MPPSC 2026

सहायक प्राध्यापक

पेपर – II

समाजशास्त्र
SOCIOLOGY

अध्यायवार MCQs

NODIA

Nodia

Scan QR for Demo PDF

GET ALL STUDY MATERIAL IN ONE APP!

- Textbooks
- Previous Year Chapterwise Question Banks
- 30 Sets Sample Papers
- Worksheets

FREE!



DOWNLOAD NOW!

SCAN & DOWNLOAD

GET IT ON Google Play

मध्य प्रदेश लोक सेवा आयोग

2026

सहायक प्राध्यापक

पेपर – II

समाजशास्त्र

अध्यायवार वस्तुनिष्ठ प्रश्न बैंक
आयोग द्वारा जारी पाठ्यक्रम के अनुसार

NODIA

Downloaded from www.pdf.tube

MPPSC सहायक प्राध्यापक समाजशास्त्र
Edition May 2026
Published by :NODIA
An Imprint of NODIA EDITIONS LLP

Information contained in this book has been obtained by author, from sources believes to be reliable. However, neither NODIA nor its author guarantee the accuracy or completeness of any information herein and NODIA nor its author shall be responsible for any error, omissions, or damages arising out of use of this information. This book is published with the understanding that NODIA and its author are supplying information but are not attempting to render engineering or other professional services.

© NODIA EDITIONS LLP

MRP ₹650.00



NODIA

This book is available on amazon and flipkart only and not available in market.

NODIA EDITIONS LLP
125, Sector 6, Vidyadhar Nagar, Jaipur 302039
Phone :+91 9001005245
email : mail@nodia.in

विषय-सूची

अध्याय 1.	समाजशास्त्रीय अवधारणाएँ	7
अध्याय 2.	समाजीकरण	66
अध्याय 3.	समाजशास्त्रीय सिद्धांत	123
अध्याय 4.	पद्धतिशास्त्र	183
अध्याय 5.	प्रकार्यवाद	250
अध्याय 6.	ग्रामीण समाजशास्त्र	314
अध्याय 7.	उद्योग एवं समाज	378
अध्याय 8.	विकास का समाजशास्त्र	442
अध्याय 9.	जनसंख्या एवं समाज	507
अध्याय 10.	मध्य प्रदेश का सामाजिक परिदृश्य	572

Click Here to Buy book on Amazon

सहायक प्राध्यापक परीक्षा–2026
द्वितीय प्रश्न–पत्र
पाठ्यक्रम – समाजशास्त्र

इकाई–I : समाजशास्त्र की अवधारणाएँ

- समाजशास्त्र की प्रकृति : परिभाषा, समाजशास्त्रीय परिप्रेक्ष्य।
- मुख्य अवधारणाएँ : समुदाय, संस्था, समिति, संस्कृति, मानदण्ड एवं मूल्य।
- सामाजिक संरचना : प्रस्थिति एवं भूमिका, विभिन्न भूमिकाएँ, भूमिका युग्म, प्रस्थिति युग्म, प्रस्थिति–क्रम, भूमिका–संघर्ष।
- सामाजिक समूह: अर्थ, प्रकार : प्राथमिक एवं द्वितीयक समूह, औपचारिक एवं अनौपचारिक समूह, अन्तःसमूह एवं बाह्य समूह, सन्दर्भ समूह।
- सामाजिक संस्थाएँ: विवाह, परिवार, शिक्षा, अर्थव्यवस्था, राजव्यवस्था, धर्म, वर्ग, आश्रम, पुरुषार्थ, ऋणु, पञ्च, संस्कार।

इकाई– II : समाजीकरण

- समाजीकरण, पुनःसमाजीकरण, प्रत्याशी समाजीकरण, प्रौढ़ समाजीकरण, समाजीकरण के अभिकरण, समाजीकरण के सिद्धान्त।
- सामाजिक स्तरीकरण : सामाजिक विभेदीकरण, उच्चोच्च, क्रम एवं असमानता, जाति, वर्ग, लिंग, जुर्गाति, सामाजिक स्तरीकरण के सिद्धान्त, सामाजिक गतिशीलता।
- सामाजिक परिवर्तन : अवधारणाएँ एवं प्रकार : उद्विकास, प्रसार, प्रगति, क्रान्ति, रूपान्तरण, सामाजिक संरचना में परिवर्तन एवं सामाजिक संरचना का परिवर्तन, सिद्धान्त– रैखिय एवं चक्रीय।
- भारतीय समाज का अवधारणात्मक स्वरूप : भारत के लोग : समूह एवं समुदाय, विविधताओं में एकता; सांस्कृतिक विविधता: क्षेत्रीय, भाषाई धार्मिक एवं जनजातीय।
- समकालीन मुद्दे : सामाजिक–सांस्कृतिक, निर्धनता, जाति एवं लिंग सम्बन्धी असमानता क्षेत्रीय, नृवंशीय एवं धार्मिक विषमरसता, पारिवारिक विषमरसता : (क) घरेलु हिंसा (ख) दहेज (ग) तलाक (घ) अन्तःपीढ़ी संघर्ष।

इकाई– III : समाजशास्त्रीय सिद्धान्त

- संरचनात्मक सिद्धान्त : नेडल, रेडक्लिफ ब्राउन।
- प्रकार्यात्मक सिद्धान्त : मेलिनोवस्की, दुर्खीम, पारसंस, मर्टन।
- अन्तःक्रियावादी सिद्धान्त : सामाजिक क्रिया–मैक्स वेबर, पैरेटो, प्रतीकात्मक अन्तःक्रियावादी सिद्धान्त : जी.एच. मीड, ब्लूमर।
- संघर्ष सिद्धान्त : कार्ल मार्क्स, दारेंडोर्फ, कोजर।
- सैद्धान्तिक परिप्रेक्ष्य :–
  भारतीय/वर्मण्य परप्रिेक्ष्य : जी.एस. घुर्ये, लुई डूमोण्ट।
  संरचनात्मक–प्रकार्यवादी परप्रिेक्ष्य : एम.एन. श्रीनिवास, एस.सी. दुबे।
  दलतिवादी परप्रिेक्ष्य : बी.आर. अम्बेडकर।
  मूल्यों का समाजशास्त्र : राधा कमल मुखर्जी।

NODIA

इकाई– IV : पद्धतिशास्त्र

- सामाजिक शोध का अर्थ एवं प्रकृति :–सामाजिक घटना की प्रकृति, वैज्ञानिक विधि, सामाजिक घटना के अध्ययन में समस्याएँ : वस्तुनिष्ठता एवं व्यक्तिनिष्ठता, तथ्य एवं मूल्य।
- गणनात्मक विधि : सर्वेक्षण, शोध प्रारूप एवं इसके प्रकार, उपकल्पना, निर्धारण, समकक्ष संकलन की विधियाँ : अवलोकन, प्रश्नावली अनुसूची।
- गुणात्मक विधियों : सहभागी अवलोकन, वैज्ञानिक अध्ययन, अन्तर्वस्तु विश्लेषण, मौखिक इतिहास, जीवन इतिहास।

- सामाजिक शोध में सांख्यिकी: केन्द्रीय प्रवृत्ति के माप: सामान्तर माध्य, मध्यस्थका, बहुलक, विचलन के माप, सह सम्बन्ध विश्लेषण, सार्थकता।
- समकामी, सामाजिक अनुसंधान में कम्प्यूटर की उपयोगिता, समुज्ज्वलि लेखन।

इकाई– V : प्रकार्यवाद

- नव–प्रकार्यवाद एवं नव–मार्क्सवाद– ज्योत अलगोजेण्डर, हेवरमास, अल्थुसर।
- संरचनीकरण और उत्तर–आधुनिकतावाद – गिडेंस, डेरिडा।
- समकालीन मुद्दे : विकासात्मक, जनसंख्या, क्षेत्रीय विषमता, झुग्गियाँ, विस्थापन, सतत विकास के लक्ष्य, नीति अयोग – संरचना एवं कार्य।
- विचलन से सम्बन्धित मुद्दे :–विचलन और इसके प्रकार, अपराध और अपराधिकता, श्वेत कॉलर अपराध और भ्रष्टाचार, अपराध का बदलता प्रोफाइल, मादक द्रव्य व्यसन, आत्महत्या।
- समकालीन विचारणाएँ : परम्परा और आधुनिकता भारत में, राष्ट्र निर्माण की समस्याएँ : धर्मनिरपेक्षता, बहुलवाद और राष्ट्र निर्माण।

इकाई– VI : ग्रामीण समाजशास्त्र

- ग्रामीण समाज की अध्ययन पद्धतियाँ : ग्रामीण तथा नगरीय अन्तर, ग्रामीणवाद–नगरीयवाद, कृषक सम्बन्धी अध्ययन।
- कृषि सम्बन्धी संस्थाएँ : भूमि स्वामित्व एवं इसके प्रकार, कृषक अन्तः सम्बन्ध एवं उत्पादन के तरीकों पर चर्चा, जमीनी व्यवस्था तथा जमीनी अन्तःसम्बन्ध, कृषि में वर्ग व्यवस्था।
- पञ्चायती राज व्यवस्था : 73 में संविधान संशोधन के पूर्व एवं पश्चात् पञ्चायती राज, ग्रामीण नेतृत्व एवं गुटबन्दी, लोक संस्कृतिकरण।
- सामाजिक मुद्दे एवं ग्रामीण विकास की रूपरेखाएँ : बँधुआ एवं प्रवासी मजदूर, दरिद्रीकरण एवं गैर किसानीकरण, कृषक अस्तर्निरोध एवं कृषक आन्दोलन।
- ग्रामीण विकास और परिवर्तन : ग्रामीण समाज में परिवर्तन की बशाएँ, परिवर्तन की प्रक्रियाएँ : प्रवजन, ग्राम से नगर की ओर, ग्राम से ग्राम की ओर गतिशीलता– सामाजिक /आर्थिक।

इकाई– VII : उद्योग एवं समाज

- समाजशास्त्रीय परम्परा में औद्योगिक समाज : श्रम–विभाजन, नौकरशाही, तार्किकता, उत्पादन सम्बन्ध, अधिशेष मूल्य, अलगाव।
- उद्योग एवं समाज : समाज व्यवस्था के रूप में कारखाना, औपचारिक एवं अनौपचारिक संगठन, उद्योग पर सामाजिक संरचना का प्रभाव, समाज पर उद्योग का प्रभाव।
- औद्योगिक सम्बन्ध : श्रम के बदलते प्रोफाइल, बदलते श्रम–प्रबन्ध सम्बन्ध, समझौता, अदालती निर्णय, मध्यस्थता, सामूहिक सौदेबाजी, श्रम संघ, प्रबन्धन में कार्य भागीदारी (संयुक्त प्रबन्ध परिषदें), गुणवत्ता वृत्त।
- भारत में औद्योगिकीकरण और सामाजिक परिवर्तन : परिवार, शिक्षा एवं स्तरीकरण पर औद्योगिकीकरण का प्रभाव, औद्योगिक समाज में वर्ग एवं वर्ग संघर्ष, औद्योगिकीकरण की बाधाएँ तथा सीमाएँ।
- वैश्वीकरण की चुनौतियाँ : समाजशास्त्र का भारतीयकरण, शिक्षा का निजीकरण, भारत की विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी नीति।

इकाई– VIII : विकास का समाजशास्त्र

- विकास की अवधारणाएँ : आर्थिक वृद्धि, मानवीय विकास, सामाजिक विकास, संपोषक विकास।
- अन्य विकास के सिद्धान्त : उदारवादी – मैक्स वेबर, गुन्नर मिर्डल।
- विकास के मार्ग : आधुनिकीकरण, वैश्वीकरण।
- सामाजिक संरचना एवं विकास : सामाजिक संरचना एक सुविधा/बाधा, विकास एवं सामाजिक आर्थिक विषमताएँ।
- संस्कृति एवं विकास : संस्कृति एक सुविधा /बाधा, उत्तर आधुनिकता, पश्चिमीकरण।

Downloaded from www.pdf.tube

इकाई– IX : जनसंख्या एवं समाज

- जनसंख्या वृद्धि के सिद्धान्त : माल्थुसवादी, जनसांख्यिकीय संक्रमण।
- भारत में जनसंख्या वृद्धि एवं वितरण : सन् 1901 से भारत में जनसंख्या वृद्धि, जनसंख्या वृद्धि के कारण एवं प्रभाव।
- अवधारणाएँ : उत्पादकता, मृत्युदर, रुग्णता तथा प्रवजन, आयु तथा लिंग संरचना तथा इसके परिणाम, उत्पादकता के निर्धारक, मृत्युदर के निर्धारक, शिशु, बाल एवं मातृ मृत्युदर, रुग्णता दर।
- जनसंख्या एवं विकास : विकास के अवरोध व मानव संसाधन के रूप में जनसंख्या, जनसंख्या को प्रभावित करने वाले सामाजिक–सांस्कृतिक कारक।
- जनसंख्या नियंत्रण : जनसंख्या नीति : समस्याएँ एवं परिप्रेक्ष्य, जनसंख्या शिक्षा, जनसंख्या नियंत्रण के लिए किए गए उपाय।

NODIA

इकाई– X : मध्यप्रदेश का सामाजिक परिदृश्य

- मध्यप्रदेश में पञ्चायती राज व्यवस्था : त्रिस्तरीय पञ्चायती राज व्यवस्था, पञ्चायती राज में महिलाओं की भागीदारी एवं भूमिका, ग्रामीण नेतृत्व, विकेन्द्रीकरण।
- मध्यप्रदेश में जनजातीय समाज: जनजातियों का सामाजिक संगठन, मध्यप्रदेश की जनजातियों के लिए कल्याणकारी कार्यक्रम।
- मध्यप्रदेश की जनजातीय संस्कृति – नृत्य कला एवं त्योहार।
- मध्यप्रदेश में स्वयंसेवी संगठनों की भूमिका, स्वय सहायता समूह, महिला सशक्तिकरण, मध्यप्रदेश लोक सेवाओं के प्रदान की व्यापस्थि अधिनियम, 2010।
- मध्यप्रदेश की जनजातिकी, जनसंख्या वृद्धि, परिवार कल्याण कार्यक्रम, लिंग अनुपात, पोषण एवं स्वास्थ्य योजनाएँ।

****

अध्याय 01
समाजशास्त्रीय अवधारणाएँ

1. निम्नलिखित में से कौन सी समाजशास्त्र की सबसे उपयुक्त परिभाषा है?
(A) मानव मन और उसके कार्यों का अध्ययन।
(B) मानव समाज और सामाजिक अंतःक्रिया का व्यवस्थित अध्ययन।
(C) अतीत की घटनाओं, विशेष रूप से मानवीय मामलों का अध्ययन।
(D) वस्तुओं के उत्पादन, वितरण और उपभोग का विश्लेषण।

2. एक समाजशास्त्रीय परिप्रेक्ष्य मुख्य रूप से निम्नलिखित में से किस पर बल देता है?
(A) मानव व्यवहार पर सामाजिक संदर्भ का प्रभाव।
(B) व्यवहार के आधार के रूप में व्यक्तिगत मनोवैज्ञानिक लक्षण।
(C) मानवीय कार्यों को आकार देने वाली जैविक प्रवृत्तियाँ।
(D) सभी सामाजिक घटनाओं के पीछे निहित आर्थिक उद्देश्य।

3. समाजशास्त्र की प्रकृति के संबंध में गलत कथन की पहचान करें।
(A) समाजशास्त्र को भौतिक विज्ञान के बजाय कड़ाई से एक सामाजिक विज्ञान के रूप में परिभाषित किया गया है।
(B) समाजशास्त्र व्यवस्थित आनुभविक अन्वेषण और आलोचनात्मक विश्लेषणात्मक पद्धतियों का उपयोग करता है।
(C) समाजशास्त्र एक निर्देशात्मक विषय है जो यह निर्धारित करता है कि समाज कैसा होना चाहिए।
(D) समाजशास्त्र आधुनिक सामाजिक जीवन के प्रतिमानों का विश्लेषण करने और उन्हें समझने का प्रयास करता है।

4. 'समुदाय' की अवधारणा को विशेषताओं के किस समूह द्वारा सबसे अच्छी तरह परिभाषित किया गया है?
(A) एक विशिष्ट लक्ष्य, स्वैच्छिक सदस्यता और औपचारिक नियम।
(B) विश्वासों और धार्मिक अनुष्ठानों की एक अमूर्त प्रणाली।
(C) एक बड़े पैमाने पर, अवैयक्तिक और संविदात्मक संबंध।
(D) एक साझा भौगोलिक क्षेत्र, समान बंधन और अंतःक्रिया।

5. निम्नलिखित प्रश्न में दो कथन शामिल हैं — कथन (A) और कारण (R)। उपयुक्त विकल्प चुनकर प्रश्न का उत्तर दें।
कथन (A): समाजशास्त्रीय परिप्रेक्ष्य अक्सर समाज के बारे में सामान्य ज्ञान से जुड़ी धारणाओं को चुनौती देते हैं।
कारण (R): समाजशास्त्र सामाजिक जीवन के बारे में उन मान्यताओं पर सवाल उठाने और उनका परीक्षण करने के लिए व्यवस्थित शोध पद्धतियों को लागू करता है जिन्हें अक्सर सच मान लिया जाता है।
(A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सही है लेकिन R गलत है।
(D) A गलत है लेकिन R सही है।

6. निम्नलिखित में से कौन सा सामाजिक संस्था का उदाहरण नहीं है?
(A) परिवार
(B) कॉफी के लिए मिलने वाले मित्रों का समूह
(C) शिक्षा प्रणाली
(D) राजनीतिक व्यवस्था

7. एक 'समिति' लोगों का एक समूह है जो निम्नलिखित में से किस उद्देश्य के लिए संगठित होता है?
(A) अपनेपन की भावना के साथ एक ही क्षेत्र में रहने के लिए।
(B) साझा ज्ञान और कौशल को पीढ़ियों तक पहुँचाने के लिए।
(C) स्थापित कानूनों को लागू करने और सामाजिक व्यवस्था बनाए रखने के लिए।
(D) किसी विशेष उद्देश्य या उद्देश्यों के समूह को पूरा करने के लिए।

8. संस्कृति के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:
1. संस्कृति सीखी जाती है और एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को हस्तांतरित की जाती है।
2. संस्कृति स्थिर होती है और समय के साथ अपरिवर्तित रहती है।
3. संस्कृति में भौतिक वस्तुएं और अभौतिक विचार दोनों शामिल होते हैं।

उपर्युक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?
(A) केवल 1
(B) केवल 1 और 3
(C) केवल 2 और 3
(D) 1, 2 और 3

9. दिए गए कथनों को पढ़ें और सही विकल्प का चयन करें।
कथन I: प्रतिमान किसी दी गई स्थिति में व्यवहार करने के तरीके के लिए विशिष्ट सांस्कृतिक अपेक्षाएं हैं।
कथन II: मूल्य समाज में क्या अच्छा और वांछनीय है, इसके

Click Here to Buy book on Amazon

बारे में अमूर्त आदर्श हैं।
(A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
(B) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।
(C) कथन I सही है, लेकिन कथन II गलत है।
(D) कथन I गलत है, लेकिन कथन II सही है।

10. कौन सा शब्द समाज में व्यक्ति द्वारा धारित सामाजिक रूप से परिभाषित पद को संदर्भित करता है?
(A) परिस्थिति
(B) भूमिका
(C) प्रतिमान
(D) संशास्ति

11. एक डॉक्टर का पेशेवर, ज्ञानवान और सहानुभूतिपूर्ण होने का अपेक्षित व्यवहार किसका उदाहरण है?
(A) परिस्थिति समुच्चय
(B) परिस्थिति क्रम
(C) बहुविध भूमिका
(D) भूमिका

12. सूची I को सूची II से सुमेलित करें और नीचे दिए गए कूट से सही उत्तर चुनें।
सूची I: (अवधारणा)
P. समुदाय
Q. समिति
R. संस्था
S. संस्कृति
सूची II: (उदाहरण)
1. एक व्यापार संघ
2. एक गाँव
3. कानूनी व्यवस्था
4. भाषा और परंपराएं
कूट:
(A) P-2, Q-1, R-3, S-4
(B) P-1, Q-2, R-4, S-3
(C) P-2, Q-3, R-1, S-4
(D) P-4, Q-1, R-3, S-2

13. 'बहुविध भूमिका' की अवधारणा संदर्भित करती है:
(A) एक ही स्थिति से जुड़े विभिन्न व्यवहारों को।
(B) जीवन भर एक स्थिति से दूसरी स्थिति में जाने की प्रक्रिया को।
(C) एक साथ कई स्थितियाँ धारण करने की अवस्था को।
(D) दो अलग-अलग भूमिकाओं की मांगों के बीच अनुभव किए जाने वाले संघर्ष को।

14. किसी व्यक्ति द्वारा एक ही समय में धारण की जाने वाली सभी स्थितियों के संग्रह को किस रूप में जाना जाता है?
(A) भूमिका समुच्चय
(B) परिस्थिति क्रम
(C) मुख्य परिस्थिति
(D) परिस्थिति समुच्चय

15. एक छात्र जो कर्मचारी, टीम कप्तान और बेटी भी है, वह किसका उदाहरण है?
(A) बहुविध भूमिकाएं
(B) भूमिका संघर्ष
(C) परिस्थिति क्रम
(D) भूमिका समुच्चय

16. निम्नलिखित में से कौन सा जोड़ा गलत सुमेलित है?
(A) परिस्थिति - एक मान्यता प्राप्त सामाजिक पद।
(B) भूमिका संघर्ष - एक ही स्थिति से असंगत अपेक्षाएं।
(C) भूमिका - किसी स्थिति से जुड़ा अपेक्षित व्यवहार।
(D) परिस्थिति समुच्चय - एक व्यक्ति द्वारा एक ही समय में धारित सभी स्थितियाँ।

17. निम्नलिखित प्रश्न में दो कथन शामिल हैं — कथन (A) और कारण (R)। उपयुक्त विकल्प चुनकर प्रश्न का उत्तर दें।
कथन (A): आधुनिक, जटिल समाजों में व्यक्ति अक्सर भूमिका संघर्ष का अनुभव करता है।
कारण (R): आधुनिक समाजों में व्यक्ति आमतौर पर कई स्थितियाँ धारण करते हैं, और इन विभिन्न स्थितियों से जुड़ी भूमिकाओं की मांगें विरोधाभासी हो सकती हैं।
(A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सही है लेकिन R गलत है।
(D) A गलत है लेकिन R सही है।

18. एक 'भूमिका समुच्चय' में शामिल है:
(A) एक ही स्थिति से जुड़ी विभिन्न भूमिकाएं।
(B) वे सभी स्थितियाँ जो एक व्यक्ति धारण करता है।
(C) समय के साथ धारण की गई स्थितियों का क्रम।
(D) दो अलग-अलग भूमिकाओं के बीच संघर्ष।

19. सामाजिक समूहों के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:
1. एक सामाजिक समूह में दो या दो से अधिक लोग होते हैं जो एक-दूसरे के साथ अंतःक्रिया करते हैं।
2. एक सामाजिक समूह के सदस्य साझा पहचान की भावना रखते हैं।
3. बस का इंतज़ार कर रहे लोगों का समूह एक सामाजिक समूह बनाता है।
उपर्युक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?
(A) केवल 1
(B) केवल 1 और 2
(C) केवल 2 और 3
(D) 1, 2 और 3

20. एक करियर पथ जिसमें जूनियर एग्जीक्यूटिव से मैनेजर और फिर वाइस प्रेसिडेंट बनना शामिल है, किसका उदाहरण है?

Downloaded from www.pdf.tube

(A) परिस्थिति समुच्चय
(B) भूमिका संघर्ष
(C) भूमिका समुच्चय
(D) परिस्थिति क्रम

21. व्यक्ति के जीवन के दौरान स्थितियों के एक क्रम के माध्यम से होने वाले संचलन को परिभाषित किया गया है:
(A) परिस्थिति असंगति
(B) भूमिका संक्रमण
(C) परिस्थिति क्रम
(D) सामाजिक गतिशीलता

22. परिवार को किस प्रकार का सामाजिक समूह माना जाता है?
(A) द्वितीयक समूह
(B) प्राथमिक समूह
(C) औपचारिक समूह
(D) बाह्य समूह

23. एक बड़ा निगम जहाँ संबंध अवैयक्तिक और लक्ष्य-उन्मुख होते हैं, किसका उत्कृष्ट उदाहरण है?
(A) प्राथमिक समूह
(B) अंतः समूह
(C) संदर्भ समूह
(D) द्वितीयक समूह

24. निम्नलिखित में से कौन सी प्राथमिक समूह की एक प्रमुख विशेषता है?
(A) आमने-सामने की, घनिष्ठ अंतःक्रिया
(B) अवैयक्तिक संबंध
(C) लक्ष्य-उन्मुख अंतःक्रिया
(D) औपचारिक नियम और कानून

25. पारंपरिक हिंदू 'आश्रम' व्यवस्था के निम्नलिखित चरणों को सही कालानुक्रमिक क्रम में व्यवस्थित करें:
1. गृहस्थ
2. ब्रह्मचर्य
3. वानप्रस्थ
4. संन्यास

(A) 2, 1, 3, 4
(B) 1, 2, 3, 4
(C) 2, 3, 1, 4
(D) 4, 3, 2, 1

26. 'अंतः समूह' को उस समूह के रूप में सबसे अच्छी तरह वर्णित किया जा सकता है:
(A) जिससे व्यक्ति संबंधित है और पहचान तथा वफादारी की भावना महसूस करता है।
(B) जिससे व्यक्ति संबंधित नहीं है और प्रतिस्पर्धा की भावना महसूस करता है।
(C) जिसकी एक औपचारिक संरचना और परिभाषित भूमिकाएं होती हैं।
(D) जिसे व्यक्ति आत्म-मूल्यांकन के लिए एक मानक के रूप में उपयोग करता है।

27. एक किशोर जो अपने पसंदीदा लोकप्रिय बैंड के पहनावे और संगीत की शैली को अपनाता है, वह उस बैंड का उपयोग किस रूप में कर रहा है?
(A) द्वितीयक समूह
(B) बाह्य समूह
(C) प्राथमिक समूह
(D) संदर्भ समूह

28. कौन सा कथन औपचारिक और अनौपचारिक समूहों के बीच सही अंतर करता है?
(A) औपचारिक समूह बड़ी इकाइयां हैं, जबकि अनौपचारिक समूह हमेशा छोटे होते हैं।
(B) औपचारिक समूहों के स्थापित नियम होते हैं, जबकि अनौपचारिक समूह स्वतःस्फूर्त होते हैं।
(C) औपचारिक समूह हमेशा प्राथमिक होते हैं, जबकि अनौपचारिक समूह द्वितीयक होते हैं।
(D) औपचारिक समूह नातेदारी पर आधारित होते हैं, जबकि अनौपचारिक समूह व्यावसायिक होते हैं।

NODIA

29. पारंपरिक भारतीय समाजशास्त्र में 'पुरुषार्थ' की अवधारणा संदर्भित करती है:
(A) जीवन के चार चरणों को।
(B) किए जाने वाले पवित्र बलिदानों को।
(C) जीवन के चार वैध लक्ष्यों को।
(D) देवताओं, ऋषियों और पूर्वजों के प्रति ऋणों को।

30. दिए गए कथनों को पढ़ें और सही विकल्प का चयन करें।
कथन I: एक सामाजिक संस्था के रूप में धर्म पवित्र से संबंधित विश्वासों और प्रथाओं का एक समूह प्रदान करता है।
कथन II: एक सामाजिक संस्था के रूप में राज्य मुख्य रूप से वस्तुओं के उत्पादन और वितरण से संबंधित है।
(A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
(B) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।
(C) कथन I सही है, लेकिन कथन II गलत है।
(D) कथन I गलत है, लेकिन कथन II सही है।

31. निम्नलिखित में से कौन 'पुरुषार्थ' में से एक नहीं है?
(A) यज्ञ
(B) धर्म
(C) अर्थ
(D) काम

32. 'वर्ण' व्यवस्था सामाजिक स्तरीकरण का एक ढांचा है जो पारंपरिक रूप से किस पर आधारित है?
(A) धन और संपत्ति
(B) व्यवसाय और कर्तव्य
(C) भौगोलिक क्षेत्र
(D) आयु और लिंग

33. निम्नलिखित प्रश्न में दो कथन शामिल हैं — कथन (A) और कारण (R)। उपयुक्त विकल्प चुनकर प्रश्न का उत्तर दें।
कथन (A): सामाजिक संस्थाएं परिवर्तन के प्रति प्रतिरोधी होती हैं।
कारण (R): संस्थाओं में सामाजिक संबंधों और प्रथाओं के स्थापित और स्थायी प्रतिमान होते हैं जो संस्कृति में गहराई से रचे-बसे होते हैं।
(A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सही है लेकिन R गलत है।
(D) A गलत है लेकिन R सही है।

34. एक समाजशास्त्री जो यह अध्ययन कर रहा है कि कक्षा की अंतःक्रियाएं छात्र की पहचान को कैसे आकार देती हैं, वह किस सामाजिक संस्था पर ध्यान केंद्रित कर रहा है?
(A) शिक्षा
(B) अर्थव्यवस्था
(C) राज्य
(D) धर्म

35. हिंदू दर्शन में 'ऋण' की अवधारणा संदर्भित करती है:
(A) मानव जीवन के चार लक्ष्यों को।
(B) विभिन्न जीवन-चक्र समारोहों को।
(C) तीन मूलभूत ऋणों को।
(D) जन्म और मृत्यु के चक्र से अंतिम मुक्ति को।

36. सूची I को सूची II से सुमेलित करें और नीचे दिए गए कूट से सही उत्तर चुनें।
सूची I: (समूह प्रकार)
P. प्राथमिक समूह
Q. द्वितीयक समूह
R. संदर्भ समूह
S. अंतः समूह
सूची II: (विशेषता)
1. तुलना का मानक
2. "हम-की भावना"
3. अवैयक्तिक, साधनपरक संबंध
4. घनिष्ठ, आमने-सामने का संबंध
कूट:
(A) P-4, Q-3, R-1, S-2
(B) P-3, Q-4, R-2, S-1
(C) P-4, Q-1, R-3, S-2
(D) P-2, Q-3, R-1, S-4

37. निम्नलिखित में से कौन सा एक सामाजिक संस्था के रूप में 'अर्थव्यवस्था' का सबसे अच्छा वर्णन करता है?
(A) वह संस्था जो नए सदस्यों का समाजीकरण करती है और सांस्कृतिक विरासत को हस्तांतरित करती है।
(B) वह संस्था जो राजनीतिक शक्ति और संसाधनों के वितरण का प्रबंधन करती।
(C) वह संस्था जो वस्तुओं के उत्पादन और वितरण को व्यवस्थित करती है।
(D) वह संस्था जो पवित्र के बारे में विश्वासों के माध्यम से आध्यात्मिक अर्थ प्रदान करती है।

38. हिंदू सामाजिक संस्थाओं के संदर्भ में 'संस्कार' को सबसे अच्छी तरह किस रूप में समझा जाता है?
(A) जीवन के चरण से जुड़े कर्तव्य।
(B) जीवन के चरणों को चिह्नित करने वाले रीति-रिवाज या धार्मिक कृत्य।
(C) किसी व्यक्ति के अनुसरण के लिए वैध लक्ष्य या उद्देश्य।
(D) एक पदानुक्रमित व्यवस्था के भीतर सामाजिक वर्ग।

39. सामाजिक संरचना के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:
1. परिस्थिति गतिशील पक्ष है, जबकि भूमिका स्थिर पक्ष है।
2. एक व्यक्ति किसी भी समय केवल एक ही परिस्थिति धारण कर सकता है।
3. भूमिका संघर्ष तब होता है जब दो या दो से अधिक परिस्थितियों की भूमिकाएं असंगत होती हैं।
उपर्युक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?
(A) केवल 3
(B) केवल 1 और 2
(C) केवल 2 और 3
(D) 1, 2 और 3

40. जब एक ही परिस्थिति से जुड़ी भूमिकाओं की मांगें भारी या विरोधाभासी हो जाती हैं, तो इसे किस रूप में जाना जाता है?
(A) भूमिका तनाव
(B) भूमिका संघर्ष
(C) परिस्थिति असंगति
(D) परिस्थिति क्रम

41. कौन सी समाजशास्त्रीय अवधारणा एक मान्यता प्राप्त उद्देश्य के साथ सामाजिक व्यवहार की स्थापित और संगठित प्रणाली को संदर्भित करती है?
(A) समुदाय
(B) समिति
(C) संस्था
(D) सामाजिक समूह

42. निम्नलिखित में से कौन समाज में एक 'मूल्य' का प्रतिनिधित्व करता है?
(A) यह विश्वास कि लोकतंत्र सरकार का सबसे अच्छा रूप है।
(B) किसी से मिलते समय हाथ मिलाना।
(C) ट्रैफिक की लाल बत्ती पर रुकना।
(D) शादी में औपचारिक पोशाक पहनना।

Click Here to Buy book on Amazon

43. वह समूह जिसके प्रति व्यक्ति विरोध और प्रतिस्पर्धा की भावना महसूस करता है, उसे क्या कहा जाता है?
(A) अंतः समूह
(B) संदर्भ समूह
(C) द्वितीयक समूह
(D) बाह्य समूह

44. निम्नलिखित में से कौन सा एक अनौपचारिक सामाजिक समूह का उदाहरण है?
(A) एक बहुराष्ट्रीय निगम।
(B) खेल की रात के लिए पड़ोस के दोस्तों का नियमित जमावड़ा।
(C) विश्वविद्यालय की छात्र सरकार।
(D) राष्ट्रीय सेना।

45. समाज में शक्ति और अधिकार के वैध उपयोग से संबंधित सामाजिक संस्था है:
(A) अर्थव्यवस्था
(B) धर्म
(C) राज्य
(D) परिवार

46. पारंपरिक भारतीय विचार में 'यज्ञ' का सबसे सटीक वर्णन है:
(A) एक जीवन-चक्र समारोह।
(B) मानव अस्तित्व का एक लक्ष्य।
(C) जीवन का एक चरण।
(D) एक अनुष्ठानिक बलिदान।

47. निम्नलिखित पारंपरिक 'वर्णों' को उनके पारंपरिक पदानुक्रमित क्रम में, उच्चतम से निम्नतम तक व्यवस्थित करें।
1. वैश्य
2. ब्राह्मण
3. शूद्र
4. क्षत्रिय
(A) 2, 4, 1, 3
(B) 4, 2, 1, 3
(C) 2, 1, 4, 3
(D) 1, 2, 3, 4

48. एक न्यायाधीश, जो एक माँ भी है, को अपने पेशे और अपने परिवार की मांगों के बीच संतुलन बनाना मुश्किल लगता है। यह किसका उत्कृष्ट उदाहरण है?
(A) भूमिका समुच्चय
(B) भूमिका संघर्ष
(C) परिस्थिति समुच्चय
(D) परिस्थिति क्रम

49. निम्नलिखित में से कौन समाजशास्त्र की मूल अवधारणा नहीं है?
(A) समुदाय
(B) सामाजिक गतिशीलता
(C) संस्था
(D) संस्कृति

50. दिए गए कथनों को पढ़ें और सही विकल्प का चयन करें।
कथन I: 'समुदाय' की विशेषता 'हम-की भावना' और एक निश्चित इलाका है।
कथन II: 'समिति' जानबूझकर विशिष्ट, सीमित लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए बनाई जाती है।
(A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
(B) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।
(C) कथन I सही है, लेकिन कथन II गलत है।
(D) कथन I गलत है, लेकिन कथन II सही है।

51. संस्कृति प्राप्त करने की प्रक्रिया को किस रूप में जाना जाता है?
(A) परसंस्कृतिग्रहण
(B) आत्मसातीकरण
(C) समाजीकरण
(D) स्तरीकरण

52. निम्नलिखित प्रश्न में दो कथन शामिल हैं — कथन (A) और कारण (R)। उपयुक्त विकल्प चुनकर प्रश्न का उत्तर दें।
कथन (A): संदर्भ समूह वह समूह हो सकता है जिससे कोई संबंधित नहीं है।
कारण (R): व्यक्ति अक्सर उन समूहों के मानकों और व्यवहारों का उपयोग आत्म-मूल्यांकन और दृष्टिकोण निर्माण के लिए संदर्भ के रूप में करते हैं जिनमें वे शामिल होने की आकांक्षा रखते हैं।
(A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सही है लेकिन R गलत है।
(D) A गलत है लेकिन R सही है।

53. वे साझा नियम जो किसी समाज या समूह के सदस्यों के व्यवहार का मार्गदर्शन करते हैं, क्या कहलाते हैं?
(A) मूल्य
(B) विश्वास
(C) प्रतिमान
(D) पुरावशेष

54. भावनात्मक समर्थन और पोषण प्रदान करने का परिवार का कार्य इसके किस प्रकार का समूह होने का एक प्रमुख पहलू है?
(A) द्वितीयक समूह
(B) प्राथमिक समूह
(C) औपचारिक संस्था
(D) संदर्भ समूह

55. सूची I को सूची II से सुमेलित करें और नीचे दिए गए कूट से सही उत्तर चुनें।

NODIA

सूची I: (पुरुषार्थ)
P. धर्म
Q. अर्थ
R. काम
S. मोक्ष
सूची II: (अर्थ)
1. धन और भौतिक कल्याण की खोज
2. सुख और इंद्रिय तृप्ति की खोज
3. पुनर्जन्म के चक्र से मुक्ति
4. धर्मी आचरण और कर्तव्य
कूट:
(A) P-1, Q-2, R-3, S-4
(B) P-4, Q-1, R-2, S-3
(C) P-4, Q-3, R-1, S-2
(D) P-2, Q-4, R-1, S-3

56. एक 'प्रोफेसर' होने की एकल स्थिति से जुड़ी सभी भूमिकाएं (शिक्षण, शोध, छात्रों को सलाह देना, प्रशासनिक कर्तव्य) सामूहिक रुप से प्रोफेसर का क्या बनाती हैं?
(A) भूमिका समुच्चय
(B) परिस्थिति समुच्चय
(C) भूमिका संघर्ष
(D) परिस्थिति क्रम

57. कौन सी अवधारणा लोगों के एक समूह के व्यापक और संपूर्ण जीवन जीने के तरीके का वर्णन करती है?
(A) संस्था
(B) समुदाय
(C) संस्कृति
(D) समाज

58. एक सामाजिक संस्था के रुप में विवाह के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:
1. यह व्यक्तियों के बीच एक सामाजिक रूप से स्वीकृत मिलन है।
2. यह नातेदारी और वंश की एक प्रणाली स्थापित करता है।
3. यह सभी समाजों में एक ही रुप में मौजूद है।
उपर्युक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?
(A) केवल 2
(B) केवल 1 और 2
(C) केवल 1 और 3
(D) 1, 2 और 3

59. निम्नलिखित में से कौन सा परिस्थिति का सबसे अच्छा उदाहरण है?
(A) ईमानदार होना
(B) परीक्षा के लिए कड़ी मेहनत करना
(C) कार चलाना
(D) एक 'पिता' होना

60. समाजशास्त्रीय परिप्रेक्ष्य हमें विशिष्ट में सामान्य देखने के लिए प्रोत्साहित करता है, जिसका अर्थ है कि यह हमें निम्नलिखित में मदद करता है:
(A) प्रत्येक व्यक्ति के जीवन के अद्वितीय पहलुओं पर ध्यान केंद्रित करना।
(B) यह देखना कि सामान्य सामाजिक प्रतिमान व्यक्तिगत अनुभवों को कैसे आकार देते हैं।
(C) एक ही मामले से पूरी आबादी के बारे में सामान्यीकरण करना।
(D) जैविक सिद्धांतों के पक्ष में व्यक्तिगत इतिहास की उपेक्षा करना।

61. क्या एक 'सामाजिक समूह' को लोगों के मात्र 'पुंज' से अलग करता है?
(A) विशिष्ट सेटिंग में शामिल लोगों की संख्या।
(B) स्थान के भीतर व्यक्तियों की शारीरिक निकटता।
(C) निरंतर अंतःक्रिया और साझा पहचान की उपस्थिति।
(D) समान शारीरिक या बाहरी लक्षण साझा करना।

62. आश्रम व्यवस्था में 'गृहस्थ' चरण मुख्य रुप से किसके उत्तरदायित्वों से जुड़ा है?
(A) छात्र
(B) तपस्वी
(C) संन्यासी
(D) गृहस्थ

63. वह अवधारणा जिसमें व्यक्ति की स्थितियों का संपूर्ण संग्रह शामिल होता है, जैसे माँ, वकील, पत्नी और स्वयंसेवक, क्या कहलाती है?
(A) परिस्थिति समुच्चय
(B) परिस्थिति क्रम
(C) भूमिका समुच्चय
(D) बहुविध भूमिकाएं

64. एक समाजशास्त्री का तर्क है कि शिक्षा प्रणाली छात्रों को विभिन्न शैक्षणिक स्तरों में छाँटकर सामाजिक असमानता बनाए रखने में मदद करती है। यह तर्क किसे दर्शाता है?
(A) मनोवैज्ञानिक परिप्रेक्ष्य
(B) समाजशास्त्रीय परिप्रेक्ष्य
(C) जैविक परिप्रेक्ष्य
(D) ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य

65. निम्नलिखित में से कौन सा सही जोड़ा है?
(A) प्राथमिक समूह - एक पेशेवर फुटबॉल टीम
(B) संदर्भ समूह - एक ऐसा समूह जिसकी तरह बनने की व्यक्ति आकांक्षा रखता है
(C) द्वितीयक समूह - एक घनिष्ठ परिवार
(D) अंतः समूह - एक प्रतिद्वंद्वी खेल टीम

Downloaded from www.pdf.tube

66. स्थापित विश्वासों, प्रथाओं और संगठनात्मक रूपों का वह समूह जो एक समाज अपनी निरंतर आवश्यकताओं में से एक को पूरा करने के लिए विकसित करता है, क्या कहलाती है?
(A) सामाजिक संस्था
(B) सामाजिक समूह
(C) समुदाय
(D) समिति

67. निम्नलिखित प्रश्न में दो कथन शामिल हैं — कथन (A) और कारण (R)। उपयुक्त विकल्प चुनकर प्रश्न का उत्तर दें।
कथन (A): मूल्य वे व्यापक सिद्धांत प्रदान करते हैं जो सामाजिक जीवन का मार्गदर्शन करते हैं, जबकि प्रतिमान व्यवहार के विशिष्ट नियम हैं।
कारण (R): 'बड़ों के प्रति सम्मान' के मूल्य को बस में किसी वृद्ध व्यक्ति को सीट देने जैसे प्रतिमानों के माध्यम से व्यक्त किया जाता है।
(A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सही है लेकिन R गलत है।
(D) A गलत है लेकिन R सही है।

68. पुरुषार्थ के ढांचे में 'अर्थ' की खोज को एक वैध लक्ष्य माना जाता है, बशर्ते वह किसके द्वारा शासित हो?
(A) काम
(B) मोक्ष
(C) यज्ञ
(D) धर्म

69. निम्नलिखित में से कौन सा द्वितीयक समूह की विशेषताओं का अपवाद है?
(A) अवैयक्तिक संबंध
(B) लक्ष्य अभिविन्यास
(C) दीर्घकालिक, घनिष्ठ बंधन
(D) बड़ा आकार

70. निम्नलिखित में से किसे पारंपरिक हिंदू विचार में तीन 'ऋणों' में से एक नहीं माना जाता है?
(A) देव ऋण
(B) गुरु ऋण
(C) ऋषि ऋण
(D) पितृ ऋण

71. सूची I को सूची II से सुमेलित करें और नीचे दिए गए कूट से सही उत्तर चुनें।
सूची I: (अवधारणा)
P. भूमिका संघर्ष
Q. भूमिका समुच्चय
R. परिस्थिति क्रम
S. परिस्थिति समुच्चय
सूची II: (विवरण)
1. एक ही स्थिति से जुड़ी सभी भूमिकाएं
2. एक व्यक्ति द्वारा एक समय में धारित सभी स्थितियाँ
3. दो या दो से अधिक स्थितियों के बीच असंगत अपेक्षाएं
4. जीवन भर धारण की गई स्थितियों का क्रम
कूट:
(A) P-3, Q-1, R-4, S-2
(B) P-1, Q-3, R-2, S-4
(C) P-3, Q-2, R-4, S-1
(D) P-4, Q-1, R-2, S-3

72. 'समिति' की वह परिभाषित विशेषता क्या है जो इसे 'समुदाय' से अलग करती है?
(A) विशिष्ट और सीमित उद्देश्य
(B) भौगोलिक आधार
(C) स्वतःस्फूर्त उत्पत्ति
(D) स्थायित्व और स्थिरता

73. 'राज्य' शब्द उस सामाजिक संस्था को संदर्भित करता है जिसके माध्यम से:
(A) वस्तुओं और सेवाओं का उत्पादन और वितरण किया जाता है।
(B) पदानुक्रमित प्रणाली के आधार पर सामाजिक पदों का आवंटन किया जाता है।
(C) कुछ लोगों और समूहों द्वारा शक्ति प्राप्त की जाती है और उसका प्रयोग किया जाता है।
(D) सांस्कृतिक प्रतिमानों और मूल्यों को नए सदस्यों तक पहुँचाया जाता है।

74. निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:
1. एक अनौपचारिक समूह की विशेषता आधिकारिक संरचना की कमी है।
2. बाह्य समूह वह समूह है जिससे व्यक्ति महसूस नहीं करता कि वह संबंधित है।
3. एक द्वितीयक समूह आमतौर पर प्राथमिक समूह की तुलना में बड़ा और कम घनिष्ठ होता है।
उपर्युक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?
(A) केवल 1
(B) केवल 1 और 2
(C) केवल 2 और 3
(D) 1, 2 और 3

75. 'ब्रह्मचर्य आश्रम' जीवन का वह चरण है जो किसके लिए समर्पित है?
(A) विवाह और पारिवारिक जीवन।
(B) त्याग और आध्यात्मिक खोज।
(C) सांसारिक मामलों से विरक्ति।
(D) शिक्षा और अनुशासित शिक्षण।

76. "सोचने, महसूस करने और कार्य करने के वे सीखे हुए प्रतिमान जो एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को हस्तांतरित किए जाते हैं" किसकी परिभाषा है?

NODIA

(A) संस्था
(B) संस्कृति
(C) समुदाय
(D) परिस्थिति

77. एक सैनिक जिसे ऐसी कार्रवाई करने का आदेश दिया जाता है जो उसके व्यक्तिगत नैतिक विश्वासों का उल्लंघन करती है, वह किसका अनुभव कर रहा है?
(A) परिस्थिति संबंधी चिंता
(B) भूमिका त्याग
(C) भूमिका संघर्ष
(D) परिस्थिति संबंधी अस्पष्टता

78. निम्नलिखित में से कौन सा सामाजिक संस्था का सबसे अच्छा उदाहरण है?
(A) मित्रों का एक समूह
(B) दिल्ली शहर
(C) क्रिकेट का खेल
(D) कानूनी व्यवस्था

79. 'हम-की भावना' की अवधारणा सबसे दृढ़ता से किसके साथ जुड़ी हुई है?
(A) अंतः समूह
(B) द्वितीयक समूह
(C) बाह्य समूह
(D) पुंज

80. दिए गए कथनों को पढ़ें और सही विकल्प का चयन करें।
कथन I: वर्ण व्यवस्था व्यक्ति के जीवन के चरणों को व्यवस्थित करने का एक ढांचा है।
कथन II: आश्रम व्यवस्था जन्म और व्यवसाय पर आधारित सामाजिक स्तरीकरण का एक मॉडल है।
(A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
(B) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।
(C) कथन I सही है, लेकिन कथन II गलत है।
(D) कथन I गलत है, लेकिन कथन II सही है।

81. 'उपनयन' जैसा संस्कार पारंपरिक हिंदू व्यवस्था में व्यक्ति के जीवन में किस संक्रमण को चिह्नित करता है?
(A) विवाह
(B) छात्र जीवन में प्रवेश
(C) जन्म
(D) मृत्यु

82. 'समाजशास्त्र की प्रकृति' का अर्थ है कि यह एक ऐसा बौद्धिक विषय है जो:
(A) सामाजिक दृष्टिकोण से दुनिया को समझने का एक तरीका प्रदान करता है।
(B) सभी सामाजिक समस्याओं के निश्चित समाधान प्रदान करता है।
(C) केवल दार्शनिक अटकलों पर निर्भर करता है।
(D) अन्य सभी सामाजिक विज्ञानों से स्वतंत्र है।

83. एक विशिष्ट पेशेवर करियर के लिए 'परिस्थिति क्रम' की अवधारणा के अनुसार निम्नलिखित जीवन घटनाओं को व्यवस्थित करें।
1. सेवानिवृत्ति
2. इंटर्नशिप
3. वरिष्ठ प्रबंधन पद
4. प्रवेश स्तर की नौकरी
(A) 2, 4, 3, 1
(B) 4, 2, 3, 1
(C) 2, 3, 4, 1
(D) 1, 2, 4, 3

84. बुनियादी समाजशास्त्रीय अवधारणाओं के बारे में गलत कथन की पहचान करें।
(A) समुदाय एक ऐसा समूह है जो एक साझा क्षेत्र और पहचान की भावना साझा करता है।
(B) समिति एक विशिष्ट उद्देश्य के साथ औपचारिक रूप से संगठित समूह है।
(C) संस्कृति एक समूह के साझा विश्वासों, मूल्यों और प्रथाओं का प्रतिनिधित्व करती है।
(D) संस्था साझा रुचि वाले लोगों का एक अस्थायी जमावड़ा है।

85. कौन सा शब्द उस समूह का वर्णन करता है जिसका उपयोग व्यक्ति अपने स्वयं के व्यवहार और दृष्टिकोण का मूल्यांकन करने के लिए करता है?
(A) अंतः समूह
(B) बाह्य समूह
(C) संदर्भ समूह
(D) प्राथमिक समूह

86. निम्नलिखित प्रश्न में दो कथन शामिल हैं — कथन (A) और कारण (R)। उपयुक्त विकल्प चुनकर प्रश्न का उत्तर दें।
कथन (A): परिवार एक प्राथमिक समूह है।
कारण (R): यह घनिष्ठ, आमने-सामने के जुड़ाव और सहयोग द्वारा विशेषता है, जो व्यक्तियों की सामाजिक प्रकृति बनाने के लिए मौलिक हैं।
(A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सही है लेकिन R गलत है।
(D) A गलत है लेकिन R सही है।

87. निम्नलिखित में से कौन सा 'परिस्थिति' और 'भूमिका' की सबसे सटीक समझ का प्रतिनिधित्व करता है?
(A) एक व्यक्ति एक भूमिका धारण करता है और एक परिस्थिति का निर्वहन करता है।
(B) परिस्थिति और भूमिका बिना किसी संबंध के स्वतंत्र अवधारणाएं हैं।

Click Here to Buy book on Amazon

(C) परिस्थिति और भूमिका सामाजिक पद के लिए समान शब्द हैं।
(D) एक व्यक्ति एक परिस्थिति धारण करता है और एक भूमिका का निर्वहन करता है।

88. प्राथमिक और द्वितीयक समूह के बीच मुख्य अंतर किसमें निहित है?
(A) संबंधों की गुणवत्ता और प्रकृति।
(B) समूह का आकार।
(C) सदस्यों की भौगोलिक स्थिति।
(D) आधिकारिक नियम और कानून।

89. सूची I को सूची II से सुमेलित करें और नीचे दिए गए कूट से सही उत्तर चुनें।
सूची I: (भारतीय अवधारणा)
P. वर्ण
Q. आश्रम
R. पुरुषार्थ
S. ऋण
सूची II: (मुख्य विचार)
1. जीवन के चरण
2. जीवन के लक्ष्य
3. सामाजिक स्तरीकरण
4. नैतिक ऋण
कूट:
(A) P-3, Q-1, R-2, S-4
(B) P-1, Q-3, R-4, S-2
(C) P-3, Q-2, R-1, S-4
(D) P-4, Q-1, R-2, S-3

90. चोरी की सामाजिक अस्वीकृति एक मजबूत सामाजिक प्रतिमान का उदाहरण है:
(A) प्रतिमान
(B) मूल्य
(C) विश्वास
(D) पुरावशेष

91. निम्नलिखित में से कौन सी सामाजिक संस्था मुख्य रूप से ज्ञान और कौशल के औपचारिक हस्तांतरण के लिए जिम्मेदार है?
(A) परिवार
(B) धर्म
(C) अर्थव्यवस्था
(D) शिक्षा

92. निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:
1. किसी व्यक्ति का परिस्थिति समुच्चय उसके जीवनकाल में बदल सकता है।
2. परिस्थिति समुच्चय की प्रत्येक स्थिति की एक संगत भूमिका होती है।
3. व्यक्ति के परिस्थिति समुच्चय की सभी स्थितियाँ समान महत्व की होती हैं।

उपर्युक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?
(A) केवल 2
(B) केवल 1 और 2
(C) केवल 1 और 3
(D) 1, 2 और 3

93. 'समाजशास्त्रीय परिप्रेक्ष्य' की अवधारणा का सबसे अच्छा उदाहरण है:
(A) व्यक्तियों को उनकी गरीबी के लिए दोष देना।
(B) सफलता का श्रेय पूरी तरह से व्यक्तिगत कड़ी मेहनत को देना।
(C) गरीबी को सामाजिक संरचनाओं और आर्थिक ताकतों के परिणाम के रूप में समझना।
(D) मानव व्यवहार को विशुद्ध रूप से सहज ज्ञान युक्त देखना।

94. अपने परिवार और दोस्तों के प्रति वफादारी की भावना किसकी अभिव्यक्ति है?
(A) बाह्य समूह शत्रुता
(B) संदर्भ समूह व्यवहार
(C) द्वितीयक समूह संबद्धता
(D) अंतः समूह एकजुटता

95. 'संन्यास आश्रम' किस चरण का प्रतिनिधित्व करता है?
(A) त्यागी या तपस्वी।
(B) छात्र।
(C) गृहस्थ।
(D) वानप्रस्थी।

96. एक विश्वविद्यालय को किस रूप में सबसे अच्छा वर्गीकृत किया जा सकता है?
(A) एक प्राथमिक समूह
(B) एक द्वितीयक समूह और एक समिति
(C) एक अनौपचारिक समूह
(D) एक समुदाय

97. 'संस्था' और 'समिति' के बीच मूलभूत अंतर क्या है?
(A) संस्था अस्थायी है; समिति स्थायी है।
(B) संस्था प्रतिमानों का एक समूह है; समिति लोगों का एक समूह है।
(C) संस्था छोटी है; समिति बड़ी है।
(D) संस्था में स्वैच्छिक सदस्यता होती है; समिति की सदस्यता आरोपित होती है।

98. एक फैक्ट्री सुपरवाइज़र द्वारा अनुभव किया जाने वाला संघर्ष, जो प्रबंधन की मांगों और श्रमिकों की जरूरतों के बीच फंसा हुआ है, किसका उदाहरण है?
(A) भूमिका तनाव
(B) परिस्थिति क्रम
(C) परिस्थिति समुच्चय
(D) भूमिका त्याग

NODIA

99. हिंदू समाज का ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र में पारंपरिक चार गुना विभाजन किस रूप में जाना जाता है?
(A) आश्रम व्यवस्था
(B) पुरुषार्थ व्यवस्था
(C) वर्ण व्यवस्था
(D) संस्कार व्यवस्था

100. दिए गए कथनों को पढ़ें और सही विकल्प का चयन करें।
कथन I: संस्कृति एक अद्वितीय मानवीय घटना है।
कथन II: संस्कृति आनुवंशिक रूप से विरासत में मिलती है और सीखी नहीं जाती है।
(A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
(B) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।
(C) कथन I सही है, लेकिन कथन II गलत है।
(D) कथन I गलत है, लेकिन कथन II सही है।

101. निम्नलिखित में से कौन सी 'समुदाय' की विशेषता नहीं है?
(A) निश्चित इलाका या क्षेत्र।
(B) सामुदायिक भावना या 'हम-की भावना'।
(C) एक विशिष्ट, जानबूझकर बनाया गया उद्देश्य।
(D) स्वतःस्फूर्त रूप से विकसित सामाजिक जीवन।

102. पवित्र और अलौकिक पर केंद्रित सामाजिक प्रथाओं और विश्वासों की प्रणाली को किस संस्था के रूप में जाना जाता है?
(A) राज्य
(B) धर्म
(C) शिक्षा
(D) परिवार

103. एक युवा पेशेवर जो अपनी मांग वाली नौकरी छोड़कर पूर्णकालिक माता-पिता बन जाती है, वह किससे संबंधित प्रक्रिया से गुजर रही है?
(A) भूमिका संघर्ष
(B) भूमिका समुच्चय विस्तार
(C) बहुविध भूमिकाएं
(D) परिस्थिति क्रम

104. निम्नलिखित में से कौन सा औपचारिक समूह का उदाहरण है?
(A) किसी संगठन में आधिकारिक रूप से गठित समिति।
(B) दोस्तों का एक समूह जो साप्ताहिक रूप से मिलता है।
(C) कॉफी शॉप में बातचीत करते लोग।
(D) छुट्टी के लिए परिवार का जमावड़ा।

105. निम्नलिखित प्रश्न में दो कथन शामिल हैं — कथन (A) और कारण (R)। उपयुक्त विकल्प चुनकर प्रश्न का उत्तर दें।
कथन (A): कॉलेज की एक कक्षा को द्वितीयक समूह माना जा सकता है।
कारण (R): छात्रों के बीच और छात्रों तथा शिक्षक के बीच संबंध आमतौर पर औपचारिक, अवैयक्तिक और पाठ्यक्रम सामग्री सीखने के विशिष्ट लक्ष्य की ओर निर्देशित होते हैं।
(A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सही है लेकिन R गलत है।
(D) A गलत है लेकिन R सही है।

NOIDA

106. पुरुषार्थ के संदर्भ में, 'काम' किसके अनुसरण को संदर्भित करता है?
(A) सौंदर्यात्मक और इंद्रिय सुख
(B) धर्मी कर्तव्य
(C) धन और समृद्धि
(D) आध्यात्मिक मुक्ति

107. 'पुरुषार्थों' को उस क्रम में व्यवस्थित करें जो सांसारिक सरोकारों से अंतिम आध्यात्मिक लक्ष्यों की ओर प्रगति को दर्शाता है।
1. मोक्ष
2. अर्थ
3. काम
4. धर्म
(A) 4, 2, 3, 1
(B) 2, 3, 4, 1
(C) 4, 3, 2, 1
(D) 3, 2, 1, 4

108. सामाजिक स्थितियों का संपूर्ण जाल जो एक व्यक्ति धारण करता है, उसकी क्या कहलाती है?
(A) भूमिका समुच्चय
(B) परिस्थिति समुच्चय
(C) परिस्थिति समूह
(D) सामाजिक वर्ग

109. कौन सा कथन प्रतिमानों और मूल्यों के बीच संबंध का सबसे अच्छा वर्णन करता है?
(A) प्रतिमान अमूर्त आदर्श हैं, जबकि मूल्य विशिष्ट नियम हैं।
(B) प्रतिमान और मूल्य असंबंधित अवधारणाएं हैं।
(C) मूल्य वे सामान्य मानक हैं जिन्हें प्रतिमान दर्शाते हैं।
(D) मूल्यों को कानूनों द्वारा लागू किया जाता है, जबकि प्रतिमानों को नहीं।

110. सूची I को सूची II से सुमेलित करें और नीचे दिए गए कूट से सही उत्तर चुनें।
सूची I: (सामाजिक संस्था)
P. परिवार
Q. अर्थव्यवस्था
R. राज्य
S. शिक्षा
सूची II: (प्राथमिक कार्य)
1. शक्ति का वितरण
2. वस्तुओं का उत्पादन
3. युवाओं का समाजीकरण
4. औपचारिक ज्ञान का हस्तांतरण

कूट:
(A) P-3, Q-2, R-1, S-4
(B) P-2, Q-3, R-4, S-1
(C) P-3, Q-1, R-2, S-4
(D) P-4, Q-2, R-1, S-3

111. 'वानप्रस्थ आश्रम' वह चरण है जहाँ व्यक्ति से क्या अपेक्षा की जाती है?
(A) वैराग्य के जीवन के लिए जंगल में चले जाना।
(B) गुरु के अधीन छात्र बनना।
(C) गृहस्थी और पारिवारिक जिम्मेदारियों का प्रबंधन करना।
(D) दुनिया का पूरी तरह से त्याग करना और मोक्ष प्राप्त करना।

112. संदर्भ समूहों के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:
1. संदर्भ समूह हमेशा वह समूह होता है जिससे व्यक्ति संबंधित होता है।
2. संदर्भ समूह आत्म-मूल्यांकन के लिए तुलना के बिंदु के रूप में कार्य करता है।
3. एक व्यक्ति के नकारात्मक संदर्भ समूह भी हो सकते हैं जिनसे वह खुद को दूर रखना चाहता है।

उपर्युक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?
(A) केवल 1
(B) केवल 2
(C) केवल 2 और 3
(D) 1, 2 और 3

113. 'समाजशास्त्रीय परिप्रेक्ष्य' के लिए व्यक्ति को व्यक्तिगत अनुभवों और किसके बीच की कड़ी को देखने की आवश्यकता होती है?
(A) व्यक्तिगत मनोवैज्ञानिक दोष।
(B) व्यापक सामाजिक ताकतें।
(C) ईश्वरीय इच्छा या भाग्य।
(D) आनुवंशिक विरासत।

114. हिंदू परंपरा में व्यक्ति के जीवन में महत्वपूर्ण संक्रमणों को चिह्नित करने वाले रीति-रिवाजों का शब्द है:
(A) संस्कार
(B) यज्ञ
(C) पुरुषार्थ
(D) ऋण

115. एक पुलिस अधिकारी जिसे अपने किसी करीबी दोस्त को गिरफ्तार करना पड़ता है, उसे किसका अनुभव होने की संभावना है?
(A) भूमिका समुच्चय जटिलता
(B) परिस्थिति क्रम
(C) भूमिका संघर्ष
(D) परिस्थिति असंगति

116. सामाजिक समूहों के संबंध में निम्नलिखित में से कौन सा गलत जोड़ा है?
(A) अंतः समूह - "हम-की भावना"
(B) द्वितीयक समूह - अवैयक्तिक संबंध
(C) प्राथमिक समूह - आमने-सामने की अंतःक्रिया
(D) औपचारिक समूह - स्वतःस्फूर्त अंतःक्रिया

117. पुरुषार्थों के संदर्भ में 'धर्म' का अर्थ है:
(A) भौतिक लाभ की खोज।
(B) आध्यात्मिक मुक्ति की प्राप्ति।
(C) अपने कर्तव्यों और नैतिक दायित्वों की पूर्ति।
(D) इंद्रिय सुखों का आनंद।

118. कार्य और विचार के वे स्थापित प्रतिमान जो सामाजिक जीवन के एक केंद्रीय पहलू, जैसे परिवार या सरकार, को व्यवस्थित करते हैं, क्या कहलाते हैं?
(A) सामाजिक समूह
(B) सामाजिक संस्थाएं
(C) समितियाँ
(D) समुदाय

119. 'प्राथमिक समूह' की एक परिभाषित विशेषता यह है कि इसके सदस्य:
(A) साध्य के लिए साधन मात्र हैं।
(B) अपनी साधनपरक भूमिकाओं के लिए मूल्यवान माने जाते हैं।
(C) औपचारिक और संविदात्मक संबंध रखते हैं।
(D) संपूर्ण व्यक्तियों के रूप में देखे जाते हैं।

120. दिए गए कथनों को पढ़ें और सही विकल्प का चयन करें।
कथन I: भूमिका समुच्चय की अवधारणा उन विभिन्न भूमिकाओं को संदर्भित करती है जो एक व्यक्ति अपनी बहुविध परिस्थितियों के कारण निभाता है।
कथन II: परिस्थिति समुच्चय की अवधारणा एकल परिस्थिति से जुड़ी भूमिकाओं की श्रृंखला को संदर्भित करती है।
(A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
(B) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।
(C) कथन I सही है, लेकिन कथन II गलत है।
(D) कथन I गलत है, लेकिन कथन II सही है।

121. 'पितृ ऋण' वह पारंपरिक ऋण है जो किसके प्रति बकाया है?
(A) देवताओं
(B) ऋषियों
(C) अपने पूर्वजों
(D) समाज के प्रति

122. एक व्यक्ति की अविवाहित होने से लेकर विवाहित होने, फिर माता-पिता बनने और फिर दादा-दादी बनने की प्रगति किसकी अवधारणा को स्पष्ट करती है?
(A) परिस्थिति क्रम
(B) परिस्थिति समुच्चय

Downloaded from www.pdf.tube

(C) भूमिका संघर्ष
(D) भूमिका समुच्चय

123. संस्कृति और समाज के बीच मुख्य अंतर यह है कि:
(A) समाज सीखा जाता है, जबकि संस्कृति जैविक रूप से विरासत में मिलती है।
(B) संस्कृति लोगों को संदर्भित करती है, जबकि समाज विचारों और वस्तुओं को संदर्भित करता है।
(C) कोई अंतर नहीं है; समाजशास्त्र में ये शब्द विनिमेय हैं।
(D) संस्कृति जीवन जीने का तरीका है, जबकि समाज उन लोगों का समूह है जो इसे साझा करते हैं।

124. क्षत्रिय वर्ण का पारंपरिक कार्य क्या था?
(A) पुरोहिती और शिक्षण।
(B) शासन और युद्ध।
(C) वाणिज्य और कृषि।
(D) सेवा और श्रम।

125. निम्नलिखित में से कौन सी एक सामाजिक संस्था नहीं है?
(A) विवाह
(B) अर्थव्यवस्था
(C) सड़क पर प्रदर्शन देख रही भीड़
(D) धर्म

126. निम्नलिखित प्रश्न में दो कथन शामिल हैं — कथन (A) और कारण (R)। उपयुक्त विकल्प चुनकर प्रश्न का उत्तर दें।
कथन (A): अंतः समूह और बाह्य समूह के बीच का अंतर सामाजिक संघर्ष का आधार हो सकता है।
कारण (R): अंतः समूह की वफादारी अक्सर श्रेष्ठता की भावना और बाह्य समूहों के प्रति एक नकारात्मक धारणा उत्पन्न करती है।
(A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सही है लेकिन R गलत है।
(D) A गलत है लेकिन R सही है।

127. एक नवनियुक्त प्रबंधक को अपने पूर्व साथियों का बॉस बनने में तालमेल बिठाना मुश्किल लगता है। यह स्थिति किसमें परिवर्तन से उत्पन्न तनाव का एक उदाहरण है?
(A) परिस्थिति और भूमिका
(B) सामुदायिक मूल्य
(C) संदर्भ समूह
(D) सांस्कृतिक प्रतिमान

128. सूची I को सूची II से सुमेलित करें और नीचे दिए गए कूट से सही उत्तर चुनें।
सूची I: (आश्रम)
P. ब्रह्मचर्य
Q. गृहस्थ
R. वानप्रस्थ
S. संन्यास
सूची II: (प्राथमिक भूमिका)
1. गृहस्थ, पारिवारिक जिम्मेदारियां
2. त्यागी, मुक्ति की खोज
3. छात्र, ज्ञान प्राप्त करना
4. वानप्रस्थी, क्रमिक वैराग्य
कूट:
(A) P-1, Q-3, R-4, S-2
(B) P-3, Q-1, R-4, S-2
(C) P-3, Q-4, R-1, S-2
(D) P-2, Q-1, R-3, S-4

129. शतरंज क्लब जैसी 'समिति' का मुख्य उद्देश्य क्या है?
(A) अपने सदस्यों के लिए जीवन जीने का एक संपूर्ण तरीका प्रदान करना।
(B) शतरंज खेलने के विशिष्ट, साझा हित को पूरा करना।
(C) साझा क्षेत्र के आधार पर अपनेपन की भावना पैदा करना।
(D) औपचारिक संशास्तियों के माध्यम से सामाजिक प्रतिमानों को लागू करना।

NODIA

130. निम्नलिखित समाजशास्त्रीय अवधारणाओं पर विचार करें:
1. परिस्थिति केवल एक आरोपित पद है।
2. एक भूमिका समुच्चय में व्यक्ति की कई परिस्थितियों से जुड़ी सभी भूमिकाएं शामिल होती हैं।
3. भूमिका संघर्ष एक ही परिस्थिति से जुड़ी विरोधाभासी अपेक्षाओं से उत्पन्न होता है।
उपर्युक्त में से कौन सा/से कथन गलत है/हैं?
(A) केवल 1 और 2
(B) केवल 2 और 3
(C) 1, 2 और 3
(D) केवल 3

131. समाज के लिए शक्ति वितरित करने और निर्णय लेने की संस्थागत प्रणाली है:
(A) अर्थव्यवस्था
(B) धर्म
(C) राज्य
(D) शिक्षा

132. साझा क्षेत्र और जीवन जीने के सामान्य तरीके के साथ एक बड़े समूह का हिस्सा होने की भावना को किस रूप में जाना जाता है?
(A) समितिय हित
(B) संस्थागत वफादारी
(C) समूह चेतना
(D) सामुदायिक भावना

133. कौन सा शब्द किसी विशेष परिस्थिति को धारण करने वाले व्यक्ति के अपेक्षित व्यवहार को संदर्भित करता है?
(A) प्रतिमान
(B) मूल्य

(C) भूमिका
(D) परिस्थिति

134. निम्नलिखित में से कौन सा प्रतिमान का उदाहरण है?
(A) ईमानदारी सबसे अच्छी नीति है।
(B) उपहार प्राप्त करने के बाद "धन्यवाद" कहना।
(C) अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता।
(D) खुशी की तलाश।

135. हिंदू दर्शन में 'यज्ञ' की अवधारणा मुख्य रूप से किससे संबंधित है?
(A) जीवन के चरणों से।
(B) सामाजिक पदानुक्रम से।
(C) मानव जीवन के लक्ष्यों से।
(D) बलिदान और अनुष्ठानिक आहुति के प्रदर्शन से।

136. एक बड़े कार्यालय में कर्मचारियों का एक समूह जो करीबी दोस्त हैं और नियमित रूप से एक साथ लंच करते हैं, वे किसका निर्माण करते हैं?
(A) द्वितीयक समूह के भीतर एक प्राथमिक समूह।
(B) द्वितीयक समूह के भीतर एक औपचारिक समूह।
(C) प्राथमिक समूह के भीतर एक द्वितीयक समूह।
(D) बाह्य समूह के भीतर एक संदर्भ समूह।

137. निम्नलिखित में से कौन सा सही जोड़ा है?
(A) भूमिका संघर्ष - एक प्रोफेसर के बहुविध कर्तव्य: शिक्षण, शोध, प्रशासन।
(B) भूमिका तनाव - एक कामकाजी माँ जो नौकरी और परिवार में संतुलन बना रही है।
(C) परिस्थिति समुच्चय - छात्र, कर्मचारी, बेटा, दोस्त।
(D) परिस्थिति क्रम - एक ही समय में डॉक्टर और संगीतकार होना।

138. समाजशास्त्र का मूलभूत उद्देश्य क्या है?
(A) सामाजिक जीवन की अंतर्निहित व्यवस्था को समझना।
(B) विभिन्न संस्कृतियों को श्रेष्ठ या निम्न के रूप में आंकना।
(C) सरकार के आदर्श रूपों को निर्धारित करना।
(D) व्यक्तिगत व्यक्तित्व लक्षणों का विश्लेषण करना।

139. निम्नलिखित में से कौन सी एक 'संस्था' की विशेषता है?
(A) यह मूर्त है और देखी जा सकती है।
(B) यह लोगों का एक संग्रह है।
(C) यह अस्थायी और अल्पकालिक है।
(D) यह प्रतिमानों और नियमों की एक प्रणाली है।

140. दिए गए कथनों को पढ़ें और सही विकल्प का चयन करें।
कथन I: व्यक्ति के 'परिस्थिति समुच्चय' में आरोपित और अर्जित दोनों स्थितियाँ शामिल होती हैं।
कथन II: एक 'आरोपित परिस्थिति' वह है जो व्यक्तिगत प्रयास से अर्जित की जाती है।
(A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
(B) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।
(C) कथन I सही है, लेकिन कथन II गलत है।
(D) कथन I गलत है, लेकिन कथन II सही है।

141. अंतिम 'पुरुषार्थ' जो जन्म और मृत्यु के चक्र से मुक्ति का प्रतीक है, वह है:
(A) धर्म
(B) अर्थ
(C) मोक्ष
(D) काम

142. निम्नलिखित संस्कारों को उनके विशिष्ट जीवन-चक्र क्रम में व्यवस्थित करें।
1. विवाह
2. उपनयन
3. गर्भाधान
4. अन्त्येष्टि
(A) 3, 2, 1, 4
(B) 2, 3, 1, 4
(C) 3, 1, 2, 4
(D) 1, 2, 3, 4

143. अंतः समूह की "हम-की भावना" अक्सर किसके द्वारा तीव्र होती है?
(A) एक साझा दुश्मन या बाह्य समूह की उपस्थिति।
(B) औपचारिक नियमों और प्रक्रियाओं को अपनाना।
(C) समूह के आकार में वृद्धि।
(D) व्यक्तिवादी लक्ष्यों की खोज।

144. कौन सी अवधारणा एक ही परिस्थिति से जुड़ी कई भूमिकाओं को संदर्भित करती है?
(A) परिस्थिति समुच्चय
(B) भूमिका समुच्चय
(C) बहुविध भूमिकाएं
(D) भूमिका संघर्ष

145. निम्नलिखित प्रश्न में दो कथन शामिल हैं — कथन (A) और कारण (R)। उपयुक्त विकल्प चुनकर प्रश्न का उत्तर दें।
कथन (A): प्रतिमान और मूल्य संस्कृति के महत्वपूर्ण घटक हैं।
कारण (R): वे इस बात का एक साझा ढांचा प्रदान करते हैं कि क्या महत्वपूर्ण माना जाता है और लोगों से कैसे व्यवहार करने की अपेक्षा की जाती है, जिससे सामाजिक व्यवस्था सुनिश्चित होती है।
(A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सही है लेकिन R गलत है।
(D) A गलत है लेकिन R सही है।

Click Here to Buy book on Amazon

146. एक फैक्ट्री, एक स्कूल और एक अस्पताल सभी उन संगठनों के उदाहरण हैं जो किस श्रेणी में आते हैं?
(A) द्वितीयक समूह
(B) प्राथमिक समूह
(C) समुदाय
(D) अनौपचारिक समूह

147. व्यक्ति की जाति, लिंग और जन्म का परिवार किसके उदाहरण हैं?
(A) अर्जित स्थितियाँ
(B) भूमिका समुच्चय
(C) आरोपित स्थितियाँ
(D) परिस्थिति क्रम

148. बुनियादी समाजशास्त्रीय अवधारणाओं के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:
1. 'समुदाय' को 'हम-की भावना' और साझा क्षेत्र द्वारा परिभाषित किया जाता है।
2. 'समिति' एक विशिष्ट उद्देश्य के लिए संगठित समूह है।
3. 'संस्था' एक समूह के लोगों को संदर्भित करती है, न कि उनके द्वारा पालन किए जाने वाले नियमों को।

उपर्युक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?
(A) केवल 1
(B) केवल 1 और 2
(C) केवल 2 और 3
(D) 1, 2 और 3

149. वस्तुओं और सेवाओं के उत्पादन, वितरण और उपभोग से संबंधित सामाजिक संस्था है:
(A) राज्य
(B) परिवार
(C) अर्थव्यवस्था
(D) धर्म

150. सूची I को सूची II से सुमेलित करें और नीचे दिए गए कूट से सही उत्तर चुनें।
सूची I: (अवधारणा)
P. प्राथमिक समूह
Q. अंतः समूह
R. द्वितीयक समूह
S. संदर्भ समूह
सूची II: (उदाहरण/विशेषता)
1. अवैयक्तिक, लक्ष्य-उन्मुख
2. आत्म-मूल्यांकन के लिए उपयोग किया जाने वाला समूह
3. घनिष्ठ, दीर्घकालिक संबंध
4. वह समूह जिसके प्रति व्यक्ति वफादारी और अपनेपन की भावना महसूस करता है

कूट:
(A) P-3, Q-4, R-1, S-2
(B) P-1, Q-2, R-3, S-4
(C) P-3, Q-1, R-4, S-2
(D) P-4, Q-3, R-2, S-1

151. पारंपरिक वर्ण व्यवस्था में 'शूद्र' की भूमिका मुख्य रूप से क्या थी?
(A) पुरोहिती
(B) युद्ध
(C) वाणिज्य
(D) अन्य वर्णों की सेवा

152. समाजशास्त्र में, 'परिस्थिति' संदर्भित करती है:
(A) किसी समूह या समाज में सामाजिक रूप से परिभाषित पद को।
(B) व्यक्ति के प्रतिष्ठा या सम्मान के स्तर को।
(C) व्यवहार संबंधी अपेक्षाओं के समूह को।
(D) एक निश्चित और अपरिवर्तनीय सामाजिक पदक्रम को।

153. एक समाजशास्त्री जो उन तरीकों का अध्ययन करता है जिनसे धार्मिक अनुष्ठान एक समुदाय को एक साथ बांधते हैं, वह धर्म की किस रूप में जांच कर रहा है?
(A) व्यक्तिगत विश्वास प्रणाली
(B) ऐतिहासिक ग्रंथों का समूह
(C) सामाजिक संस्था
(D) राजनीतिक नियंत्रण का रूप

154. 'बहुविध भूमिका' शब्द सीधे तौर पर इस तथ्य से संबंधित है कि व्यक्ति:
(A) एक ही समय में एक से अधिक स्थितियाँ धारण करते हैं।
(B) एक ही भूमिका के भीतर संघर्ष का अनुभव करते हैं।
(C) एक पूर्वानुमेय करियर पथ का अनुसरण करते हैं।
(D) केवल एक सामाजिक समूह से संबंधित होते हैं।

155. कौन सा कथन 'समाजशास्त्रीय परिप्रेक्ष्य' का सटीक वर्णन करता है?
(A) यह व्यक्तियों के अद्वितीय व्यक्तित्व पर केंद्रित है।
(B) यह जैविक कारकों के माध्यम से मानव व्यवहार की व्याख्या करता है।
(C) यह मौजूदा सामाजिक व्यवस्था को सही ठहराने का प्रयास करता।
(D) यह लोगों के जीवन पर समाज के प्रभाव का विश्लेषण करता है।

156. सामाजिक संरचना के मूलभूत निर्माण खंड हैं:
(A) प्रतिमान और मूल्य
(B) परिस्थिति और भूमिका
(C) समुदाय और समिति
(D) प्राथमिक और द्वितीयक समूह

157. दिए गए कथनों को पढ़ें और सही विकल्प का चयन करें।
कथन I: एक समुदाय एक निश्चित भौगोलिक स्थिति से

NODIA

चिह्नित होता है।
कथन II: एक समिति व्यापक, अपरिभाषित मानवीय आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए बनाई जाती है।
(A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
(B) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।
(C) कथन I सही है, लेकिन कथन II गलत है।
(D) कथन I गलत है, लेकिन कथन II सही है।

158. एक वकील जिसे एक ऐसे मुवक्किल का बचाव करना है जिसे वह जानती है कि वह दोषी है, वह अपने पेशेवर दायित्वों और अपनी व्यक्तिगत नैतिकता के बीच संघर्ष का सामना कर रही है। यह किसका उदाहरण है?
(A) भूमिका संघर्ष
(B) परिस्थिति असंगति
(C) भूमिका अस्पष्टता
(D) भूमिका तनाव

159. धन और सुख की खोज को पुरुषार्थ ढांचे के भीतर स्वीकार्य माना जाता है जब तक कि वे किसके द्वारा निर्देशित हों?
(A) धर्म
(B) मोक्ष
(C) यज्ञ
(D) ऋण

160. निम्नलिखित में से कौन सी एक सामाजिक समूह की आवश्यक विशेषता नहीं है?
(A) सदस्यों के बीच अंतःक्रिया
(B) एक औपचारिक कानूनी चार्टर
(C) अपनेपन या पहचान की भावना
(D) साझा हित या लक्ष्य

161. एक छात्र-शिक्षक संबंध आमतौर पर किसके भीतर अंतःक्रिया का उदाहरण है?
(A) प्राथमिक समूह
(B) द्वितीयक समूह
(C) समुदाय
(D) परिवार

162. हिंदू परंपरा में 'ऋण' की अवधारणा में निम्नलिखित को छोड़कर सभी शामिल हैं:
(A) राज्य के प्रति ऋण
(B) देवताओं के प्रति ऋण
(C) ऋषियों के प्रति ऋण
(D) पूर्वजों के प्रति ऋण

163. डॉक्टर के रूप में एक व्यक्ति का व्यवसाय, पुरुष के रूप में उनका लिंग, और एशियाई के रूप में उनकी जातीयता, ये सभी उनके किसके भाग हैं?
(A) भूमिका समुच्चय
(B) परिस्थिति क्रम
(C) परिस्थिति समुच्चय
(D) भूमिका निर्वहन

164. हिंदू धर्म में जीवन के चार चरणों की पारंपरिक प्रणाली को क्या कहा जाता है?
(A) वर्ण
(B) पुरुषार्थ
(C) संस्कार
(D) आश्रम

165. विवाह की संस्था एक सार्वभौमिक सामाजिक संस्था है क्योंकि मुख्य रूप से:
(A) यह व्यक्तिगत रोमांटिक प्रेम व्यक्त करने का एक तरीका प्रदान करती है।
(B) यह अंतर्राष्ट्रीय मानवाधिकार कानून द्वारा अनिवार्य है।
(C) यह सामाजिक विकास के लिए एक स्थिर ढांचा प्रदान करती है।
(D) यह सभी परिवारों के लिए वित्तीय समृद्धि की गारंटी देती है।

166. लोगों का एक समूह जो एक साझा परिस्थिति साझा करता है और एक बड़े समाज का हिस्सा है, लेकिन जरूरी नहीं कि वे आपस में अंतःक्रिया करें या एक-दूसरे को जानते हों, वह है:
(A) सामाजिक समूह
(B) सामाजिक श्रेणी
(C) समुदाय
(D) द्वितीयक समूह

167. निम्नलिखित में से कौन सी एक आरोपित परिस्थिति है?
(A) विश्वविद्यालय स्नातक
(B) कॉर्पोरेट सीईओ
(C) ओलंपिक एथलीट
(D) एक राजतंत्र की रानी

168. राज्य संस्था का प्राथमिक कार्य क्या है?
(A) सामाजिक व्यवस्था बनाए रखना और शक्ति का आवंटन करना।
(B) समाज के नए सदस्यों का समाजीकरण करना।
(C) वस्तुओं का उत्पादन और वितरण करना।
(D) अर्थ के अंतिम प्रश्नों के उत्तर प्रदान करना।

169. निम्नलिखित प्रश्न में दो कथन शामिल हैं — कथन (A) और कारण (R)। उपयुक्त विकल्प चुनकर प्रश्न का उत्तर दें।
कथन (A): 'परिस्थिति' और 'भूमिका' की अवधारणाएं एक ही सिक्के के दो पहलू हैं।
कारण (R): 'परिस्थिति' वह पद है जिसे कोई धारण करता है, और 'भूमिका' उस पद के लिए अपेक्षित व्यवहार है; एक-दूसरे के बिना अस्तित्व में नहीं रह सकते।
(A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सही है लेकिन R गलत है।

Downloaded from www.pdf.tube

(D) A गलत है लेकिन R सही है।

170. निम्नलिखित में से कौन 'प्रतिमान' को सबसे अच्छी तरह परिभाषित करता है?
(A) किसी विशेष स्थिति में व्यवहार के लिए एक विशिष्ट नियम।
(B) क्या सही है या गलत, इसके बारे में एक सामान्य विश्वास।
(C) सामाजिक संरचना में एक मान्यता प्राप्त पद।
(D) लोगों के एक समूह के जीवन जीने का तरीका।

171. एक पारिवारिक मिलन समारोह उन रिश्तेदारों को एक साथ लाता है जो पहचान और वफादारी की दृढ़ भावना साझा करते हैं। यह मिलन किसका उदाहरण है?
(A) द्वितीयक समूह
(B) समिति
(C) औपचारिक समूह
(D) प्राथमिक समूह

172. सामाजिक भूमिकाओं के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:
1. भूमिका किसी विशेष परिस्थिति के लिए अपेक्षित व्यवहार है।
2. एक व्यक्ति अपने पूरे जीवन में केवल एक ही भूमिका निभाता है।
3. भूमिकाएं सामाजिक अंतःक्रिया को पूर्वानुमेय बनाने में मदद करती हैं।

उपर्युक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?
(A) केवल 2
(B) केवल 1 और 3
(C) केवल 2 और 3
(D) 1, 2 और 3

173. 'पुरुषार्थ' की अवधारणा किसके लिए एक ढांचा प्रदान करती है?
(A) व्यक्ति के जीवन के चरणों को समझने के लिए।
(B) लोगों को सामाजिक स्तरों में वर्गीकृत करने के लिए।
(C) मानव जीवन के उचित लक्ष्यों और उद्देश्यों को परिभाषित करने के लिए।
(D) किए जाने वाले पवित्र अनुष्ठानों को सूचीबद्ध करने के लिए।

174. उस समूह के लिए क्या शब्द है जो अपने सदस्यों की "हम-भावना" और साझा पहचान द्वारा परिभाषित होता है?
(A) बाह्य समूह
(B) द्वितीयक समूह
(C) पुंज
(D) अंतः समूह

175. सूची I को सूची II से सुमेलित करें और नीचे दिए गए कूट से सही उत्तर चुनें।

सूची I: (पारंपरिक अवधारणा)
P. वर्ण
Q. संस्कार
R. आश्रम
S. पुरुषार्थ

सूची II: (वर्गीकरण)
1. जीवन का चरण
2. जीवन का लक्ष्य
3. सामाजिक स्तर
4. जीवन-चक्र रीति

कूट:
(A) P-3, Q-4, R-1, S-2
(B) P-4, Q-3, R-2, S-1
(C) P-3, Q-1, R-4, S-2
(D) P-2, Q-4, R-1, S-3

176. निम्नलिखित में से कौन सी समाजशास्त्रीय परिप्रेक्ष्य की मुख्य विशेषता नहीं है?
(A) विशिष्ट में सामान्य को देखना।
(B) सामान्य ज्ञान की व्याख्याओं को तथ्य के रूप में स्वीकार करना।
(C) परिचित में अपरिचित को देखना।
(D) जीवनवृत्त और इतिहास के बीच संबंध को समझना।

177. एक राजनीतिक दल, जो चुनाव लड़ने और सरकार बनाने के लिए संगठित होता है, किसका प्रमुख उदाहरण है?
(A) संस्था
(B) समिति
(C) समुदाय
(D) अनौपचारिक समूह

178. एक व्यक्ति द्वारा धारित दो या दो से अधिक परिस्थितियों के अनुरूप भूमिकाओं के बीच असंगतता को क्या कहा जाता है?
(A) भूमिका संघर्ष
(B) भूमिका तनाव
(C) परिस्थिति असंगति
(D) परिस्थिति संबंधी चिंता

179. संस्कृति का एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी में हस्तांतरण किन दो संस्थाओं का प्राथमिक कार्य है?
(A) अर्थव्यवस्था और राज्य
(B) धर्म और अर्थव्यवस्था
(C) परिवार और शिक्षा
(D) राज्य और परिवार

180. दिए गए कथनों को पढ़ें और सही विकल्प का चयन करें।
कथन I: प्राथमिक समूह स्वभाव से साधनपरक होते हैं।
कथन II: द्वितीयक समूह स्वभाव से भावात्मक होते हैं।
(A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
(B) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।
(C) कथन I सही है, लेकिन कथन II गलत है।

NODIA

(D) कथन I गलत है, लेकिन कथन II सही है।

181. ब्राह्मण वर्ण की पारंपरिक भूमिका किस पर केंद्रित थी?
(A) व्यापार और कृषि।
(B) प्रशासन और रक्षा।
(C) धार्मिक अनुष्ठान और विद्वत्तापूर्ण कार्य।
(D) शारीरिक श्रम और सेवा।

182. गाँव से आए प्रवासियों का एक समूह जो एक साथ बसते हैं और नए पड़ोस में साझा पहचान बनाए रखते हैं, क्या बना रहे हैं?
(A) द्वितीयक समूह
(B) समुदाय
(C) समिति
(D) संदर्भ समूह

183. निम्नलिखित में से कौन सी एक अर्जित परिस्थिति है?
(A) बेटी
(B) किशोर
(C) महिला
(D) चिकित्सक

184. 'विवाह' संस्कार एक ऐसा रीति-रिवाज है जो मुख्य रूप से किस चरण में संक्रमण को चिह्नित करता है?
(A) गृहस्थ आश्रम
(B) ब्रह्मचर्य आश्रम
(C) वानप्रस्थ आश्रम
(D) संन्यास आश्रम

185. हस्तियों की जीवनशैली की प्रशंसा करने वाला और उनकी नकल करने की कोशिश करने वाला व्यक्ति उन हस्तियों का उपयोग किस रूप में कर रहा है?
(A) प्राथमिक समूह
(B) अंतः समूह
(C) संदर्भ समूह
(D) द्वितीयक समूह

186. 'सामाजिक संरचना' की अवधारणा को सबसे अच्छी तरह किस रूप में वर्णित किया जा सकता है?
(A) समाज में मौजूद आवर्ती और प्रतिमानित संबंध।
(B) मानव व्यवहार की यादृच्छिक और अप्रत्याशित प्रकृति।
(C) समाज के सभी व्यक्तियों का कुल योग।
(D) किसी देश के आधिकारिक कानून और नियम।

187. "सामाजिक संबंधों का एक स्थापित और स्थायी प्रतिमान" सामाजिक संस्था की परिभाषा है:
(A) समूह
(B) समिति
(C) समुदाय
(D) संस्था

188. निम्नलिखित में से कौन सा मूल्य का उदाहरण है?
(A) सड़क के बाईं ओर गाड़ी चलाना।
(B) व्यक्तिगत स्वतंत्रता में विश्वास।
(C) स्कूल में यूनिफॉर्म पहनना।
(D) अच्छी सेवा के लिए वेटर को बख्शीश देना।

189. 'अंतः समूह' और 'बाह्य समूह' के बीच का अंतर मुख्य रूप से किस पर आधारित है?
(A) समूह का आकार।
(B) समूह की संरचना की औपचारिकता।
(C) सदस्य के अपनेपन या गैर-अपनेपन की भावना।
(D) सदस्यों की भौगोलिक निकटता।

190. प्राचीन ग्रंथों में निर्धारित आश्रमों को सही क्रम में व्यवस्थित करें।
1. वानप्रस्थ
2. संन्यास
3. गृहस्थ
4. ब्रह्मचर्य
(A) 4, 3, 1, 2
(B) 4, 1, 3, 2
(C) 3, 4, 1, 2
(D) 1, 2, 3, 4

191. वह शब्द जो किसी व्यक्ति द्वारा एक विशेष समय में धारण की जाने वाली सभी स्थितियों को समाहित करता है, वह है:
(A) परिस्थिति समुच्चय
(B) परिस्थिति
(C) मुख्य परिस्थिति
(D) परिस्थिति प्रतीक

192. प्रतिमानों के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:
1. वे कार्य के लिए विशिष्ट मार्गदर्शक हैं।
2. वे मूल्यों की तुलना में कम विशिष्ट होते हैं।
3. वे औपचारिक या अनौपचारिक हो सकते हैं।
उपर्युक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?
(A) केवल 1
(B) केवल 1 और 3
(C) केवल 2 और 3
(D) 1, 2 और 3

193. एक शिक्षक द्वारा छात्रों के एक ही समूह के लिए एक दयालु मार्गदर्शक और एक सख्त मूल्यांकनकर्ता होने के बीच महसूस किया जाने वाला तनाव किसका उदाहरण है?
(A) भूमिका संघर्ष
(B) भूमिका तनाव
(C) भूमिका त्याग
(D) परिस्थिति संघर्ष

194. कौन सी सामाजिक संस्था पवित्र से संबंधित विश्वासों और प्रथाओं पर अपने ध्यान द्वारा परिभाषित होती है?

Click Here to Buy book on Amazon

(A) धर्म
(B) शिक्षा
(C) राज्य
(D) अर्थव्यवस्था

195. निम्नलिखित प्रश्न में दो कथन शामिल हैं — कथन (A) और कारण (R)। उपयुक्त विकल्प चुनकर प्रश्न का उत्तर दें।
कथन (A): एक समिति कुछ सीमित हितों को प्राप्त करने का एक साधन है।
कारण (R): लोग साझा क्षेत्र और अपनेपन की स्वाभाविक भावना के आधार पर खेल क्लब या राजनीतिक दल जैसी समितियाँ बनाते हैं, न कि विशिष्ट लक्ष्यों के आधार पर।
(A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सही है लेकिन R गलत है।
(D) A गलत है लेकिन R सही है।

196. हिंदू धर्म में जीवन के चार पारंपरिक लक्ष्यों — धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष — को सामूहिक रूप से क्या कहा जाता है?
(A) वर्ण
(B) आश्रम
(C) ऋण
(D) पुरुषार्थ

197. निम्नलिखित को छोड़कर सभी सामाजिक संस्थाओं के उदाहरण हैं:
(A) परिवार
(B) अर्थव्यवस्था
(C) एक स्थानीय पुस्तक क्लब
(D) शिक्षा प्रणाली

198. औपचारिक समूह की प्रमुख विशेषता क्या है?
(A) संबंधों की प्रगाढ़ता।
(B) एक परिभाषित संरचना और नियमों की उपस्थिति।
(C) इसके गठन की स्वतःस्फूर्ति।
(D) सदस्यों की कम संख्या।

199. इंटर्न से लेकर सीईओ तक के व्यक्ति के करियर पथ को समाजशास्त्रीय रूप से किस रूप में वर्णित किया जा सकता है?
(A) परिस्थिति समुच्चय
(B) भूमिका समुच्चय
(C) भूमिका संघर्ष
(D) परिस्थिति क्रम

200. सूची I को सूची II से सुमेलित करें और नीचे दिए गए कूट से सही उत्तर चुनें।
सूची I: (पद)
P. परिस्थिति
Q. भूमिका
R. प्रतिमान
S. मूल्य
सूची II: (परिभाषा)
1. क्या वांछनीय है, इसका एक मानक
2. आचरण का एक नियम
3. एक सामाजिक पद
4. किसी पद से अपेक्षित व्यवहार
कूट:
(A) P-3, Q-4, R-2, S-1
(B) P-4, Q-3, R-1, S-2
(C) P-3, Q-1, R-2, S-4
(D) P-1, Q-2, R-3, S-4

201. 'समाजशास्त्र की प्रकृति' को सबसे अच्छी तरह किस रूप में वर्णित किया गया है?
(A) निर्देशात्मक
(B) दार्शनिक
(C) आनुभविक और विश्लेषणात्मक
(D) काल्पनिक

202. निम्नलिखित में से कौन सा प्राथमिक समूह का सबसे अच्छा उदाहरण है?
(A) बचपन के करीबी दोस्तों का एक समूह।
(B) मूवी थियेटर में दर्शक।
(C) राष्ट्रीय राजनीतिक दल के सदस्य।
(D) 300 छात्रों की विश्वविद्यालय कक्षा।

203. 'संस्कृति' की अवधारणा में शामिल है:
(A) समाज की केवल कलात्मक उपलब्धियां।
(B) केवल वे भौतिक वस्तुएं जिन्हें लोग बनाते हैं।
(C) जनसंख्या के केवल जैविक लक्षण।
(D) भौतिक वस्तुएं और अभौतिक विश्वास तथा मूल्य दोनों।

204. निम्नलिखित में से कौन सा जोड़ा सही सुमेलित है?
(A) समुदाय - एक पेशेवर चिकित्सा संघ।
(B) प्रतिमान - लाइन में खड़े होने की प्रथा।
(C) संस्था - पहचान की दृढ़ भावना वाला एक गाँव।
(D) समिति - परिवार।

205. दिए गए कथनों को पढ़ें और सही विकल्प का चयन करें।
कथन I: भूमिका संघर्ष दो या दो से अधिक परिस्थितियों की प्रतिस्पर्धी मांगों से उत्पन्न होता है।
कथन II: भूमिका तनाव एक ही परिस्थिति के भूमिका समुच्चय के भीतर तनाव से उत्पन्न होता है।
(A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
(B) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।
(C) कथन I सही है, लेकिन कथन II गलत है।
(D) कथन I गलत है, लेकिन कथन II सही है।

206. हिंदू धर्म में जीवन-चक्र के संस्कार, जैसे जन्म, विवाह और मृत्यु के लिए, किस नाम से जाने जाते हैं?

Downloaded from www.pdf.tube

(A) पुरुषार्थ
(B) आश्रम
(C) यज्ञ
(D) संस्कार

207. 'संदर्भ समूह' समाजशास्त्र में महत्वपूर्ण है क्योंकि यह:
(A) व्यक्ति की आकांक्षाओं और आत्म-अवधारणा को आकार देता है।
(B) हमेशा वह समूह होता है जिससे व्यक्ति संबंधित होता है।
(C) अवैयक्तिक संबंधों द्वारा विशेषता है।
(D) इसका एक औपचारिक, लिखित संविधान होता है।

208. सामाजिक संस्था के रूप में अर्थव्यवस्था का मुख्य कार्य क्या है?
(A) शक्ति और अधिकार वितरित करना।
(B) संसाधनों के उत्पादन और वितरण का प्रबंधन करना।
(C) समाज के लिए एक नैतिक दिशा-निर्देश प्रदान करना।
(D) नए सदस्यों के प्रजनन और समाजीकरण को सुनिश्चित करना।

209. निम्नलिखित प्रश्न में दो कथन शामिल हैं — कथन (A) और कारण (R)। उपयुक्त विकल्प चुनकर प्रश्न का उत्तर दें।
कथन (A): परिवार और शिक्षा जैसी सामाजिक संस्थाएं कुछ समाजों में पाई जाती हैं, लेकिन सभी में नहीं।
कारण (R): सभी समाजों को कुछ मूलभूत समस्याओं को हल करना चाहिए, जैसे युवाओं का समाजीकरण और वस्तुओं का उत्पादन, जो संस्थाओं के सार्वभौमिक विकास की ओर ले जाता है।
(A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सही है लेकिन R गलत है।
(D) A गलत है लेकिन R सही है।

210. 'ऋण' की अवधारणा जो ऋषियों और विद्वानों के प्रति ऋण को संदर्भित करती है, वह है:
(A) ऋषि ऋण
(B) देव ऋण
(C) पितृ ऋण
(D) मनुष्य ऋण

211. निम्नलिखित में से कौन सी द्वितीयक समूह की विशेषता नहीं है?
(A) लक्ष्य-उन्मुख
(B) अवैयक्तिक
(C) भावनात्मक रूप से घनिष्ठ
(D) अक्सर बड़े आकार का

212. एकल परिस्थिति, जैसे 'माँ' की स्थिति से जुड़ी भूमिकाओं के संग्रह को क्या कहा जाता है?
(A) परिस्थिति समुच्चय
(B) भूमिका संघर्ष
(C) परिस्थिति क्रम
(D) भूमिका समुच्चय

213. उन व्यक्तियों का समूह जो अस्थायी रूप से एक ही भौतिक स्थान साझा करते हैं लेकिन आपस में अंतःक्रिया नहीं करते हैं, क्या कहलाते हैं?
(A) सामाजिक समूह
(B) द्वितीयक समूह
(C) पुंज
(D) समुदाय

214. निम्नलिखित में से कौन 'परिस्थिति क्रम' की अवधारणा का सबसे अच्छा प्रतिनिधित्व करता है?
(A) छात्र, अंशकालिक कार्यकर्ता और एथलीट की स्थितियों को एक साथ धारण करना।
(B) दस वर्षों में कर्मचारी से प्रबंधक की स्थिति में जाना।
(C) माता-पिता और एक मांग वाले पेशेवर होने के बीच संघर्ष।
(D) डॉक्टर होने की स्थिति से जुड़ी सभी भूमिकाएं।

215. सामाजिक संस्थाओं के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:
1. वे बुनियादी सामाजिक आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए स्थापित की गई हैं।
2. इनमें प्रतिमानों, स्थितियों और भूमिकाओं की एक प्रणाली होती है।
3. इन्हें आसानी से और जल्दी से बदला जा सकता है।

उपर्युक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?
(A) केवल 3
(B) केवल 1 और 2
(C) केवल 2 और 3
(D) 1, 2 और 3

216. सुरक्षा में सुधार के लिए निवासियों द्वारा आयोजित एक स्थानीय व्यवस्था किसका उदाहरण है?
(A) समिति
(B) संस्था
(C) समुदाय
(D) अंतः समूह

217. 'समाजशास्त्र की प्रकृति' इस बात पर जोर देती है कि यह एक सामान्यीकरण करने वाला विज्ञान है, जिसका अर्थ है कि यह:
(A) अद्वितीय, व्यक्तिगत घटनाओं पर ध्यान केंद्रित करता है।
(B) व्यापक, असमर्थित दावे करता है।
(C) सामाजिक जीवन के प्रतिमानों और सिद्धांतों को स्थापित करने का प्रयास करता है।
(D) आनुभविक साक्ष्यों से सरोकार नहीं रखता है।

218. प्रतिद्वंद्वी टीम के प्रति व्यक्ति जो अलगाव और विरोध महसूस करता है, वह किसके प्रति उसके दृष्टिकोण की विशेषता है?

NODIA

(A) बाह्य समूह
(B) अंतः समूह
(C) संदर्भ समूह
(D) प्राथमिक समूह

219. 'वैश्य' वर्ण का पारंपरिक कार्य मुख्य रूप से किससे संबंधित था?
(A) आध्यात्मिक मार्गदर्शन और शिक्षण।
(B) शासन और सैन्य सुरक्षा।
(C) सेवा और श्रम करना।
(D) वाणिज्य, व्यापार और कृषि।

220. निम्नलिखित में से कौन 'भूमिका संघर्ष' का सबसे अच्छा उदाहरण है?
(A) एक छात्र जो एक कक्षा के लिए सभी होमवर्क पूरा करने के लिए संघर्ष कर रहा है।
(B) एक पुलिस अधिकारी जो अपने ही माता-पिता का चालान काट रहा है।
(C) एक प्रबंधक जो अपनी टीम का व्यक्तिगत मित्र बनने की कोशिश कर रहा है।
(D) एक व्यक्ति जो इंटर्न से कर्मचारी की स्थिति में जा रहा है।

221. आश्रम व्यवस्था में जीवन का वह चरण जो गृहस्थी, करियर और पारिवारिक कर्तव्यों पर केंद्रित है, वह है:
(A) ब्रह्मचर्य
(B) वानप्रस्थ
(C) गृहस्थ
(D) संन्यास

222. समाजशास्त्र में 'संस्कृति' शब्द संदर्भित करता है:
(A) किसी व्यक्ति के परिष्कार के स्तर को।
(B) जनसंख्या की जैविक विशेषताओं को।
(C) किसी राष्ट्र की राजनीतिक संरचना को।
(D) समाज के जीवन जीने के संपूर्ण, सीखे हुए तरीके को।

223. दिए गए कथनों को पढ़ें और सही विकल्प का चयन करें।
कथन I: औपचारिक समूह एक विशिष्ट योजना और उद्देश्य के साथ बनाए जाते हैं।
कथन II: अनौपचारिक समूह व्यक्तिगत अंतःक्रिया से स्वतःस्फूर्त रूप से उभरते हैं।
(A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
(B) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।
(C) कथन I सही है, लेकिन कथन II गलत है।
(D) कथन I गलत है, लेकिन कथन II सही है।

224. निम्नलिखित में से कौन 'मूल्य' का उदाहरण है?
(A) बस के लिए कतार में लगना।
(B) 'समानता' का सिद्धांत।
(C) अभिवादन के रूप में हाथ मिलाना।
(D) तेज गति से गाड़ी चलाने के खिलाफ कानून।

225. परिवार, अर्थव्यवस्था, राज्य और धर्म को 'सामाजिक संस्था' माना जाता है क्योंकि वे:
(A) औपचारिक संगठनों के प्रकार हैं।
(B) मूलभूत सामाजिक समस्याओं के स्थायी समाधान का प्रतिनिधित्व करते हैं।
(C) उन लोगों के समूह हैं जो दैनिक अंतःक्रिया करते हैं।
(D) विशिष्ट भवनों में स्थित हैं।

226. 'परिस्थिति' का संबंध 'पद' से वैसा ही है जैसा 'भूमिका' का संबंध किससे है?
(A) व्यवहार
(B) प्रतिष्ठा
(C) संघर्ष
(D) समूह

227. मित्रों का समूह एक प्राथमिक समूह है, जबकि एक पेशेवर समाज एक द्वितीयक समूह है।
(A) औपचारिक; अनौपचारिक
(B) प्राथमिक; द्वितीयक
(C) प्राथमिक; द्वितीयक
(D) संदर्भ; अंतः समूह

228. 'समाजशास्त्रीय परिप्रेक्ष्य' में शामिल है:
(A) सामाजिक घटनाओं के लिए सतही व्याख्याओं को स्वीकार करना।
(B) विशेष रूप से व्यक्तिगत मनोविज्ञान पर ध्यान केंद्रित करना।
(C) सामाजिक समस्याओं के लिए नैतिक समाधान निर्धारित करना।
(D) व्यक्तिगत परेशानियों को सार्वजनिक मुद्दों के रूप में देखना।

229. सूची I को सूची II से सुमेलित करें और नीचे दिए गए कूट से सही उत्तर चुनें।
सूची I: (सामाजिक समूह)
P. औपचारिक समूह
Q. अनौपचारिक समूह
R. अंतः समूह
S. बाह्य समूह
सूची II: (उदाहरण/विशेषता)
1. "वे" की भावना, विरोध की भावना
2. "हम" की भावना, वफादारी की भावना
3. काम पर करीबी दोस्तों का एक समूह
4. एक सरकारी नौकरशाही
कूट:
(A) P-1, Q-2, R-3, S-4
(B) P-4, Q-3, R-2, S-1
(C) P-4, Q-2, R-3, S-1
(D) P-3, Q-4, R-1, S-2

Click Here to Buy book on Amazon

230. पुरुषार्थ के रूप में 'मोक्ष' किसके अंतिम लक्ष्य का प्रतिनिधित्व करता है?
(A) भौतिक सफलता
(B) आध्यात्मिक मुक्ति
(C) सामाजिक कर्तव्य
(D) इंद्रिय सुख

231. वह शब्द जो एक परिस्थिति से जुड़ी एकल भूमिका के भीतर अपेक्षाओं की असंगतता का वर्णन करता है, वह है:
(A) भूमिका संघर्ष
(B) परिस्थिति संघर्ष
(C) परिस्थिति क्रम
(D) भूमिका तनाव

232. निम्नलिखित को छोड़कर सभी 'संस्कार' के उदाहरण हैं:
(A) धर्म
(B) विवाह
(C) उपनयन
(D) अन्त्येष्टि

233. 'आश्रम' व्यवस्था किसके लिए एक मॉडल प्रदान करती है?
(A) समाज के सामाजिक पदानुक्रम के लिए।
(B) समाज के आर्थिक संगठन के लिए।
(C) व्यक्ति के जीवन के विभिन्न चरणों में उचित आचरण के लिए।
(D) देवताओं को प्रसन्न करने के लिए आवश्यक अनुष्ठानों के लिए।

234. समाजशास्त्रीय रूप से 'समुदाय' को किसकी उपस्थिति द्वारा परिभाषित किया गया है?
(A) एक साझा भौगोलिक क्षेत्र और साझा पहचान की भावना।
(B) एक औपचारिक चार्टर और स्वैच्छिक सदस्यता।
(C) अवैयक्तिक संबंध और विशिष्ट लक्ष्य।
(D) अधिकार की एक पदानुक्रमित संरचना।

235. 'राज्य' की संस्था मुख्य रूप से किससे संबंधित है?
(A) वस्तुओं और सेवाओं का उत्पादन।
(B) बच्चों का समाजीकरण।
(C) अलौकिक की पूजा।
(D) शक्ति का वितरण और प्रयोग।

236. निम्नलिखित प्रश्न में दो कथन शामिल हैं — कथन (A) और कारण (R)। उपयुक्त विकल्प चुनकर प्रश्न का उत्तर दें।
कथन (A): एक छात्र अपने परिवार को प्राथमिक समूह के रूप में और सफल पेशेवरों के समूह को संदर्भ समूह के रूप में उपयोग कर सकता है।
कारण (R): प्राथमिक समूह घनिष्ठ संबंधों वाला अपनेपन का समूह है, जबकि संदर्भ समूह मूल्यांकन का एक मानक है, जिससे कोई संबंधित हो भी सकता है और नहीं भी।
(A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सही है लेकिन R गलत है।
(D) A गलत है लेकिन R सही है।

237. समाज के सदस्यों द्वारा साझा किया गया जीवन का संपूर्ण तरीका, जिसमें भाषा, प्रतिमान और भौतिक वस्तुएं शामिल हैं, क्या कहलाता है?
(A) एक संस्था
(B) एक समुदाय
(C) एक संस्कृति
(D) एक समिति

238. एक 'न्यायाधीश' के रूप में व्यक्ति की स्थिति एक अर्जित परिस्थिति है, जबकि 'पुत्र' के रूप में उनकी स्थिति एक आरोपित परिस्थिति है।
(A) आरोपित; अर्जित
(B) प्राथमिक; द्वितीयक
(C) औपचारिक; अनौपचारिक
(D) अर्जित; आरोपित

239. निम्नलिखित में से कौन सा अनौपचारिक समूह का उदाहरण है?
(A) पड़ोसियों का एक समूह जो हर रविवार को क्रिकेट खेलता है
(B) भारत का सर्वोच्च न्यायालय
(C) टाटा मोटर्स लिमिटेड
(D) भारतीय सेना

240. 'वर्ण' व्यवस्था किसका एक शास्त्रीय मॉडल है?
(A) आयु-आधारित भूमिकाएं
(B) सामाजिक स्तरीकरण
(C) जीवन के चरण
(D) आर्थिक विनिमय

241. दिए गए कथनों को पढ़ें और सही विकल्प का चयन करें।
कथन I: व्यक्ति का परिस्थिति समुच्चय जीवन भर स्थिर रहता है।
कथन II: व्यक्ति का भूमिका समुच्चय परस्पर विरोधी मांगें पैदा कर सकता है, जिससे भूमिका तनाव उत्पन्न होता है।
(A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
(B) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।
(C) कथन I सही है, लेकिन कथन II गलत है।
(D) कथन I गलत है, लेकिन कथन II सही है।

242. "समाजशास्त्र की परिभाषा" इसके किस रूप के चरित्र पर जोर देती है?
(A) समाज का व्यवस्थित अध्ययन
(B) प्राकृतिक विज्ञान
(C) दर्शनशास्त्र की एक शाखा
(D) सामान्य ज्ञान के विचारों का संग्रह

NODIA

243. 'समुदाय' और 'समिति' के बीच मुख्य अंतर यह है कि समुदाय अपनेपन की भावना पर आधारित है, जबकि समिति एक विशिष्ट लक्ष्य पर आधारित है।
(A) क्षेत्र; हित
(B) हित; क्षेत्र
(C) अपनेपन; लक्ष्य
(D) नियमों; इलाके

244. सामाजिक समूहों के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:
1. सभी सामाजिक समूह स्वभाव से औपचारिक होते हैं।
2. एक द्वितीयक समूह के भीतर कई प्राथमिक समूह हो सकते हैं।
3. संदर्भ समूह हमेशा वे समूह होते हैं जिनसे व्यक्ति संबंधित नहीं होता है।

उपर्युक्त में से कौन सा/से कथन गलत है/हैं?
(A) केवल 1 और 3
(B) केवल 2
(C) केवल 1 और 2
(D) 1, 2 और 3

245. 'यज्ञ' एक विशिष्ट प्रकार का धार्मिक अनुष्ठान या बलिदान है:
(A) जीवन का चरण
(B) नैतिक ऋण
(C) अनुष्ठान या बलिदान
(D) जीवन का लक्ष्य

246. इस श्रृंखला द्वारा कौन सी अवधारणा स्पष्ट की गई है: हाई स्कूल छात्र -> कॉलेज छात्र -> मेडिकल छात्र -> डॉक्टर?
(A) परिस्थिति समुच्चय
(B) परिस्थिति क्रम
(C) भूमिका समुच्चय
(D) भूमिका संघर्ष

247. 'शिक्षा' की सामाजिक संस्था मुख्य रूप से किस कार्य के लिए है?
(A) शक्ति के उपयोग को वैध बनाना।
(B) उत्पादन और उपभोग को व्यवस्थित करना।
(C) प्रजनन और नातेदारी को विनियमित करना।
(D) ज्ञान, कौशल और मूल्यों का हस्तांतरण करना।

248. अपने देश के प्रति देशभक्ति की भावना किसका उदाहरण है?
(A) अंतः समूह एकजुटता
(B) बाह्य समूह विरोध
(C) द्वितीयक समूह अंतःक्रिया
(D) संदर्भ समूह तुलना

249. निम्नलिखित में से कौन पारंपरिक चार 'वर्णों' में से एक नहीं है?
(A) ब्राह्मण
(B) क्षत्रिय
(C) गृहस्थ
(D) शूद्र

250. 'मूल्यों' का संबंध 'आदर्शों' से वैसा ही है जैसा 'प्रतिमानों' का संबंध किससे है?
(A) नियम
(B) भावनाएं
(C) स्थितियाँ
(D) समूह

251. एक राजनीतिक दल को 'समिति' के रूप में सबसे अच्छी तरह वर्णित किया जाता है क्योंकि यह:
(A) साझा क्षेत्र पर आधारित है।
(B) इसमें घनिष्ठ, आमने-सामने के संबंध शामिल हैं।
(C) बिना किसी औपचारिक संरचना के स्वतःस्फूर्त रूप से उभरता है।
(D) विशिष्ट लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए संगठित है।

252. परिवार की संस्था को समाजीकरण का प्राथमिक अभिकर्ता माना जाता है क्योंकि:
(A) यह आधुनिक अर्थव्यवस्था का मुख्य चालक है।
(B) यह वह जगह है जहाँ व्यक्ति सबसे पहले प्रतिमान सीखता है।
(C) यह एक औपचारिक और संरचित शिक्षा प्रदान करता है।
(D) यह राष्ट्रीय रक्षा इकाइयों के लिए जिम्मेदार है।

253. 'सामाजिक संरचना' की अवधारणा संदर्भित करती है:
(A) समाज के भौतिक भवनों और बुनियादी ढांचे को।
(B) एक समूह में व्यक्तिगत व्यक्तित्वों के योग को।
(C) स्थितियों और भूमिकाओं के उस ढांचे को जो सामाजिक अंतःक्रिया को आकार देता है।
(D) सामाजिक जीवन के स्वतःस्फूर्त और असंरचित पहलुओं को।

254. सूची I को सूची II से सुमेलित करें और नीचे दिए गए कूट से सही उत्तर चुनें।
सूची I: (सामाजिक इकाई)
P. समुदाय
Q. समिति
R. प्राथमिक समूह
S. द्वितीयक समूह
सूची II: (परिभाषिक विशेषता)
1. अवैयक्तिक, साध्य के लिए साधन
2. घनिष्ठ, स्वयं में साध्य
3. हम-की भावना और इलाका
4. किसी उद्देश्य के लिए औपचारिक रूप से संगठित
कूट:
(A) P-1, Q-2, R-3, S-4
(B) P-3, Q-4, R-1, S-2
(C) P-3, Q-4, R-2, S-1
(D) P-4, Q-3, R-2, S-1

Downloaded from www.pdf.tube

255. एक नया कर्मचारी जो वरिष्ठ प्रबंधकों के व्यवहार को देखता है और उनका अनुकरण करता है, वह उनका उपयोग किस रूप में कर रहा है?
(A) संदर्भ समूह
(B) अंतः समूह
(C) बाह्य समूह
(D) प्राथमिक समूह

256. एक व्यक्ति द्वारा चुकाए जाने वाले पारंपरिक हिंदू ऋण देवताओं, पूर्वजों और किसके प्रति हैं?
(A) राजाओं
(B) ऋषियों
(C) प्रकृति
(D) स्वयं

257. कौन सा कथन 'परिस्थिति' और 'भूमिका' के बीच सबसे सटीक अंतर करता है?
(A) परिस्थिति अर्जित होती है, जबकि भूमिका आरोपित होती है।
(B) परिस्थिति एक पद है, जबकि भूमिका उस पद में अपेक्षित आचरण है।
(C) भूमिका पद है, जबकि परिस्थिति आचरण है।
(D) परिस्थिति व्यक्तियों को संदर्भित करती है, जबकि भूमिका समूहों को।

258. 'समाजशास्त्रीय परिप्रेक्ष्य' यह समझने में मदद करता है कि व्यक्ति के जीवन के विकल्प:
(A) उनके सामाजिक संदर्भ द्वारा बाधित और आकार लिए हुए होते हैं।
(B) पूरी तरह से स्वतंत्र इच्छा का मामला है।
(C) पूरी तरह से उनके जीवविज्ञान द्वारा निर्धारित होते हैं।
(D) पूरी तरह से यादृच्छिक और अप्रत्याशित होते हैं।

259. एक छात्र जो अंशकालिक नौकरी भी करता है और एक स्वयंसेवक दमकलकर्मी भी है, वह अपने समय और ऊर्जा पर प्रतिस्पर्धी मांगों के कारण भूमिका संघर्ष का अनुभव कर सकता है।
(A) भूमिका तनाव
(B) परिस्थिति संगति
(C) भूमिका संघर्ष
(D) भूमिका त्याग

260. निम्नलिखित में से कौन सी एक सामाजिक संस्था नहीं है?
(A) परिवार
(B) राज्य
(C) धर्म
(D) मित्रता

261. साझा विश्वास, मूल्य, प्रतिमान और भौतिक वस्तुएं जो लोगों के जीवन जीने का तरीका बनाती हैं, उनकी क्या कहलाती हैं?
(A) सामाजिक संरचना
(B) सामाजिक व्यवस्था
(C) संस्कृति
(D) समाज

262. निम्नलिखित प्रश्न में दो कथन शामिल हैं — कथन (A) और कारण (R)। उपयुक्त विकल्प चुनकर प्रश्न का उत्तर दें।
कथन (A): परिवार एक सार्वभौमिक सामाजिक संस्था है।
कारण (R): प्रत्येक समाज को प्रजनन को विनियमित करने, बच्चों का समाजीकरण करने और भावनात्मक समर्थन प्रदान करने के लिए एक प्रणाली की आवश्यकता होती है।
(A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सही है लेकिन R गलत है।
(D) A गलत है लेकिन R सही है।

NODIA

263. 'अंतः समूह' की प्राथमिक विशेषता क्या है?
(A) एक औपचारिक सदस्यता सूची।
(B) एक विशिष्ट लक्ष्य या उद्देश्य।
(C) सदस्यों की बड़ी संख्या।
(D) पहचान और वफादारी की भावना।

264. 'अन्त्येष्टि' संस्कार किससे जुड़ा रीति-रिवाज है?
(A) मृत्यु
(B) जन्म
(C) विवाह
(D) शिक्षा

265. साझा पहचान, एकता की भावना और एक निश्चित क्षेत्र वाले लोगों का समूह एक समुदाय है:
(A) समिति
(B) संस्था
(C) समुदाय
(D) द्वितीयक समूह

266. विश्वविद्यालय संकाय की बैठक किसका एक उदाहरण है?
(A) औपचारिक समूह
(B) प्राथमिक समूह
(C) अनौपचारिक समूह
(D) समुदाय

267. दिए गए कथनों को पढ़ें और सही विकल्प का चयन करें।
कथन I: आश्रम व्यवस्था चार पदानुक्रमित सामाजिक वर्गों को रेखांकित करती है।
कथन II: वर्ण व्यवस्था जीवन के चार चरणों को रेखांकित करती है।
(A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
(B) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।
(C) कथन I सही है, लेकिन कथन II गलत है।
(D) कथन I गलत है, लेकिन कथन II सही है।

268. निम्नलिखित में से कौन 'भूमिका तनाव' का सबसे अच्छा उदाहरण है?
(A) एक महिला मुख्य कार्यकारी अधिकारी और माँ के रूप में अपनी भूमिकाओं को संतुलित करने के लिए संघर्ष करती है।
(B) एक प्रोफेसर पढ़ाने और शोध प्रकाशित करने के अपने कर्तव्यों के बीच फंसा हुआ महसूस करता है।
(C) एक हालिया स्नातक प्रबंधक के रूप में एक नई नौकरी शुरू करता है।
(D) एक व्यक्ति प्रतिद्वंद्वी खेल टीम के सदस्यों को नापसंद करता है।

269. हिंदू धर्म में जीवन के चार लक्ष्य धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष हैं:
(A) यज्ञ
(B) ऋण
(C) मोक्ष
(D) संन्यास

270. सामाजिक संरचना के बारे में निम्नलिखित पर विचार करें:
1. यह स्थितियों और भूमिकाओं से बनी है।
2. यह सामाजिक जीवन को पूर्वानुमेयता प्रदान करती है।
3. यह स्थिर है और कभी नहीं बदलती।
उपर्युक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?
(A) केवल 1
(B) केवल 1 और 2
(C) केवल 3
(D) 1, 2 और 3

271. मानव समाज का वैज्ञानिक और व्यवस्थित अध्ययन किसकी परिभाषा है?
(A) समाजशास्त्र
(B) मनोविज्ञान
(C) नृविज्ञान
(D) इतिहास

272. 'प्रतिमानों' और 'मूल्यों' के बीच एक मुख्य अंतर यह है कि:
(A) प्रतिमान सामान्य हैं, जबकि मूल्य विशिष्ट हैं।
(B) मूल्य अमूर्त आदर्श हैं, जबकि प्रतिमान ठोस नियम हैं।
(C) प्रतिमान हमेशा कानून होते हैं, जबकि मूल्य रीति-रिवाज होते हैं।
(D) मूल्य व्यवहार के बारे में हैं, जबकि प्रतिमान विश्वासों के बारे में हैं।

273. आपका परिवार प्राथमिक समूह का एक उदाहरण है, जबकि एक बड़ी कंपनी में आपके सहकर्मी द्वितीयक समूह का उदाहरण हैं।
(A) द्वितीयक समूह; प्राथमिक समूह
(B) प्राथमिक समूह; द्वितीयक समूह
(C) अंतः समूह; बाह्य समूह
(D) औपचारिक समूह; अनौपचारिक समूह

274. वह संस्था जो वस्तुओं के उत्पादन, वितरण और उपभोग को व्यवस्थित करती है, वह है:
(A) अर्थव्यवस्था
(B) राज्य
(C) धर्म
(D) शिक्षा

275. 'भूमिका समुच्चय' शब्द संदर्भित करता है:
(A) वे सभी स्थितियाँ जो एक व्यक्ति धारण करता है।
(B) एक नई भूमिका सीखने की प्रक्रिया।
(C) एकल परिस्थिति से जुड़ी कई भूमिकाएं।
(D) विभिन्न स्थितियों की भूमिकाओं के बीच संघर्ष।

276. आश्रम व्यवस्था में 'वानप्रस्थ' चरण किसके बाद आता है?
(A) ब्रह्मचर्य चरण
(B) संन्यास चरण
(C) शूद्र चरण
(D) गृहस्थ चरण

277. 'समाजशास्त्रीय परिप्रेक्ष्य' किस पर ध्यान केंद्रित करने के लिए प्रोत्साहित करता है?
(A) व्यक्तिगत कमियां
(B) सार्वभौमिक नैतिक सत्य
(C) व्यक्तिगत जीवन को आकार देने वाली सामाजिक ताकतें
(D) जैविक नियतिवाद

278. निम्नलिखित में से कौन सी एक आरोपित परिस्थिति है?
(A) डॉक्टर
(B) राजकुमार
(C) जीवनसाथी
(D) स्नातक

279. सामाजिक जीवन के एक प्रमुख क्षेत्र, जैसे कि कानून, को विनियमित करने वाली स्थापित प्रक्रियाएं और नियम सामाजिक संस्था कहलाते हैं:
(A) समूह
(B) समुदाय
(C) समिति
(D) संस्था

280. एक छात्रा जो अच्छे ग्रेड लाने के लिए अपने माता-पिता से, मेलजोल बढ़ाने के लिए अपने दोस्तों से, और अधिक घंटे काम करने के लिए अपने बॉस से दबाव महसूस करती है, वह किसका अनुभव कर रही है?
(A) भूमिका संघर्ष
(B) भूमिका तनाव
(C) परिस्थिति क्रम
(D) परिस्थिति समुच्चय

Click Here to Buy book on Amazon

281. पारंपरिक वर्ण व्यवस्था किसकी प्रणाली का एक उदाहरण है?
(A) सामाजिक संस्थाएं
(B) सामाजिक समूह
(C) सामाजिक स्तरीकरण
(D) सामाजिक मूल्य

282. 'संदर्भ समूह' का उद्देश्य किसके रूप में कार्य करना है?
(A) स्वयं और दूसरों को आंकने के लिए मानक।
(B) घनिष्ठ भावनात्मक समर्थन का स्रोत।
(C) किसी लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए औपचारिक संगठन।
(D) वह समूह जिसके प्रति व्यक्ति तीव्र विरोध महसूस करता है।

283. दिए गए कथनों को पढ़ें और सही विकल्प का चयन करें।
कथन I: समुदाय 'हम-की भावना' पर आधारित है।
कथन II: समिति एक विशिष्ट लक्ष्य प्राप्त करने के लिए बनाया गया समूह है।
(A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
(B) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।
(C) कथन I सही है, लेकिन कथन II गलत है।
(D) कथन I गलत है, लेकिन कथन II सही है।

284. 'उपनयन' संस्कार एक लड़के के जीवन में किसको चिह्नित करता है?
(A) विवाह
(B) औपचारिक शिक्षा में प्रवेश
(C) जन्म
(D) अंतिम संस्कार

285. सूची I को सूची II से सुमेलित करें और नीचे दिए गए कूट से सही उत्तर चुनें।
सूची I: (अवधारणा)
P. परिस्थिति समुच्चय
Q. भूमिका समुच्चय
R. भूमिका संघर्ष
S. परिस्थिति क्रम
सूची II: (संक्षिप्त विवरण)
1. कई परिस्थितियों से उत्पन्न विरोधाभासी भूमिकाएं
2. एक व्यक्ति द्वारा धारित सभी स्थितियाँ
3. स्थितियों की एक आजीवन श्रृंखला
4. एक ही परिस्थिति से जुड़ी सभी भूमिकाएं
कूट:
(A) P-2, Q-4, R-1, S-3
(B) P-1, Q-2, R-3, S-4
(C) P-2, Q-1, R-4, S-3
(D) P-4, Q-2, R-1, S-3

286. निम्नलिखित में से कौन सी प्राथमिक सामाजिक संस्था नहीं है?
(A) परिवार
(B) धर्म
(C) अर्थव्यवस्था
(D) एक खेल टीम

287. 'हम-की भावना' से जुड़े लोगों का समूह अंतः समूह है, जबकि 'वे' के रूप में देखा जाने वाला समूह बाह्य समूह है।
(A) अंतः समूह; बाह्य समूह
(B) प्राथमिक समूह; द्वितीयक समूह
(C) औपचारिक समूह; अनौपचारिक समूह
(D) समुदाय; समिति

288. चार पुरुषार्थों में 'अर्थ' किसके अनुसरण को संदर्भित करता है?
(A) कर्तव्य
(B) धन/संपत्ति
(C) सुख
(D) मुक्ति

289. कौन सा क्रम वर्णों को पारंपरिक रूप से उच्चतम से निम्नतम क्रम में व्यवस्थित करता है?
(A) ब्राह्मण, वैश्य, क्षत्रिय, शूद्र
(B) ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र
(C) क्षत्रिय, ब्राह्मण, शूद्र, वैश्य
(D) वैश्य, शूद्र, ब्राह्मण, क्षत्रिय

290. वह प्रमुख तत्व जो 'समाजशास्त्र' को एक विज्ञान के रूप में परिभाषित करता है, उसकी किस पर निर्भरता है?
(A) व्यवस्थित अवलोकन और साक्ष्य
(B) सामान्य ज्ञान
(C) दार्शनिक तर्क
(D) पारंपरिक ज्ञान

291. निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:
1. परिस्थिति पद है, और भूमिका निर्वहन है।
2. एक व्यक्ति के पास अपने जीवनकाल में केवल एक ही परिस्थिति होती है।
3. भूमिका समुच्चय उन सभी स्थितियों को संदर्भित करता है जो एक व्यक्ति धारण करता है।
उपर्युक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?
(A) केवल 1
(B) केवल 2 और 3
(C) केवल 1 और 3
(D) 1, 2 और 3

292. वह संस्थागत तरीका जिसके माध्यम से एक समाज अपने सदस्यों को उद्देश्य की भावना और अर्थ का ढांचा प्रदान करता है, वह है:
(A) राज्य
(B) अर्थव्यवस्था
(C) शिक्षा
(D) धर्म

NODIA

293. हिंदू दर्शन में 'ऋण' की अवधारणा व्यक्ति के किस पर जोर देती है?
(A) अधिकार और विशेषाधिकार
(B) लक्ष्य और उद्देश्य
(C) ऋण और दायित्व
(D) रीति-रिवाज और समारोह

294. किसी विश्वविद्यालय में एक शोध टीम को किस रूप में सबसे अच्छा वर्गीकृत किया जा सकता है?
(A) प्राथमिक समूह
(B) द्वितीयक समूह
(C) समुदाय
(D) भीड़

295. निम्नलिखित प्रश्न में दो कथन शामिल हैं — कथन (A) और कारण (R)। उपयुक्त विकल्प चुनकर प्रश्न का उत्तर दें।
कथन (A): एक जटिल समाज में, व्यक्ति अक्सर कई समूहों से संबंधित होते हैं, जैसे परिवार, कार्य और मनोरंजन क्लब।
कारण (R): ये बहुविध सदस्यताएँ भूमिका संघर्ष का कारण बन सकती हैं जब एक समूह की अपेक्षाएँ दूसरे समूह की अपेक्षाओं के साथ टकराती हैं।
(A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सही है लेकिन R गलत है।
(D) A गलत है लेकिन R सही है।

296. 'मूल्य' वांछनीयता को आंकने का एक मानक है, जबकि 'प्रतिमान' व्यवहार के लिए एक नियम है।
(A) वांछनीयता; व्यवहार
(B) सुंदरता; आचरण
(C) सत्य; विश्वास
(D) क्रिया; विचार

297. आश्रम व्यवस्था में जीवन का वह चरण जो वैराग्य और आध्यात्मिक चिंतन के लिए समर्पित है, अक्सर एक वनवासी के रूप में, वह है:
(A) संन्यास
(B) गृहस्थ
(C) वानप्रस्थ
(D) ब्रह्मचर्य

298. एक व्यक्ति की समूह सदस्यताओं और सामाजिक स्थितियों का संपूर्ण संग्रह सामाजिक संरचना में उनकी स्थिति बनाता है:
(A) संरचना
(B) संस्था
(C) संस्कृति
(D) समुदाय

299. प्रतिद्वंद्वी विश्वविद्यालय के सदस्यों के प्रति विरोध की भावना किसका उदाहरण है?
(A) अंतः समूह पक्षपात
(B) संदर्भ समूह व्यवहार
(C) प्राथमिक समूह गतिशीलता
(D) बाह्य समूह शत्रुता

300. निम्नलिखित में से कौन सी सामाजिक 'संस्था' की सबसे सटीक परिभाषा है?
(A) एक सामान्य उद्देश्य वाले लोगों का एक विशिष्ट समूह।
(B) सामाजिक आवश्यकताओं को पूरा करने वाले प्रतिमानों की एक संगठित प्रणाली।
(C) सार्वजनिक उद्देश्यों के लिए उपयोग की जाने वाली कोई भी बड़ी इमारत।
(D) पूरी तरह से नातेदारी पर आधारित एक छोटा, घनिष्ठ समूह।

www.nodia.in
NODIA

उत्तर (व्याख्या सहित)

1. (B) मानव समाज और सामाजिक अंतःक्रिया का व्यवस्थित अध्ययन।
समाजशास्त्र वह सामाजिक विज्ञान है जो मानवीय संबंधों और सामाजिक समूहों का क्रमबद्ध विश्लेषण करता है। यह मुख्य रूप से सामाजिक संस्थाओं, अंतःक्रियाओं और समाज की संरचना को समझने पर केंद्रित है। इसमें मानवीय व्यवहार के सामाजिक संदर्भ को वैज्ञानिक पद्धतियों द्वारा परखा जाता है। यह व्यक्तिगत कार्यों से परे समाज के व्यापक स्वरूप और उसके विकास को वैज्ञानिक रूप से स्पष्ट करने का प्रयास करता है।

2. (A) मानव व्यवहार पर सामाजिक संदर्भ का प्रभाव।
समाजशास्त्रीय परिप्रेक्ष्य का मुख्य केंद्र व्यक्ति के व्यवहार और समाज के बीच के अंतर्संबंधों को समझना है। यह दृष्टिकोण इस बात पर बल देता है कि हमारे कार्य और विचार सामाजिक परिस्थितियों, समूहों और परिवेश द्वारा प्रभावित होते हैं। इसके माध्यम से हम यह देखते हैं कि व्यापक सामाजिक शक्तियाँ किस प्रकार व्यक्तिगत जीवन को आकार देती हैं। यह विश्लेषण व्यक्तिगत मनोविज्ञान के स्थान पर सामाजिक संरचनाओं को प्राथमिकता देता है।

3. (C) समाजशास्त्र एक निर्देशात्मक विषय है जो यह निर्धारित करता है कि समाज कैसा होना चाहिए।
समाजशास्त्र की प्रकृति एक आनुभविक और विश्लेषणात्मक सामाजिक विज्ञान की है। यह विषय समाज की वर्तमान स्थितियों का वास्तविक अध्ययन करता है, न कि यह निर्देश देता है कि समाज कैसा होना चाहिए। निर्देशात्मक होने के स्थान पर, समाजशास्त्र तथ्यों और आँकड़ों के आधार पर सामाजिक वास्तविकताओं की व्याख्या करता है। यह वैज्ञानिक अन्वेषण और आलोचनात्मक पद्धतियों द्वारा सामाजिक जीवन के विभिन्न पहलुओं को वस्तुनिष्ठता से समझाता है।

4. (D) एक साझा भौगोलिक क्षेत्र, समान बंधन और अंतःक्रिया।
समुदाय उन लोगों के समूह को दर्शाता है जो एक निश्चित भौगोलिक क्षेत्र में निवास करते हैं। इसके सदस्यों के बीच परस्पर 'हम-की भावना' और घनिष्ठ सामाजिक संबंध पाए जाते हैं। समुदाय का आधार केवल स्थान ही नहीं, बल्कि साझा मूल्य, परंपराएं और निरंतर सामाजिक अंतःक्रिया भी है। यह स्वाभाविक रूप से विकसित होने वाली इकाई है, जहाँ व्यक्ति अपनेपन का अनुभव करते हुए एक साझा सामाजिक जीवन व्यतीत करते हैं।

5. (A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण अक्सर समाज की उन मान्यताओं को चुनौती देता है जिन्हें लोग बिना प्रमाण के सच मान लेते हैं। समाजशास्त्र में व्यवस्थित शोध और वैज्ञानिक पद्धतियों द्वारा सामाजिक जीवन की गहन जाँच की जाती है। यह विषय केवल सतह पर दिखने वाले तथ्यों के स्थान पर उनके पीछे छिपे कारणों को उजागर करता है। इसलिए, यह सामान्य ज्ञान की तुलना में अधिक प्रामाणिक, वस्तुनिष्ठ और तार्किक जानकारी प्रदान करता है।

6. (B) कॉफी के लिए मिलने वाले मित्रों का समूह
सामाजिक संस्थाएँ वे स्थायी प्रणालियाँ हैं जो समाज की बुनियादी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए नियमों और प्रतिमानों का निर्माण करती हैं। परिवार, शिक्षा और राजनीति इसके उदाहरण हैं। मित्रों का अनौपचारिक समूह जो केवल अल्प समय के लिए मिलता है, एक अस्थायी सामाजिक अंतःक्रिया मात्र है। इसमें वह स्थायित्व और आधिकारिक संरचना नहीं होती जो एक औपचारिक संस्था को परिभाषित करने के लिए समाजशास्त्र में आवश्यक मानी जाती है।

7. (D) किसी विशेष उद्देश्य या उद्देश्यों के समूह को पूरा करने के लिए।
समिति व्यक्तियों का एक समूह है जिसे जानबूझकर किसी विशिष्ट उद्देश्य की प्राप्ति के लिए संगठित किया जाता है। इसकी सदस्यता स्वैच्छिक होती है और इसमें औपचारिक नियमों का पालन किया जाता है। व्यापार संघ या खेल क्लब इसके उत्तम उदाहरण हैं। समुदाय के विपरीत, समिति का गठन किसी विशेष लाभ या कार्य को ध्यान में रखकर किया जाता है, न कि केवल सामान्य सामाजिक जीवन जीने के लिए।

8. (B) केवल 1 और 3
संस्कृति एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को हस्तांतरित होने वाली सीखी गई जीवन शैली है। इसमें केवल भौतिक वस्तुएं जैसे उपकरण ही शामिल नहीं होते, बल्कि अभौतिक तत्व जैसे विश्वास, मूल्य और प्रतिमान भी महत्वपूर्ण हैं। यह निरंतर विकासशील होती है और समय के साथ परिवर्तित होती रहती है, इसलिए इसे स्थिर नहीं माना जा सकता। समाज की परंपराएं और कलात्मक अभिव्यक्तियाँ संस्कृति के इसी गतिशील स्वरूप को प्रदर्शित करती हैं।

9. (A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
प्रतिमान आचरण के वे विशिष्ट नियम हैं जो व्यक्ति को बताते हैं कि किसी विशेष परिस्थिति में उसे कैसा व्यवहार करना चाहिए। इसके विपरीत, मूल्य समाज के वे व्यापक और अमूर्त आदर्श हैं जो यह निर्धारित करते हैं कि क्या सही या वांछनीय है। मूल्य हमारे व्यवहार को दिशा देने वाले आधारभूत सिद्धांत हैं, जबकि प्रतिमान इन मूल्यों को व्यावहारिक रूप से समाज में लागू करने का कार्य करते हैं।

10. (A) परिस्थिति
परिस्थिति समाज की संरचना में व्यक्ति द्वारा प्राप्त एक निश्चित सामाजिक पद को संदर्भित करती है। यह पद समाज द्वारा

Downloaded from www.pdf.tube

परिभाषित होता है और इसके साथ विशिष्ट अधिकार तथा कर्तव्य जुड़े होते हैं। परिस्थिति यह निर्धारित करती है कि एक व्यक्ति का अन्य व्यक्तियों के साथ क्या संबंध होगा। यह पद जन्म से प्राप्त या अर्जित हो सकता है, जो समाज में व्यक्ति की सामाजिक पहचान का मुख्य आधार होता है।

11. (D) भूमिका
भूमिका उस व्यवहारिक पक्ष को संदर्भित करती है जिसकी अपेक्षा समाज किसी विशेष परिस्थिति या पद को धारण करने वाले व्यक्ति से करता है। जब कोई व्यक्ति किसी विशिष्ट पद पर होता है, तो उससे अपेक्षित आचरण की उम्मीद की जाती है। यह व्यवहार सामाजिक प्रतिमानों और मूल्यों द्वारा निर्देशित होता है। परिस्थिति एक पद है, जबकि भूमिका उस पद को क्रियान्वित करने का तरीका है, जो सामाजिक व्यवस्था बनाए रखती है।

12. (A) P-2, Q-1, R-3, S-4
सामाजिक जीवन के विभिन्न पहलुओं के लिए भिन्न अवधारणाओं का उपयोग किया जाता है। गाँव साझा क्षेत्र के कारण समुदाय का उदाहरण है, जबकि व्यापार संघ विशिष्ट उद्देश्यों के लिए गठित एक समिति है। कानूनी व्यवस्था समाज के नियमों को विनियमित करने वाली एक महत्वपूर्ण संस्था है। इसी प्रकार, भाषा और परंपराएं समाज की संस्कृति को निर्मित करती हैं। ये सभी तत्व मिलकर समाज की जटिल संरचना को पूर्णता प्रदान करते हैं।

13. (C) एक साथ कई स्थितियाँ धारण करने की अवस्था को।
बहुविध भूमिका की अवधारणा उस स्थिति को दर्शाती है जहाँ एक व्यक्ति एक ही समय में समाज के भीतर कई अलग-अलग पदों या परिस्थितियों को धारण करता है। उदाहरण के लिए, एक व्यक्ति एक ही समय में पिता, कर्मचारी और मित्र हो सकता है। प्रत्येक पद के साथ अलग-अलग व्यवहार संबंधी अपेक्षाएं जुड़ी होती हैं। यह आधुनिक समाज की जटिलता को प्रदर्शित करता है जहाँ व्यक्ति को विभिन्न सामाजिक जिम्मेदारियों का निर्वहन करना पड़ता है।

14. (D) परिस्थिति समुच्चय
परिस्थिति समुच्चय एक समाजशास्त्रीय अवधारणा है जो उन सभी सामाजिक स्थितियों के संग्रह को संदर्भित करती है जिन्हें एक व्यक्ति एक ही समय में धारण करता है। इसमें जन्मजात स्थितियाँ और व्यक्तिगत प्रयासों से अर्जित पद दोनों शामिल होते हैं। यह समुच्चय व्यक्ति की संपूर्ण सामाजिक पहचान को परिभाषित करने में सहायता करता है। समाज में प्रत्येक व्यक्ति के पास ऐसी अनेक स्थितियाँ होती हैं, जो उसे विभिन्न समूहों से जोड़ती हैं।

15. (A) बहुविध भूमिकाएं
जब एक व्यक्ति समाज में विभिन्न पदों पर कार्य करता है, तो उसे उन सभी पदों से जुड़ी जिम्मेदारियों को निभाना पड़ता है। व्यक्ति का छात्र, कर्मचारी और संतान के रूप में कार्य करना बहुविध भूमिकाओं का स्पष्ट उदाहरण है। यह दर्शाता है कि एक व्यक्ति का सामाजिक जीवन कितना विविधतापूर्ण हो सकता है। प्रत्येक पद उससे एक विशिष्ट प्रकार के आचरण की मांग करता है, जो आधुनिक समाजों में व्यक्तिगत पहचान को दर्शाता है।

16. (B) भूमिका संघर्ष - एक ही स्थिति से असंगत अपेक्षाएं।
भूमिका संघर्ष तब उत्पन्न होता है जब किसी व्यक्ति द्वारा धारण की गई दो या अधिक अलग परिस्थितियों के बीच की अपेक्षाएं आपस में टकराती हैं। एक ही स्थिति से जुड़ी विरोधाभासी अपेक्षाओं को भूमिका तनाव कहा जाता है। समाजशास्त्र में परिस्थिति एक सामाजिक पद है और भूमिका उस पद से जुड़ा अपेक्षित व्यवहार है। परिस्थिति समुच्चय एक व्यक्ति द्वारा एक ही समय में धारित सभी पदों के कुल योग को दर्शाता है।

17. (A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
आधुनिक समाजों में व्यक्ति को एक ही समय में अनेक सामाजिक पदों का निर्वहन करना पड़ता है। जब इन विभिन्न पदों से जुड़ी जिम्मेदारियां और अपेक्षाएं आपस में टकराती हैं, तो व्यक्ति भूमिका संघर्ष का अनुभव करता है। उदाहरण के लिए, पेशेवर मांगें और पारिवारिक जिम्मेदारियां विरोधाभासी हो सकती हैं। यह संघर्ष आधुनिक जीवन की बहुआयामी प्रकृति और सामाजिक संरचना में बढ़ती जटिलता का एक अपरिहार्य परिणाम माना जाता है।

18. (A) एक ही स्थिति से जुड़ी विभिन्न भूमिकाएं।
भूमिका समुच्चय की अवधारणा रॉबर्ट मर्टन द्वारा प्रतिपादित की गई थी। यह एक ही सामाजिक परिस्थिति या पद से जुड़ी विभिन्न भूमिकाओं के समूह को संदर्भित करती है। उदाहरण के लिए, एक शिक्षक की भूमिका केवल छात्रों को पढ़ाने तक सीमित नहीं है, बल्कि इसमें प्रशासन से तालमेल और अभिभावकों के साथ अंतःक्रिया भी शामिल है। यह स्पष्ट करता है कि एक पद समाज में विभिन्न समूहों के साथ अलग-अलग संबंध बनाता है।

19. (B) केवल 1 और 2
सामाजिक समूह दो या अधिक व्यक्तियों का वह संग्रह है जो निरंतर एक-दूसरे के साथ अंतःक्रिया करते हैं और साझा पहचान रखते हैं। केवल भौतिक रूप से एक स्थान पर उपस्थित होना, जैसे बस का इंतज़ार कर रहे लोग, एक सामाजिक समूह नहीं बल्कि 'पुंज' कहलाता है। सामाजिक समूह के सदस्यों के बीच साझा हित, मूल्य और प्रतिमान होते हैं जो उन्हें एक इकाई के रूप में जोड़ते हैं।

20. (D) परिस्थिति क्रम
परिस्थिति क्रम उन पदों की श्रृंखला को संदर्भित करता है जिन्हें एक व्यक्ति अपने जीवनकाल में क्रमिक रूप से धारण करता है। उदाहरण के लिए, एक व्यक्ति पहले प्रशिक्षु बनता है, फिर प्रबंधक और अंततः निदेशक के पद तक पहुँचता है। यह अवधारणा सामाजिक जीवन की गतिशीलता और करियर के विकास को दर्शाती है। यह परिस्थिति समुच्चय से भिन्न है, क्योंकि समुच्चय एक ही समय में धारित पदों को दर्शाता है।

NODIA

21. (C) परिस्थिति क्रम
परिस्थिति क्रम की अवधारणा व्यक्ति के जीवन के दौरान धारण की जाने वाली परिस्थितियों के अनुक्रम को स्पष्ट करती है। जैसे-जैसे व्यक्ति की आयु और अनुभव बढ़ता है, वह समाज में विभिन्न पदों से गुजरता है। शिक्षा पूर्ण करना, नौकरी प्राप्त करना और विवाह करना जीवन के विभिन्न चरणों में परिस्थितियों के बदलाव को प्रदर्शित करता है। यह संचलन व्यक्ति के सामाजिक विकास और उसकी जीवन यात्रा का व्यवस्थित खाका प्रस्तुत करता है।

22. (B) प्राथमिक समूह
परिवार को समाजशास्त्र में प्राथमिक समूह का सबसे उपयुक्त उदाहरण माना जाता है। चार्ल्स कूले के अनुसार, प्राथमिक समूह वे हैं जिनमें सदस्यों के बीच घनिष्ठ, आमने-सामने के संबंध और गहरी सहानुभूति पाई जाती है। परिवार में संबंध भावनात्मक और निस्वार्थ होते हैं, जहाँ व्यक्ति को संपूर्ण व्यक्ति के रूप में महत्व दिया जाता है। यह समूह व्यक्ति के समाजीकरण और व्यक्तित्व निर्माण में सबसे मौलिक भूमिका निभाता है।

23. (D) द्वितीयक समूह
द्वितीयक समूह बड़े आकार के ऐसे समूह होते हैं जहाँ सदस्यों के बीच संबंध अवैयक्तिक, औपचारिक और संविदात्मक होते हैं। एक बड़ा निगम इसका उदाहरण है, जहाँ अंतःक्रियाएँ किसी विशिष्ट लक्ष्य की प्राप्ति के लिए की जाती हैं। यहाँ व्यक्ति का महत्व उसके द्वारा किए जाने वाले कार्य और दक्षता पर आधारित होता है। प्राथमिक समूहों के विपरीत, यहाँ भावनात्मक लगाव कम होता है और आधार केवल हितों की पूर्ति होती है।

24. (A) आमने-सामने की, घनिष्ठ अंतःक्रिया
प्राथमिक समूह की मुख्य विशेषता सदस्यों के बीच घनिष्ठ और व्यक्तिगत संबंधों की उपस्थिति है। इसमें आमने-सामने की अंतःक्रिया होती है, जिससे सदस्यों के बीच गहरी 'हम-की भावना' विकसित होती है। ऐसे समूहों का आकार छोटा होता है, जिससे सभी सदस्य एक-दूसरे को व्यक्तिगत रूप से जानते हैं। परिवार और मित्र इसके प्रमुख उदाहरण हैं। यहाँ अंतःक्रिया का उद्देश्य स्वयं में एक सुखद सामाजिक अनुभव प्रदान करना होता है।

25. (A) 2, 1, 3, 4
पारंपरिक हिंदू आश्रम व्यवस्था मानव जीवन को चार अनुक्रमिक चरणों में विभाजित करती है। प्रथम चरण ब्रह्मचर्य है, जो शिक्षा के लिए समर्पित है। इसके बाद गृहस्थ आश्रम आता है, जहाँ व्यक्ति पारिवारिक उत्तरदायित्वों का निर्वहन करता है। तृतीय चरण वानप्रस्थ है, जिसमें सांसारिक मोह त्यागकर वैराग्य की ओर बढ़ा जाता है। अंतिम चरण संन्यास है, जो पूर्ण त्याग और आध्यात्मिक मोक्ष की प्राप्ति पर केंद्रित है।

26. (A) जिससे व्यक्ति संबंधित है और पहचान तथा वफादारी की भावना महसूस करता है।
अंतः समूह वह सामाजिक समूह है जिसके साथ व्यक्ति अपनी पहचान जोड़ता है और 'हम' की भावना का अनुभव करता है। इस समूह के सदस्यों के प्रति व्यक्ति में वफादारी और सहयोग की गहरी भावना होती है। यह समूह व्यक्ति के आत्म-सम्मान और सामाजिक सुरक्षा के लिए महत्वपूर्ण होता है। अंतः समूह की सदस्यता व्यक्ति के दृष्टिकोण और व्यवहार को आकार देती है, जिससे वह स्वयं को एक विशिष्ट समूह का हिस्सा महसूस करता है।

27. (D) संदर्भ समूह
संदर्भ समूह वह समूह है जिसका उपयोग व्यक्ति अपने व्यवहार, मूल्यों और दृष्टिकोण के मूल्यांकन के लिए एक मानक के रूप में करता है। यदि कोई किशोर किसी लोकप्रिय समूह के पहनावे का अनुकरण करता है, तो वह उसे अपना आदर्श मान रहा है। व्यक्ति आवश्यक नहीं कि उस समूह का सदस्य हो, लेकिन वह उसकी तरह बनने की आकांक्षा रखता है। यह अवधारणा समाजीकरण और आत्म-पहचान को प्रभावित करती है।

28. (B) औपचारिक समूहों के स्थापित नियम होते हैं, जबकि अनौपचारिक समूह स्वतःस्फूर्त होते हैं।
औपचारिक और अनौपचारिक समूहों के बीच मुख्य अंतर उनकी संरचना और नियमों में निहित है। औपचारिक समूह, जैसे कोई कार्यालय, लिखित नियमों और स्पष्ट पदानुक्रम द्वारा संचालित होते हैं। इसके विपरीत, अनौपचारिक समूह जैसे मित्रों की मंडली, व्यक्तिगत संबंधों के आधार पर स्वतःस्फूर्त रूप से बनते हैं। अनौपचारिक समूहों में कोई आधिकारिक नियम नहीं होते, बल्कि उनमें अंतःक्रिया स्वाभाविक और लचीली होती है, जो आपसी समझ पर टिकी होती है।

29. (C) जीवन के चार वैध लक्ष्यों को।
पारंपरिक भारतीय समाजशास्त्र में 'पुरुषार्थ' की अवधारणा मानव जीवन के चार अनिवार्य लक्ष्यों को रेखांकित करती है। ये लक्ष्य धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष हैं। पुरुषार्थ का दर्शन व्यक्ति को भौतिक और आध्यात्मिक जीवन के बीच संतुलन बनाए रखने की शिक्षा देता है। यह ढांचा सुनिश्चित करता है कि व्यक्ति अपने व्यक्तिगत सुखों के साथ-साथ समाज और अपनी आत्मा के प्रति उत्तरदायित्वों को भी प्रभावी ढंग से पूरा करे।

30. (C) कथन I सही है, लेकिन कथन II गलत है।
धर्म एक महत्वपूर्ण सामाजिक संस्था है जो पवित्र वस्तुओं से संबंधित विश्वासों और अनुष्ठानों की एक व्यवस्थित प्रणाली प्रदान करती है। यह समाज को नैतिक आधार और उद्देश्य की भावना प्रदान करता है। दूसरी ओर, राज्य का प्राथमिक कार्य राजनीतिक शक्ति का प्रबंधन और कानून व्यवस्था बनाए रखना है। वस्तुओं के उत्पादन और वितरण का मुख्य उत्तरदायित्व अर्थव्यवस्था नामक संस्था का होता है। अतः इनके कार्यों में स्पष्ट सामाजिक अंतर है।

31. (A) यज्ञ
हिंदू दर्शन में पुरुषार्थ के अंतर्गत चार मुख्य लक्ष्यों को मान्यता दी गई है: धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष। धर्म नैतिक जीवन का आधार है, अर्थ भौतिक आवश्यकताओं की पूर्ति है, काम सुख की प्राप्ति है और मोक्ष जीवन का अंतिम लक्ष्य है। यज्ञ एक धार्मिक अनुष्ठान है, जिसे एक संस्कार या कर्मकांड माना जाता

Click Here to Buy book on Amazon

है, न कि जीवन का एक स्वतंत्र लक्ष्य या पुरुषार्थ। अतः यज्ञ इन चारों श्रेणियों से भिन्न है।

32. (B) व्यवसाय और कर्तव्य
वर्ण व्यवस्था प्राचीन भारतीय सामाजिक स्तरीकरण का एक आधारभूत ढांचा है जो मुख्य रूप से समाज में कार्यों के विभाजन पर आधारित है। इसमें समाज को चार श्रेणियों—ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र—में विभाजित किया गया है, जिनमें से प्रत्येक के लिए विशिष्ट व्यावसायिक कर्तव्य निर्धारित किए गए थे। यह व्यवस्था सामाजिक व्यवस्था को सुचारू रूप से चलाने के लिए गुणों और कर्मों के आधार पर श्रम विभाजन सुनिश्चित करने हेतु विकसित की गई थी।

33. (A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
सामाजिक संस्थाएँ परिवर्तन के प्रति स्वाभाविक रूप से प्रतिरोधी होती हैं क्योंकि वे स्थापित नियमों और प्रथाओं के स्थायी प्रतिमानों पर आधारित होती हैं। ये संस्थाएँ समाज में गहराई से रची-बसी होती हैं और सांस्कृतिक मूल्यों द्वारा समर्थित होती हैं। पीढ़ी-दर-पीढ़ी इनका हस्तांतरण होने के कारण इनमें स्थिरता आ जाती है। यद्यपि समाज में बदलाव आते हैं, परंतु संस्थागत ढांचे में परिवर्तन की प्रक्रिया धीमी होती है क्योंकि वे सामाजिक निरंतरता को सुरक्षित रखती हैं।

34. (A) शिक्षा
शिक्षा एक सामाजिक संस्था के रूप में व्यक्ति के ज्ञान, कौशल और मूल्यों के विकास के लिए उत्तरदायी है। जब एक समाजशास्त्री कक्षा की अंतःक्रियाओं और छात्र की पहचान के निर्माण का अध्ययन करता है, तो वह शिक्षा प्रणाली के सूक्ष्म सामाजिक प्रभाव पर ध्यान केंद्रित करता है। शिक्षा न केवल सूचना प्रदान करती है, बल्कि यह व्यक्ति को समाज के उपयुक्त सदस्य के रूप में ढालने और उसे सामाजिक भूमिकाओं के लिए तैयार करने का औपचारिक माध्यम है।

35. (C) तीन मूलभूत ऋणों को।
हिंदू दर्शन के अनुसार, प्रत्येक व्यक्ति जन्म से ही तीन ऋणों से बंधा होता है जिन्हें 'ऋण-त्रय' कहा जाता है। ये ऋण देव ऋण, ऋषि ऋण और पितृ ऋण हैं। इन ऋणों को चुकाना व्यक्ति का नैतिक कर्तव्य माना जाता है। यज्ञ, स्वाध्याय और संतानोत्पत्ति के माध्यम से इन ऋणों से मुक्ति प्राप्त करने का प्रयास किया जाता है। यह अवधारणा व्यक्ति की सामाजिक और आध्यात्मिक उत्तरदायित्वों के प्रति जागरूकता को दर्शाती है।

36. (A) P-4, Q-3, R-1, S-2
समाजशास्त्र में विभिन्न समूहों को उनकी विशेषताओं के आधार पर वर्गीकृत किया गया है। प्राथमिक समूह घनिष्ठ संबंधों द्वारा पहचाने जाते हैं, जबकि द्वितीयक समूहों में संबंध अवैयक्तिक होते हैं। संदर्भ समूह वह मानक है जिसका उपयोग व्यक्ति तुलना के लिए करता है। अंतः समूह में सदस्यों के बीच 'हम-की भावना' की तीव्र अनुभूति होती है। ये सभी अवधारणाएं समाज के भीतर व्यक्तियों के संबंधों और उनके व्यवहार के विभिन्न स्वरूपों को स्पष्ट करने में सहायक हैं।

37. (C) वह संस्था जो वस्तुओं के उत्पादन और वितरण को व्यवस्थित करती है।
अर्थव्यवस्था एक महत्वपूर्ण सामाजिक संस्था है जो समाज में संसाधनों के कुशल प्रबंधन पर केंद्रित है। इसका मुख्य कार्य वस्तुओं और सेवाओं के उत्पादन, विनिमय, वितरण और उपभोग की प्रक्रियाओं को व्यवस्थित करना है। यह संस्था निर्धारित करती है कि समाज अपनी भौतिक आवश्यकताओं को कैसे पूरा करेगा। समाज की स्थिरता और विकास काफी हद तक आर्थिक संस्थाओं की कार्यप्रणाली और उनके द्वारा स्थापित नियमों एवं विनियमों पर निर्भर करती है।

38. (B) जीवन के चरणों को चिह्नित करने वाले रीति-रिवाज या धार्मिक कृत्य।
हिंदू समाज में 'संस्कार' उन पवित्र रीति-रिवाजों को संदर्भित करते हैं जो व्यक्ति के जीवन के महत्वपूर्ण संक्रमणों को चिह्नित करते हैं। ये संस्कार जन्म से पूर्व आरंभ होकर मृत्यु के पश्चात तक चलते हैं, जैसे उपनयन, विवाह और अन्त्येष्टि। इनका उद्देश्य व्यक्ति के व्यक्तित्व का शुद्धिकरण करना और उसे जीवन के अगले चरण के उत्तरदायित्वों के लिए तैयार करना है। ये संस्कार व्यक्ति को सामाजिक रूप से परिपक्व बनाने और सांस्कृतिक विरासत को बनाए रखने का साधन हैं।

39. (A) केवल 3
सामाजिक संरचना में परिस्थिति एक पद है और भूमिका उस पद से अपेक्षित व्यवहार है। परिस्थिति को भूमिका का स्थिर पक्ष और भूमिका को परिस्थिति का गतिशील पक्ष माना जाता है। एक व्यक्ति एक ही समय में कई परिस्थितियाँ धारण कर सकता है, जिसे परिस्थिति समुच्चय कहते हैं। भूमिका संघर्ष तब उत्पन्न होता है जब किसी व्यक्ति द्वारा धारित विभिन्न पदों से जुड़ी भूमिकाओं की मांगें आपस में टकराती हैं। अतः यह आधुनिक समाज की जटिलता को दर्शाता है।

NODIA

40. (A) भूमिका तनाव
भूमिका तनाव वह स्थिति है जब किसी व्यक्ति को अपनी एक ही परिस्थिति से जुड़ी विभिन्न भूमिकाओं की मांगों को पूरा करने में कठिनाई होती है। यह संघर्ष एक ही पद के भीतर निहित अलग-अलग अपेक्षाओं के बीच विरोधाभास के कारण उत्पन्न होता है। उदाहरण के लिए, एक प्रबंधक को अपने अधीनस्थों के प्रति मित्रवत होने और अनुशासन बनाए रखने के बीच जो खिंचाव महसूस होता है, वह भूमिका तनाव है। यह परिस्थिति समुच्चय से भिन्न है।

41. (C) संस्था
संस्था समाज में व्यवहार के स्थापित और संगठित प्रतिमानों की एक प्रणाली है जिसका एक विशिष्ट सामाजिक उद्देश्य होता है। यह नियमों, कानूनों और परंपराओं का ढांचा प्रदान करती है जिसके माध्यम से समाज अपनी निरंतर आवश्यकताओं को पूरा करता है। संस्थाएं अमूर्त होती हैं और सामाजिक संबंधों को स्थिरता प्रदान करती हैं। विवाह, परिवार, धर्म और कानून इसके प्रमुख उदाहरण हैं। ये समाज के सदस्यों के व्यवहार को विनियमित करने का एक सशक्त माध्यम हैं।

42. (A) यह विश्वास कि लोकतंत्र सरकार का सबसे अच्छा रुप है। मूल्य समाज के वे व्यापक और अमूर्त मानक हैं जो यह निर्धारित करते हैं कि क्या वांछनीय या सही है। यह विश्वास कि लोकतंत्र सरकार का सर्वोत्तम रुप है, एक राजनीतिक मूल्य का उदाहरण है जो सामाजिक जीवन को दिशा प्रदान करता है। मूल्यों के विपरीत, हाथ मिलाना या यातायात संकेतों पर रुकना विशिष्ट प्रतिमान हैं। मूल्य हमारे आचरण और निर्णयों के पीछे की मार्गदर्शक शक्ति होते हैं, जो संस्कृति की नैतिकता को परिभाषित करते हैं।

43. (D) बाह्य समूह
बाह्य समूह वह सामाजिक समूह है जिससे व्यक्ति स्वयं को संबंधित नहीं मानता है और जिसके प्रति वह अक्सर प्रतिस्पर्धा या अलगाव की भावना रखता है। इस समूह को व्यक्ति "वे" के रूप में देखता है, जो उसके अपने "हम" समूह से भिन्न होते हैं। बाह्य समूह की उपस्थिति अक्सर अंतः समूह की एकता और वफादारी को मजबूत करने का कार्य करती है। यह सामाजिक विभाजन व्यक्ति की पहचान को स्पष्ट करने में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

44. (B) खेल की रात के लिए पड़ोस के दोस्तों का नियमित जमावड़ा।
अनौपचारिक सामाजिक समूह वे होते हैं जिनका कोई लिखित संविधान या कठोर पदानुक्रम नहीं होता। ऐसे समूह व्यक्तिगत पसंद, मित्रता और साझा हितों के आधार पर स्वतःस्फूर्त रूप से बनते हैं। पड़ोस के दोस्तों का जमावड़ा इसका उदाहरण है, जहाँ अंतःक्रिया लचीली और भावनात्मक होती है। इसके विपरीत, निगम या सरकारी संगठन औपचारिक समूह हैं जो पूर्व-निर्धारित संरचनाओं और नियमों द्वारा संचालित होते हैं। अनौपचारिक समूहों में संबंधों का आधार व्यक्तिगत होता है।

45. (C) राज्य
राज्य वह प्रमुख सामाजिक संस्था है जो समाज में शक्ति और अधिकार के वैध प्रयोग के लिए उत्तरदायी है। इसका मुख्य कार्य कानून बनाना, उनका कार्यान्वयन सुनिश्चित करना और सामाजिक व्यवस्था को बनाए रखना है। राज्य के पास संप्रभुता होती है और यह नागरिकों के व्यवहार को विनियमित करने के लिए शक्ति का उपयोग करता है। यह संस्था राजनीतिक निर्णयों, संसाधनों के आवंटन और सुरक्षा के प्रबंधन के माध्यम से समाज के शासन की पूरी प्रक्रिया को व्यवस्थित करती है।

46. (D) एक अनुष्ठानिक बलिदान।
पारंपरिक भारतीय विचार में 'यज्ञ' एक अत्यंत महत्वपूर्ण अनुष्ठानिक बलिदान या आहुति है। यह पवित्र अग्नि के माध्यम से देवताओं को अर्पण करने की एक प्राचीन प्रक्रिया है, जिसमें विशिष्ट मंत्रों और विधि-विधानों का पालन किया जाता है। यज्ञ का उद्देश्य केवल धार्मिक लाभ प्राप्त करना ही नहीं, बल्कि ब्रह्मांडीय व्यवस्था और सामाजिक सद्भाव को बनाए रखना भी माना जाता है। यह भारतीय संस्कृति के कर्मकांडीय और आध्यात्मिक पक्ष के समन्वय का एक प्रतीक है।

47. (A) 2, 4, 1, 3
पारंपरिक हिंदू समाज में वर्ण व्यवस्था एक पदानुक्रमित संरचना है। इस सोपान क्रम में 'ब्राह्मण' सर्वोच्च स्थान पर हैं, जो शिक्षा और आध्यात्मिक कार्यों के लिए उत्तरदायी थे। द्वितीय स्थान पर 'क्षत्रिय' आते हैं, जिनका कर्तव्य रक्षा और शासन करना था। तृतीय स्थान 'वैश्य' का है, जो व्यापार और कृषि से जुड़े थे। अंतिम स्थान पर 'शूद्र' आते हैं, जिनका कार्य अन्य तीनों वर्गों की सेवा करना था। यह व्यवस्था प्राचीन काल में श्रम विभाजन का आधार थी।

48. (B) भूमिका संघर्ष
भूमिका संघर्ष तब उत्पन्न होता है जब एक व्यक्ति दो या अधिक अलग परिस्थितियों को धारण करता है और उनकी मांगें आपस में टकराती हैं। एक महिला के लिए न्यायाधीश के पेशेवर कर्तव्य और माता-पिता के रूप में पारिवारिक जिम्मेदारियों के बीच संतुलन बनाना कठिन हो सकता है, क्योंकि दोनों पदों की अपेक्षाएँ एक ही समय में पूरी करना चुनौतीपूर्ण होता है। यह स्थिति आधुनिक समाज की जटिल संरचना को दर्शाती है जहाँ व्यक्तिगत और पेशेवर जीवन के बीच विरोधाभास संघर्ष को जन्म देते हैं।

49. (B) सामाजिक गतिशीलता
समाजशास्त्र की मूल अवधारणाओं में वे तत्व शामिल हैं जो समाज के बुनियादी ढांचे का निर्माण करते हैं, जैसे समुदाय, संस्था और संस्कृति। ये अवधारणाएँ सामाजिक जीवन की स्थिरता और बनावट को समझने में सहायता करती हैं। सामाजिक गतिशीलता, यद्यपि एक महत्वपूर्ण समाजशास्त्रीय विषय है, परंतु इसे एक प्रक्रिया के रूप में देखा जाता है न कि एक मूल संरचनात्मक इकाई के रूप में। मूल अवधारणाएँ वे आधार स्तंभ हैं जिनके बिना समाज के व्यवस्थित अध्ययन की कल्पना करना संभव नहीं है।

50. (A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
'समुदाय' एक ऐसी सामाजिक इकाई है जो एक निश्चित क्षेत्र में रहने वाले लोगों के बीच 'हम-की भावना' और साझा जीवन शैली द्वारा पहचानी जाती है। इसके विपरीत, 'समिति' एक औपचारिक संगठन है जिसे विशिष्ट और सीमित लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए सोच-समझकर बनाया जाता है। समुदाय स्वाभाविक रूप से विकसित होता है, जबकि समिति की स्थापना एक निश्चित उद्देश्य की पूर्ति के लिए की जाती है। समाजशास्त्र में ये दोनों अवधारणाएं सामाजिक समूहों के अलग-अलग स्वरूपों को स्पष्ट करती हैं।

51. (C) समाजीकरण
समाजीकरण वह निरंतर प्रक्रिया है जिसके माध्यम से व्यक्ति अपने समाज की संस्कृति, मूल्यों, प्रतिमानों और व्यवहार के तरीकों को सीखता है। यह प्रक्रिया जन्म से आरंभ होकर जीवन भर चलती रहती है, जिससे व्यक्ति समाज का एक कार्यात्मक सदस्य बनता है। परिवार, विद्यालय, मित्र और संचार माध्यम समाजीकरण के मुख्य माध्यम हैं। इसके द्वारा न केवल सांस्कृतिक विरासत का हस्तांतरण होता है, बल्कि व्यक्ति की

Downloaded from www.pdf.tube

सामाजिक पहचान और व्यक्तित्व का भी समुचित निर्माण होता है।

52. (A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
संदर्भ समूह वह समूह होता है जिसे व्यक्ति आत्म-मूल्यांकन और अपने व्यवहार के लिए एक मानक के रूप में देखता है। यह आवश्यक नहीं है कि व्यक्ति उस समूह का वास्तविक सदस्य हो। अक्सर लोग उन समूहों के प्रतिमानों और जीवन शैली का अनुकरण करते हैं जिनमें वे शामिल होने की इच्छा रखते हैं। इस प्रकार, संदर्भ समूह व्यक्ति की आकांक्षाओं, दृष्टिकोणों और व्यक्तित्व निर्माण को प्रभावित करने वाली एक महत्वपूर्ण मनोवैज्ञानिक और सामाजिक शक्ति के रूप में कार्य करता है।

53. (C) प्रतिमान
प्रतिमान समाज या किसी समूह के वे साझा नियम और अपेक्षाएं हैं जो इसके सदस्यों के व्यवहार का मार्गदर्शन करते हैं। ये प्रतिमान यह निर्धारित करते हैं कि किसी विशिष्ट सामाजिक स्थिति में किस प्रकार का आचरण स्वीकार्य है। प्रतिमानों का पालन करने से सामाजिक जीवन में पूर्वानुमेयता और व्यवस्था बनी रहती है। ये औपचारिक कानूनों से लेकर अनौपचारिक लोकरीतियों तक विस्तृत हो सकते हैं, जो समाज की सांस्कृतिक अखंडता और अनुशासन बनाए रखने के लिए अनिवार्य माने जाते हैं।

54. (B) प्राथमिक समूह
परिवार को प्राथमिक समूह माना जाता है क्योंकि इसमें सदस्यों के बीच अत्यंत घनिष्ठ, आमने-सामने के और भावनात्मक संबंध होते हैं। परिवार का मुख्य कार्य अपने सदस्यों को पोषण, सुरक्षा और निरंतर भावनात्मक समर्थन प्रदान करना है। यहाँ व्यक्ति को उसकी उपयोगिता के स्थान पर उसके अस्तित्व के लिए प्रेम और सम्मान दिया जाता है। यह घनिष्ठता व्यक्ति के प्रारंभिक समाजीकरण और उसकी मनोवैज्ञानिक स्थिरता के लिए सबसे महत्वपूर्ण आधार स्तंभ के रूप में कार्य करती है।

55. (B) P-4, Q-1, R-2, S-3
हिंदू दर्शन में चार पुरुषार्थ मानव जीवन के संतुलित विकास के लिए आवश्यक लक्ष्यों को दर्शाते हैं। 'धर्म' का अर्थ नैतिक कर्तव्य और धर्मी आचरण का पालन करना है। 'अर्थ' भौतिक समृद्धि और धन के अर्जन से संबंधित है। 'काम' मानवीय इच्छाओं और इंद्रिय सुखों की संतुलित तृप्ति को संदर्भित करता है। 'मोक्ष' जीवन का सर्वोच्च लक्ष्य है, जो जन्म-मृत्यु के चक्र से मुक्ति और आध्यात्मिक पूर्णता का प्रतीक है। ये चारों लक्ष्य मनुष्य के समग्र जीवन का मार्गदर्शन करते हैं।

56. (A) भूमिका समुच्चय
भूमिका समुच्चय की अवधारणा एक ही सामाजिक स्थिति से जुड़ी विभिन्न भूमिकाओं के समूह को संदर्भित करती है। जब एक व्यक्ति किसी पद पर होता है, जैसे कि आचार्य, तो उस पद के साथ अनेक उत्तरदायित्व जुड़े होते हैं, जैसे अध्यापन, शोध और छात्रों का मार्गदर्शन करना। ये सभी कार्य मिलकर उस विशेष परिस्थिति का भूमिका समुच्चय बनाते हैं। यह दर्शाता है कि एक ही सामाजिक पद व्यक्ति को विभिन्न समूहों और सामाजिक कर्तव्यों के साथ किस प्रकार गहराई से जोड़ता है।

57. (C) संस्कृति
संस्कृति समाज के सदस्यों के संपूर्ण जीवन जीने के तरीके को समाहित करने वाली एक व्यापक अवधारणा है। इसमें साझा विश्वास, मूल्य, भाषा, परंपराएं, कला और वे सभी भौतिक वस्तुएं शामिल होती हैं जिन्हें मनुष्य अपने सामाजिक परिवेश में सीखता है और निर्मित करता है। संस्कृति ही वह तत्व है जो एक समाज को दूसरे से अलग और विशिष्ट बनाती है। यह मानव व्यवहार को निर्देशित करने वाला एक अदृश्य खाका है, जो पीढ़ी-दर-पीढ़ी हस्तांतरित होकर सामाजिक निरंतरता सुनिश्चित करता है।

58. (B) केवल 1 और 2
विवाह एक आधारभूत सामाजिक संस्था है जो व्यक्तियों के बीच एक सामाजिक और कानूनी रूप से स्वीकृत मिलन को स्थापित करती है। यह संस्था न केवल यौन संबंधों को विनियमित करती है, बल्कि नातेदारी, वंश और उत्तराधिकार की एक व्यवस्थित प्रणाली का भी निर्माण करती है। यद्यपि विवाह एक सार्वभौमिक संस्था है, परंतु इसके स्वरूप, रीति-रिवाज और नियम विभिन्न संस्कृतियों में भिन्न हो सकते हैं। यह परिवार के गठन और सामाजिक स्थिरता के लिए अत्यंत अनिवार्य मानी जाती है।

59. (D) एक 'पिता' होना
परिस्थिति समाज की संरचना में व्यक्ति द्वारा प्राप्त एक मान्यता प्राप्त सामाजिक पद या स्थिति है। 'पिता' होना एक परिस्थिति का सटीक उदाहरण है, क्योंकि यह एक विशिष्ट सामाजिक स्थिति को दर्शाता है जिसके साथ समाज द्वारा निर्धारित कुछ अधिकार और कर्तव्य जुड़े होते हैं। इसके विपरीत, ईमानदार होना एक व्यक्तिगत गुण है और वाहन चलाना या कठिन परिश्रम करना व्यवहार के प्रकार हैं। परिस्थिति व्यक्ति को सामाजिक पदानुक्रम में एक विशिष्ट स्थान और पहचान प्रदान करती है।

60. (B) यह देखना कि सामान्य सामाजिक प्रतिमान व्यक्तिगत अनुभवों को कैसे आकार देते हैं।
समाजशास्त्रीय परिप्रेक्ष्य हमें यह समझने के लिए प्रेरित करता है कि हमारे व्यक्तिगत अनुभव और जीवन के चयन किस प्रकार व्यापक सामाजिक प्रतिमानों और संरचनाओं द्वारा प्रभावित होते हैं। यह दृष्टिकोण हमें बताता है कि जिसे हम पूरी तरह निजी मानते हैं, वह अक्सर उन सामाजिक ताकतों का परिणाम होता है जो हमारे परिवेश में कार्य कर रही हैं। 'विशिष्ट में सामान्य' को देखने का अर्थ है व्यक्तिगत घटनाओं के पीछे छिपे व्यापक सामाजिक कारणों को पहचानना।

61. (C) निरंतर अंतःक्रिया और साझा पहचान की उपस्थिति।
एक सामाजिक समूह केवल लोगों का संचय नहीं है, बल्कि यह उन व्यक्तियों का समूह है जिनके बीच निरंतर सामाजिक अंतःक्रिया होती है और जो साझा पहचान की भावना रखते हैं। समूह के सदस्यों के पास कुछ साझा उद्देश्य, मूल्य और प्रतिमान

NODIA

होते हैं जो उन्हें एक इकाई के रूप में जोड़ते हैं। इसके विपरीत, भीड़ में लोग भौतिक रूप से निकट हो सकते हैं, लेकिन उनमें वह मनोवैज्ञानिक जुड़ाव और संगठित अंतःक्रिया नहीं होती जो एक समूह के लिए आवश्यक है।

62. (D) गृहस्थ
आश्रम व्यवस्था में 'गृहस्थ' चरण को सबसे महत्वपूर्ण माना गया है क्योंकि यह सांसारिक उत्तरदायित्वों और सामाजिक कर्तव्यों के निर्वहन का काल है। इस चरण में व्यक्ति विवाह करता है, परिवार का भरण-पोषण करता है और समाज की आर्थिक व्यवस्था में सक्रिय योगदान देता है। गृहस्थ आश्रम अन्य तीनों आश्रमों को आधार प्रदान करता है, क्योंकि गृहस्थ ही अन्य आश्रमों में रहने वाले व्यक्तियों की आवश्यकताओं की पूर्ति और समाज की निरंतरता को सुनिश्चित करता है।

63. (A) परिस्थिति समुच्चय
परिस्थिति समुच्चय की अवधारणा उन सभी सामाजिक पदों या स्थितियों के कुल योग को संदर्भित करती है जिन्हें एक व्यक्ति एक ही समय में धारण करता है। उदाहरण के लिए, एक ही महिला एक माँ, अधिवक्ता, पत्नी और स्वयंसेवक हो सकती है। यह समुच्चय व्यक्ति की बहुआयामी सामाजिक पहचान को स्पष्ट करता है। समाजशास्त्र में यह अवधारणा इस बात पर जोर देती है कि व्यक्ति केवल एक पद तक सीमित नहीं है, बल्कि वह समाज के विभिन्न क्षेत्रों में अलग-अलग भूमिकाएँ निभाता है।

64. (B) समाजशास्त्रीय परिप्रेक्ष्य
समाजशास्त्रीय परिप्रेक्ष्य का मुख्य केंद्र बिंदु यह विश्लेषण करना है कि सामाजिक संस्थाएँ और संरचनाएँ व्यक्ति के जीवन और सामाजिक व्यवस्था को कैसे प्रभावित करती हैं। जब कोई शोधकर्ता शिक्षा प्रणाली को सामाजिक असमानता बनाए रखने के एक साधन के रूप में देखता है, तो वह संस्थागत ढांचे के व्यापक सामाजिक प्रभावों की जांच कर रहा होता है। यह दृष्टिकोण व्यक्तिगत विफलताओं के स्थान पर सामाजिक व्यवस्था की संरचनात्मक समस्याओं और उनके परिणामों को समझने का प्रयास करता है।

65. (B) संदर्भ समूह - एक ऐसा समूह जिसकी तरह बनने की व्यक्ति आकांक्षा रखता है
संदर्भ समूह वह सामाजिक समूह है जिसे व्यक्ति अपने आत्म-मूल्यांकन और भविष्य की आकांक्षाओं के लिए एक प्रतिमान के रूप में देखता है। व्यक्ति इस समूह के प्रतिमानों और जीवन शैली को अपनाने का प्रयास करता है, भले ही वह वर्तमान में उसका सदस्य न हो। इसके विपरीत, फुटबॉल दल द्वितीयक समूह है और परिवार प्राथमिक समूह है। अंतः समूह वह है जिससे व्यक्ति जुड़ा होता है, जबकि प्रतिद्वंद्वी दल बाह्य समूह कहलाता है। अतः केवल संदर्भ समूह का विकल्प ही सही सुमेलित है।

66. (A) सामाजिक संस्था
सामाजिक संस्था विश्वासों, प्रथाओं और संगठनात्मक नियमों का एक सुव्यवस्थित समूह है जो समाज की बुनियादी और निरंतर आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए विकसित किया जाता है। यह संस्थाएं सामाजिक संबंधों को एक ढांचा प्रदान करती हैं और व्यक्तिगत व्यवहार को विनियमित करती हैं। परिवार, धर्म, अर्थव्यवस्था और शिक्षा इसके प्रमुख उदाहरण हैं। संस्थाएं समाज में स्थिरता सुनिश्चित करती हैं क्योंकि वे व्यक्तिगत चयन के स्थान पर सामूहिक प्रतिमानों और स्थापित परंपराओं पर आधारित होती हैं।

67. (A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
मूल्य समाज के वे व्यापक और अमूर्त आदर्श हैं जो हमारे जीवन का मार्गदर्शन करते हैं, जबकि प्रतिमान उन मूल्यों को व्यावहारिक रूप से लागू करने के विशिष्ट नियम हैं। 'बड़ों के प्रति सम्मान' एक मूल्य है, जिसे किसी वृद्ध व्यक्ति को अपनी सीट देना जैसे एक निश्चित प्रतिमान के माध्यम से व्यक्त किया जाता है। इस प्रकार, प्रतिमान मूल्यों को मूर्त रूप प्रदान करते हैं और यह सुनिश्चित करते हैं कि सामाजिक अंतःक्रियाएं समाज द्वारा स्वीकृत आदर्शों के अनुरूप संचालित हों।

68. (D) धर्म
पुरुषार्थ के ढांचे के अंतर्गत, 'अर्थ' और 'काम' का अनुसरण तभी उचित और वैध माना जाता है जब वे 'धर्म' के नियमों द्वारा निर्देशित हों। धर्म वह आधारभूत सिद्धांत है जो भौतिक और सांसारिक गतिविधियों को मर्यादित करता है ताकि व्यक्ति का नैतिक पतन न हो। बिना धर्म के अर्थ की खोज लालच और अराजकता की ओर ले जा सकती है। अतः धर्म एक संतुलनकारी शक्ति के रूप में कार्य करता है जो मानव जीवन को सही दिशा और मर्यादा प्रदान करता है।

69. (C) दीर्घकालिक, घनिष्ठ बंधन
द्वितीयक समूह आमतौर पर बड़े आकार के होते हैं और उनमें संबंध अवैयक्तिक, औपचारिक और किसी विशेष लक्ष्य की प्राप्ति के लिए होते हैं। इन समूहों में सदस्यों के बीच दीर्घकालिक और घनिष्ठ भावनात्मक बंधन का अभाव होता है, जो कि प्राथमिक समूहों की मुख्य विशेषता है। द्वितीयक समूह में व्यक्ति का महत्व उसकी कार्यक्षमता और भूमिका तक सीमित होता है। यहाँ अंतःक्रियाएँ संविदात्मक होती हैं, जहाँ व्यक्तिगत भावनाओं के स्थान पर पेशेवर उत्तरदायित्वों को अधिक प्राथमिकता दी जाती है।

70. (B) गुरु ऋण
हिंदू परंपरा में 'ऋण-त्रय' की अवधारणा के अंतर्गत तीन प्रमुख ऋणों का उल्लेख किया गया है: देव ऋण, ऋषि ऋण और पितृ ऋण। देव ऋण देवताओं के प्रति है, ऋषि ऋण गुरुओं और विद्वानों द्वारा प्रदान किए गए ज्ञान के प्रति है, और पितृ ऋण माता-पिता एवं पूर्वजों के प्रति है। यद्यपि गुरुओं का सम्मान सर्वोपरि है, परंतु उन्हें पारंपरिक रूप से ऋषि ऋण के अंतर्गत ही समाहित माना जाता है। गुरु ऋण नामक कोई स्वतंत्र श्रेणी ऋण-त्रय की प्राचीन शास्त्रीय सूची में नहीं है।

71. (A) P-3, Q-1, R-4, S-2
समाजशास्त्रीय अवधारणाओं का यह मिलन व्यक्ति और समाज के बीच के संबंधों को स्पष्ट करता है। भूमिका संघर्ष दो

Click Here to Buy book on Amazon

स्थितियों के बीच की विरोधाभासी अपेक्षाओं को दर्शाता है। भूमिका समुच्चय एक ही पद से जुड़ी सभी भूमिकाओं का योग है। परिस्थिति क्रम जीवन भर धारण किए गए पदों की श्रृंखला है। परिस्थिति समुच्चय उन सभी पदों को संदर्भित करता है जिन्हें एक व्यक्ति एक ही समय में धारण करता है। ये अवधारणाएं सामाजिक संरचना और व्यक्तिगत जीवन की जटिलताओं का विश्लेषण करने में सहायक हैं।

72. (A) विशिष्ट और सीमित उद्देश्य
समिति एक ऐसा सामाजिक समूह है जिसे जानबूझकर किसी विशिष्ट और सीमित उद्देश्य को प्राप्त करने के लिए संगठित किया जाता है। इसकी सदस्यता स्वैच्छिक होती है और उद्देश्य पूरा होने पर इसे भंग किया जा सकता है। इसके विपरीत, समुदाय एक व्यापक सामाजिक इकाई है जो साझा क्षेत्र और 'हम-की भावना' पर आधारित होती है, जहाँ व्यक्ति का पूरा जीवन व्यतीत होता है। समुदाय स्वाभाविक रूप से विकसित होता है, जबकि समिति का निर्माण विशेष हितों की पूर्ति के लिए सचेत रूप से किया जाता है।

73. (C) कुछ लोगों और समूहों द्वारा शक्ति प्राप्त की जाती है और उसका प्रयोग किया जाता है।
राज्य एक प्रमुख सामाजिक संस्था है जो समाज में शक्ति और अधिकार के प्रबंधन के लिए उत्तरदायी है। यह वह व्यवस्था है जिसके माध्यम से कानून बनाए जाते हैं, सामाजिक व्यवस्था बनाए रखी जाती है और राजनीतिक शक्ति का वितरण किया जाता है। राज्य के पास संप्रभुता होती है, जो उसे नागरिकों के व्यवहार को विनियमित करने का कानूनी अधिकार प्रदान करती है। यह संस्था सुनिश्चित करती है कि समाज के विभिन्न वर्गों के बीच हितों का टकराव कम हो और सामूहिक लक्ष्य प्राप्त हों।

74. (A) केवल 1
अनौपचारिक समूहों की मुख्य विशेषता आधिकारिक नियमों और औपचारिक संरचना का अभाव है, जहाँ संबंध व्यक्तिगत भावनाओं पर आधारित होते हैं। बाह्य समूह वह है जिससे व्यक्ति स्वयं को संबंधित नहीं मानता, लेकिन वह प्रतिस्पर्धा महसूस कर सकता है। द्वितीयक समूह अक्सर बड़े और कम घनिष्ठ होते हैं। अतः ये तीनों कथन सामाजिक समूहों की बुनियादी विशेषताओं को समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण से सही और सटीक रूप में परिभाषित करते हैं, जो मानवीय संबंधों की जटिलता को स्पष्ट करते हैं।

75. (D) शिक्षा और अनुशासित शिक्षण।
ब्रह्मचर्य आश्रम मानव जीवन का प्रथम चरण है, जो मुख्य रूप से ज्ञान प्राप्ति, चरित्र निर्माण और अनुशासित जीवन के लिए समर्पित है। इस अवस्था में व्यक्ति छात्र के रूप में आचार्य के सानिध्य में रहता है और शारीरिक तथा मानसिक संयम का अभ्यास करता है। इसका मुख्य उद्देश्य व्यक्ति को आगामी जीवन की चुनौतियों और उत्तरदायित्वों के लिए तैयार करना है। यह चरण शिक्षा के माध्यम से व्यक्ति की बौद्धिक नींव रखने का कार्य करता है, जो उसके भविष्य का आधार है।

76. (B) संस्कृति
संस्कृति समाज के सदस्यों द्वारा सीखे गए व्यवहारों, विचारों और भावनाओं के उन प्रतिमानों का योग है जो एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को सौंपे जाते हैं। यह न केवल हमारी विरासत है बल्कि यह हमारे सामाजिक अस्तित्व का आधार भी है। संस्कृति ही वह माध्यम है जिसके द्वारा हम दुनिया को समझते हैं और समाज में दूसरों के साथ अंतःक्रिया करते हैं। इसमें भाषा, प्रतीक, मूल्य और रीति-रिवाज शामिल हैं, जो सामूहिक रूप से हमारे अद्वितीय मानवीय जीवन के तरीके को पूर्णता प्रदान करते हैं।

77. (C) भूमिका संघर्ष
भूमिका संघर्ष तब होता है जब एक व्यक्ति को अपनी दो अलग-अलग सामाजिक स्थितियों या मूल्यों के बीच विरोधाभासी मांगों का सामना करना पड़ता है। एक सैनिक के लिए अपने सैन्य आदेशों का पालन करना एक पेशेवर भूमिका है, जबकि उसके व्यक्तिगत नैतिक विश्वास एक दूसरी आंतरिक स्थिति का हिस्सा हैं। जब ये दोनों टकराते हैं, तो वह मानसिक तनाव की स्थिति में होता है। यह संघर्ष आधुनिक जीवन की जटिलताओं को दर्शाता है जहाँ विभिन्न सामाजिक भूमिकाओं के बीच पूर्ण सामंजस्य बिठाना चुनौतीपूर्ण होता है।

78. (D) कानूनी व्यवस्था
कानूनी व्यवस्था एक सामाजिक संस्था का प्रमुख उदाहरण है क्योंकि यह समाज में व्यवहार को विनियमित करने के लिए स्थापित नियमों और प्रक्रियाओं का एक स्थायी ढांचा प्रदान करती है। संस्थाएं वे अमूर्त प्रणालियां हैं जो समाज की बुनियादी आवश्यकताओं, जैसे न्याय और व्यवस्था को पूरा करती हैं। इसके विपरीत, मित्रों का समूह एक सामाजिक समूह है और शहर एक भौगोलिक क्षेत्र है। कानूनी व्यवस्था व्यक्तिगत संबंधों से ऊपर उठकर समाज में निष्पक्षता और निरंतरता सुनिश्चित करने का कार्य प्रभावी ढंग से करती है।

79. (A) अंतः समूह
'हम-की भावना' की अवधारणा का अर्थ है सदस्यों के बीच अपनेपन, वफादारी और एकता की गहरी अनुभूति। यह भावना अंतः समूह की पहचान का आधार है, जहाँ व्यक्ति खुद को समूह का अभिन्न हिस्सा मानता है। यह भावना सदस्यों के बीच आपसी सहयोग को बढ़ावा देती है और उन्हें बाह्य समूहों से अलग करती है। समाजशास्त्रियों ने इस भावना को प्राथमिक समूहों और अंतः समूहों के सुचारु संचालन और उनकी आंतरिक मजबूती के लिए अत्यंत आवश्यक माना है।

80. (B) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।
वर्ण व्यवस्था समाज को उनके कर्तव्यों और व्यवसायों के आधार पर चार श्रेणियों (ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र) में विभाजित करने वाला स्तरीकरण का एक प्रारूप है। इसके विपरीत, आश्रम व्यवस्था व्यक्ति के जीवन को आयु और आध्यात्मिक विकास के आधार पर चार चरणों (ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ, संन्यास) में व्यवस्थित करती है। अतः कथन I और II दोनों ने अपनी परिभाषाओं को परस्पर बदल दिया है, जिससे वे तथ्यात्मक रूप से गलत और समाजशास्त्रीय रूप से असंगत सिद्ध होते हैं।

Downloaded from www.pdf.tube

81. (B) छात्र जीवन में प्रवेश
'उपनयन' संस्कार हिंदू परंपरा में एक महत्वपूर्ण धार्मिक और सामाजिक कृत्य है जो बालक के औपचारिक शिक्षण और छात्र जीवन के आरंभ को चिह्नित करता है। इसे 'यज्ञोपवीत' के नाम से भी जाना जाता है, जिसके बाद व्यक्ति को 'द्विज' माना जाता है क्योंकि वह ज्ञान की दुनिया में प्रवेश करता है। यह संस्कार व्यक्ति के अनुशासित जीवन, वेदों के अध्ययन और आचार्य के प्रति समर्पण की यात्रा की औपचारिक शुरुआत का प्रतीक माना जाता है, जो उसकी बौद्धिक नींव रखता है।

82. (A) सामाजिक दृष्टिकोण से दुनिया को समझने का एक तरीका प्रदान करता है।
समाजशास्त्र की प्रकृति यह है कि यह दुनिया को देखने के लिए एक विशिष्ट सामाजिक दृष्टिकोण प्रदान करता है। यह व्यक्तिगत घटनाओं को व्यापक सामाजिक संदर्भों और संरचनाओं के साथ जोड़कर समझने का प्रयास करता है। यह विषय केवल सतह पर दिखने वाली सच्चाइयों को स्वीकार नहीं करता, बल्कि उनके पीछे कार्य करने वाली सामाजिक ताकतों का वैज्ञानिक विश्लेषण करता है। समाजशास्त्र हमें यह सिखाता है कि किस प्रकार समाज हमारे जीवन, विचारों और अवसरों को गहराई से आकार देता है।

83. (A) 2, 4, 3, 1
परिस्थिति क्रम उन सामाजिक पदों की एक क्रमिक श्रृंखला है जिसे एक व्यक्ति अपने पेशेवर जीवन में समय के साथ प्राप्त करता है। एक सामान्य करियर पथ में, व्यक्ति पहले अनुभव प्राप्त करने के लिए प्रशिक्षुता करता है। इसके बाद, वह प्रवेश स्तर की नौकरी प्राप्त करता है और अपनी दक्षता सिद्ध करते हुए वरिष्ठ पदों तक पहुँचता है। अंत में, एक निश्चित आयु के पश्चात वह सेवानिवृत्ति प्राप्त करता है। यह अनुक्रम व्यक्ति के सामाजिक विकास के व्यवस्थित चरणों को स्पष्ट रूप से दर्शाता है।

84. (D) संस्था साझा रुचि वाले लोगों का एक अस्थायी जमावड़ा है।
समाजशास्त्र में 'संस्था' लोगों का कोई अस्थायी जमावड़ा नहीं है, बल्कि यह समाज में व्यवहार के स्थापित और स्थायी प्रतिमानों की एक अमूर्त प्रणाली है। संस्थाएं जैसे परिवार, धर्म और शिक्षा समाज की बुनियादी आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए लंबे समय तक बनी रहती हैं। अस्थायी जमावड़े को अक्सर पुंज या भीड़ कहा जाता है। संस्थाएं सामाजिक जीवन को स्थिरता प्रदान करती हैं और नियमों के माध्यम से सामाजिक अंतःक्रियाओं को निर्देशित करती हैं। अतः विकल्प (D) संस्था की समाजशास्त्रीय प्रकृति की गलत व्याख्या है।

85. (C) संदर्भ समूह
संदर्भ समूह वह सामाजिक समूह है जिसे व्यक्ति अपने स्वयं के व्यवहार, उपलब्धियों और दृष्टिकोणों का मूल्यांकन करने के लिए एक मानक के रूप में अपनाता है। व्यक्ति अक्सर उन लोगों की जीवनशैली और मूल्यों का अनुकरण करता है जिन्हें वह अपना आदर्श मानता है, भले ही वह उस समूह का सदस्य न हो। यह समूह व्यक्ति की आकांक्षाओं को आकार देने और उसे सामाजिक रूप से प्रेरित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। यह आत्म-धारणा और सामाजिक तुलना की प्रक्रिया के लिए एक आधार प्रदान करता है।

86. (A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
परिवार को प्राथमिक समूह का सबसे उपयुक्त उदाहरण माना जाता है क्योंकि इसमें सदस्यों के बीच घनिष्ठ, आमने-सामने के संबंध और गहरी सहानुभूति होती है। चार्ल्स कूले के अनुसार, ये समूह व्यक्ति की सामाजिक प्रकृति और उसके प्राथमिक समाजीकरण के निर्माण के लिए मौलिक हैं। परिवार में होने वाली अंतःक्रियाएँ भावनात्मक और निस्वार्थ होती हैं, जो व्यक्ति के व्यक्तित्व की नींव रखती हैं। इसलिए, प्राथमिक समूह के रूप में परिवार समाज की सबसे महत्वपूर्ण आधारभूत सामाजिक इकाई मानी जाती है।

87. (D) एक व्यक्ति एक परिस्थिति धारण करता है और एक भूमिका का निर्वहन करता है।
समाजशास्त्र में परिस्थिति और भूमिका एक-दूसरे के पूरक अंग हैं। परिस्थिति समाज की संरचना में व्यक्ति द्वारा प्राप्त एक पद है, जबकि भूमिका उस पद से जुड़े कर्तव्यों और अपेक्षित व्यवहारों का क्रियान्वयन है। उदाहरण के लिए, 'शिक्षक' एक परिस्थिति है जिसे कोई व्यक्ति धारण करता है, और छात्रों को पढ़ाना वह भूमिका है जिसका वह निर्वहन करता है। राल्फ लिंटन के अनुसार, पद का क्रियात्मक पक्ष ही भूमिका कहलाता है, जो सामाजिक व्यवस्था में गतिशीलता और स्थिरता लाता है।

88. (A) संबंधों की गुणवत्ता और प्रकृति।
प्राथमिक और द्वितीयक समूहों के बीच का मूलभूत अंतर संबंधों की गहराई और उनके उद्देश्य में निहित है। प्राथमिक समूहों में संबंध व्यक्तिगत, भावनात्मक, घनिष्ठ और अपने आप में साध्य होते हैं, जैसे परिवार और मित्र। इसके विपरीत, द्वितीयक समूहों में संबंध औपचारिक, अवैयक्तिक और किसी विशिष्ट लक्ष्य की प्राप्ति के लिए एक साधन मात्र होते हैं, जैसे एक व्यापारिक निगम। यद्यपि आकार और नियम भी भिन्न हो सकते हैं, परंतु संबंधों की आंतरिक गुणवत्ता ही इन दोनों समूहों को एक-दूसरे से अलग करती है।

89. (A) P-3, Q-1, R-2, S-4
प्राचीन भारतीय सामाजिक चिंतन में वर्ण व्यवस्था सामाजिक स्तरीकरण का एक आधारभूत ढांचा प्रस्तुत करती है। आश्रम व्यवस्था मानव जीवन को चार चरणों में विभाजित कर व्यक्तिगत विकास का मार्ग प्रशस्त करती है। पुरुषार्थ जीवन के उन चार लक्ष्यों को परिभाषित करता है जिन्हें प्राप्त करना मनुष्य का कर्तव्य माना गया है। ऋण की अवधारणा उन नैतिक दायित्वों और आध्यात्मिक ऋणों पर बल देती है जिन्हें चुकाना व्यक्ति का अनिवार्य सामाजिक कर्तव्य है। ये अवधारणाएँ मिलकर एक समग्र और अनुशासित सामाजिक व्यवस्था का निर्माण करती हैं।

90. (A) प्रतिमान
प्रतिमान समाज के वे साझा नियम और अपेक्षाएं हैं जो व्यक्तियों के व्यवहार को निर्देशित करते हैं और सामाजिक व्यवस्था

NODIA

बनाए रखते हैं। चोरी की सामाजिक अस्वीकृति एक मजबूत प्रतिमान का उदाहरण है, क्योंकि यह एक ऐसा नियम है जिसका उल्लंघन करने पर समाज दंड या अपमान के रूप में नकारात्मक प्रतिक्रिया देता है। ये प्रतिमान हमें बताते हैं कि कौन सा आचरण समाज के लिए स्वीकार्य है। प्रतिमानों के माध्यम से ही समाज अपने नैतिक मूल्यों को व्यावहारिक रूप से लागू करता है ताकि सामाजिक व्यवस्था बनी रहे।

91. (D) शिक्षा
शिक्षा एक प्रमुख सामाजिक संस्था है जिसका प्राथमिक उत्तरदायित्व समाज की सांस्कृतिक विरासत, ज्ञान और विशिष्ट कौशलों को औपचारिक रूप से एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक पहुँचाना है। यद्यपि परिवार प्रारंभिक समाजीकरण करता है, परंतु शिक्षा प्रणाली व्यवस्थित रूप से व्यक्ति को जटिल आधुनिक समाज की व्यावसायिक और सामाजिक भूमिकाओं के लिए तैयार करती है। यह संस्था न केवल सूचना प्रदान करती है, बल्कि यह व्यक्ति में सामाजिक मूल्यों, अनुशासन और आलोचनात्मक सोच विकसित करने का एक महत्वपूर्ण माध्यम भी है।

92. (B) केवल 1 और 2
परिस्थिति समुच्चय एक व्यक्ति द्वारा एक ही समय में धारित सभी पदों का योग है, जो जीवन के विभिन्न चरणों में करियर या अन्य उपलब्धियों के साथ निरंतर बदलता रहता है। इस समुच्चय में प्रत्येक परिस्थिति के साथ एक विशिष्ट भूमिका जुड़ी होती है जिसकी समाज उससे अपेक्षा करता है। हालाँकि, सभी स्थितियाँ समान महत्व की नहीं होतीं; व्यक्ति की 'मुख्य परिस्थिति' उसकी पहचान पर सबसे अधिक हावी होती है। अतः परिस्थिति समुच्चय गतिशील है और इसकी प्रत्येक इकाई भूमिका निर्वहन से जुड़ी है।

93. (C) गरीबी को सामाजिक संरचनाओं और आर्थिक ताकतों के परिणाम के रूप में समझना।
समाजशास्त्रीय परिप्रेक्ष्य का अर्थ है व्यक्तिगत समस्याओं को व्यापक सामाजिक और संरचनात्मक मुद्दों के संदर्भ में देखना। उदाहरण के लिए, गरीबी को केवल व्यक्तिगत विफलता के रूप में देखने के स्थान पर, इसे समाज की आर्थिक प्रणालियों, शिक्षा की कमी और संसाधनों के असमान वितरण के परिणाम के रूप में समझना एक समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण है। यह परिप्रेक्ष्य हमें यह पहचानने में मदद करता है कि व्यापक सामाजिक शक्तियाँ किस प्रकार व्यक्तिगत जीवन के अवसरों और संघर्षों को गहराई से प्रभावित करती हैं।

94. (D) अंतः समूह एकजुटता
अंतः समूह एकजुटता वह वफादारी और अपनेपन की भावना है जो व्यक्ति अपने परिवार, मित्रों या किसी भी ऐसे समूह के प्रति महसूस करता है जिससे वह गहराई से जुड़ा होता है। यह भावना 'हम' की पहचान पर आधारित होती है, जो सदस्यों के बीच आपसी सहयोग, सहानुभूति और सुरक्षा की भावना को मजबूत करती है। यह एकजुटता न केवल समूह के आंतरिक संबंधों को प्रगाढ़ बनाती है, बल्कि यह व्यक्ति को सामाजिक पदानुक्रम में एक निश्चित स्थान और भावनात्मक आधार भी प्रदान करती है।

95. (A) त्यागी या तपस्वी।
संन्यास आश्रम हिंदू आश्रम व्यवस्था का चतुर्थ और अंतिम चरण है, जो पूर्ण वैराग्य और आध्यात्मिक मुक्ति की खोज के लिए समर्पित है। इस अवस्था में व्यक्ति सांसारिक मोह, पारिवारिक संबंधों और भौतिक संपत्तियों का पूरी तरह त्याग कर देता है। एक त्यागी या तपस्वी के रूप में, वह अपना समय ध्यान, आत्म-साक्षात्कार और ईश्वर की भक्ति में व्यतीत करता है। यह चरण जीवन की नश्वरता को स्वीकार करने और जन्म-मृत्यु के चक्र से अंतिम मोक्ष प्राप्त करने के सर्वोच्च लक्ष्य का प्रतिनिधित्व करता है।

96. (B) एक द्वितीयक समूह और एक समिति
एक विश्वविद्यालय को द्वितीयक समूह माना जाता है क्योंकि इसमें सदस्यों के बीच संबंध औपचारिक, लक्ष्य-उन्मुख और अवैयक्तिक होते हैं। साथ ही, यह एक समिति भी है क्योंकि इसे उच्च शिक्षा प्रदान करने के विशिष्ट और पूर्व-निर्धारित उद्देश्य को प्राप्त करने के लिए संगठित किया गया है। यहाँ नियम लिखित होते हैं और एक स्पष्ट प्रशासनिक ढांचा कार्य करता है। विश्वविद्यालय की सदस्यता स्वैच्छिक होती है और इसका अस्तित्व इसके विशिष्ट शैक्षणिक लक्ष्यों की प्राप्ति पर टिका होता है, जो इसे संस्थागत स्वरूप प्रदान करता है।

97. (B) संस्था प्रतिमानों का एक समूह है; समिति लोगों का एक समूह है।
समाजशास्त्र में 'संस्था' और 'समिति' के बीच का अंतर अत्यंत महत्वपूर्ण है। संस्था व्यवहार के स्थापित प्रतिमानों, नियमों और कार्यप्रणालियों की एक अमूर्त प्रणाली है जो समाज की बुनियादी जरूरतों को पूरा करती है। इसके विपरीत, समिति व्यक्तियों का एक मूर्त समूह है जो किसी विशिष्ट लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए संगठित होता है। हम समिति के सदस्य हो सकते हैं, लेकिन हम संस्था के सदस्य नहीं बल्कि उसके नियमों का पालन करते हैं। इस प्रकार, संस्था एक कार्यविधि है जबकि समिति एक संगठन है।

98. (A) भूमिका तनाव
भूमिका तनाव वह मानसिक या सामाजिक खिंचाव है जो एक व्यक्ति तब महसूस करता है जब उसे अपनी एक ही परिस्थिति या पद से जुड़ी विभिन्न और कभी-कभी विरोधाभासी अपेक्षाओं को पूरा करना होता है। एक कार्यालय प्रबंधक का पद एक ही है, लेकिन उसे वरिष्ठों के लक्ष्यों को भी पूरा करना है और अधीनस्थों के कल्याण का भी ध्यान रखना है। इन दो अलग-अलग मांगों के बीच सामंजस्य बिठाना कठिन हो जाता है, जिससे उत्पन्न होने वाली स्थिति को समाजशास्त्र में भूमिका तनाव कहा जाता है।

99. (C) वर्ण व्यवस्था
वर्ण व्यवस्था प्राचीन भारतीय समाज के सामाजिक स्तरीकरण का एक आधारभूत ढांचा है। इसमें समाज को चार मुख्य श्रेणियों—ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य तथा शूद्र—में विभाजित किया गया है। यह विभाजन मूलतः गुणों और कर्मों के आधार पर श्रम विभाजन सुनिश्चित करने के लिए किया गया था। यद्यपि समय के साथ यह जाति व्यवस्था में परिवर्तित हो गई, परंतु

Click Here to Buy book on Amazon

मूल रूप से यह सामाजिक संतुलन और स्थिरता बनाए रखने की एक कार्यात्मक प्रणाली थी जो समाज के सुचारू संचालन में सहायक थी।

100. (C) कथन I सही है, लेकिन कथन II गलत है।
संस्कृति एक अद्वितीय मानवीय घटना है जो मनुष्य को अन्य प्राणियों से स्पष्ट रूप से अलग करती है। यह जैविक या आनुवंशिक रूप से विरासत में नहीं मिलती है, बल्कि इसे समाजीकरण की प्रक्रिया के माध्यम से समाज में रहकर सीखा जाता है। प्रत्येक समाज अपनी संस्कृति को भाषा, शिक्षा और परंपराओं के माध्यम से अपनी नई पीढ़ी तक निरंतर पहुँचाता है। संस्कृति हमारे सोचने, कार्य करने और भावनाओं को व्यक्त करने के तरीकों को आकार देती है, जो पूरी तरह से सामाजिक अधिगम पर ही आधारित है।

101. (C) एक विशिष्ट, जानबूझकर बनाया गया उद्देश्य।
समुदाय एक स्वाभाविक रूप से विकसित होने वाली सामाजिक इकाई है जिसकी मुख्य विशेषता साझा क्षेत्र और सदस्यों के बीच 'हम-की भावना' का होना है। समुदाय का कोई एक विशिष्ट या सीमित उद्देश्य नहीं होता, बल्कि यह जीवन जीने का एक संपूर्ण और व्यापक तरीका प्रदान करता है। विशिष्ट और जानबूझकर बनाए गए उद्देश्य समितियों की पहचान होते हैं, समुदायों की नहीं। समुदाय में व्यक्ति का सामाजिक जीवन स्वतःस्फूर्त रूप से विकसित होता है, जहाँ लोग साझा हितों के कारण परस्पर जुड़े रहते हैं।

102. (B) धर्म
धर्म एक महत्वपूर्ण सामाजिक संस्था है जो अलौकिक शक्तियों, पवित्र वस्तुओं और अर्थ के अंतिम प्रश्नों से संबंधित विश्वासों और प्रथाओं की एक व्यवस्थित प्रणाली पर केंद्रित है। यह समाज के सदस्यों को एक नैतिक ढांचा और जीवन का उद्देश्य प्रदान करता है। धार्मिक अनुष्ठान और प्रतीक सामूहिक एकजुटता को बढ़ावा देते हैं और व्यक्तियों को एक साझा पहचान में बांधते हैं। धर्म न केवल आध्यात्मिक संतुष्टि देता है, बल्कि यह सामाजिक व्यवहार को विनियमित करने और मूल्यों को स्थिरता प्रदान करने में भी सहायक है।

103. (D) परिस्थिति क्रम
परिस्थिति क्रम उन पदों या परिस्थितियों की श्रृंखला को दर्शाता है जिन्हें एक व्यक्ति अपने जीवनकाल में क्रमिक रूप से धारण करता है। जब एक पेशेवर अपनी नौकरी छोड़कर पूर्णकालिक माता-पिता बनने का निर्णय लेती है, तो वह अपने जीवन के एक चरण से दूसरे चरण में पदों का परिवर्तन कर रही है। यह उसकी सामाजिक भूमिकाओं और प्राथमिकताओं में समय के साथ आने वाले क्रमिक बदलाव को प्रदर्शित करता है। समाजशास्त्र में यह अवधारणा व्यक्ति की जीवन यात्रा और उसके सामाजिक विकास के विभिन्न पड़ावों को समझने में सहायक है।

104. (A) किसी संगठन में आधिकारिक रूप से गठित समिति।
औपचारिक समूह वे होते हैं जो किसी विशिष्ट उद्देश्य के लिए सोच-समझकर बनाए जाते हैं और जिनमें लिखित नियम, स्पष्ट पद तथा एक औपचारिक पदानुक्रम होता है। किसी संगठन की आधिकारिक समिति इसका सटीक उदाहरण है, जहाँ सदस्यों की भूमिकाएं और उत्तरदायित्व पूर्व-निर्धारित होते हैं। इसके विपरीत, मित्रों का समूह या सार्वजनिक स्थान पर बात करते लोग अनौपचारिक समूह हैं, जहाँ अंतःक्रिया स्वतःस्फूर्त होती है। औपचारिक समूह सामाजिक संरचना को स्थिरता और कार्यक्षमता प्रदान करने के लिए अनिवार्य माने जाते हैं।

105. (A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
महाविद्यालय की कक्षा को द्वितीयक समूह माना जाता है क्योंकि यहाँ छात्रों और शिक्षकों के बीच संबंध मुख्य रूप से औपचारिक, लक्ष्य-उन्मुख और अवैयक्तिक होते हैं। यहाँ अंतःक्रिया का प्राथमिक उद्देश्य पाठ्यक्रम की सामग्री को सीखना और शैक्षणिक लक्ष्यों को प्राप्त करना है। प्राथमिक समूहों की तुलना में, यहाँ सदस्यों के बीच घनिष्ठ भावनात्मक लगाव कम होता है और भूमिकाएँ स्पष्ट रूप से परिभाषित होती हैं। यह समूह किसी विशिष्ट कार्य को पूरा करने के लिए एक साधन के रूप में कार्य करता है, जो द्वितीयक समूह की पहचान है।

106. (A) सौंदर्यात्मक और इंद्रिय सुख
पुरुषार्थ के ढांचे के अंतर्गत 'काम' का अर्थ मानवीय इच्छाओं, सौंदर्यात्मक सुखों और इंद्रिय तृप्ति की संतुलित खोज है। यह जीवन के उस पक्ष को मान्यता देता है जो प्रेम, कला और आनंद से संबंधित है। हिंदू दर्शन के अनुसार, 'काम' का अनुसरण तभी श्रेयस्कर है जब वह 'धर्म' के नैतिक नियमों की सीमाओं के भीतर हो। यह अवधारणा स्पष्ट करती है कि मानव जीवन में केवल भौतिक या आध्यात्मिक प्रगति ही पर्याप्त नहीं है, बल्कि भावनात्मक और सौंदर्यबोध संबंधी सुख भी संतुलित जीवन के लिए आवश्यक हैं।

NODIA

107. (A) 4, 2, 3, 1
पुरुषार्थों का यह क्रम मानव जीवन की सांसारिक आवश्यकताओं से लेकर अंतिम आध्यात्मिक लक्ष्य तक की प्रगति को दर्शाता है। 'धर्म' नैतिक आधार प्रदान करता है, जिस पर अन्य सभी लक्ष्य टिके होते हैं। 'अर्थ' भौतिक संसाधनों की प्राप्ति सुनिश्चित करता है और 'काम' मानवीय इच्छाओं की तृप्ति का मार्ग है। अंततः, 'मोक्ष' का अर्थ इन सभी सांसारिक बंधनों से मुक्ति और आत्म-साक्षात्कार है। यह अनुक्रम व्यक्ति को भौतिक समृद्धि और आध्यात्मिक शांति के बीच एक सुव्यवस्थित संतुलन बनाने के लिए निरंतर प्रेरित करता है।

108. (B) परिस्थिति समुच्चय
परिस्थिति समुच्चय की अवधारणा उन सभी सामाजिक पदों या स्थितियों के कुल योग को संदर्भित करती है जिन्हें एक व्यक्ति किसी विशेष समय में एक साथ धारण करता है। उदाहरण के लिए, एक व्यक्ति एक ही समय में एक पुत्र, एक अभियंता, एक पति और एक नागरिक हो सकता है। यह अवधारणा स्पष्ट करती है कि व्यक्ति की सामाजिक पहचान किसी एक पद तक सीमित नहीं है, बल्कि वह समाज के विभिन्न क्षेत्रों में अनेक स्थितियों से जुड़ा हुआ है। यह व्यक्ति की जटिल सामाजिक भूमिकाओं को समझने का आधार है।

109. (C) मूल्य वे सामान्य मानक हैं जिन्हें प्रतिमान दर्शाते हैं।
मूल्य और प्रतिमान संस्कृति के दो महत्वपूर्ण लेकिन भिन्न घटक हैं। मूल्य समाज के वे व्यापक और अमूर्त आदर्श हैं जो यह बताते हैं कि क्या सही या वांछनीय है, जैसे 'ईमानदारी' या 'समानता'। प्रतिमान उन मूल्यों को दैनिक जीवन में लागू करने वाले व्यवहार के विशिष्ट और ठोस नियम हैं। उदाहरण के लिए, यदि 'ईमानदारी' एक मूल्य है, तो 'परीक्षा में अनैतिक कार्य न करना' एक प्रतिमान है। इस प्रकार, प्रतिमान अमूर्त मूल्यों को व्यवहार के धरातल पर क्रियान्वित करने का एक सशक्त माध्यम प्रदान करते हैं।

110. (A) P-3, Q-2, R-1, S-4
समाज की विभिन्न संस्थाएं विशिष्ट कार्यों के माध्यम से व्यवस्था बनाए रखती हैं। परिवार युवाओं के प्रारंभिक समाजीकरण के लिए उत्तरदायी है। अर्थव्यवस्था वस्तुओं और सेवाओं के उत्पादन और वितरण का प्रबंधन करती है। राज्य राजनीतिक शक्ति के वितरण और कानून व्यवस्था बनाए रखने का कार्य करता है। शिक्षा औपचारिक ज्ञान, कौशलों और सांस्कृतिक मूल्यों को व्यवस्थित रूप से एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक हस्तांतरित करने का माध्यम है। ये सभी संस्थाएं मिलकर समाज की बुनियादी जरूरतों को कुशलतापूर्वक और स्थायी रूप से पूरा करती हैं।

111. (A) वैराग्य के जीवन के लिए जंगल में चले जाना।
वानप्रस्थ आश्रम हिंदू आश्रम व्यवस्था का तीसरा चरण है, जो गृहस्थी के उत्तरदायित्वों को पूरा करने के बाद क्रमिक वैराग्य के लिए समर्पित है। इस अवस्था में व्यक्ति पारिवारिक मोह त्यागकर आध्यात्मिक चिंतन और एकांत की ओर बढ़ता है, जिसे प्रतीकात्मक रूप से 'वन गमन' कहा जाता है। इसका उद्देश्य सांसारिक बंधनों से मुक्त होकर स्वयं को अंतिम चरण यानी संन्यास के लिए तैयार करना है। यह चरण व्यक्ति को समाज के सक्रिय जीवन से निवृत होकर आत्मिक शांति की ओर ले जाता है।

112. (C) केवल 2 और 3
संदर्भ समूह वह समूह है जिसका उपयोग व्यक्ति आत्म-मूल्यांकन के लिए एक मानक के रूप में करता है, भले ही वह उसका सदस्य हो या न हो। अक्सर व्यक्ति उन समूहों को संदर्भ मानता है जिनमें वह शामिल होने की आकांक्षा रखता है। इसके अलावा, नकारात्मक संदर्भ समूह वे होते हैं जिनके व्यवहारों से व्यक्ति स्वयं को दूर रखना चाहता है। यह अवधारणा स्पष्ट करती है कि बाहरी समूह किस प्रकार हमारे दृष्टिकोण और व्यवहार को प्रभावित करते हैं। सदस्यता की तुलना में मनोवैज्ञानिक पहचान यहाँ अधिक महत्वपूर्ण होती है।

113. (B) व्यापक सामाजिक ताकतें।
समाजशास्त्रीय परिप्रेक्ष्य का मुख्य आधार यह है कि व्यक्ति के निजी अनुभव और चुनौतियाँ उसके व्यापक सामाजिक परिवेश और ऐतिहासिक संदर्भ से गहराई से जुड़ी होती हैं। सी. राइट मिल्स के अनुसार, इसे 'समाजशास्त्रीय कल्पनाशीलता' कहा जाता है, जहाँ हम देखते हैं कि सामाजिक संरचनाएँ, संस्थाएँ और सांस्कृतिक प्रतिमान किस प्रकार व्यक्तिगत जीवन को आकार देते हैं। यह दृष्टिकोण हमें बताता है कि व्यक्तिगत समस्याओं को केवल निजी संदर्भ में नहीं, बल्कि व्यापक सामाजिक मुद्दों और परिवर्तनों के प्रकाश में ही पूरी तरह समझा जा सकता है।

114. (A) संस्कार
हिंदू परंपरा में 'संस्कार' उन पवित्र अनुष्ठानों को कहा जाता है जो व्यक्ति के जीवन के महत्वपूर्ण चरणों और परिवर्तनों को चिह्नित करते हैं। ये संस्कार जन्म से पूर्व गर्भाधान से शुरू होकर मृत्यु के बाद अन्त्येष्टि तक चलते हैं। इनका मुख्य उद्देश्य व्यक्ति का शुद्धिकरण करना, उसे सामाजिक दायित्वों के प्रति सचेत करना और उसके व्यक्तित्व का पूर्ण विकास करना है। संस्कार व्यक्ति को सांस्कृतिक मूल्यों से जोड़ते हैं और समाज की निरंतरता को बनाए रखने के लिए पीढ़ी-दर-पीढ़ी आध्यात्मिक विरासत का हस्तांतरण करते हैं।

115. (C) भूमिका संघर्ष
भूमिका संघर्ष तब होता है जब एक व्यक्ति को अपनी दो अलग-अलग सामाजिक परिस्थितियों से जुड़ी अपेक्षाओं को एक साथ पूरा करने में कठिनाई होती है। एक पुलिस अधिकारी के पेशेवर कर्तव्य और एक मित्र की व्यक्तिगत निष्ठा के बीच का टकराव इसका सटीक उदाहरण है। जब कानून का पालन करने की पेशेवर मांग और मित्र की सहायता करने की व्यक्तिगत भावना आपस में टकराती हैं, तो व्यक्ति मानसिक खिंचाव और नैतिक दुविधा का अनुभव करता है। यह स्थिति सामाजिक संरचना में पदों के बीच निहित अंतर्विरोधों को उजागर करती है।

116. (D) औपचारिक समूह - स्वतःस्फूर्त अंतःक्रिया
औपचारिक समूह की मुख्य विशेषता यह है कि इनका निर्माण जानबूझकर किया जाता है और ये विशिष्ट नियमों, लिखित संविधान तथा एक निर्धारित पदानुक्रम द्वारा संचालित होते हैं। स्वतःस्फूर्त अंतःक्रिया अनौपचारिक समूहों की पहचान है, जहाँ संबंध व्यक्तिगत पसंद और स्वाभाविक जुड़ाव से बनते हैं। अतः विकल्प (D) गलत सुमेलित है। प्राथमिक समूहों में घनिष्ठता होती है, द्वितीयक समूहों में संबंध अवैयक्तिक होते हैं, और अंतः समूह 'हम-की भावना' पर आधारित होते हैं, जो समाजशास्त्र में समूहों के अध्ययन के आधारभूत और महत्वपूर्ण सिद्धांत माने जाते हैं।

117. (C) अपने कर्तव्यों और नैतिक दायित्वों की पूर्ति।
पुरुषार्थ के अंतर्गत 'धर्म' की अवधारणा अत्यंत व्यापक और आधारभूत है। यह केवल पूजा-पाठ तक सीमित नहीं है, बल्कि व्यक्ति के उन नैतिक उत्तरदायित्वों, सामाजिक कर्तव्यों और धर्मी आचरण को संदर्भित करती है जो समाज और ब्रह्मांड की व्यवस्था को बनाए रखते हैं। धर्म व्यक्ति को सही और गलत के बीच भेद करना सिखाता है और उसे अनुशासित जीवन जीने के लिए प्रेरित करता है। यह अन्य पुरुषार्थों (अर्थ, काम और मोक्ष) के लिए एक नैतिक आधार प्रदान करता है और व्यक्तिगत कल्याण के साथ सामाजिक हित को जोड़ता है।

118. (B) सामाजिक संस्थाएं
सामाजिक संस्थाएं कार्य और विचार के वे स्थापित और स्थायी प्रतिमान हैं जो समाज की केंद्रीय आवश्यकताओं, जैसे परिवार,

Downloaded from www.pdf.tube

शिक्षा, धर्म और सरकार को व्यवस्थित करते हैं। संस्थाएं अमूर्त होती हैं और व्यक्तिगत इच्छाओं के बजाय सामाजिक प्रतिमानों और नियमों पर टिकी होती हैं। ये समाज के सदस्यों को व्यवहार के स्वीकृत तरीके प्रदान करती हैं और सामाजिक संबंधों को स्थिरता तथा निरंतरता प्रदान करती हैं। संस्थाओं के माध्यम से ही सांस्कृतिक मूल्यों का हस्तांतरण होता है और एक सुव्यवस्थित सामाजिक जीवन की नींव रखी जाती है।

119. (D) संपूर्ण व्यक्तियों के रूप में देखे जाते हैं।
प्राथमिक समूह की एक प्रमुख विशेषता यह है कि इसके सदस्यों के बीच संबंध अत्यंत घनिष्ठ और व्यक्तिगत होते हैं। यहाँ व्यक्ति को उसकी किसी विशिष्ट भूमिका या लाभ के लिए नहीं, बल्कि उसके संपूर्ण व्यक्तित्व के लिए महत्व दिया जाता है। प्राथमिक समूहों, जैसे परिवार या मित्रों की मंडली में, अंतःक्रियाएं भावनात्मक और निस्वार्थ होती हैं। व्यक्ति अपनी भावनाओं और विचारों को खुलकर साझा कर सकता है क्योंकि यहाँ संबंध स्वयं में एक साध्य होते हैं, न कि किसी बाहरी उद्देश्य को प्राप्त करने का साधन मात्र।

120. (B) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।
समाजशास्त्र में भूमिका समुच्चय और परिस्थिति समुच्चय दो अलग-अलग लेकिन महत्वपूर्ण अवधारणाएं हैं। भूमिका समुच्चय एक ही परिस्थिति (जैसे शिक्षक) से जुड़ी विभिन्न भूमिकाओं की श्रृंखला को संदर्भित करता है। इसके विपरीत, परिस्थिति समुच्चय उन सभी विभिन्न परिस्थितियों या पदों (जैसे पिता, चिकित्सक, मित्र) के संग्रह को कहा जाता है जिन्हें एक व्यक्ति एक ही समय में धारण करता है। अतः दोनों कथनों में दी गई परिभाषाओं को आपस में बदल दिया गया है, जिससे वे समाजशास्त्रीय रूप से गलत और भ्रामक सिद्ध होते हैं।

121. (C) अपने पूर्वजों
हिंदू परंपरा के अनुसार, 'पितृ ऋण' वह ऋण है जो प्रत्येक व्यक्ति पर अपने माता-पिता और पूर्वजों के प्रति होता है। यह ऋण व्यक्ति को जीवन और वंश की निरंतरता प्रदान करने के लिए उनके प्रति कृतज्ञता व्यक्त करने का एक माध्यम है। इस ऋण से मुक्ति पाने के लिए संतानोत्पत्ति, पूर्वजों का तर्पण और उनके प्रति सम्मान प्रकट करने वाले धार्मिक कृत्य किए जाते हैं। यह अवधारणा समाज में पीढ़ीगत निरंतरता, परिवार के महत्व और पूर्वजों के प्रति सम्मान की सांस्कृतिक जड़ता को गहराई से स्थापित करती है।

122. (A) परिस्थिति क्रम
परिस्थिति क्रम की अवधारणा उन सामाजिक पदों की एक व्यवस्थित श्रृंखला को प्रदर्शित करती है जिन्हें एक व्यक्ति अपने जीवन काल में समय के साथ क्रमिक रूप से धारण करता है। अविवाहित रहने से लेकर पितामह बनने तक की यात्रा जीवन चक्र के विभिन्न पड़ावों और उनके साथ बदलने वाले सामाजिक पदों को दर्शाती है। यह परिस्थिति समुच्चय से भिन्न है क्योंकि यह कालानुक्रमिक प्रगति पर आधारित है। यह अवधारणा हमें यह समझने में मदद करती है कि किस प्रकार व्यक्ति की सामाजिक पहचान और जिम्मेदारियां आयु के साथ निरंतर विकसित होती हैं।

123. (D) संस्कृति जीवन जीने का तरीका है, जबकि समाज उन लोगों का समूह है जो इसे साझा करते हैं।
समाज और संस्कृति के बीच एक गहरा और पूरक संबंध है, लेकिन समाजशास्त्रीय रूप से वे भिन्न हैं। समाज उन लोगों के संगठित समूह को संदर्भित करता है जो निरंतर अंतःक्रिया करते हैं और एक साझा क्षेत्र में रहते हैं। इसके विपरीत, संस्कृति उन विश्वासों, मूल्यों, भाषा और भौतिक वस्तुओं का योग है जो उस समाज के लोगों के जीवन जीने के तरीके को परिभाषित करती है। सरल शब्दों में, समाज लोगों का मेल है और संस्कृति वह धागा है जो उन्हें साझा व्यवहारों और विचारों के माध्यम से एक साथ बांधता है।

124. (B) शासन और युद्ध।
पारंपरिक हिंदू वर्ण व्यवस्था में 'क्षत्रिय' वर्ण का मुख्य उत्तरदायित्व समाज की रक्षा करना, शासन करना और न्याय सुनिश्चित करना था। क्षत्रियों से यह अपेक्षा की जाती थी कि वे शारीरिक रूप से बलवान, साहसी और युद्ध कला में निपुण हों ताकि वे बाहरी आक्रमणों से समाज को बचा सकें और आंतरिक व्यवस्था बनाए रख सकें। यह वर्ग समाज के राजनीतिक और सैन्य नेतृत्व का प्रतिनिधित्व करता था। उनके कर्तव्यों में प्रजा का पालन, दान देना और धर्म की रक्षा के लिए शस्त्र उठाना सर्वोपरि माना जाता था।

125. (C) सड़क पर प्रदर्शन देख रही भीड़
सामाजिक संस्थाएँ वे सुव्यवस्थित और स्थायी प्रणालियाँ होती हैं जो समाज की बुनियादी आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए नियमों और प्रतिमानों का निर्माण करती हैं। विवाह, अर्थव्यवस्था और धर्म इसके प्रमुख उदाहरण हैं क्योंकि इनमें स्थायित्व और आधिकारिक प्रतिमान होते हैं। इसके विपरीत, सड़क पर प्रदर्शन देख रही भीड़ एक अस्थायी और असंगठित समूह (पुंज) है, जिसमें न तो कोई स्थायी नियम होते हैं और न ही कोई सुव्यवस्थित सामाजिक उद्देश्य। अतः भीड़ को एक संस्था के रूप में वर्गीकृत नहीं किया जा सकता है।

NODIA

126. (A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
अंतः समूह और बाह्य समूह के बीच का सामाजिक विभाजन अक्सर संघर्ष का कारण बनता है। जब व्यक्ति अपने समूह (अंतः समूह) के प्रति गहरी वफादारी और अपनेपन का भाव रखता है, तो वह स्वाभाविक रूप से दूसरे समूहों (बाह्य समूहों) को प्रतिस्पर्धी या निम्न समझने लगता है। यह "हम" बनाम "वे" की भावना पूर्वाग्रहों और नकारात्मक धारणाओं को जन्म देती है, जिससे समूहों के बीच तनाव और संघर्ष की संभावना बढ़ जाती है। समाजशास्त्र में यह अवधारणा समूह की एकजुटता और अंतर-समूह संबंधों को समझने के लिए महत्वपूर्ण है।

127. (A) परिस्थिति और भूमिका
जब किसी व्यक्ति की सामाजिक स्थिति या पद में परिवर्तन होता है, तो उसके साथ जुड़ी भूमिकाओं और व्यवहार संबंधी अपेक्षाओं में भी बदलाव आता है। एक नवनियुक्त प्रबंधक के लिए अपने पूर्व सहकर्मियों का उच्चाधिकारी बनना एक नई 'परिस्थिति' है, जिसके लिए एक भिन्न 'भूमिका' निर्वहन की आवश्यकता होती है। यह संक्रमण अक्सर तनाव पैदा करता है

क्योंकि पुराने संबंधों की समानता और नए पद के अधिकार के बीच सामंजस्य बिठाना कठिन होता है। यह स्थिति सामाजिक संरचना में पदों के गतिशील स्वभाव और उनके मनोवैज्ञानिक प्रभाव को दर्शाती है।

128. (B) P-3, Q-1, R-4, S-2
आश्रम व्यवस्था के माध्यम से मानव जीवन को चार चरणों में बांटकर प्रत्येक के लिए विशिष्ट सामाजिक भूमिकाएं निर्धारित की गई हैं। ब्रह्मचर्य चरण शिक्षा और ज्ञान अर्जन का काल है। गृहस्थ चरण में व्यक्ति विवाह और पारिवारिक उत्तरदायित्वों का कुशल निर्वहन करता है। वानप्रस्थ चरण सांसारिक मोह से क्रमिक वैराग्य और सामाजिक सेवा की ओर संकेत करता है। संन्यास जीवन का अंतिम और सर्वोच्च चरण है, जहाँ व्यक्ति पूर्ण त्याग अपनाकर मोक्ष की खोज करता है। यह व्यवस्था अनुशासित और संतुलित जीवन के लिए एक आदर्श ढांचा प्रदान करती है।

129. (B) शतरंज खेलने के विशिष्ट, साझा हित को पूरा करना।
समिति एक ऐसा औपचारिक समूह है जिसे किसी विशेष और सीमित हित या लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए सचेत रूप से संगठित किया जाता है। शतरंज क्लब जैसी समिति का निर्माण मुख्य रूप से उस खेल के प्रति साझा रुचि रखने वाले लोगों को एक मंच प्रदान करने के लिए किया जाता है। इसकी सदस्यता स्वैच्छिक होती है और इसकी गतिविधियाँ केवल उस विशिष्ट उद्देश्य तक ही सीमित रहती हैं। समिति समुदाय की तरह जीवन जीने का संपूर्ण तरीका नहीं है, बल्कि यह केवल चुनिंदा हितों की पूर्ति का साधन है।

130. (C) 1, 2 और 3
समाजशास्त्र में परिस्थिति केवल आरोपित नहीं होती, बल्कि यह अर्जित भी हो सकती है। भूमिका समुच्चय एक व्यक्ति की सभी परिस्थितियों से नहीं, बल्कि केवल एक ही परिस्थिति से जुड़ी भूमिकाओं की श्रृंखला को कहते हैं। भूमिका संघर्ष तब होता है जब दो या दो से अधिक अलग-अलग परिस्थितियों के बीच की विरोधाभासी अपेक्षाओं से उत्पन्न होता है, न कि एक ही परिस्थिति से। अतः ये तीनों कथन समाजशास्त्रीय अवधारणाओं की गलत व्याख्या प्रस्तुत करते हैं। परिस्थिति, भूमिका और संघर्ष के बीच का संबंध अधिक सूक्ष्म और स्पष्ट रूप से परिभाषित होता है।

131. (C) राज्य
राज्य वह सर्वोच्च सामाजिक संस्था है जो समाज में शक्ति के वितरण, कानून बनाने और सामूहिक निर्णय लेने की प्रक्रिया को विनियमित करती है। यह संस्था सुनिश्चित करती है कि समाज में व्यवस्था बनी रहे और संसाधनों तथा अधिकारों का प्रयोग न्यायसंगत तरीके से किया जाए। राज्य के पास अधिकार और संप्रभुता होती है, जो उसे नागरिकों के व्यवहार को निर्देशित करने और उल्लंघन की स्थिति में दंड देने की शक्ति प्रदान करती है। यह समाज के राजनीतिक जीवन का केंद्र बिंदु है जो शासन प्रणाली को स्थिरता देता है।

132. (D) सामुदायिक भावना
सामुदायिक भावना वह मनोवैज्ञानिक तत्व है जो एक साझा भौगोलिक क्षेत्र में रहने वाले लोगों को एक-दूसरे के साथ भावनात्मक रूप से जोड़ता है। इसे 'हम-की भावना' भी कहा जाता है, जो सदस्यों के बीच एकता, वफादारी और साझा पहचान की गहरी अनुभूति पैदा करती है। यह भावना केवल भौतिक निकटता से नहीं, बल्कि साझा परंपराओं, मूल्यों और निरंतर सामाजिक अंतःक्रिया से विकसित होती है। यही वह आधार है जो एक समुदाय को मात्र लोगों के जमावड़े या समिति से अलग और अधिक स्थायी सामाजिक इकाई बनाता है।

133. (C) भूमिका
भूमिका उस व्यवहारिक प्रतिमान को संदर्भित करती है जिसकी समाज किसी विशेष परिस्थिति या पद को धारण करने वाले व्यक्ति से अपेक्षा करता है। परिस्थिति सामाजिक संरचना में एक स्थान है, जबकि भूमिका उस स्थान पर कार्य करने का तरीका है। उदाहरण के लिए, 'चिकित्सक' एक परिस्थिति है और रोगियों का उपचार करना उसकी भूमिका है। भूमिकाएं समाज में आचरण को पूर्वानुमेय बनाती हैं और व्यक्तियों के बीच होने वाली अंतःक्रियाओं को एक निश्चित दिशा और अर्थ प्रदान करती हैं, जिससे सामाजिक व्यवस्था सुचारु रूप से चलती है।

134. (B) उपहार प्राप्त करने के बाद "धन्यवाद" कहना।
प्रतिमान व्यवहार के वे विशिष्ट और साझा नियम हैं जो किसी विशेष स्थिति में उचित आचरण का मार्गदर्शन करते हैं। "धन्यवाद" कहना एक शिष्टाचार आधारित प्रतिमान (लोकाचार) है, जो सामाजिक अंतःक्रिया में कृतज्ञता व्यक्त करने का एक स्वीकृत तरीका है। इसके विपरीत, ईमानदारी या स्वतंत्रता अमूर्त मूल्य हैं, और खुशी की तलाश एक व्यक्तिगत आकांक्षा है। प्रतिमान हमें बताते हैं कि सामाजिक परिस्थितियों में दूसरों के साथ कैसा व्यवहार करना चाहिए, जिससे समाज में सद्भाव, शिष्टता और परस्पर सहयोग की भावना निरंतर बनी रहती है।

135. (D) बलिदान और अनुष्ठानिक आहुति के प्रदर्शन से।
हिंदू दर्शन में 'यज्ञ' एक अत्यंत महत्वपूर्ण अनुष्ठानिक बलिदान या आहुति है। यह पवित्र अग्नि के माध्यम से देवताओं को अर्पण करने की एक प्राचीन प्रक्रिया है, जिसमें विशिष्ट मंत्रों और विधि-विधानों का पालन किया जाता है। यज्ञ का उद्देश्य केवल धार्मिक लाभ प्राप्त करना ही नहीं, बल्कि ब्रह्मांडीय व्यवस्था (ऋत) को बनाए रखना और सामाजिक कल्याण सुनिश्चित करना भी माना जाता है। यह भारतीय संस्कृति की प्राचीन परंपराओं और अनुष्ठानिक जीवन पद्धति का एक अत्यंत गहरा और अविभाज्य अंग है।

136. (A) द्वितीयक समूह के भीतर एक प्राथमिक समूह।
एक बड़ा कार्यालय एक द्वितीयक समूह है जहाँ संबंध औपचारिक और अवैयक्तिक होते हैं। हालाँकि, इस बड़े ढांचे के भीतर जब कुछ कर्मचारी करीबी दोस्त बन जाते हैं और नियमित रूप से मिलते हैं, तो वे एक प्राथमिक समूह का निर्माण करते हैं। यहाँ प्राथमिक समूह की घनिष्ठता और भावनात्मक जुड़ाव

Click Here to Buy book on Amazon

द्वितीयक समूह के औपचारिक वातावरण में भी मौजूद रहता है। यह उदाहरण दर्शाता है कि किस प्रकार छोटे और व्यक्तिगत समूह बड़े और औपचारिक संगठनों के भीतर स्वाभाविक रूप से उभर सकते हैं, जो सदस्यों को भावनात्मक समर्थन देते हैं।

137. (C) परिस्थिति समुच्चय - छात्र, कर्मचारी, बेटे, दोस्त।
परिस्थिति समुच्चय की अवधारणा एक ही व्यक्ति द्वारा एक ही समय में धारित विभिन्न सामाजिक पदों या स्थितियों के संग्रह को संदर्भित करती है। यदि कोई व्यक्ति एक साथ छात्र, कर्मचारी, पुत्र और मित्र है, तो ये सभी पद मिलकर उसका परिस्थिति समुच्चय बनाते हैं। विकल्प (A) और (B) में दी गई स्थितियाँ क्रमशः भूमिका तनाव और भूमिका संघर्ष के उदाहरण हैं, लेकिन उन्हें गलत तरीके से परिभाषित किया गया है। विकल्प (D) भी गलत है क्योंकि परिस्थिति क्रम समय के साथ बदलने वाले पदों की एक लंबी श्रृंखला को कहते हैं।

138. (A) सामाजिक जीवन की अंतर्निहित व्यवस्था को समझना।
समाजशास्त्र का आधारभूत उद्देश्य समाज की संरचना, सामाजिक संस्थाओं और मानवीय अंतःक्रियाओं के पीछे की कार्यप्रणाली को वैज्ञानिक रूप से समझना है। यह विषय सामाजिक घटनाओं का वस्तुनिष्ठ विश्लेषण करता है ताकि समाज में स्थिरता, परिवर्तन और व्यवस्था के कारणों को स्पष्ट किया जा सके। समाजशास्त्र व्यक्तिगत समस्याओं को व्यापक सामाजिक परिप्रेक्ष्य में रखकर देखने का प्रयास करता है। इसका लक्ष्य समाज को बेहतर तरीके से समझने के लिए ठोस प्रमाण और सिद्धांत प्रस्तुत करना है, न कि नैतिक निर्णय लेना या श्रेष्ठता का दावा करना।

139. (D) यह प्रतिमानों और नियमों की एक प्रणाली है।
सामाजिक संस्था की मुख्य विशेषता यह है कि यह व्यक्तियों का कोई भौतिक समूह नहीं है, बल्कि यह व्यवहार को विनियमित करने वाले स्थापित प्रतिमानों, नियमों और मूल्यों की एक अमूर्त प्रणाली है। संस्थाएँ समाज की महत्वपूर्ण आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए स्थायी ढांचा प्रदान करती हैं, जैसे विवाह, परिवार या कानून। इनमें एक प्रकार का स्थायित्व होता है और ये पीढ़ी-दर-पीढ़ी चलती रहती हैं। संस्थाएँ अमूर्त होती हैं, यद्यपि उन्हें संगठनों या विशिष्ट भौतिक भवनों के माध्यम से सामाजिक रूप से अभिव्यक्त किया जा सकता है।

140. (C) कथन I सही है, लेकिन कथन II गलत है।
परिस्थिति समुच्चय में वे सभी पद शामिल होते हैं जो एक व्यक्ति एक ही समय में धारण करता है, जिनमें आरोपित (जन्म से प्राप्त) और अर्जित (प्रयास से प्राप्त) दोनों स्थितियाँ होती हैं। आरोपित परिस्थिति व्यक्ति को बिना किसी प्रयास के समाज या जैविक आधार पर मिलती है, जैसे जाति या लिंग। इसके विपरीत, अर्जित परिस्थिति वह है जो व्यक्ति अपनी योग्यता, कौशल और परिश्रम के माध्यम से हासिल करता है। अतः कथन II गलत है क्योंकि यह आरोपित परिस्थिति को व्यक्तिगत प्रयास का परिणाम बताता है।

141. (C) मोक्ष
मोक्ष हिंदू जीवन दर्शन का चतुर्थ और अंतिम पुरुषार्थ है, जो मानव जीवन के सर्वोच्च लक्ष्य को प्रदर्शित करता है। इसका अर्थ है जन्म और मृत्यु के पुनरावर्ती चक्र से पूरी तरह मुक्ति प्राप्त करना और आत्मा का परमात्मा के साथ मिलन होना। मोक्ष की प्राप्ति का अर्थ सभी सांसारिक बंधनों, इच्छाओं और दुखों का अंत होना है। यह आध्यात्मिक पूर्णता और परम शांति की वह अवस्था है जिसे प्राप्त करना ही मनुष्य का अंतिम ध्येय माना गया है, जो अन्य सभी पुरुषार्थों से ऊपर है।

142. (A) 3, 2, 1, 4
हिंदू संस्कारों का यह अनुक्रम मानव जीवन के जैविक और सामाजिक विकास के विभिन्न चरणों को तार्किक रूप से दर्शाता है। 'गर्भाधान' जन्म से पूर्व का प्रथम संस्कार है जो जीवन की नींव रखता है। 'उपनयन' बालक के शिक्षा और बौद्धिक विकास की शुरुआत का प्रतीक है। 'विवाह' व्यक्ति के पारिवारिक उत्तरदायित्वों और सामाजिक जीवन में प्रवेश को चिह्नित करता है। अंत में, 'अन्त्येष्टि' जीवन के अंत का संस्कार है। यह व्यवस्थित क्रम व्यक्ति को अनुशासित और संस्कारित जीवन जीने के लिए एक आध्यात्मिक ढांचा प्रदान करता है।

NODIA

143. (A) एक साझा दुश्मन या बाह्य समूह की उपस्थिति।
अंतः समूह की 'हम-की भावना' अक्सर तब अधिक प्रबल हो जाती है जब समूह को किसी बाहरी खतरे या प्रतिद्वंद्वी समूह (बाह्य समूह) का सामना करना पड़ता है। बाहरी चुनौती या साझा दुश्मन की उपस्थिति समूह के सदस्यों को मतभेदों को भुलाकर एकजुट होने के लिए प्रेरित करती है। यह बाह्य दबाव समूह की आंतरिक पहचान को स्पष्ट करता है और वफादारी की भावना को गहरा बनाता है। समाजशास्त्र में यह देखा गया है कि समूहों के बीच संघर्ष अक्सर उनके आंतरिक सहयोग और सामूहिकता को काफी मजबूत करने का कार्य करता है।

144. (B) भूमिका समुच्चय
भूमिका समुच्चय की अवधारणा उन सभी भूमिकाओं के संग्रह को संदर्भित करती है जो किसी एक सामाजिक परिस्थिति या पद से जुड़ी होती हैं। रॉबर्ट मर्टन के अनुसार, एक अकेला पद (जैसे चिकित्सक) व्यक्ति को विभिन्न समूहों के साथ अलग-अलग भूमिकाओं में जोड़ता है, जैसे रोगी के साथ, परिचारिका के साथ और अन्य चिकित्सकों के साथ। यह अवधारणा दर्शाती है कि समाज में एक पद धारण करने का अर्थ केवल एक ही कार्य करना नहीं है, बल्कि यह एक जटिल सामाजिक जाल में विभिन्न उत्तरदायित्वों को निभाना है।

145. (A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
प्रतिमान और मूल्य किसी भी संस्कृति के अनिवार्य आधार स्तंभ हैं। मूल्य समाज के वे व्यापक आदर्श हैं जो बताते हैं कि क्या वांछनीय है, जबकि प्रतिमान उन आदर्शों को दैनिक व्यवहार में लागू करने वाले विशिष्ट नियम हैं। ये दोनों मिलकर एक ऐसा साझा ढांचा प्रदान करते हैं जो लोगों के आचरण को निर्देशित और नियंत्रित करता है। इससे सामाजिक जीवन में पूर्वानुमान और व्यवस्था बनी रहती है, जिससे समाज का अस्तित्व और

उसकी आंतरिक एकजुटता बिना किसी बड़े विघटन के लंबे समय तक सुरक्षित रहती है।

146. (A) द्वितीयक समूह
कारखाना, विद्यालय और चिकित्सालय जैसे संगठन द्वितीयक समूहों की श्रेणी में आते हैं क्योंकि इनमें संबंध मुख्य रूप से औपचारिक, लक्ष्य-उन्मुख और अवैयक्तिक होते हैं। इन समूहों का आकार बड़ा होता है और इनमें अंतःक्रियाएं किसी विशिष्ट उद्देश्य, जैसे उत्पादन, शिक्षा या उपचार, को प्राप्त करने के लिए की जाती हैं। यहाँ व्यक्ति का महत्व उसके पद और कार्यक्षमता से निर्धारित होता है। प्राथमिक समूहों के विपरीत, यहाँ भावनात्मक जुड़ाव कम होता है और संविदात्मक संबंधों तथा नियमों का पालन करना सबसे अधिक महत्वपूर्ण माना जाता है।

147. (C) आरोपित स्थितियाँ
आरोपित परिस्थितियाँ वे सामाजिक पद हैं जो व्यक्ति को उसके जन्म या जैविक विशेषताओं के आधार पर समाज द्वारा दिए जाते हैं, जिसमें उसका अपना कोई व्यक्तिगत प्रयास या नियंत्रण नहीं होता। जाति, लिंग, आयु और जन्म का परिवार इसके प्रमुख उदाहरण हैं। ये स्थितियाँ व्यक्ति को उसके सामाजिक परिवेश में एक पूर्व-निर्धारित पहचान प्रदान करती हैं। इसके विपरीत, अर्जित स्थितियाँ वे होती हैं जिन्हें व्यक्ति अपनी शिक्षा, कौशल और परिश्रम के माध्यम से समाज में स्वयं प्राप्त करता है, जैसे कोई व्यवसाय या उच्च शैक्षणिक पदवी।

148. (B) केवल 1 और 2
समाजशास्त्र में समुदाय और समिति दो महत्वपूर्ण अवधारणाएं हैं। समुदाय साझा क्षेत्र और 'हम-की भावना' पर आधारित होता है, जबकि समिति एक विशिष्ट लक्ष्य के लिए संगठित समूह है। संस्था के बारे में तीसरा कथन गलत है क्योंकि संस्था व्यक्तियों के समूह को नहीं, बल्कि समाज की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए स्थापित व्यवहार के अमूर्त नियमों, प्रतिमानों और स्थापित कार्यप्रणालियों को संदर्भित करती है। संस्थाएं वे विधियां हैं जिनके माध्यम से समूह के सदस्य अपने लक्ष्यों को प्राप्त करते हैं और सामाजिक व्यवस्था बनाए रखते हैं।

149. (C) अर्थव्यवस्था
अर्थव्यवस्था एक प्रमुख सामाजिक संस्था है जो समाज के जीवित रहने के लिए आवश्यक वस्तुओं और सेवाओं के उत्पादन, विनिमय, वितरण तथा उपभोग की पूरी प्रक्रिया को व्यवस्थित करती है। यह संस्था निर्धारित करती है कि संसाधनों का उपयोग किस प्रकार किया जाएगा और समाज की भौतिक आवश्यकताओं की पूर्ति कैसे होगी। चाहे वह बाजार प्रणाली हो या पारंपरिक विनिमय, अर्थव्यवस्था के नियम ही समाज में श्रम विभाजन और धन के प्रवाह को नियंत्रित करते हैं, जिससे सामाजिक विकास और स्थिरता का आधार तैयार होता है।

150. (A) P-3, Q-4, R-1, S-2
समाजशास्त्र में समूहों का वर्गीकरण उनके संबंधों की प्रकृति और उद्देश्य के आधार पर किया जाता है। प्राथमिक समूह घनिष्ठ और दीर्घकालिक संबंधों द्वारा पहचाने जाते हैं, जबकि द्वितीयक समूहों में संबंध अवैयक्तिक और साधनपरक होते हैं। संदर्भ समूह वह मानक है जिसका उपयोग व्यक्ति तुलना के लिए करता है। अंतः समूह में सदस्यों के बीच 'हम-की भावना' और वफादारी की तीव्र अनुभूति होती है। ये सभी अवधारणाएं समाज में मानवीय अंतःक्रियाओं के विभिन्न स्तरों और स्वरूपों को स्पष्ट करने में सहायक हैं।

151. (D) अन्य वर्णों की सेवा
पारंपरिक हिंदू वर्ण व्यवस्था में 'शूद्र' को चतुर्थ वर्ण माना गया है, जिसका मुख्य उत्तरदायित्व समाज के अन्य तीनों वर्णों (ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य) की सेवा करना और श्रम संबंधी कार्यों को पूरा करना था। यह व्यवस्था प्राचीन काल में श्रम विभाजन पर आधारित थी, जहाँ प्रत्येक वर्ण के लिए विशिष्ट कर्तव्य निर्धारित थे। शूद्रों की भूमिका समाज की आधारभूत सेवाओं को सुचारू रूप से चलाने और अन्य वर्गों के कार्यों में सहायता करने तक सीमित थी, जिससे सामाजिक व्यवस्था की कार्यात्मक निरंतरता बनी रहती थी।

152. (A) किसी समूह या समाज में सामाजिक रूप से परिभाषित पद को।
समाजशास्त्र में 'परिस्थिति' का तात्पर्य समाज की संरचना में व्यक्ति द्वारा प्राप्त एक मान्यता प्राप्त सामाजिक पद या स्थिति से है। यह पद समाज द्वारा परिभाषित होता है और इसके साथ कुछ निश्चित अधिकार, कर्तव्य और सामाजिक अपेक्षाएं जुड़ी होती हैं। परिस्थिति व्यक्ति को सामाजिक पदानुक्रम में एक पहचान और स्थान प्रदान करती है। यह परिस्थिति आरोपित (जन्म से प्राप्त) या अर्जित (व्यक्तिगत प्रयासों से प्राप्त) हो सकती है, जो अन्य व्यक्तियों के साथ उसके सामाजिक संबंधों और अंतःक्रियाओं को एक निश्चित ढांचा प्रदान करती है।

153. (C) सामाजिक संस्था
धर्म को एक सामाजिक संस्था के रूप में देखा जाता है जब उसका अध्ययन समाज को एकजुट करने, साझा मूल्य प्रदान करने और सामूहिक एकजुटता बनाने की उसकी शक्ति के संदर्भ में किया जाता है। एमिल दुर्खीम जैसे समाजशास्त्रियों के अनुसार, धार्मिक अनुष्ठान समाज के सदस्यों के बीच 'हम-की भावना' और सामूहिक चेतना को मजबूत करते हैं। एक संस्था के रूप में, धर्म पवित्र और अलौकिक से संबंधित विश्वासों और प्रथाओं की एक व्यवस्थित प्रणाली प्रदान करता है जो सामाजिक व्यवस्था और सांस्कृतिक निरंतरता बनाए रखने में सहायक होती है।

154. (A) एक ही समय में एक से अधिक स्थितियाँ धारण करते हैं।
बहुविध भूमिका की अवधारणा उस वास्तविकता को दर्शाती है जहाँ एक व्यक्ति समाज में एक ही समय में कई अलग-अलग पदों या परिस्थितियों को धारण करता है। उदाहरण के लिए, एक ही व्यक्ति किसी परिवार में संतान, किसी कार्यालय में कर्मचारी और किसी खेल टीम में खिलाड़ी हो सकता है। प्रत्येक परिस्थिति के साथ अलग-अलग व्यवहार संबंधी अपेक्षाएं और जिम्मेदारियां जुड़ी होती हैं। यह स्थिति आधुनिक समाज की जटिलता को प्रदर्शित करती है जहाँ व्यक्ति को विभिन्न क्षेत्रों

NODIA

में अपनी सामाजिक भूमिकाओं के बीच निरंतर संतुलन बनाए रखना पड़ता है।

155. (D) यह लोगों के जीवन पर समाज के प्रभाव का विश्लेषण करता है।
समाजशास्त्रीय परिप्रेक्ष्य का मुख्य केंद्र बिंदु यह समझना है कि व्यापक सामाजिक संरचनाएं, संस्थाएं और सांस्कृतिक शक्तियां किस प्रकार व्यक्तिगत जीवन, विचारों और व्यवहार को आकार देती हैं। यह दृष्टिकोण हमें बताता है कि व्यक्ति के जीवन के अनुभव केवल उसकी निजी पसंद या जीवविज्ञान का परिणाम नहीं हैं, बल्कि वे उस सामाजिक संदर्भ से गहराई से प्रभावित होते हैं जिसमें वह रहता है। यह परिप्रेक्ष्य हमें व्यक्तिगत मुद्दों को सार्वजनिक समस्याओं और सामाजिक प्रतिमानों के व्यापक संदर्भ में देखने के लिए पूरी तरह प्रेरित करता है।

156. (B) परिस्थिति और भूमिका
परिस्थिति और भूमिका को सामाजिक संरचना के आधारभूत निर्माण खंड माना जाता है। परिस्थिति समाज में व्यक्ति द्वारा धारित एक निश्चित पद है, जबकि भूमिका उस पद से जुड़े व्यवहारों और कर्तव्यों का क्रियान्वयन है। ये दोनों अवधारणाएं एक-दूसरे के पूरक हैं; बिना पद के कोई भूमिका नहीं होती और बिना भूमिका के पद का कोई व्यावहारिक अर्थ नहीं होता। इनके माध्यम से ही सामाजिक अंतःक्रियाएं संगठित होती हैं और समाज को एक सुव्यवस्थित ढांचा प्राप्त होता है, जो सामाजिक जीवन की स्थिरता और निरंतरता सुनिश्चित करता है।

157. (C) कथन I सही है, लेकिन कथन II गलत है।
'समुदाय' एक ऐसी सामाजिक इकाई है जो एक निश्चित भौगोलिक क्षेत्र और सदस्यों के बीच 'हम-की भावना' द्वारा पहचानी जाती है। इसके विपरीत, 'समिति' व्यापक मानवीय आवश्यकताओं के बजाय किसी विशेष और सीमित लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए जानबूझकर बनाई जाती है। समिति का स्वरूप औपचारिक होता है और इसके उद्देश्य पूर्व-निर्धारित होते हैं। अतः कथन II गलत है क्योंकि समिति का गठन सामान्य जीवन के बजाय विशिष्ट हितों की पूर्ति के लिए किया जाता है, जबकि समुदाय जीवन जीने का एक संपूर्ण माध्यम प्रदान करता है।

158. (D) भूमिका तनाव
भूमिका तनाव वह स्थिति है जब किसी व्यक्ति को अपनी एक ही परिस्थिति या पेशेवर पद से जुड़ी विभिन्न अपेक्षाओं के बीच सामंजस्य बिठाने में कठिनाई होती है। एक अधिवक्ता के रूप में, उसे अपने पक्षकार का बचाव करने के पेशेवर कर्तव्य और अपनी व्यक्तिगत नैतिकता के बीच जो आंतरिक संघर्ष महसूस होता है, वह भूमिका तनाव का एक सटीक उदाहरण है। यहाँ संघर्ष दो अलग पदों के बीच नहीं, बल्कि एक ही पद के भीतर निहित विरोधाभासी मांगों के कारण है। यह मानसिक खिंचाव और नैतिक दुविधा उत्पन्न करता है।

159. (A) धर्म
पुरुषार्थ के ढांचे के अंतर्गत, 'अर्थ' (भौतिक समृद्धि) और 'काम' (इच्छाओं की पूर्ति) को तभी सार्थक और स्वीकार्य माना जाता है जब वे 'धर्म' (नैतिक कर्तव्य) के सिद्धांतों द्वारा नियंत्रित हों। धर्म वह आधारभूत नियम है जो सुनिश्चित करता है कि भौतिक लाभ और सुख की खोज अनैतिक या विनाशकारी न हो जाए। धर्म व्यक्ति को मर्यादा में रहकर अपने लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए प्रेरित करता है। बिना धर्म के अर्थ और काम की खोज समाज में अराजकता और व्यक्तिगत पतन का कारण बन सकती है।

160. (B) एक औपचारिक कानूनी चार्टर
एक सामाजिक समूह के निर्माण के लिए सदस्यों के बीच निरंतर अंतःक्रिया, साझा हित और अपनेपन या पहचान की भावना का होना अनिवार्य है। ये तत्व समूह को एकजुटता और स्थायित्व प्रदान करते हैं। हालाँकि, एक औपचारिक कानूनी घोषणापत्र सभी समूहों के लिए आवश्यक नहीं है, विशेषकर अनौपचारिक समूहों जैसे मित्रों की मंडली या परिवार के लिए। कानूनी घोषणापत्र केवल औपचारिक संगठनों या समितियों की विशेषता होती है। एक समूह के लिए मनोवैज्ञानिक जुड़ाव और सामाजिक अंतःक्रिया ही उसकी वास्तविक और सबसे महत्वपूर्ण पहचान होती है।

161. (B) द्वितीयक समूह
छात्र-शिक्षक संबंध आमतौर पर एक द्वितीयक समूह का हिस्सा होता है क्योंकि यह संबंध औपचारिक, लक्ष्य-उन्मुख और अवैयक्तिक होता है। यहाँ अंतःक्रिया का प्राथमिक उद्देश्य ज्ञान का हस्तांतरण और शैक्षणिक लक्ष्यों को प्राप्त करना है। प्राथमिक समूहों के विपरीत, यहाँ सदस्यों के बीच घनिष्ठ भावनात्मक लगाव कम होता है और संबंध संविदात्मक तथा सीमित अवधि के लिए होते हैं। यह समूह किसी विशिष्ट कार्य को पूरा करने के लिए एक माध्यम के रूप में कार्य करता है, जो आधुनिक शिक्षा प्रणाली के संगठनात्मक ढांचे की एक मुख्य विशेषता है।

162. (A) राज्य के प्रति ऋण
हिंदू परंपरा के 'ऋण-त्रय' के अंतर्गत तीन प्रमुख आध्यात्मिक ऋणों का वर्णन किया गया है: देव ऋण (देवताओं के प्रति), ऋषि ऋण (गुरुओं और ज्ञान के प्रति) और पितृ ऋण (पूर्वजों और माता-पिता के प्रति)। इन ऋणों को चुकाना व्यक्ति का सर्वोच्च नैतिक और धार्मिक कर्तव्य माना जाता है। यद्यपि समाज और राष्ट्र के प्रति वफादारी महत्वपूर्ण है, परंतु 'राज्य के प्रति ऋण' जैसी कोई स्वतंत्र श्रेणी पारंपरिक धार्मिक ऋणों की शास्त्रीय सूची में शामिल नहीं है। ये ऋण व्यक्ति के आध्यात्मिक और पारिवारिक दायित्वों पर अधिक बल देते हैं।

163. (C) परिस्थिति समुच्चय
परिस्थिति समुच्चय की अवधारणा उन सभी विभिन्न पदों या सामाजिक स्थितियों के कुल योग को संदर्भित करती है जिन्हें एक व्यक्ति एक ही समय में समाज के भीतर धारण करता है। चिकित्सक के रूप में व्यवसाय, पुरुष के रूप में लिंग और एशियाई के रूप में जातीयता—ये सभी उस व्यक्ति की बहुआयामी पहचान का हिस्सा हैं। यह समुच्चय दर्शाता है कि

Downloaded from www.pdf.tube

STUDYING FROM PDFs?

THINK AGAIN.

If you are studying only from PDFs,
you are wasting valuable time.

Research shows that learning from

PRINTED BOOKS has up to

4× HIGHER RETENTION

than studying from screens.

PRINT BOOK = BETTER MEMORY

PDF = LOWER RETENTION

Those who study from **PRINTED BOOKS**
move **AHEAD.**

Others are left **BEHIND**
in competition.



In competitive exams,
being average is not enough.

STAY ONE STEP AHEAD.

एक व्यक्ति का सामाजिक अस्तित्व केवल एक पद तक सीमित नहीं है, बल्कि वह समाज के विभिन्न क्षेत्रों और संरचनाओं के साथ कई रूपों में एक साथ जुड़ा हुआ है।

164. (D) आश्रम
हिंदू धर्म में मानव जीवन के अनुशासित विकास के लिए जीवन को चार चरणों में विभाजित करने वाली प्रणाली को 'आश्रम व्यवस्था' कहा जाता है। ये चार चरण—ब्रह्मचर्य (शिक्षा), गृहस्थ (पारिवारिक जीवन), वानप्रस्थ (वैराग्य की ओर बढ़ना) और संन्यास (पूर्ण त्याग)—व्यक्ति को शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक रूप से परिपक्व बनाने का मार्ग प्रशस्त करते हैं। प्रत्येक आश्रम के लिए विशिष्ट कर्तव्य और लक्ष्य निर्धारित हैं, जो व्यक्ति को आयु के अनुसार सांसारिक जिम्मेदारियों और आध्यात्मिक मोक्ष के बीच एक सुंदर संतुलन बनाए रखने में मदद करते हैं।

165. (C) यह सामाजिक विकास के लिए एक स्थिर ढांचा प्रदान करती है।
विवाह एक सार्वभौमिक सामाजिक संस्था है क्योंकि यह समाज के अस्तित्व, निरंतरता और स्थिरता के लिए अनिवार्य कार्यों को पूरा करती है। यह संस्था यौन व्यवहार को विनियमित करती है, बच्चों के प्रजनन और उनके समाजीकरण के लिए एक मान्यता प्राप्त इकाई प्रदान करती है, और नातेदारी तथा उत्तराधिकार की व्यवस्था स्थापित करती है। यद्यपि विवाह के स्वरूप और रीति-रिवाज भिन्न हो सकते हैं, परंतु इसकी आधारभूत भूमिका समाज को एक व्यवस्थित और नैतिक ढांचा प्रदान करना है, जो सामाजिक विकास और पारिवारिक अखंडता के लिए अत्यंत आवश्यक है।

166. (B) सामाजिक श्रेणी
सामाजिक श्रेणी उन लोगों का एक सांख्यिकीय संग्रह है जो एक समान सामाजिक परिस्थिति या विशेषता साझा करते हैं, जैसे शिक्षक, छात्र या एक निश्चित आयु वर्ग के लोग। इसके सदस्यों के बीच जरूरी नहीं कि कोई प्रत्यक्ष अंतःक्रिया हो या वे एक-दूसरे को जानते हों। वे केवल एक पहचान के आधार पर एक साथ वर्गीकृत किए जाते हैं। यह एक सामाजिक समूह से भिन्न है, क्योंकि समूह में निरंतर अंतःक्रिया और साझा पहचान अनिवार्य होती है। सामाजिक श्रेणी केवल समाज के विश्लेषण के लिए एक आधार प्रदान करती है।

167. (D) एक राजतंत्र की रानी
आरोपित परिस्थिति वह सामाजिक पद है जो व्यक्ति को जन्म से या विरासत में मिलता है और जिस पर उसका कोई नियंत्रण नहीं होता। एक राजतंत्र में रानी का पद वंशानुगत होता है, जो उसे उसके जन्म के परिवार के कारण प्राप्त होता है, न कि उसकी व्यक्तिगत योग्यता या प्रयास से। इसके विपरीत, चिकित्सक, स्नातक या एथलीट होना अर्जित परिस्थितियाँ हैं, जिन्हें व्यक्ति अपनी शिक्षा, कौशल और कड़ी मेहनत के माध्यम से प्राप्त करता है। आरोपित परिस्थितियाँ समाज में व्यक्ति की पूर्व-निर्धारित स्थिति और पहचान का मुख्य आधार होती हैं।

168. (A) सामाजिक व्यवस्था बनाए रखना और शक्ति का आवंटन करना।
राज्य एक आधारभूत सामाजिक संस्था है जिसका प्राथमिक कार्य समाज के भीतर व्यवस्था, शांति और सुरक्षा सुनिश्चित करना है। यह कानून बनाने, न्याय करने और राजनीतिक शक्ति का न्यायसंगत वितरण करने के लिए उत्तरदायी है। राज्य के पास संप्रभुता होती है जो उसे समाज के सामूहिक हितों की रक्षा के लिए दंड और पुरस्कार की शक्ति का उपयोग करने का अधिकार देती है। यह संस्था संसाधनों के प्रबंधन और नागरिकों के बीच अधिकारों एवं कर्तव्यों के बीच संतुलन बनाए रखकर एक सुव्यवस्थित नागरिक समाज का निर्माण करती है।

169. (A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
समाजशास्त्र में परिस्थिति और भूमिका एक-दूसरे से अविभाज्य रूप से जुड़े हुए हैं। परिस्थिति समाज की संरचना में व्यक्ति द्वारा प्राप्त एक पद या स्थिति है, और भूमिका उस पद के साथ जुड़े व्यवहारों, कर्तव्यों और अपेक्षाओं का क्रियान्वयन है। राल्फ लिंटन के अनुसार, पद का गतिशील और व्यावहारिक पक्ष ही भूमिका है। एक-दूसरे के बिना इनका कोई स्वतंत्र अस्तित्व नहीं हो सकता; बिना पद के कोई भूमिका नहीं होती और बिना भूमिका के पद केवल एक निरर्थक शब्द बनकर रह जाता है।

170. (A) किसी विशेष स्थिति में व्यवहार के लिए एक विशिष्ट नियम।
प्रतिमान समाज के वे साझा नियम और अपेक्षाएं हैं जो यह निर्धारित करते हैं कि किसी विशिष्ट सामाजिक स्थिति या संदर्भ में व्यक्ति को कैसा व्यवहार करना चाहिए। ये प्रतिमान सामाजिक अंतःक्रियाओं को पूर्वानुमेय बनाते हैं और समाज में व्यवस्था बनाए रखने में मदद करते हैं। ये औपचारिक (जैसे कानून) या अनौपचारिक (जैसे शिष्टाचार) हो सकते हैं। प्रतिमान हमारे दैनिक आचरण को निर्देशित करते हैं और यह सुनिश्चित करते हैं कि व्यक्ति का व्यवहार समाज द्वारा स्वीकृत मूल्यों और आदर्शों के अनुरूप सुचारु रूप से बना रहे।

NODIA

171. (D) प्राथमिक समूह
एक पारिवारिक मिलन समारोह प्राथमिक समूह की अंतःक्रिया का उदाहरण है क्योंकि इसमें सदस्यों के बीच घनिष्ठ, व्यक्तिगत और भावनात्मक संबंध होते हैं। प्राथमिक समूहों में 'हम-की भावना' और साझा पहचान की गहरी अनुभूति होती है, जो सदस्यों को एक-दूसरे के प्रति वफादार बनाती है। यहाँ संबंध स्वयं में एक साध्य होते हैं और अंतःक्रियाएं आमने-सामने की होती हैं। परिवार व्यक्ति के समाजीकरण और भावनात्मक सुरक्षा का सबसे मौलिक आधार है, जो उसे एक संपूर्ण व्यक्ति के रूप में पहचान और सहारा प्रदान करता है।

172. (B) केवल 1 और 3
भूमिका किसी विशेष सामाजिक परिस्थिति या पद के लिए अपेक्षित व्यवहार और कर्तव्यों का एक सुव्यवस्थित समूह है। यह सामाजिक अंतःक्रियाओं को पूर्वानुमेय और व्यवस्थित बनाती है क्योंकि इससे लोग जानते हैं कि दूसरों से क्या अपेक्षा की जाए। हालाँकि, एक व्यक्ति अपने पूरे जीवन में केवल एक ही भूमिका नहीं निभाता; वह समय के साथ और अलग-अलग

संदर्भों में अनेक भूमिकाओं का निर्वहन करता है। भूमिकाएँ व्यक्ति के सामाजिक जीवन को दिशा देती हैं और उसे समाज की संरचना में प्रभावी ढंग से कार्य करने के लिए पूरी तरह सक्षम बनाती हैं।

173. (C) मानव जीवन के उचित लक्ष्यों और उद्देश्यों को परिभाषित करने के लिए।
पुरुषार्थ की अवधारणा मानव जीवन के संतुलित और पूर्ण विकास के लिए एक दार्शनिक और सामाजिक ढांचा प्रदान करती है। यह जीवन के चार मूलभूत लक्ष्यों—धर्म (नैतिकता), अर्थ (भौतिक संसाधन), काम (सुख) और मोक्ष (आध्यात्मिक मुक्ति)—को रेखांकित करती है। पुरुषार्थ व्यक्ति को सिखाता है कि सांसारिक सुखों का आनंद लेते हुए भी आध्यात्मिक प्रगति कैसे की जाए। यह व्यक्तिगत आकांक्षाओं और सामाजिक उत्तरदायित्वों के बीच सामंजस्य बिठाने का एक मार्ग है, जो मनुष्य के जीवन को एक स्पष्ट उद्देश्य और नैतिक दिशा प्रदान करता है।

174. (D) अंतः समूह
अंतः समूह वह सामाजिक समूह है जिसके प्रति व्यक्ति अपनेपन, वफादारी और गहरी साझा पहचान की भावना महसूस करता है। इस समूह के सदस्यों के बीच 'हम-की भावना' होती है, जो उन्हें एक इकाई के रूप में जोड़ती है। व्यक्ति इस समूह के प्रति सहानुभूति और गौरव का अनुभव करता है। यह समूह व्यक्ति के आत्म-सम्मान और सामाजिक सुरक्षा के लिए अनिवार्य है। अंतः समूह की पहचान अक्सर बाह्य समूहों के साथ तुलना या विरोध की प्रक्रिया के माध्यम से और अधिक सुस्पष्ट और अधिक मजबूत होकर उभरती है।

175. (A) P-3, Q-4, R-1, S-2
भारतीय सामाजिक चिंतन की ये चार अवधारणाएं समाज और व्यक्ति के जीवन को विभिन्न स्तरों पर व्यवस्थित करती हैं। वर्ण व्यवस्था समाज के व्यावसायिक और कार्यात्मक सोपान क्रम (सामाजिक स्तर) को परिभाषित करती है। संस्कार जीवन-चक्र के उन महत्वपूर्ण धार्मिक रीति-रिवाजों को कहते हैं जो व्यक्ति के विकास को चिह्नित करते हैं। आश्रम व्यवस्था मानव जीवन को आयु के आधार पर चार व्यवस्थित चरणों में विभाजित करती.है। पुरुषार्थ जीवन के उन चार अनिवार्य लक्ष्यों को संदर्भित करता है जिन्हें प्राप्त करना प्रत्येक व्यक्ति का परम कर्तव्य माना गया है।

176. (B) सामान्य ज्ञान की व्याख्याओं को तथ्य के रूप में स्वीकार करना।
समाजशास्त्रीय परिप्रेक्ष्य का मुख्य आधार सामान्य ज्ञान और प्रचलित मान्यताओं को बिना प्रमाण के स्वीकार न करना है। समाजशास्त्र वैज्ञानिक पद्धतियों और व्यवस्थित शोध का उपयोग करके सामाजिक वास्तविकताओं की जांच करता है। यह परिचित चीजों में अपरिचित को देखने और व्यक्तिगत अनुभवों को व्यापक सामाजिक तथा ऐतिहासिक संदर्भों से जोड़ने का प्रयास करता है। यह परिप्रेक्ष्य हमें सतह पर दिखने वाली घटनाओं के पीछे छिपे गहरे सामाजिक कारणों और संरचनात्मक कारकों को पहचानने और उनका वैज्ञानिक रूप से विश्लेषण करने के लिए पूरी तरह प्रेरित करता है।

177. (B) समिति
एक राजनीतिक दल समिति का एक प्रमुख उदाहरण है क्योंकि यह जानबूझकर किसी विशिष्ट और पूर्व-निर्धारित उद्देश्य, जैसे चुनाव लड़ना और राजनीतिक शक्ति प्राप्त करना, के लिए संगठित किया जाता है। इसकी सदस्यता स्वैच्छिक होती है और इसमें कार्य करने के लिए औपचारिक नियम तथा एक संगठनात्मक ढांचा होता है। समिति किसी विशेष हित को प्राप्त करने का एक माध्यम है। समुदाय के विपरीत, इसका उद्देश्य जीवन जीने का संपूर्ण तरीका प्रदान करना नहीं है, बल्कि एक निश्चित लक्ष्य को प्रभावी ढंग से हासिल करना है।

178. (A) भूमिका संघर्ष
भूमिका संघर्ष तब उत्पन्न होता है जब एक व्यक्ति दो या दो से अधिक अलग-अलग सामाजिक परिस्थितियों को धारण करता है और उन पदों की भूमिकाओं के बीच असंगति या टकराव होता है। उदाहरण के लिए, एक चिकित्सक को अपने किसी करीबी रिश्तेदार का इलाज करते समय पेशेवर निष्पक्षता और व्यक्तिगत भावनाओं के बीच जो तनाव महसूस होता है, वह भूमिका संघर्ष है। यह स्थिति तब पैदा होती है जब एक भूमिका की मांग को पूरा करने से दूसरी भूमिका की उपेक्षा होने की संभावना रहती है, जिससे व्यक्ति के लिए दुविधा पैदा होती है।

179. (C) परिवार और शिक्षा
परिवार और शिक्षा समाज की वे दो प्रमुख संस्थाएं हैं जो सांस्कृतिक विरासत, मूल्यों और कौशलों को एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक पहुँचाने के लिए मुख्य रूप से उत्तरदायी हैं। परिवार प्रारंभिक समाजीकरण का माध्यम है जहाँ बच्चा बुनियादी प्रतिमान और भाषा सीखता है। शिक्षा संस्था औपचारिक और व्यवस्थित रूप से छात्र को समाज की जटिल भूमिकाओं, उन्नत ज्ञान और व्यावसायिक कौशलों के लिए तैयार करती है। ये दोनों संस्थाएं मिलकर यह सुनिश्चित करती हैं कि समाज की संस्कृति निरंतर और सुचारु रूप से विकसित होती रहे।

180. (B) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।
प्राथमिक और द्वितीयक समूहों की प्रकृति के बारे में दोनों कथन समाजशास्त्रीय रूप से गलत हैं। प्राथमिक समूह, जैसे परिवार और मित्र, स्वभाव से 'भावात्मक' और भावनात्मक रूप से घनिष्ठ होते हैं, जहाँ संबंध स्वयं में एक साध्य होते हैं। इसके विपरीत, द्वितीयक समूह, जैसे कि कार्यालय या पेशेवर संगठन, स्वभाव से 'साधनपरक' होते हैं क्योंकि उनमें संबंध किसी विशिष्ट लक्ष्य को प्राप्त करने के एक माध्यम के रूप में कार्य करता है। अतः कथनों में दी गई विशेषताओं को परस्पर बदल दिया गया है, जिससे वे पूरी तरह असत्य सिद्ध होते हैं।

181. (C) धार्मिक अनुष्ठान और विद्वत्तापूर्ण कार्य।
पारंपरिक हिंदू वर्ण व्यवस्था में 'ब्राह्मण' वर्ण का स्थान पदानुक्रम में सर्वोच्च था और उनका मुख्य उत्तरदायित्व समाज का आध्यात्मिक और बौद्धिक मार्गदर्शन करना था। उनके कार्यों में वेदों का अध्ययन, शास्त्रों का अध्यापन, यज्ञ करना

Click Here to Buy book on Amazon

और धार्मिक अनुष्ठानों का संपादन करना शामिल था। ब्राह्मणों को ज्ञान और पवित्रता का संरक्षक माना जाता था, जो समाज में नैतिक मूल्यों और धार्मिक परंपराओं को बनाए रखने के लिए जिम्मेदार थे। उनका जीवन सादगी, अनुशासन और निरंतर विद्या अर्जन की खोज के लिए पूरी तरह समर्पित माना जाता था।

182. (B) समुदाय
गाँव से आए प्रवासियों का यह समूह एक 'समुदाय' का निर्माण कर रहा है क्योंकि वे एक निश्चित भौगोलिक क्षेत्र (नए पड़ोस) में साथ रह रहे हैं और एक साझा पहचान एवं 'हम-की भावना' बनाए हुए हैं। समुदाय की पहचान केवल स्थान से नहीं, बल्कि सदस्यों के बीच के भावनात्मक जुड़ाव और साझा जीवन शैली से होती है। यह समूह प्रवासियों को नए परिवेश में सामाजिक सुरक्षा, मनोवैज्ञानिक सहारा और अपनी मूल संस्कृति से जुड़े रहने का एक माध्यम प्रदान करता है, जो समुदाय की मूलभूत विशेषता है।

183. (D) चिकित्सक
अर्जित परिस्थिति वह सामाजिक पद है जिसे व्यक्ति अपनी व्यक्तिगत योग्यता, शिक्षा, कठिन परिश्रम और विशेष कौशल के माध्यम से समाज में प्राप्त करता है। 'चिकित्सक' होना इसका सटीक उदाहरण है क्योंकि इस पद तक पहुँचने के लिए वर्षों की पढ़ाई और पेशेवर प्रशिक्षण की आवश्यकता होती है। इसके विपरीत, पुत्री, किशोर या महिला होना आरोपित परिस्थितियाँ हैं जो व्यक्ति को उसके जन्म या प्राकृतिक जैविक विशेषताओं के आधार पर बिना किसी प्रयास के समाज द्वारा स्वतः ही प्रदान कर दी जाती हैं।

184. (A) गृहस्थ आश्रम
विवाह संस्कार हिंदू जीवन पद्धति में अत्यंत महत्वपूर्ण है क्योंकि यह व्यक्ति के छात्र जीवन (ब्रह्मचर्य) के अंत और 'गृहस्थ आश्रम' के आरंभ को चिह्नित करता है। गृहस्थ आश्रम को सभी आश्रमों का आधार माना गया है क्योंकि इस चरण में व्यक्ति परिवार की स्थापना करता है, संतानोत्पत्ति करता है और सामाजिक एवं आर्थिक उत्तरदायित्वों का निर्वहन करता है। विवाह केवल एक व्यक्तिगत मिलन नहीं है, बल्कि यह एक धार्मिक कर्तव्य है जो व्यक्ति को समाज की निरंतरता और कल्याण में योगदान देने के लिए तैयार करता है।

185. (C) संदर्भ समूह
जब कोई व्यक्ति किसी विशिष्ट समूह के सदस्यों, जैसे हस्तियों, की जीवनशैली की प्रशंसा करता है और उनका अनुकरण करने का प्रयास करता है, तो वह उस समूह को एक 'संदर्भ समूह' के रूप में देख रहा है। संदर्भ समूह वह मानक या आदर्श है जिसका उपयोग व्यक्ति अपने स्वयं के व्यवहार, दृष्टिकोण और आकांक्षाओं को आंकने के लिए करता है। व्यक्ति उस समूह का वास्तविक सदस्य न होते हुए भी उससे प्रेरित होता है और उसकी तरह दिखने या व्यवहार करने की प्रबल इच्छा रखता है, जो उसके समाजीकरण को प्रभावित करती है।

186. (A) समाज में मौजूद आवर्ती और प्रतिमानित संबंध।
सामाजिक संरचना समाज के विभिन्न अंगों के बीच के उन सुव्यवस्थित, स्थायी और प्रतिमानित संबंधों को संदर्भित करती है जो सामाजिक जीवन को एक ढांचा प्रदान करते हैं। इसमें विभिन्न स्थितियाँ, भूमिकाएं, समूह और संस्थाएं शामिल होती हैं जो आपस में अंतर्संबंधित होती हैं। सामाजिक संरचना ही वह तत्व है जो समाज में स्थिरता और पूर्वानुमेयता लाता है, जिससे लोग जानते हैं कि सामाजिक अंतःक्रियाओं में उनसे क्या अपेक्षा की जाती है। यह समाज की बनावट का वह अमूर्त जाल है जो मानवीय व्यवहार को व्यवस्थित और नियंत्रित करता है।

187. (D) संस्था
सामाजिक संस्था विश्वासों, प्रथाओं और संगठनात्मक नियमों का एक स्थापित और स्थायी प्रतिमान है जो समाज की आधारभूत आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए विकसित किया जाता है। संस्थाएं अमूर्त होती हैं और सामाजिक संबंधों को एक निश्चित ढांचा और स्थिरता प्रदान करती हैं। उदाहरण के लिए, परिवार, विवाह और धर्म ऐसी संस्थाएं हैं जो पीढ़ी-दर-पीढ़ी चलती रहती हैं। संस्थाएं व्यक्तिगत पसंद के बजाय सामूहिक प्रतिमानों और स्थापित परंपराओं पर आधारित होती हैं, जो समाज की निरंतरता और व्यवस्था बनाए रखने के लिए सबसे अनिवार्य मानी जाती हैं।

188. (B) व्यक्तिगत स्वतंत्रता में विश्वास।
मूल्य समाज के वे व्यापक और अमूर्त मानक या आदर्श हैं जो यह निर्धारित करते हैं कि क्या सही, वांछनीय या महत्वपूर्ण है। 'व्यक्तिगत स्वतंत्रता में विश्वास' एक मौलिक सामाजिक मूल्य है जो हमारे कार्यों और निर्णयों को एक नैतिक आधार प्रदान करता है। मूल्यों के विपरीत, सड़क पर बाईं ओर चलना या विद्यालय गणवेश पहनना विशिष्ट प्रतिमान या नियम हैं जो दैनिक व्यवहार को नियंत्रित करते हैं। मूल्य किसी संस्कृति के आदर्शों को दर्शाते हैं और समाज के सामूहिक अंतःकरण का मुख्य हिस्सा होते हैं।

NODIA

189. (C) सदस्य के अपनेपन या गैर-अपनेपन की भावना।
अंतः समूह और बाह्य समूह के बीच का मुख्य अंतर व्यक्ति की मनोवैज्ञानिक पहचान और उसके मनोवैज्ञानिक जुड़ाव पर आधारित है। अंतः समूह वह है जिसके प्रति व्यक्ति अपनेपन, वफादारी और 'हम-की भावना' रखता है। इसके विपरीत, बाह्य समूह वह है जिसे व्यक्ति "वे" के रूप में देखता है और जिसके प्रति वह अक्सर अलगाव या प्रतिस्पर्धा की भावना रखता है। यह विभाजन भौगोलिक निकटता या आकार पर नहीं, बल्कि व्यक्ति के भावनात्मक लगाव और उसकी समूह सदस्यता की व्यक्तिगत अनुभूति पर पूरी तरह से निर्भर करता है।

190. (A) 4, 3, 1, 2
प्राचीन हिंदू ग्रंथों में निर्धारित आश्रम व्यवस्था मानव जीवन के व्यवस्थित विकास के चार चरणों का कालानुक्रमिक क्रम प्रस्तुत करती है। प्रथम चरण 'ब्रह्मचर्य' है, जो शिक्षा और ज्ञान प्राप्ति के लिए है। इसके बाद 'गृहस्थ' आश्रम आता है, जहाँ व्यक्ति पारिवारिक और सामाजिक दायित्वों को निभाता है। तृतीय चरण 'वानप्रस्थ' है, जिसमें व्यक्ति सांसारिक मोह

त्यागकर वैराग्य की ओर बढ़ता है। अंतिम चरण 'संन्यास' है, जो पूर्ण त्याग और आध्यात्मिक मोक्ष की प्राप्ति के लिए समर्पित है। यह व्यवस्था अनुशासित जीवन का मार्गदर्शन करती है।

191. (A) परिस्थिति समुच्चय
परिस्थिति समुच्चय की अवधारणा उन सभी सामाजिक पदों या स्थितियों के संपूर्ण संग्रह को संदर्भित करती है जिन्हें एक व्यक्ति एक ही समय में समाज के भीतर धारण करता है। उदाहरण के लिए, एक व्यक्ति एक ही समय में एक शिक्षक, एक पिता, एक नागरिक और एक मित्र हो सकता है। यह अवधारणा स्पष्ट करती है कि व्यक्ति की सामाजिक पहचान किसी एक स्थिति तक सीमित नहीं है, बल्कि वह समाज के विभिन्न क्षेत्रों के साथ कई रूपों में जुड़ा हुआ है। यह व्यक्ति की बहुआयामी सामाजिक पहचान को समझने में सहायक है।

192. (B) केवल 1 और 3
प्रतिमान व्यवहार के वे विशिष्ट मार्गदर्शक या नियम हैं जो बताते हैं कि किसी विशेष परिस्थिति में व्यक्ति को कैसा आचरण करना चाहिए। मूल्यों की तुलना में प्रतिमान अधिक विशिष्ट और प्रत्यक्ष होते हैं; मूल्य अमूर्त आदर्श हैं जबकि प्रतिमान ठोस व्यवहारिक नियम हैं। प्रतिमान औपचारिक (जैसे कानून) या अनौपचारिक (जैसे शिष्टाचार और लोकाचार) दोनों प्रकार के हो सकते हैं। वे सामाजिक जीवन में सुव्यवस्था, निरंतरता और पूर्वानुमेयता सुनिश्चित करने के लिए अनिवार्य हैं, क्योंकि वे व्यक्तिगत व्यवहार को सामूहिक अपेक्षाओं के अनुरुप व्यवस्थित करते हैं।

193. (B) भूमिका तनाव
भूमिका तनाव वह खिंचाव या संघर्ष है जो एक व्यक्ति तब अनुभव करता है जब उसे अपनी एक ही सामाजिक परिस्थिति या पद से जुड़ी विरोधाभासी अपेक्षाओं को पूरा करना होता है। एक शिक्षक के लिए एक ही समय में एक स्नेहपूर्ण मार्गदर्शक होना और एक कठोर मूल्यांकनकर्ता की भूमिका निभाना चुनौतीपूर्ण हो सकता है। यहाँ संघर्ष दो अलग पदों के बीच नहीं, बल्कि एक ही पद के भीतर निहित अलग-अलग उत्तरदायित्वों के बीच है। यह मानसिक तनाव और आचरण संबंधी दुविधा पैदा करता है जो आधुनिक पेशेवर जीवन की एक मुख्य विशेषता है।

194. (A) धर्म
धर्म एक प्रमुख सामाजिक संस्था है जो अलौकिक शक्तियों, पवित्र वस्तुओं और जीवन के अंतिम अर्थ से संबंधित विश्वासों और प्रथाओं की एक व्यवस्थित प्रणाली पर आधारित है। यह संस्था समाज के सदस्यों को एक नैतिक ढांचा, सामूहिक पहचान और उद्देश्य की भावना प्रदान करती.है। धार्मिक अनुष्ठान और प्रतीक सामाजिक एकजुटता को बढ़ावा देते हैं और मानवीय व्यवहार को विनियमित करने में मदद करते हैं। धर्म न केवल व्यक्तिगत शांति देता है, बल्कि यह सामाजिक व्यवस्था और सांस्कृतिक अखंडता बनाए रखने का एक सशक्त और प्राचीन माध्यम भी है।

195. (C) A सही है लेकिन R गलत है।
समिति एक ऐसा सामाजिक समूह है जिसे जानबूझकर किसी विशिष्ट और सीमित हित को प्राप्त करने के उद्देश्य से संगठित किया जाता है। खेल मंडल या राजनीतिक दल जैसी समितियाँ साझा क्षेत्र या स्वाभाविक अपनेपन के आधार पर नहीं, बल्कि एक निश्चित लक्ष्य को प्रभावी ढंग से हासिल करने के लिए बनाई जाती हैं। समुदाय स्वाभाविक रूप से विकसित होता है, जबकि समिति का गठन विशेष उद्देश्यों की पूर्ति के लिए सचेत रूप से किया जाता है। अतः कारण (R) गलत है क्योंकि वह समिति को समुदाय की विशेषताओं के साथ जोड़ता है।

196. (D) पुरुषार्थ
हिंदू दर्शन के अनुसार, मानव जीवन के चार परम लक्ष्यों—धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष—को सामूहिक रूप से 'पुरुषार्थ' कहा जाता है। ये लक्ष्य मनुष्य के समग्र और संतुलित विकास के लिए एक व्यापक ढांचा प्रदान करते हैं। धर्म नैतिकता का आधार है, अर्थ भौतिक समृद्धि सुनिश्चित करता है, काम सुख की प्राप्ति का मार्ग है, और मोक्ष जीवन का अंतिम आध्यात्मिक लक्ष्य है। पुरुषार्थ का दर्शन व्यक्ति को सांसारिक जिम्मेदारियों को निभाते हुए आध्यात्मिक पूर्णता की ओर अग्रसर होने के लिए निरंतर प्रेरित और निर्देशित करता है।

197. (C) एक स्थानीय पुस्तक क्लब
सामाजिक संस्थाएँ समाज के सुचारु संचालन के लिए स्थापित व्यवहार के वे स्थायी और सुव्यवस्थित प्रतिमान हैं जो बुनियादी सामाजिक आवश्यकताओं को पूरा करते हैं, जैसे परिवार, अर्थव्यवस्था, शिक्षा और धर्म। एक स्थानीय पुस्तक मंडल एक समिति या एक छोटा सामाजिक समूह तो हो सकता है, लेकिन इसे एक 'संस्था' के रूप में वर्गीकृत नहीं किया जा सकता क्योंकि इसमें वह व्यापकता, अनिवार्यता और स्थायित्व नहीं होता जो समाज की आधारभूत संरचना का हिस्सा बनने के लिए आवश्यक है। संस्थाएँ समाज के नियमों और ढांचों को परिभाषित करती हैं।

198. (B) एक परिभाषित संरचना और नियमों की उपस्थिति।
औपचारिक समूह की सबसे प्रमुख विशेषता उसकी एक सुव्यवस्थित और आधिकारिक संरचना का होना है। ऐसे समूहों में लिखित नियम, पूर्व-निर्धारित पद और एक स्पष्ट पदानुक्रम (अधिकार की श्रृंखला) होती है। इनका गठन किसी विशिष्ट लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए जानबूझकर किया जाता है। सेना, सरकारी कार्यालय या बड़े निगम औपचारिक समूहों के प्रमुख उदाहरण हैं। यहाँ सदस्यों के बीच संबंध संविदात्मक और अवैयक्तिक होते हैं, जहाँ व्यक्तिगत भावनाओं की तुलना में निर्धारित प्रक्रियाओं और व्यावसायिक उत्तरदायित्वों को सर्वोपरि महत्व दिया जाता है।

199. (D) परिस्थिति क्रम
परिस्थिति क्रम उन सामाजिक पदों या परिस्थितियों की एक व्यवस्थित श्रृंखला को संदर्भित करता है जिन्हें एक व्यक्ति अपने जीवन काल में समय के साथ क्रमिक रूप से प्राप्त करता है। प्रशिक्षु से लेकर मुख्य कार्यकारी अधिकारी (सीईओ) तक की यात्रा व्यक्ति के व्यावसायिक विकास और उसके

Downloaded from www.pdf.tube

करियर पथ में आने वाले पदों के अनुक्रम को दर्शाती है। यह अवधारणा स्पष्ट करती है कि व्यक्ति की सामाजिक पहचान और उसके उत्तरदायित्व समय के साथ कैसे विकसित होते हैं। परिस्थिति क्रम व्यक्ति की पेशेवर और सामाजिक प्रगति का एक व्यवस्थित खाका प्रस्तुत करता है।

200. (A) P-3, Q-4, R-2, S-1
समाजशास्त्र के ये आधारभूत तत्व सामाजिक संरचना के निर्माण खंड हैं। परिस्थिति समाज में व्यक्ति द्वारा धारित एक निश्चित पद है। भूमिका उस पद से जुड़ी व्यवहार संबंधी अपेक्षाओं और कर्तव्यों का क्रियान्वयन है। प्रतिमान आचरण के वे नियम हैं जो बताते हैं कि किसी स्थिति में कैसा व्यवहार करना चाहिए। मूल्य वे अमूर्त मानक हैं जो यह निर्धारित करते हैं कि समाज में क्या वांछनीय, सही और महत्वपूर्ण है। ये सभी तत्व मिलकर मानवीय अंतःक्रियाओं को व्यवस्थित करते हैं और सामाजिक स्थिरता को पूरी तरह सुनिश्चित करते हैं।

201. (C) आनुभविक और विश्लेषणात्मक
समाजशास्त्र की प्रकृति आनुभविक और विश्लेषणात्मक है क्योंकि यह सामाजिक वास्तविकताओं का अध्ययन करने के लिए व्यवस्थित अवलोकन, प्रयोग और वैज्ञानिक आँकड़ों पर निर्भर करता है। यह विषय दार्शनिक अटकलों या कल्पनाओं के बजाय ठोस साक्ष्यों के आधार पर निष्कर्ष निकालता है। समाजशास्त्र सामाजिक घटनाओं का आलोचनात्मक विश्लेषण करता है ताकि उनके पीछे के कारणों और प्रभावों को समझा जा सके। यह एक मूल्य-मुक्त और वस्तुनिष्ठ विज्ञान बनने का प्रयास करता है जो समाज के वास्तविक स्वरूप को तथ्यों के माध्यम से पूरी तरह स्पष्ट करता है।

202. (A) बचपन के करीबी दोस्तों का एक समूह।
प्राथमिक समूह की मुख्य विशेषता सदस्यों के बीच अत्यंत घनिष्ठ, व्यक्तिगत और आमने-सामने के संबंध होना है। बचपन के करीबी दोस्तों का समूह इसका एक उत्कृष्ट उदाहरण है, जहाँ सदस्यों के बीच गहरी भावनात्मक समझ और 'हम-की भावना' पाई जाती है। यहाँ संबंध स्वयं में एक साध्य होते हैं और अंतःक्रियाएं अनौपचारिक तथा निस्वार्थ होती हैं। इसके विपरीत, दर्शक या राजनीतिक दल के सदस्य द्वितीयक समूहों का हिस्सा होते हैं जहाँ संबंध अवैयक्तिक, औपचारिक और किसी विशिष्ट उद्देश्य के लिए सीमित होते हैं।

203. (D) भौतिक वस्तुएं और अभौतिक विश्वास तथा मूल्य दोनों।
समाजशास्त्र में 'संस्कृति' एक व्यापक अवधारणा है जिसमें वे सभी भौतिक और अभौतिक तत्व शामिल हैं जिन्हें मनुष्य अपने समाज में सीखता है और निर्मित करता है। भौतिक संस्कृति में उपकरण, तकनीक और भवन जैसी वस्तुएं शामिल हैं। अभौतिक संस्कृति में विश्वास, मूल्य, भाषा, प्रतिमान और परंपराएं आती हैं। संस्कृति ही वह जीवन शैली है जो एक समाज के सदस्यों को एक साथ जोड़ती है और उनके व्यवहार को निर्देशित करती है। यह पीढ़ी-दर-पीढ़ी हस्तांतरित होकर सामाजिक निरंतरता और पहचान को सुरक्षित रखती है।

204. (B) प्रतिमान - लाइन में खड़े होने की प्रथा।
प्रतिमान व्यवहार के वे साझा नियम हैं जो किसी विशिष्ट स्थिति में उचित आचरण का मार्गदर्शन करते हैं; पंक्ति में खड़े होना एक सामाजिक प्रतिमान का सटीक उदाहरण है जो सुव्यवस्था सुनिश्चित करता है। अन्य विकल्प गलत सुमेलित हैं: पेशेवर संघ समिति है, न कि समुदाय; गाँव समुदाय है, न कि संस्था; और परिवार एक संस्था और प्राथमिक समूह है, न कि समिति। समाजशास्त्र में इन अवधारणाओं के बीच का अंतर सामाजिक संरचना और मानवीय व्यवहार के विभिन्न स्वरूपों को वैज्ञानिक रूप से समझने के लिए अत्यंत आवश्यक है।

205. (A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
भूमिका संघर्ष और भूमिका तनाव सामाजिक भूमिकाओं के दो अलग-अलग प्रकार के तनाव हैं। भूमिका संघर्ष तब उत्पन्न होता है जब किसी व्यक्ति द्वारा धारित दो या दो से अधिक अलग-अलग परिस्थितियों (जैसे चिकित्सक और माँ) की अपेक्षाएं आपस में टकराती हैं। इसके विपरीत, भूमिका तनाव तब होता है जब एक ही परिस्थिति (जैसे एक शिक्षक) से जुड़ी विभिन्न भूमिकाओं के बीच विरोधाभास या भारी दबाव महसूस होता है। ये दोनों स्थितियाँ आधुनिक जटिल समाज में व्यक्तिगत और सामाजिक उत्तरदायित्वों के बीच की चुनौतियों को स्पष्ट करती हैं।

206. (D) संस्कार
हिंदू धर्म में 'संस्कार' वे पवित्र और धार्मिक अनुष्ठान हैं जो व्यक्ति के जीवन के महत्वपूर्ण संक्रमणों, जैसे जन्म, विवाह और मृत्यु को चिह्नित करने के लिए किए जाते हैं। इन संस्कारों का उद्देश्य व्यक्ति का आध्यात्मिक शुद्धिकरण करना और उसे सामाजिक कर्तव्यों के प्रति जागरूक करना है। ये रीति-रिवाज व्यक्ति के विकास के विभिन्न पड़ावों को एक अर्थ और दिशा प्रदान करते हैं। पीढ़ी-दर-पीढ़ी इन संस्कारों का पालन करने से सांस्कृतिक मूल्यों का हस्तांतरण होता है और समाज की धार्मिक तथा सामाजिक अखंडता निरंतर बनी रहती है।

NODIA

207. (A) व्यक्ति की आकांक्षाओं और आत्म-अवधारणा को आकार देता है।
संदर्भ समूह वह सामाजिक समूह है जिसे व्यक्ति अपने स्वयं के व्यवहार, दृष्टिकोण और भविष्य के लक्ष्यों के मूल्यांकन के लिए एक मानक या आदर्श के रूप में उपयोग करता है। यह समूह व्यक्ति की आकांक्षाओं को गहराई से प्रभावित करता है क्योंकि वह उस समूह के प्रतिमानों और जीवन शैली को अपनाने का प्रयास करता है। व्यक्ति जरूरी नहीं कि उस समूह का सदस्य हो, लेकिन वह उसकी तरह बनने की इच्छा रखता है। यह अवधारणा आत्म-पहचान के निर्माण और सामाजिक गतिशीलता की प्रक्रिया में एक अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

208. (B) संसाधनों के उत्पादन और वितरण का प्रबंधन करना।
अर्थव्यवस्था एक प्रमुख सामाजिक संस्था है जिसका मुख्य कार्य समाज के लिए आवश्यक वस्तुओं और सेवाओं के उत्पादन, विनिमय, वितरण और उपभोग की प्रक्रियाओं को व्यवस्थित करना है। यह संस्था निर्धारित करती है कि समाज अपने दुर्लभ

संसाधनों का उपयोग किस प्रकार करेगा और अपनी भौतिक आवश्यकताओं की पूर्ति कैसे सुनिश्चित करेगा। अर्थव्यवस्था के माध्यम से ही श्रम विभाजन, व्यापारिक नियम और संपत्ति के अधिकार स्थापित होते हैं। यह संस्था समाज की भौतिक खुशहाली और निरंतर विकास के लिए एक आवश्यक और संगठित ढांचा प्रदान करती है।

209. (D) A गलत है लेकिन R सही है।
परिवार और शिक्षा जैसी सामाजिक संस्थाएं सार्वभौमिक हैं, जिसका अर्थ है कि वे दुनिया के सभी समाजों में किसी न किसी रुप में अवश्य पाई जाती हैं। ऐसा इसलिए है क्योंकि प्रत्येक समाज को अपनी निरंतरता के लिए बच्चों के प्रजनन, उनके समाजीकरण और ज्ञान के हस्तांतरण जैसी मूलभूत आवश्यकताओं को पूरा करना ही पड़ता है। अतः कथन (A) गलत है क्योंकि ये संस्थाएं कुछ समाजों तक सीमित नहीं हैं। कारण (R) बिल्कुल सही है क्योंकि संस्थाएं समाज की बुनियादी समस्याओं के व्यवस्थित और स्थायी समाधान के रूप में विकसित होती हैं।

210. (A) ऋषि ऋण
हिंदू परंपरा के अनुसार 'ऋषि ऋण' वह आध्यात्मिक ऋण है जो प्रत्येक व्यक्ति पर उन प्राचीन ऋषियों, गुरुओं और विद्वानों के प्रति होता है जिन्होंने ज्ञान की अमूल्य विरासत को संचित किया और उसे समाज को प्रदान किया। इस ऋण से मुक्ति पाने के लिए व्यक्ति को शास्त्रों का अध्ययन (स्वाध्याय) करने, ज्ञान का प्रसार करने और अपनी बौद्धिक क्षमताओं का विकास करने के लिए प्रेरित किया जाता है। यह ऋण व्यक्ति के जीवन में शिक्षा, विद्या और गुरुओं के महत्व को रेखांकित करने वाली एक महत्वपूर्ण नैतिक और सांस्कृतिक अवधारणा है।

211. (C) भावनात्मक रूप से घनिष्ठ
द्वितीयक समूह की मुख्य विशेषता यह है कि इसमें सदस्यों के बीच संबंध औपचारिक, अवैयक्तिक और किसी विशिष्ट लक्ष्य की प्राप्ति के लिए होते हैं। इन समूहों में भावनात्मक घनिष्ठता का अभाव होता है, जो कि प्राथमिक समूहों (जैसे परिवार) की पहचान है। द्वितीयक समूह में व्यक्ति का महत्व उसकी कार्यक्षमता और पद से निर्धारित होता है, न कि उसकी व्यक्तिगत भावनाओं से। यहाँ अंतःक्रियाएं संविदात्मक और सीमित समय के लिए होती हैं। भावनात्मक रूप से घनिष्ठ होना प्राथमिक समूह की विशेषता है, द्वितीयक समूह की नहीं।

212. (D) भूमिका समुच्चय
भूमिका समुच्चय की अवधारणा समाजशास्त्री रॉबर्ट मर्टन द्वारा दी गई थी, जो किसी एक विशेष सामाजिक परिस्थिति या पद से जुड़ी विभिन्न भूमिकाओं के समूह को संदर्भित करती है। उदाहरण के लिए, 'माँ' की स्थिति में एक महिला की भूमिका केवल बच्चे की देखभाल तक सीमित नहीं है, बल्कि इसमें बच्चे की शिक्षा सुनिश्चित करना, उसे संस्कार देना और परिवार के अन्य सदस्यों के साथ सामंजस्य बिठाना भी शामिल है। यह अवधारणा स्पष्ट करती है कि एक ही पद व्यक्ति को सामाजिक अंतःक्रियाओं के एक जटिल जाल में कैसे बांधता है।

213. (C) पुंज
पुंज उन व्यक्तियों का एक संग्रह है जो अस्थायी रूप से एक ही भौतिक स्थान पर मौजूद होते हैं, लेकिन उनमें न तो कोई संगठित अंतःक्रिया होती है और न ही कोई साझा पहचान या 'हम-की भावना' होती है। उदाहरण के लिए, बस स्टॉप पर खड़े यात्री या लिफ्ट में सवार लोग एक पुंज बनाते हैं। एक सामाजिक समूह के विपरीत, पुंज में स्थायित्व और मनोवैज्ञानिक जुड़ाव का पूरी तरह अभाव होता है। जैसे ही व्यक्ति उस स्थान से हटते हैं, पुंज का अस्तित्व पूरी तरह समाप्त हो जाता है।

214. (B) दस वर्षों में कर्मचारी से प्रबंधक की स्थिति में जाना।
परिस्थिति क्रम उन सामाजिक पदों या परिस्थितियों की एक कालानुक्रमिक श्रृंखला को दर्शाता है जिन्हें एक व्यक्ति अपने जीवन काल में समय के साथ क्रमिक रूप से प्राप्त करता है। कर्मचारी से प्रबंधक के पद तक की प्रगति व्यक्ति के व्यावसायिक विकास और उसके करियर के अनुक्रम को स्पष्ट करती है। यह परिस्थिति समुच्चय से भिन्न है क्योंकि यह एक ही समय की स्थितियों के बजाय जीवन भर की स्थितियों के प्रवाह पर केंद्रित है। यह अवधारणा व्यक्ति की सामाजिक यात्रा और उसकी बदलती जिम्मेदारियों को समझने का एक व्यवस्थित माध्यम प्रदान करती है।

215. (B) केवल 1 और 2
सामाजिक संस्थाएँ बुनियादी सामाजिक आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए स्थापित व्यवहार के स्थायी और सुव्यवस्थित प्रतिमान हैं। इनमें नियमों, स्थितियों और भूमिकाओं की एक सुसंगत प्रणाली होती है जो सामाजिक संबंधों को स्थिरता प्रदान करती.है। संस्थाओं की मुख्य विशेषता उनका स्थायित्व है; इन्हें आसानी से या शीघ्रता से नहीं बदला जा सकता क्योंकि ये संस्कृति में गहराई से रची-बसी होती हैं और पीढ़ी-दर-पीढ़ी चलती रहती हैं। अतः कथन (3) गलत है क्योंकि संस्थागत परिवर्तन की प्रक्रिया अत्यंत धीमी और जटिल सामाजिक परिवर्तनों का परिणाम होती है।

216. (A) समिति
सुरक्षा में सुधार जैसे किसी विशिष्ट और सीमित हित को प्राप्त करने के लिए जब निवासी एकजुट होकर एक व्यवस्था बनाते हैं, तो वह 'समिति' का एक उदाहरण है। समिति का गठन जानबूझकर एक निश्चित उद्देश्य की पूर्ति के लिए किया जाता है और इसकी सदस्यता स्वैच्छिक होती है। एक बार जब उद्देश्य पूरा हो जाता है या आवश्यकता बदल जाती है, तो समिति का स्वरुप भी बदल सकता है। यह समुदाय से भिन्न है क्योंकि इसका आधार साझा क्षेत्र के बजाय एक विशेष और संगठित सामाजिक हित का होना है।

217. (C) सामाजिक जीवन के प्रतिमानों और सिद्धांतों को स्थापित करने का प्रयास करता है।
समाजशास्त्र एक सामान्यीकरण करने वाला विज्ञान है क्योंकि इसका मुख्य लक्ष्य व्यक्तिगत या अद्वितीय घटनाओं के अध्ययन के बजाय सामाजिक जीवन के उन प्रतिमानों और नियमों को खोजना है जो व्यापक रूप से लागू होते हैं। यह विषय विभिन्न समाजों और स्थितियों की तुलना करके ऐसे

Click Here to Buy book on Amazon

सामान्य सिद्धांत और निष्कर्ष निकालने का प्रयास करता है जो सामाजिक व्यवहार की प्रवृत्तियों को स्पष्ट कर सकें। यह वैज्ञानिक दृष्टिकोण हमें व्यक्तिगत अनुभवों के पीछे काम करने वाली व्यापक सामाजिक ताकतों और सामान्य संरचनात्मक नियमों को समझने और उनका विश्लेषण करने में मदद करता है।

218. (A) बाह्य समूह
बाह्य समूह वह सामाजिक समूह है जिसके प्रति व्यक्ति विरोध, अलगाव या प्रतिस्पर्धा की भावना रखता है। प्रतिद्वंद्वी टीम के सदस्यों को व्यक्ति "वे" के रूप में देखता है, जो उसके अपने "हम" समूह (अंतः समूह) से भिन्न और अक्सर विरोधी होते हैं। यह भावना बाह्य समूह के प्रति नकारात्मक धारणाओं और अपने समूह के प्रति वफादारी को मजबूत करती है। समाजशास्त्र में बाह्य समूह की अवधारणा यह समझने में मदद करती है कि किस प्रकार समूह के बीच की सीमाएं और सामाजिक दूरियां व्यक्तिगत दृष्टिकोण और व्यवहार को आकार देती हैं।

219. (D) वाणिज्य, व्यापार और कृषि।
पारंपरिक हिंदू वर्ण व्यवस्था में 'वैश्य' वर्ण का मुख्य उत्तरदायित्व समाज की आर्थिक आवश्यकताओं की पूर्ति करना था। वैश्यों के कर्तव्यों में व्यापार करना, वाणिज्य का संचालन करना, कृषि कार्य करना और पशुपालन (विशेषकर गौ-रक्षा) शामिल था। यह वर्ग समाज की भौतिक समृद्धि और संसाधनों के उत्पादन तथा वितरण के लिए जिम्मेदार था। वैश्यों को समाज का आर्थिक आधार माना जाता था, जिनके माध्यम से समाज में वस्तुओं का प्रवाह और धन का अर्जन सुनिश्चित होता था, जो पूरी सामाजिक व्यवस्था के पोषण के लिए अनिवार्य था।

220. (B) एक पुलिस अधिकारी जो अपने ही माता-पिता का चालान काट रहा है।
भूमिका संघर्ष तब होता है जब एक व्यक्ति दो या दो से अधिक अलग-अलग सामाजिक परिस्थितियों को धारण करता है और उनकी भूमिकाएं आपस में टकराती हैं। एक पुलिस अधिकारी के रूप में पेशेवर कर्तव्य और एक संतान के रूप में पारिवारिक निष्ठा के बीच का विरोधाभासा इसका सटीक उदाहरण है। जब कानून लागू करने की पेशेवर मांग और माता-पिता के प्रति सम्मान की व्यक्तिगत भावना एक ही समय में आमने-सामने होती हैं, तो व्यक्ति तीव्र सामाजिक और नैतिक तनाव का अनुभव करता है। यह स्थिति सामाजिक पदों के बीच अंतर्विरोध को उजागर करती है।

221. (C) गृहस्थ
गृहस्थ आश्रम हिंदू आश्रम व्यवस्था का द्वितीय और अत्यंत महत्वपूर्ण चरण है, जो मुख्य रूप से सांसारिक कर्तव्यों और पारिवारिक उत्तरदायित्वों के लिए समर्पित है। इस अवस्था में व्यक्ति विवाह करता है, अपनी जीविका अर्जित करता है और परिवार का भरण-पोषण करता है। समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण से, गृहस्थ आश्रम समाज की आर्थिक और सामाजिक निरंतरता सुनिश्चित करने का मुख्य आधार है। यह अन्य तीनों आश्रमों के पालन पोषण की जिम्मेदारी भी उठाता है, जिससे इसे समाज की आधारभूत संरचना को बनाए रखने वाला सबसे महत्वपूर्ण आश्रम माना गया है।

222. (D) समाज के जीवन जीने के संपूर्ण, सीखे हुए तरीके को।
समाजशास्त्र में 'संस्कृति' शब्द का अर्थ केवल कला या परिष्कृत व्यवहार नहीं है, बल्कि यह उन सभी साझा विश्वासों, मूल्यों, प्रतिमानों, भाषा और भौतिक वस्तुओं का योग है जो समाज के सदस्यों के जीवन जीने का तरीका निर्धारित करते हैं। संस्कृति सीखी जाती है और एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को हस्तांतरित की जाती है। यह मानव व्यवहार के लिए एक अदृश्य खाका प्रदान करती है और सामाजिक अंतःक्रियाओं को अर्थ देती है। संस्कृति ही वह तत्व है जो मानवीय समाज को अन्य प्राणी समाजों से अलग और विशिष्ट बनाती है।

223. (A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
औपचारिक और अनौपचारिक समूहों का वर्गीकरण उनकी संरचना और निर्माण की प्रक्रिया के आधार पर किया जाता है। औपचारिक समूह, जैसे कोई कार्यालय या सेना, एक विशिष्ट योजना, लिखित नियमों और पूर्व-निर्धारित उद्देश्यों के साथ सचेत रूप से बनाए जाते हैं। इसके विपरीत, अनौपचारिक समूह, जैसे मित्रों की मंडली, व्यक्तिगत पसंद, साझा हितों और घनिष्ठ संबंधों के कारण सामाजिक अंतःक्रिया के दौरान स्वतःस्फूर्त रूप से उभरते हैं। ये दोनों प्रकार के समूह समाज की संरचना में अलग-अलग लेकिन महत्वपूर्ण भूमिकाएं निभाते हैं और मानवीय संबंधों को पूर्णता देते हैं।

224. (B) 'समानता' का सिद्धांत।
मूल्य समाज के वे व्यापक और अमूर्त मानक या आदर्श हैं जो यह निर्धारित करते हैं कि क्या वांछनीय, सही और महत्वपूर्ण है। 'समानता' का सिद्धांत एक आधारभूत मूल्य है जो सामाजिक न्याय और अधिकारों के प्रति समाज के दृष्टिकोण को दिशा प्रदान करता है। मूल्यों के विपरीत, कतार में लगना या हाथ मिलाना विशिष्ट प्रतिमान (आचरण के नियम) हैं, और अत्यधिक गति के विरुद्ध कानून औपचारिक नियम हैं। मूल्य हमारे आचरण और विश्वासों के पीछे की मार्गदर्शक शक्ति होते हैं, जो संस्कृति के नैतिक आधार को सुदृढ़ बनाते हैं।

225. (B) मूलभूत सामाजिक समस्याओं के स्थायी समाधान का प्रतिनिधित्व करते हैं।
परिवार, अर्थव्यवस्था, राज्य और धर्म को 'सामाजिक संस्था' माना जाता है क्योंकि ये वे सुव्यवस्थित प्रणालियाँ हैं जो समाज की अनिवार्य आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए स्थायी रूप से विकसित की गई हैं। संस्थाएं समाज में व्यवहार के स्थापित प्रतिमान और नियम प्रदान करती हैं जो व्यक्तिगत पसंद से परे होते हैं। जैसे, परिवार समाजीकरण की समस्या हल करता है और राज्य व्यवस्था बनाए रखने की। ये संस्थाएं पीढ़ी-दर-पीढ़ी चलती रहती हैं और सामाजिक जीवन को एक संगठित ढांचा तथा निरंतरता प्रदान करने के लिए अत्यंत अनिवार्य और महत्वपूर्ण मानी जाती हैं।

Downloaded from www.pdf.tube

226. (A) व्यवहार
समाजशास्त्र में परिस्थिति और भूमिका एक-दूसरे के पूरक अंग हैं। परिस्थिति समाज की संरचना में व्यक्ति द्वारा प्राप्त एक 'पद' या स्थिति है, और भूमिका उस पद के साथ जुड़े 'व्यवहार', कर्तव्यों और अपेक्षाओं का क्रियान्वयन है। राल्फ लिंटन के अनुसार, पद का गतिशील और व्यावहारिक पक्ष ही भूमिका कहलाता है। जिस प्रकार एक पद व्यक्ति की सामाजिक पहचान बताता है, उसी प्रकार भूमिका यह बताती है कि उस पद पर रहते हुए उसे वास्तव में क्या कार्य करने चाहिए और दूसरों के साथ कैसा आचरण करना चाहिए।

227. (C) प्राथमिक; द्वितीयक
मित्रों का समूह एक प्राथमिक समूह का उत्कृष्ट उदाहरण है क्योंकि इसमें सदस्यों के बीच अत्यंत घनिष्ठ, व्यक्तिगत और भावनात्मक संबंध होते हैं, जहाँ अंतःक्रिया स्वयं में एक साध्य होती है। इसके विपरीत, एक व्यावसायिक संघ के सहकर्मी द्वितीयक समूह का हिस्सा होते हैं जहाँ संबंध औपचारिक, अवैयक्तिक और किसी विशिष्ट लक्ष्य की प्राप्ति के लिए एक साधन मात्र होते हैं। प्राथमिक समूहों में 'हम-की भावना' प्रबल होती है, जबकि द्वितीयक समूहों में संबंधों का आधार पेशेवर उत्तरदायित्व और संविदात्मक नियमों का पालन करना होता है।

228. (D) व्यक्तिगत परेशानियों को सार्वजनिक मुद्दों के रूप में देखना।
समाजशास्त्रीय परिप्रेक्ष्य का मुख्य सार यह है कि व्यक्ति की निजी समस्याओं को व्यापक सामाजिक संरचनाओं और ऐतिहासिक संदर्भों के साथ जोड़कर देखा जाए। सी. राइट मिल्स के अनुसार, जब हम बेरोजगारी या गरीबी जैसी 'व्यक्तिगत परेशानियों' को समाज की आर्थिक व्यवस्था और संस्थागत विफलताओं जैसे 'सार्वजनिक मुद्दों' के रूप में समझते हैं, तब हम समाजशास्त्रीय कल्पनाशीलता का उपयोग कर रहे होते हैं। यह दृष्टिकोण हमें बताता है कि व्यापक सामाजिक ताकतें किस प्रकार व्यक्तिगत जीवन की परिस्थितियों और अवसरों को गहराई से प्रभावित और आकार प्रदान करती हैं।

229. (B) P-4, Q-3, R-2, S-1
सामाजिक समूहों का यह वर्गीकरण संबंधों की प्रकृति और पहचान पर आधारित है। औपचारिक समूह, जैसे सरकारी नौकरशाही, लिखित नियमों और पदानुक्रम द्वारा संचालित होते हैं। अनौपचारिक समूह, जैसे कार्यस्थल पर मित्र, व्यक्तिगत संबंधों से स्वतःस्फूर्त रूप से बनते हैं। अंतः समूह "हम-की भावना" और वफादारी से जुड़ा होता है, जबकि बाह्य समूह "वे" की भावना और अक्सर विरोध या अलगाव को दर्शाता है। ये अवधारणाएं समाज में व्यक्तियों के बीच होने वाली विविध अंतःक्रियाओं और समूहों की आंतरिक बनावट को समझने का आधार प्रदान करती हैं।

230. (B) आध्यात्मिक मुक्ति
पुरुषार्थ के ढांचे के अंतर्गत 'मोक्ष' मानव जीवन का अंतिम और सर्वोच्च लक्ष्य माना गया है। इसका अर्थ है सांसारिक बंधनों, दुखों और जन्म-मृत्यु के पुनरावर्ती चक्र से पूरी तरह मुक्ति प्राप्त करना। मोक्ष की प्राप्ति का तात्पर्य आत्मा का परमात्मा के साथ मिलन और आत्म-साक्षात्कार है। यह अवस्था आध्यात्मिक पूर्णता और परम शांति का प्रतीक है। मोक्ष अन्य तीनों पुरुषार्थों (धर्म, अर्थ और काम) से ऊपर है क्योंकि यह व्यक्ति को सांसारिक अनित्यता से मुक्त कर उसे अनंत आध्यात्मिक आनंद की ओर पूरी तरह अग्रसर करता है।

231. (D) भूमिका तनाव
भूमिका तनाव वह मानसिक या सामाजिक खिंचाव है जो तब उत्पन्न होता है जब एक व्यक्ति अपनी एक ही सामाजिक परिस्थिति या पद के भीतर निहित अलग-अलग और कभी-कभी विरोधाभासी अपेक्षाओं को पूरा करने का प्रयास करता है। यहाँ संघर्ष दो अलग पदों के बीच नहीं होता, बल्कि एक ही भूमिका के विविध आयामों के बीच सामंजस्य बिठाने की कठिनाई के कारण होता है। उदाहरण के लिए, एक ही पद पर रहते हुए अनुशासन बनाए रखना और साथ ही सहानुभूति दिखाना व्यक्ति के लिए तनावपूर्ण हो सकता है, जो भूमिका तनाव कहलाता है।

NODIA

232. (A) धर्म
हिंदू परंपरा में 'संस्कार' वे विशिष्ट धार्मिक अनुष्ठान हैं जो जीवन के महत्वपूर्ण संक्रमणों, जैसे जन्म, विवाह, उपनयन और मृत्यु (अन्त्येष्टि), को चिह्नित करते हैं। ये संस्कार व्यक्ति के आध्यात्मिक शुद्धिकरण और उसके सामाजिक विकास के पड़ावों को सुव्यवस्थित करते हैं। इसके विपरीत, 'धर्म' एक व्यापक अवधारणा है जो नैतिक कर्तव्यों और जीवन जीने के मार्ग को संदर्भित करती है; यह स्वयं में कोई एक विशिष्ट संस्कार नहीं है, बल्कि वह आधार है जिस पर सभी संस्कार और मानवीय आचरण पूरी तरह से टिके हुए होते हैं।

233. (C) व्यक्ति के जीवन के विभिन्न चरणों में उचित आचरण के लिए।
आश्रम व्यवस्था मानव जीवन के व्यवस्थित विकास के लिए एक अनुशासित प्रारूप प्रदान करती है। यह जीवन को चार चरणों—ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ और संन्यास—में विभाजित करती है, जहाँ प्रत्येक चरण के लिए विशिष्ट कर्तव्य और लक्ष्य निर्धारित हैं। यह व्यवस्था सुनिश्चित करती है कि व्यक्ति अपनी आयु और मानसिक स्थिति के अनुसार सांसारिक उत्तरदायित्वों को निभाए और क्रमिक रूप से आध्यात्मिक मोक्ष की ओर बढ़े। आश्रम व्यवस्था व्यक्तिगत आकांक्षाओं और सामाजिक आवश्यकताओं के बीच संतुलन बनाकर जीवन को समग्रता, पूर्णता और एक नैतिक दिशा प्रदान करती है।

234. (A) एक साझा भौगोलिक क्षेत्र और साझा पहचान की भावना।
समाजशास्त्रीय रूप से 'समुदाय' को दो मुख्य तत्वों द्वारा परिभाषित किया जाता है: एक निश्चित भौगोलिक इलाका और सदस्यों के बीच 'हम-की भावना' या साझा पहचान का होना। समुदाय एक ऐसी सामाजिक इकाई है जहाँ व्यक्ति का सामाजिक जीवन स्वाभाविक रूप से विकसित होता है और सदस्य आपस में घनिष्ठ संबंधों तथा साझा मूल्यों के माध्यम से जुड़े रहते हैं। यह समितियों के विपरीत, किसी विशिष्ट लक्ष्य

के लिए नहीं बल्कि जीवन के संपूर्ण और व्यापक अनुभव को साझा करने के लिए निरंतर अस्तित्व में रहता है।

235. (D) शक्ति का वितरण और प्रयोग।
राज्य एक प्रमुख सामाजिक संस्था है जिसका प्राथमिक उत्तरदायित्व समाज में राजनीतिक शक्ति का प्रबंधन और उसे विनियमित करना है। यह संस्था कानून बनाने, न्याय सुनिश्चित करने और सामाजिक व्यवस्था को बनाए रखने के माध्यम से कार्य करती है। राज्य के पास अधिकार और संप्रभुता होती है, जो उसे सामूहिक निर्णय लेने और उन्हें लागू करने की शक्ति प्रदान करती है। संसाधनों के न्यायसंगत आवंटन और नागरिकों के अधिकारों की रक्षा के माध्यम से, राज्य समाज के शासन की पूरी प्रक्रिया को स्थिरता और निरंतरता प्रदान करता है।

236. (A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
एक व्यक्ति एक ही समय में विभिन्न समूहों का हिस्सा हो सकता है और विभिन्न समूहों का उपयोग अपने मूल्यांकन के लिए कर सकता है। परिवार एक प्राथमिक समूह है जहाँ घनिष्ठ भावनात्मक संबंध होते हैं, जबकि सफल पेशेवरों का समूह एक संदर्भ समूह हो सकता है जिसका उपयोग व्यक्ति अपने करियर के लक्ष्यों को आंकने के लिए करता है। संदर्भ समूह वह मानक है जिससे व्यक्ति अपनी तुलना करता है, भले ही वह उसका सदस्य न हो। ये दोनों अवधारणाएं समाजीकरण और आत्म-अवधारणा के निर्माण की प्रक्रिया को समझने के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण हैं।

237. (C) एक संस्कृति
संस्कृति समाज के सदस्यों द्वारा साझा किए गए जीवन के संपूर्ण और सीखे हुए तरीके को संदर्भित करती है। इसमें भाषा, साझा विश्वास, मूल्य, प्रतिमान, परंपराएं और वे सभी भौतिक वस्तुएं शामिल हैं जो मनुष्य अपने सामाजिक परिवेश में निर्मित करता है। संस्कृति ही वह माध्यम है जो सामाजिक अंतःक्रियाओं को अर्थ प्रदान करती है और व्यक्तियों के व्यवहार को निर्देशित करती है। यह पीढ़ी-दर-पीढ़ी हस्तांतरित होकर समाज की विशिष्ट पहचान और निरंतरता को बनाए रखती है, जो मानवीय समाज को अन्य प्राणी समूहों से अलग बनाती है।

238. (D) अर्जित; आरोपित
समाजशास्त्र में परिस्थितियों को दो श्रेणियों में बांटा गया है: आरोपित और अर्जित। आरोपित परिस्थितियाँ वे हैं जो व्यक्ति को जन्म से या विरासत में स्वतः मिलती हैं, जैसे 'पुत्र' होना, जिस पर उसका कोई नियंत्रण नहीं होता। इसके विपरीत, अर्जित परिस्थितियाँ वे पद हैं जिन्हें व्यक्ति अपनी व्यक्तिगत योग्यता, शिक्षा और प्रयासों के माध्यम से समाज में स्वयं प्राप्त करता है, जैसे 'न्यायाधीश' बनना। यह अंतर यह समझने में मदद करता है कि समाज में व्यक्ति की स्थिति किन कारकों द्वारा निर्धारित और प्रभावित होती है।

239. (A) पड़ोसियों का एक समूह जो हर रविवार को क्रिकेट खेलता है
अनौपचारिक समूह वे होते हैं जो व्यक्तिगत संबंधों, साझा रुचियों और घनिष्ठता के आधार पर स्वतःस्फूर्त रूप से बनते हैं। पड़ोसियों का क्रिकेट खेलने वाला समूह इसका सटीक उदाहरण है, क्योंकि इसमें कोई लिखित संविधान, कठोर पदानुक्रम या आधिकारिक नियम नहीं होते। यहाँ अंतःक्रियाएं स्वाभाविक और लचीली होती हैं। इसके विपरीत, सर्वोच्च न्यायालय, टाटा मोटर्स या भारतीय सेना औपचारिक समूह और संगठन हैं जो लिखित कानूनों, स्पष्ट पदों और निर्धारित उद्देश्यों द्वारा संचालित होते हैं, जहाँ संबंधों का आधार पेशेवर और अवैयक्तिक होता है।

240. (B) सामाजिक स्तरीकरण
वर्ण व्यवस्था प्राचीन भारतीय समाज में सामाजिक स्तरीकरण का एक सुव्यवस्थित ढांचा है। इसमें समाज को चार मुख्य सोपान क्रमों—ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र—में विभाजित किया गया है। यह व्यवस्था मूलतः गुणों और कर्मों के आधार पर श्रम का विभाजन सुनिश्चित करने के लिए बनाई गई थी। स्तरीकरण के इस प्रारूप के माध्यम से समाज में प्रत्येक वर्ग के लिए विशिष्ट कर्तव्य और अधिकार निर्धारित किए गए थे। यद्यपि इसका स्वरूप समय के साथ बदला, परंतु यह सामाजिक व्यवस्था और कार्यात्मक संतुलन बनाए रखने की एक प्राचीन और आधारभूत प्रणाली थी।

241. (D) कथन I गलत है, लेकिन कथन II सही है।
परिस्थिति समुच्चय जीवन भर स्थिर नहीं रहता, बल्कि यह विवाह, करियर और आयु जैसे कारकों के साथ निरंतर बदलता रहता है। अतः कथन I गलत है। दूसरी ओर, कथन II बिल्कुल सही है क्योंकि एक व्यक्ति की विभिन्न भूमिकाओं के बीच विरोधाभासी मांगें 'भूमिका तनाव' उत्पन्न कर सकती हैं। यह स्थिति तब पैदा होती है जब एक ही समय में कई सामाजिक जिम्मेदारियों को निभाना कठिन हो जाता है। परिस्थिति समुच्चय की गतिशीलता और उससे जुड़े भूमिकाओं के बीच का खिंचाव आधुनिक समाज की एक मुख्य विशेषता है।

242. (A) समाज का व्यवस्थित अध्ययन
समाजशास्त्र की परिभाषा इसके वैज्ञानिक और व्यवस्थित स्वरूप पर बल देती है। यह विषय मानवीय समाज, सामाजिक अंतःक्रियाओं और सामाजिक संस्थाओं का अध्ययन करने के लिए व्यवस्थित शोध पद्धतियों, अवलोकन और विश्लेषणात्मक उपकरणों का उपयोग करता है। समाजशास्त्र केवल सामान्य ज्ञान या व्यक्तिगत विचारों पर निर्भर नहीं है, बल्कि यह तथ्यों और आँकड़ों के आधार पर सामाजिक वास्तविकताओं की व्याख्या करता है। यह व्यवस्थित दृष्टिकोण ही समाजशास्त्र को एक अकादमिक विषय और एक सामाजिक विज्ञान के रूप में स्थापित करता है, जो समाज के गहरे प्रतिमानों को स्पष्ट करता है।

243. (C) अपनेपन; लक्ष्य
समुदाय और समिति के बीच का मूलभूत अंतर उनकी उत्पत्ति और उनके आधार में निहित है। समुदाय एक व्यापक सामाजिक इकाई है जो साझा क्षेत्र और सदस्यों के बीच 'हम-की भावना' या स्वाभाविक अपनेपन पर टिकी होती है, जहाँ व्यक्ति का पूरा जीवन व्यतीत होता है। इसके विपरीत, समिति एक औपचारिक समूह है जिसे सचेत रूप से किसी विशिष्ट लक्ष्य या उद्देश्य को

Click Here to Buy book on Amazon

प्राप्त करने के लिए बनाया जाता है। समुदाय स्वतःस्फूर्त रुप से विकसित होता है, जबकि समिति का निर्माण विशेष हितों की पूर्ति के लिए योजनाबद्ध तरीके से किया जाता है।

244. (A) केवल 1 और 3
समाजशास्त्र में सभी सामाजिक समूह औपचारिक नहीं होते; मित्र मंडली और परिवार जैसे अनौपचारिक समूह भी अत्यंत महत्वपूर्ण हैं। साथ ही, संदर्भ समूह हमेशा वे समूह नहीं होते जिनसे व्यक्ति संबंधित नहीं है; व्यक्ति अपने ही समूह को भी एक मानक या संदर्भ के रुप में उपयोग कर सकता है। हालाँकि, यह सत्य है कि एक बड़े द्वितीयक समूह (जैसे कार्यालय) के भीतर कई छोटे प्राथमिक समूह (जैसे मित्रों के गुट) स्वाभाविक रुप से बन सकते हैं। अतः कथन 1 और 3 गलत हैं, जबकि कथन 2 समूह गतिशीलता की सही व्याख्या करता है।

245. (C) अनुष्ठान या बलिदान
हिंदू परंपरा और वैदिक विचार में 'यज्ञ' एक अत्यंत महत्वपूर्ण अनुष्ठानिक बलिदान या आहुति है। यह पवित्र अग्नि के माध्यम से देवताओं को अर्पण करने की एक प्राचीन प्रक्रिया है, जिसमें विशिष्ट मंत्रों और विधि-विधानों का पालन किया जाता है। यज्ञ का उद्देश्य केवल आध्यात्मिक लाभ प्राप्त करना ही नहीं, बल्कि ब्रह्मांडीय व्यवस्था को बनाए रखना और सामाजिक कल्याण सुनिश्चित करना भी माना जाता है। यह भारतीय संस्कृति के कर्मकांडीय पक्ष और आध्यात्मिक गहराई के समन्वय का एक उत्कृष्ट प्रतीक है जो आज भी धार्मिक जीवन का अभिन्न अंग है।

246. (B) परिस्थिति क्रम
परिस्थिति क्रम उन सामाजिक पदों की एक व्यवस्थित श्रृंखला को प्रदर्शित करता है जिसे एक व्यक्ति अपने जीवन काल में समय के साथ क्रमिक रुप से प्राप्त करता है। उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के छात्र से लेकर चिकित्सक बनने तक की यात्रा व्यक्ति के शैक्षिक और व्यावसायिक विकास के चरणों को दर्शाती है। यह अवधारणा परिस्थिति समुच्चय से भिन्न है क्योंकि यह एक ही समय की स्थितियों के बजाय जीवन भर की प्रगति और पदों के अनुक्रम पर केंद्रित है। परिस्थिति क्रम हमें यह समझने में मदद करता है कि व्यक्ति की सामाजिक पहचान और जिम्मेदारियां कैसे निरंतर विकसित होती हैं।

247. (D) ज्ञान, कौशल और मूल्यों का हस्तांतरण करना।
शिक्षा एक प्रमुख सामाजिक संस्था है जिसका प्राथमिक कार्य समाज की सांस्कृतिक विरासत, संचित ज्ञान और विशिष्ट व्यावसायिक कौशलों को व्यवस्थित रुप से एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक पहुँचाना है। यह संस्था व्यक्ति को आधुनिक समाज की जटिल भूमिकाओं के लिए तैयार करती है और उसे सामाजिक प्रतिमानों तथा नागरिक उत्तरदायित्वों से परिचित कराती है। शिक्षा न केवल सूचना प्रदान करती है, बल्कि यह व्यक्ति के व्यक्तित्व निर्माण, सामाजिक गतिशीलता और सामूहिक चेतना को विकसित करने का एक अत्यंत महत्वपूर्ण और औपचारिक माध्यम भी है।

248. (A) अंतः समूह एकजुटता
अपने देश के प्रति भक्ति की भावना 'अंतः समूह एकजुटता' का एक उत्कृष्ट उदाहरण है। यह वह वफादारी, गर्व और अपनेपन की भावना है जो व्यक्ति अपने राष्ट्र के प्रति महसूस करता है, जिसे वह अपना 'अंतः समूह' मानता है। यह भावना सदस्यों के बीच 'हम-की पहचान' को मजबूत करती है और उन्हें साझा लक्ष्यों के लिए एकजुट होने के लिए प्रेरित करती है। अंतः समूह एकजुटता न केवल आंतरिक एकता को बढ़ावा देती है, बल्कि यह सामाजिक पहचान को सुदृढ़ करने और सामूहिक वफादारी विकसित करने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

249. (C) गृहस्थ
पारंपरिक हिंदू वर्ण व्यवस्था में समाज को चार मुख्य श्रेणियों में विभाजित किया गया है: ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र। ये वर्ण समाज के कार्यात्मक श्रम विभाजन और स्तरीकरण का आधार हैं। इसके विपरीत, 'गृहस्थ' वर्ण व्यवस्था का हिस्सा नहीं है, बल्कि यह 'आश्रम व्यवस्था' का दूसरा चरण है। आश्रम व्यवस्था जीवन के व्यक्तिगत चरणों (ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ, संन्यास) को व्यवस्थित करती है, जबकि वर्ण व्यवस्था सामाजिक समूहों के कर्तव्यों को। अतः गृहस्थ एक व्यक्तिगत जीवन का चरण है, न कि कोई वर्ण या सामाजिक श्रेणी।

250. (A) नियम
समाजशास्त्र में मूल्य और प्रतिमान एक-दूसरे से संबंधित लेकिन भिन्न हैं। मूल्य समाज के वे व्यापक और अमूर्त 'आदर्श' हैं जो बताते हैं कि क्या वांछनीय या सही है, जैसे 'स्वतंत्रता' या 'न्याय'। प्रतिमान उन मूल्यों को दैनिक जीवन में लागू करने वाले विशिष्ट 'नियम' या मार्गदर्शक हैं जो बताते हैं कि किसी स्थिति में कैसा आचरण करना चाहिए। जिस प्रकार आदर्श हमारे लक्ष्यों को परिभाषित करते हैं, उसी प्रकार नियम हमारे व्यवहार को मर्यादित और पूर्वानुमेय बनाते हैं, जिससे समाज में व्यवस्था और स्थिरता बनी रहती है।

251. (D) विशिष्ट लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए संगठित है।
एक राजनीतिक दल 'समिति' की सभी विशेषताओं को पूरा करता है क्योंकि इसका गठन जानबूझकर एक निश्चित और सीमित उद्देश्य, जैसे चुनाव जीतना और शासन करना, के लिए किया जाता है। इसकी सदस्यता स्वैच्छिक होती है और यह लिखित नियमों तथा एक औपचारिक संगठनात्मक ढांचे द्वारा संचालित होता है। समिति किसी विशेष हित को प्राप्त करने का एक साधन है। समुदाय के विपरीत, राजनीतिक दल का उद्देश्य जीवन जीने का संपूर्ण तरीका प्रदान करना नहीं है, बल्कि एक विशिष्ट राजनीतिक लक्ष्य को सामूहिक रूप से प्राप्त करना है।

252. (B) वह जगह है जहाँ व्यक्ति सबसे पहले प्रतिमान सीखता है।
परिवार को समाजीकरण का प्राथमिक अभिकर्ता माना जाता है क्योंकि यह वह पहली सामाजिक इकाई है जिसके संपर्क में बालक आता है। परिवार के भीतर ही व्यक्ति भाषा, बुनियादी प्रतिमान, मूल्य और सामाजिक व्यवहार के शुरुआती तरीके सीखता है। यह प्रारंभिक अधिगम व्यक्ति के व्यक्तित्व की नींव रखता है और उसे समाज के अन्य क्षेत्रों में अंतःक्रिया करने के

NODIA

लिए तैयार करता है। परिवार में मिलने वाला स्नेह और सुरक्षा बालक के नैतिक विकास और उसकी सामाजिक पहचान के निर्माण में सबसे मौलिक और स्थायी भूमिका निभाते हैं।

253. (C) स्थितियों और भूमिकाओं के उस ढांचे को जो सामाजिक अंतःक्रिया को आकार देता है।
सामाजिक संरचना समाज के विभिन्न अंगों के बीच के उन सुव्यवस्थित, स्थायी और प्रतिमानित संबंधों को संदर्भित करती है जो सामाजिक जीवन को एक स्पष्ट ढांचा प्रदान करते हैं। इसमें विभिन्न सामाजिक स्थितियाँ, उनसे जुड़ी भूमिकाएं, समूह और संस्थाएं शामिल होती हैं जो आपस में अंतर्संबंधित होती हैं। सामाजिक संरचना ही वह तत्व है जो सामाजिक अंतःक्रियाओं को पूर्वानुमेय बनाता है और समाज को स्थिरता प्रदान करता है। यह वह अमूर्त जाल है जो मानवीय व्यवहार को निर्देशित और नियंत्रित करता है, जिससे समाज एक संगठित इकाई के रूप में कार्य करता है।

254. (C) P-3, Q-4, R-2, S-1
समाजशास्त्र में विभिन्न सामाजिक इकाइयों को उनकी विशेषताओं के आधार पर वर्गीकृत किया गया है। समुदाय साझा क्षेत्र और 'हम-की भावना' पर आधारित है। समिति किसी विशिष्ट उद्देश्य के लिए जानबूझकर संगठित किया गया समूह है। प्राथमिक समूह घनिष्ठ संबंधों और आमने-सामने की अंतःक्रिया द्वारा पहचाने जाते हैं, जहाँ संबंध स्वयं में एक साध्य होते हैं। द्वितीयक समूह में संबंध अवैयक्तिक होते हैं और वे किसी लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए एक साधन मात्र होते हैं। ये सभी अवधारणाएं समाज की संरचना और मानवीय संबंधों की प्रकृति को स्पष्ट करती हैं।

255. (A) संदर्भ समूह
संदर्भ समूह वह सामाजिक समूह है जिसे व्यक्ति अपने स्वयं के व्यवहार, मूल्यों और व्यावसायिक दृष्टिकोण के मूल्यांकन के लिए एक मानक के रूप में उपयोग करता है। जब एक नया कर्मचारी वरिष्ठ प्रबंधकों के आचरण का अवलोकन और अनुकरण करता है, तो वह उन्हें अपने लिए एक आदर्श या 'रेफरेंस' मान रहा है। व्यक्ति आवश्यक नहीं कि उस समूह का सदस्य हो, लेकिन वह उसकी तरह बनने या उसके स्तर तक पहुँचने की आकांक्षा रखता है। यह प्रक्रिया व्यावसायिक समाजीकरण और व्यक्तिगत विकास में एक अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

256. (B) ऋषियों
हिंदू परंपरा के 'ऋण-त्रय' के अनुसार, प्रत्येक व्यक्ति पर तीन प्रमुख आध्यात्मिक और नैतिक ऋण होते हैं: देव ऋण, पितृ ऋण और ऋषि ऋण। ऋषि ऋण उन ऋषियों, विद्वानों और गुरुओं के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करने का एक माध्यम है जिन्होंने ज्ञान का संचय किया और उसे आने वाली पीढ़ियों को सौंपा। इस ऋण से मुक्ति पाने के लिए व्यक्ति को निरंतर स्वाध्याय (अध्ययन) करने और विद्या का प्रसार करने के लिए प्रेरित किया जाता है। यह अवधारणा समाज में शिक्षा, ज्ञान और गुरुओं के प्रति सम्मान की सांस्कृतिक जड़ता को दर्शाती है।

257. (B) परिस्थिति एक पद है, जबकि भूमिका उस पद में अपेक्षित आचरण है।
समाजशास्त्र में परिस्थिति और भूमिका एक-दूसरे के पूरक अंग हैं। परिस्थिति समाज की संरचना में व्यक्ति द्वारा प्राप्त एक मान्यता प्राप्त 'पद' या स्थिति है (जैसे चिकित्सक)। भूमिका उस पद के साथ जुड़े व्यवहारों, कर्तव्यों और 'अपेक्षित आचरण' का क्रियान्वयन है (जैसे रोगी का उपचार करना)। राल्फ लिंटन के अनुसार, परिस्थिति एक स्थिर अवधारणा है, जबकि भूमिका उसका गतिशील और व्यावहारिक पक्ष है। एक व्यक्ति परिस्थिति को धारण करता है और उस परिस्थिति से जुड़ी हुई भूमिका का कुशलतापूर्वक निर्वहन समाज में करता है।

258. (A) उनके सामाजिक संदर्भ द्वारा बाधित और आकार लिए हुए होते हैं।
समाजशास्त्रीय परिप्रेक्ष्य यह दर्शाता है कि व्यक्ति के जीवन के विकल्प केवल उसकी व्यक्तिगत इच्छा का परिणाम नहीं होते, बल्कि वे उसके सामाजिक परिवेश—जैसे परिवार, वर्ग, संस्कृति, शिक्षा और आर्थिक परिस्थितियों—द्वारा प्रभावित और सीमित होते हैं। इसलिए व्यक्ति के निर्णय और अवसर समाज की संरचना और परिस्थितियों के अनुसार आकार लेते हैं, न कि पूरी तरह स्वतंत्र, जैविक या यादृच्छिक होते हैं।

259. (C) भूमिका संघर्ष
जब एक व्यक्ति एक साथ कई भूमिकाएँ निभाता है (जैसे छात्र, नौकरी करने वाला और स्वयंसेवक दमकलकर्मी) और इन भूमिकाओं की अपेक्षाएँ समय व ऊर्जा के लिए आपस में टकराती हैं, तो उसे भूमिका संघर्ष कहा जाता है। यह स्थिति अलग-अलग भूमिकाओं के बीच संतुलन बनाने में कठिनाई को दर्शाती है, न कि एक ही भूमिका के भीतर तनाव (भूमिका तनाव) या भूमिका छोड़ने की स्थिति।

260. (D) मित्रता
सामाजिक संस्थाएँ समाज के सुचारु संचालन के लिए स्थापित व्यवहार के वे स्थायी और सुव्यवस्थित प्रतिमान हैं जो बुनियादी आवश्यकताओं को पूरा करते हैं, जैसे परिवार, राज्य, अर्थव्यवस्था और धर्म। इनमें नियमों और भूमिकाओं का एक औपचारिक ढांचा होता है। इसके विपरीत, मित्रता एक व्यक्तिगत और अनौपचारिक सामाजिक संबंध है। यद्यपि यह अत्यंत महत्वपूर्ण है, परंतु इसमें वह संस्थागत स्थायित्व, आधिकारिक प्रतिमान और अनिवार्य सामाजिक संरचना नहीं होती जो परिवार या राज्य जैसी आधारभूत संस्थाओं की पहचान है। अतः मित्रता को एक औपचारिक सामाजिक संस्था नहीं माना जाता है।

261. (C) संस्कृति
संस्कृति समाज के सदस्यों द्वारा साझा किए गए जीवन के संपूर्ण और सीखे हुए तरीके को संदर्भित करती है। इसमें साझा विश्वास, मूल्य, प्रतिमान, भाषा, परंपराएं और वे सभी भौतिक वस्तुएं शामिल हैं जो लोग अपने सामाजिक परिवेश में निर्मित और उपयोग करते हैं। संस्कृति ही वह माध्यम है जो सामाजिक अंतःक्रियाओं को अर्थ प्रदान करती है और व्यक्तियों के व्यवहार को निर्देशित करती है। यह पीढ़ी-दर-पीढ़ी हस्तांतरित होकर

Downloaded from www.pdf.tube

समाज की विशिष्ट पहचान और निरंतरता को बनाए रखती है, जो मानवीय समाज को अन्य समूहों से अलग करती है।

262. (A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
परिवार को एक सार्वभौमिक सामाजिक संस्था माना जाता है क्योंकि यह दुनिया के प्रत्येक समाज में किसी न किसी रूप में अवश्य मौजूद है। इसका कारण यह है कि प्रत्येक समाज को अपने अस्तित्व और निरंतरता के लिए यौन व्यवहार को विनियमित करने, बच्चों के प्रजनन और उनके प्रारंभिक समाजीकरण जैसी मूलभूत समस्याओं का स्थायी समाधान चाहिए होता है। परिवार ही वह प्राथमिक इकाई है जो भावनात्मक समर्थन प्रदान करने के साथ-साथ इन अनिवार्य कार्यों को पूरा करती है। अतः यह संस्था समाज की आधारभूत संरचना का एक अपरिहार्य और स्थायी हिस्सा है।

263. (D) पहचान और वफादारी की भावना।
अंतः समूह वह सामाजिक समूह है जिसके प्रति व्यक्ति अपनेपन, वफादारी और गहरी साझा पहचान की भावना महसूस करता है। इस समूह के सदस्यों के बीच 'हम-की भावना' होती है, जो उन्हें एक भावनात्मक इकाई के रूप में जोड़ती है। व्यक्ति इस समूह के प्रति गौरव और सहानुभूति का अनुभव करता है। यह समूह व्यक्ति के आत्म-सम्मान और सामाजिक सुरक्षा के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है। अंतः समूह की पहचान अक्सर बाह्य समूहों के साथ तुलना या अलगाव की प्रक्रिया के माध्यम से और अधिक सुस्पष्ट और अधिक मजबूत होकर उभरती है।

264. (A) मृत्यु
हिंदू परंपरा में 'अन्त्येष्टि' संस्कार जीवन का अंतिम और महत्वपूर्ण संस्कार है, जो व्यक्ति की मृत्यु के पश्चात उसके शरीर के अंतिम संस्कार और उससे संबंधित धार्मिक अनुष्ठानों को संदर्भित करता है। यह संस्कार जीवन की नश्वरता को स्वीकार करने और आत्मा की शांति के लिए प्रार्थना करने का एक माध्यम है। इसके माध्यम से समाज और परिवार मृतक को विदाई देते हैं और आध्यात्मिक मान्यताओं के अनुसार उसकी आगे की यात्रा की कामना करते हैं। यह भारतीय संस्कृति के जीवन-चक्र के संस्कारों की श्रृंखला का समापन बिंदु माना जाता है।

265. (C) समुदाय
समुदाय एक ऐसी सामाजिक इकाई है जो एक निश्चित भौगोलिक क्षेत्र (इलाके) में रहने वाले लोगों के बीच साझा पहचान, एकता की भावना और 'हम-की भावना' द्वारा पहचानी जाती है। समुदाय में व्यक्ति का पूरा सामाजिक जीवन स्वाभाविक रूप से विकसित होता है, जहाँ लोग साझा हितों, मूल्यों और परंपराओं के कारण परस्पर जुड़े रहते हैं। यह समितियों के विपरीत, किसी विशिष्ट लक्ष्य के लिए नहीं बल्कि जीवन के संपूर्ण और व्यापक अनुभव को साझा करने के लिए निरंतर अस्तित्व में रहता है, जो सदस्यों को सुरक्षा और पहचान देता है।

266. (A) औपचारिक समूह
विश्वविद्यालय संकाय की बैठक एक औपचारिक समूह की अंतःक्रिया का उदाहरण है क्योंकि यह पूर्व-निर्धारित नियमों, एक लिखित कार्यसूची और अधिकार के एक स्पष्ट पदानुक्रम द्वारा संचालित होती है। ऐसी बैठकों का उद्देश्य विशिष्ट संस्थागत लक्ष्यों को प्राप्त करना और आधिकारिक निर्णय लेना होता है। यहाँ सदस्यों के बीच संबंध पेशेवर और अवैयक्तिक होते हैं, जहाँ व्यक्तिगत पसंद के बजाय पद की गरिमा और प्रशासनिक प्रक्रियाओं को सर्वोपरि महत्व दिया जाता है। औपचारिक समूह की संरचना किसी संगठन की कार्यक्षमता और स्थिरता को बनाए रखने के लिए अनिवार्य है।

267. (B) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।
समाजशास्त्र में वर्ण व्यवस्था और आश्रम व्यवस्था दो अलग-अलग आधारभूत अवधारणाएं हैं। वर्ण व्यवस्था समाज को उनके कर्तव्यों और व्यवसायों के आधार पर चार श्रेणियों (ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र) में विभाजित करने वाला स्तरीकरण का एक प्रारूप है। इसके विपरीत, आश्रम व्यवस्था व्यक्ति के जीवन को आयु और आध्यात्मिक विकास के आधार पर चार चरणों (ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ, संन्यास) में व्यवस्थित करती है। अतः दोनों कथनों ने इन व्यवस्थाओं के कार्यों को आपस में बदल दिया है, जिससे वे वर्तमान संदर्भ में तथ्यात्मक रूप से पूरी तरह गलत सिद्ध होते हैं।

268. (B) एक प्रोफेसर पढ़ाने और शोध प्रकाशित करने के अपने कर्तव्यों के बीच फंसा हुआ महसूस करता है।
भूमिका तनाव वह स्थिति है जब किसी व्यक्ति को अपनी एक ही सामाजिक परिस्थिति या पद से जुड़ी विभिन्न और कभी-कभी विरोधाभासी अपेक्षाओं को पूरा करने में कठिनाई होती है। एक प्रोफेसर के रूप में, पढ़ाना और शोध कार्य करना दोनों ही उसके पेशेवर पद के अभिन्न अंग हैं। जब इन दो महत्वपूर्ण कर्तव्यों के बीच समय और ऊर्जा का खिंचाव होता है, तो वह जो दबाव महसूस करता है, वह भूमिका तनाव का सटीक उदाहरण है। यहाँ संघर्ष दो अलग पदों के बीच नहीं, बल्कि एक ही पद के विविध आयामों के बीच है।

269. (C) मोक्ष
हिंदू दर्शन में मानव जीवन के चार परम लक्ष्यों—धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष—को सामूहिक रूप से पुरुषार्थ कहा जाता है। इनमें 'मोक्ष' अंतिम और सर्वोच्च लक्ष्य है, जो सांसारिक बंधनों और जन्म-मृत्यु के चक्र से पूर्ण मुक्ति का प्रतीक है। मोक्ष का अर्थ आत्म-साक्षात्कार और परम आध्यात्मिक शांति की प्राप्ति है। यह अवस्था अन्य तीनों पुरुषार्थों (धर्म, अर्थ और काम) के सफल और मर्यादित पालन के बाद प्राप्त होने वाला सर्वोच्च फल माना गया है, जो मनुष्य के अस्तित्व को पूर्णता और अंतिम सार्थकता प्रदान करता है।

270. (B) केवल 1 और 2
सामाजिक संरचना समाज के विभिन्न अंगों, जैसे स्थितियों और भूमिकाओं, के बीच के उन सुव्यवस्थित और प्रतिमानित संबंधों को संदर्भित करती है जो सामाजिक जीवन को एक स्पष्ट ढांचा प्रदान करते हैं। यह संरचना सामाजिक अंतःक्रियाओं को पूर्वानुमेयता और स्थिरता देती है क्योंकि लोग जानते हैं कि उनसे क्या अपेक्षा की जाती है। हालाँकि, यह कहना गलत होगा कि सामाजिक संरचना पूरी तरह स्थिर है; यह समय के साथ और सामाजिक परिवर्तनों के साथ निरंतर विकसित और

NODIA

परिवर्तित होती रहती है। अतः केवल कथन 1 और 2 सामाजिक संरचना की सही व्याख्या करते हैं।

271. (A) समाजशास्त्र
समाजशास्त्र वह महत्वपूर्ण सामाजिक विज्ञान है जो मानव समाज और सामाजिक अंतःक्रियाओं का वैज्ञानिक और व्यवस्थित अध्ययन करता है। यह विषय सामाजिक संरचनाओं, संस्थाओं, समूहों और उन प्रक्रियाओं की जांच करता है जो समाज को संगठित करती हैं या उसमें परिवर्तन लाती हैं। समाजशास्त्र व्यक्तिगत व्यवहार को व्यापक सामाजिक संदर्भों और सांस्कृतिक प्रतिमानों के प्रकाश में समझने का प्रयास करता है। व्यवस्थित शोध पद्धतियों और वस्तुनिष्ठ विश्लेषण के माध्यम से, यह विषय समाज के कार्य करने के तरीकों और सामाजिक समस्याओं के कारणों को गहराई से स्पष्ट करता है।

272. (B) मूल्य अमूर्त आदर्श हैं, जबकि प्रतिमान ठोस नियम हैं।
मूल्य और प्रतिमान संस्कृति के दो महत्वपूर्ण लेकिन भिन्न घटक हैं। मूल्य समाज के वे व्यापक और अमूर्त मानक या 'आदर्श' हैं जो यह निर्धारित करते हैं कि क्या वांछनीय या महत्वपूर्ण है, जैसे 'ईमानदारी'। इसके विपरीत, प्रतिमान उन मूल्यों को व्यावहारिक रूप से लागू करने वाले व्यवहार के 'ठोस नियम' हैं जो बताते हैं कि किसी विशिष्ट स्थिति में कैसा आचरण करना चाहिए। मूल्य हमारे विश्वासों के पीछे की मार्गदर्शक शक्ति होते हैं, जबकि प्रतिमान हमारे दैनिक कार्यों को व्यवस्थित और सामाजिक रूप से स्वीकृत बनाने का कार्य करते हैं।

273. (B) प्राथमिक समूह; द्वितीयक समूह
परिवार प्राथमिक समूह का एक उत्कृष्ट उदाहरण है क्योंकि इसमें सदस्यों के बीच अत्यंत घनिष्ठ, व्यक्तिगत और भावनात्मक संबंध होते हैं, जहाँ अंतःक्रिया स्वयं में एक साध्य होती है। इसके विपरीत, एक बड़ी कंपनी के सहकर्मी द्वितीयक समूह का हिस्सा होते हैं जहाँ संबंध औपचारिक, अवैयक्तिक और किसी विशिष्ट लक्ष्य (जैसे कार्य पूरा करना) की प्राप्ति के लिए एक साधन मात्र होते हैं। प्राथमिक समूहों में 'हम-की भावना' प्रबल होती है, जबकि द्वितीयक समूहों में संबंधों का आधार पेशेवर उत्तरदायित्व और संविदात्मक नियमों का पालन करना होता है।

274. (A) अर्थव्यवस्था
अर्थव्यवस्था एक प्रमुख सामाजिक संस्था है जिसका प्राथमिक कार्य समाज के जीवित रहने के लिए आवश्यक वस्तुओं और सेवाओं के उत्पादन, विनिमय, वितरण तथा उपभोग की पूरी प्रक्रिया को व्यवस्थित करना है। यह संस्था संसाधनों के कुशल प्रबंधन और समाज की भौतिक आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए उत्तरदायी है। अर्थव्यवस्था के माध्यम से ही श्रम विभाजन, बाजार प्रणाली, व्यापारिक नियम और संपत्ति के अधिकार स्थापित होते हैं। यह संस्था समाज की भौतिक खुशहाली और निरंतर आर्थिक विकास के लिए एक आवश्यक और संगठित सामाजिक ढांचा प्रदान करती है।

275. (C) एकल परिस्थिति से जुड़ी कई भूमिकाएं।
भूमिका समुच्चय की अवधारणा समाजशास्त्री रॉबर्ट मर्टन द्वारा दी गई थी, जो किसी एक विशेष सामाजिक परिस्थिति या पद से जुड़ी विभिन्न भूमिकाओं के समूह को संदर्भित करती है। उदाहरण के लिए, एक 'चिकित्सक' की भूमिका केवल रोगियों के साथ नहीं, बल्कि परिचारिकाओं, चिकित्सालय प्रशासकों और अन्य साथी चिकित्सकों के साथ भी अलग-अलग स्वरूपों में होती है। यह अवधारणा स्पष्ट करती है कि समाज में एक ही पद धारण करने का अर्थ एक जटिल सामाजिक जाल में विभिन्न व्यक्तियों और समूहों के प्रति अलग-अलग उत्तरदायित्वों को प्रभावी ढंग से निभाना है।

276. (D) गृहस्थ चरण
हिंदू आश्रम व्यवस्था के कालानुक्रमिक क्रम में, 'वानप्रस्थ' आश्रम तीसरा चरण है जो 'गृहस्थ' आश्रम के बाद आता है। गृहस्थ आश्रम में पारिवारिक और सामाजिक उत्तरदायित्वों को कुशलतापूर्वक निभाने के बाद, व्यक्ति से यह अपेक्षा की जाती है कि वह क्रमिक रूप से सांसारिक मोह त्यागकर वैराग्य की ओर बढ़े। वानप्रस्थ का अर्थ है आध्यात्मिक चिंतन और सामाजिक सेवा के लिए धीरे-धीरे निवृत्त होना। यह चरण व्यक्ति को अंतिम पड़ाव यानी संन्यास के लिए मानसिक और आध्यात्मिक रूप से तैयार करने का एक महत्वपूर्ण मार्ग प्रदान करता है।

277. (C) व्यक्तिगत जीवन को आकार देने वाली सामाजिक ताकतें
समाजशास्त्रीय परिप्रेक्ष्य का मुख्य केंद्र बिंदु यह समझना है कि व्यापक सामाजिक संरचनाएं, संस्थाएं और सांस्कृतिक प्रतिमान किस प्रकार व्यक्तिगत जीवन, विचारों और अनुभवों को आकार देते हैं। यह दृष्टिकोण हमें सिखाता है कि जिसे हम पूरी तरह निजी मानते हैं, वह अक्सर उन सामाजिक ताकतों का परिणाम होता है जो हमारे परिवेश में कार्य कर रही हैं। सी. राइट मिल्स के अनुसार, यह 'व्यक्तिगत परेशानियों' और 'सार्वजनिक मुद्दों' के बीच संबंध को देखने की शक्ति है, जो हमें सामाजिक व्यवस्था को गहराई से समझने में मदद करती है।

278. (B) राजकुमार
आरोपित परिस्थिति वह सामाजिक पद है जो व्यक्ति को जन्म से या विरासत में मिलता है और जिस पर उसका कोई व्यक्तिगत नियंत्रण नहीं होता। एक 'राजकुमार' का पद वंशानुगत होता है, जो उसे उसके शाही परिवार में जन्म लेने के कारण स्वतः प्राप्त होता है, न कि उसकी व्यक्तिगत योग्यता या प्रयास से। इसके विपरीत, चिकित्सक, जीवनसाथी या स्नातक होना अर्जित परिस्थितियाँ हैं, जिन्हें व्यक्ति अपनी शिक्षा, व्यक्तिगत पसंद, कौशल और कड़ी मेहनत के माध्यम से समाज में स्वयं प्राप्त करता है। आरोपित परिस्थितियाँ पूर्व-निर्धारित सामाजिक पहचान का आधार होती हैं।

279. (D) संस्था
सामाजिक संस्था विश्वासों, प्रथाओं और संगठनात्मक नियमों का एक स्थापित और स्थायी प्रतिमान है जो समाज की आधारभूत आवश्यकताओं, जैसे कि कानून, धर्म या शिक्षा, को व्यवस्थित करने के लिए विकसित किया जाता है। संस्थाएं

Click Here to Buy book on Amazon

अमूर्त होती हैं और सामाजिक संबंधों को एक निश्चित ढांचा और स्थिरता प्रदान करती हैं। ये पीढ़ी-दर-पीढ़ी चलती रहती हैं और व्यक्तिगत पसंद के बजाय सामूहिक प्रतिमानों और स्थापित परंपराओं पर आधारित होती हैं। संस्थाएं ही वे विधियां हैं जिनके माध्यम से समाज अपने सदस्यों के व्यवहार को विनियमित और सुव्यवस्थित करता है।

280. (A) भूमिका संघर्ष
भूमिका संघर्ष तब उत्पन्न होता है जब एक व्यक्ति को अपनी दो या दो से अधिक अलग-अलग सामाजिक परिस्थितियों (जैसे संतान, छात्र और कर्मचारी) से जुड़ी विरोधाभासी अपेक्षाओं का सामना करना पड़ता है। जब माता-पिता, मित्रों और वरिष्ठ अधिकारियों की मांगें एक ही समय में टकराती हैं, तो व्यक्ति मानसिक खिंचाव और सामाजिक तनाव का अनुभव करता है क्योंकि सभी जिम्मेदारियों को एक साथ पूरा करना चुनौतीपूर्ण होता है। यह स्थिति आधुनिक समाज की जटिलता को दर्शाती है जहाँ व्यक्ति को विभिन्न क्षेत्रों में अपनी भूमिकाओं के बीच निरंतर संतुलन बनाए रखना पड़ता है।

281. (C) सामाजिक स्तरीकरण
पारंपरिक वर्ण व्यवस्था समाज को उनके कर्तव्यों और व्यवसायों के आधार पर पदानुक्रमित श्रेणियों (ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र) में विभाजित करने वाला 'सामाजिक स्तरीकरण' का एक प्रारूप है। स्तरीकरण का अर्थ समाज का विभिन्न स्तरों या समूहों में विभाजन है, जहाँ प्रत्येक स्तर के पास अधिकारों, प्रतिष्ठा और संसाधनों का अलग-अलग हिस्सा होता है। वर्ण व्यवस्था मूलतः गुणों और कर्मों के आधार पर श्रम का विभाजन सुनिश्चित करने के लिए बनाई गई थी ताकि समाज एक सुव्यवस्थित और कार्यात्मक इकाई के रूप में निरंतर कार्य कर सके।

282. (A) स्वयं और दूसरों को आंकने के लिए मानक।
संदर्भ समूह वह सामाजिक समूह है जिसे व्यक्ति अपने स्वयं के व्यवहार, दृष्टिकोण, मूल्यों और उपलब्धियों के मूल्यांकन के लिए एक मानक या 'मापदंड' के रूप में उपयोग करता है। व्यक्ति अक्सर उन लोगों के समूह का अनुकरण करता है जिसे वह अपना आदर्श मानता है, भले ही वह वर्तमान में उसका सदस्य न हो। यह समूह व्यक्ति की आकांक्षाओं को आकार देता है और उसे सामाजिक रूप से प्रेरित करता है। संदर्भ समूह की अवधारणा हमें यह समझने में मदद करती है कि किस प्रकार बाहरी आदर्श हमारे आत्म-बोध और समाजीकरण को प्रभावित करते हैं।

283. (A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
समुदाय और समिति सामाजिक समूहों के दो अलग-अलग स्वरूपों को स्पष्ट करते हैं। समुदाय एक ऐसी सामाजिक इकाई है जो साझा क्षेत्र और सदस्यों के बीच 'हम-की भावना' या स्वाभाविक अपनेपन पर आधारित होती है, जहाँ व्यक्ति का पूरा जीवन व्यतीत होता है। इसके विपरीत, समिति एक औपचारिक समूह है जिसे सचेत रूप से किसी विशिष्ट और सीमित उद्देश्य को प्राप्त करने के लिए संगठित किया जाता है। समुदाय स्वतःस्फूर्त रूप से विकसित होता है, जबकि समिति का गठन विशेष हितों की पूर्ति के लिए योजनाबद्ध और संगठित तरीके से किया जाता है।

284. (B) औपचारिक शिक्षा में प्रवेश
'उपनयन' संस्कार हिंदू परंपरा का एक अत्यंत महत्वपूर्ण संस्कार है जो बालक के औपचारिक शिक्षण और छात्र जीवन (ब्रह्मचर्य आश्रम) के आरंभ को चिह्नित करता है। इसे 'यज्ञोपवीत' के नाम से भी जाना जाता है, जिसके बाद व्यक्ति को 'द्विज' या दोबारा जन्मा माना जाता है क्योंकि वह ज्ञान और विद्या की दुनिया में प्रवेश करता है। यह संस्कार व्यक्ति के अनुशासित जीवन, वेदों के अध्ययन और आचार्य के प्रति समर्पण की आध्यात्मिक यात्रा की औपचारिक शुरुआत का प्रतीक है जो उसके भविष्य की बौद्धिक नींव रखता है।

NODIA

285. (A) P-2, Q-4, R-1, S-3
समाजशास्त्र की ये अवधारणाएं व्यक्ति और सामाजिक संरचना के संबंधों को स्पष्ट करती हैं। परिस्थिति समुच्चय उन सभी पदों का संग्रह है जो व्यक्ति एक ही समय में धारण करता है। भूमिका समुच्चय एक ही पद से जुड़ी सभी भूमिकाओं की श्रृंखला है। भूमिका संघर्ष तब होता है जब अलग-अलग परिस्थितियों की अपेक्षाएं आपस में टकराती हैं। परिस्थिति क्रम जीवन भर धारण किए गए पदों की एक अनुक्रमिक श्रृंखला है। ये सभी तत्व मिलकर यह समझाते हैं कि व्यक्ति समाज के भीतर किस प्रकार अपनी विविध और जटिल जिम्मेदारियों का निर्वहन करता है।

286. (D) एक खेल टीम
प्राथमिक सामाजिक संस्थाएँ समाज के सुचारु संचालन के लिए स्थापित व्यवहार के वे व्यापक और स्थायी प्रतिमान हैं जो अनिवार्य आवश्यकताओं को पूरा करते हैं, जैसे परिवार, धर्म और अर्थव्यवस्था। इनमें स्थायित्व और सार्वभौमिकता होती है। इसके विपरीत, एक खेल दल एक छोटा सामाजिक समूह या समिति हो सकती है, लेकिन इसे एक 'प्राथमिक संस्था' के रूप में वर्गीकृत नहीं किया जा सकता क्योंकि इसमें वह व्यापकता और अनिवार्य सामाजिक संरचना नहीं होती जो समाज की आधारभूत बनावट को परिभाषित करने के लिए आवश्यक है। संस्थाएँ समाज के नियमों को आकार देती हैं।

287. (A) अंतः समूह; बाह्य समूह
अंतः समूह और बाह्य समूह के बीच का विभाजन व्यक्ति की मनोवैज्ञानिक पहचान और उसके भावनात्मक जुड़ाव पर आधारित है। अंतः समूह वह है जिसके प्रति व्यक्ति अपनेपन, वफादारी और 'हम-की भावना' रखता है, जो उसे समूह का अभिन्न हिस्सा महसूस कराती है। इसके विपरीत, बाह्य समूह वह है जिसे व्यक्ति "वे" के रूप में देखता है और जिसके प्रति वह अक्सर अलगाव, प्रतिस्पर्धा या विरोध की भावना रखता है। यह विभाजन व्यक्ति के दृष्टिकोण को आकार देने और सामाजिक सीमाओं को सुस्पष्ट करने में एक अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

288. (B) धन/संपत्ति
पुरुषार्थ के ढांचे के अंतर्गत 'अर्थ' का तात्पर्य भौतिक संसाधनों, धन और सांसारिक समृद्धि के अर्जन और प्रबंधन से है। यह

जीवन के उस पक्ष को मान्यता देता है जो आर्थिक सुरक्षा और भौतिक आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए आवश्यक है। हिंदू दर्शन के अनुसार, अर्थ का अनुसरण तभी उचित है जब वह 'धर्म' के नैतिक नियमों के अधीन हो। यह पुरुषार्थ व्यक्ति को सिखाता है कि समाज में सम्मानपूर्वक रहने और अपने उत्तरदायित्वों को निभाने के लिए भौतिक उन्नति और साधनों का अर्जन करना भी जीवन का एक अनिवार्य उद्देश्य है।

289. (B) ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र
पारंपरिक हिंदू वर्ण व्यवस्था एक पदानुक्रमित सामाजिक संरचना प्रस्तुत करती है। इस सोपान क्रम में 'ब्राह्मण' (विद्वान और पुरोहित) सर्वोच्च स्थान पर हैं। द्वितीय स्थान 'क्षत्रिय' (शासक और योद्धा) का है, जो सुरक्षा और न्याय के लिए जिम्मेदार थे। तृतीय स्थान 'वैश्य' (व्यापारी और कृषक) का है, जो अर्थव्यवस्था का संचालन करते थे। चतुर्थ और अंतिम स्थान पर 'शूद्र' (सेवक और श्रमिक) आते हैं। यह व्यवस्था प्राचीन भारत में श्रम विभाजन और सामाजिक व्यवस्था बनाए रखने की एक कार्यात्मक प्रणाली के रूप में विकसित की गई थी।

290. (A) व्यवस्थित अवलोकन और साक्ष्य
समाजशास्त्र को एक विज्ञान के रूप में इसलिए परिभाषित किया जाता है क्योंकि यह सामाजिक वास्तविकताओं का अध्ययन करने के लिए व्यवस्थित अवलोकन, प्रयोग और ठोस साक्ष्यों पर निर्भर करता है। यह विषय दार्शनिक कल्पनाओं या केवल सामान्य ज्ञान पर आधारित नहीं है, बल्कि यह तथ्यों का वस्तुनिष्ठ विश्लेषण करता है। समाजशास्त्र में वैज्ञानिक पद्धतियों का उपयोग करके सामाजिक प्रवृत्तियों की जांच की जाती है और सिद्धांतों का प्रतिपादन किया जाता है। यह व्यवस्थित और प्रमाण-आधारित दृष्टिकोण ही समाजशास्त्र को एक विश्वसनीय और वस्तुनिष्ठ सामाजिक विज्ञान की श्रेणी में पूरी तरह स्थापित करता है।

291. (A) केवल 1
समाजशास्त्र में परिस्थिति और भूमिका एक-दूसरे के पूरक अंग हैं; परिस्थिति समाज में व्यक्ति द्वारा प्राप्त एक 'पद' है और भूमिका उस पद के साथ जुड़े कर्तव्यों का व्यावहारिक 'निर्वहन' है। हालाँकि, यह कहना गलत होगा कि व्यक्ति के पास जीवन भर केवल एक ही परिस्थिति होती है, क्योंकि व्यक्ति निरंतर नए पदों को धारण करता है। साथ ही, भूमिका समुच्चय केवल एक ही परिस्थिति से जुड़ी भूमिकाओं को संदर्भित करता है, न कि सभी स्थितियों को। अतः केवल प्रथम कथन ही इन समाजशास्त्रीय अवधारणाओं के संबंधों की सही और सटीक व्याख्या करता है।

292. (D) धर्म
धर्म एक प्रमुख सामाजिक संस्था है जो अलौकिक शक्तियों और पवित्र वस्तुओं से संबंधित विश्वासों के माध्यम से समाज के सदस्यों को उद्देश्य की भावना और अर्थ का एक व्यापक ढांचा प्रदान करती है। यह संस्था जीवन के अंतिम प्रश्नों के उत्तर देती है और सामाजिक व्यवहार को निर्देशित करने के लिए नैतिक नियम स्थापित करती है। धार्मिक अनुष्ठान और साझा प्रतीक सामूहिक एकजुटता को बढ़ावा देते हैं और व्यक्तियों को एक साझा पहचान में बांधते हैं। धर्म न केवल व्यक्तिगत शांति देता है, बल्कि यह सामाजिक व्यवस्था और सांस्कृतिक अखंडता बनाए रखने का माध्यम है।

293. (C) ऋण और दायित्व
हिंदू दर्शन में 'ऋण' की अवधारणा व्यक्ति के उन नैतिक उत्तरदायित्वों और ऋणों पर बल देती है जो उसे अपने जन्म और अस्तित्व के कारण देवताओं, ऋषियों और पूर्वजों के प्रति चुकाने होते हैं। यह अवधारणा स्पष्ट करती है कि मनुष्य का जीवन स्वतंत्र नहीं है, बल्कि वह समाज और ब्रह्मांड के प्रति गहरे 'दायित्वों' से बंधा हुआ है। यज्ञ, स्वाध्याय और संतानोत्पत्ति के माध्यम से इन ऋणों को चुकाना व्यक्ति का परम कर्तव्य माना गया है। यह दर्शन व्यक्ति को स्वार्थ से ऊपर उठकर सामूहिक और आध्यात्मिक कल्याण के लिए प्रेरित करता है।

294. (B) द्वितीयक समूह
एक विश्वविद्यालय में शोध दल को द्वितीयक समूह के रूप में वर्गीकृत किया जा सकता है क्योंकि इसके सदस्यों के बीच संबंध मुख्य रूप से औपचारिक, लक्ष्य-उन्मुख और अवैयक्तिक होते हैं। यहाँ अंतःक्रिया का प्राथमिक उद्देश्य किसी विशिष्ट वैज्ञानिक समस्या का समाधान करना या शोध लक्ष्यों को प्राप्त करना है। प्राथमिक समूहों के विपरीत, यहाँ सदस्यों की भूमिकाएं उनके कौशल और विशेषज्ञता पर आधारित होती हैं और संबंध सीमित समय के लिए होते हैं। यह समूह किसी विशिष्ट बौद्धिक कार्य को पूरा करने के लिए एक साधनपरक इकाई के रूप में व्यवस्थित रूप से कार्य करता है।

NODIA

295. (A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
आधुनिक और जटिल समाजों में व्यक्ति को एक ही समय में अनेक सामाजिक समूहों (जैसे परिवार, कार्य और क्लब) का सदस्य होना पड़ता है। जब इन विभिन्न समूहों की अपेक्षाएं और मांगें विरोधाभासी हो जाती हैं और आपस में टकराने लगती हैं, तो व्यक्ति 'भूमिका संघर्ष' का अनुभव करता है। उदाहरण के लिए, कार्यस्थल की मांग और परिवार की जिम्मेदारियों के बीच संतुलन बनाना कठिन हो सकता है। यह स्थिति सामाजिक संरचना में पदों की बहुलता और उनके बीच निहित अंतर्विरोधों के कारण पैदा होने वाले तनाव को स्पष्ट रूप से दर्शाती है।

296. (A) वांछनीयता; व्यवहार
समाजशास्त्र में मूल्य और प्रतिमान संस्कृति के दो अलग-अलग आधार स्तंभ हैं। मूल्य समाज के वे अमूर्त मानक हैं जो 'वांछनीयता' को आंकने का आधार प्रदान करते हैं, यानी वे बताते हैं कि क्या सही या महत्वपूर्ण है। इसके विपरीत, प्रतिमान उन मूल्यों को व्यावहारिक रूप से लागू करने वाले 'व्यवहार' के नियम हैं जो बताते हैं कि किसी विशिष्ट स्थिति में कैसा आचरण करना चाहिए। जिस प्रकार मूल्य हमें लक्ष्य प्रदान करते हैं, उसी प्रकार प्रतिमान उन लक्ष्यों तक पहुँचने के लिए हमारे दैनिक कार्यों को सामाजिक रूप से निर्देशित और विनियमित करते हैं।

297. (C) वानप्रस्थ
वानप्रस्थ आश्रम हिंदू आश्रम व्यवस्था का तीसरा चरण है जो गृहस्थी के कर्तव्यों को पूरा करने के बाद वैराग्य और आध्यात्मिक चिंतन के लिए समर्पित है। इस अवस्था में व्यक्ति सांसारिक मोह त्यागकर क्रमिक रूप से शांति और एकांत की ओर बढ़ता है, जिसे अक्सर एक 'वनवासी' के जीवन के रूप में देखा जाता है। इसका मुख्य उद्देश्य स्वयं को पूर्ण त्याग यानी संन्यास के लिए तैयार करना है। यह चरण व्यक्ति को समाज के सक्रिय उत्तरदायित्वों से निवृत होकर आत्मिक शांति और ईश्वर की भक्ति की ओर गहराई से अग्रसर करने का मार्ग प्रशस्त करता है।

298. (A) संरचना
सामाजिक संरचना समाज के विभिन्न अंगों, जैसे स्थितियों, भूमिकाओं, समूहों और संस्थाओं के बीच के उन स्थायी और सुव्यवस्थित संबंधों को संदर्भित करती है जो सामाजिक जीवन को एक स्पष्ट ढांचा प्रदान करते हैं। व्यक्ति की सभी समूह सदस्यताएँ और सामाजिक पद इसी 'संरचना' के भीतर व्यवस्थित होते हैं। यह संरचना ही मानवीय अंतःक्रियाओं को पूर्वानुमेय बनाती है और समाज को स्थिरता प्रदान करती है। यह वह अमूर्त जाल है जो समाज के कार्य करने के तरीकों को निर्देशित करता है और व्यक्तिगत व्यवहार को सामूहिक प्रतिमानों के अनुरूप पूरी तरह से व्यवस्थित करता है।

299. (D) बाह्य समूह शत्रुता
प्रतिद्वंद्वी विश्वविद्यालय के सदस्यों के प्रति विरोध की भावना 'बाह्य समूह शत्रुता' का एक उदाहरण है। बाह्य समूह वह है जिसे व्यक्ति "वे" के रूप में देखता है और जिसके प्रति वह अलगाव, प्रतिस्पर्धा या विरोध की भावना रखता है। यह भावना अक्सर अपने समूह (अंतः समूह) के प्रति वफादारी और एकजुटता को और अधिक मजबूत करने के परिणामस्वरूप उत्पन्न होती है। समाजशास्त्र में यह देखा गया है कि समूहों के बीच की यह दूरी और नकारात्मक दृष्टिकोण सामाजिक सीमाओं को स्पष्ट करने और समूह की आंतरिक पहचान को सुदृढ़ करने में सहायक होते हैं।

300. (B) सामाजिक आवश्यकताओं को पूरा करने वाले प्रतिमानों की एक संगठित प्रणाली।
सामाजिक संस्था विश्वासों, प्रथाओं और संगठनात्मक नियमों का एक सुव्यवस्थित और स्थायी प्रतिमान है जो समाज की आधारभूत आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए विकसित किया जाता है। संस्थाएं अमूर्त होती हैं और सामाजिक संबंधों को एक निश्चित ढांचा और निरंतरता प्रदान करती हैं। विवाह, परिवार, धर्म और कानून इसके प्रमुख उदाहरण हैं जो पीढ़ी-दर-पीढ़ी चलते रहते हैं। संस्थाएं व्यक्तिगत पसंद के बजाय सामूहिक प्रतिमानों और स्थापित परंपराओं पर आधारित होती हैं, जो समाज की स्थिरता और व्यवस्था बनाए रखने के लिए सबसे अनिवार्य और महत्वपूर्ण मानी जाती हैं।

Downloaded from www.pdf.tube

अध्याय 02
समाजीकरण

1. निम्नलिखित में से कौन समाजीकरण की प्रक्रिया को सबसे अच्छी तरह परिभाषित करता है?
(A) मानव विकास और शारीरिक वृद्धि का जैविक क्रम।
(B) विभिन्न मानदंडों और विचारधाराओं को आत्मसात करने की आजीवन प्रक्रिया।
(C) व्यक्तिगत धन और स्थिति प्राप्त करने का आर्थिक क्रम।
(D) औपचारिक सरकार और राज्य बनाने का राजनीतिक क्रम।

2. समाजीकरण के अभिकरणों के संबंध में सही कथन की पहचान करें।
(A) परिवार को आमतौर पर समाजीकरण का प्राथमिक अभिकरण माना जाता है।
(B) समाजीकरण के अभिकरण विशेष रूप से स्कूलों जैसे औपचारिक संस्थान ही होते हैं।
(C) सभी समाजीकरण अभिकरणों का प्रभाव व्यक्ति के पूरे जीवन में स्थिर रहता है।
(D) आधुनिक समाज में समाजीकरण के अभिकरण के रूप में मीडिया की भूमिका नगण्य है।

3. एक मेडिकल छात्र स्नातक होने से बहुत पहले ही डॉक्टरों की पेशेवर शब्दावली, दृष्टिकोण और शिष्टाचार सीखना शुरू कर देता है। यह किसका उदाहरण है?
(A) पुनः समाजीकरण
(B) वयस्क समाजीकरण
(C) प्रत्याशित समाजीकरण
(D) प्राथमिक समाजीकरण

4. निम्नलिखित में से किसे आमतौर पर समाजीकरण का प्राथमिक अभिकरण नहीं माना जाता है?
(A) परिवार
(B) मित्र समूह
(C) जनसंचार माध्यम
(D) कार्यस्थल

5. दिए गए कथनों को पढ़ें और सही विकल्प का चयन करें।
कथन I: पुनः समाजीकरण में मानदंडों, मूल्यों और व्यवहारों का एक नया समूह सीखना शामिल है जो किसी के पिछले अनुभवों से भिन्न होते हैं।
कथन II: सैन्य अकादमी या कारागार में प्रवेश पुनः समाजीकरण की आवश्यकता वाले परिवेश के सामान्य उदाहरण हैं।
(A) कथन I और कथन II दोनों सत्य हैं।
(B) कथन I और कथन II दोनों असत्य हैं।
(C) कथन I सत्य है, लेकिन कथन II असत्य है।
(D) कथन I असत्य है, लेकिन कथन II सत्य है।

6. वयस्क समाजीकरण के बारे में निम्नलिखित में से कौन सा कथन गलत है?
(A) यह बचपन में प्रारंभिक समाजीकरण के बाद होता है।
(B) इसमें विशेष रूप से पहले से अर्जित सभी मूल्यों और मानदंडों को भुलाना शामिल है।
(C) यह अक्सर जीवनसाथी, माता-पिता या कर्मचारी बनने जैसी नई भूमिकाओं से जुड़ा होता है।
(D) यह प्राथमिक समाजीकरण की तुलना में कम तीव्र और धीमी प्रक्रिया है।

7. 'सामाजिक विभेदीकरण' शब्द का तात्पर्य है:
(A) समाज के भीतर विविध सामाजिक समूहों की श्रेणीबद्ध रैंकिंग।
(B) एक विशिष्ट समाज में भौतिक संसाधनों का समान वितरण।
(C) विभिन्न सामाजिक और आर्थिक वर्गों के बीच निरंतर संघर्ष।
(D) जैविक या सामाजिक लक्षणों के आधार पर समूहों को अलग करने की प्रक्रिया।

8. सामाजिक स्तरीकरण के संदर्भ में, 'पदानुक्रम' का अर्थ है:
(A) श्रेष्ठता और हीनता के पैमाने पर समूहों को क्रमबद्ध करने की प्रणाली।
(B) सभी सदस्यों के बीच पूर्ण और समग्र सामाजिक समानता की स्थिति।
(C) विभिन्न पदों के बीच व्यक्तियों की क्षैतिज गतिशीलता।
(D) विभिन्न स्थानीय समुदायों के बीच मौजूद सांस्कृतिक अंतर।

9. निम्न आय वाले परिवार में पैदा हुआ व्यक्ति एक धनी और सफल उद्यमी बन जाता है। यह किसका उत्कृष्ट उदाहरण है?
(A) सामाजिक विभेदीकरण
(B) सामाजिक पदानुक्रम
(C) सामाजिक गतिशीलता
(D) सामाजिक असमानता

10. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है।
अभिकथन (A): सामाजिक स्तरीकरण सभी समाजों की एक

NODIA

सार्वभौमिक विशेषता है, हालांकि इसका स्वरूप भिन्न-भिन्न होता है।
कारण (R): सभी समाजों को महत्वपूर्ण पदों को भरने और उन्हें प्रेरित करने के लिए अपने सदस्यों को विभेदित और श्रेणीबद्ध करने की आवश्यकता होती है।
(A) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सत्य हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सत्य है लेकिन R असत्य है।
(D) A असत्य है लेकिन R सत्य है।

11. स्तरीकरण का कौन सा रूप आरोपण, वंशानुगत स्थिति और सामाजिक अंतःक्रिया पर प्रतिबंधों द्वारा पहचाना जाता है?
(A) वर्ग
(B) लिंग
(C) नृजातीयता
(D) जाति

12. सामाजिक स्तरीकरण के रूपों के संबंध में गलत युग्म की पहचान करें।
(A) जाति : प्रदत्त प्रास्थिति
(B) लिंग : केवल जैविक नियतिवाद
(C) वर्ग : अर्जित प्रास्थिति
(D) नृजातीयता : साझा सांस्कृतिक विरासत

13. सामाजिक परिवर्तन की वह प्रक्रिया जिसमें समाज का सरल से अधिक जटिल रूपों में क्रमिक विकास शामिल है, कहलाती है:
(A) क्रांति
(B) विसरण
(C) उद्विकास
(D) प्रगति

14. दिए गए कथनों को पढ़ें और सही विकल्प का चयन करें।
कथन I: सामाजिक परिवर्तन के एक प्रकार के रूप में 'प्रगति' एक मूल्य-तटस्थ अवधारणा है।
कथन II: 'प्रगति' का तात्पर्य उस दिशा में परिवर्तन से है जिसे समाज द्वारा वांछनीय माना जाता है।
(A) कथन I और कथन II दोनों सत्य हैं।
(B) कथन I और कथन II दोनों असत्य हैं।
(C) कथन I असत्य है, लेकिन कथन II सत्य है।
(D) कथन I सत्य है, लेकिन कथन II असत्य है।

15. सूची I को सूची II के साथ सुमेलित कीजिए।
सूची I: (सामाजिक परिवर्तन की अवधारणा)
P. विसरण
Q. क्रांति
R. उद्विकास
S. रूपांतरण
सूची II: (विवरण)
1. सरल से जटिल रूपों की ओर क्रमिक विकास।
2. सामाजिक संरचना में अचानक और मौलिक परिवर्तन।
3. सांस्कृतिक लक्षणों का एक समूह से दूसरे समूह में प्रसार।
4. सामाजिक संस्थाओं के स्वरूप में महत्वपूर्ण परिवर्तन।
(A) P-3, Q-2, R-1, S-4
(B) P-1, Q-3, R-2, S-4
(C) P-3, Q-1, R-4, S-2
(D) P-2, Q-4, R-1, S-3

16. 'संरचना के भीतर परिवर्तन' और 'संरचना का परिवर्तन' के बीच मुख्य अंतर यह है कि 'संरचना का परिवर्तन' निम्नलिखित को संदर्भित करता है:
(A) मौजूदा सामाजिक ढांचे के भीतर मामूली समायोजन।
(B) संपूर्ण सामाजिक संरचना के स्थान पर एक नई संरचना का आना।
(C) सामाजिक मानदंडों का धीमा विकास।
(D) संरचना के भीतर पदों पर आसीन व्यक्तियों में परिवर्तन।

17. निम्नलिखित में से कौन सामाजिक परिवर्तन के चक्रीय सिद्धांत का सबसे अच्छा प्रतिनिधित्व करता है?
(A) एक सिद्धांत जो प्रस्तावित करता है कि समाज पूर्णता की स्थिति की ओर निरंतर आगे बढ़ता है।
(B) एक सिद्धांत जो सुझाव देता है कि समाज उत्थान और पतन के दोहराव वाले चरणों से गुजरता है।
(C) एक सिद्धांत जो रैखिक प्रगति को चलाने में तकनीकी नवाचार की भूमिका पर जोर देता है।
(D) एक सिद्धांत जो सामाजिक परिवर्तन को पूरी तरह से यादृच्छिक और अप्रत्याशित प्रक्रिया के रूप में देखता है।

18. भारतीय संदर्भ में 'विविधता में एकता' शब्द मुख्य रूप से किस पर जोर देता है?
(A) एक राष्ट्रीय पहचान जो व्यापक सांस्कृतिक अंतरों के साथ सह-अस्तित्व में है।
(B) सभी संस्कृतियों का एक एकल समान संस्कृति में पूर्ण समावेशन।
(C) पूरे देश के लिए एक ही आधिकारिक भाषा और धर्म का अस्तित्व।
(D) देश का राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों में औपचारिक राजनीतिक विभाजन।

19. निम्नलिखित में से कौन भारत में सांस्कृतिक विविधता का एक प्रमुख आयाम है?
(A) आर्थिक विविधता
(B) वैचारिक विविधता
(C) भाषाई विविधता
(D) पीढ़ीगत विविधता

20. भारतीय समाज में समसामयिक मुद्दों के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:
1. गरीबी पूरी तरह से एक आर्थिक मुद्दा है जिसका कोई सामाजिक आयाम नहीं है।

Click Here to Buy book on Amazon

2. जाति और लिंग की असमानता परस्पर जुड़ी समस्याएं हैं।
3. क्षेत्रीय और धार्मिक वैमनस्य राष्ट्रीय एकीकरण के लिए खतरा पैदा कर सकता है।

उपरोक्त कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?
(A) केवल 1 और 2
(B) केवल 2 और 3
(C) केवल 3
(D) 1, 2 और 3

21. पारिवारिक कलह के संदर्भ में 'दहेज' को सबसे अच्छी तरह से किस रूप में समझा जा सकता है?
(A) माता-पिता द्वारा वधू को स्वेच्छा से दिया गया पारंपरिक उपहार।
(B) वर के परिवार द्वारा वधू के परिवार से मांगी गई राशि।
(C) वधू द्वारा अपने पति के घर लाई गई संपत्ति, जो अक्सर बलपूर्वक ली जाती है।
(D) नवविवाहित जोड़ों के लिए राज्य द्वारा प्रायोजित वित्तीय सहायता प्रणाली।

22. परिवार के भीतर अंतर-पीढ़ीगत संघर्ष आमतौर पर किससे उत्पन्न होता है?
(A) भाई-बहनों के बीच धन और आय में अंतर।
(B) माता-पिता और बच्चों के बीच मूल्यों, विश्वासों और जीवन शैली में टकराव।
(C) राजनीतिक दलों के प्रति झुकाव को लेकर असहमति।
(D) परिवार के पालतू पशु के प्रति स्नेह की प्रतिस्पर्धा।

23. वह प्रक्रिया जिसके द्वारा व्यक्तियों या समूहों को प्रास्थिति के कम या अधिक स्थायी पदानुक्रम में वर्गीकृत किया जाता है, कहलाती है:
(A) सामाजिक विभेदीकरण
(B) सामाजिक गतिशीलता
(C) समाजीकरण
(D) सामाजिक स्तरीकरण

24. निम्नलिखित में से कौन सामाजिक स्तरीकरण के एक रूप का प्रतिनिधित्व नहीं करता है?
(A) सामाजिक विभेदीकरण
(B) लिंग
(C) वर्ग
(D) जाति

25. निम्नलिखित प्रक्रियाओं को सामाजिक स्तरीकरण के तार्किक क्रम में व्यवस्थित करें:
1. सामाजिक विभेदीकरण
2. सामाजिक असमानता
3. सामाजिक स्तरीकरण
4. सामाजिक पदानुक्रम

(A) 1, 4, 2, 3
(B) 1, 2, 4, 3
(C) 2, 1, 3, 4
(D) 4, 3, 2, 1

26. जाति व्यवस्था के बारे में निम्नलिखित में से कौन सा कथन गलत है?
(A) प्रास्थिति मुख्य रूप से प्रयास के माध्यम से प्राप्त की जाती है।
(B) यह स्तरीकरण की एक बंद प्रणाली है।
(C) सामाजिक गतिशीलता अत्यधिक प्रतिबंधित है।
(D) यह आरोपण के सिद्धांत पर आधारित है।

27. वह समाजीकरण जो व्यक्ति के पूरे जीवन में चलता है और उसके बचपन के बाद के वर्षों में नई भूमिकाओं और जिम्मेदारियों से जुड़ा होता है, क्या कहलाता है?
(A) प्रत्याशित समाजीकरण
(B) पुनः समाजीकरण
(C) प्राथमिक समाजीकरण
(D) वयस्क समाजीकरण

28. दिए गए कथनों को पढ़ें और सही विकल्प का चयन करें।
कथन I: समाजीकरण तब समाप्त हो जाता है जब व्यक्ति वयस्कता तक पहुँच जाता है।
कथन II: विवाह, माता-पिता बनने और रोजगार जैसी नई भूमिकाओं के अनुकूल होने के लिए वयस्क समाजीकरण आवश्यक है।
(A) कथन I और कथन II दोनों सत्य हैं।
(B) कथन I और कथन II दोनों असत्य हैं।
(C) कथन I असत्य है, लेकिन कथन II सत्य है।
(D) कथन I सत्य है, लेकिन कथन II असत्य है।

NODIA

29. समाजीकरण के सिद्धांतों का मुख्य उद्देश्य यह स्पष्ट करना है कि:
(A) समाजों को विभिन्न वर्गों में कैसे विभाजित किया जाता है।
(B) सामाजिक संरचनाएं समय के साथ कैसे बदलती हैं।
(C) व्यक्ति अपने समाज के क्रियाशील सदस्य बनना कैसे सीखते हैं।
(D) गरीबी और असमानता कैसे बनी रहती है।

30. एक नए भर्ती हुए सैनिक को नागरिक व्यवहारों को भूलना पड़ता है और सैन्य जीवन के कठोर मानदंडों को सीखना पड़ता है। यह प्रक्रिया किसका उदाहरण है?
(A) प्रत्याशित समाजीकरण
(B) लैंगिक समाजीकरण
(C) वयस्क समाजीकरण
(D) पुनः समाजीकरण

31. निम्नलिखित में से कौन सा सामाजिक विभेदीकरण और सामाजिक स्तरीकरण के बीच संबंधों का सबसे सटीक विवरण है?
(A) स्तरीकरण, विभेदीकरण से उत्पन्न संरचित असमानता की एक प्रणाली है।

(B) वे समान अवधारणाएँ हैं।
(C) सामाजिक विभेदीकरण सामाजिक स्तरीकरण का एक रूप है।
(D) सामाजिक विभेदीकरण हमेशा समानता की ओर ले जाता है, जबकि सामाजिक स्तरीकरण असमानता की ओर ले जाता है।

32. स्तरीकरण के एक रूप के रूप में 'वर्ग' की अवधारणा मुख्य रूप से किस पर आधारित है?
(A) धार्मिक पवित्रता
(B) आर्थिक स्थिति और बाजार की स्थिति
(C) वंशानुगत प्रास्थिति
(D) जन्मजात जैविक अंतर

33. सामाजिक स्तरीकरण का कौन सा सिद्धांत यह तर्क देता है कि सबसे प्रतिभाशाली व्यक्तियों को महत्वपूर्ण सामाजिक भूमिकाओं के लिए प्रेरित करने हेतु असमानता आवश्यक है?
(A) संघर्ष सिद्धांत परिप्रेक्ष्य
(B) प्रकार्यवादी सिद्धांत परिप्रेक्ष्य
(C) नृजातीय स्तरीकरण परिप्रेक्ष्य
(D) लैंगिक असमानता परिप्रेक्ष्य

34. एक कारखाने के श्रमिक का बच्चा जो डॉक्टर बन जाता है, उसने अनुभव किया है:
(A) अंतर-पीढ़ीगत सामाजिक गतिशीलता
(B) क्षैतिज सामाजिक गतिशीलता
(C) अंतः-पीढ़ीगत सामाजिक गतिशीलता
(D) संरचनात्मक सामाजिक गतिशीलता

35. संयुक्त राज्य अमेरिका से दुनिया के अन्य हिस्सों में त्वरित-भोजन श्रृंखलाओं का प्रसार किस प्रकार के सामाजिक परिवर्तन का एक उदाहरण है?
(A) उद्विकास
(B) क्रांति
(C) विसरण
(D) प्रगति

36. सामाजिक परिवर्तन का एक रैखिक सिद्धांत यह सुझाव देता है कि:
(A) समाज विकास और क्षय के दोहराव वाले चक्रों से गुजरता है।
(B) सामाजिक परिवर्तन यादृच्छिक है और इसका कोई स्पष्ट प्रतिरूप नहीं है।
(C) समाज के एक हिस्से में बदलाव का दूसरे हिस्सों पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है।
(D) समाज एक ही दिशा में विकसित होता है, जो अक्सर प्रगति की ओर होता है।

37. सामाजिक परिवर्तन के एक रूप के रूप में 'क्रांति' की एक प्रमुख विशेषता है:
(A) क्रमिक और उद्विकासीय प्रकृति।
(B) शांतिपूर्ण और आम सहमति आधारित प्रक्रिया।
(C) तीव्रता और समाज का मौलिक पुनर्गठन।
(D) मौजूदा व्यवस्था के भीतर मामूली बदलावों पर ध्यान देना।

38. भारतीय समाज के संदर्भ में "भारत के लोग" वाक्यांश अक्सर किसे संदर्भित करता है?
(A) केवल वे नागरिक जिनके पास भारतीय पारपत्र है।
(B) विविध नृजातीय और सांस्कृतिक जनसंख्या जो राष्ट्र का निर्माण करती है।
(C) प्रमुख धार्मिक समूह के सदस्य।
(D) देश पर शासन करने वाले राजनीतिक विशिष्ट वर्ग।

39. भारत के भीतर कई भाषाओं, धर्मों और जनजातीय रीति-रिवाजों का सह-अस्तित्व किसका उदाहरण है?
(A) राष्ट्रीय वैमनस्य
(B) सामाजिक स्तरीकरण
(C) राजनीतिक अस्थिरता
(D) सांस्कृतिक विविधता

40. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है।
अभिकथन (A): घरेलू हिंसा एक निजी पारिवारिक मामला है और सामाजिक मुद्दा नहीं है।
कारण (R): घरेलू हिंसा सहित पारिवारिक कलह के महत्वपूर्ण सामाजिक-सांस्कृतिक और कानूनी निहितार्थ होते हैं।
(A) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सत्य हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सत्य है लेकिन R असत्य है।
(D) A असत्य है लेकिन R सत्य है।

41. निम्नलिखित में से कौन समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण से गरीबी को सबसे अच्छी तरह परिभाषित करता है?
(A) धन का मात्र अभाव।
(B) आर्थिक, सामाजिक और राजनीतिक तत्वों को शामिल करने वाली वंचना की स्थिति।
(C) उन व्यक्तियों की व्यक्तिगत असफलता जो कठिन परिश्रम करने को तैयार नहीं हैं।
(D) एक अस्थायी स्थिति जिसे न्यूनतम प्रयास से आसानी से दूर किया जा सकता है।

42. लैंगिक असमानता का तात्पर्य है:
(A) व्यक्तियों के लिंग के आधार पर उनके साथ असमान व्यवहार और धारणा।
(B) पुरुषों और महिलाओं के बीच जैविक अंतर।
(C) एक लिंग की दूसरे लिंग पर प्राकृतिक श्रेष्ठता।
(D) लिंगों के बीच सामाजिक भूमिकाओं का समान वितरण।

43. निम्नलिखित में से कौन नृजातीय वैमनस्य का उदाहरण है?
(A) दो राजनीतिक दलों के बीच परिचर्चा।

Downloaded from www.pdf.tube

(B) साझा वंश और सांस्कृतिक प्रथाओं के आधार पर दो समूहों के बीच संघर्ष।
(C) भू-स्वामी और किराएदार के बीच असहमति।
(D) दो कंपनियों के बीच प्रतिस्पर्धा।

44. दिए गए कथनों को पढ़ें और सही विकल्प का चयन करें।
कथन I: दहेज मांगने की प्रथा के कानूनी निषेध ने इसे भारतीय समाज से पूरी तरह समाप्त कर दिया है।
कथन II: दहेज पारिवारिक कलह और महिलाओं के विरुद्ध हिंसा का स्रोत बना हुआ है।
(A) कथन I और कथन II दोनों सत्य हैं।
(B) कथन I और कथन II दोनों असत्य हैं।
(C) कथन I असत्य है, लेकिन कथन II सत्य है।
(D) कथन I सत्य है, लेकिन कथन II असत्य है।

45. सूची I को सूची II के साथ सुमेलित कीजिए।
सूची I: (समाजीकरण का प्रकार)
P. प्राथमिक समाजीकरण
Q. प्रत्याशित समाजीकरण
R. पुनः समाजीकरण
S. वयस्क समाजीकरण
सूची II: (उदाहरण)
1. एक विधि प्रशिक्षु वरिष्ठ वकीलों के व्यवहार का अनुकरण करता है।
2. माता-पिता से भाषा और बुनियादी शिष्टाचार सीखता बच्चा।
3. नई नौकरी की आवश्यकताओं को सीखता व्यक्ति।
4. किसी पंथ से बाहर निकलने के बाद वैचारिक सुधार से गुजर रहा सदस्य।
(A) P-1, Q-2, R-3, S-4
(B) P-2, Q-1, R-4, S-3
(C) P-2, Q-3, R-1, S-4
(D) P-4, Q-1, R-2, S-3

46. 'सामाजिक गतिशीलता' की अवधारणा किसके अध्ययन के लिए सबसे अधिक प्रासंगिक है?
(A) सामाजिक परिवर्तन
(B) सामाजिक स्तरीकरण
(C) समाजीकरण
(D) सामाजिक नियंत्रण

47. सामाजिक असमानता के बारे में सही कथन की पहचान करें।
(A) सामाजिक असमानता सामाजिक विभेदीकरण के समान ही है।
(B) यह मूल्यवान संसाधनों, पुरस्कारों और पदों के असमान वितरण को संदर्भित करता है।
(C) यह केवल पारंपरिक, गैर-औद्योगिक समाजों की एक विशेषता है।
(D) यह हमेशा व्यक्तिगत योग्यता और प्रतिभा पर आधारित होती है।

48. ऐसी प्रणाली जहाँ स्तरीकरण व्यक्ति की व्यक्तिगत योग्यता और उपलब्धि पर आधारित होता है, कहलाती है:
(A) योग्यतातंत्र
(B) कुलीनतंत्र
(C) जाति व्यवस्था
(D) धनिकतंत्र

49. नृजातीय स्तरीकरण एक ऐसी प्रणाली है जहाँ:
(A) समूहों को उनके आर्थिक वर्ग के आधार पर वर्गीकृत किया जाता है।
(B) लिंगों को एक पदानुक्रम में वर्गीकृत किया जाता है।
(C) समूहों को उनकी कथित सांस्कृतिक या राष्ट्रीय उत्पत्ति के आधार पर वर्गीकृत किया जाता है।
(D) आयु समूहों को एक पदानुक्रम में वर्गीकृत किया जाता है।

50. समाजीकरण के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:
1. समाजीकरण बचपन तक सीमित एक प्रक्रिया है।
2. मित्र समूह समाजीकरण के एक शक्तिशाली अभिकरण हो सकते हैं, जो कभी-कभी पारिवारिक मूल्यों के साथ संघर्ष करते हैं।
3. समाजीकरण के सिद्धांत सामाजिक अधिगम पर जैविक प्रवृत्तियों की प्रधानता पर सार्वभौमिक रूप से सहमत हैं।
उपरोक्त कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?
(A) केवल 2
(B) केवल 1 और 3
(C) केवल 1 और 2
(D) 1, 2 और 3

51. समाज में "संरचना का परिवर्तन" का तात्पर्य है:
(A) भूमिका निभाने वाले व्यक्तियों में परिवर्तन, जैसे कि नई सरकार।
(B) मौजूदा कानूनों और विनियमों में मामूली सुधार।
(C) सामाजिक संबंधों को बदले बिना नई तकनीक को अपनाना।
(D) उन सिद्धांतों का मौलिक रूपांतरण जिन पर समाज संगठित है।

52. यह विचार कि सभी सामाजिक परिवर्तन एक वांछनीय लक्ष्य की ओर बढ़ते हैं, जिसे तर्कसंगतता या लोकतंत्र जैसे मूल्यों द्वारा परिभाषित किया गया है, किसकी अवधारणा का केंद्र है?
(A) प्रगति
(B) उद्विकास
(C) विसरण
(D) रूपांतरण

53. एक समसामयिक मुद्दे के रूप में 'तलाक' की समाजशास्त्रीय समझ किस पर केंद्रित है?
(A) शामिल व्यक्तियों की व्यक्तिगत असफलताएं।
(B) एक सामाजिक परिघटना के रूप में इसके कारण,

NODIA

परिणाम और बदलती दरें।
(C) इस कृत्य की नैतिक निंदा।
(D) सामाजिक संदर्भ से रहित एक कानूनी प्रक्रिया।

54. "अंतर-पीढ़ीगत संघर्ष" शब्द किसके बीच तनाव और असहमति को संदर्भित करता है?
(A) विभिन्न धार्मिक समुदाय।
(B) विभिन्न नृजातीय समूह।
(C) विभिन्न सामाजिक वर्ग।
(D) विभिन्न पीढ़ियाँ, जैसे माता-पिता और उनके बच्चे।

55. भारत में सांस्कृतिक विविधता के संबंध में गलत कथन की पहचान करें।
(A) धार्मिक विविधता भारतीय समाज की एक प्रमुख विशेषता है।
(B) भारत के सभी जनजातीय समूह एक समान संस्कृति और जीवन शैली साझा करते हैं।
(C) रीति-रिवाजों, भोजन और पहनावे में क्षेत्रीय भिन्नताएं व्यापक हैं।
(D) भारत विभिन्न भाषा परिवारों से संबंधित बड़ी संख्या में भाषाओं का घर है।

56. 'सामाजिक स्तरीकरण' को 'सामाजिक असमानता' से क्या अलग करता है?
(A) स्तरीकरण व्यक्तिगत है, जबकि असमानता समूह-आधारित है।
(B) असमानता यादृच्छिक है, जबकि स्तरीकरण एक संरचित, संस्थागत प्रतिरूप है।
(C) स्तरीकरण समानता को संदर्भित करता है, जबकि असमानता अंतर को संदर्भित करती है।
(D) कोई अंतर नहीं है; ये शब्द पर्यायवाची हैं।

57. जब एक कारखाना प्रबंधक को कार्यशाला पर्यवेक्षक के रूप में पदावनत किया जाता है, तो यह दर्शाता है:
(A) उर्ध्वमुखी सामाजिक गतिशीलता
(B) क्षैतिज सामाजिक गतिशीलता
(C) अंतर-पीढ़ीगत गतिशीलता
(D) अधोमुखी सामाजिक गतिशीलता

58. दिए गए कथनों को पढ़ें और सही विकल्प का चयन करें।
कथन I: स्तरीकरण की वर्ग प्रणाली जाति व्यवस्था की तुलना में अपनी तरलता और खुलेपन के लिए जानी जाती है।
कथन II: वर्ग प्रणाली में, सामाजिक प्रास्थिति पूरी तरह से जन्म के समय प्रदत्त प्रास्थिति द्वारा निर्धारित होती है।
(A) कथन I और कथन II दोनों सत्य हैं।
(B) कथन I और कथन II दोनों असत्य हैं।
(C) कथन I सत्य है, लेकिन कथन II असत्य है।
(D) कथन I असत्य है, लेकिन कथन II सत्य है।

59. वह प्रक्रिया जिसके द्वारा लिंग के संबंध में सामाजिक मानदंडों, मूल्यों और अपेक्षाओं को सीखा और आत्मसात किया जाता है, कहलाती है:
(A) वर्ग समाजीकरण
(B) लैंगिक समाजीकरण
(C) नृजातीय समाजीकरण
(D) वयस्क समाजीकरण

60. निम्नलिखित में से किसे छोड़कर सभी को समाजीकरण का अभिकरण माना जाता है?
(A) विद्यालय
(B) आनुवंशिक लक्षण
(C) धर्म
(D) मित्र समूह

61. सामाजिक परिवर्तन के एक प्रकार के रूप में 'रूपांतरण' को सबसे अच्छी तरह वर्णित किया गया है:
(A) एक धीमा, क्रमिक परिवर्तन।
(B) एक ऐसा परिवर्तन जो किसी घटना के चरित्र और संरचना को पूरी तरह से बदल देता है।
(C) एक एकल सांस्कृतिक वस्तु का प्रसार।
(D) होने की पिछली स्थिति में वापसी।

62. सामाजिक परिवर्तन का एक सिद्धांत जो समाज के विकास की तुलना एक जीव के जीवन काल (जन्म, परिपक्वता, क्षय) से करता है, किसका उदाहरण है?
(A) एक चक्रीय सिद्धांत
(B) एक रैखिक सिद्धांत
(C) एक विसरणवादी सिद्धांत
(D) एक क्रांतिकारी सिद्धांत

63. "विविधता में एकता" की अवधारणा भारत के भीतर विभिन्न "समूहों और समुदायों" की उपस्थिति को स्वीकार करती है। निम्नलिखित में से कौन इन समूहों का सबसे अच्छा प्रतिनिधित्व करता है?
(A) केवल राजनीतिक दल और हित समूह।
(B) धर्म, भाषा, जाति और जनजाति पर आधारित सामाजिक संरचनाएं।
(C) केवल आधिकारिक तौर पर मान्यता प्राप्त अल्पसंख्यक समुदाय।
(D) आर्थिक वर्ग जैसे कि अमीर, मध्यम वर्ग और गरीब।

64. निरंतर और अत्यधिक गरीबी जो एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक चलती है, निम्नलिखित में किसका प्रमुख योगदानकर्ता है?
(A) उच्च सामाजिक गतिशीलता
(B) असमानता का बना रहना
(C) सांस्कृतिक विविधता का क्षरण
(D) पारिवारिक सद्भाव में वृद्धि

65. किसी देश में क्षेत्रीय वैमनस्य अक्सर किससे उत्पन्न होता है?
(A) संसाधनों और विकास का पूरी तरह से संतुलित वितरण।

Click Here to Buy book on Amazon

(B) सभी क्षेत्रों में सार्वभौमिक रूप से साझा संस्कृति और भाषा।
(C) आर्थिक विकास और राजनीतिक शक्ति में कथित या वास्तविक असमानताएं।
(D) विशिष्ट क्षेत्रीय पहचान का अभाव।

66. आधुनिक परिवारों में 'अंतर-पीढ़ीगत संघर्ष' का एक प्रमुख कारण अक्सर किसे माना जाता है?
(A) सामाजिक परिवर्तन की तीव्र गति, जिससे मूल्यों में पीढ़ी का अंतराल पैदा होता है।
(B) सामाजिक मानदंडों की समान और अपरिवर्तनीय प्रकृति।
(C) माता-पिता और बच्चों के बीच अधिकार का समान बँवारा।
(D) जीवन प्रत्याशा में गिरावट।

67. निम्नलिखित में से कौन सा सामाजिक-सांस्कृतिक मुद्दा भारत में लैंगिक असमानता से सीधे जुड़ा हुआ है?
(A) भाषाई विविधता
(B) क्षेत्रवाद
(C) अंतर-राज्यीय नदी विवाद
(D) दहेज प्रथा

68. जब कोई व्यक्ति शिक्षक से विद्यालय का प्रधानाचार्य बनता है, तो यह किसका उदाहरण है?
(A) उर्ध्वमुखी अंतः-पीढ़ीगत गतिशीलता
(B) अधोमुखी अंतः-पीढ़ीगत गतिशीलता
(C) क्षैतिज गतिशीलता
(D) अंतर-पीढ़ीगत गतिशीलता

69. वह सैद्धांतिक परिप्रेक्ष्य जो सामाजिक स्तरीकरण को समूहों के बीच दुर्लभ संसाधनों के संघर्ष के परिणाम के रूप में देखता है, वह है:
(A) प्रकार्यवादी परिप्रेक्ष्य
(B) संघर्ष परिप्रेक्ष्य
(C) प्रतीकात्मक अंतःक्रियावादी परिप्रेक्ष्य
(D) उद्विकासीय परिप्रेक्ष्य

70. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है।
अभिकथन (A): प्रत्याशित समाजीकरण एक नए सामाजिक समूह या भूमिका में व्यक्ति के संक्रमण को सुलभ बना सकता है।
कारण (R): इसमें उस समूह के मानदंडों और मूल्यों को सीखना शामिल है जिसका व्यक्ति अभी तक सदस्य नहीं है लेकिन उसमें शामिल होने की आकांक्षा रखता है।
(A) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सत्य हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सत्य है लेकिन R असत्य है।
(D) A असत्य है लेकिन R सत्य है।

71. सही युग्म की पहचान करें।
(A) वर्ग प्रणाली : बंद गतिशीलता
(B) जाति व्यवस्था : अर्जित प्रास्थिति
(C) नृजातीय स्तरीकरण : केवल आर्थिक धन पर आधारित
(D) लैंगिक स्तरीकरण : सामाजिक रूप से निर्मित भूमिकाएँ

72. सामाजिक परिवर्तन की अवधारणाओं के रूप में 'उद्विकास' और 'क्रांति' के बीच मौलिक अंतर क्या है?
(A) उद्विकास धीमा और क्रमिक है, जबकि क्रांति तीव्र और व्यापक है।
(B) उद्विकास एक नियोजित परिवर्तन है, जबकि क्रांति अनियोजित है।
(C) उद्विकास केवल जैविक प्रजातियों में होता है, समाजों में नहीं।
(D) क्रांति हमेशा शांतिपूर्ण होती है, जबकि उद्विकास हिंसक होता है।

73. भारतीय संविधान द्वारा कई आधिकारिक भाषाओं को मान्यता देना राष्ट्र के किसका प्रमाण है?
(A) धार्मिक वैमनस्य
(B) जाति पदानुक्रम
(C) भाषाई विविधता
(D) आर्थिक असमानता

74. 'पारिवारिक कलह' की वह स्थिति जिसमें एक साथी द्वारा दूसरे का व्यवस्थित शारीरिक, भावनात्मक या यौन शोषण किया जाता है, कहलाती है:
(A) अंतर-पीढ़ीगत संघर्ष
(B) तलाक
(C) घरेलू हिंसा
(D) दहेज

75. सूची I को सूची II के साथ सुमेलित कीजिए।
सूची I: (समसामयिक मुद्दा)
P. गरीबी
Q. दहेज
R. अंतर-पीढ़ीगत संघर्ष
S. नृजातीय वैमनस्य
सूची II: (प्राथमिक विशेषता)
1. आयु समूहों के बीच मूल्यों का टकराव।
2. साझा सांस्कृतिक उत्पत्ति पर आधारित संघर्ष।
3. गंभीर सामाजिक-आर्थिक वंचना की स्थिति।
4. वधू के परिवार से संपत्ति या धन की मांग।
(A) P-1, Q-2, R-3, S-4
(B) P-3, Q-4, R-1, S-2
(C) P-3, Q-1, R-4, S-2
(D) P-2, Q-4, R-1, S-3

76. समाजीकरण की आजीवन प्रकृति का तात्पर्य है कि:
(A) व्यक्ति का व्यक्तित्व प्रारंभिक बचपन में ही स्थिर हो जाता है।

Downloaded from www.pdf.tube

(B) सामाजिक भूमिकाओं को सीखना और अनुकूलित करना पूरे जीवन काल में जारी रहता है।
(C) बचपन के बाद के सभी समाजीकरण अप्रभावी होते हैं।
(D) जैविक कारक व्यवहार के एकमात्र निर्धारक हैं।

77. सामाजिक गतिशीलता के बारे में निम्नलिखित में से कौन सा कथन गलत है?
(A) यह सामाजिक स्थिति में व्यक्तियों या समूहों के आवागमन को संदर्भित करता है।
(B) बंद स्तरीकरण प्रणाली वाले समाज सामाजिक गतिशीलता की उच्च दर प्रदर्शित करते हैं।
(C) यह उर्ध्वमुखी, अधोमुखी या क्षैतिज हो सकती है।
(D) शिक्षा अक्सर उर्ध्वमुखी सामाजिक गतिशीलता को सुलभ बनाने में एक प्रमुख कारक है।

78. 'संरचना के भीतर परिवर्तन' को किसके द्वारा सबसे अच्छा उदाहरण दिया जा सकता है?
(A) एक निर्वाचित सरकार का दूसरी सरकार द्वारा प्रतिस्थापन।
(B) एक कंपनी द्वारा एक नए मुख्य कार्यकारी अधिकारी की नियुक्ति।
(C) सामंती कृषि समाज से औद्योगिक पूंजीवादी समाज की ओर परिवर्तन।
(D) एक मामूली यातायात कानून में संशोधन।

79. भारत में विशिष्ट सामाजिक संरचनाओं और सांस्कृतिक प्रथाओं वाले कई जनजातीय समुदायों की उपस्थिति किसका सूचक है?
(A) राजनीतिक एकता
(B) आर्थिक विकास
(C) जनजातीय विविधता
(D) भाषाई एकरूपता

80. सामाजिक स्तरीकरण के रूपों के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:
1. वर्ग प्रणाली आमतौर पर अधिक खुली होती है और जाति व्यवस्था की तुलना में अधिक सामाजिक गतिशीलता की अनुमति देती है।
2. लैंगिक स्तरीकरण पुरुषों और महिलाओं के बीच सामाजिक असमानताओं को संदर्भित करता है।
3. जाति की स्थिति आमतौर पर प्रदत्त होती है, जिसका अर्थ है कि यह जन्म से निर्धारित होती है।

उपरोक्त कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?
(A) केवल 1 और 3
(B) केवल 2
(C) केवल 1 और 2
(D) 1, 2 और 3

81. एक अधिवक्ता जो समान वेतन पर विधि महाविद्यालय में प्राध्यापक बनने के लिए अपनी संस्था छोड़ देती है, उसने अनुभव किया है:
(A) उर्ध्वमुखी गतिशीलता
(B) क्षैतिज गतिशीलता
(C) अधोमुखी गतिशीलता
(D) कोई गतिशीलता नहीं

82. दिए गए कथनों को पढ़ें और सही विकल्प का चयन करें।
कथन I: 'भारत के लोग' शब्द एक सजातीय, एकल इकाई का सुझाव देता है जिसमें कोई आंतरिक अंतर नहीं है।
कथन II: 'विविधता में एकता' की अवधारणा 'भारत के लोग' के विचार का समर्थन करती है।
(A) कथन I और कथन II दोनों सत्य हैं।
(B) कथन I और कथन II दोनों असत्य हैं।
(C) कथन I सत्य है, लेकिन कथन II असत्य है।
(D) कथन I असत्य है, लेकिन कथन II सत्य है।

83. सामाजिक परिवर्तन के किस रूप में दूसरे समाज से सांस्कृतिक तत्वों को उधार लेना शामिल है?
(A) उद्विकास
(B) क्रांति
(C) विसरण
(D) प्रगति

84. एक समसामयिक मुद्दे के रूप में धार्मिक वैमनस्य का तात्पर्य है:
(A) विद्वानों के बीच स्वस्थ धार्मिक परिचर्चा।
(B) एक समाज में कई धर्मों का अस्तित्व।
(C) विभिन्न धर्मों के अनुयायियों के बीच विरोध, संघर्ष और हिंसा।
(D) किसी भी धर्म का पालन न करने का व्यक्ति का व्यक्तिगत चुनाव।

85. निम्नलिखित में से कौन पुनः समाजीकरण का सबसे उपयुक्त उदाहरण है?
(A) एक बच्चा अपनी पहली भाषा बोलना सीख रहा है।
(B) एक किशोर अपने मित्रों से नवीनतम बोलचाल की भाषा सीख रहा है।
(C) एक अप्रवासी एक नए देश की भाषा और रीति-रिवाजों को सीख रहा है।
(D) एक कर्मचारी को उसी कंपनी के भीतर पदोन्नति मिलना।

86. शक्ति, प्रतिष्ठा और संपत्ति तक उनकी अलग-अलग पहुँच के आधार पर सामाजिक समूहों की श्रेणीबद्ध व्यवस्था किसकी परिभाषा है?
(A) समाजीकरण
(B) सामाजिक परिवर्तन
(C) सामाजिक स्तरीकरण
(D) सामाजिक एकीकरण

87. निम्नलिखित में से कौन स्तरीकरण की वर्ग प्रणाली का एक प्रमुख घटक है?
(A) अनुष्ठानिक पवित्रता

NODIA

(B) वंशानुगत व्यवसाय
(C) अर्जित प्रास्थिति
(D) अंतर्विवाह

88. सामाजिक स्तरीकरण पर नारीवादी परिप्रेक्ष्य मुख्य रूप से किस पर केंद्रित है?
(A) लैंगिक असमानता
(B) वर्ग संघर्ष
(C) नस्लीय और नृजातीय असमानता
(D) आयु-आधारित स्तरीकरण

89. एक सिद्धांत जो सामाजिक स्तरीकरण की व्याख्या यह तर्क देकर करता है कि यह एक ऐसा साधन है जिसके द्वारा समाज यह सुनिश्चित करता है कि सबसे महत्वपूर्ण पद सबसे योग्य व्यक्तियों द्वारा भरे जाएं, वह है:
(A) संघर्ष सिद्धांत
(B) वेबेरियन सिद्धांत
(C) प्रकार्यवादी सिद्धांत
(D) मार्क्सवादी सिद्धांत

90. 'पारंपरिक' चरण से 'आधुनिक' चरण की ओर बढ़ता समाज किस प्रकार के सामाजिक परिवर्तन सिद्धांत का उदाहरण है?
(A) चक्रीय
(B) रैखिक
(C) विसरणवादी
(D) क्रांतिकारी

91. सामाजिक परिवर्तन में 'रूपांतरण' की अवधारणा उस परिवर्तन का सुझाव देती है जो निम्नलिखित से अधिक गहरा है:
(A) क्रांति
(B) उद्विकास
(C) सरल परिवर्तन या अनुकूलन
(D) संरचनात्मक पतन

92. आंध्र प्रदेश, तमिलनाडु और पश्चिम बंगाल जैसे भाषाई आधार पर भारत में राज्यों का अस्तित्व किसकी प्रत्यक्ष स्वीकृति है?
(A) क्षेत्रीय और भाषाई विविधता
(B) धार्मिक विविधता
(C) जनजातीय विविधता
(D) जाति-आधारित विविधता

93. 'गरीबी' की समाजशास्त्रीय अवधारणा केवल आय की कमी से आगे बढ़कर निम्नलिखित को शामिल करती है:
(A) उपभोग का उच्च स्तर।
(B) सामाजिक बहिष्कार और शिक्षा तथा स्वास्थ्य देखभाल जैसे संसाधनों तक पहुँच की कमी।
(C) न्यूनतम जीवन शैली की इच्छा।
(D) विरासत में मिली संपत्ति का संचय।

94. विवाह के कानूनी विच्छेद को कहा जाता है:
(A) दहेज
(B) घरेलू हिंसा
(C) तलाक
(D) अंतर-पीढ़ीगत संघर्ष

95. भारतीय सामाजिक ताने-बाने के वैचारिक विकास में निम्नलिखित घटनाओं को व्यवस्थित करें:
1. धार्मिक और भाषाई अल्पसंख्यकों के लिए संवैधानिक गारंटी।
2. विविध साम्राज्यों और समुदायों का औपनिवेशिक पूर्व अस्तित्व।
3. स्वतंत्रता के बाद के युग में "विविधता में एकता" के विचार को प्रमुखता मिलना।
4. औपनिवेशिक "भारत के लोग" नृवंशविज्ञान सर्वेक्षण।
(A) 2, 4, 1, 3
(B) 1, 2, 4, 3
(C) 4, 2, 1, 3
(D) 2, 3, 4, 1

96. निम्नलिखित में से कौन समाजीकरण का अभिकरण नहीं है?
(A) राज्य
(B) परिवार
(C) विद्यालय
(D) मूल प्रवृत्ति

97. भविष्य की भूमिकाओं, स्थितियों और सामाजिक संबंधों के लिए तैयार होने के व्यक्ति के प्रयासों को कहा जाता है:
(A) पुनः समाजीकरण
(B) प्रत्याशित समाजीकरण
(C) वि-समाजीकरण
(D) प्राथमिक समाजीकरण

98. दिए गए कथनों को पढ़ें और सही विकल्प का चयन करें।
कथन I: सामाजिक स्तरीकरण व्यक्तियों की विशेषता है, समाज की नहीं।
कथन II: सामाजिक स्तरीकरण पीढ़ियों तक बना रहता है।
(A) कथन I और कथन II दोनों सत्य हैं।
(B) कथन I और कथन II दोनों असत्य हैं।
(C) कथन I असत्य है, लेकिन कथन II सत्य है।
(D) कथन I सत्य है, लेकिन कथन II असत्य है।

99. सामाजिक परिवर्तन की कौन सी अवधारणा परिवर्तन की दिशा के बारे में एक मूल्य निर्णय का संकेत देती है?
(A) उद्विकास
(B) विसरण
(C) प्रगति
(D) रूपांतरण

100. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है।
अभिकथन (A): परिवार समाजीकरण का एक महत्वपूर्ण अभिकरण है।

Click Here to Buy book on Amazon

कारण (R): परिवार एक बच्चे के लिए पहली सामाजिक दुनिया प्रदान करता है, जो बुनियादी मूल्यों, भाषा और पहचान को संप्रेषित करता है।
(A) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सत्य हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सत्य है लेकिन R असत्य है।
(D) A असत्य है लेकिन R सत्य है।

101. जाति और वर्ग के बीच मुख्य अंतर यह है कि वर्ग निम्नलिखित पर अधिक निर्भर है:
(A) प्रदत्त प्रास्थिति
(B) अनुष्ठानिक पवित्रता
(C) आर्थिक उपलब्धि
(D) वंशानुगत उत्तराधिकार

102. सामाजिक गतिशीलता के प्रकारों के संबंध में गलत युग्म की पहचान करें।
(A) अंतर-पीढ़ीगत गतिशीलता : पीढ़ियों के बीच सामाजिक स्थिति में परिवर्तन।
(B) क्षैतिज गतिशीलता : एक कारखाने के श्रमिक का मुख्य कार्यकारी अधिकारी बनना।
(C) अंतः-पीढ़ीगत गतिशीलता : एक व्यक्ति के जीवनकाल के भीतर सामाजिक स्थिति में परिवर्तन।
(D) संरचनात्मक गतिशीलता : व्यावसायिक संरचना में परिवर्तन के कारण होने वाली गतिशीलता।

103. 'संरचना का परिवर्तन', 'संरचना के भीतर परिवर्तन' से भिन्न है क्योंकि पहले वाले में शामिल है:
(A) उसी प्रणाली के भीतर व्यक्तियों का परिवर्तन।
(B) प्रणाली के संगठनात्मक सिद्धांतों का मौलिक प्रतिस्थापन।
(C) नियमों और भूमिकाओं में मामूली समायोजन।
(D) विशिष्ट वर्ग का चक्रीय प्रतिस्थापन।

104. निम्नलिखित में से कौन सा समसामयिक मुद्दा मुख्य रूप से पारिवारिक कलह की अभिव्यक्ति है?
(A) धार्मिक असहिष्णुता
(B) क्षेत्रवाद
(C) अंतर-पीढ़ीगत संघर्ष
(D) नृजातीय हिंसा

105. सूची I को सूची II के साथ सुमेलित कीजिए।
सूची I: (सामाजिक स्तरीकरण की अवधारणा)
P. जाति
Q. वर्ग
R. लिंग
S. नृजातीयता
सूची II: (आधार)
1. बाजार में आर्थिक स्थिति।
2. पुरुषों और महिलाओं के लिए सामाजिक रूप से निर्मित भूमिकाएँ।
3. जन्म और अनुष्ठानिक पवित्रता पर आधारित प्रदत्त स्थिति।
4. साझा सांस्कृतिक विरासत और पूर्वज।
(A) P-3, Q-1, R-2, S-4
(B) P-1, Q-3, R-4, S-2
(C) P-3, Q-2, R-1, S-4
(D) P-2, Q-1, R-4, S-3

106. एक सैद्धांतिक दृष्टिकोण जो यह सुझाव देता है कि समाजीकरण सामाजिक व्यवस्था बनाए रखने में मदद करता है, उसे किसके रूप में वर्गीकृत किया जाएगा?
(A) समाजीकरण का संघर्ष सिद्धांत
(B) समाजीकरण का प्रकार्यवादी सिद्धांत
(C) समाजीकरण का चक्रीय सिद्धांत
(D) समाजीकरण का अंतःक्रियावादी सिद्धांत

107. कौन सा शब्द उस स्थिति का वर्णन करता है जहाँ एक व्यक्ति को व्यवस्थित रूप से एक नई पहचान में समाजीकृत करने से पहले एक 'पूर्ण संस्थान' में उसकी पूर्व पहचान से वंचित कर दिया जाता है?
(A) प्रत्याशित समाजीकरण
(B) वयस्क समाजीकरण
(C) पुनः समाजीकरण
(D) लैंगिक समाजीकरण

108. समाज में विभिन्न लिंगों की व्यवस्थित रैंकिंग, जिससे संसाधनों तक असमान पहुँच होती है, कहलाती है:
(A) लैंगिक स्तरीकरण
(B) लैंगिक विभेदीकरण
(C) लैंगिक समानता
(D) लैंगिक समाजीकरण

109. जनसंख्या के माध्यम से नवाचारों, विचारों और सांस्कृतिक वस्तुओं का संचरण किसकी परिभाषा है?
(A) उद्विकास
(B) विसरण
(C) क्रांति
(D) रूपांतरण

110. सामाजिक परिवर्तन के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:
1. 'उद्विकास' का तात्पर्य क्रमिक विकास से है।
2. 'क्रांति' का तात्पर्य शक्ति और सामाजिक संरचना में तीव्र और मौलिक बदलाव से है।
3. 'प्रगति' परिवर्तन का एक वस्तुनिष्ठ और मूल्य-मुक्त मूल्यांकन है।
उपरोक्त कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?
(A) केवल 1 और 2
(B) केवल 2 और 3
(C) केवल 1

NODIA

(D) 1, 2 और 3

111. भारतीय समाज की एक विशेषता के रूप में "विविधता में एकता" किसके बीच संतुलन का तात्पर्य है?
(A) राष्ट्रीय पहचान और क्षेत्रीय/सामुदायिक पहचान।
(B) आर्थिक विकास और पर्यावरण संरक्षण।
(C) केंद्र सरकार और राज्य सरकारों के बीच।
(D) पारंपरिक मूल्यों और आधुनिक तकनीक के बीच।

112. जाति की असमानता मुख्य रूप से _____ पर आधारित है, जबकि वर्ग की असमानता मुख्य रूप से _____ पर आधारित है।
(A) उपलब्धि; आरोपण
(B) आरोपण; उपलब्धि
(C) लिंग; नृजातीयता
(D) धन; गरीबी

113. माता-पिता और उनके वयस्क बच्चों के बीच अलग-अलग जीवन शैली और नैतिक मानकों को लेकर टकराव किसके उदाहरण हैं?
(A) घरेलू हिंसा
(B) तलाक
(C) अंतर-पीढ़ीगत संघर्ष
(D) क्षेत्रीय वैमनस्य

114. निम्नलिखित में से कौन पारिवारिक कलह का रूप नहीं है?
(A) दहेज
(B) तलाक
(C) नृजातीय वैमनस्य
(D) घरेलू हिंसा

115. एक कंपनी में सम्मिलित होने वाला व्यक्ति वरिष्ठ प्रबंधकों की तरह वेशभूषा और व्यवहार करना प्रारंभ कर देता है। यह व्यवहार किसका एक रूप है?
(A) वयस्क समाजीकरण
(B) पुनः समाजीकरण
(C) प्रत्याशित समाजीकरण
(D) प्राथमिक समाजीकरण

116. दिए गए कथनों को पढ़ें और सही विकल्प का चयन करें।
कथन I: सामाजिक विभेदीकरण हमेशा सामाजिक स्तरीकरण की ओर ले जाता है।
कथन II: सामाजिक विभेदीकरण लोगों को वर्गीकृत करने की प्रक्रिया है, जो पदानुक्रमित रैंकिंग के बिना भी अस्तित्व में रह सकती है।
(A) कथन I और कथन II दोनों सत्य हैं।
(B) कथन I और कथन II दोनों असत्य हैं।
(C) कथन I असत्य है, लेकिन कथन II सत्य है।
(D) कथन I सत्य है, लेकिन कथन II असत्य है।

117. 'सामाजिक गतिशीलता' का मूल विचार किसके परिवर्तन की संभावना है?
(A) जैविक विशेषताएं
(B) सामाजिक पदानुक्रम में स्थिति
(C) राष्ट्रीयता
(D) आनुवंशिक संरचना

118. निम्नलिखित में से कौन 'संरचना के परिवर्तन' का सबसे अच्छा उदाहरण है?
(A) फ्रांसीसी क्रांति, जिसने राजशाही और कुलीनतंत्र को समाप्त कर दिया।
(B) एक चुनाव में एक दल का स्थान दूसरे दल द्वारा लेना।
(C) वार्षिक बजट में नए कर स्लैब की शुरुआत।
(D) एक शहर द्वारा अपना नाम बदलना।

119. भारत में बोली जाने वाली भाषाओं और बोलियों की विशाल संख्या किसका प्रमुख उदाहरण है?
(A) राजनीतिक संरचना
(B) आर्थिक प्रणाली
(C) भाषाई विविधता
(D) सामाजिक एकरूपता

120. भारत में दहेज प्रथा का अध्ययन करने वाले समाजशास्त्री की रुचि सबसे अधिक किसमें होगी?
(A) आभूषणों और उपभोक्ता वस्तुओं की बाजार कीमत।
(B) इसकी ऐतिहासिक उत्पत्ति, सामाजिक कार्य और लैंगिक असमानता के परिणाम।
(C) वधू और वर की व्यक्तिगत प्राथमिकताएं।
(D) विवाह उपहारों के संबंध में अन्य देशों के कानून।

121. वह प्रक्रिया जिसके माध्यम से बच्चा उस समाज की संस्कृति सीखता है जिसमें वह पैदा हुआ है, कहलाती है:
(A) पुनः समाजीकरण
(B) वयस्क समाजीकरण
(C) प्राथमिक समाजीकरण
(D) प्रत्याशित समाजीकरण

122. निम्नलिखित में से कौन सी अवधारणा सामाजिक स्तरीकरण के लिए आवश्यक है लेकिन सामाजिक विभेदीकरण के लिए अनिवार्य नहीं है?
(A) पदानुक्रम
(B) अंतर
(C) विविधता
(D) श्रेणी

123. सामाजिक स्तरीकरण का संघर्ष-आधारित सिद्धांत क्या तर्क देता है?
(A) स्तरीकरण समाज के लिए एक प्रकार्यात्मक आवश्यकता है।
(B) स्तरीकरण दुर्लभ संसाधनों पर प्रतिस्पर्धा का परिणाम है, जिससे शक्तिशाली लोगों को लाभ होता है।

Downloaded from www.pdf.tube

(C) स्तरीकरण व्यक्तियों की प्राकृतिक प्रतिभा और क्षमताओं को दर्शाता है।
(D) स्तरीकरण एक अस्थायी परिघटना है जो शीघ्र ही समाप्त हो जाएगी।

124. आखेटक-संग्रहकर्ता समाज से कृषि समाज में संक्रमण किस प्रकार के सामाजिक परिवर्तन का प्रतिनिधित्व करता है?
(A) क्रांति
(B) उद्विकास
(C) विसरण
(D) रूपांतरण

125. "विविधता में एकता" के विचार का उपयोग भारतीय समाज की किस क्षमता का वर्णन करने के लिए किया जाता है?
(A) सभी सामाजिक और सांस्कृतिक मतभेदों को मिटाना।
(B) व्यापक आंतरिक विविधता के बावजूद राष्ट्रीय पहचान की भावना बनाए रखना।
(C) सभी नागरिकों के लिए एकल भाषा और धर्म को बढ़ावा देना।
(D) संघर्ष को रोकने के लिए विभिन्न सांस्कृतिक समूहों को एक-दूसरे से पृथक करना।

126. घरेलू हिंसा को एक सामाजिक-सांस्कृतिक मुद्दा माना जाता है क्योंकि:
(A) यह केवल कुछ संस्कृतियों में ही होती है।
(B) यह अक्सर पितृसत्तात्मक मानदंडों और लैंगिक असमानता में निहित होती है।
(C) यह बिना किसी सामाजिक जड़ के विशुद्ध रूप से एक कानूनी समस्या है।
(D) यह बिना किसी सामाजिक निहितार्थ के एक निजी मामला है।

127. एक डॉक्टर का बेटा डॉक्टर बन जाता है। यह किसका उदाहरण है?
(A) सामाजिक गतिशीलता
(B) सामाजिक ठहराव या विरासत
(C) सामाजिक परिवर्तन
(D) सामाजिक विभेदीकरण

128. सामाजिक परिवर्तन के संबंध में सही कथन की पहचान करें।
(A) सामाजिक परिवर्तन हमेशा नियोजित और नियंत्रित होता है।
(B) सामाजिक परिवर्तन आंतरिक और बाह्य दोनों कारकों के कारण हो सकता है।
(C) आधुनिक समाज पारंपरिक समाजों की तुलना में सामाजिक परिवर्तन की धीमी दर का अनुभव करते हैं।
(D) सामाजिक परिवर्तन का समाजीकरण के अभिकरणों पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है।

129. भारत के भीतर कुछ क्षेत्रों द्वारा पृथक राज्यों या अधिक स्वायत्तता की मांग अक्सर किसकी अभिव्यक्ति होती है?
(A) पारिवारिक कलह
(B) लैंगिक असमानता
(C) क्षेत्रवाद और नृजातीय पहचान
(D) धार्मिक विविधता का अभाव

130. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है।
अभिकथन (A): भारत में जाति व्यवस्था सामाजिक स्तरीकरण का एक रूप है।
कारण (R): यह व्यक्तियों और समूहों को जन्म की प्रदत्त स्थिति के आधार पर एक पदानुक्रम में वर्गीकृत करती है।
(A) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सत्य हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सत्य है लेकिन R असत्य है।
(D) A असत्य है लेकिन R सत्य है।

131. वर्ग प्रणाली की एक प्रमुख विशेषता निम्नलिखित में से कौन सी है?
(A) यह गतिशीलता रहित एक बंद प्रणाली है।
(B) स्थिति जन्म के समय प्रदत्त होती है और इसे बदला नहीं जा सकता।
(C) यह मुख्य रूप से धार्मिक और अनुष्ठानिक स्थिति पर आधारित है।
(D) वर्गों के बीच की सीमाएं परिवर्तनशील हैं और उन्हें पार किया जा सकता है।

132. समाजीकरण की प्रक्रिया को 'आजीवन प्रक्रिया' माना जाता है क्योंकि:
(A) एक ही भूमिका सीखने में पूरा जीवन लग जाता है।
(B) व्यक्ति लगातार नई स्थितियों और भूमिकाओं का सामना करते हैं जिनके लिए नई सीख की आवश्यकता होती है।
(C) प्रारंभिक बचपन के पाठ हमेशा गलत होते हैं और उन्हें भूलना पड़ता है।
(D) जैविक परिपक्वता मृत्यु तक जारी रहती है।

133. जब इंटरनेट के आविष्कार के परिणामस्वरूप सामाजिक परिवर्तन होता है, तो यह किसके द्वारा संचालित परिवर्तन का उदाहरण है?
(A) विचारधारा
(B) प्रौद्योगिकी
(C) सामाजिक आंदोलन
(D) पर्यावरणीय कारक

134. निम्नलिखित में से कौन गरीबी और असमानता के बीच संबंधों का सबसे अच्छा वर्णन करता है?
(A) असमानता का उच्च स्तर गरीबी का एक प्रमुख कारण हो सकता है।
(B) वे असंबद्ध अवधारणाएँ हैं।
(C) गरीबी पूर्ण वंचना को संदर्भित करती है, जबकि असमानता सापेक्ष वंचना को संदर्भित करती है।

NODIA

(D) (A) और (C) दोनों सही हैं।

135. सूची I को सूची II के साथ सुमेलित कीजिए।
सूची I: (सामाजिक परिवर्तन सिद्धांत प्रकार)
P. रैखिक सिद्धांत
Q. चक्रीय सिद्धांत
R. विसरण
S. क्रांति
सूची II: (मूल विचार)
1. समाज उत्थान और पतन के दोहराव वाले चरणों से गुजरता है।
2. परिवर्तन एक संस्कृति से दूसरी संस्कृति में फैलता है।
3. समाज एक ही दिशा में प्रगति करता है।
4. मौजूदा व्यवस्था का तीव्र और मौलिक तख्तापलट।
(A) P-1, Q-3, R-2, S-4
(B) P-3, Q-1, R-2, S-4
(C) P-3, Q-2, R-1, S-4
(D) P-2, Q-1, R-4, S-3

136. नृजातीय स्तरीकरण में 'नृजातीय' शब्द उन समूहों को संदर्भित करता है जो किसके द्वारा अलग पहचाने जाते हैं?
(A) उनकी राष्ट्रीय या सांस्कृतिक विरासत।
(B) उनकी आर्थिक स्थिति।
(C) उनकी लैंगिक पहचान।
(D) उनका आयु वर्ग।

137. दिए गए कथनों को पढ़ें और सही विकल्प का चयन करें।
कथन I: तलाक की दरों को अक्सर बदलते पारिवारिक मानदंडों और मूल्यों के संकेतक के रूप में देखा जाता है।
कथन II: तलाक की दरों में वृद्धि की सार्वभौमिक रूप से सामाजिक पतन के संकेत के रूप में व्याख्या की जाती है।
(A) कथन I और कथन II दोनों सत्य हैं।
(B) कथन I और कथन II दोनों असत्य हैं।
(C) कथन I सत्य है, लेकिन कथन II असत्य है।
(D) कथन I असत्य है, लेकिन कथन II सत्य है।

138. एक उच्च विद्यालय का छात्र जो पत्रकार बनना चाहता है, वह एक ब्लॉग शुरू करता है और स्थानीय अधिकारियों का साक्षात्कार लेता है। यह किसका उदाहरण है?
(A) पुनः समाजीकरण
(B) प्रत्याशित समाजीकरण
(C) वयस्क समाजीकरण
(D) दुष्प्रकार्यात्मक समाजीकरण

139. निम्नलिखित में से कौन सा समसामयिक सामाजिक-सांस्कृतिक मुद्दे का उदाहरण नहीं है?
(A) गरीबी
(B) जाति की असमानता
(C) अंतरराष्ट्रीय व्यापार समझौते
(D) पारिवारिक कलह

140. पारिवारिक कलह के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:
1. घरेलू हिंसा विशेष रूप से केवल शारीरिक शोषण है।
2. दहेज से जुड़े संघर्ष भारत में पारिवारिक कलह का एक महत्वपूर्ण स्रोत हैं।
3. अंतर-पीढ़ीगत संघर्ष मूल्यों में पीढ़ी के अंतराल से उत्पन्न हो सकता है।
उपरोक्त कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?
(A) केवल 1
(B) केवल 2 और 3
(C) केवल 1 और 3
(D) 1, 2 और 3

141. भारत में हिंदू, मुस्लिम, सिख, ईसाई आदि जैसे विभिन्न धार्मिक समुदायों का अस्तित्व किसके महत्व को दर्शाता है?
(A) धार्मिक विविधता
(B) भाषाई विविधता
(C) क्षेत्रीय विविधता
(D) वर्ग विविधता

142. एक सैद्धांतिक परिप्रेक्ष्य जो इस बात पर जोर देता है कि कैसे साझा अर्थ और प्रतीक स्तरीकरण का निर्माण करते हैं, वह होगा:
(A) एक प्रतीकात्मक अंतःक्रियावादी परिप्रेक्ष्य
(B) एक प्रकार्यवादी परिप्रेक्ष्य
(C) एक संघर्ष परिप्रेक्ष्य
(D) एक चक्रीय सिद्धांत परिप्रेक्ष्य

143. सामाजिक परिवर्तन के विश्लेषण के लिए 'संरचना के भीतर परिवर्तन' और 'संरचना का परिवर्तन' के बीच का अंतर किसके लिए महत्वपूर्ण है?
(A) दिशा
(B) स्रोत
(C) परिमाण
(D) गति

144. कौन सा शब्द उस स्थिति का वर्णन करता है जहाँ व्यक्तियों के पास समाज में स्वीकार्य जीवन स्तर बनाए रखने के लिए संसाधनों की कमी होती है?
(A) सामाजिक गतिशीलता
(B) सामाजिक विभेदीकरण
(C) गरीबी
(D) समाजीकरण

145. एक लिपिक जिसका स्थानांतरण एक सरकारी विभाग से दूसरे विभाग में समान पद और वेतन पर किया जाता है, उसने अनुभव किया है:
(A) क्षैतिज गतिशीलता
(B) उर्ध्वमुखी गतिशीलता
(C) अधोमुखी गतिशीलता
(D) संरचनात्मक गतिशीलता

Click Here to Buy book on Amazon

146. समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण से, 'लिंग' को किस रूप में समझा जाता है?
(A) सामाजिक और सांस्कृतिक रूप से निर्मित भूमिकाएं और विशेषताएं जिन्हें समाज पुरुषों और महिलाओं के लिए उपयुक्त मानता है।
(B) जैविक लिंग के समान ही।
(C) एक निश्चित और अपरिवर्तनीय जैविक तथ्य।
(D) केवल प्राचीन समाजों में पाई जाने वाली स्तरीकरण की एक प्रणाली।

147. एक सिद्धांत जो मानता है कि सामाजिक परिवर्तन चरणों की एक श्रृंखला के माध्यम से होता है, जो अंततः एक उन्नत चरण में समाप्त होता है, वह है:
(A) रैखिक सिद्धांत
(B) चक्रीय सिद्धांत
(C) संघर्ष सिद्धांत
(D) विसरणवादी सिद्धांत

148. भारतीय संदर्भ में "समूह" या "समुदाय" का सबसे अच्छा उदाहरण निम्नलिखित में से कौन सा है?
(A) जाट समुदाय।
(B) बस स्टॉप पर प्रतीक्षा कर रहे लोग।
(C) वे सभी लोग जिनके पास कार है।
(D) सिनेमाघर में दर्शक।

149. अधिक स्वायत्तता की मांग करने वाले राज्य और केंद्र सरकार के बीच तनाव किसका एक रूप है?
(A) क्षेत्रीय वैमनस्य
(B) पारिवारिक कलह
(C) लैंगिक असमानता
(D) अंतर-पीढ़ीगत संघर्ष

150. विवाह के समय संपत्ति और वित्तीय मांगों से जुड़ी पारिवारिक कलह का एक प्रमुख पहलू है:
(A) तलाक
(B) दहेज
(C) घरेलू हिंसा
(D) अंतर-पीढ़ीगत संघर्ष

151. करियर के मध्य में नई नौकरी शुरू करने पर नए कौशल और मानदंड सीखना किसका उदाहरण है?
(A) प्राथमिक समाजीकरण
(B) प्रत्याशित समाजीकरण
(C) पुनः समाजीकरण
(D) वयस्क समाजीकरण

152. निम्नलिखित में से कौन सामाजिक स्तरीकरण में अवधारणाओं के एक युग्म की सही पहचान करता है?
(A) पदानुक्रम : समानता की स्थिति
(B) असमानता : मूल्यवान संसाधनों का असमान वितरण
(C) सामाजिक विभेदीकरण : रैंकिंग की एक प्रणाली
(D) जाति : अर्जित स्थिति

153. सामाजिक वर्गों के बीच, विशेष रूप से बुर्जुआ और सर्वहारा वर्ग के बीच शक्ति संघर्ष पर केंद्रित स्तरीकरण का सिद्धांत सबसे अधिक किससे संबंधित है?
(A) मार्क्सवाद
(B) प्रकार्यवाद
(C) वेबेरियन सिद्धांत
(D) प्रतीकात्मक अंतःक्रियावाद

154. सरकार का अचानक और हिंसक तख्तापलट, जिससे एक नई सामाजिक व्यवस्था बनती है, कहलाता है:
(A) उद्विकास
(B) विसरण
(C) प्रगति
(D) क्रांति

155. निम्नलिखित सामाजिक परिवर्तन अवधारणाओं को सबसे क्रमिक से सबसे अचानक के क्रम में व्यवस्थित करें:
1. क्रांति
2. रूपांतरण
3. उद्विकास
(A) 3, 2, 1
(B) 1, 2, 3
(C) 2, 3, 1
(D) 3, 1, 2

156. भारतीय समाज की अवधारणा बनाने के लिए किसकी समझ आवश्यक है?
(A) केवल भारत की आधुनिक राजनीतिक व्यवस्था।
(B) एकता, विविधता, समूहों और समुदायों की जटिल परस्पर क्रिया।
(C) केवल भारत की आर्थिक नीतियां।
(D) बिना लोगों के भारत का भूगोल।

157. कौन सा समसामयिक मुद्दा पुरुषों और महिलाओं के बीच अधिकारों और सामाजिक स्थिति में असमानताओं को सीधे संबोधित करता है?
(A) गरीबी
(B) लिंग की असमानता
(C) क्षेत्रीय वैमनस्य
(D) धार्मिक वैमनस्य

158. दिए गए कथनों को पढ़ें और सही विकल्प का चयन करें।
कथन I: अंतर-पीढ़ीगत संघर्ष एक आधुनिक परिघटना है जो पारंपरिक समाजों में मौजूद नहीं थी।
कथन II: तीव्र सामाजिक परिवर्तन पीढ़ियों के बीच मूल्य अंतराल को बढ़ा सकता है, जिससे अंतर-पीढ़ीगत संघर्ष बढ़ सकता है।
(A) कथन I और कथन II दोनों सत्य हैं।
(B) कथन I और कथन II दोनों असत्य हैं।

NODIA

(C) कथन I असत्य है, लेकिन कथन II सत्य है।
(D) कथन I सत्य है, लेकिन कथन II असत्य है।

159. समाजीकरण सिद्धांतों का प्राथमिक ध्यान यह स्पष्ट करना है कि:
(A) समाज कैसे स्तरीकृत होते हैं।
(B) सामाजिक परिवर्तन कैसे होता है।
(C) व्यक्ति एक सामाजिक प्राणी कैसे बनता है।
(D) समाज में शक्ति का वितरण कैसे होता है।

160. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है।
अभिकथन (A): वर्ग-आधारित समाज की तुलना में जाति-आधारित समाज में सामाजिक गतिशीलता काफी कम होती है।
कारण (R): जाति व्यवस्था आरोपण पर आधारित स्तरीकरण का एक बंद रूप है, जबकि वर्ग व्यवस्था अर्जित स्थिति की अनुमति देती है।
(A) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सत्य हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सत्य है लेकिन R असत्य है।
(D) A असत्य है लेकिन R सत्य है।

161. ग्रामीण क्षेत्र का एक युवा विश्वविद्यालय जाने के लिए शहर जाता है और उसे जीवन जीने के एक नए तरीके से तालमेल बिठाना पड़ता है। यह समायोजन किसका हिस्सा है?
(A) पुनः समाजीकरण
(B) प्राथमिक समाजीकरण
(C) प्रत्याशित समाजीकरण
(D) वयस्क समाजीकरण

162. स्तरीकरण के रूपों के संबंध में गलत कथन की पहचान करें।
(A) जाति एक प्रदत्त प्रणाली का उदाहरण है।
(B) वर्ग उपलब्धि-आधारित प्रणाली का एक उदाहरण है।
(C) लैंगिक स्तरीकरण केवल जैविक अंतरों पर आधारित है।
(D) नृजातीय स्तरीकरण में सांस्कृतिक पृष्ठभूमि के आधार पर रैंकिंग शामिल है।

163. यह विचार कि सामाजिक संरचनाएं समय के साथ बदलती हैं, किसके अध्ययन का केंद्र है?
(A) सामाजिक स्थिति विज्ञान
(B) सामाजिक परिवर्तन
(C) समाजीकरण
(D) सामाजिक स्तरीकरण

164. भारतीय समाज के अध्ययन में, "समूहों और समुदायों" का तात्पर्य निम्नलिखित इकाइयों से है:
(A) जाति समूह, धार्मिक समुदाय और जनजातीय समूह
(B) अस्थायी भीड़
(C) ऑनलाइन सामाजिक नेटवर्क
(D) अंतरराष्ट्रीय निगम

165. सूची I को सूची II के साथ सुमेलित कीजिए।
सूची I: (समाजीकरण का अभिकरण)
P. परिवार
Q. विद्यालय
R. मित्र समूह
S. जनसंचार माध्यम
सूची II: (प्राथमिक कार्य)
1. वयस्क पर्यवेक्षण से मुक्ति प्रदान करता है और अनौपचारिक सामाजिक नियम सिखाता है।
2. अवैयक्तिक जानकारी और लोकप्रिय संस्कृति की विस्तृत श्रृंखला प्रसारित करता है।
3. औपचारिक पाठ्यक्रम और सार्वभौमिक मूल्य सिखाता है।
4. प्राथमिक देखभाल प्रदान करता है और बुनियादी सांस्कृतिक मूल्य प्रसारित करता है।
(A) P-1, Q-2, R-3, S-4
(B) P-4, Q-3, R-2, S-1
(C) P-4, Q-3, R-1, S-2
(D) P-3, Q-4, R-1, S-2

166. सामाजिक परिवर्तन का एक सिद्धांत जो सभ्यताओं के उत्थान और पतन पर केंद्रित है, वह है:
(A) रैखिक सिद्धांत
(B) चक्रीय सिद्धांत
(C) मार्क्सवादी सिद्धांत
(D) प्रकार्यवादी सिद्धांत

167. एक समसामयिक चिंता के रूप में 'गरीबी' के मुद्दे में निम्नलिखित को समझना शामिल है:
(A) केवल एक निश्चित आय स्तर से नीचे के लोगों की संख्या।
(B) वे संरचनात्मक कारक जो गरीबी पैदा करते हैं और उसे बनाए रखते हैं।
(C) गरीबों की व्यक्तिगत व्यय संबंधी आदतें।
(D) सापेक्ष और पूर्ण वंचना का संरचनात्मक चक्र।

168. निम्नलिखित में से कौन पारिवारिक कलह का सबसे प्रत्यक्ष परिणाम है?
(A) राष्ट्रीय सकल घरेलू उत्पाद में वृद्धि।
(B) विवाह की कानूनी समाप्ति।
(C) अधिक सामाजिक सामंजस्य।
(D) नृजातीय संघर्ष में कमी।

169. नृजातीय स्तरीकरण की परिभाषित विशेषता क्या है?
(A) यह विशुद्ध रूप से व्यक्तिगत उपलब्धि पर आधारित है।
(B) यह समूहों को उनके कथित साझा पूर्वजों और संस्कृति के आधार पर श्रेणीबद्ध करता है।
(C) यह केवल आर्थिक रूप से अविकसित समाजों में पाई जाने वाली प्रणाली है।

NODIA

(D) यह हमेशा एक औपचारिक और कानूनी रूप से संहिताबद्ध प्रणाली होती है।

170. भारतीय समाज के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:
1. भारत की सांस्कृतिक विविधता समृद्धि और संघर्ष दोनों का स्रोत है।
2. "विविधता में एकता" की अवधारणा का अर्थ है कि सभी भेदों को समाप्त किया जाना चाहिए।
3. क्षेत्रीय, भाषाई और धार्मिक कारक भारत की विविधता के प्रमुख घटक हैं।

उपरोक्त कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?
(A) केवल 1 और 3
(B) केवल 2
(C) केवल 1 और 2
(D) 1, 2 और 3

171. वह शिक्षा जो भविष्य के उस पद की ओर निर्देशित होती है जिसे व्यक्ति प्राप्त करने की आशा करता है, कहलाती है:
(A) पुनः समाजीकरण
(B) प्रत्याशित समाजीकरण
(C) द्वितीयक समाजीकरण
(D) विकासात्मक समाजीकरण

172. 'सामाजिक विभेदीकरण' और 'सामाजिक स्तरीकरण' के बीच अंतर यह है कि स्तरीकरण में शामिल है:
(A) पदानुक्रम और असमानता
(B) समानता और न्याय
(C) यादृच्छिक जैविक अंतर
(D) सांस्कृतिक एकरूपता

173. 'संरचना का परिवर्तन' एक ऐसी अवधारणा है जो किस प्रकार के सामाजिक परिवर्तन के साथ सबसे अधिक मेल खाती है?
(A) प्रगति
(B) विसरण
(C) क्रांति
(D) उद्विकास

174. "भारत के लोग" परियोजना का मुख्य उद्देश्य भारतीय जनसंख्या की _____ का दस्तावेजीकरण करना था।
(A) जैविक और सांस्कृतिक विविधता
(B) राजनीतिक राय
(C) आर्थिक स्थिति
(D) मतदान प्रतिरूप

175. घरेलू हिंसा पारिवारिक कलह का एक रूप है जो:
(A) इसमें शारीरिक, भावनात्मक, यौन और आर्थिक शोषण शामिल हो सकता है।
(B) केवल मौखिक तर्कों तक सीमित है।
(C) केवल निम्न आय वाले परिवारों को प्रभावित करती है।
(D) वैवाहिक अनुशासन का एक कानूनी रूप से स्वीकार्य स्वरूप है।

176. निम्नलिखित में से कौन जाति पर आधारित असमानता का उदाहरण है?
(A) किसी व्यक्ति को उसके लिंग के कारण रोजगार देने से मना कर दिया जाना।
(B) किसी व्यक्ति को उसकी 'निम्न' जन्म स्थिति के कारण सामाजिक बहिष्कार का सामना करना पड़ना।
(C) खराब प्रदर्शन के कारण किसी व्यक्ति को पदोन्नति न मिलना।
(D) किसी व्यक्ति को दूसरे देश का प्रवेश पत्र न मिलना।

177. एक व्यक्ति का निम्न सामाजिक वर्ग से उच्च सामाजिक वर्ग में जाना कहलाता है:
(A) अधोमुखी गतिशीलता
(B) क्षैतिज गतिशीलता
(C) उर्ध्वमुखी गतिशीलता
(D) संरचनात्मक गतिशीलता

178. दिए गए कथनों को पढ़ें और सही विकल्प का चयन करें।
कथन I: सामाजिक परिवर्तन के रैखिक सिद्धांत सुझाव देते हैं कि समाज चरणों के एक निर्धारित क्रम के माध्यम से प्रगति करते हैं।
कथन II: सामाजिक परिवर्तन के चक्रीय सिद्धांत सुझाव देते हैं कि समाज विकास और पतन के आवर्ती चरणों से गुजरते हैं।
(A) कथन I और कथन II दोनों सत्य हैं।
(B) कथन I और कथन II दोनों असत्य हैं।
(C) कथन I सत्य है, लेकिन कथन II असत्य है।
(D) कथन I असत्य है, लेकिन कथन II सत्य है।

179. नदी जल बंटवारे को लेकर भारत के भीतर दो राज्यों के बीच संघर्ष किसका उदाहरण है?
(A) धार्मिक वैमनस्य
(B) क्षेत्रीय वैमनस्य
(C) पारिवारिक कलह
(D) लैंगिक असमानता

180. व्यक्ति के जीवन के प्रारंभिक वर्षों के दौरान, मुख्य रूप से परिवार के भीतर होने वाला समाजीकरण कहलाता है:
(A) वयस्क समाजीकरण
(B) पुनः समाजीकरण
(C) प्राथमिक समाजीकरण
(D) प्रत्याशित समाजीकरण

181. सामाजिक स्तरीकरण की एक प्रमुख विशेषता यह है कि यह:
(A) समाज की एक विशेषता है, न कि केवल व्यक्तियों की।
(B) केवल व्यक्तिगत अंतरों का प्रतिबिंब है।
(C) व्यक्तिगत प्रयास से सुगमता से बदला जा सकता है।
(D) एक अस्थायी और यादृच्छिक व्यवस्था है।

182. सामाजिक स्तरीकरण का एक संघर्ष सिद्धांत व्यवस्था को किस रूप में देखेगा?
(A) समाज की समग्र स्थिरता के लिए लाभदायक।

Downloaded from www.pdf.tube

(B) प्रभुत्वशाली समूहों द्वारा दमन और शोषण का एक साधन।
(C) व्यक्तिगत प्रतिभा और कठिन परिश्रम का एक निष्पक्ष प्रतिबिंब।
(D) साझा मूल्यों और आम सहमति का उत्पाद।

183. विश्व भर में स्मार्टफोन का आगमन और प्रसार किसके माध्यम से सामाजिक परिवर्तन का एक शक्तिशाली उदाहरण है?
(A) क्रांति
(B) विसरण
(C) उद्विकास
(D) चक्रीय परिवर्तन

184. 'विविधता में एकता' की अवधारणा भारतीय अनुभव का सबसे अच्छा वर्णन किस रुप में करती है?
(A) व्यापक सांस्कृतिक बहुलवाद के बीच राष्ट्रीय एकीकरण।
(B) अल्पसंख्यक संस्कृतियों का पूर्ण समावेशन।
(C) सामाजिक असमानता के सभी रुपों का उन्मूलन।
(D) एक एकल राष्ट्रीय संस्कृति।

185. दहेज के लिए उत्पीड़न और हिंसा किसकी चरम अभिव्यक्ति हैं?
(A) अंतर-पीढ़ीगत संघर्ष
(B) क्षेत्रवाद
(C) धार्मिक कट्टरवाद
(D) लैंगिक असमानता और पारिवारिक कलह

186. बाद के जीवन में नई भूमिकाओं और अपेक्षाओं को सीखने की प्रक्रिया को कौन सा शब्द संदर्भित करता है?
(A) प्राथमिक समाजीकरण
(B) वयस्क समाजीकरण
(C) स्वाभाविक शिक्षा
(D) आनुवंशिक प्रोग्रामिंग

187. निम्नलिखित में से कौन सामाजिक स्तरीकरण का एक प्रमुख रूप नहीं है?
(A) जाति
(B) वर्ग
(C) सामाजिक विभेदीकरण
(D) लिंग

188. सामाजिक स्तरीकरण के सिद्धांत किस मौलिक प्रश्न का उत्तर देने का प्रयास करते हैं?
(A) समाज में असमानता क्यों है?
(B) व्यक्ति सामाजिक मानदंड कैसे सीखते हैं?
(C) समाज समय के साथ कैसे बदलते हैं?
(D) सरकार का आदर्श स्वरूप क्या है?

189. लंबी अवधि में सामाजिक संस्थाओं और मानदंडों में क्रमिक परिवर्तन कहलाता है:
(A) क्रांति
(B) रुपांतरण
(C) प्रगति
(D) उद्विकास

NODIA

190. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है।
अभिकथन (A): गरीबी केवल एक आर्थिक स्थिति नहीं है बल्कि एक सामाजिक-सांस्कृतिक मुद्दा भी है।
कारण (R): गरीबी में अक्सर सामाजिक बहिष्कार और वंचना का एक चक्र शामिल होता है जो सामाजिक संरचनाओं द्वारा बना रहता है।
(A) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सत्य हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सत्य है लेकिन R असत्य है।
(D) A असत्य है लेकिन R सत्य है।

191. कई परिवारों में अंतर-पीढ़ीगत संघर्ष का एक प्रमुख स्रोत निम्नलिखित में से किसके संबंध में विचारों का अंतर है?
(A) भौतिकी के नियम।
(B) पारंपरिक मूल्य बनाम आधुनिक जीवन शैली।
(C) क्रीड़ा के नियम।
(D) देश की राजधानी।

192. निम्नलिखित में से कौन नृजातीय वैमनस्य के सार को सबसे अच्छी तरह दर्शाता है?
(A) विरासत को लेकर पारिवारिक विवाद।
(B) विभिन्न सांस्कृतिक उत्पत्ति वाले दो समूहों के बीच संघर्ष।
(C) नए कानून को लेकर संसद में परिचर्चा।
(D) दो कंपनियों के बीच व्यावसायिक प्रतिद्वंद्विता।

193. एक पुरानी पहचान को त्यागने और एक भिन्न परिवेश में एक नई पहचान बनाने की प्रक्रिया कहलाती है:
(A) प्रत्याशित समाजीकरण
(B) वयस्क समाजीकरण
(C) पुनः समाजीकरण
(D) प्राथमिक समाजीकरण

194. एक सामाजिक पदानुक्रम का अस्तित्व जिसमें कुछ समूहों के पास दूसरों की तुलना में अधिक शक्ति और प्रतिष्ठा होती है, किसकी परिभाषा है?
(A) सामाजिक समानता
(B) सामाजिक स्तरीकरण
(C) सामाजिक परिवर्तन
(D) समाजीकरण

195. सूची I को सूची II के साथ सुमेलित कीजिए।
सूची I: (वैमनस्य का रूप)
P. घरेलू हिंसा

Q. अंतर-पीढ़ीगत संघर्ष
R. क्षेत्रीय वैमनस्य
S. धार्मिक वैमनस्य

सूची II: (संदर्भ)
1. संसाधनों या शक्ति को लेकर राज्यों के बीच।
2. विभिन्न मतों के अनुयायियों के बीच।
3. परिवार के भीतर, अक्सर साथियों के बीच।
4. परिवार के भीतर, माता-पिता और बच्चों के बीच।

(A) P-3, Q-4, R-1, S-2
(B) P-1, Q-2, R-3, S-4
(C) P-4, Q-3, R-2, S-1
(D) P-3, Q-1, R-4, S-2

196. पीढ़ियों के बीच सामाजिक स्तरीकरण को बनाए रखने के लिए कौन सी सामाजिक प्रक्रिया मौलिक है?
(A) सामाजिक गतिशीलता
(B) सामाजिक परिवर्तन
(C) समाजीकरण
(D) सामाजिक क्रांति

197. एक सिद्धांत जो सुझाव देता है कि सामाजिक परिवर्तन एक विशिष्ट दिशा में आगे बढ़ता है, आमतौर पर सुधार की ओर, एक _____ सिद्धांत है।
(A) चक्रीय
(B) रैखिक
(C) संघर्ष
(D) स्थिर

198. धर्मनिरपेक्षता का भारतीय मॉडल, जो सभी धर्मों को स्वीकार करता है, किसकी आधारशिला है?
(A) धार्मिक विविधता
(B) जाति व्यवस्था
(C) आर्थिक नीति
(D) पारिवारिक कानून

199. एक व्यक्तिगत समस्या से 'तलाक' को एक सामाजिक मुद्दे के रूप में क्या अलग करता है?
(A) इसकी दरों, कारणों और सामाजिक प्रभाव का विश्लेषण।
(B) यह तथ्य कि इसे कानूनी रूप से मान्यता प्राप्त है।
(C) व्यक्तियों को होने वाली भावनात्मक पीड़ा।
(D) कानूनी कार्यवाही की वित्तीय लागत।

200. निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:
1. समाजीकरण वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा एक जैविक जीव सामाजिक प्राणी बनता है।
2. समाजीकरण के अभिकरणों में परिवार, विद्यालय और जनसंचार माध्यम शामिल हैं।
3. पुनः समाजीकरण उस भूमिका के लिए मानदंड सीखने की प्रक्रिया है जिसे भविष्य में निभाने की व्यक्ति उम्मीद करता है।

उपरोक्त कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?
(A) केवल 1 और 2
(B) केवल 2 और 3
(C) केवल 3
(D) 1, 2 और 3

201. 'पदानुक्रम' की अवधारणा किसके केंद्र में है?
(A) सामाजिक विभेदीकरण
(B) सामाजिक स्तरीकरण
(C) सामाजिक समानता
(D) सामाजिक विसरण

202. दिए गए कथनों को पढ़ें और सही विकल्प का चयन करें।
कथन I: स्तरीकरण की वर्ग प्रणाली पूरी तरह से खुली है, और पर्याप्त प्रयास के साथ कोई भी शिखर पर पहुँच सकता है।
कथन II: सामाजिक वर्ग की पृष्ठभूमि शिक्षा और स्वास्थ्य सहित व्यक्ति के जीवन के अवसरों को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित करती है।
(A) कथन I और कथन II दोनों सत्य हैं।
(B) कथन I और कथन II दोनों असत्य हैं।
(C) कथन I असत्य है, लेकिन कथन II सत्य है।
(D) कथन I सत्य है, लेकिन कथन II असत्य है।

203. सामाजिक और राजनीतिक संरचना में अचानक, पूर्ण और अक्सर हिंसक परिवर्तन कहलाता है:
(A) सुधार
(B) रूपांतरण
(C) क्रांति
(D) उद्विकास

204. भाषाई, धार्मिक और जनजातीय बहुलवाद का प्रबंधन किसके विचार की कुंजी है?
(A) एक राष्ट्र-राज्य
(B) सामाजिक स्तरीकरण
(C) विविधता में एकता
(D) पारिवारिक सद्भाव

205. शक्ति, धन और स्थिति के मामले में पुरुषों और महिलाओं के बीच निरंतर असमानता को कहा जाता है:
(A) लैंगिक स्तरीकरण
(B) लैंगिक भूमिकाएं
(C) लैंगिक पहचान
(D) लैंगिक समाजीकरण

206. सेना में एक नए सैनिक को वर्दी धारण करने और केवल अपने पद पर प्रतिक्रिया देने के लिए निर्देशित किया जाता है। यह किस प्रक्रिया का हिस्सा है?
(A) प्रत्याशित समाजीकरण
(B) पुनः समाजीकरण
(C) प्राथमिक समाजीकरण
(D) वयस्क समाजीकरण

Click Here to Buy book on Amazon

207. सामाजिक स्तरीकरण का कौन सा रूप अर्जित प्रास्थिति से सबसे अधिक संबंधित है?
(A) जाति
(B) जागीर
(C) दासता
(D) वर्ग

208. एक अकुशल श्रमिक का बेटा एक सफल शल्य चिकित्सक बन जाता है, यह किसका उदाहरण है?
(A) अंतर-पीढ़ीगत उर्ध्वमुखी गतिशीलता
(B) क्षैतिज गतिशीलता
(C) अधोमुखी गतिशीलता
(D) अंतः-पीढ़ीगत गतिशीलता

209. सामाजिक परिवर्तन का एक सिद्धांत जो समाज में विभिन्न समूहों के बीच अंतर्निहित तनावों पर जोर देता है, कहलाता है:
(A) एक संघर्ष सिद्धांत
(B) एक प्रकार्यवादी सिद्धांत
(C) एक उद्विकासीय सिद्धांत
(D) एक चक्रीय सिद्धांत

210. एक युवती को अपर्याप्त दहेज के कारण उसके ससुराल पक्ष द्वारा प्रताड़ित किया जाना किसका मामला है?
(A) दहेज संबंधी घरेलू हिंसा
(B) मूल्यों पर अंतर-पीढ़ीगत संघर्ष
(C) क्षेत्रीय वैमनस्य
(D) सामान्य वैवाहिक समायोजन की समस्याएं

211. निम्नलिखित में से किसे समाजीकरण का प्राथमिक अभिकरण माना जाता है?
(A) विद्यालय
(B) परिवार
(C) मित्र समूह
(D) जनसंचार माध्यम

212. सामाजिक विभेदीकरण और सामाजिक स्तरीकरण के बीच मुख्य अंतर किसकी उपस्थिति है?
(A) व्यक्तिगत अंतर
(B) संरचित असमानता और पदानुक्रम
(C) सामाजिक समूह
(D) सांस्कृतिक विविधता

213. औद्योगिक क्रांति समाज के एक गहरे किस प्रक्रिया का प्रमुख उदाहरण है?
(A) ठहराव
(B) रुपांतरण
(C) चक्र
(D) विपर्यय

214. "भारत के लोग" की अवधारणा देश के किस गठन पर जोर देती है?
(A) एक सजातीय नृजातीय समूह।
(B) कई विविध समूहों और समुदायों का समुच्चय।
(C) केवल शहरी, शिक्षित जनसंख्या।
(D) केवल उनके आर्थिक वर्ग द्वारा परिभाषित लोग।

215. व्यक्ति के जीवन पथ पर समाजीकरण के इन अभिकरणों के प्रभाव को उनके विशिष्ट क्रम में व्यवस्थित करें:
1. कार्यस्थल
2. मित्र समूह
3. परिवार
4. विद्यालय
(A) 3, 4, 2, 1
(B) 1, 2, 3, 4
(C) 3, 2, 4, 1
(D) 4, 3, 1, 2

NODIA

216. निम्नलिखित में से कौन सा असमानता से उत्पन्न होने वाला सामाजिक-सांस्कृतिक मुद्दा है?
(A) गरीबी
(B) भाषाई विविधता
(C) धार्मिक बहुलवाद
(D) पारिवारिक संरचना

217. परंपरागत विवाह में पुरानी पीढ़ी के विश्वास और प्रेम विवाह के प्रति युवा पीढ़ी की पसंद के बीच टकराव किसका उदाहरण है?
(A) घरेलू हिंसा
(B) अंतर-पीढ़ीगत संघर्ष
(C) दहेज
(D) तलाक

218. किसी समाज में पुरुष या महिला होने से जुड़ी विशिष्ट भूमिकाओं और व्यवहारों को सीखने की प्रक्रिया है:
(A) वयस्क समाजीकरण
(B) लैंगिक समाजीकरण
(C) पुनः समाजीकरण
(D) वर्ग समाजीकरण

219. एक शुद्ध जाति व्यवस्था में, सामाजिक गतिशीलता होती है:
(A) बहुत उच्च और बार-बार होने वाली।
(B) व्यवहारतः नगण्य या अत्यंत कठिन।
(C) व्यक्तिगत उपलब्धि पर आधारित।
(D) आर्थिक सफलता पर निर्भर।

220. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है।
अभिकथन (A): सामाजिक परिवर्तन एक सरल प्रक्रिया है जो समाज के सभी हिस्सों को समान रूप से प्रभावित करती है।
कारण (R): सामाजिक परिवर्तन अलग-अलग दरों और प्रभावों वाली एक जटिल प्रक्रिया है, जो अक्सर विभिन्न सामाजिक संस्थाओं में व्यवधान पैदा करती है।

(A) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सत्य हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सत्य है लेकिन R असत्य है।
(D) A असत्य है लेकिन R सत्य है।

221. निम्नलिखित में से कौन 'संरचना के परिवर्तन' के बजाय 'संरचना के भीतर परिवर्तन' के उदाहरण का प्रतिनिधित्व करता है?
(A) 1917 की रूसी क्रांति।
(B) चुनाव के बाद सत्तारूढ़ राजनीतिक दल में बदलाव।
(C) सामंतवाद से पूंजीवाद की ओर बदलाव।
(D) कानून के लिए धार्मिक आधार से धर्मनिरपेक्ष आधार पर संक्रमण।

222. वह शब्द जिसमें पारिवारिक कलह के विभिन्न रूप शामिल हैं, जैसे कि घरेलू हिंसा, दहेज संघर्ष और तलाक, वह है:
(A) सामाजिक स्तरीकरण
(B) पारिवारिक वैमनस्य
(C) सामाजिक गतिशीलता
(D) सांस्कृतिक विविधता

223. उस अवधारणा को क्या कहा जाता है जिसे आजीवन सामाजिक अनुभव के रूप में परिभाषित किया गया है जिसके द्वारा लोग अपनी मानवीय क्षमता विकसित करते हैं?
(A) समाजीकरण
(B) सामाजिक स्तरीकरण
(C) सामाजिक गतिशीलता
(D) सामाजिक परिवर्तन

224. किसी व्यक्ति की बाजार स्थिति और राजनीतिक शक्ति पर आधारित स्तरीकरण का सिद्धांत सबसे अधिक किससे संबंधित है?
(A) मैक्स वेबर
(B) कार्ल मार्क्स
(C) एमिल दुर्खीम
(D) अगस्त कॉम्टे

225. सूची I को सूची II के साथ सुमेलित कीजिए।
सूची I: (समाजशास्त्रीय अवधारणा)
P. समाजीकरण
Q. सामाजिक स्तरीकरण
R. सामाजिक परिवर्तन
S. सामाजिक गतिशीलता
सूची II: (मूल विचार)
1. सामाजिक पदानुक्रम के भीतर आवागमन।
2. समय के साथ सामाजिक संरचनाओं में बदलाव।
3. सामाजिक मानदंडों और भूमिकाओं को सीखने की प्रक्रिया।
4. संरचित सामाजिक असमानता की प्रणाली।
(A) P-3, Q-4, R-2, S-1
(B) P-1, Q-2, R-3, S-4
(C) P-3, Q-2, R-4, S-1
(D) P-4, Q-3, R-1, S-2

226. सामाजिक परिवर्तन के चक्रीय सिद्धांतों की तुलना अक्सर किससे की जाती है?
(A) संघर्ष सिद्धांत
(B) रैखिक सिद्धांत
(C) प्रकार्यवादी सिद्धांत
(D) विसरण सिद्धांत

227. भारत द्वारा विभिन्न धर्मों के त्योहारों को मनाना किसका सांस्कृतिक स्वरूप है?
(A) क्षेत्रीय वैमनस्य
(B) विविधता में एकता
(C) लैंगिक असमानता
(D) जाति व्यवस्था

228. दिए गए कथनों को पढ़ें और सही विकल्प का चयन करें।
कथन I: भारत में घरेलू हिंसा एक आपराधिक अपराध है।
कथन II: कानून के होने से पारिवारिक कलह के रूप में घरेलू हिंसा पूरी तरह से समाप्त हो गई है।
(A) कथन I और कथन II दोनों सत्य हैं।
(B) कथन I और कथन II दोनों असत्य हैं।
(C) कथन I सत्य है, लेकिन कथन II असत्य है।
(D) कथन I असत्य है, लेकिन कथन II सत्य है।

229. एक सैद्धांतिक दृष्टिकोण जो समाजीकरण को शक्तिशाली लोगों के लिए उन मूल्यों को संप्रेषित करने के तरीके के रूप में देखता है जो पूंजीवादी व्यवस्था का समर्थन करते हैं, वह होगा:
(A) प्रकार्यवादी दृष्टिकोण
(B) संघर्ष दृष्टिकोण
(C) प्रतीकात्मक अंतःक्रियावादी दृष्टिकोण
(D) उद्विकासीय दृष्टिकोण

230. निम्नलिखित समसामयिक मुद्दों पर विचार करें:
1. जाति की असमानता
2. लिंग की असमानता
3. गरीबी
उपरोक्त कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?
(A) केवल 1 और 2
(B) केवल 1 और 3
(C) केवल 2 और 3
(D) 1, 2, और 3

231. सामाजिक गतिशीलता जो व्यावसायिक संरचना में बड़े पैमाने पर परिवर्तनों के कारण होती है, कहलाती है:
(A) संरचनात्मक गतिशीलता
(B) अंतर-पीढ़ीगत गतिशीलता
(C) क्षैतिज गतिशीलता
(D) अंतः-पीढ़ीगत गतिशीलता

Downloaded from www.pdf.tube

232. 'प्रगति' सामाजिक परिवर्तन का एक विशिष्ट प्रकार है जो:
(A) हमेशा नकारात्मक होता है।
(B) मूल्य-आधारित और सुधार का सूचक होता है।
(C) यादृच्छिक और दिशाहीन होता है।
(D) मूल्य-तटस्थ और वस्तुनिष्ठ होता है।

233. भारत के विभिन्न राज्यों में पाई जाने वाली व्यंजनों और रीति-रिवाजों की विविधता किसका उदाहरण है?
(A) क्षेत्रीय विविधता
(B) धार्मिक अनुरूपता
(C) सामाजिक ठहराव
(D) पारिवारिक कलह

234. एक समाज में तलाक की संख्या में वृद्धि समाजशास्त्रीय रूप से महत्वपूर्ण है क्योंकि यह संकेत दे सकती है:
(A) कि लोग अब परिवार को महत्व नहीं देते हैं।
(B) विवाह के संबंध में सामाजिक मानदंडों में बदलाव।
(C) देश की आर्थिक वृद्धि में गिरावट।
(D) औपचारिक संघों में रुचि की कुल हानि।

235. सीखने की वह प्रक्रिया जो जन्म से प्रारंभ होती है और परिवार में संपन्न होती है, वह है:
(A) प्रत्याशित समाजीकरण
(B) पुनः समाजीकरण
(C) प्राथमिक समाजीकरण
(D) द्वितीयक समाजीकरण

236. सामाजिक स्तरीकरण की सभी प्रणालियों की विशेषता है:
(A) पूर्ण समानता
(B) समूहों की श्रेणीबद्ध रैंकिंग
(C) सामाजिक गतिशीलता की उच्च दर
(D) सामाजिक विभेदीकरण का अभाव

237. कौन सी अवधारणा किसी सामाजिक समूह या समाज की संरचना में बदलाव को संदर्भित करती है?
(A) सामाजिक नियंत्रण
(B) सामाजिक परिवर्तन
(C) समाजीकरण
(D) सामाजिक स्थिति

238. अलग-अलग धार्मिक समुदायों का सह-अस्तित्व क्या कहलाता है?
(A) धार्मिक वैमनस्य
(B) धार्मिक विविधता
(C) धार्मिक कट्टरवाद
(D) धर्म परिवर्तन

239. व्यवहार का वह प्रतिरूप जिसमें एक अंतरंग संबंध में एक व्यक्ति बल या धमकी के माध्यम से दूसरे को नियंत्रित करता है, वह है:
(A) अंतर-पीढ़ीगत संघर्ष
(B) तलाक
(C) घरेलू हिंसा
(D) दहेज

240. निम्नलिखित में से कौन सामाजिक स्तरीकरण का एक रूप नहीं है?
(A) आयु
(B) लिंग
(C) जाति
(D) सामाजिक विभेदीकरण

241. 'प्रत्याशित समाजीकरण' व्यक्ति की किस प्रकार सहायता करता है?
(A) उन्हें अपने अतीत को भूलने के लिए बाध्य करके।
(B) एक नई भूमिका या समूह में उनके संक्रमण को सुगम बनाकर।
(C) उन्हें बचपन में बुनियादी भाषा कौशल सिखाकर।
(D) वृद्धावस्था के साथ तालमेल बिठाने में उनकी सहायता करके।

242. दिए गए कथनों को पढ़ें और सही विकल्प का चयन करें।
कथन I: सभी समाजों में सामाजिक स्तरीकरण का कोई न कोई रूप होता है।
कथन II: स्तरीकरण की सभी प्रणालियां मूल्यों के सार्वभौमिक रूप से सहमत समूह पर आधारित होती हैं।
(A) कथन I और कथन II दोनों सत्य हैं।
(B) कथन I और कथन II दोनों असत्य हैं।
(C) कथन I सत्य है, लेकिन कथन II असत्य है।
(D) कथन I असत्य है, लेकिन कथन II सत्य है।

243. विश्व भर में लोकतांत्रिक आदर्शों का प्रसार किस प्रकार के सामाजिक परिवर्तन का उदाहरण है?
(A) उद्विकास
(B) क्रांति
(C) विसरण
(D) चक्रीय परिवर्तन

244. पीढ़ियों तक गरीबी का बने रहना किस समसामयिक मुद्दे का एक प्रमुख पहलू है?
(A) असमानता
(B) पारिवारिक कलह
(C) धार्मिक विविधता
(D) क्षेत्रवाद

245. जब माता-पिता और बच्चों के बीच व्यक्तिगत स्वतंत्रता और सामाजिक मानदंडों पर परस्पर विरोधी विचार होते हैं, तो यह निम्नलिखित की ओर ले जाता है:
(A) घरेलू हिंसा
(B) दहेज के मुद्दे
(C) अंतर-पीढ़ीगत संघर्ष
(D) नृजातीय वैमनस्य

NODIA

246. 'सामाजिक विभेदीकरण' की अवधारणा केवल समाज में _____ के अस्तित्व को संदर्भित करती है।
(A) पदानुक्रम
(B) असमानता
(C) भिन्नता
(D) गतिशीलता

247. सामाजिक स्तरीकरण का एक प्रकार्यवादी सिद्धांत तर्क देता है कि असमानता:
(A) समाज के लिए दुष्प्रकार्यात्मक है।
(B) शोषण का परिणाम है।
(C) यह सुनिश्चित करने का साधन है कि महत्वपूर्ण पद सक्षम लोगों द्वारा भरे जाएं।
(D) आधुनिक समाजों की एक अस्थायी विशेषता है।

248. सामाजिक परिवर्तन का सबसे क्रांतिकारी प्रकार है:
(A) उद्विकास
(B) विसरण
(C) क्रांति
(D) रूपांतरण

249. भारत में नागा और भील जैसे समूहों के बीच विशिष्ट सांस्कृतिक प्रथाओं की उपस्थिति को कौन सी अवधारणा स्पष्ट करती है?
(A) जनजातीय विविधता
(B) भाषाई विविधता
(C) धार्मिक विविधता
(D) जातिगत विविधता

250. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है।
अभिकथन (A): दहेज प्रथा अवैध होने के बावजूद भारत में महिलाओं के विरुद्ध हिंसा के कारण के रूप में बनी हुई है।
कारण (R): पितृसत्तात्मक मानदंड अक्सर सामाजिक व्यवहार को प्रभावित करने में कानून की शक्ति से अधिक प्रभावी होते हैं।
(A) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सत्य हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सत्य है लेकिन R असत्य है।
(D) A असत्य है लेकिन R सत्य है।

251. घर के बाहर, विद्यालय और कार्यस्थल जैसे परिवेश में होने वाली सीखने की प्रक्रिया कहलाती है:
(A) प्राथमिक समाजीकरण
(B) द्वितीयक समाजीकरण
(C) पुनः समाजीकरण
(D) समाज-विरोधी समाजीकरण

252. जन्म पर आधारित सामाजिक स्तरीकरण की प्रणाली, जिसमें गतिशीलता की कोई संभावना नहीं होती है, वह एक _____ प्रणाली है।
(A) वर्ग
(B) खुली
(C) जाति
(D) योग्यता-आधारित

253. "संरचना के भीतर परिवर्तन" संदर्भित करता है:
(A) सामाजिक व्यवस्था का मौलिक रूपांतरण।
(B) मौजूदा सामाजिक व्यवस्था के भीतर परिवर्तन, जैसे कि कार्मिक बदलाव।
(C) समाज का पूर्ण पतन।
(D) सांस्कृतिक लक्षणों का प्रसार।

254. कथित आर्थिक उपेक्षा और राजनीतिक स्वायत्तता की मांगों से उत्पन्न होने वाले संघर्ष किसके उदाहरण हैं?
(A) धार्मिक वैमनस्य
(B) क्षेत्रीय वैमनस्य
(C) पारिवारिक कलह
(D) लैंगिक असमानता

255. सूची I को सूची II के साथ सुमेलित कीजिए।
सूची I: (पद)
P. पुनः समाजीकरण
Q. प्रत्याशित समाजीकरण
R. सामाजिक गतिशीलता
S. सामाजिक उद्विकास
सूची II: (संबद्ध अवधारणा)
1. भविष्य की भूमिका की आकांक्षा।
2. सामाजिक सोपान में ऊपर या नीचे जाना।
3. क्रमिक सामाजिक विकास।
4. नए वातावरण में नए मानदंड सीखना।
(A) P-1, Q-4, R-2, S-3
(B) P-4, Q-1, R-2, S-3
(C) P-4, Q-2, R-1, S-3
(D) P-3, Q-1, R-2, S-4

256. निम्नलिखित में से कौन सामाजिक स्तरीकरण की विशेषता नहीं है?
(A) यह समाज की एक विशेषता है।
(B) यह पीढ़ियों तक बना रहता है।
(C) यह सार्वभौमिक है लेकिन परिवर्तनशील है।
(D) यह विशुद्ध रूप से व्यक्तिगत प्रतिभा पर आधारित है।

257. दिए गए कथनों को पढ़ें और सही विकल्प का चयन करें।
कथन I: सामाजिक परिवर्तन के चक्रीय सिद्धांत प्रस्तावित करते हैं कि समाज एक बेहतर स्थिति की ओर विकसित होते हैं।
कथन II: सामाजिक परिवर्तन के रैखिक सिद्धांत अक्सर समाज और एक जीव के जीवन चक्र के बीच समानता दर्शाते हैं।
(A) कथन I और कथन II दोनों सत्य हैं।
(B) कथन I और कथन II दोनों असत्य हैं।
(C) कथन I सत्य है, लेकिन कथन II असत्य है।

Click Here to Buy book on Amazon

(D) कथन I असत्य है, लेकिन कथन II सत्य है।

258. "विविधता में एकता" भारत की किस क्षमता को उजागर करती है?
(A) बहुलवाद के बावजूद राष्ट्रीय एकीकरण
(B) सांस्कृतिक समरूपीकरण
(C) सभी सामाजिक पदानुक्रमों को मिटाना
(D) अपने विविध समुदायों को अलग-थलग करना

259. गरीबी का अध्ययन करने वाले समाजशास्त्री की रुचि सबसे अधिक किसमें होगी?
(A) वे संरचनात्मक कारक जो गरीबी पैदा करते हैं और उसे बनाए रखते हैं।
(B) गरीब व्यक्तियों का नैतिक चरित्र।
(C) धनी परोपकारी लोगों के धर्मार्थ कार्य।
(D) आर्थिक सफलता के जैविक निर्धारक।

260. निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:
1. सामाजिक गतिशीलता एक स्तरीकरण प्रणाली के भीतर व्यक्तियों का आवागमन है।
2. पूरी तरह से बंद स्तरीकरण प्रणाली में कोई सामाजिक गतिशीलता नहीं होती है।
3. खुली प्रणालियों में शिक्षा अक्सर उर्ध्वमुखी सामाजिक गतिशीलता का प्रमुख साधन होती है।

उपरोक्त कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?
(A) केवल 1
(B) केवल 1 और 2
(C) केवल 2 और 3
(D) 1, 2 और 3

261. वृद्धावस्था से निपटने वाला समाजीकरण किसका हिस्सा है?
(A) प्राथमिक समाजीकरण
(B) वयस्क समाजीकरण
(C) प्रत्याशित समाजीकरण
(D) पुनः समाजीकरण

262. कौन सी अवधारणा लोगों के समूहों की असमान रैंकिंग को सीधे संबोधित करती है, जो असमानता को बनाए रखती है?
(A) सामाजिक स्तरीकरण
(B) सामाजिक विभेदीकरण
(C) सामाजिक अंतःक्रिया
(D) सामाजिक एकीकरण

263. क्रांति और उद्विकास के बीच एक प्रमुख अंतर परिवर्तन की _____ है।
(A) गति और पैमाना
(B) स्रोत
(C) दिशा
(D) आवश्यकता

264. भारत में सह-अस्तित्व वाली धार्मिक मान्यताओं की विविधता किसके संकेत देती है?
(A) सामाजिक स्तरीकरण
(B) पारिवारिक कलह
(C) सांस्कृतिक विविधता
(D) सामाजिक गतिशीलता

265. विवाह को समाप्त करने के कानूनी कार्य को तलाक कहा जाता है, लेकिन इसका समाजशास्त्रीय अध्ययन पारिवारिक कलह के रूप में इसके _____ पर केंद्रित होता है।
(A) व्यक्तिगत त्रासदी
(B) कारण, दरें और परिणाम
(C) नैतिक शुद्धता
(D) वित्तीय लागत

266. वह समाजीकरण जिसमें परिवेश को नियंत्रित करके व्यक्ति के व्यक्तित्व को मौलिक रूप से बदलना शामिल है, वह है:
(A) प्रत्याशित समाजीकरण
(B) पुनः समाजीकरण
(C) प्राकृतिक समाजीकरण
(D) वयस्क समाजीकरण

267. सामाजिक स्तरीकरण के एक रूप के रूप में लिंग का तात्पर्य है:
(A) लिंगों के बीच जैविक अंतर।
(B) पुरुषों और महिलाओं के बीच धन, शक्ति और विशेषाधिकार का असमान वितरण।
(C) पुरुषों और महिलाओं के बीच समान भागीदारी।
(D) लैंगिक पहचान के लिए व्यक्तिगत प्राथमिकता।

268. निम्नलिखित में से कौन सा अंतः-पीढ़ीगत गतिशीलता का उदाहरण है?
(A) एक किसान का बेटा वैज्ञानिक बन जाता है।
(B) एक व्यापारिक कार्यकारी को विक्रय लिपिक के रूप में पदावनत किया जाता है।
(C) एक महिला को अपने माता-पिता से धन विरासत में मिलता है।
(D) किसी देश की व्यावसायिक संरचना 50 वर्षों में बदल जाती है।

269. यह तर्क कि सामाजिक परिवर्तन सांस्कृतिक लक्षणों के प्रसार से प्रेरित होता है, _____ सिद्धांत का केंद्र है।
(A) उद्विकासीय
(B) चक्रीय
(C) संघर्ष
(D) विसरणवादी

270. दो धार्मिक समूहों के बीच सांप्रदायिक संघर्ष किसका चरम उदाहरण है?
(A) धार्मिक वैमनस्य
(B) क्षेत्रीय वैमनस्य

Downloaded from www.pdf.tube

(C) अंतर-पीढ़ीगत संघर्ष
(D) वर्ग संघर्ष

271. जीवन के किस चरण के दौरान समाजीकरण के अभिकरण के रूप में मित्र समूह सबसे अधिक प्रभावशाली होते हैं?
(A) शैशवावस्था
(B) किशोरावस्था
(C) मध्यम आयु
(D) वृद्धावस्था

272. एक समाज जहाँ सामाजिक स्थिति व्यक्तिगत प्रयास और उपलब्धि पर आधारित होती है, कहलाती है:
(A) जाति आधारित समाज
(B) योग्यतातंत्र
(C) धनिकतंत्र
(D) पारंपरिक समाज

273. समाज के 'रूपांतरण' का तात्पर्य ऐसे परिवर्तन से है जो:
(A) मामूली हो।
(B) गहरा, व्यापक और गुणात्मक हो।
(C) हमेशा नियोजित और जानबूझकर किया गया हो।
(D) पिछली स्थिति में वापसी हो।

274. 'भारत के लोग' की अवधारणा देश को किसके रूप में पहचानती है?
(A) एक एकल नृजातीय समूह।
(B) विविध संस्कृतियों वाले कई समूह और समुदाय।
(C) केवल आधिकारिक तौर पर मान्यता प्राप्त अनुसूचित जनजातियां।
(D) बिना किसी समूह संबद्धता वाले व्यक्ति।

275. सामाजिक स्तरीकरण के निम्नलिखित रूपों को सबसे बंद से सबसे खुले के क्रम में व्यवस्थित करें:
1. वर्ग
2. जाति
3. जागीर
(A) 2, 3, 1
(B) 1, 3, 2
(C) 3, 2, 1
(D) 2, 1, 3

276. कौन सा मुद्दा पारिवारिक कलह का उदाहरण नहीं है?
(A) घरेलू हिंसा
(B) दहेज
(C) धार्मिक वैमनस्य
(D) तलाक

277. दूसरों को देखने और उनका अनुकरण करके सामाजिक व्यवहार सीखने की प्रक्रिया किसके लिए मौलिक है?
(A) आनुवंशिक विरासत
(B) समाजीकरण
(C) सामाजिक स्तरीकरण
(D) जैविक विकास

278. दिए गए कथनों को पढ़ें और सही विकल्प का चयन करें।
कथन I: 'विविधता में एकता' के अस्तित्व का अर्थ है कि भारतीय समाज में कोई वैमनस्य नहीं है।
कथन II: क्षेत्रीय और धार्मिक वैमनस्य समसामयिक मुद्दे हैं जो भारतीय एकता को चुनौती देते हैं।
(A) कथन I और कथन II दोनों सत्य हैं।
(B) कथन I और कथन II दोनों असत्य हैं।
(C) कथन I असत्य है, लेकिन कथन II सत्य है।
(D) कथन I सत्य है, लेकिन कथन II असत्य है।

279. 'जाति की असमानता' शब्द उस पदानुक्रमित प्रणाली को संदर्भित करता है जो व्यक्तियों के साथ किसके आधार पर भेदभाव करती है?
(A) वह परिवार जिसमें वे पैदा हुए थे।
(B) उनकी आर्थिक उपलब्धियां।
(C) उनका लिंग।
(D) उनकी क्षेत्रीय उत्पत्ति।

280. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है।
अभिकथन (A): वर्ग जैसी खुली स्तरीकरण प्रणालियों में सामाजिक गतिशीलता एक महत्वपूर्ण विशेषता है।
कारण (R): खुली प्रणालियाँ अर्जित स्थिति पर आधारित होती हैं, जो व्यक्तियों को योग्यता के माध्यम से अपनी सामाजिक स्थिति बदलने की अनुमति देती हैं।
(A) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सत्य हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सत्य है लेकिन R असत्य है।
(D) A असत्य है लेकिन R सत्य है।

281. जब कोई व्यक्ति नए पेशे में प्रवेश करता है तो जो शिक्षा प्राप्त होती है, वह किसका एक रूप है?
(A) प्राथमिक समाजीकरण
(B) वयस्क समाजीकरण
(C) वि-समाजीकरण
(D) प्रतिगामी समाजीकरण

282. 'पदानुक्रम' और 'विभेदीकरण' के बीच अंतर यह है कि पदानुक्रम में निहित है:
(A) श्रेणीबद्ध रैंकिंग
(B) विविधता
(C) अंतर
(D) समानता

283. सामाजिक परिवर्तन के रैखिक और चक्रीय सिद्धांत के बीच प्राथमिक अंतर क्या है?
(A) परिवर्तन की प्रस्तावित दिशा और प्रतिरूप।

NODIA

(B) परिवर्तन का कारक।
(C) परिवर्तन का स्रोत।
(D) परिवर्तन की गति।

284. "विविधता में एकता" वाक्यांश को भारत के किसके बारे में एक कथन के रूप में सबसे अच्छी तरह समझा जा सकता है?
(A) राष्ट्रीय चरित्र और सामाजिक संरचना
(B) आर्थिक नीति
(C) विदेश संबंध
(D) सैन्य रणनीति

285. सूची I को सूची II के साथ सुमेलित कीजिए।
सूची I: (मुद्दा)
P. गरीबी
Q. लैंगिक असमानता
R. क्षेत्रीय वैमनस्य
S. तलाक
सूची II: (विवरण)
1. पुरुषों और महिलाओं के लिए असमान शक्ति और अवसर।
2. राष्ट्र के भौगोलिक क्षेत्रों के बीच संघर्ष।
3. विवाह का कानूनी विच्छेद।
4. भौतिक संसाधनों के गंभीर अभाव की स्थिति।
(A) P-4, Q-1, R-2, S-3
(B) P-1, Q-4, R-2, S-3
(C) P-4, Q-2, R-1, S-3
(D) P-3, Q-1, R-2, S-4

286. कौन सी अवधारणा समूहों के बीच व्यवस्थित असमानताओं को संदर्भित करती है जो सामाजिक प्रक्रियाओं के परिणामस्वरूप उत्पन्न होती हैं?
(A) सामाजिक समाजीकरण
(B) सामाजिक स्तरीकरण
(C) सामाजिक परिवर्तन
(D) सामाजिक गतिशीलता

287. निम्नलिखित में से कौन 'संरचना के परिवर्तन' का उदाहरण है?
(A) पूंजीवादी से समाजवादी अर्थव्यवस्था में संक्रमण।
(B) विद्यालयों में नई शिक्षा नीति लागू करना।
(C) किसी जनजातीय समुदाय के मुखिया को बदलना।
(D) कर की दर में वृद्धि करना।

288. वधू के परिवार पर भौतिक मांगों से जुड़ी 'पारिवारिक कलह' का एक प्रमुख स्रोत है:
(A) अंतर-पीढ़ीगत संघर्ष
(B) तलाक
(C) घरेलू हिंसा
(D) दहेज

289. आधुनिक समाज में औपचारिक ज्ञान प्रसारित करने के लिए समाजीकरण का कौन सा अभिकरण उत्तरदायी है?
(A) परिवार
(B) मित्र समूह
(C) विद्यालय
(D) धर्म

290. सांस्कृतिक विविधता के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:
1. सांस्कृतिक विविधता एक एकल संस्कृति वाले समाज को संदर्भित करती है।
2. भारत की सांस्कृतिक विविधता इसकी भाषाओं और धर्मों की विविधता में परिलक्षित होती है।
3. जनजातीय समुदाय भारत की सांस्कृतिक विविधता में महत्वपूर्ण योगदान देते हैं।
उपरोक्त कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?
(A) केवल 1
(B) केवल 1 और 2
(C) केवल 2 और 3
(D) 1, 2 और 3

291. उस समूह के मूल्यों को सीखने की प्रक्रिया के लिए क्या शब्द है जिसमें कोई भविष्य में शामिल होने की आशा करता है?
(A) पुनः समाजीकरण
(B) वयस्क समाजीकरण
(C) प्रत्याशित समाजीकरण
(D) प्राथमिक समाजीकरण

292. ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र का अस्तित्व स्तरीकरण के किस रूप का उदाहरण है?
(A) वर्ग
(B) लिंग
(C) जाति
(D) नृजातीयता

293. हस्तलिखित पत्रों का ईमेल से प्रतिस्थापन किसके द्वारा संचालित सामाजिक परिवर्तन का प्रतिनिधित्व करता है?
(A) तकनीकी नवाचार
(B) राजनीतिक क्रांति
(C) धार्मिक विचार
(D) चक्रीय प्रतिमान

294. लोगों की 'निम्न' जाति स्थिति के कारण उनके प्रति किया जाने वाला भेदभाव किसका उदाहरण है?
(A) लैंगिक असमानता
(B) जाति की असमानता
(C) क्षेत्रीय वैमनस्य
(D) पारिवारिक कलह

295. एक बच्चा निम्नलिखित में से किस प्रक्रिया के माध्यम से लिंग-विशिष्ट व्यवहार सीखता है?
(A) लैंगिक समाजीकरण
(B) वर्ग समाजीकरण

Click Here to Buy book on Amazon

(C) पुनः समाजीकरण
(D) वयस्क समाजीकरण

296. स्तरीकरण की एक बंद प्रणाली वह है जिसमें:
(A) सामाजिक गतिशीलता सामान्य और सुलभ है।
(B) स्थिति प्रदत्त होती है और श्रेणियों के बीच आवागमन कठिन होता है।
(C) स्थिति व्यक्तिगत उपलब्धि पर आधारित होती है।
(D) कोई स्पष्ट सामाजिक श्रेणियां नहीं होती हैं।

297. दिए गए कथनों को पढ़ें और सही विकल्प का चयन करें।
कथन I: सामाजिक परिवर्तन हमेशा समाज के सभी लोगों के लिए सुधार की ओर ले जाता है।
कथन II: सामाजिक परिवर्तन नई समस्याओं और असमानताओं को जन्म दे सकता है।
(A) कथन I और कथन II दोनों सत्य हैं।
(B) कथन I और कथन II दोनों असत्य हैं।
(C) कथन I असत्य है, लेकिन कथन II सत्य है।
(D) कथन I सत्य है, लेकिन कथन II असत्य है।

298. भारत में सैकड़ों भाषाओं के साथ व्यापक भाषाई विविधता किसका उदाहरण है?
(A) धार्मिक विविधता
(B) भाषाई विविधता
(C) आर्थिक असमानता
(D) सामाजिक गतिशीलता

299. परिवार के भीतर होने वाला शारीरिक या भावनात्मक शोषण क्या कहलाता है?
(A) सामाजिक परिवर्तन
(B) घरेलू हिंसा
(C) क्षेत्रवाद
(D) सामाजिक गतिशीलता

300. अपने समाज के मानदंडों, मूल्यों और प्रथाओं को सीखने की आजीवन प्रक्रिया कहलाती है:
(A) सामाजिक स्तरीकरण
(B) समाजीकरण
(C) सामाजिक परिवर्तन
(D) सामाजिक संघर्ष

NODIA

उत्तर (व्याख्या सहित)

1. (B) विभिन्न मानदंडों और विचारधाराओं को आत्मसात करने की आजीवन प्रक्रिया।
समाजीकरण एक निरंतर प्रक्रिया है जिसके माध्यम से व्यक्ति समाज के मानदंडों, मूल्यों और विश्वासों को आत्मसात करता है। यह जन्म से मृत्यु तक चलती है और व्यक्ति को सामाजिक प्राणी के रूप में विकसित करती है। इसके द्वारा व्यक्ति अपनी संस्कृति की जटिलताओं को समझता है और समाज के सक्रिय सदस्य के रूप में भूमिका निभाने हेतु आवश्यक कौशल अर्जित करता है।

2. (A) परिवार को आमतौर पर समाजीकरण का प्राथमिक अभिकरण माना जाता है।
परिवार समाजीकरण का प्राथमिक और सबसे महत्वपूर्ण अभिकरण है क्योंकि यहीं से बालक का विश्व के साथ प्रथम संपर्क होता है। माता-पिता और परिवार के अन्य सदस्य बच्चे को भाषा, बुनियादी शिष्टाचार और जीवन के प्रारंभिक मूल्यों की शिक्षा देते हैं। विद्यालय, मित्र समूह और जनसंचार माध्यम द्वितीयक अभिकरणों की श्रेणी में आते हैं, जो व्यक्तित्व विकास के विभिन्न चरणों में महत्वपूर्ण योगदान देते हैं।

3. (C) प्रत्याशित समाजीकरण
प्रत्याशित समाजीकरण वह प्रक्रिया है जिसमें व्यक्ति उस समूह या व्यवसाय के मूल्यों और व्यवहारों को समय पूर्व सीखना प्रारंभ कर देता है, जिसका वह भविष्य में सदस्य बनने की आकांक्षा रखता है। जब कोई छात्र आगामी व्यावसायिक भूमिका हेतु विशिष्ट शब्दावली और दृष्टिकोण अपनाता है, तो वह वास्तव में स्वयं को उस नवीन स्थिति के लिए तैयार कर रहा होता है।

4. (D) कार्यस्थल
समाजीकरण के अभिकरणों को प्राथमिक और द्वितीयक श्रेणियों में विभाजित किया गया है। कार्यस्थल को प्राथमिक अभिकरण नहीं माना जाता क्योंकि यह व्यक्ति के जीवन में विलंब से आता है। परिवार, मित्र समूह और पड़ोस जैसे प्राथमिक अभिकरण बाल्यकाल के दौरान व्यक्ति की पहचान और बुनियादी आदतों के निर्माण में मुख्य भूमिका निभाते हैं। कार्यस्थल समाजीकरण के एक द्वितीयक या वयस्क अभिकरण के रूप में होता है।

5. (A) कथन I और कथन II दोनों सत्य हैं।
पुनः समाजीकरण एक ऐसी प्रक्रिया है जिसमें व्यक्ति को पूर्व व्यवहारों और विश्वासों को त्यागकर पूर्णतः नवीन मानदंडों को अपनाना पड़ता है। सैन्य प्रशिक्षण संस्थान या कारागार इसके सटीक उदाहरण हैं क्योंकि वहाँ व्यक्ति को नियंत्रित वातावरण में नवीन पहचान और अनुशासन सिखाया जाता है। यह प्रक्रिया पूर्व अनुभवों से भिन्न होती है और सामाजिक संरचना में व्यक्ति के पूर्ण पुनर्गठन की मांग करती है।

6. (B) इसमें विशेष रूप से पहले से अर्जित सभी मूल्यों और मानदंडों को भुलाना शामिल है।
वयस्क समाजीकरण वह प्रक्रिया है जो प्रारंभिक समाजीकरण के पश्चात होती है और व्यक्ति को नवीन भूमिकाओं हेतु तैयार करती है। इसमें पिछली शिक्षा को पूर्णतः भुलाना अनिवार्य नहीं होता, बल्कि नवीन अनुभवों और उत्तरदायित्वों जैसे विवाह या व्यवसाय के साथ सामंजस्य स्थापित करना होता है। यह प्रक्रिया प्राथमिक समाजीकरण की तुलना में प्रायः कम तीव्र होती है क्योंकि व्यक्ति का व्यक्तित्व विकसित होता है।

7. (D) जैविक या सामाजिक लक्षणों के आधार पर समूहों को अलग करने की प्रक्रिया।
सामाजिक विभेदीकरण उस प्रक्रिया को संदर्भित करता है जिसके द्वारा समाज में व्यक्तियों और समूहों को उनके जैविक या सामाजिक लक्षणों के आधार पर वर्गीकृत किया जाता है। इसमें आयु, लिंग, व्यवसाय या नृजातीयता जैसे आधार सम्मिलित होते हैं। यद्यपि विभेदीकरण समूहों के मध्य अंतर उत्पन्न करता है, किंतु यह अनिवार्य रूप से उन्हें उच्च-नीच के सोपान में व्यवस्थित नहीं करता, जो स्तरीकरण की मुख्य विशेषता है।

8. (A) श्रेष्ठता और हीनता के पैमाने पर समूहों को क्रमबद्ध करने की प्रणाली।
सामाजिक स्तरीकरण के संदर्भ में पदानुक्रम का अर्थ ऐसी व्यवस्था से है जहाँ समाज के विभिन्न समूहों को श्रेष्ठता और हीनता के आधार पर व्यवस्थित किया जाता है। यह प्रणाली निर्धारित करती है कि किन समूहों के पास संसाधनों, शक्ति और प्रतिष्ठा तक अधिक पहुँच होगी। पदानुक्रम सामाजिक असमानता को संस्थागत रूप प्रदान करता है, जिससे समाज में स्पष्ट रूप से विभाजित स्तर या श्रेणियां निर्मित होती हैं।

9. (C) सामाजिक गतिशीलता
सामाजिक गतिशीलता उस प्रक्रिया को दर्शाती है जिसके द्वारा कोई व्यक्ति या समूह सामाजिक पदानुक्रम में अपनी स्थिति परिवर्तित करता है। जब कोई व्यक्ति आर्थिक स्थिति या उपलब्धियों के माध्यम से निम्न वर्ग से उच्च वर्ग में पहुँचता है, तो यह ऊर्ध्वमुखी गतिशीलता का उदाहरण है। यह दर्शाता है कि समाज की स्तरीकरण प्रणाली कितनी खुली है। खुली व्यवस्थाओं में शिक्षा के माध्यम से स्थिति सुधारना संभव है।

10. (A) कथन (A) और कारण (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
सामाजिक स्तरीकरण एक सार्वभौमिक यथार्थ है क्योंकि प्रत्येक समाज में किसी न किसी रूप में असमानता विद्यमान

Downloaded from www.pdf.tube

होती है। प्रकार्यवादी दृष्टिकोण के अनुसार, समाज को सुचारु रूप से संचालित करने हेतु महत्वपूर्ण पदों पर योग्य व्यक्तियों की नियुक्ति आवश्यक है। इन पदों के उत्तरदायित्व निर्वहन हेतु सदस्यों को प्रोत्साहित करने के लिए उन्हें विशिष्ट पुरस्कार और प्रतिष्ठा दी जाती है, जिससे पदानुक्रम विकसित होता है।

11. (D) जाति
जाति व्यवस्था सामाजिक स्तरीकरण का वह रूप है जो जन्म पर आधारित और अत्यंत कठोर होता है। इसमें व्यक्ति की स्थिति जन्म से ही निर्धारित हो जाती है, जिसे व्यक्तिगत प्रयास से परिवर्तित नहीं किया जा सकता। जाति व्यवस्था में अंतर्विवाह, खान-पान के विशेष नियम और सामाजिक अंतःक्रिया पर सख्त प्रतिबंध होते हैं। यह अनुष्ठानिक शुद्धता और अशुद्धता के सिद्धांतों पर आधारित एक बंद प्रणाली है।

12. (B) लिंग : केवल जैविक नियतिवाद
सामाजिक स्तरीकरण में लिंग को केवल जैविक अंतर के रूप में देखना त्रुटिपूर्ण है क्योंकि समाजशास्त्रीय दृष्टि से यह एक सामाजिक निर्मिति है। लिंग पुरुषों और महिलाओं हेतु समाज द्वारा निर्धारित भूमिकाओं और व्यवहारों को दर्शाता है। जहाँ जैविक लिंग प्राकृतिक है, वहीं सामाजिक लिंग असमानता और स्तरीकरण का आधार बनता है। अन्य रूपों जैसे जाति प्रदत्त स्थिति पर और वर्ग अर्जित स्थिति पर आधारित है।

13. (C) उद्विकास
उद्विकास सामाजिक परिवर्तन की वह प्रक्रिया है जिसमें समाज क्रमिक रूप से सरल और एकरूप स्थिति से जटिल एवं विविधतापूर्ण स्थिति की ओर अग्रसर होता है। यह परिवर्तन अत्यंत धीमा होता है और लंबी अवधि में घटित होता है। यह विचार जैविक विकास के सिद्धांत से प्रेरित है, जहाँ समाज को एक जीवित जीव की भांति देखा जाता है जो समय के साथ अपनी संरचना परिष्कृत करता है।

14. (C) कथन I असत्य है, लेकिन कथन II सत्य है।
प्रगति सामाजिक परिवर्तन का वह प्रकार है जिसे समाज द्वारा वांछनीय या सकारात्मक दिशा में बदलाव माना जाता है। यह मूल्य-मुक्त अवधारणा नहीं है क्योंकि इसमें नैतिकता और सामाजिक आदर्श सम्मिलित होते हैं। जो एक समाज हेतु प्रगति है, वह दूसरे के लिए हानिकारक हो सकती है। अतः प्रगति को सदैव उस दिशा में परिवर्तन के रूप में परिभाषित किया जाता है जिसे समाज श्रेष्ठ स्वीकार करता है।

15. (A) P-3, Q-2, R-1, S-4
सामाजिक परिवर्तन की विभिन्न अवधारणाएं समाज की बदलती प्रकृति को स्पष्ट करती हैं। सांस्कृतिक लक्षणों का प्रसार विसरण कहलाता है, जबकि सामाजिक संरचना में मौलिक बदलाव क्रांति है। समाज का सरल से जटिल रूपों की ओर क्रमिक विकास उद्विकास को दर्शाता है। इसी प्रकार, सामाजिक संस्थाओं के स्वरूप में महत्वपूर्ण बदलाव रूपांतरण के रूप में पहचाना जाता है। ये सभी प्रक्रियाएं सामाजिक विकास के विविध आयाम प्रस्तुत करती हैं।

16. (B) संपूर्ण सामाजिक संरचना के स्थान पर एक नई संरचना का आना।
संरचना के भीतर परिवर्तन और संरचना का परिवर्तन दो भिन्न स्थितियां हैं। संरचना का परिवर्तन तब होता है जब समाज के मौलिक आधार और संस्थागत ढांचे पूर्णतः परिवर्तित हो जाते हैं और नवीन व्यवस्था जन्म लेती है। इसके विपरीत, संरचना के भीतर परिवर्तन में मौजूदा ढांचा बना रहता है, किंतु उसके कुछ पदों या नियमों में सुधार होता है। शासन प्रणाली का परिवर्तन इसका सूचक है।

17. (B) एक सिद्धांत जो सुझाव देता है कि समाज उत्थान और पतन के दोहराव वाले चरणों से गुजरता है।
सामाजिक परिवर्तन का चक्रीय सिद्धांत मानता है कि इतिहास स्वयं को दोहराता है और समाज विकास के निश्चित चक्रों से गुजरता है। इस सिद्धांत के अनुसार, प्रत्येक सभ्यता का जन्म होता है, वह अपने शिखर पर पहुँचती है और अंततः उसका पतन हो जाता है। यह प्रक्रिया निरंतर चलती रहती है। यह रैखिक प्रगति के विचार को नकारता है और परिवर्तन को आवर्ती प्रक्रिया मानता है।

NODIA

18. (A) एक राष्ट्रीय पहचान जो व्यापक सांस्कृतिक अंतरों के साथ सह-अस्तित्व में है।
भारत के संदर्भ में विविधता में एकता का अर्थ है कि विभिन्न धर्मों, भाषाओं और जातियों के बावजूद देश में एक साझा राष्ट्रीय पहचान विद्यमान है। यह अवधारणा सांस्कृतिक विविधता को दबाने के स्थान पर उसे स्वीकार करती है और सभी समूहों को अपनी विशिष्टता बनाए रखते हुए राष्ट्र का अंग बनने हेतु प्रोत्साहित करती है। यह विविधताओं के मध्य सामंजस्यपूर्ण सह-अस्तित्व का प्रतीक है।

19. (C) भाषाई विविधता
भारतीय समाज की सांस्कृतिक विविधता का सबसे प्रमुख आयाम भाषाई विविधता है। भारत में अनेक भाषाएं और बोलियां बोली जाती हैं, जो भिन्न भाषा परिवारों से संबंधित हैं। यह भाषाई विविधता विभिन्न क्षेत्रों की अनूठी पहचान और साहित्य को समृद्ध करती है। संविधान की आठवीं अनुसूची में अनेक प्रमुख भाषाओं को आधिकारिक मान्यता दी गई है, जो भाषाई पहचान को सामाजिक संरचना का अभिन्न अंग बनाती है।

20. (B) केवल 2 और 3
भारतीय समाज में निर्धनता केवल आर्थिक विषय नहीं है, बल्कि इसके गहरे सामाजिक और सांस्कृतिक कारण भी हैं। जाति और लिंग आधारित असमानताएं परस्पर संबद्ध हैं, जो हाशिए पर रहने वाले समूहों की समस्याओं को बढ़ाती हैं। इसके अतिरिक्त, क्षेत्रीय और धार्मिक वैमनस्य देश के सामाजिक ताने-बाने को निर्बल कर सकते हैं और राष्ट्रीय एकीकरण की प्रक्रिया में बाधा उत्पन्न कर सकते हैं। इनका समाधान अनिवार्य है।

21. (C) वधू द्वारा अपने पति के घर लाई गई संपत्ति, जो अक्सर बलपूर्वक ली जाती है।
दहेज प्रथा भारतीय समाज में एक गंभीर सामाजिक बुराई और पारिवारिक कलह का मुख्य कारण है। इसमें विवाह के समय वधू के परिवार द्वारा वर पक्ष को संपत्ति या नकदी दी जाती है। यद्यपि प्राचीन समय में यह स्वेच्छा से दिया गया उपहार था, किंतु वर्तमान में यह एक अनिवार्य मांग और शोषण का रूप ले चुका है। दहेज की मांग महिलाओं के विरुद्ध हिंसा का मुख्य स्रोत है।

22. (B) माता-पिता और बच्चों के बीच मूल्यों, विश्वासों और जीवन शैली में टकराव।
अंतर-पीढ़ीगत संघर्ष प्रायः परिवार के भीतर दो भिन्न पीढ़ियों के मध्य होने वाले वैचारिक मतभेदों को संदर्भित करता है। यह तब उत्पन्न होता है जब माता-पिता के पारंपरिक मूल्य और दृष्टिकोण उनके बच्चों की आधुनिक जीवन शैली और विश्वासों से टकराते हैं। तीव्र सामाजिक और तकनीकी परिवर्तन इस अंतराल को बढ़ाते हैं। यह संघर्ष प्रायः करियर के चुनाव और विवाह जैसे व्यक्तिगत निर्णयों को लेकर होता है।

23. (D) सामाजिक स्तरीकरण
सामाजिक स्तरीकरण वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा समाज अपने सदस्यों को धन, शक्ति और प्रतिष्ठा के आधार पर विभिन्न पदानुक्रमित स्तरों में विभाजित करता है। यह एक ऐसी व्यवस्था है जो पीढ़ियों तक बनी रहती है और समाज में संरचित असमानता को जन्म देती है। स्तरीकरण के माध्यम से ही यह निर्धारित होता है कि समाज में किसे विशेष अधिकार प्राप्त होंगे और किसे वंचना का सामना करना पड़ेगा।

24. (A) सामाजिक विभेदीकरण
सामाजिक विभेदीकरण केवल व्यक्तियों या समूहों के मध्य अंतर को दर्शाता है, किंतु यह अनिवार्य रूप से उन्हें पदानुक्रम में व्यवस्थित नहीं करता है। इसके विपरीत, लिंग, जाति और वर्ग सामाजिक स्तरीकरण के वास्तविक रूप हैं क्योंकि ये समाज में श्रेणीबद्ध असमानता उत्पन्न करते हैं। विभेदीकरण स्तरीकरण का प्रारंभिक चरण हो सकता है, किंतु जब इन अंतरों के साथ श्रेष्ठता का भाव जुड़ता है, तभी स्तरीकरण निर्मित होता है।

25. (B) 1, 2, 4, 3
सामाजिक स्तरीकरण की प्रक्रिया एक तार्किक क्रम का अनुसरण करती है जो सामाजिक विभेदीकरण से प्रारंभ होती है। सर्वप्रथम समूहों को उनके लक्षणों के आधार पर पृथक किया जाता है, जिससे उनके मध्य सामाजिक असमानता उत्पन्न होती है। इसके पश्चात, इन समूहों को श्रेष्ठता और हीनता के निश्चित पदानुक्रम में व्यवस्थित किया जाता है। अंत में, यह व्यवस्था एक संरचित सामाजिक स्तरीकरण का रूप ले लेती है।

26. (A) प्रास्थिति मुख्य रूप से प्रयास के माध्यम से प्राप्त की जाती है।
जाति व्यवस्था के विषय में यह कहना त्रुटिपूर्ण है कि इसमें स्थिति प्रयास से प्राप्त की जाती है। वास्तव में, जाति एक बंद स्तरीकरण प्रणाली है जहाँ व्यक्ति की सामाजिक स्थिति उसके जन्म से निर्धारित होती है। इसे आरोपण का सिद्धांत कहते हैं, जिसका अर्थ है कि व्यक्ति अपनी मेहनत से अपनी जाति परिवर्तित नहीं कर सकता। इस व्यवस्था में सामाजिक गतिशीलता अत्यंत सीमित और व्यवसाय प्रायः वंशानुगत होते हैं।

27. (D) वयस्क समाजीकरण
वयस्क समाजीकरण वह प्रक्रिया है जो व्यक्ति के बाल्यकाल के पश्चात प्रारंभ होती है और संपूर्ण जीवन काल में निरंतर चलती है। जब व्यक्ति अपने जीवन के विभिन्न चरणों में नवीन भूमिकाओं जैसे कर्मचारी, जीवनसाथी या माता-पिता के रूप में प्रवेश करता है, तो उसे नवीन अपेक्षाएं और कौशल सीखने पड़ते हैं। यह प्रक्रिया व्यक्ति को बदलते सामाजिक परिवेश और उत्तरदायित्वों के प्रति अनुकूलित होने में सहायता करती है।

28. (C) कथन I असत्य है, लेकिन कथन II सत्य है।
समाजीकरण कभी समाप्त न होने वाली प्रक्रिया है जो बाल्यकाल से लेकर वृद्धावस्था तक चलती रहती है। यह सोचना त्रुटिपूर्ण है कि यह केवल वयस्क होने तक सीमित है। प्रत्येक नवीन सामाजिक चरण, जैसे विवाह या नवीन व्यवसाय, व्यक्ति से नवीन व्यवहार और मानदंडों को सीखने की अपेक्षा करता है। वयस्क समाजीकरण इसी आवश्यकता को पूर्ण करता है और व्यक्ति को जीवन भर सामंजस्य स्थापित करने में सहायता प्रदान करता है।

29. (C) व्यक्ति अपने समाज के क्रियाशील सदस्य बनना कैसे सीखते हैं।
समाजीकरण के सिद्धांतों का मुख्य लक्ष्य उस प्रक्रिया को समझना है जिसके द्वारा एक नवजात शिशु धीरे-धीरे समाज के नियमों और संस्कृति को सीखकर एक सामाजिक प्राणी के रूप में विकसित होता है। यह सिखाता है कि कैसे व्यक्ति समाज की अपेक्षाओं के अनुरूप व्यवहार करना सीखता है। ये सिद्धांत व्यक्ति और समाज के मध्य गहरे संबंध को स्पष्ट करते हैं, जिससे सामाजिक व्यवस्था में निरंतरता बनी रहती है।

30. (D) पुनः समाजीकरण
पुनः समाजीकरण की प्रक्रिया उस समय होती है जब व्यक्ति को नवीन और कठोर सामाजिक व्यवस्था में ढलने हेतु अपनी पूर्व आदतों को त्यागना पड़ता है। एक सैनिक का उदाहरण इस प्रक्रिया को स्पष्ट करता है, जहाँ उसे नागरिक जीवन के व्यवहारों को त्यागकर सैन्य अनुशासन और मूल्यों को आत्मसात करना होता है। यह प्रायः 'पूर्ण संस्थानों' में होता है, जहाँ व्यक्ति की पहचान को योजनाबद्ध तरीके से पुनर्गठित किया जाता है।

31. (A) स्तरीकरण, विभेदीकरण से उत्पन्न संरचित असमानता की एक प्रणाली है।
सामाजिक विभेदीकरण समाज में मौजूद विविधता और अंतर को दर्शाता है, जबकि सामाजिक स्तरीकरण उन अंतरों के आधार पर लोगों को उच्च-नीच के क्रम में रखने की एक संगठित प्रणाली है। विभेदीकरण के बिना स्तरीकरण संभव नहीं है, किंतु केवल अंतर होना ही स्तरीकरण नहीं है। जब समाज कुछ

Click Here to Buy book on Amazon

श्रेणियों को अधिक महत्व प्रदान करता है, तब विभेदीकरण संरचित असमानता या स्तरीकरण का रूप ले लेता है।

32. (B) आर्थिक स्थिति और बाजार की स्थिति
वर्ग प्रणाली सामाजिक स्तरीकरण का एक आधुनिक रूप है जो मुख्य रूप से व्यक्ति की आर्थिक स्थिति और बाजार में उसकी शक्ति पर आधारित होता है। जाति के विपरीत, वर्ग एक खुली व्यवस्था है जहाँ व्यक्ति अपनी योग्यता, शिक्षा और परिश्रम के माध्यम से स्थिति परिवर्तित कर सकता है। इसमें संपत्ति, आय और व्यावसायिक सफलता जैसे कारक व्यक्ति के वर्ग का निर्धारण करते हैं। यह व्यवस्था अर्जित स्थिति पर बल देती है।

33. (B) प्रकार्यवादी परिप्रेक्ष्य
सामाजिक स्तरीकरण का प्रकार्यवादी सिद्धांत यह तर्क देता है कि समाज में असमानता अपरिहार्य और आवश्यक है। इस दृष्टिकोण के अनुसार, कुछ सामाजिक पद दूसरों की तुलना में अधिक महत्वपूर्ण होते हैं और उन्हें भरने हेतु उच्च योग्यता की आवश्यकता होती है। प्रतिभाशाली व्यक्तियों को इन कठिन पदों को स्वीकार करने हेतु प्रेरित करने के लिए समाज उन्हें अधिक पुरस्कार और सम्मान प्रदान करता है, जिससे श्रेणीबद्ध व्यवस्था बनती है।

34. (A) अंतर-पीढ़ीगत सामाजिक गतिशीलता
जब किसी परिवार की अगली पीढ़ी अपने माता-पिता की तुलना में भिन्न सामाजिक या आर्थिक स्थिति प्राप्त करती है, तो इसे अंतर-पीढ़ीगत सामाजिक गतिशीलता कहा जाता है। एक श्रमिक के बालक का चिकित्सक बनना सामाजिक सोपान में ऊपर की ओर बढ़ने का स्पष्ट उदाहरण है। यह दर्शाता है कि उस समाज में योग्यता के माध्यम से अपनी पारिवारिक पृष्ठभूमि से आगे बढ़ने की संभावना विद्यमान है।

35. (C) विसरण
विसरण सामाजिक और सांस्कृतिक परिवर्तन की वह प्रक्रिया है जिसमें एक समाज के विचार, तकनीक या रीति-रिवाज दूसरे समाज में प्रसारित होते हैं। आधुनिक युग में वैश्वीकरण के कारण यह प्रक्रिया अत्यंत तीव्र हो गई है। उदाहरण के लिए, वैश्विक खाद्य संस्कृति का प्रसार विसरण का ही एक रूप है। इसमें संस्कृतियों का आदान-प्रदान होता है, जिससे समाज की जीवन शैली में महत्वपूर्ण परिवर्तन आते हैं जो संरचना को प्रभावित करते हैं।

36. (D) समाज एक ही दिशा में विकसित होता है, जो अक्सर प्रगति की ओर होता है।
सामाजिक परिवर्तन का रैखिक सिद्धांत मानता है कि समाज निरंतर एक सीधी दिशा में विकसित होते हैं। यह विकास प्रायः सरलता से जटिलता और निम्न स्तर से उच्च स्तर की ओर होता है। इस सिद्धांत के समर्थकों का मत है कि समाज सभ्यता की ओर बढ़ता है और अंततः अधिक तर्कसंगत स्थिति प्राप्त करता है। यह दृष्टिकोण परिवर्तन को एक अपरिहार्य और सकारात्मक प्रगति के रूप में देखता है।

37. (C) तीव्रता और समाज का मौलिक पुनर्गठन।
क्रांति सामाजिक परिवर्तन का वह रूप है जिसमें विद्यमान सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक व्यवस्था को अकस्मात और पूर्ण रूप से परिवर्तित कर दिया जाता है। यह क्रमिक सुधारों के विपरीत अत्यंत तीव्र और व्यापक होती है। क्रांति का मुख्य उद्देश्य समाज के शक्ति संतुलन को परिवर्तित करना और नवीन मूल्यों के आधार पर एक नवीन संरचना का निर्माण करना होता है। यह समाज के प्रत्येक स्तर को प्रभावित करती है।

38. (B) विविध नृजातीय और सांस्कृतिक जनसंख्या जो राष्ट्र का निर्माण करती है।
"भारत के लोग" वाक्यांश भारत की विशाल और विविधतापूर्ण जनसंख्या को संदर्भित करता है, जो भिन्न नृजातीय समूहों और संस्कृतियों से मिलकर बनी है। यह शब्द केवल नागरिकों की संख्या को ही नहीं, बल्कि उस विविधता को भी दर्शाता है जो भारतीय राष्ट्र की आधारशिला है। इसमें भिन्न धर्मों और भाषाओं के लोग सम्मिलित हैं जो साझा भौगोलिक पहचान के भीतर रहते हैं। यह लोकतांत्रिक चरित्र को व्यक्त करता है।

39. (D) सांस्कृतिक विविधता
भारत में विभिन्न भाषाओं, धर्मों और जनजातीय समुदायों का एक साथ रहना सांस्कृतिक विविधता का उत्कृष्ट उदाहरण है। यह विविधता भारत की एक अनूठी विशेषता है जो इसके इतिहास और सामाजिक बनावट में समाहित है। सांस्कृतिक विविधता का अर्थ है कि समाज में भिन्न समूहों को अपनी विशिष्ट पहचान बनाए रखने की स्वतंत्रता है। यह बहुलवाद समाज को समृद्ध बनाता है और आपसी सहिष्णुता की मांग करता है।

40. (D) कथन (A) असत्य है लेकिन कारण (R) सत्य है।
घरेलू हिंसा को केवल एक निजी पारिवारिक विषय मानना त्रुटिपूर्ण है क्योंकि इसके व्यापक सामाजिक और कानूनी प्रभाव होते हैं। यह एक गंभीर सामाजिक समस्या है जो मानवाधिकारों का उल्लंघन करती है और पितृसत्तात्मक मानसिकता को दर्शाती है। घरेलू हिंसा का प्रभाव न केवल पीड़ित पर पड़ता है, बल्कि यह परिवार की संरचना और आने वाली पीढ़ियों के मानसिक स्वास्थ्य को भी प्रभावित करता है। इसे सार्वजनिक मुद्दा माना जाना चाहिए।

41. (B) आर्थिक, सामाजिक और राजनीतिक तत्वों को शामिल करने वाली वंचना की स्थिति।
समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण से निर्धनता केवल धन का अभाव नहीं है, बल्कि यह वंचना की एक बहुआयामी स्थिति है। इसमें शिक्षा, स्वास्थ्य सेवा और निर्णय लेने की प्रक्रियाओं तक पहुँच का अभाव सम्मिलित होता है। निर्धनता व्यक्ति को सामाजिक मुख्यधारा से पृथक कर देती है और उसे अवसरों से वंचित रखती है। यह एक संरचनात्मक समस्या है जो संसाधनों के असमान वितरण के कारण बनी रहती है और पीढ़ियों तक चलती है।

42. (A) व्यक्तियों के लिंग के आधार पर उनके साथ असमान व्यवहार और धारणा।
लैंगिक असमानता उस सामाजिक स्थिति को संदर्भित करती है जहाँ पुरुषों और महिलाओं के मध्य अधिकारों, संसाधनों और

NODIA

अवसरों का भेदभावपूर्ण वितरण होता है। यह केवल जैविक अंतर नहीं है, बल्कि समाज द्वारा निर्मित व्यवस्था है जो प्रायः महिलाओं को पुरुषों की तुलना में कमतर मानती है। यह पितृसत्तात्मक सोच और सामाजिक मानदंडों में निहित होती है। यह शिक्षा, रोजगार और घरेलू उत्तरदायित्वों जैसे क्षेत्रों में प्रकट होती है।

43. (B) साझा वंश और सांस्कृतिक प्रथाओं के आधार पर दो समूहों के बीच संघर्ष।
नृजातीय वैमनस्य तब उत्पन्न होता है जब दो या अधिक समूह अपनी विशिष्ट सांस्कृतिक पहचान या साझा वंश के आधार पर एक-दूसरे के विरोध में आ जाते हैं। यह संघर्ष प्रायः संसाधनों, राजनीतिक शक्ति या सामाजिक प्रतिष्ठा पर नियंत्रण की इच्छा से प्रेरित होता है। नृजातीयता पर आधारित तनाव समाज में विभाजन उत्पन्न करते हैं और हिंसा का रूप ले सकते हैं। यह वैमनस्य सामूहिक पहचान की भावनाओं से संबद्ध होता है।

44. (C) कथन I असत्य है, लेकिन कथन II सत्य है।
दहेज प्रथा को भारत में कानूनी रूप से प्रतिबंधित कर दिया गया है, किंतु इसके बावजूद यह समाज से पूर्णतः समाप्त नहीं हुई है। आज भी दहेज की मांग अनेक परिवारों में कलह, महिलाओं के मानसिक उत्पीड़न और मृत्यु का मुख्य कारण बनी हुई है। केवल कानून बनाना ही पर्याप्त नहीं है, क्योंकि यह समस्या गहरी सामाजिक जड़ों में व्याप्त है। दृष्टिकोण में परिवर्तन और व्यापक जागरूकता ही इसे मिटा सकती है।

45. (B) P-2, Q-1, R-4, S-3
समाजीकरण के विभिन्न प्रकार व्यक्ति के जीवन के भिन्न चरणों को दर्शाते हैं। परिवार से सीखना प्राथमिक समाजीकरण है, जबकि भविष्य की भूमिका हेतु तैयारी प्रत्याशित समाजीकरण है। संस्थान में नवीन पहचान अपनाना पुनः समाजीकरण है और उत्तरार्ध में नवीन उत्तरदायित्वों के अनुकूल होना वयस्क समाजीकरण है। ये प्रक्रियाएं मिलकर व्यक्ति को समाज की जटिल संरचना के भीतर एक पूर्ण और प्रभावी सदस्य के रूप में निर्मित करती हैं।

46. (B) सामाजिक स्तरीकरण
सामाजिक गतिशीलता की अवधारणा सामाजिक स्तरीकरण के अध्ययन हेतु महत्वपूर्ण है क्योंकि यह समाज के खुलेपन को मापती है। यह बताती है कि स्तरीकरण प्रणाली के भीतर व्यक्ति अपनी सामाजिक-आर्थिक स्थिति को कितना परिवर्तित कर सकते हैं। यदि कोई समाज अधिक गतिशीलता की अनुमति देता है, तो उसे एक 'खुला' समाज माना जाता है। इसके विपरीत, जाति जैसी 'बंद' प्रणालियों में गतिशीलता बहुत सीमित होती है। गतिशीलता स्तरीकरण का आधार है।

47. (B) यह मूल्यवान संसाधनों, पुरस्कारों और पदों के असमान वितरण को संदर्भित करता है।
सामाजिक असमानता एक ऐसी स्थिति है जहाँ समाज के भीतर धन, प्रतिष्ठा और शक्ति जैसे मूल्यवान संसाधनों का वितरण समान नहीं होता। यह व्यक्तिगत अंतरों से परे एक संरचित व्यवस्था है जो कुछ समूहों को दूसरों की तुलना में अधिक लाभ प्रदान करती है। असमानता समाज की संरचना में गहराई से समाहित होती है और निर्धारित करती है कि व्यक्तियों के पास जीवन के अवसर कितने होंगे। यह स्तरीकरण का मूल है।

48. (A) योग्यतातंत्र
योग्यतातंत्र ऐसी सामाजिक प्रणाली है जहाँ व्यक्तियों को उनकी जन्मजात स्थिति के स्थान पर व्यक्तिगत योग्यता और उपलब्धियों के आधार पर पुरस्कृत किया जाता है। इस व्यवस्था में शिक्षा और परिश्रम को सामाजिक उन्नति का मुख्य साधन माना जाता है। यह स्तरीकरण का एक आदर्श रूप है जो मानता है कि समाज में सर्वोच्च पद सर्वाधिक सक्षम व्यक्तियों को मिलने चाहिए। यह प्रणाली ऊर्ध्वमुखी सामाजिक गतिशीलता को प्रोत्साहित करने पर बल देती है।

49. (C) समूहों को उनकी कथित सांस्कृतिक या राष्ट्रीय उत्पत्ति के आधार पर वर्गीकृत किया जाता है।
नृजातीय स्तरीकरण ऐसी व्यवस्था है जहाँ समाज के समूहों को उनकी सांस्कृतिक विरासत, भाषा या धार्मिक मूल के आधार पर पदानुक्रम में रखा जाता है। इसमें प्रायः एक प्रभावशाली समूह होता है जो अन्य अल्पसंख्यक नृजातीय समूहों पर अपना प्रभुत्व बनाए रखता है। यह प्रणाली भेदभाव और पूर्वाग्रहों को जन्म दे सकती है, जिससे कुछ समूहों को संसाधनों तक पहुँचने में बाधाओं का सामना करना पड़ता है। यह नृजातीय पहचान का आधार है।

50. (A) केवल 2
समाजीकरण केवल बाल्यकाल तक सीमित नहीं है, बल्कि यह एक आजीवन प्रक्रिया है। मित्र समूह समाजीकरण के एक अत्यंत शक्तिशाली अभिकरण के रूप में कार्य करते हैं, विशेष रूप से किशोरावस्था में, जहाँ वे कभी-कभी परिवार द्वारा सिखाए गए मूल्यों को चुनौती दे सकते हैं। समाजीकरण के सिद्धांतों में जैविक प्रवृत्तियों और सामाजिक अधिगम के मध्य निरंतर विमर्श बना रहता है। मित्र समूहों की भूमिका को समझना व्यक्तित्व विकास हेतु आवश्यक है।

51. (D) उन सिद्धांतों का मौलिक रूपांतरण जिन पर समाज संगठित है।
संरचना का परिवर्तन एक गंभीर प्रक्रिया है जिसमें समाज के बुनियादी आधार और संगठनात्मक सिद्धांतों में मौलिक बदलाव आता है। यह केवल व्यक्तियों या सरकार के परिवर्तन जैसा नहीं है, बल्कि इसमें सामाजिक संबंधों और संस्थाओं का पूर्णतः नवीन रूप सामने आता है। उदाहरण के लिए, कृषि समाज का औद्योगिक समाज में परिवर्तन संरचनात्मक परिवर्तन है। यह समाज की पूरी दिशा और चरित्र को परिवर्तित कर देने वाली प्रक्रिया है।

52. (A) प्रगति
प्रगति सामाजिक परिवर्तन का वह रूप है जिसमें बदलाव को किसी वांछित लक्ष्य या आदर्श की ओर बढ़ते हुए देखा जाता है। इसमें यह माना जाता है कि समाज अधिक तर्कसंगतता, समानता और न्याय जैसे मूल्यों की दिशा में विकसित हो रहा है। प्रगति की अवधारणा में एक सकारात्मक मूल्य निर्णय

NODIA

सम्मिलित होता है। यह परिवर्तन की एक दिशा निर्धारित करती है जिसे समाज के कल्याण हेतु अनिवार्य और श्रेष्ठ माना जाता है।

53. (B) एक सामाजिक परिघटना के रूप में इसके कारण, परिणाम और बदलती दरें।
विवाह विच्छेद का समाजशास्त्रीय अध्ययन इसे केवल व्यक्तिगत घटना के स्थान पर सामाजिक परिघटना के रूप में देखता है। समाजशास्त्र यह विश्लेषण करता है कि समाज में इसकी दरें क्यों बढ़ रही हैं और कौन से सामाजिक कारक इसके लिए उत्तरदायी हैं। यह परिवार की संस्था पर पड़ने वाले इसके व्यापक प्रभावों और सामाजिक मानदंडों में आने वाले बदलावों को समझने का प्रयास करता है, जिससे समाज की बदलती प्रकृति स्पष्ट होती है।

54. (D) विभिन्न पीढ़ियाँ, जैसे माता-पिता और उनके बच्चे।
अंतर-पीढ़ीगत संघर्ष का तात्पर्य उस तनाव से है जो एक ही परिवार या समाज की विभिन्न पीढ़ियों के मध्य उत्पन्न होता है। यह प्रायः तब होता है जब पुरानी पीढ़ी के पारंपरिक विचार और मूल्य युवा पीढ़ी की आधुनिक सोच और बदलती जीवन शैली के साथ मेल नहीं खाते। तीव्र तकनीकी विकास इस मतभेद को और गहरा कर देते हैं। यह संघर्ष समाज में मूल्यों के संक्रमण और पीढ़ियों के बीच समझ के अभाव को दर्शाता है।

55. (B) भारत के सभी जनजातीय समूह एक समान संस्कृति और जीवन शैली साझा करते हैं।
भारत के जनजातीय समूहों के विषय में यह कहना त्रुटिपूर्ण है कि वे सभी एक समान संस्कृति साझा करते हैं। वास्तव में, भारत में जनजातीय विविधता अत्यंत व्यापक है और प्रत्येक जनजाति की अपनी विशिष्ट भाषा, रीति-रिवाज और सामाजिक संरचना होती है। उत्तर-पूर्व की जनजातियां मध्य भारत की जनजातियों से जीवन शैली और परंपराओं में भिन्न हैं। यह विविधता भारतीय संस्कृति की समृद्धि का एक महत्वपूर्ण अंग है।

56. (B) असमानता यादृच्छिक है, जबकि स्तरीकरण एक संरचित, संस्थागत प्रतिरूप है।
सामाजिक असमानता और सामाजिक स्तरीकरण के मध्य मुख्य अंतर उनकी संरचना में है। असमानता एक सामान्य स्थिति हो सकती है जहाँ संसाधनों का वितरण समान नहीं होता, किंतु स्तरीकरण इसे एक चरण आगे ले जाता है। स्तरीकरण में यह असमानता समाज की संस्थाओं द्वारा समर्थित और नियमों द्वारा संहिताबद्ध होती है। यह एक व्यवस्थित पदानुक्रम है जो पीढ़ियों तक बना रहता है। स्तरीकरण असमानता का एक अधिक जटिल रूप है।

57. (D) अधोमुखी सामाजिक गतिशीलता
अधोमुखी सामाजिक गतिशीलता तब होती है जब कोई व्यक्ति सामाजिक पदानुक्रम में अपनी वर्तमान स्थिति से निम्न स्तर पर आ जाता है। एक प्रबंधक का पर्यवेक्षक के पद पर पदावनत होना इसका उदाहरण है, क्योंकि इससे उसकी आय, प्रतिष्ठा और अधिकार में न्यूनता आती है। यह प्रक्रिया दर्शाती है कि सामाजिक स्थिति स्थिर नहीं है और प्रतिकूल परिस्थितियों के कारण इसमें गिरावट संभव है। यह ऊर्ध्वमुखी गतिशीलता के विपरीत है।

58. (C) कथन I सत्य है, लेकिन कथन II असत्य है।
स्तरीकरण की वर्ग प्रणाली जाति व्यवस्था की तुलना में अधिक खुली और लचीली होती है क्योंकि इसमें सामाजिक गतिशीलता की संभावना विद्यमान रहती है। यह कहना त्रुटिपूर्ण है कि वर्ग स्थिति पूर्णतः जन्म से निर्धारित होती है। वर्ग प्रणाली में व्यक्ति की स्थिति उसकी शिक्षा और व्यावसायिक उपलब्धि जैसे अर्जित कारकों पर निर्भर करती है। यद्यपि पारिवारिक पृष्ठभूमि प्रभाव डालती है, किंतु व्यक्ति अपनी मेहनत से वर्ग परिवर्तित कर सकता है।

59. (B) लैंगिक समाजीकरण
लैंगिक समाजीकरण वह प्रक्रिया है जिसके माध्यम से व्यक्ति समाज में पुरुषों और महिलाओं हेतु निर्धारित विशिष्ट भूमिकाओं और व्यवहारों को सीखता है। यह प्रक्रिया बाल्यकाल से ही प्रारंभ हो जाती है जब परिवार और मीडिया बच्चों को यह संदेश देते हैं कि उन्हें कैसा व्यवहार करना चाहिए। इसके माध्यम से ही समाज में लैंगिक पहचान का निर्माण होता है। यह व्यक्ति के व्यक्तित्व विकास और भविष्य की भूमिकाओं को गहराई से प्रभावित करती है।

60. (B) आनुवंशिक लक्षण
समाजीकरण एक सामाजिक और सांस्कृतिक प्रक्रिया है, जिसमें परिवार, विद्यालय और मित्र समूह जैसे बाहरी कारक व्यक्ति के व्यवहार को निर्मित करते हैं। आनुवंशिक लक्षण जैविक कारक हैं जो व्यक्ति की शारीरिक बनावट निर्धारित करते हैं, किंतु इन्हें समाजीकरण का अभिकरण नहीं माना जा सकता। समाजीकरण का अर्थ समाज के माध्यम से सीखना है, जबकि आनुवंशिकता विरासत में मिलने वाली जैविक सामग्री है। व्यक्तित्व इन दोनों की अंतःक्रिया का परिणाम है।

61. (B) एक ऐसा परिवर्तन जो किसी घटना के चरित्र और संरचना को पूरी तरह से बदल देता है।
रूपांतरण सामाजिक परिवर्तन का एक गहन प्रकार है जो किसी संस्था या समाज के स्वरूप में व्यापक बदलाव लाता है। यह केवल बाहरी सुधारों तक सीमित नहीं होता, बल्कि समाज की आंतरिक संरचना और उसके कार्य करने के विधि को भी परिवर्तित कर देता है। रूपांतरण के माध्यम से पुरानी व्यवस्था एक नवीन और अधिक विकसित अवस्था प्राप्त करती है। यह परिवर्तन सामाजिक और आर्थिक जीवन के आधारभूत ढांचे को प्रभावित करता है।

62. (A) एक चक्रीय सिद्धांत
सामाजिक परिवर्तन का वह सिद्धांत जो समाज की तुलना एक जीवित जीव से करता है, चक्रीय सिद्धांत कहलाता है। इसमें यह माना जाता है कि समाज भी जन्म, विकास और अंततः मृत्यु के चरणों से गुजरता है। इस दृष्टिकोण के अनुसार, सभ्यताओं का उत्थान और पतन एक प्राकृतिक प्रक्रिया है। यह प्रक्रिया निरंतर चलती रहती है। यह रैखिक प्रगति के विचार

Downloaded from www.pdf.tube

को नकारता है और परिवर्तन को आवर्ती मानता है, जैसे ऋतुएं परिवर्तित होती हैं।

63. (B) धर्म, भाषा, जाति और जनजाति पर आधारित सामाजिक संरचनाएं।
भारत में "समूह और समुदाय" मुख्य रूप से धर्म, भाषा, जाति और जनजाति जैसे ठोस सामाजिक आधारों पर गठित होते हैं। ये समूह भारतीय समाज की मूलभूत इकाइयां हैं और पहचान निर्माण में केंद्रीय भूमिका निभाते हैं। विविधता में एकता की अवधारणा इन्हीं भिन्न समूहों के शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व को दर्शाती है। ये समुदाय न केवल सांस्कृतिक विविधता बनाए रखते हैं, बल्कि समाज की गतिविधियों को भी प्रभावित करते हैं।

64. (B) असमानता का बना रहना
जब अत्यधिक निर्धनता एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक चलती रहती है, तो यह समाज में संरचित असमानता को और अधिक सुदृढ़ करती है। यह निर्धनता का चक्र संसाधनों तक पहुँच की न्यूनता और खराब शिक्षा के कारण बना रहता है। इससे समाज के कुछ समूहों के पास उन्नति के अवसर सीमित हो जाते हैं, जिससे सामाजिक पदानुक्रम और भी कठोर हो जाता है। यह सामाजिक न्याय के लक्ष्यों की प्राप्ति में एक बड़ी बाधा है।

65. (C) आर्थिक विकास और राजनीतिक शक्ति में कथित या वास्तविक असमानताएं।
क्षेत्रीय वैमनस्य प्रायः तब उत्पन्न होता है जब देश के विभिन्न क्षेत्रों के मध्य आर्थिक विकास और संसाधनों के आवंटन में असंतुलन होता है। जब किसी विशेष क्षेत्र के लोगों को लगता है कि उनकी उपेक्षा की जा रही है, तो उनमें असंतोष और अलगाव की भावना उत्पन्न होती है। यह स्थिति क्षेत्रीय आंदोलनों को जन्म देती है। अतः संतुलित विकास और न्यायपूर्ण संसाधनों का वितरण राष्ट्रीय एकता हेतु अनिवार्य है।

66. (A) सामाजिक परिवर्तन की तीव्र गति, जिससे मूल्यों में पीढ़ी का अंतराल पैदा होता है।
आधुनिक समय में तकनीक के कारण सामाजिक परिवर्तन की गति तीव्र हो गई है। इसके परिणामस्वरूप, पुरानी पीढ़ी की सोच और युवा पीढ़ी के दृष्टिकोण के मध्य एक बड़ा अंतर उत्पन्न हो गया है, जिसे 'पीढ़ी अंतराल' कहा जाता है। यह अंतराल प्रायः परिवार के भीतर मूल्यों और जीवन शैली को लेकर संघर्ष का कारण बनता है। चूंकि युवा पीढ़ी नवीन विचारों को शीघ्र अपनाती है, अतः परंपराओं के साथ संतुलन कठिन हो गया है।

67. (D) दहेज प्रथा
दहेज प्रथा भारत में लैंगिक असमानता का एक प्रत्यक्ष परिणाम है। यह इस पितृसत्तात्मक धारणा को पुष्ट करती है कि महिलाएं आर्थिक रूप से भार हैं और उनके विवाह हेतु संपत्ति का हस्तांतरण आवश्यक है। दहेज की मांग न केवल महिलाओं की सामाजिक स्थिति को न्यून करती है, बल्कि उनके विरुद्ध घरेलू हिंसा का भी कारण बनती है। यह प्रथा समाज में महिलाओं के अधिकारों के हनन का प्रतीक है, जिसे मिटाना अनिवार्य है।

68. (A) ऊर्ध्वमुखी अंतः-पीढ़ीगत गतिशीलता
जब कोई व्यक्ति अपने स्वयं के व्यवसाय के दौरान एक निम्न पद से उच्च पद पर पहुँचता है, तो इसे ऊर्ध्वमुखी अंतः-पीढ़ीगत गतिशीलता कहा जाता है। एक शिक्षक का प्रधानाचार्य बनना उसकी प्रतिष्ठा और आय में वृद्धि को दर्शाता है। यह दर्शाता है कि व्यक्ति ने अपने कौशल के माध्यम से अपनी स्थिति में सुधार किया है। अंतः-पीढ़ीगत गतिशीलता व्यक्ति के जीवनकाल के भीतर होने वाले परिवर्तनों पर केंद्रित होती है।

69. (B) संघर्ष परिप्रेक्ष्य
सामाजिक स्तरीकरण का संघर्ष परिप्रेक्ष्य मानता है कि समाज परस्पर विरोधी हितों वाले समूहों में विभाजित है। इस दृष्टिकोण के अनुसार, स्तरीकरण कोई प्राकृतिक व्यवस्था नहीं है, बल्कि यह शक्तिशाली समूहों द्वारा संसाधनों पर नियंत्रण बनाए रखने का साधन है। वे अपनी स्थिति का उपयोग निर्बल समूहों के शोषण हेतु करते हैं, जिससे समाज में निरंतर तनाव बना रहता है। यह सिद्धांत स्तरीकरण को अन्याय के स्रोत के रूप में देखता है।

70. (A) कथन (A) और कारण (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
प्रत्याशित समाजीकरण एक अत्यंत उपयोगी प्रक्रिया है जो व्यक्ति को भविष्य की नवीन भूमिकाओं में सम्मिलित होने हेतु मानसिक रूप से तैयार करती है। इसमें व्यक्ति उस समूह के तौर-तरीकों और मूल्यों को पूर्व में ही अपनाना प्रारंभ कर देता है जिसका वह सदस्य बनना चाहता है। यह अभ्यास संक्रमण के दौरान होने वाली कठिनाइयों को न्यून करता है, जिससे नवीन परिस्थिति में सामंजस्य स्थापित करना सुगम हो जाता है।

71. (D) लैंगिक स्तरीकरण : सामाजिक रूप से निर्मित भूमिकाएँ
लैंगिक स्तरीकरण समाज द्वारा पुरुषों और महिलाओं हेतु निर्धारित असमान भूमिकाओं पर आधारित है, जो इसे जैविक अंतर से भिन्न बनाता है। इसके विपरीत, वर्ग प्रणाली एक खुली व्यवस्था है जहाँ गतिशीलता संभव है, जबकि जाति व्यवस्था जन्म पर आधारित एक बंद प्रणाली है। नृजातीय स्तरीकरण सांस्कृतिक पहचान पर आधारित होता है। लैंगिक स्तरीकरण यह समझने हेतु महत्वपूर्ण है कि कैसे सामाजिक धारणाएं संसाधनों के असमान वितरण को जन्म देती हैं।

72. (A) उद्विकास धीमा और क्रमिक है, जबकि क्रांति तीव्र और व्यापक है।
सामाजिक परिवर्तन की गति के आधार पर उद्विकास और क्रांति में मौलिक अंतर है। उद्विकास एक अत्यंत धीमी और निरंतर चलने वाली प्रक्रिया है जिसमें समाज धीरे-धीरे जटिल स्वरूप प्राप्त करता है। इसके विपरीत, क्रांति एक अकस्मात और तीव्र घटना है जो मौजूदा सामाजिक व्यवस्था को पूर्णतः परिवर्तित कर नवीन ढांचा स्थापित करती है। उद्विकास स्वाभाविक विकास है, जबकि क्रांति व्यवस्था के मौलिक पुनर्गठन की मांग करती है।

73. (C) भाषाई विविधता
भारतीय संविधान द्वारा अनेक आधिकारिक भाषाओं को मान्यता देना भाषाई विविधता के प्रति सम्मान का प्रतीक है। यह सुनिश्चित करता है कि भिन्न क्षेत्रों के लोगों को अपनी भाषा सुरक्षित रखने का अधिकार मिले। भाषाई विविधता भारतीय सांस्कृतिक बहुलवाद का अनिवार्य अंग है, जो देश को एक अनूठी पहचान प्रदान करता है। यह विविधता राष्ट्रीय एकता में बाधा नहीं है, बल्कि यह लोकतंत्र को अधिक समावेशी और जन-केंद्रित बनाने का माध्यम है।

74. (C) घरेलू हिंसा
घरेलू हिंसा पारिवारिक कलह का एक अत्यंत गंभीर रूप है जिसमें परिवार के किसी सदस्य द्वारा दूसरे सदस्य पर शारीरिक या मानसिक प्रहार किया जाता है। यह केवल निजी विवाद नहीं है, बल्कि नियंत्रण और सत्ता का प्रदर्शन है। घरेलू हिंसा महिलाओं और बच्चों के अधिकारों का हनन करती है और उनके विकास को बाधित करती है। समाज में इसके प्रति जागरुकता अनिवार्य है क्योंकि यह समाज की शांति हेतु एक बड़ा संकट है।

75. (B) P-3, Q-4, R-1, S-2
समसामयिक सामाजिक मुद्दे समाज की जटिल चुनौतियों को दर्शाते हैं। निर्धनता गंभीर वंचना की स्थिति है, जबकि दहेज विवाह से संबद्ध संपत्ति की मांग है। अंतर-पीढ़ीगत संघर्ष भिन्न आयु समूहों के मध्य मूल्यों के टकराव से उत्पन्न होता है। नृजातीय वैमनस्य साझा सांस्कृतिक मूल पर आधारित संघर्षों का परिणाम है। इन मुद्दों का अध्ययन समाज की बदलती संरचना और उसमें व्याप्त समस्याओं को समझने में सहायता प्रदान करता है।

76. (B) सामाजिक भूमिकाओं को सीखना और अनुकूलित करना पूरे जीवन काल में जारी रहता है।
समाजीकरण एक आजीवन प्रक्रिया है क्योंकि व्यक्ति अपने संपूर्ण जीवन में निरंतर नवीन स्थितियों और भूमिकाओं का सामना करता है। प्रत्येक चरण में नवीन व्यवहार और उत्तरदायित्व सीखने पड़ते हैं। यह धारणा त्रुटिपूर्ण है कि समाजीकरण केवल बाल्यकाल तक सीमित है। व्यक्ति की सीखने की क्षमता और सामाजिक वातावरण के प्रति अनुकूलन मृत्यु तक जारी रहता है, जो व्यक्तित्व को निरंतर विकसित और परिष्कृत करता रहता है।

77. (B) बंद स्तरीकरण प्रणाली वाले समाज सामाजिक गतिशीलता की उच्च दर प्रदर्शित करते हैं।
सामाजिक गतिशीलता के विषय में यह कथन त्रुटिपूर्ण है कि बंद स्तरीकरण प्रणालियों में इसकी दर उच्च होती है। वास्तव में, जाति जैसी बंद प्रणालियों में व्यक्ति की सामाजिक स्थिति जन्म से निर्धारित होती है, जिसे परिवर्तित करना असंभव होता है। इसके विपरीत, वर्ग जैसी खुली प्रणालियों में योग्यता के आधार पर गतिशीलता की दर अधिक होती है। गतिशीलता समाज की प्रगतिशीलता और समानता के स्तर को मापने का महत्वपूर्ण पैमाना है।

78. (A) एक निर्वाचित सरकार का दूसरी सरकार द्वारा प्रतिस्थापन।
संरचना के भीतर परिवर्तन का अर्थ है कि समाज का बुनियादी ढांचा वही रहता है, किंतु उसके भीतर के पदों पर आसीन व्यक्ति परिवर्तित हो जाते हैं। चुनाव में एक सरकार का स्थान दूसरी सरकार द्वारा लेना इसका सटीक उदाहरण है। यहाँ शासन की प्रणाली नहीं बदलती, केवल शासन करने वाले लोग बदलते हैं। यह उद्विकासीय परिवर्तन से भिन्न है जहाँ पूरी व्यवस्था का स्वरूप परिवर्तित हो जाता है।

79. (C) जनजातीय विविधता
भारत में विभिन्न जनजातीय समुदायों की उपस्थिति इसकी समृद्ध जनजातीय विविधता का प्रमाण है। प्रत्येक जनजाति की अपनी अनूठी सामाजिक संरचना, पारंपरिक नियम और पर्यावरण के साथ जुड़ाव के विशेष तरीके होते हैं। यह विविधता भारत के सांस्कृतिक मानचित्र को अधिक विस्तृत बनाती है। जनजातियों की स्वायत्त पहचान और ऐतिहासिक विरासत को समझना राष्ट्रीय विकास हेतु आवश्यक है। यह विविधता भारतीय समाज की बहुलतावादी जड़ों को गहरा करती है।

80. (A) केवल 1 और 3
सामाजिक स्तरीकरण के भिन्न रूपों में वर्ग और जाति प्रमुख हैं। वर्ग प्रणाली अपनी योग्यता पर आधारित होने के कारण अधिक खुली मानी जाती है, जिससे व्यक्ति अपनी स्थिति में सुधार कर सकता है। इसके विपरीत, जाति व्यवस्था एक बंद प्रणाली है जहाँ स्थिति जन्म से प्रदत्त होती है। लैंगिक स्तरीकरण भी समाज में व्याप्त असमानता है, किंतु वह केवल जैविक नहीं अपितु सामाजिक-सांस्कृतिक निर्मित व्यवस्था है। ये सभी रूप संरचना को प्रभावित करते हैं।

81. (B) क्षैतिज गतिशीलता
क्षैतिज गतिशीलता तब होती है जब कोई व्यक्ति अपनी सामाजिक स्थिति में परिवर्तन करता है, किंतु उसकी प्रतिष्ठा या आय में कोई महत्वपूर्ण बदलाव नहीं आता। एक अधिवक्ता का समान स्तर पर प्राध्यापक बनना इसका उदाहरण है क्योंकि वह सामाजिक पदानुक्रम में लगभग उसी स्तर पर बना रहता है। इसमें केवल कार्य का प्रकार या स्थान परिवर्तित होता है, सामाजिक रैंक नहीं। यह ऊर्ध्वमुखी गतिशीलता से भिन्न है।

82. (B) कथन I और कथन II दोनों असत्य हैं।
'भारत के लोग' शब्द किसी एक समान इकाई को नहीं, बल्कि भारत की विशाल विविधता को दर्शाता है। इसी प्रकार, विविधता में एकता का विचार इस विविधता को समाप्त करने के स्थान पर उसके भीतर एक साझा सूत्र खोजने पर बल देता है। यह कहना त्रुटिपूर्ण है कि इसका उद्देश्य मतभेदों को मिटाना है। वास्तव में, यह भिन्न संस्कृतियों और धर्मों के गौरवपूर्ण सह-अस्तित्व का समर्थन करती है।

83. (C) विसरण
विसरण सामाजिक परिवर्तन का वह रूप है जिसमें एक समाज के सांस्कृतिक तत्व जैसे विचार या तकनीक दूसरे समाज द्वारा अपनाए जाते हैं। यह प्रक्रिया व्यापार या संचार के माध्यम से होती है। जब कोई समाज बाहरी प्रभावों को आत्मसात करता

Click Here to Buy book on Amazon

STUDYING FROM PDFs?

THINK AGAIN.

If you are studying only from PDFs,
you are wasting valuable time.

Research shows that learning from

PRINTED BOOKS has up to

4× HIGHER RETENTION

than studying from screens.

PRINT BOOK = BETTER MEMORY

PDF = LOWER RETENTION

Those who study from **PRINTED BOOKS**
move **AHEAD.**

Others are left **BEHIND**
in competition.



In competitive exams,
being average is not enough.

STAY ONE STEP AHEAD.

है, तो उसके पारंपरिक ढांचे में परिवर्तन आता है। आधुनिक समय में इंटरनेट ने विसरण की इस प्रक्रिया को अत्यंत तीव्र बना दिया है, जिससे वैश्विक स्तर पर सामाजिक परिवर्तन देखने को मिलते हैं।

84. (C) विभिन्न धर्मों के अनुयायियों के बीच विरोध, संघर्ष और हिंसा।
धार्मिक वैमनस्य एक चिंताजनक सामाजिक विषय है जो भिन्न धार्मिक समुदायों के मध्य असहिष्णुता और संघर्ष के रूप में प्रकट होता है। यह केवल धार्मिक मतभेदों तक सीमित नहीं है, बल्कि प्रायः राजनीतिक हितों से प्रेरित होकर हिंसा का रूप ले लेता है। धार्मिक वैमनस्य समाज की एकता को भंग करता है और शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व को चुनौती देता है। इसे दूर करने हेतु धर्मनिरपेक्ष मूल्यों को बढ़ावा देना अनिवार्य है।

85. (C) एक अप्रवासी एक नए देश की भाषा और रीति-रिवाजों को सीख रहा है।
पुनः समाजीकरण की प्रक्रिया तब स्पष्ट होती है जब व्यक्ति को पूर्णतः नवीन और अपरिचित वातावरण में स्वयं को ढालना पड़ता है। एक अप्रवासी का उदाहरण इसे दर्शाता है, जहाँ उसे अपनी पूर्व सांस्कृतिक पहचान त्यागकर नवीन देश की भाषा और व्यवहारों को सीखना होता है। यह सीखने की एक तीव्र प्रक्रिया है जिसमें पूर्व पहचान का स्थान नवीन सामाजिक पहचान ले लेती है, जो नवीन परिस्थितियों हेतु अनिवार्य है।

86. (C) सामाजिक स्तरीकरण
सामाजिक स्तरीकरण समाज की वह व्यवस्था है जो लोगों को शक्ति, संपत्ति और प्रतिष्ठा के आधार पर भिन्न श्रेणियों में विभाजित करती है। यह एक ऐसी संरचित असमानता है जो पीढ़ियों तक चलती है और निर्धारित करती है कि समाज के किन सदस्यों को विशेषाधिकार प्राप्त होंगे। स्तरीकरण के माध्यम से ही समाज में श्रेष्ठता के पदानुक्रम का निर्माण होता है। यह व्यवस्था न केवल व्यक्तिगत अंतरों को दर्शाती है, बल्कि संरचना का अभिन्न अंग है।

87. (C) अर्जित प्रास्थिति
वर्ग प्रणाली की महत्वपूर्ण विशेषता यह है कि यह अर्जित स्थिति पर आधारित होती है। यहाँ व्यक्ति की सामाजिक स्थिति जन्म से निर्धारित नहीं होती, बल्कि उसकी शिक्षा और व्यक्तिगत उपलब्धि से तय होती है। यह एक खुली प्रणाली है जो ऊर्ध्वमुखी सामाजिक गतिशीलता की संभावना प्रदान करती है। अर्जित स्थिति पर बल देने के कारण ही वर्ग प्रणाली को न्यायपूर्ण माना जाता है क्योंकि यह व्यक्ति को उन्नति हेतु प्रोत्साहन प्रदान करती है।

88. (A) लैंगिक असमानता
नारीवादी परिप्रेक्ष्य सामाजिक स्तरीकरण के अध्ययन में लैंगिक असमानता को केंद्र में रखता है। यह दृष्टिकोण विश्लेषण करता है कि कैसे समाज पुरुषों और महिलाओं के मध्य संसाधनों और शक्ति का असमान वितरण करता है। यह पितृसत्तात्मक संरचनाओं की आलोचना करता है जो महिलाओं को हाशिए पर रखती हैं। नारीवादी विद्वान तर्क देते हैं कि लिंग आधारित स्तरीकरण सामाजिक रूप से निर्मित है और इसे समानता की दिशा में परिवर्तित करना आवश्यक है।

NODIA

89. (C) प्रकार्यवादी सिद्धांत
प्रकार्यवादी सिद्धांत मानता है कि सामाजिक स्तरीकरण समाज की स्थिरता हेतु एक आवश्यक कार्य करता है। इसके अनुसार, कुछ सामाजिक पद दूसरों की तुलना में अधिक महत्वपूर्ण होते हैं और उन्हें भरने हेतु उच्च प्रशिक्षण की आवश्यकता होती है। प्रतिभाशाली व्यक्तियों को इन पदों हेतु प्रेरित करने के लिए समाज उन्हें अधिक धन और सम्मान प्रदान करता है। इस प्रकार, असमानता समाज के कुशल प्रबंधन को सुनिश्चित करने का साधन बनती है।

90. (B) रैखिक
जब कोई समाज एक विशिष्ट और सीधी दिशा में परिवर्तित होता है, जैसे परंपरा से आधुनिकता की ओर, तो यह सामाजिक परिवर्तन के रैखिक सिद्धांत का उदाहरण है। यह सिद्धांत मानता है कि समाज निरंतर विकास के उच्च चरणों की ओर अग्रसर होता है। इसमें यह विश्वास निहित है कि तकनीकी उन्नति और तर्कसंगतता समाज को बेहतर भविष्य की ओर ले जाएगी। रैखिक सिद्धांत परिवर्तन को एक क्रमिक और सकारात्मक प्रक्रिया मानता है।

91. (C) सरल परिवर्तन या अनुकूलन
रूपांतरण की अवधारणा सामाजिक परिवर्तन की व्यापकता को दर्शाती है। यह केवल बाहरी सुधार नहीं है, बल्कि यह किसी व्यवस्था के मौलिक चरित्र में आने वाला एक पूर्ण बदलाव है। रूपांतरण के दौरान, समाज के सामाजिक संबंधों और संस्थाओं का पूर्णतः नवीन रूप उभरता है। यह परिवर्तन इतना गहरा होता है कि यह पूर्व व्यवस्था की पहचान को पूर्णतः परिवर्तित कर देता है, जिससे समाज एक नवीन ऐतिहासिक अवस्था में प्रवेश करता है।

92. (A) क्षेत्रीय और भाषाई विविधता
भारत में राज्यों का भाषाई आधार पर पुनर्गठन क्षेत्रीय और भाषाई विविधता की एक महत्वपूर्ण सामाजिक स्वीकृति है। विभिन्न राज्यों का गठन यह सुनिश्चित करने हेतु किया गया कि भिन्न भाषाई समूहों को अपनी संस्कृति के विकास हेतु स्वायत्तता प्राप्त हो। यह विविधता को दबाने के स्थान पर उसे लोकतंत्र के भीतर स्थान देने का प्रयास है। यह भाषाई पहचान को भारतीय संघवाद और राष्ट्रीय एकता का सुदृढ़ आधार बनाता है।

93. (B) सामाजिक बहिष्कार और शिक्षा तथा स्वास्थ्य देखभाल जैसे संसाधनों तक पहुँच की कमी।
निर्धनता की समाजशास्त्रीय समझ केवल निम्न आय तक सीमित नहीं है, बल्कि यह सामाजिक बहिष्कार पर भी ध्यान केंद्रित करती है। एक निर्धन व्यक्ति न केवल धन के अभाव से जूझता है, बल्कि वह बेहतर शिक्षा और स्वास्थ्य सेवाओं से भी वंचित रह जाता है। यह वंचना उसे समाज की मुख्यधारा से पृथक कर देती है, जिससे सर्वांगीण विकास बाधित होता है। निर्धनता दूर करने हेतु इन संरचनात्मक बाधाओं को हटाना अनिवार्य है।

94. (C) तलाक
विवाह विच्छेद वैवाहिक संबंध की औपचारिक समाप्ति को दर्शाता है। समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण से, यह केवल दो व्यक्तियों का पृथक होना नहीं है, बल्कि यह बदलती पारिवारिक संरचना का संकेतक है। यह प्रायः वैवाहिक कलह या जीवन के प्रति बदलते दृष्टिकोण का परिणाम होता है। इसकी बढ़ती दरें समाज में विवाह की संस्था के प्रति बदलती धारणाओं और व्यक्तिगत स्वतंत्रता के बढ़ते महत्व को स्पष्ट रूप से रेखांकित करती हैं।

95. (A) 2, 4, 1, 3
भारतीय समाज का वैचारिक विकास भिन्न चरणों से गुजरा है। औपनिवेशिक काल से पूर्व ही यहाँ विविध समुदायों का अस्तित्व था। ब्रिटिश शासन ने नृवंशविज्ञान सर्वेक्षणों के माध्यम से 'भारत के लोग' की अवधारणा को संहिताबद्ध किया। स्वतंत्रता पश्चात, भारतीय संविधान ने अल्पसंख्यकों को सुरक्षा प्रदान की और "विविधता में एकता" के विचार को राष्ट्र निर्माण के मुख्य स्तंभ के रूप में स्थापित किया। यह भारतीय पहचान की स्पष्ट तस्वीर है।

96. (D) मूल प्रवृत्ति
समाजीकरण एक ऐसी प्रक्रिया है जिसमें व्यक्ति बाहरी सामाजिक अभिकरणों के माध्यम से समाज के मूल्यों को सीखता है। इसके विपरीत, मूल प्रवृत्ति व्यक्ति की जन्मजात जैविक विशेषता है, जो उसे सामाजिक अनुभव के बिना प्राप्त होती है। चूंकि समाजीकरण का अर्थ ही 'सामाजिक अधिगम' है, अतः जैविक प्रवृत्तियों को इसका अभिकरण नहीं माना जा सकता। व्यक्तित्व का विकास शिक्षा और जैविक आधार की अंतःक्रिया से होता है।

97. (B) प्रत्याशित समाजीकरण
प्रत्याशित समाजीकरण उस प्रक्रिया को कहते हैं जिसमें व्यक्ति भविष्य में प्राप्त होने वाली किसी भूमिका हेतु स्वयं को तैयार करता है। इसमें वह उस समूह के व्यवहारों और मानदंडों को पूर्व में ही सीखना प्रारंभ कर देता है। यह प्रक्रिया व्यक्ति के सामाजिक संक्रमण को सुगम बनाती है और उसे नवीन परिस्थितियों में आत्मविश्वास के साथ कार्य करने में सहायता करती है। यह भविष्योन्मुखी सोच और सामाजिक अनुकूलन की सक्रिय इच्छा का परिणाम है।

98. (C) कथन I असत्य है, लेकिन कथन II सत्य है।
सामाजिक स्तरीकरण समाज की एक संरचनात्मक विशेषता है, न कि केवल व्यक्तियों का गुण। यह ऐसी व्यवस्था है जो व्यक्तियों को समूहों में वर्गीकृत करती है और संसाधनों का असमान वितरण करती है। इसकी महत्वपूर्ण विशेषता यह है कि यह पीढ़ियों तक बनी रहती है, जिसका अर्थ है कि माता-पिता की सामाजिक स्थिति प्रायः संतानों को विरासत में मिलती है। यह स्थायित्व ही स्तरीकरण को एक संस्थागत प्रणाली बनाता है।

99. (C) प्रगति
प्रगति सामाजिक परिवर्तन का वह प्रकार है जिसमें परिवर्तन की दिशा के विषय में एक सकारात्मक मूल्य निर्णय सम्मिलित होता है। इसे केवल बदलाव के रूप में नहीं, बल्कि 'श्रेष्ठ' की ओर बढ़ने के रूप में देखा जाता है। प्रगति की अवधारणा समाज के आदर्शों जैसे न्याय और समानता से संबद्ध होती है। चूंकि इसमें यह माना जाता है कि समाज उन्नत हो रहा है, अतः इसे मूल्य-तटस्थ शब्दों से पृथक माना जाता है।

100. (A) कथन (A) और कारण (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
परिवार को समाजीकरण का सर्वाधिक महत्वपूर्ण अभिकरण माना जाता है क्योंकि यह बालक हेतु प्रथम सामाजिक विश्व है। यहीं से बालक भाषा सीखता है और समाज के बुनियादी मूल्यों को आत्मसात करता है। परिवार द्वारा दिए गए ये प्रारंभिक पाठ व्यक्ति के व्यक्तित्व की नींव रखते हैं और भविष्य के सामाजिक व्यवहार को प्रभावित करते हैं। परिवार का प्रभाव अत्यंत गहरा और स्थाई होता है, अतः यह प्राथमिक केंद्र है।

101. (C) आर्थिक उपलब्धि
जाति और वर्ग दोनों सामाजिक स्तरीकरण के रूप हैं, किंतु उनके आधार भिन्न हैं। जाति व्यवस्था जन्म पर आधारित एक बंद प्रणाली है जहाँ स्थिति प्रदत्त होती है, जबकि वर्ग व्यवस्था मुख्य रूप से आर्थिक उपलब्धि पर निर्भर करती है। वर्ग एक खुली प्रणाली है जहाँ व्यक्ति अपनी शिक्षा और परिश्रम के माध्यम से सामाजिक स्थिति परिवर्तित कर सकता है। यह अंतर समाज में गतिशीलता के अवसर और व्यक्तिगत योग्यता को स्पष्ट करता है।

102. (B) क्षैतिज गतिशीलता : एक कारखाने के श्रमिक का मुख्य कार्यकारी अधिकारी बनना।
क्षैतिज गतिशीलता का तात्पर्य व्यक्ति की सामाजिक स्थिति में बदलाव से है, किंतु उसकी प्रतिष्ठा के स्तर में कोई परिवर्तन नहीं होता। एक श्रमिक का मुख्य कार्यकारी अधिकारी बनना ऊर्ध्वमुखी गतिशीलता का उदाहरण है, न कि क्षैतिज का। क्षैतिज गतिशीलता में केवल कार्य का स्थान परिवर्तित होता है। अन्य विकल्प सही हैं, जैसे पीढ़ियों के मध्य अंतर अंतर-पीढ़ीगत गतिशीलता है। संरचनात्मक गतिशीलता आर्थिक संरचना में आए बदलावों का परिणाम है।

103. (B) प्रणाली के संगठनात्मक सिद्धांतों का मौलिक प्रतिस्थापन।
संरचना का परिवर्तन समाज में होने वाला एक मौलिक बदलाव है। इसमें केवल नवीन पदों पर नवीन लोग नहीं आते, बल्कि उन सिद्धांतों को ही परिवर्तित कर दिया जाता है जिन पर समाज आधारित होता है। इसके विपरीत, संरचना के भीतर परिवर्तन केवल मौजूदा ढांचे के भीतर मामूली सुधार है। उदाहरण के लिए, सामंती व्यवस्था का अंत होकर लोकतांत्रिक व्यवस्था का आगमन संरचना का परिवर्तन है, जो शक्ति वितरण को नवीन रूप देता है।

Downloaded from www.pdf.tube

104. (C) अंतर-पीढ़ीगत संघर्ष
अंतर-पीढ़ीगत संघर्ष प्रत्यक्ष रूप से परिवार के भीतर होने वाली कलह की अभिव्यक्ति है। यह तब उत्पन्न होता है जब परिवार की दो भिन्न पीढ़ियों के मध्य मूल्यों और जीवन शैली को लेकर गंभीर असहमति होती है। तीव्र सामाजिक परिवर्तन इस संघर्ष को बढ़ा देते हैं क्योंकि पुरानी पीढ़ी परंपराओं को सुरक्षित रखना चाहती है जबकि युवा पीढ़ी आधुनिकता को प्राथमिकता देती है। यह संघर्ष अक्सर परिवार के सामंजस्य को प्रभावित करता है।

105. (A) P-3, Q-1, R-2, S-4
सामाजिक स्तरीकरण के भिन्न आधार समाज की जटिल असमानताओं को स्पष्ट करते हैं। जाति जन्म और शुद्धता पर आधारित एक प्रदत्त स्थिति है, जबकि वर्ग आर्थिक स्थिति से निर्धारित होता है। लिंग पुरुषों और महिलाओं हेतु सामाजिक रूप से निर्मित भूमिकाओं को दर्शाता है। नृजातीयता साझा सांस्कृतिक विरासत और पहचान पर आधारित होती है। इन रूपों को समझना समाज में शक्ति और संसाधनों के वितरण को जानने हेतु अत्यंत आवश्यक है।

106. (B) समाजीकरण का प्रकार्यवादी सिद्धांत
समाजीकरण का प्रकार्यवादी सिद्धांत तर्क देता है कि यह प्रक्रिया समाज की निरंतरता बनाए रखने हेतु अनिवार्य है। इसके अनुसार, समाजीकरण व्यक्तियों को समाज के साझा मूल्यों और भूमिकाओं को सिखाकर उन्हें एक सुसंगत व्यवस्था का अंग बनाता है। यदि सभी व्यक्ति समान नियमों का पालन करेंगे, तो समाज में संघर्ष न्यून होगा। अतः समाजीकरण समाज के सुचारु संचालन को सुनिश्चित करने वाला एक अत्यंत महत्वपूर्ण तंत्र है जो एकीकरण बढ़ाता है।

107. (C) पुनः समाजीकरण
पुनः समाजीकरण की प्रक्रिया प्रायः उन 'पूर्ण संस्थानों' में देखी जाती है जहाँ व्यक्ति को उसकी पूर्व सामाजिक पहचान से पूर्णतः पृथक कर एक नवीन पहचान प्रदान की जाती है। इस प्रक्रिया में व्यक्ति को अपने पिछले जीवन के सभी व्यवहारों को त्यागने हेतु विवश किया जाता है और उसे संस्थान के कठोर नियमों के अनुसार ढलना पड़ता है। उदाहरण के लिए, सैन्य प्रशिक्षण में व्यक्ति को एक नवीन अनुशासन सिखाया जाता है।

108. (A) लैंगिक स्तरीकरण
लैंगिक स्तरीकरण समाज में पुरुषों और महिलाओं के मध्य संसाधनों और शक्ति के असमान वितरण की एक व्यवस्थित रैंकिंग है। यह केवल जैविक अंतर नहीं है, बल्कि एक सामाजिक संरचना है जो एक लिंग को दूसरे पर प्रधानता प्रदान करती है। इसके परिणामस्वरूप शिक्षा और रोजगार के क्षेत्रों में असमानता उत्पन्न होती है। लैंगिक स्तरीकरण पितृसत्तात्मक मूल्यों को बढ़ावा देता है और समाज के एक बड़े भाग को अवसरों से वंचित करता है।

109. (B) विसरण
विसरण सामाजिक और सांस्कृतिक परिवर्तन का वह माध्यम है जिसके द्वारा नवाचार और सांस्कृतिक वस्तुएं एक समाज से दूसरे समाज में प्रसारित होती हैं। यह प्रक्रिया संचार, व्यापार या प्रवास के माध्यम से संभव होती है। जब कोई समाज बाहरी विश्व से नवीन वस्तुएं सीखता है, तो उसके पारंपरिक ढांचे में परिवर्तन आता है। विसरण वैश्विक स्तर पर सामाजिक परिवर्तन को गति देने वाली एक अत्यंत महत्वपूर्ण और निरंतर चलने वाली प्रक्रिया है।

110. (A) केवल 1 और 2
सामाजिक परिवर्तन की अवधारणाओं में उद्विकास और क्रांति के मध्य गति का अंतर है। उद्विकास एक क्रमिक विकास है, जबकि क्रांति समाज की संरचना में आने वाला एक तीव्र और मौलिक बदलाव है। प्रगति के विषय में यह कहना त्रुटिपूर्ण है कि यह पूर्णतः मूल्य-मुक्त है। प्रगति में सदैव एक दिशा और वांछनीयता जुड़ी होती है, जो समाज के आदर्शों पर आधारित होती है। अतः प्रगति एक मूल्य-आधारित अवधारणा है।

111. (A) राष्ट्रीय पहचान और क्षेत्रीय/सामुदायिक पहचान।
"विविधता में एकता" भारतीय समाज की वह अद्वितीय विशेषता है जो एक साझा राष्ट्रीय पहचान और भिन्न क्षेत्रीय पहचानों के मध्य सामंजस्यपूर्ण संतुलन निर्मित करती है। इसका अर्थ है कि भारत में लोग अपनी विशिष्ट धार्मिक या भाषाई पहचान को बनाए रखते हुए भी राष्ट्र के प्रति एकजुट रहते हैं। यह विचार बहुलवाद को बढ़ावा देता है और स्वीकार करता है कि भिन्न संस्कृतियां मिलकर राष्ट्र की पहचान को सुदृढ़ करती हैं।

112. (B) आरोपण; उपलब्धि
जाति और वर्ग स्तरीकरण के दो विपरीत रूप हैं। जाति की असमानता पूर्णतः आरोपण पर आधारित है, जिसका अर्थ है कि व्यक्ति की स्थिति जन्म से निश्चित हो जाती है जिसे बदला नहीं जा सकता। इसके विपरीत, वर्ग की असमानता मुख्य रूप से व्यक्तिगत उपलब्धि और आर्थिक सफलता पर आधारित होती है। वर्ग एक खुली प्रणाली है जो सामाजिक गतिशीलता की अनुमति देती है, जबकि जाति व्यवस्था एक कठोर सामाजिक संरचना को प्रदर्शित करती है।

113. (C) अंतर-पीढ़ीगत संघर्ष
अंतर-पीढ़ीगत संघर्ष आधुनिक परिवारों में एक बढ़ती समस्या है, जो मुख्य रूप से माता-पिता और संतानों के मध्य जीवन शैली में आए परिवर्तनों के कारण उत्पन्न होती है। पुरानी पीढ़ी जहाँ परंपरा को महत्व देती है, वहीं नवीन पीढ़ी व्यक्तिगत स्वतंत्रता को प्राथमिकता देती है। यह वैचारिक टकराव परिवार में तनाव उत्पन्न करता है। तीव्र सामाजिक परिवर्तन इस संघर्ष को बढ़ाने का कार्य करते हैं, जिससे पीढ़ियों के मध्य संवाद कठिन होता है।

NODIA

114. (C) नृजातीय वैमनस्य
पारिवारिक कलह उन संघर्षों को संदर्भित करती है जो परिवार की आंतरिक संरचना के भीतर होते हैं, जैसे दहेज की मांग और घरेलू हिंसा। इसके विपरीत, नृजातीय वैमनस्य एक व्यापक सामाजिक विषय है जो भिन्न सांस्कृतिक समूहों के मध्य होने वाले संघर्षों से संबद्ध होता है। नृजातीयता का आधार परिवार से बाहर की सामाजिक पहचान होती है, जबकि अन्य समस्याएं

सीधे तौर पर विवाह और पारिवारिक संबंधों की विफलता को दर्शाती हैं।

115. (C) प्रत्याशित समाजीकरण
प्रत्याशित समाजीकरण वह प्रक्रिया है जिसमें व्यक्ति भविष्य में प्राप्त होने वाली किसी भूमिका हेतु स्वयं को तैयार करने हेतु उसके मानदंडों को अपनाना प्रारंभ कर देता है। जब कोई कर्मचारी अपने वरिष्ठों की भांति व्यवहार अपनाता है, तो वह वास्तव में उस उच्च पद हेतु आवश्यक सामाजिक अपेक्षाओं को आत्मसात कर रहा होता है। यह मानसिक पूर्वाभ्यास व्यक्ति के सामाजिक संक्रमण को सुगम बनाता है और उसे अधिक प्रभावी बनाता है।

116. (C) कथन I असत्य है, लेकिन कथन II सत्य है।
सामाजिक विभेदीकरण केवल समाज में मौजूद विविधता को वर्गीकृत करने की प्रक्रिया है, जो अनिवार्य रूप से पदानुक्रमित स्तरीकरण की ओर नहीं ले जाती। उदाहरण के लिए, भिन्न व्यवसायों का होना विभेदीकरण है, किंतु जब कुछ व्यवसायों को श्रेष्ठ माना जाने लगता है, तभी वह स्तरीकरण निर्मित होता है। अतः विभेदीकरण बिना किसी उच्च-नीच के भी अस्तित्व में रह सकता है। यह सदैव असमानता का कारण नहीं बनता।

117. (B) सामाजिक पदानुक्रम में स्थिति
सामाजिक गतिशीलता का मूल विचार व्यक्ति या समूह द्वारा सामाजिक पदानुक्रम में अपनी स्थिति को परिवर्तित करने की क्षमता से संबद्ध है। यह गतिशीलता ऊर्ध्वमुखी, अधोमुखी या क्षैतिज हो सकती है। यह व्यक्ति के सामाजिक-आर्थिक स्तर, प्रतिष्ठा और शक्ति में होने वाले परिवर्तनों को संदर्भित करता है। गतिशीलता की दर यह दर्शाती है कि समाज कितना खुला है। यह व्यक्तिगत उपलब्धि के माध्यम से उन्नति की संभावना को प्रकट करता है।

118. (A) फ्रांसीसी क्रांति, जिसने राजशाही और कुलीनतंत्र को समाप्त कर दिया।
संरचना का परिवर्तन समाज के उन आधारभूत सिद्धांतों के पूर्ण रूपांतरण को दर्शाता है जिन पर वह आधारित होता है। फ्रांसीसी क्रांति इसका उत्कृष्ट उदाहरण है क्योंकि इसने न केवल शासकों को परिवर्तित किया, बल्कि राजशाही को समाप्त कर लोकतंत्र के सिद्धांतों पर आधारित एक पूर्णतः नवीन सामाजिक व्यवस्था स्थापित की। यह परिवर्तन समाज के प्रत्येक स्तर पर मौलिक बदलाव लाया, जो इसे सामान्य परिवर्तनों से पृथक बनाता है।

119. (C) भाषाई विविधता
भारत में बोली जाने वाली भाषाओं की विशाल संख्या देश की सांस्कृतिक विविधता का एक अत्यंत महत्वपूर्ण पहलू है। यह भाषाई विविधता भिन्न क्षेत्रों की अनूठी पहचान और साहित्य को समृद्ध बनाती है। यह दर्शाती है कि भारत एक बहुभाषी राष्ट्र है जहाँ प्रत्येक भाषा का अपना ऐतिहासिक महत्व है। भाषाई विविधता न केवल संवाद का माध्यम है, बल्कि यह उन समुदायों के गौरव और अस्मिता से भी गहराई से जुड़ी हुई है।

120. (B) इसकी ऐतिहासिक उत्पत्ति, सामाजिक कार्य और लैंगिक असमानता के परिणाम।
समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण से दहेज प्रथा का अध्ययन इसे व्यक्तिगत विषय के स्थान पर संस्थागत सामाजिक समस्या के रूप में देखता है। समाजशास्त्री इसकी ऐतिहासिक जड़ों का विश्लेषण करते हैं कि यह प्रथा पितृसत्तात्मक समाज में महिलाओं की स्थिति को कैसे प्रभावित करती है। वे इसके कारण होने वाली घरेलू हिंसा के सामाजिक परिणामों को समझने का प्रयास करते हैं। यह अध्ययन बताता है कि कैसे सामाजिक मानदंड एक शोषक प्रथा को बनाए रखते हैं।

121. (C) प्राथमिक समाजीकरण
प्राथमिक समाजीकरण वह सबसे बुनियादी प्रक्रिया है जो व्यक्ति के जीवन के प्रारंभिक वर्षों में परिवार के भीतर होती है। यहीं से बालक अपनी मातृभाषा, शिष्टाचार और सामाजिक मूल्यों को सीखना प्रारंभ करता है। परिवार का वातावरण और माता-पिता का प्रभाव बालक के व्यक्तित्व की नींव रखता है। चूंकि यह शिक्षा अत्यंत गहरी और स्थाई होती है, अतः इसे 'प्राथमिक' कहा जाता है क्योंकि यह व्यक्ति के संपूर्ण विकास का मुख्य आधार बनती है।

122. (A) पदानुक्रम
सामाजिक विभेदीकरण और सामाजिक स्तरीकरण के मध्य मुख्य अंतर पदानुक्रम की उपस्थिति है। विभेदीकरण केवल समाज के सदस्यों के मध्य मौजूद अंतरों को श्रेणियों में विभाजित करता है, किंतु यह उन्हें उच्च-नीच के क्रम में नहीं रखता। इसके विपरीत, स्तरीकरण इन श्रेणियों को श्रेष्ठता और हीनता के एक व्यवस्थित पदानुक्रम में व्यवस्थित करता है। पदानुक्रम ही वह तत्व है जो साधारण सामाजिक अंतर को संस्थागत असमानता में परिवर्तित कर देता है।

123. (B) स्तरीकरण दुर्लभ संसाधनों पर प्रतिस्पर्धा का परिणाम है, जिससे शक्तिशाली लोगों को लाभ होता है।
सामाजिक स्तरीकरण का संघर्ष सिद्धांत तर्क देता है कि समाज में असमानता कोई प्राकृतिक व्यवस्था नहीं है, बल्कि यह शक्तिशाली समूहों द्वारा थोपी गई व्यवस्था है। प्रभावशाली वर्ग दुर्लभ संसाधनों जैसे धन और शक्ति पर अपना नियंत्रण बनाए रखने हेतु स्तरीकरण का उपयोग करते हैं। यह व्यवस्था निर्बल समूहों के शोषण पर आधारित होती है और समाज में निरंतर संघर्ष उत्पन्न करती है। यह दृष्टिकोण स्तरीकरण को शक्ति के दुरुपयोग के रूप में देखता है।

124. (B) उद्विकास
आखेटक समाज से कृषि समाज में परिवर्तन सामाजिक उद्विकास का उत्कृष्ट उदाहरण है। यह परिवर्तन अत्यंत धीमा, क्रमिक और स्वाभाविक रहा है, जिसमें समाज की संरचना सरल से अधिक जटिल होती गई। इस प्रक्रिया के दौरान, मनुष्य ने पर्यावरण के साथ अपने संबंधों को परिवर्तित किया और नवीन संस्थाओं का निर्माण किया। उद्विकास समाज की कार्यक्षमता में होने वाली उस दीर्घकालिक प्रगति को दर्शाता है जो उसे विकास के उच्च स्तर की ओर ले जाती है।

Click Here to Buy book on Amazon

125. (B) व्यापक आंतरिक विविधता के बावजूद राष्ट्रीय पहचान की भावना बनाए रखना।
"विविधता में एकता" भारतीय समाज की उस क्षमता को व्यक्त करती है जहाँ अनेक भाषाओं और धर्मों के होने के बावजूद एक साझा राष्ट्रीय भावना विद्यमान है। यह विचार यह नहीं कहता कि मतभेदों को मिटा दिया जाए, बल्कि यह विभिन्न संस्कृतियों के मध्य आपसी सम्मान पर बल देता है। यह बहुलवाद को राष्ट्र की मजबूती के रूप में देखता है और विभिन्न समुदायों को एक साझा लोकतांत्रिक ढांचे के भीतर एकजुट करता है।

126. (B) यह अक्सर पितृसत्तात्मक मानदंडों और लैंगिक असमानता में निहित होती है।
घरेलू हिंसा को सामाजिक-सांस्कृतिक विषय इसलिए माना जाता है क्योंकि यह व्यक्तिगत विफलता से अधिक समाज की संरचना से संबद्ध है। यह प्रायः पितृसत्तात्मक व्यवस्था का परिणाम होती है जहाँ पुरुषों को महिलाओं पर नियंत्रण का विशेषाधिकार प्राप्त होता है। लैंगिक असमानता घरेलू हिंसा को जन्म देती है और इसे समाज में गुप्त रखने हेतु प्रोत्साहित करती है। अतः इसे दूर करने हेतु सामाजिक दृष्टिकोण में परिवर्तन लाना अनिवार्य है।

127. (B) सामाजिक ठहराव या विरासत
जब किसी बालक का व्यवसाय या सामाजिक स्थिति उसके माता-पिता के समान ही रहती है, तो इसे सामाजिक ठहराव या विरासत कहा जाता है। एक चिकित्सक की संतान का चिकित्सक बनना यह दर्शाता है कि उस परिवार के पास संसाधनों और प्रेरणा का ऐसा वातावरण है जो उस स्थिति को बनाए रखने में सहायता करता है। सामाजिक दृष्टिकोण से यह पीढ़ियों के मध्य स्थिति के हस्तांतरण को दर्शाता है, जो पदानुक्रम की स्थिरता का संकेत है।

128. (B) सामाजिक परिवर्तन आंतरिक और बाह्य दोनों कारकों के कारण हो सकता है।
सामाजिक परिवर्तन एक अत्यंत जटिल प्रक्रिया है जो समाज के भीतर होने वाले नवाचारों (आंतरिक कारक) और बाह्य सभ्यताओं के प्रभाव (बाह्य कारक) दोनों से प्रेरित हो सकती है। यह सोचना त्रुटिपूर्ण है कि परिवर्तन सदैव नियोजित होता है; कई बार यह तकनीकी विकास के कारण अनायास हो जाता है। सामाजिक परिवर्तन की गति भिन्न समाजों में भिन्न हो सकती है और यह समाज की सभी संस्थाओं को अनिवार्य रूप से प्रभावित करती है।

129. (C) क्षेत्रवाद और नृजातीय पहचान
भारत के भीतर पृथक राज्यों या अधिक स्वायत्तता की मांग प्रायः क्षेत्रवाद और नृजातीय पहचान की अभिव्यक्ति होती है। यह मांग तब प्रबल होती है जब किसी विशेष क्षेत्र के लोगों को लगता है कि उनकी सांस्कृतिक विशिष्टता संकट में है या उनकी आर्थिक उपेक्षा की जा रही है। अपनी पहचान सुरक्षित रखने की यह इच्छा कभी-कभी केंद्र सरकार के साथ संघर्ष का कारण बनती है। क्षेत्रीय पहचान की यह भावना भारतीय लोकतंत्र की विविधता को दर्शाती है।

130. (A) कथन (A) और कारण (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
भारत में जाति व्यवस्था सामाजिक स्तरीकरण का एक अत्यंत विशिष्ट रूप है। यह पूर्णतः जन्म के समय प्रदत्त स्थिति पर आधारित है, जिसका अर्थ है कि एक व्यक्ति जिस जाति में जन्म लेता है, वह जीवन भर उसी का अंग रहता है। यह व्यवस्था समाज को उच्च-नीच के एक सख्त पदानुक्रम में विभाजित करती है, जहाँ संसाधनों का वितरण जाति की रैंक के अनुसार होता है। चूंकि यह पदानुक्रम संस्थागत है, अतः यह स्तरीकरण का मुख्य रूप है।

131. (D) वर्गों के बीच की सीमाएं परिवर्तनशील हैं और उन्हें पार किया जा सकता है।
वर्ग प्रणाली की महत्वपूर्ण विशेषता इसका खुलापन है। जाति व्यवस्था के विपरीत, वर्ग प्रणाली में भिन्न वर्गों के मध्य की सीमाएं बहुत कठोर नहीं होतीं। व्यक्ति अपनी शिक्षा और कठिन परिश्रम के माध्यम से एक वर्ग से दूसरे वर्ग में जा सकता है। इसे सामाजिक गतिशीलता कहा जाता है। वर्ग की यह विशेषता व्यक्ति को स्थिति सुधारने हेतु प्रेरित करती है और यह मानती है कि सामाजिक पद व्यक्तिगत उपलब्धि पर आधारित होने चाहिए।

132. (B) व्यक्ति लगातार नई स्थितियों और भूमिकाओं का सामना करते हैं जिनके लिए नई सीख की आवश्यकता होती है।
समाजीकरण को एक आजीवन प्रक्रिया माना जाता है क्योंकि मानव जीवन निरंतर परिवर्तनों से गुजरता है। जैसे-जैसे व्यक्ति विकसित होता है, उसे नवीन भूमिकाओं जैसे कर्मचारी या माता-पिता के रूप में स्वयं को ढालना पड़ता है। प्रत्येक नवीन स्थिति अपने साथ नवीन नियम और व्यवहार के तरीके लाती है। अतः सीखने की यह प्रक्रिया कभी समाप्त नहीं होती। यह निरंतरता व्यक्ति को बदलते सामाजिक स्वरूप के साथ सामंजस्य स्थापित करने में सक्षम बनाती है।

133. (B) प्रौद्योगिकी
इंटरनेट का आविष्कार तकनीकी नवाचार के माध्यम से होने वाले सामाजिक परिवर्तन का उदाहरण है। प्रौद्योगिकी ने मानव संचार और कार्य करने के विधियों को पूर्णतः परिवर्तित कर दिया है। इसके परिणामस्वरूप सामाजिक संबंधों और शिक्षा की प्रणालियों में क्रांतिकारी बदलाव आए हैं। तकनीकी कारकों द्वारा संचालित परिवर्तन प्रायः समाज की संरचना को गहराई से प्रभावित करते हैं और जीवन जीने के नवीन प्रतिमान स्थापित करते हैं। यह वैश्विक सामाजिक व्यवस्था को पुनर्गठित करता है।

134. (D) (A) और (C) दोनों सही हैं।
निर्धनता और असमानता परस्पर गहराई से संबद्ध हैं। असमानता का उच्च स्तर समाज में संसाधनों के अनुचित वितरण को दर्शाता है, जो प्रायः व्यापक निर्धनता का मुख्य कारण बनता है। निर्धनता जहाँ बुनियादी आवश्यकताओं के 'पूर्ण वंचना' को दर्शाती है, वहीं असमानता समाज के अन्य वर्गों की तुलना में 'सापेक्ष वंचना' की ओर संकेत करती है। इन समस्याओं के

Downloaded from www.pdf.tube

समाधान हेतु आर्थिक विकास के साथ न्यायपूर्ण संसाधनों के वितरण की भी आवश्यकता होती है।

135. (B) P-3, Q-1, R-2, S-4
सामाजिक परिवर्तन के भिन्न सिद्धांत परिवर्तन की प्रकृति को समझने में सहायता करते हैं। रैखिक सिद्धांत मानता है कि समाज निरंतर एक ही दिशा में प्रगति करता है, जबकि चक्रीय सिद्धांत उत्थान और पतन के दोहराव पर बल देता है। विसरण के माध्यम से सांस्कृतिक तत्व एक समाज से दूसरे में प्रसारित होते हैं, और क्रांति मौजूदा व्यवस्था को अकस्मात परिवर्तित करने की प्रक्रिया है। ये सभी अवधारणाएं समाज के संरचनात्मक विकास को स्पष्ट करती हैं।

136. (A) उनकी राष्ट्रीय या सांस्कृतिक विरासत।
नृजातीय स्तरीकरण में 'नृजातीय' शब्द उन समूहों को संदर्भित करता है जो अपनी साझा सांस्कृतिक पहचान, भाषा या पूर्वजों के आधार पर पृथक पहचाने जाते हैं। यह प्रणाली समाज को इन सांस्कृतिक समूहों के पदानुक्रम में विभाजित करती है। नृजातीयता व्यक्ति के जन्म से जुड़ी होती है, जो उसे एक समूह के प्रति अपनत्व की भावना प्रदान करती है। यह स्तरीकरण न केवल सांस्कृतिक अंतरों को दर्शाता है, बल्कि समाज में प्रभुत्व और भेदभाव को भी जन्म दे सकता है।

137. (C) कथन I सत्य है, लेकिन कथन II असत्य है।
समाज में विवाह विच्छेद की बढ़ती दरें प्रायः बदलते पारिवारिक मूल्यों और व्यक्तिगत स्वतंत्रता के बढ़ने का संकेत प्रदान करती हैं। यद्यपि, इसे केवल सामाजिक पदानुक्रम के पतन के रूप में देखना त्रुटिपूर्ण होगा। आधुनिक समाजशास्त्र में इसे विवाह की संस्था के प्रति बदलती अपेक्षाओं और व्यक्तिगत अधिकारों के प्रति बढ़ती जागरूकता के रूप में विश्लेषित किया जाता है। अतः यह परिवर्तन समाज की बदलती नैतिकता को दर्शाता है, न कि अनिवार्य रूप से व्यवस्था के विनाश को।

138. (B) प्रत्याशित समाजीकरण
जब कोई व्यक्ति अपने भविष्य के लक्ष्य या व्यवसाय की तैयारी हेतु उस क्षेत्र से संबंधित व्यवहारों को पूर्व में ही अपनाना प्रारंभ कर देता है, तो इसे प्रत्याशित समाजीकरण कहा जाता है। एक छात्र द्वारा पत्रकार बनने की इच्छा में साक्षात्कार लेना वास्तव में उस पेशेवर जगत के मानदंडों को सीखने का एक विधि है। यह प्रक्रिया उसे नवीन भूमिका हेतु मानसिक रूप से तैयार करती है। यह सीखने की एक सक्रिय विधि है जो सामाजिक संक्रमण को सुगम बनाती है।

139. (C) अंतरराष्ट्रीय व्यापार समझौते
निर्धनता, जाति की असमानता और पारिवारिक कलह जैसे विषय सीधे तौर पर समाज की संरचना और मानवीय संबंधों को प्रभावित करते हैं, अतः इन्हें सामाजिक-सांस्कृतिक विषय माना जाता है। इसके विपरीत, अंतरराष्ट्रीय व्यापार समझौते मुख्य रूप से राष्ट्रों के मध्य होने वाली आर्थिक संधियां हैं। यद्यपि इनका प्रभाव समाज पर पड़ सकता है, किंतु ये सीधे तौर पर सामाजिक मूल्यों या रीति-रिवाजों से नहीं जुड़े होते। ये मुद्दे व्यापक वैश्विक नीतियों का अंग हैं।

140. (B) केवल 2 और 3
पारिवारिक कलह एक व्यापक अवधारणा है जिसमें केवल शारीरिक शोषण ही नहीं, बल्कि मानसिक प्रताड़ना भी सम्मिलित होती है। भारत में दहेज से संबद्ध विवाद और हिंसा पारिवारिक कलह का एक अत्यंत महत्वपूर्ण स्रोत हैं। इसी प्रकार, अंतर-पीढ़ीगत संघर्ष, जो पीढ़ियों के मध्य मूल्यों के अंतराल से उत्पन्न होता है, परिवार के भीतर तनाव का मुख्य कारण है। अतः घरेलू हिंसा को केवल शारीरिक हिंसा तक सीमित करना त्रुटिपूर्ण है, क्योंकि इसके मानसिक आयाम भी गंभीर होते हैं।

141. (A) धार्मिक विविधता
भारत में विभिन्न धार्मिक समुदायों का दीर्घ काल से एक साथ निवास करना इसकी विशाल धार्मिक विविधता का परिचायक है। यह विविधता भारतीय समाज के बहुलवादी चरित्र की आधारशिला है। धर्मनिरपेक्षता का भारतीय मॉडल सभी धर्मों के प्रति सम्मान और उनके शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व पर बल देता है। धार्मिक विविधता न केवल भिन्न त्योहारों के रूप में प्रकट होती है, बल्कि यह देश के सामाजिक और राजनीतिक चिंतन को प्रभावित करने वाला एक महत्वपूर्ण तत्व है।

142. (A) प्रतीकात्मक अंतःक्रियावादी परिप्रेक्ष्य
प्रतीकात्मक अंतःक्रियावादी परिप्रेक्ष्य इस पर ध्यान केंद्रित करता है कि कैसे लोग दैनिक जीवन में साझा अर्थों और प्रतीकों के माध्यम से संवाद करते हैं। स्तरीकरण के संदर्भ में, यह दृष्टिकोण विश्लेषण करता है कि कैसे सामाजिक स्थिति और पदानुक्रम प्रतीकों जैसे वेशभूषा या व्यवहार के माध्यम से प्रदर्शित किए जाते हैं। यह मानता है कि असमानता केवल संरचनात्मक नहीं है, बल्कि यह लोगों की निरंतर अंतःक्रियाओं के माध्यम से समाज में बनी रहती है।

143. (C) परिमाण
सामाजिक परिवर्तन के विश्लेषण में 'संरचना के भीतर परिवर्तन' और 'संरचना का परिवर्तन' के मध्य मुख्य अंतर बदलाव के परिमाण या उसकी गहराई से संबद्ध है। संरचना के भीतर परिवर्तन लघु स्तर का होता है, जहाँ मौजूदा व्यवस्था के भीतर ही मामूली समायोजन होते हैं। इसके विपरीत, संरचना का परिवर्तन बृहद परिमाण का होता है, जो पूरी सामाजिक व्यवस्था की जड़ों को परिवर्तित कर उसे नवीन स्वरूप प्रदान करता है। यह अंतर प्रभाव की तीव्रता को दर्शाता है।

144. (C) निर्धनता
निर्धनता उस सामाजिक स्थिति को परिभाषित करती है जहाँ व्यक्तियों के पास समाज में स्वीकार्य जीवन स्तर बनाए रखने हेतु आवश्यक भौतिक संसाधनों का अभाव होता है। यह वंचना केवल भोजन तक सीमित नहीं है, बल्कि इसमें स्वास्थ्य और शिक्षा के अवसरों की न्यूनता भी सम्मिलित है। निर्धनता व्यक्ति की गरिमा और उसके विकास की संभावनाओं को कम कर देती है। यह एक जटिल सामाजिक समस्या है जो संसाधनों के असमान वितरण के कारण समाज में निरंतर बनी रहती है।

NODIA

145. (A) क्षैतिज गतिशीलता
क्षैतिज गतिशीलता का तात्पर्य व्यक्ति की सामाजिक स्थिति में ऐसे परिवर्तन से है जिसमें उसके प्रतिष्ठा के स्तर या पदानुक्रम में कोई बदलाव नहीं आता। एक लिपिक का समान वेतन और पद पर एक विभाग से दूसरे में स्थानांतरण इसका सटीक उदाहरण है। यहाँ केवल कार्यस्थल परिवर्तित होता है, किंतु व्यक्ति की सामाजिक रैंक पूर्ववत रहती है। यह ऊर्ध्वमुखी गतिशीलता से भिन्न है, जो व्यक्ति की स्थिति को सामाजिक सोपान में ऊपर की ओर ले जाती है।

146. (A) सामाजिक और सांस्कृतिक रूप से निर्मित भूमिकाएं और विशेषताएं जिन्हें समाज पुरुषों और महिलाओं के लिए उपयुक्त मानता है।
समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण से लिंग (जेंडर) और जैविक लिंग (सेक्स) में स्पष्ट अंतर है। जैविक लिंग प्राकृतिक है, जबकि 'लिंग' समाज द्वारा निर्मित एक अवधारणा है। यह उन व्यवहारों और भूमिकाओं को दर्शाता है जो समाज पुरुषों और महिलाओं से संबद्ध मानता है। जैसे 'खाना बनाना महिलाओं का कार्य है' यह सामाजिक निर्मिति है। अतः लिंग आधारित स्तरीकरण समाज की उस सोच का परिणाम है जो जैविक अंतरों को सामाजिक असमानता में परिवर्तित कर देती है।

147. (A) रैखिक सिद्धांत
सामाजिक परिवर्तन का रैखिक सिद्धांत प्रस्तावित करता है कि समाज विकास के निश्चित और क्रमिक चरणों के माध्यम से आगे बढ़ता है। यह परिवर्तन एक सीधी रेखा में होता है, जो प्रायः निम्न से उच्च स्थिति की ओर ले जाता है। इस सिद्धांत के अनुसार, प्रत्येक नवीन चरण पूर्व चरण की तुलना में अधिक जटिल और श्रेष्ठ होता है। यह दृष्टिकोण परिवर्तन को प्रगति के रूप में देखता है और मानता है कि समाज अंततः एक आदर्श अवस्था प्राप्त करने की दिशा में अग्रसर है।

148. (A) जाट समुदाय।
समाजशास्त्र में 'समूह' या 'समुदाय' का तात्पर्य उन व्यक्तियों के समूह से है जो साझा हितों या संस्कृति के आधार पर परस्पर संबद्ध होते हैं और जिनमें अपनत्व की भावना होती है। 'जाट समुदाय' इसका उदाहरण है क्योंकि इसके सदस्यों के मध्य एक साझा सांस्कृतिक पहचान है। इसके विपरीत, बस स्टॉप पर खड़े लोग या सिनेमाघर के दर्शक केवल एक 'भीड़' हैं जिनमें स्थाई सामाजिक संबंधों और साझा पहचान का अभाव होता है।

149. (A) क्षेत्रीय वैमनस्य
क्षेत्रीय वैमनस्य तब प्रकट होता है जब देश के विभिन्न क्षेत्रों के मध्य संसाधनों या राजनीतिक अधिकारों को लेकर विवाद उत्पन्न होता है। राज्य और केंद्र सरकार के मध्य का तनाव प्रायः इस बात से संबद्ध होता है कि राज्यों को अपने विकास हेतु अधिक शक्ति प्राप्त होनी चाहिए। यह वैमनस्य संतुलित विकास की कमी या उपेक्षा की भावना से प्रेरित हो सकता है। इसे हल करने हेतु सहकारी संघवाद और क्षेत्रीय आकांक्षाओं के प्रति सम्मान होना अनिवार्य है।

150. (B) दहेज
दहेज प्रथा पारिवारिक कलह का एक अत्यंत नकारात्मक पक्ष है जो विवाह को पवित्र बंधन के स्थान पर एक आर्थिक समझौते में परिवर्तित कर देता है। विवाह के समय वधू के परिवार से धन और संपत्ति की मांग करना अनैतिक और गैर-कानूनी है। यह मांग प्रायः वर पक्ष द्वारा शक्ति प्रदर्शन का माध्यम बन जाती है। दहेज के कारण होने वाले विवाद परिवारों में स्थाई दरार उत्पन्न करते हैं और महिलाओं के विरुद्ध हिंसा का मुख्य कारण बनते हैं।

151. (D) वयस्क समाजीकरण
वयस्क समाजीकरण वह प्रक्रिया है जिसमें एक परिपक्व व्यक्ति अपने जीवन के उत्तरार्ध में नवीन सामाजिक भूमिकाओं के अनुसार नवीन कौशल और नियम सीखता है। व्यवसाय के मध्य में नवीन नौकरी प्रारंभ करना और उसके विशिष्ट मानदंडों को अपनाना इसी का उदाहरण है। यह दर्शाता है कि सीखने की प्रक्रिया वयस्क होने के पश्चात भी समाप्त नहीं होती। व्यक्ति को समाज में प्रभावी बने रहने हेतु बदलती परिस्थितियों के प्रति निरंतर अनुकूलन करना पड़ता है।

152. (B) असमानता : मूल्यवान संसाधनों का असमान वितरण
सामाजिक स्तरीकरण की अवधारणा में असमानता का अर्थ समाज के भीतर धन, शक्ति और प्रतिष्ठा जैसे मूल्यवान संसाधनों का विभिन्न समूहों के मध्य अनुचित वितरण है। यह असमानता व्यक्तिगत अंतरों का परिणाम नहीं, बल्कि समाज की संरचना में व्यवस्थित प्रक्रिया है। पदानुक्रम का तात्पर्य श्रेष्ठता के क्रम से है, जबकि विभेदीकरण केवल अंतर को दर्शाता है। संसाधनों का असमान वितरण ही स्तरीकरण को संस्थागत आधार प्रदान करने का मुख्य कारण है।

153. (A) मार्क्सवाद
सामाजिक स्तरीकरण का मार्क्सवादी सिद्धांत तर्क देता है कि समाज मुख्य रूप से दो परस्पर विरोधी वर्गों में विभाजित है: बुर्जुआ और सर्वहारा। कार्ल मार्क्स के अनुसार, इन दोनों वर्गों के मध्य संसाधनों पर नियंत्रण को लेकर निरंतर संघर्ष चलता रहता है। स्तरीकरण की यह व्यवस्था शक्तिशाली वर्ग द्वारा निर्बल वर्ग के शोषण का एक साधन है। यह सिद्धांत मानता है कि वर्ग संघर्ष ही समाज में होने वाले परिवर्तनों की मुख्य चालक शक्ति है।

154. (D) क्रांति
क्रांति एक अकस्मात और व्यापक सामाजिक परिवर्तन है जो मौजूदा शासन और सामाजिक संरचना को पूर्णतः परिवर्तित कर देता है। इसमें प्रायः शक्ति का हस्तांतरण एक वर्ग से दूसरे वर्ग की ओर होता है और नवीन विचारधारा के आधार पर एक नवीन सामाजिक व्यवस्था का निर्माण किया जाता है। क्रांति केवल राजनीतिक नहीं होती, बल्कि यह समाज के आर्थिक और सांस्कृतिक ताने-बाने को भी मौलिक रूप से बदल देती है। यह उद्विकास के विपरीत तीव्र बदलाव है।

Click Here to Buy book on Amazon

155. (A) 3, 2, 1
सामाजिक परिवर्तन की गति के आधार पर उद्विकास सबसे क्रमिक प्रक्रिया है, जिसमें समाज लंबी अवधि में धीरे-धीरे विकसित होता है। इसके पश्चात रूपांतरण आता है, जो समाज के स्वरूप में अधिक गहरा और व्यापक बदलाव लाता है। अंत में क्रांति आती है, जो सबसे अकस्मात और तीव्र होती है, जिससे पूरी सामाजिक व्यवस्था का तत्काल और मौलिक पुनर्गठन हो जाता है। यह क्रम सामाजिक परिवर्तनों की समय-सीमा और तीव्रता को स्पष्ट करता है।

156. (B) एकता, विविधता, समूहों और समुदायों की जटिल परस्पर क्रिया।
भारतीय समाज की अवधारणा को समझने हेतु देश की विशाल विविधता और उसके भीतर विद्यमान एकता के साझा सूत्रों के मध्य संबंधों को जानना आवश्यक है। भारत केवल एक राजनीतिक इकाई नहीं है, बल्कि यह विभिन्न जातियों, धर्मों और समुदायों का एक जटिल संगम है। इन विविध समूहों और समुदायों की परस्पर होने वाली अंतःक्रिया ही भारतीय सामाजिक ताने-बाने का निर्माण करती है। अतः इन अंगों के मध्य सामंजस्य को समझना ही वास्तविक अध्ययन है।

157. (B) लिंग की असमानता
लैंगिक असमानता एक समसामयिक विषय है जो पुरुषों और महिलाओं के मध्य अधिकारों और संसाधनों तक पहुँच में व्याप्त भेदभाव को संबोधित करता है। यह पितृसत्तात्मक समाज की उस संरचना को उजागर करता है जहाँ महिलाओं को शिक्षा और रोजगार में पुरुषों की तुलना में कम अवसर प्राप्त होते हैं। यह असमानता न केवल महिलाओं के विकास को बाधित करती है, बल्कि यह समाज की समग्र प्रगति और सामाजिक न्याय के लक्ष्यों की प्राप्ति में बाधा है।

158. (C) कथन I असत्य है, लेकिन कथन II सत्य है।
अंतर-पीढ़ीगत संघर्ष कोई नवीन परिघटना नहीं है, यह किसी न किसी रूप में सदैव अस्तित्व में रही है। यद्यपि, आधुनिक समय में सामाजिक परिवर्तन की तीव्र गति ने इस संघर्ष को बढ़ा दिया है। जब समाज शीघ्रता से बदलता है, तो पुरानी पीढ़ी के मूल्य और नवीन पीढ़ी की आकांक्षाओं के मध्य एक 'मूल्य अंतराल' उत्पन्न हो जाता है। यह अंतराल परिवारों के भीतर वैचारिक टकराव का कारण बनता है। अतः तीव्र परिवर्तन पीढ़ियों के मध्य असहमति को गहरा करता है।

159. (C) व्यक्ति एक सामाजिक प्राणी कैसे बनता है।
समाजीकरण के सिद्धांतों का प्राथमिक उद्देश्य यह स्पष्ट करना है कि एक नवजात शिशु, जो केवल एक जैविक जीव है, समाज के साथ अंतःक्रिया करके एक पूर्ण सामाजिक प्राणी के रूप में कैसे विकसित होता है। यह प्रक्रिया सिखाती है कि कैसे व्यक्ति समाज की संस्कृति, भाषा और मूल्यों को आत्मसात करता है। ये सिद्धांत व्यक्तित्व निर्माण और सामाजिक संरचना के संबंधों का विश्लेषण करते हैं। इसके माध्यम से ही सामाजिक व्यवस्था की निरंतरता को समझा जा सकता है।

160. (A) कथन (A) और कारण (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
वर्ग और जाति व्यवस्था में सामाजिक गतिशीलता के अवसरों को लेकर बड़ा अंतर है। जाति व्यवस्था एक बंद स्तरीकरण प्रणाली है जहाँ स्थिति जन्म से निर्धारित होती है, जिससे स्थिति बदलना लगभग असंभव है। इसके विपरीत, वर्ग व्यवस्था एक खुली प्रणाली है जो अर्जित स्थिति पर बल देती है, जहाँ व्यक्ति अपनी योग्यता से स्थिति बदल सकता है। इसीलिए वर्ग-आधारित समाजों में जाति-आधारित समाजों की तुलना में ऊर्ध्वमुखी गतिशीलता की संभावना अधिक होती है।

161. (D) वयस्क समाजीकरण
जब कोई व्यक्ति अपने जीवन के उत्तरार्ध में नवीन वातावरण, जैसे ग्रामीण क्षेत्र से शहरी क्षेत्र में जाना, के साथ सामंजस्य स्थापित करने हेतु नवीन व्यवहार और मूल्य सीखता है, तो यह वयस्क समाजीकरण का अंग है। यहाँ व्यक्ति पूर्व में सामाजिक हो चुका होता है, किंतु नवीन परिस्थितियों की मांग के अनुसार उसे अपने दृष्टिकोण में परिवर्तन करना पड़ता है। यह निरंतर सीखने की प्रक्रिया व्यक्ति को गतिशील सामाजिक परिवेश में कार्य करने योग्य बनाती है।

162. (C) लैंगिक स्तरीकरण केवल जैविक अंतरों पर आधारित है।
लैंगिक स्तरीकरण के विषय में यह कहना त्रुटिपूर्ण है कि यह केवल जैविक अंतरों पर आधारित है। समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण से, यह एक सामाजिक रूप से निर्मित व्यवस्था है जो पुरुषों और महिलाओं हेतु पृथक भूमिकाएं और प्रतिष्ठा निर्धारित करती है। जहाँ जैविक लिंग प्राकृतिक है, वहीं सामाजिक लिंग पदानुक्रम और असमानता का आधार बनता है। जाति प्रदत्त स्थिति का और वर्ग अर्जित स्थिति का उदाहरण है। अतः लिंग की सामाजिक भूमिका को समझना आवश्यक है।

163. (B) सामाजिक परिवर्तन
सामाजिक परिवर्तन समाजशास्त्र का एक केंद्रीय विषय है जो समय के साथ सामाजिक संरचनाओं, संस्थाओं और सांस्कृतिक मूल्यों में होने वाले बदलावों का अध्ययन करता है। यह विश्लेषण करता है कि समाज कैसे विकसित होते हैं और नवीन तकनीकें समाज को कैसे प्रभावित करती हैं। परिवर्तन का अध्ययन यह समझने में सहायता करता है कि समाज स्थिर क्यों नहीं है। यह सामाजिक स्थिरता और गतिशीलता के मध्य के संबंधों को भी गहराई से स्पष्ट करता है।

164. (A) जाति समूह, धार्मिक समुदाय और जनजातीय समूह
भारतीय समाज के संदर्भ में "समूह और समुदाय" का तात्पर्य उन संगठित सामाजिक इकाइयों से है जो भारत की मूलभूत पहचान का निर्माण करती हैं। इनमें भिन्न जातियां, विविध धर्म और अनूठी जनजातियां सम्मिलित हैं। ये समूह केवल लोगों का जमघट नहीं हैं, बल्कि इनके सदस्यों के मध्य साझा इतिहास और अपनत्व की गहरी भावना होती है। ये समुदाय व्यक्ति के समाजीकरण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं और भारत के बहुलवादी सामाजिक ताने-बाने को विविधता प्रदान करते हैं।

NODIA

165. (C) P-4, Q-3, R-1, S-2
समाजीकरण के भिन्न अभिकरण व्यक्ति के विकास में विशिष्ट भूमिकाएं निभाते हैं। परिवार प्राथमिक देखभाल और बुनियादी मूल्य प्रदान करता है, जबकि विद्यालय औपचारिक शिक्षा और सार्वभौमिक नियम सिखाता है। मित्र समूह किशोरावस्था के दौरान अनौपचारिक सामाजिक नियम और स्वायत्तता सिखाते हैं। जनसंचार माध्यम व्यापक सूचनाओं के माध्यम से व्यक्ति की सोच को प्रभावित करते हैं। ये सभी अभिकरण मिलकर व्यक्ति को समाज की जटिलताओं को समझने के योग्य बनाने का कार्य करते हैं।

166. (B) चक्रीय सिद्धांत
सामाजिक परिवर्तन का चक्रीय सिद्धांत सभ्यताओं के ऐतिहासिक उत्थान और पतन के प्रतिरूप पर केंद्रित है। यह मानता है कि कोई भी सभ्यता एक सीधी रेखा में निरंतर प्रगति नहीं करती, बल्कि वह जन्म, विकास और फिर पतन के एक निश्चित चक्र से गुजरती है। विद्वानों ने इतिहास का विश्लेषण करके दिखाया कि कैसे महान सभ्यताएं समय के साथ नष्ट हो गईं। यह सिद्धांत परिवर्तन को एक आवर्ती और अनिवार्य प्रक्रिया के रूप में देखता है जो निरंतर चलती रहती है।

167. (B) वे संरचनात्मक कारक जो गरीबी पैदा करते हैं और उसे बनाए रखते हैं।
निर्धनता को एक समसामयिक चिंता के रूप में समझने हेतु उन व्यापक सामाजिक संरचनाओं का विश्लेषण आवश्यक है जो इसे जन्म देती हैं। निर्धनता केवल व्यक्ति की व्यक्तिगत असफलता नहीं है, बल्कि यह संसाधनों के असमान वितरण और सामाजिक वंचना की गहरी प्रणालियों के कारण बनी रहती है। यह एक ऐसा दुष्चक्र है जिसे केवल व्यक्तिगत प्रयासों से नहीं, बल्कि संस्थागत सुधारों के माध्यम से ही तोड़ा जा सकता है। अतः निर्धनता का अध्ययन संरचनात्मक समाधानों की मांग करता है।

168. (B) विवाह की कानूनी समाप्ति।
पारिवारिक कलह, जिसमें निरंतर संघर्ष, घरेलू हिंसा या गंभीर वैचारिक मतभेद सम्मिलित हैं, प्रायः वैवाहिक संबंधों के विच्छेद का कारण बनती है। विवाह की कानूनी समाप्ति या तलाक इसी कलह का सबसे प्रत्यक्ष परिणाम है। जब परिवार के भीतर शांति और आपसी समझ का अभाव हो जाता है, तो कानूनी पृथक्करण ही विकल्प बचता है। यह न केवल दो व्यक्तियों को पृथक करता है, बल्कि यह परिवार की पूरी संरचना को परिवर्तित कर देता है और सदस्यों पर प्रभाव डालता है।

169. (B) यह समूहों को उनके कथित साझा पूर्वजों और संस्कृति के आधार पर श्रेणीबद्ध करता है।
नृजातीय स्तरीकरण की मुख्य विशेषता यह है कि यह समूहों को उनकी सांस्कृतिक पहचान, भाषा और ऐतिहासिक मूल के आधार पर समाज में एक पदानुक्रमित स्थान प्रदान करता है। इसमें एक प्रभावशाली समूह प्रायः अन्य समूहों पर अपनी सांस्कृतिक श्रेष्ठता बनाए रखने का प्रयास करता है। यह व्यवस्था जन्म और विरासत से जुड़ी होती है, जिससे समूहों के मध्य सामाजिक दूरियां उत्पन्न हो सकती हैं। यह स्तरीकरण संसाधनों और शक्ति तक पहुँचने की संभावनाओं को सीमित करता है।

170. (A) केवल 1 और 3
भारत की सांस्कृतिक विविधता इसकी सबसे बड़ी शक्ति है, किंतु कभी-कभी यह भिन्न समूहों के मध्य तनाव का कारण भी बन सकती है। "विविधता में एकता" का अर्थ यह नहीं है कि सभी अंतरों को समाप्त कर दिया जाए, बल्कि इसका उद्देश्य इन अंतरों के साथ शांतिपूर्वक रहना है। क्षेत्रीय और धार्मिक कारक इस विविधता के आधारभूत स्तंभ हैं जो भारतीय समाज को एक अनूठा स्वरूप प्रदान करते हैं। इन विविधताओं को स्वीकार करना और सम्मान करना ही भारतीय राष्ट्रवाद का वास्तविक सार है।

171. (B) प्रत्याशित समाजीकरण
प्रत्याशित समाजीकरण वह प्रक्रिया है जिसमें व्यक्ति उन भूमिकाओं हेतु पूर्व में ही तैयारी करना प्रारंभ कर देता है जिन्हें वह भविष्य में प्राप्त करने की आकांक्षा रखता है। इसमें व्यक्ति उस समूह के व्यवहारों और मूल्यों को सीखने का प्रयास करता है जिसका वह अभी अंग नहीं है। उदाहरण के लिए, एक छात्र जो सेना में जाना चाहता है, वह पूर्व में ही सैन्य अनुशासन अपनाना प्रारंभ कर देता है। यह व्यवहारिक अभ्यास उसे भविष्य के नवीन सामाजिक परिवेश में शीघ्र ढलने में सहायता करता है।

172. (A) पदानुक्रम और असमानता
सामाजिक विभेदीकरण और सामाजिक स्तरीकरण के मध्य मौलिक अंतर पदानुक्रम और संरचित असमानता की उपस्थिति है। विभेदीकरण केवल समाज में मौजूद विविधता को दर्शाता है, जहाँ लोग एक-दूसरे से 'पृथक' होते हैं। किंतु स्तरीकरण इन अंतरों के आधार पर समूहों को उच्च-नीच के क्रम में व्यवस्थित करता है, जहाँ कुछ समूहों को श्रेष्ठ माना जाता है। इस प्रकार, स्तरीकरण समाज में संसाधनों और शक्ति के असमान वितरण को संस्थागत रूप देकर एक स्थाई श्रेणीबद्ध व्यवस्था का निर्माण करता है।

173. (C) क्रांति
संरचना का परिवर्तन सामाजिक परिवर्तन का वह रूप है जिसमें समाज के बुनियादी आधार और शक्ति के संबंधों में आमूलचूल बदलाव आता है। यह अवधारणा क्रांति के साथ सर्वाधिक मेल खाती है क्योंकि क्रांति एक ऐसी तीव्र प्रक्रिया है जो पुरानी व्यवस्था को पूर्णतः समाप्त कर एक नवीन सामाजिक ढांचे को जन्म देती है। उद्विकास जैसे क्रमिक परिवर्तनों के विपरीत, क्रांति पूरे समाज के संगठनात्मक सिद्धांतों को मौलिक रूप से रूपांतरित कर देती है, जिससे एक नवीन सामाजिक यथार्थ अस्तित्व में आता है।

174. (A) जैविक और सांस्कृतिक विविधता
"भारत के लोग" परियोजना एक विशाल सर्वेक्षण था जिसका मुख्य उद्देश्य भारत की जनसंख्या में व्याप्त समृद्ध जैविक और सांस्कृतिक विविधता का वैज्ञानिक रूप से दस्तावेजीकरण करना था। इस परियोजना ने भारत के समुदायों की विशिष्ट पहचान, रीति-रिवाजों और उनके ऐतिहासिक विकास का

Downloaded from www.pdf.tube

अध्ययन किया। इसने यह स्पष्ट किया कि भारतीय समाज केवल एक समूह नहीं, बल्कि विविध समुदायों का संगम है। इस दस्तावेजीकरण ने भारत की बहुलतावादी पहचान को गहराई से समझने हेतु एक सुदृढ़ आधार प्रदान किया है।

175. (A) इसमें शारीरिक, भावनात्मक, यौन और आर्थिक शोषण शामिल हो सकता है।
घरेलू हिंसा पारिवारिक कलह का एक अत्यंत जटिल रूप है जो केवल शारीरिक चोट तक सीमित नहीं है। इसमें अपमान और मानसिक प्रताड़ना के माध्यम से किया जाने वाला भावनात्मक शोषण, साथ ही संसाधनों पर नियंत्रण के माध्यम से किया जाने वाला आर्थिक शोषण भी सम्मिलित है। यह हिंसा प्रायः शक्ति के असंतुलन और नियंत्रण की इच्छा का परिणाम होती है। यह परिवार की शांति को नष्ट करती है और पीड़ित के मानवाधिकारों का उल्लंघन करती है। समाज में इसके प्रति शून्य सहनशीलता आवश्यक है।

176. (B) किसी व्यक्ति को उसकी 'निम्न' जन्म स्थिति के कारण सामाजिक बहिष्कार का सामना करना पड़ना।
जाति पर आधारित असमानता का सबसे क्रूर उदाहरण वह भेदभाव है जो व्यक्ति को उसकी जन्म की स्थिति के कारण सहन करना पड़ता है। चूंकि जाति एक बंद स्तरीकरण प्रणाली है, अतः इसमें 'निम्न' मानी जाने वाली जातियों के लोगों को प्रायः सामाजिक कार्यक्रमों से पृथक रखा जाता है। यह भेदभाव व्यक्ति की योग्यता पर नहीं, बल्कि केवल उसके जन्म के 'आरोपण' पर आधारित होता है। यह सामाजिक न्याय के सिद्धांतों के विरुद्ध है और समाज में विभाजन एवं असमानता को स्थाई और संस्थागत बनाता है।

177. (C) ऊर्ध्वमुखी गतिशीलता
ऊर्ध्वमुखी गतिशीलता वह प्रक्रिया है जिसमें कोई व्यक्ति या समूह सामाजिक पदानुक्रम में अपने वर्तमान स्तर से ऊपर की ओर अग्रसर होता है। जब कोई व्यक्ति अपनी आर्थिक उपलब्धियों या शिक्षा के माध्यम से निम्न सामाजिक वर्ग से उच्च वर्ग में पहुँचता है, तो यह ऊर्ध्वमुखी गतिशीलता का उदाहरण है। यह दर्शाता है कि समाज में उन्नति के अवसर उपलब्ध हैं और व्यक्ति अपनी मेहनत से स्थिति सुधार सकता है। ऐसी गतिशीलता समाज के खुलेपन का संकेत है, जो व्यक्तिगत विकास को प्रोत्साहित करती है।

178. (A) कथन I और कथन II दोनों सत्य हैं।
सामाजिक परिवर्तन को समझने हेतु रैखिक और चक्रीय दोनों सिद्धांत महत्वपूर्ण दृष्टिकोण प्रदान करते हैं। रैखिक सिद्धांत मानता है कि समाज निरंतर विकास के उच्च और श्रेष्ठ चरणों की ओर एक सीधी रेखा में प्रगति करता है। इसके विपरीत, चक्रीय सिद्धांत यह सुझाव देता है कि इतिहास स्वयं को दोहराता है और समाज उत्थान एवं पतन के आवर्ती चरणों से गुजरते हैं। ये दोनों सिद्धांत सामाजिक विकास के भिन्न ऐतिहासिक प्रतिरूपों को स्पष्ट करने में सहायक होते हैं और परिवर्तन की जटिलता को दर्शाते हैं।

179. (B) क्षेत्रीय वैमनस्य
नदी जल के बंटवारे को लेकर दो राज्यों के मध्य संघर्ष क्षेत्रीय वैमनस्य का एक विशिष्ट उदाहरण है। यह तनाव तब उत्पन्न होता है जब संसाधनों के उपयोग को लेकर भिन्न क्षेत्रों या राज्यों के मध्य प्रतिस्पर्धा और अविश्वास बढ़ता है। क्षेत्रीय वैमनस्य प्रायः आर्थिक हितों और राजनीतिक स्वायत्तता की भावना से प्रेरित होता है। यह स्थिति न केवल संबंधित राज्यों के संबंधों को प्रभावित करती है, बल्कि राष्ट्रीय एकता और सहकारी संघवाद के ढांचे हेतु चुनौतियां उत्पन्न करती है। इसे संवाद द्वारा हल किया जाना चाहिए।

180. (C) प्राथमिक समाजीकरण
प्राथमिक समाजीकरण वह अत्यंत महत्वपूर्ण प्रक्रिया है जो व्यक्ति के जीवन के प्रारंभिक वर्षों के दौरान परिवार के वातावरण में घटित होती है। इसी चरण में बालक अपनी भाषा, बुनियादी संस्कार और सामाजिक व्यवहार के प्राथमिक नियम सीखता है। परिवार के सदस्य बालक हेतु विश्व का प्रथम चेहरा होते हैं, और उनके द्वारा सिखाए गए पाठ व्यक्तित्व की स्थाई नींव रखते हैं। चूंकि यह शिक्षा व्यक्ति के भविष्य के सभी सामाजिक अनुभवों का आधार बनती है, अतः इसे सर्वाधिक प्रभावशाली समाजीकरण माना जाता है।

181. (A) समाज की एक विशेषता है, न कि केवल व्यक्तियों की।
सामाजिक स्तरीकरण की एक मुख्य विशेषता यह है कि यह किसी व्यक्ति विशेष का गुण नहीं है, बल्कि यह पूरे समाज की एक संगठित और संरचित व्यवस्था है। यह समाज को भिन्न श्रेणियों और स्तरों में विभाजित करती है जो पीढ़ियों तक बने रहते हैं। स्तरीकरण यह सुनिश्चित करता है कि संसाधनों का वितरण एक निश्चित प्रतिरूप के अनुसार हो। यद्यपि व्यक्ति इसमें अपनी स्थिति बदल सकते हैं, किंतु यह प्रणाली स्वयं स्थिर रहती है। यह समाज की गहराई में समाहित एक संस्थागत वास्तविकता है।

182. (B) प्रभुत्वशाली समूहों द्वारा दमन और शोषण का एक साधन।
सामाजिक स्तरीकरण का संघर्ष सिद्धांत मानता है कि समाज में मौजूद असमानता कोई प्राकृतिक व्यवस्था नहीं है। इसके स्थान पर, यह प्रभुत्वशाली समूहों द्वारा अपनी शक्ति और संसाधनों पर नियंत्रण बनाए रखने हेतु निर्मित एक उपकरण है। यह सिद्धांत तर्क देता है कि स्तरीकरण के माध्यम से शक्तिशाली लोग निर्बल वर्गों का शोषण करते हैं, जिससे समाज में निरंतर असंतोष और वर्ग संघर्ष की स्थिति बनी रहती है। यह स्तरीकरण को सामाजिक अन्याय और सत्ता के दुरुपयोग के रूप में विश्लेषित करता है।

183. (B) विसरण
स्मार्टफोन का विश्व भर में तीव्रता से प्रसार विसरण के माध्यम से होने वाले सामाजिक परिवर्तन का एक सशक्त उदाहरण है। विसरण वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा एक समाज की तकनीक या नवाचार दूसरे समाजों में पहुँचते हैं और उनकी जीवन शैली को परिवर्तित कर देते हैं। स्मार्टफोन ने न केवल संचार के विधियों को बदला है, बल्कि इसने शिक्षा और व्यापार के नवीन प्रतिमान स्थापित किए हैं। यह तकनीकी प्रसार दर्शाता

NODIA

है कि कैसे वैश्वीकरण के युग में एक नवीन आविष्कार वैश्विक सामाजिक व्यवस्था को प्रभावित कर सकता है।

184. (A) व्यापक सांस्कृतिक बहुलवाद के बीच राष्ट्रीय एकीकरण।
"विविधता में एकता" की अवधारणा भारतीय अनुभव का सबसे सटीक वर्णन करती है, जहाँ अनेक भाषाओं और विविध समुदायों के बावजूद एक साझा राष्ट्रीय चेतना विद्यमान है। यह बहुलवाद को दबाने के स्थान पर उसे स्वीकार करती है और मानती है कि सांस्कृतिक विविधता देश की एकता को सुदृढ़ करती है। यह विभिन्न समूहों के मध्य सामंजस्यपूर्ण सह-अस्तित्व और साझा लोकतांत्रिक मूल्यों के प्रति उनकी प्रतिबद्धता को दर्शाती है। यह एकता उस आंतरिक सूत्र की भांति है जो विविध पहचानों को एकजुट रखती है।

185. (D) लैंगिक असमानता और पारिवारिक कलह
दहेज हेतु किया जाने वाला उत्पीड़न समाज में व्याप्त गहरी लैंगिक असमानता और पारिवारिक कलह का एक विकृत रूप है। यह प्रथा इस पितृसत्तात्मक मानसिकता को दर्शाती है कि महिलाओं का मूल्य केवल उनके साथ आने वाली संपत्ति से आंका जाता है। जब परिवार के भीतर धन की मांग को मानवीय गरिमा से ऊपर रखा जाता है, तो यह गंभीर कलह और हिंसा का कारण बनता है। यह न केवल महिलाओं के अधिकारों का हनन है, बल्कि यह परिवार की संस्था और सामाजिक नैतिकता पर भी एक कलंक है।

186. (B) वयस्क समाजीकरण
वयस्क समाजीकरण वह निरंतर प्रक्रिया है जिसके माध्यम से व्यक्ति अपने जीवन के उत्तरार्ध में नवीन सामाजिक भूमिकाओं और उत्तरदायित्वों को सीखता है। जैसे-जैसे व्यक्ति जीवन के भिन्न चरणों, जैसे विवाह या नवीन व्यवसाय, से गुजरता है, उसे अपने व्यवहार में परिवर्तन करना पड़ता है। यह प्रक्रिया दर्शाती है कि समाजीकरण केवल बाल्यकाल तक सीमित नहीं है। यह व्यक्ति को समाज की बदलती मांगों और नवीन परिस्थितियों के साथ सफलतापूर्वक सामंजस्य स्थापित करने में सहायता करती है, जो व्यक्तित्व विकास का अंग है।

187. (C) सामाजिक विभेदीकरण
जाति, वर्ग और लिंग सामाजिक स्तरीकरण के वास्तविक रूप हैं क्योंकि ये समाज में श्रेणीबद्ध असमानता उत्पन्न करते हैं। इसके विपरीत, सामाजिक विभेदीकरण केवल समाज के भीतर मौजूद अंतरों को पहचानने की प्रक्रिया है। विभेदीकरण हमें बताता है कि लोग एक-दूसरे से भिन्न हैं, किंतु यह उन्हें उच्च-नीच के क्रम में नहीं रखता। जब इन अंतरों के साथ श्रेष्ठता का भाव जुड़ जाता है और संसाधनों का असमान वितरण होता है, तभी वह स्तरीकरण का रूप लेता है। अतः विभेदीकरण स्तरीकरण से भिन्न प्रक्रिया है।

188. (A) समाज में असमानता क्यों है?
सामाजिक स्तरीकरण के सिद्धांत समाजशास्त्र के उस मौलिक प्रश्न का उत्तर खोजने का प्रयास करते हैं कि समाज में असमानता क्यों विद्यमान है और यह पीढ़ियों तक कैसे बनी रहती है। ये सिद्धांत विश्लेषण करते हैं कि धन, शक्ति और प्रतिष्ठा का वितरण समाज में किस आधार पर होता है। कुछ विद्वान इसे समाज हेतु आवश्यक मानते हैं, जबकि अन्य इसे शोषण का साधन मानते हैं। इन सिद्धांतों का अध्ययन हमें समाज की आंतरिक संरचना, वर्गों के मध्य संबंधों और सामाजिक न्याय की चुनौतियों को समझने में सहायता करता है।

189. (D) उद्विकास
उद्विकास सामाजिक परिवर्तन की वह प्रक्रिया है जिसमें समाज लंबी अवधि के दौरान धीरे-धीरे और क्रमिक रूप से परिवर्तित होता है। इस दौरान सामाजिक संस्थाओं और मानदंडों में सरलता से जटिलता की ओर विकास होता है। यह परिवर्तन अकस्मात नहीं होता, बल्कि एक निरंतर चलने वाली प्रक्रिया है जिसके माध्यम से समाज नवीन चुनौतियों के प्रति अनुकूलित होता है। उद्विकास समाज के परिपक्व होने और उसकी संरचना के अधिक परिष्कृत होने को दर्शाता है। यह स्पष्ट करता है कि समाज समय के साथ कैसे स्वाभाविक रूप से सुधरते हैं।

190. (A) कथन (A) और कारण (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
निर्धनता को केवल आय की कमी के रूप में देखना अपूर्ण होगा; यह वास्तव में एक गहरा सामाजिक-सांस्कृतिक विषय है। निर्धनता एक वंचना की स्थिति है जो प्रायः व्यक्ति को शिक्षा, स्वास्थ्य और सामाजिक भागीदारी जैसे महत्वपूर्ण संसाधनों से पृथक कर देती है। यह सामाजिक संरचनाओं द्वारा निर्मित एक ऐसा चक्र है जहाँ अवसरों की न्यूनता एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक निर्धनता को बनाए रखती है। सामाजिक बहिष्कार इसे और अधिक जटिल बनाता है। अतः निर्धनता का समाधान केवल आर्थिक सहायता नहीं, बल्कि संरचनात्मक सुधार है।

191. (B) पारंपरिक मूल्य बनाम आधुनिक जीवन शैली।
आधुनिक परिवारों में अंतर-पीढ़ीगत संघर्ष का प्रमुख कारण पुरानी पीढ़ी के पारंपरिक मूल्यों और युवा पीढ़ी की आधुनिक जीवन शैली के मध्य होने वाला वैचारिक टकराव है। माता-पिता प्रायः परंपरा और रीति-रिवाजों को अधिक महत्व देते हैं, जबकि संतानें व्यक्तिगत स्वतंत्रता और व्यवसाय के नवीन विकल्पों की ओर आकर्षित होती हैं। तीव्र तकनीकी और सामाजिक परिवर्तनों ने इस अंतराल को और अधिक बढ़ा दिया है। यह संघर्ष पीढ़ियों के मध्य समझ के अभाव और बदलती सामाजिक प्राथमिकताओं को स्पष्ट रूप से दर्शाता है।

192. (B) विभिन्न सांस्कृतिक उत्पत्ति वाले दो समूहों के बीच संघर्ष।
नृजातीय वैमनस्य की जड़ें उन संघर्षों में होती हैं जो दो या अधिक समूहों के मध्य उनकी विशिष्ट सांस्कृतिक या धार्मिक पहचान के आधार पर उत्पन्न होते हैं। यह वैमनस्य प्रायः तब बढ़ता है जब समूहों को लगता है कि उनकी पहचान संकट में है या उन्हें संसाधनों में उचित भाग नहीं मिल रहा है। यह साझा इतिहास और सामूहिक गौरव की भावनाओं से संबद्ध होता है। नृजातीय संघर्ष समाज में विभाजन उत्पन्न करते हैं और इनके समाधान हेतु सांस्कृतिक विविधता के प्रति सम्मान और आपसी संवाद अनिवार्य है।

Click Here to Buy book on Amazon

193. (C) पुनः समाजीकरण
पुनः समाजीकरण वह गहन प्रक्रिया है जिसमें व्यक्ति को एक नवीन और भिन्न परिवेश में सफलतापूर्वक रहने हेतु अपनी पूर्व आदतों और पहचान को त्यागना पड़ता है। यह प्रायः तब होता है जब कोई व्यक्ति 'पूर्ण संस्थानों' जैसे सैन्य प्रशिक्षण, सुधार गृहों या किसी पूर्णतः भिन्न संस्कृति में प्रवेश करता है। इस प्रक्रिया में व्यक्ति को नवीन नियमों और व्यवहारों को अत्यंत तीव्रता से आत्मसात करना होता है। यह सीखने की एक ऐसी अवस्था है जो व्यक्ति के व्यक्तित्व और उसकी सामाजिक पहचान को पूर्णतः नवीन रूप प्रदान करती है।

194. (B) सामाजिक स्तरीकरण
सामाजिक स्तरीकरण उस व्यवस्थित सामाजिक पदानुक्रम को संदर्भित करता है जिसमें समाज के सदस्यों को शक्ति, धन और प्रतिष्ठा के आधार पर भिन्न श्रेणियों में विभाजित किया जाता है। यह एक ऐसी संरचित व्यवस्था है जो पीढ़ियों तक बनी रहती है और निर्धारित करती है कि किन समूहों के पास संसाधनों तक अधिक पहुँच होगी। स्तरीकरण के माध्यम से समाज में श्रेष्ठता का भाव संस्थागत रूप ले लेता है। यह सामाजिक संरचना का अनिवार्य अंग है जो समाज के भीतर असमानता के प्रतिरूप को स्पष्ट रूप से दर्शाता है।

195. (A) P-3, Q-4, R-2, S-1
समाज में वैमनस्य के भिन्न रूप भिन्न सामाजिक संदर्भों में प्रकट होते हैं। घरेलू हिंसा परिवार के भीतर होने वाले शोषण को दर्शाती है। अंतर-पीढ़ीगत संघर्ष परिवार में माता-पिता और संतानों के मध्य वैचारिक टकराव है। क्षेत्रीय वैमनस्य संसाधनों हेतु भिन्न क्षेत्रों या राज्यों के मध्य होने वाले विवादों को संदर्भित करता है। धार्मिक वैमनस्य भिन्न मतों के अनुयायियों के मध्य संघर्ष का परिणाम है। इन मुद्दों का अध्ययन समाज में शांति स्थापित करने की चुनौतियों को समझने में सहायता करता है।

196. (C) समाजीकरण
समाजीकरण वह मौलिक सामाजिक प्रक्रिया है जो पीढ़ियों के मध्य सामाजिक स्तरीकरण और सांस्कृतिक मूल्यों को बनाए रखने में केंद्रीय भूमिका निभाती है। इसी प्रक्रिया के माध्यम से बालक अपने परिवार की सामाजिक स्थिति और जाति के मानदंडों को सीखते हैं। समाजीकरण यह सुनिश्चित करता है कि समाज के नियम नवीन पीढ़ी को हस्तांतरित हों, जिससे सामाजिक संरचना में निरंतरता बनी रहती है। यह व्यक्ति को उसके सामाजिक परिवेश के अनुरूप ढालने का कार्य करता है, जो विद्यमान असमानता और स्तरीकरण को स्थायित्व प्रदान करता है।

197. (B) रैखिक
सामाजिक परिवर्तन का रैखिक सिद्धांत मानता है कि समाज निरंतर एक ही दिशा में अग्रसर होता है, जो प्रायः प्रगति की ओर होता है। इस दृष्टिकोण के अनुसार, समाज अपनी आदिम अवस्था से अधिक जटिल और तर्कसंगत अवस्था की ओर विकसित होता है। यह सिद्धांत मानता है कि परिवर्तन एक क्रमिक प्रक्रिया है जो समाज को बेहतर भविष्य की ओर ले जाती है। यह तकनीकी उन्नति और सामाजिक संस्थाओं के आधुनिकीकरण को इस प्रगति का मुख्य चालक मानता है, जो समाज की बेहतरी का सूचक है।

198. (A) धार्मिक विविधता
भारत में धर्मनिरपेक्षता का मॉडल इसकी विशाल धार्मिक विविधता को सुरक्षित रखने और उसे फलने-फूलने का अवसर प्रदान करने हेतु निर्मित किया गया है। यह राज्य द्वारा सभी धर्मों को समान सम्मान देने और उनके मध्य निष्पक्षता बनाए रखने पर आधारित है। यह मॉडल स्वीकार करता है कि भारत भिन्न धार्मिक आस्थाओं का देश है और राष्ट्रीय एकता हेतु इनके मध्य आपसी सद्भाव अनिवार्य है। यह विविधता को चुनौती के स्थान पर राष्ट्र की सांस्कृतिक समृद्धि के रूप में देखता है और सभी समुदायों के अधिकारों की रक्षा करता है।

199. (A) इसकी दरों, कारणों और सामाजिक प्रभाव का विश्लेषण।
समाजशास्त्र 'विवाह विच्छेद' को केवल व्यक्तिगत दुःख के रूप में नहीं, बल्कि सामाजिक विषय के रूप में देखता है। शोधकर्ता विश्लेषण करते हैं कि समाज में इसकी दरें क्यों परिवर्तित हो रही हैं और इसके पीछे कौन से सामाजिक-सांस्कृतिक कारण उत्तरदायी हैं। यह परिवार की संस्था पर इसके व्यापक प्रभावों और बालकों के समाजीकरण पर पड़ने वाले प्रभाव का भी अध्ययन करता है। समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण इसे एक सामूहिक परिघटना के रूप में समझकर समाज की बदलती नैतिकता और संरचना को स्पष्ट करता है।

200. (A) केवल 1 और 2
समाजीकरण वह मौलिक प्रक्रिया है जिसके द्वारा एक जैविक शिशु समाज के मानदंडों को सीखकर एक सामाजिक प्राणी के रूप में विकसित होता है। इस प्रक्रिया में परिवार, विद्यालय और मित्र समूह जैसे भिन्न अभिकरण अपनी भूमिका निभाते हैं। पुनः समाजीकरण के विषय में यह कहना त्रुटिपूर्ण है कि यह भविष्य की भूमिका सीखने की प्रक्रिया है; वास्तव में वह 'प्रत्याशित समाजीकरण' है। पुनः समाजीकरण का अर्थ पूर्व पहचान त्यागकर पूर्णतः नवीन मानदंडों को अपनाना है। अतः चरणों को समझना आवश्यक है।

201. (B) सामाजिक स्तरीकरण
पदानुक्रम की अवधारणा सामाजिक स्तरीकरण का केंद्र है, जो समाज के सदस्यों को श्रेष्ठता और हीनता के एक व्यवस्थित क्रम में रखने को संदर्भित करती है। यह व्यवस्था निर्धारित करती है कि समाज के भिन्न समूहों के पास शक्ति और संसाधनों तक पहुँच का स्तर क्या होगा। स्तरीकरण पदानुक्रम के माध्यम से असमानता को संस्थागत रूप देता है, जिससे समाज में विभाजित स्तर निर्मित होते हैं। यह विभेदीकरण से आगे की स्थिति है क्योंकि इसमें श्रेणियों की उच्च-नीच और संरचित असमानता सम्मिलित होती है।

202. (C) कथन I असत्य है, लेकिन कथन II सत्य है।
वर्ग प्रणाली को सैद्धांतिक रूप से 'खुली' माना जाता है, किंतु यह कहना त्रुटिपूर्ण है कि यह पूर्णतः खुली है। वास्तव में, व्यक्ति की सामाजिक वर्ग पृष्ठभूमि उसके जीवन के अवसरों, जैसे गुणवत्तापूर्ण शिक्षा और स्वास्थ्य सेवाओं तक पहुँच को

NODIA

गहराई से प्रभावित करती है। एक धनी वर्ग में जन्म लेने वाले बालक के पास उन्नति के अवसर निर्धन पृष्ठभूमि वाले बालक की तुलना में अधिक होते हैं। अतः वर्ग व्यवस्था में गतिशीलता संभव तो है, किंतु सामाजिक संरचना की बाधाएं इसे कठिन बना देती हैं।

203. (C) क्रांति
क्रांति सामाजिक परिवर्तन का वह सर्वाधिक तीव्र रूप है जिसमें मौजूदा सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक व्यवस्था का पूर्ण रूपांतरण होता है। यह क्रमिक सुधारों के विपरीत अत्यंत गहराई से समाज को प्रभावित करती है और एक नवीन सामाजिक संरचना को स्थापित करती है। क्रांति का मुख्य लक्ष्य शक्ति के पुराने केंद्रों को विनष्ट करना और समाज के संगठनात्मक सिद्धांतों को मौलिक रूप से परिवर्तित करना होता है। यह समाज के इतिहास में एक निर्णायक मोड़ है जो एक पूर्णतः नवीन युग के प्रारंभ का प्रतीक बनता है।

204. (C) विविधता में एकता
भाषाई, धार्मिक और जनजातीय बहुलवाद का कुशल प्रबंधन भारतीय राष्ट्र के "विविधता में एकता" के विचार की कुंजी है। यह अवधारणा स्वीकार करती है कि भारत के भिन्न समुदायों की अपनी अनूठी पहचान है और इनका सम्मान करना ही राष्ट्रीय सुदृढ़ता का आधार है। यह बहुलवाद को एक चुनौती के स्थान पर एक ऐसी शक्ति के रूप में देखता है जो भारत के सामाजिक ताने-बाने को अधिक समृद्ध बनाती है। इन विविधताओं के मध्य सामंजस्यपूर्ण संतुलन बनाए रखना ही भारतीय लोकतंत्र की सफलता है।

205. (A) लैंगिक स्तरीकरण
लैंगिक स्तरीकरण समाज में पुरुषों और महिलाओं के मध्य शक्ति, धन और सामाजिक प्रतिष्ठा के असमान वितरण को संदर्भित करता है। यह एक ऐसी व्यवस्था है जो जैविक अंतरों को सामाजिक असमानता में परिवर्तित कर देती है, जहाँ एक लिंग को दूसरे पर प्राथमिकता प्रदान की जाती है। यह स्तरीकरण शिक्षा, रोजगार और घरेलू उत्तरदायित्वों के क्षेत्र में स्पष्ट रूप से प्रकट होता है। यह पितृसत्तात्मक मानदंडों द्वारा संचालित होता है जो महिलाओं के अवसरों को सीमित करते हैं। इसे समझना समानता हेतु अनिवार्य है।

206. (B) पुनः समाजीकरण
सेना में एक नवीन सैनिक को प्राप्त होने वाला प्रशिक्षण पुनः समाजीकरण की प्रक्रिया का सटीक उदाहरण है। इस प्रक्रिया में व्यक्ति को अपने पूर्व नागरिक व्यवहारों और पहचान को त्यागकर सैन्य जीवन के कठोर अनुशासन और विशिष्ट मानदंडों को अपनाना होता है। यहाँ व्यक्ति की पहचान को एक नवीन और नियंत्रित वातावरण में पुनर्गठित किया जाता है ताकि वह अपनी नवीन भूमिका को निष्ठा से निभा सके। यह सीखने की अत्यंत गहन अवस्था है जो व्यक्तित्व को संस्थागत अपेक्षाओं के अनुरूप परिवर्तित कर देती है।

207. (D) वर्ग
वर्ग प्रणाली सामाजिक स्तरीकरण का वह रूप है जो अर्जित स्थिति से सर्वाधिक गहराई से संबद्ध है। जाति के विपरीत, जहाँ व्यक्ति की स्थिति जन्म से निश्चित और अपरिवर्तनीय होती है, वर्ग प्रणाली में व्यक्ति अपनी शिक्षा, कौशल और आर्थिक उपलब्धियों के माध्यम से अपनी सामाजिक स्थिति प्राप्त कर सकता है। यह एक खुली व्यवस्था है जो ऊर्ध्वमुखी सामाजिक गतिशीलता को प्रोत्साहित करती है। अर्जित स्थिति पर आधारित होने के कारण ही यह आधुनिक और प्रगतिशील समाजों की एक प्रमुख विशेषता मानी जाती है।

208. (A) अंतर-पीढ़ीगत ऊर्ध्वमुखी गतिशीलता
जब किसी परिवार की अगली पीढ़ी अपने माता-पिता की तुलना में उच्च सामाजिक या आर्थिक स्थिति प्राप्त करती है, तो इसे अंतर-पीढ़ीगत ऊर्ध्वमुखी गतिशीलता कहा जाता है। एक अकुशल श्रमिक के बालक का चिकित्सक बनना इस गतिशीलता का उत्कृष्ट उदाहरण है। यह दर्शाता है कि उस समाज में शिक्षा और व्यक्तिगत योग्यता के माध्यम से अपनी पारिवारिक पृष्ठभूमि की सीमाओं को पार करने की संभावना विद्यमान है। ऐसी गतिशीलता समाज के खुलेपन और व्यक्तियों को समान अवसर प्रदान करने की क्षमता को प्रदर्शित करती है।

209. (A) एक संघर्ष सिद्धांत
सामाजिक परिवर्तन का संघर्ष सिद्धांत मानता है कि समाज परस्पर विरोधी हितों वाले भिन्न समूहों में विभाजित है और इनके मध्य होने वाला तनाव ही परिवर्तन का मुख्य कारण है। यह सिद्धांत तर्क देता है कि संसाधनों और शक्ति पर नियंत्रण हेतु समूहों के मध्य निरंतर संघर्ष चलता रहता है। जब शोषित वर्ग मौजूदा व्यवस्था को चुनौती देता है, तो सामाजिक संरचना में मौलिक बदलाव आते हैं। यह दृष्टिकोण परिवर्तन को सामाजिक प्रगति हेतु अनिवार्य मानता है, जो असमानता को दूर करने हेतु आवश्यक है।

NODIA

210. (A) दहेज संबंधी घरेलू हिंसा
एक युवती को दहेज हेतु प्रताड़ित करना दहेज संबंधी घरेलू हिंसा का गंभीर मामला है, जो भारत में एक विकराल सामाजिक समस्या बनी हुई है। यह पितृसत्तात्मक मानसिकता का परिणाम है, जहाँ महिला को केवल संपत्ति प्राप्ति का साधन माना जाता है। यह हिंसा न केवल पीड़ित के शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य को विनष्ट करती है, बल्कि परिवार की संस्था की पवित्रता पर भी प्रहार करती है। यह लैंगिक असमानता की चरम अभिव्यक्ति है, जिसे मिटाने हेतु सख्त कानून और सामाजिक जागरूकता अनिवार्य है।

211. (B) परिवार
परिवार को समाजीकरण का प्राथमिक और सर्वाधिक महत्वपूर्ण अभिकरण माना जाता है क्योंकि बालक विश्व की अपनी प्रथम समझ यहीं से प्राप्त करता है। माता-पिता और अन्य सदस्य बालक को भाषा, व्यवहार के बुनियादी तरीके और समाज के मौलिक मूल्यों की शिक्षा प्रदान करते हैं। परिवार द्वारा दी गई यह प्रारंभिक शिक्षा व्यक्तित्व की नींव रखती है और भविष्य के सामाजिक दृष्टिकोण को प्रभावित करती है।

चूंकि परिवार का प्रभाव अत्यंत गहरा और स्थाई होता है, अतः इसे प्राथमिक समाजीकरण का मुख्य केंद्र माना जाता है।

212. (B) संरचित असमानता और पदानुक्रम
सामाजिक विभेदीकरण केवल समाज में व्यक्तियों या समूहों के मध्य मौजूद विविधताओं को दर्शाता है, किंतु यह उन्हें अनिवार्य रूप से उच्च-नीच के क्रम में नहीं रखता। इसके विपरीत, सामाजिक स्तरीकरण इन अंतरों के आधार पर एक व्यवस्थित पदानुक्रम और संरचित असमानता का निर्माण करता है। स्तरीकरण में संसाधनों, शक्ति और प्रतिष्ठा का वितरण पदानुक्रम के अनुसार असमान रूप से होता है। अतः संरचित असमानता ही वह तत्व है जो साधारण सामाजिक अंतरों को एक संस्थागत श्रेणीबद्ध व्यवस्था में परिवर्तित कर देती है।

213. (B) रूपांतरण
औद्योगिक क्रांति सामाजिक रूपांतरण का एक युगांतरकारी उदाहरण है जिसने मानव समाज के स्वरूप को पूर्णतः परिवर्तित कर दिया। इस प्रक्रिया ने न केवल उत्पादन के विधियों को बदला, बल्कि इसने कृषि आधारित समाज को औद्योगिक समाज में रूपांतरित कर दिया। इसके परिणामस्वरूप सामाजिक संबंधों, नगरीकरण और वर्ग संरचना में गहरे बदलाव आए। रूपांतरण उस आमूलचूल परिवर्तन को दर्शाता है जो समाज की पुरानी संस्थाओं के स्थान पर पूर्णतः नवीन और अधिक जटिल प्रणालियों को स्थापित कर देता है।

214. (B) कई विविध समूहों और समुदायों का समुच्चय।
"भारत के लोग" की अवधारणा इस तथ्य पर बल देती है कि भारत एक सजातीय राष्ट्र नहीं है, बल्कि यह अनेक भाषाओं, धर्मों और जातियों वाले अनगिनत समुदायों का एक विशाल संगम है। यह शब्द भारतीय राष्ट्र की उस बहुलवादी पहचान को स्वीकार करता है जहाँ भिन्न समूह अपनी विशिष्टता बनाए रखते हुए भी साझा राष्ट्रीय ताने-बाने का अंग हैं। यह समुदायों के आपसी सह-अस्तित्व और उनकी विविधता को भारतीय राष्ट्रवाद की वास्तविक शक्ति के रूप में मान्यता प्रदान करने वाली एक महत्वपूर्ण अवधारणा है।

215. (A) 3, 4, 2, 1
व्यक्ति के जीवन पथ पर समाजीकरण के अभिकरणों का प्रभाव एक निश्चित क्रम में विकसित होता है। सर्वप्रथम परिवार प्राथमिक समाजीकरण के माध्यम से व्यक्तित्व की नींव रखता है। तत्पश्चात बालक विद्यालय के औपचारिक वातावरण में प्रवेश करता है जहाँ वह नवीन कौशल सीखता है। किशोरावस्था के दौरान मित्र समूह सामाजिक पहचान विकसित करने में अधिक प्रभावशाली हो जाते हैं। अंत में, कार्यस्थल वयस्क समाजीकरण का मुख्य केंद्र बनता है जहाँ व्यक्ति व्यावसायिक भूमिकाएं सीखता है। यह क्रम विकास के चरणों को दर्शाता है।

216. (A) निर्धनता
निर्धनता एक गंभीर सामाजिक-सांस्कृतिक विषय है जो समाज में व्याप्त गहरी आर्थिक और सामाजिक असमानता से उत्पन्न होता है। यह केवल आय की न्यूनता नहीं है, बल्कि यह वंचना की वह स्थिति है जो व्यक्ति को बेहतर शिक्षा और सम्मानजनक जीवन के अवसरों से वंचित कर देती है। निर्धनता व्यक्ति को सामाजिक पदानुक्रम में निम्नतम स्तर पर धकेल देती है और उसे मुख्यधारा से पृथक कर देती है। यह असमानता का ऐसा रूप है जो पीढ़ियों तक बना रहता है और समाज के समग्र विकास के मार्ग में बड़ी बाधा है।

217. (B) अंतर-पीढ़ीगत संघर्ष
अंतर-पीढ़ीगत संघर्ष का तात्पर्य परिवार के भीतर पुरानी और नवीन पीढ़ी के मध्य होने वाले वैचारिक मतभेदों से है। विवाह के चुनाव जैसे विषय इस संघर्ष की आम अभिव्यक्ति हैं। माता-पिता प्रायः परंपरा और सामाजिक प्रतिष्ठा को प्राथमिकता देते हैं, जबकि संतानें अपनी व्यक्तिगत पसंद और स्वतंत्रता को अधिक महत्व देती हैं। यह टकराव बदलती सामाजिक नैतिकता और पीढ़ियों के मध्य के मूल्यों के अंतराल को स्पष्ट रूप से उजागर करता है। तीव्र सामाजिक परिवर्तन इस संघर्ष को और अधिक बढ़ाने का कार्य करते हैं।

218. (B) लैंगिक समाजीकरण
लैंगिक समाजीकरण वह निरंतर प्रक्रिया है जिसके माध्यम से व्यक्ति समाज द्वारा पुरुषों और महिलाओं हेतु निर्धारित भूमिकाओं और व्यवहार के तरीकों को सीखता है। यह प्रक्रिया जन्म से ही प्रारंभ हो जाती है जब परिवार और समाज बालकों को भिन्न संदेश प्रदान करते हैं। इसके माध्यम से ही व्यक्ति अपनी लैंगिक पहचान विकसित करता है और समझता है कि समाज उससे क्या अपेक्षा रखता है। यह समाजीकरण न केवल व्यक्तित्व को गढ़ता है, बल्कि समाज में लैंगिक पदानुक्रम और असमानता को भी बनाए रखने का कार्य करता है।

219. (B) व्यवहारतः नगण्य या अत्यंत कठिन।
एक शुद्ध जाति व्यवस्था सामाजिक स्तरीकरण की अत्यंत कठोर और बंद प्रणाली है। इसमें व्यक्ति की सामाजिक स्थिति जन्म के साथ ही पूर्णतः निर्धारित हो जाती है, जिसे वह अपने जीवनकाल में किसी भी प्रयास या आर्थिक सफलता के माध्यम से परिवर्तित नहीं कर सकता। चूंकि यहाँ 'आरोपण' का सिद्धांत कार्य करता है, अतः जातियों के मध्य ऊर्ध्वमुखी या अधोमुखी गतिशीलता व्यवहार में लगभग असंभव होती है। यह व्यवस्था सामाजिक ठहराव को बढ़ावा देती है और व्यक्ति को उसकी जन्मजात श्रेणी में ही सीमित रखती है।

220. (D) कथन (A) असत्य है लेकिन कारण (R) सत्य है।
सामाजिक परिवर्तन को एक सरल और एकसमान प्रक्रिया मानना त्रुटिपूर्ण है। वास्तव में, यह एक अत्यंत जटिल परिघटना है जो समाज के भिन्न भागों को भिन्न दरों और तीव्रता से प्रभावित करती है। परिवर्तन प्रायः पुरानी सामाजिक संस्थाओं और स्थापित नियमों में व्यवधान उत्पन्न करता है, जिससे समाज में तनाव की स्थिति उत्पन्न हो सकती है। जहाँ समाज का एक भाग आधुनिकता को शीघ्रता से अपनाता है, वहीं दूसरा भाग परंपराओं से संबद्ध रह सकता है। यह असमान गति सामाजिक संघर्षों का मुख्य कारण बनती है।

Downloaded from www.pdf.tube

221. (B) चुनाव के बाद सत्तारूढ़ राजनीतिक दल में बदलाव।
संरचना के भीतर परिवर्तन का अर्थ है कि समाज की मूल व्यवस्था और नियम अपरिवर्तित रहते हैं, केवल पदों पर कार्य करने वाले व्यक्ति परिवर्तित हो जाते हैं। चुनाव में एक दल के स्थान पर दूसरे का आना इसका सटीक उदाहरण है क्योंकि शासन की लोकतांत्रिक संरचना वही बनी रहती है। इसके विपरीत, क्रांति या व्यवस्था में परिवर्तन 'संरचना का परिवर्तन' है क्योंकि इनमें समाज के बुनियादी आधार पूर्णतः बदल जाते हैं। अतः पदों का परिवर्तन संरचनात्मक ढांचे में मौलिक बदलाव नहीं लाता है।

222. (B) पारिवारिक वैमनस्य
पारिवारिक वैमनस्य एक व्यापक शब्द है जिसमें परिवार के भीतर होने वाले भिन्न प्रकार के संघर्ष सम्मिलित हैं। घरेलू हिंसा, दहेज के विवाद और पीढ़ियों के मध्य का टकराव इसी वैमनस्य की भिन्न अभिव्यक्तियाँ हैं। ये समस्याएं परिवार की शांति और स्थिरता को सीधे तौर पर प्रभावित करती हैं। पारिवारिक वैमनस्य प्रायः बदलती सामाजिक परिस्थितियों, पितृसत्तात्मक सोच और संवाद की न्यूनता का परिणाम होता है। इन मुद्दों का अध्ययन समाज की बुनियादी इकाई के रूप में परिवार में आ रही चुनौतियों को समझने में सहायता करता है।

223. (A) समाजीकरण
समाजीकरण वह आजीवन चलने वाला सामाजिक अनुभव है जिसके माध्यम से व्यक्ति अपने समाज की संस्कृति को सीखता है और अपनी मानवीय क्षमता को विकसित करता है। यह वह प्रक्रिया है जो एक जैविक शिशु को जागरूक सामाजिक प्राणी में परिवर्तित कर देती है। समाजीकरण के माध्यम से ही व्यक्ति भाषा, मूल्य और अपनी पहचान प्राप्त करता है। यह समाज की निरंतरता बनाए रखने हेतु अनिवार्य है क्योंकि इसी के द्वारा सामाजिक विरासत एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक हस्तांतरित होती है। यह व्यक्तित्व विकास का आधार है।

224. (A) मैक्स वेबर
मैक्स वेबर ने सामाजिक स्तरीकरण का एक बहुआयामी सिद्धांत प्रस्तुत किया जो केवल आर्थिक आधार तक सीमित नहीं था। उन्होंने तर्क दिया कि स्तरीकरण तीन प्रमुख कारकों पर आधारित होता है: वर्ग (आर्थिक स्थिति), प्रस्थिति (सामाजिक सम्मान) और दल (राजनीतिक शक्ति)। वेबर के अनुसार, ये तीनों तत्व परस्पर संबद्ध हो सकते हैं किंतु वे स्वतंत्र रूप से भी समाज में असमानता उत्पन्न करते हैं। उनका यह दृष्टिकोण स्तरीकरण की जटिलता को समझने हेतु समाजशास्त्र में अत्यंत महत्वपूर्ण माना जाता है।

225. (A) P-3, Q-4, R-2, S-1
समाजशास्त्रीय अवधारणाएं समाज के भिन्न पहलुओं को समझने का आधार प्रदान करती हैं। समाजीकरण मानदंडों को सीखने की प्रक्रिया है, जबकि स्तरीकरण संरचित असमानता की प्रणाली है। सामाजिक परिवर्तन समय के साथ संरचनाओं में आने वाले बदलावों को दर्शाता है, और सामाजिक गतिशीलता पदानुक्रम के भीतर व्यक्तियों के आवागमन को संदर्भित करती है। इन अवधारणाओं का परस्पर गहरा संबंध है और ये मिलकर समाज के स्थायित्व और उसकी गतिशील प्रकृति के मध्य के जटिल ताने-बाने को स्पष्ट रूप से रेखांकित करती हैं।

226. (B) रैखिक सिद्धांत
सामाजिक परिवर्तन के चक्रीय और रैखिक सिद्धांत दो विपरीत दृष्टिकोण हैं। चक्रीय सिद्धांत मानता है कि समाज विकास और पतन के दोहराव वाले चक्रों से गुजरता है, जैसे एक जीवन चक्र होता है। इसके विपरीत, रैखिक सिद्धांत प्रस्तावित करता है कि समाज निरंतर एक सीधी दिशा में, प्रायः प्रगति की ओर बढ़ता है। जहाँ चक्रीय सिद्धांत इतिहास के दोहराव पर बल देता है, वहीं रैखिक सिद्धांत परिवर्तन को एक निरंतर विकास मानता है। ये दोनों समाज के ऐतिहासिक विकास को देखने के भिन्न विधियाँ हैं।

227. (B) विविधता में एकता
भारत द्वारा भिन्न धर्मों के त्योहारों को एक साथ मनाना "विविधता में एकता" का एक जीवंत सांस्कृतिक उदाहरण है। यह दर्शाता है कि भारतीय समाज भिन्न धार्मिक आस्थाओं के मध्य आपसी सम्मान और सहिष्णुता को महत्व प्रदान करता है। यह बहुलवादी पहचान राष्ट्रीय एकीकरण का सशक्त माध्यम है, जहाँ भिन्न समुदायों के लोग एक-दूसरे की खुशियों में सम्मिलित होते हैं। यह साझा अनुभव विविधताओं के बावजूद एक ऐसी एकता निर्मित करता है जो भारत की धर्मनिरपेक्ष और लोकतांत्रिक पहचान को सुदृढ़ करती है।

228. (C) कथन I सत्य है, लेकिन कथन II असत्य है।
भारत में घरेलू हिंसा को रोकने हेतु कठोर कानून निर्मित किए गए हैं और इसे आपराधिक अपराध माना गया है। यद्यपि, यह सोचना त्रुटिपूर्ण है कि कानून की उपस्थिति मात्र से यह समस्या पूर्णतः समाप्त हो गई है। घरेलू हिंसा आज भी अनेक परिवारों में व्याप्त है क्योंकि यह गहरी पितृसत्तात्मक सोच और सामाजिक मूल्यों में निहित है। केवल कानूनी कार्रवाई ही पर्याप्त नहीं है, बल्कि इसके लिए व्यापक सामाजिक जागरूकता, दृष्टिकोण में परिवर्तन और पीड़ितों को सहायता प्रदान करने वाली सुदृढ़ व्यवस्था की आवश्यकता है।

NODIA

229. (B) संघर्ष दृष्टिकोण
समाजीकरण का संघर्ष दृष्टिकोण तर्क देता है कि यह प्रक्रिया निष्पक्ष नहीं है, बल्कि इसका उपयोग शक्तिशाली वर्गों द्वारा अपने हितों की रक्षा हेतु किया जाता है। इस परिप्रेक्ष्य के अनुसार, समाजीकरण के माध्यम से ऐसे मूल्यों को सिखाया जाता है जो मौजूदा शक्ति संतुलन का समर्थन करते हैं। यह व्यक्तियों को मौजूदा व्यवस्था के प्रति आज्ञाकारी बनाने का एक साधन है, जिससे असमानता और प्रभुत्व बना रहता है। यह दृष्टिकोण समाजीकरण को सामाजिक नियंत्रण और यथास्थिति बनाए रखने के एक उपकरण के रूप में देखता है।

230. (D) 1, 2, और 3
जाति की असमानता, लिंग की असमानता और निर्धनता भारतीय समाज के तीन प्रमुख और परस्पर संबद्ध समसामयिक मुद्दे हैं। ये तीनों समस्याएं समाज में संसाधनों, शक्ति और अवसरों के असमान वितरण को दर्शाती हैं और सामाजिक न्याय के मार्ग

में बड़ी बाधाएं हैं। जाति और लिंग जहाँ जन्म के आधार पर भेदभाव उत्पन्न करते हैं, वहीं निर्धनता वंचना की वह स्थिति है जो शिक्षा और स्वास्थ्य जैसे मौलिक अधिकारों तक पहुँच को सीमित करती है। एक न्यायपूर्ण और विकसित समाज के निर्माण हेतु इन तीनों का समाधान अनिवार्य है।

231. (A) संरचनात्मक गतिशीलता
संरचनात्मक गतिशीलता सामाजिक गतिशीलता का वह रूप है जो व्यक्ति के व्यक्तिगत प्रयासों के स्थान पर पूरे समाज की आर्थिक संरचना में आए बृहद परिवर्तनों के कारण होती है। उदाहरण के लिए, जब किसी समाज में औद्योगिकीकरण के कारण कृषि के स्थान पर उद्योगों में अधिक रोजगार उत्पन्न होते हैं, तो बड़ी संख्या में लोग कृषि त्यागकर शहरी कार्यों में चले जाते हैं। यह बदलाव व्यक्ति के वश में नहीं होता, बल्कि समाज के व्यापक ढांचागत रूपांतरण का परिणाम होता है। यह दर्शाता है कि बाह्य आर्थिक कारक कैसे प्रभावित करते हैं।

232. (B) मूल्य-आधारित और सुधार का सूचक होता है।
प्रगति सामाजिक परिवर्तन का वह विशिष्ट प्रकार है जिसमें एक दिशात्मकता और सकारात्मक मूल्य निर्णय सम्मिलित होता है। यह केवल 'बदलाव' नहीं है, बल्कि यह उस दिशा में परिवर्तन है जिसे समाज 'सुधार' या 'बेहतरी' के रूप में देखता है। प्रगति की अवधारणा सामाजिक आदर्शों जैसे न्याय, समानता और मानवाधिकारों से प्रेरित होती है। चूंकि यह समाज की आकांक्षाओं को दर्शाता है, अतः इसे मूल्य-तटस्थ शब्दों से पृथक माना जाता है। प्रगति का मुख्य लक्ष्य समाज के कल्याण और मानवीय सुख में वृद्धि करना होता है।

233. (A) क्षेत्रीय विविधता
भारत के भिन्न राज्यों में पाए जाने वाले व्यंजनों, पहनावे और रीति-रिवाजों की विविधता इसकी क्षेत्रीय विविधता का शानदार उदाहरण है। प्रत्येक भौगोलिक क्षेत्र की अपनी विशिष्ट जलवायु और इतिहास होता है, जो वहां के सामाजिक जीवन को एक अनूठा स्वरूप प्रदान करते हैं। यह विविधता भारत की सांस्कृतिक समृद्धि का आधार है और दर्शाती है कि यह देश अनेक संस्कृतियों का संगम है। क्षेत्रीय विविधता को समझना राष्ट्रीय एकता के उस सूत्र को पहचानने हेतु आवश्यक है जो इन विविध रंगों को साझा भारतीय पहचान में पिरोता है।

234. (B) विवाह के संबंध में सामाजिक मानदंडों में बदलाव।
विवाह विच्छेद की बढ़ती दरें समाजशास्त्रियों हेतु महत्वपूर्ण विषय हैं क्योंकि ये विवाह की संस्था के प्रति बदलते सामाजिक दृष्टिकोण को दर्शाती हैं। यह परिवर्तन संकेत प्रदान करता है कि अब लोग वैवाहिक संबंधों में व्यक्तिगत सुख और सम्मान को परंपराओं से अधिक महत्व देने लगे हैं। महिलाओं की बढ़ती आर्थिक स्वतंत्रता और शिक्षा ने भी उन्हें अपमानजनक संबंधों से बाहर निकलने की शक्ति प्रदान की है। अतः ये दरें समाज में व्यक्तिगत स्वतंत्रता के बढ़ते महत्व और पारंपरिक परिवार संरचना में आने वाले बदलावों का प्रतिबिंब हैं।

235. (C) प्राथमिक समाजीकरण
प्राथमिक समाजीकरण वह सबसे मौलिक प्रक्रिया है जो जन्म से ही परिवार के भीतर प्रारंभ होती है। इस चरण में बालक अपने माता-पिता के साथ अंतःक्रिया करके अपनी भाषा, बुनियादी शिष्टाचार और समाज के प्रारंभिक मूल्यों को सीखता है। यह वह समय है जब बालक के व्यक्तित्व की नींव रखी जाती है और वह अपनी प्रथम सामाजिक पहचान प्राप्त करता है। परिवार द्वारा दिए गए ये प्रारंभिक संस्कार व्यक्ति के भविष्य के सभी सामाजिक व्यवहारों और दृष्टिकोणों को गहराई से प्रभावित करने वाले सबसे स्थाई आधार होते हैं।

236. (B) समूहों की श्रेणीबद्ध रैंकिंग
सामाजिक स्तरीकरण की सभी प्रणालियों की अनिवार्य विशेषता समाज के सदस्यों को समूहों में वर्गीकृत करके उन्हें श्रेष्ठता के पदानुक्रम में व्यवस्थित करना है। चाहे वह जाति हो या वर्ग, स्तरीकरण सदैव यह सुनिश्चित करता है कि संसाधनों और शक्ति का वितरण इन श्रेणियों के अनुसार असमान रूप से हो। यह श्रेणीबद्ध रैंकिंग पीढ़ियों तक बनी रहती है और समाज में संरचित असमानता को संस्थागत रूप प्रदान करती है। यह वह ढांचा है जो यह निर्धारित करता है कि समाज में शक्ति और प्रतिष्ठा का स्तर क्या होगा।

237. (B) सामाजिक परिवर्तन
सामाजिक परिवर्तन वह अवधारणा है जो समय के साथ किसी सामाजिक समूह या पूरे समाज की संरचना, संस्थाओं और सांस्कृतिक मूल्यों में होने वाले बदलावों को संदर्भित करती है। यह एक निरंतर प्रक्रिया है जो तकनीकी नवाचारों, संघर्षों या विचारधाराओं से प्रेरित हो सकती है। सामाजिक परिवर्तन का अध्ययन यह समझने में सहायता करता है कि समाज कैसे विकसित होते हैं और पुरानी परंपराएं नवीन रूपों में कैसे परिवर्तित होती हैं। यह समाज की स्थिरता और उसकी गतिशील प्रकृति के मध्य के निरंतर संवाद को स्पष्ट करता है।

238. (B) धार्मिक विविधता
एक ही समाज में भिन्न धार्मिक मान्यताओं और समुदायों का शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व धार्मिक विविधता कहलाता है। भारत में हिंदू, मुस्लिम, सिख और ईसाई जैसे धर्मों का साथ रहना इसकी बहुलवादी पहचान का आधार है। यह विविधता समाज को भिन्न त्योहारों और जीवन शैलियों से समृद्ध बनाती है। धार्मिक विविधता का सम्मान करना और सभी हेतु समान स्वतंत्रता सुनिश्चित करना एक स्वस्थ लोकतंत्र हेतु अनिवार्य है। यह वह शक्ति है जो भिन्न आस्थाओं के मध्य आपसी संवाद के माध्यम से राष्ट्रीय एकता को सुदृढ़ करती है।

239. (C) घरेलू हिंसा
घरेलू हिंसा व्यवहार का वह शोषक प्रतिमान है जिसमें परिवार में एक व्यक्ति शक्ति और नियंत्रण बनाए रखने हेतु दूसरे के विरुद्ध शारीरिक बल या मानसिक उत्पीड़न का प्रयोग करता है। यह केवल व्यक्तिगत विवाद नहीं, बल्कि पीड़ित की स्वतंत्रता और गरिमा का दमन है। इसमें शारीरिक चोट के साथ भावनात्मक और आर्थिक नियंत्रण भी सम्मिलित हो सकता है। घरेलू हिंसा समाज की शांति और परिवार की सुरक्षा हेतु गंभीर

Click Here to Buy book on Amazon

संकट है, जो मानवाधिकारों के उल्लंघन की श्रेणी में आती है। इसके प्रति जागरूकता अनिवार्य है।

240. (D) सामाजिक विभेदीकरण
आयु, लिंग और जाति सामाजिक स्तरीकरण के महत्वपूर्ण रूप हैं क्योंकि ये समाज को पदानुक्रमित श्रेणियों में विभाजित करते हैं और असमानता को जन्म देते हैं। इसके विपरीत, सामाजिक विभेदीकरण केवल समाज के भीतर मौजूद अंतरों को पहचानने की प्रक्रिया है। विभेदीकरण यह तो बताता है कि समूह पृथक हैं, किंतु यह उन्हें अनिवार्य रूप से उच्च-नीच के क्रम में नहीं रखता। जब इन अंतरों के आधार पर संसाधनों का असमान वितरण प्रारंभ होता है, तभी वह स्तरीकरण कहलाता है। अतः विभेदीकरण स्तरीकरण का आधार है।

241. (B) एक नई भूमिका या समूह में उनके संक्रमण को सुगम बनाकर।
प्रत्याशित समाजीकरण व्यक्ति को भविष्य में मिलने वाले पदों हेतु मानसिक रुप से तैयार करने में सहायता करता है। इसमें व्यक्ति उस समूह के मूल्यों और मानदंडों को पूर्व में ही सीखना प्रारंभ कर देता है जिसका वह सदस्य बनना चाहता है। यह प्रक्रिया व्यक्ति के मन से अज्ञात स्थिति के भय को न्यून करती है और उसे नवीन वातावरण में आत्मविश्वास के साथ कार्य करने योग्य बनाती है। इस प्रकार, यह सामाजिक संक्रमण को सुगम और प्रभावी बनाकर व्यक्ति के सफल अनुकूलन को समाज में सुनिश्चित करती है।

242. (C) कथन I सत्य है, लेकिन कथन II असत्य है।
सामाजिक स्तरीकरण विश्व के लगभग सभी समाजों में किसी न किसी रूप में विद्यमान होता है, चाहे वह आदिम हो या आधुनिक। यद्यपि, यह कहना त्रुटिपूर्ण है कि सभी स्तरीकरण प्रणालियां सार्वभौमिक रूप से सहमत मूल्यों पर आधारित होती हैं। वास्तव में, स्तरीकरण प्रायः संघर्ष और शक्ति के दुरुपयोग का परिणाम होता है, जहाँ प्रभुत्वशाली वर्ग अपने हितों के अनुसार नियम निर्मित करते हैं। समाज के निचले वर्गों में इस व्यवस्था के प्रति असंतोष रह सकता है। अतः स्तरीकरण सहमति के स्थान पर प्रायः शक्ति प्रदर्शन है।

243. (C) विसरण
लोकतांत्रिक आदर्शों का विश्व भर में प्रसार विसरण के माध्यम से होने वाले सामाजिक परिवर्तन का प्रमुख उदाहरण है। विसरण वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा एक समाज की विचारधाराएं और राजनीतिक मूल्य संचार के माध्यम से अन्य समाजों तक पहुँचते हैं। लोकतंत्र के प्रति बढ़ती वैश्विक चेतना ने अनेक राष्ट्रों की पारंपरिक राजनीतिक संरचनाओं को परिवर्तित किया है और नागरिक अधिकारों के नवीन प्रतिमान स्थापित किए हैं। यह वैचारिक प्रसार विश्व भर में प्रणालियों के आधुनिकीकरण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

244. (A) असमानता
पीढ़ियों तक निर्धनता का बना रहना समाज में व्याप्त संरचित असमानता का सबसे स्पष्ट परिणाम है। यह असमानता दर्शाती है कि समाज में संसाधनों और उन्नति के अवसरों का वितरण इतना दोषपूर्ण है कि एक निर्धन परिवार हेतु उस चक्र से बाहर निकलना अत्यंत कठिन हो जाता है। यह स्थिति सामाजिक पदानुक्रम को और अधिक कठोर बनाती है और न्यायपूर्ण समाज की स्थापना में बाधा उत्पन्न करती है। पीढ़ियों तक चलने वाली वंचना न केवल आर्थिक समस्या है, बल्कि यह मानवाधिकारों के प्रति एक बड़ी चुनौती है।

245. (C) अंतर-पीढ़ीगत संघर्ष
जब माता-पिता और उनकी संतानों के मध्य व्यक्तिगत स्वतंत्रता या सामाजिक मानदंडों को लेकर परस्पर विरोधी विचार होते हैं, तो यह अंतर-पीढ़ीगत संघर्ष को जन्म देता है। यह संघर्ष पीढ़ियों के मध्य मूल्यों के अंतराल का परिणाम है, जो तीव्र सामाजिक परिवर्तन के कारण और भी गहरा हो जाता है। पुरानी पीढ़ी जहाँ परंपरा और सुरक्षा को महत्व प्रदान करती है, वहीं युवा पीढ़ी आत्म-अभिव्यक्ति और आधुनिकता की ओर आकर्षित होती है। यह टकराव परिवार के भीतर संवाद की कमी और तनाव का प्रमुख कारण बनता है।

246. (C) भिन्नता
सामाजिक विभेदीकरण की अवधारणा समाज में मौजूद उन विविधताओं और अंतरों को संदर्भित करती है जो व्यक्तियों और समूहों को एक-दूसरे से पृथक बनाते हैं। यह लिंग, आयु या व्यवसाय के आधार पर लोगों को केवल श्रेणियों में विभाजित करने की प्रक्रिया है। विभेदीकरण का प्राथमिक उद्देश्य समाज की जटिलता और उसमें मौजूद 'भिन्नता' को पहचानना है। जब तक इन भिन्नताओं के साथ उच्च-नीच का भाव नहीं जुड़ता, तब तक यह पदानुक्रमित स्तरीकरण नहीं कहलाता। अतः यह विविधता का एक वर्णनात्मक विश्लेषण है।

247. (C) यह सुनिश्चित करने का साधन है कि महत्वपूर्ण पद सक्षम लोगों द्वारा भरे जाएं।
सामाजिक स्तरीकरण का प्रकार्यवादी सिद्धांत असमानता को समाज हेतु आवश्यक और लाभदायक मानता है। इस दृष्टिकोण के अनुसार, समाज में कुछ पद दूसरों की तुलना में अधिक कठिन होते हैं, जिन्हें निभाने हेतु असाधारण प्रतिभा की आवश्यकता होती है। योग्यतम व्यक्तियों को इन चुनौतीपूर्ण पदों हेतु कड़ी मेहनत करने के लिए प्रोत्साहित करने हेतु समाज उन्हें अधिक धन और सम्मान प्रदान करता है। इस प्रकार, असमानता समाज में कार्यों के कुशल विभाजन और उसकी प्रगति को सुनिश्चित करने वाली एक अनिवार्य व्यवस्था बन जाती है।

248. (C) क्रांति
क्रांति सामाजिक परिवर्तन का सर्वाधिक प्रभावशाली रूप है क्योंकि यह विद्यमान सामाजिक व्यवस्था को पूर्णतः विनष्ट कर देती है। उद्विकास के धीमे सुधारों के विपरीत, क्रांति समाज की संरचना में अकस्मात और मौलिक बदलाव लाती है। इसमें शक्ति का पूर्ण पुनर्वितरण होता है और नवीन विचारधारा के आधार पर एक नवीन सामाजिक व्यवस्था स्थापित की जाती है। क्रांति का लक्ष्य समाज को उसके पुराने और दमनकारी ढांचे से मुक्त कर उसे एक पूर्णतः नवीन और प्रायः अधिक उन्नत रूप में परिवर्तित करना होता है।

NODIA

249. (A) जनजातीय विविधता
भारत में भिन्न समुदायों के मध्य मौजूद विशिष्ट सांस्कृतिक प्रथाएं देश की समृद्ध जनजातीय विविधता को दर्शाती हैं। प्रत्येक जनजातीय समूह की अपनी अनूठी भाषा, धार्मिक विश्वास और पर्यावरण के साथ रहने के विशेष तरीके होते हैं। यह विविधता भारत के सांस्कृतिक मानचित्र को अधिक बहुलतावादी बनाती है। इन समूहों की स्वायत्त पहचान को सुरक्षित रखना और उनके योगदान को पहचानना राष्ट्रीय एकता हेतु अत्यंत महत्वपूर्ण है। यह विविधता भारतीय समाज की ऐतिहासिक और सांस्कृतिक जड़ों को मजबूती प्रदान करती है।

250. (A) कथन (A) और कारण (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
दहेज प्रथा का अवैध होने के उपरांत भी बने रहना दर्शाता है कि कानून और सामाजिक व्यवहार के मध्य एक बड़ा अंतराल विद्यमान है। भारत में पितृसत्तात्मक मानदंड और परंपराएं प्रायः सामाजिक व्यवहार को प्रभावित करने में कानून की तुलना में अधिक शक्तिशाली होती हैं। समाज में महिलाओं को आर्थिक रूप से भार मानने की सोच दहेज की मांग को उचित ठहराने का कार्य करती है। अतः जब तक सामाजिक दृष्टिकोण और मूल्यों में जड़ से परिवर्तन नहीं आता, तब तक केवल कानूनी निषेध इसे पूर्णतः समाप्त नहीं कर सकता।

251. (B) द्वितीयक समाजीकरण
द्वितीयक समाजीकरण वह प्रक्रिया है जिसमें व्यक्ति परिवार के बाहर के औपचारिक संस्थानों, जैसे विद्यालय और कार्यस्थल में नवीन नियम और भूमिकाएं सीखता है। प्राथमिक समाजीकरण द्वारा निर्मित नींव के आधार पर, यह प्रक्रिया व्यक्ति को समाज की व्यापक संरचना और उसके विभिन्न क्षेत्रों में कार्य करने योग्य बनाती है। यहाँ बालक और वयस्क अन्य लोगों के साथ अवैयक्तिक संबंध बनाना और सार्वभौमिक मानदंडों का पालन करना सीखते हैं। यह व्यक्ति को एक जटिल आधुनिक समाज का सक्रिय सदस्य बनाने हेतु अनिवार्य है।

252. (C) जाति
जाति व्यवस्था सामाजिक स्तरीकरण की एक बंद प्रणाली है जहाँ व्यक्ति की स्थिति जन्म के समय ही पूर्णतः निर्धारित हो जाती है। इस व्यवस्था में ऊर्ध्वमुखी सामाजिक गतिशीलता की संभावना नहीं होती क्योंकि व्यक्ति अपनी योग्यता से अपनी जाति परिवर्तित नहीं कर सकता। यह प्रणाली अंतर्विवाह और वंशानुगत व्यवसायों पर आधारित होती है। यह स्तरीकरण का एक अत्यंत रूढ़िवादी रूप है जो समाज को उच्च-नीच के स्थाई पदानुक्रम में विभाजित करता है, जहाँ प्रदत्त स्थिति ही व्यक्ति की संपूर्ण सामाजिक पहचान को तय करती है।

253. (B) मौजूदा सामाजिक व्यवस्था के भीतर परिवर्तन, जैसे कि कार्मिक बदलाव।
"संरचना के भीतर परिवर्तन" सामाजिक परिवर्तन के उस रूप को संदर्भित करता है जहाँ समाज का आधारभूत ढांचा वही रहता है, किंतु उसके आंतरिक घटकों में मामूली बदलाव होते हैं। उदाहरण के लिए, किसी संगठन में नेतृत्व का परिवर्तन या नवीन अधिकारियों की नियुक्ति संरचनात्मक परिवर्तन नहीं है, बल्कि यह संरचना के भीतर का परिवर्तन है। यह परिवर्तन समाज की निरंतरता को बनाए रखते हुए सुधार की प्रक्रिया है, जो पूरी सामाजिक व्यवस्था के मौलिक चरित्र को प्रभावित नहीं करती है।

254. (B) क्षेत्रीय वैमनस्य
क्षेत्रीय वैमनस्य तब उत्पन्न होता है जब किसी क्षेत्र के लोगों को आर्थिक रूप से पिछड़ा अनुभव कराया जाता है या उनकी राजनीतिक स्वायत्तता की मांगों को उपेक्षित किया जाता है। संसाधनों के अनुचित वितरण के कारण उत्पन्न असंतोष क्षेत्रीय आंदोलनों को जन्म देता है। यह वैमनस्य प्रायः अपनी विशिष्ट क्षेत्रीय पहचान को सुरक्षित रखने की इच्छा से संबद्ध होता है। संतुलित विकास और न्यायपूर्ण संसाधनों का वितरण इस समस्या को हल करने और देश की अखंडता एवं एकता को सुदृढ़ करने हेतु अत्यंत आवश्यक है।

255. (B) P-4, Q-1, R-2, S-3
समाजशास्त्रीय पद सामाजिक प्रक्रियाओं के भिन्न आयामों को स्पष्ट करते हैं। पुनः समाजीकरण नवीन वातावरण में नवीन मानदंड सीखने की प्रक्रिया है, जबकि प्रत्याशित समाजीकरण भविष्य की भूमिका की आकांक्षा है। सामाजिक गतिशीलता पदानुक्रम में ऊपर या नीचे जाने को दर्शाती है, और सामाजिक उद्विकास समाज के क्रमिक विकास की निरंतर प्रक्रिया है। इन अवधारणाओं का अध्ययन समाज की स्थिरता और उसकी परिवर्तनशील प्रकृति के मध्य के संबंधों को समझने हेतु अनिवार्य है। ये पद व्यक्ति और समाज के अंतर्संबंधों को विश्लेषित करते हैं।

256. (D) यह विशुद्ध रूप से व्यक्तिगत प्रतिभा पर आधारित है।
सामाजिक स्तरीकरण की एक महत्वपूर्ण विशेषता यह है कि यह केवल व्यक्तिगत प्रतिभा का प्रतिबिंब नहीं है, बल्कि यह समाज की एक संरचित व्यवस्था है। यह समाज को श्रेणियों में विभाजित करती है और संसाधनों का असमान वितरण करती है, जो पीढ़ियों तक बना रहता है। यद्यपि योग्यता कुछ प्रणालियों में भूमिका निभाती है, किंतु स्तरीकरण स्वयं एक व्यापक सामाजिक विशेषता है जो व्यक्ति के जन्म और उसकी पृष्ठभूमि से गहराई से प्रभावित होती है। यह सार्वभौमिक होने के बावजूद भिन्न स्वरूपों में विद्यमान रहती है।

257. (B) कथन I और कथन II दोनों असत्य हैं।
सामाजिक परिवर्तन के चक्रीय और रैखिक सिद्धांत भिन्न अवधारणाओं पर आधारित हैं। चक्रीय सिद्धांत मानता है कि इतिहास स्वयं को दोहराता है और समाज उत्थान एवं पतन के आवर्ती चरणों से गुजरते हैं। इसके विपरीत, रैखिक सिद्धांत मानता है कि समाज निरंतर एक ही दिशा में प्रगति करता है और श्रेष्ठता की ओर बढ़ता है। यहाँ दिए गए कथनों में इन दोनों सिद्धांतों की परिभाषाओं को विपर्यय कर दिया गया है। अतः दोनों कथन असत्य हैं क्योंकि वे सिद्धांतों के मूल विचार का सही प्रतिनिधित्व नहीं करते।

Downloaded from www.pdf.tube

258. (A) बहुलवाद के बावजूद राष्ट्रीय एकीकरण
"विविधता में एकता" भारतीय समाज की उस अद्भुत क्षमता को उजागर करती है जहाँ वह अपनी विशाल सांस्कृतिक और धार्मिक बहुलता को एक साझा राष्ट्रीय पहचान के भीतर समाहित करता है। यह अवधारणा स्वीकार करती है कि विविधता राष्ट्र हेतु संकट नहीं, बल्कि एक ऐसी शक्ति है जो उसे समावेशी बनाती है। यह विभिन्न समुदायों के मध्य सामंजस्यपूर्ण सह-अस्तित्व और लोकतांत्रिक मूल्यों के प्रति उनकी सामूहिक प्रतिबद्धता का प्रतीक है। यह एकता विविध पहचानों को एक अखंड भारतीय राष्ट्र में एकजुट बनाए रखती है।

259. (A) वे संरचनात्मक कारक जो गरीबी पैदा करते हैं और उसे बनाए रखते हैं।
समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण से निर्धनता का अध्ययन उन व्यापक सामाजिक संरचनाओं पर ध्यान केंद्रित करता है जो संसाधनों के असमान वितरण को जन्म देती हैं। समाजशास्त्री विश्लेषण करते हैं कि शिक्षा की न्यूनता और सामाजिक बहिष्कार जैसे कारक कैसे व्यक्ति को वंचना के दुष्चक्र में फंसाए रखते हैं। वे निर्धनता को व्यक्तिगत असफलता नहीं, बल्कि समाज के दोषपूर्ण संगठन का परिणाम मानते हैं। इस अध्ययन का उद्देश्य उन बाधाओं को पहचानना है जो पीढ़ियों तक निर्धनता को बनाए रखती हैं ताकि न्यायपूर्ण नीतियां निर्मित हों।

260. (D) 1, 2 और 3
सामाजिक गतिशीलता स्तरीकरण की प्रणाली के भीतर व्यक्ति की स्थिति में होने वाले परिवर्तन को दर्शाती है। एक पूर्णतः बंद प्रणाली, जैसे जाति, में गतिशीलता की संभावना नगण्य होती है क्योंकि स्थिति जन्म से निर्धारित होती है। इसके विपरीत, वर्ग जैसी खुली प्रणालियों में शिक्षा और व्यक्तिगत योग्यता ऊर्ध्वमुखी गतिशीलता के प्रमुख साधन बनते हैं। ये तीनों कथन गतिशीलता और स्तरीकरण के मध्य के संबंधों को सही ढंग से स्पष्ट करते हैं, जो यह निर्धारित करते हैं कि समाज कितना गतिशील है। अतः दर प्रगतिशीलता का सूचक है।

261. (B) वयस्क समाजीकरण
वृद्धावस्था के साथ सामंजस्य स्थापित करना और इस जीवन के नवीन मानदंडों को सीखना वयस्क समाजीकरण का एक अभिन्न अंग है। जैसे-जैसे व्यक्ति जीवन के अंतिम चरण में पहुँचता है, उसे अपनी बदलती शारीरिक स्थिति और सेवा-निवृत्ति के कारण होने वाले बदलावों के प्रति स्वयं को अनुकूलित करना पड़ता है। यह दर्शाता है कि समाजीकरण एक कभी न समाप्त होने वाली प्रक्रिया है जो मृत्यु तक चलती है। वयस्क समाजीकरण व्यक्ति को जीवन के प्रत्येक नवीन चरण की चुनौतियों का सामना करने में निरंतर सहायता प्रदान करता है।

262. (A) सामाजिक स्तरीकरण
सामाजिक स्तरीकरण वह अवधारणा है जो समाज के विभिन्न समूहों की पदानुक्रमित रैंकिंग और उनके मध्य व्याप्त संरचित असमानता को सीधे संबोधित करती है। यह व्यवस्था सुनिश्चित करती है कि शक्ति, धन और प्रतिष्ठा जैसे मूल्यवान संसाधनों तक पहुँच भिन्न समूहों हेतु पृथक हो। स्तरीकरण असमानता को पीढ़ियों तक बनाए रखता है और इसे समाज की एक संस्थागत विशेषता के रूप में स्थापित करता है। यह विभेदीकरण से आगे की स्थिति है क्योंकि इसमें ऊंच-नीच का भाव और संसाधनों का अनुचित वितरण गहराई से समाहित होता है।

263. (A) गति और पैमाना
क्रांति और उद्विकास के मध्य का मौलिक अंतर सामाजिक परिवर्तन की गति और उसके पैमाने में निहित है। उद्विकास एक अत्यंत धीमी प्रक्रिया है जिसमें समाज लंबी अवधि के दौरान धीरे-धीरे जटिल स्वरूप प्राप्त करता है। इसके विपरीत, क्रांति एक अकस्मात और तीव्र घटना है जो मौजूदा व्यवस्था को विनष्ट कर समाज की संरचना को मौलिक रूप से परिवर्तित कर देती है। उद्विकास जहाँ शांतिपूर्ण सुधारों को दर्शाता है, वहीं क्रांति आमूलचूल बदलाव का प्रतीक है जो समाज के प्रत्येक स्तर को व्यापक रूप से प्रभावित करती है।

264. (C) सांस्कृतिक विविधता
भारत में भिन्न धार्मिक मान्यताओं और त्योहारों का सह-अस्तित्व इसकी समृद्ध सांस्कृतिक विविधता का स्पष्ट संकेत है। यह विविधता दर्शाती है कि भारतीय समाज बहुलवाद को महत्व देता है जहाँ भिन्न धर्मों के लोग अपनी विशिष्ट पहचान बनाए रखते हुए साथ रहते हैं। यह विविधता देश के सामाजिक ताने-बाने को अधिक व्यापक बनाती है। विभिन्न आस्थाओं का यह संगम न केवल धार्मिक सहिष्णुता को बढ़ावा देता है, बल्कि सांस्कृतिक आदान-प्रदान के माध्यम से राष्ट्रीय एकता को भी एक अनूठी मजबूती प्रदान करता है।

265. (B) कारण, दरें और परिणाम
विवाह विच्छेद का समाजशास्त्रीय अध्ययन इसे केवल व्यक्तिगत दुःख के स्थान पर सामाजिक विषय के रूप में विश्लेषित करता है। इसमें समाजशास्त्री पड़ताल करते हैं कि समाज में इसकी बढ़ती दरों के पीछे कौन से संरचनात्मक कारण, जैसे बदलती लैंगिक भूमिकाएं, उत्तरदायी हैं। वे इस प्रक्रिया के परिवार की संस्था और सामाजिक मानदंडों पर पड़ने वाले व्यापक परिणामों का भी अध्ययन करते हैं। यह दृष्टिकोण इसे एक सामूहिक परिघटना के रूप में समझकर समाज की बदलती नैतिकता और संरचना को गहराई से स्पष्ट करता है।

NODIA

266. (B) पुनः समाजीकरण
पुनः समाजीकरण वह प्रक्रिया है जिसमें व्यक्ति के परिवेश को नियंत्रित करके उसके व्यक्तित्व को मौलिक रूप से परिवर्तित करने का प्रयास किया जाता है। यह प्रायः 'पूर्ण संस्थानों' जैसे सैन्य प्रशिक्षण केंद्र या कारागार में होता है। यहाँ व्यक्ति को उसकी पूर्व पहचान त्यागने हेतु विवश किया जाता है और उसे संस्थान के विशिष्ट मूल्यों और कठोर नियमों के अनुसार नवीन पहचान दी जाती है। यह सीखने की एक अत्यंत गहन अवस्था है जो व्यक्ति को एक नवीन सामाजिक भूमिका हेतु पूर्णतः पुनर्गठित करने का कार्य करती है।

267. (B) पुरुषों और महिलाओं के बीच धन, शक्ति और विशेषाधिकार का असमान वितरण।
सामाजिक स्तरीकरण के एक रूप में लिंग का अर्थ समाज द्वारा निर्मित वह व्यवस्था है जो पुरुषों और महिलाओं के मध्य

संसाधनों का असमान वितरण करती है। यह केवल जैविक अंतर नहीं है, बल्कि वह पदानुक्रम है जहाँ एक लिंग को दूसरे पर प्राथमिकता प्रदान की जाती है। इसके परिणामस्वरूप शिक्षा और रोजगार के क्षेत्रों में भेदभाव उत्पन्न होता है। लैंगिक स्तरीकरण पितृसत्तात्मक मानदंडों द्वारा पुष्ट होता है जो महिलाओं को हाशिए पर रखते हैं। इसे समझना समाज में वास्तविक समानता प्राप्ति हेतु अनिवार्य है।

268. (B) एक व्यापारिक कार्यकारी को विक्रय लिपिक के रूप में पदावनत किया जाता है।
अंतः-पीढ़ीगत गतिशीलता व्यक्ति के स्वयं के जीवनकाल के भीतर सामाजिक स्थिति में होने वाले परिवर्तनों को संदर्भित करती है। एक कार्यकारी का लिपिक के रूप में पदावनत होना अधोमुखी अंतः-पीढ़ीगत गतिशीलता का उदाहरण है क्योंकि इससे उसकी प्रतिष्ठा और आय में न्यूनता आती है। यह गतिशीलता दर्शाती है कि व्यक्ति की सामाजिक स्थिति उसके करियर के दौरान स्थिर नहीं है। अन्य उदाहरण जैसे किसान के बालक का वैज्ञानिक बनना 'अंतर-पीढ़ीगत' गतिशीलता है क्योंकि इसमें दो भिन्न पीढ़ियों के मध्य तुलना की जाती है।

269. (D) विसरणवादी
विसरणवादी सिद्धांत तर्क देता है कि सामाजिक परिवर्तन का मुख्य स्रोत एक समाज से दूसरे समाज में सांस्कृतिक लक्षणों और विचारों का प्रसार है। जब एक संस्कृति के तत्व संचार या प्रवास के माध्यम से दूसरी संस्कृति में पहुँचते हैं, तो वे उस समाज की पारंपरिक संरचना में बदलाव लाते हैं। यह सिद्धांत मानता है कि अधिकांश समाजों का विकास स्वतंत्र रूप से नहीं, बल्कि एक-दूसरे से नवाचारों को ग्रहण करने की प्रक्रिया से हुआ है। विसरण वैश्विक सामाजिक विकास की एक प्रमुख चालक शक्ति के रूप में कार्य करता है।

270. (A) धार्मिक वैमनस्य
दो धार्मिक समूहों के मध्य होने वाला सांप्रदायिक संघर्ष धार्मिक वैमनस्य की एक चिंताजनक अभिव्यक्ति है। यह संघर्ष तब उत्पन्न होता है जब धार्मिक मतभेदों को राजनीतिक स्वार्थों हेतु प्रयुक्त किया जाता है, जिससे समुदायों के मध्य अविश्वास बढ़ता है। धार्मिक वैमनस्य समाज की शांति के ढांचे को नष्ट कर देता है और प्रायः हिंसा का रूप ले लेता है। इसे दूर करने हेतु धर्मनिरपेक्ष मूल्यों को बढ़ावा देना, आपसी संवाद स्थापित करना और सभी धर्मों के प्रति समान सम्मान की भावना विकसित करना अत्यंत आवश्यक है।

271. (B) किशोरावस्था
किशोरावस्था के दौरान समाजीकरण के अभिकरण के रूप में मित्र समूह सर्वाधिक प्रभावशाली भूमिका निभाते हैं। इस चरण में किशोर परिवार के नियंत्रण से पृथक अपनी स्वतंत्र पहचान बनाने का प्रयास करते हैं और अपने साथियों के व्यवहार को तीव्रता से अपनाते हैं। मित्र समूह उन्हें अनौपचारिक सामाजिक नियम सिखाते हैं और एक ऐसा वातावरण प्रदान करते हैं जहाँ वे स्वायत्तता का अनुभव कर सकें। साथियों का दबाव इस आयु में व्यक्ति के दृष्टिकोण को निर्मित करने में परिवार की तुलना में अधिक शक्तिशाली हो सकता है।

272. (B) योग्यतातंत्र
योग्यतातंत्र या मेरिटोक्रेसी एक ऐसा समाज है जहाँ व्यक्ति की सामाजिक स्थिति उसकी व्यक्तिगत योग्यता और परिश्रम पर आधारित होती है। इस व्यवस्था में 'अर्जित स्थिति' को सर्वोच्च महत्व प्रदान किया जाता है, जिससे सभी व्यक्तियों को अपनी क्षमताओं के आधार पर उन्नति के समान अवसर प्राप्त होते हैं। योग्यतातंत्र ऊर्ध्वमुखी सामाजिक गतिशीलता को प्रोत्साहित करता है और मानता है कि समाज के महत्वपूर्ण पद सर्वाधिक सक्षम व्यक्तियों को मिलने चाहिए। यह आधुनिक और न्यायपूर्ण समाजों का एक आदर्श सामाजिक स्वरूप है।

273. (B) गहरा, व्यापक और गुणात्मक हो।
समाज का रूपांतरण एक ऐसे सामाजिक परिवर्तन को दर्शाता है जो अत्यंत गहरा और गुणात्मक प्रकृति का होता है। यह केवल बाहरी सुधारों तक सीमित नहीं है, बल्कि यह समाज के मूल ढांचे और संस्थागत व्यवस्थाओं में पूर्ण बदलाव लाता है। रूपांतरण के माध्यम से पुरानी सामाजिक व्यवस्था एक नवीन और अधिक परिष्कृत स्वरूप में परिवर्तित हो जाती है। यह परिवर्तन समाज की पूरी दिशा और उसकी कार्यप्रणाली को मौलिक रूप से प्रभावित करता है, जिससे एक नवीन सामाजिक यथार्थ का जन्म होता है जो पूर्व अवस्था से भिन्न होता है।

274. (B) विविध संस्कृतियों वाले कई समूह और समुदाय।
'भारत के लोग' की अवधारणा देश को एक सजातीय इकाई के स्थान पर भिन्न संस्कृतियों, भाषाओं और जातियों वाले अनेक समुदायों के संगम के रूप में पहचानती है। यह शब्द भारतीय राष्ट्र की उस बहुलवादी आत्मा को व्यक्त करता है जहाँ विविधता ही एकता का आधार है। यह स्वीकार करता है कि भारत के समुदायों की अपनी विशिष्ट ऐतिहासिक पहचान है, जो मिलकर एक समृद्ध राष्ट्रीय ताने-बाने का निर्माण करती हैं। यह पहचान भारतीय समाज के लोकतांत्रिक और समावेशी चरित्र को सुदृढ़ता प्रदान करती है।

275. (A) 2, 3, 1
सामाजिक स्तरीकरण की प्रणालियों को उनके खुलेपन के आधार पर क्रमबद्ध किया जा सकता है। जाति व्यवस्था सर्वाधिक बंद प्रणाली है क्योंकि यहाँ स्थिति जन्म से निश्चित होती है। जागीर व्यवस्था भी काफी बंद थी किंतु इसमें सीमित गतिशीलता संभव थी। वर्ग प्रणाली सर्वाधिक खुली प्रणाली है क्योंकि यह व्यक्तिगत उपलब्धि और शिक्षा पर आधारित है, जो व्यक्ति को एक वर्ग से दूसरे वर्ग में जाने की अनुमति प्रदान करती है। यह क्रम समाज में व्यक्तिगत योग्यता और जन्म के महत्व के मध्य के अंतर को स्पष्ट करता है।

276. (C) धार्मिक वैमनस्य
पारिवारिक कलह उन विवादों को संदर्भित करती है जो परिवार की आंतरिक संरचना और संबंधों के भीतर उत्पन्न होते हैं, जैसे घरेलू हिंसा और दहेज के विवाद। ये विषय सीधे तौर पर परिवार के सदस्यों के मध्य के संबंधों को प्रभावित करते हैं। इसके विपरीत, धार्मिक वैमनस्य एक व्यापक सामाजिक और सांप्रदायिक विषय है जो भिन्न धार्मिक समूहों के मध्य होने वाले बाहरी संघर्षों से संबद्ध है। अतः धार्मिक वैमनस्य को परिवार

Click Here to Buy book on Amazon

की आंतरिक कलह के रूप में नहीं, बल्कि एक सामाजिक संघर्ष के रूप में देखा जाना चाहिए।

277. (B) समाजीकरण
दूसरों को देखने और उनका अनुकरण करने के माध्यम से सामाजिक व्यवहार सीखने की प्रक्रिया समाजीकरण का एक अनिवार्य अंग है। इसी प्रक्रिया द्वारा बालक समाज के मानदंडों और मूल्यों को आत्मसात करता है। अनुकरण के माध्यम से सीखना व्यक्ति को यह समझने में सहायता करता है कि भिन्न सामाजिक स्थितियों में उसे कैसा व्यवहार करना चाहिए। यह सामाजिक अधिगम न केवल व्यक्तित्व विकास हेतु महत्वपूर्ण है, बल्कि यह समाज की संस्कृति को एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक निरंतर हस्तांतरित करने का सर्वाधिक प्रभावी साधन है।

278. (C) कथन I असत्य है, लेकिन कथन II सत्य है।
"विविधता में एकता" भारतीय समाज का एक आदर्श है, किंतु इसका अर्थ यह नहीं है कि समाज में कोई संघर्ष विद्यमान नहीं है। वास्तव में, क्षेत्रीय और धार्मिक विवाद ऐसे समसामयिक मुद्दे हैं जो समय-समय पर भारतीय एकता हेतु चुनौतियां उत्पन्न करते रहते हैं। ये वैमनस्य प्रायः आर्थिक उपेक्षा के कारण बढ़ते हैं। अतः राष्ट्रीय एकता कोई स्थाई स्थिति नहीं है, बल्कि इसे आपसी संवाद, न्यायपूर्ण संसाधनों के वितरण और धर्मनिरपेक्ष मूल्यों के माध्यम से निरंतर बनाए रखने और सुदृढ़ करने की आवश्यकता होती है।

279. (A) वह परिवार जिसमें वे पैदा हुए थे।
'जाति की असमानता' उस सामाजिक व्यवस्था को संदर्भित करती है जहाँ भेदभाव का मुख्य आधार व्यक्ति की जन्मजात स्थिति होती है। चूंकि जाति एक बंद प्रणाली है, अतः व्यक्ति की सामाजिक रैंक और उसके साथ होने वाला व्यवहार उस परिवार पर निर्भर करता है जिसमें उसका जन्म हुआ है। यह भेदभाव व्यक्ति की प्रतिभा को उपेक्षित कर केवल जन्म के 'आरोपण' को महत्व प्रदान करता है। यह व्यवस्था समाज में संरचित अन्याय को बढ़ावा देती है और पीढ़ियों तक कुछ समूहों को विशेष अधिकार और दूसरों को वंचना प्रदान करती है।

280. (A) कथन (A) और कारण (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
वर्ग जैसी खुली स्तरीकरण प्रणालियों में सामाजिक गतिशीलता एक महत्वपूर्ण विशेषता है क्योंकि ये प्रणालियां 'अर्जित स्थिति' पर आधारित होती हैं। इसका अर्थ है कि व्यक्ति की सामाजिक स्थिति जन्म से पूर्व-निर्धारित नहीं होती, बल्कि वह अपनी व्यक्तिगत योग्यता और आर्थिक सफलता के माध्यम से इसे परिवर्तित कर सकता है। यह व्यवस्था व्यक्तियों को अपनी वर्तमान स्थिति से ऊपर उठने का अवसर प्रदान करती है। इसीलिए खुली प्रणालियों को अधिक न्यायपूर्ण माना जाता है क्योंकि ये व्यक्तिगत विकास और सामाजिक बदलाव की अनुमति देती हैं।

281. (B) वयस्क समाजीकरण
वयस्क समाजीकरण वह निरंतर प्रक्रिया है जिसमें एक परिपक्व व्यक्ति अपने जीवन के दौरान नवीन सामाजिक भूमिकाओं के अनुकूल होने हेतु नवीन कौशल सीखता है। किसी नवीन व्यवसाय में प्रवेश करते समय जो प्रशिक्षण प्राप्त होता है, वह इसी का अंग है क्योंकि व्यक्ति को उस विशिष्ट कार्य संस्कृति के मानदंडों को आत्मसात करना होता है। यह दर्शाता है कि समाजीकरण केवल बाल्यकाल तक सीमित नहीं है। व्यक्ति को समाज के बदलते स्वरूप के साथ सामंजस्य स्थापित करने हेतु जीवन भर सीखना पड़ता है, जो व्यक्तित्व विकास का आधार है।

282. (A) पदानुक्रम
पदानुक्रम और विभेदीकरण के मध्य का मुख्य अंतर श्रेणीबद्ध रैंकिंग में विद्यमान है। विभेदीकरण केवल समाज में मौजूद अंतरों और विविधताओं को पहचानता है, जहाँ लोग एक-दूसरे से भिन्न तो हैं किंतु उन्हें उच्च-नीच के क्रम में नहीं रखा जाता। इसके विपरीत, पदानुक्रम इन अंतरों के आधार पर समूहों को श्रेष्ठता और हीनता के एक व्यवस्थित सोपान में व्यवस्थित करता है। यह पदानुक्रम ही सामाजिक स्तरीकरण को जन्म देता है, जहाँ संसाधनों और शक्ति का वितरण समूहों की रैंक के अनुसार होता है। अतः पदानुक्रम ही असमानता को संरचित करता है।

283. (A) परिवर्तन की प्रस्तावित दिशा और प्रतिरूप।
सामाजिक परिवर्तन के रैखिक और चक्रीय सिद्धांतों के मध्य का प्राथमिक अंतर परिवर्तन की दिशा और उसके प्रतिरूप में है। रैखिक सिद्धांत मानता है कि समाज निरंतर एक सीधी दिशा में, प्रायः प्रगति की ओर बढ़ता है। इसके विपरीत, चक्रीय सिद्धांत सुझाव देता है कि इतिहास स्वयं को दोहराता है और समाज उत्थान एवं पतन के आवर्ती चक्रों से गुजरता है। जहाँ रैखिक सिद्धांत 'प्रगति' पर केंद्रित है, वहीं चक्रीय सिद्धांत परिवर्तन की 'आवर्तक' प्रकृति को स्पष्ट करता है। ये दोनों इतिहास को देखने के दो भिन्न दृष्टिकोण हैं।

284. (A) राष्ट्रीय चरित्र और सामाजिक संरचना
"विविधता में एकता" वाक्यांश भारतीय राष्ट्रीय चरित्र और उसकी सामाजिक संरचना का सबसे सटीक वर्णन है। यह दर्शाता है कि भारत की वास्तविक पहचान इसकी विशाल भाषाई और क्षेत्रीय बहुलता को एक साझा राष्ट्रीय सूत्र में पिरोने की क्षमता में निहित है। यह अवधारणा स्वीकार करती है कि विविधता देश की एकता में बाधक नहीं, बल्कि उसे सुदृढ़ बनाने वाला अनिवार्य तत्व है। यह बहुलवादी सोच भारतीय समाज के उस समावेशी ढांचे को प्रदर्शित करती है जहाँ भिन्न समुदायों के लोग साझा लोकतांत्रिक पहचान के साथ शांतिपूर्वक रहते हैं।

285. (A) P-4, Q-1, R-2, S-3
समसामयिक सामाजिक मुद्दे समाज की जटिल चुनौतियों को स्पष्ट करते हैं। निर्धनता भौतिक संसाधनों के गंभीर अभाव की स्थिति है, जबकि लैंगिक असमानता पुरुषों और महिलाओं के मध्य व्याप्त शक्ति के भेदभाव को दर्शाती है। क्षेत्रीय वैमनस्य

Downloaded from www.pdf.tube

भौगोलिक क्षेत्रों के मध्य होने वाले संघर्षों का परिणाम है, और तलाक विवाह के कानूनी विच्छेद को संदर्भित करता है। इन मुद्दों का अध्ययन समाज के बदलते स्वरूप और न्यायपूर्ण वितरण के मार्ग में आने वाली बाधाओं को समझने हेतु अत्यंत आवश्यक है, ताकि उचित समाधान खोजे जा सकें।

286. (B) सामाजिक स्तरीकरण
सामाजिक स्तरीकरण वह अवधारणा है जो समाज के विभिन्न समूहों के मध्य व्याप्त व्यवस्थित और संरचित असमानताओं को संदर्भित करती है। यह असमानता व्यक्तिगत अंतरों का परिणाम नहीं है, बल्कि यह उन सामाजिक प्रणालियों से उत्पन्न होती है जो शक्ति और प्रतिष्ठा का वितरण पदानुक्रम के आधार पर करती हैं। स्तरीकरण समाज को भिन्न श्रेणियों में विभाजित करता है जो पीढ़ियों तक बनी रहती हैं। यह व्यवस्था सुनिश्चित करती है कि कुछ समूहों को दूसरों की तुलना में अधिक विशेषाधिकार प्राप्त हों। यह सामाजिक संरचना का वह स्थायी प्रतिरूप है।

287. (A) पूंजीवादी से समाजवादी अर्थव्यवस्था में संक्रमण।
संरचना का परिवर्तन सामाजिक परिवर्तन का वह सर्वाधिक व्यापक रूप है जिसमें समाज के बुनियादी आधार और संगठनात्मक सिद्धांतों में मौलिक रूपांतरण होता है। पूंजीवादी से समाजवादी अर्थव्यवस्था में संक्रमण इसका सटीक उदाहरण है क्योंकि यह उत्पादन के साधनों पर नियंत्रण और पूरी आर्थिक व्यवस्था को जड़ से परिवर्तित कर देता है। यह केवल नियमों में सुधार नहीं है, बल्कि यह समाज के कार्य करने के तरीके का पूर्ण पुनर्गठन है। ऐसे परिवर्तन समाज के इतिहास में नवीन युग के प्रारंभ का संकेत देते हैं और नवीन ढांचा प्रदान करते हैं।

288. (D) दहेज
वधू के परिवार पर भौतिक मांगों और संपत्ति के हस्तांतरण हेतु दबाव डालना 'दहेज' प्रथा का मुख्य भाग है, जो पारिवारिक कलह का अत्यंत दुखद स्रोत है। यह प्रथा विवाह को पवित्र संबंध के स्थान पर आर्थिक सौदे के रूप में देखती है, जहाँ महिलाओं को एक वस्तु के रूप में आंका जाता है। दहेज की मांग प्रायः परिवार के भीतर तनाव और गंभीर हिंसा का कारण बनती है। यह समाज में व्याप्त पितृसत्तात्मक मानसिकता की एक गहरी समस्या है, जिसे मिटाना सामाजिक न्याय और महिलाओं की गरिमा हेतु अनिवार्य है।

289. (C) विद्यालय
आधुनिक समाज में विद्यालय समाजीकरण का वह प्रमुख औपचारिक अभिकरण है जो बालकों को व्यवस्थित ज्ञान और समाज के सार्वभौमिक नियम सिखाने हेतु उत्तरदायी है। परिवार जहाँ अनौपचारिक मूल्य प्रदान करता है, वहीं विद्यालय बालक को बृहद सामाजिक वातावरण हेतु तैयार करता है जहाँ अवैयक्तिक संबंध और प्रतिस्पर्धा का महत्व होता है। विद्यालय का औपचारिक अनुशासन बालक को भविष्य की व्यावसायिक भूमिकाओं और नागरिक उत्तरदायित्वों के योग्य बनाता है। यह समाजीकरण की प्रक्रिया में प्राथमिक और वयस्क जीवन के मध्य कड़ी है।

290. (C) केवल 2 और 3
सांस्कृतिक विविधता एक ऐसे समाज को संदर्भित करती है जहाँ अनेक संस्कृतियां और धर्म एक साथ सह-अस्तित्व में होते हैं। भारत इसका उत्कृष्ट उदाहरण है, जहाँ भाषाई और जनजातीय समुदायों की विशाल संख्या देश की सांस्कृतिक पहचान को समृद्ध बनाती है। यह कहना त्रुटिपूर्ण है कि सांस्कृतिक विविधता केवल एक एकल संस्कृति को दर्शाती है; वास्तव में यह बहुलवाद का प्रतीक है। जनजातीय समुदाय अपनी विशिष्ट परंपराओं के माध्यम से इस विविधता में योगदान देते हैं। अतः विविधता का अर्थ समाज के भीतर भिन्न सांस्कृतिक धाराओं का संगम है।

291. (C) प्रत्याशित समाजीकरण
प्रत्याशित समाजीकरण वह प्रक्रिया है जिसमें व्यक्ति उस सामाजिक समूह के मूल्यों और व्यवहारों को समय पूर्व सीखना प्रारंभ कर देता है जिसका वह भविष्य में अंग बनने की आकांक्षा रखता है। यह एक प्रकार का व्यवहारिक पूर्वाभ्यास है जो व्यक्ति को नवीन भूमिकाओं हेतु तैयार करता है। उदाहरण के लिए, एक विद्यार्थी जो भविष्य में चिकित्सक बनने का स्वप्न देखता है, वह उस व्यवसाय से जुड़ी आदतों को पूर्व में ही अपनाने का प्रयास करता है। यह प्रक्रिया नवीन सामाजिक वातावरण में उसके सफल संक्रमण और अनुकूलन को सुनिश्चित करती है।

292. (C) जाति
ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र का विभाजन प्राचीन भारतीय समाज में जाति आधारित स्तरीकरण का स्पष्ट उदाहरण है। यह व्यवस्था पदानुक्रमित है और अनुष्ठानिक शुद्धता के सिद्धांतों पर आधारित है। जाति स्तरीकरण का एक बंद रूप है जहाँ व्यक्ति की स्थिति जन्म से ही निर्धारित हो जाती है और वह अपने संपूर्ण जीवनकाल में इसे परिवर्तित नहीं कर सकता। यह व्यवस्था न केवल सामाजिक सम्मान का निर्धारण करती है, बल्कि यह व्यवसायों और सामाजिक अंतःक्रिया के नियमों को भी कठोरता से नियंत्रित करती है। यह भारतीय संरचना की स्थाई विशेषता है।

293. (A) तकनीकी नवाचार
हस्तलिखित पत्रों का स्थान ईमेल द्वारा लिया जाना तकनीकी नवाचार के माध्यम से होने वाले सामाजिक परिवर्तन का स्पष्ट उदाहरण है। संचार की नवीन तकनीक ने न केवल सूचना के आदान-प्रदान की गति को बढ़ाया है, बल्कि इसने मानव संबंधों और सामाजिक अंतःक्रिया के प्रतिमानों को भी परिवर्तित कर दिया है। तकनीकी परिवर्तन प्रायः समाज के पारंपरिक व्यवहारों को विस्थापित कर देते हैं और जीवन जीने के नवीन और अधिक कुशल विधि प्रस्तुत करते हैं। यह दर्शाता है कि कैसे एक वैज्ञानिक आविष्कार पूरी दुनिया की सामाजिक संरचना को रूपांतरित कर सकता है।

294. (B) जाति की असमानता
किसी व्यक्ति के साथ उसकी 'निम्न' मानी जाने वाली जाति की स्थिति के कारण किया जाने वाला भेदभाव जाति की असमानता का दुखद उदाहरण है। यह भेदभाव जन्म के आधार पर मिलने वाली प्रदत्त स्थिति से संबद्ध होता है, जिसे व्यक्ति अपनी किसी

NODIA

भी उपलब्धि से परिवर्तित नहीं कर सकता। जाति आधारित असमानता समाज में सामाजिक बहिष्कार और मानवाधिकारों के उल्लंघन को जन्म देती है। यह एक ऐसी संरचित अन्याय की व्यवस्था है जो पीढ़ियों तक बनी रहती है और समाज के एक बड़े भाग को उनकी गरिमा और विकास के समान अधिकारों से वंचित रखती है।

295. (A) लैंगिक समाजीकरण
लैंगिक समाजीकरण वह विशिष्ट प्रक्रिया है जिसके माध्यम से बालक समाज में पुरुषों और महिलाओं हेतु उपयुक्त माने जाने वाले व्यवहारों और भूमिकाओं को सीखता है। यह प्रक्रिया जन्म के तुरंत पश्चात प्रारंभ हो जाती है जब परिवार और भाषा के माध्यम से बालकों को यह संदेश दिया जाता है कि उन्हें कैसा व्यवहार करना चाहिए। इसके माध्यम से ही समाज में लैंगिक पहचान का निर्माण होता है। यह समाजीकरण न केवल व्यक्तित्व को गढ़ता है, बल्कि यह समाज में लैंगिक असमानता और रुढ़िवादिता को भी बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

296. (B) स्थिति प्रदत्त होती है और श्रेणियों के बीच आवागमन कठिन होता है।
स्तरीकरण की एक बंद प्रणाली वह व्यवस्था है जहाँ व्यक्ति की सामाजिक स्थिति जन्म से ही निर्धारित होती है और इसे बदला नहीं जा सकता। ऐसी प्रणाली में ऊर्ध्वमुखी सामाजिक गतिशीलता लगभग असंभव होती है क्योंकि स्थिति 'प्रदत्त' होती है, न कि 'अर्जित'। जाति व्यवस्था इसका सटीक उदाहरण है, जहाँ कठोर सामाजिक नियमों और अंतर्विवाह के कारण भिन्न श्रेणियों के मध्य आवागमन पर सख्त प्रतिबंध होते हैं। बंद प्रणालियां सामाजिक ठहराव को बढ़ावा देती हैं और समाज में मौजूद असमानता को पीढ़ियों तक स्थाई और अपरिवर्तनीय बनाए रखती हैं।

297. (C) कथन I असत्य है, लेकिन कथन II सत्य है।
सामाजिक परिवर्तन को सदैव सभी हेतु 'सुधार' मानना एक त्रुटिपूर्ण धारणा है। वास्तव में, सामाजिक परिवर्तन एक जटिल प्रक्रिया है जो पुरानी व्यवस्था को विनष्ट करती है और साथ में नवीन समस्याओं को भी जन्म दे सकती है। उदाहरण के लिए, तकनीकी प्रगति ने जहाँ जीवन सुगम बनाया है, वहीं इसने डिजिटल विभाजन जैसी नवीन चुनौतियां भी उत्पन्न की हैं। अतः परिवर्तन सदैव सकारात्मक नहीं होता; इसके प्रभाव भिन्न समूहों हेतु भिन्न हो सकते हैं और यह समाज में नवीन प्रकार के संघर्ष और असंतुलन की स्थिति उत्पन्न करने की क्षमता रखता है।

298. (B) भाषाई विविधता
भारत में सैकड़ों भाषाओं और हजारों बोलियों का अस्तित्व देश की विशाल भाषाई विविधता का एक गौरवशाली प्रमाण है। यह विविधता दर्शाती है कि भारत एक ऐसा बहुभाषी राष्ट्र है जहाँ प्रत्येक भाषा का अपना ऐतिहासिक और सामाजिक महत्व है। भिन्न भाषा परिवारों से संबद्ध ये भाषाएं भारत के भिन्न क्षेत्रों की अनूठी पहचान और समृद्ध साहित्य को संजोए हुए हैं। भाषाई विविधता भारतीय समाज के बहुलवादी चरित्र की अनिवार्य विशेषता है, जो आपसी संवाद और सांस्कृतिक आदान-प्रदान के माध्यम से राष्ट्रीय एकता के ताने-बाने को और अधिक रंगीन एवं सुदृढ़ बनाती है।

299. (B) घरेलू हिंसा
परिवार के भीतर होने वाला शारीरिक या मानसिक शोषण 'घरेलू हिंसा' की श्रेणी में आता है। यह एक गंभीर सामाजिक और कानूनी विषय है जो परिवार की आंतरिक शांति और सदस्यों की सुरक्षा को सीधे तौर पर प्रभावित करता है। घरेलू हिंसा प्रायः शक्ति के असंतुलन और नियंत्रण बनाए रखने की इच्छा का परिणाम होती है। यह पीड़ित व्यक्ति के आत्म-सम्मान और मानवाधिकारों का हनन करती है। समाज में इसके प्रति जागरूकता और शून्य सहनशीलता अनिवार्य है, क्योंकि यह परिवार की संस्था को दुर्बल करती है और आने वाली पीढ़ियों के मानसिक स्वास्थ्य पर बुरा प्रभाव डालती है।

300. (B) समाजीकरण
समाजीकरण वह अत्यंत महत्वपूर्ण और आजीवन चलने वाली प्रक्रिया है जिसके माध्यम से व्यक्ति अपने समाज के मानदंडों, मूल्यों और रीति-रिवाजों को सीखता है। यह प्रक्रिया जन्म से प्रारंभ होकर मृत्यु तक निरंतर चलती रहती है और व्यक्ति को एक जागरूक सामाजिक प्राणी के रूप में विकसित करती है। समाजीकरण के माध्यम से ही व्यक्ति समाज में रहने के योग्य बनता है और अपनी संस्कृति को आत्मसात करता है। यह समाज की निरंतरता बनाए रखने हेतु अनिवार्य है क्योंकि इसी के द्वारा सामाजिक विरासत और नियम एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक प्रभावी ढंग से हस्तांतरित होते रहते हैं।

www.nodia.in

Click Here to Buy book on Amazon

अध्याय 03
समाजशास्त्रीय सिद्धांत

NODIA

1. ए.आर. रेडक्लिफ-ब्राउन के अनुसार, व्यक्तियों के बीच के वे वास्तविक सामाजिक संबंध जो प्रत्यक्ष रूप से अवलोकनीय हैं, क्या गठित करते हैं?
(A) सामाजिक संरचना
(B) सामाजिक संगठन
(C) सामाजिक प्रकार्य
(D) सामाजिक आकारिकी

2. नीचे दो कथन दिए गए हैं। सही विकल्प का चयन कीजिए।
कथन I: ब्रॉनिस्लॉ मैलिनोवस्की का तर्क था कि प्रत्येक सांस्कृतिक वस्तु और सामाजिक संस्था व्यक्तियों की जैविक आवश्यकताओं को पूरा करने के उद्देश्य से कार्य करती है।
कथन II: मैलिनोवस्की के प्रकार्यवाद को अक्सर व्यक्तिवादी प्रकार्यवाद के रूप में वर्णित किया जाता है क्योंकि यह सामाजिक आवश्यकताओं की तुलना में व्यक्तिगत आवश्यकताओं को प्राथमिकता देता है।
(A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
(B) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।
(C) कथन I सही है, लेकिन कथन II गलत है।
(D) कथन I गलत है, लेकिन कथन II सही है।

3. निम्नलिखित में से कौन सा कथन सामाजिक संरचना पर एस.एफ. नाडेल के दृष्टिकोण का सही प्रतिनिधित्व करता है?
(A) सामाजिक संरचना एक मूर्त और प्रत्यक्ष रूप से अवलोकनीय आनुभविक वास्तविकता है।
(B) सामाजिक संरचना समाज के आर्थिक आधार का सटीक पर्यायवाची है।
(C) सामाजिक संरचना भूमिकाओं के विश्लेषण से प्राप्त एक अमूर्त अवधारणा है।
(D) सामाजिक संरचना व्यक्तियों के बीच प्रतीकात्मक अंतःक्रिया का प्राथमिक उत्पाद है।

4. एमिल दुर्खीम के अनुसार, नियमहीनता की वह स्थिति जो तब उत्पन्न होती है जब समाज के मानदंड और मूल्य कमजोर या परस्पर विरोधी होते हैं, क्या कहलाती है?
(A) अलगाव
(B) अहंकेंद्रित
(C) परार्थवाद
(D) एनोमी

5. मैक्स वेबर ने वैध सत्ता के तीन शुद्ध प्रकारों की पहचान की। निम्नलिखित में से कौन सा उनमें से एक नहीं है?
(A) पारंपरिक सत्ता
(B) करिश्माई सत्ता
(C) लोकतांत्रिक सत्ता
(D) तार्किक-कानूनी सत्ता

6. ए.आर. रेडक्लिफ-ब्राउन के कार्य में "सामाजिक संरचना" की अवधारणा किसे संदर्भित करती है?
(A) एक समूह में व्यक्तियों की अंतर्निहित मनोवैज्ञानिक प्रेरणाओं को।
(B) संस्थागत रूप से नियंत्रित संबंधों में व्यक्तियों की व्यवस्था को।
(C) सभी अवलोकनीय सामाजिक अंतःक्रियाओं के व्यापक कुल योग को।
(D) प्राथमिक आर्थिक बुनियादी ढांचे को जो संगठित सामाजिक जीवन निर्धारित करता है।

7. टैलकॉट पार्सन्स की सामाजिक व्यवस्था की अवधारणा के संबंध में गलत कथन की पहचान कीजिए।
(A) यह व्यक्तियों की अंतःक्रियाओं से बनी है।
(B) यह अपनी सीमाओं और पर्यावरण के साथ अपने संबंधों द्वारा परिभाषित होती है।
(C) जीवित रहने के लिए इसे चार प्रकार्यात्मक पूर्व-आवश्यकताओं (एजीआईएल) को हल करना चाहिए।
(D) इसकी मुख्य विशेषता संघर्ष और परिवर्तन है।

8. कार्ल मार्क्स के अनुसार, अब तक के सभी अस्तित्ववान समाजों का इतिहास किसका इतिहास है?
(A) वर्ग संघर्षों का
(B) जनसंख्या वृद्धि का
(C) तार्किकता का
(D) प्रस्थिति प्रतिस्पर्धा का

9. निम्नलिखित में से कौन सा परिप्रेक्ष्य भारतीय समाज के अध्ययन के लिए जी.एस. घुरये के दृष्टिकोण से सबसे निकटता से जुड़ा है?
(A) अधीनस्थ परिप्रेक्ष्य
(B) संरचनात्मक-प्रकार्यात्मक परिप्रेक्ष्य
(C) भारतविद्या / पाठ्य परिप्रेक्ष्य
(D) मार्क्सवादी परिप्रेक्ष्य

10. निम्नलिखित में से कौन सा ब्रॉनिस्लॉ मैलिनोवस्की द्वारा अपने प्रकार्यवादी सिद्धांत में पहचाना गया आवश्यकता का प्रकार नहीं है?
(A) प्रच्छन्न आवश्यकताएं

(B) बुनियादी आवश्यकताएं
(C) साधनपरक आवश्यकताएं
(D) एकीकृत आवश्यकताएं

11. एक सामाजिक भूमिका की 'निश्चितता' से एस.एफ. नाडेल का क्या तात्पर्य था?
(A) वह विशिष्ट सीमा जहाँ तक एक सामाजिक भूमिका तय और अपरिवर्तनीय होती है।
(B) एक भूमिका से जुड़ी प्रतिष्ठा और सामाजिक सम्मान का सापेक्ष स्तर।
(C) एक विशिष्ट भूमिका निभाने से जुड़े विभिन्न आर्थिक पुरस्कार।
(D) वह सीमा जहाँ तक भूमिका व्यवहार को निर्दिष्ट किया जाता है, जिससे भिन्नता सीमित हो जाती है।

12. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में लेबल किया गया है। सही विकल्प का चयन कीजिए।
अभिकथन (A): रॉबर्ट मर्टन ने सार्वभौमिक प्रकार्यवाद की प्रकार्यवादी धारणा की आलोचना की।
कारण (R): मर्टन ने तर्क दिया कि कुछ सामाजिक या सांस्कृतिक रूपों के परिणाम समाज या उसके भीतर के समूहों के लिए सामान्यतः दुष्प्रकार्यात्मक या गैर-प्रकार्यात्मक हो सकते हैं।
(A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सही है लेकिन R गलत है।
(D) A गलत है लेकिन R सही है।

13. विल्फ्रेडो पैरेटो की 'अवशेष' की अवधारणा किसे संदर्भित करती है?
(A) उन तार्किक औचित्यों को जो लोग अपने कार्यों के लिए उपयोग करते हैं।
(B) उन राजनीतिक और आर्थिक अभिजात वर्गों को जो समाज पर शासन करते हैं।
(C) उन निरंतर, सहज और अतार्किक भावनाओं को जो व्यवहार को संचालित करती हैं।
(D) सामाजिक क्रिया के अनपेक्षित परिणामों को।

14. एम.एन. श्रीनिवास के अनुसार, वह प्रक्रिया जिसके द्वारा एक 'निम्न' हिंदू जाति, या जनजातीय समूह, उच्च 'द्विज' जाति की दिशा में अपने रीति-रिवाजों और अनुष्ठानों को बदलता है, क्या कहलाती है?
(A) पश्चिमीकरण
(B) आधुनिकीकरण
(C) धर्मनिरपेक्षीकरण
(D) संस्कृतिकरण

15. सूची I (अवधारणा) को सूची II (समाजशास्त्री) के साथ सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए कूट का उपयोग करके सही उत्तर चुनिए।
सूची I:
P. प्रच्छन्न प्रकार्य
Q. वर्स्टेहेन
R. अभिजात वर्ग का संचरण
S. सामाजिक तथ्य
सूची II:
1. विल्फ्रेडो पैरेटो
2. एमिल दुर्खीम
3. रॉबर्ट के. मर्टन
4. मैक्स वेबर
कूट:
(A) P-3, Q-4, R-1, S-2
(B) P-1, Q-2, R-3, S-4
(C) P-3, Q-1, R-4, S-2
(D) P-4, Q-3, R-2, S-1

16. निम्नलिखित विचारकों में से कौन 'अनिवार्य रूप से समन्वित संघों' की अवधारणा से सबसे निकटता से जुड़ा है?
(A) कार्ल मार्क्स
(B) राल्फ डहरेंडोर्फ
(C) लुईस कोज़र
(D) टैलकॉट पार्सन्स

17. "I" और "Me" के बीच का अंतर किसके सामाजिक मनोविज्ञान की एक केंद्रीय अवधारणा है?
(A) हरबर्ट ब्लूमर
(B) जॉर्ज हरबर्ट मीड
(C) मैक्स वेबर
(D) एमिल दुर्खीम

18. भारतीय गाँवों के अपने अध्ययन में, एस.सी. दुबे ने मुख्य रूप से किस पर ध्यान केंद्रित किया?
(A) बहुविध परंपराओं की परस्पर क्रिया और सामाजिक परिवर्तन में उनकी भूमिका पर।
(B) समकालीन ग्रामीण राजनीतिक गतिशीलता में जाति की विशिष्ट भूमिका पर।
(C) निचली जातियों के प्रति निर्देशित आर्थिक शोषण के इतिहास पर।
(D) जनजातीय समुदायों के बीच संस्कृतिकरण की विस्तृत प्रक्रिया पर।

19. निम्नलिखित में से कौन सा परिप्रेक्ष्य रेडक्लिफ-ब्राउन की 'सामाजिक शरीर क्रिया विज्ञान' की अवधारणा से सबसे निकटता से जुड़ा है?
(A) सामाजिक जीवन की स्थिर संरचना या रूप का अध्ययन।
(B) सामाजिक जीवन के विभिन्न रूपों का तुलनात्मक अध्ययन।
(C) इस बात का अध्ययन कि सामाजिक संरचनाएं व्यवस्था

Downloaded from www.pdf.tube

को बनाए रखने के लिए कैसे कार्य करती हैं।
(D) विविध वैश्विक समाजों के ऐतिहासिक विकास का अध्ययन।

20. ब्रॉनिस्लॉ मैलिनोवस्की के अनुसार, जादू का प्राथमिक कार्य क्या है?
(A) विभिन्न अज्ञात घटनाओं के लिए एक तार्किक व्याख्या प्रदान करना।
(B) साझा सामूहिक अनुष्ठानों के माध्यम से सामाजिक एकजुटता बनाना।
(C) समकालीन सत्ताधारी वर्ग की शक्ति गतिशीलता को सुदृढ़ करना।
(D) अनिश्चितता के क्षेत्रों को पाटना और मनोवैज्ञानिक चिंता का प्रबंधन करना।

21. आत्महत्या के दुर्खीम के सिद्धांत के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. अहंकेंद्रित आत्महत्या समूह में व्यक्ति के अत्यधिक एकीकरण के परिणामस्वरूप होती है।
2. एनोमिक आत्महत्या सामाजिक मानदंडों और नियमों के अचानक व्यवधान के कारण होती है।
3. परार्थवादी आत्महत्या तब होती है जब व्यक्ति सामाजिक समूहों में अपर्याप्त रूप से एकीकृत होता है।

उपरोक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?
(A) केवल 2
(B) केवल 1 और 3
(C) 1, 2 और 3
(D) केवल 2 और 3

22. एक छात्र विश्वविद्यालय के नियमों का पालन करता है क्योंकि उसका मानना है कि प्रशासन को उन्हें लागू करने का वैध अधिकार है। मैक्स वेबर के अनुसार, यह किस पर आधारित अनुपालन है?
(A) करिश्माई सत्ता
(B) तार्किक-कानूनी सत्ता
(C) पारंपरिक सत्ता
(D) भावात्मक क्रिया

23. मर्टन के तनाव सिद्धांत में, एक व्यक्ति जो सामाजिक लक्ष्यों को स्वीकार करता है लेकिन उन्हें प्राप्त करने के लिए अवैध साधनों का उपयोग करता है, उसे किस रूप में वर्गीकृत किया जाता है?
(A) कर्मकांडी
(B) परित्यागी
(C) विद्रोही
(D) नवाचारी

24. प्रभावशाली कृति "होमो हाइरार्कस" के लेखक कौन हैं?
(A) लुई ड्यूमॉन्ट
(B) जी.एस. घुरये
(C) एम.एन. श्रीनिवास
(D) बी.आर. अंबेडकर

25. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में लेबल किया गया है। सही विकल्प का चयन कीजिए।
अभिकथन (A): हरबर्ट ब्लूमर के अनुसार, अर्थ किसी वस्तु में अंतर्निहित नहीं होता बल्कि सामाजिक अंतःक्रिया से उत्पन्न होता है।
कारण (R): प्रतीकात्मक अंतःक्रियावाद यह मानता है कि लोग चीजों के प्रति उन अर्थों के आधार पर कार्य करते हैं जो वे उन चीजों को देते हैं, और इन अर्थों को एक व्याख्यात्मक प्रक्रिया के माध्यम से संशोधित किया जाता है।
(A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सही है लेकिन R गलत है।
(D) A गलत है लेकिन R सही है।

26. राधा कमल मुखर्जी की "मूल्यों के समाजशास्त्र" की अवधारणा इस बात पर जोर देती है कि:
(A) मूल्य समाज के संगठन और कामकाज के लिए केंद्रीय हैं।
(B) मूल्य व्यक्तिपरक हैं और उनका वैज्ञानिक रूप से अध्ययन नहीं किया जा सकता है।
(C) आर्थिक कारक सामाजिक मूल्यों के प्राथमिक निर्धारक हैं।
(D) मूल्य केवल प्रभुत्वशाली वर्ग के वैचारिक उपकरण हैं।

27. लुईस कोज़र का सामाजिक संघर्ष का प्रकार्यात्मक विश्लेषण बताता है कि संघर्ष:
(A) हमेशा दुष्प्रकार्यात्मक होता है और इसे व्यवस्थित रूप से समाप्त किया जाना चाहिए।
(B) पूरी तरह से सत्ता के असमान वितरण से उत्पन्न होता है।
(C) आधुनिक सामाजिक व्यवस्था की एक अस्थायी रोगविज्ञानी अवस्था है।
(D) समूहों के भीतर सामंजस्य और एकीकरण बढ़ाने का कार्य कर सकता है।

28. बी.आर. अंबेडकर की कृति "जाति का विनाश" का मुख्य तर्क क्या है?
(A) जाति में सुधार केवल अंतरजातीय भोज और विवाह के माध्यम से किया जा सकता है।
(B) सामाजिक सुधार के लिए जाति व्यवस्था की धार्मिक पवित्रता को नष्ट करना आवश्यक है।
(C) जाति व्यवस्था मौलिक रूप से श्रम विभाजन पर आधारित है।
(D) जाति की समस्या एक सामाजिक समस्या है जिसके लिए राजनीतिक समाधान की आवश्यकता है।

29. निम्नलिखित में से कौन सा अवधारणा और समाजशास्त्री का युग्म गलत सुमेलित है?

NODIA

(A) प्रतिमान चर - टैलकॉट पार्सन्स
(B) अनिवार्य रूप से समन्वित संघ - राल्फ डहरेंडोर्फ
(C) कुला वलय - ए.आर. रेडक्लिफ-ब्राउन
(D) पवित्र और अपवित्र - एमिल दुर्खीम

30. एस.एफ. नाडेल ने समाज बनाने वाली भूमिकाओं के बीच संबंधों के जाल का वर्णन करने के लिए किस शब्द का उपयोग किया?
(A) सामाजिक संगठन
(B) सामाजिक नेटवर्क
(C) संस्थागत मैट्रिक्स
(D) संरचनात्मक रूप

31. टैलकॉट पार्सन्स की एजीआईएल योजना चार प्रकार्यात्मक समस्याओं को रेखांकित करती है जिन्हें प्रत्येक सामाजिक व्यवस्था को हल करना चाहिए। एजीआईएल में 'A' का अर्थ क्या है?
(A) अनुकूलन
(B) संघ
(C) सत्ता
(D) क्रिया

32. मैक्स वेबर के अनुसार, किस प्रकार की सामाजिक क्रिया कर्ता की भावनात्मक स्थिति से प्रेरित होती है?
(A) उद्देश्यपूर्ण-तार्किक
(B) भावात्मक क्रिया
(C) मूल्य-तार्किक
(D) पारंपरिक क्रिया

33. निम्नलिखित में से कौन सा शिक्षा व्यवस्था के उस कार्य का सबसे अच्छा उदाहरण है जिसे रॉबर्ट मर्टन 'प्रच्छन्न प्रकार्य' कहेंगे?
(A) छात्रों को बुनियादी साक्षरता और अंकगणित कौशल सिखाना।
(B) एक ऐसा सामाजिक वातावरण प्रदान करना जहाँ व्यक्ति भविष्य के जीवनसाथी से मिलते हैं।
(C) युवा पीढ़ी को सामाजिक मानदंडों और मूल्यों को हस्तांतरित करना।
(D) छात्रों को विभिन्न भविष्य के पेशेवर करियर के लिए तैयार करना।

34. जी.एच. मीड की 'सामान्यीकृत अन्य' की अवधारणा किसे संदर्भित करती है?
(A) वह संगठित समुदाय जो व्यक्ति को उसकी आत्म-एकता प्रदान करता है।
(B) एक विशिष्ट व्यक्ति जिसे व्यक्ति के जीवन में महत्वपूर्ण माना जाता है।
(C) विभिन्न जैविक आवेग जो व्यक्तिगत 'I' बनाते हैं।
(D) एक व्यक्ति जिसने सफलतापूर्वक किसी भी अन्य की भूमिका निभाना सीख लिया है।

35. निम्नलिखित समाजशास्त्रीय कृतियों को उनके प्रकाशन के कालानुक्रमिक क्रम में व्यवस्थित कीजिए:
1. द एलिमेंट्री फॉर्म्स ऑफ द रिलिजियस लाइफ (दुर्खीम)
2. द प्रोटेस्टेंट एथिक एंड द स्पिरिट ऑफ कैपिटलिज्म (वेबर)
3. द डिवीजन ऑफ लेबर इन सोसाइटी (दुर्खीम)
4. माइंड, सेल्फ एंड सोसाइटी (मीड)
सही क्रम चुनिए:
(A) 3, 2, 1, 4
(B) 2, 3, 4, 1
(C) 3, 1, 2, 4
(D) 1, 2, 3, 4

36. लुई ड्यूमॉन्ट के अनुसार, भारत में जाति व्यवस्था का मूलभूत सिद्धांत किसके बीच का विरोध है?
(A) अमीर और गरीब
(B) शासक और शासित
(C) पवित्र और धर्मनिरपेक्ष
(D) शुद्ध और अशुद्ध

37. एम.एन. श्रीनिवास ने उस जाति का वर्णन करने के लिए कौन सी अवधारणा प्रस्तावित की जो एक गाँव में संख्यात्मक रूप से मजबूत है और निर्णायक आर्थिक और राजनीतिक शक्ति रखती है?
(A) जजमानी जाति
(B) संस्कृतिकृत जाति
(C) प्रभु जाति
(D) द्विज जाति

38. किस समाजशास्त्री ने मार्क्स के संघर्ष के सिद्धांत को यह तर्क देते हुए संशोधित किया कि आधुनिक समाज में संघर्ष का आधार सत्ता का असमान वितरण है, न कि संपत्ति?
(A) लुईस कोज़र
(B) राल्फ डहरेंडोर्फ
(C) जी.एस. घुरये
(D) मैक्स वेबर

39. रेडक्लिफ-ब्राउन के लिए, 'सामाजिक संरचना' शब्द एक जीव के किसके अनुरूप है?
(A) शरीर क्रिया विज्ञान
(B) मनोविज्ञान
(C) आनुवंशिकी
(D) आकारिकी

40. नीचे दो कथन दिए गए हैं। सही विकल्प का चयन कीजिए।
कथन I: पैरेटो का 'अभिजात वर्ग का संचरण' का सिद्धांत एक निरंतर प्रक्रिया का सुझाव देता है जहाँ निचले स्तर के नए, अधिक सक्षम अभिजात वर्ग पुराने, क्षयकारी शासक अभिजात वर्ग की जगह लेते हैं।
कथन II: पैरेटो का मानना था कि यह संचरण सामाजिक प्रगति सुनिश्चित करता है और एक अधिक समतावादी सामाजिक

Click Here to Buy book on Amazon

व्यवस्था की ओर ले जाता है।
(A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
(B) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।
(C) कथन I सही है, लेकिन कथन II गलत है।
(D) कथन I गलत है, लेकिन कथन II सही है।

41. हरबर्ट ब्लूमर को किस शब्द को गढ़ने का श्रेय दिया जाता है?
(A) सामाजिक क्रिया
(B) संरचनात्मक प्रकार्यवाद
(C) प्रतीकात्मक अंतःक्रियावाद
(D) नृजातिप्रणालीशास्त्र

42. एस.सी. दुबे के विश्लेषण में, निम्नलिखित में से कौन सा परंपरा का वह स्तर नहीं है जिसकी उन्होंने भारतीय समाज में पहचान की थी?
(A) वैश्विक परंपरा
(B) शास्त्रीय परंपरा
(C) क्षेत्रीय परंपरा
(D) राष्ट्रीय परंपरा

43. बी.आर. अंबेडकर के परिप्रेक्ष्य के बारे में निम्नलिखित में से कौन सा कथन गलत है?
(A) उन्होंने जाति को श्रेणीबद्ध असमानता की एक व्यवस्था के रूप में देखा।
(B) उन्होंने जाति के पूर्ण विनाश की वकालत की।
(C) वे भारतीय संविधान के प्रमुख शिल्पकार थे।
(D) उन्होंने गाँव को भारतीय एकता और गणराज्य के प्रतीक के रूप में देखा।

44. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में लेबल किया गया है। सही विकल्प का चयन कीजिए।
अभिकथन (A): मैलिनोवस्की ने तर्क दिया कि ट्रोब्रियांड द्वीपवासियों के बीच 'कुला वलय' का कार्य मुख्य रूप से आर्थिक था, जो आवश्यक वस्तुओं के व्यापार को सुलभ बनाता था।
कारण (R): 'कुला वलय' में गैर-उपयोगितावादी शंख बहुमूल्यों का औपचारिक विनिमय शामिल था, जो दीर्घकालिक सामाजिक संबंधों को बनाने और बनाए रखने का कार्य करता था।
(A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सही है लेकिन R गलत है।
(D) A गलत है लेकिन R सही है।

45. राधा कमल मुखर्जी निम्नलिखित में से किस क्षेत्र में अपने अग्रणी कार्य के लिए जाने जाते हैं?
(A) संघर्ष का समाजशास्त्र
(B) ज्ञान का समाजशास्त्र
(C) मूल्यों का समाजशास्त्र और सामाजिक पारिस्थितिकी
(D) उत्तर-आधुनिक सामाजिक सिद्धांत

46. एमिल दुर्खीम के अनुसार निम्नलिखित में से कौन सा 'यांत्रिक एकजुटता' को सबसे अच्छी तरह परिभाषित करता है?
(A) विशिष्ट व्यक्तियों की परस्पर निर्भरता पर आधारित सामाजिक सामंजस्य।
(B) एक समाज जिसमें उच्च स्तर की एनोमी पाई जाती है।
(C) तार्किक-कानूनी सत्ता संरचनाओं के माध्यम से बना एक सामाजिक बंधन।
(D) समानता और एक मजबूत सामूहिक चेतना पर आधारित सामाजिक सामंजस्य।

47. सूची I (समाजशास्त्री) को सूची II (प्रमुख कृति) के साथ सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए कूट का उपयोग करके सही उत्तर चुनिए।
सूची I:
P. एम.एन. श्रीनिवास
Q. जी.एस. घुरये
R. लुई ड्यूमॉन्ट
S. बी.आर. अंबेडकर
सूची II:
1. होमो हाइरार्कस
2. एनिहिलेशन ऑफ कास्ट
3. कास्ट एंड रेस इन इंडिया
4. द रिमेम्बर्ड विलेज
कूट:
(A) P-1, Q-2, R-3, S-4
(B) P-4, Q-3, R-1, S-2
(C) P-3, Q-4, R-2, S-1
(D) P-4, Q-1, R-3, S-2

48. लुईस कोज़र के संघर्ष के सिद्धांत के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. कोज़र वास्तविक और अवास्तविक संघर्ष के बीच अंतर करते हैं।
2. वे तर्क देते हैं कि संघर्ष समाज में हमेशा एक नकारात्मक शक्ति होती है।
3. वे सुझाव देते हैं कि बार-बार होने वाले, कम तीव्रता वाले संघर्ष 'सुरक्षा-वाल्व' के रूप में कार्य कर सकते हैं, जो अधिक विस्फोटक संघर्षों को रोकते हैं।
उपरोक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?
(A) केवल 1 और 2
(B) केवल 2 और 3
(C) केवल 1 और 3
(D) 1, 2 और 3

49. टैलकॉट पार्सन्स के लिए, 'प्रच्छन्नता' या प्रतिमान-अनुरक्षण प्रकार्य मुख्य रूप से किस उप-व्यवस्था द्वारा किया जाता है?
(A) अर्थव्यवस्था
(B) न्यासी व्यवस्थाएं जैसे परिवार और स्कूल
(C) राजनीति

NODIA

(D) सामाजिक समुदाय

50. मैक्स वेबर की 'आदर्श प्रारूप' की अवधारणा क्या है?
(A) सामाजिक वास्तविकता को समझने के लिए एक मापने वाली छड़ी के रूप में उपयोग की जाने वाली एक विश्लेषणात्मक संरचना।
(B) एक सामाजिक घटना के सबसे नैतिक रूप से वांछनीय रूप का वर्णन।
(C) एक जनसंख्या में अवलोकित सामाजिक व्यवहारों का सांख्यिकीय औसत।
(D) एक विकसित समाज की निश्चित भविष्य की स्थिति की भविष्यवाणी।

51. जी.एच. मीड ने किस अवधारणा को स्पष्ट करने के लिए "खेल" (जैसे बेसबॉल) के उदाहरण का उपयोग किया?
(A) "I"
(B) "Me"
(C) सामान्यीकृत अन्य
(D) महत्वपूर्ण प्रतीक

52. डहरेंडोर्फ की 'अर्ध-समूह' की अवधारणा किसे संदर्भित करती है?
(A) संगठित समूह जो सक्रिय रूप से अपने प्रकट हितों को पूरा कर रहे हैं।
(B) करिश्माई नेतृत्व पर आधारित संघ।
(C) वे समूह जिन्होंने मौजूदा सत्ता संरचना को सफलतापूर्वक उखाड़ फेंका है।
(D) वे समूह जो प्रच्छन्न हितों को साझा करते हैं लेकिन अभी तक संगठित नहीं हैं।

53. निम्नलिखित में से किसने तर्क दिया कि भारत में जनजातियाँ 'पिछड़े हिंदू' थे?
(A) एम.एन. श्रीनिवास
(B) एस.सी. दुबे
(C) जी.एस. घुरये
(D) बी.आर. अंबेडकर

54. एक समाजशास्त्री जो नई सामाजिक कल्याण नीति के अनपेक्षित नकारात्मक परिणामों का अध्ययन कर रहा है, वह उस पर ध्यान केंद्रित कर रहा है जिसे रॉबर्ट मर्टन कहेंगे:
(A) एक प्रकट प्रकार्य
(B) एक दुष्प्रकार्य
(C) एक प्रच्छन्न प्रकार्य
(D) एक गैर-प्रकार्य

55. रेडक्लिफ-ब्राउन के अनुसार, वह अवधारणा जो उस योगदान को संदर्भित करती है जो एक गतिविधि समाज की संरचनात्मक निरंतरता को बनाए रखने में देती है, क्या है?
(A) सामाजिक आकारिकी
(B) सामाजिक मूल्य
(C) सामाजिक संगठन
(D) सामाजिक प्रकार्य

56. विल्फ्रेडो पैरेटो की 'व्युत्पत्ति' की अवधारणा को सबसे अच्छी तरह से कैसे समझा जा सकता है?
(A) उन मौखिक औचित्यों के रूप में जो लोग अपने अतार्किक कार्यों के लिए देते हैं।
(B) मौलिक मानवीय प्रवृत्तियों के रूप में।
(C) समाज में अभिजात वर्ग के प्रतिस्थापन की प्रक्रिया के रूप में।
(D) आय वितरण में देखी गई सांख्यिकीय नियमितताओं के रूप में।

57. निम्नलिखित में से कौन सा प्रतीकात्मक अंतःक्रियावाद के हरबर्ट ब्लूमर के तीन बुनियादी परिसरों में से एक नहीं है?
(A) मनुष्य चीजों के प्रति उन अर्थों के आधार पर कार्य करते हैं जो वे उनके लिए रखते हैं।
(B) ऐसी चीजों का अर्थ सामाजिक अंतःक्रिया से प्राप्त होता है।
(C) सामाजिक संरचनाएं और संस्थाएं मानवीय क्रिया की प्राथमिक निर्धारक हैं।
(D) इन अर्थों को एक व्याख्यात्मक प्रक्रिया के माध्यम से संशोधित किया जाता है।

58. लुई ड्यूमॉन्ट का कार्य भारत के समग्र, पदानुक्रमित समाज की तुलना पश्चिम के _____ समाज से करता है।
(A) व्यक्तिवादी
(B) पारंपरिक
(C) सामुदायिक
(D) कृषि

59. आत्महत्या का वह प्रकार जिसे दुर्खीम ने अत्यधिक सामाजिक नियमन और उत्पीड़न की स्थितियों से जोड़ा था, क्या कहलाता है?
(A) एनोमिक
(B) अहंकेंद्रित
(C) परार्थवादी
(D) भाग्यवादी

60. एस.सी. दुबे का अध्ययन 'इंडियन विलेज' किस गाँव में किए गए क्षेत्रीय कार्य पर आधारित था?
(A) रामपुरा
(B) शमीरपेट
(C) कुम्बापेट्टई
(D) मोहना

61. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में लेबल किया गया है। सही विकल्प का चयन कीजिए।
अभिकथन (A): बी.आर. अंबेडकर भारतीय ग्राम व्यवस्था के कट्टर आलोचक थे, उन्होंने इसे "स्थानीयता का कीचड़, अज्ञानता, संकीर्णता और सांप्रदायिकता का अड्डा" कहा था।

NODIA

कारण (R): उनका मानना था कि ग्रामीण संरचना ने जाति व्यवस्था और दलितों के उत्पीड़न को बनाए रखा, जिससे किसी भी वास्तविक सामाजिक प्रगति को रोका गया।
(A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सही है लेकिन R गलत है।
(D) A गलत है लेकिन R सही है।

62. भारतीय समाजशास्त्र में 'अधीनस्थ परिप्रेक्ष्य' किसके लेखन और विचारों से सबसे दृढ़ता से जुड़ा है?
(A) एम.एन. श्रीनिवास
(B) बी.आर. अंबेडकर
(C) लुई ड्यूमॉन्ट
(D) राधा कमल मुखर्जी

63. वेबर के अनुसार, किस प्रकार की सामाजिक क्रिया अपने अंतर्निहित मूल्य के कारण स्वयं में एक साध्य के रूप में की जाती है?
(A) उद्देश्यपूर्ण-तार्किक
(B) भावात्मक क्रिया
(C) मूल्य-तार्किक
(D) पारंपरिक क्रिया

64. कार्ल मार्क्स की 'अलगाव' की अवधारणा में निम्नलिखित में से किसके अलावा अन्य सभी आयाम शामिल हैं?
(A) श्रम के उत्पाद से अलगाव
(B) श्रम की क्रिया से अलगाव
(C) साथी मनुष्यों से अलगाव
(D) राजनीतिक शक्ति से अलगाव

65. सूची I (सिद्धांत) को सूची II (मुख्य विचार) के साथ सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए कूट का उपयोग करके सही उत्तर चुनिए।
सूची I:
P. संरचनात्मक-प्रकार्यवाद (पार्सन्स)
Q. संघर्ष सिद्धांत (डहरेंडोर्फ)
R. प्रतीकात्मक अंतःक्रियावाद (ब्लूमर)
S. प्रकार्यवाद (मैलिनोवस्की)
सूची II:
1. समाज परस्पर जुड़ी भूमिकाओं और संस्थाओं के रूप में जो व्यक्तिगत आवश्यकताओं को पूरा करते हैं।
2. समाज एक मंच के रूप में जहाँ व्याख्या के माध्यम से अर्थ निर्मित होते हैं।
3. समाज एक एकीकृत व्यवस्था के रूप में जो समग्र के लिए एक प्रकार्य पूर्ण करती है।
4. समाज एक ऐसी व्यवस्था के रूप में जिसमें सत्ता को लेकर अंतर्निहित संघर्ष होता है।
कूट:
(A) P-3, Q-4, R-2, S-1
(B) P-1, Q-2, R-3, S-4
(C) P-3, Q-1, R-4, S-2
(D) P-4, Q-3, R-2, S-1

66. ब्रॉनिस्लॉ मैलिनोवस्की के प्रकार्यवाद में, संस्कृति को मुख्य रूप से किस रूप में देखा जाता है?
(A) मानवीय आवश्यकताओं की संतुष्टि के लिए एक साधनपरक उपकरण के रूप में।
(B) प्रतीकों और अर्थों की एक व्यवस्था के रूप में।
(C) आर्थिक आधार के एक अधिरचनात्मक प्रतिबिंब के रूप में।
(D) सामाजिक संघर्ष और असमानता के स्रोत के रूप में।

67. रेडक्लिफ-ब्राउन ने 'सामाजिक संरचना' और 'सामाजिक संगठन' के बीच एक अंतर किया। 'सामाजिक संगठन' किसे संदर्भित करता है?
(A) सभी व्यक्ति-से-व्यक्ति संबंधों के नेटवर्क को।
(B) संस्थागत मानदंडों और प्रस्थिति-स्थितियों को।
(C) सामाजिक व्यवस्था के अंतर्निहित सिद्धांतों को।
(D) व्यक्तियों के संबंधों में उनकी गतिविधियों की व्यवस्था को।

68. यह विचार कि संघर्ष नए समूहों के गठन की ओर ले जा सकता है जिससे सामाजिक परिवर्तन को बढ़ावा मिलता है, किसका एक प्रमुख तर्क है?
(A) लुईस कोज़र
(B) टैलकॉट पार्सन्स
(C) एमिल दुर्खीम
(D) ब्रॉनिस्लॉ मैलिनोवस्की

69. जी.एच. मीड का "दूसरे की भूमिका निभाना" से क्या तात्पर्य था?
(A) बिना समझे किसी दूसरे व्यक्ति के व्यवहार की नकल करना।
(B) किसी और की सामाजिक प्रस्थिति को अपनाना।
(C) स्वयं को दूसरे के स्थान पर रखना और उनके दृष्टिकोण से देखना।
(D) दूसरे व्यक्ति के समान भावनाओं का अनुभव करना।

70. "सामाजिक तथ्य कार्य करने का वह तरीका है जो व्यक्ति पर बाहरी दबाव डालने में सक्षम हो।" यह परिभाषा किसके द्वारा दी गई थी?
(A) एमिल दुर्खीम
(B) मैक्स वेबर
(C) कार्ल मार्क्स
(D) हरबर्ट स्पेंसर

71. निम्नलिखित समाजशास्त्रियों को उनके बौद्धिक योगदान की प्राथमिक अवधि के आधार पर कालानुक्रमिक रूप से व्यवस्थित कीजिए:
1. टैलकॉट पार्सन्स
2. कार्ल मार्क्स

Downloaded from www.pdf.tube

3. एमिल दुर्खीम
4. राल्फ डहरेंडोर्फ

सही क्रम चुनिए:
(A) 2, 3, 1, 4
(B) 3, 2, 4, 1
(C) 2, 1, 3, 4
(D) 1, 2, 3, 4

72. एम.एन. श्रीनिवास ने 'पश्चिमीकरण' शब्द का उपयोग किसके लिए किया?
(A) ब्रिटिश शासन के परिणामस्वरूप होने वाले सांस्कृतिक परिवर्तन।
(B) पश्चिमी तकनीक और भौतिक वस्तुओं का अनन्य रूप से अपनाना।
(C) भारतीय संदर्भ में ईसाई बनने की विशिष्ट प्रक्रिया।
(D) उच्च वर्गों द्वारा पश्चिमी पहनावे और खान-पान का अनुकरण।

73. एस.एफ. नाडेल के अनुसार, सामाजिक संरचना को परिभाषित करने के लिए निम्नलिखित में से कौन सी कसौटी नहीं है?
(A) यह एक अमूर्तन है।
(B) इसमें भागों का परस्पर संबंध शामिल है।
(C) यह सामाजिक प्रक्रियाओं की तुलना में अपेक्षाकृत स्थिर है।
(D) यह एक आनुभविक रूप से अवलोकनीय इकाई है।

74. पैरेटो के सिद्धांत के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. 'अवशेष' मानवीय क्रिया में स्थिर, सार्वभौमिक तत्व हैं।
2. 'व्युत्पत्तियां' परिवर्तनशील हैं और कार्यों के लिए तार्किक औचित्य का प्रतिनिधित्व करती हैं।
3. पैरेटो का मानना था कि मानवीय क्रिया मुख्य रूप से तार्किक होती है।

उपरोक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?
(A) केवल 3
(B) केवल 1 और 2
(C) केवल 2 और 3
(D) 1, 2 और 3

75. प्रकार्यात्मक विश्लेषण के मर्टन के प्रतिमान में, 'दुष्प्रकार्य' किसे संदर्भित करते हैं?
(A) उन सामाजिक प्रतिमानों को जिनका कोई अवलोकनीय परिणाम नहीं होता।
(B) एक सामाजिक प्रतिमान के अपरिचित और अनपेक्षित परिणामों को।
(C) एक सामाजिक प्रतिमान के मान्यता प्राप्त और इच्छित परिणामों को।
(D) उन अवलोकित परिणामों को जो व्यवस्था के अनुकूलन को कम करते हैं।

76. निम्नलिखित में से किसने 'शुद्धता और अशुद्धता' की अवधारणा को भारतीय जाति व्यवस्था के विश्लेषण के लिए केंद्रीय धुरी के रूप में उपयोग किया?
(A) जी.एस. घुरये
(B) लुई ड्यूमॉन्ट
(C) एम.एन. श्रीनिवास
(D) एस.सी. दुबे

77. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में लेबल किया गया है। सही विकल्प का चयन कीजिए।
अभिकथन (A): रेडक्लिफ-ब्राउन के संरचनात्मक-प्रकार्यवाद की तुलना अक्सर शरीर रचना विज्ञान और शरीर क्रिया विज्ञान के अध्ययन से की जाती है।
कारण (R): उन्होंने एक जैविक जीव की सादृश्यता का उपयोग किया, जहाँ सामाजिक संरचना शरीर की रचना के समान है और सामाजिक जीवन इसकी कार्यप्रणाली के समान है।
(A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सही है लेकिन R गलत है।
(D) A गलत है लेकिन R सही है।

78. मार्क्स और डहरेंडोर्फ के संघर्ष सिद्धांतों के बीच एक प्रमुख अंतर क्या है?
(A) मार्क्स ने संघर्ष की जड़ें संपत्ति संबंधों में देखीं, जबकि डहरेंडोर्फ ने इसकी जड़ें सत्ता संबंधों में देखीं।
(B) डहरेंडोर्फ का मानना था कि संघर्ष हमेशा क्रांतिकारी होता है, जबकि मार्क्स ऐसा नहीं मानते थे।
(C) मार्क्स ने औद्योगिक समाज पर ध्यान केंद्रित किया, जबकि डहरेंडोर्फ ने कृषि समाज पर ध्यान केंद्रित किया।
(D) डहरेंडोर्फ ने वर्ग के विचार को खारिज कर दिया, जबकि मार्क्स ने इसे अपने सिद्धांत का केंद्र बनाया।

79. दुर्खीम के सिद्धांत में 'यांत्रिक एकजुटता' से 'सावयवी एकजुटता' में परिवर्तन मुख्य रूप से किसके द्वारा संचालित होता है?
(A) धार्मिक व्यक्तिवाद का उदय।
(B) एक मजबूत, केंद्रीकृत राज्य की स्थापना।
(C) सामूहिक चेतना में गिरावट।
(D) जनसंख्या घनत्व में वृद्धि और श्रम विभाजन।

80. एक डॉक्टर जो अपने पेशे के प्रति कर्तव्य की भावना से कार्य करती है और इसके नैतिक संहिता का पालन करती है, वह किसका प्रदर्शन कर रही है जिसे वेबर कहेंगे:
(A) पारंपरिक क्रिया
(B) भावात्मक क्रिया
(C) उद्देश्यपूर्ण-तार्किक क्रिया
(D) मूल्य-तार्किक क्रिया

NODIA

81. किस समाजशास्त्री का कार्य इस कथन की विशेषता है: "यदि मनुष्य स्थितियों को वास्तविक के रूप में परिभाषित करते हैं, तो वे अपने परिणामों में वास्तविक होती हैं"?
(A) जॉर्ज हरबर्ट मीड
(B) हरबर्ट ब्लूमर
(C) टैलकॉट पार्सन्स
(D) रॉबर्ट के. मर्टन

82. 'भारतविद्या' परिप्रेक्ष्य, जैसा कि जी.एस. घुरये द्वारा उपयोग किया गया है, किस पर अत्यधिक निर्भर है?
(A) प्राचीन ग्रंथों, शास्त्रों और शास्त्रीय साहित्य पर।
(B) क्षेत्रीय कार्य और सहभागी अवलोकन पर।
(C) सांख्यिकीय सर्वेक्षण और मात्रात्मक डेटा पर।
(D) ऐतिहासिक अभिलेखागार और औपनिवेशिक रिकॉर्ड पर।

83. राधा कमल मुखर्जी के अनुसार, मूल्यों को किस रूप में देखा जाना चाहिए?
(A) पूरी तरह से व्यक्तिपरक और सापेक्ष।
(B) आर्थिक संबंधों का एक उपोत्पाद।
(C) सामाजिक नियंत्रण और एकीकरण का एक प्रमुख तंत्र।
(D) समाजशास्त्रीय विश्लेषण के लिए अप्रासंगिक।

84. 'संस्थागत साधन' और 'सांस्कृतिक लक्ष्य' की अवधारणा किसके एनोमी सिद्धांत का केंद्र है?
(A) रॉबर्ट के. मर्टन
(B) एमिल दुर्खीम
(C) टैलकॉट पार्सन्स
(D) कार्ल मार्क्स

85. निम्नलिखित में से कौन टैलकॉट पार्सन्स के एजीआईएल ढांचे का हिस्सा नहीं है?
(A) लक्ष्य प्राप्ति
(B) एकीकरण
(C) अनुकूलन
(D) वैधीकरण

86. सूची I (पुस्तक) को सूची II (लेखक) के साथ सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए कूट का उपयोग करके सही उत्तर चुनिए।
सूची I:
P. क्लास एंड क्लास कॉन्फ्लिक्ट इन इंडस्ट्रियल सोसाइटी
Q. द फंक्शन्स ऑफ सोशल कॉन्फ्लिक्ट
R. द स्ट्रक्चर ऑफ सोशल एक्शन
S. अर्गोनॉट्स ऑफ द वेस्टर्न पैसिफिक
सूची II:
1. टैलकॉट पार्सन्स
2. लुईस कोज़र
3. ब्रॉनिस्लॉ मैलिनोवस्की
4. राल्फ डहरेंडोर्फ
कूट:
(A) P-1, Q-3, R-2, S-4
(B) P-4, Q-2, R-1, S-3
(C) P-4, Q-1, R-3, S-2
(D) P-2, Q-4, R-1, S-3

87. बी.आर. अंबेडकर का अधीनस्थ परिप्रेक्ष्य किस पर जोर देता है?
(A) प्रभुत्वशाली जातियों के दृष्टिकोण से समाज को समझना।
(B) जाति पहचान के ऊपर आर्थिक वर्ग के महत्व पर।
(C) पारंपरिक सामाजिक संरचनाओं को संरक्षित करने की आवश्यकता पर।
(D) उत्पीड़ित समूहों के दृष्टिकोण से समाज का विश्लेषण करना।

88. पारंपरिक समाजशास्त्रीय तरीकों की हरबर्ट ब्लूमर की आलोचना ने तर्क दिया कि वे अक्सर सामाजिक वास्तविकता को किस रूप में देखते हैं?
(A) व्याख्या की एक प्रक्रिया के रूप में।
(B) व्यक्तिगत मनोविज्ञान के उत्पाद के रूप में।
(C) व्यक्तिपरक अर्थों के संग्रह के रूप में।
(D) एक स्थिर संरचना के रूप में जो व्यवहार को निर्धारित करती है।

89. एक समाज जहाँ सामाजिक बंधन परस्पर निर्भरता और श्रम के जटिल विभाजन पर आधारित होते हैं, दुर्खीम के अनुसार क्या कहलाता है?
(A) यांत्रिक एकजुटता
(B) एनोमिक एकजुटता
(C) सावयवी एकजुटता
(D) प्रकार्यात्मक एकजुटता

90. जी.एच. मीड के अनुसार, 'स्व' किससे उत्पन्न होता है?
(A) सामाजिक अनुभव और संचार से
(B) जैविक प्रवृत्तियों से
(C) आनुवंशिक पूर्व-प्रवृत्तियों से
(D) व्यक्तिगत आत्मनिरीक्षण से

91. जाति व्यवस्था के भीतर गतिशीलता की प्रक्रिया की व्याख्या करने के लिए एम.एन. श्रीनिवास द्वारा किस अवधारणा का उपयोग किया गया है?
(A) जजमानी व्यवस्था
(B) प्रभु जाति
(C) ग्रामीण बहिर्विवाह
(D) संस्कृतिकरण

92. पैरेटो ने उन अतार्किक स्पष्टीकरणों को क्या कहा जिन्हें लोग अपने 'अवशेषों' को सही ठहराने के लिए उपयोग करते हैं?
(A) व्युत्पत्तियां
(B) सर्किट
(C) प्रवृत्तियां
(D) भावनाएं

Click Here to Buy book on Amazon

93. नीचे दो कथन दिए गए हैं। सही विकल्प का चयन कीजिए।
कथन I: लुई ड्यूमॉन्ट का तर्क है कि पारंपरिक भारत में, राजनीतिक और आर्थिक क्षेत्र जाति व्यवस्था के धार्मिक क्षेत्र के अधीन थे।
कथन II: ड्यूमॉन्ट के अनुसार, जाति व्यवस्था में पदानुक्रम का सिद्धांत मौलिक रूप से शक्ति के बारे में है, धार्मिक शुद्धता के बारे में नहीं।
(A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
(B) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।
(C) कथन I सही है, लेकिन कथन II गलत है।
(D) कथन I गलत है, लेकिन कथन II सही है।

94. लुईस कोज़र का 'वास्तविक' और 'अवास्तविक' संघर्ष के बीच का अंतर किस पर आधारित है?
(A) संघर्ष हिंसक है या अहिंसक।
(B) संघर्ष किसी साध्य का साधन है या स्वयं में एक साध्य है।
(C) संघर्ष एक समूह के भीतर होता है या समूहों के बीच।
(D) संघर्ष आर्थिक संसाधनों से संबंधित है या सांस्कृतिक मूल्यों से।

95. अपने कार्य में, एस.सी. दुबे ने किसके अध्ययन के महत्व पर जोर दिया?
(A) भारतीय परंपरा की एकता पर।
(B) शास्त्रीय परंपराओं की श्रेष्ठता पर।
(C) आधुनिक भारत में परंपरा की अप्रासंगिकता पर।
(D) परंपराओं की बहुलता और उनकी परस्पर क्रिया पर।

96. मैलिनोवस्की के लिए, एक 'संस्था' को सबसे अच्छी तरह से किस रूप में समझा जा सकता है?
(A) अमूर्त मानदंडों के एक समूह के रूप में।
(B) एक सामान्य उद्देश्य और भौतिक उपकरणों वाले संगठित समूह के रूप में।
(C) आर्थिक आधार द्वारा निर्धारित एक अधिरचनात्मक तत्व के रूप में।
(D) सामाजिक दुष्प्रकार्य के स्रोत के रूप में।

97. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में लेबल किया गया है। सही विकल्प का चयन कीजिए।
अभिकथन (A): मार्क्स के लिए, पूंजीवादी समाज में राज्य बुर्जुआ वर्ग का एक साधन है।
कारण (R): राज्य का कार्य संपूर्ण बुर्जुआ वर्ग के सामान्य मामलों का प्रबंधन करना और निजी संपत्ति की व्यवस्था की रक्षा करना है।
(A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सही है लेकिन R गलत है।
(D) A गलत है लेकिन R सही है।

98. 'सुप्रकार्य' और 'दुष्प्रकार्य' की अवधारणा को किसके द्वारा व्यवस्थित रूप से विकसित किया गया था?
(A) ए.आर. रेडक्लिफ-ब्राउन
(B) टैलकॉट पार्सन्स
(C) ब्रॉनिस्लॉ मैलिनोवस्की
(D) रॉबर्ट के. मर्टन

99. रेडक्लिफ-ब्राउन का संरचनावाद सामाजिक संबंधों के नेटवर्क पर केंद्रित है, जबकि नाडेल का संरचनावाद किस पर केंद्रित है?
(A) समाज के आर्थिक आधार पर।
(B) भूमिकाओं की संरचना पर।
(C) उन मनोवैज्ञानिक अर्थों पर जो लोग अपने कार्यों के साथ जोड़ते हैं।
(D) संस्थाओं के ऐतिहासिक विकास पर।

100. मैक्स वेबर की पद्धति के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. उन्होंने मूल्य-मुक्त समाजशास्त्र की वकालत की।
2. उन्होंने एक विश्लेषणात्मक उपकरण के रूप में 'आदर्श प्रारूप' का उपयोग किया।
3. उनकी 'वर्स्टेहेन' पद्धति में सामाजिक क्रिया की सहानुभूतिपूर्ण समझ शामिल है।
उपरोक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?
(A) केवल 1 और 2
(B) केवल 2 और 3
(C) केवल 1 और 3
(D) 1, 2 और 3

NODIA

101. 'अधीनस्थ अध्ययन' समूह, जिसकी नींव बी.आर. अंबेडकर के कार्य में मिलती है, का मुख्य उद्देश्य क्या है?
(A) आम लोगों के दृष्टिकोण से इतिहास लिखना।
(B) विशिष्ट राष्ट्रवादी राजनीति का इतिहास लिखना।
(C) उत्तर-औपनिवेशिक राष्ट्रों के आर्थिक विकास पर ध्यान केंद्रित करना।
(D) पहचान बनाने में अंतर्राष्ट्रीय संबंधों की भूमिका का विश्लेषण करना।

102. टैलकॉट पार्सन्स के सिद्धांत में, राजनीतिक उप-व्यवस्था का प्राथमिक कार्य क्या है?
(A) एकीकरण
(B) प्रच्छन्नता
(C) अनुकूलन
(D) लक्ष्य प्राप्ति

103. निम्नलिखित में से कौन सा भारत में जाति और नातेदारी के बीच संबंध पर जी.एस. घुरये के दृष्टिकोण का सबसे अच्छा प्रतिनिधित्व करता है?
(A) ये पूरी तरह से अलग और असंबंधित व्यवस्थाएं हैं।
(B) नातेदारी प्राथमिक संगठनात्मक सिद्धांत है, और जाति द्वितीयक है।

(C) जाति नातेदारी का विस्तार है, जिसमें अंतर्विवाह नातेदारी समूहों को सुदृढ़ करता है।
(D) जाति आर्थिक स्थिति निर्धारित करती है, जबकि नातेदारी अनुष्ठानिक स्थिति निर्धारित करती है।

104. कार्ल मार्क्स के लिए, समाज की 'अधिरचना' में क्या शामिल है?
(A) कानूनी, राजनीतिक, धार्मिक और दार्शनिक संस्थाएं और विचार।
(B) उत्पादन की शक्तियां और संबंध।
(C) औद्योगिक श्रमिकों का वर्ग।
(D) उत्पादन में प्रयुक्त कच्चा माल और तकनीक।

105. एम.एन. श्रीनिवास द्वारा पेश की गई निम्नलिखित अवधारणाओं को कालानुक्रमिक क्रम में व्यवस्थित कीजिए:
1. प्रभु जाति
2. संस्कृतिकरण
3. पश्चिमीकरण
4. वोट बैंक
सही क्रम चुनिए:
(A) 2, 3, 1, 4
(B) 1, 2, 3, 4
(C) 2, 1, 4, 3
(D) 3, 2, 1, 4

106. मर्टन के अनुकूलन के वर्गीकरण में, 'कर्मकांडवाद' किसे संदर्भित करता है?
(A) सांस्कृतिक लक्ष्यों और संस्थागत साधनों दोनों को अस्वीकार करना।
(B) सांस्कृतिक लक्ष्यों को स्वीकार करना लेकिन संस्थागत साधनों को अस्वीकार करना।
(C) लक्ष्यों को त्यागना लेकिन संस्थागत साधनों का पालन करना।
(D) सांस्कृतिक लक्ष्यों और संस्थागत साधनों दोनों को स्वीकार करना।

107. निम्नलिखित में से कौन सा उस बात का उदाहरण है जिसे जी.एच. मीड 'महत्वपूर्ण प्रतीक' कहेंगे?
(A) कुत्ते का गुर्राना
(B) घुटने के झटके जैसी प्रतिवर्त क्रिया
(C) भोजन के लिए बच्चे का रोना
(D) बोला गया शब्द "पेड़"

108. डहरेंडोर्फ के अनुसार, संघर्ष समूह किससे उत्पन्न होते हैं?
(A) सत्ता संरचनाओं में अंतर्निहित प्रच्छन्न हितों से।
(B) व्यक्तियों की मनोवैज्ञानिक हताशा से।
(C) आर्थिक शोषण और गरीबी से।
(D) दुर्लभ सांस्कृतिक संसाधनों पर प्रतिस्पर्धा से।

109. वह प्रकार्यात्मक धारणा कि प्रत्येक मानकीकृत सामाजिक वस्तु संपूर्ण व्यवस्था के लिए प्रकार्यात्मक होती है, मर्टन द्वारा 'प्र प्रकार्यात्मक एकता' कहलाती है, जो उन्होंने किसके कार्य से प्राप्त की थी?
(A) ब्रॉनिस्लॉ मैलिनोवस्की
(B) एमिल दुर्खीम
(C) ए.आर. रेडक्लिफ-ब्राउन
(D) टैलकॉट पार्सन्स

110. 'होमो हाइरार्कस' में लुई ड्यूमॉन्ट का तर्क है कि जाति व्यवस्था की विचारधारा मौलिक रूप से कैसी है?
(A) धार्मिक
(B) आर्थिक
(C) राजनीतिक
(D) व्यक्तिवादी

111. कौन सा युग्म सही सुमेलित है?
(A) लुईस कोज़र - द डिवीजन ऑफ लेबर इन सोसाइटी
(B) राल्फ डहरेंडोर्फ - माइंड, सेल्फ एंड सोसाइटी
(C) एम.एन. श्रीनिवास - कास्ट एंड रेस इन इंडिया
(D) एस.एफ. नाडेल - द थ्योरी ऑफ सोशल स्ट्रक्चर

112. दुर्खीम के अनुसार, धर्म एक सामाजिक घटना है और पवित्र एवं अपवित्र के बीच का अंतर है:
(A) वस्तुओं का एक सार्वभौमिक गुण।
(B) एक सामाजिक रूप से निर्मित वर्गीकरण।
(C) व्यक्तिगत मनोवैज्ञानिक आवश्यकताओं का एक उत्पाद।
(D) शासक वर्ग द्वारा बनाया गया एक भ्रम।

113. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में लेबल किया गया है। सही विकल्प का चयन कीजिए।
अभिकथन (A): राधा कमल मुखर्जी ने पश्चिमी आर्थिक सिद्धांतों की भारतीय संदर्भ में सीमित प्रयोज्यता की आलोचना की।
कारण (R): उन्होंने 'अर्थशास्त्र के संस्थागत सिद्धांत' की वकालत की जो भारत के अद्वितीय सामाजिक मूल्यों और परंपराओं को शामिल करेगा।
(A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सही है लेकिन R गलत है।
(D) A गलत है लेकिन R सही है।

114. एक सार्वजनिक समारोह जो सामाजिक एकजुटता को बढ़ावा देता है और साझा मूल्यों को सुदृढ़ करता है, मर्टन के अनुसार किसका उदाहरण है?
(A) प्रच्छन्न दुष्प्रकार्य
(B) सुप्रकार्य
(C) प्रच्छन्न प्रकार्य
(D) प्रकट प्रकार्य

Downloaded from www.pdf.tube

115. सूची I (समाजशास्त्री) को सूची II (अवधारणा) के साथ सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए कूट का उपयोग करके सही उत्तर चुनिए।
सूची I:
P. एस.सी. दुबे
Q. बी.आर. अंबेडकर
R. राधा कमल मुखर्जी
S. जी.एस. घुरये
सूची II:
1. जाति का विनाश
2. भारतविद्या
3. भारतीय गाँव
4. मूल्यों का समाजशास्त्र
कूट:
(A) P-1, Q-2, R-3, S-4
(B) P-3, Q-1, R-4, S-2
(C) P-3, Q-4, R-1, S-2
(D) P-2, Q-3, R-4, S-1

116. पैरेटो के अनुसार, अवशेषों का कौन सा वर्ग 'संयोजन की प्रवृत्ति' से जुड़ा है और 'लोमड़ियों' की विशेषता है?
(A) वर्ग II अवशेष
(B) वर्ग I अवशेष
(C) वर्ग III अवशेष
(D) वर्ग IV अवशेष

117. रेडक्लिफ-ब्राउन और मैलिनोवस्की के प्रकार्यवाद के बीच मुख्य अंतर क्या है?
(A) रेडक्लिफ-ब्राउन ने व्यक्तिगत आवश्यकताओं पर ध्यान केंद्रित किया, जबकि मैलिनोवस्की ने सामाजिक आवश्यकताओं पर।
(B) मैलिनोवस्की ने व्यक्तिगत आवश्यकताओं पर ध्यान केंद्रित किया, जबकि रेडक्लिफ-ब्राउन ने संरचनात्मक आवश्यकताओं पर।
(C) मैलिनोवस्की ने आधुनिक समाजों का अध्ययन किया, जबकि रेडक्लिफ-ब्राउन ने आदिम समाजों का।
(D) रेडक्लिफ-ब्राउन ने संघर्ष पर जोर दिया, जबकि मैलिनोवस्की ने सामंजस्य पर।

118. हरबर्ट ब्लूमर ने तर्क दिया कि सामाजिक समस्याएं क्या हैं?
(A) एक समाज में हानि की वस्तुनिष्ठ स्थितियां।
(B) परिभाषा की एक सामूहिक प्रक्रिया का उत्पाद।
(C) विफल सामाजिक संरचनाओं का परिणाम।
(D) आर्थिक असमानता के कारण।

119. पार्सन्स के ढांचे में, 'प्रतिमान चर' किसका वर्णन करते हैं?
(A) किसी भी सामाजिक व्यवस्था की चार प्रकार्यात्मक पूर्व-आवश्यकताओं को।
(B) उन बुनियादी दुविधा विकल्पों को जिनका सामना एक कर्ता किसी भी सामाजिक स्थिति में करता है।
(C) सामाजिक विकास के चरणों को।
(D) साइबरनेटिक व्यवस्था के पदानुक्रमित स्तरों को।

120. निम्नलिखित में से कौन सा कथन एम.एन. श्रीनिवास की संस्कृतिकरण की अवधारणा की आलोचना को दर्शाता है?
(A) यह केवल निचली जातियों के लिए गतिशीलता का वर्णन करता है।
(B) यह ब्राह्मणवादी मॉडल पर अत्यधिक जोर देता है और अन्य मॉडलों की उपेक्षा करता है।
(C) यह एक ऐसी प्रक्रिया है जो केवल पूर्व-औपनिवेशिक भारत में हुई थी।
(D) यह पश्चिमीकरण की प्रक्रिया के समान ही है।

121. सामाजिक तथ्यों के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. वे व्यक्ति के लिए बाहरी होते हैं।
2. वे बाध्यकारी होते हैं और व्यक्ति पर दबाव डालते हैं।
3. वे मुख्य रूप से मनोवैज्ञानिक होते हैं।
उपरोक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?
(A) केवल 1
(B) केवल 1 और 2
(C) केवल 2 और 3
(D) 1, 2 और 3

122. "शासन में 'शेरों' और 'लोमड़ियों' का इतिहास" किस विचारक द्वारा अभिजात वर्ग के संचरण का वर्णन करने के लिए उपयोग किया गया है?
(A) कार्ल मार्क्स
(B) मैक्स वेबर
(C) विल्फ्रेडो पैरेटो
(D) राल्फ डहरेंडोर्फ

123. 'अधीनस्थ' परिप्रेक्ष्य किस अन्य परिप्रेक्ष्य की सबसे अधिक आलोचना करता है?
(A) मार्क्सवादी परिप्रेक्ष्य
(B) संरचनात्मक-प्रकार्यात्मक परिप्रेक्ष्य
(C) भारतविद्या / ब्राह्मणवादी परिप्रेक्ष्य
(D) प्रतीकात्मक अंतःक्रियावादी परिप्रेक्ष्य

124. लुईस कोज़र के अनुसार, एक संघर्ष जो कुंठाओं से उत्पन्न होता है और जिसका उद्देश्य विशिष्ट परिणाम प्राप्त करना नहीं है, क्या कहलाता है?
(A) वास्तविक संघर्ष
(B) अवास्तविक संघर्ष
(C) प्रकार्यात्मक संघर्ष
(D) दुष्प्रकार्यात्मक संघर्ष

125. यह कल्पना करके कि हम दूसरों को कैसे दिखाई देते हैं, आत्म-अवधारणा विकसित करने की प्रक्रिया को चार्ल्स कूले ने क्या कहा है?
(A) सामान्यीकृत अन्य
(B) दर्पण जैसा आत्म

NODIA

(C) महत्वपूर्ण प्रतीक
(D) भूमिका निर्वहन

126. भारत में एस.सी. दुबे के 'परंपराओं के छह-गुना वर्गीकरण' में निम्नलिखित में से कौन सा शामिल नहीं था?
(A) शास्त्रीय साहित्यिक परंपरा
(B) क्षेत्रीय परंपरा
(C) स्थानीय परंपरा
(D) उत्तर-आधुनिक परंपरा

127. निम्नलिखित में से कौन सा युग्म गलत सुमेलित है?
(A) मैक्स वेबर - प्रोटेस्टेंट एथिक
(B) एमिल दुर्खीम - सुसाइड
(C) कार्ल मार्क्स - द सोशल सिस्टम
(D) जी.एस. घुरये - कास्ट एंड रेस इन इंडिया

128. नाडेल के अनुसार, संरचनात्मक विश्लेषण का एक प्रमुख कार्य सामाजिक जीवन से संरचनात्मक रूप को अमूर्त करना है। इस प्रक्रिया में किस पर ध्यान केंद्रित किया जाता है?
(A) व्यक्तियों के बजाय एक व्यवस्था के भीतर स्थितियों या भूमिकाओं पर।
(B) व्यक्तिगत कर्ताओं के व्यक्तिपरक अनुभवों पर।
(C) एक सामाजिक व्यवस्था के आर्थिक परिणामों पर।
(D) सामाजिक संस्थाओं की ऐतिहासिक उत्पत्ति पर।

129. नीचे दो कथन दिए गए हैं। सही विकल्प का चयन कीजिए।
कथन I: रेडक्लिफ-ब्राउन के लिए, कानून और नैतिकता सामाजिक व्यवस्था और संरचनात्मक निरंतरता बनाए रखने के लिए कार्य करते हैं।
कथन II: उन्होंने तर्क दिया कि सजा मुख्य रूप से सामूहिक भावनाओं को सुदृढ़ करने के बजाय व्यक्तिगत अपराधी को रोकने के लिए होती है।
(A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
(B) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।
(C) कथन I सही है, लेकिन कथन II गलत है।
(D) कथन I गलत है, लेकिन कथन II सही है।

130. 'सावयवी एकजुटता' की अवधारणा किस पर आधारित है?
(A) समानता और सादृश्यता पर
(B) परस्पर निर्भरता और अंतर पर
(C) दमनकारी कानून पर
(D) एक मजबूत सामूहिक चेतना पर

131. वेबर के अनुसार, एक करिश्माई नेता की सत्ता किस पर आधारित होती है?
(A) स्थापित रीति-रिवाजों और परंपराओं पर।
(B) निर्वैयक्तिक नियमों और कानूनों की व्यवस्था पर।
(C) उन असाधारण गुणों पर जो अनुयायी नेता में देखते हैं।
(D) नेता की विरासत में मिली सामाजिक स्थिति पर।

132. 'मध्य-सीमा सिद्धांत' की आवश्यकता का विचार किसके द्वारा प्रतिपादित किया गया था?
(A) टैलकॉट पार्सन्स
(B) रॉबर्ट के. मर्टन
(C) कार्ल मार्क्स
(D) मैक्स वेबर

133. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में लेबल किया गया है। सही विकल्प का चयन कीजिए।
अभिकथन (A): जी.एस. घुरये के भारतविद्या दृष्टिकोण की 'ब्राह्मणवादी' परिप्रेक्ष्य प्रस्तुत करने के लिए आलोचना की गई है।
कारण (R): शास्त्रीय संस्कृत ग्रंथों पर उनकी अत्यधिक निर्भरता ने एक ऐसे दृष्टिकोण को जन्म दिया जिसने उच्च जातियों के मानदंडों को प्राथमिकता दी।
(A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सही है लेकिन R गलत है।
(D) A गलत है लेकिन R सही है।

134. निम्नलिखित में से कौन टैलकॉट पार्सन्स द्वारा परिभाषित प्रतिमान चरों में से एक नहीं है?
(A) भावात्मकता बनाम भावात्मक तटस्थता
(B) सार्वभौमिकता बनाम विशिष्टतावाद
(C) एकीकरण बनाम विभेदीकरण
(D) प्रदत्त बनाम अर्जित

135. सूची I (अवधारणा) को सूची II (विवरण) के साथ सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए कूट का उपयोग करके सही उत्तर चुनिए।
सूची I:
P. प्रच्छन्न प्रकार्य
Q. वर्स्टेहेन
R. अवशेष
S. संस्कृतिकरण
सूची II:
1. मानवीय क्रिया की सहानुभूतिपूर्ण समझ
2. जाति व्यवस्था में ऊपर की ओर गतिशीलता
3. अनपेक्षित और अपरिचित परिणाम
4. व्यवहार को संचालित करने वाली अतार्किक भावना
कूट:
(A) P-3, Q-1, R-4, S-2
(B) P-1, Q-3, R-2, S-4
(C) P-3, Q-2, R-4, S-1
(D) P-4, Q-1, R-2, S-3

136. जी.एच. मीड के सिद्धांत में 'I' किसका प्रतिनिधित्व करता है?
(A) सामुदायिक दृष्टिकोण को शामिल करने वाले सामाजिक आत्म का।

Click Here to Buy book on Amazon

(B) आत्म के सहज, आवेगी और रचनात्मक पहलू का।
(C) 'सामान्यीकृत अन्य' की आंतरिक छवि का।
(D) पूर्ण और एकीकृत आत्म-अवधारणा का।

137. डहरेंडोर्फ का तर्क है कि उत्तर-पूंजीवादी समाजों में, वर्ग संघर्ष कैसा हो गया है?
(A) अधिक हिंसक और क्रांतिकारी।
(B) सामाजिक गतिशीलता के माध्यम से समाप्त।
(C) संस्थागत और विनियमित।
(D) जातीय संघर्ष द्वारा प्रतिस्थापित।

138. रामपुरा गाँव में 'प्रभु जाति' के अध्ययन से कौन सा समाजशास्त्री जुड़ा है?
(A) एस.सी. दुबे
(B) जी.एस. घुरये
(C) एम.एन. श्रीनिवास
(D) लुई ड्यूमॉन्ट

139. लुई ड्यूमॉन्ट के अनुसार, पारंपरिक जाति व्यवस्था में प्रस्थिति और शक्ति के बीच क्या संबंध है?
(A) शक्ति प्रस्थिति से श्रेष्ठ है।
(B) प्रस्थिति और शक्ति स्वतंत्र हैं।
(C) प्रस्थिति शक्ति से श्रेष्ठ है और उसे घेरे हुए है।
(D) दोनों अवधारणाएं अविभाज्य हैं।

140. राधा कमल मुखर्जी की सामाजिक पारिस्थितिकी की अवधारणा किस पर केंद्रित थी?
(A) भौगोलिक पर्यावरण के साथ मानव समाजों का अनुकूलन।
(B) शहरी क्षेत्रों के प्रतीकात्मक अर्थ पर।
(C) शहरी और ग्रामीण आबादी के बीच संघर्ष पर।
(D) समाज पर औद्योगिक प्रदूषण के प्रभाव पर।

141. निम्नलिखित विचारकों को उनके जन्म के वर्ष के आधार पर कालानुक्रमिक क्रम में व्यवस्थित कीजिए:
1. ए.आर. रेडक्लिफ-ब्राउन
2. बी.आर. अंबेडकर
3. कार्ल मार्क्स
4. रॉबर्ट के. मर्टन

सही क्रम चुनिए:
(A) 3, 1, 2, 4
(B) 1, 3, 2, 4
(C) 3, 2, 1, 4
(D) 2, 3, 1, 4

142. बी.आर. अंबेडकर ने किसके पुनरुत्पादन के लिए अंतर्विवाह को मुख्य तंत्र के रूप में पहचाना?
(A) जजमानी व्यवस्था
(B) जाति व्यवस्था
(C) ग्रामीण एकजुटता
(D) धार्मिक अनुष्ठान

143. पैरेटो के 'समूहों के स्थायित्व का अवशेष' का सबसे अच्छा वर्णन कौन सा है?
(A) नवाचार और नए संयोजन बनाने की प्रवृत्ति।
(B) मौजूदा संबंधों को बनाए रखने और परिवर्तन का विरोध करने की प्रवृत्ति।
(C) बाहरी कृत्यों के माध्यम से भावनाओं को व्यक्त करने की आवश्यकता।
(D) सामाजिकता की भावना।

144. मैलिनोवस्की का आवश्यकताओं का सिद्धांत किन तीन स्तरों में संरचित है?
(A) प्राथमिक, माध्यमिक, तृतीयक
(B) बुनियादी, साधनपरक, एकीकृत
(C) व्यक्तिगत, सामाजिक, सांस्कृतिक
(D) जैविक, मनोवैज्ञानिक, आध्यात्मिक

145. संघर्ष सिद्धांत के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. कार्ल मार्क्स ने संघर्ष की जड़ें आर्थिक वर्ग विभाजन में देखीं।
2. राल्फ डहरेंडोर्फ ने संघर्ष की जड़ें सत्ता के अंतर में देखीं।
3. लुईस कोज़र ने संघर्ष के सकारात्मक और एकीकृत पहलुओं पर ध्यान केंद्रित किया।

उपरोक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?
(A) केवल 1 और 2
(B) केवल 2 और 3
(C) केवल 1 और 3
(D) 1, 2 और 3

146. दुर्खीम के अनुसार, "सामूहिक चेतना" किसे संदर्भित करती है?
(A) व्यक्तिगत चेतनाओं के कुल योग को।
(B) समाज के औसत सदस्यों के सामान्य विश्वासों और भावनाओं को।
(C) नियमहीनता की स्थिति को।
(D) आधुनिक समाज में विशेषज्ञों द्वारा रखे गए विशिष्ट ज्ञान को।

147. एक राजनीतिज्ञ जो गहरी भक्ति और अनुसरण की इच्छा को प्रेरित करता है, वह किस सत्ता का प्रयोग कर रहा है?
(A) पारंपरिक सत्ता
(B) तार्किक-कानूनी सत्ता
(C) करिश्माई सत्ता
(D) नौकरशाही सत्ता

148. 'संदर्भ समूह' व्यवहार की अवधारणा को किसके द्वारा व्यवस्थित रूप से विस्तृत किया गया था?
(A) जी.एच. मीड
(B) टैलकॉट पार्सन्स
(C) रॉबर्ट के. मर्टन
(D) हरबर्ट ब्लूमर

Downloaded from www.pdf.tube

149. जी.एस. घुरये को कहाँ के शैक्षणिक समाजशास्त्र का संस्थापक माना जाता है?
(A) दिल्ली
(B) लखनऊ
(C) बॉम्बे (मुंबई)
(D) कलकत्ता (कोलकाता)

150. एम.एन. श्रीनिवास के अनुसार, 'प्रभु जाति' की अवधारणा का निम्नलिखित में से कौन सा एक अनिवार्य गुण नहीं है?
(A) संख्यात्मक शक्ति
(B) उच्च अनुष्ठानिक प्रस्थिति
(C) आर्थिक और राजनीतिक शक्ति
(D) पश्चिमी शिक्षा

151. एस.एफ. नाडेल के दृष्टिकोण को 'संबंधपरक' क्यों कहा जाता है?
(A) क्योंकि यह सामाजिक भूमिकाओं के बीच संबंधों पर केंद्रित है।
(B) क्योंकि यह व्यक्तियों के बीच व्यक्तिगत संबंधों पर केंद्रित है।
(C) क्योंकि यह समाज और पर्यावरण के संबंधों पर केंद्रित है।
(D) क्योंकि यह आर्थिक आधार और अधिरचना के संबंधों पर केंद्रित है।

152. निम्नलिखित समाजशास्त्रियों में से किसे प्रकार्यवादी नहीं माना जाता है?
(A) एमिल दुर्खीम
(B) हरबर्ट ब्लूमर
(C) टैलकॉट पार्सन्स
(D) ब्रॉनिस्लॉ मैलिनोवस्की

153. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में लेबल किया गया है। सही विकल्प का चयन कीजिए।
अभिकथन (A): दुर्खीम ने तर्क दिया कि अपराध सभी समाजों की एक सामान्य विशेषता है।
कारण (R): अपराध और उसका दंड सामूहिक भावनाओं की पुष्टि करने और सामाजिक एकजुटता बनाए रखने का कार्य करते हैं।
(A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सही है लेकिन R गलत है।
(D) A गलत है लेकिन R सही है।

154. मैक्स वेबर के 'वर्स्टेहेन' का तात्पर्य क्या है?
(A) सामाजिक प्रवृत्तियों का सांख्यिकीय विश्लेषण।
(B) सार्वभौमिक सामाजिक नियमों का निर्माण।
(C) सामाजिक क्रिया के व्यक्तिपरक अर्थों की व्याख्यात्मक समझ।
(D) बाहरी तथ्यों के रूप में सामाजिक संरचनाओं का अध्ययन।

155. एक व्यक्ति जो धन के लक्ष्य और वैध साधनों दोनों को अस्वीकार कर तपस्वी के रूप में रहता है, उसे मर्टन द्वारा किस रूप में वर्गीकृत किया जाएगा?
(A) नवाचारी
(B) कर्मकांडी
(C) परित्यागी
(D) विद्रोही

NODIA

156. लुई ड्यूमॉन्ट द्वारा प्रयुक्त शब्द 'होमो हाइरार्कस' किसे संदर्भित करता है?
(A) आधुनिक व्यक्तिवादी मनुष्य को।
(B) पारंपरिक भारतीय मनुष्य को जो पदानुक्रम में अपनी स्थिति द्वारा परिभाषित होता है।
(C) तर्कसंगत आर्थिक कर्ता को।
(D) पारंपरिक समाज में करिश्माई नेता को।

157. सूची I (समाजशास्त्री) को सूची II (संबद्ध विश्वविद्यालय) के साथ सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए कूट का उपयोग करके सही उत्तर चुनिए।
सूची I:
P. जी.एस. घुरये
Q. राधा कमल मुखर्जी
R. हरबर्ट ब्लूमर
S. टैलकॉट पार्सन्स
सूची II:
1. शिकागो स्कूल
2. हार्वर्ड विश्वविद्यालय
3. लखनऊ स्कूल
4. बॉम्बे स्कूल
कूट:
(A) P-1, Q-2, R-3, S-4
(B) P-4, Q-3, R-1, S-2
(C) P-4, Q-1, R-3, S-2
(D) P-2, Q-3, R-4, S-1

158. ग्रामीण अध्ययनों के प्रति एस.सी. दुबे के संरचनात्मक-प्र प्रकार्यात्मक दृष्टिकोण ने किस पर जोर दिया?
(A) ग्रामीण जीवन की स्थिर प्रकृति पर।
(B) सामाजिक परिवर्तन में जाति संघर्ष की भूमिका पर।
(C) परिवर्तन के कारकों का विश्लेषण करते समय सामाजिक संरचना को समग्र रूप में देखने पर।
(D) संगठन को समझने में प्राचीन ग्रंथों के महत्व पर।

159. जॉर्ज हरबर्ट मीड के सिद्धांत में 'Me' का सबसे अच्छा वर्णन क्या है?
(A) स्व का आवेगी पहलू।
(B) सामाजिक स्व, जो दूसरों के शामिल दृष्टिकोणों का प्रतिनिधित्व करता है।

(C) व्यक्ति की जैविक प्रेरणाएं।
(D) व्यक्ति की अद्वितीय प्रतिक्रिया।

160. कार्ल मार्क्स के अनुसार, 'उत्पादन के संबंध' किसे संदर्भित करते हैं?
(A) उत्पादन में प्रयुक्त तकनीक और कच्चे माल को।
(B) उन सामाजिक संबंधों को जिनमें लोग उत्पादन करने के लिए प्रवेश करते हैं।
(C) समाज की कानूनी और राजनीतिक व्यवस्थाओं को।
(D) एक कारखाने के भीतर श्रम के विभाजन को।

161. लुईस कोज़र के अनुसार, संघर्ष का प्रकार्य किस आधार पर भिन्न होता है?
(A) समाज के आर्थिक विकास पर।
(B) उस सामाजिक संरचना के प्रकार पर जिसमें यह होता है।
(C) इसमें शामिल लोगों की संख्या पर।
(D) भौगोलिक स्थिति पर।

162. रेडक्लिफ-ब्राउन के अनुसार, नातेदारी व्यवस्थाओं को किस रूप में देखा जाता है?
(A) जैविक संबंधों के एक समूह के रूप में।
(B) संपत्ति हस्तांतरित करने के एक तंत्र के रूप में।
(C) संबंधों के एक संरचित समूह के रूप में जो सामाजिक व्यवस्था बनाए रखता है।
(D) व्यक्तिगत भावनात्मक लगाव के प्रतिबिंब के रूप में।

163. नीचे दो कथन दिए गए। सही विकल्प का चयन कीजिए।
कथन I: एस.एफ. नाडेल के अनुसार, सामाजिक संरचना के तीन तत्व हैं: व्यक्तियों की बहुलता, संस्थागत नियम और भागों की व्यवस्था।
कथन II: नाडेल के लिए, सामाजिक संरचना के "भाग" स्वयं व्यक्तिगत मनुष्य हैं।
(A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
(B) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।
(C) कथन I सही है, लेकिन कथन II गलत है।
(D) कथन I गलत है, लेकिन कथन II सही है।

164. वह धारणा कि सभी जीवित सांस्कृतिक रूपों का एक सकारात्मक प्रकार्य होता है, 'सार्वभौमिक प्रकार्यवाद' कहलाती है। इसकी आलोचना किसके द्वारा की गई थी?
(A) ब्रॉनिस्लॉ मैलिनोवस्की
(B) ए.आर. रेडक्लिफ-ब्राउन
(C) रॉबर्ट के. मर्टन
(D) टैलकॉट पार्सन्स

165. विल्फ्रेडो पैरेटो के सामाजिक परिवर्तन के सिद्धांत का सबसे अच्छा वर्णन क्या है?
(A) उद्विकासवादी
(B) चक्रीय
(C) रेखीय
(D) क्रांतिकारी

166. निम्नलिखित में से कौन मैक्स वेबर से संबंधित नहीं है?
(A) आदर्श प्रारूप
(B) सामाजिक तथ्य
(C) वर्स्टेहेन
(D) तार्किकीकरण

167. एक सामाजिक आंदोलन जो मौजूदा लक्ष्यों को नई व्यवस्था से बदलने की कोशिश करता है, मर्टन के सिद्धांत में क्या कहलाता है?
(A) नवाचार
(B) परित्याग
(C) कर्मकांडवाद
(D) विद्रोह

168. भारतीय शहरों पर जी.एस. घुरये का कार्य किसके लिए महत्वपूर्ण था?
(A) शहरी गरीबी के विश्लेषण के लिए।
(B) शहरी नियोजन और वास्तुकला पर ध्यान केंद्रित करने के लिए।
(C) प्राचीन काल से विकास पर ऐतिहासिक और तुलनात्मक परिप्रेक्ष्य के लिए।
(D) शहरी जीवन पर प्रतीकात्मक अंतःक्रियावाद के अनुप्रयोग के लिए।

169. दुर्खीम और मर्टन की 'एनोमी' की अवधारणा के बीच मुख्य अंतर क्या है?
(A) दुर्खीम ने इसे मानदंडों के पतन के रूप में देखा; मर्टन ने इसे लक्ष्य-साधन के तनाव के रूप में देखा।
(B) दुर्खीम ने इसे आत्महत्या से जोड़ा, जबकि मर्टन ने इसे सफलता से जोड़ा।
(C) दुर्खीम की अवधारणा केवल पारंपरिक समाजों पर लागू होती है।
(D) उनकी अवधारणाओं के बीच कोई अंतर नहीं है।

170. ड्यूमॉन्ट के अनुसार, पश्चिम के 'होमो एक्वलिस' की विशेषता क्या है?
(A) व्यक्तिवाद और समतावाद
(B) समग्रतावाद और पदानुक्रम
(C) समुदाय और परंपरा
(D) धर्म और अनुष्ठान

171. एम.एन. श्रीनिवास के कार्य के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. उन्होंने रामपुरा गाँव में गहन क्षेत्रीय कार्य किया।
2. उन्होंने 'प्रभु जाति' की अवधारणा प्रस्तावित की।
3. उन्होंने तर्क दिया कि संस्कृतिकरण हमेशा संरचनात्मक परिवर्तन लाता है।

उपरोक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?
(A) केवल 1
(B) केवल 1 और 2
(C) केवल 2 और 3

Click Here to Buy book on Amazon

(D) 1, 2 और 3

172. बी.आर. अंबेडकर का बौद्धिक प्रोजेक्ट मुख्य रूप से किस उद्देश्य से था?
(A) आर्य आक्रमण का ऐतिहासिक अध्ययन करना।
(B) 'अछूतों' की सैद्धांतिक और व्यावहारिक मुक्ति।
(C) पारंपरिक भारतीय संस्कृति का संरक्षण।
(D) भारतीय समाज के प्रकार्यवादी सिद्धांत का विकास।

173. दुर्खीम और रेडक्लिफ-ब्राउन के अनुसार 'सामाजिक आकारिकी' किसका अध्ययन है?
(A) सामाजिक संस्थाओं की कार्यप्रणाली का।
(B) सामाजिक मानदंडों के विकास का।
(C) व्यक्तियों की मनोवैज्ञानिक अवस्थाओं का।
(D) समाज के आकार और संरचना का, जिसमें जनसंख्या वितरण शामिल है।

174. "एजीआईएल" ढांचा किसके सिद्धांत का एक प्रमुख घटक है?
(A) रॉबर्ट के. मर्टन
(B) टैलकॉट पार्सन्स
(C) एमिल दुर्खीम
(D) कार्ल मार्क्स

175. राधा कमल मुखर्जी ने मूल्यों के जिस उच्चतम स्तर की बात की, उसे क्या कहा गया?
(A) सामाजिक मूल्य
(B) आर्थिक मूल्य
(C) राजनीतिक मूल्य
(D) आध्यात्मिक मूल्य

176. मैक्स वेबर के अनुसार "सामाजिक क्रिया" की सबसे अच्छी परिभाषा कौन सी है?
(A) कोई भी मानवीय व्यवहार।
(B) वह व्यवहार जो दूसरों के व्यवहार की ओर उन्मुख हो और जिसमें अर्थ समाहित हो।
(C) सहज या प्रतिक्रियात्मक व्यवहार।
(D) सामाजिक संरचनाओं द्वारा निर्देशित व्यवहार।

177. जी.एच. मीड के अनुसार स्व के विकास के तीन चरण कौन से हैं?
(A) इड, ईगो, सुपरईगो
(B) मौखिक, गुदा, लैंगिक
(C) पूर्व-तैयारी, क्रीड़ा, खेल
(D) शैशवावस्था, बचपन, वयस्कता

178. डहरेंडोर्फ का संघर्ष सिद्धांत किसके कार्य की आलोचना और संशोधन है?
(A) टैलकॉट पार्सन्स और कार्ल मार्क्स
(B) मैक्स वेबर और एमिल दुर्खीम
(C) जी.एच. मीड और हरबर्ट ब्लूमर
(D) ब्रॉनिस्लॉ मैलिनोवस्की और रेडक्लिफ-ब्राउन

179. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में लेबल किया गया है। सही विकल्प का चयन कीजिए।
अभिकथन (A): प्रतीकात्मक अंतःक्रियावाद में, स्व को एक सामाजिक उत्पाद के रूप में देखा जाता है।
कारण (R): स्व सामाजिक अंतःक्रिया के माध्यम से विकसित होता है, क्योंकि व्यक्ति दूसरों के दृष्टिकोण से स्वयं को देखना सीखते हैं।
(A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सही है लेकिन R गलत है।
(D) A गलत है लेकिन R सही है।

180. अधीनस्थ परिप्रेक्ष्य का प्राथमिक ध्यान किसके अनुभव पर है?
(A) शासक अभिजात वर्ग के
(B) राष्ट्रीय बुर्जुआ वर्ग के
(C) मध्यम वर्गों के
(D) अधीनस्थ और उत्पीड़ित समूहों के

181. सूची I (पद) को सूची II (विचारक) के साथ सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए कूट का उपयोग करके सही उत्तर चुनिए।
सूची I:
P. सावयवी एकजुटता
Q. सामाजिक क्रिया
R. सामाजिक संरचना (भूमिका-व्यवस्था के रूप में)
S. बुनियादी आवश्यकताएं
सूची II:
1. मैक्स वेबर
2. एमिल दुर्खीम
3. ब्रॉनिस्लॉ मैलिनोवस्की
4. एस.एफ. नाडेल
कूट:
(A) P-1, Q-2, R-3, S-4
(B) P-2, Q-1, R-4, S-3
(C) P-3, Q-4, R-1, S-2
(D) P-2, Q-3, R-4, S-1

182. एक पुलिस अधिकारी का गिरफ्तारी करने का अधिकार, वेबर के अनुसार, किस प्रकार की सत्ता है?
(A) करिश्माई
(B) पारंपरिक
(C) तार्किक-कानूनी
(D) पितृसत्तात्मक

183. मैलिनोवस्की का सहभागी अवलोकन क्षेत्रीय कार्य किसके बीच आयोजित किया गया था?
(A) अंडमान द्वीपवासी
(B) सूडान के नुएर

NODIA

(C) ट्रोब्रियांड द्वीपवासी
(D) ऑस्ट्रेलियाई आदिवासी

184. मर्टन द्वारा पेश की गई 'दुष्प्रकार्य' की अवधारणा ने प्रकार्यात्मक विश्लेषण को किस प्रवृत्ति से उबरने में मदद की?
(A) संघर्ष और परिवर्तन पर ध्यान केंद्रित करने की प्रवृत्ति।
(B) एक रूढ़िवादी पूर्वाग्रह जो यह मानता है कि समाज में सब कुछ लाभदायक है।
(C) व्यक्तिगत मनोविज्ञान पर अत्यधिक जोर देने की प्रवृत्ति।
(D) ऐतिहासिक संदर्भ की अवहेलना करने की प्रवृत्ति।

185. डहरेंडोर्फ का तर्क है कि आधुनिक समाज में सामाजिक वर्गों को किसके द्वारा परिभाषित किया जाता है?
(A) उत्पादन के साधन
(B) सत्ता
(C) उपभोग के प्रतिमान
(D) शैक्षिक उपलब्धि

186. निम्नलिखित भारतीय समाजशास्त्रियों को उनके जन्म के वर्ष के आधार पर कालानुक्रमिक क्रम में व्यवस्थित कीजिए:
1. जी.एस. घुरये
2. एम.एन. श्रीनिवास
3. राधा कमल मुखर्जी
4. बी.आर. अंबेडकर
सही क्रम चुनिए:
(A) 3, 1, 4, 2
(B) 1, 3, 4, 2
(C) 3, 4, 1, 2
(D) 1, 2, 3, 4

187. "शुद्ध और अशुद्ध के बीच का विरोध जाति व्यवस्था में पदानुक्रम का मूल सिद्धांत है।" यह कथन किसके कार्य का केंद्र है?
(A) एम.एन. श्रीनिवास
(B) जी.एस. घुरये
(C) लुई ड्यूमॉन्ट
(D) एस.सी. दुबे

188. निम्नलिखित में से कौन हरबर्ट ब्लूमर के प्रतीकात्मक अंतःक्रियावाद का सिद्धांत नहीं है?
(A) अर्थ सामाजिक अंतःक्रिया से उत्पन्न होता है।
(B) क्रिया अर्थ पर आधारित होती है।
(C) व्यक्तियों का एक निश्चित 'स्व' होता है जो उनके कार्यों को निर्धारित करता है।
(D) व्याख्यात्मक प्रक्रिया के माध्यम से अर्थ को संशोधित किया जाता है।

189. एस.सी. दुबे के अनुसार, भारतीय गाँव को समझने का एक प्रमुख पहलू किसके बीच की अंतःक्रिया का विश्लेषण करना है?
(A) विभिन्न राजनीतिक दलों के बीच।
(B) बहुविध परंपराओं के बीच।
(C) भारत और पश्चिमी शक्तियों के बीच।
(D) कृषि और औद्योगिक क्षेत्रों के बीच।

190. पैरेटो के अनुसार, 'रेंटियर' किससे जुड़े हैं?
(A) वर्ग I अवशेष
(B) वर्ग II अवशेष
(C) वर्ग III अवशेष
(D) वर्ग IV अवशेष

191. रेडक्लिफ-ब्राउन की 'सामाजिक मूल्य' की अवधारणा किसे संदर्भित करती है?
(A) किसी वस्तु के मौद्रिक मूल्य को।
(B) हितों की उस सहमति को जो समाज के सदस्यों को एकजुट करती है।
(C) एक व्यक्ति द्वारा रखे गए नैतिक सिद्धांतों को।
(D) जैविक आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए किसी वस्तु की उपयोगिता को।

192. किस समाजशास्त्री ने तर्क दिया कि सामाजिक संघर्ष एक 'सुरक्षा-वाल्व' तंत्र के रूप में कार्य कर सकता है?
(A) कार्ल मार्क्स
(B) राल्फ डहरेंडोर्फ
(C) लुईस कोज़र
(D) टैलकॉट पार्सन्स

193. नीचे दो कथन दिए गए हैं। सही विकल्प का चयन कीजिए।
कथन I: पार्सन्स का प्रतिमान चर 'सार्वभौमिकता बनाम विशिष्टतावाद' निष्पक्ष मानदंडों को लागू करने या संबंधों का पक्ष लेने के बीच की दुविधा है।
कथन II: एक न्यायाधीश द्वारा सभी नागरिकों पर समान रूप से कानून लागू करना विशिष्टतावादी क्रिया का उदाहरण है।
(A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
(B) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।
(C) कथन I सही है, लेकिन कथन II गलत है।
(D) कथन I गलत है, लेकिन कथन II सही है।

194. "समाजशास्त्र सामाजिक तथ्यों का अध्ययन होना चाहिए।" यह सिद्धांत किसके साथ जुड़ा है?
(A) एमिल दुर्खीम
(B) मैक्स वेबर
(C) कार्ल मार्क्स
(D) जी.एच. मीड

195. राधा कमल मुखर्जी का मूल्यों का समाजशास्त्र किसका एक प्रयास था?
(A) एक मूल्य-मुक्त समाजशास्त्र बनाने का।
(B) समाजशास्त्रीय विश्लेषण में नैतिक विचारों को एकीकृत करने का।
(C) सभी मूल्यों को आर्थिक हितों तक सीमित करने का।
(D) विशुद्ध रूप से संरचनावादी परिप्रेक्ष्य से विश्लेषण करने

Downloaded from www.pdf.tube

का।

196. बी.आर. अंबेडकर के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. उन्होंने 'दबे हुए वर्गों' के लिए अलग निर्वाचन क्षेत्र की वकालत की।
2. उन्होंने अपने जीवन के अंत में बौद्ध धर्म अपना लिया।
3. उनका मानना था कि राजनीतिक सशक्तिकरण ही जाति की समस्या का एकमात्र समाधान था।

उपरोक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?
(A) केवल 1 और 2
(B) केवल 2 और 3
(C) केवल 1 और 3
(D) 1, 2 और 3

197. मैलिनोवस्की के अनुसार, मिथक का कार्य क्या है?
(A) दुनिया की वैज्ञानिक व्याख्या प्रदान करना।
(B) काल्पनिक कहानियों से मनोरंजन करना।
(C) एक 'समाजशास्त्रीय चार्टर' के रूप में कार्य करना जो सामाजिक व्यवस्था को सही ठहराता है।
(D) एनोमी की भावना पैदा करना।

198. भारतीय समाज को समझने के लिए ग्रंथों और शास्त्रीय परंपराओं पर ध्यान केंद्रित करना किसकी विशेषता है?
(A) संरचनात्मक-प्र प्रकार्यात्मक परिप्रेक्ष्य
(B) मार्क्सवादी परिप्रेक्ष्य
(C) भारतविद्या परिप्रेक्ष्य
(D) अधीनस्थ परिप्रेक्ष्य

199. एस.एफ. नाडेल के अनुसार, सामाजिक संरचना के अंतिम घटक क्या हैं?
(A) व्यक्ति
(B) भूमिकाएं
(C) संस्थाएं
(D) वर्ग

200. मैक्स वेबर द्वारा "द प्रोटेस्टेंट एथिक एंड द स्पिरिट ऑफ कैपिटलिज्म" किसका अध्ययन है?
(A) धार्मिक मूल्यों और आर्थिक व्यवहार के बीच संबंधों का।
(B) सामाजिक वर्ग और राजनीतिक शक्ति के बीच संबंधों का।
(C) श्रम विभाजन और सामाजिक एकजुटता के बीच संबंधों का।
(D) कानून और सामाजिक नियंत्रण के बीच संबंधों का।

201. निम्नलिखित में से कौन एमिल दुर्खीम द्वारा पहचाने गए आत्महत्या के प्रकारों में से एक नहीं है?
(A) अहंकेंद्रित
(B) नियमहीनतावादी
(C) व्यक्तिवादी
(D) परार्थवादी

202. रॉबर्ट मर्टन की 'सेरेंडिपिटी' की अवधारणा किसे संदर्भित करती है?
(A) एक परिकल्पना का नियोजित सत्यापन।
(B) वह अप्रत्याशित खोज जो नए सिद्धांत को प्रेरित करती है।
(C) गुणात्मक और मात्रात्मक विधियों का मिश्रण।
(D) एक मौजूदा सिद्धांत का पुनर्गठन।

NODIA

203. 'अभिजात वर्ग का संचरण' की अवधारणा किसके साथ जुड़ी है?
(A) विल्फ्रेडो पैरेटो
(B) कार्ल मार्क्स
(C) मैक्स वेबर
(D) एमिल दुर्खीम

204. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में लेबल किया गया है। सही विकल्प का चयन कीजिए।
अभिकथन (A): एम.एन. श्रीनिवास ने तर्क दिया कि 'संस्कृतिकरण' में केवल स्थितिजन्य परिवर्तन शामिल है, संरचनात्मक नहीं।
कारण (R): संस्कृतिकरण के माध्यम से ऊपर जाने वाली जाति व्यवस्था की मूल संरचना को नहीं बदलती, केवल अपनी स्थिति बदलती है।
(A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सही है लेकिन R गलत है।
(D) A गलत है लेकिन R सही है।

205. आत्म-विकास में जी.एच. मीड के 'क्रीड़ा चरण' की विशेषता क्या है?
(A) बिना समझे दूसरों की नकल करना।
(B) एक समय में एक विशिष्ट, महत्वपूर्ण दूसरे की भूमिका निभाना।
(C) संगठित समूह भूमिकाओं को समझना।
(D) एक पूर्ण रूप से गठित और स्थिर स्व रखना।

206. कार्ल मार्क्स ने पूंजीवाद में उत्पादन के साधनों के मालिकों को क्या कहा?
(A) सर्वहारा
(B) बुर्जुआ
(C) लंपेन-सर्वहारा
(D) अभिजात वर्ग

207. लुईस कोज़र के अनुसार, उन सामाजिक संरचनाओं में संघर्ष के विघटनकारी होने की अधिक संभावना है जो:
(A) कठोर हैं और जिनमें शिकायतें व्यक्त करने के साधनों की कमी है।

(B) लचीली और खुली हैं।
(C) अत्यधिक एकीकृत और एकजुट हैं।
(D) उच्च स्तर की सामाजिक गतिशीलता वाली हैं।

208. पुस्तक "द रिमेम्बर्ड विलेज" किसके द्वारा लिखी गई है?
(A) एस.सी. दुबे
(B) एम.एन. श्रीनिवास
(C) जी.एस. घुरये
(D) लुई ड्यूमॉन्ट

209. निम्नलिखित में से कौन 'अधीनस्थ परिप्रेक्ष्य' का सबसे अच्छा वर्णन करता है?
(A) बुद्धिजीवियों की भूमिका पर ध्यान केंद्रित करना।
(B) ऊपर से नीचे की ओर समाज का विश्लेषण।
(C) हाशिए पर रहने वाले लोगों के दृष्टिकोण से समाज को समझना।
(D) सामाजिक सामंजस्य और एकीकरण पर जोर देना।

210. सूची I (अवधारणा) को सूची II (विशेषता) के साथ सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए कूट का उपयोग करके सही उत्तर चुनिए।
सूची I:
P. यांत्रिक एकजुटता
Q. सावयवी एकजुटता
R. एनोमी
S. पवित्र
सूची II:
1. मानदंडहीनता
2. परस्पर निर्भरता पर आधारित
3. अलग रखा गया और निषिद्ध
4. समानता पर आधारित
कूट:
(A) P-4, Q-2, R-1, S-3
(B) P-2, Q-4, R-3, S-1
(C) P-4, Q-1, R-2, S-3
(D) P-1, Q-2, R-3, S-4

211. राधा कमल मुखर्जी के अंतःविषय दृष्टिकोण ने समाजशास्त्र को किसके साथ एकीकृत किया?
(A) भौतिकी और रसायन विज्ञान
(B) अर्थशास्त्र, पारिस्थितिकी और दर्शनशास्त्र
(C) भाषाविज्ञान और साहित्यिक आलोचना
(D) कंप्यूटर विज्ञान और गणित

212. रेडक्लिफ-ब्राउन के 'समकालिक' विश्लेषण से क्या तात्पर्य था?
(A) समाज के ऐतिहासिक विकास का अध्ययन।
(B) समय के एक ही बिंदु पर समाज का अध्ययन।
(C) दो या दो से अधिक समाजों का तुलनात्मक अध्ययन।
(D) व्यक्तियों की मनोवैज्ञानिक प्रेरणाओं का अध्ययन।

213. पार्सन्स के अनुसार, किसी के साथ उसकी पहचान बनाम उसके प्रदर्शन के आधार पर व्यवहार करना किसका प्रतिमान चर है?
(A) सार्वभौमिकता बनाम विशिष्टतावाद
(B) प्रदत्त बनाम अर्जित
(C) भावात्मकता बनाम भावात्मक तटस्थता
(D) विशिष्टता बनाम व्यापकता

214. 'अनिवार्य रूप से समन्वित संघ' शब्द किसके संघर्ष सिद्धांत का केंद्र है?
(A) कार्ल मार्क्स
(B) लुईस कोज़र
(C) राल्फ डहरेंडोर्फ
(D) मैक्स वेबर

215. विल्फ्रेडो पैरेटो के 'अवशेषों' के दो मुख्य वर्ग कौन से हैं?
(A) संयोजनों की प्रवृत्ति और समूहों का स्थायित्व
(B) तार्किकता और अतार्किकता
(C) शेर और लोमड़ी
(D) अभिजात वर्ग और जनता

216. किस भारतीय समाजशास्त्री ने भारत के 'साधुओं' पर विस्तार से लिखा है?
(A) एम.एन. श्रीनिवास
(B) जी.एस. घुरये
(C) एस.सी. दुबे
(D) लुई ड्यूमॉन्ट

217. मर्टन के अनुसार, किसी भी सामाजिक प्रतिमान का मान्यता प्राप्त और इच्छित परिणाम क्या है?
(A) प्रच्छन्न प्रकार्य
(B) प्रकट प्रकार्य
(C) दुष्प्रकार्य
(D) गैर-प्रकार्य

218. हरबर्ट ब्लूमर के अनुसार, वह प्रक्रिया जिसके माध्यम से व्यक्ति एक-दूसरे के कार्यों की व्याख्या करते हैं, क्या कहलाती है?
(A) संरचनात्मक निर्धारण
(B) सामाजिक अंतःक्रिया
(C) प्रकार्यात्मक अनुकूलन
(D) वर्ग संघर्ष

219. नीचे दो कथन दिए गए हैं। सही विकल्प का चयन कीजिए।
कथन I: बी.आर. अंबेडकर जाति व्यवस्था की उत्पत्ति के रूप में आर्य आक्रमण सिद्धांत के समर्थक थे।
कथन II: उन्होंने तर्क दिया कि शूद्र मूल रूप से क्षत्रिय वर्ण का हिस्सा थे जिन्हें ब्राह्मणों द्वारा पदावनत कर दिया गया था।
(A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
(B) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।
(C) कथन I सही है, लेकिन कथन II गलत है।
(D) कथन I गलत है, लेकिन कथन II सही है।

Click Here to Buy book on Amazon

220. यह विचार कि सामाजिक संरचनाएं समाज की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए मौजूद हैं, किसका एक केंद्रीय सिद्धांत है?
(A) प्रतीकात्मक अंतःक्रियावाद
(B) संरचनात्मक-प्रकार्यवाद
(C) संघर्ष सिद्धांत
(D) मार्क्सवाद

221. किस विचारक ने तर्क दिया कि पारंपरिक से आधुनिक समाज में संक्रमण 'तार्किकीकरण' की प्रक्रिया द्वारा चिह्नित है?
(A) एमिल दुर्खीम
(B) कार्ल मार्क्स
(C) मैक्स वेबर
(D) टैलकॉट पार्सन्स

222. लुई ड्यूमॉन्ट आधुनिक पश्चिमी समाज की विचारधारा को किस रूप में चित्रित करते हैं?
(A) पदानुक्रमित और समग्रतावादी
(B) पारंपरिक और धार्मिक
(C) समतावादी और व्यक्तिवादी
(D) सामुदायिक और प्रदत्त

223. "क्लास एंड क्लास कॉन्फ्लिक्ट इन एन इंडस्ट्रियल सोसाइटी" के लेखक कौन हैं?
(A) कार्ल मार्क्स
(B) राल्फ डहरेंडोर्फ
(C) लुईस कोज़र
(D) मैक्स वेबर

224. निम्नलिखित युग्मों पर विचार कीजिए:
1. जी.एच. मीड: सामान्यीकृत अन्य
2. आर.के. मर्टन: प्रच्छन्न प्रकार्य
3. आर. डहरेंडोर्फ: सामाजिक तथ्य

उपरोक्त में से कौन सा/से युग्म सही सुमेलित है/हैं?
(A) केवल 1
(B) केवल 1 और 2
(C) केवल 2 और 3
(D) 1, 2 और 3

225. एम.एन. श्रीनिवास के अनुसार, 'पश्चिमीकरण' की अवधारणा नैतिक रूप से कैसी है?
(A) सकारात्मक
(B) नकारात्मक
(C) तटस्थ
(D) अस्पष्ट

226. मैलिनोवस्की के प्रकार्यवाद को 'व्यक्तिवादी प्रकार्यवाद' क्यों कहा जाता है?
(A) क्योंकि यह प्रकार्यों को सामाजिक संरचना की आवश्यकताओं तक ले जाता है।
(B) क्योंकि यह प्रकार्यों को व्यक्ति की जैविक और मनोवैज्ञानिक आवश्यकताओं तक ले जाता है।
(C) क्योंकि यह आर्थिक व्यवस्था की आवश्यकताओं तक ले जाता है।
(D) क्योंकि यह सामूहिक इच्छा तक ले जाता है।

227. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में लेबल किया गया है। सही विकल्प का चयन कीजिए।
अभिकथन (A): एस.एफ. नाडेल ने संरचना की अपनी अवधारणा को रेडक्लिफ-ब्राउन से अलग किया।
कारण (R): नाडेल ने संरचना को भूमिकाओं के एक जाल के रूप में माना जो एक अमूर्तन है, जबकि रेडक्लिफ-ब्राउन ने इसे प्रत्यक्ष रूप से अवलोकनीय जाल के रूप में परिभाषित किया।
(A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सही है लेकिन R गलत है।
(D) A गलत है लेकिन R सही है।

228. रेडक्लिफ-ब्राउन के लिए अध्ययन की वस्तु 'सामाजिक संरचना' थी, जबकि नाडेल के लिए यह क्या थी?
(A) 'सामाजिक संगठन'
(B) एक अमूर्तन के रूप में 'संरचनात्मक रूप'
(C) 'सांस्कृतिक प्रतिमान'
(D) 'व्यक्तिगत क्रियाएं'

229. दुर्खीम का अध्ययन 'सुसाइड' एक समाजशास्त्रीय अध्ययन का उत्कृष्ट उदाहरण है क्योंकि:
(A) यह साबित करता है कि आत्महत्या पूरी तरह से एक मनोवैज्ञानिक कृत्य है।
(B) यह व्यक्तियों के उद्देश्यों को समझने के लिए केस स्टडी का उपयोग करता है।
(C) यह आत्महत्या के व्यक्तिगत कृत्यों को सामाजिक कारणों से जोड़ता है।
(D) यह पूरे यूरोपीय इतिहास का विवरण प्रदान करता है।

230. नौकरशाही, अपने स्पष्ट पदानुक्रम और निर्वैयक्तिकता के साथ, वेबर की किस सत्ता का सर्वोत्कृष्ट उदाहरण है?
(A) पारंपरिक सत्ता
(B) करिश्माई सत्ता
(C) तार्किक-कानूनी सत्ता
(D) सामंती सत्ता

231. पार्सन्स के एजीआईएल ढांचे में "A" और "G" प्रकार्य व्यवस्था के किसके साथ संबंधों की समस्याओं को संदर्भित करते हैं?
(A) आंतरिक वातावरण
(B) बाहरी वातावरण
(C) सांस्कृतिक उप-व्यवस्था
(D) सामाजिक उप-व्यवस्था

NODIA

232. रॉबर्ट मर्टन की 'एनोमी' की अवधारणा दुर्खीम से इस मायने में भिन्न है कि मर्टन किस पर जोर देते हैं?
(A) तीव्र सामाजिक परिवर्तन के दौरान मानदंडों के पतन पर।
(B) सामाजिक एकीकरण की कमी पर।
(C) सांस्कृतिक लक्ष्यों और संस्थागत साधनों के बीच संरचनात्मक तनाव पर।
(D) आधुनिक जीवन में अर्थहीनता की भावना पर।

233. 'क्रीड़ा चरण', 'खेल चरण' और 'सामान्यीकृत अन्य' किसके सामाजिक मनोविज्ञान की प्रमुख अवधारणाएं हैं?
(A) हरबर्ट ब्लूमर
(B) मैक्स वेबर
(C) जॉर्ज हरबर्ट मीड
(D) विल्फ्रेडो पैरेटो

234. सूची I (लेखक) को सूची II (पुस्तक) के साथ सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए कूट का उपयोग करके सही उत्तर चुनिए।
सूची I:
P. विल्फ्रेडो पैरेटो
Q. राल्फ डहरेंडोर्फ
R. लुईस कोज़र
S. कार्ल मार्क्स
सूची II:
1. द फंक्शन्स ऑफ सोशल कॉन्फ्लिक्ट
2. दास कैपिटल
3. द माइंड एंड सोसाइटी
4. क्लास एंड क्लास कॉन्फ्लिक्ट इन इंडस्ट्रियल सोसाइटी
कूट:
(A) P-3, Q-4, R-1, S-2
(B) P-1, Q-2, R-3, S-4
(C) P-3, Q-1, R-4, S-2
(D) P-4, Q-3, R-2, S-1

235. जी.एस. घुरये की पद्धति को सबसे अच्छी तरह किस रूप में वर्णित किया जा सकता है?
(A) विशुद्ध रूप से नृवंशविज्ञानी
(B) सांख्यिकीय और सर्वेक्षण-आधारित
(C) पाठ्य, ऐतिहासिक और तुलनात्मक
(D) संरचनात्मक-प्र प्रकार्यात्मक

236. भारतीय समाजशास्त्र में संरचनात्मक-प्र प्रकार्यात्मक परिप्रेक्ष्य, जो ग्रामीण अध्ययन पर केंद्रित है, सबसे अधिक किसके साथ जुड़ा है?
(A) जी.एस. घुरये और लुई ड्यूमॉन्ट
(B) एम.एन. श्रीनिवास और एस.सी. दुबे
(C) बी.आर. अंबेडकर और राधा कमल मुखर्जी
(D) ए.आर. देसाई और डी.पी. मुखर्जी

237. बी.आर. अंबेडकर के अधीनस्थ परिप्रेक्ष्य का मूल विचार क्या है?
(A) वर्ग संघर्ष के माध्यम से समाज का विश्लेषण करना।
(B) प्राचीन धार्मिक ग्रंथों के माध्यम से भारतीय समाज को समझना।
(C) सबसे उत्पीड़ित लोगों के दृष्टिकोण से सामाजिक वास्तविकता को देखना।
(D) विभिन्न समूहों की प्रकार्यात्मक परस्पर निर्भरता को बनाए रखना।

238. राधा कमल मुखर्जी के मूल्यों के समाजशास्त्र ने किसके लिए एक ढांचा प्रदान करने की कोशिश की?
(A) पश्चिमी मॉडलों पर आधारित आर्थिक विकास के लिए।
(B) मूल्यों पर आधारित सामाजिक पुनर्निर्माण के लिए।
(C) सामाजिक घटनाओं के मूल्य-तटस्थ विवरण के लिए।
(D) जाति व्यवस्था के संरक्षण के लिए।

239. कार्ल मार्क्स के लिए, किसी भी समाज का मौलिक आधार क्या है?
(A) राजनीतिक व्यवस्था
(B) धार्मिक विश्वास
(C) उत्पादन की पद्धति
(D) राष्ट्रीय पहचान

240. 'सामाजिक तथ्य' को एक 'वस्तु' के रूप में मानने से दुर्खीम का क्या तात्पर्य था?
(A) इसका श्रद्धा के साथ अध्ययन किया जाना चाहिए।
(B) यह एक भौतिक वस्तु है।
(C) यह एक बाहरी और वस्तुनिष्ठ वास्तविकता है।
(D) इसका दार्शनिक अटकलों के माध्यम से अध्ययन होना चाहिए।

NODIA

241. निम्नलिखित में से कौन मैलिनोवस्की की 'संस्था' की अवधारणा का तत्व नहीं है?
(A) चार्टर
(B) कार्मिक
(C) मानदंड
(D) एनोमी

242. अपने बाद के कार्य में, रेडक्लिफ-ब्राउन ने 'प्रकार्य' शब्द को किस अवधारणा से बदलने का सुझाव दिया?
(A) सुप्रकार्य
(B) अस्तित्व की आवश्यक शर्तें
(C) संरचनात्मक रूप
(D) एकीकृत आवश्यकताएं

243. "I दूसरों के दृष्टिकोणों के प्रति जीव की प्रतिक्रिया है; Me दूसरों के दृष्टिकोणों का संगठित समूह है।" यह अंतर किसके द्वारा किया गया था?
(A) हरबर्ट ब्लूमर
(B) जॉर्ज हरबर्ट मीड
(C) टैलकॉट पार्सन्स
(D) रॉबर्ट मर्टन

244. वेबर के अनुसार 'पारंपरिक क्रिया' वह व्यवहार है जो:
(A) विशिष्ट लक्ष्य प्राप्त करने के लिए गणनात्मक तरीके से किया जाता है।
(B) आदतों, रीति-रिवाजों और विरासत में मिले विश्वासों द्वारा निर्देशित होता है।
(C) कर्ता की वर्तमान भावनात्मक स्थिति से प्रेरित होता है।
(D) क्रिया के अंतर्निहित मूल्य में सचेत विश्वास से प्रेरित होता है।

245. भारत में 'परंपरा' पर एस.सी. दुबे के कार्य का क्या तर्क है?
(A) भारत में एक एकल, अखंड 'महान परंपरा' है।
(B) भारतीय परंपरा स्थिर है और परिवर्तन का विरोध करती है।
(C) परंपरा को एक गतिशील घटना के रूप में समझा जाना चाहिए।
(D) शास्त्रीय परंपराओं की तुलना में स्थानीय परंपराएं महत्वहीन हैं।

246. लुई ड्यूमॉन्ट के सिद्धांत के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. वे पारंपरिक और आधुनिक समाजों के बीच एक मौलिक विरोध पर जोर देते हैं।
2. वे 'होमो हाइरार्कस' को एक समग्र सामाजिक तर्क द्वारा शासित मानते हैं।
3. वे तर्क देते हैं कि 'होमो एक्वलिस' की विचारधारा सभी पहलुओं में श्रेष्ठ है।

उपरोक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?
(A) केवल 1
(B) केवल 1 और 2
(C) केवल 2 और 3
(D) 1, 2 और 3

247. 'मानदंडों का संस्थागत परिहार' की अवधारणा किसके साथ जुड़ी हुई है?
(A) एमिल दुर्खीम
(B) रॉबर्ट के. मर्टन
(C) टैलकॉट पार्सन्स
(D) मैक्स वेबर

248. 'सामाजिक संरचना' और 'सामाजिक संगठन' के बीच का अंतर किसका एक प्रमुख योगदान था?
(A) एस.एफ. नाडेल
(B) ए.आर. रेडक्लिफ-ब्राउन
(C) ब्रॉनिस्लॉ मैलिनोवस्की
(D) एमिल दुर्खीम

249. पैरेटो के अनुसार 'शेर' वर्ग II के अवशेषों की विशेषता रखते हैं, जिसका अर्थ है कि वे:
(A) अभिनव और चालाकी पर भरोसा करने वाले हैं।
(B) रूढ़िवादी हैं और समूहों के स्थायित्व पर भरोसा करते हैं।
(C) परोपकारी और सामाजिक कल्याण के बारे में चिंतित हैं।
(D) व्यक्तिवादी हैं।

250. निम्नलिखित में से कौन सा वर्षा नृत्य के 'प्रकट प्रकार्य' का सबसे अच्छा उदाहरण है?
(A) वर्षा लाना।
(B) समूह के बीच सामाजिक सामंजस्य को बढ़ावा देना।
(C) मनोरंजन प्रदान करना।
(D) ओझा की शक्ति को सुदृढ़ करना।

251. नीचे दो कथन दिए गए हैं। सही विकल्प का चयन कीजिए।
कथन I: डहरेंडोर्फ के सिद्धांत में, संघर्ष की संभावना किसी भी 'अनिवार्य रूप से समन्वित संघ' में मौजूद होती है।
कथन II: प्रत्येक अनिवार्य रूप से समन्वित संघ में सत्ता का पदानुक्रमित वितरण शामिल होता है।
(A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
(B) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।
(C) कथन I सही है, लेकिन कथन II गलत है।
(D) कथन I गलत है, लेकिन कथन II सही है।

252. यह विचार कि सामाजिक वास्तविकता व्यक्तियों की व्याख्यात्मक अंतःक्रियाओं के माध्यम से बनाई जाती है, किसका केंद्रीय आधार है?
(A) संरचनावाद
(B) प्रकार्यवाद
(C) प्रतीकात्मक अंतःक्रियावाद
(D) संघर्ष सिद्धांत

253. प्रकार्यवाद के अलावा, कौन सा समाजशास्त्री 'ज्ञान के समाजशास्त्र' में अपने योगदान के लिए जाना जाता है?
(A) टैलकॉट पार्सन्स
(B) रॉबर्ट के. मर्टन
(C) एमिल दुर्खीम
(D) ब्रॉनिस्लॉ मैलिनोवस्की

254. जी.एस. घुरये के 'भारतविद्या' परिप्रेक्ष्य की आलोचना किस लिए की गई है?
(A) आर्थिक कारकों पर बहुत अधिक केंद्रित होने के लिए।
(B) भारतीय समाज के ऐतिहासिक आयाम की उपेक्षा करने के लिए।
(C) पाठ्य स्रोतों से प्राप्त ब्राह्मण-केंद्रित दृष्टिकोण प्रस्तुत करने के लिए।
(D) संघर्ष की भूमिका पर अत्यधिक जोर देने के लिए।

255. 'प्रभु जाति' की अवधारणा एम.एन. श्रीनिवास द्वारा किसके अध्ययन के दौरान विकसित की गई थी?
(A) दक्षिण भारत के कुर्ग
(B) शमीरपेट गाँव
(C) रामपुरा गाँव
(D) बॉम्बे शहर

Downloaded from www.pdf.tube

256. बी.आर. अंबेडकर ने तर्क दिया कि जाति व्यवस्था 'श्रमिकों का विभाजन' है। इससे उनका क्या तात्पर्य था?
(A) यह काम को व्यवस्थित करने के लिए एक कुशल व्यवस्था है।
(B) यह एक पदानुक्रमित व्यवस्था है जो स्थायी रूप से व्यवसाय आवंटित करती है।
(C) यह श्रमिकों के बीच मुक्त प्रतिस्पर्धा की अनुमति देती है।
(D) यह एक लचीली व्यवस्था है।

257. राधा कमल मुखर्जी का 'मूल्यों के समाजशास्त्र' का आह्वान किसके विरुद्ध एक प्रतिक्रिया थी?
(A) समाजशास्त्र में धर्म और संस्कृति के।
(B) मूल्य-तटस्थता और यांत्रिक मॉडलों के।
(C) गुणात्मक विधियों के।
(D) भारतीय परंपराओं के।

258. मार्क्स के लिए, उत्पादन की शक्तियों और उत्पादन के संबंधों के बीच विरोधाभास किसका कारण बनता है?
(A) सामाजिक स्थिरता का
(B) सामाजिक क्रांति का
(C) सामूहिक चेतना का
(D) अभिजात वर्ग के संचरण का

259. समाज का 'कालक्रमिक' अध्ययन किसे संदर्भित करता है?
(A) समय के एक बिंदु पर समाज को।
(B) संस्थाओं के प्रकार्यों को।
(C) समय के साथ समाज में होने वाले परिवर्तनों को।
(D) विभिन्न समाजों की तुलना को।

260. एक बच्ची अपनी माँ के दृष्टिकोण से स्वयं को देखकर व्यवहार करना सीख रही है, वह मीड के अनुसार किस चरण में है?
(A) पूर्व-तैयारी चरण
(B) क्रीड़ा चरण
(C) खेल चरण
(D) सामान्यीकृत अन्य चरण

261. कोज़र के अनुसार, वास्तविक मुद्दों पर होने वाले कम तीव्रता वाले संघर्ष किस रूप में कार्य कर सकते हैं?
(A) सामाजिक व्यवस्था को नष्ट करना।
(B) विघटनकारी संघर्ष को रोकने वाला एक सुरक्षा-वाल्व तंत्र।
(C) क्रांतिकारी समूहों के गठन की ओर ले जाना।
(D) प्रभुत्वशाली समूह की शक्ति को सुदृढ़ करना।

262. कौन सा प्रतिमान चर युग्म इस बात से संबंधित है कि क्या एक संबंध संकीर्ण है या व्यापक?
(A) सार्वभौमिकता बनाम विशिष्टतावाद
(B) प्रदत्त बनाम अर्जित
(C) विशिष्टता बनाम व्यापकता
(D) भावात्मकता बनाम भावात्मक तटस्थता

263. नाडेल की 'भूमिका' की अवधारणा मुख्य रूप से कैसी है?
(A) एक व्यवहारात्मक अवधारणा
(B) एक मानकीय अवधारणा
(C) एक संरचनात्मक अवधारणा, जो एक जाल में स्थिति को संदर्भित करती है
(D) एक मनोवैज्ञानिक अवधारणा

264. मैलिनोवस्की के अनुसार, 'साधनपरक आवश्यकताओं' को किन संस्थाओं द्वारा पूरा किया जाता है?
(A) अर्थशास्त्र, शिक्षा और राजनीतिक संगठन
(B) चयापचय, प्रजनन और शारीरिक आराम
(C) प्रतीकवाद, धर्म और कला
(D) युद्ध और रक्षा

265. दुर्खीम के अनुसार सामाजिक एकजुटता के दो प्रकार कौन से हैं?
(A) प्राथमिक और माध्यमिक
(B) यांत्रिक और सावयवी
(C) प्रच्छन्न और प्रकट
(D) पवित्र और अपवित्र

266. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में लेबल किया गया है। सही विकल्प का चयन कीजिए।
अभिकथन (A): मैक्स वेबर सभ्यताओं के तुलनात्मक अध्ययन में लगे हुए थे।
कारण (R): धर्मों पर उनका कार्य यह समझने के लिए था कि तार्किक पूंजीवाद केवल पश्चिम में ही क्यों विकसित हुआ।
(A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सही है लेकिन R गलत है।
(D) A गलत है लेकिन R सही है।

267. वह अवधारणा जो किसी सामाजिक प्रतिमान के अनपेक्षित और विघटनकारी परिणामों पर ध्यान केंद्रित करती है, क्या कहलाती है?
(A) प्रच्छन्न प्रकार्य
(B) प्रकट प्रकार्य
(C) दुष्प्रकार्य
(D) सुप्रकार्य

268. निम्नलिखित में से कौन सा ब्लूमर की 'व्याख्यात्मक प्रक्रिया' की अवधारणा के सार को दर्शाता है?
(A) व्यक्ति सामाजिक उद्दीपनों पर स्वचालित रूप से प्रतिक्रिया करते हैं।
(B) व्यक्ति अर्थों को समझकर अंतःक्रिया करते हैं।
(C) सामाजिक संरचनाएं यह निर्धारित करती हैं कि व्यक्ति स्थिति की व्याख्या कैसे करता है।
(D) व्याख्या एक विशुद्ध रूप से गैर-सामाजिक प्रक्रिया है।

NODIA

269. समग्रतावाद और पदानुक्रम की विचारधारा किसके द्वारा भारतीय समाज के विश्लेषण का केंद्र है?
(A) एम.एन. श्रीनिवास
(B) लुई ड्यूमॉन्ट
(C) जी.एस. घुरये
(D) बी.आर. अंबेडकर

270. सूची I (समाजशास्त्री) को सूची II (सैद्धांतिक अभिविन्यास) के साथ सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए कूट का उपयोग करके सही उत्तर चुनिए।
सूची I:
P. ए.आर. रेडक्लिफ-ब्राउन
Q. हरबर्ट ब्लूमर
R. राल्फ डहरेंडोर्फ
S. आर.के. मर्टन
सूची II:
1. प्रतीकात्मक अंतःक्रियावाद
2. संघर्ष सिद्धांत
3. संरचनात्मक प्रकार्यवाद
4. मध्य-सीमा प्रकार्यवाद
कूट:
(A) P-1, Q-2, R-3, S-4
(B) P-3, Q-1, R-2, S-4
(C) P-3, Q-4, R-2, S-1
(D) P-4, Q-1, R-2, S-3

271. शमीरपेट गाँव का एस.सी. दुबे का अध्ययन किसमें प्रमुख योगदान था?
(A) प्राचीन भारत के पाठ्य अध्ययन में।
(B) विकास की उत्तर-औपनिवेशिक आलोचनाओं में।
(C) स्वतंत्रता के बाद के भारत में ग्रामीण नृवंशवर्णन में।
(D) कृषि संबंधों के मार्क्सवादी विश्लेषण में।

272. जाति व्यवस्था से दलितों की मुक्ति के लिए अंबेडकर का अंतिम समाधान क्या था?
(A) आर्थिक उत्थान
(B) राजनीतिक आरक्षण
(C) धर्म परिवर्तन
(D) हिंदू धर्म का आंतरिक सुधार

273. 'मूल्यों का समाजशास्त्र' एक परिप्रेक्ष्य है जो किसके कार्य से जुड़ा है?
(A) जी.एस. घुरये
(B) एम.एन. श्रीनिवास
(C) राधा कमल मुखर्जी
(D) लुई ड्यूमॉन्ट

274. पैरेटो के अनुसार, शासन को वैध बनाने के लिए उपयोग किए जाने वाले बौद्धिक औचित्य क्या कहलाते हैं?
(A) अवशेष
(B) व्युत्पत्तियां
(C) समुच्चय
(D) संयोजन

275. कार्ल मार्क्स के अनुसार, पूंजीवादी समाज में 'अलगाव' का प्राथमिक स्रोत क्या है?
(A) धार्मिक विश्वास
(B) उत्पादन के साधनों का निजी स्वामित्व
(C) श्रम विभाजन की जटिलता
(D) पारंपरिक समुदायों का पतन

276. संरचनावाद के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. रेडक्लिफ-ब्राउन ने सामाजिक संबंधों के अवलोकनीय जाल पर ध्यान केंद्रित किया।
2. नाडेल ने सामाजिक भूमिकाओं के अमूर्त जाल पर ध्यान केंद्रित किया।
3. दोनों ने संरचना को प्रक्रियाओं की तुलना में अपेक्षाकृत स्थिर माना।
उपरोक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?
(A) केवल 1 और 2
(B) केवल 2 और 3
(C) केवल 1 और 3
(D) 1, 2 और 3

277. दमनकारी कानून से क्षतिपूर्ति कानून की ओर बदलाव किसकी विशेषता है?
(A) नियमहीनतावादी से भाग्यवादी समाजों की ओर संक्रमण
(B) सावयवी से यांत्रिक एकजुटता की ओर संक्रमण
(C) यांत्रिक से सावयवी एकजुटता की ओर संक्रमण
(D) अहंकेंद्रित से परार्थवादी समाजों की ओर संक्रमण

278. एक धार्मिक पैगंबर जो अपने व्यक्तिगत आकर्षण के आधार पर अनुयायी प्राप्त करता है, किसका उदाहरण है?
(A) पारंपरिक सत्ता
(B) तार्किक-कानूनी सत्ता
(C) करिश्माई सत्ता
(D) सामंती सत्ता

279. 'व्यक्तिगत परेशानियों' को 'सार्वजनिक मुद्दों' से जोड़ने की क्षमता मर्टन के किस विचार के साथ वैचारिक स्थान साझा करती है?
(A) प्रच्छन्न और प्रकट प्रकार्य
(B) नियमहीनता और तनाव
(C) व्यक्तिगत कुसमायोजन और सामाजिक संरचना के बीच का अंतर
(D) संदर्भ समूह सिद्धांत

280. 'सामान्यीकृत अन्य' की भूमिका निभाने की क्षमता किसके लिए महत्वपूर्ण है?
(A) एक परिपक्व सामाजिक आत्म के विकास के लिए।
(B) बुनियादी जैविक आवश्यकताओं की संतुष्टि के लिए।
(C) करिश्माई सत्ता के प्रयोग के लिए।

Click Here to Buy book on Amazon

(D) एनोमी के अनुभव के लिए।

281. निम्नलिखित में से कौन समाज में संघर्ष को एक सकारात्मक और एकीकृत शक्ति के रूप में अध्ययन करने की सबसे अधिक संभावना रखता है?
(A) कार्ल मार्क्स
(B) लुईस कोज़र
(C) टैलकॉट पार्सन्स
(D) राल्फ डहरेंडोर्फ

282. निम्नलिखित में से कौन सा युग्म सही सुमेलित है?
(A) लुई ड्यूमॉन्ट - द रिमेम्बर्ड विलेज
(B) एस.सी. दुबे - होमो हाइरार्कस
(C) सोशल चेंज इन मॉडर्न इंडिया - एम.एन. श्रीनिवास
(D) जी.एस. घुरये - इंडियन विलेज

283. एम.एन. श्रीनिवास का संरचनात्मक-प्र प्रकार्यात्मक परिप्रेक्ष्य समाज को किस रूप में देखता है?
(A) वर्गों के बीच संघर्ष के अखाड़े के रूप में।
(B) परस्पर क्रिया करने वाले भागों की एक व्यवस्था के रूप में जो संतुलन की ओर प्रवृत्त होती है।
(C) पाठ्य परंपराओं के उत्पाद के रूप में।
(D) व्यक्तिगत व्याख्याओं के संग्रह के रूप में।

284. बी.आर. अंबेडकर के लेखन किसका उदाहरण प्रदान करते हैं?
(A) जाति का प्रकार्यात्मक विश्लेषण।
(B) सामाजिक पदानुक्रम की अधीनस्थ आलोचना।
(C) सामाजिक मानदंडों के लिए भारतविद्या का औचित्य।
(D) पहचान का प्रतीकात्मक अंतःक्रियावादी दृष्टिकोण।

285. "एक संस्था, सबसे पहले, मूल्यों की एक व्यवस्था है।" यह कथन किसके परिप्रेक्ष्य को दर्शाता है?
(A) कार्ल मार्क्स
(B) राधा कमल मुखर्जी
(C) हरबर्ट ब्लूमर
(D) एस.एफ. नाडेल

286. ट्रोब्रियांड द्वीपवासियों के 'कुला' विनिमय का मैलिनोवस्की का अध्ययन किसका उदाहरण है?
(A) आर्थिक तार्किकता सभी मानवीय व्यवहारों को नियंत्रित करती है।
(B) औपचारिक उपहार विनिमय के माध्यम से सामाजिक संबंध बनाए रखे जाते हैं।
(C) आदिम समाजों में जटिल सामाजिक संगठन की कमी होती है।
(D) जादू एक बेकार अभ्यास है।

287. रेडक्लिफ-ब्राउन का संरचनात्मक-प्र प्रकार्यात्मक दृष्टिकोण किससे संबंधित है?
(A) संस्थाओं की ऐतिहासिक उत्पत्ति से।
(B) सामाजिक संरचना के रखरखाव में संस्थाओं के योगदान से।
(C) व्यक्तियों को मिलने वाली मनोवैज्ञानिक संतुष्टि से।
(D) समाज के क्रांतिकारी परिवर्तन से।

288. दुर्खीम के अनुसार, 'अहंकेंद्रित आत्महत्या' किसका परिणाम है?
(A) अत्यधिक सामाजिक एकीकरण का
(B) अत्यधिक सामाजिक नियमन का
(C) अपर्याप्त सामाजिक एकीकरण का
(D) अपर्याप्त सामाजिक नियमन का

289. आदर्श प्रारूप के रूप में 'नौकरशाही' का विश्लेषण किसके द्वारा किया गया था?
(A) कार्ल मार्क्स
(B) मैक्स वेबर
(C) एमिल दुर्खीम
(D) विल्फ्रेडो पैरेटो

290. 'प्रकट' और 'प्रच्छन्न' प्रकार्यों के बीच किसने अंतर किया?
(A) टैलकॉट पार्सन्स
(B) रॉबर्ट के. मर्टन
(C) ब्रॉनिस्लॉ मैलिनोवस्की
(D) ए.आर. रेडक्लिफ-ब्राउन

291. नीचे दो कथन दिए गए हैं। सही विकल्प का चयन कीजिए।
कथन I: जी.एच. मीड के अनुसार स्व के विकास के लिए भाषा केंद्रीय है।
कथन II: भाषा व्यक्तियों को दूसरे की भूमिका निभाने और स्वयं को वस्तुओं के रूप में देखने की अनुमति देती है।
(A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
(B) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।
(C) कथन I सही है, लेकिन कथन II गलत है।
(D) कथन I गलत है, लेकिन कथन II सही है।

292. कार्ल मार्क्स के सिद्धांत को किस रूप में वर्णित किया जाता है?
(A) संरचनात्मक प्रकार्यवाद
(B) प्रतीकात्मक अंतःक्रियावाद
(C) ऐतिहासिक भौतिकवाद
(D) सामाजिक डार्विनवाद

293. जी.एस. घुरये की बौद्धिक विरासत की विशेषता क्या है?
(A) एक एकल सैद्धांतिक ढांचा।
(B) भारतीय समाज के अध्ययन के लिए एक व्यापक दृष्टिकोण।
(C) मार्क्सवादी विश्लेषण के प्रति प्रतिबद्धता।
(D) केवल ग्रामीण अध्ययनों पर ध्यान केंद्रित करना।

294. 'संस्कृतिकरण' और 'पश्चिमीकरण' किसके द्वारा विकसित अवधारणाएं हैं?
(A) धार्मिक परिवर्तन के लिए

NODIA

ग्रंथों का विश्लेषण अनिवार्य है। यह दृष्टिकोण क्षेत्रीय अध्ययन के बजाय शास्त्रीय परंपराओं और लिखित ऐतिहासिक प्रमाणों को प्राथमिकता प्रदान करता है।

10. (A) प्रच्छन्न आवश्यकताएं
ब्रॉनिस्लॉ मैलिनोवस्की ने संस्कृति के प्रकार्यात्मक विश्लेषण में तीन स्तर की आवश्यकताओं की पहचान की थी। इनमें भोजन और सुरक्षा जैसी बुनियादी आवश्यकताएं, शिक्षा और कानून जैसी साधनपरक आवश्यकताएं तथा धर्म और कला जैसी एकीकृत आवश्यकताएं शामिल हैं। उन्होंने प्रच्छन्न आवश्यकताएं जैसा कोई वर्गीकरण नहीं दिया था। उनके अनुसार, सामाजिक संस्थाएं इन्हीं तीन स्तरों की जरूरतों को पूरा करने के लिए विकसित होती हैं। यह सिद्धांत मानव व्यवहार और संस्कृति के बीच के गहरे संबंध को स्पष्ट करता है।

11. (D) वह सीमा जहाँ तक भूमिका व्यवहार को निर्दिष्ट किया जाता है, जिससे भिन्नता सीमित हो जाती है।
एस.एफ. नाडेल के अनुसार, सामाजिक भूमिका की निश्चितता उस सीमा को दर्शाती है जहाँ तक किसी विशिष्ट भूमिका से जुड़े व्यवहार को स्पष्ट रूप से परिभाषित किया जाता है। जब भूमिका के नियम कड़े होते हैं, तो व्यक्ति के व्यवहार में भिन्नता की संभावना कम हो जाती है। यह सामाजिक संरचना में स्थिरता लाता है क्योंकि कर्ता को पता होता है कि उससे क्या अपेक्षा की जाती है। निश्चितता जितनी अधिक होगी, भूमिका उतनी ही औपचारिक और पूर्व-निर्धारित मानी जाएगी।

12. (A) कथन 1 और कथन 2 दोनों सही हैं और कथन 2, कथन 1 की सही व्याख्या है।
रॉबर्ट मर्टन ने पारंपरिक प्रकार्यवाद की इस धारणा को चुनौती दी कि समाज की प्रत्येक संस्था केवल सकारात्मक कार्य करती है। उन्होंने स्पष्ट किया कि कुछ सामाजिक तत्व समाज के लिए हानिकारक भी हो सकते हैं, जिसे उन्होंने दुष्प्रकार्य कहा। इसके अलावा, कुछ तत्व ऐसे भी हो सकते हैं जिनका व्यवस्था पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता, जिन्हें गैर-प्रकार्यात्मक माना गया। मर्टन का यह तर्क सार्वभौमिक प्रकार्यवाद की सीमाओं को उजागर करता है और सामाजिक वास्तविकता का विश्लेषण प्रस्तुत करता है।

13. (C) उन निरंतर, सहज और अतार्किक भावनाओं को जो व्यवहार को संचालित करती हैं।
विल्फ्रेडो पैरेटो की अवशेष की अवधारणा उन स्थिर मानवीय भावनाओं और प्रवृत्तियों को संदर्भित करती है जो तार्किक सोच के बिना मानवीय क्रियाओं को संचालित करती हैं। पैरेटो का मानना था कि अधिकांश मानवीय व्यवहार अतार्किक होते हैं, जो इन आंतरिक अवशेषों से प्रेरित होते हैं। अवशेष सार्वभौमिक होते हैं और समय के साथ बदलते नहीं हैं। यद्यपि लोग अपने कार्यों के लिए तर्क देते हैं, लेकिन उनके पीछे की वास्तविक शक्ति ये सहज भावनाएं ही होती हैं।

14. (D) संस्कृतिकरण
एम.एन. श्रीनिवास के अनुसार, संस्कृतिकरण वह प्रक्रिया है जिसके माध्यम से निम्न जातियाँ या जनजातियाँ अपनी प्रस्थिति ऊँचा करने के लिए उच्च जातियों, विशेषकर ब्राह्मणों, के रीति-रिवाजों और जीवन शैली को अपनाती हैं। इसमें शाकाहार, मद्यपान का त्याग और विशिष्ट धार्मिक अनुष्ठानों का पालन शामिल होता है। यह प्रक्रिया जाति व्यवस्था के भीतर केवल प्रस्थिति में परिवर्तन लाती है, संरचनात्मक ढाँचे को नहीं बदलती। यह भारतीय समाज में सामाजिक गतिशीलता का एक महत्वपूर्ण सांस्कृतिक आयाम प्रस्तुत करती है।

15. (A) P-3, Q-4, R-1, S-2
समाजशास्त्र में विभिन्न विद्वानों ने महत्वपूर्ण अवधारणाएं दी हैं। रॉबर्ट मर्टन ने प्रच्छन्न प्रकार्य की अवधारणा प्रस्तुत की, जो अनपेक्षित परिणामों को दर्शाती है। मैक्स वेबर ने सामाजिक क्रियाओं को समझने के लिए वर्स्टेहेन पद्धति का समर्थन किया। विल्फ्रेडो पैरेटो ने शासन व्यवस्था में अभिजात वर्ग के संचरण का सिद्धांत दिया, जो शक्ति के चक्रीय परिवर्तन को बताता है। एमिल दुर्खीम ने सामाजिक तथ्यों को समाजशास्त्र की अध्ययन वस्तु माना, जो व्यक्ति के बाहर स्थित होते हैं और उस पर दबाव डालते हैं।

16. (B) राल्फ डहरेंडोर्फ
राल्फ डहरेंडोर्फ ने अपने संघर्ष सिद्धांत में अनिवार्य रूप से समन्वित संघों की अवधारणा प्रस्तुत की। उनके अनुसार, आधुनिक समाज विभिन्न प्रकार के संघों से बना है जहाँ सत्ता और अधिकार का असमान वितरण होता है। इस असमानता के कारण शासक और शासित समूहों के बीच हितों का टकराव पैदा होता है, जो अंततः सामाजिक संघर्ष का आधार बनता है। डहरेंडोर्फ का तर्क है कि संघर्ष संपत्ति के बजाय अधिकार और शक्ति के वितरण से उत्पन्न होता है।

17. (B) जॉर्ज हरबर्ट मीड
जॉर्ज हरबर्ट मीड के सामाजिक मनोविज्ञान में "आई" और "मी" का अंतर आत्म के विकास को समझने का मुख्य आधार है। उनके अनुसार, "आई" व्यक्ति का सहज, आवेगी और रचनात्मक पक्ष है, जबकि "मी" सामाजिक स्व है जो दूसरों के दृष्टिकोणों और सामाजिक अपेक्षाओं को आंतरिक करता है। इन दोनों के बीच निरंतर चलने वाली अंतःक्रिया से ही व्यक्ति का पूर्ण व्यक्तित्व निर्मित होता है। यह प्रक्रिया सामाजिक संचार और प्रतीकों के माध्यम से संपन्न होती है।

18. (A) बहुविध परंपराओं की परस्पर क्रिया और सामाजिक परिवर्तन में उनकी भूमिका पर।
एस.सी. दुबे ने भारतीय गाँवों के अध्ययन में परंपराओं की जटिलता पर ध्यान केंद्रित किया। उन्होंने रेडफील्ड की लघु और महान परंपराओं के द्विभाजन के बजाय परंपराओं के छह-स्तरीय वर्गीकरण का प्रस्ताव दिया। उनका मानना था कि ग्रामीण जीवन को समझने के लिए शास्त्रीय, क्षेत्रीय और स्थानीय परंपराओं के बीच होने वाली निरंतर अंतःक्रिया का विश्लेषण करना आवश्यक है। यह दृष्टिकोण भारतीय ग्रामीण समाज की विविधता और उसमें होने वाले परिवर्तनों को अधिक स्पष्ट रूप से समझने में मदद करता है।

Downloaded from www.pdf.tube

STUDYING FROM PDFs?

THINK AGAIN.

If you are studying only from PDFs,
you are wasting valuable time.

Research shows that learning from

PRINTED BOOKS has up to

4× HIGHER RETENTION

than studying from screens.

PRINT BOOK = BETTER MEMORY

PDF = LOWER RETENTION

Those who study from **PRINTED BOOKS**
move **AHEAD.**

Others are left **BEHIND**
in competition.



In competitive exams,
being average is not enough.

STAY ONE STEP AHEAD.

उत्तर (व्याख्या सहित)

1. (B) सामाजिक संगठन
ए.आर. रेडक्लिफ-ब्राउन के अनुसार, सामाजिक संगठन व्यक्तियों के बीच के उन वास्तविक सामाजिक संबंधों को दर्शाता है जो प्रत्यक्ष रूप से देखे जा सकते हैं। यह अवधारणा सामाजिक संरचना से भिन्न है क्योंकि संरचना संस्थागत रूप से नियंत्रित संबंधों की व्यवस्था को इंगित करती है। व्यक्तियों की आपसी गतिविधियों और संबंधों का प्रत्यक्ष अवलोकन सामाजिक जीवन के गतिशील स्वरूप को समझने में सहायक होता है, जिसे ब्राउन ने संगठन के रूप में परिभाषित किया है।

2. (A) कथन 1 और कथन 2 दोनों सही हैं।
ब्रॉनिस्लॉ मैलिनोवस्की का प्रकार्यवाद इस विचार पर केंद्रित है कि संस्कृति की प्रत्येक इकाई मानव की जैविक और मनोवैज्ञानिक आवश्यकताओं की पूर्ति करती है। उनके अनुसार, भोजन, आवास और प्रजनन जैसी बुनियादी ज़रूरतें सामाजिक संस्थाओं के माध्यम से पूरी होती हैं। इसी कारण उनके सिद्धांत को व्यक्तिवादी प्रकार्यवाद कहा जाता है, क्योंकि यह समाज की तुलना में व्यक्तिगत आवश्यकताओं को अधिक महत्व देता है। यह दृष्टिकोण सामाजिक प्रघटनाओं को व्यक्ति की संतुष्टि के संदर्भ में समझता है।

3. (C) सामाजिक संरचना भूमिकाओं के विश्लेषण से प्राप्त एक अमूर्त अवधारणा है।
एस.एफ. नाडेल के अनुसार, सामाजिक संरचना कोई मूर्त वस्तु नहीं है जिसे सीधे देखा जा सके, बल्कि यह सामाजिक भूमिकाओं के आपसी संबंधों से निर्मित एक अमूर्त ढांचा है। उन्होंने तर्क दिया कि संरचना को समझने के लिए समाज में व्यक्तियों द्वारा निभाई जाने वाली विभिन्न भूमिकाओं और उनके प्रतिमानों का सूक्ष्म विश्लेषण आवश्यक है। यह दृष्टिकोण संरचना को एक स्थिर व्यवस्था के बजाय भूमिकाओं के जटिल जाल के रूप में परिभाषित करता है।

4. (D) एनोमी
एमिल दुर्खीम के अनुसार, एनोमी समाज की वह स्थिति है जहाँ स्थापित मानदंड और मूल्य अपनी प्रभावशीलता खो देते हैं। यह नियमहीनता की स्थिति अक्सर तीव्र सामाजिक परिवर्तन या आर्थिक संकट के समय उत्पन्न होती है, जब समाज व्यक्तियों के व्यवहार को नियंत्रित करने में असमर्थ हो जाता है। ऐसी स्थिति में व्यक्ति लक्ष्य और साधनों के बीच संतुलन नहीं बना पाता, जिससे सामाजिक व्यवस्था में अस्थिरता और भ्रम की स्थिति पैदा हो जाती है।

5. (C) लोकतांत्रिक सत्ता
मैक्स वेबर ने वैध सत्ता के तीन मुख्य प्रकारों का वर्गीकरण किया था, जिनमें पारंपरिक, करिश्माई और तार्किक-कानूनी सत्ता शामिल हैं। पारंपरिक सत्ता रीति-रिवाजों पर आधारित होती है, जबकि करिश्माई सत्ता नेता के असाधारण गुणों पर टिकी होती है। तार्किक-कानूनी सत्ता आधुनिक नियमों और कानूनों के पालन पर आधारित होती है। लोकतांत्रिक सत्ता को वेबर ने इन शुद्ध प्रकारों में शामिल नहीं किया था, क्योंकि लोकतंत्र स्वयं किसी न किसी सत्ता का रूप हो सकता है।

6. (B) संस्थागत रूप से नियंत्रित संबंधों में व्यक्तियों की व्यवस्था को।
ए.आर. रेडक्लिफ-ब्राउन के लिए सामाजिक संरचना का अर्थ उन सामाजिक संबंधों की निरंतर व्यवस्था है जो संस्थागत नियमों द्वारा नियंत्रित होते हैं। उन्होंने इसे एक ऐसी वास्तविकता माना जिसे सामाजिक व्यवहार के माध्यम से समझा जा सकता है। इसमें व्यक्तियों की प्रस्थिति और उनके द्वारा निभाई जाने वाली भूमिकाओं का एक निश्चित प्रतिमान शामिल होता है। यह संरचना समाज को एक व्यवस्थित रूप प्रदान करती है और सामाजिक जीवन की निरंतरता को सुनिश्चित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

7. (D) इसकी मुख्य विशेषता संघर्ष और परिवर्तन है।
टैलकॉट पार्सन्स की सामाजिक व्यवस्था की अवधारणा मुख्य रूप से संतुलन, एकीकरण और व्यवस्था बनाए रखने पर केंद्रित है। उन्होंने समाज को एक ऐसी इकाई माना जो अपनी प्रकार्यात्मक आवश्यकताओं, जैसे अनुकूलन, लक्ष्य प्राप्ति, एकीकरण और प्रच्छन्नता को पूरा करके स्थिरता प्राप्त करती है। संघर्ष और परिवर्तन को उन्होंने व्यवस्था के लिए चुनौती माना, न कि इसकी मुख्य विशेषता। इसलिए, पार्सन्स का सिद्धांत संघर्ष के बजाय सामंजस्यपूर्ण और स्थिर स्वरूप पर बल देता है।

8. (A) वर्ग संघर्षों का
कार्ल मार्क्स का प्रसिद्ध तर्क है कि मानव सभ्यता का संपूर्ण लिखित इतिहास मूलतः वर्ग संघर्ष का इतिहास रहा है। उनके अनुसार, प्रत्येक युग में समाज दो परस्पर विरोधी वर्गों, शोषक और शोषित, में विभाजित रहा है। इन वर्गों के बीच उत्पादन के साधनों पर नियंत्रण को लेकर निरंतर संघर्ष होता रहता है। यह ऐतिहासिक भौतिकवाद का आधार है, जहाँ आर्थिक संरचना में होने वाले बदलाव ही समाज के अन्य सभी सामाजिक और राजनीतिक परिवर्तनों को निर्धारित करते हैं।

9. (C) भारतविद्या / पाठ्य परिप्रेक्ष्य
जी.एस. घुरये को भारतीय समाजशास्त्र में भारतविद्या या पाठ्य परिप्रेक्ष्य का जनक माना जाता है। उन्होंने भारतीय समाज, विशेष रूप से जाति और धर्म, को समझने के लिए प्राचीन संस्कृत ग्रंथों, शास्त्रों और महाकाव्यों के अध्ययन पर विशेष बल दिया। उनका मानना था कि भारतीय संस्कृति और सामाजिक संस्थाओं की जड़ों को समझने के लिए ऐतिहासिक

NODIA

(B) राजनीतिक परिवर्तन के लिए
(C) सामाजिक परिवर्तन के लिए
(D) आर्थिक विकास के लिए

295. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में लेबल किया गया है। सही विकल्प का चयन कीजिए।
अभिकथन (A): लुई ड्यूमॉन्ट के अनुसार जाति व्यवस्था को वर्ग और प्रस्थिति की पश्चिमी अवधारणाओं से नहीं समझा जा सकता।
कारण (R): इसकी आधारभूत विचारधारा शुद्ध/अशुद्ध विरोध पर आधारित पदानुक्रम का एक धार्मिक सिद्धांत है।
(A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सही है लेकिन R गलत है।
(D) A गलत है लेकिन R सही है।

296. भारतीय समाज में एक गतिशील शक्ति के रूप में 'परंपरा' का अध्ययन किसका एक प्रमुख योगदान है?
(A) एस.सी. दुबे
(B) बी.आर. अंबेडकर
(C) लुई ड्यूमॉन्ट
(D) जी.एस. घुरये

297. बी.आर. अंबेडकर के अनुसार 'अछूतों' के पतन का मुख्य स्रोत क्या था?
(A) केवल आर्थिक गरीबी
(B) शिक्षा की कमी
(C) हिंदू धर्मग्रंथों की धार्मिक स्वीकृतियां
(D) ब्रिटिश औपनिवेशिक नीतियां

298. सामाजिक संस्थाओं की नींव के रूप में 'मूल्यों' पर ध्यान केंद्रित करना किसके समाजशास्त्र का केंद्र है?
(A) एम.एन. श्रीनिवास
(B) राधा कमल मुखर्जी
(C) एस.सी. दुबे
(D) बी.आर. अंबेडकर

299. राल्फ डहरेंडोर्फ ने आधुनिक समाज को किसकी एक व्यवस्था के रूप में देखा?
(A) प्रकार्यात्मक परस्पर निर्भरता की
(B) वर्गहीन सद्भाव की
(C) अनिवार्य रूप से समन्वित संघों की
(D) प्रतीकात्मक अर्थों की

300. पवित्र और अपवित्र के बीच का अंतर किसके द्वारा विकसित धर्म के सिद्धांत का आधार है?
(A) मैक्स वेबर
(B) एमिल दुर्खीम
(C) कार्ल मार्क्स
(D) ब्रॉनिस्लॉ मैलिनोवस्की

www.nodia.in

Click Here to Buy book on Amazon

19. (C) इस बात का अध्ययन कि सामाजिक संरचनाएं व्यवस्था को बनाए रखने के लिए कैसे कार्य करती हैं।
रेडक्लिफ-ब्राउन ने सामाजिक शरीर क्रिया विज्ञान शब्द का उपयोग यह स्पष्ट करने के लिए किया कि समाज की विभिन्न संस्थाएं और गतिविधियाँ सामाजिक संरचना की निरंतरता बनाए रखने में क्या भूमिका निभाती हैं। जैसे शरीर के अंग जीवित रहने के लिए मिलकर कार्य करते हैं, वैसे ही धर्म, कानून और नातेदारी जैसी व्यवस्थाएं समाज के अस्तित्व और स्थिरता को सुनिश्चित करती हैं। यह दृष्टिकोण सामाजिक जीवन के प्रकार्यात्मक पक्ष पर बल देता है और व्यवस्था के रखरखाव का विश्लेषण करता है।

20. (D) अनिश्चितता के क्षेत्रों को पाटना और मनोवैज्ञानिक चिंता का प्रबंधन करना।
ब्रॉनिस्लॉ मैलिनोवस्की के अनुसार, जादू का मुख्य कार्य उन परिस्थितियों में मानसिक राहत प्रदान करना है जहाँ मानवीय कौशल और ज्ञान अपर्याप्त होते हैं। जब व्यक्ति को भविष्य की अनिश्चितता या खतरे का सामना करना पड़ता है, तो जादू उसे नियंत्रण की भावना देता है और उसकी चिंता को कम करता है। इस प्रकार, जादू एक मनोवैज्ञानिक उपकरण के रूप में कार्य करता है जो व्यक्ति को तनावपूर्ण स्थितियों में भी अपनी गतिविधियों को जारी रखने का साहस प्रदान करता है।

21. (A) केवल 2
एमिल दुर्खीम के आत्महत्या के सिद्धांत में केवल दूसरा कथन सही है। विसंगतिपूर्ण आत्महत्या तब होती है जब सामाजिक मानदंडों में अचानक गिरावट आती है, जिससे व्यक्ति भ्रमित महसूस करता है। अहंकेंद्रित आत्महत्या समूह में व्यक्ति के अत्यधिक एकीकरण के बजाय अपर्याप्त एकीकरण का परिणाम है। वहीं, परार्थवादी आत्महत्या तब होती है जब व्यक्ति समूह के साथ इतना अधिक एकीकृत हो जाता है कि वह समूह के लिए अपने प्राण देने को तैयार रहता है। ये स्थितियाँ सामाजिक विसंगतियों को दर्शाती हैं।

22. (B) तार्किक-कानूनी सत्ता
मैक्स वेबर के अनुसार, तार्किक-कानूनी सत्ता वह व्यवस्था है जहाँ व्यक्ति नियमों और कानूनों की वैधता में विश्वास के कारण आदेशों का पालन करते हैं। यहाँ आज्ञाकारिता किसी व्यक्ति के प्रति नहीं, बल्कि स्थापित निर्वैयक्तिक नियमों के प्रति होती है। विश्वविद्यालय के नियमों का पालन करने वाला छात्र यह मानता है कि प्रशासन के पास इन नियमों को लागू करने का संवैधानिक और कानूनी अधिकार है। यह आधुनिक नौकरशाही और आधुनिक राज्यों में पाई जाने वाली सत्ता का प्राथमिक रूप है।

23. (D) नवाचारी
रॉबर्ट मर्टन के तनाव सिद्धांत के अनुसार, नवाचारी वे व्यक्ति होते हैं जो समाज द्वारा निर्धारित सफलता के लक्ष्यों को तो स्वीकार करते हैं, लेकिन उन्हें प्राप्त करने के लिए स्वीकृत साधनों का उपयोग नहीं करते। इसके बजाय, वे अवैध या अपरंपरागत तरीकों का सहारा लेते हैं। यह स्थिति अक्सर तब उत्पन्न होती है जब समाज के कुछ वर्गों के पास लक्ष्यों तक पहुँचने के पर्याप्त कानूनी अवसर नहीं होते। अपराध और भ्रष्टाचार को अक्सर नवाचार के उदाहरण के रूप में देखा जाता है।

24. (A) लुई ड्यूमॉन्ट
प्रसिद्ध कृति "होमो हाइरार्कस" के लेखक लुई ड्यूमॉन्ट हैं, जिसमें उन्होंने भारतीय जाति व्यवस्था का गहन समाजशास्त्रीय विश्लेषण प्रस्तुत किया है। ड्यूमॉन्ट का तर्क है कि जाति व्यवस्था शुद्धता और अशुद्धता के धार्मिक विरोध पर आधारित एक पदानुक्रमित संरचना है। उन्होंने भारतीय समाज को समग्रतावादी और पश्चिमी समाज को व्यक्तिवादी माना। इस पुस्तक ने जाति के अध्ययन में पदानुक्रम के सिद्धांत को समझने के लिए एक नया और प्रभावशाली परिप्रेक्ष्य प्रदान किया है, जो आज भी प्रासंगिक है।

25. (A) कथन 1 और कथन 2 दोनों सही हैं और कथन 2, कथन 1 की सही व्याख्या है।
हरबर्ट ब्लूमर के अनुसार, किसी भी वस्तु या क्रिया का अर्थ उसमें पहले से मौजूद नहीं होता, बल्कि वह सामाजिक अंतःक्रिया के दौरान निर्मित होता है। प्रतीकात्मक अंतःक्रियावाद यह मानता है कि लोग दूसरों के साथ संवाद करते समय अर्थ निकालते हैं और अपनी व्याख्या के आधार पर व्यवहार करते हैं। यह प्रक्रिया निरंतर चलती रहती है जहाँ अर्थों को बदला और सुधारा जा सकता है। इसलिए, मानवीय क्रियाएं सामाजिक परिवेश में अर्थों के आदान-प्रदान और उनकी व्याख्या का परिणाम होती हैं।

26. (A) मूल्य समाज के संगठन और कामकाज के लिए केंद्रीय हैं।
राधा कमल मुखर्जी के अनुसार, मूल्य केवल व्यक्तिगत पसंद नहीं हैं, बल्कि वे समाज के अस्तित्व और उसके सुचारु संचालन के लिए अनिवार्य आधार हैं। उन्होंने तर्क दिया कि मानवीय मूल्य ही सामाजिक संस्थाओं और समूहों को दिशा प्रदान करते हैं। मूल्यों के बिना सामाजिक व्यवस्था में सामंजस्य स्थापित करना असंभव है। मुखर्जी ने मूल्यों के समाजशास्त्र के माध्यम से यह स्पष्ट किया कि नैतिक और आध्यात्मिक मूल्य मानव विकास और सामाजिक प्रगति की प्रक्रिया में अभिन्न भूमिका निभाते हैं।

27. (D) समूहों के भीतर सामंजस्य और एकीकरण बढ़ाने का कार्य कर सकता है।
लुईस कोज़र ने अपने विश्लेषण में तर्क दिया कि संघर्ष हमेशा विनाशकारी नहीं होता, बल्कि इसके कई सकारात्मक कार्य भी हो सकते हैं। उनके अनुसार, बाहरी समूहों के साथ संघर्ष अक्सर आंतरिक एकता और समूह की पहचान को मजबूत करता है। यह समाज में नई सीमाओं का निर्धारण करने और असंतोष को बाहर निकालने के लिए सुरक्षा-वाल्व के रूप में भी कार्य कर सकता है। इस प्रकार, संघर्ष सामाजिक व्यवस्था के भीतर परिवर्तन और अनुकूलन की प्रक्रिया में सहायक हो सकता है।

28. (B) सामाजिक सुधार के लिए जाति व्यवस्था की धार्मिक पवित्रता को नष्ट करना आवश्यक है।
बी.आर. अंबेडकर की पुस्तक "जाति का विनाश" का मुख्य तर्क है कि जब तक जाति को आधार प्रदान करने वाले हिंदू धर्मग्रंथों

Downloaded from www.pdf.tube

की पवित्रता को नष्ट नहीं किया जाता, तब तक जाति का अंत असंभव है। उन्होंने तर्क दिया कि केवल अंतरजातीय भोज या विवाह जैसे ऊपरी सुधार पर्याप्त नहीं हैं। जाति एक मानसिक स्थिति है जो धार्मिक कानूनों द्वारा समर्थित है। अतः, वास्तविक मुक्ति के लिए उन धार्मिक मान्यताओं को चुनौती देना अनिवार्य है जो असमानता और भेदभाव को बढ़ावा देती हैं।

29. (C) कुला वलय - ए.आर. रेडक्लिफ-ब्राउन
कुला वलय की अवधारणा ए.आर. रेडक्लिफ-ब्राउन द्वारा नहीं, बल्कि ब्रॉनिस्लॉ मैलिनोवस्की द्वारा ट्रोब्रियांड द्वीपवासियों के अध्ययन के दौरान दी गई थी। यह एक औपचारिक विनिमय व्यवस्था थी जिसका उद्देश्य केवल आर्थिक लाभ नहीं, बल्कि सामाजिक संबंधों को सुदृढ़ करना था। अन्य विकल्प सही सुमेलित हैं: टैलकॉट पार्सन्स ने प्रतिमान चर दिए, राल्फ डहरेंडोर्फ ने अनिवार्य रूप से समन्वित संघों की बात की और एमिल दुर्खीम ने धर्म के विश्लेषण में पवित्र और अपवित्र के बीच स्पष्ट अंतर स्थापित किया था।

30. (D) संरचनात्मक रूप
एस.एफ. नाडेल ने समाज में विभिन्न भूमिकाओं के बीच मौजूद संबंधों के जाल का वर्णन करने के लिए "संरचनात्मक रूप" शब्द का प्रयोग किया। उनके अनुसार, सामाजिक संरचना कोई स्थिर वस्तु नहीं है, बल्कि यह भूमिकाओं के आपसी संबंधों से प्राप्त एक अमूर्त प्रतिमान है। यह रूप समाज के विभिन्न अंगों के बीच के तालमेल और उनकी व्यवस्था को प्रदर्शित करता है। नाडेल ने इस बात पर जोर दिया कि संरचना का वास्तविक सार व्यक्तिगत व्यवहार के पीछे छिपे हुए इन संबंधों में है।

31. (A) अनुकूलन
टैलकॉट पार्सन्स की एजीआईएल योजना में 'ए' का अर्थ अनुकूलन है। यह प्रकार्यात्मक आवश्यकता इस बात पर जोर देती है कि प्रत्येक सामाजिक व्यवस्था को जीवित रहने के लिए अपने पर्यावरण के साथ तालमेल बिठाना चाहिए और आवश्यक संसाधन जुटाने चाहिए। यह कार्य मुख्य रूप से अर्थव्यवस्था द्वारा संपन्न किया जाता है। अनुकूलन की प्रक्रिया सुनिश्चित करती है कि समाज बदलती परिस्थितियों के अनुसार स्वयं को ढाल सके और अपनी भौतिक आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए बाहरी वातावरण का कुशलतापूर्वक उपयोग कर सके।

32. (B) भावात्मक क्रिया
मैक्स वेबर के अनुसार, भावात्मक क्रिया वह व्यवहार है जो कर्ता की वर्तमान भावनाओं, संवेगों या मनोवैज्ञानिक स्थिति से प्रेरित होता है। इसमें कोई दीर्घकालिक योजना या तार्किक गणना नहीं होती, बल्कि यह तात्कालिक प्रतिक्रिया के रूप में प्रकट होती है। उदाहरण के लिए, क्रोध में आकर किसी पर चिल्लाना या प्रेम वश कोई कार्य करना भावात्मक क्रिया के अंतर्गत आता है। वेबर ने इसे सामाजिक क्रिया के चार प्रकारों में से एक माना है, जो मानवीय व्यवहार के भावनात्मक पक्ष को दर्शाता है।

33. (B) एक ऐसा सामाजिक वातावरण प्रदान करना जहाँ व्यक्ति भविष्य के जीवनसाथी से मिलते हैं।
रॉबर्ट मर्टन के अनुसार, प्रच्छन्न प्रकार्य वे परिणाम होते हैं जो न तो प्रत्यक्ष रूप से दिखाई देते हैं और न ही सचेत रूप से इच्छित होते हैं। शिक्षा व्यवस्था का मुख्य उद्देश्य ज्ञान देना और कौशल विकसित करना है, जो इसके प्रकट प्रकार्य हैं। लेकिन स्कूल या कॉलेज का वह कार्य, जहाँ छात्र आपस में मिलते हैं और भविष्य के जीवनसाथी का चुनाव करते हैं, एक अनपेक्षित परिणाम है। यह शिक्षा व्यवस्था के सामाजिक ढांचे के भीतर होने वाला एक महत्वपूर्ण प्रच्छन्न प्रकार्य माना जाता है।

34. (A) वह संगठित समुदाय जो व्यक्ति को उसकी आत्म-एकता प्रदान करता है।
जॉर्ज हरबर्ट मीड की "सामान्यीकृत अन्य" की अवधारणा उस सामाजिक प्रक्रिया को दर्शाती है जिसमें व्यक्ति समाज या समूह के सामान्य दृष्टिकोणों और अपेक्षाओं को आंतरिक करता है। इसके माध्यम से व्यक्ति यह समझ पाता है कि पूरा समाज उससे किस प्रकार के व्यवहार की अपेक्षा करता है। यह आत्म के विकास का अंतिम चरण है, जहाँ व्यक्ति केवल विशिष्ट लोगों के प्रति नहीं, बल्कि पूरे समुदाय के नियमों और मूल्यों के प्रति सचेत होकर अपने व्यवहार को निर्देशित करना सीखता है।

35. (A) 3, 2, 1, 4
इन समाजशास्त्रीय कृतियों का प्रकाशन क्रम उनके लेखकों के काल और विचारों के विकास को दर्शाता है। एमिल दुर्खीम की "द डिवीजन ऑफ लेबर इन सोसाइटी" 1893 में प्रकाशित हुई थी। मैक्स वेबर की "द प्रोटेस्टेंट एथिक एंड द स्पिरिट ऑफ कैपिटलिज्म" 1905 में आई। दुर्खीम की "द एलिमेंट्री फॉर्म्स ऑफ द रिलिजियस लाइफ" 1912 में प्रकाशित हुई। अंत में, जॉर्ज हरबर्ट मीड की पुस्तक "माइंड, सेल्फ एंड सोसाइटी" उनके मरणोपरांत 1934 में प्रकाशित हुई। यह क्रम समाजशास्त्र के शास्त्रीय विकास को दर्शाता है।

36. (D) शुद्ध और अशुद्ध
लुई ड्यूमॉन्ट ने अपने अध्ययन में यह तर्क दिया कि भारतीय जाति व्यवस्था का आधार आर्थिक या राजनीतिक नहीं, बल्कि पूरी तरह से धार्मिक और वैचारिक है। उनके अनुसार, यह व्यवस्था शुद्ध और अशुद्ध के बीच के मौलिक विरोध पर आधारित है। ब्राह्मणों को सबसे शुद्ध और दलितों को सबसे अशुद्ध माना जाता है, जिससे समाज में एक पदानुक्रमित संरचना निर्मित होती है। यह विरोध भोजन, विवाह और सामाजिक संपर्क के नियमों को निर्धारित करता है, जो संपूर्ण जाति व्यवस्था को संचालित करता है।

37. (C) प्रभु जाति
एम.एन. श्रीनिवास ने प्रभु जाति की अवधारणा उन जातियों का वर्णन करने के लिए दी जो किसी विशेष क्षेत्र में संख्यात्मक रूप से बड़ी होती हैं और उनके पास महत्वपूर्ण भूमि स्वामित्व और राजनीतिक शक्ति होती है। ये जातियाँ अक्सर स्थानीय पदानुक्रम में ऊँचा स्थान रखती हैं और गाँव के विवादों के निपटारे में निर्णायक भूमिका निभाती हैं। प्रभु जाति न केवल आर्थिक रूप से मजबूत होती है, बल्कि अन्य जातियाँ भी उनकी

NODIA

जीवन शैली का अनुकरण करने की कोशिश करती हैं, जो सामाजिक गतिशीलता को प्रभावित करती है।

38. (B) राल्फ डहरेंडोर्फ
राल्फ डहरेंडोर्फ ने कार्ल मार्क्स के वर्ग संघर्ष के सिद्धांत में महत्वपूर्ण संशोधन किया। उन्होंने तर्क दिया कि आधुनिक औद्योगिक समाजों में संघर्ष का मूल कारण संपत्ति का स्वामित्व नहीं, बल्कि अधिकार और सत्ता का असमान वितरण है। डहरेंडोर्फ के अनुसार, समाज में दो मुख्य समूह होते हैं: वे जिनके पास सत्ता है और वे जो इससे वंचित हैं। इन समूहों के बीच के प्रच्छन्न हितों का टकराव ही सामाजिक संघर्ष को जन्म देता है, जो समाज में निरंतर परिवर्तन लाता रहता है।

39. (D) आकारिकी
ए.आर. रेडक्लिफ-ब्राउन ने समाज की तुलना एक जीव से करते हुए सामाजिक संरचना को आकारिकी के अनुरूप माना। उनके अनुसार, जिस प्रकार शरीर के अंगों की एक निश्चित व्यवस्था होती है जो शरीर का ढांचा बनाती है, उसी प्रकार सामाजिक संरचना व्यक्तियों और संस्थाओं के बीच संबंधों की एक व्यवस्थित व्यवस्था है। यह आकारिकी समाज के स्थिर रूप को दर्शाती है, जबकि सामाजिक प्रक्रियाएं इसके कार्यप्रणाली या शरीर क्रिया विज्ञान को प्रदर्शित करती हैं। यह तुलना समाज को एक एकीकृत व्यवस्था के रूप में समझने में मदद करती है।

40. (C) कथन 1 सही है, लेकिन कथन 2 गलत है।
विल्फ्रेडो पैरेटो का अभिजात वर्ग का संचरण का सिद्धांत यह बताता है कि समाज में सत्ता का परिवर्तन एक चक्रीय प्रक्रिया है। पुराने और अकुशल शासकों का स्थान नीचे से आने वाले नए और साहसी लोग लेते हैं। हालांकि, पैरेटो का यह मानना नहीं था कि यह प्रक्रिया सामाजिक प्रगति या समानता की ओर ले जाती है। उनके अनुसार, यह केवल एक अभिजात वर्ग द्वारा दूसरे का प्रतिस्थापन है, जिससे समाज का मूल ढांचा हमेशा असमान ही बना रहता है।

41. (C) प्रतीकात्मक अंतःक्रियावाद
हरबर्ट ब्लूमर को प्रतीकात्मक अंतःक्रियावाद शब्द गढ़ने और इस सिद्धांत को व्यवस्थित रूप देने का श्रेय दिया जाता है। उन्होंने जॉर्ज हरबर्ट मीड के विचारों को आगे बढ़ाते हुए तर्क दिया कि समाज व्यक्तियों के बीच होने वाली सूक्ष्म अंतःक्रियाओं और उनके द्वारा प्रतीकों को दिए जाने वाले अर्थों का परिणाम है। ब्लूमर ने इस बात पर जोर दिया कि मानवीय व्यवहार केवल बाहरी उत्तेजनाओं के प्रति प्रतिक्रिया नहीं है, बल्कि यह एक व्याख्यात्मक प्रक्रिया है जिसमें व्यक्ति स्थितियों को समझकर कार्य करते हैं।

42. (A) वैश्विक परंपरा
एस.सी. दुबे ने भारतीय समाज के विश्लेषण के लिए परंपराओं के बहुविध स्तरों की पहचान की थी। उनके वर्गीकरण में शास्त्रीय, क्षेत्रीय, स्थानीय, पश्चिमी और राष्ट्रीय परंपराएं शामिल थीं। उन्होंने वैश्विक परंपरा जैसी किसी श्रेणी का उल्लेख नहीं किया था। दुबे का मानना था कि भारतीय ग्रामीण जीवन केवल एक महान या लघु परंपरा तक सीमित नहीं है, बल्कि यह कई प्रकार की परंपराओं के आपसी मेलजोल और संघर्ष से निर्मित एक जटिल और गतिशील सामाजिक व्यवस्था है।

43. (D) उन्होंने गाँव को भारतीय एकता और गणराज्य के प्रतीक के रूप में देखा।
बी.आर. अंबेडकर भारतीय गाँव के कठोर आलोचक थे। जहाँ गांधीजी ने गाँवों को स्वराज का आधार माना, वहीं अंबेडकर ने गाँवों को स्थानीयता का कीचड़, अज्ञानता और संकीर्णता का अड्डा कहा था। उनका मानना था कि ग्रामीण संरचना मूल रूप से जातिगत उत्पीड़न और भेदभाव को बनाए रखती है, जहाँ दलितों का कोई सम्मान नहीं होता। वे चाहते थे कि दलित गाँवों को छोड़कर शहरों की ओर जाएँ, जहाँ उन्हें शिक्षा, अवसर और अधिक सामाजिक स्वतंत्रता मिल सके।

44. (D) कथन 1 गलत है लेकिन कथन 2 सही है।
ब्रॉनिस्लॉ मैलिनोवस्की ने ट्रोब्रियांड द्वीपवासियों के बीच कुला वलय का अध्ययन किया था। उन्होंने स्पष्ट किया कि इस विनिमय का मुख्य उद्देश्य आर्थिक या उपयोगितावादी नहीं था, बल्कि यह पूरी तरह से सामाजिक और प्रतीकात्मक था। इसमें शंखों और हारों का आदान-प्रदान किया जाता था, जो विभिन्न द्वीपों के लोगों के बीच स्थायी मित्रता और सामाजिक बंधन बनाने का कार्य करते थे। इसलिए, कुला को केवल एक व्यापारिक गतिविधि मानना गलत है; यह वास्तव में एक महत्वपूर्ण सामाजिक संस्था थी।

45. (C) मूल्यों का समाजशास्त्र और सामाजिक पारिस्थितिकी
राधा कमल मुखर्जी भारतीय समाजशास्त्र के एक प्रमुख स्तंभ हैं, जिन्हें मूल्यों के समाजशास्त्र और सामाजिक पारिस्थितिकी के क्षेत्र में उनके अग्रणी योगदान के लिए जाना जाता है। उन्होंने तर्क दिया कि समाजशास्त्र को केवल भौतिक तथ्यों तक सीमित नहीं रहना चाहिए, बल्कि उसे मानवीय मूल्यों और पर्यावरण के साथ मनुष्य के संबंधों का भी अध्ययन करना चाहिए। उनकी सामाजिक पारिस्थितिकी की अवधारणा ने यह स्पष्ट किया कि कैसे भौगोलिक और सामाजिक वातावरण मिलकर मानवीय व्यवहार और सामाजिक संरचना को प्रभावित करते हैं।

46. (D) समानता और एक मजबूत सामूहिक चेतना पर आधारित सामाजिक सामंजस्य।
एमिल दुर्खीम के अनुसार, यांत्रिक एकजुटता आदिम या पारंपरिक समाजों की विशेषता है जहाँ श्रम का विभाजन बहुत कम होता है। ऐसे समाजों में लोग एक जैसे कार्य करते हैं और उनके विश्वास, मूल्य और रीति-रिवाज समान होते हैं। इस समानता के कारण उनमें एक मजबूत सामूहिक चेतना विकसित होती है, जो समाज को एकता के सूत्र में बांधे रखती है। यहाँ कानून मुख्य रूप से दमनकारी होते हैं, क्योंकि सामूहिक मानदंडों का उल्लंघन पूरे समाज के प्रति अपराध माना जाता है।

47. (B) P-4, Q-3, R-1, S-2
भारतीय समाजशास्त्रियों ने महत्वपूर्ण पुस्तकों के माध्यम से समाज को समझने का प्रयास किया है। एम.एन. श्रीनिवास ने "द रिमेम्बर्ड विलेज" में रामपुरा गाँव का विस्तृत नृवंशवर्णन प्रस्तुत किया। जी.एस. घुरये की "कास्ट एंड रेस इन इंडिया" जाति

Click Here to Buy book on Amazon

मैलिनोवस्की का प्रकार्यवाद सामाजिक संस्थाओं को मानवीय आवश्यकताओं की पूर्ति का साधन मानता है। ये सिद्धांत समाज की जटिलता को विभिन्न आयामों से स्पष्ट करते हैं।

66. (A) मानवीय आवश्यकताओं की संतुष्टि के लिए एक साधनपरक उपकरण के रूप में।
ब्रॉनिस्लॉ मैलिनोवस्की के अनुसार, संस्कृति कोई अमूर्त विचार नहीं है, बल्कि यह एक व्यावहारिक उपकरण है जिसे मानव ने अपनी जैविक और मनोवैज्ञानिक आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए बनाया है। उनके लिए संस्कृति का प्रत्येक अंग, चाहे वह कोई औजार हो या कोई रीति-रिवाज, किसी न किसी मानवीय जरूरत को पूरा करने के लिए ही अस्तित्व में है। यदि संस्कृति का कोई हिस्सा अब किसी आवश्यकता को पूरा नहीं करता, तो वह धीरे-धीरे समाप्त हो जाता है। यह दृष्टिकोण संस्कृति के कार्यात्मक पक्ष को उजागर करता है।

67. (D) व्यक्तियों के संबंधों में उनकी गतिविधियों की व्यवस्था को।
रेडक्लिफ-ब्राउन के अनुसार, सामाजिक संगठन व्यक्तियों की आपसी गतिविधियों और उनके द्वारा निभाई जाने वाली भूमिकाओं के व्यावहारिक प्रबंधन को संदर्भित करता है। जहाँ सामाजिक संरचना संबंधों के एक स्थिर ढांचे को दर्शाती है, वहीं सामाजिक संगठन इस बात पर ध्यान केंद्रित करता है कि उस ढांचे के भीतर गतिविधियाँ कैसे संचालित होती हैं। यह सामाजिक जीवन का गतिशील पक्ष है, जो यह दिखाता है कि व्यक्ति अपने दैनिक अंतःक्रियाओं में कैसे तालमेल बिठाते हैं और सामाजिक कार्यों को पूरा करने के लिए कैसे संगठित होते हैं।

68. (A) लुईस कोज़र
लुईस कोज़र ने अपने संघर्ष के समाजशास्त्र में यह तर्क दिया कि संघर्ष समाज के लिए केवल हानिकारक नहीं होता, बल्कि यह सामाजिक परिवर्तन और नए समूहों के उदय का मार्ग भी प्रशस्त करता है। संघर्ष अक्सर अस्पष्ट सीमाओं को स्पष्ट करता है और समाज के विभिन्न समूहों के बीच नई संधियाँ और गठबंधन बनाने में मदद करता है। इसके माध्यम से नए सामाजिक मानदंड और संस्थाएं विकसित हो सकती हैं जो व्यवस्था को अधिक समावेशी और संतुलित बनाने में योगदान देती हैं।

69. (C) स्वयं को दूसरे के स्थान पर रखना और उनके दृष्टिकोण से देखना।
जॉर्ज हरबर्ट मीड के अनुसार, दूसरे की भूमिका निभाना वह मानसिक प्रक्रिया है जिसके माध्यम से व्यक्ति यह समझने की कोशिश करता है कि दूसरे लोग किसी स्थिति में क्या सोच रहे हैं और वे उससे क्या अपेक्षा करते हैं। यह प्रक्रिया आत्म के विकास और प्रभावी सामाजिक अंतःक्रिया के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है। इसके माध्यम से ही बच्चा धीरे-धीरे समाज के नियमों और दूसरों की भावनाओं को समझना शुरू करता है, जिससे वह अपने व्यवहार को सामाजिक रूप से स्वीकृत तरीके से नियंत्रित कर पाता है।

70. (A) एमिल दुर्खीम
एमिल दुर्खीम ने सामाजिक तथ्य की यह प्रसिद्ध परिभाषा दी थी ताकि समाजशास्त्र की एक स्वतंत्र विषय वस्तु स्थापित की जा सके। उनके अनुसार, सामाजिक तथ्य वे नियम, रीति-रिवाज और मूल्य हैं जो व्यक्ति से स्वतंत्र अस्तित्व रखते हैं और उस पर व्यवहार करने के लिए बाहरी दबाव डालते हैं। ये तथ्य केवल व्यक्तिगत पसंद नहीं होते, बल्कि समाज की सामूहिक चेतना का हिस्सा होते हैं। दुर्खीम ने जोर दिया कि सामाजिक तथ्यों का अध्ययन 'वस्तुओं' की तरह वस्तुनिष्ठ तरीके से किया जाना चाहिए।

71. (A) (2, 3, 1, 4)
समाजशास्त्रीय विचारकों का कालानुक्रमिक क्रम उनके सिद्धांतों के ऐतिहासिक विकास को दर्शाता है। कार्ल मार्क्स उन्नीसवीं सदी के मध्य के प्रमुख विचारक थे जिन्होंने वर्ग संघर्ष की नींव रखी। उनके बाद एमिल दुर्खीम आए, जिन्होंने बीसवीं सदी की शुरुआत में समाजशास्त्र को एक वैज्ञानिक आधार दिया। टैलकॉट पार्सन्स ने बीसवीं सदी के मध्य में संरचनात्मक-प्र प्रकार्यवाद को शिखर पर पहुँचाया। अंत में, राल्फ डहरेंडोर्फ ने उत्तर-द्वितीय विश्व युद्ध काल में संघर्ष सिद्धांत में नए आयाम जोड़े। यह क्रम वैचारिक विकास की निरंतरता को स्पष्ट करता है।

72. (A) ब्रिटिश शासन के परिणामस्वरूप होने वाले सांस्कृतिक परिवर्तन।
एम.एन. श्रीनिवास ने पश्चिमीकरण शब्द का उपयोग भारत में डेढ़ शताब्दी के ब्रिटिश शासन के दौरान आए परिवर्तनों का वर्णन करने के लिए किया था। इसमें केवल तकनीक और संस्थाओं का आना ही शामिल नहीं था, बल्कि विचारधारा, मूल्यों और जीवन शैली में आए व्यापक बदलाव भी शामिल थे। पश्चिमीकरण ने भारतीय समाज में मानवतावाद, तर्कवाद और समानता जैसे आधुनिक मूल्यों को बढ़ावा दिया। यह प्रक्रिया संस्कृतिकरण के साथ-साथ चलती रही, जिससे भारतीय सामाजिक संरचना में जटिल और बहुआयामी सांस्कृतिक परिवर्तन उत्पन्न हुए।

73. (D) यह एक आनुभविक रूप से अवलोकनीय इकाई है।
एस.एफ. नाडेल के अनुसार, सामाजिक संरचना कोई ऐसी वस्तु नहीं है जिसे सीधे अनुभव या अवलोकन के माध्यम से देखा जा सके। उन्होंने तर्क दिया कि संरचना एक अमूर्तन है जिसे हम व्यक्तियों के बीच की भूमिकाओं और उनके प्रतिमानों के विश्लेषण के माध्यम से प्राप्त करते हैं। नाडेल ने संरचना को भागों की एक व्यवस्थित व्यवस्था माना जो अपेक्षाकृत स्थिर होती है, लेकिन यह वास्तविकता का केवल एक मॉडल है, स्वयं वह भौतिक वास्तविकता नहीं है जिसे हम सीधे देख सकते हैं।

74. (B) केवल 1 और 2
विल्फ्रेडो पैरेटो के सिद्धांत में अवशेष और व्युत्पत्तियां प्रमुख अवधारणाएं हैं। अवशेष उन बुनियादी और स्थिर भावनाओं को कहते हैं जो मानवीय व्यवहार को प्रेरित करती हैं, जबकि व्युत्पत्तियां वे तर्क हैं जिनका उपयोग लोग अपने कार्यों को सही ठहराने के लिए करते हैं। पैरेटो का यह मानना नहीं था कि

NODIA

गढ़ता है। ये व्युत्पत्तियां भ्रामक हो सकती हैं क्योंकि इनका वास्तविकता से कम संबंध होता है, फिर भी ये सामाजिक संवाद और विचारधारा निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं।

57. (C) सामाजिक संरचनाएं और संस्थाएं मानवीय क्रिया की प्राथमिक निर्धारक हैं।
हरबर्ट ब्लूमर का प्रतीकात्मक अंतःक्रियावाद इस विचार को खारिज करता है कि सामाजिक संरचनाएं मनुष्य के व्यवहार को पूरी तरह निर्धारित करती हैं। उनके तीन मुख्य परिसर हैं: मनुष्य अर्थों के आधार पर कार्य करते हैं, ये अर्थ सामाजिक अंतःक्रिया से निकलते हैं और अर्थों को व्यक्ति की अपनी व्याख्या द्वारा बदला जा सकता है। ब्लूमर का मानना था कि समाज कोई स्थिर ढांचा नहीं है, बल्कि यह निरंतर चलने वाली अंतःक्रियाओं की एक प्रक्रिया है जहाँ व्यक्ति सक्रिय रूप से अपनी दुनिया का निर्माण करते हैं।

58. (A) व्यक्तिवादी
लुई ड्यूमॉन्ट ने अपनी तुलनात्मक समाजशास्त्र में यह तर्क दिया कि पारंपरिक भारतीय समाज मौलिक रूप से समग्रतावादी और पदानुक्रमित है, जहाँ समूह व्यक्ति से अधिक महत्वपूर्ण है। इसके विपरीत, आधुनिक पश्चिमी समाज व्यक्तिवादी और समतावादी है, जहाँ व्यक्ति की स्वतंत्रता और समानता को सर्वोपरि माना जाता है। ड्यूमॉन्ट के अनुसार, भारतीय जाति व्यवस्था को केवल तभी समझा जा सकता है जब हम उसे पश्चिम के व्यक्तिवादी मूल्यों के चश्मे से देखने के बजाय उसके अपने पदानुक्रमित सिद्धांतों के आधार पर विश्लेषण करें।

59. (D) भाग्यवादी
एमिल दुर्खीम के अनुसार, भाग्यवादी आत्महत्या तब होती है जब समाज में नियमन और अनुशासन इतना अधिक हो जाता है कि व्यक्ति का जीवन पूरी तरह से अवरुद्ध महसूस होने लगता है। यह स्थिति अत्यधिक उत्पीड़न और नियंत्रण के कारण उत्पन्न होती है, जहाँ व्यक्ति को अपने भविष्य में कोई आशा दिखाई नहीं देती। दुर्खीम ने इसे दासता या उन स्थितियों से जोड़ा जहाँ व्यक्ति की स्वायत्तता पूरी तरह समाप्त हो जाती है। यह आत्महत्या का वह प्रकार है जो व्यक्तिगत इच्छाओं के अत्यधिक दमन को दर्शाता है।

60. (B) शमीरपेट
एस.सी. दुबे की प्रसिद्ध पुस्तक 'इंडियन विलेज' उनके द्वारा हैदराबाद के निकट स्थित शमीरपेट गाँव में किए गए गहन क्षेत्रीय कार्य पर आधारित है। इस अध्ययन में उन्होंने गाँव की सामाजिक संरचना, आर्थिक गतिविधियों, धार्मिक मान्यताओं और परंपराओं का सूक्ष्म विश्लेषण प्रस्तुत किया। दुबे ने गाँव को एक आत्मनिर्भर इकाई मानने के बजाय उसे व्यापक सामाजिक और राजनीतिक परिवेश से जुड़ा हुआ माना। यह कार्य भारतीय ग्रामीण समाजशास्त्र के विकास में एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर साबित हुआ है।

61. (A) कथन 1 और कथन 2 दोनों सही हैं और कथन 2, कथन 1 की सही व्याख्या है।
बी.आर. अंबेडकर भारतीय ग्राम व्यवस्था के कठोर आलोचक थे क्योंकि उनका मानना था कि गाँव जातिगत भेदभाव और छुआछूत के केंद्र हैं। उन्होंने ग्रामीण संरचना को दलितों के शोषण का मुख्य स्रोत माना, जहाँ सामाजिक न्याय और समानता की कोई गुंजाइश नहीं थी। अंबेडकर के अनुसार, ग्रामीण परिवेश में रूढ़िवादिता और संकीर्णता इतनी गहरी थी कि वहाँ किसी भी प्रकार का सामाजिक सुधार संभव नहीं था। इसलिए उन्होंने दलितों को गाँवों के दमनकारी माहौल से बाहर निकलने की सलाह दी थी।

62. (B) बी.आर. अंबेडकर
भारतीय समाजशास्त्र में अधीनस्थ परिप्रेक्ष्य का मुख्य आधार बी.आर. अंबेडकर के विचारों में मिलता है। यह परिप्रेक्ष्य समाज को नीचे से देखने पर बल देता है, जहाँ हाशिए पर रहने वाले समुदायों और दलितों के अनुभवों को प्राथमिकता दी जाती है। अंबेडकर ने प्रभुत्वशाली वर्गों द्वारा प्रस्तुत किए गए इतिहास और सामाजिक सिद्धांतों को चुनौती दी और शोषितों की मुक्ति के लिए एक नया सैद्धांतिक ढांचा प्रदान किया। यह दृष्टिकोण सामाजिक अन्याय को उजागर करने और वंचितों के सशक्तिकरण के लिए संघर्ष करता है।

63. (C) मूल्य-तार्किक
मैक्स वेबर के अनुसार, मूल्य-तार्किक क्रिया वह व्यवहार है जो कर्ता द्वारा किसी उच्च नैतिक, धार्मिक या कलात्मक मूल्य में अटूट विश्वास के कारण किया जाता है। इस क्रिया में कर्ता सफलता या परिणामों की परवाह किए बिना अपने सिद्धांतों का पालन करता है। कर्ता के लिए वह कार्य स्वयं में ही एक साध्य होता है। उदाहरण के लिए, कर्तव्य की भावना से युद्ध लड़ना या किसी आदर्श के लिए त्याग करना इस प्रकार की क्रिया का हिस्सा है, जो मानवीय गरिमा और मूल्यों को दर्शाता है।

64. (D) राजनीतिक शक्ति से अलगाव
कार्ल मार्क्स की अलगाव की अवधारणा पूंजीवादी उत्पादन प्रणाली के मानवीय प्रभावों का विश्लेषण करती है। उनके अनुसार, श्रमिक चार स्तरों पर अलगाव महसूस करता है: उत्पादन के उत्पाद से, उत्पादन की प्रक्रिया से, अपने साथी मनुष्यों से, और अंततः अपनी मानवीय प्रकृति या 'प्रजाति सत्ता' से। मार्क्स ने इसमें राजनीतिक शक्ति से अलगाव को प्राथमिक श्रेणी के रूप में शामिल नहीं किया था, क्योंकि अन्य सभी अलगाव आर्थिक आधार से उत्पन्न होते हैं।

65. (A) P-3, Q-4, R-2, S-1
समाजशास्त्रीय सिद्धांतों के विभिन्न दृष्टिकोण समाज को अलग तरह से परिभाषित करते हैं। पार्सन्स का संरचनात्मक-प्र प्रकार्यवाद समाज को एक एकीकृत व्यवस्था मानता है जो स्थिरता बनाए रखती है। डहरेंडोर्फ का संघर्ष सिद्धांत समाज में सत्ता और अधिकार को लेकर होने वाले निरंतर टकराव पर केंद्रित है। ब्लूमर का प्रतीकात्मक अंतःक्रियावाद समाज को अर्थों और व्याख्याओं के माध्यम से निर्मित मानता है।

Downloaded from www.pdf.tube

व्यवस्था के ऐतिहासिक विकास पर प्रकाश डालती है। लुई ड्यूमॉन्ट की "होमो हाइरार्कस" जाति के पदानुक्रमित सिद्धांत का विश्लेषण करती है। बी.आर. अंबेडकर की "एनिहिलेशन ऑफ कास्ट" जाति प्रथा की कड़ी आलोचना करते हुए उसके पूर्ण विनाश का आह्वान करती है।

48. (C) केवल 1 और 3
लुईस कोज़र का संघर्ष सिद्धांत समाज में संघर्ष के प्रकार्यात्मक पक्ष पर जोर देता है। उन्होंने वास्तविक संघर्ष (जो ठोस उद्देश्यों के लिए होते हैं) और अवास्तविक संघर्ष (जो केवल भावनाओं को निकालने के लिए होते हैं) के बीच अंतर स्पष्ट किया। कोज़र ने यह भी तर्क दिया कि समाज में छोटे और बार-बार होने वाले संघर्ष सुरक्षा-वाल्व की तरह कार्य करते हैं। ये संघर्ष बड़े और विनाशकारी विस्फोटों को रोककर सामाजिक व्यवस्था में संतुलन बनाए रखने और आवश्यक सुधार करने में सहायक होते हैं।

49. (B) न्यासी व्यवस्थाएं जैसे परिवार और स्कूल
टैलकॉट पार्सन्स की एजीआईएल योजना में प्रच्छन्नता या प्रतिमान-अनुरक्षण का कार्य उन संस्थाओं द्वारा किया जाता है जो समाज के मूल्यों और मानदंडों को अगली पीढ़ी तक पहुँचाती हैं। परिवार और स्कूल जैसी न्यासी व्यवस्थाएं समाजीकरण के माध्यम से व्यक्तियों को समाज की संस्कृति सिखाती हैं। यह प्रक्रिया सुनिश्चित करती है कि समाज के सदस्य स्थापित नियमों के अनुसार व्यवहार करें और सामाजिक व्यवस्था में स्थिरता बनी रहे। यह कार्य व्यवस्था के सांस्कृतिक आधार को मजबूती प्रदान करने के लिए आवश्यक है।

50. (A) सामाजिक वास्तविकता को समझने के लिए एक मापने वाली छड़ी के रूप में उपयोग की जाने वाली एक विश्लेषणात्मक संरचना।
मैक्स वेबर की आदर्श प्रारूप की अवधारणा एक ऐसा मानसिक ढांचा है जो किसी सामाजिक प्रघटना के शुद्ध या विशिष्ट लक्षणों को उजागर करता है। यह वास्तविकता का सटीक चित्रण नहीं है, बल्कि एक विश्लेषणात्मक उपकरण है जिसका उपयोग वास्तविक स्थितियों की तुलना करने और उन्हें समझने के लिए किया जाता है। उदाहरण के लिए, वेबर ने नौकरशाही का आदर्श प्रारूप प्रस्तुत किया ताकि विभिन्न संगठनों की कार्यप्रणाली को मापा जा सके। यह समाजशास्त्रीय अनुसंधान में वस्तुनिष्ठता और स्पष्टता लाने में सहायता करता है।

51. (C) सामान्यीकृत अन्य
जॉर्ज हरबर्ट मीड ने खेल के उदाहरण के माध्यम से स्पष्ट किया कि कैसे बच्चा सामान्यीकृत अन्य की भूमिका निभाना सीखता है। खेल के दौरान, खिलाड़ी को न केवल अपनी भूमिका समझनी होती है, बल्कि उसे अन्य सभी खिलाड़ियों की भूमिकाओं और खेल के नियमों को भी जानना होता है। यह प्रक्रिया बच्चे को समाज के व्यापक दृष्टिकोण और सामूहिक अपेक्षाओं को आंतरिक करने में मदद करती है। यहीं से व्यक्ति में एक परिपक्व सामाजिक आत्म का विकास होता है।

52. (D) वे समूह जो प्रच्छन्न हितों को साझा करते हैं लेकिन अभी तक संगठित नहीं हैं।
राल्फ डहरेंडोर्फ के अनुसार, अर्ध-समूह वे श्रेणियाँ हैं जिनमें लोग समान प्रच्छन्न हितों को साझा करते हैं, लेकिन वे अभी तक एक सचेत और संगठित समूह के रूप में उभरकर नहीं आए हैं। ये समूह सामाजिक संघर्ष की संभावना को जन्म देते हैं। जब ये लोग अपने हितों के प्रति जागरूक हो जाते हैं और राजनीतिक रूप से संगठित होते हैं, तब वे 'हित समूहों' में बदल जाते हैं। डहरेंडोर्फ का मानना था कि सामाजिक संरचना में अधिकार का वितरण ही इन समूहों के निर्माण का आधार है।

53. (C) जी.एस. घुरये
जी.एस. घुरये ने जनजातियों के अध्ययन में एक विशिष्ट दृष्टिकोण अपनाया और उन्हें पिछड़े हिंदू की संज्ञा दी। उनका तर्क था कि भारत के जनजातीय समुदाय मुख्यधारा के हिंदू समाज का ही हिस्सा रहे हैं, लेकिन वे भौगोलिक अलगाव के कारण सांस्कृतिक और आर्थिक रूप से पिछड़ गए। घुरये ने जनजातियों के पूर्ण आत्मसातीकरण का समर्थन किया और वे उन्हें हिंदुओं से अलग मानने के औपनिवेशिक प्रयासों के विरोधी थे। यह विचार भारतीय समाज के एकीकृत और राष्ट्रवादी परिप्रेक्ष्य को दर्शाता है।

54. (B) एक दुष्प्रकार्य
रॉबर्ट मर्टन के अनुसार, दुष्प्रकार्य वे अवलोकित परिणाम हैं जो किसी सामाजिक व्यवस्था के अनुकूलन या सामंजस्य को कम करते हैं। जब कोई नीति या संस्था अपने निर्धारित लक्ष्यों के विपरीत समाज के लिए हानिकारक या विघटनकारी परिणाम उत्पन्न करती है, तो उसे दुष्प्रकार्य कहा जाता है। उदाहरण के लिए, यदि कोई कल्याणकारी योजना समाज में भ्रष्टाचार या निर्भरता बढ़ाती है, तो यह उसका दुष्प्रकार्य होगा। यह अवधारणा प्रकार्यात्मक विश्लेषण को केवल सकारात्मक पक्षों तक सीमित रहने से बचाती है।

NODIA

55. (D) सामाजिक प्रकार्य
ए.आर. रेडक्लिफ-ब्राउन के अनुसार, सामाजिक प्रकार्य उस योगदान को कहते हैं जो कोई सामाजिक गतिविधि या संस्था संपूर्ण सामाजिक संरचना की निरंतरता को बनाए रखने के लिए देती है। उन्होंने इसे एक जीवित जीव के अंगों की कार्यप्रणाली के समान माना। जिस प्रकार शरीर के अंगों ने जीवन को बनाए रखने के लिए मिलकर कार्य करना है, उसी प्रकार धर्म, अनुष्ठान और नियम समाज को स्थिरता प्रदान करते हैं। प्रकार्य का मुख्य उद्देश्य सामाजिक व्यवस्था के भीतर एकता और सामंजस्य स्थापित करना है।

56. (A) उन मौखिक औचित्यों के रूप में जो लोग अपने अतार्किक कार्यों के लिए देते हैं।
विल्फ्रेडो पैरेटो की व्युत्पत्ति की अवधारणा उन तर्कों या स्पष्टीकरणों को संदर्भित करती है जिनका उपयोग लोग अपनी अतार्किक क्रियाओं को सही ठहराने के लिए करते हैं। पैरेटो का मानना था कि अधिकांश मानवीय व्यवहार अतार्किक होते हैं, जो इन आंतरिक अवशेषों से प्रेरित होते हैं, लेकिन मनुष्य स्वयं को तर्कसंगत दिखाने के लिए उनके पीछे बौद्धिक कारण

मानवीय क्रियाएं मुख्य रूप से तार्किक होती हैं। इसके विपरीत, उन्होंने तर्क दिया कि अधिकांश मानवीय व्यवहार अतार्किक होते हैं और लोग केवल अपनी सहज प्रवृत्तियों के आधार पर ही कार्य करते हैं।

75. (D) उन अवलोकित परिणामों को जो व्यवस्था के अनुकूलन को कम करते हैं।
रॉबर्ट मर्टन ने प्रकार्यात्मक विश्लेषण को अधिक वैज्ञानिक बनाने के लिए दुष्प्रकार्य की अवधारणा पेश की। उनके अनुसार, समाज का प्रत्येक तत्व हमेशा लाभकारी नहीं होता। कुछ सामाजिक प्रतिमान या गतिविधियाँ ऐसी होती हैं जो व्यवस्था में तनाव, अस्थिरता या संघर्ष पैदा करती हैं और उसके सुचारु संचालन में बाधा डालती हैं। दुष्प्रकार्य का अध्ययन यह समझने में मदद करता है कि समाज में परिवर्तन की आवश्यकता कहाँ है। यह दृष्टिकोण प्रकार्यवाद के उस रूढ़िवादी पक्ष को चुनौती देता है जो हर चीज़ को उपयोगी मानता है।

76. (B) लुई ड्यूमॉन्ट
लुई ड्यूमॉन्ट ने भारतीय जाति व्यवस्था को समझने के लिए शुद्धता और अशुद्धता के विचार को केंद्रीय आधार माना। उनका तर्क था कि जाति व्यवस्था का संपूर्ण पदानुक्रम इसी धार्मिक विरोध पर टिका है। ब्राह्मणों की उच्च स्थिति उनकी अनुष्ठानिक शुद्धता के कारण है, जबकि दलितों का बहिष्कार उनकी संभावित अशुद्धता के कारण किया गया। ड्यूमॉन्ट के अनुसार, यह व्यवस्था पश्चिमी समानता के विपरीत है और इसे केवल पदानुक्रम और धार्मिक मूल्यों के संदर्भ में ही सही ढंग से समझा जा सकता है।

77. (A) कथन 1 और कथन 2 दोनों सही हैं और कथन 2, कथन 1 की सही व्याख्या है।
रेडक्लिफ-ब्राउन ने समाज की कार्यप्रणाली को समझाने के लिए जैविक जीव की सादृश्यता का व्यापक उपयोग किया। उन्होंने तर्क दिया कि जिस प्रकार शरीर के अंगों की एक व्यवस्था होती है और उनके विशिष्ट कार्य होते हैं, उसी प्रकार सामाजिक संरचना भी संस्थाओं की एक व्यवस्था है जो समाज को जीवित रखती है। यह दृष्टिकोण समाज को एक एकीकृत और सामंजस्यपूर्ण इकाई के रूप में देखने पर बल देता है, जहाँ प्रत्येक भाग संपूर्ण व्यवस्था के कल्याण में योगदान देता है।

78. (A) मार्क्स ने संघर्ष की जड़ें संपत्ति संबंधों में देखीं, जबकि डहरेंडोर्फ ने इसकी जड़ें सत्ता संबंधों में देखीं।
कार्ल मार्क्स और राल्फ डहरेंडोर्फ दोनों संघर्षवादी विचारक हैं, लेकिन उनके आधार अलग हैं। मार्क्स का मानना था कि समाज में संघर्ष का मुख्य कारण उत्पादन के साधनों पर निजी स्वामित्व और आर्थिक शोषण है। इसके विपरीत, डहरेंडोर्फ ने तर्क दिया कि आधुनिक समाज में संघर्ष का आधार अधिकार और सत्ता का असमान वितरण है। उनके अनुसार, प्रत्येक संगठित संस्था में शासक और शासित के बीच सत्ता को लेकर होने वाला टकराव ही सामाजिक संघर्ष और परिवर्तन का मुख्य कारण बनता है।

79. (D) जनसंख्या घनत्व में वृद्धि और श्रम विभाजन।
एमिल दुर्खीम के अनुसार, समाज का विकास सरल से जटिल रूप की ओर होता है। जब समाज में जनसंख्या का घनत्व बढ़ता है, तो जीवन के संसाधनों के लिए प्रतिस्पर्धा बढ़ती है। इस प्रतिस्पर्धा को कम करने के लिए श्रम का विभाजन अनिवार्य हो जाता है। यह प्रक्रिया समाज को यांत्रिक एकजुटता से हटाकर सावयवी एकजुटता की ओर ले जाती है। यहाँ व्यक्ति एक-दूसरे के कार्यों पर निर्भर होकर समाज को एकीकृत और सुव्यवस्थित बनाए रखते हैं।

80. (D) मूल्य-तार्किक क्रिया
मैक्स वेबर के अनुसार, जब कोई व्यक्ति परिणामों की चिंता किए बिना केवल अपने मूल्यों या नैतिकता के आधार पर कार्य करता है, तो उसे मूल्य-तार्किक क्रिया कहा जाता है। एक चिकित्सक जो अपने पेशे के नैतिक कोड और शपथ का पालन करते हुए रोगियों की सेवा करती है, वह किसी व्यक्तिगत लाभ के लिए नहीं बल्कि अपने कर्तव्य के मूल्य में विश्वास के कारण ऐसा करती है। यहाँ क्रिया का उद्देश्य अपने आप में एक साध्य है, जो कर्ता की सचेत प्रतिबद्धता को दर्शाता है।

81. (B) हरबर्ट ब्लूमर
यह प्रसिद्ध कथन थॉमस प्रमेय के रूप में जाना जाता है, जिसे प्रतीकात्मक अंतःक्रियावाद के भीतर हरबर्ट ब्लूमर ने अत्यधिक महत्व दिया। इसका अर्थ है कि किसी स्थिति की वस्तुनिष्ठ सच्चाई से अधिक महत्वपूर्ण यह है कि व्यक्ति उसे कैसे समझता है और परिभाषित करता है। यदि लोग किसी अफवाह या स्थिति को सच मान लेते हैं, तो उनके कार्य और उनके परिणाम वास्तविक हो जाते हैं। यह विचार मानवीय व्यवहार को समझने में व्यक्तिपरक अर्थों और सामाजिक परिभाषाओं की केंद्रीय भूमिका को स्पष्ट करता है।

82. (A) प्राचीन ग्रंथों, शास्त्रों और शास्त्रीय साहित्य पर।
जी.एस. घुरये द्वारा अपनाए गए भारतविद्या परिप्रेक्ष्य का मुख्य आधार भारतीय परंपरा के लिखित और शास्त्रीय स्रोत हैं। उनका मानना था कि भारतीय समाज की गहरी समझ विकसित करने के लिए वेदों, उपनिषदों और स्मृतियों जैसे प्राचीन ग्रंथों का गहन अध्ययन अनिवार्य है। उन्होंने इन ग्रंथों के माध्यम से जाति, नातेदारी और धर्म के ऐतिहासिक विकास को ट्रैक करने की कोशिश की। यह दृष्टिकोण भारतीय समाज को उसकी अपनी सांस्कृतिक और दार्शनिक जड़ों के माध्यम से समझने की एक विशिष्ट पद्धति प्रदान करता है।

83. (C) सामाजिक नियंत्रण और एकीकरण का एक प्रमुख तंत्र।
राधा कमल मुखर्जी के अनुसार, मूल्य केवल व्यक्तिगत भावनाएं नहीं हैं, बल्कि वे समाज को एकीकृत करने और व्यक्तियों के व्यवहार को नियंत्रित करने वाले शक्तिशाली उपकरण हैं। उन्होंने तर्क दिया कि साझा मूल्य ही समाज के विभिन्न सदस्यों को एक सूत्र में बांधते हैं और सामाजिक व्यवस्था में स्थिरता लाते हैं। मूल्यों के माध्यम से ही व्यक्ति अपनी स्वार्थपूर्ण प्रवृत्तियों को नियंत्रित करता है और सामूहिक कल्याण के लिए कार्य करता है। मुखर्जी ने इसे सामाजिक प्रगति के लिए अपरिहार्य माना था।

Click Here to Buy book on Amazon

जहाँ उन्होंने मूल्यों और पारिस्थितिकी पर ध्यान दिया। हरबर्ट ब्लूमर शिकागो स्कूल से जुड़े थे, जो प्रतीकात्मक अंतःक्रियावाद का केंद्र रहा है। टैलकॉट पार्सन्स हार्वर्ड विश्वविद्यालय में थे, जहाँ उन्होंने भव्य प्रकार्यात्मक सिद्धांतों का विकास किया। ये केंद्र समाजशास्त्रीय ज्ञान के वैश्विक विकास के मुख्य आधार रहे हैं।

158. (C) परिवर्तन के कारकों का विश्लेषण करते समय सामाजिक संरचना को समग्र रूप में देखने पर।
एस.सी. दुबे के ग्रामीण अध्ययनों ने इस बात पर जोर दिया कि गाँव की सामाजिक संरचना को खंडों में नहीं, बल्कि एक एकीकृत संपूर्णता के रूप में देखा जाना चाहिए। उन्होंने तर्क दिया कि जब समाज में परिवर्तन के कारक प्रवेश करते हैं, तो वे संपूर्ण संरचना के विभिन्न भागों को प्रभावित करते हैं। दुबे का दृष्टिकोण यह समझने में मदद करता है कि कैसे जाति, नातेदारी, धर्म और अर्थव्यवस्था एक-दूसरे से जुड़े हुए हैं और कैसे एक क्षेत्र में बदलाव पूरी ग्रामीण व्यवस्था में हलचल पैदा करता है।

159. (B) सामाजिक स्व, जो दूसरों के शामिल दृष्टिकोणों का प्रतिनिधित्व करता है।
जॉर्ज हरबर्ट मीड के अनुसार, "मी" आत्म का वह पक्ष है जो सामाजिक अपेक्षाओं, मानदंडों और मूल्यों को आंतरिक करता है। यह व्यक्ति को समाज की नजरों से स्वयं का मूल्यांकन करने में मदद करता है। "मी" एक प्रकार का सामाजिक नियंत्रण है जो व्यक्ति के आवेगी पक्ष "आई" को निर्देशित और मर्यादित करता है। आत्म का यह हिस्सा दूसरों के साथ की गई अंतःक्रियाओं और उनके द्वारा दी गई प्रतिक्रियाओं के संचय से बनता है। "मी" के माध्यम से ही व्यक्ति एक जिम्मेदार सामाजिक सदस्य के रूप में व्यवहार करना सीखता है।

160. (B) उन सामाजिक संबंधों को जिनमें लोग उत्पादन करने के लिए प्रवेश करते हैं।
कार्ल मार्क्स के अनुसार, उत्पादन के संबंध उन सामाजिक और कानूनी संबंधों को संदर्भित करते हैं जो उत्पादन की प्रक्रिया के दौरान व्यक्तियों के बीच बनते हैं। इसमें मुख्य रूप से संपत्ति का स्वामित्व और श्रम का नियंत्रण शामिल है। पूंजीवाद में, ये संबंध बुर्जुआ और सर्वहारा के बीच शोषक संबंधों के रूप में प्रकट होते हैं। मार्क्स का मानना था कि ये संबंध उत्पादन की शक्तियों के साथ मिलकर समाज का आर्थिक आधार बनाते हैं, जो अन्य सभी सामाजिक संस्थाओं को निर्धारित करता है।

161. (B) उस सामाजिक संरचना के प्रकार पर जिसमें यह होता है।
लुईस कोज़र का मानना था कि संघर्ष का प्रभाव इस बात पर निर्भर करता है कि सामाजिक संरचना कैसी है। लचीली और खुली संरचनाओं में, जहाँ संघर्षों को व्यक्त करने और हल करने के पर्याप्त अवसर होते हैं, संघर्ष अक्सर एकता और सुधार का माध्यम बनता है। इसके विपरीत, कठोर और बंद संरचनाओं में, जहाँ असंतोष को दबाया जाता है, संघर्ष के विस्फोटक और विघटनकारी होने की अधिक संभावना होती है। इसलिए, समाज की बनावट ही यह तय करती है कि संघर्ष उसके लिए वरदान साबित होगा या अभिशाप।

162. (C) संबंधों के एक संरचित समूह के रूप में जो सामाजिक व्यवस्था बनाए रखता है।
रेडक्लिफ-ब्राउन के लिए नातेदारी केवल जैविक या पारिवारिक संबंध नहीं थे, बल्कि वे एक महत्वपूर्ण सामाजिक संस्था थे जो समाज को स्थिरता प्रदान करते थे। उनके अनुसार, नातेदारी व्यवस्था अधिकारों, कर्तव्यों और भूमिकाओं का एक निश्चित प्रतिमान निर्धारित करती है, जो व्यक्तियों के बीच के व्यवहार को निर्देशित करता है। यह व्यवस्था वंशानुक्रम और उत्तराधिकार के नियमों को स्पष्ट करके सामाजिक संरचना की निरंतरता सुनिश्चित करती है। ब्राउन का प्रकार्यात्मक दृष्टिकोण नातेदारी को सामाजिक एकता और सुव्यवस्था के एक प्रमुख आधार के रूप में देखता है।

163. (C) कथन 1 सही है, लेकिन कथन 2 गलत है।
एस.एफ. नाडेल ने सामाजिक संरचना के तत्वों के रूप में व्यक्तियों की बहुलता, संस्थागत नियमों और व्यवस्था को स्वीकार किया। हालांकि, उन्होंने स्पष्ट रूप से कहा कि सामाजिक संरचना के "भाग" स्वयं व्यक्ति नहीं, बल्कि उन व्यक्तियों द्वारा निभाई जाने वाली भूमिकाएं हैं। नाडेल के अनुसार, व्यक्ति तो आते-जाते रहते हैं, लेकिन भूमिकाओं का जो प्रतिमान है, वही संरचना को स्थायित्व प्रदान करता है। इसलिए, संरचना का विश्लेषण करने के लिए व्यक्तियों के बजाय भूमिकाओं के आपसी संबंधों पर ध्यान देना आवश्यक है।

164. (C) रॉबर्ट के. मर्टन
रॉबर्ट मर्टन ने सार्वभौमिक प्रकार्यवाद की कड़ी आलोचना की, जो यह मानता था कि समाज की प्रत्येक संस्था या गतिविधि हमेशा व्यवस्था के लिए लाभकारी होती है। उन्होंने तर्क दिया कि यह विचार आदिम समाजों के लिए तो सही हो सकता है, लेकिन आधुनिक और जटिल समाजों में यह आवश्यक नहीं है। कुछ संस्थाएं समाज के एक हिस्से के लिए प्रकार्यात्मक हो सकती हैं, जबकि दूसरे के लिए वे दुष्प्रकार्यात्मक साबित हो सकती हैं। मर्टन ने प्रकार्यात्मक विश्लेषण में लचीलापन और वैज्ञानिक सटीकता लाने के लिए इस धारणा को चुनौती दी थी।

165. (B) चक्रीय
विल्फ्रेडो पैरेटो का सामाजिक परिवर्तन का सिद्धांत चक्रीय प्रकृति का है। उन्होंने तर्क दिया कि समाज में सत्ता का हस्तांतरण एक निरंतर घूमने वाले चक्र की तरह है, जहाँ एक प्रकार का अभिजात वर्ग दूसरे प्रकार द्वारा प्रतिस्थापित किया जाता है। पैरेटो के अनुसार, इतिहास में कोई रेखीय प्रगति नहीं होती, बल्कि यह केवल विभिन्न मानवीय प्रवृत्तियों और अवशेषों के बीच का संतुलन बदलने की प्रक्रिया है। समाज कभी भी पूर्ण समानता प्राप्त नहीं करता, बल्कि वह केवल एक शासक वर्ग से दूसरे की ओर बढ़ता रहता है।

166. (B) सामाजिक तथ्य
सामाजिक तथ्य की अवधारणा मैक्स वेबर से नहीं, बल्कि एमिल दुर्खीम से संबंधित है। वेबर का मुख्य ध्यान सामाजिक क्रियाओं, वर्स्टेहेन पद्धति, आदर्श प्रारूप और समाज के बढ़ते तार्किकीकरण पर था। उन्होंने समाजशास्त्र को व्यक्तिपरक अर्थों

NODIA

उन्होंने तर्क दिया कि ब्राह्मणों का उच्च दर्जा उनकी अनुष्ठानिक शुद्धता पर आधारित था, न कि भौतिक शक्ति पर। ड्यूमॉन्ट का पदानुक्रम का सिद्धांत पूरी तरह से धार्मिक मूल्यों पर टिका है, जहाँ शक्ति को धार्मिक पवित्रता के अधीन रखा गया है। इसलिए, यह कहना गलत होगा कि पदानुक्रम का आधार शक्ति है; उनके लिए यह विशुद्ध रूप से एक वैचारिक और धार्मिक व्यवस्था है।

94. (B) संघर्ष किसी साध्य का साधन है या स्वयं में एक साध्य है।
लुईस कोज़र ने संघर्ष के उद्देश्यों के आधार पर वास्तविक और अवास्तविक संघर्ष के बीच अंतर किया। वास्तविक संघर्ष तब होता है जब लोग किसी विशिष्ट लक्ष्य या दुर्लभ संसाधन को प्राप्त करने के लिए लड़ते हैं। यहाँ संघर्ष केवल एक साधन होता है। इसके विपरीत, अवास्तविक संघर्ष का कोई ठोस लक्ष्य नहीं होता; यह केवल संचित कुंठाओं, क्रोध या घृणा को बाहर निकालने के लिए किया जाता है। अवास्तविक संघर्ष में लड़ना ही अपने आप में एक साध्य बन जाता है, जिसका उद्देश्य केवल प्रतिद्वंद्वी को नुकसान पहुँचाना होता है।

95. (D) परंपराओं की बहुलता और उनकी परस्पर क्रिया पर।
एस.सी. दुबे ने भारतीय समाज को समझने के लिए परंपराओं के बहु-आयामी दृष्टिकोण को आवश्यक माना। उन्होंने तर्क दिया कि भारतीय समाज केवल एक महान परंपरा तक सीमित नहीं है, बल्कि यह कई प्रकार की परंपराओं जैसे राष्ट्रीय, क्षेत्रीय, स्थानीय और पश्चिमी परंपराओं का मिश्रण है। दुबे का मानना था कि इन विभिन्न स्तरों की परंपराओं के बीच होने वाली निरंतर अंतःक्रिया और संघर्ष ही भारतीय सामाजिक परिवर्तन और निरंतरता को आकार देते हैं। यह दृष्टिकोण भारतीय समाज की जटिल विविधता को स्वीकार करता है।

96. (B) एक सामान्य उद्देश्य और भौतिक उपकरणों वाले संगठित समूह के रूप में।
ब्रॉनिस्लॉ मैलिनोवस्की के प्रकार्यवाद में संस्था को एक संगठित और उद्देश्यपूर्ण इकाई के रूप में देखा जाता है। उनके अनुसार, प्रत्येक संस्था का एक चार्टर, कार्मिक, भौतिक उपकरण और एक निश्चित कार्यप्रणाली होती है। इन सबका मुख्य उद्देश्य मानवीय आवश्यकताओं को पूरा करना होता है। मैलिनोवस्की ने संस्था को संस्कृति की क्रियाशील इकाई माना, जो समाज के सुचारु संचालन को सुनिश्चित करती है। यह दृष्टिकोण संस्थाओं को केवल अमूर्त विचारों के बजाय व्यावहारिक और संगठित समूहों के रूप में देखता है।

97. (A) कथन 1 और कथन 2 दोनों सही हैं और कथन 2, कथन 1 की सही व्याख्या है।
कार्ल मार्क्स के अनुसार, पूंजीवादी समाज में राज्य कोई निष्पक्ष संस्था नहीं है, बल्कि वह बुर्जुआ वर्ग के हितों की रक्षा करने वाली एक कार्यकारिणी है। राज्य की मशीनरी, पुलिस, सेना और कानून का उपयोग निजी संपत्ति की रक्षा करने और सर्वहारा वर्ग के शोषण को वैध बनाए रखने के लिए किया जाता है। राज्य बुर्जुआ वर्ग के सामूहिक मामलों का प्रबंधन करता है और यह सुनिश्चित करता है कि पूंजीवादी व्यवस्था सुचारु रूप से चलती रहे और उसके विरुद्ध होने वाले विद्रोहों को दबाया जा सके।

98. (D) रॉबर्ट के. मर्टन
रॉबर्ट मर्टन ने प्रकार्यात्मक विश्लेषण में सुप्रकार्य और दुष्प्रकार्य की अवधारणाओं को व्यवस्थित रूप से विकसित किया। जहाँ सुप्रकार्य व्यवस्था के अनुकूलन और स्थिरता में योगदान देते हैं, वहीं दुष्प्रकार्य वे परिणाम हैं जो व्यवस्था में तनाव या असंतुलन पैदा करते हैं। मर्टन का यह योगदान महत्वपूर्ण है क्योंकि इसने प्रकार्यवाद को केवल समाज की सकारात्मक व्याख्या करने तक सीमित रहने के बजाय उसकी समस्याओं और परिवर्तनों का विश्लेषण करने के लिए एक संतुलित और वैज्ञानिक आधार प्रदान किया।

99. (B) भूमिकाओं की संरचना पर।
रेडक्लिफ-ब्राउन और एस.एफ. नाडेल दोनों संरचनावादी थे, लेकिन उनके दृष्टिकोण में मौलिक अंतर था। रेडक्लिफ-ब्राउन के लिए सामाजिक संरचना व्यक्तियों के बीच के वास्तविक और अवलोकनीय संबंधों का एक नेटवर्क है। इसके विपरीत, नाडेल ने तर्क दिया कि संरचना एक अमूर्त अवधारणा है जो सामाजिक भूमिकाओं के प्रतिमानों से प्राप्त होती है। नाडेल के अनुसार, संरचना का विश्लेषण करने के लिए हमें व्यक्तियों के बजाय उनके द्वारा निभाई जाने वाली भूमिकाओं और उनके बीच के संबंधों के जाल को समझना चाहिए।

100. (D) 1, 2 और 3
मैक्स वेबर की समाजशास्त्रीय पद्धति अत्यधिक व्यापक और प्रभावशाली है। उन्होंने मूल्य-मुक्त समाजशास्त्र की वकालत की ताकि शोधकर्ता अपने व्यक्तिगत पूर्वाग्रहों से मुक्त होकर अध्ययन कर सकें। वेबर ने आदर्श प्रारूप को एक विश्लेषणात्मक उपकरण के रूप में उपयोग किया ताकि जटिल सामाजिक प्रघटनाओं को समझा जा सके। इसके अतिरिक्त, उनकी वर्स्टेहेन पद्धति कर्ता के दृष्टिकोण से सामाजिक क्रिया के व्यक्तिपरक अर्थों की सहानुभूतिपूर्ण समझ विकसित करने पर बल देती है। ये तीनों तत्व वेबर के समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण के मुख्य स्तंभ हैं।

101. (A) आम लोगों के दृष्टिकोण से इतिहास लिखना।
अधीनस्थ अध्ययन समूह का मुख्य उद्देश्य इतिहास और समाज के उन पहलुओं को उजागर करना है जिन्हें प्रभुत्वशाली विमर्शों द्वारा अनदेखा किया गया है। बी.आर. अंबेडकर के विचारों से प्रेरित होकर, यह समूह किसानों, दलितों, आदिवासियों और आम जनता के संघर्षों और अनुभवों को केंद्र में रखकर सामाजिक वास्तविकता को समझने का प्रयास करता है। यह दृष्टिकोण केवल नेताओं या अभिजात वर्ग के बजाय निचले स्तर के लोगों की सक्रिय भागीदारी और उनकी चेतना के माध्यम से सामाजिक परिवर्तन का विश्लेषण करता है।

102. (D) लक्ष्य प्राप्ति
टैलकॉट पार्सन्स के सिद्धांत के अनुसार, प्रत्येक सामाजिक व्यवस्था को अपनी स्थिरता बनाए रखने के लिए लक्ष्य प्राप्ति की समस्या का समाधान करना होता है। यह कार्य मुख्य रूप

NODIA

139. (C) प्रस्थिति शक्ति से श्रेष्ठ है और उसे घेरे हुए है।
लुई ड्यूमॉन्ट के अनुसार, भारतीय जाति व्यवस्था में अनुष्ठानिक प्रस्थिति हमेशा धर्मनिरपेक्ष शक्ति से ऊपर होती है। ब्राह्मणों के पास सर्वोच्च प्रस्थिति है, भले ही उनके पास भौतिक शक्ति न हो। क्षत्रिय राजा के पास शक्ति है, लेकिन उसे अपनी धार्मिक वैधता के लिए ब्राह्मण पर निर्भर रहना पड़ता है। ड्यूमॉन्ट का तर्क है कि पदानुक्रम का यह सिद्धांत शक्ति को धार्मिक मूल्यों के घेरे में रखता है, जो इसे पश्चिमी वर्ग संरचना से मौलिक रूप से भिन्न बनाता है।

140. (A) भौगोलिक पर्यावरण के साथ मानव समाजों का अनुकूलन।
राधा कमल मुखर्जी की सामाजिक पारिस्थितिकी की अवधारणा इस बात पर केंद्रित है कि कैसे मानव समाज अपने प्राकृतिक और भौगोलिक परिवेश के साथ तालमेल बिठाते हैं। उन्होंने तर्क दिया कि मिट्टी, जलवायु और संसाधनों जैसे पर्यावरणीय कारक सामाजिक संस्थाओं, जनसंख्या के घनत्व और आर्थिक गतिविधियों के स्वरूप को निर्धारित करते हैं। मुखर्जी के अनुसार, समाज और प्रकृति के बीच एक गहरा संतुलन होता है, और इस संतुलन का अध्ययन सामाजिक व्यवस्था और विकास को समझने के लिए अत्यंत आवश्यक है।

141. (A) 3, 1, 2, 4
इन प्रमुख विचारकों का कालानुक्रमिक क्रम समाजशास्त्रीय सिद्धांतों के ऐतिहासिक विकास को दर्शाता है। कार्ल मार्क्स (1818-1883) ने सबसे पहले वर्ग संघर्ष की नींव रखी। उनके बाद ए.आर. रेडक्लिफ-ब्राउन (1881-1955) आए जिन्होंने संरचनात्मक प्रकार्यवाद को विकसित किया। बी.आर. अंबेडकर (1891-1956) ने सामाजिक न्याय और जाति के विनाश पर कार्य किया। अंत में, रॉबर्ट के. मर्टन (1910-2003) ने बीसवीं सदी के मध्य में प्रकार्यवाद में नए आयाम जोड़े। यह क्रम वैचारिक परिवर्तन की निरंतरता और विभिन्न युगों की समस्याओं को प्रतिबिंबित करता है।

142. (B) जाति व्यवस्था
बी.आर. अंबेडकर ने तर्क दिया कि अंतर्विवाह वह मुख्य तंत्र है जिसके माध्यम से जाति व्यवस्था स्वयं को बनाए रखती है। उनके अनुसार, यदि समाज में अंतरजातीय विवाह व्यापक रूप से होने लगें, तो जातियों के बीच की कठोर सीमाएं टूट जाएंगी और जाति प्रथा स्वतः समाप्त हो जाएगी। अंतर्विवाह जातियों को अलग-अलग इकाइयों में बंद रखता है और रक्त की शुद्धता के भ्रम को बनाए रखता है। इसलिए उन्होंने जाति के विनाश के लिए अंतर्विवाह की प्रथा को तोड़ने पर बल दिया था।

143. (B) मौजूदा संबंधों को बनाए रखने और परिवर्तन का विरोध करने की प्रवृत्ति।
विल्फ्रेडो पैरेटो के अनुसार, समूहों के स्थायित्व का अवशेष उन मानवीय प्रवृत्तियों को दर्शाता है जो परंपराओं, रीति-रिवाजों और पुराने सामाजिक बंधनों को जीवित रखने की कोशिश करती हैं। यह अवशेष रूढ़िवादिता और स्थिरता का प्रतीक है, जहाँ व्यक्ति बदलाव से डरता है और व्यवस्था को जैसा है वैसा ही बनाए रखना चाहता है। पैरेटो ने इसे वर्ग 2 के अवशेषों में रखा और इसे शेरों की विशेषता बताया, जो शक्ति और बल के माध्यम से मौजूदा व्यवस्था की रक्षा करते हैं।

144. (B) बुनियादी, साधनपरक, एकीकृत
ब्रॉनिस्लॉ मैलिनोवस्की ने आवश्यकताओं का एक त्रि-स्तरीय सिद्धांत प्रस्तुत किया था। बुनियादी आवश्यकताओं में जैविक जरूरतें जैसे भोजन और प्रजनन शामिल हैं। साधनपरक आवश्यकताएं उन उपकरणों और संस्थाओं को संदर्भित करती हैं जो समाज को संगठित रखने में मदद करती हैं। एकीकृत आवश्यकताएं वे हैं जो समाज को अर्थ और उद्देश्य प्रदान करती हैं, जैसे धर्म, कला और जादू। मैलिनोवस्की के अनुसार, संस्कृति का प्रत्येक तत्व इन्हीं तीन स्तरों की किसी न किसी आवश्यकता की पूर्ति के लिए मौजूद है।

145. (D) 1, 2 और 3
संघर्ष सिद्धांत के विकास में इन तीनों विचारकों का योगदान अद्वितीय और महत्वपूर्ण है। कार्ल मार्क्स ने आर्थिक असमानता को संघर्ष का मूल माना। राल्फ डहरेंडोर्फ ने इसमें सत्ता और अधिकार के आयाम को जोड़कर इसे आधुनिक बनाया। लुईस कोज़र ने एक नया दृष्टिकोण प्रस्तुत किया, जिसमें उन्होंने यह स्पष्ट किया कि संघर्ष हमेशा विनाशकारी नहीं होता, बल्कि यह सामाजिक एकजुटता और अनुकूलन में भी सहायक हो सकता है। ये तीनों सिद्धांत मिलकर समाज में होने वाले परिवर्तनों और शक्ति संबंधों की एक व्यापक समझ प्रदान करते हैं।

146. (B) समाज के औसत सदस्यों के सामान्य विश्वासों और भावनाओं को।
एमिल दुर्खीम के अनुसार, सामूहिक चेतना वह साझा नैतिक शक्ति है जो समाज के अधिकांश सदस्यों के मन में एक समान विश्वास, मूल्य और भावनाएं पैदा करती है। यह व्यक्ति से स्वतंत्र होती है और पीढ़ियों तक चलती रहती है। सामूहिक चेतना ही वह सूत्र है जो व्यक्तियों को एक समाज के रूप में बांधे रखता है। पारंपरिक समाजों में यह बहुत मजबूत होती है, जबकि आधुनिक समाजों में श्रम विभाजन के कारण इसमें व्यक्तिवाद की वृद्धि होती है, जिससे यह कुछ हद तक कमजोर हो जाती है।

147. (C) करिश्माई सत्ता
मैक्स वेबर के अनुसार, करिश्माई सत्ता वह स्थिति है जहाँ अनुयायी किसी नेता के असाधारण और अलौकिक गुणों के कारण उसके प्रति पूर्ण निष्ठा रखते हैं। एक राजनीतिज्ञ जो अपनी ओजस्वी वाणी, व्यक्तिगत प्रभाव और लोगों की आकांक्षाओं को जगाने की क्षमता से एक विशाल जनसमूह को प्रेरित करता है, वह इसी सत्ता का प्रयोग कर रहा होता है। यह सत्ता किसी कानून या परंपरा पर नहीं, बल्कि नेता और अनुयायियों के बीच के भावनात्मक जुड़ाव और विश्वास पर आधारित होती है, जो परिवर्तन के लिए प्रेरक शक्ति बनती है।

148. (C) रॉबर्ट के. मर्टन
रॉबर्ट मर्टन ने संदर्भ समूह व्यवहार की अवधारणा को विस्तार से समझाया। उनके अनुसार, संदर्भ समूह वह समूह होता है जिसके मूल्यों और व्यवहारों का व्यक्ति अनुकरण करता है या जिसके

Downloaded from www.pdf.tube

प्रजाति पर कार्य किया। नाडेल की पुस्तक ने विशेष रूप से भूमिकाओं के विश्लेषण के माध्यम से संरचना को समझने में महत्वपूर्ण योगदान दिया है।

112. (B) एक सामाजिक रूप से निर्मित वर्गीकरण।
एमिल दुर्खीम के अनुसार, पवित्र और अपवित्र के बीच का अंतर किसी वस्तु के अपने गुणों के कारण नहीं होता, बल्कि समाज द्वारा उसे दिए गए अर्थ के कारण होता है। समाज कुछ वस्तुओं, प्रतीकों या स्थानों को पवित्र घोषित कर उन्हें सामान्य जीवन से अलग कर देता है। यह वर्गीकरण सामाजिक एकता को बढ़ावा देने और समूह की सामूहिक चेतना को सुदृढ़ करने का कार्य करता है। धर्म मूल रूप से समाज की अपनी ही पूजा है, जहाँ पवित्रता का अर्थ सामूहिक शक्ति का प्रतीक होता है।

113. (A) कथन 1 और कथन 2 दोनों सही हैं और कथन 2, कथन 1 की सही व्याख्या है।
राधा कमल मुखर्जी ने तर्क दिया कि पश्चिमी आर्थिक सिद्धांत भारतीय संदर्भ में पूरी तरह से लागू नहीं होते क्योंकि वे मानवीय मूल्यों और सामाजिक परंपराओं की उपेक्षा करते हैं। उन्होंने अर्थशास्त्र के एक संस्थागत सिद्धांत की वकालत की जो भारत की अद्वितीय जाति व्यवस्था, ग्रामीण संरचना और आध्यात्मिक मूल्यों को समाहित कर सके। मुखर्जी का मानना था कि आर्थिक गतिविधियाँ समाज के व्यापक सांस्कृतिक और नैतिक ढांचे से स्वतंत्र नहीं होतीं, और विकास के लिए भारतीय मूल्यों का समावेश अनिवार्य है।

114. (D) प्रकट प्रकार्य
रॉबर्ट मर्टन के अनुसार, प्रकट प्रकार्य वे परिणाम होते हैं जो किसी सामाजिक गतिविधि के लिए स्पष्ट रूप से निर्धारित होते हैं और जिन्हें समाज के सदस्य सचेत रूप से पहचानते हैं। एक सार्वजनिक समारोह, जैसे राष्ट्रीय पर्व या धार्मिक उत्सव, का घोषित उद्देश्य लोगों को एक साथ लाना और साझा मूल्यों को मनाना होता है। यह स्पष्ट और वांछित परिणाम ही प्रकट प्रकार्य कहलाता है। यह सामाजिक एकजुटता को सीधे तौर पर सुदृढ़ करने का कार्य करता है, जो व्यवस्था की निरंतरता के लिए आवश्यक माना जाता है।

115. (B) P-3, Q-1, R-4, S-2
भारतीय समाजशास्त्रियों ने विभिन्न अवधारणाओं के माध्यम से समाज को समझने में योगदान दिया है। एस.सी. दुबे ने "भारतीय गाँव" के अध्ययन से ग्रामीण जटिलता को स्पष्ट किया। बी.आर. अंबेडकर ने "जाति का विनाश" के माध्यम से सामाजिक न्याय की वकालत की। राधा कमल मुखर्जी ने "मूल्यों के समाजशास्त्र" पर बल देते हुए मानवीय नैतिकता को अध्ययन का केंद्र बनाया। जी.एस. घुरये ने "भारतविद्या" परिप्रेक्ष्य का उपयोग कर प्राचीन ग्रंथों के माध्यम से भारतीय संस्कृति का विश्लेषण किया। ये सभी योगदान भारतीय समाजशास्त्र को समृद्ध करते हैं।

116. (B) वर्ग 1 अवशेष
विल्फ्रेडो पैरेटो के अनुसार, वर्ग 1 के अवशेषों की विशेषता संयोजन की प्रवृत्ति है, जिसमें नए विचार बनाने और नवाचार करने की इच्छा शामिल होती है। पैरेटो ने शासन करने वाले ऐसे लोगों को लोमड़ी कहा क्योंकि वे चालाकी, कूटनीति और नए तरीकों का उपयोग करके सत्ता बनाए रखते हैं। ये लोग रूढ़िवादी नहीं होते और अक्सर जोखिम लेने के लिए तैयार रहते हैं। अभिजात वर्ग के संचरण में लोमड़ियों का उदय तब होता है जब समाज को परिवर्तन और नए दृष्टिकोण की आवश्यकता होती है।

117. (B) मैलिनोवस्की ने व्यक्तिगत आवश्यकताओं पर ध्यान केंद्रित किया, जबकि रेडक्लिफ-ब्राउन ने संरचनात्मक आवश्यकताओं पर।
मैलिनोवस्की और रेडक्लिफ-ब्राउन दोनों प्रकार्यवादी थे, लेकिन उनके विश्लेषण के स्तर अलग थे। मैलिनोवस्की का प्रकार्यवाद व्यक्तिवादी था, जो यह मानता था कि सामाजिक संस्थाएं व्यक्ति की जैविक और मनोवैज्ञानिक जरूरतों को पूरा करती हैं। इसके विपरीत, रेडक्लिफ-ब्राउन का दृष्टिकोण संरचनात्मक था, जो यह मानता था कि संस्थाएं सामाजिक संरचना की निरंतरता और व्यवस्था को बनाए रखने के लिए कार्य करती हैं। यह अंतर प्रकार्यवाद के भीतर सूक्ष्म और व्यापक स्तर के विश्लेषण के बीच के विभाजन को स्पष्ट करता है।

118. (B) परिभाषा की एक सामूहिक प्रक्रिया का उत्पाद।
हरबर्ट ब्लूमर के अनुसार, सामाजिक समस्याएं केवल समाज में मौजूद वस्तुनिष्ठ हानिकारक स्थितियाँ नहीं हैं। कोई स्थिति तब तक सामाजिक समस्या नहीं बनती जब तक कि समाज के लोग उसे एक समस्या के रूप में सामूहिक रूप से परिभाषित न करें। यह प्रक्रिया जागरूकता, सार्वजनिक बहस और राजनीतिक लामबंदी के माध्यम से संपन्न होती है। ब्लूमर का मानना था कि सामाजिक समस्याओं का निर्माण समाज की व्याख्यात्मक प्रक्रिया का हिस्सा है, जहाँ अर्थ और चिंताएं निरंतर संवाद के माध्यम से आकार लेती रहती हैं।

119. (B) उन बुनियादी दुविधा विकल्पों को जिनका सामना एक कर्ता किसी भी सामाजिक स्थिति में करता है।
टैलकॉट पार्सन्स ने प्रतिमान चरों की अवधारणा के माध्यम से उन द्वैध विकल्पों को स्पष्ट किया जो एक व्यक्ति के सामने किसी भी सामाजिक अंतःक्रिया के दौरान आते हैं। जैसे, क्या उसे भावनाओं के आधार पर कार्य करना चाहिए या तटस्थ रहना चाहिए। ये चर यह समझने में मदद करते हैं कि विभिन्न संस्कृतियों और सामाजिक व्यवस्थाओं में मानवीय क्रियाएं किस प्रकार निर्देशित और संगठित होती हैं। यह सामाजिक व्यवहार के सांस्कृतिक प्रतिमानों को समझने में सहायता करता है।

120. (B) यह ब्राह्मणवादी मॉडल पर अत्यधिक जोर देता है और अन्य मॉडलों की उपेक्षा करता है।
एम.एन. श्रीनिवास की संस्कृतिकरण की अवधारणा की एक प्रमुख आलोचना यह है कि यह उच्च जातियों, विशेषकर ब्राह्मणों की जीवन शैली को ही एकमात्र आदर्श मानती है। आलोचकों का तर्क है कि भारत के विभिन्न क्षेत्रों में क्षत्रिय या वैश्य मॉडल भी अनुकरण के केंद्र रहे हैं। इसके अतिरिक्त, यह प्रक्रिया दलितों और पिछड़ी जातियों की अपनी विशिष्ट संस्कृति

NODIA

और परंपराओं को कमतर आंकती है। यह ब्राह्मणवादी वर्चस्व को अनजाने में सही ठहराने का काम करती है, जो सामाजिक विविधता की उपेक्षा है।

121. (B) केवल 1 और 2
एमिल दुर्खीम के अनुसार, सामाजिक तथ्य वे प्रघटनाएं हैं जिनका अस्तित्व व्यक्ति से बाहर होता है और जो व्यक्ति पर व्यवहार करने के लिए दबाव डालती हैं। ये मनोवैज्ञानिक नहीं बल्कि सामाजिक होते हैं, क्योंकि ये सामूहिक चेतना से उत्पन्न होते हैं। सामाजिक तथ्य जैसे कानून, रीति-रिवाज और धार्मिक विश्वास व्यक्ति की इच्छा पर निर्भर नहीं होते, बल्कि वे समाज द्वारा उस पर थोपे जाते हैं। दुर्खीम का मानना था कि समाजशास्त्र का मुख्य कार्य इन्हीं वस्तुनिष्ठ तथ्यों का वैज्ञानिक अध्ययन करना है।

122. (C) विल्फ्रेडो पैरेटो
विल्फ्रेडो पैरेटो ने अभिजात वर्ग के संचरण को समझाने के लिए शेर और लोमड़ी के रूपकों का उपयोग किया। उनके अनुसार, शेर वे शासक हैं जो शक्ति, साहस और रूढ़िवादी मूल्यों पर भरोसा करते हैं। इसके विपरीत, लोमड़ी वे हैं जो चालाकी, बुद्धि और नए संयोजनों का उपयोग करते हैं। समाज का इतिहास इन दो प्रकार के अभिजात वर्गों के बीच सत्ता के निरंतर हस्तांतरण की एक चक्रीय प्रक्रिया है, जहाँ एक की कमजोरी दूसरे के उदय का मार्ग प्रशस्त करती है।

123. (C) भारतविद्या / ब्राह्मणवादी परिप्रेक्ष्य
अधीनस्थ परिप्रेक्ष्य मुख्य रूप से भारतविद्या या ब्राह्मणवादी दृष्टिकोण की आलोचना करता है क्योंकि ये प्राचीन ग्रंथों के माध्यम से केवल उच्च जातियों के आदर्शों को प्रस्तुत करते हैं। अधीनस्थ अध्ययन यह तर्क देते हैं कि ऐसे दृष्टिकोणों ने दलितों, आदिवासियों और अन्य शोषित समुदायों की आवाजों और उनके वास्तविक संघर्षों को दबा दिया है। यह परिप्रेक्ष्य समाज की उन व्याख्याओं को चुनौती देता है जो पदानुक्रम को स्वाभाविक या धार्मिक रूप से अनिवार्य मानती हैं और समाज को नीचे से देखने पर बल देती हैं।

124. (B) अवास्तविक संघर्ष
लुईस कोज़र के अनुसार, अवास्तविक संघर्ष वह स्थिति है जहाँ संघर्ष किसी ठोस समस्या के समाधान के लिए नहीं, बल्कि केवल दमित कुंठाओं या शत्रुतापूर्ण भावनाओं को बाहर निकालने के लिए किया जाता है। यहाँ प्रतिद्वंद्वी केवल एक बलि का बकरा होता है जिस पर अपना गुस्सा निकाला जाता है। इस प्रकार के संघर्ष समाज के लिए अधिक विनाशकारी हो सकते हैं क्योंकि इनका कोई तार्किक अंत नहीं होता। यह वास्तविक संघर्ष से भिन्न है, जो किसी स्पष्ट लक्ष्य की प्राप्ति के लिए किया जाता है।

125. (B) दर्पण जैसा आत्म
चार्ल्स कूले की दर्पण जैसा आत्म की अवधारणा यह बताती है कि व्यक्ति का आत्म-बोध पूरी तरह से सामाजिक अंतःक्रिया पर आधारित है। व्यक्ति दूसरों के सामने वैसा ही महसूस करता है जैसा उसे लगता है कि दूसरे उसे देख रहे हैं। इस प्रक्रिया में तीन चरण होते हैं: हम कल्पना करते हैं कि हम दूसरों को कैसे दिखते हैं, हम उनकी संभावित प्रतिक्रिया या निर्णय की कल्पना करते हैं, और फिर उसके आधार पर गर्व या शर्म जैसी भावना विकसित करते हैं। समाज हमारे लिए एक दर्पण की तरह कार्य करता है।

126. (D) उत्तर-आधुनिक परंपरा
एस.सी. दुबे ने भारतीय समाज में परंपराओं के छह-स्तरीय वर्गीकरण का प्रस्ताव दिया था ताकि ग्रामीण जीवन की विविधता को समझा जा सके। इसमें शास्त्रीय, क्षेत्रीय, स्थानीय, पश्चिमी और राष्ट्रीय परंपराओं के साथ-साथ उप-सांस्कृतिक परंपराएं भी शामिल थीं। दुबे के काल में उत्तर-आधुनिकता का विचार समाजशास्त्रीय विश्लेषण में इतना प्रचलित नहीं था, इसलिए उन्होंने उत्तर-आधुनिक परंपरा जैसी किसी श्रेणी को अपने वर्गीकरण में शामिल नहीं किया था। उनका ध्यान मुख्य रूप से परंपरा और आधुनिकता के बीच के संबंधों पर था।

127. (C) कार्ल मार्क्स - द सोशल सिस्टम
समाजशास्त्रीय साहित्य में लेखकों और उनकी पुस्तकों का सही मिलान करना अनिवार्य है। कार्ल मार्क्स ने 'दास कैपिटल' और 'कम्युनिस्ट मेनिफेस्टो' जैसी कालजयी रचनाएं दीं। 'द सोशल सिस्टम' कार्ल मार्क्स की नहीं, बल्कि टैलकॉट पार्सन्स की महत्वपूर्ण कृति है, जिसमें उन्होंने सामाजिक व्यवस्था के प्रकार्यात्मक ढांचे को प्रस्तुत किया है। अन्य विकल्प सही हैं: वेबर ने प्रोटेस्टेंट नैतिकता पर कार्य किया, दुर्खीम ने आत्महत्या का अध्ययन किया और घुरये ने भारत में जाति और प्रजाति पर विस्तार से लिखा है।

128. (A) व्यक्तियों के बजाय एक व्यवस्था के भीतर स्थितियों या भूमिकाओं पर।
एस.एफ. नाडेल के अनुसार, सामाजिक संरचना का विश्लेषण करने का अर्थ है समाज से उसके अमूर्त रूप को अलग करना। इस प्रक्रिया में हम विशिष्ट व्यक्तियों के व्यक्तिगत गुणों की उपेक्षा करते हैं और केवल उन भूमिकाओं और स्थितियों पर ध्यान केंद्रित करते हैं जो एक-दूसरे से जुड़ी होती हैं। संरचना का सार इसी व्यवस्था में निहित है कि कैसे विभिन्न भूमिकाएं मिलकर एक सुसंगत जाल बनाती हैं। यह दृष्टिकोण सामाजिक वास्तविकता को व्यक्तिगत व्यवहार से ऊपर उठाकर एक व्यवस्थित सैद्धांतिक ढांचे में समझने में मदद करता है।

129. (C) कथन 1 सही है, लेकिन कथन 2 गलत है।
रेडक्लिफ-ब्राउन का मानना था कि कानून और नैतिकता सामाजिक संरचना को स्थिरता प्रदान करने के महत्वपूर्ण साधन हैं। हालांकि, उन्होंने सजा के उद्देश्य को केवल अपराधी को रोकने तक सीमित नहीं माना। दुर्खीम की तरह, ब्राउन ने भी तर्क दिया कि सजा का मुख्य कार्य समाज की सामूहिक भावनाओं और नैतिक मूल्यों को पुनः सुदृढ़ करना है। जब किसी नियम के उल्लंघन पर सजा दी जाती है, तो यह समाज के अन्य सदस्यों को उन साझा मूल्यों की याद दिलाती है जो उन्हें एकजुट रखते हैं।

Click Here to Buy book on Amazon

130. (B) परस्पर निर्भरता और अंतर पर
एमिल दुर्खीम के अनुसार, सावयवी एकजुटता आधुनिक और जटिल समाजों की पहचान है। यहाँ श्रम का व्यापक विभाजन होता है, जिससे व्यक्ति अलग-अलग और विशिष्ट कार्य करते हैं। इस अंतर के कारण व्यक्ति अपनी विभिन्न जरूरतों के लिए एक-दूसरे पर निर्भर हो जाते हैं। जैसे शरीर के विभिन्न अंग मिलकर जीवन संभव बनाते हैं, वैसे ही समाज के विभिन्न विशेषज्ञ मिलकर व्यवस्था को सुचारू रखते हैं। यह एकजुटता समानता के बजाय विविधता और कार्यात्मक सहयोग पर आधारित होती है, जो समाज को मजबूती देती है।

131. (C) उन असाधारण गुणों पर जो अनुयायी नेता में देखते हैं।
मैक्स वेबर के अनुसार, करिश्माई सत्ता किसी नेता के कथित असाधारण, पवित्र या अनुकरणीय गुणों के प्रति अनुयायियों की भक्ति पर आधारित होती है। यह सत्ता न तो परंपरा से आती है और ना ही कानूनों से, बल्कि यह नेता के व्यक्तिगत आकर्षण और उसके द्वारा किए गए सफलताओं पर टिकी होती है। अनुयायी नेता को एक उद्धारकर्ता या असाधारण शक्ति वाले व्यक्ति के रूप में देखते हैं। हालांकि, यह सत्ता स्वभाव से अस्थिर होती है क्योंकि इसे निरंतर सफलताओं के माध्यम से सिद्ध करना पड़ता है।

132. (B) रॉबर्ट के. मर्टन
रॉबर्ट मर्टन ने समाजशास्त्र में मध्य-सीमा सिद्धांतों की आवश्यकता पर बल दिया। उन्होंने तर्क दिया कि समाजशास्त्र को न तो बहुत व्यापक और अमूर्त सिद्धांतों में उलझना चाहिए और न ही केवल छोटे तथ्यों के संग्रह तक सीमित रहना चाहिए। मध्य-सीमा सिद्धांत वे हैं जो विशिष्ट सामाजिक घटनाओं की व्याख्या करते हैं और जिन्हें आनुभविक रूप से परखा जा सकता है। यह दृष्टिकोण समाजशास्त्रीय अनुसंधान और सिद्धांत निर्माण के बीच एक सेतु का कार्य करता है, जो विज्ञान को अधिक प्रासंगिक बनाता है।

133. (A) कथन 1 और कथन 2 दोनों सही हैं और कथन 2, कथन 1 की सही व्याख्या है।
जी.एस. घुरये के भारतविद्या दृष्टिकोण की अक्सर आलोचना की जाती है क्योंकि यह प्राचीन संस्कृत ग्रंथों और ब्राह्मणवादी शास्त्रों पर बहुत अधिक निर्भर है। इसके कारण उनके विश्लेषण में उच्च जातियों के मूल्यों और दृष्टिकोण को ही भारतीय संस्कृति का प्रतिनिधि मान लिया गया। इस पाठ्य निर्भरता ने भारतीय समाज की उन वास्तविकताओं को नजरअंदाज कर दिया जो दलितों, पिछड़ों और गैर-ब्राह्मण समुदायों के अनुभवों से जुड़ी थीं। आलोचकों के अनुसार, यह दृष्टिकोण भारतीय समाज की विविधता का समग्र चित्रण करने में विफल रहा है।

134. (C) एकीकरण बनाम विभेदीकरण
टैलकॉट पार्सन्स के प्रतिमान चरों में वे बुनियादी दुविधाएं शामिल हैं जिनका सामना एक कर्ता क्रिया के दौरान करता है। उनके पांच मुख्य प्रतिमान चर हैं: भावात्मकता बनाम भावात्मक तटस्थता, सार्वभौमिकता बनाम विशिष्टतावाद, प्रदत्त बनाम अर्जित, विशिष्टता बनाम व्यापकता, और स्व-हित बनाम सामूहिक हित। एकीकरण और विभेदीकरण सामाजिक परिवर्तन या व्यवस्था के कार्यों से जुड़े शब्द हैं, लेकिन वे पार्सन्स द्वारा परिभाषित प्रतिमान चरों की सूची में शामिल नहीं हैं। ये चर सामाजिक व्यवहार के सांस्कृतिक प्रतिमानों को समझने में सहायता करते हैं।

135. (A) P-3, Q-1, R-4, S-2
समाजशास्त्र की विभिन्न अवधारणाएं मानवीय क्रियाओं और सामाजिक परिवर्तनों को स्पष्ट करती हैं। रॉबर्ट मर्टन का प्रच्छन्न प्रकार्य उन अनपेक्षित परिणामों को दर्शाता है जो प्रत्यक्ष रूप से दिखाई नहीं देते। मैक्स वेबर की वर्स्टेहेन पद्धति सामाजिक क्रियाओं के पीछे के अर्थों को सहानुभूतिपूर्ण तरीके से समझने पर जोर देती है। विल्फ्रेडो पैरेटो के अवशेष अतार्किक भावनाओं को संदर्भित करते हैं जो व्यवहार को प्रेरित करती हैं। एम.एन. श्रीनिवास का संस्कृतिकरण जाति व्यवस्था के भीतर ऊपर की ओर होने वाली प्रस्थितिगत गतिशीलता की प्रक्रिया को दर्शाता है।

136. (B) आत्म के सहज, आवेगी और रचनात्मक पहलू का।
जॉर्ज हरबर्ट मीड के अनुसार, "आई" आत्म का वह हिस्सा है जो तात्कालिक और अनियंत्रित प्रतिक्रिया देता है। यह व्यक्ति की अद्वितीयता, रचनात्मकता और स्वायत्तता का प्रतिनिधित्व करता है। "आई" सामाजिक अपेक्षाओं से पहले आता है और यह व्यक्ति को नई क्रियाएं करने के लिए प्रेरित करता है। इसके विपरीत, "मी" सामाजिक नियमों को मानता है। "आई" और "मी" के बीच का निरंतर संवाद ही मानवीय चेतना को आकार देता है। "आई" के बिना समाज केवल एक यंत्रवत व्यवस्था बनकर रह जाएगा, जिसमें नवीनता का अभाव होगा।

137. (C) संस्थागत और विनियमित।
राल्फ डहरेंडोर्फ का तर्क है कि उत्तर-पूंजीवादी समाजों में वर्ग संघर्ष अब हिंसक क्रांति के रूप में नहीं रह गया है। इसके बजाय, इसे सामूहिक सौदेबाजी, श्रम कानूनों और ट्रेड यूनियनों के माध्यम से संस्थागत बना दिया गया है। आधुनिक समाजों में संघर्ष को हल करने के लिए कानूनी और शांतिपूर्ण मंच उपलब्ध हैं। डहरेंडोर्फ के अनुसार, इससे संघर्ष की तीव्रता कम हो गई है और यह सामाजिक व्यवस्था के भीतर ही नियंत्रित तरीके से संचालित होता है। अब यह संपत्ति के बजाय अधिकार के वितरण पर केंद्रित है।

138. (C) एम.एन. श्रीनिवास
एम.एन. श्रीनिवास ने मैसूर के रामपुरा गाँव में किए गए अपने प्रसिद्ध अध्ययन के दौरान प्रभु जाति की अवधारणा विकसित की थी। उन्होंने देखा कि गाँव की शक्ति संरचना किसी एक जाति के हाथ में केंद्रित होती है जिसके पास भूमि, संख्या बल और राजनीतिक प्रभाव होता है। रामपुरा में 'ओक्कालिगा' जाति इसी प्रकार की प्रभु जाति थी। श्रीनिवास का यह कार्य भारतीय ग्रामीण शक्ति गतिशीलता को समझने में एक क्रांतिकारी मोड़ लेकर आया, जिसने जाति और राजनीति के गहरे संबंधों को उजागर किया।

NODIA

से राजनीतिक उप-व्यवस्था द्वारा किया जाता है। राजनीति का मुख्य कार्य समाज के लक्ष्यों को निर्धारित करना, संसाधनों को संगठित करना और उन लक्ष्यों तक पहुँचने के लिए आवश्यक निर्णय लेना है। इसके माध्यम से समाज अपनी सामूहिक इच्छाओं को पूरा करने और बाहरी या आंतरिक चुनौतियों का सामना करने के लिए शक्ति का प्रयोग करता है।

103. (C) जाति नातेदारी का विस्तार है, जिसमें अंतर्विवाह नातेदारी समूहों को सुदृढ़ करता है।
जी.एस. घुरये का मानना था कि भारत में जाति और नातेदारी आपस में गहराई से जुड़ी हुई हैं। उनके अनुसार, जाति मूल रूप से नातेदारी समूहों का एक व्यापक विस्तार है। जाति के भीतर अंतर्विवाह के नियम यह सुनिश्चित करते हैं कि नातेदारी और रक्त के संबंध एक विशिष्ट समूह के भीतर ही बने रहें, जिससे जाति की पहचान और एकजुटता मजबूत होती है। घुरये ने तर्क दिया कि नातेदारी की संरचना ही जाति व्यवस्था को एक संगठित और निरंतर चलने वाला सामाजिक स्वरूप प्रदान करती है।

104. (A) कानूनी, राजनीतिक, धार्मिक और दार्शनिक संस्थाएं और विचार।
कार्ल मार्क्स के ऐतिहासिक भौतिकवाद के अनुसार, समाज दो भागों में विभाजित है: आधार और अधिरचना। आधार में उत्पादन की शक्तियां और आर्थिक संबंध शामिल हैं। अधिरचना में समाज के कानून, राजनीति, धर्म, कला और दर्शन जैसे वैचारिक तत्व आते हैं। मार्क्स का तर्क था कि समाज का आर्थिक आधार ही यह निर्धारित करता है कि उसकी अधिरचना कैसी होगी। जब आधार में परिवर्तन होता है, तो अधिरचना की संस्थाएं और विचार भी बदल जाते हैं, जो सामाजिक क्रांति का मार्ग प्रशस्त करते हैं।

105. (A) 2, 3, 1, 4
एम.एन. श्रीनिवास द्वारा विकसित इन अवधारणाओं का क्रम उनके शोध और भारतीय समाज की बदलती गतिशीलता की उनकी समझ को दर्शाता है। उन्होंने सबसे पहले 1950 के दशक के प्रारंभ में संस्कृतिकरण की अवधारणा दी, जिसके बाद पश्चिमीकरण की बात की। इसके बाद, 1950 के दशक के मध्य में उन्होंने प्रभु जाति की अवधारणा प्रस्तुत की, जो ग्रामीण शक्ति संरचना को स्पष्ट करती है। अंत में, उन्होंने भारतीय राजनीति में मतदान के प्रतिमानों को समझने के लिए वोट बैंक शब्द का प्रयोग किया, जो आज भी प्रचलित है।

106. (C) लक्ष्यों को त्यागना लेकिन संस्थागत साधनों का पालन करना।
रॉबर्ट मर्टन के अनुकूलन के वर्गीकरण में कर्मकांडवाद वह स्थिति है जहाँ व्यक्ति समाज द्वारा निर्धारित सफलता के लक्ष्यों को तो छोड़ देता है, लेकिन वह संस्थागत नियमों और साधनों का अत्यधिक कड़ाई से पालन करना जारी रखता है। ऐसे व्यक्ति जोखिम लेने से डरते हैं और केवल सुरक्षा के लिए नियमों में बंधे रहते हैं। उदाहरण के लिए, एक नौकरशाह जो केवल नियमों का पालन करता है लेकिन व्यवस्था के व्यापक लक्ष्यों की परवाह नहीं करता, वह कर्मकांडवादी अनुकूलन का प्रदर्शन कर रहा है।

107. (D) बोला गया शब्द "पेड़"
जॉर्ज हरबर्ट मीड के अनुसार, महत्वपूर्ण प्रतीक वह संकेत या शब्द है जो कर्ता और श्रोता दोनों में समान प्रतिक्रिया या अर्थ उत्पन्न करता है। बोला गया शब्द "पेड़" एक महत्वपूर्ण प्रतीक है क्योंकि इसे सुनने वाले सभी व्यक्ति एक ही मानसिक छवि को समझते हैं। यह संचार के लिए अनिवार्य है क्योंकि प्रतीकों के माध्यम से ही हम दूसरों के दृष्टिकोणों को समझ सकते हैं और सामाजिक अंतःक्रिया में भाग ले सकते हैं। महत्वपूर्ण प्रतीकों के बिना एक साझा सामाजिक दुनिया का निर्माण असंभव है।

108. (A) सत्ता संरचनाओं में अंतर्निहित प्रच्छन्न हितों से।
राल्फ डहरेंडोर्फ के अनुसार, संघर्ष समूह अचानक पैदा नहीं होते, बल्कि वे समाज की सत्ता संरचनाओं में पहले से मौजूद प्रच्छन्न हितों से निकलते हैं। प्रत्येक अनिवार्य रूप से समन्वित संघ में शासक वर्ग के पास सत्ता बनाए रखने के हित होते हैं, जबकि शासित वर्ग के पास सत्ता को बदलने या उसमें हिस्सा पाने के हित होते हैं। जब ये प्रच्छन्न हित सचेत और संगठित हो जाते हैं, तो वे सक्रिय संघर्ष समूहों में बदल जाते हैं, जिससे सामाजिक व्यवस्था में परिवर्तन आता है।

109. (C) ए.आर. रेडक्लिफ-ब्राउन
रॉबर्ट मर्टन ने प्रकार्यात्मक एकता की धारणा की आलोचना करते हुए इसे ए.आर. रेडक्लिफ-ब्राउन के कार्यों से जोड़कर देखा। ब्राउन का मानना था कि समाज के सभी अंग आपस में इस प्रकार जुड़े होते हैं कि वे व्यवस्था के समग्र सामंजस्य और स्थिरता में योगदान देते हैं। मर्टन ने इस विचार को चुनौती दी और तर्क दिया कि आधुनिक और जटिल समाजों में सभी संस्थाएं हमेशा एक-दूसरे के साथ पूरी तरह से एकीकृत या प्रकार्यात्मक नहीं होतीं। कुछ भागों में होने वाली गतिविधियाँ दूसरे भागों के लिए प्रतिकूल भी हो सकती हैं।

110. (A) धार्मिक
लुई ड्यूमॉन्ट ने अपनी पुस्तक 'होमो हाइरार्कस' में यह स्पष्ट किया कि भारतीय जाति व्यवस्था का आधार धार्मिक विचारधारा है। उनके अनुसार, यह व्यवस्था पदानुक्रम के एक ऐसे सिद्धांत पर आधारित है जो शुद्ध और अशुद्ध के धार्मिक विरोध से संचालित होता है। ड्यूमॉन्ट का तर्क था कि यहाँ शक्ति और धन के बजाय धार्मिक पवित्रता को सामाजिक प्रस्थिति का प्राथमिक मापदंड माना जाता है। इसलिए, जाति व्यवस्था को केवल आर्थिक या राजनीतिक लाभ के चश्मे से देखना इसकी मूल प्रकृति को गलत समझना होगा।

111. (D) एस.एफ. नाडेल - द थ्योरी ऑफ सोशल स्ट्रक्चर
समाजशास्त्र के क्षेत्र में विभिन्न लेखकों की उनकी कृतियों के साथ सही पहचान करना आवश्यक है। एस.एफ. नाडेल ने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक 'द थ्योरी ऑफ सोशल स्ट्रक्चर' में सामाजिक संरचना का एक गहन विश्लेषणात्मक ढांचा प्रस्तुत किया। अन्य विकल्प गलत हैं: दुर्खीम ने श्रम विभाजन पर लिखा, मीड के विचार उनके मरणोपरांत प्रकाशित हुए और घुरये ने जाति एवं

Downloaded from www.pdf.tube

आधार पर वह अपनी स्थिति का मूल्यांकन करता है। व्यक्ति अक्सर उस समूह का सदस्य नहीं होता, लेकिन वह उसका हिस्सा बनने की आकांक्षा रखता है। मर्टन ने सापेक्ष वंचना के सिद्धांत को इसके साथ जोड़कर यह स्पष्ट किया कि कैसे लोग दूसरों की तुलना में स्वयं को देखते हैं, जो उनकी संतुष्टि या असंतोष को प्रभावित करता है।

149. (C) बॉम्बे (मुंबई)
जी.एस. घुरये को बॉम्बे स्कूल ऑफ सोशियोलॉजी का संस्थापक और भारतीय समाजशास्त्र का पितामह माना जाता है। उन्होंने 1924 में बॉम्बे विश्वविद्यालय में समाजशास्त्र विभाग के अध्यक्ष के रूप में कार्यभार संभाला और कई दशकों तक भारतीय समाज के अध्ययन के लिए शोधकर्ताओं की एक पूरी पीढ़ी को प्रशिक्षित किया। उनके नेतृत्व में बॉम्बे विश्वविद्यालय समाजशास्त्रीय अनुसंधान का एक प्रमुख केंद्र बना। घुरये ने न केवल संस्थागत विकास किया, बल्कि भारतीय समाजशास्त्र को एक विशिष्ट राष्ट्रवादी और पाठ्य दिशा भी प्रदान की।

150. (B) उच्च अनुष्ठानिक प्रस्थिति
एम.एन. श्रीनिवास के अनुसार, प्रभु जाति होने के लिए उच्च अनुष्ठानिक प्रस्थिति अनिवार्य नहीं है। प्रभु जाति के मुख्य गुण हैं: संख्यात्मक बल, महत्वपूर्ण भूमि स्वामित्व के माध्यम से आर्थिक शक्ति, और स्थानीय राजनीति में प्रभाव। कई क्षेत्रों में मध्यम स्तर की जातियाँ भी अपनी आर्थिक और राजनीतिक ताकत के कारण प्रभु जाति के रूप में उभरती हैं। वे अक्सर गाँव के अन्य समुदायों पर अपना दबदबा रखती हैं और अनुष्ठानिक रूप से ऊँची जातियों के समकक्ष या उनसे भी अधिक शक्तिशाली हो सकती हैं।

151. (A) क्योंकि यह सामाजिक भूमिकाओं के बीच संबंधों पर केंद्रित है।
एस.एफ. नाडेल का दृष्टिकोण संबंधपरक इसलिए कहलाता है क्योंकि उन्होंने सामाजिक संरचना को केवल व्यक्तियों का समूह नहीं माना, बल्कि उसे भूमिकाओं के बीच के संबंधों के एक जटिल जाल के रूप में देखा। उनके अनुसार, समाज का वास्तविक ढांचा उन संबंधों से बनता है जो विभिन्न भूमिकाओं को एक-दूसरे से जोड़ते हैं। नाडेल ने इस बात पर बल दिया कि संरचना को समझने के लिए हमें इन संबंधों के प्रतिमानों का विश्लेषण करना चाहिए, जो सामाजिक व्यवस्था को एक निश्चित रूप और स्थिरता प्रदान करते हैं।

152. (B) हरबर्ट ब्लूमर
हरबर्ट ब्लूमर एक प्रकार्यवादी नहीं, बल्कि प्रतीकात्मक अंतःक्रियावाद के प्रमुख प्रवर्तक हैं। जहाँ दुर्खीम, पार्सन्स और मैलिनोवस्की जैसे प्रकार्यवादी समाज को एक एकीकृत व्यवस्था के रूप में देखते हैं जो अपनी स्थिरता और आवश्यकताओं के लिए कार्य करती है, वहीं ब्लूमर समाज को व्यक्तियों के बीच होने वाली सूक्ष्म अंतःक्रियाओं और अर्थ निर्माण की प्रक्रिया के रूप में देखते हैं। ब्लूमर का मानना था कि सामाजिक वास्तविकता स्थिर संरचनाओं के बजाय निरंतर चलने वाले मानवीय संवाद और व्याख्याओं से निर्मित होती है, जो प्रकार्यवाद से भिन्न है।

153. (A) कथन 1 और कथन 2 दोनों सही हैं और कथन 2, कथन 1 की सही व्याख्या है।
एमिल दुर्खीम ने एक क्रांतिकारी विचार प्रस्तुत किया कि अपराध समाज की एक सामान्य और अनिवार्य विशेषता है। उनके अनुसार, कोई भी समाज अपराध मुक्त नहीं हो सकता क्योंकि मानदंड हमेशा कुछ न कुछ उल्लंघन की गुंजाइश छोड़ते हैं। अपराध का प्रकार्यात्मक पक्ष यह है कि जब अपराधी को दंड दिया जाता है, तो यह समाज के साझा मूल्यों और सामूहिक चेतना को सुदृढ़ करता है। यह प्रक्रिया समाज के सदस्यों को सही और गलत की सीमाओं की याद बनाती है और उनके बीच सामाजिक एकजुटता को बनाए रखती है।

154. (C) सामाजिक क्रिया के व्यक्तिपरक अर्थों की व्याख्यात्मक समझ।
मैक्स वेबर की वर्स्टेहेन पद्धति का अर्थ है 'सहानुभूतिपूर्ण समझ'। उनका तर्क था कि समाजशास्त्री को केवल बाहरी व्यवहार को नहीं देखना चाहिए, बल्कि उस व्यक्तिपरक अर्थ को भी समझना चाहिए जो कर्ता अपनी क्रिया के साथ जोड़ता है। शोधकर्ता को स्वयं को कर्ता के स्थान पर रखकर यह देखना चाहिए कि उसने कोई विशिष्ट कार्य क्यों किया। यह पद्धति समाजशास्त्र को प्राकृतिक विज्ञानों से अलग करती है क्योंकि यह मानवीय चेतना, उद्देश्यों और भावनाओं को सामाजिक वास्तविकता को समझने का मुख्य आधार बनाती है।

155. (C) परित्यागी
रॉबर्ट मर्टन के अनुसार, परित्यागी वे व्यक्ति होते हैं जो समाज द्वारा निर्धारित सफलता के सांस्कृतिक लक्ष्यों और उन्हें प्राप्त करने के वैध साधनों, दोनों को पूरी तरह से त्याग देते हैं। ये लोग समाज के भीतर तो रहते हैं लेकिन मानसिक और सामाजिक रूप से उससे कट जाते हैं। तपस्वी, साधु, मादक द्रव्यों के सेवन करने वाले या समाज के हाशिए पर रहने वाले लोग इसी श्रेणी में आते हैं। उनका व्यवहार समाज की मुख्यधारा से अलग होता है क्योंकि वे व्यवस्था के प्रति किसी भी प्रकार की प्रतिबद्धता नहीं दिखाते।

156. (B) पारंपरिक भारतीय मनुष्य को जो पदानुक्रम में अपनी स्थिति द्वारा परिभाषित होता है।
लुई ड्यूमॉन्ट ने 'होमो हाइरार्कस' शब्द का प्रयोग पारंपरिक भारतीय मनुष्य के लिए किया, जिसकी पहचान और अस्तित्व पूरी तरह से जाति व्यवस्था के पदानुक्रम में उसकी स्थिति से निर्धारित होता है। ड्यूमॉन्ट के अनुसार, भारतीय समाज में व्यक्ति स्वायत्त नहीं है, बल्कि वह उस समग्र व्यवस्था का हिस्सा है जहाँ ऊँच-नीच के धार्मिक सिद्धांत सर्वोपरि हैं। यह आधुनिक पश्चिमी समानतावादी मनुष्य के विपरीत है। ड्यूमॉन्ट का तर्क है कि भारतीय सामाजिक वास्तविकता को केवल इसी पदानुक्रमित परिप्रेक्ष्य से समझा जा सकता है।

157. (B) P-4, Q-2, R-1, S-3
समाजशास्त्र के विभिन्न संप्रदायों ने विशिष्ट विश्वविद्यालयों के माध्यम से अपनी पहचान बनाई है। जी.एस. घुरये ने बॉम्बे विश्वविद्यालय में समाजशास्त्र की नींव रखी, जिसे बॉम्बे स्कूल कहा जाता है। राधा कमल मुखर्जी लखनऊ स्कूल के स्तंभ थे,

NODIA

84. (A) रॉबर्ट के. मर्टन
रॉबर्ट मर्टन ने अपने एनोमी या तनाव सिद्धांत में यह स्पष्ट किया कि समाज में विचलन तब पैदा होता है जब सांस्कृतिक लक्ष्यों और उन्हें प्राप्त करने के संस्थागत साधनों के बीच असंतुलन होता है। जब समाज सफलता को तो एक महत्वपूर्ण लक्ष्य बनाता है लेकिन उस तक पहुँचने के वैध अवसर सभी को प्रदान नहीं करता, तो लोग तनाव महसूस करते हैं। यह तनाव व्यक्तियों को नवाचार, कर्मकांडवाद या विद्रोह जैसे विभिन्न प्रकार के अनुकूलन अपनाने के लिए प्रेरित करता है, जो अंततः एनोमी को जन्म देता है।

85. (D) वैधीकरण
टैलकॉट पार्सन्स के एजीआईएल ढांचे में सामाजिक व्यवस्था की चार बुनियादी प्रकार्यात्मक आवश्यकताओं को शामिल किया गया है: अनुकूलन (A), लक्ष्य प्राप्ति (G), एकीकरण (I), और प्रच्छन्नता (L)। वैधीकरण इस मॉडल का हिस्सा नहीं है। पार्सन्स का मानना था कि किसी भी सामाजिक व्यवस्था को अपनी स्थिरता बनाए रखने और जीवित रहने के लिए इन चार समस्याओं का समाधान करना ही पड़ता है। ये कार्य विभिन्न उप-व्यवस्थाओं जैसे अर्थव्यवस्था, राजनीति और परिवार के माध्यम से पूरे किए जाते हैं।

86. (B) P-4, Q-2, R-1, S-3
समाजशास्त्र के महत्वपूर्ण ग्रंथों ने सिद्धांत निर्माण में बड़ी भूमिका निभाई है। राल्फ डहरेंडोर्फ ने औद्योगिक समाज में वर्ग संघर्ष का विश्लेषण किया। लुईस कोज़र ने सामाजिक संघर्ष के सकारात्मक कार्यों पर प्रकाश डाला। टैलकॉट पार्सन्स ने सामाजिक क्रिया की संरचना का व्यवस्थित सिद्धांत प्रस्तुत किया। ब्रॉनिस्लॉ मैलिनोवस्की ने पश्चिमी प्रशांत के अर्गोनॉट्स के माध्यम से आर्थिक और सामाजिक विनिमय की नृवंशविज्ञानी समझ विकसित की। ये पुस्तकें अपने-अपने क्षेत्रों में शास्त्रीय रचनाएं मानी जाती हैं जो आज भी शोध का आधार हैं।

87. (D) उत्पीड़ित समूहों के दृष्टिकोण से समाज का विश्लेषण करना।
बी.आर. अंबेडकर का अधीनस्थ परिप्रेक्ष्य इस विचार पर आधारित है कि समाज की सच्ची समझ केवल तभी प्राप्त की जा सकती है जब हम उसे सबसे निचले और शोषित वर्ग की नजरों से देखें। उन्होंने प्रभुत्वशाली जातियों और वर्ग द्वारा लिखे गए इतिहास और समाजशास्त्र की आलोचना की क्योंकि उसमें दलितों के संघर्ष और पीड़ा को नजरअंदाज किया गया था। यह परिप्रेक्ष्य सामाजिक न्याय, मानवाधिकार और वंचितों के सशक्तिकरण के मुद्दों को केंद्र में रखकर सामाजिक वास्तविकता का पुनर्निर्माण करने का प्रयास करता है।

88. (D) एक स्थिर संरचना के रूप में जो व्यवहार को निर्धारित करती है।
हरबर्ट ब्लूमर ने पारंपरिक समाजशास्त्रीय पद्धतियों की आलोचना करते हुए तर्क दिया कि वे समाज को एक जड़ और स्थिर संरचना के रूप में देखते हैं जो व्यक्तियों को केवल एक मोहरे की तरह नियंत्रित करती है। उनके अनुसार, यह दृष्टिकोण मानवीय चेतना और अर्थ निर्माण की प्रक्रिया की उपेक्षा करता है। ब्लूमर का मानना था कि सामाजिक वास्तविकता निरंतर अंतःक्रियाओं और व्याख्याओं के माध्यम से गतिशील रहती है। व्यक्ति नियमों का पालन केवल यंत्रवत नहीं करते, बल्कि वे हर स्थिति में अर्थों का निर्माण और संशोधन करते हैं।

89. (C) सावयवी एकजुटता
एमिल दुर्खीम के अनुसार, आधुनिक औद्योगिक समाजों में सावयवी एकजुटता पाई जाती है। यहाँ श्रम का जटिल विभाजन होता है, जिससे व्यक्ति विशिष्ट कार्यों में दक्ष होते हैं। इस विशिष्टता के कारण वे अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए दूसरों पर गहराई से निर्भर हो जाते हैं। यह आपसी निर्भरता ही समाज को एकजुट रखने वाले बंधन के रूप में कार्य करती है। सावयवी एकजुटता में व्यक्तिगत भिन्नताओं को स्वीकार किया जाता है और कानून मुख्य रूप से क्षतिपूर्ति या सहयोग पर आधारित होते हैं।

90. (A) सामाजिक अनुभव और संचार से
जॉर्ज हरबर्ट मीड का मानना था कि स्व कोई जैविक जन्मजात गुण नहीं है, बल्कि यह पूरी तरह से एक सामाजिक उत्पाद है। यह तब विकसित होता है जब व्यक्ति दूसरों के साथ संवाद करता है और उनके दृष्टिकोण से स्वयं को एक वस्तु के रूप में देखना शुरू करता है। प्रतीकात्मक अंतःक्रिया की इस प्रक्रिया के माध्यम से व्यक्ति सामाजिक मूल्यों और अपेक्षाओं को आंतरिक करता है। इस प्रकार, स्व के विकास के लिए समाज और सामाजिक अनुभव अनिवार्य माध्यम हैं, जिनके बिना चेतना का विकास संभव नहीं है।

91. (D) संस्कृतिकरण
एम.एन. श्रीनिवास ने संस्कृतिकरण की अवधारणा के माध्यम से स्पष्ट किया कि भारतीय जाति व्यवस्था कोई स्थिर ढांचा नहीं है, बल्कि इसमें गतिशीलता की संभावना मौजूद है। इसके तहत एक निम्न जाति अपनी अनुष्ठानिक और सामाजिक स्थिति को ऊँचा उठाने के लिए उच्च जातियों के आदर्शों, जीवन शैली और रीति-रिवाजों को अपनाती है। यद्यपि इससे जाति की मूल संरचना में कोई क्रांतिकारी परिवर्तन नहीं आता, लेकिन यह स्थानीय पदानुक्रम में उस विशेष जाति की स्थिति को बेहतर बनाने में सहायक होता है।

92. (A) व्युत्पत्तियां
विल्फ्रेडो पैरेटो के अनुसार, व्युत्पत्तियां वे मौखिक और बौद्धिक स्पष्टीकरण हैं जिनका उपयोग मनुष्य अपने अतार्किक कार्यों और अंतर्निहित अवशेषों को छिपाने या उन्हें तर्कसंगत दिखाने के लिए करता है। मनुष्य स्वाभाविक रूप से अपनी सहज प्रवृत्तियों से संचालित होता है, लेकिन वह समाज के सामने स्वयं को एक तार्किक प्राणी के रूप में प्रस्तुत करना चाहता है। ये व्युत्पत्तियां विचारधाराओं, सिद्धांतों या धार्मिक औचित्यों के रूप में हो सकती हैं, जो वास्तव में अतार्किक व्यवहार के लिए तर्क का भ्रम पैदा करती हैं।

93. (C) कथन 1 सही है, लेकिन कथन 2 गलत है।
लुई ड्यूमॉन्ट के अनुसार, पारंपरिक भारतीय समाज में धर्म और शुद्धता का क्षेत्र राजनीतिक और आर्थिक शक्ति से श्रेष्ठ था।

Click Here to Buy book on Amazon

को समझने वाले विज्ञान के रूप में विकसित किया। इसके विपरीत, दुर्खीम ने सामाजिक तथ्यों को वस्तुनिष्ठ वस्तुओं के रूप में देखने पर बल दिया जो व्यक्ति के बाहर स्थित होते हैं। वेबर और दुर्खीम के ये अलग-अलग दृष्टिकोण समाजशास्त्र की दो प्रमुख शाखाओं का प्रतिनिधित्व करते हैं।

167. (D) विद्रोह
रॉबर्ट मर्टन के अनुसार, विद्रोह अनुकूलन का वह रूप है जिसमें व्यक्ति समाज के मौजूदा लक्ष्यों और साधनों, दोनों को पूरी तरह से नकार देता है। विद्रोही केवल पुरानी व्यवस्था को छोड़ता ही नहीं, बल्कि वह उसे नए सामाजिक लक्ष्यों और नए स्वीकृत साधनों से बदलने का सक्रिय प्रयास करता है। यह अक्सर क्रांतिकारी आंदोलनों और बड़े सामाजिक परिवर्तनों का आधार बनता है। जहाँ अन्य प्रकार के अनुकूलन व्यवस्था के भीतर रहकर किए जाते हैं, वहीं विद्रोह पूरी व्यवस्था के पुनर्निर्माण की दिशा में एक साहसिक कदम है।

168. (C) प्राचीन काल से विकास पर ऐतिहासिक और तुलनात्मक परिप्रेक्ष्य के लिए।
जी.एस. घुरये ने भारतीय शहरों का अध्ययन करते समय एक व्यापक ऐतिहासिक और तुलनात्मक दृष्टिकोण अपनाया। उन्होंने केवल समकालीन समस्याओं पर ध्यान नहीं दिया, बल्कि प्राचीन ग्रंथों और पुरातात्विक साक्ष्यों के माध्यम से यह समझने की कोशिश की कि भारतीय नगरों का विकास कैसे हुआ है। उन्होंने ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों के बीच की निरंतरता और सांस्कृतिक संबंधों पर भी प्रकाश डाला। घुरये का यह कार्य भारतीय नगरीय समाजशास्त्र में ऐतिहासिक जड़ों को समझने के लिए एक महत्वपूर्ण आधार प्रदान करता है।

169. (A) दुर्खीम ने इसे मानदंडों के पतन के रूप में देखा; मर्टन ने इसे लक्ष्य-साधन के तनाव के रूप में देखा।
एनोमी की अवधारणा दुर्खीम और मर्टन के बीच अलग-अलग अर्थ रखती है। दुर्खीम के लिए, एनोमी वह स्थिति है जहाँ समाज के नियम और मानदंड अचानक टूट जाते हैं, जिससे व्यक्ति को कोई दिशा नहीं मिलती। इसके विपरीत, मर्टन ने इसे एक संरचनात्मक समस्या माना जहाँ समाज लक्ष्यों पर तो बहुत जोर देता है, लेकिन उन्हें प्राप्त करने के वैध साधन सबको उपलब्ध नहीं कराता। यह तनाव ही व्यक्ति को विचलित व्यवहार की ओर धकेलता है। दोनों विचारक सामाजिक अव्यवस्था के अलग-अलग कारणों को उजागर करते हैं।

170. (A) व्यक्तिवाद और समतावाद
लुई ड्यूमॉन्ट के अनुसार, आधुनिक पश्चिमी समाज की विचारधारा 'होमो एक्वलिस' पर आधारित है। यहाँ प्रत्येक व्यक्ति को स्वायत्त और समान माना जाता है, और व्यक्ति की स्वतंत्रता ही समाज का सर्वोच्च मूल्य है। यह भारतीय समाज के पदानुक्रमित और समग्रतावादी स्वरूप के बिल्कुल विपरीत है। ड्यूमॉन्ट का मानना था कि पश्चिम में समानता को एक नैतिक आदर्श के रूप में स्थापित किया गया है, जिसके कारण वहाँ की सामाजिक संरचना और संस्थाएं भारतीय जाति व्यवस्था से मौलिक रूप से भिन्न दिखाई देती हैं।

171. (B) केवल 1 और 2
एम.एन. श्रीनिवास के कार्य के संबंध में पहले दो कथन सही हैं। उन्होंने रामपुरा गाँव में गहन क्षेत्रीय कार्य किया और ग्रामीण शक्ति संरचना को समझने के लिए प्रभु जाति की महत्वपूर्ण अवधारणा दी। हालांकि, तीसरा कथन गलत है क्योंकि श्रीनिवास ने स्पष्ट किया था कि संस्कृतिकरण केवल स्थितिजन्य परिवर्तन लाता है, न कि संरचनात्मक। इसका अर्थ है कि एक जाति पदानुक्रम में अपनी जगह बदल सकती है, लेकिन वह पूरी जाति व्यवस्था के ढांचे या उसके बुनियादी नियमों को नहीं बदलती।

172. (B) 'अछूतों' की सैद्धांतिक और व्यावहारिक मुक्ति।
बी.आर. अंबेडकर का संपूर्ण बौद्धिक कार्य दलितों और शोषित वर्गों की मुक्ति के लिए समर्पित था। उन्होंने केवल शैक्षणिक स्तर पर जाति का विश्लेषण नहीं किया, बल्कि उसे व्यावहारिक रूप से बदलने के लिए संघर्ष किया। अंबेडकर ने जाति व्यवस्था की धार्मिक जड़ों को चुनौती दी, मानवाधिकारों की वकालत की और दलितों के राजनीतिक व सामाजिक सशक्तिकरण के लिए कानूनी ढांचे का निर्माण किया। उनका अंतिम लक्ष्य एक ऐसे समाज की स्थापना करना था जो स्वतंत्रता, समानता और बंधुत्व के सिद्धांतों पर आधारित हो।

173. (D) समाज के आकार और संरचना का, जिसमें जनसंख्या वितरण शामिल है।
दुर्खीम और रेडक्लिफ-ब्राउन के अनुसार, सामाजिक आकारिकी समाज के भौतिक और सांख्यिकीय पक्ष का अध्ययन है। इसमें समाज की जनसंख्या का आकार, उसका घनत्व, भौगोलिक वितरण और विभिन्न समूहों के बीच की भौतिक सीमाओं का विश्लेषण किया जाता है। जैसे जीव विज्ञान में आकारिकी शरीर की बनावट का अध्ययन करती है, वैसे ही समाजशास्त्र में यह समाज के बाहरी ढांचे को समझने में मदद करती है। यह अध्ययन सामाजिक जीवन की क्रियाओं और प्रकार्यों को समझने के लिए एक ठोस आधार प्रदान करता है।

174. (B) टैलकॉट पार्सन्स
एजीआईएल ढांचा टैलकॉट पार्सन्स के संरचनात्मक-प्र प्रकार्यात्मक सिद्धांत का हृदय है। यह चार प्रकार्यात्मक आवश्यकताओं—अनुकूलन, लक्ष्य प्राप्ति, एकीकरण और प्रच्छन्नता—को दर्शाता है जो किसी भी सामाजिक व्यवस्था के जीवित रहने और संतुलन बनाए रखने के लिए अनिवार्य हैं। पार्सन्स ने तर्क दिया कि यदि कोई समाज इनमें से किसी भी कार्य को पूरा करने में विफल रहता है, तो वह बिखर जाएगा। यह मॉडल वैश्विक स्तर पर समाज को एक जटिल और परस्पर निर्भर व्यवस्था के रूप में विश्लेषण करने के लिए उपयोग किया जाता है।

175. (D) आध्यात्मिक मूल्य
राधा कमल मुखर्जी ने मूल्यों का एक पदानुक्रम प्रस्तुत किया, जिसमें उन्होंने आध्यात्मिक मूल्यों को सर्वोच्च स्थान दिया। उनके अनुसार, आर्थिक, सामाजिक और राजनीतिक मूल्य जीवन के व्यावहारिक पक्षों के लिए आवश्यक हैं, लेकिन मानवीय आत्मा और समाज की पूर्णता केवल आध्यात्मिक मूल्यों के

Downloaded from www.pdf.tube

भीतर कैसे अघोषित और अनौपचारिक प्रतिमान विकसित होते हैं जो व्यवस्था के लचीलेपन को बनाए रखते हैं।

248. (B) ए.आर. रेडक्लिफ-ब्राउन
सामाजिक संरचना और सामाजिक संगठन के बीच स्पष्ट अंतर स्थापित करना ए.आर. रेडक्लिफ-ब्राउन का समाजशास्त्र में एक महत्वपूर्ण योगदान है। ब्राउन के लिए, सामाजिक संरचना संबंधों का वह स्थिर और संस्थागत ढांचा है जो व्यवस्था को आकार देता है। इसके विपरीत, सामाजिक संगठन उस ढांचे के भीतर होने वाली व्यक्तियों की वास्तविक गतिविधियों और उनके व्यवहार के व्यावहारिक प्रबंधन को दर्शाता है। यह अंतर समाज के 'स्थिर' और 'गतिशील' पक्षों को अलग-अलग समझने में मदद करता है, जिससे सामाजिक जीवन का विश्लेषण अधिक सटीक और वैज्ञानिक बन जाता है।

249. (B) रुढ़िवादी हैं और समूहों के स्थायित्व पर भरोसा करते हैं।
विल्फ्रेडो पैरेटो के अनुसार, शेर वे शासक होते हैं जिनमें वर्ग 2 के अवशेष की प्रधानता होती है। ये लोग परंपराओं के प्रति वफादार होते हैं, देशभक्ति की भावना रखते हैं और सामाजिक स्थिरता को बनाए रखने के लिए बल प्रयोग करने से नहीं हिचकते। वे लोमड़ियों की तरह चालाक या नवाचारी नहीं होते, बल्कि वे व्यवस्था को उसकी पुरानी जड़ों से जोड़कर रखने में विश्वास करते हैं। जब समाज को सुरक्षा और निरंतरता की आवश्यकता होती है, तब शेरों का प्रभुत्व बढ़ जाता है।

250. (A) वर्षा लाना।
रॉबर्ट मर्टन के अनुसार, प्रकट प्रकार्य वह घोषित और सचेत उद्देश्य है जिसके लिए कोई सामाजिक गतिविधि की जाती है। यदि कोई जनजाति वर्षा नृत्य करती है, तो उनका प्रत्यक्ष और इच्छित लक्ष्य वर्षा करवाना होता है। यह परिणाम नर्तकों और समाज के अन्य सदस्यों द्वारा स्पष्ट रूप से पहचाना जाता है। इसके विपरीत, इस नृत्य के माध्यम से लोगों का एक साथ आना और सामाजिक एकता का बढ़ना उसका प्रच्छन्न प्रकार्य होगा, जो अनपेक्षित लेकिन महत्वपूर्ण सामाजिक परिणाम है।

251. (A) कथन 1 और कथन 2 दोनों सही हैं।
राल्फ डहरेंडोर्फ के अनुसार, प्रत्येक अनिवार्य रूप से समन्वित संघ में अधिकार और सत्ता का असमान वितरण होता है। एक समूह के पास आदेश देने की शक्ति होती है, जबकि दूसरा उसके अधीन होता है। यह पदानुक्रमित संरचना ही संघर्ष की जड़ है, क्योंकि शासक और शासित के प्रच्छन्न हित हमेशा एक-दूसरे के विपरीत होते हैं। डहरेंडोर्फ का मानना था कि जहाँ भी सत्ता का अंतर है, वहाँ संघर्ष की संभावना हमेशा बनी रहती है, जो समाज में निरंतर परिवर्तन और विकास को गति प्रदान करती है।

252. (C) प्रतीकात्मक अंतःक्रियावाद
प्रतीकात्मक अंतःक्रियावाद का मूल आधार यह विचार है कि सामाजिक वास्तविकता कोई पहले से तय या बाहरी वस्तु नहीं है। इसके बजाय, यह उन अर्थों और व्याख्याओं का उत्पाद है जो व्यक्ति अपनी दैनिक अंतःक्रियाओं के दौरान एक-दूसरे को देते हैं। समाज व्यक्तियों के बीच होने वाले निरंतर प्रतीकात्मक संवाद का परिणाम है। इस परिप्रेक्ष्य में, व्यक्ति केवल नियमों का पालन करने वाले निष्क्रिय मोहरे नहीं हैं, बल्कि वे सक्रिय रूप से अपनी सामाजिक दुनिया की व्याख्या करते हैं और उसे हर पल निर्मित और पुनर्निर्मित करते रहते हैं।

253. (B) रॉबर्ट के. मर्टन
रॉबर्ट मर्टन ने प्रकार्यवाद के साथ ही ज्ञान के समाजशास्त्र में भी महत्वपूर्ण योगदान दिया है। उन्होंने यह विश्लेषण किया कि कैसे सामाजिक संरचना, वर्ग और संस्थागत परिवेश मानवीय ज्ञान, वैज्ञानिक खोजों और विचारों के स्वरूप को प्रभावित करते हैं। मर्टन ने विज्ञान के समाजशास्त्र को एक विशिष्ट क्षेत्र के रूप में विकसित किया, जहाँ उन्होंने वैज्ञानिकों के व्यवहार को नियंत्रित करने वाले मानदंडों की पहचान की। यह कार्य दिखाता है कि कैसे हमारा ज्ञान और सोच हमारे सामाजिक परिवेश की उपज होते हैं।

254. (C) पाठ्य स्रोतों से प्राप्त ब्राह्मण-केंद्रित दृष्टिकोण प्रस्तुत करने के लिए।
जी.एस. घुरये के भारतविद्या परिप्रेक्ष्य की सबसे बड़ी आलोचना यह है कि उन्होंने प्राचीन संस्कृत ग्रंथों को ही भारतीय समाज का एकमात्र सत्य मान लिया। चूँकि ये ग्रंथ मुख्य रूप से ब्राह्मणों द्वारा लिखे गए थे, इसलिए उनके विश्लेषण में उच्च जातियों के आदर्शों और पदानुक्रम को ही पूरी भारतीय संस्कृति का प्रतिनिधि मान लिया गया। इस दृष्टिकोण ने निचली जातियों, महिलाओं और गैर-ब्राह्मण समूहों की वास्तविकताओं और उनकी अपनी परंपराओं की उपेक्षा की। आलोचकों के अनुसार, यह एक पक्षपाती और सीमित दृष्टिकोण था जो सामाजिक विविधता को नहीं समझा सका।

255. (C) रामपुरा गाँव
एम.एन. श्रीनिवास ने प्रभु जाति की अपनी अत्यंत प्रभावशाली अवधारणा मैसूर के रामपुरा गाँव में किए गए गहन क्षेत्रीय कार्य के दौरान विकसित की थी। उन्होंने देखा कि गाँव की सामाजिक और राजनीतिक व्यवस्था किसी एक जाति के इर्द-गिर्द घूमती है, जिसके पास पर्याप्त भूमि, संख्या बल और स्थानीय प्रशासन पर नियंत्रण होता है। रामपुरा में ओक्कालिगा जाति का यह दबदबा श्रीनिवास के लिए इस अवधारणा को गढ़ने का आधार बना। इस अध्ययन ने भारतीय ग्रामीण समाज में शक्ति संबंधों के विश्लेषण का एक नया मार्ग प्रशस्त किया।

256. (B) यह एक पदानुक्रमित व्यवस्था है जो स्थायी रूप से व्यवसाय आवंटित करती है।
बी.आर. अंबेडकर ने तर्क दिया कि जाति व्यवस्था केवल काम का बंटवारा नहीं है, बल्कि वह उन लोगों का भी बंटवारा है जो काम करते हैं। उनके अनुसार, यह एक अकुशल और दमनकारी व्यवस्था है जो व्यक्ति की रुचि या योग्यता के बजाय उसके जन्म के आधार पर उसे एक निश्चित व्यवसाय में स्थायी रूप से बांध देती है। यह विभाजन एक पदानुक्रमित रूप में होता है जहाँ कुछ कामों और श्रमिकों को दूसरे की तुलना में नीचा और अपवित्र माना जाता है, जिससे सामाजिक अन्याय बढ़ता है।

NODIA

संस्थाएं या प्रथाएं समाज के कुछ वर्गों के लिए हानिकारक या विघटनकारी भी हो सकती हैं। इस विचार ने समाजशास्त्रियों को समाज में मौजूद तनावों, संघर्षों और परिवर्तन की आवश्यकताओं का विश्लेषण करने के लिए एक वैज्ञानिक आधार प्रदान किया।

185. (B) सत्ता
राल्फ डहरेंडोर्फ का मानना था कि आधुनिक औद्योगिक समाजों में सामाजिक वर्गों का निर्माण अब केवल संपत्ति के स्वामित्व पर आधारित नहीं है। उन्होंने तर्क दिया कि वर्गों की पहचान इस आधार पर होती है कि किसी व्यक्ति के पास किसी संगठन या संस्था के भीतर अधिकार और सत्ता है या नहीं। डहरेंडोर्फ के अनुसार, समाज अनिवार्य रूप से समन्वित संघों में बंटा हुआ है, जहाँ सत्ता का प्रयोग करने वाले और उसके अधीन रहने वाले समूहों के बीच के हितों का टकराव ही संघर्ष का मुख्य कारण है।

186. (A) 3, 1, 4, 2
भारतीय समाजशास्त्रियों का कालानुक्रमिक क्रम उनके वैचारिक विकास और संस्थागत योगदान को समझने में मदद करता है। राधा कमल मुखर्जी (1889-1968) ने लखनऊ स्कूल के माध्यम से मूल्यों का समाजशास्त्र विकसित किया। उनके बाद जी.एस. घुरये (1893-1983) आए, जिन्हें बॉम्बे स्कूल का संस्थापक माना जाता है। बी.आर. अंबेडकर (1891-1956) ने सामाजिक न्याय और दलितों की मुक्ति के लिए महत्वपूर्ण कार्य किया। अंत में, एम.एन. श्रीनिवास (1916-1999) ने आधुनिक समाजशास्त्रीय पद्धतियों और ग्रामीण अध्ययनों को एक नई दिशा प्रदान की।

187. (C) लुई ड्यूमॉन्ट
लुई ड्यूमॉन्ट ने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक 'होमो हाइरार्कस' में यह तर्क दिया कि भारतीय जाति व्यवस्था को समझने के लिए शुद्ध और अशुद्ध के बीच का विरोध ही एकमात्र मौलिक सिद्धांत है। उनके अनुसार, यह धार्मिक विरोध ही तय करता है कि कौन पदानुक्रम में ऊपर होगा और कौन नीचे। ड्यूमॉन्ट ने पदानुक्रम को भारतीय समाज की विशिष्ट विशेषता माना, जो पश्चिम के समानता के विचार से बिल्कुल अलग है। यह विचार जाति व्यवस्था के भीतर के नियमों, निषेधों और सामाजिक संबंधों को समझने का आधार प्रदान करता है।

188. (C) व्यक्तियों का एक निश्चित 'स्व' होता है जो उनके कार्यों को निर्धारित करता है।
हरबर्ट ब्लूमर के प्रतीकात्मक अंतःक्रियावाद के अनुसार, "स्व" कोई पहले से तय या स्थिर वस्तु नहीं है जो मानवीय कार्यों को मशीनी ढंग से निर्धारित करे। इसके बजाय, ब्लूमर ने तर्क दिया कि स्व एक निरंतर चलने वाली प्रक्रिया है। व्यक्ति हर नई स्थिति में अर्थों का निर्माण करता है, दूसरों के संकेतों की व्याख्या करता है और फिर अपना व्यवहार तय करता है। उनके लिए मानवीय क्रिया रचनात्मक और व्याख्यात्मक होती है, न कि केवल बाहरी सामाजिक संरचनाओं या पहले से बने स्व का परिणाम।

189. (B) बहुविध परंपराओं के बीच।
एस.सी. दुबे का मानना था कि भारतीय गाँवों का सामाजिक जीवन अत्यंत जटिल है क्योंकि यहाँ कई प्रकार की परंपराएं एक साथ मौजूद होती हैं। उन्होंने तर्क दिया कि गाँव को केवल एक अखंड इकाई के रूप में नहीं देखा जा सकता। इसे समझने के लिए शास्त्रीय ग्रंथों की महान परंपरा, स्थानीय रीति-रिवाजों की लघु परंपरा, और बाहरी पश्चिमी प्रभावों के बीच होने वाली निरंतर अंतःक्रिया और संघर्ष का विश्लेषण करना आवश्यक है। यह दृष्टिकोण भारतीय ग्रामीण समाज की विविधता और उसमें होने वाले गतिशील परिवर्तनों को अधिक गहराई से स्पष्ट करता है।

190. (B) वर्ग 2 अवशेष
विल्फ्रेडो पैरेटो ने 'रेंटियर' को वर्ग 2 के अवशेषों से जोड़ा, जिसकी विशेषता समूहों का स्थायित्व है। ये लोग स्वभाव से रूढ़िवादी, मितव्ययी और जोखिम न लेने वाले होते हैं। वे पुराने संबंधों, परंपराओं और सुरक्षा को अधिक महत्व देते हैं। पैरेटो ने इनकी तुलना शेरों से की, जो व्यवस्था को स्थिरता प्रदान करते हैं। इसके विपरीत, 'सट्टेबाज' वर्ग 1 के अवशेषों से जुड़े होते हैं जो नवाचार और कूटनीति पर भरोसा करते हैं, जिन्हें पैरेटो ने लोमड़ी कहा था।

191. (B) हितों की उस सहमति को जो समाज के सदस्यों को एकजुट करती है।
रेडक्लिफ-ब्राउन के अनुसार, सामाजिक मूल्य वे साझा विश्वास और भावनाएं हैं जो समाज के सदस्यों के बीच एक प्रकार की एकता और सहमति पैदा करते हैं। ये मूल्य केवल व्यक्तिगत पसंद नहीं होते, बल्कि वे सामाजिक संरचना की स्थिरता के लिए अनिवार्य होते हैं। जब समाज के अधिकांश लोग कुछ विशिष्ट आदर्शों या नियमों को स्वीकार करते हैं, तो उनके बीच एक सामान्य सामाजिक रुचि पैदा होती है। यही रुचि या सहमति समाज को बिखरने से बचाती है और व्यक्तियों के व्यवहार में तालमेल सुनिश्चित करती है।

192. (C) लुईस कोज़र
लुईस कोज़र ने यह महत्वपूर्ण विचार प्रस्तुत किया कि सामाजिक संघर्ष हमेशा विघटनकारी नहीं होता। यदि समाज में संघर्षों को व्यक्त करने के लिए उचित माध्यम और लचीलापन हो, तो वे एक सुरक्षा-वाल्व की तरह कार्य करते हैं। इसके माध्यम से समूह के भीतर का तनाव और असंतोष बाहर निकल जाता है, जिससे व्यवस्था के बड़े और विनाशकारी टूटने की संभावना कम हो जाती है। संघर्ष के माध्यम से नई संधियाँ होती हैं और व्यवस्था अधिक संतुलित बनती है, जो सामाजिक सामंजस्य को लंबे समय तक बनाए रखती है।

193. (C) कथन 1 सही है, लेकिन कथन 2 गलत है।
टैलकॉट पार्सन्स का प्रतिमान चर 'सार्वभौमिकता बनाम विशिष्टतावाद' यह दर्शाता है कि कोई व्यक्ति किसी स्थिति में सामान्य नियमों का पालन करता है या व्यक्तिगत संबंधों को प्राथमिकता देता है। एक न्यायाधीश द्वारा सभी नागरिकों पर बिना भेदभाव के समान कानून लागू करना सार्वभौमिकता का उदाहरण है, न कि विशिष्टतावाद का। विशिष्टतावाद तब होता

Click Here to Buy book on Amazon

देशों और धर्मों के आंकड़ों का उपयोग करके दिखाया कि आत्महत्या की दरें समाज में एकीकरण और नियमन के स्तरों पर निर्भर करती हैं। इस अध्ययन ने यह स्थापित किया कि समाजशास्त्र व्यक्तिगत मनोवैज्ञानिक अवस्थाओं के बजाय उन व्यापक सामाजिक कारकों का अध्ययन करता है जो मानवीय व्यवहार को प्रभावित करते हैं।

230. (C) तार्किक-कानूनी सत्ता
मैक्स वेबर के अनुसार, नौकरशाही तार्किक-कानूनी सत्ता का शुद्धतम और सबसे कुशल रूप है। इसमें सत्ता किसी व्यक्ति के पास नहीं, बल्कि पद और निर्वैयक्तिक नियमों के पास होती है। नौकरशाही की मुख्य विशेषताएं स्पष्ट पदानुक्रम, योग्यता आधारित चयन, लिखित नियम और कार्यों का स्पष्ट विभाजन हैं। वेबर का मानना था कि आधुनिक औद्योगिक समाज के जटिल कार्यों को व्यवस्थित करने के लिए यह सबसे तार्किक तरीका है। हालांकि, उन्होंने नौकरशाही के बढ़ते प्रभाव और मानवीय स्वायत्तता के ह्रास के प्रति चिंता भी व्यक्त की थी।

231. (B) बाहरी वातावरण
टैलकॉट पार्सन्स के एजीआईएल ढांचे में अनुकूलन और लक्ष्य प्राप्ति को 'बाह्य' कार्यों के रूप में वर्गीकृत किया गया है। अनुकूलन का संबंध समाज द्वारा बाहरी वातावरण से संसाधनों को जुटाने और उनके साथ तालमेल बिठाने से है, जो मुख्य रूप से अर्थव्यवस्था का कार्य है। लक्ष्य प्राप्ति का संबंध समाज के बाहरी लक्ष्यों को तय करने और उन्हें हासिल करने के लिए संसाधनों को निर्देशित करने से है, जो राजनीति का कार्य है। ये दोनों प्रकार्य व्यवस्था और उसके आसपास के वातावरण के बीच के संबंधों को व्यवस्थित करते हैं।

232. (C) सांस्कृतिक लक्ष्यों और संस्थागत साधनों के बीच संरचनात्मक तनाव पर।
रॉबर्ट मर्टन ने एनोमी की अवधारणा को सामाजिक संरचना के संदर्भ में पुनर्परिभाषित किया। जहाँ दुर्खीम ने इसे मानदंडों के अभाव के रूप में देखा, वहीं मर्टन ने इसे एक विसंगति के रूप में देखा जहाँ समाज व्यक्तियों को कुछ निश्चित सफलता के लक्ष्य तो देता है, लेकिन उन्हें प्राप्त करने के वैध साधन सबको उपलब्ध नहीं कराता। यह तनाव ही व्यक्ति को विचलित व्यवहार करने के लिए मजबूर करता है, जो समाज में एनोमी पैदा करता है।

233. (C) जॉर्ज हरबर्ट मीड
ये सभी अवधारणाएं जॉर्ज हरबर्ट मीड के सामाजिक मनोविज्ञान और उनके प्रतीकात्मक अंतःक्रियावाद के मूल स्तंभ हैं। मीड ने स्पष्ट किया कि कैसे एक शिशु धीरे-धीरे क्रीड़ा और खेल के चरणों से गुजरते हुए दूसरों के दृष्टिकोण को समझना सीखता है। "सामान्यीकृत अन्य" वह अंतिम चरण है जहाँ व्यक्ति पूरे समाज की सामूहिक अपेक्षाओं को आंतरिक कर लेता है। ये अवधारणाएं यह समझने के लिए अनिवार्य हैं कि समाज कैसे व्यक्ति के भीतर प्रवेश करता है और कैसे व्यक्ति एक सचेत सामाजिक आत्म का निर्माण करता है।

234. (A) P-3, Q-4, R-1, S-2
समाजशास्त्रीय विचारकों ने अपनी पुस्तकों के माध्यम से महत्वपूर्ण सिद्धांतों को स्थापित किया है। विल्फ्रेडो पैरेटो ने 'द माइंड एंड सोसाइटी' में मानवीय भावनाओं और अवशेषों का विश्लेषण किया। राल्फ डहरेंडोर्फ ने औद्योगिक समाज में वर्ग संघर्ष के नए आयाम प्रस्तुत किए। लुईस कोज़र ने संघर्ष के प्रकार्यात्मक पक्षों को उजागर किया। कार्ल मार्क्स की 'दास कैपिटल' पूंजीवादी शोषण और आर्थिक आधार का गहन विश्लेषण करती है। ये पुस्तकें समाजशास्त्रीय चिंतन की विभिन्न धाराओं को समझने के लिए अनिवार्य स्रोत हैं।

NODIA

235. (C) पाठ्य, ऐतिहासिक और तुलनात्मक
जी.एस. घुरये ने भारतीय समाज के अध्ययन के लिए एक विशिष्ट पद्धति अपनाई जो प्राचीन ग्रंथों पर आधारित थी। उन्होंने संस्कृत साहित्य और ऐतिहासिक दस्तावेजों का उपयोग करके सामाजिक संस्थाओं जैसे जाति और नातेदारी के उद्भव और विकास को समझने का प्रयास किया। उनकी पद्धति तुलनात्मक भी थी क्योंकि उन्होंने विभिन्न क्षेत्रों और समयों के बीच सामाजिक प्रवृत्तियों की तुलना की। यद्यपि उन्होंने कुछ क्षेत्रीय कार्य भी किए, लेकिन उनकी मुख्य पहचान एक ऐसे विद्वान के रूप में है जिन्होंने भारतीय परंपराओं को उनके लिखित साक्ष्यों के माध्यम से समझा।

236. (B) एम.एन. श्रीनिवास और एस.सी. दुबे
भारत में संरचनात्मक-प्र प्रकार्यात्मक परिप्रेक्ष्य को लोकप्रिय बनाने में एम.एन. श्रीनिवास और एस.सी. दुबे का सबसे बड़ा योगदान रहा है। इन दोनों विद्वानों ने गाँवों के गहन क्षेत्रीय अध्ययन के माध्यम से यह दिखाया कि कैसे ग्रामीण समाज के विभिन्न अंग एक-दूसरे से जुड़े हुए हैं और एक सुसंगत सामाजिक व्यवस्था बनाए रखते हैं। उन्होंने केवल ग्रंथों के बजाय प्रत्यक्ष अवलोकन और नृवंशविज्ञानी पद्धति पर जोर दिया, जिससे भारतीय समाजशास्त्र में क्षेत्रीय कार्य और सूक्ष्म विश्लेषण की एक नई परंपरा शुरू हुई।

237. (C) सबसे उत्पीड़ित लोगों के दृष्टिकोण से सामाजिक वास्तविकता को देखना।
बी.आर. अंबेडकर का अधीनस्थ परिप्रेक्ष्य इस मूलभूत विचार पर आधारित है कि समाज की सच्ची और पूर्ण तस्वीर ऊपर बैठे शासक या प्रभुत्वशाली वर्ग के नजरिए से कभी नहीं मिल सकती। उनका मानना था कि समाज का वास्तविक चरित्र उन लोगों के अनुभवों में छिपा है जो सबसे नीचे हैं और जिन्होंने सदियों से शोषण और अपमान सहा है। यह परिप्रेक्ष्य सामाजिक अन्याय को उजागर करने और वंचित समुदायों की मानवीय गरिमा और अधिकारों की रक्षा के लिए एक शक्तिशाली सैद्धांतिक हथियार के रूप में कार्य करता है।

238. (B) मूल्यों पर आधारित सामाजिक पुनर्निर्माण के लिए।
राधा कमल मुखर्जी का मूल्यों का समाजशास्त्र केवल एक अकादमिक अध्ययन नहीं था, बल्कि उसका एक व्यापक सामाजिक उद्देश्य था। उन्होंने तर्क दिया कि आधुनिक समाज में आने वाले संकटों और अस्थिरता का समाधान केवल तभी संभव है जब हम समाज का पुनर्निर्माण नैतिक और आध्यात्मिक

कि समाजशास्त्रियों को ऐसे अनपेक्षित परिणामों के प्रति सचेत रहना चाहिए, क्योंकि वे सामाजिक वास्तविकता की गहरी और नई परतों को उजागर करने में मदद करते हैं।

203. (A) विल्फ्रेडो पैरेटो
विल्फ्रेडो पैरेटो ने अभिजात वर्ग के संचरण का सिद्धांत दिया, जो यह बताता है कि समाज में सत्ता का परिवर्तन एक निरंतर और चक्रीय प्रक्रिया है। उनके अनुसार, समाज कभी भी शासक विहीन नहीं होता; केवल एक प्रकार का शासक वर्ग दूसरे द्वारा प्रतिस्थापित किया जाता है। जब सत्ता में बैठा वर्ग अकुशल या कमजोर हो जाता है, तो निचले वर्ग से प्रतिभाशाली और महत्वाकांक्षी लोग ऊपर आते हैं और पुराने शासकों की जगह ले लेते हैं। यह सिद्धांत सामाजिक गतिशीलता और राजनीतिक सत्ता के वितरण को स्पष्ट करता है।

204. (A) कथन 1 और कथन 2 दोनों सही हैं और कथन 2, कथन 1 की सही व्याख्या है।
एम.एन. श्रीनिवास ने स्पष्ट किया कि संस्कृतिकरण की प्रक्रिया जाति व्यवस्था के भीतर ऊपर की ओर गतिशीलता का एक माध्यम तो है, लेकिन यह संरचना को बदलने वाली कोई क्रांतिकारी प्रक्रिया नहीं है। एक निचली जाति हिंदू रीति-रिवाजों को अपनाकर स्थानीय पदानुक्रम में अपनी प्रस्थिति तो सुधार सकती है, लेकिन वह जाति व्यवस्था के मूलभूत नियमों या उसके पदानुक्रमित ढांचे को चुनौती नहीं देती। अतः, यह परिवर्तन केवल सापेक्षिक प्रस्थिति तक सीमित रहता है, जबकि जाति व्यवस्था का मूल स्वरूप वैसा ही बना रहता है।

205. (B) एक समय में एक विशिष्ट, महत्वपूर्ण दूसरे की भूमिका निभाना।
जॉर्ज हरबर्ट मीड के अनुसार, क्रीड़ा चरण आत्म के विकास का वह स्तर है जहाँ बच्चा अपने आसपास के महत्वपूर्ण लोगों की नकल करना और उनकी भूमिकाएं निभाना शुरू करता है। वह कभी माता बनता है, कभी शिक्षक तो कभी पुलिसकर्मी। इस चरण में वह यह समझने लगता है कि दूसरे लोग उससे क्या अपेक्षा करते हैं और उनकी भूमिकाएं कैसी होती हैं। हालांकि, वह अभी तक पूरे समूह के नियमों को नहीं समझ पाता, लेकिन वह दूसरों के दृष्टिकोण से स्वयं को देखने की क्षमता विकसित करने लगता है।

206. (B) बुर्जुआ
कार्ल मार्क्स ने पूंजीवादी समाज को दो मुख्य वर्गों में विभाजित किया था। बुर्जुआ वे लोग हैं जिनके पास उत्पादन के साधनों जैसे कारखानों, मशीनों और कच्चे माल पर निजी स्वामित्व होता है। वे अपनी पूंजी का उपयोग करके लाभ कमाते हैं और श्रमिकों का शोषण करते हैं। इसके विपरीत, सर्वहारा वे हैं जिनके पास केवल अपना श्रम होता है जिसे वे जीवित रहने के लिए बुर्जुआ को बेचते हैं। मार्क्स के अनुसार, इन दोनों वर्गों के बीच का अंतर्निहित संघर्ष ही पूंजीवाद की नींव और उसके पतन का मुख्य कारण है।

207. (A) कठोर हैं और जिनमें शिकायतें व्यक्त करने के साधनों की कमी है।
लुईस कोज़र का तर्क था कि समाज की संरचना यह निर्धारित करती है कि संघर्ष कितना विनाशकारी होगा। यदि कोई सामाजिक व्यवस्था कठोर है और वह अपने सदस्यों के असंतोष को बाहर निकालने के लिए कोई रास्ता नहीं देती, तो वहाँ होने वाला संघर्ष बहुत हिंसक और विघटनकारी हो सकता है। बंद समाजों में छोटी शिकायतें जमा होकर एक बड़ा विस्फोट बन जाती हैं। इसके विपरीत, लचीले समाजों में छोटे संघर्ष बार-बार होते हैं और वे व्यवस्था में सुधार लाकर स्थिरता बनाए रखने में मदद करते हैं।

208. (B) एम.एन. श्रीनिवास
"द रिमेम्बर्ड विलेज" एम.एन. श्रीनिवास की एक प्रसिद्ध और उत्कृष्ट कृति है। यह पुस्तक मैसूर के पास स्थित रामपुरा गाँव के उनके गहन नृवंशविज्ञानी अध्ययन पर आधारित है। रोचक बात यह है कि श्रीनिवास ने इस पुस्तक को अपनी याददाश्त के आधार पर लिखा था क्योंकि उनके मूल शोध नोट्स शिकागो विश्वविद्यालय में एक अग्नि दुर्घटना में नष्ट हो गए थे। इस पुस्तक में उन्होंने गाँव की सामाजिक संरचना, जाति संबंधों और ग्रामीण जीवन की सूक्ष्मताओं का बहुत ही सजीव चित्रण प्रस्तुत किया है जो आज भी प्रासंगिक है।

209. (C) हाशिए पर रहने वाले लोगों के दृष्टिकोण से समाज को समझना।
अधीनस्थ परिप्रेक्ष्य समाजशास्त्र और इतिहास लेखन का वह दृष्टिकोण है जो प्रभुत्वशाली वर्गों के बजाय उन समुदायों के अनुभवों को प्राथमिकता देता है जो सामाजिक और आर्थिक रूप से शोषित रहे हैं। इसमें दलितों, आदिवासियों, श्रमिकों और महिलाओं की आवाजों को केंद्र में रखा जाता है। यह परिप्रेक्ष्य इस विचार को चुनौती देता है कि केवल शासक वर्ग या ग्रंथों के माध्यम से ही समाज को समझा जा सकता है। इसका उद्देश्य शोषितों के संघर्षों को पहचान देना और सामाजिक वास्तविकता की एक अधिक समावेशी और न्यायपूर्ण तस्वीर प्रस्तुत करना है।

210. (A) P-4, Q-2, R-1, S-3
एमिल दुर्खीम के समाजशास्त्रीय सिद्धांत के विभिन्न तत्व सामाजिक एकता और धर्म को समझने में मदद करते हैं। यांत्रिक एकजुटता समानता और साझा सामूहिक चेतना पर आधारित है, जो सरल समाजों में पाई जाती है। सावयवी एकजुटता आधुनिक समाजों की विशेषता है जहाँ श्रम विभाजन के कारण लोग एक-दूसरे पर निर्भर होते हैं। एनोमी मानदंडों के अभाव या नियमहीनता की स्थिति को दर्शाती है। पवित्र उन वस्तुओं या विचारों को कहते हैं जिन्हें समाज विशेष सम्मान देता है और जिन्हें सामान्य जीवन से अलग रखा जाता है।

211. (B) अर्थशास्त्र, पारिस्थितिकी और दर्शनशास्त्र
राधा कमल मुखर्जी एक बहुमुखी विचारक थे जिन्होंने समाजशास्त्र को केवल एक संकीर्ण विषय नहीं माना। उन्होंने समाज के अध्ययन में आर्थिक गतिविधियों, भौगोलिक पर्यावरण और नैतिक मूल्यों के बीच के गहरे संबंधों को उजागर

Downloaded from www.pdf.tube

माध्यम से ही प्राप्त की जा सकती है। ये मूल्य व्यक्ति को संकीर्ण स्वार्थों से ऊपर उठाकर सार्वभौमिक बंधुत्व और एकता की ओर ले जाते हैं। मुखर्जी का मानना था कि आध्यात्मिक चेतना ही वास्तविक सामाजिक प्रगति का अंतिम लक्ष्य होनी चाहिए।

176. (B) वह व्यवहार जो दूसरों के व्यवहार की ओर उन्मुख हो और जिसमें अर्थ समाहित हो।
मैक्स वेबर के अनुसार, प्रत्येक मानवीय क्रिया सामाजिक नहीं होती। सामाजिक क्रिया केवल वही है जहाँ कर्ता अपने व्यवहार के पीछे एक निश्चित अर्थ रखता है और वह व्यवहार दूसरों की संभावित प्रतिक्रिया को ध्यान में रखकर किया जाता है। उदाहरण के लिए, दो साइकिल सवारों का आपस में टकराना एक दुर्घटना हो सकती है, लेकिन टकराने के बाद बहस करना या माफी माँगना एक सामाजिक क्रिया है। वेबर ने इस अर्थपूर्ण व्यवहार को ही समाजशास्त्र की अध्ययन वस्तु बनाने पर जोर दिया था।

177. (C) पूर्व-तैयारी, क्रीड़ा, खेल
जॉर्ज हरबर्ट मीड ने आत्म के विकास के लिए तीन मुख्य चरणों की पहचान की थी। पूर्व-तैयारी चरण में बच्चा बिना अर्थ समझे दूसरों की नकल करता है। क्रीड़ा चरण में वह एक समय में एक विशिष्ट व्यक्ति की भूमिका निभाना सीखता है। अंत में, खेल चरण में वह समूह के नियमों और सामान्यीकृत अन्य के दृष्टिकोण को समझने लगता है। ये चरण यह स्पष्ट करते हैं कि कैसे एक जैविक शिशु धीरे-धीरे एक सामाजिक प्राणी के रूप में विकसित होता है।

178. (A) टैलकॉट पार्सन्स और कार्ल मार्क्स
राल्फ डहरेंडोर्फ का संघर्ष सिद्धांत मुख्य रूप से कार्ल मार्क्स के वर्ग संघर्ष और टैलकॉट पार्सन्स के संरचनात्मक-प्र प्रकार्यवाद की प्रतिक्रिया और संशोधन है। उन्होंने मार्क्स के आर्थिक निर्धारणवाद को चुनौती दी और तर्क दिया कि संघर्ष का आधार संपत्ति नहीं बल्कि सत्ता है। वहीं, उन्होंने पार्सन्स के सामाजिक संतुलन और सामंजस्य के विचार की आलोचना करते हुए कहा कि संघर्ष समाज का एक स्वाभाविक और निरंतर हिस्सा है। डहरेंडोर्फ ने इन दोनों के बीच एक नया संघर्षवादी परिप्रेक्ष्य स्थापित किया।

179. (A) कथन 1 और कथन 2 दोनों सही हैं और कथन 2, कथन 1 की सही व्याख्या है।
प्रतीकात्मक अंतःक्रियावाद में यह माना जाता है कि "स्व" कोई पहले से तय इकाई नहीं है, बल्कि यह एक सामाजिक प्रक्रिया का परिणाम है। व्यक्ति दूसरों के साथ बातचीत करते समय उनकी प्रतिक्रियाओं और दृष्टिकोणों को समझता है और स्वयं को उनकी नजरों से देखना सीखता है। इस निरंतर चलने वाली सामाजिक अंतःक्रिया के माध्यम से ही व्यक्ति अपनी पहचान और आत्म-धारणा का निर्माण करता है। अतः, समाज और दूसरों के साथ संबंध ही वह आधार हैं जिनसे व्यक्ति का आत्म विकसित और परिष्कृत होता है।

180. (D) अधीनस्थ और उत्पीड़ित समूहों के
अधीनस्थ परिप्रेक्ष्य का मुख्य केंद्र समाज के वे वर्ग हैं जिन्हें इतिहास और मुख्यधारा के समाजशास्त्र में हाशिए पर रखा गया है। इसमें दलित, आदिवासी, महिलाएं, गरीब किसान और अन्य शोषित समुदायों के अनुभवों और संघर्षों का अध्ययन किया जाता है। यह दृष्टिकोण इस बात पर बल देता है कि समाज की वास्तविक तस्वीर ऊपर बैठे शासकों के बजाय नीचे से, यानी उत्पीड़ितों के दृष्टिकोण से ही स्पष्ट हो सकती है। इसका उद्देश्य इन समूहों की पहचान को पुनर्स्थापित करना और उनकी मुक्ति का मार्ग प्रशस्त करना है।

NODIA

181. (B) P-2, Q-1, R-4, S-3
समाजशास्त्रीय अवधारणाओं का उनके विचारकों के साथ गहरा संबंध है। एमिल दुर्खीम ने सावयवी एकजुटता की अवधारणा दी, जो आधुनिक समाजों में आपसी निर्भरता को दर्शाती है। मैक्स वेबर ने सामाजिक क्रिया को समाजशास्त्र के अध्ययन का केंद्र बनाया। एस.एफ. नाडेल ने सामाजिक संरचना को भूमिकाओं के एक जाल के रूप में परिभाषित किया, जो एक अमूर्त संरचना है। ब्रॉनिस्लॉ मैलिनोवस्की ने मानवीय आवश्यकताओं के सिद्धांत के माध्यम से संस्कृति और संस्थाओं के कार्यों को स्पष्ट किया। ये सभी विचार आधुनिक समाजशास्त्रीय विमर्श के आधारभूत स्तंभ हैं।

182. (C) तार्किक-कानूनी
मैक्स वेबर के अनुसार, तार्किक-कानूनी सत्ता वह है जहाँ शक्ति का प्रयोग स्थापित नियमों, कानूनों और प्रक्रियाओं के माध्यम से किया जाता है। एक पुलिस अधिकारी के पास जो अधिकार होते हैं, वे उसकी व्यक्तिगत शक्ति या परंपरा से नहीं, बल्कि उसे कानून द्वारा दिए गए पद से प्राप्त होते हैं। लोग उसकी आज्ञा का पालन इसलिए करते हैं क्योंकि वे उस कानूनी व्यवस्था की वैधता में विश्वास करते हैं जिसके तहत वह पद सृजित किया गया है। यह आधुनिक राज्य और नौकरशाही की मुख्य विशेषता है।

183. (C) ट्रोब्रियांड द्वीपवासी
ब्रॉनिस्लॉ मैलिनोवस्की ने प्रथम विश्व युद्ध के दौरान पापुआ न्यू गिनी के पास स्थित ट्रोब्रियांड द्वीपों पर अपना प्रसिद्ध क्षेत्रीय कार्य किया था। उन्होंने सहभागी अवलोकन की पद्धति अपनाई, जिसमें वे लंबे समय तक स्थानीय लोगों के साथ रहे और उनकी भाषा व संस्कृति को भीतर से समझा। उनके इस अध्ययन ने 'कुला' विनिमय, जादू और सामाजिक संगठन की नई समझ प्रस्तुत की। मैलिनोवस्की का यह कार्य आधुनिक नृवंशविज्ञान और प्रकार्यवाद के विकास में एक अत्यंत महत्वपूर्ण मील का पत्थर माना जाता है।

184. (B) एक रूढ़िवादी पूर्वाग्रह जो यह मानता है कि समाज में सब कुछ लाभदायक है।
रॉबर्ट मर्टन द्वारा प्रस्तुत दुष्प्रकार्य की अवधारणा ने प्रकार्यवाद को अधिक गतिशील और संतुलित बनाया। प्रारंभिक प्रकार्यवादी अक्सर यह मानते थे कि समाज की प्रत्येक संस्था केवल संतुलन और एकता बनाए रखने का कार्य करती है, जो एक रूढ़िवादी दृष्टिकोण था। मर्टन ने तर्क दिया कि कुछ

को पूरा करती है और व्यवस्था को बनाए रखने में योगदान देती है। जैसे परिवार बच्चों के पालन-पोषण का कार्य करता है, वैसे ही धर्म और कानून सामाजिक नियंत्रण सुनिश्चित करते हैं। यह परिप्रेक्ष्य सामाजिक स्थिरता और संतुलन पर विशेष बल देता है।

221. (C) मैक्स वेबर
मैक्स वेबर का मानना था कि आधुनिक समाज का सबसे विशिष्ट लक्षण 'तार्किकीकरण' की प्रक्रिया है। उनके अनुसार, पारंपरिक समाजों में व्यवहार रीति-रिवाजों और भावनाओं से संचालित होता था, लेकिन आधुनिक समाजों में यह गणना, दक्षता और निर्वैयक्तिक नियमों पर आधारित हो गया है। इस प्रक्रिया ने नौकरशाही, विज्ञान और आधुनिक पूंजीवाद को जन्म दिया। हालांकि, वेबर ने चेतावनी भी दी कि अत्यधिक तार्किकीकरण मनुष्य को एक 'लोहे के पिंजरे' में कैद कर सकता है, जहाँ मानवीय संवेदनाओं और मूल्यों की जगह केवल यंत्रवत दक्षता ले लेगी।

222. (C) समतावादी और व्यक्तिवादी
लुई ड्यूमॉन्ट ने तर्क दिया कि आधुनिक पश्चिमी समाज की विचारधारा भारतीय समाज से बिल्कुल विपरीत है। पश्चिम में प्रत्येक व्यक्ति को एक स्वतंत्र और स्वायत्त इकाई माना जाता है, जो समाज का सर्वोच्च मूल्य है। इसे 'व्यक्तिवाद' कहा जाता है। साथ ही, वहाँ 'समानता' को एक नैतिक और कानूनी आदर्श के रूप में स्थापित किया गया है। ड्यूमॉन्ट के अनुसार, पश्चिमी समाज 'होमो एक्वलिस' का प्रतिनिधित्व करता है, जहाँ पदानुक्रम को बुरा माना जाता है। यह तुलना भारतीय समाज के विशिष्ट पदानुक्रमित चरित्र को और अधिक स्पष्ट करने में मदद करती है।

223. (B) राल्फ डहरेंडोर्फ
राल्फ डहरेंडोर्फ की पुस्तक "क्लास एंड क्लास कॉन्फ्लिक्ट इन एन इंडस्ट्रियल सोसाइटी" संघर्ष सिद्धांत के क्षेत्र में एक शास्त्रीय रचना है। इस पुस्तक में डहरेंडोर्फ ने मार्क्स के वर्ग सिद्धांत की समीक्षा की और उसे आधुनिक औद्योगिक समाज के संदर्भ में सुधारा। उन्होंने तर्क दिया कि आधुनिक युग में वर्ग संघर्ष का मुख्य स्रोत संपत्ति का स्वामित्व नहीं बल्कि सत्ता और अधिकार का असमान वितरण है। इस पुस्तक ने संघर्ष को समाज की एक स्वाभाविक और रचनात्मक शक्ति के रूप में देखने का नया दृष्टिकोण प्रदान किया है।

224. (B) केवल 1 और 2
समाजशास्त्रीय अवधारणाओं के सही मिलान के संबंध में पहले दो युग्म बिल्कुल सही हैं। जॉर्ज हरबर्ट मीड ने "सामान्यीकृत अन्य" की अवधारणा दी, जो आत्म के सामाजिक विकास को समझाती है। रॉबर्ट मर्टन ने "प्रच्छन्न प्रकार्य" की बात की, जो किसी सामाजिक क्रिया के अनपेक्षित परिणामों को दर्शाता है। तीसरा युग्म गलत है क्योंकि "सामाजिक तथ्य" की अवधारणा राल्फ डहरेंडोर्फ की नहीं, बल्कि एमिल दुर्खीम की है। डहरेंडोर्फ मुख्य रूप से संघर्ष सिद्धांत और अनिवार्य रूप से समन्वित संघों के लिए जाने जाते हैं।

225. (C) तटस्थ
एम.एन. श्रीनिवास ने स्पष्ट किया कि पश्चिमीकरण की अवधारणा किसी प्रकार का नैतिक मूल्य निर्णय नहीं देती। यह केवल एक तटस्थ शब्द है जो उन परिवर्तनों को दर्शाता है जो ब्रिटिश शासन के प्रभाव में भारतीय समाज की तकनीक, संस्थाओं, विचारधारा और मूल्यों में आए थे। पश्चिमीकरण का अर्थ यह नहीं है कि ये परिवर्तन अच्छे हैं या बुरे, बल्कि यह केवल उनके होने की वास्तविकता को बताता है। श्रीनिवास का उद्देश्य सामाजिक परिवर्तनों का वस्तुनिष्ठ विश्लेषण करना था, न कि उन्हें नैतिक रूप से सही या गलत ठहराना।

226. (B) क्योंकि यह प्रकार्यों को व्यक्ति की जैविक और मनोवैज्ञानिक आवश्यकताओं तक ले जाता है।
ब्रॉनिस्लॉ मैलिनोवस्की के प्रकार्यवाद को व्यक्तिवादी इसलिए कहा जाता है क्योंकि उनका पूरा सिद्धांत इस विचार पर टिका है कि सामाजिक और सांस्कृतिक संस्थाएं मूल रूप से व्यक्ति के लिए मौजूद हैं। उनके अनुसार, संस्कृति का प्रत्येक अंग मानव की बुनियादी जैविक और मनोवैज्ञानिक जरूरतों को पूरा करने के लिए विकसित हुआ है। समाज की संरचना स्वयं में साध्य नहीं है, बल्कि वह व्यक्ति की आवश्यकताओं की पूर्ति का एक साधन मात्र है। यह दृष्टिकोण प्रकार्यवाद को मानवीय अनुभव के बहुत करीब ले आता है।

227. (A) कथन 1 और कथन 2 दोनों सही हैं और कथन 2, कथन 1 की सही व्याख्या है।
एस.एफ. नाडेल ने रेडक्लिफ-ब्राउन की सामाजिक संरचना की परिभाषा को अपर्याप्त माना। ब्राउन के लिए संरचना व्यक्तियों के बीच के उन संबंधों का जाल है जिन्हें हम वास्तव में समाज में देख सकते हैं। इसके विपरीत, नाडेल ने तर्क दिया कि संरचना कोई मूर्त वस्तु नहीं है, बल्कि यह भूमिकाओं के बीच के संबंधों से प्राप्त एक अमूर्त प्रतिमान या मॉडल है। नाडेल का मानना था कि संरचना को केवल सूक्ष्म भूमिका विश्लेषण के माध्यम से ही समझा जा सकता है, जो उसे एक उच्च स्तर के सैद्धांतिक अमूर्तन तक ले जाता है।

228. (B) एक अमूर्तन के रूप में 'संरचनात्मक रूप'
रेडक्लिफ-ब्राउन और एस.एफ. नाडेल के बीच संरचना को देखने के नजरिए में एक बड़ा दार्शनिक अंतर था। ब्राउन ने संरचना को सामाजिक संबंधों के एक वास्तविक और प्रत्यक्ष रूप से अवलोकनीय जाल के रूप में देखा। नाडेल ने इस विचार को चुनौती देते हुए तर्क दिया कि जो हम देखते हैं वह केवल व्यवहार है, जबकि संरचना उस व्यवहार के पीछे छिपा एक अमूर्त "संरचनात्मक रूप" है। नाडेल के लिए, यह रूप भूमिकाओं के आपसी संबंधों के विश्लेषण से प्राप्त होता है, जो सामाजिक वास्तविकता का एक सैद्धांतिक मॉडल प्रस्तुत करता है।

229. (C) यह आत्महत्या के व्यक्तिगत कृत्यों को सामाजिक कारणों से जोड़ता है।
एमिल दुर्खीम का 'सुसाइड' का अध्ययन समाजशास्त्र के इतिहास में एक मील का पत्थर है क्योंकि उन्होंने सिद्ध किया कि आत्महत्या जैसा सबसे व्यक्तिगत निर्णय भी वास्तव में सामाजिक शक्तियों द्वारा नियंत्रित होता है। उन्होंने विभिन्न

Click Here to Buy book on Amazon

किया। मुखर्जी का मानना था कि मानव जीवन को समग्रता में समझने के लिए इन विभिन्न क्षेत्रों का एकीकरण आवश्यक है। उनके इसी अंतःविषय दृष्टिकोण ने भारतीय समाजशास्त्र को एक व्यापक और दार्शनिक आधार प्रदान किया, जो प्राकृतिक और सामाजिक विज्ञानों के बीच एक सेतु की तरह कार्य करता है।

212. (B) समय के एक ही बिंदु पर समाज का अध्ययन।
ए.आर. रेडक्लिफ-ब्राउन ने समकालिक विश्लेषण पर विशेष बल दिया, जिसका अर्थ है समाज की संरचना और उसकी कार्यप्रणाली का अध्ययन उसके वर्तमान स्वरूप में करना। उनका मानना था कि समाजशास्त्रियों को इतिहास की अज्ञात गहराइयों में जाने के बजाय यह देखना चाहिए कि वर्तमान में विभिन्न सामाजिक संस्थाएं मिलकर व्यवस्था को कैसे बनाए रखती हैं। यह दृष्टिकोण ऐतिहासिक परिवर्तनों के बजाय व्यवस्था की स्थिरता और उसके आंतरिक तालमेल के विश्लेषण पर केंद्रित है। यह समाज को एक जीवित और सक्रिय ढांचे के रूप में समझने की एक वैज्ञानिक पद्धति है।

213. (B) प्रदत्त बनाम अर्जित
टैलकॉट पार्सन्स के अनुसार, प्रदत्त बनाम अर्जित का प्रतिमान चर यह तय करता है कि समाज में किसी व्यक्ति की स्थिति या उसके प्रति व्यवहार का आधार क्या होगा। 'प्रदत्त' का अर्थ है जन्म, जाति, लिंग या आयु जैसे वे गुण जो व्यक्ति को विरासत में मिलते हैं और जिन्हें बदला नहीं जा सकता। 'अर्जित' का अर्थ है शिक्षा, कौशल और व्यक्तिगत प्रदर्शन के माध्यम से प्राप्त की गई उपलब्धियां। पारंपरिक समाजों में प्रदत्त गुणों को महत्व दिया जाता है, जबकि आधुनिक समाजों में व्यक्ति के प्रदर्शन और उसकी अर्जित योग्यताओं को प्राथमिकता दी जाती है।

214. (C) राल्फ डहरेंडोर्फ
राल्फ डहरेंडोर्फ के संघर्ष सिद्धांत में अनिवार्य रूप से समन्वित संघों की अवधारणा केंद्रीय है। उनके अनुसार, समाज विभिन्न प्रकार के संगठनों और समूहों से बना है जहाँ सत्ता और अधिकार का वितरण हमेशा असमान होता है। प्रत्येक ऐसे संघ में वे लोग होते हैं जिनके पास अधिकार है और वे जो आज्ञा मानते हैं। इन दोनों पक्षों के बीच हितों का मौलिक विरोध होता है, जो सामाजिक संघर्ष को जन्म देता है और अंततः समाज में परिवर्तन का मुख्य कारक बनता है।

215. (A) संयोजनों की प्रवृत्ति और समूहों का स्थायित्व
विल्फ्रेडो पैरेटो ने मानवीय व्यवहार को संचालित करने वाले अवशेषों को छह वर्गों में विभाजित किया था, जिनमें से पहले दो सबसे महत्वपूर्ण हैं। वर्ग 1 'संयोजनों की प्रवृत्ति' है, जो नवाचार, चालाकी और नए विचार उत्पन्न करने की प्रेरणा देता है। वर्ग 2 'समूहों का स्थायित्व' है, जो परंपराओं के प्रति निष्ठा, रूढ़िवादिता और स्थिरता बनाए रखने पर बल देता है। पैरेटो के अनुसार, समाज में शक्ति का संतुलन इन्हीं दो प्रकार की प्रवृत्तियों के बीच होने वाले निरंतर उतार-चढ़ाव और संघर्ष से निर्धारित होता है।

216. (B) जी.एस. घुरये
जी.एस. घुरये ने भारतीय समाज के धार्मिक और सांस्कृतिक आयामों का बहुत विस्तार से अध्ययन किया। उन्होंने भारत के साधुओं और विभिन्न धार्मिक संप्रदायों पर एक महत्वपूर्ण पुस्तक 'साधुज ऑफ इंडिया' लिखी। इसमें उन्होंने साधुओं के सामाजिक संगठन, उनके इतिहास, विभिन्न अखाड़ों और भारतीय समाज व संस्कृति को अक्षुण्ण बनाए रखने में उनकी भूमिका का गहरा विश्लेषण किया। घुरये का यह कार्य दिखाता है कि कैसे धार्मिक संस्थाएं और परंपराएं भारतीय सामाजिक संरचना का एक अभिन्न हिस्सा रही हैं और वे कैसे समाज को प्रभावित करती हैं।

217. (B) प्रकट प्रकार्य
रॉबर्ट मर्टन के अनुसार, प्रकट प्रकार्य वे अवलोकित परिणाम हैं जो किसी सामाजिक गतिविधि या प्रतिमान के लिए सचेत रूप से निर्धारित किए जाते हैं और जिन्हें समाज के सदस्य स्पष्ट रूप से पहचानते हैं। ये वे कार्य हैं जिन्हें करने का उद्देश्य कर्ता को पहले से पता होता है और समाज उनसे उन्हीं परिणामों की अपेक्षा करता है। उदाहरण के लिए, चिकित्सालय का प्रकट प्रकार्य बीमारों का इलाज करना है। यह अवधारणा समाजशास्त्रियों को संस्थाओं के आधिकारिक और घोषित उद्देश्यों को उनके वास्तविक सामाजिक परिणामों से अलग करने में मदद करती है।

218. (B) सामाजिक अंतःक्रिया
हरबर्ट ब्लूमर के अनुसार, सामाजिक अंतःक्रिया ही वह मूल प्रक्रिया है जिससे समाज का निर्माण होता है। इसमें व्यक्ति केवल एक-दूसरे के प्रति प्रतिक्रिया नहीं करते, बल्कि वे एक-दूसरे के कार्यों, संकेतों और प्रतीकों की व्याख्या करते हैं। इस व्याख्या के माध्यम से अर्थ निकाले जाते हैं और फिर उन अर्थों के आधार पर अगला कदम तय किया जाता है। ब्लूमर का मानना था कि समाज कोई पहले से बना-बनाया ढांचा नहीं है, बल्कि यह निरंतर चलने वाली अंतःक्रियाओं और अर्थों के आदान-प्रदान का एक गतिशील परिणाम है।

NODIA

219. (D) कथन 1 गलत है, लेकिन कथन 2 सही है।
बी.आर. अंबेडकर ने जाति की उत्पत्ति के संबंध में आर्य आक्रमण सिद्धांत को पूरी तरह से नकार दिया था। उनका मानना था कि जाति कोई प्रजातीय भेद नहीं है। हालांकि, उन्होंने शूद्रों की उत्पत्ति के बारे में एक अनूठा तर्क दिया। अंबेडकर के अनुसार, शूद्र मूल रूप से सूर्यवंशी क्षत्रिय थे जो ब्राह्मणों के साथ संघर्ष के कारण पदानुक्रम में नीचे गिरा दिए गए। ब्राह्मणों ने उनके उपनयन संस्कार पर रोक लगा दी, जिससे वे चौथे वर्ण का हिस्सा बन गए। यह तर्क जाति के निर्माण में शक्ति और धार्मिक प्रतिबंधों की भूमिका को दर्शाता है।

220. (B) संरचनात्मक-प्र प्रकार्यवाद
संरचनात्मक-प्र प्रकार्यवाद समाज को एक ऐसी जटिल व्यवस्था के रूप में देखता है जिसके विभिन्न अंग एक साथ मिलकर कार्य करते हैं। इस सिद्धांत का मुख्य आधार यह है कि समाज की प्रत्येक संरचना या संस्था इसलिए अस्तित्व में है क्योंकि वह समाज की किसी न किसी बुनियादी आवश्यकता

मूल्यों के आधार पर करें। मुखर्जी चाहते थे कि समाजशास्त्र मानवीय मूल्यों को अध्ययन का केंद्र बनाए ताकि एक ऐसे सामंजस्यपूर्ण समाज का निर्माण किया जा सके जहाँ भौतिक प्रगति और आध्यात्मिक शांति के बीच संतुलन स्थापित हो सके।

239. (C) उत्पादन की पद्धति
कार्ल मार्क्स के अनुसार, किसी भी समाज का वास्तविक और मौलिक आधार उसकी 'उत्पादन की पद्धति' होती है। इसमें दो चीजें शामिल हैं: उत्पादन की शक्तियां और उत्पादन के संबंध। मार्क्स का तर्क था कि जिस तरह से समाज अपनी भौतिक आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए उत्पादन करता है, वही उस समाज के कानून, राजनीति, धर्म और विचारधारा को निर्धारित करता है। उत्पादन की पद्धति में परिवर्तन ही संपूर्ण सामाजिक व्यवस्था में क्रांतिकारी बदलाव लाता है।

240. (C) यह एक बाहरी और वस्तुनिष्ठ वास्तविकता है।
एमिल दुर्खीम ने समाजशास्त्र को एक कठोर विज्ञान बनाने के लिए 'सामाजिक तथ्यों को वस्तु के रूप में देखने' का नियम दिया। इसका अर्थ यह है कि सामाजिक तथ्य व्यक्ति के मन की उपज नहीं हैं, बल्कि वे व्यक्ति से स्वतंत्र एक बाहरी वास्तविकता हैं। उनका अध्ययन ठीक वैसे ही किया जाना चाहिए जैसे वैज्ञानिक प्रयोगशाला में भौतिक वस्तुओं का करते हैं। यह दृष्टिकोण समाजशास्त्रीय शोध में व्यक्तिगत पूर्वाग्रहों और दार्शनिक कल्पनाओं को हटाकर वस्तुनिष्ठता और वैज्ञानिक सटीकता लाने का प्रयास करता है।

241. (D) एनोमी
ब्रॉनिस्लॉ मैलिनोवस्की के अनुसार, एक संस्था समाज की वह संगठित इकाई है जो मानवीय आवश्यकताओं को पूरा करती है। उन्होंने इसके लिए एक निश्चित ढांचा दिया था जिसमें 'चार्टर', 'कार्मिक', 'मानदंड' और 'भौतिक उपकरण' शामिल हैं। एनोमी इस ढांचे का हिस्सा नहीं है क्योंकि एनोमी नियमहीनता या व्यवस्था के टूटने की स्थिति है, जबकि संस्था व्यवस्था बनाए रखने का साधन है। मैलिनोवस्की का उद्देश्य संस्थाओं की प्रकार्यात्मक बनावट को समझाना था।

242. (B) अस्तित्व की आवश्यक शर्तें
ए.आर. रेडक्लिफ-ब्राउन ने अपने बाद के लेखन में प्रकार्य शब्द के साथ जुड़ी अस्पष्टता को कम करने के लिए "अस्तित्व की आवश्यक शर्तें" वाक्यांश का सुझाव दिया। उनका तर्क था कि जिस प्रकार एक जीव को जीवित रहने के लिए कुछ विशिष्ट परिस्थितियों की आवश्यकता होती है, उसी प्रकार एक सामाजिक संरचना को निरंतर बने रहने के लिए कुछ प्रकार्यात्मक आवश्यकताओं को पूरा करना अनिवार्य होता है। यह बदलाव समाज को एक एकीकृत और व्यवस्थित ढांचे के रूप में देखने के उनके जैविक दृष्टिकोण को और अधिक वैज्ञानिक और स्पष्ट बनाने का प्रयास था।

243. (B) जॉर्ज हरबर्ट मीड
यह प्रसिद्ध अंतर जॉर्ज हरबर्ट मीड द्वारा आत्म के सामाजिक मनोविज्ञान को स्पष्ट करने के लिए किया गया था। मीड के अनुसार, "आई" व्यक्ति का वह हिस्सा है जो आवेगी, रचनात्मक और दूसरों की प्रतिक्रियाओं के प्रति तुरंत प्रतिक्रिया देने वाला होता है। इसके विपरीत, "मी" समाज की उन अपेक्षाओं और नियमों का आंतरिक रूप है जो व्यक्ति के व्यवहार को मर्यादित करते हैं। आत्म इन दोनों पक्षों के बीच निरंतर चलने वाली एक गतिशील प्रक्रिया है, जो सामाजिक अनुभव और संचार के माध्यम से विकसित होती है।

NODIA

244. (B) आदतों, रीति-रिवाजों और विरासत में मिले विश्वासों द्वारा निर्देशित होता है।
मैक्स वेबर के अनुसार, पारंपरिक क्रिया सामाजिक क्रिया का वह प्रकार है जो किसी तार्किक उद्देश्य या वर्तमान भावना के बजाय केवल लंबे समय से चले आ रहे रिवाजों और आदतों के कारण की जाती है। इसमें कर्ता यह नहीं सोचता कि वह कोई काम क्यों कर रहा है, बल्कि वह उसे केवल इसलिए करता है क्योंकि उसके पूर्वज ऐसा करते आए हैं या समाज में ऐसा करना एक रीत है। यह व्यवहार गहराई से स्थापित परंपराओं के प्रति अनियंत्रित प्रतिक्रिया है, जो सामाजिक जीवन में स्थिरता लाती है।

245. (C) परंपरा को एक गतिशील घटना के रूप में समझा जाना चाहिए।
एस.सी. दुबे ने भारतीय समाज में परंपरा के प्रति एक बहुत ही प्रगतिशील और यथार्थवादी दृष्टिकोण अपनाया। उन्होंने तर्क दिया कि परंपरा कोई जड़ या मृत वस्तु नहीं है जिसे केवल पुराने समय से जोड़कर देखा जाए। इसके विपरीत, परंपरा एक गतिशील प्रक्रिया है जो नई परिस्थितियों, आधुनिकता और बाहरी प्रभावों के साथ निरंतर अंतःक्रिया करती है और खुद को बदलती रहती है। दुबे के अनुसार, भारतीय समाज में परंपराओं की बहुलता है और उनकी यह परिवर्तनशीलता ही समाज के निरंतर विकास और अनुकूलन का मुख्य आधार है।

246. (B) केवल 1 और 2
लुई ड्यूमॉन्ट के सिद्धांत के संबंध में पहले दो कथन सत्य हैं। उन्होंने पारंपरिक और आधुनिक समाजों के बीच एक स्पष्ट और मौलिक विरोध को अपने विश्लेषण का आधार बनाया। साथ ही, उन्होंने भारतीय समाज को 'होमो हाइरार्कस' के रूप में चित्रित किया जो एक समग्र धार्मिक तर्क से संचालित होता है। हालांकि, तीसरा कथन गलत है क्योंकि ड्यूमॉन्ट का उद्देश्य किसी एक विचारधारा को दूसरे से श्रेष्ठ बताना नहीं था, बल्कि यह दिखाना था कि दोनों व्यवस्थाएं अपनी-अपनी मौलिक मान्यताओं पर आधारित हैं।

247. (B) रॉबर्ट के. मर्टन
मानदंडों के संस्थागत परिहार की अवधारणा रॉबर्ट मर्टन द्वारा दी गई थी। यह उस सामाजिक स्थिति को संदर्भित करती है जहाँ समाज के कुछ मानदंडों का उल्लंघन केवल बर्दाश्त ही नहीं किया जाता, बल्कि उसे एक प्रकार की संस्थागत स्वीकृति भी मिल जाती है। यह अक्सर तब होता है जब औपचारिक नियम वास्तविक सामाजिक व्यवहार या आवश्यकताओं के साथ तालमेल नहीं बिठा पाते। मर्टन ने इस अवधारणा का उपयोग यह दिखाने के लिए किया कि सामाजिक व्यवस्था के

है जब कोई व्यक्ति अपने परिवार या मित्र के लिए नियमों में ढील देता है। अतः, पहला कथन सही है, लेकिन न्यायाधीश का उदाहरण सार्वभौमिक मानदंडों के अनुप्रयोग को प्रदर्शित करता है।

194. (A) एमिल दुर्खीम
एमिल दुर्खीम को समाजशास्त्र को एक वैज्ञानिक और स्वतंत्र विषय के रूप में स्थापित करने का श्रेय दिया जाता है। उनका मुख्य तर्क था कि समाजशास्त्र को केवल मनोवैज्ञानिक या जैविक स्तर पर अध्ययन नहीं करना चाहिए, बल्कि उसे सामाजिक तथ्यों का अध्ययन करना चाहिए। सामाजिक तथ्य वे तरीके हैं जो व्यक्ति पर बाहर से दबाव डालते हैं और समाज की सामूहिक चेतना का हिस्सा होते हैं। दुर्खीम ने इस बात पर विशेष बल दिया कि इन तथ्यों का अध्ययन वस्तुनिष्ठ तरीके से, ठीक वैसे ही किया जाना चाहिए जैसे भौतिक वस्तुओं का किया जाता है।

195. (B) समाजशास्त्रीय विश्लेषण में नैतिक विचारों को एकीकृत करने का।
राधा कमल मुखर्जी का मानना था कि समाजशास्त्र को केवल शुष्क तथ्यों तक सीमित नहीं रहना चाहिए। उन्होंने तर्क दिया कि मानवीय मूल्य और नैतिकता सामाजिक जीवन का अनिवार्य हिस्सा हैं, इसलिए समाजशास्त्रीय विश्लेषण में उन्हें शामिल करना आवश्यक है। मुखर्जी ने पश्चिमी समाजशास्त्र के मूल्य-तटस्थ दृष्टिकोण की आलोचना की और एक ऐसे भारतीय समाजशास्त्र की वकालत की जो मूल्यों, धर्म और आध्यात्मिकता को सामाजिक विकास और संगठन के आधार के रूप में स्वीकार करे। यह उनके द्वारा प्रस्तावित मूल्यों के समाजशास्त्र का मुख्य उद्देश्य था।

196. (A) केवल 1 और 2
बी.आर. अंबेडकर के संबंध में पहले दो कथन सत्य हैं। उन्होंने दलितों के राजनीतिक अधिकारों के लिए अलग निर्वाचन क्षेत्र की पुरजोर वकालत की थी और अपने जीवन के अंतिम वर्षों में हिंदू धर्म की बुराइयों से व्यथित होकर बौद्ध धर्म अपना लिया था। हालांकि, तीसरा कथन गलत है क्योंकि अंबेडकर केवल राजनीतिक सशक्तिकरण को ही पर्याप्त नहीं मानते थे। उनका मानना था कि जाति के विनाश के लिए सामाजिक, शैक्षिक और विशेष रूप से धार्मिक सुधारों की भी उतनी ही आवश्यकता है जितनी कि राजनीतिक अधिकारों की।

197. (C) एक 'समाजशास्त्रीय चार्टर' के रूप में कार्य करना जो सामाजिक व्यवस्था को सही ठहराता है।
ब्रॉनिस्लॉ मैलिनोवस्की के अनुसार, मिथक केवल काल्पनिक कहानियाँ नहीं हैं, बल्कि वे समाज के लिए एक व्यावहारिक चार्टर की तरह कार्य करते हैं। मिथक सामाजिक संस्थाओं, रीति-रिवाजों और विशेषाधिकारों को एक पवित्र आधार और प्राचीन स्वीकृति प्रदान करते हैं। वे समाज के सदस्यों को यह बताते हैं कि व्यवस्था वैसी क्यों है जैसी वह दिखती है। इस प्रकार, मिथक सामाजिक निरंतरता बनाए रखने, नैतिक मूल्यों को सुदृढ़ करने और परंपराओं को पीढ़ी-दर-पीढ़ी हस्तांतरित करने में एक महत्वपूर्ण प्रकार्यात्मक भूमिका निभाते हैं।

198. (C) भारतविद्या परिप्रेक्ष्य
भारतविद्या या इंडोलॉजिकल परिप्रेक्ष्य भारतीय समाज के अध्ययन की वह पद्धति है जो क्षेत्रीय कार्य के बजाय प्राचीन भारतीय ग्रंथों, शास्त्रों और लिखित साहित्य को प्रमाण मानती है। जी.एस. घुरये और लुई ड्यूमॉन्ट जैसे विचारकों ने इस दृष्टिकोण का व्यापक उपयोग किया। इनका मानना था कि भारतीय संस्कृति की वास्तविक आत्मा और सामाजिक संस्थाओं के मूल स्वरूप को केवल संस्कृत ग्रंथों और शास्त्रीय परंपराओं के विश्लेषण के माध्यम से ही समझा जा सकता है। यह दृष्टिकोण भारतीय समाज को उसकी ऐतिहासिक और दार्शनिक निरंतरता में देखने का प्रयास करता है।

199. (B) भूमिकाएं
एस.एफ. नाडेल के अनुसार, सामाजिक संरचना के अंतिम और सबसे सूक्ष्म घटक भूमिकाएं हैं। उन्होंने तर्क दिया कि यद्यपि व्यक्ति संरचना के भीतर होते हैं, लेकिन संरचना का वास्तविक ढांचा उन भूमिकाओं से निर्मित होता है जो व्यक्ति निभाते हैं। भूमिकाएं ही वह माध्यम हैं जिनसे व्यक्ति एक-दूसरे से जुड़ते हैं और एक सामाजिक जाल का निर्माण करते हैं। नाडेल के लिए, संरचना को परिभाषित करने वाली स्थिरता इन्हीं भूमिकाओं के आपसी संबंधों के प्रतिमानों में निहित है, जो व्यक्तिगत परिवर्तनों के बावजूद बनी रहती है।

200. (A) धार्मिक मूल्यों और आर्थिक व्यवहार के बीच संबंधों का।
मैक्स वेबर की यह प्रसिद्ध पुस्तक प्रोटेस्टेंट धर्म के विशिष्ट मूल्यों और आधुनिक पूंजीवाद के उदय के बीच के गहरे संबंध का विश्लेषण करती है। वेबर ने तर्क दिया कि 'केल्विनवाद' जैसी प्रोटेस्टेंट शाखाओं ने परिश्रम, मितव्ययिता और सांसारिक सफलता को ईश्वरीय आशीर्वाद के रूप में देखने की शिक्षा दी। इन धार्मिक विश्वासों ने एक ऐसी आर्थिक मानसिकता तैयार की जिसने पूंजीवाद के विकास को गति प्रदान की। यह अध्ययन यह स्पष्ट करता है कि कैसे विचार और मूल्य भौतिक जगत की आर्थिक व्यवस्थाओं को आकार दे सकते हैं।

201. (C) व्यक्तिवादी
एमिल दुर्खीम ने अपने समाजशास्त्रीय अध्ययन 'सुसाइड' में आत्महत्या के चार प्रमुख प्रकारों की पहचान की थी: अहंकेंद्रित, परार्थवादी, विसंगतिपूर्ण, और भाग्यवादी। उन्होंने व्यक्तिवादी आत्महत्या जैसा कोई वर्गीकरण नहीं दिया था। दुर्खीम का मुख्य उद्देश्य यह दिखाना था कि आत्महत्या जैसा अत्यंत व्यक्तिगत कृत्य भी वास्तव में सामाजिक संरचना और समाज के भीतर एकीकरण व नियमन के स्तरों से प्रभावित होता है। ये प्रकार सामाजिक विसंगतियों के विभिन्न रूपों को प्रदर्शित करते हैं।

202. (B) वह अप्रत्याशित खोज जो नए सिद्धांत को प्रेरित करती है।
रॉबर्ट मर्टन की सेरेंडिपिटी की अवधारणा वैज्ञानिक अनुसंधान में उस स्थिति को संदर्भित करती है जहाँ एक शोधकर्ता किसी चीज़ की खोज कर रहा होता है और उसे अचानक कोई अनपेक्षित और महत्वपूर्ण तथ्य मिल जाता है। यह खोज अक्सर मौजूदा सिद्धांतों के लिए चुनौती बन जाती है या एक नए सैद्धांतिक दृष्टिकोण के विकास का आधार बनती है। मर्टन ने जोर दिया

Downloaded from www.pdf.tube

257. (B) मूल्य-तटस्थता और यांत्रिक मॉडलों के।
राधा कमल मुखर्जी ने पश्चिमी समाजशास्त्र के उस दृष्टिकोण का कड़ा विरोध किया जो समाज को केवल एक मशीनी व्यवस्था मानता था और मूल्य-तटस्थता के नाम पर नैतिकता की उपेक्षा करता था। मुखर्जी का मानना था कि मानवीय मूल्य ही समाज का प्राण हैं, और उनके बिना सामाजिक विज्ञान अधूरा है। उन्होंने एक ऐसे 'मूल्यों के समाजशास्त्र' की वकालत की जो यह स्पष्ट कर सके कि कैसे नैतिक और आध्यात्मिक आकांक्षाएं मानवीय व्यवहार और सामाजिक संस्थाओं को निर्देशित करती हैं। यह उनके द्वारा किया गया एक क्रांतिकारी वैचारिक सुधार था।

258. (B) सामाजिक क्रांति का
कार्ल मार्क्स के अनुसार, सामाजिक परिवर्तन तब होता है जब उत्पादन की शक्तियों का विकास इतना अधिक हो जाता है कि वे पुराने और सीमित उत्पादन के संबंधों के साथ तालमेल नहीं बिठा पातीं। यह असंगति समाज में एक गहरा विरोधाभास और वर्ग संघर्ष पैदा करती है। जब शोषित वर्ग इस विरोधाभास के प्रति सचेत हो जाता है, तो वह एक सामाजिक क्रांति के माध्यम से पुरानी व्यवस्था को उखाड़ फेंकता है और एक नई उत्पादन पद्धति स्थापित करता है, जो नए सामाजिक युग की शुरुआत होती है।

259. (C) समय के साथ समाज में होने वाले परिवर्तनों को।
समाज का कालक्रमिक अध्ययन वह पद्धति है जो सामाजिक संस्थाओं, संरचनाओं और व्यवहारों के ऐतिहासिक विकास का विश्लेषण करती है। इसमें यह देखा जाता है कि समय के बीतने के साथ समाज कैसे बदला है और किन कारणों ने इन परिवर्तनों को जन्म दिया है। यह समकालिक अध्ययन के विपरीत है जो केवल वर्तमान पर ध्यान देता है। कालक्रमिक दृष्टिकोण समाज की निरंतरता और परिवर्तन की प्रक्रियाओं को समझने के लिए अनिवार्य है, क्योंकि यह वर्तमान को अतीत के संदर्भ में स्पष्ट करने का प्रयास करता है।

260. (B) क्रीड़ा चरण
जॉर्ज हरबर्ट मीड के अनुसार, क्रीड़ा चरण में बच्चा दूसरों की भूमिकाएं निभाकर आत्म का विकास करना शुरू करता है। जब एक बच्ची अपनी माता के चश्मे से स्वयं को देखती है और माता की तरह व्यवहार करती है, तो वह एक "महत्वपूर्ण दूसरे" के दृष्टिकोण को आंतरिक कर रही होती है। यह प्रक्रिया उसे यह समझने में मदद करती है कि वह समाज के लिए एक वस्तु है और दूसरे उसके बारे में क्या सोचते हैं। यह आत्म-जागरूकता और सामाजिक व्यवहार सीखने की दिशा में एक प्रारंभिक और अत्यंत महत्वपूर्ण कदम है।

261. (B) विघटनकारी संघर्ष को रोकने वाला एक सुरक्षा-वाल्व तंत्र।
लुईस कोज़र का तर्क था कि यदि समाज में वास्तविक मुद्दों को लेकर छोटे-छोटे संघर्ष होते रहते हैं, तो वे एक सुरक्षा-वाल्व के रूप में कार्य करते हैं। ये संघर्ष लोगों को अपनी शिकायतों को व्यक्त करने और उन्हें हल करने का मौका देते हैं, जिससे समाज के भीतर बड़ा और विनाशकारी असंतोष जमा नहीं हो पाता। इस प्रकार, बार-बार होने वाले ये कम तीव्रता के संघर्ष सामाजिक व्यवस्था के लचीलेपन को बढ़ाते हैं और उसे पूरी तरह से टूटने से बचाते हैं, जो अंततः व्यवस्था की स्थिरता में योगदान देता है।

262. (C) विशिष्टता बनाम व्यापकता
टैलकॉट पार्सन्स के अनुसार, 'विशिष्टता बनाम व्यापकता' का प्रतिमान चर यह निर्धारित करता है कि किसी सामाजिक संबंध की सीमा कितनी विस्तृत होगी। 'विशिष्ट' संबंध वे होते हैं जो किसी खास उद्देश्य या कार्य तक सीमित होते हैं, जैसे विक्रेता और ग्राहक का संबंध। इसके विपरीत, 'व्यापक' संबंध वे होते हैं जिनमें व्यक्ति दूसरे के संपूर्ण व्यक्तित्व के साथ जुड़ा होता है और जिसमें कोई निश्चित सीमा नहीं होती, जैसे परिवार के सदस्यों के बीच का संबंध। यह चर आधुनिक और पारंपरिक संबंधों के अंतर को समझने में मदद करता है।

263. (C) एक संरचनात्मक अवधारणा, जो एक जाल में स्थिति को संदर्भित करती है
एस.एफ. नाडेल के लिए भूमिका केवल व्यवहार का तरीका नहीं थी, बल्कि वह सामाजिक संरचना का एक आधारभूत निर्माण खंड थी। उनके अनुसार, भूमिका एक व्यक्ति की उस स्थिति को दर्शाती है जो वह अन्य भूमिकाओं के सापेक्ष समाज के एक व्यवस्थित जाल में रखता है। नाडेल ने भूमिका को एक संरचनात्मक इकाई माना क्योंकि यह संबंधों के प्रतिमानों को परिभाषित करती है। इस दृष्टिकोण से, संरचना भूमिकाओं का एक ऐसा संगठन है जो समाज को उसका विशिष्ट रूप और स्थिरता प्रदान करता है, भले ही उसमें कार्य करने वाले व्यक्ति बदलते रहें।

264. (A) अर्थशास्त्र, शिक्षा और राजनीतिक संगठन
ब्रॉनिस्लॉ मैलिनोवस्की के अनुसार, साधनपरक आवश्यकताएं वे जरूरतें हैं जो समाज को संगठित रखने और मानवीय गतिविधियों को सुचारू रूप से चलाने के लिए अनिवार्य हैं। ये आवश्यकताएं सीधे जैविक नहीं होतीं, बल्कि वे संस्कृति और सामाजिक व्यवस्था को बनाए रखने का साधन होती हैं। अर्थशास्त्र संसाधनों के वितरण को संभालता है, शिक्षा नई पीढ़ी को ज्ञान और कौशल सौंपती है, और राजनीतिक संगठन समाज में नियम और व्यवस्था बनाए रखता है। ये संस्थाएं मिलकर मानव जीवन को एक व्यवस्थित सामाजिक ढांचा प्रदान करती हैं।

NODIA

265. (B) यांत्रिक और सावयवी
एमिल दुर्खीम ने सामाजिक एकजुटता के दो प्रमुख प्रकार बताए जो समाज के विकास के विभिन्न चरणों को दर्शाते हैं। यांत्रिक एकजुटता सरल और पारंपरिक समाजों में पाई जाती है जहाँ लोग समानता और साझा मूल्यों के आधार पर एक-दूसरे से जुड़े होते हैं। सावयवी एकजुटता आधुनिक औद्योगिक समाजों की पहचान है जहाँ श्रम के जटिल विभाजन के कारण लोग एक-दूसरे पर अपनी आवश्यकताओं के लिए निर्भर हो जाते हैं। दुर्खीम का मानना था कि समाज के अस्तित्व के लिए किसी न किसी प्रकार की एकजुटता का होना अनिवार्य है।

अध्याय 04
पद्धतिशास्त्र

1. निम्नलिखित में से कौन सामाजिक घटनाओं की प्रकृति को सबसे अच्छी तरह परिभाषित करता है?
(A) वे समय के साथ स्थिर और अपरिवर्तनीय होती हैं।
(B) वे मानवीय अंतःक्रिया, चेतना और साझा अर्थों में निहित होती हैं।
(C) वे भौतिक विज्ञान के समान सार्वभौमिक नियमों द्वारा शासित होती हैं।
(D) उनका विशेष रूप से आत्मनिरीक्षण और व्यक्तिगत चिंतन के माध्यम से अध्ययन किया जा सकता है।

2. सामाजिक अनुसंधान में प्रयुक्त वैज्ञानिक पद्धति को सबसे अच्छी तरह इस प्रकार समझा जा सकता है:
(A) अनुभवजन्य अन्वेषण और तार्किक तर्क की एक व्यवस्थित प्रक्रिया।
(B) सार्वभौमिक रूप से लागू होने वाले नियमों का एक कठोर समूह।
(C) एक ऐसी विधि जो समाज के बारे में पूर्ण और अंतिम सत्य की गारंटी देती है।
(D) एक दृष्टिकोण जो पूरी तरह से गुणात्मक व्याख्याओं पर निर्भर करता है।

3. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए और सही विकल्प का चयन कीजिए:
कथन I: व्यक्तिपरकता की समस्या इसलिए उत्पन्न होती है क्योंकि शोधकर्ता उस सामाजिक जगत का हिस्सा होता है जिसका वह अध्ययन कर रहा है।
कथन II: सामाजिक विज्ञान में 'तथ्य' की अवधारणा एक सामाजिक घटना के बारे में अनुभवजन्य रूप से सत्यापन योग्य कथन को संदर्भित करती है।
(A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
(B) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।
(C) कथन I सही है, लेकिन कथन II गलत है।
(D) कथन I गलत है, लेकिन कथन II सही है।

4. सामाजिक अनुसंधान के संदर्भ में, 'वस्तुनिष्ठता' मुख्य रूप से किसे संदर्भित करती है?
(A) शोधकर्ता की व्यक्तिगत मूल्यों और विश्वासों से पूरी तरह मुक्त होने की क्षमता।
(B) सामाजिक जगत की बाहरी और अपरिवर्तनीय वास्तविकता।
(C) किसी विशेष मुद्दे पर सभी शोध विषयों की सहमति।
(D) अनुसंधान प्रक्रिया में पक्षपात और पूर्वाग्रह को कम करने का प्रक्रियात्मक उद्देश्य।

5. सामाजिक अनुसंधान में एक 'तथ्य' को 'मूल्य' से इस प्रकार अलग किया जाता है कि तथ्य:
(A) व्यक्तिगत पसंद और नैतिक निर्णय पर आधारित होता है।
(B) शोधकर्ता द्वारा रखी गई एक व्यक्तिपरक राय है।
(C) एक अनुभवजन्य रूप से सत्यापन योग्य कथन है।
(D) एक सैद्धांतिक धारणा है जिसका परीक्षण नहीं किया जा सकता है।

6. निम्नलिखित में से कौन-सी सामाजिक घटनाओं के अध्ययन की एक प्राथमिक समस्या है जो इसे प्राकृतिक विज्ञानों से अलग करती है?
(A) किसी भी प्रतिरूप या नियमितता का पूर्ण अभाव।
(B) वस्तुनिष्ठता का मुद्दा और विषय वस्तु में शोधकर्ता की भागीदारी।
(C) डेटा एकत्र करने के तरीकों का अस्तित्वहीन होना।
(D) मात्रात्मक विश्लेषण के किसी भी रूप का उपयोग करने में असमर्थता।

7. निम्नलिखित अभिकथन (A) और कारण (R) को पढ़िए और सही विकल्प चुनिए:
अभिकथन (A): सामाजिक घटनाओं का अध्ययन स्वाभाविक रूप से जटिल है।
कारण (R): सामाजिक घटनाओं में मानवीय अभिकर्तृत्व, अर्थ और व्याख्या शामिल होती है, जो प्राकृतिक विज्ञानों की विषय वस्तु में उपस्थित नहीं होते हैं।
(A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सही है लेकिन R गलत है।
(D) A गलत है लेकिन R सही है।

8. मात्रात्मक विधियों के संदर्भ में 'सर्वेक्षण' क्या है?
(A) प्रश्नों के उत्तरों के माध्यम से व्यक्तियों के एक नमूने से डेटा एकत्र करने की एक विधि।
(B) लंबे समय तक किसी एक व्यक्ति या समूह का गहन अध्ययन।
(C) सामाजिक प्रवृत्तियों को समझने के लिए ऐतिहासिक दस्तावेजों और ग्रंथों का विश्लेषण।
(D) एक विशिष्ट परिकल्पना का परीक्षण करने के लिए तैयार किया गया एक नियंत्रित प्रयोग।

Click Here to Buy book on Amazon

प्रवृत्तियों और सत्ता की भूख को छिपाते हैं। व्युत्पत्तियां समाज में विचारधाराओं के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं।

275. (B) उत्पादन के साधनों का निजी स्वामित्व
कार्ल मार्क्स के अनुसार, पूंजीवादी समाज में अलगाव का मुख्य कारण यह है कि उत्पादन के साधनों पर एक छोटे वर्ग का निजी स्वामित्व होता है। श्रमिक के पास अपना कुछ नहीं होता, वह केवल अपना श्रम बेचता है। इस व्यवस्था में, श्रमिक जो वस्तु बनाता है उस पर उसका कोई अधिकार नहीं होता, जिससे वह अपने ही काम के उत्पाद से अलग महसूस करता है। मार्क्स का मानना था कि यह निजी स्वामित्व ही मानवीय रचनात्मकता को नष्ट करता है और व्यक्ति को समाज व स्वयं से अलग कर देता है।

276. (D) 1, 2 और 3
संरचनावाद के विकास में रेडक्लिफ-ब्राउन और एस.एफ. नाडेल के विचार पूरक और महत्वपूर्ण हैं। ब्राउन ने सामाजिक संरचना को वास्तविक संबंधों के नेटवर्क के रूप में देखा जिसे हम प्रत्यक्ष अवलोकन से समझ सकते हैं। नाडेल ने इसे एक कदम आगे ले जाते हुए भूमिकाओं के अमूर्त जाल के रूप में परिभाषित किया। हालांकि उनके विश्लेषण के स्तर अलग थे, लेकिन दोनों इस बात पर सहमत थे कि संरचना समाज का वह पक्ष है जो निरंतर चलने वाली प्रक्रियाओं की तुलना में अधिक स्थिर और व्यवस्थित होता है।

277. (C) यांत्रिक से सावयवी एकजुटता की ओर संक्रमण
एमिल दुर्खीम के अनुसार, कानून का स्वरुप समाज की एकजुटता के प्रकार को दर्शाता है। सरल समाजों में, जहाँ यांत्रिक एकजुटता होती है, कानून दमनकारी होते हैं क्योंकि किसी भी नियम का उल्लंघन सामूहिक चेतना पर प्रहार माना जाता है। जैसे-जैसे समाज जटिल होता है और सावयवी एकजुटता विकसित होती है, कानून क्षतिपूर्ति पर आधारित हो जाते हैं। यहाँ उद्देश्य अपराधी को पीड़ा देना नहीं, बल्कि व्यवस्था में आए बिगाड़ को ठीक करना और पक्षों के बीच सहयोग को पुनः स्थापित करना होता है।

278. (C) करिश्माई सत्ता
मैक्स वेबर के अनुसार, करिश्माई सत्ता वह स्थिति है जहाँ अनुयायी किसी व्यक्ति के प्रति उसकी असाधारण शक्तियों, पवित्रता या वीरता के कारण आकर्षित होते हैं। एक धार्मिक पैगंबर इसका सबसे उत्कृष्ट उदाहरण है क्योंकि लोग उसकी शिक्षाओं का पालन इसलिए नहीं करते कि वे पुराने रिवाजों का हिस्सा हैं या किसी कानून द्वारा अनिवार्य हैं, बल्कि इसलिए करते हैं क्योंकि वे उस पैगंबर के व्यक्तित्व में एक दैवीय गुण देखते हैं। यह सत्ता क्रांतिकारी होती है क्योंकि यह पुरानी परंपराओं और कानूनों को चुनौती देकर नई व्यवस्था स्थापित करती है।

279. (C) व्यक्तिगत कुसमायोजन और सामाजिक संरचना के बीच का अंतर
रॉबर्ट मर्टन ने यह स्पष्ट किया कि कई बार जिसे हम व्यक्ति की व्यक्तिगत परेशानी या विफलता मानते हैं, उसकी जड़ें वास्तव में समाज की संरचना में छिपी होती हैं। उन्होंने अपने तनाव सिद्धांत के माध्यम से दिखाया कि कैसे सामाजिक संरचना लक्ष्यों और साधनों के बीच असंतुलन पैदा करके व्यक्ति को कुसमायोजन या विचलन की ओर धकेलती है। यह विचार व्यक्तिगत अनुभवों को व्यापक सामाजिक और ऐतिहासिक प्रक्रियाओं के संदर्भ में समझकर सामाजिक समस्याओं का समाधान खोजने का प्रयास करता है।

280. (A) एक परिपक्व सामाजिक आत्म के विकास के लिए।
जॉर्ज हरबर्ट मीड के अनुसार, 'सामान्यीकृत अन्य' की भूमिका निभाने की क्षमता आत्म के विकास का सर्वोच्च शिखर है। इसका अर्थ है कि व्यक्ति केवल विशिष्ट लोगों के ही नहीं, बल्कि संपूर्ण समाज के सामूहिक दृष्टिकोणों, नियमों और मूल्यों को समझने और अपनाने में सक्षम हो जाता है। जब कोई व्यक्ति इस स्तर पर पहुँचता है, तो वह समाज की अपेक्षाओं के अनुसार स्वयं को नियंत्रित कर सकता है और एक जिम्मेदार नागरिक के रूप में व्यवहार करता है। यह क्षमता ही व्यक्ति को एक संगठित सामाजिक व्यक्तित्व प्रदान करती है।

281. (B) लुईस कोज़र
लुईस कोज़र उन कुछ संघर्षवादी विचारकों में से एक हैं जिन्होंने संघर्ष के विनाशकारी पहलुओं के साथ-साथ उसके प्रकार्यात्मक या सकारात्मक पहलुओं पर भी ध्यान केंद्रित किया। उनका मानना था कि संघर्ष समाज को पूरी तरह से नष्ट नहीं करता, बल्कि वह समूहों के बीच की सीमाओं को स्पष्ट करने, आंतरिक एकजुटता बढ़ाने और सामाजिक परिवर्तन के लिए आवश्यक दबाव बनाने में मदद करता है। कोज़र के अनुसार, संघर्ष समाज को जड़ता से बचाता है और नई संधियों के माध्यम से व्यवस्था को अधिक समावेशी और एकीकृत बनाने का कार्य कर सकता है।

282. (C) सोशल चेंज इन मॉडर्न इंडिया - एम.एन. श्रीनिवास
समाजशास्त्रीय साहित्य में सही लेखक और उनकी पुस्तकों का मिलान करना उनके सैद्धांतिक योगदान को समझने के लिए आवश्यक है। एम.एन. श्रीनिवास की पुस्तक 'सोशल चेंज इन मॉडर्न इंडिया' भारतीय समाज में होने वाले संस्कृतिकरण और पश्चिमीकरण जैसी प्रक्रियाओं का विश्लेषण करती है। अन्य विकल्प गलत सुमेलित हैं: 'होमो हाइरार्कस' लुई ड्यूमॉन्ट की है, 'द रिमेम्बर्ड विलेज' एम.एन. श्रीनिवास की ही रचना है, और 'इंडियन विलेज' एस.सी. दुबे की प्रसिद्ध पुस्तक है।

283. (B) परस्पर क्रिया करने वाले भागों की एक व्यवस्था के रूप में जो संतुलन की ओर प्रवृत्त होती है।
एम.एन. श्रीनिवास का संरचनात्मक-प्र प्रकार्यात्मक दृष्टिकोण समाज को एक जीवित जीव की तरह देखता है, जहाँ विभिन्न सामाजिक संस्थाएं आपस में जुड़ी होती हैं। प्रत्येक भाग समाज के अस्तित्व को बनाए रखने के लिए एक विशिष्ट कार्य करता है। यह दृष्टिकोण इस बात पर जोर देता है कि समाज में जब भी कोई परिवर्तन या अशांति आती है, तो उसकी विभिन्न संस्थाएं मिलकर पुनः संतुलन स्थापित करने का प्रयास करती हैं। यह परिप्रेक्ष्य सामाजिक स्थिरता, निरंतरता और अंगों के बीच के सामंजस्यपूर्ण तालमेल के विश्लेषण पर ध्यान केंद्रित करता है।

NODIA

266. (A) कथन 1 और कथन 2 दोनों सही हैं और कथन 2, कथन 1 की सही व्याख्या है।
मैक्स वेबर ने विश्व की प्रमुख सभ्यताओं और उनके धर्मों का विस्तृत तुलनात्मक अध्ययन किया था। उनका मुख्य उद्देश्य यह पता लगाना था कि आधुनिक तार्किक पूंजीवाद केवल पश्चिमी यूरोप में ही क्यों पैदा हुआ, जबकि चीन और भारत जैसे देशों में भी इसके लिए आवश्यक आर्थिक परिस्थितियाँ मौजूद थीं। वेबर ने निष्कर्ष निकाला कि प्रोटेस्टेंट धर्म की विशिष्ट नैतिकता ने तार्किक परिश्रम और पूंजी संचय को जो बढ़ावा दिया, वह अन्य धर्मों में नहीं पाया गया। यह अध्ययन धर्म और आर्थिक व्यवहार के गहरे संबंध को उजागर करता है।

267. (C) दुष्प्रकार्य
रॉबर्ट मर्टन के अनुसार, दुष्प्रकार्य किसी सामाजिक गतिविधि या प्रतिमान के वे अवलोकित परिणाम हैं जो व्यवस्था की स्थिरता को कम करते हैं और उसमें तनाव या अव्यवस्था पैदा करते हैं। ये परिणाम अक्सर अनपेक्षित होते हैं और समाज के सुचारु संचालन में बाधा डालते हैं। उदाहरण के लिए, नौकरशाही का उद्देश्य कार्यक्षमता बढ़ाना है, लेकिन कभी-कभी लालफीताशाही के कारण यह देरी और असंतोष का कारण बनती है, जो इसका दुष्प्रकार्य है। यह अवधारणा समाजशास्त्रियों को संस्थाओं की कमियों और उनके नकारात्मक प्रभावों का विश्लेषण करने के लिए एक वैज्ञानिक उपकरण प्रदान करती है।

268. (B) व्यक्ति अर्थों को समझकर अंतःक्रिया करते हैं।
हरबर्ट ब्लूमर के अनुसार, मानवीय व्यवहार केवल बाहरी उत्तेजनाओं के प्रति एक स्वचालित प्रतिक्रिया नहीं है। इसके बजाय, दो व्यक्तियों के बीच होने वाली अंतःक्रिया के बीच में एक 'व्याख्यात्मक प्रक्रिया' होती है। व्यक्ति सामने वाले के व्यवहार या संकेत को देखता है, उसे एक अर्थ देता है, और फिर उस अर्थ के आधार पर अपना उत्तर तय करता है। इसका मतलब है कि मानवीय क्रिया सचेत और सोच-समझकर की जाती है। यही प्रक्रिया समाज में अर्थों के निर्माण और निरंतर चलने वाले संवाद को संभव बनाती है।

269. (B) लुई ड्यूमॉन्ट
लुई ड्यूमॉन्ट का भारतीय समाजशास्त्र में सबसे महत्वपूर्ण योगदान यह तर्क देना है कि भारत को पदानुक्रम और समग्रतावाद के सिद्धांतों के माध्यम से ही समझा जा सकता है। उन्होंने जाति व्यवस्था को शुद्ध और अशुद्ध के धार्मिक विरोध पर आधारित एक एकीकृत वैचारिक व्यवस्था माना। ड्यूमॉन्ट के अनुसार, यहाँ पूरा समाज एक 'समग्र' के रूप में है जहाँ व्यक्ति का स्थान उसकी जाति और पदानुक्रम में उसकी शुद्धता के स्तर से तय होता है। यह विचार पश्चिमी व्यक्तिवाद के बिल्कुल विपरीत है और भारतीय सामाजिक संरचना की विशिष्टता को रेखांकित करता है।

270. (B) P-3, Q-1, R-2, S-4
समाजशास्त्र के विभिन्न सिद्धांतकारों ने अलग-अलग दृष्टिकोणों के माध्यम से समाज को समझने की कोशिश की है। रेडक्लिफ-ब्राउन संरचनात्मक प्रकार्यवाद के समर्थक थे, जो व्यवस्था की स्थिरता पर बल देते थे। हरबर्ट ब्लूमर प्रतीकात्मक अंतःक्रियावाद के जनक माने जाते हैं, जो सूक्ष्म अंतःक्रियाओं और अर्थों पर ध्यान देते हैं। राल्फ डहरेंडोर्फ ने आधुनिक संघर्ष सिद्धांत विकसित किया जो सत्ता संबंधों पर आधारित है। रॉबर्ट मर्टन ने मध्य-सीमा प्रकार्यवाद की वकालत की ताकि समाजशास्त्रीय सिद्धांतों को अधिक सटीक और परीक्षण योग्य बनाया जा सके।

271. (C) स्वतंत्रता के बाद के भारत में ग्रामीण नृवंशवर्णन में।
एस.सी. दुबे द्वारा शमीरपेट गाँव में किया गया अध्ययन स्वतंत्र भारत के ग्रामीण समाजशास्त्र में एक क्रांतिकारी योगदान था। उन्होंने पारंपरिक नृवंशविज्ञानी पद्धतियों का उपयोग करके गाँव के जीवन, उसकी सामाजिक संरचना, जाति व्यवस्था और बदलती आर्थिक परिस्थितियों का सजीव और विस्तृत वर्णन किया। इस अध्ययन ने यह दिखाया कि भारतीय गाँव कोई बंद या स्थिर इकाइयां नहीं हैं, बल्कि वे आधुनिकता और विकास की प्रक्रियाओं के प्रभाव में निरंतर बदल रहे हैं। दुबे का यह कार्य शोधकर्ताओं के लिए क्षेत्रीय कार्य का एक उत्कृष्ट मॉडल बन गया।

272. (C) धर्म परिवर्तन
बी.आर. अंबेडकर ने अपने जीवन के लंबे संघर्ष के बाद यह निष्कर्ष निकाला कि हिंदू धर्म के भीतर रहते हुए दलितों का पूर्ण उत्थान और सम्मान प्राप्त करना असंभव है। उनका मानना था कि जाति और छुआछूत की जड़ें हिंदू धर्मग्रंथों की मान्यताओं में इतनी गहरी हैं कि उन्हें बदला नहीं जा सकता। इसलिए, उन्होंने दलितों के लिए 'धर्म परिवर्तन' को अंतिम समाधान माना और स्वयं लाखों अनुयायियों के साथ बौद्ध धर्म अपना लिया। उनका यह कदम केवल धार्मिक नहीं, बल्कि एक गहरा राजनीतिक और सामाजिक मुक्ति का आंदोलन था।

273. (C) राधा कमल मुखर्जी
मूल्यों का समाजशास्त्र एक विशिष्ट परिप्रेक्ष्य है जिसे राधा कमल मुखर्जी ने भारतीय समाजशास्त्र में स्थापित किया। उन्होंने तर्क दिया कि मानवीय मूल्य केवल व्यक्तिगत पसंद नहीं हैं, बल्कि वे समाज के संगठन, उसकी स्थिरता और प्रगति के मूल आधार हैं। मुखर्जी के अनुसार, समाजशास्त्र को केवल भौतिक प्रघटनाओं तक सीमित रहने के बजाय उन नैतिक और आध्यात्मिक आदर्शों का भी अध्ययन करना चाहिए जो मानवीय व्यवहार को निर्देशित करते हैं। यह दृष्टिकोण समाजशास्त्र को दर्शनशास्त्र और नैतिकता के साथ जोड़कर एक अधिक मानवीय समझ प्रदान करता है।

274. (B) व्युत्पत्तियां
विल्फ्रेडो पैरेटो के अनुसार, व्युत्पत्तियां वे बौद्धिक और तार्किक स्पष्टीकरण हैं जिनका उपयोग शासक वर्ग और सामान्य लोग अपने अतार्किक अवशेषों को सही ठहराने के लिए करते हैं। जब कोई सत्ताधारी वर्ग शासन करता है, तो वह अपने कार्यों को न्याय, धर्म या जन कल्याण जैसे सिद्धांतों के माध्यम से वैध बनाने की कोशिश करता है। पैरेटो का मानना था कि ये तर्क वास्तव में केवल एक आवरण होते हैं जो मूल मानवीय

Downloaded from www.pdf.tube

इतिहास की प्रेरक शक्ति विचार नहीं, बल्कि भौतिक संसाधनों और उत्पादन पद्धति के लिए होने वाला संघर्ष है।

293. (B) भारतीय समाज के अध्ययन के लिए एक व्यापक दृष्टिकोण।
जी.एस. घुरये की बौद्धिक विरासत किसी एक संकीर्ण सिद्धांत तक सीमित नहीं थी। उन्होंने भारतीय समाज के विविध आयामों—जाति, नातेदारी, धर्म, शहरों का विकास, कला और जनजातियों—का अध्ययन किया। उनकी विशेषता यह थी कि उन्होंने पाठ्य स्रोतों के साथ-साथ ऐतिहासिक और तुलनात्मक पद्धतियों का भी उपयोग किया। घुरये ने भारतीय समाजशास्त्र को एक ऐसा व्यापक आधार प्रदान किया जिसने बाद के शोधकर्ताओं को समाज की जटिलता और उसकी सांस्कृतिक जड़ों को गहराई से समझने की प्रेरणा दी। उन्हें भारतीय समाजशास्त्र का शिल्पी माना जाता है।

294. (C) सामाजिक परिवर्तन के लिए
एम.एन. श्रीनिवास द्वारा विकसित 'संस्कृतिकरण' और 'पश्चिमीकरण' की अवधारणाएं भारतीय समाज में होने वाले सामाजिक परिवर्तनों को समझने के मुख्य औजार हैं। संस्कृतिकरण जहाँ पारंपरिक पदानुक्रम के भीतर होने वाली ऊपर की ओर गतिशीलता को दर्शाता है, वहीं पश्चिमीकरण उन परिवर्तनों को स्पष्ट करता है जो आधुनिक शिक्षा, तकनीक और उदारवादी मूल्यों के कारण आए हैं। ये दोनों प्रक्रियाएं मिलकर यह बताती हैं कि कैसे भारतीय समाज अपनी पुरानी परंपराओं को बनाए रखते हुए भी आधुनिकता के साथ तालमेल बिठा रहा है और अपना स्वरूप बदल रहा है।

295. (A) कथन 1 और कथन 2 दोनों सही हैं और कथन 2, कथन 1 की सही व्याख्या है।
लुई ड्यूमॉन्ट ने तर्क दिया कि भारतीय जाति व्यवस्था को पश्चिम के वर्ग और प्रस्थिति के मापदंडों से मापना एक बड़ी भूल होगी। उनके अनुसार, जाति व्यवस्था का हृदय शुद्ध और अशुद्ध के धार्मिक विरोध पर आधारित पदानुक्रम है। यहाँ प्रस्थिति का निर्धारण इस बात से होता है कि कोई समूह धार्मिक रूप से कितना शुद्ध है, न कि इस बात से कि उसके पास कितनी भौतिक शक्ति है। इसलिए, जाति व्यवस्था एक अद्वितीय वैचारिक संरचना है जिसे केवल उसके अपने धार्मिक तर्क के माध्यम से ही सही ढंग से समझा जा सकता है।

296. (A) एस.सी. दुबे
एस.सी. दुबे ने भारतीय समाज के विश्लेषण में परंपरा को एक अत्यंत गतिशील और जीवंत शक्ति के रूप में प्रस्तुत किया। उन्होंने उन विचारों को खारिज कर दिया जो परंपरा को स्थिर या परिवर्तन विरोधी मानते थे। दुबे का तर्क था कि भारतीय परंपराओं में स्वयं को बदलने और नई परिस्थितियों के साथ अनुकूलन करने की जबरदस्त क्षमता है। उन्होंने परंपराओं के विभिन्न स्तरों के बीच होने वाले निरंतर संवाद को सामाजिक परिवर्तन का मुख्य कारक माना। दुबे का यह योगदान भारतीय आधुनिकता को परंपरा के विरोध के बजाय उसकी निरंतरता में समझने का मार्ग प्रशस्त करता है।

297. (C) हिंदू धर्मग्रंथों की धार्मिक स्वीकृतियां
बी.आर. अंबेडकर का दृढ़ विश्वास था कि दलितों के सदियों पुराने उत्पीड़न का असली कारण हिंदू धर्मग्रंथों द्वारा पदानुक्रम को दी गई धार्मिक मान्यता है। उनका तर्क था कि जाति व्यवस्था केवल एक सामाजिक बुराई नहीं है, बल्कि वह उन नियमों पर आधारित है जिन्हें शास्त्रों में 'पवित्र' माना गया है। इसलिए, उन्होंने यह स्पष्ट किया कि जब तक इन ग्रंथों की सत्ता को चुनौती नहीं दी जाती और उनकी धार्मिक पवित्रता को नष्ट नहीं किया जाता, तब तक दलितों की वास्तविक मुक्ति और समानता का सपना कभी पूरा नहीं हो सकता।

298. (B) राधा कमल मुखर्जी
राधा कमल मुखर्जी के समाजशास्त्र का मुख्य केंद्र यह विचार है कि सामाजिक संस्थाएं और समूह मानवीय मूल्यों के बिना जीवित नहीं रह सकते। उन्होंने तर्क दिया कि मूल्य ही वह सूत्र हैं जो समाज के विभिन्न अंगों को एक साथ जोड़कर रखते हैं। मुखर्जी के अनुसार, परिवार, धर्म और समुदाय जैसी संस्थाएं केवल भौतिक आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए नहीं, बल्कि उच्च नैतिक और आध्यात्मिक आदर्शों को प्राप्त करने के लिए विकसित हुई हैं। यह दृष्टिकोण सामाजिक संरचना के भीतर मानवीय गरिमा और नैतिक आकांक्षाओं की भूमिका को सर्वोपरि मानता है।

299. (C) अनिवार्य रूप से समन्वित संघों की
राल्फ डहरेंडोर्फ ने आधुनिक समाज का चित्रण अनिवार्य रूप से समन्वित संघों की एक व्यवस्था के रूप में किया। उनके अनुसार, समाज केवल व्यक्तियों का समूह नहीं है, बल्कि वह कई संगठनों से बना है जहाँ अधिकार और सत्ता का असमान वितरण होता है। प्रत्येक ऐसे संघ में सत्ता रखने वाले और सत्ता से वंचित लोगों के बीच हितों का मौलिक विरोध होता है। डहरेंडोर्फ का मानना था कि समाज का वास्तविक स्वरूप इसी पदानुक्रमित संरचना और उसमें छिपे हुए निरंतर संघर्ष की संभावना में निहित है, जो परिवर्तन को गति देता है।

300. (B) एमिल दुर्खीम
एमिल दुर्खीम के धर्म के सिद्धांत का आधार ही पवित्र और अपवित्र के बीच का स्पष्ट विभाजन है। उनके अनुसार, धर्म अलौकिक शक्तियों में विश्वास मात्र नहीं है, बल्कि वह उन चीजों, विश्वासों और अनुष्ठानों की एक एकीकृत व्यवस्था है जिन्हें समाज 'पवित्र' मानकर सामान्य और 'अपवित्र' जीवन से अलग कर देता है। दुर्खीम का तर्क था कि पवित्र वस्तुएं वास्तव में समाज की अपनी शक्ति और एकता के प्रतीक हैं। जब लोग मिलकर इन पवित्र प्रतीकों की पूजा करते हैं, तो वे सामूहिक चेतना को ही सुदृढ़ कर रहे होते हैं।

NODIA

284. (B) सामाजिक पदानुक्रम की अधीनस्थ आलोचना।
बी.आर. अंबेडकर के लेखन भारतीय समाज के पारंपरिक पदानुक्रम की एक अत्यंत प्रभावशाली और तार्किक अधीनस्थ आलोचना प्रस्तुत करते हैं। उन्होंने समाज को ऊपर से देखने वाले ब्राह्मणवादी या भारतविद्या परिप्रेक्ष्य को पूरी तरह से चुनौती दी। अंबेडकर ने दलितों और उत्पीड़ितों के अनुभवों को आधार बनाकर यह दिखाया कि कैसे जाति व्यवस्था और धार्मिक ग्रंथों ने अन्याय और अमानवीयता को वैध बनाया। उनके विचार समाज की उन संरचनाओं को उखाड़ फेंकने का आह्वान करते हैं जो समानता और मानवीय गरिमा के विरुद्ध हैं।

285. (B) राधा कमल मुखर्जी
राधा कमल मुखर्जी के समाजशास्त्र में मूल्यों को केंद्रीय स्थान प्राप्त है। उनका मानना था कि किसी भी सामाजिक संस्था की वास्तविक नींव केवल भौतिक हितों पर नहीं, बल्कि उन मूल्यों और नैतिक आदर्शों पर टिकी होती है जिन्हें समाज के सदस्य सामूहिक रुप से स्वीकार करते हैं। मुखर्जी के अनुसार, मूल्य ही संस्थाओं को स्थायित्व, अर्थ और दिशा प्रदान करते हैं। उन्होंने तर्क दिया कि मूल्यों के बिना संस्थाएं केवल मृत ढांचे की तरह हैं। इसलिए, समाजशास्त्र का मुख्य कार्य उन मूल्यों के विकास और सामाजिक संगठन पर उनके प्रभावों का अध्ययन करना होना चाहिए।

286. (B) औपचारिक उपहार विनिमय के माध्यम से सामाजिक संबंध बनाए रखे जाते हैं।
ब्रॉनिस्लॉ मैलिनोवस्की द्वारा किया गया 'कुला' विनिमय का अध्ययन यह स्पष्ट करता है कि मानव व्यवहार हमेशा केवल आर्थिक लाभ के लिए नहीं होता। कुला में उपहारों का जो आदान-प्रदान होता था, उसका कोई भौतिक मूल्य नहीं था, लेकिन उसका अत्यधिक सामाजिक महत्व था। यह विनिमय विभिन्न द्वीपों के लोगों के बीच स्थायी मित्रता, शांति और आपसी विश्वास के बंधन बनाने का एक माध्यम था। इस अध्ययन ने यह सिद्ध किया कि उपहार देना और लेना सामाजिक एकजुटता और संबंधों की निरंतरता बनाए रखने के लिए एक अनिवार्य संस्थागत प्रक्रिया है।

287. (B) सामाजिक संरचना के रखरखाव में संस्थाओं के योगदान से।
ए.आर. रेडक्लिफ-ब्राउन का संरचनात्मक-प्र प्रकार्यात्मक दृष्टिकोण पूरी तरह से सामाजिक व्यवस्था की निरंतरता पर केंद्रित है। उनके अनुसार, प्रकार्य का अर्थ है वह योगदान जो कोई सामाजिक गतिविधि या संस्था संपूर्ण सामाजिक संरचना के अस्तित्व के लिए देती है। जैसे शरीर के अंग जीवन बनाए रखने के लिए कार्य करते हैं, वैसे ही नातेदारी के नियम, धार्मिक अनुष्ठान और कानूनी संस्थाएं समाज को बिखरने से बचाती हैं और उसे एक सुसंगत रुप प्रदान करती हैं। ब्राउन का मुख्य उद्देश्य उन नियमों को खोजना था जो समाज को एकता के सूत्र में बांधे रखते हैं।

288. (C) अपर्याप्त सामाजिक एकीकरण का
एमिल दुर्खीम के अनुसार, अहंकेंद्रित आत्महत्या तब होती है जब समाज में एकीकरण का स्तर बहुत कम हो जाता है और व्यक्ति स्वयं को समूह से कटा हुआ महसूस करने लगता है। ऐसी स्थिति में, सामाजिक बंधन कमजोर हो जाते हैं और व्यक्ति की व्यक्तिगत इच्छाएं उसे समाज की तुलना में बहुत बड़ी लगने लगती हैं। जब समाज व्यक्ति को पर्याप्त सहारा, उद्देश्य और सामूहिक पहचान प्रदान करने में विफल रहता है, तो व्यक्ति अकेलापन और अर्थहीनता महसूस करता है, जो उसे अपना जीवन समाप्त करने की दिशा में ले जाता है।

289. (B) मैक्स वेबर
मैक्स वेबर ने आधुनिक समाज की जटिलताओं को समझने के लिए 'नौकरशाही' का एक आदर्श प्रारूप प्रस्तुत किया। उन्होंने इसे तार्किक-कानूनी सत्ता का सबसे शुद्ध और प्रभावी रूप माना। वेबर के अनुसार, नौकरशाही की मुख्य विशेषताएं स्पष्ट पदानुक्रम, लिखित नियम, कार्यों का विशेषज्ञतापूर्ण विभाजन और निर्वैयक्तिक व्यवहार हैं। यद्यपि उन्होंने इसकी कार्यकुशलता की सराहना की, लेकिन उन्होंने यह चेतावनी भी दी कि यह व्यवस्था मनुष्य को नियमों के एक 'लोहे के पिंजरे' में बंद कर सकती है, जिससे व्यक्तिगत स्वतंत्रता और संवेदनाएं समाप्त होने का खतरा रहता है।

290. (B) रॉबर्ट के. मर्टन
रॉबर्ट मर्टन ने प्रकार्यात्मक विश्लेषण में गहराई लाने के लिए 'प्रकट' और 'प्रच्छन्न' प्रकार्यों के बीच एक महत्वपूर्ण अंतर स्थापित किया। प्रकट प्रकार्य वे परिणाम हैं जो सचेत रूप से इच्छित होते हैं और समाज के सदस्यों द्वारा पहचाने जाते हैं। इसके विपरीत, प्रच्छन्न प्रकार्य वे अनपेक्षित परिणाम होते हैं जो प्रत्यक्ष रूप से दिखाई नहीं देते लेकिन सामाजिक व्यवस्था के लिए महत्वपूर्ण होते हैं। मर्टन के इस योगदान ने समाजशास्त्रियों को संस्थाओं के आधिकारिक उद्देश्यों के बजाय उनके वास्तविक सामाजिक प्रभावों का अध्ययन करने के लिए प्रेरित किया।

291. (A) कथन 1 और कथन 2 दोनों सही हैं।
जॉर्ज हरबर्ट मीड के अनुसार, भाषा आत्म के विकास के लिए सबसे महत्वपूर्ण उपकरण है। भाषा के माध्यम से ही व्यक्ति प्रतीकों का उपयोग करना सीखता है और दूसरों के साथ अर्थपूर्ण संवाद करता है। भाषा ही वह माध्यम है जो व्यक्ति को यह क्षमता प्रदान करती है कि वह स्वयं को दूसरों के स्थान पर रखकर देख सके और उनके दृष्टिकोण से अपनी भूमिका का मूल्यांकन कर सके। इस प्रक्रिया के बिना, व्यक्ति स्वयं को एक सामाजिक वस्तु के रूप में नहीं समझ सकता। अतः, भाषा ही वह आधार है जिस पर संपूर्ण सामाजिक चेतना टिकी है।

292. (C) ऐतिहासिक भौतिकवाद
कार्ल मार्क्स के सिद्धांत को 'ऐतिहासिक भौतिकवाद' के रूप में जाना जाता है क्योंकि यह मानव इतिहास के विकास को आर्थिक परिस्थितियों के आधार पर स्पष्ट करता है। मार्क्स का तर्क था कि समाज के विचार, मूल्य और राजनीति उसके आर्थिक आधार पर टिके होते हैं। जब तकनीकी विकास और उत्पादन के संबंधों के बीच संघर्ष होता है, तो समाज एक अवस्था से दूसरी अवस्था में प्रवेश करता है। यह सिद्धांत यह मानता है कि

Click Here to Buy book on Amazon

9. सामाजिक अनुसंधान में 'मूल्य-तटस्थता' की अवधारणा का तात्पर्य है कि एक शोधकर्ता को:
(A) केवल उन्हीं विषयों का अध्ययन करना चाहिए जो नैतिक निहितार्थों से पूरी तरह मुक्त हों।
(B) शोध करते समय अपने व्यक्तिगत मूल्यों को पूरी तरह से त्याग देना चाहिए।
(C) अपने व्यक्तिगत मूल्यों को शोध के निष्कर्षों को विकृत करने से रोकने का प्रयास करना चाहिए।
(D) अपनी व्यक्तिगत नैतिक धारणाओं के आधार पर अनुसंधान समस्याओं का चयन करना चाहिए।

10. वैज्ञानिक पद्धति के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. इसकी विशेषता अनुभवजन्य साक्ष्यों पर निर्भरता है।
II. इसमें एक तार्किक और व्यवस्थित प्रक्रिया शामिल है।
III. यह गारंटी देती है कि निष्कर्ष स्थायी और सार्वभौमिक रूप से मान्य हैं।
उपरोक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?
(A) केवल I और II
(B) केवल II और III
(C) केवल I
(D) I, II और III सभी

11. 'अनुसंधान प्रारूप' को सबसे अच्छी तरह इस प्रकार वर्णित किया गया है:
(A) शोध निष्कर्षों की अंतिम रिपोर्ट।
(B) डेटा विश्लेषण के लिए उपयोग किए जाने वाले सांख्यिकीय उपकरण।
(C) जनसंख्या में से एक नमूने के चयन की प्रक्रिया।
(D) एक शोध परियोजना के संचालन के लिए एक रूपरेखा या योजना।

12. वैज्ञानिक पद्धति के निम्नलिखित सामान्य चरणों को कालानुक्रमिक क्रम में व्यवस्थित कीजिए:
I. परिकल्पना निर्माण
II. अवलोकन और डेटा संग्रह
III. समस्या की पहचान
IV. विश्लेषण और व्याख्या
निम्नलिखित में से कौन-सा सही क्रम का प्रतिनिधित्व करता है?
(A) III, I, II, IV
(B) I, III, II, IV
(C) II, III, I, IV
(D) III, II, I, IV

13. निम्नलिखित में से कौन-सा अनुसंधान प्रारूप का एक प्रकार नहीं है?
(A) अन्वेषणात्मक अनुसंधान प्रारूप
(B) वर्णनात्मक अनुसंधान प्रारूप
(C) परिकल्पनात्मक अनुसंधान प्रारूप
(D) व्याख्यात्मक अनुसंधान प्रारूप

14. दो या दो से अधिक चरों के बीच संबंधों के बारे में एक परीक्षण योग्य प्रस्ताव को किस रूप में जाना जाता है?
(A) सिद्धांत
(B) तथ्य
(C) अवधारणा
(D) परिकल्पना

15. अनुसंधान शब्द को उसके विवरण के साथ सुमेलित कीजिए:

	शब्द		**विवरण**
P.	सर्वेक्षण	1.	चरों के बीच संबंध के बारे में एक अस्थायी कथन।
Q.	अनुसंधान प्रारूप	2.	डेटा एकत्र करने और विश्लेषण करने के लिए एक रूपरेखा।
R.	परिकल्पना	3.	मानव जीवन और समाज के पहलू जिनका वैज्ञानिक रूप से अध्ययन किया जा सकता है।
S.	सामाजिक घटना	4.	जनसंख्या के एक नमूने से डेटा एकत्र करने की एक विधि।

(A) P-4, Q-2, R-1, S-3
(B) P-1, Q-3, R-2, S-4
(C) P-4, Q-1, R-3, S-2
(D) P-3, Q-2, R-4, S-1

16. किसी ऐसे विषय की खोज के उद्देश्य से किए गए अध्ययन के लिए कौन-सा अनुसंधान प्रारूप सबसे उपयुक्त है जिसे अच्छी तरह से नहीं समझा गया है या जिसके लिए बहुत कम शोध उपलब्ध है?
(A) व्याख्यात्मक
(B) अन्वेषणात्मक
(C) वर्णनात्मक
(D) प्रयोगात्मक

17. पूरी जनसंख्या के बारे में सामान्यीकरण करने के उद्देश्य से जनसंख्या के एक उपसमुच्चय के चयन की प्रक्रिया को कहा जाता है:
(A) परिकल्पना निर्माण
(B) प्रतिचयन
(C) प्रारूप निर्माण
(D) अवलोकन

18. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए और सही विकल्प का चयन कीजिए:
कथन I: एक वर्णनात्मक अनुसंधान प्रारूप का उद्देश्य किसी विशेष व्यक्ति, स्थिति या समूह की विशेषताओं को सटीक रूप से चित्रित करना है।

Downloaded from www.pdf.tube

(A) दो चरों के बीच संबंध की मजबूती और दिशा को मापने के लिए।
(B) यह सिद्ध करने के लिए कि एक चर दूसरे का कारण बनता है।
(C) वितरण में औसत मान खोजने के लिए।
(D) शोध परिकल्पना की सार्थकता का परीक्षण करने के लिए।

43. -0.9 का सहसंबंध गुणांक दर्शाता है:
(A) एक बहुत ही कमजोर नकारात्मक संबंध।
(B) एक बहुत ही मजबूत सकारात्मक संबंध।
(C) चरों के बीच कोई संबंध नहीं।
(D) एक बहुत ही मजबूत नकारात्मक संबंध।

44. सामाजिक अनुसंधान में 'सार्थकता परीक्षण' का उपयोग किया जाता है:
(A) शोध निष्कर्षों के व्यावहारिक महत्व को निर्धारित करने के लिए।
(B) इस संभावना का आकलन करने के लिए कि नमूने में देखे गए परिणाम संयोग के कारण हैं।
(C) डेटा की केंद्रीय प्रवृत्ति की गणना करने के लिए।
(D) पूरी जनसंख्या का सीधे वर्णन करने के लिए।

45. समाजमिति एक मात्रात्मक विधि है:
(A) लिखित या मौखिक संचार के विश्लेषण के लिए।
(B) किसी एक मामले का गहन अध्ययन करने के लिए।
(C) सामाजिक संबंधों और समूह की संरचना को मापने के लिए।
(D) व्यक्तिगत वृत्तांतों के माध्यम से ऐतिहासिक घटनाओं को समझने के लिए।

46. सामाजिक अनुसंधान में कंप्यूटर सॉफ्टवेयर का एक सामान्य अनुप्रयोग निम्नलिखित में से कौन-सा है?
(A) सहभागी अवलोकन की प्रक्रिया को स्वचालित करना।
(B) उत्तरदाताओं को सत्य उत्तर देने के लिए बाध्य करना।
(C) अनुसंधान प्रारूप की आवश्यकता को समाप्त करना।
(D) बड़े डेटासेट का भंडारण, प्रबंधन और विश्लेषण करना।

47. वह विधि जो किसी संस्कृति या सामाजिक समूह का समृद्ध और समग्र विवरण प्रस्तुत करने के लिए सहभागी अवलोकन और गहन साक्षात्कार को जोड़ती है, कहलाती है:
(A) नृवंशविज्ञान
(B) समाजमिति
(C) विषय-वस्तु विश्लेषण
(D) सर्वेक्षण अनुसंधान

48. सांख्यिकीय अवधारणा को उसकी परिभाषा के साथ सुमेलित कीजिए:

अवधारणा
P. माध्य
Q. बहुलक
R. परिक्षेपण
S. सहसंबंध

परिभाषा
1. वितरण में सबसे अधिक बार आने वाला मान।
2. अंकों का फैलाव या परिवर्तनशीलता।
3. अंकगणितीय औसत।
4. दो चरों के बीच संबंध की मात्रा।

(A) P-1, Q-3, R-4, S-2
(B) P-3, Q-1, R-2, S-4
(C) P-3, Q-2, R-1, S-4
(D) P-2, Q-1, R-4, S-3

49. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए और सही विकल्प का चयन कीजिए:
कथन I: एक शून्य परिकल्पना यह प्रस्तावित करती है कि कोई प्रभाव या कोई संबंध नहीं है।
कथन II: वैकल्पिक परिकल्पना वह है जिसे शोधकर्ता समर्थन देने का लक्ष्य रखता है।
(A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
(B) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।
(C) कथन I सही है, लेकिन कथन II गलत है।
(D) कथन I गलत है, लेकिन कथन II सही है।

50. एक शोधकर्ता बच्चों से यह पूछकर कक्षा की सामाजिक संरचना का अध्ययन करना चाहता है कि वे किसके साथ बैठना पसंद करेंगे। यह किसका एक उत्कृष्ट अनुप्रयोग है?
(A) समाजमिति
(B) नृवंशविज्ञान
(C) मौखिक इतिहास
(D) वैयक्तिक अध्ययन

51. जब एक शोधकर्ता के मूल्य सचेत या अनजाने में अध्ययन के परिणामों को प्रभावित करते हैं, तो इसे किसका उल्लंघन माना जाता है?
(A) तथ्य-आधारित जांच
(B) व्यक्तिपरकता
(C) वस्तुनिष्ठता
(D) वैज्ञानिक पद्धति

52. एक 'व्याख्यात्मक' अनुसंधान प्रारूप मुख्य रूप से किससे संबंधित है?
(A) किसी स्थिति का विस्तृत विवरण प्रदान करना।
(B) एक नए शोध क्षेत्र की खोज करना।
(C) किसी व्यक्ति के जीवन की कहानी का दस्तावेजीकरण करना।
(D) किसी घटना के कारणों की पहचान करना।

53. प्रतिचयन में, गैर-संभाव्यता प्रतिचयन की तुलना में संभाव्यता प्रतिचयन का मुख्य लाभ क्या है?
(A) यह अधिक लागत प्रभावी और तीव्र कार्यान्वयन प्रक्रिया प्रदान करता है।

अनुभागीय सर्वेक्षण।
(C) किसी व्यक्ति के सार्वजनिक रिकॉर्ड का ऐतिहासिक विश्लेषण।
(D) किसी व्यक्ति के जीवन का वर्णनात्मक अध्ययन जैसा कि स्वयं उस व्यक्ति द्वारा बताया गया हो।

31. निम्नलिखित में से कौन-सा सामान्य रुप से गुणात्मक विधियों से जुड़ा नहीं है?
(A) बड़े पैमाने पर सांख्यिकीय विश्लेषण
(B) गहन समझ
(C) प्रासंगिक अर्थ
(D) व्यक्तिपरक अनुभव

32. नृवंशविज्ञान का प्राथमिक लक्ष्य क्या है?
(A) नियंत्रित परिस्थितियों में विशिष्ट परिकल्पना का व्यवस्थित रुप से परीक्षण करना।
(B) एक सांस्कृतिक समूह के रोजमर्रा के जीवन और प्रथाओं का वर्णन करना।
(C) जनसंख्या में चरों के बीच सांख्यिकीय संबंध को मापना।
(D) प्रमुख ऐतिहासिक हस्तियों की व्यक्तिगत जीवन कथाएं एकत्र करना।

33. निम्नलिखित में से कौन केंद्रीय प्रवृत्ति का माप है?
(A) मानक विचलन
(B) माध्यिका
(C) परास
(D) प्रसरण

34. निम्नलिखित अभिकथन (A) और कारण (R) को पढ़िए और सही विकल्प चुनिए:
अभिकथन (A): सहभागी अवलोकन शोधकर्ता के लिए नैतिक चुनौतियाँ पेश करता है।
कारण (R): शोधकर्ता की उपस्थिति अध्ययन किए जा रहे समूह के व्यवहार को बदल सकती है, और धोखे तथा सूचित सहमति के मुद्दे पैदा हो सकते हैं।
(A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सही है लेकिन R गलत है।
(D) A गलत है लेकिन R सही है।

35. अंकों के एक समूह के अंकगणितीय औसत को कहा जाता है:
(A) बहुलक
(B) माध्यिका
(C) माध्य
(D) परिक्षेपण

36. अंकों के डेटासेट {7, 3, 9, 5, 3} में बहुलक क्या है?
(A) 9
(B) 5
(C) 7
(D) 3

37. अंकों के वितरण में मध्य मान, जब उन्हें आरोही या अवरोही क्रम में व्यवस्थित किया जाता है, कहलाता है:
(A) माध्य
(B) बहुलक
(C) माध्यिका
(D) परास

38. गुणात्मक अनुसंधान के बारे में निम्नलिखित में से कौन-सा कथन गलत है?
(A) यह अक्सर छोटे, गैर-यादृच्छिक नमूनों का उपयोग करता है।
(B) यह मुख्य रूप से संख्यात्मक डेटा और सांख्यिकीय विश्लेषण पर निर्भर करता है।
(C) इसका उद्देश्य विषय वस्तु की गहरी और समग्र समझ प्राप्त करना है।
(D) यह व्याख्यात्मक है और उन अर्थों पर केंद्रित है जो लोग अपने सामाजिक जगत से जोड़ते हैं।

39. सांख्यिकी में 'परिक्षेपण के माप' का उपयोग वर्णन करने के लिए किया जाता है:
(A) दिए गए डेटासेट के भीतर विशिष्ट या केंद्रीय मान को।
(B) दिए गए डेटासेट के भीतर सबसे अधिक बार आने वाले मान को।
(C) दो स्वतंत्र चरों के बीच मौजूद कार्य-कारण संबंध को।
(D) वह सीमा जिस तक डेटा बिंदु फैले हुए हैं या एक साथ गुच्छित हैं।

40. निम्नलिखित में से कौन परिक्षेपण का माप है?
(A) मानक विचलन
(B) माध्य
(C) बहुलक
(D) माध्यिका

41. मात्रात्मक विधियों के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. वे वस्तुनिष्ठ माप और संख्यात्मक विश्लेषण पर जोर देते हैं।
II. वे मुख्य रूप से प्रतिभागियों के अर्थों और व्याख्याओं की खोज से संबंधित हैं।
III. वे बड़ी जनसंख्या के लिए परिणामों के सामान्यीकरण के लिए उपयुक्त हैं।
उपरोक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?
(A) केवल I और III
(B) केवल II
(C) I, II और III सभी
(D) केवल II और III

42. सहसंबंध विश्लेषण एक सांख्यिकीय विधि है जिसका उपयोग किया जाता है:

Click Here to Buy book on Amazon

कथन II: एक व्याख्यात्मक अनुसंधान प्रारूप चरों के बीच कार्य-कारण संबंधों को स्थापित करने का प्रयास करता है।
(A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
(B) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।
(C) कथन I सही है, लेकिन कथन II गलत है।
(D) कथन I गलत है, लेकिन कथन II सही है।

19. निम्नलिखित में से कौन मात्रात्मक अनुसंधान में डेटा संग्रह की एक प्रमुख तकनीक है?
(A) मौखिक इतिहास
(B) जीवन इतिहास
(C) प्रश्नावली
(D) सहभागी अवलोकन

20. एक शोधकर्ता सदस्यों के व्यवहार को प्रभावित किए बिना एक विशिष्ट धार्मिक समुदाय के भीतर दैनिक दिनचर्या और अंतःक्रियाओं को समझना चाहता है। शुरुआत में डेटा संग्रह की कौन-सी तकनीक सबसे उपयुक्त होगी?
(A) अनुसूची
(B) साक्षात्कार
(C) प्रश्नावली
(D) अवलोकन

21. प्रश्नावली और अनुसूची के बीच मुख्य अंतर क्या है?
(A) प्रश्नावली गुणात्मक अनुसंधान के लिए है जबकि अनुसूची मात्रात्मक अनुसंधान के लिए।
(B) प्रश्नावली में खुले प्रश्न होते हैं जबकि अनुसूची में केवल बंद प्रश्न होते हैं।
(C) प्रश्नावली उत्तरदाताओं द्वारा भरी जाती है जबकि अनुसूची शोधकर्ताओं द्वारा भरी जाती है।
(D) प्रश्नावली व्यक्तिगत रूप से दी जाती है जबकि अनुसूची डाक द्वारा भेजी जाती है।

22. जानकारी एकत्र करने के उद्देश्य से एक शोधकर्ता और एक उत्तरदाता के बीच एक संरचित, आमने-सामने की बातचीत को कहा जाता है:
(A) अवलोकन
(B) साक्षात्कार
(C) वैयक्तिक अध्ययन
(D) सर्वेक्षण

23. निम्नलिखित में से कौन शून्य परिकल्पना का एक उदाहरण है?
(A) उच्च शिक्षा से उच्च आय प्राप्त होती है।
(B) सामाजिक वर्ग और राजनीतिक वरीयता के बीच एक महत्वपूर्ण संबंध है।
(C) महिलाओं की तुलना में पुरुषों द्वारा अपराध करने की संभावना अधिक होती है।
(D) शहरीकरण के स्तर और अपराध दर के बीच कोई संबंध नहीं है।

24. प्रतिचयन के संदर्भ में, व्यक्तियों का वह पूरा समूह जिसमें शोधकर्ता अध्ययन करने में रुचि रखता है, कहलाता है:
(A) जनसंख्या
(B) नमूना
(C) तत्व
(D) ढांचा

25. एक शोधकर्ता सड़क के कोने पर खड़ा होता है और वहां से गुज़रने वाले हर पांचवें व्यक्ति से कुछ सवालों के जवाब देने के लिए कहता है। यह किस प्रकार के प्रतिचयन का उदाहरण है?
(A) सरल यादृच्छिक प्रतिचयन
(B) स्तरित प्रतिचयन
(C) व्यवस्थित प्रतिचयन
(D) कोटा प्रतिचयन

26. किस गुणात्मक विधि में शोधकर्ता प्राकृतिक संदर्भ में व्यवहार का निरीक्षण करने के लिए लंबे समय तक एक सामाजिक परिवेश में खुद को शामिल करता है?
(A) सहभागी अवलोकन
(B) विषय-वस्तु विश्लेषण
(C) वैयक्तिक अध्ययन
(D) मौखिक इतिहास

27. किसी एक व्यक्ति, समूह, संस्थान या घटना की गहन और विस्तृत जांच को किस रूप में जाना जाता है?
(A) सर्वेक्षण
(B) समाजमिति
(C) विषय-वस्तु विश्लेषण
(D) वैयक्तिक अध्ययन

28. एक शोधकर्ता समाचार पत्र के लेखों के संग्रह में विशिष्ट शब्दों और विषयों की आवृत्ति का विश्लेषण कर रहा है। इस विधि को कहा जाता है:
(A) जीवन इतिहास
(B) विषय-वस्तु विश्लेषण
(C) सहभागी अवलोकन
(D) नृवंशविज्ञान

29. अतीत की घटनाओं में लोगों, समुदायों और प्रतिभागियों की आवाज़ों और यादों को इकट्ठा करने, संरक्षित करने और व्याख्या करने की विधि को कहा जाता है:
(A) वैयक्तिक अध्ययन
(B) विषय-वस्तु विश्लेषण
(C) मौखिक इतिहास
(D) समाजमिति

30. सामाजिक अनुसंधान में 'जीवन इतिहास' क्या है?
(A) किसी व्यक्ति के जीवन की घटनाओं का सांख्यिकीय सारांश।
(B) जीवन के विभिन्न चरणों में लोगों का एक क्रॉस-

NODIA

(B) यह शोधकर्ता को प्रतिभागियों के चयन के लिए व्यक्तिपरक निर्णय का उपयोग करने की अनुमति देता है।
(C) यह जनसंख्या के लिए निष्कर्षों के सांख्यिकीय सामान्यीकरण की अनुमति देता है।
(D) यह छोटे गुणात्मक अध्ययन करने के लिए प्राथमिक विधि के रूप में कार्य करता है।

54. छात्र प्रदर्शन पर एक नई शिक्षण पद्धति के प्रभाव का अध्ययन करने वाला एक शोधकर्ता हस्तक्षेप से पहले और बाद में छात्रों के अंकों को मापता है। यह किस प्रकार के अनुसंधान प्रारूप का उदाहरण है?
(A) अनुप्रस्थ काट प्रारूप
(B) पूर्व-परीक्षण/पश्च-परीक्षण प्रारूप
(C) स्थिर समूह तुलना
(D) वैयक्तिक अध्ययन प्रारूप

55. कौन-सी डेटा संग्रह तकनीक सामाजिक वांछनीयता पक्षपात की समस्याओं के प्रति सबसे अधिक संवेदनशील है?
(A) आधिकारिक रिकॉर्ड का विषय-वस्तु विश्लेषण
(B) गुप्त अवलोकन
(C) भौतिक निशानों का विश्लेषण
(D) स्वयं-प्रशासित प्रश्नावली और साक्षात्कार

56. शोध में एस.पी.एस.एस. का उपयोग किसका एक उदाहरण है?
(A) सामाजिक अनुसंधान में कंप्यूटर का अनुप्रयोग।
(B) डेटा संग्रह की एक विधि।
(C) एक गुणात्मक विश्लेषण तकनीक।
(D) प्रतिचयन प्रारूप का एक प्रकार।

57. निम्नलिखित अभिकथन (A) और कारण (R) को पढ़िए और सही विकल्प चुनिए:
अभिकथन (A): अत्यधिक विषम वितरण के लिए माध्य केंद्रीय प्रवृत्ति का एक भ्रामक माप हो सकता है।
कारण (R): माध्य चरम बाह्य मानों के प्रति संवेदनशील होता है, जो औसत को अपनी ओर खींच लेते हैं।
(A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सही है लेकिन R गलत है।
(D) A गलत है लेकिन R सही है।

58. निम्नलिखित में से कौन सामाजिक अनुसंधान में अवलोकन का एक प्रकार नहीं है?
(A) परिकल्पनात्मक अवलोकन
(B) सहभागी अवलोकन
(C) गैर-सहभागी अवलोकन
(D) नियंत्रित अवलोकन

59. मानव विषयों के साथ व्यवहार करते समय एक शोधकर्ता को कौन-सा मौलिक नैतिक सिद्धांत बनाए रखना चाहिए?
(A) यह सुनिश्चित करना कि शोध एक उच्च स्तरीय पत्रिका में प्रकाशित हो।
(B) गारंटी देना कि निष्कर्ष प्रारंभिक परिकल्पना का समर्थन करेंगे।
(C) डेटा संग्रह को शीघ्रता से पूर्ण करना।
(D) प्रतिभागियों के लिए हानि को कम करना और लाभों को अधिकतम करना।

60. वैयक्तिक अध्ययन के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. यह एक एकल इकाई का गहन अध्ययन है।
II. इसका उपयोग मुख्य रूप से व्यापक सांख्यिकीय सामान्यीकरण करने के लिए किया जाता है।
III. यह समृद्ध, विस्तृत और प्रासंगिक डेटा प्रदान करता है।
उपरोक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?
(A) केवल II
(B) केवल I और III
(C) केवल II और III
(D) I, II और III सभी

61. बड़े पैमाने पर सर्वेक्षण करने से पहले 'प्रायोगिक अध्ययन' का मुख्य उद्देश्य क्या है?
(A) प्रारंभिक निष्कर्षों को शीघ्र प्रकाशित करना।
(B) मुख्य अध्ययन के लिए अंतिम नमूने का चयन करना।
(C) प्रश्नावली और अनुसंधान प्रक्रियाओं का परीक्षण और परिष्करण करना।
(D) मुख्य शोध से प्राप्त अंतिम डेटा का विश्लेषण करना।

62. एक चर जिसे दूसरे चर का कारण माना जाता है या जो दूसरे को प्रभावित करता है, कहलाता है:
(A) आश्रित चर
(B) बाह्य चर
(C) भ्रामक चर
(D) स्वतंत्र चर

63. निम्नलिखित प्रतिचयन विधियों पर विचार कीजिए:
I. कोटा प्रतिचयन
II. सरल यादृच्छिक प्रतिचयन
III. सुविधाजनक प्रतिचयन
IV. स्तरित यादृच्छिक प्रतिचयन
निम्नलिखित में से कौन सबसे अधिक कठोर से कम कठोर तक की सही श्रेणी का प्रतिनिधित्व करता है?
(A) II, IV, I, III
(B) IV, II, I, III
(C) III, I, IV, II
(D) I, III, II, IV

Downloaded from www.pdf.tube

(B) II, III, IV, I
(C) I, II, III, IV
(D) II, IV, III, I

86. निम्नलिखित में से कौन गैर-संभाव्यता प्रतिचयन का एक उदाहरण है?
(A) सरल यादृच्छिक प्रतिचयन
(B) स्नोबॉल प्रतिचयन
(C) क्लस्टर प्रतिचयन
(D) स्तरित प्रतिचयन

87. एक शोधकर्ता एक छिपी हुई जनसंख्या का अध्ययन कर रहा है। वे कुछ ज्ञात व्यक्तियों से शुरू करते हैं और उनसे दूसरों के बारे में जानकारी देने को कहते हैं। यह प्रतिचयन तकनीक है:
(A) कोटा प्रतिचयन
(B) उद्देश्यपूर्ण प्रतिचयन
(C) सुविधाजनक प्रतिचयन
(D) स्नोबॉल प्रतिचयन

88. वैयक्तिक अध्ययन का मुख्य नुकसान क्या है?
(A) निष्कर्षों के निम्न सामान्यीकरण की संभावना।
(B) एकत्र किए गए डेटा में गहराई की कमी।
(C) समकालीन घटनाओं का अध्ययन करने में असमर्थता।
(D) बड़े नमूनों के लिए इसकी उच्च लागत और समय की आवश्यकता।

89. एक 'समाजआरेख' किस विधि का उपयोग करके एकत्र किए गए डेटा का एक दृश्य प्रतिनिधित्व है?
(A) नृवंशविज्ञान
(B) मौखिक इतिहास
(C) समाजमिति
(D) विषय-वस्तु विश्लेषण

90. अनुसंधान में 'वैधता' किसे संदर्भित करती है?
(A) वह सीमा जिस तक कोई माप उस अवधारणा को सटीक रूप से दर्शाता है जिसे उसे मापने का उद्देश्य है।
(B) मापन की निरंतरता और स्थिरता।
(C) जनसंख्या के लिए निष्कर्षों की सामान्यीकरण क्षमता।
(D) परिणामों की सांख्यिकीय सार्थकता।

91. मापन की निरंतरता, या वह डिग्री जिस तक कोई उपकरण हर बार एक ही तरह से मापता है, कहलाती है:
(A) वैधता
(B) वस्तुनिष्ठता
(C) उपयोगिता
(D) विश्वसनीयता

92. निम्नलिखित में से कौन सामाजिक अनुसंधान में नैतिक मुद्दा नहीं है?
(A) सूचित सहमति
(B) सांख्यिकीय सार्थकता
(C) गोपनीयता
(D) गुमनामी

93. सामाजिक न्याय के प्रति अपनी व्यक्तिगत प्रतिबद्धता के कारण घरेलू हिंसा की समस्या का अध्ययन करने का एक शोधकर्ता का निर्णय, शोध में _____ की भूमिका का एक उदाहरण है।
(A) तथ्यों
(B) वस्तुनिष्ठता
(C) मूल्यों
(D) परिकल्पना

94. निम्नलिखित में से कौन डेटा संग्रह की तकनीक नहीं है?
(A) साक्षात्कार
(B) अवलोकन
(C) अनुसूची
(D) अनुसंधान प्रारूप

95. निम्नलिखित अभिकथन (A) और कारण (R) को पढ़िए और सही विकल्प चुनिए:
अभिकथन (A): मात्रात्मक और गुणात्मक विधियों के बीच चुनाव शोध प्रश्न पर निर्भर करता है।
कारण (R): प्रसार को मापने या कारण संबंधी परिकल्पनाओं के परीक्षण के उद्देश्य वाले शोध प्रश्न मात्रात्मक विधियों के लिए बेहतर उपयुक्त होते हैं।
(A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सही है लेकिन R गलत है।
(D) A गलत है लेकिन R सही है।

96. नाममात्र डेटा के लिए केंद्रीय प्रवृत्ति का कौन-सा माप उपयुक्त है?
(A) माध्य
(B) बहुलक
(C) माध्यिका
(D) मानक विचलन

97. 'सहभागी अवलोकन' की प्रमुख विशेषता क्या है?
(A) शोधकर्ता बिना किसी अंतःक्रिया के दूर से अवलोकन करता है।
(B) शोधकर्ता अध्ययन किए जा रहे समूह का सक्रिय सदस्य बन जाता है।
(C) अवलोकन एक नियंत्रित प्रयोगशाला परिवेश में होता है।
(D) शोधकर्ता अवलोकन के लिए केवल पूर्व-निर्धारित चेकलिस्ट का उपयोग करता है।

98. निम्नलिखित में से कौन-सा जोड़ा एक शोध विधि और उसके प्राथमिक डेटा प्रकार को सही ढंग से सुमेलित करता है?
(A) जीवन इतिहास - व्यक्तिगत वृत्तांत

NODIA

74. यदि कोई अध्ययन यह निर्धारित करने के लिए तैयार किया गया है कि कोई विशेष सामाजिक कार्यक्रम सफल क्यों रहा, तो किस प्रकार का अनुसंधान प्रारूप सबसे उपयुक्त होगा?
(A) व्याख्यात्मक
(B) वर्णनात्मक
(C) अन्वेषणात्मक
(D) आधारभूत

75. सार्थकता परीक्षण में p-मान क्या दर्शाता है?
(A) वैकल्पिक शोध परिकल्पना के सही होने की सटीक संभावना।
(B) दो प्राथमिक चरों के बीच देखे गए सहसंबंध की व्यापकता।
(C) अनुसंधान अध्ययन में शामिल प्रतिभागियों की कुल संख्या।
(D) यदि शून्य परिकल्पना सही होती, तो डेटा के अवलोकन की संभावना।

76. "संचार की संरचना के बजाय उसकी विषय-वस्तु का एक व्यवस्थित विश्लेषण, जैसे कि एक लिखित कार्य, भाषण या फिल्म" किसकी परिभाषा है?
(A) विमर्श विश्लेषण
(B) विषय-वस्तु विश्लेषण
(C) व्याख्यात्मक शास्त्र
(D) जीवन इतिहास

77. प्रश्नावली की तुलना में अनुसूची के उपयोग का मुख्य लाभ क्या है?
(A) यह सस्ता है और व्यापक भौगोलिक क्षेत्र को कवर कर सकता है।
(B) यह साक्षात्कारकर्ता के पक्षपात की संभावना को समाप्त करता है।
(C) यह उच्च प्रतिक्रिया दर सुनिश्चित करता है और प्रश्नों के स्पष्टीकरण की अनुमति देता है।
(D) यह उत्तरदाता को गुमनामी प्रदान करता है।

78. कौन-सा कथन 'सिद्धांत' और 'परिकल्पना' के बीच के संबंध का सबसे अच्छा वर्णन करता है?
(A) सिद्धांत एक विशिष्ट अनुमान है, जबकि परिकल्पना एक अच्छी तरह से स्थापित व्याख्या है।
(B) परिकल्पना एक सामान्य रूपरेखा है, और सिद्धांत इसका एक परीक्षण योग्य हिस्सा है।
(C) सिद्धांत और परिकल्पना एक ही अवधारणा के लिए विनिमय योग्य शब्द हैं।
(D) सिद्धांत एक व्यापक व्याख्या है, और परिकल्पना इससे प्राप्त एक परीक्षण योग्य भविष्यवाणी है।

79. डेटासेट का परास किसका माप है?
(A) परिक्षेपण
(B) केंद्रीय प्रवृत्ति
(C) सहसंबंध
(D) सार्थकता

80. एक शोधकर्ता विस्थापित व्यक्तियों के पुनर्वास के व्यक्तिगत वृत्तांतों को एकत्र करके उनके अनुभवों को समझना चाहता है। कौन-सी विधि सबसे उपयुक्त है?
(A) समाजमिति
(B) जीवन इतिहास / मौखिक इतिहास
(C) समाचार रिपोर्टों का विषय-वस्तु विश्लेषण
(D) बड़े पैमाने पर मात्रात्मक सर्वेक्षण

81. एक साक्षात्कार में, "क्या आप मुझे अपने अनुभव के बारे में और बता सकते हैं?" जैसा प्रश्न किसका उदाहरण है?
(A) एक बंद प्रश्न।
(B) एक जांच प्रश्न।
(C) एक निर्देशित प्रश्न।
(D) एक द्विभाजित प्रश्न।

82. नियमों के एक पूर्व-निर्दिष्ट समूह के अनुसार वस्तुओं की विशेषताओं को संख्या या प्रतीक सौंपने की प्रक्रिया को कहा जाता है:
(A) मापन
(B) प्रतिचयन
(C) परिकल्पना निर्माण
(D) कोडिंग

83. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए और सही विकल्प का चयन कीजिए:
कथन I: नृवंशविज्ञान सांख्यिकीय डेटा पर केंद्रित एक मात्रात्मक विधि है।
कथन II: समाजमिति विस्तृत सांस्कृतिक विवरण बनाने के लिए उपयोग की जाने वाली एक गुणात्मक विधि है।
(A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
(B) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।
(C) कथन I सही है, लेकिन कथन II गलत है।
(D) कथन I गलत है, लेकिन कथन II सही है।

84. 0.00 का सहसंबंध गुणांक दर्शाता है:
(A) एक पूर्ण रैखिक संबंध।
(B) एक पूर्ण नकारात्मक रैखिक संबंध।
(C) चरों के बीच एक कार्य-कारण संबंध।
(D) चरों के बीच कोई रैखिक संबंध नहीं।

85. एक विशिष्ट सर्वेक्षण अनुसंधान परियोजना के निम्नलिखित चरणों को कालानुक्रमिक क्रम में व्यवस्थित कीजिए:
I. डेटा विश्लेषण
II. प्रश्नावली निर्माण
III. प्रतिचयन
IV. डेटा संग्रह
निम्नलिखित में से कौन-सा सही क्रम का प्रतिनिधित्व करता है?
(A) III, II, IV, I

Click Here to Buy book on Amazon

108. एक प्रयोग जिसमें न तो प्रतिभागियों को और न ही शोधकर्ताओं को पता होता है कि नियंत्रण समूह में कौन है, कहलाता है:
(A) एक अंध प्रयोग
(B) एक दोहरा-अंध प्रयोग
(C) एक अर्ध-प्रयोग
(D) एक क्षेत्रीय प्रयोग

109. अन्वेषणात्मक अनुसंधान का प्राथमिक उद्देश्य क्या है?
(A) एक अच्छी तरह से परिभाषित परिकल्पना का परीक्षण करना।
(B) जनसंख्या की विशेषताओं का वर्णन करना।
(C) किसी घटना से परिचित होना या उसके बारे में नई अंतर्दृष्टि प्राप्त करना।
(D) एक निश्चित कार्य-कारण संबंध स्थापित करना।

110. एक शोधकर्ता प्रश्नों की एक सूची तैयार करता है लेकिन बातचीत के दौरान प्रश्नों के शब्दों और क्रम को बदलने के लिए स्वतंत्र होता है। यह किसका उदाहरण है?
(A) संरचित साक्षात्कार
(B) डाक प्रश्नावली
(C) मानकीकृत परीक्षण
(D) असंरचित या अर्ध-संरचित साक्षात्कार

111. जनसंख्या की उन सभी इकाइयों की सूची जिसमें से नमूना चुना जाता है, किस रूप में जानी जाती है?
(A) प्रतिचयन ढांचा
(B) प्रतिचयन तत्व
(C) जनसंख्या प्राचल
(D) नमूना सांख्यिकी

112. डेटासेट में सबसे अधिक बार आने वाला अंक _____ है, जबकि वह अंक जो वितरण को आधे हिस्से में विभाजित करता है, _____ है।
(A) माध्य; माध्यिका
(B) बहुलक; माध्यिका
(C) माध्यिका; बहुलक
(D) माध्य; बहुलक

113. निम्नलिखित अभिकथन (A) और कारण (R) को पढ़िए और सही विकल्प चुनिए:
अभिकथन (A): समाजशास्त्र में वैज्ञानिक पद्धति प्राकृतिक विज्ञानों के समान नहीं हो सकती।
कारण (R): सामाजिक घटनाओं में एक व्यक्तिपरक आयाम होता है और वे ऐतिहासिक रूप से विशिष्ट होती हैं।
(A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सही है लेकिन R गलत है।
(D) A गलत है लेकिन R सही है।

114. एनविवो या एटलस.टीआई सॉफ्टवेयर का उपयोग किस प्रकार के शोध के विश्लेषण चरण से सबसे अधिक निकटता से जुड़ा है?
(A) गुणात्मक अनुसंधान
(B) मात्रात्मक सर्वेक्षण अनुसंधान
(C) प्रयोगात्मक अनुसंधान
(D) समाजमितीय विश्लेषण

115. निम्नलिखित में से कौन-सा अवधारणा और उदाहरण का गलत जोड़ा है?
(A) परिकल्पना: "गरीबी से अपराध दर बढ़ती है।"
(B) अनुसंधान प्रारूप: "500 घरों का एक अनुप्रस्थ काट सर्वेक्षण।"
(C) डेटा संग्रह तकनीक: "आय का माध्य और माध्यिका।"
(D) प्रतिचयन: "विद्यालय के रोस्टर से प्रत्येक 10वें छात्र का चयन करना।"

NODIA

116. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. नृवंशविज्ञान एक शोध पद्धति है।
II. नृवंशविज्ञान शोध का एक लिखित उत्पाद है।
III. नृवंशविज्ञान मुख्य रूप से परिकल्पना परीक्षण पर केंद्रित है।
उपरोक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?
(A) केवल I और II
(B) केवल II और III
(C) केवल I
(D) I, II और III सभी

117. एकमात्र डेटा संग्रह पद्धति के रूप में अवलोकन का उपयोग करने की प्राथमिक सीमा क्या है?
(A) यह एक अनुभवजन्य विधि नहीं है।
(B) यह केवल ऐतिहासिक अनुसंधान के लिए उपयुक्त है।
(C) इसका उपयोग लोग क्या सोचते या अनुभव करते हैं, इसके अध्ययन के लिए नहीं किया जा सकता है।
(D) यह केवल मात्रात्मक डेटा उत्पन्न कर सकता है।

118. एक शोधकर्ता विभिन्न ग्रंथों और मिथकों में इसके उपयोग का विश्लेषण करके एक विशिष्ट सांस्कृतिक प्रतीक के अर्थ को समझना चाहता है। सबसे उपयुक्त गुणात्मक विधि होगी:
(A) वैयक्तिक अध्ययन
(B) विषय-वस्तु विश्लेषण
(C) सहभागी अवलोकन
(D) मौखिक इतिहास

119. प्रसरण के वर्गमूल को किस रूप में जाना जाता है?
(A) परास
(B) माध्य विचलन
(C) विचरण गुणांक
(D) मानक विचलन

(B) सर्वेक्षण - क्षेत्र टिप्पणियाँ
(C) विषय-वस्तु विश्लेषण - वर्णनात्मक वृत्तांत
(D) सहभागी अवलोकन - सांख्यिकीय तालिकाएं

99. गुणात्मक डेटा विश्लेषण में कंप्यूटर के अनुप्रयोग मुख्य रूप से सॉफ्टवेयर द्वारा सुगम होते हैं जिन्हें इस प्रकार डिजाइन किया गया है:
(A) डेटा से स्वचालित रूप से सिद्धांतों का निर्माण करना।
(B) सार्थकता के सांख्यिकीय परीक्षण आयोजित करना।
(C) पाठ्य या दृश्य डेटा को कोड करने, व्यवस्थित करने और पुनः प्राप्त करने में सहायता करना।
(D) शोधकर्ता की व्याख्या की आवश्यकता को समाप्त करना।

100. प्रतिचयन प्रकार को उसकी विशेषता के साथ सुमेलित कीजिए:

प्रतिचयन प्रकार
P. सरल यादृच्छिक
Q. स्तरित यादृच्छिक
R. कोटा
S. सुविधाजनक

विशेषता
1. आसान पहुंच के आधार पर चुनी गई इकाइयाँ।
2. श्रेणियों में पूर्व-निर्धारित संख्या भरने के लिए चुनी गई इकाइयाँ।
3. जनसंख्या को उपसमूहों में विभाजित किया जाता है और प्रत्येक से नमूने लिए जाते हैं।
4. प्रत्येक इकाई के चुने जाने की समान संभावना होती है।

(A) P-1, Q-2, R-3, S-4
(B) P-4, Q-3, R-1, S-2
(C) P-4, Q-3, R-2, S-1
(D) P-3, Q-4, R-2, S-1

101. सामाजिक अनुसंधान के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. सामाजिक घटनाओं की प्रकृति उन्हें व्यवस्थित रूप से पढ़ना असंभव बनाती है।
II. वस्तुनिष्ठता किसी भी सामाजिक शोधकर्ता के लिए आसानी से प्राप्त होने वाली पूर्ण अवस्था है।
III. सामाजिक विज्ञान में 'तथ्य' और 'मूल्य' विनिमय योग्य अवधारणाएं हैं।

उपरोक्त कथनों में से कौन-सा/से गलत है/हैं?
(A) केवल I और II
(B) केवल III
(C) केवल II और III
(D) I, II और III सभी

102. एक अध्ययन जो किसी जनसंख्या से एक विशिष्ट समय पर डेटा एकत्र करता है, कहलाता है:
(A) एक अनुदैर्ध्य अध्ययन
(B) एक अनुप्रस्थ काट अध्ययन
(C) एक समय-श्रृंखला अध्ययन
(D) एक कोहोर्ट अध्ययन

103. सांख्यिकी में, वितरण में उच्चतम और निम्नतम अंक के बीच के अंतर को किस रूप में जाना जाता है?
(A) प्रसरण
(B) मानक विचलन
(C) अंतर्कचर्तुथक परास
(D) परास

104. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए और सही विकल्प का चयन कीजिए:
कथन I: एक सकारात्मक सहसंबंध इंगित करता है कि जैसे-जैसे एक चर बढ़ता है, दूसरा चर भी बढ़ता है।
कथन II: एक नकारात्मक सहसंबंध इंगित करता है कि जैसे-जैसे एक चर बढ़ता है, दूसरा चर घटता है।
(A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
(B) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।
(C) कथन I सही है, लेकिन कथन II गलत है।
(D) कथन I गलत है, लेकिन कथन II सही है।

105. सामाजिक अनुसंधान में "त्रिभुजीकरण" किसे संदर्भित करता है?
(A) एक अध्ययन संचालित करने के लिए तीन शोधकर्ताओं का उपयोग करना।
(B) एक प्रतिचयन विधि जिसमें तीन चरण शामिल होते हैं।
(C) एक ही घटना का अध्ययन करने के लिए कई विधियों या डेटा स्रोतों का उपयोग करना।
(D) तीन चरों का विश्लेषण करने के लिए एक सांख्यिकीय तकनीक।

106. 'मौखिक इतिहास' और 'जीवन इतिहास' के बीच एक मुख्य अंतर यह है कि:
(A) मौखिक इतिहास अक्सर एक विशिष्ट घटना पर केंद्रित होता है, जबकि जीवन इतिहास पूरे जीवनकाल को कवर करता है।
(B) मौखिक इतिहास गुणात्मक है, जबकि जीवन इतिहास मात्रात्मक है।
(C) मौखिक इतिहास साक्षात्कार का उपयोग करता है, जबकि जीवन इतिहास प्रश्नावली का उपयोग करता है।
(D) मौखिक इतिहास एक आधुनिक तकनीक है, जबकि जीवन इतिहास एक अप्रचलित तकनीक है।

107. एक शोधकर्ता को आइसक्रीम की बिक्री और अपराध दर के बीच एक मजबूत सकारात्मक सहसंबंध मिलता है। सबसे उपयुक्त निष्कर्ष क्या होगा?
(A) आइसक्रीम खाने से लोग अपराध करते हैं।
(B) अपराध करने से लोग आइसक्रीम खाते हैं।
(C) सहसंबंध पूरी तरह से संयोग है और अर्थहीन है।
(D) एक तीसरा चर, जैसे गर्म मौसम, संभवतः दोनों को प्रभावित कर रहा है।

NODIA

64. यदि एक शोधकर्ता समय के कई बिंदुओं पर व्यक्तियों के एक ही समूह का अध्ययन करता है, तो वह किस प्रकार का अध्ययन कर रहा है?
(A) अनुप्रस्थ काट अध्ययन
(B) अनुदैर्ध्य अध्ययन
(C) वैयक्तिक अध्ययन
(D) प्रयोगात्मक अध्ययन

65. अनुसंधान विधि को उसके प्राथमिक केंद्र के साथ सुमेलित कीजिए:

अनुसंधान विधि
P. नृवंशविज्ञान
Q. मौखिक इतिहास
R. विषय-वस्तु विश्लेषण
S. समाजमिति

प्राथमिक केंद्र
1. संचार के प्रतिरूपों का विश्लेषण।
2. समूह संरचना और पारस्परिक विकल्पों को समझना।
3. एक संस्कृति का सघन विवरण प्रदान करना।
4. ऐतिहासिक घटनाओं की व्यक्तिगत स्मृतियों को एकत्र करना।

(A) P-1, Q-2, R-3, S-4
(B) P-3, Q-4, R-1, S-2
(C) P-4, Q-3, R-2, S-1
(D) P-3, Q-1, R-4, S-2

66. एक शोधकर्ता पूर्व-निर्धारित प्रतिक्रिया विकल्पों के साथ एक प्रश्नावली बनाता है। ये किसके उदाहरण हैं?
(A) बंद प्रश्न
(B) खुले प्रश्न
(C) असंरचित प्रश्न
(D) प्रक्षेपी प्रश्न

67. निम्नलिखित में से कौन-सी गुणात्मक विधि नहीं है?
(A) जीवन इतिहास
(B) नृवंशविज्ञान
(C) सर्वेक्षण
(D) सहभागी अवलोकन

68. सामाजिक अनुसंधान में 'प्रतिक्रियाशीलता' की समस्या किससे संबंधित है?
(A) जटिल गुणात्मक डेटासेट को वर्गीकृत करने और विश्लेषण करने में अंतर्निहित कठिनाई।
(B) सांख्यिकीय अशुद्धियाँ और व्यवस्थित त्रुटियाँ जो प्रतिचयन चरण के दौरान होती हैं।
(C) विषय वस्तु के प्रति शोधकर्ता की भावनात्मक प्रतिक्रिया।
(D) विषयों की यह प्रवृत्ति कि वे यह अनुभव होने पर अपना व्यवहार बदल लेते हैं कि उनका अवलोकन किया जा रहा है।

69. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए और सही विकल्प का चयन कीजिए:
कथन I: सामाजिक विज्ञान में एक 'तथ्य' वस्तुनिष्ठ होता है और किसी भी सैद्धांतिक रूपरेखा से पूरी तरह स्वतंत्र होता है।
कथन II: एक 'मूल्य' इस बात के व्यक्तिपरक मानक का प्रतिनिधित्व करता है कि क्या वांछनीय या सही माना जाता है।
(A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
(B) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।
(C) कथन I सही है, लेकिन कथन II गलत है।
(D) कथन I गलत है, लेकिन कथन II सही है।

70. निम्नलिखित अभिकथन (A) और कारण (R) को पढ़िए और सही विकल्प चुनिए:
अभिकथन (A): गुणात्मक विधियों की अक्सर उनके सामान्यीकरण की कमी के लिए आलोचना की जाती है।
कारण (R): वे सामान्यतः छोटे, गैर-यादृच्छिक नमूनों का उपयोग करते हैं, जो बड़ी जनसंख्या के प्रतिनिधि नहीं हो सकते हैं।
(A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सही है लेकिन R गलत है।
(D) A गलत है लेकिन R सही है।

71. डेटासेट {10, 20, 30, 40, 150} में, केंद्रीय प्रवृत्ति का कौन-सा माप संख्या 150 से सबसे अधिक प्रभावित होगा?
(A) माध्यिका
(B) बहुलक
(C) सभी समान रूप से प्रभावित होंगे
(D) माध्य

72. 'नृवंशविज्ञान' के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. इसकी उत्पत्ति सांस्कृतिक नृविज्ञान के क्षेत्र से हुई है।
II. यह सहभागी अवलोकन पर बहुत अधिक निर्भर करता है।
III. इसका प्राथमिक आउटपुट सांख्यिकीय तालिकाएं और सहसंबंध गुणांक हैं।
उपरोक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?
(A) केवल I और II
(B) केवल II और III
(C) केवल III
(D) I, II और III सभी

73. 'हॉथोर्न प्रभाव' सामाजिक अनुसंधान की किस व्यापक समस्या का एक विशिष्ट उदाहरण है?
(A) प्रतिचयन त्रुटि
(B) शोधकर्ता पक्षपात
(C) प्रतिक्रियाशीलता
(D) डेटा निर्माण

Downloaded from www.pdf.tube

120. सामाजिक अनुसंधान में, 'मूल्य-मुक्त' समाजशास्त्र की समस्या किसके बीच के तनाव से सबसे अधिक निकटता से जुड़ी है?
(A) तथ्य और मूल्य
(B) मात्रात्मक और गुणात्मक विधियाँ
(C) परिकल्पना और सिद्धांत
(D) सर्वेक्षण और साक्षात्कार

121. एक अध्ययन से पता चलता है कि जैसे-जैसे लोगों की आयु बढ़ती है, उनकी राजनीतिक रूढ़िवादिता भी बढ़ती जाती है। यह दर्शाता है:
(A) नकारात्मक सहसंबंध
(B) शून्य सहसंबंध
(C) सकारात्मक सहसंबंध
(D) कार्य-कारण संबंध

122. निम्नलिखित में से कौन-सा 'अनुसूची' की एक प्राथमिक विशेषता है?
(A) इसे एक प्रशिक्षित साक्षात्कारकर्ता द्वारा संचालित किया जाता है जो उत्तरों को रिकॉर्ड करता है।
(B) इसे उत्तरदाता द्वारा बिना किसी सहायता के भरा जाता है।
(C) इसका उपयोग विशेष रूप से गुणात्मक जीवन इतिहास एकत्र करने के लिए किया जाता है।
(D) इसमें केवल खुले, असंरचित प्रश्न होते हैं।

123. एक अध्ययन में 'विश्लेषण की इकाई' किसे संदर्भित करती है?
(A) उपयोग की जाने वाली सांख्यिकीय तकनीक।
(B) पालन किए गए नैतिक दिशा-निर्देश।
(C) अंतिम शोध रिपोर्ट।
(D) वह तत्व या विषय जिसका अध्ययन किया जा रहा है।

124. उद्देश्य को उसके अनुसंधान प्रारूप प्रकार के साथ सुमेलित कीजिए:

उद्देश्य
P. पृष्ठभूमि की जानकारी प्राप्त करना
Q. घटनाओं का वर्णन और मापन करना
R. कार्य-कारण निर्धारित करना

अनुसंधान
1. व्याख्यात्मक
2. अन्वेषणात्मक
3. वर्णनात्मक

(A) P-1, Q-2, R-3
(B) P-3, Q-1, R-2
(C) P-2, Q-3, R-1
(D) P-2, Q-1, R-3

125. इनमें से कौन केंद्रीय प्रवृत्ति का माप नहीं है?
(A) माध्य
(B) बहुलक
(C) प्रसरण
(D) माध्यिका

126. एक शोधकर्ता जो एक विरोध आंदोलन की आंतरिक गतिशीलता को एक अंदरूनी सूत्र के दृष्टिकोण से समझने के लिए उसमें शामिल होता है, वह किसका उपयोग कर रहा है?
(A) विषय-वस्तु विश्लेषण
(B) संरचित साक्षात्कार
(C) सामाजिक सर्वेक्षण
(D) सहभागी अवलोकन

127. निम्नलिखित अभिकथन (A) और कारण (R) को पढ़िए और सही विकल्प चुनिए:
अभिकथन (A): स्नोबॉल प्रतिचयन उन आबादियों के अध्ययन के लिए एक उपयोगी तकनीक है जिन तक पहुंचना कठिन है।
कारण (R): यह संभाव्यता प्रतिचयन का एक रूप है जो यह सुनिश्चित करता है कि जनसंख्या के प्रत्येक सदस्य के चुने जाने की समान संभावना हो।
(A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सही है लेकिन R गलत है।
(D) A गलत है लेकिन R सही है।

128. यदि शोध का कोई निष्कर्ष 'सांख्यिकीय रूप से महत्वपूर्ण' है, तो इसका अर्थ है कि परिणाम:
(A) बहुत महत्वपूर्ण है और इसके प्रमुख व्यावहारिक निहितार्थ हैं।
(B) यादृच्छिक संयोग से होने की संभावना नहीं है।
(C) बिल्कुल निश्चित और त्रुटि मुक्त है।
(D) पूरी जनसंख्या का प्रतिनिधि है।

129. इस कथन पर विचार कीजिए: "इस गाँव की औसत आय 50,000 रुपये प्रति माह है।" यह कथन एक है:
(A) मूल्य
(B) तथ्य
(C) परिकल्पना
(D) सिद्धांत

130. गुणात्मक अनुसंधान के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. डेटा अक्सर शब्दों, चित्रों या वस्तुओं के रूप में होता है।
II. शोध प्रक्रिया अक्सर लचीली और उभरती हुई होती है।
III. शोधकर्ता को डेटा संग्रह का एक उपकरण माना जाता है।
उपरोक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?
(A) केवल I
(B) केवल I और II
(C) केवल II और III
(D) I, II और III सभी

131. शोध साक्षात्कार के संदर्भ में 'सौहार्द' क्या है?
(A) पूछे गए मानकीकृत प्रश्नों का समूह।
(B) साक्षात्कार प्रतिलेख का विश्लेषण।

NODIA

(C) साक्षात्कारकर्ता और उत्तरदाता के बीच एक सहज और भरोसेमंद संबंध।
(D) उत्तरदाता को उनके समय के लिए दिया गया भुगतान।

132. विश्लेषण के लिए गुणात्मक डेटा को श्रेणियों और कोड में बदलने की प्रक्रिया किसका केंद्रीय हिस्सा है?
(A) सांख्यिकीय विश्लेषण
(B) प्रतिचयन
(C) परिकल्पना परीक्षण
(D) गुणात्मक डेटा विश्लेषण

133. 'जीवन इतिहास' अनुसंधान के संचालन में निम्नलिखित में से कौन-सी सबसे महत्वपूर्ण चुनौती है?
(A) सांख्यिकीय विश्लेषण करने में कठिनाई।
(B) समकालीन व्यक्तियों का अध्ययन करने में असमर्थता।
(C) स्मृति रिकॉल, चयनात्मक पक्षपात और व्यक्तिगत औचित्य से जुड़े वर्णनात्मक मुद्दे।
(D) उच्च श्रेणी के कंप्यूटर-सहायता प्राप्त सॉफ्टवेयर के लिए आवश्यक उच्च वित्तीय निवेश।

134. किस विधि को "संस्कृति और लोगों का अध्ययन" के रूप में परिभाषित किया गया है?
(A) समाजमिति
(B) नृवंशविज्ञान
(C) इतिहासलेखन
(D) वैयक्तिक अध्ययन

135. डेटासेट {10, 15, 20, 25, 30} के लिए माध्यिका क्या है?
(A) 15
(B) 22
(C) 30
(D) 20

136. वैज्ञानिक पद्धति को 'अनुभवजन्य' माना जाता है क्योंकि यह आधारित है:
(A) अवलोकन और अनुभव पर।
(B) सिद्धांतों से तार्किक कटौती पर।
(C) स्थापित अधिकार और परंपरा पर।
(D) व्यक्तिगत अंतर्ज्ञान और विश्वास पर।

137. निम्नलिखित में से कौन-सा परिदृश्य 'सूचित सहमति' से संबंधित नैतिक दुविधा को सबसे अच्छी तरह से दर्शाता है?
(A) एक शोधकर्ता प्रतिभागियों को उनके समय के लिए एक लघु शुल्क देता है।
(B) एक शोधकर्ता सार्वजनिक उद्यान में लोगों को उनकी जानकारी के बिना देखता है।
(C) एक शोधकर्ता बिना खुलासा किए सहायता समूहों को रिकॉर्ड करने के लिए गुप्त कैमरों का उपयोग करता है।
(D) एक शोधकर्ता साक्षात्कार रिकॉर्ड करने के लिए औपचारिक लिखित अनुमति मांगता है।

138. एक शोधकर्ता जनसंख्या को पुरुषों और महिलाओं में विभाजित करता है, और फिर प्रत्येक से एक सरल यादृच्छिक नमूना लेता है। यह किसका उदाहरण है?
(A) स्तरित प्रतिचयन
(B) क्लस्टर प्रतिचयन
(C) कोटा प्रतिचयन
(D) व्यवस्थित प्रतिचयन

139. एक 'अनुसंधान समस्या' को सबसे अच्छी तरह परिभाषित किया गया है:
(A) डेटा संग्रह के दौरान आने वाली कठिनाई।
(B) अनुसंधान प्रारूप में एक दोष।
(C) विश्लेषण में एक सांख्यिकीय त्रुटि।
(D) एक प्रश्न या मुद्दा जिसे शोधकर्ता संबोधित करना चाहता है।

140. निम्नलिखित में से कौन एक गलत जोड़े की पहचान करता है?
(A) गुणात्मक विधि - सहभागी अवलोकन
(B) डेटा संग्रह तकनीक - सहसंबंध विश्लेषण
(C) मात्रात्मक विधि - सर्वेक्षण
(D) सांख्यिकीय उपकरण - माध्य

141. 'वैयक्तिक अध्ययन' की एक प्रमुख विशेषता इसका किस पर ध्यान केंद्रित करना है?
(A) गहराई के बजाय व्यापकता पर।
(B) सांख्यिकीय सामान्यीकरण पर।
(C) तीव्रता और समग्रता पर।
(D) विशेष रूप से परिकल्पना परीक्षण पर।

142. मात्रात्मक डेटा विश्लेषण के लिए कंप्यूटर का उपयोग करने का मुख्य उद्देश्य है:
(A) पूछे गए प्रश्नों की गुणवत्ता में सुधार करना।
(B) सैद्धांतिक रूपरेखा की आवश्यकता को समाप्त करना।
(C) व्याख्या में शोधकर्ता की भूमिका को प्रतिस्थापित करना।
(D) जटिल सांख्यिकीय गणनाओं को शीघ्र और सटीक रूप से करना।

143. यदि कोई शोधकर्ता अंतःक्रियाओं का आरेख बनाकर एक छोटी कंपनी के सामाजिक नेटवर्क का अध्ययन करता है, तो वह उपयोग कर रहा है:
(A) समाजमिति
(B) मौखिक इतिहास
(C) विषय-वस्तु विश्लेषण
(D) जीवन इतिहास

144. सामाजिक अनुसंधान में वस्तुनिष्ठता और व्यक्तिपरकता के बीच संबंध के बारे में कौन-सा कथन सत्य है?
(A) पूर्ण वस्तुनिष्ठता आसानी से प्राप्त की जा सकती है, और व्यक्तिपरकता हमेशा एक दोष है।
(B) व्यक्तिपरकता को स्वीकार करना और प्रबंधित करना

Click Here to Buy book on Amazon

वस्तुनिष्ठता की दिशा में प्रयास करने का एक प्रमुख हिस्सा है।
(C) वे विरोधी शक्तियाँ हैं, और एक शोधकर्ता को सभी व्यक्तिपरकता को समाप्त करना चाहिए।
(D) व्यक्तिपरकता मात्रात्मक अनुसंधान का लक्ष्य है।

145. कौन-सा एक गुणात्मक अध्ययन के लिए तार्किक अनुक्रम का प्रतिनिधित्व करता है?
(A) III, II, I, IV
(B) II, I, III, IV
(C) III, I, II, IV
(D) I, III, II, IV

146. एक चर जो स्वतंत्र और आश्रित चरों के बीच संबंध को प्रभावित कर सकता है, कहलाता है:
(A) बाह्य चर
(B) अंतवर्ती चर
(C) नियंत्रण चर
(D) नियामक चर

147. लिकर्ट पैमाना किस डेटा संग्रह तकनीक में उपयोग किया जाने वाला एक सामान्य उपकरण है?
(A) अवलोकन
(B) मौखिक इतिहास
(C) प्रश्नावली
(D) वैयक्तिक अध्ययन

148. गुणात्मक विधियों का प्रमुख लाभ उनकी यह क्षमता है:
(A) सटीक संख्यात्मक माप प्रदान करना।
(B) बड़ी जनसंख्या के लिए सामान्यीकरण की अनुमति देना।
(C) उच्च निश्चितता के साथ कारण संबंधी परिकल्पनाओं का परीक्षण करना।
(D) किसी घटना की समृद्ध, गहन समझ प्रदान करना।

149. सामाजिक विज्ञान में 'तथ्य' की अवधारणा समस्याग्रस्त है क्योंकि:
(A) सामाजिक घटनाओं को देखा नहीं जा सकता।
(B) कोई भी दो व्यक्ति किसी सामाजिक अवलोकन पर सहमत नहीं हो सकते।
(C) तथ्य हमेशा सिद्धांत-आधारित होते हैं और एक संदर्भ के भीतर व्याख्या किए जाते हैं।
(D) समाज में किसी भी वस्तु को गिनना या मापना असंभव है।

150. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए और सही विकल्प का चयन कीजिए:
कथन I: एक अनुसंधान प्रारूप एक ऐसी योजना है जो डेटा के संग्रह और विश्लेषण का मार्गदर्शन करती है।
कथन II: डेटा एकत्र होने के बाद अनुसंधान प्रारूप तैयार किया जाता है।
(A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
(B) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।
(C) कथन I सही है, लेकिन कथन II गलत है।
(D) कथन I गलत है, लेकिन कथन II सही है।

151. सामाजिक अनुसंधान में कंप्यूटर सॉफ्टवेयर के उपयोग का निम्नलिखित में से कौन-सा लाभ नहीं है?
(A) डेटा प्रोसेसिंग और विश्लेषण में गति।
(B) जटिल गणनाओं में सटीकता।
(C) बड़े डेटासेट को संभालने की क्षमता।
(D) प्रारंभिक शोध परिकल्पना का निर्माण।

152. संस्थापक सदस्यों से किसी सामाजिक आंदोलन के ऐतिहासिक विकास को समझने के लिए कौन-सी गुणात्मक विधि सबसे उपयुक्त होगी?
(A) मौखिक इतिहास
(B) विषय-वस्तु विश्लेषण
(C) वैयक्तिक अध्ययन
(D) सहभागी अवलोकन

153. अंकों के निम्नलिखित समूह के लिए बहुलक क्या है: 2, 5, 8, 2, 9, 8, 10, 8?
(A) 2
(B) 5
(C) 8
(D) 10

154. निम्नलिखित अभिकथन (A) और कारण (R) को पढ़िए और सही विकल्प चुनिए:
अभिकथन (A): भौगोलिक रूप से बिखरी हुई जनसंख्या से डेटा एकत्र करने के लिए प्रश्नावली एक प्रभावी उपकरण है।
कारण (R): आमने-सामने के साक्षात्कार की तुलना में प्रश्नावली को अपेक्षाकृत कम लागत पर वितरित किया जा सकता है।
(A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सही है लेकिन R गलत है।
(D) A गलत है लेकिन R सही है।

155. अनुसंधान गतिविधि को उससे संबंधित विधि के साथ सुमेलित कीजिए:

अनुसंधान गतिविधि
P. परिकल्पना तैयार करना
Q. नमूने का चयन करना
R. पाठ्य डेटा का विश्लेषण करना
S. समूह संबंधों को मापना

संबंधित विधि
1. विषय-वस्तु विश्लेषण
2. समाजमिति
3. वैज्ञानिक पद्धति
4. प्रतिचयन

(A) P-3, Q-4, R-1, S-2

(B) P-1, Q-2, R-3, S-4
(C) P-4, Q-3, R-2, S-1
(D) P-3, Q-1, R-4, S-2

156. किसी अन्य शोधकर्ता द्वारा एकत्र किए गए मौजूदा डेटासेट के उपयोग को क्या कहा जाता है?
(A) प्राथमिक डेटा विश्लेषण
(B) द्वितीयक डेटा विश्लेषण
(C) मेटा-विश्लेषण
(D) प्रारंभिक डेटा विश्लेषण

157. निम्नलिखित में से कौन द्विभाजित चर का एक उदाहरण है?
(A) वर्षों में आयु
(B) रुपयों में आय
(C) लिंग (पुरुष/महिला)
(D) संतुष्टि का स्तर

158. माध्यिका के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. यह सबसे अधिक बार आने वाला मान है।
II. यह चरम बाह्य मानों से अप्रभावित रहता है।
III. यह वितरण का मध्य बिंदु है।
उपरोक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?
(A) केवल I और II
(B) केवल II और III
(C) केवल I और III
(D) I, II और III सभी

159. 'वर्स्टेहेन' दृष्टिकोण किस अनुसंधान प्रतिमान से सबसे अधिक निकटता से जुड़ा है?
(A) व्याख्यात्मक
(B) प्रत्यक्षवाद
(C) संरचनात्मक प्रकार्यवाद
(D) संघर्ष सिद्धांत

160. वर्णनात्मक सांख्यिकी का प्राथमिक उद्देश्य क्या है?
(A) जनसंख्या के बारे में परिकल्पनाओं का परीक्षण करना।
(B) एक नमूने की विशेषताओं को संक्षेप में प्रस्तुत करना और उनका वर्णन करना।
(C) चरों के बीच कार्य-कारण संबंधों को निर्धारित करना।
(D) जनसंख्या में से एक प्रतिनिधि नमूना चुनना।

161. निम्नलिखित में से कौन-सा/से कथन गलत है/हैं?
I. सहभागी अवलोकन एक मात्रात्मक विधि है।
II. परिकल्पना एक सिद्ध तथ्य है।
III. अनुसंधान प्रारूप अनुसंधान प्रक्रिया का एक वैकल्पिक हिस्सा है।
(A) केवल I
(B) केवल II
(C) I, II और III सभी
(D) केवल I और II

162. प्रतीकात्मक संचार का व्यवस्थित अध्ययन किसका मूल है?
(A) विषय-वस्तु विश्लेषण
(B) जीवन इतिहास
(C) मौखिक इतिहास
(D) वैयक्तिक अध्ययन

163. एक पूर्ण सकारात्मक सहसंबंध को किस गुणांक द्वारा दर्शाया जाता है?
(A) -1.0
(B) 0.0
(C) +1.0
(D) +100

164. "एक विशिष्ट व्यक्ति या विशिष्ट संदर्भ का गहन अध्ययन" किसे संदर्भित करता है?
(A) सर्वेक्षण
(B) नृवंशविज्ञान
(C) सहसंबंधी अध्ययन
(D) वैयक्तिक अध्ययन

165. जब शोधकर्ता की उपस्थिति अध्ययन किए जा रहे लोगों के व्यवहार को प्रभावित करती है, तो इसे किस रूप में जाना जाता है?
(A) प्रतिचयन पक्षपात
(B) प्लेसबो प्रभाव
(C) प्रेक्षक प्रभाव
(D) सहसंबंध भ्रम

166. किस प्रकार के शोध का उद्देश्य किसी स्थिति का एक विवरण प्रदान करना है जैसा कि वह एक विशेष समय पर मौजूद है?
(A) अनुदैर्ध्य अनुसंधान
(B) वर्णनात्मक अनुसंधान
(C) प्रयोगात्मक अनुसंधान
(D) ऐतिहासिक अनुसंधान

167. एक शोधकर्ता एक समूह को प्रश्नावली देता है और निरंतरता की जांच के लिए दो सप्ताह बाद इसे दोहराता है। यह परीक्षण करता है:
(A) विषय-वस्तु वैधता
(B) अंतर-मूल्यांकनकर्ता विश्वसनीयता
(C) अवधारणा वैधता
(D) परीक्षण-पुनर्परीक्षण विश्वसनीयता

168. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए और सही विकल्प का चयन कीजिए:
कथन I: सहभागी अवलोकन में, शोधकर्ता एक गुप्त या प्रत्यक्ष भूमिका निभा सकता है।
कथन II: गुप्त अवलोकन धोखे से संबंधित नैतिक चिंताएं पैदा करता है।
(A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
(B) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।

Downloaded from www.pdf.tube

(C) कथन I सही है, लेकिन कथन II गलत है।
(D) कथन I गलत है, लेकिन कथन II सही है।

169. संख्याओं का माध्य क्या है: 10, 20, 30, 40, 50?
(A) 25
(B) 35
(C) 30
(D) 150

170. निम्नलिखित में से कौन संभाव्यता प्रतिचयन का एक रूप नहीं है?
(A) उद्देश्यपूर्ण प्रतिचयन
(B) व्यवस्थित प्रतिचयन
(C) सरल यादृच्छिक प्रतिचयन
(D) क्लस्टर प्रतिचयन

171. एक शोध परियोजना जिसका उद्देश्य किसी विशिष्ट परिवेश में तत्काल, व्यावहारिक समस्या को हल करना है, किस रूप में जानी जाती है?
(A) बुनियादी अनुसंधान
(B) वैचारिक अनुसंधान
(C) मौलिक अनुसंधान
(D) अनुप्रयुक्त अनुसंधान

172. 'नियंत्रण समूह' का उपयोग किस अनुसंधान प्रारूप की विशेषता है?
(A) वैयक्तिक अध्ययन
(B) प्रयोगात्मक
(C) वर्णनात्मक
(D) नृवंशविज्ञानी

173. विषय-वस्तु विश्लेषण में विश्लेषण की मूलभूत इकाई क्या है?
(A) व्यक्तिगत उत्तरदाता
(B) सांस्कृतिक समूह
(C) रिकॉर्ड किया गया संचार स्वयं
(D) किसी व्यक्ति के जीवन की कहानी

174. निम्नलिखित अभिकथन (A) और कारण (R) को पढ़िए और सही विकल्प चुनिए:
अभिकथन (A): वैयक्तिक अध्ययन उच्च स्तर की गहराई और विवरण प्रदान करते हैं।
कारण (R): वे व्यापक सामान्यीकरण प्रदान करने की अपनी क्षमता में सीमित हैं।
(A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सही है लेकिन R गलत है।
(D) A गलत है लेकिन R सही है।

175. वैज्ञानिक पद्धति में "आगमन की समस्या" इस मुद्दे को संदर्भित करती है कि:
(A) हम इस बात के प्रति निश्चित नहीं हो सकते कि भविष्य के अवलोकन पिछले अवलोकनों के अनुरूप होंगे।
(B) निगमनात्मक तर्क हमेशा त्रुटिपूर्ण होता है।
(C) सामाजिक तथ्यों का अस्तित्व नहीं है।
(D) सिद्धांत के बिना अवलोकन असंभव है।

176. कौन-सा शब्द क्षेत्र अध्ययन के दौरान शोधकर्ता द्वारा लिए गए विस्तृत, वर्णनात्मक नोट्स का सबसे अच्छा वर्णन करता है?
(A) परिकल्पना
(B) क्षेत्र टिप्पणियाँ
(C) अनुसूची
(D) समाजआरेख

177. यदि अंकों का वितरण सकारात्मक रूप से विषम है, तो कौन-सा क्रम सबसे अधिक संभावित है?
(A) माध्य = माध्यिका = बहुलक
(B) बहुलक < माध्यिका < माध्य
(C) माध्य < माध्यिका < बहुलक
(D) माध्य = बहुलक

178. सांख्यिकीय परीक्षण में "$p < 0.05$" क्या दर्शाता है?
(A) यदि शून्य परिकल्पना सही है, तो परिणाम प्राप्त करने की 5% से कम संभावना।
(B) शून्य परिकल्पना के सही होने की 95% संभावना है।
(C) चरों के बीच सहसंबंध 0.05 है।
(D) नमूना आकार जनसंख्या के 5% से कम का प्रतिनिधित्व करता है।

179. फोरम पोस्ट का विश्लेषण करके ऑनलाइन समुदायों का अध्ययन करने वाला एक शोधकर्ता क्या कर रहा है?
(A) सहभागी अवलोकन
(B) मौखिक इतिहास
(C) विषय-वस्तु विश्लेषण
(D) समाजमिति

180. प्रश्नावली की तुलना में साक्षात्कार का सबसे महत्वपूर्ण लाभ यह है कि यह:
(A) संचालित करने में कम खर्चीला है।
(B) उत्तरदाता के लिए गुमनामी की गारंटी देता है।
(C) साक्षात्कारकर्ता के पक्षपात से मुक्त है।
(D) अधिक गहराई, जाँच और स्पष्टीकरण की अनुमति देता है।

181. वह विधि जिसका उद्देश्य किसी समूह के सांस्कृतिक व्यवहार का वर्णन और व्याख्या करना है:
(A) समाजमिति
(B) जीवन इतिहास
(C) नृवंशविज्ञान
(D) वैयक्तिक अध्ययन

NODIA

(B) मौखिक इतिहास
(C) सहसंबंध विश्लेषण
(D) वैयक्तिक अध्ययन

234. विश्लेषण से पहले डेटा की शुद्धि करना और त्रुटियों की जांच करना कहलाता है:
(A) डेटा प्रोसेसिंग
(B) डेटा संग्रह
(C) डेटा व्याख्या
(D) डेटा रिपोर्टिंग

235. व्याख्यात्मक अनुसंधान का उद्देश्य है:
(A) किसी स्थिति का चित्रण करना।
(B) किसी नए विषय की खोज करना।
(C) व्यक्तिगत कहानियाँ एकत्र करना।
(D) यह समझाना कि स्थितियाँ वैसी क्यों हैं जैसी वे हैं।

236. बाह्य मानों वाले आय डेटा के लिए केंद्रीय प्रवृत्ति का कौन-सा माप सबसे उपयुक्त है?
(A) माध्य
(B) माध्यिका
(C) बहुलक
(D) परास

237. निम्नलिखित अभिकथन (A) और कारण (R) को पढ़िए और सही विकल्प चुनिए:
अभिकथन (A): कंप्यूटरों ने सामाजिक अनुसंधान में क्रांति ला दी है।
कारण (R): कंप्यूटर भंडारण और जटिल सांख्यिकीय विश्लेषण को सक्षम बनाते हैं।
(A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सही है लेकिन R गलत है।
(D) A गलत है लेकिन R सही है।

238. "सामाजिक वर्ग और जीवन प्रत्याशा के बीच एक संबंध है" एक:
(A) शून्य परिकल्पना है।
(B) दिशात्मक परिकल्पना है।
(C) कारण संबंधी परिकल्पना है।
(D) गैर-दिशात्मक परिकल्पना है।

239. डाक प्रश्नावली की सबसे महत्वपूर्ण सीमा है:
(A) निम्न प्रतिक्रिया दर की संभावना।
(B) प्रति उत्तरदाता उच्च लागत।
(C) साक्षात्कारकर्ता पक्षपात।
(D) गुमनामी की कमी।

240. कौन-सी अवधारणा किसी माप की सटीकता को संदर्भित करती है?
(A) विश्वसनीयता
(B) वैधता
(C) मापनीयता
(D) वस्तुनिष्ठता

241. निम्नलिखित में से कौन 'अनुसंधान प्रारूप' को सबसे अच्छी तरह परिभाषित करता है?
(A) वह विधि जिससे शोधकर्ता अपने निष्कर्ष प्रस्तुत करता है।
(B) शोध करने के लिए तार्किक खाका।
(C) डेटा संग्रह के लिए एक विशिष्ट तकनीक।
(D) प्रयुक्त सांख्यिकीय सॉफ्टवेयर।

242. 'सामाजिक वर्ग' जैसी अमूर्त अवधारणा को मापने योग्य बनाने को क्या कहा जाता है?
(A) संक्रियात्मककरण
(B) परिकल्पना निर्माण
(C) प्रतिचयन
(D) सामान्यीकरण

243. सामाजिक अनुसंधान पद्धति में प्रमुख दार्शनिक बहस किसके बीच है?
(A) प्रकार्यवाद और संघर्ष सिद्धांत।
(B) आधुनिकतावाद और उत्तर-आधुनिकतावाद।
(C) प्रत्यक्षवाद और व्याख्यात्मकता।
(D) सिद्धांत और डेटा।

244. डेटा संग्रह उपकरण को उसकी विशेषता के साथ सुमेलित कीजिए:

डेटा संग्रह उपकरण
P. प्रश्नावली
Q. अनुसूची
R. अवलोकन चेकलिस्ट
S. साक्षात्कार मार्गदर्शिका

विशेषता
1. एक प्रगणक द्वारा संचालित।
2. गुणात्मक साक्षात्कार के लिए विषय सूची।
3. व्यवहारों को रिकॉर्ड करने का उपकरण।
4. उत्तरदाता द्वारा स्वयं प्रशासित।

(A) P-1, Q-4, R-2, S-3
(B) P-4, Q-1, R-3, S-2
(C) P-4, Q-3, R-1, S-2
(D) P-2, Q-1, R-3, S-4

245. सांख्यिकी में 'N' आमतौर पर किसका प्रतिनिधित्व करता है?
(A) शून्य परिकल्पना का
(B) चरों की संख्या का
(C) मामलों की कुल संख्या का
(D) सार्थकता स्तर का

246. नीचे दी गई कौन-सी विधि स्वाभाविक रूप से अनुदैर्ध्य है?

Click Here to Buy book on Amazon

STUDYING FROM PDFs?

THINK AGAIN.

If you are studying only from PDFs,
you are wasting valuable time.

Research shows that learning from

PRINTED BOOKS has up to

4× HIGHER RETENTION

than studying from screens.

PRINT BOOK = BETTER MEMORY

PDF = LOWER RETENTION

Those who study from **PRINTED BOOKS**
move **AHEAD.**

Others are left **BEHIND**
in competition.



In competitive exams,
being average is not enough.

STAY ONE STEP AHEAD.

194. जब कोई माप लगातार एक ही परिणाम देता है, तो उसे कहा जाता है:
(A) विश्वसनीय
(B) वैध
(C) महत्वपूर्ण
(D) वस्तुनिष्ठ

195. मात्रात्मक सर्वेक्षण पद्धति के लिए कौन-सा शोध प्रश्न सबसे अधिक उपयुक्त है?
(A) एकल माता होने का जीवंत अनुभव क्या है?
(B) एक संप्रदाय के सदस्य पवित्र ग्रंथों की व्याख्या कैसे करते हैं?
(C) जनसंख्या का कितना प्रतिशत किसी विशेष नीति का समर्थन करता है?
(D) एक दूरस्थ गाँव में प्रमुख सांस्कृतिक अनुष्ठान क्या हैं?

196. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए और सही विकल्प का चयन कीजिए:
कथन I: सहसंबंध का तात्पर्य कार्य-कारण है।
कथन II: सार्थकता परीक्षण यह तय करने में मदद करता है कि क्या कोई निष्कर्ष संयोग के कारण है।
(A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
(B) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।
(C) कथन I सही है, लेकिन कथन II गलत है।
(D) कथन I गलत है, लेकिन कथन II सही है।

197. मानक विचलन किसका माप है?
(A) केंद्रीय स्थान का।
(B) चरों के बीच संबंध का।
(C) माध्य के चारों ओर परिक्षेपण का।
(D) सबसे अधिक बार आने वाले अंक का।

198. सामाजिक विज्ञान में 'दोहरी-व्याख्यात्मकता' इस विचार को संदर्भित करती है कि:
(A) शोध हमेशा दो चरणों में किया जाना चाहिए।
(B) शोधकर्ता उस दुनिया की व्याख्या करते हैं जिसकी व्याख्या अभिनेताओं द्वारा पहले ही की जा चुकी है।
(C) डेटा दो प्रकार के होते हैं।
(D) सभी शोधों को दो बार दोहराया जाना चाहिए।

199. 'मिथ्या सहसंबंध' वह है जहाँ:
(A) एक ऐसी स्थिति जहाँ चरों के बीच सांख्यिकीय संबंध मजबूत दिखाई देता है।
(B) संबंध सकारात्मक के बजाय नकारात्मक होता है।
(C) संबंध सांख्यिकीय रूप से महत्वहीन होता है।
(D) स्पष्ट संबंध एक तीसरे, अमापित चर के कारण होता है।

200. कंप्यूटर-सहायता प्राप्त व्यक्तिगत साक्षात्कार का एक प्रमुख लाभ क्या है?
(A) यह तत्काल डेटा प्रविष्टि की अनुमति देता है और कोडिंग त्रुटियों को कम करता है।
(B) यह साक्षात्कारकर्ता की आवश्यकता को समाप्त करता है।
(C) यह डेटा संग्रह की सबसे सस्ती विधि है।
(D) यह तकनीकी उपकरणों के बिना कार्य करता है।

201. नृवंशविज्ञानी अनुसंधान में 'द्वारपाल' वह व्यक्ति होता है जो:
(A) एकत्र किए गए डेटा का विश्लेषण करता है।
(B) शोध परियोजना को वित्तपोषित करता है।
(C) शोधकर्ता को समुदाय तक पहुंच प्राप्त करने में सहायता करता है।
(D) औपचारिक रूप से नैतिक प्रक्रियाओं की समीक्षा करता है।

202. निम्नलिखित में से कौन परिक्षेपण का माप नहीं है?
(A) बहुलक
(B) परास
(C) प्रसरण
(D) मानक विचलन

203. तुलना समूह वाले लेकिन यादृच्छिक आवंटन के बिना अनुसंधान प्रारूप को क्या कहा जाता है?
(A) वास्तविक प्रयोगात्मक प्रारूप
(B) पूर्व-प्रयोगात्मक प्रारूप
(C) सहसंबंधी प्रारूप
(D) अर्ध-प्रयोगात्मक प्रारूप

204. ऐतिहासिक शोध में प्राथमिक स्रोत निम्नलिखित में से कौन-सा है?
(A) फ्रांसीसी क्रांति पर एक पाठ्यपुस्तक।
(B) फ्रांसीसी क्रांति का एक प्रत्यक्षदर्शी विवरण।
(C) फ्रांसीसी क्रांति के बारे में एक वृत्तचित्र फिल्म।
(D) वर्ष 2010 में लिखी गई नेपोलियन की जीवनी।

205. कौन-सा सबसे अमूर्त से सबसे विशिष्ट तक सही क्रम का प्रतिनिधित्व करता है?
(A) III, II, I, IV
(B) II, III, I, IV
(C) III, I, II, IV
(D) IV, I, II, III

206. समाजमिति में, वह व्यक्ति जिसे बहुत से लोग चुनते हैं लेकिन जो बहुत कम लोगों को चुनता है, कहलाता है:
(A) एकाकी
(B) पारस्परिक जोड़ी
(C) गुट
(D) सितारा

207. निम्नलिखित में से कौन-सा प्रश्न 'खुला' है?
(A) आप वर्तमान राजनीतिक वातावरण के बारे में अपनी भावनाओं का वर्णन कैसे करेंगे?
(B) वर्षों में आपकी आयु क्या है?

Downloaded from www.pdf.tube

(C) डेटा विश्लेषण: माध्य, माध्यिका, बहुलक
(D) अनुसंधान प्रारूप: मौखिक इतिहास

261. वैज्ञानिक पद्धति में अंतिम चरण सामान्यतः होता है:
(A) डेटा संग्रह।
(B) परिकल्पना निर्माण।
(C) निष्कर्ष निकालना और परिणामों की रिपोर्ट करना।
(D) नमूना चुनना।

262. निम्नलिखित में से कौन-सा अनुसंधान प्रारूप का प्रकार नहीं है?
(A) वर्णनात्मक
(B) परिकल्पनात्मक
(C) अन्वेषणात्मक
(D) व्याख्यात्मक

263. जब प्रत्येक सदस्य के चुने जाने की समान संभावना होती है, तो यह है:
(A) कोटा प्रतिचयन
(B) उद्देश्यपूर्ण प्रतिचयन
(C) स्नोबॉल प्रतिचयन
(D) सरल यादृच्छिक प्रतिचयन

264. सहसंबंधी विश्लेषण में सबसे सामान्य दोष क्या है?
(A) सहसंबंध से कार्य-कारण मान लेना।
(B) बहुत बड़े नमूने का उपयोग करना।
(C) गुणांक की गलत गणना करना।
(D) एक महत्वहीन परिणाम प्राप्त करना।

265. प्रतिचयन में सबसे छोटी इकाई से सबसे बड़ी इकाई के क्रम में व्यवस्थित कीजिए:
I. जनसंख्या
II. नमूना
III. तत्व
(A) III, II, I
(B) I, II, III
(C) II, III, I
(D) III, I, II

266. कौन-सी गुणात्मक विधि एक एकल परिबद्ध प्रणाली के गहन अध्ययन से संबंधित है?
(A) वैयक्तिक अध्ययन
(B) मौखिक इतिहास
(C) विषय-वस्तु विश्लेषण
(D) नृवंशविज्ञान

267. "जैसे-जैसे शिक्षा का स्तर बढ़ता है, आय बढ़ने की प्रवृत्ति होती है" एक है:
(A) शून्य परिकल्पना
(B) अनुसंधान समस्या
(C) तथ्य
(D) परिकल्पना

268. कौन-सा उदाहरण प्रारंभिक चरणों में कंप्यूटर के अनुप्रयोग को दर्शाता है?
(A) सार्थकता परीक्षण करना।
(B) ऑनलाइन डेटाबेस का उपयोग करके साहित्य खोज करना।
(C) साक्षात्कार प्रतिलेखों की कोडिंग करना।
(D) अंतिम ग्राफिकल प्रतिनिधित्व बनाना।

269. गुप्त सहभागी अवलोकन में मुख्य नैतिक मुद्दा क्या है?
(A) लागत।
(B) समय।
(C) सूचित सहमति की कमी।
(D) डेटा विश्लेषण की कठिनाई।

270. सांख्यिकी में 'बहुलक' है:
(A) अंकगणितीय औसत।
(B) मध्य मान।
(C) डेटा का प्रसार।
(D) सबसे अधिक बार आने वाला मान।

271. किसी निगम की संस्कृति का अध्ययन करने के लिए कर्मचारी के रूप में कार्य करना है:
(A) सहभागी अवलोकन।
(B) एक प्रयोग।
(C) एक सर्वेक्षण।
(D) एक विषय-वस्तु विश्लेषण।

272. आधिकारिक आंकड़ों का उपयोग करने की एक प्रमुख सीमा यह है कि:
(A) वे मात्रात्मक नहीं होते हैं।
(B) वे अन्य उद्देश्यों के लिए एकत्र किए गए थे।
(C) वे हमेशा अविश्वसनीय होते हैं।
(D) वे कंप्यूटर पर उपलब्ध नहीं होते हैं।

273. 'वस्तुनिष्ठता' की अवधारणा के लिए शोधकर्ता का होना आवश्यक है:
(A) भावनात्मक रूप से सम्मिलित।
(B) व्यक्तिगत रूप से तटस्थ और निष्पक्ष।
(C) परिणाम के प्रति निश्चित।
(D) समूह का एक सदस्य।

274. 20, 30 और 40 वर्ष की आयु में एक ही समूह का अध्ययन करना एक:
(A) अनुदैर्ध्य अध्ययन है।
(B) अनुप्रस्थ काट अध्ययन है।
(C) वैयक्तिक अध्ययन है।
(D) पूर्वव्यापी अध्ययन है।

275. शब्द को उसके संक्षिप्त विवरण के साथ सुमेलित कीजिए:

NODIA

(D) सामाजिक परिवेश में दीर्घकालिक विसर्जन।

220. किसी भी सामाजिक शोध परियोजना का प्रथम चरण होता है:
(A) डेटा एकत्र करना।
(B) एक शोध समस्या या प्रश्न तैयार करना।
(C) नमूना चुनना।
(D) डेटा का विश्लेषण करना।

221. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. एक शून्य परिकल्पना बताती है कि कोई संबंध नहीं है।
II. एक वैकल्पिक परिकल्पना शून्य परिकल्पना के विपरीत होती है।
III. शून्य परिकल्पना को गलत सिद्ध करने के प्रयास के लिए शोध किया जाता है।
(A) केवल I
(B) केवल II और III
(C) केवल I और II
(D) I, II और III सभी

222. जब कोई उत्तरदाता वे उत्तर देता है जो उसे लगता है कि शोधकर्ता चाहता है, तो यह है:
(A) प्रतिचयन त्रुटि।
(B) यादृच्छिक त्रुटि।
(C) सांख्यिकीय सार्थकता।
(D) प्रतिक्रियाशीलता या साक्षात्कारकर्ता प्रभाव।

223. 12, 5, 22, 30, 7, 14 की माध्यिका क्या है?
(A) 13
(B) 22
(C) 12
(D) 15.5

224. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए और सही विकल्प का चयन कीजिए:
कथन I: सामाजिक विज्ञान में वस्तुनिष्ठता का अर्थ मूल्य-मुक्त होना है।
कथन II: एक शोधकर्ता के मूल्य विषय के चुनाव को प्रभावित कर सकते हैं।
(A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
(B) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।
(C) कथन I सही है, लेकिन कथन II गलत है।
(D) कथन I गलत है, लेकिन कथन II सही है।

225. प्रश्नावली की तुलना में अनुसूची के उपयोग का एक प्रमुख लाभ है:
(A) कम लागत
(B) उच्च प्रतिक्रिया दर और डेटा की पूर्णता
(C) कम साक्षात्कारकर्ता पक्षपात
(D) उत्तरदाता के लिए अधिक गुमनामी

226. 'सघन विवरण' किस शोध पद्धति के लिए केंद्रीय अवधारणा है?
(A) नृवंशविज्ञान
(B) सर्वेक्षण अनुसंधान
(C) प्रयोगात्मक अनुसंधान
(D) समाजमिति

227. आवर्ती विचारधाराओं की पहचान करने के लिए राजनीतिक भाषणों का विश्लेषण करना किसका उपयोग करता है?
(A) जीवन इतिहास
(B) सहभागी अवलोकन
(C) विषय-वस्तु विश्लेषण
(D) वैयक्तिक अध्ययन

228. समाजमिति में, एक 'एकाकी' वह व्यक्ति है जो:
(A) बहुत से लोगों द्वारा चुना जाता है लेकिन कम लोगों को चुनता है।
(B) एक मजबूत पारस्परिक बंधन बनाता है।
(C) सबसे लोकप्रिय व्यक्ति है।
(D) समूह में बहुत कम या किसी के द्वारा नहीं चुना जाता है।

229. यदि परिणामों को अन्य परिवेशों में सामान्यीकृत किया जा सकता है, तो अध्ययन में उच्च:
(A) आंतरिक वैधता है।
(B) विश्वसनीयता है।
(C) बाहरी वैधता है।
(D) वस्तुनिष्ठता है।

230. पहले और बाद के अपराध आंकड़ों की तुलना करके कानून के प्रभाव का अध्ययन करना एक:
(A) अनुप्रस्थ काट अध्ययन है।
(B) अनुदैर्ध्य अध्ययन है।
(C) वैयक्तिक अध्ययन है।
(D) प्रयोगात्मक अध्ययन है।

231. एक शोधकर्ता की प्राथमिक नैतिक जिम्मेदारी किसके प्रति होती है?
(A) वित्तपोषक संस्था के।
(B) शैक्षणिक प्रकाशक के।
(C) उनके व्यक्तिगत करियर के।
(D) अनुसंधान प्रतिभागियों के।

232. निम्नलिखित में से कौन वैज्ञानिक पद्धति के लिए केंद्रीय नहीं है?
(A) बिना किसी प्रश्न के विश्वास
(B) अनुभववाद
(C) वस्तुनिष्ठता
(D) व्यवस्थित प्रक्रिया

233. निम्नलिखित में से कौन-सी गुणात्मक शोध विधि नहीं है?
(A) नृवंशविज्ञान

Click Here to Buy book on Amazon

(C) क्या आपके पास कार है? (हाँ/नहीं)
(D) 1 से 5 के पैमाने पर, आप कितने संतुष्ट हैं?

208. 'साहित्य समीक्षा' का मुख्य उद्देश्य क्या है?
(A) पुस्तकों की एक लंबी सूची प्रदान करना।
(B) यह समझना कि विषय के बारे में पहले से क्या ज्ञात है।
(C) यह सिद्ध करना कि कभी कोई शोध नहीं किया गया है।
(D) उपयुक्त सांख्यिकीय परीक्षण का चयन करना।

209. निम्नलिखित अभिकथन (A) और कारण (R) को पढ़िए और सही विकल्प चुनिए:
अभिकथन (A): बाह्य मानों की उपस्थिति में माध्यिका, माध्य की तुलना में अधिक मजबूत होती है।
कारण (R): माध्यिका की गणना श्रेणी-क्रम के आधार पर की जाती है, जिससे यह चरम अंकों के प्रति असंवेदनशील हो जाती है।
(A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सही है लेकिन R गलत है।
(D) A गलत है लेकिन R सही है।

210. गुणात्मक शोध में व्यक्तिपरकता की भूमिका का सबसे अच्छा वर्णन कौन-सा कथन करता है?
(A) इसे प्रक्रिया के एक अपरिहार्य हिस्से के रूप में स्वीकार किया जाता है।
(B) यह त्रुटि का एक स्रोत है जिसे पूरी तरह से समाप्त किया जाना चाहिए।
(C) यह शोध प्रक्रिया के लिए अप्रासंगिक है।
(D) यह केवल मात्रात्मक शोध में एक समस्या है।

211. 'जीवन इतिहास' की एक प्रमुख विशेषता क्या है?
(A) यह बड़े पैमाने पर सामाजिक प्रवृत्तियों पर ध्यान केंद्रित करता है।
(B) यह मुख्य रूप से एक सांख्यिकीय विधि है।
(C) यह एक व्यक्ति के सामाजिक संदर्भ में उसका समग्र दृष्टिकोण प्रदान करता है।
(D) यह एक त्वरित और सस्ती विधि है।

212. परिकल्पना परीक्षण में टाइप I त्रुटि तब होती है जब एक शोधकर्ता:
(A) शून्य परिकल्पना को सही ढंग से खारिज करता है।
(B) शून्य परिकल्पना को खारिज करने में सही ढंग से विफल रहता है।
(C) एक गलत शून्य परिकल्पना को खारिज करने में गलत तरीके से विफल रहता है।
(D) एक सही शून्य परिकल्पना को गलत तरीके से खारिज करता है।

213. क्या शोध के निष्कर्षों को बड़ी जनसंख्या पर लागू किया जा सकता है, यह किसका प्रश्न है?
(A) आंतरिक वैधता
(B) विश्वसनीयता
(C) बाहरी वैधता
(D) वस्तुनिष्ठता

214. वैज्ञानिक पद्धति के बारे में कौन-सा कथन सबसे सटीक है?
(A) यह सभी विज्ञानों के लिए एक एकल, निश्चित प्रक्रिया है।
(B) यह सिद्धांत, परिकल्पना और अवलोकन की एक चक्रीय प्रक्रिया है।
(C) यह सिद्धांतों को पूर्णतः सत्य सिद्ध करती है।
(D) यह केवल प्राकृतिक विज्ञानों पर लागू होती है।

215. कार्यप्रणाली को उसकी अवधारणा के साथ सुमेलित कीजिए:

कार्यप्रणाली	**अवधारणा**
P. मात्रात्मक	1. वर्स्टेहेन, सघन विवरण
Q. गुणात्मक	2. मापन, सांख्यिकी

(A) P-1, Q-2
(B) P-2, Q-1
(C) P-1, Q-1
(D) P-2, Q-2

216. एक नई औषधि का परीक्षण करने वाला शोधकर्ता उस समूह का उपयोग करता है जिसे केवल शर्करा की गोली दी जाती है। यह समूह है:
(A) नियंत्रण समूह
(B) प्रयोगात्मक समूह
(C) सहसंबंधी समूह
(D) नमूना समूह

217. साक्षात्कार के दौरान 'अनुवर्ती प्रश्नों' का उपयोग किस उद्देश्य से किया जाता है?
(A) उत्तरदाता को शीघ्र समाप्त करने के लिए प्रेरित करना।
(B) उत्तरदाता की स्मृति का परीक्षण करना।
(C) उत्तरदाता को उत्तर विस्तार से बताने के लिए प्रोत्साहित करना।
(D) निश्चित क्रम में प्रश्न पूछना।

NODIA

218. निम्नलिखित में से कौन-सा जोड़ा गलत है?
(A) नृवंशविज्ञान - सार्थकता का माप
(B) माध्य - केंद्रीय प्रवृत्ति का माप
(C) मानक विचलन - परिक्षेपण का माप
(D) सहसंबंध - जुड़ाव का माप

219. नृवंशविज्ञानी अनुसंधान की एक परिभाषित विशेषता है:
(A) नियंत्रित प्रयोगों पर इसकी निर्भरता।
(B) बड़े पैमाने पर सर्वेक्षणों का उपयोग।
(C) पहले से मौजूद आंकड़ों का विश्लेषण।

(A) एक अनुप्रस्थ काट सर्वेक्षण
(B) एक जीवन इतिहास
(C) एक विशिष्ट वैयक्तिक अध्ययन
(D) एकल दस्तावेज़ का विषय-वस्तु विश्लेषण

247. 'सघन विवरण' का लक्ष्य रखने वाला अध्ययन किसका उपयोग कर रहा है?
(A) सर्वेक्षण
(B) प्रयोग
(C) समाजमिति
(D) नृवंशविज्ञान

248. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए और सही विकल्प का चयन कीजिए:
कथन I: वैज्ञानिक पद्धति पूर्ण प्रमाण प्रदान करती है।
कथन II: वैज्ञानिक पद्धति परीक्षण के माध्यम से अनिश्चितता को कम करती है।
(A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
(B) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।
(C) कथन I सही है, लेकिन कथन II गलत है।
(D) कथन I गलत है, लेकिन कथन II सही है।

249. सहभागी अवलोकन का एक प्रमुख लाभ निम्नलिखित में से कौन-सा है?
(A) यह चरों पर उच्च स्तर का नियंत्रण प्रदान करता है।
(B) निष्कर्षों को आसानी से सामान्यीकृत किया जा सकता है।
(C) यह व्यवहार के प्राकृतिक संदर्भ में अध्ययन की अनुमति देता है।
(D) यह नैतिक चिंताओं से मुक्त है।

250. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. कंप्यूटर प्रासंगिक साहित्य की खोज कर सकते हैं।
II. उनका उपयोग मात्रात्मक और गुणात्मक विश्लेषण के लिए किया जा सकता है।
III. वे स्वतंत्र रूप से समस्या तैयार कर सकते हैं।
(A) केवल I और II
(B) केवल II और III
(C) केवल I और III
(D) केवल I

251. दो चरों के बीच -1.0 का सहसंबंध इंगित करता है:
(A) कोई संबंध नहीं है।
(B) जैसे-जैसे एक चर बढ़ता है, दूसरा पूर्णतः बढ़ता है।
(C) संबंध तीसरे चर के कारण होता है।
(D) जैसे-जैसे एक चर बढ़ता है, दूसरा पूर्णतः घटता है।

252. नृवंशविज्ञान में 'एमिक' परिप्रेक्ष्य किससे संबंधित है?
(A) शोधकर्ता का बाहरी, विश्लेषणात्मक परिप्रेक्ष्य।
(B) अंदरूनी सूत्र का दृष्टिकोण।
(C) ऐतिहासिक संदर्भ।
(D) नैतिक दिशा-निर्देश।

253. सामाजिक अनुसंधान में 'तथ्य' का सबसे अच्छा उदाहरण निम्नलिखित में से कौन-सा है?
(A) विकास के लिए शिक्षा सबसे महत्वपूर्ण है।
(B) सभी बच्चों को निःशुल्क शिक्षा मिलनी चाहिए।
(C) वर्ष 2011 में भारत की साक्षरता दर 74.04% थी।
(D) सरकार को शिक्षा पर अधिक व्यय करना चाहिए।

254. 'समाजमिति' का प्राथमिक केंद्र क्या है?
(A) गहन सांस्कृतिक विवरण।
(B) संचार विषय-वस्तु का विश्लेषण।
(C) व्यक्तिगत वृत्तांतों का संग्रह।
(D) सामाजिक विकल्पों और संबंधों का मापन।

255. अतीत की घटनाओं के बारे में वृत्तांतों पर निर्भर रहने वाली शोध विधि है:
(A) मौखिक इतिहास
(B) विषय-वस्तु विश्लेषण
(C) सहभागी अवलोकन
(D) सर्वेक्षण

256. सार्थकता परीक्षण किसका हिस्सा है?
(A) वर्णनात्मक सांख्यिकी
(B) अनुमानात्मक सांख्यिकी
(C) डेटा संग्रह
(D) अनुसंधान प्रारूप

257. 'साक्षात्कार अनुसूची' क्या है?
(A) किसे साक्षात्कार देना है, इसकी एक योजना।
(B) संरचित साक्षात्कार में प्रयुक्त प्रश्नों की सूची।
(C) पूर्ण किए गए साक्षात्कार की एक प्रतिलिपि।
(D) एक स्वयं-प्रशासित प्रश्नावली।

258. शोध में व्यक्तिपरकता के साथ मुख्य समस्या यह है कि यह क्या उत्पन्न कर सकती है?
(A) पक्षपात
(B) सांख्यिकीय सार्थकता
(C) विश्वसनीयता
(D) वैधता

259. पुरुषों और महिलाओं की औसत आय की तुलना करने के लिए किस परीक्षण का उपयोग किया जा सकता है?
(A) केवल केंद्रीय प्रवृत्ति
(B) एक विषय-वस्तु विश्लेषण
(C) एक सार्थकता परीक्षण
(D) एक समाजमितीय विश्लेषण

260. निम्नलिखित में से कौन-सा जोड़ा गलत सुमेलित है?
(A) गुणात्मक विधि: वैयक्तिक अध्ययन
(B) मात्रात्मक विधि: सर्वेक्षण

Downloaded from www.pdf.tube

(B) डेटा संग्रह के लिए एक उपकरण।
(C) सांख्यिकीय विश्लेषण की एक विधि।
(D) निष्कर्षों का सारांश।

288. मानक विचलन परास की तुलना में अधिक मजबूत होता है क्योंकि:
(A) इसकी गणना करना सरल है।
(B) यह प्रत्येक अंक को ध्यान में रखता है।
(C) यह केवल चरम अंकों पर आधारित है।
(D) यह केंद्रीय प्रवृत्ति का एक माप है।

289. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए और सही विकल्प का चयन कीजिए:
कथन I: सार्थकता परीक्षण एक परिकल्पना को सिद्ध कर सकता है।
कथन II: सार्थकता परीक्षण केवल समर्थन करने या समर्थन करने में विफल रहने का प्रमाण प्रदान करता है।
(A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
(B) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।
(C) कथन I सही है, लेकिन कथन II गलत है।
(D) कथन I गलत है, लेकिन कथन II सही है।

290. 'समाजआरेख' क्या है?
(A) पारस्परिक संबंधों को दर्शाने वाला एक चार्ट।
(B) जीवन इतिहास का एक प्रतिलेख।
(C) एक सांख्यिकीय तालिका।
(D) एक लिखित सांस्कृतिक विवरण।

291. कौन-सी शोध विधि प्राथमिक डेटा के रूप में 'क्षेत्र टिप्पणियाँ' का उपयोग करती है?
(A) सर्वेक्षण
(B) प्रयोग
(C) नृवंशविज्ञान / सहभागी अवलोकन
(D) विषय-वस्तु विश्लेषण

292. मात्रात्मक विधियों का मुख्य लाभ उनकी यह क्षमता है:
(A) गहरी, प्रासंगिक समझ प्रदान करना।
(B) जीवंत अनुभवों का पता लगाना।
(C) शोध के दौरान लचीलापन और अनुकूलन।
(D) बड़े नमूनों को संभालना और सांख्यिकीय सामान्यीकरण की अनुमति देना।

293. निम्नलिखित में से कौन वैज्ञानिक पद्धति का मूल घटक नहीं है?
(A) परिकल्पना
(B) अवलोकन
(C) व्यक्तिगत राय
(D) सत्यापन

294. विश्वविद्यालय में औसत आयु किसका उदाहरण है?
(A) परिक्षेपण का माप
(B) केंद्रीय प्रवृत्ति का माप
(C) सार्थकता परीक्षण
(D) सहसंबंधी विश्लेषण

295. व्यक्तिगत डायरी और आत्मकथाओं का विश्लेषण है:
(A) सहभागी अवलोकन
(B) सर्वेक्षण अनुसंधान
(C) प्रयोगात्मक अनुसंधान
(D) विषय-वस्तु विश्लेषण

296. 'वस्तुनिष्ठता बनाम व्यक्तिपरकता' की समस्या किस चुनौती को उजागर करती है?
(A) घटनाओं से शोधकर्ता के परिप्रेक्ष्य को पृथक करना।
(B) विधियों के बीच चुनाव करना।
(C) नमूना खोजना।
(D) कंप्यूटर का उपयोग करना।

297. प्रस्ताव का कौन-सा भाग अध्ययन के लिए उठाए गए कदमों की रूपरेखा तैयार करता है?
(A) प्रस्तावना
(B) साहित्य समीक्षा
(C) कार्यप्रणाली
(D) निष्कर्ष

298. निम्नलिखित अभिकथन (A) और कारण (R) को पढ़िए और सही विकल्प चुनिए:
अभिकथन (A): सर्वेक्षण में निम्न प्रतिक्रिया दर वैधता के लिए संकट बन सकती है।
कारण (R): गैर-उत्तरदाता व्यवस्थित रूप से उत्तरदाताओं से भिन्न हो सकते हैं।
(A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सही है लेकिन R गलत है।
(D) A गलत है लेकिन R सही है।

299. यदि कोई शोधकर्ता एक अंक जानकर दूसरे अंक की भविष्यवाणी कर सकता है, तो परीक्षणों में उच्च:
(A) परिक्षेपण है।
(B) सार्थकता है।
(C) केंद्रीय प्रवृत्ति है।
(D) सहसंबंध है।

300. नृवंशविज्ञान का अंतिम लक्ष्य है:
(A) एक विशिष्ट परिकल्पना का परीक्षण करना।
(B) स्थानीय व्यक्ति के दृष्टिकोण से जीवन शैली को समझना।
(C) व्यवहार की आवृत्ति मापना।
(D) मनुष्यों के लिए निष्कर्षों को सामान्यीकृत करना।

NODIA

शब्द
P. परिकल्पना
Q. तथ्य
R. मूल्य
S. सिद्धांत
संक्षिप्त विवरण
1. अनुभवजन्य रूप से सत्यापन योग्य कथन।
2. तथ्यों के लिए एक व्यापक व्याख्या।
3. वांछनीयता के बारे में एक विश्वास।
4. एक परीक्षण योग्य प्रस्ताव।
(A) P-1, Q-4, R-2, S-3
(B) P-4, Q-1, R-3, S-2
(C) P-4, Q-3, R-1, S-2
(D) P-2, Q-1, R-3, S-4

276. कौन-सी विधि समूह गतिशीलता और सामाजिक संरचना से सबसे अधिक संबंधित है?
(A) नृवंशविज्ञान
(B) जीवन इतिहास
(C) मौखिक इतिहास
(D) समाजमिति

277. 'वैज्ञानिक पद्धति' जानने का एक तरीका है जो इस पर आधारित है:
(A) सत्ता।
(B) परंपरा।
(C) अनुभवजन्य साक्ष्य।
(D) अंतर्ज्ञान।

278. निम्नलिखित अभिकथन (A) और कारण (R) को पढ़िए और सही विकल्प चुनिए:
अभिकथन (A): गुणात्मक डेटा विश्लेषण सामान्यतः एक पुनरावृत्ति प्रक्रिया है।
कारण (R): शोधकर्ता डेटा, कोड और उभरती अवधारणाओं के बीच आवाजाही करते हैं।
(A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सही है लेकिन R गलत है।
(D) A गलत है लेकिन R सही है।

279. एक प्रयोग में 'नियंत्रण समूह' का उद्देश्य है:
(A) उपचार प्राप्त करना।
(B) प्रतिभागियों को नियंत्रित करना।
(C) यादृच्छिक प्रतिचयन सुनिश्चित करना।
(D) तुलना के लिए एक आधार रेखा प्रदान करना।

280. एक सर्वेक्षण प्रश्न जो एक ही बार में दो अलग-अलग मुद्दों के बारे में पूछता है, कहलाता है:
(A) द्वि-आयामी प्रश्न
(B) निर्देशित प्रश्न
(C) भारित प्रश्न
(D) बंद प्रश्न

281. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. गुणात्मक विधियाँ संदर्भ से संबंधित हैं।
II. उनका लक्ष्य सांख्यिकीय सामान्यीकरण प्राप्त करना है।
III. वे अक्सर आगमनात्मक तर्क का उपयोग करती हैं।
(A) केवल I और III
(B) केवल II
(C) केवल I और II
(D) केवल II और III

282. एनविवो सॉफ्टवेयर का उपयोग किसका एक उदाहरण है?
(A) कंप्यूटर-सहायता प्राप्त गुणात्मक डेटा विश्लेषण।
(B) सामाजिक विज्ञान के लिए सांख्यिकीय पैकेज।
(C) भौगोलिक सूचना प्रणाली।
(D) डेटा संग्रह की एक विधि।

283. साक्षात्कार और प्रश्नावली के बीच मूलभूत अंतर क्या है?
(A) साक्षात्कार गुणात्मक होते हैं जबकि प्रश्नावली मात्रात्मक होती है।
(B) साक्षात्कार छोटे नमूनों के लिए होते हैं।
(C) साक्षात्कार खुले प्रश्नों का उपयोग करते हैं।
(D) साक्षात्कार संवादात्मक और मौखिक होते हैं जबकि प्रश्नावली लिखित होती है।

284. एक शोधकर्ता का यह विश्वास कि गरीबी को मिटाने के लिए इसका अध्ययन किया जाना चाहिए, एक है:
(A) तथ्य
(B) मूल्य
(C) परिकल्पना
(D) सिद्धांत

285. वैयक्तिक अध्ययन की विशेषता है इसकी:
(A) व्यापकता और सामान्यीकरण क्षमता।
(B) सांख्यिकीय परीक्षणों का उपयोग।
(C) तीव्रता और गहराई।
(D) बड़े नमूने का आकार।

286. निम्नलिखित में से कौन-सा 'अनुसूची' की एक प्राथमिक विशेषता है?
(A) इसे एक प्रशिक्षित साक्षात्कारकर्ता द्वारा संचालित किया जाता है जो उत्तरों को रिकॉर्ड करता है।
(B) इसे उत्तरदाता द्वारा बिना किसी सहायता के भरा जाता है।
(C) इसका उपयोग विशेष रूप से गुणात्मक जीवन इतिहास एकत्र करने के लिए किया जाता है।
(D) इसमें केवल खुले, असंरचित प्रश्न होते हैं।

287. एक 'अनुसंधान प्रारूप' किस रूप में कार्य करता है?
(A) शोध प्रश्नों और निष्पादन के बीच एक सेतु।

Click Here to Buy book on Amazon

182. यह कथन कि "लोकतंत्र सरकार का सबसे अच्छा रूप है" किसका एक उदाहरण है?
(A) तथ्य
(B) मूल्य निर्णय
(C) परिकल्पना
(D) वैज्ञानिक नियम

183. निम्नलिखित में से कौन समाजशास्त्र में वैज्ञानिक पद्धति की एक सीमा है?
(A) अनुभवजन्य डेटा एकत्र करने की असंभवता।
(B) समाज में प्रतिरूपित व्यवहार की कमी।
(C) किसी भी सांख्यिकीय उपकरण का उपयोग करने में असमर्थता।
(D) नियंत्रित प्रयोग बनाने में नैतिक और व्यावहारिक कठिनाइयाँ।

184. 'प्रतिचयन त्रुटि' है:
(A) एक नमूना सांख्यिकी और जनसंख्या प्राचल के बीच का अंतर।
(B) डेटा प्रविष्टि में गलतियों से उत्पन्न होने वाली त्रुटि।
(C) साक्षात्कारकर्ता द्वारा पेश किया गया पक्षपात।
(D) सभी व्यक्तियों से प्रतिक्रिया प्राप्त करने में विफलता।

185. वैयक्तिक अध्ययन किसका एक रूप है?
(A) मात्रात्मक अनुसंधान।
(B) प्रयोगात्मक अनुसंधान।
(C) गुणात्मक अनुसंधान।
(D) सांख्यिकीय अनुसंधान।

186. शब्द को उसकी परिभाषा के साथ सुमेलित कीजिए:

शब्द
P. जनसंख्या
Q. नमूना
R. प्रतिचयन ढांचा
S. तत्व

परिभाषा
1. जनसंख्या में सभी तत्वों की एक सूची।
2. जनसंख्या का व्यक्तिगत सदस्य।
3. रुचि का संपूर्ण समूह।
4. अध्ययन के लिए चुना गया एक उपसमुच्चय।

(A) P-3, Q-4, R-1, S-2
(B) P-4, Q-3, R-2, S-1
(C) P-3, Q-1, R-4, S-2
(D) P-2, Q-4, R-1, S-3

187. इनमें से कौन 'परिकल्पना' की एक परिभाषित विशेषता है?
(A) इसे जटिल और समझने में कठिन होना चाहिए।
(B) शोध शुरू होने से पहले इसे एक सिद्ध तथ्य होना चाहिए।
(C) इसे शोधकर्ता के व्यक्तिगत मूल्यों पर आधारित होना चाहिए।
(D) इसे परीक्षण योग्य और खंडन योग्य होना चाहिए।

188. सर्वेक्षण अनुसंधान में, 'प्रतिक्रिया दर' किसे संदर्भित करती है?
(A) वह गति जिस पर उत्तरदाता प्रश्नावली पूरी करते हैं।
(B) चुने गए नमूने का वह प्रतिशत जो वास्तव में भाग लेता है।
(C) उत्तरदाता द्वारा उत्तर दिए गए प्रश्नों की संख्या।
(D) उत्तरदाताओं द्वारा प्रदान किए गए उत्तरों की सटीकता।

189. निम्नलिखित अभिकथन (A) और कारण (R) को पढ़िए और सही विकल्प चुनिए:
अभिकथन (A): विषय-वस्तु विश्लेषण या तो मात्रात्मक या गुणात्मक हो सकता है।
कारण (R): एक शोधकर्ता शब्द की आवृत्ति गिन सकता है या अंतर्निहित विषयों का विश्लेषण कर सकता है।
(A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सही है लेकिन R गलत है।
(D) A गलत है लेकिन R सही है।

190. कौन-सी गुणात्मक विधि किसी व्यक्ति के अपने पूरे जीवन की कहानी पर केंद्रित होती है?
(A) मौखिक इतिहास
(B) वैयक्तिक अध्ययन
(C) नृवंशविज्ञान
(D) जीवन इतिहास

191. 'तथ्य' और 'मूल्य' के बीच एक मुख्य अंतर यह है कि तथ्य _____ हैं, जबकि मूल्य _____ हैं।
(A) वर्णनात्मक और अनुभवजन्य; निर्देशात्मक और मानकीय
(B) वस्तुनिष्ठ; व्यक्तिपरक
(C) सत्यापन योग्य; विश्वास-आधारित
(D) उपरोक्त सभी

192. समाजमिति के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. यह पारस्परिक संबंधों को मापने की एक विधि है।
II. यह अक्सर समाजआरेख का उपयोग करता है।
III. यह गहन नृवंशविज्ञानी विवरण का एक रूप है।
(A) केवल I
(B) केवल III
(C) केवल I और II
(D) केवल II और III

193. 'सुविधाजनक नमूने' का उपयोग करने की प्राथमिक समस्या यह है कि:
(A) इसे लागू करना बहुत महंगा है।
(B) परिणामों के जनसंख्या के लिए सामान्यीकरण की संभावना कम होती है।
(C) इसमें बहुत अधिक समय लगता है।
(D) इसके लिए जनसंख्या की पूरी सूची की आवश्यकता होती है।

NODIA

उत्तर (व्याख्या सहित)

1. (B) वे मानवीय अंतःक्रिया, चेतना और साझा अर्थों में निहित होती हैं।
सामाजिक घटनाओं की प्रकृति मानवीय अंतःक्रियाओं, चेतना और साझा अर्थों से निर्मित होती है। ये घटनाएँ स्थिर या पूर्णतः भौतिक नियमों के अधीन नहीं होतीं, अपितु निरंतर परिवर्तनशील रहती हैं। सामाजिक जगत को समझने हेतु व्यक्तियों के पारस्परिक व्यवहार और उनकी व्याख्याओं का अनुशीलन अनिवार्य है। यह प्रक्रिया समाज की आंतरिक संरचना और मानवीय संवेदनाओं की जटिलता को प्रतिपादित करती है।
मानवीय चेतना और उनके अंतर्संबंधों के बोध के बिना सामाजिक वास्तविकता का सटीक निरूपण संभव नहीं है। समाज का निर्माण मानवीय साझी समझ से होता है।

2. (A) अनुभवजन्य अन्वेषण और तार्किक तर्क की एक व्यवस्थित प्रक्रिया।
सामाजिक अनुसंधान में प्रयुक्त वैज्ञानिक पद्धति अनुभवजन्य साक्ष्यों पर आधारित एक सुव्यवस्थित प्रक्रिया है। इसमें तार्किक विवेचना का उपयोग करते हुए सामाजिक यथार्थ का गहन अन्वेषण किया जाता है। यह पद्धति व्यक्तिगत पूर्वाग्रहों को पृथक रखने और व्यवस्थित अवलोकन के माध्यम से तथ्यों के संकलन पर बल देती है। इसके माध्यम से प्राप्त निष्कर्ष अनुमानों पर आधारित न होकर ठोस प्रमाणों द्वारा समर्थित होते हैं।
वैज्ञानिक दृष्टिकोण द्वारा सामाजिक जगत की जटिल संरचनाओं का निष्पक्ष और तार्किक विश्लेषण करना अत्यंत सुगम एवं प्रभावी सिद्ध होता है।

3. (A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
सामाजिक विज्ञान में व्यक्तिपरकता की चुनौती तब उत्पन्न होती है जब शोधकर्ता स्वयं उस समाज का अंग होता है जिसका वह अध्ययन कर रहा है। साथ ही, तथ्य की अवधारणा उन वर्णनों को संदर्भित करती है जिन्हें अनुभवजन्य रूप से परखा जा सके। शोधकर्ता की सहभागिता और तथ्यों का सत्यापन योग्य होना, दोनों ही सामाजिक अनुसंधान की वैज्ञानिक गुणवत्ता और निष्कर्षों की प्रामाणिकता को प्रभावित करते हैं।
निष्पक्ष शोध हेतु शोधकर्ता को अपनी उपस्थिति के प्रभाव और साक्ष्यों की सत्यता के प्रति सदैव जागरूक एवं अत्यंत सावधान रहना चाहिए।

4. (D) अनुसंधान प्रक्रिया में पक्षपात और पूर्वाग्रह को कम करने का प्रक्रियात्मक उद्देश्य।
सामाजिक अनुसंधान के संदर्भ में वस्तुनिष्ठता का मुख्य अर्थ शोध प्रक्रिया के दौरान व्यक्तिगत पक्षपात और पूर्वाग्रहों को न्यूनतम करना है। यह एक ऐसा प्रक्रियात्मक उद्देश्य है जो शोधकर्ता को अपने व्यक्तिगत मूल्यों से ऊपर उठकर तथ्यों का विश्लेषण करने हेतु प्रेरित करता है। इसका लक्ष्य यह सुनिश्चित करना है कि शोध के परिणाम व्यक्तिगत विचारों के स्थान पर वास्तविक साक्ष्यों और निष्पक्ष अवलोकनों पर आधारित हों।
वैज्ञानिक वैधता बनाए रखने हेतु शोध प्रक्रिया में निष्पक्षता और तटस्थता का पालन करना प्रत्येक शोधकर्ता का अनिवार्य और नैतिक उत्तरदायित्व है।

5. (C) एक अनुभवजन्य रूप से सत्यापन योग्य कथन है।
सामाजिक अनुसंधान में तथ्य को मूल्य से इस आधार पर पृथक किया जाता है कि तथ्य एक अनुभवजन्य रूप से सत्यापन योग्य कथन होता है। तथ्य वह सूचना है जिसे साक्ष्यों और अवलोकनों के माध्यम से प्रमाणित किया जा सकता है। इसके विपरीत, मूल्य व्यक्तिगत प्राथमिकताओं, विश्वासों और नैतिक निर्णयों पर आधारित होते हैं। वैज्ञानिक अध्ययन मुख्य रूप से तथ्यों पर ध्यान केंद्रित करता है ताकि समाज का वस्तुनिष्ठ विवरण प्राप्त हो।
तथ्यों की सत्यता को किसी भी समय साक्ष्यों द्वारा प्रमाणित किया जा सकता है, जो उन्हें वैज्ञानिक अनुसंधान का ठोस एवं विश्वसनीय आधार बनाता है।

6. (B) वस्तुनिष्ठता का मुद्दा और विषय वस्तु में शोधकर्ता की भागीदारी।
सामाजिक घटनाओं के अध्ययन की एक प्राथमिक समस्या शोधकर्ता की विषय वस्तु में सक्रिय भागीदारी और वस्तुनिष्ठता बनाए रखने की चुनौती है। प्राकृतिक विज्ञानों के विपरीत, सामाजिक विज्ञान में शोधकर्ता स्वयं उस समाज का हिस्सा होता है जिसका वह अध्ययन करता है। यह स्थिति व्यक्तिगत पूर्वाग्रहों के प्रवेश की संभावना को बढ़ा देती है। अतः शोध में पूर्ण तटस्थता प्राप्त करना एक कठिन कार्य है जो इसे अन्य विज्ञानों से भिन्न करता है।
मानवीय व्यवहार की व्यक्तिपरक प्रकृति के कारण सामाजिक शोध में पूर्ण वैज्ञानिक निष्पक्षता सुनिश्चित करना सदैव एक वृहद् और जटिल चुनौती बनी रहती है।

7. (A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
सामाजिक घटनाओं का अध्ययन स्वाभाविक रूप से अत्यंत जटिल होता है क्योंकि इसमें मानवीय अभिकर्तृत्व, अर्थ और व्याख्या जैसे तत्व सम्मिलित होते हैं। प्राकृतिक विज्ञानों की विषय वस्तु अचेतन होती है, जबकि सामाजिक जगत सचेत मनुष्यों से निर्मित है। मनुष्य अपने कार्यों को विशिष्ट अर्थ प्रदान करते हैं, जिससे उनके व्यवहार का पूर्वानुमान लगाना कठिन होता है। यही कारण है कि सामाजिक अनुसंधान में जटिलता का स्तर सदैव उच्च रहता है।
मानवीय चेतना और उनके द्वारा निर्मित अर्थों की विविधता सामाजिक जीवन को एक बहुआयामी और अत्यंत जटिल अध्ययन क्षेत्र बना देती है।

NODIA

की जाँच करता है और उनके सूक्ष्म सिद्धांतों को स्पष्ट करता है। इस प्रकार का शोध सामाजिक समस्याओं के समाधान हेतु प्रभावी नीतियाँ निर्मित करने में अत्यंत सहायक सिद्ध होता है। घटनाओं के पीछे छिपे 'क्यों' को उजागर करना और उनके प्रेरक कारकों का तार्किक विश्लेषण करना ही इस अनुसंधान प्रारूप का प्राथमिक लक्ष्य है।

53. (C) यह जनसंख्या के लिए निष्कर्षों के सांख्यिकीय सामान्यीकरण की अनुमति देता है।
प्रतिचयन में संभाव्यता प्रतिचयन का मुख्य लाभ यह है कि यह प्रतिदर्श से प्राप्त निष्कर्षों को सांख्यिकीय रूप से संपूर्ण जनसंख्या पर आरोपित करने की अनुमति देता है। इसमें जनसंख्या के प्रत्येक सदस्य के चयनित होने की एक निश्चित और समान संभावना होती है, जो शोधकर्ता के व्यक्तिगत पक्षपात को समाप्त करती है। यह विधि शोध की बाह्य वैधता को बढ़ाती है और प्राप्त परिणामों को अधिक विश्वसनीय बनाती है। गैर-संभाव्यता प्रतिचयन में यह वैज्ञानिक आधार प्रायः निर्बल होता है।
यादृच्छिकता के सिद्धांत का अनुपालन करके संपूर्ण समूह का सटीक प्रतिनिधित्व सुनिश्चित करना ही संभाव्यता प्रतिचयन की सबसे बड़ी वैज्ञानिक विशेषता है।

54. (B) पूर्व-परीक्षण/पश्च-परीक्षण प्रारूप
जब शोधकर्ता हस्तक्षेप अथवा नवीन पद्धति लागू करने से पूर्व और पश्चात प्रदत्त का मापन करता है, तो इसे पूर्व-परीक्षण/पश्च-परीक्षण प्रारूप कहते हैं। यह प्रारूप चरों में आए परिवर्तन को प्रत्यक्ष रूप से मापने की अनुमति देता है और यह देखने में सहायता करता है कि क्या हस्तक्षेप का कोई महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ा है। सामाजिक अनुसंधान और शिक्षा के क्षेत्र में प्रभावशीलता की जाँच हेतु यह अत्यंत लोकप्रिय प्रयोगात्मक विधि है। यह विधि समय के अंतराल पर हुए परिवर्तनों का सटीक विश्लेषण करती है।
किसी विशिष्ट क्रिया अथवा हस्तक्षेप के वास्तविक प्रभाव का आकलन करने हेतु समय के दो भिन्न बिंदुओं पर तुलना करना एक सशक्त वैज्ञानिक विधि है।

55. (D) स्वयं-प्रशासित प्रश्नावली और साक्षात्कार
स्वयं-प्रशासित प्रश्नावली और साक्षात्कार सामाजिक वांछनीयता पक्षपात के प्रति सर्वाधिक संवेदनशील होते हैं। इसमें उत्तरदाता प्रायः उन उत्तरों का चयन करते हैं जो समाज में श्रेष्ठ माने जाते हैं, चाहे वे उनके वास्तविक व्यवहार से भिन्न हों। व्यक्ति अपनी नकारात्मक छवि प्रस्तुत करने से संकोच करते हैं, जिससे प्रदत्त की सटीकता प्रभावित होती है। इसके विपरीत, गुप्त अवलोकन अथवा आधिकारिक अभिलेखों का विश्लेषण इस प्रकार के व्यक्तिगत पक्षपात से काफी सीमा तक मुक्त रहता है।
उत्तरदाताओं की यह स्वाभाविक मानवीय प्रवृत्ति कि वे स्वयं को सामाजिक रूप से 'सही' प्रस्तुत करें, प्रायः सर्वेक्षण प्रदत्त की विश्वसनीयता हेतु चुनौती बनती है।

56. (A) सामाजिक अनुसंधान में कंप्यूटर का अनुप्रयोग।
अनुसंधान में एस.पी.एस.एस. (SPSS) का उपयोग सामाजिक अनुसंधान में संगणक के अनुप्रयोग का एक उत्कृष्ट उदाहरण है। यह यंत्रांश विशेष रूप से सांख्यिकीय प्रदत्त के प्रबंधन और जटिल विश्लेषण हेतु निर्मित किया गया है। शोधकर्ता इसका उपयोग वृहद् मात्रा में संकलित आँकड़ों को व्यवस्थित करने, आवृत्ति ज्ञात करने और चरों के मध्य सहसंबंधों की जाँच करने हेतु करते हैं। यह प्रक्रिया न केवल समय की बचत करती है, अपितु गणनाओं में मानवीय त्रुटियों की संभावना को भी अत्यंत न्यूनतम कर देती है।
आधुनिक युग में जटिल सांख्यिकीय गणनाओं को सुगम और त्वरित बनाने हेतु संगणक यंत्रांश अनुसंधान का एक अनिवार्य और शक्तिशाली अंग बन गए हैं।

57. (A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
अत्यधिक विषम वितरण हेतु माध्य केंद्रीय प्रवृत्ति का एक भ्रामक माप सिद्ध हो सकता है क्योंकि यह चरम बाह्य मानों के प्रति अत्यंत संवेदनशील होता है। यदि प्रदत्त में कुछ बहुत विशाल अथवा बहुत लघु अंक हैं, तो माध्य उनकी ओर विस्थापित हो जाता है, जिससे वह औसत का वास्तविक चित्रण नहीं कर पाता। ऐसी स्थिति में माध्यिका अधिक उपयुक्त होती है क्योंकि वह केवल मध्य मान पर केंद्रित रहती है। माध्य की यह सीमा सांख्यिकीय विश्लेषण के दौरान सतर्कता की मांग करती है।
चरम अंकों द्वारा औसत को विकृत करने की माध्य की प्रवृत्ति इसे विषम प्रदत्त के विश्लेषण में कभी-कभी अविश्वसनीय और अस्पष्ट बना देती है।

58. (A) परिकल्पनात्मक अवलोकन
सामाजिक अनुसंधान में सहभागी, गैर-सहभागी और नियंत्रित अवलोकन मान्यता प्राप्त विधियाँ हैं, किंतु 'परिकल्पनात्मक अवलोकन' कोई स्थापित प्रकार नहीं है। सहभागी अवलोकन में शोधकर्ता समूह का अंग बनता है, जबकि गैर-सहभागी में वह दूरस्थ अवलोकन करता है। नियंत्रित अवलोकन विशिष्ट परिस्थितियों में व्यवहार की जाँच हेतु किया जाता है। परिकल्पना स्वयं अनुसंधान की एक प्रक्रिया है, न कि अवलोकन की कोई पृथक विधि। अतः यह विकल्प अन्य प्रकारों से भिन्न है और सामाजिक अनुसंधान का भाग नहीं है।
अवलोकन की वैज्ञानिक विधियाँ इस आधार पर चयनित की जाती हैं कि शोधकर्ता को अध्ययन क्षेत्र में कितनी गहनता और नियंत्रण की आवश्यकता है।

59. (D) प्रतिभागियों के लिए हानि को कम करना और लाभों को अधिकतम करना।
मानव विषयों के साथ अनुसंधान करते समय शोधकर्ता का सबसे मौलिक नैतिक कर्तव्य प्रतिभागियों हेतु किसी भी संभावित क्षति को न्यूनतम करना और लाभों को अधिकतम करना है। इसमें उनकी गोपनीयता अक्षुण्ण रखना, सूचित सहमति प्राप्त करना और उनकी मानवीय गरिमा का सम्मान करना सम्मिलित है। शोध का उद्देश्य कभी भी व्यक्तिगत लाभ अथवा केवल प्रकाशन नहीं होना चाहिए, अपितु ज्ञान का

Downloaded from www.pdf.tube

वैज्ञानिक अध्ययन संभव है। इन अवधारणाओं का सही सुमेल सामाजिक अनुसंधान की प्रक्रिया को स्पष्ट करता है।
इन मूलभूत तत्वों की सही समझ और उनका उचित प्रयोग ही एक सफल, निष्पक्ष और वैज्ञानिक सामाजिक शोध का आधार तैयार करता है।

16. (B) अन्वेषणात्मक
जब किसी विषय को पर्याप्त रूप से समझा न गया हो अथवा उस पर बहुत अल्प शोध उपलब्ध हो, तो अन्वेषणात्मक अनुसंधान प्रारूप सर्वाधिक उपयुक्त होता है। इसका प्राथमिक उद्देश्य समस्या की गहनता को समझना और भविष्य के विस्तृत शोध हेतु आधार निर्मित करना है। यह प्रारूप शोधकर्ता को नवीन विचारों की खोज और परिकल्पनाओं के विकास हेतु लचीलापन प्रदान करता है। इसमें कठोर संरचना के स्थान पर नवीन अंतर्दृष्टि प्राप्त करने पर बल दिया जाता है।
अज्ञात क्षेत्रों में ज्ञान की सीमाओं को विस्तार देने और प्रारंभिक सूचनाएँ जुटाने हेतु अन्वेषणात्मक शोध एक अनिवार्य प्रथम चरण है।

17. (B) प्रतिचयन
संपूर्ण जनसंख्या के विषय में सामान्यीकरण करने के उद्देश्य से जनसंख्या के एक लघु उपसमुच्चय या प्रतिदर्श के चयन की प्रक्रिया को प्रतिचयन कहते हैं। सामाजिक अनुसंधान में संपूर्ण जनसंख्या का अध्ययन प्रायः व्यावहारिक रूप से असंभव होता है, अतः एक प्रतिनिधि प्रतिदर्श चुना जाता है। यदि प्रतिचयन वैज्ञानिक विधि से किया जाए, तो प्रतिदर्श से प्राप्त निष्कर्षों को संपूर्ण जनसंख्या पर आरोपित किया जा सकता है। यह शोध की लागत और समय को घटाता है।
वैज्ञानिक प्रतिचयन तकनीकें यह सुनिश्चित करती हैं कि लघु समूह भी वृहद् जनसंख्या की विशेषताओं का सटीक और निष्पक्ष प्रतिनिधित्व कर सके।

18. (A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
वर्णनात्मक अनुसंधान प्रारूप का मुख्य उद्देश्य किसी स्थिति, व्यक्ति अथवा समूह की विशेषताओं का सटीक और विस्तृत चित्रण करना होता है। दूसरी ओर, व्याख्यात्मक अनुसंधान प्रारूप चरों के मध्य कार्य-कारण संबंधों को स्थापित करने और यह समझने का प्रयास करता है कि कोई घटना क्यों घटित होती है। ये दोनों प्रारूप सामाजिक अनुसंधान के भिन्न-भिन्न चरणों और विशिष्ट उद्देश्यों की पूर्ति करते हैं। इनके माध्यम से समाज का व्यवस्थित और तार्किक अध्ययन संभव होता है।
समाज की जटिलताओं को सुलझाने हेतु घटनाओं का वस्तुनिष्ठ वर्णन करना और उनके कारणों की व्याख्या करना दोनों ही समान रूप से महत्वपूर्ण हैं।

19. (C) प्रश्नावली
मात्रात्मक अनुसंधान में प्रश्नावली प्रदत्त संग्रह की एक प्रमुख और अत्यंत प्रभावी तकनीक है। इसमें पूर्व-निर्धारित प्रश्नों का एक समूह होता है जिसका उपयोग वृहद् संख्या में उत्तरदाताओं से मानकीकृत सूचना प्राप्त करने हेतु किया जाता है। प्रश्नावली के माध्यम से प्राप्त प्रदत्त सांख्यिकीय विश्लेषण हेतु अत्यंत उपयुक्त होते हैं। यह विधि शोधकर्ता को जनसंख्या के व्यापक रुझानों और प्रतिरूपों को मापने में सहायता करती है। इसकी सहायता से विशाल आबादी का कुशलतापूर्वक अध्ययन संभव है।
सूचनाओं के वृहद् स्तर पर संग्रहण और उनके सांख्यिकीय परिशोधन हेतु प्रश्नावली एक विश्वसनीय और वैश्विक स्तर पर प्रयुक्त उपकरण है।

20. (D) अवलोकन
यदि शोधकर्ता किसी समुदाय के व्यवहार को प्रभावित किए बिना उनकी दैनिक दिनचर्या समझना चाहता है, तो अवलोकन सर्वाधिक उपयुक्त तकनीक है। अवलोकन के माध्यम से घटनाओं और अंतःक्रियाओं को उनके प्राकृतिक परिवेश में प्रत्यक्ष रूप से देखा जा सकता है। इसमें शोधकर्ता उत्तरदाताओं से प्रश्न पूछने के स्थान पर उनके कार्यों को देख कर प्रदत्त संकलित करता है। यह विधि व्यवहार के उन सूक्ष्म पहलुओं को समझने में सक्षम है जो साक्षात्कारों में प्रायः उपेक्षित रह जाते हैं।
मानवीय व्यवहार की स्वाभाविकता को अक्षुण्ण रखते हुए वास्तविक परिस्थितियों का निष्पक्ष अध्ययन करने हेतु अवलोकन एक श्रेष्ठ और विश्वसनीय तकनीक है।

21. (C) प्रश्नावली उत्तरदाताओं द्वारा भरी जाती है जबकि अनुसूची शोधकर्ताओं द्वारा भरी जाती है।
प्रश्नावली और अनुसूची के मध्य प्राथमिक अंतर प्रदत्त पूरण की प्रक्रिया में निहित है। प्रश्नावली सामान्यतः उत्तरदाताओं को प्रेषित की जाती है और वे इसे स्वयं भरते हैं, जिसके लिए उनका साक्षर होना अनिवार्य है। इसके विपरीत, अनुसूची को शोधकर्ता अथवा प्रगणक द्वारा उत्तरदाता से प्रत्यक्ष साक्षात्कार करके भरा जाता है। यह अंतर अनुसूची को निरक्षर जनसंख्या के अध्ययन हेतु अधिक उपयुक्त बनाता है। इसमें शोधकर्ता प्रश्नों को स्पष्ट कर प्रदत्त की गुणवत्ता बढ़ा सकता है।
प्रदत्त संग्रह की इन दोनों विधियों का चयन अध्ययन की प्रकृति और लक्षित जनसंख्या की साक्षरता के स्तर पर पूर्णतः निर्भर करता है।

22. (B) साक्षात्कार
सूचना संकलन के उद्देश्य से शोधकर्ता और उत्तरदाता के मध्य एक संरचित और प्रत्यक्ष संवाद को साक्षात्कार कहा जाता है। यह विधि शोधकर्ता को उत्तरदाता की भावनाओं, दृष्टिकोणों और अनुभवों की गहराई तक पहुँचने की अनुमति प्रदान करती है। साक्षात्कार लचीला हो सकता है, जिससे जटिल विषयों पर स्पष्टीकरण प्राप्त करना सरल हो जाता है। इसमें मौखिक और गैर-मौखिक दोनों प्रकार के संकेतों को अंकित किया जा सकता है। यह गुणात्मक प्रदत्त संग्रह का अत्यंत शक्तिशाली माध्यम है।
व्यक्तिगत संवाद के माध्यम से मानवीय अनुभवों की सूक्ष्मताओं को समझने हेतु साक्षात्कार एक अपरिहार्य और अत्यंत प्रभावी शोध विधि मानी जाती है।

NODIA

38. (B) यह मुख्य रूप से संख्यात्मक डेटा और सांख्यिकीय विश्लेषण पर निर्भर करता है।
गुणात्मक अनुसंधान के विषय में यह कथन त्रुटिपूर्ण है कि यह मुख्य रूप से संख्यात्मक प्रदत्त पर निर्भर करता है। वास्तव में, गुणात्मक शोध शब्दों, विवरणों और अर्थों पर केंद्रित होता है। यह प्रायः लघु और गैर-यादृच्छिक प्रतिदर्शों का उपयोग करता है ताकि किसी विषय की गहन और समग्र समझ प्राप्त की जा सके। इसका उद्देश्य यह समझना है कि व्यक्ति अपने सामाजिक जगत की व्याख्या किस प्रकार करते हैं। सांख्यिकीय विश्लेषण और संख्यात्मक मापन मात्रात्मक अनुसंधान की प्रमुख विशेषताएँ हैं।
मानवीय अनुभवों की गहनता और उनके अर्थों की जटिलता को समझना ही गुणात्मक शोध का वास्तविक, मौलिक और प्राथमिक कार्यक्षेत्र है।

39. (D) वह सीमा जिस तक डेटा बिंदु फैले हुए हैं या एक साथ गुच्छित हैं।
सांख्यिकी में परिक्षेपण के माप का उपयोग यह वर्णन करने हेतु किया जाता है कि प्रदत्त बिंदु माध्य अथवा केंद्र के चारों ओर किस सीमा तक विस्तृत हैं। यह बताता है कि प्रदत्त में कितनी भिन्नता अथवा अस्थिरता उपस्थित है। यदि परिक्षेपण अल्प है, तो अंक केंद्र के समीप होते हैं, और यदि अधिक है, तो वे दूर तक विस्तृत होते हैं। परास, प्रसरण और मानक विचलन इसके प्रमुख उदाहरण हैं। यह प्रदत्त की विविधता समझने हेतु अनिवार्य है।
प्रदत्त के फैलाव अथवा बिखराव की सीमा को माप कर वितरण की स्थिरता और विविधता का सटीक वैज्ञानिक आकलन करना ही इसका उद्देश्य है।

40. (A) मानक विचलन
मानक विचलन परिक्षेपण का एक महत्वपूर्ण माप है जो यह बताता है कि अंक अपने माध्य से औसतन कितनी दूरी पर हैं। यह प्रदत्त के फैलाव अथवा विविधता की सटीक वैज्ञानिक गणना करता है। इसके विपरीत, माध्य, बहुलक और माध्यिका केंद्रीय प्रवृत्ति के माप हैं जो प्रदत्त के केंद्र को प्रदर्शित करते हैं। मानक विचलन का उपयोग वैज्ञानिक शोध में प्रदत्त की स्थिरता और सटीकता को मापने हेतु व्यापक रूप से किया जाता है। यह बताता है कि प्रदत्त कितना विश्वसनीय और एकसमान है। वितरण में अंकों के विचलन की मात्रा को स्पष्ट कर प्रदत्त की गुणवत्ता और सटीकता को निर्धारित करना मानक विचलन का मुख्य सांख्यिकीय कार्य है।

41. (A) केवल I और III
मात्रात्मक विधियाँ मुख्य रूप से वस्तुनिष्ठ मापन और संख्यात्मक विश्लेषण पर बल देती हैं। इनका उपयोग वृहद् जनसंख्या हेतु परिणामों के सामान्यीकरण हेतु किया जाता है। इसके विपरीत, प्रतिभागियों के अर्थों और व्याख्याओं की खोज गुणात्मक विधियों का मुख्य कार्य है। मात्रात्मक शोध में प्रदत्त संकलन हेतु प्रश्नावली और सर्वेक्षणों का व्यापक उपयोग होता है। यह चरों के मध्य संबंधों को मापने और परिकल्पनाओं के परीक्षण हेतु एक शक्तिशाली और प्रभावी वैज्ञानिक दृष्टिकोण प्रदान करता है।
सांख्यिकीय शुद्धता और व्यापक निष्कर्षों की प्राप्ति हेतु मात्रात्मक विधियाँ सामाजिक अनुसंधान में एक अनिवार्य और प्रभावी भूमिका निभाती हैं।

42. (A) दो चरों के बीच संबंध की मजबूती और दिशा को मापने के लिए।
सहसंबंध विश्लेषण एक महत्वपूर्ण सांख्यिकीय विधि है जिसका उपयोग दो चरों के मध्य संबंध की प्रगाढ़ता और दिशा को मापने हेतु किया जाता है। यह स्पष्ट करता है कि क्या एक चर में परिवर्तन दूसरे चर में परिवर्तन के साथ संबद्ध है। हालाँकि, सहसंबंध यह प्रमाणित नहीं करता कि एक चर दूसरे का कारण है। सहसंबंध गुणांक +1.0 से -1.0 के मध्य होता है। सकारात्मक सहसंबंध का अर्थ है दोनों चर समान दिशा में बढ़ते हैं, जबकि नकारात्मक में वे विपरीत दिशा में चलते हैं।
चरों के पारस्परिक जुड़ाव और उनके व्यवहार के प्रतिरूपों को समझने हेतु सहसंबंध विश्लेषण एक अत्यंत उपयोगी और आवश्यक सांख्यिकीय उपकरण है।

43. (D) एक बहुत ही मजबूत नकारात्मक संबंध।
-0.9 का सहसंबंध गुणांक दो चरों के मध्य एक अत्यंत सबल नकारात्मक संबंध को प्रदर्शित करता है। नकारात्मक सहसंबंध का अर्थ है कि जैसे-जैसे एक चर का मान बढ़ता है, दूसरे चर का मान घटता जाता है। चूंकि यह मान -1.0 के अत्यंत समीप है, अतः यह संबंध अत्यंत सुसंगत और दृढ़ माना जाता है। शून्य का मान किसी भी संबंध की अनुपस्थिति को दर्शाता है, जबकि +1.0 एक पूर्ण सकारात्मक संबंध का संकेत देता है। यह सांख्यिकीय मान चरों की अंतर्निर्भरता को स्पष्ट करता है। चरों के विपरीत दिशा में प्रबल जुड़ाव को स्पष्ट करने वाला यह मान अनुसंधान में प्रदत्त की गहन व्याख्या में अत्यंत सहायक सिद्ध होता है।

44. (B) इस संभावना का आकलन करने के लिए कि नमूने में देखे गए परिणाम संयोग के कारण हैं।
सामाजिक अनुसंधान में सार्थकता परीक्षण का उपयोग यह आकलन करने हेतु किया जाता है कि प्रतिदर्श में देखे गए परिणाम कहीं केवल संयोग का प्रतिफल तो नहीं हैं। यह शोधकर्ता को यह निर्धारित करने में सहायता करता है कि क्या परिणाम सांख्यिकीय रूप से विश्वसनीय हैं और संपूर्ण जनसंख्या पर आरोपित किए जा सकते हैं। सामान्यतः, यदि संभावना 5% ($p < 0.05$) से अल्प है, तो परिणाम को महत्वपूर्ण माना जाता है। यह सांख्यिकीय उपकरण शोध के निष्कर्षों को वैज्ञानिक प्रमाणिकता प्रदान करता है।
आकस्मिक निष्कर्षों को वैज्ञानिक तथ्यों से पृथक करने हेतु सार्थकता परीक्षण अनुसंधान प्रक्रिया का एक अत्यंत महत्वपूर्ण और निर्णयकारी चरण माना जाता है।

45. (C) सामाजिक संबंधों और समूह की संरचना को मापने के लिए।
समाजमिति एक मात्रात्मक विधि है जिसे विशेष रूप से सामाजिक संबंधों और समूह के आंतरिक ढाँचे को मापने हेतु

Click Here to Buy book on Amazon

सहायता करती है। इसमें गहन साक्षात्कारों का उपयोग होता है ताकि व्यक्ति की जीवन यात्रा का समग्र चित्रण प्राप्त हो सके। यह व्यक्तिगत अनुभवों और सामाजिक संदर्भों के संबंध को स्पष्ट करता है।
व्यक्ति की जुबानी उसके जीवन के उतार-चढ़ाव और सामाजिक अनुभवों का विश्लेषण करना ही इस गुणात्मक विधि का मूल सार और उद्देश्य है।

31. (A) बड़े पैमाने पर सांख्यिकीय विश्लेषण
गुणात्मक विधियाँ मुख्य रूप से मानवीय व्यवहार की गहन समझ, व्यक्तिपरक अनुभवों और प्रासंगिक अर्थों की खोज पर केंद्रित होती हैं। वृहद् स्तर पर सांख्यिकीय विश्लेषण सामान्यतः मात्रात्मक विधियों की विशेषता है, जहाँ संख्याओं और गणनाओं के माध्यम से सामान्यीकरण किया जाता है। गुणात्मक शोध में प्रदत्त शब्दों और विवरणों के रूप में होता है, न कि सांख्यिकीय आँकड़ों के रूप में। अतः सांख्यिकीय विश्लेषण गुणात्मक अनुसंधान की प्राथमिक पहचान नहीं मानी जाती है।
अर्थों की गहराई और अनुभवों की विविधता का अध्ययन करना ही गुणात्मक शोध को सांख्यिकीय गणनाओं वाले मात्रात्मक शोध से पृथक एवं विशिष्ट बनाता है।

32. (B) एक सांस्कृतिक समूह के रोजमर्रा के जीवन और प्रथाओं का वर्णन करना।
नृवंशविज्ञान का प्राथमिक लक्ष्य किसी विशिष्ट सांस्कृतिक समूह के दैनिक जीवन, प्रथाओं और सामाजिक अंतःक्रियाओं का गहन विवरण प्रस्तुत करना है। इसमें शोधकर्ता प्रायः दीर्घकाल तक उस संस्कृति के मध्य रहकर प्रदत्त संकलित करता है। इसका उद्देश्य संस्कृति को 'भीतर' से समझना और व्यक्तियों के कार्यों के अंतर्निहित अर्थों को स्पष्ट करना है। नृवंशविज्ञान सांख्यिकीय मापन के स्थान पर सघन विवरण और गुणात्मक समझ पर अधिक बल देता है।
किसी समाज की सांस्कृतिक बारीकियों और उनके जीवन जीने की शैलियों का जीवंत चित्रण करना ही इस पद्धति का मुख्य और मौलिक उद्देश्य है।

33. (B) माध्यिका
केंद्रीय प्रवृत्ति के माप ऐसे सांख्यिकीय मान हैं जो प्रदत्त समूह के केंद्र अथवा प्रतिनिधि मान को प्रदर्शित करते हैं। माध्यिका इनमें से एक प्रमुख माप है, जो वितरण के ठीक मध्य में स्थित होती है जब अंकों को क्रमबद्ध किया जाता है। अन्य प्रमुख माप माध्य और बहुलक हैं। मानक विचलन और प्रसरण परिक्षेपण के माप हैं, जो प्रदत्त के फैलाव को दर्शाते हैं। माध्यिका बाह्य मानों से न्यूनतम प्रभावित होती है, जिससे यह विषम प्रदत्त हेतु एक अत्यंत उपयोगी माप बन जाती है।
प्रदत्त के मध्य बिंदु को दर्शाने वाले ये मान संपूर्ण सूचना को एक संक्षिप्त अंक में सारांशित करने की सांख्यिकीय शक्ति रखते हैं।

34. (A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
सहभागी अवलोकन शोधकर्ता हेतु गंभीर नैतिक चुनौतियाँ प्रस्तुत करता है क्योंकि उसकी उपस्थिति समूह के व्यवहार को परिवर्तित कर सकती है। यदि शोधकर्ता अपनी पहचान छिपाता है, तो धोखे और सूचित सहमति के उल्लंघन के विषय उठते हैं। व्यक्ति यह जानकर भिन्न व्यवहार कर सकते हैं कि उनका अध्ययन हो रहा है, जिसे 'प्रतिक्रियाशीलता' कहते हैं। इन नैतिक दुविधाओं को सुलझाना और प्रदत्त की विश्वसनीयता बनाए रखना शोधकर्ता हेतु एक कठिन और अनिवार्य संतुलन कार्य होता है।
अनुसंधान की शुद्धता और प्रतिभागियों के मानवीय अधिकारों के मध्य तार्किक तालमेल बिठाना सहभागी अवलोकन की प्रक्रिया में एक अनिवार्य आवश्यकता है।

35. (C) माध्य
अंकों के एक समूह के अंकगणितीय औसत को माध्य कहा जाता है। इसकी गणना समस्त अंकों को जोड़कर उनकी कुल संख्या से भाग देकर की जाती है। यह केंद्रीय प्रवृत्ति का सर्वाधिक प्रयुक्त माप है क्योंकि इसमें प्रदत्त समूह के प्रत्येक अंक का योगदान सम्मिलित होता है। हालाँकि, माध्य चरम अथवा बहुत विशाल अंकों के प्रति संवेदनशील होता है, जो औसत मान को प्रभावित कर सकते हैं। यह प्रदत्त के समग्र स्तर को समझने हेतु एक महत्वपूर्ण सांख्यिकीय उपकरण है।
समस्त मानों को समाहित कर एक औसत प्रतिनिधित्व प्रदान करने की अपनी क्षमता के कारण माध्य सांख्यिकीय विश्लेषण में अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान रखता है।

36. (D) 3
सांख्यिकी में बहुलक वह मान होता है जो किसी प्रदत्त समूह में सर्वाधिक आवृत्ति के साथ आता है। दिए गए अंकों {7, 3, 9, 5, 3} में, अंक 3 दो बार आया है, जबकि अन्य समस्त अंक केवल एक बार आए हैं। चूंकि 3 की आवृत्ति सर्वाधिक है, अतः इस वितरण का बहुलक 3 होगा। बहुलक प्रदत्त के सर्वाधिक सामान्य अथवा लोकप्रिय रुझान को पहचानने में सहायता करता है। यह विशेष रूप से श्रेणीगत प्रदत्त के विश्लेषण हेतु बहुत उपयोगी माना जाता है।
प्रदत्त में बार-बार आने वाले मानों की पहचान करके समूह की सामान्य प्रवृत्ति को समझना बहुलक के माध्यम से अत्यंत सरल और प्रभावी हो जाता है।

37. (C) माध्यिका
जब अंकों के वितरण को आरोही अथवा अवरोही क्रम में व्यवस्थित किया जाता है, तो उनके ठीक मध्य में स्थित मान को माध्यिका कहते हैं। यह प्रदत्त समूह को दो समान भागों में विभाजित करती है, जहाँ आधे अंक इससे ऊपर और आधे इससे नीचे होते हैं। माध्यिका की मुख्य विशेषता यह है कि यह बहुत विशाल अथवा बहुत लघु चरम मानों से प्रभावित नहीं होती है। इस कारण इसे आय अथवा अन्य विषम वितरणों के अध्ययन हेतु माध्य से श्रेष्ठ माना जाता है।
वितरण के संतुलित मध्य बिंदु को दर्शाने के कारण माध्यिका प्रदत्त के वास्तविक केंद्रीय रुझान को समझने का एक सटीक और विश्वसनीय साधन है।

NODIA

8. (A) प्रश्नों के उत्तरों के माध्यम से व्यक्तियों के एक नमूने से डेटा एकत्र करने की एक विधि।
मात्रात्मक विधियों के अंतर्गत सर्वेक्षण अनुसंधान एक ऐसी तकनीक है जिसमें व्यक्तियों के एक विशिष्ट प्रतिदर्श से प्रश्नों के माध्यम से प्रदत्त संकलित किए जाते हैं। इस विधि का उपयोग विशाल जनसंख्या की विशेषताओं, विचारों और व्यवहारों को समझने हेतु किया जाता है। सर्वेक्षण के परिणाम सांख्यिकीय विश्लेषण हेतु उपयुक्त होते हैं और सामान्यीकरण में सहायता करते हैं। यह सामाजिक प्रवृत्तियों के व्यापक स्तर पर मापन हेतु प्रभावी उपकरण है।
व्यवस्थित प्रश्नों का उपयोग करके शोधकर्ता अल्प समय में वृहद् जनसंख्या के विषय में महत्वपूर्ण और सटीक सांख्यिकीय सूचनाएँ प्राप्त कर सकता है।

9. (C) अपने व्यक्तिगत मूल्यों को शोध के निष्कर्षों को विकृत करने से रोकने का प्रयास करना चाहिए।
सामाजिक अनुसंधान में मूल्य-तटस्थता की अवधारणा का अर्थ है कि शोधकर्ता को अपने व्यक्तिगत मूल्यों और विश्वासों को अनुसंधान के परिणामों पर प्रभावी नहीं होने देना चाहिए। यद्यपि शोधकर्ता के अपने विचार हो सकते हैं, किंतु उसे यह सुनिश्चित करना चाहिए कि वे तथ्यों की व्याख्या को प्रभावित न करें। इसका उद्देश्य शोध की वस्तुनिष्ठता और वैज्ञानिक विश्वसनीयता को अक्षुण्ण बनाए रखना है। यह दृष्टिकोण शोधकर्ता को निष्पक्ष निष्कर्षों तक पहुँचाता है।
वैज्ञानिक सत्यनिष्ठा की मांग है कि शोधकर्ता तथ्यों का विश्लेषण करते समय अपनी व्यक्तिगत प्राथमिकताओं को पूर्णतः पृथक और निष्प्रभावी रखे।

10. (A) केवल I और II
वैज्ञानिक पद्धति की मुख्य पहचान अनुभवजन्य साक्ष्यों पर निर्भरता और एक तार्किक तथा व्यवस्थित प्रक्रिया का अनुपालन करना है। यह पद्धति तथ्यों के व्यवस्थित अवलोकन और परीक्षण पर आधारित होती है। हालाँकि, इसके निष्कर्ष सदैव स्थायी और सार्वभौमिक रूप से मान्य नहीं हो सकते, क्योंकि नवीन प्रदत्त पुराने सिद्धांतों को परिवर्तित कर सकते हैं। विज्ञान निरंतर परिष्करण की प्रक्रिया है, जो नवीन प्रमाणों के आधार पर विकसित होती रहती है।
साक्ष्यों की तर्कसंगत व्याख्या और व्यवस्थित जाँच ही वैज्ञानिक पद्धति को विश्वसनीयता प्रदान करती है, यद्यपि इसके निष्कर्ष सदैव अनंतिम होते हैं।

11. (D) एक शोध परियोजना के संचालन के लिए एक रूपरेखा या योजना।
अनुसंधान प्रारूप को एक शोध परियोजना के सफल संचालन हेतु निर्मित की गई तार्किक रूपरेखा या योजना के रूप में वर्णित किया जा सकता है। यह योजना निर्धारित करती है कि प्रदत्त संकलन कैसे होगा, किन विधियों का उपयोग किया जाएगा और विश्लेषण की प्रक्रिया क्या होगी। एक स्पष्ट प्रारूप शोधकर्ता को अपने उद्देश्यों की प्राप्ति हेतु निश्चित दिशा प्रदान करता है। यह अनुसंधान की दक्षता और सटीकता सुनिश्चित करने हेतु अपरिहार्य है।
बिना किसी ठोस योजना के अनुसंधान कार्य दिशाहीन हो सकता है, इसलिए एक सुदृढ़ शोध प्रारूप का निर्माण करना अत्यंत आवश्यक होता है।

12. (A) III, I, II, IV
वैज्ञानिक पद्धति का तार्किक क्रम सर्वप्रथम समस्या की पहचान से प्रारंभ होता है। इसके उपरांत, शोधकर्ता एक संभावित समाधान अथवा परिकल्पना का निर्माण करता है। तृतीय चरण में, परिकल्पना के परीक्षण हेतु व्यवस्थित अवलोकन और प्रदत्त संग्रह किया जाता है। अंत में, संकलित सूचनाओं का विश्लेषण और व्याख्या करके निष्कर्ष प्रतिपादित किए जाते हैं। यह अनुक्रमिक प्रक्रिया शोध को वैज्ञानिक आधार प्रदान करती है और मानवीय त्रुटियों की संभावना को न्यूनतम करती है।
चरणों का यह व्यवस्थित अनुपालन ही किसी भी अध्ययन को वैज्ञानिक श्रेणी में रखता है और उसे सामाजिक स्वीकार्यता एवं प्रामाणिकता प्रदान करता है।

13. (C) परिकल्पनात्मक अनुसंधान प्रारूप
सामाजिक अनुसंधान में अन्वेषणात्मक, वर्णनात्मक और व्याख्यात्मक प्रारूप सामान्य रूप से स्वीकृत प्रकार हैं। अन्वेषणात्मक प्रारूप का उपयोग तब होता है जब विषय नवीन हो, वर्णनात्मक प्रारूप विशेषताओं का चित्रण करता है, और व्याख्यात्मक प्रारूप कार्य-कारण संबंधों की जाँच करता है। 'परिकल्पनात्मक' स्वयं में कोई विशिष्ट अनुसंधान प्रारूप नहीं है, अपितु परिकल्पना अनुसंधान प्रक्रिया का एक अंग है जिसका परीक्षण किया जाता है। अतः यह अन्य विकल्पों के समान नहीं है।
अनुसंधान की प्रकृति और शोध उद्देश्यों के आधार पर ही उपयुक्त प्रारूप का चयन किया जाता है ताकि सटीक एवं वैज्ञानिक परिणाम प्राप्त हो सकें।

14. (D) परिकल्पना
दो या दो से अधिक चरों के मध्य संबंधों के विषय में एक परीक्षण योग्य प्रस्ताव को परिकल्पना कहा जाता है। यह एक अस्थायी कथन होता है जिसे शोधकर्ता अपने अध्ययन के माध्यम से सिद्ध अथवा असिद्ध करने का प्रयास करता है। परिकल्पना शोध को एक निश्चित दिशा और तार्किक आधार प्रदान करती है। वैज्ञानिक अनुसंधान में परिकल्पना का निर्माण प्रदत्त संग्रह से पूर्व किया जाता है ताकि जाँच की प्रक्रिया अधिक केंद्रित और उद्देश्यपूर्ण बनी रहे।
परिकल्पना अनुसंधान का वह महत्वपूर्ण आधार स्तंभ है जो चरों के मध्य संभावित संबंधों को स्पष्ट कर वैज्ञानिक जाँच का मार्ग प्रशस्त करता है।

15. (A) P-4, Q-2, R-1, S-3
सर्वेक्षण एक ऐसी विधि है जिसमें जनसंख्या के प्रतिदर्श से प्रदत्त एकत्र किए जाते हैं। अनुसंधान प्रारूप प्रदत्त संग्रह और विश्लेषण हेतु एक सुव्यवस्थित रूपरेखा प्रदान करता है। परिकल्पना चरों के मध्य संबंधों के विषय में एक अस्थायी और परीक्षण योग्य कथन है। सामाजिक घटना मानव जीवन और समाज के उन विभिन्न पहलुओं को संदर्भित करती है जिनका

Downloaded from www.pdf.tube

निर्मित किया गया है। यह विधि व्यक्तियों के मध्य आकर्षण, विकर्षण और संचार के प्रतिरूपों को समझने में सहायता करती है। इसमें प्रायः 'समाजआरेख' का उपयोग किया जाता है जो समूह की गतिशीलता को दृश्य रूप में प्रस्तुत करता है। समाजमिति के माध्यम से समूह के प्रभावशाली नेताओं और एकाकी सदस्यों की पहचान की जा सकती है। यह समाजशास्त्र का महत्वपूर्ण अंग है।
समूह के भीतर आपसी पसंद-नापसंद और सामाजिक जुड़ाव के जटिल जाल को मापने और समझने हेतु समाजमिति एक अद्वितीय और प्रभावी तकनीक है।

46. (D) बड़े डेटासेट का भंडारण, प्रबंधन और विश्लेषण करना।
सामाजिक अनुसंधान में संगणक यंत्रांश का सर्वाधिक सामान्य और महत्वपूर्ण अनुप्रयोग विशाल प्रदत्त समूहों का कुशलतापूर्वक भंडारण, प्रबंधन और विश्लेषण करना है। आधुनिक अनुसंधान में सहस्त्रों उत्तरदाताओं की सूचना को हस्तलिखित रूप में संभालना दुष्कर होता है। यंत्रांश के उपयोग से जटिल सांख्यिकीय गणनाएँ अत्यंत तीव्रता और शुद्धता से संपन्न की जा सकती हैं। यह शोधकर्ता को मानवीय त्रुटियों से सुरक्षित रखने और प्रदत्त से जटिल निष्कर्ष निकालने में सहायता करता है। यह प्रक्रिया अनुसंधान को सुव्यवस्थित बनाती है।
तकनीकी प्रगति ने विशाल सूचनाओं के प्रसंस्करण और गहन सांख्यिकीय विश्लेषण को सुलभ बनाकर सामाजिक शोध की सीमाओं का अभूतपूर्व विस्तार किया है।

47. (A) नृवंशविज्ञान
नृवंशविज्ञान वह शोध विधि है जो किसी संस्कृति अथवा सामाजिक समूह का समृद्ध और समग्र विवरण प्रस्तुत करने हेतु सहभागी अवलोकन और गहन साक्षात्कार को एकीकृत करती है। इसमें शोधकर्ता समूह के साथ घुल-मिल जाता है ताकि उनके जीवन के अनुभवों को वास्तविक रूप में समझ सके। इसका मुख्य लक्ष्य समूह के विश्वासों, मूल्यों और प्रथाओं का विस्तृत तथा प्रासंगिक चित्रण करना है। यह विधि मानव व्यवहार की जटिलताओं को उनके प्राकृतिक परिवेश में समझने हेतु सर्वश्रेष्ठ मानी जाती है।
सहभागी अनुभव और गहन संवाद के मेल से किसी समाज की सांस्कृतिक आत्मा को जीवंत रूप में प्रस्तुत करना ही इस शोध विधि की विशिष्टता है।

48. (B) P-3, Q-1, R-2, S-4
माध्य अंकगणितीय औसत को प्रदर्शित करता है जो प्रदत्त के समग्र स्तर की गणना करता है। बहुलक वितरण में सर्वाधिक बार आने वाले मान को संदर्भित करता है। परिक्षेपण अंकों के फैलाव अथवा उनकी परिवर्तनशीलता का मापन करता है। सहसंबंध दो चरों के मध्य के संबंध की मात्रा और दिशा को स्पष्ट करता है। इन सांख्यिकीय अवधारणाओं का सही संयोजन प्रदत्त विश्लेषण को वैज्ञानिक आधार प्रदान करता है। इनके माध्यम से शोधकर्ता जटिल आँकड़ों को सरल और बोधगम्य प्रारूप में सारांशित कर सकता है।

NODIA

सांख्यिकीय मापों की सही पहचान और उनका उचित प्रयोग ही प्रदत्त की सार्थक व्याख्या और वैज्ञानिक निष्कर्षों की प्राप्ति सुनिश्चित करता है।

49. (A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
सामाजिक अनुसंधान में शून्य परिकल्पना यह प्रस्तावित करती है कि अध्ययन किए जा रहे चरों के मध्य कोई प्रभाव अथवा संबंध विद्यमान नहीं है। इसके विपरीत, वैकल्पिक परिकल्पना वह होती है जिसे शोधकर्ता साक्ष्यों के माध्यम से समर्थित करने का लक्ष्य रखता है। शोध की प्रक्रिया में प्रायः शून्य परिकल्पना का परीक्षण किया जाता है ताकि यह देखा जा सके कि क्या उसे अस्वीकृत किया जा सकता है। ये दोनों परिकल्पनाएँ मिलकर वैज्ञानिक जाँच और परिकल्पना परीक्षण का तार्किक ढाँचा निर्मित करती हैं।
चरों के मध्य संबंधों की संभावना और उनके अभाव के मध्य का यह द्वंद्व ही वैज्ञानिक अनुसंधान को एक निश्चित दिशा और उद्देश्य प्रदान करता है।

50. (A) समाजमिति
जब शोधकर्ता बालकों से उनकी पसंद के साथियों के विषय में पूछकर कक्षा की सामाजिक संरचना का अध्ययन करता है, तो यह समाजमिति का एक श्रेष्ठ अनुप्रयोग है। यह विधि समूह के भीतर आपसी आकर्षण और सामाजिक संबंधों के प्रतिरूपों को मापने में सक्षम है। इसके माध्यम से प्राप्त प्रदत्त को समाजआरेख में परिवर्तित किया जा सकता है, जो समूह की आंतरिक गतिशीलता को स्पष्ट रूप से दर्शाता है। समाजमिति का उपयोग लघु समूहों के सामाजिक ढाँचे को समझने हेतु व्यापक रूप से किया जाता है।
समूह के सदस्यों के व्यक्तिगत चुनावों के माध्यम से उनके अंतर्निहित सामाजिक संबंधों के जाल को वैज्ञानिक रूप से मापना ही इस विधि की मुख्य शक्ति है।

51. (C) वस्तुनिष्ठता
जब शोधकर्ता के व्यक्तिगत मूल्य सचेत अथवा अचेतन रूप से अध्ययन के परिणामों को प्रभावित करते हैं, तो इसे वस्तुनिष्ठता का उल्लंघन माना जाता है। वस्तुनिष्ठता की मांग है कि शोध पूर्णतः तथ्यों और साक्ष्यों पर आधारित होना चाहिए, न कि शोधकर्ता की भावनाओं अथवा विश्वासों पर। निष्पक्षता बनाए रखना वैज्ञानिक अनुसंधान की एक मौलिक शर्त है। यदि पक्षपात अनुसंधान में प्रवेश करता है, तो निष्कर्षों की विश्वसनीयता और वैधता घट जाती है। अतः शोधकर्ता को सदैव सजग रहने की आवश्यकता होती है।
व्यक्तिगत पूर्वाग्रहों से मुक्त होकर तथ्यों का निष्पक्ष विश्लेषण करना ही किसी भी शोध को वैज्ञानिक और विश्वसनीय बनाने का एकमात्र प्रशस्त मार्ग है।

52. (D) किसी घटना के कारणों की पहचान करना।
एक व्याख्यात्मक अनुसंधान प्रारूप मुख्य रूप से किसी विशिष्ट सामाजिक घटना अथवा स्थिति के अंतर्निहित कारणों की पहचान करने से संबद्ध होता है। इसका उद्देश्य केवल यह बताना नहीं है कि 'क्या' घटित हो रहा है, अपितु यह समझना है कि वह 'क्यों' हो रहा है। यह चरों के मध्य कार्य-कारण संबंधों

सूचनाओं के मानकीकृत और त्वरित प्रसंस्करण हेतु बंद प्रश्न शोधकर्ताओं के मध्य एक अत्यंत लोकप्रिय और प्रभावी सांख्यिकीय साधन हैं।

67. (C) सर्वेक्षण
सर्वेक्षण मुख्य रुप से एक मात्रात्मक शोध विधि है जिसका उपयोग वृहद् जनसंख्या से मानकीकृत प्रदत्त एकत्र करने हेतु किया जाता है। इसके विपरीत, जीवन इतिहास, नृवंशविज्ञान और सहभागी अवलोकन गुणात्मक विधियाँ हैं जो अर्थों की गहराई और व्यक्तिगत अनुभवों पर केंद्रित होती हैं। सर्वेक्षण में सांख्यिकीय विश्लेषण और संख्यात्मक मापन का उपयोग अधिक होता है। गुणात्मक विधियाँ प्रायः लघु प्रतिदर्शों के साथ सघन विवरण और व्याख्यात्मक समझ प्राप्त करने का प्रयत्न करती हैं। अतः सर्वेक्षण इस सूची में भिन्न है।
अनुसंधान की प्रकृति और गहराई के आधार पर ही यह निर्धारित होता है कि वह गुणात्मक मार्ग अपनाएगा अथवा मात्रात्मक सर्वेक्षण का चयन करेगा।

68. (D) विषयों की यह प्रवृत्ति कि वे यह अनुभव होने पर अपना व्यवहार बदल लेते हैं कि उनका अवलोकन किया जा रहा है।
सामाजिक अनुसंधान में 'प्रतिक्रियाशीलता' उस समस्या को संदर्भित करती है जहाँ व्यक्ति अपना स्वाभाविक व्यवहार परिवर्तित कर लेते हैं क्योंकि वे जानते हैं कि उनका अवलोकन हो रहा है। यह प्रवृत्ति शोध के प्रदत्त की वैधता को प्रभावित कर सकती है, क्योंकि शोधकर्ता वास्तविक व्यवहार के स्थान पर एक कृत्रिम व्यवहार देख रहा होता है। इसे 'हॉथोर्न प्रभाव' के रूप में भी जाना जाता है। शोधकर्ता प्रायः इस प्रभाव को न्यूनतम करने हेतु दीर्घकाल तक समूह के साथ रहने जैसी तकनीकों का उपयोग करते हैं।
मानवीय चेतना की यह विशेषता कि वे निगरानी में सजग हो जाते हैं, सामाजिक शोध की शुद्धता हेतु एक निरंतर चुनौती बनी रहती है।

69. (D) कथन I गलत है, लेकिन कथन II सही है।
सामाजिक विज्ञान में 'तथ्य' पूर्णतः सिद्धांतों से स्वतंत्र नहीं होते, अपितु वे प्रायः किसी न किसी सैद्धांतिक ढाँचे के भीतर व्याख्यायित किए जाते हैं। अतः कथन I त्रुटिपूर्ण है। दूसरी ओर, 'मूल्य' वास्तव में व्यक्तिगत और सामाजिक मानकों का प्रतिनिधित्व करते हैं कि क्या वांछनीय अथवा उचित है, जिससे कथन II सत्य सिद्ध होता है। शोध में तथ्यों और मूल्यों के मध्य संतुलन बनाना एक वृहद् चुनौती है। मूल्यों के प्रभाव को समझना वस्तुनिष्ठ अनुसंधान हेतु अनिवार्य कदम है।
तथ्य और मूल्य परस्पर संबद्ध होते हैं, जहाँ तथ्य वास्तविकता का वर्णन करते हैं और मूल्य हमारे निर्णयों एवं दिशा को निर्धारित करते हैं।

70. (A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
गुणात्मक विधियों की प्रायः आलोचना की जाती है क्योंकि उनके निष्कर्षों को वृहद् जनसंख्या पर आरोपित करना कठिन होता है। इसका कारण यह है कि ये विधियाँ सामान्यतः बहुत लघु और गैर-यादृच्छिक प्रतिदर्शों का उपयोग करती हैं, जो संपूर्ण जनसंख्या का पूर्ण प्रतिनिधित्व नहीं करते। इन विधियों का उद्देश्य गहराई से समझना है, न कि सांख्यिकीय सामान्यीकरण करना। चूंकि प्रत्येक मामला अद्वितीय हो सकता है, अतः प्राप्त परिणाम व्यापक संदर्भों में सदैव सटीक नहीं बैठते।
सूक्ष्म विवरणों की प्रचुरता और प्रतिदर्शों की सीमित संख्या गुणात्मक शोध को विशिष्ट तो बनाती है, किंतु उसके विस्तार को सीमित कर देती है।

71. (D) माध्य
प्रदत्त समूह {10, 20, 30, 40, 150} में, संख्या 150 एक चरम बाह्य मान है जो अन्य अंकों की तुलना में बहुत विशाल है। केंद्रीय प्रवृत्ति के मापों में से 'माध्य' इस बाह्य मान से सर्वाधिक प्रभावित होगा क्योंकि इसकी गणना में समस्त अंकों का योग सम्मिलित होता है। माध्यिका केवल मध्य पद पर ध्यान केंद्रित करती है और बहुलक सर्वाधिक आवृत्ति वाले अंक पर, अतः वे इस विशाल अंक से अल्प प्रभावित होंगे। यह चरम अंकों के प्रति माध्य की संवेदनशीलता दर्शाता है।
चरम मानों द्वारा औसत को अपनी ओर विस्थापित कर लेने की माध्य की यह विशेषता विषम वितरणों के विश्लेषण में इसे कभी-कभी अविश्वसनीय बनाती है।

72. (A) केवल I और II
नृवंशविज्ञान की उत्पत्ति मुख्य रुप से सांस्कृतिक नृविज्ञान के क्षेत्र से हुई है और यह सहभागी अवलोकन पर अत्यधिक निर्भर करता है। इसका उद्देश्य किसी संस्कृति का विस्तृत विवरण प्रस्तुत करना है, न कि सांख्यिकीय तालिकाएं अथवा सहसंबंध गुणांक निर्मित करना। यह एक गुणात्मक विधि है जो मानवीय व्यवहार के अंतर्निहित अर्थों और सांस्कृतिक प्रतिरूपों को समझने का प्रयास करती है। शोधकर्ता समूह के साथ दीर्घकाल तक रहकर उनके जीवन के अनुभवों को सघन विवरणों के रूप में अंकित करता है।
किसी समाज की सांस्कृतिक बारीकियों को उसके स्वाभाविक परिवेश में गहराई से अनुभव करना और वर्णित करना ही नृवंशविज्ञान की वास्तविक पहचान है।

73. (C) प्रतिक्रियाशीलता
'हॉथोर्न प्रभाव' सामाजिक अनुसंधान की 'प्रतिक्रियाशीलता' की समस्या का एक प्रमुख उदाहरण है। इसमें अध्ययन के प्रतिभागियों के व्यवहार में परिवर्तन इसलिए होता है क्योंकि वे जानते हैं कि उन पर ध्यान दिया जा रहा है, न कि किसी विशिष्ट शोध हस्तक्षेप के कारण। यह प्रभाव प्रदत्त की वास्तविकता को विकृत कर सकता है और शोध के निष्कर्षों को अविश्वसनीय बना सकता है। शोधकर्ताओं को इस मानवीय प्रवृत्ति के प्रति सदैव सचेत रहना पड़ता है ताकि वे अधिक सटीक और स्वाभाविक प्रदत्त संकलित कर सकें।
प्रेक्षण के प्रति प्रतिभागियों की सजगता शोध परिणामों को अनचाहे ढंग से प्रभावित कर सकती है, जिसे नियंत्रित करना वैज्ञानिक अनुसंधान हेतु अनिवार्य है।

74. (A) व्याख्यात्मक
यदि किसी अध्ययन का उद्देश्य यह निर्धारित करना है कि कोई विशेष कार्यक्रम क्यों सफल रहा, तो व्याख्यात्मक

Click Here to Buy book on Amazon

विस्तार और समाज का कल्याण होना चाहिए। नैतिक दिशा-निर्देशों का अनुपालन अनुसंधान की सामाजिक स्वीकार्यता हेतु अनिवार्य है।
मानवीय मूल्यों की रक्षा और प्रतिभागियों की सुरक्षा सुनिश्चित करना किसी भी शोध कार्य की सफलता और नैतिकता का सर्वोपरि मापदंड माना जाता है।

60. (B) केवल I और III
वैयक्तिक अध्ययन किसी एक एकल इकाई, जैसे व्यक्ति अथवा समूह, का अत्यंत गहन अध्ययन है जो समृद्ध और विस्तृत प्रासंगिक प्रदत्त प्रदान करता है। इसका मुख्य उद्देश्य विषय की गहराई में जाना है, न कि व्यापक सांख्यिकीय सामान्यीकरण करना। चूंकि इसमें प्रतिदर्शों की संख्या बहुत सीमित होती है, अतः इसके निष्कर्षों को संपूर्ण जनसंख्या पर प्रत्यक्ष रूप से आरोपित नहीं किया जा सकता। यह विधि परिकल्पना निर्माण और जटिल सामाजिक प्रक्रियाओं को समझने हेतु अत्यंत उपयोगी और प्रभावी मानी जाती है।
गहराई और सूक्ष्म विवरणों पर ध्यान केंद्रित करने की अपनी विशिष्टता के कारण वैयक्तिक अध्ययन गुणात्मक शोध का एक सशक्त आधार स्तंभ है।

61. (C) प्रश्नावली और अनुसंधान प्रक्रियाओं का परीक्षण और परिष्करण करना।
वृहद् स्तर पर सर्वेक्षण करने से पूर्व 'प्रायोगिक अध्ययन' अथवा पायलट अध्ययन का मुख्य उद्देश्य प्रश्नावली और शोध प्रक्रियाओं का परीक्षण करना होता है। यह शोधकर्ता को प्रश्नों की स्पष्टता जाँचने और संभावित व्यावहारिक समस्याओं की पहचान करने में सहायता करता है। इसके माध्यम से समय और संसाधनों के अपव्यय को रोका जा सकता है। पायलट अध्ययन से प्राप्त प्रतिपुष्टि के आधार पर अंतिम अनुसंधान योजना में आवश्यक सुधार किए जाते हैं, जिससे मुख्य अध्ययन की सफलता सुनिश्चित होती है।
वास्तविक शोध से पूर्व एक लघु स्तर पर परीक्षण करना किसी भी अनुसंधान की गुणवत्ता और विश्वसनीयता को संवर्धित करने हेतु अनिवार्य है।

62. (D) स्वतंत्र चर
एक चर जिसे दूसरे चर का कारण माना जाता है अथवा जो दूसरे को प्रभावित करता है, स्वतंत्र चर कहलाता है। शोधकर्ता प्रायः स्वतंत्र चर में परिवर्तन करके उसके प्रभाव का अवलोकन आश्रित चर पर करते हैं। उदाहरण के लिए, यदि शिक्षा का प्रभाव आय पर देखा जा रहा है, तो शिक्षा एक स्वतंत्र चर होगी। स्वतंत्र चर वह कारक है जिसे शोधकर्ता नियंत्रित अथवा परिवर्तित कर सकता है। यह वैज्ञानिक अनुसंधान में कार्य-कारण संबंध की व्याख्या करने का एक मूलभूत आधार है।
प्रभाव डालने वाले मुख्य कारक के रूप में स्वतंत्र चर चरों के मध्य अंतःक्रियाओं को समझने हेतु विश्लेषण का मुख्य केंद्र बिंदु होता है।

63. (B) IV, II, I, III
प्रतिचयन विधियों में कठोरता का क्रम उनके द्वारा प्रदान की जाने वाली वैज्ञानिक सटीकता और यादृच्छिकता पर आधारित होता है। स्तरित यादृच्छिक प्रतिचयन सर्वाधिक कठोर है क्योंकि यह उपसमूहों का उचित प्रतिनिधित्व सुनिश्चित करता है। इसके उपरांत सरल यादृच्छिक प्रतिचयन आता है जिसमें प्रत्येक इकाई के चयन की समान संभावना होती है। कोटा और सुविधाजनक प्रतिचयन गैर-संभाव्यता विधियाँ हैं, जिनमें शोधकर्ता का पक्षपात सम्मिलित हो सकता है। सुविधाजनक प्रतिचयन सबसे अल्प कठोर माना जाता है।
यादृच्छिकता और व्यवस्थित चयन प्रक्रिया ही किसी प्रतिचयन पद्धति को वैज्ञानिक रूप से कठोर और उसके निष्कर्षों को विश्वसनीय एवं मान्य बनाती है।

64. (B) अनुदैर्ध्य अध्ययन
यदि शोधकर्ता समय के कई भिन्न बिंदुओं पर व्यक्तियों के एक ही समूह का अध्ययन करता है, तो वह अनुदैर्ध्य अध्ययन कर रहा है। इस प्रकार के शोध का मुख्य लाभ यह है कि यह समय के साथ होने वाले परिवर्तनों और विकास की प्रवृत्तियों को मापने की अनुमति देता है। यह किसी घटना के दीर्घकालिक प्रभावों और सामाजिक निरंतरता को समझने में सहायता करता है। इसके विपरीत, अनुप्रस्थ काट अध्ययन केवल एक ही समय पर प्रदत्त संग्रह करता है। अनुदैर्ध्य अध्ययन अधिक समयसाध्य और व्ययपूर्ण होता है।
समय के निरंतर प्रवाह में सामाजिक व्यवहार और परिवर्तनों का सूक्ष्म अवलोकन करने हेतु यह एक अत्यंत प्रभावशाली और गहन शोध दृष्टिकोण है।

65. (B) P-3, Q-4, R-1, S-2
नृवंशविज्ञान का मुख्य उद्देश्य किसी संस्कृति का सघन और समृद्ध विवरण प्रदान करना है। मौखिक इतिहास ऐतिहासिक घटनाओं के विषय में व्यक्तियों की व्यक्तिगत स्मृतियों को संकलित करने पर केंद्रित है। विषय-वस्तु विश्लेषण संचार के प्रतिरूपों और सामग्री के व्यवस्थित अध्ययन से संबद्ध है। समाजमिति समूह संरचना और व्यक्तियों के पारस्परिक चयनों को मापने हेतु प्रयुक्त होती है। इन विधियों का सही सुमेल यह दर्शाता है कि सामाजिक अनुसंधान के विविध उपकरण समाज के भिन्न पहलुओं को समझने में कैसे सहायक हैं।
विविध शोध पद्धतियों की विशिष्टताओं को समझकर ही सामाजिक जीवन के बहुआयामी पक्षों का सार्थक और वैज्ञानिक अध्ययन संभव हो पाता है।

66. (A) बंद प्रश्न
जब प्रश्नावली में पूर्व-निर्धारित प्रतिक्रिया विकल्प प्रदान किए जाते हैं, तो उन्हें बंद प्रश्न कहा जाता है। इन प्रश्नों का मुख्य लाभ यह है कि इनके उत्तरों का सांख्यिकीय कूटलेखन और विश्लेषण अत्यंत सुगम होता है। उत्तरदाताओं हेतु भी यह अल्प समयसाध्य होता है क्योंकि उन्हें उपलब्ध विकल्पों में से चयन करना होता है। हालाँकि, यह उत्तरदाताओं को अपने विचार विस्तार से व्यक्त करने की अनुमति नहीं देता है। इस प्रकार के प्रश्न मात्रात्मक अनुसंधान और वृहद् सर्वेक्षणों हेतु अत्यंत उपयुक्त होते हैं।

Downloaded from www.pdf.tube

23. (D) शहरीकरण के स्तर और अपराध दर के बीच कोई संबंध नहीं है।
शून्य परिकल्पना एक ऐसा सांख्यिकीय प्रस्ताव है जो चरों के मध्य किसी भी प्रकार के संबंध अथवा प्रभाव के अभाव को प्रदर्शित करता है। उदाहरण के लिए, यह कहना कि शहरीकरण और अपराध दर के मध्य कोई संबंध नहीं है, एक शून्य परिकल्पना है। शोधकर्ता का मुख्य उद्देश्य प्रायः प्रदत्त के माध्यम से इस शून्य परिकल्पना को खंडित करना होता है। यदि साक्ष्य सबल हैं, तो शून्य परिकल्पना को अस्वीकृत कर दिया जाता है। यह परिकल्पना परीक्षण की अनिवार्य प्रक्रिया है।
चरों के मध्य किसी भी संबंध को नकार कर वैज्ञानिक जाँच हेतु एक निष्पक्ष और तार्किक आधार प्रदान करना ही इसका मुख्य कार्य है।

24. (A) जनसंख्या
प्रतिचयन के संदर्भ में, व्यक्तियों अथवा तत्वों का वह संपूर्ण समूह जिसमें शोधकर्ता अध्ययन करने में रुचि रखता है, जनसंख्या कहलाता है। यह वह समग्र समूह है जिसके विषय में शोधकर्ता निष्कर्ष प्रतिपादित करना चाहता है। जनसंख्या का आकार लघु अथवा बहुत वृहद् हो सकता है, जैसे किसी राष्ट्र के समस्त नागरिक। चूंकि संपूर्ण जनसंख्या का अध्ययन करना प्रायः दुष्कर होता है, इसलिए इसमें से एक प्रतिनिधि प्रतिदर्श का चयन किया जाता है जो संपूर्ण समूह की विशेषताएँ दर्शाए। शोध के उद्देश्यों के अनुसार परिभाषित संपूर्ण समूह ही वह मूल स्रोत है जिससे विश्लेषण हेतु प्रतिदर्श का वैज्ञानिक चुनाव किया जाता है।

25. (C) व्यवस्थित प्रतिचयन
जब शोधकर्ता एक निश्चित अंतराल पर, जैसे कि प्रत्येक पाँचवें व्यक्ति को प्रतिदर्श के रूप में चुनता है, तो यह व्यवस्थित प्रतिचयन कहलाता है। इस पद्धति में संपूर्ण जनसंख्या की एक सूची का उपयोग किया जाता है और एक यादृच्छिक प्रारंभिक बिंदु के उपरांत नियमित अंतराल पर इकाइयों का चयन होता है। यह सरल यादृच्छिक प्रतिचयन की तुलना में अधिक व्यवस्थित और क्रियान्वित करने में सरल है। यह सुनिश्चित करता है कि प्रतिदर्श संपूर्ण जनसंख्या में समान रूप से वितरित हो।
निश्चित अंतराल के आधार पर इकाइयों का चयन करने की यह प्रक्रिया प्रतिचयन को सरल, तीव्र और वैज्ञानिक रूप से सुसंगत बनाती है।

26. (A) सहभागी अवलोकन
सहभागी अवलोकन एक ऐसी गुणात्मक विधि है जिसमें शोधकर्ता किसी सामाजिक समूह अथवा परिवेश में स्वयं को दीर्घकाल हेतु सम्मिलित करता है। इसका उद्देश्य व्यक्तियों के व्यवहार और उनकी संस्कृति को उनके प्राकृतिक संदर्भ में गहराई से समझना है। शोधकर्ता समूह के दैनिक जीवन का अंग बनकर उनके अर्थों और दृष्टिकोणों को भीतर से अनुभव करता है। यह विधि प्रदत्त की उच्च वैधता सुनिश्चित करती है क्योंकि यह वास्तविक जीवन की परिस्थितियों और प्रत्यक्ष अनुभवों पर पूर्णतः आधारित होती है।

NODIA

समूह के साथ प्रत्यक्ष जुड़ाव और उनके जीवन में सक्रिय सहभागिता के माध्यम से गहन सांस्कृतिक अंतर्दृष्टि प्राप्त करना ही इसकी विशेषता है।

27. (D) वैयक्तिक अध्ययन
किसी एक व्यक्ति, समूह, संस्थान अथवा सामाजिक घटना की अत्यंत गहन और विस्तृत जाँच को वैयक्तिक अध्ययन के रूप में जाना जाता है। इस विधि का मुख्य उद्देश्य विषय की जटिलता और उसके विशिष्ट संदर्भ को पूरी गहराई से समझना है। इसमें प्रदत्त के विविध स्रोतों जैसे साक्षात्कार, अवलोकन और प्रलेखों का उपयोग किया जाता है। यद्यपि इसके निष्कर्षों का व्यापक सामान्यीकरण संभव नहीं, किंतु यह किसी विशिष्ट मामले की अद्वितीय समझ प्रदान करने में अपरिहार्य एवं श्रेष्ठ है।
किसी विशिष्ट इकाई के सूक्ष्म विश्लेषण और उसके बहुआयामी पक्षों को उजागर करने हेतु वैयक्तिक अध्ययन एक अत्यंत महत्वपूर्ण शोध विधि है।

28. (B) विषय-वस्तु विश्लेषण
जब शोधकर्ता संचार के माध्यमों, जैसे समाचार पत्रों के लेखों में विशिष्ट शब्दों अथवा विषयों की आवृत्ति का विश्लेषण करता है, तो इसे विषय-वस्तु विश्लेषण कहते हैं। यह विधि लिखित, मौखिक अथवा दृश्य सामग्रियों के व्यवस्थित अध्ययन हेतु प्रयुक्त होती है। इसके माध्यम से संचार के छिपे हुए प्रतिरूपों और अंतर्निहित विचारधाराओं को समझा जा सकता है। यह गुणात्मक प्रदत्त को वस्तुनिष्ठ और मापने योग्य रूप में परिवर्तित करने में सहायता करता है। यह सामाजिक प्रवृत्तियों के विश्लेषण का प्रभावी माध्यम है।
सूचनाओं के संचार स्वरूप का व्यवस्थित वर्गीकरण और विश्लेषण करके व्यापक अर्थ निकालना ही इस शोध तकनीक का मूल वैज्ञानिक उद्देश्य है।

29. (C) मौखिक इतिहास
मौखिक इतिहास एक ऐसी विधि है जिसमें अतीत की घटनाओं में सम्मिलित व्यक्तियों की आवाज़ों और यादों को संकलित एवं व्याख्यायित किया जाता है। यह उन लोगों के अनुभवों को संरक्षित करने पर केंद्रित है जिनका इतिहास प्रायः आधिकारिक प्रलेखों में दर्ज नहीं होता। साक्षात्कारों के माध्यम से, यह विधि व्यक्तिगत स्मृतियों को ऐतिहासिक साक्ष्य के रूप में प्रयुक्त करती है। यह सामाजिक इतिहास को एक नवीन और मानवीय दृष्टिकोण प्रदान करती है। यह हाशिए के समुदायों के इतिहास को समझने में सहायक है।
व्यक्तिगत अनुभवों और स्मृतियों के माध्यम से इतिहास के अनछुए पहलुओं को जीवंत बनाना इस शोध पद्धति का प्रमुख मानवीय एवं वैज्ञानिक लक्ष्य है।

30. (D) किसी व्यक्ति के जीवन का वर्णनात्मक अध्ययन जैसा कि स्वयं उस व्यक्ति द्वारा बताया गया हो।
सामाजिक अनुसंधान में जीवन इतिहास किसी व्यक्ति के जीवन का एक विस्तृत और वर्णनात्मक अध्ययन है, जैसा कि स्वयं उस व्यक्ति ने अनुभव किया और वर्णित किया हो। यह विधि व्यक्ति के जीवन की प्रमुख घटनाओं और उनके द्वारा दी गई व्याख्याओं के माध्यम से सामाजिक संरचनाओं के प्रभाव को समझने में

अनुसंधान प्रारूप सर्वाधिक उपयुक्त होता है। यह प्रारूप चरों के मध्य कार्य-कारण संबंधों की जाँच करता है और परिणामों के अंतर्निहित 'क्यों' को स्पष्ट करने का प्रयास करता है। यह केवल सफलताओं का वर्णन नहीं करता, अपितु उन कारकों का विश्लेषण करता है जिन्होंने उस सफलता को निर्मित किया। इस प्रकार की समझ भविष्य में समान कार्यक्रमों को बेहतर ढंग से क्रियान्वित करने हेतु महत्वपूर्ण सूचना प्रदान करती है। घटनाओं के मूल कारणों और प्रभावी कारकों का तार्किक विश्लेषण करना ही इस अनुसंधान प्रारूप की मुख्य शक्ति और वैज्ञानिक उपयोगिता है।

75. (D) यदि शून्य परिकल्पना सही होती, तो डेटा के अवलोकन की संभावना।
सार्थकता परीक्षण में p-मान यह प्रदर्शित करता है कि यदि शून्य परिकल्पना वास्तव में सत्य होती, तो हमें अपने प्रदत्त जैसे परिणाम प्राप्त होने की कितनी संभावना थी। एक बहुत अल्प p-मान (सामान्यतः 0.05 से कम) यह सुझाव देता है कि प्राप्त परिणाम केवल संयोग के कारण होने की संभावना अत्यंत क्षीण है। यह शोधकर्ता को शून्य परिकल्पना को अस्वीकृत करने और सांख्यिकीय रुप से महत्वपूर्ण निष्कर्ष निकालने का आधार प्रदान करता है। यह सांख्यिकीय अनुमान प्रक्रिया का मानक है।
संयोग और वास्तविक प्रभाव के मध्य के अंतर को सांख्यिकीय रुप से मापने हेतु p-मान अनुसंधान में एक अनिवार्य निर्णयकारी मानक माना जाता है।

76. (B) विषय-वस्तु विश्लेषण
संचार की संरचना के स्थान पर उसकी विषय-वस्तु का व्यवस्थित विश्लेषण विषय-वस्तु विश्लेषण कहलाता है। इसमें लिखित प्रलेखों, भाषणों, चलचित्रों अथवा अन्य संचार माध्यमों में विद्यमान विशिष्ट शब्दों, विषयों और संदेशों का सूक्ष्म अध्ययन किया जाता है। इसका लक्ष्य संचार के माध्यम से व्यक्त किए गए विचारों और प्रतिरूपों को समझना है। यह विधि गुणात्मक संचार को मात्रात्मक रुप में परिवर्तित करने में सहायता करती है ताकि विशिष्ट रुझान पहचाने जा सकें। यह सामाजिक संदेशों के विश्लेषण का सशक्त उपकरण है।
संचार की सामग्रियों का निष्पक्ष और व्यवस्थित वर्गीकरण करके उनके अंतर्निहित संदेशों को उजागर करना ही इस विश्लेषण तकनीक का मूल सार है।

77. (C) यह उच्च प्रतिक्रिया दर सुनिश्चित करता है और प्रश्नों के स्पष्टीकरण की अनुमति देता है।
प्रश्नावली की तुलना में अनुसूची के उपयोग का वृहद् लाभ यह है कि यह उच्च प्रतिक्रिया दर सुनिश्चित करता है। चूंकि एक साक्षात्कारकर्ता अथवा प्रगणक व्यक्तिगत रुप से उपस्थित होता है, वह जटिल प्रश्नों को स्पष्ट कर सकता है और उत्तरदाताओं को प्रोत्साहित कर सकता है। इससे प्रदत्त की गुणवत्ता और पूर्णता संवर्धित होती है। प्रश्नावली में उत्तरदाताओं द्वारा प्रश्नों को त्रुटिपूर्ण समझने अथवा उन्हें रिक्त छोड़ने की संभावना अधिक होती है। अनुसूची निरक्षर उत्तरदाताओं से सूचना जुटाने हेतु श्रेष्ठ है।
व्यक्तिगत उपस्थिति और संवादात्मक स्पष्टीकरण के माध्यम से प्रदत्त की प्रमाणिकता और गहराई सुनिश्चित करना ही अनुसूची की प्रमुख विशेषता एवं शक्ति है।

78. (D) सिद्धांत एक व्यापक व्याख्या है, और परिकल्पना इससे प्राप्त एक परीक्षण योग्य भविष्यवाणी है।
सिद्धांत और परिकल्पना के मध्य संबंध यह है कि सिद्धांत एक व्यापक अवधारणा अथवा रुपरेखा है जो सामाजिक जगत के कुछ पहलुओं की व्याख्या करता है। दूसरी ओर, परिकल्पना सिद्धांत से व्युत्पन्न एक विशिष्ट और परीक्षण योग्य भविष्यवाणी है जिसे शोध के माध्यम से परखा जा सकता है। सिद्धांत मार्गदर्शन प्रदान करता है, जबकि परिकल्पना उस मार्गदर्शन को अनुभवजन्य परीक्षण की कसौटी पर कसती है। यदि निरंतर परीक्षणों में परिकल्पनाएँ सत्य सिद्ध होती हैं, तो सिद्धांत की स्वीकार्यता संवर्धित होती है।
अमूर्त व्याख्याओं को व्यावहारिक जाँच के योग्य बनाना ही सिद्धांत और परिकल्पना के मध्य के इस निरंतर और वैज्ञानिक जुड़ाव का मूल कार्य है।

79. (A) परिक्षेपण
प्रदत्त समूह का परास परिक्षेपण का सरलतम माप है, जो वितरण के उच्चतम और निम्नतम मानों के मध्य के अंतर को प्रदर्शित करता है। यह बताता है कि प्रदत्त कितने वृहद् क्षेत्र में विस्तृत है। हालाँकि परास केवल दो चरम अंकों पर आधारित होता है और मध्य के अंकों के विषय में सूचना प्रदान नहीं करता, फिर भी यह प्रदत्त की विविधता का त्वरित आकलन करने में सहायता करता है। यह माध्य अथवा माध्यिका जैसे केंद्रीय प्रवृत्ति के मापों से भिन्न है क्योंकि यह फैलाव पर ध्यान केंद्रित करता है।
अंकों के विस्तार की सीमा को स्पष्ट करके प्रदत्त की व्यापकता को प्रदर्शित करना ही परास का मुख्य और प्राथमिक सांख्यिकीय उद्देश्य है।

80. (B) जीवन इतिहास / मौखिक इतिहास
विस्थापित व्यक्तियों के पुनर्वास के व्यक्तिगत अनुभवों और वृत्तांतों को संकलित करने हेतु जीवन इतिहास अथवा मौखिक इतिहास सर्वाधिक उपयुक्त विधि है। ये विधियाँ व्यक्ति के निजी अनुभवों, भावनाओं और यादों के माध्यम से एक विशाल सामाजिक घटना की मानवीय समझ प्रदान करती हैं। इसमें सांख्यिकीय आँकड़ों के स्थान पर व्यक्ति के शब्दों और उनकी कथाओं को महत्व दिया जाता है। यह शोधकर्ता को यह समझने में सहायता करता है कि व्यापक सामाजिक परिवर्तन व्यक्तियों के दैनिक जीवन और उनकी अस्मिता को कैसे प्रभावित करते हैं।
मानवीय संवेदनाओं और व्यक्तिगत संघर्षों को ऐतिहासिक एवं सामाजिक संदर्भ में सहेजने के लिए ये गुणात्मक विधियाँ अद्वितीय एवं अत्यंत प्रभावी साधन हैं।

81. (B) एक जांच प्रश्न।
साक्षात्कार में जब शोधकर्ता उत्तरदाता से अधिक सूचना प्राप्त करने हेतु "क्या आप मुझे अपने अनुभव के विषय में और बता सकते हैं?" जैसे प्रश्न पूछता है, तो इसे 'जांच प्रश्न' कहते हैं।

Click Here to Buy book on Amazon

125. (C) प्रसरण
माध्य, माध्यिका और बहुलक केंद्रीय प्रवृत्ति के माप हैं जो प्रदत्त समूह के केंद्र अथवा औसत का प्रतिनिधित्व करते हैं। इसके विपरीत, प्रसरण परिक्षेपण का एक माप है जो यह बताता है कि प्रदत्त बिंदु अपने माध्य से कितनी दूरी पर विस्तृत हैं। प्रसरण प्रदत्त की विविधता और विचलन की मात्रा को प्रदर्शित करता है। केंद्रीय प्रवृत्ति यह बताती है कि प्रदत्त कहाँ स्थित है, जबकि परिक्षेपण यह स्पष्ट करता है कि प्रदत्त कितना विस्तृत है। इन दोनों के मध्य का अंतर सांख्यिकीय विश्लेषण हेतु मौलिक है।
प्रदत्त के केंद्र और उसके फैलाव के बीच का यह सांख्यिकीय भेद वितरण की प्रकृति को पूरी तरह से समझने के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है।

126. (D) सहभागी अवलोकन
जब शोधकर्ता किसी विरोध आंदोलन की आंतरिक गतिशीलता समझने हेतु स्वयं उसमें सम्मिलित होता है, तो वह सहभागी अवलोकन का उपयोग कर रहा होता है। एक 'अंदरूनी सूत्र' के रूप में, वह उन अनुभवों, भावनाओं और गुप्त रणनीतियों को देख सकता है जो बाह्य व्यक्तियों हेतु अदृश्य रहती हैं। यह विधि शोधकर्ता को समूह के दृष्टिकोण से जगत को देखने और उनके कार्यों के वास्तविक अर्थों को समझने का अद्वितीय अवसर प्रदान करती है। यह सामाजिक आंदोलनों के गहन और वास्तविक अध्ययन हेतु श्रेष्ठ है।
समूह के साथ प्रत्यक्ष जुड़ाव और सक्रिय भागीदारी के माध्यम से सूक्ष्म सामाजिक सच्चाइयों को उजागर करना ही इस शोध तकनीक का मूल सार है।

127. (C) A सही है लेकिन R गलत है।
स्नोबॉल प्रतिचयन उन आबादियों के अध्ययन हेतु वास्तव में उपयोगी है जिन तक पहुँचना दुष्कर है, किंतु यह संभाव्यता प्रतिचयन का स्वरूप नहीं है। यह एक गैर-संभाव्यता विधि है क्योंकि इसमें प्रत्येक सदस्य के चयनित होने की समान संभावना नहीं होती, अपितु यह व्यक्तिगत संपर्कों पर निर्भर करता है। कारण (R) त्रुटिपूर्ण है क्योंकि संभाव्यता प्रतिचयन यादृच्छिकता पर आधारित होता है। स्नोबॉल प्रतिचयन का उपयोग तब होता है जब कोई औपचारिक सूची उपलब्ध न हो। यह गुप्त समुदायों हेतु एक व्यवहार्य विकल्प है।
विशिष्ट समूहों की खोज में स्नोबॉल तकनीक की उपयोगिता निर्विवाद है, भले ही इसमें वैज्ञानिक यादृच्छिकता का पूर्ण अभाव होता है।

128. (B) यादृच्छिक संयोग से होने की संभावना नहीं है।
यदि शोध का कोई निष्कर्ष 'सांख्यिकीय रूप से महत्वपूर्ण' है, तो इसका अर्थ है कि प्राप्त परिणाम केवल यादृच्छिक संयोग के कारण होने की संभावना अत्यंत क्षीण है। यह इंगित करता है कि चरों के मध्य देखा गया संबंध वास्तविक है और प्रतिदर्श की त्रुटि के कारण नहीं है। इसका यह अर्थ नहीं कि परिणाम व्यावहारिक रूप से बहुत महत्वपूर्ण है, अपितु यह केवल सांख्यिकीय प्रामाणिकता को दर्शाता है। यह शोधकर्ताओं को यह विश्वास दिलाता है कि उनके द्वारा पाए गए प्रतिरूप विश्वसनीय और पुनरावृत्ति योग्य हैं।
संयोग और यथार्थ के बीच के सूक्ष्म भेद को सांख्यिकीय रूप से स्पष्ट करना ही अनुसंधान की वैज्ञानिक प्रामाणिकता का मुख्य आधार है।

129. (B) तथ्य
यह कथन कि "ग्राम की औसत आय 50,000 रुपये प्रति माह है," एक तथ्य है क्योंकि इसे अनुभवजन्य साक्ष्यों और प्रदत्त के माध्यम से सत्यापित किया जा सकता है। तथ्य वस्तुनिष्ठ होते हैं और वास्तविकता का वैसा ही वर्णन करते हैं जैसी वह विद्यमान है। इसके विपरीत, यदि कोई कहता है कि यह आय बहुत न्यून है, तो वह एक 'मूल्य निर्णय' होगा। तथ्य वैज्ञानिक अनुसंधान की नींव निर्मित करते हैं क्योंकि वे जाँच हेतु एक ठोस और निष्पक्ष आधार प्रदान करते हैं। तथ्यों का सटीक मापन अध्ययन को विश्वसनीयता प्रदान करता।
अनुभवजन्य साक्ष्यों पर आधारित सत्यापन योग्य जानकारी ही किसी भी वैज्ञानिक अध्ययन को प्रामाणिकता और वस्तुनिष्ठ आधार प्रदान करती है।

130. (D) I, II और III सभी
गुणात्मक अनुसंधान की विशेषता है कि इसमें प्रदत्त प्रायः शब्दों, चित्रों अथवा वस्तुओं के रूप में होता है। इसकी शोध प्रक्रिया लचीली और विकासशील होती है, जिससे शोधकर्ता नवीन अंतर्दृष्टि के आधार पर अपनी दिशा परिवर्तित कर सकता है। इसके अतिरिक्त, शोधकर्ता स्वयं को प्रदत्त संग्रह के मुख्य उपकरण के रूप में प्रयुक्त करता है, जहाँ उसकी संवेदनशीलता और व्याख्या की क्षमता महत्वपूर्ण होती है। ये समस्त तत्व मिलकर गुणात्मक शोध को मानवीय अनुभवों और अर्थों की गहराई तक पहुँचने हेतु सशक्त माध्यम बनाते हैं।
लचीलापन, मानवीय संवेदनशीलता और विवरणों की प्रचुरता ही गुणात्मक शोध को समाज की सूक्ष्मताओं को समझने का एक प्रभावी जरिया बनाती है।

131. (C) साक्षात्कारकर्ता और उत्तरदाता के बीच एक सहज और भरोसेमंद संबंध।
शोध साक्षात्कार के संदर्भ में 'सौहार्द' साक्षात्कारकर्ता और उत्तरदाता के मध्य एक सहज, सकारात्मक और भरोसेमंद संबंध को संदर्भित करता है। एक उत्तम सौहार्द स्थापित करना सफल प्रदत्त संग्रह हेतु अनिवार्य है, क्योंकि इससे उत्तरदाता सुरक्षित अनुभव करता है और संवेदनशील सूचना साझा करने हेतु तत्पर होता है। साक्षात्कार के प्रारंभ में सामान्य वार्तालाप और सम्मानजनक व्यवहार सौहार्द निर्मित करने में सहायता करते हैं। यह सुनिश्चित करता है कि प्राप्त सूचना वास्तविक, गहन और शोध उद्देश्यों के अनुकूल हो।
आपसी विश्वास और सहजता का वातावरण ही साक्षात्कार की प्रक्रिया को सार्थक बनाता है और सूचनाओं की गुणवत्ता को दृढ़ता प्रदान करता है।

132. (D) गुणात्मक डेटा विश्लेषण
गुणात्मक प्रदत्त विश्लेषण में विश्लेषण हेतु सूचनाओं को श्रेणियों और कूटों में परिवर्तित करने की प्रक्रिया एक केंद्रीय और

NODIA

होती है। शोधकर्ताओं को इसके निष्कर्षों की व्याख्या करते समय अत्यंत सतर्कता बरतनी पड़ती है।
सूक्ष्मता और गहराई की प्राप्ति हेतु प्रायः व्यापक निष्कर्षों की न्यूनता के रूप में मूल्य चुकाना पड़ता है, जो इस विधि की एक प्रमुख सीमा है।

89. (C) समाजमिति
एक 'समाजआरेख' समाजमिति विधि का उपयोग करके संकलित प्रदत्त का दृश्य प्रतिनिधित्व है। यह समूह के सदस्यों के मध्य संबंधों के जाल, जैसे पसंद-नापसंद और संचार के प्रवाह को चित्रों और संकेतों के माध्यम से प्रदर्शित करता है। समाजआरेख द्वारा शोधकर्ता सुगमता से समूह के सर्वाधिक प्रभावशाली 'सितारों' और एकाकी सदस्यों की पहचान कर सकता है। यह समूह की आंतरिक संरचना और सामाजिक गतिशीलता को समझने का अत्यंत प्रभावी दृश्य उपकरण माना जाता है।
सामाजिक संबंधों के जटिल ताने-बाने को एक स्पष्ट दृश्य चित्र में ढालकर प्रस्तुत करना ही इस तकनीक की मुख्य विशेषता और वैज्ञानिक उपयोगिता है।

90. (A) वह सीमा जिस तक कोई माप उस अवधारणा को सटीक रूप से दर्शाता है जिसे उसे मापने का उद्देश्य है।
अनुसंधान में वैधता इस तथ्य को संदर्भित करती है कि कोई मापन उपकरण वास्तव में उसी अवधारणा को माप रहा है जिसे मापने का उसका दावा है। यदि कोई उपकरण त्रुटिपूर्ण सूचना प्रदान कर रहा है, तो वह वैध नहीं माना जाएगा। उदाहरण के लिए, यदि बुद्धि परीक्षण केवल स्मरण शक्ति को माप रहा है, तो उसमें वैधता का अभाव है। वैधता यह सुनिश्चित करती है कि शोध के निष्कर्ष यथार्थ के समीप हों और उनमें सटीकता हो। यह वैज्ञानिक शोध का अनिवार्य मानक है।
मापन की सटीकता और उसका वास्तविक उद्देश्य से पूर्ण मेल ही अनुसंधान के परिणामों को सत्यता और वैज्ञानिक स्वीकार्यता प्रदान करता है।

91. (D) विश्वसनीयता
मापन की निरंतरता अथवा वह सीमा जिस तक कोई उपकरण प्रत्येक बार उपयोग करने पर समान परिणाम प्रदान करता है, विश्वसनीयता कहलाती है। यदि एक ही परिस्थिति में बार-बार परीक्षण करने पर परिणाम परिवर्तित हो जाते हैं, तो उपकरण विश्वसनीय नहीं माना जाएगा। विश्वसनीयता यह सुनिश्चित करती है कि शोध के निष्कर्ष स्थिर और प्रामाणिक हैं। हालाँकि एक विश्वसनीय माप सदैव वैध नहीं होता, किंतु वैज्ञानिक शोध में सटीकता प्राप्ति हेतु विश्वसनीयता का होना एक अनिवार्य प्राथमिक शर्त मानी जाती है।
परिणामों की स्थिरता और दोहराव की क्षमता ही किसी मापन यंत्र को शोध के क्षेत्र में विश्वसनीय और उपयोगी सांख्यिकीय आधार प्रदान करती है।

92. (B) सांख्यिकीय सार्थकता
सूचित सहमति, गोपनीयता और अनाम स्थिति सामाजिक अनुसंधान के अत्यंत महत्वपूर्ण नैतिक विषय हैं जो प्रतिभागियों के अधिकारों की सुरक्षा करते हैं। इसके विपरीत, सांख्यिकीय सार्थकता एक तकनीकी और गणितीय अवधारणा है जो प्रदत्त विश्लेषण की शुद्धता से संबद्ध है, न कि नैतिकता से। नैतिकता का संबंध इस तथ्य से है कि शोध प्रतिभागियों और समाज को किस प्रकार प्रभावित करता है। सांख्यिकीय मान शोध परिणामों की विश्वसनीयता तय करते हैं, जबकि नैतिक मानक अनुसंधान की मानवीय मर्यादाओं को निर्धारित करते हैं।
वैज्ञानिक विश्लेषण के तकनीकी मानक और अनुसंधान के मानवीय पक्ष के नैतिक दिशा-निर्देश शोध की समग्र गुणवत्ता के दो पृथक परंतु पूरक स्तंभ हैं।

93. (C) मूल्यों
जब शोधकर्ता अपनी व्यक्तिगत प्रतिबद्धता अथवा विश्वासों के आधार पर किसी विशिष्ट विषय, जैसे घरेलू हिंसा, को अध्ययन हेतु चयनित करता है, तो यह शोध में 'मूल्यों' की भूमिका का परिचायक है। मूल्य शोधकर्ता के चयन, दिशा और अनुसंधान के प्रति उसके दृष्टिकोण को प्रभावित करते हैं। यद्यपि वैज्ञानिक पद्धति वस्तुनिष्ठता पर बल देती है, किंतु शोध विषय का चयन प्रायः शोधकर्ता के नैतिक और सामाजिक मूल्यों से अभिप्रेरित होता है। यह स्वीकार करना आवश्यक है कि शोध पूर्णतः मूल्य-मुक्त नहीं हो सकता।
व्यक्तिगत मान्यताओं और सामाजिक सरोकारों का शोध की दिशा तय करने में महत्वपूर्ण प्रभाव होता है, जो अनुसंधान के मानवीय पक्ष को स्पष्ट रूप से दर्शाता है।

94. (D) अनुसंधान प्रारूप
साक्षात्कार, अवलोकन और अनुसूची प्रदत्त संकलित करने की विशिष्ट तकनीकें अथवा उपकरण हैं जिनका उपयोग शोधकर्ता सूचना संकलन हेतु करता है। इसके विपरीत, अनुसंधान प्रारूप एक व्यापक योजना अथवा रूपरेखा है जो संपूर्ण शोध प्रक्रिया का मार्गदर्शन करती है। यह स्वयं प्रदत्त संग्रह की तकनीक नहीं है, अपितु यह निर्धारित करती है कि कौन सी तकनीकें कहाँ और कैसे प्रयुक्त होंगी। अनुसंधान प्रारूप एक तार्किक ढांचा प्रदान करता है जिसके भीतर प्रदत्त संग्रह और विश्लेषण की समस्त गतिविधियाँ आयोजित होती हैं।
योजना और तकनीक के मध्य का यह अंतर समझना शोध को सुव्यवस्थित और उद्देश्यपूर्ण बनाने हेतु अत्यंत आवश्यक और बुनियादी आवश्यकता है।

95. (A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
मात्रात्मक और गुणात्मक विधियों के मध्य चयन पूर्णतः शोध प्रश्न की प्रकृति पर निर्भर करता है। यदि शोध का उद्देश्य किसी घटना के प्रसार को मापना अथवा चरों के मध्य कारण संबंधी परिकल्पनाओं का परीक्षण करना है, तो मात्रात्मक विधियाँ जैसे सर्वेक्षण सर्वाधिक उपयुक्त होती हैं। वे सांख्यिकीय सटीकता और व्यापक सामान्यीकरण प्रदान करती हैं। दूसरी ओर, गहन अर्थों और अनुभवों को समझने हेतु गुणात्मक विधियाँ चुनी जाती हैं। शोध प्रश्न ही अनुसंधान की संपूर्ण कार्यप्रणाली को निर्धारित करता है।
अनुसंधान के उद्देश्यों और प्रदत्त की प्रकृति के अनुसार सही पद्धति का चयन करना ही वैज्ञानिक अन्वेषण की सफलता की प्रथम अनिवार्य सीढ़ी है।

Downloaded from www.pdf.tube

96. (B) बहुलक
नाममात्र प्रदत्त वह सूचना है जिसे केवल श्रेणियों अथवा नामों में विभक्त किया जा सकता है, जैसे लिंग अथवा धर्म। इस प्रकार के प्रदत्त हेतु केंद्रीय प्रवृत्ति का सर्वाधिक उपयुक्त माप बहुलक है। माध्य की गणना हेतु संख्यात्मक मानों की आवश्यकता होती है और माध्यिका हेतु अंकों को क्रमबद्ध करना पड़ता है, जो नाममात्र श्रेणियों के साथ संभव नहीं है। बहुलक यह स्पष्ट करता है कि कौन सी श्रेणी सर्वाधिक आवृत्ति के साथ आई है, जिससे प्रदत्त के सामान्य रुझान का ज्ञान होता है।
श्रेणीगत सूचनाओं के विश्लेषण में सर्वाधिक प्रचलित मान की पहचान करना बहुलक के माध्यम से अत्यंत सरल और प्रभावी सांख्यिकीय कार्य है।

97. (B) शोधकर्ता अध्ययन किए जा रहे समूह का सक्रिय सदस्य बन जाता है।
सहभागी अवलोकन की मुख्य विशेषता यह है कि शोधकर्ता अध्ययन किए जा रहे समूह का एक सक्रिय सदस्य बन जाता है। वह व्यक्तियों के दैनिक जीवन, अनुष्ठानों और गतिविधियों में स्वयं सम्मिलित होता है ताकि उनकी संस्कृति और व्यवहार को 'भीतर' से समझ सके। यह विधि शोधकर्ता को उन सूक्ष्म और प्रच्छन्न पहलुओं तक पहुँच प्रदान करती है जो एक बाह्य व्यक्ति कभी नहीं देख सकता। इसमें समूह के साथ घनिष्ठ संबंध स्थापित करना और उनके दृष्टिकोण से जगत को देखना सम्मिलित है।
समूह के साथ एकाकार होकर उनके जीवन के अनुभवों को साझा करना ही इस शोध तकनीक की प्रामाणिकता और गहराई का मुख्य स्रोत है।

98. (A) जीवन इतिहास - व्यक्तिगत वृत्तांत
जीवन इतिहास एक गुणात्मक शोध विधि है जिसका प्राथमिक प्रदत्त प्रकार व्यक्तिगत वृत्तांत और कथाएं हैं। यह विधि व्यक्ति के संपूर्ण जीवन के अनुभवों को उसके अपने शब्दों में सहेजने पर केंद्रित है। इसके विपरीत, सर्वेक्षण सामान्यतः सांख्यिकीय प्रदत्त उत्पन्न करते हैं, और सहभागी अवलोकन प्रायः सघन विवरणों वाली क्षेत्र टिप्पणियों पर आधारित होते हैं। विषय-वस्तु विश्लेषण लिखित अथवा मौखिक संचार की सामग्री का अध्ययन करता है। जीवन इतिहास और व्यक्तिगत वृत्तांत का यह मेल मानवीय अनुभवों की सूक्ष्म समझ प्रदान करता है।
व्यक्ति की जीवन यात्रा के अनुभवों को प्राथमिकता देकर समाज की जटिल संरचनाओं का विश्लेषण करना ही इस शोध पद्धति की मूल आत्मा और उद्देश्य है।

99. (C) पाठ्य या दृश्य डेटा को कोड करने, व्यवस्थित करने और पुनः प्राप्त करने में सहायता करना।
गुणात्मक प्रदत्त विश्लेषण में संगणक यंत्रांश का मुख्य कार्य पाठ्य अथवा दृश्य प्रदत्त को व्यवस्थित, कूटलेखन और पुनः प्राप्त करने में शोधकर्ता की सहायता करना है। गुणात्मक शोध में प्रायः साक्षात्कारों और टिप्पणियों का विशाल अंबार लग जाता है, जिसे हस्तलिखित रूप में संभालना दुष्कर होता है। ये यंत्रांश शोधकर्ता को प्रदत्त के भीतर विषयों और प्रतिरूपों की पहचान करने में सहायता करते हैं। हालाँकि, प्रदत्त की व्याख्या और अंतिम निष्कर्ष प्रतिपादित करने का उत्तरदायित्व शोधकर्ता का ही रहता है।
विशाल सूचनाओं के व्यवस्थित प्रबंधन और विश्लेषण की प्रक्रिया को सुगम बनाकर ये तकनीकी उपकरण शोध की गुणवत्ता और गहराई को अभूतपूर्व विस्तार देते हैं।

100. (C) P-4, Q-3, R-2, S-1
सरल यादृच्छिक प्रतिचयन में प्रत्येक इकाई के चयनित होने की समान संभावना होती है। स्तरित यादृच्छिक प्रतिचयन में जनसंख्या को उपसमूहों में विभाजित किया जाता है और फिर प्रत्येक से प्रतिदर्श लिए जाते हैं। कोटा प्रतिचयन में विशिष्ट श्रेणियों में पूर्व-निर्धारित संख्या पूर्ण करने हेतु इकाइयों का चयन होता है। सुविधाजनक प्रतिचयन में शोधकर्ता अपनी सुगम पहुँच के आधार पर इकाइयों को चुनता है। प्रतिचयन के इन विविध प्रकारों का सही सुमेल अनुसंधान की वैज्ञानिकता और प्रतिनिधित्व की क्षमता को स्पष्ट करता है।
चयन की विविध पद्धतियाँ शोध की सीमाओं और आवश्यकताओं के अनुसार प्रतिदर्शों की निष्पक्षता और सटीकता सुनिश्चित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं।

101. (D) I, II और III सभी
ये तीनों कथन त्रुटिपूर्ण हैं क्योंकि सामाजिक घटनाओं को व्यवस्थित रूप से पढ़ना संभव है और वस्तुनिष्ठता एक आदर्श है जिसे प्राप्त करना कठिन होता है, न कि एक पूर्ण अवस्था। इसके अतिरिक्त, 'तथ्य' और 'मूल्य' परस्पर परिवर्तनीय नहीं हैं, अपितु वे दो पृथक अवधारणाएँ हैं। सामाजिक अनुसंधान की प्रकृति जटिल अवश्य है, किंतु वैज्ञानिक पद्धति द्वारा इसे समझा जा सकता है। शोधकर्ता की व्यक्तिपरकता अध्ययन को प्रभावित करती है, अतः वस्तुनिष्ठता सदैव एक चुनौतीपूर्ण लक्ष्य बना रहता है।
अनुसंधान की वैज्ञानिक सीमाओं और सैद्धांतिक बारीकियों के प्रति स्पष्ट समझ ही किसी भी अध्ययन को तर्कसंगत और विश्वसनीय आधार प्रदान करती है।

102. (B) एक अनुप्रस्थ काट अध्ययन
एक अनुप्रस्थ काट अध्ययन वह शोध है जो किसी जनसंख्या से एक ही विशिष्ट समय पर प्रदत्त संकलित करता है। यह उस समय विशेष पर समाज अथवा समूह की स्थिति का एक प्रतिरूप प्रदान करता है। इसका उपयोग प्रायः भिन्न समूहों के मध्य तुलना करने अथवा किसी समस्या की व्यापकता का आकलन करने हेतु किया जाता है। अनुदैर्ध्य अध्ययन के विपरीत, यह समय के साथ होने वाले परिवर्तनों को ट्रैक नहीं करता। यह विधि अल्प व्ययपूर्ण और शीघ्र परिणाम प्रदान करने वाली मानी जाती है, जिससे यह अत्यंत लोकप्रिय है।
वर्तमान समय की सामाजिक वास्तविकताओं और प्रवृत्तियों का त्वरित एवं व्यवस्थित चित्रण करने हेतु अनुप्रस्थ काट अध्ययन एक अत्यंत प्रभावी उपकरण है।

103. (D) परास
सांख्यिकी में, वितरण में उच्चतम और निम्नतम अंक के मध्य के अंतर को परास के रूप में जाना जाता है। यह परिक्षेपण का सरलतम माप है जो प्रदत्त के फैलाव की एक त्वरित छवि

NODIA

प्रस्तुत करता है। परास की गणना करना अत्यंत सुगम है, किंतु यह केवल दो चरम अंकों पर आधारित होता है और मध्य के अंकों के वितरण के विषय में कोई सूचना प्रदान नहीं करता। इस कारण, यह प्रदत्त की विविधता का केवल एक स्थूल अनुमान प्रदान करता है। अधिक सटीक विश्लेषण हेतु मानक विचलन का उपयोग किया जाता है।
अंकों के विस्तार की ऊपरी और निचली सीमाओं को स्पष्ट कर प्रदत्त की व्यापकता को दर्शाना ही परास का मुख्य और प्राथमिक सांख्यिकीय कार्य है।

104. (A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
सहसंबंध के संदर्भ में, सकारात्मक सहसंबंध तब होता है जब दो चर एक ही दिशा में परिवर्तित होते हैं; अर्थात, एक के संवर्धन पर दूसरा भी संवर्धित होता है। नकारात्मक सहसंबंध में चर विपरीत दिशाओं में गति करते हैं, जहाँ एक चर के बढ़ने पर दूसरा घटता है। ये दोनों अवधारणाएँ चरों के मध्य संबंधों की दिशा और प्रकृति को समझने में सहायता करती हैं। सामाजिक अनुसंधान में सहसंबंध विश्लेषण यह पहचानने हेतु महत्वपूर्ण है कि समाज के भिन्न कारक परस्पर किस प्रकार संबद्ध हैं।
चरों के पारस्परिक व्यवहार के प्रतिरूपों को वैज्ञानिक रूप से मापना और उनकी दिशा को स्पष्ट करना ही सहसंबंध विश्लेषण का मूल आधार है।

105. (C) एक ही घटना का अध्ययन करने के लिए कई विधियों या डेटा स्रोतों का उपयोग करना।
सामाजिक अनुसंधान में 'त्रिभुजीकरण' का अर्थ है एक ही घटना का अध्ययन करने हेतु विविध विधियों, सिद्धांतों अथवा प्रदत्त स्रोतों का उपयोग करना। इसका मुख्य उद्देश्य शोध निष्कर्षों की वैधता और विश्वसनीयता को संवर्धित करना है। जब भिन्न विधियों से समान परिणाम प्राप्त होते हैं, तो निष्कर्षों के प्रति शोधकर्ता का विश्वास और दृढ़ हो जाता है। यह दृष्टिकोण किसी एकल विधि की सीमाओं और संभावित पक्षपातों को दूर करने में सहायता करता है। यह समाज की जटिलताओं को समझने की समग्र रणनीति है।
विविध दृष्टिकोणों के संगम से शोध की प्रामाणिकता को पुष्ट करना और यथार्थ के भिन्न पहलुओं को उजागर करना ही त्रिभुजीकरण का मूल लक्ष्य है।

106. (A) मौखिक इतिहास अक्सर एक विशिष्ट घटना पर केंद्रित होता है, जबकि जीवन इतिहास पूरे जीवनकाल को कवर करता है।
मौखिक इतिहास और जीवन इतिहास के मध्य मुख्य अंतर उनके कार्यक्षेत्र में निहित है। मौखिक इतिहास सामान्यतः किसी विशिष्ट ऐतिहासिक घटना, काल अथवा विषय के विषय में स्मृतियों को संकलित करने पर केंद्रित होता है। इसके विपरीत, जीवन इतिहास व्यक्ति के जन्म से वर्तमान तक के संपूर्ण जीवनकाल के अनुभवों और सामाजिक संदर्भों का विस्तृत विवरण प्रदान करता है। दोनों ही विधियाँ व्यक्तिगत अनुभवों को महत्व देती हैं, किंतु उनकी गहराई और काल सीमा भिन्न होती है। ये समाज के मानवीय पक्ष को उजागर करती हैं। विशिष्ट यादों और समग्र जीवन यात्रा के मध्य का यह अंतर ही इन दोनों गुणात्मक शोध पद्धतियों को उनकी अनूठी पहचान प्रदान करता है।

107. (D) एक तीसरा चर, जैसे गर्म मौसम, संभवतः दोनों को प्रभावित कर रहा है।
आइसक्रीम के विक्रय और अपराध दर के मध्य सकारात्मक सहसंबंध का यह अर्थ नहीं है कि वे परस्पर कार्य-कारण संबद्ध हैं। यहाँ एक तृतीय चर, जैसे उष्ण मौसम, दोनों को प्रभावित कर रहा हो सकता है; उष्ण काल में व्यक्ति अधिक बाहर निकलते हैं और आइसक्रीम का उपभोग भी बढ़ता है। इसे 'मिथ्या सहसंबंध' कहते हैं। सहसंबंध केवल जुड़ाव प्रदर्शित करता है, कार्य-कारण नहीं। शोधकर्ताओं को सदैव सचेत रहना चाहिए कि वे सांख्यिकीय संबंधों की व्याख्या सतही आधार पर न करके गहराई से कारणों की जाँच करें।
चरों के पारस्परिक जुड़ाव के पीछे छिपे वास्तविक कारकों की पहचान करना ही वैज्ञानिक विश्लेषण की गहराई और उसकी सार्थकता सुनिश्चित करता है।

108. (B) एक दोहरा-अंध प्रयोग
एक दोहरा-अंध प्रयोग वह अनुसंधान प्रारूप है जिसमें न तो प्रतिभागियों को और न ही प्रदत्त संकलित करने वाले शोधकर्ताओं को ज्ञान होता है कि कौन सा समूह उपचार प्राप्त कर रहा है और कौन सा नियंत्रण समूह है। इसका मुख्य उद्देश्य शोधकर्ता के पक्षपात और प्रतिभागियों की अपेक्षाओं के प्रभाव को पूर्णतः समाप्त करना है। यह विधि परिणामों की वस्तुनिष्ठता को बढ़ाती है और निष्कर्षों को अधिक विश्वसनीय बनाती है। यह चिकित्सा और सामाजिक मनोविज्ञान के प्रयोगों में उच्च मानक सुनिश्चित करने हेतु अनिवार्य है।
सूचनाओं के प्रवाह को नियंत्रित करके मानवीय पूर्वाग्रहों को न्यूनतम करना ही इस प्रयोगात्मक तकनीक की सबसे बड़ी वैज्ञानिक खूबी और शक्ति है।

109. (C) किसी घटना से परिचित होना या उसके बारे में नई अंतर्दृष्टि प्राप्त करना।
अन्वेषणात्मक अनुसंधान का प्राथमिक उद्देश्य किसी नवीन अथवा अल्प बोधगम्य घटना के विषय में प्रारंभिक सूचना और अंतर्दृष्टि प्राप्त करना है। यह प्रायः तब किया जाता है जब शोधकर्ता को समस्या के विषय में बहुत न्यून ज्ञान होता है। इसका लक्ष्य कठोर परीक्षण के स्थान पर संभावनाओं की खोज करना और भविष्य के विस्तृत शोध हेतु परिकल्पनाएँ विकसित करना है। यह प्रारूप लचीला होता है और शोधकर्ता को विषय की विविध परतों को समझने की अनुमति देता है ताकि मुख्य विषयों की पहचान संभव हो सके।
अज्ञात के अन्वेषण और ज्ञान की नवीन सीमाओं को परिभाषित करने के लिए अन्वेषणात्मक शोध एक अत्यंत आवश्यक और सृजनात्मक प्रारंभिक चरण है।

110. (D) असंरचित या अर्ध-संरचित साक्षात्कार
जब शोधकर्ता प्रश्नों की सूची तैयार करता है किंतु संवाद के दौरान उनके शब्दों और अनुक्रम को परिवर्तित करने हेतु स्वतंत्र होता है, तो यह असंरचित अथवा अर्ध-संरचित साक्षात्कार

Click Here to Buy book on Amazon

इसका उद्देश्य उत्तरदाता को गहनता से बोलने हेतु प्रोत्साहित करना और अस्पष्ट तथ्यों को स्पष्ट करना होता है। यह तकनीक गुणात्मक साक्षात्कार में समृद्ध प्रदत्त संकलित करने हेतु अनिवार्य है। यह उत्तरदाता को अनुभव कराती है कि उनके विचारों को महत्व दिया जा रहा है, जिससे वे अधिक मुक्त होकर संवाद करते हैं।
चर्चा को गति प्रदान करने और सूचनाओं की गहराई तक पहुँचने के लिए जांच प्रश्न साक्षात्कारकर्ता के पास एक महत्वपूर्ण एवं रचनात्मक उपकरण है।

82. (A) मापन
नियमों के एक पूर्व-निर्दिष्ट समूह के अनुसार वस्तुओं अथवा घटनाओं की विशेषताओं को संख्या अथवा प्रतीक प्रदान करने की प्रक्रिया को मापन कहते हैं। यह अमूर्त अवधारणाओं को मात्रात्मक अथवा श्रेणीगत रूप में परिवर्तित करने में सहायता करता है ताकि उनका वैज्ञानिक विश्लेषण संभव हो सके। मापन शोध में सटीकता लाता है और भिन्न मामलों के मध्य तुलना करना संभव बनाता है। एक उत्तम मापन प्रक्रिया विश्वसनीय और वैध होनी चाहिए, जिसका अर्थ है कि वह वही माप रही है जो अपेक्षित है।
सामाजिक वास्तविकताओं को व्यवस्थित प्रतीकों और अंकों में ढालकर उनका तुलनात्मक विश्लेषण करना ही मापन की प्रक्रिया का वास्तविक और मुख्य आधार है।

83. (B) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।
नृवंशविज्ञान वास्तव में एक गुणात्मक विधि है जो सांस्कृतिक विवरणों पर केंद्रित होती है, न कि सांख्यिकीय प्रदत्त पर। वहीं दूसरी ओर, समाजमिति एक मात्रात्मक विधि है जिसका उपयोग समूह संरचना और सामाजिक संबंधों को मापने हेतु किया जाता है, न कि विस्तृत सांस्कृतिक विवरण निर्मित करने हेतु। अतः दोनों कथन अपनी विधियों की विशेषताओं को त्रुटिपूर्ण रूप से प्रस्तुत करते हैं। शोध विधियों की सही प्रकृति की समझ उनके प्रभावी उपयोग और सटीक अनुसंधान निष्कर्षों की प्राप्ति हेतु अत्यंत आवश्यक मानी जाती है।
विधियों के उद्देश्यों और उनके द्वारा उत्पन्न प्रदत्त की प्रकृति के प्रति स्पष्टता ही एक सफल और वैज्ञानिक शोध की बुनियादी आवश्यकता है।

84. (D) चरों के बीच कोई रैखिक संबंध नहीं।
सांख्यिकी में 0.00 का सहसंबंध गुणांक यह प्रदर्शित करता है कि अध्ययन किए जा रहे दो चरों के मध्य कोई भी रैखिक संबंध विद्यमान नहीं है। इसका अर्थ है कि एक चर में होने वाले परिवर्तन का दूसरे चर के परिवर्तन के साथ कोई निश्चित अथवा पूर्वानुमेय जुड़ाव नहीं है। यह पूर्ण स्वतंत्रता की स्थिति को दर्शाता है। सहसंबंध का मान जितना शून्य के समीप होता है, संबंध उतना ही निर्बल होता है। शोध में यह निष्कर्ष महत्वपूर्ण हो सकता है क्योंकि यह चरों की पारस्परिक निर्भरता को अस्वीकृत करता है।
चरों के मध्य किसी भी व्यवस्थित जुड़ाव की अनुपस्थिति को वैज्ञानिक रूप से पुष्ट करना ही शून्य सहसंबंध गुणांक का मुख्य सांख्यिकीय संदेश है।

85. (B) II, III, IV, I
एक सर्वेक्षण अनुसंधान परियोजना का तार्किक क्रम सर्वप्रथम प्रश्नावली के निर्माण से प्रारंभ होता है। इसके पश्चात, लक्षित जनसंख्या में से एक प्रतिनिधि प्रतिदर्श के चयन हेतु प्रतिचयन की प्रक्रिया अपनाई जाती है। तृतीय चरण में, चयनित इकाइयों से प्रदत्त संग्रह किया जाता है। अंत में, संकलित सूचनाओं का सांख्यिकीय विश्लेषण किया जाता है ताकि निष्कर्ष प्राप्त किए जा सकें। यह व्यवस्थित क्रम सुनिश्चित करता है कि अनुसंधान वैज्ञानिक मानकों के अनुरूप हो और परिणाम विश्वसनीय तथा सटीक प्राप्त हों।
चरणों का यह क्रमिक पालन ही शोध प्रक्रिया को सुव्यवस्थित बनाता है और त्रुटियों को न्यूनतम करके निष्कर्षों की वैज्ञानिक प्रामाणिकता को दृढ़ता प्रदान करता है।

86. (B) स्नोबॉल प्रतिचयन
स्नोबॉल प्रतिचयन गैर-संभाव्यता प्रतिचयन का एक उदाहरण है, जहाँ प्रतिदर्श यादृच्छिक रूप से नहीं चुना जाता है। इसमें शोधकर्ता कुछ ज्ञात व्यक्तियों से प्रारंभ करता है और फिर उनसे अन्यों का परिचय देने हेतु कहता है। इसके विपरीत, सरल यादृच्छिक, क्लस्टर और स्तरित प्रतिचयन संभाव्यता प्रतिचयन के प्रकार हैं जहाँ प्रत्येक सदस्य के चयनित होने की ज्ञात संभावना होती है। स्नोबॉल प्रतिचयन का उपयोग प्रायः कठिनता से सुलभ आबादियों, जैसे नशा करने वालों अथवा गुप्त समुदायों के अध्ययन हेतु किया जाता है।
सामाजिक नेटवर्क के माध्यम से प्रतिदर्शों का विस्तार करने की यह तकनीक विशिष्ट और विरल आबादियों की खोज हेतु एक अत्यंत उपयोगी साधन है।

87. (D) स्नोबॉल प्रतिचयन
जब शोधकर्ता किसी गुप्त जनसंख्या के अध्ययन हेतु कुछ प्रारंभिक प्रतिभागियों से अन्यों की सूचना प्राप्त करता है, तो इसे स्नोबॉल प्रतिचयन कहते हैं। यह प्रक्रिया एक लुढ़कते हुए हिम-गोलक के समान प्रतिदर्श के आकार को संवर्धित करती जाती है। यह उन परिस्थितियों में अत्यंत प्रभावी है जहाँ जनसंख्या की कोई औपचारिक सूची उपलब्ध नहीं होती। इस विधि का उपयोग सामाजिक हाशिए पर स्थित समूहों अथवा विशिष्ट उप-संस्कृतियों के अनुसंधान में गहन सूचना संकलन हेतु व्यापक रूप से किया जाता है।
संपर्कों की एक श्रृंखला बनाकर अज्ञात अथवा गुप्त समूहों तक पहुँच प्राप्त करना ही इस प्रतिचयन तकनीक की सबसे बड़ी उपयोगिता है।

88. (A) निष्कर्षों के निम्न सामान्यीकरण की संभावना।
वैयक्तिक अध्ययन की मुख्य सीमा इसके निष्कर्षों को व्यापक स्तर पर सामान्यीकृत करने की असमर्थता है। चूंकि यह अध्ययन केवल एक विशिष्ट इकाई अथवा मामले पर केंद्रित होता है, अतः यह अनिवार्य नहीं कि प्राप्त परिणाम अन्य समूहों अथवा परिस्थितियों पर समान रूप से आरोपित हों। यह विधि गहराई और सूक्ष्मता तो प्रदान करती है, किंतु व्यापक जनसंख्या के प्रतिनिधि के रूप में इसकी विश्वसनीयता क्षीण

NODIA

है, जिससे मानवीय क्रियाओं के पीछे छिपे व्यक्तिगत अर्थ और मनोवैज्ञानिक गहराई उपेक्षित रह जाते हैं।
बाह्य क्रियाओं और आंतरिक चेतना के बीच के इस अंतर को समझना ही शोध विधियों के चयन में एक महत्वपूर्ण और निर्णायक कारक माना जाता है।

118. (B) विषय-वस्तु विश्लेषण
यदि शोधकर्ता भिन्न प्रलेखों और पुराकथाओं में किसी विशिष्ट सांस्कृतिक प्रतीक के अर्थ को समझना चाहता है, तो विषय-वस्तु विश्लेषण सर्वाधिक उपयुक्त विधि होगी। यह तकनीक प्रतीकात्मक संचार के व्यवस्थित अध्ययन की अनुमति प्रदान करती है और बार-बार आने वाले विषयों अथवा संदेशों की पहचान करती है। इसके माध्यम से शोधकर्ता यह विश्लेषण कर सकता है कि कोई प्रतीक कालक्रम में कैसे विकसित हुआ और भिन्न संदर्भों में उसके क्या अर्थ रहे हैं। यह सांस्कृतिक अध्ययन हेतु शक्तिशाली और वस्तुनिष्ठ गुणात्मक उपकरण है।
सूचनाओं के संचार स्वरूप और उनमें छिपे सांस्कृतिक प्रतीकों का व्यवस्थित विश्लेषण करना ही इस शोध पद्धति की मुख्य शक्ति और सार्थकता है।

119. (D) मानक विचलन
प्रसरण के वर्गमूल को मानक विचलन के रूप में जाना जाता है। यह परिक्षेपण का सर्वाधिक प्रयुक्त और विश्वसनीय माप है क्योंकि यह बताता है कि वितरण में अंक अपने माध्य से औसतन कितनी दूरी पर फैले हुए हैं। मानक विचलन प्रदत्त की स्थिरता और एकरूपता की गणना करने में सहायता करता है। चूंकि यह मूल प्रदत्त की इकाइयों में व्यक्त किया जाता है, अतः इसकी व्याख्या करना प्रसरण की तुलना में सुगम होता है। यह वैज्ञानिक शोध में प्रदत्त की गुणवत्ता मापने हेतु अनिवार्य है।
वितरण में विचलन की मात्रा को स्पष्ट कर प्रदत्त की सटीकता और विश्वसनीयता को निर्धारित करना ही मानक विचलन का प्राथमिक सांख्यिकीय कार्य है।

120. (A) तथ्य और मूल्य
सामाजिक अनुसंधान में 'मूल्य-मुक्त' समाजशास्त्र की समस्या मुख्य रूप से तथ्य और मूल्य के मध्य के निरंतर तनाव से संबद्ध है। प्रत्यक्षवादी विचारक मानते हैं कि समाजशास्त्र को केवल वस्तुनिष्ठ तथ्यों पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए और व्यक्तिगत मूल्यों को पूर्णतः त्याग देना चाहिए। हालाँकि, आलोचकों का तर्क है कि शोधकर्ता के मूल्य विषय के चयन और व्याख्या को अनिवार्य रूप से प्रभावित करते हैं। यह बहस इस तथ्य पर केंद्रित है कि क्या सामाजिक विज्ञान वास्तव में प्राकृतिक विज्ञानों की भाँति तटस्थ हो सकता है।
वैज्ञानिक निष्पक्षता और मानवीय विश्वासों के मध्य का यह वैचारिक द्वंद्व समाजशास्त्र के विकास और उसकी शोध पद्धतियों का एक केंद्रीय मुद्दा है।

121. (C) सकारात्मक सहसंबंध
जब आयु संवर्धन के साथ-साथ राजनीतिक रूढ़िवादिता भी संवर्धित होती है, तो यह एक सकारात्मक सहसंबंध का उदाहरण है। सकारात्मक सहसंबंध का अर्थ है कि दो चर समान दिशा में गति करते हैं; अर्थात एक चर के मान में वृद्धि दूसरे चर के मान में भी वृद्धि का कारण बनती है। यह चरों के मध्य एक व्यवस्थित जुड़ाव को प्रदर्शित करता है, यद्यपि यह यह सिद्ध नहीं करता कि एक दूसरे का कारण है। सामाजिक प्रवृत्तियों के विश्लेषण में इस प्रकार के सहसंबंधों की पहचान भविष्यवाणियां करने में सहायक होती है।
चरों के एक ही दिशा में निरंतर और सुसंगत व्यवहार को समझना ही सकारात्मक सहसंबंध की पहचान और उसका मुख्य सांख्यिकीय संदेश है।

122. (A) इसे एक प्रशिक्षित साक्षात्कारकर्ता द्वारा संचालित किया जाता है जो उत्तरों को रिकॉर्ड करता है।
अनुसूची की प्राथमिक विशेषता यह है कि इसे एक प्रशिक्षित साक्षात्कारकर्ता अथवा प्रगणक द्वारा व्यक्तिगत रूप से संचालित किया जाता है। वह उत्तरदाता से प्रश्न पूछता है और स्वयं उत्तरों को अंकित करता है। यह प्रक्रिया उत्तरदाताओं के संदेहों को दूर करने और उच्च प्रतिक्रिया दर सुनिश्चित करने में सहायता करती है। प्रश्नावली के विपरीत, जो स्वयं-प्रशासित होती है, अनुसूची में साक्षात्कारकर्ता की सक्रिय भूमिका होती है। यह विधि ग्रामीण अथवा अल्प साक्षर जनसंख्या से सटीक प्रदत्त संकलित करने हेतु अत्यंत प्रभावी मानी जाती है।
शोधकर्ता और उत्तरदाता के बीच प्रत्यक्ष संवाद के माध्यम से सूचनाओं की स्पष्टता और पूर्णता सुनिश्चित करना ही अनुसूची की मुख्य शक्ति है।

123. (D) वह तत्व या विषय जिसका अध्ययन किया जा रहा है।
एक अध्ययन में 'विश्लेषण की इकाई' उस प्राथमिक तत्व अथवा विषय को संदर्भित करती है जिसके विषय में शोधकर्ता प्रदत्त संकलित करता है और निष्कर्ष प्रतिपादित करता है। यह कोई व्यक्ति, परिवार, संगठन, समुदाय अथवा यहाँ तक कि कोई सामाजिक घटना भी हो सकती है। विश्लेषण की इकाई का सटीक चयन शोध की संपूर्ण दिशा और निष्कर्षों के स्तर को निर्धारित करता है। उदाहरण हेतु, यदि हम अपराध का अध्ययन कर रहे हैं, तो विश्लेषण की इकाई अपराधी हो सकता है अथवा संपूर्ण परिवेश।
अध्ययन के केंद्र बिंदु और प्रदत्त के मुख्य स्रोत को स्पष्ट रूप से परिभाषित करना ही वैज्ञानिक अनुसंधान की नींव को दृढ़ता प्रदान करता है।

124. (C) P-2, Q-3, R-1
अन्वेषणात्मक शोध का मुख्य उद्देश्य किसी विषय पर प्रारंभिक पृष्ठभूमि की सूचना प्राप्त करना है। वर्णनात्मक शोध घटनाओं की विशेषताओं का सटीक वर्णन और मापन करने पर ध्यान केंद्रित करता है। व्याख्यात्मक शोध चरों के मध्य कार्य-कारण संबंधों को निर्धारित करने और यह समझाने का प्रयास करता है कि कोई घटना क्यों घटित होती है। इन उद्देश्यों और प्रारूपों का सही मेल अनुसंधान की तार्किक संरचना को स्पष्ट करता है। यह शोधकर्ता को अपने लक्ष्यों के अनुसार सही कार्यप्रणाली चयनित करने में मार्गदर्शन प्रदान करता है।
अनुसंधान के लक्ष्यों और उसकी प्रकृति के बीच यह तालमेल ही वैज्ञानिक अन्वेषण की सफलता और परिणामों की सटीकता को सुनिश्चित करता है।

NODIA

कहलाता है। यह विधि शोध को लचीलापन प्रदान करती है और उत्तरदाता को अपने विचारों को विस्तार से साझा करने की अनुमति देती है। शोधकर्ता नवीन और अप्रत्याशित विषयों पर गहन सूचना संकलित कर सकता है। यह तकनीक गुणात्मक अनुसंधान में मानवीय अनुभवों की जटिलताओं और व्यक्तिगत दृष्टिकोणों को समझने हेतु अत्यंत प्रभावी मानी जाती है।
संवादात्मक स्वतंत्रता और लचीलेपन के माध्यम से सूचनाओं की गहराई तक पहुँचना ही इस साक्षात्कार पद्धति की प्रमुख विशेषता और वैज्ञानिक आधार है।

111. (A) प्रतिचयन ढांचा
जनसंख्या की उन समस्त इकाइयों अथवा सदस्यों की संपूर्ण सूची जिसमें से प्रतिदर्श चुना जाता है, उसे प्रतिचयन ढांचा कहते हैं। एक सटीक और अद्यतन ढांचा शोध की वैधता हेतु अपरिहार्य है। यदि ढांचा अपूर्ण अथवा दोषपूर्ण है, तो चयनित प्रतिदर्श संपूर्ण जनसंख्या का सत्य प्रतिनिधित्व नहीं कर पाएगा, जिससे 'प्रतिचयन पक्षपात' उत्पन्न हो सकता है। उदाहरण हेतु, किसी नगर के निवासियों के अध्ययन हेतु मतदाता सूची एक प्रतिचयन ढांचे के रूप में कार्य कर सकती है।
प्रतिदर्शों के निष्पक्ष चयन के लिए एक विश्वसनीय और व्यापक आधार प्रदान करना ही प्रतिचयन ढांचे की मुख्य भूमिका और उसकी सार्थकता है।

112. (B) बहुलक; माध्यिका
सांख्यिकी में, बहुलक वह मान होता है जो प्रदत्त समूह में सर्वाधिक आवृत्ति के साथ आता है, जो समूह के सर्वाधिक लोकप्रिय रुझान को प्रदर्शित करता है। वहीं दूसरी ओर, माध्यिका वह मान है जो वितरण को ठीक दो समान हिस्सों में विभाजित करती है, जहाँ आधे अंक उससे अधिक और आधे उससे न्यून होते हैं। बहुलक सर्वाधिक सामान्य स्थिति की पहचान करता है, जबकि माध्यिका वितरण के केंद्रीय संतुलन बिंदु को दर्शाती है। ये दोनों माप प्रदत्त के भिन्न पहलुओं को सारांशित करने हेतु अनिवार्य हैं।
प्रदत्त की आवृत्ति और उसके संतुलित विभाजन की सूक्ष्म समझ प्राप्त करने के लिए बहुलक और माध्यिका दोनों ही महत्वपूर्ण सांख्यिकीय उपकरण हैं।

113. (A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
समाजशास्त्र में वैज्ञानिक पद्धति प्राकृतिक विज्ञानों के पूर्णतः सदृश नहीं हो सकती क्योंकि सामाजिक घटनाओं में एक अनिवार्य व्यक्तिपरक आयाम सम्मिलित होता है। मनुष्य अपनी क्रियाओं को अर्थ प्रदान करते हैं और सामाजिक स्थितियाँ ऐतिहासिक रूप से विशिष्ट होती हैं, जिन्हें प्रयोगशाला में दोहराया नहीं जा सकता। प्राकृतिक विज्ञान अचेतन वस्तुओं का अध्ययन करते हैं, जबकि सामाजिक विज्ञान सचेत और व्याख्या करने वाले मनुष्यों का। यही कारण है कि समाजशास्त्र को अपनी विशिष्ट विधियों और व्याख्यात्मक दृष्टिकोणों की आवश्यकता होती है।
मानवीय चेतना और सामाजिक संदर्भों की विशिष्टता ही समाजशास्त्र को एक पृथक और चुनौतीपूर्ण वैज्ञानिक दृष्टिकोण अपनाने के लिए प्रेरित करती है।

114. (A) गुणात्मक अनुसंधान
एनविवो (NVivo) अथवा एटलस.टीआई (Atlas.ti) जैसे संगणक अनुप्रयोगों का उपयोग मुख्य रूप से गुणात्मक अनुसंधान के विश्लेषण चरण में किया जाता है। ये उपकरण शोधकर्ताओं को वृहद् मात्रा में पाठ्य, दृश्य और श्रव्य प्रदत्त को व्यवस्थित, कूटलेखन और श्रेणीबद्ध करने में सहायता करते हैं। गुणात्मक प्रदत्त की जटिल प्रकृति के कारण, इन्हें हस्तलिखित रूप में विश्लेषित करना कठिन होता है, जहाँ ये यंत्रांश विषयों और प्रतिरूपों की पहचान को सुलभ बनाते हैं। यह तकनीकी सहायता शोध की सटीकता को बढ़ाती है।
विस्तृत सूचनाओं के सुव्यवस्थित प्रबंधन और गुणात्मक व्याख्या की प्रक्रिया को सरल बनाकर ये उपकरण शोध की गुणवत्ता को नई ऊंचाइयां प्रदान करते हैं।

115. (C) डेटा संग्रह तकनीक: "आय का माध्य और माध्यिका।"
माध्य और माध्यिका प्रदत्त संग्रह की तकनीकें नहीं हैं, अपितु वे प्रदत्त विश्लेषण हेतु प्रयुक्त होने वाले सांख्यिकीय माप हैं। प्रदत्त संग्रह की तकनीकें प्रश्नावली, साक्षात्कार अथवा अवलोकन जैसी विधियाँ होती हैं जिनका उपयोग सूचना जुटाने हेतु किया जाता है। परिकल्पना, अनुसंधान प्रारूप और प्रतिचयन के उदाहरण यहाँ सत्य ढंग से सुमेलित हैं। अवधारणाओं और उनके वास्तविक अनुप्रयोगों के मध्य का यह अंतर समझना शोध प्रक्रिया को स्पष्ट करने और त्रुटियों से बचने हेतु अत्यंत आवश्यक बुनियादी आवश्यकता है।
अनुसंधान के विभिन्न चरणों और उपकरणों की सही पहचान ही अध्ययन को तार्किक दृढ़ता और वैज्ञानिक प्रामाणिकता प्रदान करने का मार्ग प्रशस्त करती है।

116. (A) केवल I और II
नृवंशविज्ञान एक ऐसी शोध पद्धति है जिसमें संस्कृति का सघन विवरण जुटाने हेतु सहभागी अवलोकन का उपयोग किया जाता है। साथ ही, नृवंशविज्ञान उस अंतिम लिखित उत्पाद अथवा पुस्तक को भी कहते हैं जो इस शोध के निष्कर्षों को प्रस्तुत करती है। हालाँकि, यह मुख्य रूप से परिकल्पना परीक्षण पर केंद्रित नहीं होती, अपितु इसका लक्ष्य गहराई से समझना और वर्णन करना होता है। यह विधि सामाजिक जगत की जटिलताओं को उसके प्राकृतिक संदर्भ में उजागर करने हेतु एक समग्र दृष्टिकोण अपनाती है।
संस्कृति के अध्ययन की प्रक्रिया और उसके परिणामी विवरण, दोनों ही रूपों में नृवंशविज्ञान सामाजिक अनुसंधान का एक अत्यंत महत्वपूर्ण अंग है।

117. (C) इसका उपयोग लोग क्या सोचते या अनुभव करते हैं, इसके अध्ययन के लिए नहीं किया जा सकता है।
केवल अवलोकन का उपयोग करने की मुख्य सीमा यह है कि यह व्यक्तियों के बाह्य व्यवहार को तो देख सकता है, किंतु उनके आंतरिक विचारों, भावनाओं अथवा उद्देश्यों को नहीं जान सकता। कोई व्यक्ति कुछ क्यों कर रहा है, इसका उत्तर केवल अवलोकन से प्राप्त नहीं हो सकता। इसके लिए साक्षात्कार अथवा अन्य संवादात्मक विधियों की आवश्यकता होती है। अवलोकन केवल दृश्य घटनाओं तक सीमित रहता

Downloaded from www.pdf.tube

अनिवार्य अंग है। चूंकि गुणात्मक प्रदत्त शब्दों और विवरणों के रूप में होता है, अतः कूटलेखन के माध्यम से इसे व्यवस्थित करना आवश्यक होता है ताकि प्रतिरूपों और विषयों की पहचान की जा सके। यह प्रक्रिया शोधकर्ता को प्रदत्त के विशाल समूह से सार्थक निष्कर्ष निकालने में सहायता करती है। यह एक पुनरावृत्ति प्रक्रिया है जिसमें प्रदत्त का बार-बार अवलोकन और वर्गीकरण सम्मिलित होता है।
विस्तृत सूचनाओं के सुव्यवस्थित वर्गीकरण और कूटलेखन के माध्यम से ही गुणात्मक प्रदत्त से वैज्ञानिक निष्कर्ष निकालना संभव हो पाता है।

133. (C) स्मृति रिकॉल, चयनात्मक पक्षपात और व्यक्तिगत औचित्य से जुड़े वर्णनात्मक मुद्दे।
जीवन इतिहास अनुसंधान के संचालन में वृहद् चुनौती उत्तरदाता की स्मृति से संबद्ध होती है। व्यक्ति अतीत की घटनाओं को विस्मृत कर सकते हैं अथवा उन्हें अपने वर्तमान हितों के अनुसार चयनात्मक रूप से स्मरण कर सकते हैं। इसके अतिरिक्त, व्यक्ति प्रायः अपने विगत कार्यों को तर्कसंगत प्रदर्शित करने हेतु 'व्यक्तिगत औचित्य' का उपयोग करते हैं, जिससे प्रदत्त में पक्षपात आ सकता है। शोधकर्ता को इन वर्णनात्मक विषयों के प्रति सचेत रहकर सूचना को अन्य स्रोतों से सत्यापित करने का प्रयत्न करना चाहिए।
व्यक्तिगत स्मृतियों की चयनात्मकता और आत्म-प्रस्तुति की मानवीय प्रवृत्ति जीवन इतिहास शोध की विश्वसनीयता के लिए एक निरंतर चुनौती है।

134. (B) नृवंशविज्ञान
नृवंशविज्ञान को विशेष रूप से "संस्कृति और व्यक्तियों के अध्ययन" के रूप में परिभाषित किया गया है। यह विधि किसी समूह के जीवन जीने की शैलियों, उनकी परंपराओं, मूल्यों और सामाजिक अंतःक्रियाओं का गहराई से विश्लेषण करती है। नृवंशविज्ञानी प्रायः अध्ययन किए जा रहे समुदाय के साथ दीर्घकाल तक रहते हैं ताकि उनके जगत को उनके ही दृष्टिकोण से समझा जा सके। इसका मुख्य उद्देश्य संस्कृति का 'सघन विवरण' निर्मित करना है। यह मानव विज्ञान और समाजशास्त्र का एक अत्यंत महत्वपूर्ण और मौलिक अनुसंधान क्षेत्र माना जाता है।
किसी समाज के सांस्कृतिक ताने-बाने को उसके वास्तविक स्वरूप में समझना और वर्णित करना ही इस शोध पद्धति की आत्मा है।

135. (D) 20
प्रदत्त समूह {10, 15, 20, 25, 30} में पाँच अंक हैं और वे पूर्व से ही आरोही क्रम में व्यवस्थित हैं। माध्यिका वह मान होता है जो वितरण के बिल्कुल मध्य में स्थित होता है। यहाँ, तृतीय अंक 20 है, जिसके दो अंक वाम ओर और दो अंक दक्षिण ओर स्थित हैं। चूंकि 20 ठीक मध्य में है, अतः इस प्रदत्त समूह की माध्यिका 20 होगी। माध्यिका का उपयोग प्रदत्त के संतुलित केंद्र बिंदु को पहचानने हेतु किया जाता है, जो चरम मानों से प्रभावित नहीं होता।
वितरण के सटीक मध्य बिंदु की पहचान करके प्रदत्त के केंद्रीय रुझान को समझना माध्यिका के माध्यम से अत्यंत सरल और विश्वसनीय है।

NODIA

136. (A) अवलोकन और अनुभव पर।
वैज्ञानिक पद्धति को 'अनुभवजन्य' इसलिए माना जाता है क्योंकि यह मुख्य रूप से ज्ञानेंद्रियों द्वारा किए गए अवलोकन और वास्तविक अनुभवों पर आधारित होती है। इसका अर्थ है कि निष्कर्षों को केवल तार्किक अनुमानों अथवा परंपराओं के आधार पर स्वीकार नहीं किया जाता, अपितु उन्हें साक्ष्यों के माध्यम से परखा जाना अनिवार्य है। अनुभववाद यह सुनिश्चित करता है कि ज्ञान वास्तविक जगत की घटनाओं के साथ संबद्ध है। किसी भी सिद्धांत को तब तक वैज्ञानिक नहीं माना जाता जब तक उसे अनुभवजन्य रूप से सत्यापित न किया जा सके। साक्ष्यों की सत्यता को वास्तविक अवलोकनों और अनुभवों की कसौटी पर कसना ही वैज्ञानिक अनुसंधान की प्रामाणिकता का मुख्य आधार है।

137. (C) एक शोधकर्ता बिना खुलासा किए सहायता समूहों को रिकॉर्ड करने के लिए गुप्त कैमरों का उपयोग करता है।
सूचित सहमति का नैतिक सिद्धांत यह मांग करता है कि प्रतिभागियों को शोध की प्रकृति और उनके अधिकारों के विषय में पूर्ण सूचना हो और वे अपनी स्वेच्छा से सम्मिलित हों। जब शोधकर्ता बिना प्रकटीकरण के गुप्त कैमरों का उपयोग करता है, तो यह प्रतिभागियों की स्वायत्तता और गोपनीयता का गंभीर उल्लंघन है। यह नैतिक दुविधा उत्पन्न करता है क्योंकि यहाँ धोखे का उपयोग किया गया है। शोध की नैतिकता यह सुनिश्चित करती है कि ज्ञान की प्राप्ति प्रतिभागियों की गरिमा और सुरक्षा की बलि देकर न हो।
प्रतिभागियों की सूचना और सहमति के बिना किया गया अध्ययन अनुसंधान की नैतिक मर्यादाओं और उसकी सामाजिक गरिमा को खंडित करता है।

138. (A) स्तरित प्रतिचयन
जब शोधकर्ता जनसंख्या को पुरुषों और महिलाओं जैसे उपसमूहों अथवा स्तरों में विभाजित करता है, और फिर प्रत्येक स्तर से एक यादृच्छिक प्रतिदर्श लेता है, तो इसे स्तरित प्रतिचयन कहते हैं। यह विधि यह सुनिश्चित करती है कि प्रतिदर्श में जनसंख्या के समस्त महत्वपूर्ण वर्गों का प्रतिनिधित्व हो। यह सरल यादृच्छिक प्रतिचयन की तुलना में अधिक सटीक निष्कर्ष प्रदान करती है, विशेष रूप से जब जनसंख्या में विविधता हो। यह प्रतिचयन त्रुटि को घटाने और शोध की बाह्य वैधता को बढ़ाने में सहायता करती है।
जनसंख्या की आंतरिक विविधता को प्रतिदर्श में समान रूप से समाहित करना ही स्तरित प्रतिचयन की सबसे बड़ी वैज्ञानिक विशेषता और शक्ति है।

139. (D) एक प्रश्न या मुद्दा जिसे शोधकर्ता संबोधित करना चाहता है।
एक 'अनुसंधान समस्या' वह विशिष्ट प्रश्न, विषय अथवा अंतराल है जिसे शोधकर्ता अपने अध्ययन के माध्यम से सुलझाने अथवा संबोधित करने का लक्ष्य रखता है। यह अनुसंधान प्रक्रिया का

प्रथम और सर्वाधिक महत्वपूर्ण चरण है जो संपूर्ण अध्ययन की दिशा निर्धारित करता है। एक भली-भांति परिभाषित समस्या स्पष्ट, मापने योग्य और उत्तर देने योग्य होनी चाहिए। यह शोधकर्ता को यह निर्णय लेने में सहायता करती है कि कौन से प्रदत्त संकलित करने हैं और किस विधि का उपयोग करना है। अनुसंधान के उद्देश्यों को एक निश्चित दिशा प्रदान करना और जिज्ञासा को वैज्ञानिक जाँच में परिवर्तित करना ही अनुसंधान समस्या का मुख्य कार्य है।

140. (B) डेटा संग्रह तकनीक - सहसंबंध विश्लेषण
सहसंबंध विश्लेषण प्रदत्त संग्रह की तकनीक नहीं है, अपितु यह प्रदत्त विश्लेषण का एक सांख्यिकीय उपकरण है। प्रदत्त संग्रह की तकनीकें साक्षात्कार, प्रश्नावली और अवलोकन हैं, जिनका उपयोग सूचना संकलन हेतु किया जाता है। दूसरी ओर, गुणात्मक विधियों में सहभागी अवलोकन और मात्रात्मक में सर्वेक्षण सम्मिलित हैं। सांख्यिकीय उपकरणों में माध्य एक प्रमुख उदाहरण है। इन अवधारणाओं के मध्य का भेद समझना शोध प्रक्रिया के भिन्न चरणों और उनकी भूमिकाओं को स्पष्ट करने हेतु अत्यंत आवश्यक और बुनियादी है।
शोध के भिन्न अंगों की सटीक पहचान ही अध्ययन को वैज्ञानिक शुद्धता और तार्किक दृढ़ता प्रदान करने में सहायक सिद्ध होती है।

141. (C) तीव्रता और समग्रता पर।
वैयक्तिक अध्ययन की सर्वाधिक प्रमुख विशेषता इसकी तीव्रता और समग्रता पर ध्यान केंद्रित करना है। यह विधि किसी एक इकाई का उसके संपूर्ण सामाजिक संदर्भ में अत्यंत गहराई से अध्ययन करती है। इसका लक्ष्य केवल सतही सूचना प्राप्त करना नहीं है, अपितु विषय के आंतरिक ढाँचे और उसमें समाहित जटिल प्रक्रियाओं को पूर्णतः उजागर करना है। यह दृष्टिकोण शोधकर्ता को उन सूक्ष्म विवरणों तक पहुँचने में सहायता करता है जो वृहद् स्तर के सर्वेक्षणों में प्रायः उपेक्षित रह जाते हैं। यह गहन समझ हेतु श्रेष्ठ है।
किसी विशिष्ट इकाई के बहुआयामी पक्षों और उनकी गहराई का सूक्ष्म विश्लेषण करना ही इस गुणात्मक शोध पद्धति का मुख्य उद्देश्य है।

142. (D) जटिल सांख्यिकीय गणनाओं को शीघ्र और सटीक रूप से करना।
मात्रात्मक प्रदत्त विश्लेषण हेतु संगणक का उपयोग करने का मुख्य और प्राथमिक उद्देश्य जटिल सांख्यिकीय गणनाओं को अत्यंत तीव्रता और शुद्धता के साथ पूर्ण करना है। आधुनिक अनुसंधान में सहस्त्रों चरों और मामलों के मध्य संबंधों को हस्तलिखित रूप में मापना लगभग असंभव और त्रुटिपूर्ण होता है। संगणक यंत्रांश न केवल गणना की गति संवर्धित करते हैं, अपितु मानवीय भूलों की संभावना को भी न्यूनतम कर देते हैं। इससे शोधकर्ता का समय बचता है और वह प्रदत्त की व्याख्या और निष्कर्षों पर अधिक ध्यान दे सकता है।
सूचनाओं के त्वरित प्रसंस्करण और गणना की शुद्धता सुनिश्चित करके संगणक ने सामाजिक शोध की वैज्ञानिक सक्षमता को अभूतपूर्व विस्तार प्रदान किया है।

143. (A) समाजमिति
यदि शोधकर्ता अंतःक्रियाओं का आरेख निर्मित करके किसी संस्था के सामाजिक नेटवर्क का अध्ययन करता है, तो वह समाजमिति का उपयोग कर रहा है। समाजमिति व्यक्तियों के मध्य आकर्षण, विकर्षण और सामाजिक संबंधों के प्रतिरूपों को मापने की एक मात्रात्मक तकनीक है। इसमें 'समाजआरेख' का उपयोग होता है जो समूह की संरचना को दृश्य रूप में प्रस्तुत करता है। यह विधि यह समझने में सहायता करती है कि समूह के भीतर कौन से व्यक्ति केंद्रीय भूमिका निभा रहे हैं और कौन हाशिए पर हैं। यह समूह गतिशीलता का आधार है।
समूह के भीतर आपसी जुड़ाव और सामाजिक अंतःक्रियाओं के सूक्ष्म जाल को वैज्ञानिक रूप से मापना और प्रदर्शित करना ही समाजमिति की शक्ति है।

144. (B) व्यक्तिपरकता को स्वीकार करना और प्रबंधित करना वस्तुनिष्ठता की दिशा में प्रयास करने का एक प्रमुख हिस्सा है। सामाजिक अनुसंधान में वस्तुनिष्ठता और व्यक्तिपरकता के मध्य संबंध के विषय में यह सत्य है कि व्यक्तिपरकता को स्वीकार करना ही वस्तुनिष्ठता की ओर बढ़ने का प्रथम चरण है। शोधकर्ता के अपने मूल्य और अनुभव होते हैं, जिन्हें पूर्णतः विलोपित करना असंभव है। शोधकर्ता को इन प्रभावों के प्रति सचेत रहकर उन्हें प्रबंधित करने का प्रयास करना चाहिए। अपनी सीमाओं को स्वीकार करके ही शोधकर्ता अधिक पारदर्शी और विश्वसनीय निष्कर्षों तक पहुँच सकता है। यह वैज्ञानिक ईमानदारी का एक महत्वपूर्ण अंग है।
स्वयं के पूर्वाग्रहों के प्रति जागरूकता और उनका निष्पक्ष प्रबंधन ही किसी भी शोध को वास्तविक वस्तुनिष्ठता के समीप ले जाता है।

145. (A) III, II, I, IV
एक गुणात्मक अध्ययन का तार्किक अनुक्रम सर्वप्रथम एक व्यापक शोध प्रश्न अथवा अभिरुचि के क्षेत्र की पहचान से प्रारंभ होता है। इसके पश्चात, शोधकर्ता अध्ययन स्थल का चयन करता है और वहाँ पहुँच प्राप्त करता है। तृतीय चरण में, सघन अवलोकन और गहन साक्षात्कारों के माध्यम से प्रदत्त संग्रह किया जाता है। अंत में, संकलित विवरणों का विश्लेषण करके अर्थपूर्ण निष्कर्ष प्रतिपादित किए जाते हैं। यह प्रक्रिया लचीली होती है, जहाँ शोधकर्ता प्रदत्त के आधार पर अपनी दिशा परिवर्तित कर सकता है।
चरणों का यह क्रमिक और लचीला अनुपालन ही गुणात्मक शोध को मानवीय संवेदनाओं और सामाजिक वास्तविकताओं के अत्यंत समीप ले जाता है।

146. (A) बाह्य चर
एक चर जो स्वतंत्र और आश्रित चरों के मध्य के संबंधों को प्रभावित कर सकता है, उसे बाह्य चर कहते हैं। ये ऐसे कारक होते हैं जिनका शोधकर्ता प्रत्यक्ष अध्ययन नहीं कर रहा होता, किंतु वे परिणामों को विकृत कर सकते हैं। उदाहरण हेतु, यदि हम अध्ययन के समय का प्रभाव परीक्षा के अंकों पर देख रहे हैं, तो छात्र की बुद्धि एक बाह्य चर हो सकती है। शोध में इन चरों

Click Here to Buy book on Amazon

को पहचानना और नियंत्रित करना अत्यंत अनिवार्य है ताकि मुख्य चरों के मध्य वास्तविक संबंधों को स्पष्ट किया जा सके। परिणामों को प्रभावित करने वाले अनचाहे कारकों की पहचान और नियंत्रण शोध की आंतरिक वैधता और सटीकता के लिए अनिवार्य बुनियादी आवश्यकता है।

147. (C) प्रश्नावली
लिकर्ट पैमाना एक सामान्य उपकरण है जिसका उपयोग प्रश्नावली में उत्तरदाताओं के दृष्टिकोणों और भावनाओं को मापने हेतु किया जाता है। इसमें सामान्यतः प्रतिक्रियाओं की एक श्रृंखला होती है, जैसे "पूर्णतः सहमत" से "पूर्णतः असहमत" तक। यह उत्तरदाताओं को किसी कथन के प्रति उनकी सहमति के स्तर को व्यक्त करने की अनुमति देता है। यह मात्रात्मक विश्लेषण हेतु अत्यंत उपयोगी है क्योंकि यह व्यक्तिपरक विचारों को संख्यात्मक मानों में परिवर्तित कर देता है। सामाजिक विज्ञान के सर्वेक्षणों में इसका व्यापक प्रयोग होता है।
मानवीय दृष्टिकोणों की तीव्रता को मापने और उन्हें सांख्यिकीय रूप में ढालने के लिए लिकर्ट पैमाना एक अत्यंत प्रभावी और लोकप्रिय साधन है।

148. (D) किसी घटना की समृद्ध, गहन समझ प्रदान करना।
गुणात्मक विधियों का सर्वाधिक प्रमुख लाभ उनकी यह क्षमता है कि वे किसी सामाजिक घटना की अत्यंत समृद्ध, सूक्ष्म और गहन समझ प्रदान करती हैं। ये विधियाँ 'क्यों' और 'कैसे' जैसे प्रश्नों का उत्तर अन्वेषण करती हैं, जिन्हें केवल संख्याओं के माध्यम से नहीं समझा जा सकता। ये प्रतिभागियों के दृष्टिकोणों, उनके जीवन के अनुभवों और उनकी व्याख्याओं को प्राथमिकता देती हैं। गुणात्मक शोध सामाजिक जगत की जटिलताओं और संदर्भों को उजागर करने में अद्वितीय है, जो इसे मात्रात्मक शोध का पूरक बनाता है।
अर्थों की गहराई और मानवीय अनुभवों की विविधता को सघन विवरणों के माध्यम से प्रस्तुत करना ही इन शोध विधियों की वास्तविक शक्ति है।

149. (C) तथ्य हमेशा सिद्धांत-आधारित होते हैं और एक संदर्भ के भीतर व्याख्या किए जाते हैं।
सामाजिक विज्ञान में 'तथ्य' की अवधारणा समस्याप्रद है क्योंकि तथ्य कभी भी पूर्णतः स्वतंत्र नहीं होते। वे सदैव किसी न किसी सैद्धांतिक परिप्रेक्ष्य अथवा संदर्भ के माध्यम से देखे और व्याख्यायित किए जाते हैं। जिसे एक समाज में तथ्य माना जाता है, उसे भिन्न संदर्भ में अलग ढंग से देखा जा सकता है। सामाजिक वास्तविकता सचेत मनुष्यों द्वारा निर्मित होती है, अतः तथ्यों के चयन और उनकी प्रस्तुति में शोधकर्ता के दृष्टिकोण का प्रभाव पड़ना स्वाभाविक है। यह सामाजिक विज्ञान की व्याख्यात्मक प्रकृति को दर्शाता है।
तथ्यों की व्याख्या में निहित व्यक्तिपरकता और संदर्भ की भूमिका उन्हें प्राकृतिक विज्ञानों के तथ्यों की तुलना में अधिक जटिल बना देती है।

150. (C) कथन I सही है, लेकिन कथन II गलत है।
एक अनुसंधान प्रारूप वह तार्किक योजना है जो प्रदत्त के संकलन और विश्लेषण का मार्गदर्शन करती है, अतः कथन I सत्य है। हालाँकि, कथन II त्रुटिपूर्ण है क्योंकि अनुसंधान प्रारूप प्रदत्त एकत्र करने से पूर्व निर्मित किया जाना चाहिए, न कि पश्चात। यह योजना शोधकर्ता को निश्चित दिशा प्रदान करती है और सुनिश्चित करती है कि अध्ययन के उद्देश्यों को कुशलतापूर्वक प्राप्त किया जा सके। बिना किसी पूर्व योजना के प्रदत्त संग्रह करना अव्यवस्थित हो सकता है और शोध की वैज्ञानिक वैधता को न्यून कर सकता है।
शोध कार्य की सफलता के लिए एक सुदृढ़ और पूर्व-निर्धारित योजना का होना अनिवार्य है जो संपूर्ण प्रक्रिया को वैज्ञानिक आधार दे सके।

151. (D) प्रारंभिक शोध परिकल्पना का निर्माण।
सामाजिक अनुसंधान में संगणक यंत्रांश प्रदत्त संसाधन, सांख्यिकीय विश्लेषण और विशाल प्रदत्त समूहों के प्रबंधन में अत्यंत सहायक होते हैं, किंतु वे प्रारंभिक शोध परिकल्पना का निर्माण नहीं कर सकते। परिकल्पना का निर्माण शोधकर्ता की सृजनात्मकता, सिद्धांत की समझ और समस्या के ज्ञान पर निर्भर करता है। संगणक केवल गणना और प्रदत्त के सुव्यवस्थित आयोजन का उपकरण है। वैचारिक चिंतन और समस्या की पहचान जैसे मौलिक बौद्धिक कार्य शोधकर्ता द्वारा ही संपन्न किए जाते हैं। अतः संगणक मानवीय बुद्धि का स्थान नहीं ले सकते।
तकनीकी उपकरण केवल शोध की प्रक्रिया को गति और शुद्धता प्रदान करते हैं, जबकि वैचारिक आधार तैयार करना शोधकर्ता का ही मौलिक दायित्व है।

152. (A) मौखिक इतिहास
संस्थापक सदस्यों से किसी सामाजिक आंदोलन के ऐतिहासिक विकास को समझने हेतु मौखिक इतिहास सर्वाधिक उपयुक्त गुणात्मक विधि होगी। यह विधि उन व्यक्तियों के प्रत्यक्ष अनुभवों और स्मृतियों को सहेजने पर केंद्रित है जिन्होंने उस इतिहास को स्वयं अनुभव किया है। साक्षात्कारों के माध्यम से, शोधकर्ता आधिकारिक प्रलेखों से परे जाकर आंदोलन की अनकही कथाओं, प्रेरणाओं और आंतरिक संघर्षों को जान सकता है। मौखिक इतिहास व्यक्तिगत अनुभवों को ऐतिहासिक संदर्भ में रखकर समाज की एक जीवंत और सूक्ष्म समझ प्रदान करता है।
स्मृतियों की गहराई से अतीत के पन्नों को जीवंत करना और सामाजिक परिवर्तनों के मानवीय पक्ष को उजागर करना ही इस विधि का मूल सार है।

153. (C) 8
सांख्यिकी में बहुलक वह मान होता है जो किसी प्रदत्त समूह में सर्वाधिक आवृत्ति के साथ आता है। दिए गए अंकों {2, 5, 8, 2, 9, 8, 10, 8} में, अंक 8 कुल तीन बार आया है, जो किसी भी अन्य अंक की तुलना में अधिक है। अंक 2 केवल दो बार आया है। चूंकि 8 की आवृत्ति सर्वाधिक है, अतः इस वितरण का बहुलक 8 होगा। बहुलक का उपयोग प्रदत्त के सर्वाधिक

NODIA

182. (B) मूल्य निर्णय
यह कथन कि "लोकतंत्र शासन का सर्वश्रेष्ठ स्वरूप है," एक मूल्य निर्णय है क्योंकि यह व्यक्तिगत अथवा सामाजिक मान्यताओं और प्राथमिकताओं पर आधारित है। इसे अनुभवजन्य रूप से पूर्णतः सिद्ध नहीं किया जा सकता क्योंकि 'सर्वश्रेष्ठ' होने का मापदंड भिन्न व्यक्तियों हेतु अलग हो सकता है। तथ्य वह होता है जिसे साक्ष्यों से परखा जा सके, जबकि मूल्य यह निर्देशित करते हैं कि क्या होना चाहिए। वैज्ञानिक शोध में तथ्यों और मूल्य निर्णयों के मध्य भेद करना वस्तुनिष्ठता बनाए रखने हेतु अत्यंत अनिवार्य है।
व्यक्तिगत मान्यताओं और आदर्शों पर आधारित कथनों को वैज्ञानिक तथ्यों से पृथक पहचानना ही शोध की निष्पक्षता और सटीकता का मुख्य आधार है।

183. (D) नियंत्रित प्रयोग बनाने में नैतिक और व्यावहारिक कठिनाइयाँ।
समाजशास्त्र में वैज्ञानिक पद्धति की एक प्रमुख सीमा यह है कि मनुष्यों के साथ नियंत्रित प्रयोग करना प्रायः अनैतिक और व्यावहारिक रूप से दुष्कर होता है। हम व्यक्तियों को प्रयोगशाला की नियंत्रित परिस्थितियों में प्रतिबंधित नहीं कर सकते क्योंकि इससे उनका व्यवहार अप्राकृतिक हो जाएगा। इसके अतिरिक्त, निर्धनता अथवा संघर्ष जैसी परिस्थितियों को प्रयोग हेतु कृत्रिम रूप से निर्मित करना नैतिक रूप से अनुचित है। यही कारण है कि समाजशास्त्री प्रायः अवलोकन, सर्वेक्षण और ऐतिहासिक विश्लेषण जैसी अन्य वैज्ञानिक विधियों पर निर्भर रहते हैं।
मानवीय गरिमा की रक्षा और सामाजिक जीवन की जटिलता ही समाजशास्त्र को अपनी विशिष्ट और चुनौतीपूर्ण शोध पद्धतियाँ विकसित करने हेतु प्रेरित करती है।

184. (A) एक नमूना सांख्यिकी और जनसंख्या प्राचल के बीच का अंतर।
'प्रतिचयन त्रुटि' उस सांख्यिकीय भेद को संदर्भित करती है जो एक प्रतिदर्श से प्राप्त निष्कर्षों और संपूर्ण जनसंख्या के वास्तविक मानों के मध्य विद्यमान होता है। यह त्रुटि इसलिए उत्पन्न होती है क्योंकि प्रतिदर्श संपूर्ण जनसंख्या का केवल एक अंश होता है, चाहे वह कितना भी प्रतिनिधि क्यों न हो। इसे पूर्णतः विलोपित नहीं किया जा सकता, किंतु प्रतिदर्श का आकार संवर्धित करके और यादृच्छिक प्रतिचयन तकनीकों का उपयोग करके इसे न्यूनतम किया जा सकता है। यह शोधकर्ता को निष्कर्षों में अनिश्चितता का स्मरण कराता है।
प्रतिदर्श और समग्र जनसंख्या के बीच के इस स्वाभाविक सांख्यिकीय अंतर को समझना अनुसंधान के परिणामों की सटीकता को मापने हेतु अनिवार्य है।

185. (C) गुणात्मक अनुसंधान।
वैयक्तिक अध्ययन अथवा केस स्टडी गुणात्मक अनुसंधान का एक महत्वपूर्ण स्वरूप है। इसका मुख्य उद्देश्य किसी एक विशिष्ट इकाई, जैसे व्यक्ति अथवा समूह, की सूक्ष्म और गहन समझ प्राप्त करना है। इसमें सांख्यिकीय गणनाओं के स्थान पर विस्तृत विवरणों, अर्थों और संदर्भों पर ध्यान केंद्रित किया जाता है। यह विधि चरों के मध्य संबंधों को गहराई से अन्वेषण करने और नवीन परिकल्पनाओं के निर्माण हेतु अत्यंत उपयोगी मानी जाती है। यह समाज की जटिलताओं को उनके वास्तविक और समग्र रूप में प्रस्तुत करने का सशक्त माध्यम है।
मानवीय अनुभवों की गहराई और सामाजिक संदर्भों की सूक्ष्मता को सघन विवरणों के माध्यम से उजागर करना ही इस शोध पद्धति का मूल आधार है।

186. (A) P-3, Q-4, R-1, S-2
जनसंख्या उन समस्त तत्वों का संपूर्ण समूह है जिनमें शोधकर्ता की अभिरुचि है। प्रतिदर्श उस जनसंख्या में से अध्ययन हेतु चयनित एक लघु उपसमुच्चय है। प्रतिचयन ढांचा जनसंख्या के समस्त तत्वों की एक वास्तविक सूची है जिससे प्रतिदर्श निकाला जाता है। तत्व जनसंख्या का वह व्यक्तिगत अंग है जिसका अध्ययन किया जाता है। इन अवधारणाओं का सही सुमेल प्रतिचयन की संपूर्ण वैज्ञानिक प्रक्रिया को स्पष्ट करता है। यह ढाँचा सुनिश्चित करता है कि शोध का आधार व्यवस्थित और प्रतिनिधिमूलक हो।
प्रतिचयन की इन बुनियादी कड़ियों को समझकर ही एक शोधकर्ता अपने अध्ययन हेतु एक सटीक और निष्पक्ष प्रतिनिधि समूह का चयन कर सकता है।

187. (D) इसे परीक्षण योग्य और खंडन योग्य होना चाहिए।
परिकल्पना की एक परिभाषित विशेषता यह है कि उसे परीक्षण योग्य और खंडन योग्य होना चाहिए। इसका अर्थ है कि शोधकर्ता को इसे अनुभवजन्य साक्ष्यों के माध्यम से जाँचने में सक्षम होना चाहिए ताकि उसे सत्य अथवा असत्य सिद्ध किया जा सके। यदि कोई प्रस्ताव ऐसा है जिसे परखा नहीं जा सकता, तो वह वैज्ञानिक परिकल्पना की श्रेणी में नहीं आएगा। परिकल्पना शोध को एक विशिष्ट दिशा प्रदान करती है और तथ्यों के अन्वेषण का आधार बनती है। यह वैज्ञानिक जांच की प्रक्रिया में एक अनिवार्य कड़ी है।
साक्ष्यों की कसौटी पर परखे जाने योग्य होना ही किसी विचार को वैज्ञानिक परिकल्पना की श्रेणी में रखता है और जाँच का मार्ग प्रशस्त करता है।

188. (B) चुने गए नमूने का वह प्रतिशत जो वास्तव में भाग लेता है।
सर्वेक्षण अनुसंधान में, 'प्रतिक्रिया दर' उस प्रतिशत को संदर्भित करती है जो चयनित कुल प्रतिदर्श में से वास्तव में प्रश्नावली को पूर्ण करते हैं अथवा साक्षात्कार में सम्मिलित होते हैं। एक उच्च प्रतिक्रिया दर शोध परिणामों की वैधता और प्रतिनिधित्व हेतु अत्यंत महत्वपूर्ण है। यदि बहुत अल्प व्यक्ति उत्तर देते हैं, तो 'गैर-प्रतिक्रिया पक्षपात' उत्पन्न हो सकता है, जिससे निष्कर्ष भ्रामक हो सकते हैं। शोधकर्ता प्रायः अनुवर्ती प्रयासों और प्रोत्साहनों के माध्यम से प्रतिक्रिया दर बढ़ाने का प्रयत्न करते हैं ताकि प्रदत्त विश्वसनीय बना रहे।
प्रतिभागियों की सक्रिय सहभागिता का स्तर ही किसी सर्वेक्षण की सफलता और उसके निष्कर्षों की वैज्ञानिक प्रामाणिकता को निर्धारित करने वाला मुख्य मापदंड है।

Downloaded from www.pdf.tube

सूचनाओं के विशाल समूह को सरल और अर्थपूर्ण मानों में सारांशित करना ही वर्णनात्मक सांख्यिकी की मुख्य शक्ति और उपयोगिता है।

161. (C) I, II और III सभी
ये तीनों कथन त्रुटिपूर्ण हैं क्योंकि सहभागी अवलोकन एक गुणात्मक विधि है, न कि मात्रात्मक। परिकल्पना एक सिद्ध तथ्य नहीं, अपितु एक अस्थायी और परीक्षण योग्य प्रस्ताव है जिसे शोध के माध्यम से परखा जाना चाहिए। इसके अतिरिक्त, अनुसंधान प्रारूप संपूर्ण शोध प्रक्रिया का एक अनिवार्य और महत्वपूर्ण अंग है, न कि कोई वैकल्पिक विकल्प। इन बुनियादी अवधारणाओं की त्रुटिपूर्ण समझ शोध की वैज्ञानिक प्रामाणिकता को संकट में डाल सकती है। वैज्ञानिक दृष्टिकोण हेतु इन परिभाषाओं के प्रति स्पष्टता होना परम आवश्यक है।
अनुसंधान के बुनियादी सिद्धांतों और विधियों की सही पहचान ही किसी भी वैज्ञानिक अध्ययन की नींव को दृढ़ता और सटीकता प्रदान करती है।

162. (A) विषय-वस्तु विश्लेषण
प्रतीकात्मक संचार का व्यवस्थित और वस्तुनिष्ठ अध्ययन विषय-वस्तु विश्लेषण का मूल आधार है। इस विधि के माध्यम से लिखित, मौखिक अथवा दृश्य संदेशों में विद्यमान अर्थों और प्रतिरूपों की पहचान की जाती है। यह तकनीक संचार की सामग्री का विश्लेषण करके समाज की विचारधाराओं, सांस्कृतिक मूल्यों और प्रवृत्तियों को उजागर करती है। यह गुणात्मक संचार को सांख्यिकीय रूप में परिवर्तित करने की अनुमति देती है ताकि निष्कर्षों को अधिक स्पष्टता से प्रस्तुत किया जा सके। जनसंचार अध्ययन में इसका उपयोग वृहद् स्तर पर होता है।
संदेशों के अंतर्निहित ढाँचे और उनके प्रतीकात्मक अर्थों का वैज्ञानिक विश्लेषण करना ही इस शोध पद्धति की मुख्य शक्ति और सार्थकता है।

163. (C) +1.0
सांख्यिकी में, एक पूर्ण सकारात्मक सहसंबंध को +1.0 के गुणांक द्वारा प्रदर्शित किया जाता है। इसका अर्थ है कि दो चरों के मध्य एक पूर्ण और अटूट संबंध है, जहाँ एक चर में होने वाली वृद्धि के साथ दूसरा चर भी उसी अनुपात में संवर्धित होता है। यह स्थिति चरों के मध्य एक रैखिक और पूर्वानुमेय संबंध को दर्शाती है। वास्तविक जीवन के सामाजिक प्रदत्त में +1.0 का मान प्राप्त होना अत्यंत विरल है, किंतु यह सहसंबंध की उच्चतम सीमा और दिशा को समझने हेतु एक महत्वपूर्ण मानक बिंदु है।
चरों के बीच एक ही दिशा में पूर्ण तालमेल और सुसंगत व्यवहार को स्पष्ट करना ही इस सांख्यिकीय मान का मुख्य उद्देश्य है।

164. (D) वैयक्तिक अध्ययन
किसी विशिष्ट व्यक्ति, समूह अथवा संदर्भ के अत्यंत गहन और सूक्ष्म अध्ययन को वैयक्तिक अध्ययन के रूप में परिभाषित किया जाता है। यह विधि किसी इकाई की अद्वितीयता और उसके बहुआयामी पक्षों को गहराई से उजागर करने का प्रयास करती है। इसमें शोधकर्ता विषय के इतिहास, वर्तमान परिस्थितियों और उनके अंतर्संबंधों का समग्र चित्रण प्रस्तुत करता है। यद्यपि इसके निष्कर्षों का व्यापक सामान्यीकरण संभव नहीं, किंतु यह किसी विशेष मामले की सूक्ष्म समझ विकसित करने हेतु एक अत्यंत शक्तिशाली वैज्ञानिक उपकरण है।
किसी विशिष्ट इकाई के भीतर छिपी सामाजिक जटिलताओं और व्यक्तिगत सच्चाइयों का सघन विश्लेषण करना ही इस शोध पद्धति की विशेषता है।

165. (C) प्रेक्षक प्रभाव
जब शोधकर्ता की उपस्थिति ही अध्ययन किए जा रहे व्यक्तियों के व्यवहार को अनचाहे ढंग से प्रभावित करती है, तो इसे प्रेक्षक प्रभाव अथवा 'प्रतिक्रियाशीलता' कहते हैं। व्यक्ति यह जानकर कि उनका अवलोकन हो रहा है, प्रायः अधिक सतर्क हो जाते हैं और अपने स्वाभाविक व्यवहार को प्रच्छन्न करने का प्रयास करते हैं। यह स्थिति प्रदत्त की शुद्धता और शोध की वैधता हेतु एक वृहद् चुनौती है। शोधकर्ता इस प्रभाव को न्यूनतम करने हेतु दीर्घकाल तक समूह के साथ रहने जैसी तकनीकों का आश्रय लेते हैं।
मानवीय चेतना की यह विशेषता कि वे निगरानी में सजग हो जाते हैं, सामाजिक शोध में वास्तविक व्यवहार को समझने में बाधा उत्पन्न करती है।

166. (B) वर्णनात्मक अनुसंधान
वर्णनात्मक अनुसंधान का मुख्य उद्देश्य किसी सामाजिक स्थिति, समूह अथवा घटना का एक सटीक और विस्तृत चित्रण करना है जैसा कि वह एक विशेष समय पर विद्यमान है। यह शोध 'क्या है' के प्रश्न का उत्तर प्रदान करता है और चरों की विशेषताओं को मापने एवं उनका वर्णन करने पर केंद्रित होता है। इसमें प्रायः सर्वेक्षणों और अवलोकनों का उपयोग किया जाता है ताकि समाज के भिन्न पहलुओं की स्पष्ट छवि प्राप्त हो सके। यह चरों के मध्य कारण संबंधी संबंधों की व्याख्या के स्थान पर उनके वर्तमान स्वरूप को स्पष्ट करता है।
सामाजिक वास्तविकताओं का बिना किसी हेरफेर के वस्तुनिष्ठ और स्पष्ट वर्णन करना ही इस अनुसंधान प्रारूप का प्राथमिक और मुख्य लक्ष्य है।

167. (D) परीक्षण-पुनर्परीक्षण विश्वसनीयता
जब शोधकर्ता एक ही उपकरण अथवा प्रश्नावली को एक ही समूह को दो भिन्न समय अंतरालों पर प्रदान करता है और परिणामों की निरंतरता की जाँच करता है, तो इसे परीक्षण-पुनर्परीक्षण विश्वसनीयता कहते हैं। इसका उद्देश्य यह अवलोकन करना है कि क्या मापन समय के साथ स्थिर रहता है। यदि दोनों समय के परिणाम समान अथवा अत्यंत समीप हैं, तो उपकरण को विश्वसनीय माना जाता है। यह शोध की गुणवत्ता सुनिश्चित करने हेतु महत्वपूर्ण है क्योंकि यह मापन में होने वाली आकस्मिक त्रुटियों को पहचानने में सहायता करता है।
मापन की स्थिरता और दोहराव की क्षमता ही किसी शोध उपकरण को वैज्ञानिक रूप से विश्वसनीय और भरोसेमंद आधार प्रदान करती है।

NODIA

196. (D) कथन I गलत है, लेकिन कथन II सही है।
सहसंबंध का तात्पर्य कार्य-कारण नहीं होता, अतः कथन I त्रुटिपूर्ण है; दो चरों का साथ बढ़ना यह प्रमाणित नहीं करता कि एक दूसरे को जन्म दे रहा है। दूसरी ओर, कथन II सत्य है क्योंकि सार्थकता परीक्षण वास्तव में यह निर्धारित करने में सहायता करता है कि प्रतिदर्श में देखा गया कोई निष्कर्ष वास्तविक है अथवा केवल आकस्मिक संयोग का प्रतिफल है। यह सांख्यिकीय उपकरण शोध परिणामों को वैज्ञानिक प्रामाणिकता प्रदान करता है। सहसंबंध और कार्य-कारण के मध्य का अंतर समझना विश्लेषण की बुनियादी आवश्यकता है। सांख्यिकीय संबंधों की सही व्याख्या और संयोग के प्रभाव को समझना ही वैज्ञानिक अनुसंधान की शुद्धता और विश्वसनीयता को सुनिश्चित करता है।

197. (C) माध्य के चारों ओर परिक्षेपण का।
मानक विचलन परिक्षेपण का एक प्रमुख माप है जो यह बताता है कि वितरण में अंक अपने माध्य अथवा औसत के चारों ओर किस सीमा तक विस्तृत हैं। यह प्रदत्त की परिवर्तनशीलता और स्थिरता की गणना करता है। यदि मानक विचलन न्यून है, तो इसका अर्थ है कि अधिकांश अंक माध्य के समीप हैं, और यदि अधिक है, तो वे दूर तक विस्तृत हैं। यह सांख्यिकीय मान प्रदत्त की गुणवत्ता और सटीकता को मापने हेतु अनिवार्य है। यह स्पष्ट करता है कि हमारा औसत मान कितना प्रतिनिधि है।
वितरण में विचलन की मात्रा को स्पष्ट कर प्रदत्त की एकरूपता और उसके फैलाव को मापना ही मानक विचलन का प्राथमिक सांख्यिकीय कार्य है।

198. (B) शोधकर्ता उस दुनिया की व्याख्या करते हैं जिसकी व्याख्या अभिनेताओं द्वारा पहले ही की जा चुकी है।
सामाजिक विज्ञान में 'दोहरी-व्याख्यात्मकता' का अर्थ है कि शोधकर्ता उस सामाजिक जगत का अध्ययन करता है जो पूर्व में ही वहाँ के निवासियों (अभिनेताओं) द्वारा अर्थपूर्ण बनाया जा चुका है। शोधकर्ता अपनी व्याख्याओं को उन पूर्व-विद्यमान व्याख्याओं पर आरोपित करता है। यह प्राकृतिक विज्ञानों से भिन्न है, जहाँ अचेतन वस्तुएं स्वयं को अर्थ प्रदान नहीं करतीं। यह अवधारणा सामाजिक अनुसंधान की संवादात्मक प्रकृति को रेखांकित करती है, जहाँ अर्थों की दोहरी परतें सक्रिय रूप से कार्य करती हैं।
मानवीय चेतना और उनके द्वारा निर्मित अर्थों के जाल को समझना ही सामाजिक अनुसंधान की एक विशिष्ट और चुनौतीपूर्ण अनिवार्य आवश्यकता है।

199. (D) स्पष्ट संबंध एक तीसरे, अमापित चर के कारण होता है।
'मिथ्या सहसंबंध' एक ऐसी स्थिति है जहाँ दो चरों के मध्य एक सबल सांख्यिकीय संबंध दृष्टिगोचर होता है, किंतु वे वास्तव में एक-दूसरे को प्रभावित नहीं करते। इसके स्थान पर, यह संबंध किसी तृतीय, अमापित चर के कारण होता है जो दोनों को एक साथ प्रभावित कर रहा होता है। उदाहरण हेतु, जूतों के आकार और पठन क्षमता के मध्य संबंध वास्तव में 'आयु' के कारण हो सकता है। शोधकर्ताओं को ऐसे भ्रमपूर्ण संबंधों से सावधान रहकर कार्य-कारण संबंधों का सूक्ष्म विश्लेषण करना चाहिए। चरों के सतही जुड़ाव के पीछे छिपे वास्तविक प्रेरक कारकों की पहचान करना ही वैज्ञानिक विश्लेषण की गहराई और उसकी प्रामाणिकता का आधार है।

200. (A) इट तत्काल डेटा प्रविष्टि की अनुमति देता है और कोडिंग त्रुटियों को कम करता है।
संगणक-सहायता प्राप्त व्यक्तिगत साक्षात्कार का एक प्रमुख लाभ यह है कि यह तत्काल प्रदत्त प्रविष्टि की सुविधा प्रदान करता है, जिससे कूटलेखन में होने वाली मानवीय त्रुटियों की संभावना अत्यंत क्षीण हो जाती है। साक्षात्कारकर्ता प्रतिक्रियाओं को प्रत्यक्ष रूप से डिजिटल उपकरण में अंकित कर सकता है, जिससे प्रदत्त संसाधन का समय बचता है। यह विधि प्रश्नों के तार्किक प्रवाह को स्वचालित रूप से प्रबंधित कर सकती है, जिससे सर्वेक्षण सुव्यवस्थित हो जाता है। यह शोध की दक्षता को संवर्धित करता है।
तकनीकी प्रगति के माध्यम से प्रदत्त संग्रह की प्रक्रिया को अधिक सटीक, तीव्र और त्रुटिहीन बनाना ही इस आधुनिक पद्धति की मुख्य विशेषता है।

201. (C) शोधकर्ता को समुदाय तक पहुंच प्राप्त करने में सहायता करता है।
नृवंशविज्ञानी अनुसंधान में 'द्वारपाल' वह महत्वपूर्ण व्यक्ति होता है जो शोधकर्ता को किसी विशिष्ट समुदाय अथवा सामाजिक समूह तक पहुँच प्राप्त करने में सहायता प्रदान करता है। यह व्यक्ति प्रायः समुदाय के भीतर प्रतिष्ठित अथवा प्रभावशाली होता है और शोधकर्ता हेतु विश्वास का सेतु निर्मित करता है। उसके बिना, एक बाह्य व्यक्ति हेतु गुप्त अथवा बंद समुदायों में प्रवेश करना और व्यक्तियों का सहयोग प्राप्त करना दुष्कर हो सकता है। द्वारपाल की भूमिका अनुसंधान की प्रारंभिक सफलता सुनिश्चित करने हेतु अत्यंत महत्वपूर्ण मानी जाती है। शोध क्षेत्र में प्रवेश को सुगम बनाने और प्रतिभागियों के साथ विश्वास का संबंध स्थापित करने में द्वारपाल एक अनिवार्य और महत्वपूर्ण कड़ी है।

202. (A) बहुलक
बहुलक केंद्रीय प्रवृत्ति का एक माप है जो यह स्पष्ट करता है कि प्रदत्त समूह में कौन सा मान सर्वाधिक बार आया है। इसके विपरीत, परास, प्रसरण और मानक विचलन परिक्षेपण के माप हैं जो प्रदत्त के फैलाव अथवा बिखराव की सीमा को प्रदर्शित करते हैं। परिक्षेपण के माप बताते हैं कि अंक केंद्र से कितनी दूरी पर स्थित हैं, जबकि बहुलक केवल सर्वाधिक लोकप्रिय रुझान को दर्शाता है। सांख्यिकीय विश्लेषण में इन दोनों प्रकार के मापों का अपना विशिष्ट महत्व है जो वितरण की प्रकृति को स्पष्ट करते।
प्रदत्त के केंद्र और उसके फैलाव के बीच का यह सांख्यिकीय अंतर वितरण के स्वरूप को पूरी तरह समझने के लिए अत्यंत मौलिक और आवश्यक है।

203. (D) अर्ध-प्रयोगात्मक प्रारूप
तुलना समूह वाले किंतु यादृच्छिक आवंटन के बिना अनुसंधान प्रारूप को अर्ध-प्रयोगात्मक प्रारूप कहा जाता है। इसमें शोधकर्ता स्वाभाविक रूप से निर्मित समूहों का उपयोग करता

Click Here to Buy book on Amazon

175. (A) हम इस बात के प्रति निश्चित नहीं हो सकते कि भविष्य के अवलोकन पिछले अवलोकनों के अनुरूप होंगे।
वैज्ञानिक पद्धति में "आगमन की समस्या" इस दार्शनिक विषय को संदर्भित करती है कि हम केवल विगत अनुभवों के आधार पर भविष्य के विषय में निश्चित भविष्यवाणी नहीं कर सकते। मात्र इसलिए कि हमने अब तक केवल श्वेत हंस देखे हैं, हम यह तर्क नहीं दे सकते कि संसार में कृष्ण (काले) हंस विद्यमान नहीं हो सकते। यह तर्क देता है कि कितने भी अवलोकन किसी सामान्य नियम को पूर्णतः सिद्ध नहीं कर सकते। यह सिद्धांत सामाजिक शोध में निष्कर्षों की अस्थायी प्रकृति और निरंतर परीक्षण की आवश्यकता पर बल देता है।
अनुभवजन्य ज्ञान की सीमाओं और तार्किक सामान्यीकरण की चुनौतियों को समझना ही वैज्ञानिक अन्वेषण की गहराई और उसकी विनम्रता का सार है।

176. (B) क्षेत्र टिप्पणियाँ
क्षेत्र अध्ययन के दौरान शोधकर्ता द्वारा लिए गए विस्तृत और वर्णनात्मक आलेखों को 'क्षेत्र टिप्पणियाँ' कहते हैं। ये टिप्पणियाँ प्रेक्षित घटनाओं, वार्तालाप और शोधकर्ता के अपने प्रतिबिंबों का एक मौलिक और महत्वपूर्ण अभिलेख होती हैं। वे पश्चातवर्ती प्रदत्त विश्लेषण और नृवंशविज्ञानी विवरण निर्मित करने हेतु प्राथमिक आधार प्रदान करती हैं। उत्तम क्षेत्र टिप्पणियाँ सघन विवरणों से परिपूर्ण होती हैं जो सामाजिक संदर्भ को जीवंत बनाती हैं। यह सहभागी अवलोकन की प्रक्रिया का एक अपरिहार्य और अत्यंत महत्वपूर्ण अंग है।
वास्तविक समय के अनुभवों और अवलोकनों को व्यवस्थित लिखित रूप में सहेजना ही शोध की प्रामाणिकता और गहराई को सुनिश्चित करने का मुख्य मार्ग है।

177. (B) बहुलक < माध्यिका < माध्य
जब अंकों का वितरण सकारात्मक रूप से विषम होता है, तो इसका अर्थ है कि प्रदत्त में कुछ अत्यंत विशाल चरम मान हैं जो वितरण की पूंछ को दक्षिण ओर खींचते हैं। ऐसी स्थिति में, माध्य इन विशाल मानों की ओर सर्वाधिक विस्थापित हो जाता है और इसका मान उच्चतम होता है। बहुलक न्यूनतम मान पर रहता है जहाँ अंकों का संचयन अधिक होता है, और माध्यिका इन दोनों के मध्य स्थित होती है। यह अनुक्रम वितरण की विषमता और केंद्रीय प्रवृत्ति के मापों पर इसके प्रभाव को स्पष्ट करता है।
वितरण के आकार और चरम अंकों की उपस्थिति के कारण औसत मानों में आने वाले इस परिवर्तन को समझना सांख्यिकीय विश्लेषण के लिए अनिवार्य है।

178. (A) यदि शून्य परिकल्पना सही है, तो परिणाम प्राप्त करने की 5% से कम संभावना।
सांख्यिकीय परीक्षण में "p < 0.05" का अर्थ है कि यदि शून्य परिकल्पना वास्तव में सत्य होती, तो हमें अपने प्रदत्त जैसे परिणाम प्राप्त होने की संभावना 5% से भी न्यून थी। यह मान एक मानक सीमा है जिसे 'सार्थकता स्तर' कहा जाता है। जब p-मान इस सीमा से न्यून होता है, तो शोधकर्ता शून्य परिकल्पना को अस्वीकृत कर देता है और यह स्वीकार करता है कि परिणाम सांख्यिकीय रूप से महत्वपूर्ण हैं और केवल संयोग का प्रतिफल नहीं हैं। यह वैज्ञानिक निष्कर्षों को विश्वसनीयता प्रदान करता।
परिणामों की प्रामाणिकता को संयोग की कसौटी पर कसना ही अनुसंधान के निष्कर्षों को वैज्ञानिक वैधता और सामाजिक स्वीकार्यता प्रदान करने का आधार है।

179. (C) विषय-वस्तु विश्लेषण
अंतर्जाल मंचों अथवा चर्चाओं का विश्लेषण करके समुदायों का अध्ययन करना विषय-वस्तु विश्लेषण का एक उदाहरण है। इसमें शोधकर्ता लिखित संदेशों की सामग्री का व्यवस्थित अध्ययन करता है ताकि समूह के विचारों, प्रवृत्तियों और भाषाई प्रतिरूपों को समझा जा सके। यह विधि आधुनिक युग में सामाजिक अंतःक्रियाओं को समझने का प्रभावी मार्ग है। इसमें शोधकर्ता प्रत्यक्ष रूप से सहभागिता नहीं करता, अपितु विद्यमान संचार प्रदत्त का उपयोग करता है। यह तकनीक संचार के माध्यम से प्रच्छन्न सामाजिक संदेशों को उजागर करती है।
डिजिटल संचार की सामग्रियों का निष्पक्ष और व्यवस्थित वर्गीकरण करके उनके अंतर्निहित अर्थों को समझना ही इस विश्लेषण पद्धति का मुख्य लक्ष्य है।

180. (D) अधिक गहराई, जाँच और स्पष्टीकरण की अनुमति देता है।
प्रश्नावली की तुलना में साक्षात्कार का सर्वाधिक महत्वपूर्ण लाभ यह है कि यह शोधकर्ता को विषय की सूक्ष्मता तक पहुँचने की अनुमति प्रदान करता है। साक्षात्कारकर्ता उत्तरदाता की प्रतिक्रियाओं के आधार पर अनुवर्ती प्रश्न पूछ सकता है और अस्पष्ट तथ्यों पर स्पष्टीकरण प्राप्त कर सकता है। यह लचीलापन जटिल और संवेदनशील विषयों को समझने हेतु अत्यंत आवश्यक है। इसके अतिरिक्त, साक्षात्कार में गैर-मौखिक संकेतों को भी अंकित किया जा सकता है, जो प्रश्नावली में संभव नहीं। यह मानवीय अनुभवों की समृद्ध तस्वीर प्रदान करता।
व्यक्तिगत संवाद और लचीलेपन के माध्यम से सूचनाओं की सूक्ष्मताओं और उनके वास्तविक अर्थों को उजागर करना ही साक्षात्कार की प्रमुख शक्ति है।

181. (C) नृवंशविज्ञान
नृवंशविज्ञान वह विधि है जिसका उद्देश्य किसी विशिष्ट सामाजिक अथवा सांस्कृतिक समूह के व्यवहार, प्रथाओं और विश्वासों का गहराई से वर्णन और व्याख्या करना है। इसमें शोधकर्ता स्वयं को दीर्घकाल तक उस समूह के जीवन में सम्मिलित करता है ताकि उनकी दुनिया को उनके ही दृष्टिकोण से देख सके। इसका मुख्य बल 'सघन विवरण' प्रदान करने पर होता है, जो सामाजिक जीवन की जटिलताओं को उद्घाटित करता है। यह मानव विज्ञान की एक मौलिक पद्धति है जिसे समाजशास्त्र में भी व्यापक रूप से अंगीकार किया गया है।
किसी समाज की सांस्कृतिक आत्मा को उसके प्राकृतिक परिवेश में गहराई से अनुभव करना और वर्णित करना ही इस शोध पद्धति की अद्वितीय विशेषता है।

Downloaded from www.pdf.tube

सामान्य अथवा विशिष्ट रुझान की पहचान करने हेतु किया जाता है।
प्रदत्त में बार-बार आने वाले मानों की पहचान करके समूह की सामान्य प्रवृत्ति को समझना बहुलक के माध्यम से अत्यंत सरल और प्रभावी है।

154. (A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
भौगोलिक रुप से विस्तृत जनसंख्या से प्रदत्त एकत्र करने हेतु प्रश्नावली वास्तव में एक अत्यंत प्रभावी उपकरण है। इसका मुख्य कारण यह है कि इसे डाक अथवा अंतर्जाल के माध्यम से बहुत न्यून लागत पर विशाल क्षेत्रों में प्रेषित किया जा सकता है। इसके विपरीत, प्रत्यक्ष साक्षात्कारों हेतु यात्रा और समय की अत्यधिक आवश्यकता होती है, जो इसे व्ययपूर्ण बनाता है। इस प्रकार, प्रश्नावली शोधकर्ता को व्यापक भौगोलिक क्षेत्रों तक पहुँचने और विशाल प्रतिदर्श से सूचना जुटाने का एक किफायती मार्ग प्रदान करती है।
व्यापक सूचना संग्रहण की दक्षता और अल्प लागत के कारण प्रश्नावली सर्वेक्षण अनुसंधान का एक अत्यंत लोकप्रिय और अपरिहार्य माध्यम बन गई है।

155. (A) P-3, Q-4, R-1, S-2
परिकल्पना निर्मित करना वैज्ञानिक पद्धति का एक मौलिक और अनिवार्य अंग है। प्रतिदर्श का चयन करने की प्रक्रिया प्रतिचयन कहलाती है। पाठ्य प्रदत्त का विश्लेषण करना विषय-वस्तु विश्लेषण के अंतर्गत आता है। समूह संबंधों को मापने हेतु समाजमिति का उपयोग किया जाता है। इन गतिविधियों और विधियों का सही मेल सामाजिक अनुसंधान की व्यवस्थित प्रकृति को स्पष्ट करता है। यह प्रदर्शित करता है कि शोध के प्रत्येक चरण हेतु विशिष्ट उपकरण और तकनीकें निर्धारित हैं जो अध्ययन की प्रामाणिकता को संवर्धित करती हैं।
अनुसंधान की जटिल प्रक्रिया को विविध तकनीकी चरणों में विभाजित करके ही समाज का एक सटीक और वैज्ञानिक अध्ययन संभव हो पाता है।

156. (B) द्वितीयक डेटा विश्लेषण
किसी अन्य शोधकर्ता अथवा संस्था द्वारा पूर्व में संकलित विद्यमान प्रदत्त समूहों के उपयोग को द्वितीयक प्रदत्त विश्लेषण कहा जाता है। इसमें शोधकर्ता स्वयं प्रदत्त संकलित नहीं करता, अपितु सरकारी प्रतिवेदनों, पुराने सर्वेक्षणों अथवा जनगणना जैसे प्रदत्त का पुनः विश्लेषण करता है। यह विधि समय और संसाधनों की बचत करती है और वृहद् स्तर पर रुझानों का अध्ययन करने की अनुमति देती है। हालाँकि, इसमें शोधकर्ता का मूल प्रदत्त संग्रह प्रक्रिया पर कोई नियंत्रण नहीं होता, जिससे कुछ सीमाएँ उत्पन्न हो सकती हैं।
पूर्व-निर्मित सूचनाओं के नवीन और रचनात्मक विश्लेषण के माध्यम से ज्ञान का विस्तार करना ही द्वितीयक प्रदत्त विश्लेषण की मुख्य सार्थकता है।

157. (C) लिंग (पुरुष/महिला)
एक द्विभाजित चर वह होता है जिसके केवल दो ही संभावित मान अथवा श्रेणियां हो सकती हैं। लिंग, जिसमें पुरुष और महिला दो मुख्य श्रेणियां हैं, इसका एक उत्कृष्ट उदाहरण है। इसके विपरीत, आयु और आय निरंतर चर हैं जिनके अनेक मान हो सकते हैं, और संतुष्टि का स्तर भी कई श्रेणियों में हो सकता है। द्विभाजित चर सांख्यिकीय विश्लेषण में दो समूहों के मध्य तुलना करने हेतु बहुत उपयोगी होते हैं। इनका उपयोग प्रायः यह देखने हेतु होता है कि क्या कोई विशेषता दो समूहों में भिन्न है।
चरों को केवल दो विपरीत अथवा स्पष्ट श्रेणियों में विभाजित करके विश्लेषण करना शोध प्रक्रिया को सरल और तुलनात्मक रुप से दृढ़ बनाता है।

158. (B) केवल II और III
माध्यिका वितरण का वह मध्य बिंदु है जो प्रदत्त समूह को दो समान भागों में विभाजित करती है। इसकी एक प्रमुख विशेषता यह है कि यह चरम बाह्य मानों से प्रभावित नहीं होती, जिससे यह विषम प्रदत्त हेतु एक विश्वसनीय माप बन जाती है। हालाँकि, यह सर्वाधिक आवृत्ति वाला मान नहीं है, क्योंकि वह 'बहुलक' की विशेषता है। माध्यिका का उपयोग प्रायः आय अथवा आवास के मूल्यों जैसे प्रदत्त के विश्लेषण हेतु किया जाता है जहाँ कुछ बहुत वृहद् अंक औसत को विकृत कर सकते हैं।
प्रदत्त के संतुलित केंद्र की पहचान करने और चरम मानों के प्रभाव से मुक्त रहने के कारण माध्यिका एक श्रेष्ठ सांख्यिकीय माप है।

159. (A) व्याख्यात्मक
'वर्स्टेहेन' (Verstehen) अथवा सहानुभूतिपूर्ण बोध का दृष्टिकोण व्याख्यात्मक अनुसंधान प्रतिमान से अत्यंत निकटता से संबद्ध है। इस दृष्टिकोण का मुख्य लक्ष्य मानवीय क्रियाओं के अंतर्निहित अर्थों और उद्देश्यों को प्रतिभागियों के स्वयं के दृष्टिकोण से समझना है। यह प्रत्यक्षवाद के विरुद्ध है, जो केवल बाह्य व्यवहार को मापता है। व्याख्यात्मक शोध यह स्वीकार करता है कि सामाजिक जगत सचेत मनुष्यों द्वारा निर्मित है, अतः इसे समझने हेतु गहन व्याख्या की आवश्यकता है। यह समाजशास्त्र में वेबर के विचारों से अभिप्रेरित है।
मानवीय व्यवहार के आंतरिक अर्थों और सामाजिक क्रियाओं की सूक्ष्म व्याख्या करना ही इस शोध प्रतिमान का वास्तविक और मौलिक आधार है।

160. (B) एक नमूने की विशेषताओं को संक्षेप में प्रस्तुत करना और उनका वर्णन करना।
वर्णनात्मक सांख्यिकी का प्राथमिक उद्देश्य प्रदत्त समूह अथवा प्रतिदर्श की मुख्य विशेषताओं को संक्षेप में प्रस्तुत करना और उनका सरल वर्णन करना है। इसमें माध्य, माध्यिका, बहुलक जैसे केंद्रीय प्रवृत्ति के माप और परास तथा मानक विचलन जैसे परिक्षेपण के माप सम्मिलित होते हैं। यह शोधकर्ता को प्रदत्त के समग्र स्वरूप को समझने और उसे तालिका अथवा आरेख के माध्यम से प्रस्तुत करने में सहायता करता है। यह सांख्यिकी भविष्यवाणियां करने के स्थान पर केवल वर्तमान प्रदत्त का स्पष्ट चित्रण करती है।

NODIA

189. (A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
विषय-वस्तु विश्लेषण वास्तव में मात्रात्मक अथवा गुणात्मक दोनों स्वरूप का हो सकता है। शोधकर्ता या तो विशिष्ट शब्दों की आवृत्ति की गणना करके प्रदत्त का सांख्यिकीय मापन कर सकता है (मात्रात्मक), अथवा संचार के भीतर निहित विषयों और अर्थों का गहन विश्लेषण कर सकता है (गुणात्मक)। यह लचीलापन इस विधि को भिन्न शोध उद्देश्यों हेतु अत्यंत उपयोगी बनाता है। कारण (R) यह स्पष्ट करता है कि कैसे एक ही प्रदत्त स्रोत को भिन्न दृष्टिकोणों से देखा जा सकता है। यह संचार के विश्लेषण का बहुआयामी उपकरण है।
मापन की शुद्धता और अर्थों की गहराई के मध्य तालमेल स्थापित करने की क्षमता ही इस विश्लेषण तकनीक को अत्यंत प्रभावी और व्यापक बनाती है।

190. (D) जीवन इतिहास
जीवन इतिहास वह गुणात्मक विधि है जो किसी व्यक्ति के संपूर्ण जीवन की कथा पर गहराई से ध्यान केंद्रित करती है। इसमें व्यक्ति के जन्म से लेकर वर्तमान तक की प्रमुख घटनाओं, अनुभवों और उन सामाजिक परिस्थितियों का वर्णन किया जाता है जिन्होंने उसे आकार प्रदान किया। यह केवल तथ्यों का संकलन नहीं है, अपितु व्यक्ति द्वारा अपने अनुभवों को प्रदान किए गए अर्थों का विश्लेषण है। इसके माध्यम से, शोधकर्ता यह समझ सकता है कि व्यापक सामाजिक परिवर्तन व्यक्तिगत जीवन यात्रा को कैसे प्रभावित करते हैं।
व्यक्ति की जुबानी उसके संपूर्ण जीवन की उतार-चढ़ाव भरी यात्रा और सामाजिक अनुभवों का विश्लेषण करना ही इस शोध पद्धति का मूल सार है।

191. (D) उपरोक्त सभी
तथ्य और मूल्य के मध्य के अंतर को कई स्तरों पर समझा जा सकता है। तथ्य वर्णनात्मक और अनुभवजन्य होते हैं, जबकि मूल्य निर्देशात्मक और मानकीय होते हैं। तथ्य वस्तुनिष्ठ होते हैं, जिन्हें साक्ष्यों से परखा जा सकता है, जबकि मूल्य व्यक्तिपरक होते हैं और व्यक्तिगत प्राथमिकताओं पर आधारित होते हैं। तथ्यों की सत्यता को सत्यापित किया जा सकता है, जबकि मूल्य विश्वासों और नैतिक धारणाओं पर आधारित होते हैं। ये समस्त बिंदु वैज्ञानिक अनुसंधान में यथार्थ और व्यक्तिगत निर्णयों के मध्य की सूक्ष्म विभाजन रेखा को परिभाषित करते हैं।
अनुभवजन्य सत्य और व्यक्तिगत मान्यताओं के बीच का यह बुनियादी भेद ही वैज्ञानिक शोध की निष्पक्षता और सटीकता को सुनिश्चित करता है।

192. (C) केवल I और II
समाजमिति पारस्परिक संबंधों को मापने की एक मात्रात्मक विधि है जिसका उपयोग समूह की संरचना को समझने हेतु किया जाता है। यह प्रायः 'समाजआरेख' का उपयोग करता है जो सामाजिक नेटवर्क और आकर्षण के प्रतिरूपों को दृश्य रूप में प्रस्तुत करता है। हालाँकि, यह गहन नृवंशविज्ञानी विवरण का स्वरूप नहीं है, क्योंकि नृवंशविज्ञान गुणात्मक और विवरणात्मक होता है। समाजमिति का मुख्य बल मापन और समूह की गतिशीलता को सांख्यिकीय अथवा दृश्य रूप में प्रस्तुत करने पर होता है। यह समाजशास्त्र का विशिष्ट उपकरण है।
समूह के भीतर आपसी पसंद और सामाजिक जुड़ाव के प्रतिरूपों को वैज्ञानिक रूप से मापना और प्रदर्शित करना ही इस तकनीक की मुख्य सार्थकता है।

193. (B) परिणामों के जनसंख्या के लिए सामान्यीकरण की संभावना कम होती है।
'सुविधाजनक प्रतिदर्श' का उपयोग करने की प्राथमिक समस्या यह है कि इससे प्राप्त परिणामों को संपूर्ण जनसंख्या पर आरोपित करना दुष्कर होता है। चूंकि शोधकर्ता केवल उन व्यक्तियों को चयनित करता है जो सुगमता से उपलब्ध हैं, अतः यह प्रतिदर्श संपूर्ण जनसंख्या का सत्य प्रतिनिधित्व नहीं करता। इसमें यादृच्छिकता का अभाव होता है, जिससे निष्कर्षों में पक्षपात की संभावना संवर्धित होती है। यद्यपि यह विधि त्वरित है, किंतु वैज्ञानिक दृष्टिकोण से इसकी बाह्य वैधता अत्यंत न्यून मानी जाती है।
चयन की सरलता और पहुँच की सुगमता के बदले प्रायः शोध निष्कर्षों की व्यापकता और वैज्ञानिक सटीकता का त्याग करना पड़ता है।

194. (A) विश्वसनीय
जब कोई मापन अथवा शोध उपकरण बार-बार उपयोग करने पर निरंतर समान परिणाम प्रदान करता है, तो उसे विश्वसनीय कहते हैं। विश्वसनीयता परिणामों की स्थिरता और पुनरावृत्ति की क्षमता को प्रदर्शित करती है। यदि कोई परीक्षण आज एक परिणाम देता है और कल उसी परिस्थिति में भिन्न, तो वह अविश्वसनीय माना जाएगा। वैज्ञानिक अनुसंधान में प्रदत्त की सटीकता हेतु विश्वसनीयता एक अनिवार्य शर्त है। हालाँकि विश्वसनीयता का अर्थ यह नहीं कि माप सदैव वैध है, किंतु यह स्थिरता का प्रमाण अवश्य प्रदान करती है।
परिणामों की निरंतरता और मापन में स्थिरता ही किसी भी शोध उपकरण को वैज्ञानिक रूप से भरोसेमंद और उपयोगी आधार प्रदान करती है।

195. (C) जनसंख्या का कितना प्रतिशत किसी विशेष नीति का समर्थन करता है?
मात्रात्मक सर्वेक्षण पद्धति हेतु यह प्रश्न सर्वाधिक उपयुक्त है कि जनसंख्या का कितना प्रतिशत किसी विशिष्ट नीति का समर्थन करता है। इसका कारण यह है कि इस प्रश्न का उत्तर संख्याओं और सांख्यिकीय आँकड़ों के माध्यम से दिया जा सकता है, जिसे वृहद् प्रतिदर्श पर मापना सुगम है। अन्य विकल्प जैसे जीवंत अनुभव अथवा अर्थों की व्याख्या गुणात्मक विधियों हेतु श्रेष्ठ हैं। सर्वेक्षणों का मुख्य कार्य व्यापक सामाजिक रुझानों और जनमत का सांख्यिकीय मापन करना है, जो वैज्ञानिक सामान्यीकरण का आधार है।
व्यापक जनमत का सांख्यिकीय आकलन और संख्यात्मक प्रतिनिधित्व करना ही सर्वेक्षण अनुसंधान का प्राथमिक और सर्वाधिक प्रभावी कार्यक्षेत्र है।

Click Here to Buy book on Amazon

168. (A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
सहभागी अवलोकन में शोधकर्ता या तो प्रत्यक्ष रूप से अपनी पहचान उद्घाटित कर सकता है अथवा गुप्त रूप से समूह में सम्मिलित हो सकता है। गुप्त अवलोकन में व्यक्तियों को ज्ञान नहीं होता कि उनका अध्ययन किया जा रहा है, जिससे वे स्वाभाविक व्यवहार करते हैं। हालाँकि, यह विधि धोखे और सूचित सहमति के अभाव के कारण गंभीर नैतिक चिंताएं उत्पन्न करती है। शोधकर्ता को वैज्ञानिक लाभ और नैतिक सीमाओं के मध्य एक कठिन संतुलन स्थापित करना पड़ता है। ये दोनों स्थितियाँ सामाजिक अनुसंधान की जटिल प्रकृति को दर्शाती हैं।
अनुसंधान की शुद्धता और मानवीय अधिकारों के प्रति संवेदनशीलता के मध्य सामंजस्य स्थापित करना सामाजिक शोधकर्ता का अनिवार्य उत्तरदायित्व है।

169. (C) 30
संख्याओं {10, 20, 30, 40, 50} का माध्य ज्ञात करने हेतु सर्वप्रथम इन समस्त संख्याओं को जोड़ा जाता है, जिनका योग 150 प्राप्त होता है। चूंकि यहाँ कुल पाँच संख्याएँ विद्यमान हैं, अतः इस योग को 5 से विभाजित किया जाता है। 150 को 5 से भाग देने पर परिणाम 30 प्राप्त होता है। इस प्रकार, इस समूह का अंकगणितीय औसत अथवा माध्य 30 है। माध्य प्रदत्त समूह के समग्र स्तर का एक एकल अंक में प्रतिनिधित्व करता है, जो केंद्रीय प्रवृत्ति समझने हेतु अनिवार्य है।
समस्त मानों को समाहित कर एक औसत प्रतिनिधित्व प्रदान करने की अपनी क्षमता के कारण माध्य सांख्यिकीय विश्लेषण का एक मौलिक स्तंभ है।

170. (A) उद्देश्यपूर्ण प्रतिचयन
उद्देश्यपूर्ण प्रतिचयन गैर-संभाव्यता प्रतिचयन का एक प्रकार है जहाँ शोधकर्ता अपने ज्ञान और निर्णय के आधार पर उन इकाइयों का चयन करता है जो उसके शोध हेतु सर्वाधिक उपयुक्त हों। इसमें यादृच्छिकता का अभाव होता है और प्रत्येक सदस्य के चयनित होने की समान संभावना नहीं होती। इसके विपरीत, व्यवस्थित, सरल यादृच्छिक और क्लस्टर प्रतिचयन संभाव्यता प्रतिचयन के रूप हैं जो वैज्ञानिक यादृच्छिकता पर आधारित होते हैं। उद्देश्यपूर्ण प्रतिचयन का उपयोग तब होता है जब विशिष्ट विशेषताओं वाले प्रतिदर्शों की गहन जाँच अभीष्ट हो।
शोधकर्ता के विवेक और विशिष्ट लक्ष्यों के आधार पर प्रतिदर्शों का चयन करना इस पद्धति को वैज्ञानिक यादृच्छिकता से पृथक बनाता है।

171. (D) अनुप्रयुक्त अनुसंधान
एक शोध परियोजना जिसका प्राथमिक उद्देश्य किसी विशिष्ट परिवेश में तात्कालिक और व्यावहारिक सामाजिक समस्या का समाधान करना है, उसे अनुप्रयुक्त अनुसंधान कहते हैं। यह ज्ञान का उपयोग वास्तविक जगत की चुनौतियों का समाधान खोजने और नीतिगत निर्णय लेने हेतु करता है। बुनियादी अनुसंधान के विपरीत, जो केवल सिद्धांत निर्माण पर केंद्रित होता है, अनुप्रयुक्त अनुसंधान व्यावहारिक उपयोगिता और सामाजिक सुधार को प्राथमिकता प्रदान करता है। यह शिक्षा, स्वास्थ्य और प्रशासन जैसे क्षेत्रों में सुधार हेतु एक अत्यंत प्रभावी दृष्टिकोण है।
ज्ञान के व्यावहारिक प्रयोग के माध्यम से सामाजिक समस्याओं का सटीक समाधान खोजना ही इस शोध प्रकार की मुख्य सार्थकता और उद्देश्य है।

172. (B) प्रयोगात्मक
'नियंत्रण समूह' का उपयोग प्रयोगात्मक अनुसंधान प्रारूप की एक मुख्य विशेषता है। इस प्रारूप में, शोधकर्ता प्रतिभागियों को दो समूहों में विभक्त करता है: एक प्रयोगात्मक समूह जिसे उपचार दिया जाता है, और एक नियंत्रण समूह जिसे कोई उपचार नहीं दिया जाता। नियंत्रण समूह एक आधार रेखा के रूप में कार्य करता है जिसके साथ प्रयोगात्मक समूह के परिणामों की तुलना की जाती है। यह विधि शोधकर्ता को यह निर्धारित करने में सहायता करती है कि क्या स्वतंत्र चर का वास्तव में आश्रित चर पर कोई प्रभाव पड़ा है।
तुलनात्मक विश्लेषण और चरों के हेरफेर के माध्यम से कार्य-कारण संबंधों की सटीक जाँच करना ही प्रयोगात्मक शोध का मूल आधार है।

173. (C) रिकॉर्ड किया गया संचार स्वयं
विषय-वस्तु विश्लेषण में विश्लेषण की मूलभूत इकाई वह अभिलिखित संचार स्वयं होता है जिसका अध्ययन किया जा रहा है। यह कोई शब्द, वाक्य, अनुच्छेद, समाचार लेख, चलचित्र का दृश्य अथवा संपूर्ण भाषण हो सकता है। शोधकर्ता संचार के इन अंशों को वर्गीकृत और कूटबद्ध करता है ताकि उनमें विद्यमान प्रतिरूपों और अर्थों को समझा जा सके। इसमें व्यक्ति के स्थान पर संदेश की सामग्री और उसके स्वरूप पर ध्यान केंद्रित किया जाता है। यह संचार के माध्यम से सामाजिक वास्तविकताओं को समझने का व्यवस्थित मार्ग है।
संदेशों के अंतर्निहित ढांचे और उनकी सामग्री का वैज्ञानिक वर्गीकरण करना ही इस विश्लेषण तकनीक की प्राथमिक और मुख्य भूमिका है।

174. (B) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या है नहीं।
वैयक्तिक अध्ययन वास्तव में उच्च स्तर की गहनता और विवरण प्रदान करते हैं, जो उनके मुख्य गुणों में से एक है। साथ ही, यह भी सत्य है कि वे अपनी व्यापक सामान्यीकरण क्षमता में सीमित होते हैं क्योंकि वे केवल एक ही मामले पर केंद्रित होते हैं। हालाँकि, सामान्यीकरण का अभाव गहराई प्रदान करने का कारण नहीं है, अपितु यह इस शोध विधि की एक अंतर्निहित सीमा है। गहराई इसकी सबलता है और अल्प सामान्यीकरण इसकी सीमा; ये दोनों तथ्य सही हैं किंतु एक-दूसरे की व्याख्या नहीं करते।
सूक्ष्म विवरणों की प्रचुरता और निष्कर्षों के सीमित विस्तार के बीच का यह संतुलन वैयक्तिक अध्ययन की विशिष्ट प्रकृति को परिभाषित करता है।

NODIA

है और स्वयं प्रतिभागियों को यादृच्छिक रूप से आवंटित नहीं कर सकता। यह प्रायः तब प्रयुक्त होता है जब वास्तविक प्रयोग करना नैतिक अथवा व्यावहारिक रूप से कठिन हो। यद्यपि इसमें वास्तविक प्रयोग की तुलना में कार्य-कारण संबंध स्थापित करने की क्षमता अल्प होती है, फिर भी यह सामाजिक हस्तक्षेपों के प्रभाव का आकलन करने हेतु अत्यंत उपयोगी विधि है।
वास्तविक परिस्थितियों की सीमाओं के भीतर रहकर तुलनात्मक अध्ययन और प्रभाव का आकलन करना ही इस अनुसंधान प्रारूप की मुख्य उपयोगिता है।

204. (B) फ्रांसीसी क्रांति का एक प्रत्यक्षदर्शी विवरण।
ऐतिहासिक शोध में प्राथमिक स्रोत वे प्रलेख अथवा सामग्रियाँ होती हैं जो उस कालखंड की प्रत्यक्षदर्शी होती हैं जिसका अध्ययन किया जा रहा है। फ्रांसीसी क्रांति का एक प्रत्यक्षदर्शी विवरण एक प्राथमिक स्रोत है क्योंकि यह सीधे घटना से संबद्ध है। इसके विपरीत, पश्चातवर्ती पाठ्यपुस्तकें, जीवनियाँ अथवा वृत्तचित्र द्वितीयक स्रोत कहलाते हैं क्योंकि वे प्राथमिक स्रोतों की व्याख्या करते हैं। प्राथमिक स्रोत शोध को मौलिकता और ऐतिहासिक प्रामाणिकता प्रदान करते हैं। इतिहासकारों हेतु इनका विश्लेषण अनिवार्य है।
घटना के समय के साक्ष्यों और प्रत्यक्ष अनुभवों के माध्यम से अतीत को समझना ही ऐतिहासिक अनुसंधान की प्रामाणिकता का मुख्य आधार है।

205. (A) III, II, I, IV
सामाजिक अनुसंधान में सर्वाधिक अमूर्त से सर्वाधिक विशिष्ट तक का क्रम सिद्धांत से प्रारंभ होता है, जो एक व्यापक व्याख्या प्रदान करता है। इसके पश्चात अवधारणाएँ आती हैं जो सिद्धांत के निर्माण घटक हैं। संक्रियात्मककरण इन अवधारणाओं को मापने योग्य चरों में परिवर्तित करता है। अंत में, अवलोकन वह विशिष्ट क्रिया है जहाँ प्रदत्त वास्तविक जगत से संकलित किए जाते हैं। यह अनुक्रम वैचारिक चिंतन को व्यावहारिक जाँच में परिवर्तित करने की प्रक्रिया को प्रदर्शित करता है। यह शोध को वैज्ञानिक रूप से सुसंगत बनाता है।
विचारों के व्यापक फलक से लेकर धरातल पर साक्ष्यों के संग्रहण तक का यह सफर ही वैज्ञानिक अन्वेषण की रीढ़ और उसकी आत्मा है।

206. (D) सितारा
समाजमिति में, वह व्यक्ति जिसे समूह के अनेक व्यक्ति चयनित करते हैं, किंतु जो स्वयं बहुत अल्प व्यक्तियों को चुनता है, उसे 'सितारा' कहा जाता है। यह व्यक्ति समूह के भीतर आकर्षण का केंद्र और अत्यंत प्रभावशाली होता है। समाजआरेख में, इस व्यक्ति की ओर सर्वाधिक तीर निर्देशित होते हैं, जो उसकी लोकप्रियता और केंद्रीय सामाजिक स्थिति को प्रदर्शित करते हैं। सितारों की पहचान करना समूह की गतिशीलता, नेतृत्व प्रतिरूपों और सामाजिक प्रभाव की संरचना को समझने हेतु अत्यंत महत्वपूर्ण है।
समूह के भीतर लोकप्रियता और प्रभाव के केंद्र बिंदु को वैज्ञानिक रूप से पहचानना ही इस समाजमितीय तकनीक का मुख्य उद्देश्य और शक्ति है।

207. (A) आप वर्तमान राजनीतिक वातावरण के बारे में अपनी भावनाओं का वर्णन कैसे करेंगे?
एक 'खुला' प्रश्न वह होता है जो उत्तरदाता को अपनी प्रतिक्रिया विस्तार से और अपने शब्दों में प्रदान करने की अनुमति देता है। यह पूर्व-निर्धारित विकल्पों तक प्रतिबंधित नहीं होता। अन्य विकल्प जैसे आयु, लिंग अथवा निश्चित पैमाना बंद प्रश्नों के उदाहरण हैं क्योंकि उनमें उत्तर सीमित होते हैं। खुले प्रश्न गुणात्मक शोध हेतु अत्यंत मूल्यवान हैं क्योंकि वे मानवीय अनुभवों की गहराई और जटिलता को उजागर करते हैं। इनसे शोधकर्ता को नवीन और अप्रत्याशित अंतर्दृष्टि प्राप्त करने में सहायता मिलती है।
उत्तरदाताओं को स्वतंत्र रूप से अपने विचार व्यक्त करने का अवसर देकर सूचनाओं की गहराई और विविधता प्राप्त करना ही खुले प्रश्नों का मूल है।

208. (B) यह समझना कि विषय के बारे में पहले से क्या ज्ञात है।
साहित्य समीक्षा का मुख्य उद्देश्य यह समझना है कि अध्ययन किए जा रहे विषय के विषय में पूर्व में कौन से शोध, सिद्धांत और निष्कर्ष उपलब्ध हैं। यह शोधकर्ता को अपने अध्ययन को वर्तमान ज्ञान के संदर्भ में स्थापित करने और 'ज्ञान के अंतराल' की पहचान करने में सहायता करता है। इसके माध्यम से शोधकर्ता विगत त्रुटियों की पुनरावृत्ति से बच सकता है और अपनी शोध समस्या को अधिक सटीकता से परिभाषित कर सकता है। साहित्य समीक्षा एक सुदृढ़ सैद्धांतिक आधार प्रदान करती है।
वर्तमान ज्ञान की सीमाओं को समझकर अपने शोध के लिए एक ठोस और प्रासंगिक आधार तैयार करना ही साहित्य समीक्षा की मुख्य सार्थकता है।

209. (A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
बाह्य अथवा चरम मानों की उपस्थिति में माध्यिका वास्तव में माध्य की तुलना में अधिक दृढ़ और विश्वसनीय माप होती है। इसका कारण यह है कि माध्यिका की गणना अंकों के श्रेणी-क्रम अथवा उनकी स्थिति के आधार पर की जाती है, न कि उनके योग पर। अतः वितरण के छोरों पर स्थित अत्यंत विशाल अथवा अत्यंत लघु अंक माध्यिका को प्रभावित नहीं कर पाते। माध्य चरम अंकों की ओर विस्थापित हो जाता है, जबकि माध्यिका केंद्र में स्थिर रहती है। अतः विषम वितरणों हेतु माध्यिका श्रेष्ठ है।
चरम अंकों के प्रभाव से मुक्त रहकर प्रदत्त के वास्तविक मध्य को दर्शाने की क्षमता ही माध्यिका को एक सटीक और सबल माप बनाती है।

210. (A) इसे प्रक्रिया के एक अपरिहार्य हिस्से के रूप में स्वीकार किया जाता है।
गुणात्मक शोध में व्यक्तिपरकता को एक बाधा के स्थान पर शोध प्रक्रिया के एक अपरिहार्य और स्वाभाविक अंग के रूप में स्वीकार किया जाता है। चूंकि यह शोध मानवीय अर्थों और

Downloaded from www.pdf.tube

व्याख्याओं पर केंद्रित है, अतः शोधकर्ता की अपनी अंतर्दृष्टि और संवेदनशीलता प्रदत्त को समझने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। हालाँकि शोधकर्ता को अपने पूर्वाग्रहों के प्रति सचेत रहकर पारदर्शिता बनाए रखनी चाहिए। व्यक्तिपरकता को स्वीकार करने से शोध में वह गहराई और मानवीय स्पर्श आता है जो केवल वस्तुनिष्ठ मापन से संभव नहीं।
शोधकर्ता की दृष्टि और प्रतिभागियों के अनुभवों के बीच के इस संगम को ही गुणात्मक शोध की असली शक्ति और उसकी गहराई माना जाता है।

211. (C) यह एक व्यक्ति के सामाजिक संदर्भ में उसका समग्र दृष्टिकोण प्रदान करता है।
'जीवन इतिहास' की प्रमुख विशेषता यह है कि यह किसी व्यक्ति के संपूर्ण जीवन को उसके सामाजिक और ऐतिहासिक संदर्भ में देखने का समग्र दृष्टिकोण प्रदान करता है। यह केवल व्यक्तिगत घटनाओं का संकलन नहीं है, अपितु यह प्रदर्शित करता है कि समाज की वृहद् संरचनाएं एक व्यक्ति की पहचान और निर्णयों को किस प्रकार प्रभावित करती हैं। इस विधि के माध्यम से सूक्ष्म और वृहद् स्तरों के मध्य के संबंधों को गहराई से समझा जा सकता है। यह मानवीय अनुभवों का बहुआयामी चित्रण करता है।
व्यक्ति की जीवन यात्रा के माध्यम से सामाजिक वास्तविकताओं का गहन और समग्र विश्लेषण करना ही इस शोध पद्धति की मुख्य पहचान है।

212. (D) एक सही शून्य परिकल्पना को गलत तरीके से खारिज करता है।
परिकल्पना परीक्षण में टाइप I त्रुटि तब होती है जब शोधकर्ता एक ऐसी शून्य परिकल्पना को त्रुटिपूर्ण ढंग से अस्वीकृत कर देता है जो वास्तव में सत्य थी। इसे 'मिथ्या सकारात्मक' परिणाम भी कहते हैं। इसका अर्थ है कि शोधकर्ता ने भ्रमवश यह मान लिया कि चरों के मध्य कोई संबंध है, जबकि वास्तव में ऐसा नहीं था। इस प्रकार की त्रुटि को न्यूनतम करना वैज्ञानिक शोध की शुद्धता हेतु अनिवार्य है। सांख्यिकी में सार्थकता स्तर का चयन प्रायः इसी त्रुटि की संभावना को नियंत्रित करने हेतु किया जाता।
वैज्ञानिक जाँच में त्रुटिपूर्ण निष्कर्षों के प्रवेश को रोकने के लिए टाइप I त्रुटि के जोखिम को न्यूनतम करना एक अनिवार्य और महत्वपूर्ण चुनौती है।

213. (C) बाहरी वैधता
शोध में बाह्य वैधता इस विषय से संबद्ध है कि क्या किसी अध्ययन के निष्कर्षों को उस विशिष्ट प्रतिदर्श और परिवेश से परे वृहद् जनसंख्या अथवा अन्य परिस्थितियों पर आरोपित किया जा सकता है। यह सामान्यीकरण की क्षमता को मापती है। यदि कोई अध्ययन केवल प्रयोगशाला की कृत्रिम परिस्थितियों में सत्य सिद्ध होता है और वास्तविक जगत में विफल रहता है, तो उसमें बाह्य वैधता का अभाव है। उच्च बाह्य वैधता सुनिश्चित करने हेतु प्रतिनिधि प्रतिचयन और वास्तविक सामाजिक संदर्भों में अध्ययन करना अनिवार्य है।
अनुसंधान के परिणामों को व्यापक संदर्भों में सार्थक, उपयोगी और दोहराने योग्य बनाना ही बाहरी वैधता का प्राथमिक और सर्वोपरि लक्ष्य है।

214. (B) यह सिद्धांत, परिकल्पना और अवलोकन की एक चक्रीय प्रक्रिया है।
वैज्ञानिक पद्धति के विषय में सर्वाधिक सटीक कथन यह है कि यह सिद्धांत, परिकल्पना और अवलोकन की एक निरंतर चक्रीय प्रक्रिया है। यह सिद्धांतों से प्रारंभ हो सकती है जिससे परिकल्पनाएँ व्युत्पन्न होती हैं, जिन्हें अवलोकनों के माध्यम से परखा जाता है। अवलोकनों से प्राप्त नवीन प्रदत्त पुनः सिद्धांतों में परिष्करण अथवा नवीन सिद्धांतों के निर्माण का आधार बनते हैं। यह चक्र ज्ञान के निरंतर विकास और शुद्धता को सुनिश्चित करता है। यह साक्ष्यों के आधार पर सुधार की संभावना को सदैव खुला रखता है।
सिद्धांतों के निर्माण और उनके अनुभवजन्य परीक्षण के बीच का यह निरंतर द्वंद्व ही विज्ञान को प्रगतिशील और विश्वसनीय आधार प्रदान करता है।

215. (B) P-2, Q-1
मात्रात्मक कार्यप्रणाली मुख्य रूप से मापन, सांख्यिकी और संख्यात्मक विश्लेषण पर केंद्रित होती है जिसका लक्ष्य वस्तुनिष्ठता और सामान्यीकरण प्राप्त करना है। इसके विपरीत, गुणात्मक कार्यप्रणाली 'वर्स्टेहेन' (सहानुभूतिपूर्ण समझ), सघन विवरण और मानवीय अर्थों की खोज से संबद्ध है। इन दोनों दृष्टिकोणों का सही सुमेल सामाजिक अनुसंधान के दो प्रमुख स्तंभों को स्पष्ट करता है। जहाँ मात्रात्मक शोध व्यापक प्रवृत्तियों को मापता है, वहीं गुणात्मक शोध सामाजिक घटनाओं की गहराई और उनके सूक्ष्म संदर्भों को समझने का प्रयास करता है। मापन की शुद्धता और अर्थों की गहराई के बीच का यह वैचारिक संतुलन ही सामाजिक दुनिया के अध्ययन को पूर्णता और वैज्ञानिक आधार देता है।

216. (A) नियंत्रण समूह
एक शोध में वह समूह जिसे केवल एक शर्करा की वर्तिका (प्लेसबो) दी जाती है और मुख्य उपचार प्रदान नहीं किया जाता, नियंत्रण समूह कहलाता है। इसका मुख्य उद्देश्य प्रयोगात्मक समूह के परिणामों के साथ तुलना हेतु एक आधार रेखा प्रदान करना है। नियंत्रण समूह यह सुनिश्चित करने में सहायता करता है कि प्रेक्षित परिवर्तन वास्तव में उपचार के कारण हैं, न कि किसी अन्य बाह्य कारक अथवा केवल मनोवैज्ञानिक प्रभाव के कारण। प्रयोगात्मक अनुसंधान की शुद्धता बनाए रखने हेतु यह समूह अनिवार्य अंग है।
हस्तक्षेप के वास्तविक प्रभाव को अन्य कारकों से अलग करके सटीक रूप से मापने के लिए नियंत्रण समूह एक आवश्यक वैज्ञानिक मानक है।

217. (C) उत्तरदाता को उत्तर विस्तार से बताने के लिए प्रोत्साहित करना।
साक्षात्कार के दौरान 'अनुवर्ती प्रश्नों' का मुख्य उद्देश्य उत्तरदाता को अपने विचारों और अनुभवों को अधिक विस्तार से और स्पष्ट रूप से साझा करने हेतु प्रोत्साहित करना है। ये प्रश्न तब पूछे

NODIA

जाते हैं जब उत्तरदाता का प्रारंभिक उत्तर संक्षिप्त अथवा अस्पष्ट होता है। यह तकनीक शोधकर्ता को सतही सूचना से परे जाकर मानवीय भावनाओं और दृष्टिकोणों की सूक्ष्मता तक पहुँचने में सहायता करती है। अनुवर्ती प्रश्न प्रदत्त की गुणवत्ता को बढ़ाते हैं और सामाजिक अनुसंधान में मानवीय पक्ष की समृद्ध समझ सुनिश्चित करते।
चर्चा को गहराई प्रदान करने और सूचनाओं की बारीकियों को पकड़ने के लिए अनुवर्ती प्रश्न साक्षात्कारकर्ता का एक अत्यंत रचनात्मक और प्रभावी उपकरण है।

218. (A) नृवंशविज्ञान - सार्थकता का माप
यह युग्म त्रुटिपूर्ण सुमेलित है क्योंकि सार्थकता का माप सांख्यिकीय और मात्रात्मक विश्लेषण का अंग है, जबकि नृवंशविज्ञान एक गुणात्मक शोध विधि है जो सघन विवरणों पर केंद्रित होती है। अन्य युग्म सत्य हैं: माध्य केंद्रीय प्रवृत्ति को मापता है, मानक विचलन परिक्षेपण अथवा फैलाव को प्रदर्शित करता है, और सहसंबंध दो चरों के मध्य जुड़ाव की मात्रा को स्पष्ट करता है। वैज्ञानिक शोध में विधियों और उनके विशिष्ट मापों के मध्य सही संबंध की समझ प्रदत्त की सटीक व्याख्या हेतु अत्यंत आवश्यक है।
अनुसंधान की कार्यप्रणाली और उसके विश्लेषण के उपकरणों के बीच स्पष्ट भेद ही वैज्ञानिक अन्वेषण को तार्किक दृढ़ता और प्रमाणिकता प्रदान करता है।

219. (D) सामाजिक परिवेश में दीर्घकालिक विसर्जन।
नृवंशविज्ञानी अनुसंधान की सर्वाधिक परिभाषित विशेषता शोधकर्ता का सामाजिक परिवेश में दीर्घकालिक विसर्जन है। इसमें शोधकर्ता अध्ययन किए जा रहे समुदाय के साथ कई मासों अथवा वर्षों तक रहता है, उनके दैनिक जीवन का अंग बनता है और उनकी भाषा एवं प्रथाओं का अधिगम करता है। यह गहन जुड़ाव उसे समूह के विश्वासों और व्यवहारों के अंतर्निहित वास्तविक अर्थों को समझने की अनुमति प्रदान करता है। नृवंशविज्ञान केवल बाह्य अवलोकन नहीं, अपितु एक संस्कृति को उसके संपूर्ण स्वरूप में 'भीतर' से जीने की प्रक्रिया है।
समूह के साथ एकाकार होकर उनके जीवन के अनुभवों को साझा करना ही इस शोध तकनीक की गहराई और उसकी प्रामाणिकता का मुख्य स्रोत है।

220. (B) एक शोध समस्या या प्रश्न तैयार करना।
किसी भी सामाजिक शोध परियोजना का प्रथम और अनिवार्य चरण एक स्पष्ट शोध समस्या अथवा प्रश्न निर्मित करना है। जब तक शोधकर्ता को यह ज्ञात नहीं होता कि वह क्या अन्वेषण कर रहा है, तब तक प्रदत्त संग्रह अथवा विश्लेषण की कोई भी प्रक्रिया प्रारंभ नहीं की जा सकती। शोध समस्या ही संपूर्ण अध्ययन के उद्देश्यों, कार्यप्रणाली और निष्कर्षों की दिशा को निर्धारित करती है। यह जिज्ञासा को व्यवस्थित और वैज्ञानिक जाँच के ढाँचे में ढालने का कार्य करती है। एक सुपरिभाषित समस्या ही सफल शोध का आधार है।
जिज्ञासा को वैज्ञानिक लक्ष्य में बदलना और अनुसंधान के लिए एक निश्चित मार्ग प्रशस्त करना ही इस प्रारंभिक चरण की मुख्य सार्थकता है।

221. (D) I, II और III सभी
ये तीनों कथन परिकल्पना परीक्षण की प्रक्रिया को सत्य ढंग से प्रदर्शित करते हैं। एक शून्य परिकल्पना यह स्वीकार करती है कि चरों के मध्य कोई संबंध नहीं है, जबकि वैकल्पिक परिकल्पना इसके विपरीत संबंध का दावा करती है। वैज्ञानिक शोध का मुख्य लक्ष्य प्रायः अनुभवजन्य प्रदत्त के माध्यम से शून्य परिकल्पना को खंडित करने का प्रयत्न करना होता है। यदि साक्ष्य शून्य परिकल्पना को नकारते हैं, तो वैकल्पिक परिकल्पना को समर्थन प्राप्त होता है। यह प्रक्रिया अनुसंधान को तार्किक और वस्तुनिष्ठ ढाँचा प्रदान करती है।
चरों के मध्य संबंधों की वैज्ञानिक जाँच और परिकल्पनाओं का द्वंद्वात्मक परीक्षण ही अनुसंधान की विश्वसनीयता और शुद्धता का आधार है।

222. (D) प्रतिक्रियाशीलता या साक्षात्कारकर्ता प्रभाव।
जब कोई उत्तरदाता ईमानदारी के स्थान पर वे उत्तर प्रदान करता है जो उसे प्रतीत होता है कि शोधकर्ता सुनना चाहता है, तो इसे प्रतिक्रियाशीलता अथवा साक्षात्कारकर्ता प्रभाव कहते हैं। यह प्रायः सामाजिक वांछनीयता अथवा शोधकर्ता को संतुष्ट करने की मानवीय प्रवृत्ति के कारण होता है। यह स्थिति प्रदत्त की यथार्थता और शोध की वैधता को गंभीर रूप से प्रभावित कर सकती है। शोधकर्ताओं को इस प्रभाव को न्यून करने हेतु तटस्थ रहने और एक भरोसेमंद वातावरण निर्मित करने का प्रयास करना चाहिए ताकि उत्तरदाता सहज हों।
उत्तरदाता और शोधकर्ता के बीच की अंतःक्रिया में छिपे इस सूक्ष्म पक्षपात को पहचानना और नियंत्रित करना वैज्ञानिक शोध की एक बड़ी चुनौती है।

223. (A) 13
प्रदत्त समूह {12, 5, 22, 30, 7, 14} की माध्यिका ज्ञात करने हेतु सर्वप्रथम इन्हें आरोही क्रम में व्यवस्थित किया जाता है: {5, 7, 12, 14, 22, 30}। चूंकि यहाँ कुल छह संख्याएँ हैं, अतः मध्य के दो अंकों, 12 और 14, का औसत निकाला जाएगा। (12 + 14) / 2 करने पर परिणाम 13 प्राप्त होता है। इस प्रकार, इस वितरण की माध्यिका 13 है। माध्यिका प्रदत्त के संतुलित मध्य बिंदु को प्रदर्शित करती है, जो चरम अंकों के प्रभाव से मुक्त रहने के कारण अत्यंत उपयोगी माप है।
वितरण के सटीक मध्य को पहचानकर प्रदत्त के केंद्रीय रुझान को समझना माध्यिका के माध्यम से अत्यंत सरल, प्रभावी और वैज्ञानिक है।

224. (D) कथन I गलत है, लेकिन कथन II सही है।
सामाजिक विज्ञान में वस्तुनिष्ठता का अर्थ पूर्णतः मूल्य-मुक्त होना नहीं है, क्योंकि शोधकर्ता के व्यक्तिगत मूल्य अनिवार्य रूप से उसके कार्य को प्रभावित करते हैं। अतः कथन I त्रुटिपूर्ण है। हालाँकि, कथन II सत्य है क्योंकि शोधकर्ता के मूल्य और सामाजिक सरोकार ही प्रायः अध्ययन के विषय के चयन को अभिप्रेरित करते हैं। वस्तुनिष्ठता का वास्तविक अर्थ अनुसंधान

Click Here to Buy book on Amazon

इनका लक्ष्य सांख्यिकीय सामान्यीकरण प्राप्त करना नहीं होता, क्योंकि वे लघु प्रतिदर्शों पर गहराई से ध्यान केंद्रित करती हैं। गुणात्मक शोध मानवीय अर्थों और अनुभवों की समृद्ध तस्वीर प्रस्तुत करने में सक्षम है, जो इसे विशिष्ट बनाता है।
सूक्ष्म विवरणों की प्रचुरता और अर्थों की गहराई को सघन विवरणों के माध्यम से प्रस्तुत करना ही इन शोध विधियों की वास्तविक शक्ति और सार्थकता है।

282. (A) कंप्यूटर-सहायता प्राप्त गुणात्मक डेटा विश्लेषण।
एनविवो (NVivo) यंत्रांश का उपयोग संगणक-सहायता प्राप्त गुणात्मक प्रदत्त विश्लेषण का एक प्रमुख उदाहरण है। यह यंत्रांश शोधकर्ताओं को साक्षात्कारों, क्षेत्र टिप्पणियों और अन्य गुणात्मक प्रदत्त के विशाल समूह को व्यवस्थित करने और कूटलेखन करने में सहायता करता है। यह प्रदत्त के भीतर प्रतिरूपों, विषयों और संबंधों की पहचान को सुलभ बनाता है। यद्यपि यह सांख्यिकीय यंत्रांश नहीं है, किंतु यह गुणात्मक शोध की प्रक्रिया को सुव्यवस्थित और कुशल बनाता है। यह शोधकर्ता की व्याख्यात्मक क्षमता को तकनीकी शुद्धता के साथ जोड़ता है।
विस्तृत सूचनाओं के सुव्यवस्थित प्रबंधन और विश्लेषण की प्रक्रिया को सरल बनाकर ये तकनीकी उपकरण शोध की गुणवत्ता और गहराई को अभूतपूर्व विस्तार देते हैं।

283. (D) साक्षात्कार संवादात्मक और मौखिक होते हैं जबकि प्रश्नावली लिखित होती है।
साक्षात्कार और प्रश्नावली के मध्य आधारभूत अंतर उनके माध्यम और अंतःक्रिया की प्रकृति में निहित है। साक्षात्कार एक संवादात्मक और मौखिक प्रक्रिया है जहाँ शोधकर्ता और उत्तरदाता के मध्य प्रत्यक्ष संवाद होता है। यह लचीलापन और तात्कालिक स्पष्टीकरण की अनुमति प्रदान करता है। इसके विपरीत, प्रश्नावली एक लिखित साधन है जिसे उत्तरदाता स्वयं पढ़ता है और पूर्ण करता है। प्रश्नावली में व्यक्तिगत संपर्क का अभाव होता है, किंतु यह अल्प समय में वृहद् जनसंख्या से प्रदत्त संकलित करने हेतु अधिक दक्ष है।
सूचनाओं के संग्रहण में मानवीय संवाद की भूमिका और उसके स्वरूप का यह अंतर ही इन दोनों शोध तकनीकों को अपनी विशिष्ट पहचान और उपयोगिता देता है।

284. (B) मूल्य
शोधकर्ता का यह विश्वास कि निर्धनता उन्मूलन हेतु उसका अध्ययन किया जाना चाहिए, एक 'मूल्य' का परिचायक है। यह नैतिक प्रतिबद्धता और वांछनीयता के विषय में एक व्यक्तिगत विचार को प्रदर्शित करता है। मूल्य शोधकर्ता के सामाजिक सरोकारों और उसके शोध के उद्देश्यों को दिशा प्रदान करते हैं। यद्यपि अनुसंधान की प्रक्रिया वस्तुनिष्ठ होनी चाहिए, किंतु शोध विषय का चयन और उसके पीछे की प्रेरणा प्रायः शोधकर्ता के मानवीय और सामाजिक मूल्यों से ही उद्भूत होती है। यह स्वीकार करना कि मूल्य शोध का अंग हैं, वैज्ञानिक ईमानदारी है।

NODIA

व्यक्तिगत मान्यताओं और सामाजिक आदर्शों का शोध की दिशा तय करने में महत्वपूर्ण प्रभाव होता है, जो अनुसंधान के मानवीय पक्ष को स्पष्ट रूप से उजागर करता है।

285. (C) तीव्रता और गहराई।
वैयक्तिक अध्ययन की सर्वाधिक प्रमुख और अद्वितीय विशेषता इसकी तीव्रता और सूक्ष्म गहराई है। यह शोध विधि किसी एक इकाई का उसके संपूर्ण सामाजिक संदर्भ में अत्यंत सूक्ष्म और विस्तृत विश्लेषण करती है। इसका मुख्य उद्देश्य विषय के आंतरिक ढांचे और उसमें समाहित जटिल प्रक्रियाओं को उनकी समग्रता में उद्घाटित करना है। यह दृष्टिकोण शोधकर्ता को उन बारीकियों तक पहुँचने में सहायता करता है जो वृहद् स्तर के सर्वेक्षणों में प्रायः उपेक्षित रह जाती हैं। यह विधि जटिल मानवीय व्यवहारों को सुलझाने के लिए सशक्त गुणात्मक उपकरण है।
किसी विशिष्ट इकाई के बहुआयामी पक्षों और उनकी गहराई का सूक्ष्म विश्लेषण करना ही इस गुणात्मक शोध पद्धति का मुख्य उद्देश्य और उसकी सार्थकता है।

286. (A) इसे एक प्रशिक्षित साक्षात्कारकर्ता द्वारा संचालित किया जाता है जो उत्तरों को रिकॉर्ड करता है।
अनुसूची की एक प्राथमिक और अनिवार्य विशेषता यह है कि इसे एक प्रशिक्षित साक्षात्कारकर्ता अथवा प्रगणक द्वारा व्यक्तिगत रूप से संचालित किया जाता है। वह उत्तरदाता से प्रत्यक्ष प्रश्न पूछता है और उनके द्वारा प्रदत्त उत्तरों को स्वयं अंकित करता है। यह प्रक्रिया सूचनाओं की पूर्णता और स्पष्टता सुनिश्चित करने में सहायता करती है, क्योंकि शोधकर्ता कठिन प्रश्नों की व्याख्या कर सकता है। प्रश्नावली के विपरीत, अनुसूची निरक्षर अथवा अल्प जानकार उत्तरदाताओं से सटीक प्रदत्त संकलित करने हेतु एक अत्यंत विश्वसनीय वैज्ञानिक विधि मानी जाती।
शोधकर्ता और उत्तरदाता के बीच प्रत्यक्ष संवाद के माध्यम से प्रदत्त की प्रमाणिकता और गहराई सुनिश्चित करना ही अनुसूची की मुख्य विशेषता और शक्ति है।

287. (A) शोध प्रश्नों और निष्पादन के बीच एक सेतु।
एक अनुसंधान प्रारूप शोध प्रश्नों और अनुसंधान के वास्तविक क्रियान्वयन के बीच एक सेतु अथवा सुदृढ़ कड़ी के रूप में कार्य करता है। यह वह तार्किक योजना है जो निर्धारित करती है कि अध्ययन के उद्देश्यों की प्राप्ति हेतु प्रदत्त का संकलन और विश्लेषण किस प्रकार संपन्न होगा। एक सुदृढ़ प्रारूप यह सुनिश्चित करता है कि शोध प्रक्रिया व्यवस्थित, दक्ष और वैज्ञानिक रूप से सुसंगत हो। यह शोधकर्ता को संसाधनों के समुचित उपयोग और संभावित त्रुटियों को न्यून करने में मार्गदर्शन प्रदान करता है। बिना प्रारूप के शोध अविश्वसनीय हो सकता है।
अनुसंधान के व्यावहारिक निष्पादन के लिए एक स्पष्ट और वैज्ञानिक मार्गचित्र प्रदान करना ही इस भाग की मुख्य भूमिका और उसकी सार्थकता को स्पष्ट करता है।

288. (B) यह प्रत्येक अंक को ध्यान में रखता है।
मानक विचलन परास (Range) की तुलना में अधिक दृढ़ और विश्वसनीय माप माना जाता है क्योंकि यह प्रदत्त समूह के प्रत्येक अंक को अपनी गणना में सम्मिलित करता है। परास

मानवीय मूल्यों की रक्षा और प्रतिभागियों के कल्याण को प्राथमिकता देना ही किसी भी शोध कार्य की सफलता और उसकी नैतिक प्रमाणिकता का सार है।

232. (A) बिना किसी प्रश्न के विश्वास
वैज्ञानिक पद्धति अनुभववाद, वस्तुनिष्ठता और एक व्यवस्थित प्रक्रिया पर आधारित होती है, जिसमें प्रत्येक दावे को साक्ष्यों की कसौटी पर परखा जाता है। 'बिना किसी प्रश्न के विश्वास' वैज्ञानिक दृष्टिकोण के पूर्णतः विपरीत है, क्योंकि विज्ञान संदेह और निरंतर जाँच को प्रोत्साहित करता है। वैज्ञानिक पद्धति में किसी भी सूचना को तब तक सत्य नहीं माना जाता जब तक उसे अनुभवजन्य रुप से सत्यापित न किया जा सके। यह पद्धति तथ्यों की तर्कसंगत व्याख्या और प्रमाणों की माँग करती है, जो इसे अंधविश्वास से पृथक बनाती है।
साक्ष्यों की तर्कसंगत जाँच और निरंतर संदेह ही वैज्ञानिक अन्वेषण की वह प्रेरक शक्ति है जो ज्ञान को शुद्धता और विश्वसनीयता प्रदान करती है।

233. (C) सहसंबंध विश्लेषण
सहसंबंध विश्लेषण एक मात्रात्मक शोध विधि है जिसका उपयोग दो या दो से अधिक चरों के मध्य सांख्यिकीय संबंधों की सबलता और दिशा को मापने हेतु किया जाता है। इसके विपरीत, नृवंशविज्ञान, मौखिक इतिहास और वैयक्तिक अध्ययन गुणात्मक विधियाँ हैं जो अर्थों की गहराई और मानवीय अनुभवों के विवरण पर केंद्रित होती हैं। सहसंबंध विश्लेषण संख्यात्मक प्रदत्त और गणितीय गणनाओं पर निर्भर करता है, जबकि गुणात्मक विधियाँ शब्दों और व्याख्याओं को प्राथमिकता देती हैं। अतः सहसंबंध विश्लेषण इस सूची में अन्य विकल्पों से भिन्न है।
चरों के आपसी जुड़ाव को सांख्यिकीय रुप में मापने की क्षमता ही इस विधि को गुणात्मक विवरणों वाली अन्य पद्धतियों से अलग और विशिष्ट बनाती है।

234. (A) डेटा प्रोसेसिंग
विश्लेषण के वास्तविक चरण से पूर्व प्रदत्त का शोधन करना, कूटलेखन करना और त्रुटियों की जाँच करना प्रदत्त संसाधन (Data Processing) कहलाता है। यह चरण अत्यंत महत्वपूर्ण है क्योंकि यह कच्चे प्रदत्त को एक ऐसे प्रारूप में परिवर्तित करता है जिसका सांख्यिकीय अथवा गुणात्मक विश्लेषण संभव हो सके। इसमें अपूर्ण सूचना को पृथक करना और विसंगतियों को संशोधित करना सम्मिलित है ताकि निष्कर्षों की शुद्धता सुनिश्चित हो सके। यह शोध के नियोजन और अंतिम प्रतिवेदन के मध्य की एक महत्वपूर्ण कड़ी है।
सूचनाओं के व्यवस्थित परिशोधन और उनके वैज्ञानिक वर्गीकरण के माध्यम से विश्लेषण के लिए एक ठोस आधार तैयार करना ही इस चरण का मुख्य कार्य है।

235. (D) यह समझाना कि स्थितियाँ वैसी क्यों हैं जैसी वे हैं।
व्याख्यात्मक अनुसंधान का प्राथमिक उद्देश्य यह स्पष्ट करना है कि सामाजिक स्थितियाँ अथवा घटनाएँ वैसी क्यों हैं जैसी वे दृष्टिगोचर होती हैं। यह केवल विवरण प्रस्तुत करने से आगे बढ़कर चरों के मध्य कार्य-कारण संबंधों का अन्वेषण करता है। इसका लक्ष्य उन अंतर्निहित कारकों और सिद्धांतों की पहचान करना है जो किसी विशिष्ट परिणाम को निर्मित करते हैं। यह शोध शोधकर्ताओं को भविष्यवाणियां करने और सामाजिक समस्याओं के प्रभावी समाधान विकसित करने में सहायता करता है। 'क्यों' को उजागर करना ही इसकी सार्थकता है।
सामाजिक वास्तविकताओं के मूल कारणों और प्रेरक तत्वों का तार्किक विश्लेषण करना ही इस अनुसंधान प्रारूप का सर्वोपरि और अंतिम लक्ष्य है।

236. (B) माध्यिका
जब आय जैसे प्रदत्त में अत्यंत विशाल अथवा अत्यंत न्यून बाह्य मान होते हैं, तो केंद्रीय प्रवृत्ति का सर्वाधिक उपयुक्त माप माध्यिका होती है। माध्य ऐसे चरम मानों के प्रति बहुत संवेदनशील होता है और वह औसत को अपनी ओर विस्थापित कर सकता है, जिससे त्रुटिपूर्ण चित्र प्रस्तुत होता है। माध्यिका केवल मध्य मान पर केंद्रित रहती है, अतः यह चरम अंकों से अप्रभावित रहती है। यह विषम वितरणों में एक अधिक प्रतिनिधि और यथार्थवादी औसत प्रदान करती है। इसीलिए आर्थिक अध्ययनों में माध्यिका को प्राथमिकता दी जाती है।
चरम अंकों के प्रभाव से मुक्त रहकर वितरण के वास्तविक मध्य को दर्शाने की क्षमता ही माध्यिका को एक सटीक और विश्वसनीय सांख्यिकीय माप बनाती है।

237. (A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
संगणकों ने सामाजिक अनुसंधान की संपूर्ण प्रक्रिया में क्रांतिकारी परिवर्तन किया है। इसका मुख्य कारण यह है कि संगणक वृहद् मात्रा में प्रदत्त का सुरक्षित भंडारण करने और अत्यंत जटिल सांख्यिकीय विश्लेषणों को बहुत अल्प समय में पूर्ण करने में सक्षम हैं। पूर्व में जिन गणनाओं में कई सप्ताह लगते थे, वे अब कुछ ही क्षणों में संपन्न हो जाती हैं। संगणकों ने प्रदत्त की शुद्धता संवर्धित की है और शोधकर्ताओं को विशाल प्रदत्त समूहों के साथ कार्य करने का अवसर दिया है। तकनीकी प्रगति ने अनुसंधान की गुणवत्ता को विस्तार दिया है।
सूचनाओं के त्वरित प्रसंस्करण और जटिल गणनाओं की शुद्धता सुनिश्चित करके संगणक ने सामाजिक शोध की वैज्ञानिक सक्षमता को नई ऊंचाइयां प्रदान की हैं।

238. (D) गैर-दिशात्मक परिकल्पना है।
यह कथन कि "सामाजिक वर्ग और जीवन प्रत्याशा के मध्य एक संबंध है," एक गैर-दिशात्मक परिकल्पना है। इसका कारण यह है कि यह केवल संबंध की उपस्थिति का दावा करती है, किंतु यह स्पष्ट नहीं करती कि संबंध किस दिशा में है (सकारात्मक अथवा नकारात्मक)। इसमें यह नहीं बताया गया कि उच्च वर्ग की जीवन प्रत्याशा अधिक है अथवा न्यून। एक दिशात्मक परिकल्पना इसके विपरीत स्पष्ट संकेत प्रदान करती है। गैर-दिशात्मक परिकल्पनाएँ प्रायः शोध के प्रारंभिक चरणों में प्रयुक्त होती हैं जहाँ शोधकर्ता संबंध के विषय में सामान्य धारणा रखता है।
चरों के मध्य किसी भी प्रकार के जुड़ाव की संभावना को खुले तौर पर स्वीकार करना ही इस परिकल्पना का मुख्य वैज्ञानिक और अन्वेषणात्मक उद्देश्य है।

NODIA

करके सिद्ध अथवा खंडित करने का प्रयास करता है। यह शोध को निश्चित दिशा और वैज्ञानिक आधार प्रदान करती है। परिकल्पना निर्माण अनुसंधान प्रक्रिया का महत्वपूर्ण चरण है जो वैज्ञानिक जाँच की सीमाओं को परिभाषित करता है।
चरों के मध्य संभावित संबंधों को एक स्पष्ट और परीक्षण योग्य कथन में ढालना ही वैज्ञानिक अनुसंधान का एक मुख्य उद्देश्य है।

268. (B) ऑनलाइन डेटाबेस का उपयोग करके साहित्य खोज करना।
अनुसंधान के प्रारंभिक चरणों में संगणक का एक महत्वपूर्ण अनुप्रयोग ऑनलाइन प्रदत्त आधारों (Databases) और पुस्तकालयों का उपयोग करके प्रासंगिक साहित्य का अन्वेषण करना है। यह शोधकर्ता को अपने विषय से संबद्ध विगत अध्ययनों, लेखों और सिद्धांतों को तीव्रता से खोजने में सहायता करता है। कूटलेखन और सांख्यिकीय विश्लेषण पश्चातवर्ती चरणों में आते हैं। साहित्य अन्वेषण हेतु संगणक का उपयोग न केवल समय की बचत करता है, अपितु यह शोधकर्ता को वैश्विक ज्ञान तक पहुँच प्रदान करता है, जिससे शोध का सैद्धांतिक आधार सबल होता है।
सूचनाओं के विशाल वैश्विक भंडार तक त्वरित पहुँच प्रदान करके कंप्यूटर ने अनुसंधान की प्रारंभिक योजना और तैयारी को अभूतपूर्व शक्ति दी है।

269. (C) सूचित सहमति की कमी।
गुप्त सहभागी अवलोकन में सर्वाधिक प्रमुख नैतिक विषय 'सूचित सहमति' का अभाव है। चूंकि शोधकर्ता अपनी पहचान और अध्ययन के वास्तविक उद्देश्यों को प्रच्छन्न रखकर समूह में सम्मिलित होता है, अतः प्रतिभागियों को ज्ञान नहीं होता कि उनका अध्ययन किया जा रहा है। यह उनकी स्वायत्तता और गोपनीयता का उल्लंघन माना जा सकता है। यद्यपि यह विधि व्यवहार की स्वाभाविकता बनाए रखने में सहायक है, किंतु धोखे का उपयोग शोध की नैतिकता पर प्रश्नचिह्न लगाता है। शोधकर्ता को वैज्ञानिक लाभ और नैतिक दायित्व में संतुलन बनाना पड़ता है।
प्रतिभागियों की सूचना और सहमति के बिना किया गया अध्ययन अनुसंधान की मानवीय मर्यादाओं और उसकी नैतिक प्रमाणिकता को खंडित करता है।

270. (D) सबसे अधिक बार आने वाला मान।
सांख्यिकी में बहुलक वह मान होता है जो किसी प्रदत्त समूह अथवा वितरण में सर्वाधिक आवृत्ति के साथ आता है। यह केंद्रीय प्रवृत्ति का एक माप है जो प्रदत्त के सर्वाधिक सामान्य अथवा विशिष्ट रुझान की पहचान करने में सहायता करता है। माध्यिका मध्य मान को प्रदर्शित करती है और माध्य अंकगणितीय औसत को, जबकि बहुलक केवल संचयन के केंद्र को स्पष्ट करता है। इसका उपयोग विशेष रूप से श्रेणीगत प्रदत्त के विश्लेषण हेतु किया जाता है जहाँ औसत ज्ञात करना संभव नहीं होता। यह प्रदत्त के प्रमुख प्रतिरूप को समझने का सरल साधन है।

वितरण में सबसे अधिक प्रचलित स्थिति की पहचान करके समूह की सामान्य प्रवृत्ति को समझना बहुलक के माध्यम से अत्यंत सरल और प्रभावी है।

271. (A) सहभागी अवलोकन।
किसी निगम की संस्कृति का अध्ययन करने हेतु एक कर्मचारी के रूप में कार्य करना सहभागी अवलोकन का उत्कृष्ट उदाहरण है। इसमें शोधकर्ता स्वयं समूह का अंग बन जाता है और उनके दैनिक जीवन, कार्यों और अनकही सूक्ष्मताओं को एक 'अंदरूनी सूत्र' के रूप में अनुभव करता है। यह विधि उसे उन सूक्ष्म पहलुओं तक पहुँच प्रदान करती है जो एक बाह्य साक्षात्कारकर्ता हेतु अदृश्य रहते हैं। सहभागी अवलोकन के माध्यम से प्राप्त सूचना अत्यंत गहन और यथार्थ होती है क्योंकि यह प्रत्यक्ष अनुभव और दीर्घकालिक जुड़ाव पर आधारित होती है।
समूह के साथ एकाकार होकर उनके जीवन के अनुभवों को साझा करना ही इस शोध तकनीक की प्रामाणिकता और गहराई का मुख्य स्रोत है।

272. (B) वे अन्य उद्देश्यों के लिए एकत्र किए गए थे।
आधिकारिक आंकड़ों (जैसे जनगणना) का उपयोग करने की एक प्रमुख सीमा यह है कि वे मूल रूप से उन उद्देश्यों हेतु संकलित किए गए थे जो शोधकर्ता के विशिष्ट उद्देश्यों से भिन्न हो सकते हैं। इसे 'द्वितीयक प्रदत्त' कहते हैं। इसमें शोधकर्ता का प्रदत्त संग्रह की प्रक्रिया अथवा पूछे गए प्रश्नों पर कोई नियंत्रण नहीं होता। कई बार शोध हेतु आवश्यक विशिष्ट सूचना इन आंकड़ों में उपलब्ध नहीं होती। इसके अतिरिक्त, आधिकारिक आंकड़ों की परिभाषाएं समय के साथ परिवर्तित हो सकती हैं, जिससे तुलनात्मक विश्लेषण करना चुनौतीपूर्ण हो जाता है।
पूर्व-निर्धारित सूचनाओं के उपयोग में निहित यह सीमा शोधकर्ता को प्रदत्त की व्याख्या करते समय अत्यंत सतर्क रहने के लिए विवश करती है।

273. (B) व्यक्तिगत रूप से तटस्थ और निष्पक्ष।
'वस्तुनिष्ठता' की अवधारणा हेतु यह अनिवार्य है कि शोधकर्ता अनुसंधान की संपूर्ण प्रक्रिया के दौरान व्यक्तिगत रूप से तटस्थ और निष्पक्ष बना रहे। उसे अपने व्यक्तिगत मूल्यों, पूर्वाग्रहों और संवेदनाओं को तथ्यों के विश्लेषण से पृथक रखना चाहिए। वस्तुनिष्ठ शोधकर्ता केवल साक्ष्यों और प्रमाणों का अनुगमन करता है, चाहे वे उसकी व्यक्तिगत मान्यताओं के विपरीत ही क्यों न हों। यह निष्पक्षता वैज्ञानिक अनुसंधान की विश्वसनीयता और उसकी सामाजिक स्वीकार्यता हेतु एक अनिवार्य शर्त है। वस्तुनिष्ठता ही शोध को प्रामाणिक ज्ञान का स्वरूप प्रदान करती है।
व्यक्तिगत पूर्वाग्रहों से मुक्त होकर तथ्यों का निष्पक्ष विश्लेषण करना ही किसी भी शोध को वास्तविक वैज्ञानिक आधार और प्रमाणिकता प्रदान करता है।

274. (A) अनुदैर्ध्य अध्ययन है।
20, 30 और 40 वर्ष की आयु में व्यक्तियों के एक ही समूह का अध्ययन करना एक अनुदैर्ध्य अध्ययन है। इस प्रकार का शोध समय के वृहद् अंतराल पर प्रदत्त संकलित करता है ताकि विकास की प्रवृत्तियों, परिवर्तनों और निरंतरता को मापा जा

Downloaded from www.pdf.tube

पर होने वाले परिवर्तनों, निरंतरता और विकास की परतों का अनुशीलन करती है। यह जन्म से वर्तमान तक की घटनाओं को एक कालक्रम में सहेजती है। इसके विपरीत, अनुप्रस्थ काट सर्वेक्षण केवल एक ही समय पर प्रदत्त संकलित करते हैं। जीवन इतिहास शोधकर्ता को यह समझने में सहायता करता है कि सामाजिक संरचनाएं और व्यक्तिगत निर्णय समय के प्रवाह में परस्पर कैसे प्रभावित होते हैं। यह एक गतिशील तस्वीर प्रस्तुत करती है।
समय के निरंतर प्रवाह में मानवीय अनुभवों और सामाजिक परिवर्तनों का सूक्ष्म विश्लेषण करना ही इस शोध पद्धति की मुख्य विशेषता और शक्ति है।

247. (D) नृवंशविज्ञान
'सघन विवरण' का लक्ष्य रखने वाला अध्ययन नृवंशविज्ञान का उपयोग कर रहा होता है। इसका उद्देश्य केवल सतही व्यवहार को अंकित करना नहीं, अपितु उन सांस्कृतिक अर्थों और सूक्ष्म संदर्भों को उजागर करना है जो किसी क्रिया को सार्थकता प्रदान करते हैं। शोधकर्ता समूह के साथ दीर्घकाल तक रहकर उनके जीवन की बारीकियों को इस प्रकार वर्णित करता है कि पाठक उस संस्कृति के मर्म को अनुभव कर सके। यह विधि गुणात्मक शोध की उच्चतम गहराई को प्रदर्शित करती है और मानवीय व्यवहार की जटिल सामाजिक जड़ों को समझने के लिए सर्वश्रेष्ठ है।
सामाजिक क्रियाओं के आंतरिक संदेशों और उनके विस्तृत सांस्कृतिक परिवेश को जीवंत रूप में चित्रित करना ही इस शोध पद्धति का मूल है।

248. (D) कथन I गलत है, लेकिन कथन II सही है।
वैज्ञानिक पद्धति कभी भी पूर्ण और अंतिम प्रमाण प्रदान करने का दावा नहीं करती, क्योंकि नवीन साक्ष्य विगत सिद्धांतों को परिवर्तित कर सकते हैं। अतः कथन I त्रुटिपूर्ण है। हालाँकि, कथन II सत्य है क्योंकि वैज्ञानिक पद्धति निरंतर परीक्षण और सत्यापन के माध्यम से अनिश्चितता को न्यून करने और ज्ञान की सटीकता संवर्धित करने का प्रयास करती है। यह पद्धति केवल अटकलों के स्थान पर तथ्यों पर आधारित होती है, जो इसे विश्वसनीय बनाती है। विज्ञान एक आत्म-संशोधक प्रक्रिया है जो सदैव नवीन खोजों हेतु द्वार खुला रखती है।
साक्ष्यों की तर्कसंगत जाँच और निरंतर परिष्करण ही वैज्ञानिक अन्वेषण की वह शक्ति है जो ज्ञान को दृढ़ता और प्रमाणिकता प्रदान करती है।

249. (C) यह व्यवहार के प्राकृतिक संदर्भ में अध्ययन की अनुमति देता है।
सहभागी अवलोकन का सर्वाधिक प्रमुख लाभ यह है कि यह मानवीय व्यवहार का उसके वास्तविक और प्राकृतिक संदर्भ में अध्ययन करने की अनुमति प्रदान करता है। शोधकर्ता व्यक्तियों को उनके दैनिक जीवन में प्रत्यक्ष देख सकता है, जहाँ वे कृत्रिम व्यवहार नहीं करते। यह विधि उन सूचनाओं को उजागर करने में सक्षम है जो सर्वेक्षणों अथवा साक्षात्कारों में उपेक्षित रह सकती हैं। इसके माध्यम से प्राप्त प्रदत्त अत्यंत समृद्ध और यथार्थ होता है क्योंकि यह प्रत्यक्ष अनुभव पर आधारित है। यह सामाजिक यथार्थ की गहरी समझ प्रदान करता है।
मानवीय क्रियाओं की स्वाभाविकता को बनाए रखते हुए वास्तविक परिस्थितियों का जीवंत अध्ययन करना ही इस शोध तकनीक की सबसे बड़ी खूबी है।

250. (A) केवल I और II
संगणक शोध की प्रक्रिया में अत्यंत सहायक होते हैं क्योंकि वे प्रासंगिक साहित्य का अन्वेषण कर सकते हैं और मात्रात्मक एवं गुणात्मक दोनों प्रकार के प्रदत्त का विश्लेषण कर सकते हैं। हालाँकि, वे स्वतंत्र रूप से अनुसंधान समस्या निर्मित नहीं कर सकते, क्योंकि यह एक उच्च स्तरीय बौद्धिक और सृजनात्मक कार्य है जो केवल मानव शोधकर्ता द्वारा संभव है। संगणक केवल प्रदत्त प्रबंधन और गणना के साधन हैं। शोध की दिशा निर्धारित करना शोधकर्ता के विवेक, ज्ञान और सामाजिक अंतर्दृष्टि पर पूर्णतः निर्भर करता है।
तकनीकी साधन केवल शोध की प्रक्रिया को गति और शुद्धता देते हैं, जबकि वैचारिक आधार का निर्माण शोधकर्ता का ही मौलिक उत्तरदायित्व है।

251. (D) जैसे-जैसे एक चर बढ़ता है, दूसरा पूर्णतः घटता है।
सांख्यिकी में -1.0 का सहसंबंध गुणांक दो चरों के मध्य एक पूर्ण नकारात्मक रैखिक संबंध को प्रदर्शित करता है। इसका अर्थ है कि चरों के मध्य एक निश्चित विपरीत जुड़ाव विद्यमान है; जब एक चर का मान संवर्धित होता है, तो दूसरे का मान उसी अनुपात में पूर्णतः घटता है। यह स्थिति पूर्ण पूर्वानुमेयता को दर्शाती है। यद्यपि सामाजिक अनुसंधान में पूर्ण -1.0 प्राप्त होना अत्यंत विरल है, किंतु यह चरों की विपरीत दिशा में पारस्परिक निर्भरता की उच्चतम सांख्यिकीय सीमा को स्पष्ट करने हेतु एक महत्वपूर्ण मानक बिंदु है।
चरों के विपरीत दिशा में पूर्ण तालमेल और उनके सुसंगत व्यवहार को वैज्ञानिक रूप से मापना ही इस मान का मुख्य उद्देश्य है।

252. (B) अंदरुनी सूत्र का दृष्टिकोण।
नृवंशविज्ञान में 'एमिक' (Emic) परिप्रेक्ष्य अध्ययन किए जा रहे समुदाय के 'अंदरुनी सूत्र' के दृष्टिकोण को संदर्भित करता है। इसका उद्देश्य संस्कृति को उन व्यक्तियों की दृष्टि से समझना है जो उसे स्वयं जी रहे हैं। शोधकर्ता उनके अपने शब्दों, अर्थों और श्रेणियों का उपयोग करता है ताकि उनके व्यवहार के अंतर्निहित वास्तविक तर्क को उजागर किया जा सके। यह 'एटिक' (Etic) परिप्रेक्ष्य के विपरीत है, जो शोधकर्ता के बाह्य विश्लेषण को दर्शाता है। एमिक दृष्टिकोण प्रदत्त की उच्च वैधता और सांस्कृतिक प्रामाणिकता सुनिश्चित करने हेतु महत्वपूर्ण है। किसी समाज की आंतरिक सच्चाई और उनके अपने अर्थों के जाल को गहराई से समझना ही इस शोध परिप्रेक्ष्य का वास्तविक और मौलिक लक्ष्य है।

253. (C) वर्ष 2011 में भारत की साक्षरता दर 74.04% थी।
सामाजिक अनुसंधान में 'तथ्य' वह सूचना है जिसे अनुभवजन्य रूप से सत्यापित किया जा सकता है और जो वस्तुनिष्ठ साक्ष्यों पर आधारित होती है। वर्ष 2011 की साक्षरता दर का आँकड़ा

NODIA

एक तथ्य है क्योंकि इसे जनगणना के प्रदत्त के माध्यम से प्रमाणित किया जा सकता है। अन्य विकल्प जैसे शिक्षा का महत्व अथवा व्यय में वृद्धि, मूल्य निर्णय अथवा राय के उदाहरण हैं। तथ्य वास्तविकता का वर्णन करते हैं, जबकि मूल्य निर्देशित करते हैं कि क्या वांछनीय है। तथ्यों का सटीक मापन ही वैज्ञानिक अनुसंधान को विश्वसनीय आधार देता है। अनुभवजन्य साक्ष्यों पर आधारित सत्यापन योग्य जानकारी ही किसी भी वैज्ञानिक अध्ययन को प्रामाणिकता और निष्पक्ष आधार प्रदान करने का मुख्य मार्ग है।

254. (D) सामाजिक विकल्पों और संबंधों का मापन।
समाजमिति का प्राथमिक केंद्र सामाजिक विकल्पों, आकर्षणों, विकर्षणों और समूह के भीतर व्यक्तियों के पारस्परिक संबंधों का मापन करना है। यह विधि एक मात्रात्मक दृष्टिकोण अपनाती है ताकि यह स्पष्ट हो सके कि समूह के सदस्य परस्पर किस प्रकार संबद्ध हैं। इसके माध्यम से प्रभावशाली व्यक्तियों, गुटों और विलग सदस्यों की वैज्ञानिक पहचान संभव है। समाजमिति समूह की आंतरिक संरचना और सामाजिक गतिशीलता को समझने का प्रभावी उपकरण है। यह संबंधों के जटिल जाल को वैज्ञानिक रूप से उजागर करती है।
समूह के सदस्यों के व्यक्तिगत चुनावों के माध्यम से उनके अंतर्निहित सामाजिक संबंधों को मापना ही इस तकनीक की मुख्य सार्थकता है।

255. (A) मौखिक इतिहास
अतीत की उन घटनाओं के वृत्तांतों पर निर्भर रहने वाली शोध विधि, जो आधिकारिक अभिलेखों में दर्ज नहीं हैं, मौखिक इतिहास कहलाती है। यह विधि जीवित व्यक्तियों के साक्षात्कारों के माध्यम से उनकी स्मृतियों और अनुभवों को ऐतिहासिक साक्ष्य के रूप में संकलित करती है। यह उन लोगों को वाणी प्रदान करती है जिनका इतिहास प्रायः अनसुना रह जाता है। मौखिक इतिहास व्यक्तिगत स्मृतियों को व्यापक सामाजिक संदर्भ में रखकर समाज की एक मानवीय समझ प्रदान करता है। यह अतीत को वर्तमान से जोड़ने का सशक्त गुणात्मक माध्यम है।
व्यक्तिगत अनुभवों और स्मृतियों के माध्यम से इतिहास के अनछुए पहलुओं को सहेजना ही इस शोध पद्धति की मुख्य पहचान और उसकी शक्ति है।

256. (B) अनुमानात्मक सांख्यिकी
सार्थकता परीक्षण अनुमानात्मक सांख्यिकी का एक महत्वपूर्ण अंग है। इसका उपयोग एक प्रतिदर्श से प्राप्त निष्कर्षों के आधार पर संपूर्ण जनसंख्या के विषय में अनुमान लगाने हेतु किया जाता है। यह परीक्षण शोधकर्ता को यह निर्धारित करने में सहायता करता है कि क्या परिणाम सांख्यिकीय रूप से महत्वपूर्ण हैं अथवा केवल संयोग के कारण हुए हैं। वर्णनात्मक सांख्यिकी केवल प्रदत्त का सारांश प्रस्तुत करती है, जबकि अनुमानात्मक सांख्यिकी व्यापक सामान्यीकरण की शक्ति प्रदान करती है। यह वैज्ञानिक शोध में परिकल्पना परीक्षण का अनिवार्य आधार है।
प्रतिदर्श के परिणामों को संपूर्ण जनसंख्या पर आरोपित करने की संभावना को सांख्यिकीय रूप से मापना ही इस विश्लेषण का मुख्य कार्य है।

257. (B) संरचित साक्षात्कार में प्रयुक्त प्रश्नों की सूची।
साक्षात्कार अनुसूची उन प्रश्नों और मदों की एक पूर्व-निर्धारित और व्यवस्थित सूची है जिसका उपयोग शोधकर्ता संरचित साक्षात्कार के दौरान करता है। शोधकर्ता स्वयं इन प्रश्नों को पढ़ता है और उत्तरदाता के जवाबों को अंकित करता है। यह सुनिश्चित करता है कि समस्त उत्तरदाताओं से समान प्रश्न एक ही अनुक्रम में पूछे जाएं, जिससे प्रदत्त की तुलना सुगम हो जाती है। अनुसूची प्रदत्त संग्रह में मानकीकरण और सटीकता लाती है। यह विशेष रूप से तब उपयोगी है जब उत्तरदाता स्वयं प्रश्नावली भरने में सक्षम अथवा इच्छुक न हों।
साक्षात्कार की प्रक्रिया में एकरूपता और सूचनाओं की पूर्णता सुनिश्चित करना ही इस व्यवस्थित सूची का मुख्य वैज्ञानिक और व्यावहारिक उद्देश्य है।

258. (A) पक्षपात
शोध में व्यक्तिपरकता के साथ मुख्य समस्या यह है कि यह पक्षपात उत्पन्न कर सकती है। जब शोधकर्ता के व्यक्तिगत मूल्य, विश्वास अथवा भावनाएं प्रदत्त के संकलन और उसकी व्याख्या को प्रभावित करती हैं, तो निष्कर्षों की वस्तुनिष्ठता क्षीण हो जाती है। पक्षपात शोध के परिणामों को विकृत कर सकता है, जिससे वे यथार्थ के स्थान पर शोधकर्ता के अपने नजरिए को प्रतिबिंबित करने लगते हैं। वैज्ञानिक अनुसंधान का मुख्य लक्ष्य इस पक्षपात को पहचानना और उसे न्यूनतम करना है ताकि प्राप्त ज्ञान निष्पक्ष, विश्वसनीय और पूर्णतः साक्ष्यों पर आधारित हो।
व्यक्तिगत पूर्वाग्रहों से मुक्त होकर तथ्यों का निष्पक्ष विश्लेषण करना ही किसी भी शोध को वैज्ञानिक और विश्वसनीय बनाने का एकमात्र प्रशस्त मार्ग है।

259. (C) एक सार्थकता परीक्षण
पुरुषों और महिलाओं की औसत आय की तुलना करने हेतु एक सार्थकता परीक्षण का उपयोग किया जा सकता है। यह परीक्षण यह निर्धारित करने में सहायता करता है कि क्या दोनों समूहों की आय के मध्य प्रेक्षित अंतर सांख्यिकीय रूप से वास्तविक है अथवा केवल प्रतिदर्श में आकस्मिक भिन्नता का प्रतिफल है। यह चरों के मध्य के संबंधों की प्रामाणिकता को जाँचने का वैज्ञानिक मार्ग है। सार्थकता परीक्षण शोधकर्ता को यह निर्णय लेने का आधार प्रदान करता है कि क्या निष्कर्षों को वृहद् जनसंख्या पर विश्वास के साथ आरोपित किया जा सकता है।
विभिन्न समूहों के मध्य तुलनात्मक अंतर की सत्यता को सांख्यिकीय रूप से प्रमाणित करना ही इस परीक्षण का मुख्य और निर्णायक कार्य है।

260. (D) अनुसंधान प्रारूप: मौखिक इतिहास
यह युग्म त्रुटिपूर्ण सुमेलित है क्योंकि मौखिक इतिहास एक शोध विधि अथवा प्रदत्त संग्रह की तकनीक है, न कि अनुसंधान प्रारूप। अनुसंधान प्रारूप एक व्यापक योजना होती है जैसे

Click Here to Buy book on Amazon

वर्णनात्मक अथवा व्याख्यात्मक प्रारूप। अन्य युग्म सत्य हैं: वैयक्तिक अध्ययन एक गुणात्मक विधि है, सर्वेक्षण एक मात्रात्मक विधि है, और माध्य एवं बहुलक प्रदत्त विश्लेषण के उपकरण हैं। इन अवधारणाओं के मध्य सही अंतर समझना शोध प्रक्रिया के विभिन्न अंगों को स्पष्ट करने और वैज्ञानिक सटीकता बनाए रखने हेतु अत्यंत आवश्यक है।
शोध के विभिन्न चरणों और उनकी विशिष्ट भूमिकाओं की सही पहचान ही अध्ययन को तार्किक दृढ़ता और वैज्ञानिक प्रामाणिकता प्रदान करती है।

261. (C) निष्कर्ष निकालना और परिणामों की रिपोर्ट करना।
वैज्ञानिक पद्धति में अंतिम और महत्वपूर्ण चरण निष्कर्ष प्रतिपादित करना और प्राप्त परिणामों का प्रतिवेदन (Report) करना होता है। इसमें शोधकर्ता अपने प्रदत्त विश्लेषण के आधार पर यह निर्धारित करता है कि उसकी परिकल्पना सत्य थी अथवा नहीं। परिणामों को वैज्ञानिक समुदाय के साथ साझा करना अनिवार्य है ताकि अन्य विशेषज्ञ शोध की समीक्षा कर सकें और उसे संवर्धित कर सकें। यह चरण शोध की संपूर्ण प्रक्रिया को पूर्णता प्रदान करता है और ज्ञान के संचय में योगदान देता है। प्रतिवेदन के बिना अनुसंधान का मूल्य सीमित रह जाता है।
प्राप्त ज्ञान को व्यवस्थित रूप में प्रस्तुत करना और उसे सार्वजनिक जांच हेतु उपलब्ध कराना ही वैज्ञानिक अन्वेषण का अंतिम और अनिवार्य लक्ष्य है।

262. (B) परिकल्पनात्मक
सामाजिक अनुसंधान में वर्णनात्मक, अन्वेषणात्मक और व्याख्यात्मक अनुसंधान प्रारूप सामान्य रूप से स्वीकृत प्रकार हैं। वर्णनात्मक प्रारूप विशेषताओं का वर्णन करता है, अन्वेषणात्मक नवीन विषयों की खोज करता है, और व्याख्यात्मक कारणों की जाँच करता है। 'परिकल्पनात्मक' स्वयं में कोई विशिष्ट अनुसंधान प्रारूप नहीं है, अपितु परिकल्पना अनुसंधान का एक अंश है जिसका परीक्षण किया जाता है। अनुसंधान प्रारूप एक व्यापक योजना है जो प्रदत्त संग्रह और विश्लेषण का मार्गदर्शन करती है। अतः यह विकल्प वैज्ञानिक शोध का स्वतंत्र प्रारूप नहीं है।
अनुसंधान के लक्ष्यों और उसकी प्रकृति के आधार पर ही उपयुक्त प्रारूप का चयन किया जाता है ताकि सटीक परिणाम प्राप्त हो सकें।

263. (D) सरल यादृच्छिक प्रतिचयन
सरल यादृच्छिक प्रतिचयन में जनसंख्या के प्रत्येक सदस्य के प्रतिदर्श में चयनित होने की एक ज्ञात और पूर्णतः समान संभावना होती है। यह विधि पूर्णतः यादृच्छिकता और निष्पक्षता पर आधारित है, जहाँ शोधकर्ता का व्यक्तिगत पक्षपात शून्य हो जाता है। इसके विपरीत, कोटा, उद्देश्यपूर्ण और स्नोबॉल प्रतिचयन गैर-संभाव्यता विधियाँ हैं जिनमें चयन प्रक्रिया शोधकर्ता के विवेक अथवा विशिष्ट आवश्यकताओं पर निर्भर करती है। यह निष्कर्षों की बाह्य वैधता को संवर्धित करता है और सांख्यिकीय सामान्यीकरण हेतु विश्वसनीय आधार प्रदान करता।
चयन में पूर्ण निष्पक्षता और यादृच्छिकता सुनिश्चित करके संपूर्ण आबादी का सटीक प्रतिनिधित्व करना ही इस प्रतिचयन तकनीक की मुख्य खूबी है।

264. (A) सहसंबंध से कार्य-कारण मान लेना।
सहसंबंधी विश्लेषण में सर्वाधिक सामान्य और गंभीर दोष यह है कि शोधकर्ता प्रायः सहसंबंध को ही कार्य-कारण मान लेते हैं। मात्र इसलिए कि दो चर साथ-साथ परिवर्तित होते हैं, इसका यह अर्थ नहीं कि एक चर दूसरे को निर्मित कर रहा है। सहसंबंध केवल जुड़ाव की सबलता प्रदर्शित करता है, 'क्यों' का उत्तर नहीं देता। चरों के मध्य का यह संबंध किसी तृतीय अज्ञात कारक के कारण भी हो सकता है। वैज्ञानिक व्याख्या में इस सूक्ष्म भेद को समझना अनिवार्य है ताकि त्रुटिपूर्ण निष्कर्षों और भ्रामक भविष्यवाणियों से बचा जा सके।
चरों के आपसी जुड़ाव और उनके वास्तविक प्रेरक कारकों के बीच के अंतर को स्पष्ट रूप से पहचानना ही सटीक विश्लेषण का आधार है।

265. (A) III, II, I
प्रतिचयन की प्रक्रिया में लघुतम इकाई 'तत्व' होती है जिसका प्रत्यक्ष अध्ययन किया जाता है। तत्वों के एक विशिष्ट समूह को, जिसे अध्ययन हेतु चयनित किया जाता है, 'प्रतिदर्श' (Sample) कहते हैं। अंत में, 'जनसंख्या' उन समस्त तत्वों का वृहद् और संपूर्ण समूह है जिसके विषय में शोधकर्ता निष्कर्ष प्रतिपादित करना चाहता है। यह अनुक्रम विशिष्ट से सामान्य की ओर संवर्धित होता है। इन इकाइयों के बीच का पदानुक्रम समझना प्रतिचयन ढाँचे को सुव्यवस्थित करने और अनुसंधान की वैज्ञानिक शुद्धता सुनिश्चित करने हेतु आवश्यक है।
व्यक्तिगत इकाई से लेकर समग्र समूह तक की इन कड़ियों को समझकर ही एक शोधकर्ता अपने अध्ययन का सटीक विस्तार निर्धारित कर सकता है।

266. (A) वैयक्तिक अध्ययन
वैयक्तिक अध्ययन वह गुणात्मक विधि है जो किसी एक एकल 'परिबद्ध प्रणाली' (जैसे व्यक्ति, संस्था अथवा विशिष्ट घटना) के अत्यंत गहन और सूक्ष्म अध्ययन से संबद्ध है। इसका मुख्य उद्देश्य उस इकाई के भीतर की समस्त जटिलताओं, संबंधों और प्रक्रियाओं को उनकी समग्रता में समझना है। यह विधि 'क्यों' और 'कैसे' जैसे गहन प्रश्नों का अन्वेषण करती है। यद्यपि इसके निष्कर्षों का व्यापक सामान्यीकरण संभव नहीं, किंतु यह किसी विशेष मामले की अद्वितीय और सघन समझ प्रदान करने हेतु एक अत्यंत शक्तिशाली वैज्ञानिक उपकरण है।
किसी विशिष्ट इकाई के सूक्ष्म विश्लेषण और उसके बहुआयामी पक्षों को समग्रता में उजागर करना ही इस शोध पद्धति की मुख्य विशेषता है।

267. (D) परिकल्पना
यह कथन कि "जैसे-जैसे शिक्षा का स्तर संवर्धित होता है, आय बढ़ने की प्रवृत्ति होती है," एक परिकल्पना का उदाहरण है। यह दो चरों (शिक्षा और आय) के मध्य एक संभावित संबंध के विषय में परीक्षण योग्य प्रस्ताव है। परिकल्पना एक अस्थायी कथन होता है जिसे शोधकर्ता अनुभवजन्य प्रदत्त संकलित

NODIA

की प्रक्रिया में निष्पक्षता और साक्ष्यों के प्रति सत्यनिष्ठा बनाए रखना है। यह स्वीकार करना कि मूल्य शोध की दिशा तय करते हैं, एक पारदर्शी दृष्टिकोण है।
व्यक्तिगत विश्वासों और वैज्ञानिक तटस्थता के बीच का यह जटिल संतुलन ही सामाजिक अनुसंधान की मानवीय और वैज्ञानिक प्रकृति को परिभाषित करता है।

225. (B) उच्च प्रतिक्रिया दर और डेटा की पूर्णता
प्रश्नावली की तुलना में अनुसूची के उपयोग का एक प्रमुख और निर्णायक लाभ उच्च प्रतिक्रिया दर और प्रदत्त की पूर्णता सुनिश्चित करना है। चूंकि एक प्रगणक अथवा साक्षात्कारकर्ता व्यक्तिगत रूप से उपस्थित होता है, वह उत्तरदाताओं को प्रश्नों के उत्तर देने हेतु अभिप्रेरित कर सकता है और छोड़े गए अंशों को तत्काल पूर्ण करवा सकता है। प्रश्नावली में प्रायः उत्तरदाता प्रश्नों को अधूरा छोड़ देते हैं। अनुसूची में शोधकर्ता जटिल प्रश्नों को स्पष्ट भी कर सकता है, जिससे प्राप्त प्रदत्त अधिक सटीक और विश्वसनीय हो जाता है।
व्यक्तिगत उपस्थिति और संवादात्मक स्पष्टीकरण के माध्यम से प्रदत्त की प्रमाणिकता और पूर्णता सुनिश्चित करना ही अनुसूची की सबसे बड़ी खूबी है।

226. (A) नृवंशविज्ञान
'सघन विवरण' नृवंशविज्ञानी शोध पद्धति हेतु एक केंद्रीय और मौलिक अवधारणा है। इसका अर्थ केवल व्यवहार का अवलोकन करना नहीं है, अपितु उस व्यवहार के अंतर्निहित गहरे सामाजिक संदर्भों, अर्थों और सूक्ष्म बारीकियों का विस्तृत वर्णन करना है। यह अवधारणा क्लिफोर्ड गीर्ट्ज़ द्वारा लोकप्रिय की गई थी। सघन विवरण शोधकर्ता को किसी संस्कृति की जटिलताओं को इस प्रकार प्रस्तुत करने की अनुमति देता है कि एक बाह्य व्यक्ति भी उन क्रियाओं के वास्तविक अर्थ को समझ सके। यह गुणात्मक शोध की गहराई संवर्धित करता है।
सामाजिक क्रियाओं के सूक्ष्म संदर्भों और उनके अंतर्निहित संदेशों को जीवंत रूप में चित्रित करना ही इस शोध पद्धति की आत्मा और शक्ति है।

227. (C) विषय-वस्तु विश्लेषण
आवर्ती विचारधाराओं और संदेशों की पहचान हेतु राजनीतिक भाषणों का विश्लेषण करना विषय-वस्तु विश्लेषण का उत्कृष्ट अनुप्रयोग है। यह विधि संचार की सामग्री को व्यवस्थित रूप से वर्गीकृत करने और उसमें विद्यमान प्रतिरूपों को उद्घाटित करने में सहायता करती है। शोधकर्ता विशिष्ट शब्दों अथवा विषयों की आवृत्ति और उनके संदर्भ की जाँच करता है ताकि वक्ता के वास्तविक उद्देश्यों और सामाजिक-राजनीतिक प्रभाव को समझा जा सके। यह तकनीक संचार के माध्यम से शक्ति संरचनाओं और विचारधाराओं के प्रसार को समझने का वस्तुनिष्ठ माध्यम है।
संदेशों के तार्किक ढांचे और उनके वैचारिक प्रभाव का वैज्ञानिक विश्लेषण करना ही इस शोध पद्धति की मुख्य भूमिका और उसकी सार्थकता है।

228. (D) समूह में बहुत कम या किसी के द्वारा नहीं चुना जाता है।
समाजमिति के संदर्भ में, एक 'एकाकी' वह व्यक्ति होता है जिसे समूह के भीतर किसी भी सदस्य द्वारा नहीं चयनित किया जाता अथवा बहुत ही न्यून व्यक्तियों द्वारा चुना जाता है। यह व्यक्ति समूह के सामाजिक नेटवर्क से विलग अथवा हाशिए पर अनुभव कर सकता है। समाजआरेख में, इस व्यक्ति की ओर निर्देशित होने वाले तीरों की संख्या शून्य अथवा नगण्य होती है। एकाकी सदस्यों की पहचान करना समूह के सामंजस्य, सामाजिक बहिष्कार और सदस्यों के मनोवैज्ञानिक कल्याण को समझने हेतु अत्यंत महत्वपूर्ण सूचना प्रदान करता है।
समूह के भीतर सामाजिक जुड़ाव की कमी और अलगाव के प्रतिरूपों को वैज्ञानिक रूप से उजागर करना ही इस तकनीक का मुख्य सामाजिक उद्देश्य है।

229. (C) बाहरी वैधता है।
समाजमिति के संदर्भ में, एक 'एकाकी' वह व्यक्ति होता है जिसे समूह के अन्य सदस्य बहुत कम या बिल्कुल भी नहीं चुनते हैं। यह दर्शाता है कि वह व्यक्ति समूह के सामाजिक नेटवर्क में कम जुड़ा हुआ है या हाशिए पर है। समाजआरेख में ऐसे व्यक्ति की ओर आने वाले तीर शून्य या बहुत कम होते हैं, जो उसके सामाजिक अलगाव को स्पष्ट करते हैं।
मूल बात यह है कि, एकाकी सदस्य समूह के भीतर सामाजिक जुड़ाव की कमी को दर्शाते हैं, और उनकी पहचान से समूह में सामंजस्य, बहिष्कार तथा सदस्यों के मानसिक और सामाजिक कल्याण को समझने में मदद मिलती है।

230. (B) अनुदैर्ध्य अध्ययन है।
विधान लागू होने के पूर्व और पश्चात के अपराध आंकड़ों की तुलना करके उसके प्रभाव का अध्ययन करना एक अनुदैर्ध्य अध्ययन है। इस प्रकार का शोध समय के भिन्न बिंदुओं पर प्रदत्त संकलित करता है ताकि परिवर्तन की प्रवृत्तियों और हस्तक्षेपों के दीर्घकालिक परिणामों को मापा जा सके। यह चरों के मध्य समय-आधारित संबंधों को समझने में सहायता करता है और यह स्पष्ट करता है कि क्या कोई विशिष्ट घटना वास्तव में परिवर्तन का प्रेरक बनी है। यह सामाजिक नीतियों के मूल्यांकन हेतु अत्यंत शक्तिशाली शोध दृष्टिकोण है।
समय के निरंतर प्रवाह में सामाजिक परिवर्तनों और हस्तक्षेपों के वास्तविक प्रभाव का सूक्ष्म विश्लेषण करना ही इस शोध पद्धति की मुख्य विशेषता है।

231. (D) अनुसंधान प्रतिभागियों के।
एक सामाजिक शोधकर्ता का सर्वाधिक प्राथमिक और मौलिक नैतिक उत्तरदायित्व उन अनुसंधान प्रतिभागियों के प्रति होता है जो उसके अध्ययन का अंग हैं। शोधकर्ता को यह सुनिश्चित करना चाहिए कि उनकी गोपनीयता, सुरक्षा और गरिमा के साथ कोई समझौता न हो। इसमें सूचित सहमति प्राप्त करना, उन्हें संभावित संकटों के विषय में सूचित करना और उनकी पहचान गोपनीय रखना सम्मिलित है। यद्यपि संस्थाओं के प्रति भी उत्तरदायित्व होते हैं, किंतु प्रतिभागियों के अधिकारों की रक्षा करना किसी भी वैज्ञानिक अन्वेषण का सर्वोपरि मापदंड है।

Downloaded from www.pdf.tube

सके। यह विधि शोधकर्ता को यह समझने में सहायता करती है कि समय और आयु के साथ व्यक्तियों के विचार, व्यवहार और सामाजिक स्थितियाँ कैसे विकसित होती हैं। यह जीवन-क्रम के विश्लेषण हेतु अत्यंत शक्तिशाली शोध दृष्टिकोण है। यद्यपि यह समयसाध्य है, किंतु इसके निष्कर्ष अद्वितीय एवं मूल्यवान होते हैं।
समय के निरंतर प्रवाह में मानवीय जीवन और सामाजिक प्रवृत्तियों का सूक्ष्म अवलोकन करना ही इस शोध पद्धति की मुख्य विशेषता और शक्ति है।

275. (B) P-4, Q-1, R-3, S-2
परिकल्पना एक परीक्षण योग्य प्रस्ताव है जो चरों के मध्य संभावित संबंधों को प्रदर्शित करता है। तथ्य एक अनुभवजन्य रूप से सत्यापन योग्य कथन है जो वास्तविकता का वर्णन करता है। मूल्य वांछनीयता के विषय में एक व्यक्तिगत अथवा सामाजिक विश्वास है। सिद्धांत तथ्यों हेतु एक व्यापक व्याख्या प्रदान करने वाली रुपरेखा है। इन अवधारणाओं का सही सुमेल वैज्ञानिक अनुसंधान की संरचना को स्पष्ट करता है। यह प्रदर्शित करता है कि कैसे अमूर्त विचार, वास्तविक साक्ष्य और व्यक्तिगत विश्वास शोध प्रक्रिया में पृथक भूमिकाएँ निभाते हैं। अनुसंधान की इन बुनियादी कड़ियों को समझकर ही सामाजिक दुनिया के अध्ययन को एक तार्किक दृढ़ता और वैज्ञानिक आधार प्रदान किया जा सकता है।

276. (D) समाजमिति
समाजमिति वह शोध विधि है जो समूह की गतिशीलता, सामाजिक संरचना और सदस्यों के मध्य के पारस्परिक संबंधों को समझने से सर्वाधिक संबद्ध है। यह विधि समूह के भीतर आकर्षण और विकर्षण के प्रतिरूपों को मापती है, जिससे यह ज्ञान प्राप्त होता है कि सामाजिक जुड़ाव कैसे निर्मित होते हैं। इसके माध्यम से समूह के लोकप्रिय नेताओं, गुटों और विलग व्यक्तियों की वैज्ञानिक पहचान की जा सकती है। समाजमिति लघु समूहों के सामाजिक स्वास्थ्य और उनके आंतरिक कार्यकरण को समझने का अत्यंत प्रभावी और वस्तुनिष्ठ मात्रात्मक उपकरण है।
समूह के भीतर आपसी पसंद और सामाजिक अंतःक्रियाओं के सूक्ष्म जाल को वैज्ञानिक रूप से मापना और दर्शाना ही इस तकनीक की मुख्य सक्षमता है।

277. (C) अनुभवजन्य साक्ष्य।
'वैज्ञानिक पद्धति' जगत को जानने का एक ऐसा मार्ग है जो मुख्य रूप से अनुभवजन्य साक्ष्यों पर आधारित होता है। इसका अर्थ है कि ज्ञान केवल अंतर्ज्ञान अथवा परंपरा के आधार पर स्वीकार नहीं किया जाता, अपितु उसे इंद्रियों द्वारा किए गए अवलोकन और प्रयोगों के माध्यम से प्रमाणित किया जाना चाहिए। अनुभववाद यह सुनिश्चित करता है कि निष्कर्ष वास्तविक जगत की घटनाओं के साथ संबद्ध हैं और उन्हें कोई भी स्वतंत्र रूप से जाँचना संभव है। यह वैज्ञानिक अनुसंधान की निष्पक्षता, सटीकता और विश्वसनीयता सुनिश्चित करने वाला मौलिक आधार है।
साक्ष्यों की सत्यता को वास्तविक अवलोकनों और अनुभवों की कसौटी पर कसना ही वैज्ञानिक अन्वेषण की प्रामाणिकता और उसकी गरिमा का मूल आधार है।

278. (A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
गुणात्मक प्रदत्त विश्लेषण वास्तव में एक पुनरावृत्ति और चक्रीय प्रक्रिया है। इसका मुख्य कारण यह है कि शोधकर्ता प्रदत्त के संकलन और विश्लेषण के दौरान निरंतर प्रदत्त, कूट और उभरती अवधारणाओं के मध्य आवाजाही करता रहता है। वह केवल एक बार में विश्लेषण पूर्ण नहीं करता, अपितु नवीन प्रदत्त के आधार पर अपनी श्रेणियों और व्याख्याओं को बार-बार परिष्कृत करता है। यह प्रक्रिया तब तक चलती है जब तक कि एक स्पष्ट सामाजिक प्रतिरूप उभरकर सम्मुख न आ जाए। यह लचीलापन मानवीय अनुभवों की गहराई पकड़ने में सहायक है। प्रदत्त के निरंतर अवलोकन और उसके व्यवस्थित वर्गीकरण के माध्यम से सूक्ष्म निष्कर्ष निकालना ही इस विश्लेषण प्रक्रिया की मुख्य विशेषता और शक्ति है।

279. (D) तुलना के लिए एक आधार रेखा प्रदान करना।
एक प्रयोग में 'नियंत्रण समूह' का प्राथमिक उद्देश्य तुलना हेतु एक ठोस आधार रेखा प्रदान करना है। इस समूह को वह मुख्य उपचार अथवा हस्तक्षेप प्रदान नहीं किया जाता जो प्रयोगात्मक समूह को मिलता है। नियंत्रण समूह की उपस्थिति शोधकर्ता को यह निर्धारित करने में सहायता करती है कि प्रयोगात्मक समूह में प्रेक्षित परिवर्तन वास्तव में स्वतंत्र चर (उपचार) के कारण हैं अथवा किसी अन्य बाह्य कारक के कारण। यह विधि परिणामों की वैज्ञानिक प्रामाणिकता सुनिश्चित करती है और पुष्ट करती है कि निष्कर्ष केवल संयोग का प्रतिफल नहीं हैं।
हस्तक्षेप के वास्तविक प्रभाव को अन्य कारकों से अलग करके सटीक रूप से मापने के लिए नियंत्रण समूह एक अनिवार्य वैज्ञानिक मानक और आधार है।

280. (A) द्वि-आयामी प्रश्न
एक सर्वेक्षण प्रश्न जो एक ही समय में दो पृथक और असंबद्ध विषयों के विषय में प्रश्न पूछता है, उसे द्वि-आयामी प्रश्न कहते हैं। उदाहरण हेतु, "क्या आप अधिक वेतन और उत्तम कार्य वातावरण से संतुष्ट हैं?" यहाँ उत्तरदाता भ्रमित हो सकता है यदि वह एक से संतुष्ट है और दूसरे से नहीं। ऐसे प्रश्न प्रदत्त की शुद्धता को प्रभावित करते हैं क्योंकि उनका उत्तर देना दुष्कर होता है। एक श्रेष्ठ प्रश्नावली में प्रत्येक प्रश्न को केवल एक ही विशिष्ट विषय पर केंद्रित होना चाहिए ताकि प्राप्त सूचना सटीक और विश्लेषण योग्य बनी रहे।
सूचनाओं के मानकीकृत और स्पष्ट संग्रहण के लिए प्रश्नों की सरलता और उनकी विशिष्टता सुनिश्चित करना सर्वेक्षण अनुसंधान की एक बुनियादी आवश्यकता है।

281. (A) केवल I और III
गुणात्मक विधियाँ मुख्य रूप से संदर्भ से संबद्ध होती हैं, जिसका अर्थ है कि वे घटनाओं को उनके सामाजिक और ऐतिहासिक परिवेश में समझने का प्रयास करती हैं। ये विधियाँ प्रायः 'आगमनात्मक तर्क' का उपयोग करती हैं, जहाँ विशिष्ट अवलोकनों से व्यापक सिद्धांतों का निर्माण होता है। हालाँकि,

NODIA

239. (A) निम्न प्रतिक्रिया दर की संभावना।
डाक प्रश्नावली की सर्वाधिक महत्वपूर्ण और गंभीर सीमा न्यून प्रतिक्रिया दर की संभावना है। अनेक व्यक्ति प्रश्नावली प्राप्त होने पर उसे नहीं भरते अथवा वापस नहीं प्रेषित करते, जिससे प्राप्त प्रतिदर्श संपूर्ण जनसंख्या का सत्य प्रतिनिधित्व नहीं कर पाता। इससे 'गैर-प्रतिक्रिया पक्षपात' उत्पन्न होता है, जो शोध निष्कर्षों की वैधता को निर्बल करता है। यद्यपि यह विधि मितव्ययी है और व्यापक क्षेत्रों को आवृत कर सकती है, किंतु उत्तरदाताओं की अल्प सहभागिता इसकी सफलता हेतु एक वृहद् चुनौती बनी रहती है।
प्रतिभागियों की कम सक्रियता और सूचनाओं के प्रवाह में आने वाली यह बाधा सर्वेक्षण अनुसंधान की विश्वसनीयता के लिए एक गंभीर और निरंतर खतरा है।

240. (B) वैधता
वैधता वह अवधारणा है जो किसी मापन उपकरण की सटीकता और उसकी सत्यता को संदर्भित करती है। यह इस प्रश्न का उत्तर प्रदान करती है कि क्या उपकरण वास्तव में उसी तथ्य को माप रहा है जिसे उसे मापना चाहिए था। यदि कोई मापन उपकरण त्रुटिपूर्ण सूचना प्रदान कर रहा है, तो वह विश्वसनीय तो हो सकता है किंतु वैध नहीं माना जाएगा। वैधता शोध की गुणवत्ता सुनिश्चित करती है और यह पुष्ट करती है कि अध्ययन के निष्कर्ष यथार्थ के अनुरूप हैं। वैज्ञानिक अनुसंधान में वैधता प्राप्त करना एक मौलिक लक्ष्य है।
मापन की सटीकता और उसका वास्तविक उद्देश्य से पूर्ण तालमेल ही अनुसंधान के परिणामों को सत्यता और वैज्ञानिक स्वीकार्यता प्रदान करने का एकमात्र मार्ग है।

241. (B) शोध करने के लिए तार्किक खाका।
अनुसंधान प्रारूप को शोध संचालित करने हेतु एक तार्किक खाका अथवा ब्लूप्रिंट के रूप में सर्वश्रेष्ठ रूप से परिभाषित किया जा सकता है। यह वह योजना है जो निर्धारित करती है कि प्रदत्त कैसे संकलित होगा, प्रतिदर्श कैसे चयनित होगा और विश्लेषण की प्रक्रिया क्या होगी। एक स्पष्ट प्रारूप शोधकर्ता को अपने उद्देश्यों की प्राप्ति हेतु सुव्यवस्थित दिशा प्रदान करता है। यह अनुसंधान की दक्षता, सटीकता और वैज्ञानिक सत्यनिष्ठा सुनिश्चित करने हेतु अनिवार्य है। बिना किसी ठोस खाके के अनुसंधान कार्य दिशाहीन हो सकता है।
योजना और कार्यान्वयन के बीच एक वैज्ञानिक कड़ी के रूप में कार्य करना ही अनुसंधान प्रारूप की मुख्य भूमिका और उसकी सार्थकता है।

242. (A) संक्रियात्मककरण
'सामाजिक वर्ग' जैसी अमूर्त और वैचारिक धारणाओं को मापने योग्य चरों और स्पष्ट संकेतों में परिवर्तित करने की प्रक्रिया को संक्रियात्मककरण कहते हैं। चूंकि हम सामाजिक वर्ग को प्रत्यक्ष रूप से नहीं देख सकते, अतः हम इसे आय, शिक्षा अथवा व्यवसाय जैसे मापने योग्य संकेतकों के माध्यम से परिभाषित करते हैं। यह प्रक्रिया सिद्धांत और अनुभवजन्य अनुसंधान के मध्य एक सेतु का कार्य करती है। यह सुनिश्चित करती है कि शोधकर्ता जिस अवधारणा का अध्ययन करना चाहता है, उसे यथार्थ में सटीकता और निष्पक्षता के साथ मापा जा सके।
अमूर्त विचारों को व्यावहारिक मापन के योग्य बनाना ही वैज्ञानिक अनुसंधान की प्रामाणिकता और उसकी अनुभवजन्य शुद्धता सुनिश्चित करने का मुख्य आधार है।

243. (C) प्रत्यक्षवाद और व्याख्यात्मकता।
सामाजिक अनुसंधान पद्धति में सर्वाधिक प्रमुख दार्शनिक विवाद प्रत्यक्षवाद और व्याख्यात्मकता के मध्य विद्यमान है। प्रत्यक्षवाद का मत है कि सामाजिक विज्ञान को प्राकृतिक विज्ञानों के सदृश वस्तुनिष्ठ और मात्रात्मक विधियों का उपयोग करना चाहिए। इसके विपरीत, व्याख्यात्मकता का तर्क है कि सामाजिक जगत मानवीय अर्थों और व्याख्याओं से निर्मित है, अतः इसे समझने हेतु गुणात्मक और सहानुभूतिपूर्ण दृष्टिकोण अनिवार्य है। यह बहस शोध के उद्देश्यों, प्रदत्त की प्रकृति और शोधकर्ता की भूमिका के विषय में मौलिक प्रश्न उठाती है।
वैज्ञानिक वस्तुनिष्ठता और मानवीय अर्थों की सूक्ष्म व्याख्या के बीच का यह निरंतर द्वंद्व ही सामाजिक अनुसंधान की विविध पद्धतियों को जन्म देता है।

244. (B) P-4, Q-1, R-3, S-2
प्रश्नावली सामान्यतः उत्तरदाता द्वारा स्वयं प्रशासित और पूरित की जाती है। अनुसूची एक प्रगणक अथवा साक्षात्कारकर्ता द्वारा व्यक्तिगत रूप से संचालित की जाती है। अवलोकन जाँच-सूची व्यवहारों को व्यवस्थित रूप से अंकित करने का एक साधन है। साक्षात्कार मार्गदर्शिका गुणात्मक साक्षात्कार के दौरान चर्चा हेतु मुख्य विषयों की एक लचीली सूची है। इन उपकरणों की सही पहचान शोधकर्ता को प्रदत्त संग्रह हेतु सर्वाधिक उपयुक्त माध्यम चयनित करने में सहायता करती है। यह सुनिश्चित करता है कि सूचना संकलन अध्ययन के उद्देश्यों के अनुरूप हो।
प्रदत्त संग्रह के विभिन्न माध्यमों की विशिष्टताओं को समझकर ही सामाजिक अनुसंधान की प्रक्रिया को वैज्ञानिक दृढ़ता और सटीकता प्रदान की जा सकती है।

245. (C) मामलों की कुल संख्या का
सांख्यिकी में, प्रतीक 'N' सामान्यतः अध्ययन में सम्मिलित मामलों, प्रतिभागियों अथवा इकाइयों की कुल संख्या का प्रतिनिधित्व करता है। यह प्रतिदर्श के आकार अथवा संपूर्ण जनसंख्या की कुल संख्या को प्रदर्शित करने हेतु प्रयुक्त होता है। 'N' का मान सांख्यिकीय गणनाओं में अत्यंत महत्वपूर्ण है क्योंकि यह प्रदत्त की विश्वसनीयता और सामान्यीकरण की क्षमता को प्रभावित करता है। विशाल 'N' प्रायः अधिक सटीक परिणामों और न्यून प्रतिचयन त्रुटि का परिचायक है। रिपोर्टों में 'N' को स्पष्ट रूप से बताना पारदर्शिता हेतु अनिवार्य है।
अध्ययन के विस्तार और सूचनाओं के परिमाण को एक सरल सांख्यिकीय संकेत के रूप में व्यक्त करना ही 'N' की मुख्य भूमिका और उपयोगिता है।

246. (B) एक जीवन इतिहास
जीवन इतिहास एक ऐसी शोध विधि है जो स्वभावतः अनुदैर्ध्य होती है क्योंकि यह किसी व्यक्ति के जीवन में समय के अंतराल

Click Here to Buy book on Amazon

केवल उच्चतम और निम्नतम अंकों के मध्य के अंतर को प्रदर्शित करता है, जिससे यह मध्य के वितरण के विषय में कोई सूचना प्रदान नहीं करता। मानक विचलन यह मापता है कि समस्त अंक अपने माध्य से औसतन कितनी दूरी पर स्थित हैं, जो प्रदत्त के फैलाव की सूक्ष्म और सटीक तस्वीर प्रस्तुत करता है। यह सांख्यिकीय शुद्धता हेतु अनिवार्य है।
वितरण में विचलन की मात्रा को सभी मानों के आधार पर स्पष्ट करना ही मानक विचलन को एक श्रेष्ठ और वैज्ञानिक सांख्यिकीय माप बनाता है।

289. (D) कथन I गलत है, लेकिन कथन II सही है।
सार्थकता परीक्षण कभी भी किसी परिकल्पना को पूर्णतः 'सिद्ध' नहीं कर सकता, क्योंकि विज्ञान सदैव नवीन अन्वेषणों हेतु द्वार खुला रखता है। अतः कथन I त्रुटिपूर्ण है। हालाँकि, कथन II सत्य है क्योंकि सार्थकता परीक्षण केवल यह प्रमाण प्रदान करता है कि प्राप्त निष्कर्ष शून्य परिकल्पना को अस्वीकृत करने में सफल हैं अथवा नहीं। यह सांख्यिकीय आधार पर स्पष्ट करता है कि परिणाम केवल संयोग के कारण होने की संभावना कितनी क्षीण है। यह शोधकर्ता को प्रदत्त की विश्वसनीयता के विषय में निर्णय लेने का तार्किक आधार देता है।
सांख्यिकीय संभावनाओं के आधार पर निष्कर्षों की प्रमाणिकता को मापना ही इस परीक्षण का मुख्य कार्य है, जो निश्चितता के स्थान पर साक्ष्य पर बल देता है।

290. (A) पारस्परिक संबंधों को दर्शाने वाला एक चार्ट।
'समाजआरेख' (Sociogram) एक दृश्य चार्ट है जो समूह के सदस्यों के मध्य पारस्परिक संबंधों, जैसे पसंद-नापसंद और सामाजिक जुड़ाव के प्रतिरूपों को प्रदर्शित करता है। यह समाजमिति विधि का परिणाम होता है और संकेतों के माध्यम से सूचनाओं के प्रवाह और आकर्षण के केंद्रों को स्पष्ट करता है। इसके माध्यम से शोधकर्ता सुगमता से समूह के प्रभावशाली नेताओं और विलग सदस्यों की पहचान कर सकता है। यह समूह की आंतरिक गतिशीलता और सामाजिक संरचना को समझने का अत्यंत प्रभावी दृश्य और वैज्ञानिक उपकरण माना जाता है।
सामाजिक संबंधों के जटिल ताने-बाने को एक स्पष्ट दृश्य चित्र में ढालकर प्रस्तुत करना ही इस तकनीक की मुख्य विशेषता और उसकी उपयोगिता है।

291. (C) नृवंशविज्ञान / सहभागी अवलोकन
नृवंशविज्ञान और सहभागी अवलोकन वे शोध विधियाँ हैं जो प्राथमिक प्रदत्त के रूप में 'क्षेत्र टिप्पणियों' का व्यापक उपयोग करती हैं। क्षेत्र टिप्पणियाँ शोधकर्ता द्वारा अध्ययन स्थल पर किए गए विस्तृत विवरण होते हैं, जिनमें घटनाओं, संवाद और वातावरण का सघन वर्णन सम्मिलित होता है। ये टिप्पणियाँ सामाजिक वास्तविकता को उसके प्राकृतिक संदर्भ में सुरक्षित करने का कार्य करती हैं। विश्लेषण के दौरान, ये टिप्पणियाँ ही साक्ष्य का मुख्य आधार बनती हैं। यह विधि व्यवहार के उन सूक्ष्म पहलुओं को समझने में सक्षम है जो अन्य विधियों में छूट सकते हैं।
वास्तविक समय के अनुभवों और अवलोकनों को व्यवस्थित लिखित रूप में सहेजना ही शोध की प्रामाणिकता और उसकी गहराई सुनिश्चित करने का मुख्य मार्ग है।

292. (D) बड़े नमूनों को संभालना और सांख्यिकीय सामान्यीकरण की अनुमति देना।
मात्रात्मक विधियों का सर्वाधिक महत्वपूर्ण लाभ उनकी यह क्षमता है कि वे अत्यंत वृहद् प्रतिदर्शों को कुशलतापूर्वक प्रबंधित कर सकती हैं और सांख्यिकीय सामान्यीकरण की अनुमति प्रदान करती हैं। इन विधियों के माध्यम से प्राप्त निष्कर्षों को संपूर्ण जनसंख्या पर विश्वास के साथ आरोपित किया जा सकता है, यदि प्रतिचयन वैज्ञानिक हो। ये विधियाँ वस्तुनिष्ठ मापन और चरों के मध्य संबंधों के परीक्षण पर बल देती हैं। यह दृष्टिकोण शोधकर्ता को व्यापक सामाजिक प्रवृत्तियों और प्रतिरूपों को सटीक रूप से मापने और उनकी तुलना करने में सहायता करता है।
सांख्यिकीय शुद्धता और व्यापक निष्कर्षों की प्राप्ति सुनिश्चित करके मात्रात्मक विधियाँ सामाजिक अनुसंधान में एक अनिवार्य और शक्तिशाली भूमिका निभाती हैं।

293. (C) व्यक्तिगत राय
वैज्ञानिक पद्धति का मूल आधार परिकल्पना, व्यवस्थित अवलोकन और सत्यापन पर आधारित है। इसमें तथ्यों की निष्पक्ष जाँच की जाती है ताकि वस्तुनिष्ठ निष्कर्ष प्राप्त किए जा सकें। 'व्यक्तिगत राय' वैज्ञानिक पद्धति का अंग नहीं है, क्योंकि विज्ञान व्यक्तिगत धारणाओं के स्थान पर अनुभवजन्य साक्ष्यों को प्राथमिकता प्रदान करता है। यदि शोध में केवल व्यक्तिगत राय को महत्व दिया जाए, तो वह अपनी वैज्ञानिक प्रामाणिकता खो देगा। वैज्ञानिक पद्धति का मुख्य लक्ष्य व्यक्तिगत पूर्वाग्रहों को विलोपित करना और ऐसा ज्ञान विकसित करना है जिसे परखा जा सके।
साक्ष्यों की तर्कसंगत जाँच और प्रमाणों की माँग ही वैज्ञानिक अन्वेषण की वह शक्ति है जो ज्ञान को शुद्धता, विश्वसनीयता और सर्वमान्यता प्रदान करती है।

294. (B) केंद्रीय प्रवृत्ति का माप
विश्वविद्यालय में औसत आयु की गणना करना केंद्रीय प्रवृत्ति के माप का एक श्रेष्ठ उदाहरण है। यहाँ 'औसत' अथवा माध्य यह प्रदर्शित करता है कि छात्रों की आयु का केंद्र अथवा प्रतिनिधि मान क्या है। यह संपूर्ण प्रदत्त समूह को एक एकल और अर्थपूर्ण अंक में सारांशित करने में सहायता करता है। केंद्रीय प्रवृत्ति के अन्य मापों में माध्यिका और बहुलक भी सम्मिलित हैं। यह सांख्यिकीय मान शोधकर्ता को समूह की सामान्य विशेषताओं को समझने और भिन्न समूहों के मध्य तुलना करने का एक सरल और वैज्ञानिक आधार प्रदान करता है।
सूचनाओं के विशाल समूह को एक प्रतिनिधि मान में ढालकर प्रस्तुत करना ही केंद्रीय प्रवृत्ति के मापों की मुख्य सांख्यिकीय शक्ति और उपयोगिता है।

295. (D) विषय-वस्तु विश्लेषण
व्यक्तिगत डायरी और आत्मकथाओं का विश्लेषण विषय-वस्तु विश्लेषण का एक उदाहरण है। इस विधि के माध्यम से

Downloaded from www.pdf.tube

समाजों में, राज्य संकटों के प्रबंधन के लिए अर्थव्यवस्था में तीव्रता से हस्तक्षेप करता है।
कारण (R): यह हस्तक्षेप "वैधता के संकट" की ओर ले जाता है क्योंकि राज्य ऐसी उत्तरदायित्व लेता है जिन्हें वह पूरा नहीं कर सकता, जिससे जनता का विश्वास और निष्ठा न्यून हो जाती है।
(A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सही है लेकिन R गलत है।
(D) A गलत है लेकिन R सही है।

71. भारत जैसे विविधतापूर्ण देश में "राष्ट्र-निर्माण" की समस्या में किसकी भावना को बढ़ावा देने की चुनौती सम्मिलित है?
(A) सभी भेदों को दबाकर समरूपता।
(B) पड़ोसी देशों पर श्रेष्ठता।
(C) राष्ट्र की उपेक्षा करते हुए केवल अपने स्थानीय समुदाय के प्रति निष्ठा।
(D) राष्ट्रीय पहचान जो विविध आंतरिक पहचानों का सम्मान करती है।

72. समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण से, एक 'झुग्गी-बस्ती' को सर्वोत्तम रूप में किस रूप में संकल्पित किया गया है?
(A) नगरीय निर्धनता और सामाजिक बहिष्करण की एक भौतिक अभिव्यक्ति।
(B) नवीन प्रवासियों के लिए एक अस्थायी आवास समाधान।
(C) बिना किसी सामाजिक संगठन के आपराधिक गतिविधियों का केंद्र।
(D) एक ही जातीय समूह द्वारा विशेष रूप से बसा हुआ क्षेत्र।

73. 'अपराध' (crime) और 'अपचार' (delinquency) के बीच प्राथमिक अंतर किस पर आधारित है?
(A) कृत्य की गंभीरता।
(B) वह स्थान जहाँ कृत्य किया गया था।
(C) अपराधी की आयु।
(D) अपराधी का सामाजिक वर्ग।

74. एक मामला जहाँ एक सॉफ्टवेयर इंजीनियर बैंक के डेटाबेस को अवैध रूप से एक्सेस करने और अपने खाते में धन हस्तांतरित करने के लिए अपने कौशल का उपयोग करता है, किसका उदाहरण है?
(A) साइबर-संबंधित कार्यों की ओर अपराध की रूपरेखा में परिवर्तन।
(B) संपत्ति अपराध का पारंपरिक रूप।
(C) दुर्खीम द्वारा वर्णित विसंगति (anomie) की अवधारणा।
(D) नगरीय क्षेत्रों में जेंट्रीफिकेशन की प्रक्रिया।

75. एंथनी गिडिन्स के संरचनाकरण सिद्धांत के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. यह इस बात पर बल देता है कि संरचनाएँ कठोर और व्यक्तियों के लिए बाह्य होती हैं, जो उनके कार्यों को पूर्णतः निर्धारित करती हैं।
2. यह 'संरचना की द्वैतता' की अवधारणा प्रस्तुत करता है, जहाँ संरचना क्रिया का माध्यम और परिणाम दोनों है।
3. यह तर्क देता है कि मानवीय कर्ता 'जानकार अभिनेता' (knowledgeable actors) हैं जिनके पास व्यावहारिक और विमर्शात्मक दोनों चेतनाएँ होती हैं।

ऊपर दिए गए कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?
(A) केवल 1
(B) केवल 1 और 2
(C) केवल 2 और 3
(D) 1, 2 और 3

76. योजना आयोग के स्थान पर नीति आयोग का गठन किसकी ओर परिवर्तन का संकेत देता है?
(A) नियोजन के लिए अधिक केंद्रीकृत, 'कमांड-एंड-कंट्रोल' दृष्टिकोण।
(B) सहकारी संघवाद पर बल देने वाला एक सांकेतिक नियोजन मॉडल।
(C) किसी भी प्रकार के राष्ट्रीय नियोजन का पूर्ण उन्मूलन।
(D) केवल कृषि विकास पर ध्यान केंद्रित करना।

77. अल्थुसर के ढांचे में निम्नलिखित में से कौन-सा वैचारिक राज्य तंत्र (ISA) नहीं है?
(A) परिवार
(B) विद्यालय
(C) सेना
(D) चर्च

78. 'वृहद आख्यानों' (grand narratives) के संबंध में उत्तर-आधुनिकतावाद का केंद्रीय तर्क यह है कि वे:
(A) वस्तुनिष्ठ सत्य को समझने के लिए आवश्यक हैं।
(B) समकालीन विश्व में अधिक प्रासंगिक हो गए हैं।
(C) वैज्ञानिक ज्ञान का एकमात्र स्रोत हैं।
(D) वैकल्पिक दृष्टिकोणों और ज्ञान के रूपों को हाशिए पर धकेल देते हैं।

79. "संवादात्मक क्रिया" (Communicative Action) की अवधारणा से कौन-सा सिद्धांतकार सबसे निकटता से संबद्ध है?
(A) जुर्गन हेबरमास
(B) लुई अल्थुसर
(C) जैक्स डेरिडा
(D) जेफरी अलेक्जेंडर

80. जेफरी अलेक्जेंडर की परियोजना का एक प्रमुख पक्ष प्रकार्यवाद को विशुद्ध रूप से वृहद (macro) परिप्रेक्ष्य से दूर ले जाना और किसे सम्मिलित करना था?
(A) आर्थिक आधार पर एक नवीन ध्यान।
(B) सूक्ष्म-स्तरीय (micro-level) आकस्मिकता और अभिकर्तृत्व की समझ।
(C) एक क्रांतिकारी राजनीतिक कार्यक्रम।

STUDYING FROM PDFs?

THINK AGAIN.

If you are studying only from PDFs,
you are wasting valuable time.

Research shows that learning from

PRINTED BOOKS has up to

4× HIGHER RETENTION

than studying from screens.

PRINT BOOK = BETTER MEMORY

PDF = LOWER RETENTION

Those who study from **PRINTED BOOKS**
move **AHEAD.**

Others are left **BEHIND**
in competition.



In competitive exams,
being average is not enough.

STAY ONE STEP AHEAD.

अध्याय 05
प्रकार्यवाद

1. निम्नलिखित में से कौन-सा जेफरी अलेक्ज़ेंडर के 'नव-प्रकार्यवाद' (Neo-functionalism) के मुख्य उद्देश्य को सबसे सटीक रूप से परिभाषित करता है?
(A) पार्सन्स के प्रकार्यवाद के दोषों के कारण उसे पूर्णतः अस्वीकार करना।
(B) पार्सन्स के सिद्धांत के मूल तत्वों को बनाए रखते हुए उनमें परिमार्जन करना।
(C) शक्ति और संघर्ष पर केंद्रित एक नवीन 'वृहद सिद्धांत' (Grand Theory) विकसित करना।
(D) केवल सूक्ष्म-स्तरीय (micro-level) अंतःक्रियाओं के माध्यम से सामाजिक जीवन की जांच करना।

2. जुर्गन हेबरमास के अनुसार, "जीवन-जगत" (Lifeworld) समाज के किस पक्ष को संदर्भित करता है?
(A) सांस्कृतिक ज्ञान और सामाजिक एकजुटता का साझा क्षेत्र।
(B) आर्थिक प्रणालियाँ जिनका आधुनिक दैनिक जीवन पर वर्चस्व है।
(C) राज्य के वे तंत्र जो बल प्रयोग के माध्यम से व्यवस्था लागू करते हैं।
(D) आधुनिक सरकारी प्रशासन के तर्कसंगत क्षेत्र।

3. लुई अल्थुसर की 'वैचारिक राज्य तंत्र' (ISAs) की अवधारणा के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
कथन I: वैचारिक राज्य तंत्र (ISAs) मुख्य रूप से शासक वर्ग के शासन को बनाए रखने के लिए हिंसा और दमन के माध्यम से कार्य करते हैं।
कथन II: परिवार, शैक्षिक प्रणाली और धार्मिक संस्थान ISAs के उदाहरण हैं।
निम्नलिखित में से कौन-सा विकल्प सही है?
(A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
(B) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।
(C) कथन I सही है, लेकिन कथन II गलत है।
(D) कथन I गलत है, लेकिन कथन II सही है।

4. निम्नलिखित में से कौन-सी एंथनी गिडिन्स द्वारा अपने 'संरचनाकरण सिद्धांत' (Structuration theory) में प्रस्तावित एक प्रमुख अवधारणा है?
(A) तर्कसंगतता का लौह पिंजरा (The iron cage of rationality)
(B) वैधता का संकट (The legitimation crisis)
(C) सिमुलाक्रम (The simulacrum)
(D) संरचना की द्वैतता (The duality of structure)

5. सूची I के विचारकों को सूची II में उनकी संबंधित प्रमुख अवधारणाओं के साथ सुमेलित कीजिए:
सूची I: विचारक
P. जैक्स डेरिडा
Q. जुर्गन हेबरमास
R. एंथनी गिडिन्स
S. लुई अल्थुसर
सूची II: प्रमुख अवधारणा
1. संवादात्मक क्रिया (Communicative Action)
2. इंटरपेलशन (Interpellation)
3. विखंडनवाद (Deconstruction)
4. संरचना की द्वैतता (Duality of Structure)
सही विकल्प चुनें:
(A) P-3, Q-1, R-4, S-2
(B) P-1, Q-3, R-2, S-4
(C) P-3, Q-2, R-1, S-4
(D) P-4, Q-1, R-3, S-2

6. कौन-सा कथन डेरिडा जैसे विचारकों से जुड़े 'उत्तर-आधुनिकतावाद' (Post-Modernism) के केंद्रीय तर्क को सटीक रूप से दर्शाता है?
(A) वैज्ञानिक विधियों से खोजा जा सकने वाला एक ही सत्य या वास्तविकता है।
(B) ज्ञान खंडित, बहुल और भाषा द्वारा निर्मित है।
(C) वृहद आख्यान (Grand narratives) समाज का व्यापक दृष्टिकोण प्रदान करते हैं।
(D) सामाजिक विकास पूर्ण प्रगति की ओर एक रैखिक मार्ग का अनुसरण करता है।

7. निम्नलिखित में से किसे सतत विकास (Sustainable development) का लक्ष्य नहीं माना जाता है?
(A) वर्तमान पीढ़ी की आवश्यकताओं को पूरा करना।
(B) पर्यावरण और प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण करना।
(C) भविष्य की पीढ़ियों की अपनी आवश्यकताओं को पूरा करने की क्षमता सुनिश्चित करना।
(D) सभी पर्यावरणीय प्रभावों की अवहेलना कर आर्थिक विकास को प्राथमिकता देना।

8. एक ऐसी स्थिति जहाँ एक विशाल बाँध के निर्माण के कारण बड़ी संख्या में लोगों को उनके घरों से अनैच्छिक रूप से विस्थापित कर दिया जाता है, उसे सबसे सटीक रूप में किस रूप में वर्णित किया जा सकता है?

Click Here to Buy book on Amazon

49. भारत में राष्ट्र-निर्माण की प्रक्रिया के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
कथन I: भारत में राष्ट्र-निर्माण की प्रक्रिया एक समाप्त और पूर्ण परियोजना है।
कथन II: क्षेत्रवाद, सांप्रदायिकता और भाषाई संघर्ष जैसे विषय भारत में राष्ट्रीय एकीकरण के लिए चुनौतियाँ प्रस्तुत करना जारी रखते हैं।
निम्नलिखित में से कौन-सा विकल्प सही है?
(A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
(B) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।
(C) कथन I सही है, लेकिन कथन II गलत है।
(D) कथन I गलत है, लेकिन कथन II सही है।

50. एंथनी गिडिन्स के लिए एक केंद्रीय अवधारणा "संरचना की द्वैतता" (duality of structure) का अर्थ है कि:
(A) संरचनाएँ क्रिया द्वारा निर्मित भी होती हैं और उसका माध्यम भी हैं।
(B) समाज दो विरोधी वर्गों में विभाजित है।
(C) सामाजिक संरचनाएँ और मानवीय अभिकर्तृत्व पृथक और विरोधी शक्तियाँ हैं।
(D) व्यक्तियों में दो पृथक चेतनाएँ होती हैं: एक व्यावहारिक और एक विमर्शात्मक।

51. जेफरी अलेक्जेंडर की नव-प्रकार्यवादी सैद्धांतिक रुपरेखा को किस रूप में वर्णित किया गया है?
(A) एक-आयामी और नियतिवादी।
(B) केवल वृहद-स्तरीय (macro-level) संरचनाओं पर केंद्रित।
(C) बहुआयामी और क्रिया एवं संरचना दोनों को समाहित करने वाली।
(D) पूंजीवाद की आलोचनात्मक और क्रांति पर केंद्रित।

52. हेबरमास के सिद्धांत में, 'सार्वजनिक क्षेत्र' (public sphere) एक ऐसा क्षेत्र है जहाँ:
(A) राज्य अपनी दमनकारी शक्ति का प्रयोग करता है।
(B) आर्थिक लेनदेन और बाजार प्रतिस्पर्धा होती है।
(C) धार्मिक अनुष्ठान और समारोह आयोजित किए जाते हैं।
(D) व्यक्ति सामान्य हितों पर वाद-विवाद करने के लिए एक सार्वजनिक निकाय बनाते हैं।

53. लुई अल्थुसर निम्नलिखित में से किसे 'दमनकारी राज्य तंत्र' (RSA) के रूप में वर्गीकृत करेंगे?
(A) मीडिया
(B) शिक्षा प्रणाली
(C) पुलिस
(D) परिवार

54. जैक्स डेरिडा के विखंडनवादी दृष्टिकोण में किस पर प्रश्न उठाना सम्मिलित है?
(A) विज्ञान की प्रगति।
(B) द्विआधारी विरोध (binary oppositions) और भाषाई अर्थ की स्थिरता।
(C) सामाजिक वर्ग का अस्तित्व।
(D) सामाजिक संस्थाओं के कार्य।

55. खनन परियोजनाओं के कारण समुदायों का उनकी भूमि से अनैच्छिक निष्कासन किसका एक विशिष्ट उदाहरण है?
(A) क्षेत्रीय असमानता
(B) झुग्गी-बस्ती निर्माण
(C) श्वेत-वसन अपराध
(D) विकास-प्रेरित विस्थापन

56. निम्नलिखित में से कौन-सा नीति आयोग का कार्य नहीं है?
(A) राज्यों के लिए वार्षिक वित्तीय योजनाओं को अंतिम रूप देना और निधि आवंटित करना।
(B) रणनीतिक दीर्घकालिक नीति निर्मित करना।
(C) संसाधन केंद्र और ज्ञान केंद्र के रूप में कार्य करना।
(D) सरकारी कार्यक्रमों की निगरानी और मूल्यांकन करना।

57. एक समाजशास्त्री का तर्क है कि साइबर अपराध की बढ़ती दर "अपराध की बदलती रूपरेखा" का प्रतिनिधित्व करती है। इस तर्क का निहितार्थ है कि:
(A) चोरी जैसे पारंपरिक अपराध विलुप्त हो गए हैं।
(B) अपराध दर सार्वभौमिक रूप से न्यून हो रही है।
(C) नवीन सामाजिक स्थितियाँ नवीन आपराधिक रूपों को जन्म देती हैं।
(D) अब केवल धनी व्यक्ति ही अपराध के शिकार होते हैं।

58. धर्मनिरपेक्षता का भारतीय मॉडल पश्चिमी मॉडल से मुख्य रूप से इस अर्थ में भिन्न है कि भारतीय राज्य:
(A) सामाजिक सुधार लागू करने के लिए धार्मिक विषयों में हस्तक्षेप कर सकता है।
(B) धार्मिक विषयों में कठोर पृथक्करण और गैर-हस्तक्षेप की नीति अपनाता है।
(C) आधिकारिक तौर पर नास्तिक है और सभी धर्मों का दमन करता है।
(D) का संवैधानिक रूप से घोषित राज्य धर्म है।

59. कौन-सा कथन भारत में परंपरा और आधुनिकता के बीच संबंध का सर्वोत्तम प्रतिनिधित्व करता है?
(A) परंपरा से आधुनिकता की ओर एक रैखिक प्रगति।
(B) परंपरा पर आधुनिकता की पूर्ण विजय।
(C) पारंपरिक शक्तियों द्वारा आधुनिकता का उन्मूलन।
(D) संवाद, अनुकूलन और समन्वय (syncretism) की एक जटिल प्रक्रिया।

60. गिडिन्स की इस समझ के लिए कौन-सी अवधारणा केंद्रीय है कि कर्ता (agents) सामाजिक व्यवस्था को कैसे बनाए रखते हैं, अक्सर उन नियमों को स्पष्ट करने में अक्षम हुए बिना जिनका वे पालन कर रहे हैं?
(A) विमर्शात्मक चेतना (Discursive Consciousness)
(B) व्यावहारिक चेतना (Practical Consciousness)

NODIA

निर्मित करने और उसे बनाए रखने के लिए दैनिक संवाद और सामाजिक नियमों का उपयोग किया जाता है, वह संभवतः किसके सिद्धांतों को लागू कर रहा है?
(A) गिडिन्स का संरचनाकरण सिद्धांत
(B) अल्थुसर का संरचनात्मक मार्क्सवाद
(C) डेरिडा का विखंडनवाद
(D) हेबरमास का सार्वजनिक क्षेत्र का सिद्धांत

19. जैक्स डेरिडा की 'विखंडनवाद' (deconstruction) की पद्धति को सबसे सटीक रूप में किस रूप में समझा जा सकता है?
(A) किसी पाठ (text) के लिए एक निश्चित और अंतिम अर्थ स्थापित करना।
(B) पश्चिमी दार्शनिक परंपराओं की श्रेष्ठता सिद्ध करना।
(C) किसी पाठ के भीतर के आंतरिक विरोधाभासों और मान्यताओं को उजागर करना।
(D) सामाजिक इतिहास की व्याख्या करने के लिए एक वृहद आख्यान का निर्माण करना।

20. निम्नलिखित में से कौन-सा नीति आयोग का प्राथमिक संरचनात्मक घटक नहीं है?
(A) शासी परिषद (Governing Council) जिसमें सभी राज्यों के मुख्यमंत्री सम्मिलित हैं।
(B) विशिष्ट क्षेत्रीय विषयों के समाधान के लिए क्षेत्रीय परिषदें।
(C) एक पूर्णकालिक संगठनात्मक ढांचा जिसमें एक उपाध्यक्ष और सीईओ सम्मिलित हैं।
(D) राज्यों को वित्तीय निधि वितरित करने का अंतिम अधिकार।

21. वह घटना जहाँ कुछ नगरीय क्षेत्रों की विशेषता निम्न-स्तरीय आवास, अत्यधिक भीड़भाड़ और बुनियादी सेवाओं का अभाव होती है, उसे क्या कहा जाता है?
(A) जेंट्रीफिकेशन (Gentrification)
(B) नगरीय पुनरुद्धार (Urban renewal)
(C) झुग्गी-बस्ती (Slum)
(D) गेटेड कम्युनिटी (Gated community)

22. निम्नलिखित में से कौन-सा युग्म विचलन (deviance) के रूप और उसके वर्गीकरण को सही ढंग से सुमेलित करता है?
(A) रिश्वतखोरी - अनौपचारिक विचलन
(B) हत्या - औपचारिक विचलन (अपराध)
(C) पुस्तकालय में ज़ोर से बोलना - औपचारिक विचलन (अपराध)
(D) कर चोरी - अनौपचारिक विचलन

23. समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण से, मादक पदार्थों की लत (drug addiction) को मुख्य रूप से किस रूप में देखा जाता है?
(A) पूर्णतः एक व्यक्तिगत नैतिक विफलता।
(B) केवल अल्प आय वाले समुदायों की एक समस्या।
(C) पूर्णतः एक जैविक और आनुवंशिक स्थिति।
(D) सामाजिक हाशिए पर होने और साथियों के दबाव से प्रेरित एक सामाजिक विषय।

24. भारत में 'परंपरा और आधुनिकता' (Tradition and Modernity in India) के बीच चल रही चर्चा क्या संकेत देती है?
(A) परंपराएँ अक्सर आधुनिक संदर्भों के भीतर अनुकूलित होती हैं और सह-अस्तित्व में रहती हैं।
(B) आधुनिकता ने सभी पारंपरिक प्रथाओं को पूर्णतः समाप्त कर दिया है।
(C) परंपरा और आधुनिकता परस्पर अनन्य (mutually exclusive) अवधारणाएँ हैं।
(D) भारत ने आधुनिकता के सभी पक्षों को पूर्णतः अस्वीकार कर दिया है।

25. निम्नलिखित विचारकों को उनके प्रमुख सिद्धांतों के प्राथमिक विकास के कालानुक्रमिक क्रम में व्यवस्थित करें:
1. जुर्गन हेबरमास
2. लुई अल्थुसर
3. एंथनी गिडिन्स
4. जेफरी अलेक्जेंडर
(A) 1, 2, 4, 3
(B) 4, 3, 1, 2
(C) 2, 1, 3, 4
(D) 2, 3, 4, 1

26. जेफरी अलेक्जेंडर की नव-प्रकार्यवादी परियोजना के संबंध में निम्नलिखित में से कौन-सा कथन गलत है?
(A) यह 'सामाजिक व्यवस्था' (social system) की अवधारणा को पूर्णतः त्याग देता है।
(B) यह सामाजिक विश्लेषण के लिए एक बहु-आयामी दृष्टिकोण की वकालत करता है।
(C) यह विश्लेषण के सूक्ष्म (micro) और वृहद (macro) स्तरों को पुनः एकीकृत करने का प्रयास करता है।
(D) यह सामाजिक जीवन के अंग के रूप में संघर्ष और संतुलन दोनों को स्वीकार करता है।

27. हेबरमास के कार्य में "संवादात्मक क्रिया" (Communicative Action) की अवधारणा किस ओर उन्मुख सामाजिक क्रिया को संदर्भित करती है?
(A) रणनीतिक सफलता और व्यक्तिगत लाभ।
(B) एक करिश्माई नेता के आदेशों का अनुपालन करना।
(C) बिना किसी प्रश्न के पारंपरिक मानदंडों को बनाए रखना।
(D) तर्कसंगत विमर्श के माध्यम से पारस्परिक समझ तक पहुँचना।

28. वह प्रक्रिया जिसके द्वारा व्यक्तियों को विचारधारा द्वारा एक विशेष कर्ता-प्रास्थिति (subject-position) में "आवाहन" (hailed) या भर्ती किया जाता है, लुई अल्थुसर द्वारा उसे क्या कहा गया है?
(A) अलगाव (Alienation)

Downloaded from www.pdf.tube

(B) इंटरपेलशन (Interpellation)
(C) उच्चीकरण (Sublimation)
(D) तर्कसंगतकरण (Rationalization)

29. एंथनी गिडिन्स के 'संरचनाकरण सिद्धांत' के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
कथन I: गिडिन्स के सिद्धांत में, 'संरचना' को केवल मानवीय अभिकर्तृत्व (agency) पर एक बाधा के रूप में देखा जाता है।
कथन II: गिडिन्स का मानना है कि संरचना सामाजिक क्रिया का माध्यम और परिणाम दोनों है (संरचना की द्वैतता)।
निम्नलिखित में से कौन-सा विकल्प सही है?
(A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
(B) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।
(C) कथन I सही है, लेकिन कथन II गलत है।
(D) कथन I गलत है, लेकिन कथन II सही है।

30. जैक्स डेरिडा द्वारा गढ़ा गया शब्द 'différance' (डिफेरांस) इस विचार की ओर संकेत करता है कि:
(A) शब्द का अर्थ स्थिर और निश्चित होता है।
(B) सभी द्विआधारी विरोध (binary oppositions) प्राकृतिक और सार्वभौमिक हैं।
(C) भाषा पूर्णतः एक बाह्य वास्तविकता को प्रतिबिंबित करती है।
(D) अर्थ विभेद (difference) के माध्यम से उत्पन्न होता है और आस्थगित (deferred) होता है।

31. किसी देश में 'क्षेत्रीय असमानता' (regional disparity) से संबंधित एक प्रमुख चुनौती किसे संदर्भित करती है?
(A) क्षेत्रों के बीच विकास और कल्याण में असंतुलन।
(B) सभी भौगोलिक क्षेत्रों में समान आर्थिक विकास।
(C) प्राकृतिक संसाधनों का समान वितरण।
(D) राष्ट्र के सभी भागों में पाई जाने वाली समान सांस्कृतिक प्रथाएँ।

32. भारत सरकार के लिए 'थिंक टैंक' के रूप में कार्य करने वाले नीति आयोग का मुख्य उद्देश्य क्या है?
(A) ग्राम स्तर पर सीधे कल्याणकारी योजनाओं को लागू करना।
(B) रणनीतिक और तकनीकी नीतिगत परामर्श प्रदान करना।
(C) बिना परामर्श के राज्य स्तरीय परियोजनाओं के लिए धन आवंटित करना।
(D) अंतर-राज्यीय विवादों को सुलझाने के लिए एक न्यायिक निकाय के रूप में कार्य करना।

33. निम्नलिखित में से कौन-सा 'अपचार' (delinquency) का सबसे सटीक उदाहरण है?
(A) एक कॉर्पोरेट अधिशासी द्वारा वित्तीय धोखाधड़ी करना।
(B) एक नाबालिग (किशोर) द्वारा बार-बार तोड़फोड़ की गतिविधियों में संलिप्त होना।
(C) एक वयस्क द्वारा विभाग भंडार (department store) से चोरी करना।
(D) एक राजनीतिज्ञ द्वारा रिश्वत स्वीकार करना।

34. आधुनिक भारतीय राजनीति में जाति-आधारित पहचानों की निरंतरता और उनका प्रभाव किसका उदाहरण है?
(A) परंपरा और आधुनिकता की अंतःक्रिया और समन्वय (syncretism)।
(B) आधुनिकीकरण की प्रक्रिया की पूर्ण विफलता।
(C) लोकतांत्रिक सिद्धांतों की पूर्ण अस्वीकृति।
(D) सभी पारंपरिक संरचनाओं का सफल उन्मूलन।

35. सूची I की अवधारणाओं को सूची II में उनके संबद्ध विचारों के साथ सुमेलित कीजिए:
सूची I: अवधारणा
P. श्वेत-वसन अपराध
Q. विस्थापन
R. बहुलवाद
S. झुग्गी-बस्ती
सूची II: संबद्ध विचार
1. विविध संस्कृतियों का सह-अस्तित्व
2. निम्न-स्तरीय नगरीय आवास
3. विशिष्ट वर्ग का व्यावसायिक अपराध
4. अनैच्छिक पुनर्वास
सही विकल्प चुनें:
(A) P-1, Q-2, R-3, S-4
(B) P-3, Q-4, R-1, S-2
(C) P-2, Q-1, R-4, S-3
(D) P-3, Q-2, R-1, S-4

36. भारत में प्रचलित 'धर्मनिरपेक्षता' (secularism) की अवधारणा को अक्सर 'सर्व धर्म समभाव' के रूप में वर्णित किया जाता है, जिसका अर्थ है:
(A) राज्य का अपना आधिकारिक धर्म होना।
(B) एक कठोर पृथक्करण जहाँ राज्य धर्म के प्रति शत्रुतापूर्ण हो।
(C) सभी धार्मिक विषयों के प्रति राज्य की उदासीनता।
(D) राज्य द्वारा सभी धर्मों के साथ समान सम्मान का व्यवहार करना।

37. एक बहुलवादी समाज के लिए राष्ट्र-निर्माण में एक प्रमुख समस्या क्या है?
(A) सभी नागरिकों पर एक एकल, समरूप संस्कृति लागू करना।
(B) क्षेत्रीय और सांस्कृतिक भेदों के सभी रूपों को समाप्त करना।
(C) विविध पहचानों का सम्मान और समायोजन करते हुए राष्ट्रीय एकता प्राप्त करना।
(D) केवल बहुसंख्यक समुदाय के हितों को बढ़ावा देना।

38. हेबरमास के अनुसार, "वैधता का संकट" (legitimation crisis) तब होता है जब:

NODIA

(A) जीवन-जगत सफलतापूर्वक सिस्टम द्वारा औपनिवेशीकरण का विरोध करता है।
(B) राज्य अपने नागरिकों की निष्ठा बनाए रखने में विफल रहता है।
(C) संवादात्मक क्रिया सामाजिक अंतःक्रिया का प्रमुख रूप बन जाती है।
(D) आर्थिक समृद्धि अपने चरमोत्कर्ष पर होती है, जिससे सामाजिक आत्मसंतुष्टि होती है।

39. अधिसंरचनाओं (जैसे राज्य और विचारधारा) की "सापेक्ष स्वायत्तता" (relative autonomy) से अल्थुसर का क्या आशय है?
(A) वे आर्थिक आधार से पूर्णतः स्वतंत्र हैं।
(B) वे आर्थिक आधार द्वारा यंत्रवत रूप से निर्धारित होते हैं।
(C) आर्थिक आधार पर उनका कोई प्रभाव नहीं पड़ता है।
(D) उनके पास आर्थिक आधार से सीमित स्वतंत्रता है।

40. नीचे दो कथन दिए गए हैं: एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है।
अभिकथन (A): एंथनी गिडिन्स का संरचनाकरण सिद्धांत सामाजिक सिद्धांत में अभिकर्तृत्व (agency) और संरचना (structure) के द्वैतवाद को दूर करने का प्रयास करता है।
कारण (R): गिडिन्स का तर्क है कि अभिकर्तृत्व और संरचना दो स्वतंत्र रूप से विद्यमान संस्थाएं हैं, जिसमें संरचना हमेशा अभिकर्तृत्व को निर्धारित करती है।
(A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सही है लेकिन R गलत है।
(D) A गलत है लेकिन R सही है।

41. उत्तर-आधुनिकतावादी विचार का एक प्रमुख केंद्र 'लोगोसेंट्रिज्म' (logocentrism) की आलोचना है, जो संदर्भित करता है:
(A) तर्कों में तार्किक कमियों का अध्ययन।
(B) लिखित पाठों पर दृश्य संस्कृति का बल।
(C) सत्य के आधार के रूप में वाणी और तर्क को प्राथमिकता देना।
(D) अनेक, समान रूप से मान्य वास्तविकताओं में विश्वास।

42. निम्नलिखित में से कौन-सा समकालीन विषय असमान आर्थिक विकास का सीधा परिणाम है, जिससे कुछ भौगोलिक क्षेत्रों में धन का संकेंद्रण होता है जबकि अन्य पिछड़ जाते हैं?
(A) क्षेत्रीय असमानता
(B) मादक पदार्थों की लत
(C) श्वेत-वसन अपराध
(D) धर्मनिरपेक्षता

43. नीति आयोग की शासी परिषद (Governing Council) का प्राथमिक कार्य निम्नलिखित में से कौन-सा है?
(A) केंद्रीय बजट को अनुमति देना।
(B) उच्चतम न्यायालय के न्यायाधीशों की नियुक्ति करना।
(C) राष्ट्रीय निर्वाचन आयोजित करना।
(D) राज्यों के मुख्यमंत्रियों के लिए एक विचार-विमर्श मंच के रूप में कार्य करना।

44. वह व्यवहार जो महत्वपूर्ण सामाजिक मानदंडों का उल्लंघन करता है और समाज में बड़ी संख्या में लोगों द्वारा अस्वीकार किया जाता है, उसे व्यापक रूप से क्या कहा जाता है?
(A) बहुलवाद
(B) विचलन (Deviance)
(C) आधुनिकता
(D) संरचनाकरण

45. सतत विकास के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. यह केवल पर्यावरण संरक्षण पर केंद्रित है, आर्थिक और सामाजिक कारकों की उपेक्षा करता है।
2. यह आर्थिक विकास, सामाजिक समानता और पर्यावरण संरक्षण के बीच संतुलन को बढ़ावा देता है।
3. यह एक विकास मॉडल है जो मुख्य रूप से भविष्य की कीमत पर वर्तमान पीढ़ी को लाभ पहुँचाता है।

ऊपर दिए गए कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?
(A) केवल 2
(B) केवल 1 और 3
(C) केवल 1
(D) 1, 2 और 3

46. निम्नलिखित में से किसे सामान्यतः श्वेत-वसन अपराध का रूप नहीं माना जाता है?
(A) गबन (Embezzlement)
(B) इनसाइडर ट्रेडिंग
(C) भ्रष्टाचार/रिश्वतखोरी
(D) सशस्त्र डकैती

47. 'अपचार' (delinquency) शब्द का प्रयोग विशेष रूप से किसे संदर्भित करने के लिए किया जाता है?
(A) किशोरों द्वारा किए गए आपराधिक या असामाजिक कृत्य।
(B) एक वयस्क द्वारा किया गया कोई भी आपराधिक कृत्य।
(C) गैर-अपराधिक किंतु विचलित व्यवहार।
(D) उच्चतम स्तरों पर राजनीतिक भ्रष्टाचार।

48. दुर्खीम की परंपरा का अनुकरण करते हुए, आत्महत्या की समाजशास्त्रीय समझ किस पर बल देगी?
(A) व्यक्ति की मनोवैज्ञानिक निर्बलता और व्यक्तिगत विकृति।
(B) सामाजिक कारकों जैसे सामाजिक एकीकरण और नियमन का प्रभाव।
(C) शून्य में लिया गया एक विशुद्ध रूप से तर्कसंगत विकल्प।
(D) आनुवंशिक प्रवृत्तियों के परिणाम के रूप में आत्महत्या।

Click Here to Buy book on Amazon

(A) विकास-प्रेरित विस्थापन
(B) स्वैच्छिक प्रवास
(C) मौसमी प्रवास
(D) नगरीय फैलाव (Urban sprawl)

9. भारत में नीति (NITI) आयोग के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
कथन I: नीति आयोग की स्थापना भारत में योजना आयोग के स्थान पर की गई थी।
कथन II: नीति आयोग का एक प्रमुख कार्य नीति-निर्माण प्रक्रिया में राज्यों को सम्मिलित करके सहकारी संघवाद को बढ़ावा देना है।
निम्नलिखित में से कौन-सा विकल्प सही है?
(A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
(B) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।
(C) कथन I सही है, लेकिन कथन II गलत है।
(D) कथन I गलत है, लेकिन कथन II सही है।

10. नीचे दो कथन दिए गए हैं: एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है।
अभिकथन (A): जेफरी अलेक्ज़ेंडर ने शास्त्रीय प्रकार्यवाद की उसके व्यक्ति-विरोधी (anti-individualistic) पूर्वाग्रह के लिए आलोचना की।
कारण (R): नव-प्रकार्यवाद संरचना (structure) को अभिकर्तृत्व (agency) के साथ एकीकृत करने का प्रयास करता है।
(A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सही है लेकिन R गलत है।
(D) A गलत है लेकिन R सही है।

11. निम्नलिखित में से कौन-सा कृत्य 'विचलन' (deviance) तो है किंतु आवश्यक रूप से 'अपराध' (crime) नहीं है?
(A) एक व्यक्ति द्वारा शारीरिक लूटपाट करना।
(B) एक चालक द्वारा राजमार्ग की गति सीमा का उल्लंघन करना।
(C) एक व्यक्ति द्वारा अवैध इनसाइडर ट्रेडिंग में संलिप्त होना।
(D) एक छात्र द्वारा विद्यालय के औपचारिक परिधान संबंधी नियमों का उल्लंघन करना।

12. "श्वेत-वसन अपराध" (white-collar crime) शब्द मूल रूप से किसके द्वारा किए गए अपराधों का वर्णन करने के लिए गढ़ा गया था?
(A) महानगरीय क्षेत्रों में रहने वाले नगरीय निर्धन।
(B) अपने व्यवसायों के भीतर उच्च-प्रास्थिति वाले व्यक्ति।
(C) निम्न सामाजिक-आर्थिक पृष्ठभूमि वाले व्यक्ति।
(D) पथ हिंसा में संलिप्त संगठित आपराधिक गिरोह।

13. समकालीन, वैश्वीकृत विश्व में "अपराध की रूपरेखा" (profile of crime) में सबसे महत्वपूर्ण परिवर्तन क्या है?
(A) पारंपरिक संपत्ति अपराधों का पूर्णतः विलुप्त होना।
(B) हिंसक अपराध के सभी रूपों में न्यूनता।
(C) साइबर अपराध और अंतरराष्ट्रीय संगठित अपराध का उदय।
(D) सार्वजनिक पदों पर भ्रष्टाचार का उन्मूलन।

14. भारतीय समाज के संदर्भ में, 'बहुलवाद' (pluralism) की अवधारणा मुख्य रूप से किसे संदर्भित करती है?
(A) एक ही प्रभावशाली राजनीतिक दल का अस्तित्व।
(B) सभी नागरिकों के लिए एक समान नागरिक संहिता का समान अनुप्रयोग।
(C) सभी राज्यों में एक ही राष्ट्रीय भाषा का प्रभुत्व।
(D) विविध धार्मिक, भाषाई और सांस्कृतिक समूहों का सह-अस्तित्व।

15. भारत में राष्ट्र-निर्माण (nation-building) के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. धर्मनिरपेक्षता को बढ़ावा देना राष्ट्रीय एकता के लिए एक महत्वपूर्ण तत्व माना जाता है।
2. भाषाई विविधता ने अक्सर राष्ट्र-निर्माण की प्रक्रिया में चुनौतियाँ प्रस्तुत की हैं।
3. भारतीय संविधान एक एकात्मक राज्य की वकालत करता है जिसमें क्षेत्रीय संस्थाओं के लिए कोई स्वायत्तता नहीं है।

ऊपर दिए गए कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?
(A) केवल 1
(B) केवल 1 और 2
(C) केवल 2 और 3
(D) 1, 2 और 3

16. हेबरमास की कौन-सी अवधारणा उस प्रक्रिया का वर्णन करती है जिसके द्वारा आर्थिक और प्रशासनिक प्रणालियाँ ('सिस्टम') 'जीवन-जगत' पर हावी हो जाती हैं और उसे तर्कसंगत बनाती हैं?
(A) सार्वजनिक क्षेत्र (Public Sphere)
(B) जीवन-जगत का औपनिवेशीकरण (Colonization of the Lifeworld)
(C) वैधता का संकट (Legitimation Crisis)
(D) संवादात्मक क्रिया (Communicative Action)

17. अल्थुसर के अनुसार, 'दमनकारी राज्य तंत्र' (RSA) का प्राथमिक कार्य क्या है?
(A) शिक्षा और मीडिया के माध्यम से नागरिकों की विचारधाराओं को आकार देना।
(B) मुख्य रूप से हिंसा या हिंसा के भय के माध्यम से कार्य करना।
(C) राष्ट्रीय पहचान और एकजुटता की भावना उत्पन्न करना।
(D) समाज के आर्थिक उत्पादन का प्रबंधन करना।

NODIA

18. एक समाजशास्त्री जो इस बात का अध्ययन कर रहा है कि कैसे व्यक्तियों द्वारा समय के साथ सामाजिक वास्तविकता

(C) मिथ्या चेतना (False Consciousness)
(D) वर्ग चेतना (Class Consciousness)

61. निम्नलिखित में से कौन-सी एक प्रमुख आलोचना है जो अलेक्जेंडर जैसे नव-प्रकार्यवादियों ने शास्त्रीय प्रकार्यवाद के विरुद्ध की थी?
(A) इसने व्यक्तिगत अभिकर्तृत्व (agency) पर बहुत अधिक ध्यान दिया।
(B) यह संघर्ष और परिवर्तन पर बहुत अधिक केंद्रित था।
(C) यह सर्वसम्मति (consensus) के प्रति पूर्वाग्रही था और शक्ति की उपेक्षा करता था।
(D) यह अत्यधिक अनुभवजन्य था और इसमें एक वृहद सैद्धांतिक दृष्टि का अभाव था।

62. हेबरमास के दृष्टिकोण में, गणना और दक्षता के माध्यम से बाह्य जगत में एक उद्देश्य प्राप्त करने के लक्ष्य से किस प्रकार की क्रिया संचालित होती है?
(A) संवादात्मक क्रिया (Communicative Action)
(B) मानकीय रूप से विनियमित क्रिया (Normatively Regulated Action)
(C) नाटकीय क्रिया (Dramaturgical Action)
(D) उपकरणपरक क्रिया (Instrumental Action)

63. अल्थुसर द्वारा 'इंटरपेलशन' (interpellation) की अवधारणा वर्णन करती है कि कैसे:
(A) विचारधारा व्यक्तियों को कर्ता-स्थितियों (subject-positions) के रूप में निर्मित करती है।
(B) श्रमिक वर्ग एक क्रांतिकारी चेतना विकसित करता है।
(C) राज्य जनसंख्या को नियंत्रित करने के लिए भौतिक बल का उपयोग करता है।
(D) आर्थिक संकट पूंजीवाद के पतन का कारण बनते हैं।

64. डेरिडा का 'उपस्थिति की तत्वमीमांसा' (metaphysics of presence) को चुनौती देने से क्या आशय है?
(A) उनका तर्क है कि भौतिक वास्तविकता का अस्तित्व नहीं है।
(B) वह सत्य के लिए एक स्थिर आधार की खोज की आलोचना करते हैं।
(C) वह सामाजिक संगठन के पूर्व-आधुनिक रूपों की ओर लौटने की वकालत करते हैं।
(D) वह इस विचार को बढ़ावा देते हैं कि केवल वर्तमान घटनाएं ही अध्ययन के योग्य हैं।

65. सूची I के सामाजिक विषयों को सूची II में उनकी मुख्य विशेषताओं के साथ सुमेलित कीजिए:
सूची I: सामाजिक विषय
P. झुग्गी-बस्ती
Q. क्षेत्रीय असमानता
R. विस्थापन
S. भ्रष्टाचार
सूची II: मुख्य विशेषता
1. भौगोलिक क्षेत्रों के बीच असमान विकास
2. निजी लाभ के लिए सार्वजनिक पद का दुरुपयोग
3. लोगों का उनके आवास से अनैच्छिक निष्कासन
4. अपर्याप्त सेवाओं वाला भीड़भाड़ वाला नगरीय क्षेत्र
सही विकल्प चुनें:
(A) P-4, Q-1, R-3, S-2
(B) P-1, Q-4, R-2, S-3
(C) P-4, Q-2, R-1, S-3
(D) P-3, Q-1, R-4, S-2

66. निम्नलिखित में से कौन-सा सतत विकास का एक प्रमुख लक्ष्य है?
(A) आर्थिक, सामाजिक और पर्यावरणीय लक्ष्यों को संतुलित करना।
(B) किसी भी पर्यावरणीय मूल्य पर तीव्र औद्योगीकरण प्राप्त करना।
(C) सभी आर्थिक विकास को रोककर पर्यावरण को संरक्षित करना।
(D) ग्लोबल साउथ की तुलना में ग्लोबल नॉर्थ की आवश्यकताओं को प्राथमिकता देना।

67. नीति आयोग में कौन-सा निकाय विशेष रूप से उन विषयों के समाधान के लिए गठित किया गया है जो राज्यों के एक विशेष समूह या क्षेत्र के लिए विशिष्ट हो सकते हैं?
(A) शासी परिषद
(B) उपाध्यक्ष कार्यालय
(C) क्षेत्रीय परिषदें
(D) मुख्य कार्यकारी अधिकारी का सचिवालय

NODIA

68. 'भ्रष्टाचार' का एक कृत्य, जैसे कि एक सार्वजनिक अधिकारी द्वारा रिश्वत स्वीकार करना, किस श्रेणी में आता है?
(A) किशोर अपचार
(B) विसंगतिजन्य (Anomic) आत्महत्या
(C) अनौपचारिक विचलन
(D) श्वेत-वसन अपराध

69. 'अपराध की बदलती रूपरेखा' (changing profile of crime) के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
कथन I: 'अपराध की बदलती रूपरेखा' इस तथ्य को संदर्भित करती है कि आधुनिक समाजों में अपराध दर शून्य हो गई है।
कथन II: अंतरराष्ट्रीय आतंकवाद और साइबर-जासूसी का उदय अपराध की बदलती रूपरेखा के संकेतक हैं।
निम्नलिखित में से कौन-सा विकल्प सही है?
(A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
(B) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।
(C) कथन I सही है, लेकिन कथन II गलत है।
(D) कथन I गलत है, लेकिन कथन II सही है।

70. नीचे दो कथन दिए गए हैं: एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है।
अभिकथन (A): जुर्गन हेबरमास का तर्क है कि उत्तर-पूंजीवादी

शोधकर्ता लिखित प्रलेखों में विद्यमान अर्थों, विचारधाराओं और आवर्ती विषयों का व्यवस्थित अध्ययन करता है। यह तकनीक संचार के माध्यमों के भीतर प्रच्छन्न सामाजिक संदेशों और व्यक्तिगत दृष्टिकोणों को उजागर करने में सक्षम है। यह गुणात्मक सामग्रियों को वस्तुनिष्ठ श्रेणियों में वर्गीकृत करने में सहायता करती है ताकि उनके प्रतिरूपों को समझा जा सके। यह सामाजिक संदर्भों में मानवीय अनुभवों के विश्लेषण का प्रभावी साधन है।
संदेशों के अंतर्निहित ढांचे और उनके प्रतीकात्मक अर्थों का वैज्ञानिक विश्लेषण करना ही इस शोध पद्धति की मुख्य भूमिका और सार्थकता है।

296. (A) घटनाओं से शोधकर्ता के परिप्रेक्ष्य को पृथक करना।
'वस्तुनिष्ठता बनाम व्यक्तिपरकता' की समस्या सामाजिक अनुसंधान में उस वृहद् चुनौती को उद्घाटित करती है जहाँ शोधकर्ता को अध्ययन की जा रही घटनाओं से अपने स्वयं के परिप्रेक्ष्य और मूल्यों को पृथक करना होता है। चूंकि शोधकर्ता स्वयं समाज का अंग है, अतः उसके अपने पूर्वाग्रह और अनुभव अनजाने में उसके निष्कर्षों को प्रभावित कर सकते हैं। वैज्ञानिक वस्तुनिष्ठता की मांग है कि तथ्यों का विश्लेषण बिना किसी व्यक्तिगत झुकाव के संपन्न हो। इस द्वंद्व को प्रबंधित करना ही निष्पक्ष शोध की दिशा में अनिवार्य कदम है।
व्यक्तिगत विश्वासों और वैज्ञानिक तटस्थता के बीच का यह जटिल संतुलन ही सामाजिक अनुसंधान की गुणवत्ता और उसकी प्रमाणिकता को निर्धारित करता है।

297. (C) कार्यप्रणाली
शोध प्रस्ताव का 'कार्यप्रणाली' (Methodology) वाला भाग उन विशिष्ट चरणों और विधियों की विस्तृत रूपरेखा प्रस्तुत करता है जो अध्ययन को पूर्ण करने हेतु अपनाए जाएंगे। इसमें प्रदत्त संग्रह की तकनीकें, प्रतिचयन की योजना और प्रदत्त विश्लेषण के उपकरणों का स्पष्ट विवरण सम्मिलित होता है। यह भाग यह स्पष्ट करता है कि शोधकर्ता अपने शोध प्रश्नों का उत्तर किस प्रकार अन्वेषण करेगा। एक सुस्पष्ट कार्यप्रणाली शोध की वैज्ञानिक दृढ़ता सुनिश्चित करती है और अन्य शोधकर्ताओं को अध्ययन की समीक्षा करने हेतु एक तार्किक मार्ग प्रदान करती है।
अनुसंधान के व्यावहारिक निष्पादन के लिए एक स्पष्ट और वैज्ञानिक मार्गचित्र प्रदान करना ही इस भाग की मुख्य भूमिका और सार्थकता है।

298. (A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
सर्वेक्षण अनुसंधान में न्यून प्रतिक्रिया दर वास्तव में प्रदत्त की वैधता हेतु एक वृहद् संकट सिद्ध हो सकती है। इसका मुख्य कारण यह है कि जो व्यक्ति उत्तर नहीं देते, वे प्रायः उन व्यक्तियों से व्यवस्थित रूप से भिन्न हो सकते हैं जो उत्तर प्रदान करते हैं। इसे 'गैर-प्रतिक्रिया पक्षपात' कहते हैं, जो प्रतिदर्श को गैर-प्रतिनिधि बना देता है। उदाहरण हेतु, यदि केवल उच्च आय वर्ग के व्यक्ति ही उत्तर देते हैं, तो निष्कर्ष संपूर्ण जनसंख्या का सत्य चित्रण नहीं करेंगे। अतः उच्च प्रतिक्रिया दर वैज्ञानिक शुद्धता हेतु अनिवार्य है।
प्रतिभागियों की सक्रिय भागीदारी का स्तर ही किसी सर्वेक्षण की सफलता और उसके निष्कर्षों की वैज्ञानिक प्रामाणिकता को निर्धारित करने वाला मुख्य आधार है।

299. (D) सहसंबंध है।
यदि शोधकर्ता एक चर का मान जानकर दूसरे चर के मान की भविष्यवाणी करने में समर्थ है, तो इसका अर्थ है कि उन चरों के मध्य उच्च सहसंबंध विद्यमान है। सहसंबंध दो चरों के मध्य के उस व्यवस्थित संबंध को प्रदर्शित करता है जहाँ उनके मान साथ-साथ परिवर्तित होते हैं। सहसंबंध जितना सबल होगा, भविष्यवाणी उतनी ही सटीक होगी। हालाँकि सहसंबंध यह प्रमाणित नहीं करता कि एक दूसरे का कारण है, किंतु यह चरों के पारस्परिक जुड़ाव और उनके व्यवहार के प्रतिरूपों को समझने के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण सांख्यिकीय उपकरण है।
चरों के आपसी व्यवहार में निरंतरता और उनके जुड़ाव की मजबूती को मापना ही सहसंबंध विश्लेषण का मुख्य और प्राथमिक सांख्यिकीय संदेश है।

300. (B) स्थानीय व्यक्ति के दृष्टिकोण से जीवन शैली को समझना।
नृवंशविज्ञान का अंतिम और सर्वोपरि लक्ष्य किसी विशिष्ट सामाजिक समूह अथवा संस्कृति की जीवन शैली को स्थानीय व्यक्ति (अंदरूनी सूत्र) के दृष्टिकोण से गहराई से समझना है। इसमें शोधकर्ता केवल बाह्य अवलोकन नहीं करता, अपितु व्यक्तियों के विश्वासों, प्रथाओं और सामाजिक अंतःक्रियाओं के अंतर्निहित वास्तविक अर्थों को उजागर करने का प्रयास करता है। इसका मुख्य बल 'सघन विवरण' प्रदान करने पर होता है जो संस्कृति की जटिलता को स्पष्ट करता है। यह मानवीय विविधता की सूक्ष्म समझ विकसित करने और समाज की आंतरिक सच्चाइयों को जीवंत करने का माध्यम है।
किसी समाज की सांस्कृतिक आत्मा और उनके अपने अर्थों के जाल को गहराई से समझना ही इस शोध पद्धति की वास्तविक पहचान है।

www.nodia.in

Downloaded from www.pdf.tube

(D) सामाजिक व्यवहार की एक जैविक व्याख्या।

81. गिडिन्स ने उस ज्ञान का वर्णन करने के लिए किस शब्द का उपयोग किया जिसे कर्ता अपने स्वयं के कार्यों और सामाजिक स्थितियों के बारे में शब्दों में व्यक्त कर सकते हैं?
(A) व्यावहारिक चेतना (Practical consciousness)
(B) विमर्शात्मक चेतना (Discursive consciousness)
(C) सामूहिक चेतना (Collective consciousness)
(D) मिथ्या चेतना (False consciousness)

82. 'पुरुष/महिला' या 'वाणी/लेखन' जैसे शब्दों के युग्म को एक पदानुक्रमित विरोध के रूप में कैसे निर्मित किया जाता है, इसका विश्लेषण किसके कार्य का केंद्र है?
(A) जैक्स डेरिडा
(B) एंथनी गिडिन्स
(C) जुर्गन हेबरमास
(D) जेफरी अलेक्जेंडर

83. किसी देश में उद्योगों, बुनियादी ढांचे और शैक्षणिक संस्थानों का असमान वितरण किसका स्पष्ट संकेतक है?
(A) सतत विकास
(B) राष्ट्रीय एकीकरण
(C) क्षेत्रीय असमानता
(D) सामाजिक गतिशीलता

84. विचलन के संदर्भ में, सामाजिक 'शास्ति' (sanction) का प्राथमिक उद्देश्य क्या है?
(A) सामाजिक मानदंडों के अनुरूप होने पर पुरस्कृत करना।
(B) यह परिभाषित करना कि सामान्य व्यवहार क्या माना जाता है।
(C) विचलित व्यवहार के कारणों की व्याख्या करना।
(D) सामाजिक मानदंडों के उल्लंघन को दंडित करना या हतोत्साहित करना।

85. निम्नलिखित घटनाओं/संस्थानों को उनके स्थापना/घटने के सही कालानुक्रमिक क्रम में व्यवस्थित करें:
1. संयुक्त राष्ट्र द्वारा सतत विकास लक्ष्यों (SDGs) का निर्धारण।
2. नीति आयोग द्वारा योजना आयोग का प्रतिस्थापन।
3. हेबरमास की 'द थ्योरी ऑफ कम्युनिकेटिव एक्शन' का प्रकाशन।
4. गिडिन्स की 'द कॉन्स्टिट्यूशन ऑफ सोसाइटी' का प्रकाशन।
(A) 1, 2, 3, 4
(B) 4, 3, 1, 2
(C) 3, 4, 2, 1
(D) 2, 1, 4, 3

86. विचलन के एक रूप के रूप में भ्रष्टाचार किसी राष्ट्र के लिए विशेष रूप से हानिकारक है क्योंकि यह:
(A) एक पीड़ित रहित (victimless) अपराध है।
(B) जनता के विश्वास और संस्थागत वैधता को निर्बल करता है।
(C) केवल न्यून संख्या में लोगों द्वारा किया जाता है।
(D) व्यवहार का एक गैर-अपराधिक रूप है।

87. भारत में आधुनिकता और परंपरा के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
कथन I: भारत में 'आधुनिकता' की अवधारणा का तात्पर्य सभी पारंपरिक मूल्यों से पूर्ण और समान रूप से पृथक होना है।
कथन II: नियोजित विवाह (आधुनिक संशोधनों के साथ) जैसी प्रथाओं की निरंतरता और अनुकूलन भारत में परंपरा और आधुनिकता के बीच जटिल संबंध को दर्शाते हैं।
निम्नलिखित में से कौन-सा विकल्प सही है?
(A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
(B) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।
(C) कथन I सही है, लेकिन कथन II गलत है।
(D) कथन I गलत है, लेकिन कथन II सही है।

88. राष्ट्र-निर्माण के संदर्भ में 'बहुलवाद' का सिद्धांत स्वीकार करता है कि:
(A) विविधता किसी राष्ट्र के लिए शक्ति और समृद्धि का स्रोत हो सकती है।
(B) राष्ट्रीय एकता के लिए समरूपता ही एकमात्र आधार है।
(C) अल्पसंख्यक संस्कृतियों को बहुसंख्यक संस्कृति में समाहित किया जाना चाहिए।
(D) राजनीतिक शक्ति एक ही समूह में केंद्रित होनी चाहिए।

89. एक झुग्गी-बस्ती और अन्य आवासीय क्षेत्रों के बीच मुख्य अंतर किसकी न्यूनता है?
(A) निवासियों के बीच सामाजिक अंतःक्रिया।
(B) आर्थिक गतिविधि का कोई भी रूप।
(C) सुरक्षित भू-स्वामित्व और बुनियादी नागरिक अवसंरचना।
(D) समुदाय की भावना या सामाजिक नेटवर्क।

90. अल्थुसर के सिद्धांत के संदर्भ में, "अधिसंरचना" (superstructure) क्या है?
(A) समाज के राजनीतिक और वैचारिक स्तर।
(B) समाज का आर्थिक आधार।
(C) सर्वहारा वर्ग की क्रांतिकारी क्षमता।
(D) बिना किसी प्रासंगिकता वाली एक पुरानी अवधारणा।

91. निम्नलिखित में से कौन-सा विचारक और उनके मुख्य विचार का गलत मेल है?
(A) गिडिन्स - संरचनाकरण (Structuration)
(B) डेरिडा - शब्द-केंद्रिकता (Logocentrism)
(C) हेबरमास - जीवन-जगत (Lifeworld)
(D) अलेक्जेंडर - दमनकारी राज्य तंत्र

92. यह विचार कि सामाजिक जीवन कृत्यों की एक यादृच्छिक श्रृंखला नहीं है, बल्कि इसमें एक स्वरूपित, पुनरुत्पादनीय गुण है, गिडिन्स की किस अवधारणा का केंद्र है?

NODIA

182. एक ऐसी स्थिति जहाँ अर्थव्यवस्था और नौकरशाही की तर्कसंगत प्रक्रियाएं पारंपरिक, सांस्कृतिक रूप से आधारित जीवन पद्धतियों का स्थान ले लेती हैं, उसे हेबरमास क्या कहते हैं?
(A) सार्वजनिक क्षेत्र
(B) जीवन-जगत का औपनिवेशीकरण
(C) वैधता का संकट
(D) आदर्श भाषण स्थिति

183. एंथनी गिडिन्स के संरचनाकरण के सिद्धांत के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
कथन I: गिडिन्स के अनुसार, सामाजिक संरचनाएं एक भवन की दीवारों की भाँति होती हैं, जो क्रिया को बाधित करती हैं किंतु सक्षम नहीं बनातीं।
कथन II: संरचनाकरण का सिद्धांत संरचना को 'द्वैत' के रूप में देखता है, जो सामाजिक प्रथाओं का माध्यम और परिणाम दोनों है।
निम्नलिखित में से कौन-सा विकल्प सही है?
(A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
(B) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।
(C) कथन I सही है, लेकिन कथन II गलत है।
(D) कथन I गलत है, लेकिन कथन II सही है।

184. पाठों की प्रच्छन्न मान्यताओं और उनके आंतरिक पदानुक्रमों की मनमानी प्रकृति को उजागर करने के लिए उनका विश्लेषण करने की पद्धति क्या है?
(A) विखंडनवाद (Deconstruction)
(B) प्रकार्यवाद
(C) संरचनाकरण
(D) नव-मार्क्सवाद

185. सूची I के समकालीन विषयों को सूची II में उनके उदाहरणों के साथ सुमेलित कीजिए:
सूची I: समकालीन विषय
P. क्षेत्रीय असमानता
Q. विस्थापन
R. झुग्गी-बस्ती
S. श्वेत-वसन अपराध
सूची II: उदाहरण
1. शेयर बाजार में इनसाइडर ट्रेडिंग
2. नवीन हवाई अड्डे के लिए ग्रामीणों की बेदखली
3. पश्चिमी भारत में औद्योगिक विकास का संकेंद्रण
4. मुंबई में धारावी जैसी बस्ती
सही विकल्प चुनें:
(A) P-1, Q-2, R-3, S-4
(B) P-3, Q-2, R-4, S-1
(C) P-2, Q-3, R-1, S-4
(D) P-4, Q-1, R-2, S-3

186. नीति आयोग का प्राथमिक अधिदेश (mandate) क्या है?
(A) विकास नीति को रणनीतिक, दिशात्मक इनपुट प्रदान करना।
(B) कर वितरण के लिए एक वित्तीय आयोग के रूप में कार्य करना।
(C) केंद्र और राज्यों के बीच विधिक विवादों को सुलझाना।
(D) प्रत्येक दस वर्ष में राष्ट्रीय जनगणना आयोजित करना।

187. निम्नलिखित में से कौन-सा कृत्य विचलित है किंतु आपराधिक नहीं?
(A) चोरी (Burglary)
(B) हमला (Assault)
(C) आगजनी (Arson)
(D) सार्वजनिक रूप से स्वयं से ऊँचे स्वर में बातें करने वाला व्यक्ति।

188. समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण से, मादक पदार्थों की लत की समस्या किससे संबद्ध है?
(A) केवल एक व्यक्ति की इच्छाशक्ति की न्यूनता।
(B) सामाजिक कारक जैसे विसंगति (Anomie) और साथियों का प्रभाव।
(C) एक साधारण आर्थिक विकल्प।
(D) एक समस्या जो केवल धनी वर्ग को प्रभावित करती है।

189. भारत में लोकतांत्रिक निर्वाचनों में जाति-आधारित मतदान प्रतिमान की निरंतरता किसका उदाहरण है?
(A) लोकतंत्र की पूर्ण विफलता।
(B) आधुनिक भारत में जाति की अप्रासंगिकता।
(C) आधुनिक राजनीति के साथ परंपरा की अंतःक्रिया और उसे आकार देना।
(D) राजनीति के पश्चिमी मॉडल का सफल अधिरोपण।

190. नीचे दो कथन दिए गए हैं: एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है।
अभिकथन (A): एंथनी गिडिन्स ने 'संरचना की द्वैतता' की अवधारणा प्रस्तुत की।
कारण (R): उन्होंने तर्क दिया कि सामाजिक संरचनाएं व्यक्तियों के लिए बाह्य हैं और उनके व्यवहार को पूर्णतः निर्धारित करती हैं, जिससे अभिकर्तृत्व (agency) के लिए कोई स्थान नहीं शेष रहता।
(A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सही है लेकिन R गलत है।
(D) A गलत है लेकिन R सही है।

191. राष्ट्र-निर्माण की एक प्रमुख चुनौती एक व्यापक राष्ट्रीय पहचान निर्मित करने के साथ-साथ किसके विषय का समाधान करना है?
(A) क्षेत्रीय असमानता
(B) वैश्विक तापन (Global warming)
(C) तकनीकी अप्रचलन
(D) पीढ़ीगत अंतराल

Click Here to Buy book on Amazon

103. हेबरमास के सिद्धांत में, आधुनिक समाजों में 'सार्वजनिक क्षेत्र' के आदर्श को किससे भय है?
(A) साक्षरता और शिक्षा में वृद्धि।
(B) राजनीतिक वाद-विवाद में नागरिकों की सक्रिय भागीदारी।
(C) सरकारी शाखाओं के बीच शक्तियों का पृथक्करण।
(D) वाणिज्यिक मीडिया और जनसंपर्क (public relations) का प्रभाव।

104. गिडिन्स के अनुसार, यह तथ्य कि लोग निरंतर अपने और दूसरों के कार्यों और सामाजिक संदर्भों की निगरानी करते हैं, और तदनुसार अपने व्यवहार को समायोजित करते हैं, क्या कहलाता है?
(A) प्रतीकात्मकता (Reflexivity)
(B) संरचना की द्वैतता
(C) इंटरपेलशन (Interpellation)
(D) विखंडन (Deconstruction)

105. भारत में राष्ट्र-निर्माण की चुनौतियों के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. अधिक राज्य स्वायत्तता की मांग कभी-कभी एक सुदृढ़ राष्ट्रीय केंद्र के लक्ष्य के साथ संघर्ष कर सकती है।
2. भाषाओं की बहुलता के अस्तित्व को बिना किसी राजनीतिक संघर्ष के सहज रूप से एकीकृत किया गया है।
3. धर्मनिरपेक्षता को सार्वभौमिक रूप से स्वीकार किया गया है और यह राजनीतिक विवाद का विषय नहीं है।

ऊपर दिए गए कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?
(A) केवल 1
(B) केवल 2 और 3
(C) केवल 1 और 3
(D) 1, 2 और 3

106. द्विआधारी विरोधों (जैसे, उपस्थिति/अनुपस्थिति, प्रकृति/संस्कृति) के डेरिडा के विखंडन के पीछे मुख्य विचार क्या है?
(A) उनकी निर्मित प्रकृति को दिखाकर पदानुक्रम को अस्थिर करना।
(B) यह सिद्ध करना कि प्रथम शब्द स्वाभाविक रूप से श्रेष्ठ है।
(C) पदानुक्रम को उलटना और यह दिखाना कि द्वितीय शब्द श्रेष्ठ है।
(D) नवीन, अधिक तार्किक द्विआधारी विरोध निर्मित करना।

107. निम्नलिखित में से कौन-सा 'सतत विकास' के लक्ष्य का सर्वोत्तम वर्णन करता है?
(A) एक विकास मार्ग जो निगमों के लिए अल्पकालिक लाभ को अधिकतम करता है।
(B) आर्थिक विकास को पूर्णतः पृथक रखते हुए पर्यावरण संरक्षण पर ध्यान केंद्रित करना।
(C) आधुनिकीकरण के किसी भी रूप को रोककर पारंपरिक समाजों का संरक्षण।
(D) वर्तमान और भविष्य दोनों की आवश्यकताओं को पूरा करने वाला सामंजस्यपूर्ण विकास।

108. कौन-सी विशेषता सामान्यतः 'झुग्गी-बस्ती' से संबद्ध नहीं है?
(A) अत्यधिक भीड़भाड़
(B) स्वच्छ जल और स्वच्छता तक सुगम पहुँच
(C) असुरक्षित आवासीय प्रास्थिति
(D) न्यून संरचनात्मक गुणवत्ता वाले आवास

109. नीति आयोग की शक्तियों के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
कथन I: नीति आयोग के पास योजना आयोग की भाँति राज्यों को अनिवार्य वित्तीय अनुदान आवंटित करने की शक्ति है।
कथन II: नीति आयोग की भूमिका मुख्य रूप से परामर्शदात्री है, और यह सरकार के लिए एक थिंक टैंक के रूप में कार्य करता है।
निम्नलिखित में से कौन-सा विकल्प सही है?
(A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
(B) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।
(C) कथन I सही है, लेकिन कथन II गलत है।
(D) कथन I गलत है, लेकिन कथन II सही है।

110. एक विशाल निगम के उच्च पदस्थ अधिकारी द्वारा किया गया बड़े पैमाने पर वित्तीय घोटाला किसका उदाहरण है?
(A) किशोर अपचार
(B) ब्लू-कॉलर अपराध
(C) विसंगतिजन्य (Anomic) आत्महत्या
(D) श्वेत-वसन अपराध

111. विचलन और अपराध के बीच मुख्य अंतर क्या है?
(A) अपराध एक विधिक उल्लंघन है; विचलन एक मानदंड (norm) का उल्लंघन है।
(B) कोई अंतर नहीं है; शब्द पर्यायवाची हैं।
(C) विचलन हमेशा अपराध से अधिक गंभीर होता है।
(D) सभी विचलन अपराध के रूप हैं, लेकिन सभी अपराध विचलन नहीं हैं।

112. आत्महत्या का समाजशास्त्रीय अध्ययन क्या समझने का प्रयास करता है?
(A) आत्महत्या करने वाले प्रत्येक व्यक्ति की अद्वितीय मनोवैज्ञानिक रूपरेखा।
(B) आत्महत्या की दरें और प्रतिमान तथा सामाजिक शक्तियों के साथ उनका सह-संबंध।
(C) आत्मघाती विचारों का एक सार्वभौमिक उपचार।
(D) विरासत में मिले आनुवंशिक गुण के रूप में आत्महत्या।

113. समान नागरिक संहिता के बारे में भारत में चल रही चर्चा सीधे तौर पर किस विषय से संबंधित है?
(A) क्षेत्रीय असमानता
(B) धर्मनिरपेक्षता और बहुलवाद
(C) विकास-प्रेरित विस्थापन

NODIA

(D) श्वेत-वसन अपराध

114. 'संरचना की द्वैतता' की अवधारणा किस विचारक से संबद्ध है?
(A) एंथनी गिडिन्स
(B) जुर्गन हेबरमास
(C) लुई अल्थुसर
(D) जैक्स डेरिडा

115. जेफरी अलेक्जेंडर के नव-प्रकार्यवाद का एक प्रमुख तत्व प्रकार्यवादी विश्लेषण में _____ को वापस लाने का उसका प्रयास है।
(A) वर्ग संघर्ष
(B) पवित्रता (the sacred)
(C) संघर्ष (conflict)
(D) जैविक नियतिवाद

116. हेबरमास की 'जीवन-जगत के औपनिवेशीकरण' की अवधारणा उस प्रक्रिया का वर्णन करती है जहाँ:
(A) पारंपरिक समाजों को साम्राज्यवादी शक्तियों द्वारा जीत लिया जाता है।
(B) सार्वजनिक क्षेत्र का विस्तार होता है और वह अधिक तर्कसंगत हो जाता है।
(C) व्यक्ति स्वेच्छा से अधिक तर्कसंगत जीवन शैली अपनाना चुनते हैं।
(D) प्रणालीगत तर्क (Systemic logic) संवाद और सामाजिक एकीकरण को विकृत कर देता है।

117. अल्थुसर के अनुसार, निम्नलिखित में से कौन-सा 'वैचारिक राज्य तंत्र' (ISA) के कार्यप्रणाली का एक उदाहरण है?
(A) एक पुलिस अधिकारी द्वारा एक प्रदर्शनकारी को बंदी बनाना।
(B) न्यायालय में एक न्यायाधीश द्वारा अपराधी को दंड सुनाना।
(C) विद्यालय में एक शिक्षक द्वारा देशभक्तिपूर्ण इतिहास पढ़ाना।
(D) एक सैनिक द्वारा विद्रोह को दबाना।

118. कौन-सा कथन ज्ञान पर उत्तर-आधुनिकतावादी परिप्रेक्ष्य को सर्वोत्तम रूप में सारांशित करता है?
(A) ज्ञान वस्तुनिष्ठ वास्तविकता का दर्पण है।
(B) ज्ञान सामाजिक रूप से निर्मित है और शक्ति से संबद्ध है।
(C) ज्ञान का एक सार्वभौमिक और वास्तविक रूप है।
(D) वैज्ञानिक ज्ञान ही ज्ञान का एकमात्र वैध रूप है।

119. एक विकास परियोजना जो वनों की कटाई और जैव विविधता के ह्रास की ओर ले जाती है, वह किन सिद्धांतों का उल्लंघन करेगी?
(A) क्षेत्रीय असमानता
(B) बहुलवाद
(C) धर्मनिरपेक्षता
(D) पर्यावरणीय अखंडता और सतत विकास

120. नीति आयोग की एक प्राथमिक भूमिका 'सहकारी संघवाद' को बढ़ावा देना है, जिसका अर्थ है:
(A) विकास में केंद्र और राज्यों के बीच पारस्परिक भागीदारी।
(B) केंद्र सरकार राज्यों को सभी नीतियां निर्देशित करती है।
(C) राज्यों के पास किसी भी राष्ट्रीय नीति को निषेधाधिकार (वीटो) देने की शक्ति है।
(D) विदेशी देश नीतिगत विषयों में भारत के साथ सहयोग करते हैं।

121. समाजशास्त्र और अपराध विज्ञान में 'अपचार' (delinquency) शब्द का प्रयोग विशेष रूप से किसे दर्शाने के लिए किया जाता है?
(A) राजनीतिक भ्रष्टाचार का कोई भी कृत्य।
(B) निगमों द्वारा किए गए वित्तीय अपराध।
(C) एक नाबालिग का असामाजिक या अवैध व्यवहार।
(D) हिंसक अपराध के सभी रूप।

122. निम्नलिखित में से कौन-सा 21वीं सदी में 'अपराध की बदलती रूपरेखा' का एक उदाहरण है?
(A) महत्वपूर्ण कंप्यूटर प्रणालियों पर रैनसमवेयर आक्रमण।
(B) एक जेबकतरे द्वारा बटुआ चुराना।
(C) एक कृषक द्वारा पड़ोसी की भूमि पर अतिक्रमण करना।
(D) दो व्यक्तियों के बीच पथ पर विवाद।

123. बेंगलुरु जैसे क्षेत्र में पारंपरिक कृषि गाँवों के साथ-साथ हाई-टेक सॉफ्टवेयर पार्कों का सह-अस्तित्व क्या दर्शाता है?
(A) राष्ट्र-निर्माण की पूर्ण विफलता।
(B) सभी क्षेत्रीय असमानताओं का उन्मूलन।
(C) पश्चिमी संस्कृति को समान रूप से अपनाना।
(D) भारत में परंपरा और आधुनिकता की जटिल अंतःक्रिया।

124. भाषाओं और लिपियों की विविधता का सम्मान करने वाले 'बहु-सांस्कृतिक' राष्ट्र के लिए भारतीय संवैधानिक प्रावधान किस सिद्धांत का प्रमाण है?
(A) धर्मनिरपेक्षता
(B) बहुलवाद
(C) समाजवाद
(D) सत्तावाद

125. सूची I में एंथनी गिडिन्स की अवधारणाओं को सूची II में उनके विवरण के साथ सुमेलित कीजिए:
सूची I: अवधारणा
P. अभिकर्तृत्व (Agency)
Q. संरचना (Structure)
R. व्यावहारिक चेतना
S. संरचना की द्वैतता
सूची II: विवरण
1. निहित ज्ञान क्षमता जिसका उपयोग कर्ता क्रिया में करते हैं

Downloaded from www.pdf.tube

2. व्यक्तियों की स्वतंत्र रूप से कार्य करने और अपने स्वयं के विकल्प चुनने की क्षमता
3. यह विचार कि संरचना क्रिया का माध्यम और परिणाम दोनों है
4. बार-बार होने वाली स्वरूपित सामाजिक व्यवस्थाएं जो विकल्पों को प्रभावित या सीमित करती हैं

सही विकल्प चुनें:
(A) P-2, Q-4, R-1, S-3
(B) P-1, Q-2, R-3, S-4
(C) P-2, Q-1, R-4, S-3
(D) P-4, Q-2, R-3, S-1

126. डेरिडा जैसे उत्तर-आधुनिकतावादियों द्वारा संरचनावाद के विरुद्ध की गई एक प्राथमिक आलोचना इसकी क्या है?
(A) व्यक्तिगत अभिकर्तृत्व पर ध्यान केंद्रित करना।
(B) ऐतिहासिक संदर्भ पर अत्यधिक बल।
(C) वैज्ञानिक पद्धति की अस्वीकृति।
(D) सार्वभौमिक और स्थिर अर्थ संरचनाओं की खोज।

127. जेफरी अलेक्जेंडर द्वारा परिकल्पित नव-प्रकार्यवाद का लक्ष्य निम्नलिखित में से कौन-सा नहीं है?
(A) विशुद्ध रूप से सूक्ष्म-समाजशास्त्रीय (micro-sociological) सिद्धांत निर्मित करना।
(B) समाजशास्त्र में विरोधी सैद्धांतिक दृष्टिकोणों को संश्लेषित करना।
(C) एक ऐसा सिद्धांत विकसित करना जो बहुआयामी हो।
(D) समाज में व्यवस्था और संघर्ष दोनों को स्वीकार करना।

128. हेबरमास के 'सिस्टम' और 'जीवन-जगत' के बीच का भेद मोटे तौर पर किसके बीच के भेद से मेल खाता है?
(A) पवित्र और अपवित्र।
(B) उपकरणपरक क्रिया और संवादात्मक क्रिया।
(C) व्यक्ति और सामूहिक।
(D) आधार और अधिसंरचना।

129. लुई अल्थुसर के सिद्धांत के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
कथन I: अल्थुसर के अनुसार, दमनकारी राज्य तंत्र (RSAs) सार्वजनिक डोमेन के हैं, जबकि अधिकांश वैचारिक राज्य तंत्र (ISAs) निजी डोमेन के हैं।
कथन II: अल्थुसर का तर्क है कि अपनी निजी स्थिति के बावजूद, ISAs शासक वर्ग की विचारधारा को सुरक्षित करने के लिए कार्य करते हैं।
निम्नलिखित में से कौन-सा विकल्प सही है?
(A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
(B) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।
(C) कथन I सही है, लेकिन कथन II गलत है।
(D) कथन I गलत है, लेकिन कथन II सही है।

130. नीचे दो कथन दिए गए हैं: एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है।
अभिकथन (A): विशाल बाँधों और राजमार्गों जैसी विकास परियोजनाएं, आर्थिक विकास को बढ़ावा देते हुए, अक्सर निर्धन और जनजातीय समुदायों के विस्थापन का परिणाम होती हैं।
कारण (R): विकास की प्रक्रिया सदैव न्यायसंगत होती है और यह सुनिश्चित करती है कि इसके लाभ समाज के सभी वर्गों में समान रूप से वितरित हों।
(A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सही है लेकिन R गलत है।
(D) A गलत है लेकिन R सही है।

131. भारत के कुछ उत्तरी और पूर्वी राज्यों की तुलना में दक्षिणी राज्यों में आईटी उद्योगों का असमान संकेंद्रण किसका एक प्रमुख उदाहरण है?
(A) बहुलवाद
(B) राष्ट्रीय एकीकरण
(C) क्षेत्रीय असमानता
(D) सतत विकास

132. नीति आयोग का गठन 'सबके लिए एक ही नियम' (one-size-fits-all) वाले नियोजन दृष्टिकोण से हटकर किसकी ओर बढ़ने के लिए किया गया था?
(A) केंद्रीकृत और कठोर ढांचा।
(B) अंतरराष्ट्रीय स्तर पर संचालित नीति मॉडल।
(C) बिना किसी सरकारी हस्तक्षेप वाली अहस्तक्षेप प्रणाली।
(D) विकेंद्रीकृत, सहकारी और राज्य-विशिष्ट दृष्टिकोण।

133. गबन (Embezzlement) _____ का एक रूप है और इसे सामान्यतः _____ के रूप में वर्गीकृत किया जाता है।
(A) पथ अपराध; ब्लू-कॉलर अपराध
(B) विचलन; अनौपचारिक विचलन
(C) संपत्ति अपराध; श्वेत-वसन अपराध
(D) हिंसक अपराध; अपचार

134. निम्नलिखित में से कौन-सी स्थिति राष्ट्र-निर्माण की चुनौती के रूप में 'बहुलवाद' की अवधारणा को सर्वोत्तम रूप से दर्शाती है?
(A) एक ऐसा देश जहाँ प्रत्येक व्यक्ति एक ही भाषा बोलता है और एक ही धर्म का अनुपालन करता है।
(B) विभिन्न राष्ट्रीय भाषाओं की आधिकारिक प्रास्थिति पर वाद-विवाद।
(C) एक सरकार सफलतापूर्वक एक एकल राष्ट्रीय पहचान को बढ़ावा दे रही है जो अन्य सभी संबद्धताओं को समाप्त कर देती है।
(D) एक समाज जिसने पूर्ण आर्थिक समानता प्राप्त कर ली है।

135. विचलन के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. सभी विचलित कृत्य अवैध हैं और राज्य द्वारा दंडनीय हैं।
2. विचलित क्या है इसकी परिभाषा भिन्न-भिन्न संस्कृतियों

NODIA

(B) न्यायिक निरीक्षण
(C) अंतरराष्ट्रीय साझेदारी
(D) सहकारी संघवाद

159. एक नीति जिसका उद्देश्य आर्थिक विकास को पर्यावरण संरक्षण और सामाजिक न्याय के साथ संतुलित करना है, वह किसके सिद्धांतों का अनुपालन कर रही है?
(A) सतत विकास
(B) नव-प्रकार्यवाद
(C) संरचनात्मक मार्क्सवाद
(D) विखंडनवाद

160. नीचे दो कथन दिए गए हैं: एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है।
अभिकथन (A): भारत में परंपरा और आधुनिकता पर वाद-विवाद से पता चलता है कि वे परस्पर अनन्य श्रेणियां नहीं हैं।
कारण (R): भारत में अनेक आधुनिक संस्थान, जैसे राजनीतिक दल और व्यवसाय, अक्सर जाति और नातेदारी के पारंपरिक नेटवर्क के माध्यम से कार्य करते हैं।
(A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सही है लेकिन R गलत है।
(D) A गलत है लेकिन R सही है।

161. 'जीवन-जगत' (Lebenswelt) की अवधारणा हेबरमास के कार्य का केंद्र थी, जिन्होंने इसे किस पूर्व दार्शनिक परंपरा से ग्रहण किया था?
(A) अस्तित्ववाद
(B) प्रघटनाशास्त्र (Phenomenology)
(C) संरचनावाद
(D) तार्किक प्रत्यक्षवाद

162. अल्थुसर के अनुसार, RSA और ISA दोनों का कार्य अंततः क्या है?
(A) उत्पादन के संबंधों का पुनरुत्पादन सुनिश्चित करना।
(B) सामाजिक गतिशीलता को बढ़ावा देना।
(C) आलोचनात्मक सोच और असहमति को प्रोत्साहित करना।
(D) एक वर्गहीन समाज निर्मित करना।

163. एक विद्वान जो विश्लेषण कर रहा है कि कैसे एक फिल्म नायक और खलनायक की पारंपरिक धारणाओं को उनके बीच की नैतिक सीमाओं को अस्पष्ट करके उलट देती है, वह संभवतः _____ दृष्टिकोण का उपयोग कर रहा है।
(A) प्रकार्यवादी
(B) नव-मार्क्सवादी
(C) विखंडनवादी
(D) व्यवहारवादी

164. संरचनाकरण सिद्धांत में, सामाजिक विश्व में 'परिवर्तन लाने' की व्यक्ति की क्षमता को क्या कहा जाता है?
(A) संरचना
(B) प्रणाली (System)
(C) विसंगति (Anomie)
(D) अभिकर्तृत्व (Agency)

165. नीति आयोग के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. यह संसद के एक अधिनियम द्वारा स्थापित एक वैधानिक निकाय है।
2. इसे राज्यों को निधि आवंटन के लिए अंतिम अधिकार दिया गया है।
3. इसकी प्रमुख भूमिकाओं में से एक ज्ञान और नवाचार केंद्र के रूप में कार्य करना है।

ऊपर दिए गए कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?
(A) केवल 3
(B) केवल 1 और 2
(C) केवल 2 और 3
(D) 1, 2 और 3

166. निम्नलिखित में से कौन-सी झुग्गी-बस्ती की एक परिभाषित विशेषता है?
(A) गृह स्वामित्व का उच्च स्तर।
(B) निवासियों के लिए आवास की सुरक्षा का अभाव।
(C) भली-भाँति विकसित अवसंरचना।
(D) हरित, खुले स्थानों की प्रचुरता।

167. विस्थापन के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
कथन I: 'विस्थापन' सदैव बेहतर अवसरों के लिए नवीन स्थान पर जाने के स्वैच्छिक विकल्प को संदर्भित करता है।
कथन II: वृहद स्तर की अवसंरचना परियोजनाओं का निर्माण 'विकास-प्रेरित विस्थापन' का कारण बन सकता है।
निम्नलिखित में से कौन-सा विकल्प सही है?
(A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
(B) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।
(C) कथन I सही है, लेकिन कथन II गलत है।
(D) कथन I गलत है, लेकिन कथन II सही है।

168. एक वृहद निगम द्वारा कर चोरी किसका उदाहरण है?
(A) श्वेत-वसन अपराध
(B) किशोर अपचार
(C) विसंगतिजन्य आत्महत्या
(D) बहुलवाद

169. भारत में राष्ट्र-निर्माण के लिए एक प्रमुख चुनौती वैश्वीकरण और आधुनिकता की शक्तियों को किसके साथ संतुलित करना है?
(A) पारंपरिक सामाजिक पदानुक्रम को बनाए रखने की आवश्यकता।
(B) देश को विश्व अर्थव्यवस्था से पृथक करने का लक्ष्य।
(C) अपनी अद्वितीय सांस्कृतिक पहचान और परंपराओं को

Click Here to Buy book on Amazon

पार्कों जैसी परियोजनाओं के लिए लोगों के अनिवार्य स्थानांतरण को संदर्भित करता है।
निम्नलिखित में से कौन-सा विकल्प सही है?
(A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
(B) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।
(C) कथन I सही है, लेकिन कथन II गलत है।
(D) कथन I गलत है, लेकिन कथन II सही है।

148. किस विचारक का कार्य भाषा और अर्थ की उत्तर-आधुनिकतावादी आलोचना को समझने के लिए केंद्रीय है?
(A) एंथनी गिडिन्स
(B) जेफरी अलेक्जेंडर
(C) लुई अल्थुसर
(D) जैक्स डेरिडा

149. अलेक्जेंडर द्वारा विकसित नव-प्रकार्यवादी सिद्धांत में, समाज किससे निर्मित है?
(A) केवल आर्थिक आधार।
(B) एक एकल, अविभेदित प्रणाली।
(C) विशिष्ट किंतु परस्पर संबंधित उप-प्रणालियाँ।
(D) पृथक व्यक्तियों का एक संग्रह।

150. हेबरमास के अनुसार, 'आदर्श भाषण स्थिति' (ideal speech situation) क्या है?
(A) एक संवाद जहाँ एक व्यक्ति शक्ति के माध्यम से वर्चस्व रखता है।
(B) तर्कसंगत योग्यता पर आधारित बल-मुक्त विमर्श।
(C) एक वाद-विवाद जहाँ सत्य से अधिक वाकपटुता महत्वपूर्ण है।
(D) एक ऐसी स्थिति जहाँ संवाद का उपयोग रणनीतिक रूप से दूसरों को भ्रमित करने के लिए किया जाता है।

151. एक इंटरनेट धोखाधड़ी योजना जो सहस्त्रों लोगों को उनके बैंक विवरण प्रकट करने के लिए फुसलाती है, किसका प्रमुख उदाहरण है?
(A) किशोर अपचार
(B) विसंगतिजन्य (Anomic) आत्महत्या
(C) विकास-प्रेरित विस्थापन
(D) अपराध की बदलती रुपरेखा

152. निम्नलिखित में से कौन-सी राष्ट्र-निर्माण की समस्या विशेष रूप से भारत के बहुलवादी चरित्र से उत्पन्न होती है?
(A) विविध पहचानों को दबाए बिना राष्ट्र को एकीकृत करना।
(B) तीव्र आर्थिक विकास प्राप्त करना।
(C) पड़ोसी देशों के साथ मैत्रीपूर्ण संबंध बनाए रखना।
(D) प्राकृतिक संसाधनों की न्यूनता।

153. एक ऐसी स्थिति जहाँ एक राजनीतिज्ञ अपने प्रभाव का उपयोग किसी संबंधी के स्वामित्व वाली कंपनी को सरकारी अनुबंध दिलाने के लिए करता है, किसका स्पष्ट प्रकरण है?
(A) बहुलवाद
(B) धर्मनिरपेक्षता
(C) भ्रष्टाचार
(D) विस्थापन

154. 'वैचारिक राज्य तंत्र' (Ideological State Apparatuses) की अवधारणा किसके द्वारा प्रस्तुत की गई थी?
(A) लुई अल्थुसर
(B) जुर्गन हेबरमास
(C) एंथनी गिडिन्स
(D) जेफरी अलेक्जेंडर

155. सूची I के शब्दों को सूची II में उनकी परिभाषाओं के साथ सुमेलित कीजिए:
सूची I: शब्द
P. विचलन
Q. अपराध
R. अपचार (Delinquency)
S. श्वेत-वसन अपराध
सूची II: परिभाषा
1. एक कृत्य जो आपराधिक विधि का उल्लंघन करता है।
2. अपने व्यवसाय में उच्च सामाजिक प्रास्थिति के व्यक्ति द्वारा किया गया अपराध।
3. सामाजिक मानदंडों का उल्लंघन।
4. एक नाबालिग द्वारा किए गए गैर-कानूनी कृत्य।
सही विकल्प चुनें:
(A) P-1, Q-3, R-2, S-4
(B) P-3, Q-1, R-4, S-2
(C) P-3, Q-4, R-1, S-2
(D) P-2, Q-1, R-3, S-4

156. गिडिन्स के संरचनाकरण सिद्धांत का मुख्य तर्क यह है कि:
(A) संरचना पूर्णतः व्यक्तिगत क्रिया को निर्धारित करती है।
(B) संरचना और अभिकर्तृत्व (agency) एक-दूसरे को पारस्परिक रूप से निर्मित करते हैं।
(C) व्यक्ति सामाजिक बाधाओं से पूर्णतः स्वतंत्र हैं।
(D) समाज एक आदर्श स्थिति की ओर अग्रसर है।

157. निम्नलिखित में से कौन-सा उत्तर-आधुनिकतावादी विचार का एक केंद्रीय सिद्धांत है?
(A) सार्वभौमिक, वस्तुनिष्ठ सत्य में विश्वास।
(B) यह विचार कि इतिहास की एक स्पष्ट दिशा और उद्देश्य है।
(C) वृहद आख्यानों (grand narratives) या मेटा-सिद्धांतों की अस्वीकृति।
(D) एक एकल, तर्कसंगत विश्वदृष्टि का समर्थन।

158. नीति आयोग की 'शासी परिषद' (Governing Council), जिसमें सभी राज्यों के मुख्यमंत्री सम्मिलित हैं, किस सिद्धांत को साकार करने के लिए निर्मित की गई है?
(A) केंद्रीकृत प्राधिकार

Downloaded from www.pdf.tube

(A) अभिकर्तृत्व (Agency)
(B) संरचना (Structure)
(C) प्रतीकात्मकता (Reflexivity)
(D) तर्कसंगतकरण (Rationalization)

93. 'मेटा-आख्यानों' (meta-narratives) की उत्तर-आधुनिकतावादी आलोचना किसकी आलोचना है?
(A) लघु स्तर की, स्थानीय कहानियों की।
(B) दैनिक जीवन में आख्यानों के उपयोग की।
(C) मार्क्सवाद या प्रकार्यवाद जैसे सार्वभौमिक सिद्धांतों की।
(D) ऐतिहासिक पाठों के अध्ययन की।

94. निम्नलिखित में से कौन-सा नीति आयोग का प्राथमिक उद्देश्य है?
(A) राज्यों पर केंद्र सरकार की नीतियों को लागू करने के लिए एक दमनकारी निकाय के रूप में कार्य करना।
(B) आर्थिक विवादों के लिए एक समानांतर न्यायपालिका के रूप में कार्य करना।
(C) राज्य सरकारों के वित्त का प्रत्यक्ष प्रबंधन करना।
(D) रणनीतिक और दिशात्मक नीतिगत इनपुट प्रदान करना।

95. सूची I के विचारकों को सूची II में उनके व्यापक सैद्धांतिक संप्रदायों के साथ सुमेलित कीजिए:
सूची I: विचारक
P. जेफरी अलेक्जेंडर
Q. लुई अल्थुसर
R. एंथनी गिडिन्स
S. जैक्स डेरिडा
सूची II: व्यापक सैद्धांतिक संप्रदाय
1. उत्तर-संरचनावाद / उत्तर-आधुनिकतावाद
2. संरचनाकरण सिद्धांत
3. नव-मार्क्सवाद (संरचनात्मक मार्क्सवाद)
4. नव-प्रकार्यवाद
सही विकल्प चुनें:
(A) P-1, Q-2, R-3, S-4
(B) P-4, Q-3, R-2, S-1
(C) P-4, Q-2, R-3, S-1
(D) P-2, Q-3, R-4, S-1

96. विशेष आर्थिक क्षेत्र (SEZ) के निर्माण के लिए कृषि भूमि का अनिवार्य अधिग्रहण अक्सर किस ओर ले जाता है?
(A) कृषि उत्पादकता में वृद्धि।
(B) कृषकों का विकास-प्रेरित विस्थापन।
(C) क्षेत्रीय असमानता में कमी।
(D) नवीन झुग्गी-बस्तियों का स्वतः निर्माण।

97. कौन-सी सामाजिक समस्या अपने आधिकारिक पद या शक्ति का निजी लाभ के लिए अवैध या अनैतिक उपयोग के रूप में परिभाषित है?
(A) अपचार (Delinquency)
(B) भ्रष्टाचार
(C) विस्थापन
(D) आत्महत्या

98. भारत में वैश्विक ग्राहकों को सेवा प्रदान करने वाले कॉल सेंटरों का उदय और साथ ही पारंपरिक उद्योगों का ह्रास किसकी गतिशील प्रकृति की ओर संकेत करता है?
(A) वैश्वीकृत अर्थशास्त्र और विकास पर इसका प्रभाव।
(B) परंपरा और आधुनिकता।
(C) धर्मनिरपेक्षता का भारतीय मॉडल।
(D) जनसंख्या वृद्धि।

99. भारत में राष्ट्र-निर्माण के संदर्भ में 'धर्मनिरपेक्षता' के लिए निम्नलिखित में से कौन-सी एक प्रमुख चुनौती है?
(A) राज्य द्वारा सभी धर्मों का समान प्रचार।
(B) धार्मिक स्वतंत्रता की संवैधानिक गारंटी।
(C) धार्मिक कट्टरवाद और सांप्रदायिक राजनीति का उदय।
(D) जनसंख्या में किसी भी धार्मिक विविधता का अभाव।

100. नीचे दो कथन दिए गए हैं: एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है।
अभिकथन (A): अल्थुसर के लिए, विचारधारा केवल 'मिथ्या चेतना' नहीं है, बल्कि वैचारिक राज्य तंत्र (ISAs) में अंतर्निहित एक भौतिक अभ्यास है।
कारण (R): विद्यालय और परिवार जैसे ISAs पूंजीवादी व्यवस्था के भीतर समायोजित होने के लिए व्यक्तियों के विश्वासों और व्यवहारों को आकार देकर उत्पादन के संबंधों का पुनरुत्पादन करते हैं।
(A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सही है लेकिन R गलत है।
(D) A गलत है लेकिन R सही है।

101. एक व्यक्ति जिसने विधि का उल्लंघन किया है, उसने एक _____ किया है, जो _____ का एक विशिष्ट प्रकार है।
(A) विचलन; अपराध
(B) अपचार; बहुलवाद
(C) अपराध; विचलन
(D) परंपरा; आधुनिकता

102. जेफरी अलेक्जेंडर के नव-प्रकार्यवाद को एक "संश्लेषण" (synthesis) माना जाता है क्योंकि यह किसे एकीकृत करने का प्रयास करता है?
(A) केवल प्रकार्यवादी और मार्क्सवादी परिप्रेक्ष्य।
(B) सूक्ष्म-अंतःक्रियावादी (micro-interactionist) सिद्धांतों को वृहद-संरचनात्मक सिद्धांतों के साथ।
(C) व्यवहार की समाजशास्त्रीय और जैविक व्याख्याएं।
(D) पूर्वी और पश्चिमी दार्शनिक परंपराएं।

NODIA

संरक्षित करने की इच्छा।
(D) सभी पश्चिमी प्रभावों की पूर्ण अस्वीकृति।

170. धर्मनिरपेक्षता का भारतीय मॉडल, जिसमें पृथक्करण की कठोर दीवार के स्थान पर एक 'सैद्धांतिक दूरी' सम्मिलित है, देश की किस गहन स्थिति की प्रतिक्रिया है?
(A) धार्मिक बहुलवाद
(B) आर्थिक असमानता
(C) क्षेत्रीय असमानता
(D) आधुनिक संस्थानों का अभाव

171. जेफरी अलेक्जेंडर के नव-प्रकार्यवाद का एक प्रमुख लक्ष्य क्या है?
(A) पार्सन्स की विरासत को पूर्णतः त्याग देना।
(B) केवल सामाजिक संरचनाओं के आर्थिक नियतिवाद पर ध्यान केंद्रित करना।
(C) विशुद्ध रूप से सूक्ष्म-समाजशास्त्रीय ढांचा निर्मित करना।
(D) पारंपरिक प्रकार्यवाद से परे एक बहुआयामी सिद्धांत विकसित करना।

172. हेबरमास के लिए, 'जीवन-जगत' साझा समझ और मानदंडों का पृष्ठभूमि भंडार है जो किसे संभव बनाता है?
(A) उपकरणपरक क्रिया
(B) संवादात्मक क्रिया
(C) रणनीतिक क्रिया
(D) राज्य दमन

173. अल्थुसर दमनकारी राज्य तंत्र (RSA) और वैचारिक राज्य तंत्र (ISAs) के बीच क्या मुख्य अंतर बताते हैं?
(A) RSA निजी हैं जबकि ISA सार्वजनिक हैं।
(B) RSA विचारधारा द्वारा कार्य करते हैं जबकि ISA हिंसा द्वारा कार्य करते हैं।
(C) RSA मुख्य रूप से हिंसा का उपयोग करते हैं जबकि ISA विचारधारा का उपयोग करते हैं।
(D) उनके बीच कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं है।

174. 'संरचना की द्वैतता' की अवधारणा का आशय है कि:
(A) व्यक्ति सामाजिक संरचनाओं द्वारा नियंत्रित कठपुतली हैं।
(B) सामाजिक संरचनाएं केवल व्यक्तिगत कार्यों का योग हैं।
(C) समाज स्थायी रूप से दो परस्पर विरोधी समूहों में विभाजित है।
(D) संरचना और अभिकर्तृत्व परस्पर निर्भर और पुनरावर्ती (recursively) रूप से संबंधित हैं।

175. इतिहास के प्रति एक उत्तर-आधुनिक दृष्टिकोण सबसे अधिक संभावना क्या करेगा?
(A) अतीत के खंडित और परस्पर विरोधी वृत्तांतों को उजागर करना।
(B) किसी ऐतिहासिक घटना का एकमात्र वास्तविक वृत्तांत खोजने का प्रयास करना।
(C) प्रगति और ज्ञानोदय के 'वृहद आख्यान' पर ध्यान केंद्रित करना।
(D) यह निष्कर्ष निकालना कि वर्तमान को समझने के लिए इतिहास अप्रासंगिक है।

176. महाराष्ट्र और बिहार जैसे राज्यों के बीच प्रति व्यक्ति आय में बढ़ता अंतर किसका उदाहरण है?
(A) सतत विकास
(B) क्षेत्रीय असमानता
(C) राष्ट्रीय एकता
(D) सामाजिक बहुलवाद

177. निम्नलिखित में से कौन-सा सतत विकास का घोषित लक्ष्य है?
(A) तात्कालिक आर्थिक लाभ के लिए सभी प्राकृतिक संसाधनों को समाप्त करना।
(B) अंतर-पीढ़ीगत समानता सुनिश्चित करना।
(C) आर्थिक गतिविधि के सभी रूपों को रोकना।
(D) दूसरों की कीमत पर एक संस्कृति को बढ़ावा देना।

178. 'भ्रष्टाचार' किस प्रकार का विचलन है?
(A) अपराध का एक रूप, जिसे सामान्यतः श्वेत-वसन के रूप में वर्गीकृत किया जाता है।
(B) यह सदैव अनौपचारिक विचलन है और कभी अपराध नहीं है।
(C) यह किशोर अपचार का एक रूप है।
(D) यह व्यवहार का एक रूप है जिसे सामाजिक रूप से अनुमोदित किया जाता है।

179. इंटरनेट और वैश्विक संवाद नेटवर्क द्वारा सुगम अपराध के नवीन रूपों के उदय को क्या कहा जाता है?
(A) विचलन का ह्रास
(B) परंपरा की निरंतरता
(C) अपराध की बदलती रूपरेखा
(D) धर्मनिरपेक्षता की प्रक्रिया

180. हज यात्रा के लिए सहायता प्रदान करने और कुंभ मेले के प्रबंधन के लिए निधि देने की भारतीय राज्य की नीति किसके प्रति उसके अद्वितीय दृष्टिकोण का एक उदाहरण है?
(A) क्षेत्रीय असमानता
(B) विस्थापन
(C) श्वेत-वसन अपराध
(D) धर्मनिरपेक्षता

181. निम्नलिखित में से कौन नव-प्रकार्यवाद (Neo-functionalism) का एक प्रमुख प्रस्तावक है?
(A) लुई अल्थुसर
(B) जैक्स डेरिडा
(C) जेफरी अलेक्जेंडर
(D) एंथनी गिडिन्स

Click Here to Buy book on Amazon

और समय के साथ परिवर्तित हो सकती है।
3. विचलन केवल व्यक्तियों के कार्यों को संदर्भित करता है, समूहों या निगमों के नहीं।

ऊपर दिए गए कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?
(A) केवल 2
(B) केवल 1 और 2
(C) केवल 3
(D) 1, 2 और 3

136. यह विचार कि परंपरा कोई स्थिर इकाई नहीं है, बल्कि समकालीन उद्देश्यों की पूर्ति के लिए निरंतर 'निर्मित' और पुनर्व्याख्या की जाती है, किसकी चर्चा में एक प्रमुख अंतर्दृष्टि है?
(A) परंपरा और आधुनिकता के बीच विकसित होते संबंध।
(B) क्षेत्रीय असमानता
(C) श्वेत-वसन अपराध
(D) सतत विकास

137. 'संरचनाकरण' (Structuration) का सिद्धांत किसने प्रस्तावित किया था?
(A) जेफरी अलेक्जेंडर
(B) जुर्गन हेबरमास
(C) एंथनी गिडिन्स
(D) लुई अल्थुसर

138. 'विखंडनवाद' (Deconstruction) की अवधारणा सर्वाधिक प्रसिद्ध रूप से किसके साथ संबद्ध है?
(A) जैक्स डेरिडा
(B) एंथनी गिडिन्स
(C) जेफरी अलेक्जेंडर
(D) जुर्गन हेबरमास

139. गिडिन्स के दृष्टिकोण में, मानवीय कर्ता सदैव 'जानकार' होते हैं, किंतु यह जानकारी अक्सर:
(A) त्रुटिपूर्ण और तर्कहीन होती है।
(B) पूर्णतः आधिकारिक स्रोतों से प्राप्त होती है।
(C) मिथ्या चेतना का एक रूप होती है।
(D) विमर्शात्मक के बजाय निहित या व्यावहारिक होती है।

140. एक सरकारी नीति जो आने वाली जनसंख्या के लिए पर्याप्त आवास, स्वच्छता और रोजगार प्रदान किए बिना तीव्र नगरीकरण को प्रोत्साहित करती है, उससे क्या बढ़ने की संभावना है?
(A) क्षेत्रीय संतुलन
(B) झुग्गी-बस्तियाँ
(C) सतत नगर
(D) बहुलवादी समुदाय

141. समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण से, भारत के कुछ क्षेत्रों में कृषकों के बीच उच्च आत्महत्या दर का विश्लेषण किसके संबंध में किया जाएगा?
(A) व्यक्तिगत मनोवैज्ञानिक निर्बलता।
(B) स्थानीय परिस्थितियों से असंबद्ध एक वैश्विक प्रवृत्ति।
(C) कृषि संकट और ऋण जैसे सामाजिक-आर्थिक कारक।
(D) कृषकों के नैतिक चरित्र की न्यूनता।

142. 'कमांड-स्टाइल' योजना आयोग का परामर्शदात्री नीति आयोग के साथ प्रतिस्थापन भारत सरकार के किस दृष्टिकोण में परिवर्तन को दर्शाता है?
(A) विदेश नीति
(B) न्यायिक सुधार
(C) सैन्य रणनीति
(D) संघीय आर्थिक शासन

NODIA

143. निम्नलिखित में से कौन-सा सतत विकास का लक्ष्य नहीं है?
(A) तात्कालिक आर्थिक लाभ के लिए प्राकृतिक संसाधनों का अनियंत्रित दोहन।
(B) आर्थिक दक्षता
(C) सामाजिक समानता
(D) पर्यावरण संरक्षण

144. पारंपरिक सामुदायिक या जाति-आधारित सभाओं को व्यवस्थित करने और सुदृढ़ करने के लिए सोशल मीडिया जैसी आधुनिक तकनीक का उपयोग किसका उदाहरण है?
(A) आधुनिकता की विफलता।
(B) परंपरा और आधुनिकता का समन्वय (syncretism)।
(C) परंपरा की पूर्ण अस्वीकृति।
(D) बहुलवाद का अंत।

145. निम्नलिखित सैद्धांतिक अवधारणाओं को उन विचारकों के क्रम में व्यवस्थित करें जिन्होंने उन्हें लोकप्रिय बनाया:
1. संरचना की द्वैतता
2. इंटरपेलशन (Interpellation)
3. संवादात्मक क्रिया
4. विखंडनवाद (Deconstruction)

(A) 3, 2, 4, 1
(B) 2, 3, 1, 4
(C) 1, 4, 2, 3
(D) 4, 1, 3, 2

146. एक "झुग्गी-बस्ती" को सर्वोत्तम रूप में किस विशेषता वाले आवासीय क्षेत्र के रूप में परिभाषित किया गया है?
(A) निम्न-स्तरीय आवास, अत्यधिक भीड़भाड़ और भू-स्वामित्व का अभाव।
(B) उच्च संपत्ति मूल्य और विशेष सुविधाएं।
(C) पूर्ण नागरिक सेवाओं के साथ विधिक रूप से मान्यता प्राप्त और नियोजित बस्ती।
(D) धनी, सेवानिवृत्त व्यक्तियों का समुदाय।

147. विस्थापन के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
कथन I: विस्थापन के सभी रूप स्वैच्छिक होते हैं।
कथन II: विकास-प्रेरित विस्थापन बाँधों, खानों या औद्योगिक

192. कौन-सा विचारक 'वैचारिक राज्य तंत्र' और 'दमनकारी राज्य तंत्र' की अवधारणाओं से संबद्ध है?
(A) जुर्गन हेबरमास
(B) लुई अल्थुसर
(C) जैक्स डेरिडा
(D) जेफरी अलेक्जेंडर

193. 'मेटा-आख्यानों' के प्रति उत्तर-आधुनिक संदेह का आशय किसके प्रति संदेह से है?
(A) व्यक्तिगत किस्से और कहानियाँ।
(B) सार्वभौमिक सिद्धांत जो पूर्ण सामाजिक व्याख्या का दावा करते हैं।
(C) संवाद में भाषा का उपयोग।
(D) अनुभवजन्य डेटा और वैज्ञानिक विधियाँ।

194. योजना आयोग से नीति आयोग की ओर परिवर्तन 'नियंत्रक' से '_____' की भूमिका की ओर बढ़ने का प्रतिनिधित्व करता है।
(A) सक्षमकर्ता (enabler)
(B) अधिनायक
(C) न्यायाधीश
(D) अभियोजक

195. जैक्स डेरिडा के कार्य के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. उन्होंने भाषा में अर्थ की स्थिरता और निश्चित प्रकृति का तर्क दिया।
2. उन्होंने पाठों का विश्लेषण करने के लिए विखंडन (deconstruction) की पद्धति विकसित की।
3. उन्होंने पश्चिमी दार्शनिक परंपरा के 'शब्द-केंद्रिकता' (logocentrism) की आलोचना की।

ऊपर दिए गए कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?
(A) केवल 1
(B) केवल 1 और 2
(C) केवल 2 और 3
(D) 1, 2 और 3

196. निम्नलिखित में से कौन-सा 'सतत विकास' के दायरे में आता है?
(A) एक-फसली कृषि के लिए वर्षावनों को काटना।
(B) नदियों में औद्योगिक अपशिष्ट प्रवाहित करना।
(C) एकल-उपयोग प्लास्टिक के उपयोग को बढ़ावा देना।
(D) सौर और पवन ऊर्जा जैसे नवीकरणीय ऊर्जा स्रोतों का उपयोग करना।

197. निम्न-स्तरीय आवास और बुनियादी सेवाओं तक अपर्याप्त पहुँच वाली घनी जनसंख्या वाली, अनौपचारिक बस्ती को क्या कहा जाता है?
(A) गेटेड कम्युनिटी
(B) उपनगर (Suburb)
(C) झुग्गी-बस्ती
(D) वाणिज्यिक जिला

198. एक वैध आवेदन पर कार्रवाई करने के लिए एक सरकारी अधिकारी द्वारा धन की मांग करना किसका कृत्य है?
(A) विस्थापन
(B) भ्रष्टाचार
(C) अपचार (Delinquency)
(D) धर्मनिरपेक्षता

199. अधिकांश विधिक प्रणालियों में 'अपचार' (delinquency) को 'अपराध' (crime) से क्या पृथक करता है?
(A) अपराधी का सामाजिक वर्ग।
(B) कृत्य के पीछे का उद्देश्य।
(C) कृत्य का स्थान।
(D) अपराधी की आयु।

200. भारत में "बहुलवाद" की अवधारणा किसके बीच संतुलन की आवश्यकता के द्वारा राष्ट्र-निर्माण के लिए एक निरंतर चुनौती प्रस्तुत करती है?
(A) एकता और विविधता
(B) कृषि और उद्योग
(C) युवा और वृद्ध
(D) धनी और निर्धन

201. संघर्ष, अभिकर्तृत्व और बहुआयामी तत्वों को सम्मिलित करके प्रकार्यवाद को पुनर्जीवित करने का प्रयास करने का श्रेय किस विचारक को दिया जाता है?
(A) लुई अल्थुसर
(B) जुर्गन हेबरमास
(C) जेफरी अलेक्जेंडर
(D) जैक्स डेरिडा

202. हेबरमास के सिद्धांत में, एक समान समझ तक पहुँचने के लिए उन्मुख सामाजिक क्रिया को क्या कहा जाता है?
(A) संवादात्मक क्रिया (Communicative Action)
(B) उपकरणपरक क्रिया (Instrumental Action)
(C) रणनीतिक क्रिया (Strategic Action)
(D) प्रच्छन्न (Latent) क्रिया

203. शिक्षा के प्रति लुई अल्थुसर के दृष्टिकोण के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
कथन I: अल्थुसर ने तर्क दिया कि विद्यालय, वैचारिक राज्य तंत्र के रूप में, ज्ञान संचरण के लिए तटस्थ स्थान हैं।
कथन II: अल्थुसर के लिए, शिक्षा प्रणाली प्रभावी वर्ग की विचारधारा को पुनरुत्पादित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।
निम्नलिखित में से कौन-सा विकल्प सही है?
(A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
(B) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।
(C) कथन I सही है, लेकिन कथन II गलत है।
(D) कथन I गलत है, लेकिन कथन II सही है।

Downloaded from www.pdf.tube

295. लुई अल्थुसर के अनुसार निम्नलिखित में से कौन-सा वैचारिक राज्य तंत्र नहीं है?
(A) चर्च
(B) विद्यालय
(C) परिवार
(D) न्यायालय प्रणाली

296. 'किसी को पीछे न छोड़ने' का सतत विकास का लक्ष्य सीधे तौर पर किस विषय को संबोधित करता है?
(A) सामाजिक समानता और समावेशन।
(B) राष्ट्रीय संप्रभुता
(C) तकनीकी प्रगति
(D) राजनीतिक विचारधाराएं

297. 'अपचार' (delinquency) शब्द समाजशास्त्रीय रूप से महत्वपूर्ण है क्योंकि इसका निहितार्थ है:
(A) कि ये अपराध वयस्कों द्वारा किए गए अपराधों की तुलना में न्यून गंभीर हैं।
(B) कि अपराधी धनी पृष्ठभूमि से है।
(C) युवा अपराधियों के साथ न्याय प्रणालियों द्वारा पृथक रूप से व्यवहार किया जा सकता है।
(D) कि यह कृत्य विधि का उल्लंघन नहीं था।

298. भारत में विभिन्न जाति समूहों द्वारा मान्यता और संसाधनों के लिए चल रहे राजनीतिक और सामाजिक दावों को किसके बीच अंतःक्रिया के रूप में देखा जा सकता है?
(A) लोकतांत्रिक राजनीति के भीतर परंपरा और आधुनिकता।
(B) क्षेत्रीय असमानता और विस्थापन।
(C) श्वेत-वसन अपराध और भ्रष्टाचार।
(D) केवल धर्मनिरपेक्षता और राष्ट्र निर्माण।

299. नीति आयोग का एक प्राथमिक कार्य, जो योजना आयोग का केंद्र नहीं था, वह है:
(A) पंचवर्षीय योजनाएँ निर्मित करना।
(B) राज्यों को निधि आवंटित करना।
(C) राज्य के व्यय को नियंत्रित करना।
(D) नीतियों की निगरानी और मूल्यांकन।

300. यह अवधारणा कि सामाजिक संरचनाएं उन प्रथाओं का माध्यम और परिणाम दोनों हैं जिन्हें वे पुनरावर्ती (recursively) रूप से व्यवस्थित करती हैं, क्या कहलाती है?
(A) विखंडनवाद (Deconstruction)
(B) संरचना की द्वैतता
(C) जीवन-जगत का औपनिवेशीकरण
(D) इंटरपेलशन (Interpellation)

NODIA

P. जुर्गन हेबरमास
Q. लुई अल्थुसर
R. एंथनी गिडिन्स
S. जैक्स डेरिडा

सूची II: आलोचनात्मक केंद्र

1. अभिकर्तृत्व-संरचना द्वैतवाद पर विजय प्राप्त करना
2. शब्द-केंद्रिकता और उपस्थिति की तत्वमीमांसा की आलोचना करना
3. पूंजीवाद के पुनरुत्पादन में विचारधारा की भूमिका
4. सिस्टम द्वारा जीवन-जगत का औपनिवेशीकरण

सही विकल्प चुनें:

(A) P-1, Q-2, R-3, S-4
(B) P-4, Q-3, R-1, S-2
(C) P-4, Q-1, R-3, S-2
(D) P-2, Q-3, R-4, S-1

216. निम्नलिखित में से कौन-सा भारत में राष्ट्र-निर्माण की चुनौती का एक प्रमुख घटक है?

(A) एक ऐसी राष्ट्रीय पहचान निर्मित करना जो बहुलवाद को समाहित करती हो।
(B) सभी भेदों को समाप्त करके एक समरूप समाज निर्मित करना।
(C) भारत को वैश्विक आर्थिक और राजनीतिक प्रवृत्तियों से पृथक करना।
(D) एक गैर-धर्मनिरपेक्ष, ईश्वरीय राज्य की स्थापना करना।

217. 'संरचना की द्वैतता' की अवधारणा का उद्देश्य किसके बीच समाजशास्त्रीय वाद-विवाद को हल करना है?

(A) आधुनिकता और परंपरा
(B) पवित्र और अपवित्र
(C) संरचना और अभिकर्तृत्व (agency)
(D) गुणात्मक और मात्रात्मक विधियाँ

218. जेफरी अलेक्जेंडर का कार्य किस प्रमुख समाजशास्त्रीय परिप्रेक्ष्य का समकालीन विकास है?

(A) प्रकार्यवाद (Functionalism)
(B) मार्क्सवाद
(C) प्रतीकात्मक अंतःक्रियावाद (Symbolic Interactionism)
(D) नृजातिप्रणालीशास्त्र (Ethnomethodology)

219. जुर्गन हेबरमास के 'जीवन-जगत' और 'सिस्टम' के सिद्धांत के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

कथन I: हेबरमास इस बात को लेकर आशावादी हैं कि 'जीवन-जगत' कभी भी 'सिस्टम' से प्रभावित नहीं हो सकता है।
कथन II: हेबरमास का सिद्धांत 'सिस्टम' (धन और शक्ति) द्वारा 'जीवन-जगत' (दैनिक संवाद) के औपनिवेशीकरण और तर्कसंगतकरण के संकट की ओर संकेत करता है।

निम्नलिखित में से कौन-सा विकल्प सही है?

(A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
(B) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।
(C) कथन I सही है, लेकिन कथन II गलत है।
(D) कथन I गलत है, लेकिन कथन II सही है।

220. नीचे दो कथन दिए गए हैं: एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है।

अभिकथन (A): नीति आयोग के गठन का उद्देश्य सहकारी संघवाद को बढ़ावा देना था।
कारण (R): योजना आयोग के विपरीत, नीति आयोग की शासी परिषद में सभी राज्यों के मुख्यमंत्री और केंद्र शासित प्रदेशों के उपराज्यपाल सम्मिलित हैं, जो उन्हें नीति निर्माण में सक्रिय भागीदार बनाते हैं।

(A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सही है लेकिन R गलत है।
(D) A गलत है लेकिन R सही है।

221. किस सिद्धांतकार ने तर्क दिया कि विचारधारा व्यक्तियों को 'कर्ता' (subjects) के रूप में गठित करने का कार्य करती है?

(A) एंथनी गिडिन्स
(B) जैक्स डेरिडा
(C) लुई अल्थुसर
(D) जुर्गन हेबरमास

222. सतत विकास का एक प्रमुख उद्देश्य _____ की अपनी आवश्यकताओं को पूरा करने की क्षमता से समझौता किए बिना वर्तमान की आवश्यकताओं को पूरा करना है।

(A) निगमों
(B) राज्य
(C) विशिष्ट वर्ग
(D) भविष्य की पीढ़ियों

223. असुरक्षित भू-स्वामित्व और अपर्याप्त बुनियादी सेवाओं की विशेषता वाली एक विशाल, अनियोजित नगरीय बस्ती को किस रूप में जाना जाता है?

(A) झुग्गी-बस्ती
(B) उपनगर (Suburb)
(C) गेटेड कम्युनिटी
(D) विशेष आर्थिक क्षेत्र

224. भारतीय राष्ट्र के संदर्भ में 'बहुलवाद' (pluralism) शब्द किसकी बहुलता के अस्तित्व को संदर्भित करता है?

(A) केवल राजनीतिक दल।
(B) धर्म, भाषा और सांस्कृतिक नृजातीयता।
(C) केवल आर्थिक वर्ग।
(D) केवल भौगोलिक क्षेत्र।

225. धर्मनिरपेक्षता के भारतीय मॉडल के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. यह राज्य और धर्म के बीच कठोर पृथक्करण का आदेश देता है, जिसमें किसी भी हस्तक्षेप की अनुमति नहीं है।

Click Here to Buy book on Amazon

2. यह विभिन्न समुदायों के धार्मिक संस्थानों को राज्य समर्थन की अनुमति देता है।
3. यह राज्य को सामाजिक सुधार के उद्देश्य से धार्मिक प्रथाओं में हस्तक्षेप करने की अनुमति देता है।

ऊपर दिए गए कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?
(A) केवल 1
(B) केवल 2 और 3
(C) केवल 1 और 3
(D) 1, 2 और 3

226. गिडिन्स का 'विमर्शात्मक चेतना' (discursive consciousness) से क्या आशय है?
(A) वह ज्ञान जिसे कर्ता बताने या शब्दों में व्यक्त करने में सक्षम होते हैं।
(B) कर्ताओं की अपने कार्यों की व्याख्या करने में असमर्थता।
(C) संपूर्ण समाज के साझा विश्वास।
(D) शासक वर्ग द्वारा थोपा गया वास्तविकता का विकृत स्वरूप।

227. नव-प्रकार्यवाद का एक प्रमुख केंद्र दोनों पर ध्यान देकर एक अधिक 'संतुलित' सिद्धांत निर्मित करना है:
(A) जीव विज्ञान और समाज
(B) पूर्व और पश्चिम
(C) व्यवस्था और संघर्ष
(D) मानव और पशु

228. हेबरमास द्वारा संकल्पित 'सार्वजनिक क्षेत्र' (public sphere) किसके लिए एक स्थान है?
(A) निजी पारिवारिक जीवन।
(B) राज्य की प्रशासनिक कार्रवाई।
(C) बाजार आधारित प्रतिस्पर्धा।
(D) नागरिकों के बीच तर्कसंगत-आलोचनात्मक वाद-विवाद।

229. डेरिडा का एक केंद्रीय दावा यह है कि भाषा किसकी एक प्रणाली है?
(A) वास्तविकता का प्रत्यक्ष प्रतिनिधित्व।
(B) सार्वभौमिक और स्थिर अर्थ।
(C) भेद (difference) और स्थगन (deferral) द्वारा उत्पन्न संकेत।
(D) केवल तार्किक प्रस्ताव।

230. एक राज्य सरकार द्वारा अपने अल्प विकसित पूर्वी जिलों में निवेश आकर्षित करने के प्रयास ताकि उसके पश्चिमी जिलों के विकास के साथ संतुलन स्थापित हो सके, किसका उद्देश्य है?
(A) राष्ट्रीय ऋण न्यून करना
(B) क्षेत्रीय असमानता को न्यून करना
(C) जनसंख्या वृद्धि न्यून करना
(D) राजनीतिक भ्रष्टाचार न्यून करना

231. अपराध और विचलन के अन्य रूपों के बीच मुख्य अंतर यह है कि अपराध में सम्मिलित है:
(A) नैतिक मानदंडों का उल्लंघन।
(B) ऐसा व्यवहार जो केवल असामान्य है।
(C) केवल निर्धनों द्वारा किए गए कार्य।
(D) लिखित विधि का उल्लंघन।

NODIA

232. ऑनलाइन वित्तीय धोखाधड़ी और डेटा चोरी में वृद्धि किसका संकेत है?
(A) डिजिटल युग में अपराध की बदलती रूपरेखा।
(B) सभी अपराधों का अंत।
(C) पारंपरिक पुलिसिंग विधियों की सफलता।
(D) श्वेत-वसन अपराध में ह्रास।

233. नीति आयोग भारत सरकार के प्रमुख _____ के रूप में कार्य करता है।
(A) विधि प्रवर्तन एजेंसी
(B) न्यायिक निकाय
(C) नीति थिंक टैंक (Policy think tank)
(D) वित्तीय वितरण प्राधिकारी

234. एक नवीन राजमार्ग के निर्माण के कारण समुदायों का अनैच्छिक पुनर्वास किसका उदाहरण है?
(A) विकास-प्रेरित विस्थापन
(B) नगरीकरण
(C) जेंट्रीफिकेशन
(D) मौसमी प्रवास

235. यह तर्क कि 'परंपरा' अक्सर 'आधुनिकता' के विपरीत होने के स्थान पर उसके लिए एक संसाधन है, किसके अध्ययन में एक केंद्रीय विषय है?
(A) भारत में अपराध की बदलती रूपरेखा।
(B) नीति आयोग की संरचना और कार्य।
(C) नशीली दवाओं की लत के कारण।
(D) भारत में सामाजिक परिवर्तन और विकास।

236. निम्नलिखित विचारकों में से कौन नव-मार्क्सवाद या उत्तर-संरचनावाद से संबद्ध नहीं है?
(A) लुई अल्थुसर
(B) जेफरी अलेक्जेंडर
(C) जुर्गन हेबरमास
(D) जैक्स डेरिडा

237. यह विचार कि सामाजिक वास्तविकता भाषा और विमर्श (discourse) के माध्यम से गठित होती है, किसका आधार है?
(A) शास्त्रीय प्रकार्यवाद
(B) नव-प्रकार्यवाद
(C) उत्तर-आधुनिकतावाद
(D) विनिमय सिद्धांत (Exchange Theory)

238. एंथनी गिडिन्स के संरचनाकरण सिद्धांत के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
कथन I: एंथनी गिडिन्स का संरचनाकरण सिद्धांत यह मानता है कि मानवीय कर्ता 'सांस्कृतिक जड़बुद्धि' (cultural dopes) हैं जो सामाजिक संरचनाओं द्वारा पूर्णतः निर्धारित होते हैं।
कथन II: गिडिन्स का तर्क है कि कर्ता जानकार अभिनेता हैं जो अपने कार्यों और सामाजिक संदर्भ की प्रतीकात्मक निगरानी करते हैं।
निम्नलिखित में से कौन-सा विकल्प सही है?
(A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
(B) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।
(C) कथन I सही है, लेकिन कथन II गलत है।
(D) कथन I गलत है, लेकिन कथन II सही है।

239. अल्थुसर के सिद्धांत में दमनकारी राज्य तंत्र (RSA) का एक उदाहरण होगा:
(A) सैन्य (Military)
(B) परिवार
(C) मीडिया
(D) विश्वविद्यालय

240. कौन-सा समकालीन विषय देश के विभिन्न भौगोलिक क्षेत्रों में विकास और संसाधनों के असमान वितरण से उत्पन्न होता है?
(A) श्वेत-वसन अपराध
(B) क्षेत्रीय असमानता
(C) धर्मनिरपेक्षता
(D) मादक पदार्थों की लत

241. निम्नलिखित में से कौन-सा नीति आयोग का मुख्य कार्य नहीं है?
(A) सहकारी संघवाद को बढ़ावा देना।
(B) राज्यों को बाध्यकारी वित्तीय आवंटन करना।
(C) नीतिगत थिंक टैंक के रूप में कार्य करना।
(D) सरकारी कार्यक्रमों की निगरानी और मूल्यांकन करना।

242. "श्वेत-वसन अपराध" की परिभाषित विशेषता यह है कि यह एक व्यक्ति द्वारा किया जाता है:
(A) अपने सम्मानित व्यवसाय के दौरान।
(B) निम्न सामाजिक-आर्थिक पृष्ठभूमि से।
(C) जो एक नाबालिग है।
(D) राजनीतिक विचारधारा से प्रेरित होकर।

243. हाल के दशकों में "अपराध की बदलती रुपरेखा" को किसके द्वारा महत्वपूर्ण रुप से आकार दिया गया है?
(A) शिक्षा में ह्रास।
(B) पारंपरिक सामुदायिक बंधनों का सुदृढ़ीकरण।
(C) वैश्वीकरण और सूचना प्रौद्योगिकी का उदय।
(D) आर्थिक असमानता में कमी।

244. आत्महत्या की दरों का समाजशास्त्रीय विश्लेषण सर्वाधिक किस पर केंद्रित होगा?
(A) व्यक्तियों के मस्तिष्क के जैव-रसायन पर।
(B) मृतक के नैतिक चरित्र पर।
(C) आत्महत्या में प्रयुक्त विशिष्ट विधि पर।
(D) आत्महत्या और व्यापक सामाजिक कारकों के बीच संबंध पर।

245. सूची I के शब्दों को सूची II में उनके संबद्ध विचारकों के साथ सुमेलित कीजिए:
सूची I: शब्द
P. नव-प्रकार्यवाद
Q. संरचनाकरण (Structuration)
R. विखंडनवाद (Deconstruction)
S. वैचारिक राज्य तंत्र
सूची II: संबद्ध विचारक
1. जैक्स डेरिडा
2. लुई अल्थुसर
3. जेफरी अलेक्जेंडर
4. एंथनी गिडिन्स
सही विकल्प चुनें:
(A) P-3, Q-4, R-1, S-2
(B) P-1, Q-2, R-3, S-4
(C) P-3, Q-2, R-1, S-4
(D) P-4, Q-1, R-3, S-2

246. हेबरमास के लिए, बल से मुक्त तर्कसंगत विमर्श के लिए आदर्श स्थितियाँ कहाँ पाई जाती हैं?
(A) बाजार
(B) आदर्श भाषण स्थिति (Ideal Speech Situation)
(C) राज्य नौकरशाही
(D) परिवार

247. विखंडन (deconstruction) का प्राथमिक उद्देश्य क्या है?
(A) पाठ का एकमात्र वास्तविक अर्थ खोजना।
(B) पश्चिमी साहित्य की श्रेष्ठता सिद्ध करना।
(C) समाज का एक नवीन वृहद सिद्धांत निर्मित करना।
(D) पदानुक्रमित विरोधों में अस्थिरता को उजागर करना।

248. अल्थुसर के सिद्धांत में 'सापेक्ष स्वायत्तता' की अवधारणा बताती है कि राजनीतिक और वैचारिक अधिसंरचनाएं:
(A) अंतिम रूप में आर्थिक आधार पर निर्भर हैं।
(B) आर्थिक आधार से पूर्णतः स्वतंत्र हैं।
(C) अर्थव्यवस्था के प्राथमिक चालक हैं।
(D) पूंजीवाद की कार्यप्रणाली के लिए अप्रासंगिक हैं।

249. निम्नलिखित में से कौन-सा झुग्गी-बस्ती का लक्षण नहीं है?
(A) अत्यधिक भीड़भाड़
(B) आवास की न्यून संरचनात्मक गुणवत्ता
(C) सुरक्षित भू-स्वामित्व
(D) सुरक्षित जल और स्वच्छता तक अपर्याप्त पहुँच

NODIA

(B) प्रकार्यवादी विचार को पुनर्गठित करने के लिए एक व्यापक संश्लेषित कार्यक्रम।
(C) विशुद्ध रूप से सूक्ष्म-समाजशास्त्रीय सिद्धांत।
(D) संरचनात्मक मार्क्सवाद का एक रूप।

273. 'वैधता का संकट' (legitimation crisis) की अवधारणा किस विचारक से संबद्ध है?
(A) जैक्स डेरिडा
(B) जुर्गन हेबरमास
(C) एंथनी गिडिन्स
(D) जेफरी अलेक्जेंडर

274. विखंडन की पद्धति के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
कथन I: एक पद्धति के रूप में विखंडन का उद्देश्य किसी दिए गए पाठ का एक वास्तविक और स्थिर अर्थ स्थापित करना है।
कथन II: जैक्स डेरिडा की विखंडन की पद्धति पाठ के भीतर आंतरिक विरोधाभासों और पदानुक्रमित विरोधों को उजागर करने और उन्हें विखंडित करने का प्रयास करती है।
निम्नलिखित में से कौन-सा विकल्प सही है?
(A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
(B) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।
(C) कथन I सही है, लेकिन कथन II गलत है।
(D) कथन I गलत है, लेकिन कथन II सही है।

275. सूची I की सामाजिक घटनाओं को सूची II में उनकी संबंधित समाजशास्त्रीय अवधारणाओं के साथ सुमेलित कीजिए:
सूची I: सामाजिक घटना
P. एक किशोर द्वारा सार्वजनिक दीवार पर भित्तिचित्र (graffiti) बनाना।
Q. दो राज्यों के बीच साक्षरता दर में भारी अंतर।
R. एक राजनीतिज्ञ द्वारा अनुमति (परमिट) के लिए रिश्वत स्वीकार करना।
S. भारत में अनेक धर्मों का सह-अस्तित्व।
सूची II: समाजशास्त्रीय अवधारणा
1. क्षेत्रीय असमानता
2. बहुलवाद
3. अपचार (Delinquency)
4. भ्रष्टाचार
सही विकल्प चुनें:
(A) P-1, Q-2, R-3, S-4
(B) P-3, Q-1, R-4, S-2
(C) P-2, Q-4, R-1, S-3
(D) P-4, Q-3, R-2, S-1

276. निम्नलिखित में से कौन-सा सतत विकास का एक महत्वपूर्ण लक्ष्य है?
(A) वर्तमान पीढ़ी के लिए संसाधन उपभोग को अधिकतम करना।
(B) सभी औद्योगिक और आर्थिक गतिविधियों को रोकना।
(C) एक एकल वैश्विक संस्कृति को बढ़ावा देना।
(D) पर्यावरणीय संरक्षण के साथ सामाजिक और आर्थिक विकास को एकीकृत करना।

277. लोगों के उनके घरों और भूमि से अनिवार्य और अक्सर वृहद स्तर पर स्थानांतरण के लिए क्या शब्द है?
(A) पर्यटन
(B) कम्यूटिंग (Commuting)
(C) विस्थापन
(D) तीर्थयात्रा

278. यह तथ्य कि नीति आयोग के अध्यक्ष भारत के प्रधानमंत्री हैं, क्या सुनिश्चित करता है?
(A) सरकार से इसकी पूर्ण स्वतंत्रता।
(B) इसके नीतिगत प्रस्तावों को उच्च स्तरीय राजनीतिक समर्थन प्राप्त होना।
(C) कि यह एक न्यायिक निकाय के रूप में कार्य करता है।
(D) राजनीतिक प्रक्रिया से इसका पृथक्करण।

279. एक ऐसे व्यक्ति की आत्महत्या जो सामाजिक नियमन के पूर्ण अभाव और नियमहीनता का अनुभव करता है, जैसे कि आकस्मिक आर्थिक मंदी के पश्चात, दुर्खीम ने उसे क्या कहा था?
(A) अहंकेंद्रित (Egoistic)
(B) परार्थवादी (Altruistic)
(C) भाग्यवादी (Fatalistic)
(D) विसंगतिजन्य (Anomic) आत्महत्या

280. नीचे दो कथन दिए गए हैं: एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है।
अभिकथन (A): लुई अल्थुसर ने दमनकारी राज्य तंत्र (RSAs) और वैचारिक राज्य तंत्र (ISAs) के बीच भेद किया।
कारण (R): अल्थुसर ने तर्क दिया कि पूंजीवादी समाजों में, शासक वर्ग विशेष रूप से RSAs के माध्यम से बल प्रयोग द्वारा शक्ति बनाए रखता है।
(A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सही है लेकिन R गलत है।
(D) A गलत है लेकिन R सही है।

281. समकालीन समाजशास्त्रीय वाद-विवादों में "परंपरा" को सर्वोत्तम रूप में किस रूप में समझा जा सकता है?
(A) अतीत के विश्वासों का एक स्थिर और अपरिवर्तित समूह।
(B) एक बाधा जिसे प्रगति के लिए पूर्णतः समाप्त किया जाना चाहिए।
(C) वर्तमान के भीतर पुनर्व्याख्या किया गया एक गतिशील संसाधन।
(D) आधुनिक जीवन के लिए अप्रासंगिक कुछ।

282. गिडिन्स के सिद्धांत में 'संरचना की द्वैतता' किसके बीच की अंतःक्रिया को संदर्भित करती है?

Downloaded from www.pdf.tube

260. वयस्क होने की विधिक आयु से न्यून आयु का बालक जो चोरी करता है, उस पर किसका अभियोग लगने की संभावना है?
(A) श्वेत-वसन अपराध
(B) भ्रष्टाचार
(C) विचलन का एक कृत्य किंतु अपराध नहीं
(D) अपचार (Delinquency)

261. पार्सन्स के मूल प्रकार्यवाद के विरुद्ध जेफरी अलेक्जेंडर द्वारा की गई मुख्य आलोचनाओं में से एक क्या थी?
(A) संघर्ष पर अत्यधिक बल।
(B) व्यवस्थित दृष्टिकोण का अभाव।
(C) आदर्शवाद की ओर झुकाव और भौतिक स्थितियों की उपेक्षा।
(D) सूक्ष्म-अंतःक्रियाओं पर ध्यान केंद्रित करना।

262. निम्नलिखित में से कौन-सा विचलन का रूप नहीं है?
(A) एक व्यक्ति द्वारा हत्या करना।
(B) एक व्यक्ति द्वारा श्वसन क्रिया करना।
(C) परीक्षा में नकल करने वाला व्यक्ति।
(D) प्रतिकूल वातावरण में अल्पसंख्यक धर्म का अनुपालन करने वाला व्यक्ति।

263. 'संरचनाकरण' की अवधारणा इस बात पर बल देती है कि:
(A) व्यक्ति सामाजिक संरचनाओं के विरुद्ध शक्तिहीन हैं।
(B) सामाजिक संरचनाएं केवल समाजशास्त्रियों के मस्तिष्क में विद्यमान हैं।
(C) सभी सामाजिक संरचनाएं आर्थिक रूप से निर्धारित होती हैं।
(D) मानवीय क्रियाओं के माध्यम से संरचनाओं का निरंतर पुनरुत्पादन किया जाता है।

264. भारत में राष्ट्र-निर्माण की एक प्रमुख समस्या एक सुदृढ़ केंद्र सरकार और किसके बीच तनाव का प्रबंधन करना है?
(A) अधिक क्षेत्रीय और राज्य स्वायत्तता की मांग।
(B) अंतरराष्ट्रीय व्यापार की आवश्यकता।
(C) पश्चिमी मीडिया का प्रभाव।
(D) अंतरिक्ष अन्वेषण के लक्ष्य।

265. विकास परिदृश्य में निम्नलिखित अवधारणाओं को कारण से प्रभाव के तार्किक क्रम में रखें:
1. झुग्गी-बस्तियों का विकास
2. ग्रामीण क्षेत्रों से विकास-प्रेरित विस्थापन
3. एक नवीन औद्योगिक गलियारे के लिए भूमि अधिग्रहण
4. विस्थापित लोगों का नगरों की ओर पलायन
(A) 1, 4, 2, 3
(B) 2, 3, 1, 4
(C) 3, 2, 4, 1
(D) 4, 1, 3, 2

266. एक सरकार जो सभी धर्मों का सम्मान करती है और जिसका कोई आधिकारिक राज्य धर्म नहीं है, किंतु वह सभी धार्मिक समुदायों के साथ संवाद कर सकती है, वह किस मॉडल का अनुकरण कर रही है?
(A) धर्मनिरपेक्षता
(B) ईश्वरीय शासन (Theocracy)
(C) नास्तिकता
(D) राजशाही

267. अल्थुसर के ISA और RSA के बीच मौलिक भेद क्या है?
(A) उनका अंतिम लक्ष्य।
(B) उनका स्वामित्व (सार्वजनिक बनाम निजी)।
(C) वर्ग शासन बनाए रखने में उनकी प्रभावशीलता।
(D) उनके कार्य करने की प्राथमिक विधि (विचारधारा बनाम दमन)।

268. उत्तर-आधुनिकतावादी रुख को सर्वोत्तम रूप में किसके प्रति अस्वीकृति के रूप में वर्णित किया जा सकता है?
(A) आधुनिक तकनीक।
(B) सार्वभौमिक सत्य और आधारभूत दर्शन।
(C) भाषा का महत्व।
(D) सामाजिक और राजनीतिक आलोचना।

269. नीति आयोग का 'नीचे से ऊपर' (bottom-up) नियोजन पर बल योजना आयोग के किस दृष्टिकोण से भिन्नता है?
(A) 'मिडिल-आउट' दृष्टिकोण।
(B) 'राज्य-नेतृत्व' दृष्टिकोण।
(C) 'ऊपर से नीचे' (top-down) दृष्टिकोण।
(D) 'बाजार-संचालित' दृष्टिकोण।

270. एक प्रकरण अध्ययन में, एक नगर में एक संपन्न वित्तीय केंद्र, विश्व स्तरीय चिकित्सालय और विलासी आवास पाए जाते हैं, जबकि कुछ ही किलोमीटर दूर, एक विशाल जनसंख्या बिना जल या विद्युत के अस्थायी आवासों में रहती है। यह किसकी समस्या को दर्शाता है?
(A) बहुलवाद
(B) सतत विकास
(C) राष्ट्रीय एकीकरण
(D) क्षेत्रीय असमानता और प्रणालीगत असमानता।

271. गिडिन्स के अनुसार, दैनिक सामाजिक जीवन इसलिए संभव है क्योंकि मानवीय कर्ता _____ हैं जो निहित ज्ञान के भंडार का उपयोग करते हैं।
(A) जानकार कर्ता (Knowledgeable agents)
(B) सांस्कृतिक जड़बुद्धि (Cultural dopes)
(C) तर्कहीन अभिनेता
(D) जैविक जीव

272. जेफरी अलेक्जेंडर के नव-प्रकार्यवाद को किस रूप में वर्णित किया जा सकता है?
(A) पिछले सभी समाजशास्त्रीय सिद्धांतों की अस्वीकृति।

NODIA

250. नीचे दो कथन दिए गए हैं: एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है।
अभिकथन (A): भारत में परंपरा और आधुनिकता को अक्सर एक-दूसरे के साथ सह-अस्तित्व में और प्रभावित करते हुए देखा जाता है।
कारण (R): भारत में आधुनिकीकरण की प्रक्रिया ने जाति और धार्मिक अनुष्ठानों जैसे सभी पारंपरिक संस्थानों और मूल्यों के पूर्ण उन्मूलन को जन्म दिया है।
(A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सही है लेकिन R गलत है।
(D) A गलत है लेकिन R सही है।

251. सतत विकास का एक प्रमुख लक्ष्य किन तीन स्तंभों के बीच संतुलन स्थापित करना है?
(A) आर्थिक विकास, राजनीतिक शक्ति और सैन्य शक्ति।
(B) परंपरा, आधुनिकता और उत्तर-आधुनिकता।
(C) व्यक्तिवाद, सामूहिकता और राज्यवाद।
(D) आर्थिक विकास, सामाजिक समानता और पर्यावरण संरक्षण।

252. विशाल भाषाई, धार्मिक और जातीय विविधता वाले क्षेत्र से एक एकीकृत राष्ट्र निर्मित करने की चुनौती किसकी समस्या का केंद्र है?
(A) श्वेत-वसन अपराध का प्रबंधन।
(B) एक बहुलवादी समाज में राष्ट्र-निर्माण।
(C) क्षेत्रीय आर्थिक असमानता को दूर करना।
(D) सतत विकास लक्ष्यों को लागू करना।

253. एंथनी गिडिन्स द्वारा दी गई कौन-सी अवधारणा उस निरंतर प्रक्रिया को संदर्भित करती है जहाँ व्यक्ति तीव्रता से बदलती सामाजिक दुनिया के प्रत्युत्तर में अपनी पहचान की व्याख्या करते हैं और उसे आकार देते हैं?
(A) संरचना की द्वैतता
(B) व्यावहारिक चेतना
(C) स्वयं की प्रतीकात्मक परियोजना (Reflexive project of the self)
(D) जीवन-जगत का औपनिवेशीकरण

254. शेयर बाजार में व्यक्तिगत लाभ अर्जित करने के लिए गोपनीय जानकारी का उपयोग करने वाला एक वित्तीय विश्लेषक क्या कर रहा है?
(A) एक ब्लू-कॉलर अपराध
(B) किशोर अपचार
(C) बहुलवाद का एक कृत्य
(D) इनसाइडर ट्रेडिंग, जो एक प्रकार का श्वेत-वसन अपराध है।

255. अपराध और विचलन के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. सभी अपराध, परिभाषा के अनुसार, विचलन के रूप हैं।
2. विचलन के सभी रूप अपराध हैं।
3. विचलित क्या माना जाता है वह सभी समाजों में स्थिर और अपरिवर्तित रहता है।

ऊपर दिए गए कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?
(A) केवल 1
(B) केवल 2
(C) केवल 1 और 3
(D) केवल 2 और 3

256. हेबरमास के लिए, 'जीवन-जगत' किस पर आधारित है?
(A) बाजार की अनिवार्यताएं।
(B) सांस्कृतिक समझ और संवादात्मक प्रक्रियाएं।
(C) राज्य का प्रशासनिक तर्क।
(D) पुलिस और सेना की दमनकारी शक्ति।

257. उत्तर-आधुनिकतावादी शब्दावली में "मेटा-आख्यान" या "वृहद आख्यान" क्या है?
(A) एक व्यक्तिगत कहानी या जीवनी।
(B) इतिहास और समाज की व्याख्या करने वाला एक सार्वभौमिक सिद्धांत।
(C) एक लघु, काल्पनिक कहानी।
(D) अनुभवजन्य डेटा पर आधारित एक वैज्ञानिक रिपोर्ट।

258. नीति आयोग में एक 'टीम इंडिया हब' और एक 'ज्ञान एवं नवाचार हब' है। 'टीम इंडिया हब' मुख्य रूप से किसके लिए उत्तरदायी है?
(A) केंद्र सरकार के साथ राज्यों की भागीदारी को बढ़ावा देना।
(B) अंतरराष्ट्रीय विशेषज्ञों के साथ संपर्क स्थापित करना।
(C) संस्थान की आंतरिक अनुसंधान क्षमताओं का निर्माण करना।
(D) नीति आयोग के बजट का प्रबंधन करना।

259. विकास-प्रेरित विस्थापन के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
कथन I: विकास-प्रेरित विस्थापन जनजातीय समूहों और ग्रामीण निर्धनों जैसे हाशिए के समुदायों को असमान रूप से प्रभावित करता है।
कथन II: ऐसे समुदायों में अक्सर विशाल परियोजनाओं के लिए भूमि अधिग्रहण का विरोध करने के लिए राजनीतिक और आर्थिक शक्ति का अभाव होता है।
निम्नलिखित में से कौन-सा विकल्प सही है?
(A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं, और कथन II, कथन I की सही व्याख्या है।
(B) कथन I और कथन II दोनों सही हैं, लेकिन कथन II, कथन I की सही व्याख्या नहीं है।
(C) कथन I सही है, लेकिन कथन II गलत है।
(D) कथन I गलत है, लेकिन कथन II सही है।

Click Here to Buy book on Amazon

(A) अभिकर्तृत्व और संरचना
(B) अर्थव्यवस्था और राजनीति
(C) परंपरा और आधुनिकता
(D) सिस्टम और जीवन-जगत

283. जेफरी अलेक्जेंडर मुख्य रूप से किस विचारधारा से संबद्ध हैं?
(A) नव-मार्क्सवाद
(B) उत्तर-आधुनिकतावाद
(C) प्रतीकात्मक अंतःक्रियावाद
(D) नव-प्रकार्यवाद

284. निम्नलिखित में से कौन-सा हेबरमास के "जीवन-जगत" का सर्वाधिक सटीक वर्णन है?
(A) आर्थिक उत्पादन का विश्व।
(B) संस्कृति, एकजुटता और पहचान का अंतर्विषय (intersubjective) क्षेत्र।
(C) नौकरशाही प्रशासन का क्षेत्र।
(D) प्राकृतिक, भौतिक वातावरण।

285. एंथनी गिडिन्स के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. वह 'द कॉन्स्टिट्यूशन ऑफ सोसाइटी' के लेखक हैं।
2. उन्होंने संरचना की द्वैतता की अवधारणा प्रस्तावित की।
3. वह वर्ग क्रांति पर केंद्रित एक नव-मार्क्सवादी विचारक हैं।

ऊपर दिए गए कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?
(A) केवल 3
(B) केवल 1 और 3
(C) केवल 1 और 2
(D) 1, 2 और 3

286. उत्तर-आधुनिकतावाद 'ज्ञानोदय के तर्क' (Enlightenment reason) के विरुद्ध मुख्य रूप से क्या आलोचना करता है?
(A) यह पर्याप्त वैज्ञानिक नहीं था।
(B) इससे अत्यधिक तकनीक का विकास हुआ।
(C) इसने अर्थशास्त्र पर पर्याप्त ध्यान नहीं दिया।
(D) सार्वभौमिकता का इसका दावा वर्चस्व के एक रूप के रूप में कार्य करता है।

287. नीति आयोग द्वारा निम्नलिखित में से किस संस्थान को प्रतिस्थापित किया गया था?
(A) योजना आयोग
(B) वित्त आयोग
(C) राष्ट्रीय विकास परिषद
(D) विश्वविद्यालय अनुदान आयोग

288. उदर पूर्ति के लिए चोरी करने वाला व्यक्ति एक _____ कर रहा है, जबकि स्टॉक के मूल्यों में हेरफेर करने वाला सीईओ एक _____ कर रहा है।
(A) श्वेत-वसन अपराध; ब्लू-कॉलर अपराध
(B) ब्लू-कॉलर अपराध; श्वेत-वसन अपराध
(C) अपचार; विचलन
(D) अपराध; गैर-अपराध

289. भारतीय संविधान में 'धर्मनिरपेक्षता' की अवधारणा का तात्पर्य है कि:
(A) राज्य धर्म-विरोधी है।
(B) राज्य की समानता और सभी धर्मों से सैद्धांतिक दूरी।
(C) राज्य का एक आधिकारिक धर्म है।
(D) सार्वजनिक जीवन से धर्म प्रतिबंधित है।

290. एक ही राष्ट्र-राज्य के भीतर विविध सांस्कृतिक, जातीय और भाषाई समूहों के सह-अस्तित्व को क्या कहा जाता है?
(A) बहुलवाद
(B) समरूपता
(C) धर्मनिरपेक्षता
(D) सर्वाधिकारवाद (Totalitarianism)

291. निम्नलिखित में से कौन-सी जैक्स डेरिडा के कार्य की एक केंद्रीय अवधारणा है?
(A) संरचनाकरण
(B) संवादात्मक क्रिया
(C) विखंडनवाद (Deconstruction)
(D) वैधता का संकट

292. नव-प्रकार्यवाद का एक प्रमुख उद्देश्य सामाजिक व्यवस्था के अध्ययन को किसके अध्ययन के साथ एकीकृत करना है?
(A) व्यक्तिगत मनोविज्ञान
(B) जैविक विकास
(C) साहित्यिक आलोचना
(D) सामाजिक परिवर्तन और संघर्ष

293. तर्क के जुर्गन हेबरमास के सिद्धांत के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
कथन I: हेबरमास के लिए, उपकरणपरक तर्क मानवीय तर्कसंगतता का उच्चतम रूप है।
कथन II: हेबरमास संवादात्मक तर्कसंगतता को प्राथमिकता देते हैं, जिसका उद्देश्य पारस्परिक समझ है, और जो एक लोकतांत्रिक सार्वजनिक क्षेत्र के लिए आवश्यक है।
निम्नलिखित में से कौन-सा विकल्प सही है?
(A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
(B) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।
(C) कथन I सही है, लेकिन कथन II गलत है।
(D) कथन I गलत है, लेकिन कथन II सही है।

294. गिडिन्स के संरचनाकरण सिद्धांत में विश्लेषण की मूलभूत इकाई क्या है?
(A) व्यक्ति
(B) सामाजिक प्रथा (Social practice)
(C) सामाजिक संरचना
(D) आर्थिक प्रणाली

NODIA

204. निम्नलिखित में से कौन-सा गिडिन्स के 'संरचनाकरण सिद्धांत' का सर्वोत्तम अनुप्रयोग है?
(A) यह विश्लेषण करना कि आर्थिक आधार सांस्कृतिक अधिसंरचना को कैसे निर्धारित करता है।
(B) भाषाई चयन सामाजिक नियमों को कैसे पुनरुत्पादित और परिवर्तित करते हैं।
(C) किसी पाठ के प्रच्छन्न द्विआधारी विरोधों को खोजने के लिए उसका विखंडन करना।
(D) किसी संस्था के प्रकट और प्रच्छन्न कार्यों की पहचान करना।

205. निम्नलिखित समकालीन भारतीय विषयों को उस पैमाने के आधार पर व्यवस्थित करें जिस पर वे सामान्यतः विश्लेषण किए जाते हैं, वृहद (राष्ट्रीय/क्षेत्रीय) से सूक्ष्म (व्यक्तिगत/समूह) तक:
1. मादक पदार्थों की लत का एक प्रकरण।
2. धर्मनिरपेक्षता पर एक नीतिगत वाद-विवाद।
3. राज्यों के बीच क्षेत्रीय असमानता पर एक अध्ययन।
4. एक खान के लिए एक ही गाँव का विस्थापन।
(A) 1, 4, 2, 3
(B) 2, 3, 1, 4
(C) 3, 2, 4, 1
(D) 4, 1, 3, 2

206. उत्तर-आधुनिकतावाद की एक प्रमुख विशेषता किसके प्रति अविश्वास है?
(A) व्यक्तिवाद
(B) प्रौद्योगिकी
(C) कला
(D) मेटा-आख्यान (Meta-narratives)

207. नीति आयोग के 'तीन वर्षीय कार्य एजेंडा' (Three Year Action Agenda) का प्राथमिक उद्देश्य निम्नलिखित में से कौन-सा है?
(A) तीन वर्षों में कार्यान्वयन के लिए एक नीतिगत कार्ययोजना तैयार करना।
(B) प्रत्येक मंत्रालय के लिए विस्तृत वित्तीय आवंटन प्रदान करना।
(C) वार्षिक केंद्रीय बजट को प्रतिस्थापित करना।
(D) बाध्यकारी लक्ष्यों के साथ पंचवर्षीय योजना बनाना।

208. जातीय संघर्ष या पर्यावरणीय आपदाओं के कारण लोगों का अनैच्छिक स्थानांतरण किसका एक रूप है?
(A) बहुलवाद
(B) विस्थापन
(C) भ्रष्टाचार
(D) अपचार

209. 'श्वेत-वसन अपराध' शब्द अपराधी के _____ पर केंद्रित है, न कि स्वयं अपराध के प्रकार पर।
(A) आयु
(B) व्यावसायिक प्रास्थिति
(C) लिंग
(D) राष्ट्रीयता

210. एक व्यक्ति द्वारा की गई आत्महत्या जो समाज द्वारा अत्यधिक विनियमित अनुभव करता है और जिसका भविष्य अवरुद्ध है, उसे दुर्खीम द्वारा _____ आत्महत्या कहा जाएगा।
(A) भाग्यवादी (Fatalistic)
(B) विसंगतिजन्य (Anomic)
(C) अहंकेंद्रित (Egoistic)
(D) परार्थवादी (Altruistic)

211. गिडिन्स के सिद्धांत में, सामाजिक जीवन में 'नियमों और संसाधनों' की क्या भूमिका है?
(A) वे बाह्य शक्तियाँ हैं जो मानवीय क्रिया को पूर्णतः निर्धारित करती हैं।
(B) वे केवल आर्थिक विश्लेषण के लिए प्रासंगिक हैं।
(C) संरचनात्मक घटक जिनका कर्ता अपने कार्यों में उपयोग करते हैं।
(D) वे विचारधारा द्वारा निर्मित भ्रम हैं।

212. निम्नलिखित में से कौन-सा डेरिडा की 'différance' की अवधारणा के सार को सर्वोत्तम रूप में स्पष्ट करता है?
(A) यह विचार कि अर्थ निश्चित और सार्वभौमिक है।
(B) विभिन्न भाषाओं के बीच समानता।
(C) किसी शब्द और उसकी वस्तु के बीच प्रत्यक्ष संबंध।
(D) अर्थ में स्थगन और विभेदीकरण की प्रक्रिया।

213. यह तथ्य कि नीति आयोग के सीईओ की नियुक्ति प्रधानमंत्री द्वारा की जाती है, किस रूप में इसकी भूमिका को इंगित करता है?
(A) एक स्वतंत्र संवैधानिक निकाय।
(B) एक न्यायिक प्राधिकारी।
(C) नीति को गति देने के लिए प्रधानमंत्री कार्यालय के विस्तार के रूप में।
(D) एक अंतरराष्ट्रीय संगठन।

214. कौन-सा कथन औपचारिक और अनौपचारिक विचलन के बीच सटीक रूप से भेद करता है?
(A) अनौपचारिक विचलन औपचारिक विचलन से अधिक गंभीर होता है।
(B) औपचारिक विचलन विधि का उल्लंघन करता है; अनौपचारिक प्रथाओं का उल्लंघन करता है।
(C) औपचारिक विचलन प्रथाओं का उल्लंघन है, जबकि अनौपचारिक विचलन विधियों का उल्लंघन है।
(D) कोई अंतर नहीं है; सभी विचलन के साथ एक ही तरह से व्यवहार किया जाता है।

215. सूची I के विचारकों को सूची II में उनके आलोचनात्मक केंद्रों के साथ सुमेलित कीजिए:
सूची I: विचारक

Downloaded from www.pdf.tube

उत्तर (व्याख्या सहित)

NODIA

1. (B) पार्सन्स के सिद्धांत के मूल तत्वों को बनाए रखते हुए उनमें परिमार्जन करना।
जेफरी अलेक्जेंडर ने टैलकोट पार्सन्स के शास्त्रीय प्रकार्यवाद की सीमाओं को आधुनिक संदर्भ में परिष्कृत करने का प्रयास किया। उनका नव-प्रकार्यवाद सिद्धांत पार्सन्स की मूल संरचना को पूर्णतः नकारे बिना उसमें आवश्यक संशोधन और विस्तार करता है। यह सिद्धांत सामाजिक व्यवस्था के भीतर व्यक्ति, क्रिया और संरचना के मध्य नवीन संतुलन स्थापित करता है। इसमें संघर्ष और परिवर्तन जैसे उन महत्वपूर्ण पहलुओं को भी सम्मिलित किया गया है जिनकी पूर्व में उपेक्षा की गई थी।

2. (A) सांस्कृतिक ज्ञान और सामाजिक एकजुटता का साझा क्षेत्र।
जुर्गन हेबरमास के जीवन-जगत की अवधारणा समाज के उस क्षेत्र को संदर्भित करती है जहाँ व्यक्ति संवाद और साझा भाषा के माध्यम से सामूहिक पहचान एवं सांस्कृतिक मूल्यों का निर्माण करते हैं। यह क्षेत्र पारस्परिक समझ और सामाजिक एकता का केंद्र है। यहाँ संचार का मुख्य उद्देश्य किसी बाह्य दबाव के बिना सहमति तक पहुँचना होता है। इसे प्रणालियों के प्रशासनिक और आर्थिक प्रभाव से मुक्त मानवीय अनुभवों एवं परंपराओं का साझा सामाजिक भंडार माना जाता है।

3. (D) कथन I गलत है, लेकिन कथन II सही है।
लुई अल्थुसर ने स्पष्ट किया कि वैचारिक राज्य तंत्र मुख्य रूप से हिंसा के स्थान पर विचारधारा और संचार के माध्यम से कार्य करते हैं। इनका उद्देश्य शासक वर्ग के हितों के अनुकूल चेतना का निर्माण करना होता है। शिक्षा, परिवार और धार्मिक संस्थाएँ इसके प्रमुख उदाहरण हैं जो समाज में प्रचलित व्यवस्था को वैचारिक रूप से सुदृढ़ करते हैं। दमनकारी तंत्रों के विपरीत ये मनोवैज्ञानिक स्तर पर प्रभुत्व स्थापित करते हैं। इस प्रकार उत्पादन संबंधों का निरंतर पुनरुत्पादन सुनिश्चित होता है।

4. (D) संरचना की द्वैतता
एंथनी गिडिन्स ने अपने संरचनाकरण सिद्धांत में संरचना की द्वैतता को केंद्रीय स्तंभ के रूप में प्रस्तुत किया है। यह अवधारणा स्पष्ट करती है कि सामाजिक संरचनाएं व्यक्तियों की क्रियाओं को न केवल सीमित करती हैं, बल्कि उन्हें संभव भी बनाती हैं। संरचना क्रिया का साधन है और क्रिया के माध्यम से ही उसका निरंतर पुनरुत्पादन होता है। इस प्रकार व्यक्ति और सामाजिक संरचना एक-दूसरे के विरोधी नहीं बल्कि एक ही सिक्के के दो पहलुओं की भाँति परस्पर संबंधित हैं।

5. (A) P-3, Q-1, R-4, S-2
समाजशास्त्रीय सिद्धांतों में डेरिडा ने पाठ के अर्थ को अनिश्चित मानते हुए विखंडनवाद का विचार दिया। हेबरमास ने संवादात्मक क्रिया के माध्यम से समाज में पारस्परिक समझ विकसित करने पर बल दिया। गिडिन्स ने संरचना की द्वैतता के माध्यम से बताया कि संरचना और मानवीय क्रियाएं एक-दूसरे को प्रभावित करती हैं। वहीं अल्थुसर ने इंटरपेलशन की अवधारणा द्वारा स्पष्ट किया कि विचारधारा व्यक्तियों को एक विशेष सामाजिक पहचान और कर्ता के रूप में समाज में किस प्रकार स्थापित करती है।

6. (B) ज्ञान खंडित, बहुल और भाषा द्वारा निर्मित है।
उत्तर-आधुनिकतावाद इस विचार को चुनौती देता है कि संसार को समझने का कोई एक सार्वभौमिक या वस्तुनिष्ठ मार्ग हो सकता है। डेरिडा जैसे विचारकों का तर्क है कि ज्ञान स्थिर नहीं है, बल्कि यह भाषा और विमर्श के माध्यम से निरंतर निर्मित होता है। इसमें किसी एक परम सत्य के स्थान पर अनेक दृष्टिकोणों और व्याख्याओं की संभावना निहित रहती है। यह विचारधारा वृहद आख्यानों को अस्वीकार करती है और सामाजिक वास्तविकता को खंडित तथा बहुआयामी रूप में देखती है।

7. (D) सभी पर्यावरणीय प्रभावों की अवहेलना कर आर्थिक विकास को प्राथमिकता देना।
सतत विकास का मूल उद्देश्य आर्थिक उन्नति और पर्यावरण संरक्षण के मध्य एक संतुलित मार्ग खोजना है। इसका मुख्य लक्ष्य वर्तमान पीढ़ी की आवश्यकताओं को इस प्रकार पूर्ण करना है कि भविष्य की पीढ़ियों की आवश्यकताओं के साथ कोई समझौता न हो। इसमें केवल आर्थिक लाभ को प्राथमिकता नहीं दी जाती, बल्कि प्राकृतिक संसाधनों के विवेकपूर्ण उपयोग पर बल दिया जाता है। पर्यावरण की उपेक्षा करना इस अवधारणा के मूल सिद्धांतों के विपरीत है क्योंकि यह दीर्घकालिक विनाश का कारण बनता है।

8. (A) विकास-प्रेरित विस्थापन
जब सरकार या कोई संस्था विकास परियोजनाओं जैसे बाँध निर्माण, औद्योगिक क्षेत्र या राजमार्गों के लिए स्थानीय निवासियों को उनकी भूमि से विस्थापित करती है, तो उसे विकास-प्रेरित विस्थापन कहा जाता है। यह प्रक्रिया प्रायः अनैच्छिक होती है और प्रभावित व्यक्तियों को अपनी आजीविका तथा आवास का त्याग करना पड़ता है। यह प्रक्रिया दर्शाती है कि राष्ट्रीय विकास के लाभ और हानियाँ समाज के विभिन्न वर्गों के मध्य असमान रूप से वितरित होती हैं। इसमें विस्थापितों के सामाजिक-आर्थिक पुनरुत्थान की चुनौतियाँ निहित होती हैं।

9. (A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
भारत सरकार ने वर्ष 2015 में योजना आयोग के स्थान पर नीति आयोग की स्थापना की, जो एक नीतिगत विशेषज्ञ निकाय के रूप में कार्य करता है। इसका प्राथमिक उद्देश्य राज्यों को विकास की रणनीति में सक्रिय रूप से सम्मिलित करना है,

एक वृहद आख्यान के स्थान पर लघु, स्थानीय और विविध आख्यानों को अधिक महत्व प्रदान करते हैं ताकि समाज की वास्तविकता को उसकी समग्रता में समझा जा सके।

79. (A) जुर्गन हेबरमास
संवादात्मक क्रिया की अवधारणा जुर्गन हेबरमास के समाजशास्त्रीय चिंतन का केंद्र बिंदु है। उनका मानना है कि समाज में मानवीय संबंध तभी सुदृढ़ हो सकते हैं जब व्यक्ति बिना किसी दबाव के तर्कपूर्ण विमर्श के माध्यम से एक-दूसरे को समझें। यह क्रिया केवल निजी स्वार्थ हेतु नहीं, बल्कि पारस्परिक सहमति और सामाजिक एकता स्थापित करने हेतु की जाती है। हेबरमास का तर्क है कि आधुनिक युग में इस प्रकार के संवाद को सुरक्षित रखना अनिवार्य है क्योंकि वर्तमान में व्यावसायिक और प्रशासनिक प्रणालियाँ मानवीय विमर्श को नियंत्रित और विकृत करने का प्रयास कर रही हैं।

80. (B) सूक्ष्म-स्तरीय आकस्मिकता और अभिकर्तृत्व की समझ।
जेफरी अलेक्जेंडर ने पार्सन्स के प्रकार्यवाद को अधिक आधुनिक बनाने हेतु उसमें व्यक्तिगत क्रियाओं और सूक्ष्म अंतःक्रियाओं को सम्मिलित करने का कार्य किया। शास्त्रीय प्रकार्यवाद केवल वृहद ढांचों और व्यवस्था की स्थिरता पर ध्यान केंद्रित करता था, जिससे व्यक्ति की भूमिका गौण हो जाती थी। अलेक्जेंडर ने यह प्रदर्शित किया कि समाज की वृहद संरचनाएँ भी व्यक्तियों के दैनिक चयन और क्रियाओं से प्रभावित होती हैं। इस संश्लेषण के माध्यम से उन्होंने एक ऐसा बहुआयामी सिद्धांत विकसित किया जो समाज की स्थिरता और व्यक्ति की स्वतंत्रता दोनों को समान महत्व प्रदान करता है।

81. (B) विमर्शात्मक चेतना
एंथनी गिडिन्स के अनुसार विमर्शात्मक चेतना वह क्षमता है जिसके द्वारा व्यक्ति अपने कार्यों और उनके पीछे निहित कारणों को स्पष्ट रूप से व्यक्त कर सकता है। जब हम अपने व्यवहार का विश्लेषण करते हैं या सामाजिक नियमों के विषय में विमर्श करते हैं, तो हम इसी चेतना का उपयोग करते हैं। यह व्यावहारिक चेतना से पृथक है, जहाँ हम आदतन कार्य करते हैं। विमर्शात्मक चेतना दर्शाती है कि मनुष्य केवल नियमों का अनुपालन करने वाले जीव नहीं हैं, बल्कि वे अपनी परिस्थितियों पर विचार करने और उन्हें शब्दों में व्यक्त करने में पूर्णतः सक्षम विवेकशील कर्ता हैं।

82. (A) जैक्स डेरिडा
जैक्स डेरिडा ने विखंडनवाद के माध्यम से पश्चिमी दर्शन में उपस्थित उन युग्मों का विश्लेषण किया जहाँ एक पक्ष को सदैव दूसरे से श्रेष्ठ माना जाता है। उदाहरण स्वरूप, वाणी को लेखन से अधिक महत्वपूर्ण माना गया। डेरिडा ने तर्क दिया कि ये पदानुक्रम प्राकृतिक नहीं हैं, बल्कि भाषा द्वारा निर्मित हैं। उनका कार्य यह प्रदर्शित करता है कि कैसे ये विरोध समाज में सत्ता और वर्चस्व की संरचनाओं को बनाए रखते हैं। विखंडन के माध्यम से वे इन सीमाओं का अतिक्रमण करते हैं और यह सिद्ध करते हैं कि अर्थ सदैव परिवर्तित और स्थानांतरित होता रहता है।

83. (C) क्षेत्रीय असमानता
जब विकास की गति और संसाधनों का वितरण संपूर्ण देश में समान नहीं होता, तो इससे क्षेत्रीय असमानता उत्पन्न होती है। कुछ क्षेत्रों में आधुनिक उद्योगों और उच्च शिक्षण संस्थानों की अधिकता होती है, जबकि अन्य क्षेत्र आज भी आधारभूत सुविधाओं हेतु संघर्षरत हैं। यह असंतुलन आर्थिक नीतियों के साथ-साथ भौगोलिक और ऐतिहासिक कारकों पर भी निर्भर करता है। इससे न केवल आर्थिक पिछड़ापन बढ़ता है, बल्कि यह सामाजिक और राजनीतिक असंतोष को भी जन्म देता है। राष्ट्र की समग्र उन्नति हेतु सभी क्षेत्रों का संतुलित विकास होना अपरिहार्य है।

84. (D) सामाजिक मानदंडों के उल्लंघन को दंडित करना या हतोत्साहित करना।
शास्ति या सामाजिक दंड वे माध्यम हैं जिनके द्वारा समाज अपने सदस्यों के व्यवहार को नियंत्रित करता है। इनका मुख्य उद्देश्य यह सुनिश्चित करना है कि व्यक्ति समाज के स्थापित नियमों और मूल्यों का अनुपालन करें। जब कोई व्यक्ति विचलित व्यवहार करता है, तो उसे वैधानिक दंड या सामाजिक बहिष्कार जैसी शास्तियों का सामना करना पड़ता है। ये शास्तियाँ अन्य व्यक्तियों हेतु भी एक चेतावनी का कार्य करती हैं ताकि वे नियमों का उल्लंघन न करें। इस प्रकार समाज में व्यवस्था और स्थिरता बनाए रखने हेतु शास्तियाँ एक अनिवार्य भूमिका निर्वहन करती हैं।

85. (C) 3, 4, 2, 1
समाजशास्त्रीय और नीतिगत विकास के क्रम में सर्वप्रथम जुर्गन हेबरमास की संवादात्मक क्रिया का सिद्धांत वर्ष 1981 में आया। इसके पश्चात 1984 में एंथनी गिडिन्स की संरचना संबंधी महती कृति प्रकाशित हुई। भारत में नीति आयोग का गठन 2015 के प्रारंभ में योजना आयोग के स्थान पर किया गया था। उसी वर्ष 2015 के अंत में संयुक्त राष्ट्र ने सतत विकास लक्ष्यों को आधिकारिक रूप से अंगीकृत किया। यह कालक्रम आधुनिक सामाजिक सिद्धांतों और वैश्विक नीतियों के ऐतिहासिक विकास के चरणों को पूर्णतः और सटीक रूप से स्पष्ट करता है।

86. (B) जनता के विश्वास और संस्थागत वैधता को निर्बल करता है।
भ्रष्टाचार केवल आर्थिक क्षति नहीं है, बल्कि यह देश की संपूर्ण प्रशासनिक व्यवस्था को आंतरिक रूप से खोखला कर देता है। जब व्यक्ति देखते हैं कि सरकारी कार्यों हेतु रिश्वत देना अपरिहार्य है, तो उनका कानून और न्याय प्रणाली से विश्वास उठ जाता है। इससे लोकतांत्रिक संस्थानों की प्रतिष्ठा धूमिल होती है और वे अपनी वैधता खोने लगते हैं। भ्रष्टाचार से समाज में असमानता में वृद्धि होती है क्योंकि केवल साधन संपन्न व्यक्ति ही लाभ प्राप्त कर पाते हैं। अतः यह विकास की प्रक्रिया और राष्ट्रीय चरित्र दोनों हेतु एक गंभीर संकट है।

87. (D) कथन I गलत है, लेकिन कथन II सही है।
भारत में आधुनिकता का अर्थ प्राचीन परंपराओं का पूर्णतः उन्मूलन नहीं है, बल्कि यह उनके साथ एक जटिल सामंजस्य है। यहाँ आधुनिक शिक्षा और उच्च पदों पर आसीन होने के

Click Here to Buy book on Amazon

स्तरीय अंतःक्रियाओं को वृहद सामाजिक व्यवस्थाओं से जोड़ने का कार्य करता है। इसमें यह स्पष्ट किया गया है कि व्यक्ति केवल सामाजिक नियमों का पालन ही नहीं करते, बल्कि समय के साथ उन नियमों को नवीन स्वरुप भी प्रदान करते हैं।

19. (C) किसी पाठ के भीतर के आंतरिक विरोधाभासों और मान्यताओं को उजागर करना।
जैक्स डेरिडा का विखंडनवाद किसी लेख या विचार के पीछे निहित उन अर्थों को स्पष्ट करने की प्रक्रिया है जिन्हें प्रायः अनदेखा कर दिया जाता है। यह पद्धति दर्शाती है कि भाषा स्थिर नहीं है और किसी भी शब्द का एक अंतिम अर्थ नहीं हो सकता। यह पाठ के भीतर उपस्थित पदानुक्रमों और विरोधाभासों को सम्मुख लाता है, जिससे यह सिद्ध होता है कि लेखक के मूल उद्देश्य के अतिरिक्त भी अन्य व्याख्याएँ संभव हैं। यह दृष्टिकोण सत्य की निश्चितता को चुनौती प्रदान करता है और अर्थ की बहुलता को स्वीकार करता है।

20. (D) राज्यों को वित्तीय निधि वितरित करने का अंतिम अधिकार।
नीति आयोग की संरचना में शासी परिषद और क्षेत्रीय परिषदें सम्मिलित हैं जो राज्यों के साथ मिलकर कार्य करती हैं। इसमें विशेषज्ञों और पूर्णकालिक अधिकारियों का एक व्यवस्थित ढांचा होता है। यद्यपि पूर्ववर्ती योजना आयोग के विपरीत नीति आयोग के पास राज्यों को सीधे विकास अनुदान प्रदान करने की वित्तीय शक्ति नहीं है। यह अधिकार अब वित्त मंत्रालय के पास निहित है। नीति आयोग का मुख्य कार्य केवल परामर्श देना और रणनीतिक अनुसंधान के माध्यम से सरकार को दिशा प्रदान करना है, न कि बजट का आवंटन करना।

21. (C) झुग्गी-बस्ती (Slum)
झुग्गी-बस्ती किसी नगर के उस भाग को कहा जाता है जहाँ निवास की स्थितियाँ अत्यंत दयनीय होती हैं और जनसंख्या घनत्व बहुत अधिक होता है। यहाँ प्रायः स्वच्छ जल, विद्युत और शौचालय जैसी आधारभूत नागरिक सुविधाओं का अभाव रहता है। ये क्षेत्र अनियोजित होते हैं और यहाँ निवास करने वाले व्यक्तियों के पास प्रायः भूमि का वैधानिक स्वामित्व भी नहीं होता। झुग्गी-बस्तियों का निर्माण ग्रामीण क्षेत्रों से आने वाले निर्धन प्रवासियों के पास नगरों में सस्ते आवास के विकल्पों की कमी के कारण होता है।

22. (B) हत्या - औपचारिक विचलन (अपराध)
विचलन को दो प्रमुख श्रेणियों में विभाजित किया जा सकता है, जिसमें औपचारिक विचलन वह है जो सीधे तौर पर कानून का उल्लंघन करता है। हत्या जैसे कृत्य समाज के सबसे आधारभूत और महत्वपूर्ण नियमों के विरुद्ध हैं, इसलिए राज्य उन्हें गंभीर अपराध मानता है और कठोर दंड का प्रावधान करता है। अन्य लघु उल्लंघन जैसे सार्वजनिक स्थानों पर ऊँचे स्वर में बोलना केवल अनौपचारिक विचलन हो सकते हैं। औपचारिक दंड केवल उन्हीं कृत्यों हेतु दिया जाता है जो समाज की लिखित आचार संहिता और वैधानिक ढांचे के अंतर्गत आते हैं।

23. (D) सामाजिक हाशिए पर होने और साथियों के दबाव से प्रेरित एक सामाजिक विषय।
समाजशास्त्री मादक पदार्थों की लत को केवल व्यक्ति की नैतिक दुर्बलता नहीं मानते, बल्कि इसे सामाजिक परिवेश के संदर्भ में देखते हैं। यह प्रायः बेरोजगारी, सामाजिक विमुखता या मित्रों के प्रभाव का परिणाम होता है। हाशिए पर रहने वाले समुदायों में अवसरों का अभाव और मानसिक तनाव व्यक्तियों को नशे की ओर धकेल सकता है। अतः इसका समाधान केवल वैधानिक दंड नहीं, बल्कि सामाजिक सुधार और समर्थन प्रणाली का निर्माण करना है। यह समस्या दर्शाती है कि समाज का ढांचा व्यक्तिगत निर्णयों को कैसे प्रभावित करता है।

24. (A) परंपराएँ अक्सर आधुनिक संदर्भों के भीतर अनुकूलित होती हैं और सह-अस्तित्व में रहती हैं।
भारत में परंपरा और आधुनिकता के मध्य संबंध अत्यंत जटिल है क्योंकि यहाँ आधुनिक विचार प्राचीन प्रथाओं को पूर्णतः समाप्त नहीं करते। प्रायः देखा जाता है कि व्यक्ति आधुनिक तकनीक और शिक्षा का प्रयोग करते हुए भी अपनी पारंपरिक मान्यताओं और जातीय पहचान को बनाए रखते हैं। इसे परंपरा का आधुनिकीकरण भी कहा जा सकता है। यह प्रक्रिया दर्शाती है कि समाज की प्राचीन और नवीन व्यवस्थाएँ परस्पर मिलकर एक नवीन स्वरूप धारण करती हैं, जहाँ दोनों का अस्तित्व बना रहता है और वे एक-दूसरे को प्रभावित करती हैं।

25. (C) 2, 1, 3, 4
समाजशास्त्रीय सिद्धांतों के विकास क्रम में लुई अल्थुसर ने वर्ष 1960 के दशक में अपने संरचनात्मक मार्क्सवाद को स्थापित किया। इसके पश्चात जुर्गन हेबरमास ने 1970 और 80 के दशक में संवादात्मक क्रिया का सिद्धांत प्रस्तुत किया। एंथनी गिडिन्स ने 1980 के दशक के मध्य में संरचनाकरण सिद्धांत को लोकप्रियता प्रदान की। जेफरी अलेक्जेंडर द्वारा नव-प्रकार्यवाद का विकास 1980 के उत्तरार्ध में प्रकार्यवाद को नवीन स्वरूप प्रदान करने हेतु किया गया था। यह क्रम आधुनिक समाजशास्त्र के बौद्धिक विकास के चरणों को सटीक रूप से दर्शाता है।

26. (A) यह 'सामाजिक व्यवस्था' की अवधारणा को पूर्णतः त्याग देता है।
जेफरी अलेक्जेंडर का नव-प्रकार्यवाद पार्सन्स की सामाजिक व्यवस्था की अवधारणा को पूर्णतः अस्वीकार नहीं करता, बल्कि उसे अधिक लचीला और आधुनिक बनाता है। यह सिद्धांत स्वीकार करता है कि समाज एक व्यवस्था है, किंतु यह केवल स्थिरता पर नहीं बल्कि संघर्ष और गतिशीलता पर भी ध्यान केंद्रित करता है। यह विश्लेषण के सूक्ष्म और वृहद दोनों स्तरों को जोड़ने का प्रयास करता है। इसका मानना है कि समाज में असंतुलन और तनाव भी व्यवस्था का अंग हैं, इसलिए यह प्रकार्यवाद को एक व्यापक दृष्टिकोण प्रदान करता है।

27. (D) तर्कसंगत विमर्श के माध्यम से पारस्परिक समझ तक पहुँचना।
जुर्गन हेबरमास के सिद्धांत में संवादात्मक क्रिया का उद्देश्य केवल अपनी बात मनवाना या लाभ प्राप्त करना नहीं है। यह ऐसी सामाजिक क्रिया है जहाँ व्यक्ति तर्कपूर्ण विमर्श के माध्यम

Downloaded from www.pdf.tube

62. (D) उपकरणपरक क्रिया
उपकरणपरक क्रिया वह व्यवहार है जहाँ व्यक्ति किसी विशिष्ट और व्यावहारिक लक्ष्य की प्राप्ति हेतु सर्वाधिक प्रभावी साधनों का चयन करता है। इसमें मुख्य रूप से कार्यकुशलता, गणना और परिणामों पर ध्यान केंद्रित किया जाता है। हेबरमास के अनुसार यह क्रिया आधुनिक प्रशासनिक और आर्थिक प्रणालियों का आधार है। यहाँ अन्य व्यक्तियों की भावनाओं या नैतिक मूल्यों के स्थान पर केवल सफलता और लाभ को प्राथमिकता दी जाती है। जब यह क्रिया सामाजिक जीवन के अन्य क्षेत्रों पर प्रभावी होने लगती है, तो इससे मानवीय संबंधों में भावनात्मक गहराई की न्यूनता आने लगती है।

63. (A) विचारधारा व्यक्तियों को कर्ता-स्थितियों के रूप में निर्मित करती है।
लुई अल्थुसर ने इंटरपेलशन के माध्यम से यह स्पष्ट किया कि विचारधारा हमें स्वतंत्र व्यक्ति मानने के स्थान पर समाज में हमारी भूमिकाओं के अनुरूप निर्मित करती है। विचारधारा हमें अपनी ओर आकर्षित करती है और हमें यह अनुभव कराती है कि हम एक विशेष सामाजिक स्थिति से संबंद्ध हैं। इस प्रक्रिया के माध्यम से हम स्वयं को एक छात्र, श्रमिक या नागरिक के रूप में पहचानते हैं और उसी के अनुसार आचरण करते हैं। यह वैचारिक नियंत्रण इतना सूक्ष्म होता है कि हमें यह सब स्वाभाविक और अपनी स्वेच्छा से चयनित प्रतीत होने लगता है।

64. (B) वह सत्य के लिए एक स्थिर आधार की खोज की आलोचना करते हैं।
डेरिडा के अनुसार उपस्थिति की तत्वमीमांसा वह पश्चिमी दार्शनिक परंपरा है जो मानती है कि किसी भी शब्द या विचार का एक निश्चित और प्रत्यक्ष अर्थ होता है जिसे अन्वेषित किया जा सकता है। उन्होंने इसे चुनौती देते हुए कहा कि अर्थ सदैव भाषा के भीतर अन्य शब्दों के साथ संबंधों के कारण परिवर्तित होता रहता है और कभी भी पूर्णतः स्पष्ट या स्थिर नहीं होता। यह दृष्टिकोण किसी भी अंतिम सत्य या निश्चित आधार की संभावना को अस्वीकार करता है। विखंडनवाद इसी अनिश्चितता को उजागर कर विचारों की गहराई और उनकी विविधता को सम्मुख लाता है।

65. (A) P-4, Q-1, R-3, S-2
सामाजिक विषयों में झुग्गी-बस्ती शहरी क्षेत्रों में अपर्याप्त नागरिक सुविधाओं और अत्यधिक भीड़भाड़ वाली बस्तियों को प्रदर्शित करती है। क्षेत्रीय असमानता का अर्थ विभिन्न भौगोलिक क्षेत्रों के मध्य आर्थिक और सामाजिक विकास का असंतुलन है। विस्थापन एक ऐसी स्थिति है जहाँ विकास परियोजनाओं या आपदाओं के कारण व्यक्तियों को बलात अपने आवासों से निष्कासित किया जाता है। भ्रष्टाचार सार्वजनिक पदों पर आसीन व्यक्तियों द्वारा निजी लाभ हेतु अपनी शक्ति का दुरुपयोग करने की प्रक्रिया है। ये सभी विषय समकालीन भारतीय समाज की महत्वपूर्ण चुनौतियों का प्रतिनिधित्व करते हैं।

66. (A) आर्थिक, सामाजिक और पर्यावरणीय लक्ष्यों को संतुलित करना।
सतत विकास का मुख्य विचार यह है कि वर्तमान में की जाने वाली आर्थिक प्रगति पर्यावरण को क्षति न पहुँचाए और समाज के सभी वर्गों को इसका लाभ प्राप्त हो। यह केवल लाभार्जन पर केंद्रित नहीं है, बल्कि भविष्य की पीढ़ियों हेतु संसाधनों के संरक्षण पर बल देता है। इसमें स्वच्छ ऊर्जा, न्यायसंगत समाज और टिकाऊ आर्थिक ढांचे का निर्माण सम्मिलित है। यह अवधारणा हमें बोध कराती है कि यदि हम अपनी प्रकृति और सामाजिक समानता की रक्षा नहीं करेंगे, तो हमारी आर्थिक सफलता दीर्घकालिक रूप से स्थिर नहीं रह पाएगी।

67. (C) क्षेत्रीय परिषदें
नीति आयोग की संरचना में क्षेत्रीय परिषदें उन विशेष विषयों के समाधान हेतु निर्मित की गई हैं जो एक से अधिक राज्यों या किसी विशेष भौगोलिक क्षेत्र को प्रभावित करते हैं। इन परिषदों की अध्यक्षता प्रधानमंत्री या उनके द्वारा नामित व्यक्ति करते हैं और इनमें संबंधित राज्यों के मुख्यमंत्री सम्मिलित होते हैं। यह व्यवस्था यह सुनिश्चित करती है कि स्थानीय समस्याओं का समाधान क्षेत्रीय सहयोग के माध्यम से निकाला जाए। यह सहकारी संघवाद का उत्कृष्ट उदाहरण है जहाँ केंद्र और राज्य विशिष्ट चुनौतियों का सामना करने हेतु मिलकर एक साझा रणनीति विकसित करते हैं।

NODIA

68. (D) श्वेत-वसन अपराध
भ्रष्टाचार को श्वेत-वसन अपराध की श्रेणी में सम्मिलित किया जाता है क्योंकि यह समाज के प्रतिष्ठित और शक्तिशाली पदों पर आसीन व्यक्तियों द्वारा किया जाता है। इसमें शारीरिक हिंसा का प्रयोग नहीं होता, बल्कि पद का दुरुपयोग और वित्तीय हेराफेरी सम्मिलित होती है। जब कोई लोक सेवक अपने वैधानिक कर्तव्यों के निर्वहन के बदले रिश्वत की माँग करता है, तो वह जनविश्वास और वैधानिक नैतिकता का उल्लंघन करता है। ऐसे अपराध प्रायः गुप्त होते हैं और इन्हें प्रमाणित करना जटिल होता है, क्योंकि इनके पीछे एक प्रभावशाली तंत्र कार्य करता है।

69. (D) कथन I गलत है, लेकिन कथन II सही है।
अपराध की परिवर्तित रूपरेखा का अर्थ यह नहीं है कि अपराध समाप्त हो गए हैं, बल्कि इसका अभिप्राय है कि उनके स्वरूप में परिवर्तन आया है। वर्तमान समय में इंटरनेट और वैश्वीकरण के कारण साइबर आक्रमण, वित्तीय धोखाधड़ी और अंतरराष्ट्रीय आतंकवाद जैसे नवीन संकट उभरे हैं। ये अपराध पारंपरिक अपराधों से अधिक जटिल और घातक हैं क्योंकि ये किसी भी स्थान से संचालित किए जा सकते हैं। अतः आधुनिक समाज को इन नवीन और विकसित आपराधिक रूपों से निपटने हेतु अधिक उन्नत तकनीक और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर सुदृढ़ वैधानिक सहयोग की आवश्यकता है।

70. (A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
हेबरमास का तर्क है कि आधुनिक पूंजीवादी राज्यों में जब आर्थिक प्रणालियाँ अस्थिर होती हैं, तो सरकार संकट निवारण हेतु अत्यधिक हस्तक्षेप करती है। इससे राज्य पर महती

है। राज्य का अपना कोई आधिकारिक धर्म नहीं होता और यह नागरिकों को किसी भी धर्म के अनुसरण की स्वतंत्रता प्रदान करता है। साथ ही, समाज सुधार हेतु राज्य धार्मिक विषयों में हस्तक्षेप भी कर सकता है। यह मॉडल पश्चिमी धर्मनिरपेक्षता से भिन्न है क्योंकि यहाँ राज्य सभी धार्मिक समुदायों से समान दूरी बनाए रखते हुए संरक्षण और आवश्यक सहायता प्रदान करने का कार्य करता है।

37. (C) विविध पहचानों का सम्मान और समायोजन करते हुए राष्ट्रीय एकता प्राप्त करना।
एक बहुलवादी समाज में राष्ट्र-निर्माण की सबसे बड़ी चुनौती यह है कि विभिन्न समूहों की विशिष्ट पहचान को सुरक्षित रखते हुए उन्हें एक साझा राष्ट्र के साथ कैसे एकीकृत किया जाए। एकता और विविधता के मध्य संतुलन स्थापित करना अत्यंत जटिल कार्य है। यदि सरकार किसी एक संस्कृति को आरोपित करने का प्रयास करती है, तो इससे विद्रोह और विभाजन की स्थिति उत्पन्न हो सकती है। अतः सफल राष्ट्र-निर्माण हेतु सभी भाषाई और धार्मिक अल्पसंख्यकों के अधिकारों की रक्षा करना और उन्हें निर्णय प्रक्रिया में सहभागी बनाना अनिवार्य है।

38. (B) राज्य अपने नागरिकों की निष्ठा बनाए रखने में विफल रहता है।
हेबरमास के अनुसार वैधता का संकट तब उत्पन्न होता है जब राजनीतिक व्यवस्था जनता की अपेक्षाओं को पूर्ण करने और उनके विश्वास को अक्षुण्ण रखने में असमर्थ हो जाती है। यह प्रायः तब होता है जब राज्य की आर्थिक नीतियां विफल होती हैं या सामाजिक न्याय सुनिश्चित नहीं हो पाता। ऐसी स्थिति में जनता सरकार के निर्णयों और शासन करने के अधिकार पर प्रश्न उठाने लगती है। यह संकट लोकतंत्र की स्थिरता हेतु वृहद संकट है क्योंकि शासन हेतु केवल शक्ति नहीं, बल्कि नागरिकों की वैचारिक सहमति भी अनिवार्य होती है।

39. (D) उनके पास आर्थिक आधार से सीमित स्वतंत्रता है।
लुई अल्थुसर ने मार्क्सवाद के इस विचार में परिमार्जन किया कि केवल अर्थव्यवस्था ही समाज के अन्य पक्षों को निर्धारित करती है। उन्होंने तर्क दिया कि राजनीति, कानून और विचारधारा जैसे अधिसंरचनात्मक तत्वों के पास आर्थिक आधार से कुछ सीमा तक स्वायत्तता होती है। इसका अर्थ है कि वे सदैव सीधे तौर पर आर्थिक परिवर्तनों से प्रभावित नहीं होते और उनकी अपनी स्वतंत्र गतिशीलता हो सकती है। यद्यपि अंतिम रूप में आर्थिक आधार ही समाज की दिशा निर्धारित करता है, किंतु अधिसंरचना के पास स्वयं की कार्यप्रणाली हेतु स्थान उपलब्ध रहता है।

40. (C) A सही है लेकिन R गलत है।
एंथनी गिडिन्स का संरचनाकरण सिद्धांत अभिकर्तृत्व और संरचना को दो पृथक इकाइयाँ नहीं मानता, बल्कि इन्हें एक ही प्रक्रिया के दो पहलू के रूप में देखता है। उन्होंने इस प्राचीन विवाद को सुलझाया कि व्यक्ति महत्वपूर्ण है या समाज। गिडिन्स का तर्क है कि संरचनाएं मनुष्यों के व्यवहार को पूर्णतः निर्धारित नहीं करतीं, बल्कि वे व्यक्तियों की क्रियाओं से ही निर्मित और परिवर्तित होती हैं। अतः कारण दोषपूर्ण है क्योंकि संरचना अभिकर्तृत्व से स्वतंत्र नहीं है, बल्कि वह क्रियाओं का माध्यम और परिणाम दोनों ही है।

41. (C) सत्य के आधार के रूप में वाणी और तर्क को प्राथमिकता देना।
उत्तर-आधुनिकतावादी विचारकों ने शब्द-केंद्रिकता की आलोचना करते हुए यह तर्क दिया कि पश्चिमी दर्शन ने सदैव तर्क और प्रत्यक्ष वाणी को लेखन या अन्य माध्यमों से श्रेष्ठ माना है। उनका मानना है कि यह दृष्टिकोण सत्य को एक निश्चित और अंतिम वस्तु के रूप में देखने का प्रयास करता है। डेरिडा के अनुसार, कोई भी शब्द या विचार पूर्णतः स्थिर नहीं हो सकता और तर्क की श्रेष्ठता का दावा करना अन्य प्रकार के ज्ञान को दबाने का एक साधन है। यह आलोचना भाषा और सत्य की पारंपरिक समझ को विखंडित करती है।

42. (A) क्षेत्रीय असमानता
जब आर्थिक विकास का लाभ देश के सभी क्षेत्रों तक समान रूप से नहीं पहुँचता, तो इससे क्षेत्रीय असमानता उत्पन्न होती है। कुछ भौगोलिक क्षेत्र औद्योगिक और तकनीकी प्रगति के कारण समृद्ध हो जाते हैं, जबकि अन्य क्षेत्रों में संसाधनों की न्यूनता और निर्धनता बनी रहती है। यह स्थिति विकास की नीतियों में असंतुलन का परिणाम है। इससे जनसंख्या का पलायन और सामाजिक तनाव जैसी समस्याएँ उत्पन्न होती हैं। संतुलित राष्ट्रीय विकास हेतु यह आवश्यक है कि पिछड़े क्षेत्रों में आधारभूत सुविधाओं और उद्योगों को प्रोत्साहित किया जाए।

43. (D) राज्यों के मुख्यमंत्रियों के लिए एक विचार-विमर्श मंच के रूप में कार्य करना।
नीति आयोग की शासी परिषद भारत के प्रधानमंत्री की अध्यक्षता में एक उच्च स्तरीय निकाय है जिसमें सभी राज्यों के मुख्यमंत्री सम्मिलित होते हैं। इसका मुख्य उद्देश्य केंद्र और राज्यों के मध्य विकास के विषयों पर प्रत्यक्ष संवाद स्थापित करना है। यहाँ राज्यों को अपनी विशिष्ट समस्याओं और आवश्यकताओं को प्रस्तुत करने का अवसर प्राप्त होता है। यह परिषद राष्ट्रीय प्राथमिकताओं को निर्धारित करने और नीतियों के क्रियान्वयन में राज्यों की भूमिका सुनिश्चित करने हेतु एक महत्वपूर्ण मंच है, जिससे सहकारी संघवाद सुदृढ़ होता है।

44. (B) विचलन
विचलन उन व्यवहारों को कहते हैं जो समाज के स्थापित मानदंडों, मूल्यों या कानूनों से पृथक होते हैं और जिन्हें अधिकांश व्यक्तियों द्वारा अनुचित माना जाता है। यह केवल वैधानिक अपराध तक सीमित नहीं है, बल्कि इसमें वे सभी सामाजिक व्यवहार सम्मिलित हैं जो अस्वीकार्य माने जाते हैं। समाज विचलित व्यवहार करने वालों पर दबाव आरोपित करता है ताकि वे मुख्यधारा के नियमों का पालन करें। विचलन की परिभाषा समय और स्थान के साथ परिवर्तित होती रहती है, जो एक समाज में मान्य है वह दूसरे समाज में विचलित व्यवहार हो सकता है।

Click Here to Buy book on Amazon

से एक साझा समझ या सहमति तक पहुँचने का प्रयास करते हैं। यह प्रक्रिया किसी भी प्रकार के बल या प्रलोभन से मुक्त होनी चाहिए। इसमें व्यक्ति एक-दूसरे के विचारों का सम्मान करते हुए सत्य का अन्वेषण करते हैं। यह आधुनिक लोकतंत्र और एक स्वस्थ सार्वजनिक क्षेत्र के निर्माण हेतु अनिवार्य आवश्यकता मानी गई है।

28. (B) इंटरपेलशन
लुई अल्थुसर ने 'इंटरपेलशन' शब्द का प्रयोग यह समझाने हेतु किया कि विचारधारा व्यक्तियों को किस प्रकार संबोधित करती है और उन्हें एक निश्चित कर्ता के रूप में पहचान प्रदान करती है। यह एक ऐसी प्रक्रिया है जहाँ व्यक्ति को विचारधारा द्वारा पुकारा जाता है और वह अपनी सामाजिक भूमिका को स्वीकार कर लेता है। उदाहरण के लिए, जब अधिकारी किसी को आवाज़ देता है, तो वह व्यक्ति स्वयं को एक वैधानिक अनुपालन करने वाले या उल्लंघन करने वाले कर्ता के रूप में देखता है। इस प्रकार विचारधारा हमारे आत्म-बोध को गहरे स्तर पर प्रभावित करती है।

29. (D) कथन I गलत है, लेकिन कथन II सही है।
एंथनी गिडिन्स का तर्क है कि संरचना केवल व्यक्तियों पर अंकुश लगाने वाली शक्ति नहीं है, बल्कि यह कार्यों को संभव भी बनाती है। संरचना और मानवीय अभिकर्तृत्व के मध्य अटूट संबंध है जिसे उन्होंने संरचना की द्वैतता कहा है। इसका अर्थ है कि मनुष्य अपने कार्यों द्वारा संरचना का निर्माण करते हैं और साथ ही वही संरचना उनके कार्यों को निर्देशित करती है। गिडिन्स के अनुसार संरचना और व्यक्ति दो पृथक इकाइयाँ नहीं हैं, बल्कि वे निरंतर चलने वाली सामाजिक प्रथाओं के माध्यम से परस्पर संबंधित होते हैं।

30. (D) अर्थ विभेद के माध्यम से उत्पन्न होता है और आस्थगित होता है।
जैक्स डेरिडा द्वारा प्रतिपादित यह अवधारणा भाषा की उस प्रकृति को स्पष्ट करती है जहाँ किसी शब्द का अर्थ कभी भी पूर्ण या अंतिम नहीं होता। अर्थ अन्य शब्दों से उसके अंतर पर निर्भर करता है और यह सदैव अधूरा रहता है। भाषा में एक शब्द निरंतर दूसरे शब्द की ओर संकेत करता है, जिससे अर्थ अन्वेषण की प्रक्रिया सतत चलती रहती है। यह अवधारणा इस विचार को चुनौती प्रदान करती है कि सत्य या वास्तविकता को भाषा के माध्यम से पूर्णतः और स्थायी रूप से व्यक्त किया जा सकता है, जो विखंडनवाद का आधार है।

31. (A) क्षेत्रों के बीच विकास और कल्याण में असंतुलन।
क्षेत्रीय असमानता उस स्थिति को दर्शाती है जहाँ एक ही देश के भीतर कुछ राज्य या क्षेत्र आर्थिक और सामाजिक रूप से अत्यंत उन्नत हो जाते हैं, जबकि अन्य पिछड़ जाते हैं। यह असंतुलन प्रायः संसाधनों के वितरण, निवेश की न्यूनता और आधारभूत सुविधाओं के अभाव के कारण उत्पन्न होता है। इससे राष्ट्र की एकता और स्थिरता हेतु संकट उत्पन्न हो सकता है क्योंकि पिछड़े क्षेत्रों के निवासियों में असंतोष उत्पन्न होता है। इस समस्या के समाधान हेतु सरकार को समावेशी नीतियां बनाने और समान विकास सुनिश्चित करने की आवश्यकता होती है।

32. (B) रणनीतिक और तकनीकी नीतिगत परामर्श प्रदान करना।
नीति आयोग भारत सरकार हेतु एक प्रमुख परामर्शदात्री निकाय है जो भविष्य की विकास योजनाओं हेतु विशेषज्ञ परामर्श प्रदान करता है। यह आयोग विभिन्न मंत्रालयों और राज्य सरकारों को जटिल विषयों पर रणनीतिक सुझाव देता है। इसका उद्देश्य भारत हेतु दीर्घकालिक दृष्टिकोण निर्मित करना और नवीन तकनीकी समाधान खोजना है। यह सीधे धन वितरण या योजनाओं के क्रियान्वयन में सम्मिलित होने के स्थान पर एक मार्गदर्शक की भूमिका निर्वहन करता है। इसके सुझावों का उद्देश्य सरकारी नीतियों की प्रभावशीलता को बढ़ाना और नवाचार को प्रोत्साहन देना है।

33. (B) एक नाबालिग द्वारा बार-बार तोड़फोड़ की गतिविधियों में संलिप्त होना।
अपचार मुख्य रुप से उन गैर-कानूनी कृत्यों को संदर्भित करता है जो बालकों या किशोरों द्वारा किए जाते हैं। समाजशास्त्रीय दृष्टि से इसे वयस्कों द्वारा किए गए अपराधों से पृथक देखा जाता है क्योंकि बालकों की मानसिक परिपक्वता न्यून होती है। किशोरों के ऐसे व्यवहार का कारण प्रायः पारिवारिक समस्याएँ या प्रतिकूल सामाजिक परिवेश होता है। वैधानिक प्रणालियों में ऐसे युवाओं हेतु दंड के स्थान पर सुधार और पुनर्वास पर अधिक बल दिया जाता है। तोड़फोड़ या लघु चोरियां किशोरों द्वारा किए जाने वाले अपचार के सामान्य उदाहरण हैं।

34. (A) परंपरा और आधुनिकता की अंतःक्रिया और समन्वय।
आधुनिक भारतीय राजनीति में जाति का प्रभाव यह दर्शाता है कि प्राचीन सामाजिक संरचनाएँ नवीन लोकतांत्रिक व्यवस्था के साथ पूर्णतः समाप्त नहीं हुई हैं। इसके विपरीत जातियों ने राजनीतिक दलों और निर्वाचन की प्रक्रिया में स्वयं को अनुकूलित कर लिया है। इसे परंपरा का आधुनिकीकरण माना जा सकता है जहाँ प्राचीन पहचान का उपयोग आधुनिक राजनीतिक लाभ हेतु किया जाता है। यह प्रक्रिया समाज के विकास के उस चरण को प्रदर्शित करती है जहाँ पारंपरिक मूल्य और आधुनिक संस्थाएं परस्पर मिलकर एक नवीन सामाजिक वास्तविकता का निर्माण करती हैं।

35. (B) P-3, Q-4, R-1, S-2
समाजशास्त्रीय सिद्धांतों में श्वेत-वसन अपराध उच्च प्रास्थिति के व्यक्तियों द्वारा उनके व्यवसाय के दौरान किए गए आर्थिक धोखाधड़ी के कृत्यों को दर्शाता है। विस्थापन विकास कार्यों या आपदाओं के कारण व्यक्तियों को अपने आवास त्यागने हेतु विवश होने वाली स्थिति है। बहुलवाद समाज में विभिन्न संस्कृतियों और धर्मों के शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व की अवधारणा है। झुग्गी-बस्ती शहरी क्षेत्रों में उन घनी और असुरक्षित बस्तियों को कहते हैं जहाँ आधारभूत सुविधाओं की भारी कमी होती है। ये अवधारणाएं समकालीन समाज की प्रमुख चुनौतियों को रेखांकित करती हैं।

36. (D) राज्य द्वारा सभी धर्मों के साथ समान सम्मान का व्यवहार करना।
भारत में धर्मनिरपेक्षता का अर्थ राज्य का धर्म से पूर्ण विच्छेद नहीं है, बल्कि यह सभी धर्मों के प्रति समान सम्मान की नीति

NODIA

विचारधारा के माध्यम से नियंत्रण रखना शासक वर्ग हेतु पर्याप्त नहीं रह जाता।

54. (B) द्विआधारी विरोध और भाषाई अर्थ की स्थिरता।
जैक्स डेरिडा के विखंडनवाद का मुख्य उद्देश्य भाषा के भीतर उपस्थित उन विपरीत युग्मों को चुनौती देना है जहाँ एक शब्द को दूसरे से श्रेष्ठ माना जाता है। उन्होंने तर्क दिया कि भाषा में अर्थ कभी स्थिर नहीं होता और शब्दों का कोई अंतिम आधार नहीं होता। विखंडन के माध्यम से यह प्रदर्शित किया जाता है कि कैसे हमारी सोच और दर्शन कुछ पूर्व-निर्धारित मान्यताओं पर आधारित हैं। यह पद्धति सत्य की एकमात्र परिभाषा को अस्वीकार करती है और यह स्पष्ट करती है कि किसी भी पाठ के अनेक और विरोधाभासी अर्थ संभव हो सकते हैं।

55. (D) विकास-प्रेरित विस्थापन
जब वृहद औद्योगिक या खनन परियोजनाओं हेतु स्थानीय समुदायों को उनके पैतृक आवास और भूमि से बलात हटाया जाता है, तो उसे विकास-प्रेरित विस्थापन कहते हैं। यह प्रायः उन व्यक्तियों को सर्वाधिक प्रभावित करता है जिनकी आजीविका पूर्णतः भूमि और प्राकृतिक संसाधनों पर आश्रित होती है। यद्यपि ऐसी परियोजनाएं राष्ट्रीय विकास हेतु आवश्यक मानी जा सकती हैं, किंतु इनसे विस्थापित होने वाले व्यक्तियों हेतु यह एक गंभीर सामाजिक और आर्थिक संकट बन जाता है। इससे वृहद स्तर पर पलायन और आवासहीनता की समस्या उत्पन्न होती है।

56. (A) राज्यों के लिए वार्षिक वित्तीय योजनाओं को अंतिम रूप देना और निधि आवंटित करना।
नीति आयोग की भूमिका मुख्य रूप से परामर्शदात्री है और इसके पास राज्यों को प्रत्यक्ष विकास अनुदान या वित्तीय कोष प्रदान करने का अधिकार नहीं है। पूर्ववर्ती योजना आयोग के पास यह शक्ति निहित थी, किंतु अब यह कार्य वित्त मंत्रालय और वित्त आयोग द्वारा निष्पादित किया जाता है। नीति आयोग का ध्यान अब रणनीतिक योजना निर्माण, अंतर-मंत्रालयी सहयोग संवर्धन और सरकारी कार्यक्रमों की प्रभावशीलता की निगरानी पर केंद्रित रहता है। यह राष्ट्र के विकास हेतु एक बौद्धिक संसाधन केंद्र के रूप में कार्य करता है जो नवीन विचारों को प्रोत्साहन देता है।

57. (C) नवीन सामाजिक स्थितियाँ नवीन आपराधिक रूपों को जन्म देती हैं।
समाजशास्त्रीय तर्क यह है कि जैसे-जैसे समाज का स्वरूप परिवर्तित होता है, वैसे-वैसे अपराध करने की विधियाँ और प्रकार भी परिवर्तित हो जाते हैं। इंटरनेट और डिजिटल तकनीक के प्रसार ने साइबर अपराधों हेतु एक नवीन क्षेत्र का मार्ग प्रशस्त किया है। यह अपराध की परिवर्तित रूपरेखा का संकेत है जहाँ अपराधी अब प्रत्यक्ष संपर्क के बिना अपराध कर सकते हैं। यह दर्शाता है कि कानून और सुरक्षा प्रणालियों को समाज की बदलती तकनीकी और सामाजिक वास्तविकताओं के साथ निरंतर सामंजस्य स्थापित करना पड़ता है ताकि वे नवीन संकटों का सामना कर सकें।

58. (A) सामाजिक सुधार लागू करने के लिए धार्मिक विषयों में हस्तक्षेप कर सकता है।
भारत में धर्मनिरपेक्षता का अर्थ राज्य और धर्म के मध्य केवल पृथक्करण नहीं है, बल्कि राज्य को सभी धर्मों के प्रति समान सम्मान के साथ सुधार करने का अधिकार भी प्राप्त है। पश्चिमी मॉडल में राज्य और धर्म के मध्य एक अभेद्य दीवार होती है, जबकि भारतीय मॉडल में राज्य अस्पृश्यता जैसी कुरीतियों के उन्मूलन हेतु धार्मिक विषयों में हस्तक्षेप कर सकता है। यह दृष्टिकोण समाज में समानता और न्याय सुनिश्चित करने हेतु अंगीकृत किया गया है। यहाँ राज्य सभी धार्मिक समुदायों को अपनी संस्थाएँ संचालित करने हेतु वित्तीय सहायता भी प्रदान कर सकता है।

59. (D) संवाद, अनुकूलन और समन्वय की एक जटिल प्रक्रिया।
भारत में परंपरा और आधुनिकता के मध्य कोई प्रत्यक्ष संघर्ष नहीं है जहाँ एक दूसरे को पूर्णतः समाप्त कर दे। इसके स्थान पर यहाँ प्राचीन प्रथाएं आधुनिक मूल्यों के साथ सम्मिश्रित होकर एक नवीन स्वरूप ग्रहण करती हैं। उदाहरण हेतु, व्यक्ति आधुनिक तकनीक का प्रयोग करके अपनी पारंपरिक मान्यताओं का प्रचार करते हैं। यह प्रक्रिया निरंतर चलने वाला एक संवाद है जहाँ समाज अपनी जड़ों से संबंद्ध रहते हुए भी विकास को अंगीकार करता है। इसी समन्वय के कारण भारतीय समाज अपनी विविधता और विशिष्टता अक्षुण्ण रखने में सफल रहा है जो इसकी महती शक्ति है।

60. (B) व्यावहारिक चेतना
एंथनी गिडिन्स के अनुसार व्यावहारिक चेतना वह ज्ञान है जिसका प्रयोग मनुष्य अपने दैनिक जीवन में बिना गहन विचार के सहज रूप से करता है। हम सामाजिक नियमों का अनुपालन तो करते हैं, किंतु यदि कोई हमसे उनके विषय में प्रश्न करे, तो हम प्रायः उन्हें स्पष्ट रूप से शब्दों में व्यक्त नहीं कर पाते। यह चेतना हमारी दैनिक आदतों और व्यवहार का आधार है। यह विमर्शात्मक चेतना से भिन्न है, जहाँ हम अपने कार्यों का विश्लेषण कर सकते हैं। यह हमारे सामाजिक अस्तित्व को सुचारु रूप से और बिना किसी वृहद मानसिक प्रयास के संचालित करने में सहायक होती है।

61. (C) यह सर्वसम्मति के प्रति पूर्वाग्रही था और शक्ति की उपेक्षा करता था।
जेफरी अलेक्जेंडर जैसे नव-प्रकार्यवादियों ने शास्त्रीय सिद्धांत की आलोचना की क्योंकि वह समाज को केवल एक स्थिर और सामंजस्यपूर्ण व्यवस्था के रूप में देखता था। उनका मानना था कि प्राचीन सिद्धांत समाज में उपस्थित सत्ता के संघर्ष और शक्ति के असमान वितरण को पूर्णतः अनदेखा कर देता है। नव-प्रकार्यवाद ने इस तथ्य पर बल दिया कि समाज में एकता के साथ-साथ तनाव और विरोधाभास भी अपरिहार्य अंग हैं। इस प्रकार उन्होंने प्रकार्यवाद को अधिक यथार्थवादी और समकालीन सामाजिक समस्याओं के विश्लेषण हेतु अधिक सक्षम बनाने का ठोस प्रयास किया है।

Downloaded from www.pdf.tube

जिससे सहकारी संघवाद की भावना सुदृढ़ हो सके। यह आयोग ऊपर से नीचे के नियोजन के स्थान पर नीचे से ऊपर के दृष्टिकोण पर आधारित है। यह राष्ट्रीय लक्ष्यों की प्राप्ति हेतु केंद्र और राज्यों के मध्य निरंतर संवाद को प्रोत्साहित करता है।

10. (A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
जेफरी अलेक्जेंडर ने पार्सन्स के प्रकार्यवाद की आलोचना इस आधार पर की कि वह केवल वृहद संरचनाओं पर ध्यान केंद्रित करता था और व्यक्तिगत योगदान को गौण मानता था। नव-प्रकार्यवाद का मुख्य लक्ष्य इसी त्रुटि को दूर करना है। यह सिद्धांत सामाजिक संरचनाओं के महत्व को स्वीकार करते हुए यह भी स्पष्ट करता है कि व्यक्ति अपनी क्रियाओं और चयन के माध्यम से व्यवस्था को कैसे प्रभावित करते हैं। इस प्रकार यह संरचना और व्यक्तिगत अभिकर्तृत्व को एकीकृत करने का नवीन ढांचा प्रस्तुत करता है।

11. (D) एक छात्र द्वारा विद्यालय के औपचारिक परिधान संबंधी नियमों का उल्लंघन करना।
विचलन का अर्थ समाज के स्थापित मानदंडों या नियमों का पालन न करना है, जो अनिवार्यतः कानूनी अपराध नहीं होते। विद्यालय के परिधान संबंधी नियमों का पालन न करना केवल सामाजिक मानदंडों का उल्लंघन है, जिसे प्रशासन द्वारा दंडित किया जा सकता है, किंतु यह दंड न्यायालय द्वारा नहीं दिया जाता। अपराध केवल उन कृत्यों को कहा जाता है जिन्हें राज्य द्वारा विशेष रूप से प्रतिबंधित किया गया है और जिनके लिए दंड संहिता में स्पष्ट सजा का प्रावधान किया गया है।

12. (B) अपने व्यवसायों के भीतर उच्च-प्रास्थिति वाले व्यक्ति।
समाजशास्त्री एडविन सदरलैंड ने श्वेत-वसन अपराध की अवधारणा उन अपराधों हेतु दी जो समाज के सम्मानित और उच्च वर्ग के व्यक्तियों द्वारा किए जाते हैं। ये अपराध व्यक्ति की व्यावसायिक गतिविधियों के दौरान संपन्न होते हैं, जैसे वित्तीय धोखाधड़ी, कर चोरी या गबन। यहाँ अपराधी समाज का वह वर्ग होता है जिसके पास आर्थिक और राजनीतिक शक्ति होती है। यह अवधारणा इस पारंपरिक सोच को चुनौती देती है कि अपराध केवल निर्धन या समाज के निम्न वर्गों की ही विशेषता है।

13. (C) साइबर अपराध और अंतरराष्ट्रीय संगठित अपराध का उदय।
वैश्वीकरण और सूचना प्रौद्योगिकी की प्रगति ने अपराध के स्वरूप को पूर्णतः परिवर्तित कर दिया है। अब अपराधी सीमाओं के पार डिजिटल माध्यमों से बैंकिंग धोखाधड़ी, डेटा चोरी और आतंकवाद जैसी गतिविधियों को क्रियान्वित करते हैं। यह अपराध की परिवर्तित रूपरेखा का सबसे प्रमुख पक्ष है, क्योंकि अब अपराध स्थानीय सीमाओं तक सीमित नहीं रहे हैं। तकनीक के प्रयोग ने अपराधियों को पकड़े जाने के भय के बिना दूर बैठकर वृहद स्तर पर आर्थिक और सामाजिक क्षति पहुँचाने की क्षमता प्रदान की है।

14. (D) विविध धार्मिक, भाषाई और सांस्कृतिक समूहों का सह-अस्तित्व।
भारत के संदर्भ में बहुलवाद एक ऐसी व्यवस्था है जहाँ विभिन्न धर्मों, भाषाओं और संस्कृतियों के अनुयायी एक ही राष्ट्र के भीतर समानता के साथ निवास करते हैं। यह अवधारणा इस तथ्य पर बल देती है कि विविधता राष्ट्र हेतु संकट नहीं, बल्कि शक्ति का स्रोत है। यहाँ प्रत्येक समूह को अपनी पहचान अक्षुण्ण रखने और अपनी परंपराओं का पालन करने की संवैधानिक स्वतंत्रता प्राप्त है। राष्ट्र-निर्माण हेतु इन विविध समूहों के मध्य सामंजस्य और पारस्परिक सम्मान अनिवार्य माना गया है।

15. (B) केवल 1 और 2
भारत में राष्ट्र-निर्माण एक चुनौतीपूर्ण प्रक्रिया रही है जिसमें धर्मनिरपेक्षता को राष्ट्रीय एकता का आधार माना गया है। विविध भाषाओं की उपस्थिति ने समय-समय पर प्रशासनिक और राजनीतिक विवाद उत्पन्न किए हैं, जिन्हें सुलझाना एक महती चुनौती रही है। भारतीय संविधान एक संघीय ढांचा प्रदान करता है जो राज्यों को पर्याप्त स्वायत्तता प्रदान करता है, न कि पूर्णतः एकात्मक राज्य। अतः धर्मनिरपेक्ष मूल्यों को प्रोत्साहन देना और भाषाई विविधता का सम्मान करना ही भारतीय लोकतंत्र की एकता और अखंडता सुनिश्चित करने का मुख्य मार्ग है।

16. (B) जीवन-जगत का औपनिवेशीकरण
हेबरमास के अनुसार आधुनिक समाजों में आर्थिक और प्रशासनिक प्रणालियाँ इतनी शक्तिशाली हो गई हैं कि वे मानवीय संबंधों के सूक्ष्म क्षेत्रों पर भी नियंत्रण स्थापित करने लगती हैं। इस प्रक्रिया को जीवन-जगत का औपनिवेशीकरण कहा जाता है। इसमें बाजार के लाभ और नौकरशाही के नियमों का तर्क पारस्परिक संवाद तथा सांस्कृतिक मूल्यों का स्थान ले लेता है। इसके परिणामस्वरूप व्यक्तियों के मध्य सहज संवाद न्यून हो जाता है और सामाजिक जीवन यांत्रिक हो जाता है, जिससे समाज में विमुखता की स्थितियाँ उत्पन्न होती हैं।

17. (B) मुख्य रूप से हिंसा या हिंसा के भय के माध्यम से कार्य करना।
लुई अल्थुसर ने राज्य की शक्ति को दो भागों में विभाजित किया है, जिसमें दमनकारी राज्य तंत्र प्रत्यक्ष शक्ति का प्रतिनिधित्व करता है। इसमें पुलिस, सेना, न्यायालय और कारागार सम्मिलित हैं जो कानून लागू करने हेतु शारीरिक बल का प्रयोग कर सकते हैं। इनका प्राथमिक कार्य किसी भी विद्रोह या नियम के उल्लंघन को दबाकर शासक वर्ग के हितों की रक्षा करना है। यह तंत्र तभी सक्रिय होता है जब वैचारिक साधनों के माध्यम से व्यक्तियों की सहमति प्राप्त करना और नियंत्रण रखना कठिन हो जाता है।

NODIA

18. (A) गिडिन्स का संरचनाकरण सिद्धांत
एंथनी गिडिन्स का मानना है कि सामाजिक व्यवस्थाएँ व्यक्तियों की दैनिक गतिविधियों और नियमों के अनुपालन से ही स्थिर रहती हैं। उनका संरचनाकरण सिद्धांत यह विश्लेषण करता है कि कैसे कर्ता अपनी जानकारी और विवेक का उपयोग करके संरचनाओं का पुनरुत्पादन करते हैं। यह दृष्टिकोण सूक्ष्म-

जिम्मेदारी आ जाती है जिसे वह पूर्णतः निर्वहन करने में प्रायः असमर्थ रहता है। जब जनता की अपेक्षाएं पूर्ण नहीं होतीं, तो शासन के प्रति उनका विश्वास न्यून होने लगता है और इसे ही वैधता का संकट कहा जाता है। यह स्थिति तब उत्पन्न होती है जब सरकारी नीतियां केवल आर्थिक लाभ पर केंद्रित होती हैं और नागरिकों के साथ संवाद एवं सामाजिक न्याय की उपेक्षा करती हैं।

71. (D) राष्ट्रीय पहचान जो विविध आंतरिक पहचानों का सम्मान करती है।
भारत जैसे बहुलवादी राष्ट्र में राष्ट्र-निर्माण का अर्थ किसी एक संस्कृति को सर्वत्र आरोपित करना नहीं है। इसकी वास्तविक चुनौती एक ऐसी साझा भारतीय पहचान विकसित करना है जिसमें विभिन्न धर्मों, भाषाओं और क्षेत्रीय संस्कृतियों हेतु पर्याप्त स्थान और सम्मान उपलब्ध हो। इसे विविधता में एकता भी कहा जाता है। राष्ट्र-निर्माण तभी सफल होता है जब प्रत्येक नागरिक यह अनुभव करे कि उसकी अपनी सांस्कृतिक जड़ें सुरक्षित हैं और वह एक विशाल राष्ट्र का अभिन्न अंग है। यह समावेशी दृष्टिकोण ही देश की अखंडता को सुदृढ़ बनाता है।

72. (A) नगरीय निर्धनता और सामाजिक बहिष्करण की एक भौतिक अभिव्यक्ति।
झुग्गी-बस्ती केवल दोषपूर्ण आवासों का समूह नहीं है, बल्कि यह समाज में उपस्थित आर्थिक असमानता और अवसरों की न्यूनता का प्रतीक है। ये बस्तियां उन व्यक्तियों के जीवन संघर्ष को प्रदर्शित करती हैं जो नगर की अर्थव्यवस्था का अंग तो हैं, किंतु मुख्यधारा की सुख-सुविधाओं से वंचित हैं। यहाँ के निवासी प्रायः आधारभूत मानवाधिकारों और नागरिक सेवाओं हेतु संघर्ष करते हैं। समाजशास्त्रीय दृष्टि से, झुग्गी-बस्तियों का अध्ययन हमें नगरीकरण की उन त्रुटियों को समझने में सहायता करता है जो सामाजिक न्याय और समान विकास के मार्ग में अवरोध उत्पन्न करती हैं।

73. (C) अपराधी की आयु।
कानून की दृष्टि में अपराध और अपचार के मध्य का सबसे बड़ा अंतर अपराधी की आयु से निर्धारित होता है। यदि कोई वयस्क व्यक्ति कानून का उल्लंघन करता है तो उसे अपराधी माना जाता है और उसे दंड संहिता के अनुसार सजा प्राप्त होती है। वहीं, यदि वही कृत्य किसी नाबालिग द्वारा संपन्न किया जाता है, तो उसे किशोर अपचार की श्रेणी में रखा जाता है। किशोरों हेतु पृथक न्यायालय और सुधार गृह होते हैं जहाँ उन्हें परिष्कृत करने का प्रयास किया जाता है। इस वर्गीकरण के पीछे यह धारणा है कि बालकों में अपराध की बोध क्षमता वयस्कों के समान नहीं होती।

74. (A) साइबर-संबंधित कार्यों की ओर अपराध की रूपरेखा में परिवर्तन।
डिजिटल युग में अपराध क्रियान्वयन की विधियाँ परिवर्तित हो गई हैं, जहाँ शारीरिक शक्ति के स्थान पर तकनीकी ज्ञान का प्रयोग किया जाता है। बैंक खातों में अनाधिकृत प्रवेश और ऑनलाइन धोखाधड़ी इसके प्रमुख उदाहरण हैं। यह दर्शाता है कि आधुनिक अपराधी अब शस्त्रों के स्थान पर कंप्यूटर कौशल का आश्रय ले रहे हैं। यह परिवर्तन सुरक्षा एजेंसियों हेतु एक महती चुनौती है क्योंकि ऐसे अपराधों में अपराधी और पीड़ित भौगोलिक रूप से अत्यंत दूर हो सकते हैं। यह अपराध की रूपरेखा में वैश्विक स्तर पर आए क्रांतिकारी परिवर्तन का प्रत्यक्ष प्रमाण है।

75. (C) केवल 2 और 3
एंथनी गिडिन्स के संरचनाकरण सिद्धांत के अनुसार मानवीय कर्ता केवल सांस्कृतिक नियमों के अधीन नहीं हैं, बल्कि वे अपने कार्यों के प्रति सचेत और विवेकी होते हैं। उनके पास व्यावहारिक और विमर्शात्मक दोनों प्रकार की चेतना होती है जो उन्हें समाज में सक्रिय भूमिका निर्वहन में सहायता करती है। संरचना की द्वैतता का अर्थ है कि संरचना और क्रिया निरंतर एक-दूसरे को आकार प्रदान करते हैं। यह सिद्धांत इस तथ्य पर बल देता है कि संरचनाएं केवल अवरोध नहीं हैं, बल्कि वे क्रियाओं को संभव बनाने वाले नियम और संसाधन भी उपलब्ध कराती हैं।

76. (B) सहकारी संघवाद पर बल देने वाला एक सांकेतिक नियोजन मॉडल।
नीति आयोग की स्थापना भारत के आर्थिक शासन में एक वृहद परिवर्तन का प्रतीक है। पूर्ववर्ती योजना आयोग ऊपर से निर्णय लेकर राज्यों पर आरोपित करता था, किंतु नीति आयोग राज्यों को नीति निर्माण में सहभागी बनाता है। यह सांकेतिक नियोजन मॉडल राज्यों को उनकी विशिष्ट आवश्यकताओं के अनुरूप योजना निर्माण की स्वायत्तता प्रदान करता है। इसका मुख्य उद्देश्य केंद्र और राज्यों के मध्य विश्वास का संबंध स्थापित करना और सामूहिक प्रयासों से विकास प्राप्त करना है। यह परिवर्तन दर्शाता है कि भारत अब अधिक लोकतांत्रिक और विकेंद्रीकृत विकास की दिशा में अग्रसर है।

77. (C) सेना
लुई अल्थुसर ने स्पष्ट किया कि सेना दमनकारी राज्य तंत्र का अंग है क्योंकि यह हिंसा और बल के माध्यम से राज्य की शक्ति को क्रियान्वित करती है। इसके विपरीत परिवार, विद्यालय और धार्मिक संस्थाएं वैचारिक राज्य तंत्र हैं क्योंकि वे व्यक्तियों के विश्वासों, मूल्यों और विचारधारा को प्रभावित करते हैं। वैचारिक तंत्र हमें मानसिक रूप से शासन के अनुकूल बनाते हैं, जबकि दमनकारी तंत्र शारीरिक नियंत्रण स्थापित करते हैं। सेना का प्रयोग तभी किया जाता है जब वैचारिक साधनों से समाज में व्यवस्था अक्षुण्ण रखना और विरोध को नियंत्रित करना शासक वर्ग हेतु असाध्य हो जाता है।

78. (D) वैकल्पिक दृष्टिकोणों और ज्ञान के रूपों को हाशिए पर धकेल देते हैं।
उत्तर-आधुनिकतावाद के अनुसार वृहद आख्यान ऐसे सार्वभौमिक सिद्धांत हैं जो संपूर्ण विश्व को एक ही दृष्टिकोण से देखने का दावा करते हैं। विचारकों का मानना है कि ये सिद्धांत प्रायः स्थानीय अनुभवों, अल्पसंख्यकों की आवाजों और विविध संस्कृतियों की उपेक्षा करते हैं। जब हम किसी एक विचार को परम सत्य स्वीकार कर लेते हैं, तो अन्य लघु और महत्वपूर्ण सत्य दब जाते हैं। अतः उत्तर-आधुनिकतावादी विचारक किसी

Click Here to Buy book on Amazon

45. (A) केवल 2
सतत विकास एक व्यापक अवधारणा है जो न केवल पर्यावरण संरक्षण पर ध्यान केंद्रित करती है, बल्कि आर्थिक प्रगति और सामाजिक न्याय को भी समान महत्व प्रदान करती है। इसका लक्ष्य एक ऐसा विकास मॉडल निर्मित करना है जो प्राकृतिक संसाधनों को भविष्य की पीढ़ियों हेतु सुरक्षित रखते हुए वर्तमान की आवश्यकताओं को पूर्ण करे। यह किसी एक पक्ष की लागत पर दूसरे को लाभ पहुँचाने के स्थान पर तीनों के मध्य संतुलन स्थापित करने की वकालत करता है। यह वर्तमान और भविष्य के मध्य समानता सुनिश्चित करने का प्रभावी मार्ग है।

46. (D) सशस्त्र डकैती
सशस्त्र डकैती को पारंपरिक अपराध माना जाता है क्योंकि इसमें शारीरिक बल और प्रत्यक्ष हिंसा का प्रयोग होता है। इसके विपरीत, श्वेत-वसन अपराधों में हिंसा नहीं होती, बल्कि उनमें विश्वास का उल्लंघन और बौद्धिक धोखाधड़ी सम्मिलित होती है। गबन, इनसाइडर ट्रेडिंग और भ्रष्टाचार जैसे कृत्य उच्च व्यावसायिक पदों पर आसीन व्यक्तियों द्वारा किए जाते हैं। ये अपराध मुख्य रुप से आर्थिक लाभ हेतु प्रलेखीय या डिजिटल हेराफेरी के माध्यम से किए जाते हैं। अतः डकैती को इस श्रेणी में सम्मिलित नहीं किया जा सकता है।

47. (A) किशोरों द्वारा किए गए आपराधिक या असामाजिक कृत्य।
अपचार शब्द का प्रयोग विशेष रूप से अल्पायु बालकों या किशोरों द्वारा किए गए वैधानिक उल्लघनों हेतु किया जाता है। समाजशास्त्र में यह माना जाता है कि युवाओं का आपराधिक व्यवहार वयस्कों से भिन्न होता है क्योंकि उनके विकास की प्रक्रिया अभी अपूर्ण होती है। ऐसे अपराधियों के प्रति कानून का दृष्टिकोण दंड देने के स्थान पर सुधार और मार्गदर्शन पर अधिक केंद्रित होता है। इसके पीछे मुख्य कारण यह है कि अल्पायु में अपराधी बनने के पीछे प्रायः दोषपूर्ण पारिवारिक परिवेश या कुसंगति जैसे सामाजिक कारक उत्तरदायी होते हैं।

48. (B) सामाजिक कारकों जैसे सामाजिक एकीकरण और नियमन का प्रभाव।
एमिल दुर्खीम ने आत्महत्या को केवल एक व्यक्तिगत या मानसिक समस्या के रूप में नहीं, बल्कि एक सामाजिक तथ्य के रूप में देखा। उनका तर्क था कि समाज में एकीकरण और नियंत्रण का स्तर यह निर्धारित करता है कि आत्महत्या की दर क्या होगी। जब व्यक्ति समाज से अत्यधिक संलग्न हो जाता है या पूर्णतः पृथक हो जाता है, तो दोनों ही स्थितियों में आत्महत्या की संभावना बढ़ जाती है। यह दृष्टिकोण स्पष्ट करता है कि व्यक्ति के निजी निर्णय भी उसके परिवेश की सामाजिक शक्तियों और व्यवस्थाओं द्वारा गहरे रूप से प्रभावित होते हैं।

49. (D) कथन I गलत है, लेकिन कथन II सही है।
राष्ट्र-निर्माण एक निरंतर चलने वाली प्रक्रिया है जिसे कभी भी पूर्णतः समाप्त नहीं माना जा सकता, क्योंकि समय के साथ नवीन चुनौतियाँ सम्मुख आती रहती हैं। भारत जैसे विविध देश में भाषाई संघर्ष, धार्मिक तनाव और क्षेत्रीय आकांक्षाएं राष्ट्रीय एकता के मार्ग में निरंतर बाधाएं उत्पन्न करती हैं। इन विषयों के समाधान हेतु सतत संवाद और नीतिगत सुधारों की आवश्यकता होती है। यह मानना कि राष्ट्र-निर्माण का कार्य पूर्ण हो चुका है, त्रुटिपूर्ण है क्योंकि विविधतापूर्ण समाज को एकीकृत रखना एक स्थायी और गतिशील चुनौती है।

50. (A) संरचनाएँ क्रिया द्वारा निर्मित भी होती हैं और उसका माध्यम भी हैं।
गिडिन्स की संरचना की द्वैतता का अर्थ है कि सामाजिक संरचना और मानवीय क्रिया एक-दूसरे पर पूर्णतः आश्रित हैं। संरचना केवल व्यक्तियों के व्यवहार को नियंत्रित करने वाला कोई बाह्य ढांचा नहीं है, बल्कि यह वही माध्यम है जिसके द्वारा व्यक्ति अपनी सामाजिक गतिविधियों को निष्पादित करते हैं। व्यक्ति अपने दैनिक व्यवहार से समाज के नियमों को बनाए रखते हैं या उनमें परिवर्तन करते हैं। इस प्रकार संरचना एक ही समय में सामाजिक क्रियाओं को आकार भी देती है और उन्हीं क्रियाओं द्वारा निरंतर पुनरुत्पादित भी होती रहती है।

51. (C) बहुआयामी और क्रिया एवं संरचना दोनों को समाहित करने वाली।
जेफरी अलेक्जेंडर का नव-प्रकार्यवाद किसी एक कारक को समाज का आधार नहीं मानता, बल्कि यह एक बहुआयामी दृष्टिकोण प्रस्तुत करता है। यह सिद्धांत सामाजिक विश्लेषण में संरचनात्मक कारकों के साथ-साथ व्यक्तिगत क्रियाओं और सांस्कृतिक मूल्यों को भी समान महत्व प्रदान करता है। अलेक्जेंडर ने पार्सन्स के प्रकार्यवाद की रूढ़िवादिता को पृथक कर उसमें संघर्ष और गतिशीलता जैसे तत्वों को सम्मिलित किया। यह सिद्धांत व्यवस्था बनाए रखने वाली शक्तियों और समाज को परिवर्तित करने वाले संघर्षों के मध्य एक संतुलित समझ विकसित करने का प्रयास करता है।

52. (D) व्यक्ति सामान्य हितों पर वाद-विवाद करने के लिए एक सार्वजनिक निकाय बनाते हैं।
हेबरमास के अनुसार सार्वजनिक क्षेत्र समाज का वह भाग है जहाँ नागरिक निजी हितों से ऊपर उठकर जनहित के विषयों पर स्वतंत्र विमर्श करते हैं। यह स्थान राज्य के नियंत्रण और बाजार के व्यावसायिक प्रभाव से मुक्त होना चाहिए। यहाँ होने वाली तर्कपूर्ण बहस सरकार की नीतियों को दिशा प्रदान करने और लोकतंत्र को सुदृढ़ करने का कार्य करती है। यह क्षेत्र तब सक्रिय होता है जब व्यक्ति एक समुदाय के रूप में मिलकर तर्कसंगत संवाद करते हैं। आधुनिक युग में मीडिया और जनसंचार माध्यम इस क्षेत्र को प्रभावित करने वाले प्रमुख कारक हैं।

53. (C) पुलिस
लुई अल्थुसर के सिद्धांत में दमनकारी राज्य तंत्र वे संस्थाएँ हैं जो समाज में कानून-व्यवस्था बनाए रखने हेतु शारीरिक बल या दंड का प्रयोग करती हैं। पुलिस इसका सबसे प्रत्यक्ष उदाहरण है क्योंकि यह नियमों का उल्लंघन करने वालों के विरुद्ध वैधानिक कार्रवाई और बंदी बनाने का कार्य कर सकती है। परिवार, मीडिया और शिक्षा प्रणाली को वैचारिक राज्य तंत्र कहा जाता है क्योंकि वे मस्तिष्क और विचारों के माध्यम से नियंत्रण करते हैं। दमनकारी तंत्रों का प्रयोग तब होता है जब

NODIA

उपरांत भी व्यक्ति अपनी सांस्कृतिक प्रथाओं जैसे नियोजित विवाह को आधुनिक परिवर्तनों के साथ निरंतर रखते हैं। यह दर्शाता है कि परंपराएँ समाप्त होने के स्थान पर नवीन संदर्भों में अनुकूलित हो रही हैं। आधुनिकता और परंपरा के मध्य यह निरंतर संवाद भारतीय समाज की विशिष्ट विशेषता है, जहाँ प्राचीन मूल्य नवीन विचारों के साथ मिलकर समाज को विशिष्ट पहचान प्रदान करते हैं।

88. (A) विविधता किसी राष्ट्र के लिए शक्ति और समृद्धि का स्रोत हो सकती है।
बहुलवाद का सिद्धांत इस विचार पर आधारित है कि एक राष्ट्र की वास्तविक शक्ति उसकी विविध संस्कृतियों, धर्मों और भाषाओं के पारस्परिक मेलजोल में निहित है। यह सिद्धांत स्वीकार करता है कि पृथक पहचानों का होना एकता में अवरोध नहीं है, बल्कि यह समाज को अधिक समृद्ध और सहिष्णु बनाता है। राष्ट्र-निर्माण हेतु यह आवश्यक है कि बहुसंख्यक समाज अल्पसंख्यकों के अधिकारों का सम्मान करे और उन्हें मुख्यधारा में सम्मिलित करे। जब सभी समूहों को अपनी संस्कृति संरक्षित करने का अवसर प्राप्त होता है, तो राष्ट्र के प्रति उनकी निष्ठा सुदृढ़ होती है।

89. (C) सुरक्षित भू-स्वामित्व और बुनियादी नागरिक अवसंरचना।
झुग्गी-बस्ती और अन्य नियोजित क्षेत्रों के मध्य सर्वाधिक अंतर वैधानिक मान्यता और सुविधाओं का है। झुग्गी-बस्तियों में निवास करने वाले व्यक्तियों के पास अपनी भूमि का वैधानिक अधिकार नहीं होता, जिससे उन पर सदैव निष्कासन का भय बना रहता है। यहाँ पक्की सड़कें, नियमित विद्युत और अपवाह तंत्र जैसी नागरिक सुविधाओं का अभाव रहता है। इसके विपरीत, अन्य क्षेत्रों में प्रशासन द्वारा ये सुविधाएँ सुनिश्चित की जाती हैं। यह भौतिक अंतर ही झुग्गी-बस्तियों को मुख्य नगर से पृथक और एक उपेक्षित स्थान के रूप में चिह्नित करता है।

90. (A) समाज के राजनीतिक और वैचारिक स्तर।
मार्क्सवादी शब्दावली में अधिसंरचना समाज के उन अंगों को कहते हैं जो आर्थिक आधार पर आश्रित होते हैं, जैसे राजनीति, कानून, शिक्षा, धर्म और संस्कृति। अल्थुसर ने इस अवधारणा को और विस्तृत किया और बताया कि अधिसंरचना केवल अर्थव्यवस्था का प्रतिबिंब नहीं है, बल्कि यह समाज के नियंत्रण और पुनरुत्पादन में सक्रिय भूमिका निर्वहन करती है। इसमें वे सभी संस्थाएं सम्मिलित हैं जो व्यक्तियों के विचारों को आकार प्रदान करती हैं और शासक वर्ग की शक्ति को अक्षुण्ण रखती हैं। आधार और अधिसंरचना के मध्य का यह संबंध ही संपूर्ण सामाजिक ढांचे को परिभाषित करता है।

91. (D) अलेक्जेंडर - दमनकारी राज्य तंत्र
जेफरी अलेक्जेंडर का नाम मुख्य रूप से नव-प्रकार्यवाद के साथ संबंद्ध है, न कि दमनकारी राज्य तंत्र के साथ। दमनकारी और वैचारिक राज्य तंत्र की अवधारणा लुई अल्थुसर द्वारा प्रतिपादित की गई थी। गिडिन्स ने संरचनाकरण का सिद्धांत प्रस्तुत किया और डेरिडा ने भाषा के अर्थ को समझने हेतु विखंडनवाद का विचार दिया। हेबरमास का जीवन-जगत का सिद्धांत आधुनिक समाज में संवाद के महत्व को रेखांकित करता है। यह स्पष्ट है कि अलेक्जेंडर का कार्य प्रकार्यवाद को नवीन स्वरूप प्रदान करने पर केंद्रित है, जिससे वह अल्थुसर के मार्क्सवादी ढांचे से पूर्णतः पृथक हैं।

92. (B) संरचना
गिडिन्स के अनुसार संरचना का अर्थ उन नियमों और संसाधनों से है जो सामाजिक संबंधों को एक निश्चित स्वरूप और निरंतरता प्रदान करते हैं। यह कोई पाषाण जैसी कठोर संरचना नहीं है, बल्कि यह उन व्यवहारों का समुच्चय है जिन्हें हम बार-बार दोहराते हैं। जब हम इन नियमों का अनुपालन करते हैं, तो समाज में एक व्यवस्थित प्रतिमान निर्मित होता है जिसे पहचाना जा सकता है। इस प्रकार संरचना ही वह तत्व है जो सामाजिक जीवन को अव्यवस्थित होने से सुरक्षित रखती है और उसे एक स्थायी एवं पुनरुत्पादनीय गुण प्रदान करने में सहायक होती है।

93. (C) मार्क्सवाद या प्रकार्यवाद जैसे सार्वभौमिक सिद्धांतों की।
उत्तर-आधुनिकतावादी विचारक वृहद आख्यानों की तीव्र आलोचना करते हैं क्योंकि ये सिद्धांत दावा करते हैं कि वे संपूर्ण विश्व और इतिहास को एक ही दृष्टिकोण से स्पष्ट कर सकते हैं। ल्योटार्ड जैसे विचारकों का तर्क है कि आधुनिक युग में ऐसे व्यापक सिद्धांतों पर से जनसामान्य का विश्वास उठ गया है। ये सिद्धांत प्रायः उन लघु समूहों और विशिष्ट अनुभवों को दबा देते हैं जो उनकी परिभाषा में उपयुक्त नहीं बैठते। अतः उत्तर-आधुनिकतावाद स्थानीय, खंडित और विविध सत्यों को अधिक महत्व प्रदान करता है और किसी भी एक महान सिद्धांत के प्रभुत्व को पूर्णतः नकारता है।

94. (D) रणनीतिक और दिशात्मक नीतिगत इनपुट प्रदान करना।
नीति आयोग का मुख्य उद्देश्य भारत सरकार को विकास के विभिन्न क्षेत्रों में भविष्य की चुनौतियों से निपटने हेतु विशेषज्ञ परामर्श और रणनीतिक दिशा प्रदान करना है। यह आयोग एक विशेषज्ञ निकाय के रूप में कार्य करता है जो डेटा और अनुसंधान के आधार पर सर्वोत्तम नीतियों का सुझाव देता है। इसका कार्य राज्यों को निर्देशित करना या बजट का वितरण करना नहीं है, बल्कि विकास की एक साझा दृष्टि निर्मित करना है। यह नवाचार को प्रोत्साहित करता है और यह सुनिश्चित करता है कि सरकारी योजनाएं आधुनिक आवश्यकताओं के अनुरुप पूर्णतः प्रभावी और परिणामोन्मुखी हों।

95. (B) P-4, Q-3, R-2, S-1
आधुनिक समाजशास्त्र में जेफरी अलेक्जेंडर नव-प्रकार्यवाद के प्रमुख प्रणेता हैं जिन्होंने पार्सन्स के विचारों में परिमार्जन किया। लुई अल्थुसर ने संरचनात्मक मार्क्सवाद के माध्यम से राज्य और विचारधारा का विश्लेषण किया। एंथनी गिडिन्स ने संरचनाकरण सिद्धांत विकसित किया जो व्यक्ति और समाज के पारस्परिक संबंधों पर आधारित है। जैक्स डेरिडा उत्तर-संरचनावाद के प्रमुख स्तंभ हैं जिन्होंने विखंडनवाद की पद्धति प्रदान की। ये सभी विचारक आधुनिक सामाजिक चिंतन की विभिन्न दिशाओं का प्रतिनिधित्व करते हैं जिन्होंने समाज को समझने के हमारे दृष्टिकोण को गहराई से प्रभावित किया है।

NODIA

में देखता है। यह समाज की संरचना और उसकी एकता के स्तर को मापने का एक महत्वपूर्ण माध्यम माना गया है।

113. (B) धर्मनिरपेक्षता और बहुलवाद
समान नागरिक संहिता का विषय सीधे तौर पर भारत की धर्मनिरपेक्षता और सांस्कृतिक विविधता से संबद्ध है। इसमें इस विषय पर विमर्श होता है कि क्या सभी नागरिकों हेतु विवाह, तलाक और उत्तराधिकार के कानून एक समान होने चाहिए या उन्हें उनके धर्म के आधार पर पृथक रहने दिया जाना चाहिए। यह बहुलवाद की रक्षा और राष्ट्रीय एकता के मध्य संतुलन का प्रश्न है। यह बहस दर्शाती है कि एक विविध राष्ट्र में कानून का एकीकरण कितना जटिल कार्य है। इसमें धार्मिक स्वायत्तता और समानता के संवैधानिक अधिकारों के मध्य निरंतर वैचारिक द्वंद्व बना रहता है।

114. (A) एंथनी गिडिन्स
एंथनी गिडिन्स ने संरचना की द्वैतता की अवधारणा के माध्यम से समाजशास्त्र को नवीन दिशा प्रदान की। उनका तर्क है कि सामाजिक संरचनाएं और मानवीय क्रियाएं एक-दूसरे से पृथक नहीं हैं। संरचना नियमों और संसाधनों का समुच्चय है जो क्रियाओं को संभव बनाती है, और इन्हीं क्रियाओं के माध्यम से संरचना का पुनरुत्पादन होता है। यह सिद्धांत यह स्पष्ट करता है कि व्यक्ति केवल सामाजिक व्यवस्था के अधीन नहीं हैं, बल्कि वे इसे निर्मित करने और परिवर्तित करने वाले सक्रिय कारक भी हैं। यह अवधारणा अभिकर्तृत्व और संरचना के मध्य के प्राचीन विवाद को सुलझाने का अत्यंत प्रभावी प्रयास है।

115. (C) संघर्ष
शास्त्रीय प्रकार्यवाद की प्रायः यह आलोचना की जाती थी कि वह समाज में केवल स्थिरता और एकता को देखता है और संघर्ष की उपेक्षा करता है। जेफरी अलेक्जेंडर ने नव-प्रकार्यवाद के माध्यम से इस त्रुटि को दूर किया। उन्होंने तर्क दिया कि समाज में संतुलन बनाए रखने की प्रक्रिया में संघर्ष और असंतोष का होना भी उतना ही स्वाभाविक है। अलेक्जेंडर ने प्रकार्यवाद को एक गतिशील सिद्धांत निर्मित किया जो सामाजिक परिवर्तनों और सत्ता के संघर्षों का गहन विश्लेषण कर सके। इस प्रकार उन्होंने प्रकार्यवाद को अधिक व्यावहारिक तथा समकालीन सामाजिक वास्तविकताओं के विश्लेषण हेतु अधिक उपयोगी बनाया है।

116. (D) प्रणालीगत तर्क संवाद और सामाजिक एकीकरण को विकृत कर देता है।
हेबरमास का मानना है कि आधुनिक समय में बाजार और सत्ता के नियम मानवीय संबंधों पर प्रभावी होते जा रहे हैं। जब हम अपने पारस्परिक संवाद और सांस्कृतिक मूल्यों के स्थान पर केवल लाभ और प्रशासनिक नियमों के आधार पर जीवन निर्वाह करने लगते हैं, तो इसे जीवन-जगत का औपनिवेशीकरण कहा जाता है। इससे समाज में भावनात्मक संलग्नता न्यून हो जाती है और व्यक्ति केवल यांत्रिक प्रणालियों का अंग बनकर रह जाते हैं। यह प्रक्रिया सामाजिक एकता को क्षति पहुँचाती है और व्यक्तियों के मध्य की सहज समझ को पूर्णतः विनष्ट कर देती है, जिससे गंभीर संकट उत्पन्न होते हैं।

117. (C) विद्यालय में एक शिक्षक द्वारा देशभक्तिपूर्ण इतिहास पढ़ाना।
लुई अल्थुसर के अनुसार विद्यालय एक प्रमुख वैचारिक राज्य तंत्र है क्योंकि यहाँ बालकों को उन मूल्यों और विचारधाराओं की शिक्षा प्रदान की जाती है जिन्हें राज्य प्रोत्साहित करना चाहता है। देशभक्ति या विशिष्ट प्रकार का इतिहास पढ़ाकर छात्रों के मानस में व्यवस्था के प्रति स्वीकृति उत्पन्न की जाती है। यहाँ कोई शारीरिक हिंसा नहीं होती, बल्कि विचारों के माध्यम से नियंत्रण स्थापित किया जाता है। यह प्रक्रिया छात्रों को भविष्य के आज्ञाकारी नागरिक और श्रमिक के रूप में सज्जित करती है। इस प्रकार विचारधारा शिक्षा प्रणाली के माध्यम से समाज में गहराई से पैठ बना लेती है।

118. (B) ज्ञान सामाजिक रूप से निर्मित है और शक्ति से संबद्ध है।
उत्तर-आधुनिकतावाद इस विचार पर आधारित है कि ज्ञान कभी भी पूर्णतः निष्पक्ष या वस्तुनिष्ठ नहीं हो सकता। फूको और डेरिडा जैसे विचारकों का मानना है कि जिसे हम सत्य कहते हैं, वह प्रायः शक्तिशाली समूहों द्वारा निर्मित और आरोपित किया जाता है। समाज में जिसका प्रभाव अधिक होता है, वही यह निर्धारित करता है कि क्या उचित है और क्या अनुचित। अतः ज्ञान और सत्ता एक-दूसरे से गहराई से संबंद्ध हैं। यह दृष्टिकोण हमें बोध कराता है कि हमें प्रचलित सूचनाओं और तथ्यों के पीछे निहित सत्ता के समीकरणों को सदैव संदेह की दृष्टि से देखना चाहिए।

119. (D) पर्यावरणीय अखंडता और सतत विकास
जब कोई विकास परियोजना केवल आर्थिक लाभ को दृष्टिगत रखती है और वनों तथा जैव विविधता का विनाश करती है, तो वह सतत विकास के मूल सिद्धांतों के प्रतिकूल होती है। सतत विकास का अभिप्राय ही यह है कि प्रकृति की रक्षा करते हुए प्रगति की जाए। यदि हम पर्यावरण को विनष्ट करते हैं, तो यह विकास दीर्घकालिक रूप से स्थिर नहीं रह पाएगा और इसके परिणाम विनाशकारी होंगे। यह सिद्धांत प्रतिपादित करता है कि हमें पृथ्वी के सूक्ष्म संतुलन को अक्षुण्ण रखना चाहिए ताकि आगामी पीढ़ियां भी इन संसाधनों का उपभोग कर सकें। अतः प्रकृति की उपेक्षा करना एक गंभीर नैतिक और पर्यावरणीय अपराध है।

120. (A) विकास में केंद्र और राज्यों के बीच पारस्परिक भागीदारी।
सहकारी संघवाद का अर्थ है कि केंद्र और राज्य सरकारें एक-दूसरे की प्रतिद्वंद्वी नहीं, बल्कि विकास की प्रक्रिया में समान भागीदार हैं। नीति आयोग इसी भावना के साथ स्थापित किया गया है ताकि राज्यों के स्वर को राष्ट्रीय स्तर पर सुना जा सके। इसमें केंद्र द्वारा आदेश देने के स्थान पर सामूहिक निर्णय लेने पर बल दिया जाता है। इसका लक्ष्य एक सुदृढ़ राष्ट्र हेतु सुदृढ़ राज्यों का निर्माण करना है। जब केंद्र और राज्य एक साझा लक्ष्य हेतु सहयोग करते हैं, तो विकास की योजनाएं अधिक सफल होती हैं और जनसामान्य तक उनका लाभ प्रभावी ढंग से पहुँचता है।

Downloaded from www.pdf.tube

क्योंकि हमारे पास ज्ञान के अनेक स्रोत उपलब्ध हैं। हम केवल परंपराओं का अनुपालन नहीं करते, बल्कि प्रत्येक सोपान पर यह विचार करते हैं कि क्या हमारा कार्य उचित है। यह निरंतर आत्म-चिंतन और आत्म-सुधार की क्षमता ही मनुष्य को एक सचेत कर्ता निर्मित करती है जो अपनी सामाजिक दुनिया को सक्रिय रूप से आकार प्रदान करता है।

105. (A) केवल 1
भारत जैसे संघीय राष्ट्र में राज्यों द्वारा अधिक शक्ति की माँग प्रायः केंद्र के साथ तनाव उत्पन्न करती है। राष्ट्र-निर्माण की प्रक्रिया में यह संतुलन स्थापित करना अनिवार्य है कि केंद्र सुदृढ़ रहे किंतु राज्यों की क्षेत्रीय पहचान और स्वायत्तता भी अक्षुण्ण रहे। भाषाई विविधता सदैव सहज नहीं रही है और इसके कारण अनेक आंदोलन हुए हैं। इसी प्रकार धर्मनिरपेक्षता पर भी देश में निरंतर राजनीतिक और सामाजिक विमर्श चलता रहता है। अतः सुदृढ़ राष्ट्रीय एकता और क्षेत्रीय आकांक्षाओं के मध्य सामंजस्य स्थापित करना ही भारतीय लोकतंत्र की सबसे बड़ी और निरंतर चलने वाली चुनौती है।

106. (A) उनकी निर्मित प्रकृति को दिखाकर पदानुक्रम को अस्थिर करना।
जैक्स डेरिडा ने तर्क दिया कि भाषा में प्रायः शब्दों को विपरीत युग्मों में रखा जाता है जहाँ एक को दूसरे से श्रेष्ठ स्वीकार किया जाता है। विखंडन के माध्यम से वे यह प्रदर्शित करते हैं कि ये श्रेणियां प्राकृतिक नहीं हैं, बल्कि मानव निर्मित हैं और इन्हें परिवर्तित किया जा सकता है। इसका उद्देश्य किसी नवीन पदानुक्रम का निर्माण करना नहीं, बल्कि यह दिखाना है कि अर्थ सदैव लचीला और अनिश्चित होता है। यह पद्धति हमें विचारों के पीछे निहित सत्ता के खेल को समझने में सहायता करती है और हमारी सोच को अधिक समावेशी और उदार बनाने की दिशा में प्रेरित करती है।

107. (D) वर्तमान और भविष्य दोनों की आवश्यकताओं को पूरा करने वाला सामंजस्यपूर्ण विकास।
सतत विकास का सर्वोत्तम लक्ष्य एक ऐसी प्रगति है जो सामाजिक न्याय, आर्थिक लाभ और प्रकृति की सुरक्षा को एकीकृत करके चले। यह स्वीकार करता है कि यदि हम वर्तमान लाभ हेतु पृथ्वी के संसाधनों को पूर्णतः विनष्ट कर देंगे, तो आगामी पीढ़ियों के पास जीवन निर्वाह के साधन शेष नहीं रहेंगे। इसलिए यह विकास का एक नैतिक और उत्तरदायी मॉडल है। इसमें यह सुनिश्चित किया जाता है कि विकास की गति पर्यावरण की वहन क्षमता के भीतर हो। यह न केवल वर्तमान के कल्याण पर ध्यान देता है, बल्कि भविष्य की सुरक्षा को भी अपनी प्राथमिकता मानता है।

108. (B) स्वच्छ जल और स्वच्छता तक सुगम पहुँच
झुग्गी-बस्ती की प्रमुख पहचान ही आधारभूत सुविधाओं का अभाव है। यहाँ निवास करने वाले व्यक्तियों को पेयजल और सुव्यवस्थित अपवाह तंत्र जैसी मौलिक वस्तुओं हेतु दैनिक संघर्ष करना पड़ता है। अत्यधिक भीड़भाड़, जर्जर आवास और असुरक्षित निवास यहाँ की सामान्य विशेषताएं हैं। यहाँ स्वच्छ जल और स्वच्छता तक पहुँच सुगम नहीं बल्कि अत्यंत दुष्कर होती है। यह स्थिति रोगों के प्रसार का प्रमुख कारण बनती है। अतः किसी भी क्षेत्र में इन मूलभूत सुविधाओं की पर्याप्त उपलब्धता उसे झुग्गी-बस्ती की श्रेणी से पृथक करने हेतु प्रथम और अनिवार्य शर्त मानी जाती है।

109. (D) कथन I गलत है, लेकिन कथन II सही है।
नीति आयोग और योजना आयोग के मध्य सर्वाधिक अंतर वित्तीय शक्तियों का है। नीति आयोग के पास राज्यों को धन आवंटित करने का कोई वैधानिक अधिकार नहीं है, यह कार्य अब केवल वित्त मंत्रालय के माध्यम से निष्पादित होता है। नीति आयोग की भूमिका एक बौद्धिक परामर्शदाता की है जो सरकार को केवल नीतिगत सुझाव प्रदान करता है। यह आयोग विकास हेतु रणनीतिक योजनाएं निर्मित करता है और राज्यों के मध्य स्वस्थ प्रतिस्पर्धा को प्रोत्साहित करता है। अतः यह कहना कि इसके पास वित्तीय शक्तियाँ हैं, पूर्णतः त्रुटिपूर्ण और भ्रामक होगा।

110. (D) श्वेत-वसन अपराध
जब किसी वृहद प्रतिष्ठान का अधिकारी अपने पद का लाभ उठाकर वृहद आर्थिक धोखाधड़ी करता है, तो इसे श्वेत-वसन अपराध कहा जाता है। यह अपराध समाज के उच्च और सम्मानित वर्ग के व्यक्ति द्वारा संपन्न किया जाता है, न कि किसी साधारण अपराधी द्वारा। ऐसे घोटालों में प्रत्यक्ष हिंसा नहीं होती, किंतु इनका आर्थिक प्रभाव अत्यंत व्यापक और विनाशकारी होता है। इसमें अंशधारकों और जनसामान्य का धन डूब जाता है, जिससे संपूर्ण अर्थव्यवस्था की स्थिरता संकट में पड़ सकती है। यह अपराध पद के दुरुपयोग और बौद्धिक चालाकी का एक गंभीर और प्रत्यक्ष उदाहरण है।

111. (A) अपराध एक विधिक उल्लंघन है; विचलन एक मानदंड का उल्लंघन है।
विचलन और अपराध के मध्य का अंतर नियमों की प्रकृति पर आश्रित होता है। विचलन वह व्यवहार है जो समाज द्वारा अवांछित या अनुचित स्वीकार किया जाता है, जैसे शिष्टाचार का पालन न करना। इसके विपरीत अपराध केवल वही है जिसे देश के कानून द्वारा विशेष रूप से प्रतिबंधित किया गया है। प्रत्येक अपराध विचलन का एक अंश है, किंतु समाज के प्रत्येक अनुचित व्यवहार हेतु कानून दंड नहीं देता। विचलन पर समाज केवल अपनी अप्रसन्नता प्रकट करता है, जबकि अपराध करने पर राज्य पुलिस और न्यायालयों के माध्यम से औपचारिक दंड और सजा सुनिश्चित करता है।

112. (B) आत्महत्या की दरें और प्रतिमान तथा सामाजिक शक्तियों के साथ उनका सह-संबंध।
समाजशास्त्रीय अध्ययन यह विश्लेषण नहीं करता कि एक व्यक्ति ने आत्महत्या क्यों की, बल्कि यह देखता है कि समाज में आत्महत्या की दरें परिवर्तित क्यों होती हैं। इसका उद्देश्य उन सामाजिक परिस्थितियों को समझना है जो व्यक्तियों को इस चरम सोपान की ओर धकेलती हैं। एमिल दुर्खीम ने प्रदर्शित किया कि सामाजिक दबाव, विमुखता और आर्थिक परिवर्तन आत्महत्या की दरों को प्रभावित करते हैं। इस प्रकार, यह अध्ययन व्यक्तिगत संताप को एक सामाजिक समस्या के रूप

NODIA

जिससे वे सदैव असुरक्षित अनुभव करते हैं। यहाँ स्वच्छता और स्वास्थ्य सेवाओं का गंभीर अभाव रहता है। यह स्थिति नगर की चकाचौंध के मध्य प्रच्छन्न उस निर्धनता के अंधकार को उजागर करती है जहाँ व्यक्ति श्रेष्ठ भविष्य की खोज में संघर्षपूर्ण जीवन व्यतीत करते हैं।

147. (D) कथन I गलत है, लेकिन कथन II सही है।
विस्थापन की प्रक्रिया प्रायः व्यक्तियों हेतु अत्यंत कष्टकारी होती है क्योंकि उन्हें बलात अपना आवास त्यागना पड़ता है। कथन II सत्य है क्योंकि वृहद बांधों या कारखानों के निर्माण से सहस्त्रों व्यक्तियों को उनकी भूमि से निष्कासित कर दिया जाता है, जिसे विकास-प्रेरित विस्थापन कहते हैं। कथन I त्रुटिपूर्ण है क्योंकि कोई भी स्वेच्छा से अपनी जड़ों से पृथक होना नहीं चाहता। यह विस्थापन प्रायः अनैच्छिक होता है और इसमें व्यक्तियों की आजीविका की क्षति होती है। विकास के नाम पर होने वाला यह उत्सर्ग समाज के निर्बल वर्गों पर अत्यधिक भार डालता है और सामाजिक अन्याय को प्रगाढ़ करता है।

148. (D) जैक्स डेरिडा
जैक्स डेरिडा के विखंडनवाद ने भाषा और अर्थ की हमारी पारंपरिक समझ को पूर्णतः परिवर्तित कर दिया है। उनका तर्क है कि भाषा में कोई भी शब्द पूर्णतः स्थिर नहीं है और उसका अर्थ सदैव परिवर्तित होता रहता है। उन्होंने उत्तर-आधुनिकतावादी चिंतन को महती सुदृढ़ता प्रदान की, जो किसी भी एक परम सत्य या अंतिम व्याख्या को अंगीकार नहीं करती। डेरिडा का कार्य हमें बोध कराता है कि प्रत्येक पाठ या विचार के भीतर निहित विरोधाभासों को कैसे पहचाना जाए। उनके विचारों ने समकालीन विश्व में ज्ञान और वास्तविकता को देखने का एक सर्वथा नवीन दृष्टिकोण प्रदान किया है।

149. (C) विशिष्ट किंतु परस्पर संबंधित उप-प्रणालियाँ।
जेफरी अलेक्ज़ेंडर के नव-प्रकार्यवाद के अनुसार समाज कोई एक ठोस पिंड नहीं है, बल्कि यह अनेक लघु प्रणालियों के सम्मिश्रण से निर्मित है। ये सभी उप-प्रणालियाँ, जैसे कि परिवार, शिक्षा और राजनीति, परस्पर संबंद्ध हैं और एक-दूसरे को प्रभावित करती हैं। यद्यपि ये अपने स्थान पर पृथक कार्य करती हैं, किंतु समाज की एकता हेतु इनका पारस्परिक सामंजस्य होना अत्यंत आवश्यक है। यह दृष्टिकोण समाज को एक अत्यंत जटिल और गतिशील व्यवस्था के रूप में देखता है जहाँ स्थिरता और परिवर्तन की प्रक्रियाएं साथ-साथ निरंतर चलती रहती हैं।

150. (B) तर्कसंगत योग्यता पर आधारित बल-मुक्त विमर्श।
हेबरमास की आदर्श भाषण स्थिति एक ऐसी परिकल्पना है जहाँ समाज के सभी व्यक्ति बिना किसी भय या स्वार्थ के मुक्त विमर्श कर सकें। इसमें केवल वही विचार ग्राह्य होता है जिसके पीछे सर्वाधिक सुदृढ़ तर्क निहित हो। यहाँ न तो सत्ता का दबाव होता है और न ही धन का प्रभाव, बल्कि सबका उद्देश्य केवल सत्य की प्राप्ति होता है। यद्यपि व्यवहार में ऐसी स्थिति प्राप्त करना अत्यंत दुष्कर है, किंतु यह एक लोकतांत्रिक समाज हेतु एक लक्ष्य के समान है। यह संवाद की शुद्धता और मानवीय समानता के आदर्श स्वरूप को हमारे सम्मुख प्रस्तुत करती है।

151. (D) अपराध की बदलती रुपरेखा
इंटरनेट पर होने वाली धोखाधड़ी यह प्रदर्शित करती है कि अब अपराध निष्पादन हेतु किसी के सम्मुख उपस्थित होना अनिवार्य नहीं है। अपराधी तकनीक का अवलंबन लेकर सुदूर स्थित सहस्त्रों व्यक्तियों को अपना शिकार बना रहे हैं। यह अपराध की परिवर्तित रूपरेखा का एक अत्यंत गंभीर और आधुनिक पक्ष है। यह पारंपरिक अपराधों से कहीं अधिक चालाकी पूर्ण और संकटपूर्ण है क्योंकि इसमें अपराधी की पहचान गुप्त रखना अत्यंत सुलभ होता है। यह घटना हमें सचेत करती है कि जैसे-जैसे हमारा विश्व डिजिटल हो रहा है, हमें अपनी सुरक्षा और कानूनों को भी उसी गति से अद्यतन करना होगा।

152. (A) विविध पहचानों को दबाए बिना राष्ट्र को एकीकृत करना।
भारत की सर्वाधिक महती चुनौती यह है कि वह अपनी सहस्त्रों जातियों, धर्मों और भाषाओं को कैसे एक सूत्र में एकीकृत करे। राष्ट्र-निर्माण का अर्थ यहाँ सबको एकरूप बनाना नहीं है, बल्कि सबकी विविधता का सम्मान करते हुए उन्हें एक साझा पहचान प्रदान करना है। यह बहुलवाद की वास्तविक परीक्षा है जहाँ प्रत्येक समूह को यह अनुभव होना चाहिए कि वह इस राष्ट्र का समान अंग है। जब व्यक्तियों को अपनी विशिष्टता बनाए रखने की स्वतंत्रता प्राप्त होती है, तभी वे पूर्ण निष्ठा से राष्ट्र के साथ संबद्ध होते हैं और देश सुदृढ़ बनता है।

153. (C) भ्रष्टाचार
जब कोई जनप्रतिनिधि या अधिकारी अपनी वैधानिक शक्ति का प्रयोग अपने परिवार या मित्रों को लाभ पहुँचाने हेतु करता है, तो यह भ्रष्टाचार का एक प्रत्यक्ष उदाहरण है। यह जनविश्वास के साथ महती छल है क्योंकि वैधानिक पद सेवा हेतु होते हैं, निजी लाभ हेतु नहीं। ऐसे कृत्यों से समाज में अन्याय का प्रसार होता है और योग्य व्यक्तियों के अधिकारों का हनन होता है। भ्रष्टाचार देश के संसाधनों की चोरी है और यह संपूर्ण तंत्र की ईमानदारी को विनष्ट कर देता है। इसे प्रतिबंधित करना समाज की नैतिकता और राष्ट्र के विकास हेतु अत्यंत अनिवार्य है।

154. (A) लुई अल्थुसर
वैचारिक राज्य तंत्र की अवधारणा लुई अल्थुसर ने प्रतिपादित की थी, जो एक विख्यात मार्क्सवादी विचारक थे। उन्होंने स्पष्ट किया कि राज्य केवल पुलिस या सेना के भय से शासन नहीं करता, बल्कि वह शिक्षा, धर्म और परिवार के माध्यम से व्यक्तियों के मानस को भी नियंत्रित करता है। ये संस्थाएं हमें शैशवावस्था से ही शिक्षित करती हैं कि वर्तमान व्यवस्था को कैसे स्वीकार करना है। अल्थुसर का यह विचार यह समझने में सहायक है कि क्यों व्यक्ति प्रायः अपनी ही अधीनता को अपनी स्वेच्छा मान लेते हैं। यह सत्ता के सूक्ष्म और मानसिक नियंत्रण को गहराई से स्पष्ट करता है।

155. (B) P-3, Q-1, R-4, S-2
विचलन समाज के सामान्य नियमों के उल्लंघन का व्यवहार है, जबकि अपराध उन नियमों का उल्लंघन है जिन्हें कानून द्वारा दंडनीय स्वीकार किया गया है। किशोर अपचार अल्पायु बालकों द्वारा किए गए अनुचित कार्यों को कहते हैं। श्वेत-वसन अपराध समाज के सम्मानित और समृद्ध व्यक्तियों द्वारा अपने

Click Here to Buy book on Amazon

121. (C) एक नाबालिग का असामाजिक या अवैध व्यवहार।
समाजशास्त्र में अपचार शब्द का प्रयोग विशेष रूप से अल्पायु बालकों द्वारा किए गए उन कार्यों हेतु होता है जो कानून की दृष्टि में अपराध हैं। इसका उद्देश्य इन किशोरों को वयस्कों से पृथक श्रेणी में रखना है क्योंकि समाज मानता है कि उनकी परिपक्वता का स्तर अभी न्यून है। ऐसे युवाओं को कारागार भेजने के स्थान पर सुधार गृहों में रखा जाता है ताकि उन्हें भविष्य में एक श्रेष्ठ नागरिक बनाया जा सके। यह अवधारणा दंड के स्थान पर पुनर्वास और शिक्षा के माध्यम से बालकों को कुमार्ग से विमुख करने पर सर्वाधिक बल प्रदान करती है।

122. (A) महत्वपूर्ण कंप्यूटर प्रणालियों पर रैनसमवेयर आक्रमण।
रैनसमवेयर आक्रमण आधुनिक अपराध की परिवर्तित रूपरेखा का एक भयावह उदाहरण है, जहाँ अपराधी डिजिटल माध्यम से डेटा को बंधक बनाकर फिरौती की माँग करते हैं। इसमें प्रत्यक्ष हिंसा की आवश्यकता नहीं होती, तथापि यह संपूर्ण विश्व को प्रभावित कर सकता है। यह दर्शाता है कि तकनीक के विकास के साथ अपराधी अब भौतिक सीमाओं का अतिक्रमण कर वैश्विक स्तर पर सक्रिय हो गए हैं। ऐसे अपराधों से निपटने हेतु अब केवल पारंपरिक पुलिसिंग पर्याप्त नहीं है। समाज को इन अदृश्य और तकनीकी रूप से उन्नत संकटों से बचने हेतु अब अधिक सचेत और डिजिटल रूप से सुरक्षित रहने की आवश्यकता है।

123. (D) भारत में परंपरा और आधुनिकता की जटिल अंतःक्रिया।
बेंगलुरु जैसे नगरों में जब एक ओर अत्याधुनिक सॉफ्टवेयर कंपनियाँ हों और दूसरी ओर प्राचीन परंपराओं को मानने वाले ग्रामीण क्षेत्र, तो यह भारतीय समाज की विविधता को प्रदर्शित करता है। यहाँ आधुनिकता ने परंपराओं को समाप्त नहीं किया है, बल्कि दोनों साथ-साथ उपस्थित हैं। प्रायः आधुनिक व्यवसायों में संलग्न व्यक्ति भी अपने पारिवारिक और धार्मिक संस्कारों का पूर्ण निष्ठा से पालन करते हैं। यह समन्वय सिद्ध करता है कि भारत ने पश्चिमी आधुनिकता को अपनी जड़ों को त्याग किए बिना अंगीकार किया है। परंपरा और प्रगति के मध्य का यह अनूठा संतुलन भारतीय समाज की प्रमुख पहचान है।

124. (B) बहुलवाद
भारतीय संविधान का यह प्रावधान कि देश में विभिन्न भाषाओं, लिपियों और संस्कृतियों को समान दर्जा और सुरक्षा प्राप्त होगी, बहुलवाद के प्रति हमारी प्रतिबद्धता को प्रदर्शित करता है। यह सिद्धांत मानता है कि एक राष्ट्र के भीतर विविध समूहों का अस्तित्व उसकी सुंदरता और सुदृढ़ता है। बहुलवाद अल्पसंख्यक समुदायों को अपनी विशिष्ट पहचान अक्षुण्ण रखने की गारंटी प्रदान करता है, जिससे वे राष्ट्र की मुख्यधारा में सम्मान के साथ सम्मिलित हो सकें। यह समावेशी दृष्टिकोण ही भारत जैसे विशाल और विविध देश को एक सूत्र में पिरोने का सबसे सुदृढ़ और सफल आधार है।

125. (A) P-2, Q-4, R-1, S-3
गिडिन्स के अनुसार अभिकर्तृत्व व्यक्ति की स्वतंत्र क्रिया करने की क्षमता है, जबकि संरचना समाज के वे नियम और संसाधन हैं जो कार्यों को एक ढांचा प्रदान करते हैं। व्यावहारिक चेतना वह ज्ञान है जिसका प्रयोग हम बिना विस्तार से स्पष्ट किए सहज रूप से करते हैं। संरचना की द्वैतता का अर्थ है कि संरचना और क्रिया एक-दूसरे को निर्मित करते हैं। ये अवधारणाएं यह समझने में सहायता करती हैं कि कैसे व्यक्ति अपने कार्यों के माध्यम से समाज को अक्षुण्ण रखते हैं या उसे परिवर्तित करते हैं। यह सिद्धांत मानव व्यवहार और सामाजिक व्यवस्था के अंतर्संबंधों को गहराई से स्पष्ट करता है।

126. (D) सार्वभौमिक और स्थिर अर्थ संरचनाओं की खोज।
डेरिडा जैसे उत्तर-आधुनिकतावादियों ने संरचनावाद की आलोचना इसलिए की क्योंकि वह भाषा और समाज में निहित स्थायी नियमों या ढांचों को अन्वेषित करने का दावा करता था। उनका मानना था कि अर्थ कभी भी स्थिर नहीं होता, बल्कि वह सदैव संदर्भ के अनुसार परिवर्तित होता रहता है। संरचनावाद यह स्वीकार करके चलता था कि सत्य को एक निश्चित ढांचे के भीतर प्राप्त किया जा सकता है, जिसे डेरिडा ने पूर्णतः त्रुटिपूर्ण बताया। विखंडनवाद का उद्देश्य इसी कथित स्थिरता का खंडन करना और यह दिखाना है कि वास्तविकता और भाषा सदैव परिवर्तनशील, अनिश्चित और अनेक व्याख्याओं हेतु उन्मुक्त होती है।

127. (A) विशुद्ध रूप से सूक्ष्म-समाजशास्त्रीय सिद्धांत निर्मित करना।
जेफरी अलेक्जेंडर के नव-प्रकार्यवाद का लक्ष्य केवल सूक्ष्म स्तर के लघु व्यवहारों का अध्ययन करना नहीं है, बल्कि वह सूक्ष्म और वृहद दोनों स्तरों को एकीकृत करना चाहता है। वह पार्सन्स के प्रकार्यवाद की रुढ़ियों को खंडित कर उसे अधिक व्यापक और समावेशी बनाना चाहता है। यह सिद्धांत व्यक्ति की स्वतंत्रता और समाज की व्यवस्था दोनों को समान महत्व प्रदान करता है। अलेक्जेंडर का प्रयास विभिन्न समाजशास्त्रीय दृष्टिकोणों को सम्मिश्रित कर एक ऐसा बहुआयामी ढांचा तैयार करना है जो समाज की जटिलता को श्रेष्ठ रूप से समझ सके। अतः इसे केवल सूक्ष्म सिद्धांत कहना इसकी व्यापकता को न्यून करना होगा।

128. (B) उपकरणपरक क्रिया और संवादात्मक क्रिया।
हेबरमास के सिद्धांत में प्रणाली का संबंध अर्थव्यवस्था और सत्ता से है जहाँ क्रियाएं केवल लाभ और दक्षता हेतु की जाती हैं, जिसे उपकरणपरक क्रिया कहते हैं। इसके विपरीत जीवन-जगत वह क्षेत्र है जहाँ संवादात्मक क्रिया के माध्यम से पारस्परिक समझ और सांस्कृतिक संबंधों का निर्माण होता है। जब प्रणाली के व्यावसायिक नियम जीवन-जगत के मानवीय संवाद को अवरुद्ध करने लगते हैं, तो समाज में संकट उत्पन्न होता है। यह भेद हमें यह समझने में सहायता करता है कि आधुनिक समाजों में कैसे तकनीकी और आर्थिक सफलता मानवीय मूल्यों पर प्रभावी होती जा रही है।

129. (A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
लुई अल्थुसर ने स्पष्ट किया कि पुलिस और सेना जैसे दमनकारी तंत्र सार्वजनिक होते हैं, किंतु परिवार और धार्मिक संस्थान जैसे वैचारिक तंत्र प्रायः निजी क्षेत्र के होते हैं। इसके उपरांत भी, ये निजी संस्थान शासक वर्ग की विचारधारा को प्रसारित करने और उसे अक्षुण्ण रखने का महत्वपूर्ण कार्य करते हैं।

NODIA

वे व्यक्तियों को इस प्रकार शिक्षित करते हैं कि वे वर्तमान सामाजिक व्यवस्था को उचित स्वीकार करने लगें। इस प्रकार, निजी और सार्वजनिक का भेद वैचारिक नियंत्रण के विषय में समाप्त हो जाता है क्योंकि दोनों का अंतिम उद्देश्य समाज के प्रभुत्वशाली ढांचे को सुरक्षित रखना ही होता है।

130. (C) A सही है लेकिन R गलत है।
विकास परियोजनाओं से विस्थापन एक यथार्थ है जो प्रायः समाज के सर्वाधिक निर्धन और दुर्बल वर्गों को प्रभावित करता है। अभिकथन सत्य है क्योंकि बांधों जैसे वृहद निर्माण कार्यों से व्यक्तियों को अपनी भूमि त्यागनी पड़ती है। किंतु कारण त्रुटिपूर्ण है क्योंकि विकास की प्रक्रिया सदैव न्यायसंगत नहीं होती। प्रायः विकास का लाभ समृद्ध वर्गों को प्राप्त होता है, जबकि उसकी लागत निर्धन वर्गों को अपना आवास और आजीविका खोकर चुकानी पड़ती है। विकास के लाभों का वितरण समाज में अत्यंत असमान और भेदभावपूर्ण होता है, जिससे सामाजिक असंतोष की भावना प्रस्फुटित होती है।

131. (C) क्षेत्रीय असमानता
जब भारत के कतिपय राज्यों में आधुनिक उद्योगों और तकनीकी प्रगति का अत्यधिक विकास होता है, जबकि अन्य राज्य पिछड़ जाते हैं, तो इसे क्षेत्रीय असमानता कहा जाता है। दक्षिण भारत के राज्यों में सूचना प्रौद्योगिकी क्षेत्र की उन्नति उत्तर और पूर्व के राज्यों की तुलना में अधिक है। यह असंतुलन संसाधनों के प्रबंधन, शिक्षा के स्तर और सरकारी नीतियों के कारण उत्पन्न होता है। इससे राज्यों के मध्य आर्थिक अंतर बढ़ता है और पलायन जैसी समस्याएँ उत्पन्न होती हैं। संपूर्ण देश की प्रगति हेतु विकास के अवसरों का समान वितरण होना अपरिहार्य है।

132. (D) विकेंद्रीकृत, सहकारी और राज्य-विशिष्ट दृष्टिकोण।
नीति आयोग की स्थापना का उद्देश्य पूर्ववर्ती केंद्रीय नियोजन मॉडल को परिवर्तित करना था जहाँ केंद्र से संपूर्ण देश हेतु एक समान नीतियां निर्मित की जाती थीं। नीति आयोग इस तथ्य को स्वीकार करता है कि प्रत्येक राज्य की समस्याएँ और आवश्यकताएँ भिन्न होती हैं। इसलिए यह राज्यों को अपनी विकास योजनाएं स्वयं निर्मित करने और उसमें केंद्र की सहायता प्राप्त करने हेतु प्रोत्साहित करता है। यह नीचे से ऊपर का दृष्टिकोण सहकारी संघवाद को संवर्धित करता है। इससे नीतियां धरातल पर अधिक प्रभावी होती हैं क्योंकि वे स्थानीय परिस्थितियों को दृष्टिगत रखकर बनाई जाती हैं।

133. (C) संपत्ति अपराध; श्वेत-वसन अपराध
गबन एक ऐसा अपराध है जहाँ कोई व्यक्ति अपने पद का दुरुपयोग कर उस संपत्ति या धन की चोरी करता है जिसकी उत्तरदायित्व उसे सौंपा गया था। इसे श्वेत-वसन अपराध कहा जाता है क्योंकि यह प्रायः उच्च पदों पर आसीन शिक्षित व्यक्तियों द्वारा बिना किसी शारीरिक हिंसा के संपन्न किया जाता है। इसमें मुख्य रूप से विश्वासघात और वित्तीय हेराफेरी सम्मिलित होती है। यह अपराध बैंक अधिकारियों, सरकारी कर्मचारियों या व्यावसायिक प्रबंधकों द्वारा अपने कार्यस्थल पर क्रियान्वित किया जाता है। यह दर्शाता है कि आर्थिक अपराधों का प्रभाव समाज की संपूर्ण वित्तीय व्यवस्था की विश्वसनीयता पर पड़ता है।

134. (B) विभिन्न राष्ट्रीय भाषाओं की आधिकारिक प्रास्थिति पर वाद-विवाद।
भारत जैसे बहुलवादी राष्ट्र में भाषाओं का विषय सदैव चर्चा का केंद्र रहता है क्योंकि प्रत्येक समूह अपनी भाषा को सम्मान प्राप्त कराना चाहता है। यह बहुलवाद की एक वृहद चुनौती है जहाँ सरकार को यह निर्धारित करना होता है कि किसी एक भाषा को आरोपित किए बिना सबको साथ कैसे लिया जाए। भाषाओं पर होने वाला विमर्श यह प्रदर्शित करता है कि विभिन्न सांस्कृतिक पहचानों को एक राष्ट्रीय पहचान में कैसे एकीकृत किया जाए। राष्ट्र-निर्माण की सफलता इसी तथ्य में है कि सभी भाषाई समूहों को यह अनुभव हो कि उनकी अपनी भाषा और संस्कृति पूर्णतः सुरक्षित है।

135. (A) केवल 2
विचलन की परिभाषा समाज और काल के साथ परिवर्तित होती रहती है, जो एक संस्कृति में सामान्य है, वह दूसरी में अनुचित हो सकता है। सभी विचलित कृत्य कानून का उल्लंघन नहीं करते, इसलिए वे अपराध नहीं कहलाते। उदाहरण स्वरूप, किसी समाज में पारंपरिक परिधान का न पहनना विचलन माना जा सकता है, किंतु इसके लिए कारावास का दंड नहीं दिया जा सकता। अतः केवल वैधानिक नियमों का उल्लंघन ही अपराध है। विचलन एक व्यापक सामाजिक अवधारणा है जो केवल कानून तक सीमित नहीं है, बल्कि इसमें व्यवहार के प्रति समाज की प्रतिक्रिया भी सम्मिलित होती है।

136. (A) परंपरा और आधुनिकता के बीच विकसित होते संबंध।
समाजशास्त्र में यह स्वीकार किया जाता है कि परंपराएँ कोई निर्जीव और जड़ वस्तु नहीं हैं जिन्हें परिवर्तित न किया जा सके। व्यक्ति प्रायः अपनी वर्तमान आवश्यकताओं के अनुसार प्राचीन प्रथाओं की नवीन व्याख्या करते हैं या उन्हें नवीन स्वरूप प्रदान करते हैं। उदाहरण स्वरूप, धार्मिक उत्सवों को आधुनिक पद्धति से मनाना परंपरा का समकालीन उपयोग है। यह प्रक्रिया दर्शाती है कि समाज अपनी पहचान अक्षुण्ण रखने हेतु अतीत का अवलंबन तो लेता है, किंतु उसे आधुनिक संदर्भ में ढाल भी लेता है। परंपरा और आधुनिकता एक-दूसरे के प्रतिद्वंद्वी नहीं, बल्कि एक-दूसरे के पूरक हैं।

137. (C) एंथनी गिडिन्स
संरचनाकरण सिद्धांत को एंथनी गिडिन्स ने अपनी सुप्रसिद्ध कृति में विस्तार से स्पष्ट किया है। इस सिद्धांत का मुख्य उद्देश्य व्यक्ति और सामाजिक संरचना के मध्य के प्राचीन विवाद का समापन करना है। गिडिन्स का तर्क है कि समाज की संरचना और व्यक्तियों की क्रियाएं निरंतर एक-दूसरे को आकार प्रदान करती हैं। यह सिद्धांत स्पष्ट करता है कि हम अपनी आदतों और कार्यों से ही समाज के नियमों को स्थिर रखते हैं। इस प्रकार यह समाजशास्त्र के क्षेत्र में एक अत्यंत महत्वपूर्ण दृष्टिकोण माना जाता है जो अभिकर्तृत्व और संरचना को एक ही सिक्के के दो पहलू मानता है।

Downloaded from www.pdf.tube

138. (A) जैक्स डेरिडा
जैक्स डेरिडा ने विखंडनवाद की अवधारणा के माध्यम से भाषा और दर्शन को देखने का एक क्रांतिकारी दृष्टिकोण प्रदान किया। उनका मानना था कि किसी भी पाठ का कोई एक निश्चित या अंतिम अर्थ नहीं हो सकता क्योंकि शब्द निरंतर अन्य संदर्भों की ओर संकेत करते हैं। विखंडन का उद्देश्य उन प्रच्छन्न मान्यताओं को उजागर करना है जिनके आधार पर कोई विचार निर्मित किया गया है। यह पद्धति प्रदर्शित करती है कि सत्य को कभी भी पूर्णतः शब्दों में आवद्ध नहीं किया जा सकता। डेरिडा के इस कार्य ने साहित्य, दर्शन और समाजशास्त्र पर अत्यंत गंभीर प्रभाव डाला है।

139. (D) विमर्शात्मक के बजाय निहित या व्यावहारिक होती है।
गिडिन्स का मानना है कि अधिकांश समय हम सामाजिक नियमों का अनुपालन बिना गहन विचार के अपनी आदतों के आधार पर करते हैं। हम जानते हैं कि समाज में कैसा आचरण करना है, किंतु यदि कोई हमें इसे विस्तार से स्पष्ट करने हेतु कहे, तो हम इसे शब्दों में पूर्णतः व्यक्त नहीं कर पाते। इसी को गिडिन्स ने व्यावहारिक या निहित जानकारी कहा है। यह जानकारी हमारे दैनिक जीवन को सुचारु बनाने हेतु अत्यंत आवश्यक है। यह प्रदर्शित करती है कि मनुष्य के पास सामाजिक दुनिया को संचालित करने का एक गंभीर और अंतर्निहित ज्ञान सदैव उपलब्ध रहता है।

140. (B) झुग्गी-बस्तियाँ
जब नगरों में जनसंख्या तीव्र गति से बढ़ती है और सरकार उनके हेतु सस्ते आवास तथा आधारभूत सुविधाएं उपलब्ध नहीं करा पाती, तो विवश होकर व्यक्ति अनियोजित बस्तियों में निवास करने लगते हैं। इसी अभाव के कारण झुग्गी-बस्तियों का विस्तार होता है। यह तीव्र नगरीकरण का एक नकारात्मक पक्ष है जहाँ विकास की गति और संसाधनों की उपलब्धता के मध्य वृहद असंतुलन होता है। झुग्गी-बस्तियां उन व्यक्तियों के संघर्ष को प्रदर्शित करती हैं जो नगरों में श्रम तो करते हैं किंतु उनके पास निवास का कोई सम्मानजनक और सुरक्षित स्थान नहीं होता। यह नगरीय नियोजन की विफलता है।

141. (C) कृषि संकट और ऋण जैसे सामाजिक-आर्थिक कारक।
कृषकों की आत्महत्या को समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण से केवल एक व्यक्तिगत संताप नहीं, बल्कि एक वृहद आर्थिक समस्या के रूप में देखा जाता है। कृषि उत्पाद की क्षति, ऋण का भारी बोझ और बाजार में उत्पादों की न्यून लागत जैसे कारक कृषकों को इस भयावह सोपान हेतु विवश करते हैं। यह स्थिति कृषि क्षेत्र में उपस्थित गंभीर त्रुटियों और सरकारी नीतियों की विफलता को रेखांकित करती है। जब समाज की आर्थिक संरचना व्यक्ति को संबल प्रदान करने में असमर्थ रहती है, तो ऐसी कारुणिक घटनाएं बढ़ती हैं। अतः इसका समाधान कृषि को लाभप्रद और कृषकों को आर्थिक रूप से सुरक्षित बनाना है।

142. (B) न्यायिक सुधार
यहाँ विकल्प (B) त्रुटिपूर्ण है, उचित संदर्भ आर्थिक शासन होना चाहिए। नीति आयोग का गठन भारत के नियोजन मॉडल में परिवर्तन को प्रदर्शित करता है जहाँ अब कठोर नियंत्रण के स्थान पर परामर्श और सहयोग को प्रधानता दी जाती है। यह परिवर्तन दर्शाता है कि सरकार अब राज्यों को केवल निर्देशित करने के स्थान पर उनके साथ मिलकर कार्य करना चाहती है। नीति आयोग एक ऐसा मंच उपलब्ध कराता है जहाँ राज्यों की विशिष्ट समस्याओं को दृष्टिगत रखकर लचीली नीतियां निर्मित की जा सकें। यह प्राचीन केंद्रीकृत नियोजन से आधुनिक सहकारी नियोजन की ओर भारत के बढ़ते सोपान का प्रतीक है।

143. (A) तात्कालिक आर्थिक लाभ के लिए प्राकृतिक संसाधनों का अनियंत्रित दोहन।
सतत विकास का मुख्य सिद्धांत यह है कि हमें अपनी पृथ्वी के संसाधनों का प्रयोग अत्यंत सावधानीपूर्वक करना चाहिए। अनियंत्रित दोहन आगामी पीढ़ियों के भविष्य को संकट में डाल देता है, जो इस अवधारणा के पूर्णतः विपरीत है। इसका लक्ष्य आर्थिक समृद्धि के साथ-साथ प्रकृति की रक्षा और सामाजिक न्याय सुनिश्चित करना है। यदि हम केवल वर्तमान लाभ को देखेंगे, तो हम एक ऐसे भविष्य की ओर अग्रसर होंगे जहाँ जल, वायु और भूमि जीवन योग्य नहीं रहेंगे। अतः संसाधनों का विवेकपूर्ण और टिकाऊ उपयोग ही सतत विकास की प्रथम अनिवार्य शर्त है।

144. (B) परंपरा और आधुनिकता का समन्वय।
जब व्यक्ति अपनी प्राचीन परंपराओं और सामाजिक समूहों को सुदृढ़ करने हेतु सोशल मीडिया जैसी आधुनिक तकनीक का अवलंबन लेते हैं, तो यह परंपरा और आधुनिकता के समन्वय को प्रदर्शित करता है। यह सिद्ध करता है कि आधुनिकता परंपरा को विनष्ट नहीं करती, बल्कि उसे नवीन माध्यम उपलब्ध कराती है। भारतीय समाज में ऐसे दृष्टांत प्रचुर मात्रा में हैं जहाँ व्यक्ति जातीय सभाओं या धार्मिक अनुष्ठानों हेतु इंटरनेट का प्रयोग करते हैं। इसे परंपरा का आधुनिकीकरण कहा जा सकता है, जहाँ प्राचीन मूल्यों को आधुनिक साधनों के माध्यम से एक नवीन शक्ति और प्रसार की क्षमता प्राप्त होती है।

145. (B) 2, 3, 1, 4
समाजशास्त्रीय अवधारणाओं के विकास क्रम में लुई अल्थुसर ने 1960 के दशक में इंटरपेलशन का विचार प्रस्तुत किया। इसके पश्चात 1981 में जुर्गन हेबरमास ने संवादात्मक क्रिया का सिद्धांत दिया। एंथनी गिडिन्स ने 1984 में संरचना की द्वैतता की अवधारणा को विस्तारित किया। जैक्स डेरिडा द्वारा विखंडनवाद को 1960 के दशक के उत्तरार्ध में प्रारंभ किया गया था किंतु समाजशास्त्र में इसका व्यापक प्रभाव कालांतर में बढ़ा। यह कालक्रम दर्शाता है कि समाजशास्त्रीय चिंतन कैसे शनैः-शनैः संरचनात्मक नियंत्रण से विमुख होकर मानवीय क्रिया और भाषा के सूक्ष्म विश्लेषण की ओर अग्रसर हुआ।

146. (A) निम्न-स्तरीय आवास, अत्यधिक भीड़भाड़ और भू-स्वामित्व का अभाव।
झुग्गी-बस्ती किसी नगर का वह उपेक्षित क्षेत्र है जहाँ निवास की स्थिति अत्यंत कारुणिक होती है। यहाँ के आवास अत्यंत लघु और असुरक्षित होते हैं तथा अत्यंत सीमित स्थान में वृहद जनसंख्या निवास करती है। सर्वाधिक गंभीर समस्या यहाँ के निवासियों के पास भूमि का कोई वैधानिक प्रलेख न होना है,

NODIA

को समझने और उसे नवीन दृष्टिकोण से देखने का प्रभावी मार्ग है।

164. (D) अभिकर्तृत्व
अभिकर्तृत्व का अर्थ है व्यक्ति की वह शक्ति जिससे वह स्वतंत्र रूप से निर्णय ले सके और अपने परिवेश में परिवर्तन ला सके। एंथनी गिडिन्स के अनुसार, मनुष्य केवल समाज की कठपुतली नहीं है, बल्कि उसके पास अपनी बुद्धि और इच्छाशक्ति होती है। चाहे परिस्थितियाँ कितनी भी जटिल क्यों न हों, व्यक्ति के पास सदैव कुछ पृथक करने का विकल्प उपलब्ध रहता है। यही अभिकर्तृत्व सामाजिक परिवर्तन का इंजन है। जब अनेक व्यक्ति मिलकर अपने अभिकर्तृत्व का प्रयोग करते हैं, तो वे प्राचीन और अप्रासंगिक हो चुकी सामाजिक संरचनाओं को परिवर्तित कर एक नवीन और श्रेष्ठ व्यवस्था का निर्माण करने में सफल होते हैं।

165. (A) केवल 3
नीति आयोग कोई वैधानिक संस्था नहीं है, बल्कि इसे सरकार के एक कार्यकारी आदेश द्वारा निर्मित किया गया है। इसके पास राज्यों को बजट की राशि प्रदान करने की कोई शक्ति नहीं है, जो इसकी प्रमुख विशेषता है। इसका वास्तविक कार्य एक ज्ञान केंद्र और नवाचार केंद्र के रूप में सरकारी नीतियों में परिमार्जन हेतु नवीन विचार प्रदान करना है। यह केवल परामर्श देने वाला निकाय है जो विशेषज्ञों की सहायता से भविष्य की योजनाओं पर कार्य करता है। इसलिए यह कहना कि इसके पास वित्तीय शक्तियाँ हैं, पूर्णतः त्रुटिपूर्ण है, क्योंकि इसका मुख्य कार्य केवल बौद्धिक मार्गदर्शन और रणनीतिक अनुसंधान करना है।

166. (B) निवासियों के लिए आवास की सुरक्षा का अभाव।
झुग्गी-बस्ती की सर्वाधिक महती समस्या यह है कि वहाँ निवास करने वाले व्यक्तियों के पास अपने आवास की कोई वैधानिक गारंटी नहीं होती। सरकार कभी भी उन आवासों को अनधिकृत मानकर ध्वस्त कर सकती है, जिससे निवासियों में सदैव असुरक्षा बनी रहती है। यहाँ आधारभूत सुविधाएं जैसे स्वच्छ जल और विद्युत की उपलब्धता अत्यंत दुष्कर होती है। ये अनियोजित बस्तियां नगर की निर्धनता और विवशता का जीवंत प्रमाण हैं। आवास की सुरक्षा का यह अभाव ही झुग्गी-बस्ती के जीवन को और अधिक जटिल और संघर्षपूर्ण बना देता है, जिससे वहां के निवासियों का सामाजिक और आर्थिक विकास अवरुद्ध हो जाता है।

167. (D) कथन I गलत है, लेकिन कथन II सही है।
विस्थापन की प्रक्रिया प्रायः व्यक्तियों हेतु अत्यंत संतापजनक होती है क्योंकि उन्हें विवश होकर अपना आवास त्यागना पड़ता है। कथन II सत्य है क्योंकि वृहद बांधों या उद्योगों के निर्माण से सहस्त्रों व्यक्तियों को उनकी भूमि से विस्थापित कर दिया जाता है, जिसे विकास-प्रेरित विस्थापन कहते हैं। कथन I त्रुटिपूर्ण है क्योंकि कोई भी स्वेच्छा से अपनी जड़ों से पृथक होना नहीं चाहता। यह विस्थापन प्रायः अनैच्छिक होता है और इसमें व्यक्तियों की आजीविका की हानि होती है। विकास के नाम पर होने वाला यह उत्सर्ग समाज के निर्बल वर्गों पर अत्यधिक भार डालता है और सामाजिक अन्याय को प्रगाढ़ करता है।

168. (A) श्वेत-वसन अपराध
जब कोई वृहद प्रतिष्ठान सरकार को वंचना देकर कर की चोरी करता है, तो इसे श्वेत-वसन अपराध कहा जाता है। यह अपराध समाज के शिक्षित और आर्थिक रूप से समृद्ध व्यक्तियों द्वारा संपन्न किया जाता है। इसमें हिंसा का प्रयोग नहीं होता, बल्कि वैधानिक जटिलताओं और प्रलेखीय हेराफेरी का अवलंबन लिया जाता है। ऐसे अपराधों से देश की अर्थव्यवस्था को अत्यंत भारी क्षति होती है, जिससे जनकल्याण की योजनाओं हेतु धन की न्यूनता हो जाती है। यह दर्शाता है कि भ्रष्टाचार और अपराध केवल निर्धनों तक सीमित नहीं हैं, बल्कि उच्च पदों पर आसीन व्यक्ति भी अनैतिक कृत्यों में संलिप्त हो सकते हैं।

169. (C) अपनी अद्वितीय सांस्कृतिक पहचान और परंपराओं को संरक्षित करने की इच्छा।
भारत जैसे प्राचीन और महान राष्ट्र हेतु आधुनिक बनना एक चुनौती है, क्योंकि उसे अपनी सहस्त्रों वर्ष पुरानी संस्कृति को भी अक्षुण्ण रखना है। राष्ट्र-निर्माण का अर्थ यहाँ केवल नवीन तकनीक अंगीकार करना नहीं है, बल्कि अपनी जड़ों से संबद्ध रहते हुए प्रगति करना है। व्यक्ति आकांक्षा करते हैं कि वे विश्व के साथ कदम मिलाकर चलें, किंतु अपने रीति-रिवाजों और मूल्यों का परित्याग न करें। परंपरा और आधुनिकता के मध्य यह संतुलन ही भारतीय राष्ट्र की आत्मा है। यदि हम अपनी पहचान खो देंगे, तो विकास का कोई प्रयोजन नहीं रह जाएगा, इसलिए सांस्कृतिक संरक्षण राष्ट्र-निर्माण का अपरिहार्य अंग है।

170. (A) धार्मिक बहुलवाद
भारत में धर्मों की इतनी महती विविधता है कि यहाँ धर्म और राज्य को पूर्णतः पृथक करना संभव नहीं है। इसी कारण भारतीय धर्मनिरपेक्षता ने सैद्धांतिक दूरी का मार्ग चुना, जहाँ राज्य सभी धर्मों से समान दूरी बनाए रखता है किंतु आवश्यकता पड़ने पर उनमें सुधार भी कर सकता है। यह मॉडल इसलिए अंगीकृत किया गया क्योंकि यहाँ विभिन्न धर्मों के मध्य पारस्परिक मेलजोल और संघर्ष दोनों की संभावना रहती है। राज्य को एक निष्पक्ष मध्यस्थ की भूमिका निर्वहन करनी पड़ती है ताकि धार्मिक बहुलवाद देश की एकता हेतु संकट न बने, बल्कि उसकी सुदृढ़ता और गौरव का आधार बना रहे।

171. (D) पारंपरिक प्रकार्यवाद से परे एक बहुआयामी सिद्धांत विकसित करना।
जेफरी अलेक्जेंडर ने अनुभव किया कि प्राचीन प्रकार्यवाद अत्यधिक रूढ़िवादी हो गया था और वह परिवर्तित समाज का वर्णन करने में असमर्थ था। इसी कारण उन्होंने नव-प्रकार्यवाद का सूत्रपात किया, जो व्यवस्था की स्थिरता के साथ-साथ व्यक्तिगत स्वतंत्रता और सामाजिक संघर्ष को भी महत्व प्रदान करता है। उनका लक्ष्य एक ऐसा सिद्धांत निर्मित करना था जो समाज की जटिलता को प्रत्येक दृष्टिकोण से देख सके। यह दृष्टिकोण केवल एक पक्ष पर ध्यान केंद्रित करने के स्थान पर आर्थिक, सांस्कृतिक और सामाजिक सभी कारकों को एकीकृत

Click Here to Buy book on Amazon

व्यवसाय के दौरान की गई धोखाधड़ी है। ये चारों अवधारणाएं हमें यह समझने में सहायता करती हैं कि समाज में नियम क्यों टूटते हैं और अपराधी की सामाजिक स्थिति का उस अपराध की गंभीरता और प्रकार पर क्या गहरा प्रभाव पड़ता है।

156. (B) संरचना और अभिकर्तृत्व एक-दूसरे को पारस्परिक रूप से निर्मित करते हैं।
गिडिन्स का संरचनाकरण सिद्धांत यह स्पष्ट करता है कि समाज की संरचना और व्यक्तियों के कार्य एक-दूसरे से पृथक नहीं हैं। संरचना नियमों और संसाधनों का समुच्चय है जो हमें कार्य करने की शक्ति प्रदान करती है, और हमारे कार्य ही उन संरचनाओं को अक्षुण्ण रखते हैं। इसे संरचना की द्वैतता कहा जाता है। इसका अर्थ है कि मनुष्य केवल नियमों के अनुगामी नहीं हैं, बल्कि वे अपनी क्रियाओं से उन नियमों को जन्म देते हैं और आवश्यकता होने पर उन्हें परिवर्तित भी कर सकते हैं। यह सिद्धांत मानव की सक्रिय भूमिका और समाज के ढांचे के मध्य सुदृढ़ संतुलन स्थापित करता है।

157. (C) वृहद आख्यानों या मेटा-सिद्धांतों की अस्वीकृति।
उत्तर-आधुनिकतावाद उन सभी वृहद सिद्धांतों को अस्वीकार करता है जो यह दावा करते हैं कि वे संपूर्ण विश्व का एक ही दृष्टिकोण से वर्णन कर सकते हैं। उनका मानना है कि मार्क्सवाद या प्रकार्यवाद जैसे सिद्धांत अत्यंत जटिल विश्व को एक ही सांचे में ढालने का प्रयास करते हैं, जो त्रुटिपूर्ण है। उत्तर-आधुनिकतावादी विचारक लघु, स्थानीय और पृथक अनुभवों को अधिक महत्व प्रदान करते हैं। उनके अनुसार कोई भी एक सत्य अंतिम नहीं होता, बल्कि प्रत्येक व्यक्ति का अपना एक सत्य और अपना एक दृष्टिकोण होता है। यह विचारधारा हमें अन्य के विचारों के प्रति अधिक सहिष्णु बनने हेतु प्रेरित करती है।

158. (D) सहकारी संघवाद
नीति आयोग की शासी परिषद में सभी राज्यों के मुख्यमंत्रियों को सम्मिलित करना सहकारी संघवाद का एक श्रेष्ठ उदाहरण है। इसका उद्देश्य यह है कि देश की उन्नति में केंद्र और राज्य दोनों मिलकर कार्य करें। इसमें राज्यों को केवल निर्देशित नहीं किया जाता, बल्कि उनसे सुझाव आमंत्रित किए जाते हैं और उनकी विशिष्ट समस्याओं पर विमर्श किया जाता है। जब राज्य और केंद्र एक टीम की भाँति मिलकर कार्य करते हैं, तो विकास की नीतियां अधिक सफल और प्रभावशाली होती हैं। यह व्यवस्था भारत के लोकतंत्र को और अधिक सुदृढ़ और समावेशी बनाने की दिशा में एक महती सोपान है।

159. (A) सतत विकास
सतत विकास एक ऐसा संतुलित मार्ग है जो प्रतिपादित करता है कि हमें केवल आर्थिक लाभार्जन नहीं करना चाहिए, बल्कि अपनी प्रकृति और समाज के दुर्बल वर्गों का भी पूर्ण ध्यान रखना चाहिए। यह स्वीकार करता है कि वास्तविक प्रगति वही है जिसमें वर्तमान का लाभ भविष्य हेतु संकट न बने। यदि हम वर्तमान में वनों का विनाश करेंगे या प्रदूषण प्रसारित करेंगे, तो आगामी पीढ़ी के पास कुछ भी शेष नहीं रहेगा। इसलिए यह आर्थिक लाभ, सामाजिक समानता और पर्यावरण की सुरक्षा को एकीकृत करने की बात करता है। यह हमारे अस्तित्व को दीर्घकालिक रूप से सुरक्षित रखने हेतु श्रेष्ठ दृष्टिकोण माना गया है।

160. (A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
भारत में आधुनिकता और परंपरा के मध्य एक अनूठा संबंध है जहाँ दोनों साथ-साथ चलते हैं। अभिकथन सत्य है क्योंकि यहाँ व्यक्ति आधुनिक संस्थानों में कार्य करते हुए भी अपनी पारंपरिक मान्यताओं का परित्याग नहीं करते। कारण भी पूर्णतः सत्य है और इसकी व्याख्या करता है क्योंकि राजनीति और व्यवसाय में प्रायः जातीय और पारिवारिक संबंधों का उपयोग किया जाता है। यह समन्वय ही भारतीय समाज की वास्तविक पहचान है, जहाँ प्राचीन और नवीन परस्पर संघर्ष के स्थान पर एक-दूसरे को संबल प्रदान करते हैं। इससे समाज का विकास उसकी सांस्कृतिक जड़ों को सुरक्षित रखते हुए संतुलित ढंग से होता है।

161. (B) प्रघटनाशास्त्र
जुर्गन हेबरमास ने जीवन-जगत की अवधारणा को प्रघटनाशास्त्र की परंपरा से ग्रहण किया है, जो मानवीय अनुभवों और चेतना के अध्ययन पर आधारित है। यह दार्शनिक मार्ग स्पष्ट करता है कि विश्व को केवल बाह्य रूप से नहीं, बल्कि व्यक्ति के दृष्टिकोण से भी समझा जाना चाहिए। हेबरमास ने इसे सामाजिक संवाद से संबंद्ध कर यह बताया कि कैसे साझा भाषा और संस्कृति हमारे जीवन को अर्थ प्रदान करती है। यह परंपरा हमें यह समझने में सहायता करती है कि समाज के नियम केवल ग्रंथों में नहीं होते, बल्कि वे हमारे दैनिक व्यवहार और पारस्परिक विमर्श में जीवित रहते हैं।

162. (A) उत्पादन के संबंधों का पुनरुत्पादन सुनिश्चित करना।
लुई अल्थुसर के अनुसार, चाहे राज्य पुलिस की शक्ति का प्रयोग करे या विद्यालय की शिक्षा का, सबका अंतिम उद्देश्य एक ही है। वह उद्देश्य है पूंजीवादी व्यवस्था को अक्षुण्ण रखना और यह सुनिश्चित करना कि श्रमिक और स्वामी के संबंध सदैव बने रहें। दमनकारी तंत्र भयभीत कर और वैचारिक तंत्र मानस को परिवर्तित कर व्यक्तियों को व्यवस्था के अनुकूल बनाते हैं। जब तक व्यक्ति इस ढांचे को स्वाभाविक स्वीकार करते रहेंगे, तब तक शासक वर्ग की सत्ता सुरक्षित रहेगी। इस प्रकार राज्य के सभी अंग मिलकर समाज की वर्तमान आर्थिक और सामाजिक संरचना को निरंतर सुरक्षित रखने का कार्य करते हैं।

163. (C) विखंडनवादी
विखंडनवादी दृष्टिकोण का उपयोग तब किया जाता है जब हम किसी विचार या वृत्तांत के भीतर प्रच्छन्न विरोधाभासों को देखना चाहते हैं। जैक्स डेरिडा के इस सिद्धांत के अनुसार, विश्व केवल श्वेत और श्याम में विभाजित नहीं है, बल्कि इसके मध्य अनेक परतें उपस्थित हैं। जब एक चलचित्र का नायक कुछ अनुचित करता है और प्रतिनायक कुछ उचित, तो यह हमारे पूर्व-निर्धारित मूल्यों को चुनौती प्रदान करता है। यह पद्धति हमें यह विचार करने हेतु विवश करती है कि हमारे द्वारा निर्मित नैतिक नियम कितने लचीले हो सकते हैं। यह अर्थ की गहराई

Downloaded from www.pdf.tube

96. (B) कृषकों का विकास-प्रेरित विस्थापन।
विशेष आर्थिक क्षेत्रों के निर्माण हेतु जब उपजाऊ कृषि भूमि अधिग्रहित की जाती है, तो वृहद संख्या में कृषक अपनी आजीविका का एकमात्र स्रोत खो देते हैं। उन्हें अपनी पारंपरिक जड़ों से पृथक होकर नवीन स्थानों पर जाने हेतु विवश होना पड़ता है, जिसे विकास-प्रेरित विस्थापन कहा जाता है। यद्यपि यह औद्योगिक प्रगति हेतु किया जाता है, किंतु इससे ग्रामीण समाज में गहरा असंतोष और आर्थिक असुरक्षा उत्पन्न होती है। आर्थिक प्रतिपूर्ति के उपरांत भी, विस्थापितों के सामाजिक और सांस्कृतिक जीवन में आने वाला परिवर्तन एक गंभीर चुनौती बन जाता है जिसे सुलझाना अनिवार्य है।

97. (B) भ्रष्टाचार
भ्रष्टाचार एक ऐसा विचलित व्यवहार है जहाँ कोई व्यक्ति अपनी शक्ति या अधिकार का प्रयोग अनैतिक तरीके से निजी लाभ प्राप्त करने हेतु करता है। यह केवल कानून का ही नहीं, बल्कि नैतिकता और सार्वजनिक विश्वास का भी उल्लंघन है। इसमें रिश्वत ग्रहण करना, पद का दुरुपयोग करना या सार्वजनिक धन का गबन सम्मिलित है। भ्रष्टाचार समाज में न्याय और समानता के मार्ग में महती बाधा है क्योंकि यह योग्य व्यक्तियों के अवसरों का हनन करता है। यह राष्ट्र की प्रगति को मंद कर देता है और सरकारी संस्थानों की विश्वसनीयता को गहराई से क्षति पहुँचाता है।

98. (A) वैश्वीकृत अर्थशास्त्र और विकास पर इसका प्रभाव।
भारत में सूचना प्रौद्योगिकी और कॉल सेंटरों का विकास वैश्वीकरण की प्रक्रिया का प्रत्यक्ष परिणाम है, जहाँ भारतीय श्रम वैश्विक बाजार से संबंद्ध है। इसके साथ ही कुछ प्राचीन उद्योगों का बंद होना आर्थिक परिवर्तन की एक अनिवार्य प्रक्रिया को दर्शाता है। यह स्थिति प्रदर्शित करती है कि कैसे वैश्विक बाजार की मांगें स्थानीय अर्थव्यवस्था को नवीन स्वरूप प्रदान करती हैं। इससे न केवल रोजगार के नवीन अवसर सृजित होते हैं, बल्कि समाज के आर्थिक ढांचे और व्यक्तियों की जीवनशैली में भी वृहद परिवर्तन आते हैं। यह आधुनिक विश्व में विकास की गतिशील प्रकृति का प्रत्यक्ष प्रमाण है।

99. (C) धार्मिक कट्टरवाद और सांप्रदायिक राजनीति का उदय।
भारत में धर्मनिरपेक्षता हेतु सर्वाधिक संकट वह विचारधारा है जो धर्म का प्रयोग राजनीतिक लाभ हेतु करती है। जब धार्मिक कट्टरवाद में वृद्धि होती है, तो विभिन्न समुदायों के मध्य अविश्वास और संघर्ष की स्थिति उत्पन्न होती है। यह राष्ट्र की अखंडता और शांति हेतु गंभीर चुनौती है क्योंकि इससे धर्मनिरपेक्ष मूल्यों का ह्रास होता है। सांप्रदायिक राजनीति व्यक्तियों को धर्म के आधार पर विभाजित करती है, जो लोकतंत्र की मूल भावना के प्रतिकूल है। अतः राष्ट्र-निर्माण हेतु धार्मिक सहिष्णुता और संवैधानिक धर्मनिरपेक्षता को सुरक्षित रखना अत्यंत आवश्यक माना गया है।

100. (A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
लुई अल्थुसर के अनुसार विचारधारा केवल मस्तिष्क में निवास करने वाले विचार नहीं हैं, बल्कि यह हमारे दैनिक व्यवहार और संस्थागत अभ्यासों में सम्मिलित है। विद्यालय, परिवार और धार्मिक संस्थान हमें शैशवावस्था से ही शिक्षित करते हैं कि समाज में व्यवस्था को कैसे स्वीकार करना है। इस प्रकार विचारधारा शासक वर्ग के प्रभुत्व को हमारे व्यवहार का अंग बना देती है। यह प्रक्रिया इतनी सूक्ष्म होती है कि हम अनजाने में ही पूंजीवादी व्यवस्था का समर्थन करने लगते हैं। यह व्याख्या विचारधारा की भौतिक शक्ति और उसके नियंत्रण की विधि को अत्यंत स्पष्ट रूप से स्पष्ट करती है।

101. (C) अपराध; विचलन
विचलन एक व्यापक शब्दावली है जिसमें वे सभी व्यवहार सम्मिलित हैं जो सामाजिक मानदंडों के प्रतिकूल होते हैं। जब कोई व्यक्ति ऐसे विचलन को क्रियान्वित करता है जो लिखित कानून के विरुद्ध होता है, तो उसे अपराध की संज्ञा दी जाती है। इसलिए प्रत्येक अपराध एक प्रकार का विचलन है, किंतु समाज का प्रत्येक विचलित व्यवहार अपराध की श्रेणी में नहीं आता। कानून का उल्लंघन करने पर राज्य द्वारा औपचारिक दंड प्रदान किया जाता है, जबकि अन्य प्रकार के विचलन पर केवल सामाजिक दबाव या अनौपचारिक आलोचना का सामना करना पड़ता है। यह अंतर वैधानिक और सामाजिक नियंत्रण की सीमा को परिभाषित करता है।

102. (B) सूक्ष्म-अंतःक्रियावादी सिद्धांतों को वृहद-संरचनात्मक सिद्धांतों के साथ।
जेफरी अलेक्जेंडर का नव-प्रकार्यवाद समाजशास्त्र के दो वृहद संप्रदायों को एकीकृत करने का प्रयास करता है। शास्त्रीय प्रकार्यवाद केवल वृहद प्रणालियों पर ध्यान केंद्रित करता था, जबकि अंतःक्रियावाद केवल व्यक्ति के व्यवहार पर। अलेक्जेंडर का तर्क है कि एक पूर्ण सिद्धांत वही है जो यह स्पष्ट कर सके कि कैसे वृहद सामाजिक ढांचे और व्यक्तियों के लघु संवाद एक-दूसरे को प्रभावित करते हैं। यह संश्लेषण समाज को एक जीवंत व्यवस्था के रूप में देखने में सहायता करता है जहाँ संरचना और व्यक्तिगत आकांक्षा दोनों का अपना महत्व है। इसी कारण उनके कार्य को आधुनिक सिद्धांत का महत्वपूर्ण स्तंभ माना गया है।

103. (D) वाणिज्यिक मीडिया और जनसंपर्क का प्रभाव।
हेबरमास के अनुसार एक स्वस्थ सार्वजनिक क्षेत्र वह है जहाँ नागरिक स्वतंत्र और निष्पक्ष विमर्श कर सकें। आधुनिक समय में मीडिया का व्यावसायीकरण और विज्ञापन का प्रभाव इस विमर्श को विकृत कर देता है। जब सूचनाओं को केवल लाभ हेतु नियंत्रित किया जाता है, तो जनता तक केवल वही तथ्य पहुँचते हैं जो शक्तिशाली समूहों के हित में होते हैं। इससे तर्कसंगत वाद-विवाद के स्थान पर मनोरंजन और प्रचार प्रभावी हो जाते हैं। यह स्थिति लोकतंत्र हेतु संकट है क्योंकि यह नागरिकों की चिंतन करने और उचित निर्णय लेने की क्षमता को गहरे स्तर पर प्रभावित और बाधित करती है।

104. (A) प्रतीकात्मकता
गिडिन्स के अनुसार प्रतीकात्मकता वह प्रक्रिया है जिसमें व्यक्ति अपने व्यवहार और सामाजिक संदर्भों की निरंतर निगरानी करते हैं और प्राप्त जानकारी के आधार पर अपने कार्यों में परिवर्तन करते हैं। आधुनिक समाज में यह प्रक्रिया अत्यंत तीव्र हो गई है

NODIA

करता है। इस प्रकार उन्होंने प्रकार्यवाद को आधुनिक युग की चुनौतियों हेतु पुनः सज्जित किया है।

172. (B) संवादात्मक क्रिया
हेबरमास के अनुसार जीवन-जगत वह पृष्ठभूमि है जो हमें एक-दूसरे से संवाद करने और समझने का आधार प्रदान करती है। इसमें हमारी साझा संस्कृति, भाषा और मूल्य सम्मिलित होते हैं। इसी के अवलंबन से हम संवादात्मक क्रिया करते हैं, जिसका उद्देश्य बिना किसी स्वार्थ के पारस्परिक सहमति तक पहुँचना है। यदि यह जीवन-जगत न हो, तो हम एक-दूसरे के विचारों को कभी नहीं समझ पाएंगे। यह क्षेत्र हमारे सामाजिक अस्तित्व का अत्यंत कोमल और महत्वपूर्ण अंग है। जब तक यह सुरक्षित है, तब तक समाज में मानवीय संवेदनाएं और पारस्परिक समझ जीवित रहती है, जो लोकतंत्र हेतु अत्यंत अनिवार्य है।

173. (C) RSA मुख्य रूप से हिंसा का उपयोग करते हैं जबकि ISA विचारधारा का उपयोग करते हैं।
लुई अल्थुसर ने राज्य की शक्ति के दो पृथक पक्षों को अत्यंत स्पष्टता से प्रदर्शित किया है। दमनकारी तंत्र जैसे पुलिस और सेना शरीर पर नियंत्रण स्थापित करते हैं और कानून का उल्लंघन करने वालों को दंडित करते हैं। इसके विपरीत, वैचारिक तंत्र जैसे विद्यालय और मीडिया हमारे मानस को प्रभावित करते हैं और हमें यह शिक्षित करते हैं कि समाज के नियम उचित हैं। विचारधारा के माध्यम से राज्य व्यक्तियों की सहमति प्राप्त करता है, जबकि हिंसा का प्रयोग अंतिम विकल्प के रूप में होता है। शासन की सुदृढ़ता इसी तथ्य में है कि व्यक्ति स्वयं ही नियमों को मानने हेतु वैचारिक रूप से तत्पर रहें।

174. (D) संरचना और अभिकर्तृत्व परस्पर निर्भर और पुनरावर्ती रूप से संबंधित हैं।
गिडिन्स की संरचना की द्वैतता का अर्थ है कि समाज के नियम हमें कार्य करने की विधि सिखाते हैं और हमारे वही कार्य उन नियमों को समाज में अक्षुण्ण रखते हैं। हम नियमों के दास नहीं हैं, बल्कि हम उनके प्रणेता भी हैं। जब हम भाषा बोलते हैं, तो हम उसके व्याकरण के नियमों का अनुपालन करते हैं और साथ ही उस भाषा को विस्तारित भी करते हैं। इसी प्रकार समाज भी संचालित होता है। संरचना और व्यक्ति एक-दूसरे के बिना अपूर्ण हैं। यह एक सतत चलने वाला चक्र है जहाँ क्रिया संरचना को निर्मित करती है और संरचना क्रिया को एक आधार प्रदान करती है।

175. (A) अतीत के खंडित और परस्पर विरोधी वृत्तांतों को उजागर करना।
उत्तर-आधुनिकतावादी इतिहास को किसी एक सरल रेखा की भाँति नहीं देखते। उनका मानना है कि इतिहास का कोई एक वास्तविक सत्य नहीं होता, बल्कि प्रत्येक व्यक्ति उसे अपने दृष्टिकोण से लिपिबद्ध करता है। वे उन स्वरों को अन्वेषित करने का प्रयास करते हैं जिन्हें इतिहास के मुख्य ग्रंथों में दबा दिया गया है। उनके लिए इतिहास पृथक-पृथक वृत्तांतों का एक संग्रह है जो प्रायः परस्पर मेल नहीं खाते। यह दृष्टिकोण हमें बोध कराता है कि हमें इतिहास के किसी भी एक दावे को बिना सोचे-समझे स्वीकार नहीं करना चाहिए, बल्कि उसके पीछे निहित विभिन्न दृष्टिकोणों को गहराई से समझना चाहिए।

176. (B) क्षेत्रीय असमानता
जब भारत के कुछ राज्य तीव्र गति से समृद्ध हो रहे हैं और कुछ निर्धन बने हुए हैं, तो यह क्षेत्रीय असमानता का प्रत्यक्ष प्रमाण है। यह अंतर केवल धन का नहीं है, बल्कि शिक्षा, स्वास्थ्य और रोजगार के अवसरों का भी है। इस असंतुलन के कारण व्यक्ति अपने पिछड़े राज्यों को त्यागकर विकसित राज्यों की ओर पलायन करते हैं, जिससे वृहद नगरों पर दबाव बढ़ता है। यह स्थिति राष्ट्र की एकता हेतु भी एक चुनौती है क्योंकि पिछड़े क्षेत्रों के निवासियों में हीनता और रोष की भावना प्रस्फुटित हो सकती है। समान विकास ही देश की वास्तविक और स्थायी प्रगति का एकमात्र मार्ग है।

177. (B) अंतर-पीढ़ीगत समानता सुनिश्चित करना।
सतत विकास का सर्वाधिक महान लक्ष्य यह है कि हम पृथ्वी के संसाधनों का उपभोग इस प्रकार करें कि आगामी पीढ़ियों हेतु भी कुछ शेष रहे। इसे अंतर-पीढ़ीगत समानता कहा जाता है, जिसका अर्थ है कि वर्तमान पीढ़ी को वह सब विनष्ट करने का कोई अधिकार नहीं है जो भविष्य की पीढ़ियों का अधिकार है। हमें एक ऐसा विश्व छोड़ना चाहिए जो आज से न्यून सुंदर या न्यून उर्वर न हो। यह हमारी आगामी संतानों के प्रति एक वृहद नैतिक उत्तरदायित्व है। जब हम अपनी आवश्यकताओं को सीमित और संतुलित रखते हैं, तभी हम एक श्रेष्ठ और सुरक्षित भविष्य की नींव सुदृढ़ता से रख पाते हैं।

178. (A) अपराध का एक रूप, जिसे सामान्यतः श्वेत-वसन के रूप में वर्गीकृत किया जाता है।
भ्रष्टाचार केवल एक अनुचित व्यवहार नहीं है, बल्कि यह कानून की दृष्टि में एक गंभीर अपराध है। चूंकि यह प्रायः सरकारी अधिकारियों और प्रभावशाली व्यक्तियों द्वारा अपने कार्यस्थल पर क्रियान्वित किया जाता है, इसलिए इसे श्वेत-वसन अपराध की श्रेणी में वर्गीकृत किया जाता है। इसमें हिंसा का प्रयोग नहीं होता, किंतु यह संपूर्ण समाज के साथ एक वृहद आर्थिक और नैतिक विश्वासघात है। यह व्यवस्था की शुचिता को समाप्त कर देता है और विकास हेतु आवंटित धन की चोरी करता है। भ्रष्टाचार को प्रतिबंधित करना किसी भी सभ्य समाज और सुदृढ़ लोकतंत्र हेतु प्रथम प्राथमिकता होनी चाहिए।

179. (C) अपराध की बदलती रूपरेखा
वर्तमान समय में इंटरनेट और मोबाइल ने अपराध क्रियान्वयन की विधियों को पूर्णतः परिवर्तित कर दिया है, जिसे अपराध की परिवर्तित रूपरेखा कहा जाता है। अब अपराधी घर बैठे विश्व के किसी भी भाग में बैंक खाते रिक्त कर सकते हैं या भ्रामक सूचनाएं प्रसारित कर सकते हैं। यह पारंपरिक चोरियों और डकैतियों से अत्यंत भिन्न और आधुनिक है। तकनीक के इस दुरुपयोग ने सुरक्षा हेतु नवीन चुनौतियाँ उत्पन्न कर दी हैं क्योंकि अपराधी प्रायः अदृश्य रहते हैं। यह परिवर्तन हमें बोध कराता है कि हमें सुरक्षा के प्राचीन उपायों को त्यागकर अब और अधिक तकनीकी रूप से दक्ष बनना होगा।

Click Here to Buy book on Amazon

और जहाँ सबके हेतु अवलंबन की एक सुदृढ़ व्यवस्था उपलब्ध हो।

245. (A) P-3, Q-4, R-1, S-2
समाजशास्त्रीय सिद्धांतों के विकास में जेफरी अलेक्जेंडर ने नव-प्रकार्यवाद का विचार प्रस्तुत किया, जबकि एंथनी गिडिन्स ने संरचनाकरण सिद्धांत विकसित किया। जैक्स डेरिडा ने भाषा और सत्य को समझने हेतु विखंडनवाद का क्रांतिकारी मार्ग प्रदर्शित किया और लुई अल्थुसर ने वैचारिक राज्य तंत्र के माध्यम से सत्ता के खेल को स्पष्ट किया। ये चारों विचारक आधुनिक समाजशास्त्र के आधार स्तंभ के समान हैं। उन्होंने यह स्पष्ट किया कि समाज कैसे स्थिर रहता है, कैसे परिवर्तित होता है और कैसे सत्ता एवं विचार हमारे जीवन को गहरे स्तर पर प्रभावित करते हैं। उनके योगदान के बिना आधुनिक समाज को समझना अपूर्ण होगा।

246. (B) आदर्श भाषण स्थिति
हेबरमास की आदर्श भाषण स्थिति एक ऐसी दुनिया की परिकल्पना है जहाँ संवाद का एकमात्र प्रयोजन सत्य की प्राप्ति होता है। यहाँ कोई किसी को भयभीत नहीं करता और न ही कोई अपने स्वार्थ हेतु असत्य बोलता है। इसमें केवल वही विचार अंगीकार किया जाता है जिसके पीछे सर्वाधिक सुदृढ़ और निष्पक्ष तर्क निहित हो। हेबरमास का मानना है कि आधुनिक लोकतंत्र को इसी आदर्श की ओर अग्रसर होना चाहिए ताकि समाज में सत्य और न्याय अक्षुण्ण रहे। यद्यपि इसे पूर्णतः प्राप्त करना दुष्कर है, किंतु यह हमें शिक्षित करता है कि एक श्रेष्ठ और निष्पक्ष विमर्श समाज को कितनी उन्नति तक ले जा सकता है।

247. (D) पदानुक्रमित विरोधों में अस्थिरता को उजागर करना।
विखंडन का मुख्य कार्य उन विचारों की नींव को हिलाना है जिन्हें हम अटल सत्य स्वीकार कर लेते हैं। जैक्स डेरिडा ने प्रदर्शित किया कि हम प्रायः कतिपय वस्तुओं को अन्य से श्रेष्ठ स्वीकार करते हैं, जैसे सत्य को असत्य से या पुरुष को स्त्री से। विखंडन यह सिद्ध करता है कि ये श्रेणियां इतनी सरल नहीं हैं और ये परस्पर आश्रित होती हैं। इसका उद्देश्य समाज में उपस्थित इन प्राचीन और भेदभावपूर्ण ढांचों को खंडित करना है ताकि हम विश्व को एक नवीन और अधिक उदार दृष्टिकोण से देख सकें। यह पद्धति हमें प्रत्येक विचार को सूक्ष्मता से परखना सिखाती है।

248. (A) अंतिम रूप में आर्थिक आधार पर निर्भर हैं।
लुई अल्थुसर ने मार्क्सवाद को नवीन स्वरूप प्रदान करते हुए कहा कि राजनीति और विचारधारा जैसी वस्तुएं सदैव प्रत्यक्ष रूप से अर्थव्यवस्था से संचालित नहीं होतीं। उनके पास अपनी कतिपय स्वतंत्रता (सापेक्ष स्वायत्तता) होती है। इसका तात्पर्य है कि समाज की संस्थाएं अपने अनुरूप भी कार्य कर सकती हैं। किंतु, उन्होंने यह भी स्पष्ट किया कि दीर्घकाल में अर्थव्यवस्था ही यह निर्धारित करती है कि समाज किस दिशा में अग्रसर होगा। यह विचार यह समझने में सहायता करता है कि समाज अत्यंत जटिल है जहाँ पृथक-पृथक अंग स्वतंत्र होते हुए भी अंततः एक-दूसरे के साथ गहरे रूप से एकीकृत होते हैं।

249. (C) सुरक्षित भू-स्वामित्व
झुग्गी-बस्ती की सर्वाधिक महती दुर्बलता ही यह है कि वहाँ के निवासियों के पास अपनी भूमि का कोई वैधानिक प्रलेख या सुरक्षा उपलब्ध नहीं होती। वे सदैव इस भय में जीवन व्यतीत करते हैं कि प्रशासन किसी भी समय आकर उनके आवासों को ध्वस्त कर देगा। इसके अतिरिक्त अत्यधिक भीड़भाड़, जर्जर आवास और अस्वच्छता वहाँ की सामान्य पहचान है। सुरक्षित भू-स्वामित्व का होना तो एक विकसित और नियोजित आवासीय क्षेत्र की विशेषता है, झुग्गी की नहीं। आवास की यह अनिश्चितता ही झुग्गी के जीवन को सर्वाधिक कष्टकारी बनाती है। वैधानिक अधिकार का अभाव निवासियों को विकास की मुख्यधारा से पृथक कर देता है।

250. (C) A सही है लेकिन R गलत है।
अभिकथन पूर्णतः सत्य है कि भारत में परंपरा और आधुनिकता साथ-साथ अग्रसर होते हैं। हम वर्तमान में भी आधुनिक यंत्रों का प्रयोग करते हुए अपने प्राचीन संस्कारों का अनुपालन करते हैं। किंतु कारण पूर्णतः त्रुटिपूर्ण है क्योंकि आधुनिकीकरण ने जाति या धर्म को समाप्त नहीं किया है। वास्तविकता यह है कि इन पारंपरिक संस्थाओं ने स्वयं को आधुनिक विश्व के अनुरूप ढाल लिया है और आज भी वे हमारे जीवन में अत्यंत प्रभावशाली हैं। भारत ने आधुनिकता को अपनी जड़ों को विनष्ट कर नहीं, बल्कि अपनी परंपराओं को उसके साथ एकीकृत कर अत्यंत श्रेष्ठ स्वरूप में अंगीकार किया है।

251. (D) आर्थिक विकास, सामाजिक समानता और पर्यावरण संरक्षण।
सतत विकास का संपूर्ण ढांचा इन तीन स्तंभों पर आधारित है। इसका तात्पर्य है कि हमें केवल आर्थिक लाभार्जन नहीं करना चाहिए, बल्कि यह भी दृष्टिगत रखना चाहिए कि क्या समाज के प्रत्येक वर्ग को उसका लाभ प्राप्त हो रहा है और क्या हमारी पृथ्वी सुरक्षित है। यदि हम इनमें से किसी एक का भी परित्याग करेंगे, तो विकास दीर्घकालिक रूप से स्थिर नहीं रह पाएगा। वास्तविक प्रगति वही है जहाँ आर्थिक सुदृढ़ता, न्यायपूर्ण समाज और स्वच्छ प्रकृति तीनों साथ उपस्थित हों। यह संतुलन ही आगामी पीढ़ियों हेतु एक सुखद और सुरक्षित विश्व सुनिश्चित करने का एकमात्र स्थायी मार्ग है।

252. (B) एक बहुलवादी समाज में राष्ट्र-निर्माण।
भारत जैसे विशाल राष्ट्र हेतु राष्ट्र-निर्माण का अर्थ है अनगिनत विविधताओं के मध्य एकता का सूत्र स्थापित करना। यहाँ पृथक-पृथक धर्मों, भाषाओं और संस्कृतियों के निवासियों को एकीकृत करना एक अत्यंत वृहद चुनौती है। यह बहुलवाद ही भारत का सौंदर्य है, किंतु इसे एक राष्ट्र के रूप में एकीकृत रखना निरंतर प्रयास और विवेक का कार्य है। सफल राष्ट्र-निर्माण तभी संपन्न होता है जब प्रत्येक लघु समूह को अनुभव हो कि उसकी पहचान सुरक्षित है और वह इस महान राष्ट्र का अभिन्न अंग है। यह समावेशी चिंतन ही देश की अखंडता और एकता की सुदृढ़तम ढाल है।

NODIA

STUDYING FROM PDFs?

THINK AGAIN.

If you are studying only from PDFs,
you are wasting valuable time.

Research shows that learning from

PRINTED BOOKS has up to

4× HIGHER RETENTION

than studying from screens.

PRINT BOOK = BETTER MEMORY

PDF = LOWER RETENTION

Those who study from **PRINTED BOOKS**
move **AHEAD.**

Others are left **BEHIND**
in competition.



In competitive exams,
being average is not enough.

STAY ONE STEP AHEAD.

188. (B) सामाजिक कारक जैसे विसंगति और साथियों का प्रभाव।
समाजशास्त्री मादक द्रव्य की लत को केवल एक व्यक्ति की दुर्बलता नहीं मानते, बल्कि इसके पीछे सामाजिक कारकों को देखते हैं। प्रायः बेरोजगारी, एकाकीपन या दोषपूर्ण मित्रों का साथ व्यक्ति को नशे की ओर प्रवृत्त करता है। दुर्खीम की शब्दावली में कहें तो जब समाज के नियम शिथिल पड़ जाते हैं (विसंगति), तब ऐसी समस्याएं अधिक बढ़ती हैं। यह प्रदर्शित करती है कि समाज का परिवेश व्यक्ति के निजी जीवन को कितना प्रभावित करता है। अतः नशे की समस्या का समाधान केवल औषधि नहीं है, बल्कि एक ऐसा सहायक सामाजिक वातावरण निर्मित करना है जहाँ व्यक्ति को सम्मान और रोजगार प्राप्त हो सके।

189. (C) आधुनिक राजनीति के साथ परंपरा की अंतःक्रिया और उसे आकार देना।
भारत में निर्वाचन के समय जाति का महत्व यह प्रदर्शित करता है कि हमारी प्राचीन परंपराएं नवीन राजनीतिक व्यवस्था के साथ कैसे एकीकृत हो गई हैं। यह लोकतंत्र की विफलता नहीं है, बल्कि यह दर्शाता है कि आधुनिक राजनीति ने पारंपरिक पहचानों को अपने प्रयोजन हेतु अनुकूलित कर लिया है। जातियां अब राजनीतिक दबाव समूहों की भाँति कार्य करती हैं ताकि वे अपने अधिकारों की माँग कर सकें। यह समन्वय ही भारतीय लोकतंत्र की एक अनूठी और वास्तविक छवि है जहाँ प्राचीन सामाजिक बंधन नवीन अधिकारों के साथ मिलकर चलते हैं। यह प्रक्रिया दर्शाती है कि आधुनिक संस्थाएं पारंपरिक समाज में पैठ बना लेती हैं।

190. (C) A सही है लेकिन R गलत है।
अभिकथन पूर्णतः सत्य है कि गिडिन्स ने संरचना की द्वैतता का प्रतिपादन किया था। किंतु कारण पूर्णतः त्रुटिपूर्ण है क्योंकि गिडिन्स ने कभी यह स्वीकार नहीं किया कि व्यक्ति समाज की कठपुतली है। उनका मानना था कि व्यक्ति अपनी क्रियाओं में स्वतंत्र है और उसी की क्रियाओं से संरचना निर्मित होती है। गिडिन्स के अनुसार, संरचना और अभिकर्तृत्व एक-दूसरे के प्रतिद्वंद्वी नहीं, बल्कि पूरक हैं। मनुष्य सामाजिक नियमों का अनुपालन करते हुए भी उन्हें परिवर्तित कर सकता है। अतः यह कहना कि अभिकर्तृत्व हेतु कोई स्थान नहीं है, गिडिन्स के क्रांतिकारी विचारों के विपरीत और भ्रामक होगा।

191. (A) क्षेत्रीय असमानता
राष्ट्र-निर्माण के मार्ग में क्षेत्रीय असमानता एक अत्यंत वृहद अवरोध है क्योंकि जब कुछ भाग पिछड़ जाते हैं, तो वहाँ के निवासियों में रोष प्रस्फुटित होता है। एक एकीकृत राष्ट्र हेतु यह अनिवार्य है कि विकास का लाभ कन्याकुमारी से लेकर कश्मीर तक सबको समान रूप से प्राप्त हो। यदि केवल वृहद नगरों का विकास होगा, तो पिछड़े क्षेत्रों में अलगाववाद की भावना बढ़ सकती है। इसलिए राष्ट्रीय पहचान को सुदृढ़ करने हेतु संतुलित विकास अत्यंत अपरिहार्य है। जब प्रत्येक क्षेत्र समृद्ध होगा, तभी राष्ट्र के प्रति व्यक्तियों का प्रेम और विश्वास बढ़ेगा और देश की एकता एवं अखंडता सुरक्षित बनी रहेगी।

192. (B) लुई अल्थुसर
लुई अल्थुसर एक विख्यात फ्रांसीसी विचारक थे जिन्होंने राज्य की शक्ति को समझने हेतु दो तंत्रों का प्रतिपादन किया। उन्होंने स्पष्ट किया कि कैसे राज्य एक ओर पुलिस और सेना के माध्यम से भयभीत करता है और दूसरी ओर विद्यालय, परिवार और धर्म के माध्यम से हमारे मानस में अपनी विचारधारा प्रविष्ट करता है। अल्थुसर का यह विश्लेषण सत्ता के उन सूक्ष्म और वैचारिक मार्गों को उजागर करता है जिन्हें हम प्रायः पहचान नहीं पाते। उनके इन विचारों ने मार्क्सवाद को एक नवीन दिशा प्रदान की और यह स्पष्ट किया कि समाज में शासक वर्ग का प्रभुत्व केवल शस्त्रों के बल पर नहीं, बल्कि संस्कृति और शिक्षा के माध्यम से भी रहता है।

193. (B) सार्वभौमिक सिद्धांत जो पूर्ण सामाजिक व्याख्या का दावा करते हैं।
उत्तर-आधुनिकतावाद का यह मानना है कि विश्व इतना जटिल है कि उसे किसी एक वृहद आख्यान या वृहद सिद्धांत से नहीं समझा जा सकता। वे मार्क्सवाद या उदारवाद जैसे सिद्धांतों पर संदेह करते हैं क्योंकि ये सिद्धांत दावा करते हैं कि वे संपूर्ण समाज का एकमात्र सत्य जानते हैं। उत्तर-आधुनिकतावादी विचारकों के अनुसार, प्रत्येक समूह और प्रत्येक संस्कृति का अपना एक पृथक सत्य होता है। इसलिए वे वृहद दावों के स्थान पर लघु और स्थानीय सच्चाइयों को अधिक महत्व प्रदान करते हैं। यह दृष्टिकोण हमें किसी भी एक विचार के प्रति कट्टर होने से सुरक्षित रखता है और हमें अन्य के विचारों का सम्मान करना सिखाता है।

194. (A) सक्षमकर्ता
योजना आयोग और नीति आयोग के मध्य का सर्वाधिक वृहद अंतर उनकी कार्यपद्धति में निहित है। पूर्ववर्ती आयोग ऊपर से नियम निर्मित करता था और राज्यों को उन्हें अंगीकार करने हेतु विवश करता था, जो एक नियंत्रक की भूमिका थी। इसके विपरीत, नीति आयोग एक सक्षमकर्ता की भाँति कार्य करता है, जो राज्यों को श्रेष्ठ नीतियां निर्मित करने में सहायता करता है और उन्हें प्रगति हेतु आवश्यक संसाधन एवं परामर्श प्रदान करता है। यह परिवर्तन भारत के संघीय ढांचे को सुदृढ़ करता है क्योंकि अब राज्यों को विकास में समान भागीदार स्वीकार किया जाता है। यह दृष्टिकोण अधिक लोकतांत्रिक, लचीला और परिणामोन्मुखी है।

195. (C) केवल 2 और 3
जैक्स डेरिडा का विखंडनवाद इस तथ्य पर बल देता है कि भाषा में अर्थ कभी स्थिर नहीं होता, जो कथन 1 के पूर्णतः विपरीत है। उन्होंने पश्चिमी दर्शन की इस सोच की महती आलोचना की कि शब्दों का कोई एक परम आधार या सत्य हो सकता है। विखंडन के माध्यम से वे पाठों के भीतर प्रच्छन्न विरोधाभासों को उजागर करते हैं। डेरिडा का मानना था कि अर्थ सदैव संदर्भ और अन्य शब्दों के साथ उसके संबंधों के कारण परिवर्तित होता रहता है। उनके विचारों ने हमें यह बोध कराया कि सत्य और वास्तविकता को केवल एक ही दृष्टिकोण से नहीं देखा जा सकता, बल्कि वे अत्यंत जटिल होते हैं।

Downloaded from www.pdf.tube

180. (D) धर्मनिरपेक्षता
भारतीय धर्मनिरपेक्षता का यह एक अत्यंत अनूठा पक्ष है जहाँ राज्य धर्म से पूर्णतः पृथक नहीं है, बल्कि वह सभी धर्मों के कल्याण में सक्रिय भूमिका निर्वहन करता है। हज यात्रा में सहायता प्रदान करना या कुंभ मेले का वृहद आयोजन प्रबंधित करना यह प्रदर्शित करता है कि राज्य सभी धर्मों का समान सम्मान करता है। यहाँ राज्य धार्मिक भावनाओं को स्वीकार करता है और सार्वजनिक शांति तथा सुविधा हेतु उनका प्रबंधन करता है। यह पश्चिमी मॉडल से पृथक है जो धर्म को केवल व्यक्तिगत विषय स्वीकार करता है। यह भारतीय दृष्टिकोण विविध धर्मों के मध्य शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व को प्रोत्साहित करने हेतु प्रभावी है।

181. (C) जेफरी अलेक्जेंडर
जेफरी अलेक्जेंडर को आधुनिक समाजशास्त्र में नव-प्रकार्यवाद के सर्वाधिक प्रमुख विचारक के रूप में स्वीकार किया जाता है। उन्होंने टैलकोट पार्सन्स के शास्त्रीय प्रकार्यवाद में नवीन प्राण फूँकने का कार्य किया। अलेक्जेंडर ने यह अनुभव किया कि प्राचीन प्रकार्यवाद में व्यक्ति की भूमिका और समाज के संघर्षों की उपेक्षा की गई थी, जिसे उन्होंने परिष्कृत करने का प्रयास किया। उनका सिद्धांत प्रकार्यवाद को और अधिक लचीला, लोकतांत्रिक और आधुनिक सामाजिक समस्याओं के वर्णन हेतु अधिक सक्षम बनाता है। उन्होंने समाजशास्त्रीय चिंतन में परंपरा और आधुनिकता के मध्य एक अत्यंत सार्थक वैचारिक सेतु निर्मित किया है।

182. (B) जीवन-जगत का औपनिवेशीकरण
हेबरमास के अनुसार जब बाजार का लाभ और सरकारी नियमों का दबाव हमारे पारिवारिक जीवन और पारस्परिक विमर्श पर प्रभावी होने लगता है, तो इसे जीवन-जगत का औपनिवेशीकरण कहते हैं। इसका अर्थ है कि अब हम संवेदनाओं और सांस्कृतिक मूल्यों के स्थान पर केवल लाभ और हानि की भाषा में चिंतन करने लगे हैं। इससे व्यक्तियों के मध्य का पारस्परिक विश्वास न्यून हो जाता है और समाज एक यंत्र की भाँति कार्य करने लगता है। यह स्थिति मानवीय संवेदनाओं हेतु अत्यंत घातक है क्योंकि यह हमारे उन सूक्ष्म और पवित्र सामाजिक संबंधों को विनष्ट कर देती है जो हमारे जीवन का वास्तविक आधार होते हैं।

183. (D) कथन I गलत है, लेकिन कथन II सही है।
गिडिन्स का मानना है कि सामाजिक संरचनाएं कोई कारागार की दीवारें नहीं हैं जो हमें केवल अवरुद्ध करती हों, बल्कि वे हमें कार्य करने के साधन भी प्रदान करती हैं। संरचना और क्रिया एक-दूसरे के पूरक हैं, जिसे उन्होंने संरचना की द्वैतता की संज्ञा दी है। मनुष्य अपने व्यवहार से नियमों का निर्माण करता है और वही नियम समाज को एक स्वरूप प्रदान करते हैं। कथन I त्रुटिपूर्ण है क्योंकि संरचनाएं हमें कार्य करने में सक्षम बनाती हैं, न कि केवल अवरोध उत्पन्न करती हैं। यह सिद्धांत स्पष्ट करता है कि व्यक्ति और समाज के मध्य का संबंध अत्यंत गतिशील है जहाँ दोनों एक-दूसरे को आकार प्रदान करते हैं।

184. (A) विखंडनवाद (Deconstruction)
विखंडनवाद वह पद्धति है जिसके माध्यम से हम किसी लेख या विचार की सूक्ष्मता में जाकर उसके विरोधाभासों को अन्वेषित करते हैं। जैक्स डेरिडा ने यह विधि प्रदान की ताकि हम यह समझ सकें कि कोई भी विचार परम सत्य नहीं है। इसमें यह प्रदर्शित किया जाता है कि कैसे हम कतिपय शब्दों को अन्य से श्रेष्ठ मान लेते हैं, जबकि वास्तव में उनका अर्थ एक-दूसरे पर आश्रित होता है। यह पद्धति हमें अंधविश्वास और रुढ़ियों से सुरक्षित रखती है और हमें प्रत्येक वस्तु को एक नवीन और आलोचनात्मक दृष्टिकोण से देखने हेतु प्रेरित करती है। यह भाषा के पीछे प्रच्छन्न सत्ता के समीकरणों को उजागर करती है।

NODIA

185. (B) P-3, Q-2, R-4, S-1
क्षेत्रीय असमानता का दृष्टांत भारत के पश्चिमी राज्यों का अधिक विकसित होना है। विस्थापन तब होता है जब विमानपत्तन जैसी परियोजनाओं हेतु व्यक्तियों को निष्कासित किया जाता है। झुग्गी-बस्ती मुंबई की धारावी जैसी श्रेणियों को कहते हैं जहाँ जीवन अत्यंत जटिल होता है। श्वेत-वसन अपराध इनसाइडर ट्रेडिंग जैसी आर्थिक धोखाधड़ी है जो संपन्न व्यक्तियों द्वारा संपन्न की जाती है। ये चारों स्थितियां आधुनिक भारत की उन सामाजिक और आर्थिक सच्चाइयों को प्रदर्शित करती हैं जिनसे समाज को संघर्ष करना पड़ रहा है। ये विकास की प्रक्रिया में उपस्थित उन त्रुटियों और असमानताओं को उजागर करती हैं जिन्हें दूर करना अपरिहार्य है।

186. (A) विकास नीति को रणनीतिक, दिशात्मक इनपुट प्रदान करना।
नीति आयोग का वास्तविक कार्य भारत सरकार हेतु एक दूरगामी परामर्शदाता की भूमिका निर्वहन करना है। यह केवल वर्तमान की समस्याओं को दृष्टिगत नहीं रखता, बल्कि भविष्य हेतु रणनीतिक योजनाएं निर्मित करता है। यह आयोग विशेषज्ञों और डेटा की सहायता से यह निर्धारित करता है कि देश को किस दिशा में अग्रसर होना चाहिए। इसका मुख्य लक्ष्य विकास की गति को त्वरित करना और नीतियों को अधिक आधुनिक एवं प्रभावी बनाना है। यह राज्यों के साथ मिलकर कार्य करता है ताकि राष्ट्रीय लक्ष्य सुगमता से प्राप्त हो सकें। यह एक बौद्धिक संस्थान है जो देश के विकास हेतु एक मार्गदर्शक की भूमिका निभाता है।

187. (D) सार्वजनिक रूप से स्वयं से ऊँचे स्वर में बातें करने वाला व्यक्ति।
विचलन वह व्यवहार है जो समाज की दृष्टि में थोड़ा विलक्षण या अनुचित हो सकता है, किंतु उसके लिए पुलिस बंदी नहीं बना सकती। यदि कोई व्यक्ति मार्ग पर ऊँचे स्वर में स्वयं से वार्ता कर रहा है, तो व्यक्ति उसे विचलित मान सकते हैं, किंतु यह कोई वैधानिक अपराध नहीं है। अपराध केवल वही कृत्य है जो देश के लिखित कानून का उल्लंघन करता है, जैसे चोरी या प्रहार। समाज में अनेक ऐसे विषय हैं जो विचलित माने जाते हैं किंतु वे गैर-कानूनी नहीं होते। यह अंतर समझना अत्यंत आवश्यक है क्योंकि सामाजिक नियंत्रण और वैधानिक नियंत्रण दोनों की विधियाँ और उद्देश्य भिन्न होते हैं।

204. (B) भाषाई चयन सामाजिक नियमों को कैसे पुनरुत्पादित और परिवर्तित करते हैं।
गिडिन्स का संरचनाकरण सिद्धांत भाषा के दृष्टांत से अत्यंत श्रेष्ठ रूप से समझा जा सकता है। जब हम संवाद करते हैं, तो हम भाषा के नियमों का प्रयोग करते हैं, जिससे वे नियम अक्षुण्ण रहते हैं। साथ ही, हम नवीन शब्दों या विधियों का प्रयोग कर उन नियमों को परिवर्तित भी कर देते हैं। यह क्रिया संरचना की द्वैतता को प्रदर्शित करती है जहाँ मनुष्य नियमों का अनुपालन भी करता है और उनका प्रणेता भी होता है। यह विश्लेषण यह समझने में सहायता करता है कि समाज कैसे स्थिर भी रहता है और काल के साथ शनैः-शनैः परिवर्तित भी होता है, जो कि अत्यंत तार्किक प्रक्रिया है।

205. (C) 3, 2, 4, 1
सामाजिक विश्लेषण के विभिन्न स्तर होते हैं। क्षेत्रीय असमानता संपूर्ण राज्यों या क्षेत्रों को प्रभावित करती है, इसलिए यह सर्वाधिक वृहद स्तर है। धर्मनिरपेक्षता पर नीतिगत विमर्श राष्ट्रीय स्तर का विषय है। एक ग्राम का विस्थापन एक विशिष्ट समुदाय का विषय है, जो मध्य स्तर का है। मादक पदार्थों की लत व्यक्तिगत स्तर की समस्या है, इसलिए यह सूक्ष्म स्तर पर परिगणित होती है। यह क्रम हमें यह समझने में सहायता करता है कि समाजशास्त्रीय अध्ययन कैसे वृहद ढांचों से प्रारंभ होकर व्यक्ति के जीवन के सूक्ष्म पक्षों तक पहुँचते हैं और उन्हें गहराई से एकीकृत करते हैं।

206. (D) मेटा-आख्यान
उत्तर-आधुनिकतावाद की सर्वाधिक महती पहचान यह है कि वह उन सभी वृहद सिद्धांतों पर संदेह करता है जो संपूर्ण विश्व का एक ही सत्य स्पष्ट करने का दावा करते हैं। वृहद आख्यान जैसे कि मार्क्सवाद या प्रगति की अवधारणा, उत्तर-आधुनिकतावादियों की दृष्टि में केवल एक विशिष्ट दृष्टिकोण हैं, परम सत्य नहीं। वे स्वीकार करते हैं कि विश्व अत्यंत खंडित और विविध है, जिसे एक वृत्तांत में समाहित नहीं किया जा सकता। इसलिए वे वृहद दावों के स्थान पर लघु और स्थानीय विषयों को अधिक महत्व प्रदान करते हैं। यह विचारधारा हमें प्रत्येक उस विचार पर प्रश्न उठाने हेतु प्रेरित करती है जो सार्वभौमिक होने का दावा करता है।

207. (A) तीन वर्षों में कार्यान्वयन के लिए एक नीतिगत कार्ययोजना तैयार करना।
नीति आयोग का तीन वर्षीय कार्य एजेंडा सरकार हेतु एक अल्पकालिक मार्गदर्शिका की भाँति कार्य करता है। इसका मुख्य उद्देश्य यह है कि दीर्घकालीन योजनाओं के साथ-साथ आगामी तीन वर्षों में क्या ठोस कार्य निष्पादित किए जाने हैं, उन्हें स्पष्ट किया जाए। यह पंचवर्षीय योजनाओं के प्राचीन और वृहद ढांचे से कहीं अधिक लचीला और व्यावहारिक है। इसमें परिवर्तित समय की आवश्यकताओं के अनुसार लक्ष्यों को त्वरित गति से परिवर्तित किया जा सकता है। यह सरकार को अपनी प्राथमिकताओं को शीघ्रता से लागू करने और उनके परिणामों पर दृष्टि रखने में महती सहायता और दिशा प्रदान करता है।

208. (B) विस्थापन
जब व्यक्ति दंगों, युद्ध या बाढ़ जैसी आपदाओं के कारण विवश होकर अपने आवासों को त्यागकर अन्यत्र निवास करने जाते हैं, तो उसे विस्थापन कहा जाता है। यह एक अत्यंत कारुणिक स्थिति है जहाँ व्यक्ति अपनी जड़ों, संपत्ति और सामाजिक पहचान से पूर्णतः विच्छिन्न हो जाता है। विस्थापन केवल आर्थिक ही नहीं, बल्कि एक गहरा मानसिक और सांस्कृतिक संताप भी है। चाहे कारण प्राकृतिक हो या मानव निर्मित, विस्थापित व्यक्तियों का पुनर्वास करना किसी भी राष्ट्र हेतु एक वृहद मानवीय और प्रशासनिक चुनौती होती है। उनकी सुरक्षा और सम्मान को पुनर्स्थापित करना समाज का नैतिक उत्तरदायित्व माना जाता है।

209. (B) व्यावसायिक प्रास्थिति
श्वेत-वसन अपराध की सर्वाधिक महती पहचान यह है कि इसे समाज के वे व्यक्ति संपन्न करते हैं जिन पर हम सर्वाधिक विश्वास करते हैं। यह शब्द अपराधी के श्वेत कॉलर अर्थात उसके स्वच्छ और उच्च व्यवसाय की ओर संकेत करता है। ये अपराधी प्रायः चिकित्सक, अधिवक्ता, बैंक अधिकारी या राजनीतिक नेता होते हैं। समाज प्रायः इन्हें अपराधी स्वीकार करने में त्रुटि करता है क्योंकि ये हिंसक प्रतीत नहीं होते। किंतु इनके द्वारा की गई धोखाधड़ी और गबन समाज की आर्थिक नींव को अत्यंत विदीर्ण कर देते हैं। यह दर्शाता है कि पद और धन किसी को अपराधी बनने से पूर्णतः अवरुद्ध नहीं कर सकते।

210. (A) भाग्यवादी
दुर्खीम के अनुसार भाग्यवादी आत्महत्या तब होती है जब समाज का नियंत्रण व्यक्ति पर इतना अधिक बढ़ जाए कि उसे अपना भविष्य पूर्णतः अवरुद्ध और दमघोंटू प्रतीत होने लगे। ऐसी स्थिति में व्यक्ति को अनुभव होता है कि उसकी अपनी कोई इच्छा शेष नहीं है और सब कुछ नियति पर आश्रित है। उदाहरण स्वरूप, अत्यधिक कठोर कारागार नियमों या दासता के बोझ तले दबा व्यक्ति इस चरम सोपान को अपना सकता है। यह उस घुटन का परिणाम है जहाँ नियम इतने कठोर होते हैं कि वे व्यक्ति की जिजीविषा को ही पूर्णतः कुचल देते हैं और उसे मृत्यु ही एकमात्र मार्ग दृष्टिगोचर होती है।

211. (C) संरचनात्मक घटक जिनका कर्ता अपने कार्यों में उपयोग करते हैं।
गिडिन्स के अनुसार, समाज के नियम और संसाधन केवल अवरोध नहीं हैं, बल्कि वे वे साधन हैं जिनके बिना हम कोई सामाजिक कार्य निष्पादित नहीं कर सकते। जैसे भाषा के अभाव में हम संवाद नहीं कर सकते, वैसे ही सामाजिक नियमों के बिना हम समाज में निवास नहीं कर सकते। हम इन नियमों का उपयोग अपने उद्देश्यों की प्राप्ति हेतु करते हैं। संरचना हमें शक्ति प्रदान करती है और हम अपनी क्रियाओं से उसे अक्षुण्ण रखते हैं। यह गिडिन्स की उस क्रांतिकारी सोच को प्रदर्शित करता है जहाँ संरचना और व्यक्ति एक-दूसरे के प्रतिद्वंद्वी नहीं, बल्कि एक-दूसरे के परम सहायक और पूरक माने गए हैं।

Click Here to Buy book on Amazon

196. (D) सौर और पवन ऊर्जा जैसे नवीकरणीय ऊर्जा स्रोतों का उपयोग करना।
सतत विकास का मूल अभिप्राय ऐसे साधनों का उपयोग करना है जो कभी समाप्त न हों और पर्यावरण को क्षति न पहुँचाएँ। सौर और पवन ऊर्जा इसके श्रेष्ठ उदाहरण हैं क्योंकि ये प्रदूषण प्रसारित नहीं करते और आगामी पीढ़ियों हेतु भी उपलब्ध रहेंगे। इसके विपरीत, कोयला या पेट्रोल जैसे संसाधन न केवल प्रदूषण प्रसारित करते हैं, बल्कि वे तीव्र गति से समाप्त भी हो रहे हैं। नवीकरणीय ऊर्जा अंगीकार करना पृथ्वी के भविष्य को सुरक्षित रखने हेतु एक क्रांतिकारी और उत्तरदायी सोपान है। यह हमें एक स्वच्छ, सुरक्षित और टिकाऊ विश्व की ओर अग्रसर करता है जहाँ विकास और प्रकृति साथ-साथ चलते हैं।

197. (C) झुग्गी-बस्ती
झुग्गी-बस्ती नगर के उन सघन क्षेत्रों को कहते हैं जहाँ व्यक्ति अत्यंत कारुणिक और संकीर्ण आवासों में रहने हेतु विवश होते हैं। यहाँ प्रायः पेयजल, विद्युत और अपवाह तंत्र जैसी आधारभूत वस्तुओं की वृहद न्यूनता होती है। ये बस्तियां प्रायः अनियोजित होती हैं और यहाँ निवास करने वालों के पास अपने आवासों का कोई वैधानिक अधिकार नहीं होता। यह नगरीय विकास की विफलता और समाज में उपस्थित गंभीर आर्थिक असमानता का प्रत्यक्ष प्रमाण है। झुग्गी-बस्तियों की उपस्थिति यह प्रदर्शित करती है कि हमारा विकास अभी तक समावेशी नहीं हो पाया है और एक वृहद वर्ग आज भी उपेक्षित है।

198. (B) भ्रष्टाचार
जब कोई वैधानिक कर्मचारी अपने पद का उपयोग कर किसी वैधानिक कार्य हेतु धन की माँग करता है, तो यह भ्रष्टाचार का एक स्पष्ट कृत्य है। यह न केवल कानून का उल्लंघन है, बल्कि समाज के नैतिक मूल्यों और जनविश्वास के साथ भी एक महती छल है। भ्रष्टाचार से संपूर्ण व्यवस्था दूषित हो जाती है और जनसामान्य का कार्य संपन्न होना दुष्कर हो जाता है। यह देश की प्रगति के चक्र को अवरुद्ध कर देता है और न्याय को केवल समृद्ध व्यक्तियों की संपत्ति बना देता है। इसे पूर्णतः समाप्त करना एक स्वस्थ लोकतंत्र और ईमानदार समाज हेतु अत्यंत अनिवार्य और महती प्राथमिकता होनी चाहिए।

199. (D) अपराधी की आयु।
कानून की दृष्टि में एक ही अनुचित कार्य को अपराधी की आयु के अनुरुप पृथक नाम प्रदान किए जाते हैं। यदि कोई बालक या किशोर कानून का उल्लंघन करता है, तो उसे अपचार कहा जाता है, जबकि वयस्क हेतु उसे अपराध स्वीकार किया जाता है। इस अंतर के पीछे यह चिंतन है कि बालकों को परिष्कृत किया जा सकता है और उनके पास वयस्कों जैसी समझ नहीं होती। इसलिए किशोरों को कारागार के स्थान पर सुधार गृह प्रेषित किया जाता है। यह वर्गीकरण समाज की उस मानवीय और सुधारात्मक सोच को प्रदर्शित करता है जो मानती है कि बाल्यकाल की त्रुटियों को सुधारकर किसी भी बालक के भविष्य को पुनः संवारा जा सकता है।

200. (A) एकता और विविधता
भारत जैसे बहुलवादी राष्ट्र हेतु सर्वाधिक महती संतुलन एकता और विविधता के मध्य अक्षुण्ण रहना है। राष्ट्र-निर्माण का अर्थ यहाँ यह है कि हम अपनी सहस्त्रों भाषाओं और धर्मों का सम्मान करते हुए भी एक अखंड भारत के रुप में एकीकृत रहें। यह चुनौती इसलिए है क्योंकि कभी-कभी क्षेत्रीय पहचानें राष्ट्रीय पहचान से अधिक प्रभावी होने लगती हैं। एक सुदृढ़ राष्ट्र तभी निर्मित होता है जब वह अपनी प्रत्येक लघु पहचान को सुरक्षित अनुभव कराए और सबको एक साझा गौरव के सूत्र में एकीकृत करे। यह समावेशी चिंतन ही भारत जैसे विशाल लोकतंत्र को अक्षुण्ण रखने और अग्रसर करने का एकमात्र सफल मार्ग है।

201. (C) जेफरी अलेक्जेंडर
जेफरी अलेक्जेंडर को नव-प्रकार्यवाद के प्रणेता के रूप में देखा जाता है क्योंकि उन्होंने पार्सन्स के प्राचीन सिद्धांतों को आधुनिक समाज की आवश्यकताओं के अनुरुप नवीन स्वरूप प्रदान किया। उन्होंने प्रकार्यवाद में व्यक्ति की भूमिका और समाज के संघर्षों को सम्मिलित कर उसे अधिक व्यावहारिक बनाया। अलेक्जेंडर का मानना था कि समाज केवल व्यवस्था अक्षुण्ण रखने का यंत्र नहीं है, बल्कि यह संघर्षों और क्रियाओं का एक गतिशील क्षेत्र है। उनके इस प्रयास ने प्रकार्यवाद को समाजशास्त्र में पुनः एक महत्वपूर्ण स्थान प्रदान किया। यह सिद्धांत अब सामाजिक स्थिरता और परिवर्तन दोनों को एकीकृत रुप में समझने का सुदृढ़ माध्यम बन चुका है।

202. (A) संवादात्मक क्रिया
जुर्गन हेबरमास के अनुसार संवादात्मक क्रिया वह है जहाँ व्यक्ति एक-दूसरे से केवल स्वार्थ हेतु नहीं, बल्कि पारस्परिक समझ निर्मित करने हेतु विमर्श करते हैं। इसका लक्ष्य बिना किसी दबाव के एक ऐसी सहमति तक पहुँचना है जिसे सर्वमान्य स्वीकार किया जाए। यह क्रिया समाज में एकता और सद्भाव अक्षुण्ण रखने हेतु अत्यंत आवश्यक है। हेबरमास का तर्क है कि आधुनिक विश्व में जब बाजार और सत्ता के नियम हमारे संवाद को विकृत करने लगते हैं, तो हमें इसी संवादात्मक क्रिया को सुरक्षित रखना चाहिए। यह मानवीय सभ्यता और लोकतंत्र को जीवित रखने का सर्वाधिक पवित्र और शक्तिशाली माध्यम माना गया है।

203. (D) कथन I गलत है, लेकिन कथन II सही है।
लुई अल्थुसर का मानना था कि विद्यालय कभी भी तटस्थ नहीं होते। वे वैचारिक राज्य तंत्र के रूप में कार्य करते हैं और बालकों के मानस में वही तथ्य प्रविष्ट करते हैं जो शासक वर्ग हेतु अनुकूल हों। कथन II पूर्णतः सत्य है क्योंकि शिक्षा प्रणाली वर्तमान व्यवस्था को उचित सिद्ध करने और उसे भविष्य हेतु सुरक्षित रखने का कार्य करती है। कथन I त्रुटिपूर्ण है क्योंकि विद्यालय कभी निष्पक्ष नहीं रह सकते। वे सदैव समाज की सत्ता संरचना का पोषण करते हैं। इस प्रकार शिक्षा अनजाने में ही बालकों को एक विशिष्ट प्रकार की विचारधारा का अनुसरण करने वाले कर्ता के रूप में निर्मित करती है।

NODIA

220. (A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
नीति आयोग की स्थापना ही सहकारी संघवाद को यथार्थ बनाने हेतु हुई थी। अभिकथन सत्य है क्योंकि यह केंद्र और राज्यों के मध्य सामूहिक कार्य की भावना पर आधारित है। कारण इसकी उचित व्याख्या करता है क्योंकि इसकी शासी परिषद में सभी मुख्यमंत्री सम्मिलित हैं, जिससे राज्यों को राष्ट्रीय नीतियों में अपने विचार प्रस्तुत करने का प्रत्यक्ष और सुदृढ़ अवसर प्राप्त होता है। यह पूर्ववर्ती योजना आयोग से अत्यंत श्रेष्ठ है क्योंकि यहाँ राज्यों को केवल निर्देशित नहीं किया जाता, बल्कि उन्हें विकास का समान भागीदार स्वीकार किया जाता है। यह लोकतांत्रिक व्यवस्था की सुदृढ़ता हेतु अनिवार्य है।

221. (C) लुई अल्थुसर
लुई अल्थुसर ने यह क्रांतिकारी विचार प्रस्तुत किया कि विचारधारा केवल हमारे मस्तिष्क में निवास नहीं करती, बल्कि वह हमें कर्ता या एक सामाजिक भूमिका के रूप में निर्मित करती है। उनके अनुसार, समाज की संस्थाएं जैसे विद्यालय या धार्मिक संस्थान हमें शैशवावस्था से ही यह बोध कराते हैं कि हम कौन हैं और हमें क्या करना चाहिए। इसी को उन्होंने इंटरपेलशन कहा। यह प्रक्रिया इतनी सूक्ष्म होती है कि हमें अनुभव होता है कि हम अपनी स्वेच्छा से निर्णय ले रहे हैं, जबकि वास्तव में हम विचारधारा के सांचे में ढल चुके होते हैं। यह सत्ता के मानसिक नियंत्रण को समझने का गंभीर मार्ग है।

222. (D) भविष्य की पीढ़ियों
सतत विकास का सर्वाधिक मुख्य उद्देश्य यह है कि हम वर्तमान प्रगति के निमित्त भविष्य की क्षति न करें। यह स्वीकार करता है कि पृथ्वी के संसाधन केवल हमारे नहीं हैं, बल्कि ये हमारी आगामी संतानों की धरोहर हैं। यदि हम वर्तमान में संपूर्ण जल प्रदूषित कर देंगे या संपूर्ण वनों का विनाश कर देंगे, तो आगामी पीढ़ियां कैसे जीवन निर्वाह करेंगी? इसलिए यह सिद्धांत प्रतिपादित करता है कि हमें अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति इस प्रकार करनी चाहिए कि प्रकृति का संतुलन अक्षुण्ण रहे। यह आगामी पीढ़ियों के प्रति हमारा एक वृहद नैतिक और मानवीय उत्तरदायित्व है जिसे निर्वहन करना ही वास्तविक मानवता है।

223. (A) झुग्गी-बस्ती
झुग्गी-बस्ती किसी भी नगर का वह भाग है जहाँ विकास की प्रभा नहीं पहुँच पाती। यहाँ की मुख्य पहचान असुरक्षित आवास, अत्यधिक भीड़भाड़ और स्वच्छता का महती अभाव है। इन क्षेत्रों में निवास करने वालों के पास प्रायः अपनी भूमि का कोई वैधानिक अधिकार नहीं होता, जिससे वे सदैव भय में जीवन व्यतीत करते हैं। यह स्थिति नगरीय विकास के उन दोषों को उजागर करती है जहाँ निर्धनों हेतु निवास का कोई सम्मानजनक स्थान उपलब्ध नहीं होता। झुग्गी-बस्तियां समाज की उस आर्थिक खाई को प्रदर्शित करती हैं जहाँ एक ओर गगनचुंबी इमारतें हैं और दूसरी ओर आधारभूत सुविधाओं का घोर अभाव है।

224. (B) धर्म, भाषा और सांस्कृतिक नृजातीयता।
भारतीय बहुलवाद का तात्पर्य है कि यहाँ सहस्त्रों प्रकार की भाषाएं, अनेक धर्म और विविध सांस्कृतिक परंपराएं एक साथ पल्लवित हुई हैं। यह केवल राजनीतिक दलों की संख्या नहीं है, बल्कि समाज के प्रत्येक कोने में उपस्थित विविधता है। यह बहुलवाद ही भारत की वास्तविक पहचान और गौरव है। इसमें प्रत्येक समुदाय को अपनी विशिष्टता अक्षुण्ण रखने का पूर्ण संवैधानिक अधिकार प्राप्त है। राष्ट्र-निर्माण का अर्थ इन सबको समाप्त करना नहीं, बल्कि इनके मध्य एकता का सूत्र अन्वेषित करना है। जब हम इस विविधता का सम्मान करते हैं, तभी हमारा देश सांस्कृतिक रूप से समृद्ध और पूर्णतः एकीकृत बनता है।

NORIA

225. (B) केवल 2 और 3
भारत की धर्मनिरपेक्षता पश्चिमी राष्ट्रों से पूर्णतः भिन्न है। कथन 1 त्रुटिपूर्ण है क्योंकि भारतीय राज्य धर्म से पूर्णतः विच्छिन्न नहीं है। इसके विपरीत कथन 2 और 3 सत्य हैं क्योंकि राज्य धार्मिक संस्थाओं की सहायता भी कर सकता है और यदि धर्म के नाम पर कुछ अनुचित हो रहा हो, जैसे अस्पृश्यता, तो उसमें सुधार हेतु हस्तक्षेप भी कर सकता है। यह सैद्धांतिक दूरी का मॉडल है जहाँ राज्य सभी धर्मों का समान सम्मान करता है किंतु सामाजिक न्याय को सर्वोपरि रखता है। यह लचीलापन ही भारत जैसे विविधतापूर्ण समाज में शांति अक्षुण्ण रखने हेतु सर्वाधिक प्रभावी मार्ग है।

226. (A) वह ज्ञान जिसे कर्ता बताने या शब्दों में व्यक्त करने में सक्षम होते हैं।
एंथनी गिडिन्स के अनुसार विमर्शात्मक चेतना वह क्षमता है जिससे हम अपने कार्यों को विचार-पूर्वक अन्य के सम्मुख स्पष्ट कर सकते हैं। यह व्यावहारिक चेतना से एक सोपान अग्रगामी है। जब हम अपने व्यवहार के पीछे निहित कारणों का विश्लेषण करते हैं या सामाजिक नियमों पर विमर्श करते हैं, तो हम इसी चेतना का उपयोग करते हैं। यह प्रदर्शित करती है कि मनुष्य केवल आदतों का दास नहीं है, बल्कि वह एक सचेत प्राणी है जो अपनी परिस्थितियों पर विचार कर सकता है। यह आत्म-चिंतन की शक्ति ही हमें अपने समाज और जीवन को परिवर्तित करने की वास्तविक सामर्थ्य प्रदान करती है।

227. (C) व्यवस्था और संघर्ष
जेफरी अलेक्ज़ेंडर के नव-प्रकार्यवाद का सर्वाधिक महती योगदान यह है कि उसने समाज को केवल एक शांत और स्थिर व्यवस्था के रूप में देखना विस्मृत कर दिया। उन्होंने स्वीकार किया कि समाज में एकता (व्यवस्था) और द्वंद्व (संघर्ष) दोनों ही अनिवार्य रूप से सह-विद्यमान रहते हैं। प्राचीन प्रकार्यवाद केवल व्यवस्था पर बल देता था, जिससे वह आंशिक सत्य ही प्रदर्शित कर पाता था। नव-प्रकार्यवाद इन दोनों विपरीत शक्तियों को एकीकृत कर समाज की एक अधिक संतुलित और वास्तविक छवि प्रस्तुत करता है। यह दृष्टिकोण हमें यह समझने में सहायता करता है कि समाज कैसे परिवर्तित होता है और संकटों के मध्य भी अपना अस्तित्व कैसे सुरक्षित रखता है।

212. (D) अर्थ में स्थगन और विभेदीकरण की प्रक्रिया।
जैक्स डेरिडा द्वारा प्रतिपादित यह शब्दावली भाषा की उस वास्तविकता को स्पष्ट करती है जहाँ अर्थ कभी भी पूर्ण नहीं होता। एक शब्द का तात्पर्य केवल इसलिए है क्योंकि वह अन्य शब्द से पृथक है (विभेदीकरण), और इसका अंतिम अर्थ सदैव आगामी सोपान पर स्थानांतरित होता रहता है (स्थगन)। भाषा के भीतर अर्थ कभी भी स्थायी रूप से नहीं रुकता। डेरिडा के अनुसार, हम जब भी कुछ अभिव्यक्त करते हैं, उसका संपूर्ण तात्पर्य कभी सम्मुख नहीं आता। यह अवधारणा हमें शिक्षित करती है कि भाषा और सत्य अत्यंत लचीले और अनिश्चित होते हैं, जिन्हें किसी एक निश्चित ढांचे में कभी आबद्ध नहीं किया जा सकता।

213. (C) नीति को गति देने के लिए प्रधानमंत्री कार्यालय के विस्तार के रूप में।
नीति आयोग के मुख्य कार्यकारी अधिकारी की नियुक्ति सीधे प्रधानमंत्री द्वारा किया जाना यह प्रदर्शित करता है कि यह संस्थान सरकार की उच्चतम प्राथमिकताओं से संबद्ध है। यह केवल एक बाह्य परामर्शदाता नहीं है, बल्कि यह सरकार की नीतियों को दिशा प्रदान करने और उन्हें त्वरित गति से क्रियान्वित करने का एक मुख्य केंद्र है। इससे आयोग को वह राजनीतिक बल प्राप्त होता है जो उसके सुझावों को यथार्थ में परिवर्तित करने हेतु अनिवार्य है। यह व्यवस्था नीति निर्माण और उसे धरातल पर उतारने के मध्य की दूरी को न्यून करती है, जिससे सरकारी कार्यपद्धति में अधिक तीव्रता और प्रभावशीलता सुनिश्चित हो सके।

214. (B) औपचारिक विचलन विधि का उल्लंघन करता है; अनौपचारिक प्रथाओं का उल्लंघन करता है।
विचलन के दो रूपों के मध्य का अंतर अत्यंत स्पष्ट है। औपचारिक विचलन वह है जो देश के लिखित कानून का उल्लंघन करता है, जैसे चोरी या प्रहार, जिसके हेतु पुलिस और कारावास का दंड निर्धारित है। दूसरी ओर, अनौपचारिक विचलन केवल समाज के रीति-रिवाजों या शिष्टाचार का उल्लंघन है, जैसे अशिष्ट व्यवहार करना। इसके हेतु कानून दंड नहीं देता, किंतु समाज आपको हीन दृष्टि से देख सकता है या आपका बहिष्कार कर सकता है। यह अंतर हमें यह समझने में सहायता करता है कि समाज कैसे पृथक-पृथक विधियों से हमारे व्यवहार पर नियंत्रण स्थापित करता है।

215. (B) P-4, Q-3, R-1, S-2
समाजशास्त्रीय चिंतन में हेबरमास ने जीवन-जगत के औपनिवेशीकरण का विचार दिया, जहाँ व्यावसायिक तर्क पारस्परिक संवाद को दबा देता है। अल्थुसर ने प्रदर्शित किया कि विचारधारा समाज के पुनरुत्पादन में कितनी महत्वपूर्ण है। गिडिन्स ने संरचना और अभिकर्तृत्व के मध्य के द्वंद्व को समाप्त करने हेतु संरचना की द्वैतता का विचार प्रस्तुत किया। डेरिडा ने सत्य की निश्चितता को चुनौती देने हेतु शब्द-केंद्रिकता की आलोचना की। ये चारों विचारक आधुनिक समाजशास्त्र की आधारशिला के समान हैं, जिन्होंने समाज को देखने और समझने के हमारे प्राचीन दृष्टिकोण को पूर्णतः परिवर्तित कर उसे नवीन गहराई प्रदान की है।

216. (A) एक ऐसी राष्ट्रीय पहचान निर्मित करना जो बहुलवाद को समाहित करती हो।
भारत जैसे विविधतापूर्ण देश में राष्ट्र-निर्माण का सर्वाधिक महती लक्ष्य एक ऐसी एकता निर्मित करना है जिसमें प्रत्येक धर्म और भाषा हेतु सम्मान निहित हो। इसका तात्पर्य यह नहीं है कि सबको एकरूप बना दिया जाए, बल्कि यह है कि सब अपनी विशिष्टता अक्षुण्ण रखते हुए भारतीय होने पर गौरव का अनुभव करें। बहुलवाद को अंगीकार करना ही भारत की सर्वाधिक महती शक्ति है। जब हम प्रत्येक संस्कृति का सम्मान करते हैं, तभी राष्ट्र की जड़ें सुदृढ़ होती हैं। यह समावेशी दृष्टिकोण ही देश को आंतरिक संघर्षों से सुरक्षित रखता है और इसे विकास के मार्ग पर एक साथ अग्रसर होने हेतु प्रेरित करता है।

217. (C) संरचना और अभिकर्तृत्व
समाजशास्त्र में यह अत्यंत प्राचीन विवाद था कि क्या समाज व्यक्ति को संचालित करता है या व्यक्ति समाज को निर्मित करता है। गिडिन्स ने संरचना की द्वैतता के माध्यम से इस विवाद का समाधान किया। उन्होंने स्पष्ट किया कि संरचना और अभिकर्तृत्व दो पृथक विषय नहीं हैं, बल्कि वे एक ही सिक्के के दो पहलू हैं। संरचना नियमों और संसाधनों का समुच्चय है जो हमारी क्रियाओं से निर्मित होती है और उन्हें दिशा भी प्रदान करती है। इस प्रकार व्यक्ति समाज की कठपुतली नहीं है, बल्कि वह अपनी क्रियाओं के माध्यम से सामाजिक व्यवस्था का निर्माता और पुनरुत्पादक दोनों ही भूमिकाओं में रहता है।

218. (A) प्रकार्यवाद
जेफरी अलेक्ज़ेंडर का कार्य प्रकार्यवाद की परंपरा को नवीन जीवन प्रदान करने का एक अत्यंत प्रशंसनीय प्रयास है। उन्होंने पार्सन्स के प्राचीन और कतिपय रूढ़िवादी प्रकार्यवाद को परिवर्तित कर उसमें संघर्ष, व्यक्तिगत आकांक्षा और सांस्कृतिक परिवर्तनों को सम्मिलित किया। इसे नव-प्रकार्यवाद की संज्ञा दी गई है। अलेक्ज़ेंडर ने यह प्रदर्शित किया कि प्रकार्यवाद वर्तमान में भी आधुनिक समाज को समझने हेतु उतना ही प्रासंगिक हो सकता है, यदि उसे थोड़ा लचीला बनाया जाए। उनका यह योगदान समाजशास्त्रीय सिद्धांतों के विकास में एक अत्यंत महत्वपूर्ण मील का पत्थर स्वीकार किया जाता है जिसने प्राचीन विचारों को नवीन गहराई प्रदान की है।

219. (D) कथन I गलत है, लेकिन कथन II सही है।
जुर्गन हेबरमास आधुनिक समाज के संकटों को लेकर अत्यंत चिंतित थे। कथन II पूर्णतः सत्य है क्योंकि वे स्वीकार करते थे कि धन और सत्ता (प्रणाली) हमारे पारस्परिक संवाद (जीवन-जगत) को विनष्ट कर रहे हैं। कथन I त्रुटिपूर्ण है क्योंकि वे भविष्य को लेकर पूर्णतः आशावादी नहीं थे, बल्कि उन्होंने चेतावनी प्रदान की थी कि यदि हम अपने संवाद के क्षेत्र को सुरक्षित नहीं रखेंगे, तो समाज का मानवीय आधार पूर्णतः विनष्ट हो जाएगा। उनका यह सिद्धांत हमें बाजार और राजनीति के उन अदृश्य दबावों के प्रति सचेत करता है जो हमारे सामाजिक संबंधों की मधुरता को शनैः-शनैः समाप्त कर रहे हैं।

Downloaded from www.pdf.tube

किया, जबकि अन्य विचारकों ने सत्ता, भाषा और सामाजिक संघर्षों के अधिक गंभीर पहलुओं का विश्लेषण किया। इसलिए अलेक्जेंडर इन शेष विचारकों से सर्वथा पृथक श्रेणी में आते हैं। उनका संपूर्ण ध्यान प्रकार्यवाद को समकालीन विश्व हेतु अधिक प्रासंगिक और उपयोगी बनाने पर केंद्रित रहा है।

237. (C) उत्तर-आधुनिकतावाद
उत्तर-आधुनिकतावाद का यह मानना है कि हम विश्व को वैसा नहीं देखते जैसा वह वास्तव में है, बल्कि वैसा देखते हैं जैसा हमारी भाषा और समाज हमें प्रदर्शित करते हैं। उनके अनुसार, सत्य कुछ और नहीं बल्कि शब्दों और विमर्शों का एक खेल मात्र है। समाज की प्रत्येक संस्था और प्रत्येक विचार भाषा के माध्यम से ही स्थापित हुआ है। इसलिए वे किसी भी एक परम सत्य को अंगीकार नहीं करते और प्रत्येक विचार को संदेह की दृष्टि से देखते हैं। यह दृष्टिकोण हमें यह समझने में सहायता करता है कि कैसे हमारे विचार और हमारी संपूर्ण वास्तविकता सामाजिक रूप से निर्मित होती है और कैसे उसे परिवर्तित भी किया जा सकता है।

238. (D) कथन I गलत है, लेकिन कथन II सही है।
गिडिन्स ने कभी यह स्वीकार नहीं किया कि मनुष्य समाज के नियमों के अधीन एक पुतली मात्र है। कथन I त्रुटिपूर्ण है क्योंकि वे मनुष्यों को अत्यंत विवेकशील और जागरूक कर्ता स्वीकार करते हैं। कथन II पूर्णतः सत्य है क्योंकि गिडिन्स का तर्क है कि हम जो भी कार्य निष्पादित करते हैं, उस पर स्वयं निगरानी रखते हैं और आवश्यकतानुसार उसमें परिवर्तन भी करते हैं। इसे उन्होंने प्रतीकात्मक निगरानी की संज्ञा दी है। मनुष्य अपनी बुद्धि से सामाजिक परिस्थितियों को समझता है और उसी के अनुरूप अपना व्यवहार निर्धारित करता है। यह गिडिन्स के सिद्धांत की महती विशेषता है जो मानव स्वतंत्रता का सम्मान करती है।

239. (A) सैन्य
लुई अल्थुसर के अनुसार सैन्य बल दमनकारी राज्य तंत्र का सर्वाधिक वृहद उदाहरण है। इसका कार्य भयभीत करना और शारीरिक शक्ति के माध्यम से कानून क्रियान्वित करना है। जब व्यक्ति अनुनय या संवाद से सहमत नहीं होते, तब राज्य सेना या पुलिस का अवलंबन लेता है। इसके विपरीत, परिवार और मीडिया वैचारिक तंत्र हैं जो हमारे मानस को परिवर्तित करते हैं। दमनकारी तंत्रों का प्रयोग राज्य तभी करता है जब उसकी सत्ता संकट में होती है और वैचारिक नियंत्रण शिथिल पड़ने लगता है। सैन्य बल का मुख्य कार्य किसी भी विद्रोह का दमन करना और देश की व्यवस्था को बलपूर्वक सुरक्षित रखना होता है।

240. (B) क्षेत्रीय असमानता
क्षेत्रीय असमानता उस कारुणिक स्थिति को कहते हैं जहाँ देश का एक भाग तो अत्यंत समृद्ध और विलासी है, किंतु दूसरा भाग निर्धनता और पिछड़ेपन में निमग्न है। यह असंतुलन तब प्रादुर्भूत होता है जब संसाधनों और उद्योगों का वितरण समान नहीं होता। इससे समाज में तनाव व्याप्त होता है क्योंकि पिछड़े क्षेत्रों के निवासियों को अनुभव होता है कि उनके साथ पक्षपातपूर्ण व्यवहार हो रहा है। एक सुदृढ़ भारत हेतु यह अत्यंत आवश्यक है कि प्रत्येक राज्य और प्रत्येक क्षेत्र में समान रूप से विद्यालय, चिकित्सालय और रोजगार उपलब्ध हों। संतुलित विकास ही राष्ट्रीय एकता और शांति की सुदृढ़तम नींव है।

241. (B) राज्यों को बाध्यकारी वित्तीय आवंटन करना।
नीति आयोग की सर्वाधिक महती सीमा यह है कि वह राज्यों को बजट की राशि प्रदान नहीं कर सकता। यह पूर्ववर्ती योजना आयोग का कार्य था, जिसे अब समाप्त कर दिया गया है। नीति आयोग की मुख्य भूमिका केवल परामर्श देने और राज्यों के मध्य श्रेष्ठ सामंजस्य स्थापित करने की है। यह केंद्र और राज्यों को विकास हेतु नवीन विचार प्रदान करता है और सरकारी योजनाओं के प्रभाव पर दृष्टि रखता है। वित्तीय निर्णय लेने की शक्ति अब केवल वित्त मंत्रालय के पास निहित है। अतः नीति आयोग एक रणनीतिक परामर्शदाता की भाँति कार्य करता है, जो देश के विकास हेतु बौद्धिक मार्ग प्रशस्त करता है।

242. (A) अपने सम्मानित व्यवसाय के दौरान।
श्वेत-वसन अपराध की मुख्य विशेषता यह है कि इसे समाज के वे व्यक्ति संपन्न करते हैं जिन पर हम सर्वाधिक विश्वास करते हैं। ये अपराधी उच्च पदों पर आसीन शिक्षित व्यक्ति होते हैं, जो अपने कार्यालयीन कार्यों के दौरान वृहद हेराफेरी या धोखाधड़ी करते हैं। चूंकि वे सम्मानित व्यवसायों से संबंद्ध होते हैं, इसलिए प्रायः उनके अपराध शीघ्र संज्ञान में नहीं आते। ये अपराधी हिंसक नहीं होते, किंतु इनके द्वारा किए गए आर्थिक घोटाले समाज को अत्यंत गंभीर क्षति पहुँचाते हैं। यह दर्शाता है कि पद और धन किसी को अनैतिक बनने से पूर्णतः विमुख नहीं कर सकते।

NODIA

243. (C) वैश्वीकरण और सूचना प्रौद्योगिकी का उदय।
वर्तमान विश्व में तकनीक और वैश्वीकरण ने अपराध क्रियान्वयन की विधियों को पूर्णतः परिवर्तित कर दिया है। अब अपराधी इंटरनेट का प्रयोग कर बिना किसी शारीरिक हिंसा के वृहद चोरियाँ और धोखाधड़ी कर रहे हैं। साइबर अपराध और अंतरराष्ट्रीय संगठित अपराध अब एक महती चुनौती बन गए हैं क्योंकि वे किसी भी भौगोलिक सीमा को स्वीकार नहीं करते। तकनीक ने अपराधियों को नवीन मार्ग और नवीन सामर्थ्य प्रदान की है जिससे वे अदृश्य होकर कार्य कर सकते हैं। यह परिवर्तन हमें बोध कराता है कि हमें सुरक्षा के प्राचीन उपायों को त्यागकर अब और अधिक तकनीकी रूप से उन्नत रहने की आवश्यकता है।

244. (D) आत्महत्या और व्यापक सामाजिक कारकों के बीच संबंध पर।
समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण से आत्महत्या केवल एक निजी निर्णय नहीं है, बल्कि इसके पीछे समाज की वृहद शक्तियों का योगदान होता है। एमिल दुर्खीम ने स्पष्ट किया कि जब समाज में आकस्मिक वृहद परिवर्तन होते हैं या जब व्यक्ति स्वयं को समाज से पृथक अनुभव करते हैं, तो आत्महत्या की दरें बढ़ जाती हैं। यह विश्लेषण व्यक्ति के संताप को संपूर्ण समाज के ढांचे और उसकी सुदृढ़ता के साथ एकीकृत करके देखता है। यह अध्ययन हमें यह समझने में सहायता करता है कि एक स्वस्थ समाज वही है जहाँ व्यक्ति पारस्परिक रूप से संबंद्ध हों

228. (D) नागरिकों के बीच तर्कसंगत-आलोचनात्मक वाद-विवाद।
हेबरमास के अनुसार सार्वजनिक क्षेत्र वह स्थान है जहाँ नागरिक मिलकर सरकारी नीतियों और समाज की समस्याओं पर मुक्त एवं निष्पक्ष विमर्श करते हैं। यह क्षेत्र लोकतंत्र का हृदय है क्योंकि यहीं से जनमत निर्मित होता है। यहाँ विमर्श का आधार केवल तर्क होना चाहिए, न कि किसी की शक्ति या धन। जब नागरिक अपनी व्यक्तिगत चिंताओं का परित्याग कर संपूर्ण समाज के कल्याण हेतु चिंतन और संवाद करते हैं, तभी एक स्वस्थ लोकतंत्र का प्रादुर्भाव होता है। आधुनिक युग में इस क्षेत्र की रक्षा करना अत्यंत अनिवार्य है ताकि नागरिकों का स्वर सत्ता के गलियारों में सुदृढ़ता से पहुँच सके।

229. (C) भेद और स्थगन द्वारा उत्पन्न संकेत।
जैक्स डेरिडा का मानना था कि भाषा में कोई भी शब्द अपने आप में पूर्ण नहीं होता। उसका तात्पर्य केवल इसलिए है क्योंकि वह अन्य शब्दों से पृथक है, और उसका संपूर्ण अर्थ सदैव अपूर्ण रहता है। इसे उन्होंने डिफ़ेरांस की संज्ञा दी। उनके अनुसार, जब हम कुछ अभिव्यक्त करते हैं, उसका अर्थ सदैव आगामी सोपान पर स्थानांतरित होता रहता है और कभी भी पूर्णतः अधिकृत नहीं होता। यह चिंतन इस तथ्य को चुनौती प्रदान करता है कि सत्य को भाषा के माध्यम से पूर्णतः अभिव्यक्त किया जा सकता है। डेरिडा के ये विचार हमें शब्दों के पीछे प्रच्छन्न अनगिनत अर्थों और संभावनाओं के अन्वेषण हेतु प्रेरित करते हैं।

230. (B) क्षेत्रीय असमानता को न्यून करना
जब सरकार किसी पिछड़े क्षेत्र में उद्योगों या विद्यालयों की स्थापना हेतु विशेष प्रयास करती है, तो उसका उद्देश्य क्षेत्रीय असमानता का उन्मूलन करना होता है। यह अनिवार्य है क्योंकि यदि विकास केवल एक ही स्थान पर केंद्रित हो जाएगा, तो देश के अन्य भागों के निवासी निर्धन और असंतुष्ट रह जाएंगे। संतुलित विकास ही राष्ट्र की एकता का आधार है। जब पिछड़े क्षेत्रों में भी अवसर उपलब्ध होते हैं, तो वहाँ के निवासियों का जीवन स्तर परिष्कृत होता है और पलायन न्यून होता है। यह प्रयास संपूर्ण राष्ट्र को आर्थिक और सामाजिक रूप से सुदृढ़ बनाने हेतु अत्यंत अनिवार्य सोपान माना जाता है।

231. (D) लिखित विधि का उल्लंघन।
विचलन और अपराध के मध्य की विभाजक रेखा अत्यंत स्पष्ट है। समाज में अनेक ऐसे विषय हैं जो व्यक्तियों को अनुचित प्रतीत हो सकते हैं या जो प्रथाओं के विरुद्ध हो सकते हैं, उन्हें हम विचलन कहते हैं। किंतु जब कोई ऐसा कार्य संपन्न किया जाए जो देश के लिखित कानून में प्रतिबंधित किया गया है, तभी उसे अपराध स्वीकार किया जाता है। अपराध हेतु पुलिस और न्यायालय औपचारिक दंड प्रदान करते हैं। यह लिखित कानून ही समाज में यह निर्धारित करता है कि किस व्यवहार हेतु आपको कारावास हो सकता है और किस व्यवहार हेतु केवल सामाजिक आलोचना का सामना करना पड़ेगा।

232. (A) डिजिटल युग में अपराध की बदलती रूपरेखा।
ऑनलाइन धोखाधड़ी और डेटा की चोरी यह प्रदर्शित करती है कि अपराधी अब कंप्यूटर और इंटरनेट का उपयोग कर नवीन विधियों से जनसामान्य को लूट रहे हैं। यह अपराध की परिवर्तित रूपरेखा का एक भयावह यथार्थ है। इसमें अपराधी प्रायः अदृश्य रहते हैं और विश्व के किसी भी कोने से अपना कार्य निष्पादित कर सकते हैं। यह पारंपरिक चोरियों से अत्यंत पृथक है क्योंकि इसमें सहस्त्रों व्यक्तियों को एक साथ लक्षित किया जा सकता है। यह परिवर्तन हमें सचेत करता है कि हमें अपनी सुरक्षा हेतु अब अधिक तकनीकी रूप से जागरूक और डिजिटल रूप से पूर्णतः सतर्क रहने की महती आवश्यकता है।

233. (C) नीति थिंक टैंक
नीति आयोग भारत सरकार का एक मुख्य नीतिगत विशेषज्ञ निकाय है जिसका कार्य योजनाओं को क्रियान्वित करना नहीं, बल्कि उनके हेतु श्रेष्ठ विचार और सुझाव प्रदान करना है। यह विशेषज्ञों का एक ऐसा समूह है जो डेटा और शोध के आधार पर देश के भविष्य हेतु नीतियां निर्मित करता है। यह पूर्ववर्ती योजना आयोग से भिन्न है क्योंकि यह राज्यों के साथ मिलकर कार्य करता है और उन पर नियम आरोपित नहीं करता। इसका मुख्य लक्ष्य विकास की गति को त्वरित करने हेतु सरकार को रणनीतिक परामर्श देना और नवाचार को प्रोत्साहित करना है। यह आधुनिक भारत के निर्माण में एक मार्गदर्शक के रूप में वृहद भूमिका निभाता है।

234. (A) विकास-प्रेरित विस्थापन
जब राजमार्ग या वृहद उद्योगों हेतु व्यक्तियों को उनकी भूमि और आवासों से निष्कासित किया जाता है, तो उसे विकास-प्रेरित विस्थापन कहते हैं। यह प्रायः उन व्यक्तियों हेतु एक महती विपत्ति बन जाता है जिनकी संपूर्ण जीवन पद्धति उस भूमि से संबंद्ध होती है। यद्यपि इसे राष्ट्र की प्रगति हेतु अनिवार्य प्रतिपादित किया जाता है, किंतु विस्थापित होने वाले परिवारों हेतु यह एक गंभीर सामाजिक और आर्थिक संकट है। आर्थिक प्रतिपूर्ति प्राप्त होने के उपरांत भी उनका प्राचीन समुदाय और संस्कृति पुनः प्राप्त नहीं हो पाती। अतः ऐसे व्यक्तियों का समुचित पुनर्वास करना सरकार का महती उत्तरदायित्व है।

235. (D) भारत में सामाजिक परिवर्तन और विकास।
भारत में सामाजिक परिवर्तन का तात्पर्य प्राचीन वस्तुओं का परित्याग करना नहीं है। यहाँ प्रायः देखा जाता है कि व्यक्ति अपनी परंपराओं का उपयोग आधुनिक लक्ष्यों की प्राप्ति हेतु करते हैं। उदाहरण स्वरूप, निर्वाचन जीतने हेतु जातीय संबंधों का उपयोग करना या व्यवसाय विस्तार हेतु धार्मिक उत्सवों का अवलंबन लेना। यह समन्वय ही भारतीय समाज की वास्तविक शक्ति है जहाँ परंपरा और आधुनिकता एक-दूसरे से संघर्ष के स्थान पर मिलकर कार्य करते हैं। यह अध्ययन हमें यह समझने में सहायता करता है कि भारत ने कैसे अपनी सांस्कृतिक पहचान सुरक्षित रखते हुए विश्व के साथ कदम मिलाने का मार्ग अन्वेषित किया है।

236. (B) जेफरी अलेक्जेंडर
जेफरी अलेक्जेंडर का नाम मुख्य रूप से नव-प्रकार्यवाद के साथ संबंद्ध है, जो समाज की व्यवस्था और स्थिरता पर ध्यान केंद्रित करता है। इसके विपरीत, लुई अल्थुसर नव-मार्क्सवादी हैं और डेरिडा उत्तर-संरचनावादी। हेबरमास आलोचनात्मक सिद्धांत के वृहद विचारक हैं। अलेक्जेंडर ने पार्सन्स के विचारों में परिमार्जन

Click Here to Buy book on Amazon

253. (C) स्वयं की प्रतीकात्मक परियोजना
एंथनी गिडिन्स के अनुसार, आधुनिक विश्व में हमारी पहचान पूर्व-निर्धारित नहीं होती, बल्कि हमें उसे स्वयं निर्मित करना पड़ता है। हम निरंतर अपने अनुभवों और समाज से प्राप्त सूचनाओं के आधार पर यह निर्धारित करते हैं कि हम कौन हैं और हमें कैसा स्वरूप धारण करना है। इसी को उन्होंने स्वयं की प्रतीकात्मक परियोजना कहा है। यह एक निरंतर चलने वाली प्रक्रिया है जहाँ हम अपने व्यक्तित्व को परिष्कृत करते हैं और परिवर्तित विश्व के साथ स्वयं को अनुकूलित करते हैं। यह दर्शाता है कि आधुनिक मनुष्य केवल परंपराओं का अनुगामी नहीं है, बल्कि वह अपनी पहचान का सचेत निर्माता है।

254. (D) इनसाइडर ट्रेडिंग, जो एक प्रकार का श्वेत-वसन अपराध है।
इनसाइडर ट्रेडिंग एक गंभीर आर्थिक अपराध है जहाँ प्रतिष्ठान का कोई जानकार प्रच्छन्न सूचनाओं का लाभ उठाकर शेयर बाजार में अनैतिक रूप से धन अर्जित करता है। इसे श्वेत-वसन अपराध कहा जाता है क्योंकि यह समाज के शिक्षित और सम्मानित पेशेवरों द्वारा संपन्न किया जाता है। इसमें कोई शारीरिक हिंसा नहीं होती, किंतु यह निवेशकों के विश्वास और बाजार की ईमानदारी को अत्यंत गंभीर क्षति पहुँचाता है। ऐसे अपराधों से संपूर्ण अर्थव्यवस्था की विश्वसनीयता धूमिल होती है। यह पद और सूचना के दुरुपयोग का अत्यंत चालाकी पूर्ण दृष्टांत है जिसे कानून द्वारा सख्ती से प्रतिबंधित किया गया है।

255. (A) केवल 1
समाजशास्त्र में विचलन एक अत्यंत व्यापक अवधारणा है जिसके अंतर्गत वे सभी कार्य आते हैं जो समाज के नियमों के प्रतिकूल हैं। अपराध केवल उस विचलन का वह भाग है जिसके हेतु देश के कानून ने दंड निर्धारित किया है। इसलिए प्रत्येक अपराध एक विचलन है, किंतु समाज के प्रत्येक अनुचित व्यवहार हेतु पुलिस आपको बंदी नहीं बना सकती। उदाहरण स्वरूप, बड़ों का सम्मान न करना विचलन हो सकता है, किंतु यह अपराध नहीं है। नियम और कानून काल के साथ परिवर्तित होते रहते हैं, इसलिए विचलन की परिभाषा भी समाज की सोच के साथ निरंतर परिवर्तित और विकसित होती रहती है।

256. (B) सांस्कृतिक समझ और संवादात्मक प्रक्रियाएं।
हेबरमास के अनुसार जीवन-जगत वह आधार है जिस पर हमारे संपूर्ण सामाजिक संबंध स्थापित होते हैं। इसमें हमारी भाषा, साझा मूल्य और प्राचीन परंपराएं सम्मिलित होती हैं। इसी के माध्यम से हम पारस्परिक संवाद करते हैं और समाज में एकता अक्षुण्ण रखते हैं। यहाँ मुख्य पक्ष पारस्परिक समझ है, न कि कोई स्वार्थ। यह क्षेत्र हमें एक व्यक्ति के रूप में पहचान प्रदान करता है और हमें समाज का अंग निर्मित करता है। हेबरमास का मानना है कि जीवन-जगत ही वह स्थान है जहाँ वास्तविक मानवीय स्वतंत्रता और भ्रातृत्व पल्लवित होता है, इसलिए इसकी सुरक्षा करना समाज हेतु अनिवार्य है।

257. (B) इतिहास और समाज की व्याख्या करने वाला एक सार्वभौमिक सिद्धांत।
उत्तर-आधुनिकतावादी वृहद आख्यान उन वृहद दावों को कहते हैं जो संपूर्ण विश्व को एक ही सूत्र से समझाने का प्रयास करते हैं, जैसे कि यह दावा कि विज्ञान ही संपूर्ण समस्याओं का समाधान कर देगा या मार्क्सवाद ही समाज की रक्षा करेगा। विचारकों का तर्क है कि ये वृहद सिद्धांत प्रायः व्यक्तियों के निजी अनुभवों और स्थानीय यथार्थों को दबा देते हैं। वे स्वीकार करते हैं कि विश्व अत्यंत विखंडित है और इसे किसी एक वृत्तांत में आबद्ध नहीं किया जा सकता। इसलिए वे किसी भी एक वृहद सत्य के स्थान पर अनेक लघु और विविध सत्यों को अधिक महत्व और सम्मान प्रदान करते हैं।

NODIA

258. (A) केंद्र सरकार के साथ राज्यों की भागीदारी को बढ़ावा देना।
नीति आयोग का टीम इंडिया हब एक सेतु की भाँति कार्य करता है जो केंद्र सरकार और राज्यों को पारस्परिक रूप से एकीकृत करता है। इसका मुख्य कार्य यह सुनिश्चित करना है कि विकास के संदर्भ में राज्यों के स्वर को दिल्ली में सुना जाए और उन्हें नीति निर्माण में समान अधिकार प्राप्त हो। यह सहकारी संघवाद की भावना को यथार्थ करने का एक माध्यम है। जब केंद्र और राज्य एक टीम की भाँति मिलकर कार्य करते हैं, तभी देश की वृहद समस्याओं का निराकरण होता है। यह हब पारस्परिक सहयोग, विश्वास और साझेदारी को सुदृढ़ करने हेतु एक अत्यंत महत्वपूर्ण और प्रभावी मंच माना गया है।

259. (A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं, और कथन II, कथन I की सही व्याख्या है।
विकास के नाम पर होने वाला विस्थापन प्रायः समाज के सर्वाधिक निर्धन और असहाय व्यक्तियों जैसे आदिवासियों और ग्रामीणों को ही लक्षित करता है। अभिकथन सत्य है क्योंकि ये समूह सर्वाधिक प्रभावित होते हैं। कारण भी पूर्णतः सत्य है क्योंकि इन व्यक्तियों के पास अपनी आवाज उठाने या वैधानिक संघर्ष करने हेतु न तो वित्त होता है और न ही राजनीतिक पहुँच। इसलिए वृहद उद्योगों या बांधों हेतु उनकी भूमि अधिगृहीत करना सुलभ हो जाता है। यह विकास की प्रक्रिया में निहित उस गंभीर अन्याय को उजागर करता है जहाँ निर्धनों का उत्सर्ग कर संपन्न वर्गों की सुख-सुविधाओं को संवर्धित किया जाता है।

260. (D) अपचार
जब कोई बालक या किशोर कानून का उल्लंघन करता है, तो उसे अपराधी संबोधित करने के स्थान पर अपचारी कहा जाता है। कानून और समाज यह स्वीकार करते हैं कि बालकों में वयस्कों जैसी बोध क्षमता नहीं होती और उन्हें परिष्कृत किया जा सकता है। इसलिए उनके हेतु कारागार के स्थान पर सुधार गृह निर्मित किए गए हैं। इसका उद्देश्य उन्हें दंडित करना नहीं, बल्कि उन्हें संवेदना और शिक्षा के माध्यम से एक श्रेष्ठ व्यक्ति बनाना है। यह दृष्टिकोण समाज की उस मानवीय सोच को प्रदर्शित करता है जो मानती है कि बाल्यकाल की त्रुटियों को सुधारकर किसी भी बालक के भविष्य को पुनः उज्ज्वल बनाया जा सकता है।

261. (C) आदर्शवाद की ओर झुकाव और भौतिक स्थितियों की उपेक्षा।
जेफरी अलेक्जेंडर ने पार्सन्स के प्राचीन सिद्धांत में यह त्रुटि पाई कि वह समाज की यथार्थ सच्चाइयों और संघर्षों की उपेक्षा कर केवल उच्च आदर्शों और व्यवस्था की स्थिरता की चर्चा

स्वीकृति।
(C) 73वें संशोधन का सफल और प्रभावी क्रियान्वयन।
(D) गांव में सामाजिक और आर्थिक समानता का उच्च स्तर।

9. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है।
अभिकथन (A): जजमानी प्रथा पारंपरिक भारतीय गांवों में पारस्परिक आर्थिक और सामाजिक संबंधों का एक उदाहरण है।
कारण (R): यह प्रणाली जजमान और कमिन के बीच सेवाओं के सममित और समान विनिमय पर आधारित थी।
(A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सही है लेकिन R गलत है।
(D) A गलत है लेकिन R सही है।

10. निम्नलिखित परिदृश्य को पढ़ें और उसके बाद आने वाले प्रश्न का उत्तर दें।
एक गांव पर नए राजमार्ग के प्रभाव का अध्ययन करने वाले एक समाजशास्त्री ने पाया कि जहां कुछ किसानों को बाजार तक बेहतर पहुंच से लाभ होता है, वहीं नगर के सामानों से प्रतिस्पर्धा के कारण कई छोटे कारीगर अपनी आजीविका खो देते हैं। यह प्रक्रिया, जहां कुछ को लाभ होता है और अन्य अपना पारंपरिक आर्थिक आधार खो देते हैं, किस अवधारणा का अनुप्रयोग है?
(A) ग्रामीण परिवर्तन का विभेदित प्रभाव
(B) ग्रामीण-नगरीय सातत्य
(C) सामाजिक एकजुटता
(D) ग्रामीण संस्कृति का समरूपीकरण

11. 73वें संशोधन से पहले की पारंपरिक पंचायती राज व्यवस्था के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. यह नियमित चुनावों के साथ संवैधानिक रूप से अनिवार्य थी।
2. इसमें अक्सर वित्तीय स्वायत्तता का अभाव था और यह राज्य सरकारों पर निर्भर थी।
3. इसमें महिलाओं या अनुसूचित जातियों/जनजातियों के लिए सीटों के आरक्षण का प्रावधान नहीं था।

ऊपर दिए गए कथनों में से कौन से सही हैं?
(A) केवल 1 और 2
(B) केवल 2 और 3
(C) केवल 1 और 3
(D) 1, 2 और 3

12. जजमानी प्रथा में 'जजमान' शब्द का अर्थ है:
(A) सेवा प्रदान करने वाला जाति समूह।
(B) भूस्वामी संरक्षक जो सेवाएँ प्राप्त करता है।
(C) ग्राम प्रधान जो विवादों की मध्यस्थता करता है।
(D) मौसमी आधार पर काम करने वाला प्रवासी मजदूर।

13. निम्नलिखित में से किसे छोड़कर अन्य सभी को आमतौर पर एक 'कृषक' की विशेषता माना जाता है:
(A) जिस भूमि पर वे खेती करते हैं, उस पर स्वामित्व या पट्टे के माध्यम से नियंत्रण होना।
(B) खेती के लिए मुख्य रूप से पारिवारिक श्रम का उपयोग करना।
(C) मुख्य रूप से बाजार में बिक्री और लाभ को अधिकतम करने के लिए उत्पादन करना।
(D) एक बड़े राज्य समाज का हिस्सा होना और उसकी मांगों के अधीन होना।

14. ग्रामीण संदर्भ में 'कंगालीकरण' का प्राथमिक कारण क्या है?
(A) कृषि उत्पादकता में अचानक वृद्धि।
(B) भूमि सुधार अधिनियमों का सफल क्रियान्वयन।
(C) पारंपरिक जजमानी प्रथा का विस्तार।
(D) परिसंपत्तियों की प्रगतिशील हानि और अत्यधिक निर्धनता।

15. ग्रामीण शासन के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए।
कथन I: 73वें संविधान संशोधन अधिनियम का उद्देश्य ग्रामीण भारत में स्थानीय स्वशासन को सशक्त बनाना था।
कथन II: इस संशोधन की एक मुख्य विशेषता पंचायती राज व्यवस्था की आधारशिला के रूप में ग्राम सभा का गठन था।
(A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
(B) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।
(C) कथन I सही है, लेकिन कथन II गलत है।
(D) कथन I गलत है, लेकिन कथन II सही है।

16. निम्नलिखित में से कौन समकालीन ग्रामीण समाज में परिवर्तन की एक प्रमुख प्रवृत्ति की सही पहचान करता है?
(A) कृषि से हटकर व्यावसायिक विविधीकरण में कमी।
(B) ग्रामीण से नगरीय क्षेत्रों में प्रवास में वृद्धि।
(C) पारंपरिक जजमानी संबंधों का मजबूत होना।
(D) कृषि में तकनीक के उपयोग में गिरावट।

17. भारतीय कृषि में 'उत्पादन की पद्धति' पर बहस मुख्य रूप से इस बात पर केंद्रित है कि क्या कृषि अर्थव्यवस्था को इस रूप में चित्रित किया जा सकता है:
(A) आदिम-सामुदायिक या समाजवादी।
(B) सामंती, अर्ध-सामंती, या पूंजीवादी।
(C) चरवाहा या बागवानी आधारित।
(D) जजमानी आधारित या वस्तु विनिमय आधारित।

18. कृषि संस्थानों के संदर्भ में निम्नलिखित में से कौन सी भूमि स्वामित्व की प्रणाली नहीं है?
(A) निगम स्वामित्व
(B) व्यक्तिगत स्वामित्व
(C) सामुदायिक स्वामित्व
(D) राजकीय स्वामित्व

Downloaded from www.pdf.tube

है और तदुपरांत उनके आधार पर राष्ट्रीय योजनाएं निर्मित की जाती हैं। यह परिवर्तन अनिवार्य था क्योंकि भारत जैसे विशाल राष्ट्र में एक ही नियम सर्वत्र प्रभावी नहीं हो सकता। यह नवीन विधि अधिक लोकतांत्रिक और प्रभावी है क्योंकि यह स्थानीय आवश्यकताओं को दृष्टिगत रखकर विकास की नवीन राहें निर्मित करती है।

270. (D) क्षेत्रीय असमानता और प्रणालीगत असमानता।
जब एक ही नगर में अत्यधिक विलासिता और कारुणिक निर्धनता साथ-साथ दृष्टिगोचर होती है, तो यह हमारे विकास मॉडल की विफलता प्रदर्शित करती है। यह दर्शाता है कि हमारी व्यवस्था में धन और सुविधाएं कुछ ही व्यक्तियों तक सीमित होकर रह गई हैं, जबकि करोड़ों व्यक्ति आज भी आधारभूत आवश्यकताओं हेतु संघर्षरत हैं। इसे प्रणालीगत असमानता कहते हैं क्योंकि यह समाज के ढांचे में ही गहराई से व्याप्त है। यह स्थिति सामाजिक न्याय के दावों पर एक महती प्रश्नचिह्न उपस्थित करती है। वास्तविक प्रगति तभी स्वीकार की जाएगी जब विकास का लाभ प्रत्येक झुग्गी-बस्ती तक अपनी पहुँच सुनिश्चित करने में सफल हो।

271. (A) जानकार कर्ता
एंथनी गिडिन्स का मानना है कि मनुष्य कोई निर्जीव वस्तु नहीं है, बल्कि वह एक जानकार कर्ता है जो बोध रखता है कि वह क्या कर रहा है। हमारे पास समाज को संचालित करने का एक गंभीर और अंतर्निहित ज्ञान होता है, जिसे हम अपनी आदतों में प्रयुक्त करते हैं। हम केवल नियमों का अनुपालन करने वाले यंत्र नहीं हैं, बल्कि हम अपनी बुद्धि से उन नियमों को अर्थ प्रदान करते हैं। यह चिंतन मनुष्य को एक गरिमामय स्थान प्रदान करता है क्योंकि यह स्पष्ट करता है कि हमारे पास अपने समाज को समझने और उसे अपनी इच्छा के अनुरूप परिवर्तित करने की पूर्ण शक्ति और योग्यता सदैव उपस्थित रहती है।

272. (B) प्रकार्यवादी विचार को पुनर्गठित करने के लिए एक व्यापक संश्लेषित कार्यक्रम।
जेफरी अलेक्जेंडर ने अनुभव किया कि प्रकार्यवाद को आधुनिक बनाने हेतु उसे अन्य सिद्धांतों के साथ एकीकृत करना आवश्यक है। इसी कारण उन्होंने नव-प्रकार्यवाद को एक संश्लेषण निर्मित किया, जहाँ वे व्यवस्था के साथ-साथ संघर्ष और व्यक्तिगत अभिकर्तृत्व को भी स्थान प्रदान करते हैं। उनका यह कार्यक्रम प्रकार्यवाद को प्राचीन रूढ़ियों से निष्कासित कर उसे एक नवीन ऊर्जा और व्यापकता प्रदान करता है। यह सिद्धांत समाज को केवल एक यंत्र की भाँति नहीं, बल्कि एक जीवंत और परिवर्तित होती व्यवस्था के रूप में देखता है। अलेक्जेंडर के इस प्रयास ने समाजशास्त्रीय चिंतन में एक नवीन और प्रभावी संतुलन स्थापित करने का कार्य किया है।

273. (B) जुर्गन हेबरमास
वैधता का संकट वह स्थिति है जब सरकार जनसामान्य का विश्वास खो देती है, और यह अवधारणा जुर्गन हेबरमास ने प्रतिपादित की थी। उनका मत था कि जब राज्य वृहद आश्वासन देता है किंतु उन्हें पूर्ण करने में असमर्थ रहता है, तो जनसामान्य उसकी सत्ता पर प्रश्नचिह्न उपस्थित करने लगते हैं। आधुनिक समाज में जब आर्थिक संकट बढ़ते हैं, तो यह संकट और अधिक गहरा हो जाता है। हेबरमास का यह विचार हमें यह समझने में सहायता करता है कि किसी भी शासन की वास्तविक शक्ति केवल सैन्य बल नहीं, बल्कि वह विश्वास है जो जनता अपने शासकों पर करती है। विश्वास का खंडन ही राज्य हेतु सर्वाधिक महती संकट है।

274. (D) कथन I गलत है, लेकिन कथन II सही है।
विखंडन का प्रयोजन कभी भी किसी एक अंतिम सत्य की प्राप्ति नहीं होता, जो कथन I के पूर्णतः विपरीत है। इसके विपरीत, कथन II सत्य है क्योंकि जैक्स डेरिडा ने प्रदर्शित किया कि प्रत्येक विचार के भीतर कुछ न कुछ अपूर्ण और विरोधाभासी निहित होता है। विखंडन हमें शिक्षित करता है कि हम शब्दों के प्रच्छन्न अर्थों को पहचानें और उन पदानुक्रमों को खंडित करें जिन्हें समाज ने हम पर आरोपित कर दिया है। यह पद्धति सत्य की निश्चितता को समाप्त कर हमें विचारों की एक ऐसी दुनिया में ले जाती है जहाँ प्रत्येक विषय के अनेक अर्थ संभव हो सकते हैं और जो पूर्णतः स्वतंत्र होती है।

275. (B) P-3, Q-1, R-4, S-2
एक बालक द्वारा दीवार को अस्वच्छ करना अपचार है, क्योंकि यह अल्पायु की त्रुटि है। राज्यों के मध्य साक्षरता का अंतर क्षेत्रीय असमानता को प्रदर्शित करता है। रिश्वत ग्रहण करना भ्रष्टाचार है जो पद का दुरुपयोग है। अनेक धर्मों का सह-अस्तित्व बहुलवाद है जो हमारी सांस्कृतिक सुदृढ़ता है। ये चारों तथ्य हमें यह समझने में सहायता करते हैं कि समाज के पृथक-पृथक भागों में किस प्रकार की समस्याएं और विशेषताएं उपस्थित हैं। ये अवधारणाएं समाज को केवल कागजों पर नहीं, बल्कि उसकी वास्तविक और धरातलीय सच्चाइयों के साथ गहराई से देखने और समझने का एक स्पष्ट और तार्किक दृष्टिकोण हमें प्रदान करती हैं।

276. (D) पर्यावरणीय संरक्षण के साथ सामाजिक और आर्थिक विकास को एकीकृत करना।
सतत विकास का सर्वाधिक श्रेष्ठ लक्ष्य यह है कि हम प्रगति भी करें, सबको साथ लेकर भी चलें और अपनी प्रकृति को भी सुरक्षित रखें। यह स्वीकार करता है कि इनमें से कोई भी कार्य एकाकी रूप में संपन्न नहीं किया जा सकता। यदि हम केवल धन अर्जित करेंगे और वायु-जल को प्रदूषित कर देंगे, तो वह विकास निरर्थक सिद्ध होगा। इसलिए यह सिद्धांत इन तीनों तत्वों को एकीकृत करने की बात करता है। यह एक ऐसा मार्ग है जो हमें एक सुरक्षित, न्यायपूर्ण और सुखद भविष्य की ओर अग्रसर करता है जहाँ मनुष्य और प्रकृति दोनों एक-दूसरे के साथ गहरे और सुखद सामंजस्य में निवास कर सकें।

277. (C) विस्थापन
विस्थापन एक ऐसी संतापजनक स्थिति है जहाँ व्यक्तियों को विवशतापूर्वक अपनी भूमि और आवास त्यागकर अन्यत्र जाना पड़ता है। यह प्रायः वृहद बांधों, कारखानों या प्राकृतिक आपदाओं के कारण घटित होता है। विस्थापित व्यक्ति केवल अपनी संपत्ति ही नहीं खोता, बल्कि वह अपना संपूर्ण समाज, अपनी स्मृतियाँ और अपनी पहचान भी खो देता है। यह किसी

NODIA

करता था। उन्होंने तर्क दिया कि समाज केवल विचारों से संचालित नहीं होता, बल्कि उसमें भौतिक परिस्थितियों और शक्ति के संघर्षों की भी महती भूमिका होती है। नव-प्रकार्यवाद के माध्यम से उन्होंने इन कमियों को दूर किया और प्रकार्यवाद को धरातल की सच्चाइयों से जोड़ने का कार्य किया। उनका यह प्रयास प्रकार्यवाद को अधिक यथार्थवादी और समकालीन समाज की जटिलताओं को समझने हेतु अधिक सक्षम बनाने की दिशा में सार्थक रहा है।

262. (B) एक व्यक्ति द्वारा श्वसन क्रिया करना।
विचलन केवल उन्हीं व्यवहारों को कहा जाता है जो समाज के निर्मित नियमों या प्रथाओं के प्रतिकूल हों। श्वसन एक प्राकृतिक और जैविक क्रिया है जिसे प्रत्येक मनुष्य निष्पादित करता है, इसलिए यह कभी भी विचलन नहीं हो सकता। इसके विपरीत, चोरी करना, परीक्षा में अनुचित साधनों का प्रयोग करना या किसी विशिष्ट परिवेश में भिन्न धर्म का अनुसरण करना समाज की दृष्टि में विचलित व्यवहार हो सकता है। विचलन सामाजिक प्रतिक्रिया पर आश्रित होता है। जो व्यवहार समाज के मानदंडों को चुनौती प्रदान करता है, उसे ही विचलित स्वीकार किया जाता है, न कि उन क्रियाओं को जो जीवन हेतु अनिवार्य हैं।

263. (D) मानवीय क्रियाओं के माध्यम से संरचनाओं का निरंतर पुनरुत्पादन किया जाता है।
संरचनाकरण सिद्धांत प्रतिपादित करता है कि समाज की संरचना कोई स्थिर वस्तु नहीं है, बल्कि वह हमारे दैनिक व्यवहार से अक्षुण्ण रहती है। जैसे हम प्रत्येक दिन कार्यालय जाकर या विद्यालय जाकर इन संस्थाओं को जीवित रखते हैं। यदि व्यक्ति कार्य करना बंद कर दें, तो संरचनाएँ समाप्त हो जाएंगी। इसका तात्पर्य है कि हम अपनी क्रियाओं के माध्यम से ही समाज के वृहद ढांचों को निरंतर जन्म देते हैं। यह सिद्धांत व्यक्ति को महती शक्ति प्रदान करता है क्योंकि यह स्पष्ट करता है कि हम अपनी क्रियाओं को परिवर्तित कर समाज की संरचना को पूर्णतः परिवर्तित और नवीन स्वरुप प्रदान कर सकते हैं।

264. (A) अधिक क्षेत्रीय और राज्य स्वायत्तता की मांग।
भारत जैसे विशाल राष्ट्र को संचालित करना एक जटिल संतुलन का कार्य है। एक ओर हमें एक सुदृढ़ केंद्र सरकार की आवश्यकता है जो देश को एकीकृत रखे, और दूसरी ओर राज्यों को भी अपनी संस्कृति और विकास हेतु स्वायत्तता चाहिए। जब राज्य अत्यधिक अधिकारों की माँग करते हैं, तो कभी-कभी केंद्र के साथ द्वंद्व होता है। राष्ट्र-निर्माण की सफलता इसी तथ्य में है कि केंद्र और राज्य एक-दूसरे के प्रतिद्वंद्वी न बनकर सहयोगी बनें। यह पारस्परिक समझ और सम्मान ही भारत के संघीय ढांचे को सुदृढ़ बनाता है और देश की एकता तथा अखंडता को पूर्णतः सुरक्षित और अक्षुण्ण बनाए रखता है।

265. (C) 3, 2, 4, 1
विकास और विस्थापन की प्रक्रिया अनुक्रमिक रूप से घटित होती है। सर्वप्रथम सरकार उद्योग हेतु भूमि अधिग्रहित करती है, जिससे व्यक्तियों को विवश होकर अपना आवास त्यागना पड़ता है। आवासहीन होने के पश्चात वे आजीविका की खोज में नगरों की ओर प्रस्थान करते हैं। चूंकि उनके पास पर्याप्त धन नहीं होता, इसलिए वे नगरों के बाहरी क्षेत्रों में झुग्गी-बस्तियां निर्मित कर निवास करने लगते हैं। यह क्रम प्रदर्शित करता है कि कैसे विकास की एक नीति समाज के एक वृहद वर्ग को निर्धनता और असुरक्षा के गर्त में धकेल सकती है। यह नगरीकरण के उस अंधकारमय पक्ष को स्पष्ट रूप से उजागर करता है।

266. (A) धर्मनिरपेक्षता
धर्मनिरपेक्षता एक ऐसा महान आदर्श है जहाँ राज्य का अपना कोई विशिष्ट धर्म नहीं होता और वह सभी धर्मों के साथ समान व्यवहार करता है। वह न तो किसी धर्म का प्रचार करता है और न ही किसी के प्रति पक्षपात। इसका उद्देश्य यह सुनिश्चित करना है कि प्रत्येक नागरिक को अपने विश्वास के अनुरूप जीवन निर्वाह की पूर्ण स्वतंत्रता प्राप्त हो। एक धर्मनिरपेक्ष सरकार विभिन्न समुदायों के मध्य एक निष्पक्ष मध्यस्थ की भाँति कार्य करती है ताकि देश में शांति और भ्रातृत्व अक्षुण्ण रहे। यह लोकतंत्र की वह आधारशिला है जो विविधता को दुर्बलता नहीं बल्कि राष्ट्र की महती शक्ति बनाने में सहायता प्रदान करती है।

267. (D) उनके कार्य करने की प्राथमिक विधि (विचारधारा बनाम दमन)।
लुई अल्थुसर ने राज्य की शक्ति को दो अत्यंत पृथक विधियों से कार्य करते हुए प्रदर्शित किया। दमनकारी तंत्र जैसे पुलिस दंड और कारागार के भय से व्यक्तियों को नियंत्रित रखते हैं, जिसे दमन कहा जाता है। इसके विपरीत, वैचारिक तंत्र जैसे विद्यालय और जनसंचार माध्यम हमारे चिंतन की विधि को परिवर्तित करते हैं ताकि हम स्वयं ही व्यवस्था को उचित स्वीकार करने लगें। विचारधारा मानस पर शासन करती है और दमन शरीर पर। राज्य इन दोनों का उपयोग अत्यंत कुशलता से करता है ताकि समाज में शासक वर्ग का प्रभुत्व सदैव अक्षुण्ण रहे और कोई भी विद्रोह प्रभावी न हो सके।

268. (B) सार्वभौमिक सत्य और आधारभूत दर्शन।
उत्तर-आधुनिकतावाद इस प्राचीन गर्व को खंडित करता है कि कोई भी एक दर्शन या विज्ञान संपूर्ण विश्व का परम सत्य अन्वेषित कर सकता है। उनका मानना है कि सत्य कभी भी एकात्मक नहीं होता, बल्कि वह पृथक-पृथक व्यक्तियों और संस्कृतियों के अनुरूप भिन्न होता है। वे उन वृहद सिद्धांतों को अस्वीकार करते हैं जो सबको एक ही प्रतिमान से मापने का प्रयास करते हैं। उनके लिए विश्व खंडित और अनिश्चित है, जिसे किसी एक सूत्र में आबद्ध नहीं किया जा सकता। यह विचारधारा हमें शिक्षित करती है कि हमें प्रत्येक उस दावे पर प्रश्न उठाना चाहिए जो स्वयं को एकमात्र सत्य होने का दावा करता है।

269. (C) 'ऊपर से नीचे' दृष्टिकोण।
पूर्ववर्ती योजना आयोग ऊपर से नीचे की कार्यपद्धति पर आधारित था, जहाँ केंद्र से संपूर्ण देश की नियति निर्धारित की जाती थी। नीति आयोग ने इस विधि को परिवर्तित कर नीचे से ऊपर की सोच को अंगीकार किया है। इसका तात्पर्य है कि अब ग्रामों और राज्यों की समस्याओं को प्रथम समझा जाता

Click Here to Buy book on Amazon

कि हम अपनी क्रियाओं से समाज को कैसे निर्मित कर सकते हैं और आधुनिकता की चुनौतियों का सामना कैसे कर सकते हैं, जो अत्यंत प्रेरणास्पद है।

286. (D) सार्वभौमिकता का इसका दावा वर्चस्व के एक रूप के रूप में कार्य करता है।
उत्तर-आधुनिकतावाद का तर्क है कि ज्ञानोदय के काल से जो तर्क और विज्ञान की चर्चा की गई, उन्होंने स्वयं को एकमात्र सत्य स्वीकार कर अन्य संस्कृतियों और विचारों का दमन किया। उनका मानना है कि जब कोई विचार प्रतिपादित करता है कि वह सबके हेतु और सर्वत्र उचित है, तो वह अन्य पर अपना प्रभुत्व आरोपित करने का प्रयास कर रहा होता है। उत्तर-आधुनिकतावादी विचारक इस वर्चस्व के विरुद्ध हैं। वे स्वीकार करते हैं कि प्रत्येक समाज का अपना एक सत्य होता है। यह आलोचना हमें यह विचार करने हेतु विवश करती है कि प्रगति के नाम पर हमने कितने लघु और श्रेष्ठ विचारों को पूर्णतः उपेक्षित कर दिया है।

287. (A) योजना आयोग
भारत सरकार ने वर्ष 2015 में एक अत्यंत महत्वपूर्ण निर्णय लेते हुए दशकों प्राचीन योजना आयोग को समाप्त कर दिया और उसके स्थान पर नीति आयोग की स्थापना की। योजना आयोग प्राचीन ऊपर से नीचे वाली विचारधारा पर आधारित था, जबकि नीति आयोग राज्यों को साथ लेकर चलने वाला एक आधुनिक विशेषज्ञ निकाय है। यह परिवर्तन प्रदर्शित करता है कि अब भारत को कठोर नियंत्रण के स्थान पर सहयोग और विशेषज्ञ परामर्श की अधिक आवश्यकता है। नीति आयोग का गठन सहकारी संघवाद को सुदृढ़ करने और विकास की नीतियों को अधिक लचीला एवं धरातलीय सच्चाइयों के समीप लाने की दिशा में एक साहसिक और क्रांतिकारी सोपान माना जाता है।

288. (B) ब्लू-कॉलर अपराध; श्वेत-वसन अपराध
समाज में अपराधों को क्रियान्वित करने वालों की स्थिति के अनुरूप उन्हें पृथक नाम प्रदान किए जाते हैं। जब कोई व्यक्ति विवशता या निर्धनता में चोरी जैसा प्रत्यक्ष अपराध संपन्न करता है, तो उसे प्रायः ब्लू-कॉलर अपराध की श्रेणी में दृष्टिगत किया जाता है। इसके विपरीत, जब कोई समृद्ध अधिकारी अपने पद पर आसीन होकर प्रलेखों या कंप्यूटर के माध्यम से धोखाधड़ी करता है, तो उसे श्वेत-वसन अपराध कहते हैं। यह अंतर हमें यह बोध कराता है कि अपराध केवल गलियों में नहीं, बल्कि विलासी कार्यालयों में भी होते हैं। श्वेत-वसन अपराध प्रायः समाज की अर्थव्यवस्था को कहीं अधिक गंभीर क्षति पहुँचाते हैं, जिसे पहचानना अनिवार्य है।

289. (B) राज्य की समानता और सभी धर्मों से सैद्धांतिक दूरी।
भारतीय धर्मनिरपेक्षता का अभिप्राय यह नहीं है कि राज्य धर्म का प्रतिद्वंद्वी है। इसका वास्तविक अर्थ यह है कि राज्य की दृष्टि में सभी धर्म समान हैं। वह सैद्धांतिक दूरी अक्षुण्ण रखता है, जिसका तात्पर्य है कि वह किसी धर्म के कार्यों में हस्तक्षेप नहीं करेगा, किंतु यदि समाज में परिमार्जन की आवश्यकता हो, तो वह हस्तक्षेप भी कर सकता है। यह मॉडल भारत की वृहद विविधता के प्रबंधन हेतु निर्मित किया गया है। यह सुनिश्चित करता है कि प्रत्येक नागरिक को अपनी पद्धति से उपासना की स्वतंत्रता प्राप्त हो और किसी भी धर्म को अन्य पर प्रभावी होने का अवसर प्राप्त न हो, जो लोकतंत्र की वास्तविक सुदृढ़ता है।

290. (A) बहुलवाद
बहुलवाद एक ऐसी श्रेष्ठ व्यवस्था है जहाँ पृथक-पृथक धर्मों, भाषाओं और संस्कृतियों के निवासी पारस्परिक रूप से एकीकृत होकर रहते हैं। यह स्वीकार करता है कि जैसे एक उद्यान में विविध पुष्पों की उपस्थिति उसकी सुंदरता संवर्धित करती है, वैसे ही समाज में विविधता उसे समृद्ध बनाती है। बहुलवाद में किसी एक समूह को अन्य पर आरोपित नहीं किया जाता, बल्कि सबको विकसित होने का समान अवसर प्रदान किया जाता है। यह राष्ट्र की एकता का सुदृढ़तम आधार है क्योंकि जब प्रत्येक व्यक्ति को सम्मान प्राप्त होता है, तभी वह पूर्ण निष्ठा से अपने राष्ट्र से संबद्ध होता है। यह समावेशी सोच ही भारत की अखंडता की वास्तविक पहचान है।

291. (C) विखंडनवाद (Deconstruction)
जैक्स डेरिडा ने विखंडनवाद के माध्यम से हमें यह शिक्षित किया कि किसी भी विचार या वृत्तांत का कोई एक अंतिम सत्य नहीं होता। उन्होंने स्पष्ट किया कि भाषा अत्यंत लचीली है और शब्दों के अर्थ संदर्भ के अनुरूप परिवर्तित होते रहते हैं। विखंडन का कार्य उन प्रच्छन्न दोषों या पक्षपातों को सम्मुख लाना है जो हमारे विचारों के पीछे निहित होते हैं। यह पद्धति हमें अंधविश्वासों से सुरक्षित रखती है और हमें प्रत्येक विषय को सूक्ष्मता से परखने का सामर्थ्य प्रदान करती है। डेरिडा के इस क्रांतिकारी विचार ने विश्व भर के विद्वानों को समाज और संस्कृति को एक नवीन और आलोचनात्मक दृष्टिकोण से देखने हेतु गहराई से प्रेरित किया है।

292. (D) सामाजिक परिवर्तन और संघर्ष
जेफरी अलेक्जेंडर के नव-प्रकार्यवाद का सर्वाधिक महती लक्ष्य यह है कि वह समाज को केवल स्थिर न स्वीकार करे, बल्कि उसमें प्रादुर्भूत होने वाले परिवर्तनों और संघर्षों को भी समझे। शास्त्रीय प्रकार्यवाद केवल शांति और व्यवस्था की चर्चा करता था, जिससे वह अपूर्ण था। नव-प्रकार्यवाद ने उसमें संघर्ष और परिवर्तन को एकीकृत कर उसे पूर्णता प्रदान की। यह सिद्धांत यह स्पष्ट करता है कि समाज कैसे चुनौतियों का सामना करता है और कैसे वह काल के साथ स्वयं को परिवर्तित करता है। यह दृष्टिकोण हमें यह समझने में सहायता करता है कि व्यवस्था बनाए रखने और परिवर्तन लाने वाली शक्तियां पारस्परिक रूप से समाज को कैसे गतिशील बनाए रखती हैं।

293. (D) कथन I गलत है, लेकिन कथन II सही है।
जुर्गन हेबरमास का मत था कि तर्क का प्रयोग केवल लाभ हेतु नहीं होना चाहिए। कथन I त्रुटिपूर्ण है क्योंकि वे केवल स्वार्थ सिद्ध करने वाले तर्क को अपूर्ण स्वीकार करते थे। कथन II पूर्णतः सत्य है क्योंकि वे संवादात्मक तर्कसंगतता को सर्वोपरि मानते हैं, जिसका प्रयोजन पारस्परिक समझ और भ्रातृत्व संवर्धन है। उनके अनुसार, एक श्रेष्ठ लोकतंत्र तभी संचालित हो सकता है जब व्यक्ति ईमानदारी से एक-दूसरे के विचार सुनें और तर्कपूर्ण संवाद करें। उनका यह विचार हमें शिक्षित करता

Downloaded from www.pdf.tube

है कि विमर्श ही समाज की सर्वाधिक महती शक्ति है और इसी से वृहद समस्याओं का निराकरण बिना किसी हिंसा के संपन्न किया जा सकता है।

294. (B) सामाजिक प्रथा
एंथनी गिडिन्स हेतु समाज को समझने की श्रेष्ठ विधि सामाजिक प्रथाएं हैं। उनका मानना है कि समाज न तो केवल व्यक्ति है और न ही केवल कोई वृहद ढांचा, बल्कि वह वह कार्य है जो हम प्रत्येक दिन बार-बार निष्पादित करते हैं। हमारी ये दैनिक आदतें और कार्य ही समाज को एक स्वरूप प्रदान करते हैं। प्रथाएं ही वह सेतु हैं जो व्यक्ति को समाज की वृहद संरचनाओं से एकीकृत करती हैं। जब हम अपनी प्रथाओं को परिवर्तित करते हैं, तो समाज भी परिवर्तित होने लगता है। यह चिंतन हमें यह बोध कराता है कि हमारे लघु दैनिक कार्य ही संपूर्ण समाज के भविष्य को निर्मित करने और उसे नवीन आकार प्रदान करने में सर्वाधिक महती भूमिका निभाते हैं।

295. (D) न्यायालय प्रणाली
लुई अल्थुसर ने न्यायालय प्रणाली को दमनकारी राज्य तंत्र में परिगणित किया था क्योंकि इसके पास दंड देने और कारागार प्रेषित करने की वैधानिक शक्ति होती है। इसके विपरीत, धार्मिक संस्थान, विद्यालय और परिवार वैचारिक तंत्र हैं क्योंकि वे संवेदना और शिक्षा के माध्यम से हमारे मानस को प्रभावित करते हैं। न्यायालय बल और कानून के सामर्थ्य पर व्यवस्था अक्षुण्ण रखता है, जबकि वैचारिक तंत्र विचारों के माध्यम से। अल्थुसर का यह भेद सत्ता के पृथक-पृथक रूपों को अत्यंत स्पष्टता से प्रदर्शित करता है। यह समझना अनिवार्य है कि राज्य कब भय दिखाकर कार्य करता है और कब वह हमारे मानस को परिवर्तित कर अपनी सत्ता सुरक्षित रखने का सूक्ष्म प्रयास करता है।

296. (A) सामाजिक समानता और समावेशन।
सतत विकास का यह उद्देश्य कि कोई भी पीछे न छूटे, सीधे तौर पर समाज के सर्वाधिक निर्धन और उपेक्षित व्यक्तियों के विषय में है। इसका तात्पर्य है कि वास्तविक उन्नति वही है जिसका लाभ समाज के अंतिम व्यक्ति तक पहुँचे। इसमें समृद्ध और निर्धन के मध्य की दूरी को न्यून करने और सबको समान अवसर प्रदान करने पर बल दिया गया है। जब तक समाज में भेदभाव और निर्धनता उपस्थित रहेगी, तब तक विकास अपूर्ण माना जाएगा। यह लक्ष्य हमें एक अधिक संवेदनशील और न्यायपूर्ण विश्व निर्मित करने की प्रेरणा प्रदान करता है जहाँ प्रत्येक मनुष्य को सम्मान और सुख के साथ जीवन निर्वाह का पूर्ण अधिकार एवं अवसर प्राप्त हो।

297. (C) युवा अपराधियों के साथ न्याय प्रणालियों द्वारा पृथक रूप से व्यवहार किया जा सकता है।
समाजशास्त्र में अपचार शब्दावली एक अत्यंत महत्वपूर्ण और मानवीय दृष्टिकोण को प्रदर्शित करती है। इसका प्रयोग यह स्पष्ट करने हेतु किया जाता है कि बालकों द्वारा की गई त्रुटियां वयस्कों के अपराधों से पृथक होती हैं। यह शब्दावली न्याय प्रणाली को यह अवसर प्रदान करती है कि वह बालकों को अपराधी मानकर कारागार भेजने के स्थान पर उन्हें सुधारात्मक परिवेश उपलब्ध कराए। इसके पीछे यह गंभीर विश्वास निहित है कि युवाओं को उचित मार्गदर्शन और शिक्षा प्रदान कर उन्हें पुनः समाज की मुख्यधारा में सम्मानजनक रीति से पुनर्स्थापित किया जा सकता है। यह शब्दावली दंड के स्थान पर सुधार और उज्ज्वल भविष्य पर ध्यान केंद्रित करती है।

298. (A) आधुनिक राजनीति के साथ परंपरा की अंतःक्रिया और उसे आकार देना।
भारत में जब व्यक्ति अपनी जाति के आधार पर अधिकारों की माँग करते हैं, तो यह प्रदर्शित करता है कि प्राचीन सामाजिक व्यवस्था ने स्वयं को आधुनिक राजनीति के ढांचे में अनुकूलित कर लिया है। यह न तो पूर्णतः परंपरा है और न ही पूर्णतः आधुनिकता, बल्कि इन दोनों का एक अत्यंत विलक्षण और जीवंत सम्मिश्रण है। जातियां अब राजनीतिक समूहों की भाँति कार्य करती हैं, जो लोकतंत्र का ही एक अंग बन गई हैं। यह समन्वय हमें यह समझने में सहायता करता है कि भारत ने कैसे अपनी प्राचीन पहचान का परित्याग किए बिना आधुनिक अधिकारों और चुनावी राजनीति को अत्यंत गहराई से और सफलतापूर्वक अंगीकार कर लिया है।

299. (D) नीतियों की निगरानी और मूल्यांकन।
नीति आयोग का एक अत्यंत विशिष्ट कार्य यह विश्लेषण करना है कि सरकारी योजनाएं धरातल पर कितनी प्रभावी हैं। पूर्ववर्ती योजना आयोग केवल योजना निर्माण पर ध्यान केंद्रित करता था, किंतु नीति आयोग उनके मूल्यांकन पर बल देता है। यदि कोई योजना सफल नहीं हो रही, तो उसे परिवर्तित करने या परिष्कृत करने का सुझाव देना इसी का उत्तरदायित्व है। यह आयोग डेटा और आधुनिक तकनीकों की सहायता से सरकारी कार्यप्रणाली में सुधार लाता है। यह निगरानी व्यवस्था सरकार को अधिक उत्तरदायी और पारदर्शी निर्मित करती है, जिससे जनसामान्य के धन का उचित उपयोग हो सके और विकास के वास्तविक परिणाम सबको प्राप्त हों।

300. (B) संरचना की द्वैतता
एंथनी गिडिन्स की संरचना की द्वैतता का तात्पर्य है कि सामाजिक नियम हमें कार्य करने की सामर्थ्य प्रदान करते हैं और हमारे वही कार्य उन नियमों को समाज में अक्षुण्ण रखते हैं। यह एक निरंतर चलने वाली प्रक्रिया है जहाँ संरचना और क्रिया एक-दूसरे के बिना अपूर्ण हैं। हम नियमों के अधीन नहीं हैं, बल्कि हम उनके निरंतर प्रणेता भी हैं। जब हम भाषा बोलते हैं, तो हम उसके व्याकरण का अनुपालन करते हैं और साथ ही उस भाषा को संवर्धित भी करते हैं। यह सिद्धांत स्पष्ट करता है कि व्यक्ति और समाज का संबंध अत्यंत गतिशील है जहाँ दोनों एक-दूसरे को निरंतर नवीन आकार, सार्थकता और भविष्य की दिशा प्रदान करते हैं।

NODIA

अध्याय 06
ग्रामीण समाजशास्त्र

1. ग्रामीण समाजशास्त्र में एक अवधारणा के रूप में 'ग्रामीणता' को निम्नलिखित में से कौन सबसे अच्छी तरह परिभाषित करता है?
(A) गैर-नगरीय क्षेत्रों में जनसंख्या घनत्व का सांख्यिकीय विश्लेषण।
(B) घनिष्ठ समुदायों और अनौपचारिक सामाजिक नियंत्रण की एक जीवन शैली।
(C) विभिन्न प्रकार की कृषि सहायता के लिए राजनीतिक समर्थन।
(D) पारंपरिक ग्रामीण संरचनाओं में प्रचलित वास्तुकला शैली।

2. ग्रामीण-नगरीय अंतर के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए।
कथन I: ग्रामीण समाजों की विशेषता आमतौर पर नगरीय समाजों की तुलना में उच्च स्तर का सामाजिक विभेदीकरण है।
कथन II: नगरीय समाज अक्सर सामाजिक नियंत्रण के लिए औपचारिक संस्थाओं पर अधिक निर्भरता प्रदर्शित करते हैं।
(A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
(B) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।
(C) कथन I सही है, लेकिन कथन II गलत है।
(D) कथन I गलत है, लेकिन कथन II सही है।

3. समाजशास्त्र के भीतर 'कृषक अध्ययन' का मुख्य केंद्र किस समूह पर है?
(A) औद्योगिक श्रमिक जो हाल ही में विभिन्न ग्रामीण क्षेत्रों से प्रवास कर आए हैं।
(B) अत्यधिक उन्नत तकनीकों का उपयोग करने वाले बड़े पैमाने के व्यावसायिक किसान।
(C) छोटे पैमाने के निर्वाह कृषि उत्पादक जो भूमि के स्वामी हैं या उसे पट्टे पर लेते हैं।
(D) खानाबदोश चरवाहा समूह जो आमतौर पर किसी भी प्रकार की खेती नहीं करते हैं।

4. ग्रामीण और नगरीय समाजों के बीच अंतर के संबंध में निम्नलिखित में से कौन सा कथन गलत है?
(A) ग्रामीण समाजों में नगरीय समाजों की तुलना में जनसंख्या घनत्व कम होता है।
(B) नगरीय समाजों में सामाजिक गतिशीलता आमतौर पर अधिक मानी जाती है।
(C) ग्रामीण समाजों में सामाजिक संबंध अक्सर अधिक व्यक्तिगत और प्राथमिक होते हैं।
(D) नगरीय समाजों की तुलना में ग्रामीण समाजों में व्यवसाय अधिक विविधतापूर्ण है।

5. उस प्रक्रिया का वर्णन करने के लिए किस शब्द का उपयोग किया जाता है जिसके द्वारा ग्रामीण व्यक्ति या समूह अपनी भूमि खो देते हैं और मजदूरी करने के लिए विवश हो जाते हैं, जिससे प्रभावी रूप से उनकी कृषक स्थिति समाप्त हो जाती है?
(A) नगरीकरण
(B) संस्कृतिकरण
(C) अकृषकीकरण
(D) सम्भ्रांतकरण

6. जीवन जीने के एक तरीके के रूप में 'नगरीयता' की अवधारणा निम्नलिखित में से किस विशेषताओं के समूह पर बल देती है?
(A) समरूपता, प्राथमिक संबंध और सामाजिक एकजुटता।
(B) विषमता, द्वितीयक संबंध और अनामिकता।
(C) कृषि की प्रधानता, जाति-आधारित व्यवसाय और परंपरावाद।
(D) सामुदायिक सामंजस्य, अनौपचारिक सामाजिक नियंत्रण और वस्तु विनिमय अर्थव्यवस्था।

7. सूची I को सूची II के साथ सुमेलित कीजिए।
सूची I: (अवधारणा)
P. कृषक अध्ययन
Q. जजमानी प्रथा
R. ग्रामीणता
S. अकृषकीकरण
सूची II: (मुख्य विचार)
1. कृषि और घनिष्ठ सामुदायिक संबंधों पर केंद्रित जीवन शैली।
2. छोटे पैमाने के निर्वाह कृषकों का अध्ययन।
3. भूमि-आधारित आजीविका खोने की प्रक्रिया।
4. पारस्परिक सेवा संबंधों की एक पारंपरिक प्रणाली।
कूट:
(A) P-2, Q-4, R-1, S-3
(B) P-1, Q-2, R-3, S-4
(C) P-3, Q-1, R-4, S-2
(D) P-2, Q-3, R-1, S-4

8. ग्रामीण नेतृत्व में गुटबाजी के बने रहने का सबसे उपयुक्त कारण निम्नलिखित में से कौन सा है?
(A) दुर्लभ संसाधनों, शक्ति और सामाजिक प्रतिष्ठा के लिए प्रतिस्पर्धा।
(B) लोकतांत्रिक सिद्धांतों की व्यापक और सार्वभौमिक

Click Here to Buy book on Amazon

29. प्रवासी मजदूरों के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. वे अक्सर खराब रहने की स्थिति और सामाजिक सुरक्षा की कमी का सामना करते हैं।
2. उनका आवागमन हमेशा स्थायी होता है और कभी मौसमी नहीं होता।
3. वे स्रोत और गंतव्य दोनों क्षेत्रों की अर्थव्यवस्था में महत्वपूर्ण योगदान देते हैं।

ऊपर दिए गए कथनों में से कौन से सही हैं?
(A) केवल 1 और 2
(B) केवल 2 और 3
(C) केवल 1 और 3
(D) 1, 2 और 3

30. निम्नलिखित में से कौन कृषि वर्ग और उसकी विशिष्ट विशेषता का गलत जोड़ा है?
(A) जमींदार - भूमि का स्वामी है लेकिन स्वयं खेती नहीं करता है।
(B) मध्यम किसान - मुख्य रुप से स्वामित्व वाली या पट्टे पर ली गई भूमि पर खेती के लिए पारिवारिक श्रम पर निर्भर करता है।
(C) खेतिहर मजदूर - कृषि में मजदूरी के लिए श्रम शक्ति बेचता है।
(D) धनी किसान - अपनी अधिकांश भूमि पट्टे पर देता है और मजदूर के रूप में कार्य करता है।

31. सूची I को सूची II के साथ सुमेलित कीजिए।
सूची I: (73वें संशोधन का प्रावधान)
P. ग्राम सभा
Q. अनुसूचित जाति/जनजाति के लिए आरक्षण
R. राज्य वित्त आयोग
S. त्रि-स्तरीय प्रणाली
सूची II: (उद्देश्य)
1. पंचायतों की वित्तीय व्यवहार्यता सुनिश्चित करना।
2. ग्राम, ब्लॉक और जिला स्तर पर स्थानीय शासन के लिए एक संरचना प्रदान करना।
3. प्रत्यक्ष लोकतंत्र के प्राथमिक निकाय के रूप में कार्य करना।
4. वंचित समुदायों का प्रतिनिधित्व सुनिश्चित करना।

कूट:
(A) P-1, Q-2, R-3, S-4
(B) P-3, Q-4, R-1, S-2
(C) P-2, Q-1, R-4, S-3
(D) P-4, Q-3, R-2, S-1

32. भारतीय कृषि के संदर्भ में 'उत्पादन की पद्धति पर बहस' किसे समझने के लिए सैद्धांतिक ढांचे का उपयोग करती है?
(A) फसल चक्र की विधियाँ।
(B) अंतर्निहित आर्थिक संरचना और वर्ग संबंध।
(C) सिंचाई के लिए उपयोग की जाने वाली तकनीक।
(D) कटाई से जुड़े सांस्कृतिक अनुष्ठान।

33. आर्थिक परिवर्तन के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए।
कथन I: 'कंगालीकरण' पूर्ण निर्धनता की प्रक्रिया को संदर्भित करता है।
कथन II: 'अकृषकीकरण' विशेष रूप से एक कृषक की पहचान और आजीविका की हानि को संदर्भित करता है, जो कंगालीकरण की ओर ले जा सकता है या नहीं भी।
(A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
(B) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।
(C) कथन I सही है, लेकिन कथन II गलत है।
(D) कथन I गलत है, लेकिन कथन II सही है।

34. एक किसान जो मुख्य रुप से अपने परिवार के श्रम के साथ भूमि के एक छोटे से टुकड़े पर खेती करता है, केवल निर्वाह के लिए पर्याप्त उत्पादन करता है, और कभी-कभी आय बढ़ाने के लिए दूसरों के लिए काम करता है, उसे कृषि वर्ग संरचना में सबसे अच्छा किस रुप में वर्गीकृत किया जाएगा:
(A) गरीब किसान
(B) जमींदार
(C) धनी किसान
(D) पूंजीवादी किसान

35. पंचायती राज व्यवस्था के माध्यम से लोगों के सशक्तिकरण का मुख्य उद्देश्य किसे बढ़ाना है?
(A) अंतरराष्ट्रीय मामलों में भागीदारी।
(B) राष्ट्रीय आर्थिक नीति पर नियंत्रण।
(C) स्थानीय शासन और निर्णय लेने में भूमिका।
(D) नगरीय मनोरंजन सुविधाओं तक पहुंच।

36. निम्नलिखित में से कौन जजमानी प्रथा की विशिष्ट विशेषता नहीं है?
(A) जजमान और कमिन के बीच वंशानुगत संबंध।
(B) वस्तुओं और सेवाओं का पारस्परिक विनिमय।
(C) यह जाति-आधारित व्यावसायिक संरचना को सुदृढ़ करती है।
(D) बाजार दरों के आधार पर नकद भुगतान।

37. भारत में कृषक आंदोलनों का ऐतिहासिक रूप से एक प्रमुख उद्देश्य क्या रहा है?
(A) ग्रामीण क्षेत्रों में औद्योगिकरण को बढ़ावा देना।
(B) जाति व्यवस्था का उन्मूलन।
(C) भूमि अधिकार, उचित लगान और लाभकारी मूल्य की मांग।
(D) किसानों के लिए एक अलग राजनीतिक राज्य की स्थापना।

38. वह घटना जहां ग्रामीण क्षेत्र पारंपरिक रूप से शहरों से जुड़ी जीवन शैली, उपभोग पैटर्न और मूल्यों को अपनाना शुरू करते हैं, किस अवधारणा से संबंधित है?
(A) ग्रामीण-नगरीय द्विभाजन
(B) ग्रामीण जीवन पर नगरीयता का प्रभाव

NODIA

19. वह स्थिति जिसमें एक ऋणी को ऋण चुकाने के लिए ऋणदाता को श्रम प्रदान करने के लिए विवश किया जाता है, जो अक्सर अनिश्चित अवधि के लिए और शोषणकारी परिस्थितियों में होता है, कहलाती है:
(A) जजमानी सेवा
(B) अनुबंध कृषि
(C) बंधुआ मजदूरी
(D) मौसमी प्रवास

20. विकास के एक सामान्य प्रक्षेपवक्र को दर्शाते हुए, ग्रामीण समाज में परिवर्तन के निम्नलिखित सामान्य चरणों को तार्किक कालानुक्रमिक क्रम में व्यवस्थित करें:
1. निर्वाह कृषि और जजमानी प्रथा का प्रभुत्व।
2. कृषि का बढ़ता व्यावसायीकरण और अकृषकीकरण।
3. ग्रामीण अर्थव्यवस्था का विविधीकरण और ग्रामीण-नगरीय प्रवास में वृद्धि।
4. हरित क्रांति प्रौद्योगिकियों की शुरुआत।
(A) 1, 4, 2, 3
(B) 2, 1, 4, 3
(C) 1, 2, 3, 4
(D) 4, 1, 2, 3

21. ग्रामीण नेतृत्व के संदर्भ में, 'गुटबाजी' का अर्थ है:
(A) लोकतांत्रिक आम सहमति के माध्यम से नेताओं को चुनने की प्रक्रिया।
(B) गांव के विकास के लिए विभिन्न जाति समूहों के बीच सहयोग।
(C) समुदाय का विशिष्ट नेताओं के साथ जुड़े प्रतिद्वंद्वी समूहों में विभाजन।
(D) स्थापित ग्राम वृद्धों द्वारा नियमित रूप से प्रयोग किया जाने वाला पारंपरिक अधिकार।

22. ग्रामीण-से-नगरीय प्रवास के बारे में निम्नलिखित में से कौन सा कथन सही है?
(A) यह मुख्य रूप से ग्रामीण सांस्कृतिक जीवन के आकर्षण से प्रेरित होता है।
(B) यह अक्सर ग्रामीण क्षेत्रों में रोजगार के अवसरों की कमी के कारण होता है।
(C) यह सार्वभौमिक रूप से सभी प्रवासियों के जीवन स्तर में सुधार की ओर ले जाता है।
(D) इसके परिणामस्वरूप नगरीय केंद्रों में जनसंख्या घनत्व में कमी आती है।

23. भारतीय संविधान के 73वें संशोधन ने किसके द्वारा लोगों के सशक्तिकरण के प्रावधान किए:
(A) ग्राम सभा को समाप्त करके।
(B) सभी ग्रामीण विकास कोषों को राज्य सरकार के पास केंद्रीकृत करके।
(C) पंचायतों को बिना किसी वास्तविक शक्ति के केवल सलाहकार निकाय बनाकर।
(D) पंचायतों में महिलाओं और वंचित समुदायों के लिए आरक्षण अनिवार्य करके।

24. 'ग्रामीणता' और 'नगरीयता' के बीच एक प्रमुख अंतर निहित है:
(A) सामाजिक संबंधों की प्रकृति और सामाजिक नियंत्रण के स्तर में।
(B) देश की कुल जनसंख्या के आकार में।
(C) बोली जाने वाली प्रमुख भाषा में।
(D) राष्ट्रीय राजनीतिक भागीदारी के स्तर में।

25. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है।
अभिकथन (A): ग्रामीण भारत के कई हिस्सों में अकृषकीकरण की प्रक्रिया तेज हुई है।
कारण (R): भूमि का बढ़ता विखंडन, ऋण और छोटे पैमाने की खेती का अलाभकारी होना इसके प्रमुख कारक हैं।
(A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सही है लेकिन R गलत है।
(D) A गलत है लेकिन R सही है।

26. 'कृषि अशांति' का प्राथमिक कारण अक्सर किससे जुड़ा होता है?
(A) भूमि स्वामित्व, पट्टे के अधिकार और कृषि कीमतों से संबंधित मुद्दे।
(B) जजमानी प्रथा का सुचारू संचालन।
(C) समानता प्राप्त करने में ग्रामीण विकास कार्यक्रमों की सफलता।
(D) ग्राम राजनीति में गुटबाजी में गिरावट।

27. निम्नलिखित में से कौन ग्रामीण-से-ग्रामीण प्रवास का सबसे अच्छा उदाहरण है?
(A) एक सॉफ्टवेयर इंजीनियर का गांव से महानगर में जाना।
(B) एक छात्र का उच्च शिक्षा के लिए गांव से जिला मुख्यालय जाना।
(C) एक ग्रामीण परिवार का बेहतर अवसरों के लिए विदेश जाना।
(D) एक खेतिहर मजदूर का काम के लिए सूखा प्रवण गांव से नहर-सिंचित गांव में जाना।

28. 'कृषि वर्ग संरचना' की अवधारणा मुख्य रूप से किससे संबंधित है?
(A) ग्रामीण क्षेत्रों में धार्मिक विश्वासों के आधार पर समाज का विभाजन।
(B) भूमि और कृषि उत्पादन के साथ उनके संबंध के आधार पर ग्रामीण आबादी का वर्गीकरण।
(C) अनुष्ठानिक शुद्धता के आधार पर सामाजिक स्थिति का पदानुक्रम।
(D) विभिन्न आयु-समूहों में ग्रामीण समाज का संगठन।

Downloaded from www.pdf.tube

भी मनुष्य हेतु एक गहरा मानसिक और सामाजिक आघात है। राष्ट्र के विकास हेतु विस्थापित होने वाले व्यक्तियों का समुचित सम्मान और पुनर्वास सुनिश्चित करना समाज का सर्वाधिक महती नैतिक और प्रशासनिक उत्तरदायित्व है जिसे कभी उपेक्षित नहीं किया जाना चाहिए।

278. (B) इसके नीतिगत प्रस्तावों को उच्च स्तरीय राजनीतिक समर्थन प्राप्त होना।
प्रधानमंत्री का नीति आयोग का अध्यक्ष होना यह सुनिश्चित करता है कि आयोग जो भी योजनाएं निर्मित करेगा, उन्हें सरकार की संपूर्ण शक्ति का संबल प्राप्त होगा। यह व्यवस्था नीति आयोग को केवल एक सैद्धांतिक परामर्शदाता नहीं रहने देती, बल्कि उसे देश के शासन का एक सक्रिय अंग निर्मित करती है। जब उच्चतम वैधानिक पद सीधे तौर पर संबंद्ध होता है, तो केंद्र और राज्यों के मध्य संवाद भी अधिक प्रभावी हो जाता है। यह ढांचा विकास के वृहद लक्ष्यों को त्वरित गति से प्राप्त करने और देश की शासन व्यवस्था में एक नवीन ऊर्जा एवं दिशा प्रविष्ट करने हेतु अत्यंत रणनीतिक और प्रभावी ढंग से कार्य करता है।

279. (D) विसंगतिजन्य आत्महत्या
दुर्खीम के अनुसार विसंगतिजन्य आत्महत्या तब होती है जब समाज में आकस्मिक इतने वृहद परिवर्तन प्रादुर्भूत हों कि प्राचीन नियम निष्प्रभावी हो जाएं। उदाहरण स्वरूप, आर्थिक मंदी या आकस्मिक प्राप्त महती प्रसिद्धि व्यक्ति को दिग्भ्रमित कर सकती है क्योंकि उसे बोध नहीं होता कि अब कैसा आचरण करना है। ऐसी नियमहीनता की स्थिति में व्यक्ति स्वयं को अत्यंत एकाकी और लक्ष्यहीन अनुभव करता है, जो उसे इस कारुणिक सोपान की ओर अग्रसर करता है। यह प्रदर्शित करता है कि समाज के नियम और स्थिरता हमारे मानसिक स्वास्थ्य एवं जीवन की सुरक्षा हेतु कितने अनिवार्य और गहराई से संबंद्ध हैं।

280. (C) A सही है लेकिन R गलत है।
अभिकथन पूर्णतः सत्य है कि अल्थुसर ने दो प्रकार के तंत्रों का प्रतिपादन किया था। किंतु कारण त्रुटिपूर्ण है क्योंकि अल्थुसर ने कभी यह नहीं कहा कि राज्य केवल शक्ति के बल पर संचालित होता है। उनका वास्तविक तर्क तो यह था कि राज्य वैचारिक तंत्रों के माध्यम से व्यक्तियों के मानस को अधिकृत कर अधिक प्रभावी रीति से शासन करता है। हिंसा का प्रयोग केवल तभी संपन्न होता है जब विचारधारा कार्य नहीं करती। शासन की वास्तविक सफलता इसी तथ्य में निहित है कि जनसामान्य स्वयं ही व्यवस्था को उचित स्वीकार कर उसका अनुपालन करें, जिसे अल्थुसर ने गहराई से स्पष्ट किया था।

281. (C) वर्तमान के भीतर पुनर्व्याख्या किया गया एक गतिशील संसाधन।
वर्तमान काल में परंपरा को कोई प्राचीन और जड़ वस्तु स्वीकार नहीं किया जाता। समाजशास्त्रीय रूप से, यह एक ऐसा कोष है जिसे हम अपनी वर्तमान आवश्यकताओं के अनुरूप नवीन स्वरूप प्रदान करते रहते हैं। हम अपनी प्राचीन पहचान का पूर्णतः परित्याग नहीं करते, बल्कि उसे आधुनिक विश्व में जीवन निर्वाह का एक नवीन माध्यम निर्मित कर लेते हैं। इसे परंपरा का आधुनिकीकरण भी कहा जाता है। यह प्रक्रिया प्रदर्शित करती है कि समाज अपनी जड़ों से संबंद्ध रहकर ही वास्तविक विकास कर सकता है। परंपरा और आधुनिकता एक-दूसरे के प्रतिद्वंद्वी नहीं, बल्कि एक-दूसरे को परिष्कृत करने वाले उपयोगी सामाजिक संसाधन हैं।

282. (A) अभिकर्तृत्व और संरचना
गिडिन्स की संरचना की द्वैतता का संपूर्ण विचार व्यक्ति (अभिकर्तृत्व) और समाज (संरचना) के मध्य के संबंध को समझने पर आधारित है। उनका मत है कि ये दोनों एक-दूसरे को निर्मित करते हैं। हम अपनी क्रियाओं से समाज के नियमों को जन्म देते हैं और वही नियम हमें कार्य करने की विधि शिक्षित करते हैं। यह एक सतत चक्र के समान है जहाँ न तो व्यक्ति समाज के बिना रह सकता है और न ही समाज व्यक्ति के बिना। यह संतुलन ही सामाजिक जीवन की वास्तविक हकीकत है। गिडिन्स का यह सिद्धांत हमें यह समझने में सहायता करता है कि समाज कैसे परिवर्तित होता है और कैसे स्थिर भी रहता है।

283. (D) नव-प्रकार्यवाद
जेफरी अलेक्जेंडर नव-प्रकार्यवाद के सर्वाधिक वृहद व्यक्तित्व हैं। उन्होंने अनुभव किया कि प्रकार्यवाद का प्राचीन ढांचा अब समाज की जटिलताओं को सहन करने में अक्षम है, इसलिए उन्होंने इसे नवीन और आधुनिक बनाया। नव-प्रकार्यवाद में वे संघर्ष, सत्ता और व्यक्तिगत आकांक्षा जैसे उन तत्वों को भी स्थान प्रदान करते हैं जिन्हें पूर्व में उपेक्षित किया गया था। उनका उद्देश्य एक ऐसा बहुआयामी सिद्धांत निर्मित करना है जो समाज के प्रत्येक पक्ष को सूक्ष्मता से देख सके। अलेक्जेंडर के इस योगदान ने समाजशास्त्रीय चिंतन में प्रकार्यवाद को एक नवीन गरिमा और समकालीन प्रासंगिकता प्रदान करने का अत्यंत सराहनीय कार्य किया है।

NODIA

284. (B) संस्कृति, एकजुटता और पहचान का अंतर्विषय क्षेत्र।
हेबरमास के अनुसार जीवन-जगत समाज का वह कोमल और पवित्र अंग है जहाँ हम एक-दूसरे के साथ मानवीय संबंध निर्मित करते हैं। इसमें हमारी साझी संस्कृति, भाषा और वे मूल्य सम्मिलित हैं जो हमें पारस्परिक रूप से एकीकृत करते हैं। यह क्षेत्र बाजार या राजनीति के लाभ-हानि के तर्क से सर्वथा पृथक है। यहाँ पारस्परिक समझ और भ्रातृत्व सर्वोपरि होता है। यह हमें एक व्यक्ति के रूप में पहचान प्रदान करता है और हमें यह शिक्षित करता है कि हम सब एक ही समाज का अंग हैं। जीवन-जगत ही वह स्थान है जहाँ वास्तविक सामाजिक एकता और मानवीय संवेदनाएं पूर्णतः सुरक्षित एवं जीवित रह सकती हैं।

285. (C) केवल 1 और 2
एंथनी गिडिन्स आधुनिक समाजशास्त्र के एक अत्यंत प्रभावशाली प्रणेता हैं। उन्होंने अपनी सुप्रसिद्ध कृति में समाज को समझने के नवीन मार्ग प्रदान किए। उन्होंने संरचना की द्वैतता की अवधारणा प्रस्तुत की जो व्यक्ति और समाज के पारस्परिक संबंध को स्पष्ट करती है। कथन 3 त्रुटिपूर्ण है क्योंकि वे मार्क्सवादी नहीं, बल्कि एक स्वतंत्र और मौलिक विचारक हैं जिन्होंने संरचना और अभिकर्तृत्व को एकीकृत करने का कार्य किया। गिडिन्स के विचार हमें यह शिक्षित करते हैं

(C) ग्रामीण आत्मनिर्भरता
(D) कृषक परंपरावाद

39. पंचायती राज व्यवस्था के संदर्भ में, 73वां संशोधन एक महत्वपूर्ण कदम था क्योंकि इसने:
(A) भारत में पहली बार इस प्रणाली की शुरुआत की।
(B) एकल-स्तरीय प्रणाली के पक्ष में त्रि-स्तरीय संरचना को समाप्त कर दिया।
(C) राज्य सरकार की सभी शक्तियाँ पंचायतों को हस्तांतरित कर दीं।
(D) पंचायती राज संस्थाओं को संवैधानिक दर्जा और एकरूपता प्रदान की।

40. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है।
अभिकथन (A): ग्रामीण-नगरीय प्रवास अक्सर ग्रामीण गरीबों के बीच आर्थिक गतिशीलता के लिए एक रणनीति है।
कारण (R): नगरीय क्षेत्रों को ग्रामीण क्षेत्रों की तुलना में अधिक विविध रोजगार के अवसर और उच्च मजदूरी की क्षमता प्रदान करने वाला माना जाता है।
(A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सही है लेकिन R गलत है।
(D) A गलत है लेकिन R सही है।

41. निम्नलिखित परिदृश्य को पढ़ें और उसके बाद आने वाले प्रश्न का उत्तर दें।
निम्नलिखित में से कौन सा परिदृश्य ग्राम पंचायत चुनाव में 'गुटबाजी' की अवधारणा को सबसे अच्छी तरह से दर्शाता है?
(A) सभी ग्रामीण सर्वसम्मति से सरपंच के लिए एक ही उम्मीदवार को चुनते हैं।
(B) चुनाव राष्ट्रीय दलों की अच्छी तरह से परिभाषित राजनीतिक विचारधाराओं के आधार पर लड़ा जाता है।
(C) दो शक्तिशाली परिवार प्रतिद्वंद्वी उम्मीदवार उतारते हैं, जिससे गांव विरोधी खेमों में बंट जाता है।
(D) एक स्वतंत्र उम्मीदवार सभी जाति समूहों के समर्थन से चुनाव जीतता है।

42. 'कृषि संबंध' शब्द उन सामाजिक और आर्थिक संबंधों को संदर्भित करता है जो:
(A) भूमि के स्वामित्व, नियंत्रण और उपयोग के इर्द-गिर्द केंद्रित हैं।
(B) विभिन्न गांवों के बीच हैं।
(C) नगरीय औद्योगिक क्षेत्र के भीतर हैं।
(D) एकल परिवार के सदस्यों के बीच हैं।

43. ग्रामीण नेतृत्व के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. पारंपरिक ग्रामीण नेतृत्व अक्सर जाति और भूमि स्वामित्व जैसे प्रदत्त मानदंडों पर आधारित था।
2. आधुनिक ग्रामीण नेतृत्व तेजी से शिक्षा और राजनीतिक संबंधों जैसे अर्जित मानदंडों पर आधारित हो रहा है।
3. नई पंचायती राज व्यवस्था के आने से गुटबाजी पूरी तरह से समाप्त हो गई है।
ऊपर दिए गए कथनों में से कौन से सही हैं?
(A) केवल 1 और 2
(B) केवल 2 और 3
(C) केवल 1 और 3
(D) 1, 2 और 3

44. अकृषकीकरण की प्रक्रिया का प्रत्यक्ष परिणाम निम्नलिखित में से कौन सा है?
(A) मालिक-कृषकों की संख्या में वृद्धि।
(B) भूमिहीन खेतिहर मजदूरों की जनसंख्या में वृद्धि।
(C) जजमानी प्रथा का सुदृढ़ीकरण।
(D) ग्रामीण से नगरीय प्रवास में कमी।

45. गांवों और शहरों के बीच सामाजिक संरचना, संस्कृति और जीवन शैली के अंतर का अध्ययन किस विषय के अंतर्गत आता है?
(A) जजमानी संबंध
(B) उत्पादन की पद्धति पर बहस
(C) ग्रामीण-नगरीय अंतर
(D) कृषक आंदोलन

46. निम्नलिखित में से कौन ग्रामीण समाज के लिए परिवर्तन की प्रक्रिया नहीं है?
(A) प्रवास
(B) सामाजिक गतिशीलता
(C) आर्थिक गतिशीलता
(D) धर्म परिवर्तन

47. श्रम संबंधों के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए।
कथन I: बंधुआ मजदूरी ऋणग्रस्तता से उत्पन्न विवश श्रम का एक रूप है।
कथन II: भारत में बंधुआ मजदूरी की प्रथा को कानूनी रूप से समाप्त कर दिया गया था, लेकिन यह प्रच्छन्न रूपों में मौजूद है।
(A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
(B) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।
(C) कथन I सही है, लेकिन कथन II गलत है।
(D) कथन I गलत है, लेकिन कथन II सही है।

48. 73वें संशोधन के बाद पंचायती राज व्यवस्था में एक महत्वपूर्ण परिवर्तन था:
(A) पंचायत का कार्यकाल घटाकर दो वर्ष करना।
(B) हर पांच साल में अनिवार्य नियतकालिक चुनावों की शुरुआत।
(C) पंचायतों के लिए वित्तीय शक्तियों का उन्मूलन।
(D) ग्राम सभा को हटाना।

Click Here to Buy book on Amazon

70. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है।
अभिकथन (A): कृषक आंदोलन कृषि संकट के प्रति सामूहिक प्रतिक्रिया का एक रूप है।
कारण (R): ये आंदोलन हमेशा स्वतःस्फूर्त, असंगठित होते हैं और इनमें किसी विशिष्ट मांग का अभाव होता है।
(A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सही है लेकिन R गलत है।
(D) A गलत है लेकिन R सही है।

71. निम्नलिखित में से कौन 'बंधुआ मजदूर' की स्थिति का सबसे अच्छा वर्णन करता है?
(A) एक निश्चित अवधि के अनुबंध वाला वेतनभोगी कर्मचारी।
(B) एक स्वरोजगार कारीगर जो खुले बाजार में सामान बेचता है।
(C) ग्रामीण विकास परियोजना में कार्यरत एक सरकारी अधिकारी।
(D) एक श्रमिक जिसका श्रम ऋण के बदले गिरवी रखा गया है, जो अक्सर आवागमन और रोजगार की स्वतंत्रता खो देता है।

72. निम्नलिखित परिदृश्य को पढ़ें और उसके बाद आने वाले प्रश्न का उत्तर दें।
ग्रामीण समाज में 'सामाजिक गतिशीलता' की प्रक्रिया तब देखी जा सकती है जब:
(A) निचली जाति का एक सदस्य धन और राजनीतिक शक्ति प्राप्त करता है, जिससे उसकी सामाजिक स्थिति में सुधार होता है।
(B) एक परिवार उसी गांव में एक घर से दूसरे घर में जाता है।
(C) प्राकृतिक आपदा के कारण पूरा गांव अपना स्थान बदल लेता है।
(D) एक किसान एक मौसम से दूसरे मौसम में उगाई जाने वाली फसल बदल देता है।

73. 'उत्पादन की पद्धति' बहस विशेष रूप से विश्लेषण करती है:
(A) ग्रामीण जीवन के सांस्कृतिक मानदंडों का।
(B) कृषकों के सामाजिक मनोविज्ञान का।
(C) कृषि में उत्पादन की शक्तियों और संबंधों का।
(D) कृषि समाजों में पारिस्थितिक संतुलन का।

74. निम्नलिखित युग्मों पर विचार कीजिए:
1. ग्रामीणता - प्राथमिक समूह संबंधों की विशेषता वाली एक जीवन शैली।
2. नगरीयता - अनामिकता और द्वितीयक समूह संबंधों की विशेषता वाली एक जीवन शैली।
3. जजमानी प्रथा - मौद्रिक मजदूरी और मुक्त बाजार विनिमय पर आधारित एक प्रणाली।

ऊपर दिए गए कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?
(A) केवल 1
(B) केवल 1 और 2
(C) केवल 2 और 3
(D) 1, 2 और 3

75. सूची I को सूची II के साथ सुमेलित कीजिए।
सूची I: (शब्द)
P. कंगालीकरण
Q. कृषि अशांति
R. गुटबाजी
S. प्रवास
सूची II: (विवरण)
1. काम या बेहतर अवसरों के लिए लोगों का आवागमन।
2. किसानों द्वारा सामूहिक विरोध।
3. अत्यंत निर्धन होने की प्रक्रिया।
4. समुदाय का परस्पर विरोधी समूहों में विभाजन।

कूट:
(A) P-1, Q-2, R-3, S-4
(B) P-3, Q-2, R-4, S-1
(C) P-4, Q-3, R-1, S-2
(D) P-3, Q-4, R-2, S-1

76. ग्रामीण शासन के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए।
कथन I: 73वां संशोधन 20 लाख से अधिक आबादी वाले राज्यों के लिए पंचायती राज की एक समान त्रि-स्तरीय प्रणाली प्रदान करता है।
कथन II: यही संशोधन राज्य विधायिका के विवेक पर बनाई जाने वाली ग्राम सभा को एक वैकल्पिक निकाय बनाता है।
(A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
(B) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।
(C) कथन I सही है, लेकिन कथन II गलत है।
(D) कथन I गलत है, लेकिन कथन II सही है।

77. भूमि जोत और जाति पर आधारित नेतृत्व से चुनावी सफलता और राजनीतिक कौशल पर आधारित नेतृत्व में बदलाव किसका प्रतिनिधित्व करता है?
(A) लोकतांत्रिक से निरंकुश नेतृत्व।
(B) गुटबाजी आधारित से आम सहमति आधारित नेतृत्व।
(C) प्रदत्त से अर्जित नेतृत्व मानदंडों में बदलाव।
(D) ग्रामीण से नगरीय नेतृत्व।

78. निम्नलिखित में से कौन 'कृषक अध्ययन' का एक प्रमुख घटक है?
(A) शेयर बाजार के रुझानों का विश्लेषण करना।
(B) बहुराष्ट्रीय कृषि व्यवसायों की निगम संरचना का अध्ययन करना।
(C) नगरीय अभिजात वर्ग के उपभोग पैटर्न की जांच करना।
(D) कृषकों और व्यापक समाज या राज्य के बीच संबंधों की जांच करना।

NODIA

हो सकती है।
(C) इसमें अक्सर किसानों या खेतिहर मजदूरों द्वारा सामूहिक कार्रवाई शामिल होती है।
(D) भूमि सुधार की मांग कृषि अशांति का एक सामान्य कारण है।

59. ग्रामीण-से-नगरीय प्रवास के लिए 'आकर्षण' कारकों में निम्नलिखित में से किसे छोड़कर सभी शामिल हैं:
(A) शहरों में बेहतर रोजगार के अवसर।
(B) नगरीय उद्योगों में उच्च मजदूरी।
(C) शहरों में बेहतर बुनियादी ढांचे और सुविधाओं की उपलब्धता।
(D) गांवों में शिक्षा और स्वास्थ्य सुविधाओं की कमी।

60. जजमानी प्रथा के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. जजमानी प्रथा में नकद-आधारित, संविदात्मक संबंध शामिल होते हैं।
2. जजमानी प्रथा में संबंध आमतौर पर वंशानुगत होते हैं।
3. यह प्रणाली जाति पदानुक्रम को दर्शाती है और उसे पुष्ट करती है।

ऊपर दिए गए कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?
(A) केवल 1 और 2
(B) केवल 2 और 3
(C) केवल 1 और 3
(D) 1, 2 और 3

61. ग्रामीण संदर्भ में 'आर्थिक गतिशीलता' का विशेष रूप से तात्पर्य किसमें परिवर्तन से है?
(A) किसी व्यक्ति की जाति स्थिति में।
(B) एक परिवार की राजनीतिक संबद्धता में।
(C) किसी व्यक्ति या समूह की आय, संपत्ति और जीवन स्तर में।
(D) किसी व्यक्ति के धार्मिक विश्वासों में।

62. पंचायतों की वित्तीय स्थिति की समीक्षा करने और सिफारिशें करने के लिए उत्तरदायी संवैधानिक निकाय है:
(A) राज्य चुनाव आयोग
(B) जिला योजना समिति
(C) नीति आयोग
(D) राज्य वित्त आयोग

63. आर्थिक परिवर्तन के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए।
कथन I: ग्रामीण समाज में गुटबाजी विकास कार्यक्रमों के क्रियान्वयन में बाधा डाल सकती है।
कथन II: गुट अक्सर गांव के सामूहिक कल्याण के बजाय अपने समूह के हितों को प्राथमिकता देते हैं।
(A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
(B) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।
(C) कथन I सही है, लेकिन कथन II गलत है।
(D) कथन I गलत है, लेकिन कथन II सही है।

64. कृषक अध्ययन में एक 'कृषक' को 'पूंजीवादी किसान' से अलग करने वाली प्राथमिक विशेषता है:
(A) उगाई गई फसल का प्रकार।
(B) उत्पादन का तर्क (निर्वाह बनाम लाभ का अधिकतमीकरण)।
(C) परिवार का आकार।
(D) किसान द्वारा माना जाने वाला धर्म।

65. ग्रामीण-से-नगरीय प्रवास के लिए एक प्रमुख 'विकर्षण' कारक है:
(A) नगरीय जीवन शैली का आकर्षण।
(B) भूमि पर दबाव और ग्रामीण क्षेत्रों में गैर-कृषि नौकरियों की कमी।
(C) शहरों में बेहतर आवास की उपलब्धता।
(D) अनामिकता की इच्छा।

66. किस प्रकार की भूमि स्वामित्व प्रणाली में राज्य या जमींदार ग्रामीणों से राजस्व एकत्र करते हैं?
(A) जमींदारी प्रणाली
(B) रैयतवाड़ी प्रणाली
(C) सामुदायिक स्वामित्व
(D) व्यक्तिगत स्वामित्व

67. 73वें संशोधन के बाद के युग में ग्राम सभा का सबसे महत्वपूर्ण कार्य क्या है?
(A) आपराधिक मामलों के लिए अदालत के रूप में कार्य करना।
(B) राज्य विधानसभा के सदस्यों का चुनाव करना।
(C) गांव के सभी मतदाताओं को स्थानीय शासन में भाग लेने और पंचायत के काम की निगरानी के लिए एक मंच प्रदान करना।
(D) जिले के पूरे बजट का सीधे प्रबंधन और नियंत्रण करना।

68. इनपुट और आउटपुट दोनों के लिए बाजारों पर बढ़ती निर्भरता ग्रामीण समाज में किस प्रवृत्ति की एक प्रमुख विशेषता है?
(A) जजमानी प्रथा का पतन।
(B) पारंपरिक नेतृत्व का उदय।
(C) ग्रामीण से नगरीय प्रवास में कमी।
(D) कृषि का व्यावसायीकरण।

69. निम्नलिखित में से कौन ग्रामीण गुटबाजी का परिणाम नहीं है?
(A) समुदाय-व्यापी सहकारी प्रयासों में बाधा उत्पन्न करना।
(B) सामाजिक तनाव और विवादों का तीव्र होना।
(C) ग्राम विकास योजनाओं का एकीकृत और सौहार्दपूर्ण क्रियान्वयन।
(D) अपने स्वयं के गुट को लाभ पहुँचाने के लिए विकास निधि का दुरुपयोग।

NODIA

से बनी हो।
(D) सेवा-आधारित अर्थव्यवस्था वाला एक नगरीय समाज।

110. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है।
अभिकथन (A): 73वां संशोधन ग्राम सभा के सशक्तिकरण के लिए कोई प्रावधान करने में विफल रहा।
कारण (R): ग्राम सभा को पंचायती राज व्यवस्था की आधारशिला के रूप में परिकल्पित किया गया था, जो प्रत्यक्ष लोकतंत्र का प्रतीक है।
(A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सही है लेकिन R गलत है।
(D) A गलत है लेकिन R सही है।

111. निम्नलिखित परिदृश्य को पढ़ें और उसके बाद आने वाले प्रश्न का उत्तर दें।
एक गांव का अध्ययन करने वाले एक समाजशास्त्री ने दो प्रतिद्वंद्वी 'गुटों' के अस्तित्व पर ध्यान दिया जो पीढ़ियों से बने हुए हैं, और जो पंचायत चुनावों से लेकर सामाजिक कार्यों तक सब कुछ प्रभावित करते हैं। यह किसका एक स्पष्ट मामला है?
(A) ग्रामीण गुटबाजी
(B) जजमानी प्रथा
(C) सामाजिक गतिशीलता
(D) अकृषकीकरण

112. कटाई के मौसम के दौरान कम विकसित, शुष्क क्षेत्र से समृद्ध, सिंचित क्षेत्र में खेतिहर मजदूरों का आवागमन किसका उदाहरण है?
(A) ग्रामीण-से-नगरीय प्रवास
(B) ग्रामीण-से-ग्रामीण प्रवास
(C) अकृषकीकरण
(D) अंतरराष्ट्रीय प्रवास

113. निम्नलिखित विशेषताओं पर विचार कीजिए:
1. जनसंख्या की विषमता
2. द्वितीयक संबंधों की प्रधानता
3. सामाजिक नियंत्रण के औपचारिक साधन
नगरीयता की अवधारणा के लिए उपरोक्त में से कौन सा समूह सही है?
(A) ग्रामीणता
(B) नगरीयता
(C) जजमानी प्रथा
(D) कृषक समाज

114. 'कृषि संबंध' शब्द में निम्नलिखित में से किसे छोड़कर सभी शामिल हैं:
(A) नगरीय बाजार में ग्राहक-दुकानदार संबंध।
(B) जमींदार-पट्टेदार संबंध।
(C) मालिक-कृषक का भूमि के साथ संबंध।
(D) कृषि में नियोक्ता-मजदूर संबंध।

115. सूची I को सूची II के साथ सुमेलित कीजिए।
सूची I: (समिति)
P. बलवंत राय मेहता समिति
Q. अशोक मेहता समिति
R. 73वां संशोधन अधिनियम
S. जी.वी.के. राव समिति
सूची II: (पंचायती राज से संबंधित सिफारिश)
1. द्वि-स्तरीय पंचायती राज व्यवस्था की सिफारिश की।
2. जिले को योजना की बुनियादी इकाई बनाने की सिफारिश की।
3. त्रि-स्तरीय पंचायती राज व्यवस्था की स्थापना की सिफारिश की।
4. पंचायती राज व्यवस्था को संवैधानिक दर्जा दिया।
कूट:
(A) P-3, Q-1, R-4, S-2
(B) P-1, Q-3, R-2, S-4
(C) P-3, Q-2, R-4, S-1
(D) P-2, Q-1, R-4, S-3

116. आर्थिक परिवर्तन के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए।
कथन I: ग्रामीण समाज में एक प्रमुख प्रवृत्ति जाति और जजमानी जैसी पारंपरिक संस्थाओं का कमजोर होना है।
कथन II: यह आंशिक रूप से आधुनिक शिक्षा, बाजार अर्थव्यवस्था और राजकीय विधान के प्रभाव के कारण है।
(A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
(B) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।
(C) कथन I सही है, लेकिन कथन II गलत है।
(D) कथन I गलत है, लेकिन कथन II सही है।

117. ग्रामीण परिवेश में किसी व्यक्ति या परिवार की आय और धन में वृद्धि, जिससे वे अधिक संपत्ति खरीद सकें और अपने जीवन स्तर में सुधार कर सकें, किसका प्रत्यक्ष उदाहरण है?
(A) सामाजिक गतिशीलता
(B) राजनीतिक गतिशीलता
(C) आर्थिक गतिशीलता
(D) भौगोलिक गतिशीलता

118. कौन सा कथन भारतीय कृषि में 'उत्पादन की पद्धति' बहस के एक मुख्य पहलू का सही वर्णन करता है?
(A) यह बहस करती है कि क्या भारतीय कृषि में ट्रैक्टर या बैलों का उपयोग किया जाता है।
(B) यह बहस करती है कि क्या प्रमुख उत्पादन संबंध सामंती, अर्ध-सामंती या प्रकृति में पूंजीवादी हैं।
(C) यह विभिन्न क्षेत्रों में उगाने के लिए सबसे लाभदायक फसलों पर बहस करती है।
(D) यह विभिन्न कृषि अनुष्ठानों के सांस्कृतिक महत्व पर बहस करती है।

Downloaded from www.pdf.tube

79. बढ़ती लागत के साथ-साथ भूमि जोतों का निरंतर विखंडन अक्सर किस प्रक्रिया की ओर ले जाता है?
(A) अकृषकीकरण
(B) सशक्तिकरण
(C) जजमानी प्रथा का पुनरुद्धार
(D) प्रतिगामी प्रवास

80. बंधुआ मजदूरी और प्रवासी मजदूरी के बीच एक मुख्य अंतर यह है कि:
(A) बंधुआ मजदूरी हमेशा अच्छी तरह से भुगतान की जाती है, जबकि प्रवासी मजदूरी नहीं।
(B) प्रवासी मजदूरी हमेशा स्वैच्छिक होती है, जबकि बंधुआ मजदूरी में बलप्रयोग शामिल होता है।
(C) प्रवासी मजदूर अपना गांव कभी नहीं छोड़ते, जबकि बंधुआ मजदूर छोड़ते हैं।
(D) कोई अंतर नहीं है; ये शब्द परस्पर विनिमय के योग्य हैं।

81. ग्रामीण समाजशास्त्र में निम्नलिखित को सबसे व्यापक से सबसे विशिष्ट अवधारणा के क्रम में व्यवस्थित करें:
1. कृषक अध्ययन
2. कृषि वर्ग संरचना
3. ग्रामीण समाज का अध्ययन
4. जजमानी प्रथा
(A) 3, 1, 2, 4
(B) 1, 2, 3, 4
(C) 4, 2, 1, 3
(D) 3, 2, 1, 4

82. पंचायती राज व्यवस्था के माध्यम से 'लोगों के सशक्तिकरण' को सबसे अच्छी तरह इस रूप में समझा जाता है:
(A) विकल्प चुनने और उन विकल्पों को वांछित कार्यों और परिणामों में बदलने की लोगों की क्षमता बढ़ाने के लिए एक तंत्र।
(B) बिना किसी उत्तरदायित्व के वित्तीय सहायता प्रदान करने की एक प्रक्रिया।
(C) सरपंच के हाथों में सारी शक्ति केंद्रित करने की एक विधि।
(D) नगरीय क्षेत्रों में प्रवास को प्रोत्साहित करने की एक रणनीति।

83. ग्रामीण-नगरीय अंतर के बारे में निम्नलिखित में से कौन सा कथन सबसे सटीक है?
(A) सभी समाजों में यह अंतर पूर्ण और स्पष्ट है।
(B) ग्रामीण समाज हमेशा स्थिर होते हैं, जबकि नगरीय समाज हमेशा गतिशील होते हैं।
(C) यह एक सातत्य है, जिसमें कई बस्तियों में ग्रामीण और नगरीय दोनों विशेषताएं होती हैं।
(D) नगरीय समाजों की विशेषता प्राथमिक संबंधों की पूर्ण अनुपस्थिति है।

NODIA

84. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है।
अभिकथन (A): आधुनिक भारत में जजमानी प्रथा में काफी गिरावट आई है।
कारण (R): बाजार अर्थव्यवस्था के विस्तार, नकद-आधारित लेनदेन और रोजगार के नए अवसरों ने पारंपरिक पारस्परिक बाध्यताओं को कमजोर कर दिया है।
(A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सही है लेकिन R गलत है।
(D) A गलत है लेकिन R सही है।

85. ग्रामीण भारत में सामाजिक गतिशीलता के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. यह विशेष रूप से एक व्यक्तिगत घटना है और कभी सामूहिक नहीं होती।
2. इसे शिक्षा, प्रवास और राजनीतिक लामबंदी द्वारा सुगम बनाया जा सकता है।
3. पारंपरिक जाति संरचना सामाजिक गतिशीलता के लिए एक महत्वपूर्ण बाधा उत्पन्न करती है।
ऊपर दिए गए कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?
(A) केवल 1 और 2
(B) केवल 2 और 3
(C) केवल 1 और 3
(D) 1, 2 और 3

86. ग्रामीण विकास की एक रणनीति जो स्थानीय निर्णय लेने वाले निकायों में महिलाओं और अनुसूचित जातियों या जनजातियों के उचित प्रतिनिधित्व सुनिश्चित करने पर ध्यान केंद्रित करती है, सीधे किसके सिद्धांत से जुड़ी है?
(A) आर्थिक दक्षता
(B) सामाजिक सशक्तिकरण
(C) तकनीकी उन्नयन
(D) गुटीय राजनीति

87. निम्नलिखित में से कौन जीवन जीने के एक तरीके के रूप में ग्रामीणता की परिभाषित विशेषता नहीं है?
(A) व्यवसाय के रूप में कृषि की प्रधानता।
(B) परिवार और नातेदारी का गहरा प्रभाव।
(C) संस्कृति और मूल्यों में समरूपता।
(D) सामाजिक संबंधों में अनामिकता।

88. भूमि का स्वामित्व, नियंत्रण और वितरण कैसे किया जाता है, और इसके परिणामस्वरूप होने वाले सामाजिक पदानुक्रम का अध्ययन किसका केंद्र है?
(A) कृषि संरचना का अध्ययन।
(B) ग्रामीण प्रवास का अध्ययन।
(C) ग्रामीण नेतृत्व का अध्ययन।
(D) कृषक आंदोलनों का अध्ययन।

स्थिति में है।
(C) निर्यात फसलों पर केंद्रित बड़े पैमाने का व्यावसायिक किसान है।
(D) एक खानाबदोश चरवाहा है जो कृषि नहीं करता है।

130. एक पीढ़ी के दौरान एक परिवार की सामाजिक स्थिति में एक पट्टेदार किसान से भूमि-स्वामी किसान के रूप में परिवर्तन किसका उदाहरण है?
(A) सामाजिक गतिशीलता
(B) भौगोलिक गतिशीलता
(C) दैनिक आवागमन
(D) गुटीय बदलाव

131. एक गांव में विभिन्न जाति समूहों के बीच पारस्परिक दायित्वों की पारंपरिक प्रणाली को क्या कहा जाता है?
(A) पंचायती राज
(B) बंधुआ मजदूरी
(C) जजमानी प्रथा
(D) कृषि अशांति

132. आर्थिक परिवर्तन के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर consider कीजिए।
कथन I: कृषि अशांति हमेशा हिंसक और क्रांतिकारी प्रकृति की होती है।
कथन II: कृषक आंदोलन शांतिपूर्ण विरोध प्रदर्शनों से लेकर अधिक कट्टरपंथी विद्रोहों तक हो सकते हैं।
(A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
(B) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।
(C) कथन I सही है, लेकिन कथन II गलत है।
(D) कथन I गलत है, लेकिन कथन II सही है।

133. निम्नलिखित में से कौन ग्रामीण-नगरीय अंतर की गलत समझ का प्रतिनिधित्व करता है?
(A) ग्रामीण क्षेत्रों में सामाजिक संबंध प्राथमिक और बहुआयामी होने की अधिक संभावना है।
(B) नगरीय क्षेत्रों में श्रम विभाजन अधिक विशिष्ट है।
(C) ग्रामीण समाज पूरी तरह से स्थिर और अपरिवर्तनीय हैं।
(D) ग्रामीण क्षेत्रों में जनसंख्या घनत्व आमतौर पर कम होता है।

134. 73वें संशोधन के तहत स्थापित राज्य चुनाव आयोग का प्राथमिक कार्य निम्नलिखित में से कौन सा है?
(A) पंचायतों के लिए वित्तीय संसाधनों का निर्धारण करना।
(B) पंचायती राज संस्थाओं के लिए स्वतंत्र और निष्पक्ष चुनाव कराना।
(C) ग्रामीण विकास योजनाओं को लागू करना।
(D) राज्य सरकार के खातों का लेखा-परीक्षण करना।

135. निम्नलिखित कृषि वर्गों को ऊपर से नीचे के क्रम में एक विशिष्ट पदानुक्रम में व्यवस्थित करें:
1. भूमिहीन खेतिहर मजदूर
2. जमींदार
3. मध्यम और गरीब किसान
4. धनी किसान
(A) 2, 4, 3, 1
(B) 1, 3, 4, 2
(C) 2, 3, 4, 1
(D) 4, 2, 1, 3

136. निम्नलिखित मुद्दों पर विचार कीजिए: ऋण के कारण भूमि अलगाव, जोतों का अलाभकारी होना, और ग्रामीण क्षेत्रों में वैकल्पिक रोजगार की कमी। ये मुख्य रूप से किस घटना से संबंधित हैं?
(A) अकृषकीकरण
(B) जजमानी प्रथा की सफलता
(C) ग्रामीण गुटबाजी में गिरावट
(D) महिलाओं का सशक्तिकरण

137. वह 'उत्पादन की पद्धति' जो पूंजी के निवेश, मुक्त वेतन-श्रम के उपयोग और लाभ के लिए उत्पादन द्वारा परिभाषित की जाती है, वह है:
(A) सामंती उत्पादन पद्धति
(B) जजमानी उत्पादन पद्धति
(C) पूंजीवादी उत्पादन पद्धति
(D) निर्वाह उत्पादन पद्धति

138. 'ग्रामीण-नगरीय अंतर' का अध्ययन करने वाले दृष्टिकोणों का मुख्य केंद्र क्या है?
(A) ग्रामीण और नगरीय क्षेत्रों की सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक विशेषताओं की व्यवस्थित तुलना करना और उनमें अंतर करना।
(B) यह सिद्ध करना कि ग्रामीण जीवन नगरीय जीवन से श्रेष्ठ है।
(C) यह तर्क देना कि गांवों और शहरों के बीच कोई अंतर नहीं है।
(D) शहरों के केवल आर्थिक पहलुओं का अध्ययन करना।

139. फसल के एक निश्चित हिस्से के बदले एक भूस्वामी द्वारा एक पट्टेदार को भूमि पट्टे पर देना किसका उदाहरण है?
(A) जजमानी संबंध
(B) बंधुआ मजदूरी
(C) ग्रामीण गुटबाजी
(D) कृषि संबंध

140. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है।
अभिकथन (A): जजमानी प्रथा प्रत्यक्ष और अक्सर वंशानुगत संबंधों के सिद्धांत पर संचालित होती थी।
कारण (R): यह एक अवैयक्तिक, बाजार-आधारित प्रणाली थी जहां सेवाएं उच्चतम बोली लगाने वाले को खरीदी और बेची जाती थीं।
(A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।

Click Here to Buy book on Amazon

(A) यह तीनों स्तरों पर सदस्यों के प्रत्यक्ष चुनाव को अनिवार्य बनाता है।
(B) यह सभी स्तरों पर अध्यक्ष के पद को उनकी जनसंख्या के अनुपात में अनुसूचित जातियों और अनुसूचित जनजातियों के लिए आरक्षित करता है।
(C) इसमें महिलाओं के लिए सीटों के आरक्षण का कोई प्रावधान नहीं है।
(D) यह पंचायत चुनाव कराने के लिए एक राज्य चुनाव आयोग की स्थापना करता है।

100. कृषि संबंधों के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. वे पूरी तरह से आर्थिक हैं और किसी भी सामाजिक या राजनीतिक आयाम से रहित हैं।
2. इनमें जमींदार और पट्टेदार, तथा भूस्वामी और मजदूर के बीच के संबंध शामिल हैं।
3. उत्पादन की पद्धति पर बहस इन संबंधों को सैद्धांतिक रूप से वर्गीकृत करने का एक प्रयास है।

ऊपर दिए गए कथनों में से कौन से सही हैं?
(A) केवल 1 और 2
(B) केवल 2 और 3
(C) केवल 1 और 3
(D) 1, 2 और 3

101. वह प्रक्रिया जहाँ एक छोटा मालिक-कृषक ऋण के कारण अपनी भूमि बेचने के लिए विवश हो जाता है और भूमिहीन मजदूर बन जाता है, किसका उत्कृष्ट उदाहरण है?
(A) ऊपर की ओर आर्थिक गतिशीलता
(B) जजमानी प्रथा का सुदृढ़ीकरण
(C) अकृषकीकरण और कंगालीकरण
(D) ग्रामीण-नगरीय संलयन

102. आर्थिक परिवर्तन के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए।
कथन I: कुछ समाजशास्त्रियों द्वारा 'ग्रामीणता' और 'नगरीयता' को भौगोलिक स्थानों के रूप में नहीं बल्कि जीवन के विशिष्ट तरीकों के रूप में देखा जाता है।
कथन II: इस दृष्टिकोण के अनुसार, शहर में रहने वाला व्यक्ति 'ग्रामीण' लक्षण प्रदर्शित कर सकता है, और गांव का व्यक्ति 'नगरीय' लक्षण प्रदर्शित कर सकता है।
(A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
(B) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।
(C) कथन I सही है, लेकिन कथन II गलत है।
(D) कथन I गलत है, लेकिन कथन II सही है।

103. ग्रामीण समाज में परिवर्तन की एक प्रमुख प्रवृत्ति निम्नलिखित में से कौन सी रही है?
(A) मुद्रा आधारित अर्थव्यवस्था से वस्तु विनिमय प्रणाली में बदलाव।
(B) पारंपरिक जाति-आधारित व्यवसायों का सुदृढ़ीकरण।
(C) नगरीय केंद्रों के साथ संचार और परिवहन संपर्कों में कमी।
(D) कृषि के महत्व में गिरावट और गैर-कृषि रोजगार में वृद्धि।

104. अकृषकीकरण की एक विशिष्ट प्रक्रिया के चरणों को तार्किक क्रम में व्यवस्थित करें:
1. भूमिहीन खेतिहर मजदूर बन जाना।
2. ऋण चुकाने के लिए भूमि का एक हिस्सा बेच देना।
3. फसल खराब होने के कारण साहूकार से ऋण लेना।
4. और अधिक ऋण लेना और शेष भूमि बेच देना।

(A) 1, 2, 3, 4
(B) 3, 2, 4, 1
(C) 2, 3, 1, 4
(D) 3, 1, 2, 4

105. जजमानी प्रथा में 'कमिन' या 'प्रजा' किसे संदर्भित करता है?
(A) भूस्वामी संरक्षक।
(B) ग्राम वृद्धों की परिषद।
(C) वे समूह जो विशेष वस्तुएं और सेवाएं प्रदान करते हैं।
(D) मध्यस्थ कर संग्रहकर्ता।

106. कृषि वर्ग संरचना के संदर्भ में, मुख्य विभेदक कारक किसी व्यक्ति या समूह का क्या है?
(A) कृषि उत्पादन के साधनों के साथ संबंध।
(B) धार्मिक संबद्धता
(C) भाषाई समूह
(D) आयु और लिंग

107. कृषक आंदोलनों का प्राथमिक उद्देश्य निम्नलिखित में से क्या है?
(A) पारंपरिक, गैर-व्यावसायिक खेती को बढ़ावा देना।
(B) जजमानी संबंधों की एक नई प्रणाली स्थापित करना।
(C) नगरीय क्षेत्रों में प्रवास को प्रोत्साहित करना।
(D) राज्य के अधिकार को चुनौती देना और कृषि संबंधों में संरचनात्मक परिवर्तनों की मांग करना।

108. 73वें संशोधन के संदर्भ में 'सशक्तिकरण' की अवधारणा को सबसे समग्र रूप से किसके माध्यम से प्राप्त किया जाता है?
(A) व्यक्तियों को वित्तीय अनुदान प्रदान करना।
(B) पंचायतों के लिए राजनीतिक प्रतिनिधित्व, वित्तीय स्वायत्तता और कार्यात्मक जिम्मेदारियां सुनिश्चित करना।
(C) पंचायतों को चलाने के लिए सरकारी अधिकारियों की नियुक्ति करना।
(D) केवल सड़कों और भवनों के निर्माण पर ध्यान केंद्रित करना।

109. निम्नलिखित में से कौन 'कृषक समाज' को सबसे अच्छी तरह परिभाषित करता है?
(A) पूरी तरह से औद्योगिक श्रमिकों से बना समाज।
(B) चरवाहा आधारित एक खानाबदोश समाज।
(C) ऐसा समाज जहां अधिकांश आबादी छोटे कृषि उत्पादकों

NODIA

49. ग्रामीण संदर्भ में 'सामाजिक गतिशीलता' का अर्थ है:
(A) लोगों का एक गांव से दूसरे गांव में भौतिक रूप से जाना।
(B) सामाजिक पदानुक्रम में किसी व्यक्ति या समूह की स्थिति में परिवर्तन।
(C) कृषि कार्य के लिए श्रम का मौसमी प्रवास।
(D) काम के लिए गांव से पास के शहर तक दैनिक आवागमन।

50. निर्वाह-आधारित कृषि अर्थव्यवस्था से ऐसी अर्थव्यवस्था में संक्रमण जहां फसलें मुख्य रूप से बाजार में बिक्री के लिए उगाई जाती हैं, ग्रामीण समाज में परिवर्तन की एक प्रमुख प्रवृत्ति है जिसे कहा जाता है:
(A) कृषि का व्यावसायीकरण
(B) अकृषकीकरण
(C) कंगालीकरण
(D) गुटबाजी

51. भारत में पंचायती राज व्यवस्था से संबंधित निम्नलिखित घटनाओं को कालानुक्रमिक क्रम में व्यवस्थित करें:
1. 73वें संविधान संशोधन अधिनियम का पारित होना।
2. बलवंत राय मेहता समिति की रिपोर्ट प्रस्तुत करना।
3. अशोक मेहता समिति की रिपोर्ट प्रस्तुत करना।
4. सामुदायिक विकास कार्यक्रम का शुभारंभ।
(A) 4, 2, 3, 1
(B) 2, 4, 3, 1
(C) 1, 3, 2, 4
(D) 4, 3, 2, 1

52. 'उत्पादन की पद्धति' बहस किस प्रमुख समाजशास्त्रीय सिद्धांतकार की अवधारणाओं को भारतीय कृषि संदर्भ में लागू करने का प्रयास करती है?
(A) एमिल दुर्खीम
(B) मैक्स वेबर
(C) टैलकोट पार्सन्स
(D) कार्ल मार्क्स

53. निम्नलिखित में से कौन ग्रामीण अर्थव्यवस्था में नकारात्मक परिवर्तनों से संबंधित अवधारणाओं के जोड़े की सही पहचान करता है?
(A) सशक्तिकरण और सामाजिक गतिशीलता
(B) जजमानी प्रथा और गुटबाजी
(C) कंगालीकरण और अकृषकीकरण
(D) ग्रामीणता और नगरीयता

54. ग्रामीण समाजशास्त्र के संदर्भ में 'प्रवासी मजदूर' शब्द विशेष रूप से संदर्भित करता है:
(A) एक गांव के सभी निवासियों को।
(B) उन श्रमिकों को जो रोजगार के लिए अपने मूल स्थान से दूसरे स्थान पर जाते हैं।
(C) उन भूस्वामियों को जो अपने खेतों पर काम की निगरानी करते हैं।
(D) ग्रामीण क्षेत्रों में तैनात सरकारी अधिकारियों को।

55. सूची I को सूची II के साथ सुमेलित कीजिए।
सूची I: (कृषि वर्ग)
P. जमींदार
Q. धनी किसान
R. मध्यम किसान
S. खेतिहर मजदूर
सूची II: (प्राथमिक आर्थिक गतिविधि)
1. स्वयं की भूमि पर खेती करता है, मजदूर किराए पर लेता है, और बाजार के लिए महत्वपूर्ण अधिशेष पैदा करता है।
2. मुख्य रूप से अपनी श्रम शक्ति बेचकर जीवन यापन करता है।
3. खेती में लगे बिना, भूमि के लगान पर जीवित रहता है।
4. मुख्य रूप से पारिवारिक श्रम के साथ अपनी भूमि पर खेती करता है, जिसमें बहुत कम अधिशेष होता है।
कूट:
(A) P-3, Q-1, R-4, S-2
(B) P-1, Q-3, R-2, S-4
(C) P-3, Q-4, R-1, S-2
(D) P-2, Q-1, R-4, S-3

56. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है।
अभिकथन (A): 73वें संशोधन में पंचायतों में महिलाओं के लिए एक-तिहाई सीटों के आरक्षण का प्रावधान है।
कारण (R): यह प्रावधान ग्रामीण भारत में महिलाओं के राजनीतिक सशक्तिकरण के लिए एक प्रमुख रणनीति है।
(A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सही है लेकिन R गलत है।
(D) A गलत है लेकिन R सही है।

57. निम्नलिखित परिदृश्य को पढ़ें और उसके बाद आने वाले प्रश्न का उत्तर दें।
एक समाजशास्त्री देखता है कि एक गांव में, एक एकल उच्च जाति का परिवार अधिकांश भूमि को नियंत्रित करता है, धन उधार देता है और राजनीतिक निर्णयों को प्रभावित करता है। इस परिवार पर केंद्रित प्रभुत्व और निर्भरता का नेटवर्क किसका एक उत्कृष्ट उदाहरण है:
(A) एक कार्यशील जजमानी प्रथा
(B) सामाजिक गतिशीलता
(C) ग्रामीण नेतृत्व और शक्ति का संकेंद्रण
(D) एक समतावादी कृषि संरचना

58. कृषि अशांति के बारे में निम्नलिखित में से कौन सा कथन गलत है?
(A) यह कृषि प्रणाली के साथ पूर्ण संतोष का संकेत है।
(B) यह जमींदारों या साहूकारों द्वारा शोषण के कारण शुरू

Downloaded from www.pdf.tube

119. निम्नलिखित परिदृश्य को पढ़ें और उसके बाद आने वाले प्रश्न का उत्तर दें।
एक ऐसी स्थिति जहां एक गरीब किसान अपनी भूमि का छोटा टुकड़ा खो देता है और निर्माण मजदूर के रूप में काम करने के लिए शहर जाने को विवश होता है, किन संयुक्त प्रक्रियाओं का उदाहरण है:
(A) गुटबाजी और जजमानी संबंध।
(B) सशक्तिकरण और सामाजिक गतिशीलता।
(C) कृषि अशांति और ग्रामीण नेतृत्व।
(D) अकृषकीकरण और ग्रामीण-से-नगरीय प्रवास।

120. बंधुआ मजदूरी के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. यह एक स्वतंत्र और आपसी अनुबंध पर आधारित प्रणाली है।
2. इसमें अक्सर मजदूर के भौतिक आवागमन पर प्रतिबंध शामिल होता है।
3. ऋण में अक्सर इस तरह से हेरफेर किया जाता है कि उसे चुकाना असंभव हो जाता है।

ऊपर दिए गए कथनों में से कौन से सही हैं?
(A) केवल 1 और 2
(B) केवल 2 और 3
(C) केवल 1 और 3
(D) 1, 2 और 3

121. 'प्रवासी मजदूर' और 'बंधुआ मजदूर' के बीच मुख्य अंतर किसका तत्व है?
(A) कौशल स्तर
(B) मूल स्थान
(C) विवशता और स्वतंत्रता की हानि
(D) किए गए कार्य का प्रकार

122. निम्नलिखित में से कौन ग्रामीण विकास की रणनीति नहीं है?
(A) कृषि अशांति और कृषक आंदोलनों को बढ़ावा देना।
(B) बंधुआ और प्रवासी मजदूरों के मुद्दे का समाधान करना।
(C) कंगालीकरण और अकृषकीकरण का मुकाबला करना।
(D) सामाजिक मुद्दों के अध्ययन से उत्पन्न रणनीतियों को लागू करना।

123. समकालीन पंचायती राज व्यवस्था का 'लोगों का सशक्तिकरण' एक केंद्रीय लक्ष्य है। निम्नलिखित में से कौन इस सशक्तिकरण का एक प्रमुख संकेतक है?
(A) पंचायत चुनावों में मतदाता मतदान में गिरावट।
(B) राज्य नौकरशाही पर पंचायतों की पूर्ण निर्भरता।
(C) व्यक्तिगत वफादारी पर आधारित गुटबाजी का उदय।
(D) ग्राम सभा की बैठकों में महिलाओं और वंचित समूहों की सक्रिय भागीदारी।

124. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है।
अभिकथन (A): ग्रामीण-से-नगरीय प्रवास के मूल ग्रामीण समाज के लिए सकारात्मक और नकारात्मक दोनों परिणाम हो सकते हैं।
कारण (R): प्रवासियों द्वारा प्रेषित धन ग्रामीण अर्थव्यवस्था को बढ़ावा दे सकता है, लेकिन सक्षम श्रमिकों की कमी कृषि उत्पादकता में बाधा डाल सकती है।
(A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सही है लेकिन R गलत है।
(D) A गलत है लेकिन R सही है।

125. ग्रामीण क्षेत्रों में जमींदारों, कृषकों और मजदूरों जैसे समूहों के बीच सामाजिक स्थिति और आर्थिक शक्ति में व्यवस्थित अंतर का अध्ययन किसका अध्ययन है?
(A) ग्रामीण-नगरीय अंतर
(B) ग्रामीण गुटबाजी
(C) कृषि वर्ग संरचना
(D) जजमानी प्रथा

126. 73वां संशोधन पंचायतों के लिए क्रांतिकारी था क्योंकि इसने:
(A) उन्हें स्थानीय सांसद के अधीनस्थ बना दिया।
(B) सरपंच की भूमिका को समाप्त कर दिया।
(C) केवल सरकारी अधिकारियों को ही सदस्य बनने की अनुमति दी।
(D) उन्हें राज्य द्वारा निर्मित निकायों से संवैधानिक रूप से अनिवार्य संस्थानों में बदल दिया।

127. निम्नलिखित में से कौन 'कंगालीकरण' का सबसे सटीक विवरण है?
(A) निरंतर आर्थिक गिरावट की प्रक्रिया जो बेसहारा होने की ओर ले जाती है।
(B) भूमिहीन होने की प्रक्रिया।
(C) ग्रामीण से नगरीय क्षेत्र में जाने की प्रक्रिया।
(D) गांव में राजनीतिक शक्ति प्राप्त करने की प्रक्रिया।

128. ग्रामीण-से-नगरीय प्रवास में 'आकर्षण' कारक किसे संदर्भित करते हैं?
(A) गांवों में वे नकारात्मक स्थितियाँ जो लोगों को बाहर धकेलती हैं।
(B) शहरों की वे अनुकूल स्थितियाँ जो लोगों को अपनी ओर खींचती हैं।
(C) वे सरकारी नीतियां जो आवागमन को प्रतिबंधित करती हैं।
(D) वे पारिवारिक दबाव जो लोगों को गांव में रहने के लिए मजबूर करते हैं।

129. कृषक अध्ययन में 'कृषक' की अवधारणा को आमतौर पर एक ग्रामीण कृषि उत्पादक के रूप में समझा जाता है जो:
(A) बाहरी दुनिया से बिना किसी संपर्क के पूरी तरह से आत्मनिर्भर है।
(B) एक बड़े, स्तरीकृत समाज का हिस्सा है और अधीनस्थ

NODIA

89. ग्रामीण शासन के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए।
कथन I: 73वें संशोधन से पहले, कई राज्यों में पंचायती राज संस्थाएं अनियमित चुनाव और धन की कमी से जूझ रही थीं।
कथन II: 73वें संशोधन ने चुनाव अनिवार्य करके और राज्य वित्त आयोगों का गठन करके इन मुद्दों को सुधारने की कोशिश की।
(A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
(B) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।
(C) कथन I सही है, लेकिन कथन II गलत है।
(D) कथन I गलत है, लेकिन कथन II सही है।

90. 'उत्पादन की पद्धति' जिसकी विशेषता भूस्वामियों द्वारा गैर-आर्थिक बलप्रयोग के माध्यम से पट्टेदारों से अधिशेष निकालना है, कहलाती है:
(A) सामंती या अर्ध-सामंती
(B) पूंजीवादी
(C) समाजवादी
(D) सांप्रदायिक

91. एक किसान जिसके पास पर्याप्त मात्रा में भूमि है, वेतनभोगी श्रम को नियोजित करता है, आधुनिक तकनीक का उपयोग करता है और मुख्य रूप से बाजार में लाभ के लिए उत्पादन करता है, उसे किस रूप में वर्गीकृत किया जाएगा:
(A) मध्यम किसान
(B) गरीब किसान
(C) भूमिहीन मजदूर
(D) पूंजीवादी किसान या धनी किसान

92. निम्नलिखित में से किसे छोड़कर अन्य सभी ग्रामीण विकास और परिवर्तन के अध्ययन के मुख्य विषय हैं:
(A) ग्रामीण समाज में परिवर्तन की प्रवृत्तियाँ।
(B) अंतरराष्ट्रीय कूटनीति का अध्ययन।
(C) प्रवास की प्रक्रियाएँ।
(D) सामाजिक और आर्थिक गतिशीलता।

93. अपनी फसलों के लिए उच्च खरीद मूल्य की मांग करने वाले किसानों का अचानक और व्यापक विरोध किसका उदाहरण है?
(A) जजमानी प्रथा
(B) अकृषकीकरण
(C) कृषि अशांति
(D) ग्रामीण-से-ग्रामीण प्रवास

94. 73वें संशोधन के तहत ग्राम सभा का सशक्तिकरण किसकी ओर एक कदम है?
(A) प्रतिनिधि लोकतंत्र
(B) राजशाही
(C) एक केंद्रीकृत नौकरशाही
(D) सहभागी लोकतंत्र

95. वह अवधारणा जिसमें गांवों और शहरों के बीच जनसंख्या घनत्व, व्यावसायिक संरचना और सामाजिक परिवेश में अंतर शामिल है, कहलाती है:
(A) ग्रामीण-नगरीय अंतर
(B) जजमानी प्रथा
(C) उत्पादन की पद्धति
(D) गुटबाजी

96. सूची I को सूची II के साथ सुमेलित कीजिए।
सूची I: (सामाजिक मुद्दा)
P. बंधुआ मजदूरी
Q. कंगालीकरण
R. प्रवासी मजदूरी
S. कृषि अशांति
सूची II: (मुख्य विशेषता)
1. कृषि क्षेत्र में कथित अन्याय के खिलाफ सामूहिक कार्रवाई।
2. ऋणग्रस्तता के कारण विवश सेवा।
3. रोजगार के लिए अस्थायी या स्थायी आवागमन।
4. प्रगतिशील निर्धनता और परिसंपत्तियों की हानि की प्रक्रिया।
कूट:
(A) P-1, Q-3, R-2, S-4
(B) P-2, Q-4, R-3, S-1
(C) P-4, Q-1, R-2, S-3
(D) P-3, Q-1, R-4, S-2

97. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है।
अभिकथन (A): ग्रामीण गुटबाजी किसी गांव के समग्र विकास के लिए हानिकारक है।
कारण (R): यह सामान्य लक्ष्यों के लिए ग्राम समुदाय के सभी वर्गों के बीच एकता और सहयोग को बढ़ावा देती है।
(A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सही है लेकिन R गलत है।
(D) A गलत है लेकिन R सही है।

98. निम्नलिखित परिदृश्य को पढ़ें और उसके बाद आने वाले प्रश्न का उत्तर दें।
एक गांव में नई खुली फैक्ट्री में नौकरी के लिए युवाओं का पास के शहर में बड़े पैमाने पर जाना देखा जाता है। इस घटना को सबसे अच्छी तरह इस रूप में वर्णित किया गया है:
(A) ग्रामीण-से-नगरीय प्रवास
(B) ग्रामीण-से-ग्रामीण प्रवास
(C) अकृषकीकरण
(D) गुटबाजी

99. 73वें संशोधन के बाद पंचायती राज व्यवस्था के संबंध में निम्नलिखित में से कौन सा कथन गलत है?

Click Here to Buy book on Amazon

(B) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सही है लेकिन R गलत है।
(D) A गलत है लेकिन R सही है।

141. सूची I को सूची II के साथ सुमेलित कीजिए।
सूची I: (प्रक्रिया)
P. प्रवास
Q. अकृषकीकरण
R. कंगालीकरण
S. सशक्तिकरण
सूची II: (परिणाम)
1. स्थानीय शासन में महिलाओं की बढ़ती भागीदारी।
2. नगरीय मलिन बस्तियों की वृद्धि।
3. भूमिहीन खेतिहर मजदूरों में वृद्धि।
4. अत्यधिक निर्धनता और संपत्तिहीनता।
कूट:
(A) P-2, Q-3, R-4, S-1
(B) P-1, Q-2, R-3, S-4
(C) P-2, Q-4, R-1, S-3
(D) P-3, Q-1, R-4, S-2

142. ग्रामीण समाज में परिवर्तन की एक महत्वपूर्ण प्रवृत्ति कृषि वर्ग संरचना का परिवर्तन है, जिसमें शामिल है:
(A) सभी वर्गों का पूर्णतः समाप्त होना, जिससे एक समतावादी समाज बनता है।
(B) जमींदार वर्ग का मजबूत होना और कृषकों का पूर्ण उन्मूलन।
(C) कृषि-पूर्व समाज में वापसी।
(D) कृषकों के बीच बढ़ता विभेदीकरण और पूंजीवादी खेती का विकास।

143. कृषि समाजशास्त्र में चर्चित भूमि स्वामित्व का निम्नलिखित में से कौन सा रुप नहीं है?
(A) गैर-कृषि उपयोग के लिए एक नगरीय निगम द्वारा स्वामित्व।
(B) व्यक्तिगत कृषक द्वारा स्वामित्व।
(C) समुदाय या गांव द्वारा स्वामित्व।
(D) एक अनुपस्थित जमींदार द्वारा स्वामित्व।

144. 73वें संशोधन से पहले पंचायती राज व्यवस्था के साथ मुख्य समस्या क्या थी?
(A) वे बहुत शक्तिशाली थे और केंद्र सरकार के अधिकार को चुनौती देते थे।
(B) उनमें संवैधानिक अधिदेश का अभाव था, जिससे अनियमितता और राज्य सरकारों पर निर्भरता बनी रही।
(C) उनमें महिलाओं के लिए अनिवार्य आरक्षण था, जिसका ग्रामीणों ने विरोध किया था।
(D) वे द्वि-स्तरीय प्रणाली पर आधारित थे जो अप्रभावी पाई गई थी।

145. 'कृषक आंदोलनों' के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. वे एक आधुनिक घटना हैं और पूर्व-औपनिवेशिक भारत में मौजूद नहीं थे।
2. उनकी मांगें अक्सर भूमि, लगान और ऋण के मुद्दों पर केंद्रित होती हैं।
3. वे कृषि अशांति व्यक्त करने वाली सामूहिक कार्रवाई का एक रुप हैं।
ऊपर दिए गए कथनों में से कौन से सही हैं?
(A) केवल 1 और 2
(B) केवल 2 और 3
(C) केवल 1 और 3
(D) 1, 2 और 3

146. निम्नलिखित परिदृश्य को पढ़ें और उसके बाद आने वाले प्रश्न का उत्तर दें।
आरक्षण और जन समर्थन के कारण गांव में वंचित वर्ग के किसी व्यक्ति का पंचायत के सरपंच के रूप में निर्वाचित होना किसका उदाहरण है?
(A) सामाजिक और राजनीतिक गतिशीलता
(B) आर्थिक गतिशीलता
(C) ग्रामीण-से-ग्रामीण प्रवास
(D) कंगालीकरण

147. श्रम संबंधों के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए।
कथन I: ग्रामीण-से-ग्रामीण प्रवास अक्सर अलग-अलग कृषि चक्रों या संसाधन संपन्नता वाले क्षेत्रों के बीच होता है।
कथन II: ऐसा प्रवास हमेशा स्थायी होता है, और प्रवासी कभी भी अपने मूल स्थान पर नहीं लौटते हैं।
(A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
(B) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।
(C) कथन I सही है, लेकिन कथन II गलत है।
(D) कथन I गलत है, लेकिन कथन II सही है।

148. 'नगरीयता' की अवधारणा का तात्पर्य है कि नगरीय वातावरण सामाजिक जीवन को इस तरह से आकार देता है जो बढ़ावा देता है:
(A) सादगी और सामाजिक एकरूपता को।
(B) व्यक्तिगत और आत्मीय संबंधों को।
(C) समुदाय और अपनेपन की मजबूत भावना को।
(D) व्यक्तिवाद और सामाजिक विभाजन को।

149. एक गांव में नातेदारी या जाति समूहों के बीच प्रतिद्वंद्विता का बने रहना, जो स्थानीय राजनीति को प्रभावित करता है, किसकी अभिव्यक्ति है?
(A) सामाजिक गतिशीलता
(B) अकृषकीकरण
(C) ग्रामीण नेतृत्व और गुटबाजी
(D) जजमानी प्रथा

Downloaded from www.pdf.tube

213. 73वें संशोधन के अधिदेश के अनुसार ग्राम सभा के सशक्तिकरण का उद्देश्य है:
(A) निर्वाचित ग्राम पंचायत को कमजोर करना।
(B) सभी निर्णय लेने की शक्ति जिला कलेक्टर को हस्तांतरित करना।
(C) जमीनी स्तर पर प्रत्यक्ष, सहभागी लोकतंत्र को मजबूत करना।
(D) गुटबाजी को प्रोत्साहित करना।

214. जजमानी प्रथा को सबसे अच्छी तरह किसके तंत्र के रूप में समझा जा सकता है?
(A) लोकतांत्रिक चुनाव।
(B) बाजार आधारित मजदूरी श्रम।
(C) व्यक्तियों के बीच औपचारिक कानूनी अनुबंध।
(D) पारंपरिक, जाति-आधारित, पारस्परिक सेवा संबंध।

215. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है।
अभिकथन (A): कृषि वर्ग संरचना स्थिर नहीं है और इसमें परिवर्तन होता रहता है।
कारण (R): कृषि का व्यावसायीकरण, भूमि सुधार और अकृषकीकरण जैसी प्रक्रियाएं विभिन्न कृषि वर्गों के बीच संबंधों को नया आकार देती हैं।
(A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सही है लेकिन R गलत है।
(D) A गलत है लेकिन R सही है।

216. ग्रामीण समाज में परिवर्तन की एक प्रमुख प्रवृत्ति में 'प्रदत्त' स्थिति की गिरावट और 'अर्जित' स्थिति का उदय शामिल है। इसका अर्थ है:
(A) किसी व्यक्ति की सामाजिक स्थिति व्यक्तिगत प्रयास के बजाय जन्म से अधिक निर्धारित होती है।
(B) किसी व्यक्ति की सामाजिक स्थिति जन्म के बजाय व्यक्तिगत प्रयास, शिक्षा और धन द्वारा तेजी से निर्धारित होती है।
(C) ग्रामीण समाज में सामाजिक स्थिति का महत्व समाप्त हो गया है।
(D) जाति व्यवस्था पहले से कहीं अधिक कठोर हो गई है।

217. जब किसी क्षेत्र के कृषक कृषि ऋण माफी की मांग के लिए संगठित होते हैं, तो वे किसके एक रूप में भाग ले रहे होते हैं?
(A) कृषक आंदोलन
(B) ग्रामीण-से-नगरीय प्रवास
(C) जजमानी संबंध
(D) गुटीय विवाद

218. 'प्रवासी मजदूरों' की समस्या एक महत्वपूर्ण सामाजिक मुद्दा है क्योंकि वे अक्सर:
(A) शोषण, खराब रहने की स्थिति का सामना करते हैं और सामाजिक सुरक्षा से बाहर रह जाते हैं।
(B) उच्च मजदूरी और पूर्ण सामाजिक सुरक्षा लाभ प्राप्त करते हैं।
(C) अपने गंतव्य गांवों में भूस्वामी होते हैं।
(D) ग्रामीण क्षेत्रों में सबसे शक्तिशाली राजनीतिक समूह होते हैं।

219. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. कृषि संबंध भूमि के इर्द-गिर्द संबंधों के जाल को संदर्भित करते हैं।
2. उत्पादन की पद्धति पर बहस इन संबंधों को वर्गीकृत करने का एक प्रयास है।
निम्नलिखित में से कौन सा सही है?
(A) केवल 1 और 2
(B) केवल 2
(C) केवल 1
(D) न तो 1 और न ही 2

220. ग्रामीण-नगरीय अंतर अक्सर सामाजिक नियंत्रण की प्रकृति में अंतर की विशेषता है, जिसमें ग्रामीण समाज किस पर अधिक निर्भर करता है?
(A) औपचारिक कानून, पुलिस और अदालतें।
(B) अनामिकता और उदासीनता।
(C) बाजार के आदेश।
(D) रीति-रिवाजों, परंपराओं और जनमत जैसे अनौपचारिक तंत्र।

221. ग्रामीण शासन के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए।
कथन I: भारत के संविधान का 73वां संशोधन नगरीय स्थानीय निकायों से संबंधित है।
कथन II: 73वें संशोधन ने पंचायती राज की त्रि-स्तरीय प्रणाली का प्रावधान किया।
(A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
(B) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।
(C) कथन I सही है, लेकिन कथन II गलत है।
(D) कथन I गलत है, लेकिन कथन II सही है।

222. ग्रामीण समाज में व्यक्तियों या समूहों का एक सामाजिक स्थिति से दूसरी सामाजिक स्थिति में ऊपर या नीचे जाना क्या कहलाता है?
(A) सामाजिक प्रवास
(B) सामाजिक गतिशीलता
(C) सामाजिक गुटबाजी
(D) सामाजिक अशांति

223. किस प्रकार के भूमि स्वामित्व में व्यक्तिगत कृषकों के पास अपनी भूमि पर प्रत्यक्ष स्वामित्व अधिकार होते हैं और वे सीधे राज्य को राजस्व का भुगतान करते हैं?
(A) जमींदारी स्वामित्व
(B) जजमानी स्वामित्व

NODIA

बिहार के अपने गांव से पंजाब जाता है और कुछ महीनों के बाद वापस लौट आता है, किसका उदाहरण है?
(A) स्थायी प्रवास
(B) मौसमी, ग्रामीण-से-ग्रामीण प्रवास
(C) ग्रामीण-से-नगरीय प्रवास
(D) बंधुआ मजदूरी

161. आर्थिक परिवर्तन के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए।
कथन I: पारंपरिक ग्रामीण नेतृत्व मुख्य रूप से प्रदत्त था, जो जाति और भूमि स्वामित्व पर आधारित था।
कथन II: पंचायती राज चुनावों की शुरुआत ने पारंपरिक शक्ति संरचनाओं के प्रभाव को पूरी तरह से समाप्त कर दिया है।
(A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
(B) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।
(C) कथन I सही है, लेकिन कथन II गलत है।
(D) कथन I गलत है, लेकिन कथन II सही है।

162. निम्नलिखित में से किसे छोड़कर अन्य सभी 'कृषि संबंधों' के पहलू हैं:
(A) शहर में फैक्ट्री श्रमिकों के बीच संबंध
(B) बटाईदारी की व्यवस्था
(C) खेत श्रम के लिए मजदूरी अनुबंध
(D) भूमि पट्टे की शर्तें

163. अकृषकीकरण की प्रक्रिया किस सामाजिक समूह के लिए सीधा खतरा है?
(A) बड़े अनुपस्थित जमींदार
(B) नगरीय औद्योगिक पूंजीपति
(C) छोटे और सीमांत भूमि-स्वामी कृषक
(D) वेतनभोगी सरकारी कर्मचारी

164. भारत में आधुनिक पंचायती राज व्यवस्था का संवैधानिक आधार क्या है?
(A) भारत सरकार अधिनियम, 1935
(B) प्रथम पंचवर्षीय योजना की सिफारिशें
(C) नीति आयोग का एक प्रस्ताव
(D) 73वां संविधान संशोधन अधिनियम, 1992

165. सूची I को सूची II के साथ सुमेलित कीजिए।
सूची I: (समाजशास्त्रीय केंद्र)
P. ग्रामीण-नगरीय विषमता का अध्ययन
Q. कृषक समाज का अध्ययन
R. कृषि वर्ग संरचना का अध्ययन
S. जजमानी प्रथा का अध्ययन
सूची II: (अवधारणा)
1. पारस्परिक, जाति-आधारित सेवा विनिमय पर ध्यान।
2. जीवन जीने के तरीकों में अंतर पर ध्यान।
3. भूमि संबंधों पर आधारित पदानुक्रम पर ध्यान।
4. राज्य समाज में छोटे उत्पादकों पर ध्यान।
कूट:
(A) P-1, Q-2, R-3, S-4
(B) P-2, Q-4, R-3, S-1
(C) P-3, Q-1, R-4, S-2
(D) P-2, Q-3, R-1, S-4

166. समकालीन भारत में 'कृषि अशांति' का एक प्रमुख कारण है:
(A) सभी किसानों के लिए कृषि की उच्च लाभप्रदता।
(B) किसानों की ऋणग्रस्तता और उपज के लिए अलाभकारी मूल्य।
(C) सभी ग्रामीण विकास योजनाओं की भारी सफलता।
(D) शहरों की ओर प्रवास में गिरावट।

167. निम्नलिखित परिदृश्य को पढ़ें और उसके बाद आने वाले प्रश्न का उत्तर दें।
एक वंचित परिवार द्वारा आर्थिक समृद्धि प्राप्त करने और इसके परिणामस्वरूप गांव में उच्च सामाजिक स्थिति प्राप्त करने में सक्षम होने वाली गतिशीलता किसका उदाहरण है?
(A) केवल आर्थिक गतिशीलता
(B) सामाजिक-आर्थिक गतिशीलता
(C) केवल भौगोलिक गतिशीलता
(D) केवल व्यावसायिक बदलाव

168. निम्नलिखित में से कौन जजमानी प्रथा की विशेषता नहीं है?
(A) यह वार्षिक रूप से नवीनीकृत औपचारिक लिखित अनुबंध पर आधारित संबंध था।
(B) यह पारस्परिकता पर आधारित संबंध था।
(C) संबंध अक्सर वंशानुगत होता था।
(D) भुगतान पारंपरिक रूप से नकद के बजाय वस्तु के रूप में होता था।

169. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है।
अभिकथन (A): ग्रामीण भारत में बंधुआ मजदूरी का मुद्दा एक महत्वपूर्ण सामाजिक समस्या है।
कारण (R): यह ऋण और निर्भरता की कृषि संरचना में निहित शोषण की अभिव्यक्ति है।
(A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सही है लेकिन R गलत है।
(D) A गलत है लेकिन R सही है।

170. ग्रामीण नेतृत्व के संदर्भ में 'गुटबाजी' का अर्थ है:
(A) एकजुट, प्रतिस्पर्धी समूहों का अस्तित्व जो शक्ति और संसाधनों के लिए प्रतिस्पर्धा करते हैं।
(B) आम सहमति आधारित निर्णय लेने की प्रक्रिया।
(C) एक साझा उद्देश्य के लिए गांव का एकीकरण।
(D) एकल, पारंपरिक प्रमुख का नेतृत्व।

171. आधुनिक ग्रामीण समाज में देखा गया एक प्रमुख परिवर्तन है:
(A) बाहरी दुनिया से गांवों के अलगाव में वृद्धि।

Click Here to Buy book on Amazon

(B) कृषि वर्ग संरचना का पूर्णतः गायब होना।
(C) ग्रामीण-से-नगरीय प्रवास का उल्टा होना।
(D) कृषि से परे ग्रामीण अर्थव्यवस्था का बढ़ता विविधीकरण।

172. 'अकृषकीकरण' शब्द उस प्रक्रिया को संदर्भित करता है जिसके द्वारा कृषक:
(A) भूमि सुधारों के माध्यम से सशक्त होते हैं।
(B) भूमि पर अपनी स्वायत्तता खो देते हैं और खेतिहर मजदूर बन जाते हैं।
(C) आधुनिक कृषि प्रौद्योगिकियों को तेजी से अपनाते हैं।
(D) नगरीय व्यवसाय शुरू करने के लिए स्वेच्छा से खेती छोड़ देते हैं।

173. 'कृषि अशांति' शब्द क्या दर्शाता है?
(A) असाधारण कृषि उपज और समृद्धि की अवधि।
(B) कृषक समुदाय के बीच संतोष की स्थिति।
(C) कृषि क्षेत्र के भीतर सामाजिक तनाव और संघर्षों की अभिव्यक्ति।
(D) ग्रामीण विकास के लिए एक सरकारी कार्यक्रम।

174. ग्रामीण शासन के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए।
कथन I: 73वां संशोधन पंचायतों में अनुसूचित जातियों और अनुसूचित जनजातियों के लिए सीटों के आरक्षण को अनिवार्य बनाता है।
कथन II: अनुसूचित जातियों या जनजातियों के लिए आरक्षण की मात्रा पंचायत क्षेत्र में उनकी जनसंख्या के अनुपात में होनी चाहिए।
(A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
(B) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।
(C) कथन I सही है, लेकिन कथन II गलत है।
(D) कथन I गलत है, लेकिन कथन II सही है।

175. निम्नलिखित विशेषताओं पर विचार कीजिए: बाजार के लिए नकदी फसलें उगाना, दिहाड़ी श्रम का उपयोग करना, और लाभ को अधिकतम करना। कौन सा समूह इस विवरण में सबसे सटीक बैठता है?
(A) गरीब किसान
(B) पूंजीवादी किसान या धनी किसान
(C) निर्वाह कृषक
(D) भूमिहीन मजदूर

176. 73वें संशोधन से पहले और बाद की पंचायत प्रणाली के बीच मुख्य अंतर निम्नलिखित में से कौन सा है?
(A) संशोधन से पहले, पंचायतों को संवैधानिक रूप से संरक्षण प्राप्त था।
(B) संशोधन के बाद, नियमित चुनाव और वित्तीय प्रावधान अनिवार्य कर दिए गए।
(C) संशोधन के बाद, पंचायतें अपने अस्तित्व के लिए राज्य सरकार की इच्छा पर निर्भर हो गईं।
(D) संशोधन से पहले, महिलाओं के लिए अनिवार्य आरक्षण था।

177. केवल भौगोलिक स्थानों के बजाय 'जीवन के तरीकों' के रूप में 'ग्रामीणता' और 'नगरीयता' का अध्ययन समाजशास्त्रियों को क्या समझने में मदद करता है?
(A) शहर हमेशा गांवों से बेहतर क्यों होते हैं।
(B) विभिन्न निवास परिवेशों के सांस्कृतिक और सामाजिक-मनोवैज्ञानिक प्रभाव।
(C) हर गांव और शहर की सटीक जनसंख्या।
(D) ग्रामीण और नगरीय इमारतों के बीच स्थापत्य अंतर।

178. ग्रामीण प्रवास के संदर्भ में निम्नलिखित में से कौन 'विकर्षण' कारकों का सबसे अच्छा वर्णन करता है?
(A) मूल स्थान की प्रतिकूल स्थितियाँ, जैसे निर्धनता और बेरोजगारी।
(B) गंतव्य क्षेत्रों में बेहतर नौकरी के अवसर।
(C) शहरों में उच्च मजदूरी और वेतन।
(D) शहर के जीवन की चकाचौंध।

179. 'उत्पादन की पद्धति' बहस का केंद्रीय मुद्दा क्या है?
(A) यह तय करना कि कौन सी फसलें सबसे अधिक उत्पादक हैं।
(B) जैविक बनाम रासायनिक खेती के गुणों पर बहस करना।
(C) कृषि समाज की मौलिक आर्थिक संरचना को चित्रित करना।
(D) गांवों को उनके विकास के स्तर के आधार पर श्रेणीबद्ध करना।

180. पंचायती राज व्यवस्था के माध्यम से लोगों, विशेष रूप से वंचित समूहों का सशक्तिकरण, किसके लिए एक रणनीति का उदाहरण है?
(A) गुटबाजी को बढ़ावा देना।
(B) अकृषकीकरण को प्रोत्साहित करना।
(C) स्थानीय स्वशासन को कमजोर करना।
(D) समावेशी ग्रामीण विकास प्राप्त करना।

NODIA

181. ग्रामीण संदर्भ में परिवर्तन की निम्नलिखित प्रक्रियाओं को संभावित कारण-और-प्रभाव क्रम में व्यवस्थित करें:
1. ग्रामीण-से-नगरीय प्रवास में वृद्धि।
2. भूमि का विखंडन और कृषि आय में गिरावट।
3. गांव में नगरीय उपभोग पैटर्न को अपनाना।
4. प्रवासियों द्वारा नगरीय जीवन का प्रदर्शन और नकद आय अर्जित करना।

(A) 1, 2, 3, 4
(B) 2, 1, 4, 3
(C) 3, 4, 1, 2
(D) 2, 3, 1, 4

182. एक मजदूर अपने नियोक्ता को छोड़ने में असमर्थ है क्योंकि उसके दादा ने नियोक्ता के दादा से ऋण लिया था, और वह

ऋण पीढ़ियों से चला आ रहा है। यह किसका एक उत्कृष्ट मामला है?
(A) मौसमी प्रवासी श्रम
(B) वंशानुगत बंधुआ मजदूरी
(C) संविदात्मक श्रम
(D) मुक्त वेतन श्रम

183. जजमानी प्रथा के बारे में कौन सा कथन गलत है?
(A) यह सेवाओं और वस्तुओं के विनिमय की एक प्रणाली थी।
(B) यह जाति संरचना में अंतर्निहित थी।
(C) संबंध टिकाऊ और अक्सर वंशानुगत होते थे।
(D) यह प्रतिभागियों के लिए स्वतंत्र प्रवेश और निकास वाली एक लचीली प्रणाली थी।

184. 'लोगों के सशक्तिकरण' को प्राप्त करने में 73वें संशोधन की सफलता का मूल्यांकन अक्सर किसका परीक्षण करके किया जाता है:
(A) ग्राम सभा और पंचायत गतिविधियों में नागरिकों की वास्तविक भागीदारी का स्तर।
(B) गांव से प्रवास में वृद्धि।
(C) वह सीमा जिस तक राष्ट्रीय राजनीतिक दल पंचायतों को नियंत्रित करते हैं।
(D) गांव में बने नए गुटों की संख्या।

185. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है।
अभिकथन (A): ग्रामीण भारत में व्यावसायिक विविधीकरण की एक उल्लेखनीय प्रवृत्ति देखी जा रही है।
कारण (R): ऐसा इसलिए है क्योंकि कृषि इतनी लाभदायक हो गई है कि कोई भी अन्य व्यवसाय नहीं करना चाहता है।
(A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सही है लेकिन R गलत है।
(D) A गलत है लेकिन R सही है।

186. ग्रामीण समाजशास्त्र को समझने के लिए 'कृषक अध्ययन' एक क्षेत्र के रूप में महत्वपूर्ण है क्योंकि:
(A) कई विकासशील समाजों में कृषक जनसंख्या का एक महत्वपूर्ण हिस्सा हैं।
(B) कृषक सभी समाजों में सबसे शक्तिशाली और प्रभावशाली वर्ग हैं।
(C) कृषक अध्ययन विशेष रूप से सबसे धनी किसानों पर केंद्रित है।
(D) कृषक शेष विश्व से पूर्ण अलगाव में रहते हैं।

187. निम्नलिखित में से कौन सा युग्म सही सुमेलित है?
(A) कृषि वर्ग - धार्मिक पहचान पर आधारित
(B) जजमानी प्रथा - नकद लेनदेन पर आधारित
(C) गुटबाजी - आम सहमति और एकता पर आधारित
(D) 73वां संशोधन - पंचायतों के लिए संवैधानिक अधिदेश पर आधारित

188. ग्रामीण संदर्भ में 'सामाजिक गतिशीलता' आवागमन की वह प्रक्रिया है:
(A) विभिन्न भौगोलिक स्थानों के बीच।
(B) सामाजिक और आर्थिक पदानुक्रम में ऊपर या नीचे।
(C) विभिन्न फसल चक्रों के बीच।
(D) दैनिक कार्य के लिए गांव से पास के शहर तक।

189. सूची I को सूची II के साथ सुमेलित कीजिए।
सूची I: (गतिशीलता या प्रवास का प्रकार)
P. सामाजिक गतिशीलता
Q. आर्थिक गतिशीलता
R. ग्रामीण-नगरीय प्रवास
S. अकृषकीकरण
सूची II: (उदाहरण)
1. पंचायत चुनाव में गांव के दो समूहों का कड़ा मुकाबला।
2. एक खेत मजदूर का पुत्र विद्यालय शिक्षक बन जाता है।
3. एक किसान का पुत्र फैक्ट्री में काम करने के लिए दिल्ली चला जाता है।
4. अच्छी फसल और बाजार मूल्य के कारण एक किसान की आय दोगुनी हो जाती है।
कूट:
(A) P-3, Q-2, R-1, S-4
(B) P-1, Q-3, R-2, S-4
(C) P-3, Q-1, R-4, S-2
(D) P-2, Q-4, R-1, S-3

190. आर्थिक परिवर्तन के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए।
कथन I: कृषि समाज में उत्पादन की पद्धति उसकी उत्पादन की शक्तियों और उत्पादन के संबंधों के संयोजन को संदर्भित करती है।
कथन II: भारत में उत्पादन की पद्धति पर बहस अप्रासंगिक है क्योंकि पूरी कृषि समान रूप से पूंजीवादी है।
(A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
(B) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।
(C) कथन I सही है, लेकिन कथन II गलत है।
(D) कथन I गलत है, लेकिन कथन II सही है।

191. भूमि की हानि, ऋणग्रस्तता और वैकल्पिक आजीविका की कमी किन दोनों में योगदान देने वाले कारक हैं?
(A) कंगालीकरण और बाह्य-प्रवास।
(B) सशक्तिकरण और ऊपर की ओर गतिशीलता।
(C) जजमानी प्रथा का सुदृढ़ीकरण और ग्रामीणता।
(D) गुटबाजी और कृषि अशांति में गिरावट।

192. निम्नलिखित मुद्दों पर विचार कीजिए: कम मजदूरी, काम की खराब स्थिति और सामाजिक सुरक्षा की कमी। इनमें से कौन सी प्रवासी मजदूरों द्वारा सामना की जाने वाली समस्याएं हैं?

Downloaded from www.pdf.tube

1. कम मजदूरी
2. काम की खराब स्थिति
3. सामाजिक सुरक्षा की कमी

उपरोक्त में से कौन से सही हैं?
(A) केवल 1 और 2
(B) केवल 2 और 3
(C) केवल 1 और 3
(D) 1, 2 और 3

193. 'कृषि संबंध' की अवधारणा किस पर ध्यान केंद्रित करती है?
(A) खेती के तकनीकी पहलुओं पर।
(B) भूमि के इर्द-गिर्द बने मानवीय और सामाजिक संबंधों पर।
(C) कृषि से जुड़े अनुष्ठानों और विश्वासों पर।
(D) फार्महाउसों की वास्तुकला पर।

194. पंचायतों में महिलाओं के लिए आरक्षण का प्रावधान किसके उद्देश्य वाली रणनीति है?
(A) उनके राजनीतिक सशक्तिकरण और निर्णय लेने में शामिल करने।
(B) केवल उनके आर्थिक सशक्तिकरण।
(C) उनकी भौगोलिक गतिशीलता।
(D) सार्वजनिक जीवन से उनके अलगाव।

195. निम्नलिखित में से कौन 'कृषि अशांति' का विशिष्ट कारण नहीं है?
(A) शोषणकारी पट्टेदारी की शर्तें।
(B) कम कीमतों पर उपज की विवश खरीद।
(C) सभी किसानों के लिए सुनिश्चित उच्च लाभ।
(D) ऋणग्रस्तता का उच्च स्तर।

196. ग्रामीण समाज का विश्लेषण जो इसके सदस्यों को जमींदार, धनी किसान, मध्यम किसान, गरीब किसान और खेतिहर मजदूर में वर्गीकृत करता है, किसका अध्ययन कर रहा है?
(A) जजमानी प्रथा
(B) ग्रामीण-नगरीय अंतर
(C) ग्रामीण गुटबाजी
(D) कृषि वर्ग संरचना

197. परिवर्तन की वह प्रक्रिया जहां पारंपरिक, पारस्परिक, गैर-मौद्रिक विनिमय को मौद्रिक, संविदात्मक और अवैयक्तिक लेनदेन द्वारा प्रतिस्थापित किया जाता है, किसकी विशेषता है?
(A) ग्रामीणता के सुदृढ़ीकरण की।
(B) सामाजिक गतिशीलता में गिरावट की।
(C) ग्रामीण अर्थव्यवस्था के व्यावसायीकरण और आधुनिकीकरण की।
(D) पारंपरिक संस्थाओं के पुनरुद्धार की।

198. ग्रामीण नेतृत्व में 73वें संशोधन का सबसे महत्वपूर्ण योगदान यह है कि इसने:
(A) पारंपरिक नेताओं की शक्ति को पुख्ता किया।
(B) वंचित वर्गों और महिलाओं के नेताओं को उभरने के लिए एक नया राजनीतिक स्थान प्रदान किया।
(C) ग्रामीण नेतृत्व के सभी रूपों को समाप्त कर दिया।
(D) नेताओं के चयन को राज्य के राज्यपाल को हस्तांतरित कर दिया।

199. निम्नलिखित में से कौन सा कथन 'कृषक अध्ययन' के एक मुख्य विचार का सही प्रतिनिधित्व करता है?
(A) कृषक उद्यमी होते हैं जो हमेशा लाभ-उन्मुख होते हैं।
(B) कृषक समाज पूरी तरह से अलग-थलग होते हैं और उनका शहरों से कोई संपर्क नहीं होता है।
(C) कृषक और औद्योगिक श्रमिक एक ही सामाजिक श्रेणी हैं।
(D) कृषक एक 'लघु परंपरा' का हिस्सा हैं जो व्यापक समाज की 'वृहत परंपरा' के साथ संवाद करती है।

200. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है।
अभिकथन (A): भारत के कुछ हिस्सों में ग्रामीण-से-ग्रामीण प्रवास परिवर्तन की एक महत्वपूर्ण प्रक्रिया है।
कारण (R): यह अक्सर कृषि विकास में क्षेत्रीय असमानताओं, जैसे सिंचाई सुविधाओं की उपस्थिति या विभिन्न फसल मौसमों से प्रेरित होता है।
(A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सही है लेकिन R गलत है।
(D) A गलत है लेकिन R सही है।

201. पंचायती राज व्यवस्था के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. 73वां संशोधन सभी स्तरों पर पंचायतों के लिए पांच साल का निश्चित कार्यकाल प्रदान करता है।
2. ग्राम सभा में पंचायत क्षेत्र के मतदाता के रूप में पंजीकृत सभी वयस्क सदस्य शामिल होते हैं।
3. संशोधन ने पंचायती राज संस्थाओं को संविधान के न्यायोचित भाग का हिस्सा बना दिया है।

ऊपर दिए गए कथनों में से कौन से सही हैं?
(A) केवल 1 और 2
(B) केवल 2 और 3
(C) केवल 1 और 3
(D) 1, 2 और 3

202. जीवन के तरीकों के रूप में 'ग्रामीणता' और 'नगरीयता' के बीच का अंतर किसके लिए उपयोगी है?
(A) विभिन्न निवास प्रतिमानों के सांस्कृतिक और सामाजिक परिणामों को समझने के लिए।
(B) सभी गांवों और शहरों के बीच एक सख्त भौतिक सीमा बनाने के लिए।
(C) यह सिद्ध करने के लिए कि सभी शहरवासी दुखी हैं और

NODIA

सभी ग्रामीण सुखी हैं।
(D) ग्रामीण और नगरीय क्षेत्रों के सटीक आर्थिक उत्पादन की गणना करने के लिए।

203. निम्नलिखित परिदृश्य को पढ़ें और उसके बाद आने वाले प्रश्न का उत्तर दें।
कौन सा परिदृश्य 'अकृषकीकरण' का सबसे अच्छा उदाहरण है?
(A) एक किसान अधिक भूमि और एक ट्रैक्टर खरीदता है।
(B) एक किसान का पुत्र शहर में चिकित्सक बन जाता है।
(C) एक छोटा किसान, ऋण के बोझ तले अपनी भूमि बेच देता है और किसी और के खेत में दिहाड़ी मजदूर के रूप में काम करना शुरू कर देता है।
(D) किसानों का एक समूह अपनी उपज बेचने के लिए एक सहकारी समिति बनाता है।

204. श्रम संबंधों के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए।
कथन I: भूमि स्वामित्व के प्रकारों का कृषि संबंधों पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है।
कथन II: अनुपस्थित जमींदारों के वर्चस्व वाली प्रणाली में मालिक-कृषकों की प्रणाली की तुलना में जमींदार-पट्टेदार संबंध अलग होने की संभावना है।
(A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
(B) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।
(C) कथन I सही है, लेकिन कथन II गलत है।
(D) कथन I गलत है, लेकिन कथन II सही है।

205. निम्नलिखित परिदृश्य को पढ़ें और उसके बाद आने वाले प्रश्न का उत्तर दें।
एक गांव में दो प्रमुख भूस्वामी परिवारों के बीच प्रतिद्वंद्विता का बने रहना, जो मतदान पैटर्न और ग्राम संसाधनों तक पहुंच को प्रभावित करता है, किसका एक उत्कृष्ट उदाहरण है?
(A) सामाजिक गतिशीलता
(B) जजमानी प्रथा
(C) ग्रामीण नेतृत्व और गुटबाजी
(D) कृषि अशांति

206. सामाजिक मुद्दे के रूप में 'कंगालीकरण' संदर्भित करता है:
(A) कृषकों के समृद्ध होने को।
(B) अत्यंत निर्धन होने और अपनी आजीविका के साधनों को खोने की प्रक्रिया को।
(C) ग्रामीण क्षेत्रों से नगरीय क्षेत्रों में लोगों के प्रवास को।
(D) नए ग्रामीण नेतृत्व के उदय को।

207. पारंपरिक पंचायतों और 73वें संशोधन के बाद की पंचायतों के बीच एक प्राथमिक अंतर किसका औपचारिक समावेश है?
(A) केवल उच्च जाति के सदस्यों का।
(B) केवल भूस्वामियों का।
(C) केवल सरकार द्वारा नियुक्त अधिकारियों का।
(D) आरक्षण प्रणाली के माध्यम से महिलाओं और अनुसूचित जाति या जनजाति के सदस्यों का।

208. कृषि संरचना के संदर्भ में 'उत्पादन की पद्धति' शब्द संदर्भित करता है:
(A) तकनीक, श्रम और स्वामित्व सहित आर्थिक संगठन की समग्र प्रणाली को।
(B) हल चलाने के लिए उपयोग की जाने वाली विशिष्ट तकनीकों को।
(C) कृषि वस्तुओं के विपणन की रणनीतियों को।
(D) बुआई और कटाई से संबंधित सांस्कृतिक त्योहारों को।

209. स्वयं प्रवासियों के लिए ग्रामीण-से-नगरीय प्रवास का संभावित नकारात्मक परिणाम निम्नलिखित में से कौन सा है?
(A) औपचारिक क्षेत्र में उच्च वेतन वाली नौकरियों की गारंटी।
(B) नगरीय मध्यम वर्ग में तत्काल एकीकरण।
(C) नगरीय अनौपचारिक क्षेत्र में अनिश्चित परिस्थितियों में रहना और काम करना।
(D) आगमन पर उच्च गुणवत्ता वाले आवास तक पहुंच।

210. सूची I को सूची II के साथ सुमेलित कीजिए।
सूची I: (अवधारणा)
P. बंधुआ मजदूरी
Q. कृषक आंदोलन
R. सामाजिक गतिशीलता
S. अकृषकीकरण
सूची II: (मुख्य विशेषता)
1. भूमि-आधारित कृषक स्थिति की हानि।
2. सामाजिक पदानुक्रम के भीतर स्थिति में परिवर्तन।
3. कृषि अधिकारों के लिए सामूहिक कार्रवाई।
4. ऋण के कारण दासता।
कूट:
(A) P-1, Q-2, R-3, S-4
(B) P-4, Q-3, R-2, S-1
(C) P-4, Q-2, R-1, S-3
(D) P-3, Q-1, R-4, S-2

211. ग्रामीण प्रवास के लिए किस कारक को 'विकर्षण' कारक नहीं माना जाता है?
(A) गिरती कृषि उत्पादकता
(B) शैक्षिक सुविधाओं की कमी
(C) गांव में सामाजिक उत्पीड़न
(D) शहरों में बेहतर सुविधाओं की उपलब्धता

212. कृषक अध्ययन में एक 'कृषक' को एक 'किसान' से किस आधार पर अलग किया जाता है?
(A) आधुनिक तकनीक का उपयोग।
(B) एक अधीनस्थ स्थिति में एक व्यापक राज्य संरचना में एकीकरण।
(C) बाजार से पूर्ण स्वतंत्रता।
(D) पशुपालन पर विशेष ध्यान।

Click Here to Buy book on Amazon

150. ग्रामीण क्षेत्रों में ऋणग्रस्तता से उत्पन्न एक प्रमुख सामाजिक मुद्दा, जहां एक व्यक्ति को शोषणकारी परिस्थितियों में ऋणदाता के लिए काम करने के लिए विवश किया जाता है, वह है:
(A) कृषि अशांति
(B) बंधुआ मजदूरी
(C) गुटबाजी
(D) नगरीयता

151. 73वें संशोधन द्वारा परिकल्पित पंचायती राज व्यवस्था की परिभाषित विशेषता निम्नलिखित में से कौन सी है?
(A) स्थानीय स्वशासन की द्वि-स्तरीय संरचना।
(B) पूरी तरह से केंद्र द्वारा नियुक्त अधिकारियों द्वारा संचालित प्रणाली।
(C) बिना किसी वित्तीय शक्ति के एक सलाहकार भूमिका।
(D) अधिकांश राज्यों में संवैधानिक रूप से अनिवार्य त्रि-स्तरीय संरचना।

152. परिवर्तन की वह प्रक्रिया जहां एक कृषक परिवार स्वयं के उपभोग के लिए खाद्य फसलें उगाने के बजाय बाजार में बिक्री के लिए कपास उगाने लगता है, क्या दर्शाती है?
(A) कृषि के व्यावसायीकरण की ओर झुकाव।
(B) ग्रामीण-नगरीय प्रवास में गिरावट।
(C) जजमानी प्रथा का सुदृढ़ीकरण।
(D) कंगालीकरण की प्रक्रिया।

153. एक गांव में "उत्पादन की पद्धति" पर ध्यान केंद्रित करने वाले अध्ययन की सबसे अधिक रुचि किसमें होगी?
(A) गांव में कौन से धार्मिक त्यौहार मनाए जाते हैं?
(B) विवाह के पैटर्न और नातेदारी के नियम क्या हैं?
(C) भूमि का स्वामी कौन है, उस पर कौन काम करता है, और अधिशेष उत्पाद का वितरण कैसे किया जाता है?
(D) युवाओं में शैक्षिक स्तर क्या है?

154. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है।
अभिकथन (A): महिलाओं का सशक्तिकरण 73वें संशोधन का एक प्रमुख उद्देश्य और परिणाम है।
कारण (R): महिलाओं के लिए सीटों और अध्यक्ष पदों के आरक्षण ने ग्रामीण स्थानीय शासन में उनकी भागीदारी को काफी बढ़ा दिया है।
(A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सही है लेकिन R गलत है।
(D) A गलत है लेकिन R सही है।

155. निम्नलिखित परिदृश्य को पढ़ें और उसके बाद आने वाले प्रश्न का उत्तर दें।
कौन सा परिदृश्य 'कंगालीकरण' का सबसे अच्छा उदाहरण है?
(A) एक धनी किसान का नया ट्रैक्टर खरीदना।
(B) एक मध्यम किसान का अपने बच्चे को पढ़ाने के लिए ऋण लेना।
(C) एक ग्रामीण युवा का शहर जाना और घर पैसे भेजना।
(D) एक छोटे किसान का अपने पशुधन बेचना, फिर अपनी भूमि बेचना, और अंततः एक बेसहारा दिहाड़ी मजदूर बन जाना।

156. निम्नलिखित में से कौन सा अवधारणा और उसके विवरण के बीच गलत मिलान है?
(A) ग्रामीणता - कृषि लोकाचार पर आधारित जीवन शैली।
(B) जजमानी प्रथा - एक आधुनिक, संविदात्मक श्रम समझौता।
(C) अकृषकीकरण - कृषक का दर्जा खोने की प्रक्रिया।
(D) गुटबाजी - एक समुदाय में परस्पर विरोधी समूहों का अस्तित्व।

157. 'कृषि वर्ग संरचना' शब्द ग्रामीण इलाकों में समूहों की पदानुक्रमित व्यवस्था को संदर्भित करता है जो उनके किस आधार पर है:
(A) जाति शुद्धता
(B) धार्मिक ज्ञान
(C) भूमि और उसकी उपज के साथ संबंध
(D) आयु और वरिष्ठता

158. 'कृषक आंदोलनों' का अध्ययन अनिवार्य रूप से किसका अध्ययन है?
(A) कृषकों के मौसमी प्रवास का।
(B) कृषकों के दैनिक सांस्कृतिक जीवन का।
(C) कृषक परिवारों पर नगरीकरण के प्रभाव का।
(D) अपने हितों की रक्षा के लिए कृषकों की सामूहिक, संघर्ष-उन्मुख कार्रवाइयों का।

159. ग्रामीण-नगरीय विभाजन के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. इसे जनसंख्या के आकार, घनत्व और प्रमुख व्यवसाय जैसे मानदंडों के आधार पर परिभाषित किया जा सकता है।
2. समाजशास्त्रीय रूप से, इसे सामाजिक संगठन और संस्कृति में अंतर द्वारा भी परिभाषित किया जाता है।
3. समकालीन समाज में ग्रामीण और नगरीय के बीच की विभाजन रेखा धुंधली होती जा रही है।

ऊपर दिए गए कथनों में से कौन से सही हैं?
(A) केवल 1 और 2
(B) केवल 2 और 3
(C) केवल 1 और 3
(D) 1, 2 और 3

160. निम्नलिखित परिदृश्य को पढ़ें और उसके बाद आने वाले प्रश्न का उत्तर दें।
एक भूमिहीन मजदूर जो गेहूं की कटाई के मौसम के लिए

NODIA

(C) सामुदायिक स्वामित्व
(D) रैयतवाड़ी स्वामित्व

224. निम्नलिखित में से कौन जजमानी प्रथा के पतन का परिणाम नहीं है?
(A) पारंपरिक अंतर-जातीय निर्भरता का कमजोर होना।
(B) वंशानुगत सेवा दायित्वों का सुदृढ़ीकरण।
(C) पूर्व सेवा जातियों के लिए व्यावसायिक गतिशीलता में वृद्धि।
(D) सेवाओं के लिए मुद्रा आधारित, संविदात्मक संबंधों में वृद्धि।

225. भारतीय कृषि को 'अर्ध-सामंती' बताने वाला विद्वान सबसे अधिक संभावना है कि किस ओर इशारा करेगा?
(A) बड़े पैमाने के पूंजीवादी खेतों का पूर्ण प्रभुत्व।
(B) स्वतंत्र और गतिशील वेतन श्रम की व्यापकता।
(C) बाजार संबंधों के साथ-साथ पट्टेदारी, बटाईदारी और ऋण-दासता का बने रहना।
(D) ग्राम अर्थव्यवस्था में किसी भी बाजार लेनदेन की पूर्ण अनुपस्थिति।

226. कृषि वर्ग संरचना पर 'अकृषकीकरण' की प्रक्रिया का सबसे प्रत्यक्ष प्रभाव क्या है?
(A) मध्यम किसानों की संख्या में वृद्धि।
(B) खेतिहर मजदूरों की संख्या में भारी वृद्धि।
(C) अनुपस्थित जमींदारों की संख्या में कमी।
(D) धनी किसानों का उन्मूलन।

227. पंचायतों में एक नए, शिक्षित नेतृत्व का उभरना, जो पारंपरिक ग्राम वृद्धों के अधिकार को चुनौती देता है, किसका उदाहरण है?
(A) जजमानी प्रथा में बदलाव
(B) प्रवास के रुझान में बदलाव
(C) उत्पादन की पद्धति में बदलाव
(D) ग्रामीण नेतृत्व के पैटर्न में बदलाव

228. 'ग्रामीण विकास के लिए सामाजिक मुद्दे और रणनीतियां' का मुख्य विषय क्या है?
(A) यह तर्क देना कि ग्रामीण समाज में कोई समस्या नहीं है।
(B) ग्रामीण समस्याओं की पहचान करना और उनके समाधान के तरीके खोजना।
(C) विशेष रूप से नगरीय विकास पर ध्यान केंद्रित करना।
(D) बिना किसी बदलाव के पारंपरिक प्रथाओं को बढ़ावा देना।

229. निम्नलिखित परिदृश्य को पढ़ें और उसके बाद आने वाले प्रश्न का उत्तर दें।
ईंट भट्ठे में काम करने वाले एक मजदूर को अग्रिम रूप से एकमुश्त राशि दी जाती है और उसे तब तक कहीं और जाने या काम करने की अनुमति नहीं दी जाती जब तक कि अग्रिम राशि चुका न दी जाए। यह किसका उदाहरण है?
(A) मुक्त वेतन श्रम
(B) जजमानी सेवा
(C) बंधुआ मजदूरी
(D) स्वरोजगार

230. निम्नलिखित परिदृश्य को पढ़ें और उसके बाद आने वाले प्रश्न का उत्तर दें।
नए राजमार्ग के लिए अपनी भूमि के अधिग्रहण के विरोध में किसानों की सामूहिक लामबंदी किसका स्पष्ट उदाहरण है?
(A) गुटबाजी
(B) सामाजिक गतिशीलता
(C) अकृषकीकरण
(D) कृषि अशांति या कृषक आंदोलन

231. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है।
अभिकथन (A): 'ग्रामीण' और 'नगरीय' की अवधारणाओं को एक कठोर द्विभाजन के बजाय एक सातत्य के दो सिरों के रूप में देखा जाना चाहिए।
कारण (R): कई बस्तियाँ ग्रामीण और नगरीय दोनों विशेषताओं का मिश्रण प्रदर्शित करती हैं, जिससे तीव्र अंतर धुंधला हो जाता है।
(A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सही है लेकिन R गलत है।
(D) A गलत है लेकिन R सही है।

232. ग्रामीण परिवर्तन की वह प्रक्रिया जिसके द्वारा कृषि तेजी से स्थानीय, राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय बाजारों से जुड़ जाती है, क्या कहलाती है?
(A) कृषकीकरण
(B) व्यावसायीकरण
(C) कंगालीकरण
(D) गुटबाजी

233. पंचायती राज व्यवस्था के तहत ग्राम सभा की संस्था किसका प्रतिनिधित्व करती है?
(A) प्रतिनिधि लोकतंत्र का एक रूप।
(B) प्रत्यक्ष लोकतंत्र का एक मंच।
(C) एक नौकरशाही एजेंसी।
(D) एक न्यायिक अदालत।

234. कृषि संबंधों के संदर्भ में, निम्नलिखित में से कौन वर्ग पदानुक्रम में सबसे नीचे होगा?
(A) एक भूमिहीन खेतिहर मजदूर।
(B) एक बड़ा अनुपस्थित जमींदार।
(C) एक धनी किसान जो मजदूर नियुक्त करता है।
(D) एक मध्यम किसान जो पारिवारिक श्रम का उपयोग करता है।

NODIA

235. सूची I को सूची II के साथ सुमेलित कीजिए।
सूची I: (ग्रामीण प्रक्रिया)
P. आर्थिक गतिशीलता
Q. अकृषकीकरण
R. ग्रामीण-ग्रामीण प्रवास
S. सशक्तिकरण
सूची II: (मुख्य विशेषता)
1. काम के लिए शुष्क भूमि वाले गांव से सिंचित गांव की ओर जाना।
2. एक पट्टेदार किसान द्वारा उस भूमि को खरीदना जिस पर वह खेती करता है।
3. वंचित समूह की महिला का सरपंच के रूप में निर्वाचित होना।
4. ऋण के कारण एक छोटे किसान द्वारा अपनी भूमि बेचना।
कूट:
(A) P-1, Q-2, R-3, S-4
(B) P-4, Q-3, R-2, S-1
(C) P-2, Q-4, R-1, S-3
(D) P-3, Q-1, R-4, S-2

236. 'ग्रामीण नेतृत्व और गुटबाजी' का अध्ययन किसे समझने के लिए महत्वपूर्ण है?
(A) फसल उगाने की तकनीक।
(B) नातेदारी और विवाह के पैटर्न।
(C) ग्रामीण-नगरीय अंतर का इतिहास।
(D) ग्राम राजनीति में शक्ति और संघर्ष की गतिशीलता।

237. निम्नलिखित में से कौन जीवन जीने के एक तरीके के रूप में 'नगरीयता' से जुड़ी विशिष्ट विशेषता नहीं है?
(A) विषमता
(B) अनामिकता
(C) अनौपचारिक सामाजिक नियंत्रण
(D) द्वितीयक समूह की प्रधानता

238. आर्थिक परिवर्तन के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए।
कथन I: सभी कृषक आंदोलनों का उद्देश्य राज्य को उखाड़ फेंकना होता है।
कथन II: कई कृषक आंदोलन अनुचित कराधान, कम कीमतों या भूमि सुरक्षा जैसी विशिष्ट शिकायतों पर ध्यान केंद्रित करते हैं।
(A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
(B) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।
(C) कथन I सही है, लेकिन कथन II गलत है।
(D) कथन I गलत है, लेकिन कथन II सही है।

239. ग्रामीण आबादी के बड़े वर्गों के क्रमिक निर्धन होने को क्या कहा जाता है?
(A) सम्भ्रांतकरण
(B) सशक्तिकरण
(C) संस्कृतिकरण
(D) कंगालीकरण

240. पंचायती राज व्यवस्था में आरक्षण नीति का मुख्य उद्देश्य है:
(A) ऐतिहासिक रूप से वंचित समूहों के राजनीतिक सशक्तिकरण और प्रतिनिधित्व को सुनिश्चित करना।
(B) स्थानीय शासन में लोगों की भागीदारी को सीमित करना।
(C) यह सुनिश्चित करना कि केवल शिक्षित व्यक्ति ही नेता बन सकें।
(D) जाति के आधार पर गुटबाजी को बढ़ावा देना।

241. प्रवास के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. यह 'विकर्षण' और 'आकर्षण' दोनों कारकों के कारण हो सकता है।
2. इसके परिणाम मूल और गंतव्य दोनों समाजों के लिए होते हैं।
उपरोक्त में से कौन से सही हैं?
(A) केवल 1
(B) केवल 1 और 2
(C) केवल 2
(D) 1 और 2 दोनों गलत हैं

242. भूमि स्वामित्व की वह प्रणाली जिसमें ग्राम समुदाय संयुक्त रूप से राज्य को भू-राजस्व देने के लिए उत्तरदायी होता है, कहलाती है:
(A) महलवाड़ी प्रणाली
(B) रैयतवाड़ी प्रणाली
(C) जमींदारी प्रणाली
(D) जजमानी प्रथा

243. भारतीय कृषि के संदर्भ में "उत्पादन की पद्धति" बहस मुख्य रूप से किसके बारे में चर्चा है?
(A) सबसे कुशल सिंचाई विधियाँ।
(B) उपयोग किए जाने वाले सर्वोत्तम उर्वरक।
(C) भूमि का सांस्कृतिक अर्थ।
(D) वर्ग संबंधों की प्रकृति और आर्थिक शोषण।

244. जजमानी प्रथा का पतन किस बदलाव का संकेत देता है?
(A) बाजार अर्थव्यवस्था से निर्वाह अर्थव्यवस्था की ओर।
(B) प्रस्थिति और पारस्परिकता पर आधारित संबंधों से अनुबंध और नकद पर आधारित संबंधों की ओर।
(C) अनुबंध आधारित संबंधों से प्रस्थिति आधारित संबंधों की ओर।
(D) सामाजिक गतिशीलता की प्रणाली से कठोर पदानुक्रम की ओर।

245. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है।
अभिकथन (A): ग्रामीण नेतृत्व पारंपरिक, प्रदत्त रूपों से आधुनिक, अर्जित रूपों में परिवर्तित हो रहा है।
कारण (R): पंचायतों में लोकतांत्रिक चुनावों की शुरुआत ने

Downloaded from www.pdf.tube

इस परिवर्तन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।
(A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सही है लेकिन R गलत है।
(D) A गलत है लेकिन R सही है।

246. 'कृषक अध्ययन' का मुख्य केंद्र कृषक के किसके साथ संबंधों को समझना है?
(A) बाहरी अंतरिक्ष।
(B) केवल अंतरराष्ट्रीय निगमों।
(C) नगरीय फैशन प्रवृत्तियों।
(D) भूमि, बाजार और राज्य।

247. प्रत्येक राज्य के लिए राज्य वित्त आयोग की स्थापना का अधिदेश 73वें संशोधन द्वारा किसके लिए दिया गया था?
(A) पंचायतों की वित्तीय स्थिति की समीक्षा करना और संसाधन साझा करने के सिद्धांतों की सिफारिश करना।
(B) पंचायत चुनाव कराना।
(C) गांवों में कानून व्यवस्था की स्थिति की निगरानी करना।
(D) राज्य सरकार के लिए वार्षिक बजट तैयार करना।

248. बेहतर आजीविका की खोज में पूरे परिवार का गांव से शहर की ओर जाना किसका उदाहरण है?
(A) ग्रामीण-से-नगरीय प्रवास
(B) उपरोक्त सभी
(C) सामाजिक गतिशीलता
(D) आर्थिक गतिशीलता

249. निम्नलिखित में से कौन सा सामाजिक मुद्दा कृषि संकट और ऋणग्रस्तता का प्रत्यक्ष परिणाम है?
(A) हरित क्रांति की सफलता
(B) बंधुआ मजदूरी
(C) खेती में लाभप्रदता में वृद्धि
(D) गुटबाजी में गिरावट

250. ग्रामीण विकास रणनीतियों के संदर्भ में 'लोगों के सशक्तिकरण' का अर्थ है:
(A) ऐसी संरचनाएं और प्रक्रियाएं बनाना जो लोगों को अपने स्वयं के जीवन और विकास पर नियंत्रण करने में सक्षम बनाती हैं।
(B) अस्थायी वित्तीय राहत प्रदान करना।
(C) लोगों को पूरी तरह से सरकारी सब्सिडी पर निर्भर बनाना।
(D) ग्रामीण समस्याओं के एकमात्र समाधान के रूप में प्रवास को प्रोत्साहित करना।

251. कृषि संबंधों के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए।
कथन I: 'कृषि वर्ग संरचना' शब्द जाति पदानुक्रम का समानार्थी है।
कथन II: हालांकि ग्रामीण भारत में जाति और वर्ग अक्सर एक-दूसरे में व्याप्त होते हैं, लेकिन 'वर्ग' विश्लेषणात्मक रूप से अलग है क्योंकि यह भूमि और उत्पादन के आर्थिक संबंधों पर आधारित है।
(A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
(B) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।
(C) कथन I सही है, लेकिन कथन II गलत है।
(D) कथन I गलत है, लेकिन कथन II सही है।

252. एक नगरीय समाज के विपरीत, एक विशिष्ट ग्रामीण समाज की सामाजिक संरचना किसकी विशेषता है?
(A) अधिक सामाजिक विभेदीकरण।
(B) कम सामाजिक समरूपता।
(C) औपचारिक, कानूनी सामाजिक नियंत्रण पर निर्भरता।
(D) प्राथमिक समूहों और संबंधों की प्रधानता।

253. कंगालीकरण और अकृषकीकरण की प्रक्रिया को अक्सर किस रूप में देखा जाता है?
(A) सफल ग्रामीण विकास के संकेतक।
(B) ग्रामीण सामाजिक गतिशीलता में सकारात्मक प्रवृत्तियाँ।
(C) कृषि अशांति और प्रवास के मूल कारण।
(D) कृषि अर्थव्यवस्था से असंबद्ध।

254. निम्नलिखित परिदृश्य को पढ़ें और उसके बाद आने वाले प्रश्न का उत्तर दें।
ग्रामीण शक्ति संरचना में एक बदलाव जहां एक नया समृद्ध, वंचित जाति का व्यापारी पारंपरिक उच्च जाति के जमींदार के प्रभुत्व को चुनौती देता है, किसका उदाहरण है?
(A) जजमानी प्रथा का पतन।
(B) ग्रामीण नेतृत्व और सामाजिक गतिशीलता में बदलाव।
(C) अकृषकीकरण की प्रक्रिया।
(D) ग्रामीण-से-ग्रामीण प्रवास।

255. 'कृषि संबंध' की अवधारणा मुख्य रूप से ग्रामीण समाज के किस पहलू से संबंधित है?
(A) राजनीतिक पहलू
(B) धार्मिक पहलू
(C) मनोवैज्ञानिक पहलू
(D) भूमि से संबंधित आर्थिक और सामाजिक पहलू

256. महिलाओं के सशक्तिकरण के लिए 73वें संशोधन द्वारा लाया गया सबसे महत्वपूर्ण परिवर्तन निम्नलिखित में से कौन सा है?
(A) इसने पंचायतों में महिलाओं के लिए सीटों और अध्यक्षों के पदों के आरक्षण को अनिवार्य कर दिया।
(B) इसने महिलाओं के लिए शिक्षा अनिवार्य कर दी।
(C) इसने महिलाओं के लिए रोजगार की गारंटी दी।
(D) इसने दहेज प्रथा को समाप्त कर दिया।

257. निम्नलिखित परिदृश्य को पढ़ें और उसके बाद आने वाले प्रश्न का उत्तर दें।
अपनी उपज के लिए कम कीमतों के विरोध में प्रदर्शन आयोजित करने वाले कृषकों का एक समूह किसका उदाहरण

NODIA

है?
(A) जजमानी विवाद
(B) ग्रामीण-नगरीय प्रवास
(C) कृषि अशांति
(D) गुटीय संघर्ष

258. ग्रामीण संदर्भ में 'आर्थिक गतिशीलता' और 'सामाजिक गतिशीलता' हैं:
(A) अक्सर परस्पर संबंधित, जिसमें आर्थिक स्थिति में परिवर्तन सामाजिक स्थिति को प्रभावित करते हैं।
(B) एक-दूसरे से पूरी तरह स्वतंत्र।
(C) बिल्कुल एक समान और एक ही अर्थ वाले।
(D) केवल नगरीय समाजों के लिए प्रासंगिक।

259. दुनिया भर के ग्रामीण समाजों में परिवर्तन की एक प्राथमिक प्रवृत्ति क्या है?
(A) नगरीय केंद्रों से अलगाव में वृद्धि।
(B) निर्धनता का पूर्ण उन्मूलन।
(C) केवल निर्वाह खेती की ओर वापसी।
(D) समग्र अर्थव्यवस्था में कृषि के महत्व में गिरावट।

260. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है।
अभिकथन (A): प्रवासी मजदूर अक्सर ग्रामीण और नगरीय दोनों क्षेत्रों में असंगठित क्षेत्र में काम करते हैं।
कारण (R): यह क्षेत्र नियमन, नौकरी की सुरक्षा और सामाजिक लाभों की कमी की विशेषता है, जो उन्हें शोषण के प्रति संवेदनशील बनाता है।
(A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सही है लेकिन R गलत है।
(D) A गलत है लेकिन R सही है।

261. सूची I को सूची II के साथ सुमेलित कीजिए।
सूची I: (गतिशीलता या प्रवास का प्रकार)
P. सामाजिक गतिशीलता
Q. आर्थिक गतिशीलता
R. ग्रामीण-नगरीय प्रवास
S. ग्रामीण-ग्रामीण प्रवास
सूची II: (विवरण)
1. एक बुनकर का परिवार कपड़ा मिल में काम करने के लिए शहर चला जाता है।
2. एक भूमिहीन मजदूर की पुत्री सरकारी अधिकारी बन जाती है।
3. गन्ना काटने वाला एक मजदूर शुष्क जिले से नहर-सिंचित जिले में चला जाता है।
4. अच्छी फसल और बाजार मूल्य के कारण एक किसान की आय दोगुनी हो जाती है।
कूट:
(A) P-1, Q-3, R-2, S-4
(B) P-2, Q-4, R-1, S-3
(C) P-3, Q-2, R-4, S-1
(D) P-2, Q-1, R-3, S-4

262. जजमानी प्रथा के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. यह जाति पर आधारित आर्थिक और सामाजिक संबंधों की एक प्रणाली थी।
2. यह बाजार आधारित प्रतिस्पर्धी व्यवस्था थी।
निम्नलिखित में से कौन सा सही है?
(A) केवल 1
(B) केवल 2
(C) केवल 1 और 2
(D) न तो 1 और न ही 2

263. ग्रामीण समाजशास्त्र में 'गुटबाजी' की अवधारणा क्या उजागर करती है?
(A) लंबवत रूप से लामबंद, प्रतिस्पर्धी समूहों की उपस्थिति।
(B) ग्राम समुदाय की एकता और एकजुटता।
(C) लोकतांत्रिक संस्थाओं का सुचारू संचालन।
(D) आर्थिक विकास की प्रक्रिया।

264. 'अकृषकीकरण' 'कंगालीकरण' से इस मायने में भिन्न है कि:
(A) अकृषकीकरण हमेशा धन की ओर ले जाता है।
(B) कंगालीकरण निर्धन होने के बारे में है, जबकि अकृषकीकरण विशेष रूप से कृषक की स्थिति और आजीविका खोने के बारे में है।
(C) दोनों शब्द एक जैसे हैं और इन्हें एक-दूसरे के स्थान पर इस्तेमाल किया जा सकता है।
(D) कंगालीकरण भूमि खोने के बारे में है, जबकि अकृषकीकरण भूमि पाने के बारे में है।

265. ग्रामीण शासन के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए।
कथन I: 73वें संशोधन ने भारत में पंचायती राज के लिए एक समान ढांचा तैयार किया।
कथन II: यह राज्यों को पंचायतों को सौंपी जाने वाली विशिष्ट शक्तियों और कार्यों पर विधान बनाने का लचीलापन देता है।
(A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
(B) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।
(C) कथन I सही है, लेकिन कथन II गलत है।
(D) कथन I गलत है, लेकिन कथन II सही है।

266. निम्नलिखित में से कौन सी अवधारणा और उसके मुख्य विचार का जोड़ा सही है?
(A) कृषक अध्ययन - छोटे पैमाने के कृषि उत्पादकों पर ध्यान।
(B) ग्रामीणता - विषमता और अनामिकता।
(C) कृषि संबंध - नगरीय उद्योगों पर ध्यान।
(D) 73वां संशोधन - शक्ति का केंद्रीकरण।

Click Here to Buy book on Amazon

267. 'बंधुआ मजदूरी' की घटना निम्नलिखित में से किससे सबसे अधिक जुड़ी हुई है?
(A) उच्च कृषि मजदूरी
(B) ग्रामीण सहकारी समितियों की सफलता
(C) अंतर-पीढ़ीगत ऋण और बलप्रयोग
(D) एक मजबूत सामाजिक सुरक्षा जाल

268. गांवों में कृषि-आधारित से गैर-कृषि गतिविधियों में व्यावसायिक प्रतिमान के बदलाव का अध्ययन किसका अध्ययन है?
(A) विशेष रूप से जजमानी प्रथा का।
(B) जनसंख्या घनत्व में ग्रामीण-नगरीय अंतर का।
(C) कृषक आंदोलनों के इतिहास का।
(D) ग्रामीण समाज में परिवर्तन की प्रवृत्तियों का।

269. भारतीय कृषि में 'उत्पादन की पद्धति' बहस तब प्रमुख हुई जब विद्वानों ने किसके बाद आर्थिक परिवर्तन की प्रकृति को समझने की कोशिश की?
(A) जजमानी प्रथा की शुरुआत।
(B) 73वां संविधान संशोधन।
(C) हरित क्रांति और बढ़ता व्यावसायीकरण।
(D) मुगल साम्राज्य का पतन।

270. ग्रामीण नेतृत्व के अध्ययन में, एक नेता जो बड़े भूस्वामियों के रूप में अपने परिवार की लंबे समय से चली आ रही स्थिति से अधिकार प्राप्त करता है, किसका प्रतिनिधित्व करता है:
(A) आधुनिक, करिश्माई नेतृत्व
(B) पारंपरिक, प्रदत्त नेतृत्व
(C) निर्वाचित, लोकतांत्रिक नेतृत्व
(D) नौकरशाही नेतृत्व

271. ग्रामीण समाजशास्त्र में निम्नलिखित में से कौन सा सबसे व्यापक विषय है?
(A) जजमानी प्रथा
(B) पंचायती राज व्यवस्था
(C) बंधुआ और प्रवासी मजदूर
(D) ग्रामीण समाज के अध्ययन के दृष्टिकोण

272. पंचायती राज व्यवस्था का एक प्रमुख उद्देश्य, विशेष रूप से 73वें संशोधन के बाद, 'लोगों का सशक्तिकरण' है। इसे किसके माध्यम से प्राप्त करने का प्रयास किया जाता है?
(A) स्थानीय निर्वाचित निकायों को शक्तियों, कार्यों और वित्त का हस्तांतरण।
(B) गांवों पर नौकरशाही नियंत्रण में वृद्धि।
(C) ग्रामीणों को गुटीय संघर्षों के माध्यम से सभी मामलों को हल करने के लिए प्रोत्साहित करना।
(D) स्थानीय शासन में सार्वजनिक भागीदारी को हतोत्साहित करना।

273. 'सामाजिक गतिशीलता' की अवधारणा एक समाजशास्त्री को किसका विश्लेषण करने की अनुमति देती है?
(A) किसी दिए गए वर्ष में प्रवास की दर।
(B) जजमानी प्रथा का कामकाज।
(C) समाज में खुलेपन और स्तरीकरण के स्तर।
(D) कृषि अशांति के कारण।

274. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है।
अभिकथन (A): जजमानी प्रथा एक सममित संबंध था जहाँ सभी भाग लेने वाली जातियों की शक्ति और स्थिति समान थी।
कारण (R): यह प्रणाली जाति पदानुक्रम में अंतर्निहित थी, जिसमें भूस्वामी उच्च जातियां सेवा प्रदाता निम्न जातियों पर प्रभुत्व रखती थीं।
(A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सही है लेकिन R गलत है।
(D) A गलत है लेकिन R सही है।

275. कृषि अशांति के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. यह अंतर्निहित तनावों का संकेत है।
2. कृषक आंदोलन इसकी एक संगठित अभिव्यक्ति हैं।
उपरोक्त में से कौन से सही हैं?
(A) केवल 1
(B) केवल 2
(C) 1 और 2 दोनों
(D) न तो 1 और न ही 2

276. एक ग्रामीण क्षेत्र से दूसरे ग्रामीण क्षेत्र में श्रम का आवागमन, जो अक्सर मौसमी कृषि कार्य के लिए होता है, क्या कहलाता है?
(A) नगरीकरण
(B) ग्रामीण-से-ग्रामीण प्रवास
(C) अंतरराष्ट्रीय प्रवास
(D) सामाजिक गतिशीलता

277. ग्रामीण आबादी का 'जमींदार', 'कृषक' और 'मजदूर' में वर्गीकरण किसका अध्ययन करने का एक मौलिक पहलू है?
(A) ग्रामीण-नगरीय अंतर।
(B) पंचायती राज व्यवस्था।
(C) कृषि वर्ग संरचना।
(D) जीवन जीने के एक तरीके के रूप में ग्रामीणता।

278. निम्नलिखित में से कौन ग्रामीण विकास में परिवर्तन की प्रक्रिया नहीं है?
(A) प्रवास
(B) सामाजिक गतिशीलता
(C) आर्थिक गतिशीलता
(D) धार्मिक समन्वयवाद

NODIA

40. (A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
ग्रामीण-से-नगरीय प्रवास ग्रामीण निर्धनों के लिए जीवन स्तर सुधारने की एक महत्वपूर्ण रणनीति है। ग्रामीण क्षेत्रों में खेती के अलाभकारी होने के कारण लोग शहरों की ओर आकर्षित होते हैं। शहरों में उद्योगों और सेवा क्षेत्र के विस्तार के कारण रोजगार के अधिक विविध अवसर उपलब्ध होते हैं। यद्यपि शहरों में जीवन कठिन हो सकता है, किंतु उच्च मजदूरी की संभावना और नियमित आय की उम्मीद ग्रामीणों को प्रवास के लिए प्रोत्साहित करती है, जिससे वे आर्थिक गतिशीलता प्राप्त करते हैं।

41. (C) दो शक्तिशाली परिवार प्रतिद्वंद्वी उम्मीदवार उतारते हैं, जिससे गांव विरोधी खेमों में बंट जाता है।
ग्रामीण गुटबाजी प्रायः सत्ता और संसाधनों पर नियंत्रण के लिए होने वाले व्यक्तिगत और पारिवारिक संघर्षों का परिणाम होती है। पंचायत चुनावों के दौरान यह स्थिति और भी स्पष्ट हो जाती है, जहाँ प्रतिद्वंद्वी गुट अपनी शक्ति प्रदर्शित करने के लिए आमने-सामने होते हैं। ये गुट अक्सर वफादारी के आधार पर ग्रामीणों को विभाजित करते हैं। यह विभाजन गांव की एकता को क्षति पहुँचाता है और प्रायः विकास कार्यों के स्थान पर आपसी कलह को केंद्र में ला देता है।

42. (A) भूमि के स्वामित्व, नियंत्रण और उपयोग के इर्द-गिर्द केंद्रित हैं।
कृषि संबंध ग्रामीण समाज के आर्थिक और सामाजिक ताने-बाने की आधारशिला हैं। ये संबंध उन अंतःक्रियाओं को परिभाषित करते हैं जो भूमि के स्वामित्व और खेती की प्रक्रिया के दौरान विभिन्न समूहों के बीच होती हैं। इसमें भूस्वामी और खेतिहर मजदूर के बीच के अधिकार और कर्तव्य शामिल होते हैं। ये संबंध न केवल आय का वितरण तय करते हैं, बल्कि गांव में सत्ता की संरचना और सामाजिक प्रतिष्ठा के स्तर को भी निर्धारित करते हैं, जिससे ग्रामीण वर्गों का निर्माण होता है।

43. (A) केवल 1 और 2
ग्रामीण नेतृत्व की प्रकृति में समय के साथ महत्वपूर्ण बदलाव आए हैं। पारंपरिक रूप से नेतृत्व उन लोगों के पास था जिनके पास उच्च जाति और अधिक भूमि थी। हालाँकि, आधुनिक समय में शिक्षा, राजनीतिक जागरूकता और सरकारी तंत्र के साथ संपर्क जैसे अर्जित मानदंड अधिक प्रभावी हो रहे हैं। यद्यपि पंचायती राज व्यवस्था ने शासन को समावेशी बनाया है, किंतु इसने गुटबाजी को पूरी तरह समाप्त नहीं किया है, बल्कि कई बार चुनावी प्रतिस्पर्धा ने नए प्रकार के गुटों को जन्म दिया है।

44. (B) भूमिहीन खेतिहर मजदूरों की जनसंख्या में वृद्धि।
अकृषकीकरण की प्रक्रिया का सबसे सीधा और गंभीर परिणाम कृषकों का भूमिहीन होना है। जब छोटे किसान ऋण या आर्थिक विवशता के कारण अपनी भूमि खो देते हैं, तो उनके पास अपना श्रम बेचने के अतिरिक्त कोई विकल्प नहीं बचता। इसके परिणामस्वरूप, ग्रामीण क्षेत्रों में स्वतंत्र कृषकों की संख्या कम हो जाती है और खेतिहर मजदूरों की संख्या में भारी वृद्धि होती है। यह बदलाव ग्रामीण वर्ग संरचना को और अधिक विषम बना देता है, जहाँ जनसंख्या का बड़ा भाग मजदूरी पर निर्भर हो जाता है।

45. (C) ग्रामीण-नगरीय अंतर
ग्रामीण-नगरीय अंतर का अध्ययन समाजशास्त्र का एक महत्वपूर्ण क्षेत्र है जो गांवों और शहरों की विशिष्ट सामाजिक संरचनाओं का विश्लेषण करता है। इसमें जनसंख्या का आकार, घनत्व, प्रमुख व्यवसाय और सामाजिक संबंधों की प्रकृति जैसे कारकों की तुलना की जाती है। यह विषय यह समझने में सहायता करता है कि निवास का स्थान लोगों की जीवन शैली और सामाजिक नियंत्रण के तरीकों को कैसे प्रभावित करता है। यद्यपि दोनों क्षेत्रों में निरंतर संपर्क रहता है, किंतु उनकी आंतरिक कार्यप्रणाली में मूलभूत अंतर बने रहते हैं।

46. (D) धर्म परिवर्तन
ग्रामीण समाज में परिवर्तन विभिन्न सामाजिक और आर्थिक प्रक्रियाओं के माध्यम से होता है। प्रवास लोगों के परिवेश को बदलता है, जबकि सामाजिक और आर्थिक गतिशीलता उनके पदानुक्रम और जीवन स्तर में सुधार लाती है। ये प्रक्रियाएं संरचनात्मक बदलावों का भाग हैं। इसके विपरीत, धर्म परिवर्तन एक व्यक्तिगत विश्वास प्रणाली में बदलाव है, जिसे आमतौर पर ग्रामीण समाज की मूलभूत संरचनात्मक परिवर्तन की प्रक्रिया के रूप में नहीं देखा जाता है। ग्रामीण समाजशास्त्र मुख्य रूप से आजीविका और शक्ति संबंधों के परिवर्तनों पर ध्यान केंद्रित करता है।

47. (A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
बंधुआ मजदूरी भारतीय ग्रामीण समाज में ऋणग्रस्तता और सामाजिक निर्भरता का एक चरम रूप है। यह एक ऐसी व्यवस्था है जहाँ निर्धन व्यक्ति ऋण के बदले अपना श्रम गिरवी रख देता है, जिससे उसकी व्यक्तिगत स्वतंत्रता समाप्त हो जाती है। यद्यपि भारत सरकार ने कानून के माध्यम से इस प्रथा को पूरी तरह प्रतिबंधित कर दिया है, किंतु यह अभी भी विभिन्न प्रच्छन्न रूपों में विद्यमान है। विशेष रूप से कुछ कृषि क्षेत्रों में मजदूरों को अग्रिम भुगतान के माध्यम से विवश श्रम के लिए बाध्य किया जाता है।

48. (B) हर पांच साल में अनिवार्य नियतकालिक चुनावों की शुरुआत।
73वें संविधान संशोधन ने पंचायती राज संस्थाओं के लोकतांत्रिक चरित्र को सुनिश्चित करने के लिए नियमित चुनावों को अनिवार्य बना दिया। इससे पूर्व, राज्यों में चुनाव अनिश्चित होते थे और कई बार पंचायतों को वर्षों तक भंग रखा जाता था। अब, प्रत्येक पांच वर्ष में चुनाव कराना संवैधानिक रूप से अनिवार्य है। यदि कोई पंचायत भंग होती है, तो छह महीने के भीतर चुनाव कराना आवश्यक है। इस प्रावधान ने स्थानीय नेतृत्व में स्थिरता लाई है और सत्ता हस्तांतरण की एक पारदर्शी प्रक्रिया स्थापित की है।

Downloaded from www.pdf.tube

(C) A सही है लेकिन R गलत है।
(D) A गलत है लेकिन R सही है।

290. वह अवधारणा जो भूमि पर नियंत्रण के आधार पर ग्रामीण इलाकों में समूहों के पदानुक्रमित क्रम का वर्णन करती है, वह है:
(A) कृषि वर्ग संरचना
(B) जजमानी प्रथा
(C) पंचायती राज
(D) ग्रामीण-नगरीय सातत्य

291. 73वें संशोधन के अनुसार पंचायत का कार्यकाल कितना है?
(A) तीन वर्ष
(B) चार वर्ष
(C) छह वर्ष
(D) पांच वर्ष

292. कृषक विरोधों के कारणों और परिणामों का अध्ययन किस विषय के अंतर्गत आता है?
(A) जजमानी संबंध
(B) कृषि अशांति और कृषक आंदोलन
(C) ग्रामीण नेतृत्व
(D) ग्रामीण-नगरीय अंतर

293. आर्थिक परिवर्तन के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए।
कथन I: सामाजिक गतिशीलता हमेशा सामाजिक पदानुक्रम में ऊपर की ओर गति होती है।
कथन II: व्यक्ति और समूह नीचे की ओर सामाजिक गतिशीलता का अनुभव भी कर सकते हैं।
(A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
(B) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।
(C) कथन I सही है, लेकिन कथन II गलत है।
(D) कथन I गलत है, लेकिन कथन II सही है।

294. भारतीय ग्रामीण शासन में निम्नलिखित संस्थागत विकासों को कालानुक्रमिक क्रम में व्यवस्थित करें:
1. पंचायतों को संवैधानिक दर्जा प्रदान किया गया।
2. लोकतांत्रिक विकेंद्रीकरण पर बलवंत राय मेहता समिति की रिपोर्ट।
3. सामुदायिक विकास कार्यक्रम का शुभारंभ।
(A) 3, 2, 1
(B) 1, 2, 3
(C) 2, 3, 1
(D) 3, 1, 2

295. पारंपरिक संरक्षक-ग्राहक संबंधों का कमजोर होना और संविदात्मक, बाजार-आधारित संबंधों का उदय एक महत्वपूर्ण:
(A) ग्रामीण समाज में परिवर्तन की प्रवृत्ति है।
(B) जजमानी प्रथा की विशेषता है।
(C) कृषक आंदोलनों का लक्ष्य है।
(D) गुटबाजी का परिणाम है।

296. किसी व्यक्ति या परिवार की आर्थिक स्थिति में सुधार की प्रक्रिया क्या कहलाती है?
(A) कंगालीकरण
(B) आर्थिक गतिशीलता
(C) अकृषकीकरण
(D) ठहराव

297. पारंपरिक कृषि संस्थानों के लिए प्रासंगिक भूमि स्वामित्व का निम्नलिखित में से कौन सा प्रकार नहीं है?
(A) जमींदारी
(B) निगम स्टॉक स्वामित्व
(C) रैयतवाड़ी
(D) महलवाड़ी

NODIA

298. निम्नलिखित विशेषताओं पर विचार कीजिए: यह ऋण से उत्पन्न विवश श्रम का एक रूप है और इसमें स्वतंत्रता की हानि शामिल है। कौन सा समूह इस विवरण में सबसे सटीक बैठता है?
(A) प्रवासी श्रम
(B) जजमानी सेवा
(C) बंधुआ मजदूरी
(D) अनुबंध कृषि

299. भारतीय ग्रामीण अर्थव्यवस्था सामंती, अर्ध-सामंती या पूंजीवादी है, इस बारे में सैद्धांतिक चर्चा को क्या कहा जाता है?
(A) पंचायती राज बहस
(B) ग्रामीण-नगरीय बहस
(C) उत्पादन की पद्धति पर बहस
(D) जजमानी बहस

300. पंचायती राज व्यवस्था में आरक्षण के माध्यम से महिलाओं और वंचित वर्गों का सशक्तिकरण किसका प्रत्यक्ष प्रयास है?
(A) गुटबाजी को बढ़ाना।
(B) पंचायती राज संस्थाओं को कमजोर करना।
(C) शहरों की ओर प्रवास को बढ़ावा देना।
(D) स्थानीय शासन को अधिक समावेशी और प्रतिनिधि बनाना।

www.nodia.in

उत्तर (व्याख्या सहित)

1. (B) घनिष्ठ समुदायों और अनौपचारिक सामाजिक नियंत्रण की एक जीवन शैली।
ग्रामीण समाजशास्त्र में ग्रामीणता की अवधारणा सामाजिक संबंधों और विशिष्ट जीवन पद्धति के विश्लेषण पर आधारित है। ग्रामीण समाज में घनिष्ठता और प्राथमिक समूहों का विशेष महत्व होता है, जो नगरीय क्षेत्रों की तुलना में अधिक पाया जाता है। यहाँ अनौपचारिक सामाजिक नियंत्रण की व्यवस्था अत्यंत प्रभावी रहती है। परिवार और नातेदारी संबंधों की मजबूती ग्रामीणता का अनिवार्य लक्षण है, जो पारंपरिक मूल्यों को निर्देशित करती है।

2. (D) कथन I गलत है, लेकिन कथन II सही है।
नगरीय समाजों में सामाजिक विभेदीकरण का स्तर अधिक होता है, क्योंकि वहाँ व्यवसायों और जीवन शैलियों में व्यापक विविधता पाई जाती है। उच्च जनसंख्या घनत्व के कारण शहरी क्षेत्रों में सामाजिक संबंधों में औपचारिकता आ जाती है। इसलिए, शहरों में कानून व्यवस्था बनाए रखने के लिए पुलिस और न्यायपालिका जैसी औपचारिक संस्थाओं पर निर्भरता बढ़ जाती है, जबकि ग्रामीण क्षेत्रों में पारंपरिक और अनौपचारिक नियंत्रण अधिक प्रभावी रहता है।

3. (C) छोटे पैमाने के निर्वाह कृषि उत्पादक जो भूमि के स्वामी हैं या उसे पट्टे पर लेते हैं।
समाजशास्त्र के अंतर्गत कृषक अध्ययन उन लघु उत्पादकों पर केंद्रित होता है जो अपनी आजीविका के लिए मुख्य रूप से कृषि पर निर्भर रहते हैं। ये कृषक भूमि के स्वामी हो सकते हैं या उसे पट्टे पर ले सकते हैं। उनका मुख्य उद्देश्य बाजार में लाभ कमाना नहीं, बल्कि परिवार का निर्वाह करना होता है। यह अध्ययन कृषकों के व्यापक समाज तथा राज्य के साथ संबंधों का व्यवस्थित विश्लेषण करता है।

4. (D) नगरीय समाजों की तुलना में ग्रामीण समाजों में व्यवसाय अधिक विविधतापूर्ण है।
ग्रामीण और नगरीय समाजों के बीच प्रमुख अंतर उनकी व्यावसायिक संरचना की प्रकृति में निहित होता है। ग्रामीण क्षेत्रों में व्यवसायों की विविधता अत्यंत सीमित होती है और अधिकांश जनसंख्या अनिवार्य रूप से कृषि कार्यों में लगी होती है। इसके विपरीत, नगरीय क्षेत्रों में श्रम विभाजन अत्यधिक विशिष्ट होता है और व्यवसायों में व्यापक विविधता पाई जाती है। इसलिए, ग्रामीण समाजों को नगरीय समाजों से अधिक विविधतापूर्ण कहना त्रुटिपूर्ण है।

5. (C) अकृषकीकरण
अकृषकीकरण वह प्रक्रिया है जिसके माध्यम से ग्रामीण आबादी अपनी भूमि पर नियंत्रण खो देती है और जीवन यापन के लिए मजदूरी करने पर विवश हो जाती है। यह प्रक्रिया कृषकों की पारंपरिक पहचान समाप्त कर उन्हें खेतिहार मजदूर या प्रवासी श्रमिक बना देती है। भूमि का विखंडन और ऋणग्रस्तता इसके प्रमुख कारक हैं। यह ग्रामीण समाज में होने वाला एक महत्वपूर्ण संरचनात्मक परिवर्तन है जो निर्धनता को बढ़ाता है।

6. (B) विषमता, द्वितीयक संबंध और अनामिकता।
लुई विर्थ द्वारा प्रतिपादित नगरीयता की अवधारणा नगरों की विशिष्ट सामाजिक विशेषताओं पर बल देती है। इसमें जनसंख्या की विषमता, द्वितीयक संबंधों की प्रधानता और व्यक्तियों के बीच अनामिकता मुख्य लक्षण हैं। नगरीय परिवेश में सामाजिक संबंध प्रायः सतही, अस्थायी और स्वार्थ पर आधारित होते हैं। यह ग्रामीण जीवन की समरूपता के विपरीत है, जहाँ व्यक्तिगत पहचान के स्थान पर कार्यात्मक भूमिकाओं को अधिक महत्व दिया जाता है।

7. (A) P-2, Q-4, R-1, S-3
ग्रामीण समाजशास्त्र की विभिन्न अवधारणाएं सामाजिक संरचना को समझने में सहायक हैं। कृषक अध्ययन निर्वाह कृषकों की जीवन शैली पर केंद्रित है, जबकि जजमानी प्रथा जातियों के बीच सेवाओं के पारस्परिक विनिमय की एक वंशानुगत प्रणाली है। ग्रामीणता घनिष्ठ सामुदायिक संबंधों पर आधारित जीवन पद्धति को दर्शाती है। अकृषकीकरण भूमि खोने और कृषक की आर्थिक स्थिति में गिरावट की प्रक्रिया है, जिससे समाज में वर्ग परिवर्तन होता है।

8. (A) दुर्लभ संसाधनों, शक्ति और सामाजिक प्रतिष्ठा के लिए प्रतिस्पर्धा।
ग्रामीण नेतृत्व में गुटबाजी का प्रमुख कारण सीमित संसाधनों, शक्ति और सामाजिक प्रतिष्ठा पर नियंत्रण प्राप्त करने की होड़ है। विभिन्न गुट अक्सर शक्तिशाली परिवारों या प्रभावशाली व्यक्तियों के इर्द-गिर्द संगठित होते हैं जो अपने समूह के हितों को प्राथमिकता देते हैं। यह गुटबाजी स्थानीय राजनीति और पंचायत चुनावों में स्पष्ट रूप से दिखाई देती है। संसाधनों के लिए यह प्रतिस्पर्धा सामुदायिक विकास और सामाजिक सद्भाव में बाधा बनती है।

9. (C) A सही है लेकिन R गलत है।
जजमानी प्रथा पारंपरिक भारतीय ग्रामीण समाज में जातियों के बीच आर्थिक और सामाजिक अंतःक्रिया का एक व्यवस्थित रूप है। इसमें संरक्षक और सेवा प्रदाता के बीच संबंध व्यक्तिगत और अक्सर वंशानुगत होते थे। यद्यपि यह प्रणाली पारस्परिकता पर आधारित थी, किंतु यह अनिवार्य रूप से समान विनिमय नहीं थी। इसमें उच्च जातियों का निम्न जातियों पर प्रभुत्व रहता था, जिससे यह एक विषम और शोषणकारी व्यवस्था बन जाती थी।

Click Here to Buy book on Amazon

10. (A) ग्रामीण परिवर्तन का विभेदित प्रभाव
ग्रामीण क्षेत्रों में विकास परियोजनाओं या तकनीकी परिवर्तनों का प्रभाव समाज के सभी वर्गों पर एक समान नहीं होता। उदाहरण के लिए, बड़े किसानों को अपनी उपज बेचने के बेहतर अवसर मिलते हैं, जिससे उन्हें लाभ होता है। दूसरी ओर, नगरीय वस्तुओं से प्रतिस्पर्धा के कारण स्थानीय कारीगरों की आजीविका संकट में पड़ सकती है। इस स्थिति को ग्रामीण परिवर्तन का विभेदित प्रभाव कहा जाता है, जो आर्थिक असमानता को बढ़ाता है।

11. (B) केवल 2 और 3
स्वतंत्र भारत में 73वें संवैधानिक संशोधन से पूर्व पंचायती राज व्यवस्था संरचनात्मक रूप से कमजोर थी। उस समय पंचायतों के पास पर्याप्त वित्तीय स्वायत्तता का अभाव था और वे पूरी तरह राज्य सरकारों के अनुदान पर निर्भर रहती थीं। इसके अलावा, पारंपरिक प्रणालियों में महिलाओं और अनुसूचित जातियों के लिए अनिवार्य आरक्षण का कोई प्रावधान नहीं था। इन कमियों को दूर करने के लिए ही पंचायती राज को संवैधानिक दर्जा प्रदान किया गया।

12. (B) भूस्वामी संरक्षक जो सेवाएँ प्राप्त करता है।
भारतीय ग्रामीण समाज की पारंपरिक जजमानी व्यवस्था में जजमान वह व्यक्ति होता है जो विभिन्न जातियों से विशिष्ट सेवाएं प्राप्त करता है। जजमान आमतौर पर भूमि का स्वामी होता है और समाज में उच्च आर्थिक स्थिति रखता है। वह सेवा प्रदाताओं को उनकी सेवाओं के बदले अनाज या अन्य वस्तुओं के रूप में भुगतान करता है। यह संबंध केवल आर्थिक नहीं होता, बल्कि इसमें सामाजिक सुरक्षा और पारस्परिक सहयोग भी शामिल होता है।

13. (C) मुख्य रूप से बाजार में बिक्री और लाभ को अधिकतम करने के लिए उत्पादन करना।
समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण से कृषक वह उत्पादक है जो मुख्य रूप से स्वयं के उपभोग और परिवार के निर्वाह के लिए खेती करता है। उनके पास भूमि पर कुछ स्तर का नियंत्रण होता है और वे खेती में पारिवारिक श्रम का उपयोग करते हैं। वे एक व्यापक राज्य संरचना का हिस्सा होते हैं जो उनसे कर की मांग करता है। कृषक का मुख्य उद्देश्य बाजार में लाभ कमाना नहीं होता, जो उन्हें व्यावसायिक किसानों से अलग बनाता है।

14. (D) परिसंपत्तियों की प्रगतिशील हानि और अत्यधिक निर्धनता।
ग्रामीण संदर्भ में कंगालीकरण एक ऐसी प्रक्रिया है जिसमें कृषकों की आर्थिक स्थिति में निरंतर गिरावट आती है। इसमें लोग धीरे-धीरे अपनी भूमि, पशुधन और उत्पादन के साधनों को खो देते हैं। ऋण का बढ़ता बोझ और खेती का अलाभकारी होना इस स्थिति को और विकट बना देता है। अंततः, यह प्रक्रिया व्यक्ति को पूर्ण निर्धनता की स्थिति में धकेल देती है, जहाँ बुनियादी आवश्यकताओं की पूर्ति भी अत्यंत कठिन हो जाती है।

15. (A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
भारतीय संविधान का 73वां संशोधन ग्रामीण भारत में स्थानीय स्वशासन के सुदृढ़ीकरण की दिशा में एक क्रांतिकारी कदम था। इस अधिनियम ने पंचायती राज संस्थाओं को संवैधानिक दर्जा प्रदान किया और उन्हें लोकतांत्रिक विकेंद्रीकरण का माध्यम बनाया। इसकी सबसे महत्वपूर्ण इकाई ग्राम सभा है, जिसमें गांव के सभी पंजीकृत मतदाता शामिल होते हैं। ग्राम सभा प्रत्यक्ष लोकतंत्र के मंच के रूप में कार्य करती है, जो विकास योजनाओं में जनभागीदारी सुनिश्चित करती है।

16. (B) ग्रामीण से नगरीय क्षेत्रों में प्रवास में वृद्धि।
ग्रामीण भारत में वर्तमान सामाजिक परिवर्तनों में प्रवास एक प्रमुख प्रवृत्ति है। बेहतर रोजगार और आधुनिक सुविधाओं की तलाश में ग्रामीण आबादी का शहरों की ओर पलायन बढ़ा है। यह केवल भौतिक आवागमन नहीं है, बल्कि इससे ग्रामीण समाज की पारंपरिक संरचना और व्यवसायों में भी बदलाव आ रहा है। कृषि पर निर्भरता कम हो रही है और ग्रामीण लोग नगरीय जीवन शैली को अपना रहे हैं, जो व्यापक आधुनिकीकरण का संकेत है।

17. (B) सामंती, अर्ध-सामंती, या पूंजीवादी।
भारतीय कृषि में उत्पादन पद्धति पर होने वाली सैद्धांतिक बहस का उद्देश्य ग्रामीण अर्थव्यवस्था की प्रकृति को समझना है। विद्वान इस पर चर्चा करते हैं कि क्या वर्तमान कृषि व्यवस्था सामंती अवशेषों से ग्रस्त है या यह पूरी तरह पूंजीवादी बन चुकी है। यह बहस भूमि संबंधों, श्रम के उपयोग और अधिशेष के विनियोग की प्रणालियों का विश्लेषण करती है। यह कृषि वर्ग संरचना और आर्थिक शोषण को समझने में सहायक है।

18. (A) निगम स्वामित्व
ग्रामीण समाजों में भूमि स्वामित्व की विभिन्न प्रणालियां प्रचलित रही हैं। व्यक्तिगत स्वामित्व में किसान के पास भूमि का पूर्ण अधिकार होता है। सामुदायिक स्वामित्व में गांव या समूह संयुक्त रूप से भूमि का नियंत्रण करता है। राजकीय स्वामित्व में भूमि पर राज्य का अधिकार होता है। हालाँकि, निगम स्वामित्व वाली व्यवस्था मुख्य रूप से आधुनिक औद्योगिक क्षेत्रों में पाई जाती है, जिसे पारंपरिक ग्रामीण भूमि स्वामित्व की प्रणाली नहीं माना जाता है।

19. (C) बंधुआ मजदूरी
बंधुआ मजदूरी श्रम शोषण का एक गंभीर रूप है, जहाँ व्यक्ति ऋण चुकाने के लिए अपनी श्रम शक्ति को गिरवी रख देता है। यह स्थिति अक्सर पीढ़ी दर पीढ़ी चलती रहती है क्योंकि उच्च ब्याज दरों के कारण मूल ऋण कभी चुकता नहीं हो पाता। मजदूर के पास कार्य छोड़ने या किसी अन्य नियोक्ता के पास जाने की स्वतंत्रता नहीं होती। यह व्यवस्था मानवीय गरिमा का उल्लंघन करती है और ग्रामीण संरचना में व्याप्त गहरी निर्भरता को दर्शाती है।

20. (A) 1, 4, 2, 3
ग्रामीण समाज में परिवर्तन एक क्रमिक प्रक्रिया है। इसकी शुरुआत पारंपरिक निर्वाह कृषि और जजमानी संबंधों के

Downloaded from www.pdf.tube

279. प्रतिद्वंद्वी नेताओं के नेतृत्व में ग्राम संसाधनों पर प्रतिस्पर्धी दावों से उत्पन्न संघर्षों का अध्ययन किस विषय के अंतर्गत आता है?
(A) ग्रामीण नेतृत्व और गुटबाजी
(B) जजमानी प्रथा
(C) कृषक अध्ययन
(D) ग्रामीण-नगरीय अंतर

280. आर्थिक परिवर्तन के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए।
कथन I: अकृषकीकरण उस प्रक्रिया को संदर्भित करता है जहां कृषक अपनी भूमि खो देते हैं।
कथन II: कंगालीकरण उस प्रक्रिया को संदर्भित करता है जहां कृषक अत्यंत निर्धन हो जाते हैं।
(A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
(B) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।
(C) कथन I सही है, लेकिन कथन II गलत है।
(D) कथन I गलत है, लेकिन कथन II सही है।

281. छोटे पैमाने के कृषि उत्पादकों और बड़े समाज में उनके स्थान का औपचारिक अध्ययन क्या कहलाता है?
(A) नगरीय समाजशास्त्र
(B) कृषक अध्ययन
(C) औद्योगिक समाजशास्त्र
(D) जनसांख्यिकी

282. 73वें संशोधन का प्रत्यक्ष परिणाम निम्नलिखित में से कौन सा है?
(A) पंचायती राज संस्थाओं के लिए एक संवैधानिक आधार की स्थापना।
(B) ग्राम सभा का उन्मूलन।
(C) राष्ट्रीय राजधानी में सभी ग्रामीण विकास योजनाओं का केंद्रीकरण।
(D) गांवों में गुटबाजी का पूर्ण उन्मूलन।

283. भारतीय कृषि 'सामंती' है या 'पूंजीवादी', इस पर बहस किसके केंद्र में है?
(A) ग्रामीण-नगरीय अंतर का अध्ययन
(B) जजमानी प्रथा विश्लेषण
(C) उत्पादन की पद्धति पर बहस
(D) पंचायती राज सुधार

284. एक पीढ़ी के दौरान एक परिवार की सामाजिक स्थिति में सुधार, जो भूमिहीन मजदूर से छोटे भूस्वामी बन जाते हैं, किसका उदाहरण है?
(A) गुटबाजी
(B) अकृषकीकरण
(C) कंगालीकरण
(D) ऊपर की ओर सामाजिक गतिशीलता

285. सूची I को सूची II के साथ सुमेलित कीजिए।
सूची I: (सामाजिक समूह)
P. बंधुआ मजदूर
Q. प्रवासी मजदूर
R. जजमान
S. कृषक
सूची II: (परिभाषित विशेषता)
1. काम के लिए एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाता है।
2. भूमि पर नियंत्रण वाला छोटे पैमाने का कृषक।
3. ऋण के माध्यम से ऋणदाता से बंधा हुआ।
4. पारंपरिक सेवा-विनिमय प्रणाली में संरक्षक।
कूट:
(A) P-3, Q-1, R-4, S-2
(B) P-1, Q-3, R-2, S-4
(C) P-3, Q-2, R-4, S-1
(D) P-2, Q-4, R-1, S-3

286. ग्रामीण परिवर्तन की किस प्रक्रिया का विश्लेषण करने के लिए 'विकर्षण' और 'आकर्षण' कारकों का उपयोग किया जाता है?
(A) गुटबाजी
(B) प्रवास
(C) सामाजिक गतिशीलता
(D) अकृषकीकरण

287. ग्रामीण समाज के बारे में निम्नलिखित में से कौन सा कथन गलत है?
(A) इसे अक्सर कृषि की प्रधानता द्वारा पहचाना जाता है।
(B) सामाजिक संबंध आमतौर पर अनौपचारिक और व्यक्तिगत होते हैं।
(C) इसमें महत्वपूर्ण सामाजिक और आर्थिक परिवर्तन हो रहे हैं।
(D) यह बिना किसी आंतरिक विभेदीकरण के पूरी तरह से समरूप है।

288. ग्रामीण विकास की रणनीतियों का एक प्रमुख उद्देश्य किन सामाजिक मुद्दों का समाधान करना है?
(A) कंगालीकरण और बंधुआ मजदूरी।
(B) बड़े कृषि व्यवसायों की सफलता।
(C) बढ़ती नगरीय जनसंख्या।
(D) अंतरराष्ट्रीय व्यापार में गिरावट।

NODIA

289. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है।
अभिकथन (A): गुटबाजी गांवों में सामुदायिक विकास के लिए एक बड़ी बाधा हो सकती है।
कारण (R): प्रतिद्वंद्वी गुट सामुदायिक कल्याण पर गुटीय प्रतिद्वंद्विता को प्राथमिकता देते हुए, विरोधी समूह द्वारा शुरू की गई परियोजनाओं को विफल करने का काम कर सकते हैं।
(A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।

30. (D) धनी किसान - अपनी अधिकांश भूमि पट्टे पर देता है और मजदूर के रूप में कार्य करता है।
कृषि वर्ग संरचना में धनी किसान वह वर्ग है जिसके पास प्रचुर भूमि होती है और वह स्वयं शारीरिक श्रम करने के स्थान पर वेतनभोगी मजदूरों को नियुक्त करता है। वे आधुनिक तकनीक का उपयोग करते हैं ताकि बाजार के लिए अधिशेष उत्पादन कर सकें। इसके विपरीत, मजदूर के रूप में कार्य करना निर्धन या भूमिहीन किसानों की विशेषता है। धनी किसान अक्सर गांव के आर्थिक और राजनीतिक जीवन पर महत्वपूर्ण प्रभाव रखते हैं और अपनी जोत का प्रबंधन स्वयं करते हैं।

31. (B) P-3, Q-4, R-1, S-2
73वें संशोधन ने पंचायतों को संवैधानिक अधिकार देकर ग्रामीण शासन का कायाकल्प किया। ग्राम सभा को प्रत्यक्ष लोकतंत्र के प्राथमिक निकाय के रूप में मान्यता दी गई। अनुसूचित जातियों और जनजातियों के लिए आरक्षण ने हाशिए के समुदायों का प्रतिनिधित्व सुनिश्चित किया। राज्य वित्त आयोग का गठन पंचायतों की आर्थिक स्थिति सुधारने के लिए किया गया। अंततः, त्रि-स्तरीय प्रणाली ने ग्राम, ब्लॉक और जिला स्तर पर शासन की एक संगठित और प्रभावी संरचना प्रदान की है।

32. (B) अंतर्निहित आर्थिक संरचना और वर्ग संबंध।
भारतीय कृषि में उत्पादन पद्धति पर बहस मार्क्सवादी समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण से प्रेरित है। इसका उद्देश्य यह विश्लेषण करना है कि ग्रामीण भारत की आर्थिक व्यवस्था सामंती है या पूंजीवादी रूप ले चुकी है। यह बहस भूमि स्वामित्व के पैटर्न, श्रम के शोषण और अधिशेष के विनियोग की जांच करती है। यह समझना महत्वपूर्ण है क्योंकि इसी संरचना से गांव के वर्ग संबंध और शोषण की प्रक्रियाएं निर्धारित होती हैं, जो ग्रामीण विकास की दिशा तय करती हैं।

33. (A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
कंगालीकरण और अकृषकीकरण ग्रामीण समाज में होने वाले नकारात्मक परिवर्तनों की दो परस्पर जुड़ी अवधारणाएं हैं। कंगालीकरण पूर्ण निर्धनता की प्रक्रिया को दर्शाता है, जहाँ व्यक्ति अपनी आजीविका के सभी साधन खो देता है। अकृषकीकरण विशेष रूप से कृषक की पहचान और भूमि पर नियंत्रण की हानि को संदर्भित करता है। यद्यपि अकृषकीकरण अक्सर कंगालीकरण का कारण बनता है, किंतु कभी-कभी यह अन्य व्यवसायों में जाने का अवसर भी दे सकता है, यदि अनुकूल आर्थिक स्थितियां उपलब्ध हों।

34. (A) गरीब किसान
गरीब किसान वह वर्ग है जिसके पास अत्यंत सीमित भूमि होती है और उत्पादन केवल परिवार के निर्वाह के लिए पर्याप्त हो पाता है। उनके पास कोई अधिशेष नहीं बचता जिसे वे बाजार में बेच सकें। अपनी आय बढ़ाने और बुनियादी जरूरतों को पूरा करने के लिए वे अक्सर बड़े किसानों के खेतों पर मजदूरी करने के लिए विवश होते हैं। वे पूरी तरह से पारिवारिक श्रम पर निर्भर होते हैं और अक्सर ऋण के चक्र में फंसे रहते हैं।

35. (C) स्थानीय शासन और निर्णय लेने में भूमिका।
पंचायती राज व्यवस्था के माध्यम से लोगों के सशक्तिकरण का मूल उद्देश्य सत्ता का विकेंद्रीकरण करना है। इसका अर्थ है कि ग्रामीण विकास से जुड़े महत्वपूर्ण निर्णय लेने की शक्ति स्वयं ग्रामीणों के पास होनी चाहिए। जब लोग स्थानीय शासन में सक्रिय रूप से भाग लेते हैं, तो उनकी आवश्यकताओं को योजनाओं में बेहतर स्थान मिलता है। यह प्रक्रिया नागरिकों में आत्मविश्वास पैदा करती है और उन्हें अपनी समस्याओं का समाधान स्वयं खोजने के लिए सक्षम बनाती है, जिससे लोकतंत्र सुदृढ़ होता है।

36. (D) बाजार दरों के आधार पर नकद भुगतान।
जजमानी प्रथा एक पारंपरिक विनिमय प्रणाली है जो बाजार के नियमों के स्थान पर सामाजिक और धार्मिक मानदंडों पर आधारित है। इसमें सेवाओं के बदले भुगतान प्रायः अनाज या अन्य वस्तुओं के रूप में किया जाता था। यह संबंध वंशानुगत और स्थाई होता था, जहाँ जजमान और सेवा प्रदाता के बीच एक गहरा सामाजिक बंधन बना रहता था। आधुनिक नकद भुगतान इस प्रथा की विशेषता नहीं है, बल्कि यह पारंपरिक व्यवस्था के पतन का परिणाम है।

37. (C) भूमि अधिकार, उचित लगान और लाभकारी मूल्य की मांग।
भारत में कृषक आंदोलनों का इतिहास मुख्य रूप से कृषि संरचना में सुधारों और शोषण के विरुद्ध संघर्ष का रहा है। किसानों ने सदैव भूमि पर सुरक्षित अधिकार, अत्यधिक लगान से मुक्ति और अपनी फसल के लिए उचित बाजार मूल्य की मांग की है। औपनिवेशिक काल से वर्तमान तक, इन आंदोलनों ने साहूकारों के चंगुल से स्वतंत्रता और ऋण माफी जैसे मुद्दों को उठाया है। यह सामूहिक कार्रवाई कृषकों के अधिकारों की सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए की जाती है।

38. (B) ग्रामीण जीवन पर नगरीयता का प्रभाव
आधुनिक समय में ग्रामीण और नगरीय क्षेत्रों के बीच की सीमाएं धुंधली होती जा रही हैं। संचार क्रांति और परिवहन के विकास के कारण नगरीय जीवन शैली और आधुनिक मूल्य गांवों तक पहुँच रहे हैं। ग्रामीण युवा अब शहरों की तरह फैशन, शिक्षा और मनोरंजन के साधनों की आकांक्षा रखते हैं। इस प्रक्रिया को ग्रामीण जीवन पर नगरीयता का प्रभाव कहा जाता है, जहाँ पारंपरिक मूल्यों का स्थान धीरे-धीरे व्यावसायिकता ले रही है, जिससे समाज की संस्कृति में परिवर्तन आ रहा है।

39. (D) पंचायती राज संस्थाओं को संवैधानिक दर्जा और एकरूपता प्रदान की।
73वां संविधान संशोधन भारतीय लोकतंत्र के इतिहास में एक मील का पत्थर है क्योंकि इसने पंचायतों को संवैधानिक संरक्षण प्रदान किया। इससे पूर्व, पंचायतों के चुनाव राज्यों की इच्छा पर निर्भर थे और उनमें निरंतरता का अभाव था। इस संशोधन ने देश भर में त्रि-स्तरीय संरचना, नियमित चुनाव और वित्तीय संसाधनों के हस्तांतरण को अनिवार्य बना दिया। इसने स्थानीय निकायों को स्वशासन की एक स्वतंत्र और वैधानिक इकाई के रूप में स्थापित करने का महत्वपूर्ण कार्य किया।

Click Here to Buy book on Amazon

प्रभुत्व से हुई। इसके पश्चात, हरित क्रांति की तकनीक ने कृषि उत्पादन के तरीकों को बदला। इस तकनीकी विकास ने कृषि के व्यावसायीकरण और धीरे-धीरे अकृषकीकरण की प्रक्रिया को जन्म दिया, जिससे कई छोटे कृषक मजदूरी की ओर मुड़े। वर्तमान चरण में रोजगार की तलाश में ग्रामीण आबादी का शहरों की ओर प्रवास अधिक बढ़ गया है।

21. (C) समुदाय का विशिष्ट नेताओं के साथ जुड़े प्रतिद्वंद्वी समूहों में विभाजन।
ग्रामीण नेतृत्व में गुटबाजी वह स्थिति है जहाँ पूरा गांव कुछ शक्तिशाली नेताओं या परिवारों के प्रति निष्ठा रखने वाले प्रतिस्पर्धी समूहों में बंट जाता है। ये गुट अक्सर जाति या आर्थिक हितों के आधार पर बनते हैं और संसाधनों पर नियंत्रण के लिए संघर्ष करते हैं। गुटबाजी के कारण सामुदायिक निर्णय लेने की प्रक्रिया बाधित होती है। यह स्थिति गांव में सामाजिक तनाव को जन्म देती है, जहाँ प्रत्येक गुट दूसरे का प्रभाव कम करने का प्रयास करता है।

22. (B) यह अक्सर ग्रामीण क्षेत्रों में रोजगार के अवसरों की कमी के कारण होता है।
ग्रामीण क्षेत्रों से नगरीय केंद्रों की ओर होने वाला प्रवास मुख्य रूप से आर्थिक विवशताओं से प्रेरित होता है। गांवों में कृषि का अलाभकारी होना और गैर-कृषि रोजगार के अवसरों की कमी लोगों को बाहर जाने के लिए मजबूर करती है। शहर बेहतर मजदूरी और विविध नौकरियों की संभावना प्रदान करते हैं। यद्यपि यह प्रवासियों के लिए आय का स्रोत बनता है, लेकिन इससे शहरों में संसाधनों पर दबाव और ग्रामीण क्षेत्रों में श्रम शक्ति की कमी जैसी चुनौतियां उत्पन्न होती हैं।

23. (D) पंचायतों में महिलाओं और वंचित समुदायों के लिए आरक्षण अनिवार्य करके।
भारतीय संविधान के 73वें संशोधन ने पंचायतों को सशक्त बनाने के लिए समावेशी प्रतिनिधित्व पर बल दिया। इसके अंतर्गत अनुसूचित जातियों, अनुसूचित जनजातियों और महिलाओं के लिए उनकी जनसंख्या के अनुपात में आरक्षण अनिवार्य किया गया। यह प्रावधान महत्वपूर्ण है क्योंकि इसने उन वर्गों को निर्णय लेने की प्रक्रिया में शामिल किया जो ऐतिहासिक रूप से हाशिए पर रहे थे। इस सशक्तिकरण ने ग्रामीण सत्ता संरचना को अधिक लोकतांत्रिक बनाया और विकास में वंचितों की भागीदारी सुनिश्चित की।

24. (A) सामाजिक संबंधों की प्रकृति और सामाजिक नियंत्रण के स्तर में।
ग्रामीणता और नगरीयता के बीच मुख्य अंतर भौगोलिक सीमा से अधिक सामाजिक व्यवहार में निहित है। ग्रामीण क्षेत्रों में सामाजिक संबंध प्राथमिक, व्यक्तिगत और घनिष्ठ होते हैं, जहाँ परिवार की भूमिका प्रमुख होती है। इसके विपरीत, नगरीय क्षेत्रों में द्वितीयक और औपचारिक संबंध प्रधान होते हैं। ग्रामीण समाज में सामाजिक नियंत्रण अनौपचारिक होता है, जबकि शहरों में कानून और पुलिस जैसे औपचारिक माध्यमों पर अधिक निर्भरता होती है, जो जीवन के प्रति अलग दृष्टिकोण को दर्शाते हैं।

25. (A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
आधुनिक ग्रामीण भारत में अकृषकीकरण की प्रक्रिया तीव्र हुई है, जिसका अर्थ है कि लोग अपनी आजीविका के लिए कृषि का त्याग कर रहे हैं। इसका प्राथमिक कारण भूमि का निरंतर विखंडन है, जिससे खेती अलाभकारी हो गई है। इसके साथ ही, किसानों पर ऋण का बोझ और बढ़ती लागत ने उन्हें विवश कर दिया है। परिणामस्वरूप, छोटे और सीमांत किसान अपनी भूमि खोकर मजदूरी या अन्य गैर-कृषि कार्यों की तलाश में प्रवास करने को मजबूर हो रहे हैं।

26. (A) भूमि स्वामित्व, पट्टे के अधिकार और कृषि कीमतों से संबंधित मुद्दे।
कृषि अशांति ग्रामीण समाज में व्याप्त असंतोष की सामूहिक अभिव्यक्ति है, जो अक्सर शोषणकारी भूमि व्यवस्था और आर्थिक असुरक्षा से उत्पन्न होती है। जब किसानों को अपनी उपज का लाभकारी मूल्य नहीं मिलता या उनके भूमि अधिकारों का हनन होता है, तो वे विरोध के लिए लामबंद होते हैं। इसके अलावा, ऋणग्रस्तता और पट्टेदारों के असुरक्षित अधिकार भी इस अशांति को तीव्र करते हैं। यह स्थिति दर्शाती है कि कृषि संरचना में सुधारों की तत्काल आवश्यकता है।

27. (D) एक खेतिहर मजदूर का काम के लिए सूखा प्रवण गांव से नहर-सिंचित गांव में जाना।
ग्रामीण-से-ग्रामीण प्रवास भारत में प्रवास का एक प्रमुख रूप है, जो कृषि विकास की क्षेत्रीय असमानताओं के कारण होता है। इसमें मजदूर उन क्षेत्रों से पलायन करते हैं जहाँ सिंचाई की सुविधाएं नहीं हैं, और उन क्षेत्रों में जाते हैं जहाँ खेती उन्नत है और साल भर काम उपलब्ध रहता है। कटाई के मौसम में यह आवागमन विशेष रूप से देखा जाता है। यह प्रवास मुख्य रूप से बेहतर मजदूरी और रोजगार की निरंतरता सुनिश्चित करने के लिए किया जाता है।

28. (B) भूमि और कृषि उत्पादन के साथ उनके संबंध के आधार पर ग्रामीण आबादी का वर्गीकरण।
कृषि वर्ग संरचना ग्रामीण समाज के आर्थिक और सामाजिक पदानुक्रम को दर्शाती है। यह वर्गीकरण इस आधार पर किया जाता है कि किसी व्यक्ति के पास कितनी भूमि है और वह उस पर स्वयं कार्य करता है या दूसरों का श्रम उपयोग करता है। इसमें भूस्वामी, धनी किसान, मध्यम किसान और भूमिहीन मजदूर जैसे विभिन्न वर्ग शामिल होते हैं। यह संरचना गांव के भीतर शक्ति संबंधों और सामाजिक प्रभाव के स्तर को भी स्पष्ट रूप से परिभाषित करती है।

29. (C) केवल 1 और 3
प्रवासी मजदूर ग्रामीण अर्थव्यवस्था के महत्वपूर्ण स्तंभ हैं, किंतु उन्हें अत्यंत कठिन परिस्थितियों का सामना करना पड़ता है। वे गंतव्य क्षेत्रों में खराब आवास और सामाजिक सुरक्षा की कमी के बीच कार्य करते हैं। उनका योगदान महत्वपूर्ण है क्योंकि वे अपने मूल गांव में धन भेजकर ग्रामीण आय बढ़ाते हैं और औद्योगिक क्षेत्रों में श्रम की मांग पूरी करते हैं। यह ध्यान रखना आवश्यक है कि प्रवास हमेशा स्थायी नहीं होता; भारत में मौसमी प्रवास का चलन काफी व्यापक है।

NODIA

49. (B) सामाजिक पदानुक्रम में किसी व्यक्ति या समूह की स्थिति में परिवर्तन।
ग्रामीण संदर्भ में सामाजिक गतिशीलता का अर्थ है किसी व्यक्ति या परिवार की सामाजिक स्थिति या वर्ग में होने वाला बदलाव। यह बदलाव ऊपर की ओर हो सकता है, जैसे किसी मजदूर का शिक्षित होकर सरकारी सेवा प्राप्त करना। इसके विपरीत, यह नीचे की ओर भी हो सकता है, जैसे किसी कृषक का अपनी भूमि खोकर मजदूर बन जाना। सामाजिक गतिशीलता यह दर्शाती है कि समाज कितना खुला है और क्या वहां व्यक्तियों के लिए अपनी परिस्थितियों को बदलने के अवसर उपलब्ध हैं।

50. (A) कृषि का व्यावसायीकरण
कृषि का व्यावसायीकरण वह प्रक्रिया है जिसमें खेती का उद्देश्य परिवार का भरण-पोषण करने के स्थान पर बाजार के लिए उत्पादन करना हो जाता है। इसमें किसान नकदी फसलों के उत्पादन पर अधिक ध्यान देते हैं। इस प्रक्रिया ने ग्रामीण अर्थव्यवस्था को वैश्विक बाजारों से जोड़ दिया है। इससे किसानों की आय में वृद्धि की संभावना तो बनी है, किंतु साथ ही वे बाजार की कीमतों में उतार-चढ़ाव और बढ़ती लागत के जोखिमों के प्रति अधिक संवेदनशील हो गए हैं।

51. (A) 4, 2, 3, 1
भारत में पंचायती राज का विकास विभिन्न चरणों में हुआ। इसकी शुरुआत 1952 में सामुदायिक विकास कार्यक्रम से हुई। इसके पश्चात 1957 में बलवंत राय मेहता समिति ने त्रि-स्तरीय व्यवस्था की अनुशंसा की। 1977 में अशोक मेहता समिति ने द्वि-स्तरीय मॉडल का सुझाव दिया। अंततः, इन प्रयासों के परिणामस्वरूप 1992 में 73वां संविधान संशोधन अधिनियम पारित किया गया। यह कालक्रम दर्शाता है कि कैसे स्थानीय स्वशासन को धीरे-धीरे संरचनात्मक और कानूनी मजबूती प्रदान की गई।

52. (D) कार्ल मार्क्स
भारतीय कृषि में उत्पादन पद्धति पर होने वाली बहस मुख्य रूप से कार्ल मार्क्स के ऐतिहासिक भौतिकवाद के सिद्धांतों पर आधारित है। समाजशास्त्री यह विश्लेषण करते हैं कि क्या ग्रामीण भारत में उत्पादन के संबंध सामंती हैं या उनमें पूंजीवादी तत्वों का समावेश हो चुका है। मार्क्सवादी ढांचा भूमि संबंधों, श्रम के शोषण और अधिशेष मूल्य के वितरण को समझने में सहायता करता है। यह बहस 1970 के दशक में विशेष रूप से तीव्र हुई जब हरित क्रांति ने ग्रामीण वर्ग संरचना में व्यापक बदलाव किए थे।

53. (C) कंगालीकरण और अकृषकीकरण
कंगालीकरण और अकृषकीकरण ग्रामीण अर्थव्यवस्था में होने वाले प्रतिगामी परिवर्तनों को दर्शाते हैं। कंगालीकरण उस स्थिति को कहते हैं जहाँ ग्रामीण आबादी धीरे-धीरे अत्यंत निर्धन हो जाती है और अपने न्यूनतम जीवन निर्वाह के साधनों से वंचित हो जाती है। अकृषकीकरण वह प्रक्रिया है जिसमें किसान अपनी भूमि और खेती पर आधारित आजीविका खो देते हैं। ये दोनों अवधारणाएं ग्रामीण क्षेत्रों में व्याप्त आर्थिक संकट और असमानता को उजागर करती हैं, जो प्रायः लोगों को मजबूरी में श्रमिक बनने की ओर धकेलती हैं।

54. (B) उन श्रमिकों को जो रोजगार के लिए अपने मूल स्थान से दूसरे स्थान पर जाते हैं।
ग्रामीण समाजशास्त्र में प्रवासी मजदूर वे व्यक्ति होते हैं जो अपने मूल गांव में आजीविका के अवसरों की कमी के कारण अन्य क्षेत्रों में कार्य की तलाश में जाते हैं। यह प्रवास मौसमी हो सकता है, जैसे कटाई के समय उन्नत कृषि क्षेत्रों में जाना, या लंबे समय के लिए शहरों में उद्योगों से जुड़ना। प्रवासी मजदूर प्रायः सामाजिक सुरक्षा के अभाव में कार्य करते हैं। वे न केवल अपने परिवारों को आर्थिक सहायता भेजते हैं, बल्कि गंतव्य क्षेत्रों की अर्थव्यवस्था में भी योगदान देते हैं।

55. (A) P-3, Q-1, R-4, S-2
कृषि वर्ग संरचना विभिन्न समूहों की आर्थिक भूमिकाओं को परिभाषित करती है। जमींदार वे हैं जो बिना स्वयं खेती किए केवल भूमि के लगान पर निर्भर रहते हैं। धनी किसान आधुनिक तकनीकों और भाड़े के मजदूरों के माध्यम से बाजार के लिए बड़े पैमाने पर उत्पादन करते हैं। मध्यम किसान मुख्य रूप से अपने परिवार के श्रम का उपयोग करते हैं और अल्प अधिशेष पैदा कर पाते हैं। अंत में, खेतिहर मजदूर वे भूमिहीन लोग हैं जो अपनी आजीविका के लिए अपनी शारीरिक श्रम शक्ति को दूसरों को बेचते हैं।

56. (A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
73वें संविधान संशोधन के माध्यम से पंचायतों में महिलाओं के लिए एक-तिहाई सीटों का आरक्षण अनिवार्य करना एक ऐतिहासिक कदम था। इस प्रावधान का मुख्य उद्देश्य ग्रामीण स्तर पर महिलाओं की राजनीतिक भागीदारी सुनिश्चित करना और उन्हें निर्णय लेने की प्रक्रिया में सशक्त बनाना है। आरक्षण के कारण लाखों महिलाएं अब सरपंच के रूप में कार्य कर रही हैं, जिससे पारंपरिक पितृसत्तात्मक सत्ता संरचना को चुनौती मिली है। यह रणनीति महिलाओं में आत्मविश्वास बढ़ाने और स्थानीय विकास में उनके मुद्दों को प्राथमिकता देने में सहायक सिद्ध हुई है।

57. (C) ग्रामीण नेतृत्व और शक्ति का संकेंद्रण
ग्रामीण समाजों में शक्ति अक्सर कुछ ही हाथों में सिमटी होती है, जिसे शक्ति का संकेंद्रण कहा जाता है। जब एक ही प्रभावशाली परिवार के पास अधिकांश भूमि और राजनीतिक नियंत्रण होता है, तो पूरा गांव उन पर निर्भर हो जाता है। यह परिवार ऋण देकर और विवादों में मध्यस्थता करके अपना वर्चस्व बनाए रखता है। ऐसी स्थिति में, लोकतांत्रिक संस्थाएं होने के बावजूद वास्तविक निर्णय लेने की शक्ति इसी अभिजात वर्ग के पास रहती है। यह पारंपरिक ग्रामीण नेतृत्व के प्रभुत्व को दर्शाता है जो सामाजिक समानता में बाधक है।

58. (A) यह कृषि प्रणाली के साथ पूर्ण संतोष का संकेत है।
कृषि अशांति वास्तव में कृषि व्यवस्था में व्याप्त गहरे असंतोष और संकट का परिणाम होती है। यह तब उत्पन्न होती है जब किसानों को उनकी मेहनत का उचित मूल्य नहीं मिलता, वे भारी

Downloaded from www.pdf.tube

की आवश्यकता बढ़ जाती है क्योंकि पारंपरिक सामुदायिक नियंत्रण यहाँ निर्बल होता है। ये तत्व मिलकर एक ऐसे जटिल सामाजिक परिवेश का निर्माण करते हैं जो ग्रामीण जीवन से पृथक है।

114. (A) नगरीय बाजार में ग्राहक-दुकानदार संबंध।
कृषि संबंध विशेष रूप से उन सामाजिक और आर्थिक अंतःक्रियाओं को संदर्भित करते हैं जो कृषि उत्पादन की प्रक्रिया और भूमि के नियंत्रण से जुड़ी होती हैं। इसमें भूस्वामियों और पट्टेदारों के बीच की शर्तें, बटाईदारी की व्यवस्था और कृषि कार्यों के लिए मजदूरों के साथ किए गए अनुबंध सम्मिलित होते हैं। ये संबंध ग्रामीण सामाजिक संरचना को परिभाषित करते हैं। नगरीय बाजारों में होने वाले ग्राहक-दुकानदार संबंध पूर्णतः व्यावसायिक और गैर-कृषि प्रकृति के होते हैं, इसलिए उन्हें कृषि संबंधों के अंतर्गत सम्मिलित नहीं किया जाता है।

115. (A) P-3, Q-1, R-4, S-2
भारत में पंचायती राज के विकास में विभिन्न समितियों का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। बलवंत राय मेहता समिति ने त्रि-स्तरीय व्यवस्था की नींव रखी, जबकि अशोक मेहता समिति ने द्वि-स्तरीय मॉडल का सुझाव दिया। जी.वी.के. राव समिति ने योजना निर्माण में जिले की भूमिका पर बल दिया। अंततः, 73वें संविधान संशोधन ने इन सभी प्रयासों को एक कानूनी ढांचा प्रदान करते हुए पंचायती राज को संवैधानिक दर्जा प्रदान किया। यह ऐतिहासिक विकास दर्शाता है कि स्थानीय लोकतंत्र को सुदृढ़ करने के लिए समय-समय पर विभिन्न संरचनात्मक बदलाव किए गए हैं।

116. (A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
समकालीन ग्रामीण समाज में व्यापक सामाजिक परिवर्तन हो रहे हैं, जहाँ जाति और जजमानी जैसी संस्थाएं अपनी पकड़ खो रही हैं। बाजार अर्थव्यवस्था के प्रसार ने व्यावसायिक संबंधों को अधिक संविदात्मक और नकद-आधारित बना दिया है। आधुनिक शिक्षा ने लोगों में नवीन दृष्टिकोण और आकांक्षाएं उत्पन्न की हैं, जिससे वे पारंपरिक व्यवसायों से बाहर निकल रहे हैं। साथ ही, विभिन्न राजकीय कानूनों ने सामाजिक समानता को बढ़ावा दिया है। ये कारक मिलकर ग्रामीण समाज की पारंपरिक संरचना को नया स्वरूप प्रदान कर रहे हैं और सामाजिक न्याय की ओर बढ़ रहे हैं।

117. (C) आर्थिक गतिशीलता
आर्थिक गतिशीलता ग्रामीण समाज में होने वाले उन परिवर्तनों को संदर्भित करती है जो व्यक्तियों की भौतिक स्थिति और धन से संबद्ध होते हैं। जब कोई निर्धन किसान उन्नत तकनीक अपनाकर या नवीन आजीविका खोजकर अपनी आय बढ़ाता है, तो वह आर्थिक गतिशीलता प्राप्त करता है। यह गतिशीलता उनके जीवन स्तर को सुधारती है और प्रायः समाज में उनकी प्रतिष्ठा को भी प्रभावित करती है। यह ग्रामीण विकास का एक महत्वपूर्ण सूचक है, क्योंकि यह दर्शाता है कि लोग आर्थिक बाधाओं को तोड़कर समृद्धि की ओर अग्रसर हो रहे हैं।

118. (B) यह बहस करती है कि क्या प्रमुख उत्पादन संबंध सामंती, अर्ध-सामंती या प्रकृति में पूंजीवादी हैं।
भारतीय कृषि में 'उत्पादन पद्धति' पर होने वाली बहस समाजशास्त्रीय विश्लेषण का अत्यंत महत्वपूर्ण भाग है। यह चर्चा इस विषय पर केंद्रित है कि ग्रामीण अर्थव्यवस्था की मौलिक संरचना कैसी है। विद्वान इस बात का अन्वेषण करते हैं कि क्या भूमि पर अभी भी सामंती अवशेषों का प्रभाव है या फिर यह पूर्णतः पूंजीवादी बन चुकी है, जहाँ लाभ कमाना मुख्य आधार है। यह बहस ग्रामीण वर्गों के बीच के शक्ति संबंधों और भविष्य के आर्थिक विकास की दिशा को समझने में सहायता करती है।

119. (D) अकृषकीकरण और ग्रामीण-से-नगरीय प्रवास।
जब कोई लघु किसान अपनी भूमि खो देता है, तो वह अकृषकीकरण की प्रक्रिया का शिकार होता है, जिससे उसकी कृषक पहचान समाप्त हो जाती है। इसके परिणामस्वरूप, आजीविका के लिए वह शहर जाकर मजदूरी करने पर विवश होता है, जिसे ग्रामीण-से-नगरीय प्रवास कहा जाता है। ये दोनों प्रक्रियाएं आपस में गहराई से संबद्ध हैं और ग्रामीण संकट के दो पहलुओं को दर्शाती हैं। यह स्थिति बताती है कि कैसे ग्रामीण क्षेत्रों में संसाधनों की कमी लोगों को अपनी जड़ों से दूर होने और नगरीय अनौपचारिक क्षेत्र में कार्य करने के लिए विवश करती है।

NODIA

120. (B) केवल 2 और 3
बंधुआ मजदूरी शोषण का एक अमानवीय स्वरूप है, जो किसी भी प्रकार से स्वतंत्र अनुबंध पर आधारित नहीं है। इसमें मजदूर की व्यक्तिगत स्वतंत्रता और आवागमन पर कठोर प्रतिबंध होते हैं, जिससे वह नियोक्ता की इच्छा के बिना कहीं जा नहीं सकता। ऋण का चक्र प्रायः इतना जटिल होता है कि मजदूर के लिए उसे चुकाना असंभव हो जाता है, जिससे यह स्थिति पीढ़ी दर पीढ़ी चलती रहती है। यह व्यवस्था पूर्णतः विवशता और शोषण पर टिकी है, जहाँ श्रमिक का अपने स्वयं के श्रम और जीवन पर कोई नियंत्रण नहीं रहता।

121. (C) विवशता और स्वतंत्रता की हानि
प्रवासी मजदूरों और बंधुआ मजदूरों के बीच का सबसे प्रमुख अंतर उनकी व्यक्तिगत स्वतंत्रता का स्तर है। प्रवासी मजदूर सामान्यतः अपनी इच्छा से बेहतर अवसरों की खोज में एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाते हैं, और उनके पास कार्य छोड़ने का अधिकार होता है। इसके विपरीत, बंधुआ मजदूरी में बलप्रयोग और विवशता सम्मिलित होती है, जहाँ श्रमिक ऋण के कारण अपनी इच्छा से कार्य बदलने के लिए स्वतंत्र नहीं होता। यही स्वतंत्रता का अभाव बंधुआ मजदूरी को एक गंभीर सामाजिक बुराई और शोषण का चरम स्वरूप बना देता है।

122. (A) कृषि अशांति और कृषक आंदोलनों को बढ़ावा देना।
ग्रामीण विकास की रणनीतियों का प्राथमिक लक्ष्य ग्रामीणों के जीवन स्तर को सुधारना और सामाजिक समस्याओं का समाधान करना होता है। इसमें बंधुआ मजदूरी को समाप्त करना, प्रवासियों की सुरक्षा सुनिश्चित करना और कंगालीकरण जैसी प्रक्रियाओं को रोकना सम्मिलित है। सरकारी नीतियों का

STUDYING FROM PDFs?

THINK AGAIN.

If you are studying only from PDFs,
you are wasting valuable time.

Research shows that learning from

PRINTED BOOKS has up to

4× HIGHER RETENTION

than studying from screens.

PRINT BOOK = BETTER MEMORY

PDF = LOWER RETENTION

Those who study from **PRINTED BOOKS**
move **AHEAD.**

Others are left **BEHIND**
in competition.



In competitive exams,
being average is not enough.

STAY ONE STEP AHEAD.

विकास की योजनाओं को स्वीकृति देना और पंचायत के व्यय का लेखा-जोखा देखना है। यह निर्वाचित प्रतिनिधियों की जवाबदेही सुनिश्चित करती है और ग्रामीणों को अपने गांव के विकास में निर्णय लेने की वास्तविक शक्ति प्रदान करती है, जिससे शासन पारदर्शी बनता है।

68. (D) कृषि का व्यावसायीकरण।
कृषि का व्यावसायीकरण वह प्रवृत्ति है जिसमें खेती केवल भोजन के लिए नहीं, बल्कि बिक्री के लिए की जाती है। इस प्रक्रिया में किसान बीज और उर्वरक जैसे साधनों के लिए बाजार पर निर्भर हो जाते हैं। साथ ही, वे अपनी उपज को बेचने के लिए भी राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय बाजारों पर निर्भर रहते हैं। यह पारंपरिक आत्मनिर्भर खेती के अंत को दर्शाता है। यद्यपि इससे आय बढ़ने की संभावना रहती है, किंतु यह किसानों को बाजार की अनिश्चितताओं और ऋण के प्रति अधिक संवेदनशील भी बना देता है।

69. (C) ग्राम विकास योजनाओं का एकीकृत और सौहार्दपूर्ण क्रियान्वयन।
ग्रामीण गुटबाजी समाज के लिए नकारात्मक परिणाम लेकर आती है। जब गांव विभिन्न समूहों में बंट जाता है, तो आपसी अविश्वास और प्रतिद्वंद्विता बढ़ जाती है। गुट प्रायः सरकारी निधियों को केवल अपने समर्थकों तक सीमित करने का प्रयास करते हैं, जिससे संसाधनों का अनुचित वितरण होता है। इसके कारण किसी भी विकास योजना को पूरे गांव के सहयोग से लागू करना असंभव हो जाता है। अतः, गुटबाजी से सौहार्दपूर्ण क्रियान्वयन नहीं, बल्कि सामाजिक तनाव और कार्यों में रुकावट उत्पन्न होती है, जो प्रगति को अवरुद्ध करती है।

70. (C) A सही है लेकिन R गलत है।
कृषक आंदोलन ग्रामीण क्षेत्रों में व्याप्त आर्थिक संकट के प्रति किसानों की एक संगठित और सामूहिक प्रतिक्रिया है। ये आंदोलन भूमि अधिकारों और फसलों के उचित मूल्य जैसे ठोस मुद्दों पर आधारित होते हैं। यह कहना त्रुटिपूर्ण है कि ये सदैव स्वतःस्फूर्त और असंगठित होते हैं; वास्तव में, अनेक कृषक आंदोलन अत्यंत सुव्यवस्थित होते हैं और उनके पास स्पष्ट मांगें तथा नेतृत्व होता है। ये आंदोलन राज्य की नीतियों को प्रभावित करने और कृषि क्षेत्र में न्याय प्राप्त करने के लिए महत्वपूर्ण शक्ति के रूप में कार्य करते हैं।

71. (D) एक श्रमिक जिसका श्रम ऋण के बदले गिरवी रखा गया है, जो अक्सर आवागमन और रोजगार की स्वतंत्रता खो देता है।
बंधुआ मजदूर वह व्यक्ति है जो अपनी आर्थिक विवशता या ऋण के कारण किसी नियोक्ता के साथ बंध जाता है। इस व्यवस्था में श्रमिक को ऋण के ब्याज के बदले श्रम करना पड़ता है, और वह तब तक स्वतंत्र नहीं हो सकता जब तक संपूर्ण ऋण चुकता न हो जाए। प्रायः यह ऋण कभी समाप्त नहीं होता और श्रमिक अपनी इच्छा से कहीं और कार्य करने का अधिकार खो देता है। यह आधुनिक दासता का एक रूप है जो मानवाधिकारों का उल्लंघन करता है और ग्रामीण शोषण को दर्शाता है।

72. (A) निचली जाति का एक सदस्य धन और राजनीतिक शक्ति प्राप्त करता है, जिससे उसकी सामाजिक स्थिति में सुधार होता है।
सामाजिक गतिशीलता उस प्रक्रिया को कहते हैं जिसमें कोई व्यक्ति या समूह सामाजिक पदानुक्रम के भीतर अपनी स्थिति परिवर्तित करता है। जब समाज के किसी वंचित वर्ग का व्यक्ति शिक्षा या राजनीति के माध्यम से उच्च पद प्राप्त करता है, तो इसे ऊपर की ओर सामाजिक गतिशीलता माना जाता है। यह परिवर्तन पारंपरिक जातिगत सीमाओं को चुनौती देता है और दर्शाता है कि समाज में योग्यता और अवसर का महत्व बढ़ रहा है। ऐसी गतिशीलता समाज में संरचनात्मक बदलाव लाती है और लोगों को प्रगति के लिए प्रेरित करती है।

73. (C) कृषि में उत्पादन की शक्तियों और संबंधों का।
उत्पादन पद्धति पर बहस समाजशास्त्रीय विश्लेषण का एक गंभीर क्षेत्र है। यह मुख्य रूप से कृषि व्यवस्था के भीतर उत्पादन की शक्तियों, जैसे तकनीक, तथा उत्पादन के संबंधों, जैसे भूस्वामी और मजदूर के बीच के संबंधों की जांच करती है। इसका उद्देश्य यह निर्धारित करना है कि क्या समाज सामंती है, जहाँ शोषण गैर-आर्थिक दबाव से होता है, या पूंजीवादी है, जहाँ लाभ और मजदूरी प्रधान है। यह बहस ग्रामीण समाज के मौलिक वर्ग ढांचे और संघर्षों को समझने का आधार प्रदान करती है।

74. (B) केवल 1 और 2
ग्रामीणता और नगरीयता दो भिन्न जीवन शैलियों का प्रतिनिधित्व करते हैं। ग्रामीणता की विशेषता प्राथमिक समूहों और व्यक्तिगत संबंधों की प्रगाढ़ता है, जहाँ सामुदायिक भावना प्रबल होती है। नगरीयता में इसके विपरीत अनामिकता और औपचारिक द्वितीयक संबंधों का बोलबाला होता है। जजमानी प्रथा एक पारंपरिक विनिमय प्रणाली है, जो बाजार दरों पर आधारित नहीं थी, बल्कि यह जातिगत दायित्वों पर टिकी थी। अतः, जजमानी प्रथा को आधुनिक बाजार व्यवस्था के रूप में देखना समाजशास्त्रीय रूप से त्रुटिपूर्ण है।

75. (B) P-3, Q-2, R-4, S-1
ग्रामीण समाजशास्त्र की विभिन्न प्रक्रियाएं समाज के बदलते स्वरूप को परिभाषित करती हैं। कंगालीकरण निरंतर निर्धनता की वह प्रक्रिया है जिसमें व्यक्ति अपनी संपत्ति खो देता है। कृषि अशांति किसानों द्वारा अपने अधिकारों के लिए किया जाने वाला सामूहिक विरोध है। गुटबाजी का अर्थ है गांव के समुदाय का प्रतिस्पर्धी समूहों में विभाजित हो जाना, जो प्रायः शक्ति संघर्ष से प्रेरित होता है। प्रवास बेहतर अवसरों या आजीविका की खोज में लोगों का एक स्थान से दूसरे स्थान पर होने वाला आवागमन है।

76. (C) कथन I सही है, लेकिन कथन II गलत है।
73वें संविधान संशोधन ने भारत में पंचायती राज की एक संगठित संरचना प्रदान की है। यह उन राज्यों के लिए त्रि-स्तरीय प्रणाली अनिवार्य बनाता है जिनकी जनसंख्या 20 लाख से अधिक है। हालाँकि, यह कहना त्रुटिपूर्ण है कि ग्राम सभा एक वैकल्पिक निकाय है। वास्तव में, इस संशोधन ने ग्राम सभा को पंचायती राज व्यवस्था की आधारशिला और एक

Click Here to Buy book on Amazon

ऋण में डूबे होते हैं या उनके भूमि अधिकारों का शोषण होता है। इसमें प्रायः किसानों द्वारा सामूहिक लामबंदी और विरोध प्रदर्शन शामिल होते हैं। यह अशांति दर्शाती है कि वर्तमान नीतियां कृषकों की आवश्यकताओं को पूरा करने में विफल रही हैं। अतः, यह संतोष का नहीं, बल्कि व्यवस्था में परिवर्तन की मांग का प्रतीक है।

59. (D) गांवों में शिक्षा और स्वास्थ्य सुविधाओं की कमी।
ग्रामीण-से-नगरीय प्रवास के संदर्भ में आकर्षण और विकर्षण कारकों को समझना आवश्यक है। आकर्षण कारक शहरों की वे विशेषताएं हैं जो लोगों को अपनी ओर खींचती हैं, जैसे बेहतर नौकरियां और आधुनिक बुनियादी ढांचा। इसके विपरीत, गांवों में सुविधाओं का अभाव, बेरोजगारी और निर्धनता विकर्षण कारक कहलाते हैं, जो लोगों को गांव छोड़ने के लिए विवश करते हैं। अतः, गांवों में शिक्षा और स्वास्थ्य सुविधाओं की कमी एक विकर्षण कारक है, न कि शहरों का कोई आकर्षण कारक।

60. (B) केवल 2 और 3
जजमानी प्रथा पारंपरिक भारतीय ग्रामीण समाज की एक अनूठी विशेषता रही है। यह प्रणाली मुख्य रूप से जातियों के बीच सेवाओं के पारस्परिक विनिमय पर आधारित थी, जहाँ संबंध प्रायः वंशानुगत और स्थाई होते थे। यह बाजार की संविदात्मक प्रकृति के विपरीत थी क्योंकि इसमें नकद भुगतान के स्थान पर वस्तु विनिमय अधिक प्रचलित था। जजमानी प्रथा न केवल आर्थिक जरूरतों को पूरा करती थी, बल्कि यह गांव के भीतर जाति पदानुक्रम को भी सुदृढ़ करती थी, जहाँ प्रत्येक जाति का एक निश्चित कार्य निर्धारित था।

61. (C) किसी व्यक्ति या समूह की आय, संपत्ति और जीवन स्तर में।
आर्थिक गतिशीलता ग्रामीण समाज में होने वाले उन परिवर्तनों को संदर्भित करती है जो व्यक्तियों की भौतिक स्थिति और धन से जुड़े होते हैं। जब कोई निर्धन किसान उन्नत तकनीक अपनाकर या नई आजीविका खोजकर अपनी आय बढ़ाता है, तो वह आर्थिक गतिशीलता प्राप्त करता है। यह गतिशीलता उनके जीवन स्तर को सुधारती है और प्रायः समाज में उनकी प्रतिष्ठा को भी प्रभावित करती है। यह ग्रामीण विकास का एक महत्वपूर्ण सूचक है, क्योंकि यह दर्शाता है कि लोग आर्थिक बाधाओं को तोड़कर समृद्धि की ओर बढ़ रहे हैं।

62. (D) राज्य वित्त आयोग
73वें संविधान संशोधन ने पंचायती राज संस्थाओं की वित्तीय मजबूती सुनिश्चित करने के लिए राज्य वित्त आयोग के गठन का प्रावधान किया है। प्रत्येक पांच वर्ष में राज्यपाल द्वारा नियुक्त यह आयोग पंचायतों की वित्तीय स्थिति की समीक्षा करता है। इसका मुख्य कार्य राज्य सरकार द्वारा एकत्रित करों के राजस्व को राज्य और पंचायतों के बीच साझा करने के सिद्धांतों की अनुशंसा करना है। यह आयोग पंचायतों को अनुदान देने और उनके संसाधन बढ़ाने के उपायों पर भी सुझाव देता है, जिससे स्थानीय शासन आत्मनिर्भर बन सके।

63. (A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
ग्रामीण समाज में गुटबाजी प्रायः विकास कार्यों के क्रियान्वयन में एक गंभीर बाधा बन जाती है। जब गांव प्रतिद्वंद्वी गुटों में विभाजित होता है, तो प्रत्येक गुट दूसरे समूह के प्रभाव को कम करने का प्रयास करता है, जिससे सामुदायिक योजनाओं पर सहमति बनना कठिन हो जाता है। गुट प्रायः गांव के सामूहिक कल्याण के स्थान पर अपने समूह के संकीर्ण हितों को प्राथमिकता देते हैं। इसके कारण सरकारी संसाधनों का दुरुपयोग होता है और सामाजिक सद्भाव बिगड़ता है, जिससे समग्र ग्रामीण प्रगति की गति मंद हो जाती है।

64. (B) उत्पादन का तर्क (निर्वाह बनाम लाभ का अधिकतमीकरण)।
कृषक अध्ययन में एक पारंपरिक कृषक और एक आधुनिक पूंजीवादी किसान के बीच मुख्य अंतर उनके उत्पादन के पीछे की सोच में होता है। एक पारंपरिक कृषक मुख्य रूप से अपने परिवार के उपभोग और अस्तित्व के लिए खेती करता है। इसके विपरीत, एक पूंजीवादी किसान का प्राथमिक लक्ष्य बाजार के लिए उत्पादन करना और लाभ को अधिकतम करना होता है। पूंजीवादी किसान बड़े पैमाने पर निवेश करता है और आधुनिक प्रबंधन तकनीकों को अपनाता है, जबकि कृषक अपनी श्रम शक्ति पर अधिक निर्भर रहता है।

65. (B) भूमि पर दबाव और ग्रामीण क्षेत्रों में गैर-कृषि नौकरियों की कमी।
ग्रामीण-से-नगरीय प्रवास के लिए विकर्षण कारक वे नकारात्मक परिस्थितियां हैं जो लोगों को अपने मूल स्थान को छोड़ने के लिए विवश करती हैं। इसमें बढ़ती जनसंख्या के कारण भूमि पर अत्यधिक दबाव और गांवों में आजीविका के वैकल्पिक साधनों का अभाव शामिल है। जब कृषि परिवार का भरण-पोषण करने में सक्षम नहीं रहती, तो लोग विवश होकर शहरों की ओर पलायन करते हैं। यह प्रवास स्वेच्छा के स्थान पर प्रायः आर्थिक तंगी और बेहतर आजीविका की खोज में किया गया एक अनिवार्य निर्णय होता है।

66. (A) जमींदारी प्रणाली
औपनिवेशिक भारत में जमींदारी प्रणाली भूमि राजस्व संग्रह का एक प्रमुख माध्यम थी। इस व्यवस्था में सरकार ने जमींदारों को भूमि का कानूनी स्वामी घोषित कर दिया था, जिनका मुख्य कार्य किसानों से लगान वसूल करना और उसका एक निश्चित हिस्सा सरकार को देना था। इस प्रणाली में वास्तविक कृषकों के पास भूमि पर कोई अधिकार नहीं था। इसके परिणामस्वरूप किसानों का व्यापक शोषण हुआ और ग्रामीण क्षेत्रों में निर्धनता बढ़ी, क्योंकि उपज का अधिकांश भाग लगान के रूप में ले लिया जाता था।

67. (C) गांव के सभी मतदाताओं को स्थानीय शासन में भाग लेने और पंचायत के काम की निगरानी के लिए एक मंच प्रदान करना।
73वें संविधान संशोधन के पश्चात ग्राम सभा को पंचायती राज व्यवस्था की आधारशिला माना गया है। यह प्रत्यक्ष लोकतंत्र का एक जीवंत मंच है जहाँ गांव के सभी पंजीकृत मतदाता सीधे बैठकों में भाग लेते हैं। ग्राम सभा का मुख्य कार्य स्थानीय

NODIA

प्रक्रियाओं के माध्यम से उच्च दर्जा प्राप्त करने का प्रयास करता है।

86. (B) सामाजिक सशक्तिकरण
ग्रामीण विकास की वह रणनीति जो वंचित वर्गों और महिलाओं को स्थानीय निकायों में प्रतिनिधित्व प्रदान करती है, सीधे सामाजिक सशक्तिकरण से जुड़ी है। इसका उद्देश्य समाज के उन हिस्सों को शक्ति प्रदान करना है जिन्हें पारंपरिक रूप से निर्णय लेने की प्रक्रिया से बाहर रखा गया था। जब अनुसूचित जातियां और महिलाएं पंचायतों का नेतृत्व करती हैं, तो वे अपने समुदाय की विशिष्ट समस्याओं को हल करने के लिए अधिक प्रभावी ढंग से कार्य कर पाती हैं। यह प्रक्रिया न केवल राजनीतिक भागीदारी बढ़ाती है, बल्कि सामाजिक न्याय की नींव भी रखती है।

87. (D) सामाजिक संबंधों में अनामिकता।
ग्रामीणता एक ऐसी जीवन शैली है जिसकी पहचान गहरे सामाजिक संबंधों और सामुदायिक सामंजस्य से होती है। यहाँ लोग एक-दूसरे को व्यक्तिगत रूप से जानते हैं और परिवार का प्रभाव जीवन के हर पहलू पर होता है। कृषि यहाँ का मुख्य व्यवसाय है और संस्कृति में एक प्रकार की समरूपता पाई जाती है। इसके विपरीत, अनामिकता नगरीयता की एक प्रमुख विशेषता है, जहाँ लोग एक-दूसरे के लिए अपरिचित होते हैं। ग्रामीण समाज में व्यक्ति की पहचान उसके व्यक्तिगत और पारिवारिक संबंधों से अभिन्न रूप से जुड़ी होती है।

88. (A) कृषि संरचना का अध्ययन।
कृषि संरचना का अध्ययन ग्रामीण समाजशास्त्र का एक केंद्रीय विषय है, जो भूमि के स्वामित्व और वितरण के जटिल जाल का विश्लेषण करता है। यह इस बात की जांच करता है कि भूमि संबंधों के कारण समाज में कौन सा पदानुक्रम निर्मित होता है और शक्ति का वितरण कैसे होता है। इसमें भूस्वामियों और मजदूरों के बीच के आर्थिक और सामाजिक संबंधों को समझा जाता है। यह संरचना न केवल आय का स्रोत तय करती है, बल्कि गांव के राजनीतिक और सामाजिक जीवन की दिशा को भी गहरे रूप में प्रभावित करती है।

89. (A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
73वें संविधान संशोधन से पूर्व पंचायती राज संस्थाएं संरचनात्मक और वित्तीय समस्याओं से ग्रस्त थीं। राज्यों में चुनाव नियमित नहीं होते थे और पंचायतों के पास विकास कार्यों के लिए अपने स्वयं के वित्तीय संसाधन अत्यंत सीमित थे। इन बुनियादी मुद्दों को हल करने के लिए संशोधन ने प्रत्येक पांच वर्ष में चुनाव कराना अनिवार्य कर दिया और राज्य वित्त आयोगों के गठन का प्रावधान किया। इन संवैधानिक उपायों का उद्देश्य पंचायतों को स्वायत्तता देना और उन्हें स्थानीय स्वशासन की प्रभावी इकाइयों के रूप में पुनर्स्थापित करना था।

90. (A) सामंती या अर्ध-सामंती
उत्पादन की वह पद्धति जिसमें भूस्वामी अपनी शक्ति का उपयोग करके पट्टेदारों या कृषकों से लगान के रूप में अधिशेष वसूल करते हैं, सामंती या अर्ध-सामंती कहलाती है। इसमें शोषण का आधार प्रायः आर्थिक होने के स्थान पर सामाजिक या राजनीतिक बल प्रयोग होता है, जैसे कि बेगार कराना या ऊंचे ब्याज दर पर ऋण देना। ऐसी व्यवस्था में बाजार की भूमिका गौण होती है और पट्टेदार भूस्वामी पर पूर्णतः निर्भर रहता है। यह संरचना कृषकों को निरंतर निर्धनता और अधीनता की स्थिति में रखती है।

91. (D) पूंजीवादी किसान या धनी किसान
कृषि वर्ग संरचना में पूंजीवादी या धनी किसान वह वर्ग है जो कृषि को एक व्यावसायिक उद्यम के रूप में देखता है। उनके पास पर्याप्त भूमि होती है और वे उत्पादन बढ़ाने के लिए आधुनिक तकनीकों का बड़े पैमाने पर उपयोग करते हैं। वे स्वयं शारीरिक श्रम करने के स्थान पर वेतनभोगी मजदूरों पर निर्भर रहते हैं। उनका प्राथमिक उद्देश्य बाजार के लिए अधिशेष पैदा करना और अधिकतम लाभ कमाना होता है, जिससे वे ग्रामीण समाज में आर्थिक और राजनीतिक रूप से अत्यंत प्रभावशाली बन जाते हैं।

92. (B) अंतरराष्ट्रीय कूटनीति का अध्ययन।
ग्रामीण समाजशास्त्र और विकास के अध्ययन का मुख्य केंद्र ग्रामीण समाज के आंतरिक परिवर्तनों और उनकी समस्याओं को समझना है। इसमें कृषि में होने वाले बदलाव, प्रवास की प्रवृत्तियां और ग्रामीण वर्गों के बीच के शक्ति संबंधों का विश्लेषण किया जाता है। अंतरराष्ट्रीय कूटनीति, जो राष्ट्रों के बीच के राजनीतिक संबंधों से संबंधित है, इस विषय का प्रत्यक्ष भाग नहीं है। ग्रामीण अध्ययन मुख्य रूप से स्थानीय स्तर पर सामाजिक न्याय, निर्धनता निवारण और ग्रामीण सशक्तिकरण की रणनीतियों पर अपना ध्यान केंद्रित करता है।

93. (C) कृषि अशांति
कृषि अशांति किसानों में व्याप्त उस व्यापक असंतोष को दर्शाती है जो उनकी आर्थिक असुरक्षा और व्यवस्थागत अन्याय से उत्पन्न होता है। जब किसान सामूहिक रूप से अपनी उपज के लिए उच्च खरीद मूल्य की मांग करते हैं या ऋण माफी के लिए प्रदर्शन करते हैं, तो यह उनकी दयनीय स्थिति के प्रति एक संगठित विरोध होता है। यह अशांति प्रायः कृषि लागत में वृद्धि और घटते लाभ के कारण तीव्र होती है। यह सरकार का ध्यान अपनी समस्याओं की ओर आकर्षित करने और कृषि नीतियों में सुधार लाने का एक प्रभावी माध्यम है।

94. (D) सहभागी लोकतंत्र
सहभागी लोकतंत्र एक ऐसी व्यवस्था है जहाँ नागरिक केवल मतदान ही नहीं करते, बल्कि नीति निर्धारण और कार्यान्वयन में भी सीधे सम्मिलित होते हैं। 73वें संशोधन के अंतर्गत ग्राम सभा को प्रदत्त शक्तियां इसी सहभागी लोकतंत्र का उदाहरण हैं। ग्राम सभा गांव के सामान्य लोगों को विकास योजनाओं पर चर्चा करने और पंचायत के कार्यों पर दृष्टि रखने का अधिकार देती है। यह प्रक्रिया निर्णय लेने की शक्ति को चुने हुए प्रतिनिधियों के स्थान पर पूरे समुदाय के हाथों में सौंपती है, जिससे शासन जवाबदेह बनता है।

अनिवार्य संवैधानिक संस्था के रूप में स्थापित किया है। ग्राम सभा स्थानीय स्वशासन का सबसे बुनियादी अंग है, जो प्रत्यक्ष जनभागीदारी सुनिश्चित करती है।

77. (C) प्रदत्त से अर्जित नेतृत्व मानदंडों में बदलाव।
ग्रामीण भारत में नेतृत्व के स्वरूप में एक महत्वपूर्ण परिवर्तन आया है। पूर्व में नेतृत्व मुख्य रूप से जाति और विरासत में मिली भूमि जैसे प्रदत्त गुणों पर आधारित था। अब, चुनावी राजनीति और पंचायती राज के कारण शिक्षा और जनता का समर्थन प्राप्त करना जैसे अर्जित मानदंड अधिक महत्वपूर्ण हो रहे हैं। यह बदलाव दर्शाता है कि ग्रामीण समाज अब अधिक लोकतांत्रिक और गतिशील हो रहा है, जहाँ व्यक्ति अपने प्रयासों और क्षमताओं के माध्यम से नेतृत्व की स्थिति प्राप्त कर सकता है।

78. (D) कृषकों और व्यापक समाज या राज्य के बीच संबंधों की जांच करना।
कृषक अध्ययन समाजशास्त्र का वह महत्वपूर्ण क्षेत्र है जो लघु कृषि उत्पादकों की विशिष्ट सामाजिक और आर्थिक स्थितियों का विश्लेषण करता है। इसका मुख्य केंद्र यह समझना है कि ये कृषक अपने स्थानीय समुदाय से बाहर के व्यापक समाज और राज्य के शासन तंत्र के साथ कैसे अंतःक्रिया करते हैं। यह कृषकों की अधीनता और बदलते ग्रामीण परिवेश में उनकी बदलती पहचान की जांच करता है। यह अध्ययन विकासशील देशों की सामाजिक वास्तविकताओं को समझने के लिए अत्यंत आवश्यक है।

79. (A) अकृषकीकरण
ग्रामीण क्षेत्रों में भूमि का निरंतर विखंडन और खेती की बढ़ती लागत छोटे किसानों के लिए एक गंभीर चुनौती बन गई है। जब खेती से होने वाली आय परिवार का भरण-पोषण करने के लिए पर्याप्त नहीं रह जाती, तो किसान खेती छोड़ने पर विवश हो जाते हैं। इस प्रक्रिया को अकृषकीकरण कहा जाता है, जहाँ पूर्व में कृषक रहे लोग अब भूमिहीन मजदूर बन जाते हैं। यह प्रवृत्ति ग्रामीण समाज की आर्थिक संरचना में एक बड़े बदलाव का संकेत देती है, जो कृषि क्षेत्र के गहरे संकट को दर्शाती है।

80. (B) प्रवासी मजदूरी हमेशा स्वैच्छिक होती है, जबकि बंधुआ मजदूरी में बलप्रयोग शामिल होता है।
प्रवासी और बंधुआ मजदूरी के बीच मूलभूत अंतर व्यक्तिगत स्वतंत्रता का है। प्रवासी मजदूर प्रायः बेहतर अवसरों की खोज में स्वेच्छा से एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाते हैं, और उनके पास कार्य बदलने का अधिकार होता है। इसके विपरीत, बंधुआ मजदूरी में श्रमिक ऋण के कारण नियोक्ता से बंधा होता है और उस पर शारीरिक या मानसिक दबाव होता है। बंधुआ मजदूर की स्वतंत्रता पूरी तरह बाधित होती है, जिससे यह व्यवस्था अत्यंत शोषणकारी और अमानवीय बन जाती है।

81. (A) 3, 1, 2, 4
ग्रामीण समाजशास्त्र में अवधारणाओं को समझने का एक तार्किक पदानुक्रम होता है। ग्रामीण समाज का अध्ययन सबसे व्यापक क्षेत्र है जो सभी ग्रामीण पहलुओं को समेटता है। इसके अंतर्गत कृषक अध्ययन विशेष रूप से खेती करने वाले समूहों पर ध्यान केंद्रित करता है। कृषक अध्ययन के भीतर कृषि वर्ग संरचना यह बताती है कि भूमि के आधार पर लोग कैसे विभाजित हैं। अंत में, जजमानी प्रथा इन वर्गों और जातियों के बीच के एक अत्यंत विशिष्ट और पारंपरिक पारस्परिक संबंध को परिभाषित करती है।

82. (A) विकल्प चुनने और उन विकल्पों को वांछित कार्यों और परिणामों में बदलने की लोगों की क्षमता बढ़ाने के लिए एक तंत्र।
पंचायती राज व्यवस्था में सशक्तिकरण का अर्थ केवल पद देना नहीं, बल्कि ग्रामीणों को अपने जीवन के निर्णय लेने में समर्थ बनाना है। इसका उद्देश्य लोगों में वह क्षमता विकसित करना है जिससे वे अपनी समस्याओं की पहचान कर सकें और स्वयं योजनाएं बना सकें। जब ग्रामीण स्वयं संसाधनों का प्रबंधन करते हैं और निर्वाचित प्रतिनिधियों को जवाबदेह ठहराते हैं, तो वे वास्तविक रूप से सशक्त होते हैं। यह प्रक्रिया लोकतंत्र को जमीनी स्तर पर सुदृढ़ और अधिक सार्थक बनाती है।

83. (C) यह एक सातत्य है, जिसमें कई बस्तियों में ग्रामीण और नगरीय दोनों विशेषताएं होती हैं।
ग्रामीण और नगरीय क्षेत्रों को दो पृथक श्रेणियों में विभाजित करना कठिन है क्योंकि वे एक-दूसरे से निरंतर जुड़े होते हैं। समाजशास्त्र में इसे ग्रामीण-नगरीय सातत्य कहा जाता है, जहाँ अनेक क्षेत्र ऐसे होते हैं जिनमें गांव जैसी कृषि प्रधानता और शहर जैसी आधुनिक सुविधाएं दोनों पाई जाती हैं। जैसे-जैसे परिवहन और संचार बढ़ रहा है, शहरों का प्रभाव ग्रामीण क्षेत्रों तक फैल रहा है। अतः, यह एक क्रमिक बदलाव है न कि कोई स्पष्ट विभाजन, जो दोनों के बीच की सीमाओं को धुंधला करता है।

84. (A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
आधुनिक भारत में पारंपरिक जजमानी प्रथा तीव्रता से लुप्त हो रही है, जिसका मुख्य कारण ग्रामीण अर्थव्यवस्था का बदलता स्वरूप है। बाजार अर्थव्यवस्था के प्रसार ने व्यावसायिक संबंधों को अधिक नकद-आधारित बना दिया है। अब लोग सेवाओं के लिए वंशानुगत दायित्वों के स्थान पर नकद भुगतान और अल्पकालिक अनुबंधों को प्राथमिकता देते हैं। शिक्षा और रोजगार के नए अवसरों ने भी निम्न जातियों को अपने पारंपरिक व्यवसायों को त्यागने के लिए प्रोत्साहित किया है, जिससे जजमानी संबंधों की पुरानी सामाजिक पकड़ शिथिल हो गई है।

85. (B) केवल 2 और 3
ग्रामीण भारत में सामाजिक गतिशीलता एक जटिल प्रक्रिया है जो विभिन्न कारकों द्वारा सुगम होती है। शिक्षा और शहरों की ओर प्रवास व्यक्तियों को अपनी पारंपरिक स्थिति से ऊपर उठने में सहायता करते हैं। हालाँकि, जाति संरचना अभी भी एक बड़ी बाधा के रूप में कार्य करती है, जो प्रायः वंचित वर्गों के आगे बढ़ने के मार्ग में सामाजिक रुकावटें उत्पन्न करती है। यह समझना भी महत्वपूर्ण है कि गतिशीलता न केवल व्यक्तिगत होती है, बल्कि कभी-कभी पूरा समूह भी संस्कृतिकरण जैसी

Downloaded from www.pdf.tube

के लिए उसे अपनी भूमि का एक लघु भाग बेचने के लिए विवश होना पड़ता है। आर्थिक स्थिति में सुधार न होने पर और अधिक ऋण लिया जाता है, जिससे अंततः शेष भूमि भी बेचनी पड़ती है। इस प्रक्रिया के अंतिम चरण में, वह व्यक्ति जो कभी स्वयं की भूमि का स्वामी था, अब भूमिहीन खेतिहर मजदूर बन जाता है।

105. (C) वे समूह जो विशेष वस्तुएं और सेवाएं प्रदान करते हैं।
पारंपरिक जजमानी व्यवस्था में कमिन या प्रजा उन जातियों को कहा जाता है जो जजमान को विशिष्ट सेवाएं प्रदान करती हैं। इनमें लुहार, कुम्हार और नाई जैसे विभिन्न व्यावसायिक समूह सम्मिलित होते थे। इन सेवा प्रदाताओं का जजमान के साथ एक स्थाई और प्रायः पीढ़ी दर पीढ़ी चलने वाला संबंध होता था। वे न केवल आर्थिक सेवाएं प्रदान करते थे, बल्कि सामाजिक उत्सवों में भी उनकी महत्वपूर्ण भूमिका होती थी। बदले में, उन्हें जजमान से अनाज या अन्य वस्तुएं प्राप्त होती थीं, जो उनके जीवन निर्वाह का आधार थीं।

106. (A) कृषि उत्पादन के साधनों के साथ संबंध।
कृषि वर्ग संरचना का विश्लेषण मुख्य रूप से इस आधार पर किया जाता है कि किसी व्यक्ति का भूमि और श्रम जैसे उत्पादन के साधनों पर कितना नियंत्रण है। यह संबंध निर्धारित करता है कि वह व्यक्ति भूस्वामी है या भूमिहीन मजदूर। उत्पादन की प्रक्रिया में उनकी यह स्थिति न केवल उनकी आर्थिक आय को तय करती है, बल्कि ग्रामीण समाज के सामाजिक पदानुक्रम में उनके स्थान और शक्ति को भी परिभाषित करती है। अतः, कृषि वर्गों को समझने के लिए भूमि संबंधों का अध्ययन सबसे महत्वपूर्ण और बुनियादी पहलू है।

107. (D) राज्य के अधिकार को चुनौती देना और कृषि संबंधों में संरचनात्मक परिवर्तनों की मांग करना।
कृषक आंदोलन केवल आर्थिक मांगों तक सीमित नहीं होते, बल्कि वे ग्रामीण क्षेत्रों में व्याप्त अन्यायपूर्ण शक्ति संरचनाओं को परिवर्तित करने का एक प्रयास हैं। ये आंदोलन प्रायः उन नीतियों को चुनौती देते हैं जो बड़े भूस्वामियों के हितों का पोषण करती हैं और छोटे कृषकों का शोषण करती हैं। भूमि सुधार और उचित बाजार मूल्य के माध्यम से वे कृषि संबंधों में मूलभूत बदलाव लाना चाहते हैं। यह सामूहिक लामबंदी किसानों को एक राजनीतिक शक्ति के रूप में स्थापित करती है, जिससे वे अपने अधिकारों के लिए संघर्ष कर सकते हैं।

108. (B) पंचायतों के लिए राजनीतिक प्रतिनिधित्व, वित्तीय स्वायत्तता और कार्यात्मक जिम्मेदारियां सुनिश्चित करना।
73वें संशोधन के अंतर्गत सशक्तिकरण की अवधारणा पंचायतों को स्वशासन की वास्तविक इकाई बनाने पर केंद्रित है। इसका अर्थ केवल चुनाव कराना नहीं है, बल्कि पंचायतों को विकास के लिए पर्याप्त वित्तीय संसाधन देना और उन्हें विशिष्ट उत्तरदायित्व सौंपना भी है। आरक्षण के माध्यम से समाज के कमजोर वर्गों को राजनीतिक प्रतिनिधित्व प्रदान करना इसका अनिवार्य भाग है। जब पंचायतों के पास निर्णय लेने की शक्ति और उसे लागू करने के लिए धन होता है, तभी वास्तविक स्थानीय सशक्तिकरण संभव हो पाता है।

109. (C) ऐसा समाज जहां अधिकांश आबादी छोटे कृषि उत्पादकों से बनी हो।
कृषक समाज एक ऐसा सामाजिक स्वरूप है जिसकी अर्थव्यवस्था मुख्य रूप से भूमि और खेती के इर्द-गिर्द केंद्रित होती है। इस समाज में अधिकांश लोग लघु स्तर पर खेती करते हैं और अपनी आजीविका के लिए मुख्य रूप से परिवार के श्रम पर निर्भर होते हैं। कृषक समाज की एक अन्य विशेषता यह है कि यह पूरी तरह स्वतंत्र नहीं होता, बल्कि एक व्यापक राज्य व्यवस्था और नगरीय केंद्रों के साथ आर्थिक संबंधों में बंधा होता है। यह समाज अपनी विशिष्ट परंपराओं और सरल जीवन शैली के लिए पहचाना जाता है।

110. (D) A गलत है लेकिन R सही है।
यह कहना पूर्णतः त्रुटिपूर्ण है कि 73वां संशोधन ग्राम सभा के सशक्तिकरण में विफल रहा। वास्तव में, इस संशोधन ने ही प्रथम बार ग्राम सभा को संवैधानिक दर्जा प्रदान किया और उसे पंचायती राज व्यवस्था के सबसे महत्वपूर्ण स्तंभ के रूप में स्थापित किया। ग्राम सभा को प्रत्यक्ष लोकतंत्र के प्रतीक के रूप में परिकल्पित किया गया है, जहाँ गांव के सभी नागरिक बैठकर सीधे निर्णय लेते हैं। यह संस्था स्थानीय स्तर पर पारदर्शिता और जवाबदेही सुनिश्चित करने का सबसे प्रभावी माध्यम है, जो आम नागरिकों को शासन प्रक्रिया से जोड़ती है।

111. (A) ग्रामीण गुटबाजी
ग्रामीण गुटबाजी वह स्थिति है जहाँ गांव की शक्ति संरचना प्रतिद्वंद्वी समूहों या गुटों के बीच विभाजित हो जाती है। ये गुट प्रायः शक्तिशाली परिवारों के इर्द-गिर्द निर्मित होते हैं और सामाजिक तथा राजनीतिक लाभ प्राप्त करने के लिए निरंतर संघर्ष करते हैं। यह प्रतिद्वंद्विता न केवल चुनाव परिणामों को प्रभावित करती है, बल्कि गांव के दैनिक सामाजिक जीवन और विकास परियोजनाओं के क्रियान्वयन में भी बाधा उत्पन्न करती है। गुटबाजी यह दर्शाती है कि ग्रामीण समुदाय सदैव एकजुट नहीं होता, बल्कि वहां आंतरिक संघर्ष विद्यमान रहते हैं।

112. (B) मौसमी, ग्रामीण-से-ग्रामीण प्रवास
भारत में खेतिहर मजदूरों का एक गांव से दूसरे गांव की ओर पलायन प्रायः कृषि चक्रों की भिन्नता पर आधारित होता है। जब मजदूरों के अपने क्षेत्र में कार्य की कमी होती है, तो वे उन सिंचित और उन्नत क्षेत्रों में चले जाते हैं जहाँ कटाई का मौसम चल रहा होता है। यह प्रवास कुछ महीनों के लिए होता है, जिसके पश्चात मजदूर अपने घर लौट आते हैं। इसे मौसमी प्रवास कहा जाता है। यह प्रक्रिया मजदूरों के लिए आय का एक वैकल्पिक स्रोत प्रदान करती है और उन्नत कृषि क्षेत्रों में श्रम की मांग पूरी करती है।

113. (B) नगरीयता
नगरीयता को समाजशास्त्र में जीवन जीने के एक विशिष्ट तरीके के रूप में देखा जाता है। जनसंख्या की विषमता का अर्थ है कि शहरों में विविध पृष्ठभूमि और व्यवसायों के लोग निवास करते हैं। यहाँ द्वितीयक संबंधों की प्रधानता होती है, जो औपचारिक और स्वार्थ पर आधारित होते हैं। इसके साथ ही, सामाजिक नियंत्रण के लिए कानून और पुलिस जैसे औपचारिक साधनों

NODIA

समूहों के बीच एक सुव्यवस्थित आर्थिक व्यवस्था थी, जहाँ प्रत्येक जाति का एक विशिष्ट सेवा कार्य निर्धारित था। इस प्रणाली में 'जजमान' और 'सेवा प्रदाता' के बीच के संबंध व्यक्तिगत और वंशानुगत होते थे, जो पीढ़ी दर पीढ़ी चलते थे। सेवाओं के बदले नकद भुगतान के स्थान पर अनाज या अन्य वस्तुओं के रुप में विनिमय किया जाता था। यह व्यवस्था गांव के भीतर सामाजिक एकीकरण और आर्थिक आत्मनिर्भरता को बनाए रखने का एक सशक्त माध्यम थी।

132. (D) कथन I गलत है, लेकिन कथन II सही है।
कृषि अशांति सदैव हिंसक नहीं होती है, बल्कि यह किसानों के बीच व्याप्त असंतोष की एक व्यापक सामाजिक अभिव्यक्ति है। कृषक आंदोलन विरोध के अनेक शांतिपूर्ण और लोकतांत्रिक तरीकों का उपयोग कर सकते हैं, जैसे धरना और प्रदर्शन। हालाँकि, जब किसानों की बुनियादी समस्याओं की दीर्घकाल तक उपेक्षा की जाती है, तो ये आंदोलन कभी-कभी उग्र रुप भी ले सकते हैं। अतः, कृषक आंदोलनों की प्रकृति उनके उद्देश्यों, नेतृत्व और राज्य की प्रतिक्रिया के आधार पर शांतिपूर्ण से लेकर विद्रोही तक कुछ भी हो सकती है।

133. (C) ग्रामीण समाज पूरी तरह से स्थिर और अपरिवर्तनीय हैं।
ग्रामीण समाज के विषय में यह धारणा पूर्णतः त्रुटिपूर्ण है कि वे स्थिर और अपरिवर्तनीय होते हैं। वास्तव में, ग्रामीण समाज निरंतर परिवर्तन की प्रक्रिया से गुजर रहे हैं। आधुनिक तकनीक, शिक्षा और संचार ने ग्रामीण जीवन के हर पहलू को प्रभावित किया है। परंपरागत संस्थाएं जैसे जजमानी प्रथा निर्बल हो रही हैं और नवीन प्रकार के नेतृत्व उभर रहे हैं। खेती के तरीकों से लेकर लोगों के सामाजिक मूल्यों और आकांक्षाओं तक, सब कुछ परिवर्तित हो रहा है। ग्रामीण समाज की गतिशीलता उन्हें एक जीवंत और विकासशील सामाजिक इकाई बनाती है।

134. (B) पंचायती राज संस्थाओं के लिए स्वतंत्र और निष्पक्ष चुनाव कराना।
73वें संविधान संशोधन ने पंचायती राज संस्थाओं के लोकतांत्रिक चरित्र को सुनिश्चित करने के लिए प्रत्येक राज्य में एक स्वतंत्र राज्य चुनाव आयोग की स्थापना को अनिवार्य बनाया है। इस आयोग का सबसे महत्वपूर्ण कार्य पंचायती राज संस्थाओं के चुनावों के लिए मतदाता सूची तैयार करना और चुनावों का संचालन करना है। यह आयोग सुनिश्चित करता है कि स्थानीय स्तर पर चुनाव बिना किसी बाहरी राजनीतिक हस्तक्षेप के, नियमित अंतराल पर और पारदर्शी तरीके से आयोजित किए जाएं। इस संस्था की उपस्थिति लोकतांत्रिक प्रक्रिया की अखंडता को बनाए रखने के लिए आवश्यक है।

135. (A) 2, 4, 3, 1
भारतीय कृषि वर्ग संरचना में एक स्पष्ट आर्थिक और सामाजिक पदानुक्रम पाया जाता है। इस पदानुक्रम में सर्वोच्च स्तर पर जमींदार होते हैं जो बड़ी मात्रा में भूमि के स्वामी होते हैं और लगान पर निर्भर रहते हैं। उनके पश्चात धनी किसान आते हैं जो आधुनिक खेती और भाड़े के श्रम का उपयोग करते हैं। मध्यम और निर्धन किसान इनके नीचे आते हैं, जो अपनी छोटी जोत पर स्वयं कार्य करते हैं। इस संरचना में सबसे नीचे भूमिहीन खेतिहर मजदूर होते हैं, जो केवल अपनी श्रम शक्ति पर जीवित रहते हैं।

136. (A) अकृषकीकरण
अकृषकीकरण एक जटिल सामाजिक-आर्थिक समस्या है जो अनेक कारकों के मिलन से उत्पन्न होती है। जब लघु किसानों की भूमि ऋण के कारण छीन ली जाती है या उनकी जोत का आकार इतना छोटा हो जाता है कि वह परिवार का भरण-पोषण करने में अक्षम होता है, तो वे खेती छोड़ने को विवश हो जाते हैं। ग्रामीण क्षेत्रों में अन्य उद्योगों की कमी इस स्थिति को और गंभीर बना देती है। इसके परिणामस्वरूप, वे लोग जो कभी कृषक थे, अब खेतिहर मजदूर या प्रवासी श्रमिक बन जाते हैं। यह प्रक्रिया ग्रामीण भारत में बढ़ती असमानता का प्रतीक है।

137. (C) पूंजीवादी उत्पादन पद्धति
पूंजीवादी उत्पादन पद्धति कृषि का वह स्वरुप है जहाँ खेती को एक लाभ-उन्मुख व्यावसायिक उद्यम के रूप में संचालित किया जाता है। इसकी मुख्य पहचान पूंजी का निवेश, उन्नत मशीनरी का उपयोग और स्वतंत्र वेतनभोगी मजदूरों की नियुक्ति है। इसमें उत्पादन का उद्देश्य स्वयं का उपभोग नहीं, बल्कि बाजार में बिक्री करके लाभ अर्जित करना होता है। यह पद्धति पारंपरिक निर्वाह खेती से सर्वथा भिन्न है क्योंकि इसमें बाजार की गतिशीलता प्रधान होती है। यह व्यवस्था ग्रामीण समाज में नवीन वर्ग संबंधों और आर्थिक गतिशीलता को जन्म देती है।

138. (A) ग्रामीण और नगरीय क्षेत्रों की सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक विशेषताओं की व्यवस्थित तुलना करना और उनमें अंतर करना।
ग्रामीण-नगरीय अंतर का समाजशास्त्रीय अध्ययन हमें यह समझने में सहायता करता है कि भिन्न-भिन्न निवास परिवेश मानव जीवन को कैसे प्रभावित करते हैं। इसका मुख्य उद्देश्य इन दोनों क्षेत्रों के बीच के मूलभूत भेदों, जैसे कि जनसंख्या घनत्व और व्यावसायिक संरचना की वैज्ञानिक रूप से जांच करना है। यह अध्ययन न केवल उनके बीच के अंतरों को उजागर करता है, बल्कि उनके आपसी संपर्कों और निर्भरता का भी विश्लेषण करता है। यह समाज के समग्र विकास के लिए आवश्यक नीतियां बनाने और विभिन्न जीवन शैलियों की समस्याओं को समझने का आधार प्रदान करता है।

139. (D) कृषि संबंध
भूस्वामी और पट्टेदार के बीच की व्यवस्था, जहाँ भूमि को फसल के एक निश्चित भाग के बदले खेती के लिए प्रदान किया जाता है, कृषि संबंधों का एक प्रमुख उदाहरण है। इसे बटाईदारी भी कहा जाता है। ये संबंध यह तय करते हैं कि खेती के लिए श्रम और संसाधन कौन प्रदान करेगा और अंतिम उत्पाद का विभाजन कैसे होगा। यह ग्रामीण समाज की आर्थिक और सामाजिक शक्ति के वितरण को दर्शाता है। ये संबंध केवल उत्पादन की तकनीक तक सीमित नहीं हैं, बल्कि ये गांव के भीतर निर्भरता और सामाजिक पदानुक्रम के विभिन्न रुपों को भी परिभाषित करते हैं।

Click Here to Buy book on Amazon

उद्देश्य सदैव शांतिपूर्ण समाधान और विकास की मुख्यधारा में लोगों को जोड़ना होता है। कृषि अशांति और आंदोलनों को बढ़ावा देना विकास की रणनीति नहीं है, बल्कि ये स्थितियां तब उत्पन्न होती हैं जब विकास की रणनीतियां विफल हो जाती हैं या कृषकों की समस्याओं की उपेक्षा की जाती है।

123. (D) ग्राम सभा की बैठकों में महिलाओं और वंचित समूहों की सक्रिय भागीदारी।
सशक्तिकरण का वास्तविक अर्थ तब सिद्ध होता है जब समाज के वे वर्ग, जिन्हें पारंपरिक रूप से निर्णय लेने की प्रक्रिया से बाहर रखा गया था, सक्रिय रूप से शासन में भाग लेने लगते हैं। ग्राम सभा की बैठकों में महिलाओं और वंचित समूहों की भागीदारी यह दर्शाती है कि लोकतांत्रिक प्रक्रिया अधिक समावेशी और न्यायपूर्ण बन रही है। यह भागीदारी उन्हें अपनी विशिष्ट समस्याओं को उठाने और उनके समाधान के लिए संसाधनों की मांग करने का अवसर प्रदान करती है। यह पंचायती राज व्यवस्था के माध्यम से होने वाले वास्तविक सामाजिक परिवर्तन का एक जीवंत सूचक है।

124. (A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
ग्रामीण-से-नगरीय प्रवास के प्रभाव ग्रामीण समाज पर दोधारी तलवार के समान होते हैं। एक ओर, शहरों से प्रवासियों द्वारा प्रेषित धन ग्रामीण परिवारों की आय बढ़ाता है, जिससे उनके जीवन स्तर में सुधार होता है और ग्रामीण बाजार को गति प्राप्त होती है। दूसरी ओर, कार्यक्षम युवाओं के पलायन से गांवों में कृषि कार्य के लिए श्रम की भारी कमी हो जाती है। यह 'श्रम पलायन' कृषि उत्पादकता को प्रतिकूल रूप से प्रभावित कर सकता है और गांवों को आर्थिक रूप से केवल बाहरी आय पर निर्भर बना सकता है।

125. (C) कृषि वर्ग संरचना
ग्रामीण क्षेत्रों में समूहों के बीच विद्यमान सामाजिक और आर्थिक असमानता का विश्लेषण कृषि वर्ग संरचना के अंतर्गत किया जाता है। यह संरचना भूमि के स्वामित्व और उत्पादन के साथ विभिन्न समूहों के संबंधों पर आधारित होती है। इसमें भूस्वामियों के पास शक्ति का उच्चतम स्तर होता है, जबकि भूमिहीन मजदूर पदानुक्रम में सबसे नीचे होते हैं। इन वर्गों के बीच का अंतर केवल आय तक सीमित नहीं है, बल्कि यह उनकी सामाजिक स्थिति और निर्णय लेने की क्षमता को भी निर्धारित करता है, जिससे गांव के भीतर शक्ति संबंध विकसित होते हैं।

126. (D) उन्हें राज्य द्वारा निर्मित निकायों से संवैधानिक रूप से अनिवार्य संस्थानों में बदल दिया।
73वें संशोधन ने पंचायतों की स्थिति में आमूल-चूल परिवर्तन किया क्योंकि इसने उन्हें संविधान का भाग बना दिया। इससे पूर्व, पंचायतें राज्य सरकारों के विवेक पर निर्भर थीं, जिससे उनकी कार्यप्रणाली में अनिश्चितता बनी रहती थी। इस संशोधन ने पंचायतों के अस्तित्व को संवैधानिक गारंटी प्रदान की, जिससे वे लोकतांत्रिक स्वशासन की एक स्थाई और अनिवार्य इकाई बन गईं। अब राज्य सरकारें बिना वैध कारणों के पंचायतों को लंबे समय तक निलंबित नहीं रख सकतीं, जिससे स्थानीय लोकतंत्र को एक नवीन मजबूती और स्थिरता प्राप्त हुई है।

127. (A) निरंतर आर्थिक गिरावट की प्रक्रिया जो बेसहारा होने की ओर ले जाती है।
कंगालीकरण ग्रामीण समाज में होने वाला एक अत्यंत नकारात्मक आर्थिक परिवर्तन है। यह एक ऐसी क्रमिक प्रक्रिया है जिसमें व्यक्ति या परिवार अपनी संपत्ति, भूमि और पशुधन को धीरे-धीरे खोते चले जाते हैं। इसका परिणाम यह होता है कि वे अपनी न्यूनतम बुनियादी जरूरतों को पूरा करने में भी असमर्थ हो जाते हैं और पूर्णतः बेसहारा हो जाते हैं। ऋणग्रस्तता और कृषि का अलाभकारी होना इस प्रक्रिया को और तीव्र कर देते हैं। यह केवल निर्धनता नहीं है, बल्कि यह एक ऐसी स्थिति है जहाँ से वापस उभरना अत्यंत दुष्कर हो जाता है।

128. (B) शहरों की वे अनुकूल स्थितियाँ जो लोगों को अपनी ओर खींचती हैं।
प्रवास के समाजशास्त्र में 'आकर्षण' कारक उन सकारात्मक नगरीय स्थितियों को कहते हैं जो ग्रामीणों को शहरों की ओर आने के लिए प्रेरित करती हैं। इनमें शहरों में बेहतर और नियमित रोजगार के अवसर, उच्च मजदूरी दर, आधुनिक शिक्षा और स्वास्थ्य सुविधाएं सम्मिलित हैं। इसके अतिरिक्त, शहरों की आधुनिक जीवन शैली और वहां मिलने वाली सामाजिक स्वतंत्रता भी लोगों को आकर्षित करती है। ये कारक लोगों को यह विश्वास दिलाते हैं कि शहर में रहकर वे अपनी और अपने परिवार की आर्थिक तथा सामाजिक स्थिति को श्रेष्ठ बना सकते हैं।

129. (B) एक बड़े, स्तरीकृत समाज का हिस्सा है और अधीनस्थ स्थिति में है।
कृषक अध्ययन में कृषक की अवधारणा को एक ऐसे लघु उत्पादक के रूप में समझा जाता है जो न केवल अपनी भूमि से संबद्ध है, बल्कि एक व्यापक सामाजिक और राजनीतिक व्यवस्था का भाग भी है। कृषक पूर्णतः आत्मनिर्भर नहीं होते; वे राज्य को कर प्रदान करते हैं और अपनी आवश्यकताओं के लिए नगरीय केंद्रों पर निर्भर रहते हैं। इस व्यापक संरचना में कृषकों की स्थिति प्रायः अधीनस्थ होती है, जहाँ वे शासक वर्गों के आर्थिक और राजनीतिक प्रभाव के नीचे रहते हैं। यह अधीनता उनकी सामाजिक पहचान का एक अनिवार्य भाग है।

130. (A) सामाजिक गतिशीलता
जब कोई परिवार अपनी कड़ी मेहनत के कारण पट्टेदार किसान से भूमि का स्वामी बन जाता है, तो यह ऊपर की ओर सामाजिक गतिशीलता का एक उत्कृष्ट उदाहरण है। यह परिवर्तन समाज में उनकी स्थिति को परिवर्तित कर देता है, क्योंकि भूमि का स्वामित्व ग्रामीण क्षेत्रों में केवल आय का स्रोत नहीं, बल्कि सम्मान और शक्ति का भी प्रतीक है। ऐसी गतिशीलता यह दर्शाती है कि सामाजिक संरचना में परिवर्तन की संभावनाएं विद्यमान हैं। यह प्रक्रिया न केवल उस परिवार के जीवन स्तर को सुधारती है, बल्कि गांव के पारंपरिक पदानुक्रम में भी फेरबदल करती है।

131. (C) जजमानी प्रथा
भारतीय ग्रामीण समाज की एक पारंपरिक और अत्यंत महत्वपूर्ण विशेषता जजमानी प्रथा रही है। यह विभिन्न जाति

NODIA

95. (A) ग्रामीण-नगरीय अंतर
ग्रामीण-नगरीय अंतर एक समाजशास्त्रीय अवधारणा है जो गांवों और शहरों के बीच विद्यमान मूलभूत भिन्नताओं का वर्णन करती है। इसमें जनसंख्या के घनत्व, प्रमुख आर्थिक गतिविधियों और सामाजिक अंतःक्रियाओं के तरीकों में अंतर सम्मिलित है। ग्रामीण समाज आमतौर पर कृषि प्रधान और पारंपरिक होता है, जबकि नगरीय समाज अत्यधिक सघन और आधुनिक होता है। इन अंतरों को समझना महत्वपूर्ण है क्योंकि ये लोगों की जीवन शैली, मूल्यों और सामाजिक मानदंडों को प्रभावित करते हैं, जिससे समाज का स्वरूप निर्धारित होता है।

96. (B) P-2, Q-4, R-3, S-1
ग्रामीण भारत में सामाजिक मुद्दे अक्सर एक-दूसरे से जुड़े होते हैं। बंधुआ मजदूरी ऋण के कारण उत्पन्न होने वाला विवश श्रम है, जहाँ मजदूर अपनी स्वतंत्रता खो देता है। कंगालीकरण वह प्रक्रिया है जिसमें ग्रामीण अपनी संपत्ति खोकर अत्यंत निर्धन हो जाते हैं। प्रवासी मजदूरी रोजगार की खोज में एक स्थान से दूसरे स्थान पर होने वाला आवागमन है। कृषि अशांति तब होती है जब किसान अन्याय के विरुद्ध सामूहिक रूप से विरोध करते हैं। ये स्थितियां ग्रामीण समाज में व्याप्त शोषण और आर्थिक संकट को दर्शाती हैं।

97. (C) A सही है लेकिन R गलत है।
ग्रामीण गुटबाजी किसी भी गांव के समग्र विकास के लिए अत्यंत हानिकारक होती है क्योंकि यह समुदाय की सामूहिक शक्ति को खंडित कर देती है। जब लोग प्रतिद्वंद्वी गुटों में विभाजित हो जाते हैं, तो वे एक-दूसरे के कार्यों में बाधा डालते हैं और ग्राम सभा के साझा लक्ष्यों पर आम सहमति नहीं बन पाती। यह कहना त्रुटिपूर्ण है कि यह एकता को बढ़ावा देती है; वास्तव में, यह अविश्वास और तनाव उत्पन्न करती है। गुटबाजी प्रायः विकास निधि के अनुचित वितरण और व्यक्तिगत लाभ के लिए सामाजिक हितों की उपेक्षा का कारण बनती है।

98. (A) ग्रामीण-से-नगरीय प्रवास
ग्रामीण क्षेत्रों से युवाओं का रोजगार की खोज में शहरों की ओर जाना ग्रामीण-से-नगरीय प्रवास का एक विशिष्ट उदाहरण है। यह प्रवास मुख्य रूप से 'आकर्षण' और 'विकर्षण' कारकों द्वारा संचालित होता है। शहरों में उद्योगों का विकास रोजगार के बेहतर अवसर प्रदान करता है, जो युवाओं को आकर्षित करता है। दूसरी ओर, गांवों में कृषि के अतिरिक्त अन्य कार्य की कमी उन्हें बाहर जाने के लिए प्रेरित करती है। यह प्रक्रिया न केवल प्रवासियों के जीवन को बदलती है, बल्कि ग्रामीण और नगरीय दोनों समाजों की जनसांख्यिकी को प्रभावित करती है।

99. (C) इसमें महिलाओं के लिए सीटों के आरक्षण का कोई प्रावधान नहीं है।
73वें संविधान संशोधन की सबसे क्रांतिकारी विशेषताओं में से एक महिलाओं के लिए आरक्षण का अनिवार्य प्रावधान है। इस कानून ने पंचायतों के सभी स्तरों पर कुल सीटों और अध्यक्ष पदों में से कम से कम एक-तिहाई भाग महिलाओं के लिए आरक्षित किया है। यह कथन त्रुटिपूर्ण है कि इसमें महिलाओं के लिए आरक्षण नहीं है। वास्तव में, इस प्रावधान ने ग्रामीण भारत में लाखों महिलाओं को नेतृत्व के अवसर प्रदान किए हैं। इसके अतिरिक्त, यह अधिनियम अनुसूचित जातियों के प्रतिनिधित्व और निष्पक्ष चुनाव सुनिश्चित करता है।

100. (B) केवल 2 और 3
कृषि संबंध ग्रामीण समाज के आर्थिक और सामाजिक ताने-बाने को समझने के लिए अनिवार्य हैं। इनमें भूस्वामियों और मजदूरों के बीच के जटिल संबंध सम्मिलित होते हैं, जो भूमि के नियंत्रण और उत्पादन की प्रक्रिया पर आधारित होते हैं। यह कहना त्रुटिपूर्ण है कि ये केवल आर्थिक हैं; वास्तव में, इनमें गहरा सामाजिक आयाम भी सम्मिलित होता है, क्योंकि भूमि स्वामित्व प्रायः शक्ति और प्रतिष्ठा से जुड़ा होता है। उत्पादन पद्धति पर बहस इन संबंधों को व्यवस्थित रूप से वर्गीकृत करने और वर्ग संघर्षों का विश्लेषण करने का महत्वपूर्ण प्रयास है।

101. (C) अकृषकीकरण और कंगालीकरण
जब कोई लघु किसान ऋण के बोझ के कारण अपनी भूमि बेचने के लिए विवश होता है और अंततः एक मजदूर बन जाता है, तो यह अकृषकीकरण और कंगालीकरण की दोहरी प्रक्रिया को दर्शाता है। अकृषकीकरण उनकी कृषक पहचान और आजीविका के साधन की हानि है। कंगालीकरण उनकी आर्थिक स्थिति में आने वाली वह गिरावट है जो उन्हें निर्धनता की चरम सीमा तक ले जाती है। यह स्थिति ग्रामीण समाज में बढ़ती असमानता और कृषि संकट को उजागर करती है, जहाँ स्वावलंबी उत्पादक असहाय श्रमिकों में परिवर्तित हो रहे हैं।

102. (A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
आधुनिक समाजशास्त्र में ग्रामीणता और नगरीयता को केवल भौगोलिक स्थानों तक सीमित नहीं माना जाता, बल्कि इन्हें जीवन के विशिष्ट तरीकों के रूप में देखा जाता है। इस दृष्टिकोण का अर्थ है कि ग्रामीण क्षेत्रों में रहने वाला व्यक्ति भी नगरीय मूल्यों, जैसे आधुनिक उपभोग को अपना सकता है। इसी प्रकार, शहरों में रहने वाले लोग भी घनिष्ठ ग्रामीण संबंधों को बनाए रख सकते हैं। यह दर्शाता है कि संचार और प्रवास ने ग्रामीण और नगरीय जीवन शैलियों को एक-दूसरे में समाहित कर दिया है, जिससे एक मिश्रित संस्कृति उभर रही है।

103. (D) कृषि के महत्व में गिरावट और गैर-कृषि रोजगार में वृद्धि।
समकालीन ग्रामीण समाज में एक अत्यंत महत्वपूर्ण परिवर्तन देखा जा रहा है जहाँ ग्रामीण अर्थव्यवस्था अब केवल कृषि तक सीमित नहीं रह गई है। यद्यपि कृषि अभी भी महत्वपूर्ण है, किंतु आय और रोजगार के लिए गैर-कृषि गतिविधियों, जैसे व्यापार और सेवाओं की ओर झुकाव बढ़ रहा है। लोग अब केवल खेती पर निर्भर रहने के स्थान पर विविध व्यवसायों को अपना रहे हैं। यह विविधीकरण ग्रामीण जीवन में आधुनिकीकरण और बाजार के बढ़ते प्रभाव का परिणाम है, जो गांवों को व्यापक आर्थिक प्रणाली से जोड़ रहा है।

104. (B) 3, 2, 4, 1
अकृषकीकरण की प्रक्रिया प्रायः एक दुःखद आर्थिक चक्र के रूप में आरंभ होती है। सर्वप्रथम, फसल क्षति जैसी आपदाओं के कारण किसान को ऋण लेना पड़ता है। उस ऋण को चुकाने

Downloaded from www.pdf.tube

140. (C) A सही है लेकिन R गलत है।
जजमानी प्रथा पारंपरिक ग्रामीण भारत की एक ऐसी सामाजिक-आर्थिक व्यवस्था थी जो पूर्णतः व्यक्तिगत और वंशानुगत संबंधों पर टिकी थी। यह कहना त्रुटिपूर्ण है कि यह बाजार आधारित थी; वास्तव में, यह बाजार की प्रतिस्पर्धी और अवैयक्तिक प्रकृति के सर्वथा विपरीत थी। जजमानी संबंधों में सेवाएं और वस्तुएं परंपरा से निर्धारित होती थीं और भुगतान प्रायः अनाज या अन्य वस्तुओं के रूप में होता था। यह व्यवस्था समुदायों के बीच एक स्थाई सामाजिक अनुबंध की भांति कार्य करती थी, जहाँ प्रत्येक पक्ष के अधिकार उनके जन्म और जाति से संबद्ध होते थे।

141. (A) P-2, Q-3, R-4, S-1
ग्रामीण भारत की विभिन्न सामाजिक और आर्थिक प्रक्रियाएं समाज के स्वरूप को निरंतर परिवर्तित कर रही हैं। प्रवास अक्सर शहरों में जनसंख्या के दबाव और मलिन बस्तियों के विस्तार का कारण बनता है। अकृषकीकरण के परिणामस्वरूप भूमिहीन मजदूरों की संख्या में वृद्धि होती है, क्योंकि किसान अपनी भूमि खो देते हैं। कंगालीकरण समाज में निर्धनता की चरम स्थिति और संपत्तियों की पूर्ण हानि को दर्शाता है। सशक्तिकरण, विशेष रूप से 73वें संशोधन के माध्यम से, पंचायत गतिविधियों में महिलाओं और वंचित वर्गों की बढ़ती भागीदारी और प्रभाव का मार्ग प्रशस्त करता है।

142. (D) कृषकों के बीच बढ़ता विभेदीकरण और पूंजीवादी खेती का विकास।
समकालीन ग्रामीण समाज में कृषि वर्ग संरचना एक बड़े परिवर्तन से गुजर रही है, जिसे वर्गों का विभेदीकरण कहा जाता है। इसका अर्थ है कि ग्रामीण समुदाय अब समरूप नहीं रहा है। एक पक्ष पर धनी किसान वर्ग उभर रहा है जो पूंजी और तकनीक के माध्यम से बड़े पैमाने पर व्यावसायिक खेती कर रहा है, वहीं दूसरी ओर लघु किसान अपनी भूमि खोकर मजदूरों के वर्ग में सम्मिलित हो रहे हैं। यह प्रक्रिया ग्रामीण समाज में आर्थिक असमानता को बढ़ा रही है और पारंपरिक कृषि संबंधों को लाभ पर आधारित नवीन संबंधों में परिवर्तित कर रही है।

143. (A) गैर-कृषि उपयोग के लिए एक नगरीय निगम द्वारा स्वामित्व।
ग्रामीण समाजशास्त्र में भूमि स्वामित्व के विभिन्न रूपों का अध्ययन किया जाता है जो प्रत्यक्षतः खेती और ग्रामीण आजीविका से जुड़े होते हैं। इसमें व्यक्तिगत किसानों का स्वामित्व, पूरे समुदाय का सामूहिक नियंत्रण, या बड़े जमींदारों का अधिकार सम्मिलित है जो पट्टेदारों से कार्य करवाते हैं। नगरीय निगम द्वारा गैर-कृषि उद्देश्यों के लिए भूमि का स्वामित्व एक शहरी प्रक्रिया है, जो पारंपरिक कृषि संरचना का भाग नहीं है। ग्रामीण भूमि संबंध मुख्य रूप से इस पर केंद्रित होते हैं कि भूमि का उपयोग उत्पादन के लिए कौन और किस प्रकार करता है।

144. (B) उनमें संवैधानिक अधिदेश का अभाव था, जिससे अनियमितता और राज्य सरकारों पर निर्भरता बनी रही।
73वें संशोधन से पूर्व पंचायती राज व्यवस्था की मुख्य दुर्बलता इसकी वैधानिक अस्थिरता थी। चूंकि पंचायतों को संवैधानिक मान्यता प्राप्त नहीं थी, इसलिए राज्य सरकारें प्रायः उनके चुनाव कराने में विलंब करती थीं या बिना उचित कारण के उन्हें भंग कर देती थीं। पंचायतों के पास अपने कार्यों के लिए निश्चित वित्तीय संसाधन भी नहीं थे, जिससे वे पूर्णतः राज्य के अनुदान पर निर्भर रहती थीं। इस अनिश्चितता ने स्थानीय शासन को निष्प्रभावी बना दिया था। संवैधानिक दर्जे ने इन निकायों को स्थाई और लोकतांत्रिक रूप से जवाबदेह बनाने के लिए आवश्यक कानूनी मजबूती प्रदान की।

145. (B) केवल 2 और 3
कृषक आंदोलन भारत में एक दीर्घ ऐतिहासिक क्रम का भाग हैं और ये औपनिवेशिक काल से ही सक्रिय रहे हैं। ये आंदोलन ग्रामीण समाज में व्याप्त कृषि संकट और अन्याय के विरुद्ध किसानों की संगठित आवाज हैं। इनका मुख्य केंद्र भूमि अधिकारों की सुरक्षा, अत्यधिक लगान में कमी और किसानों को ऋण के बोझ से राहत दिलाना रहा है। ये सामूहिक कार्रवाइयां दर्शाती हैं कि किसान अपनी समस्याओं के प्रति सचेत हैं और वे व्यवस्थागत सुधारों के लिए संघर्ष करने की क्षमता रखते हैं। अतः, इन्हें कृषि अशांति की एक महत्वपूर्ण और संगठित सामाजिक अभिव्यक्ति माना जाता है।

NODIA

146. (A) सामाजिक और राजनीतिक गतिशीलता
जब समाज के किसी वंचित वर्ग का व्यक्ति आरक्षण और जन समर्थन के माध्यम से सरपंच जैसा महत्वपूर्ण पद प्राप्त करता है, तो यह सामाजिक और राजनीतिक गतिशीलता का एक सशक्त उदाहरण है। यह न केवल उस व्यक्ति की स्थिति को परिवर्तित करता है, बल्कि पारंपरिक सत्ता संरचना को भी चुनौती देता है जहाँ नेतृत्व केवल उच्च जातियों तक सीमित था। यह परिवर्तन वंचित समूहों में आत्मविश्वास उत्पन्न करता है और उन्हें निर्णय लेने की प्रक्रिया में सहभागी बनाता है। यह लोकतांत्रिक विकेंद्रीकरण के माध्यम से होने वाले वास्तविक सशक्तिकरण और सामाजिक न्याय की दिशा में एक वृहत कदम है।

147. (C) कथन I सही है, लेकिन कथन II गलत है।
ग्रामीण-से-ग्रामीण प्रवास भारत में एक अत्यंत महत्वपूर्ण आर्थिक रणनीति है, जो विभिन्न क्षेत्रों में कृषि विकास के भिन्न-भिन्न स्तरों के कारण होती है। मजदूर प्रायः उन सूखाग्रस्त क्षेत्रों से पलायन करते हैं जहाँ कार्य कम है, और उन सिंचित क्षेत्रों में जाते हैं जहाँ वर्ष भर खेती होती है। हालाँकि, यह कहना त्रुटिपूर्ण है कि यह प्रवास सदैव स्थायी होता है। वास्तव में, अधिकांश ग्रामीण-से-ग्रामीण प्रवास मौसमी और अस्थायी प्रकृति का होता है, जहाँ मजदूर कटाई के पश्चात वापस अपने मूल गांव और परिवार के पास लौट आते हैं।

148. (D) व्यक्तिवाद और सामाजिक विभाजन को।
नगरीयता को समाजशास्त्रीय रूप से एक ऐसी जीवन शैली माना जाता है जो व्यक्तिवाद को प्रोत्साहित करती है। शहरों की विशाल और सघन जनसंख्या के मध्य लोग प्रायः एक-दूसरे

जातियों के मध्य एक पारस्परिक निर्भरता का जाल निर्मित करती थी, जहाँ प्रत्येक जाति के लिए विशिष्ट कार्य निर्धारित थे। ये संबंध व्यक्तिगत, वंशानुगत और पीढ़ी दर पीढ़ी चलने वाले होते थे। इसमें विनिमय केवल आर्थिक लाभ के लिए नहीं, बल्कि सामाजिक दायित्वों के निर्वाह के लिए भी किया जाता था। यह व्यवस्था गांव को एक आत्मनिर्भर इकाई के रूप में बनाए रखने और सामाजिक पदानुक्रम को सुदृढ़ करने का एक महत्वपूर्ण तंत्र थी।

215. (A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
ग्रामीण समाज में कृषि वर्ग संरचना एक निरंतर परिवर्तनशील प्रक्रिया है, जो स्थिर नहीं रहती। इसका मुख्य कारण विभिन्न सामाजिक सुधारों का प्रभाव है। भूमि सुधार कानूनों ने पुरातन जमींदारी तंत्र को परिवर्तित किया है, जबकि हरित क्रांति ने धनी किसानों के एक नवीन वर्ग को जन्म दिया है। साथ ही, अकृषकीकरण के कारण अनेक लघु किसान मजदूर बन रहे हैं। ये सभी कारक मिलकर ग्रामीण क्षेत्रों में वर्गों के मध्य के पुरातन संबंधों को नवीन आकार प्रदान कर रहे हैं और सामाजिक पदानुक्रम में नवीन संघर्ष और अवसर उत्पन्न कर रहे हैं।

216. (B) किसी व्यक्ति की सामाजिक स्थिति जन्म के बजाय व्यक्तिगत प्रयास, शिक्षा और धन द्वारा तेजी से निर्धारित होती है।
आधुनिक ग्रामीण समाज में हो रहा एक वृहत बदलाव 'प्रदत्त' स्थिति से 'अर्जित' स्थिति की ओर संक्रमण है। पारंपरिक रूप से, व्यक्ति का दर्जा उसकी जाति और जन्म से निर्धारित होता था, जिसे परिवर्तित नहीं किया जा सकता था। किंतु अब शिक्षा और राजनीतिक भागीदारी ने लोगों को अपनी क्षमता सिद्ध करने के अवसर प्रदान किए हैं। अब एक व्यक्ति अपनी कड़ी मेहनत, आर्थिक समृद्धि और कौशल के माध्यम से समाज में उच्च स्थान प्राप्त कर सकता है। यह परिवर्तन ग्रामीण समाज को अधिक प्रगतिशील और गतिशील बनाने की दिशा में एक सकारात्मक कदम है।

217. (A) कृषक आंदोलन
जब किसी क्षेत्र के किसान अपनी आर्थिक समस्याओं, जैसे ऋण माफी या फसल बीमा के लिए सामूहिक रूप से संगठित होकर आवाज उठाते हैं, तो यह कृषक आंदोलन का रूप ग्रहण कर लेता है। यह आंदोलन किसानों के मध्य व्याप्त संकट के प्रति उनकी चेतना और एकजुटता को दर्शाता है। यह केवल विरोध नहीं है, बल्कि यह राज्य की नीतियों को किसानों के पक्ष में मोड़ने का एक संगठित राजनीतिक प्रयास है। कृषक आंदोलन यह सिद्ध करते हैं कि ग्रामीण आबादी अपने हितों की रक्षा के लिए संगठित होकर सरकार पर दबाव बनाने में सक्षम है।

218. (A) शोषण, खराब रहने की स्थिति का सामना करते हैं और सामाजिक सुरक्षा से बाहर रह जाते हैं।
प्रवासी मजदूरों का मुद्दा एक गंभीर सामाजिक चुनौती है क्योंकि वे प्रायः समाज के सबसे असुरक्षित वर्ग से आते हैं। गंतव्य क्षेत्रों में उनके पास न तो स्थाई निवास होता है और न ही श्रेष्ठ स्वास्थ्य सुविधाएं। चूंकि वे असंगठित क्षेत्र में कार्य करते हैं, इसलिए उन्हें न्यूनतम मजदूरी प्राप्त करने में वृहत कठिनाई होती है। वे प्रायः नियोक्ता के शोषण का शिकार होते हैं और सामाजिक सुरक्षा जैसे सुरक्षा जालों से वंचित रह जाते हैं। यह स्थिति उनके जीवन को निरंतर अनिश्चितता और आर्थिक असुरक्षा के घेरे में रखती है।

219. (A) केवल 1 और 2
कृषि संबंध ग्रामीण समाज के मूलभूत आर्थिक और सामाजिक ढांचे को परिभाषित करते हैं, जो भूमि के स्वामित्व और खेती की प्रक्रिया के इर्द-गिर्द निर्मित होते हैं। ये संबंध केवल धन के विनिमय तक सीमित नहीं हैं, बल्कि ये समाज में शक्ति और अधीनता के संबंधों को भी निर्धारित करते हैं। उत्पादन पद्धति पर होने वाली विद्वानों की बहस इन संबंधों को सैद्धांतिक रूप से समझने और यह अन्वेषण करने का प्रयास है कि ग्रामीण भारत में आर्थिक व्यवस्था सामंती है या पूंजीवादी। ये दोनों पहलू मिलकर ग्रामीण वर्ग संघर्ष और विकास की गतिशीलता को समझने का आधार प्रदान करते हैं।

220. (D) रीति-रिवाजों, परंपराओं और जनमत जैसे अनौपचारिक तंत्र।
ग्रामीण समाजों में सामाजिक नियंत्रण की प्रकृति नगरीय क्षेत्रों से मौलिक रूप से पृथक होती है। ग्रामीण क्षेत्रों में जनसंख्या न्यून और संबंध घनिष्ठ होने के कारण, लोगों का व्यवहार परिवार के दबाव, धार्मिक रीति-रिवाजों और गांव के जनमत द्वारा अधिक नियंत्रित होता है। यहाँ सामाजिक बहिष्कार जैसी अनौपचारिक सजाएं कानून और पुलिस से अधिक प्रभावी होती हैं। यह व्यवस्था समाज में एकरूपता और नैतिक व्यवस्था बनाए रखने का कार्य करती है। यह घनिष्ठता और सामुदायिक निगरानी ही ग्रामीण जीवन को उसकी विशिष्ट पहचान प्रदान करती है।

221. (D) कथन I गलत है, लेकिन कथन II सही है।
भारतीय संविधान का 73वां संशोधन अधिनियम विशेष रूप से ग्रामीण स्थानीय शासन अर्थात पंचायती राज संस्थाओं से संबद्ध है, जबकि नगरीय निकायों के लिए 74वां संशोधन किया गया था। 73वें संशोधन ने संपूर्ण देश में पंचायतों की एक समान त्रि-स्तरीय व्यवस्था का प्रावधान किया है, जिसमें ग्राम पंचायत, पंचायत समिति और जिला परिषद सम्मिलित हैं। इस कानून ने ग्रामीण क्षेत्रों में लोकतांत्रिक विकेंद्रीकरण को एक संवैधानिक ढांचा प्रदान किया है, जिससे स्थानीय नागरिकों को अपने स्वयं के विकास में सीधे रूप से भाग लेने का अधिकार प्राप्त हुआ है।

222. (B) सामाजिक गतिशीलता
सामाजिक गतिशीलता वह महत्वपूर्ण प्रक्रिया है जिसके माध्यम से व्यक्ति या समूह समाज के पदानुक्रम में अपनी स्थिति को परिवर्तित करते हैं। ग्रामीण समाज में यह तब होता है जब कोई व्यक्ति शिक्षा या आर्थिक समृद्धि के माध्यम से अपनी पारंपरिक जातिगत स्थिति से ऊपर उठता है। इसके विपरीत, आर्थिक संकट के कारण स्थिति का गिरना नीचे की ओर गतिशीलता है। यह प्रक्रिया यह दर्शाती है कि ग्रामीण समाज पूर्णतः स्थिर नहीं है, बल्कि वहां लोगों के लिए अपनी सामाजिक पहचान और जीवन स्तर को परिष्कृत करने की निरंतर संभावना और संघर्ष बना रहता है।

Click Here to Buy book on Amazon

संविदात्मक। अन्य अवधारणाएं जैसे ग्रामीणता, अकृषकीकरण और गुटबाजी अपने दिए गए विवरणों के साथ मेल खाती हैं। जजमानी प्रथा का पतन ही वास्तव में आधुनिक संविदात्मक संबंधों के उदय का मुख्य कारण बना है।

157. (C) भूमि और उसकी उपज के साथ संबंध
कृषि वर्ग संरचना ग्रामीण समाज को समझने का एक महत्वपूर्ण मानदंड है, जो समूहों को उनके आर्थिक आधार पर वर्गीकृत करता है। यह विभाजन मुख्य रूप से इस पर निर्भर करता है कि किसके पास कितनी भूमि है और वह उत्पादन की प्रक्रिया में किस प्रकार सम्मिलित है। इसमें वे लोग सम्मिलित होते हैं जो भूमि के स्वामी हैं, जो उसे पट्टे पर लेते हैं, और वे जो केवल अपना श्रम बेचते हैं। यह संरचना केवल आर्थिक स्थिति ही नहीं, बल्कि गांव के भीतर की सामाजिक शक्ति और प्रतिष्ठा के स्तर को भी निर्धारित करती है, जिससे वर्गों का निर्माण होता है।

158. (D) अपने हितों की रक्षा के लिए कृषकों की सामूहिक, संघर्ष-उन्मुख कार्रवाइयों का।
कृषक आंदोलनों का अध्ययन ग्रामीण समाजशास्त्र का एक जीवंत भाग है, जो किसानों की राजनीतिक और सामाजिक सक्रियता पर ध्यान केंद्रित करता है। ये आंदोलन तब उभरते हैं जब कृषक समुदाय अपनी समस्याओं, जैसे भूमि का अधिग्रहण या शोषणकारी नीतियों के समाधान के लिए संगठित होता है। यह अध्ययन इन संघर्षों के पीछे के कारणों, लामबंदी के तरीकों और उनके परिणामों का विश्लेषण करता है। कृषक आंदोलन यह दर्शाते हैं कि किसान केवल निष्क्रिय उत्पादक नहीं हैं, बल्कि वे अपने अधिकारों और न्याय के लिए संगठित होकर व्यवस्था को चुनौती देने की क्षमता भी रखते हैं।

159. (D) 1, 2 और 3
ग्रामीण और नगरीय क्षेत्रों के बीच का विभाजन बहुआयामी है और इसे समझने के लिए अनेक मानदंडों का उपयोग किया जाता है। जनसंख्या के आकार और व्यवसाय के अतिरिक्त, समाजशास्त्रीय रूप से वहां की संस्कृति और सामाजिक अंतःक्रिया के तरीके भी अत्यंत महत्वपूर्ण हैं। वर्तमान समय में, आधुनिक तकनीक, संचार और आवागमन की सुगमता के कारण ग्रामीण और नगरीय जीवन के बीच की दूरी अल्प हो रही है, जिससे उनके बीच की विभाजन रेखा काफी धुंधली होती जा रही है। यह सातत्य दर्शाता है कि दोनों क्षेत्र एक-दूसरे के पूरक और निरंतर परिवर्तनशील हैं।

160. (B) मौसमी, ग्रामीण-से-ग्रामीण प्रवास
एक मजदूर का कार्य की खोज में एक राज्य से दूसरे राज्य के कृषि क्षेत्रों में जाना और कार्य समाप्त होने पर वापस लौट आना मौसमी, ग्रामीण-से-ग्रामीण प्रवास का विशिष्ट उदाहरण है। यह प्रवास उन क्षेत्रों के बीच होता है जहाँ कृषि विकास का स्तर भिन्न-भिन्न है। मजदूर अधिक मजदूरी और कार्य की निरंतरता के लिए उन्नत खेती वाले क्षेत्रों में जाते हैं। यह प्रक्रिया न केवल मजदूरों को आय का साधन प्रदान करती है, बल्कि यह उन क्षेत्रों में श्रम की मांग को भी पूर्ण करती है जहाँ वृहत स्तर पर कृषि कार्य किए जाते हैं।

161. (C) कथन I सही है, लेकिन कथन II गलत है।
ग्रामीण नेतृत्व में पारंपरिक रूप से उच्च जाति और प्रचुर भूमि स्वामित्व जैसे प्रदत्त गुणों की प्रधानता रही है, जो जन्म से निर्धारित होते थे। हालाँकि, पंचायती राज व्यवस्था और लोकतांत्रिक चुनावों ने इस पुरातन संरचना को कठोर चुनौती दी है और नवीन वर्गों को नेतृत्व का अवसर प्रदान किया है। फिर भी, यह कहना त्रुटिपूर्ण है कि पारंपरिक सत्ता संरचना पूर्णतः समाप्त हो गई है। वास्तव में, पुरातन प्रभावशाली समूह अभी भी चुनावी राजनीति और गुटबाजी के माध्यम से अपना प्रभाव बनाए रखने का प्रयास करते हैं, जिससे ग्रामीण शक्ति संबंधों में एक जटिल संघर्ष बना रहता है।

162. (A) शहर में फैक्ट्री श्रमिकों के बीच संबंध
कृषि संबंध विशेष रूप से ग्रामीण और कृषि परिवेश में होने वाली आर्थिक और सामाजिक अंतःक्रियाओं को संदर्भित करते हैं। इनमें भूमि के पट्टे, बटाईदारी की व्यवस्था और कृषि कार्यों के लिए किए गए श्रम अनुबंध सम्मिलित हैं, जो उत्पादन की प्रक्रिया को संचालित करते हैं। ये संबंध ग्रामीण वर्ग संरचना और निर्भरता के जाल को समझने के लिए अनिवार्य हैं। इसके विपरीत, शहरों में फैक्ट्री श्रमिकों और उनके स्वामियों के बीच के संबंध औद्योगिक समाजशास्त्र का विषय हैं और वे पूर्णतः भिन्न आर्थिक नियमों द्वारा संचालित होते हैं, इसलिए उन्हें कृषि संबंधों में सम्मिलित नहीं किया जाता।

163. (C) छोटे और सीमांत भूमि-स्वामी कृषक
अकृषकीकरण की प्रक्रिया का सबसे गंभीर और प्रत्यक्ष नकारात्मक प्रभाव लघु और सीमांत किसानों पर पड़ता है। ये वे किसान हैं जिनके पास अत्यंत सीमित भूमि होती है और जो प्रायः ऋण के जाल में फंसे रहते हैं। आर्थिक विवशता या फसल की बर्बादी के कारण जब उन्हें अपनी भूमि खोनी पड़ती है, तो उनकी कृषक पहचान समाप्त हो जाती है। वे अपनी आजीविका के एकमात्र साधन से वंचित हो जाते हैं और मजदूर बनने पर विवश होते हैं। यह प्रक्रिया इस वर्ग को आर्थिक असुरक्षा और निर्धनता के गहरे गर्त में धकेल देती है, जिससे ग्रामीण असमानता बढ़ती है।

164. (D) 73वां संशोधन अधिनियम, 1992
भारत में आधुनिक पंचायती राज व्यवस्था की आधारशिला 73वें संविधान संशोधन अधिनियम, 1992 द्वारा रखी गई थी। इस ऐतिहासिक कानून ने पंचायतों को संवैधानिक मान्यता और संरक्षण प्रदान किया, जिससे वे स्थानीय स्वशासन की अनिवार्य इकाई बन गईं। इस अधिनियम ने संपूर्ण देश में पंचायतों की त्रि-स्तरीय संरचना, नियमित चुनाव, महिलाओं और वंचित वर्गों के लिए आरक्षण तथा वित्तीय शक्तियों के हस्तांतरण का प्रावधान किया। इसने लोकतांत्रिक विकेंद्रीकरण को एक सुदृढ़ कानूनी ढांचा प्रदान किया, जिससे ग्रामीण भारत में जमीनी स्तर पर लोकतंत्र को प्रभावी रूप से लागू करना संभव हो पाया।

165. (B) P-2, Q-4, R-3, S-1
ग्रामीण समाजशास्त्र के विभिन्न अध्ययन क्षेत्र विशिष्ट अवधारणाओं पर ध्यान केंद्रित करते हैं। ग्रामीण-नगरीय विषमता का अध्ययन जीवन के तरीकों और परिवेश के अंतर

Downloaded from www.pdf.tube

से अपरिचित होते हैं, जिससे सामाजिक संबंधों में अनामिकता उत्पन्न होती है। यहाँ सामुदायिक भावना के स्थान पर व्यक्तिगत हितों और कार्यात्मक भूमिकाओं को अधिक महत्व दिया जाता है। इसके परिणामस्वरूप सामाजिक विभाजन और अलगाव की स्थिति उत्पन्न हो सकती है। नगरीय वातावरण लोगों को अधिक स्वतंत्र तो बनाता है, किंतु साथ ही यह उन पारंपरिक सामाजिक बंधनों को भी निर्बल करता है जो ग्रामीण समाज में सुरक्षा प्रदान करते हैं।

149. (C) ग्रामीण नेतृत्व और गुटबाजी
ग्रामीण क्षेत्रों में नातेदारी और जाति समूहों के बीच प्रतिद्वंद्विता प्रायः ग्रामीण नेतृत्व और गुटबाजी का रूप ले लेती है। ये गुट गांव के संसाधनों, जैसे जल, भूमि और सरकारी योजनाओं के लाभ पर नियंत्रण प्राप्त करने के लिए संघर्ष करते हैं। यह प्रतिस्पर्धा प्रायः पीढ़ियों तक चलती है और पंचायत चुनावों से लेकर गांव के लघु सामाजिक निर्णयों तक को प्रभावित करती है। गुटबाजी यह दर्शाती है कि ग्रामीण राजनीति केवल विकास पर आधारित नहीं है, बल्कि यह पारंपरिक वफादारियों और शक्ति के व्यक्तिगत समीकरणों से भी गहराई से जुड़ी हुई है, जो सामुदायिक एकता को प्रभावित करती है।

150. (B) बंधुआ मजदूरी
ग्रामीण क्षेत्रों में ऋणग्रस्तता एक गंभीर सामाजिक समस्या है जो प्रायः बंधुआ मजदूरी की ओर ले जाती है। जब कोई निर्धन व्यक्ति अपनी तात्कालिक आवश्यकताओं के लिए साहूकार से ऋण लेता है और उसे चुकाने में असमर्थ होता है, तो उसे ब्याज के बदले शारीरिक श्रम करने के लिए विवश किया जाता है। यह स्थिति प्रायः पीढ़ी दर पीढ़ी चलती रहती है और श्रमिक के पास अपनी इच्छा से कहीं और कार्य करने की स्वतंत्रता नहीं होती। यह व्यवस्था पूर्णतः शोषणकारी और अमानवीय है, जो ग्रामीण आर्थिक संबंधों में विद्यमान गंभीर असमानता और अन्याय को उजागर करती है।

151. (D) अधिकांश राज्यों में संवैधानिक रूप से अनिवार्य त्रि-स्तरीय संरचना।
73वें संविधान संशोधन की सबसे प्रमुख विशेषता यह है कि इसने देश के अधिकांश राज्यों में पंचायती राज की एक समान त्रि-स्तरीय संरचना को अनिवार्य बना दिया है। इसमें ग्राम स्तर पर ग्राम पंचायत, मध्यवर्ती स्तर पर पंचायत समिति और जिला स्तर पर जिला परिषद सम्मिलित हैं। इस व्यवस्था का उद्देश्य शासन को जनता के जितना संभव हो सके उतना निकट लाना है। संवैधानिक रूप से अनिवार्य होने के कारण अब पंचायतें राज्य सरकारों की इच्छा पर निर्भर नहीं हैं, बल्कि वे एक स्थाई और वैधानिक संस्था बन गई हैं, जिससे लोकतांत्रिक विकेंद्रीकरण को एक नवीन मजबूती प्राप्त हुई है।

152. (A) कृषि के व्यावसायीकरण की ओर झुकाव।
जब कोई कृषक परिवार निर्वाह फसलों के स्थान पर बाजार में विक्रय के उद्देश्य से नकदी फसलें उगाना आरंभ करता है, तो यह कृषि के व्यावसायीकरण की प्रक्रिया को दर्शाता है। इस बदलाव का मुख्य उद्देश्य बाजार में अपनी उपज बेचकर अधिकतम नकद आय अर्जित करना होता है। यह प्रवृत्ति ग्रामीण अर्थव्यवस्था के बाजारीकरण और वैश्विक मांग के साथ उसके जुड़ाव का संकेत देती है। यद्यपि इससे किसानों की आर्थिक स्थिति में सुधार की संभावना बढ़ती है, किंतु यह उन्हें बाजार की अनिश्चितताओं और कीमतों में होने वाले उतार-चढ़ाव के जोखिमों के प्रति भी अधिक संवेदनशील बना देता है।

153. (C) भूमि का स्वामी कौन है, उस पर कौन काम करता है, और अधिशेष उत्पाद का वितरण कैसे किया जाता है?
ग्रामीण समाजशास्त्र में "उत्पादन पद्धति" पर आधारित अध्ययन का मुख्य केंद्र आर्थिक संरचना और वर्ग संबंधों को समझना होता है। यह विश्लेषण करता है कि उत्पादन के प्रमुख साधनों, विशेष रूप से भूमि पर किसका नियंत्रण है और खेती में किस प्रकार के श्रम का उपयोग किया जा रहा है। यह अध्ययन यह भी जांचता है कि उत्पादन के पश्चात जो अधिशेष शेष रहता है, उसका विनियोग कौन करता है और किस प्रकार। यह ढांचा गांव के भीतर विद्यमान आर्थिक असमानता, शोषण के तरीकों और वर्गों के बीच के शक्ति संबंधों को स्पष्ट रूप से उजागर करने में अत्यंत प्रभावी है।

154. (A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
73वें संविधान संशोधन ने ग्रामीण भारत में महिलाओं की स्थिति में क्रांतिकारी परिवर्तन लाया है। पंचायतों में महिलाओं के लिए एक-तिहाई सीटों और अध्यक्ष पदों के आरक्षण ने उन्हें सार्वजनिक जीवन की मुख्यधारा में ला दिया है। इसके परिणामस्वरूप, लाखों महिलाएं अब स्थानीय शासन में सक्रिय रूप से भाग ले रही हैं और निर्णय लेने की प्रक्रिया को प्रभावित कर रही हैं। यह राजनीतिक सशक्तिकरण न केवल महिलाओं के आत्मविश्वास को बढ़ाता है, बल्कि यह समाज के पितृसत्तात्मक मानदंडों को भी चुनौती देता है। यह प्रावधान महिलाओं के नेतृत्व को मान्यता देने और समावेशी विकास सुनिश्चित करने में सफल रहा है।

155. (D) एक छोटे किसान का अपने पशुधन बेचना, फिर अपनी भूमि बेचना, और अंततः एक बेसहारा दिहाड़ी मजदूर बन जाना।
कंगालीकरण एक अत्यंत पीड़ादायक सामाजिक-आर्थिक प्रक्रिया है जो ग्रामीण निर्धनों की निरंतर गिरती स्थिति को दर्शाती है। यह तब होता है जब एक लघु किसान ऋण के बोझ या निरंतर फसल की बर्बादी के कारण अपनी संपत्तियों को एक-एक करके खोने लगता है। सर्वप्रथम पशुधन की बिक्री होती है, फिर जीवन की अंतिम सुरक्षा के रूप में भूमि का टुकड़ा भी छिन जाता है। अंत में, वह व्यक्ति पूर्णतः साधनहीन होकर बेसहारा दिहाड़ी मजदूर बन जाता है। यह प्रक्रिया ग्रामीण समाज में बढ़ती असुरक्षा और उत्पादन के साधनों से अलगाव की चरम स्थिति को व्यक्त करती है।

156. (B) जजमानी प्रथा - एक आधुनिक, संविदात्मक श्रम समझौता।
जजमानी प्रथा के विषय में यह कहना पूर्णतः त्रुटिपूर्ण है कि यह एक आधुनिक या संविदात्मक श्रम समझौता है। इसके विपरीत, जजमानी प्रथा भारतीय ग्रामीण समाज की एक अत्यंत प्राचीन और पारंपरिक व्यवस्था है जो जाति पदानुक्रम पर आधारित थी। इस व्यवस्था में संबंध व्यक्तिगत, वंशानुगत और स्थाई होते थे, न कि बाजार की भांति अल्पकालिक और

NODIA

परिणामस्वरूप किसानों और खेतिहर मजदूरों के मध्य बेचैनी बढ़ती है, जो प्रायः विरोध प्रदर्शनों, हड़तालों या आंदोलनों के रूप में प्रकट होती है। यह अशांति दर्शाती है कि समाज के उत्पादक वर्ग और व्यवस्था के बीच के संबंधों में गहरा तनाव है, जिसे केवल नीतिगत सुधारों और न्यायपूर्ण भूमि व्यवस्था के माध्यम से ही दूर किया जा सकता है।

174. (A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
73वें संविधान संशोधन ने पंचायतों में समावेशी प्रतिनिधित्व सुनिश्चित करने के लिए महत्वपूर्ण कानूनी प्रावधान किए हैं। यह अधिनियम अनिवार्य रूप से अनुसूचित जातियों और अनुसूचित जनजातियों के लिए उनकी जनसंख्या के अनुपात में सीटों का आरक्षण प्रदान करता है। इसका मुख्य उद्देश्य ऐतिहासिक रूप से उपेक्षित इन वर्गों को स्थानीय शासन की मुख्यधारा में लाना और उन्हें निर्णय लेने की वास्तविक शक्ति प्रदान करना है। यह आरक्षण न केवल पंचायत सदस्य के पदों के लिए है, बल्कि अध्यक्ष के पदों के लिए भी लागू होता है, जिससे ग्रामीण सत्ता संरचना में सामाजिक न्याय की नींव सुदृढ़ होती है।

175. (B) पूंजीवादी किसान या धनी किसान
पूंजीवादी या धनी किसान वे होते हैं जो कृषि को पूर्णतः एक व्यावसायिक उद्यम के रूप में संचालित करते हैं। उनकी खेती का मुख्य उद्देश्य लाभ को अधिकतम करना होता है, जिसके लिए वे बाजार की मांग के अनुसार नकदी फसलें उगाते हैं। वे स्वयं शारीरिक श्रम करने के स्थान पर दैनिक मजदूरी पर श्रमिकों को नियुक्त करते हैं और उत्पादन बढ़ाने के लिए ट्रैक्टर तथा अन्यों आधुनिक तकनीकों का भरपूर उपयोग करते हैं। यह वर्ग ग्रामीण अर्थव्यवस्था में एक प्रभावशाली शक्ति के रूप में कार्य करता है और बाजार की गतिशीलता के साथ गहराई से जुड़ा हुआ होता है।

176. (B) संशोधन के बाद, नियमित चुनाव और वित्तीय प्रावधान अनिवार्य कर दिए गए।
73वें संशोधन से पूर्व और पश्चात की पंचायत प्रणाली के मध्य का मुख्य अंतर उनकी वैधानिक स्थिति और निरंतरता में है। संशोधन के माध्यम से पंचायतों को संवैधानिक दर्जा प्रदान किया गया, जिससे प्रत्येक पांच वर्ष में चुनाव कराना और भंग होने की स्थिति में छह महीने के भीतर चुनाव कराना अनिवार्य हो गया। साथ ही, राज्य वित्त आयोग के माध्यम से पंचायतों के लिए वित्तीय संसाधनों का नियमित प्रवाह सुनिश्चित किया गया। इसने पंचायतों को राज्य सरकार की प्रशासनिक इच्छा पर निर्भर रहने के स्थान पर एक स्थाई, स्वायत्त और आर्थिक रूप से सक्षम स्थानीय शासन की इकाई के रूप में स्थापित किया।

177. (B) विभिन्न निवास प्रतिमानों के सांस्कृतिक और सामाजिक-मनोवैज्ञानिक प्रभाव।
समाजशास्त्रियों के लिए ग्रामीणता और नगरीयता केवल स्थान नहीं, बल्कि दो भिन्न मानसिक और सामाजिक जगत हैं। जीवन के तरीकों के रूप में इनका अध्ययन करने से हमें यह समझने में सहायता मिलती है कि किस प्रकार निवास का परिवेश लोगों के चिंतन, व्यवहार और आपसी संबंधों को आकार प्रदान करता है। यह दृष्टिकोण ग्रामीण क्षेत्रों में पाई जाने वाली सामुदायिक एकजुटता और शहरों की अनामिकता तथा व्यक्तिवाद के प्रभावों को गहराई से स्पष्ट करता है। इससे यह समझने में सहायता मिलती है कि आधुनिक समाज में भौतिक दूरियां अल्प होने के बावजूद सांस्कृतिक भिन्नताएं किस प्रकार बनी रहती हैं और परिवर्तित होती हैं।

178. (A) मूल स्थान की प्रतिकूल स्थितियाँ, जैसे निर्धनता और बेरोजगारी।
प्रवास के समाजशास्त्र में 'विकर्षण' कारक उन नकारात्मक स्थितियों को संदर्भित करते हैं जो लोगों को अपना गृह या गांव त्यागने के लिए विवश करती हैं। ग्रामीण क्षेत्रों में निर्धनता का उच्च स्तर, खेती में होने वाली क्षति, रोजगार के अवसरों का अभाव और कभी-कभी सामाजिक भेदभाव या उत्पीड़न इसके प्रमुख उदाहरण हैं। जब लोगों को यह अनुभव होता है कि वे अपने मूल स्थान पर रहकर अपना और अपने परिवार का भरण-पोषण नहीं कर सकते, तो वे बाहर जाने का कठोर निर्णय लेते हैं। ये कारक ग्रामीण जीवन की आर्थिक और सामाजिक असुरक्षा को स्पष्ट रूप से दर्शाते हैं।

179. (C) कृषि समाज की मौलिक आर्थिक संरचना को चित्रित करना।
'उत्पादन पद्धति' बहस का मूल उद्देश्य भारतीय कृषि समाज की आंतरिक कार्यप्रणाली और उसके वर्ग संबंधों का गहराई से विश्लेषण करना है। यह चर्चा इस विषय को समझने के लिए है कि उत्पादन के साधनों का स्वामित्व किसके पास है और श्रम का उपयोग किस प्रकार किया जाता है। विद्वान यह अन्वेषण करने का प्रयास करते हैं कि क्या ग्रामीण भारत में शोषण अभी भी सामंती प्रकृति का है या यह आधुनिक पूंजीवादी रूप ले चुका है। यह सैद्धांतिक ढांचा ग्रामीण समाज में शक्ति, संघर्ष और आर्थिक परिवर्तन की प्रक्रियाओं को समझने के लिए एक आवश्यक और व्यापक आधार प्रदान करता है।

180. (D) समावेशी ग्रामीण विकास प्राप्त करना।
पंचायती राज व्यवस्था के माध्यम से होने वाला सशक्तिकरण एक ऐसी रणनीति है जिसका उद्देश्य विकास के लाभों को समाज के प्रत्येक वर्ग तक पहुँचाना है। जब महिलाएं और वंचित समूह निर्णय लेने की प्रक्रिया में सम्मिलित होते हैं, तो वे अपनी विशिष्ट समस्याओं को प्रभावी ढंग से उठा पाते हैं, जिससे विकास योजनाएं अधिक न्यायपूर्ण और प्रतिनिधि बनती हैं। यह प्रक्रिया केवल आर्थिक सुधार तक सीमित नहीं है, बल्कि यह एक गरिमापूर्ण सामाजिक जीवन और समान अवसरों को सुनिश्चित करने का प्रयास है। यही समावेशी विकास का सार है, जहाँ प्रत्येक ग्रामीण को अपनी प्रगति में समान भागीदारी का अधिकार प्राप्त होता है।

181. (B) 2, 1, 4, 3
ग्रामीण समाज में परिवर्तन एक जटिल और परस्पर संबद्ध प्रक्रिया है। प्रायः इसकी शुरुआत भूमि के विखंडन और कृषि से होने वाली आय में गिरावट से होती है, जिससे आर्थिक संकट उत्पन्न होता है। इस संकट के कारण लोग रोजगार की खोज में शहरों की ओर प्रवास करने के लिए विवश होते हैं। जब ये प्रवासी शहरों में कार्य करके नकद आय अर्जित करते हैं और

Click Here to Buy book on Amazon

यह उन पुरातन सामाजिक सुरक्षा जालों को भी निर्बल कर देता है जो पारंपरिक पारस्परिकता पर आधारित थे।

198. (B) वंचित वर्गों और महिलाओं के नेताओं को उभरने के लिए एक नया राजनीतिक स्थान प्रदान किया।
73वें संविधान संशोधन ने ग्रामीण भारत में नेतृत्व के स्वरूप को मौलिक रूप से परिवर्तित कर दिया है। आरक्षण के प्रावधान के माध्यम से, इस कानून ने उन वर्गों के लिए चुनावी राजनीति के द्वार खोल दिए हैं जिन्हें पारंपरिक रूप से सत्ता से पृथक रखा गया था। अब अनुसूचित जातियों और महिलाओं के पास सरपंच बनने का कानूनी अधिकार है। इस नवीन राजनीतिक स्थान ने न केवल प्रतिनिधित्व बढ़ाया है, बल्कि इसने नवीन आकांक्षाओं और नेतृत्व कौशलों को भी जन्म दिया है। यह बदलाव ग्रामीण समाज को अधिक समावेशी और लोकतांत्रिक बनाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर है।

199. (D) कृषकों एक 'लघु परंपरा' का हिस्सा हैं जो व्यापक समाज की 'वृहत परंपरा' के साथ संवाद करती है।
कृषक अध्ययन में रॉबर्ट रेडफील्ड की अवधारणा के अनुसार, कृषक समाज को पूर्णतः पृथक नहीं माना जा सकता। कृषक अपनी स्थानीय 'लघु परंपरा' को बनाए रखते हैं, जिसमें उनके विशिष्ट रीति-रिवाज और लोकगीत सम्मिलित होते हैं। साथ ही, वे व्यापक समाज या 'वृहत परंपरा', जिसमें शास्त्रीय धर्म, कानून और राज्य की नीतियां सम्मिलित हैं, के साथ निरंतर संपर्क और संवाद में रहते हैं। यह अंतःक्रिया ही कृषक समाज की संस्कृति को समृद्ध और जटिल बनाती है। यह दर्शाता है कि ग्रामीण जीवन राष्ट्रीय संस्कृति का एक अनिवार्य और अभिन्न भाग है।

200. (A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
भारत में ग्रामीण-से-ग्रामीण प्रवास परिवर्तन की एक महत्वपूर्ण और व्यापक प्रक्रिया है, जो मुख्य रूप से क्षेत्रीय आर्थिक असमानताओं का परिणाम है। जिन क्षेत्रों में सिंचाई की श्रेष्ठ सुविधाएं हैं और जहां वर्ष भर विभिन्न फसलें उगाई जाती हैं, वहां श्रम की मांग अधिक होती है। इसके विपरीत, वर्षा पर आधारित और अल्प विकसित क्षेत्रों में कार्य की कमी होती है। इसलिए, मजदूर श्रेष्ठ मजदूरी और निरंतर रोजगार की खोज में विकसित कृषि क्षेत्रों की ओर पलायन करते हैं। यह प्रवास कृषि अर्थव्यवस्था को संतुलित करने और मजदूरों के जीवन निर्वाह में महत्वपूर्ण भूमिका निर्वाह करता है।

201. (D) 1, 2 और 3
73वें संविधान संशोधन ने पंचायती राज व्यवस्था को एक अत्यंत सुदृढ़ और स्पष्ट ढांचा प्रदान किया है। इसने पंचायतों के लिए पांच वर्ष का निश्चित कार्यकाल सुनिश्चित किया है और भंग होने पर चुनाव आयोजित कराने का नियम बनाया है। ग्राम सभा, जिसमें गांव के सभी वयस्क मतदाता सम्मिलित होते हैं, को इस संपूर्ण व्यवस्था की मूल इकाई बनाया गया है, जो सहभागी लोकतंत्र का आधार है। सबसे महत्वपूर्ण तथ्य यह है कि इस संशोधन ने इन प्रावधानों को संवैधानिक दर्जा प्रदान कर उन्हें स्थाई और अनिवार्य लोकतांत्रिक संस्थाओं के रूप में स्थापित किया है।

202. (A) विभिन्न निवास प्रतिमानों के सांस्कृतिक और सामाजिक परिणामों को समझने के लिए।
ग्रामीणता और नगरीयता को केवल स्थान के स्थान पर जीवन शैली के रूप में देखने से हमें समाज की सूक्ष्म परतों को समझने में सहायता मिलती है। यह दृष्टिकोण यह स्पष्ट करता है कि किस प्रकार एक ही भौगोलिक क्षेत्र में निवास करने वाले लोगों के मध्य उनके सामाजिक संबंधों और प्राथमिकताओं के आधार पर अंतर हो सकता है। इससे यह ज्ञात होता है कि नगरीकरण केवल शहरों का विस्तार नहीं है, बल्कि यह एक सांस्कृतिक परिवर्तन है जो ग्रामीण मानसिकता को भी प्रभावित करता है। यह समाजशास्त्रियों को आधुनिक समाज में हो रहे जटिल सामाजिक परिवर्तनों का विश्लेषण करने में सक्षम बनाता है।

203. (C) एक छोटा किसान, ऋण के बोझ तले अपनी भूमि बेच देता है और किसी और के खेत में दिहाड़ी मजदूर के रूप में काम करना शुरू कर देता है।
अकृषकीकरण ग्रामीण क्षेत्रों में होने वाली एक कष्टकारी प्रक्रिया है जो कृषक वर्ग के आर्थिक ह्रास को दर्शाती है। यह तब होता है जब एक स्वतंत्र किसान, जो पूर्व में अपनी भूमि पर खेती करता था, प्रतिकूल परिस्थितियों के कारण अपनी भूमि खो देता है। भूमिहीन होने के पश्चात, उसकी पहचान एक उत्पादक से परिवर्तित होकर एक आश्रित मजदूर की हो जाती है। यह न केवल उसकी आय को अल्प करता है, बल्कि समाज में उसकी प्रतिष्ठा को भी छीन लेता है। यह प्रक्रिया ग्रामीण भारत में व्याप्त कृषि संकट और बढ़ती आर्थिक असमानता का एक दुःखद परिणाम है।

204. (A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
कृषि संबंध अनिवार्य रूप से भूमि के स्वामित्व के प्रकारों द्वारा आकार ग्रहण करते हैं। जब भूमि का मालिकाना अधिकार उन लोगों के पास होता है जो स्वयं खेती नहीं करते, जिन्हें अनुपस्थित भूस्वामी कहा जाता है, तो वहां शोषण और पट्टेदारी के असुरक्षित संबंध अधिक होते हैं। इसके विपरीत, जहाँ किसान अपनी भूमि का स्वयं स्वामी होता है, वहां संबंध अधिक स्वायत्त और उत्पादन-उन्मुख होते हैं। भूमि स्वामित्व की व्यवस्था ही यह निर्धारित करती है कि कृषि से होने वाले लाभ का विभाजन किस प्रकार होगा और समाज में विभिन्न वर्गों के मध्य शक्ति का संतुलन क्या होगा।

205. (C) ग्रामीण नेतृत्व और गुटबाजी
ग्रामीण नेतृत्व में गुटबाजी प्रायः सत्ता और प्रतिष्ठा के लिए होने वाली स्थाई प्रतिद्वंद्विता का परिणाम होती है। जब दो शक्तिशाली परिवार गांव के संसाधनों और राजनीतिक पदों पर नियंत्रण के लिए संघर्ष करते हैं, तो वे गांव को प्रतिस्पर्धी खेमों में विभाजित कर देते हैं। यह गुटबाजी पंचायत चुनावों में मतदान के तरीकों को गहराई से प्रभावित करती है और प्रायः विकास कार्यों के स्थान पर आपसी विरोध को प्राथमिकता देती है। यह स्थिति दर्शाती है कि ग्रामीण क्षेत्रों में शक्ति का संघर्ष प्रायः व्यक्तिगत वफादारियों और पुरातन रंजिशों से प्रेरित होता है, जो सामाजिक एकता में बाधक है।

NODIA

जाता है। ये सभी प्रक्रियाएं ग्रामीण भारत की बदलती आर्थिक और सामाजिक वास्तविकताओं को स्पष्ट रूप से उजागर करती हैं।

190. (C) कथन I सही है, लेकिन कथन II गलत है।
मार्क्सवादी समाजशास्त्र के अनुसार, उत्पादन पद्धति उत्पादन की शक्तियों और उत्पादन के संबंधों का एक विशिष्ट योग है जो समाज की आर्थिक संरचना को परिभाषित करता है। भारत में इस विषय पर होने वाली बहस अत्यंत प्रासंगिक है क्योंकि भारतीय कृषि में अत्यधिक विविधता विद्यमान है। एक ओर जहाँ पंजाब जैसे क्षेत्रों में पूंजीवादी खेती का वर्चस्व है, वहीं अनेक अन्य क्षेत्रों में आज भी अर्ध-सामंती अवशेष जैसे कि बटाईदारी और ऋण-आधारित शोषण के रूप विद्यमान हैं। अतः, संपूर्ण कृषि को समान रूप से पूंजीवादी मानना त्रुटिपूर्ण है; इसकी जटिलताओं को समझने के लिए यह बहस अनिवार्य है।

191. (A) कंगालीकरण और बाह्य-प्रवास।
ग्रामीण समाज में भूमि का छिनना, ऋण का वृहत बोझ और रोजगार के विकल्पों की न्यूनता एक गंभीर सामाजिक-आर्थिक संकट को जन्म देती है। जब लोग अपनी आजीविका के साधन खो देते हैं, तो वे कंगालीकरण की प्रक्रिया का शिकार हो जाते हैं, जिसका अर्थ है उनकी संपत्ति और जीवन स्तर में निरंतर गिरावट। इस निराशाजनक स्थिति से सुरक्षा के लिए, वे प्रायः अपने गांव को त्यागकर शहरों या अन्य राज्यों की ओर पलायन करते हैं, जिसे बाह्य-प्रवास कहा जाता है। यह प्रवास स्वेच्छा से नहीं, बल्कि अस्तित्व की रक्षा और जीवन को बनाए रखने की एक अनिवार्य विवशता बन जाता है।

192. (D) 1, 2 और 3
प्रवासी मजदूरों को अपनी आजीविका अर्जन के दौरान अनेक गंभीर चुनौतियों और शोषण का सामना करना पड़ता है। वे प्रायः अत्यंत न्यून मजदूरी पर कार्य करने के लिए विवश होते हैं क्योंकि उनके पास मोलभाव करने की शक्ति नहीं होती। कार्यस्थलों पर उन्हें निवास की दयनीय स्थिति और असुरक्षित वातावरण का सामना करना पड़ता है। इसके अतिरिक्त, चूंकि वे असंगठित क्षेत्र में कार्य करते हैं, इसलिए वे किसी भी प्रकार की सामाजिक सुरक्षा, जैसे बीमा या भविष्य निधि के लाभों से वंचित रह जाते हैं। ये समस्याएं उनके जीवन को अत्यंत अनिश्चित और दुष्कर बना देती हैं, जिससे वे निरंतर निर्धनता के चक्र में आबद्ध रहते हैं।

193. (B) भूमि के इर्द-गिर्द बने मानवीय और सामाजिक संबंधों पर।
कृषि संबंध ग्रामीण समाजशास्त्र का एक बुनियादी अध्ययन क्षेत्र है जो केवल खेती की तकनीक तक सीमित नहीं है। इसका मुख्य केंद्र यह समझना है कि भूमि के स्वामित्व और उपयोग के कारण लोगों के बीच किस प्रकार के सामाजिक बंधन और संघर्ष विकसित होते हैं। इसमें भूस्वामी और खेतिहर मजदूर के बीच के आपसी अधिकार, कर्तव्य और शक्ति संतुलन सम्मिलित हैं। ये संबंध यह निर्धारित करते हैं कि समाज में कौन प्रभावशाली है और किसका शोषण हो रहा है। अतः, कृषि संबंध ग्रामीण समाज के आर्थिक और सामाजिक पदानुक्रम का विश्लेषण करने के लिए अनिवार्य हैं।

194. (A) उनके राजनीतिक सशक्तिकरण और निर्णय लेने में शामिल करने।
पंचायतों में महिलाओं के लिए आरक्षण का प्रावधान एक दूरगामी रणनीति है जिसका मुख्य उद्देश्य ग्रामीण सत्ता संरचना में लैंगिक समानता लाना है। यह प्रावधान महिलाओं को गृह की चारदीवारी से बाहर निकलकर सार्वजनिक मंचों पर अपनी आवाज उठाने और गांव के विकास से जुड़े महत्वपूर्ण निर्णय लेने का अवसर प्रदान करता है। इससे न केवल महिलाओं के प्रति सामाजिक दृष्टिकोण में परिवर्तन आता है, बल्कि विकास योजनाओं में महिलाओं और शिशुओं की विशिष्ट आवश्यकताओं को श्रेष्ठ विधि से संबोधित किया जाता है। यह आरक्षण प्रक्रिया वास्तव में ग्रामीण भारत में महिलाओं के राजनीतिक और सामाजिक उत्थान की आधारशिला है।

195. (C) सभी किसानों के लिए सुनिश्चित उच्च लाभ।
कृषि अशांति के पश्चात सदैव आर्थिक असुरक्षा और शोषणकारी स्थितियां उत्तरदायी होती हैं। जब किसानों को अपनी उपज का उचित मूल्य प्राप्त नहीं होता या वे ऋण के बोझ और शोषणकारी पट्टेदारी की शर्तों के कारण संकट में होते हैं, तब असंतोष विकसित होता है। यह अशांति सामूहिक विरोध के रूप में प्रकट होती है। इसके विपरीत, यदि सभी किसानों के लिए उच्च लाभ और आर्थिक सुरक्षा सुनिश्चित हो, तो वहां अशांति का कोई कारण शेष नहीं रहेगा। अतः, सुनिश्चित लाभ संतोष और स्थिरता का सूचक है, जो कृषि अशांति की स्थितियों के पूर्णतः विपरीत है और उसे समाप्त करता है।

196. (D) कृषि वर्ग संरचना
ग्रामीण समाज को जमींदार, धनी किसान, मध्यम किसान और मजदूर जैसी श्रेणियों में विभाजित करना कृषि वर्ग संरचना के विश्लेषण का भाग है। यह वर्गीकरण केवल आय पर आधारित नहीं है, बल्कि यह उत्पादन के साधनों, विशेष रूप से भूमि के साथ उनके संबंधों को दर्शाता है। इससे ज्ञात होता है कि समाज में कौन अन्यों का श्रम उपयोग करता है और कौन अपनी आजीविका के लिए केवल अपना श्रम बेचता है। यह संरचना गांव में शक्ति के वितरण, आर्थिक निर्भरता और सामाजिक संघर्षों के मूल कारणों को समझने में समाजशास्त्रियों की सहायता करती है।

197. (C) ग्रामीण अर्थव्यवस्था के व्यावसायीकरण और आधुनिकीकरण की।
ग्रामीण समाज में होने वाला एक प्रमुख परिवर्तन पारंपरिक जजमानी जैसे संबंधों का अंत और बाजार आधारित संबंधों का उदय है। जब गांव के लोग सेवाओं के लिए अनाज या व्यक्तिगत वफादारी के स्थान पर नकद भुगतान और कानूनी अनुबंधों का उपयोग करने लगते हैं, तो यह अर्थव्यवस्था के व्यावसायीकरण का संकेत है। यह प्रक्रिया दर्शाती है कि ग्रामीण समाज अब व्यापक वैश्विक और राष्ट्रीय बाजारों के साथ एकीकृत हो रहा है। यद्यपि इससे कार्यक्षमता बढ़ती है, किंतु

Downloaded from www.pdf.tube

वापस गांव लौटते हैं, तो वे अपने साथ नगरीय जीवन के अनुभव लेकर आते हैं। अंततः, उनके माध्यम से गांव में नगरीय उपभोग के तरीकों और आधुनिक मूल्यों का प्रसार होता है, जिससे ग्रामीण संस्कृति परिवर्तित हो जाती है।

182. (B) वंशानुगत बंधुआ मजदूरी
जब कोई मजदूर किसी ऋण के कारण पीढ़ी दर पीढ़ी किसी नियोक्ता की सेवा करने के लिए विवश होता है, तो इसे वंशानुगत बंधुआ मजदूरी कहा जाता है। यह ऋण प्रायः इतना पुरातन होता है कि मजदूर को उसकी वास्तविक राशि का भी ज्ञान नहीं होता। इस व्यवस्था में श्रमिक की व्यक्तिगत स्वतंत्रता पूर्णतः समाप्त हो जाती है और उसे नियोक्ता की शर्तों पर कार्य करना पड़ता है। यह आधुनिक समाज में अमानवीय शोषण का एक चरम स्वरूप है, जहाँ एक व्यक्ति का जन्म ही ऋण के बोझ के साथ होता है, जो सामाजिक न्याय के सिद्धांतों के सर्वथा विपरीत है।

183. (D) यह प्रतिभागियों के लिए स्वतंत्र प्रवेश और निकास वाली एक लचीली प्रणाली थी।
जजमानी प्रथा के विषय में यह धारणा त्रुटिपूर्ण है कि यह कोई लचीली या स्वतंत्र रूप से चुनी गई व्यवस्था थी। वास्तव में, यह एक अत्यंत कठोर और जाति आधारित प्रणाली थी, जहाँ जजमान और सेवा प्रदाता दोनों के अधिकार और कर्तव्य जन्म से निर्धारित होते थे। किसी व्यक्ति के लिए अपनी इच्छा से इस व्यवस्था से बाहर निकलना या अपना पारंपरिक व्यवसाय परिवर्तित करना लगभग असंभव था। इसमें संबंध स्थाई और वंशानुगत होते थे, जो सामाजिक मर्यादाओं और धार्मिक विश्वासों द्वारा नियंत्रित होते थे। अतः, इसमें स्वतंत्रता का कोई स्थान नहीं था, जो इसे आधुनिक बाजार संबंधों से पृथक बनाता है।

184. (A) ग्राम सभा और पंचायत गतिविधियों में नागरिकों की वास्तविक भागीदारी का स्तर।
73वें संशोधन की सफलता का वास्तविक मानदंड केवल चुनाव आयोजित होना नहीं, बल्कि यह है कि आम नागरिक शासन में कितने सक्रिय हैं। जब ग्राम सभा की बैठकों में लोग वृहत संख्या में भाग लेते हैं, अपनी समस्याओं पर चर्चा करते हैं और पंचायत के बजट की निगरानी करते हैं, तब सशक्तिकरण का उद्देश्य सिद्ध होता है। विशेष रूप से महिलाओं और वंचित वर्गों की सक्रिय भागीदारी यह दर्शाती है कि शक्ति का वास्तविक हस्तांतरण हुआ है। यही भागीदारी यह सुनिश्चित करती है कि स्थानीय शासन जवाबदेह, पारदर्शी और लोगों की वास्तविक आवश्यकताओं के प्रति संवेदनशील बना रहे।

185. (C) A सही है लेकिन R गलत है।
ग्रामीण भारत में व्यावसायिक विविधीकरण की प्रवृत्ति स्पष्ट रूप से देखी जा रही है, किंतु इसका कारण कृषि की उच्च लाभप्रदता नहीं है। इसके विपरीत, कृषि में बढ़ता जोखिम, घटती आय और भूमि के लघु होते आकार ने लोगों को अन्य व्यवसायों की ओर जाने के लिए प्रेरित किया है। इसे आजीविका का संकट और विविधीकरण की विवशता कहा जा सकता है। लोग अब केवल खेती पर निर्भर रहने के स्थान पर व्यापार, मजदूरी या लघु उद्योगों में प्रयास कर रहे हैं। अतः, यह विविधीकरण कृषि की सफलता के स्थान पर प्रायः उसके संकट और गैर-कृषि रोजगार की बढ़ती आवश्यकता का परिणाम है।

NODIA

186. (A) कई विकासशील समाजों में कृषक जनसंख्या का एक महत्वपूर्ण हिस्सा हैं।
ग्रामीण समाजशास्त्र में कृषक अध्ययन का महत्व इस तथ्य में निहित है कि भारत जैसे विकासशील देशों में जनसंख्या का एक अत्यंत वृहत भाग अभी भी प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से कृषि पर निर्भर है। कृषक समाज की अपनी अनूठी संरचना, संस्कृति और संघर्ष होते हैं जो संपूर्ण देश की अर्थव्यवस्था और राजनीति को प्रभावित करते हैं। इन समूहों का अध्ययन किए बिना हम निर्धनता, विकास की चुनौतियों और ग्रामीण सामाजिक परिवर्तनों को गहराई से नहीं समझ सकते। कृषक समाज की स्थिरता और संकट प्रत्यक्षतः राष्ट्रीय प्रगति और सामाजिक स्थिरता के साथ संबद्ध हैं।

187. (D) 73वां संशोधन - पंचायतों के लिए संवैधानिक अधिदेश पर आधारित
भारत में ग्रामीण विकास और शासन की विभिन्न अवधारणाओं को उनके उचित संदर्भ में समझना आवश्यक है। कृषि वर्ग आर्थिक संबंधों पर आधारित होता है, न कि धार्मिक पहचान पर। जजमानी प्रथा पारंपरिक विनिमय पर टिकी थी, न कि आधुनिक नकद लेनदेन पर। गुटबाजी सदैव विभाजन और संघर्ष का प्रतीक रही है, न कि एकता का। केवल 73वां संविधान संशोधन ही वह ऐतिहासिक कदम है जिसने पंचायतों को संवैधानिक मान्यता और अनिवार्य कानूनी दर्जा प्रदान किया। इस सुधार ने स्थानीय लोकतंत्र को एक नवीन मजबूती, एकरूपता और स्थाई संवैधानिक आधार प्रदान किया है।

188. (B) सामाजिक और आर्थिक पदानुक्रम में ऊपर या नीचे।
सामाजिक गतिशीलता ग्रामीण समाज में होने वाला एक संरचनात्मक परिवर्तन है जो व्यक्तियों या समूहों के सामाजिक दर्जे और आर्थिक स्थिति में परिवर्तन को दर्शाता है। जब कोई व्यक्ति अपनी कड़ी मेहनत, शिक्षा या नवीन तकनीकों के माध्यम से अपनी आय और प्रतिष्ठा बढ़ाता है, तो इसे ऊपर की ओर गतिशीलता कहा जाता है। इसके विपरीत, संकट के कारण स्थिति का अवनयन नीचे की ओर गतिशीलता है। यह प्रक्रिया दर्शाती है कि ग्रामीण समाज स्थिर नहीं है, बल्कि वहां लोगों के लिए अपनी परिस्थितियों को परिवर्तित करने और सामाजिक पदानुक्रम में नवीन स्थान प्राप्त करने की निरंतर संभावनाएं बनी रहती हैं।

189. (A) P-3, Q-2, R-1, S-4
ग्रामीण समाज में गतिशीलता और प्रवास के विभिन्न स्वरूप देखने को मिलते हैं। सामाजिक गतिशीलता तब होती है जब एक परिवार का पुत्र शिक्षा और नवीन सेवा के माध्यम से उच्च दर्जा प्राप्त करता है। आर्थिक गतिशीलता का अर्थ आय में होने वाली वृद्धि है, जो श्रेष्ठ फसल या लाभ से संभव होती है। ग्रामीण-नगरीय प्रवास आजीविका के लिए शहर जाने की प्रक्रिया है। अंततः, अकृषकीकरण उस स्थिति को दर्शाता है जब किसान अपनी भूमि खोकर विवशतापूर्वक मजदूर बन

206. (B) अत्यंत निर्धन होने और अपनी आजीविका के साधनों को खोने की प्रक्रिया को।
कंगालीकरण ग्रामीण समाज में व्याप्त उस गंभीर संकट को दर्शाती है जहाँ जनसंख्या का एक भाग निरंतर आर्थिक गिरावट का सामना करता है। यह केवल निर्धनता की स्थिति नहीं है, बल्कि एक ऐसी सक्रिय प्रक्रिया है जिसमें लोग अपनी भूमि, पशुधन और उपकरणों जैसे उत्पादन के साधनों को खोते चले जाते हैं। इसका परिणाम यह होता है कि वे पूर्णतः साधनहीन होकर अन्यों की अनुकंपा या न्यूनतम मजदूरी पर निर्भर हो जाते हैं। यह प्रक्रिया ग्रामीण समाज में संपत्तियों के संकेंद्रण और वृहत जनसमूह के बेसहारा होने की दुःखद वास्तविकता को उजागर करती है।

207. (D) आरक्षण प्रणाली के माध्यम से महिलाओं और अनुसूचित जाति या जनजाति के सदस्यों का।
पारंपरिक पंचायतों में नेतृत्व प्रायः गांव के उच्च जाति के वरिष्ठों और भूस्वामियों तक ही सीमित रहता था, जहाँ हाशिए के वर्गों की कोई भूमिका नहीं थी। 73वें संविधान संशोधन के पश्चात की पंचायतों में एक मौलिक बदलाव यह आया है कि अब आरक्षण के माध्यम से महिलाओं और अनुसूचित जातियों का समावेश अनिवार्य हो गया है। इस औपचारिक प्रावधान ने ग्रामीण नेतृत्व को अधिक प्रतिनिधि और लोकतांत्रिक बना दिया है। अब समाज के निर्बल वर्गों के पास भी निर्णय लेने की शक्ति है, जो सामाजिक न्याय की दिशा में एक अत्यंत वृहत और प्रभावी कदम है।

208. (A) तकनीक, श्रम और स्वामित्व सहित आर्थिक संगठन की समग्र प्रणाली को।
कृषि संरचना के संदर्भ में 'उत्पादन पद्धति' एक अत्यंत व्यापक अवधारणा है। यह केवल खेती के उपकरणों के विषय में नहीं है, बल्कि यह उस संपूर्ण आर्थिक और सामाजिक ढांचे को संदर्भित करती है जिसके अंतर्गत उत्पादन संपन्न होता है। इसमें भूमि स्वामित्व के नियम, श्रम का उपयोग करने के तरीके, जैसे कि स्वतंत्र मजदूर या बंधुआ मजदूर, और उत्पादित वस्तुओं के विपणन के संबंध सम्मिलित हैं। यह ढांचा यह समझने में सहायता करता है कि समाज सामंती अवशेषों पर आधारित है या वह आधुनिक व्यावसायिक व्यवस्था की ओर अग्रसर हो रहा है।

209. (C) नगरीय अनौपचारिक क्षेत्र में अनिश्चित परिस्थितियों में रहना और काम करना।
यद्यपि ग्रामीण-से-नगरीय प्रवास प्रायः आर्थिक उन्नति के लिए किया जाता है, किंतु प्रवासियों के लिए यह चुनौतियों से परिपूर्ण होता है। अधिकांश प्रवासी शहरों के अनौपचारिक क्षेत्र में कार्य करते हैं जहाँ न तो सेवा की सुरक्षा होती है और न ही उचित मजदूरी। उन्हें प्रायः मलिन बस्तियों में अत्यंत दयनीय और अस्वास्थ्यकर परिस्थितियों में निवास करना पड़ता है, जहाँ बुनियादी सुविधाओं का अभाव होता है। यह स्थिति उनके सामाजिक और आर्थिक अलगाव को बढ़ाती है। वे शहर का भाग तो बन जाते हैं, किंतु उसकी सुख-सुविधाओं और सुरक्षा तंत्र से प्रायः पृथक ही रह जाते हैं।

210. (B) P-4, Q-3, R-2, S-1
ग्रामीण समाज की विभिन्न अवधारणाएं वहां व्याप्त सामाजिक और आर्थिक वास्तविकताओं को स्पष्ट करती हैं। बंधुआ मजदूरी ऋण के कारण होने वाली एक प्रकार की आधुनिक दासता है। कृषक आंदोलन किसानों द्वारा अपने अधिकारों और न्याय के लिए की जाने वाली सामूहिक लामबंदी और कार्रवाई है। सामाजिक गतिशीलता वह प्रक्रिया है जिसके माध्यम से व्यक्ति सामाजिक पदानुक्रम में अपना स्थान परिवर्तित करते हैं। अकृषकीकरण उस स्थिति को दर्शाता है जब किसान अपनी भूमि खो देते हैं और उनकी पारंपरिक कृषि पहचान समाप्त हो जाती है।

211. (D) शहरों में बेहतर सुविधाओं की उपलब्धता
प्रवास के कारणों का विश्लेषण करते समय आकर्षण और विकर्षण कारकों के मध्य अंतर करना महत्वपूर्ण है। विकर्षण कारक वे नकारात्मक परिस्थितियां हैं जो लोगों को अपना गांव त्यागने के लिए विवश करती हैं, जैसे निर्धनता और रोजगार का अभाव। ये गांव की आंतरिक कमियां हैं। इसके विपरीत, शहरों में श्रेष्ठ स्वास्थ्य और आधुनिक सुविधाओं की उपलब्धता एक आकर्षण कारक है, जो अपनी गुणवत्ता के कारण लोगों को बाहर से अपनी ओर आकर्षित करता है। अतः, सुविधाओं की उपलब्धता शहर की एक सकारात्मक विशेषता है, न कि गांव का कोई दबाव।

212. (B) एक अधीनस्थ स्थिति में एक व्यापक राज्य संरचना में एकीकरण।
कृषक अध्ययन में 'कृषक' की पहचान एक ऐसे लघु उत्पादक के रूप में की जाती है जो न केवल अपनी भूमि से संबद्ध है, बल्कि एक वृहत राजनीतिक और आर्थिक व्यवस्था के अधीन है। एक स्वतंत्र किसान के विपरीत, कृषक को राज्य को लगान या कर प्रदान करना पड़ता है और वह शहरों की आर्थिक मांगों के प्रति संवेदनशील होता है। उनकी यह अधीनस्थ स्थिति ही उन्हें एक विशिष्ट वर्ग बनाती है। वे पूर्णतः स्वतंत्र उत्पादक नहीं होते, बल्कि उनका जीवन और कार्य राज्य की नीतियों और नगरीय बाजारों की आवश्यकताओं द्वारा नियंत्रित होता है।

213. (C) जमीनी स्तर पर प्रत्यक्ष, सहभागी लोकतंत्र को मजबूत करना।
73वें संविधान संशोधन ने ग्राम सभा को ग्रामीण शासन की आधारशिला के रूप में स्थापित किया है। ग्राम सभा का मुख्य उद्देश्य यह सुनिश्चित करना है कि गांव के प्रत्येक नागरिक की आवाज स्थानीय विकास की योजनाओं में सुनी जाए। यह प्रत्यक्ष लोकतंत्र का एक ऐसा मंच है जहाँ लोग सीधे तौर पर पंचायत के कार्यों की निगरानी कर सकते हैं और विकास की प्राथमिकताओं को निर्धारित कर सकते हैं। यह प्रक्रिया शासन को अधिक पारदर्शी और समावेशी बनाती है। जब लोग स्वयं निर्णय लेने की प्रक्रिया में सम्मिलित होते हैं, तो इससे लोकतंत्र वास्तव में सुदृढ़ होता है।

214. (D) पारंपरिक, जाति-आधारित, पारस्परिक सेवा संबंध।
जजमानी प्रथा भारतीय ग्रामीण समाज के एक अत्यंत जटिल सामाजिक-आर्थिक ढांचे को दर्शाती है। यह व्यवस्था विभिन्न

Click Here to Buy book on Amazon

को स्पष्ट करता है। कृषक समाज का अध्ययन राज्य संरचना के भीतर निवास करने वाले लघु उत्पादकों की अधीनता और उनकी जीवन शैली की जांच करता है। कृषि वर्ग संरचना का केंद्र भूमि संबंधों और उत्पादन के आधार पर निर्मित सामाजिक पदानुक्रम को समझना है। अंत में, जजमानी प्रथा का अध्ययन जातियों के बीच होने वाले पारंपरिक सेवा विनिमय के तंत्र का विश्लेषण करता है जो सदियों से ग्रामीण भारत की विशेषता रही है।

166. (B) किसानों की ऋणग्रस्तता और उपज के लिए अलाभकारी मूल्य।
समकालीन भारत में कृषि अशांति का मुख्य कारण कृषि क्षेत्र में व्याप्त गहरा आर्थिक संकट है। किसानों को अपनी फसलों के उत्पादन के लिए आवश्यक लागत, जैसे बीज और उर्वरक में भारी वृद्धि का सामना करना पड़ रहा है, जबकि उन्हें अपनी उपज का लाभकारी मूल्य प्राप्त नहीं हो पा रहा है। इसके परिणामस्वरूप, किसान ऋण के बोझ तले दबते जा रहे हैं, जिससे उनकी आजीविका पर गंभीर संकट मंडरा रहा है। यह आर्थिक असुरक्षा और लाभ में कमी ही किसानों को संगठित होकर विरोध प्रदर्शन करने और अपनी मांगों के लिए सड़कों पर उतरने के लिए प्रेरित करती है।

167. (B) सामाजिक-आर्थिक गतिशीलता
जब कोई वंचित परिवार आर्थिक रूप से समृद्ध होता है और इसके परिणामस्वरूप समाज में अपनी प्रतिष्ठा भी परिष्कृत कर लेता है, तो यह सामाजिक-आर्थिक गतिशीलता का उदाहरण है। ग्रामीण समाज में धन और भूमि केवल भौतिक संपत्ति नहीं हैं, बल्कि वे सामाजिक प्रतिष्ठा और शक्ति के प्रमुख स्रोत भी हैं। आर्थिक स्थिति में सुधार प्रायः परिवार को श्रेष्ठ शिक्षा और स्वास्थ्य सुविधाएं प्राप्त करने में सक्षम बनाता है, जिससे वे पारंपरिक बाधाओं को पार कर उच्च सामाजिक दर्जा प्राप्त करते हैं। यह द्विआयामी परिवर्तन दर्शाता है कि आर्थिक प्रगति किस प्रकार व्यापक सामाजिक उत्थान का मार्ग प्रशस्त करती है।

168. (A) यह वार्षिक रूप से नवीनीकृत औपचारिक लिखित अनुबंध पर आधारित संबंध था।
जजमानी प्रथा की सबसे प्रमुख विशेषता यह थी कि यह किसी भी प्रकार के आधुनिक या लिखित अनुबंध पर आधारित नहीं थी। इसके विपरीत, यह पूर्णतः सदियों पुरानी परंपराओं, रीति-रिवाजों और सामाजिक दायित्वों पर आधारित एक अनौपचारिक व्यवस्था थी। इसमें संबंध वंशानुगत और स्थाई होते थे, जो पीढ़ी दर पीढ़ी चलते रहते थे। जजमान और सेवा प्रदाता के बीच का विनिमय मुख्य रूप से वस्तुओं के रूप में होता था, न कि नकद भुगतान के रूप में। अतः, यह कहना त्रुटिपूर्ण है कि यह वार्षिक रूप से नवीनीकृत होने वाला कोई औपचारिक या संविदात्मक संबंध था।

169. (A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
ग्रामीण भारत में बंधुआ मजदूरी एक अत्यंत गंभीर और जटिल सामाजिक समस्या बनी हुई है, जो मानवीय गरिमा का उल्लंघन करती है। इसकी जड़ें ग्रामीण समाज की शोषणकारी कृषि संरचना और व्यापक ऋणग्रस्तता में निहित हैं। जब निर्धन और साधनहीन लोग अपनी बुनियादी आवश्यकताओं के लिए ऋण लेते हैं, तो वे अपनी श्रम शक्ति को गिरवी रख देते हैं। यह निर्भरता का एक ऐसा चक्र है जहाँ मजदूर अपनी व्यक्तिगत स्वतंत्रता खो देता है और नियोक्ता के पूर्ण नियंत्रण में आ जाता है। यह मुद्दा ग्रामीण अर्थव्यवस्था में व्याप्त असमानता और शोषण के गहरे संकट को उजागर करता है।

170. (A) एकजुट, प्रतिस्पर्धी समूहों का अस्तित्व जो शक्ति और संसाधनों के लिए प्रतिस्पर्धा करते हैं।
ग्रामीण नेतृत्व के संदर्भ में गुटबाजी वह स्थिति है जहाँ गांव का समुदाय कुछ शक्तिशाली नेताओं के नेतृत्व वाले परस्पर विरोधी समूहों में विभाजित हो जाता है। ये गुट प्रायः अपने सदस्यों के हितों को गांव के सामूहिक कल्याण से ऊपर रखते हैं। इनके मध्य संसाधनों, जैसे जल, भूमि और पंचायत के पदों पर नियंत्रण के लिए निरंतर संघर्ष चलता रहता है। गुटबाजी सामुदायिक एकता को खंडित करती है और प्रायः विकास परियोजनाओं के प्रभावी क्रियान्वयन में वृहत बाधा बनती है, क्योंकि एक गुट दूसरे समूह के प्रत्येक कार्य का विरोध करने का प्रयास करता है।

171. (D) कृषि से परे ग्रामीण अर्थव्यवस्था का बढ़ता विविधीकरण।
आधुनिक ग्रामीण समाज में हो रहा एक अत्यंत महत्वपूर्ण परिवर्तन ग्रामीण अर्थव्यवस्था का विविधीकरण है। अब ग्रामीण क्षेत्रों में आजीविका के साधन केवल पारंपरिक खेती तक सीमित नहीं रह गए हैं। लोग अब व्यापार, लघु उद्योगों, परिवहन और विभिन्न सेवाओं में तीव्रता से संलग्न हो रहे हैं। यह विविधीकरण ग्रामीण आय को स्थिर करने और कृषि पर जनसंख्या के दबाव को अल्प करने में सहायक हो रहा है। इसके साथ ही, श्रेष्ठ शिक्षा और बाजार के विस्तार ने ग्रामीणों को नवीन कौशल सीखने और गैर-कृषि रोजगार प्राप्त करने के अवसर प्रदान किए हैं, जिससे ग्रामीण जीवन शैली परिवर्तित हो रही है।

NODIA

172. (B) भूमि पर अपनी स्वायत्तता खो देते हैं और खेतिहर मजदूर बन जाते हैं।
अकृषकीकरण वह प्रक्रिया है जिसके माध्यम से स्वतंत्र कृषक धीरे-धीरे उत्पादन के साधनों, मुख्य रूप से भूमि पर अपना नियंत्रण खो देते हैं। यह प्रायः ऋण, आर्थिक विवशता या भूमि के छोटे-छोटे टुकड़ों में विखंडन के कारण होता है। जब किसान अपनी भूमि बेचने या खोने पर विवश होते हैं, तो उन्हें अपनी आजीविका के लिए अन्यों के खेतों पर मजदूरी करनी पड़ती है। यह परिवर्तन कृषकों को स्वावलंबी उत्पादकों से भूमिहीन और आश्रित श्रमिकों में परिवर्तित कर देता है, जो ग्रामीण समाज की वर्ग संरचना में एक गहरे और कष्टकारी बदलाव को दर्शाता है।

173. (C) कृषि क्षेत्र के भीतर सामाजिक तनाव और संघर्षों की अभिव्यक्ति।
कृषि अशांति शब्द ग्रामीण समाज में विद्यमान असंतोष और संकट की गहरी स्थितियों को इंगित करता है। यह तब उत्पन्न होती है जब कृषि संरचना में व्याप्त शोषण, असमानता और आर्थिक कठिनाइयां असहनीय हो जाती हैं। इसके

223. (D) रैयतवाड़ी स्वामित्व
रैयतवाड़ी प्रणाली औपनिवेशिक भारत में भूमि स्वामित्व का एक विशिष्ट स्वरूप थी, जो मुख्य रूप से दक्षिण और पश्चिम भारत में लागू की गई थी। इस व्यवस्था में सरकार ने जमींदारों को हटाकर सीधे कृषकों या 'रैयतों' के साथ समझौता किया था। किसानों को उनकी भूमि का कानूनी स्वामी माना गया था और उनके पास इसे विक्रय करने का अधिकार था। वे सीधे राज्य को राजस्व का भुगतान करते थे। यद्यपि इसने जमींदारों के शोषण को अल्प किया, किंतु सरकार द्वारा निर्धारित उच्च राजस्व दरों ने प्रायः किसानों को ऋणग्रस्तता की ओर धकेला।

224. (B) वंशानुगत सेवा दायित्वों का सुदृढ़ीकरण।
जजमानी प्रथा का पतन ग्रामीण भारत में पारंपरिक संबंधों के आधुनिक बाजार संबंधों में परिवर्तित होने का संकेत है। इस गिरावट के कारण सदियों पुरातन वंशानुगत सेवा दायित्व अब निर्बल हो रहे हैं और लोग अपनी रुचि के नवीन व्यवसायों को अपनाने के लिए स्वतंत्र हो रहे हैं। अब सेवाओं का विनिमय जातिगत कर्तव्यों के स्थान पर नकद भुगतान और अल्पकालिक अनुबंधों पर आधारित है। यह परिवर्तन पूर्व सेवा जातियों को सामाजिक रुप से अधिक गतिशील बनाने में सहायक सिद्ध हो रहा है। अतः, इस प्रक्रिया से पुरातन दायित्व सुदृढ़ नहीं होते, बल्कि वे धीरे-धीरे समाप्त हो रहे हैं।

225. (C) बाजार संबंधों के साथ-साथ पट्टेदारी, बटाईदारी और ऋण-दासता का बने रहना।
कुछ विद्वान भारतीय कृषि को 'अर्ध-सामंती' मानते हैं क्योंकि यहाँ आधुनिक बाजार व्यवस्था के साथ-साथ शोषण के पुरातन और दमनकारी रूप अभी भी विद्यमान हैं। इसमें पट्टेदारी की अनिश्चित शर्तें और ऋण के कारण होने वाली विवशता सम्मिलित है, जो मजदूरों को स्वतंत्र होने से रोकती है। ऐसी व्यवस्था में किसान बाजार से जुड़ा तो है, किंतु वह अपनी आर्थिक स्वतंत्रता का पूर्णतः उपयोग नहीं कर पाता क्योंकि वह साहूकारों और बड़े भूस्वामियों के प्रभाव में रहता है। यह जटिलता भारतीय ग्रामीण अर्थव्यवस्था के संक्रमणकालीन स्वरूप को गहराई से उजागर करती है।

226. (B) खेतिहर मजदूरों की संख्या में भारी वृद्धि।
अकृषकीकरण की प्रक्रिया का सबसे गंभीर प्रभाव ग्रामीण वर्ग संरचना के असंतुलन के रूप में प्रकट होता है। जब लघु किसान अपनी भूमि खो देते हैं या खेती उनके लिए अलाभकारी हो जाती है, तो वे खेतिहर मजदूरों के वर्ग में सम्मिलित हो जाते हैं। इसके परिणामस्वरूप, स्वतंत्र किसानों की संख्या न्यून हो जाती है और उन लोगों की संख्या में वृहत वृद्धि होती है जो आजीविका के लिए केवल अपनी श्रम शक्ति को अन्यों के खेतों पर विक्रय करने के लिए विवश हैं। यह बदलाव ग्रामीण समाज में आर्थिक असुरक्षा और वर्गों के मध्य की खाई को और अधिक विस्तृत कर देता है।

227. (D) ग्रामीण नेतृत्व के पैटर्न में बदलाव
ग्रामीण नेतृत्व में आने वाला बदलाव एक महत्वपूर्ण सामाजिक परिवर्तन है। पारंपरिक रूप से नेतृत्व उन लोगों के पास था जिनकी सामाजिक स्थिति उच्च थी और जिनके पास अधिक भूमि थी। किंतु अब शिक्षा और पंचायती राज व्यवस्था के कारण एक नवीन और युवा नेतृत्व उभर रहा है। ये नवीन नेता प्रायः वंचित वर्गों से आते हैं और वे पारंपरिक सत्ता संरचनाओं को चुनौती दे रहे हैं। यह बदलाव दर्शाता है कि ग्रामीण राजनीति अब विरासत के स्थान पर योग्यता और लोकतांत्रिक समर्थन की ओर अग्रसर हो रही है, जो ग्रामीण समाज के सशक्तिकरण का एक प्रमुख भाग है।

228. (B) ग्रामीण समस्याओं की पहचान करना और उनके समाधान के तरीके खोजना।
ग्रामीण विकास के लिए सामाजिक मुद्दों और रणनीतियों का मुख्य उद्देश्य ग्रामीण समाज की वास्तविक चुनौतियों का गहराई से अध्ययन करना है। इसमें निर्धनता, ऋणग्रस्तता, भूमिहीनता और सामाजिक असमानता जैसे महत्वपूर्ण मुद्दों का विश्लेषण किया जाता है। इसके आधार पर ऐसी व्यावहारिक रणनीतियां निर्मित की जाती हैं जो इन समस्याओं को समाप्त कर सकें और ग्रामीणों को सशक्त बना सकें। यह विषय केवल सिद्धांत तक सीमित नहीं है, बल्कि यह ग्रामीण जीवन को श्रेष्ठ बनाने के लिए शिक्षा और आर्थिक अवसरों के विस्तार पर विशेष ध्यान केंद्रित करता है।

229. (C) बंधुआ मजदूरी
जब किसी मजदूर को अग्रिम भुगतान के बदले विवशतापूर्वक कार्य पर रखा जाता है और उसकी स्वतंत्रता छीन ली जाती है, तो यह बंधुआ मजदूरी का एक आधुनिक स्वरूप है। ऐसी स्थिति में श्रमिक तब तक कार्य छोड़ने के लिए स्वतंत्र नहीं होता जब तक वह ली गई राशि को चुका न दे, जो प्रायः दुष्कर शर्तों के कारण असंभव हो जाता है। यह व्यवस्था पूर्णतः शोषणकारी और अमानवीय है, क्योंकि इसमें मजदूर का अपने श्रम पर कोई अधिकार नहीं रह जाता। यह ग्रामीण क्षेत्रों में व्याप्त आर्थिक विवशता और शोषण की गंभीर वास्तविकता को दर्शाता है।

230. (D) कृषि अशांति या कृषक आंदोलन
किसानों का अपनी भूमि के अधिग्रहण के विरोध में संगठित होकर संघर्ष करना कृषि अशांति और कृषक आंदोलन का एक स्पष्ट उदाहरण है। यह सामूहिक लामबंदी तब होती है जब कृषक समुदाय को अनुभव होता है कि उनके अधिकारों या आजीविका के साधन पर संकट मंडरा रहा है। ऐसे आंदोलनों के माध्यम से किसान अपनी शक्ति का प्रदर्शन करते हैं और राज्य की नीतियों को परिवर्तित करने के लिए दबाव निर्मित करते हैं। यह प्रक्रिया दर्शाती है कि किसान अपने हितों के प्रति सचेत हैं और वे अन्याय के विरुद्ध सामूहिक रूप से संघर्ष करने हेतु तत्पर हैं।

231. (A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण से ग्रामीण और नगरीय क्षेत्रों को दो पूर्णतः पृथक और बंद श्रेणियों में नहीं विभाजित किया जा सकता। इसके स्थान पर, इन्हें एक 'सातत्य' के रूप में देखना अधिक वैज्ञानिक है, जहाँ एक पक्ष पर विशुद्ध ग्रामीण जीवन है और दूसरी ओर महानगर। मध्य की अनेक बस्तियां और कस्बे ऐसे होते हैं जहाँ ग्रामीण सादगी और नगरीय आधुनिकता का अनूठा मिश्रण पाया जाता है। जैसे-जैसे विकास बढ़ रहा है,

NODIA

ही, यह कानून भारतीय संघवाद की भावना के अनुरूप राज्यों को यह लचीलापन भी प्रदान करता है कि वे अपनी विशिष्ट स्थानीय आवश्यकताओं के अनुसार पंचायतों को सौंपी जाने वाली शक्तियों और कार्यों का निर्धारण कर सकें। यह संतुलन सुनिश्चित करता है कि पंचायतों के पास एक स्थाई संवैधानिक आधार हो, किंतु साथ ही वे स्थानीय विकास में प्रभावी भूमिका निभाने के लिए पर्याप्त रूप से स्वतंत्र भी रहें।

266. (A) कृषक अध्ययन - छोटे पैमाने के कृषि उत्पादकों पर ध्यान।
कृषक अध्ययन समाजशास्त्र का वह महत्वपूर्ण क्षेत्र है जो मुख्य रूप से उन लघु कृषि उत्पादकों की सामाजिक और आर्थिक स्थितियों का विश्लेषण करता है जो अपनी आजीविका के लिए भूमि पर निर्भर हैं। यह अध्ययन उनकी विशिष्ट जीवन शैली और राज्य के साथ उनके संबंधों की जांच करता है। अन्य अवधारणाएं जैसे ग्रामीणता, वास्तव में समरूपता और घनिष्ठता से संबद्ध हैं, न कि विषमता से। इसी प्रकार, कृषि संबंध ग्रामीण भूमि संबंधों पर केंद्रित होते हैं और 73वां संशोधन सत्ता के विकेंद्रीकरण का प्रतीक है। अतः, कृषक अध्ययन का विवरण ही यहाँ सटीक है।

267. (C) अंतर-पीढ़ीगत ऋण और बलप्रयोग
बंधुआ मजदूरी की घटना मुख्य रूप से ग्रामीण क्षेत्रों में व्याप्त ऋणग्रस्तता और सामाजिक असमानता का परिणाम है। यह स्थिति तब और विकट हो जाती है जब ऋण अंतर-पीढ़ीगत हो जाता है, जहाँ एक व्यक्ति को अपने पूर्वजों द्वारा लिए गए ऋण को चुकाने के लिए आजीवन न्यून मजदूरी पर कार्य करना पड़ता है। इसमें नियोक्ता द्वारा शारीरिक और मानसिक बलप्रयोग सम्मिलित होता है, जिससे श्रमिक की व्यक्तिगत स्वतंत्रता पूर्णतः समाप्त हो जाती है। यह अमानवीय व्यवस्था दर्शाती है कि किस प्रकार ऋण के बोझ का उपयोग लोगों को निरंतर अधीनता और शोषण की स्थिति में रखने के लिए किया जाता है।

268. (D) ग्रामीण समाज में परिवर्तन की प्रवृत्तियों का।
ग्रामीण समाजशास्त्र में व्यावसायिक प्रतिमानों का अध्ययन यह समझने के लिए अनिवार्य है कि समाज किस दिशा में विकसित हो रहा है। जब ग्रामीण लोग पारंपरिक खेती को त्यागकर गैर-कृषि गतिविधियों, जैसे व्यापार और सेवाओं की ओर अग्रसर होते हैं, तो यह ग्रामीण अर्थव्यवस्था के विविधीकरण को दर्शाता है। यह बदलाव ग्रामीण समाज में होने वाले व्यापक परिवर्तनों की एक प्रमुख प्रवृत्ति है, जो आधुनिकीकरण और बाजार के बढ़ते प्रभाव का परिणाम है। इन परिवर्तनों का अध्ययन करके ही हम ग्रामीण विकास की नवीन चुनौतियों और अवसरों का यथार्थवादी आकलन कर सकते हैं।

269. (C) हरित क्रांति और बढ़ता व्यावसायीकरण।
भारतीय कृषि में 'उत्पादन पद्धति' पर होने वाली सैद्धांतिक बहस को 1960 और 70 के दशक में हरित क्रांति के आगमन ने एक नवीन मोड़ प्रदान किया। इस तकनीकी बदलाव ने कृषि उत्पादन के तरीकों को परिवर्तित किया और ग्रामीण क्षेत्रों में पूंजीवादी खेती के विकास को गति प्रदान की। इसके परिणामस्वरूप, पुरातन पट्टेदारी संबंधों में बदलाव आया और कृषि का वृहत स्तर पर व्यावसायीकरण हुआ। विद्वान यह समझने के लिए उत्सुक थे कि क्या यह परिवर्तन ग्रामीण समाज में शोषण के नवीन पूंजीवादी रूप ग्रहण कर रहा है। यह बहस आधुनिक ग्रामीण वर्ग संरचना को समझने का आधार निर्मित करती है।

270. (B) पारंपरिक, प्रदत्त नेतृत्व
ग्रामीण नेतृत्व का वह रूप जहाँ कोई व्यक्ति अपनी सामाजिक प्रतिष्ठा और अधिकार अपने परिवार की विरासत, उच्च जाति या प्रचुर भूमि स्वामित्व से प्राप्त करता है, पारंपरिक और प्रदत्त नेतृत्व कहलाता है। यह नेतृत्व जन्म से निर्धारित होता है और इसे समाज में स्वाभाविक रूप से स्वीकार किया जाता था। ऐसे नेता अक्सर गांव के सामाजिक और आर्थिक जीवन पर गहरा प्रभाव रखते हैं। यद्यपि आधुनिक चुनावों ने इस ढांचे को चुनौती प्रदान की है, किंतु अनेक गांवों में आज भी पुरातन प्रभावशाली परिवारों का वर्चस्व बना हुआ है, जो ग्रामीण सत्ता संरचना में परंपरा की गहरी जड़ों को दर्शाता है।

271. (D) ग्रामीण समाज के अध्ययन के दृष्टिकोण
ग्रामीण समाजशास्त्र के अंतर्गत ग्रामीण समाज के अध्ययन के विभिन्न दृष्टिकोण सबसे व्यापक और मौलिक विषय हैं, क्योंकि ये संपूर्ण क्षेत्र की सैद्धांतिक नींव रखते हैं। ये दृष्टिकोण ही यह निर्धारित करते हैं कि हम ग्रामीण समस्याओं और संरचनाओं को किस दृष्टिकोण से देखते हैं, चाहे वह संरचनात्मक-प्रकार्यात्मक हो या मार्क्सवादी। जजमानी प्रथा, पंचायती राज और प्रवासी मजदूर जैसे विषय इसी व्यापक ढांचे के भीतर आने वाले विशिष्ट अध्ययन क्षेत्र हैं। इन दृष्टिकोणों को समझकर ही हम ग्रामीण समाज की जटिलताओं और उसमें होने वाले निरंतर परिवर्तनों का व्यवस्थित और वैज्ञानिक विश्लेषण करने में सक्षम हो पाते हैं।

272. (A) स्थानीय निर्वाचित निकायों को शक्तियों, कार्यों और वित्त का हस्तांतरण।
73वें संविधान संशोधन के पश्चात पंचायती राज व्यवस्था में 'लोगों के सशक्तिकरण' का वास्तविक अर्थ सत्ता का वास्तविक विकेंद्रीकरण करना है। इसका उद्देश्य केवल चुनाव आयोजित करना नहीं, बल्कि निर्वाचित पंचायतों को पर्याप्त प्रशासनिक शक्तियां, महत्वपूर्ण विकास कार्यों का उत्तरदायित्व और आवश्यक वित्तीय संसाधन प्रदान करना है। जब स्थानीय निकायों के पास अपने क्षेत्र के विकास के लिए निर्णय लेने की वास्तविक क्षमता होती है, तभी आम ग्रामीण शासन प्रक्रिया में सहभागी अनुभव करते हैं। यह प्रक्रिया जनता को सशक्त बनाती है और लोकतंत्र को गांव के स्तर पर वास्तव में प्रभावी बनाती है।

273. (C) समाज में खुलेपन और स्तरीकरण के स्तर।
सामाजिक गतिशीलता की अवधारणा समाजशास्त्रियों को यह विश्लेषण करने में सहायता करती है कि समाज कितना गतिशील और न्यायपूर्ण है। यदि किसी समाज में व्यक्ति अपनी मेहनत और शिक्षा के माध्यम से अपना सामाजिक दर्जा परिवर्तित कर सकते हैं, तो वह एक 'खुला' समाज कहलाता है। इसके विपरीत, जहाँ जन्म और जाति ही सब कुछ निर्धारित

Downloaded from www.pdf.tube

उन वर्गों, विशेष रुप से महिलाओं और अनुसूचित जातियों को निर्णय लेने की प्रक्रिया में सम्मिलित करना है जिन्हें सदियों से सत्ता से पृथक रखा गया था। यह आरक्षण उन्हें न केवल चुनाव लड़ने का अवसर प्रदान करता है, बल्कि उन्हें पंचायतों में एक निश्चित आवाज और प्रभाव भी प्रदान करता है। इस राजनीतिक सशक्तिकरण से विकास योजनाओं में समाज के निम्नतम तबके की आवश्यकताओं को प्राथमिकता मिलना संभव हो पाया है।

241. (B) केवल 1 और 2
प्रवास एक बहुआयामी सामाजिक प्रक्रिया है जो आकर्षण और विकर्षण दोनों कारकों के प्रभाव से उत्पन्न होती है। गाँव की निर्धनता लोगों को बाहर धकेलती है, जबकि शहरों की श्रेष्ठ नौकरियाँ उन्हें अपनी ओर आकर्षित करती हैं। प्रवास का प्रभाव केवल व्यक्ति पर ही नहीं, बल्कि उस स्थान पर भी पड़ता है जहाँ से वह जाता है। यह मूल स्थान पर आर्थिक आय प्रेषित कर लाभ पहुँचाता है, किंतु वहां श्रम की न्यूनता भी उत्पन्न कर सकता है। इसी प्रकार, गंतव्य क्षेत्रों में यह श्रम की आपूर्ति करता है किंतु संसाधनों पर दबाव भी बढ़ाता है।

242. (A) महलवाड़ी प्रणाली
महलवाड़ी प्रणाली औपनिवेशिक भारत में भू-राजस्व की एक विशिष्ट व्यवस्था थी, जो मुख्य रुप से उत्तर-पश्चिमी प्रांतों और पंजाब में लागू की गई थी। इस व्यवस्था में राजस्व का समझौता व्यक्तिगत किसानों के स्थान पर संपूर्ण गांव या 'महल' के साथ किया जाता था। गांव के सभी भूस्वामी संयुक्त रुप से राज्य को राजस्व प्रदान करने के लिए उत्तरदायी होते थे। गांव का मुखिया प्रायः राजस्व एकत्रित करने और उसे सरकार को जमा करने का कार्य करता था। यह प्रणाली ग्रामीण समुदाय के सामूहिक उत्तरदायित्व और पारंपरिक संरचना पर आधारित थी।

243. (D) वर्ग संबंधों की प्रकृति और आर्थिक शोषण।
भारतीय कृषि के संदर्भ में उत्पादन पद्धति पर होने वाली सैद्धांतिक बहस का मूल केंद्र यह समझना है कि ग्रामीण समाज में आर्थिक शक्ति का वितरण किस प्रकार होता है। यह चर्चा इस विषय पर आधारित है कि भूमि का स्वामी कौन है और वह मजदूरों से कार्य किस प्रकार करवाता है। विद्वान यह विश्लेषण करते हैं कि क्या यहाँ के संबंध सामंती हैं, जहाँ गैर-आर्थिक दबाव से शोषण होता है, या फिर वे पूंजीवादी बन चुके हैं जहाँ लाभ प्रधान हैं। यह बहस ग्रामीण वर्गों के मध्य के तनावों और भविष्य के आर्थिक विकास के स्वरुप को स्पष्ट करती है।

244. (B) प्रस्थिति और पारस्परिकता पर आधारित संबंधों से अनुबंध और नकद पर आधारित संबंधों की ओर।
जजमानी प्रथा का पतन ग्रामीण भारत के सामाजिक और आर्थिक ताने-बाने में आने वाले एक वृहत बदलाव का प्रतीक है। यह परिवर्तन पारंपरिक जातिगत दायित्वों की समाप्ति और आधुनिक बाजार व्यवस्था के उदय को दर्शाता है। अब ग्रामीण क्षेत्रों में सेवाएं और श्रम व्यक्तिगत वफादारी के स्थान पर नकद भुगतान और स्पष्ट कानूनी अनुबंधों पर आधारित हैं। यह बदलाव व्यक्ति को अपने पारंपरिक कार्यों से मुक्त होकर नवीन आजीविका चुनने की स्वतंत्रता प्रदान करता है। यह ग्रामीण समाज के व्यावसायिक संबंधों के आधुनिकीकरण की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है।

245. (A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
भारतीय ग्रामीण नेतृत्व की प्रकृति में एक स्पष्ट परिवर्तन आ रहा है। पूर्व में नेतृत्व केवल उन लोगों तक सीमित था जो उच्च जाति में उत्पन्न हुए थे और जिनके पास विरासत में मिली भूमि थी, जिसे प्रदत्त नेतृत्व कहा जाता है। अब, पंचायतों में नियमित लोकतांत्रिक चुनावों और आरक्षण की व्यवस्था ने इस पुरातन परंपरा को भंग कर दिया है। शिक्षा और राजनीतिक समझ जैसे अर्जित गुण अब नेतृत्व प्राप्त करने के लिए अधिक महत्वपूर्ण हो गए हैं। यह बदलाव दर्शाता है कि ग्रामीण समाज अब अधिक जागरूक हो रहा है, जहाँ व्यक्ति की योग्यता उसके जन्म से अधिक मूल्यवान है।

NODIA

246. (D) भूमि, बाजार और राज्य।
कृषक अध्ययन समाजशास्त्र का एक महत्वपूर्ण क्षेत्र है जो लघु उत्पादकों की सामाजिक स्थिति का विश्लेषण करता है। इसका मुख्य केंद्र यह समझना है कि कृषक अपनी भूमि के साथ किस प्रकार जुड़े हैं, वे बाजार की आर्थिक शक्तियों से कैसे प्रभावित होते हैं और वे राज्य की नीतियों के अधीन किस प्रकार कार्य करते हैं। कृषक समाज पूर्णतः स्वतंत्र नहीं होता, बल्कि वह इन तीनों स्तंभों के मध्य एक जटिल संतुलन में निवास करता है। इन संबंधों का अध्ययन करके ही हम कृषकों के संकट और बदलते ग्रामीण परिवेश में उनकी भूमिका को गहराई से समझ सकते हैं।

247. (A) पंचायतों की वित्तीय स्थिति की समीक्षा करना और संसाधन साझा करने के सिद्धांतों की सिफारिश करना।
73वें संविधान संशोधन ने पंचायती राज संस्थाओं को आर्थिक रुप से सशक्त करने के लिए प्रत्येक राज्य में राज्य वित्त आयोग के गठन को अनिवार्य बनाया है। इस आयोग का सबसे महत्वपूर्ण कार्य राज्यपाल को यह अनुशंसा करना है कि राज्य सरकार द्वारा एकत्रित करों के राजस्व को राज्य और पंचायतों के बीच किस प्रकार विभाजित किया जाए। यह आयोग पंचायतों को दिए जाने वाले अनुदानों और उनके अपने राजस्व स्रोतों को सुदृढ़ करने के उपायों पर भी सुझाव प्रदान करता है। इसका उद्देश्य पंचायतों को वित्तीय रूप से आत्मनिर्भर और जवाबदेह स्थानीय निकाय बनाना है।

248. (B) उपरोक्त सभी
जब कोई ग्रामीण परिवार श्रेष्ठ जीवन और आजीविका की खोज में शहर की ओर पलायन करता है, तो यह अनेक सामाजिक और आर्थिक प्रक्रियाओं को एक साथ दर्शाता है। भौतिक रूप से यह ग्रामीण-से-नगरीय प्रवास है। आर्थिक दृष्टिकोण से, यह नवीन आजीविका और उच्च आय प्राप्त करने का प्रयास है, जिसे आर्थिक गतिशीलता कहा जाता है। साथ ही, शहर में निवास करने और कार्य करने से उनकी सामाजिक स्थिति और जीवन स्तर में जो परिवर्तन आता है, वह सामाजिक गतिशीलता का प्रतीक है। अतः, यह बहुआयामी प्रक्रिया ग्रामीण जीवन के रूपांतरण की आकांक्षा को व्यक्त करती है।

क्योंकि ग्रामीण भूमि संबंध मुख्य रूप से व्यक्तिगत खेती या सामुदायिक नियंत्रण के इर्द-गिर्द निर्मित होते हैं जो निर्वाह और स्थानीय उत्पादन पर केंद्रित होते हैं।

298. (C) बंधुआ मजदूरी
बंधुआ मजदूरी शोषण का एक चरम अमानवीय स्वरूप है, जो मुख्य रूप से ऋणग्रस्तता से उत्पन्न होता है। इस व्यवस्था में श्रमिक अपनी आर्थिक विवशता के कारण नियोक्ता से लिए गए ऋण के बदले अपनी श्रम शक्ति को गिरवी रख देता है। इसकी सबसे भयानक विशेषता यह है कि मजदूर की व्यक्तिगत स्वतंत्रता पूर्णतः समाप्त हो जाती है और वह नियोक्ता की अनुमति के बिना कहीं जा नहीं सकता। यह प्रायः पीढ़ी दर पीढ़ी चलने वाला विवश श्रम है, जहाँ ऋण चुकाना लगभग असंभव बना दिया जाता है। यह व्यवस्था मानवीय गरिमा का उल्लंघन करती है और ग्रामीण समाज में व्याप्त गहरे शोषण और अन्याय को दर्शाती है।

299. (C) उत्पादन की पद्धति पर बहस
भारतीय ग्रामीण अर्थव्यवस्था की प्रकृति को समझने के लिए समाजशास्त्रियों और अर्थशास्त्रियों के मध्य होने वाली सैद्धांतिक चर्चा को 'उत्पादन पद्धति पर बहस' कहा जाता है। इस बहस का मुख्य केंद्र यह विश्लेषण करना है कि क्या ग्रामीण भारत में आज भी सामंती अवशेष जैसे कि बेगार और ऋण-दासता का वर्चस्व है, या यह पूर्णतः पूंजीवादी व्यवस्था में परिवर्तित हो चुकी है जहाँ लाभ और स्वतंत्र मजदूरी श्रम मुख्य आधार हैं। यह चर्चा ग्रामीण वर्ग संरचना, शक्ति संबंधों और भविष्य के आर्थिक विकास के स्वरूप को समझने के लिए एक आवश्यक और व्यापक वैचारिक ढांचा प्रदान करती है।

300. (D) स्थानीय शासन को अधिक समावेशी और प्रतिनिधि बनाना।
पंचायती राज व्यवस्था में आरक्षण के माध्यम से समाज के वंचित वर्गों और महिलाओं का सशक्तिकरण करना एक दूरगामी लोकतांत्रिक कदम है। इस रणनीति का मुख्य उद्देश्य यह सुनिश्चित करना है कि स्थानीय शासन की निर्णय लेने वाली प्रक्रियाओं में उन लोगों की भी प्रभावी आवाज हो जिन्हें ऐतिहासिक रूप से हाशिए पर रखा गया था। जब अनुसूचित जातियां और महिलाएं नेतृत्व संभालती हैं, तो वे अपने समुदाय की विशिष्ट समस्याओं को योजनाओं में श्रेष्ठ ढंग से सम्मिलित कर पाती हैं। यह प्रक्रिया स्थानीय शासन को केवल शक्तिशाली समूहों तक सीमित रहने के स्थान पर संपूर्ण समाज के लिए अधिक समावेशी और प्रतिनिधि बनाने का कार्य करती है।

Click Here to Buy book on Amazon

257. (C) कृषि अशांति
जब किसान अपनी मेहनत की उपज के लिए लाभकारी और उचित मूल्य प्राप्त करने में विफल रहते हैं, तो उनमें व्याप्त असंतोष सामूहिक विरोध के रूप में सम्मुख आता है, जिसे कृषि अशांति कहा जाता है। यह अशांति प्रायः तब और तीव्र हो जाती है जब बाजार की कीमतें गिर जाती हैं और किसान ऋण के बोझ के साथ-साथ अपने परिवार के अस्तित्व के संकट का सामना करते हैं। किसानों का संगठित होकर प्रदर्शन करना इस बात का प्रमाण है कि वे अपनी आर्थिक असुरक्षा के प्रति सचेत हैं और वे सरकार से न्यायपूर्ण नीतियों की मांग कर रहे हैं, जो उनकी आजीविका की रक्षा कर सकें।

258. (A) अक्सर परस्पर संबंधित, जिसमें आर्थिक स्थिति में परिवर्तन सामाजिक स्थिति को प्रभावित करते हैं।
ग्रामीण संदर्भ में आर्थिक और सामाजिक गतिशीलता एक-दूसरे के पूरक और अत्यंत निकटता से जुड़े हुए हैं। जब किसी व्यक्ति या परिवार की आय और संपत्ति में सुधार होता है, तो उनकी सामाजिक प्रतिष्ठा और गांव के निर्णय लेने की प्रक्रिया में उनका प्रभाव भी बढ़ जाता है। उदाहरण के लिए, आर्थिक रूप से सफल होना किसी व्यक्ति को श्रेष्ठ शिक्षा और राजनीतिक पद प्राप्त करने में सहायता कर सकता है, जो उनकी सामाजिक स्थिति को उच्च उठाता है। यह अंतर्संबंध दर्शाता है कि ग्रामीण समाज में समृद्धि केवल भौतिक लाभ नहीं है, बल्कि यह व्यापक सामाजिक उत्थान का मुख्य आधार भी है।

259. (D) समग्र अर्थव्यवस्था में कृषि के महत्व में गिरावट।
आधुनिक विश्व में ग्रामीण समाजों में परिवर्तन की एक प्रमुख और सार्वभौमिक प्रवृत्ति अर्थव्यवस्था में कृषि के घटते सापेक्ष महत्व के रूप में देखी जा रही है। यद्यपि भोजन की मांग बढ़ रही है, किंतु सकल घरेलू उत्पाद और कुल रोजगार में कृषि का योगदान निरंतर अल्प हो रहा है। ग्रामीण आबादी अब तीव्रता से गैर-कृषि क्षेत्रों, जैसे विनिर्माण और सेवा क्षेत्र की ओर आकर्षित हो रही है। यह बदलाव ग्रामीण जीवन शैली के विविवधीकरण और नगरीकरण की प्रक्रिया का भाग है, जहाँ गांव अब पूर्णतः आत्मनिर्भर कृषि इकाइयां नहीं रहे, बल्कि वे व्यापक राष्ट्रीय बाजार का अभिन्न भाग बन गए हैं।

260. (A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
प्रवासी मजदूर अक्सर अर्थव्यवस्था के असंगठित क्षेत्र का भाग होते हैं, जहाँ उन्हें सर्वाधिक कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। इस क्षेत्र की मुख्य विशेषता यह है कि यहाँ कार्य के घंटे अनिश्चित होते हैं, सेवा की कोई सुरक्षा नहीं होती और न ही कोई औपचारिक सामाजिक लाभ, जैसे बीमा या भविष्य निधि उपलब्ध होते हैं। इस नियमन के अभाव के कारण नियोक्ता प्रायः मजदूरों का शोषण करते हैं और उन्हें न्यून मजदूरी पर कठिन परिस्थितियों में कार्य करने के लिए विवश करते हैं। यह असुरक्षा प्रवासियों को निरंतर निर्धनता और सामाजिक भेदभाव के प्रति संवेदनशील बनाए रखती है।

261. (B) P-2, Q-4, R-1, S-3
ग्रामीण समाज में गतिशीलता और प्रवास के विविध स्वरूपों को विभिन्न उदाहरणों से समझा जा सकता है। सामाजिक गतिशीलता तब होती है जब एक वंचित पृष्ठभूमि की महिला सरकारी पद प्राप्त कर अपनी स्थिति परिष्कृत करती है। आर्थिक गतिशीलता श्रेष्ठ फसल के कारण आय में होने वाली प्रत्यक्ष वृद्धि है। ग्रामीण-नगरीय प्रवास श्रेष्ठ सेवाओं के लिए शहर जाने की प्रक्रिया को दर्शाता है। अंततः, ग्रामीण-ग्रामीण प्रवास मजदूरों का एक कृषि क्षेत्र से दूसरे अधिक विकसित कृषि क्षेत्र की ओर होने वाला आवागमन है। ये सभी प्रक्रियाएं ग्रामीण भारत की बदलती जनसांख्यिकीय और आर्थिक वास्तविकताओं का चित्रण करती हैं।

262. (A) केवल 1
जजमानी प्रथा भारतीय ग्रामीण समाज की एक पारंपरिक व्यवस्था थी जो मुख्य रूप से जाति पर आधारित आर्थिक और सामाजिक संबंधों पर आधारित थी। यह प्रणाली विभिन्न समूहों के मध्य सेवाओं के पारस्परिक विनिमय को सुनिश्चित करती थी और समाज को एक सुव्यवस्थित ढांचे में आबद्ध रखती थी। यह कहना त्रुटिपूर्ण है कि यह बाजार आधारित थी; वास्तव में, यह व्यवस्था बाजार की प्रतिस्पर्धी प्रकृति के सर्वथा विपरीत थी। इसमें संबंध स्थाई, वंशानुगत और पीढ़ी दर पीढ़ी चलने वाले होते थे, जो आर्थिक आवश्यकताओं के साथ-साथ सामाजिक सुरक्षा भी प्रदान करते थे।

263. (A) लंबवत रूप से लामबंद, प्रतिस्पर्धी समूहों की उपस्थिति।
ग्रामीण समाजशास्त्र में गुटबाजी की अवधारणा यह स्पष्ट करती है कि ग्रामीण समुदाय सदैव एक एकीकृत इकाई नहीं होता। वास्तव में, गांव प्रायः कुछ शक्तिशाली नेताओं या परिवारों के नेतृत्व वाले प्रतिस्पर्धी समूहों में विभाजित होता है, जिसे गुटबाजी कहा जाता है। ये गुट गांव के संसाधनों, शक्ति और सरकारी योजनाओं के लाभ पर नियंत्रण प्राप्त करने के लिए निरंतर एक-दूसरे के साथ संघर्ष करते रहते हैं। यह लंबवत लामबंदी सामुदायिक विकास के कार्यों में बाधा उत्पन्न कर सकती है और सामाजिक तनाव को जन्म देती है, जहाँ वफादारी प्रायः गांव के सामूहिक हित से ऊपर होती है।

264. (B) कंगालीकरण निर्धन होने के बारे में है, जबकि अकृषकीकरण विशेष रूप से कृषक की स्थिति और आजीविका खोने के बारे में है।
कंगालीकरण और अकृषकीकरण ग्रामीण समाज की दो भिन्न किंतु परस्पर संबद्ध समस्याएं हैं। कंगालीकरण एक व्यापक प्रक्रिया है जो ग्रामीण आबादी की निरंतर गिरती आर्थिक स्थिति और पूर्ण निर्धनता को दर्शाती है। इसके विपरीत, अकृषकीकरण एक अधिक विशिष्ट अवधारणा है जो मुख्य रूप से किसान की अपनी भूमि और खेती पर आधारित आजीविका के साधन के छिन जाने को संदर्भित करती है। यद्यपि अकृषकीकरण प्रायः कंगालीकरण का मुख्य कारण बनता है, किंतु तकनीकी रूप से यह कृषक की उत्पादक पहचान के विनाश और उसके श्रमिक बनने की प्रक्रिया पर अधिक ध्यान केंद्रित करता है।

265. (A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
73वें संविधान संशोधन ने भारत में पंचायती राज व्यवस्था के लिए एक समान और सुदृढ़ ढांचा निर्मित किया है, जिससे संपूर्ण देश में स्थानीय स्वशासन की एकरूपता सुनिश्चित हुई है। साथ

NODIA

शहरों का प्रभाव गांवों तक पहुँच रहा है, जिससे उनके बीच का तीखा अंतर धुंधला होता जा रहा है।

232. (B) व्यावसायीकरण
ग्रामीण अर्थव्यवस्था का व्यावसायीकरण वह प्रक्रिया है जिसके माध्यम से कृषि उत्पादन अब केवल परिवार की आवश्यकताओं तक सीमित नहीं रहता, बल्कि यह व्यापक बाजार की मांग से जुड़ जाता है। इस प्रक्रिया में किसान अधिक लाभ के लिए नकदी फसलों का चयन करते हैं और वैश्विक बाजार की कीमतों के प्रति संवेदनशील हो जाते हैं। यह बदलाव ग्रामीण क्षेत्रों में नकद आय तो लाता है, किंतु साथ ही यह किसानों को बाजार की अनिश्चितताओं के प्रभाव में भी ला देता है। यह प्रक्रिया पारंपरिक ग्रामीण समाज के आधुनिकीकरण और उसकी आर्थिक संरचना में आने वाले परिवर्तन का भाग है।

233. (B) प्रत्यक्ष लोकतंत्र का एक मंच।
पंचायती राज व्यवस्था में ग्राम सभा की संस्था प्रत्यक्ष लोकतंत्र का सबसे जीवंत स्वरूप है। यह एक ऐसा मंच है जहाँ गांव के सभी पंजीकृत मतदाता सीधे बैठकर स्थानीय समस्याओं पर चर्चा करते हैं और विकास की योजनाओं को स्वीकृति प्रदान करते हैं। ग्राम सभा केवल प्रतिनिधियों का चुनाव नहीं करती, बल्कि यह निर्वाचित प्रतिनिधियों के कार्यों की निरंतर निगरानी भी करती है। यह व्यवस्था शासन को जनता के जितना संभव हो सके उतना निकट लाती है और प्रत्येक ग्रामीण को अपने गांव के भाग्य का निर्धारण करने में प्रत्यक्ष भागीदारी का अवसर प्रदान करती है।

234. (A) एक भूमिहीन खेतिहर मजदूर।
कृषि वर्ग पदानुक्रम में भूमिहीन खेतिहर मजदूर की स्थिति निम्नतम और अत्यंत असुरक्षित होती है। चूंकि उनके पास अपनी कोई भूमि नहीं होती, इसलिए वे पूर्णतः अन्यों के खेतों पर मजदूरी करने के लिए आश्रित होते हैं। उनकी आजीविका अनिश्चित होती है और उन्हें प्रायः अत्यंत न्यून मजदूरी पर कठिन परिस्थितियों में कार्य करना पड़ता है। उनके पास सामाजिक और आर्थिक सुरक्षा का अभाव होता है और वे प्रायः ऋणग्रस्तता के चक्र में आबद्ध रहते हैं। यह वर्ग ग्रामीण समाज में व्याप्त शोषण और आर्थिक असमानता की सबसे गहरी मार झेलने वाला समूह है।

235. (C) P-2, Q-4, R-1, S-3
ग्रामीण समाज में होने वाले विभिन्न परिवर्तनों को विशिष्ट उदाहरणों के माध्यम से समझा जा सकता है। आर्थिक गतिशीलता तब होती है जब एक पट्टेदार किसान अपनी मेहनत से भूमि क्रय कर स्वयं स्वामी बन जाता है। अकृषकीकरण उस दुःखद स्थिति को दर्शाता है जब ऋण के कारण किसान को अपनी भूमि बेचनी पड़ती है। ग्रामीण-ग्रामीण प्रवास रोजगार के लिए एक गांव से दूसरे विकसित कृषि क्षेत्र की ओर जाने की प्रक्रिया है। अंततः, सशक्तिकरण का प्रमाण यह है कि आरक्षण के माध्यम से वंचित वर्गों की महिलाएं अब सरपंच जैसे पदों पर आसीन हो रही हैं।

236. (D) ग्राम राजनीति में शक्ति और संघर्ष की गतिशीलता।
ग्रामीण नेतृत्व और गुटबाजी का अध्ययन करना ग्राम समुदाय की आंतरिक कार्यप्रणाली को समझने के लिए अत्यंत आवश्यक है। यह विषय हमें बताता है कि गांव में वास्तविक शक्ति किसके पास है और विभिन्न समूह संसाधनों पर नियंत्रण पाने के लिए किस प्रकार प्रतिस्पर्धा करते हैं। गुटबाजी प्रायः विकास कार्यों में बाधा उत्पन्न करती है और सामाजिक तनाव को जन्म देती है, किंतु यह यह भी स्पष्ट करती है कि ग्रामीण समाज एक अखंड इकाई नहीं है। इन शक्ति संबंधों को समझकर ही प्रभावी ग्रामीण विकास नीतियां निर्मित की जा सकती हैं जो स्थानीय स्तर पर लागू हों।

237. (C) अनौपचारिक सामाजिक नियंत्रण
जीवन जीने के एक तरीके के रूप में नगरीयता की पहचान व्यक्तिवाद और अनामिकता से होती है। शहरों में घनिष्ठ संबंधों का अभाव होता है, जिससे वहां परिवार का अनौपचारिक सामाजिक नियंत्रण अत्यंत निर्बल हो जाता है। इसी कारण नगरीय क्षेत्रों में कानून व्यवस्था बनाए रखने के लिए औपचारिक तंत्रों, जैसे पुलिस और न्यायपालिका पर अधिक निर्भरता होती है। अनौपचारिक सामाजिक नियंत्रण मुख्य रूप से ग्रामीण समाज की विशेषताएं हैं। नगरीय परिवेश में लोगों की स्वतंत्रता अधिक होती है, किंतु सामुदायिक बंधन उतने गहरे नहीं होते जितने कि ग्रामीण समाजों में पाए जाते हैं।

238. (D) कथन I गलत है, लेकिन कथन II सही है।
कृषक आंदोलनों को सदैव राज्य विरोधी या हिंसक नहीं माना जा सकता है। वास्तव में, अधिकांश कृषक आंदोलन अपनी विशिष्ट आर्थिक शिकायतों को दूर करने के लिए किए जाते हैं। किसान प्रायः अनुचित करों के बोझ या भूमि अधिकारों की सुरक्षा जैसे मुद्दों पर संगठित होते हैं। वे अपनी मांगों को मनवाने के लिए शांतिपूर्ण और संवैधानिक तरीकों, जैसे धरना और ज्ञापन का उपयोग करते हैं। ये आंदोलन ग्रामीण समाज में लोकतंत्र की सक्रियता को दर्शाते हैं और सिद्ध करते हैं कि किसान अपनी समस्याओं के प्रति जागरूक हैं और वे सुधार चाहते हैं।

239. (D) कंगालीकरण
कंगालीकरण ग्रामीण भारत में व्याप्त एक अत्यंत चिंताजनक आर्थिक प्रक्रिया है जो व्यापक निर्धनता को दर्शाती है। यह तब होता है जब ग्रामीण आबादी का एक वृहत भाग धीरे-धीरे अपनी संपत्तियों, जैसे भूमि और पशुधन को खोने लगता है और उनकी आय का स्तर न्यूनतम जीवन निर्वाह से भी नीचे चला जाता है। ऋण का बढ़ता बोझ और आजीविका के साधनों की निरंतर न्यूनता इस स्थिति को और विकट बना देती है। यह केवल आय की न्यूनता नहीं है, बल्कि यह एक ऐसी अवस्था है जहाँ लोग आर्थिक रूप से पूर्णतः टूट जाते हैं और गहरे संकट में फंस जाते हैं।

240. (A) ऐतिहासिक रूप से वंचित समूहों के राजनीतिक सशक्तिकरण और प्रतिनिधित्व को सुनिश्चित करना।
पंचायती राज व्यवस्था में आरक्षण की नीति का मुख्य दर्शन सामाजिक न्याय की स्थापना करना है। इसका उद्देश्य समाज के

Downloaded from www.pdf.tube

करते हैं, वहां गतिशीलता न्यून होती है। ग्रामीण संदर्भ में, सामाजिक गतिशीलता का अध्ययन यह स्पष्ट करता है कि क्या पारंपरिक जातिगत बाधाएं भंग हो रही हैं और क्या समाज के वंचित वर्गों को प्रगति के वास्तविक अवसर प्राप्त हो रहे हैं।

274. (D) A गलत है लेकिन R सही है।
जजमानी प्रथा के विषय में यह सोचना पूर्णतः त्रुटिपूर्ण है कि यह कोई समान संबंधों वाली व्यवस्था थी। वास्तव में, यह प्रणाली भारतीय जाति पदानुक्रम में गहराई से निहित थी और अत्यंत विषम थी। इसमें उच्च जातियों के भूस्वामी जजमानों के पास आर्थिक और सामाजिक शक्ति का संकेंद्रण था, जबकि सेवा प्रदाता निम्न जातियां उनकी सेवा करने के लिए सामाजिक और धार्मिक रूप से विवश थीं। यह व्यवस्था प्रायः शोषणकारी थी, जहाँ जजमान का वर्चस्व बना रहता था। अतः, यह पारस्परिकता पर आधारित तो थी, किंतु इसमें शक्ति का वितरण पूर्णतः असमान और पदानुक्रमित था।

275. (C) 1 और 2 दोनों
कृषि अशांति ग्रामीण समाज में व्याप्त गहरे असंतोष और संकट की एक स्पष्ट सामाजिक अभिव्यक्ति है, जो आर्थिक असुरक्षा और व्यवस्थागत अन्याय जैसे अंतर्निहित तनावों की ओर संकेत करती है। यह केवल व्यक्तिगत शिकायत नहीं है, बल्कि संपूर्ण कृषक समुदाय के भीतर की व्याकुलता है। कृषक आंदोलन इस अशांति को एक संगठित और उद्देश्यपूर्ण स्वरूप प्रदान करते हैं, जहाँ किसान अपनी मांगों को लेकर एकजुट होते हैं और सामूहिक कार्रवाई करते हैं। अतः, ये दोनों अवधारणाएं आपस में संबद्ध हैं और ग्रामीण क्षेत्रों में सामाजिक न्याय तथा आर्थिक सुधारों की निरंतर आवश्यकता को रेखांकित करती हैं।

276. (B) ग्रामीण-से-ग्रामीण प्रवास
ग्रामीण-से-ग्रामीण प्रवास भारत में प्रवास का एक प्रमुख स्वरूप है, जो प्रायः कृषि विकास की क्षेत्रीय भिन्नताओं के कारण होता है। इसमें मजदूर उन क्षेत्रों से पलायन करते हैं जहाँ वर्षा न्यून है या कार्य की कमी है, और उन क्षेत्रों में जाते हैं जहाँ उन्नत सिंचाई सुविधाओं के कारण वर्ष भर कृषि कार्य उपलब्ध रहता है। यह आवागमन प्रायः मौसमी होता है, जो कटाई के समय तीव्र हो जाता है। यह प्रवास मजदूरों के लिए आजीविका सुनिश्चित करने का एक महत्वपूर्ण माध्यम है और साथ ही यह विकसित कृषि क्षेत्रों की श्रम संबंधी आवश्यकताओं को पूर्ण करने में भी सहायक होता है।

277. (C) कृषि वर्ग संरचना।
ग्रामीण आबादी को उनके आर्थिक और उत्पादन संबंधी संबंधों के आधार पर जमींदार, कृषक और मजदूर जैसे वर्गों में वर्गीकृत करना कृषि वर्ग संरचना के अध्ययन का आधार है। यह विश्लेषण केवल यह नहीं बताता कि किसके पास कितनी भूमि है, बल्कि यह गांव के भीतर शक्ति के वितरण और निर्भरता के संबंधों को भी स्पष्ट करता है। इससे ज्ञात होता है कि समाज का आर्थिक ढांचा किस प्रकार संचालित होता है और विभिन्न वर्गों के मध्य किस प्रकार के संघर्ष की संभावनाएं विद्यमान हैं। ग्रामीण समाज के यथार्थवादी चित्रण के लिए इस वर्ग संरचना को समझना समाजशास्त्रियों के लिए अत्यंत अनिवार्य है।

278. (D) धार्मिक समन्वयवाद
ग्रामीण विकास और सामाजिक परिवर्तन के समाजशास्त्रीय अध्ययन में प्रवास, सामाजिक गतिशीलता और आर्थिक बदलाव जैसे विषयों पर मुख्य रूप से ध्यान केंद्रित किया जाता है, क्योंकि ये प्रत्यक्षतः ग्रामीण संरचना को नवीन स्वरूप प्रदान करते हैं। प्रवास लोगों के परिवेश को परिवर्तित करता है, जबकि गतिशीलता उनके दर्जे और आय में सुधार लाती है। धार्मिक समन्वयवाद, जो विभिन्न धार्मिक विश्वासों के मेलजोल की प्रक्रिया है, एक महत्वपूर्ण सांस्कृतिक घटना तो हो सकती है, किंतु इसे आमतौर पर ग्रामीण विकास और संरचनात्मक परिवर्तन की प्रमुख प्रेरक प्रक्रिया के रूप में नहीं देखा जाता है। विकास के अध्ययन में आजीविका और सत्ता संबंधों के बदलाव प्राथमिक होते हैं।

279. (A) ग्रामीण नेतृत्व और गुटबाजी
ग्रामीण नेतृत्व और गुटबाजी का अध्ययन हमें गांव के भीतर शक्ति के संघर्षों और प्रतिद्वंद्विता को समझने में सहायता करता है। जब विभिन्न नेता या प्रभावशाली परिवार गांव के संसाधनों, जैसे सरकारी अनुदान, भूमि या पंचायत के पदों पर नियंत्रण प्राप्त करने के लिए आपस में प्रतिस्पर्धा करते हैं, तो वे गांव के समुदाय को पृथक-पृथक गुटों में विभाजित कर देते हैं। यह गुटबाजी प्रायः विकास परियोजनाओं के प्रभावी क्रियान्वयन में बाधा उत्पन्न करती है और सामाजिक तनाव उत्पन्न करती है। इन प्रतिद्वंद्विता के कारणों और उनके सामाजिक परिणामों का विश्लेषण करना ग्रामीण राजनीति की वास्तविकताओं को जानने के लिए अत्यंत आवश्यक है।

280. (A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
अकृषकीकरण और कंगालीकरण ग्रामीण भारत में होने वाले दो अत्यंत चिंताजनक और नकारात्मक आर्थिक परिवर्तनों को परिभाषित करते हैं। अकृषकीकरण विशेष रूप से उस प्रक्रिया को संदर्भित करता है जहाँ कृषक अपनी भूमि और खेती पर आधारित आजीविका खो देते हैं, जिससे उनकी उत्पादक पहचान समाप्त हो जाती है। कंगालीकरण इससे भी व्यापक प्रक्रिया है, जो ग्रामीणों की निरंतर गिरती आर्थिक स्थिति और उनके पूर्णतः साधनहीन होने को दर्शाती है। ये दोनों अवधारणाएं ग्रामीण क्षेत्रों में व्याप्त गहरे कृषि संकट और आर्थिक असुरक्षा की ओर संकेत करती हैं, जो सामाजिक स्थिरता के लिए एक वृहत चुनौती बनी हुई है।

281. (B) कृषक अध्ययन
कृषक अध्ययन समाजशास्त्र का एक विशिष्ट क्षेत्र है जो मुख्य रूप से उन लघु कृषि उत्पादकों की सामाजिक और आर्थिक स्थितियों का विश्लेषण करता है जो अपनी आजीविका के लिए भूमि पर निर्भर हैं। यह अध्ययन केवल खेती की तकनीक तक सीमित नहीं है, बल्कि यह कृषकों की विशिष्ट जीवन शैली, उनकी संस्कृति और व्यापक राज्य संरचना के भीतर उनकी अधीनस्थ स्थिति की भी जांच करता है। कृषक अध्ययन हमें यह समझने में सहायता करता है कि आधुनिक विश्व के

NODIA

249. (B) बंधुआ मजदूरी
ग्रामीण भारत में कृषि संकट और निरंतर बढ़ती ऋणग्रस्तता का एक अत्यंत दुःखद सामाजिक परिणाम बंधुआ मजदूरी के रूप में सम्मुख आता है। जब निर्धन किसान और खेतिहर मजदूर अपनी बुनियादी आवश्यकताओं के लिए साहूकारों से उच्च ब्याज दर पर ऋण लेते हैं और उसे चुकाने में असमर्थ होते हैं, तो वे विवश होकर अपने श्रम को नियोक्ता के पास गिरवी रख देते हैं। यह ऋण-जाल उनकी व्यक्तिगत स्वतंत्रता को छीन लेता है और उन्हें शोषणकारी परिस्थितियों में कार्य करने के लिए विवश करता है। यह समस्या ग्रामीण अर्थव्यवस्था की विफलता और शोषण के तंत्र को स्पष्ट रूप से उजागर करती है।

250. (A) ऐसी संरचनाएं और प्रक्रियाएं बनाना जो लोगों को अपने स्वयं के जीवन और विकास पर नियंत्रण करने में सक्षम बनाती हैं।
ग्रामीण विकास की रणनीतियों में 'लोगों का सशक्तिकरण' एक केंद्रीय लक्ष्य है। इसका वास्तविक अर्थ यह है कि ग्रामीणों को केवल योजनाओं का लाभार्थी बनाने के स्थान पर उन्हें उन योजनाओं का निर्माता और प्रबंधक बनाया जाए। इसके लिए पंचायतों और ग्राम सभाओं जैसी स्थानीय संस्थाओं को सुदृढ़ करना आवश्यक है, जहाँ लोग स्वयं अपनी प्राथमिकताओं को निर्धारित कर सकें और संसाधनों का प्रबंधन कर सकें। जब लोगों के पास निर्णय लेने की शक्ति और सूचनाओं तक पहुंच होती है, तभी वे वास्तव में सशक्त होते हैं और अपने समुदाय के सतत विकास में सक्रिय भूमिका निभाते हैं।

251. (D) कथन I गलत है, लेकिन कथन II सही है।
ग्रामीण भारत में 'जाति' और 'वर्ग' दो भिन्न सामाजिक अवधारणाएं हैं, यद्यपि वे प्रायः एक-दूसरे को प्रभावित करती हैं। जाति जन्म पर आधारित एक सामाजिक समूह है, जबकि कृषि वर्ग आर्थिक स्थिति और उत्पादन के साधनों, जैसे भूमि के साथ संबंधों पर आधारित होता है। यद्यपि उच्च जातियों के पास प्रायः अधिक भूमि होती है और वे उच्च वर्ग में आते हैं, किंतु आर्थिक परिवर्तनों के कारण अनेक पिछड़ी जातियां भी अब भूमि स्वामी बनकर उच्च वर्ग में सम्मिलित हो रही हैं। अतः, इन दोनों को एक मानना त्रुटिपूर्ण है; ग्रामीण समाज की जटिलता समझने के लिए इनका पृथक विश्लेषण अनिवार्य है।

252. (D) प्राथमिक समूहों और संबंधों की प्रधानता।
ग्रामीण समाज की सबसे विशिष्ट पहचान वहां के सामाजिक संबंधों की गहराई और घनिष्ठता है। नगरीय समाजों के विपरीत, जहाँ लोग प्रायः अनामिकता और औपचारिक संबंधों के मध्य निवास करते हैं, ग्रामीण समाज में प्राथमिक समूहों जैसे परिवार और पड़ोस का अत्यधिक महत्व होता है। यहाँ लोग एक-दूसरे को व्यक्तिगत रूप से जानते हैं और उनकी पहचान उनके सामुदायिक संबंधों से जुड़ी होती है। यह घनिष्ठता सामाजिक सुरक्षा प्रदान करती है और अनौपचारिक नियंत्रण को प्रभावी बनाती है। ग्रामीण जीवन की यही सादगी उसे आधुनिक नगरीय जीवन के जटिल स्वरूप से पृथक करती है।

253. (C) कृषि अशांति और प्रवास के मूल कारण।
कंगालीकरण और अकृषकीकरण ग्रामीण क्षेत्रों में होने वाली दो अत्यंत गंभीर प्रक्रियाएं हैं जो प्रत्यक्षतः कृषि संकट को दर्शाती हैं। जब लघु किसान अपनी संपत्तियां और भूमि खो देते हैं, तो उनके भीतर असंतोष और निराशा बढ़ती है, जो प्रायः संगठित कृषि अशांति और आंदोलनों के रूप में प्रकट होती है। इसके अतिरिक्त, आजीविका के साधन छिन जाने के कारण उनके पास शहरों की ओर पलायन करने के अतिरिक्त कोई विकल्प शेष नहीं रहता। अतः, ये दोनों प्रक्रियाएं ग्रामीण निर्धनता, सामाजिक तनाव और वृहत स्तर पर होने वाले प्रवास की मुख्य प्रेरक शक्तियां हैं।

254. (B) ग्रामीण नेतृत्व और सामाजिक गतिशीलता में बदलाव।
ग्रामीण शक्ति संरचना में आने वाला परिवर्तन ग्रामीण भारत के बदलते सामाजिक परिदृश्य का एक महत्वपूर्ण संकेत है। जब नवीन आर्थिक सफलता और राजनीतिक जागरूकता के कारण वंचित जातियों के लोग पारंपरिक उच्च जाति के भूस्वामियों के वर्चस्व को चुनौती देते हैं, तो यह ऊपर की ओर सामाजिक गतिशीलता को दर्शाता है। यह बदलाव नेतृत्व के पैटर्न को अधिक समावेशी और प्रतिस्पर्धी बनाता है। यह प्रक्रिया सिद्ध करती है कि अब ग्रामीण राजनीति और प्रतिष्ठा केवल जन्म से निर्धारित नहीं होती, बल्कि आर्थिक शक्ति और अर्जित नेतृत्व कौशल भी इसमें निर्णायक भूमिका निर्वाह करने लगे हैं।

255. (D) भूमि से संबंधित आर्थिक और सामाजिक पहलू
कृषि संबंध ग्रामीण समाज के उन मूलभूत आर्थिक और सामाजिक ताने-बाने को संदर्भित करते हैं जो भूमि के स्वामित्व, पट्टेदारी और खेती की प्रक्रिया के इर्द-गिर्द केंद्रित होते हैं। ये संबंध यह निर्धारित करते हैं कि भूमि का स्वामी कौन है, उस पर कौन परिश्रम करता है और अंतिम फसल का विभाजन किस प्रकार किया जाता है। ये केवल व्यावसायिक लेनदेन नहीं हैं, बल्कि ये समाज में शक्ति और निर्भरता के संबंधों को भी परिभाषित करते हैं। कृषि संबंधों का अध्ययन करने से ही हमें ग्रामीण वर्ग संरचना, शोषण के तरीकों और ग्रामीण समुदायों के मध्य विद्यमान गहरे पदानुक्रम की वास्तविक समझ प्राप्त होती है।

256. (A) इसने पंचायतों में महिलाओं के लिए सीटों और अध्यक्षों के पदों के आरक्षण को अनिवार्य कर दिया।
73वें संविधान संशोधन का सबसे दूरगामी प्रभाव ग्रामीण भारत में महिलाओं के राजनीतिक सशक्तिकरण के रूप में देखा जा सकता है। इस कानून ने पंचायतों के सभी स्तरों पर महिलाओं के लिए न्यूनतम एक-तिहाई सीटों और अध्यक्ष के पदों का आरक्षण अनिवार्य कर दिया। इस क्रांतिकारी प्रावधान ने सदियों पुरातन पितृसत्तात्मक बाधाओं को भंग कर लाखों महिलाओं को निर्णय लेने की प्रक्रिया की मुख्यधारा में ला दिया है। अब महिलाएं न केवल स्थानीय नीतियों को आकार प्रदान कर रही हैं, बल्कि वे समाज में नेतृत्व की नवीन भूमिकाओं को भी स्वीकार कर रही हैं, जिससे ग्रामीण भारत का सामाजिक स्वरूप परिवर्तित हो रहा है।

Click Here to Buy book on Amazon

है और सामाजिक सद्भाव को बिगाड़ती है, जिससे समग्र विकास की गति अवरुद्ध हो जाती है।

290. (A) कृषि वर्ग संरचना
कृषि वर्ग संरचना ग्रामीण समाज की वह महत्वपूर्ण अवधारणा है जो भूमि के स्वामित्व और नियंत्रण के आधार पर लोगों के मध्य विद्यमान पदानुक्रमित क्रम का वर्णन करती है। यह संरचना यह स्पष्ट करती है कि समाज में शक्ति और संसाधनों का वितरण किस प्रकार होता है, जहाँ जमींदार शिखर पर होते हैं और भूमिहीन मजदूर निम्नतम स्तर पर। यह केवल आर्थिक विभाजन नहीं है, बल्कि यह गांव के भीतर के सामाजिक और राजनीतिक संबंधों को भी निर्धारित करता है। कृषि वर्ग संरचना को समझकर ही हम ग्रामीण क्षेत्रों में व्याप्त असमानता, निर्भरता और विभिन्न समूहों के मध्य होने वाले संघर्षों के मूल कारणों को जान सकते हैं।

291. (D) पांच वर्ष
73वें संविधान संशोधन अधिनियम ने पंचायती राज संस्थाओं के लोकतांत्रिक स्वरूप और स्थिरता को सुनिश्चित करने के लिए पंचायतों का कार्यकाल पांच वर्ष निर्धारित किया है। यह कार्यकाल पंचायत की प्रथम बैठक की तिथि से गिना जाता है। इस प्रावधान का मुख्य उद्देश्य यह सुनिश्चित करना है कि स्थानीय निकायों के चुनाव नियमित अंतराल पर आयोजित हों और प्रतिनिधियों की जवाबदेही बनी रहे। यदि कोई पंचायत अपनी अवधि पूर्ण होने से पूर्व भंग कर दी जाती है, तो संवैधानिक रूप से छह महीने के भीतर नवीन चुनाव आयोजित कराना अनिवार्य है। इस नियम ने स्थानीय शासन में निरंतरता को मजबूती प्रदान की है।

292. (B) कृषि अशांति और कृषक आंदोलन
कृषक विरोधों के कारणों और उनके सामाजिक-राजनीतिक परिणामों का अध्ययन करना कृषि अशांति और कृषक आंदोलन के क्षेत्र के अंतर्गत आता है। यह विषय इस बात का विश्लेषण करता है कि किसान कब और क्यों संगठित होते हैं और वे राज्य की नीतियों या शोषणकारी व्यवस्था के विरुद्ध किस प्रकार संघर्ष करते हैं। यह अध्ययन कृषकों के असंतोष, उनकी लामबंदी की रणनीतियों और उनके द्वारा की जाने वाली सामूहिक कार्रवाइयों को समझने में सहायता करता है। कृषक आंदोलन यह दर्शाते हैं कि ग्रामीण उत्पादक वर्ग अपने हितों की रक्षा के लिए संगठित होकर व्यवस्था को चुनौती देने की पूर्ण क्षमता रखता है।

293. (D) कथन I गलत है, लेकिन कथन II सही है।
सामाजिक गतिशीलता को केवल ऊपर की ओर होने वाली प्रगति के रूप में देखना समाजशास्त्रीय रूप से अपूर्ण है। यद्यपि हम प्रायः शिक्षा या धन के माध्यम से स्थिति परिष्कृत करने की चर्चा करते हैं, किंतु प्रतिकूल परिस्थितियों के कारण नीचे की ओर गतिशीलता भी उतनी ही वास्तविक है। ग्रामीण समाज में फसल की बर्बादी, वृहत ऋण या भूमि का छिन जाना किसी व्यक्ति को उसकी वर्तमान स्थिति से अवनत कर मजदूर बना सकता है। अतः, सामाजिक गतिशीलता एक द्वि-आयामी प्रक्रिया है जो पदानुक्रम में ऊपर या नीचे किसी भी दिशा में हो सकती है, जो समाज में विद्यमान आर्थिक जोखिमों को दर्शाती है।

294. (A) 3, 2, 1
भारत में स्थानीय स्वशासन के विकास का एक क्रमिक इतिहास रहा है। इसकी शुरुआत 1952 में सामुदायिक विकास कार्यक्रम से हुई थी, जिसका उद्देश्य ग्रामीण पुनरुत्थान था। इसके पश्चात 1957 में बलवंत राय मेहता समिति ने अपनी रिपोर्ट प्रदान की, जिसमें प्रथम बार लोकतांत्रिक विकेंद्रीकरण के लिए त्रि-स्तरीय पंचायती राज व्यवस्था की अनुशंसा की गई थी। इस दीर्घ प्रक्रिया और विभिन्न समितियों के सुझावों के पश्चात, अंततः 1992 में 73वां संविधान संशोधन अधिनियम पारित किया गया। इस ऐतिहासिक कानून ने पंचायतों को संवैधानिक दर्जा प्रदान कर उन्हें स्थाई लोकतांत्रिक संस्थाओं के रूप में संपूर्ण देश में स्थापित किया।

295. (A) ग्रामीण समाज में परिवर्तन की प्रवृत्ति है।
आधुनिक ग्रामीण भारत में पारंपरिक संरक्षक-ग्राहक संबंधों, जैसे कि जजमानी प्रथा का शिथिल होना एक अत्यंत महत्वपूर्ण सामाजिक और आर्थिक परिवर्तन है। यह बदलाव पारंपरिक जातिगत वफादारियों की समाप्ति और नवीन बाजार अर्थव्यवस्था के प्रसार का संकेत प्रदान करता है। अब ग्रामीण क्षेत्रों में संबंध अधिक संविदात्मक, नकद-आधारित और व्यावसायिक हो रहे हैं, जहाँ व्यक्ति अपनी इच्छा के अनुसार श्रम और सेवाएं विक्रय करने के लिए स्वतंत्र है। यह प्रवृत्ति ग्रामीण समाज के आधुनिकीकरण और उसके व्यापक राष्ट्रीय बाजारों के साथ एकीकरण की प्रक्रिया को दर्शाती है, जो व्यक्तिगत स्वतंत्रता और व्यावसायिक गतिशीलता को प्रोत्साहित करती है।

296. (B) आर्थिक गतिशीलता
आर्थिक गतिशीलता वह प्रक्रिया है जो किसी व्यक्ति या परिवार की वित्तीय स्थिति, आय और भौतिक संसाधनों में होने वाले सकारात्मक सुधार को दर्शाती है। ग्रामीण क्षेत्रों में जब कोई व्यक्ति श्रेष्ठ कृषि तकनीकों, शिक्षा या नवीन रोजगार के अवसरों के माध्यम से अपनी आय बढ़ाता है, तो वह आर्थिक रूप से गतिशील होता है। यह परिवर्तन उनके जीवन स्तर को उच्च उठाता है, उन्हें ऋण के जाल से मुक्त करता है और प्रायः उनकी सामाजिक प्रतिष्ठा में भी वृद्धि करता है। आर्थिक गतिशीलता ग्रामीण विकास का एक मुख्य उद्देश्य है, क्योंकि यह समाज में निर्धनता को अल्प करने और लोगों को आर्थिक रूप से स्वावलंबी बनाने का आधार प्रदान करती है।

297. (B) निगम स्टॉक स्वामित्व
पारंपरिक कृषि संरचना में भूमि स्वामित्व के वे स्वरूप महत्वपूर्ण हैं जो प्रत्यक्षतः कृषक और राज्य के मध्य के संबंधों को परिभाषित करते हैं। इसमें जमींदारी, जहाँ बिचौलिये महत्वपूर्ण थे, रैयतवाड़ी, जहाँ किसान सीधा स्वामी था, और महलवाड़ी, जहाँ संपूर्ण गांव राजस्व के लिए उत्तरदायी था, प्रमुख प्रणालियां रही हैं। निगम स्टॉक स्वामित्व एक आधुनिक औद्योगिक और वित्तीय व्यवस्था है जो मुख्य रूप से वृहत कॉर्पोरेट क्षेत्रों में पाई जाती है। यह पारंपरिक ग्रामीण समाज का भाग नहीं है,

Downloaded from www.pdf.tube

परिवर्तनों के मध्य ये समुदाय अपनी पहचान किस प्रकार बनाए रखते हैं और वे आर्थिक तथा राजनीतिक दबावों का सामना किस प्रकार करते हैं।

282. (A) पंचायती राज संस्थाओं के लिए एक संवैधानिक आधार की स्थापना।
73वें संविधान संशोधन का सबसे ऐतिहासिक और दूरगामी परिणाम यह है कि इसने पंचायतों को एक स्थाई संवैधानिक आधार प्रदान किया। इस कानून से पूर्व, पंचायतों का अस्तित्व पूर्णतः राज्य सरकारों के विवेक पर निर्भर था, जिससे उनकी कार्यप्रणाली में अनिश्चितता बनी रहती थी। अब, संवैधानिक मान्यता के कारण, पंचायतों के लिए नियमित चुनाव आयोजित कराना, वित्त आयोग का गठन करना और समाज के कमजोर वर्गों को आरक्षण प्रदान करना अनिवार्य हो गया है। इस सुधार ने स्थानीय निकायों को राज्य के प्रशासनिक विस्तार के स्थान पर स्वशासन की एक स्वतंत्र और वैधानिक लोकतांत्रिक इकाई के रूप में स्थापित किया है।

283. (C) उत्पादन की पद्धति पर बहस
भारतीय कृषि के स्वरूप को सामंती या पूंजीवादी के रूप में चित्रित करने की चर्चा 'उत्पादन पद्धति' पर होने वाली सैद्धांतिक बहस का मुख्य भाग है। यह बहस समाजशास्त्रियों और अर्थशास्त्रियों के मध्य इस विषय को लेकर है कि ग्रामीण भारत में आर्थिक शोषण का आधार क्या है। क्या यहाँ आज भी पुरातन पट्टेदारी संबंधों और ऋण-आधारित गुलामी का वर्चस्व है, या कृषि अब पूर्णतः लाभ और बाजार आधारित पूंजीवादी उद्यम बन चुकी है। यह बहस ग्रामीण वर्गों के मध्य के शक्ति संबंधों और भविष्य की आर्थिक नीतियों की दिशा को समझने के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण आधार प्रदान करती है।

284. (D) ऊपर की ओर सामाजिक गतिशीलता
जब कोई परिवार अपनी कड़ी मेहनत या अनुकूल परिस्थितियों के कारण भूमिहीन मजदूर की स्थिति से ऊपर उठकर लघु भूस्वामी के रूप में स्थापित होता है, तो यह ऊपर की ओर सामाजिक गतिशीलता का एक आदर्श उदाहरण है। ग्रामीण समाज में भूमि का स्वामित्व केवल एक आर्थिक लाभ नहीं है, बल्कि यह समाज में प्रतिष्ठा, सुरक्षा और सम्मान का भी प्रमुख स्रोत है। यह परिवर्तन दर्शाता है कि सामाजिक संरचना में सुधार की संभावना विद्यमान है और लोग अपनी परिस्थितियों को परिवर्तित करने में सक्षम हैं। ऐसी गतिशीलता समाज में समानता की दिशा में एक सकारात्मक बदलाव लाती है।

285. (A) P-3, Q-1, R-4, S-2
ग्रामीण समाज की विभिन्न भूमिकाओं और संबंधों को उनके विशिष्ट लक्षणों के आधार पर समझा जा सकता है। बंधुआ मजदूर वह है जो ऋण के कारण नियोक्ता की अधीनता में रहने को विवश है। प्रवासी मजदूर रोजगार की खोज में निरंतर एक स्थान से दूसरे स्थान पर आवागमन करते हैं। जजमान पारंपरिक विनिमय प्रणाली में सेवा प्राप्त करने वाला संरक्षक होता है, जिसके पास प्रायः भूमि और शक्ति का संकेंद्रण होता है। अंततः, कृषक वह लघु पैमाने का उत्पादक है जो अपनी भूमि पर नियंत्रण रखता है और परिवार के निर्वाह के लिए श्रम करता है। ये श्रेणियां ग्रामीण आर्थिक ढांचे की जटिलता को दर्शाती हैं।

286. (B) प्रवास
ग्रामीण प्रवास की प्रक्रिया को समझने के लिए समाजशास्त्री 'विकर्षण' और 'आकर्षण' कारकों के ढांचे का उपयोग करते हैं। विकर्षण कारक वे नकारात्मक परिस्थितियां हैं जो लोगों को गांव त्यागने के लिए विवश करती हैं, जैसे निर्धनता और रोजगार का अभाव। दूसरी ओर, आकर्षण कारक शहरों की वे सकारात्मक विशेषताएं हैं जो लोगों को अपनी ओर आकर्षित करती हैं, जैसे श्रेष्ठ नौकरियां, उच्च मजदूरी और आधुनिक जीवन की सुविधाएं। इन दोनों बलों की अंतःक्रिया ही यह निर्धारित करती है कि लोग क्यों और कहाँ पलायन करते हैं, जो ग्रामीण जनसांख्यिकी में वृहत बदलावों का कारण बनता है।

287. (D) यह बिना किसी आंतरिक विभेदीकरण के पूरी तरह से समरूप है।
ग्रामीण समाज के विषय में यह धारणा पूर्णतः त्रुटिपूर्ण है कि वह बिना किसी आंतरिक भेदभाव के एक समरूप इकाई है। वास्तव में, ग्रामीण समाज जाति, वर्ग और शक्ति के आधार पर गहराई से विभाजित और स्तरीकृत है। यहाँ भूस्वामियों और भूमिहीन मजदूरों के मध्य के आर्थिक अंतर के साथ-साथ जातियों के मध्य का सामाजिक पदानुक्रम भी विद्यमान है। ग्रामीण समाज में होने वाले निरंतर परिवर्तन और आंतरिक संघर्ष यह सिद्ध करते हैं कि वहां हितों और आकांक्षाओं की वृहत विविधता है। अतः, गांव को एक सरल समुदाय मानना उसकी वास्तविक सामाजिक जटिलता को पूर्णतः नकारना होगा।

288. (A) कंगालीकरण और बंधुआ मजदूरी।
ग्रामीण विकास की रणनीतियों का प्राथमिक और अनिवार्य लक्ष्य ग्रामीण क्षेत्रों में व्याप्त गंभीर सामाजिक और आर्थिक समस्याओं का समाधान करना है। कंगालीकरण, जो निरंतर निर्धनता और संपत्तियों की हानि की प्रक्रिया है, और बंधुआ मजदूरी, जो ऋण-आधारित शोषण का एक अमानवीय स्वरूप है, ग्रामीण समाज की सबसे बड़ी चुनौतियां हैं। विकास की योजनाएं इन्हीं मुद्दों को केंद्र में रखकर निर्मित की जाती हैं ताकि ऋणग्रस्तता को अल्प किया जा सके, आजीविका के नवीन साधन निर्मित किए जा सकें और समाज के निम्नतम तबके को शोषण से मुक्ति दिलाकर एक गरिमापूर्ण जीवन सुनिश्चित किया जा सके।

289. (A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
ग्रामीण गुटबाजी सामुदायिक विकास के मार्ग में एक अत्यंत विनाशकारी बाधा के रूप में कार्य करती है। जब गांव के लोग प्रतिस्पर्धी गुटों में विभाजित हो जाते हैं, तो वे प्रायः सार्वजनिक कल्याण की योजनाओं पर एकमत नहीं हो पाते। प्रतिद्वंद्वी गुट प्रायः अपने विरोधियों के प्रभाव को अल्प करने के लिए जनहित की परियोजनाओं में भी रुकावट उत्पन्न करते हैं और विकास निधियों का उपयोग केवल अपने समर्थकों को लाभ पहुँचाने के लिए करने का प्रयास करते हैं। यह आपसी अविश्वास की स्थिति गांव की सामूहिक शक्ति को नष्ट कर देती

NODIA

अध्याय 07
उद्योग एवं समाज

1. शास्त्रीय समाजशास्त्रियों में से किसने अपनी कृति "द डिवीज़न ऑफ लेबर इन सोसाइटी" में 'श्रम विभाजन' की अवधारणा का व्यापक विश्लेषण किया है?
(A) कार्ल मार्क्स
(B) एमिल दुर्खीम
(C) मैक्स वेबर
(D) अगस्त कॉम्टे

2. मैक्स वेबर की नौकरशाही की अवधारणा के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए।
कथन I: नौकरशाही की विशेषता अधिकार का एक स्पष्ट पदानुक्रम और नियमों की एक प्रणाली है।
कथन II: नौकरशाही के भीतर पद सामान्यतः तकनीकी सक्षमता के बजाय व्यक्तिगत निष्ठा और नातेदारी पर आधारित होते हैं।
(A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
(B) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।
(C) कथन I सही है, लेकिन कथन II गलत है।
(D) कथन I गलत है, लेकिन कथन II सही है।

3. मार्क्सवादी विश्लेषण के संदर्भ में, श्रमिक द्वारा अपनी श्रम-शक्ति के मूल्य से अधिक उत्पादित उस मूल्य के लिए क्या शब्द है, जिसे पूंजीपति द्वारा हड़प लिया जाता है?
(A) उपयोग मूल्य
(B) विनिमय मूल्य
(C) अतिरिक्त मूल्य
(D) वस्तु मूल्य

4. मैक्स वेबर द्वारा वर्णित 'आदर्श-प्ररूप' (ideal-type) नौकरशाही की निम्नलिखित में से कौन सी विशेषता नहीं है?
(A) अधिकार का एक सुपरिभाषित पदानुक्रम
(B) अमूर्त नियमों की एक प्रणाली
(C) निर्णय लेने में निर्वैयक्तिक अभिविन्यास
(D) संरक्षण और व्यक्तिगत पक्षपात के आधार पर नियुक्तियाँ

5. शास्त्रीय समाजशास्त्रीय परंपरा की अवधारणाओं के संबंध में सूची I को सूची II से सुमेलित कीजिए।
सूची I: (अवधारणा)
P. अलगाव (Alienation)
Q. एनोमी (Anomie)
R. तार्किकता (Rationality)
S. उत्पादन संबंध (Production Relations)
सूची II: (विचारक)
1. एमिल दुर्खीम
2. मैक्स वेबर
3. कार्ल मार्क्स
4. कार्ल मार्क्स
(A) P-3, Q-1, R-2, S-4
(B) P-1, Q-2, R-3, S-4
(C) P-3, Q-2, R-1, S-4
(D) P-4, Q-1, R-3, S-2

6. कार्ल मार्क्स के अनुसार, पूंजीवादी समाज में बुर्जुआ और सर्वहारा वर्ग के बीच के संबंधों को क्या परिभाषित करता है?
(A) सहकारी साझेदारी
(B) उत्पादन के संबंध
(C) सामाजिक एकजुटता
(D) प्रकार्यात्मक अन्योन्याश्रयता

7. एक बड़े ऑटोमोबाइल कारखाने में एक कर्मचारी केवल कारों पर बाएं-सामने के पहिये को फिट करने के लिए उत्तरदायी है। वह अंतिम उत्पाद से कटा हुआ अनुभव करता है और उसका कोई रचनात्मक योगदान नहीं है। मार्क्स की कौन सी अवधारणा उसकी स्थिति का सर्वश्रेष्ठ वर्णन करती है?
(A) अतिरिक्त मूल्य
(B) वर्ग चेतना
(C) तार्किकता
(D) अलगाव

8. निम्नलिखित प्रश्न में, अभिकथन (A) के बाद कारण (R) का कथन दिया गया है। सही विकल्प चुनिए।
अभिकथन (A): मैक्स वेबर ने तर्क दिया कि तार्किकता आधुनिक औद्योगिक समाजों की एक प्रमुख विशेषता है।
कारण (R): नौकरशाही का उदय, दक्षता, गणनात्मकता और नियमों पर इसके बल के साथ, युक्तिकरण (rationalization) की प्रक्रिया का एक प्रमुख उदाहरण है।
(A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सही है लेकिन R गलत है।
(D) A गलत है लेकिन R सही है।

9. दुर्खीम के अनुसार, औद्योगिक समाज में श्रम विभाजन निम्नलिखित में से किस ओर ले जाता है?
(A) यांत्रिक एकजुटता (Mechanical Solidarity)
(B) सामूहिक चेतना

Click Here to Buy book on Amazon

Interactionism)
(D) उत्तर-आधुनिकतावाद (Post-modernism)

48. कारखाने में अनौपचारिक संगठन का संभावित सकारात्मक कार्य क्या है?
(A) यह सदैव हड़ताल और तालाबंदी की ओर ले जाता है।
(B) यह कर्मचारियों के बीच संचार और टीम वर्क में सुधार कर सकता है।
(C) यह औपचारिक प्रबंधन की आवश्यकता को समाप्त करता है।
(D) यह सुनिश्चित करता है कि उत्पादन लक्ष्य सदैव पूर्ण हों।

49. प्रदूषण के उच्च स्तर, अत्यधिक भीड़भाड़ और पारंपरिक सामाजिक मानदंडों के टूटने का अनुभव करने वाला एक औद्योगिक नगर किसका उदाहरण है?
(A) समाज पर उद्योग का सकारात्मक प्रभाव।
(B) औपचारिक संगठन के रूप में कारखाना।
(C) समाज पर उद्योग का दुष्प्रकार्यात्मक (dysfunctional) प्रभाव।
(D) तार्किकता की प्रक्रिया।

50. 'ब्लू-कॉलर' शारीरिक श्रम से 'वाइट-कॉलर' ज्ञान-आधारित कार्य की ओर श्रम के बदलते स्वरूप क्या दर्शाता है?
(A) वैश्विक औद्योगिकीकरण की समग्र प्रक्रिया में मात्रात्मक गिरावट।
(B) औद्योगिक से उत्तर-औद्योगिक समाज में समाजशास्त्रीय संक्रमण।
(C) परिवर्तन के अनुकूल होने में पारंपरिक ट्रेड यूनियनों की प्रणालीगत विफलता।
(D) दीर्घकालिक सामूहिक सौदेबाजी प्रक्रियाओं की अंतिम सफलता।

51. औद्योगिक विवाद तंत्र के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए।
1. सुलह अनुनय की एक प्रक्रिया है और यह पक्षों पर बाध्यकारी नहीं है।
2. श्रम न्यायालय द्वारा अधिनिर्णय के परिणामस्वरूप विधिक रूप से बाध्यकारी निर्णय प्राप्त होता है।
3. मध्यस्थता सदैव अनिवार्य होती है और सरकार द्वारा थोपी जाती है।

उपर्युक्त कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?
(A) केवल 1 और 2
(B) केवल 2 और 3
(C) केवल 1
(D) 1, 2 और 3

52. भारत में संयुक्त प्रबंधन परिषदों (JMCs) की स्थापना किसको बढ़ावा देने के लिए एक नीतिगत पहल थी?
(A) सामूहिक सौदेबाजी
(B) प्रबंधन में श्रमिकों की भागीदारी
(C) विवादों का अधिनिर्णय
(D) ट्रेड यूनियनों का विकास

53. भारत में एक कारखाना स्वामी अपने पैतृक गाँव और जाति के लोगों को कार्य पर रखने में वरीयता देता है। यह प्रथा क्या दर्शाती है?
(A) नौकरशाही के औपचारिक नियम।
(B) सामूहिक सौदेबाजी का सिद्धांत।
(C) क्वालिटी सर्कल की कार्यप्रणाली।
(D) उद्योग पर सामाजिक संरचना का प्रभाव।

54. वह प्रक्रिया जिसके द्वारा श्रमिक और प्रबंधन संयुक्त रूप से नियोजन के नियमों और शर्तों पर बातचीत करते हैं, कहलाती है:
(A) सुलह
(B) मध्यस्थता
(C) सामूहिक सौदेबाजी
(D) अधिनिर्णय

55. निम्नलिखित प्रश्न में, अभिकथन (A) के बाद कारण (R) का कथन दिया गया है। सही विकल्प चुनिए।
अभिकथन (A): कई क्षेत्रों में ट्रेड यूनियनों की पारंपरिक शक्ति कम हो रही है।
कारण (R): असंगठित क्षेत्र की वृद्धि, कार्य की बदलती प्रकृति (जैसे, गिग इकोनॉमी) और विधायी परिवर्तनों जैसे कारकों ने इस गिरावट में योगदान दिया है।
(A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सही है लेकिन R गलत है।
(D) A गलत है लेकिन R सही है।

56. भारत में परिवार पर औद्योगिकीकरण के प्रभाव को सर्वश्रेष्ठ रूप से इस प्रकार वर्णित किया गया है:
(A) पश्चिमी एकल परिवार मॉडल की ओर एक समान और तीव्र संक्रमण।
(B) सभी पारंपरिक और आधुनिक पारिवारिक रूपों का पूर्ण विघटन।
(C) एकलकरण और संयुक्त परिवार अनुकूलन से जुड़ी एक जटिल प्रक्रिया।
(D) आधुनिक घरों में पितृसत्तात्मक अधिकार का पूर्ण सुदृढ़ीकरण।

57. स्वतंत्रता के पश्चात के भारत में तीव्र औद्योगिकीकरण की प्राथमिक सीमाओं में से एक थी:
(A) प्रारंभ से ही निजी क्षेत्र पर अत्यधिक निर्भरता।
(B) संभावित कार्यबल की कमी।
(C) किसी भी विज्ञान और प्रौद्योगिकी नीति की अनुपस्थिति।
(D) "लाइसेंस-परमिट राज" और एक प्रतिबंधात्मक नियामक वातावरण।

NODIA

(C) अनौपचारिक संगठन अनिवार्य रूप से औपचारिक संरचना के भीतर सामाजिक अंतःक्रियाओं से उत्पन्न होता है।
(D) औपचारिक संगठन का प्राथमिक प्रणालीगत लक्ष्य अनौपचारिक संगठन को समाप्त करना है।

20. एक कारखाना प्रबंधक देखता है कि एक विशेष क्षेत्र के श्रमिक एक घनिष्ठ समूह बनाते हैं, एक-दूसरे की सहायता करते हैं और कभी-कभी एक-दूसरे की त्रुटियों को छिपाते हैं। यह किसका उदाहरण है?
(A) श्रम का औपचारिक विभाजन
(B) तार्किकता की प्रक्रिया
(C) नौकरशाही पदानुक्रम
(D) उद्योग पर सामाजिक संरचना का प्रभाव

21. औद्योगिक संबंध तंत्र के संबंध में सूची I को सूची II से सुमेलित कीजिए।
सूची I: (तंत्र)
P. सुलह (Conciliation)
Q. अधिनिर्णय (Adjudication)
R. मध्यस्थता (Arbitration)
S. सामूहिक सौदेबाजी (Collective Bargaining)
सूची II: (विशेषता)
1. बाध्यकारी निर्णय देने के लिए दोनों पक्षों द्वारा एक तटस्थ तीसरे पक्ष को चुना जाता है।
2. एक तीसरा पक्ष चर्चा को सुगम बनाता है लेकिन निर्णय थोपता नहीं है।
3. नियोक्ता और कर्मचारी प्रतिनिधियों के बीच सीधी बातचीत।
4. बाध्यकारी निर्णय के लिए विवाद को श्रम न्यायालय या न्यायाधिकरण जैसे वैधानिक निकाय को भेजा जाता है।
(A) P-2, Q-4, R-1, S-3
(B) P-1, Q-2, R-3, S-4
(C) P-4, Q-1, R-2, S-3
(D) P-3, Q-4, R-1, S-2

22. औद्योगिक संबंधों में 'सामूहिक सौदेबाजी' मुख्य रूप से किसे संदर्भित करती है?
(A) एक प्रक्रिया जहाँ व्यक्तिगत श्रमिक अपने अनुबंधों पर अलग-अलग बातचीत करते हैं।
(B) एक नियोक्ता और कर्मचारियों के समूह (सामान्यतः संघ के माध्यम से) के बीच बातचीत की प्रक्रिया।
(C) एक विधिक प्रक्रिया जहाँ न्यायाधीश मजदूरी विवाद पर निर्णय लेता है।
(D) एक ऐसी प्रणाली जहाँ सरकार सभी मजदूरी और कार्य की दशाएं निर्धारित करती है।

23. हाल के दशकों में 'श्रम के बदलते स्वरूप' में किसकी वृद्धि सम्मिलित है?
(A) विनिर्माण क्षेत्र में स्थायी, पूर्णकालिक नौकरियों की संख्या।
(B) औद्योगिक श्रम पर कृषि श्रम का प्रभुत्व।
(C) पारंपरिक, बड़े पैमाने के ट्रेड यूनियनों की शक्ति।
(D) उच्च शैक्षिक और तकनीकी कौशल वाले श्रमिक।

24. औद्योगिक विवाद समाधान के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए।
कथन I: अधिनिर्णय एक स्वैच्छिक प्रक्रिया है जहाँ निर्णय विधिक रूप से बाध्यकारी नहीं होता है।
कथन II: सुलह एक अनिवार्य प्रक्रिया है जहाँ एक तीसरा पक्ष अंतिम समझौता थोपता है।
(A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
(B) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।
(C) कथन I सही है, लेकिन कथन II गलत है।
(D) कथन I गलत है, लेकिन कथन II सही है।

25. औद्योगिक परिवेश में 'क्वालिटी सर्कल' (Quality Circle) का प्राथमिक उद्देश्य क्या है?
(A) श्रमिकों के लिए वेतन वृद्धि पर बातचीत करना।
(B) एक औपचारिक शिकायत निवारण निकाय के रूप में कार्य करना।
(C) कार्य से संबंधित समस्याओं की पहचान करने और उन्हें हल करने में कर्मचारियों के एक छोटे समूह को सम्मिलित करना।
(D) कार्यबल के लिए सामाजिक और सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन करना।

26. निम्नलिखित में से कौन सा ट्रेड यूनियन का प्राथमिक कार्य नहीं है?
(A) कंपनी के मुख्य कार्यकारी अधिकारी की नियुक्ति करना।
(B) अपने सदस्यों के लिए बेहतर वेतन और कार्य की दशाएं सुरक्षित करना।
(C) प्रबंधन के साथ विवादों में श्रमिकों का प्रतिनिधित्व करना।
(D) सदस्यों को कल्याणकारी सेवाएं और विधिक परामर्श प्रदान करना।

27. संयुक्त प्रबंधन परिषदों (JMCs) जैसे तंत्रों के माध्यम से 'प्रबंधन में श्रमिकों की भागीदारी' का लक्ष्य क्या है?
(A) प्रबंधन को पूर्णतः श्रमिक प्रतिनिधियों से प्रतिस्थापित करना।
(B) ट्रेड यूनियनों की आवश्यकता को समाप्त करना।
(C) केवल उत्पादन लक्ष्यों को बढ़ाने पर ध्यान केंद्रित करना।
(D) श्रमिकों को प्रभावित करने वाली निर्णय लेने की प्रक्रियाओं में उन्हें अपनी बात रखने का अवसर देना।

28. वह प्रक्रिया जिसमें सरकारी प्राधिकारी द्वारा विवाद को सुनने और बाध्यकारी निर्णय देने के लिए एक निष्पक्ष तीसरे पक्ष को नियुक्त किया जाता है, कहलाती है:
(A) मध्यस्थता (Arbitration)
(B) अधिनिर्णय (Adjudication)
(C) सुलह (Conciliation)

Downloaded from www.pdf.tube

(D) सामूहिक सौदेबाजी (Collective Bargaining)

29. निम्नलिखित प्रश्न में, अभिकथन (A) के बाद कारण (R) का कथन दिया गया है। सही विकल्प चुनिए।
अभिकथन (A): हाल के वर्षों में, श्रम-प्रबंधन संबंधों में टकराव से सहयोग की ओर परिवर्तन आया है।
कारण (R): अधिक शिक्षित कार्यबल के उदय और नए प्रबंधन दर्शन ने प्रतिकूल रणनीति के बजाय पारस्परिक लक्ष्यों और समस्या-समाधान पर बल दिया है।
(A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सही है लेकिन R गलत है।
(D) A गलत है लेकिन R सही है।

30. कौन सा शब्द विवाद समाधान के उस रूप का वर्णन करता है जहाँ दोनों पक्ष अपने मामले को एक तटस्थ तीसरे पक्ष को सौंपने और उस पक्ष के निर्णय का पालन करने के लिए सहमत होते हैं?
(A) अधिनिर्णय (Adjudication)
(B) सुलह (Conciliation)
(C) मुकदमेबाजी (Litigation)
(D) स्वैच्छिक मध्यस्थता (Voluntary Arbitration)

31. भारत में औद्योगिकीकरण ने परिवार की संरचना पर महत्वपूर्ण प्रभाव डाला है, विशेष रूप से:
(A) एकल परिवारों की ओर झुकाव, विशेष रूप से शहरी क्षेत्रों में।
(B) पारंपरिक संयुक्त परिवार प्रणाली की मजबूती और विस्तार।
(C) नातेदारी संबंधों का पूर्णतः लुप्त होना।
(D) परिवार के सदस्यों की आर्थिक भूमिका में कमी।

32. औद्योगिकीकरण ने भारत में स्तरीकरण प्रणाली को कैसे प्रभावित किया है?
(A) इसने जाति आधारित असमानताओं को पूर्णतः समाप्त कर दिया है।
(B) इसने वर्तमान जाति पदानुक्रम के साथ-साथ वर्ग स्तरीकरण की एक नई प्रणाली बनाई है।
(C) इसने पारंपरिक जजमानी व्यवस्था को सुदृढ़ किया है।
(D) इसने बिना किसी सामाजिक स्तरीकरण वाले समाज का निर्माण किया है।

33. निम्नलिखित में से किसे भारत में औद्योगिकीकरण की बाधा माना जाता है?
(A) एक विशाल और युवा कार्यबल
(B) अपर्याप्त आधारभूत संरचना, जैसे बिजली और परिवहन
(C) साक्षरता और तकनीकी शिक्षा का उच्च स्तर
(D) एक स्थिर और लोकतांत्रिक राजनीतिक व्यवस्था

34. औद्योगिकीकरण के प्रभाव के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए।
1. औद्योगिकीकरण विशिष्ट और तकनीकी शिक्षा की मांग को बढ़ाता है।
2. औद्योगिकीकरण सामान्यतः सामाजिक गतिशीलता में गिरावट की ओर ले जाता है।
3. श्रमिक वर्ग का उदय औद्योगिकीकरण की प्रक्रिया का प्रत्यक्ष परिणाम है।

उपर्युक्त कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?
(A) केवल 1
(B) केवल 1 और 3
(C) केवल 2 और 3
(D) 1, 2 और 3

35. मार्क्सवादी सिद्धांत के अनुसार औद्योगिक समाज में 'वर्ग संघर्ष' की अवधारणा मुख्य रूप से किसके बीच के संघर्ष को संदर्भित करती है?
(A) विभिन्न धार्मिक समूह
(B) कुशल और अकुशल श्रमिक
(C) बुर्जुआ (स्वामी) और सर्वहारा (श्रमिक)
(D) ग्रामीण और शहरी आबादी

36. कौन सा कथन भारत में शिक्षा पर औद्योगिकीकरण के प्रभाव का सटीक वर्णन करता है?
(A) इसने औपचारिक शिक्षा के महत्व को कम कर दिया।
(B) इसने केवल पारंपरिक और धार्मिक शिक्षा पर ध्यान केंद्रित किया।
(C) इसके परिणामस्वरूप विश्वविद्यालय और महाविद्यालय बंद हो गए।
(D) इसने कुशल कार्यबल की आपूर्ति के लिए व्यावसायिक और तकनीकी प्रशिक्षण की मांग उत्पन्न की।

37. 'समाजशास्त्र के भारतीयकरण' का आह्वान क्या है?
(A) सभी पश्चिमी समाजशास्त्रीय सिद्धांतों और अवधारणाओं को अस्वीकार करना।
(B) सभी प्रमुख समाजशास्त्रीय कार्यों का भारतीय भाषाओं में अनुवाद करना।
(C) ऐसी समाजशास्त्रीय अवधारणाओं और विधियों को लागू करना जो भारतीय सामाजिक संदर्भ में प्रासंगिक हों।
(D) अन्यों की तुलना में भारतीय समाज की श्रेष्ठता का तर्क देना।

38. शिक्षा के निजीकरण से जुड़ी एक बड़ी चुनौती निम्नलिखित में से कौन सी है?
(A) शिक्षण संस्थानों के बीच प्रतिस्पर्धा में कमी।
(B) गुणवत्तापूर्ण शिक्षा तक पहुंच में असमानता बढ़ने की संभावना।
(C) नवाचार की कमी के कारण शिक्षा की गुणवत्ता में गिरावट।
(D) छात्रों और अभिभावकों के लिए विकल्पों में कमी।

NODIA

39. भारत की विज्ञान और प्रौद्योगिकी नीति का एक प्रमुख उद्देश्य क्या है?
(A) वैज्ञानिक अनुसंधान और नवाचार को हतोत्साहित करना।
(B) विशेष रूप से आयातित तकनीक पर निर्भर रहना।
(C) वैज्ञानिक विकास को केवल कृषि पर केंद्रित करना।
(D) स्वदेशी तकनीक के विकास को बढ़ावा देना और इसे राष्ट्रीय लक्ष्यों से जोड़ना।

40. निम्नलिखित प्रश्न में, अभिकथन (A) के बाद कारण (R) का कथन दिया गया है। सही विकल्प चुनिए।
अभिकथन (A): वैश्वीकरण भारतीय उद्योग के लिए अवसर और चुनौतियाँ दोनों प्रस्तुत करता है।
कारण (R): जहाँ यह वैश्विक बाजार खोलता है, वहीं यह घरेलू उद्योगों को तीव्र अंतरराष्ट्रीय प्रतिस्पर्धा के समक्ष भी लाता है।
(A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सही है लेकिन R गलत है।
(D) A गलत है लेकिन R सही है।

41. समानता पर आधारित एकजुटता (यांत्रिक) से अन्योन्याश्रयता पर आधारित एकजुटता (सावयवी) की ओर संक्रमण किसके कार्य का केंद्रीय विषय है?
(A) तार्किकता पर मैक्स वेबर
(B) अलगाव पर कार्ल मार्क्स
(C) श्रम विभाजन पर एमिल दुर्खीम
(D) भारतीयकरण पर जी.एस. घुर्ये

42. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए।
कथन I: वेबर के शब्दों में 'तार्किकता' का अर्थ व्यवहार के प्रेरक के रूप में परंपरा और भावना के स्थान पर दक्षता और परिणामों पर आधारित गणनाओं का उपयोग करना है।
कथन II: तात्विक तार्किकता (Substantive rationality) में एक विशिष्ट मूल्य प्रणाली के आधार पर निर्णय लेना सम्मिलित है, जो औपचारिक अर्थों में 'दक्ष' नहीं भी हो सकता है।
(A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
(B) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।
(C) कथन I सही है, लेकिन कथन II गलत है।
(D) कथन I गलत है, लेकिन कथन II सही है।

43. मार्क्सवादी अवधारणाओं के संबंध में सूची I को सूची II से सुमेलित कीजिए।
सूची I: (पद)
P. उत्पाद से अलगाव
Q. प्रक्रिया से अलगाव
R. प्रजातीय-सत्व (species-being) से अलगाव
S. अन्यों से अलगाव
सूची II: (विवरण)
1. उत्पादन गतिविधि पर श्रमिक का कोई नियंत्रण नहीं होता है।
2. श्रमिक अपनी जन्मजात मानवीय रचनात्मकता और क्षमता से पृथक हो जाता है।
3. सामाजिक संबंध केवल बाजार के लेन-देन तक सीमित हो जाते हैं।
4. श्रमिक उस वस्तु का स्वामी नहीं होता जिसका वह उत्पादन करता है।
(A) P-1, Q-2, R-3, S-4
(B) P-4, Q-1, R-2, S-3
(C) P-3, Q-4, R-1, S-2
(D) P-2, Q-3, R-4, S-1

44. निम्नलिखित में से कौन नौकरशाही विशेषता का गलत प्रतिनिधित्व है?
(A) आधिकारिक कार्य निरंतर, नियम-बद्ध आधार पर संचालित किए जाते हैं।
(B) अधिकारी वरिष्ठों के व्यक्तिगत और मनमाने आदेशों के अधीन होते हैं।
(C) प्रत्येक अधिकारी के पास सक्षमता का एक स्पष्ट रूप से परिभाषित क्षेत्र होता है।
(D) लिखित दस्तावेजों (फाइलों) को आधिकारिक कार्यों के रिकॉर्ड के रूप में संरक्षित किया जाता है।

45. वेबर के अनुसार, नौकरशाही के "निर्वैयक्तिक अभिविन्यास" का अर्थ है कि अधिकारियों को:
(A) जनता के प्रति अमित्र और दुर्गम होना चाहिए।
(B) स्थापित नियमों और विनियमों की अनदेखी करनी चाहिए।
(C) व्यक्तिगत भावनाओं और पक्षपात के बिना कार्य करना चाहिए।
(D) अपने व्यक्तिगत संबंधों के आधार पर निर्णय लेने चाहिए।

46. औद्योगिकीकरण के प्रभाव के निम्नलिखित चरणों को तार्किक क्रम में रखें।
1. कारखाना प्रणाली का उदय
2. शहरी केंद्रों का विकास
3. कृषि अर्थव्यवस्था में गिरावट
4. नई वर्ग संरचनाओं का विकास
(A) 3, 1, 2, 4
(B) 1, 3, 4, 2
(C) 1, 2, 3, 4
(D) 2, 1, 3, 4

47. यह विचार कि कारखाने का विश्लेषण उसके घटक भागों जैसे तकनीकी प्रणाली, प्रशासनिक प्रणाली और सामाजिक प्रणाली के संदर्भ में किया जा सकता है, किसका अनुप्रयोग है?
(A) संरचनात्मक-प्रकार्यवाद (Structural-Functionalism)
(B) संघर्ष सिद्धांत (Conflict Theory)
(C) प्रतीकात्मक अंतःक्रियावाद (Symbolic

Click Here to Buy book on Amazon

(D) एक सामूहिक सौदेबाजी समझौता

68. निम्नलिखित में से कौन सामाजिक स्तरीकरण पर उद्योग के प्रभाव को सर्वश्रेष्ठ रूप से दर्शाता है?
(A) गाँवों में जजमानी व्यवस्था का जारी रहना।
(B) एक पेशेवर मध्यम वर्ग और एक औद्योगिक श्रमिक वर्ग का उदय।
(C) सभी नागरिकों का एक ही, अविभेदित आर्थिक स्थिति में सिमट जाना।
(D) सामाजिक स्थिति के एकमात्र निर्धारक के रूप में जाति का सुदृढ़ीकरण।

69. अधिनिर्णय (Adjudication) और मध्यस्थता (Arbitration) के बीच मुख्य अंतर यह है कि:
(A) अधिनिर्णय स्वैच्छिक है, जबकि मध्यस्थता अनिवार्य है।
(B) अधिनिर्णायक सरकार द्वारा नियुक्त न्यायिक अधिकारी होता है, जबकि मध्यस्थ प्रायः स्वयं पक्षों द्वारा चुना जाता है।
(C) मध्यस्थ का निर्णय बाध्यकारी नहीं होता, जबकि अधिनिर्णायक का होता है।
(D) अधिनिर्णय मजदूरी से संबंधित है, जबकि मध्यस्थता कार्य की दशाओं से संबंधित है।

70. निम्नलिखित प्रश्न में, अभिकथन (A) के बाद कारण (R) का कथन दिया गया है। सही विकल्प चुनिए।
अभिकथन (A): सामूहिक सौदेबाजी प्रबंधन के साथ बातचीत में श्रमिकों की स्थिति को सुदृढ़ करती है।
कारण (R): एक समूह के रूप में बातचीत करके, श्रमिक व्यक्तिगत रूप से किए जाने वाले प्रयास की तुलना में अधिक दबाव डाल सकते हैं, जिससे नियोजन की बेहतर शर्तें प्राप्त होती हैं।
(A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सही है लेकिन R गलत है।
(D) A गलत है लेकिन R सही है।

71. एक ही कार्य क्षेत्र के कर्मचारियों का एक छोटा समूह जो कार्य से संबंधित समस्याओं की पहचान करने, विश्लेषण करने और हल करने के लिए स्वेच्छा से और नियमित रूप से मिलते हैं, कहलाते हैं:
(A) संयुक्त प्रबंधन परिषद
(B) ट्रेड यूनियन कार्यकारी समिति
(C) क्वालिटी सर्कल
(D) निदेशक मंडल

72. भारत में औद्योगिकीकरण के प्रभाव के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए।
1. इससे राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था में कृषि के महत्व में गिरावट आई।
2. यह देश के सभी क्षेत्रों में समान रूप से वितरित था।
3. इसने वर्ग पर आधारित सामाजिक असमानता के नए रूप बनाए।

उपर्युक्त कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?
(A) केवल 1 और 3
(B) केवल 2
(C) केवल 1 और 2
(D) 1, 2 और 3

73. औद्योगिक समाज में 'वर्ग संघर्ष' शब्द का तात्पर्य है कि पूंजी के स्वामी वर्ग और वेतनभोगी वर्ग के हित:
(A) उनके दीर्घकालिक आर्थिक और सामाजिक लक्ष्यों में संरचनात्मक रूप से समान हैं।
(B) वर्तमान पूंजीवादी ढांचे के भीतर मौलिक रूप से असंगत हैं।
(C) सरकारी हस्तक्षेप और राज्य के नेतृत्व वाले नीतिगत उपायों द्वारा सरलता से सुलझाए जा सकते हैं।
(D) आधुनिक सामाजिक संरचना के व्यापक विकास के लिए सामाजिक रूप से अप्रासंगिक हैं।

74. वैश्वीकरण के अंतर्गत "शिक्षा के निजीकरण" का तात्पर्य है:
(A) सरकार द्वारा सभी निजी विद्यालयों और महाविद्यालयों का अधिग्रहण।
(B) शैक्षिक सेवाएं प्रदान करने में निजी, लाभकारी संस्थाओं की बढ़ती भूमिका।
(C) सभी नागरिकों के लिए शिक्षा को निःशुल्क बनाना।
(D) सभी संस्थानों में एक समान पाठ्यक्रम लागू करना।

75. 'समाजशास्त्र के भारतीयकरण' पर बहस मौलिक रूप से किसके बारे में है?
(A) विश्वविद्यालय विभागों में शिक्षा की सर्वाधिक उपयुक्त भाषा का चयन करना।
(B) समाजशास्त्रीय ज्ञान की सार्वभौमिक प्रयोज्यता बनाम संदर्भात्मक प्रासंगिकता।
(C) विदेशी शोधकर्ताओं के मुकाबले देशी भारतीय समाजशास्त्रियों की संख्या को संतुलित करना।
(D) एक विषय के रूप में समाजशास्त्र की विशिष्ट ऐतिहासिक और क्षेत्रीय उत्पत्ति की पहचान करना।

76. निम्नलिखित औद्योगिक विवाद समाधान विधियों को बाहरी नियंत्रण और बाध्यकारी अधिकार के बढ़ते क्रम में व्यवस्थित कीजिए।
1. सामूहिक सौदेबाजी
2. सुलह
3. अधिनिर्णय
(A) 1, 2, 3
(B) 2, 1, 3
(C) 1, 3, 2
(D) 3, 2, 1

77. मार्क्स के अनुसार, पूंजीवाद के अंतर्गत अलगाव का प्राथमिक स्रोत क्या है?

NODIA

58. 'समाजशास्त्र के भारतीयकरण' का आह्वान पश्चिमी सिद्धांतों के बिना सोचे-समझे अनुप्रयोग की आलोचना करता है क्योंकि वे:
(A) ऐसी अवधारणाएँ प्रस्तुत करते हैं जो बौद्धिक रूप से समझने में बहुत कठिन हैं।
(B) जाति और नातेदारी द्वारा संरचित वास्तविकताओं की पर्याप्त व्याख्या नहीं कर सकते हैं।
(C) स्वाभाविक रूप से त्रुटिपूर्ण हैं और शोधकर्ताओं के लिए उनका कोई विश्लेषणात्मक मूल्य नहीं है।
(D) मूल रूप से प्रमुख भारतीय भाषाओं में नहीं लिखे या प्रकाशित किए गए थे।

59. भारत में उच्च शिक्षा के निजीकरण का संभावित परिणाम निम्नलिखित में से कौन सा है?
(A) शिक्षा समाज के सभी वर्गों के लिए अधिक वहन योग्य हो जाती है।
(B) सभी निजी संस्थानों की गुणवत्ता सार्वजनिक संस्थानों की तुलना में बेहतर होने की गारंटी है।
(C) इससे व्यवसायीकरण हो सकता है और लाभ के लिए शैक्षणिक मानकों से समझौता हो सकता है।
(D) यह सभी सामाजिक-आर्थिक पृष्ठभूमि के छात्रों के लिए समान पहुंच सुनिश्चित करता है।

60. भारत की विज्ञान और प्रौद्योगिकी नीति प्रायः 'किफायती नवाचार' (frugal innovation) की आवश्यकता पर बल देती है। इस अवधारणा का क्या अर्थ है?
(A) परिष्कृत आयातित तकनीक के अधिग्रहण में पर्याप्त पूंजी निवेश करना।
(B) विशाल जनसंख्या की आवश्यकताओं के लिए प्रासंगिक उच्च-गुणवत्ता वाले, कम लागत वाले समाधान विकसित करना।
(C) वैज्ञानिक अनुसंधान को सीमित व्यावहारिक उपयोगिता वाले सैद्धांतिक मॉडलों की ओर निर्देशित करना।
(D) बड़े पैमाने पर अनुसंधान और विकास में निजी क्षेत्र के सहयोग को हतोत्साहित करना।

61. सूची I को सूची II से सुमेलित कीजिए।
सूची I: (समाजशास्त्री)
P. कार्ल मार्क्स
Q. मैक्स वेबर
R. एमिल दुर्खीम
S. एल्टन मेयो
सूची II: (संबद्ध अवधारणा/अध्ययन)
1. नौकरशाही और तार्किकता
2. श्रम विभाजन और एनोमी
3. हाथोर्न अध्ययन
4. अतिरिक्त मूल्य और अलगाव
(A) P-4, Q-1, R-2, S-3
(B) P-1, Q-2, R-3, S-4
(C) P-4, Q-3, R-1, S-2
(D) P-2, Q-1, R-4, S-3

NODIA

62. दुर्खीम के विचार में, श्रम के तीव्र विभाजन से 'एनोमी' (anomie) की स्थिति तब उत्पन्न हो सकती है जब:
(A) किसी समाज में अत्यधिक और प्रतिबंधात्मक नैतिक विनियमन हो।
(B) सामाजिक मानदंड और नियम तीव्र सामाजिक परिवर्तनों के साथ तालमेल बिठाने में विफल हो जाते हैं।
(C) व्यक्ति एकजुट सामाजिक और स्थानीय समूहों में बहुत गहराई से एकीकृत होते हैं।
(D) औद्योगिक क्षेत्रों में यांत्रिक एकजुटता अत्यधिक मजबूत हो जाती है।

63. वेबर की 'तार्किकता' की अवधारणा के बारे में कौन सा कथन सही नहीं है?
(A) यह आधुनिकीकरण की प्रक्रिया की एक केंद्रीय विशेषता है।
(B) इसमें गणनात्मकता, पूर्वानुमेयता और नियंत्रण सम्मिलित है।
(C) यह विवेकपूर्ण या नैतिक होने का पर्यायवाची है।
(D) नौकरशाही औपचारिक तार्किकता का प्रतीक है।

64. एक प्रबंधक जो कंपनी के नियमों और प्रक्रियाओं का कठोरता से पालन करता है, भले ही कोई अधिक सहानुभूतिपूर्ण या व्यावहारिक समाधान उपलब्ध हो, वह क्या प्रदर्शित कर रहा है?
(A) करिश्माई सत्ता
(B) नौकरशाही तार्किकता
(C) अनौपचारिक संगठनात्मक व्यवहार
(D) एनोमिक व्यवहार

65. मार्क्स के अनुसार, किसी भी समाज का मूलभूत आधार उसका:
(A) धार्मिक विश्वास है
(B) राजनीतिक व्यवस्था है
(C) उत्पादन की पद्धति है
(D) विधिक ढांचा है

66. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए।
कथन I: एक सामाजिक व्यवस्था के रूप में कारखाने में न केवल मशीनें और भवन, बल्कि मानदंड, मूल्य और स्थिति-भूमिका संबंध भी सम्मिलित हैं।
कथन II: अनौपचारिक संगठन आधिकारिक रूप से प्रबंधन द्वारा औपचारिक संरचना के पूरक के लिए डिजाइन किया गया है।
(A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
(B) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।
(C) कथन I सही है, लेकिन कथन II गलत है।
(D) कथन I गलत है, लेकिन कथन II सही है।

67. "ग्रेपवाइन" (Grapevine) किसका एक प्रसिद्ध उदाहरण है?
(A) एक औपचारिक संचार माध्यम
(B) एक नौकरशाही नियम
(C) एक अनौपचारिक संचार नेटवर्क

(C) सावयवी एकजुटता (Organic Solidarity)
(D) खंडात्मक समाज (Segmental Society)

10. मार्क्स के सिद्धांत में अतिरिक्त मूल्य की अवधारणा का कौन सा कथन गलत वर्णन करता है?
(A) यह श्रमिकों को उनके अतिरिक्त प्रयास के लिए दिया जाने वाला उचित मुआवजा है।
(B) यह पूंजीपति के लिए लाभ का स्रोत है।
(C) यह श्रमिक के अवैतनिक श्रम का प्रतिनिधित्व करता है।
(D) यह इसलिए उत्पन्न होता है क्योंकि श्रम-शक्ति को उसके विनिमय मूल्य पर बेचा जाता है, जो उसके द्वारा उत्पादित मूल्य से कम होता है।

11. अलगाव (alienation) के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए।
1. अलगाव का अर्थ व्यक्तियों का उनके कार्य, उनके कार्य के उत्पाद, उनके साथी मनुष्यों और उनकी अपनी मानवीय क्षमता से पृथक होना है।
2. एमिल दुर्खीम ने अलगाव को सावयवी एकजुटता के प्राथमिक परिणाम के रूप में देखा।
3. मार्क्स के लिए, अलगाव पूंजीवाद के अंतर्गत जीवन की एक परिभाषित विशेषता है।

उपर्युक्त कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?
(A) केवल 1
(B) केवल 1 और 3
(C) केवल 2 और 3
(D) 1, 2 और 3

12. कारखाने को एक 'सामाजिक व्यवस्था' के रूप में मानने का अर्थ है कि यह:
(A) विशुद्ध रूप से उत्पादन की एक तकनीकी इकाई है।
(B) सामाजिक भूमिकाओं, स्थितियों और मानदंडों का एक परस्पर जुड़ा हुआ नेटवर्क है।
(C) सामाजिक अंतःक्रियाओं से पूर्णतः रहित स्थान है।
(D) केवल आर्थिक उद्देश्यों से संचालित एक व्यवस्था है।

13. एक कारखाने के भीतर औपचारिक और अनौपचारिक संगठन के बीच प्राथमिक अंतर क्या है?
(A) औपचारिक संगठन उत्पादन से संबंधित है, जबकि अनौपचारिक संगठन विक्रय से संबंधित है।
(B) औपचारिक संगठन श्रमिकों से बना होता है, जबकि अनौपचारिक संगठन प्रबंधकों से बना होता है।
(C) औपचारिक संगठन नियोजित और प्रलेखित होता है, जबकि अनौपचारिक संगठन स्वतः स्फूर्त रूप से उभरता है।
(D) औपचारिक संगठन अस्थायी होता है, जबकि अनौपचारिक संगठन स्थायी होता है।

14. एक कारखाने में श्रमिकों के बीच मित्रता समूहों, गुटों और सामाजिक मेलजोल का अस्तित्व किसे दर्शाता है?
(A) औपचारिक संगठन
(B) नौकरशाही संरचना
(C) श्रम विभाजन
(D) अनौपचारिक संगठन

15. निम्नलिखित प्रश्न में, अभिकथन (A) के बाद कारण (R) का कथन दिया गया है। सही विकल्प चुनिए।
अभिकथन (A): एक कारखाने के भीतर अनौपचारिक संगठन कभी-कभी औपचारिक संगठन के लक्ष्यों के विरुद्ध कार्य कर सकता है।
कारण (R): अनौपचारिक समूह ऐसे मानदंड विकसित कर सकते हैं जो उत्पादन को प्रतिबंधित करते हैं या प्रबंधन द्वारा प्रारंभ किए गए परिवर्तनों का विरोध करते हैं।
(A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सही है लेकिन R गलत है।
(D) A गलत है लेकिन R सही है।

16. सामाजिक संरचना, जैसे भारत में जाति व्यवस्था, उद्योग को कैसे प्रभावित करती है?
(A) आधुनिक औद्योगिक संगठनात्मक प्रथाओं के विकास पर इसका न्यूनतम प्रभाव पड़ता है।
(B) यह भर्ती, पदोन्नति और अनौपचारिक नेटवर्क के निर्माण को प्रभावित कर सकती है।
(C) यह मुख्य रूप से कारखाने के परिसर में धार्मिक अनुष्ठानों और पारंपरिक प्रथाओं को प्रभावित करती है।
(D) यह सभी समकालीन औद्योगिक परिवेशों में पूर्णतः कार्य करने वाली योग्यता-प्रणाली (meritocracy) सुनिश्चित करती है।

17. निम्नलिखित में से कौन समाज पर उद्योग के प्रभाव का एक उदाहरण है?
(A) पारंपरिक कृषि मूल्यों का सुदृढ़ीकरण
(B) आर्थिक भूमिकाओं के आधार पर नए सामाजिक वर्गों का उदय
(C) शहरीकरण और प्रवासन में गिरावट
(D) संयुक्त परिवार प्रणाली की मजबूती

18. "हाथोर्न अध्ययन" (Hawthorne Studies) प्रसिद्ध रूप से किसके महत्व की खोज से जुड़े हैं?
(A) कार्यस्थल पर अनौपचारिक सामाजिक व्यवस्था
(B) औपचारिक नौकरशाही नियम
(C) तकनीकी श्रम विभाजन
(D) अतिरिक्त मूल्य का निष्कर्षण

19. कौन सा कथन औपचारिक और अनौपचारिक संगठन के बीच संबंधों का सर्वश्रेष्ठ वर्णन करता है?
(A) वे परस्पर अपवर्जित प्रणालियाँ हैं जो एक ही संगठनात्मक स्थान में नहीं रह सकतीं।
(B) अनौपचारिक संगठन औपचारिक संगठन का एक जानबूझकर नियोजित घटक है।

Downloaded from www.pdf.tube

(A) आधुनिक तकनीक की जटिलता
(B) धर्म का पतन
(C) राज्य की नौकरशाही प्रकृति
(D) उत्पादन के साधनों का निजी स्वामित्व

78. निम्नलिखित में से कौन कार्ल मार्क्स द्वारा पहचाने गए अलगाव के चार प्रकारों में से एक नहीं है?
(A) श्रम के उत्पाद से अलगाव
(B) श्रम की प्रक्रिया से अलगाव
(C) राज्य और सरकार से अलगाव
(D) साथी मनुष्यों से अलगाव

79. एक सरकारी अधिकारी का पद और अधिकार उसके द्वारा धारण किए गए कार्यालय से जुड़ा होता है, न कि उसके व्यक्तित्व से। यह सिद्धांत किसका प्रमुख भाग है?
(A) दुर्खीम की एनोमी की अवधारणा
(B) मार्क्स का अतिरिक्त मूल्य का सिद्धांत
(C) वेबर का नौकरशाही मॉडल
(D) अनौपचारिक संगठनों की कार्यप्रणाली

80. निम्नलिखित प्रश्न में, अभिकथन (A) के बाद कारण (R) का कथन दिया गया है। सही विकल्प चुनिए।
अभिकथन (A): किसी समाज की सामाजिक संरचना, उसके मूल्यों और मानदंडों सहित, औद्योगिक विकास को सुगम बना सकती है या उसमें बाधा डाल सकती है।
कारण (R): एक ऐसा समाज जो उद्यमिता और तकनीकी कौशल को महत्व देता है, उसके सफलतापूर्वक औद्योगीकृत होने की संभावना उस समाज की तुलना में अधिक होती है जो पारंपरिक, वंशानुगत व्यवसायों को प्राथमिकता देता है।
(A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सही है लेकिन R गलत है।
(D) A गलत है लेकिन R सही है।

81. 'सावयवी एकजुटता' (Organic Solidarity) की अवधारणा किस पर आधारित है?
(A) व्यक्तियों के बीच समानता और सादृश्य
(B) एक सुदृढ़ सामूहिक अंतरात्मा
(C) भूमिकाओं की अन्योन्याश्रयता और विशिष्टीकरण
(D) दमनकारी कानून और दंड

82. 'संयुक्त प्रबंधन परिषद' (JMC) का सर्वाधिक उपयुक्त वर्णन क्या है?
(A) प्रमुख शेयरधारकों से बना एक वैधानिक निकाय जो सीधे कंपनी चलाता है।
(B) एक स्थानीय ट्रेड यूनियन जो मुख्य रूप से हड़ताल और विरोध प्रदर्शन आयोजित करने पर ध्यान केंद्रित करता है।
(C) परामर्श और सूचना साझा करने के लिए श्रमिक भागीदारी का एक रूप।
(D) जटिल औद्योगिक मजदूरी विवादों को निपटाने के लिए स्थापित एक सरकारी न्यायाधिकरण।

83. नगरों में मलिन बस्तियों की वृद्धि, बढ़ता प्रदूषण और यातायात की भीड़ प्रायः किसके नकारात्मक परिणामों के रूप में उद्धृत की जाती है?
(A) हरित क्रांति
(B) ग्रामीण विकास कार्यक्रम
(C) तीव्र और अनियोजित औद्योगिकीकरण
(D) शिक्षा का निजीकरण

84. 'श्रम के बदलते स्वरूप' में निम्नलिखित में से कौन सी प्रवृत्ति सम्मिलित नहीं है?
(A) विभिन्न क्षेत्रों में महिला श्रम बल की भागीदारी में वृद्धि।
(B) राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था के भीतर एक बढ़ता हुआ अनौपचारिक या असंगठित क्षेत्र।
(C) उच्च कुशल कार्य से पूर्णतः अकुशल शारीरिक श्रम की ओर परिवर्तन।
(D) फ्रीलांसिंग और उभरती हुई 'गिग इकोनॉमी' जैसे कार्य के नए रूपों का उदय।

NODIA

85. भारत में औद्योगिकीकरण और सामाजिक परिवर्तन के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए।
कथन I: औद्योगिकीकरण ने शहरी, औपचारिक नियोजन क्षेत्र में जाति के प्रभाव को शिथिल किया है, लेकिन सामाजिक संबंधों में इसका प्रभाव बना हुआ है।
कथन II: औद्योगिकीकरण के कारण भारत में संयुक्त परिवार प्रणाली पूर्णतः लुप्त हो गई है।
(A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
(B) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।
(C) कथन I सही है, लेकिन कथन II गलत है।
(D) कथन I गलत है, लेकिन कथन II सही है।

86. शिक्षा के निजीकरण के विरुद्ध एक प्रमुख तर्क यह है कि इससे क्या हो सकता है?
(A) शिक्षा को एक वस्तु के बजाय 'सार्वजनिक हित' के रूप में देखने पर निरंतर ध्यान।
(B) सभी के लिए उच्च शिक्षा की लागत में एक महत्वपूर्ण और प्रत्यक्ष कमी।
(C) उच्च शुल्क के कारण मेधावी वंचित छात्रों का बहिष्कार।
(D) स्थानीय व्यवस्था में उच्च योग्य और अनुभवी शिक्षकों की अत्यधिक आपूर्ति।

87. भारत में उच्च शिक्षा के निजीकरण का संभावित परिणाम निम्नलिखित में से कौन सा है?
(A) शिक्षण संस्थानों के बीच प्रतिस्पर्धा में कमी।
(B) गुणवत्तापूर्ण शिक्षा तक पहुंच में असमानता बढ़ने की संभावना।
(C) नवाचार की कमी के कारण शिक्षा की गुणवत्ता में गिरावट।
(D) छात्रों और अभिभावकों के लिए विकल्पों में कमी।

88. भारत जैसे विकासशील देश में विज्ञान और प्रौद्योगिकी नीति का मुख्य उद्देश्य है:
(A) वैज्ञानिक दृष्टिकोण को बढ़ावा देना और सामाजिक-आर्थिक विकास के लिए विज्ञान और प्रौद्योगिकी का उपयोग करना।
(B) पारंपरिक जीवन शैली को संरक्षित करने के लिए प्रौद्योगिकी के उपयोग को सीमित करना।
(C) सभी तकनीकी वस्तुओं के आयात को बढ़ावा देना।
(D) वैज्ञानिक अनुसंधान को केवल सरकारी प्रयोगशालाओं तक सीमित रखना।

89. सूची I को सूची II से सुमेलित कीजिए।
सूची I: (औद्योगिकीकरण का प्रभाव)
P. एकल परिवारों का उदय
Q. नई वर्ग संरचना का उदय
R. तकनीकी कौशल की बढ़ती मांग
S. शहरी केंद्रों का विकास
सूची II: (प्रभाव का क्षेत्र)
1. स्तरीकरण
2. शिक्षा
3. शहरीकरण
4. परिवार
(A) P-4, Q-1, R-2, S-3
(B) P-1, Q-4, R-2, S-3
(C) P-4, Q-2, R-1, S-3
(D) P-3, Q-1, R-2, S-4

90. एक औद्योगिक विवाद को अंतिम और बाध्यकारी निर्णय के लिए श्रम न्यायालय में भेजा जाता है। यह प्रक्रिया है:
(A) सुलह
(B) अधिनिर्णय
(C) सामूहिक सौदेबाजी
(D) मध्यस्थता

91. किस शास्त्रीय सिद्धांतकार ने आधुनिक विश्व को तार्किकता के "लोह पिंजरे" (iron cage) के रूप में देखा?
(A) कार्ल मार्क्स
(B) एमिल दुर्खीम
(C) मैक्स वेबर
(D) हरबर्ट स्पेंसर

92. अतिरिक्त मूल्य का सिद्धांत मार्क्स की किसकी व्याख्या के लिए केंद्रीय है?
(A) सामाजिक एकीकरण
(B) पूंजीवादी शोषण
(C) धार्मिक विश्वास
(D) नौकरशाही दक्षता

93. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए।
1. अनौपचारिक संगठन किसी भी औपचारिक संगठन का एक आवश्यक और अपरिहार्य भाग है।
2. अनौपचारिक संगठन के लक्ष्य सदैव औपचारिक संगठन के लक्ष्यों के साथ संघर्ष में होते हैं।
3. हाथोर्न अध्ययनों ने अनौपचारिक संगठन के महत्व पर प्रकाश डाला।
उपर्युक्त कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?
(A) केवल 2
(B) केवल 1 और 3
(C) केवल 2 और 3
(D) 1, 2 और 3

94. श्रम-प्रबंधन संबंधों में विशुद्ध रूप से प्रतिकूल मॉडल से सहयोग की ओर परिवर्तन किसके द्वारा संचालित है?
(A) कॉर्पोरेट प्रबंधन पर श्रम की पूर्ण और अंतिम राजनीतिक विजय।
(B) प्रतिस्पर्धी बाजार में उत्पादकता और अस्तित्व के साझा हितों की पहचान।
(C) कठोर सरकारी विधान जो औद्योगिक विवाद के सभी रूपों को अवैध घोषित करता है।
(D) सभी प्रशासनिक और प्रबंधन पदों का रणनीतिक उन्मूलन।

95. स्तरीकरण पर औद्योगिकीकरण के प्रभाव के संदर्भ में, 'वर्ग' प्रणाली का प्राथमिक आधार क्या है?
(A) अनुष्ठानिक पवित्रता और प्रदूषण
(B) वंशानुगत स्थिति
(C) आर्थिक स्थिति और उत्पादन के साधनों से संबंध
(D) क्षेत्रीय और भाषाई संबद्धता

96. भारत में औद्योगिकीकरण की एक बड़ी सीमा रही है:
(A) बहुत अधिक नियोजन सृजित करने की प्रवृत्ति।
(B) किसी भी उपभोक्ता वस्तु का उत्पादन करने में विफलता।
(C) असमान क्षेत्रीय विकास, जिससे समृद्धि और पिछड़ेपन के क्षेत्र बन गए हैं।
(D) भारतीय जनसंख्या द्वारा इसे पूर्णतः अस्वीकार करना।

97. 'समाजशास्त्र के भारतीयकरण' की अवधारणा निम्नलिखित में से किस समाजशास्त्री के साथ गहराई से जुड़ी हुई है?
(A) एम.एन. श्रीनिवास
(B) जी.एस. घुर्ये
(C) ए.आर. देसाई
(D) योगेंद्र सिंह

98. निम्नलिखित में से कौन शिक्षा के निजीकरण से उत्पन्न होने वाले संभावित संघर्ष का प्रतिनिधित्व करता है?
(A) सामाजिक समानता का लक्ष्य बनाम निजी लाभ का उद्देश्य।
(B) सभी शिक्षण संस्थानों में पाठ्यक्रम की अनिवार्य एकरूपता।
(C) सभी शैक्षणिक पाठ्यक्रमों में छात्रों के नामांकन में निरंतर गिरावट।
(D) विशेष रूप से सरकार द्वारा अनुमोदित शिक्षण कर्मचारियों

Click Here to Buy book on Amazon

की अनिवार्य भर्ती।

99. निम्नलिखित प्रश्न में, अभिकथन (A) के बाद कारण (R) का कथन दिया गया है। सही विकल्प चुनिए।
अभिकथन (A): औद्योगिकीकरण किसी समाज के शैक्षिक परिदृश्य को मौलिक रूप से परिवर्तित कर देता है।
कारण (R): यह साक्षर और तकनीकी रूप से कुशल कार्यबल की मांग उत्पन्न करता है जिसकी आपूर्ति पारंपरिक, कृषि आधारित शैक्षिक प्रणाली नहीं कर सकती है।
(A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सही है लेकिन R गलत है।
(D) A गलत है लेकिन R सही है।

100. सामूहिक सौदेबाजी में ट्रेड यूनियन की प्राथमिक शक्ति किससे आती है?
(A) इसके नेताओं की व्यक्तिगत संपत्ति से।
(B) हड़ताल जैसी सामूहिक कार्यवाही के माध्यम से उत्पादन को नियंत्रित करने की इसकी क्षमता से।
(C) किसी राजनीतिक दल के साथ इसकी संबद्धता से।
(D) उन अधिवक्ताओं की संख्या से जिन्हें वह नियुक्त करती है।

101. दुर्खीम की 'यांत्रिक एकजुटता' की अवधारणा किसकी विशेषता है?
(A) उच्च स्तर के विशिष्टीकरण वाले आधुनिक, औद्योगिक समाज।
(B) अल्प श्रम विभाजन वाले पारंपरिक, पूर्व-औद्योगिक समाज।
(C) उच्च स्तर की एनोमी का अनुभव करने वाले समाज।
(D) नौकरशाही संगठन।

102. मैक्स वेबर के अनुसार, एक नौकरशाही अधिकारी का अधिकार किस पर आधारित होता है?
(A) व्यक्तिगत करिश्मा
(B) पारंपरिक या विरासत में मिली स्थिति
(C) विधिक रूप से परिभाषित और तर्कसंगत नियम
(D) अधीनस्थों के बीच लोकप्रिय सहमति

103. असेंबली लाइन पर कार्य करने वाला एक श्रमिक जो पूर्ण उत्पादन प्रक्रिया की समझ के बिना दिन भर एक ही दोहराव वाला कार्य करता है, किसका एक उत्कृष्ट उदाहरण है?
(A) श्रम की प्रक्रिया से अलगाव
(B) उच्च कार्य संतुष्टि
(C) प्रबंधन में श्रमिक भागीदारी
(D) सावयवी एकजुटता

104. मार्क्स के शब्दों में 'उत्पादन के संबंध' की सटीक परिभाषा क्या है?
(A) उत्पादन में उपयोग की जाने वाली तकनीकी विधियाँ और मशीनरी।
(B) वस्तुओं के उत्पादन और विनिमय के लिए लोग जिन सामाजिक संबंधों में प्रवेश करते हैं।
(C) कारखाने के भीतर अनौपचारिक सामाजिक नेटवर्क।
(D) विभिन्न देशों के बीच व्यापार समझौते।

NODIA

105. शास्त्रीय समाजशास्त्र में इन अवधारणाओं के उदय को कालानुक्रमिक रूप से व्यवस्थित करें।
1. द डिवीज़न ऑफ लेबर इन सोसाइटी (दुर्खीम)
2. द कम्युनिस्ट मेनिफेस्टो (मार्क्स और एंगेल्स)
3. इकोनॉमी एंड सोसाइटी (वेबर)
(A) 2, 1, 3
(B) 1, 2, 3
(C) 3, 2, 1
(D) 2, 3, 1

106. 'सामाजिक व्यवस्था' के रूप में देखे जाने वाले कारखाने का अर्थ है कि इसमें आंतरिक उप-प्रणालियाँ हैं जो:
(A) एक-दूसरे से पूर्णतः स्वतंत्र हैं।
(B) परस्पर संबंधित और अन्योन्याश्रित हैं।
(C) विशुद्ध रूप से यांत्रिक और अमानवीय हैं।
(D) बाहरी सामाजिक पर्यावरण से असंबद्ध हैं।

107. कौन सा कथन औपचारिक संगठन को अनौपचारिक संगठन से सटीक रूप से पृथक करता है?
(A) औपचारिक संगठन भावनात्मक और भावात्मक है; अनौपचारिक तार्किक और साधनात्मक है।
(B) औपचारिक संगठन स्पष्ट रूप से एक उद्देश्य के लिए बनाया गया है; अनौपचारिक संगठन स्वतः स्फूर्त सामाजिक अंतःक्रिया से उत्पन्न होता है।
(C) औपचारिक संगठन उद्योग में पाया जाता है; अनौपचारिक संगठन परिवारों में पाया जाता है।
(D) औपचारिक संगठन सदैव छोटे पैमाने का होता है; अनौपचारिक संगठन सदैव बड़े पैमाने का होता है।

108. औद्योगिक कार्यबल में महिलाओं की बढ़ती भागीदारी किसका एक उदाहरण है?
(A) परिवार और लैंगिक भूमिकाओं पर उद्योग का प्रभाव।
(B) औद्योगिकीकरण की विफलता।
(C) पारंपरिक स्तरीकरण की निरंतरता।
(D) शिक्षा की आवश्यकता में गिरावट।

109. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए।
कथन I: एक सुलहकर्ता के पास विवाद करने वाले पक्षों पर विधिक रूप से बाध्यकारी समझौता थोपने का अधिकार होता है।
कथन II: एक मध्यस्थ (arbitrator) का निर्णय सामान्यतः श्रम और प्रबंधन दोनों पर बाध्यकारी होता है, बशर्ते वे मध्यस्थता प्रक्रिया के लिए सहमत हों।
(A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
(B) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।

130. पांच मशीन ऑपरेटरों और उनके पर्यवेक्षक का एक समूह मशीन के डाउनटाइम को कम करने और उत्पाद की फिनिश में सुधार करने के तरीकों पर चर्चा करने के लिए साप्ताहिक रूप से मिलता है। यह किसका उदाहरण है?
(A) एक सामूहिक सौदेबाजी सत्र
(B) क्वालिटी सर्कल
(C) संयुक्त प्रबंधन परिषद
(D) हड़ताल समिति

131. एक 'आदर्श प्ररूप' के रूप में 'नौकरशाही' की अवधारणा को व्यवस्थित रूप से किसके द्वारा विकसित किया गया था?
(A) कार्ल मार्क्स
(B) एमिल दुर्खीम
(C) मैक्स वेबर
(D) ए. आर. देसाई

132. एक आधुनिक औद्योगिक समाज में प्रतिमानहीनता (normlessness) की भावना और सामाजिक नियमन के टूटने को क्या कहा जाता है?
(A) अलगाव
(B) एनोमी
(C) तार्किकता
(D) नौकरशाही

133. सूची I को सूची II से सुमेलित कीजिए।
सूची I: (औद्योगिक संबंध पद)
P. सुलह
Q. अधिनिर्णय
R. सामूहिक सौदेबाजी
S. प्रबंधन में श्रमिक भागीदारी
सूची II: (परिभाषा)
1. एक वैधानिक निकाय विवाद पर बाध्यकारी निर्णय देता है।
2. श्रम और प्रबंधन के बीच परामर्श के लिए एक संस्थागत व्यवस्था।
3. एक तीसरा पक्ष विवाद करने वाले पक्षों को आपसी समझौते तक पहुँचने में मदद करता है।
4. श्रम और प्रबंधन के प्रतिनिधि एक अनुबंध पर बातचीत करते हैं।
(A) P-1, Q-3, R-2, S-4
(B) P-3, Q-1, R-4, S-2
(C) P-2, Q-4, R-1, S-3
(D) P-4, Q-1, R-3, S-2

134. निम्नलिखित में से कौन औद्योगिक श्रम के बदलते स्वरूप की विशेषता की सटीक पहचान करता है?
(A) कुल कार्यबल की औसत आयु में महत्वपूर्ण और निरंतर गिरावट।
(B) उन्नत तकनीकी कौशल की संरचनात्मक आवश्यकता में निरंतर कमी।
(C) पूर्ण नौकरी सुरक्षा और स्थायी आजीवन नियोजन में वृद्धि।
(D) काफी हद तक अशिक्षित से अधिक उच्च शिक्षित कार्यबल की ओर परिवर्तन।

135. यह तर्क कि भारत में समाजशास्त्र को भारतीय सामाजिक वास्तविकता में निहित अपनी अवधारणाओं और सिद्धांतों को विकसित करने की आवश्यकता है, किस आह्वान के रूप में जाना जाता है?
(A) समाजशास्त्र का निजीकरण
(B) समाजशास्त्र का वैश्वीकरण
(C) समाजशास्त्र का भारतीयकरण
(D) समाजशास्त्र का युक्तिकरण (Rationalization)

136. उत्पादन के साधनों के स्वामियों और अपनी श्रम शक्ति बेचने वालों के बीच के सामाजिक संबंधों को मार्क्स ने क्या कहा है?
(A) श्रम विभाजन
(B) उत्पादन संबंध
(C) नौकरशाही संबंध
(D) अनौपचारिक संगठन

137. निम्नलिखित में से कौन उद्योग पर सामाजिक संरचना के प्रभाव का एक उदाहरण है?
(A) एक नई निर्माण तकनीक को अपनाना।
(B) अपनी योग्यता के बजाय अपनी जाति के आधार पर प्रबंधक की नियुक्ति।
(C) एक नई गुणवत्ता नियंत्रण प्रणाली का क्रियान्वयन।
(D) किसी नए देश को माल निर्यात करने का निर्णय।

138. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए।
कथन I: भारत में औद्योगिकीकरण ने एक नए, शिक्षित, शहरी मध्यम वर्ग के विकास को जन्म दिया है।
कथन II: औद्योगिकीकरण का स्तरीकरण की पारंपरिक जाति-आधारित प्रणाली पर कोई प्रभाव नहीं पड़ा है।
(A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
(B) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।
(C) कथन I सही है, लेकिन कथन II गलत है।
(D) कथन I गलत है, लेकिन कथन II सही है।

139. भारत के कई क्षेत्रों में तीव्र औद्योगिकीकरण में एक बड़ी बाधा है:
(A) मानव संसाधनों की कमी
(B) खराब आधारभूत संरचनागत सुविधाएं
(C) वस्तुओं के बाजार की अनुपस्थिति
(D) अत्यधिक शक्तिशाली ट्रेड यूनियन

140. निम्नलिखित प्रश्न में, अभिकथन (A) के बाद कारण (R) का कथन दिया गया है। सही विकल्प चुनिए।
अभिकथन (A): कार्यस्थल के भीतर अनौपचारिक संगठन उत्पादकता पर महत्वपूर्ण प्रभाव डाल सकता है।
कारण (R): अनौपचारिक संरचना के भीतर समूह मानदंड या

Downloaded from www.pdf.tube

3. वेबर के लिए, 'युक्तिकरण' एक ऐसी प्रक्रिया है जो आर्थिक क्षेत्र के लिए विशिष्ट है और जीवन के अन्य क्षेत्रों को प्रभावित नहीं करती है।

उपर्युक्त कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?
(A) केवल 1
(B) केवल 1 और 2
(C) केवल 3
(D) 1, 2 और 3

120. यह अवधारणा कि श्रमिकों को उनके भरण-पोषण की लागत के बराबर मजदूरी दी जाती है, जबकि उनके द्वारा उत्पादित अतिरिक्त मूल्य पूंजीपति द्वारा ले लिया जाता है, किसके केंद्र में है?
(A) वेबर का नौकरशाही का सिद्धांत
(B) दुर्खीम का एकजुटता का सिद्धांत
(C) मार्क्स का अतिरिक्त मूल्य का सिद्धांत
(D) परेटो का अभिजात वर्ग के संचलन का सिद्धांत

121. किसी संगठन के भीतर "ग्रेपवाइन" या अनौपचारिक संचार माध्यम लाभप्रद हो सकता है क्योंकि यह:
(A) सदैव सटीक और आधिकारिक सूचना प्रसारित करता है।
(B) कभी-कभी औपचारिक माध्यमों की तुलना में अधिक तीव्रता से सूचना प्रसारित कर सकता है।
(C) प्रबंधकों की कर्मचारियों के साथ संवाद करने की आवश्यकता को समाप्त करता है।
(D) सभी औपचारिक निर्णय लेने का आधार है।

122. शिक्षा पर औद्योगिकीकरण का प्रभाव मुख्य रूप से किसमें देखा जाता है?
(A) साक्षरता दर में गिरावट।
(B) उद्योग द्वारा आवश्यक कौशल की ओर पाठ्यक्रम का झुकाव।
(C) धर्मनिरपेक्ष शिक्षा के ऊपर धार्मिक शिक्षा को बढ़ावा देना।
(D) शिक्षा क्षेत्र से राज्य का पूर्णतः हट जाना।

123. कौन सा औद्योगिक संबंध तंत्र अनिवार्य रूप से तीसरे पक्ष की भागीदारी के बिना दो पक्षों के बीच बातचीत है?
(A) सुलह
(B) मध्यस्थता
(C) अधिनिर्णय
(D) सामूहिक सौदेबाजी

124. वैश्वीकरण के संदर्भ में 'श्रम के बदलते स्वरूप' में सम्मिलित है:
(A) संविदात्मक और अस्थायी कार्य में निरंतर और प्रत्यक्ष कमी।
(B) एक ऐसा कार्यबल जो तेजी से एक स्थायी क्षेत्रीय कारखाने में स्थित होता जा रहा है।
(C) बहु-कौशल और अनुकूलन क्षमता के प्रणालीगत महत्व में वृद्धि।
(D) कार्यबल में महिलाओं की कुल संख्या में महत्वपूर्ण गिरावट।

125. निम्नलिखित प्रश्न में, अभिकथन (A) के बाद कारण (R) का कथन दिया गया है। सही विकल्प चुनिए।
अभिकथन (A): भारत में परिवार की संरचना पर औद्योगिकीकरण का प्रभाव जटिल है और यह एक सरल एकपक्षीय प्रक्रिया नहीं है।
कारण (R): जहाँ शहरी क्षेत्रों में एकल परिवारों की ओर झुकाव है, वहीं संयुक्त परिवार प्रायः स्वयं को ढाल लेते हैं, जैसे प्रवासी सदस्यों को सहायता प्रदान करने जैसे नए कार्य करना।
(A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सही है लेकिन R गलत है।
(D) A गलत है लेकिन R सही है।

126. शिक्षा के निजीकरण के संबंध में एक प्राथमिक चिंता इसे किसमें परिवर्तित करने की क्षमता है?
(A) सार्वजनिक हित
(B) मौलिक अधिकार
(C) विपणन योग्य वस्तु (Commodity)
(D) धर्मार्थ सेवा

NODIA

127. स्वदेशी प्रौद्योगिकियों का विकास और आत्मनिर्भरता किसके प्रमुख लक्ष्य हैं?
(A) भारत की औद्योगिक संबंध नीति
(B) भारत की विज्ञान और प्रौद्योगिकी नीति
(C) सामूहिक सौदेबाजी की प्रक्रिया
(D) अलगाव की अवधारणा

128. भारतीय सामाजिक स्तरीकरण के संदर्भ में 'वर्ग' और 'जाति' के बीच मुख्य अंतर क्या है?
(A) वर्ग जन्म पर आधारित है, जबकि जाति उपलब्धि पर आधारित है।
(B) वर्ग सामाजिक गतिशीलता की अनुमति देता है, जबकि जाति पारंपरिक रूप से प्रदत्त (ascriptive) और कठोर है।
(C) वर्ग ग्रामीण समाज की विशेषता है, जबकि जाति शहरी समाज की विशेषता है।
(D) दोनों अवधारणाओं के बीच कोई अंतर नहीं है।

129. ट्रेड यूनियन का मुख्य उद्देश्य है:
(A) प्रबंधन के हितों को बढ़ावा देना।
(B) कंपनी के लाभ को अधिकतम करना।
(C) अपने सदस्य श्रमिकों के हितों की रक्षा करना और उन्हें आगे बढ़ाना।
(D) कारखाने के स्वामित्व को अपने हाथ में लेना।

(C) कथन I सही है, लेकिन कथन II गलत है।
(D) कथन I गलत है, लेकिन कथन II सही है।

110. क्वालिटी सर्कल्स (Quality Circles) की स्थापना किस देश में विकसित प्रबंधन प्रथाओं से प्रेरित थी?
(A) संयुक्त राज्य अमेरिका
(B) जर्मनी
(C) जापान
(D) भारत

111. सामूहिक सौदेबाजी का प्राथमिक उद्देश्य क्या है?
(A) प्रबंधन को श्रमिक सहकारी संस्था से प्रतिस्थापित करना।
(B) वेतन, कार्य घंटों और नियोजन की अन्य शर्तों को सम्मिलित करने वाले औपचारिक समझौते (अनुबंध) पर पहुँचना।
(C) कार्यस्थल के सभी मुद्दों को न्यायाधीश द्वारा हल करवाना।
(D) कार्यस्थल में अनौपचारिक सामाजिक समूह बनाना।

112. भारत में आधुनिक उद्योगों में नियोजन सुरक्षित करने में जाति-आधारित नेटवर्क की निरंतरता किसका उदाहरण है?
(A) नौकरशाही की आदर्श कार्यप्रणाली।
(B) उद्योग पर पूर्व-विद्यमान सामाजिक संरचना का प्रभाव।
(C) प्रबंधन में श्रमिक भागीदारी का सफल क्रियान्वयन।
(D) सामूहिक सौदेबाजी की प्रक्रिया।

113. निम्नलिखित प्रश्न में, अभिकथन (A) के बाद कारण (R) का कथन दिया गया है। सही विकल्प चुनिए।
अभिकथन (A): भारत में औद्योगिकीकरण शहरीकरण का एक प्रमुख चालक रहा है।
कारण (R): उद्योगों की स्थापना नियोजन के अवसर उत्पन्न करती है जो ग्रामीण क्षेत्रों से शहरी क्षेत्रों की ओर प्रवासियों को आकर्षित करते हैं।
(A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सही है लेकिन R गलत है।
(D) A गलत है लेकिन R सही है।

114. मार्क्सवादी अर्थ में 'वर्ग चेतना' शब्द का तात्पर्य है:
(A) अपने सामाजिक वर्ग के बारे में व्यक्ति की जागरूकता।
(B) एक सामाजिक वर्ग द्वारा अपने साझा हितों और अन्य वर्गों के प्रति अपने विरोध की जागरूकता।
(C) अन्य सामाजिक वर्गों पर श्रेष्ठता की भावना।
(D) यह विश्वास कि वर्ग विभाजन स्वाभाविक और अपरिवर्तनीय हैं।

115. भारत में प्रबंधन योजनाओं में श्रमिक भागीदारी की सफलता में एक महत्वपूर्ण बाधा रही है:
(A) सभी कारखाना श्रमिकों के बीच देखी गई शिक्षा का असाधारण उच्च स्तर।
(B) कई औद्योगिक क्षेत्रों में पंजीकृत ट्रेड यूनियनों की पूर्ण अनुपस्थिति।
(C) प्रबंधन और कुछ स्थापित ट्रेड यूनियनों दोनों की ओर से उदासीनता या प्रतिरोध।
(D) सभी कर्मचारियों की अत्यधिक उत्साहपूर्ण और असंगठित भागीदारी।

116. सूची I को सूची II से सुमेलित कीजिए।
सूची I: (चुनौती)
P. समाजशास्त्र का भारतीयकरण
Q. शिक्षा का निजीकरण
R. अनुसंधान एवं विकास (R&D) को राष्ट्रीय आवश्यकताओं से जोड़ना
S. प्रतिस्पर्धा और घरेलू सुरक्षा के बीच संतुलन
सूची II: (संबद्ध क्षेत्र)
1. वैश्वीकरण
2. शैक्षणिक विषय
3. विज्ञान और प्रौद्योगिकी नीति
4. शिक्षा नीति
(A) P-1, Q-2, R-3, S-4
(B) P-2, Q-4, R-3, S-1
(C) P-4, Q-3, R-1, S-2
(D) P-2, Q-1, R-4, S-3

117. उस स्थिति से संक्रमण जहाँ श्रमिक अपने स्वयं के उपकरणों के स्वामी होते हैं और अपने कार्य को नियंत्रित करते हैं (कारीगर), उस स्थिति की ओर जहाँ वे अन्यों के स्वामित्व वाले उपकरणों का उपयोग करके वेतन के लिए कार्य करते हैं (कारखाना श्रमिक), किसकी अवधारणा का केंद्र है?
(A) एनोमी
(B) अलगाव
(C) युक्तिकरण (Rationalization)
(D) यांत्रिक एकजुटता

118. वेबर के अनुसार नौकरशाही के 'नियमों' के बारे में कौन सा कथन सही है?
(A) नियम अस्थायी होते हैं और प्रतिदिन बदलते हैं।
(B) नियम अमूर्त, स्थिर और व्यापक होते हैं, जिन्हें सीखा जा सकता है।
(C) अधिकारी की व्यक्तिगत पसंद के आधार पर नियम अलग-अलग तरह से लागू किए जाते हैं।
(D) वास्तविक नौकरशाही में कोई नियम नहीं होते, केवल नेता के आदेश होते हैं।

119. शास्त्रीय समाजशास्त्रीय अवधारणाओं के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए।
1. मार्क्स के लिए, 'उत्पादन के संबंध' अन्य सभी सामाजिक संस्थाओं को समझने की कुंजी हैं।
2. दुर्खीम के लिए, 'एनोमी' सामाजिक बाधाओं से मुक्ति की एक सकारात्मक स्थिति है।

Click Here to Buy book on Amazon

तो उच्च उत्पादन को प्रोत्साहित कर सकते हैं या श्रमिकों के बीच "धीमे चलो" (go-slow) के दृष्टिकोण को लागू कर सकते हैं।
(A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सही है लेकिन R गलत है।
(D) A गलत है लेकिन R सही है।

141. वेबर के अनुसार, युक्तिकरण (rationalization) की प्रक्रिया किस ओर ले जाती है?
(A) जादुई और धार्मिक सोच को बढ़ावा देना।
(B) 'विश्व का मोहभंग' (disenchantment of the world)।
(C) व्यक्तिगत निष्ठा और परंपरा पर आधारित समाज।
(D) दक्षता और पूर्वानुमेयता में कमी।

142. मार्क्सवादी सिद्धांत में, 'प्रजातीय-सत्व' (species-being) से अलगाव का तात्पर्य व्यक्तियों का किससे पृथक होना है?
(A) उनके निकटतम एकल परिवार और करीबी व्यक्तिगत मित्र।
(B) कार्य के दौरान उनके द्वारा बनाए गए मूर्त और भौतिक उत्पाद।
(C) उनकी अनिवार्य मानवीय प्रकृति और अंतर्निहित रचनात्मक क्षमता।
(D) औपचारिक राज्य तंत्र और वर्तमान राजनीतिक प्रक्रियाएं।

143. निम्नलिखित में से कौन सी सावयवी एकजुटता (organic solidarity) की विशेषता नहीं है?
(A) श्रम विभाजन का उच्च स्तर।
(B) व्यक्तियों के बीच अन्योन्याश्रयता।
(C) सामूहिक चेतना की प्रधानता।
(D) क्षतिपूरक (restitutive) कानून की प्रमुखता।

144. कारखाने को एक 'सामाजिक व्यवस्था' माना जाता है क्योंकि:
(A) यह एक समाज के भीतर स्थित है।
(B) लोग इसके भीतर संरचित विधियों से, परिभाषित भूमिकाओं और स्थितियों के साथ अंतःक्रिया करते हैं।
(C) यह अपने श्रमिकों को सामाजिक कल्याण की सुविधाएं प्रदान करता है।
(D) समाजशास्त्री इसका अध्ययन करते हैं।

145. औद्योगिक संबंधों के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए।
1. सामूहिक सौदेबाजी प्रबंधन द्वारा एकपक्षीय निर्णय लेने की एक विधि है।
2. अधिनिर्णय में तीसरे पक्ष का हस्तक्षेप सम्मिलित होता है जिसके परिणामस्वरूप एक बाध्यकारी निर्णय प्राप्त होता है।
3. सुलह का उद्देश्य दोनों पक्षों को एक साथ लाना है ताकि आपसी सहमति वाले समाधान तक पहुँचा जा सके।

उपर्युक्त कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?
(A) केवल 1
(B) केवल 1 और 2
(C) केवल 2 और 3
(D) 1, 2 और 3

146. 'संयुक्त प्रबंधन परिषद' किसका एक उदाहरण है?
(A) एक ट्रेड यूनियन
(B) प्रबंधन में श्रमिक भागीदारी का एक रूप
(C) एक सुलह बोर्ड
(D) एक क्वालिटी सर्कल

147. भारत में सामाजिक स्तरीकरण पर औद्योगिकीकरण के महत्वपूर्ण प्रभावों में से एक है:
(A) वर्ग प्रणाली द्वारा जाति व्यवस्था का पूर्ण और अंतिम प्रतिस्थापन।
(B) पारंपरिक कृषि जजमानी व्यवस्था का सुदृढ़ीकरण और विस्तार।
(C) वर्ग और प्रस्थिति के नए पदानुक्रमों का निर्माण जो प्रायः जाति के साथ परस्पर व्याप्त (overlap) होते हैं।
(D) सामाजिक असमानता के सभी ज्ञात रूपों का पूर्ण और अपरिवर्तनीय उन्मूलन।

148. उच्च शिक्षा की बढ़ती लागत और पहुंच की समानता के बारे में चिंताएं किससे संबंधित प्रमुख मुद्दे हैं?
(A) समाजशास्त्र का भारतीयकरण
(B) शिक्षा का निजीकरण
(C) भारत की विज्ञान और प्रौद्योगिकी नीति
(D) क्वालिटी सर्कल्स की कार्यप्रणाली

149. भारत की विज्ञान और प्रौद्योगिकी नीति का प्राथमिक लक्ष्य किसके द्वारा ज्ञान-आधारित समाज का निर्माण करना है?
(A) वैज्ञानिक दृष्टिकोण और नवाचार को प्रोत्साहित करना।
(B) वैज्ञानिक सूचना तक पहुंच को प्रतिबंधित करना।
(C) केवल विदेशी तकनीक आयात करने पर ध्यान केंद्रित करना।
(D) अनुसंधान और विकास को हतोत्साहित करना।

150. निम्नलिखित विचारकों को औद्योगिक समाज पर उनके कार्य के प्राथमिक फोकस के आधार पर, सबसे पहले से शुरू करते हुए व्यवस्थित करें।
1. मैक्स वेबर (तार्किकता, नौकरशाही)
2. कार्ल मार्क्स (पूंजीवाद, अलगाव)
3. एमिल दुर्खीम (श्रम विभाजन, एकजुटता)
(A) 2, 3, 1
(B) 1, 2, 3
(C) 3, 1, 2
(D) 2, 1, 3

151. मार्क्स के अनुसार, अब तक के सभी विद्यमान समाज का इतिहास किसका इतिहास है?

Downloaded from www.pdf.tube

172. निम्नलिखित प्रश्न में, अभिकथन (A) के बाद कारण (R) का कथन दिया गया है। सही विकल्प चुनिए।
अभिकथन (A): वैश्वीकरण ने 'समाजशास्त्र के भारतीयकरण' पर बहस को जन्म दिया है।
कारण (R): वैश्विक विचारों के बढ़ते प्रवाह ने भारत के विशिष्ट सामाजिक-सांस्कृतिक संदर्भ में पश्चिमी अवधारणाओं की प्रासंगिकता का परीक्षण करने की आवश्यकता के प्रति जागरूकता बढ़ाई है।
(A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सही है लेकिन R गलत है।
(D) A गलत है लेकिन R सही है।

173. मार्क्सवादी विचार में 'उत्पादन संबंध' शब्द किसके बीच के संबंध को संदर्भित करता है?
(A) श्रमिक और मशीन
(B) कारखाना और बाजार
(C) उत्पादन में सम्मिलित सामाजिक वर्ग
(D) तैयार उत्पाद और उपभोक्ता

174. वेबर की आदर्श-प्रकार की नौकरशाही की परिभाषित विशेषता इनमें से कौन सी है?
(A) नेता के प्रति व्यक्तिगत निष्ठा
(B) अधिकार का पदानुक्रम
(C) मनमाना निर्णय लेना
(D) वंशानुगत पद

175. शास्त्रीय अवधारणाओं के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए।
1. दुर्खीम ने तर्क दिया कि आधुनिक समाज में श्रम विभाजन सावयवी एकजुटता बनाता है।
2. मार्क्स ने अलगाव को प्रतिमानहीनता (normlessness) की स्थिति के रूप में परिभाषित किया।
3. वेबर की तार्किकता की अवधारणा दक्षता और गणनात्मकता पर आधारित निर्णय लेने पर बल देती है।

उपर्युक्त कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?
(A) केवल 1 और 3
(B) केवल 2
(C) केवल 1 और 2
(D) 1, 2 और 3

176. 'सामाजिक व्यवस्था' के रूप में कारखाने का अर्थ है कि इसमें:
(A) केवल मशीनें और कच्चा माल है
(B) भूमिकाओं, स्थितियों और अपेक्षित व्यवहारों की एक संरचना है
(C) बाहरी समाज के साथ कोई संबंध नहीं है
(D) केवल आर्थिक कार्य हैं और कोई सामाजिक कार्य नहीं है

177. गुटों और सामाजिक समूहों का अस्तित्व जो किसी आधिकारिक संगठन चार्ट पर दिखाई नहीं देते हैं, किसका प्रमाण है?
(A) औपचारिक संगठन
(B) अनौपचारिक संगठन
(C) नौकरशाही की विफलता
(D) युक्तिकरण (Rationalization)

178. औद्योगिक संबंधों में 'अधिनिर्णय' (adjudication) शब्द का तात्पर्य किस प्रक्रिया से है?
(A) सीधी बातचीत के माध्यम से विवाद का निपटारा।
(B) एक तटस्थ तीसरा पक्ष समझौते को सुगम बनाता है।
(C) एक न्यायालय या न्यायाधिकरण विधिक रूप से बाध्यकारी निर्णय लेता है।
(D) श्रमिक हड़ताल पर जाने के लिए मतदान करते हैं।

179. श्रम बल के स्वरूप में मुख्य रूप से पुरुषों से पुरुष और महिला श्रमिकों के मिश्रण की ओर परिवर्तन किसका एक महत्वपूर्ण पक्ष है?
(A) आधुनिक वैश्विक उद्योग की प्रणालीगत और प्रत्यक्ष विफलता।
(B) श्रम के बदलते स्वरूप की समाजशास्त्रीय अवधारणा।
(C) स्थापित ट्रेड यूनियनों की मात्रात्मक और प्रत्यक्ष गिरावट।
(D) औद्योगिक और विधिक अधिनिर्णय की औपचारिक प्रक्रिया।

180. स्तरीकरण प्रणाली पर औद्योगिकीकरण का प्रभाव किसमें सर्वाधिक स्पष्ट है?
(A) जाति व्यवस्था की मजबूती
(B) आर्थिक मानदंडों पर आधारित वर्ग व्यवस्था का उदय
(C) सभी सामाजिक असमानताओं का लुप्त होना
(D) सभी के लिए पूर्ण सामाजिक गतिशीलता

181. निम्नलिखित में से कौन भारत में औद्योगिकीकरण की बाधा नहीं है?
(A) नौकरशाही की लालफीताशाही
(B) आधारभूत संरचना की अड़चनें
(C) एक बड़ा घरेलू बाजार
(D) पूंजी की कमी

182. 'समाजशास्त्र के भारतीयकरण' शब्द का तात्पर्य है:
(A) समाजशास्त्र को एक विशिष्ट और पृथक भारतीय शैक्षणिक विषय में परिवर्तित करना।
(B) भारतीय समाज में पश्चिमी अवधारणाओं की प्रयोज्यता का आलोचनात्मक मूल्यांकन करना।
(C) सभी वैश्विक समाजशास्त्र पाठ्यपुस्तकों का प्रमुख क्षेत्रीय भारतीय भाषाओं में अनुवाद करना।
(D) सैद्धांतिक रूप से यह तर्क देना कि भारतीय समाज मौलिक रूप से अन्यों से श्रेष्ठ है।

183. शिक्षा के निजीकरण के साथ मुख्य चिंताओं में से एक यह है कि यह:
(A) ग्रामीण निर्धनों के लिए शैक्षणिक पहुंच और वहन क्षमता

NODIA

(C) शैक्षणिक समाजशास्त्रीय सिद्धांत के सभी रूपों की पूर्ण और अंतिम अस्वीकृति।
(D) विशेष रूप से विदेशी और गैर-निवासी समाजशास्त्रियों द्वारा भारतीय समाज का अध्ययन।

163. शिक्षा के अनियंत्रित निजीकरण की एक प्रमुख आलोचना यह है कि यह किसे प्राथमिकता दे सकता है?
(A) पूर्ण शैक्षणिक गुणवत्ता के ऊपर सामाजिक न्याय और समानता के सिद्धांत।
(B) शैक्षिक लक्ष्यों की प्राथमिक उपलब्धि के ऊपर निजी लाभ का उद्देश्य।
(C) भौतिक आधारभूत संरचना के विकास के ऊपर उन्नत शिक्षक प्रशिक्षण पहल।
(D) व्यावहारिक कक्षा शिक्षण और अधिगम के ऊपर सैद्धांतिक वैज्ञानिक अनुसंधान।

164. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए।
कथन I: भारत की विज्ञान और प्रौद्योगिकी नीति का उद्देश्य देश को वैश्विक वैज्ञानिक प्रगति से पृथक करना है।
कथन II: नीति समावेशी और सतत विकास के लिए विज्ञान और प्रौद्योगिकी का लाभ उठाना चाहती है।
(A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
(B) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।
(C) कथन I सही है, लेकिन कथन II गलत है।
(D) कथन I गलत है, लेकिन कथन II सही है।

165. सूची I को सूची II से सुमेलित कीजिए।
सूची I: (पुस्तक)
P. द डिवीज़न ऑफ लेबर इन सोसाइटी
Q. दास कैपिटल
R. इकोनॉमी एंड सोसाइटी
S. द प्रोटेस्टेंट एथिक एंड द स्पिरिट ऑफ कैपिटलिज्म
सूची II: (लेखक)
1. कार्ल मार्क्स
2. मैक्स वेबर
3. एमिल दुर्खीम
4. मैक्स वेबर
(A) P-3, Q-1, R-2, S-4
(B) P-1, Q-2, R-3, S-4
(C) P-3, Q-1, R-4, S-2
(D) P-2, Q-1, R-4, S-3

166. एक कारखाने में सामाजिक संबंधों की वह प्रणाली जो संगठन के औपचारिक चार्ट के बजाय कर्मचारियों की व्यक्तिगत और समूह आवश्यकताओं से उभरती है, कहलाती है:
(A) नौकरशाही प्रणाली
(B) अनौपचारिक संगठन
(C) तकनीकी प्रणाली
(D) श्रम विभाजन

167. सामाजिक संगठन के आधार के रूप में 'प्रस्थिति' (प्रदत्त) से 'अनुबंध' (अर्जित) की ओर परिवर्तन किसके संक्रमण का एक प्रमुख विषय है?
(A) सामंती समाज
(B) जनजातीय समाज
(C) औद्योगिक समाज
(D) प्राचीन समाज

168. निम्नलिखित औद्योगिक संबंध प्रथाओं पर विचार कीजिए।
1. कंपनी का प्रबंधन और ट्रेड यूनियन एक नए वेतन समझौते पर बातचीत करते हैं।
2. सरकार द्वारा नियुक्त एक अधिकारी श्रमिकों और प्रबंधन के बीच विवाद में मध्यस्थता करने का प्रयास करता है।
3. अंतिम निर्णय के लिए विवाद को श्रम न्यायालय में भेजा जाता है।
ये प्रथाएं किस अनुक्रम के अनुरूप हैं?
(A) अधिनिर्णय, सुलह, सामूहिक सौदेबाजी
(B) सामूहिक सौदेबाजी, सुलह, अधिनिर्णय
(C) सुलह, अधिनिर्णय, सामूहिक सौदेबाजी
(D) सामूहिक सौदेबाजी, अधिनिर्णय, सुलह

169. 'प्रबंधन में श्रमिकों की भागीदारी' का लक्ष्य क्या है?
(A) कॉर्पोरेट निर्णय लेने में श्रमिक प्रतिनिधियों को अपनी बात कहने का अवसर देना।
(B) प्रबंधन संरचना को पूर्णतः समाप्त करना।
(C) कार्य के घंटों की संख्या बढ़ाना।
(D) ट्रेड यूनियनों की शक्ति को सीमित करना।

170. कौन सा कथन भारत में परिवार पर औद्योगिकीकरण के प्रभाव का सर्वश्रेष्ठ वर्णन करता है?
(A) इसने पूरे देश में संयुक्त परिवार प्रणाली को समान रूप से सुदृढ़ किया है।
(B) इससे एकल परिवारों का उदय हुआ है जबकि संयुक्त परिवार का आदर्श प्रायः बना रहता है।
(C) इसके कारण सभी पारिवारिक संबंध पूर्णतः टूट गए हैं।
(D) इसका परिवार की संरचना पर कोई स्पष्ट प्रभाव नहीं पड़ा है।

171. भारत में औद्योगिकीकरण के लिए एक बड़ी चुनौती एक विशाल और बढ़ती जनसंख्या के लिए नियोजन उत्पन्न करना है, जिसे प्रायः किसका लाभ उठाने के रूप में जाना जाता है:
(A) विकसित पश्चिमी देशों की ओर व्यवस्थित और बड़े पैमाने पर प्रतिभा पलायन (brain drain)।
(B) वर्तमान जनसांख्यिकीय लाभांश (demographic dividend) द्वारा प्रदान की गई संभावित आर्थिक वृद्धि।
(C) आधुनिक कृषि और सिंचाई तकनीकों के परिणामस्वरूप कृषि अधिशेष।
(D) शहरी अभिजात वर्ग और ग्रामीण निर्धनों के बीच विद्यमान डिजिटल अंतराल (digital divide)।

Click Here to Buy book on Amazon

(D) 1, 2 और 3

193. भारत के औद्योगिकीकरण की एक प्रमुख सीमा इसका 'नियोजनहीन विकास' (jobless growth) चरण रहा है, जिसका अर्थ है:
(A) उद्योग से जीडीपी बढ़ी, लेकिन नियोजन सृजन उसके अनुपात में नहीं था।
(B) स्थानीय उद्योग बंद कर दिए गए, जिससे बड़े पैमाने पर क्षेत्रीय नौकरियों की क्षति हुई।
(C) इस विकासात्मक चरण के दौरान कोई नई औद्योगिक इकाइयाँ स्थापित नहीं की गईं।
(D) सभी औद्योगिक श्रमिकों ने एक समन्वित राष्ट्रीय हड़ताल कार्यवाही में भाग लिया।

194. निम्नलिखित में से कौन सा भारतीय उद्योग के लिए वैश्वीकरण का परिणाम नहीं है?
(A) बहुराष्ट्रीय निगमों से बढ़ती प्रतिस्पर्धा।
(B) नई तकनीकों और वैश्विक बाजारों तक पहुंच।
(C) वैश्विक आर्थिक प्रवृत्तियों से पूर्ण अलगाव।
(D) गुणवत्ता और दक्षता में सुधार के लिए दबाव।

195. 'सामाजिक व्यवस्था के रूप में कारखाना' की अवधारणा को किसके द्वारा महत्वपूर्ण रूप से रेखांकित किया गया था?
(A) एफ.डब्ल्यू. टेलर का वैज्ञानिक प्रबंधन स्कूल
(B) हाथोर्न अध्ययनों के पश्चात 'मानव संबंध' (Human Relations) स्कूल
(C) कार्ल मार्क्स का पूंजीवाद का विश्लेषण
(D) मैक्स वेबर का नौकरशाही का सिद्धांत

196. एक श्रमिक का उसके द्वारा उत्पादित वस्तु से पृथक होना, जो तब किसी अन्य के स्वामित्व में होती है और उसके द्वारा बेची जाती है, मार्क्स द्वारा क्या कहा गया है?
(A) उत्पाद से अलगाव
(B) स्वयं से अलगाव
(C) एनोमी
(D) युक्तिकरण (Rationalization)

197. निम्नलिखित में से कौन एक विचारक की औद्योगिक समाज से संबंधित उनकी मूल अवधारणा के साथ सटीक पहचान करता है?
(A) दुर्खीम - तार्किकता
(B) वेबर - अलगाव
(C) मार्क्स - श्रम विभाजन
(D) वेबर - नौकरशाही

198. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए।
कथन I: कारखाने में औपचारिक संगठन उसकी आधिकारिक संरचना, नियमों और पदानुक्रम द्वारा परिभाषित किया जाता है।
कथन II: अनौपचारिक संगठन व्यक्तिगत और सामाजिक संबंधों का एक नेटवर्क है जो औपचारिक संगठन द्वारा स्थापित या आवश्यक नहीं है।
(A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
(B) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।
(C) कथन I सही है, लेकिन कथन II गलत है।
(D) कथन I गलत है, लेकिन कथन II सही है।

199. ट्रेड यूनियन का एक प्राथमिक कार्य किसमें संलग्न होना है?
(A) कंपनी के निदेशकों की नियुक्ति करना
(B) उत्पादन लक्ष्य निर्धारित करना
(C) अपने सदस्यों की ओर से सामूहिक सौदेबाजी करना
(D) कंपनी की विपणन रणनीति तय करना

200. एक काल्पनिक औद्योगिक विवाद के निम्नलिखित चरणों को तार्किक क्रम में व्यवस्थित करें।
1. सामूहिक सौदेबाजी विफल हो जाती है।
2. एक सुलह अधिकारी नियुक्त किया जाता है।
3. विवाद को अधिनिर्णय के लिए श्रम न्यायाधिकरण में भेजा जाता है।
(A) 1, 2, 3
(B) 2, 1, 3
(C) 1, 3, 2
(D) 3, 1, 2

201. भारत में शिक्षा पर औद्योगिकीकरण का प्रभाव किस पर अधिक बल देने के रूप में रहा है?
(A) धार्मिक और नैतिक निर्देश
(B) कला और मानविकी
(C) विज्ञान, प्रौद्योगिकी, इंजीनियरिंग और प्रबंधन
(D) पारंपरिक शिल्प और कौशल

202. पूंजी के स्वामियों और औद्योगिक कार्यबल के बीच संघर्षों के उदय को क्या कहा जाता है?
(A) सामाजिक एकजुटता
(B) वर्ग संघर्ष
(C) युक्तिकरण (Rationalization)
(D) एनोमी

203. औद्योगिकीकरण में एक बड़ी बाधा सामाजिक-संरचनात्मक हो सकती है, जैसे:
(A) एक ऐसी संस्कृति जो जोखिम लेने और उद्यमिता को हतोत्साहित करती है।
(B) एक अत्यधिक कुशल और गतिशील श्रम शक्ति।
(C) संपत्ति के अधिकारों के लिए सुदृढ़ विधिक सुरक्षा।
(D) आधारभूत संरचना में सार्वजनिक निवेश का उच्च स्तर।

204. 'समाजशास्त्र के भारतीयकरण' का आह्वान इस चिंता से उत्पन्न हुआ है कि:
(A) भारतीय समाजशास्त्र आनुभविक अनुसंधान पर बहुत अधिक केंद्रित है।
(B) पश्चिमी समाजशास्त्रीय अवधारणाएं सार्वभौमिक रूप से लागू नहीं हो सकती हैं और नृजाति-केंद्रित

NODIA

में समान रूप से सुधार कर सकता है।
(B) लाभ पर ध्यान केंद्रित करने के कारण शैक्षिक मानकों में गिरावट ला सकता है।
(C) सभी के लिए उच्च शिक्षा की समग्र लागत को पर्याप्त कम कर सकता है।
(D) स्थानीय विद्यालय और महाविद्यालय पाठ्यक्रम पर सरकारी नियंत्रण बढ़ा सकता है।

184. भारत की विज्ञान और प्रौद्योगिकी नीति किसके लिए एक पारिस्थितिकी तंत्र बनाने पर बल देती है?
(A) स्वदेशी नवाचार और अनुसंधान एवं विकास पहल को बढ़ावा देना।
(B) सभी विदेशी तकनीक के व्यवस्थित आयात पर पूर्णतः निर्भर रहना।
(C) ग्रामीण क्षेत्रों में कंप्यूटर और आधुनिक डिजिटल तकनीक के उपयोग को सीमित करना।
(D) वैज्ञानिक विकास को विशेष रूप से पारंपरिक कृषि की विधियों पर केंद्रित करना।

185. दुर्खीम की शब्दावली में, एक समाज जहाँ व्यक्ति अत्यधिक समान होते हैं और एक सुदृढ़ सामान्य नैतिकता साझा करते हैं, किसके द्वारा जुड़ा होता है?
(A) सावयवी एकजुटता (Organic Solidarity)
(B) यांत्रिक एकजुटता (Mechanical Solidarity)
(C) एनोमी
(D) श्रम विभाजन

186. निम्नलिखित प्रश्न में, अभिकथन (A) के बाद कारण (R) का कथन दिया गया है। सही विकल्प चुनिए।
अभिकथन (A): कार्ल मार्क्स ने तर्क दिया कि पूंजीवाद के अंतर्गत कार्य में अलगाव एक अनिवार्य विशेषता है।
कारण (R): श्रमिक उत्पाद से, उत्पादन की प्रक्रिया से, अपनी रचनात्मक क्षमता से और अपने साथी श्रमिकों से पृथक हो जाता है।
(A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सही है लेकिन R गलत है।
(D) A गलत है लेकिन R सही है।

187. "नियमों से बंधा आधिकारिक कार्यों का एक निरंतर संगठन।" यह किस वेबेरियन अवधारणा की एक प्रमुख विशेषता है?
(A) करिश्माई सत्ता
(B) पारंपरिक सत्ता
(C) नौकरशाही
(D) सामाजिक क्रिया

188. समाज पर उद्योग का प्रभाव का सर्वश्रेष्ठ उदाहरण निम्नलिखित में से कौन सा है?
(A) जातिगत अंतर्विवाह का सुदृढ़ीकरण।
(B) साक्षरता दर में गिरावट।
(C) बड़े, अनाम शहरी केंद्रों का विकास।
(D) जजमानी व्यवस्था का सुदृढ़ीकरण।

189. सूची I को सूची II से सुमेलित कीजिए।
सूची I: (प्रक्रिया)
P. सुलह
Q. अधिनिर्णय
R. मध्यस्थता
S. सामूहिक सौदेबाजी
सूची II: (विवरण)
1. नियोक्ता और संघ के बीच सीधी बातचीत
2. बाध्यकारी निर्णय के साथ न्यायालय जैसी कार्यवाही
3. एक तटस्थ सूत्रधार पक्षों को साझा आधार खोजने में सहायता करता है
4. दोनों पक्षों द्वारा चुना गया एक निजी, तटस्थ पक्ष बाध्यकारी निर्णय देता है
(A) P-3, Q-2, R-4, S-1
(B) P-1, Q-2, R-3, S-4
(C) P-3, Q-4, R-2, S-1
(D) P-2, Q-3, R-1, S-4

190. 'क्वालिटी सर्कल्स' की अवधारणा एक ऐसे प्रबंधन दर्शन के भाग के रूप में उत्पन्न हुई जो किस पर बल देती है:
(A) कठोर पदानुक्रमित नियंत्रण
(B) निरंतर सुधार और कर्मचारियों की भागीदारी
(C) श्रम और प्रबंधन के बीच टकराव
(D) कार्यबल कम करने के लिए स्वचालन (automation) में वृद्धि

191. श्रम और प्रबंधन के बीच शत्रुतापूर्ण संबंध से अधिक सहकारी संबंध की ओर क्रमिक परिवर्तन किसके द्वारा संचालित है?
(A) कठोर सरकारी विधान जो औद्योगिक सहयोग को अनिवार्य करते हैं।
(B) सभी आधुनिक वैश्विक उद्योगों की विनाशकारी और प्रत्यक्ष गिरावट।
(C) प्रतिस्पर्धी वैश्विक बाजार में जीवित रहने की आवश्यकता की पारस्परिक पहचान।
(D) सभी वर्तमान ट्रेड यूनियनों का पूर्ण राजनीतिक उन्मूलन।

192. स्तरीकरण पर औद्योगिकीकरण के प्रभाव के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए।
1. औद्योगिकीकरण स्तरीकरण का एक नया सिद्धांत प्रस्तुत करता है: वर्ग।
2. किसी व्यक्ति की वर्ग स्थिति मुख्य रूप से उसकी आर्थिक स्थिति से निर्धारित होती है।
3. भारत में, वर्ग और जाति पदानुक्रम प्रायः जटिल विधियों से परस्पर व्याप्त और अंतःक्रिया करते हैं।
उपर्युक्त कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?
(A) केवल 1
(B) केवल 1 और 2
(C) केवल 2 और 3

Downloaded from www.pdf.tube

(A) सामाजिक एकीकरण
(B) वर्ग संघर्ष
(C) युक्तिकरण (Rationalization)
(D) जनसंख्या वृद्धि

152. "एक सामाजिक स्थिति जिसमें उन मानदंडों और मूल्यों का विघटन या लुप्त होना होता है जो पहले समाज के लिए सामान्य थे।" यह किसकी परिभाषा है?
(A) अलगाव
(B) नौकरशाही
(C) एनोमी
(D) अतिरिक्त मूल्य

153. निम्नलिखित प्रश्न में, अभिकथन (A) के बाद कारण (R) का कथन दिया गया है। सही विकल्प चुनिए।
अभिकथन (A): मैक्स वेबर आधुनिक विश्व के बढ़ते युक्तिकरण (rationalization) को लेकर निराशावादी थे।
कारण (R): उन्हें भय था कि नौकरशाही का प्रसार व्यक्तियों को तर्कसंगत गणना के "लोह पिंजरे" में फंसा देगा, जिससे मानवीय रचनात्मकता और स्वतंत्रता का दमन होगा।
(A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सही है लेकिन R गलत है।
(D) A गलत है लेकिन R सही है।

154. मार्क्सवादी सिद्धांत में 'अतिरिक्त मूल्य' का मुख्य तत्व क्या है?
(A) यह श्रमिक और पूंजीपति के बीच समान रूप से साझा किया गया लाभ है।
(B) यह श्रमिक के श्रम का वह भाग है जो अवैतनिक है।
(C) यह श्रमिक को दिया जाने वाला वेतन है।
(D) यह कच्चे माल की लागत है।

155. किसी संगठन में कर्मचारियों के बीच संचार के अनौपचारिक नेटवर्क को लोकप्रिय रूप से क्या कहा जाता है?
(A) औपचारिक चैनल
(B) पदानुक्रम
(C) ग्रेपवाइन (Grapevine)
(D) क्वालिटी सर्कल

156. समाज पर उद्योग का प्रभाव निम्नलिखित में से किसे छोड़कर सभी में झलकता है?
(A) नगरों और शहरीकरण का विकास
(B) नए सामाजिक वर्गों का उदय
(C) औपचारिक नौकरियों में योग्यता के ऊपर नातेदारी का बढ़ता महत्व
(D) परिवार की संरचना और कार्यों में परिवर्तन

157. निम्नलिखित में से कौन सा जोड़ा सही सुमेलित है?
(A) सुलह - बाध्यकारी निर्णय
(B) अधिनिर्णय - स्वैच्छिक बातचीत
(C) मध्यस्थता - पक्षों द्वारा सहमत तीसरे पक्ष का बाध्यकारी निर्णय
(D) सामूहिक सौदेबाजी - सरकार द्वारा थोपा गया समझौता

158. 'क्वालिटी सर्कल्स' की अवधारणा किस सिद्धांत पर आधारित है?
(A) प्रबंधन द्वारा एकतरफा गुणवत्ता मानक थोपना।
(B) समस्या-समाधान में कर्मचारियों की भागीदारी।
(C) गुणवत्ता नियंत्रण को किसी बाहरी एजेंसी को आउटसोर्स करना।
(D) मानवीय गुणवत्ता निरीक्षकों को प्रतिस्थापित करने के लिए तकनीक का उपयोग करना।

159. कृषि से औद्योगिक कार्य की ओर संक्रमण ने श्रम के बदलते स्वरूप को जन्म दिया है, जिसकी विशेषता है:
(A) संगठनात्मक अनुशासन और समय के प्रति जागरूकता में महत्वपूर्ण और निरंतर गिरावट।
(B) तकनीकी कौशल, समय की पाबंदी और कारखाने के अनुशासन पर प्रत्यक्ष बल।
(C) श्रम के प्रणालीगत विभाजन में मात्रात्मक और गुणात्मक कमी।
(D) आधुनिक कार्यस्थल के भीतर पारंपरिक सामुदायिक बंधनों का प्रत्यक्ष सुदृढ़ीकरण।

160. स्तरीकरण प्रणाली पर औद्योगिकीकरण का एक बड़ा परिणाम किसका उदय है?
(A) पारंपरिक जमींदार अभिजात वर्ग जो ग्रामीण क्षेत्रों में अपना प्रभाव बनाए रखते हैं।
(B) कृषि श्रमिक जो कार्य के लिए शहरी केंद्रों में चले गए हैं।
(C) वेतनभोगी पेशेवर, प्रबंधक और विभिन्न वाइट-कॉलर कर्मचारी।
(D) औद्योगिक सर्वहारा जो कारखाने के परिवेश में शारीरिक श्रम करते हैं।

NODIA

161. भारत में औद्योगिकीकरण की प्रक्रिया की एक सीमा निम्नलिखित में से कौन सी है?
(A) यह बहुत अधिक श्रम-प्रधान रही है, जिससे बहुत अधिक नियोजन सृजित हुए हैं।
(B) इसके लाभ समान रूप से वितरित नहीं हुए हैं, जिससे क्षेत्रीय और सामाजिक असमानताएं उत्पन्न हुई हैं।
(C) यह वैश्विक बाजार के लिए वस्तुओं का उत्पादन करने में विफल रही है।
(D) इससे जनसंख्या के शिक्षा स्तर में गिरावट आई है।

162. 'समाजशास्त्र के भारतीयकरण' की बहस किसका पक्ष लेती है?
(A) वैश्विक स्तर पर सभी मानव समाजों पर लागू संदर्भ-मुक्त समाजशास्त्र का विकास।
(B) भारतीय ऐतिहासिक और सांस्कृतिक विशिष्टताओं के प्रति संवेदनशील रूपरेखा (frameworks)।

(ethnocentric) हो सकती हैं।
(C) भारत में बहुत अधिक समाजशास्त्री हैं।
(D) समाजशास्त्र एक वैज्ञानिक विषय नहीं है।

205. वैश्वीकरण राष्ट्रीय अर्थव्यवस्थाओं को किसके द्वारा चुनौती देता है?
(A) उन्हें शेष विश्व से पृथक करके।
(B) प्रतिस्पर्धा और दक्षता की आवश्यकता को बढ़ाकर।
(C) पूंजी और प्रौद्योगिकी के प्रवाह को कम करके।
(D) सभी अर्थव्यवस्थाओं को एक जैसा बनाकर।

206. शिक्षा के निजीकरण का एक संभावित नकारात्मक परिणाम क्या है?
(A) सभी संस्थानों में शैक्षणिक गुणवत्ता में व्यापक और प्रत्यक्ष सुधार।
(B) सभी छात्रों के लिए शिक्षण शुल्क में महत्वपूर्ण और प्रणालीगत कमी।
(C) एक स्तरीकृत व्यवस्था का निर्माण जहाँ गुणवत्ता भुगतान करने की क्षमता से जुड़ी हो।
(D) प्रमुख सार्वजनिक विश्वविद्यालयों के लिए सरकारी वित्त पोषण में पर्याप्त वृद्धि।

207. भारत की विज्ञान and प्रौद्योगिकी नीति का एक मुख्य स्तंभ क्या बनाना है?
(A) विदेशी तकनीक पर निर्भरता
(B) प्रौद्योगिकी के महत्वपूर्ण क्षेत्रों में राष्ट्रीय आत्मनिर्भरता
(C) एक ऐसा समाज जो आधुनिक विज्ञान को अस्वीकार करता है
(D) केवल कृषि विज्ञान पर केंद्रित एक व्यवस्था

208. एक श्रमिक द्वारा उत्पादित मूल्य और उसके वेतन के मूल्य के बीच के अंतर को क्या कहा जाता है?
(A) उपयोग-मूल्य
(B) लाभ
(C) अतिरिक्त मूल्य
(D) विनिमय-मूल्य

209. निम्नलिखित प्रश्न में, अभिकथन (A) के बाद कारण (R) का कथन दिया गया है। सही विकल्प चुनिए।
अभिकथन (A): दुर्खीम के अनुसार, औद्योगिक समाज में श्रम विभाजन सामाजिक सामंजस्य का एक स्रोत है।
कारण (R): यह व्यक्तियों और समूहों के बीच अन्योन्याश्रयता उत्पन्न करता है, उन्हें आपसी दायित्वों की एक प्रणाली में बांधता है, जिसे उन्होंने सावयवी एकजुटता (organic solidarity) कहा।
(A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सही है लेकिन R गलत है।
(D) A गलत है लेकिन R सही है।

210. वेबर द्वारा प्रतिपादित नौकरशाही का 'आदर्श प्ररूप' है:
(A) नौकरशाही के सर्वाधिक सामान्य रूप का वर्णन।
(B) नौकरशाही बनाने के लिए एक राजनीतिक घोषणापत्र।
(C) वास्तविक विश्व की नौकरशाही का आकलन करने के लिए एक विश्लेषणात्मक निर्मिति या एक मापदंड।
(D) संगठन के सभी रूपों की आलोचना।

211. कार्य पर कर्मचारी जो अनौपचारिक मित्रता और गठबंधन बनाते हैं, वे किसका गठन करते हैं?
(A) औपचारिक संगठन
(B) श्रम विभाजन
(C) अनौपचारिक संगठन
(D) अधिनिर्णय की प्रणाली

212. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए।
1. ट्रेड यूनियन मुख्य रूप से सामाजिक क्लब हैं जिनका कोई आर्थिक उद्देश्य नहीं है।
2. सामूहिक सौदेबाजी ट्रेड यूनियनों का एक प्रमुख कार्य है।
3. प्रबंधन में श्रमिक भागीदारी का उद्देश्य कंपनी के मामलों में श्रमिकों को अपनी बात रखने का अवसर देना है।

उपर्युक्त कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?
(A) केवल 1
(B) केवल 1 और 2
(C) केवल 2 और 3
(D) 1, 2 और 3

213. परिवार पर औद्योगिकीकरण के प्रभाव में प्रायः कार्यों में परिवर्तन सम्मिलित होता है, जहाँ:
(A) परिवार उत्पादन की प्राथमिक और केंद्रीय इकाई बन जाता है।
(B) उत्पादन कार्य कम हो जाते हैं जबकि समाजीकरण के कार्य प्रमुख हो जाते हैं।
(C) परिवार कोई सामाजिक या आर्थिक कार्य करना पूर्णतः बंद कर देता है।
(D) राज्य परिवार के सभी आंतरिक और बाहरी कार्यों को अपने हाथ में ले लेता है।

214. भारत में औद्योगिकीकरण की मुख्य सीमाओं में से एक इसका किसमें संकेंद्रण रहा है?
(A) ग्रामीण क्षेत्र
(B) सभी राज्यों में समान रूप से
(C) कुछ विशिष्ट क्षेत्र और शहरी केंद्र
(D) कृषि क्षेत्र

215. वैश्वीकरण की चुनौतियों के संदर्भ में 'निजीकरण' शब्द का तात्पर्य है:
(A) निजी से सार्वजनिक क्षेत्र में स्वामित्व का हस्तांतरण।
(B) सार्वजनिक (सरकार) से निजी क्षेत्र में स्वामित्व या प्रबंधन का हस्तांतरण।
(C) सरकार द्वारा सभी निजी उद्यमों का अधिग्रहण।

Click Here to Buy book on Amazon

है।
कारण (R): पूर्व से विद्यमान सामाजिक नेटवर्क, जैसे जाति या नातेदारी पर आधारित, भर्ती प्रथाओं और कार्यस्थल की अंतःक्रियाओं को प्रभावित कर सकते हैं, जो कभी-कभी औपचारिक नियमों पर भारी पड़ते हैं।
(A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सही है लेकिन R गलत है।
(D) A गलत है लेकिन R सही है।

239. कौन सा जोड़ा सही सुमेलित नहीं है?
(A) संयुक्त प्रबंधन परिषद - श्रमिक भागीदारी
(B) सामूहिक सौदेबाजी - बातचीत
(C) सुलह - अनिवार्य निर्णय
(D) अधिनिर्णय - श्रम न्यायालय

240. 'श्रम के बदलते स्वरूप' का तात्पर्य निम्नलिखित में से क्या नहीं है?
(A) गिग इकोनॉमी में वृद्धि
(B) कौशल उन्नयन (upskilling) और पुनः कौशल (reskilling) की अधिक आवश्यकता
(C) स्थायी, आजीवन नियोजन की ओर वैश्विक वापसी
(D) वाइट-कॉलर और सेवा क्षेत्र के श्रमिकों की संख्या में वृद्धि

241. निम्नलिखित सामाजिक रूपों को उस क्रम में व्यवस्थित करें जिस क्रम में दुर्खीम ने उनके विकास की अवधारणा की थी।
1. सावयवी एकजुटता पर आधारित समाज
2. यांत्रिक एकजुटता पर आधारित समाज
3. अनियंत्रित परिवर्तन के कारण एनोमिक समाज
(A) 2, 1, 3
(B) 2, 1, 3
(C) 2, 3, 1
(D) 3, 2, 1

242. शिक्षा जैसी अनिवार्य सेवाओं के अनियंत्रित निजीकरण की मुख्य आलोचना यह है कि यह किसके सिद्धांत को शिथिल कर सकता है?
(A) निजी सेवा क्षेत्र में कॉर्पोरेट लाभ का अधिकतमकरण।
(B) शैक्षणिक संस्थानों के बीच अनियमित बाजार प्रतिस्पर्धा।
(C) सामाजिक न्याय और गुणवत्तापूर्ण शैक्षणिक अवसरों तक निष्पक्ष पहुंच।
(D) विभिन्न निजी विद्यालय प्रदाताओं के बीच विविध उपभोक्ता पसंद।

243. एक बड़े औद्योगिक श्रमिक वर्ग (सर्वहारा) की वृद्धि, जिसके पास अपनी श्रम शक्ति के अतिरिक्त कुछ भी नहीं है, किसकी एक प्रमुख विशेषता है?
(A) सामंती समाज
(B) जनजातीय समाज
(C) पूंजीवादी औद्योगिक समाज
(D) उत्तर-औद्योगिक समाज

244. मार्क्स के ढांचे में, पूंजीवादी औद्योगिक समाज में दो मुख्य वर्ग कौन से हैं?
(A) सामंत और अर्धदास (Lords and Serfs)
(B) कुलीन और सामान्य जन (Patricians and Plebeians)
(C) बुर्जुआ और सर्वहारा
(D) पादरी और सामान्य लोग (Clergy and Laity)

245. सूची I को सूची II से सुमेलित कीजिए।
सूची I: (समाजशास्त्रीय परंपरा)
P. मार्क्सवादी
Q. वेबेरियन
R. दुर्खीमवादी
S. मानव संबंध (Human Relations)
सूची II: (उद्योग के बारे में मूल विचार)
1. एनोमी या सावयवी एकजुटता का स्रोत
2. वर्ग संघर्ष और अलगाव का अखाड़ा
3. तार्किकता और नौकरशाही का अवतार
4. औपचारिक और अनौपचारिक समूहों की एक सामाजिक व्यवस्था
(A) P-1, Q-2, R-3, S-4
(B) P-2, Q-3, R-1, S-4
(C) P-3, Q-1, R-4, S-2
(D) P-2, Q-4, R-1, S-3

246. 'अतिरिक्त मूल्य' के बारे में निम्नलिखित में से कौन सा कथन सही है?
(A) यह श्रमिक को उसके श्रम के लिए दिया जाने वाला वेतन है।
(B) यह श्रमिक द्वारा अपनी श्रम शक्ति की लागत से अधिक सृजित किया गया मूल्य है।
(C) यह उत्पादन में प्रयुक्त कच्चे माल का मूल्य है।
(D) यह उत्तम प्रदर्शन के लिए दिया जाने वाला बोनस है।

NODIA

247. नौकरशाही की अवधारणा में निम्नलिखित को छोड़कर सभी विशेषताएं हैं:
(A) कार्यालयों का एक स्पष्ट पदानुक्रम
(B) तर्कसंगत-विधिक नियमों की एक प्रणाली
(C) तकनीकी सक्षमता पर आधारित भर्ती
(D) व्यक्तिगत और भावनात्मक विचारों पर आधारित निर्णय

248. "समाज पर उद्योग का प्रभाव" किस प्रक्रिया में सर्वाधिक स्पष्ट रूप से देखा जाता है?
(A) ग्रामीणकरण (Ruralization)
(B) शहरीकरण (Urbanization)
(C) वि-वैश्वीकरण (De-globalization)
(D) पारंपरिकता (Traditionalization)

STUDYING FROM PDFs?

THINK AGAIN.

If you are studying only from PDFs,
you are wasting valuable time.

Research shows that learning from

PRINTED BOOKS has up to

4× HIGHER RETENTION

than studying from screens.

PRINT BOOK = BETTER MEMORY

PDF = LOWER RETENTION

Those who study from **PRINTED BOOKS**
move **AHEAD.**

Others are left **BEHIND**
in competition.



In competitive exams,
being average is not enough.

STAY ONE STEP AHEAD.

(D) औपचारिक तार्किकता and नौकरशाही

227. पूंजीवादी समाज में मार्क्स की अलगाव की अवधारणा का सार है:
(A) एकाकीपन की भावना
(B) अपने स्वयं के श्रम और उसके उत्पादों पर नियंत्रण की क्षति
(C) सरकारी नीति के साथ असहमति
(D) धार्मिक विश्वास की कमी

228. निम्नलिखित में से कौन वेबर की आदर्श-प्रकार की नौकरशाही का भाग नहीं है?
(A) निर्वैयक्तिकता
(B) पदानुक्रम
(C) लिखित रिकॉर्ड
(D) करिश्माई नेतृत्व

229. हाथोर्न प्रयोगों ने प्रसिद्ध रूप से किसके महत्व को प्रदर्शित किया?
(A) केवल आर्थिक प्रोत्साहन
(B) कार्य की भौतिक स्थितियाँ
(C) कार्यस्थल पर सामाजिक और मनोवैज्ञानिक कारक
(D) पर्यवेक्षण की कठोरता

230. कंपनी के प्रबंधन और ट्रेड यूनियन के प्रतिनिधियों के बीच बातचीत की प्रक्रिया को क्या कहा जाता है?
(A) अधिनिर्णय
(B) मध्यस्थता
(C) सुलह
(D) सामूहिक सौदेबाजी

231. 'क्वालिटी सर्कल' का सर्वश्रेष्ठ वर्णन है:
(A) एक अनिवार्य प्रबंधन समिति
(B) कार्य से संबंधित समस्याओं को हल करने वाला श्रमिकों का एक स्वैच्छिक समूह
(C) सामूहिक सौदेबाजी के लिए एक वार्ता दल
(D) गुणवत्ता निरीक्षण के लिए एक सरकारी निकाय

232. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए।
1. भारत में औद्योगिकीकरण ने शहरीकरण में महत्वपूर्ण वृद्धि की है।
2. परिवार पर औद्योगिकीकरण का प्रभाव प्रत्येक स्थान पर एकल परिवार मॉडल को समान रूप से अपनाना रहा है।
3. औद्योगिकीकरण ने भारत में एक नई वर्ग संरचना बनाई है।

उपर्युक्त कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?
(A) केवल 1 और 3
(B) केवल 2
(C) केवल 1 और 2
(D) 1, 2 और 3

233. भारत के संदर्भ में, 'वर्ग संघर्ष' प्रायः किसके द्वारा जटिल हो जाता है?
(A) किसी भी परिभाषित सामाजिक वर्ग की पूर्ण और प्रत्यक्ष अनुपस्थिति।
(B) पारंपरिक जाति पहचानों का परस्पर व्याप्त होना और उनकी निरंतरता।
(C) सभी विद्यमान सामाजिक समूहों के बीच पूर्ण और अंतिम सद्भाव।
(D) देश में किसी भी महत्वपूर्ण औद्योगिक विकास का अभाव।

234. शिक्षा के निजीकरण के पक्ष में प्रमुख तर्कों में से एक यह है कि यह:
(A) सभी सामाजिक समूहों के लिए पहुंच की पूर्ण और अंतिम समानता सुनिश्चित कर सकता है।
(B) अधिक निवेश ला सकता है और अधिक विविध संस्थागत विकल्प प्रदान कर सकता है।
(C) सामान्य जनसंख्या के लिए शैक्षणिक शिक्षा की समग्र लागत को कम कर सकता है।
(D) राज्य सहायता के माध्यम से वर्तमान सार्वजनिक शिक्षा प्रणाली को सुदृढ़ कर सकता है।

235. समाजशास्त्र में 'भारतीयकरण' शब्द का तात्पर्य किसकी आवश्यकता से है:
(A) एक एकल, सार्वभौमिक और विश्व स्तर पर लागू समाजशास्त्रीय सिद्धांत।
(B) भारतीय सामाजिक वास्तविकता का प्रासंगिक रूप से प्रासंगिक समाजशास्त्रीय विश्लेषण।
(C) आनुभविक अनुसंधान के सभी रूपों की पूर्ण और अंतिम अस्वीकृति।
(D) विशेष रूप से देशी भारतीय समाजशास्त्रियों द्वारा भारतीय समाज का अध्ययन।

236. अन्य राष्ट्रों पर निर्भरता कम करने के लिए स्वदेशी तकनीकी क्षमताओं को विकसित करने की नीति किसका आधार है?
(A) निजीकरण नीति
(B) श्रम संबंध नीति
(C) विज्ञान और प्रौद्योगिकी नीति
(D) शिक्षा नीति

237. 'श्रम विभाजन' को दुर्खीम ने किसका प्राथमिक स्रोत माना था?
(A) आधुनिक समाज में सामाजिक संघर्ष
(B) आधुनिक समाज में सामाजिक एकजुटता
(C) आधुनिक समाज में अलगाव
(D) आधुनिक समाज में नौकरशाही

238. निम्नलिखित प्रश्न में, अभिकथन (A) के बाद कारण (R) का कथन दिया गया है। सही विकल्प चुनिए।
अभिकथन (A): एक समुदाय की सामाजिक संरचना उसके भीतर स्थित उद्योग की कार्यप्रणाली को प्रभावित कर सकती

NODIA

(C) पर्याप्त छोटा और कम अनुभवी कार्यबल।
(D) उद्योग में महिलाओं की भागीदारी में गुणात्मक गिरावट।

282. सामाजिक स्तरीकरण पर औद्योगिकीकरण का प्रभाव मुख्य रूप से किसका उदय है?
(A) बिना किसी असमानता वाला समाज।
(B) आर्थिक स्थिति पर आधारित वर्ग संरचना।
(C) शहरी क्षेत्रों में एक कठोर जाति व्यवस्था।
(D) केवल धार्मिक स्थिति पर आधारित व्यवस्था।

283. भारत में औद्योगिक विकास की एक महत्वपूर्ण सीमा रही है:
(A) बड़े घरेलू बाजार का अभाव।
(B) कुछ अवधियों में 'नियोजनहीन विकास' का मुद्दा।
(C) कृषि पर अत्यधिक बल।
(D) निजी क्षेत्र की किसी भी भागीदारी की अनुपस्थिति।

284. वैश्वीकरण भारतीय समाजशास्त्र के लिए किसके द्वारा एक चुनौती प्रस्तुत करता है?
(A) भारतीय समाज का अध्ययन करना असंभव बनाना।
(B) वैश्विक संदर्भ में स्थानीय वास्तविकताओं के पुनर्मूल्यांकन के लिए बाध्य करना।
(C) सभी पश्चिमी सिद्धांतों को सार्वभौमिक रूप से सही सिद्ध करना।
(D) विषय की आवश्यकता को ही समाप्त करना।

285. भारत की विज्ञान and प्रौद्योगिकी नीति का एक मुख्य स्तंभ किसे बढ़ावा देना है?
(A) वैज्ञानिक सोच और नवाचार की संस्कृति।
(B) आयातित तकनीक पर पूर्ण निर्भरता।
(C) औद्योगिक आवश्यकताओं से विज्ञान का पृथक्करण।
(D) वैज्ञानिक ज्ञान का प्रतिबंध।

286. दुर्खीम ने 'एनोमी' शब्द का प्रयोग किसकी स्थिति का वर्णन करने के लिए किया था?
(A) पूर्ण सामाजिक एकीकरण
(B) सुदृढ़ सामूहिक अंतरात्मा
(C) प्रतिमानहीनता (Normlessness)
(D) उच्च सामाजिक घनत्व

287. कौन सी समाजशास्त्रीय अवधारणा अपने स्पष्ट नियमों, पदानुक्रम और विशिष्ट भूमिकाओं के साथ एक आधुनिक सरकारी विभाग की संरचना की सर्वश्रेष्ठ व्याख्या करती है?
(A) अलगाव
(B) नौकरशाही
(C) यांत्रिक एकजुटता
(D) अनौपचारिक संगठन

288. मार्क्स के अनुसार, सर्वहारा वर्ग अपने श्रम के उत्पाद से पृथक है क्योंकि:
(A) उत्पाद समझने के लिए बहुत जटिल है।
(B) उत्पाद श्रमिक का नहीं बल्कि पूंजीपति का है।
(C) उत्पाद निम्न गुणवत्ता का है।
(D) श्रमिक उपभोक्ता को पसंद नहीं करता है।

289. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए।
1. कारखाने के औपचारिक संगठन को संगठनात्मक चार्ट द्वारा दर्शाया जाता है।
2. अनौपचारिक संगठन श्रमिकों की उन सामाजिक आवश्यकताओं को पूर्ण कर सकता है जो औपचारिक संरचना द्वारा पूरी नहीं होती हैं।
3. औपचारिक और अनौपचारिक संगठन सदैव संघर्ष में रहते हैं।

उपर्युक्त कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?
(A) केवल 3
(B) केवल 1 और 2
(C) केवल 2 और 3
(D) 1, 2 और 3

290. निम्नलिखित प्रश्न में, अभिकथन (A) के बाद कारण (R) का कथन दिया गया है। सही विकल्प चुनिए।
अभिकथन (A): वैश्वीकरण के युग में औद्योगिक संबंध अधिक जटिल हो गए हैं।
कारण (R): आउटसोर्सिंग, स्वचालन (automation) और लचीले कार्यबल के उदय जैसे मुद्दों ने श्रम और प्रबंधन के बीच संबंधों में नए आयाम प्रस्तुत किए हैं।
(A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सही है लेकिन R गलत है।
(D) A गलत है लेकिन R सही है।

291. सूची I को सूची II से सुमेलित कीजिए।
सूची I: (पद)
P. श्रम विभाजन
Q. वर्ग संघर्ष
R. निजीकरण
S. संयुक्त प्रबंधन परिषद
सूची II: (उदाहरण/अर्थ)
1. बुर्जुआ और सर्वहारा के बीच संघर्ष
2. कारखाने में कार्यों का विशिष्टीकरण
3. प्रबंधन में श्रमिक भागीदारी के लिए एक निकाय
4. सार्वजनिक क्षेत्र की कंपनी का निजी हाथों में हस्तांतरण
(A) P-2, Q-1, R-4, S-3
(B) P-2, Q-1, R-4, S-3
(C) P-3, Q-4, R-1, S-2
(D) P-2, Q-4, R-3, S-1

292. शहरी औद्योगिक क्षेत्रों में विस्तारित या संयुक्त परिवारों से छोटे, एकल परिवारों की ओर परिवर्तन किसका परिवार पर एक बड़ा प्रभाव है?
(A) स्तरीकरण
(B) शिक्षा

Downloaded from www.pdf.tube

249. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए।
कथन I: मध्यस्थता (Arbitration) एक ऐसी प्रक्रिया है जहाँ तीसरे पक्ष (मध्यस्थ) का निर्णय विवाद करने वालों पर बाध्यकारी होता है।
कथन II: सुलह (Conciliation) एक ऐसी प्रक्रिया है जहाँ तीसरा पक्ष (सुलहकर्ता) एक संस्तुति करता है जो विधिक रूप से बाध्यकारी नहीं होती है।
(A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
(B) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।
(C) कथन I सही है, लेकिन कथन II गलत है।
(D) कथन I गलत है, लेकिन कथन II सही है।

250. संयुक्त प्रबंधन परिषदों जैसी 'प्रबंधन में श्रमिक भागीदारी' योजनाओं का मुख्य उद्देश्य है:
(A) औद्योगिक संघर्ष को बढ़ाना।
(B) अपनत्व की भावना और सहयोग को बढ़ावा देना।
(C) प्रबंधकों की भूमिका को समाप्त करना।
(D) ट्रेड यूनियन को एकमात्र निर्णय निर्माता बनाना।

251. भारत में औद्योगिकीकरण की एक 'बाधा और सीमा' किसकी चुनौती है?
(A) आर्थिक विकास के साथ पर्यावरणीय स्थिरता को संतुलित करना।
(B) अत्यधिक कुशल श्रमिकों का बहुत बड़ा अधिशेष होना।
(C) औद्योगिक उत्पादों के लिए घरेलू मांग का पूर्ण अभाव।
(D) एक अत्यधिक कुशल और आधुनिक राष्ट्रीय नौकरशाही।

252. 'समाजशास्त्र के भारतीयकरण' पर बहस अनिवार्य रूप से किसकी मांग है?
(A) अधिक बौद्धिक आत्मनिर्भरता और संदर्भात्मक प्रासंगिकता।
(B) समाजशास्त्रीय सिद्धांत के सभी रूपों को अस्वीकार करना।
(C) समाजशास्त्र को भारतविद्या (Indology) की एक शाखा बनाना।
(D) पश्चिमी समाजों के अध्ययन पर प्रतिबंध लगाना।

253. निम्नलिखित में से कौन 'शिक्षा के निजीकरण' की चुनौती का सर्वश्रेष्ठ प्रतिनिधित्व करता है?
(A) यह शैक्षिक मानकों में सुधार की गारंटी देता है।
(B) यह गुणवत्तापूर्ण शिक्षा वहन करने में सक्षम लोगों और जो नहीं कर सकते, उनके बीच एक अंतराल उत्पन्न कर सकता है।
(C) इससे शिक्षा पर सरकारी व्यय में वृद्धि होती है।
(D) यह उपलब्ध शैक्षिक विकल्पों की संख्या को कम करता है।

254. भारत की विज्ञान and प्रौद्योगिकी नीति का उद्देश्य किसके द्वारा 'समावेशी विकास' प्राप्त करना है?
(A) उन्नत तकनीक को विशेष रूप से अभिजात वर्ग की आवश्यकताओं पर केंद्रित करना।
(B) सभी वर्गों द्वारा सामना की जाने वाली समस्याओं को हल करने के लिए विज्ञान और प्रौद्योगिकी हस्तक्षेपों का उपयोग करना।
(C) बिना किसी घरेलू विकास के आवश्यक तकनीक का आयात करना।
(D) आधुनिक तकनीक के उपयोग को विशेष रूप से शहरी क्षेत्रों तक सीमित रखना।

255. शास्त्रीय समाजशास्त्रीय परंपरा में, आधुनिकता की परिभाषित विशेषता के रूप में 'तार्किकता' की अवधारणा से सर्वाधिक कौन जुड़ा है?
(A) कार्ल मार्क्स
(B) एमिल दुर्खीम
(C) मैक्स वेबर
(D) विल्फ्रेडो परेटो

256. निम्नलिखित प्रश्न में, अभिकथन (A) के बाद कारण (R) का कथन दिया गया है। सही विकल्प चुनिए।
अभिकथन (A): औद्योगिकीकरण सामाजिक स्तरीकरण प्रणाली के परिवर्तन की ओर ले जाता है।
कारण (R): यह जाति जैसी कठोर, प्रदत्त (ascriptive) व्यवस्था को वर्ग की अधिक लचीली, उपलब्धि-आधारित व्यवस्था से प्रतिस्थापित कर देता है, यद्यपि पुरानी व्यवस्था के अवशेष बने रहते हैं।
(A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सही है लेकिन R गलत है।
(D) A गलत है लेकिन R सही है।

257. एक कारखाना श्रमिक अपने कार्य से शक्तिहीन और विमुख अनुभव करता है क्योंकि वह 'मशीन का मात्र एक पुर्जा' है। इस भावना को सर्वश्रेष्ठ रूप से इस प्रकार वर्णित किया गया है:
(A) एनोमी
(B) अलगाव
(C) एकजुटता
(D) तार्किकता

258. नौकरशाही की 'निर्वैयक्तिकता' का अर्थ है कि:
(A) अधिकारियों को अमित्र होना चाहिए।
(B) व्यक्तिगत स्थिति की परवाह किए बिना नियम सभी पर समान रूप से लागू होते हैं।
(C) संगठन का कोई मानवीय सदस्य नहीं है।
(D) निर्णय अनियंत्रित रूप से लिए जाते हैं।

259. हाथोर्न अध्ययनों ने एक सामाजिक व्यवस्था के रूप में कारखाने के बारे में क्या प्रकट किया?
(A) कि श्रमिक केवल धन से प्रेरित होते हैं।
(B) कि अनौपचारिक सामाजिक संबंध और समूह मानदंड उत्पादकता को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित करते हैं।
(C) कि केवल औपचारिक संगठनात्मक चार्ट ही महत्वपूर्ण

NODIA

उत्तर (व्याख्या सहित)

1. (B) एमिल दुर्खीम
एमिल दुर्खीम ने अपनी प्रसिद्ध रचना में श्रम विभाजन का समाजशास्त्रीय विश्लेषण प्रस्तुत किया है। उन्होंने तर्क दिया कि जैसे-जैसे समाज सरल से जटिल की ओर विकसित होता है, श्रम विभाजन बढ़ता है। यह प्रक्रिया समाज में 'यांत्रिक एकता' के स्थान पर 'सावयवी एकता' को स्थापित करती है। आधुनिक औद्योगिक समाजों में बढ़ती विशिष्टता और कार्यात्मक अन्योन्याश्रयता ही सामाजिक सुदृढ़ता और परस्पर निर्भरता का मुख्य आधार बनती है।

2. (C) कथन I सही है, लेकिन कथन II गलत है।
मैक्स वेबर के अनुसार नौकरशाही की मुख्य विशेषता पदों का एक व्यवस्थित पदानुक्रम और स्पष्ट लिखित नियमों की प्रणाली है। यहाँ सभी निर्णय व्यक्तिगत भावनाओं के स्थान पर तार्किक नियमों के आधार पर लिए जाते हैं। नौकरशाही में पदों पर नियुक्ति व्यक्ति की तकनीकी सक्षमता और योग्यता के आधार पर की जाती है। इसमें व्यक्तिगत निष्ठा, भाई-भतीजावाद या नातेदारी जैसे अनौपचारिक संबंधों के लिए कोई स्थान नहीं होता है।

3. (C) अतिरिक्त मूल्य
कार्ल मार्क्स के आर्थिक विश्लेषण के अनुसार श्रमिक अपनी मजदूरी के मूल्य से कहीं अधिक मूल्य का उत्पादन करता है। श्रमिक द्वारा उत्पादित इस कुल मूल्य और उसे दी गई वास्तविक मजदूरी के बीच का अंतर ही 'अतिरिक्त मूल्य' कहलाता है। पूंजीवादी व्यवस्था में इस अधिशेष मूल्य को पूंजीपति द्वारा लाभ के रूप में संचित कर लिया जाता है। यही प्रक्रिया पूंजीवाद के अंतर्गत श्रमिकों के शोषण और पूंजी संचय का आधार बनती है।

4. (D) संरक्षण और व्यक्तिगत पक्षपात के आधार पर नियुक्तियाँ
मैक्स वेबर द्वारा वर्णित आदर्श नौकरशाही मॉडल में नियुक्तियाँ पूर्णतः योग्यता और तकनीकी दक्षता पर आधारित होती हैं। इसमें अधिकारियों के अधिकार क्षेत्र स्पष्ट रूप से परिभाषित होते हैं और कार्य संचालन के लिए लिखित नियमों का कड़ाई से पालन किया जाता है। व्यक्तिगत पक्षपात, भाई-भतीजावाद या राजनीतिक संरक्षण जैसी प्रथाएँ नौकरशाही की तार्किक प्रकृति के विपरीत मानी जाती हैं। एक सक्षम व्यवस्था में निर्वैयक्तिकता और निष्पक्षता अनिवार्य तत्व हैं।

5. (A) P-3, Q-1, R-2, S-4
समाजशास्त्रीय परंपरा में अलगाव की अवधारणा कार्ल मार्क्स द्वारा पूंजीवाद के प्रभाव के रूप में प्रस्तुत की गई थी। एमिल दुर्खीम ने औद्योगिक समाज में नियमों के अभाव की स्थिति को समझाने के लिए 'प्रतिमानहीनता' शब्द का प्रयोग किया। मैक्स वेबर ने आधुनिक समाज की प्रमुख विशेषता के रूप में तार्किकता पर बल दिया। इसके अतिरिक्त, उत्पादन संबंधों की व्याख्या भी कार्ल मार्क्स के ऐतिहासिक भौतिकवाद का एक अनिवार्य और महत्वपूर्ण हिस्सा मानी जाती है।

6. (B) उत्पादन के संबंध
कार्ल मार्क्स के अनुसार पूंजीवादी समाज में वर्गों के बीच का संबंध मुख्य रूप से उत्पादन प्रक्रिया में उनकी स्थिति से निर्धारित होता है। बुर्जुआ वर्ग उत्पादन के साधनों का स्वामी होता है, जबकि सर्वहारा वर्ग अपनी श्रम शक्ति बेचने के लिए विवश होता है। यह आर्थिक संरचना ही उनके बीच के सामाजिक और संघर्षपूर्ण संबंधों को परिभाषित करती है। उत्पादन के ये संबंध समाज के अन्य सभी राजनीतिक और सांस्कृतिक पहलुओं को प्रभावित करते हैं।

7. (D) अलगाव
जब कोई श्रमिक उत्पादन प्रक्रिया के केवल एक छोटे और दोहराव वाले हिस्से तक सीमित हो जाता है, तो वह अंतिम उत्पाद से अपना जुड़ाव खो देता है। मार्क्स के अनुसार यह स्थिति उसे अपनी रचनात्मकता और मानवीय क्षमता से दूर कर देती है। श्रमिक स्वयं को मशीन का एक निर्जीव पुर्जा समझने लगता है और कार्य के प्रति उसकी रुचि समाप्त हो जाती है। यह प्रक्रिया ही आधुनिक कारखानों में श्रमिक के 'अलगाव' को दर्शाती है।

8. (A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
मैक्स वेबर का मानना था कि आधुनिकीकरण के साथ समाज में तार्किकता का प्रभाव निरंतर बढ़ता जाता है। नौकरशाही इसी युक्तिकरण की प्रक्रिया का सर्वश्रेष्ठ उदाहरण है क्योंकि यह दक्षता, गणना और स्पष्ट नियमों पर आधारित होती है। इसमें व्यक्तिगत भावनाओं के स्थान पर लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए सबसे प्रभावी साधनों का उपयोग किया जाता है। अतः नौकरशाही का उदय समाज में तार्किक व्यवस्था के सुदृढ़ीकरण और विस्तार का प्रतीक है।

9. (C) सावयवी एकजुटता (Organic Solidarity)
एमिल दुर्खीम के अनुसार औद्योगिक समाजों में उच्च स्तर का श्रम विभाजन और विशिष्टीकरण पाया जाता है। इसमें व्यक्ति विभिन्न कार्यों के लिए एक-दूसरे पर निर्भर होते हैं, जिससे समाज में 'सावयवी एकता' उत्पन्न होती है। यह एकता लोगों की समानता पर नहीं, बल्कि उनकी भिन्नता और कार्यात्मक अन्योन्याश्रयता पर आधारित होती है। आधुनिक जटिल समाजों में यही व्यवस्था सामाजिक सामंजस्य बनाए रखने में एक प्रभावी और अनिवार्य भूमिका निभाती है।

Click Here to Buy book on Amazon

(B) मध्यस्थता
(C) सामूहिक सौदेबाजी
(D) एक क्वालिटी सर्कल

271. समय के साथ श्रम-प्रबंधन संबंधों में परिवर्तन का सर्वश्रेष्ठ वर्णन कौन सा कथन करता है?
(A) अधिक संघर्ष और हड़ताल की ओर एक निरंतर और रैखिक गति।
(B) कोई परिवर्तन नहीं हुआ है; संबंध एक शताब्दी पूर्व के समान ही बने हुए हैं।
(C) प्रतिकूल संबंधों से जटिल सहयोग की ओर एक प्रवृत्ति।
(D) श्रम संघों द्वारा प्रबंधन कार्यों का पूर्ण अधिग्रहण।

272. भारतीय समाज पर औद्योगिकीकरण का एक महत्वपूर्ण प्रभाव क्या रहा है?
(A) शिक्षा के महत्व में व्यवस्थित और प्रत्यक्ष गिरावट।
(B) विभिन्न विद्यमान शहरी अर्थव्यवस्थाओं का मात्रात्मक शिथिल होना।
(C) सामाजिक गतिशीलता और स्तरीकरण के नए रूपों का निर्माण।
(D) सभी नागरिकों के लिए सार्वभौमिक समृद्धि की संरचनात्मक गारंटी।

273. 'क्षेत्रीय असंतुलन' की समस्या भारत की किसकी एक बड़ी सीमा है?
(A) परिवार प्रणाली
(B) शैक्षिक प्रणाली
(C) औद्योगिकीकरण प्रक्रिया
(D) विज्ञान नीति

274. निम्नलिखित प्रश्न में, अभिकथन (A) के बाद कारण (R) का कथन दिया गया है। सही विकल्प चुनिए।
अभिकथन (A): वैश्वीकरण घरेलू फर्मों को अधिक प्रतिस्पर्धी बनने के लिए बाध्य करता है।
कारण (R): व्यापार बाधाओं को हटाने से वे विदेशी फर्मों की प्रतिस्पर्धा के समक्ष आते हैं, जो उन्हें जीवित रहने और बढ़ने के लिए गुणवत्ता, दक्षता और नवाचार में सुधार करने के लिए बाध्य करता है।
(A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सही है लेकिन R गलत है।
(D) A गलत है लेकिन R सही है।

275. 'समाजशास्त्र के भारतीयकरण' का आंदोलन किसके विरुद्ध तर्क देता है?
(A) अनुसंधान में मात्रात्मक और गुणात्मक आनुभविक डेटा का उपयोग।
(B) पारंपरिक जाति और धर्म का विस्तृत शैक्षणिक अध्ययन।
(C) पश्चिमी सैद्धांतिक मॉडलों और तर्क का बिना सोचे-समझे उपयोग।
(D) अंग्रेजी में समाजशास्त्रीय अनुसंधान कार्यों का प्रकाशन।

276. "अतिरिक्त मूल्य" की अवधारणा किस सिद्धांतकार के कार्य के लिए सर्वाधिक केंद्रीय है?
(A) मैक्स वेबर
(B) एमिल दुर्खीम
(C) कार्ल मार्क्स
(D) टैलकोट पार्सन्स

277. समाज में सामाजिक क्रिया के पारंपरिक, भावनात्मक और पवित्र आधारों को व्यवस्थित, गणनात्मक और लौकिक (profane) आधारों से प्रतिस्थापित करना क्या कहलाता है?
(A) अलगाव
(B) एनोमी
(C) एकजुटता
(D) युक्तिकरण (Rationalization)

278. किसी कंपनी के भीतर अनौपचारिक संगठन का उदाहरण निम्नलिखित में से कौन सा है?
(A) रिपोर्टिंग लाइनों को दिखाने वाला आधिकारिक संगठनात्मक चार्ट।
(B) कर्मचारियों का एक समूह जो प्रत्येक सप्ताहांत एक साथ क्रिकेट खेलता है।
(C) कंपनी की आचार संहिता नियमावली।
(D) निदेशक मंडल।

279. विवाद समाधान के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए।
कथन I: स्वैच्छिक मध्यस्थता (voluntary arbitration) में, दोनों पक्ष अपने विवाद को एक मध्यस्थ को सौंपने और उसके निर्णय को बाध्यकारी के रूप में स्वीकार करने के लिए सहमत होते हैं।
कथन II: सुलह (conciliation) में, सुलहकर्ता की भूमिका पक्षों पर समझौता थोपना है।
(A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
(B) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।
(C) कथन I सही है, लेकिन कथन II गलत है।
(D) कथन I गलत है, लेकिन कथन II सही है।

NODIA

280. ट्रेड यूनियनों का प्राथमिक उद्देश्य है:
(A) कंपनी के लाभ को बढ़ाना।
(B) श्रमिकों के सामूहिक हितों का प्रतिनिधित्व करना।
(C) कारखाने के दैनिक कार्यों का प्रबंधन करना।
(D) नए कर्मचारियों को तकनीकी प्रशिक्षण प्रदान करना।

281. उद्योग में नई तकनीकों के समावेश के लिए प्रायः श्रम के स्वरूप में परिवर्तन की आवश्यकता होती है, विशेष रूप से किसकी आवश्यकता होती है:
(A) अकुशल शारीरिक श्रमिकों की संख्या में वृद्धि।
(B) उच्च तकनीकी कौशल और अनुकूलन क्षमता वाले श्रमिक।

है।
(D) कि श्रमिक पूर्ण एकांत में सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करते हैं।

260. निम्नलिखित में से कौन प्रबंधन में श्रमिक भागीदारी का एक तंत्र है?
(A) सामूहिक सौदेबाजी
(B) संयुक्त प्रबंधन परिषद
(C) अधिनिर्णय
(D) सुलह

261. भारत में औद्योगिकीकरण के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए।
1. औद्योगिकीकरण के कारण ग्रामीण क्षेत्रों से शहरी क्षेत्रों में बड़े पैमाने पर प्रवासन हुआ है।
2. इसका पारंपरिक पारिवारिक संरचनाओं पर गहरा प्रभाव पड़ा है।
3. औद्योगिकीकरण के लाभ सभी सामाजिक समूहों और क्षेत्रों में समान रूप से वितरित किए गए हैं।

उपर्युक्त कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?
(A) केवल 3
(B) केवल 1 और 2
(C) केवल 2 और 3
(D) 1, 2 और 3

262. मजदूरी, कार्य के घंटों और उत्पादन पर नियंत्रण को लेकर पूंजीपति वर्ग और श्रमिक वर्ग के बीच के संघर्ष को क्या कहा जाता है?
(A) एनोमिक संघर्ष
(B) वर्ग संघर्ष
(C) पीढ़ीगत संघर्ष
(D) स्थिति संघर्ष (Status conflict)

263. भारत जैसे देश के लिए वैश्वीकरण की एक प्रमुख चुनौती है:
(A) घरेलू उद्योग संरक्षण के साथ आर्थिक खुलेपन को संतुलित करना।
(B) विदेशी निवेश पूंजी का पूर्ण और प्रत्यक्ष अभाव।
(C) नई तकनीक तक पहुंचने में संरचनात्मक और स्थायी अक्षमता।
(D) वैश्विक समुदाय से मात्रात्मक और गुणात्मक पृथक्करण।

264. शिक्षा जैसे क्षेत्रों में निजीकरण की ओर कदम को प्रायः इस तर्क से उचित ठहराया जाता है कि यह किसे बढ़ावा देता है:
(A) सामाजिक समानता और वितरणकारी न्याय के सार्वभौमिक सिद्धांत।
(B) केंद्रीकृत सरकारी नियंत्रण और प्रतिबंधात्मक राज्य विनियमन।
(C) संरचनात्मक दक्षता और उन्नत बाजार-आधारित प्रतिस्पर्धा।
(D) उपलब्ध शैक्षणिक छात्र विकल्पों में गुणात्मक कमी।

265. विज्ञान और प्रौद्योगिकी नीति का प्राथमिक ध्यान क्या है?
(A) राष्ट्रीय उद्देश्यों के लिए विज्ञान और प्रौद्योगिकी का लाभ उठाने के लिए एक रणनीतिक ढांचा तैयार करना।
(B) युवाओं के बीच वैज्ञानिक जांच को हतोत्साहित करना।
(C) आयातित वस्तुओं पर देश की निर्भरता बढ़ाना।
(D) आधुनिक विज्ञान को अस्वीकार करके पारंपरिक ज्ञान को संरक्षित करना।

266. निम्नलिखित में से कौन सी यांत्रिक एकजुटता (mechanical solidarity) की विशेषता नहीं है?
(A) निम्न श्रम विभाजन
(B) उच्च स्तर का व्यक्तिवाद
(C) सुदृढ़ सामूहिक चेतना
(D) व्यक्तियों के बीच एकरूपता (Homogeneity)

267. सूची I को सूची II से सुमेलित कीजिए।
सूची I: (विचारक)
P. एमिल दुर्खीम
Q. कार्ल मार्क्स
R. मैक्स वेबर
S. एल्टन मेयो
सूची II: (औद्योगिक समाज पर मुख्य विचार)
1. अलगाव पूंजीवादी उत्पादन पद्धति में अंतर्निहित है।
2. श्रम विभाजन सामाजिक सामंजस्य का एक नया रूप बनाता है।
3. 'अनौपचारिक संगठन' और इसके महत्व की खोज।
4. युक्तिकरण (Rationalization) और नौकरशाही आधुनिकता की कुंजी हैं।
(A) P-2, Q-1, R-4, S-3
(B) P-1, Q-2, R-3, S-4
(C) P-2, Q-3, R-1, S-4
(D) P-4, Q-1, R-2, S-3

268. मार्क्स के अनुसार, उत्पादन के संबंध किसके द्वारा निर्धारित होते हैं?
(A) राजनीतिक अधिरचना (Superstructure)।
(B) उत्पादन की शक्तियों के विकास का स्तर।
(C) प्रमुख धार्मिक विचारधारा।
(D) केवल शासक वर्ग की इच्छा।

269. एक कारखाने के औपचारिक संगठन की एक प्रमुख विशेषता है:
(A) इसकी स्वतःस्फूर्त और अनियोजित प्रकृति।
(B) मित्रता और व्यक्तिगत संबंधों में इसका आधार।
(C) अधिकार और उत्तरदायित्व की एक स्पष्ट रूप से परिभाषित संरचना।
(D) श्रमिकों की भावनात्मक आवश्यकताओं पर इसका ध्यान।

270. वह प्रक्रिया जिसके द्वारा श्रम और प्रबंधन एक अनुबंध पर बातचीत करने और उसे लागू करने के लिए मिलते हैं, वह है:
(A) अधिनिर्णय

Downloaded from www.pdf.tube

(C) परिवार
(D) राजनीति

293. भारत में उद्योगों का असमान भौगोलिक प्रसार, जिससे कुछ क्षेत्रों का विकास हुआ है जबकि अन्य पिछड़ गए हैं, क्या कहलाता है?
(A) वर्ग संघर्ष
(B) क्षेत्रीय असंतुलन
(C) सामाजिक गतिशीलता
(D) निजीकरण

294. समाजशास्त्र का भारतीयकरण मुख्य रूप से किसके बारे में एक बहस है?
(A) भाषा
(B) ज्ञानमीमांसा (Epistemology) और प्रासंगिकता
(C) वित्त पोषण
(D) विश्वविद्यालय प्रशासन

295. दुर्खीम की सावयवी एकजुटता (organic solidarity) की अवधारणा की एक प्रमुख विशेषता निम्नलिखित में से कौन सी है?
(A) व्यक्तियों के बीच उच्च स्तर की समानता
(B) सुदृढ़ सामूहिक अंतरात्मा
(C) विशिष्टीकरण पर आधारित अन्योन्याश्रयता
(D) दमनकारी कानून

296. परंपरा या भावना के बजाय दक्षता, गणनात्मकता और पूर्वानुमेयता के आधार पर निर्णय लेने की प्रक्रिया कहलाती है:
(A) अलगाव
(B) तार्किकता
(C) एकजुटता
(D) एनोमी

297. श्रमिकों द्वारा अपने उत्पादन को उस स्तर तक सीमित करने की घटना जिसे अनौपचारिक कार्य समूह उचित समझता है, किसका एक उदाहरण है?
(A) अनौपचारिक संगठन की शक्ति।
(B) औपचारिक प्रबंधन नियंत्रण की सफलता।
(C) सामूहिक सौदेबाजी की प्रक्रिया।
(D) क्वालिटी सर्कल की कार्यप्रणाली।

298. औद्योगिक संबंधों में किस प्रक्रिया में अर्ध-न्यायिक (quasi-judicial) प्राधिकारी सम्मिलित होता है?
(A) सुलह
(B) सामूहिक सौदेबाजी
(C) अधिनिर्णय
(D) क्वालिटी सर्कल

299. एक पेशेवर, वेतनभोगी मध्यम वर्ग की वृद्धि किसका औद्योगिकीकरण पर प्रत्यक्ष प्रभाव है?
(A) परिवार संरचना
(B) सामाजिक स्तरीकरण
(C) धार्मिक प्रथाएं
(D) राजनीतिक दल

300. 'शिक्षा के निजीकरण' की चुनौती किसके बीच तनाव के इर्द-गिर्द घूमती है:
(A) एक सार्वजनिक हित के रूप में शिक्षा और एक निजी वस्तु (commodity) के रूप में शिक्षा।
(B) मानकीकृत घरेलू बनाम विविध अंतरराष्ट्रीय पाठ्यक्रम का क्रियान्वयन।
(C) विज्ञान-आधारित बनाम उदार कला-आधारित शिक्षा की रणनीतिक प्राथमिकता।
(D) शिक्षकों के पारिश्रमिक और छात्र शिक्षण शुल्क के बीच नियामक संतुलन।

www.nodia.in

NODIA

(D) सभी निजी कंपनियों पर प्रतिबंध लगाना।

216. निम्नलिखित में से कौन मार्क्स द्वारा वर्णित अलगाव का रूप नहीं है?
(A) उत्पाद से अलगाव
(B) उत्पादन की क्रिया से अलगाव
(C) अपने "प्रजातीय-सत्व" से अलगाव
(D) राजनीतिक दलों से अलगाव

217. सूची I को सूची II से सुमेलित कीजिए।
सूची I: (अवधारणा)
P. तार्किकता
Q. सावयवी एकजुटता
R. अतिरिक्त मूल्य
S. अनौपचारिक संगठन
सूची II: (संक्षिप्त विवरण)
1. विशेषज्ञता के माध्यम से अन्योन्याश्रयता
2. कार्यस्थल पर अनौपचारिक सामाजिक संरचना
3. श्रमिक का अवैतनिक श्रम
4. गणना और दक्षता पर आधारित क्रिया
(A) P-1, Q-2, R-3, S-4
(B) P-4, Q-1, R-3, S-2
(C) P-4, Q-3, R-1, S-2
(D) P-2, Q-1, R-3, S-4

218. समाज में परंपराओं, मूल्यों और भावनाओं को गणना, दक्षता और नियंत्रण द्वारा प्रतिस्थापित करने की प्रक्रिया कहलाती है:
(A) अलगाव
(B) एनोमी
(C) युक्तिकरण (Rationalization)
(D) औद्योगिकीकरण

219. उद्योग पर सामाजिक संरचना के प्रभाव के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए।
कथन I: भारतीय उद्योगों में नियोजन प्रथाओं पर जाति व्यवस्था का कोई प्रभाव नहीं पड़ा है।
कथन II: क्षेत्रीय और नातेदारी संबंध कारखाने के भीतर भर्ती और कार्य समूहों के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं।
(A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
(B) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।
(C) कथन I सही है, लेकिन कथन II गलत है।
(D) कथन I गलत है, लेकिन कथन II सही है।

220. 'सुलह' (conciliation) की कार्यवाही का उद्देश्य है:
(A) एक बाध्यकारी विधिक आदेश जारी करना।
(B) विवाद करने वाले पक्षों के बीच स्वैच्छिक समझौते की सुविधा प्रदान करना।
(C) न्यायालय के मामले में श्रमिकों का प्रतिनिधित्व करना।
(D) हड़ताल के लिए मतदान आयोजित करना।

221. 'प्रबंधन में श्रमिक भागीदारी' एक ऐसी अवधारणा है जो किसे बढ़ावा देती है?
(A) औद्योगिक संघर्ष
(B) औद्योगिक लोकतंत्र
(C) प्रबंधकीय निरंकुशता
(D) ट्रेड यूनियनों का उन्मूलन

222. औद्योगिक उद्यमियों के एक नए वर्ग और एक विशाल संपत्तिहीन श्रमिक वर्ग का उदय सामाजिक स्तरीकरण पर औद्योगिकीकरण का प्रत्यक्ष परिणाम है:
(A) परिवार
(B) शिक्षा
(C) सामाजिक स्तरीकरण
(D) धर्म

223. यह तर्क कि भारतीय समाजशास्त्र को स्वदेशी ग्रंथों और परंपराओं की अवधारणाओं का उपयोग करना चाहिए, किस बहस का एक प्रमुख पक्ष है?
(A) निजीकरण
(B) वैश्वीकरण
(C) भारतीयकरण
(D) युक्तिकरण (Rationalization)

224. शिक्षा के निजीकरण की एक संभावित सामाजिक लागत है:
(A) शिक्षा प्रदान करने में राज्य की बढ़ी हुई और केंद्रीकृत भूमिका।
(B) आर्थिक पृष्ठभूमि के आधार पर सामाजिक असमानताओं का गहरा होना।
(C) शैक्षणिक संस्थानों की कुल संख्या में मात्रात्मक कमी।
(D) सभी नागरिकों के लिए एक समान और मानकीकृत शिक्षा को बढ़ावा देना।

225. निम्नलिखित प्रश्न में, अभिकथन (A) के बाद कारण (R) का कथन दिया गया है। सही विकल्प चुनिए।
अभिकथन (A): भारत की विज्ञान और प्रौद्योगिकी नीति न केवल विज्ञान के बारे में है, बल्कि राष्ट्रीय विकास के लिए इसके अनुप्रयोग के बारे में भी है।
कारण (R): नीति का उद्देश्य वैज्ञानिक अनुसंधान को अर्थव्यवस्था और समाज की आवश्यकताओं, जैसे स्वास्थ्य, कृषि और उद्योग से जोड़ना है।
(A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सही है लेकिन R गलत है।
(D) A गलत है लेकिन R सही है।

226. दुर्खीम के अनुसार, श्रम के सरल विभाजन वाले समाजों की विशेषता है:
(A) सावयवी एकजुटता and क्षतिपूरक कानून
(B) यांत्रिक एकजुटता and दमनकारी कानून
(C) एनोमी and व्यक्तिवाद

Click Here to Buy book on Amazon

10. (A) यह श्रमिकों को उनके अतिरिक्त प्रयास के लिए दिया जाने वाला उचित मुआवजा है।
अतिरिक्त मूल्य का सिद्धांत यह स्पष्ट करता है कि पूंजीपति श्रमिक द्वारा उत्पादित अधिशेष मूल्य को स्वयं रख लेता है। यह श्रमिक के अवैतनिक श्रम का प्रतिनिधित्व करता है, न कि उसे दिया जाने वाला कोई पुरस्कार या आर्थिक मुआवजा। पूंजीवाद में श्रम शक्ति का विनिमय मूल्य उसके द्वारा उत्पादित वास्तविक मूल्य से बहुत कम होता है। यही अंतर पूंजीपति के लिए लाभ का मुख्य स्रोत बनता है और श्रमिक का शोषण सुनिश्चित करता है।

11. (B) केवल 1 और 3
अलगाव की अवधारणा मुख्य रूप से कार्ल मार्क्स से जुड़ी है, जिन्होंने इसे पूंजीवादी शोषण के परिणाम के रूप में देखा। इसमें व्यक्ति अपने कार्य, उत्पाद और स्वयं की मानवीय प्रकृति से विमुख हो जाता है। एमिल दुर्खीम ने अलगाव के स्थान पर 'प्रतिमानहीनता' की बात की थी, जो सावयवी एकता के असामान्य रूपों से संबंधित है। अतः अलगाव को पूंजीवाद के अंतर्गत जीवन की एक विशिष्ट और अनिवार्य नकारात्मक सामाजिक विशेषता माना गया है।

12. (B) सामाजिक भूमिकाओं, स्थितियों और मानदंडों का एक परस्पर जुड़ा हुआ नेटवर्क है।
एक कारखाने को केवल मशीनों और उत्पादन की इकाई नहीं माना जा सकता। समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण से यह एक जीवंत सामाजिक व्यवस्था है जहाँ लोग विभिन्न भूमिकाओं और प्रस्थितियों में एक-दूसरे के साथ अंतःक्रिया करते हैं। यहाँ कार्य निष्पादन के लिए विशिष्ट नियम, मूल्य और मानदंड होते हैं जो व्यवहार को नियंत्रित करते हैं। इन सभी तत्वों का परस्पर संबंध ही कारखाने को एक संगठित और कार्यात्मक सामाजिक संरचना का स्वरूप प्रदान करता है।

13. (C) औपचारिक संगठन नियोजित और प्रलेखित होता है, जबकि अनौपचारिक संगठन स्वतः स्फूर्त रूप से उभरता है।
औपचारिक संगठन किसी भी संस्थान की आधिकारिक संरचना होती है जिसमें नियम, पदानुक्रम और उत्तरदायित्व लिखित रूप में स्पष्ट होते हैं। इसके विपरीत, अनौपचारिक संगठन कार्यस्थल पर व्यक्तिगत संबंधों, मित्रता और सामाजिक अंतःक्रियाओं के माध्यम से स्वतः विकसित होता है। जहाँ औपचारिक संगठन लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए प्रबंधन द्वारा बनाया जाता है, वहीं अनौपचारिक संगठन श्रमिकों की सामाजिक और मनोवैज्ञानिक आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए स्वाभाविक रूप से निर्मित होता है।

14. (D) अनौपचारिक संगठन
कारखाने के भीतर जब श्रमिक अपनी व्यक्तिगत पसंद, मित्रता और साझा हितों के आधार पर छोटे समूह बनाते हैं, तो इसे 'अनौपचारिक संगठन' कहा जाता है। यह संरचना आधिकारिक चार्ट का हिस्सा नहीं होती, लेकिन श्रमिकों के व्यवहार को बहुत प्रभावित करती है। यह समूहों में आपसी सहयोग और सूचनाओं के त्वरित आदान-प्रदान का माध्यम बनता है। अनौपचारिक संगठन कार्यस्थल के वातावरण को मानवीय बनाने और श्रमिकों को सामाजिक समर्थन प्रदान करने में सहायक होता है।

15. (A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
अनौपचारिक समूह अपने स्वयं के नियम और मानदंड बना लेते हैं जो कभी-कभी प्रबंधन की अपेक्षाओं के विपरीत होते हैं। उदाहरण के लिए, श्रमिक समूह उत्पादन की एक अधिकतम सीमा तय कर सकते हैं ताकि प्रबंधन कार्य का बोझ न बढ़ा सके। यदि प्रबंधन द्वारा किए गए परिवर्तन इन समूहों के हितों को प्रभावित करते हैं, तो वे एकजुट होकर इसका विरोध कर सकते हैं। इस प्रकार, अनौपचारिक संगठन आधिकारिक लक्ष्यों को प्रभावित करने की क्षमता रखता है।

16. (B) यह भर्ती, पदोन्नति और अनौपचारिक नेटवर्क के निर्माण को प्रभावित कर सकती है।
भारतीय समाज में उद्योग सामाजिक संरचना से अछूते नहीं रहते हैं। जाति और नातेदारी जैसे पारंपरिक कारक अक्सर आधुनिक कार्यस्थलों में भर्ती और पदोन्नति के निर्णयों को प्रभावित करते हैं। कई बार नियोक्ता अपनी ही जाति के लोगों को प्राथमिकता देते हैं, जिससे कार्यस्थल पर अनौपचारिक नेटवर्क बन जाते हैं। यह स्थिति दर्शाती है कि आधुनिक औद्योगिक व्यवस्था के भीतर भी पारंपरिक सामाजिक बंधन अपनी सक्रिय और अत्यंत प्रभावी भूमिका बनाए रखते हैं।

17. (B) आर्थिक भूमिकाओं के आधार पर नए सामाजिक वर्गों का उदय
औद्योगिकीकरण समाज की संरचना में व्यापक परिवर्तन लाता है। इसके कारण पारंपरिक व्यवसायों का महत्व कम हो जाता है और पूंजीपतियों एवं श्रमिकों के रूप में नए सामाजिक वर्गों का निर्माण होता है। यह प्रक्रिया समाज में धन और शक्ति के वितरण के नए तरीके निर्धारित करती है। इसके साथ ही, औद्योगिक समाज में शिक्षा और कौशल के आधार पर सामाजिक गतिशीलता और स्तरीकरण के नए प्रतिमान भी निरंतर विकसित होने लगते हैं।

18. (A) कार्यस्थल पर अनौपचारिक सामाजिक व्यवस्था
एल्टन मेयो द्वारा किए गए 'हाथोर्न' अध्ययनों ने औद्योगिक समाजशास्त्र की दिशा बदल दी। इन शोधों से यह सिद्ध हुआ कि श्रमिक केवल आर्थिक लाभ या भौतिक स्थितियों से प्रेरित नहीं होते हैं। कार्यस्थल पर सामाजिक संबंध और अनौपचारिक समूहों की मान्यता उनकी कार्यक्षमता को अधिक प्रभावित करती है। इस अध्ययन ने प्रबंधन को यह समझने में मदद की कि उत्पादन बढ़ाने के लिए श्रमिकों की सामाजिक और मनोवैज्ञानिक आवश्यकताओं पर ध्यान देना अनिवार्य है।

19. (C) अनौपचारिक संगठन अनिवार्य रूप से औपचारिक संरचना के भीतर सामाजिक अंतःक्रियाओं से उत्पन्न होता है।
किसी भी औद्योगिक संस्थान में औपचारिक और अनौपचारिक संगठन एक-दूसरे के पूरक होते हैं। औपचारिक संरचना कार्य करने के लिए आवश्यक ढांचा प्रदान करती है, जबकि उसी ढांचे के भीतर काम करते हुए लोग स्वाभाविक रूप से सामाजिक संबंध बना लेते हैं। ये अनौपचारिक संबंध औपचारिक नियमों

Downloaded from www.pdf.tube

स्थिति आती है जहाँ सरकार या न्यायालय का पूर्ण नियंत्रण होता है और उनका फैसला मानना अनिवार्य होता है। यह क्रम बाहरी हस्तक्षेप और विधिक शक्ति के बढ़ते प्रभाव को दर्शाता है।

77. (D) उत्पादन के साधनों का निजी स्वामित्व
मार्क्स के अनुसार अलगाव की जड़ें निजी संपत्ति की व्यवस्था में निहित हैं। जब उत्पादन के साधनों पर कुछ ही लोगों का एकाधिकार होता है, तो श्रमिक अपनी मेहनत के उत्पाद पर नियंत्रण खो देता है। वह केवल जीवित रहने के लिए अपनी श्रम शक्ति को बेचने के लिए विवश होता है। यह आर्थिक ढांचा ही मनुष्य को उसके कार्य और उसकी रचनात्मकता से पृथक कर देता है। मार्क्स का मानना था कि निजी स्वामित्व के अंत के बिना इस अलगाव को समाप्त करना पूर्णतः असंभव है।

78. (C) राज्य और सरकार से अलगाव
कार्ल मार्क्स ने अलगाव के चार विशिष्ट रूपों की पहचान की थी: उत्पाद से अलगाव, उत्पादन की प्रक्रिया से, अपनी मानवीय प्रकृति से और अंत में अपने साथी मनुष्यों से। उन्होंने राजनीतिक संस्थाओं से अलगाव को अपने इस विशिष्ट आर्थिक विश्लेषण का प्राथमिक हिस्सा नहीं बनाया था। उनके लिए अलगाव मुख्य रूप से कार्यस्थल और उत्पादन के संबंधों से उत्पन्न होने वाली एक मानसिक और सामाजिक स्थिति है। यह पूंजीवाद के अंतर्गत श्रमिक की शक्तिहीनता का एक गहरा चित्रण है।

79. (C) वेबर का नौकरशाही मॉडल
मैक्स वेबर के अनुसार नौकरशाही की एक प्रमुख विशेषता पदों की निर्वैयक्तिकता है। यहाँ शक्ति व्यक्ति के पास नहीं, बल्कि उस कार्यालय या पद में निहित होती है जिसे वह धारण करता है। जब अधिकारी पद छोड़ता है, तो उसकी शक्ति भी स्वतः समाप्त हो जाती है। यह व्यवस्था सुनिश्चित करती है कि शासन नियमों के अनुसार चले, न कि किसी व्यक्ति की स्वेच्छा से। यह आधुनिक प्रशासन को अधिक तर्कसंगत, पूर्वानुमेय और कुशल बनाने का एक महत्वपूर्ण और अनिवार्य आधार प्रदान करता है।

80. (A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
समाज के सांस्कृतिक मूल्य यह निर्धारित करते हैं कि वह कितनी तीव्रता से औद्योगिक प्रगति करेगा। यदि कोई समाज नवाचार और कठोर परिश्रम को सम्मान देता है, तो वहाँ उद्योगों का तीव्र विकास होता है। इसके विपरीत, रूढ़िवादी समाज जहाँ लोग केवल पारंपरिक व्यवसायों से जुड़े रहना चाहते हैं, वहाँ तकनीकी परिवर्तन को अपनाना कठिन होता है। अतः औद्योगिक विकास केवल आर्थिक नीतियों पर नहीं, बल्कि समाज की गहरी सामाजिक और मानसिक संरचना पर भी बहुत हद तक निर्भर करता है।

81. (C) भूमिकाओं की अन्योन्याश्रयता और विशिष्टीकरण
सावयवी एकता आधुनिक समाजों की पहचान है जहाँ लोग एक-दूसरे से भिन्न होते हैं लेकिन अपने कार्यों के लिए परस्पर निर्भर होते हैं। जैसे शरीर के विभिन्न अंग अलग कार्य करते हुए भी शरीर को जीवित रखते हैं, वैसे ही डॉक्टर, कृषक और अभियंता मिलकर समाज को संचालित करते हैं। यह एकता किसी दबाव से नहीं, बल्कि एक-दूसरे की सेवाओं की आवश्यकता से उत्पन्न होती है। दुर्खीम के अनुसार, यही अन्योन्याश्रयता जटिल औद्योगिक समाज को स्थिरता और सांगठनिक मजबूती प्रदान करती है।

NODIA

82. (C) परामर्श और सूचना साझा करने के लिए श्रमिक भागीदारी का एक रूप।
संयुक्त प्रबंधन परिषदें श्रमिकों और प्रबंधन के बीच एक सेतु का कार्य करती हैं। इनका उद्देश्य कोई विधिक निर्णय देना नहीं, बल्कि आपसी संवाद के माध्यम से कार्यस्थल की समस्याओं को सुलझाना है। यहाँ श्रमिक प्रतिनिधियों को कारखाने की उत्पादन योजनाओं और कल्याणकारी नीतियों की जानकारी दी जाती है। इससे श्रमिकों में संस्थान के प्रति अपनेपन की भावना जागृत होती है और प्रबंधन को श्रमिकों के अनुभवों का लाभ मिलता है। यह औद्योगिक संबंधों में सहयोग को बढ़ावा देता है।

83. (C) तीव्र और अनियोजित औद्योगिकीकरण
जब औद्योगिकीकरण बिना किसी दीर्घकालिक योजना के अत्यंत तीव्र गति से होता है, तो यह कई नगरीय समस्याओं को जन्म देता है। शहरों में संसाधनों पर दबाव बढ़ जाता है जिससे मलिन बस्तियों का विस्तार होता है। साथ ही, प्रदूषण और अत्यधिक भीड़ से जनजीवन प्रभावित होता है और पुराने सामाजिक बंधन कमजोर होने लगते हैं। यह औद्योगिक विकास का नकारात्मक पक्ष है जिसे सामाजिक लागत कहा जाता है। अतः संतुलित विकास के लिए उचित शहरी नियोजन और पर्यावरणीय नियमों का होना अनिवार्य है।

84. (C) उच्च कुशल कार्य से पूर्णतः अकुशल शारीरिक श्रम की ओर परिवर्तन।
आधुनिक समय में श्रम के बदलते स्वरूप में तकनीकी कौशल की मांग निरंतर बढ़ रही है। अब उद्योगों को ऐसे श्रमिकों की आवश्यकता है जो कंप्यूटर और जटिल मशीनों का संचालन कर सकें। अकुशल शारीरिक श्रम का महत्व धीरे-धीरे कम हो रहा है क्योंकि मशीनीकरण ने ऐसे कार्यों का स्थान ले लिया है। इसके साथ ही नई कार्य व्यवस्थाओं और कार्यबल में महिलाओं की बढ़ती भागीदारी जैसे नए रुझान भी सामने आए हैं। अतः श्रम बाजार अब अधिक ज्ञान और कौशल आधारित होता जा रहा है।

85. (C) कथन I सही है, लेकिन कथन II गलत है।
औद्योगिकीकरण ने वास्तव में शहरों में जाति के कठोर नियमों को अधिक लचीला बना दिया है क्योंकि कार्यस्थल पर सभी जातियों के लोग साथ मिलकर कार्य करते हैं। यद्यपि, भारतीय परिवारों के संदर्भ में यह कहना गलत होगा कि संयुक्त परिवार पूर्णतः समाप्त हो गए हैं। कई परिवार आज भी अपनी संरचना बदलकर आर्थिक रूप से एक-दूसरे की सहायता करते हैं। अतः परिवार की संस्था ने स्वयं को आधुनिकता के अनुसार अनुकूलित किया है, न कि वह समाज से पूरी तरह लुप्त हुई है।

उत्पादकता बढ़ाई जा सकती है। नए प्रबंधन दर्शन में समस्या-समाधान के लिए सहभागी दृष्टिकोण पर बल दिया जाता है, जो दोनों पक्षों के लिए लाभकारी है।

30. (D) स्वैच्छिक मध्यस्थता (Voluntary Arbitration)
स्वैच्छिक मध्यस्थता एक ऐसी व्यवस्था है जहाँ विवाद के दोनों पक्ष आपसी सहमति से एक निष्पक्ष तीसरे व्यक्ति को अपना विवाद सौंपते हैं। वे पहले से ही यह प्रतिज्ञा करते हैं कि उस व्यक्ति द्वारा दिया गया निर्णय उन्हें स्वीकार्य और बाध्यकारी होगा। यह न्यायालयों के बोझ को कम करने और विवादों को शीघ्र सुलझाने का एक प्रभावी तरीका है। इसमें पक्षों का मध्यस्थ पर विश्वास होता है, जिससे निर्णय का पालन करना सरल और शांतिपूर्ण हो जाता है।

31. (A) एकल परिवारों की ओर झुकाव, विशेष रूप से शहरी क्षेत्रों में।
भारत में औद्योगिकीकरण के कारण बड़ी संख्या में लोग काम की तलाश में गाँवों से शहरों की ओर पलायन करते हैं। शहरों में सीमित स्थान और उच्च जीवन स्तर के कारण बड़े संयुक्त परिवार को रखना कठिन हो जाता है। इसके परिणामस्वरूप माता-पिता और बच्चों तक सीमित एकल परिवारों की संख्या में तेजी से वृद्धि हुई है। यद्यपि भावनात्मक संबंध बने रहते हैं, लेकिन भौतिक और संरचनात्मक रूप से परिवार के स्वरूप में यह एक बड़ा परिवर्तन है।

32. (B) इसने वर्तमान जाति पदानुक्रम के साथ-साथ वर्ग स्तरीकरण की एक नई प्रणाली बनाई है।
औद्योगिकीकरण ने भारत में स्तरीकरण के स्वरूप को अधिक जटिल बना दिया है। जहाँ एक ओर जाति व्यवस्था के प्रभाव आज भी भर्ती और सामाजिक संबंधों में दिखाई देते हैं, वहीं दूसरी ओर आय और व्यवसाय पर आधारित वर्ग व्यवस्था भी मजबूत हुई है। अब व्यक्ति की पहचान केवल उसकी जाति से नहीं, बल्कि उसकी आर्थिक स्थिति और पेशेवर योग्यता से भी होती है। यह दोहरी व्यवस्था भारतीय समाज के वर्तमान औद्योगिक ढांचे की एक प्रमुख विशेषता है।

33. (B) अपर्याप्त आधारभूत संरचना, जैसे बिजली और परिवहन
किसी भी देश के औद्योगिक विकास के लिए बिजली, सड़क और सुचारू परिवहन जैसी बुनियादी सुविधाएँ अनिवार्य होती हैं। भारत में इन सुविधाओं की कमी और अनियमितता औद्योगिकीकरण की गति को बाधित करती है। उद्योगों को सतत उत्पादन के लिए पर्याप्त ऊर्जा और माल की आवाजाही के लिए बेहतर संपर्क की आवश्यकता होती है। आधारभूत संरचना की इन बाधाओं के कारण निवेश और उत्पादन लागत बढ़ जाती है, जो औद्योगिक प्रगति के मार्ग में एक बड़ी चुनौती है।

34. (B) केवल 1 और 3
औद्योगिकीकरण की प्रक्रिया प्रत्यक्ष रूप से तकनीकी शिक्षा और विशिष्ट कौशल की मांग उत्पन्न करती है। जैसे-जैसे कारखाने बढ़ते हैं, एक संगठित श्रमिक वर्ग का उदय होता है जो आधुनिक उत्पादन का मुख्य आधार बनता है। यह धारणा गलत है कि औद्योगिकीकरण सामाजिक गतिशीलता को कम करता है; इसके विपरीत, यह अक्सर नई नौकरियों के माध्यम से ऊपर की ओर गतिशीलता के अवसर प्रदान करता है। अतः औद्योगिक विकास के ये परिणाम आधुनिक समाज की संरचना में अत्यंत महत्वपूर्ण होते हैं।

35. (C) बुर्जुआ (स्वामी) और सर्वहारा (श्रमिक)
मार्क्सवादी सिद्धांत के अनुसार औद्योगिक समाज संसाधनों के स्वामित्व को लेकर दो मुख्य वर्गों में विभाजित होता है। बुर्जुआ वर्ग उत्पादन के साधनों पर नियंत्रण रखता है, जबकि सर्वहारा वर्ग अपनी श्रम शक्ति को मजदूरी के बदले बेचता है। इन दोनों वर्गों के आर्थिक हित एक-दूसरे के विरोधी होते हैं क्योंकि पूंजीपति लाभ बढ़ाना चाहता है और श्रमिक बेहतर मजदूरी। यही अंतर्निहित विरोधाभास वर्ग संघर्ष को जन्म देता है, जो समाज के ऐतिहासिक परिवर्तन का मुख्य चालक माना जाता है।

36. (D) इसने कुशल कार्यबल की आपूर्ति के लिए व्यावसायिक और तकनीकी प्रशिक्षण की मांग उत्पन्न की।
औद्योगिकीकरण ने शिक्षा के पारंपरिक ढांचे को बदलकर उसे आर्थिक आवश्यकताओं के अनुरूप ढाल दिया है। अब शिक्षा का मुख्य उद्देश्य केवल ज्ञानार्जन नहीं, बल्कि रोजगार के योग्य कौशल विकसित करना हो गया है। इसके कारण अभियांत्रिकी, प्रबंधन और अन्य व्यावसायिक पाठ्यक्रमों के प्रति आकर्षण बढ़ा है। उद्योगों को चलाने के लिए जिस तकनीकी विशेषज्ञता की आवश्यकता होती है, उसकी पूर्ति के लिए ही आधुनिक शैक्षणिक संस्थानों और प्रशिक्षण केंद्रों का निरंतर विस्तार हुआ है।

37. (C) ऐसी समाजशास्त्रीय अवधारणाओं और विधियों को लागू करना जो भारतीय सामाजिक संदर्भ में प्रासंगिक हों।
समाजशास्त्र के भारतीयकरण का अर्थ है कि पश्चिमी सिद्धांतों को बिना किसी आलोचनात्मक परीक्षण के भारतीय समाज पर लागू नहीं किया जाना चाहिए। भारत की अपनी विशिष्ट सामाजिक संरचना, जाति व्यवस्था और सांस्कृतिक मूल्य हैं जिनका विश्लेषण केवल पश्चिमी दृष्टिकोण से करना अधूरा हो सकता है। यह आह्वान समाजशास्त्रियों को ऐसे शोध और सिद्धांतों को विकसित करने के लिए प्रेरित करता है जो भारत की वास्तविक समस्याओं और सामाजिक बारीकियों को गहराई से समझने में पूर्णतः सक्षम हों।

38. (B) गुणवत्तापूर्ण शिक्षा तक पहुंच में असमानता बढ़ने की संभावना।
शिक्षा के निजीकरण के कारण कई उच्च स्तरीय संस्थान उभरे हैं, लेकिन उनकी शुल्क संरचना अक्सर बहुत अधिक होती है। इससे समाज का केवल समृद्ध वर्ग ही गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्राप्त कर पाता है, जबकि आर्थिक रूप से पिछड़े मेधावी छात्र पीछे रह जाते हैं। यह स्थिति समाज में शैक्षिक अवसर की समानता के सिद्धांत के विरुद्ध है और भविष्य में आर्थिक एवं सामाजिक विभाजन को और अधिक गहरा कर सकती है। अतः यह शिक्षा नीति के समक्ष एक बड़ी चुनौती है।

Click Here to Buy book on Amazon

की कठोरता को कम करते हैं और संचार को अधिक प्रभावी बनाते हैं। अतः अनौपचारिक संगठन को औपचारिक व्यवस्था से अलग नहीं किया जा सकता, क्योंकि यह उसी का अभिन्न अंग है।

20. (D) उद्योग पर सामाजिक संरचना का प्रभाव
जब श्रमिक एक-दूसरे की सहायता करते हैं और समूह बनाकर अपनी पहचान सुदृढ़ करते हैं, तो यह समाज की गहरी संरचनात्मक प्रवृत्तियों को दर्शाता है। यह व्यवहार अक्सर साझा पृष्ठभूमि या जातीय पहचान से प्रेरित होता है जो औपचारिक नियमों से ऊपर होता है। ऐसी स्थितियाँ यह प्रमाणित करती हैं कि कारखाने की कार्यप्रणाली केवल तकनीकी नियमों से नहीं, बल्कि समाज के सामाजिक संबंधों और पारंपरिक मूल्यों से भी गहराई से प्रभावित होती है।

21. (A) P-2, Q-4, R-1, S-3
औद्योगिक विवादों को सुलझाने के लिए विभिन्न तंत्रों का उपयोग किया जाता है। सुलह में एक निष्पक्ष व्यक्ति केवल बातचीत को सुगम बनाता है। अधिनिर्णय में श्रम न्यायालय जैसे वैधानिक निकाय कानूनी रूप से बाध्यकारी फैसला सुनाते हैं। मध्यस्थता में दोनों पक्ष स्वेच्छा से एक व्यक्ति को चुनते हैं जिसका निर्णय वे स्वीकार करते हैं। सामूहिक सौदेबाजी में नियोक्ता और कर्मचारी सीधे बातचीत कर अनुबंध करते हैं, जो औद्योगिक शांति बनाए रखने का मुख्य आधार बनता है।

22. (B) एक नियोक्ता और कर्मचारियों के समूह (सामान्यतः संघ के माध्यम से) के बीच बातचीत की प्रक्रिया।
सामूहिक सौदेबाजी औद्योगिक संबंधों का एक लोकतांत्रिक और प्रभावी माध्यम है। इसमें श्रमिक व्यक्तिगत रूप से बात करने के बजाय एक समूह या श्रमिक संघ के रूप में अपनी मांगें रखते हैं। इसका उद्देश्य मजदूरी, काम के घंटे और अन्य सुविधाओं पर आपसी सहमति से एक समझौता करना होता है। यह प्रक्रिया श्रमिकों को सौदेबाजी की अधिक शक्ति प्रदान करती है और औद्योगिक विवादों को शांतिपूर्ण तरीके से सुलझाने में सहायता करती है।

23. (D) उच्च शैक्षिक और तकनीकी कौशल वाले श्रमिक।
हाल के वर्षों में तकनीकी प्रगति और वैश्वीकरण के कारण श्रम के स्वरूप में बड़ा बदलाव आया है। अब उद्योगों में केवल शारीरिक श्रम के बजाय मानसिक श्रम और तकनीकी विशेषज्ञता की मांग बढ़ गई है। आधुनिक कार्यबल को निरंतर नए कौशल सीखने और उन्नत मशीनों के साथ काम करने की आवश्यकता होती है। यह परिवर्तन औद्योगिक क्षेत्र में पारंपरिक नौकरियों के स्थान पर अधिक ज्ञान-आधारित और विशिष्ट नौकरियों के सृजन को स्पष्ट रूप से दर्शाता है।

24. (B) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।
अधिनिर्णय एक विधिक प्रक्रिया है जहाँ श्रम न्यायालय द्वारा दिया गया निर्णय पक्षों पर कानूनन बाध्यकारी होता है। इसके विपरीत, सुलह एक ऐसी प्रक्रिया है जहाँ एक तीसरा पक्ष केवल विवाद को सुलझाने में सहायता करता है और वह अपना निर्णय थोप नहीं सकता। यहाँ दोनों कथनों में इन प्रक्रियाओं की प्रकृति को गलत तरीके से प्रस्तुत किया गया है। अतः औद्योगिक विवाद समाधान के इन दोनों महत्वपूर्ण तंत्रों की व्याख्या पूर्णतः त्रुटिपूर्ण है।

25. (C) कार्य से संबंधित समस्याओं की पहचान करने और उन्हें हल करने में कर्मचारियों के एक छोटे समूह को सम्मिलित करना।
'क्वालिटी सर्कल' श्रमिकों की स्वैच्छिक भागीदारी का एक आधुनिक रूप है। इसमें एक ही विभाग के कर्मचारी नियमित रूप से मिलते हैं और अपने कार्य क्षेत्र की समस्याओं पर विचार-विमर्श करते हैं। इसका मुख्य उद्देश्य उत्पादन की गुणवत्ता में सुधार करना और कार्य प्रक्रिया को अधिक कुशल बनाना है। यह प्रणाली श्रमिकों को निर्णय लेने की प्रक्रिया में शामिल कर उनमें जिम्मेदारी और आत्म-सम्मान की भावना को विकसित करने का कार्य करती है।

26. (A) कंपनी के मुख्य कार्यकारी अधिकारी की नियुक्ति करना।
श्रमिक संघ का मुख्य कार्य अपने सदस्यों के आर्थिक और सामाजिक हितों की रक्षा करना होता है। वे बेहतर वेतन, सुरक्षित कार्य दशाओं और विधिक सहायता के लिए प्रबंधन से बातचीत करते हैं। यद्यपि वे प्रबंधन की नीतियों को प्रभावित कर सकते हैं, लेकिन कंपनी के शीर्ष अधिकारियों की नियुक्ति करना उनके अधिकार क्षेत्र में नहीं आता है। यह कार्य पूर्णतः कंपनी के स्वामियों या निदेशक मंडल के प्रशासनिक और व्यावसायिक निर्णयों का हिस्सा होता है।

27. (D) श्रमिकों को प्रभावित करने वाली निर्णय लेने की प्रक्रियाओं में उन्हें अपनी बात रखने का अवसर देना।
प्रबंधन में श्रमिकों की भागीदारी का मुख्य उद्देश्य औद्योगिक लोकतंत्र को बढ़ावा देना है। संयुक्त प्रबंधन परिषदों के माध्यम से श्रमिकों को कारखाने के संचालन और उनकी कार्य स्थितियों से जुड़े महत्वपूर्ण विषयों पर राय देने का मंच मिलता है। इससे श्रमिकों और प्रबंधन के बीच विश्वास बढ़ता है और टकराव की संभावना कम होती है। यह भागीदारी श्रमिकों को केवल एक उत्पादन उपकरण न मानकर उन्हें संस्थान का सक्रिय भागीदार बनाती है।

28. (B) अधिनिर्णय (Adjudication)
जब औद्योगिक विवाद आपसी बातचीत से नहीं सुलझता, तब सरकार उसे श्रम न्यायालय या औद्योगिक न्यायाधिकरण को सौंप देती है। इस प्रक्रिया को 'अधिनिर्णय' कहा जाता है जहाँ एक न्यायाधीश दोनों पक्षों को सुनकर अंतिम फैसला देता है। यह निर्णय विधिक रूप से अनिवार्य होता है और इसका उल्लंघन करने पर दंडात्मक कार्रवाई की जा सकती है। यह तंत्र विवाद समाधान का अंतिम विधिक उपाय माना जाता है जब सुलह के अन्य सभी प्रयास विफल हो जाते हैं।

29. (A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
आधुनिक उद्योगों में अब टकराव के स्थान पर आपसी सहयोग के दर्शन को अपनाया जा रहा है। शिक्षित और जागरूक कार्यबल अब अधिकारों के साथ-साथ संस्थान की सफलता में अपनी भूमिका को भी समझता है। प्रबंधन भी अब यह मानता है कि दमनकारी नीतियों के बजाय श्रमिकों को विश्वास में लेकर ही

NODIA

औपचारिक सूचनाओं को शीघ्र प्रसारित करने में सहायता करते हैं। यदि प्रबंधन इन समूहों के साथ समन्वय बनाए रखे, तो यह संस्थान की उत्पादकता और कर्मचारियों के मनोबल बढ़ाने में सहायक हो सकता है।

49. (C) समाज पर उद्योग का दुष्प्रकार्यात्मक (dysfunctional) प्रभाव।
जब औद्योगिकीकरण के कारण प्रदूषण, अत्यधिक भीड़ और सामाजिक मूल्यों में गिरावट आती है, तो इसे 'दुष्प्रकार्यात्मक प्रभाव' माना जाता है। यह स्थिति दर्शाती है कि औद्योगिक प्रगति हमेशा समाज के लिए केवल लाभदायक ही नहीं होती। यदि विकास अनियोजित हो, तो यह जीवन की गुणवत्ता को नष्ट कर सकता है और नई सामाजिक समस्याएँ उत्पन्न कर सकता है। अतः यह आवश्यक है कि औद्योगिक विकास के साथ-साथ पर्यावरण और सामाजिक संतुलन को भी प्राथमिकता दी जाए।

50. (B) औद्योगिक से उत्तर-औद्योगिक समाज में समाजशास्त्रीय संक्रमण।
जब कोई समाज भारी विनिर्माण और शारीरिक श्रम के बजाय सूचना, सेवा और ज्ञान आधारित कार्यों पर अधिक निर्भर हो जाता है, तो उसे 'उत्तर-औद्योगिक समाज' कहा जाता है। शारीरिक श्रम वाली नौकरियों से मानसिक श्रम वाली नौकरियों की ओर झुकाव इसी परिवर्तन का संकेत है। इस व्यवस्था में शिक्षा, तकनीकी ज्ञान और नवाचार उत्पादन के मुख्य साधन बन जाते हैं। यह बदलाव सामाजिक वर्ग संरचना, जीवन शैली और आर्थिक प्राथमिकताओं में एक मौलिक और व्यापक परिवर्तन को प्रदर्शित करता है।

51. (A) केवल 1 और 2
औद्योगिक विवाद समाधान में सुलह केवल पक्षों के बीच संवाद स्थापित करने का एक माध्यम है, जिसका कोई कानूनी बंधन नहीं होता। इसके विपरीत, अधिनिर्णय में श्रम न्यायालयों द्वारा दिया गया फैसला कानूनी रूप से अनिवार्य और बाध्यकारी होता है। मध्यस्थता हमेशा अनिवार्य नहीं होती; यह अक्सर दोनों पक्षों की सहमति से चुनी गई एक स्वैच्छिक प्रक्रिया हो सकती है। अतः विवादों को सुलझाने के लिए इन विभिन्न विधिक और गैर-विधिक तंत्रों की अलग-अलग भूमिकाएँ और प्रभाव निर्धारित हैं।

52. (B) प्रबंधन में श्रमिकों की भागीदारी
भारत में संयुक्त प्रबंधन परिषदों की स्थापना का मुख्य उद्देश्य कार्यस्थल पर औद्योगिक लोकतंत्र को स्थापित करना था। इन परिषदों के माध्यम से श्रमिकों और प्रबंधन को एक साथ बैठकर उत्पादन, सुरक्षा और कल्याण जैसे मुद्दों पर चर्चा करने का अवसर मिलता है। यह नीति इस विचार पर आधारित है कि यदि श्रमिकों को निर्णय लेने में शामिल किया जाए, तो वे अधिक जिम्मेदारी से कार्य करेंगे। इससे श्रमिकों और प्रबंधन के बीच बेहतर तालमेल, विश्वास और आपसी सहयोग विकसित होता है।

53. (D) उद्योग पर सामाजिक संरचना का प्रभाव।
जब कोई नियोक्ता भर्ती के समय अपनी जाति या क्षेत्र के लोगों को प्राथमिकता देता है, तो यह दर्शाता है कि आधुनिक उद्योग भी पारंपरिक सामाजिक बंधनों से मुक्त नहीं हैं। भारत जैसे समाज में नातेदारी और जातीय नेटवर्क अक्सर औपचारिक नियमों से अधिक प्रभावी हो जाते हैं। यह प्रथा कार्यस्थल के भीतर एक विशिष्ट अनौपचारिक व्यवस्था बनाती है जो बाहरी सामाजिक संरचना का ही विस्तार होती है। यह स्थिति आधुनिक औद्योगिक तर्क और पारंपरिक सामाजिक मूल्यों के अंतर्संबंध को स्पष्ट करती है।

54. (C) सामूहिक सौदेबाजी
सामूहिक सौदेबाजी एक ऐसी प्रक्रिया है जिसमें श्रमिक अपने संघ के माध्यम से नियोक्ता के साथ वेतन और अन्य सुविधाओं पर बातचीत करते हैं। इसका मुख्य लाभ यह है कि यह श्रमिकों को एक संगठित शक्ति प्रदान करती है जिससे वे अपनी न्यायसंगत माँगें मनवा सकते हैं। यह आपसी विश्वास और सहयोग पर आधारित एक द्विपक्षीय प्रक्रिया है। सफल सौदेबाजी से एक औपचारिक समझौता होता है जो भविष्य में हड़ताल या औद्योगिक विवादों की संभावना को कम करने में बहुत सहायक होता है।

55. (A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
हाल के वर्षों में श्रमिक संघों की सदस्यता और प्रभाव में कमी आई है। इसका एक बड़ा कारण अस्थाई और संविदात्मक नौकरियों का बढ़ना है जहाँ श्रमिक संगठित नहीं हो पाते। इसके अतिरिक्त, तकनीकी बदलावों ने भी पारंपरिक उद्योगों में स्थाई नौकरियों को कम कर दिया है। सरकार की कई नई श्रम नीतियाँ भी अब लचीलेपन पर अधिक ध्यान केंद्रित करती हैं। ये सभी कारक मिलकर श्रमिक संघों की सामूहिक सौदेबाजी की शक्ति को धीरे-धीरे कमजोर कर रहे हैं।

56. (C) एकलकरण और संयुक्त परिवार अनुकूलन से जुड़ी एक जटिल प्रक्रिया।
भारत में औद्योगिकीकरण ने केवल संयुक्त परिवारों को समाप्त नहीं किया, बल्कि उन्हें एक नया स्वरूप प्रदान किया है। जहाँ शहरों में एकल परिवार बढ़ रहे हैं, वहीं ग्रामीण क्षेत्रों में रहने वाले सदस्यों के साथ उनके आर्थिक और भावनात्मक संबंध आज भी बहुत गहरे हैं। कई संयुक्त परिवार आधुनिक आवश्यकताओं के अनुसार स्वयं को ढाल लेते हैं और प्रवासी सदस्यों को संबल प्रदान करते हैं। अतः यह परिवर्तन सरल नहीं है, बल्कि परंपरा और आधुनिकता के बीच एक निरंतर अनुकूलन है।

57. (D) "लाइसेंस-परमिट राज" और एक प्रतिबंधात्मक नियामक वातावरण।
स्वतंत्रता के बाद के दशकों में भारत में उद्योगों को स्थापित करने और संचालित करने के लिए सरकार से अनेक अनुमतियाँ लेनी पड़ती थीं, जिसे 'लाइसेंस राज' कहा गया। इस व्यवस्था में लालफीताशाही और भ्रष्टाचार अधिक था, जिससे निजी निवेश और नवाचार बाधित होता था। कठोर नियमों के कारण उद्यमियों को विस्तार करने में कठिनाई होती थी और औद्योगिक विकास की गति धीमी बनी रही। 1991 के आर्थिक सुधारों के

Downloaded from www.pdf.tube

39. (D) स्वदेशी तकनीक के विकास को बढ़ावा देना और इसे राष्ट्रीय लक्ष्यों से जोड़ना।
भारत की विज्ञान और प्रौद्योगिकी नीति का मुख्य उद्देश्य विदेशी निर्भरता को कम करके आत्मनिर्भरता प्राप्त करना है। सरकार स्थानीय स्तर पर अनुसंधान और नवाचार को प्रोत्साहित करती है ताकि ऐसी तकनीकें विकसित की जा सकें जो भारतीय परिस्थितियों के अनुकूल हों। इन वैज्ञानिक विकासों को गरीबी उन्मूलन, कृषि सुधार और औद्योगिक विकास जैसे राष्ट्रीय लक्ष्यों के साथ एकीकृत किया जाता है। स्वदेशी विकास से देश की संप्रभुता और आर्थिक स्थिति दोनों सुदृढ़ होती हैं।

40. (A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
वैश्वीकरण ने भारतीय उद्योगों को विश्व बाजार में अपनी पहुँच बनाने का सुनहरा अवसर दिया है। लेकिन इसके साथ ही, घरेलू कंपनियों को अब उन वैश्विक दिग्गजों का सामना करना पड़ता है जिनके पास आधुनिक तकनीक और अधिक संसाधन हैं। यदि भारतीय उद्योग स्वयं को उन्नत नहीं करते हैं, तो वे इस प्रतिस्पर्धा में पिछड़ सकते हैं। अतः वैश्वीकरण विकास के द्वार खोलने के साथ-साथ निरंतर दक्षता और गुणवत्ता में सुधार की एक कठिन चुनौती भी पेश करता है।

41. (C) श्रम विभाजन पर एमिल दुर्खीम
एमिल दुर्खीम ने समझाया कि प्राचीन समाजों में लोग समान कार्य करते थे और उनकी सोच भी एक जैसी थी, जिसे 'यांत्रिक एकता' कहा गया। लेकिन आधुनिक औद्योगिक समाजों में श्रम का गहरा विभाजन होता है और लोग अपने विशिष्ट कार्यों के लिए एक-दूसरे पर निर्भर होते हैं। इस अन्योन्याश्रयता को दुर्खीम ने 'सावयवी एकता' का नाम दिया। यह परिवर्तन समाज के विकास और उसके सदस्यों के बीच बढ़ते सहयोग एवं कार्यात्मक निर्भरता के एक नए स्तर को प्रदर्शित करता है।

42. (A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
मैक्स वेबर के अनुसार तार्किकता आधुनिक समाज की आधारशिला है जहाँ परंपरा के स्थान पर उद्देश्यपूर्ण गणना को महत्व दिया जाता है। औपचारिक तार्किकता दक्षता और नियमों पर ध्यान केंद्रित करती है, जबकि तात्विक तार्किकता में किसी विशेष मूल्य या नैतिकता के आधार पर निर्णय लिए जाते हैं। उदाहरण के लिए, एक निर्णय तकनीकी रूप से कुशल हो सकता है लेकिन नैतिक मूल्यों के विरुद्ध हो सकता है। वेबर का यह विश्लेषण आधुनिक संगठनों की जटिल निर्णय प्रक्रिया को समझने में सहायक है।

43. (B) P-4, Q-1, R-2, S-3
कार्ल मार्क्स ने पूंजीवाद में अलगाव के विभिन्न रूपों की व्याख्या की है। श्रमिक जिस वस्तु को बनाता है वह उसका स्वामी नहीं होता, जो उत्पाद से अलगाव है। उत्पादन की प्रक्रिया पर उसका कोई नियंत्रण नहीं होता, जो प्रक्रिया से अलगाव है। वह अपनी मानवीय रचनात्मकता खो देता है, जिसे प्रजातीय-सत्व से अलगाव कहा गया। अंत में, प्रतिस्पर्धी बाजार के कारण उसके सामाजिक संबंध केवल आर्थिक लेन-देन तक सीमित हो जाते हैं, जो अन्यों से अलगाव का प्रतीक है।

44. (B) अधिकारी वरिष्ठों के व्यक्तिगत और मनमाने आदेशों के अधीन होते हैं।
नौकरशाही की मुख्य विशेषता यह है कि यहाँ व्यक्तिगत इच्छा या मनमर्जी के लिए कोई स्थान नहीं होता। अधिकारी केवल उन आदेशों का पालन करते हैं जो स्थापित नियमों और कानूनों के दायरे में होते हैं। वरिष्ठ अधिकारी भी अपने अधीनस्थों को व्यक्तिगत पसंद के आधार पर आदेश नहीं दे सकते। पूरी व्यवस्था लिखित नियमों और तार्किक प्रक्रियाओं पर आधारित होती है ताकि कार्य निष्पादन में निष्पक्षता, निरंतरता और पारदर्शिता बनी रहे और प्रशासनिक अराजकता से बचा जा सके।

45. (C) व्यक्तिगत भावनाओं और पक्षपात के बिना कार्य करना चाहिए।
वेबर के अनुसार निर्वैयक्तिकता नौकरशाही का एक अनिवार्य गुण है। इसका अर्थ है कि एक अधिकारी को अपना कर्तव्य निभाते समय अपनी व्यक्तिगत पसंद, द्वेष या पक्षपात को दूर रखना चाहिए। सभी नागरिकों और मामलों के साथ नियमों के अनुसार समान व्यवहार किया जाना चाहिए। यह सिद्धांत सुनिश्चित करता है कि प्रशासनिक निर्णय तार्किक और निष्पक्ष हों। निर्वैयक्तिकता के बिना कोई भी औपचारिक संगठन अपनी विश्वसनीयता और दक्षता को बनाए रखने में सक्षम नहीं हो सकता है।

46. (A) 3, 1, 2, 4
औद्योगिकीकरण की प्रक्रिया सामान्यतः कृषि आधारित अर्थव्यवस्था के कमजोर होने से शुरू होती है। इसके पश्चात बड़े कारखानों की स्थापना होती है जहाँ उत्पादन मशीनों द्वारा किया जाता है। कारखानों में रोजगार के कारण शहरों का विस्तार होता है और आबादी का संकेंद्रण होता है। अंत में, इस नई आर्थिक व्यवस्था के परिणामस्वरूप समाज में पूंजीपतियों और श्रमिकों जैसे नए सामाजिक वर्गों का निर्माण होता है। यह अनुक्रम समाज के संपूर्ण संरचनात्मक परिवर्तन को स्पष्ट रूप से दर्शाता है।

47. (A) संरचनात्मक-प्रकार्यवाद (Structural-Functionalism)
संरचनात्मक-प्रकार्यवाद के अनुसार, समाज या कोई संगठन विभिन्न भागों से बना होता है जो एक साथ मिलकर कार्य करते हैं। कारखाने के संदर्भ में, इसकी तकनीकी, प्रशासनिक और सामाजिक प्रणालियाँ अंगों की तरह कार्य करती हैं। यदि इनमें से एक भी भाग विफल होता है, तो पूरा कारखाना प्रभावित होता है। यह दृष्टिकोण कारखाने को एक स्थिर व्यवस्था के रूप में देखता है जहाँ प्रत्येक घटक का अपना विशिष्ट और महत्वपूर्ण कार्य होता है जो पूरी संरचना को बनाए रखता है।

48. (B) यह कर्मचारियों के बीच संचार और टीम वर्क में सुधार कर सकता है।
कारखाने के भीतर अनौपचारिक समूह हमेशा हानिकारक नहीं होते। ये समूह श्रमिकों को सामाजिक सहयोग प्रदान करते हैं, जिससे उनका मानसिक तनाव कम होता है। आपसी विश्वास के कारण श्रमिक एक-दूसरे की मदद करते हैं, जिससे सामूहिक कार्य क्षमता बढ़ती है। कई बार अनौपचारिक संचार माध्यम

NODIA

67. (C) एक अनौपचारिक संचार नेटवर्क
कार्यस्थल पर जब सूचनाएँ आधिकारिक माध्यमों के बजाय गपशप, अफवाहों या व्यक्तिगत बातचीत के माध्यम से प्रसारित होती हैं, तो उसे 'ग्रेपवाइन' कहा जाता है। यह नेटवर्क अत्यंत तीव्र होता है और अक्सर उन विषयों को भी उजागर कर देता है जिन्हें प्रबंधन गोपनीय रखना चाहता है। यद्यपि इसमें सूचना की सत्यता संदिग्ध हो सकती है, लेकिन यह कर्मचारियों की प्रतिक्रियाओं को जानने का एक अच्छा स्रोत भी है। यह किसी भी संगठन के अनौपचारिक ढांचे का एक अनिवार्य हिस्सा है।

68. (B) एक पेशेवर मध्यम वर्ग और एक औद्योगिक श्रमिक वर्ग का उदय।
औद्योगिकीकरण ने समाज को नए आर्थिक समूहों में विभाजित किया है। पारंपरिक कृषि आधारित समाज के स्थान पर अब एक ऐसा ढांचा विकसित हुआ है जहाँ कौशल और आय के आधार पर वर्ग निर्धारित होते हैं। कारखानों में कार्य करने वाले श्रमिकों और उन्हें प्रबंधित करने वाले पेशेवरों का एक नया पदानुक्रम बना है। यह व्यवस्था जाति जैसी जन्म आधारित प्रस्थितियों को कमजोर करती है और आर्थिक उपलब्धि पर आधारित सामाजिक स्तरीकरण के नए स्वरूपों को मजबूती प्रदान करती है।

69. (B) अधिनिर्णायक सरकार द्वारा नियुक्त न्यायिक अधिकारी होता है, जबकि मध्यस्थ प्रायः स्वयं पक्षों द्वारा चुना जाता है।
मध्यस्थता और अधिनिर्णय दोनों में तीसरा पक्ष निर्णय लेता है, लेकिन उनकी नियुक्ति की प्रक्रिया भिन्न है। मध्यस्थता में श्रमिक और प्रबंधन आपसी सहमति से एक ऐसे व्यक्ति को चुनते हैं जिस पर उन्हें पूर्ण विश्वास हो। इसके विपरीत, अधिनिर्णय एक विधिक प्रक्रिया है जहाँ मामला श्रम न्यायालय में जाता है और न्यायाधीश विधिक साक्ष्यों के आधार पर फैसला सुनाता है। मध्यस्थता अक्सर अधिक सहयोगात्मक होती है, जबकि अधिनिर्णय एक अनिवार्य विधिक संघर्ष का अंतिम चरण माना जाता है।

70. (A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
अकेले कार्य करने वाले श्रमिक की तुलना में संगठित श्रमिक समूह की सौदेबाजी की शक्ति बहुत अधिक होती है। सामूहिक सौदेबाजी के माध्यम से श्रमिक संघ प्रबंधन पर उत्पादन रोकने का दबाव डाल सकते हैं, जिससे प्रबंधन उनकी मांगों पर गंभीरता से विचार करने के लिए विवश होता है। यह प्रक्रिया कार्यस्थल पर शक्ति संतुलन स्थापित करने में सहायता करती है। अतः सामूहिक रूप से उठाई गई आवाज व्यक्तिगत प्रयासों की तुलना में अधिक प्रभावी, सुदृढ़ और सफल सिद्ध होती है।

71. (C) क्वालिटी सर्कल
'क्वालिटी सर्कल' कार्यस्थल पर सुधार लाने का एक सहभागी माध्यम है। इसमें एक ही क्षेत्र के श्रमिक स्वेच्छा से एकत्र होते हैं और अपनी रोजमर्रा की समस्याओं का तार्किक तरीके से समाधान खोजते हैं। इससे न केवल उत्पादकता बढ़ती है, बल्कि श्रमिकों में निर्णय लेने का कौशल भी विकसित होता है। यह पद्धति जापान में अत्यंत सफल रही है और अब वैश्विक स्तर पर उद्योगों में श्रमिकों को मानसिक रूप से कार्य से जोड़ने के लिए बड़े पैमाने पर अपनाई जाती है।

72. (A) केवल 1 और 3
भारत में औद्योगिकीकरण ने अर्थव्यवस्था के मुख्य आधार को कृषि से हटाकर उद्योगों की ओर स्थानांतरित किया है। इसके साथ ही, समाज में आय और संपत्ति के आधार पर नए वर्ग बने हैं, जिन्होंने पारंपरिक असमानताओं को एक नया स्वरूप दिया है। यद्यपि, यह विकास पूरे देश में एक समान नहीं रहा है; कुछ राज्य अत्यंत विकसित हो गए हैं जबकि कुछ आज भी पिछड़े हुए हैं। अतः क्षेत्रीय असमानता और नए वर्ग संघर्ष औद्योगिकीकरण के दो अत्यंत महत्वपूर्ण परिणाम हैं।

73. (B) वर्तमान पूंजीवादी ढांचे के भीतर मौलिक रूप से असंगत हैं।
मार्क्सवादी विश्लेषण के अनुसार पूंजीपति का उद्देश्य लाभ को अधिकतम करना होता है, जो अक्सर श्रमिकों की मजदूरी में कटौती करके ही संभव होता है। दूसरी ओर, श्रमिक अपनी मेहनत का उचित प्रतिफल और बेहतर कार्य दशाएँ चाहते हैं। इन दोनों के हितों में यह बुनियादी टकराव पूंजीवादी व्यवस्था का एक स्थाई और अनिवार्य हिस्सा है। सरकारी कानून इस संघर्ष को कुछ समय के लिए शांत तो कर सकते हैं, लेकिन वे इस अंतर्निहित विरोधाभास को पूर्णतः समाप्त नहीं कर सकते।

74. (B) शैक्षिक सेवाएं प्रदान करने में निजी, लाभकारी संस्थाओं की बढ़ती भूमिका।
शिक्षा के निजीकरण का तात्पर्य है कि अब सरकार के साथ-साथ निजी कंपनियाँ और न्यास भी शिक्षण संस्थान संचालित कर रहे हैं। वैश्वीकरण के दौर में बाजार की माँगों के अनुसार शिक्षा प्रदान करने के लिए निजी क्षेत्र का विस्तार हुआ है। यद्यपि इससे आधुनिक सुविधाएँ और अधिक विकल्प प्राप्त होते हैं, लेकिन शिक्षा अब एक सेवा के बजाय एक व्यवसाय बनती जा रही है। इससे शिक्षा की गुणवत्ता तो सुधर सकती है, लेकिन वह सामान्य नागरिकों के लिए अधिक महंगी हो जाती है।

75. (B) समाजशास्त्रीय ज्ञान की सार्वभौमिक प्रयोज्यता बनाम संदर्भात्मक प्रासंगिकता।
समाजशास्त्र के भारतीयकरण पर बहस इस मुख्य प्रश्न पर आधारित है कि क्या पश्चिमी सिद्धांतों को बिना किसी परिवर्तन के भारतीय समाज पर लागू किया जा सकता है। भारतीय समाजशास्त्रियों का तर्क है कि भारत की सामाजिक वास्तविकता भिन्न है, इसलिए यहाँ के लिए विशिष्ट शोध पद्धतियों की आवश्यकता है। यह बहस ज्ञान के वैश्वीकरण और स्थानीय संस्कृति के संरक्षण के बीच एक संतुलन खोजने का प्रयास है। इसका उद्देश्य भारतीय समाज की अधिक सटीक और प्रासंगिक समझ विकसित करना है।

76. (A) 1, 2, 3
औद्योगिक विवादों को सुलझाने की विधियों में सबसे पहले सामूहिक सौदेबाजी आती है, जो पूर्णतः आंतरिक और स्वैच्छिक है। यदि यह विफल होती है, तो सुलह की प्रक्रिया अपनाई जाती है जिसमें एक बाहरी व्यक्ति सहायता करता है, लेकिन उसका निर्णय बाध्यकारी नहीं होता। अंत में, अधिनिर्णय की

Click Here to Buy book on Amazon

बाद ही इस प्रतिबंधात्मक वातावरण में महत्वपूर्ण बदलाव आया।

58. (B) जाति और नातेदारी द्वारा संरचित वास्तविकताओं की पर्याप्त व्याख्या नहीं कर सकते हैं।
पश्चिमी समाजशास्त्रीय सिद्धांत मुख्य रूप से वर्ग और व्यक्तिवाद पर आधारित हैं, जो भारतीय समाज की संपूर्ण वास्तविकता को नहीं दर्शाते। भारत में जाति, धर्म और संयुक्त परिवार जैसे कारक सामाजिक व्यवहार और औद्योगिक संबंधों को गहराई से प्रभावित करते हैं। समाजशास्त्र के भारतीयकरण का तर्क है कि हमें अपनी विशिष्ट सामाजिक वास्तविकताओं को समझने के लिए अपने ही संदर्भ से विकसित अवधारणाओं की आवश्यकता है। केवल विदेशी सिद्धांतों के माध्यम से भारतीय समाज का विश्लेषण करना अक्सर भ्रामक हो सकता है।

59. (C) इससे व्यवसायीकरण हो सकता है और लाभ के लिए शैक्षणिक मानकों से समझौता हो सकता है।
उच्च शिक्षा के निजीकरण से निवेश और आधुनिक सुविधाएँ तो बढ़ी हैं, लेकिन इसके साथ ही शिक्षा का बाजारीकरण भी हुआ है। कई निजी संस्थान शिक्षा को केवल लाभ अर्जन का माध्यम समझने लगते हैं, जिससे शिक्षण की गुणवत्ता और शोध के मानकों में गिरावट आती है। इसके अतिरिक्त, ऊँची फीस के कारण केवल समृद्ध वर्ग ही इन सुविधाओं का लाभ उठा पाता है। यह स्थिति शिक्षा के सामाजिक उद्देश्य को कमजोर करती है और शैक्षणिक असमानता को बढ़ावा देती है।

60. (B) विशाल जनसंख्या की आवश्यकताओं के लिए प्रासंगिक उच्च-गुणवत्ता वाले, कम लागत वाले समाधान विकसित करना।
'किफायती नवाचार' का अर्थ है सीमित संसाधनों में बेहतर और टिकाऊ उत्पाद बनाना। भारत जैसे विकासशील देश में जहाँ संसाधनों की कमी है और आबादी बड़ी है, यह अवधारणा अत्यंत महत्वपूर्ण है। इसका उद्देश्य आम लोगों के लिए सस्ती और उपयोगी तकनीक उपलब्ध कराना है, जैसे किफायती स्वास्थ्य उपकरण या सौर ऊर्जा समाधान। यह न केवल आर्थिक विकास में सहायता करता है बल्कि सामाजिक समस्याओं को हल करने में भी एक प्रभावी और व्यावहारिक दृष्टिकोण प्रदान करता है।

61. (A) P-4, Q-1, R-2, S-3
कार्ल मार्क्स ने पूंजीवाद में शोषण को समझाने के लिए अतिरिक्त मूल्य और अलगाव के सिद्धांतों को प्रस्तुत किया। मैक्स वेबर ने आधुनिक संगठनों की कार्यप्रणाली को नौकरशाही और तार्किकता के माध्यम से स्पष्ट किया। एमिल दुर्खीम ने श्रम विभाजन के सामाजिक परिणामों और प्रतिमानहीनता की स्थिति का गहन विश्लेषण किया। अंत में, एल्टन मेयो ने अपने प्रसिद्ध अध्ययनों द्वारा कार्यस्थल पर मानवीय संबंधों और अनौपचारिक समूहों के महत्व को विश्व के समक्ष सफलतापूर्वक प्रतिपादित किया।

62. (B) सामाजिक मानदंड और नियम तीव्र सामाजिक परिवर्तनों के साथ तालमेल बिठाने में विफल हो जाते हैं।
दुर्खीम के अनुसार, जब समाज में बहुत तीव्रता से आर्थिक या औद्योगिक परिवर्तन होते हैं, तो पुराने नियम अपना प्रभाव खो देते हैं और नए नियम पूरी तरह विकसित नहीं हो पाते। इस संक्रमण काल में व्यक्ति स्वयं को दिशाहीन अनुभव करता है और उसे उचित-अनुचित का बोध नहीं रहता। नियमों की इसी अनुपस्थिति या शून्यता को 'प्रतिमानहीनता' कहा जाता है। यह स्थिति समाज में असंतोष, हताशा और सामाजिक विघटन जैसी गंभीर समस्याओं को जन्म दे सकती है।

NODIA

63. (C) यह विवेकपूर्ण या नैतिक होने का पर्यायवाची है।
वेबर के समाजशास्त्र में तार्किकता का अर्थ नैतिकता या अच्छाई से नहीं, बल्कि लक्ष्यों को प्राप्त करने के सबसे कुशल तरीकों से है। यह एक ऐसी प्रक्रिया है जहाँ भावनाओं और परंपराओं के स्थान पर केवल परिणामों और सटीक गणनाओं को महत्व दिया जाता है। एक तार्किक निर्णय तकनीकी रूप से कुशल हो सकता है लेकिन वह मानवीय मूल्यों के प्रति उदासीन हो सकता है। अतः तार्किकता का संबंध मुख्य रूप से दक्षता, पूर्वानुमेयता और नियंत्रण से है, न कि किसी नैतिक श्रेष्ठता से।

64. (B) नौकरशाही तार्किकता
नौकरशाही व्यवस्था में नियमों का पालन करना सर्वोपरि माना जाता है। जब कोई प्रबंधक परिस्थितियों की जटिलता को समझे बिना केवल यांत्रिक रूप से नियमों के अनुसार कार्य करता है, तो यह 'नौकरशाही तार्किकता' का उदाहरण है। यहाँ नियमों की कठोरता अक्सर मानवीय संवेदनाओं पर भारी पड़ती है। वेबर ने इसे 'तार्किकता का लौह पिंजरा' कहा था जहाँ व्यक्ति नियमों के जाल में फंसकर अपनी रचनात्मकता खो देता है। यह आधुनिक संगठनों की एक बड़ी संरचनात्मक समस्या मानी जाती है।

65. (C) उत्पादन की पद्धति है
कार्ल मार्क्स के ऐतिहासिक भौतिकवाद के अनुसार, समाज का आर्थिक ढांचा ही उसकी वास्तविक नींव है। इसमें उत्पादन की शक्तियाँ और उत्पादन के संबंध सम्मिलित होते हैं। धर्म, राजनीति, कानून और संस्कृति जैसी अन्य सभी संस्थाएँ इस आर्थिक आधार के ऊपर टिकी हुई एक अधिरचना मात्र हैं। मार्क्स का मानना था कि जब उत्पादन की पद्धति में परिवर्तन आता है, तो पूरा समाज और उसकी विचारधारा भी बदल जाती है। अतः आर्थिक आधार ही समाज का प्राथमिक चालक है।

66. (C) कथन I सही है, लेकिन कथन II गलत है।
एक कारखाने को सामाजिक व्यवस्था कहना उचित है क्योंकि वहाँ लोग केवल मशीनों के साथ नहीं, बल्कि एक-दूसरे के साथ सामाजिक संबंधों में भी बँधे होते हैं। यद्यपि, अनौपचारिक संगठन प्रबंधन द्वारा नियोजित नहीं किया जाता है। यह श्रमिकों के बीच स्वाभाविक मेलजोल और साझा अनुभवों से स्वयं उत्पन्न होता है। प्रबंधन अक्सर अनौपचारिक समूहों को नियंत्रित करने का प्रयास करता है क्योंकि वे आधिकारिक लक्ष्यों के विपरीत भी कार्य कर सकते हैं। अतः दोनों की उत्पत्ति की प्रकृति भिन्न होती है।

86. (C) उच्च शुल्क के कारण मेधावी वंचित छात्रों का बहिष्कार।
निजीकरण से शिक्षा की लागत अत्यंत बढ़ जाती है जो केवल समाज के समृद्ध वर्ग की पहुँच में होती है। इससे निर्धन लेकिन होनहार छात्रों के लिए गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्राप्त करना अत्यंत कठिन हो जाता है। यह स्थिति सामाजिक न्याय के सिद्धांतों के विपरीत है और देश की प्रतिभाओं का पूर्ण उपयोग करने में बाधा उत्पन्न करती है। जब शिक्षा केवल लाभ का साधन बन जाती है, तो वह समाज में समानता लाने के बजाय आर्थिक असमानता को और अधिक गहरा करने लगती है।

87. (B) गुणवत्तापूर्ण शिक्षा तक पहुंच में असमानता बढ़ने की संभावना।
उच्च शिक्षा का निजीकरण एक ऐसी व्यवस्था बना सकता है जहाँ शिक्षा की गुणवत्ता छात्र की भुगतान क्षमता पर निर्भर करती है। समृद्ध परिवारों के बच्चे आधुनिक संसाधनों वाले निजी विश्वविद्यालयों में जा सकते हैं, जबकि निर्धन छात्र सीमित संसाधनों वाले संस्थानों तक सिमट जाते हैं। यह शैक्षिक विभाजन भविष्य में रोजगार के अवसरों और सामाजिक स्थिति में भी बड़ा अंतर उत्पन्न करता है। अतः निजीकरण समाज के विभिन्न वर्गों के बीच के शैक्षिक और आर्थिक अंतराल को और बढ़ा सकता है।

88. (A) वैज्ञानिक दृष्टिकोण को बढ़ावा देना और सामाजिक-आर्थिक विकास के लिए विज्ञान और प्रौद्योगिकी का उपयोग करना।
भारत जैसे विकासशील देश के लिए विज्ञान और प्रौद्योगिकी नीति का मुख्य लक्ष्य निर्धनता और पिछड़ेपन को दूर करना है। इसका उद्देश्य लोगों के सोचने के तरीके को तार्किक बनाना और नवाचार के माध्यम से कृषि एवं उद्योगों को आधुनिक बनाना है। सरकार अनुसंधान के लिए एक अनुकूल वातावरण निर्मित करती है ताकि देश तकनीकी रूप से आत्मनिर्भर बन सके। यह नीति केवल मशीनों के विषय में नहीं है, बल्कि राष्ट्र के समग्र और समावेशी विकास का एक शक्तिशाली माध्यम है।

89. (A) P-4, Q-1, R-2, S-3
औद्योगिकीकरण समाज के प्रत्येक क्षेत्र को प्रभावित करता है। इसके कारण परिवारों का स्वरूप बदलकर एकल परिवारों की ओर झुकाव बढ़ा है। स्तरीकरण के क्षेत्र में आय और व्यवसाय पर आधारित नई वर्ग संरचनाएँ विकसित हुई हैं। शिक्षा के क्षेत्र में तकनीकी और व्यावसायिक कौशल की मांग निरंतर बढ़ रही है। साथ ही, रोजगार के अवसरों के कारण शहरों का विस्तार हुआ है जिसे शहरीकरण कहा जाता है। ये सभी परिवर्तन औद्योगिक विकास की व्यापकता और उसके गहरे सामाजिक प्रभावों को दर्शाते हैं।

90. (B) अधिनिर्णय
जब औद्योगिक विवादों का समाधान आपसी बातचीत से नहीं होता, तो उसे विधिक प्रक्रिया के माध्यम से श्रम न्यायालय में ले जाया जाता है। इस विधिक प्रक्रिया को 'अधिनिर्णय' कहा जाता है जहाँ न्यायाधीश साक्ष्यों के आधार पर निर्णय देता है। यह फैसला अंतिम होता है और दोनों पक्षों के लिए इसे मानना विधिक रूप से अनिवार्य होता है। यह तंत्र औद्योगिक अशांति को रोकने और कानून का शासन बनाए रखने के लिए सरकार द्वारा उपयोग किया जाने वाला एक महत्वपूर्ण प्रशासनिक उपकरण माना जाता है।

91. (C) मैक्स वेबर
मैक्स वेबर ने आधुनिक समाज में बढ़ती तार्किकता और नौकरशाही के कठोर नियमों को 'लौह पिंजरा' कहा था। उनके अनुसार, दक्षता और गणना के प्रति अत्यधिक झुकाव मनुष्य की व्यक्तिगत स्वतंत्रता और रचनात्मकता को सीमित कर देता है। व्यक्ति इस व्यवस्था में केवल एक पुर्जा बनकर रह जाता है जिसे निर्धारित नियमों के अनुसार ही कार्य करना पड़ता है। वेबर का यह विचार आधुनिक जीवन की मशीनी और निर्जीव प्रकृति पर एक गंभीर आलोचनात्मक टिप्पणी है जो आज के संगठित समाज पर भी सटीक बैठती है।

92. (B) पूंजीवादी शोषण
कार्ल मार्क्स के अनुसार पूंजीवाद की संपूर्ण व्यवस्था श्रमिकों के शोषण पर आधारित है। अतिरिक्त मूल्य वह मूल्य है जो श्रमिक उत्पादित करता है लेकिन उसका पूर्ण लाभ पूंजीपति प्राप्त करता है। श्रमिक को केवल उतना ही भुगतान किया जाता है जिससे वह अपना अस्तित्व बनाए रख सके। यही अतिरिक्त मूल्य पूंजीपति की संपत्ति और शक्ति में वृद्धि करता है, जबकि श्रमिक निर्धन ही बना रहता है। मार्क्स का यह सिद्धांत पूंजीवाद की अंतर्निहित अन्यायपूर्ण प्रकृति को वैज्ञानिक ढंग से उजागर करने का कार्य करता है।

93. (B) केवल 1 and 3
किसी भी संस्थान में अनौपचारिक संगठन का होना अपरिहार्य है क्योंकि मनुष्य स्वभावतः एक सामाजिक प्राणी है। हाथोर्न अध्ययनों ने स्पष्ट किया कि ये अनौपचारिक समूह कार्यस्थल की संस्कृति और उत्पादकता पर गहरा प्रभाव डालते हैं। यह कहना त्रुटिपूर्ण है कि ये समूह सदैव प्रबंधन के विरोध में होते हैं; यदि इनके साथ उचित समन्वय स्थापित किया जाए, तो ये सहयोग और मनोबल बढ़ाने में सहायक हो सकते हैं। अतः औपचारिक संरचना के भीतर इन सामाजिक नेटवर्क का अस्तित्व अत्यंत महत्वपूर्ण है।

94. (B) प्रतिस्पर्धी बाजार में उत्पादकता और अस्तित्व के साझा हितों की पहचान।
वैश्वीकरण और बढ़ती प्रतिस्पर्धा के कारण अब कंपनियों और श्रमिकों दोनों को यह बोध हो गया है कि वे एक-दूसरे के बिना सफल नहीं हो सकते। यदि संस्थान आर्थिक संकट में जाएगा, तो श्रमिकों की आजीविका पर भी संकट आएगा। इस वास्तविकता ने दोनों पक्षों को पुरानी शत्रुता त्यागकर आपसी सहयोग की ओर बढ़ने के लिए प्रेरित किया है। अब प्रबंधन श्रमिकों को साझेदार के रूप में देखता है और श्रमिक भी उत्पादकता बढ़ाने में सहयोग करते हैं। यह बदलाव औद्योगिक शांति के लिए सुखद है।

95. (C) आर्थिक स्थिति और उत्पादन के साधनों से संबंध
औद्योगिक समाज में स्तरीकरण का मुख्य आधार 'वर्ग' होता है, जो पूर्णतः आर्थिक स्थिति पर निर्भर करता है। व्यक्ति की

NODIA

पहचान इस तथ्य से होती है कि उसके पास संपत्ति है या वह केवल अपनी श्रम शक्ति बेचता है। जाति के विपरीत, वर्ग व्यवस्था में व्यक्ति अपनी कठोर मेहनत और शिक्षा के बल पर अपनी स्थिति बदल सकता है। यह एक खुली व्यवस्था है जहाँ सामाजिक गतिशीलता संभव है। अतः उत्पादन के साधनों पर नियंत्रण ही इस नई सामाजिक व्यवस्था की धुरी माना जाता है।

96. (C) असमान क्षेत्रीय विकास, जिससे समृद्धि और पिछड़ेपन के क्षेत्र बन गए हैं।
भारत में औद्योगिकीकरण का सबसे बड़ा दोष यह रहा है कि यह कुछ ही राज्यों और बड़े महानगरों तक सीमित रह गया है। महाराष्ट्र, गुजरात और दक्षिण के कुछ क्षेत्रों में भारी निवेश हुआ है, जबकि मध्य और पूर्वी भारत के कई क्षेत्र आज भी पिछड़े हुए हैं। इस क्षेत्रीय असंतुलन के कारण बड़े पैमाने पर पलायन होता है और सामाजिक तनाव बढ़ता है। देश के सर्वांगीण विकास के लिए यह आवश्यक है कि उद्योगों को पिछड़े क्षेत्रों में भी उचित प्रोत्साहन और बुनियादी सुविधाएँ प्रदान की जाएँ।

97. (B) जी.एस. घुर्ये
जी.एस. घुर्ये को भारतीय समाजशास्त्र का जनक माना जाता है और उन्होंने ही समाजशास्त्र के भारतीयकरण पर सर्वाधिक बल दिया। उनका मानना था कि भारतीय समाज की विशिष्टताओं, जैसे जाति और धर्म को समझने के लिए भारतीय ग्रंथों और परंपराओं का सूक्ष्म अध्ययन अनिवार्य है। उन्होंने पश्चिमी सिद्धांतों की अंधाधुंध नकल करने के बजाय भारतीय संदर्भ में मौलिक शोध करने की परंपरा प्रारंभ की। उनके कार्यों ने भारतीय समाजशास्त्र को एक विशिष्ट पहचान और स्वतंत्र दिशा प्रदान करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

98. (A) सामाजिक समानता का लक्ष्य बनाम निजी लाभ का उद्देश्य।
शिक्षा के निजीकरण में सबसे बड़ा टकराव समाज सेवा और व्यावसायिक लाभ के मध्य होता है। सरकार का लक्ष्य सभी को समान शैक्षिक अवसर प्रदान करना होता है, जबकि निजी संस्थान अपने निवेश और लाभ को प्राथमिकता देते हैं। जब शिक्षा केवल मुनाफा कमाने का साधन बन जाती है, तो नैतिक मूल्यों और सामाजिक उत्तरदायित्वों की उपेक्षा होने लगती है। यह संघर्ष इस मौलिक प्रश्न को जन्म देता है कि क्या शिक्षा जैसी बुनियादी आवश्यकता को पूरी तरह से बाजार की शक्तियों पर छोड़ा जा सकता है।

99. (A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
औद्योगिक समाज को संचालित करने के लिए साक्षरता और तकनीकी ज्ञान वाले व्यक्तियों की आवश्यकता होती है। पुरानी शिक्षा प्रणालियाँ जो केवल धर्म या साहित्य पर केंद्रित थीं, वे आधुनिक मशीनों और वैश्विक व्यापार को समझने के लिए पर्याप्त नहीं हैं। इसीलिए औद्योगिकीकरण के साथ-साथ शैक्षणिक पाठ्यक्रमों में विज्ञान, गणित और तकनीकी विषयों को प्रमुखता से शामिल किया गया। शिक्षा में यह व्यापक परिवर्तन औद्योगिक अर्थव्यवस्था की माँगों को पूरा करने और विकास की गति को बनाए रखने के लिए अनिवार्य है।

100. (B) हड़ताल जैसी सामूहिक कार्यवाही के माध्यम से उत्पादन को नियंत्रित करने की इसकी क्षमता से।
श्रमिक संघों की वास्तविक शक्ति उनकी सामूहिक एकता में निहित है जो उत्पादन प्रक्रिया को प्रभावित कर सकती है। यदि प्रबंधन श्रमिकों की न्यायसंगत मांगों को स्वीकार नहीं करता, तो संघ हड़ताल का सहारा लेते हैं जिससे संस्थान को आर्थिक हानि हो सकती है। यह 'कार्य बंद' करने की शक्ति ही उन्हें प्रबंधन के समकक्ष बैठकर बातचीत करने का विधिक अधिकार प्रदान करती है। बिना इस सामूहिक शक्ति के, एक अकेला श्रमिक अपनी शर्तों पर समझौता करने में कभी भी समर्थ नहीं हो सकता है।

101. (B) अल्प श्रम विभाजन वाले पारंपरिक, पूर्व-औद्योगिक समाज।
यांत्रिक एकता उन समाजों में पाई जाती है जहाँ लोग समान जीवनशैली और साझा विश्वासों का पालन करते हैं। ऐसे समाजों में श्रम विभाजन बहुत अल्प होता है और लोगों के बीच व्यक्तिगत भिन्नताएँ न के बराबर होती हैं। यहाँ सामाजिक नियंत्रण दमनकारी कानूनों के माध्यम से होता है ताकि समूह की अखंडता बनी रहे। दुर्खीम के अनुसार, यह एकता लोगों की समानता और साझा 'सामूहिक चेतना' पर आधारित होती है, जो पुराने कबीलाई या पारंपरिक ग्रामीण समुदायों की मुख्य विशेषता थी।

102. (C) विधिक रुप से परिभाषित और तर्कसंगत नियम
मैक्स वेबर के अनुसार, एक आधुनिक नौकरशाही में अधिकारी की शक्ति उसके व्यक्तित्व या परंपरा से प्राप्त नहीं होती। उसे वह अधिकार कानून और तार्किक नियमों के तहत मिलता है जो उसके पद के साथ संबद्ध होते हैं। इसे 'तर्कसंगत-विधिक सत्ता' कहा जाता है। अधिकारी केवल उन सीमाओं के भीतर ही आदेश दे सकता है जो नियमों द्वारा स्पष्ट रुप से निर्धारित की गई हैं। यह व्यवस्था सुनिश्चित करती है कि शक्ति का प्रयोग स्वेच्छाचारी ढंग से न हो और प्रशासनिक कार्यों में एकरुपता बनी रहे।

103. (A) श्रम की प्रक्रिया से अलगाव
जब कोई श्रमिक उत्पादन श्रृंखला पर केवल एक छोटा सा कार्य निरंतर करता है, तो उसे संपूर्ण उत्पाद की समझ नहीं रहती। उसे यह भी बोध नहीं होता कि उसका योगदान अंतिम उत्पाद में किस प्रकार सहायक है। मार्क्स के अनुसार, यह स्थिति कार्य को नीरस और अर्थहीन बना देती है। श्रमिक अपनी मेहनत के साथ कोई मानसिक या सृजनात्मक जुड़ाव अनुभव नहीं कर पाता और वह केवल मशीन का एक विस्तार बनकर रह जाता है। यही श्रम की प्रक्रिया से उत्पन्न होने वाला वास्तविक अलगाव है।

104. (B) वस्तुओं के उत्पादन और विनिमय के लिए लोग जिन सामाजिक संबंधों में प्रवेश करते हैं।
कार्ल मार्क्स के अनुसार, उत्पादन केवल तकनीकी प्रक्रिया नहीं है, बल्कि यह व्यक्तियों के मध्य एक सामाजिक संबंध है। इसमें यह निर्धारित होता है कि उत्पादन के साधनों का स्वामी कौन है और श्रम कौन कर रहा है। उदाहरण के लिए, स्वामी और श्रमिक या जमींदार और कृषक के बीच के संबंध ही उत्पादन संबंध हैं।

Downloaded from www.pdf.tube

ये संबंध समाज के आर्थिक आधार का निर्माण करते हैं और यह निर्धारित करते हैं कि समाज में धन, संसाधन और शक्ति का वितरण किस प्रकार सुनिश्चित किया जाएगा।

105. (A) 2, 1, 3
समाजशास्त्रीय साहित्य के विकास में मार्क्स और एंगेल्स का 'कम्युनिस्ट घोषणापत्र' 1848 में आया, जिसने वर्ग संघर्ष की आधारशिला रखी। इसके पश्चात 1893 में दुर्खीम की 'द डिवीजन ऑफ लेबर इन सोसाइटी' प्रकाशित हुई, जिसमें सामाजिक एकता का विश्लेषण किया गया। अंत में, मैक्स वेबर की 'इकोनॉमी एंड सोसाइटी' बीसवीं शताब्दी के प्रारंभ में आई, जिसमें नौकरशाही और तार्किकता की विस्तृत व्याख्या की गई। यह अनुक्रम औद्योगिक समाज के बारे में समाजशास्त्रीय विचारों के ऐतिहासिक विकास और उनकी परिपक्वता को दर्शाता है।

106. (B) परस्पर संबंधित और अन्योन्याश्रयता हैं।
कारखाने को एक सामाजिक व्यवस्था मानने का अर्थ है कि उसके सभी विभाग और सदस्य एक-दूसरे से कार्यात्मक रूप से संबद्ध हैं। तकनीकी विभाग, प्रशासन और श्रमिक वर्ग मिलकर एक सांगठनिक इकाई की तरह कार्य करते हैं। यदि श्रमिकों का मनोबल गिरता है, तो उत्पादन प्रभावित होता है, और यदि तकनीक त्रुटिपूर्ण होगी, तो प्रशासन विफल होगा। यह अन्योन्याश्रयता ही कारखाने को स्थिरता और कार्यक्षमता प्रदान करती है। समाजशास्त्रीय दृष्टि से, संस्थान के भीतर होने वाली प्रत्येक क्रिया का प्रभाव संपूर्ण व्यवस्था पर पड़ता है।

107. (B) औपचारिक संगठन स्पष्ट रूप से एक उद्देश्य के लिए बनाया गया है; अनौपचारिक संगठन स्वतः स्फूर्त सामाजिक अंतःक्रिया से उत्पन्न होता है।
औपचारिक संगठन का निर्माण प्रबंधन द्वारा विशिष्ट लक्ष्यों, जैसे उत्पादन और लाभ अर्जन के लिए किया जाता है। इसमें नियम और पद पूर्व-निर्धारित होते हैं। इसके विपरीत, अनौपचारिक संगठन का कोई पूर्व-नियोजित ढांचा नहीं होता। यह कार्यस्थल पर लोगों के मध्य होने वाली अंतःक्रियाओं, साझा हितों और आपसी सहानुभूति से स्वतः विकसित होता है। जहाँ औपचारिक संगठन कार्य की कुशलता पर केंद्रित रहता है, वहीं अनौपचारिक संगठन मानवीय भावनाओं और सामाजिक संतुष्टि को प्राथमिकता प्रदान करने का कार्य करता है।

108. (A) परिवार और लैंगिक भूमिकाओं पर उद्योग का प्रभाव।
औद्योगिकीकरण ने महिलाओं को गृह की चारदीवारी से बाहर निकलकर आर्थिक रूप से स्वतंत्र होने का अवसर प्रदान किया है। जब महिलाएँ कारखानों और कार्यालयों में कार्य करने लगती हैं, तो परिवार के भीतर उनकी प्रस्थिति और निर्णय लेने की शक्ति में सकारात्मक परिवर्तन आता है। यह पारंपरिक पुरुष प्रधान ढांचे को चुनौती देता है और लैंगिक समानता की ओर एक प्रभावी कदम है। इस प्रक्रिया ने न केवल अर्थव्यवस्था को गति प्रदान की है, बल्कि समाज की प्राचीन सोच और पारिवारिक भूमिकाओं को भी गहराई से प्रभावित किया है।

109. (D) कथन I गलत है, लेकिन कथन II सही है।
सुलह की प्रक्रिया में सुलहकर्ता केवल एक सलाहकार की भूमिका निर्वाह करता है, वह कोई विधिक निर्णय थोप नहीं सकता। उसका कार्य केवल दोनों पक्षों को बातचीत के लिए प्रोत्साहित करना है। इसके विपरीत, मध्यस्थता में यदि दोनों पक्ष सहमत हों, तो मध्यस्थ द्वारा दिया गया फैसला कानूनी रूप से बाध्यकारी होता है। यहाँ प्रथम कथन में सुलह की शक्ति को बढ़ा-चढ़ाकर दिखाया गया है, जबकि द्वितीय कथन में मध्यस्थता की वास्तविक विधिक प्रकृति को स्पष्ट रूप से और सटीक रूप से वर्णित किया गया है।

110. (C) जापान
'क्वालिटी सर्कल' की अवधारणा द्वितीय विश्व युद्ध के पश्चात जापान में विकसित हुई थी। जापानी प्रबंधन दर्शन में इस तथ्य पर बल दिया गया कि निचले स्तर के श्रमिक भी अपनी बुद्धि और अनुभव से उत्पाद की गुणवत्ता में सुधार कर सकते हैं। जापानी कंपनियों ने श्रमिकों के छोटे समूहों को समस्या समाधान के लिए प्रोत्साहित किया, जिससे वहाँ के उद्योगों ने वैश्विक स्तर पर महान सफलता प्राप्त की। आज यह मॉडल संपूर्ण विश्व में श्रमिकों की भागीदारी और गुणवत्ता प्रबंधन का एक उत्कृष्ट, प्रभावी और प्रेरक उदाहरण माना जाता है।

111. (B) वेतन, कार्य घंटों और नियोजन की अन्य शर्तों को सम्मिलित करने वाले औपचारिक समझौते (अनुबंध) पर पहुँचना।
सामूहिक सौदेबाजी का मुख्य लक्ष्य एक ऐसा लिखित समझौता तैयार करना है जो नियोक्ता और श्रमिकों दोनों को पूर्णतः मान्य हो। इस प्रक्रिया में कार्य की शर्तें स्पष्ट की जाती हैं ताकि भविष्य में किसी भी प्रकार का संशय या विवाद उत्पन्न न हो। यह द्विपक्षीय बातचीत औद्योगिक शांति बनाए रखने का सर्वाधिक लोकतांत्रिक तरीका है। सफल सौदेबाजी से एक निश्चित अवधि के लिए सांगठनिक स्थिरता आती है, जिससे उत्पादन सुचारू रूप से चलता है और श्रमिकों के अधिकारों को विधिक सुरक्षा प्राप्त होती है।

112. (B) उद्योग पर पूर्व-विद्यमान सामाजिक संरचना का प्रभाव।
आधुनिक कारखानों में भर्ती के समय जाति आधारित नेटवर्क का प्रयोग यह सिद्ध करता है कि उद्योग समाज से पृथक नहीं हैं। भारत में लोग अक्सर अपने ही समुदाय के व्यक्तियों पर अधिक विश्वास करते हैं और उन्हें रोजगार दिलाने में सहायता करते हैं। यह व्यवहार तार्किक व्यावसायिक नियमों के बजाय पारंपरिक सामाजिक वफादारी पर आधारित होता है। यह स्थिति दर्शाती है कि औद्योगिकीकरण के उपरांत भी पुराने सामाजिक बंधन आज भी आर्थिक निर्णयों और कार्यस्थल की प्रगतियों को गहराई से प्रभावित करने की क्षमता रखते हैं।

113. (A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
औद्योगिकीकरण और शहरीकरण का परस्पर अत्यंत गहरा संबंध है। जब किसी विशेष क्षेत्र में उद्योग स्थापित होते हैं, तो वहाँ रोजगार, शिक्षा और बेहतर सुविधाओं की खोज में ग्रामीण क्षेत्रों से लोग प्रवास करने लगते हैं। यह जनसंख्या का संकेंद्रण धीरे-धीरे उस क्षेत्र को नगर में परिवर्तित कर देता है। भारत के लगभग सभी प्रमुख शहरों का विकास किसी न किसी

NODIA

149. (A) वैज्ञानिक दृष्टिकोण और नवाचार को प्रोत्साहित करना।
भारत की विज्ञान और प्रौद्योगिकी नीति का मुख्य लक्ष्य एक ऐसा समाज निर्मित करना है जो तर्क, वैज्ञानिक चेतना और खोज पर आधारित हो। सरकार का प्रयास है कि नई पीढ़ी में वैज्ञानिक सोच विकसित की जाए ताकि वे भविष्य की वैश्विक चुनौतियों का सामना कर सकें। अनुसंधान और विकास को निरंतर बढ़ावा देकर देश को तकनीकी रूप से आत्मनिर्भर बनाने का प्रयास किया जा रहा है। यह नीति केवल मशीनों के विकास तक सीमित नहीं है, बल्कि राष्ट्र के समग्र, समावेशी और दीर्घकालिक विकास का एक अत्यंत शक्तिशाली और वैज्ञानिक माध्यम है।

150. (A) 2, 3, 1
कार्ल मार्क्स ने उन्नीसवीं शताब्दी के मध्य में पूंजीवाद और उसके सामाजिक दुष्परिणामों का विश्लेषण किया था। उनके पश्चात एमिल दुर्खीम ने शताब्दी के अंत में श्रम विभाजन और सामाजिक एकता के सिद्धांतों को प्रस्तुत किया। मैक्स वेबर ने बीसवीं शताब्दी के प्रारंभ में आधुनिक समाज में नौकरशाही और बढ़ते युक्तिकरण पर अपना विस्तृत शोध कार्य किया। इन तीनों महान विचारकों के क्रमिक योगदान ने औद्योगिक समाज की जटिलताओं को समझने के लिए समाजशास्त्र को एक सुदृढ़ सैद्धांतिक आधार और एक स्पष्ट विश्लेषणात्मक दिशा प्रदान की है।

151. (B) वर्ग संघर्ष
कार्ल मार्क्स का प्रसिद्ध कथन है कि संपूर्ण ज्ञात इतिहास सदैव दो वर्गों के बीच के निरंतर संघर्ष का इतिहास रहा है। एक वर्ग वह जिसके पास उत्पादन के समस्त संसाधन हैं और दूसरा वह जो केवल शारीरिक श्रम करता है। चाहे वह स्वामी और दास हों, या पूंजीपति और श्रमिक, उनके हितों का आपसी टकराव ही समाज को परिवर्तन की ओर ले जाता है। मार्क्स का मानना था कि यह संघर्ष तब तक चलता रहेगा जब तक एक वर्गविहीन समाज की स्थापना नहीं हो जाती। उनके लिए वर्ग संघर्ष ही सामाजिक परिवर्तन की मुख्य शक्ति है।

152. (C) एनोमी
'एनोमी' एक ऐसी सामाजिक स्थिति है जहाँ प्राचीन नियम खंडित हो जाते हैं और नवीन नियम अभी पूरी तरह स्पष्ट नहीं होते। यह अक्सर तीव्र सामाजिक या आर्थिक उथल-पुथल के दौर में होता है। व्यक्ति स्वयं को समाज से पृथक अनुभव करता है क्योंकि उसे व्यवहार के लिए कोई स्पष्ट और स्थाई दिशा-निर्देश प्राप्त नहीं होते। दुर्खीम ने इसे आधुनिकता का एक बड़ा संकट माना था। जब समाज अपने सदस्यों को नियंत्रित करने और उन्हें उद्देश्य प्रदान करने में विफल होता है, तो 'प्रतिमानहीनता' की स्थिति उत्पन्न होती है, जो अराजकता की ओर ले जाती है।

153. (A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
मैक्स वेबर आधुनिकता के भविष्य को लेकर चिंतित थे क्योंकि उन्हें लगा कि मनुष्य अब केवल कठोर नियमों और फाइलों का गुलाम बनकर रह जाएगा। उन्होंने 'लौह पिंजरा' शब्दावली का प्रयोग यह बताने के लिए किया कि नौकरशाही और अत्यधिक तकनीक मनुष्य की रचनात्मक आत्मा को शुष्क कर देंगे। तर्क और दक्षता के पीछे भागते हुए हम अपनी मानवीय संवेदनाओं और सहानुभूति को खो देंगे। वेबर का यह भय आज के युग में भी अत्यंत प्रासंगिक है जहाँ समस्त निर्णय आंकड़ों और मशीनी सटीकता से लिए जाते हैं, और मानवीय स्पर्श लुप्त होता जा रहा है।

154. (B) यह श्रमिक के श्रम का वह भाग है जो अवैतनिक है।
'अतिरिक्त मूल्य' का अर्थ है वह मूल्य जो श्रमिक अपनी मजदूरी के मूल्य से अधिक उत्पादित करता है। मान लीजिए एक श्रमिक दिन भर में 1000 रुपये का मूल्य सृजित करता है परंतु उसे मजदूरी केवल 300 रुपये प्राप्त होती है। शेष 700 रुपये पूंजीपति के लाभ के रूप में जमा होते हैं, यही 'अतिरिक्त मूल्य' है। मार्क्स के अनुसार यह श्रमिक का 'चुराया हुआ श्रम' है। यही वह अधिशेष है जिससे पूंजीपति निरंतर समृद्ध होते जाते हैं और श्रमिक वर्ग सदैव अभाव और आर्थिक शोषण के दुष्चक्र में फँसा रहता है।

155. (C) ग्रेपवाइन (Grapevine)
किसी भी संस्थान में सूचनाओं के संप्रेषण का एक अनौपचारिक तरीका होता है जिसे 'ग्रेपवाइन' कहा जाता है। इसका नाम अंगूर की बेल की तरह उलझा हुआ और प्रत्येक दिशा में त्वरित विस्तार के कारण पड़ा है। इसमें सूचनाएँ अत्यंत तीव्रता से एक कर्मचारी से दूसरे तक पहुँचती हैं। कई बार प्रबंधन भी महत्वपूर्ण संदेशों को प्रसारित करने के लिए कूटनीतिक रूप से इसका उपयोग करता है। यद्यपि यह अफवाहों का केंद्र हो सकता है, लेकिन यह कार्यस्थल की वास्तविक मनोदशा और कर्मचारियों की भावनाओं को समझने का एक अत्यंत प्रभावी और मानवीय माध्यम है।

156. (C) औपचारिक नौकरियों में योग्यता के ऊपर नातेदारी का बढ़ता महत्व
औद्योगिकीकरण समाज में आधुनिक मूल्यों को बढ़ावा देता है जहाँ व्यक्तिगत योग्यता और तकनीकी कौशल को सर्वोच्च प्राथमिकता दी जाती है। आधुनिक नौकरियों में नातेदारी या भाई-भतीजावाद को तकनीकी रूप से त्रुटिपूर्ण माना जाता है क्योंकि इससे सांगठनिक दक्षता प्रभावित होती है। यद्यपि व्यवहार में यह पूर्णतः समाप्त नहीं हुआ है, लेकिन औपचारिक सिद्धांत सदैव योग्यता पर ही बल देते हैं। इसके विपरीत, तीव्र शहरीकरण और नवीन वर्गों का उदय औद्योगिक प्रगति के प्रत्यक्ष परिणाम हैं जो समाज की प्राचीन संरचना को मौलिक रूप से परिवर्तित करने का कार्य करते हैं।

157. (C) मध्यस्थता - पक्षों द्वारा सहमत तीसरे पक्ष का बाध्यकारी निर्णय
मध्यस्थता एक ऐसी सुव्यवस्थित प्रक्रिया है जहाँ दोनों पक्ष आपसी सहमति से एक निष्पक्ष व्यक्ति को निर्णायक के रूप में चुनते हैं। वे पूर्व में ही यह लिखित समझौता करते हैं कि वह व्यक्ति जो भी निर्णय देगा, उन्हें मान्य होगा। यह अदालती कार्यवाही की तुलना में अधिक तीव्र और मितव्ययी होती है। इसमें दोनों पक्षों का मध्यस्थ की निष्पक्षता पर भरोसा होता है, जिससे विवाद का अंत शांतिपूर्ण ढंग से होता है। यह औद्योगिक जगत में आपसी सहमति और विधिक अनुशासन के

Click Here to Buy book on Amazon

122. (B) उद्योग द्वारा आवश्यक कौशल की ओर पाठ्यक्रम का झुकाव।
औद्योगिकीकरण ने शिक्षा के पारंपरिक उद्देश्यों को परिवर्तित कर उसे बाजार की आवश्यकताओं के अनुरूप अनुकूलित कर दिया है। अब शैक्षणिक संस्थानों में तकनीकी विषयों, संगणक और प्रबंधन पर अधिक ध्यान दिया जाता है क्योंकि उद्योगों को ऐसे ही कुशल कार्यबल की आवश्यकता है। शिक्षा अब केवल आत्म-सुधार का माध्यम नहीं रही, बल्कि वह रोजगार प्राप्ति का एक साधन बन गई है। इस बदलाव ने व्यावसायिक शिक्षा के महत्व को बढ़ाया है, जिससे समाज में शिक्षा का स्वरूप अधिक व्यावहारिक, रोजगारोन्मुखी और लक्ष्य-आधारित हो गया है।

123. (D) सामूहिक सौदेबाजी
सामूहिक सौदेबाजी औद्योगिक संबंधों की एक विशिष्ट प्रक्रिया है जहाँ नियोक्ता और श्रमिक संघ सीधे संवाद के माध्यम से अपनी समस्याओं का समाधान खोजते हैं। इसमें किसी सरकारी अधिकारी या बाहरी मध्यस्थ की कोई प्रत्यक्ष भूमिका नहीं होती। यह स्वायत्तता दोनों पक्षों को अधिक जिम्मेदारी से व्यवहार करने के लिए प्रेरित करती है। जब वे स्वयं किसी समझौते पर पहुँचते हैं, तो उसके अनुपालन की संभावना भी अधिक होती है। यह प्रक्रिया कार्यस्थल पर आपसी विश्वास और औद्योगिक लोकतंत्र को सुदृढ़ करने का कार्य करती है।

124. (C) बहु-कौशल और अनुकूलन क्षमता के प्रणालीगत महत्व में वृद्धि।
वैश्वीकरण के वर्तमान युग में तकनीक अत्यंत तीव्र गति से परिवर्तित हो रही है। अब श्रमिकों के लिए केवल एक कार्य का ज्ञान पर्याप्त नहीं है; उन्हें नई मशीनों और प्रणालियों के साथ स्वयं को ढालने की आवश्यकता है। बहु-कौशली होने से श्रमिक विभिन्न भूमिकाएँ निर्वाह कर सकते हैं, जिससे उनकी रोजगार सुरक्षा में वृद्धि होती है। उद्योगों को भी अब ऐसे लचीले कार्यबल की खोज है जो बदलते वैश्विक बाजार की चुनौतियों का सामना कर सकें। अतः निरंतर सीखना और कौशल संवर्धन अब आधुनिक श्रमिक के लिए अनिवार्य हो गया है।

125. (A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
भारत में औद्योगिकीकरण का परिवार पर प्रभाव केवल विखंडनकारी नहीं रहा है। यद्यपि नगरों में लघु परिवार बढ़े हैं, लेकिन वे अपने ग्रामीण संयुक्त परिवार से पूर्णतः पृथक नहीं हुए हैं। संयुक्त परिवार अक्सर अपने युवा सदस्यों को शहर भेजकर उनकी शिक्षा और आजीविका में सहायता करते हैं, और बदले में नगरों से आर्थिक संसाधन वापस गाँवों में प्रवाहित होते हैं। यह दर्शाता है कि भारतीय परिवार ने आधुनिकता के साथ सामंजस्य स्थापित करते हुए अपनी सांस्कृतिक जड़ों को सुरक्षित रखने का एक अद्भुत मार्ग खोज लिया है।

126. (C) विपणन योग्य वस्तु (Commodity)
शिक्षा के निजीकरण के कारण अब इसे एक ऐसी वस्तु के रूप में देखा जाने लगा है जिसका क्रय और विक्रय संभव है। जब शिक्षा का मुख्य उद्देश्य लाभ अर्जन हो जाता है, तो इसके सामाजिक मूल्य गौण हो जाते हैं। शिक्षण संस्थान अब छात्रों को 'ग्राहक' समझने लगते हैं और शैक्षणिक गुणवत्ता के स्थान पर बाह्य चकाचौंध पर अधिक ध्यान केंद्रित करते हैं। यह दृष्टिकोण शिक्षा की पवित्रता को क्षीण करता है और समाज के निर्धन वर्गों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा से वंचित करने का संकट उत्पन्न करता है जो अत्यंत चिंताजनक है।

127. (B) भारत की विज्ञान और प्रौद्योगिकी नीति
भारत की विज्ञान और प्रौद्योगिकी नीति का एक मुख्य स्तंभ 'आत्मनिर्भरता' है। इसका लक्ष्य ऐसी तकनीकों का विकास करना है जो भारत में ही निर्मित हों और देश की विशिष्ट समस्याओं का समाधान कर सकें। इससे न केवल विदेशी मुद्रा की बचत होती है, बल्कि राष्ट्रीय सुरक्षा और गौरव में भी वृद्धि होती है। सरकार स्थानीय वैज्ञानिकों और शोध संस्थानों को विशेष प्रोत्साहन प्रदान करती है ताकि वे वैश्विक स्तर के नवाचार कर सकें। स्वदेशी विकास ही देश को महाशक्ति बनाने का वास्तविक, स्थाई और विश्वसनीय मार्ग है।

128. (B) वर्ग सामाजिक गतिशीलता की अनुमति देता है, जबकि जाति पारंपरिक रूप से प्रदत्त (ascriptive) और कठोर है।
जाति व्यवस्था जन्म पर आधारित होती है जिसे व्यक्ति कभी परिवर्तित नहीं कर सकता, चाहे वह कितनी भी संपत्ति अर्जित कर ले। इसके विपरीत, वर्ग व्यवस्था पूर्णतः आर्थिक स्थिति और व्यक्तिगत उपलब्धियों पर आधारित होती है। एक निर्धन व्यक्ति कठोर परिश्रम और शिक्षा के माध्यम से उच्च वर्ग में पहुँच सकता है। औद्योगिक समाज में वर्ग का महत्व बढ़ता है क्योंकि यहाँ कौशल और योग्यता को वरीयता दी जाती है। अतः वर्ग व्यवस्था समाज को अधिक गतिशील, समावेशी और खुला बनाने में सार्थक सहायता प्रदान करती है।

129. (C) अपने सदस्य श्रमिकों के हितों की रक्षा करना और उन्हें आगे बढ़ाना।
श्रमिक संघ श्रमिकों का एक ऐसा संगठन है जो उन्हें प्रबंधन के समक्ष सांगठनिक शक्ति प्रदान करता है। वे श्रमिकों के वेतन, सुरक्षा और सम्मान के लिए संघर्ष करते हैं। व्यक्तिगत रूप से एक श्रमिक निर्बल हो सकता है, लेकिन संघ के माध्यम से वह अपनी बात सुदृढ़ता से रख सकता है। संघों का कार्य केवल संघर्ष करना नहीं, बल्कि श्रमिकों के लिए कल्याणकारी योजनाएँ संचालित करना और उन्हें विधिक परामर्श देना भी है। यह औद्योगिक लोकतंत्र को बनाए रखने के लिए एक अनिवार्य और महत्वपूर्ण सामाजिक संस्था है।

130. (B) क्वालिटी सर्कल
जब श्रमिक और पर्यवेक्षक मिलकर अपने कार्य की गुणवत्ता सुधारने के लिए विचार-विमर्श करते हैं, तो इसे 'क्वालिटी सर्कल' कहा जाता है। यह जापानी प्रबंधन का एक अभिन्न हिस्सा है जो श्रमिकों को केवल आज्ञापालक नहीं, बल्कि चिंतनशील प्राणी मानता है। इससे न केवल तकनीकी त्रुटियाँ कम होती हैं, बल्कि श्रमिकों का मनोबल भी बढ़ता है क्योंकि उनके सुझावों को उचित महत्व दिया जाता है। यह कार्यस्थल पर एक सहयोगात्मक और रचनात्मक वातावरण निर्मित करने का सर्वाधिक प्रभावी, मानवीय और आधुनिक तरीका है।

NODIA

औद्योगिक गतिविधि के कारण ही संभव हुआ है। अतः उद्योगों द्वारा सृजित अवसर ही ग्रामीण आबादी के शहरी क्षेत्रों की ओर पलायन का मुख्य कारण हैं।

114. (B) एक सामाजिक वर्ग द्वारा अपने साझा हितों और अन्य वर्गों के प्रति अपने विरोध की जागरुकता।
मार्क्स के अनुसार, केवल एक वर्ग का हिस्सा होना पर्याप्त नहीं है; वास्तविक वर्ग चेतना तब आती है जब श्रमिक यह समझने लगते हैं कि उनका शोषण हो रहा है। वे यह पहचानते हैं कि उन सभी की समस्याएँ समान हैं और उनके हित पूंजीपति वर्ग के हितों के सर्वथा विपरीत हैं। यह जागरुकता उन्हें व्यक्तिगत शिकायतों से ऊपर उठाकर एक संगठित राजनीतिक शक्ति बनाती है। मार्क्स का मानना था कि यही वर्ग चेतना अंततः क्रांति और समाज में आमूलचूल परिवर्तन का मुख्य वैचारिक आधार बनेगी।

115. (C) प्रबंधन और कुछ स्थापित ट्रेड यूनियनों दोनों की ओर से उदासीनता या प्रतिरोध।
भारत में श्रमिकों को प्रबंधन में सम्मिलित करने की योजनाएँ अक्सर केवल औपचारिकताओं तक सीमित रह जाती हैं। कई प्रबंधक अपनी सत्ता कम होने के भय से इसे स्वीकार नहीं करते, वहीं कुछ श्रमिक संघ भी इसे प्रबंधन की कूटनीति मानकर इसका विरोध करते हैं। वे इसे अपनी स्वतंत्र सौदेबाजी की शक्ति के लिए संकट समझते हैं। इस आपसी अविश्वास और सहयोग के अभाव के कारण सहभागी प्रबंधन का उद्देश्य पूर्णतः सफल नहीं हो पाया है, जिससे कार्यस्थल पर लोकतांत्रिक मूल्यों का विकास बाधित होता है।

116. (B) P-2, Q-4, R-3, S-1
समाजशास्त्र का भारतीयकरण शैक्षणिक विषय के विकास से संबद्ध है, जिसका उद्देश्य स्थानीय प्रासंगिकता की खोज करना है। शिक्षा का निजीकरण आधुनिक शिक्षा नीति की एक बड़ी चुनौती है जो पहुँच और गुणवत्ता को प्रभावित करती है। विज्ञान और प्रौद्योगिकी नीति का मुख्य लक्ष्य शोध को राष्ट्रीय आवश्यकताओं से जोड़ना है। अंत में, वैश्वीकरण के युग में घरेलू उद्योगों की सुरक्षा और अंतरराष्ट्रीय प्रतिस्पर्धा के मध्य संतुलन स्थापित करना एक अनिवार्य आर्थिक आवश्यकता बन गई है। ये सभी मुद्दे आधुनिक भारत के विकास के विभिन्न आयाम हैं।

117. (B) अलगाव
शिल्पकारों के युग में व्यक्ति अपने कार्य का स्वामी होता था और उसे अपनी कला से गहरा लगाव था। कारखानों के आगमन के पश्चात श्रमिक केवल मजदूरी के लिए कार्य करने लगा और उसने उत्पादन प्रक्रिया पर अपना नियंत्रण खो दिया। मार्क्स ने इसे 'अलगाव' की स्थिति कहा है जहाँ कार्य अब आनंद का स्रोत नहीं, बल्कि केवल उदरपूर्ति का एक साधन बन गया है। यह परिवर्तन मनुष्य को उसकी रचनात्मकता और आत्म-सम्मान से पृथक कर देता है, जो औद्योगिक व्यवस्था का एक अत्यंत संवेदनशील और दुखद मानवीय पक्ष है।

118. (B) नियम अमूर्त, स्थिर और व्यापक होते हैं जिन्हें सीखा जा सकता है।
मैक्स वेबर के अनुसार, नौकरशाही के नियम लिखित और स्पष्ट होते हैं ताकि वे सभी के लिए समान रूप से लागू हों। ये नियम किसी व्यक्ति विशेष के लिए परिवर्तित नहीं किए जाते और इनके आधार पर ही समस्त कार्यों का निष्पादन होता है। अधिकारियों को इन नियमों का विशेष प्रशिक्षण प्रदान किया जाता है ताकि वे कुशलतापूर्वक कार्य कर सकें। नियमों की यह स्थिरता और व्यापकता ही प्रशासन में पूर्वानुमान और निष्पक्षता सुनिश्चित करती है। इससे व्यक्ति की स्वेच्छाचारिता समाप्त होती है और संपूर्ण व्यवस्था तार्किक ढांचे के तहत संचालित होती है।

119. (A) केवल 1
कार्ल मार्क्स का मानना था कि उत्पादन के संबंध ही समाज की संपूर्ण संरचना को निर्धारित करते हैं। इसके विपरीत, दुर्खीम ने प्रतिमानहीनता को एक नकारात्मक और पीड़ादायक सामाजिक स्थिति माना था जहाँ व्यक्ति स्वयं को दिशाहीन अनुभव करता है। वेबर का युक्तिकरण भी केवल आर्थिक क्षेत्र तक सीमित नहीं था, बल्कि उन्होंने इसे धर्म, कानून और संगीत जैसे जीवन के प्रत्येक पहलू में विस्तृत होते हुए देखा था। अतः मार्क्स का यह विचार कि आर्थिक आधार ही समाज की कुंजी है, शास्त्रीय समाजशास्त्र का एक अत्यंत मौलिक और प्रभावशाली सिद्धांत है।

120. (C) मार्क्स का अतिरिक्त मूल्य का सिद्धांत
अतिरिक्त मूल्य का सिद्धांत यह प्रतिपादित करता है कि पूंजीपति केवल श्रमिक की श्रम शक्ति का क्रय करता है, उसकी संपूर्ण उत्पादकता का नहीं। श्रमिक जितना उत्पादन करता है और उसे जो मजदूरी प्राप्त होती है, उन दोनों के मध्य के विशाल अंतर को ही 'अतिरिक्त मूल्य' कहा जाता है। पूंजीपति इस अधिशेष को अपने लाभ के रूप में संचित करता है। मार्क्स के अनुसार, यही प्रक्रिया पूंजीवाद के अंतर्गत धन के असमान वितरण और श्रमिकों के निरंतर आर्थिक शोषण का मूल कारण है, जो समाज में वर्ग विभाजन को और अधिक गहरा करती है।

121. (B) कभी-कभी औपचारिक माध्यमों की तुलना में अधिक तीव्रता से सूचना प्रसारित कर सकता है।
किसी भी संगठन में अनौपचारिक संचार माध्यम अथवा 'ग्रेपवाइन' अत्यंत सक्रिय होता है। इसकी गति आधिकारिक फाइलों या ईमेल से कहीं अधिक तीव्र होती है। जब आधिकारिक घोषणाओं में विलंब होता है, तो यह नेटवर्क कर्मचारियों की जिज्ञासा को शांत करने का कार्य करता है। यद्यपि इसमें अफवाहों का भय बना रहता है, लेकिन चतुर प्रबंधक इसका उपयोग कर्मचारियों के मनोबल को समझने के लिए भी करते हैं। यह मानवीय स्वभाव का एक सहज हिस्सा है जो प्रत्येक संगठित संस्थान में स्वाभाविक रूप से विद्यमान रहता है।

Downloaded from www.pdf.tube

140. (A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
कारखाने में श्रमिकों के आपसी सामाजिक संबंध उत्पादन की गति निर्धारित करने में प्रमुख भूमिका निभाते हैं। यदि श्रमिक समूह प्रबंधन से असंतुष्ट हैं, तो वे जानबूझकर कार्य की गति धीमी कर सकते हैं जिसे 'गो-स्लो' कहा जाता है। इसके विपरीत, यदि उनके मध्य मधुर संबंध हैं, तो वे एक-दूसरे की सहायता कर उत्पादन बढ़ा सकते हैं। अनौपचारिक समूहों के अपने अलिखित नियम होते हैं जो अक्सर औपचारिक आदेशों से अधिक प्रभावी सिद्ध होते हैं। इसीलिए आधुनिक प्रबंधन अब इन समूहों की मनोदशा को समझने पर विशेष बल देता है।

141. (B) 'विश्व का मोहभंग' (disenchantment of the world)।
मैक्स वेबर का मानना था कि जैसे-जैसे समाज तर्क और विज्ञान की ओर अग्रसर होता है, अंधविश्वास और धर्म का प्रभाव कम होने लगता है। प्रत्येक विषय को अब सटीक गणना और प्रमाणों की कसौटी पर परखा जाता है। इस प्रक्रिया ने विश्व को रहस्यहीन और मशीनी बना दिया है, जिसे उन्होंने 'विश्व का मोहभंग' कहा। यद्यपि इससे कार्य दक्षता में वृद्धि हुई, लेकिन जीवन की कलात्मकता और आध्यात्मिक गहराई कम हो गई। व्यक्ति अब केवल लक्ष्यों और आंकड़ों के पीछे भागने वाला एक तार्किक लेकिन संवेदनहीन प्राणी बनकर रह गया है।

142. (C) उनकी अनिवार्य मानवीय प्रकृति और अंतर्निहित रचनात्मक क्षमता।
मार्क्स के अनुसार मनुष्य स्वभावतः एक रचनात्मक प्राणी है जो कार्य के माध्यम से स्वयं को अभिव्यक्त करता है। परंतु पूंजीवाद में श्रमिक को वही कार्य करना पड़ता है जो स्वामी निर्धारित करता है, जिससे उसकी निजी सृजनात्मकता समाप्त हो जाती है। वह स्वयं को एक स्वतंत्र मनुष्य के स्थान पर केवल एक उत्पादन का साधन समझने लगता है। इसी स्थिति को 'प्रजातीय-सत्व से अलगाव' कहा गया है। यह अलगाव मनुष्य को उसकी आत्मा और उसकी वास्तविक पहचान से दूर कर देता है, जो एक गंभीर मनोवैज्ञानिक एवं सामाजिक संकट है।

143. (C) सामूहिक चेतना की प्रधानता।
सावयवी एकता वाले आधुनिक समाजों में व्यक्तिवाद अधिक प्रबल होता है। यहाँ लोग एक-दूसरे से भिन्न होते हैं और अपनी स्वतंत्र पहचान एवं विचार रखते हैं। सामूहिक चेतना, जो सभी को एक जैसा सोचने के लिए बाध्य करती है, यहाँ अत्यंत निर्बल हो जाती है। इसके स्थान पर, अनुबंध और विधिक नियमों का महत्व बढ़ जाता है जो व्यक्तियों के बीच के संबंधों को तार्किक रूप से निर्धारित करते हैं। अतः व्यक्तिगत स्वतंत्रता और भूमिकाओं की विशिष्टता ही इस व्यवस्था की धुरी है, न कि समूह का पूर्ण और एकपक्षीय मानसिक नियंत्रण।

144. (B) लोग इसके भीतर संरचित विधियों से, परिभाषित भूमिकाओं और स्थितियों के साथ अंतःक्रिया करते हैं।
एक कारखाना केवल भौतिक ढांचा नहीं है, बल्कि यह मानवीय संबंधों का एक जटिल जाल है। यहाँ प्रत्येक व्यक्ति, चाहे वह श्रमिक हो या प्रबंधक, एक निश्चित सामाजिक व्यवस्था के तहत कार्य करता है। उनके बीच अधिकार, उत्तरदायित्व और सम्मान के स्पष्ट नियम विद्यमान होते हैं। यह आपसी अंतःक्रिया ही कारखाने को एक समाज की तरह जीवंत और क्रियाशील बनाती है। यदि ये सामाजिक संबंध खंडित हो जाएँ, तो उन्नत तकनीक और मशीनें मिलकर भी कभी किसी सफल उत्पादन प्रक्रिया को पूर्णतः अंजाम नहीं दे सकती हैं।

145. (C) केवल 2 और 3
औद्योगिक विवादों में सामूहिक सौदेबाजी एक द्विपक्षीय प्रक्रिया है, न कि प्रबंधन का एकतरफा निर्णय। इसमें दोनों पक्षों की सहमति अनिवार्य होती है। अधिनिर्णय में तीसरे पक्ष (न्यायालय) का हस्तक्षेप होता है और उसका फैसला कानूनी रूप से मानना अनिवार्य होता है। सुलह का मुख्य उद्देश्य विवाद को न्यायालय तक ले जाने के बजाय आपसी समझ और संवाद से सुलझाना है। अतः विवाद समाधान के इन तंत्रों में जहाँ अधिनिर्णय विधिक शक्ति का प्रयोग करता है, वहीं सुलह आपसी सहमति और स्वेच्छा पर सर्वाधिक बल देती है।

146. (B) प्रबंधन में श्रमिकों की भागीदारी का एक रूप
संयुक्त प्रबंधन परिषदें एक ऐसा मंच हैं जहाँ श्रमिक और स्वामी मिलकर संस्थान के भविष्य और नीतियों पर चर्चा करते हैं। यह योजना इस विचार पर आधारित है कि श्रमिकों को केवल कार्य करने वाली मशीन न मानकर उन्हें निर्णय लेने की प्रक्रिया में सम्मिलित किया जाना चाहिए। इससे श्रमिकों में उत्तरदायित्व का बोध बढ़ता है और वे संस्थान को अपना समझने लगते हैं। यह औद्योगिक लोकतंत्र की दिशा में एक बड़ा कदम है, जिसका मुख्य उद्देश्य कार्यस्थल पर शांति, विश्वास और आपसी सहयोग का सुदृढ़ वातावरण निर्मित करना है।

147. (C) वर्ग और प्रस्थिति के नए पदानुक्रमों का निर्माण जो प्रायः जाति के साथ परस्पर व्याप्त (overlap) होते हैं।
भारत में औद्योगिकीकरण ने स्तरीकरण को पूर्णतः समाप्त नहीं किया, बल्कि उसे अधिक जटिल बना दिया है। अब व्यक्ति की पहचान केवल उसकी जाति से नहीं, बल्कि उसकी आय और व्यवसाय से भी होती है। अक्सर यह देखा जाता है कि उच्च जातियों के लोग ही उच्च आर्थिक और पेशेवर वर्गों में आसीन हैं। इसे वर्ग और जाति का 'परस्पर व्यापन' कहा जाता है। यह स्थिति दर्शाती है कि समाज के प्राचीन और नवीन पदानुक्रम मिलकर एक ऐसी व्यवस्था बना रहे हैं जहाँ पारंपरिक असमानताएँ आधुनिक रूपों में निरंतर जीवित और प्रभावी हैं।

148. (B) शिक्षा का निजीकरण
शिक्षा के निजीकरण के कारण उच्च शिक्षा अब एक अत्यंत महंगी व्यावसायिक सेवा बनती जा रही है। इससे यह आशंका उत्पन्न हो गई है कि भविष्य में केवल समृद्ध वर्ग के बच्चे ही प्रतिष्ठित डॉक्टर या अभियंता बन पाएंगे। गुणवत्तापूर्ण शिक्षा तक सभी वर्गों की समान पहुँच न होना समाज के लिए एक बड़ा संकट है। यह मुद्दा केवल आर्थिक नहीं, बल्कि सामाजिक न्याय से भी संबद्ध है। जब शिक्षा केवल लाभ अर्जन का व्यापार बन जाती है, तो वह समाज में समानता स्थापित करने का अपना वास्तविक और नैतिक उद्देश्य खोने लगती है।

NODIA

166. (B) अनौपचारिक संगठन
कारखाने में जब श्रमिक आपस में मिलते हैं, गपशप करते हैं और संकट के समय एक-दूसरे का संबल बनते हैं, तो वह 'अनौपचारिक संगठन' कहलाता है। यह किसी लिखित नियम या आदेश से संचालित नहीं होता, बल्कि मानवीय भावनाओं और आपसी भरोसे पर टिका होता है। यह संगठन श्रमिकों को एक विशिष्ट पहचान प्रदान करता है और उन्हें कार्यस्थल के मशीनी वातावरण में मानवीय गरिमा का बोध कराता है। यद्यपि यह आधिकारिक सांगठनिक चार्ट का हिस्सा नहीं है, लेकिन इसकी उपेक्षा करना प्रबंधन के लिए घातक हो सकता है क्योंकि यह श्रमिकों की सामूहिक शक्ति और मनोबल का मुख्य स्रोत है।

167. (C) औद्योगिक समाज
प्राचीन समाजों में व्यक्ति की पहचान उसके जन्म या प्रदत्त प्रस्थिति से होती थी, जिसे वह परिवर्तित नहीं कर सकता था। परंतु औद्योगिक समाज में 'अनुबंध' या लिखित समझौते का महत्व बढ़ गया है। अब दो पक्षों के मध्य के संबंध उनकी इच्छा और तार्किक समझौते पर आधारित होते हैं। एक श्रमिक अपनी स्वेच्छा से आजीविका का चयन कर सकता है और उसे त्याग भी सकता है। यह परिवर्तन व्यक्ति को अधिक स्वतंत्रता, अवसर और गतिशीलता प्रदान करता है। यह पुरानी सामाजिक जंजीरों को तोड़कर एक आधुनिक, तार्किक और प्रगतिशील समाज की ओर बढ़ने का प्रमुख संकेत है।

168. (B) सामूहिक सौदेबाजी, सुलह, अधिनिर्णय
औद्योगिक विवादों को सुलझाने का प्रथम चरण सामूहिक सौदेबाजी है जहाँ श्रमिक और स्वामी स्वयं संवाद के माध्यम से मसला सुलझाते हैं। यदि यह विफल होता है, तो सरकार 'सुलह' के लिए अपना अधिकारी नियुक्त करती है जो दोनों पक्षों के मध्य मध्यस्थ का कार्य करता है। जब सुलह भी निष्फल हो जाए, तो मामला 'अधिनिर्णय' के लिए श्रम न्यायालय में प्रेषित किया जाता है जहाँ कानूनी आधार पर फैसला सुनाया जाता है। यह व्यवस्थित और क्रमिक प्रक्रिया विवादों को शांतिपूर्ण और विधिक तरीके से निपटाने का एक सुव्यवस्थित, प्रभावी और न्यायपूर्ण ढांचा प्रदान करती है।

169. (A) कॉर्पोरेट निर्णय लेने में श्रमिक प्रतिनिधियों को अपनी बात कहने का अवसर देना।
प्रबंधन में श्रमिकों की भागीदारी का मुख्य लक्ष्य कार्यस्थल पर स्वेच्छाचारिता को समाप्त करना है। जब श्रमिक स्वयं नीतिगत निर्णयों का हिस्सा बनते हैं, तो वे कार्य को अपनी नैतिक जिम्मेदारी समझने लगते हैं। इससे हड़ताल और संघर्ष की घटनाओं में कमी आती है और आपसी विश्वास सुदृढ़ होता है। यह व्यवस्था श्रमिकों को संस्थान के प्रति अधिक वफादार और सक्रिय सहभागी बनाती है। यह केवल वेतन वृद्धि का माध्यम नहीं है, बल्कि श्रमिकों को सम्मान देने और उन्हें संस्थान के विकास का वास्तविक साझेदार बनाने का एक अत्यंत साहसिक और आधुनिक प्रयास है।

170. (B) इससे एकल परिवारों का उदय हुआ है जबकि संयुक्त परिवार का आदर्श प्रायः बना रहता है।
औद्योगिकीकरण ने भारतीय परिवारों के रहने की शैली को परिवर्तित कर दिया है। नगरों के सीमित स्थानों में संपूर्ण संयुक्त परिवार का एक साथ रहना कठिन होता है, इसलिए एकल परिवार निरंतर बढ़ रहे हैं। परंतु भारतीय संस्कृति में आज भी लोग भावनात्मक और आर्थिक रूप से अपने विस्तारित परिवार से जुड़े रहते हैं। पर्वों और मांगलिक अवसरों पर आज भी संयुक्त परिवार का स्वरूप स्पष्ट दिखाई देता है। अतः भौतिक रूप से परिवार भले ही लघु हो गए हों, लेकिन परिवार की जो मूल भावना और उत्तरदायित्व का बोध है, वह आज भी भारतीय समाज में अत्यंत गहरा और अटूट बना हुआ है।

171. (B) वर्तमान जनसांख्यिकीय लाभांश (demographic dividend) द्वारा प्रदान की गई संभावित आर्थिक वृद्धि।
भारत के पास युवाओं की एक विशाल जनसंख्या है जिसे 'जनसांख्यिकीय लाभांश' कहा जाता है। यदि इन युवाओं को उचित शिक्षा और उच्च तकनीकी प्रशिक्षण प्रदान किया जाए, तो वे राष्ट्र की प्रगति में महान योगदान दे सकते हैं। औद्योगिकीकरण के माध्यम से इन युवाओं को सार्थक रोजगार प्रदान करना सरकार की सर्वोच्च प्राथमिकता है। यदि हम इस अवसर का सही उपयोग करने में विफल रहे, तो यह बेरोजगारी के कारण एक सामाजिक संकट भी बन सकता है। अतः युवाओं का कौशल विकास ही भारत के उज्ज्वल और समृद्ध भविष्य की वास्तविक, अनिवार्य और एकमात्र कुंजी है।

172. (A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
वैश्वीकरण के कारण संपूर्ण विश्व के नवीन विचार अब भारत में सुगमता से पहुँच रहे हैं। इसने भारतीय विद्वानों को इस पर पुनर्विचार करने के लिए विवश किया है कि क्या पश्चिमी समाजशास्त्र हमारी अपनी सामाजिक समस्याओं को समझने के लिए पूर्णतः पर्याप्त है। भारत की सामाजिक विविधता और यहाँ की प्राचीन व्यवस्थाएँ अत्यंत विशिष्ट हैं। इसीलिए अब यह मांग प्रबल हो गई है कि हमें अपनी सांस्कृतिक जड़ों से संबद्ध समाजशास्त्र विकसित करना चाहिए। समाजशास्त्र का भारतीयकरण इसी वैश्विक चुनौती का एक रचनात्मक, तार्किक और अत्यंत आवश्यक प्रतिउत्तर माना जा सकता है।

173. (C) उत्पादन में सम्मिलित सामाजिक वर्ग
मार्क्स के अनुसार उत्पादन संबंध मुख्य रूप से उन समूहों के मध्य के रिश्ते हैं जो मिलकर वस्तुओं का उत्पादन करते हैं। इसमें एक पक्ष वे लोग होते हैं जिनके पास भूमि और कारखाने जैसे संसाधन हैं (बुर्जुआ), और दूसरा पक्ष वे जो केवल अपनी श्रम शक्ति बेचते हैं (सर्वहारा)। इन दोनों वर्गों के मध्य का रिश्ता सहयोग के स्थान पर अक्सर शोषण और प्रभुत्व पर आधारित होता है। ये संबंध ही समाज की वास्तविक शक्ति संरचना को निर्धारित करते हैं और यह तय करते हैं कि राष्ट्र के संसाधनों और धन पर किसका और कितना विधिक अधिकार होगा।

174. (B) अधिकार का पदानुक्रम
मैक्स वेबर की नौकरशाही में कार्य संचालन का एक स्पष्ट संरचनात्मक ढांचा होता है जिसे 'पदानुक्रम' कहते हैं। यहाँ

Click Here to Buy book on Amazon

मध्य एक श्रेष्ठ संतुलन और तार्किक समाधान प्रदान करने का कार्य करती है।

158. (B) समस्या-समाधान में कर्मचारियों की भागीदारी।
'क्वालिटी सर्कल' इस विश्वास पर आधारित हैं कि कार्यस्थल पर कार्य करने वाले श्रमिक ही मशीनों और उत्पादन की सूक्ष्मताओं को सर्वाधिक बेहतर ढंग से समझते हैं। जब उन्हें अपनी राय व्यक्त करने और सुधार के सुझाव देने की स्वतंत्रता दी जाती है, तो वे अधिक उत्साह और लगन से कार्य करते हैं। इससे न केवल उत्पाद की गुणवत्ता में सुधार होता है, बल्कि श्रमिकों के आत्म-सम्मान में भी वृद्धि होती है। यह भागीदारी प्रबंधन और श्रमिकों के बीच की दूरी को न्यूनतम करती है और कार्यस्थल को अधिक लोकतांत्रिक और रचनात्मक बनाने में सहायता प्रदान करती है।

159. (B) तकनीकी कौशल, समय की पाबंदी और कारखाने के अनुशासन पर प्रत्यक्ष बल।
कृषि कार्यों में समय का बंधन लचीला होता है, परंतु कारखाने में निर्धारित समय पर कार्य प्रारंभ करना अनिवार्य होता है। आधुनिक उद्योग में समय की पाबंदी और सांगठनिक नियमों का अनुपालन सर्वाधिक महत्वपूर्ण है। यहाँ श्रमिक को मशीनों की गति के साथ तालमेल बिठाना पड़ता है, जिसके लिए विशेष तकनीकी प्रशिक्षण अनिवार्य होता है। यह कठोर अनुशासन और नियमितता ही औद्योगिक उत्पादन की रीढ़ मानी जाती है। इस संरचनात्मक बदलाव ने श्रमिकों की संपूर्ण जीवनशैली और उनके सोचने के तार्किक तरीके को पूर्णतः परिवर्तित कर दिया है।

160. (C) वेतनभोगी पेशेवर, प्रबंधक और विभिन्न वाइट-कॉलर कर्मचारी।
औद्योगिकीकरण ने समाज में एक नवीन 'मध्यम वर्ग' को जन्म दिया है जो न तो कारखाने का स्वामी है और न ही केवल शारीरिक श्रम करने वाला श्रमिक। ये वे लोग हैं जिनके पास विशेष शैक्षणिक डिग्री और विशेषज्ञता है, जैसे अभियंता, डॉक्टर और प्रबंधक। इस वर्ग की संख्या और सामाजिक प्रभाव निरंतर बढ़ रहा है। यह वर्ग समाज में शिक्षा, आधुनिकता और तार्किकता का प्रसार करता है। इसकी सामाजिक प्रस्थिति आय और पद से निर्धारित होती है, जिसने पुराने समाज के जातिगत और वर्ग के समीकरणों को पूरी तरह परिवर्तित कर दिया है।

161. (B) इसके लाभ समान रूप से वितरित नहीं हुए हैं, जिससे क्षेत्रीय और सामाजिक असमानताएं उत्पन्न हुई हैं।
भारत में औद्योगिकीकरण का सबसे बड़ा दोष इसका 'असमान' स्वरूप होना है। जहाँ कुछ महानगर चकाचौंध और सुविधाओं से परिपूर्ण हैं, वहीं अनेक गाँव और पिछड़े जनपद आज भी ऊर्जा और सड़क जैसी बुनियादी सुविधाओं के लिए संघर्ष कर रहे हैं। इसी प्रकार, कुछ विशिष्ट वर्गों ने इस प्रगति का सर्वाधिक लाभ उठाया, जबकि अकुशल और निर्धन लोग पिछड़ गए। इस बढ़ती असमानता के कारण समाज में असंतोष और पलायन की प्रवृत्ति बढ़ती है। विकास की वास्तविक सफलता तभी है जब इसका लाभ समाज के अंतिम व्यक्ति तक न्यायपूर्ण ढंग से पहुँचे।

162. (B) भारतीय ऐतिहासिक और सांस्कृतिक विशिष्टताओं के प्रति संवेदनशील रूपरेखा (frameworks)।
समाजशास्त्र का भारतीयकरण इस तथ्य पर बल देता है कि भारत को समझने के लिए हमें यहाँ की प्राचीन परंपराओं, सामाजिक दर्शन और सांस्कृतिक जड़ों को गहराई से देखना होगा। पश्चिमी मॉडल अक्सर भारतीय वास्तविकताओं को समझने में विफल रहते हैं क्योंकि वे हमारे मूल्यों और सामाजिक बुनावट से अपरिचित होते हैं। भारतीय विद्वानों का तर्क है कि हमें अपनी अवधारणाएँ स्वयं निर्मित करनी चाहिए जो हमारी जाति व्यवस्था और संयुक्त परिवार जैसे जटिल विषयों को सही परिप्रेक्ष्य में समझा सकें। यह प्रयास समाजशास्त्र को भारत के लिए अधिक उपयोगी और सार्थक बनाता है।

163. (B) शैक्षिक लक्ष्यों की प्राथमिक उपलब्धि के ऊपर निजी लाभ का उद्देश्य।
जब शिक्षा का मुख्य लक्ष्य केवल आर्थिक लाभ अर्जन हो जाता है, तो इसकी गुणवत्ता, शुचिता और नैतिकता संकट में पड़ जाती है। निजी संस्थान अक्सर अपनी सुविधाओं का विज्ञापन तो व्यापक स्तर पर करते हैं, परंतु वास्तव में वे छात्रों को केवल एक 'ग्राहक' की दृष्टि से देखते हैं। इससे उन मानवीय और सामाजिक विषयों की उपेक्षा होती है जो समाज के निर्माण के लिए आवश्यक हैं परंतु जिनसे मुनाफा नहीं होता। शिक्षा का यह व्यवसायीकरण समाज की बौद्धिक गहराई को क्षीण कर सकता है और इसे केवल समृद्ध वर्ग का विशेषाधिकार बना देने का जोखिम उत्पन्न करता है।

164. (D) कथन I गलत है, लेकिन कथन II गलत है।
भारत की विज्ञान और प्रौद्योगिकी नीति कभी भी देश को वैश्विक समुदाय से पृथक करने का लक्ष्य नहीं रखती; इसके विपरीत, यह अंतरराष्ट्रीय सहयोग और ज्ञान के साझाकरण पर बल देती है। नीति का वास्तविक उद्देश्य विज्ञान के लाभों को समाज के प्रत्येक वर्ग तक पहुँचाना है ताकि सतत और सर्वांगीण विकास सुनिश्चित हो सके। यह तकनीक को निर्धनता उन्मूलन, स्वास्थ्य सुधार और पर्यावरण संरक्षण का प्रमुख साधन मानती है। अतः आधुनिक भारत के नवनिर्माण में विज्ञान की भूमिका अत्यंत प्रगतिशील, समावेशी और राष्ट्र की समस्त वर्तमान आवश्यकताओं के पूर्णतः अनुकूल है।

165. (A) P-3, Q-1, R-2, S-4
एमिल दुर्खीम ने श्रम विभाजन के सामाजिक प्रभावों का विस्तृत विश्लेषण प्रस्तुत किया। कार्ल मार्क्स की 'दास कैपिटल' पूंजीवादी व्यवस्था के शोषण और उसके अंत का सर्वाधिक चर्चित विश्लेषण है। मैक्स वेबर ने 'इकोनॉमी एंड सोसाइटी' में नौकरशाही और सत्ता के विभिन्न रूपों को स्पष्ट किया। उनकी एक अन्य महत्वपूर्ण रचना 'प्रोटेस्टेंट एथिक' ने यह प्रतिपादित किया कि किस प्रकार धार्मिक विचारों ने आधुनिक पूंजीवाद के उदय में सहायता की। इन सभी पुस्तकों ने आधुनिक समाजशास्त्र की आधारशिला रखी है और समाज को समझने का एक नवीन और वैज्ञानिक दृष्टिकोण प्रदान किया है।

Downloaded from www.pdf.tube

कौन से सिद्धांत यहाँ प्रभावी होंगे और कौन से नहीं। यह विषय की शुद्धता और उसकी सामाजिक उपयोगिता को बढ़ाने का एक ईमानदार प्रयास है। इसका लक्ष्य भारतीय समाज की एक ऐसी समझ विकसित करना है जो सच्ची, गहरी और हमारी अपनी सांस्कृतिक जड़ों के निकट हो।

183. (B) लाभ पर ध्यान केंद्रित करने के कारण शैक्षिक मानकों में गिरावट ला सकता है।
शिक्षा के निजीकरण में सर्वाधिक गंभीर आशंका यह है कि कहीं शिक्षण संस्थान केवल प्रमाणपत्र विक्रय करने के केंद्र न बन जाएँ। जब आर्थिक लाभ अर्जन ही मुख्य उद्देश्य हो जाता है, तो संस्थान प्रायः शिक्षकों की योग्यता और मौलिक शोध की गुणवत्ता पर व्यय कम करने लगते हैं। वे केवल उन विषयों को प्रोत्साहित करते हैं जिनकी बाजार में मांग है, जिससे मानविकी और साहित्य जैसे महत्वपूर्ण क्षेत्र पिछड़ सकते हैं। यह दृष्टिकोण छात्रों को केवल आजीविका के योग्य बनाता है, परंतु उन्हें एक संवेदनशील, तार्किक और जागरूक नागरिक बनाने में अक्सर विफल रहता है।

184. (A) स्वदेशी नवाचार और अनुसंधान एवं विकास पहल को बढ़ावा देना।
भारत की विज्ञान और प्रौद्योगिकी नीति का प्राथमिक उद्देश्य देश को तकनीकी रूप से पूर्णतः आत्मनिर्भर बनाना है। सरकार चाहती है कि हमारे वैज्ञानिक और अभियंता यहीं पर नवीन शोध करें जो हमारी निर्धनता और संसाधनों के अभाव जैसी समस्याओं का स्थाई समाधान निकाल सकें। अनुसंधान और विकास में निवेश बढ़ाकर हम वैश्विक पटल पर अपनी सामरिक और आर्थिक शक्ति सिद्ध कर सकते हैं। यह नीति आत्मनिर्भर भारत के स्वप्न को साकार करने और अंतरराष्ट्रीय मंच पर राष्ट्र की साख बढ़ाने का एक बहुत ही सुविचारित, तार्किक और प्रभावी रणनीतिक प्रयास है।

185. (B) यांत्रिक एकजुटता (Mechanical Solidarity)
दुर्खीम के अनुसार 'यांत्रिक एकता' उन प्राचीन समाजों में विद्यमान थी जहाँ लोग समान जीवनशैली व्यतीत करते थे और उनकी सोच भी एक जैसी थी। वहाँ धर्म और परंपरा का पूर्ण प्रभुत्व था और व्यक्ति की अपनी कोई पृथक पहचान नहीं थी। सभी सदस्य मिलकर एक जैसा कार्य करते थे, जिससे उनके मध्य एक नैसर्गिक जुड़ाव था। इस व्यवस्था में सामाजिक नियमों का उल्लंघन करने पर अत्यंत कठोर दंड प्रदान किया जाता था क्योंकि उसे संपूर्ण समूह का अपमान माना जाता था। यह एकता सादगी और निर्विवाद समानता पर टिकी हुई समाज की एक प्राचीन और सुदृढ़ कड़ी थी।

186. (A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
कार्ल मार्क्स ने अलगाव को पूंजीवाद के एक गहरे संरचनात्मक घाव के रूप में विश्लेषण किया। उनका मानना था कि जब श्रमिक अपनी मेहनत का प्रतिफल स्वयं प्राप्त नहीं कर पाता और केवल मशीनों के नियंत्रण में रहता है, तो वह आंतरिक रूप से खंडित हो जाता है। वह अपने कार्य को आनंद के बजाय एक दंड समझने लगता है और समाज से भी विमुख हो जाता है। यह स्थिति उसे एक यंत्रवत प्राणी के समान बना देती है जिसकी अपनी कोई स्वायत्त खुशी या रचनात्मकता शेष नहीं रहती। मार्क्स का यह विश्लेषण औद्योगिक कार्यस्थल के कड़वे मानवीय सत्य और श्रमिक की विवशता को उजागर करता है।

187. (C) नौकरशाही
मैक्स वेबर की नौकरशाही का अर्थ है एक ऐसी व्यवस्था जहाँ प्रत्येक कार्य तार्किक नियमों के अनुसार और सुव्यवस्थित ढंग से संपादित होता है। यहाँ पदों का एक निश्चित पदानुक्रम होता है और प्रत्येक अधिकारी को अपने उत्तरदायित्वों का पूर्ण बोध होता है। यह व्यवस्था निरंतर संचालित होती रहती है, चाहे पदस्थ व्यक्ति परिवर्तित हो जाएँ। नौकरशाही का मुख्य उद्देश्य सांगठनिक कार्यों में दक्षता, निष्पक्षता और पूर्वानुमेयता स्थापित करना है। आधुनिक सरकारी और निजी संगठनों को संचालित करने के लिए यह वर्तमान युग की सर्वाधिक अनिवार्य, तार्किक और प्रभावी प्रशासनिक संरचना मानी जाती है जो अराजकता को नियंत्रित करती है।

188. (C) बड़े, अनाम शहरी केंद्रों का विकास।
औद्योगिकीकरण ने मानवीय अधिवास के स्वरूप को पूर्णतः परिवर्तित कर दिया है। कारखानों की स्थापना के कारण लोग ग्रामीण क्षेत्रों के लघु और घनिष्ठ समुदायों को त्यागकर नगरों की सघन भीड़ में प्रवास कर चुके हैं। यहाँ पड़ोसी एक-दूसरे से अपरिचित होते हैं और जीवन की गति अत्यंत तीव्र होती है। यह शहरीकरण उद्योग का सर्वाधिक प्रत्यक्ष प्रभाव है जिसने हमारी संस्कृति, सामाजिक संबंधों और रहन-सहन को एक नवीन स्वरूप प्रदान किया है। यद्यपि नगरों में अवसर अधिक उपलब्ध हैं, परंतु वहाँ अजनबीयत और एकाकीपन भी आधुनिक जीवन की एक बड़ी और कड़वी सामाजिक सच्चाई बन गई है।

189. (A) P-3, Q-2, R-4, S-1
औद्योगिक विवादों को सुलझाने के लिए विभिन्न विधिक और गैर-विधिक मार्ग अपनाए जाते हैं। सुलह में एक निष्पक्ष व्यक्ति दोनों पक्षों के मध्य संवाद स्थापित करता है। अधिनिर्णय में विधिक कार्यवाही होती है जहाँ न्यायाधीश अंतिम फैसला सुनाता है। मध्यस्थता में दोनों पक्ष अपनी इच्छा से किसी विश्वसनीय व्यक्ति से निर्णय करवाते हैं। अंत में, सामूहिक सौदेबाजी ही सर्वाधिक प्रचलित पद्धति है जहाँ नियोक्ता और श्रमिक संघ सीधे अपनी शर्तों पर संवाद करते हैं। ये समस्त विधियाँ मिलकर कार्यस्थल पर शांति और सुचारू उत्पादन सुनिश्चित करने का एक व्यापक और प्रभावी सांगठनिक ढांचा तैयार करती हैं।

190. (B) निरंतर सुधार और कर्मचारियों की भागीदारी
'क्वालिटी सर्कल' इस दर्शन पर आधारित है कि निरंतर लघु सुधार भी भविष्य में वृहत् परिणाम ला सकते हैं। यह प्रबंधन और श्रमिकों के मध्य की दूरी को कम करता है क्योंकि यहाँ श्रमिक केवल निर्देशों का पालन नहीं करते, बल्कि सुधार के लिए अपने मूल्यवान सुझाव भी प्रदान करते हैं। जब कर्मचारियों को यह बोध होता है कि उनके विचारों को सम्मान दिया जा रहा है, तो वे अधिक लगन से कार्य करते हैं। यह पद्धति उत्पादकता बढ़ाने के साथ-साथ श्रमिकों के मानसिक स्वास्थ्य और उनके

NODIA

प्रत्येक कर्मचारी का एक वरिष्ठ अधिकारी होता है और प्रत्येक अधिकारी के पास विनिर्दिष्ट अधिकार और उत्तरदायित्व होते हैं। यह व्यवस्था सुनिश्चित करती है कि आदेश ऊपर से नीचे तक त्रुटिहीन तरीके से संप्रेषित हों। पदानुक्रम के कारण सांगठनिक अनुशासन बना रहता है और यह स्पष्ट रहता है कि किसी भी कार्य की सफलता या त्रुटि के लिए कौन उत्तरदायी है। यह संरचना आधुनिक संगठनों को सुव्यवस्थित, पूर्वानुमेय और अधिक कुशल बनाने में महान सहायता प्रदान करती है।

175. (A) केवल 1 और 3
एमिल दुर्खीम ने प्रतिपादित किया था कि आधुनिक समाज में श्रम का गहरा विभाजन व्यक्तियों को अन्योन्याश्रयता के माध्यम से सूत्रबद्ध करता है। मैक्स वेबर ने भी आधुनिकीकरण को तार्किकता और कार्य दक्षता के निरंतर बढ़ने से जोड़ा। यद्यपि, मार्क्स के लिए अलगाव नियमों के अभाव का परिणाम नहीं, बल्कि उत्पादन के साधनों पर नियंत्रण खोने की आर्थिक परिणति थी। अतः समाजशास्त्रीय परंपरा में श्रम विभाजन और तार्किकता की भूमिका आधुनिकता को समझने के लिए सर्वाधिक महत्वपूर्ण उपकरण माने जाते हैं, जो आज भी अकादमिक और व्यावहारिक जगत में पूर्णतः प्रासंगिक हैं।

176. (B) भूमिकाओं, स्थितियों and अपेक्षित व्यवहारों की एक संरचना है
कारखाने को एक सामाजिक व्यवस्था इसलिए कहा जाता है क्योंकि वहाँ केवल यांत्रिक कार्य नहीं होता, बल्कि लोग सामाजिक संबंधों में आबद्ध होते हैं। वहाँ प्रबंधक, पर्यवेक्षक और श्रमिक के रूप में प्रत्येक सदस्य की एक निश्चित प्रस्थिति और भूमिका निर्धारित होती है। उनसे यह अपेक्षा की जाती है कि वे स्थापित नियमों के अनुरूप व्यवहार करेंगे। यह व्यवस्था कारखाने को एक लघु समाज का स्वरूप प्रदान करती है जहाँ सांगठनिक अनुशासन और आपसी सहयोग अनिवार्य होता है। इसके बिना कोई भी वृहत् उत्पादन लक्ष्य कभी भी सफलतापूर्वक और कुशलतापूर्वक प्राप्त नहीं किया जा सकता है।

177. (B) अनौपचारिक संगठन
किसी भी संस्थान में लोग केवल यंत्रवत कार्य नहीं करते, वे व्यक्तिगत संबंध और समूह भी निर्मित करते हैं। यह 'अनौपचारिक संगठन' आधिकारिक नियमों में नहीं झलकता परंतु यह अत्यंत प्रभावशाली होता है। यह संगठन ही निर्धारित करता है कि कर्मचारी अपने कार्य के प्रति कैसा दृष्टिकोण रखते हैं और वे एक-दूसरे की कितनी सहायता करेंगे। कई बार ये समूह इतने सुदृढ़ होते हैं कि प्रबंधन को कोई भी नवीन नियम लागू करने से पूर्व उनकी अनौपचारिक सहमति लेनी पड़ती है। यह कार्यस्थल का वह अदृश्य परंतु अत्यंत महत्वपूर्ण हिस्सा है जो मानवीय पक्ष को जीवित रखता है।

178. (C) एक न्यायालय या न्यायाधिकरण विधिक रूप से बाध्यकारी निर्णय लेता है।
अधिनिर्णय औद्योगिक विवादों को सुलझाने का सर्वाधिक कठोर और विधिक माध्यम है। जब आपसी संवाद और सुलह के समस्त मार्ग अवरुद्ध हो जाते हैं, तब सरकार विवाद को श्रम न्यायालय को प्रेषित कर देती है। यहाँ एक न्यायाधीश दोनों पक्षों के साक्ष्यों और दलीलों का परीक्षण करता है और कानून के अनुरूप अपना निर्णय देता है। यह निर्णय मानना दोनों पक्षों के लिए विधिक विवशता होती है। यद्यपि इसमें समय अधिक लग सकता है, लेकिन यह समाज में कानून व्यवस्था बनाए रखने और औद्योगिक हिंसा को रोकने का एक अंतिम और प्रभावी विधिक समाधान माना जाता है।

179. (B) श्रम के बदलते स्वरूप की समाजशास्त्रीय अवधारणा।
वर्तमान युग में कार्यस्थलों पर महिलाओं की निरंतर बढ़ती भागीदारी केवल एक आर्थिक परिवर्तन नहीं, बल्कि एक महान सामाजिक रूपांतरण है। यह इस तथ्य को दर्शाता है कि अब शिक्षा, विशेषज्ञता और कौशल केवल पुरुषों का एकाधिकार नहीं रह गया है। इस बदलाव ने परिवार की संरचना और समाज की प्राचीन संकीर्ण लैंगिक सोच को कड़ी चुनौती प्रदान की है। श्रम का यह नवीन स्वरूप अधिक समावेशी, न्यायसंगत और विविध है, जो आधुनिकता के वास्तविक अर्थ को स्पष्ट करता है। यह औद्योगिक विकास के साथ-साथ सामाजिक न्याय और समानता की दिशा में एक अत्यंत महत्वपूर्ण कदम है।

180. (B) आर्थिक मानदंडों पर आधारित वर्ग व्यवस्था का उदय
औद्योगिकीकरण ने समाज में सामाजिक प्रतिष्ठा के प्राचीन पैमानों को परिवर्तित कर दिया है। अब व्यक्ति की पहचान उसकी जाति के स्थान पर उसके पद, आय और व्यावसायिक योग्यता से अधिक होती है। इस व्यवस्था में शिक्षा और तकनीकी दक्षता ही सामाजिक सोपान पर ऊपर जाने का प्रमुख मार्ग हैं। मध्यम वर्ग, जो आय और कौशल पर आधारित है, इसी औद्योगिक क्रांति की देन है। यह वर्ग व्यवस्था समाज को अधिक गतिशील बनाती है जहाँ व्यक्ति अपने परिश्रम से अपनी स्थिति निर्मित कर सकता है। यह पुरानी सामाजिक जड़ता को खंडित कर व्यक्तिगत उपलब्धि पर आधारित समाज की नींव रखती है।

181. (C) एक बड़ा घरेलू बाजार
भारत की विशाल जनसंख्या उद्योगों के लिए एक अत्यंत विस्तृत घरेलू बाजार उपलब्ध कराती है, जो विकास के लिए एक बड़ी सांगठनिक शक्ति है, न कि कोई अवरोध। वास्तविक बाधाएँ तो लालफीताशाही, विद्युत संकट और पूँजी का अभाव जैसे तत्व हैं। जब नागरिकों की क्रय शक्ति में वृद्धि होती है, तो उद्योगों को उत्पादन और विक्रय की नवीन प्रेरणा प्राप्त होती है। अतः भारत का यह विशाल उपभोक्ता वर्ग ही हमारे देश के औद्योगिकीकरण के लिए सर्वाधिक बड़ा अवसर और वैश्विक आकर्षण का केंद्र बना हुआ है, जो अंतरराष्ट्रीय निवेशकों को भी निरंतर आकर्षित करता है।

182. (B) भारतीय समाज में पश्चिमी अवधारणाओं की प्रयोज्यता का आलोचनात्मक मूल्यांकन करना।
समाजशास्त्र का भारतीयकरण इस तथ्य पर बल देता है कि हमें पश्चिमी सिद्धांतों को बिना किसी परीक्षण के स्वीकार नहीं करना चाहिए। भारत की सामाजिक वास्तविकता, जैसे यहाँ की जातिगत संरचना और ग्रामीण जनजीवन, पश्चिमी देशों से पूर्णतः भिन्न है। इसलिए हमें यह विश्लेषण करना चाहिए कि

Click Here to Buy book on Amazon

131. (C) मैक्स वेबर
मैक्स वेबर ने नौकरशाही को आधुनिक समाज की एक तर्कसंगत और कुशल व्यवस्था के रूप में विश्लेषण किया था। उन्होंने इसके 'आदर्श प्रारूप' का निर्माण किया ताकि विभिन्न प्रशासनिक प्रणालियों की तुलना की जा सके। उनके अनुसार नौकरशाही में नियमों की स्पष्टता, पदों का पदानुक्रम और निर्वैयक्तिकता सर्वाधिक महत्वपूर्ण गुण हैं। यद्यपि वे इसके 'लौह पिंजरे' जैसे नकारात्मक प्रभावों से भी चिंतित थे, लेकिन उन्होंने इसे आधुनिक राज्य और उद्योगों के संचालन के लिए एक अपरिहार्य और अनिवार्य संरचनात्मक ढांचा माना था।

132. (B) एनोमी
जब समाज में अत्यंत तीव्र गति से परिवर्तन आते हैं, तो व्यक्ति पुराने मूल्यों को त्याग देता है और उसे यह बोध नहीं होता कि किन नवीन नियमों का पालन करना उचित है। इसी 'प्रतिमानहीनता' की स्थिति को दुर्खीम ने 'एनोमी' कहा है। औद्योगिक नगरों में जहाँ अपरिचय अधिक होता है, वहाँ यह भावना अत्यंत प्रबल हो जाती है। व्यक्ति स्वयं को समाज से पृथक और एकाकी अनुभव करने लगता है। यह स्थिति सामाजिक विघटन को जन्म देती है और आधुनिक समाज की एक बड़ी मनोवैज्ञानिक एवं संरचनात्मक चुनौती मानी जाती है।

133. (B) P-3, Q-1, R-4, S-2
औद्योगिक संबंधों के समाधान के लिए विभिन्न मार्ग अपनाए जाते हैं। सुलह में एक निष्पक्ष व्यक्ति केवल विवादित पक्षों के मध्य संवाद का मार्ग प्रशस्त करता है। अधिनिर्णय में श्रम न्यायालय विधिक रूप से अनिवार्य और बाध्यकारी फैसला सुनाता है। सामूहिक सौदेबाजी में नियोक्ता और श्रमिक संघ प्रत्यक्ष रूप से एक अनुबंध पर चर्चा करते हैं। प्रबंधन में श्रमिक भागीदारी वह व्यवस्था है जहाँ श्रमिकों को संस्थान के नीतिगत निर्णयों में सम्मिलित किया जाता है। ये चारों तंत्र मिलकर औद्योगिक शांति बनाए रखने का व्यापक ढांचा तैयार करते हैं।

134. (D) काफी हद तक अशिक्षित से अधिक उच्च शिक्षित कार्यबल की ओर परिवर्तन।
पूर्व के युग में कारखानों में केवल शारीरिक श्रम करने वाले अकुशल श्रमिकों की आवश्यकता होती थी। परंतु वर्तमान तकनीकी युग में मशीनों के संचालन और प्रबंधन के लिए शिक्षित कार्यबल अनिवार्य हो गया है। अब श्रमिकों को संगणक, रोबोटिक्स और जटिल सॉफ्टवेयर प्रणालियों का ज्ञान होना आवश्यक है। इस बदलाव के कारण अब उद्योगों में स्नातक और पेशेवर डिग्री धारकों की संख्या निरंतर बढ़ रही है। यह परिवर्तन औद्योगिक श्रम के बढ़ते बौद्धिक, तकनीकी और विशेषज्ञता के स्तर को स्पष्ट रूप से प्रदर्शित करता है।

135. (C) समाजशास्त्र का भारतीयकरण
समाजशास्त्र का भारतीयकरण इस विचार पर आधारित है कि पश्चिमी देशों में विकसित सिद्धांत भारत के ग्रामीण समाज, जाति और धर्म की सूक्ष्म गुत्थियों को पूर्णतः नहीं सुलझा सकते। भारतीय समाजशास्त्रियों का मानना है कि हमें अपनी संस्कृति, इतिहास और सामाजिक जड़ों को केंद्र में रखकर नवीन अवधारणाएँ विकसित करनी चाहिए। यह आंदोलन इस विषय को अधिक व्यावहारिक और सार्थक बनाने का एक प्रयास है। इससे हम भारतीय समाज की समस्याओं को उन्हीं के विशिष्ट संदर्भ में बेहतर ढंग से समझकर उचित समाधान खोज सकते हैं।

136. (B) उत्पादन संबंध
कार्ल मार्क्स के अनुसार उत्पादन संबंध उन आर्थिक रिश्तों को कहते हैं जो उत्पादन की प्रक्रिया के दौरान निर्मित होते हैं। इसमें यह स्पष्ट होता है कि उत्पादन के साधनों का वास्तविक स्वामित्व किसके पास है और श्रम कौन कर रहा है। उदाहरण के लिए, एक कारखाने में स्वामी और श्रमिक के मध्य का संबंध एक उत्पादन संबंध है। ये संबंध ही समाज के संपूर्ण ढांचे, उसकी राजनीति और उसके कानून को निर्धारित करते हैं। मार्क्स का मानना था कि उत्पादन संबंधों में होने वाला परिवर्तन ही समाज में वास्तविक क्रांति लाता है।

137. (B) अपनी योग्यता के बजाय अपनी जाति के आधार पर प्रबंधक की नियुक्ति।
औद्योगिक संगठनों में जाति का प्रभाव यह प्रदर्शित करता है कि आधुनिकता और परंपरा साथ-साथ चलती हैं। जब कोई पद योग्यता के स्थान पर सामाजिक पहचान के आधार पर प्रदान किया जाता है, तो यह नौकरशाही के तार्किक नियमों का स्पष्ट उल्लंघन है। भारत में कई बार क्षेत्रीय और जातीय संवेग पेशेवर दक्षता पर प्रभावी हो जाते हैं। यह स्थिति प्रमाणित करती है कि कार्यस्थल के भीतर होने वाली अंतःक्रियाएँ और प्रशासनिक निर्णय बाह्य सामाजिक संरचना और उसके गहरे भेदभावों से पूर्णतः मुक्त नहीं हो पाए हैं।

NODIA

138. (C) कथन I सही है, लेकिन कथन II गलत है।
औद्योगिकीकरण ने वास्तव में भारत में एक शिक्षित और गतिशील मध्यम वर्ग का निर्माण किया है जिसने समाज की प्राचीन जड़ता को खंडित किया है। यद्यपि, यह कहना त्रुटिपूर्ण होगा कि जाति व्यवस्था पर इसका कोई प्रभाव नहीं पड़ा है। उद्योगों में सह-कार्य और शहरी जीवन ने जातिगत छुआछूत और सामाजिक दूरियों को काफी कम कर दिया है। जहाँ पूर्व में जाति ही व्यवसाय निर्धारित करती थी, अब शिक्षा और कौशल प्रधान हो गए हैं। अतः जाति व्यवस्था में होने वाले महत्वपूर्ण और गुणात्मक बदलाव स्पष्ट रूप से देखे जा सकते हैं।

139. (B) खराब आधारभूत संरचनागत सुविधाएं
भारत के कई पिछड़े क्षेत्रों में ऊर्जा की कमी, जर्जर सड़कें और रेल संपर्क का अभाव उद्योगों के विकास को बाधित करते हैं। बिना ऊर्जा के मशीनों का संचालन संभव नहीं है और बिना सुदृढ़ परिवहन के कच्चा माल मंगाना तथा तैयार उत्पाद बेचना अत्यंत कठिन है। यही कारण है कि निवेशक केवल विकसित राज्यों की ओर आकर्षित होते हैं, जिससे देश में क्षेत्रीय असंतुलन उत्पन्न होता है। आधारभूत संरचना में सुधार ही ग्रामीण और पिछड़े क्षेत्रों में औद्योगिकीकरण लाने की प्रथम और सर्वाधिक महत्वपूर्ण अनिवार्य शर्त है।

आत्मविश्वास के लिए भी अत्यंत लाभकारी सिद्ध होती है, जो जापानी औद्योगिक सफलता का मुख्य आधार है।

191. (B) प्रतिस्पर्धी बाजार में उत्पादकता और अस्तित्व के साझा हितों की पहचान।
वर्तमान वैश्वीकरण के युग में संस्थानों और श्रमिकों को यह भली-भांति समझ आ गया है कि यदि वे परस्पर संघर्षरत रहे, तो वैश्विक प्रतिस्पर्धा उन्हें समाप्त कर देगी। यदि संस्थान आर्थिक लाभ में नहीं रहेगा, तो श्रमिकों की आजीविका भी सुरक्षित नहीं रहेगी। इस आर्थिक यथार्थ ने दोनों पक्षों को सहयोग करने के लिए प्रेरित किया है। अब वे एक-दूसरे को प्रतिद्वंद्वी नहीं, बल्कि एक ही सांगठनिक इकाई का अभिन्न अंग मानते हैं। यह समझ ही आधुनिक औद्योगिक संबंधों में शांति और सहयोगात्मक वातावरण बनाए रखने का सर्वाधिक प्रमुख और वास्तविक कारण बनी हुई है।

192. (D) 1, 2 और 3
औद्योगिकीकरण ने समाज में धन, संसाधन और व्यवसाय के आधार पर नवीन वर्ग व्यवस्था को जन्म दिया है। अब व्यक्ति की सामाजिक प्रतिष्ठा उसके पेशे और आय से निर्धारित होती है। भारत जैसे समाज में यह स्थिति और भी विशिष्ट है क्योंकि यहाँ आधुनिक वर्ग और प्राचीन जाति व्यवस्था परस्पर अंतर्ग्रथित हैं। प्रायः उच्च जातियों के पास ही बेहतर अवसर और संसाधन उपलब्ध होते हैं, जो यह प्रदर्शित करता है कि पारंपरिक असमानताएँ नवीन आर्थिक ढांचे में भी अपना स्थान बनाए हुए हैं। स्तरीकरण का यह मिश्रित स्वरूप भारतीय औद्योगिक समाज की एक विशिष्ट और जटिल पहचान है।

193. (A) उद्योग से जीडीपी बढ़ी, लेकिन नियोजन सृजन उसके अनुपात में नहीं था।
'रोजगारविहीन विकास' भारत की आर्थिक प्रगति का एक चिंताजनक पक्ष रहा है। मशीनीकरण और उन्नत तकनीक के प्रयोग के कारण उत्पादन में तो वृद्धि हुई है, परंतु उतनी नवीन नौकरियाँ सृजित नहीं हुई हैं जितनी हमारी विशाल बढ़ती जनसंख्या के लिए आवश्यक थीं। कंपनियाँ अब अल्प कार्यबल और अधिक मशीनीकरण के साथ कार्य करना प्राथमिकता देती हैं। यह स्थिति आर्थिक समृद्धि तो लाती है परंतु समाज में बेरोजगारी और आर्थिक विषमता के संकट को भी बढ़ा देती है। अतः भविष्य के लिए ऐसे औद्योगिक प्रतिमान की आवश्यकता है जो श्रम-प्रधान हो और अधिक रोजगार सृजित कर सके।

194. (C) वैश्विक आर्थिक प्रवृत्तियों से पूर्ण अलगाव।
वैश्वीकरण का वास्तविक अर्थ ही विश्व अर्थव्यवस्था से एकीकृत होना है, अतः इससे पृथक होना असंभव है। आज भारतीय कंपनियाँ अंतरराष्ट्रीय बाजारों में अपने उत्पाद बेच रही हैं और उन्नत विदेशी तकनीक का उपयोग कर रही हैं। इससे हमें आर्थिक लाभ तो प्राप्त हुआ है परंतु साथ ही अंतरराष्ट्रीय प्रतिस्पर्धा का दबाव भी बढ़ा है। अब हमें वैश्विक मानकों के अनुरूप अपनी गुणवत्ता और दक्षता में सुधार करना अनिवार्य है। अतः वैश्वीकरण ने भारतीय उद्योगों को विश्व का एक अभिन्न हिस्सा बना दिया है, जहाँ निरंतर प्रगति और अनुकूलन ही एकमात्र विकल्प शेष है।

195. (B) हाथोर्न अध्ययनों के पश्चात 'मानव संबंध' (Human Relations) स्कूल
हाथोर्न अध्ययनों ने यह प्रमाणित किया कि कारखाने में कार्य करने वाले श्रमिक केवल आर्थिक इकाइयाँ नहीं हैं, बल्कि उनकी अपनी भावनाएँ और सामाजिक आवश्यकताएँ भी हैं। एल्टन मेयो और उनके सहयोगियों ने प्रतिपादित किया कि जब श्रमिकों को सम्मान प्राप्त होता है और उनके आपसी संबंध मधुर होते हैं, तो उनकी कार्यक्षमता में स्वतः वृद्धि होती है। इस खोज ने प्रबंधन के पारंपरिक दृष्टिकोण को पूर्णतः परिवर्तित कर दिया। अब उद्योगों में केवल तकनीक और कठोर नियमों पर नहीं, बल्कि श्रमिकों के संतोष और उनके सामाजिक वातावरण पर भी विशेष ध्यान दिया जाने लगा है।

196. (A) उत्पाद से अलगाव
पूंजीवादी व्यवस्था में श्रमिक जो भी वस्तु निर्मित करता है, उस पर उसका कोई विधिक अधिकार नहीं होता। वह दिन भर कारखाने में कठोर परिश्रम करता है परंतु उत्पाद बनते ही वह स्वामी की संपत्ति हो जाता है। मार्क्स के अनुसार, यह श्रमिक के लिए एक बड़ी मनोवैज्ञानिक पीड़ा है क्योंकि उसकी मेहनत का फल उसे केवल अल्प पारिश्रमिक के रूप में प्राप्त होता है। वह स्वयं उस उत्पाद का उपभोग भी नहीं कर पाता जिसे उसने इतनी निष्ठा से बनाया है। यही 'उत्पाद से अलगाव' है जो मनुष्य को उसके श्रम के वास्तविक और सार्थक परिणामों से वंचित कर देता है।

197. (D) वेबर - नौकरशाही
मैक्स वेबर का नाम नौकरशाही के गहन अध्ययन के साथ सदैव के लिए संबद्ध हो गया है। उन्होंने ही सर्वप्रथम सुव्यवस्थित ढंग से यह स्पष्ट किया कि किस प्रकार आधुनिक संगठनों को तार्किक नियमों और पदानुक्रम के माध्यम से संचालित किया जाता है। उनके अनुसार नौकरशाही ही वह अनिवार्य तंत्र है जो विशाल समाजों और जटिल उद्योगों को सुचारु रूप से चलाने की क्षमता रखता है। यद्यपि उन्होंने इसकी संरचनात्मक कमियों को भी रेखांकित किया, परंतु उनके सिद्धांतों के बिना आधुनिक प्रशासन को समझना संभव नहीं है। वेबर का यह विश्लेषण समाजशास्त्र की सर्वाधिक महत्वपूर्ण उपलब्धियों में से एक है।

198. (A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
किसी भी औद्योगिक संस्थान में दो प्रकार की व्यवस्थाएँ समानांतर चलती हैं। औपचारिक व्यवस्था वह है जो लिखित नियमों और आधिकारिक सांगठनिक ढांचे से निर्धारित होती है, जैसे सत्ता का सोपान। वहीं अनौपचारिक व्यवस्था वह है जो कर्मचारियों के आपसी मेलजोल और सामाजिक मित्रता से निर्मित होती है। ये दोनों ही संगठन को प्रभावी ढंग से संचालित करने के लिए आवश्यक हैं। जहाँ औपचारिक ढांचा सांगठनिक अनुशासन सुनिश्चित करता है, वहीं अनौपचारिक ढांचा कार्य के दबाव के मध्य मानवीय सहानुभूति और सहयोग प्रदान करता है। इन दोनों का सामंजस्य ही कार्यस्थल को सफल बनाता है।

199. (C) अपने सदस्यों की ओर से सामूहिक सौदेबाजी करना
श्रमिक संघ का सर्वाधिक शक्तिशाली साधन 'सामूहिक सौदेबाजी' है। जब एक अकेला श्रमिक अपनी मांग प्रस्तुत

Downloaded from www.pdf.tube

जिसने मानव सभ्यता के भूगोल और उसकी संस्कृति को पूर्णतः और मौलिक रूप से परिवर्तित कर दिया है।

249. (A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
मध्यस्थता और सुलह औद्योगिक विवादों के समाधान के दो पृथक परंतु अत्यंत प्रभावी माध्यम हैं। मध्यस्थता में दोनों पक्ष अपनी स्वेच्छा से एक निर्णायक चुनते हैं और उसका फैसला स्वीकार करना उनके लिए विधिक रूप से अनिवार्य होता है। इसके विपरीत, सुलह में एक सरकारी अधिकारी केवल संवाद का मार्ग सुगम बनाता है और वह कोई बाध्यकारी निर्णय थोप नहीं सकता। सुलह का प्राथमिक उद्देश्य आपसी समझ और विश्वास को बढ़ाना है। ये दोनों विधियाँ दीर्घकालिक विधिक मुकदमों से सुरक्षा प्रदान करती हैं और कार्यस्थल पर शांति बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह करती हैं।

250. (B) अपनत्व की भावना और सहयोग को बढ़ावा देना।
संयुक्त प्रबंधन परिषदों का वास्तविक ध्येय श्रमिकों और प्रबंधन के मध्य की कड़वाहट और अविश्वास को समाप्त करना है। जब श्रमिकों को यह बोध होता है कि संस्थान के नीतिगत निर्णयों में उनके परामर्श को महत्व दिया जा रहा है, तो वे अधिक उत्तरदायित्व और निष्ठा के साथ कार्य करते हैं। इससे हड़ताल और तालाबंदी जैसी नकारात्मक प्रवृत्तियों में स्पष्ट कमी आती है। यह व्यवस्था कार्यस्थल पर सामूहिक पहचान और 'अपनत्व' की भावना विकसित करती है, जिससे उत्पादकता में वृद्धि होती है और औद्योगिक संबंध अधिक मानवीय बनते हैं। यह औद्योगिक लोकतंत्र की दिशा में एक अत्यंत सराहनीय और आधुनिक कदम है।

251. (A) आर्थिक विकास के साथ पर्यावरणीय स्थिरता को संतुलित करना।
वर्तमान युग में औद्योगिकीकरण के समक्ष सर्वाधिक गंभीर चुनौती प्रदूषण और जलवायु परिवर्तन है। भारत जैसे विकासशील राष्ट्र के लिए यह अत्यंत दुष्कर है कि वह आर्थिक विकास की गति को भी तीव्र रखे और प्राकृतिक पर्यावरण को भी सुरक्षित रखे। बिना औद्योगिक विस्तार के निर्धनता दूर करना संभव नहीं है, परंतु यदि ये उद्योग पर्यावरण को क्षति पहुँचाते हैं, तो भविष्य संकटपूर्ण हो जाएगा। अतः 'सतत विकास' ही वह एकमात्र तार्किक मार्ग है जिस पर चलकर हम आगामी पीढ़ियों के लिए एक सुरक्षित विश्व छोड़ सकते हैं। यह नीति निर्माताओं के समक्ष एक अनिवार्य राष्ट्रीय चुनौती है।

252. (A) अधिक बौद्धिक आत्मनिर्भरता और संदर्भात्मक प्रासंगिकता।
समाजशास्त्र के भारतीयकरण का आह्वान इस यथार्थ को स्वीकार करना है कि भारत के ग्रामीण अंचल और यहाँ की विशिष्ट सामाजिक संरचना को केवल विदेशी दृष्टिकोण से नहीं समझा जा सकता। हमें अपनी सांस्कृतिक जड़ों से विकसित ज्ञान और सिद्धांतों की आवश्यकता है। यह मांग किसी अन्य विचारधारा के प्रति विद्वेष नहीं, बल्कि स्वयं की सामाजिक वास्तविकता को अधिक गहराई से समझने का प्रयास है। यह समाजशास्त्र को अधिक व्यावहारिक, सार्थक और उपयोगी बनाने का एक गंभीर शैक्षणिक उपक्रम है। इसका लक्ष्य एक ऐसा ज्ञानतंत्र निर्मित करना है जो भारतीय जनजीवन के वास्तविक अनुभवों को प्रामाणिकता के साथ प्रतिबिंबित कर सके।

253. (B) यह गुणवत्तापूर्ण शिक्षा वहन करने में सक्षम लोगों और जो नहीं कर सकते, उनके बीच एक अंतराल उत्पन्न कर सकता है।
शिक्षा के निजीकरण की सबसे वृहत् चुनौती यह है कि यह ज्ञान को केवल समृद्ध वर्ग का विशेषाधिकार बना सकता है। जब उच्च शुल्क ही उत्कृष्ट शिक्षा की अनिवार्य शर्त बन जाए, तो समाज के निर्धन परंतु मेधावी छात्र विकास की दौड़ में पिछड़ जाते हैं। इससे समाज में एक ऐसी आर्थिक और शैक्षिक खाई उत्पन्न होती है जिसे भविष्य में पाटना अत्यंत कठिन होगा। यह स्थिति सामाजिक न्याय और सबके लिए समान अवसर के लोकतांत्रिक संकल्प के सर्वथा विपरीत है। अतः शिक्षा को केवल बाजार के अधीन छोड़ना राष्ट्र के संतुलित भविष्य के लिए एक गंभीर सामाजिक संकट उत्पन्न कर सकता है।

254. (B) सभी वर्गों द्वारा सामना की जाने वाली समस्याओं को हल करने के लिए विज्ञान और प्रौद्योगिकी हस्तक्षेपों का उपयोग करना।
भारत की विज्ञान नीति का ध्येय है कि विज्ञान का लाभ केवल नगरों के विशिष्ट संस्थानों तक सीमित न रहे, बल्कि वह सुदूर गाँवों के खेतों और निर्धन बस्तियों तक पहुँचे। सरकार का लक्ष्य है कि तकनीक के माध्यम से हम ऐसी व्याधियों का उपचार खोजें जो निर्धन वर्ग को प्रभावित करती हैं और ऐसे उपकरण निर्मित करें जो लघु कृषकों का कार्य सुगम बना सकें। समावेशी विकास का वास्तविक अर्थ यही है कि प्रगति की इस प्रक्रिया में कोई भी वर्ग उपेक्षित न रहे। जब विज्ञान सामान्य नागरिक की समस्याओं का समाधान बनता है, तभी उसकी वास्तविक सफलता और सार्थकता सिद्ध होती है।

255. (C) मैक्स वेबर
मैक्स वेबर ने आधुनिकता को तार्किकता के निरंतर बढ़ते प्रभाव के रूप में विश्लेषित किया था। उनके अनुसार, अब समाज परंपरा या धार्मिक संवेगों के स्थान पर केवल कार्य दक्षता, तार्किक गणना और परिणामों से संचालित होता है। इसी वैज्ञानिक सोच ने आधुनिक विज्ञान, विधिक कानून और नौकरशाही जैसे स्तंभों को जन्म दिया है। वेबर का मत था कि यह प्रक्रिया संपूर्ण विश्व को अपनी परिधि में ले लेगी। यद्यपि उन्होंने यह चेतावनी भी दी थी कि अत्यधिक तार्किकता मनुष्य को एक यांत्रिक जीवन में आबद्ध कर सकती है, परंतु उन्होंने इसे आधुनिक सभ्यता की सर्वाधिक विशिष्ट और अनिवार्य पहचान के रूप में विश्व के समक्ष प्रस्तुत किया।

256. (A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
औद्योगिकीकरण ने समाज में सामाजिक प्रतिष्ठा के प्राचीन और जन्म-आधारित पैमानों को दुर्बल कर दिया है। जहाँ पूर्व में व्यक्ति की प्रस्थिति जन्म से निर्धारित होती थी, अब वह उसकी शिक्षा, व्यावसायिक कौशल और व्यक्तिगत उपलब्धि से तय होती है। नगरों में जातिगत भेदभावों में कमी आई है और आर्थिक वर्ग अधिक प्रभावी हो गए हैं। यद्यपि भारत में प्राचीन व्यवस्था के कुछ तत्व आज भी विद्यमान हैं, फिर भी यह कहना तर्कसंगत

NODIA

न केवल राष्ट्र के आर्थिक संसाधनों की बचत होती है, बल्कि हमारी संप्रभुता और सुरक्षा भी सुदृढ़ होती है। आत्मनिर्भर होने का अर्थ वैश्विक समुदाय से पृथक होना नहीं है, बल्कि विश्व के साथ समानता की स्थिति में खड़ा होना है। स्वदेशी तकनीक ही वह ठोस आधार है जिस पर एक सशक्त और आधुनिक भारत का निर्माण संभव है।

208. (C) अतिरिक्त मूल्य
'अतिरिक्त मूल्य' वह आर्थिक लाभ है जिसे पूंजीपति स्वयं के पास सुरक्षित रखता है और जो श्रमिक के श्रम से उत्पादित होता है। मार्क्स के अनुसार, श्रमिक अपने पारिश्रमिक की तुलना में कहीं अधिक मूल्य की वस्तुओं का सृजन करता है। उस बढ़े हुए अधिशेष मूल्य को ही 'अतिरिक्त मूल्य' कहा जाता है। यह पूंजीवाद का वह मूल यंत्र है जो स्वामियों को निरंतर समृद्ध और श्रमिकों को सदैव अभावग्रस्त बनाए रखता है। यह अवधारणा हमें यह बोध कराती है कि किस प्रकार जटिल आर्थिक प्रणालियों के पीछे शोषण का एक अदृश्य परंतु स्थाई तंत्र सक्रिय रहता है जो वर्ग असमानता को बढ़ाता है।

209. (A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
एमिल दुर्खीम ने प्रतिपादित किया कि औद्योगिक समाज में व्यक्ति एक-दूसरे के विरोधी नहीं, बल्कि कार्यात्मक रूप से परस्पर निर्भर होते हैं। एक श्रमिक को अभियंता की आवश्यकता है और अभियंता को कृषक की। इसी अनिवार्य आवश्यकता ने समाज को एक नवीन सामाजिक सूत्र में आबद्ध किया है जिसे उन्होंने 'सावयवी एकता' कहा है। यह अन्योन्याश्रयता ही आधुनिक समाज को विखंडन से सुरक्षित रखती है। अतः श्रम विभाजन केवल कार्यों का बंटवारा नहीं है, बल्कि यह व्यक्तियों के मध्य एक गहरा सामाजिक बंधन और आपसी सहयोग का सुदृढ़ तार्किक आधार भी है।

210. (C) वास्तविक विश्व की नौकरशाही का आकलन करने के लिए एक विश्लेषणात्मक निर्मिति या एक मापदंड।
मैक्स वेबर का 'आदर्श प्रारूप' कोई काल्पनिक व्यवस्था नहीं है, बल्कि एक ऐसा तार्किक मॉडल है जिसके माध्यम से हम वास्तविक सांगठनिक व्यवस्थाओं का परीक्षण कर सकें। वेबर ने स्पष्ट किया कि एक कुशल नौकरशाही में कौन-कौन से अनिवार्य गुण होने चाहिए। जब हम किसी वास्तविक प्रशासनिक तंत्र का अवलोकन करते हैं, तो हमें बोध होता है कि वह इस आदर्श मॉडल से कितना निकट या दूर है। यह एक मानक की तरह है जो हमें यह समझने में सहायता करता है कि हमारी प्रशासनिक व्यवस्था कितनी तर्कसंगत और कुशल है। यह समाजशास्त्रीय अध्ययन का एक अत्यंत वैज्ञानिक उपकरण है।

211. (C) अनौपचारिक संगठन
कारखाने में विश्राम के समय होने वाला संवाद या व्यक्तिगत मित्रता ही 'अनौपचारिक संगठन' का निर्माण करती है। यह संगठन किसी आधिकारिक निर्देश से निर्मित नहीं होता, बल्कि यह सहज मानवीय स्वभाव की परिणति है। यहाँ लोग एक-दूसरे के सुख-दुख साझा करते हैं और सामाजिक संबल प्रदान करते हैं। यह संगठन श्रमिकों को कार्यस्थल के तनावपूर्ण वातावरण में मानसिक राहत प्रदान करता है। कई बार ये व्यक्तिगत संबंध इतने प्रभावशाली होते हैं कि वे संपूर्ण कारखाने की कार्यप्रणाली को सकारात्मक या नकारात्मक रूप से प्रभावित करने लगते हैं। यह कार्यस्थल का वह मानवीय पक्ष है जिसे विधिक नियमों में नहीं बाँधा जा सकता।

212. (C) केवल 2 और 3
श्रमिक संघों का प्राथमिक उत्तरदायित्व अपने सदस्यों के आर्थिक और सामाजिक अधिकारों की रक्षा करना है। सामूहिक सौदेबाजी उनका सर्वाधिक महत्वपूर्ण कार्य है जिसके माध्यम से वे न्यायसंगत पारिश्रमिक और सुरक्षित कार्य दशाओं के लिए वार्ता करते हैं। साथ ही, प्रबंधन में श्रमिकों की भागीदारी का उद्देश्य नीतिगत निर्णयों में श्रमिकों को प्रभावी आवाज प्रदान करना है। ये दोनों संस्थाएँ औद्योगिक लोकतंत्र को सुदृढ़ करती हैं और श्रमिकों को केवल एक उत्पादन का साधन न मानकर उन्हें संस्थान का सक्रिय, सम्मानित और उत्तरदायी भागीदार बनाने का कार्य करती हैं।

213. (B) उत्पादन कार्य कम हो जाते हैं जबकि समाजीकरण के कार्य प्रमुख हो जाते हैं।
औद्योगिकीकरण के फलस्वरूप परिवार की कार्यात्मक भूमिका में बड़ा परिवर्तन आया है। पूर्व में परिवार के समस्त सदस्य मिलकर कृषि या कुटीर उद्योग संचालित करते थे, परंतु अब सदस्य पृथक-पृथक स्थानों पर आजीविका हेतु कार्यरत हैं। अब परिवार का मुख्य उत्तरदायित्व बच्चों का समाजीकरण, उन्हें नैतिक मूल्य प्रदान करना और सदस्यों को भावनात्मक सहारा देना रह गया है। आर्थिक उत्पादन अब गृह की परिधि से निकलकर कारखानों और कार्यालयों में स्थानांतरित हो गया है। यह बदलाव दर्शाता है कि परिवार अब एक आर्थिक इकाई के स्थान पर एक सामाजिक और मनोवैज्ञानिक आधार स्तंभ बन गया है।

214. (C) कुछ विशिष्ट क्षेत्र और शहरी केंद्र
भारत में औद्योगिक विकास का भौगोलिक वितरण अत्यंत असमान रहा है। महाराष्ट्र, तमिलनाडु और कर्नाटक जैसे राज्यों में उद्योगों का सघन संकेंद्रण है, जबकि बिहार और ओडिशा के कई क्षेत्र आज भी औद्योगिक विकास की प्रतीक्षा में हैं। इसी प्रकार, उद्योग मुख्यतः बड़े महानगरों के समीप ही स्थित हैं। इस असमान विकास के कारण रोजगार की खोज में ग्रामीण आबादी का वृहत् पलायन होता है, जिससे नगरों पर अत्यधिक दबाव बढ़ता है। राष्ट्र के संतुलित और समावेशी विकास के लिए पिछड़े और ग्रामीण क्षेत्रों में औद्योगिक निवेश को प्रोत्साहित करना अनिवार्य आवश्यकता है।

215. (B) सार्वजनिक (सरकार) से निजी क्षेत्र में स्वामित्व या प्रबंधन का हस्तांतरण।
निजीकरण का तात्पर्य सरकारी उपक्रमों के स्वामित्व या प्रबंधन को निजी हाथों में सौंपना है। यह तर्क दिया जाता है कि निजी क्षेत्र अधिक कार्यकुशलता और नवीन तकनीक के साथ कार्य करता है जिससे आर्थिक हानि कम होती है। वैश्वीकरण के वर्तमान दौर में अंतरराष्ट्रीय प्रतिस्पर्धा का सामना करने हेतु सरकार ने अनेक क्षेत्रों को निजी निवेश के लिए खोल दिया है।

Click Here to Buy book on Amazon

करता है, तो उसे दबाना सुगम होता है, परंतु जब हजारों श्रमिक एक साथ संगठित होते हैं, तो प्रबंधन को उनकी न्यायसंगत बात सुननी पड़ती है। संघ अपने सदस्यों के लिए बेहतर पारिश्रमिक, पेंशन और सुरक्षा की विधिक गारंटी मांगते हैं। यह प्रक्रिया संघर्ष के स्थान पर संवाद से रास्ता निकालने पर बल देती है। अतः श्रमिक संघ श्रमिकों के अधिकारों और उनके आर्थिक हितों की रक्षा के लिए एक सशक्त ढाल की तरह कार्य करते हैं।

200. (A) 1, 2, 3
औद्योगिक विवादों को सुलझाने का एक निश्चित विधिक अनुक्रम होता है। सर्वप्रथम श्रमिक और स्वामी स्वयं संवाद के माध्यम से मसला सुलझाने का प्रयास करते हैं। यदि वे इसमें असफल रहते हैं, तो सरकार एक सुलह अधिकारी नियुक्त करती है जो दोनों पक्षों के मध्य समन्वय स्थापित करता है। यदि फिर भी सहमति नहीं बन पाती, तो मामला अंततः श्रम न्यायालय या न्यायाधिकरण के पास 'अधिनिर्णय' के लिए प्रेषित किया जाता है जहाँ विधिक आधार पर निर्णय लिया जाता है। यह सुव्यवस्थित तरीका औद्योगिक जगत में अराजकता को रोकने और न्याय सुनिश्चित करने का एक प्रमुख मार्ग है।

201. (C) विज्ञान, प्रौद्योगिकी, इंजीनियरिंग और प्रबंधन
औद्योगिकीकरण ने शिक्षा के पारंपरिक उद्देश्यों को बदलकर उसे बाजार की माँगों के अनुरूप ढाल दिया है। अब अभिभावक और छात्र उन विषयों की ओर अधिक आकर्षित होते हैं जिनसे शीघ्र और बेहतर रोजगार प्राप्त हो सके। इसीलिए अभियांत्रिकी और प्रबंधन जैसे पाठ्यक्रमों की मांग में अत्यधिक वृद्धि हुई है। यह बदलाव प्रदर्शित करता है कि आधुनिक समाज अब आर्थिक प्रगति और तकनीकी विशेषज्ञता को सर्वोच्च महत्व प्रदान करता है। यद्यपि इससे देश को कुशल पेशेवर प्राप्त हो रहे हैं, परंतु कला और मानविकी जैसे क्षेत्र कहीं न कहीं इस प्रतिस्पर्धा में पिछड़ते जा रहे हैं, जो एक बड़ा शैक्षिक असंतुलन है।

202. (B) वर्ग संघर्ष
कार्ल मार्क्स के अनुसार पूंजीवाद में दो वर्गों के आर्थिक हित सदैव परस्पर टकराते हैं। स्वामी न्यूनतम लागत में अधिकतम लाभ प्राप्त करना चाहता है, जबकि श्रमिक अपनी मेहनत का न्यायसंगत मूल्य मांगता है। यह निरंतर चलने वाला टकराव ही 'वर्ग संघर्ष' है जो समाज में हड़ताल, तालाबंदी और कभी-कभी वृहत् आंदोलनों का कारण बनता है। मार्क्स का मानना था कि यह संघर्ष तभी समाप्त होगा जब संसाधनों का न्यायपूर्ण और समान वितरण सुनिश्चित होगा। यह सिद्धांत समाज की आर्थिक जड़ों और वहाँ विद्यमान गहरे सामाजिक भेदभावों को समझने के लिए एक क्रांतिकारी दृष्टिकोण प्रदान करता है।

203. (A) एक ऐसी संस्कृति जो जोखिम लेने और उद्यमिता को हतोत्साहित करती है।
किसी भी राष्ट्र की औद्योगिक प्रगति वहाँ के समाज के सांस्कृतिक दृष्टिकोण पर गहराई से निर्भर करती है। यदि समाज में लोग केवल सुरक्षित सरकारी नौकरियों या पारंपरिक कार्यों को ही श्रेष्ठ मानते हैं और व्यावसायिक जोखिम या नवाचार से भयभीत रहते हैं, तो वहाँ औद्योगिकीकरण की गति धीमी रहेगी। उद्योगों के विकास के लिए ऐसे साहसी व्यक्तियों की आवश्यकता होती है जो जोखिम उठा सकें और मौलिक सोच रख सकें। अतः समाज का सांस्कृतिक नजरिया आर्थिक विकास के मार्ग में या तो एक बड़ा संबल बन सकता है या फिर एक अत्यंत कठिन और गंभीर बाधा भी बन सकता है।

204. (B) पश्चिमी समाजशास्त्रीय अवधारणाएं सार्वभौमिक रूप से लागू नहीं हो सकती हैं और नृजाति-केंद्रित (ethnocentric) हो सकती हैं।
समाजशास्त्र का भारतीयकरण इस चेतना से प्रारंभ हुआ कि हम अपनी विशिष्ट सामाजिक पहचान को पश्चिमी दृष्टिकोण से न देखें। पश्चिमी देशों के सिद्धांत भारत के ग्रामीण समाज और यहाँ की अनूठी जाति व्यवस्था पर पूर्णतः सटीक नहीं बैठते। भारतीय समाजशास्त्री चाहते हैं कि हम अपनी सामाजिक समस्याओं को अपनी ही संस्कृति, परंपरा और ऐतिहासिक संदर्भ के आधार पर समझें। यह मांग केवल शैक्षणिक स्वायत्तता की नहीं है, बल्कि यह ज्ञान को अधिक सटीक और सार्थक बनाने का एक वैज्ञानिक प्रयास है ताकि हम अपनी सामाजिक वास्तविकता को उसकी संपूर्ण गहराई में देख सकें।

205. (B) प्रतिस्पर्धा और दक्षता की आवश्यकता को बढ़ाकर।
वैश्वीकरण ने संपूर्ण विश्व को एक वृहत् एकीकृत बाजार में परिवर्तित कर दिया है। अब भारतीय कंपनियों को न केवल घरेलू बल्कि अंतरराष्ट्रीय कंपनियों से भी कड़ी स्पर्धा करनी पड़ती है। अस्तित्व बनाए रखने के लिए उन्हें अपनी तकनीक में सुधार करना पड़ रहा है और उत्पादन लागत कम करनी पड़ रही है। इससे उपभोक्ताओं को तो लाभ प्राप्त हुआ है परंतु निर्बल उद्योगों के लिए यह एक बड़ा संकट है। अतः वैश्वीकरण ने विकास की गति को तो तीव्र किया है, परंतु उसने निरंतर सुधार और उच्च सांगठनिक दक्षता की एक ऐसी अनिवार्य शर्त लगा दी है जिसे पूर्ण करना प्रत्येक संस्थान के लिए सुगम नहीं है।

206. (C) एक स्तरीकृत व्यवस्था का निर्माण जहाँ गुणवत्ता भुगतान करने की क्षमता से जुड़ी हो।
शिक्षा के अनियंत्रित निजीकरण का सर्वाधिक नकारात्मक प्रभाव यह है कि गुणवत्तापूर्ण शिक्षा अब केवल समृद्ध वर्ग की निजी संपत्ति बन सकती है। समृद्ध बच्चे आधुनिक और सुसज्जित निजी संस्थानों में अध्ययन करते हैं, जबकि निर्धन बच्चे बुनियादी सुविधाओं के अभाव वाले संस्थानों तक सीमित रह जाते हैं। यह शैक्षिक विभाजन भविष्य में समाज के मध्य की आर्थिक खाई को और अधिक विस्तृत कर देगा। जब ज्ञान केवल एक क्रय योग्य वस्तु बन जाता है, तो सामाजिक समानता का स्वप्न अधूरा रह जाता है। यह स्थिति सामाजिक न्याय की राह में एक बहुत बड़ी बाधा है जिसे दूर करना कल्याणकारी राज्य का कर्तव्य है।

207. (B) प्रौद्योगिकी के महत्वपूर्ण क्षेत्रों में राष्ट्रीय आत्मनिर्भरता
भारत की विज्ञान और प्रौद्योगिकी नीति का मूल ध्येय यह है कि भारत को तकनीक के लिए अन्य देशों पर निर्भर न रहना पड़े। हम रक्षा, अंतरिक्ष, ऊर्जा और स्वास्थ्य जैसे संवेदनशील क्षेत्रों में अपनी तकनीक स्वयं विकसित करना चाहते हैं। इससे

NODIA

224. (B) आर्थिक पृष्ठभूमि के आधार पर सामाजिक असमानताओं का गहरा होना।
शिक्षा के निजीकरण का एक चिंताजनक पक्ष यह है कि यह समृद्ध और निर्धन के मध्य की सामाजिक दूरी को और अधिक विस्तृत कर सकता है। प्रतिष्ठित शिक्षण संस्थान इतने महंगे हो जाते हैं कि सामान्य नागरिक वहाँ शिक्षा प्राप्त करने का स्वप्न भी नहीं देख सकता। इससे समाज में दो प्रकार के नागरिक निर्मित होते हैं—एक वे जिन्हें उत्कृष्ट शिक्षा प्राप्त हुई है, और दूसरे वे जो संसाधनों के अभाव में पिछड़ गए हैं। यह स्थिति भविष्य में सामाजिक अशांति और असंतोष उत्पन्न कर सकती है क्योंकि ज्ञान पर अब केवल कुछ ही लोगों का एकाधिकार होता जा रहा है।

225. (A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
भारत की विज्ञान नीति केवल प्रयोगशालाओं तक सीमित नहीं है, बल्कि इसका प्रत्यक्ष संबंध जनमानस के जीवन स्तर से है। सरकार का ध्येय है कि वैज्ञानिक ऐसी नवीन खोजें करें जिससे कृषि उत्पादन में वृद्धि हो, निर्धन नागरिकों को सुलभ उपचार मिले और उद्योगों में स्वदेशी तकनीक विकसित हो। इस नीति का मुख्य उद्देश्य विज्ञान को राष्ट्र निर्माण का एक सशक्त माध्यम बनाना है। जब वैज्ञानिक अनुसंधान और सामाजिक आवश्यकताएँ एक ही दिशा में अग्रसर होती हैं, तभी राष्ट्र का वास्तविक और सर्वांगीण विकास संभव होता है। यह नीति आधुनिक भारत की प्रगति हेतु एक आधार स्तंभ है।

226. (B) यांत्रिक एकजुटता and दमनकारी कानून
दुर्खीम के अनुसार प्राचीन समाजों में लोग समान थे और वे सामाजिक मानदंडों को ईश्वर का आदेश मानते थे। वहाँ यदि कोई नियम भंग करता था, तो उसे अत्यंत कठोर दंड दिया जाता था ताकि संपूर्ण समूह में व्यवस्था बनी रहे, जिसे 'दमनकारी कानून' कहा गया। यहाँ व्यक्तियों के मध्य एक नैसर्गिक और दृढ़ जुड़ाव था जिसे 'यांत्रिक एकता' कहते हैं। सभी सदस्य एक जैसा कार्य करते थे और सबकी चेतना भी एक ही थी। यह व्यवस्था समाज को सांगठनिक सूत्र में बाँधने का एक सरल परंतु अत्यंत प्रभावशाली और अनुशासित तरीका था।

227. (B) अपने स्वयं के श्रम और उसके उत्पादों पर नियंत्रण की क्षति
मार्क्स के अनुसार पूंजीवाद में श्रमिक अपनी श्रम शक्ति का स्वामी नहीं रह जाता। वह जो भी उत्पाद निर्मित करता है, उसे उसे तत्काल त्यागना पड़ता है। उसका कार्य अब उसकी स्वेच्छा से नहीं, बल्कि मशीनों की गति और स्वामियों के निर्देशों से संचालित होता है। इसी स्थिति को 'अलगाव' कहा जाता है जहाँ मनुष्य अपनी ही सृजनात्मकता से पराया हो जाता है। यह दुखद सामाजिक स्थिति उसे एक निर्जीव साधन के रूप में परिवर्तित कर देती है। मार्क्स का यह सिद्धांत हमें यह चिंतन करने पर विवश करता है कि क्या आर्थिक प्रगति के लिए मानवीय स्वायत्तता का त्याग करना उचित है।

228. (D) करिश्माई नेतृत्व
मैक्स वेबर की नौकरशाही में किसी व्यक्ति के निजी प्रभाव या करिश्मे के लिए कोई स्थान नहीं होता। यहाँ प्रत्येक कार्य लिखित नियमों, आधिकारिक फाइलों और पदानुक्रम से संचालित होता है। सत्ता किसी व्यक्ति विशेष की नहीं, बल्कि उसके द्वारा धारण किए गए पद की होती है। करिश्माई नेतृत्व प्रायः संवेगों और आकस्मिक निर्णयों पर आधारित होता है, जो नौकरशाही की स्थिरता के सर्वथा विरुद्ध है। नौकरशाही का मुख्य गुण ही इसकी पूर्वानुमेयता और विधिक नियमबद्धता है। अतः यह व्यवस्था पूर्णतः तर्क और कानून पर आधारित होती है, न कि किसी व्यक्ति के निजी आकर्षण पर।

229. (C) कार्यस्थल पर सामाजिक और मनोवैज्ञानिक कारक
हाथोर्न प्रयोगों ने वैश्विक स्तर पर यह सिद्ध किया कि श्रमिक केवल आर्थिक लाभ के लिए कार्य नहीं करते। उन्हें कार्यस्थल पर सम्मान, सामाजिक स्वीकृति और साथियों का सहयोग भी अनिवार्य रूप से चाहिए। जब प्रयोगों के दौरान भौतिक सुविधाएँ कम की गईं, तब भी उत्पादन में वृद्धि हुई क्योंकि श्रमिकों को यह बोध हुआ कि प्रबंधन उनकी परवाह कर रहा है। इसे 'हाथोर्न प्रभाव' कहा गया। इन अध्ययनों ने प्रमाणित किया कि यदि आप अपने कर्मचारियों को मानसिक रूप से संतुष्ट और सम्मानित अनुभव कराएंगे, तो वे बेहतर परिणाम देंगे। यह औद्योगिक समाजशास्त्र की एक क्रांतिकारी उपलब्धि है।

230. (D) सामूहिक सौदेबाजी
सामूहिक सौदेबाजी औद्योगिक शांति बनाए रखने की सर्वाधिक प्रभावी पद्धति है। इसमें श्रमिक व्यक्तिगत रूप से निर्बल होने के स्थान पर एक संगठित संघ के रूप में नियोक्ता से वार्ता करते हैं। वे प्रत्यक्ष संवाद के माध्यम से पारिश्रमिक, अवकाश और कार्य के घंटों पर एक तार्किक समझौता करते हैं। इसमें किसी विधिक न्यायालय या बाह्य मध्यस्थ की आवश्यकता नहीं होती, जिससे आपसी कटुता में कमी आती है। यह प्रक्रिया लोकतंत्र के समान है जहाँ संवाद से समाधान निकाला जाता है। सफल सौदेबाजी से संस्थान में एक सुखद, मर्यादित और अनुशासित वातावरण निर्मित होता है।

231. (B) कार्य से संबंधित समस्याओं को हल करने वाला श्रमिकों का एक स्वैच्छिक समूह
'क्वालिटी सर्कल' एक ऐसी सहभागी व्यवस्था है जहाँ श्रमिक स्वेच्छा से कार्य में सुधार लाने हेतु संगठित होते हैं। यह प्रबंधन द्वारा आरोपित कोई समिति नहीं है। इसमें सम्मिलित होकर श्रमिकों को यह गौरव अनुभव होता है कि वे केवल एक कर्मचारी नहीं, बल्कि संस्थान की प्रगति के आधार स्तंभ हैं। जब सूक्ष्म स्तर पर समस्याओं का तार्किक समाधान होने लगता है, तो संपूर्ण कारखाने की कार्यकुशलता में वृद्धि होती है। यह पद्धति कार्यस्थल पर उत्तरदायित्व की भावना और आपसी सहयोग संवर्द्धन का एक अत्यंत प्रभावी, मानवीय और आधुनिक प्रगतिशील मार्ग है।

232. (A) केवल 1 और 3
औद्योगिकीकरण ने भारत में नगरीकरण की प्रक्रिया को तीव्र किया है क्योंकि आजीविका हेतु ग्रामीण जनसंख्या नगरों की ओर आकर्षित होती है। इसके साथ ही समाज में आर्थिक आधार पर नवीन वर्ग निर्मित हुए हैं जिन्होंने पारंपरिक जातिगत सीमाओं को चुनौती प्रदान की है। यद्यपि, परिवार के संदर्भ

NODIA

श्रेष्ठ प्रबंधन पद्धतियों के साथ कार्य करता है जिससे संपूर्ण सांगठनिक व्यवस्था अधिक सुचारु और परिणाम-उन्मुख बनती है। उनका विश्वास है कि बाजार की शक्तियाँ ही किसी भी सेवा को अधिक कुशल बना सकती हैं। यद्यपि यह व्यवस्था महंगी हो सकती है, परंतु यह वैश्विक मानकों को प्राप्त करने का एक तीव्र मार्ग माना जाता है।

265. (A) राष्ट्रीय उद्देश्यों के लिए विज्ञान और प्रौद्योगिकी का लाभ उठाने के लिए एक रणनीतिक ढांचा तैयार करना।
विज्ञान और प्रौद्योगिकी नीति का प्राथमिक उत्तरदायित्व यह निर्धारित करना है कि राष्ट्र के वैज्ञानिक अनुसंधान का सदुपयोग जनमानस के कल्याण हेतु किस प्रकार सुनिश्चित किया जाए। यह नीति शिक्षा, स्वास्थ्य, सामरिक रक्षा और कृषि जैसे महत्वपूर्ण क्षेत्रों में तकनीक के प्रभावी प्रयोग हेतु एक स्पष्ट विधिक दिशा प्रदान करती है। इसका ध्येय भारत को आत्मनिर्भर बनाना और वैश्विक पटल पर एक ज्ञान-आधारित सुदृढ़ अर्थव्यवस्था के रूप में स्थापित करना है। जब विज्ञान और राष्ट्रीय संकल्प एक ही दिशा में अग्रसर होते हैं, तभी राष्ट्र की प्रगति वास्तविक, समावेशी और दीर्घकालिक रूप से स्थाई बन पाती है।

266. (B) उच्च स्तर का व्यक्तिवाद
दुर्खीम के अनुसार 'यांत्रिक एकता' वाले प्राचीन समाजों में व्यक्तिवाद का स्तर अत्यंत निम्न होता था। वहाँ सदस्य अपनी स्वेच्छा से निर्णय लेने हेतु स्वतंत्र नहीं थे, बल्कि वे समाज और परंपराओं के कठोर नियमों में आबद्ध थे। संपूर्ण समूह की सोच, धर्म और कार्य समान थे, जिससे समाज में एक सघन सांगठनिक एकता विद्यमान थी। वहाँ 'व्यक्ति' की तुलना में 'समूह' को सर्वोच्च महत्व प्राप्त था। इसके विपरीत, आधुनिक जटिल समाजों में व्यक्तिवाद का विकास होता है जहाँ लोग अपनी पृथक पहचान और निजी स्वतंत्रता को महत्व प्रदान करते हैं। अतः यांत्रिक एकता की जड़ें सामूहिक चेतना की प्रधानता में निहित होती हैं।

267. (A) P-2, Q-1, R-4, S-3
समाजशास्त्रीय विचारकों ने औद्योगिक समाज का विभिन्न दृष्टिकोणों से विश्लेषण किया है। एमिल दुर्खीम ने श्रम विभाजन को नवीन सामाजिक एकता का आधार माना। कार्ल मार्क्स ने अलगाव को पूंजीवाद का सर्वाधिक नकारात्मक परिणाम माना जहाँ श्रमिक अपनी पहचान खो देता है। मैक्स वेबर ने आधुनिक विश्व को नौकरशाही और बढ़ती तार्किकता के प्रभाव से संबद्ध किया। अंत में, एल्टन मेयो ने कार्यस्थल पर मानवीय संबंधों और अनौपचारिक समूहों की निर्णायक भूमिका को सिद्ध किया। ये समस्त विचार मिलकर औद्योगिक समाज की आर्थिक, प्रशासनिक और सामाजिक पेचीदगियों को समझने का एक अत्यंत समृद्ध और वैज्ञानिक विश्लेषणात्मक ढांचा निर्मित करते हैं।

268. (B) उत्पादन की शक्तियों के विकास का स्तर।
कार्ल मार्क्स के अनुसार, उत्पादन के संबंध इस तथ्य पर आधारित होते हैं कि समाज में तकनीक और उत्पादन के उपकरण किस स्तर के हैं। जब केवल हल और बैल उपलब्ध थे, तब जमींदार और कृषक के मध्य के संबंध विशिष्ट थे। परंतु जब भाप के इंजन और आधुनिक मशीनों का प्रादुर्भाव हुआ, तब स्वामी और श्रमिक के नवीन औद्योगिक संबंध निर्मित हुए। जैसे-जैसे उत्पादन की शक्तियाँ विकसित और परिवर्तित होती हैं, समाज का संपूर्ण आर्थिक और सामाजिक ढांचा भी बदल जाता है। मार्क्स का यह सिद्धांत स्पष्ट करता है कि तकनीकी प्रगति ही हमारे सामाजिक रिश्तों के स्वरूप को बदलने वाली सबसे मौलिक शक्ति है।

269. (C) अधिकार और उत्तरदायित्व की एक स्पष्ट रूप से परिभाषित संरचना।
कारखाने का औपचारिक संगठन वह सांगठनिक ढांचा है जो लिखित नियमों और आधिकारिक विधिक चार्ट पर आधारित होता है। यहाँ प्रत्येक सदस्य को स्पष्ट बोध होता है कि उसका वरिष्ठ अधिकारी कौन है और उसके निर्धारित उत्तरदायित्व क्या हैं। यह व्यवस्था सांगठनिक अनुशासन बनाए रखने और उत्पादन लक्ष्यों को कुशलतापूर्वक प्राप्त करने हेतु प्रबंधन द्वारा सुविचारित ढंग से निर्मित की जाती है। इसमें पदों का एक निश्चित क्रम होता है और कार्यों का विभाजन तार्किक आधार पर किया जाता है। औपचारिकता ही वह आधार है जो वृहत् संगठनों को सुचारू, पूर्वानुमेय और अत्यधिक कार्यकुशल बनाने में निर्णायक भूमिका निभाती है।

270. (C) सामूहिक सौदेबाजी
सामूहिक सौदेबाजी औद्योगिक शांति बनाए रखने का सर्वाधिक प्रभावी और लोकतांत्रिक मार्ग है। इसमें श्रमिक व्यक्तिगत रूप से निर्बल होने के स्थान पर अपने संघ के माध्यम से नियोक्ता के साथ सीधे संवाद करते हैं। उनका मुख्य ध्येय एक ऐसा अनुबंध करना होता है जिसमें पारिश्रमिक, सुरक्षा और कार्य की शर्तें पूर्णतः स्पष्ट हों। यह प्रक्रिया विधिक अदालती संघर्षों और हड़तालों को रोकने में अत्यंत सहायक सिद्ध होती है। सफल सौदेबाजी से कार्यस्थल पर आपसी विश्वास में वृद्धि होती है और दोनों पक्षों को एक निश्चित समयावधि के लिए सांगठनिक स्थिरता और सुरक्षा का विधिक आश्वासन प्राप्त होता है।

271. (C) प्रतिकूल संबंधों से जटिल सहयोग की ओर एक प्रवृत्ति।
पूर्व के औद्योगिक युग में श्रमिक और नियोक्ता प्रायः एक-दूसरे को प्रतिद्वंद्वी मानते थे और केवल संघर्ष का मार्ग अपनाते थे। परंतु आधुनिक युग में दोनों पक्षों को यह बोध हो गया है कि उनकी सांगठनिक सफलता आपसी सहयोग पर ही आधारित है। वैश्वीकरण और निरंतर बढ़ती प्रतिस्पर्धा के कारण अब वे परस्पर मिलकर उत्पादकता बढ़ाने और जटिल समस्याओं को सुलझाने का तार्किक प्रयास करते हैं। यह बदलाव टकराव की संस्कृति से संवाद और सांगठनिक भागीदारी की ओर प्रस्थान है। औद्योगिक संबंधों में यह सकारात्मक परिवर्तन न केवल शांति बल्कि राष्ट्र की आर्थिक प्रगति हेतु भी एक अनिवार्य और स्वागत योग्य कदम है।

272. (C) सामाजिक गतिशीलता और स्तरीकरण के नए रूपों का निर्माण।
औद्योगिकीकरण ने भारतीय समाज में परिवर्तन की एक नवीन लहर उत्पन्न की है। इसने व्यक्तियों को अपनी संकीर्ण जातिगत

Downloaded from www.pdf.tube

आर्थिक अनिश्चितता अब आधुनिक श्रम बाजार की एक वैश्विक वास्तविकता बन गई है, जो पुराने सांगठनिक ढांचे को चुनौती दे रही है।

241. (B) 2, 1, 3
एमिल दुर्खीम के विश्लेषण के अनुसार समाज का विकास 'यांत्रिक एकता' से प्रारंभ हुआ जहाँ सदस्य समान थे। श्रम विभाजन में वृद्धि के साथ समाज 'सावयवी एकता' की ओर अग्रसर हुआ जहाँ व्यक्ति कार्यात्मक रूप से परस्पर निर्भर होने लगे। जब यह सामाजिक परिवर्तन अत्यंत तीव्र गति से हुआ और समाज इसके साथ सामंजस्य स्थापित करने में असमर्थ रहा, तब 'एनोमी' या प्रतिमानहीनता की संकटपूर्ण स्थिति उत्पन्न हुई। यह अनुक्रम समाज के सरल से जटिल स्वरूप की ओर बढ़ने और उस दौरान उत्पन्न होने वाले संरचनात्मक संकटों को स्पष्ट करता है। दुर्खीम का यह विश्लेषण अत्यंत महत्वपूर्ण है।

242. (C) सामाजिक न्याय और गुणवत्तापूर्ण शैक्षणिक अवसरों तक निष्पक्ष पहुंच।
शिक्षा के अनियंत्रित निजीकरण की सर्वाधिक गंभीर आलोचना यह है कि यह ज्ञान को केवल एक विपणन योग्य वस्तु में परिवर्तित कर देता है। इससे वे मेधावी छात्र विकास की मुख्यधारा से पिछड़ जाते हैं जो आर्थिक रूप से निर्बल हैं। यह स्थिति समाज में समानता के संवैधानिक लक्ष्य को बाधित करती है। जब शिक्षा का मुख्य ध्येय केवल आर्थिक लाभ प्राप्त करना हो जाता है, तो वह समाज के प्रति अपने नैतिक उत्तरदायित्वों की उपेक्षा कर सकती है। अतः निजीकरण से उत्पन्न यह शैक्षिक विषमता सामाजिक न्याय और सबके लिए समान अवसर की उपलब्धि के मार्ग में एक वृहत् अवरोध सिद्ध होती है।

243. (C) पूंजीवादी औद्योगिक समाज
पूंजीवादी औद्योगिक समाज की मुख्य विशेषता ही एक वृहत् संगठित श्रमिक वर्ग का अस्तित्व है। इन श्रमिकों के पास उत्पादन के कोई निजी साधन (भूमि या मशीनें) नहीं होते; उनके पास केवल अपनी श्रम शक्ति होती है जिसे वे पारिश्रमिक के बदले बेचने के लिए विवश होते हैं। मार्क्स ने इस वर्ग को 'सर्वहारा' की संज्ञा दी थी। यह वर्ग आर्थिक रूप से पूरी तरह पूंजीपति वर्ग पर निर्भर होता है। इस विशिष्ट आर्थिक संरचना ने समाज में अमीर और गरीब के मध्य एक गहरी खाई निर्मित की है। यही वर्ग आधुनिक उद्योगों का संचालन करता है, फिर भी वह प्रायः अधिकारों से वंचित रहता है।

244. (C) बुर्जुआ और सर्वहारा
कार्ल मार्क्स ने आधुनिक औद्योगिक समाज को दो प्रमुख विरोधी वर्गों में विभाजित देखा था। 'बुर्जुआ' वे लोग हैं जिनके पास उत्पादन के समस्त साधन और पूँजी का संकेंद्रण है। 'सर्वहारा' वे श्रमिक हैं जिनके पास कोई संपत्ति नहीं है और वे केवल अपनी श्रम शक्ति बेचकर ही आजीविका चलाते हैं। इन दोनों के मध्य सदैव हितों का टकराव बना रहता है क्योंकि नियोक्ता अपना लाभ बढ़ाना चाहता है और श्रमिक अपने हक की मजदूरी। मार्क्स का यह मानना था कि यह अंतर्निहित विरोधाभास ही अंततः पूंजीवाद के पतन और एक नवीन वर्गविहीन सामाजिक व्यवस्था की स्थापना का मुख्य कारण बनेगा।

245. (B) P-2, Q-3, R-1, S-4
मार्क्सवादी विचारधारा उद्योग को वर्ग संघर्ष और अलगाव के मुख्य केंद्र के रूप में विश्लेषित करती है। वेबेरियन दृष्टिकोण तार्किकता और नौकरशाही के महत्व पर बल देता है। दुर्खीमवादी परंपरा श्रम विभाजन को सामाजिक एकता अथवा प्रतिमानहीनता के स्रोत के रूप में देखती है। अंत में, 'मानव संबंध स्कूल' कारखाने को एक ऐसी जीवंत सामाजिक व्यवस्था मानता है जहाँ औपचारिक और अनौपचारिक समूह दोनों निरंतर सक्रिय रहते हैं। ये समस्त दृष्टिकोण हमें औद्योगिक समाज की आर्थिक, प्रशासनिक और सामाजिक परतों को गहराई से समझने हेतु एक अत्यंत समृद्ध और स्पष्ट विश्लेषणात्मक परिप्रेक्ष्य प्रदान करते हैं।

246. (B) यह श्रमिक द्वारा अपनी श्रम शक्ति की लागत से अधिक सृजित किया गया मूल्य है।
'अतिरिक्त मूल्य' कार्ल मार्क्स के आर्थिक सिद्धांत का केंद्रीय तत्व है। इसका तात्पर्य यह है कि एक श्रमिक अपने कार्य दिवस के दौरान जितना मूल्य उत्पादित करता है, उसका एक वृहत् अंश नियोक्ता स्वयं रख लेता है और श्रमिक को केवल उसके जीवन निर्वाह हेतु न्यूनतम पारिश्रमिक प्रदान किया जाता है। यह अधिशेष मूल्य ही पूंजीपति की संपत्ति में निरंतर वृद्धि का आधार है। मार्क्स के अनुसार, यही वह वास्तविक मुनाफा है जो श्रमिकों के अवैतनिक श्रम के शोषण से प्राप्त होता है। बिना इस अतिरिक्त मूल्य के पूंजीवादी व्यवस्था में पूँजी का संचय करना पूर्णतः असंभव है।

247. (D) व्यक्तिगत और भावनात्मक विचारों पर आधारित निर्णय
मैक्स वेबर के अनुसार नौकरशाही की सर्वाधिक सांगठनिक शक्ति उसकी निष्पक्षता और नियमबद्धता में निहित है। यहाँ प्रशासनिक निर्णय किसी व्यक्ति की निजी रुचि या अरुचि से नहीं, बल्कि स्थापित लिखित कानूनों के आधार पर लिए जाते हैं। व्यक्तिगत संवेगों को कार्यालय से पृथक रखना अनिवार्य है ताकि प्रत्येक नागरिक के साथ समान व्यवहार सुनिश्चित हो सके। इसमें पदों का एक निश्चित सोपान होता है और नियुक्तियाँ केवल योग्यता के आधार पर की जाती हैं। यदि प्रशासन में व्यक्तिगत भावनाएँ प्रभावी हो जाएँ, तो वह अपनी तार्किकता खो देगा और व्यवस्था में अराजकता व्याप्त हो जाएगी। अतः निर्वैयक्तिकता ही मूल मंत्र है।

248. (B) शहरीकरण (Urbanization)
औद्योगिकीकरण का सर्वाधिक व्यापक और प्रत्यक्ष सामाजिक प्रभाव शहरीकरण के रूप में परिलक्षित होता है। जैसे-जैसे उद्योगों का विस्तार होता है, ग्रामीण जनसंख्या आजीविका की खोज में नगरों की ओर प्रस्थान करती है। इससे विशाल महानगरों का उदय होता है जहाँ जीवन की गति अत्यंत तीव्र होती है और प्राचीन सामुदायिक बंधन क्षीण पड़ जाते हैं। शहरीकरण केवल जनसंख्या का संकेंद्रण नहीं है, बल्कि यह एक नवीन जीवनशैली, तार्किक सोच और नवीन सामाजिक संबंधों का सूत्रपात है। यह औद्योगिक प्रगति का वह स्वरूप है

NODIA

यद्यपि इससे सेवाओं की गुणवत्ता में सुधार संभव है, परंतु निर्धन वर्ग के लिए इन सुविधाओं के अत्यधिक महंगे होने की आशंका सदैव बनी रहती है। अतः निजीकरण आर्थिक सुधारों का एक अत्यंत प्रभावशाली और संवेदनशील पक्ष है।

216. (D) राजनीतिक दलों से अलगाव
कार्ल मार्क्स ने अलगाव के चार प्रमुख प्रकारों का विश्लेषण किया था जो उत्पादन प्रक्रिया और मानवीय सत्व से संबद्ध हैं। इनमें उत्पाद से, उत्पादन की प्रक्रिया से, स्वयं की मानवीय प्रकृति से और अन्य मनुष्यों से अलगाव सम्मिलित हैं। उन्होंने राजनीतिक दलों से पृथकता को अपने इस मूल आर्थिक सिद्धांत का प्राथमिक अंग नहीं माना था। मार्क्स के लिए अलगाव एक ऐसी विवशकारी स्थिति है जहाँ श्रमिक अपनी संपूर्ण शक्ति और पहचान को पूंजीवादी व्यवस्था के अधीन अनुभव करता है। यह मनुष्य की रचनात्मक आत्मा और उसकी स्वायत्तता के दमन की एक अत्यंत गंभीर सामाजिक एवं मानसिक स्थिति है।

217. (B) P-4, Q-1, R-3, S-2
मैक्स वेबर ने तार्किकता को आधुनिक समाज का मुख्य आधार माना जहाँ प्रत्येक कार्य उद्देश्यपूर्ण गणना और दक्षता से संपादित होता है। एमिल दुर्खीम ने सावयवी एकता को विशेषज्ञों की कार्यात्मक अन्योन्याश्रयता के रूप में प्रतिपादित किया। कार्ल मार्क्स ने अतिरिक्त मूल्य को श्रमिक के उस श्रम के रूप में वर्णित किया जिसका लाभ उसे प्राप्त नहीं होता। अंत में, अनौपचारिक संगठन कार्यस्थल पर विद्यमान उन मानवीय संबंधों को दर्शाता है जो किसी लिखित विधिक नियम से संचालित नहीं होते। ये समस्त अवधारणाएँ मिलकर हमें औद्योगिक समाज की आर्थिक, प्रशासनिक और सामाजिक जटिलताओं को गहराई से समझने में सहायता करती हैं।

218. (C) युक्तिकरण (Rationalization)
युक्तिकरण एक ऐसी आधुनिक सामाजिक प्रक्रिया है जिसमें परंपराओं, भावनाओं या अंधविश्वासों के स्थान पर केवल तार्किकता, कार्य दक्षता और परिणामों को सर्वोच्च महत्व प्रदान किया जाता है। आधुनिक समाज में अब हम यह नहीं देखते कि प्राचीन रिवाज क्या है, बल्कि यह देखते हैं कि लक्ष्य प्राप्ति का सर्वाधिक तीव्र और मितव्ययी मार्ग क्या है। यह चिंतन ही आधुनिक विज्ञान और तकनीक का मूल है। मैक्स वेबर के अनुसार, इसी युक्तिकरण ने विश्व को अधिक कुशल तो बनाया है, परंतु इसने मानवीय संबंधों की सहजता और पुराने रहस्यों को समाप्त कर जीवन को यांत्रिक बना दिया है।

219. (D) कथन I गलत है, लेकिन कथन II सही है।
यह कहना पूर्णतः त्रुटिपूर्ण है कि भारतीय उद्योगों में जाति का कोई प्रभाव विद्यमान नहीं है; वास्तविकता यह है कि अनेक बार भर्ती और पदोन्नति में जातीय और क्षेत्रीय पहचान महत्वपूर्ण भूमिका निर्वाह करती है। नातेदारी और सामुदायिक संबंध आज भी कार्यस्थल पर सुरक्षा और सहयोग का एक बड़ा माध्यम हैं। कई बार श्रमिक अपनी ही जाति या क्षेत्र के नियोक्ता के समीप कार्य करना अधिक सुरक्षित अनुभव करते हैं। यह स्थिति स्पष्ट करती है कि भारत का आधुनिक उद्योग आज भी हमारी प्राचीन और गहरी सामाजिक जड़ों से पूर्णतः पृथक नहीं हो पाया है, बल्कि उनके साथ सामंजस्य बिठाकर कार्यरत है।

220. (B) विवाद करने वाले पक्षों के बीच स्वैच्छिक समझौते की सुविधा प्रदान करना।
सुलह की प्रक्रिया में सुलहकर्ता एक सहायक की भूमिका निभाता है। वह विवादित पक्षों के मध्य संवाद का मार्ग खोलकर उनके बीच की कड़वाहट को न्यूनतम करने का प्रयास करता है। उसका कार्य किसी पर अपना निर्णय थोपना नहीं है, बल्कि उन्हें एक ऐसे सामान्य धरातल पर लाना है जहाँ दोनों पक्ष संतुष्ट हों। यह पद्धति औद्योगिक शांति के लिए श्रेष्ठ है क्योंकि इसमें दोनों पक्ष अपनी स्वेच्छा से निर्णय लेते हैं। यह दीर्घकालिक अदालती मुकदमों से मुक्ति दिलाता है और कार्यस्थल पर भविष्य के मधुर संबंधों के लिए एक सुदृढ़ आधार तैयार करता है।

221. (B) औद्योगिक लोकतंत्र
प्रबंधन में श्रमिकों की भागीदारी का तात्पर्य है कि संस्थान का संचालन केवल मालिकों के निर्णय से नहीं, बल्कि श्रमिकों के परामर्श से भी होगा। यह विचार औद्योगिक लोकतंत्र को प्रोत्साहित करता है जहाँ कार्य करने वाले श्रमिकों को भी महत्वपूर्ण सांगठनिक निर्णयों में सम्मिलित किया जाता है। इससे श्रमिकों का मनोबल बढ़ता है और वे स्वयं को संस्थान का अभिन्न अंग समझने लगते हैं। यह व्यवस्था आपसी अविश्वास को समाप्त करती है और कार्यस्थल को अधिक मानवीय, सहयोगात्मक और न्यायपूर्ण बनाने में एक अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह करती है।

222. (C) सामाजिक स्तरीकरण
औद्योगिकीकरण ने समाज को नवीन आर्थिक वर्गों में विभाजित कर दिया है, जिसे समाजशास्त्रीय शब्दावली में सामाजिक स्तरीकरण कहते हैं। एक पक्ष वे समृद्ध उद्योगपति हैं जिनके पास उत्पादन के समस्त साधन हैं, और दूसरा पक्ष वे करोड़ों श्रमिक हैं जो केवल अपने पारिश्रमिक पर निर्भर हैं। इन दोनों के मध्य अब एक विस्तृत मध्यम वर्ग भी विकसित हो चुका है। यह व्यवस्था जाति जैसी प्राचीन जंजीरों को खंडित करने में सहायता तो करती है, परंतु यह आर्थिक आधार पर नवीन सामाजिक विषमता भी उत्पन्न कर देती है। अब व्यक्ति की सामाजिक प्रतिष्ठा उसकी योग्यता, मेहनत और शिक्षा से निर्धारित होती है।

223. (C) भारतीयकरण
भारतीयकरण की बहस इस मांग पर आधारित है कि भारतीय समाज को समझने हेतु हमें केवल पश्चिमी सिद्धांतों पर निर्भर रहने के स्थान पर अपने ऐतिहासिक ग्रंथों, दर्शन और स्थानीय परंपराओं का संबल लेना चाहिए। विद्वानों का मत है कि भारतीय समाज की आत्मा पश्चिमी अवधारणाओं के माध्यम से पूर्णतः नहीं समझी जा सकती। हमें अपनी सामाजिक विसंगतियों का समाधान अपने ही सांस्कृतिक और ऐतिहासिक संदर्भों में खोजना होगा। यह आंदोलन भारतीय समाजशास्त्र को एक नवीन पहचान प्रदान करने और उसे देश की वास्तविकताओं और जनमानस की गहरी जड़ों से जोड़ने का एक सार्थक प्रयास है।

Click Here to Buy book on Amazon

है कि औद्योगिक प्रगति ने समाज को अधिक गतिशील बनाया है जहाँ कठोर परिश्रम के बल पर कोई भी अपनी सामाजिक स्थिति में सकारात्मक सुधार कर सकता है।

257. (B) अलगाव
जब एक श्रमिक कारखाने में स्वयं को केवल 'मशीन का एक निर्जीव अवयव' समझने लगता है, तो वह 'अलगाव' की स्थिति का अनुभव करता है। मार्क्स के अनुसार, यह तब होता है जब कार्य अब मनुष्य की सृजनात्मक अभिव्यक्ति का माध्यम नहीं, बल्कि केवल आजीविका अर्जन का एक विवशकारी साधन बन जाता है। वह जिस उत्पाद का निर्माण करता है, उस पर उसका कोई विधिक अधिकार नहीं होता, जिससे वह अपने श्रम से विमुख होने लगता है। यह मानसिक पीड़ा उसे समाज और स्वयं के वास्तविक स्वरूप से पृथक कर देती है। यह औद्योगिक व्यवस्था का वह कड़वा यथार्थ है जहाँ मनुष्य अपनी विशिष्ट पहचान खो देता है।

258. (B) व्यक्तिगत स्थिति की परवाह किए बिना नियम सभी पर समान रूप से लागू होते हैं।
नौकरशाही की 'निर्वैयक्तिकता' का तात्पर्य है कि कानून और नियम प्रत्येक नागरिक पर समान रूप से लागू होते हैं। एक अधिकारी को अपने पद पर रहते हुए यह सदैव स्मरण रखना चाहिए कि निर्णय केवल विधिक नियमों के आधार पर हों, न कि व्यक्तिगत संबंधों के आधार पर। उसे अपनी निजी पसंद-नापसंद को प्रशासनिक कार्यों से पृथक रखना चाहिए। यह व्यवस्था पक्षपात और भ्रष्टाचार के उन्मूलन हेतु निर्मित की गई है। निर्वैयक्तिकता ही वह मौलिक गुण है जो प्रशासन में निष्पक्षता और जनमानस का विश्वास बनाए रखने में सहायक होता है। इसके बिना कोई भी संगठन अपनी साख सुरक्षित नहीं रख सकता।

259. (B) कि अनौपचारिक सामाजिक संबंध और समूह मानदंड उत्पादकता को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित करते हैं।
हाथोर्न अध्ययनों ने यह वैश्विक स्तर पर सिद्ध किया कि श्रमिक केवल उत्पादन की मशीनें नहीं हैं, वे मनुष्य हैं जिनकी सामाजिक और मनोवैज्ञानिक आवश्यकताएँ महत्वपूर्ण हैं। इन शोधों ने स्पष्ट किया कि जब श्रमिकों के मध्य सौहार्दपूर्ण संबंध होते हैं और उन्हें प्रबंधन से उचित सम्मान प्राप्त होता है, तो उनकी कार्यक्षमता में असाधारण वृद्धि होती है। अनौपचारिक समूह संस्थान की सांगठनिक सफलता में अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। इस महान खोज के उपरांत ही उद्योगों में 'मानव संबंध' दृष्टिकोण को अपनाया गया। अब प्रबंधन केवल तकनीक पर नहीं, बल्कि श्रमिकों के संतोष पर भी ध्यान केंद्रित करता है।

260. (B) संयुक्त प्रबंधन परिषद
संयुक्त प्रबंधन परिषदें कार्यस्थल पर लोकतांत्रिक मूल्यों को स्थापित करने का एक सशक्त माध्यम हैं। इसमें श्रमिक और स्वामी एक साथ बैठकर संस्थान के कल्याण और उत्पादन लक्ष्यों पर विचार-विमर्श करते हैं। यह व्यवस्था श्रमिकों को यह अनुभव कराती है कि वे केवल कर्मचारी नहीं, बल्कि संस्थान के विकास के महत्वपूर्ण अंग हैं। जब श्रमिकों को नीतिगत निर्णय लेने की प्रक्रिया में सम्मिलित किया जाता है, तो वे अधिक उत्साह और सांगठनिक जिम्मेदारी के साथ कार्य करते हैं। यह औद्योगिक शांति बनाए रखने और आपसी अविश्वास को न्यूनतम करने का एक अत्यंत सराहनीय, मानवीय और आधुनिक प्रगतिशील प्रयास है जो दोनों पक्षों के लिए लाभकारी है।

261. (B) केवल 1 और 2
औद्योगिकीकरण ने भारत में ग्रामीण क्षेत्रों से नगरों की ओर वृहत् पलायन को प्रोत्साहित किया है, जिससे नगरीय स्वरूप में आमूलचूल परिवर्तन आया है। इसने हमारे पारंपरिक संयुक्त परिवारों को विखंडित कर एकल परिवारों की ओर अग्रसर किया है। यद्यपि, यह कहना तथ्यात्मक रूप से त्रुटिपूर्ण होगा कि इसके लाभ समाज के प्रत्येक वर्ग को समान रूप से प्राप्त हुए हैं; वास्तविकता यह है कि इससे आर्थिक विषमता और बढ़ी है और केवल कुछ विशिष्ट क्षेत्र ही विकसित हो पाए हैं। अतः क्षेत्रीय और सामाजिक असमानता आज भी औद्योगिकीकरण की एक वृहत् चुनौती बनी हुई है, जिसे दूर करना राष्ट्र का प्रमुख लक्ष्य होना चाहिए।

262. (B) वर्ग संघर्ष
'वर्ग संघर्ष' कार्ल मार्क्स के सामाजिक सिद्धांतों का आधार स्तंभ है। यह उस निरंतर टकराव को व्यक्त करता है जो उत्पादन के साधनों के स्वामियों और केवल शारीरिक श्रम करने वाले श्रमिकों के मध्य होता है। नियोक्ता सदैव अपने आर्थिक लाभ को अधिकतम करना चाहता है, जबकि श्रमिक अपने अधिकारों, न्यायसंगत पारिश्रमिक और बेहतर कार्य दशाओं की मांग करता है। इन दोनों वर्गों के हितों का यह स्थाई विरोध ही समाज में हड़ताल, सांगठनिक आंदोलन और ऐतिहासिक परिवर्तनों का मूल कारण बनता है। मार्क्स का मत था कि यह संघर्ष तब तक समाप्त नहीं होगा जब तक समाज में आर्थिक विषमता का आधार पूर्णतः समाप्त नहीं हो जाता।

263. (A) घरेलू उद्योग संरक्षण के साथ आर्थिक खुलेपन को संतुलित करना।
वैश्वीकरण के वर्तमान दौर में भारत के समक्ष सर्वाधिक गंभीर चुनौती यह है कि वह अपनी अर्थव्यवस्था को वैश्विक प्रतिस्पर्धा के लिए कितना उन्मुक्त करे। यदि हम पूर्णतः विदेशी वस्तुओं हेतु द्वार खोल देते हैं, तो हमारे लघु और स्वदेशी उद्योग अंतरराष्ट्रीय वृहत् कंपनियों के समक्ष टिक नहीं पाएंगे। दूसरी ओर, यदि हम खुलेपन को स्वीकार नहीं करते, तो हम आधुनिक तकनीक और विदेशी निवेश से वंचित रह जाएंगे। अतः स्वदेशी उद्योगों की सुरक्षा सुनिश्चित करना और साथ ही वैश्विक बाजार का सक्रिय हिस्सा बने रहना एक अत्यंत नाजुक और कठिन नीतिगत संतुलन है जिसे अत्यंत सूझबूझ से संभालना अनिवार्य है।

264. (C) संरचनात्मक दक्षता और उन्नत बाजार-आधारित प्रतिस्पर्धा।
निजीकरण के समर्थकों का यह तर्क है कि जब शिक्षा या अन्य महत्वपूर्ण सेवाएँ निजी क्षेत्र के अधीन होती हैं, तो वहाँ प्रतिस्पर्धा में वृद्धि होती है। उत्कृष्ट सेवाएँ प्रदान करने की इस होड़ में गुणवत्ता में सुधार होता है और लालफीताशाही का प्रभाव कम होता है। निजी क्षेत्र आधुनिक तकनीक और

NODIA

में यह कहना त्रुटिपूर्ण होगा कि संपूर्ण ढांचा परिवर्तित हो गया है। भारतीय परिवार आज भी संयुक्त और एकल परिवार का एक मिश्रित स्वरूप हैं। अतः शहरीकरण और नवीन वर्ग संरचना औद्योगिकीकरण के दो सर्वाधिक महत्वपूर्ण और स्थाई सामाजिक प्रभाव हैं जो आधुनिक भारत को परिभाषित कर रहे हैं।

233. (B) पारंपरिक जाति पहचानों का परस्पर व्याप्त होना और उनकी निरंतरता।
भारत में वर्ग संघर्ष केवल आर्थिक संघर्ष नहीं है, यह प्रायः जाति की जटिल राजनीति से भी संबद्ध होता है। अनेक बार श्रमिक अपनी जातीय पहचान के आधार पर विभाजित हो जाते हैं, जिससे उनकी सांगठनिक एकता निर्बल होती है। इसी प्रकार, कुछ विशिष्ट जातियों का ही उद्योगों और पूँजीगत संसाधनों पर वर्चस्व देखा जाता है। यह स्थिति वर्ग संघर्ष को और अधिक पेचीदा बना देती है। जब तक जाति और वर्ग का यह अंतर्संबंध विद्यमान रहेगा, तब तक भारत में श्रमिकों के अधिकारों के लिए एक शुद्ध आर्थिक संघर्ष संचालित करना सदैव एक बड़ी चुनौती और जटिल सामाजिक प्रक्रिया रहेगी।

234. (B) अधिक निवेश ला सकता है और अधिक विविध संस्थागत विकल्प प्रदान कर सकता है।
शिक्षा के निजीकरण के समर्थन में यह तर्क दिया जाता है कि इससे नवीन विषयों और उन्नत तकनीक से युक्त संस्थानों की स्थापना होती है। सरकारी वित्तीय संसाधनों पर बोझ कम होता है और शिक्षा के क्षेत्र में स्वस्थ प्रतिस्पर्धा बढ़ती है जिससे गुणवत्ता में सुधार की संभावना रहती है। अंतरराष्ट्रीय विश्वविद्यालय भी भारत आने के लिए प्रोत्साहित होते हैं। इससे छात्रों के समक्ष चयन हेतु अनेक विकल्प उपलब्ध होते हैं। यद्यपि यह व्यवस्था महंगी हो सकती है, परंतु यह उन छात्रों के लिए उत्कृष्ट अवसर प्रदान करती है जो वैश्विक स्तर की शिक्षा और आधुनिक करियर की खोज में हैं।

235. (B) भारतीय सामाजिक वास्तविकता का प्रासंगिक रूपरेखा समाजशास्त्रीय विश्लेषण।
समाजशास्त्र का भारतीयकरण इस विचार का समर्थन करता है कि हमें भारतीय समाज के विश्लेषण हेतु अपनी सांस्कृतिक पृष्ठभूमि से विकसित सिद्धांतों का उपयोग करना चाहिए। पश्चिमी अवधारणाएँ हमारी जाति व्यवस्था, धर्म और संयुक्त परिवार की सूक्ष्मताओं को पूर्णतः समझाने में सक्षम नहीं हैं। यह आंदोलन समाजशास्त्र को भारत के लिए अधिक व्यावहारिक और सार्थक बनाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। इसका मुख्य उद्देश्य एक ऐसा ज्ञानतंत्र विकसित करना है जो भारतीय जनजीवन के वास्तविक अनुभवों और उसकी सांस्कृतिक विशिष्टताओं को पूर्ण निष्पक्षता से प्रतिबिंबित कर सके।

236. (C) विज्ञान और प्रौद्योगिकी नीति
भारत की विज्ञान और प्रौद्योगिकी नीति का एक सर्वोपरि लक्ष्य तकनीकी आत्मनिर्भरता सुनिश्चित करना है। सरकार स्वदेशी नवाचारों को प्रोत्साहित करती है ताकि संवेदनशील क्षेत्रों में अन्य राष्ट्रों पर हमारी निर्भरता न्यूनतम हो सके। इससे न केवल आर्थिक संसाधनों की बचत होती है बल्कि राष्ट्रीय सुरक्षा और वैश्विक प्रतिष्ठा भी सुदृढ़ होती है। अपनी विशिष्ट तकनीक विकसित करके हम अपनी स्थानीय समस्याओं, जैसे कृषि सुधार और स्वास्थ्य सेवाओं का अधिक प्रभावी समाधान निकाल सकते हैं। यह नीति भारत को वैश्विक मंच पर एक सशक्त और अग्रणी राष्ट्र बनाने की दिशा में एक ठोस कदम है।

237. (B) आधुनिक समाज में सामाजिक एकजुटता
एमिल दुर्खीम का मत था कि श्रम विभाजन केवल आर्थिक कार्यों का बँटवारा नहीं है, बल्कि यह समाज को नवीन ढंग से सूत्रबद्ध करने की एक प्रक्रिया है। आधुनिक समाज में व्यक्ति इतने विशिष्ट हो जाते हैं कि वे अपने प्रत्येक कार्य हेतु अन्य सदस्यों पर निर्भर रहने लगते हैं। इसी कार्यात्मक अन्योन्याश्रयता से 'सावयवी एकता' का प्रादुर्भाव होता है। यह एकता समाज को सांगठनिक स्थिरता प्रदान करती है और व्यक्तियों को आपसी सहयोग हेतु प्रेरित करती है। दुर्खीम के अनुसार, यही जटिल श्रम विभाजन आधुनिक औद्योगिक समाज की अखंडता और उसके सुचारू संचालन का मुख्य तार्किक आधार है।

238. (A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
किसी भी औद्योगिक संस्थान की कार्यप्रणाली वहाँ के सामाजिक परिवेश से पूर्णतः विमुख नहीं रह सकती। भारत में जाति, नातेदारी और क्षेत्रीय संबंध अक्सर औपचारिक विधिक नियमों पर प्रभावी हो जाते हैं। नियोक्ता भर्ती और पदोन्नति में प्रायः अपने ही समुदाय के व्यक्तियों को वरीयता देते हैं, जिससे कार्यस्थल पर अनौपचारिक नेटवर्क निर्मित हो जाते हैं। यह स्थिति स्पष्ट करती है कि समाज की प्राचीन संरचना आधुनिक उद्योग के भीतर भी अपनी गहरी पैठ बनाए हुए है। अतः औद्योगिक तार्किकता और पारंपरिक सामाजिक मूल्यों के मध्य एक निरंतर और जटिल अंतःक्रिया चलती रहती है जो सांगठनिक व्यवहार को प्रभावित करती है।

239. (C) सुलह - अनिवार्य निर्णय
सुलह की प्रक्रिया में सुलहकर्ता केवल विवाद समाधान में सहायता प्रदान करता है, उसका कोई भी निर्णय विवादित पक्षों पर विधिक रूप से अनिवार्य नहीं होता। यह एक स्वैच्छिक और परामर्शात्मक प्रक्रिया है। इसके विपरीत, अधिनिर्णय में श्रम न्यायालय द्वारा दिया गया फैसला कानूनी रूप से बाध्यकारी होता है। यहाँ 'सुलह' के साथ 'अनिवार्य निर्णय' का मेल पूर्णतः त्रुटिपूर्ण है। अन्य विकल्प सही सुमेलित हैं क्योंकि सामूहिक सौदेबाजी संवाद पर आधारित है और संयुक्त प्रबंधन परिषद श्रमिकों की सांगठनिक भागीदारी को प्रोत्साहित करती है। अतः इन तंत्रों की भिन्न प्रकृति को समझना अनिवार्य है।

240. (C) स्थायी, आजीवन नियोजन की ओर वैश्विक वापसी
वर्तमान युग में जीवन भर एक ही आजीविका में बने रहने की पारंपरिक परिपाटी अत्यंत तीव्रता से समाप्त हो रही है। अब 'गिग इकोनॉमी' और अल्पकालिक संविदात्मक कार्यों का चलन निरंतर बढ़ रहा है जहाँ व्यक्ति अपनी स्वेच्छा से और विशिष्ट समझौतों पर कार्य करते हैं। इसके साथ ही तकनीकी परिवर्तनों के कारण अब निरंतर नवीन कौशल सीखने की आवश्यकता बढ़ गई है। कार्यबल अब पूर्व की तुलना में अधिक गतिशील और लचीला हो गया है। स्थाई नियोजन का अभाव और बढ़ती

Downloaded from www.pdf.tube

पहचान से बाहर निकलकर शिक्षा और कौशल के बल पर प्रगति करने का स्वर्णिम अवसर प्रदान किया है। अब व्यक्ति की सामाजिक प्रस्थिति जन्म के स्थान पर उसकी उपलब्धि, विशेषज्ञता और आय से निर्धारित होती है। यद्यपि इससे नवीन आर्थिक विषमताएँ भी उत्पन्न हुई हैं, परंतु इसने समाज को पूर्व की तुलना में अधिक गतिशील और प्रतिस्पर्धी बना दिया है। सामाजिक स्तरीकरण का यह नवीन स्वरूप आधुनिक भारत की बदलती आकांक्षाओं और उसके विकसित होते सामाजिक ढांचे को अत्यंत स्पष्ट और प्रभावी ढंग से प्रस्तुत करता है।

273. (C) औद्योगिकीकरण प्रक्रिया
भारत में औद्योगिकीकरण की प्रक्रिया का सर्वाधिक गंभीर नकारात्मक पक्ष क्षेत्रीय असंतुलन रहा है। जहाँ महाराष्ट्र और गुजरात जैसे तटीय राज्य तीव्र गति से औद्योगिक विकास की ओर अग्रसर हुए, वहीं मध्य और पूर्वी भारत के अनेक क्षेत्र इस दौड़ में पिछड़ गए। इस विसंगति के कारण पिछड़े क्षेत्रों से बड़े महानगरों की ओर वृहत् जनसंख्या का पलायन होता है, जिससे नगरों पर अत्यधिक दबाव बढ़ता है और सामाजिक तनाव उत्पन्न होता है। राष्ट्र का सर्वांगीण विकास तभी संभव है जब उद्योगों को पिछड़े और ग्रामीण अंचलों में भी समान रूप से प्रोत्साहित किया जाए। क्षेत्रीय असंतुलन आज भी राष्ट्र की प्रगति की एक बड़ी सीमा बना हुआ है।

274. (A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
वैश्वीकरण ने भारतीय कंपनियों हेतु वैश्विक बाजारों के द्वार खोल दिए हैं, परंतु इसके साथ ही अत्यंत कड़ी अंतरराष्ट्रीय प्रतिस्पर्धा भी आई है। जब विदेशी कंपनियाँ आधुनिक तकनीक और किफायती उत्पाद लेकर आती हैं, तो घरेलू उद्योगों को भी अपनी कार्यक्षमता, गुणवत्ता और तकनीक में सुधार हेतु विवश होना पड़ता है। जो संस्थान समय की मांग के अनुरूप स्वयं को रूपांतरित नहीं करते, वे प्रतिस्पर्धा में पिछड़ जाते हैं। अतः वैश्वीकरण ने भारतीय उद्योगों को अधिक कुशल, आधुनिक और सामर्थ्यवान बनाने की एक अनिवार्य चुनौती प्रस्तुत की है, जो अंततः राष्ट्र की आर्थिक सुदृढ़ता हेतु एक आवश्यक प्रक्रिया है।

275. (C) पश्चिमी सैद्धांतिक मॉडलों और तर्क का बिना सोचे-समझे उपयोग।
समाजशास्त्र के भारतीयकरण का आंदोलन इस प्रवृत्ति की आलोचना करता है कि हम पश्चिमी विद्वानों द्वारा विकसित सिद्धांतों को बिना किसी तार्किक परिवर्तन के भारतीय समाज पर आरोपित कर देते हैं। भारतीय समाज की जड़ें जाति व्यवस्था, संयुक्त परिवार और विशिष्ट धार्मिक मूल्यों में निहित हैं, जिन्हें समझने हेतु हमें अपनी सांस्कृतिक पृष्ठभूमि के अनुकूल नवीन अवधारणाओं की आवश्यकता है। यह आंदोलन बौद्धिक परतंत्रता का त्याग कर शैक्षणिक आत्मनिर्भरता की ओर बढ़ने का एक साहसिक प्रयास है। इसका ध्येय एक ऐसा समाजशास्त्र विकसित करना है जो भारत की सामाजिक वास्तविकता को उसकी संपूर्ण गहराई और ऐतिहासिक संदर्भ में देख सके।

276. (C) कार्ल मार्क्स
'अतिरिक्त मूल्य' की अवधारणा कार्ल मार्क्स के सामाजिक एवं आर्थिक विश्लेषण का सर्वाधिक महत्वपूर्ण अंग है। उन्होंने यह तार्किक रूप से स्पष्ट किया कि किस प्रकार पूंजीपति श्रमिक की मेहनत से उत्पादित समस्त अधिशेष को अपने निजी लाभ के रूप में सुरक्षित रख लेते हैं और श्रमिक को केवल जीवित रहने हेतु न्यूनतम पारिश्रमिक प्रदान करते हैं। यही वह आर्थिक तंत्र है जिससे पूंजीवादी व्यवस्था में अमीर और गरीब के मध्य की खाई निरंतर विस्तृत होती जाती है। मार्क्स का यह सिद्धांत न केवल आर्थिक लाभ की व्याख्या करता है, बल्कि यह उत्पादन की प्रक्रिया में अंतर्निहित शोषण और अन्याय को भी विश्व के समक्ष अत्यंत प्रभावी ढंग से उजागर करता है।

277. (D) युक्तिकरण (Rationalization)
युक्तिकरण एक ऐसी आधुनिक सांगठनिक प्रक्रिया है जिसमें प्राचीन परंपराओं और भावनाओं के स्थान पर केवल कार्य दक्षता, तार्किक गणना और वैज्ञानिक तर्क को सर्वोच्च महत्व दिया जाता है। मैक्स वेबर के अनुसार, आधुनिकीकरण के फलस्वरूप हमारा संपूर्ण जनजीवन अब विधिक नियमों और मशीनी सटीकता से संचालित होने लगा है। अब हम घटनाओं की जादुई या अलौकिक व्याख्याओं के स्थान पर केवल वैज्ञानिक और तार्किक कारणों की खोज करते हैं। यद्यपि इससे कार्यों में सांगठनिक कुशलता और पूर्वानुमेयता बढ़ी है, परंतु इसने मानवीय संबंधों की स्वाभाविकता को कम करके जीवन को यांत्रिक बना दिया है, जिसे वेबर ने आधुनिक समाज का एक गंभीर संकट माना था।

278. (B) कर्मचारियों का एक समूह जो प्रत्येक सप्ताहांत एक साथ क्रिकेट खेलता है।
अनौपचारिक संगठन का सर्वश्रेष्ठ उदाहरण वे सामाजिक मित्रता समूह हैं जो कर्मचारी अपनी स्वेच्छा से कार्यस्थल के भीतर या बाहर निर्मित करते हैं। यह समूह किसी कंपनी के आधिकारिक नियम या निर्देश से निर्मित नहीं होता, बल्कि यह साझा रुचियों और आपसी भरोसे पर आधारित होता है। यह संगठन कर्मचारियों को मानसिक शांति प्रदान करता है और सांगठनिक तनाव को कम करने में सहायक होता है। यद्यपि यह आधिकारिक सांगठनिक चार्ट का हिस्सा नहीं है, परंतु प्रबंधन हेतु इसकी उपेक्षा करना त्रुटिपूर्ण होगा क्योंकि यह श्रमिकों के मनोबल और उनकी सामूहिक सामाजिक एकता का वास्तविक मानवीय आधार होता है।

279. (C) कथन I सही है, लेकिन कथन II गलत है।
औद्योगिक विवादों के समाधान में 'मध्यस्थता' एक विधिक प्रक्रिया है जहाँ दोनों पक्ष आपसी सहमति से नियुक्त मध्यस्थ का निर्णय स्वीकार करने हेतु विधिक रूप से वचनबद्ध होते हैं। इसके विपरीत, 'सुलह' का उत्तरदायित्व केवल विवादित पक्षों के मध्य संवाद को सुगम बनाना है, सुलहकर्ता अपना निर्णय किसी पक्ष पर आरोपित नहीं कर सकता। उसकी भूमिका केवल एक सहायक की होती है। यहाँ द्वितीय कथन में सुलह की विधिक प्रकृति को त्रुटिपूर्ण बताया गया है। अतः विवाद समाधान के इन दोनों तंत्रों—एक बाध्यकारी और दूसरा परामर्शात्मक—के मध्य के सूक्ष्म अंतर को समझना औद्योगिक शांति हेतु अत्यंत अनिवार्य और महत्वपूर्ण है।

NODIA

(D) इसने विमर्श में पर्यावरणीय और अंतर-पीढ़ीगत चिंताओं को प्रस्तुत किया।

47. सूची I को सूची II के साथ सुमेलित कीजिए।
सूची I: (विकास का पथ)
P. आधुनिकीकरण
Q. वैश्वीकरण
R. पश्चिमीकरण
S. उत्तर-आधुनिकीकरण
सूची II: (प्रमुख विशेषता)
1. पश्चिमी जीवन शैली और मूल्यों को अपनाना
2. जीवन की गुणवत्ता और आत्म-अभिव्यक्ति पर बल
3. 'पारंपरिक' से 'आधुनिक' समाज में संक्रमण
4. बढ़ी हुई वैश्विक परस्पर संबद्धता और प्रवाह
(A) P-3, Q-4, R-1, S-2
(B) P-1, Q-2, R-3, S-4
(C) P-3, Q-1, R-4, S-2
(D) P-4, Q-3, R-2, S-1

48. एक विकास कार्यक्रम जो नागरिक समाज संगठनों को सुदृढ़ करने, सामुदायिक भागीदारी को बढ़ावा देने और हाशिए पर रहने वाले समूहों के लिए न्याय सुनिश्चित करने पर केंद्रित है, उसे सबसे अच्छी तरह वर्णित किया जा सकता है:
(A) आर्थिक संवृद्धि-केंद्रित
(B) सामाजिक विकास
(C) विशुद्ध रूप से वेबरवादी
(D) पश्चिमीकरण का एक रूप

49. सही युग्म की पहचान करें।
(A) मैक्स वेबर : संचयी कारणता
(B) आधुनिकीकरण : एकरेखीय विकास
(C) गुन्नार मिर्डल : प्रोटेस्टेंट नैतिकता
(D) सतत विकास : सांस्कृतिक समरूपीकरण

50. नीचे दो कथन दिए गए हैं: एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है।
अभिकथन (A): विकास की प्रक्रिया हमेशा सुचारु या एकसमान नहीं होती है।
कारण (R): सामाजिक संरचनाएं महत्वपूर्ण बाधाओं के रूप में कार्य कर सकती हैं, और विकास स्वयं सामाजिक-आर्थिक विषमताओं को उत्पन्न कर सकता है।
(A) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सत्य हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सत्य है लेकिन R असत्य है।
(D) A असत्य है लेकिन R सत्य है।

51. जब संस्कृति को विकास में 'सहायक' के रूप में देखा जाता है, तो इसका तात्पर्य है:
(A) सांस्कृतिक प्रथाएं जो सीधे राजस्व उत्पन्न करती हैं, जैसे पर्यटन।
(B) स्थानीय संस्कृति को विदेशी संस्कृति से प्रतिस्थापित करने की प्रक्रिया।
(C) विश्वास और सहयोग जैसे मूल्य और मानदंड, जो आर्थिक लेनदेन और सामाजिक स्थिरता को सुगम बनाते हैं।
(D) विकास परियोजनाओं के विरुद्ध राजनीतिक विरोध के रूप में संस्कृति का उपयोग।

52. निम्नलिखित में से कौन सा कथन वैश्वीकरण की अवधारणा का गलत प्रतिनिधित्व करता है?
(A) यह सीमाओं के पार वस्तुओं, सेवाओं और पूंजी के प्रवाह को बढ़ाता है।
(B) यह विचारों और प्रौद्योगिकियों के तीव्र प्रसार की सुविधा प्रदान कर सकता है।
(C) यह बहुराष्ट्रीय निगमों के उदय से जुड़ा हुआ है।
(D) यह अपनी अर्थव्यवस्था पर राष्ट्र-राज्य के नियंत्रण को सुदृढ़ करने की ओर ले जाता है।

53. विकास के संदर्भ में 'सामाजिक-आर्थिक विषमताओं' की अवधारणा का तात्पर्य है:
(A) व्यक्तियों के बीच प्रतिभा और क्षमताओं में प्राकृतिक अंतर।
(B) विभिन्न संस्कृतियों के बीच बढ़ती समानता।
(C) समाज के भीतर धन, आय, अवसरों और शक्ति का असमान वितरण।
(D) किसी देश की आर्थिक क्षमता और उसके वास्तविक प्रदर्शन के बीच का अंतर।

54. गुन्नार मिर्डल के विश्लेषण में, एक राज्य जो नियमों को लागू करने में असमर्थ या अनिच्छुक है, विशेष रूप से शक्तिशाली समूहों के विरुद्ध, उसे कहा जाता है:
(A) कठोर राज्य
(B) मृदु राज्य
(C) कल्याणकारी राज्य
(D) आधुनिक राज्य

55. मैक्स वेबर के सिद्धांत के परिप्रेक्ष्य से, निम्नलिखित में से किसे आधुनिक पूंजीवाद के विकास में सांस्कृतिक बाधा माना जाएगा?
(A) एक विश्वास प्रणाली जो तर्कसंगत गणना और निवेश को प्रोत्साहित करती है।
(B) एक ऐसी नैतिकता जो कठिन परिश्रम को एक ईश्वरीय कार्य के रूप में महत्व देती है।
(C) एक कानूनी प्रणाली जो निजी उद्यम का समर्थन करती है।
(D) उत्सवों और समारोहों पर बचत करने के बजाय उदारतापूर्वक व्यय करने का सामाजिक मानदंड।

56. औद्योगिक उत्पादन पर केंद्रित समाज से सूचना और सेवाओं पर केंद्रित समाज में संक्रमण, जीवन की गुणवत्ता की ओर मूल्यों में बदलाव के साथ, किसकी विशेषता है?
(A) उत्तर-आधुनिकीकरण
(B) प्रारंभिक आधुनिकीकरण

Click Here to Buy book on Amazon

सांगठनिक दक्षता, निष्पक्षता और पूर्वानुमेयता स्थापित करना है ताकि किसी की निजी स्वेच्छाचारिता प्रभावी न हो। यह संरचना ही वृहत् जनमानस के कार्यों को नियंत्रित और निर्देशित करने का सर्वाधिक आधुनिक और अनिवार्य प्रशासनिक माध्यम मानी जाती है।

288. (B) उत्पाद श्रमिक का नहीं बल्कि पूंजीपति का है।
कार्ल मार्क्स के अनुसार पूंजीवाद के अंतर्गत श्रमिक जिस वस्तु को अपने कठोर श्रम से निर्मित करता है, उस पर उसका कोई विधिक या आर्थिक स्वामित्व नहीं होता। उत्पाद पूर्ण होते ही वह तत्काल नियोक्ता की निजी संपत्ति बन जाता है जिसे वह बाजार में आर्थिक लाभ हेतु बेचता है। श्रमिक को केवल उसका पारिश्रमिक प्राप्त होता है, जो प्रायः उसके द्वारा सृजित वास्तविक मूल्य से बहुत कम होता है। यह स्थिति श्रमिक को उसके श्रम के सार्थक प्रतिफल से पूर्णतः पृथक कर देती है। यही 'उत्पाद से अलगाव' है जो मनुष्य को उसकी अपनी रचनात्मकता और मेहनत के परिणामों से एक विवश पराया बना देता है।

289. (B) केवल 1 और 2
किसी भी औद्योगिक संस्थान का औपचारिक संगठन उसके आधिकारिक विधिक चार्ट और नियमों से निर्धारित होता है। इसके समानांतर, कर्मचारियों के आपसी संवाद और व्यक्तिगत सामाजिक संबंधों से एक अनौपचारिक संगठन भी स्वतः निर्मित हो जाता है जो उनकी सामाजिक और मनोवैज्ञानिक आवश्यकताओं की पूर्ति करता है। यह कहना त्रुटिपूर्ण है कि ये दोनों सदैव संघर्षरत रहते हैं; वास्तव में, एक सफल प्रबंधन वही है जो इन दोनों के मध्य श्रेष्ठ सामंजस्य स्थापित करता है। जहाँ औपचारिक ढांचा अनुशासन और उत्पादन लक्ष्य सुनिश्चित करता है, वहीं अनौपचारिक ढांचा श्रमिकों को भावनात्मक संबल प्रदान कर कार्यस्थल को अधिक मानवीय और सुखद बनाने में सहायता करता है।

290. (A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
वैश्वीकरण और उन्नत तकनीक के प्रादुर्भाव से औद्योगिक संबंधों की पारंपरिक परिभाषा पूर्णतः परिवर्तित हो गई है। अब संस्थान समस्त कार्य एक ही स्थान पर करने के बजाय उन्हें बाह्य स्रोतों को सौंपते हैं (आउटसोर्सिंग) और मशीनीकरण का व्यापक प्रयोग करते हैं। इससे श्रमिकों की आजीविका की सुरक्षा पर संकट बढ़ा है और श्रम एवं प्रबंधन के मध्य नवीन सांगठनिक तनाव उत्पन्न हुए हैं। अब केवल वेतन ही मुख्य मुद्दा नहीं है, बल्कि निरंतर कौशल संवर्धन और भविष्य की आर्थिक अनिश्चितता भी वृहत् चुनौतियां हैं। औद्योगिक संबंधों की यह बढ़ती जटिलता स्पष्ट करती है कि हमें अब और अधिक लचीली, मानवीय और आधुनिक प्रगतिशील श्रम नीतियों की अनिवार्य आवश्यकता है।

291. (B) P-2, Q-1, R-4, S-3
औद्योगिक समाज में 'श्रम विभाजन' का तात्पर्य कार्यों का अत्यधिक विशिष्टीकरण है जहाँ प्रत्येक व्यक्ति एक विशिष्ट कार्य में विशेषज्ञ होता है। 'वर्ग संघर्ष' पूंजीपति और श्रमिक के मध्य के स्थाई और अंतर्निहित आर्थिक विरोध को प्रदर्शित करता है। 'निजीकरण' वह आर्थिक प्रक्रिया है जिसमें सार्वजनिक उपक्रमों को निजी स्वामियों को हस्तांतरित कर दिया जाता है। 'संयुक्त प्रबंधन परिषदें' श्रमिकों को संस्थान के नीतिगत निर्णयों में सहभागी बनाकर उन्हें संस्थान का सक्रिय सदस्य बनाती हैं। ये समस्त अवधारणाएँ मिलकर हमें औद्योगिक जगत की आर्थिक संरचना, वहाँ होने वाले संघर्षों और सांगठनिक सुधार के प्रयासों को गहराई से समझने में महत्वपूर्ण सहायता प्रदान करती हैं।

292. (C) परिवार
औद्योगिकीकरण का सर्वाधिक गहरा और व्यापक प्रभाव हमारे परिवार के संरचनात्मक ढांचे पर पड़ा है। ग्रामीण क्षेत्रों से नगरों की ओर होने वाले वृहत् पलायन के कारण व्यक्ति अपने विस्तारित परिवारों से पृथक होकर लघु आवासों में रहने लगे हैं। नगरों के तीव्र जीवन और आर्थिक दबावों के कारण अब माता-पिता और बच्चों तक सीमित 'एकल परिवारों' का प्रचलन निरंतर बढ़ रहा है। यद्यपि इससे व्यक्तिगत स्वतंत्रता में वृद्धि हुई है, परंतु बच्चों के उचित समाजीकरण और वृद्धों की देखभाल हेतु मिलने वाला पारिवारिक संबल क्षीण हुआ है। यह बदलाव दर्शाता है कि आर्थिक प्रणालियों में होने वाले परिवर्तन हमारे सबसे निजी और महत्वपूर्ण सामाजिक संस्थानों को भी मौलिक रुप से रूपांतरित कर देते हैं।

293. (B) क्षेत्रीय असंतुलन
भारत के औद्योगिक विकास की एक कड़वी सामाजिक वास्तविकता यह है कि यह केवल कुछ विशिष्ट भौगोलिक क्षेत्रों तक ही सीमित रहा है। जहाँ महाराष्ट्र, गुजरात और दक्षिण के राज्यों में उद्योगों का सघन जाल विद्यमान है, वहीं राष्ट्र के अनेक अन्य हिस्से आज भी औद्योगिक दृष्टि से अत्यंत पिछड़े हुए हैं। इसी विसंगति को 'क्षेत्रीय असंतुलन' कहा जाता है। इसके फलस्वरूप पिछड़े क्षेत्रों की जनता को अपना गृह त्यागकर सुदूर नगरों में आजीविका हेतु भटकना पड़ता है। राष्ट्र की प्रगति तभी सार्थक मानी जाएगी जब विकास का यह लाभ प्रत्येक राज्य और प्रत्येक जनपद तक समान रुप से पहुँचे और सबको अपनी ही भूमि पर रोजगार के गरिमापूर्ण अवसर प्राप्त हो सकें।

294. (B) ज्ञानमीमांसा (Epistemology) और प्रासंगिकता
समाजशास्त्र के भारतीयकरण पर केंद्रित बहस इस मौलिक प्रश्न पर आधारित है कि हम समाज का बोध कैसे प्राप्त करते हैं और हमारे सिद्धांत कितने यथार्थवादी हैं। भारतीय विद्वानों का तर्क है कि पश्चिमी देशों में विकसित अवधारणाएँ भारत की जाति व्यवस्था, विशिष्ट धर्मों और यहाँ के ग्रामीण जीवन की सूक्ष्मताओं को गहराई से समझाने में सक्षम नहीं हैं। यह बहस केवल शब्दावली की नहीं है, बल्कि यह ज्ञान के सही और प्रासंगिक परिप्रेक्ष्य की है। इसका ध्येय एक ऐसा समाजशास्त्र विकसित करना है जो भारतीय सामाजिक वास्तविकता के प्रति पूर्णतः निष्ठावान, प्रासंगिक और वैज्ञानिक रुप से सुदृढ़ हो ताकि हम अपनी समस्याओं का उन्हीं के विशिष्ट संदर्भ में स्थाई समाधान खोज सकें।

Downloaded from www.pdf.tube

280. (B) श्रमिकों के सामूहिक हितों का प्रतिनिधित्व करना।
श्रमिक संघ का प्राथमिक और सर्वाधिक महत्वपूर्ण कार्य अपने सदस्य श्रमिकों की आवाज को प्रबंधन तक पहुँचाना और उनके विधिक अधिकारों की रक्षा करना है। एक अकेला श्रमिक नियोक्ता के सम्मुख निर्बल हो सकता है, परंतु संघ के माध्यम से वह अपनी न्यायसंगत मांगों को सुदृढ़ता से प्रस्तुत कर सकता है। श्रमिक संघों का ध्येय केवल पारिश्रमिक बढ़ाना नहीं, बल्कि कार्यस्थल पर सुरक्षा, मानवीय सम्मान और न्याय सुनिश्चित करना भी है। यह औद्योगिक लोकतंत्र का एक अनिवार्य अंग है जो श्रमिकों को संगठित शक्ति प्रदान करता है और उन्हें संस्थान का एक सक्रिय, सम्मानित और उत्तरदायी सहभागी बनाने का कार्य करता है।

281. (B) उच्च तकनीकी कौशल और अनुकूलन क्षमता वाले श्रमिक।
जैसे-जैसे आधुनिक उद्योगों में उन्नत तकनीक और स्वचालन का प्रभाव निरंतर बढ़ रहा है, वैसे-वैसे केवल शारीरिक श्रम करने वाले अकुशल श्रमिकों की मांग में गिरावट आ रही है। अब संस्थानों को ऐसे कार्यबल की आवश्यकता है जो संगणक, आधुनिक सॉफ्टवेयर और जटिल मशीनों के संचालन में दक्ष हों और नवीन तकनीकी प्रणालियों के साथ स्वयं को त्वरित गति से ढाल सकें। इस बदलाव ने 'श्रम के बदलते स्वरूप' को जन्म दिया है जहाँ निरंतर सीखना और कौशल संवर्धन अब आजीविका की सुरक्षा हेतु अनिवार्य हो गया है। तकनीकी विशेषज्ञता ही अब आधुनिक औद्योगिक श्रमिक की वास्तविक शक्ति और उसकी सफलता की मुख्य पहचान बन गई है।

282. (B) आर्थिक मानदंडों पर आधारित वर्ग संरचना।
औद्योगिकीकरण ने समाज के पारंपरिक ढांचे को परिवर्तित कर सामाजिक स्तरीकरण के नवीन प्रतिमान विकसित किए हैं। अब व्यक्ति की सामाजिक प्रतिष्ठा उसकी जाति या कुल के स्थान पर उसकी आय, संचित संपत्ति और व्यावसायिक पद से निर्धारित होती है। इस नवीन व्यवस्था ने एक गतिशील मध्यम वर्ग और एक वृहत् श्रमिक वर्ग को जन्म दिया है। यहाँ शिक्षा, विशेषज्ञता और व्यक्तिगत योग्यता ही सामाजिक सोपान पर प्रगति का मुख्य मार्ग हैं। वर्ग व्यवस्था समाज को अधिक प्रतिस्पर्धी और उपलब्धि-आधारित बनाती है जहाँ जन्म के स्थान पर कठोर परिश्रम को वरीयता प्राप्त होती है। यह आधुनिक समाज की एक विशिष्ट पहचान है।

283. (B) कुछ अवधियों में 'नियोजनहीन विकास' का मुद्दा।
भारत की औद्योगिक प्रगति के सम्मुख एक वृहत् चुनौती यह रही है कि उत्पादन में तो संतोषजनक वृद्धि हुई है, परंतु रोजगार के अवसर उस अनुपात में सृजित नहीं हो पाए हैं। इसे समाजशास्त्रीय शब्दावली में 'रोजगारविहीन विकास' कहा जाता है। आधुनिक मशीनों और स्वचालित तकनीक के अत्यधिक प्रयोग के कारण तुलनात्मक रूप से कम श्रमिकों की आवश्यकता होती है, जिससे बेरोजगारी की गंभीर समस्या पूर्णतः हल नहीं हो पा रही है। राष्ट्र की विशाल युवा जनसंख्या को देखते हुए यह एक गंभीर आर्थिक संकट है। अतः भविष्य में ऐसी श्रम-प्रधान नीतियों की आवश्यकता है जो उद्योगों को आधुनिक बनाने के साथ-साथ वृहत् स्तर पर रोजगार भी सृजित कर सकें।

284. (B) वैश्विक संदर्भ में स्थानीय वास्तविकताओं के पुनर्मूल्यांकन के लिए बाध्य करना।
वैश्वीकरण ने संपूर्ण विश्व को एक सूत्र में आबद्ध कर दिया है, जिससे भारतीय समाजशास्त्रियों को भी अपने पारंपरिक सिद्धांतों को नवीन परिप्रेक्ष्य में देखने का अवसर प्राप्त हुआ है। अब हमें यह विश्लेषण करना होगा कि वैश्विक प्रवृत्तियाँ हमारे ग्रामीण समाज, परिवार और जातिगत ढांचे को किस प्रकार रूपांतरित कर रही हैं। यह केवल बाह्य विचारों को स्वीकार करने का विषय नहीं है, बल्कि अपनी विशिष्ट पहचान को वैश्विक मंच पर तार्किक ढंग से प्रस्तुत करने की चुनौती भी है। वैश्वीकरण ने समाजशास्त्र को और अधिक प्रासंगिक बना दिया है जहाँ स्थानीय और वैश्विक वास्तविकताओं के मध्य का अटूट संबंध अब शोध का मुख्य केंद्र बन गया है।

285. (A) वैज्ञानिक सोच और नवाचार की संस्कृति।
भारत की विज्ञान और प्रौद्योगिकी नीति का सर्वोच्च लक्ष्य राष्ट्र में वैज्ञानिक चेतना और तार्किक सोच विकसित करना है। सरकार का यह ध्येय है कि युवा पीढ़ी केवल किताबी ज्ञान तक सीमित न रहे, बल्कि उनमें नवीन शोध करने और जिज्ञासाओं के वैज्ञानिक समाधान खोजने का साहस विकसित हो। नवाचार की संस्कृति ही भारत को वैश्विक महाशक्ति बना सकती है। जब समाज में विज्ञान को उचित सम्मान प्राप्त होता है और अनुसंधान हेतु श्रेष्ठ संसाधन उपलब्ध कराए जाते हैं, तभी राष्ट्र की अर्थव्यवस्था और जनजीवन में स्थाई और सकारात्मक सुधार संभव है। यह नीति भविष्य के एक आधुनिक, आत्मनिर्भर और शक्तिशाली भारत के निर्माण का सुदृढ़ रणनीतिक आधार है।

286. (C) प्रतिमानहीनता (Normlessness)
एमिल दुर्खीम के विश्लेषण के अनुसार 'एनोमी' एक ऐसी संकटपूर्ण सामाजिक स्थिति है जहाँ प्राचीन नियम और मूल्य अपना प्रभाव खो देते हैं और नवीन मानदंड अभी पूर्णतः स्थापित नहीं हो पाते। व्यक्ति स्वयं को दिशाहीन और असुरक्षित अनुभव करता है क्योंकि उसे यह बोध नहीं होता कि समाज उससे किस प्रकार के व्यवहार की अपेक्षा कर रहा है। यह प्रायः युद्ध, आर्थिक मंदी या अत्यंत तीव्र सामाजिक रूपांतरण के दौर में परिलक्षित होता है। विधिक और सामाजिक नियमों की इसी शून्यता के कारण समाज में अशांति बढ़ती है। एनोमी आधुनिक समाज की वह व्याधि है जो व्यक्ति और समूह के मध्य के स्वस्थ संबंध को विखंडित कर देती है।

287. (B) नौकरशाही
आधुनिक सरकारी कार्यालयों और विभागों का कार्य संचालन जिस सुव्यवस्थित और तार्किक पद्धति से संपादित होता है, उसे समाजशास्त्रीय भाषा में 'नौकरशाही' कहा जाता है। मैक्स वेबर के अनुसार, इसमें प्रत्येक कर्मचारी के पास विधिक रूप से परिभाषित अधिकार होते हैं, एक निश्चित पदानुक्रम होता है और समस्त प्रशासनिक कार्य लिखित नियमों के अनुरूप किए जाते हैं। नौकरशाही का मुख्य उद्देश्य प्रशासनिक कार्यों में

NODIA

अध्याय 08
विकास का समाजशास्त्र

1. निम्नलिखित में से कौन 'आर्थिक संवृद्धि' की अवधारणा को सबसे अच्छी तरह परिभाषित करता है?
(A) संपूर्ण जनसंख्या के गुणात्मक जीवन और सामाजिक कल्याण में व्यापक सुधार।
(B) एक विशिष्ट अवधि में किसी देश की वास्तविक राष्ट्रीय आय या सकल उत्पाद में मात्रात्मक वृद्धि।
(C) सभी के लिए राष्ट्रीय संसाधनों और सामाजिक अवसरों का व्यवस्थित और न्यायसंगत वितरण।
(D) भविष्य की पीढ़ियों के लिए महत्वपूर्ण प्राकृतिक संसाधनों और पर्यावरण का रणनीतिक संरक्षण।

2. 'मानव विकास' की अवधारणा के संबंध में सही कथन की पहचान करें।
(A) यह केवल अर्थव्यवस्था की संवृद्धि के बजाय मानव जीवन की समृद्धि के विस्तार पर ध्यान केंद्रित करता है।
(B) यह एक ऐसा मानक है जिसे केवल किसी राष्ट्र की वार्षिक प्रति व्यक्ति आय और वित्तीय संपत्ति द्वारा मापा जाता है।
(C) यह अन्य सभी सामाजिक लक्ष्यों से ऊपर तीव्र औद्योगिक और तकनीकी प्रगति को प्राथमिकता देता है।
(D) यह एक विकासात्मक अवधारणा है जो पूरी तरह से 'पश्चिमीकरण' की प्रक्रिया का पर्याय है।

3. नीचे दो कथन दिए गए हैं:
कथन I: सतत विकास भविष्य की पीढ़ियों की अपनी आवश्यकताओं को पूरा करने की क्षमता से समझौता किए बिना वर्तमान की आवश्यकताओं को पूरा करने पर बल देता है।
कथन II: सामाजिक विकास का सरोकार विशेष रूप से जीडीपी और जीएनपी जैसे आर्थिक संकेतकों से है।
(A) कथन I और कथन II दोनों सत्य हैं।
(B) कथन I और कथन II दोनों असत्य हैं।
(C) कथन I सत्य है, लेकिन कथन II असत्य है।
(D) कथन I असत्य है, लेकिन कथन II सत्य है।

4. अल्पविकास पर उदारवादी परिप्रेक्ष्य के अनुसार, मैक्स वेबर ने संस्कृति को क्या भूमिका दी थी?
(A) आर्थिक प्रक्रियाओं और राष्ट्रीय विकास के अध्ययन के लिए संस्कृति मौलिक रूप से अप्रासंगिक है।
(B) सभी पारंपरिक संस्कृतियाँ विकास-विरोधी हैं और उन्हें एक आधुनिक सार्वभौमिक संस्कृति द्वारा प्रतिस्थापित किया जाना चाहिए।
(C) संस्कृति विकास में केवल उच्च स्तर की संवृद्धि प्राप्त करने के बाद ही एक प्रासंगिक कारक बनती है।
(D) पूंजीवाद के उदय के लिए कुछ सांस्कृतिक मूल्य, जैसे प्रोटेस्टेंट कार्य नैतिकता, महत्वपूर्ण थे।

5. नीचे दो कथन दिए गए हैं: एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है।
अभिकथन (A): अल्पविकास पर गुन्नार मिर्डल का कार्य बताता है कि आर्थिक प्रक्रियाएं बढ़ती क्षेत्रीय असमानताओं को जन्म दे सकती हैं।
कारण (R): मिर्डल की 'संचयी कारणता' की अवधारणा बताती है कि कैसे शुरुआती लाभ या हानि समय के साथ सुदृढ़ हो सकते हैं, जिससे क्षेत्रों के बीच विचलन पैदा होता है।
(A) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सत्य हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सत्य है लेकिन R असत्य है।
(D) A असत्य है लेकिन R सत्य है।

6. निम्नलिखित में से कौन मानव विकास दृष्टिकोण का मुख्य घटक नहीं है?
(A) शिक्षा तक पहुँच
(B) राष्ट्रीय सैन्य शक्ति का अधिकतम विस्तार
(C) दीर्घ और स्वस्थ जीवन
(D) जीवन का एक सभ्य स्तर

7. सूची I को सूची II के साथ सुमेलित कीजिए।
सूची I: (विकास की अवधारणा)
P. आर्थिक संवृद्धि
Q. मानव विकास
R. सतत विकास
S. सामाजिक विकास
सूची II: (मुख्य केंद्र)
1. अंतर-पीढ़ीगत समानता और पर्यावरणीय संतुलन
2. लोगों के विकल्पों और क्षमताओं का विस्तार
3. जीडीपी और प्रति व्यक्ति आय में वृद्धि
4. सामाजिक संस्थाओं और समानता में सुधार
(A) P-3, Q-2, R-1, S-4
(B) P-1, Q-4, R-3, S-2
(C) P-3, Q-1, R-2, S-4
(D) P-2, Q-3, R-4, S-1

8. एक देश ऐसी नीतियां लागू करता है जिससे उसके सकल राष्ट्रीय उत्पाद में तीव्र वृद्धि होती है, लेकिन इसके परिणामस्वरूप

Click Here to Buy book on Amazon

व्यापक पर्यावरणीय प्रदूषण होता है और अमीर एवं गरीब के बीच की खाई बढ़ जाती है। यह परिदृश्य विकास के किन दो दृष्टिकोणों के बीच संघर्ष को उजागर करता है?
(A) आर्थिक संवृद्धि और सतत विकास
(B) सामाजिक विकास और मानव विकास
(C) आधुनिकीकरण और पश्चिमीकरण
(D) उत्तर-आधुनिकीकरण और वैश्वीकरण

9. आधुनिकीकरण के सिद्धांत के बारे में कौन सा कथन गलत है?
(A) यह पारंपरिक से आधुनिक समाजों की ओर एक रेखीय पथ का प्रस्ताव करता है।
(B) यह आधुनिक तकनीक और सामाजिक संस्थाओं को अपनाने पर बल देता है।
(C) यह मुख्य रूप से केंद्र राष्ट्रों द्वारा परिधीय राष्ट्रों के शोषण पर ध्यान केंद्रित करता है।
(D) यह पारंपरिक मूल्यों को अल्पविकास के प्राथमिक कारण के रूप में देखता है।

10. विकास के पथ के रूप में 'वैश्वीकरण' के बारे में कुछ कथन नीचे दिए गए हैं:
I. इसमें आर्थिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक क्षेत्रों में समाजों की बढ़ती परस्पर संबद्धता शामिल है।
II. यह एक ऐसी प्रक्रिया है जो सार्वभौमिक रूप से सभी देशों और सामाजिक समूहों को समान रूप से लाभ पहुँचाती है।
III. यह पूंजी और सूचना के प्रवाह के लिए राष्ट्रीय सीमाओं के महत्व को कम करता है।
ऊपर दिए गए कथनों में से कौन से सही हैं?
(A) केवल I और II
(B) केवल I और III
(C) केवल II और III
(D) I, II और III

11. उदारवादी परिप्रेक्ष्य से, उत्तर-औपनिवेशिक समाजों में गुन्नार मिर्डल की 'मृदु राज्य' की अवधारणा का तात्पर्य था:
(A) एक ऐसा राज्य जिसकी विशेषता अत्यधिक कुशल, तर्कसंगत और आधुनिक नौकरशाही है।
(B) एक लोकतांत्रिक राज्य जो अपने नागरिकों की आवश्यकताओं के प्रति अत्यधिक संवेदनशील है।
(C) एक ऐसा राज्य जो जानबूझकर आर्थिक संवृद्धि के ऊपर सामाजिक कल्याण कार्यक्रमों को प्राथमिकता देता है।
(D) एक ऐसा राज्य जिसमें नीतियों को प्रभावी ढंग से लागू करने के लिए राजनीतिक इच्छाशक्ति और अनुशासन की कमी हो।

12. इस बात का सबसे उपयुक्त वर्णन क्या है कि जाति व्यवस्था जैसी कठोर सामाजिक संरचना विकास में बाधा के रूप में कैसे कार्य कर सकती है?
(A) यह तीव्र आर्थिक संवृद्धि के प्राथमिक चालकों के रूप में प्रतिस्पर्धा और योग्यता तंत्र को बढ़ावा देती है।
(B) यह योग्यता के बजाय जन्म के आधार पर भूमिकाएं सौंपती है, जिससे गतिशीलता और पूंजी की दक्षता प्रतिबंधित होती है।
(C) यह विविध और सामाजिक समूहों के बीच सूचना और नवाचार के सहज प्रवाह की सुविधा प्रदान करती है।
(D) यह राष्ट्रीय आधुनिकीकरण के लिए आवश्यक तर्कसंगत और वैज्ञानिक दृष्टिकोण को प्रोत्साहित करती है।

13. गलत युग्म की पहचान करें।
(A) आर्थिक संवृद्धि : प्रति व्यक्ति आय
(B) मानव विकास : क्षमताएं
(C) सतत विकास : पर्यावरणीय क्षरण
(D) सामाजिक विकास : सामाजिक एकजुटता

14. नीचे दो कथन दिए गए हैं: एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है।
अभिकथन (A): मैक्स वेबर के अनुसार, आधुनिक पूंजीवाद की भावना केवल लालच के बारे में नहीं थी।
कारण (R): इसमें एक नैतिक कर्तव्य के रूप में लाभ की तर्कसंगत, व्यवस्थित और संयमित खोज शामिल थी।
(A) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सत्य हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सत्य है लेकिन R असत्य है।
(D) A असत्य है लेकिन R सत्य है।

15. यदि कोई समाज आर्थिक और भौतिक सुरक्षा को प्राथमिकता देने के बजाय आत्म-अभिव्यक्ति, व्यक्तिगत स्वतंत्रता और जीवन की गुणवत्ता पर बल देने वाले मूल्यों की ओर बदलाव का अनुभव करता है, तो यह किस प्रक्रिया से गुजर रहा है?
(A) उत्तर-आधुनिकीकरण
(B) पश्चिमीकरण
(C) आधुनिकीकरण
(D) आर्थिक संवृद्धि

16. निम्नलिखित में से कौन 'पश्चिमीकरण' और 'आधुनिकीकरण' के बीच एक प्रमुख अंतर है?
(A) आधुनिकीकरण तकनीक पर ध्यान केंद्रित करता है जबकि पश्चिमीकरण पश्चिमी लोकतंत्र को अपनाने पर ध्यान केंद्रित करता है।
(B) पश्चिमीकरण पश्चिमी सांस्कृतिक लक्षणों को अपनाना है, जबकि आधुनिकीकरण तर्कसंगतीकरण है।
(C) इसमें कोई तात्विक अंतर नहीं है क्योंकि विकास समाजशास्त्र में ये शब्द पर्यायवाची हैं।
(D) पश्चिमीकरण एक सकारात्मक शब्द है, जबकि आधुनिकीकरण के मुख्य रूप से नकारात्मक अर्थ हैं।

17. एक विकास कार्यक्रम जो महिला साक्षरता बढ़ाने, स्थानीय शासन में महिलाओं की भागीदारी को बढ़ावा देने और समान कार्य के लिए समान वेतन सुनिश्चित करने पर केंद्रित है, मुख्य रूप से किसका उदाहरण है?

NODIA

(A) शुद्ध आर्थिक संवृद्धि रणनीति
(B) सामाजिक विकास
(C) पश्चिमीकरण
(D) उत्तर-आधुनिकीकरण

18. विकास के संदर्भ में, एक सामाजिक संरचना को 'सुविधाप्रदाता' के रूप में देखा जा सकता है जब:
(A) इसकी संस्थाएँ, जैसे एक लचीली शिक्षा प्रणाली, योग्यता और कौशल विकास को बढ़ावा देती हैं।
(B) यह कठोर पदानुक्रम बनाती है जो सामाजिक गतिशीलता को रोकती है।
(C) यह पारंपरिक मानदंडों को लागू करती है जो उद्यमिता को हतोत्साहित करते हैं।
(D) यह एक छोटे अभिजात वर्ग के हाथों में धन के संकेंद्रण की ओर ले जाती है।

19. कौन सा कथन 'विकास' और 'सामाजिक-आर्थिक विषमताओं' के बीच संबंधों को सबसे अच्छी तरह दर्शाता है?
(A) विकास प्रक्रियाएं हमेशा और स्वचालित रूप से सामाजिक-आर्थिक विषमताओं को कम करती हैं।
(B) सामाजिक-आर्थिक विषमताएं विकास की प्रक्रिया से पूरी तरह से असंबंधित हैं।
(C) विकास कभी-कभी मौजूदा विषमताओं को बढ़ा सकता है या नई विषमताएं पैदा कर सकता है।
(D) विकास के केवल समाजवादी मॉडल ही सामाजिक-आर्थिक विषमताओं की ओर ले जाते हैं।

20. निम्नलिखित विकास प्रतिमानों को उनकी मुख्य अवधारणाओं के उद्भव के सामान्य कालानुक्रमिक क्रम में व्यवस्थित करें।
1. सतत विकास
2. मानव विकास
3. प्राथमिक लक्ष्य के रूप में आर्थिक संवृद्धि
(A) 1, 2, 3
(B) 3, 1, 2
(C) 2, 3, 1
(D) 3, 2, 1

21. एक ऐसी संस्कृति जो व्यक्तिगत पहल और आलोचनात्मक सोच के बजाय भाग्यवादिता और पारंपरिक सत्ता के प्रति सम्मान पर बल देती है, वेबर के परिप्रेक्ष्य से उसे देखा जा सकता है:
(A) तर्कसंगत पूंजीवादी विकास में सहायक के रूप में।
(B) उत्तर-आधुनिकीकरण के परिणाम के रूप में।
(C) आधुनिकीकरण में बाधा के रूप में।
(D) सामाजिक विकास के सुविधाप्रदाता के रूप में।

22. 'सतत विकास' शब्द किन तीन मुख्य स्तंभों के बीच संतुलन का संकेत देता है?
(A) तकनीक, राजनीति और सैन्य
(B) अर्थव्यवस्था, समाज और पर्यावरण
(C) परंपरा, संस्कृति और धर्म
(D) व्यक्तिवाद, सामूहिकता और राज्य

23. नीचे दो कथन दिए गए हैं:
कथन I: वैश्वीकरण में समय और स्थान का संकुचन शामिल है।
कथन II: आधुनिकीकरण सिद्धांत सभी समाजों के लिए विकास के एक सार्वभौमिक और एकरेखीय पथ को मानता है।
(A) कथन I और कथन II दोनों सत्य हैं।
(B) कथन I और कथन II दोनों असत्य हैं।
(C) कथन I सत्य है, लेकिन कथन II असत्य है।
(D) कथन I असत्य है, लेकिन कथन II सत्य है।

24. जीवन प्रत्याशा बढ़ाने, शिशु मृत्यु दर कम करने और साक्षरता दर में सुधार करने पर ध्यान केंद्रित करना विकास के किस परिप्रेक्ष्य के साथ सबसे निकटता से मेल खाता है?
(A) मानव विकास
(B) आर्थिक संवृद्धि
(C) उत्तर-आधुनिकीकरण
(D) पश्चिमीकरण

25. नीचे दो कथन दिए गए हैं: एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है।
अभिकथन (A): किसी देश की उच्च प्रति व्यक्ति जीडीपी का अर्थ अनिवार्य रूप से उच्च स्तर का मानव विकास नहीं होता है।
कारण (R): आर्थिक संवृद्धि द्वारा उत्पन्न संसाधनों का उपयोग जनसंख्या के बड़े भाग के लिए शिक्षा और स्वास्थ्य में सुधार के लिए नहीं किया जा सकता है।
(A) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सत्य हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सत्य है लेकिन R असत्य है।
(D) A असत्य है लेकिन R सत्य है।

26. निम्नलिखित में से कौन सी स्थिति उस स्थिति का सबसे अच्छा प्रतिनिधित्व करती है जहाँ 'सामाजिक संरचना' विकास के लिए 'बाधा' के रूप में कार्य करती है?
(A) नातेदारी और पारिवारिक दायित्व जो व्यक्तियों को शहरी केंद्रों में जाने से रोकते हैं।
(B) उच्च स्तर की सामाजिक गतिशीलता और सार्वभौमिक शिक्षा की विशेषता वाला एक लचीला समाज।
(C) एक पारदर्शी कानूनी प्रणाली जो निजी संपत्ति की रक्षा करती है और अनुबंधों को लागू करती है।
(D) एक सक्रिय सरकार जो सार्वजनिक बुनियादी ढांचे और आधुनिक स्वास्थ्य सेवा में निवेश करती है।

27. सूची I को सूची II के साथ सुमेलित कीजिए।
सूची I: (विचारक/सिद्धांत)
P. मैक्स वेबर
Q. गुन्नार मिर्डल

Downloaded from www.pdf.tube

295. (C) विशिष्टीकरण पर आधारित अन्योन्याश्रयता
'सावयवी एकता' दुर्खीम द्वारा प्रतिपादित वह सामाजिक विचार है जो आधुनिक औद्योगिक समाजों को सांगठनिक सूत्र में आबद्ध करता है। यहाँ व्यक्ति एक-दूसरे से पूर्णतः भिन्न और विशिष्ट कार्य करते हैं, परंतु इसी विशिष्टीकरण के कारण वे अपनी आवश्यकताओं हेतु अन्य सदस्यों पर पूरी तरह निर्भर हो जाते हैं। एक चिकित्सक भोजन हेतु कृषक पर और कृषक स्वास्थ्य लाभ हेतु चिकित्सक पर निर्भर है। यह कार्यात्मक अन्योन्याश्रयता ही आधुनिक समाज में सहयोग और सांगठनिक एकता का नवीन तार्किक आधार बनती है। दुर्खीम के अनुसार, यह एकता आधुनिक औद्योगिक समाज के सुचारु संचालन और उसकी स्थिरता का मुख्य स्तंभ है जो समाज के क्रमिक विकास की एक अनिवार्य परिणति है।

296. (B) तार्किकता
तार्किकता वह वैचारिक प्रक्रिया है जहाँ भावनाओं, प्राचीन परंपराओं या अलौकिक विश्वासों के स्थान पर केवल तर्क, कार्य दक्षता और सटीक परिणामों को सर्वोच्च महत्व प्रदान किया जाता है। आधुनिक समाज में अब हम यह विश्लेषण करते हैं कि किसी भी सांगठनिक लक्ष्य को प्राप्त करने का सर्वाधिक तार्किक और प्रभावी मार्ग क्या है। यह वैज्ञानिक चिंतन ही आधुनिक विज्ञान, विधिक कानून और उन्नत उद्योगों की वास्तविक आधारशिला है। मैक्स वेबर ने इसे आधुनिक सभ्यता की सर्वाधिक प्रमुख विशेषता माना था। यद्यपि उन्होंने यह भी संकेत दिया था कि केवल तार्किकता के पीछे भागने से मानवीय संवेदनशीलता क्षीण हो सकती है, परंतु उन्होंने इसे समाज को सुव्यवस्थित और प्रगतिशील बनाने के लिए एक अनिवार्य और निर्णायक शक्ति माना था।

297. (A) अनौपचारिक संगठन की शक्ति।
कारखाने में जब श्रमिक परस्पर संगठित होकर यह निर्धारित कर लेते हैं कि उन्हें प्रतिदिन कितना उत्पादन करना है, तो यह 'अनौपचारिक संगठन' के प्रभाव को दर्शाता है। वे प्रायः प्रबंधन द्वारा आरोपित अत्यधिक कठिन लक्ष्यों के विरुद्ध एक ऐसी सामूहिक सीमा निर्धारित कर लेते हैं जिसे वे तर्कसंगत मानते हैं। यह उनकी सांगठनिक एकजुटता और सामूहिक हितों की सुरक्षा का एक प्रभावी मार्ग है। यह स्पष्ट करता है कि कार्यस्थल पर केवल विधिक और लिखित नियम ही प्रभावी नहीं होते, बल्कि श्रमिकों की आपसी समझ और उनके अलिखित सामूहिक निर्णय भी उत्पादन की वास्तविक गति को नियंत्रित करने की शक्ति रखते हैं। प्रबंधन हेतु इस मानवीय शक्ति के साथ सामंजस्य स्थापित करना सफलता की कुंजी है।

298. (C) अधिनिर्णय
'अधिनिर्णय' औद्योगिक विवादों के समाधान का एक सुव्यवस्थित अर्द्ध-न्यायिक माध्यम है जहाँ श्रम न्यायालय या औद्योगिक न्यायाधिकरण निर्णायक की भूमिका निर्वाह करते हैं। यहाँ दोनों विवादित पक्षों के साक्ष्यों और दलीलों का सूक्ष्मता से परीक्षण किया जाता है और तत्पश्चात विधिक कानून के आधार पर एक अंतिम और निष्पक्ष फैसला सुनाया जाता है। यह निर्णय विधिक रूप से बाध्यकारी होता है, जिसका अनुपालन करना दोनों पक्षों हेतु अनिवार्य है। यह प्रक्रिया तब अपनाई जाती है जब आपसी संवाद और सुलह के समस्त प्रयास विफल हो चुके हों। यह तंत्र औद्योगिक अशांति को नियंत्रित करने और समाज में कानून का शासन अक्षुण्ण बनाए रखने के लिए सरकार द्वारा प्रयुक्त एक अंतिम और शक्तिशाली विधिक हथियार है।

299. (B) सामाजिक स्तरीकरण
औद्योगिकीकरण ने समाज में सामाजिक प्रतिष्ठा के प्राचीन मानदंडों को रूपांतरित कर एक नवीन और गतिशील वर्ग व्यवस्था को स्थापित किया है। अब एक वृहत् और प्रभावशाली मध्यम वर्ग का उदय हुआ है जो अपनी उच्च शिक्षा, विशेषज्ञ ज्ञान और तकनीकी कौशल के बल पर आर्थिक समृद्धि प्राप्त करता है। चिकित्सक, अभियंता और प्रबंधक इसी वर्ग के अभिन्न अंग हैं। यह वर्ग न तो उत्पादन के साधनों का स्वामी है और न ही केवल अकुशल शारीरिक श्रम करने वाला श्रमिक। यह बदलाव स्पष्ट करता है कि अब सामाजिक प्रस्थिति जन्म के स्थान पर आर्थिक उपलब्धि और व्यावसायिक पद से निर्धारित होती है। सामाजिक स्तरीकरण का यह नवीन स्वरूप आधुनिक औद्योगिक समाज की एक अत्यंत विशिष्ट पहचान है जो पुरानी जड़ताओं को चुनौती प्रदान करती है।

300. (A) एक सार्वजनिक हित के रूप में शिक्षा और एक निजी वस्तु (commodity) के रूप में शिक्षा।
शिक्षा के निजीकरण के संदर्भ में सर्वाधिक महत्वपूर्ण वैचारिक संघर्ष इस प्रश्न पर आधारित है कि क्या शिक्षा प्रत्येक नागरिक का मौलिक अधिकार है या यह केवल एक विपणन योग्य व्यावसायिक वस्तु है। सरकार इसे एक कल्याणकारी सामाजिक सेवा मानती है, जबकि निजी संस्थान इसे लाभ अर्जन का एक माध्यम समझते हैं। जब शिक्षा का प्रसार केवल बाजार की शक्तियों पर आश्रित हो जाता है, तो निर्धन मेधावी छात्रों हेतु इसके द्वार अवरुद्ध होने का संकट बढ़ जाता है। यह वैचारिक तनाव आधुनिक शिक्षा नीति के सम्मुख एक अत्यंत गंभीर और संवेदनशील चुनौती है। हमें एक ऐसा मध्यम मार्ग खोजना अनिवार्य है जहाँ शिक्षा की गुणवत्ता भी अक्षुण्ण रहे और वह समाज के प्रत्येक वर्ग तक न्यायपूर्ण ढंग से पहुँच सके।

www.nodia.in
NODIA

36. विकास के 'सुविधाप्रदाता' के रूप में सामाजिक संरचना का विचार किसके द्वारा सबसे अच्छा स्पष्ट होता है?
(A) एक कठोर वर्ग व्यवस्था जो निचले तबके के लिए अवसरों को सीमित करती है।
(B) सांस्कृतिक मानदंड जो नवाचार के बजाय परंपरा को प्राथमिकता देते हैं।
(C) एक राजनीतिक व्यवस्था जहाँ शक्ति एक गैर-निर्वाचित अभिजात वर्ग के हाथों में केंद्रित होती है।
(D) एक कानूनी ढांचा जो उद्यमिता को बढ़ावा देता है और संपत्ति के अधिकारों को सुरक्षित करता है।

37. निम्नलिखित में से कौन सामाजिक विकास का संकेतक नहीं है?
(A) सामाजिक एकजुटता और विश्वास का स्तर
(B) दीर्घ और स्वस्थ जीवन
(C) सकल घरेलू उत्पाद में वृद्धि की दर
(D) शासन में नागरिक भागीदारी की सीमा

38. वह वैचारिक परिप्रेक्ष्य जो विकास को इस आधार पर मापता है कि लोग वास्तव में क्या करने और बनने में सक्षम हैं, कहलाता है:
(A) आर्थिक संवृद्धि परिप्रेक्ष्य
(B) मानव विकास परिप्रेक्ष्य
(C) आधुनिकीकरण परिप्रेक्ष्य
(D) वैश्वीकरण परिप्रेक्ष्य

39. एक गैर-पश्चिमी देश में पश्चिमी फास्ट-फूड चेन, फिल्मों और वस्त्रों की शैलियों को अपनाना किसका स्पष्ट उदाहरण है?
(A) सतत विकास
(B) उत्तर-आधुनिकीकरण
(C) सामाजिक विकास
(D) पश्चिमीकरण

40. निम्नलिखित अवधारणाओं को सूक्ष्म-स्तरीय सांस्कृतिक मूल्य से व्यापक-स्तरीय वैश्विक प्रक्रिया के क्रम में व्यवस्थित करें।
1. वैश्वीकरण
2. कार्य नैतिकता
3. आधुनिकीकरण
(A) 2, 3, 1
(B) 1, 3, 2
(C) 3, 1, 2
(D) 2, 1, 3

41. विकास के शुरुआती 'आर्थिक संवृद्धि' मॉडल के विरुद्ध की गई एक प्रमुख आलोचना इसकी निम्नलिखित कमी थी:
(A) पर्यावरणीय स्थिरता पर अत्यधिक बल।
(B) औद्योगिकीकरण को बढ़ावा देने में विफलता।
(C) आय वितरण और सामाजिक कल्याण के मुद्दों की उपेक्षा।
(D) जीएनपी बढ़ाने पर ध्यान की कमी।

42. 'बैकवाश प्रभाव' के विपरीत, गुन्नार मिर्डल के 'प्रसार प्रभाव' का तात्पर्य है:
(A) केंद्रों से अन्य क्षेत्रों में फैलने वाले विकास के सकारात्मक आवेग।
(B) आसपास के वातावरण पर आर्थिक गतिविधि के नकारात्मक प्रभाव।
(C) एक विशिष्ट क्षेत्र में आर्थिक गतिविधि का गहन संकेंद्रण।
(D) विकासशील देशों पर पश्चिमी सांस्कृतिक मूल्यों का थोपा जाना।

43. नीचे दो कथन दिए गए हैं:
कथन I: वैश्वीकरण में समय और स्थान का संकुचन शामिल है।
कथन II: आधुनिकीकरण की प्रक्रिया में सामाजिक संस्थाओं का बढ़ता विभेदीकरण शामिल है।
(A) कथन I और कथन II दोनों सत्य हैं।
(B) कथन I और कथन II दोनों असत्य हैं।
(C) कथन I सत्य है, लेकिन कथन II असत्य है।
(D) कथन I असत्य है, लेकिन कथन II सत्य है।

44. एक सरकारी नीति जो प्रदूषण या श्रमिक कल्याण की परवाह किए बिना केवल अधिक कारखाने बनाने और औद्योगिक उत्पादन बढ़ाने पर केंद्रित है, किस विकास प्रतिमान को सबसे अच्छी तरह दर्शाती है?
(A) मानव विकास
(B) आर्थिक संवृद्धि
(C) सतत विकास
(D) सामाजिक विकास

45. विकास में बाधा के रूप में संस्कृति के बारे में कुछ कथन नीचे दिए गए हैं:
I. कार्य के बजाय अवकाश को प्राथमिकता देने वाले सांस्कृतिक मानदंड उत्पादकता में बाधा डाल सकते हैं।
II. भ्रष्टाचार और भाई-भतीजावाद की संस्कृति संसाधनों के कुशल आवंटन को निर्बल कर सकती है।
III. सुदृढ़ पारिवारिक मूल्य कभी-कभी आधुनिक नौकरशाही की मांगों के साथ संघर्ष कर सकते हैं।
ऊपर दिए गए कथनों में से कौन से सही हैं?
(A) केवल I और II
(B) केवल II और III
(C) केवल I और III
(D) I, II और III

46. निम्नलिखित में से कौन 'सतत विकास' परिप्रेक्ष्य का सबसे महत्वपूर्ण योगदान है?
(A) यह राष्ट्रीय आर्थिक संवृद्धि की आवश्यकता पर बल देने वाली अग्रणी अवधारणा थी।
(B) इसने सिद्ध किया कि औद्योगिक विकास और पर्यावरण संरक्षण परस्पर अनन्य हैं।
(C) इसने विशेष रूप से आधुनिक विकास के गुणात्मक सामाजिक आयामों पर ध्यान केंद्रित किया।

Click Here to Buy book on Amazon

R. आधुनिकीकरण सिद्धांत
S. उत्तर-आधुनिकीकरण सिद्धांत

सूची II: (संबद्ध विचार)

1. उत्तरजीविता मूल्यों से आत्म-अभिव्यक्ति मूल्यों की ओर बदलाव
2. पारंपरिक बनाम आधुनिक समाज
3. संचयी कारणता
4. प्रोटेस्टेंट नैतिकता

(A) P-1, Q-2, R-3, S-4
(B) P-4, Q-3, R-2, S-1
(C) P-4, Q-2, R-3, S-1
(D) P-1, Q-3, R-2, S-4

28. यह तर्क कि कुछ सांस्कृतिक लक्षण, जैसे सुदृढ़ कार्य नैतिकता, मितव्ययिता और तर्कसंगतता, आर्थिक विकास में 'सहायक' हो सकते हैं, किसके साथ जुड़ा हुआ है?
(A) गुन्नार मिर्डल
(B) मैक्स वेबर
(C) कार्ल मार्क्स
(D) एमिल दुर्खीम

29. 'उत्तर-आधुनिकीकरण' की एक प्रमुख विशेषता निम्नलिखित पर प्रश्न उठाना है:
(A) परिवार और स्थानीय समुदाय की सामाजिक संरचनाओं का मौलिक महत्व।
(B) किसी भी आधुनिक औद्योगिक रूप में सतत संवृद्धि की आर्थिक आवश्यकता।
(C) प्रगति के एकरेखीय पथ और विकास के वृहत आख्यानों का विचार।
(D) व्यक्तिगत स्वतंत्रता का मूल्य और रचनात्मक आत्म-अभिव्यक्ति को बढ़ावा देना।

30. विकास पथों के बारे में कुछ कथन नीचे दिए गए हैं:
I. पश्चिमीकरण एक ऐसी प्रक्रिया है जिसमें पश्चिमी संस्थागत मॉडलों को अपनाना शामिल है।
II. उत्तर-आधुनिकीकरण पारंपरिक धार्मिक मूल्यों के पुनरुत्थान की विशेषता है।
III. आधुनिकीकरण विशेष रूप से आर्थिक परिवर्तन के बारे में है, जो सामाजिक और राजनीतिक पहलुओं की अनदेखी करता है।

ऊपर दिए गए कथनों में से कौन से सही हैं?
(A) केवल I
(B) केवल I और II
(C) केवल II और III
(D) I, II और III

31. निम्नलिखित में से कौन विकास द्वारा सामाजिक-आर्थिक विषमता के उत्पन्न होने या बढ़ने का एक उदाहरण है?
(A) एक नया उच्च-तकनीकी उद्योग विशिष्ट नौकरियां उत्पन्न करता है जबकि कम कुशल श्रमिकों को विस्थापित करता है।
(B) देश भर में गरीबी कम करने के लिए एक सार्वभौमिक बुनियादी आय कार्यक्रम लागू किया जाता है।
(C) एक भूमि सुधार कार्यक्रम सफलतापूर्वक सभी भूमिहीन किसानों को संपत्ति पुनर्वितरित करता है।
(D) एक सार्वजनिक स्वास्थ्य अभियान उस बीमारी को समाप्त करता है जिसने सभी सामाजिक वर्गों को समान रूप से प्रभावित किया था।

32. गुन्नार मिर्डल के अनुसार, विकास की प्रक्रिया में 'बैकवाश प्रभाव' का तात्पर्य है:
(A) समृद्ध केंद्रों से पिछड़े ग्रामीण क्षेत्रों तक विकास का सकारात्मक प्रसार।
(B) निर्धन क्षेत्रों से समृद्ध क्षेत्रों की ओर पूंजी और श्रम का पलायन।
(C) क्षेत्रीय और सामाजिक असंतुलन को ठीक करने के लिए उपयोग किए जाने वाले विशिष्ट सरकारी प्रयास।
(D) आधुनिक और तर्कसंगत आर्थिक गतिविधियों के प्रति निरंतर सांस्कृतिक प्रतिरोध।

33. कौन सी अवधारणा मुख्य रूप से समाज की सामाजिक व्यवस्था में निष्पक्षता, न्याय और समानता से संबंधित है?
(A) आर्थिक संवृद्धि
(B) सामाजिक विकास
(C) पश्चिमीकरण
(D) वैश्वीकरण

34. वेबर और मिर्डल द्वारा प्रस्तुत अल्पविकास के उदारवादी सिद्धांतों के संबंध में गलत कथन की पहचान करें।
(A) दोनों सिद्धांत तर्क देते हैं कि साम्राज्यवाद और उपनिवेशवाद ही अल्पविकास के एकमात्र कारण हैं।
(B) वे दोनों विकासशील समाजों के भीतर आंतरिक कारकों को रेखांकित करते हैं।
(C) वेबर ने सांस्कृतिक और धार्मिक मूल्यों को प्रमुख कारकों के रूप में केंद्रित किया।
(D) मिर्डल ने राज्य और बाजार-प्रेरित असमानताओं की भूमिका पर बल दिया।

35. नीचे दो कथन दिए गए हैं: एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है।
अभिकथन (A): वैश्वीकरण विकासशील देशों के लिए एक दोधारी तलवार हो सकता है।
कारण (R): जहाँ यह व्यापार और निवेश के माध्यम से आर्थिक संवृद्धि के अवसर प्रदान करता है, वहीं यह वैश्विक बाजार के उतार-चढ़ाव और सांस्कृतिक समरूपीकरण के प्रति संवेदनशीलता भी बढ़ा सकता है।
(A) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सत्य हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सत्य है लेकिन R असत्य है।
(D) A असत्य है लेकिन R सत्य है।

NODIA

(C) पश्चिमीकरण
(D) आर्थिक संवृद्धि के प्रारंभिक चरण

57. नीचे दो कथन दिए गए हैं:
कथन I: आर्थिक संवृद्धि मानव विकास के लिए एक आवश्यक और पर्याप्त शर्त है।
कथन II: सतत विकास केवल परियोजनाओं की आर्थिक व्यवहार्यता से संबंधित है।
(A) कथन I और कथन II दोनों सत्य हैं।
(B) कथन I और कथन II दोनों असत्य हैं।
(C) कथन I सत्य है, लेकिन कथन II असत्य है।
(D) कथन I असत्य है, लेकिन कथन II सत्य है।

58. "विकास... लोगों द्वारा आनंद ली जाने वाली वास्तविक स्वतंत्रताओं के विस्तार की एक प्रक्रिया होनी चाहिए।" यह कथन किसके मुख्य विचार को दर्शाता है?
(A) मानव विकास दृष्टिकोण
(B) आर्थिक संवृद्धि सिद्धांत
(C) आधुनिकीकरण सिद्धांत
(D) पश्चिमीकरण

59. विकास का कौन सा पथ 'वैश्विक गाँव' के विचार और समय एवं स्थान के संकुचन के साथ सबसे निकटता से जुड़ा हुआ है?
(A) आधुनिकीकरण
(B) सामाजिक विकास
(C) सतत विकास
(D) वैश्वीकरण

60. सामाजिक संरचना और विकास के संबंध में कुछ कथन नीचे दिए गए हैं:
I. एक योग्यता-आधारित सामाजिक संरचना प्रतिभा का कुशलतापूर्वक आवंटन करके विकास की सुविधा प्रदान कर सकती है।
II. गहरे जातीय या धार्मिक विभाजन वाली सामाजिक संरचना संघर्ष उत्पन्न करके विकास में बाधा डाल सकती है।
III. सामाजिक संरचना स्थिर होती है और विकास प्रक्रियाओं के परिणामस्वरूप नहीं बदलती है।
ऊपर दिए गए कथनों में से कौन से सही हैं?
(A) केवल I और II
(B) केवल II और III
(C) केवल I और III
(D) I, II और III

61. निम्नलिखित में से कौन सा विकास के आधुनिकीकरण पथ की विशेषता नहीं है?
(A) औद्योगिकीकरण और शहरीकरण पर बल।
(B) विकसित देशों से विकासशील देशों में तकनीक और पूंजी के हस्तांतरण में विश्वास।
(C) आर्थिक विस्तार के ऊपर पारिस्थितिक संतुलन को प्राथमिकता देना।
(D) यह धारणा कि पारंपरिक समाज स्वाभाविक रूप से त्रुटिपूर्ण हैं।

62. गुन्नार मिर्डल के 'चक्रीय और संचयी कारणता' के सिद्धांत का मुख्य तर्क यह है कि:
(A) सभी राष्ट्रीय अर्थव्यवस्थाएं प्राकृतिक संतुलन और संतुलित राजकोषीय संवृद्धि की ओर प्रवृत्त होती हैं।
(B) सांस्कृतिक कारक राष्ट्रीय आर्थिक विकास के एकमात्र महत्वपूर्ण निर्धारक हैं।
(C) विकास एक मौलिक रूप से यादृच्छिक और अप्रत्याशित प्रक्रिया है।
(D) बाजार की ताकतें क्षेत्रों के बीच असमानताओं को कम करने के बजाय बढ़ाने की प्रवृत्ति रखती हैं।

63. मानव विकास सूचकांक (HDI) को विकास के किस पारंपरिक उपाय के विकल्प के रूप में विकसित किया गया था?
(A) प्रति व्यक्ति सकल घरेलू उत्पाद (GDP)
(B) सामाजिक एकजुटता सूचकांक
(C) पर्यावरणीय प्रदर्शन सूचकांक
(D) राजनीतिक स्वतंत्रता सूचकांक

64. जब एक पारंपरिक समाज को इस रूप में वर्णित किया जाता है कि उसकी संस्कृति विकास में 'बाधा' के रूप में कार्य कर रही है, तो उपयोग किया जा रहा 'विकास' का अंतर्निहित मॉडल सामान्यतः होता है:
(A) सतत विकास
(B) आधुनिकीकरण
(C) सामाजिक विकास
(D) उत्तर-आधुनिकीकरण

65. नीचे दो कथन दिए गए हैं: एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है।
अभिकथन (A): पश्चिमीकरण आधुनिकीकरण की तुलना में अधिक विशिष्ट और मूल्य-युक्त अवधारणा है।
कारण (R): पश्चिमीकरण स्पष्ट रूप से पश्चिम से सांस्कृतिक रूपों को अपनाने की ओर संकेत करता है, जबकि आधुनिकीकरण सामाजिक परिवर्तन की अधिक अमूर्त प्रक्रिया को संदर्भित करता है।
(A) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सत्य हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सत्य है लेकिन R असत्य है।
(D) A असत्य है लेकिन R सत्य है।

66. यदि कोई विकास परियोजना राष्ट्रीय आय में वृद्धि करती है लेकिन एक स्थानीय समुदाय को उनकी भूमि से विस्थापित भी करती है, तो यह किसके बीच तनाव को उजागर करती है?
(A) आर्थिक संवृद्धि और सामाजिक विकास
(B) आधुनिकीकरण और पश्चिमीकरण
(C) वैश्वीकरण और उत्तर-आधुनिकीकरण
(D) मानव विकास और सतत विकास

NODIA

बढ़ा हुआ प्रवाह शामिल है।
(C) यह राष्ट्रीय संप्रभुता और स्थानीय संस्कृतियों के लिए चुनौतियां उत्पन्न कर सकता है।
(D) यह संचार और परिवहन तकनीक में प्रगति द्वारा सुगम होता है।

150. एक परंपरावादी संस्कृति जो लाभ कमाने और ब्याज लेने को पाप मानती है, वेबर के अनुसार, पूंजीवादी विकास के लिए एक _____ मानी जाएगी।
(A) सहायता
(B) सुविधाप्रदाता
(C) बाधा
(D) अप्रासंगिकता

151. निम्नलिखित में से कौन सी विकास अवधारणा समानता और न्याय के लिए सामाजिक संस्थाओं की गुणवत्ता में सुधार पर ध्यान केंद्रित करने के रूप में परिभाषित है?
(A) सामाजिक विकास
(B) आर्थिक संवृद्धि
(C) मानव विकास
(D) सतत विकास

152. अल्पविकास पर मैक्स वेबर का उदारवादी परिप्रेक्ष्य निम्नलिखित की भूमिका पर बल देता है:
(A) तर्कसंगतता, सांस्कृतिक मूल्य और धार्मिक नैतिकता।
(B) अंतरराष्ट्रीय शोषण।
(C) 'मृदु राज्य' और 'संचयी कारणता'।
(D) भौगोलिक नियतिवाद।

153. एक विकास मॉडल जो उच्च राष्ट्रीय आय की ओर ले जाता है लेकिन अत्यधिक वायु प्रदूषण और जल संदूषण का कारण भी बनता है, किस मानदंड पर विफल होता है?
(A) आर्थिक संवृद्धि
(B) आधुनिकीकरण
(C) सतत विकास
(D) पश्चिमीकरण

154. नीचे दो कथन दिए गए हैं:
कथन I: आधुनिकीकरण सिद्धांत के अनुसार, विकास के लिए सामाजिक मानदंडों में 'विशिष्टतावाद' से 'सार्वभौमिकता' की ओर बदलाव की आवश्यकता होती है।
कथन II: 'सार्वभौमिकता' का अर्थ है कि लोगों के साथ सामान्य नियमों के अनुसार व्यवहार किया जाता है।
(A) कथन I और कथन II दोनों सत्य हैं।
(B) कथन I और कथन II दोनों असत्य हैं।
(C) कथन I सत्य है, लेकिन कथन II असत्य है।
(D) कथन I असत्य है, लेकिन कथन II सत्य है।

155. सूची I को सूची II के साथ सुमेलित कीजिए।
सूची I: (पथ/सिद्धांत)
P. आधुनिकीकरण
Q. वैश्वीकरण
R. उत्तर-आधुनिकीकरण
S. अल्पविकास (मिर्डल)
सूची II: (मुख्य विचार)
1. बैकवाश प्रभाव
2. जीवन की गुणवत्ता की ओर मूल्यों में बदलाव
3. वैश्विक परस्पर संबद्धता
4. संवृद्धि के रेखीय चरण
(A) P-1, Q-2, R-3, S-4
(B) P-4, Q-3, R-2, S-1
(C) P-4, Q-2, R-3, S-1
(D) P-1, Q-3, R-2, S-4

156. एक राजधानी शहर में निवेश और प्रतिभा का संकेंद्रण, जिससे बाहरी क्षेत्रों में जड़ता आती है, किसका एक उत्कृष्ट उदाहरण है जिसे गुन्नार मिर्डल ने कहा था:
(A) प्रसार प्रभाव
(B) बैकवाश प्रभाव
(C) प्रोटेस्टेंट नैतिकता
(D) उत्तर-आधुनिकीकरण

157. एक देश में जीवन प्रत्याशा और साक्षरता दर में वृद्धि, भले ही उसकी प्रति व्यक्ति आय में परिवर्तन न हुआ हो, निम्नलिखित में सुधार माना जाएगा:
(A) आर्थिक संवृद्धि
(B) मानव विकास
(C) पश्चिमीकरण
(D) वैश्वीकरण

158. निम्नलिखित में से कौन 'सामाजिक संरचना' के विकास के लिए 'बाधा' के रूप में कार्य करने का सबसे अच्छा उदाहरण है?
(A) निम्न सामाजिक गतिशीलता वाली अत्यधिक स्तरीकृत वर्ग व्यवस्था।
(B) एक पारदर्शी कानूनी व्यवस्था।
(C) उच्च सामाजिक विश्वास की संस्कृति।
(D) एक लचीला श्रम बाजार।

159. विकास के बारे में कुछ कथन नीचे दिए गए हैं:
I. सतत विकास की अवधारणा पर्यावरणीय चिंताओं को सामाजिक-आर्थिक मुद्दों के साथ जोड़ती है।
II. आर्थिक संवृद्धि सतत विकास प्राप्त करने के लिए एक पर्याप्त शर्त है।
III. अंतर-पीढ़ीगत समानता सतत विकास का एक मुख्य सिद्धांत है।
ऊपर दिए गए कथनों में से कौन से सही हैं?
(A) केवल I और II
(B) केवल II और III
(C) केवल I और III
(D) I, II और III

Downloaded from www.pdf.tube

STUDYING FROM PDFs?

THINK AGAIN.

If you are studying only from PDFs,
you are wasting valuable time.

Research shows that learning from

PRINTED BOOKS has up to

4× HIGHER RETENTION

than studying from screens.

PRINT BOOK = BETTER MEMORY

PDF = LOWER RETENTION

Those who study from **PRINTED BOOKS**
move **AHEAD.**

Others are left **BEHIND**
in competition.



In competitive exams,
being average is not enough.

STAY ONE STEP AHEAD.

जाता है।

77. नीचे दो कथन दिए गए हैं:
कथन I: वैश्वीकरण ने एक पूरी तरह से सीमाहीन विश्व का निर्माण किया है जहाँ राष्ट्र-राज्यों के पास कोई शक्ति नहीं है।
कथन II: उत्तर-आधुनिकीकरण में सभी आधुनिक तकनीकों और सुविधाओं की पूर्ण अस्वीकृति शामिल है।
(A) कथन I और कथन II दोनों सत्य हैं।
(B) कथन I और कथन II दोनों असत्य हैं।
(C) कथन I सत्य है, लेकिन कथन II असत्य है।
(D) कथन I असत्य है, लेकिन कथन II सत्य है।

78. निम्नलिखित में से कौन व्यवहार में 'सतत विकास' का सबसे अच्छा उदाहरण है?
(A) लाभदायक नकदी फसल लगाने के लिए वर्षावन को काटना।
(B) ऐसी कृषि तकनीकों को लागू करना जो संसाधनों को समाप्त किए बिना फसल की पैदावार में सुधार करती हैं।
(C) एक कारखाना बनाना जो रोजगार प्रदान करता है लेकिन स्थानीय नदी को प्रदूषित करता है।
(D) अल्पकालिक राष्ट्रीय लाभ के लिए तेल निष्कर्षण को अधिकतम करना।

79. अल्पविकास पर उदारवादी परिप्रेक्ष्य, जैसा कि मैक्स वेबर द्वारा प्रस्तुत किया गया है, अल्पविकास के प्राथमिक कारणों को कहाँ देखता है?
(A) अंतरराष्ट्रीय पूंजीवाद की शोषक प्रकृति।
(B) किसी देश की प्रतिकूल जलवायु और भूगोल।
(C) समाज की आंतरिक सांस्कृतिक और संस्थागत विशेषताएं।
(D) उपनिवेशवाद की ऐतिहासिक विरासत।

80. नीचे दो कथन दिए गए हैं: एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है।
अभिकथन (A): आधुनिकीकरण की प्रक्रिया पारंपरिक संस्कृतियों के क्षरण का कारण बन सकती है।
कारण (R): आधुनिकीकरण सार्वभौमिक और तर्कसंगत मूल्यों को बढ़ावा देता है जो पारंपरिक समाजों के भावनात्मक और पवित्र मूल्यों के साथ संघर्ष कर सकते हैं।
(A) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सत्य हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सत्य है लेकिन R असत्य है।
(D) A असत्य है लेकिन R सत्य है।

81. एक कठोर और पदानुक्रमित सामाजिक संरचना को विकास के लिए 'बाधा' माने जाने की सर्वाधिक संभावना है क्योंकि यह:
(A) सामाजिक गतिशीलता और प्रतिभा के कुशल आवंटन को प्रतिबंधित करती है।
(B) नवाचार और जोखिम लेने को प्रोत्साहित करती है।
(C) सामाजिक स्थिरता और व्यवस्था सुनिश्चित करती है।
(D) सभी नागरिकों के लिए समान अवसर को बढ़ावा देती है।

82. निम्नलिखित में से कौन वैश्वीकरण का आयाम नहीं है?
(A) व्यापार और निवेश के माध्यम से आर्थिक एकीकरण।
(B) राष्ट्रीय अर्थव्यवस्थाओं का पूर्ण अलगाव।
(C) सांस्कृतिक आदान-प्रदान और प्रसार।
(D) राजनीतिक सहयोग और अंतरराष्ट्रीय संगठनों का उदय।

NODIA

83. उत्तर-आधुनिकीकरण के बारे में कुछ कथन नीचे दिए गए हैं:
I. यह भौतिकवादी से उत्तर-भौतिकवादी मूल्यों की ओर बदलाव से जुड़ा है।
II. यह प्रगति और विकास के वृहत आख्यानों पर प्रश्न उठाता है।
III. यह आधुनिक-पूर्व पारंपरिक समाजों की सामाजिक संरचनाओं की ओर लौटने का प्रतिनिधित्व करता है।
ऊपर दिए गए कथनों में से कौन से सही हैं?
(A) केवल I और II
(B) केवल II और III
(C) केवल I और III
(D) I, II और III

84. गुन्नार मिर्डल द्वारा प्रतिपादित 'मृदु राज्य' की अवधारणा की विशेषता है:
(A) राष्ट्रीय सामाजिक अनुशासन का अत्यधिक उच्च स्तर।
(B) व्यापक भ्रष्टाचार और कानून प्रवर्तन की कमी।
(C) एक कुशल और योग्यता-आधारित नौकरशाही।
(D) आमूल-चूल आर्थिक सुधारों को लागू करने की सुदृढ़ राजनीतिक इच्छाशक्ति।

85. विकास का कौन सा वैचारिक परिप्रेक्ष्य उस नीति की सर्वाधिक आलोचना करेगा जो जीडीपी तो बढ़ाती है लेकिन वायु प्रदूषण भी बढ़ाती है?
(A) आर्थिक संवृद्धि
(B) आधुनिकीकरण
(C) सतत विकास
(D) पश्चिमीकरण

86. विकास के 'सुविधाप्रदाता के रूप में सामाजिक संरचना' को इसमें देखा जा सकता है:
(A) एक सुदृढ़ और स्वतंत्र न्यायपालिका का अस्तित्व जो अनुबंधों को लागू करती है।
(B) बाल विवाह की प्रथा जो लड़कियों के लिए शैक्षिक प्राप्ति को सीमित करती है।
(C) जमींदार के प्रति सामंती वफादारी का सांस्कृतिक मानदंड।
(D) पक्षपातपूर्ण पूंजीवाद की एक प्रणाली जहाँ सफलता राजनीतिक संबंधों पर निर्भर करती है।

87. कौन सा कथन मानव विकास को सामाजिक विकास से सटीक रूप से पृथक करता है?

(A) मानव विकास व्यक्तिगत क्षमताओं पर ध्यान केंद्रित करता है, जबकि सामाजिक विकास सामाजिक संस्थाओं और संबंधों की गुणवत्ता पर ध्यान केंद्रित करता है।
(B) सामाजिक विकास विशुद्ध रूप से आर्थिक है, जबकि मानव विकास विशुद्ध रूप से सांस्कृतिक है।
(C) मानव विकास एक पश्चिमी अवधारणा है, जबकि सामाजिक विकास एक पूर्वी अवधारणा है।
(D) दोनों अवधारणाओं के बीच कोई तात्विक अंतर नहीं है।

88. यह विचार कि सभी समाज विकास के समान चरणों से गुजरते हैं, 'पारंपरिक' से आरंभ होकर 'आधुनिक' पर समाप्त होते हैं, किसका एक केंद्रीय सिद्धांत है?
(A) उत्तर-आधुनिकीकरण सिद्धांत
(B) सतत विकास
(C) वैश्वीकरण सिद्धांत
(D) आधुनिकीकरण सिद्धांत

89. एक सांस्कृतिक मूल्य प्रणाली जो उद्यमिता, नवाचार और उपलब्धि को महत्व देती है, उसे देखा जा सकता है:
(A) विकास में बाधा के रूप में।
(B) अल्पविकास के प्रभाव के रूप में।
(C) विकास में सहायक के रूप में।
(D) उत्तर-आधुनिकीकरण के लक्षण के रूप में।

90. सूची I को सूची II के साथ सुमेलित कीजिए।
सूची I: (मुख्य शब्द)
P. प्रोटेस्टेंट नैतिकता
Q. संचयी कारणता
R. सामाजिक-आर्थिक विषमता
S. अंतर-पीढ़ीगत समानता
सूची II: (संबद्ध अवधारणा)
1. सतत विकास
2. असमानता
3. गुन्नार मिर्डल
4. मैक्स वेबर
(A) P-4, Q-3, R-2, S-1
(B) P-3, Q-4, R-1, S-2
(C) P-4, Q-3, R-1, S-2
(D) P-3, Q-4, R-2, S-1

91. 'आर्थिक संवृद्धि' परिप्रेक्ष्य का प्राथमिक केंद्र निम्नलिखित पर है:
(A) व्यक्तिगत स्वतंत्रताओं और क्षमताओं का विस्तार।
(B) भविष्य की पीढ़ियों के लिए प्राकृतिक पर्यावरण का संरक्षण।
(C) वस्तुओं और सेवाओं के उत्पादन में मात्रात्मक वृद्धि।
(D) सामाजिक न्याय और समानता को बढ़ावा देना।

92. वह घटना जहाँ पश्चिमी मीडिया के प्रभाव से एक गैर-पश्चिमी देश में स्थानीय संगीत और सामाजिक मानदंडों में बदलाव आता है, उसे कहा जाता है:
(A) सामाजिक विकास
(B) आधुनिकीकरण
(C) पश्चिमीकरण
(D) सतत विकास

93. नीचे दो कथन दिए गए हैं:
कथन I: गुन्नार मिर्डल के अनुसार, एक विकासशील अर्थव्यवस्था में बाजार की ताकतें 'बैकवाश प्रभाव' की तुलना में अधिक शक्तिशाली 'प्रसार प्रभाव' उत्पन्न करती हैं।
कथन II: मैक्स वेबर ने तर्क दिया कि हिंदू धर्म का लोकाचार पूंजीवाद के लिए उतना ही अनुकूल था जितना कि प्रोटेस्टेंट नैतिकता।
(A) कथन I और कथन II दोनों सत्य हैं।
(B) कथन I और कथन II दोनों असत्य हैं।
(C) कथन I सत्य है, लेकिन कथन II असत्य है।
(D) कथन I असत्य है, लेकिन कथन II सत्य है।

94. औद्योगिकीकरण के परिणामस्वरूप शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों के बीच आय और अवसरों की बढ़ती खाई किसका उदाहरण है?
(A) विकास जिससे विषमताएं कम हो रही हैं।
(B) सामाजिक संरचना सुविधाप्रदाता के रूप में कार्य कर रही है।
(C) एक सफल सतत विकास नीति।
(D) विकास जिससे सामाजिक-आर्थिक विषमताएं बढ़ रही हैं।

95. विकास के संदर्भ में, 'सहायक के रूप में संस्कृति' बताती है कि:
(A) विश्वास और भविष्य-उन्मुखता जैसे मूल्य लेनदेन की लागत को कम कर सकते हैं और आर्थिक गतिविधि को बढ़ावा दे सकते हैं।
(B) सभी पारंपरिक संस्कृतियाँ स्वाभाविक रूप से विकास-समर्थक हैं।
(C) विकास में सहायता के लिए पर्यटन हेतु संस्कृति का व्यवसायीकरण किया जाना चाहिए।
(D) विकास तभी संभव है जब कोई समाज एक एकल वैश्विक संस्कृति को अपना ले।

96. 'उत्तर-आधुनिकीकरण' सिद्धांत बताता है कि जैसे-जैसे समाज अधिक समृद्ध होते जाते हैं, उनके मूल्य निम्नलिखित की ओर स्थानांतरित होते हैं:
(A) सामूहिकता से व्यक्तिवाद की ओर।
(B) उत्तरजीविता से आत्म-अभिव्यक्ति और जीवन की गुणवत्ता की ओर।
(C) धार्मिक से धर्मनिरपेक्ष की ओर।
(D) आत्म-अभिव्यक्ति से उत्तरजीविता की ओर।

97. निम्नलिखित में से कौन विकास में बाधा डालने वाली सामाजिक संरचना का उदाहरण नहीं है?
(A) एक जाति व्यवस्था जो जन्म के आधार पर व्यवसायों को

Click Here to Buy book on Amazon

प्रतिबंधित करती है।
(B) पितृसत्तात्मक मानदंड जो शिक्षा तक महिलाओं की पहुँच को सीमित करते हैं।
(C) सार्वजनिक संस्थानों में व्यापक भ्रष्टाचार।
(D) पारदर्शी और जवाबदेह शासन की प्रणाली।

98. 'सतत विकास' की मुख्य चिंता जो इसे अन्य विकास प्रतिमानों से अलग करती है, वह इसका निम्नलिखित पर बल है:
(A) किसी भी लागत पर तीव्र औद्योगिकीकरण।
(B) भविष्य की पीढ़ियों की आवश्यकताएं।
(C) राष्ट्र-राज्य की सर्वोच्चता।
(D) पश्चिमी उपभोक्ता संस्कृति को अपनाना।

99. प्रोटेस्टेंट नैतिकता और पूंजीवाद की भावना के बीच संबंधों का मैक्स वेबर का विश्लेषण विकास में किसकी भूमिका को उजागर करने वाले सिद्धांत का उदाहरण है?
(A) सामाजिक संरचना
(B) संस्कृति
(C) वैश्वीकरण
(D) भूगोल

100. नीचे दो कथन दिए गए हैं: एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है।
अभिकथन (A): वैश्वीकरण एक बहुआयामी प्रक्रिया है जिसमें आर्थिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक आयाम शामिल हैं।
कारण (R): वैश्वीकरण की प्रक्रिया में केवल पूंजी और वस्तुओं की मुक्त आवाजाही शामिल है, और इसका संस्कृति पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है।
(A) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सत्य हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सत्य है लेकिन R असत्य है।
(D) A असत्य है लेकिन R सत्य है।

101. कौन सा विकास परिप्रेक्ष्य किसी देश की सफलता को उसकी जीडीपी संवृद्धि दर से मापने की सर्वाधिक संभावना रखता है?
(A) मानव विकास
(B) सतत विकास
(C) आर्थिक संवृद्धि
(D) सामाजिक विकास

102. गुन्नार मिर्डल ने तर्क दिया कि विकासशील देशों में, 'प्रसार प्रभाव' अक्सर 'बैकवाश प्रभाव' से निर्बल होते हैं, जिससे:
(A) संतुलित क्षेत्रीय विकास होता है।
(B) क्षेत्रीय असमानता बढ़ती है।
(C) 'मृदु राज्य' का पतन होता है।
(D) उत्तर-आधुनिकीकरण की ओर तेजी से बदलाव होता है।

103. विकास के बारे में कुछ कथन नीचे दिए गए हैं:
I. आधुनिकीकरण सिद्धांत 'पारंपरिक' और 'आधुनिक' समाजों के बीच एक द्वैध स्थापित करता है।
II. 'पश्चिमीकरण', 'आधुनिकीकरण' का एक उपसमुच्चय है जहाँ आधुनिकता का मॉडल पश्चिम है।
III. वैश्वीकरण आधुनिकीकरण का अंतिम चरण है।
ऊपर दिए गए कथनों में से कौन से सही हैं?
(A) केवल I और II
(B) केवल II और III
(C) केवल I और III
(D) I, II और III

104. निम्नलिखित में से कौन 'सामाजिक विकास' को सबसे अच्छी तरह परिभाषित करता है?
(A) कल्याण और समानता प्राप्त करने के लिए सामाजिक संस्थाओं और संबंधों की गुणवत्ता में सुधार करना।
(B) किसी देश की राष्ट्रीय आय और वित्तीय पूंजी में वार्षिक प्रतिशत वृद्धि।
(C) पश्चिमी सांस्कृतिक मानदंडों और सामाजिक मूल्यों को अपनाने की प्रक्रिया।
(D) भविष्य की सभी मानव पीढ़ियों के लिए पर्यावरण का संरक्षण।

105. एक ऐसी संस्कृति जो अनुरूपता के पक्ष में व्यक्तिवाद और जोखिम लेने को दृढ़ता से हतोत्साहित करती है, उसे देखा जा सकता है:
(A) पूंजीवादी विकास के सुविधाप्रदाता के रूप में।
(B) उद्यमशीलता की गतिविधि में बाधा के रूप में।
(C) उत्तर-आधुनिक समाज की विशेषता के रूप में।
(D) वैश्वीकरण के परिणाम के रूप में।

106. 'विकास और सामाजिक-आर्थिक विषमता' की अवधारणा बताती है कि:
(A) विकास के सभी रूप स्वचालित रूप से असमानताओं को मिटा देते हैं।
(B) विकास की प्रक्रिया, विशेष रूप से बाजार के नेतृत्व वाली संवृद्धि, असमानता के नए रूप उत्पन्न कर सकती है।
(C) सामाजिक-आर्थिक विषमताएं केवल अल्पविकसित समाजों में उपस्थित होती हैं।
(D) विषमताएं एक सांस्कृतिक मुद्दा हैं, आर्थिक नहीं।

107. वेबर के दृष्टिकोण से, योग्यता के बजाय नातेदारी और व्यक्तिगत वफादारी पर आधारित नौकरशाही किसका उदाहरण होगी?
(A) तर्कसंगत विकास की सुविधा प्रदान करने वाली सामाजिक संरचना।
(B) तर्कसंगत विकास में बाधा डालने वाली सामाजिक संरचना।
(C) उत्तर-आधुनिक समाज की एक विशेषता।
(D) प्रोटेस्टेंट नैतिकता का एक प्रमुख घटक।

108. उत्तर-आधुनिकीकरण सिद्धांत द्वारा प्रस्तावित संभावित क्रम में निम्नलिखित सामाजिक मूल्यों को व्यवस्थित करें।

NODIA

129. 'उत्तर-आधुनिकीकरण' शब्द एक सामाजिक परिवर्तन का वर्णन करता है जिसकी विशेषता है:
(A) कृषि जीवन शैली की ओर वापसी।
(B) भौतिक धन और सुरक्षा पर बढ़ता बल।
(C) विज्ञान और प्रगति के वृहत सिद्धांतों के प्रति बढ़ता संदेह।
(D) पारंपरिक धार्मिक सत्ता का सुदृढ़ीकरण।

130. नीचे दो कथन दिए गए हैं: एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है।
अभिकथन (A): संस्कृति को विकास के सहायक और बाधा दोनों के रूप में देखा जा सकता है।
कारण (R): जबकि भाग्यवादिता जैसे सांस्कृतिक मूल्य विकास में बाधा डाल सकते हैं, विश्वास और सुदृढ़ कार्य नैतिकता इसमें सहायता कर सकते हैं।
(A) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सत्य हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सत्य है लेकिन R असत्य है।
(D) A असत्य है लेकिन R सत्य है।

131. एक बड़े औद्योगिक संयंत्र का निर्माण देश की जीडीपी को बढ़ाता है लेकिन सैकड़ों परिवारों को बिना पर्याप्त मुआवजे के उनकी भूमि से बेदखल कर देता है। यह परिदृश्य किसके बीच संभावित संघर्ष का उदाहरण है:
(A) आर्थिक संवृद्धि और सामाजिक विकास।
(B) आधुनिकीकरण और उत्तर-आधुनिकीकरण।
(C) पश्चिमीकरण और वैश्वीकरण।
(D) मानव विकास और सतत विकास।

132. सूची I को सूची II के साथ सुमेलित कीजिए।
सूची I: (विकास का पहलू)
P. पर्यावरणीय दीर्घायु
Q. व्यक्तिगत क्षमताएं
R. राष्ट्रीय आय में वृद्धि
S. सामाजिक समानता
सूची II: (वैचारिक परिप्रेक्ष्य)
1. आर्थिक संवृद्धि
2. सामाजिक विकास
3. मानव विकास
4. सतत विकास
(A) P-4, Q-3, R-1, S-2
(B) P-1, Q-2, R-3, S-4
(C) P-4, Q-1, R-3, S-2
(D) P-1, Q-3, R-2, S-4

133. मैक्स वेबर के अनुसार, 'पूंजीवाद की भावना' विशेष रूप से किसके द्वारा पोषित की गई थी?
(A) भारत में जाति व्यवस्था।
(B) पारंपरिक कुलों की सामाजिक एकजुटता।
(C) कुछ प्रोटेस्टेंट संप्रदायों के संयमित मूल्य।
(D) सुख की सुखवादी खोज।

134. निम्नलिखित में से कौन वैश्वीकरण की सबसे परिभाषित विशेषता है?
(A) स्थानीय परंपराओं का सुदृढ़ीकरण।
(B) विश्वव्यापी सामाजिक संबंधों का तीव्रीकरण।
(C) आर्थिक गतिविधि में गिरावट।
(D) सभी राष्ट्रों के बीच पूर्ण समानता।

135. नीचे दो कथन दिए गए हैं:
कथन I: विकास का आधुनिकीकरण पथ परंपरा को प्रगति में बाधा के रूप में देखता है।
कथन II: विकास का उत्तर-आधुनिकीकरण पथ प्रगति के एकल और सार्वभौमिक मानक का उत्सव मनाता है।
(A) कथन I और कथन II दोनों सत्य हैं।
(B) कथन I और कथन II दोनों असत्य हैं।
(C) कथन I सत्य है, लेकिन कथन II असत्य है।
(D) कथन I असत्य है, लेकिन कथन II सत्य है।

136. एक ऐसा समाज जिसमें व्यक्ति के जीवन के अवसर उस सामाजिक वर्ग द्वारा निर्धारित होते हैं जिसमें वह जन्मा है, यह स्पष्ट करता है कि कैसे:
(A) सामाजिक संरचना विकास के लिए बाधा के रूप में कार्य कर सकती है।
(B) सामाजिक संरचना विकास के सुविधाप्रदाता के रूप में कार्य कर सकती है।
(C) विकास ने सामाजिक-आर्थिक विषमताओं को समाप्त कर दिया है।
(D) विकास के लिए संस्कृति अप्रासंगिक है।

137. निम्नलिखित में से कौन सा 'सतत विकास' परिप्रेक्ष्य द्वारा संबोधित एक प्रमुख प्रश्न है?
(A) हम इस वर्ष जीडीपी को 10% कैसे बढ़ा सकते हैं?
(B) हम भविष्य की पीढ़ियों की आवश्यकताओं से समझौता किए बिना अपनी वर्तमान आवश्यकताओं को कैसे पूरा कर सकते हैं?
(C) हम अपनी संस्कृति को पश्चिम की तरह कैसे बना सकते हैं?
(D) हम अपने देश में कारखानों की संख्या कैसे बढ़ा सकते हैं?

138. विकास सिद्धांतों के बारे में कुछ कथन नीचे दिए गए हैं:
I. गुन्नार मिर्डल ने विकास नीतियों को लागू करने में राजनीतिक इच्छाशक्ति की कमी का वर्णन करने के लिए 'मृदु राज्य' की अवधारणा प्रस्तुत की।
II. मैक्स वेबर का कार्य इतिहास के एकमात्र चालक के रूप में भौतिक और आर्थिक संरचनाओं पर केंद्रित था।
III. अल्पविकास के उदारवादी सिद्धांत विकासशील समाज के आंतरिक कारकों पर बल देते हैं।
ऊपर दिए गए कथनों में से कौन से सही हैं?
(A) केवल I और II

Downloaded from www.pdf.tube

भागीदारी से बाहर रखते हैं।

118. वेबर और मिर्डल से जुड़े अल्पविकास के उदारवादी सिद्धांत मुख्य रूप से निम्नलिखित पर ध्यान केंद्रित करते हैं:
(A) बाहरी कारक जैसे उपनिवेशवाद और वैश्विक शक्ति संरचनाएं।
(B) समाज के भीतर के आंतरिक कारक, जैसे उसकी संस्कृति या राज्य की क्षमता।
(C) पर्यावरण को होने वाली अपूरणीय क्षति।
(D) साम्यवाद की अपरिहार्य विजय।

119. एक विकास संकेतक जो स्वास्थ्य, शिक्षा और जीवन स्तर तक पहुँच को मापता है, वह किसके सार को दर्शाता है?
(A) आर्थिक संवृद्धि
(B) पश्चिमीकरण
(C) मानव विकास
(D) वैश्वीकरण

120. विकास और विषमता के संबंध में कुछ कथन नीचे दिए गए हैं:
I. तीव्र आर्थिक संवृद्धि कभी-कभी धन के संकेंद्रण की ओर ले जा सकती है।
II. विकास नीतियों को विशेष रूप से सामाजिक-आर्थिक विषमताओं को कम करने के लिए निर्मित किया जा सकता है।
III. सामाजिक-आर्थिक विषमताएं सभी समाजों की एक स्वाभाविक और अपरिवर्तनीय विशेषता हैं।
ऊपर दिए गए कथनों में से कौन से सही हैं?
(A) केवल I और II
(B) केवल II और III
(C) केवल I और III
(D) I, II और III

121. यह तर्क कि धार्मिक नैतिकता द्वारा संचालित व्यवसायों की तर्कसंगत खोज आधुनिक पूंजीवाद के उदय में एक प्रमुख कारक थी, किसके कार्य के केंद्र में है?
(A) गुन्नार मिर्डल
(B) मैक्स वेबर
(C) कार्ल मार्क्स
(D) अमर्त्य सेन

122. निम्नलिखित में से कौन वैश्वीकरण की प्रक्रियाओं का अपवाद है?
(A) बहुराष्ट्रीय निगमों का उदय।
(B) वैश्विक संचार के लिए इंटरनेट का बढ़ता उपयोग।
(C) राष्ट्रीय व्यापार बाधाओं और आत्मनिर्भरता को सुदृढ़ करना।
(D) सांस्कृतिक उत्पादों का वैश्विक प्रसार।

123. 'सामाजिक विकास' का सरोकार निम्नलिखित से है:
(A) केवल राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था की संवृद्धि।
(B) अपनी सामाजिक संरचनाओं और संस्थाओं के संदर्भ में समाज की प्रगति।
(C) केवल पारिस्थितिक संतुलन का संरक्षण।
(D) केवल व्यक्तिगत विकल्पों का विस्तार।

124. गुन्नार मिर्डल के सिद्धांत के केंद्र में 'संचयी कारणता' की अवधारणा बताती है कि:
(A) गरीबी एक दुष्चक्र है जहाँ हानियां संचित होती रहती हैं।
(B) सभी समाज अंततः आर्थिक संतुलन की स्थिति में पहुँच जाते हैं।
(C) सांस्कृतिक मूल्य आर्थिक सफलता के एकमात्र निर्धारक हैं।
(D) मुक्त बाजार स्वाभाविक रूप से न्यायसंगत परिणामों की ओर ले जाते हैं।

NODIA

125. 'आर्थिक संवृद्धि' से 'मानव विकास' की ओर ध्यान केंद्रित करना निम्नलिखित की ओर एक कदम था:
(A) लोगों को आर्थिक संवृद्धि के साधन के रूप में देखना।
(B) आर्थिक संवृद्धि को लोगों के जीवन को बेहतर बनाने के साधन के रूप में देखना।
(C) आर्थिक संवृद्धि को पूरी तरह से त्याग देना।
(D) केवल पर्यावरणीय मुद्दों पर ध्यान केंद्रित करना।

126. 'उपलब्धि' के बजाय 'आरोपण' की विशेषता वाली सामाजिक संरचना वह होगी जहाँ:
(A) व्यक्ति की सामाजिक स्थिति उसके कौशल और प्रयासों से निर्धारित होती है।
(B) व्यक्ति की सामाजिक स्थिति जन्म, नातेदारी या जाति से निर्धारित होती है।
(C) सामाजिक गतिशीलता उच्च स्तर पर होती है।
(D) शिक्षा प्रणाली खुली और योग्यता-आधारित होती है।

127. 'पश्चिमीकरण' की अवधारणा के बारे में कौन सा कथन सबसे सटीक है?
(A) यह विकास की एक सार्वभौमिक प्रक्रिया का वर्णन करने वाला एक तटस्थ शब्द है।
(B) यह विशेष रूप से पश्चिम से सांस्कृतिक और संस्थागत स्वरूपों को अपनाने को संदर्भित करता है।
(C) यह एक विकासात्मक अवधारणा है जो पूरी तरह से 'सतत विकास' का पर्याय है।
(D) यह भौतिकवादी मूल्यों से आत्म-अभिव्यक्ति की ओर बदलाव का वर्णन करता है।

128. एक विकास रणनीति जो वनीकरण और नवीकरणीय ऊर्जा को बढ़ावा देने पर केंद्रित है, किस परिप्रेक्ष्य के साथ सबसे अच्छी तरह मेल खाती है?
(A) आर्थिक संवृद्धि
(B) आधुनिकीकरण
(C) सतत विकास
(D) सामाजिक विकास

67. निम्नलिखित में से कौन विकास की सुविधा प्रदान करने वाली सामाजिक संरचना का उदाहरण है?
(A) नौकरशाही नियुक्तियों में भाई-भतीजावाद।
(B) कानूनी खामियां जो व्यापक कर चोरी की अनुमति देती हैं।
(C) एक शिक्षा प्रणाली जो सभी वर्गों के लिए खुली है और उच्च गुणवत्ता वाला प्रशिक्षण प्रदान करती है।
(D) सुदृढ़ पितृसत्तात्मक मानदंड जो कार्यबल में महिलाओं की भागीदारी को सीमित करते हैं।

68. यह विचार कि विकास "दीर्घ, स्वस्थ और रचनात्मक जीवन जीने की क्षमता, ज्ञान प्राप्त करने और जीवन के एक सभ्य स्तर के लिए आवश्यक संसाधनों तक पहुँच" को बढ़ाना चाहिए, किसके केंद्र में है?
(A) अल्पविकास का उदारवादी सिद्धांत
(B) आधुनिकीकरण का सिद्धांत
(C) आर्थिक संवृद्धि की अवधारणा
(D) मानव विकास की अवधारणा

69. विकास पर वैचारिक परिप्रेक्ष्यों के संबंध में गलत युग्म की पहचान करें।
(A) आर्थिक संवृद्धि : राष्ट्रीय उत्पादन में वृद्धि
(B) मानव विकास : लोगों के विकल्पों को बढ़ाना
(C) सामाजिक विकास : लाभ का अधिकतम विस्तार
(D) सतत विकास : अंतर-पीढ़ीगत समानता

70. सूची I को सूची II के साथ सुमेलित कीजिए।
सूची I: (प्रक्रिया)
P. वैश्वीकरण
Q. उत्तर-आधुनिकीकरण
R. पश्चिमीकरण
S. आधुनिकीकरण
सूची II: (संबद्ध मूल्य)
1. संरचनात्मक विभेदीकरण
2. सांस्कृतिक समरूपीकरण
3. आत्म-अभिव्यक्ति मूल्यों का उदय
4. समय-स्थान संकुचन
(A) P-1, Q-2, R-3, S-4
(B) P-4, Q-3, R-2, S-1
(C) P-4, Q-2, R-3, S-1
(D) P-1, Q-3, R-2, S-4

71. धार्मिकता से धर्मनिरपेक्षता की ओर, पारंपरिक सत्ता से तर्कसंगत-कानूनी सत्ता की ओर, और कृषि आधारित अर्थव्यवस्था से औद्योगिक अर्थव्यवस्था की ओर बदलाव की विशेषता वाला समाज निम्नलिखित में से किससे गुजर रहा है?
(A) उत्तर-आधुनिकीकरण
(B) वैश्वीकरण
(C) सामाजिक विकास
(D) आधुनिकीकरण

72. विकास परियोजनाओं के लिए 'सामाजिक-आर्थिक विषमताएं' उत्पन्न करने की संभावना तब स्पष्ट होती है जब:
(A) एक नए बांध के लाभ मुख्य रूप से बड़े भूस्वामियों और उद्योगों द्वारा प्राप्त किए जाते हैं।
(B) एक सार्वजनिक स्वास्थ्य कार्यक्रम समाज के सभी वर्गों में शिशु मृत्यु दर को सफलतापूर्वक कम करता है।
(C) एक नया कानून पुरुषों और महिलाओं के लिए समान उत्तराधिकार अधिकार सुनिश्चित करता है।
(D) निर्धन ग्रामीण समुदायों में सूक्ष्म ऋण योजनाएं सफलतापूर्वक लागू की जाती हैं।

73. मैक्स वेबर और गुन्नार मिर्डल अल्पविकास के किस व्यापक सैद्धांतिक परिप्रेक्ष्य से जुड़े हैं?
(A) मार्क्सवादी
(B) निर्भरता
(C) उदारवादी
(D) उत्तर-संरचनावादी

74. विकास के लिए 'बाधा के रूप में संस्कृति' की अवधारणा निम्नलिखित में से किस अवलोकन द्वारा समर्थित होगी?
(A) एक ऐसी संस्कृति जो भाग्यवादिता को बढ़ावा देती है और दीर्घकालिक योजना को हतोत्साहित करती है।
(B) एक ऐसी संस्कृति जो वैज्ञानिक जांच और नवाचार को महत्व देती है।
(C) पारस्परिकता और सामाजिक विश्वास के सुदृढ़ मानदंडों वाली संस्कृति।
(D) एक ऐसी संस्कृति जो अपने सभी सदस्यों के लिए उच्च स्तर की शिक्षा को प्रोत्साहित करती है।

75. इन अवधारणाओं को उनके वैचारिक विकास के क्रम में व्यवस्थित करें, संकीर्ण आर्थिक केंद्र से विकास के व्यापक और अधिक समग्र दृष्टिकोण तक।
1. सतत विकास
2. मानव विकास
3. आर्थिक संवृद्धि
(A) 1, 2, 3
(B) 3, 2, 1
(C) 2, 3, 1
(D) 3, 2, 1

76. 'आर्थिक संवृद्धि' और 'सामाजिक विकास' के बीच मुख्य अंतर यह है कि:
(A) दोनों अवधारणाएं समान हैं और इनका परस्पर उपयोग किया जा सकता है।
(B) आर्थिक संवृद्धि धन सृजन पर ध्यान केंद्रित करती है, जबकि सामाजिक विकास समानता, न्याय और संस्थागत सुधार पर ध्यान केंद्रित करता है।
(C) सामाजिक विकास आर्थिक संवृद्धि के लिए एक पूर्व शर्त है।
(D) आर्थिक संवृद्धि को गुणात्मक रूप से मापा जाता है, जबकि सामाजिक विकास को मात्रात्मक रूप से मापा

Click Here to Buy book on Amazon

(B) केवल II और III
(C) केवल I और III
(D) I, II और III

139. वह परिप्रेक्ष्य जो यह मानता है कि विकास का अर्थ लोगों के विकल्पों को बढ़ाना और उन जीवन को जीने की उनकी क्षमताओं को बढ़ाना है जिन्हें वे मूल्यवान मानते हैं:
(A) मानव विकास
(B) आर्थिक संवृद्धि
(C) पश्चिमीकरण
(D) आधुनिकीकरण

140. वह प्रक्रिया जिसके द्वारा विकास स्वयं विजेता और पराजित वर्ग उत्पन्न कर सकता है, जिससे समाज में विभिन्न समूहों के बीच की खाई बढ़ जाती है, किस समस्या के रूप में जानी जाती है?
(A) सतत विकास
(B) सामाजिक-आर्थिक विषमताएं
(C) सांस्कृतिक बाधाएं
(D) उत्तर-आधुनिकीकरण

141. संस्कृति विकास के लिए एक 'सहायक' हो सकती है, यह विचार किस अवलोकन द्वारा समर्थित है?
(A) भ्रष्टाचार की संस्कृति आर्थिक प्रगति को धीमा कर देती है।
(B) उच्च स्तर के सामाजिक विश्वास वाली संस्कृति व्यवसाय और नागरिक समाज को बढ़ावा दे सकती है।
(C) एक ऐसी संस्कृति जो परंपरा को अन्य सभी चीजों से ऊपर मानती है, परिवर्तन का विरोध कर सकती है।
(D) सभी संस्कृतियाँ पूंजीवादी विकास के लिए समान रूप से अनुकूल हैं।

142. निम्नलिखित प्रक्रियाओं को एक तार्किक कार्य-कारण क्रम में व्यवस्थित करें जैसा कि एक आधुनिकीकरण सिद्धांतकार तर्क दे सकता है।
1. एक 'आधुनिक' व्यक्तित्व का उदय।
2. पश्चिमी तकनीक और पूंजी का प्रसार।
3. एक विकसित औद्योगिक समाज में परिवर्तन।
(A) 2, 1, 3
(B) 1, 3, 2
(C) 2, 3, 1
(D) 3, 2, 1

143. आधुनिकीकरण के विपरीत, जो सैद्धांतिक रूप से एक गैर-पश्चिमी मॉडल का अनुसरण कर सकता है, 'पश्चिमीकरण' विशेष रूप से इंगित करता है:
(A) औद्योगिकीकरण और शहरीकरण।
(B) पश्चिमी मूल के सांस्कृतिक और सामाजिक स्वरूपों को अपनाना।
(C) सतत संवृद्धि की उपलब्धि।
(D) मानव विकास संकेतकों में सुधार।

144. एक देश में, तेजी से जीडीपी संवृद्धि के एक दशक के बाद गिनी गुणांक काफी खराब हो जाता है। यह स्थिति इंगित करती है कि:
(A) सामाजिक संरचना ने न्यायसंगत संवृद्धि के लिए सुविधाप्रदाता के रूप में कार्य किया।
(B) विकास की प्रक्रिया ने सामाजिक-आर्थिक विषमताओं को बढ़ा दिया है।
(C) मानव विकास और आर्थिक संवृद्धि एक साथ आगे बढ़े हैं।
(D) देश ने सतत विकास प्राप्त कर लिया है।

145. नीचे दो कथन दिए गए हैं: एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है।
अभिकथन (A): गुन्नार मिर्डल के लिए, उत्तर-औपनिवेशिक राष्ट्रों में 'मृदु राज्य' विकास के लिए एक बड़ी बाधा है।
कारण (R): 'मृदु राज्य' की विशेषता उच्च स्तर का सामाजिक अनुशासन और एक कुशल, भ्रष्टाचार मुक्त नौकरशाही है।
(A) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सत्य हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सत्य है लेकिन R असत्य है।
(D) A असत्य है लेकिन R सत्य है।

146. विकास की कौन सी अवधारणा विद्यालयों, अस्पतालों और स्वच्छता प्रणालियों के निर्माण को प्राथमिकता देने की सर्वाधिक संभावना रखती है?
(A) मानव विकास
(B) आर्थिक संवृद्धि
(C) उत्तर-आधुनिकीकरण
(D) पश्चिमीकरण

147. एक लचीली और योग्यता-आधारित शिक्षा प्रणाली जो निर्धन पृष्ठभूमि के प्रतिभाशाली व्यक्तियों को नेतृत्व के पदों तक पहुँचने की अनुमति देती है, किसका उदाहरण है?
(A) बाधा के रूप में सामाजिक संरचना।
(B) सुविधाप्रदाता के रूप में सामाजिक संरचना।
(C) बाधा के रूप में संस्कृति।
(D) एक 'मृदु राज्य'।

148. निम्नलिखित में से कौन 'उत्तर-आधुनिकीकरण' मूल्य परिवर्तन की एक विशिष्ट विशेषता है?
(A) भौतिक संपदा पर अधिक बल।
(B) आर्थिक सुरक्षा पर बल देने के बजाय आत्म-अभिव्यक्ति और जीवन की गुणवत्ता पर बल देना।
(C) राष्ट्रीय सैन्य शक्ति पर नए सिरे से ध्यान केंद्रित करना।
(D) पर्यावरणीय चिंताओं की अस्वीकृति।

149. वैश्वीकरण के बारे में गलत कथन की पहचान करें।
(A) इसके प्रभाव समान रूप से वितरित हैं, जिससे सभी लोगों और राष्ट्रों को समान रूप से लाभ होता है।
(B) इसमें सीमाओं के पार पूंजी, वस्तुओं और सूचनाओं का

Downloaded from www.pdf.tube

1. आर्थिक सुरक्षा और भौतिक सुरक्षा पर बल।
2. व्यक्तिगत आत्म-अभिव्यक्ति और जीवन की गुणवत्ता पर बल।
3. निर्वाह और उत्तरजीविता।

(A) 3, 1, 2
(B) 1, 2, 3
(C) 2, 3, 1
(D) 3, 2, 1

109. सतत विकास का मौलिक सिद्धांत क्या है?
(A) आर्थिक संवृद्धि को अन्य सभी चीजों से ऊपर प्राथमिकता दी जानी चाहिए।
(B) वर्तमान पीढ़ी की आवश्यकताओं को भविष्य की पीढ़ियों की आवश्यकताओं से समझौता किए बिना पूरा किया जाना चाहिए।
(C) सभी समाजों को विकास के पश्चिमी पथ का अनुसरण करना चाहिए।
(D) सामाजिक विकास पर्यावरण संरक्षण से अधिक महत्वपूर्ण है।

110. सूची I को सूची II के साथ सुमेलित कीजिए।
सूची I: (अवधारणा)
P. मृदु राज्य
Q. प्रोटेस्टेंट नैतिकता
R. उत्तर-भौतिकवादी मूल्य
S. क्षमता दृष्टिकोण
सूची II: (संबद्ध विचारक/सिद्धांत)
1. मैक्स वेबर
2. गुन्नार मिर्डल
3. मानव विकास
4. उत्तर-आधुनिकीकरण

(A) P-1, Q-2, R-3, S-4
(B) P-2, Q-1, R-4, S-3
(C) P-2, Q-1, R-3, S-4
(D) P-1, Q-2, R-4, S-3

111. विकास के संदर्भ में 'सामाजिक-आर्थिक विषमताओं' का तात्पर्य निम्नलिखित में असमानताओं से है:
(A) ऊंचाई और भार
(B) आय, धन और जीवन के अवसर
(C) धार्मिक विश्वास
(D) व्यक्तिगत राय

112. विकास का आधुनिकीकरण पथ सामान्यतः विकसित देशों से विकासशील देशों में निम्नलिखित में से किसके प्रसार की वकालत करता है?
(A) पूंजी, तकनीक और 'आधुनिक' मूल्य
(B) पारंपरिक कृषि तकनीकें
(C) स्वदेशी ज्ञान प्रणालियाँ
(D) निर्भरता और अल्पविकास

113. नीचे दो कथन दिए गए हैं:
कथन I: मानव विकास आर्थिक संवृद्धि की तुलना में व्यापक अवधारणा है।
कथन II: एक देश में उच्च आर्थिक संवृद्धि हो सकती है लेकिन फिर भी मानव विकास संकेतक निम्न हो सकते हैं।
(A) कथन I और कथन II दोनों सत्य हैं।
(B) कथन I और कथन II दोनों असत्य हैं।
(C) कथन I सत्य है, लेकिन कथन II असत्य है।
(D) कथन I असत्य है, लेकिन कथन II सत्य है।

114. राष्ट्रीय अर्थव्यवस्थाओं का एक एकल वैश्विक बाजार में बढ़ता एकीकरण किसकी एक प्रमुख विशेषता है?
(A) उत्तर-आधुनिकीकरण
(B) सामाजिक विकास
(C) वैश्वीकरण
(D) मृदु राज्य

115. नीचे दो कथन दिए गए हैं: एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है।
अभिकथन (A): किसी देश की सामाजिक संरचना विकास को सुगम बना सकती है या रोक सकती है।
कारण (R): कानूनी प्रणाली और शिक्षा प्रणाली जैसी संस्थाएँ व्यक्तियों के लिए उपलब्ध अवसरों को आकार देती हैं।
(A) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सत्य हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सत्य है लेकिन R असत्य है।
(D) A असत्य है लेकिन R सत्य है।

116. 'आधुनिकीकरण' और 'उत्तर-आधुनिकीकरण' के बीच एक प्रमुख अंतर यह है कि:
(A) आधुनिकीकरण औद्योगिकीकरण पर बल देता है, जबकि उत्तर-आधुनिकीकरण सेवा अर्थव्यवस्था पर बल देता है।
(B) आधुनिकीकरण प्रगति के वृहत आख्यानों का समर्थन करता है, जबकि उत्तर-आधुनिकीकरण उनके प्रति संदेहास्पद है।
(C) आधुनिकीकरण भौतिकवादी मूल्यों से जुड़ा है, जबकि उत्तर-आधुनिकीकरण उत्तर-भौतिकवादी मूल्यों से जुड़ा है।
(D) उपर्युक्त सभी।

117. इनमें से कौन 'विकास के सहायक के रूप में संस्कृति' का उदाहरण है?
(A) विशिष्ट उपभोग की परंपरा जो बचत को हतोत्साहित करती है।
(B) 'विश्वास' का एक सुदृढ़ सांस्कृतिक मानदंड जो अनुबंधों के विधिक प्रवर्तन की आवश्यकता को कम करता है।
(C) अंधविश्वास जो सामाजिक संघर्ष और संदेह उत्पन्न करता है।
(D) पितृसत्तात्मक मूल्य जो आधी जनसंख्या को आर्थिक

NODIA

160. आधुनिकीकरण और पश्चिमीकरण के बीच मुख्य अंतर यह है कि आधुनिकीकरण _____ की प्रक्रिया है, जबकि पश्चिमीकरण _____ की प्रक्रिया है।
(A) सांस्कृतिक अनुकरण; संरचनात्मक परिवर्तन
(B) संरचनात्मक परिवर्तन; सांस्कृतिक अनुकरण
(C) आर्थिक गिरावट; सांस्कृतिक संवृद्धि
(D) सामाजिक न्याय; आर्थिक संवृद्धि

161. एक विकास परियोजना जो एक नई फसल प्रस्तुत करके कृषि उत्पादन बढ़ाती है, लेकिन समुदाय को पूरी तरह से एक एकल बहुराष्ट्रीय निगम पर निर्भर बनाती है, उसे किसके नकारात्मक पहलू के रूप में देखा जा सकता है?
(A) सामाजिक विकास
(B) सतत विकास
(C) वैश्वीकरण
(D) उत्तर-आधुनिकीकरण

162. मैक्स वेबर के अनुसार, सामाजिक जीवन का 'तर्कसंगतीकरण', जो आधुनिकीकरण का एक प्रमुख घटक है, में शामिल है:
(A) लक्ष्य-उन्मुख, कुशल और गणनात्मक क्रिया का बढ़ता प्रभुत्व।
(B) जादू और परंपरा पर अधिक निर्भरता।
(C) भावनात्मक सामाजिक बंधनों पर ध्यान केंद्रित करना।
(D) विज्ञान और तकनीक की अस्वीकृति।

163. 'सामाजिक विकास' की प्राथमिक चिंता निम्नलिखित के साथ है:
(A) एक देश द्वारा उत्पादित वस्तुओं की मात्रा।
(B) इसकी सामाजिक संस्थाओं की गुणवत्ता और इसके सामाजिक संबंधों की समानता।
(C) विदेशी सांस्कृतिक लक्षणों को अपनाना।
(D) मानवीय आवश्यकताओं के ऊपर प्रकृति का संरक्षण।

164. समृद्ध समाजों में पर्यावरणीय आंदोलनों का उदय और भौतिक संचय के बजाय जीवन की गुणवत्ता पर बल देना किसके सिद्धांत के तहत अध्ययन की जाने वाली घटनाएँ हैं?
(A) आधुनिकीकरण
(B) उत्तर-आधुनिकीकरण
(C) पश्चिमीकरण
(D) आर्थिक संवृद्धि

165. नीचे दो कथन दिए गए हैं: एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है।
अभिकथन (A): किसी देश में भ्रष्टाचार के उच्च स्तर को गुन्नार मिर्डल द्वारा वर्णित 'मृदु राज्य' के उदाहरण के रूप में देखा जा सकता है।
कारण (R): भ्रष्टाचार अपने स्वयं के नियमों और कानूनों को लागू करने में राज्य की विफलता का प्रतीक है।
(A) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सत्य लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सत्य है लेकिन R असत्य है।
(D) A असत्य है लेकिन R सत्य है।

166. एक समाज की कानूनी व्यवस्था महिलाओं को संपत्ति रखने से रोकती है। यह किसका स्पष्ट उदाहरण है?
(A) विकास की सुविधा प्रदान करने वाली सामाजिक संरचना।
(B) विकास में बाधा डालने वाली सामाजिक संरचना।
(C) विकास के लिए सांस्कृतिक सहायता।
(D) उत्तर-आधुनिकीकरण की एक विशेषता।

167. विकास का कौन सा वैचारिक परिप्रेक्ष्य यह प्रश्न पूछेगा, "क्या संवृद्धि का वर्तमान स्वरूप भविष्य की पीढ़ियों के लिए उचित है?"
(A) आर्थिक संवृद्धि
(B) सतत विकास
(C) आधुनिकीकरण
(D) पश्चिमीकरण

168. यह विचार कि विकास "समृद्धि के द्वीप" उत्पन्न करना चाहिए जबकि अन्य क्षेत्रों को "जड़" छोड़ देना चाहिए, किसके अल्पविकास के सिद्धांत के केंद्र में है?
(A) मैक्स वेबर
(B) गुन्नार मिर्डल
(C) टैलकोट पार्सन्स
(D) रोनाल्ड इंगलहार्ट

169. विकास के एकमात्र उपाय के रूप में 'आर्थिक संवृद्धि' का उपयोग करने की मौलिक आलोचना क्या है?
(A) इसे मापना बहुत कठिन है।
(B) यह आय के वितरण, जीवन की गुणवत्ता और पर्यावरणीय प्रभावों की उपेक्षा करता है।
(C) यह विकास-विरोधी विचारकों द्वारा आविष्कृत अवधारणा है।
(D) यह सामाजिक न्याय पर बहुत अधिक ध्यान केंद्रित करता है।

170. निम्नलिखित में से कौन सांस्कृतिक लक्षण के विकास के लिए 'सहायक' के रूप में कार्य करने का उदाहरण है?
(A) शिक्षा और सीखने पर सांस्कृतिक बल।
(B) भाई-भतीजावाद का मानदंड।
(C) भाग्यवादिता में विश्वास।
(D) सामाजिक समारोहों पर भव्य व्यय की परंपरा।

171. राष्ट्रीय आर्थिक नीतियों पर अंतरराष्ट्रीय निकायों का बढ़ता प्रभाव किसकी अभिव्यक्ति है?
(A) उत्तर-आधुनिकीकरण
(B) वैश्वीकरण
(C) सामाजिक विकास
(D) प्रोटेस्टेंट नैतिकता

Click Here to Buy book on Amazon

172. नीचे दो कथन दिए गए हैं:
कथन I: मानव विकास दृष्टिकोण तर्क देता है कि आय मानव विकास का एक साधन है, अपने आप में अंत नहीं।
कथन II: आर्थिक संवृद्धि दृष्टिकोण तर्क देता है कि आय बढ़ाना विकास का अंतिम लक्ष्य है।
(A) कथन I और कथन II दोनों सत्य हैं।
(B) कथन I और कथन II दोनों असत्य हैं।
(C) कथन I सत्य है, लेकिन कथन II असत्य है।
(D) कथन I असत्य है, लेकिन कथन II सत्य है।

173. विकास का 'आधुनिकीकरण' पथ यह मानता है कि 'पारंपरिक' समाजों की विशेषता निम्नलिखित में से सभी है, सिवाय:
(A) आरोपित स्थिति
(B) सुदृढ़ नातेदारी संबंध
(C) मुख्य रुप से कृषि आधारित अर्थव्यवस्था
(D) एक तर्कसंगत-कानूनी नौकरशाही

174. विकास नीतियों के अनपेक्षित परिणाम के रूप में नई और व्यापक सामाजिक-आर्थिक विषमताओं का उदय योजना में किस परिप्रेक्ष्य को एकीकृत करने के महत्व को उजागर करता है?
(A) शुद्ध आर्थिक संवृद्धि केंद्र
(B) सामाजिक विकास और समानता की चिंताएं
(C) पश्चिमीकरण की सख्त नीति
(D) यह विश्वास कि बाजार सभी समस्याओं का समाधान करेगा

175. निम्नलिखित विचारकों और अवधारणाओं को एक तार्किक युग्म में व्यवस्थित करें।
सूची I: (विचारक)
1. मैक्स वेबर
2. गुन्नार मिर्डल
3. उत्तर-आधुनिकीकरण सिद्धांतकार
सूची II: (अवधारणा)
a. मृदु राज्य
b. उत्तर-भौतिकवादी मूल्य
c. सांस्कृतिक-धार्मिक नैतिकता और पूंजीवाद
नीचे दिए गए कूटों के आधार पर सही उत्तर चुनिए—
(A) 1-a, 2-b, 3-c
(B) 1-c, 2-a, 3-b
(C) 1-b, 2-c, 3-a
(D) 1-c, 2-b, 3-a

176. निम्नलिखित में से कौन 'उत्तर-आधुनिकीकरण' समाज की प्राथमिक विशेषता है?
(A) भारी उद्योग और विनिर्माण पर ध्यान।
(B) लोकतांत्रिक संस्थाओं में गिरावट।
(C) व्यक्तिगत पहचान, जीवन शैली विकल्पों और जीवन की गुणवत्ता के महत्व में वृद्धि।
(D) पारंपरिक, पदानुक्रमित सामाजिक संरचनाओं के प्रति सुदृढ़ निष्ठा।

177. एक सांस्कृतिक व्यवस्था जो एक गुण के रूप में 'तपस्या' को उच्च स्थान देती है, वेबर के अनुसार, पूंजी संचय के लिए एक _____ होगी।
(A) सहायता
(B) बाधा
(C) अप्रासंगिक कारक
(D) अवरोधक

178. 'सामाजिक-आर्थिक विषमताओं' की अवधारणा मुख्य रूप से निम्नलिखित से संबंधित है:
(A) प्राकृतिक पर्यावरणीय अंतर।
(B) राजनीतिक राय में अंतर।
(C) समाज के भीतर पदानुक्रमित विभाजन और असमानताएं।
(D) तकनीकी परिवर्तन की गति।

NODIA

179. अल्पविकास के उदारवादी सिद्धांतों (मैक्स वेबर, गुन्नार मिर्डल) में एक सामान्य प्रवृत्ति क्या साझा है?
(A) सभी समस्याओं के लिए उपनिवेशवाद को दोष देना।
(B) एक कम्युनिस्ट क्रांति की वकालत करना।
(C) विकासशील राष्ट्र के आंतरिक कारकों का विश्लेषण करना।
(D) राज्य की भूमिका की अनदेखी करना।

180. सूची I को सूची II के साथ सुमेलित कीजिए।
सूची I: (शब्द)
P. जीएनपी संवृद्धि
Q. क्षमता विस्तार
R. पारिस्थितिक संतुलन
S. सामाजिक न्याय
सूची II: (विकास प्रतिमान)
1. सतत विकास
2. सामाजिक विकास
3. मानव विकास
4. आर्थिक संवृद्धि
(A) P-4, Q-3, R-1, S-2
(B) P-1, Q-2, R-3, S-4
(C) P-4, Q-2, R-1, S-3
(D) P-1, Q-3, R-2, S-4

181. एक 'सामाजिक संरचना' जिसमें सुव्यवस्थित और सार्वभौमिक रूप से लागू संपत्ति अधिकार शामिल हैं, उसकी संभावना है:
(A) असमानता उत्पन्न करके विकास को रोकना।
(B) विकास प्रक्रिया के लिए अप्रासंगिक होना।
(C) निवेश और उद्यम को प्रोत्साहित करके विकास की सुविधा प्रदान करना।
(D) केवल उत्तर-आधुनिक समाजों में उपस्थित होना।

182. 'पश्चिमीकरण' की प्रायः इसके लिए आलोचना की जाती है:
(A) संधारणीय प्रथाओं को बढ़ावा देना।
(B) सांस्कृतिक समरूपीकरण और स्थानीय परंपराओं के क्षरण की ओर ले जाना।

(C) बहुत धीमी प्रक्रिया होना।
(D) गैर-पश्चिमी समाजों में सामाजिक एकजुटता को सुदृढ़ करना।

183. विकास के बारे में कुछ कथन नीचे दिए गए हैं:
I. वैश्वीकरण एक ऐसी प्रक्रिया है जो केवल विकसित देशों की अर्थव्यवस्थाओं को प्रभावित करती है।
II. आधुनिकीकरण सिद्धांत बताता है कि सभी समाज एक 'आधुनिक' अवस्था की ओर समान पथ पर हैं।
III. सतत विकास आर्थिक, सामाजिक और पर्यावरणीय लक्ष्यों को संतुलित करता है।
ऊपर दिए गए कथनों में से कौन से सही हैं?
(A) केवल I और II
(B) केवल II और III
(C) केवल I और III
(D) I, II और III

184. 'मानव विकास' का मूल विचार है:
(A) देश की सैन्य शक्ति बढ़ाना।
(B) मनुष्यों को राष्ट्रों की वास्तविक संपत्ति के रूप में केंद्रित करना।
(C) पश्चिमी संस्कृति को अपनाने को बढ़ावा देना।
(D) आर्थिक संवृद्धि की उच्चतम संभव दर प्राप्त करना।

185. गुन्नार मिर्डल के अनुसार, विकासशील देशों में बाजार की ताकतें क्षेत्रीय असमानताओं को क्यों बढ़ाती हैं?
(A) 'प्रसार प्रभाव' के 'बैकवाश प्रभाव' पर हावी होने के कारण।
(B) असंतुलन को ठीक करने वाले सरकारी हस्तक्षेप के कारण।
(C) अमीर क्षेत्रों की ओर पूंजी और श्रम के पलायन के कारण।
(D) मृदु राज्य में सामाजिक न्याय के प्रति दृढ़ प्रतिबद्धता के कारण।

186. इनमें से किसे 'उत्तर-आधुनिकीकरण' के परिणाम के रूप में देखा जा सकता है?
(A) राजनीतिक दलों और ट्रेड यूनियनों के प्रति सुदृढ़ वफादारी।
(B) व्यक्तिगत पसंद के महत्व में गिरावट।
(C) पर्यावरण संरक्षण और मानवाधिकार जैसे मुद्दों पर अधिक बल।
(D) वृहत वैज्ञानिक या राजनीतिक विचारधाराओं में विश्वास का पुनरुत्थान।

187. "किसी देश की प्रति व्यक्ति आय में वृद्धि" किसकी परिभाषा है?
(A) सामाजिक विकास
(B) मानव विकास
(C) सतत विकास
(D) आर्थिक संवृद्धि

188. धर्म और अर्थव्यवस्था पर मैक्स वेबर का कार्य निम्नलिखित के विश्लेषण का एक उत्कृष्ट उदाहरण है:
(A) बाधा के रूप में सामाजिक संरचना।
(B) विकास के सहायक/बाधा के रूप में संस्कृति।
(C) वैश्वीकरण के प्रभाव।
(D) सतत विकास के सिद्धांत।

189. एक राज्य जो कर एकत्र करने, अनुबंधों को लागू करने और कानून व्यवस्था बनाए रखने के लिए संघर्ष करता है, वह गुन्नार मिर्डल के अनुसार किसका उदाहरण है:
(A) उत्तर-आधुनिक राज्य
(B) कठोर राज्य
(C) मृदु राज्य
(D) सतत राज्य

190. नीचे दो कथन दिए गए हैं: एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है।
अभिकथन (A): आधुनिकीकरण और वैश्वीकरण जैसे 'विकास के पथ' आलोचकों के बिना नहीं हैं।
कारण (R): ये पथ बढ़ती असमानता, सांस्कृतिक व्यवधान और पर्यावरणीय क्षति का कारण बन सकते हैं।
(A) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सत्य हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सत्य है लेकिन R असत्य है।
(D) A असत्य है लेकिन R सत्य है।

191. एक सरकार अपने सभी नागरिकों के लिए निःशुल्क सार्वजनिक शिक्षा और स्वास्थ्य सेवा में भारी निवेश करती है। यह नीति मुख्य रूप से निम्नलिखित को बढ़ावा देती है:
(A) आर्थिक संवृद्धि, जैसा कि जीडीपी द्वारा मापा जाता है।
(B) मानव विकास, क्षमताओं का विस्तार करके।
(C) पश्चिमीकरण, विदेशी मॉडलों को अपनाकर।
(D) उत्तर-आधुनिकीकरण, आर्थिक लक्ष्यों को अस्वीकार करके।

192. निम्नलिखित में से कौन विकास के 'आधुनिकीकरण' पथ की विशेषता नहीं है?
(A) प्रगति और तर्कसंगतता में विश्वास।
(B) औद्योगिकीकरण और शहरीकरण का महत्व।
(C) आधुनिक मूल्यों और संस्थाओं को अपनाने की आवश्यकता।
(D) इतिहास का चक्रीय दृष्टिकोण जहाँ समाजों का उत्थान और पतन होता है।

193. यह अवधारणा कि विकास को आने वाली पीढ़ियों के लिए संसाधन आधार को संकट में नहीं डालना चाहिए, किसके केंद्र में है?
(A) सामाजिक विकास
(B) आर्थिक संवृद्धि
(C) सतत विकास

Downloaded from www.pdf.tube

216. 'आर्थिक संवृद्धि' की अवधारणा मुख्य रूप से संबंधित है:
(A) धन का वितरण।
(B) अर्थव्यवस्था का कुल आकार।
(C) राजनीतिक स्वतंत्रता का स्तर।
(D) पर्यावरण का स्वास्थ्य।

217. गुन्नार मिर्डल के ढांचे में, एक सरकार जो शक्तिशाली समूहों की इच्छा के विरुद्ध भूमि सुधारों को सफलतापूर्वक लागू करती है, वह किसका उदाहरण होगी:
(A) मृदु राज्य
(B) कठोर राज्य
(C) उत्तर-आधुनिक राज्य
(D) विफल राज्य

218. जब एक कठोर वर्ग या जाति व्यवस्था के कारण सामाजिक गतिशीलता अवरुद्ध हो जाती है, तो 'सामाजिक संरचना' किस रूप में कार्य कर रही है:
(A) विकास का सुविधाप्रदाता
(B) विकास का अवरोधक
(C) विकास में एक तटस्थ कारक
(D) उत्तर-आधुनिकीकरण का उत्पाद

219. यह तर्क कि विकास रणनीतियों में भविष्य की पीढ़ियों की आवश्यकताओं पर विचार किया जाना चाहिए, किसका आधार है:
(A) मानव विकास
(B) सतत विकास
(C) सामाजिक विकास
(D) आधुनिकीकरण सिद्धांत

220. "प्रगति" और "तर्क" के सार्वभौमिक दावों के प्रति संदेहास्पद दृष्टिकोण किसकी पहचान है:
(A) आधुनिकीकरण
(B) उत्तर-आधुनिकीकरण
(C) आर्थिक संवृद्धि मॉडल
(D) पश्चिमीकरण

221. मैक्स वेबर का सिद्धांत विशिष्ट सांस्कृतिक मूल्यों और निम्नलिखित के बीच एक सुदृढ़ कड़ी का सुझाव देता है:
(A) सतत विकास का उदय।
(B) एक विशेष आर्थिक व्यवस्था का उद्भव।
(C) वैश्वीकरण की प्रक्रिया।
(D) सभी विकास प्रयासों की विफलता।

222. 'सामाजिक-आर्थिक विषमता' शब्द निम्नलिखित में से किसके असमान उपयोग को संदर्भित कर सकता है?
(A) धन और आय
(B) शिक्षा और स्वास्थ्य सेवा
(C) राजनीतिक शक्ति और प्रभाव
(D) उपर्युक्त सभी

223. मैक्स वेबर और गुन्नार मिर्डल के सिद्धांतों पर 'उदारवादी' लेबल यह सुझाव देता है कि वे अल्पविकास के समाधान के रूप में _____ की वकालत नहीं करते हैं।
(A) राज्य का हस्तक्षेप
(B) सांस्कृतिक परिवर्तन
(C) पूंजीवाद का क्रांतिकारी तख्तापलट
(D) संस्थागत सुधार

NODIA

224. निम्नलिखित में से कौन मानव विकास सूचकांक के तीन मुख्य घटकों में से एक नहीं है?
(A) एक दीर्घ और स्वस्थ जीवन
(B) ज्ञान
(C) जीवन का एक सभ्य स्तर
(D) राजनीतिक स्वतंत्रता और मानवाधिकार

225. नीचे दो कथन दिए गए हैं: एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है।
अभिकथन (A): वैश्वीकरण सांस्कृतिक समरूपीकरण की ओर ले जा सकता है।
कारण (R): पश्चिमी मीडिया, ब्रांडों और मनोरंजन का वैश्विक प्रभुत्व स्थानीय संस्कृतियों को विस्थापित कर सकता है।
(A) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सत्य हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सत्य है लेकिन R असत्य है।
(D) A असत्य है लेकिन R सत्य है।

226. एक सामाजिक संरचना विकास की 'सुविधाप्रदाता' है यदि वह:
(A) सामाजिक गतिशीलता और योग्यता तंत्र को बढ़ावा देती है।
(B) जन्म के आधार पर संसाधनों तक पहुँच को प्रतिबंधित करती है।
(C) अनिश्चितता उत्पन्न करती है और निवेश को हतोत्साहित करती है।
(D) कठोर पारंपरिक मानदंडों को लागू करती है।

227. विनिर्माण आधारित अर्थव्यवस्था से सेवा और ज्ञान आधारित अर्थव्यवस्था की ओर बदलाव किसकी ओर संक्रमण की एक प्रमुख विशेषता है?
(A) आधुनिकीकरण
(B) पश्चिमीकरण
(C) उत्तर-आधुनिकीकरण
(D) अल्पविकास

228. "भविष्य की पीढ़ियों की अपनी आवश्यकताओं को पूरा करने की क्षमता से समझौता किए बिना वर्तमान की आवश्यकताओं को पूरा करना" किसकी सर्वाधिक व्यापक परिभाषा है?
(A) आर्थिक संवृद्धि
(B) सामाजिक विकास
(C) मानव विकास

(B) A और R दोनों सत्य हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सत्य है लेकिन R असत्य है।
(D) A असत्य है लेकिन R सत्य है।

206. एक सामाजिक व्यवस्था जहाँ नियुक्तियाँ योग्यता के बजाय व्यक्तिगत संबंधों और पारिवारिक संबंधों पर आधारित होती हैं, एक ऐसी सामाजिक संरचना का उदाहरण है जो:
(A) विकास की सुविधा प्रदान करती है
(B) विकास को रोकती है
(C) उत्तर-आधुनिक मूल्यों को बढ़ावा देती है
(D) वैश्वीकरण का परिणाम है

207. निम्नलिखित में से कौन 'सतत विकास' को बढ़ावा देने वाली नीति का सबसे अच्छा उदाहरण है?
(A) अधिक ड्राइविंग को प्रोत्साहित करने के लिए पेट्रोलियम पर सब्सिडी।
(B) प्रदूषण नियंत्रण तकनीक स्थापित करने वाले उद्योगों के लिए कर प्रोत्साहन।
(C) तत्काल लकड़ी राजस्व के लिए वनों को काटने का कार्यक्रम।
(D) अपशिष्ट निपटान योजना के बिना परमाणु संयंत्र का निर्माण।

208. 'उत्तर-आधुनिकीकरण' शब्द सामाजिक मूल्यों में _____ से _____ की ओर बदलाव से जुड़ा है।
(A) उत्तरजीविता; आत्म-अभिव्यक्ति
(B) धार्मिक; धर्मनिरपेक्ष
(C) कृषि; औद्योगिक
(D) सामूहिक; व्यक्तिवादी

209. एशिया में व्यावसायिक भाषा के रूप में अंग्रेजी, पश्चिमी पॉप संगीत और यूरोपीय फैशन प्रवृत्तियों को अपनाना किसके संकेतक हैं?
(A) सामाजिक विकास
(B) सतत विकास
(C) पश्चिमीकरण
(D) उत्तर-आधुनिकीकरण

210. सूची I को सूची II के साथ सुमेलित कीजिए।
सूची I: (सिद्धांत/अवधारणा)
P. मैक्स वेबर
Q. गुन्नार मिर्डल
R. मानव विकास
S. आधुनिकीकरण
सूची II: (केंद्र बिंदु)
1. पारंपरिक बनाम आधुनिक का द्वैध
2. क्षमताओं और विकल्पों का विस्तार
3. चक्रीय और संचयी कारणता
4. सांस्कृतिक मूल्य और आर्थिक तर्कसंगतता
(A) P-1, Q-2, R-3, S-4
(B) P-4, Q-3, R-2, S-1
(C) P-4, Q-3, R-1, S-2
(D) P-1, Q-4, R-2, S-3

211. एक विशिष्ट क्षेत्र में आर्थिक उछाल जो राष्ट्रीय जीडीपी को बढ़ाता है लेकिन जनसंख्या के केवल एक छोटे शिक्षित भाग को लाभ पहुँचाता है, यह दर्शाता है कि विकास निम्नलिखित की ओर ले जा सकता है:
(A) सामाजिक-आर्थिक विषमताएं
(B) सांस्कृतिक बाधा
(C) एक सुदृढ़ सामाजिक संरचना
(D) सतत परिणाम

212. नीचे दो कथन दिए गए हैं:
कथन I: अल्पविकास का उदारवादी सिद्धांत विकास की कमी के लिए आंतरिक सामाजिक कारकों को उत्तरदायी मानता है।
कथन II: इसके विपरीत, निर्भरता सिद्धांत अल्पविकास के लिए वैश्विक पूंजीवादी शोषण के बाहरी कारकों को उत्तरदायी मानता है।
(A) कथन I और कथन II दोनों सत्य हैं।
(B) कथन I और कथन II दोनों असत्य हैं।
(C) कथन I सत्य है, लेकिन कथन II असत्य है।
(D) कथन I असत्य है, लेकिन कथन II सत्य है।

213. एक ऐसी संस्कृति जो उच्च स्तर के सामाजिक विश्वास, सुदृढ़ कार्य नैतिकता और अनुबंधों के सम्मान को बढ़ावा देती है, उसे देखा जाएगा:
(A) विकास में बाधा के रूप में।
(B) विकास में सहायक के रूप में।
(C) मृदु राज्य की एक विशेषता के रूप में।
(D) उत्तर-आधुनिकता के संकेत के रूप में।

214. मानव विकास परिप्रेक्ष्य तर्क देता है कि आर्थिक संवृद्धि है:
(A) समाज का अंतिम लक्ष्य।
(B) लक्ष्य प्राप्ति का एक साधन, लक्ष्य मानव कल्याण है।
(C) मानव कल्याण के लिए अप्रासंगिक।
(D) समाज के लिए हमेशा हानिकारक।

215. विकास के पथों के बारे में कुछ कथन नीचे दिए गए हैं:
I. आधुनिकीकरण एक ऐसे संक्रमण का संकेत देता है जिससे सभी समाजों को गुजरना होगा।
II. वैश्वीकरण इन सभी समाजों की बढ़ती परस्पर संबद्धता को संदर्भित करता है।
III. पश्चिमीकरण पश्चिम के सांस्कृतिक मॉडल को विशेष रूप से अपनाना है।
ऊपर दिए गए कथनों में से कौन से सही हैं?
(A) केवल I और II
(B) केवल II और III
(C) केवल I और III
(D) I, II और III

Click Here to Buy book on Amazon

(D) मानव विकास

194. एक कठोर जाति व्यवस्था जहाँ व्यवसाय जन्म से निर्धारित होता है, किसका प्रमुख उदाहरण है?
(A) विकास के सुविधाप्रदाता के रूप में सामाजिक संरचना।
(B) विकास के अवरोधक के रूप में सामाजिक संरचना।
(C) एक वैश्वीकृत समाज की विशेषता।
(D) एक उत्तर-आधुनिक घटना।

195. अंतरराष्ट्रीय गैर-सरकारी संगठनों और वैश्विक सामाजिक आंदोलनों का प्रसार किससे जुड़ी विशेषताएं हैं?
(A) आधुनिकीकरण
(B) वैश्वीकरण
(C) मृदु राज्य
(D) वेबरियन तर्कसंगतता

196. नीचे दो कथन दिए गए हैं:
कथन I: मैक्स वेबर ने तर्क दिया कि आधुनिक पूंजीवाद के उदय में धार्मिक विचारों का एक विशिष्ट समुच्चय सहायक था।
कथन II: गुन्नार मिर्डल ने तर्क दिया कि क्षेत्रीय असमानता उत्पन्न करने वाली बाजारों की प्रवृत्ति का सामना करने के लिए राज्य का हस्तक्षेप आवश्यक है।
(A) कथन I और कथन II दोनों सत्य हैं।
(B) कथन I और कथन II दोनों असत्य हैं।
(C) कथन I सत्य है, लेकिन कथन II असत्य है।
(D) कथन I असत्य है, लेकिन कथन II सत्य है।

197. विकास की प्रक्रिया एक 'डिजिटल डिवाइड' उत्पन्न करती है—जहाँ एक उच्च-तकनीकी अभिजात वर्ग को लाभ होता है जबकि अन्य पीछे छूट जाते हैं—यह विकास के किसका कारण बनने का उदाहरण है?
(A) सामाजिक-आर्थिक विषमताएं
(B) सांस्कृतिक सहायता
(C) सतत संतुलन
(D) सामाजिक एकजुटता

198. बड़े पैमाने पर, ऊपर से नीचे की विकास परियोजनाओं पर प्रश्न उठाना और स्थानीय ज्ञान एवं विकास के विविध पथों के प्रति अधिक सराहना किसकी विशेषता है?
(A) प्रारंभिक आधुनिकीकरण सिद्धांत।
(B) उत्तर-आधुनिकीकरण परिप्रेक्ष्य।
(C) आर्थिक संवृद्धि मॉडल।
(D) पश्चिमीकरण प्रक्रिया।

199. जब किसी देश की गरीबी के कारणों के रूप में भाग्यवादिता और भविष्य के प्रति झुकाव की कमी जैसे सांस्कृतिक मूल्यों का उल्लेख किया जाता है, तो यह निम्नलिखित दृष्टिकोण को दर्शाता है:
(A) विकास के सहायक के रूप में संस्कृति।
(B) विकास में बाधा के रूप में संस्कृति।
(C) एकमात्र निर्धारक के रूप में सामाजिक संरचना।
(D) प्राथमिक कारण के रूप में वैश्वीकरण।

200. विकास पर वैचारिक परिप्रेक्ष्यों को चरों की बढ़ती जटिलता और समावेशिता के क्रम में व्यवस्थित करें।
1. आर्थिक संवृद्धि
2. मानव विकास
3. सतत विकास
(A) 1, 2, 3
(B) 2, 1, 3
(C) 1, 3, 2
(D) 3, 2, 1

201. कौन सी अवधारणा समानता, समावेश और नागरिक भागीदारी को बढ़ाने के लिए समाज के संस्थागत ढांचे में सुधार की प्रक्रिया का सबसे अच्छा वर्णन करती है?
(A) सामाजिक विकास
(B) आर्थिक संवृद्धि
(C) पश्चिमीकरण
(D) उत्तर-आधुनिकीकरण

202. 'प्रोटेस्टेंट नैतिकता' पर मैक्स वेबर का सिद्धांत आर्थिक जीवन पर _____ के प्रभाव का एक उत्कृष्ट अध्ययन है।
(A) संस्कृति
(B) वैश्वीकरण
(C) सामाजिक संरचना
(D) स्थिरता

203. यह विचार कि बाजार की ताकतें, यदि मुक्त छोड़ दी जाएं, तो गरीबी और क्षेत्रीय असमानता का एक दुष्चक्र उत्पन्न करेंगी, कहलाता है:
(A) प्रोटेस्टेंट नैतिकता
(B) आधुनिकीकरण
(C) संचयी कारणता
(D) उत्तर-आधुनिकीकरण

204. विकास का कौन सा पथ भौगोलिक दूरी की बढ़ती अप्रासंगिकता और वैश्विक चेतना के उदय की विशेषता है?
(A) आधुनिकीकरण
(B) सामाजिक विकास
(C) सतत विकास
(D) वैश्वीकरण

205. नीचे दो कथन दिए गए हैं: एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है।
अभिकथन (A): विकास केवल एक आर्थिक घटना नहीं है बल्कि एक बहुआयामी प्रक्रिया है।
कारण (R): आर्थिक संवृद्धि मॉडल के संकीर्ण केंद्र के पूरक के रूप में मानव विकास, सामाजिक विकास और सतत विकास की अवधारणाएँ प्रस्तुत की गई थीं।
(A) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।

NODIA

(D) सतत विकास

229. एक सांस्कृतिक अभिविन्यास जो तात्कालिक संतुष्टि और अजनबियों के प्रति अविश्वास पर बल देता है, उसे माना जा सकता है:
(A) आधुनिक आर्थिक विकास में सहायक।
(B) आधुनिक आर्थिक विकास में बाधा।
(C) उत्तर-आधुनिकीकरण का परिणाम।
(D) सामाजिक विकास का सुविधाप्रदाता।

230. अल्पविकास का गुन्नार मिर्डल का विश्लेषण किसके बीच परस्पर क्रिया पर बल देता है?
(A) केवल आर्थिक कारक।
(B) केवल सांस्कृतिक कारक।
(C) संचयी कारणता की प्रक्रिया में आर्थिक, सामाजिक और राजनीतिक कारक।
(D) केवल अंतरराष्ट्रीय संबंध और उपनिवेशवाद।

231. मानव विकास और आर्थिक संवृद्धि के बीच प्राथमिक अंतर यह है कि पूर्व _____ है, जबकि बाद वाला _____ है।
(A) लोक-केंद्रित; अर्थव्यवस्था-केंद्रित
(B) अर्थव्यवस्था-केंद्रित; लोक-केंद्रित
(C) पर्यावरण-केंद्रित; संस्कृति-केंद्रित
(D) गुणात्मक; वह भी गुणात्मक

232. यह विचार कि पारंपरिक समाज 'स्थिर' हैं और आधुनिक समाज 'गतिशील' हैं, किसका एक मूल आधार है?
(A) उत्तर-आधुनिकीकरण सिद्धांत
(B) आधुनिकीकरण सिद्धांत
(C) सतत विकास
(D) सामाजिक विकास

233. नीचे दो कथन दिए गए हैं:
कथन I: वैश्वीकरण ने कई राष्ट्र-राज्यों की आर्थिक स्वायत्तता को निर्बल कर दिया है।
कथन II: सामाजिक विकास साक्षरता, स्वास्थ्य और लैंगिक समानता जैसे सामाजिक संकेतकों को बेहतर बनाने पर केंद्रित है।
(A) कथन I और कथन II दोनों सत्य हैं।
(B) कथन I और कथन II दोनों असत्य हैं।
(C) कथन I सत्य है, लेकिन कथन II असत्य है।
(D) कथन I असत्य है, लेकिन कथन II सत्य है।

234. यदि एक नई तकनीक राष्ट्र की संपत्ति बढ़ाती है लेकिन कम कुशल श्रमिकों के बीच व्यापक बेरोजगारी भी उत्पन्न करती है, तो यह विकास और निम्नलिखित के बीच तनाव को उजागर करती है:
(A) उत्तर-आधुनिकीकरण
(B) सामाजिक-आर्थिक विषमताएं
(C) सांस्कृतिक मूल्य
(D) पश्चिमीकरण

235. यह तर्क कि आधुनिक पूंजीवाद के लिए एक तर्कसंगत और अवैयक्तिक कानूनी प्रणाली एक पूर्व शर्त है, किसके साथ सबसे निकटता से जुड़ा है?
(A) गुन्नार मिर्डल
(B) मैक्स वेबर
(C) उत्तर-आधुनिक विचारक
(D) सतत विकास समर्थक

236. 'मृदु राज्य' की अवधारणा में निम्नलिखित को छोड़कर सभी विशेषताएं शामिल हैं:
(A) सामाजिक अनुशासन की कमी
(B) व्यापक भ्रष्टाचार
(C) एक सुदृढ़ और कुशल नौकरशाही
(D) कानूनों को लागू करने के लिए राजनीतिक इच्छाशक्ति की कमी

237. संस्कृति और विकास के संबंध में कुछ कथन नीचे दिए गए हैं:
I. संस्कृति विश्वास और नवाचार को बढ़ावा देकर विकास के सहायक के रूप में कार्य कर सकती है।
II. संस्कृति भाग्यवादिता या भाई-भतीजावाद के मानदंडों के माध्यम से विकास में बाधा के रूप में कार्य कर सकती है।
III. संस्कृति आर्थिक प्रक्रियाओं से पूरी तरह पृथक और उनसे अप्रभावित है।
ऊपर दिए गए कथनों में से कौन से सही हैं?
(A) केवल I और II
(B) केवल II और III
(C) केवल I और III
(D) I, II और III

238. विकास का कौन सा पथ पश्चिम के ऐतिहासिक अनुभव के आधार पर एक ही मानक सभी के लिए मॉडल के विचार से सबसे अधिक जुड़ा हुआ है?
(A) सतत विकास
(B) उत्तर-आधुनिकीकरण
(C) आधुनिकीकरण
(D) सामाजिक विकास

239. 'सामाजिक विकास' परिप्रेक्ष्य का मुख्य लक्ष्य प्राप्त करना है:
(A) उच्चतम संभव जीडीपी संवृद्धि।
(B) एक ऐसा समाज जो न्यायसंगत, समावेशी और न्यायपूर्ण हो।
(C) पर्यावरण का पूर्ण संरक्षण।
(D) पश्चिमी जीवन शैली को अपनाना।

240. सूची I को सूची II के साथ सुमेलित कीजिए।
सूची I: (लेखक)
P. मैक्स वेबर
Q. गुन्नार मिर्डल

NODIA

263. एक देश नदी पर बांध बनाने का निर्णय लेता है जो शहरों के लिए बिजली प्रदान करेगा लेकिन कृषि भूमि को जलमग्न कर देगा और हजारों ग्रामीणों को विस्थापित कर देगा। यह परिदृश्य आर्थिक संवृद्धि और किसके बीच संघर्ष को दर्शाता है:
(A) सामाजिक विकास
(B) उत्तर-आधुनिकीकरण
(C) पश्चिमीकरण
(D) सांस्कृतिक सहायता

264. गरीबी के "दुष्चक्र" और "संचयी कारणता" का विचार किसके विकास चिंतन का केंद्र है?
(A) मैक्स वेबर
(B) गुन्नार मिर्डल
(C) उत्तर-आधुनिकीकरण के समर्थक
(D) वैश्वीकरण के समर्थक

265. नीचे दो कथन दिए गए हैं: एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है।
अभिकथन (A): सतत विकास के लिए एक समग्र दृष्टिकोण की आवश्यकता होती है।
कारण (R): यह आर्थिक, सामाजिक और पर्यावरणीय उद्देश्यों को एकीकृत करने का प्रयास करता है।
(A) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सत्य हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सत्य है लेकिन R असत्य है।
(D) A असत्य है लेकिन R सत्य है।

266. निम्नलिखित में से कौन सामाजिक संरचना का उदाहरण नहीं है?
(A) कानूनी व्यवस्था
(B) शिक्षा प्रणाली
(C) वर्ग पदानुक्रम
(D) आशावाद की व्यक्तिगत भावना

267. विश्व भर में योग की बढ़ती लोकप्रियता किसकी प्रक्रिया के भीतर एक सांस्कृतिक प्रवाह का उदाहरण है:
(A) आधुनिकीकरण
(B) वैश्वीकरण
(C) एक मृदु राज्य
(D) आर्थिक संवृद्धि

268. मैक्स वेबर के अनुसार, 'आधुनिक पूंजीवाद की भावना' में निम्नलिखित को छोड़कर सभी शामिल थे:
(A) लाभ की तर्कसंगत खोज
(B) एक संयमित जीवन शैली
(C) अपने कार्य में कर्तव्य का विचार
(D) धन का भव्य और विशिष्ट उपभोग

269. एक नीति जो सामुदायिक स्तर के विश्वास को बेहतर बनाने और सहयोग के नेटवर्क बनाने पर केंद्रित है, वह सीधे किसको संबोधित कर रही है:
(A) आर्थिक संवृद्धि
(B) सामाजिक विकास
(C) पश्चिमीकरण
(D) उत्तर-आधुनिकीकरण

270. सूची I को सूची II के साथ सुमेलित कीजिए।
सूची I: (केंद्र क्षेत्र)
P. जीडीपी, जीएनपी, प्रति व्यक्ति आय
Q. जीवन प्रत्याशा, साक्षरता, जीवन स्तर
R. समानता, समावेश, भागीदारी
S. अंतर-पीढ़ीगत समानता, पर्यावरण
सूची II: (विकास की अवधारणा)
1. सामाजिक विकास
2. सतत विकास
3. आर्थिक संवृद्धि
4. मानव विकास
(A) P-3, Q-4, R-1, S-2
(B) P-1, Q-2, R-3, S-4
(C) P-3, Q-1, R-4, S-2
(D) P-4, Q-3, R-2, S-1

271. यह सिद्धांत कि जैसे-जैसे समाज औद्योगिक होते जाते हैं, वे अनिवार्य रूप से सामाजिक और राजनीतिक संस्थाओं के एक समान समुच्चय की ओर बढ़ते हैं, किसका एक प्रमुख तर्क है:
(A) आधुनिकीकरण सिद्धांत
(B) उत्तर-आधुनिकीकरण सिद्धांत
(C) सतत विकास
(D) सामाजिक विकास

272. यह तथ्य कि एक विकास परियोजना देश की औसत आय बढ़ा सकती है जबकि सबसे निर्धन नागरिकों को और बदतर बना सकती है, यह दर्शाता है कि विकास निम्नलिखित को और खराब कर सकता है:
(A) सांस्कृतिक पहचान
(B) सामाजिक-आर्थिक विषमताएं
(C) राष्ट्रीय सुरक्षा
(D) उत्तर-आधुनिक मूल्य

273. नीचे दो कथन दिए गए हैं:
कथन I: वैश्वीकरण विशुद्ध रूप से एक आर्थिक घटना है।
कथन II: पश्चिमीकरण विशुद्ध रूप से एक राजनीतिक घटना है।
(A) कथन I और कथन II दोनों सत्य हैं।
(B) कथन I और कथन II दोनों असत्य हैं।
(C) कथन I सत्य है, लेकिन कथन II असत्य है।
(D) कथन I असत्य है, लेकिन कथन II सत्य है।

Downloaded from www.pdf.tube

251. न्याय, समानता और समाज की संस्थाओं की गुणवत्ता से सर्वाधिक संबंधित अवधारणा है:
(A) आर्थिक संवृद्धि
(B) पश्चिमीकरण
(C) सामाजिक विकास
(D) वैश्वीकरण

252. मैक्स वेबर का कार्य बताता है कि आधुनिक पूंजीवाद के उदय के लिए, एक समाज को न केवल सही आर्थिक स्थितियों की आवश्यकता है, बल्कि निम्नलिखित की भी आवश्यकता है:
(A) एक अनुकूल राष्ट्रीय जलवायु।
(B) एक विशिष्ट सांस्कृतिक और नैतिक अभिविन्यास।
(C) एक सुदृढ़ सैन्य संगठन।
(D) उपनिवेशवाद की ऐतिहासिक विरासत।

253. नीचे दो कथन दिए गए हैं:
कथन I: विकास का आधुनिकीकरण पथ प्रायः यह मानता है कि विकासशील देशों को पश्चिमी राष्ट्रों द्वारा अपनाए गए पथ का अनुकरण करना चाहिए।
कथन II: पश्चिमीकरण की अवधारणा आधुनिकीकरण की तुलना में व्यापक और अधिक तटस्थ है।
(A) कथन I और कथन II दोनों सत्य हैं।
(B) कथन I और कथन II दोनों असत्य हैं।
(C) कथन I सत्य है, लेकिन कथन II असत्य है।
(D) कथन I असत्य है, लेकिन कथन II सत्य है।

254. यह विचार कि एक समृद्ध क्षेत्र में होने वाली संवृद्धि आसपास के निर्धन क्षेत्रों से संसाधनों और प्रतिभा को खींच सकती है, कहलाता है:
(A) प्रसार प्रभाव
(B) बैकवाश प्रभाव
(C) प्रोटेस्टेंट नैतिकता
(D) उत्तर-भौतिकवाद

255. एक देश जो स्थानीय समुदायों की सहायता के लिए पारिस्थितिक पर्यटन विकसित करते हुए अपने वनों की सफलतापूर्वक रक्षा करता है, वह क्या अपना रहा है:
(A) शुद्ध आर्थिक संवृद्धि
(B) पश्चिमीकरण
(C) सतत विकास
(D) एक मृदु राज्य नीति

256. 'उत्तर-आधुनिकीकरण' की एक प्रमुख विशेषता निम्नलिखित में विश्वास की कमी है:
(A) व्यक्तिवाद
(B) इतिहास और प्रगति के वृहत और व्यापक आख्यान।
(C) जीवन की गुणवत्ता का महत्व।
(D) लोकतांत्रिक मूल्य।

257. एक सामाजिक संरचना जो कानून व्यवस्था और बुनियादी ढांचा जैसी सार्वजनिक वस्तुएं प्रदान करती है, वह है:
(A) विकास में बाधक।
(B) विकास की सुविधाप्रदाता।
(C) केवल पारंपरिक समाजों की एक विशेषता।
(D) संस्कृति में बाधा।

258. निम्नलिखित में से कौन वैश्वीकरण और सामाजिक-आर्थिक विषमताओं के बीच संबंध का सबसे अच्छा वर्णन करता है?
(A) वैश्वीकरण हमेशा विषमताओं को कम करता है।
(B) वैश्वीकरण हमेशा विषमताओं को बढ़ाता है।
(C) वैश्वीकरण नीतियों और परिस्थितियों के आधार पर विषमताओं को कम और बढ़ा दोनों सकता है।
(D) विषमताओं पर वैश्वीकरण का कोई प्रभाव नहीं पड़ता है।

259. एक सांस्कृतिक मूल्य जो अपने परिवार या कबीले के प्रति वफादारी को अन्य सभी चीजों से ऊपर रखता है, एक योग्यता-आधारित नौकरशाही के विकास में एक _____ हो सकता है।
(A) सहायता
(B) बाधा
(C) सुविधाप्रदाता
(D) परिणाम

260. अल्पविकास के उदारवादी सिद्धांतों के बारे में कुछ कथन नीचे दिए गए हैं:
I. मैक्स वेबर ने संस्कृति और धर्म की भूमिका पर ध्यान केंद्रित किया।
II. गुन्नार मिर्डल ने राज्य और बाजार की ताकतों की भूमिका पर ध्यान केंद्रित किया।
III. दोनों विचारकों ने अल्पविकास की प्राथमिक समस्याओं को स्वयं विकासशील देशों के भीतर पाया।
ऊपर दिए गए कथनों में से कौन से सही हैं?
(A) केवल I और II
(B) केवल II और III
(C) केवल I और III
(D) I, II और III

261. मानव विकास परिप्रेक्ष्य किसी नई नीति का मूल्यांकन इस आधार पर करेगा कि क्या वह:
(A) राष्ट्रीय जीडीपी को बढ़ाती है।
(B) लोगों की स्वतंत्रताओं और जीवन के विकल्पों का विस्तार करती है।
(C) देश को पश्चिम की तरह बनाती है।
(D) पारंपरिक सांस्कृतिक मूल्यों को संरक्षित करती है।

262. उपलब्धि बनाम आरोपण जैसे चरों के आधार पर 'पारंपरिक' और 'आधुनिक' समाजों के बीच का अंतर किसके लिए मौलिक है?
(A) वैश्वीकरण सिद्धांत
(B) आधुनिकीकरण सिद्धांत
(C) सतत विकास
(D) उत्तर-आधुनिकीकरण सिद्धांत

NODIA

R. मानव विकास के प्रस्तावक
S. सतत विकास के प्रस्तावक
सूची II: (मुख्य चिंता)
1. अंतर-पीढ़ीगत समानता
2. मृदु राज्य
3. मानवीय क्षमताएं
4. प्रोटेस्टेंट नैतिकता
(A) P-4, Q-2, R-3, S-1
(B) P-1, Q-2, R-3, S-4
(C) P-4, Q-3, R-2, S-1
(D) P-1, Q-3, R-2, S-4

241. परंपराओं को त्यागने के रूप में विकास का विचार किसके केंद्र में है?
(A) आधुनिकीकरण सिद्धांत
(B) उत्तर-आधुनिकीकरण सिद्धांत
(C) सतत विकास
(D) सामाजिक विकास

242. भ्रष्ट न्यायपालिका और पुलिस बल वाला देश, जहाँ शक्तिशाली लोग दंड के बिना कार्य कर सकते हैं, किसका उदाहरण है?
(A) विकास की सुविधा प्रदान करने वाली एक सुदृढ़ सामाजिक संरचना।
(B) विकास को रोकने वाला एक मृदु राज्य।
(C) एक उत्तर-आधुनिक स्थिति।
(D) एक सफल मानव विकास की कहानी।

243. सतत विकास का "त्रि-स्तरीय केंद्र" किन तीन पहलुओं को संतुलित करने को संदर्भित करता है?
(A) अतीत, वर्तमान, भविष्य
(B) आर्थिक, सामाजिक, पर्यावरणीय
(C) स्थानीय, राष्ट्रीय, वैश्विक
(D) व्यक्ति, समुदाय, राज्य

244. आर्थिक संवृद्धि के विपरीत, जो मात्रा का माप है, मानव विकास किसका माप है?
(A) सैन्य शक्ति
(B) मानव जीवन की गुणवत्ता
(C) सांस्कृतिक शुद्धता
(D) राष्ट्रीय ऋण

245. नीचे दो कथन दिए गए हैं: एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है।
अभिकथन (A): सामाजिक संरचना और संस्कृति विकास को प्रभावित करने वाले दो महत्वपूर्ण आंतरिक कारक हैं।
कारण (R): सामाजिक संरचना संस्थानों का ढांचा प्रदान करती है, जबकि संस्कृति उन मूल्यों को प्रदान करती है जो मानवीय क्रियाओं का मार्गदर्शन करते हैं।
(A) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सत्य हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सत्य है लेकिन R असत्य है।
(D) A असत्य है लेकिन R सत्य है।

246. कुछ वैश्विक भाषाओं का बढ़ता प्रभुत्व और स्थानीय बोलियों की गिरावट को किसका सांस्कृतिक परिणाम माना जा सकता है?
(A) सामाजिक विकास
(B) सतत विकास
(C) वैश्वीकरण
(D) उत्तर-आधुनिकीकरण

247. गुन्नार मिर्डल के अनुसार अल्पविकास का उदारवादी सिद्धांत निम्नलिखित पर ध्यान केंद्रित करता है:
(A) सर्वहारा क्रांति की आवश्यकता।
(B) चक्रीय और संचयी कारणता की व्यवस्था में राज्य की भूमिका।
(C) सभी पूर्व-पूंजीवादी समाजों की अतार्किकता।
(D) मुक्त बाजारों की सकारात्मक और स्व-सुधारात्मक प्रकृति।

248. भौतिकवादी चिंताओं से उत्तर-भौतिकवादी चिंताओं की ओर मूल्य परिवर्तन किसका मूल सिद्धांत है?
(A) आधुनिकीकरण
(B) उत्तर-आधुनिकीकरण
(C) पश्चिमीकरण
(D) सामाजिक विकास

249. निम्नलिखित में से कौन विकास की प्रक्रिया द्वारा सामाजिक-आर्थिक विषमताओं को बढ़ाने का एक उदाहरण है?
(A) एक प्रगतिशील कर प्रणाली आरंभ की गई है।
(B) एक सार्वजनिक निर्माण कार्यक्रम बेरोजगारों के लिए रोजगार उत्पन्न करता है।
(C) नई बुनियादी ढांचा परियोजनाएं बिना मुआवजे के निर्धन समुदायों को विस्थापित करती हैं, जबकि धनी ठेकेदारों को लाभ पहुँचाती हैं।
(D) सार्वभौमिक स्वास्थ्य कवरेज सफलतापूर्वक लागू किया गया है।

250. निम्नलिखित में से कौन विकास में सांस्कृतिक बाधा का उदाहरण नहीं है?
(A) एक सांस्कृतिक मानदंड जो नवाचार और उद्यमिता को महत्व देता है।
(B) एक सांस्कृतिक मानदंड जिसमें महंगे अनुष्ठान भोज की आवश्यकता होती है, जिससे ऋण उत्पन्न होता है।
(C) एक सांस्कृतिक मानदंड जो महिलाओं को घर के बाहर कार्य करने से रोकता है।
(D) भाग्यवादिता का एक सांस्कृतिक मानदंड जो भविष्य के लिए योजना बनाने को हतोत्साहित करता है।

Click Here to Buy book on Amazon

274. एक ऐसी संस्कृति जो वैज्ञानिकों को उच्च सम्मान देती है और आलोचनात्मक सोच को प्रोत्साहित करती है, उसे माना जाएगा:
(A) विकास में सहायक।
(B) विकास में बाधा।
(C) एक पारंपरिक समाज की विशेषता।
(D) 'मृदु राज्य' का एक कारण।

275. उत्तर-आधुनिकीकरण के सामान्य सिद्धांत के अनुसार निम्नलिखित चरणों को व्यवस्थित करें।
1. आर्थिक संवृद्धि पर केंद्रित औद्योगिक समाज।
2. जीवन की गुणवत्ता और आत्म-अभिव्यक्ति पर केंद्रित उत्तर-औद्योगिक समाज।
3. उत्तरजीविता और पारंपरिक सत्ता पर केंद्रित कृषि समाज।
(A) 1, 2, 3
(B) 3, 1, 2
(C) 2, 3, 1
(D) 3, 2, 1

276. वेबर के विचार में, पारंपरिक और आधुनिक समाजों के बीच एक प्रमुख अंतर सत्ता के आधार में निहित है, जो व्यक्तिगत और करिश्माई से बदलकर निम्नलिखित हो जाता है:
(A) वंशानुगत और सामंती।
(B) तर्कसंगत-कानूनी और नौकरशाही।
(C) लोकतांत्रिक और लोकलुभावन।
(D) वैश्वीकृत और कॉर्पोरेट।

277. एक सामाजिक संरचना जो व्यवस्थित रूप से एक जातीय समूह को विद्यालयों और नौकरियों तक पहुँच से वंचित करती है, राष्ट्रीय विकास के लिए एक _____ के रूप में कार्य करती है।
(A) अवरोधक
(B) सुविधाप्रदाता
(C) सहायता
(D) परिणाम

278. 'विकास' की वह अवधारणा जिसमें स्पष्ट रूप से ग्रह की पारिस्थितिक सीमाओं की चिंता शामिल है:
(A) आर्थिक संवृद्धि
(B) सामाजिक विकास
(C) मानव विकास
(D) सतत विकास

279. अल्पविकास के उदारवादी सिद्धांतों (मैक्स वेबर, गुन्नार मिर्डल) में एक सामान्य प्रवृत्ति क्या साझा है?
(A) सभी समस्याओं के लिए उपनिवेशवाद को दोष देना।
(B) एक कम्युनिस्ट क्रांति की वकालत करना।
(C) विकासशील राष्ट्र के आंतरिक कारकों का विश्लेषण करना।
(D) राज्य की भूमिका की उपेक्षा करना।

280. जब 'मानव विकास' परिप्रेक्ष्य से देखा जाता है, तो विकास नीति की सफलता उसके निम्नलिखित प्रभाव से मापी जाती है:
(A) कॉर्पोरेट लाभ।
(B) लोगों की क्षमताएं और विकल्प।
(C) राष्ट्रीय बजट अधिशेष।
(D) पश्चिमी तकनीक को अपनाना।

281. विकास पर गुन्नार मिर्डल के कार्य का मुख्य तर्क यह है कि:
(A) केवल संस्कृति ही मायने रखती है।
(B) बाजार की ताकतें स्वचालित रूप से संतुलित संवृद्धि की ओर ले जाती हैं।
(C) विकास एक ऐसी प्रक्रिया है जहाँ आर्थिक और गैर-आर्थिक कारक संचयी कारणता में आबद्ध होते हैं।
(D) सभी देशों को पश्चिम के समान पथ का अनुसरण करना चाहिए।

282. निम्नलिखित में से कौन 'सामाजिक संरचना' का सबसे अच्छा वर्णन करता है?
(A) समाज की कुल जनसंख्या।
(B) समाज में प्रतिरूपित सामाजिक व्यवस्थाएँ जो व्यक्तियों की क्रियाओं को आकार देती हैं।
(C) एक समूह की सामूहिक भावनाएं।
(D) समाज की इमारतों की स्थापत्य शैली।

283. 'वैश्वीकरण' की प्रक्रिया निम्नलिखित को छोड़कर सभी की विशेषता है:
(A) बढ़ा हुआ व्यापार और वित्तीय प्रवाह।
(B) सांस्कृतिक आदान-प्रदान को रोकने के लिए राष्ट्रीय सीमाओं को सुदृढ़ करना।
(C) तीव्र संचार और परिवहन।
(D) जलवायु परिवर्तन जैसी अंतरराष्ट्रीय चुनौतियों का उदय।

284. विकास अवधारणाओं के बारे में कुछ कथन नीचे दिए गए हैं:
I. आर्थिक संवृद्धि राष्ट्र के उत्पादन में वृद्धि को मापती है।
II. मानव विकास लोगों की स्वतंत्रताओं के विस्तार को मापता है।
III. सतत विकास भविष्य की पीढ़ियों की आवश्यकताओं पर विचार करता है।
ऊपर दिए गए कथनों में से कौन से सही हैं?
(A) केवल I और II
(B) केवल II और III
(C) केवल I और III
(D) I, II और III

285. नीचे दो कथन दिए गए हैं: एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है।
अभिकथन (A): आधुनिकीकरण परिप्रेक्ष्य विकास को एक चरणबद्ध प्रक्रिया के रूप में देखता है।
कारण (R): यह प्रायः व्यक्तिगत जीवन चक्र के साथ एक सादृश्य निर्मित करता है, जहाँ समाजों को 'बचपन' से 'वयस्कता' की ओर गुजरना चाहिए।

NODIA

मुक्त प्रवाह को प्रोत्साहित करता है। इसमें अंतरराष्ट्रीय संगठनों और बहुराष्ट्रीय निगमों की भूमिका बढ़ जाती है, जिससे अक्सर राष्ट्रीय सरकारों का अपनी अर्थव्यवस्था पर नियंत्रण शिथिल हो जाता है। यह विचारों, तकनीकों और व्यापार के एकीकरण की प्रक्रिया है। अतः यह कहना त्रुटिपूर्ण होगा कि वैश्वीकरण राष्ट्र-राज्य के नियंत्रण को सुदृढ़ करता है; इसके विपरीत, यह अक्सर राष्ट्रीय संप्रभुता और वैश्विक बाजार के बीच तनाव उत्पन्न करता है।

53. (C) समाज के भीतर धन, आय, अवसरों और शक्ति का असमान वितरण।
सामाजिक-आर्थिक विषमता का तात्पर्य समाज के विभिन्न समूहों के बीच संसाधनों और लाभों के न्यायसंगत वितरण के अभाव से है। इसमें केवल आय का अंतर ही नहीं, बल्कि शिक्षा, स्वास्थ्य सेवा और राजनीतिक प्रभाव तक पहुँच में असमानता भी सम्मिलित है। यह विषमता अक्सर ऐतिहासिक संरचनाओं या दोषपूर्ण विकास नीतियों के कारण उत्पन्न होती है। जब विकास का लाभ केवल एक लघु समूह तक सीमित रह जाता है, तो यह सामाजिक तनाव और असंतोष का कारण बनता है। यह समाज की समग्र प्रगति में एक बहुत बड़ी बाधा है।

54. (B) मृदु राज्य
गुन्नार मिर्डल ने मृदु राज्य की अवधारणा उन देशों हेतु दी थी जहाँ सरकारें अपने ही कानूनों और नियमों को प्रभावी ढंग से लागू करने में अक्षम होती हैं। ऐसे राज्यों में राजनीतिक इच्छाशक्ति की कमी होती है, विशेषकर जब विषय शक्तिशाली और प्रभावशाली समूहों के विरुद्ध हो। यहाँ भ्रष्टाचार, भाई-भतीजावाद और सामाजिक अनुशासन का अभाव विकास की योजनाओं को विफल कर देता है। यह राज्य की वह निर्बलता है जो उसे आर्थिक और सामाजिक सुधारों को दृढ़ता से लागू करने से रोकती है और अल्पविकास की स्थिति को निरंतर बनाए रखती है।

55. (D) उत्सवों और समारोहों पर बचत करने के बजाय उदारतापूर्वक व्यय करने का सामाजिक मानदंड।
मैक्स वेबर के अनुसार, आधुनिक पूंजीवाद के विकास के लिए पूंजी का संचय और उसका पुनर्निवेश अनिवार्य है। यदि किसी समाज में उत्सवों और धार्मिक समारोहों पर अत्यधिक और अनुत्पादक व्यय करने की परंपरा है, तो वह पूंजी निर्माण की प्रक्रिया को बाधित करती है। ऐसी संस्कृति जो बचत और निवेश के बजाय तत्काल उपभोग और प्रदर्शन को महत्व देती है, आर्थिक तर्कसंगतता के विरुद्ध कार्य करती है। यह व्यवहार उस मितव्ययिता के विपरीत है जिसे वेबर ने पूंजीवाद की आत्मा के लिए एक आवश्यक सांस्कृतिक कारक माना था।

56. (A) उत्तर-आधुनिकीकरण
उत्तर-आधुनिकीकरण की प्रक्रिया औद्योगिक युग से उत्तर-औद्योगिक युग की ओर संक्रमण को प्रदर्शित करती है। इसमें समाज का मुख्य केंद्र भारी उद्योगों से हटकर सूचना, ज्ञान और सेवाओं पर आधारित हो जाता है। साथ ही, लोगों के मूल्यों में भी परिवर्तन आता है; वे अब केवल भौतिक उत्तरजीविता और सुरक्षा की चिंता नहीं करते, बल्कि व्यक्तिगत स्वतंत्रता, आत्म-अभिव्यक्ति और जीवन की गुणवत्ता को अधिक महत्व देते हैं। यह परिवर्तन औद्योगिकीकरण के पारंपरिक लक्ष्यों पर प्रश्न उठाता है और व्यक्ति की पहचान एवं रचनात्मकता को केंद्र में रखता है।

57. (B) कथन I और कथन II दोनों असत्य हैं।
आर्थिक संवृद्धि मानव विकास के लिए आवश्यक तो हो सकती है, लेकिन यह पर्याप्त नहीं है। बिना उचित वितरण और सार्वजनिक सेवाओं के, केवल आय में वृद्धि मानव कल्याण सुनिश्चित नहीं कर सकती। इसी प्रकार, सतत विकास केवल आर्थिक लाभ से संबंधित नहीं है। यह आर्थिक, सामाजिक और पर्यावरणीय तीनों आयामों के बीच संतुलन स्थापित करने की अवधारणा है। यह न केवल वर्तमान परियोजनाओं की वित्तीय लाभप्रदता देखता है, बल्कि यह भी सुनिश्चित करता है कि वे भविष्य के पर्यावरण और आने वाली पीढ़ियों के हितों के पूर्णतः अनुकूल हों।

58. (A) मानव विकास दृष्टिकोण
यह विचार अमर्त्य सेन के क्षमता दृष्टिकोण से प्रेरित है, जो मानव विकास का मूल आधार है। उनके अनुसार, विकास का वास्तविक अर्थ लोगों को उन बाधाओं से मुक्त करना है जो उन्हें अपनी क्षमताओं का पूर्ण उपयोग करने से रोकती हैं। इसमें साक्षरता, पोषण और स्वास्थ्य जैसे कारक सम्मिलित हैं जो व्यक्ति को वास्तविक स्वतंत्रता प्रदान करते हैं। केवल आय बढ़ाना पर्याप्त नहीं है; विकास तभी सार्थक है जब वह व्यक्ति को वह जीवन जीने में सक्षम बनाए जिसे वह मूल्यवान मानता है। यह मनुष्यों को विकास का साध्य मानता है।

59. (D) वैश्वीकरण
वैश्वीकरण ही वह प्रक्रिया है जिसने विश्व को एक वैश्विक ग्राम में परिवर्तित कर दिया है। परिवहन और संचार तकनीकों में क्रांति ने भौगोलिक दूरियों के महत्व को समाप्त कर दिया है, जिससे सूचना और संसाधनों का प्रवाह अत्यंत तीव्र हो गया है। इस प्रक्रिया में समय-स्थान संकुचन होता है, जहाँ विश्व के एक कोने में होने वाली घटना का प्रभाव तुरंत दूसरे कोने में अनुभव किया जाता है। यह राष्ट्रों के बीच की आर्थिक और सांस्कृतिक सीमाओं को पार कर एक एकीकृत वैश्विक प्रणाली का निर्माण करता है, जिससे परस्पर संबद्धता बढ़ती है।

60. (A) केवल I और II
सामाजिक संरचना विकास को गहराई से प्रभावित करती है। एक योग्यता-आधारित समाज प्रतिभा को सही दिशा में मोड़कर प्रगति में सहायक सिद्ध होता है। इसके विपरीत, यदि समाज में जातीय या धार्मिक विभाजन गहरे हैं, तो वे संघर्ष और अस्थिरता पैदा करते हैं जो विकास को बाधित करते हैं। यह मानना त्रुटिपूर्ण है कि सामाजिक संरचना स्थिर होती है; वास्तव में, आर्थिक और तकनीकी विकास की प्रक्रिया अक्सर पुरानी सामाजिक संरचनाओं को तोड़ती है और नए वर्गों का निर्माण करती है। इस प्रकार, विकास और संरचना के बीच निरंतर परस्पर क्रिया होती है।

Downloaded from www.pdf.tube

चाहिए।

298. नीचे दो कथन दिए गए हैं: एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है।
अभिकथन (A): विकास की प्रक्रिया स्वयं सामाजिक असमानता का स्रोत हो सकती है।
कारण (R): विकास अक्सर नए अवसर और धन उत्पन्न करता है जो समान रूप से वितरित नहीं होते हैं।
(A) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सत्य हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सत्य है लेकिन R असत्य है।
(D) A असत्य है लेकिन R सत्य है।

299. एक सांस्कृतिक मानदंड जो भविष्य के लिए मितव्ययिता, बचत और निवेश को प्रोत्साहित करता है, किसका उदाहरण है:
(A) विकास में बाधा के रूप में संस्कृति।
(B) विकास के सहायक के रूप में संस्कृति।
(C) एक उत्तर-आधुनिक मूल्य।
(D) एक मृदु राज्य की विशेषता।

300. सूची I को सूची II के साथ सुमेलित कीजिए।
सूची I: (समस्या)
P. भविष्य की पीढ़ियों के लिए पर्यावरणीय क्षरण
Q. विकास लाभ का असमान वितरण
R. बुनियादी शिक्षा और स्वास्थ्य देखभाल की कमी
S. अक्षम और भ्रष्ट राज्य मशीनरी
सूची II: (प्रासंगिक अवधारणा)
1. मानव विकास की कमी
2. सामाजिक-आर्थिक विषमता
3. मृदु राज्य
4. स्थिरता की कमी
(A) P-4, Q-2, R-1, S-3
(B) P-1, Q-2, R-3, S-4
(C) P-4, Q-3, R-1, S-2
(D) P-1, Q-4, R-2, S-3

NODIA

35. (A) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
वैश्वीकरण विकासशील देशों के लिए अवसर और चुनौतियां दोनों लेकर आता है। यह विदेशी निवेश और अंतरराष्ट्रीय व्यापार के द्वार खोलकर आर्थिक विकास को गति प्रदान कर सकता है। लेकिन साथ ही, यह इन अर्थव्यवस्थाओं को वैश्विक बाजार के अस्थिर उतार-चढ़ाव के प्रति संवेदनशील बना देता है। इसके अलावा, पश्चिमी संस्कृति के अत्यधिक प्रभाव के कारण स्थानीय परंपराओं और पहचान के लुप्त होने का भय बना रहता है। इस प्रकार, वैश्वीकरण एक जटिल प्रक्रिया है जो आर्थिक लाभ के साथ-साथ सामाजिक और सांस्कृतिक जोखिम भी उत्पन्न करती है।

36. (D) एक कानूनी ढांचा जो उद्यमिया को बढ़ावा देता है और संपत्ति के अधिकारों को सुरक्षित करता है।
सामाजिक संरचना विकास के लिए तब सुविधाप्रदाता के रूप में कार्य करती है जब वह एक स्थिर और पारदर्शी वातावरण प्रदान करती है। एक सुदृढ़ कानूनी प्रणाली जो संपत्ति के अधिकारों की रक्षा करती है और अनुबंधों को प्रभावी ढंग से लागू करती है, निवेशकों और उद्यमियों में विश्वास पैदा करती है। यह संरचना नवाचार और आर्थिक गतिविधियों को जोखिम मुक्त बनाती है। जब समाज के नियम और कानून स्पष्ट और निष्पक्ष होते हैं, तो वे विकास की गति को तीव्र करते हैं। यह दर्शाता है कि संस्थागत ढांचा आर्थिक समृद्धि की एक आवश्यक पूर्व शर्त है।

37. (C) सकल घरेलू उत्पाद में वृद्धि की दर
सामाजिक विकास के संकेतकों में वे कारक सम्मिलित होते हैं जो मानव जीवन की गुणवत्ता और सामाजिक संबंधों को दर्शाते हैं। इसमें सामाजिक एकजुटता, स्वास्थ्य, दीर्घायु और शासन में नागरिकों की भागीदारी जैसे गुणात्मक पहलुओं को मापा जाता है। सकल घरेलू उत्पाद की वृद्धि दर वास्तव में आर्थिक संवृद्धि का संकेतक है, सामाजिक विकास का नहीं। सामाजिक विकास का उद्देश्य यह देखना है कि समाज कितना न्यायपूर्ण और समावेशी बना है, न कि केवल यह कि उसने कितनी भौतिक संपत्ति अर्जित की है। यह गुणात्मक प्रगति का मापदंड है।

38. (B) मानव विकास परिप्रेक्ष्य
मानव विकास का दृष्टिकोण अमर्त्य सेन की क्षमताओं वाली अवधारणा पर आधारित है। यह मानता है कि विकास का वास्तविक अर्थ लोगों की उन स्वतंत्रताओं का विस्तार करना है जो उन्हें एक सार्थक और उद्देश्यपूर्ण जीवन जीने में सक्षम बनाती हैं। इसमें केवल आय नहीं, बल्कि पोषण, शिक्षा और स्वास्थ्य जैसी बुनियादी जरूरतों की पूर्ति सम्मिलित है ताकि व्यक्ति अपनी इच्छाओं के अनुसार कार्य कर सके। यह परिप्रेक्ष्य विकास को मनुष्यों की वास्तविक क्षमताओं के विकास और उनके जीवन के अवसरों की विविधता के संदर्भ में मापता है।

39. (D) पश्चिमीकरण
पश्चिमीकरण की प्रक्रिया में गैर-पश्चिमी समाजों द्वारा पश्चिम की जीवन शैली, खान-पान, मनोरंजन और पहनावे का अनुकरण किया जाता है। प्रसिद्ध खाद-श्रृंखलाओं, विदेशी चलचित्रों और पश्चिमी वेशभूषा का प्रसार इस सांस्कृतिक प्रभाव के प्रत्यक्ष प्रमाण हैं। यह प्रक्रिया अक्सर वैश्वीकरण के माध्यम से तीव्र होती है और स्थानीय संस्कृतियों के स्वरूप को परिवर्तित कर देती है। यह केवल तकनीक अपनाने तक सीमित नहीं है, बल्कि यह पश्चिमी सांस्कृतिक मूल्यों और सामाजिक व्यवहारों को अपनी जीवन शैली का हिस्सा बनाने की एक सचेत प्रक्रिया है।

40. (A) 2, 3, 1
विकास की अवधारणाओं का स्तर सूक्ष्म से व्यापक की ओर अग्रसर होता है। कार्य नैतिकता एक व्यक्तिगत और सांस्कृतिक मूल्य है जो सूक्ष्म स्तर पर कार्य करता है। आधुनिकीकरण एक व्यापक राष्ट्रीय प्रक्रिया है जो पूरे समाज की संस्थाओं और संरचनाओं को परिवर्तित कर देती है। वैश्वीकरण सबसे व्यापक और वैश्विक स्तर की प्रक्रिया है जो देशों के बीच की सीमाओं को धुंधला कर विश्व को एक एकल प्रणाली के रूप में जोड़ती है। यह क्रम सांस्कृतिक मूल्यों के व्यक्तिगत प्रभाव से लेकर वैश्विक स्तर के एकीकरण को प्रदर्शित करता है।

41. (C) आय वितरण और सामाजिक कल्याण के मुद्दों की उपेक्षा।
शुरुआती आर्थिक संवृद्धि प्रतिमान की सबसे बड़ी निर्बलता यह थी कि उसने केवल राष्ट्रीय उत्पादन और आय की मात्रा पर ध्यान केंद्रित किया। यह माना गया कि यदि जीडीपी बढ़ेगी, तो उसका लाभ स्वतः ही समाज के सभी वर्गों तक पहुँच जाएगा। हालांकि, वास्तविकता में ऐसा नहीं हुआ और समृद्ध-निर्धन की खाई और चौड़ी हो गई। इस प्रतिमान ने गरीबी उन्मूलन, स्वास्थ्य और शिक्षा जैसे सामाजिक कल्याण के मुद्दों को विकास की मुख्य चर्चा से बाहर रखा, जिसके कारण बाद में अधिक समावेशी दृष्टिकोणों की आवश्यकता अनुभव हुई।

42. (A) केंद्रों से अन्य क्षेत्रों में फैलने वाले विकास के सकारात्मक आवेग।
गुन्नार मिर्डल के अनुसार, प्रसार प्रभाव वह प्रक्रिया है जिसमें विकसित केंद्रों से विकास की तरंगें पिछड़े ग्रामीण क्षेत्रों की ओर बढ़ती हैं। जब एक केंद्र समृद्ध होता है, तो वह आसपास के क्षेत्रों से कच्चा माल और खाद्य पदार्थ क्रय करता है, जिससे वहां के निवासियों की आय बढ़ती है। इसके अलावा, तकनीक और नए विचारों का संचार भी पिछड़े क्षेत्रों तक होता है। हालांकि, मिर्डल का मानना था कि विकासशील देशों में ये सकारात्मक प्रभाव अक्सर बैकवाश प्रभाव की तुलना में बहुत निर्बल होते हैं, जिससे क्षेत्रीय असमानता बनी रहती है।

43. (A) कथन I और कथन II दोनों सत्य हैं।
वैश्वीकरण ने परिवहन और संचार तकनीक के माध्यम से भौगोलिक दूरियों को प्रभावी ढंग से कम कर दिया है, जिससे विश्व अधिक परस्पर जुड़ गया है। इसे समय-स्थान संकुचन कहा जाता है। दूसरी ओर, आधुनिकीकरण में सामाजिक संस्थाओं का बढ़ता विभेदीकरण सम्मिलित है, जहाँ धर्म, अर्थव्यवस्था और राजनीति जैसी संस्थाएं अधिक विशिष्ट और स्वायत्त हो जाती हैं। ये दोनों प्रक्रियाएं आधुनिक विश्व में सामाजिक और आर्थिक संरचनाओं के परिवर्तन की व्याख्या करती हैं और यह

Click Here to Buy book on Amazon

9. (C) यह मुख्य रूप से केंद्र राष्ट्रों द्वारा परिधीय राष्ट्रों के शोषण पर ध्यान केंद्रित करता है।
आधुनिकीकरण का सिद्धांत यह मानता है कि सभी समाज परंपरा से आधुनिकता की ओर एक रेखीय पथ पर विकसित होते हैं। यह तकनीक अपनाने और सामाजिक संस्थाओं के आधुनिकीकरण पर बल देता है। यह पारंपरिक मूल्यों को विकास में मुख्य बाधा मानता है। केंद्र द्वारा परिधि के शोषण का विचार वास्तव में निर्भरता सिद्धांत का हिस्सा है, आधुनिकीकरण सिद्धांत का नहीं। आधुनिकीकरण दृष्टिकोण अल्पविकास को एक आंतरिक समस्या के रूप में देखता है जिसे पश्चिमी मॉडल और पूंजी के हस्तांतरण से सुधारा जा सकता है।

10. (B) केवल I और III
वैश्वीकरण एक व्यापक प्रक्रिया है जिसमें आर्थिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक क्षेत्रों में विश्व के विभिन्न समाजों की परस्पर संबद्धता बढ़ती है। यह सूचना और पूंजी के अबाध प्रवाह को सुनिश्चित करने के लिए राष्ट्रीय सीमाओं की पारंपरिक बाधाओं को कम करता है। हालांकि, यह सभी देशों और समूहों को समान रूप से लाभ नहीं पहुँचाता है। अक्सर यह देखा गया है कि वैश्वीकरण के लाभों का वितरण असमान होता है, जिससे कुछ विकसित राष्ट्रों और शक्तिशाली समूहों को अधिक लाभ मिलता है जबकि अन्य पिछड़ जाते हैं।

11. (D) एक ऐसा राज्य जिसमें नीतियों को प्रभावी ढंग से लागू करने के लिए राजनीतिक इच्छाशक्ति और अनुशासन की कमी हो।
गुन्नार मिर्डल ने मृदु राज्य शब्दावली का प्रयोग उन दक्षिण एशियाई राष्ट्रों के संदर्भ में किया था जहां कानूनों और नीतियों का प्रवर्तन अत्यंत शिथिल था। ऐसे राज्यों में भ्रष्टाचार व्याप्त होता है और सरकार शक्तिशाली समूहों के हितों के विरुद्ध कड़े निर्णय लेने का साहस नहीं जुटा पाती है। यहाँ सामाजिक अनुशासन की कमी होती है, जिसके कारण नियोजित विकास के लक्ष्य अधूरे रह जाते हैं। यह अवधारणा स्पष्ट करती है कि सुदृढ़ प्रशासनिक इच्छाशक्ति के बिना केवल आर्थिक योजनाएं विकास सुनिश्चित नहीं कर सकतीं।

12. (B) यह योग्यता के बजाय जन्म के आधार पर भूमिकाएं सौंपती है, जिससे गतिशीलता और पूंजी की दक्षता प्रतिबंधित होती है।
जाति व्यवस्था जैसी कठोर सामाजिक संरचनाएं विकास की प्रक्रिया में महत्वपूर्ण बाधा उत्पन्न करती हैं क्योंकि वे श्रम की गतिशीलता को सीमित करती हैं। जब व्यक्तियों को उनकी प्रतिभा के बजाय जन्म के आधार पर व्यवसाय सौंपे जाते हैं, तो समाज की मानवीय क्षमता का पूर्ण दोहन नहीं हो पाता है। इससे आर्थिक प्रतिस्पर्धा कम होती है और नवाचार को प्रोत्साहन नहीं मिलता है। ऐसी पदानुक्रमित व्यवस्थाएं संसाधनों के कुशल आवंटन को रोकती हैं और सामाजिक-आर्थिक असमानता को स्थायी बनाकर विकास की गति को अत्यंत मंद कर देती हैं।

13. (C) सतत विकास : पर्यावरणीय क्षरण
आर्थिक संवृद्धि का सीधा संबंध प्रति व्यक्ति आय की वृद्धि से है, और मानव विकास व्यक्तियों की क्षमताओं के विस्तार पर केंद्रित होता है। सामाजिक विकास का उद्देश्य सामाजिक एकजुटता और समरसता को बढ़ावा देना है। सतत विकास का अर्थ पर्यावरणीय क्षरण नहीं, बल्कि उसका संरक्षण और संसाधनों का संतुलित उपयोग है। सतत विकास की अवधारणा विकास और प्रकृति के बीच समन्वय स्थापित करने का प्रयास करती है ताकि वर्तमान विकास भावी पीढ़ियों के लिए संकट या पारिस्थितिक असंतुलन का कारण न बन सके।

14. (A) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
मैक्स वेबर के अनुसार, आधुनिक पूंजीवाद केवल व्यक्तिगत लोभ या धन के संचय तक सीमित नहीं था। इसके पीछे एक विशिष्ट नैतिक और धार्मिक दृष्टिकोण कार्य कर रहा था। प्रोटेस्टेंट नैतिकता ने लाभ की खोज को एक पवित्र कर्तव्य और ईश्वर की सेवा के रूप में प्रस्तुत किया। इसमें समय का सदुपयोग, मितव्ययिता और भावनाओं पर नियंत्रण जैसे तर्कसंगत मूल्यों को महत्व दिया गया। यह व्यवस्थित जीवन पद्धति और निरंतर आर्थिक प्रयास ही पूंजीवाद की वह भावना थी जिसने औद्योगिक विकास को सशक्त आधार प्रदान किया।

15. (A) उत्तर-आधुनिकीकरण
उत्तर-आधुनिकीकरण की प्रक्रिया उन समाजों में देखी जाती है जो बुनियादी आर्थिक और भौतिक सुरक्षा प्राप्त कर चुके हैं। यहाँ लोगों की प्राथमिकताएं भौतिक संचय से हटकर आत्म-अभिव्यक्ति, व्यक्तिगत स्वतंत्रता और जीवन की गुणवत्ता की ओर स्थानांतरित हो जाती हैं। इसमें उत्तर-भौतिकवादी मूल्यों को अधिक महत्व दिया जाता है। यह परिवर्तन औद्योगिकीकरण के पारंपरिक लक्ष्यों पर प्रश्न उठाता है और व्यक्ति की पहचान एवं रचनात्मकता को केंद्र में रखता है। यह समाज के विकास का एक उच्च और अधिक परिष्कृत चरण माना जाता है।

16. (B) पश्चिमीकरण पश्चिमी सांस्कृतिक लक्षणों को अपनाना है, जबकि आधुनिकीकरण तर्कसंगतीकरण है।
पश्चिमीकरण एक विशेष प्रक्रिया है जिसमें गैर-पश्चिमी समाज पश्चिम के कपड़ों, भोजन, भाषा और सामाजिक रीति-रिवाजों का अनुकरण करते हैं। इसके विपरीत, आधुनिकीकरण एक अधिक व्यापक और अमूर्त प्रक्रिया है जो जीवन के सभी क्षेत्रों में तर्कसंगतता, वैज्ञानिक दृष्टिकोण और कार्यात्मक विभेदीकरण पर आधारित है। आधुनिकीकरण में परंपरा से आधुनिकता की ओर संरचनात्मक संक्रमण होता है, जो आवश्यक नहीं कि केवल पश्चिमी मॉडल पर ही आधारित हो। यह तकनीक और विचार के स्तर पर समाज के मौलिक और स्थायी परिवर्तन को दर्शाता है।

17. (B) सामाजिक विकास
सामाजिक विकास का मुख्य केंद्र समाज की संस्थाओं, संबंधों और मूल्यों में सुधार लाना है ताकि न्याय और समानता सुनिश्चित हो सके। महिला साक्षरता, स्थानीय शासन में उनकी भागीदारी और समान वेतन जैसे कार्यक्रम सामाजिक ढांचे को अधिक समावेशी बनाने के उदाहरण हैं। ये प्रयास केवल आर्थिक वृद्धि पर केंद्रित नहीं हैं, बल्कि ये वंचित समूहों के सशक्तिकरण और सामाजिक न्याय को बढ़ावा देते हैं। यह समाज की समग्र प्रगति

Downloaded from www.pdf.tube

(A) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सत्य हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सत्य है लेकिन R असत्य है।
(D) A असत्य है लेकिन R सत्य है।

286. 'सामाजिक-आर्थिक विषमताओं' की अवधारणा सीधे तौर पर निम्नलिखित मुद्दे से संबंधित है:
(A) असमानता
(B) तकनीक
(C) परंपरा
(D) पर्यावरण

287. 'कर्म' पर एक सांस्कृतिक बल जो सामाजिक स्थिति को अपरिवर्तनीय मान लेने की स्वीकृति देता है, वेबर के अनुसार उसे इस रूप में व्याख्यायित किया जा सकता है:
(A) सामाजिक गतिशीलता का एक सुविधाप्रदाता।
(B) पूंजीवादी विकास से जुड़े प्रयास में एक बाधा।
(C) उत्तर-आधुनिकीकरण का परिणाम।
(D) आर्थिक संवृद्धि में सहायक।

288. विकास के एकल और सार्वभौमिक मॉडल के विचार के प्रति बढ़ती संशयशीलता किस परिप्रेक्ष्य की एक प्रमुख विशेषता है?
(A) आर्थिक संवृद्धि
(B) आधुनिकीकरण
(C) उत्तर-आधुनिकीकरण
(D) सामाजिक विकास

289. वह शब्द जो विशेष रूप से पश्चिमी संस्कृति और जीवन शैली के अनुकरण को संदर्भित करता है, वह है:
(A) आधुनिकीकरण
(B) वैश्वीकरण
(C) सामाजिक विकास
(D) पश्चिमीकरण

290. गुन्नार मिर्डल की 'मृदु राज्य' की अवधारणा मुख्य रूप से किस क्षेत्र में राज्य की निर्बलता को संदर्भित करती है?
(A) सैन्य शक्ति
(B) सांस्कृतिक उत्पादन
(C) नीति कार्यान्वयन और कानून प्रवर्तन
(D) अंतरराष्ट्रीय कूटनीति

291. कौन सी विकास अवधारणा आर्थिक व्यवहार्यता, सामाजिक समानता और पर्यावरण संरक्षण को शामिल करते हुए कार्यक्षेत्र में सर्वाधिक व्यापक है?
(A) आर्थिक संवृद्धि
(B) मानव विकास
(C) सामाजिक विकास
(D) सतत विकास

292. एक तरल वर्ग संरचना और सामाजिक गतिशीलता की उच्च दर वाला समाज एक ऐसी सामाजिक संरचना है जो विकास की _____ करती है।
(A) सुविधा प्रदान
(B) रोकथाम
(C) बाधा
(D) विलोम

293. नीचे दो कथन दिए गए हैं:
कथन I: मैक्स वेबर ने तर्क दिया कि केल्विनवादी सिद्धांतों ने पूंजीवादी संचय के अनुकूल एक मनोवैज्ञानिक वातावरण निर्मित किया।
कथन II: वेबर का मानना था कि पूंजीवाद के उदय की व्याख्या करने के लिए अकेले आर्थिक कारक पर्याप्त थे।
(A) कथन I और कथन II दोनों सत्य हैं।
(B) कथन I और कथन II दोनों असत्य हैं।
(C) कथन I सत्य है, लेकिन कथन II असत्य है।
(D) कथन I असत्य है, लेकिन कथन II सत्य है।

294. एक वैश्विक वित्तीय बाजार का उदय जहाँ पूंजी अत्यंत तीव्र गति से सीमाओं के पार जा सकती है, किसका प्रमुख उदाहरण है:
(A) सामाजिक विकास
(B) सतत विकास
(C) आर्थिक वैश्वीकरण
(D) उत्तर-आधुनिकीकरण

NODIA

295. निम्नलिखित में से कौन 'सामाजिक विकास' की प्राथमिक चिंता होगी?
(A) शेयर बाजार की संवृद्धि दर।
(B) एक समुदाय में सामाजिक एकजुटता और विश्वास का स्तर।
(C) स्थानीय दुकानों में उपलब्ध विदेशी ब्रांडों की संख्या।
(D) पशुओं की एक विशिष्ट प्रजाति का संरक्षण।

296. यह विचार कि निर्धन देश इसलिए निर्धन हैं क्योंकि उनके पास पारंपरिक संस्कृतियाँ और संस्थाएँ हैं जो आधुनिक आर्थिक व्यवस्थाओं के अनुकूल नहीं हैं, किसका मुख्य तर्क है:
(A) आधुनिकीकरण सिद्धांत
(B) निर्भरता सिद्धांत
(C) उत्तर-आधुनिकीकरण सिद्धांत
(D) सतत विकास

297. 'मानव विकास' दृष्टिकोण का एक प्रमुख सिद्धांत यह है कि:
(A) लोग वस्तुओं के उत्पादन के साधन हैं।
(B) विकास का उद्देश्य एक ऐसा वातावरण निर्मित करना है जिसमें लोग लंबे, स्वस्थ और रचनात्मक जीवन का आनंद ले सकें।
(C) विकसित होने के लिए सभी समाजों को पश्चिमी मूल्यों को अपनाना होगा।
(D) आर्थिक संवृद्धि ही एकमात्र लक्ष्य है जिसे प्राप्त करना

आवश्यक है। ऐसी रूढ़िवादी संरचनाएं आधुनिक आर्थिक परिवर्तनों के प्रति कड़ा प्रतिरोध उत्पन्न करती हैं।

27. (B) P-4, Q-3, R-2, S-1
मैक्स वेबर ने प्रोटेस्टेंट नैतिकता को पूंजीवाद के उदय से जोड़ा। गुन्नार मिर्डल ने संचयी कारणता के माध्यम से क्षेत्रीय असमानताओं की व्याख्या की। आधुनिकीकरण सिद्धांत समाजों को पारंपरिक से आधुनिक की ओर बढ़ते हुए देखता है। उत्तर-आधुनिकीकरण भौतिक उत्तरजीविता के बजाय आत्म-अभिव्यक्ति और जीवन की गुणवत्ता जैसे मूल्यों पर ध्यान केंद्रित करता है। ये सभी विचारक और सिद्धांत विकास के विभिन्न पहलुओं, जैसे संस्कृति, आर्थिक भूगोल, सामाजिक परिवर्तन और मूल्य प्रणालियों का विश्लेषण करते हैं, जो समाजशास्त्र में विकास के अध्ययन के मुख्य आधार स्तंभ हैं।

28. (B) मैक्स वेबर
मैक्स वेबर ने यह तर्क दिया कि आर्थिक सफलता के पीछे केवल तकनीकी या वित्तीय कारक नहीं होते, बल्कि कुछ सांस्कृतिक मूल्य भी अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। उन्होंने प्रोटेस्टेंट एथिक के माध्यम से प्रदर्शित किया कि कैसे कठिन परिश्रम, समय का पालन, मितव्ययिता और तर्कसंगत जीवन शैली ने आधुनिक पूंजीवाद के विकास को गति प्रदान की। वेबर के अनुसार, जब कोई संस्कृति इन गुणों को नैतिक और धार्मिक मान्यता प्रदान करती है, तो वह आर्थिक संवृद्धि और विकास के लिए एक अत्यंत सहायक वातावरण का निर्माण करती है।

29. (C) प्रगति के एकरेखीय पथ और विकास के वृहत आख्यानों का विचार।
उत्तर-आधुनिकीकरण विकास के उस आधुनिक विचार को चुनौती देता है जो मानता है कि सभी समाज एक ही दिशा और पथ पर आगे बढ़ते हैं। यह विचारधारा प्रगति की सार्वभौमिक परिभाषाओं पर प्रश्न उठाती है और स्थानीय संस्कृतियों एवं विविधता को महत्व प्रदान करती है। यह मानता है कि विकास का कोई एक श्रेष्ठ प्रतिमान नहीं हो सकता। उत्तर-आधुनिक दृष्टिकोण विज्ञान और तकनीक की निरपेक्ष सत्ता के प्रति संदेहास्पद रहता है और विकास के उन बड़े दावों की आलोचना करता है जो अक्सर स्थानीय समुदायों की उपेक्षा करते हैं।

30. (A) केवल I.
पश्चिमीकरण वह प्रक्रिया है जिसमें समाज पश्चिम की राजनीतिक, सामाजिक और आर्थिक संस्थाओं तथा मूल्यों को अपनाते हैं। हालांकि, उत्तर-आधुनिकीकरण पारंपरिक मूल्यों की ओर लौटना नहीं है, बल्कि यह आधुनिकता के बाद का चरण है जहाँ आत्म-अभिव्यक्ति और गुणवत्ता को महत्व मिलता है। आधुनिकीकरण केवल आर्थिक परिवर्तन नहीं है, बल्कि इसमें व्यापक सामाजिक और राजनीतिक सुधार भी सम्मिलित होते हैं। अतः, केवल प्रथम कथन सटीक रूप से पश्चिमीकरण की परिभाषा को स्पष्ट करता है, जबकि अन्य दो कथन इन अवधारणाओं का त्रुटिपूर्ण वर्णन करते हैं।

31. (A) एक नया उच्च-तकनीकी उद्योग विशिष्ट नौकरियां उत्पन्न करता है जबकि कम कुशल श्रमिकों को विस्थापित करता है।
विकास अक्सर समाज में विषमता पैदा करता है क्योंकि तकनीकी प्रगति सभी के लिए समान रूप से सुलभ नहीं होती। जब कोई आधुनिक उद्योग स्थापित होता है, तो वह शिक्षित और कुशल व्यक्तियों को उच्च वेतन वाली नौकरियां देता है, लेकिन साथ ही उन लोगों को बेरोजगार कर देता है जिनके पास आधुनिक कौशल का अभाव है। इससे समृद्ध और निर्धन के बीच की खाई और गहरी हो जाती है। यह उदाहरण स्पष्ट करता है कि उचित प्रशिक्षण और सुरक्षात्मक नीतियों के बिना, आर्थिक विकास समाज के भीतर नई संरचनात्मक असमानताएं और असंतुलन पैदा कर सकता है।

32. (B) निर्धन क्षेत्रों से समृद्ध क्षेत्रों की ओर पूंजी और श्रम का पलायन।
गुन्नार मिर्डल के अनुसार, बैकवाश प्रभाव वह प्रक्रिया है जिसमें बाजार की शक्तियां पिछड़े क्षेत्रों के विकास को और अधिक बाधित करती हैं। समृद्ध केंद्र अपनी ओर पूंजी, कुशल श्रमिक और संसाधनों को आकर्षित करते हैं, जिससे निर्धन क्षेत्रों में संसाधनों की भारी कमी हो जाती है। यह प्रभाव क्षेत्रों के बीच विकास की खाई को और चौड़ा कर देता है। संचयी कारणता के कारण, पहले से विकसित क्षेत्र और अधिक समृद्ध होते जाते हैं जबकि उपेक्षित क्षेत्र पिछड़ते रहते हैं। यह बाजार-आधारित विकास के नकारात्मक क्षेत्रीय परिणामों को प्रदर्शित करता है।

33. (B) सामाजिक विकास
सामाजिक विकास का मूल सरोकार समाज के भीतर न्याय, समानता और मानवीय गरिमा को बढ़ावा देना है। यह केवल धन संचय पर नहीं, बल्कि इस बात पर ध्यान देता है कि सामाजिक संस्थाएं और संबंध कितने निष्पक्ष और समावेशी हैं। इसमें वंचित समूहों के अधिकारों की रक्षा और अवसरों की समानता सुनिश्चित की जाती है। यह एक ऐसा वातावरण निर्मित करने का प्रयास है जहाँ प्रत्येक व्यक्ति भेदभाव के बिना अपनी क्षमता का पूर्ण विकास कर सके। यह विकास की एक मानवीय और नैतिक अवधारणा है जो सामाजिक उत्थान पर केंद्रित है।

34. (A) दोनों सिद्धांत तर्क देते हैं कि साम्राज्यवाद और उपनिवेशवाद ही अल्पविकास के एकमात्र कारण हैं।
वेबर और मिर्डल के उदारवादी सिद्धांत अल्पविकास की व्याख्या के लिए केवल बाहरी कारकों को उत्तरदायी नहीं मानते। वेबर ने सांस्कृतिक और धार्मिक मूल्यों जैसे आंतरिक कारकों पर ध्यान केंद्रित किया, जबकि मिर्डल ने राज्य की अक्षमता और बाजार की प्रक्रियाओं का विश्लेषण किया। वे यह नहीं कहते कि उपनिवेशवाद ही एकमात्र कारण है, बल्कि वे विकासशील देशों के भीतर की संस्थागत और सामाजिक संरचनाओं को भी महत्वपूर्ण मानते हैं। उनके अनुसार, आंतरिक सुधार और तर्कसंगत नीतियों के बिना बाहरी सहायता विकास सुनिश्चित करने में विफल हो सकती है।

Click Here to Buy book on Amazon

उत्तर (व्याख्या सहित)

1. (B) एक विशिष्ट अवधि में किसी देश की वास्तविक राष्ट्रीय आय या सकल उत्पाद में मात्रात्मक वृद्धि।
आर्थिक संवृद्धि एक विशुद्ध मात्रात्मक अवधारणा है, जो किसी अर्थव्यवस्था के उत्पादन स्तर में होने वाली भौतिक वृद्धि को इंगित करती है। यह मुख्य रूप से सकल घरेलू उत्पाद और प्रति व्यक्ति आय जैसे संकेतकों के माध्यम से मापी जाती है। यह प्रक्रिया केवल आय और धन के संचय पर ध्यान केंद्रित करती है, जबकि वितरण और जीवन की गुणवत्ता की उपेक्षा करती है। यह राष्ट्रीय आय में होने वाले वार्षिक विस्तार का प्रतिनिधित्व करती है।

2. (A) यह केवल अर्थव्यवस्था की संवृद्धि के बजाय मानव जीवन की समृद्धि के विस्तार पर ध्यान केंद्रित करता है।
मानव विकास की अवधारणा केवल आर्थिक आंकड़ों से परे मानव जीवन की गुणवत्ता पर बल देती है। यह दृष्टिकोण रेखांकित करता है कि विकास का अंतिम लक्ष्य लोगों की क्षमताओं का निर्माण और उनके विकल्पों का विस्तार होना चाहिए। इसमें शिक्षा, स्वास्थ्य और सम्मानजनक जीवन स्तर को मुख्य प्राथमिकता दी जाती है। यह आय को साध्य नहीं बल्कि एक साधन मानता है, जिससे व्यक्ति अपनी वास्तविक स्वतंत्रता और रचनात्मक क्षमता का पूर्ण उपयोग करने में समर्थ हो सके।

3. (C) कथन I सत्य है, लेकिन कथन II असत्य है।
सतत विकास ऐसा दृष्टिकोण है जो वर्तमान आवश्यकताओं की पूर्ति के दौरान प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण पर बल देता है ताकि भावी पीढ़ियों के हितों से समझौता न करना पड़े। यह पर्यावरणीय स्थिरता और अंतर-पीढ़ीगत न्याय का समर्थन करता है। इसके विपरीत, सामाजिक विकास केवल आर्थिक संकेतकों तक सीमित नहीं है। इसका मुख्य सरोकार सामाजिक संस्थाओं में सुधार करने, समानता सुनिश्चित करने और समाज के सभी वर्गों के लिए कल्याणकारी अवसरों को न्यायसंगत बनाने से होता है।

4. (D) पूंजीवाद के उदय के लिए कुछ सांस्कृतिक मूल्य, जैसे प्रोटेस्टेंट कार्य नैतिकता, महत्वपूर्ण थे।
मैक्स वेबर ने विकास के उदारवादी परिप्रेक्ष्य में संस्कृति की भूमिका को अत्यंत महत्वपूर्ण माना है। उन्होंने अपने विश्लेषण में स्पष्ट किया कि केल्विनवादी और प्रोटेस्टेंट नैतिकता ने कठिन परिश्रम, मितव्ययिता और तर्कसंगत व्यवहार जैसे मूल्यों को बढ़ावा दिया। ये सांस्कृतिक मूल्य आधुनिक पूंजीवाद के उदय हेतु आवश्यक मनोवैज्ञानिक आधार प्रदान करते हैं। उनके अनुसार, धार्मिक विश्वास और सामाजिक संस्कार केवल व्यक्तिगत जीवन तक सीमित नहीं हैं, बल्कि वे व्यापक आर्थिक संरचनाओं को भी निर्धारित करते हैं।

5. (A) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
गुन्नार मिर्डल की संचयी कारणता की अवधारणा यह स्पष्ट करती है कि आर्थिक प्रक्रियाएं स्वाभाविक रूप से क्षेत्रीय संतुलन स्थापित नहीं करती हैं। इसके बजाय, बाजार की शक्तियां विकसित क्षेत्रों को अधिक लाभ पहुँचाती हैं, जिससे वहां निवेश और प्रतिभा का संकेंद्रण होता है। यह प्रारंभिक लाभ समय के साथ और अधिक सुदृढ़ होता जाता है, जबकि पिछड़े क्षेत्र और अधिक पिछड़ते जाते हैं। इस प्रकार, आर्थिक विकास की प्रक्रिया अक्सर विभिन्न क्षेत्रों के बीच विकास में गहरा विचलन पैदा करती है।

6. (B) राष्ट्रीय सैन्य शक्ति का अधिकतम विस्तार
मानव विकास दृष्टिकोण का मुख्य केंद्र मानव जीवन की गुणवत्ता और व्यक्ति की गरिमा है। इसके घटकों में दीर्घायु, स्वास्थ्य सेवा तक पहुँच, गुणवत्तापूर्ण शिक्षा और जीवन का एक सभ्य स्तर सम्मिलित हैं। यह दृष्टिकोण सामाजिक और व्यक्तिगत क्षमताओं के विस्तार को विकास का वास्तविक पैमाना मानता है। सैन्य शक्ति का विस्तार या सैन्य आधुनिकीकरण इस अवधारणा का हिस्सा नहीं है, क्योंकि यह प्रत्यक्ष रूप से व्यक्ति के कल्याण या उसके विकल्पों और स्वतंत्रताओं के विस्तार से संबंधित नहीं होता है।

7. (A) P-3, Q-2, R-1, S-4
आर्थिक संवृद्धि मुख्य रूप से सकल घरेलू उत्पाद और प्रति व्यक्ति आय में होने वाली मात्रात्मक वृद्धि से संबंधित है। मानव विकास का मुख्य केंद्र व्यक्तियों के विकल्पों और उनकी क्षमताओं का व्यापक विस्तार करना है। सतत विकास भविष्य की पीढ़ियों के हितों की रक्षा करते हुए पर्यावरणीय संतुलन और अंतर-पीढ़ीगत समानता पर बल देता है। सामाजिक विकास समाज की संस्थागत संरचनाओं में सुधार और समानता लाने पर केंद्रित है। ये सभी अवधारणाएं विकास के विभिन्न आर्थिक, मानवीय और सामाजिक आयामों को व्यक्त करती हैं।

8. (A) आर्थिक संवृद्धि और सतत विकास
जब कोई देश केवल सकल राष्ट्रीय उत्पाद में वृद्धि पर ध्यान केंद्रित करता है, तो वह आर्थिक संवृद्धि के प्रतिमान का अनुसरण करता है। यदि इस प्रक्रिया में पर्यावरण प्रदूषित होता है और सामाजिक विषमता बढ़ती है, तो यह सतत विकास के सिद्धांतों के विरुद्ध होता है। सतत विकास आर्थिक उन्नति के साथ-साथ पर्यावरणीय संरक्षण और सामाजिक न्याय के बीच संतुलन की मांग करता है। यह संघर्ष दर्शाता है कि केवल आय में वृद्धि पर्याप्त नहीं है, बल्कि विकास को समावेशी और दीर्घकालिक होना चाहिए।

NODIA

प्रदर्शित करती हैं कि समाज कैसे अधिक जटिल और परस्पर संबद्ध होते जा रहे हैं।

44. (B) आर्थिक संवृद्धि
वह नीति जो केवल उत्पादन और कारखानों के विस्तार पर केंद्रित है, आर्थिक संवृद्धि के पारंपरिक प्रतिमान का उदाहरण है। यह दृष्टिकोण विकास को केवल सकल घरेलू उत्पाद और औद्योगिक क्षमता में वृद्धि के रूप में देखता है। इसमें अक्सर पर्यावरण संरक्षण, श्रमिकों की सुरक्षा और सामाजिक न्याय जैसे महत्वपूर्ण आयामों को उपेक्षित कर दिया जाता है। इसका मुख्य लक्ष्य किसी भी मूल्य पर अल्पकालिक आर्थिक लाभ प्राप्त करना होता है। यह मात्रात्मक विस्तार को प्राथमिकता देता है, भले ही इसके नकारात्मक सामाजिक और पर्यावरणीय परिणाम क्यों न हों।

45. (D) I, II और III
संस्कृति विकास की प्रक्रिया को विभिन्न प्रकार से बाधित कर सकती है। यदि सांस्कृतिक मूल्य कार्य के बजाय विश्राम को अधिक महत्व देते हैं, तो उत्पादकता कम हो सकती है। इसी प्रकार, भ्रष्टाचार और भाई-भतीजावाद के मानदंड संसाधनों के दोषपूर्ण वितरण का कारण बनते हैं, जिससे योग्य व्यक्तियों को अवसर प्राप्त नहीं हो पाते। सुदृढ़ पारिवारिक निष्ठा कभी-कभी पेशेवर तटस्थता और आधुनिक नौकरशाही के नियमों के साथ टकरा सकती है। ये सभी कारक मिलकर आर्थिक और संस्थागत प्रगति की गति को मंद कर देते हैं और विकास में बाधक बनते हैं।

46. (D) इसने विमर्श में पर्यावरणीय और अंतर-पीढ़ीगत चिंताओं को प्रस्तुत किया।
सतत विकास का सबसे महत्वपूर्ण योगदान यह है कि इसने विकास की परिभाषा को केवल वर्तमान तक सीमित नहीं रहने दिया। इसने यह विचार प्रस्तुत किया कि आज का विकास आने वाली पीढ़ियों के संसाधनों की बलि देकर नहीं होना चाहिए। इसने पर्यावरणीय सुरक्षा को आर्थिक नीतियों का अभिन्न अंग बनाया। इस दृष्टिकोण ने यह स्पष्ट किया कि यदि हम प्रकृति का अनियंत्रित दोहन करते रहे, तो भविष्य में विकास की प्रक्रिया ही अवरुद्ध हो जाएगी। यह वर्तमान और भविष्य के बीच संतुलन स्थापित करने वाला एक अनिवार्य वैश्विक दर्शन है।

47. (A) P-3, Q-4, R-1, S-2
आधुनिकीकरण पारंपरिक समाजों से आधुनिक औद्योगिक समाजों में संक्रमण की प्रक्रिया है। वैश्वीकरण विश्व की बढ़ती आर्थिक और सांस्कृतिक परस्पर संबद्धता को प्रदर्शित करता है। पश्चिमीकरण विशेष रूप से पश्चिम के मूल्यों और जीवन शैली को अपनाने को कहते हैं। उत्तर-आधुनिकीकरण वह चरण है जहाँ समाज भौतिक सुरक्षा से आगे बढ़कर जीवन की गुणवत्ता और आत्म-अभिव्यक्ति को प्राथमिकता प्रदान करने लगता है। ये चारों अवधारणाएं सामाजिक परिवर्तन के विभिन्न आयामों और चरणों को स्पष्ट करती हैं जो आधुनिक और समकालीन विश्व की विशिष्ट विशेषताएं हैं।

48. (B) सामाजिक विकास
सामाजिक विकास का उद्देश्य समाज के संस्थागत ढांचे को सुदृढ़ बनाना और वंचित समूहों को मुख्यधारा में लाना है। नागरिक समाज संगठनों को सशक्त बनाना और सामुदायिक भागीदारी को प्रोत्साहित करना इस प्रक्रिया के मुख्य अंग हैं। यह केवल आर्थिक लाभ पर केंद्रित नहीं है, बल्कि यह न्याय, समानता और लोगों के सशक्तिकरण को प्राथमिकता देता है। ऐसे कार्यक्रम समाज में विश्वास और एकजुटता बढ़ाते हैं, जिससे एक अधिक न्यायपूर्ण और समावेशी सामाजिक व्यवस्था का निर्माण होता है। यह विकास की एक मानवीय और सामूहिक अवधारणा है।

49. (B) आधुनिकीकरण : एकरेखीय विकास
आधुनिकीकरण सिद्धांत यह मानता है कि सभी समाज विकास के एक निश्चित और एकरेखीय पथ का अनुसरण करते हैं, जो परंपरा से आधुनिकता की ओर जाता है। इसके विपरीत, मैक्स वेबर ने संचयी कारणता नहीं बल्कि प्रोटेस्टेंट नैतिकता का विचार प्रस्तुत किया था, और गुन्नार मिर्डल संचयी कारणता से संबद्ध हैं। सतत विकास का संबंध पर्यावरण और भविष्य से है, न कि सांस्कृतिक समरूपीकरण से। अतः केवल आधुनिकीकरण और एकरेखीय विकास का युग्म ही सही है, क्योंकि यह इस विशिष्ट सिद्धांत की मूल धारणा को सटीक रूप से व्यक्त करता है।

50. (A) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
विकास की प्रक्रिया अत्यंत जटिल है और यह सभी क्षेत्रों या वर्गों के लिए समान परिणाम नहीं लाती है। अक्सर पुरानी सामाजिक संरचनाएं, जैसे जाति या वर्ग, नई आर्थिक नीतियों के क्रियान्वयन में बाधा उत्पन्न करती हैं। साथ ही, विकास के कारण कभी-कभी नए प्रकार के असंतुलन पैदा होते हैं, जहाँ कुछ लोगों को बहुत अधिक लाभ मिलता है और अन्य पिछड़ जाते हैं। यह सामाजिक-आर्थिक विषमता विकास के अनपेक्षित परिणाम के रूप में उभर सकती है। इसलिए, विकास को हमेशा एक सुचारु और निरंतर ऊपर जाने वाली प्रक्रिया नहीं माना जा सकता।

51. (C) विश्वास और सहयोग जैसे मूल्य और मानदंड, जो आर्थिक लेनदेन और सामाजिक स्थिरता को सुगम बनाते हैं।
जब संस्कृति विकास में सहायक होती है, तो इसका अर्थ है कि समाज के मूल्य आर्थिक गतिविधियों को सरल बनाते हैं। उदाहरण के लिए, यदि समाज में विश्वास का उच्च स्तर है, तो व्यापारिक अनुबंधों को लागू करना सुगम होता है और लेनदेन की लागत कम हो जाती है। सहयोग और ईमानदारी जैसे मानदंड एक स्थिर वातावरण प्रदान करते हैं जो निवेश हेतु अनुकूल होता है। यह सामाजिक पूंजी के रूप में कार्य करता है, जो औपचारिक कानूनों के साथ मिलकर विकास की गति को तीव्र करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

52. (D) यह अपनी अर्थव्यवस्था पर राष्ट्र-राज्य के नियंत्रण को सुदृढ़ करने की ओर ले जाता है।
वैश्वीकरण वास्तव में राष्ट्र-राज्यों की आर्थिक स्वायत्तता को चुनौती देता है क्योंकि यह सीमाओं के पार पूंजी और सेवाओं के

Downloaded from www.pdf.tube

के लिए सामाजिक बाधाओं को दूर करने और एकजुटता बढ़ाने का एक अत्यंत प्रभावी माध्यम है।

18. (A) इसकी संस्थाएँ, जैसे एक लचीली शिक्षा प्रणाली, योग्यता और कौशल विकास को बढ़ावा देती हैं।
सामाजिक संरचना विकास के लिए एक सुविधाप्रदाता तब बनती है जब उसके नियम और संस्थाएं व्यक्तियों की प्रगति में सहायक होती हैं। एक लचीली शिक्षा प्रणाली जो योग्यता को जन्म के ऊपर प्राथमिकता देती है, समाज की छिपी हुई प्रतिभाओं को सामने लाने में सहायता करती है। इससे श्रम की उत्पादकता बढ़ती है और नवाचार को प्रोत्साहन मिलता है। जब सामाजिक मानदंड उद्यमिता और परिश्रम को सम्मान देते हैं, तो आर्थिक और मानवीय विकास की प्रक्रिया सुगम हो जाती है, जिससे समाज का सर्वांगीण उत्थान संभव होता है।

19. (C) विकास कभी-कभी मौजूदा विषमताओं को बढ़ा सकता है या नई विषमताएं पैदा कर सकता है।
विकास की प्रक्रिया हमेशा न्यायसंगत नहीं होती है। अक्सर यह देखा जाता है कि नई तकनीक और औद्योगिक प्रगति का लाभ समाज के कुछ विशिष्ट वर्गों को अधिक मिलता है, जबकि अन्य पिछड़ जाते हैं। उदाहरण के लिए, शहरी क्षेत्रों में विकास ग्रामीण क्षेत्रों की तुलना में तीव्र हो सकता है, जिससे क्षेत्रीय विषमता बढ़ती है। इसके अलावा, कुशल श्रमिकों को उच्च वेतन मिलता है जबकि अकुशल श्रमिक विस्थापित हो सकते हैं। इस प्रकार, यदि उचित नीतिगत हस्तक्षेप न हो, तो विकास सामाजिक-आर्थिक विषमताओं को गहरा कर सकता है।

20. (D) 3, 2, 1
विकास के दृष्टिकोण समय के साथ विकसित हुए हैं। द्वितीय विश्व युद्ध के बाद के शुरुआती दशकों में आर्थिक संवृद्धि को प्राथमिक लक्ष्य माना गया, जिसमें केवल कुल उत्पादन बढ़ाने पर ध्यान था। 1970 और 1980 के दशक में मानव विकास का विचार उभरा, जिसने शिक्षा और स्वास्थ्य जैसे मानवीय पहलुओं को महत्व दिया। इसके पश्चात 1980 के दशक के अंत और 1990 के दशक में सतत विकास की अवधारणा आई, जिसने पर्यावरणीय सीमाओं और आने वाली पीढ़ियों के कल्याण को विकास प्रक्रिया में अनिवार्य रूप से जोड़ दिया।

21. (C) आधुनिकीकरण में बाधा के रूप में।
मैक्स वेबर के परिप्रेक्ष्य से, भाग्यवादिता और पारंपरिक सत्ता के प्रति अंधभक्ति विकास में प्रमुख बाधाएं हैं। आधुनिकीकरण के लिए तर्कसंगत सोच, व्यक्तिगत पहल और भविष्य के प्रति एक सक्रिय दृष्टिकोण की आवश्यकता होती है। जब कोई संस्कृति यह मानती है कि सब कुछ पूर्व-निर्धारित है, तो वह नवाचार और जोखिम लेने की भावना को हतोत्साहित करती है। ऐसी प्रवृत्तियां आर्थिक तर्कसंगतता के विकास को रोकती हैं और समाज को पारंपरिक ढांचे में ही जकड़े रखती हैं, जिससे आधुनिक औद्योगिक प्रगति का मार्ग अवरुद्ध हो जाता है।

22. (B) अर्थव्यवस्था, समाज और पर्यावरण
सतत विकास की अवधारणा तीन मुख्य स्तंभों के बीच संतुलन और समन्वय पर आधारित है। पहला स्तंभ आर्थिक विकास है जो समृद्धि लाता है, दूसरा स्तंभ सामाजिक समानता है जो विकास के लाभों का न्यायसंगत वितरण सुनिश्चित करता है, और तीसरा स्तंभ पर्यावरणीय संरक्षण है जो प्राकृतिक संसाधनों के अस्तित्व को बनाए रखता है। इन तीनों के बीच संतुलन अनिवार्य है क्योंकि एक के अभाव में दूसरा स्थायी नहीं रह सकता। यह दृष्टिकोण विकास को केवल तात्कालिक लाभ के बजाय एक दीर्घकालिक और उत्तरदायी प्रक्रिया मानता है।

23. (A) कथन I और कथन II दोनों सत्य हैं।
वैश्वीकरण की प्रक्रिया में परिवहन और संचार तकनीक के कारण भौगोलिक दूरियां कम हो गई हैं, जिसे समय और स्थान का संकुचन कहा जाता है। यह विश्व को एक छोटे से ग्राम की तरह जोड़ देता है। वहीं, आधुनिकीकरण सिद्धांत यह मानता है कि विकास का एक सार्वभौमिक पथ है जिसका अनुसरण सभी समाजों को करना चाहिए। यह पारंपरिक अवस्था से उच्च जन-उपभोग की अवस्था तक का एक रेखीय विकास क्रम प्रस्तुत करता है। दोनों ही अवधारणाएं आधुनिक विश्व में हो रहे व्यापक सामाजिक और आर्थिक परिवर्तनों की व्याख्या करती हैं।

24. (A) मानव विकास
मानव विकास का प्राथमिक उद्देश्य मनुष्यों के जीवन की गुणवत्ता और उनकी क्षमताओं को बढ़ाना है। जीवन प्रत्याशा में वृद्धि, शिशु मृत्यु दर में कमी और साक्षरता दर में सुधार जैसे सूचकांक सीधे तौर पर व्यक्ति के कल्याण और उसकी कार्यक्षमता से जुड़े होते हैं। यह दृष्टिकोण मानता है कि विकास का वास्तविक मापदंड केवल आय नहीं, बल्कि यह है कि लोग कितना स्वस्थ और शिक्षित जीवन जी रहे हैं। यह मनुष्यों को विकास का साधन नहीं बल्कि साध्य मानता है, जो इस प्रक्रिया का अंतिम लक्ष्य हैं।

NODIA

25. (A) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
उच्च प्रति व्यक्ति सकल घरेलू उत्पाद किसी देश की आर्थिक शक्ति का सूचक है, लेकिन यह स्वचालित रूप से बेहतर जीवन स्तर की गारंटी नहीं देता है। यदि संवृद्धि से प्राप्त संसाधनों का निवेश शिक्षा, सार्वजनिक स्वास्थ्य और पोषण में नहीं किया जाता है, तो जनसंख्या का एक बड़ा हिस्सा बुनियादी सुविधाओं से वंचित रह सकता है। विकास के लाभों का असमान वितरण मानव विकास के स्तर को निम्न बनाए रख सकता है। इसलिए, आर्थिक संवृद्धि को मानव विकास में बदलने के लिए जागरूक और लक्षित सार्वजनिक नीतियों की आवश्यकता होती है।

26. (A) नातेदारी और पारिवारिक दायित्व जो व्यक्तियों को शहरी केंद्रों में जाने से रोकते हैं।
सामाजिक संरचना तब बाधा बनती है जब वह आर्थिक अवसरों और गतिशीलता को प्रतिबंधित करती है। यदि पारंपरिक नातेदारी व्यवस्था व्यक्तियों को उनके पैतृक स्थानों या व्यवसायों से बांधे रखती है, तो वे आधुनिक औद्योगिक क्षेत्रों में कौशल विकास के लिए नहीं जा पाते। यह श्रम के कुशल आवंटन को रोकता है और नवाचार की संभावनाओं को कम करता है। विकास के लिए समाज का लचीला होना और व्यक्तिगत उपलब्धि को पारंपरिक बंधनों से ऊपर रखना

61. (C) आर्थिक विस्तार के ऊपर पारिस्थितिक संतुलन को प्राथमिकता देना।
आधुनिकीकरण का पथ मुख्य रूप से औद्योगिक विस्तार, शहरीकरण और तकनीकी प्रगति पर केंद्रित होता है। यह अक्सर प्रकृति पर विजय प्राप्त करने और संसाधनों के अधिकतम दोहन को विकास का मार्ग मानता है। इसमें पारिस्थितिक संतुलन की तुलना में आर्थिक वृद्धि को अधिक महत्व दिया जाता है। वास्तव में, पारिस्थितिक संतुलन को प्राथमिकता देना सतत विकास की मुख्य विशेषता है, न कि पारंपरिक आधुनिकीकरण सिद्धांत की। आधुनिकीकरण सिद्धांत विकासशील देशों को पश्चिमी मॉडल के अनुसार अपनी अर्थव्यवस्था को तीव्र गति से बढ़ाने के लिए प्रोत्साहित करता है।

62. (D) बाजार की ताकतें क्षेत्रों के बीच असमानताओं को कम करने के बजाय बढ़ाने की प्रवृत्ति रखती हैं।
गुन्नार मिर्डल का मुख्य तर्क यह है कि बाजार की प्रक्रियाएं स्वतः ही संतुलित नहीं होतीं। संचयी कारणता के माध्यम से, विकसित क्षेत्रों को मिलने वाले शुरुआती लाभ और अधिक निवेश को आकर्षित करते हैं, जिससे वे तीव्र गति से बढ़ते हैं। इसके विपरीत, पिछड़े क्षेत्र अपनी पूंजी और प्रतिभा को विकसित क्षेत्रों की ओर खो देते हैं, जिससे वे और अधिक पिछड़ जाते हैं। मिर्डल का मानना था कि यदि राज्य द्वारा सशक्त हस्तक्षेप न किया जाए, तो बाजार की ये शक्तियां समृद्ध और निर्धन क्षेत्रों के बीच की खाई को निरंतर बढ़ाती रहेंगी।

63. (A) प्रति व्यक्ति सकल घरेलू उत्पाद (GDP)
मानव विकास सूचकांक को इसलिए विकसित किया गया था क्योंकि प्रति व्यक्ति सकल घरेलू उत्पाद जैसे उपाय विकास की अधूरी तस्वीर प्रस्तुत करते थे। जीडीपी केवल औसत आय को मापता है, लेकिन यह नहीं बताता कि वह आय लोगों के जीवन को बेहतर बना रही है या नहीं। एचडीआई ने विकास के मूल्यांकन में स्वास्थ्य और ज्ञान जैसे गैर-आर्थिक आयामों को सम्मिलित किया। यह एक अधिक समग्र मापदंड है जो यह देखता है कि आर्थिक संसाधनों का उपयोग वास्तव में मानवीय क्षमताओं को बढ़ाने के लिए किया जा रहा है या नहीं।

64. (B) आधुनिकीकरण
आधुनिकीकरण का प्रतिमान यह मानता है कि विकास के लिए पारंपरिक समाज के पुराने मूल्यों, प्रथाओं और संस्थाओं को त्यागना आवश्यक है। इस दृष्टिकोण में परंपरा को अक्सर पिछड़ापन और प्रगति में बाधक माना जाता है। यह प्रतिमान पश्चिमी संस्थाओं और तर्कसंगत-वैज्ञानिक दृष्टिकोण को अपनाने की वकालत करता है। इसके अनुसार, जब तक समाज अपने पारंपरिक ढांचे को परिवर्तित नहीं करता, वह औद्योगिक और आर्थिक उन्नति प्राप्त नहीं कर सकता। अतः, संस्कृति को बाधा के रूप में देखना विशिष्ट रूप से आधुनिकीकरण के सिद्धांतों से जुड़ा विचार है।

65. (A) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
पश्चिमीकरण और आधुनिकीकरण अक्सर एक साथ चलते हैं, लेकिन उनके बीच तात्विक अंतर है। पश्चिमीकरण विशेष रूप से पश्चिम के सांस्कृतिक रूपों, जैसे वेशभूषा और जीवन शैली के अनुकरण को दर्शाता है, जो एक मूल्य-युक्त प्रक्रिया है। इसके विपरीत, आधुनिकीकरण एक अधिक वैज्ञानिक और संरचनात्मक प्रक्रिया है जिसमें तर्कसंगतीकरण और तकनीकी प्रगति सम्मिलित होती है। यद्यपि आधुनिकीकरण की शुरुआत पश्चिम में हुई, लेकिन यह एक व्यापक परिवर्तन है जिसे विभिन्न संस्कृतियाँ अपने तरीके से अपना सकती हैं, जबकि पश्चिमीकरण अनिवार्य रूप से पश्चिम की नकल है।

66. (A) आर्थिक संवृद्धि और सामाजिक विकास
राष्ट्रीय आय में वृद्धि होना आर्थिक संवृद्धि का संकेत है, लेकिन यदि इसके लिए स्थानीय निवासियों को उनकी भूमि से विस्थापित किया जाता है, तो यह सामाजिक विकास के सिद्धांतों के विरुद्ध है। सामाजिक विकास न्याय, समानता और लोगों के अधिकारों की सुरक्षा पर बल देता है। यह तनाव दर्शाता है कि केवल आंकड़ों में वृद्धि पर्याप्त नहीं है; विकास की प्रक्रिया में मानवीय गरिमा का ध्यान रखना अनिवार्य है। जब संवृद्धि लोगों के जीवन को उजाड़ती है, तो वह समग्र सामाजिक कल्याण में बाधक बन जाती है और विषमता उत्पन्न करती है।

67. (C) एक शिक्षा प्रणाली जो सभी वर्गों के लिए खुली है और उच्च गुणवत्ता वाला प्रशिक्षण प्रदान करती है।
एक समावेशी और योग्यता-आधारित शिक्षा प्रणाली विकास के लिए सबसे बड़ी सुविधाप्रदाता होती है। यह समाज के सभी वर्गों के व्यक्तियों को अपनी प्रतिभा प्रदर्शित करने और कौशल विकसित करने का समान अवसर प्रदान करती है। इससे श्रम की गुणवत्ता में सुधार होता है और नवाचार को बढ़ावा मिलता है। ऐसी संरचना सामाजिक गतिशीलता को सुगम बनाती है और यह सुनिश्चित करती है कि जन्म के स्थान पर प्रतिभा ही सफलता का आधार बने। यह आर्थिक संवृद्धि और सामाजिक न्याय दोनों को एक साथ प्राप्त करने का सशक्त माध्यम है।

68. (D) मानव विकास की अवधारणा
मानव विकास की अवधारणा का मूल केंद्र व्यक्ति के जीवन को बेहतर बनाना है। यह मानता है कि केवल धन संचय करना पर्याप्त नहीं है, बल्कि लोगों के पास ज्ञान प्राप्त करने, स्वस्थ जीवन जीने और संसाधनों तक पहुँचने की वास्तविक क्षमता होनी चाहिए। यह दृष्टिकोण विकास को लोगों के विकल्पों के विस्तार के रूप में देखता है। इसमें शिक्षा और स्वास्थ्य सेवा को विकास के अनिवार्य अंग के रूप में स्वीकार किया गया है। यह मनुष्यों को आर्थिक प्रक्रिया का साधन नहीं बल्कि साध्य मानता है, जो इसका अंतिम लक्ष्य है।

69. (C) सामाजिक विकास : लाभ का अधिकतम विस्तार
सामाजिक विकास का उद्देश्य लाभ का अधिकतम विस्तार करना नहीं, बल्कि सामाजिक न्याय, समानता और एकजुटता सुनिश्चित करना है। लाभ को अधिकतम करना आर्थिक संवृद्धि और निजी पूंजीवाद का लक्ष्य होता है। सामाजिक विकास यह देखता है कि विकास के लाभ समाज के सभी वर्गों तक न्यायसंगत रूप से पहुँच रहे हैं या नहीं। अन्य युग्म सही हैं क्योंकि आर्थिक संवृद्धि राष्ट्रीय उत्पादन से, मानव विकास विकल्पों के विस्तार से और सतत विकास भविष्य की पीढ़ियों की समानता से अत्यंत निकटता से संबंधित अवधारणाएं हैं।

Click Here to Buy book on Amazon

104. (A) कल्याण और समानता प्राप्त करने के लिए सामाजिक संस्थाओं और संबंधों की गुणवत्ता में सुधार करना।
सामाजिक विकास का अर्थ केवल आय बढ़ाना नहीं है, बल्कि समाज के ताने-बाने को अधिक न्यायपूर्ण और समावेशी बनाना है। इसमें ऐसी सामाजिक संस्थाओं का निर्माण और सुधार सम्मिलित है जो भेदभाव को न्यून करें, न्याय सुनिश्चित करें और समाज के निर्बल वर्गों को सशक्त बनाएं। यह लोगों के बीच विश्वास, सहयोग और एकजुटता बढ़ाने पर ध्यान केंद्रित करता है। सामाजिक विकास का लक्ष्य एक ऐसा समाज बनाना है जहाँ प्रत्येक नागरिक को सम्मानजनक जीवन जीने और विकास की प्रक्रिया में भाग लेने का समान अवसर प्राप्त हो।

105. (B) उद्यमशीलता की गतिविधि में बाधा के रूप में।
उद्यमशीलता हेतु जोखिम लेने, नवाचार करने और पारंपरिक मानदंडों को चुनौती देने की आवश्यकता होती है। यदि कोई संस्कृति केवल अनुरूपता और यथास्थिति पर बल देती है और व्यक्तिगत पहल को हतोत्साहित करती है, तो वह नए व्यवसायों और विचारों के उदय को अवरुद्ध कर देती है। ऐसी सामाजिक व्यवस्था में लोग कुछ नवीन करने के स्थान पर पारंपरिक मार्गों पर ही चलना पसंद करते हैं। यह सांस्कृतिक जड़ता आर्थिक गतिशीलता को बाधित करती है और समाज को आधुनिक औद्योगिक प्रतिस्पर्धा में पीछे धकेल देती है, जिससे विकास की गति मंद हो जाती है।

106. (B) विकास की प्रक्रिया, विशेष रूप से बाजार के नेतृत्व वाली संवृद्धि, असमानता के नए रूप उत्पन्न कर सकती है।
यह अवधारणा इस वास्तविकता को उद्घाटित करती है कि आर्थिक प्रगति का लाभ हमेशा समान रूप से प्राप्त नहीं होता। बाजार-आधारित विकास अक्सर उन लोगों को अधिक पुरस्कृत करता है जिनके पास पूर्व से पूंजी, शिक्षा और कौशल उपलब्ध है। इससे समाज के विभिन्न वर्गों के बीच धन और अवसरों की खाई विस्तृत हो सकती है। नई तकनीकें अकुशल श्रमिकों को विस्थापित कर सकती हैं, जिससे बेरोजगारी और आय की विषमता उत्पन्न होती है। अतः, बिना सुधारात्मक सामाजिक नीतियों के, विकास स्वयं समाज के भीतर नई प्रकार की संरचनात्मक असमानताओं का कारण बन सकता है।

107. (B) तर्कसंगत विकास में बाधा डालने वाली सामाजिक संरचना।
मैक्स वेबर के अनुसार, आधुनिक विकास के लिए एक तर्कसंगत-कानूनी नौकरशाही अनिवार्य है जहाँ नियुक्तियाँ योग्यता और नियमों पर आधारित हों। यदि कोई सामाजिक संरचना व्यक्तिगत वफादारी और नातेदारी को प्राथमिकता प्रदान करती है, तो वह अकुशलता और भ्रष्टाचार को बढ़ावा देती है। यह संसाधनों के दोषपूर्ण आवंटन का कारण बनता है और योग्य व्यक्तियों को योगदान देने से वंचित करता है। ऐसी व्यवस्था आर्थिक तर्कसंगतता को नष्ट करती है और आधुनिक संस्थाओं के कामकाज को बाधित करती है, जिससे दीर्घकालिक और कुशल राष्ट्रीय विकास का मार्ग अवरुद्ध हो जाता है।

108. (A) 3, 1, 2
उत्तर-आधुनिकीकरण सिद्धांत के अनुसार, समाजों का विकास मूल्यों के क्रमिक परिवर्तन से होता है। सर्वप्रथम कृषि समाजों में मुख्य चिंता केवल जीवित रहने या उत्तरजीविता की होती है। औद्योगिक समाज के उदय के साथ, ध्यान आर्थिक और भौतिक सुरक्षा पर केंद्रित हो जाता है। अंततः, जब समाज अत्यधिक समृद्ध हो जाता है, तो वह उत्तर-औद्योगिक चरण में प्रवेश करता है जहाँ व्यक्तिगत आत्म-अभिव्यक्ति और जीवन की गुणवत्ता सर्वाधिक महत्वपूर्ण मूल्य बन जाते हैं। यह क्रम भौतिक आवश्यकताओं से मानवीय गरिमा और स्वायत्तता की ओर झुकाव को प्रदर्शित करता है।

109. (B) वर्तमान पीढ़ी की आवश्यकताओं को भविष्य की पीढ़ियों की आवश्यकताओं से समझौता किए बिना पूरा किया जाना चाहिए।
सतत विकास का मूल सिद्धांत अंतर-पीढ़ीगत न्याय है। यह स्वीकार करता है कि हम पृथ्वी के संसाधनों के स्वामी नहीं बल्कि न्यासी हैं। हमारा दायित्व है कि हम विकास की ऐसी विधियाँ अपनाएँ जो पर्यावरण को क्षति न पहुँचाएँ और संसाधनों को इस प्रकार बचाएँ कि भावी पीढ़ियाँ भी अपना विकास कर सकें। यह केवल आज के लाभ के विषय में नहीं है, बल्कि यह विकास की निरंतरता और पारिस्थितिक संतुलन बनाए रखने का एक दूरदर्शी दृष्टिकोण है जो वर्तमान और भविष्य को सामंजस्य के साथ जोड़ता है।

110. (B) P-2, Q-1, R-4, S-3
गुन्नार मिर्डल ने मृदु राज्य की अवधारणा दी जहाँ कानून का शासन निर्बल होता है। मैक्स वेबर ने प्रोटेस्टेंट नैतिकता को पूंजीवाद के उदय का आधार स्वीकार किया। उत्तर-आधुनिकीकरण उत्तर-भौतिकवादी मूल्यों की ओर बदलाव की पहचान करता है। मानव विकास का मुख्य केंद्र क्षमता दृष्टिकोण है जो लोगों की स्वतंत्रताओं के विस्तार पर बल देता है। ये सभी विचार विकास के विभिन्न सामाजिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक आयामों को स्पष्ट करते हैं और यह प्रदर्शित करते हैं कि समाज की प्रगति को मापने के लिए आय के अतिरिक्त अन्य कारक कितने महत्वपूर्ण हैं।

111. (B) आय, धन और जीवन के अवसर
विकास के संदर्भ में सामाजिक-आर्थिक विषमता का अर्थ समाज के भीतर संसाधनों का असमान वितरण है। यह केवल इस विषय में नहीं है कि किसके पास कितना धन है, बल्कि इसमें यह भी सम्मिलित है कि शिक्षा, स्वास्थ्य सेवा और श्रेष्ठ नौकरियों तक किसकी पहुँच है। ये विषमताएं अक्सर निवासियों के जीवन के अवसरों को जन्म से ही सीमित कर देती हैं। यदि विकास के लाभ केवल एक विशिष्ट वर्ग तक सीमित रहते हैं, तो यह समाज में विभाजन पैदा करता है और उन लोगों के लिए प्रगति के द्वार बंद कर देता है जो पूर्व से हाशिए पर हैं।

112. (A) पूंजी, तकनीक और 'आधुनिक' मूल्य
आधुनिकीकरण सिद्धांत यह प्रस्ताव करता है कि विकसित पश्चिमी देशों के पास वह ज्ञान, पूंजी और तकनीक उपलब्ध है जिसकी विकासशील देशों को आधुनिक बनने हेतु आवश्यकता

NODIA

ही आगामी कल की मिट्टी भी उपजाऊ बनी रहे। अन्य विकल्प केवल अल्पकालिक आर्थिक लाभ पर ध्यान देते हैं और भविष्य के संसाधनों की बलि चढ़ाते हैं। सतत विकास हमें वर्तमान की जरूरतों और भविष्य की संभावनाओं में संतुलन सिखाता है।

79. (C) समाज की आंतरिक सांस्कृतिक और संस्थागत विशेषताएं।
मैक्स वेबर और अल्पविकास के उदारवादी विचारकों का मानना है कि किसी राष्ट्र के पिछड़ेपन के मूल कारण उसकी अपनी आंतरिक संरचनाओं में निहित होते हैं। उनके अनुसार, पारंपरिक मूल्य, तर्कहीन विश्वास और निर्बल संस्थाएं आर्थिक संवृद्धि को बाधित करती हैं। वेबर ने तर्क दिया कि जब तक समाज में तर्कसंगतता और उद्यमशीलता के सांस्कृतिक मूल्य विकसित नहीं होते, तब तक केवल बाहरी पूंजी या तकनीक से विकास संभव नहीं है। यह परिप्रेक्ष्य विकास के लिए आंतरिक सामाजिक सुधारों और आधुनिक मूल्यों को अपनाने पर सबसे अधिक बल देता है।

80. (A) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
आधुनिकीकरण की प्रक्रिया अक्सर पारंपरिक समाजों के लिए सांस्कृतिक चुनौती प्रस्तुत करती है। यह तर्कसंगतता, विज्ञान और व्यक्तिगत उपलब्धि जैसे सार्वभौमिक मूल्यों को बढ़ावा देता है, जो पारंपरिक समाज के उन मूल्यों से टकराते हैं जो भावनाओं, धर्म और समुदाय पर आधारित होते हैं। इस संघर्ष के परिणामस्वरूप कई बार स्थानीय कलाएं, भाषाएं और जीवन जीने के पारंपरिक तरीके लुप्त हो जाते हैं। यह प्रक्रिया समाज को भौतिक रूप से तो समृद्ध बना सकती है, लेकिन उसकी सांस्कृतिक विविधता और जड़ों को निर्बल करने का जोखिम भी उठाती है।

81. (A) सामाजिक गतिशीलता और प्रतिभा के कुशल आवंटन को प्रतिबंधित करती है।
विकास के लिए समाज का लचीला होना अनिवार्य है ताकि योग्य व्यक्ति अपनी क्षमता के अनुसार उच्च पदों तक पहुँच सकें। एक पदानुक्रमित संरचना, जहाँ व्यक्ति का भविष्य उसके जन्म या जाति से निर्धारित होता है, प्रतिभा के मार्ग में अवरोध उत्पन्न करती है। इससे न केवल व्यक्तिगत असंतोष बढ़ता है, बल्कि समाज अपनी सर्वश्रेष्ठ मानव पूंजी का उपयोग करने से भी वंचित रह जाता है। ऐसी व्यवस्था नवाचार को हतोत्साहित करती है और आर्थिक विकास की संभावनाओं को कम कर देती है, क्योंकि यहाँ योग्यता के स्थान पर परंपरा को महत्व मिलता है।

82. (B) राष्ट्रीय अर्थव्यवस्थाओं का पूर्ण अलगाव।
वैश्वीकरण अनिवार्य रूप से विश्व के विभिन्न भागों के बीच संबंधों को जोड़ने और गहरा करने की प्रक्रिया है। इसके आर्थिक आयाम में मुक्त व्यापार और निवेश सम्मिलित हैं, जबकि सांस्कृतिक आयाम में विचारों और कलाओं का आदान-प्रदान होता है। राजनीतिक रूप से यह अंतरराष्ट्रीय सहयोग को बढ़ाता है। राष्ट्रीय अर्थव्यवस्थाओं का पूर्ण अलगाव वैश्वीकरण के मूल सिद्धांतों के बिल्कुल विपरीत है। वैश्वीकरण आत्मनिर्भरता के स्थान पर परस्पर निर्भरता को बढ़ावा देता है और यह मानता है कि वैश्विक सहयोग से ही आज की बड़ी चुनौतियों का समाधान संभव है।

83. (A) केवल I और II
उत्तर-आधुनिकीकरण एक ऐसा चरण है जहाँ समाज भौतिक संचय से आगे बढ़कर उत्तर-भौतिकवादी मूल्यों जैसे कि आत्म-अभिव्यक्ति और पर्यावरण के प्रति सचेत हो जाता है। यह प्रगति के उन बड़े सिद्धांतों और आख्यानों पर प्रश्न उठाता है जो आधुनिकीकरण के दौरान निर्विवाद माने जाते थे। हालांकि, यह पारंपरिक समाजों की ओर लौटने का प्रयास नहीं है। यह आधुनिकता के अनुभवों के बाद एक नई, अधिक लचीली और विविधतापूर्ण चेतना का उदय है। यह व्यक्ति की स्वायत्तता और जीवन की गुणवत्ता को विकास का वास्तविक पैमाना मानता है।

84. (B) व्यापक भ्रष्टाचार और कानून प्रवर्तन की कमी।
गुन्नार मिर्डल ने मृदु राज्य का प्रयोग उन विकासशील देशों का वर्णन करने के लिए किया था जहाँ कानून और व्यवस्था का शासन अत्यंत निर्बल होता है। ऐसे राज्यों में भ्रष्टाचार संस्थागत रूप ले लेता है और सरकार की नीतियां केवल कागजों तक सीमित रह जाती हैं। यहाँ शक्तिशाली लोग कानूनों की अवहेलना करते हैं और राज्य उन्हें दंडित करने की राजनीतिक शक्ति नहीं रखता। यह मृदुता नियोजित विकास के मार्ग में सबसे बड़ी बाधा है, क्योंकि बिना कठोर अनुशासन और कानून के शासन के कोई भी आर्थिक सुधार प्रभावी नहीं हो सकता।

85. (C) सतत विकास
सतत विकास का परिप्रेक्ष्य केवल जीडीपी की वृद्धि से संतुष्ट नहीं होता। यह अनिवार्य रूप से यह देखता है कि विकास की इस प्रक्रिया में पर्यावरण की क्या मूल्य चुकाई जा रही है। यदि कोई नीति आर्थिक लाभ तो देती है लेकिन वायु प्रदूषण बढ़ाकर स्वास्थ्य और पारिस्थितिकी को क्षति पहुँचाती है, तो सतत विकास इसे वास्तविक प्रगति नहीं मानता। यह दृष्टिकोण वर्तमान संवृद्धि और भविष्य के पर्यावरण संरक्षण के बीच अटूट संबंध स्थापित करता है और ऐसी नीतियों की कड़ी आलोचना करता है जो अल्पकालिक लाभ हेतु प्राकृतिक संसाधनों को नष्ट करती हैं।

86. (A) एक सुदृढ़ और स्वतंत्र न्यायपालिका का अस्तित्व जो अनुबंधों को लागू करती है।
सामाजिक संरचना विकास के लिए तब सहायक होती है जब वह आर्थिक व्यवहार हेतु एक सुरक्षित वातावरण प्रदान करती है। एक स्वतंत्र न्यायपालिका जो बिना किसी भेदभाव के अनुबंधों का पालन सुनिश्चित करती है, व्यापार और निवेश में विश्वास पैदा करती है। यह संरचनात्मक विशेषता सुनिश्चित करती है कि विवादों का निपटारा तर्कसंगत और कानूनी आधार पर होगा, न कि बाहुबल या सिफारिश के आधार पर। ऐसी संस्थाएं बाजार की दक्षता बढ़ाती हैं और उद्यमिता को प्रोत्साहित करती हैं, जिससे समाज का आर्थिक विकास अधिक सुदृढ़ और विश्वसनीय बनता है।

NODIA

स्थान पर पृथ्वी की सहनशक्ति और संसाधनों की सीमितता पर ध्यान केंद्रित करता है। यह विकास के ऐसे मार्गों की खोज करता है जो पर्यावरण को सुरक्षित रखते हुए मानवीय कल्याण को अक्षुण्ण बनाए रखें। यह आर्थिक संवृद्धि को एक ऐसी दीर्घकालिक प्रक्रिया के रूप में देखता है जो आने वाले सहस्राब्दियों तक सुरक्षित बनी रह सके।

138. (C) केवल I और III
गुन्नार मिर्डल ने मृदु राज्य के माध्यम से उन देशों की प्रशासनिक निर्बलता और भ्रष्टाचार को उद्घाटित किया जो विकास नीतियों को प्रभावी ढंग से लागू नहीं कर पाते। साथ ही, उदारवादी सिद्धांतकारों का मुख्य ध्यान उन आंतरिक कारणों पर होता है जो किसी समाज को पिछड़ा बनाए रखते हैं। हालांकि, मैक्स वेबर के विषय में यह कहना त्रुटिपूर्ण है कि वे केवल भौतिक कारकों पर केंद्रित थे; वास्तव में उनका संपूर्ण कार्य इस विषय पर आधारित था कि सांस्कृतिक और धार्मिक विचार किस प्रकार आर्थिक और सामाजिक संरचनाओं को आकार प्रदान करते हैं।

139. (A) मानव विकास
मानव विकास का दृष्टिकोण यह मानता है कि विकास का अंतिम लक्ष्य मनुष्यों की स्वतंत्रता और उनकी क्षमताओं में वृद्धि करना है। अमर्त्य सेन के इस विचार के अनुसार, आय महत्वपूर्ण है लेकिन वह केवल एक साधन मात्र है। वास्तविक विकास तब होता है जब व्यक्ति स्वस्थ हो, शिक्षित हो और उसके पास वे विकल्प उपलब्ध हों जिनसे वह अपनी इच्छा के अनुसार एक सार्थक जीवन व्यतीत कर सके। यह दृष्टिकोण विकास की चर्चा को केवल अर्थव्यवस्था और यंत्रों से हटाकर मनुष्यों और उनके जीवन की वास्तविक गुणवत्ता पर गहराई से केंद्रित करता है।

140. (B) सामाजिक-आर्थिक विषमताएं
विकास की प्रक्रिया अक्सर असमान होती है और यदि इसे सही ढंग से प्रबंधित न किया जाए, तो यह समाज में विजेताओं और पराजितों के बीच की खाई को और विस्तृत कर देती है। नई तकनीकें और बाजार की शक्तियां अक्सर उन निवासियों को अधिक लाभ पहुँचाती हैं जो पूर्व से ही संपन्न और शिक्षित हैं, जबकि निर्धन और कम कुशल लोग और अधिक पिछड़ जाते हैं। इस स्थिति को सामाजिक-आर्थिक विषमता कहा जाता है। यह न केवल आर्थिक रूप से हानिकारक है, बल्कि यह सामाजिक तनाव, अस्थिरता और न्याय के अभाव को भी जन्म देती है।

141. (B) उच्च स्तर के सामाजिक विश्वास वाली संस्कृति व्यवसाय और नागरिक समाज को बढ़ावा दे सकती है।
विकास हेतु सहायक के रूप में संस्कृति का अर्थ है कि समाज के मूल्य आर्थिक गतिविधियों को सुगम बनाते हैं। यदि किसी समाज में निवासियों के बीच उच्च स्तर का विश्वास व्याप्त है, तो व्यापारिक अनुबंधों को लागू करना सुगम हो जाता है और धोखाधड़ी की आशंका न्यून हो जाती है। इससे लेनदेन की लागत घट जाती है और आपसी सहयोग बढ़ता है। ऐसी संस्कृति में लोग नवीन विचारों को साझा करने और साझा लक्ष्यों हेतु मिलकर कार्य करने के प्रति अधिक खुले होते हैं, जो आर्थिक प्रगति और सामाजिक स्थिरता दोनों हेतु अत्यंत महत्वपूर्ण है।

142. (A) 2, 1, 3
आधुनिकीकरण के तर्क के अनुसार, विकास का प्रारंभ विकसित देशों से आधुनिक तकनीक, पूंजी और वैज्ञानिक ज्ञान के प्रसार से होता है। यह बाहरी प्रभाव पारंपरिक समाज में परिवर्तन लाता है, जिससे व्यक्तियों के सोचने के तरीके परिवर्तित होते हैं और एक आधुनिक एवं तर्कसंगत व्यक्तित्व का उदय होता है। अंततः, जब ये आधुनिक विचार और तकनीकें समाज की संस्थाओं में गहराई तक व्याप्त हो जाती हैं, तब वह समाज पूर्ण रूप से एक विकसित औद्योगिक समाज में परिवर्तित हो जाता है। यह क्रम विकास की एक चरणबद्ध और बाहरी प्रभावों से प्रेरित प्रक्रिया है।

143. (B) पश्चिमी मूल के सांस्कृतिक और सामाजिक स्वरूपों को अपनाना।
आधुनिकीकरण एक व्यापक और अमूर्त प्रक्रिया है जो तर्कसंगतता और तकनीक पर आधारित है, जिसे कोई भी समाज अपने विशिष्ट तरीके से अपना सकता है। इसके विपरीत, पश्चिमीकरण का प्रत्यक्ष संबंध पश्चिम के विशिष्ट सांस्कृतिक प्रतिमानों से है। इसमें गैर-पश्चिमी समाजों द्वारा पश्चिम के मूल्यों, वेशभूषा, भाषा और सामाजिक रीति-रिवाजों का सचेत अनुकरण सम्मिलित होता है। यह प्रक्रिया केवल आर्थिक उन्नति नहीं है, बल्कि यह अपनी सांस्कृतिक पहचान को परिवर्तित कर उसे पश्चिमी सांचे में ढालने का प्रयास है। अतः, पश्चिमीकरण विकास का एक सांस्कृतिक आयाम है।

144. (B) विकास की प्रक्रिया ने सामाजिक-आर्थिक विषमताओं को बढ़ा दिया है।
गिनी गुणांक का दोषपूर्ण होना इस बात का प्रमाण है कि देश में आय और संपत्ति का वितरण पहले की तुलना में अधिक असमान हो गया है। यह प्रदर्शित करता है कि तीव्र गति से हुई आर्थिक संवृद्धि का लाभ समाज के सभी वर्गों तक नहीं पहुँचा है, बल्कि धन का संकेंद्रण केवल कुछ ही हाथों में हुआ है। यह स्थिति स्पष्ट करती है कि बिना किसी न्यायपूर्ण वितरण नीति के, केवल जीडीपी में वृद्धि समाज के भीतर की खाई को और चौड़ा कर सकती है। यह समावेशी विकास के लक्ष्यों की विफलता को प्रत्यक्ष रूप से इंगित करता है।

145. (C) A सत्य है लेकिन R असत्य है।
गुन्नार मिर्डल ने मृदु राज्य शब्द का प्रयोग उन देशों की निर्बलता को दर्शाने के लिए किया था जहाँ कानून का शासन और सामाजिक अनुशासन अत्यंत निम्न स्तर पर होता है। ऐसे राज्यों में भ्रष्टाचार व्याप्त होता है और वे अपनी ही नीतियों को लागू करने में विफल रहते हैं, जो विकास में एक बहुत बड़ी बाधा है। अतः अभिकथन सही है, लेकिन कारण त्रुटिपूर्ण है क्योंकि मृदु राज्य की विशेषता अनुशासन और कुशलता नहीं, बल्कि अव्यवस्था और नियमों की अनदेखी होती है। यह विफलता ही विकास की समस्त योजनाओं को निष्प्रभावी बना देती है।

Downloaded from www.pdf.tube

की बचत कल के निवेश में परिवर्तित करने हेतु प्रेरित करती है। ये सांस्कृतिक गुण एक अदृश्य बुनियादी ढांचे की तरह कार्य करते हैं जो औपचारिक कानूनों को अधिक प्रभावी बनाते हैं और आर्थिक प्रगति हेतु एक सकारात्मक वातावरण तैयार करते हैं।

96. (B) उत्तरजीविता से आत्म-अभिव्यक्ति और जीवन की गुणवत्ता की ओर।
उत्तर-आधुनिकीकरण सिद्धांत के अनुसार, जब समाज अत्यधिक समृद्ध हो जाते हैं और उनकी बुनियादी भौतिक आवश्यकताएं पूरी हो जाती हैं, तो उनके मूल्यों में मौलिक बदलाव आता है। लोग अब केवल जीवित रहने या धन संचय करने के विषय में नहीं सोचते, बल्कि वे व्यक्तिगत स्वतंत्रता, आत्म-अभिव्यक्ति और जीवन के आनंद पर अधिक ध्यान केंद्रित करते हैं। इसे उत्तर-भौतिकवादी मूल्यों की ओर संक्रमण कहा जाता है। यहाँ विकास का अर्थ केवल आय बढ़ाना नहीं, बल्कि एक सार्थक और गुणवत्तापूर्ण जीवन जीना बन जाता है, जो मानवीय गरिमा पर केंद्रित है।

97. (D) पारदर्शी और जवाबदेह शासन की प्रणाली।
जाति व्यवस्था, पितृसत्तात्मक मानदंड और भ्रष्टाचार ऐसी सामाजिक संरचनाएं और प्रथाएं हैं जो विकास को अवरुद्ध करती हैं क्योंकि वे भेदभाव पैदा करती हैं और संसाधनों का दोषपूर्ण वितरण करती हैं। इसके विपरीत, पारदर्शी और जवाबदेह शासन विकास हेतु एक सशक्त सुविधाप्रदाता है। यह सुनिश्चित करता है कि सरकार की नीतियां प्रभावी ढंग से लागू हों, भ्रष्टाचार न्यून हो और सभी नागरिकों को समान अवसर प्राप्त हों। ऐसी व्यवस्था निवेश को प्रोत्साहित करती है और समाज में विश्वास पैदा करती है, जो स्थायी विकास हेतु पूर्णतः अनिवार्य है।

98. (B) भविष्य की पीढ़ियों की आवश्यकताएं।
सतत विकास की सबसे अद्वितीय विशेषता इसकी अंतर-पीढ़ीगत समानता की चिंता है। अन्य प्रतिमान अक्सर तात्कालिक संवृद्धि पर ध्यान देते हैं, लेकिन सतत विकास यह मांग करता है कि हम आज के संसाधनों का उपयोग इस प्रकार करें कि वे आगामी पीढ़ियों के लिए भी उपलब्ध रहें। यह आर्थिक प्रगति को पर्यावरणीय सीमाओं के साथ जोड़ता है। इसका मानना है कि यदि हम आज प्रकृति को नष्ट करके समृद्ध बनते हैं, तो हम आने वाली पीढ़ियों के जीवन और विकास की संभावनाओं को स्थायी रुप से संकट में डाल रहे हैं।

99. (B) संस्कृति
मैक्स वेबर का विश्लेषण स्पष्ट करता है कि आर्थिक व्यवस्थाएं केवल भौतिक कारकों से नहीं, बल्कि लोगों की धार्मिक और सांस्कृतिक मान्यताओं से भी प्रभावित होती हैं। प्रोटेस्टेंट नैतिकता ने आर्थिक सफलता को एक ईश्वरीय वरदान के रूप में प्रस्तुत किया, जिसने लोगों को कठिन परिश्रम और मितव्ययिता हेतु प्रेरित किया। यह सिद्धांत दर्शाता है कि संस्कृति कैसे मानवीय क्रियाओं को दिशा प्रदान करती है और पूंजीवाद जैसी जटिल आर्थिक प्रणाली के विकास के लिए आवश्यक मानसिक और नैतिक वातावरण तैयार करने में एक अत्यंत महत्वपूर्ण शक्ति के रूप में कार्य करती है।

100. (C) A सत्य है लेकिन R असत्य है।
वैश्वीकरण वास्तव में एक बहुआयामी प्रक्रिया है जिसमें अर्थव्यवस्था के साथ-साथ राजनीति और संस्कृति भी गहराई से संबद्ध हैं। यह कहना त्रुटिपूर्ण है कि इसका संस्कृति पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता; वास्तव में, वैश्वीकरण के कारण ही आज विश्व भर में विचारों, भाषाओं, संगीत और जीवन शैली का तीव्र आदान-प्रदान हो रहा है। इसके परिणामस्वरूप कई बार स्थानीय संस्कृतियाँ वैश्विक संस्कृति के प्रभाव में परिवर्तित हो जाती हैं या कभी-कभी उनके अस्तित्व पर संकट भी आ जाता है। अतः वैश्वीकरण का सांस्कृतिक आयाम इसके आर्थिक आयाम जितना ही शक्तिशाली है।

101. (C) आर्थिक संवृद्धि
आर्थिक संवृद्धि का दृष्टिकोण विकास को मुख्य रूप से मात्रात्मक माप के माध्यम से देखता है। इसमें सकल घरेलू उत्पाद की वार्षिक वृद्धि दर को देश की सफलता और प्रगति का सबसे महत्वपूर्ण सूचकांक माना जाता है। यह स्वीकार करता है कि यदि अर्थव्यवस्था का कुल आकार बढ़ रहा है, तो देश का विकास हो रहा है। यह परिप्रेक्ष्य आय और उत्पादन के विस्तार पर सर्वाधिक बल देता है, भले ही वह धन समाज के सभी वर्गों तक न्यायपूर्ण रुप से न पहुँच रहा हो। यह गुणात्मक सुधारों के स्थान पर आंकड़ों को प्राथमिकता देता है।

102. (B) क्षेत्रीय असमानता बढ़ती है।
गुन्नार मिर्डल के अनुसार, विकासशील देशों में बाजार की शक्तियां पिछड़े क्षेत्रों से पूंजी और कुशल श्रमिकों को विकसित केंद्रों की ओर आकर्षित करती हैं। इसे बैकवाश प्रभाव कहा जाता है। चूंकि पिछड़े क्षेत्रों को विकसित करने वाले प्रसार प्रभाव अत्यंत निर्बल होते हैं, इसलिए समृद्ध क्षेत्र और अधिक धनी हो जाते हैं जबकि निर्धन क्षेत्र संसाधनों के अभाव में और अधिक पिछड़ जाते हैं। यह प्रक्रिया संचयी रुप से कार्य करती है, जिससे समय के साथ विभिन्न क्षेत्रों के बीच विकास का असंतुलन और क्षेत्रीय असमानता निरंतर गहरी होती जाती है।

103. (A) केवल I और II
आधुनिकीकरण सिद्धांत यह मानता है कि समाज परंपरा से आधुनिकता की ओर एक सीधी रेखा में अग्रसर होते हैं। पश्चिमीकरण को अक्सर आधुनिकीकरण के एक विशिष्ट रूप के रूप में देखा जाता है जहाँ विकास का आदर्श प्रतिमान पश्चिम की संस्थाएं और संस्कृति होती हैं। हालांकि, यह कहना अनिवार्य नहीं है कि वैश्वीकरण आधुनिकीकरण का अंतिम चरण है; यह एक पृथक और समकालीन प्रक्रिया है जो राष्ट्रों की सीमाओं को पार कर वैश्विक एकीकरण पर बल देती है। अतः प्रथम दो कथन इन अवधारणाओं के शास्त्रीय समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण को सही दर्शाते हैं।

NODIA

70. (B) P-4, Q-3, R-2, S-1
वैश्वीकरण समय और स्थान के संकुचन के माध्यम से विश्व को जोड़ता है। उत्तर-आधुनिकीकरण भौतिक संपदा के स्थान पर आत्म-अभिव्यक्ति और जीवन की गुणवत्ता जैसे मूल्यों को प्राथमिकता देता है। पश्चिमीकरण अक्सर पश्चिमी सांस्कृतिक रूपों के अनुकरण के कारण सांस्कृतिक समरूपीकरण की ओर ले जाता है। आधुनिकीकरण में समाज के भीतर संस्थागत और संरचनात्मक विभेदीकरण की प्रक्रिया सम्मिलित होती है। ये सभी अवधारणाएं आधुनिक समाजों में हो रहे विभिन्न प्रकार के परिवर्तनों और उनके पीछे के प्रेरक कारकों को समझने में सहायता प्रदान करती हैं।

71. (D) आधुनिकीकरण
आधुनिकीकरण एक व्यापक प्रक्रिया है जो समाज को प्रत्येक स्तर पर परिवर्तित कर देती है। इसमें धार्मिक और पारंपरिक विश्वासों का स्थान तर्कसंगत और धर्मनिरपेक्ष विचार ले लेते हैं। राजनीतिक रूप से, यह पारंपरिक सत्ता से हटकर कानून और नियमों पर आधारित नौकरशाही की ओर अग्रसर होता है। आर्थिक रूप से, यह समाज को कृषि प्रधानता से औद्योगिक और शहरी व्यवस्था की ओर ले जाता है। यह संक्रमण केवल तकनीकी नहीं है, बल्कि यह व्यक्ति और समाज के सोचने के तरीके और उनके बीच के संबंधों में आने वाले मौलिक बदलाव को प्रदर्शित करता है।

72. (A) एक नए बांध के लाभ मुख्य रूप से बड़े भूस्वामियों और उद्योगों द्वारा प्राप्त किए जाते हैं।
विकास परियोजनाएं अक्सर समाज में व्याप्त विषमताओं को और गहरा कर देती हैं यदि उनके लाभों का वितरण न्यायसंगत नहीं होता। बांध निर्माण जैसी बड़ी परियोजनाएं अक्सर निर्धन ग्रामीणों और आदिवासियों को विस्थापित करती हैं, जबकि उनसे उत्पन्न लाभ केवल धनी भूस्वामियों और उद्योगों को प्राप्त होता है। यह दर्शाता है कि विकास की प्रक्रिया अक्सर शक्ति और संसाधनों के संकेंद्रण की ओर ले जा सकती है। इससे समाज के विभिन्न वर्गों के बीच की आर्थिक और सामाजिक खाई और अधिक चौड़ी हो जाती है, जो अन्यायपूर्ण है।

73. (C) उदारवादी
मैक्स वेबर और गुन्नार मिर्डल अल्पविकास के उदारवादी परिप्रेक्ष्य के प्रमुख विचारक माने जाते हैं। यह परिप्रेक्ष्य विकास की समस्याओं का समाधान मुख्य रूप से समाज के भीतर के आंतरिक सुधारों, जैसे सांस्कृतिक परिवर्तन और संस्थागत सुदृढ़ीकरण में देखता है। यह मार्क्सवादी सिद्धांतों के विपरीत है जो विकास की बाधाओं के लिए केवल बाहरी शोषण या वर्ग संघर्ष को उत्तरदायी मानते हैं। उदारवादी विचारक मानते हैं कि लोकतंत्र, कानून का शासन और तर्कसंगत आर्थिक व्यवहार ही किसी राष्ट्र के विकास की स्थायी और वास्तविक कुंजी हैं।

74. (A) एक ऐसी संस्कृति जो भाग्यवादिता को बढ़ावा देती है और दीर्घकालिक योजना को हतोत्साहित करती है।
भाग्यवादिता विकास में एक बड़ी बाधा है क्योंकि यह लोगों को यह विश्वास दिलाती है कि उनकी स्थिति उनके नियंत्रण से बाहर है। ऐसी संस्कृति में लोग भविष्य के लिए निवेश करने या नए प्रयोग करने के बजाय परंपराओं पर ही निर्भर रहते हैं। यह नवाचार की भावना को समाप्त कर देती है और आर्थिक उत्पादकता को बाधित करती है। आधुनिकीकरण के लिए सक्रिय योजना और व्यक्तिगत उद्यम की आवश्यकता होती है। जब संस्कृति केवल अतीत या नियति पर ध्यान केंद्रित करती है, तो वह समाज को विकास के पथ पर आगे बढ़ने से रोकती है।

75. (D) 3, 2, 1
विकास के दृष्टिकोणों का विकास सर्वप्रथम केवल आर्थिक संवृद्धि पर केंद्रित था। इसके बाद यह अनुभव किया गया कि केवल आय पर्याप्त नहीं है, और मानव विकास का विचार आया जिसमें स्वास्थ्य और शिक्षा को जोड़ा गया। अंततः, विकास की चर्चा और व्यापक हुई और इसमें पर्यावरण एवं भविष्य की पीढ़ियों की सुरक्षा के लिए सतत विकास को केंद्र में रखा गया। यह क्रम एक संकीर्ण आर्थिक माप से प्रारंभ होकर विकास के एक अधिक समग्र, मानवीय और दूरगामी दृष्टिकोण की ओर बढ़ने की ऐतिहासिक विकास प्रक्रिया को प्रदर्शित करता है।

76. (B) आर्थिक संवृद्धि धन सृजन पर ध्यान केंद्रित करती है, जबकि सामाजिक विकास समानता, न्याय और संस्थागत सुधार पर ध्यान केंद्रित करता है।
आर्थिक संवृद्धि का मुख्य पैमाना अर्थव्यवस्था का कुल आकार और उत्पादन स्तर होता है, जो मात्रात्मक होता है। इसके विपरीत, सामाजिक विकास एक गुणात्मक अवधारणा है जो यह देखती है कि समाज कितना न्यायपूर्ण और समावेशी है। सामाजिक विकास का लक्ष्य समाज के सभी वर्गों के लिए अवसरों की समानता, मानवाधिकारों का सम्मान और कल्याणकारी संस्थाओं का सुदृढ़ीकरण है। केवल धन का संचय समाज की प्रगति का एकमात्र मानक नहीं हो सकता; वास्तविक विकास तब होता है जब आर्थिक लाभ सामाजिक सुधारों के साथ मिलकर सबका उत्थान करते हैं।

77. (B) कथन I और कथन II दोनों असत्य हैं।
वैश्वीकरण ने राष्ट्र-राज्यों की शक्ति को कुछ सीमा तक सीमित अवश्य किया है, लेकिन राष्ट्र-राज्य अभी भी कानून निर्माण, सुरक्षा और आर्थिक प्रबंधन में अत्यंत शक्तिशाली बने हुए हैं। विश्व पूर्णतः सीमाहीन नहीं हुआ है। इसी प्रकार, उत्तर-आधुनिकीकरण तकनीक को पूरी तरह अस्वीकार नहीं करता है, बल्कि यह केवल आधुनिकता के अंधविश्वास और प्रगति के कठोर दावों की आलोचना करता है। यह जीवन की गुणवत्ता को बढ़ाने के लिए तकनीक के अधिक मानवीय और संधारणीय उपयोग पर बल देता है। अतः दोनों ही कथन त्रुटिपूर्ण धारणाएं प्रस्तुत करते हैं।

78. (B) ऐसी कृषि तकनीकों को लागू करना जो संसाधनों को समाप्त किए बिना फसल की पैदावार में सुधार करती हैं।
सतत विकास का अर्थ है प्रकृति के साथ तालमेल स्थापित करके प्रगति करना। ऐसी कृषि तकनीकें जो मृदा की उर्वरता बनाए रखती हैं और जल संसाधनों का विवेकपूर्ण उपयोग करती हैं, इस अवधारणा का आदर्श उदाहरण हैं। यह सुनिश्चित करता है कि हम आज तो पर्याप्त पोषण प्राप्त करें ही, साथ

Click Here to Buy book on Amazon

है। इसके अनुसार, पश्चिमी मूल्यों, जैसे तर्कसंगतता और उद्यमशीलता, के प्रसार से पारंपरिक समाज अपने पिछड़ेपन को दूर करने में समर्थ हो सकते हैं। यह दृष्टिकोण मानता है कि विकास का एक ही सार्वभौमिक मार्ग है और पिछड़े देशों को विकसित राष्ट्रों के अनुभवों और संसाधनों का उपयोग करके अपनी अर्थव्यवस्था और समाज का आधुनिकीकरण करना चाहिए ताकि वे प्रतिस्पर्धा कर सकें।

113. (A) कथन I और कथन II दोनों सत्य हैं।
मानव विकास एक व्यापक अवधारणा है क्योंकि यह केवल आय पर नहीं, बल्कि लोगों की शिक्षा, स्वास्थ्य और सम्मानजनक जीवन पर केंद्रित है। आर्थिक संवृद्धि इसका केवल एक लघु हिस्सा हो सकती है। यह संभव है कि किसी देश की राष्ट्रीय आय अत्यंत तीव्र गति से बढ़ रही हो, लेकिन वहां निर्धनता, निरक्षरता और खराब स्वास्थ्य सुविधाएं भी यथावत बनी हों। इसका कारण यह है कि संवृद्धि से उत्पन्न धन का उपयोग अक्सर सामाजिक कल्याण में नहीं किया जाता। अतः, उच्च आर्थिक संवृद्धि के बावजूद मानव विकास के संकेतक निम्न हो सकते हैं।

114. (C) वैश्वीकरण
वैश्वीकरण वह प्रक्रिया है जिसमें दुनिया भर की अर्थव्यवस्थाएं व्यापार, निवेश और वित्त के माध्यम से एक-दूसरे के साथ गहराई से संबद्ध हो जाती हैं। इसके परिणामस्वरूप एक वैश्विक बाजार का निर्माण होता है जहाँ वस्तुओं, सेवाओं और पूंजी का प्रवाह सीमाओं के पार अत्यंत सुगम हो जाता है। यह राष्ट्रों के बीच की आर्थिक निर्भरता को निरंतर बढ़ाता है और एक ऐसी एकीकृत वैश्विक आर्थिक प्रणाली विकसित करता है जहाँ स्थानीय बाजार वैश्विक प्रवृत्तियों से प्रत्यक्ष प्रभावित होते हैं। यह आधुनिक विश्व की सबसे प्रमुख और व्यापक आर्थिक विशेषता है।

115. (A) A and R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
किसी भी समाज की प्रगति उसके बुनियादी ढांचे और स्थापित नियमों पर निर्भर करती है। सामाजिक संरचना, जिसमें कानूनी व्यवस्था और शिक्षा प्रणाली सम्मिलित है, यह निर्धारित करती है कि व्यक्तियों को अपनी प्रतिभा प्रदर्शित करने के कितने अवसर प्राप्त होंगे। यदि कानूनी व्यवस्था संपत्ति के अधिकारों की रक्षा करती है और शिक्षा प्रणाली योग्यता को प्रोत्साहित करती है, तो विकास सुगम हो जाता है। इसके विपरीत, यदि ये संस्थाएं भेदभावपूर्ण या अक्षम हैं, तो वे विकास को बाधित कर देती हैं। अतः सामाजिक संरचना विकास की दिशा निर्धारित करने वाला मौलिक कारक है।

116. (D) उपर्युक्त सभी।
आधुनिकीकरण और उत्तर-आधुनिकीकरण सामाजिक परिवर्तन के दो पृथक चरणों को प्रदर्शित करते हैं। आधुनिकीकरण औद्योगिकीकरण, भौतिक उन्नति और प्रगति के सार्वभौमिक सिद्धांतों पर आधारित है। इसके विपरीत, उत्तर-आधुनिकीकरण सेवा आधारित अर्थव्यवस्था, उत्तर-भौतिकवादी मूल्यों जैसे आत्म-अभिव्यक्ति और आधुनिकता के बड़े दावों के प्रति संशयशीलता की विशिष्टता रखता है। यह मानता है कि विकास के कई पथ हो सकते हैं और जीवन की गुणवत्ता केवल धन से नहीं मापी जा सकती। ये दोनों अवधारणाएं आधुनिक समाज के क्रमिक विकास और उसके बदलते मूल्यों को समझने में सहायता करती हैं।

117. (B) 'विश्वास' का एक सुदृढ़ सांस्कृतिक मानदंड जो अनुबंधों के विधिक प्रवर्तन की आवश्यकता को कम करता है।
जब किसी समाज की संस्कृति में विश्वास एक सुदृढ़ मूल्य के रूप में स्थापित होता है, तो वह आर्थिक गतिविधियों को अत्यंत सरल बना देता है। व्यापारिक लेनदेन में लोगों को धोखाधड़ी का भय न्यून होता है, जिससे कानूनी विवाद कम होते हैं और व्यापार की लागत घट जाती है। यह सांस्कृतिक विशेषता सामाजिक पूंजी के रूप में कार्य करती है, जो औपचारिक व्यवस्था के अभाव में भी विकास को गति प्रदान करती है। ऐसे मूल्य सहयोग और दीर्घकालिक व्यावसायिक संबंधों को प्रोत्साहित करते हैं, जो एक स्वस्थ और गतिशील अर्थव्यवस्था हेतु अत्यंत सहायक होते हैं।

118. (B) समाज के भीतर के आंतरिक कारक, जैसे उसकी संस्कृति या राज्य की क्षमता।
वेबर और मिर्डल जैसे उदारवादी विचारक मानते हैं कि विकास या अल्पविकास मुख्य रूप से राष्ट्रों की अपनी आंतरिक परिस्थितियों का परिणाम है। वेबर ने सांस्कृतिक और धार्मिक मूल्यों की भूमिका को रेखांकित किया, जबकि मिर्डल ने मृदु राज्य और कानून प्रवर्तन की न्यूनता जैसे संस्थागत मुद्दों पर ध्यान केंद्रित किया। उनका विश्वास है कि जब तक कोई समाज अपनी आंतरिक बाधाओं को दूर नहीं करता और तर्कसंगत नीतियों को नहीं अपनाता, तब तक वह स्थायी प्रगति नहीं कर सकता। यह दृष्टिकोण विकास हेतु आंतरिक सुधारों पर सर्वाधिक बल देता है।

119. (C) मानव विकास
मानव विकास का दृष्टिकोण यह स्वीकार करता है कि विकास का वास्तविक माप वह है जो लोगों के जीवन को प्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करता है। दीर्घायु, व्याधियों से मुक्ति, शिक्षा तक पहुँच और एक सम्मानजनक जीवन जीने के लिए आवश्यक संसाधनों की उपलब्धता इसके मुख्य पैमाने हैं। यह दृष्टिकोण केवल आर्थिक आंकड़ों पर सीमित नहीं रहता, बल्कि यह देखता है कि व्यक्ति अपने जीवन में कितना स्वतंत्र और सक्षम है। यह मनुष्यों को विकास का अंतिम उद्देश्य मानता है और उनके कल्याण एवं क्षमताओं के विस्तार को ही सच्ची प्रगति के रूप में स्वीकार करता है।

120. (A) केवल I और II
विकास की प्रक्रिया अक्सर असमान होती है। तीव्र संवृद्धि से उत्पन्न धन अक्सर उन लोगों के पास संचित हो जाता है जिनके पास पूर्व से संसाधन हैं, जिससे विषमता विस्तृत होती है। हालांकि, यह मानना त्रुटिपूर्ण है कि विषमताएं अपरिवर्तनीय हैं। सरकारें ऐसी नीतियां निर्मित कर सकती हैं जो शिक्षा, स्वास्थ्य और संसाधनों के पुनर्वितरण के माध्यम से इन विषमताओं को न्यून करें। विकास को समावेशी बनाकर समाज के सभी वर्गों तक उसके लाभ पहुँचाना संभव है। अतः, विषमताएं विकास का

NODIA

87. (A) मानव विकास व्यक्तिगत क्षमताओं पर ध्यान केंद्रित करता है, जबकि सामाजिक विकास सामाजिक संस्थाओं और संबंधों की गुणवत्ता पर ध्यान केंद्रित करता है।
मानव विकास का मुख्य केंद्र व्यक्ति है, जिसमें उसकी शिक्षा, स्वास्थ्य और कौशल के माध्यम से उसकी क्षमताओं को बढ़ाने का प्रयास किया जाता है। दूसरी ओर, सामाजिक विकास समाज की सामूहिक संरचनाओं और मूल्यों पर केंद्रित होता है। यह यह देखता है कि सामाजिक न्याय, कानून का शासन और समाज के विभिन्न समूहों के बीच संबंध कितने निष्पक्ष और समावेशी हैं। सरल शब्दों में, मानव विकास व्यक्ति को सशक्त बनाने के बारे में है, जबकि सामाजिक विकास उस सामाजिक वातावरण को श्रेष्ठ बनाने के बारे में है जिसमें व्यक्ति निवास करता है।

88. (D) आधुनिकीकरण सिद्धांत
आधुनिकीकरण सिद्धांत यह मानता है कि विकास की एक निश्चित प्रक्रिया है जिससे प्रत्येक समाज को गुजरना होता है। यह समाजों को पारंपरिक से आधुनिक की ओर बढ़ते हुए देखता है। यह एक रेखीय पथ है जहाँ पश्चिमी प्रतिमान को विकास का अंतिम मानक माना जाता है। इस सिद्धांत के अनुसार, विकासशील देशों को विकसित होने हेतु आधुनिक तकनीक, विज्ञान और पश्चिमी सामाजिक संस्थाओं को अपनाना अनिवार्य है ताकि वे विकास के अगले चरणों तक पहुँच सकें। यह तकनीक और विचार के स्तर पर समाज के मौलिक परिवर्तन को प्रदर्शित करता है।

89. (C) विकास में सहायक के रूप में।
सांस्कृतिक मूल्य जो उद्यमिता, नवाचार और उपलब्धि को उच्च स्थान देते हैं, वे प्रत्यक्ष रूप से आर्थिक संवृद्धि को बढ़ावा देते हैं। जब समाज जोखिम लेने वाले व्यक्तियों का सम्मान करता है और सफलता के लिए कठिन परिश्रम को आवश्यक मानता है, तो वह एक प्रतिस्पर्धी वातावरण निर्मित करता है। ये मूल्य नई तकनीकों को अपनाने और संसाधनों के सृजनात्मक उपयोग को प्रोत्साहित करते हैं। इस प्रकार की संस्कृति आर्थिक तर्कसंगतता और व्यावसायिक कौशल के विकास में महत्वपूर्ण सामाजिक पूंजी के रूप में कार्य करती है, जो राष्ट्र की प्रगति को गति प्रदान करती है।

90. (A) P-4, Q-3, R-2, S-1
मैक्स वेबर ने प्रोटेस्टेंट नैतिकता के माध्यम से पूंजीवाद के उदय की व्याख्या की। गुन्नार मिर्डल ने संचयी कारणता के सिद्धांत से क्षेत्रीय असमानताओं के दुष्चक्र को समझाया। सामाजिक-आर्थिक विषमता प्रत्यक्ष रूप से समाज में व्याप्त असमानता के विभिन्न रूपों को प्रदर्शित करती है। अंतर-पीढ़ीगत समानता सतत विकास का मूल आधार है, जो भविष्य हेतु संसाधनों के संरक्षण पर बल देता है। ये सभी अवधारणाएं विकास समाजशास्त्र के अध्ययन के महत्वपूर्ण अंग हैं, जो यह समझने में सहायता करते हैं कि विकास केवल आर्थिक नहीं, बल्कि सांस्कृतिक भी है।

91. (C) वस्तुओं और सेवाओं के उत्पादन में मात्रात्मक वृद्धि।
आर्थिक संवृद्धि का परिप्रेक्ष्य मुख्य रूप से भौतिक समृद्धि और उत्पादन के स्तर पर केंद्रित है। इसका मानना है कि यदि किसी देश का सकल घरेलू उत्पाद और राष्ट्रीय आय बढ़ती है, तो वह देश विकसित हो रहा है। यह एक मात्रात्मक माप है जो केवल आर्थिक आंकड़ों के विस्तार को प्राथमिकता देता है। इसमें इस विषय पर न्यून ध्यान दिया जाता है कि वह धन समाज के विभिन्न वर्गों के बीच कैसे वितरित हो रहा है या लोगों के जीवन की गुणवत्ता में वास्तव में क्या सकारात्मक सुधार आया है। यह संकीर्ण आर्थिक दृष्टिकोण है।

92. (C) पश्चिमीकरण
जब किसी देश की स्थानीय संस्कृति, जैसे संगीत, पहनावा और सामाजिक व्यवहार, पश्चिमी देशों के संचार माध्यमों और वैश्विक प्रभाव के कारण परिवर्तित होने लगते हैं, तो इसे पश्चिमीकरण कहा जाता है। यह एक ऐसी प्रक्रिया है जहाँ गैर-पश्चिमी समाज सचेत या अवचेतन रूप से पश्चिम के सांस्कृतिक और सामाजिक प्रतिमानों का अनुकरण करते हैं। यह केवल तकनीक अपनाने तक सीमित नहीं है, बल्कि यह मूल्यों और जीवन शैली के स्तर पर पश्चिम के प्रभाव को स्वीकार करना है। पश्चिमी ब्रांडों की लोकप्रियता इस सांस्कृतिक संक्रमण का स्पष्ट उदाहरण है।

93. (B) कथन I और कथन II दोनों असत्य हैं।
गुन्नार मिर्डल ने तर्क दिया था कि विकासशील देशों में बैकवाश प्रभाव अक्सर प्रसार प्रभाव से अधिक शक्तिशाली होते हैं, जिससे क्षेत्रीय असमानता बढ़ती है। वहीं, मैक्स वेबर ने यह माना था कि हिंदू धर्म का लोकाचार, अपने पुनर्जन्म और जाति के विचारों के कारण, आधुनिक पूंजीवाद के तर्कसंगत स्वभाव के पूर्णतः अनुकूल नहीं था। उन्होंने प्रोटेस्टेंट नैतिकता को ही पूंजीवाद के उदय के लिए अद्वितीय माना था। अतः दोनों ही कथन इन विचारकों के मूल सिद्धांतों के विपरीत जानकारी देते हैं, जो ऐतिहासिक रूप से त्रुटिपूर्ण है।

94. (D) विकास जिससे सामाजिक-आर्थिक विषमताएं बढ़ रही हैं।
औद्योगिकीकरण अक्सर शहरों में निवेश और रोजगार के अवसर उत्पन्न करता है, जबकि ग्रामीण क्षेत्र संसाधनों और प्रतिभा के पलायन के कारण पिछड़ जाते हैं। इससे शहरी और ग्रामीण जनसंख्या के बीच आय और जीवन स्तर की खाई चौड़ी हो जाती है। यह इस बात का स्पष्ट उदाहरण है कि विकास की प्रक्रिया समाज में नई प्रकार की विषमताएं उत्पन्न कर सकती है। यदि विकास केवल कुछ क्षेत्रों तक सीमित रहता है, तो वह समग्र सामाजिक न्याय के स्थान पर समाज के भीतर असंतुलन और विखंडन को ही अधिक बढ़ावा देता है।

95. (A) विश्वास और भविष्य-उन्मुखता जैसे मूल्य लेनदेन की लागत को कम कर सकते हैं और आर्थिक गतिविधि को बढ़ावा दे सकते हैं।
संस्कृति विकास में तब सहायता करती है जब उसके मूल्य व्यापार और सहयोग को सुगम बनाते हैं। यदि किसी समाज में विश्वास एक सुदृढ़ सांस्कृतिक मूल्य है, तो लोग अनुबंधों और सहयोग पर अधिक भरोसा करते हैं, जिससे व्यापारिक जोखिम कम हो जाते हैं। भविष्य-उन्मुख सोच लोगों को आज

Downloaded from www.pdf.tube

129. (C) विज्ञान और प्रगति के वृहत सिद्धांतों के प्रति बढ़ता संदेह।
उत्तर-आधुनिकीकरण वह विचारधारा है जो आधुनिक युग के उन बड़े दावों को चुनौती प्रदान करती है जिनमें माना जाता था कि विज्ञान और तकनीक सभी समस्याओं का समाधान कर सकते हैं। यह प्रगति की किसी एक निश्चित परिभाषा को स्वीकार नहीं करता और सार्वभौमिक सत्य के स्थान पर स्थानीय ज्ञान एवं विविधता को महत्व देता है। इसमें यह स्वीकार किया जाता है कि विकास के कई पृथक पथ हो सकते हैं और किसी एक संस्कृति का प्रतिमान दूसरों पर थोपना उचित नहीं है। यह आधुनिक संस्थाओं की सीमाओं को पहचानता है और अधिक मानवीय दृष्टिकोण अपनाता है।

130. (A) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
विकास की प्रक्रिया में संस्कृति की भूमिका दोहरी हो सकती है। भाग्यवादिता जैसे मूल्य लोगों को निष्क्रिय बनाते हैं और उन्हें यह विश्वास दिलाते हैं कि प्रयास करने का कोई लाभ नहीं है, जो विकास को अवरुद्ध करता है। इसके विपरीत, यदि संस्कृति में आपसी विश्वास, ईमानदारी और कठिन परिश्रम के प्रति सम्मान है, तो यह आर्थिक गतिविधियों और सामाजिक सहयोग हेतु एक सुदृढ़ आधार प्रदान करती है। अतः, संस्कृति विकास के लिए एक बाधा और सहायक दोनों हो सकती है, जो इस विषय पर निर्भर करता है कि समाज के मुख्य मूल्य और मानदंड क्या हैं।

131. (A) आर्थिक संवृद्धि और सामाजिक विकास।
यह परिदृश्य विकास के दो पृथक आयामों के बीच संघर्ष को स्पष्ट करता है। औद्योगिक संयंत्र का निर्माण जीडीपी बढ़ाकर आर्थिक संवृद्धि तो लाता है, लेकिन स्थानीय निवासियों को बिना मुआवजे के विस्थापित करना सामाजिक अन्याय है। सामाजिक विकास का उद्देश्य सभी वर्गों का कल्याण और न्याय सुनिश्चित करना है। जब विकास का लाभ केवल एक पक्ष को मिलता है और दूसरे का जीवन नष्ट हो जाता है, तो वह सामाजिक असमानता और अशांति को जन्म देता है। यह दर्शाता है कि केवल आर्थिक आंकड़े किसी देश की सच्ची प्रगति को मापने के लिए पूर्णतः पर्याप्त नहीं हैं।

132. (A) P-4, Q-3, R-1, S-2
पर्यावरणीय दीर्घायु सतत विकास का मुख्य स्तंभ है जो संसाधनों के भविष्य तक सुरक्षित बने रहने पर बल देता है। व्यक्तिगत क्षमताओं का विस्तार मानव विकास का मूल लक्ष्य है। राष्ट्रीय आय में वृद्धि आर्थिक संवृद्धि की प्राथमिक पहचान है, जो केवल उत्पादन के आंकड़ों को देखती है। सामाजिक समानता सुनिश्चित करना सामाजिक विकास का मुख्य उद्देश्य है, जो न्यायपूर्ण समाज के निर्माण पर केंद्रित है। ये चारों दृष्टिकोण मिलकर विकास की एक समग्र और समावेशी समझ प्रदान करते हैं, जिसमें आर्थिक लाभ के साथ मानवीय और पर्यावरणीय कल्याण के आयाम भी सम्मिलित हैं।

133. (C) कुछ प्रोटेस्टेंट संप्रदायों के संयमित मूल्य।
मैक्स वेबर ने तर्क दिया कि प्रोटेस्टेंट धर्म, विशेष रूप से केल्विनवाद, के नैतिक मूल्यों ने आधुनिक पूंजीवाद के लिए आवश्यक भावना उत्पन्न की। इन मूल्यों में कठिन परिश्रम को धार्मिक कर्तव्य स्वीकार करना, समय को व्यर्थ न गवाना और धन का प्रदर्शन करने के स्थान पर उसे पुनः निवेश करना सम्मिलित था। यह संयमित और तर्कसंगत जीवन शैली ही थी जिसने पूंजी के निरंतर संचय और व्यवस्थित व्यावसायिक गतिविधियों को प्रोत्साहित किया। वेबर के अनुसार, इन धार्मिक संस्कारों ने ही पश्चिमी जगत में आर्थिक तर्कसंगतता और औद्योगिक प्रगति का सशक्त आधार तैयार किया।

134. (B) विश्वव्यापी सामाजिक संबंधों का तीव्रीकरण।
वैश्वीकरण की सबसे प्रमुख विशेषता यह है कि इसने पूरी दुनिया के निवासियों को आर्थिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक रूप से एक-दूसरे के निकट ला दिया है। आधुनिक तकनीक के कारण अब भौगोलिक दूरियां कोई बाधा नहीं रह गई हैं, जिससे विचारों और सूचनाओं का आदान-प्रदान अत्यंत तीव्र हो गया है। यह केवल अंतरराष्ट्रीय व्यापार तक सीमित नहीं है, बल्कि यह एक ऐसी वैश्विक चेतना का निर्माण करता है जहाँ दुनिया के किसी भी भाग में होने वाली हलचल पूरी दुनिया को प्रभावित करती है। यह परस्पर संबद्धता ही आधुनिक युग में वैश्वीकरण को परिभाषित करती है।

135. (C) कथन I सत्य है, लेकिन कथन II असत्य है।
आधुनिकीकरण सिद्धांत वास्तव में परंपरा को आधुनिकता के मार्ग में एक अवरोध के रूप में देखता है और मानता है कि विकास के लिए पुरानी संस्थाओं को परिवर्तित करना आवश्यक है। हालांकि, उत्तर-आधुनिकीकरण प्रगति के किसी एक और सार्वभौमिक मानक का समर्थन नहीं करता। इसके विपरीत, वह इस विचार के प्रति संदेहास्पद है और स्थानीय विविधता, सांस्कृतिक विशिष्टता और विकास के पृथक पथों का समर्थन करता है। वह मानता है कि पश्चिमी प्रतिमान ही एकमात्र मार्ग नहीं है और विकास की परिभाषा प्रत्येक समाज के संदर्भ में भिन्न-भिन्न हो सकती है।

136. (A) सामाजिक संरचना विकास के लिए बाधा के रूप में कार्य कर सकती है।
जब किसी व्यक्ति के अवसर उसकी योग्यता के स्थान पर उसके जन्म के सामाजिक वर्ग से निर्धारित होते हैं, तो समाज की प्रगति अवरुद्ध हो जाती है। यह व्यवस्था प्रतिभाशाली निवासियों को आगे बढ़ने से रोकती है और संसाधनों को केवल एक लघु अभिजात वर्ग तक सीमित रखती है। इससे न केवल सामाजिक अन्याय विस्तृत होता है, बल्कि समाज अपनी श्रेष्ठ मानव पूंजी का उपयोग करने से भी वंचित रह जाता है। ऐसी जड़ सामाजिक संरचनाएं नवाचार और उद्यमशीलता को हतोत्साहित करती हैं, जो आधुनिक आर्थिक विकास के लिए पूर्णतः अनिवार्य तत्व माने जाते हैं।

137. (B) हम भविष्य की पीढ़ियों की आवश्यकताओं से समझौता किए बिना अपनी वर्तमान आवश्यकताओं को कैसे पूरा कर सकते हैं?
सतत विकास का केंद्र बिंदु संसाधनों का उत्तरदायी उपयोग है। यह प्रश्न रेखांकित करता है कि आज की आर्थिक प्रगति आगामी पीढ़ियों के संसाधनों की बलि देकर नहीं होनी चाहिए। यह दृष्टिकोण केवल तत्काल लाभ या औद्योगिकीकरण के

NODIA

एक संभावित परिणाम हैं, जिन्हें लक्षित नीतियों द्वारा नियंत्रित किया जा सकता है।

121. (B) मैक्स वेबर
मैक्स वेबर ने अपनी प्रसिद्ध कृति द प्रोटेस्टेंट एथिक एंड द स्पिरिट ऑफ कैपिटलिज्म में यह तर्क प्रस्तुत किया कि आधुनिक पूंजीवाद के उदय में धार्मिक विचारों की महत्वपूर्ण भूमिका थी। उन्होंने स्पष्ट किया कि कैसे प्रोटेस्टेंट नैतिकता के कर्तव्य विचार ने लोगों को लाभ की तर्कसंगत खोज और संयमित जीवन जीने हेतु प्रेरित किया। उनके अनुसार, यह धार्मिक उत्साह ही वह शक्ति थी जिसने आर्थिक गतिविधियों को एक नैतिक आधार प्रदान किया और पश्चिमी जगत में औद्योगिक विकास के लिए आवश्यक मानसिक और सांस्कृतिक वातावरण का निर्माण किया।

122. (C) राष्ट्रीय व्यापार बाधाओं और आत्मनिर्भरता को सुदृढ़ करना।
वैश्वीकरण का मूल उद्देश्य राष्ट्रों के बीच की बाधाओं को समाप्त करना और व्यापार को सुगम बनाना है। यह बहुराष्ट्रीय निगमों के विस्तार, सूचना के वैश्विक आदान-प्रदान और सांस्कृतिक प्रसार को प्रोत्साहित करता है। राष्ट्रीय व्यापार बाधाओं को सुदृढ़ करना या पूर्णतः आत्मनिर्भर होने का प्रयास करना वास्तव में वैश्वीकरण के विपरीत दिशा में जाने वाली प्रक्रिया है, जिसे अक्सर संरक्षणवाद कहा जाता है। वैश्वीकरण परस्पर निर्भरता का समर्थन करता है, न कि आर्थिक अलगाव का, क्योंकि इसका मानना है कि वैश्विक सहयोग से ही सबकी आर्थिक संवृद्धि संभव है।

123. (B) अपनी सामाजिक संरचनाओं और संस्थाओं के संदर्भ में समाज की प्रगति।
सामाजिक विकास का अर्थ है समाज का एक ऐसी दिशा में परिवर्तन जो न्याय, समानता और मानवीय गरिमा को बढ़ावा प्रदान करे। यह केवल जीडीपी की वृद्धि नहीं है, बल्कि यह देखना है कि समाज की संस्थाएं, जैसे कानून, शिक्षा और स्वास्थ्य, सभी के लिए कितनी सुलभ और निष्पक्ष बनी हैं। इसमें भेदभावपूर्ण प्रथाओं को समाप्त करना और समाज के विभिन्न समूहों के बीच सहयोग और एकजुटता को सुदृढ़ करना सम्मिलित है। सामाजिक विकास का अंतिम लक्ष्य एक ऐसा न्यायपूर्ण समाज बनाना है जहाँ प्रत्येक व्यक्ति निर्भय होकर प्रगति कर सके।

124. (A) गरीबी एक दुष्चक्र है जहाँ हानियां संचित होती रहती हैं।
संचयी कारणता का सिद्धांत यह स्पष्ट करता है कि समाज में परिवर्तन एक सीधी रेखा में नहीं होते, बल्कि वे एक-दूसरे को सुदृढ़ करते हैं। निर्धनता के प्रकरण में, न्यून आय से कुपोषण और व्याधि होती है, जिससे कार्यक्षमता घटती है और शिक्षा तक पहुँच अवरुद्ध हो जाती है। यह पुनः न्यून आय का कारण बनता है। मिर्डल के अनुसार, यह एक नकारात्मक चक्र है जहाँ एक निर्बलता दूसरी निर्बलता को जन्म देती है और स्थितियाँ समय के साथ विषम होती जाती हैं। विकास हेतु इस दुष्चक्र को सशक्त नीतिगत हस्तक्षेप से तोड़ना पूर्णतः अनिवार्य होता है।

125. (B) आर्थिक संवृद्धि को लोगों के जीवन को बेहतर बनाने के साधन के रूप में देखना।
प्रारंभिक काल में केवल जीडीपी बढ़ाना ही विकास का मानक माना जाता था, लेकिन मानव विकास की अवधारणा ने इस दृष्टिकोण को परिवर्तित कर दिया। अब आर्थिक संवृद्धि को अपने आप में एक लक्ष्य नहीं, बल्कि एक साधन माना जाता है जिसका उद्देश्य लोगों की शिक्षा, स्वास्थ्य और जीवन स्तर में सुधार करना है। यह बदलाव स्वीकार करता है कि विकास तभी सफल है जब वह मनुष्यों की क्षमताओं को बढ़ाता है और उन्हें एक गरिमापूर्ण जीवन जीने के अवसर प्रदान करता है। धन महत्वपूर्ण है, लेकिन केवल तभी जब वह मानवीय कल्याण को प्रोत्साहित करे।

126. (B) व्यक्ति की सामाजिक स्थिति जन्म, नातेदारी या जाति से निर्धारित होती है।
आरोपण आधारित सामाजिक संरचना में व्यक्ति की योग्यता या प्रयास का उसकी स्थिति में कोई महत्व नहीं होता। उसकी भूमिका और अवसर उसके परिवार या उस समूह से निर्धारित होते हैं जिसमें उसने जन्म लिया है। यह व्यवस्था सामाजिक गतिशीलता को पूर्णतः अवरुद्ध कर देती है क्योंकि एक प्रतिभाशाली व्यक्ति भी अपनी जन्मगत स्थिति से बाहर नहीं निकल पाता। इसके विपरीत, आधुनिक समाज उपलब्धि पर आधारित होते हैं जहाँ कौशल और श्रम से व्यक्ति उच्च पदों तक पहुँच सकता है। आरोपण विकास में बाधक है क्योंकि यह समाज की प्रतिभा का दुरुपयोग करता है।

127. (B) यह विशेष रूप से पश्चिम से सांस्कृतिक और संस्थागत स्वरूपों को अपनाने को संदर्भित करता है।
पश्चिमीकरण एक ऐसी प्रक्रिया है जिसमें कोई समाज सचेत रूप से पश्चिमी देशों की जीवन शैली, मूल्यों, भाषा और राजनीतिक-आर्थिक संस्थाओं का अनुकरण करता है। यह अक्सर औपनिवेशिक इतिहास या आधुनिक वैश्वीकरण के प्रभाव के कारण घटित होता है। हालांकि इसे कभी-कभी आधुनिकीकरण का हिस्सा माना जाता है, लेकिन यह अधिक विशिष्ट है क्योंकि इसका आधार पश्चिम का सांस्कृतिक प्रतिमान है। यह प्रक्रिया समाज के पारंपरिक ढांचे में परिवर्तन लाती है और उसे पश्चिमी सांचे में ढालने का प्रयास करती है, जिससे अक्सर स्थानीय पहचान और पश्चिमी प्रभावों में तनाव उत्पन्न होता है।

128. (C) सतत विकास
वनीकरण और नवीकरणीय ऊर्जा को प्रोत्साहित करने वाली नीतियां प्रत्यक्ष रूप से सतत विकास के सिद्धांतों से संबद्ध हैं। ये कदम न केवल आज की ऊर्जा आवश्यकताओं को पूर्ण करते हैं, बल्कि पर्यावरण को बचाकर आगामी पीढ़ियों के लिए एक सुरक्षित ग्रह भी सुनिश्चित करते हैं। सतत विकास का मुख्य उद्देश्य आर्थिक उन्नति और पारिस्थितिक सुरक्षा के बीच एक स्थायी संतुलन स्थापित करना है। यह स्वीकार करता है कि प्राकृतिक संसाधनों का अनियंत्रित दोहन विकास को अल्पकालिक बना देगा, इसलिए हमें ऐसे विकल्पों को अपनाना चाहिए जो प्रकृति को क्षति पहुँचाए बिना प्रगति दें।

Click Here to Buy book on Amazon

146. (A) मानव विकास
मानव विकास की अवधारणा का मुख्य केंद्र मनुष्यों की बुनियादी क्षमताओं का निर्माण करना है। साक्षरता बढ़ाने हेतु विद्यालयों का निर्माण और बेहतर स्वास्थ्य सुनिश्चित करने के लिए चिकित्सालयों एवं स्वच्छता प्रणालियों में निवेश इस दृष्टिकोण की प्राथमिकताएं हैं। यह स्वीकार करता है कि जब तक लोग स्वस्थ और शिक्षित नहीं होंगे, वे विकास की प्रक्रिया में सक्रिय भागीदारी नहीं कर सकेंगे। यह दृष्टिकोण आर्थिक वृद्धि को केवल एक साधन मानता है जिसका वास्तविक उद्देश्य मानव जीवन की गुणवत्ता को सर्वोपरि बनाना और उसे गरिमापूर्ण तथा सुखी बनाना है।

147. (B) सुविधाप्रदाता के रुप में सामाजिक संरचना।
जब कोई सामाजिक संरचना, जैसे शिक्षा प्रणाली, इतनी लचीली और निष्पक्ष होती है कि वह निर्धन पृष्ठभूमि के व्यक्तियों को भी उनके कौशल के आधार पर सफलता प्राप्त करने का मार्ग प्रदान करती है, तो वह विकास की एक सुविधाप्रदाता कहलाती है। ऐसी संरचना प्रतिभा के पलायन को रोकती है और समाज की श्रेष्ठ मानवीय क्षमता का उपयोग सुनिश्चित करती है। यह सामाजिक गतिशीलता को प्रोत्साहित कर असमानता को न्यून करती है और समाज में विश्वास एवं न्याय की भावना उत्पन्न करती है, जो किसी भी राष्ट्र की स्थायी प्रगति हेतु पूर्णतः अनिवार्य है।

148. (B) आर्थिक सुरक्षा पर बल देने के बजाय आत्म-अभिव्यक्ति और जीवन की गुणवत्ता पर बल देना।
उत्तर-आधुनिकीकरण की प्रक्रिया में मूल्यों का एक वृहत परिवर्तन देखा जाता है। जब समाज में बुनियादी भौतिक आवश्यकताओं और आर्थिक सुरक्षा की चिंता न्यून हो जाती है, तो लोग उन मूल्यों की ओर अग्रसर होते हैं जो उनकी व्यक्तिगत स्वतंत्रता, पहचान और आत्म-सम्मान से संबंधित होते हैं। इसे उत्तर-भौतिकवादी मूल्यों का उदय कहा जाता है। इसमें पर्यावरण संरक्षण, लैंगिक समानता और व्यक्तिगत स्वायत्तता जैसे विषयों को आर्थिक लाभ से अधिक महत्व प्रदान किया जाता है। यह विकास का वह चरण है जहाँ मानवीय गरिमा ही प्रगति का असली पैमाना है।

149. (A) इसके प्रभाव समान रुप से वितरित हैं, जिससे सभी लोगों और राष्ट्रों को समान रुप से लाभ होता है।
वैश्वीकरण के विषय में यह कहना पूर्णतः त्रुटिपूर्ण होगा कि इसके लाभ सभी को समान रूप से प्राप्त होते हैं। वास्तविकता यह है कि वैश्वीकरण ने अक्सर विकसित राष्ट्रों और समृद्ध वर्गों को अधिक अवसर प्रदान किए हैं, जबकि विकासशील देश और निर्धन श्रमिक अक्सर इसके नकारात्मक प्रभावों, जैसे अस्थिरता और कठोर प्रतिस्पर्धा, का सामना करते हैं। हालांकि यह तकनीक और व्यापार के प्रवाह को तीव्र करता है, लेकिन यह समाज और राष्ट्रों के बीच की आर्थिक खाई को न्यून करने के स्थान पर कई बार और अधिक विस्तृत कर देता है।

150. (C) बाधा
मैक्स वेबर के अनुसार, पूंजीवादी विकास के लिए तर्कसंगत आर्थिक व्यवहार, लाभ की खोज और निवेश अनिवार्य हैं। यदि किसी समाज की संस्कृति लाभ अर्जित करने को अनैतिक मानती है और ब्याज लेने को पाप स्वीकार करती है, तो वह पूंजी के संचय और व्यावसायिक गतिविधियों को हतोत्साहित करती है। ऐसी धार्मिक और सांस्कृतिक मान्यताएं आर्थिक तर्कसंगतता के मार्ग में एक वृहत बाधा बन जाती हैं। यह समाज को पारंपरिक ढांचे में ही आबद्ध रखती है और उसे उस आधुनिक उद्यमशीलता की ओर बढ़ने से रोकती है जो औद्योगिक प्रगति हेतु आवश्यक है।

151. (A) सामाजिक विकास
सामाजिक विकास की अवधारणा का मूल सरोकार समाज के संस्थागत ढांचे में सुधार करना है ताकि न्याय और समानता सुनिश्चित हो सके। यह केवल आर्थिक लाभ पर केंद्रित नहीं है, बल्कि यह देखता है कि समाज की संस्थाएं कितनी समावेशी और निष्पक्ष बनी हैं। इसमें वंचित वर्गों के सशक्तिकरण और सामाजिक बाधाओं को दूर करने पर सर्वाधिक बल दिया जाता है। इसका लक्ष्य एक ऐसी सामाजिक व्यवस्था का निर्माण करना है जहाँ सभी को समान अवसर प्राप्त हों और समाज के भीतर आपसी विश्वास एवं एकजुटता का स्तर निरंतर सुदृढ़ हो सके।

152. (A) तर्कसंगतता, सांस्कृतिक मूल्य और धार्मिक नैतिकता।
मैक्स वेबर का उदारवादी परिप्रेक्ष्य इस विचार पर आधारित है कि आर्थिक परिवर्तन के पीछे सामाजिक और सांस्कृतिक शक्तियाँ सक्रिय रुप से कार्य करती हैं। उन्होंने तर्क दिया कि आधुनिकीकरण और पूंजीवाद का विकास केवल तकनीक या संसाधनों पर आश्रित नहीं है, बल्कि यह निवासियों के सोचने के तरीके और उनके नैतिक मूल्यों से संबद्ध है। तर्कसंगत गणना, समय की पाबंदी और मितव्ययिता जैसे सांस्कृतिक मूल्य विकास के आधार स्तंभ हैं। उनके अनुसार, जब तक समाज अपने पारंपरिक विश्वासों को त्यागकर तर्कसंगतता को नहीं अपनाता, तब तक विकास संभव नहीं है।

153. (C) सतत विकास
सतत विकास की अवधारणा यह मांग करती है कि आर्थिक प्रगति पर्यावरण की बलि देकर नहीं होनी चाहिए। यदि कोई प्रतिमान राष्ट्रीय आय तो बढ़ाता है लेकिन प्रदूषण के माध्यम से प्रकृति और मानव स्वास्थ्य को दीर्घकालिक क्षति पहुँचाता है, तो वह सतत विकास की कसौटी पर विफल माना जाता है। सतत विकास का अर्थ है संसाधनों का ऐसा विवेकपूर्ण उपयोग जिससे आगामी पीढ़ियों की आवश्यकताओं से कोई समझौता न हो। यह केवल आज की संवृद्धि नहीं, बल्कि आने वाले कल की सुरक्षा और पारिस्थितिक संतुलन को विकास का अनिवार्य हिस्सा मानता है।

154. (A) कथन I और कथन II दोनों सत्य हैं।
आधुनिकीकरण के सिद्धांत में विशिष्टतावाद (जहाँ अपनों के साथ विशेष व्यवहार हो) से सार्वभौमिकता (जहाँ नियम सभी पर समान रुप से लागू हों) की ओर संक्रमण एक महत्वपूर्ण चरण है। सार्वभौमिकता का अर्थ है कि समाज में व्यक्तियों के साथ उनके व्यक्तिगत संबंधों या जन्म के स्थान पर समान नियमों और मानदंडों के आधार पर व्यवहार किया जाता है।

Downloaded from www.pdf.tube

और उसकी सफलता की संभावनाओं को आकार प्रदान करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

189. (C) मृदु राज्य
गुन्नार मिर्डल ने मृदु राज्य शब्द का प्रयोग उन राष्ट्रों हेतु किया था जहाँ की सरकारें अपने ही कानूनों को लागू करने में अत्यंत निर्बल होती हैं। कर वंचना, भ्रष्टाचार और अनुबंधों के उल्लंघन पर नियंत्रण न लगा पाना इस राज्य की मुख्य निर्बलताएँ हैं। ऐसी व्यवस्था में शक्तिशाली निवासी सरकारी तंत्र को अपने व्यक्तिगत लाभ हेतु मोड़ लेते हैं और सामान्य जनता का विश्वास कानून व्यवस्था से उठ जाता है। यह प्रशासनिक और नैतिक पतन ही राष्ट्र के आर्थिक और सामाजिक पिछड़ेपन का एक प्रमुख कारण होता है क्योंकि यहाँ नियोजित विकास असंभव हो जाता है।

190. (A) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
विकास के मार्ग, जैसे आधुनिकीकरण और वैश्वीकरण, ने विश्व को कई लाभ प्रदान किए हैं, लेकिन उनके नकारात्मक परिणामों की भी व्यापक आलोचना होती है। ये प्रक्रियाएं अक्सर समृद्ध और निर्धन के बीच की खाई को विस्तृत करती हैं और स्थानीय संस्कृतियों के अस्तित्व हेतु संकट उत्पन्न करती हैं। इसके अतिरिक्त, औद्योगिक संवृद्धि हेतु प्राकृतिक संसाधनों का अनियंत्रित दोहन पर्यावरण को अपूरणीय क्षति पहुँचाता है। इसलिए, इन विकास प्रतिमानों को पूर्णतः सफल नहीं माना जा सकता और इनके मानवीय एवं पर्यावरणीय प्रभावों पर निरंतर प्रश्न उठाए जाते हैं।

191. (B) मानव विकास, क्षमताओं का विस्तार करके।
जब सरकार शिक्षा और स्वास्थ्य में निवेश करती है, तो वह प्रत्यक्ष रूप से अपने नागरिकों की क्षमताओं में वृद्धि कर रही होती है। शिक्षित और स्वस्थ नागरिक न केवल अपनी आजीविका श्रेष्ठ बना सकते हैं, बल्कि वे एक सार्थक जीवन जीने हेतु अधिक स्वतंत्र भी होते हैं। यह मानव विकास के मूल दर्शन के पूर्णतः अनुरूप है जो मानता है कि मनुष्यों को सशक्त बनाना ही विकास का वास्तविक पैमाना है। आय तो कालान्तर में आएगी, सर्वप्रथम निवासियों को उस योग्य बनाना होगा कि वे अपने विकल्पों का चुनाव कर सकें और अपनी प्रतिभा का पूर्ण उपयोग कर सकें।

192. (D) इतिहास का चक्रीय दृष्टिकोण जहाँ समाजों का उत्थान और पतन होता है।
आधुनिकीकरण सिद्धांत इतिहास के प्रति एक रेखीय दृष्टिकोण रखता है। यह मानता है कि समस्त समाज निरंतर प्रगति करते हैं और पारंपरिक अवस्था से आधुनिक अवस्था की ओर एक निश्चित दिशा में अग्रसर होते हैं। चक्रीय दृष्टिकोण, जिसमें समाजों के बार-बार निर्मित होने और विनष्ट होने की चर्चा की जाती है, इस सिद्धांत का भाग नहीं है। आधुनिकीकरण का संपूर्ण विचार ही निरंतर उन्नति, विज्ञान की विजय और तर्कसंगतता के बढ़ते प्रभाव पर आधारित है, जहाँ समाज कभी पीछे नहीं मुड़ता बल्कि सदैव आगे की ओर और अधिक जटिल रूप में विकसित होता है।

193. (C) सतत विकास
सतत विकास की अवधारणा का मूल मंत्र ही संसाधनों का उत्तरदायी प्रबंधन सुनिश्चित करना है। यह मांग करता है कि हम पृथ्वी के कोष को आज ही पूर्णतः समाप्त न कर दें, बल्कि उसे इस प्रकार बचाकर रखें कि आगामी सहस्त्रों पीढ़ियों को भी अपनी आवश्यकताएं पूरी करने में कोई कठिनाई न हो। यह दृष्टिकोण वर्तमान के लोभ और भविष्य की सुरक्षा के बीच एक न्यायपूर्ण संतुलन स्थापित करने का प्रयास करता है। यह हमें स्मरण कराता है कि हम इस पृथ्वी के स्वामी नहीं बल्कि इसके संरक्षक हैं और विकास तभी वास्तविक है जब वह संधारणीय हो।

194. (B) विकास के अवरोधक के रूप में सामाजिक संरचना।
एक कठोर जाति व्यवस्था विकास के लिए सबसे बड़ी बाधाओं में से एक है क्योंकि वह व्यक्ति की प्रतिभा को जन्म के सांचे में आबद्ध कर देती है। यदि कोई व्यक्ति अत्यंत प्रतिभाशाली है लेकिन उसकी जाति उसे उच्च शिक्षा या व्यवसाय से अवरुद्ध करती है, तो समाज उसकी सेवाओं से सदैव वंचित रह जाता है। यह व्यवस्था श्रम की गतिशीलता को विनष्ट करती है और संसाधनों के दोषपूर्ण आवंटन को प्रोत्साहित करती है। जहाँ समानता और अवसर नहीं होते, वहां नवाचार और प्रतिस्पर्धा भी समाप्त हो जाती है। ऐसी संरचनाएं आधुनिक विकास की मांगों के साथ असंगत हैं।

195. (B) वैश्वीकरण
वैश्वीकरण केवल वस्तुओं और मुद्राओं का आदान-प्रदान नहीं है, बल्कि यह नागरिक समाज और सामाजिक आंदोलनों का भी वैश्विक विस्तार है। आधुनिक सूचना तकनीक और तीव्र संचार ने दुनिया भर के निवासियों को साझा विषयों, जैसे जलवायु परिवर्तन और मानवाधिकारों, पर एक साथ आने का अवसर प्रदान किया है। अंतरराष्ट्रीय गैर-सरकारी संगठन अब राष्ट्रों की सीमाओं के पार जाकर सक्रिय कार्य करते हैं और वैश्विक नीतियां बनाने में अपनी भूमिका निभाते हैं। यह वैश्विक नागरिक समाज का उदय वैश्वीकरण की एक अत्यंत महत्वपूर्ण सामाजिक और राजनीतिक विशिष्टता है।

196. (A) कथन I और कथन II दोनों सत्य हैं।
मैक्स वेबर और गुन्नार मिर्डल दोनों ने विकास की जटिलताओं को गहराई से अनुभव किया था। वेबर ने स्पष्ट किया कि आर्थिक सफलता के पीछे केवल यंत्र नहीं, बल्कि निवासियों के सांस्कृतिक और धार्मिक विचार (प्रोटेस्टेंट नैतिकता) भी होते हैं। वहीं, मिर्डल ने यह चेतावनी दी थी कि मुक्त बाजार स्वतः ही क्षेत्रीय असमानताएं उत्पन्न करता है, जिसे रोकने हेतु राज्य का जागरूक और शक्तिशाली हस्तक्षेप पूर्णतः अनिवार्य है। ये दोनों विचार हमें यह बोध कराते हैं कि विकास हेतु सही सांस्कृतिक मानसिकता और सुदृढ़ प्रशासनिक नेतृत्व दोनों की आवश्यकता है।

197. (A) सामाजिक-आर्थिक विषमताएं
डिजिटल डिवाइड इस तथ्य का आधुनिक उदाहरण है कि तकनीक किस प्रकार समाज में नवीन दूरियां उत्पन्न कर सकती है। विकास की प्रक्रिया में जो लोग तकनीक के साथ सामंजस्य

NODIA

163. (B) इसकी सामाजिक संस्थाओं की गुणवत्ता और इसके सामाजिक संबंधों की समानता।
सामाजिक विकास का मूल उद्देश्य एक ऐसा समाज निर्मित करना है जहाँ संस्थाएं न्यायपूर्ण हों और निवासियों के बीच के संबंध समानता पर आधारित हों। यह केवल भौतिक वस्तुओं के उत्पादन तक सीमित नहीं है, बल्कि यह देखता है कि समाज कितना समावेशी और शांतिपूर्ण बना है। इसमें भेदभाव को समाप्त करना, कानून का शासन सुनिश्चित करना और सभी के लिए सामाजिक न्याय की गारंटी देना सम्मिलित है। यह समाज के नैतिक और संस्थागत उत्थान को ही वास्तविक प्रगति स्वीकार करता है, जहाँ प्रत्येक व्यक्ति को समान और सुरक्षित अवसर प्राप्त हो।

164. (B) उत्तर-आधुनिकीकरण
उत्तर-आधुनिकीकरण उन समाजों की विशेषता है जहाँ भौतिक समृद्धि प्राप्त हो चुकी है। ऐसे समाजों में लोग अब केवल और अधिक धन अर्जित करने के पीछे नहीं भागते, बल्कि वे पर्यावरण की रक्षा, मानवाधिकारों और व्यक्तिगत प्रसन्नता जैसे उत्तर-भौतिकवादी मूल्यों को प्राथमिकता प्रदान करते हैं। यह विचारधारा प्रगति के उन पुराने दावों को चुनौती देती है जो केवल औद्योगिकीकरण को ही विकास का मानक मानते थे। इसमें जीवन की गुणवत्ता और आत्म-अभिव्यक्ति को आर्थिक संवृद्धि से ऊपर रखा जाता है, जो समाज की सोच में आए बड़े बदलाव को दर्शाता है।

165. (A) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
गुन्नार मिर्डल ने मृदु राज्य की अवधारणा उन व्यवस्थाओं हेतु दी थी जहाँ कानून लागू करने की शक्ति और इच्छाशक्ति का पूर्ण अभाव होता है। भ्रष्टाचार इसका सबसे स्पष्ट प्रमाण है, क्योंकि यह दर्शाता है कि राज्य के अधिकारी स्वयं स्थापित नियमों के स्थान पर निजी लाभ को प्राथमिकता दे रहे हैं। जब भ्रष्टाचार व्यापक हो जाता है, तो समस्त सरकारी योजनाएं विफल हो जाती हैं और समाज में असुरक्षा की भावना उत्पन्न होती है। यह प्रशासनिक निर्बलता ही विकास की राह में सबसे बड़ी बाधा बनती है क्योंकि यह संसाधनों के कुशल उपयोग को रोकती है।

166. (B) विकास को रोकने वाली सामाजिक संरचना।
जब कोई सामाजिक या कानूनी व्यवस्था समाज के एक वृहत भाग, जैसे कि महिलाओं, को संपत्ति या संसाधनों के अधिकारों से वंचित करती है, तो वह राष्ट्र के विकास में वृहत बाधा बनती है। यह न केवल मानवाधिकारों का उल्लंघन है, बल्कि यह आर्थिक उत्पादकता को भी न्यून कर देता है क्योंकि आधी जनसंख्या विकास की प्रक्रिया में पूर्णतः भाग नहीं ले पाती। ऐसी भेदभावपूर्ण संरचनाएं प्रतिभा का दुरुपयोग करती हैं और समाज में असमानता को गहरा करती हैं। समावेशी विकास हेतु इन संरचनात्मक बाधाओं को समाप्त करना पूर्णतः अनिवार्य है।

167. (B) सतत विकास
सतत विकास का परिप्रेक्ष्य विकास को वर्तमान के साथ-साथ भविष्य के संदर्भ में भी देखता है। यह मुख्य रूप से यह प्रश्न उठाता है कि आज हम जिस प्रकार से संसाधनों का उपयोग कर रहे हैं, क्या वह आगामी पीढ़ियों के लिए भी पर्याप्त अवशेष रहेगा। यह केवल आज की आय बढ़ाने के विषय में नहीं है, बल्कि यह विकास के ऐसे संधारणीय प्रतिमान की खोज करता है जो प्रकृति को विनष्ट किए बिना निरंतर बना रहे। यह दृष्टिकोण आर्थिक निर्णयों में पर्यावरणीय सुरक्षा और आने वाले कल की आवश्यकताओं को प्राथमिकता देकर एक उत्तरदायी विकास का समर्थन करता है।

168. (B) गुन्नार मिर्डल
गुन्नार मिर्डल ने संचयी कारणता के माध्यम से समझाया कि विकास अक्सर असंतुलित होता है। उनके अनुसार, बाजार की ताकतें कुछ क्षेत्रों को समृद्धि के द्वीप बना देती हैं जहाँ समस्त संसाधन और निवेश संचित हो जाते हैं। इसके विपरीत, अन्य क्षेत्र जड़ या पिछड़े रह जाते हैं क्योंकि वहां से पूंजी और प्रतिभा का निरंतर पलायन हो जाता है। यह क्षेत्रीय असंतुलन विकासशील देशों की एक वृहत समस्या है। मिर्डल का विश्वास था कि राज्य के सक्रिय हस्तक्षेप के बिना ये समृद्ध केंद्र स्वतः पिछड़े क्षेत्रों का उद्धार नहीं करेंगे, बल्कि असमानता और बढ़ेगी।

169. (B) यह आय के वितरण, जीवन की गुणवत्ता और पर्यावरणीय प्रभावों की उपेक्षा करता है।
आर्थिक संवृद्धि को विकास का एकमात्र पैमाना मानने की सबसे बड़ी आलोचना यह है कि यह अत्यंत संकीर्ण है। यह केवल इस विषय पर ध्यान देता है कि देश की कुल आय में कितनी वृद्धि हुई है, लेकिन यह इस तथ्य की पूर्ण उपेक्षा करता है कि वह धन निर्धन वर्गों तक पहुँच रहा है या नहीं। इसके अतिरिक्त, यह संवृद्धि पर्यावरण को कितनी क्षति पहुँचा रही है और क्या निवासियों का स्वास्थ्य और शिक्षा का स्तर बेहतर हो रहा है, इस पर यह प्रतिमान मौन रहता है। वास्तविक विकास समावेशी और मानवीय होना चाहिए, जो आंकड़ों तक सीमित न हो।

170. (A) शिक्षा और सीखने पर सांस्कृतिक बल।
जब किसी संस्कृति में ज्ञान, शिक्षा और निरंतर सीखने को सर्वोच्च स्थान प्रदान किया जाता है, तो वह विकास हेतु एक अत्यंत शक्तिशाली सहायक सिद्ध होती है। ऐसी संस्कृति एक ऐसी मानव पूंजी तैयार करती है जो नवाचार करने, नवीन तकनीकों को सीखने और जटिल समस्याओं का समाधान खोजने में सक्षम होती है। यह कौशल विकास और उत्पादकता को प्रोत्साहित करती है, जो आधुनिक अर्थव्यवस्था का मुख्य आधार स्तंभ हैं। शिक्षा के प्रति यह सकारात्मक दृष्टिकोण समाज की आर्थिक और सामाजिक प्रगति की गति को कई गुना बढ़ा देता है, जिससे विकास स्थायी होता है।

171. (B) वैश्वीकरण
वैश्वीकरण ने विश्व की अर्थव्यवस्थाओं को इतना परस्पर संबद्ध कर दिया है कि अब कोई भी राष्ट्र पूर्णतः स्वतंत्र होकर अपनी नीतियां निर्मित नहीं कर सकता। अंतरराष्ट्रीय निकायों, जैसे विश्व व्यापार संगठन और अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष, का राष्ट्रीय नीतियों पर प्रभाव बढ़ना इस प्रक्रिया का एक मुख्य हिस्सा है। यह प्रदर्शित करता है कि आर्थिक और राजनीतिक निर्णय अब केवल राष्ट्रीय सीमाओं के भीतर नहीं, बल्कि वैश्विक स्तर पर लिए जा रहे हैं। यह प्रक्रिया राष्ट्रीय संप्रभुता और वैश्विक

Click Here to Buy book on Amazon

206. (B) विकास को रोकती है
जब किसी समाज में नियुक्तियाँ योग्यता के स्थान पर सिफारिश, भाई-भतीजावाद या पारिवारिक संबंधों पर आधारित होती हैं, तो वह सामाजिक संरचना विकास के मार्ग में एक वृहत बाधा बन जाती है। ऐसी व्यवस्था में प्रतिभाशाली और परिश्रमी व्यक्तियों को उन्नति के अवसर प्राप्त नहीं होते, जिससे समाज अपनी श्रेष्ठ मानव पूंजी का लाभ नहीं उठा पाता। इससे भ्रष्टाचार को प्रोत्साहन मिलता है और सरकारी एवं निजी संस्थाओं की कार्यक्षमता गिर जाती है। जहाँ न्याय और अवसर नहीं होते, वहां आर्थिक प्रगति और नवाचार का सकारात्मक वातावरण कभी फल-फूल नहीं सकता।

207. (B) प्रदूषण नियंत्रण तकनीक स्थापित करने वाले उद्योगों के लिए कर प्रोत्साहन।
सतत विकास का अर्थ है आर्थिक उन्नति के साथ-साथ पर्यावरण की सुरक्षा भी सुनिश्चित करना। जब सरकार प्रदूषण न्यून करने वाली तकनीकों हेतु उद्योगों को कर में रियायत प्रदान करती है, तो वह यह संदेश प्रेषित करती है कि विकास स्वच्छ और संधारणीय होना चाहिए। यह कदम उद्योगों को आधुनिक बनाने और प्रकृति के प्रति अधिक उत्तरदायी बनने हेतु प्रेरित करता है। अन्य विकल्प या तो प्रदूषण को प्रोत्साहित करते हैं या भविष्य के संसाधनों को विनष्ट करते हैं। अतः, आर्थिक लाभ और पारिस्थितिक सुरक्षा के बीच का यह समन्वय ही सतत विकास का श्रेष्ठ उदाहरण है।

208. (A) उत्तरजीविता; आत्म-अभिव्यक्ति
उत्तर-आधुनिकीकरण सिद्धांत यह स्वीकार करता है कि समाजों के मूल्यों में परिवर्तन उनकी आर्थिक स्थिति के साथ आबद्ध है। जब समाज निर्धन होते हैं, तो उनकी मुख्य चिंता केवल उत्तरजीविता या जीवित रहने की होती है। लेकिन जैसे-जैसे वे समृद्ध होते जाते हैं और उनकी भौतिक सुरक्षा सुनिश्चित हो जाती है, उनका ध्यान आत्म-अभिव्यक्ति और व्यक्तिगत स्वतंत्रता की ओर स्थानांतरित हो जाता है। अब लोग केवल भौतिक आवश्यकताओं के लिए नहीं, बल्कि अपने अधिकारों, पहचान और जीवन के उच्च उद्देश्यों हेतु कार्य करते हैं। यह परिवर्तन मानवीय विकास के एक उच्च स्तर को दर्शाता है।

209. (C) पश्चिमीकरण
जब कोई समाज सचेत रूप से पश्चिमी देशों की भाषा, संगीत और वेशभूषा शैलियों का अनुकरण करने लगता है, तो यह पश्चिमीकरण की एक स्पष्ट अभिव्यक्ति है। यह प्रक्रिया केवल तकनीक अपनाने तक सीमित नहीं है, बल्कि यह पश्चिम के सांस्कृतिक प्रतिमानों को अपने दैनिक जीवन का भाग बनाने की एक सचेत या अवचेतन कोशिश है। वैश्वीकरण के काल में संचार माध्यमों के प्रभाव से यह प्रक्रिया और भी तीव्र हो गई है। यह दर्शाता है कि किस प्रकार पश्चिमी मूल्य और जीवन शैलियाँ दुनिया भर के विभिन्न समाजों में स्थानीय परंपराओं के साथ घुल-मिल रही हैं।

210. (B) P-4, Q-3, R-2, S-1
मैक्स वेबर ने सांस्कृतिक मूल्यों और आर्थिक तर्कसंगतता के बीच गहन संबंध को स्पष्ट किया। गुन्नार मिर्डल ने संचयी कारणता के माध्यम से पिछड़ेपन के दुष्चक्र की व्याख्या की। मानव विकास का संपूर्ण ध्यान निवासियों की क्षमताओं और विकल्पों के विस्तार पर केंद्रित है, ताकि वे श्रेष्ठ जीवन व्यतीत कर सकें। आधुनिकीकरण सिद्धांत समाजों को पारंपरिक अवस्था से आधुनिक औद्योगिक अवस्था की ओर अग्रसर होते हुए देखता है। ये सभी विचारक और सिद्धांत समाज की प्रगति और उसकी चुनौतियों को समझने हेतु पृथक लेकिन महत्वपूर्ण दृष्टिकोण प्रदान करते हैं, जो विकास समाजशास्त्र का आधार हैं।

211. (A) सामाजिक-आर्थिक विषमताएं
जब विकास की प्रक्रिया केवल एक विशिष्ट क्षेत्र या केवल शिक्षित और संपन्न वर्ग तक ही सीमित रहती है, तो वह समाज में सामाजिक-आर्थिक विषमता को जन्म देती है। जीडीपी बढ़ने के बावजूद यदि समाज का एक वृहत भाग विकास के लाभों से वंचित रहता है, तो समृद्ध और निर्धन के बीच की खाई और गहरी हो जाती है। यह असंतुलित विकास समाज में तनाव और असंतोष उत्पन्न करता है। सच्ची प्रगति तभी संभव है जब विकास के अवसर और लाभ समस्त वर्गों और क्षेत्रों तक न्यायपूर्ण रूप से पहुँचें, न कि केवल कुछ ही व्यक्तियों तक सीमित रहें।

NODIA

212. (A) कथन I और कथन II दोनों सत्य हैं।
विकास के ये दो प्रमुख सिद्धांत अल्पविकास के कारणों को पृथक दृष्टिकोण से देखते हैं। उदारवादी सिद्धांत स्वीकार करते हैं कि पिछड़ेपन के लिए राष्ट्र की अपनी आंतरिक कमियाँ, जैसे उसकी संस्कृति और संस्थाएं, उत्तरदायी हैं। इसके विपरीत, निर्भरता सिद्धांत यह तर्क प्रस्तुत करता है कि विकासशील देशों का पिछड़ापन वैश्विक पूंजीवादी व्यवस्था द्वारा उनके ऐतिहासिक शोषण का परिणाम है। ये दोनों कथन इन दो महत्वपूर्ण वैचारिक धाराओं के मूल तर्कों को सटीक रूप से स्पष्ट करते हैं, जो विकास की चर्चा के सदैव केंद्र में रहे हैं।

213. (B) विकास में सहायक के रूप में।
एक ऐसी संस्कृति जहाँ लोग एक-दूसरे पर विश्वास करते हैं, समय का पालन करते हैं और अनुबंधों का सम्मान करते हैं, वह आर्थिक प्रगति हेतु एक उर्वर भूमि तैयार करती है। विश्वास व्यापार में जोखिम को न्यून करता है और आपसी सहयोग को प्रोत्साहित करता है, जो किसी भी सफल व्यवसाय हेतु पूर्णतः अनिवार्य है। सुदृढ़ कार्य नैतिकता उत्पादकता को संवर्धित करती है और संसाधनों का समुचित उपयोग सुनिश्चित करती है। ये सांस्कृतिक मूल्य एक अदृश्य ऊर्जा की भांति कार्य करते हैं जो विकास के यंत्र को गति प्रदान करते हैं और समाज को स्थायी समृद्धि की ओर ले जाते हैं।

214. (B) लक्ष्य प्राप्ति का एक साधन, लक्ष्य मानव कल्याण है।
मानव विकास परिप्रेक्ष्य का यह एक क्रांतिकारी विचार है कि आर्थिक संवृद्धि को विकास का अंतिम पैमाना नहीं माना जाना चाहिए। धन महत्वपूर्ण है, लेकिन वह केवल इसलिए आवश्यक है क्योंकि वह हमें श्रेष्ठ पोषण, उत्तम शिक्षा और उत्कृष्ट स्वास्थ्य सेवा उपलब्ध कराता है। वास्तविक विकास तो निवासियों के जीवन की गुणवत्ता में आने वाला स्थायी सुधार और उनकी स्वतंत्रताओं का विस्तार है। अतः, संवृद्धि केवल एक उपकरण

संभावनाओं को विस्तृत करने पर केंद्रित है। पारिस्थितिक संतुलन बनाए रखना सतत विकास का अनिवार्य अंग है ताकि पर्यावरण सुरक्षित बना रहे। सामाजिक न्याय सुनिश्चित करना सामाजिक विकास का प्राथमिक लक्ष्य है, जो समाज में समानता और निष्पक्षता स्थापित करता है। ये चारों दृष्टिकोण मिलकर विकास की एक व्यापक तस्वीर प्रस्तुत करते हैं जहाँ मानवीय कल्याण के आयाम सम्मिलित हैं।

181. (C) निवेश और उद्यम को प्रोत्साहित करके विकास की सुविधा प्रदान करना।
एक सुदृढ़ सामाजिक और कानूनी संरचना, जहाँ संपत्ति के अधिकार पूर्णतः सुरक्षित हैं, विकास के लिए सबसे बड़ी सुविधाप्रदाता होती है। जब व्यक्तियों और निगमों को यह विश्वास होता है कि उनकी श्रमशक्ति और संपत्ति कानून द्वारा सुरक्षित है, तो वे दीर्घकालिक निवेश करने और जोखिम लेने हेतु प्रेरित होते हैं। यह स्थिरता आर्थिक गतिविधियों को गति प्रदान करती है और नवाचार को प्रोत्साहित करती है। इसके विपरीत, जहाँ नियम अस्पष्ट या असुरक्षित होते हैं, वहां पूंजी का पलायन होता है। स्पष्ट नियम और न्यायपूर्ण व्यवस्था ही वास्तविक प्रगति का आधार है।

182. (B) सांस्कृतिक समरूपीकरण और स्थानीय परंपराओं के क्षरण की ओर ले जाना।
पश्चिमीकरण की सबसे बड़ी आलोचना यह है कि यह संपूर्ण विश्व को एक ही सांचे में ढालने का प्रयास करता है, जिसे सांस्कृतिक समरूपीकरण कहते हैं। इसमें पश्चिम के भोजन, वेशभूषा, भाषा और मूल्यों का इतना अधिक प्रभाव होता है कि स्थानीय संस्कृतियाँ अपनी विशिष्टता खोने लगती हैं। यह प्रक्रिया सांस्कृतिक विविधता को विनष्ट करती है और कई बार पारंपरिक ज्ञान एवं जीवन पद्धतियों को पिछड़ा मानकर त्याग दिया जाता है। आलोचक मानते हैं कि विकास का अर्थ पश्चिम की नकल नहीं होना चाहिए, बल्कि इसमें अपनी जड़ों को सुरक्षित रखना भी सम्मिलित है।

183. (B) केवल II और III
आधुनिकीकरण सिद्धांत यह स्वीकार करता है कि समस्त समाज परंपरा से आधुनिकता की ओर एक ही मार्ग पर अग्रसर हैं। इसी प्रकार, सतत विकास की अवधारणा आर्थिक प्रगति के साथ-साथ पर्यावरण और सामाजिक न्याय को संतुलित करने पर बल प्रदान करती है। हालांकि, वैश्वीकरण के विषय में यह कहना त्रुटिपूर्ण होगा कि यह केवल विकसित देशों को ही प्रभावित करता है; वास्तव में, यह विश्व के प्रत्येक कोने को प्रभावित करता है, अक्सर विकासशील देशों में इसके परिणाम और भी अधिक गहरे और व्यापक होते हैं। अतः, प्रथम कथन को छोड़कर अन्य दोनों कथन सही हैं।

184. (B) मनुष्यों को राष्ट्रों की वास्तविक संपत्ति के रूप में केंद्रित करना।
मानव विकास का मूल दर्शन यह है कि किसी राष्ट्र की वास्तविक संपदा उसके कारखाने या कोष नहीं, बल्कि उसके निवासी हैं। विकास का उद्देश्य एक ऐसा वातावरण निर्मित करना है जिसमें लोग स्वस्थ, शिक्षित और रचनात्मक जीवन व्यतीत कर सकें। यह दृष्टिकोण मानता है कि यदि लोग सक्षम होंगे, तो वे स्वयं राष्ट्र की आर्थिक और सामाजिक प्रगति को अग्रसर करेंगे। यह केवल आय बढ़ाने पर नहीं, बल्कि मानव जीवन की गरिमा और उसकी संभावनाओं को अधिकतम करने पर ध्यान केंद्रित करता है, जो विकास का वास्तविक और मानवीय स्वरूप है।

185. (C) अमीर क्षेत्रों की ओर पूंजी और श्रम के पलायन के कारण।
गुन्नार मिर्डल के अनुसार, बाजार की ताकतें स्वाभाविक रूप से समानता स्थापित नहीं करतीं, बल्कि वे संसाधनों को पूर्व से विकसित क्षेत्रों की ओर आकर्षित करती हैं। समृद्ध क्षेत्रों में श्रेष्ठ सुविधाएं और अवसर उपलब्ध होते हैं, इसलिए वहां से और अधिक निवेश आकर्षित होता है और पिछड़े क्षेत्रों के सबसे प्रतिभाशाली निवासी भी वहीं पलायन कर जाते हैं। इस बैकवाश प्रभाव के कारण निर्धन क्षेत्र अपनी श्रेष्ठ मानवीय और वित्तीय पूंजी खो देते हैं, जिससे वे और अधिक निर्धन होते जाते हैं। यह प्रक्रिया संचयी रूप से क्षेत्रीय असंतुलन को स्थायी बना देती है।

186. (C) पर्यावरण संरक्षण और मानवाधिकार जैसे मुद्दों पर अधिक बल।
उत्तर-आधुनिकीकरण की प्रक्रिया में समाज के मूल्यों में गहन परिवर्तन आता है। जब भौतिक सुरक्षा की प्राथमिक चिंताएं समाप्त हो जाती हैं, तो निवासी उन व्यापक वैश्विक और मानवीय विषयों के प्रति अधिक संवेदनशील हो जाते हैं जो जीवन की गुणवत्ता को प्रत्यक्ष प्रभावित करते हैं। पर्यावरण की रक्षा करना और समस्त नागरिकों के मानवाधिकारों को सुनिश्चित करना इस नवीन युग की प्राथमिकताएं बन जाती हैं। यह विचारधारा किसी एक संकीर्ण आर्थिक लाभ के स्थान पर संपूर्ण मानवता और पृथ्वी के कल्याण को विकास का वास्तविक लक्ष्य स्वीकार करती है, जो परिपक्व सोच है।

187. (D) आर्थिक संवृद्धि
आर्थिक संवृद्धि एक सरल और मात्रात्मक अवधारणा है जो किसी राष्ट्र की अर्थव्यवस्था में होने वाले भौतिक विस्तार को मापती है। जब हम प्रति व्यक्ति आय में वृद्धि की चर्चा करते हैं, तो हम यह विश्लेषण कर रहे होते हैं कि राष्ट्रीय आय का औसत भाग प्रत्येक नागरिक हेतु कितना बढ़ा है। यह मापदंड केवल आर्थिक आंकड़ों के संवर्धन पर केंद्रित है और यह स्पष्ट नहीं करता कि वह आय समाज में कैसे वितरित हो रही है या निवासियों का स्वास्थ्य और शिक्षा का स्तर क्या है। यह विकास की एक बुनियादी और प्रारंभिक माप है।

188. (B) विकास के सहायक/बाधा के रूप में संस्कृति।
मैक्स वेबर का संपूर्ण कार्य इस विचार पर आधारित है कि धर्म और संस्कृति आर्थिक प्रणालियों को गहराई से प्रभावित करते हैं। उन्होंने प्रदर्शित किया कि कैसे प्रोटेस्टेंट नैतिकता के कुछ मूल्यों ने पूंजीवाद हेतु सहायक वातावरण निर्मित किया, जबकि अन्य धर्मों के कुछ विश्वास आर्थिक तर्कसंगतता में बाधा उत्पन्न कर सकते हैं। यह विश्लेषण स्पष्ट करता है कि संस्कृति केवल व्यक्तिगत पसंद का विषय नहीं है, बल्कि यह एक ऐसी सामूहिक शक्ति है जो किसी राष्ट्र के आर्थिक विकास की दिशा

Downloaded from www.pdf.tube

आर्थिक एकीकरण के बीच एक नवीन और जटिल संबंध स्थापित करती है।

172. (A) कथन I और कथन II दोनों सत्य हैं।
ये दोनों कथन विकास के दो पृथक दर्शनों को स्पष्ट करते हैं। पारंपरिक आर्थिक संवृद्धि दृष्टिकोण आय बढ़ाने को ही विकास की सफलता स्वीकार करता है। इसके विपरीत, मानव विकास दृष्टिकोण यह मानता है कि धन अपने आप में लक्ष्य नहीं है, वह केवल इसलिए महत्वपूर्ण है क्योंकि उससे हम श्रेष्ठ शिक्षा, स्वास्थ्य और सुविधाएं क्रय कर सकते हैं। इस दृष्टिकोण में, मनुष्य का कल्याण और उसकी क्षमताएं ही वास्तविक लक्ष्य हैं, जबकि आर्थिक वृद्धि केवल उस लक्ष्य तक पहुँचने का एक साधन मात्र है।

173. (D) एक तर्कसंगत-कानूनी नौकरशाही
आधुनिकीकरण सिद्धांत के अनुसार, पारंपरिक समाजों की पहचान उनके सुदृढ़ नातेदारी संबंधों, कृषि आधारित अर्थव्यवस्था और जन्म या परंपरा के आधार पर मिलने वाली आरोपित स्थिति से होती है। इन समाजों में नियम और कानून अक्सर व्यक्तिगत संबंधों या रीति-रिवाजों पर आधारित होते हैं। इसके विपरीत, तर्कसंगत-कानूनी नौकरशाही आधुनिक समाजों की एक प्रमुख विशेषता है, जहाँ समस्त कार्य पूर्व-निर्धारित नियमों, लिखित कानूनों और योग्यता के आधार पर संपन्न होता है। अतः, यह नौकरशाही आधुनिकीकरण का परिणाम है, जो इसे अन्य विकल्पों से पृथक करती है।

174. (B) सामाजिक विकास और समानता की चिंताएं
जब विकास की योजनाएं अनजाने में नई विषमताएं उत्पन्न करती हैं, तो यह इस बात का संकेत है कि योजना में सामाजिक आयामों की उपेक्षा की गई है। केवल आर्थिक लाभ पर ध्यान केंद्रित करने से समाज का एक वृहत वर्ग पिछड़ सकता है। इसलिए, विकास रणनीतियों में सामाजिक विकास और समानता के आयामों को अनिवार्य रूप से सम्मिलित किया जाना चाहिए। इसका अर्थ है कि नीतियों को इस प्रकार निर्मित किया जाए कि उनके लाभों का वितरण न्यायपूर्ण हो और वंचित समूहों के हितों की रक्षा हो सके। समावेशी विकास ही सामाजिक स्थिरता सुनिश्चित करता है।

175. (B) 1-c, 2-a, 3-b
मैक्स वेबर ने सांस्कृतिक और धार्मिक नैतिकता को पूंजीवाद के उदय से संबद्ध किया। गुन्नार मिर्डल ने मृदु राज्य की अवधारणा के माध्यम से विकासशील देशों की प्रशासनिक निर्बलता को स्पष्ट किया। उत्तर-आधुनिकीकरण सिद्धांतकारों ने भौतिक संचय के स्थान पर उत्तर-भौतिकवादी मूल्यों जैसे आत्म-अभिव्यक्ति और जीवन की गुणवत्ता पर ध्यान केंद्रित किया। ये तीनों विचार विकास की समाजशास्त्रीय समझ के पृथक पहलुओं—संस्कृति, राज्य की भूमिका और बदलते मानवीय मूल्यों—को प्रस्तुत करते हैं, जो समाज की प्रगति और उसकी जटिलताओं को समझने हेतु पूर्णतः अनिवार्य हैं।

176. (C) व्यक्तिगत पहचान, जीवन शैली विकल्पों और जीवन की गुणवत्ता के महत्व में वृद्धि।
उत्तर-आधुनिकीकरण वह समाज है जहाँ औद्योगिकीकरण के पुराने और कठोर लक्ष्य अब प्राथमिक नहीं रह गए हैं। यहाँ निवासियों के पास इतनी भौतिक सुरक्षा उपलब्ध है कि वे अब अपनी विशिष्ट पहचान बनाने और अपने जीवन को अधिक सार्थक बनाने पर ध्यान केंद्रित कर सकते हैं। विविधता, व्यक्तिगत पसंद और पर्यावरणीय सुरक्षा जैसे विषयों को यहाँ सर्वाधिक महत्व प्रदान किया जाता है। यह समाज किसी एक विचार या मानक को थोपने के स्थान पर व्यक्तिगत स्वतंत्रता और जीवन की समग्र प्रसन्नता को ही सच्ची प्रगति का मापदंड स्वीकार करता है।

177. (A) सहायता
मैक्स वेबर के अनुसार, तपस्या या मितव्ययिता पूंजीवाद के उदय में एक वृहत सहायता सिद्ध हुई। जब संस्कृति विलासिता और अपव्यय के स्थान पर संयमित जीवन और बचत को धार्मिक मूल्य स्वीकार करती है, तो वह पूंजी के संचय को प्रोत्साहित करती है। यह बचत जब व्यापार में पुनः निवेश की जाती है, तो वह आर्थिक विस्तार का आधार बनती है। वेबर का विश्वास था कि प्रोटेस्टेंट संप्रदायों के इसी संयम और अनुशासन ने ही वह प्रारंभिक पूंजी और कार्य नैतिकता प्रदान की जिसने आधुनिक औद्योगिक विकास को संभव बनाया, जो आर्थिक उन्नति का आधार बना।

178. (C) समाज के भीतर पदानुक्रमित विभाजन और असमानताएं।
सामाजिक-आर्थिक विषमता की अवधारणा का मुख्य केंद्र समाज में विद्यमान वह ढांचा है जो संसाधनों को असमान रूप से वितरित करता है। यह वर्ग, जाति या लिंग के आधार पर निर्मित उन पदानुक्रमों को प्रदर्शित करता है जो कुछ निवासियों को लाभ पहुँचाते हैं और अन्यों को अवसरों से वंचित रखते हैं। यह केवल आय का अंतर नहीं है, बल्कि यह उन सामाजिक बाधाओं से भी संबद्ध है जो निवासियों की प्रगति को अवरुद्ध करती हैं। विकास के संदर्भ में, इन विषमताओं को समझना अनिवार्य है क्योंकि ये सामाजिक न्याय के मार्ग में सबसे बड़ी चुनौती हैं।

179. (C) विकास जिससे सामाजिक-आर्थिक विषमताएं बढ़ रही हैं।
वेबर और मिर्डल जैसे उदारवादी विद्वान मानते हैं कि किसी देश का भाग्य उसके अपने हाथों में है। उनका कहना है कि अगर कोई देश निर्धन है, तो उसे दूसरों को दोष देने के स्थान पर अपने अंदर झांकना चाहिए। क्या वहां की संस्कृति में आलस्य या भाग्यवादिता व्याप्त है? क्या वहां का शासन भ्रष्ट है? क्या वहां नियम कड़ाई से लागू नहीं होते? उनके अनुसार, जब तक कोई समाज अपनी इन आंतरिक बुराइयों को दूर नहीं करता और स्वयं को आधुनिक एवं तर्कसंगत नहीं बनाता, तब तक कोई भी बाहरी शक्ति उसे विकसित नहीं बना सकती।

180. (A) P-4, Q-3, R-1, S-2
सकल राष्ट्रीय उत्पाद संवृद्धि का मुख्य केंद्र आर्थिक संवृद्धि है, जो केवल उत्पादन की मात्रा को मापता है। क्षमता विस्तार का संबंध मानव विकास से है, जो निवासियों के जीवन की

NODIA

स्थापित कर लेते हैं, वे उन्नति के शिखर पर पहुँच जाते हैं, जबकि जो लोग शिक्षा या संसाधनों के अभाव में पिछड़ जाते हैं, उनकी स्थिति और अधिक विषम हो जाती है। यह विषमता केवल धन की नहीं, बल्कि ज्ञान और अवसरों की भी है। यदि विकास का लाभ केवल एक तकनीकी अभिजात वर्ग तक सीमित रहता है, तो वह समाज में गहरा असंतोष और अन्याय उत्पन्न करता है।

198. (B) उत्तर-आधुनिकीकरण परिप्रेक्ष्य।
उत्तर-आधुनिकीकरण की विचारधारा विकास के उस एक ही आकार के प्रतिमान को अस्वीकार करती है जिसे अक्सर विकसित राष्ट्रों द्वारा ऊपर से थोपा जाता है। यह स्थानीय समुदायों की समझ, उनके पारंपरिक ज्ञान और उनकी विशिष्ट आवश्यकताओं को सर्वाधिक महत्व प्रदान करता है। यह मानता है कि विकास की कोई एक सार्वभौमिक परिभाषा नहीं हो सकती और प्रत्येक समाज का अपना एक पृथक और सार्थक मार्ग हो सकता है। यह दृष्टिकोण विकास की प्रक्रिया को अधिक लोकतांत्रिक, लचीला और मानवीय बनाने की वकालत करता है, जो सांस्कृतिक विविधता का पूर्ण सम्मान करती है।

199. (B) विकास में बाधा के रूप में संस्कृति।
जब किसी समाज में यह विश्वास कर लिया जाता है कि निर्धनता उनकी नियति है और वे आगामी कल के विषय में विचार करना बंद कर देते हैं, तो यह संस्कृति विकास में एक वृहत रुकावट बन जाती है। आधुनिकीकरण और आर्थिक उन्नति हेतु निवासियों में यह विश्वास होना अनिवार्य है कि वे अपने प्रयासों से अपनी स्थिति परिवर्तित कर सकते हैं। भविष्य के प्रति उदासीनता निवेश और शिक्षा के प्रति उत्साह को विनष्ट कर देती है। इस प्रकार, ये नकारात्मक सांस्कृतिक मूल्य समाज को पिछड़ेपन में बनाए रखते हैं और किसी भी आधुनिक सुधार को विफल कर सकते हैं।

200. (A) 1, 2, 3
विकास के ये तीन चरण उसकी निरंतर बढ़ती जटिलता को प्रदर्शित करते हैं। आर्थिक संवृद्धि सबसे सरल माप है जो केवल राष्ट्रीय आय और उत्पादन के आंकड़ों को देखती है। मानव विकास इसमें एक नवीन स्तर जोड़ता है जहाँ शिक्षा, स्वास्थ्य और निवासियों की व्यक्तिगत क्षमताओं को महत्वपूर्ण स्वीकार किया जाता है। सतत विकास सबसे व्यापक और जटिल चरण है क्योंकि यह आर्थिक और मानवीय लक्ष्यों के साथ-साथ संपूर्ण पृथ्वी के पर्यावरण और आगामी पीढ़ियों की सुरक्षा को भी विकास की परिभाषा में अनिवार्य रूप से सम्मिलित करता है।

201. (A) सामाजिक विकास
सामाजिक विकास की मुख्य चिंता समाज की उन संस्थाओं और नियमों को श्रेष्ठ बनाना है जो निवासियों के जीवन को प्रभावित करते हैं। इसका उद्देश्य एक ऐसा ढांचा निर्मित करना है जहाँ प्रत्येक व्यक्ति की सक्रिय भागीदारी हो और किसी के साथ भेदभाव न हो। यह न्यायसंगत अवसरों और निष्पक्ष शासन के माध्यम से समाज के समस्त वर्गों का कल्याण सुनिश्चित करता है। सामाजिक विकास केवल धन के संचय के विषय में नहीं है, बल्कि यह एक ऐसे न्यायपूर्ण समाज के निर्माण के विषय में है जहाँ समानता और मानवीय गरिमा को सर्वोच्च प्राथमिकता प्राप्त होती है।

202. (A) संस्कृति
मैक्स वेबर का प्रसिद्ध अध्ययन यह स्पष्ट करता है कि समाज के आर्थिक ढाँचे और उसके सांस्कृतिक मूल्यों के बीच एक अटूट संबंध विद्यमान होता है। उन्होंने यह प्रमाणित किया कि प्रोटेस्टेंट नैतिकता के धार्मिक संस्कारों ने निवासियों में उस अनुशासन और कार्य संस्कृति को जन्म दिया जिसने पूंजीवाद को सफल बनाया। यह प्रदर्शित करता है कि आर्थिक विकास केवल व्यापार या तकनीक का विषय नहीं है, बल्कि इसके पीछे निवासियों के गहन विश्वास और मूल्य प्रणाली सक्रिय कार्य करती है। संस्कृति ही वह आधार है जो यह निर्धारित करती है कि समाज प्रगतिशील होगा।

203. (C) संचयी कारणता
गुन्नार मिर्डल की संचयी कारणता की अवधारणा यह स्पष्ट करती है कि आर्थिक विकास की प्रक्रिया में बाजार की शक्तियां पिछड़ेपन के दुष्चक्र को और अधिक सुदृढ़ करती हैं। उनके अनुसार, यदि किसी क्षेत्र में एक बार निर्धनता व्याप्त हो जाए, तो वह वहां की शिक्षा, स्वास्थ्य और निवेश को प्रतिकूल प्रभावित करती है, जिससे वहां और अधिक निर्धनता आती है। यह प्रक्रिया एक निरंतर गतिमान चक्र की तरह है जहाँ कारण और प्रभाव एक-दूसरे को और विषम बनाते जाते हैं। इससे क्षेत्रीय असमानताएं बढ़ती रहती हैं, जिन्हें केवल राज्य के सशक्त हस्तक्षेप से ही तोड़ा जा सकता है।

204. (D) वैश्वीकरण
वैश्वीकरण वह प्रक्रिया है जिसने भौगोलिक दूरियों के महत्व को लगभग पूर्णतः समाप्त कर दिया है। आधुनिक संचार साधनों और परिवहन की गति ने विश्व को इतना निकट ला दिया है कि अब हम स्वयं को एक वैश्विक समुदाय का भाग स्वीकार करने लगे हैं। इसे वैश्विक चेतना का उदय कहा जाता है, जहाँ दुनिया के किसी एक भाग की घटना का प्रभाव तुरंत वैश्विक स्तर पर अनुभव किया जाता है। यह राष्ट्रों की संकीर्ण सीमाओं से बाहर निकलकर संपूर्ण विश्व को एक सूत्र में आबद्ध करने और एक साझा वैश्विक भविष्य के प्रति जागरूकता लाने का मार्ग है।

205. (A) A and R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
विकास को अब केवल जीडीपी की वृद्धि तक ही सीमित नहीं स्वीकार किया जाता। यह एक बहुआयामी प्रक्रिया है जिसमें शिक्षा, स्वास्थ्य, सामाजिक न्याय और पर्यावरण जैसे समस्त महत्वपूर्ण आयाम सम्मिलित हैं। पारंपरिक आर्थिक संवृद्धि प्रतिमान की निर्बलताओं को दूर करने हेतु ही मानव विकास, सामाजिक विकास और सतत विकास जैसी नवीन अवधारणाएं प्रस्तुत की गईं। ये विचार यह सुनिश्चित करते हैं कि विकास न केवल आंकड़ों में दृष्टिगोचर हो, बल्कि वह निवासियों के जीवन को श्रेष्ठ बनाए, समाज में समानता स्थापित करे और भावी संसाधनों को भी सुरक्षित रखे।

Click Here to Buy book on Amazon

व्यवस्था के भीतर ही सांस्कृतिक बदलाव, कानून का शासन, और संस्थागत सुदृढ़ीकरण के माध्यम से विकास लाना चाहते हैं। वे मार्क्सवादी विचारधारा की भांति पूंजीवाद को पूर्णतः उखाड़ फेंकने की वकालत नहीं करते। उनके अनुसार, यदि समाज अपनी आंतरिक निर्बलताओं को दूर कर ले और नीतियां तर्कसंगत हों, तो मौजूदा व्यवस्था में ही स्थायी और न्यायपूर्ण विकास प्राप्त किया जा सकता है।

224. (D) राजनीतिक स्वतंत्रता और मानवाधिकार
मानव विकास सूचकांक को मुख्य रूप से तीन बुनियादी आयामों के मापन हेतु निर्मित किया गया है: स्वास्थ्य, ज्ञान और जीवन स्तर। यद्यपि राजनीतिक स्वतंत्रता और मानवाधिकार मानव कल्याण हेतु अत्यंत महत्वपूर्ण हैं, लेकिन वे एचडीआई के इन तीन मुख्य सांख्यिकीय संकेतकों का भाग नहीं हैं। एचडीआई का उद्देश्य विकास की एक सरल और प्रभावी तस्वीर प्रस्तुत करना है जो केवल आय से परे जाकर मानवीय क्षमताओं के बुनियादी स्तर को प्रदर्शित करती है। स्वतंत्रता के आयामों हेतु अन्य पृथक सूचकांकों का प्रयोग सांख्यिकीय रूप से किया जाता है।

225. (A) A and R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
वैश्वीकरण ने संपूर्ण विश्व को एक साझा बाजार में परिवर्तित कर दिया है, लेकिन इसका एक वृहत संकट सांस्कृतिक समरूपीकरण है। पश्चिमी राष्ट्रों, विशेषकर अमेरिका, की चलचित्रों, ब्रांडों और जीवन शैली का संपूर्ण विश्व पर इतना अधिक प्रभाव है कि स्थानीय संस्कृतियाँ अपनी आभा खो रही हैं। निवासी अपनी पारंपरिक भाषाओं और रीति-रिवाजों को त्यागकर वैश्विक स्तर पर लोकप्रिय हो रहे पश्चिमी प्रतिमानों को अपनाने लगे हैं। यह प्रक्रिया सांस्कृतिक विविधता को न्यून करती है और संपूर्ण विश्व को एक जैसे उपभोक्ता समाज में बदलने का जोखिम उत्पन्न करती है।

226. (A) सामाजिक गतिशीलता और योग्यता तंत्र को बढ़ावा देती है।
सामाजिक संरचना विकास हेतु तब वरदान सिद्ध होती है जब वह योग्यता का सम्मान करती है। जब समाज में लोग अपनी श्रमशक्ति और कौशल के बल पर उच्च पदों तक पहुँच सकते हैं, तो वह समाज अधिक गतिशील और उत्पादक बन जाता है। ऐसी व्यवस्था में प्रत्येक व्यक्ति को यह प्रेरणा प्राप्त होती है कि वह अपनी क्षमताओं का सर्वांगीण विकास करे। यह प्रतिभा के समुचित उपयोग को सुनिश्चित करती है और नवाचार हेतु एक उर्वर वातावरण तैयार करती है। जहाँ अवसर सबके लिए समान उपलब्ध हों, वहां विकास की गति स्वतः तीव्र और स्थायी हो जाती है।

227. (C) उत्तर-आधुनिकीकरण
उत्तर-आधुनिकीकरण का काल औद्योगिक समाज के पश्चात का चरण है। इसमें समाज का मुख्य आधार अब कारखाने और भारी यंत्र नहीं हैं, बल्कि सूचना, प्रौद्योगिकी और ज्ञान आधारित सेवाएं हैं। यह संक्रमण न केवल अर्थव्यवस्था के स्वरूप को परिवर्तित करता है, बल्कि निवासियों के जीवन जीने के ढंग और उनकी सोच में भी मौलिक परिवर्तन लाता है। अब निवासी केवल वस्तुओं के उपभोग पर ध्यान केंद्रित नहीं करते, बल्कि वे अपनी रचनात्मकता और आत्म-सम्मान को सर्वाधिक महत्व प्रदान करते हैं। यह विकास का वह उच्च स्तर है जहाँ बौद्धिक संपदा ही प्रगति की शक्ति है।

228. (D) सतत विकास
सतत विकास की यह सर्वाधिक प्रसिद्ध और सटीक परिभाषा है। यह हमें यह बोध कराती है कि हम इस पृथ्वी के स्वामी नहीं बल्कि केवल न्यासी हैं। हमारा विकास तभी वास्तविक स्वीकार किया जाएगा जब हम आज अपनी सुख-सुविधाओं हेतु उन संसाधनों को पूर्णतः विनष्ट न कर दें जिनकी आवश्यकता हमारी भावी संतानों को भी होगी। यह दृष्टिकोण वर्तमान के स्वार्थ और भविष्य की सुरक्षा के बीच एक पवित्र संतुलन स्थापित करने की मांग करता है। यह हमें स्मरण कराता है कि प्रगति वही है जो अनंत काल तक अक्षुण्ण बनी रह सके और प्रकृति को साथ लेकर चले।

229. (B) आधुनिक आर्थिक विकास में बाधा।
आर्थिक विकास हेतु दीर्घकालिक सोच, बचत और आपसी सहयोग पूर्णतः अनिवार्य है। यदि किसी संस्कृति में निवासी केवल तात्कालिक संतुष्टि के विषय में विचार करते हैं और अन्यों पर विश्वास नहीं करते, तो वहां न तो निवेश हो सकता है और न ही वृहत व्यापारिक गठबंधन निर्मित हो सकते हैं। अविश्वास व्यावसायिक जोखिमों को संवर्धित कर देता है और लोग भविष्य हेतु योजना बनाने से कतराते हैं। ऐसे नकारात्मक सांस्कृतिक मूल्य समाज को आर्थिक रूप से पंगु बना देते हैं और उसे आधुनिक प्रतिस्पर्धा और औद्योगिक प्रगति की दौड़ में बहुत पीछे छोड़ देते हैं।

230. (C) संचयी कारणता की प्रक्रिया में आर्थिक, सामाजिक और राजनीतिक कारक।
गुन्नार मिर्डल का विश्वास था कि अल्पविकास कोई सरल समस्या नहीं है जिसे केवल वित्त प्रदान करके सुलझाया जा सके। यह आर्थिक पिछड़ेपन, दोषपूर्ण सामाजिक संस्थाओं और निर्बल राजनीतिक नेतृत्व के बीच की एक जटिल परस्पर क्रिया है। ये सभी कारक एक-दूसरे को प्रभावित करते हैं और पिछड़ेपन का एक संचयी दुष्चक्र निर्मित करते हैं। उनके अनुसार, विकास तभी संभव है जब इन तीनों क्षेत्रों में एक साथ सुधारात्मक प्रयास किए जाएं। यह एक समग्र दृष्टिकोण है जो यह मानता है कि समाज के प्रत्येक अंग की सुदृढ़ता ही उसे विकास के मार्ग पर ले जा सकती है।

231. (A) लोक-केंद्रित; अर्थव्यवस्था-केंद्रित
आर्थिक संवृद्धि और मानव विकास के बीच यही सबसे मौलिक और तात्विक अंतर है। आर्थिक संवृद्धि का संपूर्ण ध्यान यंत्रों, उत्पादन और मुद्राओं पर होता है, जहाँ मनुष्य को केवल उत्पादन का एक साधन मात्र स्वीकार किया जाता है। इसके विपरीत, मानव विकास का दृष्टिकोण पूर्णतः मनुष्यों पर केंद्रित है। यह मानता है कि विकास का वास्तविक अर्थ निवासियों का श्रेष्ठ स्वास्थ्य, उत्कृष्ट शिक्षा और एक गरिमापूर्ण जीवन है। सरल शब्दों में, आर्थिक संवृद्धि का लक्ष्य वृहत बाजार निर्मित

NODIA

या माध्यम है, जबकि विकास का वास्तविक साध्य या उद्देश्य मनुष्यों का समग्र कल्याण और उनकी मानवीय गरिमा है।

215. (D) I, II और III
ये तीनों अवधारणाएं समाज के आधुनिक स्वरूप को समझने में अत्यंत सहायक हैं। आधुनिकीकरण यह स्पष्ट करता है कि कैसे समाज पुरानी परंपराओं को त्यागकर नवीन वैज्ञानिक और औद्योगिक युग में प्रवेश करते हैं। वैश्वीकरण इस तथ्य को रेखांकित करता है कि कैसे तकनीकी क्रांति ने संपूर्ण विश्व के राष्ट्रों को एक-दूसरे पर पूर्णतः निर्भर बना दिया है। पश्चिमीकरण विशेष रूप से पश्चिम के सांस्कृतिक और सामाजिक प्रतिमानों के प्रभाव को प्रदर्शित करता है। ये तीनों प्रक्रियाएं आधुनिक विश्व के सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक ढांचे को आकार देने वाली सर्वाधिक महत्वपूर्ण शक्तियाँ हैं।

216. (B) अर्थव्यवस्था का कुल आकार।
आर्थिक संवृद्धि एक मात्रात्मक अवधारणा है जिसका संपूर्ण ध्यान केवल आंकड़ों की वृद्धि पर केंद्रित होता है। यह यह मापन करती है कि विगत वर्ष की तुलना में इस वर्ष राष्ट्र के भीतर वस्तुओं और सेवाओं का कुल उत्पादन कितना संवर्धित हुआ है। सकल घरेलू उत्पाद इसका सर्वाधिक महत्वपूर्ण सूचक है। यह प्रतिमान यह विश्लेषण नहीं करता कि वह उत्पादन पर्यावरण को कितनी क्षति पहुँचा रहा है या वह धन समाज के समस्त निवासियों तक पहुँच रहा है या नहीं। यह केवल अर्थव्यवस्था के भौतिक विस्तार और उसकी कुल संचित संपदा पर ही केंद्रित रहता है।

217. (B) कठोर राज्य
गुन्नार मिर्डल के सिद्धांत के अनुसार, एक कठोर राज्य वह है जिसमें इतनी प्रशासनिक और राजनीतिक शक्ति व्याप्त होती है कि वह शक्तिशाली समूहों के प्रबल विरोध के बावजूद जनहित में कड़े निर्णय ले सके। भूमि सुधारों को प्रभावी ढंग से लागू करना इसका एक उत्कृष्ट उदाहरण है, क्योंकि इसमें अक्सर प्रभावशाली भूस्वामियों के हितों से टकराना अनिवार्य होता है। ऐसा राज्य कानून का शासन सुनिश्चित करता है और अपने नागरिकों में अनुशासन उत्पन्न करता है। मृदु राज्य की तुलना में, कठोर राज्य नियोजित विकास के लक्ष्यों को प्राप्त करने में अधिक सक्षम और सफल सिद्ध होता है।

218. (B) विकास का अवरोधक
सामाजिक संरचना तब एक अवरोधक बन जाती है जब वह निवासियों की योग्यता और श्रम के मार्ग में बाधा निर्मित कर देती है। एक जाति या वर्ग आधारित व्यवस्था, जहाँ उच्च पद और अवसर केवल कुछ विशिष्ट समूहों हेतु आरक्षित हों, प्रतिभा का दमन कर देती है। इससे समाज के निम्न स्तर के प्रतिभाशाली लोग कभी उन्नति नहीं कर पाते, जिससे राष्ट्र की समग्र मानवीय पूंजी का गंभीर ह्रास होता है। ऐसी जड़ता नवाचार और प्रतिस्पर्धा को पूर्णतः समाप्त कर देती है, जिससे आर्थिक विकास की प्रक्रिया सुस्त और अपंग हो जाती है, जो राष्ट्र हेतु अहितकारी है।

219. (B) सतत विकास
सतत विकास का संपूर्ण दर्शन इसी विचार पर आधारित है कि आज का विकास आगामी कल के विनाश की मूल्य पर नहीं होना चाहिए। यह हमें स्मरण कराता है कि हम इस पृथ्वी के संसाधनों के स्वामी नहीं बल्कि केवल न्यासी हैं। हमारा यह नैतिक दायित्व है कि हम संसाधनों का इस प्रकार उपयोग करें कि भावी पीढ़ियां भी अपनी आवश्यकताओं को पूर्ण कर सकें और एक स्वस्थ पर्यावरण में जीवन व्यतीत कर सकें। यह वर्तमान और भविष्य के बीच संतुलन स्थापित करने वाला एक अत्यंत उत्तरदायी और दूरदर्शी दृष्टिकोण है, जो विकास की प्रक्रिया को चिरस्थायी बनाता है।

220. (B) उत्तर-आधुनिकीकरण
उत्तर-आधुनिकीकरण की विचारधारा आधुनिक युग के उन बड़े और सर्वव्यापी दावों को चुनौती प्रदान करती है जिनमें स्वीकार किया जाता था कि प्रगति और तर्क की केवल एक ही सही परिभाषा है। यह इस विचार के प्रति पूर्णतः संदेहास्पद है कि पश्चिमी विज्ञान और संस्थाएं ही संपूर्ण विश्व हेतु श्रेष्ठ हैं। इसके स्थान पर, यह स्थानीय संस्कृतियों, विविध अनुभवों और विकास के पृथक मार्गों को सम्मान प्रदान करता है। यह स्वीकार करता है कि विकास का कोई एक वृहत आख्यान नहीं हो सकता और विविधता ही मानवीय प्रगति की वास्तविक पहचान है।

221. (B) एक विशेष आर्थिक व्यवस्था का उद्भव।
मैक्स वेबर ने यह ऐतिहासिक तथ्य प्रमाणित किया कि आधुनिक पूंजीवाद का उदय केवल मुद्राओं या यंत्रों के कारण नहीं हुआ, बल्कि उसके पीछे एक विशिष्ट धार्मिक और सांस्कृतिक सोच सक्रिय थी। उन्होंने प्रदर्शित किया कि किस प्रकार निवासियों के नैतिक विश्वासों ने उन्हें कठिन परिश्रम और तर्कसंगत निवेश हेतु प्रेरित किया, जिससे एक नवीन आर्थिक व्यवस्था का जन्म हुआ। यह दर्शाता है कि किसी भी वृहत आर्थिक परिवर्तन की जड़ें समाज की गहन सांस्कृतिक और नैतिक मान्यताओं में निहित होती हैं। संस्कृति ही वह उर्वर भूमि है जहाँ आर्थिक प्रणालियां विकसित होती हैं।

222. (D) उपर्युक्त सभी
सामाजिक-आर्थिक विषमता एक अत्यंत व्यापक शब्दावली है जो समाज में व्याप्त प्रत्येक प्रकार की गहन असमानता को अपने भीतर समाहित करती है। इसमें केवल समृद्ध और निर्धन के बीच का अंतर ही सम्मिलित नहीं है, बल्कि यह भी सम्मिलित है कि शिक्षा और स्वास्थ्य जैसी बुनियादी सेवाओं तक किसकी कितनी पहुँच सुनिश्चित है। साथ ही, यह राजनीतिक शक्ति के असमान वितरण को भी प्रदर्शित करता है, जहाँ कुछ निवासियों के पास निर्णय लेने की शक्ति होती है और अन्य केवल उन निर्णयों को स्वीकार करने हेतु विवश होते हैं। सच्ची प्रगति हेतु इन विषमताओं को दूर करना अनिवार्य है।

223. (C) पूंजीवाद का क्रांतिकारी तख्तापलट
वेबर और मिर्डल जैसे उदारवादी विद्वान सुधारों और तर्कसंगत परिवर्तनों में विश्वास करते हैं, न कि हिंसक क्रांतियों में। उनका उदारवादी वर्गीकरण यह स्पष्ट करता है कि वे वर्तमान

NODIA

यह परिवर्तन एक आधुनिक, निष्पक्ष और तर्कसंगत समाज के निर्माण हेतु आवश्यक है जहाँ केवल योग्यता को महत्व प्राप्त होता है और कानून का शासन सर्वोपरि होता है।

155. (B) P-4, Q-3, R-2, S-1
आधुनिकीकरण सिद्धांत विकास को पारंपरिक से आधुनिकता की ओर एक रेखीय यात्रा के रूप में देखता है। वैश्वीकरण विश्व की बढ़ती आर्थिक और सांस्कृतिक परस्पर संबद्धता को प्रदर्शित करता है। उत्तर-आधुनिकीकरण वह चरण है जहाँ भौतिक सुरक्षा के स्थान पर जीवन की गुणवत्ता और आत्म-अभिव्यक्ति जैसे मूल्य प्रभावी हो जाते हैं। गुन्नार मिर्डल ने बैकवाश प्रभाव के माध्यम से यह समझाया कि कैसे विकास प्रक्रिया कुछ क्षेत्रों को समृद्ध और कुछ को और अधिक निर्धन बना सकती है। ये सभी विचार आधुनिक समाजशास्त्र में विकास के विभिन्न आयामों को स्पष्ट करते हैं।

156. (B) बैकवाश प्रभाव
गुन्नार मिर्डल के अनुसार, बैकवाश प्रभाव वह प्रक्रिया है जिसमें एक विकसित केंद्र आसपास के पिछड़े क्षेत्रों से संसाधनों, पूंजी और श्रेष्ठ प्रतिभाओं को अपनी ओर आकर्षित कर लेता है। इसके परिणामस्वरूप, मुख्य केंद्र तो तीव्र गति से विकसित होता है, लेकिन सुदूर ग्रामीण और पिछड़े क्षेत्र विकास की दौड़ में और अधिक पीछे छूट जाते हैं। यह बाजार की वह नकारात्मक शक्ति है जो क्षेत्रीय असंतुलन को जन्म देती है। मिर्डल का मानना था कि सरकारी हस्तक्षेप के बिना यह प्रक्रिया पिछड़े क्षेत्रों को विकास की मुख्यधारा से स्थायी रूप से वंचित कर सकती है।

157. (B) मानव विकास
मानव विकास का दृष्टिकोण यह स्वीकार करता है कि आय में वृद्धि के बिना भी निवासियों के जीवन में वास्तविक सुधार संभव है। यदि किसी देश में लोग अधिक दीर्घायु हो रहे हैं और अधिक शिक्षित हो रहे हैं, तो उनकी क्षमताओं का विस्तार हो रहा है। यह सच्ची प्रगति का सूचक है क्योंकि विकास का अंतिम उद्देश्य मनुष्यों का कल्याण है, न कि केवल भौतिक धन का संचय। शिक्षा और स्वास्थ्य व्यक्ति को अधिक स्वतंत्र और सक्षम बनाते हैं। अतः, इन सामाजिक संकेतकों में सुधार मानव विकास की सफलता को दर्शाता है, भले ही आर्थिक आंकड़े स्थिर रहें।

158. (A) निम्न सामाजिक गतिशीलता वाली अत्यधिक स्तरीकृत वर्ग व्यवस्था।
सामाजिक संरचना तब बाधा बनती है जब वह निवासियों के विकास के अवसरों को सीमित कर देती है। एक अत्यधिक स्तरीकृत समाज में, व्यक्ति की स्थिति उसके जन्म से निर्धारित होती है, जिससे निर्धन और प्रतिभाशाली व्यक्तियों हेतु उन्नति के मार्ग अवरुद्ध हो जाते हैं। इससे न केवल सामाजिक अन्याय विस्तृत होता है, बल्कि राष्ट्र अपनी मानव पूंजी का वास्तविक उपयोग भी नहीं कर पाता। जहाँ गतिशीलता न्यून होती है, वहां नवाचार और उद्यमिता भी कुंठित हो जाते हैं। ऐसी कठोर संरचनाएं आधुनिक अर्थव्यवस्था की मांग के अनुसार बदलाव को रोकने का कार्य करती हैं।

159. (C) केवल I और III
सतत विकास एक व्यापक अवधारणा है जो आर्थिक उन्नति के साथ-साथ पर्यावरणीय और सामाजिक लक्ष्यों में तालमेल स्थापित करती है। इसका मुख्य आधार अंतर-पीढ़ीगत समानता है, जिसका अर्थ है कि हमें आज के संसाधनों का उपयोग इस प्रकार करना चाहिए कि भावी पीढ़ियों हेतु पर्याप्त संसाधन अवशेष रहें। हालांकि, केवल आर्थिक संवृद्धि होना ही सतत विकास हेतु पर्याप्त नहीं है; वास्तव में, अनियंत्रित संवृद्धि पर्यावरण को गंभीर क्षति पहुँचा सकती है। सतत विकास हेतु सचेत नियोजन और प्राकृतिक संसाधनों के विवेकपूर्ण संरक्षण की महती आवश्यकता होती है।

160. (B) संरचनात्मक परिवर्तन; सांस्कृतिक अनुकरण
आधुनिकीकरण एक गहन और व्यापक प्रक्रिया है जिसमें समाज की संपूर्ण संरचना, जैसे उसकी राजनीति, अर्थव्यवस्था और संस्थाएं, अधिक तर्कसंगत और वैज्ञानिक आधार पर परिवर्तित हो जाती हैं। इसके विपरीत, पश्चिमीकरण का केंद्र मुख्य रूप से सांस्कृतिक और सामाजिक अनुकरण है। इसमें कोई समाज पश्चिम के मूल्यों, वेशभूषा, भाषा और जीवन शैली का अनुकरण करता है। जहाँ आधुनिकीकरण समाज के कार्य करने के तरीके को मौलिक रूप से नवीन बनाता है, वहीं पश्चिमीकरण अक्सर केवल बाहरी स्वरूप को पश्चिम जैसा बनाने तक ही सीमित रह सकता है।

161. (C) वैश्वीकरण
वैश्वीकरण के कारण स्थानीय अर्थव्यवस्थाएं अक्सर वैश्विक ताकतों और बहुराष्ट्रीय निगमों पर अत्यधिक निर्भर हो जाती हैं। यद्यपि नई तकनीक उत्पादन में वृद्धि कर सकती है, लेकिन यदि वह आत्मनिर्भरता को समाप्त कर देती है और स्थानीय समुदायों को बड़े निगमों के अधीन कर देती है, तो यह वैश्वीकरण का एक नकारात्मक पहलू है। इससे स्थानीय नियंत्रण न्यून हो जाता है और समुदाय वैश्विक बाजार के अस्थिर उतार-चढ़ाव के प्रति संवेदनशील हो जाते हैं। यह स्थिति दर्शाती है कि वैश्वीकरण आर्थिक अवसरों के साथ-साथ आर्थिक स्वायत्तता हेतु चुनौतियां भी ला सकता है।

162. (A) लक्ष्य-उन्मुख, कुशल और गणनात्मक क्रिया का बढ़ता प्रभुत्व।
मैक्स वेबर के अनुसार, आधुनिकीकरण की सबसे बड़ी विशेषता सामाजिक जीवन का तर्कसंगतीकरण है। इसका अर्थ है कि परंपरा, भावना या धर्म के स्थान पर, मानवीय क्रियाएं अब दक्षता, नियमों और सावधानीपूर्वक की गई गणनाओं द्वारा निर्देशित होती हैं। समाज के प्रत्येक क्षेत्र, जैसे प्रशासन और व्यवसाय में, नौकरशाही और वैज्ञानिक पद्धति का प्रभाव निरंतर बढ़ता है। यह बदलाव समाज को अधिक व्यवस्थित और उत्पादक तो बनाता है, लेकिन साथ ही मानवीय संबंधों को अधिक औपचारिक और अवैयक्तिक भी बना देता है, जो आधुनिकता की प्रमुख पहचान है।

Downloaded from www.pdf.tube

करना है, जबकि मानव विकास का लक्ष्य श्रेष्ठ और सुखी मनुष्य बनाना है।

232. (B) आधुनिकीकरण सिद्धांत
आधुनिकीकरण सिद्धांत समाजों को विश्लेषण करने हेतु एक विशिष्ट पैमाना प्रयुक्त करता है। इसके अनुसार, पारंपरिक समाज में व्यक्ति की पहचान उसके जन्म से होती है, जबकि आधुनिक समाज में वह अपनी श्रमशक्ति और कौशल से नवीन पहचान निर्मित करता है। विकास का वास्तविक तात्पर्य ही यही है कि समाज पुरानी और जड़ सोच को त्याग दे और योग्यता एवं तर्क के आधार पर निरंतर आगे बढ़े। यह सिद्धांत स्वीकार करता है कि जब लोग स्वयं को जन्म के बंधनों से मुक्त कर लेंगे और केवल काबिलियत का सम्मान करेंगे, तभी वह समाज वास्तव में आधुनिक कहलाएगा।

233. (A) कथन I और कथन II दोनों सत्य हैं।
ये दोनों कथन आधुनिक विश्व की वास्तविकताओं को प्रदर्शित करते हैं। वैश्वीकरण के कारण अब राष्ट्रों की अर्थव्यवस्थाएं वैश्विक बाजार और बहुराष्ट्रीय निगमों के प्रत्यक्ष प्रभाव में हैं, जिससे उनकी स्वतंत्र निर्णय लेने की शक्ति न्यून हुई है। दूसरी ओर, सामाजिक विकास का संपूर्ण ध्यान इस तथ्य पर केंद्रित है कि निवासियों के जीवन में वास्तविक सुधार किस प्रकार आए। स्वास्थ्य, शिक्षा और समानता जैसे क्षेत्रों में स्थायी सुधार ही किसी समाज की सच्ची सुदृढ़ता के वास्तविक पैमाने हैं। ये दोनों प्रक्रियाएं मिलकर आधुनिक राष्ट्रों के समक्ष नवीन चुनौतियां प्रस्तुत करती हैं।

234. (B) सामाजिक-आर्थिक विषमताएं
तकनीक का विकास सदैव सबको लाभान्वित नहीं करता। जब नवीन यंत्र और सॉफ्टवेयर राष्ट्र की संपदा संवर्धित करते हैं, तो अक्सर कम शिक्षित या अकुशल श्रमिक अपनी आजीविका खो देते हैं। इससे समाज में एक ओर तो अत्यंत समृद्ध तकनीकी वर्ग उदित हो जाता है और दूसरी ओर बेरोजगारों की एक विशाल संख्या खड़ी हो जाती है। यह स्थिति सामाजिक-आर्थिक विषमता का ज्वलंत उदाहरण है। यह प्रदर्शित करता है कि बिना समुचित प्रशिक्षण और पुनर्वितरण की नीतियों के, आधुनिक तकनीक समाज के भीतर की आर्थिक खाई को और भी अधिक विस्तृत कर सकती है।

235. (B) मैक्स वेबर
मैक्स वेबर का यह अत्यंत महत्वपूर्ण तर्क था कि आधुनिक पूंजीवाद केवल धन के विषय में नहीं है, बल्कि यह एक सुव्यवस्थित और तर्कसंगत ढांचे की मांग करता है। उनके अनुसार, व्यापार और निवेश तभी फल-फूल सकते हैं जब वहां एक स्पष्ट और निष्पक्ष कानूनी व्यवस्था विद्यमान हो जो अनुबंधों का सम्मान करे और सबको समान विधिक सुरक्षा प्रदान करे। यह अवैयक्तिक व्यवस्था, जहाँ नातेदारी के स्थान पर नियम प्रभावी होते हैं, आधुनिक विकास की एक अनिवार्य पूर्व शर्त है। वेबर ने इसे तर्कसंगतीकरण का भाग माना, जो आधुनिक समाजों की शक्ति है।

236. (C) एक सुदृढ़ और कुशल नौकरशाही
मृदु राज्य की सबसे प्रमुख पहचान ही उसकी प्रशासनिक निर्बलता है। गुन्नार मिर्डल के अनुसार, ऐसे राज्यों में नौकरशाही अक्सर भ्रष्ट, अकुशल और नियमों की खुली अनदेखी करने वाली होती है। यहाँ कानूनों को केवल कागज पर निर्मित किया जाता है लेकिन उन्हें धरातल पर क्रियान्वित करने की राजनीतिक शक्ति का अभाव होता है। सामाजिक अनुशासन की न्यूनता और शक्तिशाली निवासियों का दंड से बच निकलना इस राज्य की मुख्य व्याधियाँ हैं। अतः, एक सुदृढ़ नौकरशाही मृदु राज्य की विशेषता नहीं, बल्कि एक कठोर राज्य की पहचान है जो विकास को सुनिश्चित करता है।

237. (A) केवल I और II
संस्कृति और विकास के बीच का संबंध अत्यंत गहन और जटिल होता है। संस्कृति एक ओर तो आपसी विश्वास और सहयोग के मूल्य उत्पन्न करके व्यापार और उन्नति को सुगम बना सकती है। दूसरी ओर, यदि वहां भाग्यवादिता या केवल अपनों को लाभ पहुँचाने जैसे संस्कार व्याप्त हैं, तो वह विकास को अवरुद्ध भी कर सकती है। यह कहना त्रुटिपूर्ण है कि संस्कृति और अर्थव्यवस्था पृथक हैं; वास्तव में, निवासियों के कार्य करने की शैली उनके सांस्कृतिक संस्कारों से ही निर्धारित होती है। संस्कृति ही वह अदृश्य शक्ति है जो किसी भी राष्ट्र के विकास की वास्तविक गति निर्धारित करती है।

238. (C) आधुनिकीकरण
आधुनिकीकरण सिद्धांत इस विचार पर आधारित है कि पश्चिम ने विकास का जो मार्ग अपनाया है, वही विश्व के शेष समस्त देशों के लिए भी एकमात्र आदर्श है। यह स्वीकार करता है कि पारंपरिक होने का तात्पर्य पिछड़ा होना है और आधुनिक होने का तात्पर्य पश्चिम जैसा सुसज्जित होना है। यह प्रतिमान सांस्कृतिक विविधता को महत्व नहीं देता और समस्त समाजों को एक ही प्रकार की वैज्ञानिक और औद्योगिक व्यवस्था की ओर अग्रसर होने हेतु प्रेरित करता है। इस सिद्धांत के अनुसार, विकास एक ऐसी यात्रा है जिसमें पश्चिम अग्रगामी है और शेष विश्व को उसका अनुकरण करना है।

239. (B) एक ऐसा समाज जो न्यायसंगत, समावेशी और न्यायपूर्ण हो।
सामाजिक विकास का अंतिम ध्येय केवल धन अर्जित करना नहीं, बल्कि एक ऐसा समाज निर्मित करना है जहाँ प्रत्येक मनुष्य को सम्मान प्राप्त हो। इसका लक्ष्य समाज के उन कोनों तक पहुँचना है जहाँ आज भी भेदभाव और अन्याय व्याप्त है। यह समावेशी विकास पर सर्वाधिक बल देता है, ताकि उन्नति का प्रतिफल केवल कुछ समृद्ध निवासियों तक सीमित न रहे, बल्कि समाज के अंतिम पायदान पर खड़े व्यक्ति तक भी पहुँचे। सामाजिक विकास का विश्वास है कि वास्तविक उन्नति वही है जहाँ सब सामंजस्य के साथ चलें, सब सुरक्षित अनुभव करें और सबके पास आगे बढ़ने का समान अवसर हो।

240. (A) P-4, Q-2, R-3, S-1
मैक्स वेबर ने प्रोटेस्टेंट नैतिकता के माध्यम से संस्कृति और पूंजीवाद के संबंध को स्पष्ट किया। गुन्नार मिर्डल ने मृदु राज्य

NODIA

को पूर्ण सुरक्षा का अनुभव कराती है। जब निवासियों को यह बोध होता है कि उनकी श्रमशक्ति का फल कोई छीनेगा नहीं और शासन उनका सहयोग करेगा, तो वे दोगुने उत्साह से कार्य करते हैं। अतः सुदृढ़ संस्थाएं और श्रेष्ठ कानून व्यवस्था ही वे सुविधाप्रदाता हैं जो किसी भी राष्ट्र की प्रगति की स्थायी नींव रखते हैं।

258. (C) वैश्वीकरण नीतियों और परिस्थितियों के आधार पर विषमताओं को कम और बढ़ा दोनों सकता है।
वैश्वीकरण एक द्विधारी तलवार की भांति है। यदि किसी राष्ट्र के पास श्रेष्ठ शिक्षा और आधुनिक तकनीक उपलब्ध है, तो वह वैश्विक बाजार का लाभ अर्जित कर निर्धनता दूर कर सकता है और विषमता न्यून कर सकता है। लेकिन यदि कोई राष्ट्र पूर्णतः सज्ज नहीं है, तो वैश्वीकरण उसके संसाधनों का शोषण कर सकता है और समृद्ध-निर्धन की खाई को और भी अधिक गहरा कर सकता है। सब कुछ इस तथ्य पर निर्भर करता है कि राष्ट्र का शासन इसे किस प्रकार प्रबंधित करता है और वहां के नागरिकों के पास प्रतिस्पर्धा हेतु कितने पर्याप्त साधन और कौशल उपलब्ध हैं।

259. (B) बाधा
विकास हेतु योग्यता सर्वाधिक महत्वपूर्ण तत्व है, लेकिन जब संस्कृति में केवल अपने परिवार या समूह को लाभ पहुँचाना ही सर्वोच्च कर्तव्य स्वीकार कर लिया जाता है, तो वह प्रगति के मार्ग में एक वृहत अवरोध बन जाती है। ऐसी संकीर्ण सोच के कारण योग्य निवासी उपेक्षित रह जाते हैं और केवल संबंधियों को ही श्रेष्ठ अवसर प्राप्त होते हैं। इससे सरकारी और निजी कार्यप्रणाली में भ्रष्टाचार और अकुशलता व्याप्त हो जाती है। जब तक समाज वफादारी से ऊपर उठकर निष्पक्षता और योग्यता को अंगीकार नहीं करता, तब तक वह एक आधुनिक और सफल राष्ट्र के रूप में स्थापित नहीं हो सकता।

260. (D) I, II और III
मैक्स वेबर और गुन्नार मिर्डल जैसे उदारवादी विद्वानों ने विकास की समस्याओं को अत्यंत गहराई से विश्लेषित किया। वेबर ने स्पष्ट किया कि मानसिक चिंतन और संस्कृति कितनी निर्णायक है, तो मिर्डल ने शासन की शक्ति और बाजार के प्रभावों पर प्रकाश डाला। इन दोनों की एक स्थापना समान थी—वे स्वीकार करते थे कि किसी राष्ट्र के पिछड़ेपन के लिए सर्वाधिक उत्तरदायी उसके अपने आंतरिक दोष और प्राचीन जड़ आदतें हैं। यह दृष्टिकोण हमें बोध कराता है कि यदि हमें उन्नति करनी है, तो हमें सर्वप्रथम अपने समाज और कार्य करने की प्रणालियों को वैज्ञानिक आधार पर सुधारना होगा।

261. (B) लोगों की स्वतंत्रताओं और जीवन के विकल्पों का विस्तार करती है।
मानव विकास के दृष्टिकोण से जब हम किसी सरकारी नीति का मूल्यांकन करते हैं, तो हम यह प्रश्न नहीं करते कि राष्ट्र का कोष कितना संवर्धित हुआ? बल्कि हम यह पूछते हैं कि क्या इससे सामान्य नागरिक का जीवन सुगम हुआ? क्या अब वह पहले से अधिक स्वतंत्र है? क्या उसके पास अपनी रुचि का कार्य करने या श्रेष्ठ चिकित्सा प्राप्त करने की पर्याप्त क्षमता है? यदि कोई नीति निवासियों को अधिक सक्षम और स्वतंत्र बनाती है, तभी उसे मानव विकास की कसौटी पर सफल स्वीकार किया जाता है। विकास का वास्तविक ध्येय निवासियों को उन बंधनों से मुक्त करना है।

262. (B) आधुनिकीकरण सिद्धांत
आधुनिकीकरण सिद्धांत समाजों के मूल्यांकन हेतु एक विशिष्ट मापदंड प्रयुक्त करता है। इसके अनुसार, पारंपरिक समाज में निवासी की पहचान उसके जन्म से निर्धारित होती है, जबकि आधुनिक समाज में वह अपनी श्रमशक्ति और हुनर से नवीन पहचान अर्जित करता है। विकास का वास्तविक अर्थ ही यही है कि समाज अपनी जड़ सोच को त्याग दे और योग्यता एवं तर्क के आधार पर निरंतर उन्नति करे। यह सिद्धांत मानता है कि जब निवासी स्वयं को जन्म के बंधनों से मुक्त कर लेंगे और केवल कार्यकुशलता का सम्मान करेंगे, तभी वह समाज वास्तव में आधुनिक और पूर्णतः विकसित राष्ट्र कहलाएगा।

263. (A) सामाजिक विकास
बांध निर्माण से विद्युत ऊर्जा प्राप्त होना आर्थिक संवृद्धि तो है, लेकिन सहस्त्रों निर्धन निवासियों को आवासहीन कर देना सामाजिक विकास के सिद्धांतों के पूर्णतः विपरीत है। सामाजिक विकास कहता है कि उन्नति ऐसी होनी चाहिए जो किसी का आवास न छीने और सबको साथ लेकर चले। जब विकास का मूल्य केवल निर्धन और निराश्रित निवासी चुकाते हैं और उसका लाभ केवल संपन्न नगरों को प्राप्त होता है, तो वह समाज में गहरा असंतोष और अन्याय उत्पन्न करता है। यह संघर्ष हमें स्मरण कराता है कि बिना न्याय और मानवीय संवेदना के, केवल आर्थिक आंकड़े किसी देश का कल्याण नहीं कर सकते।

264. (B) गुन्नार मिर्डल
गुन्नार मिर्डल ने निर्धनता के उस संचयी दुष्चक्र को स्पष्ट किया जिसे विनष्ट करना अत्यंत कठिन कार्य होता है। उनके अनुसार, निर्धनता केवल मुद्राओं का अभाव नहीं है, बल्कि यह एक ऐसी व्याधि है जो शिक्षा, स्वास्थ्य और संकल्प शक्ति—सबको विनष्ट कर देती है, जिससे और अधिक निर्धनता जन्म लेती है। इसे उन्होंने संचयी कारणता की संज्ञा दी है। मिर्डल का विश्वास था कि निर्धन राष्ट्र स्वतः इस दलदल से बाहर नहीं निकल सकते। इसके लिए राज्य को एक वृहत हस्तक्षेप करना होगा ताकि यह नकारात्मक चक्र अवरुद्ध हो सके और विकास की एक नवीन सकारात्मक प्रक्रिया प्रारंभ हो सके।

265. (A) A and R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
सतत विकास कोई लघु सुधार नहीं है, बल्कि यह विश्व को देखने का एक पूर्णतः नवीन और समग्र दृष्टिकोण है। यह स्वीकार करता है कि हम मुद्राओं, समाज और प्रकृति को पृथक-पृथक भागों में विभाजित नहीं कर सकते। यदि हम धन अर्जित करने के प्रयास में वायु और जल को प्रदूषित करते हैं, तो अंततः हमारा समाज भी व्याधिग्रस्त हो जाएगा। इसलिए सतत विकास इन तीनों आयामों को एक ही सूत्र में आबद्ध करने का प्रयास करता है। यह एक ऐसा मार्ग है जहाँ हम सब उन्नति करें, न्याय के साथ जीवन जिएं और हमारी यह सुंदर वसुंधरा भी सदैव सुरक्षित एवं मुस्कुराती रहे।

Click Here to Buy book on Amazon

STUDYING FROM PDFs?

THINK AGAIN.

If you are studying only from PDFs,
you are wasting valuable time.

Research shows that learning from

PRINTED BOOKS has up to

4× HIGHER RETENTION

than studying from screens.

PRINT BOOK = BETTER MEMORY

PDF = LOWER RETENTION

Those who study from **PRINTED BOOKS**
move **AHEAD.**

Others are left **BEHIND**
in competition.



In competitive exams,
being average is not enough.

STAY ONE STEP AHEAD.

व्यक्ति स्वेच्छा से अपनी पहचान निर्मित कर सके। यह मानवीय चेतना के एक नवीन शिखर का प्रतिनिधित्व करता है।

249. (C) नई बुनियादी ढांचा परियोजनाएं बिना मुआवजे के निर्धन समुदायों को विस्थापित करती हैं, जबकि धनी ठेकेदारों को लाभ पहुँचाती हैं।
यह उदाहरण विकास के तिमिरपूर्ण पक्ष को उद्घाटित करता है। कई बार वृहत परियोजनाओं के निर्माण से राष्ट्र के आंकड़े तो उज्ज्वल प्रतीत होते हैं, लेकिन उस स्थान पर निवास करने वाले निर्धन निवासी अपने आवास और आजीविका से वंचित हो जाते हैं। उनके इस बलिदान पर केवल समृद्ध ठेकेदार और निगम अपनी संपदा संवर्धित करते हैं। यह समाज में आर्थिक और सामाजिक विषमता को और भी अधिक गहरा कर देता है। यदि विकास का लाभ निर्धन वर्गों को उजाड़कर केवल धनवानों को प्राप्त हो रहा है, तो वह वास्तविक प्रगति नहीं बल्कि एक वृहत सामाजिक अन्याय है।

250. (A) एक सांस्कृतिक मानदंड जो नवाचार और उद्यमिता को महत्व देता है।
नवाचार और उद्यमिता को महत्व प्रदान करना संस्कृति की एक ऐसी विशिष्टता है जो विकास को अवरुद्ध करने के स्थान पर उसे नवीन ऊंचाइयों पर ले जाती है। यह समाज को कुछ मौलिक करने, जोखिम लेने और जटिल समस्याओं का समाधान खोजने हेतु प्रेरित करती है, जो उन्नति की बुनियादी शर्त है। इसके विपरीत, वंचित वर्गों को कार्य से रोकना, भाग्य के आश्रित रहना या अंधविश्वासों पर व्यय करना—ये सभी वे सांस्कृतिक बाधाएं हैं जो समाज को पीछे धकेलती हैं। अतः सकारात्मक सोच और परिवर्तन को स्वीकार करने वाली संस्कृति सदैव विकास की श्रेष्ठ मित्र होती है।

251. (C) सामाजिक विकास
सामाजिक विकास का वास्तविक पैमाना यह है कि समाज के निर्बलतम व्यक्ति को न्याय और समानता का अवसर प्राप्त हो रहा है या नहीं। यह केवल अर्थव्यवस्था के संवर्धन का विषय नहीं है, बल्कि समाज की संस्थाओं—जैसे हमारी विधिक व्यवस्था और शैक्षणिक संस्थान—की ईमानदारी और निष्पक्षता का विषय है। इसका लक्ष्य एक ऐसा वातावरण निर्मित करना है जहाँ भेदभाव का कोई स्थान अवशेष न रहे और निवासी परस्पर सहयोग के साथ रहें। सामाजिक विकास ही वह सुदृढ़ नींव है जिस पर एक सुखी राष्ट्र की अट्टालिका निर्मित की जा सकती है, जहाँ न्याय सर्वोपरि है।

252. (B) एक विशिष्ट सांस्कृतिक और नैतिक अभिविन्यास।
मैक्स वेबर ने अत्यंत गहराई से यह अनुभव किया था कि मुद्राओं और यंत्रों से स्वतः पूंजीवाद उदित नहीं हो सकता। उसके लिए निवासियों के मानस में एक विशिष्ट प्रकार की तर्कसंगत सोच और कार्य के प्रति समर्पण होना अनिवार्य है। उन्होंने स्पष्ट किया कि किस प्रकार कुछ विशिष्ट नैतिक मूल्यों ने लोगों को श्रम करने, धन बचाने और उसे व्यर्थ व्यय करने के स्थान पर व्यापार में निवेश हेतु प्रेरित किया। यह सांस्कृतिक और नैतिक बदलाव ही वह शक्ति थी जिसने पश्चिम को आधुनिक पूंजीवाद के पथ पर अग्रसर किया और उसे विश्व में सर्वाधिक समृद्ध बनाया।

253. (C) कथन I सत्य है, लेकिन कथन II असत्य है।
आधुनिकीकरण सिद्धांत अक्सर विकास के उसी मार्ग का समर्थन करता है जिस पर अग्रसर होकर पश्चिमी राष्ट्र समृद्ध बने हैं। लेकिन यह कहना त्रुटिपूर्ण होगा कि पश्चिमीकरण एक तटस्थ अवधारणा है। वास्तव में, पश्चिमीकरण का तात्पर्य पश्चिम की विशिष्ट संस्कृति और जीवन शैली का अनुकरण करना है, जो स्थानीय पहचानों को विनष्ट कर सकता है। यह एक मूल्य-युक्त प्रक्रिया है जिसमें पश्चिम को श्रेष्ठ स्वीकार कर लिया जाता है। आधुनिकीकरण जहाँ वैज्ञानिक चिंतन की चर्चा करता है, वहीं पश्चिमीकरण केवल पश्चिम के बाहरी स्वरूप को अपनाने पर बल देता है, जो विवादस्पद है।

254. (B) बैकवाश प्रभाव
गुन्नार मिर्डल के बैकवाश प्रभाव का तात्पर्य है कि विकास की तरंगें सदैव समाज के समस्त अंगों को स्पर्श नहीं करतीं। अक्सर एक समृद्ध नगर या क्षेत्र अपने आस-पास के ग्रामीण अंचलों और निर्धन क्षेत्रों से समस्त संपदा, कच्चा माल और वहां की श्रेष्ठ प्रतिभाओं को अपनी ओर आकर्षित कर लेता है। परिणाम यह होता है कि वह नगर तो और समृद्ध हो जाता है, लेकिन आस-पास के क्षेत्र और भी रिक्त और निर्धन हो जाते हैं। बाजार की यह अनियंत्रित शक्ति क्षेत्रीय असमानता को न्यून करने के स्थान पर उसे और भी भयावह बना देती है, जो एक गंभीर समस्या है।

255. (C) सतत विकास
यह उदाहरण सतत विकास की अत्यंत सुंदर तस्वीर प्रस्तुत करता है। यहाँ राष्ट्र ने अपने वनों को विनष्ट कर धन अर्जित नहीं किया, बल्कि उन्हें संरक्षित कर वहां पर्यटन का ऐसा मार्ग प्रशस्त किया जिससे प्रकृति भी सुरक्षित रहे और स्थानीय निवासियों को गरिमापूर्ण रोजगार भी प्राप्त हो सके। यह वर्तमान की आवश्यकता और आगामी कल की अमानत के बीच एक उत्कृष्ट सामंजस्य है। सतत विकास हमें यही शिक्षा देता है कि उन्नति ऐसी होनी चाहिए जो प्रकृति का दमन न करे, बल्कि उसके साथ सामंजस्य स्थापित करके चले ताकि हमारी यह वसुंधरा सदैव हरित और सुरक्षित बनी रहे।

NODIA

256. (B) इतिहास और प्रगति के वृहत और व्यापक आख्यान।
उत्तर-आधुनिकीकरण वह काल है जहाँ लोग उन वृहत दावों पर विश्वास करना त्याग देते हैं जो कहते हैं कि विकास का सिर्फ एक ही मार्ग सत्य है। यह विचारधारा स्वीकार करती है कि प्रगति की कोई एक सार्वभौमिक परिभाषा नहीं हो सकती। यह आधुनिकीकरण के उस दावे को सशक्त चुनौती देती है कि विज्ञान और तकनीक ही समस्त व्याधियों की एकमात्र औषधि है। उत्तर-आधुनिकीकरण में प्रत्येक लघु समूह की अपनी विशिष्ट गाथा, अपनी संस्कृति और अपना विकास का पृथक ढंग महत्वपूर्ण होता है। यह एक ही सांचे में सबको ढालने की सोच के विरुद्ध एक बौद्धिक विद्रोह है।

257. (B) विकास की सुविधाप्रदाता।
जब किसी समाज का ढांचा ऐसा हो कि वहां शांति व्याप्त रहे, सबको समय पर न्याय सुलभ हो और सुदृढ़ बुनियादी सुविधाएं उपलब्ध हों, तो वह विकास हेतु उर्वर भूमि तैयार करने जैसा है। ऐसी सामाजिक संरचना व्यापार और श्रम करने वाले निवासियों

रखे। यह एक त्रिकोणीय संतुलन है, जो यह सुनिश्चित करता है कि हम आज तो सुखद जीवन व्यतीत करें ही, साथ ही हमारी भावी पीढ़ियां भी एक अत्यंत खुशहाल और सुरक्षित विश्व में अपना प्रथम कदम रखें।

292. (A) सुविधा प्रदान
जिस समाज में निवासी अपनी श्रमशक्ति के बल पर निम्न स्तर से उच्च शिखर तक पहुँच सकते हैं, वह समाज उन्नति हेतु उर्वर भूमि के समान है। ऐसी सामाजिक संरचना प्रत्येक नागरिक को महान स्वप्न देखने और उन्हें पूर्ण करने का साहस प्रदान करती है। यहाँ किसी का मार्ग उसके जन्म या जाति के नाम पर अवरुद्ध नहीं किया जाता। जब प्रतिभा को आगे बढ़ने का पूर्ण अवसर प्राप्त होता है, तो संपूर्ण राष्ट्र की उत्पादकता और ऊर्जा संवर्धित हो जाती है। ऐसी लचीली व्यवस्था ही आधुनिक विश्व में किसी भी राष्ट्र की आर्थिक और सामाजिक सफलता की सर्वाधिक बड़ी और विश्वसनीय गारंटी होती है।

293. (C) कथन I सत्य है, लेकिन कथन II असत्य है।
मैक्स वेबर का सर्वाधिक महत्वपूर्ण योगदान यही था कि उन्होंने स्पष्ट किया कि संपदा स्वतः पूंजीवाद नहीं लाती। उन्होंने केल्विनवादी सिद्धांतों के माध्यम से यह प्रमाणित किया कि किस प्रकार धार्मिक विश्वासों ने निवासियों के मानस में बचत और निवेश का एक नवीन उत्साह पैदा किया। वेबर इस विचार के विरुद्ध थे कि केवल आर्थिक कारण ही इतिहास को परिवर्तित करते हैं। उनका संपूर्ण कार्य यही स्पष्ट करने में व्यतीत हुआ कि मनुष्य के विचार, उसके संस्कार और उसकी संस्कृति आर्थिक ढांचों को निर्मित करने और उन्हें परिवर्तित करने में सर्वाधिक निर्णायक भूमिका का निर्वहन करते हैं।

294. (C) आर्थिक वैश्वीकरण
आज के विश्व में संपदा किसी एक राष्ट्र की भौगोलिक सीमा में आबद्ध नहीं है। आधुनिक सूचना तकनीक के माध्यम से एक क्षण में विपुल धन एक राष्ट्र से दूसरे राष्ट्र तक पहुँच जाता है। यह आर्थिक वैश्वीकरण का सर्वाधिक तीव्र और प्रभावशाली स्वरूप है। इससे संपूर्ण विश्व की अर्थव्यवस्थाएं एक-दूसरे से इस प्रकार जुड़ गई हैं कि यदि एक राष्ट्र में आर्थिक मंदी आती है, तो उसका प्रतिकूल प्रभाव संपूर्ण विश्व पर अनुभव होता है। यह एक एकीकृत वैश्विक बाजार का निर्माण है जहाँ पूंजी और निवेश बिना किसी अवरोध के संपूर्ण विश्व का संचरण करते हैं और विकास की गति सुनिश्चित करते हैं।

295. (B) एक समुदाय में सामाजिक एकजुटता और विश्वास का स्तर।
सामाजिक विकास का वास्तविक कोष मुद्राओं में नहीं, बल्कि निवासियों के बीच व्याप्त परस्पर विश्वास और सहयोग में निहित होता है। जब किसी समाज में निवासी एक-दूसरे पर विश्वास करते हैं और संकट के समय संगठित होते हैं, तो वहां अपराध न्यून होते हैं और व्यावसायिक गतिविधियां भी सुगम हो जाती हैं। इसे ही सामाजिक एकजुटता कहते हैं। सामाजिक विकास का विश्वास है कि भौतिक भवनों की उन्नति से अधिक आवश्यक मानवीय संबंधों की सुदृढ़ता और एक ऐसा भाईचारा निर्मित करना है जहाँ प्रत्येक नागरिक स्वयं को सुरक्षित और सम्मानित अनुभव करे। यही वास्तविक राष्ट्रशक्ति है।

296. (A) आधुनिकीकरण सिद्धांत
आधुनिकीकरण सिद्धांत का एक अत्यंत स्पष्ट और कठोर तर्क है: "यदि आप निर्धन हैं, तो इसका कारण आपकी अपनी प्राचीन जड़ आदतें और दकियानूसी चिंतन है।" यह सिद्धांत मानता है कि विकासशील राष्ट्रों की पारंपरिक संस्कृतियाँ ही उनकी उन्नति के मार्ग में अवरोध बनी हुई हैं। जब तक वे अपने प्राचीन रीति-रिवाजों और अतार्किक संस्थाओं को त्यागकर विकसित राष्ट्रों जैसा आधुनिक प्रशासनिक और सामाजिक ढांचा अंगीकार नहीं करते, तब तक वे पिछड़े ही रहेंगे। इस परिप्रेक्ष्य में विकास का तात्पर्य अपनी प्राचीन पहचान त्यागकर एक नवीन आधुनिक और वैज्ञानिक पहचान को पूर्णतः स्वीकार कर लेना है।

297. (B) विकास का उद्देश्य एक ऐसा वातावरण निर्मित करना है जिसमें लोग लंबे, स्वस्थ और रचनात्मक जीवन का आनंद ले सकें।
मानव विकास का दृष्टिकोण अत्यंत गंभीर और मानवीय है। यह स्थापित करता है कि राष्ट्र की वास्तविक सफलता इस तथ्य में नहीं है कि उसका राजकीय कोष कितना विस्तृत है, बल्कि इस तथ्य में है कि उसके नागरिक कितने प्रसन्न और सक्षम हैं। विकास का वास्तविक ध्येय एक ऐसी दुनिया निर्मित करना है जहाँ किसी बालक को शिक्षा हेतु न तरसना पड़े, कोई व्याधि के कारण असमय कालकवलित न हो और प्रत्येक मनुष्य को अपनी अंतर्निहित प्रतिभा प्रदर्शित करने का पूर्ण अवसर सुलभ हो। यह मनुष्यों को उन्नति का केंद्र स्वीकार करता है और उनकी सर्वांगीण खुशहाली को ही प्रगति मानता है।

298. (A) A and R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
यह विकास का एक कड़वा सत्य है कि उन्नति का प्रतिफल सबको समान रूप से प्राप्त नहीं होता। अक्सर जब नवीन औद्योगिक इकाइयां स्थापित होती हैं या वृहत परियोजनाएं आती हैं, तो उनका सर्वाधिक लाभ उन निवासियों को प्राप्त होता है जिनके पास पूर्व से संपदा, शिक्षा और राजनीतिक पहुँच होती है। निर्धन और अशिक्षित निवासी अक्सर इस प्रतिस्पर्धा में और भी अधिक पीछे छूट जाते हैं। इस प्रकार, विकास ही समाज में अमीरी और गरीबी की एक नवीन और गहन खाई निर्मित कर देता है। इसलिए उन्नति के साथ-साथ सामाजिक न्याय की चिंता करना भी राष्ट्र हेतु पूर्णतः अनिवार्य है।

299. (B) विकास के सहायक के रूप में संस्कृति।
जिस समाज में यह संस्कार प्रदान किया जाता है कि "आज की बचत आगामी कल का आधार है" और जहाँ परिश्रम की कमाई को पुनः व्यापार में निवेश करना गौरव का विषय स्वीकार किया जाता है, वहां विकास स्वतः तीव्र गति से अग्रसर होता है। ऐसी संस्कृति भविष्य के प्रति एक सकारात्मक दृष्टिकोण उत्पन्न करती है और निवासियों को दीर्घकालिक निवेश हेतु निरंतर प्रेरित करती है। ये सूक्ष्म सांस्कृतिक मूल्य ही वह ऊर्जा हैं जो किसी भी राष्ट्र की आर्थिक गति को शक्ति प्रदान करते हैं। अतः, सकारात्मक चिंतन और भावी सुरक्षा की चिंता करने वाले संस्कार ही तरक्की के श्रेष्ठ सहयोगी होते हैं।

Downloaded from www.pdf.tube

266. (D) आशावाद की व्यक्तिगत भावना
सामाजिक संरचना उन स्थापित नियमों, संस्थाओं और पदानुक्रमों को कहते हैं जो संपूर्ण समाज को एक विशिष्ट आकार प्रदान करते हैं, जैसे हमारी विधिक व्यवस्था, शिक्षा प्रणाली या आर्थिक श्रेणियां। ये तत्व हमारे व्यक्तिगत नियंत्रण से परे होते हैं और हमारे सामाजिक व्यवहार को प्रभावित करते हैं। इसके विपरीत, आशावाद व्यक्ति के अपने मानस की एक विशिष्ट भावना या उसका स्वभाव है। यह समाज का बाह्य ढांचा नहीं बल्कि एक व्यक्तिगत मानसिक अवस्था है। संरचना बाह्य होती है जो सबको प्रभावित करती है, जबकि भावना आंतरिक होती है जो व्यक्ति-व्यक्ति पर निर्भर करती है।

267. (B) वैश्वीकरण
वैश्वीकरण का तात्पर्य केवल विदेशी निगमों का आगमन नहीं है, बल्कि स्थानीय संस्कृति का विश्व भर में प्रसार भी है। योग का विश्व भर में लोकप्रिय होना इस तथ्य का प्रमाण है कि आज के काल में विचार और जीवन शैलियाँ भौगोलिक सीमाओं को स्वीकार नहीं करतीं। सूचना तकनीक और वैश्विक संपर्क ने विश्व के विभिन्न कोनों की श्रेष्ठ वस्तुओं को साझा करना सुगम बना दिया है। यह एक सांस्कृतिक प्रवाह है जहाँ ज्ञान और परंपराएं अब किसी एक राष्ट्र की व्यक्तिगत संपदा नहीं रह गई हैं, बल्कि वे संपूर्ण मानवता की साझा विरासत बन गई हैं, जो परस्पर जुड़ाव का प्रतीक है।

268. (D) धन का भव्य और विशिष्ट उपभोग
मैक्स वेबर ने आधुनिक पूंजीवाद के विषय में एक अत्यंत रोचक तथ्य उद्घाटित किया था। उन्होंने कहा था कि वास्तविक पूंजीपति वह नहीं है जो संपदा का अपव्यय करता है, बल्कि वह है जो संपदा बचाकर उसे पुनः व्यवसाय में निवेश करता है। पूंजीवाद की भावना में संयम, सादगी और कठोर अनुशासन सर्वोपरि थे। प्रदर्शन हेतु विलासिता पर धन व्यय करना वेबर की दृष्टि में सामंती जड़ आदत थी, जो पूंजी संचय में बाधा डालती है। आधुनिक उन्नति की नींव ही इस तथ्य पर आधारित है कि हम आज अपनी फिजूलखर्ची पर नियंत्रण स्थापित करें ताकि आगामी कल उज्ज्वल हो सके।

269. (B) सामाजिक विकास
जब हम समाज के भीतर परस्पर विश्वास करना और सामूहिक सहयोग से कार्य करना सीखते हैं, तो हम वास्तव में सामाजिक विकास के मार्ग पर अग्रसर होते हैं। यह विकास भौतिक भवनों से नहीं, बल्कि मानवीय रिश्तों की सुदृढ़ता से उदित होता है। जब निवासियों के बीच विश्वास व्याप्त होता है, तो समाज सुरक्षित अनुभव करता है और व्यापार भी तीव्र गति से पल्लवित होता है। ऐसी नीतियां जो समाज के विखंडन को रोककर उसे एक सूत्र में आबद्ध करती हैं, वे ही किसी राष्ट्र को आंतरिक रूप से सशक्त बनाती हैं। बिना सामाजिक एकजुटता के, कोई भी आर्थिक उन्नति स्थायी नहीं रह सकती।

270. (A) P-3, Q-4, R-1, S-2
आर्थिक संवृद्धि का संपूर्ण बल केवल मुद्राओं और उत्पादन के आंकड़ों पर केंद्रित होता है। मानव विकास निवासियों की बुनियादी आवश्यकताओं—जैसे दीर्घायु और शिक्षा—पर विशेष ध्यान प्रदान करता है। सामाजिक विकास का आदर्श एक ऐसा समाज है जहाँ समस्त नागरिकों को न्याय और समानता का अधिकार प्राप्त हो। सतत विकास इस तथ्य की चिंता करता है कि हमारी उन्नति पर्यावरण को क्षति न पहुँचाए और भावी पीढ़ियों के उपयोग हेतु भी संसाधन अवशेष रहें। ये चारों दृष्टिकोण मिलकर हमें बोध कराते हैं कि विकास का वास्तविक अर्थ अत्यंत गहन और चारों दिशाओं में फैला हुआ है।

271. (A) आधुनिकीकरण सिद्धांत
आधुनिकीकरण सिद्धांत का एक अत्यंत सुदृढ़ दावा है जिसे अभिसरण का विचार कहते हैं। यह स्वीकार करता है कि औद्योगिकीकरण की अपनी एक विशिष्ट शक्ति होती है जो विश्व के समस्त समाजों को धीरे-धीरे एक समान बना देती है। चाहे कोई भी राष्ट्र हो, यदि वह आधुनिक बनना चाहता है, तो उसे वही लोकतांत्रिक संस्थाएं, वही वैज्ञानिक दृष्टिकोण और वही शहरी जीवन पद्धति अपनानी होगी जो विकसित राष्ट्रों में विद्यमान है। यह सिद्धांत मानता है कि अंततः संपूर्ण विश्व एक ही आधुनिक सांचे में ढल जाएगा और समस्त भिन्नताएं कालान्तर में पूर्णतः समाप्त हो जाएंगी।

272. (B) सामाजिक-आर्थिक विषमताएं
यह विकास का एक वृहत विरोधाभास है कि औसत आंकड़े तो श्रेष्ठ प्रतीत होते हैं, लेकिन वास्तविकता में निर्धन और अधिक निर्धन हो जाता है। जब विकास की नीतियां केवल संपन्न नगरों या समृद्ध वर्गों को ध्यान में रखकर निर्मित की जाती हैं, तो वे समाज के अंतिम पायदान पर खड़े व्यक्ति को और भी अधिक पीछे धकेल देती हैं। इसे सामाजिक-आर्थिक विषमता का संवर्धन कहते हैं। यदि उन्नति का अर्थ केवल धनिकों की संपदा संवर्धित करना है और निर्धनों के भाग में केवल प्रदूषण अवशेष है, तो वह विकास समाज हेतु एक घातक व्याधि के समान है, जो अशांति उत्पन्न करेगा।

273. (B) कथन I और कथन II दोनों असत्य हैं।
वैश्वीकरण और पश्चिमीकरण कोई लघु या एकपक्षीय घटनाएँ नहीं हैं। वैश्वीकरण में केवल मुद्रा का प्रवाह नहीं होता, बल्कि इसके साथ नवीन विचार, संगीत, राजनीति और यहाँ तक कि खान-पान भी संपूर्ण विश्व में फैलता है। इसी प्रकार, पश्चिमीकरण केवल राजनीतिक सीमाओं तक ही सीमित नहीं है; यह हमारे पहनावे, हमारे चिंतन और हमारे पारिवारिक संबंधों तक को मौलिक रूप से परिवर्तित कर देता है। ये दोनों ही अत्यंत गहन और बहुआयामी बदलाव हैं जो हमारे जीवन के प्रत्येक पक्ष—आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक—को गहराई से प्रभावित करते हैं।

274. (A) विकास में सहायक।
जिस समाज में विज्ञान और आलोचनात्मक चिंतन की पूर्ण स्वतंत्रता होती है, वह समाज उन्नति की प्रतिस्पर्धा में सर्वाधिक अग्रणी रहता है। ऐसी संस्कृति नवीन आविष्कारों को जन्म देती है और प्राचीन, अनुपयोगी आदतों को त्यागने का साहस प्रदर्शित करती है। जब लोग वैज्ञानिकों का सम्मान करते हैं, तो वे अंधविश्वास के तिमिर से बाहर निकलकर तर्क के

NODIA

प्रकाश में संचरण करते हैं। यह मानसिकता न केवल नवीन तकनीक सृजित करती है, बल्कि समाज की प्रत्येक समस्या का विवेकपूर्ण समाधान भी खोजती है। ऐसी जागृत संस्कृति ही किसी भी राष्ट्र के विकास का वास्तविक आधार है।

275. (B) 3, 1, 2
समाजों का विकास एक विशिष्ट ऐतिहासिक क्रम में घटित होता है। सर्वप्रथम कृषि समाज का उदय होता है जहाँ निवासी केवल उत्तरजीविता हेतु संघर्ष करते हैं और प्राचीन परंपराओं का निर्वहन करते हैं। तत्पश्चात औद्योगिक युग आता है जहाँ सबका ध्यान संपदा अर्जित करने और यंत्र स्थापित करने पर केंद्रित होता है। अंततः वह समाज उदित होता है जो इतना समृद्ध हो चुका है कि उसे अब केवल उदरपूर्ति की चिंता नहीं है। वहां निवासी आत्म-सम्मान, व्यक्तिगत स्वतंत्रता और जीवन के आनंद को सर्वाधिक महत्व प्रदान करते हैं। यह मानवीय आवश्यकताओं के उत्थान की कहानी है।

276. (B) तर्कसंगत-कानूनी और नौकरशाही।
मैक्स वेबर के अनुसार, समाज का आधुनिक होना उसकी सत्ता के स्वरूप परिवर्तन से ज्ञात होता है। प्राचीन काल में लोग किसी अधिपति या जादुई व्यक्तित्व के पीछे चलते थे। लेकिन आधुनिक समाज में सत्ता कानून और नियमों में निहित होती है। अब कार्य इसलिए संपन्न होता है क्योंकि वह विधिक नियम है, न कि इसलिए कि किसी ने आज्ञा दी है। इस व्यवस्था को तर्कसंगत-कानूनी नौकरशाही कहते हैं, जहाँ प्रत्येक निर्णय विवेकपूर्ण विश्लेषण और योग्यता के आधार पर लिया जाता है। यही वह शक्ति है जो आधुनिक राष्ट्रों को व्यवस्थित और अत्यंत शक्तिशाली बनाती है।

277. (A) अवरोधक
विकास हेतु समस्त नागरिकों को समानता का अवसर प्राप्त होना पूर्णतः अनिवार्य है। लेकिन जब समाज का ढांचा ऐसा हो कि वह किसी विशिष्ट समूह या जाति के बालकों को शैक्षणिक संस्थानों में प्रवेश से रोके या उन्हें श्रेष्ठ व्यावसायिक अवसर प्रदान न करे, तो वह अवरोधक के रूप में कार्य करता है। इससे समाज की वृहत प्रतिभा बिना उपयोग के ही विनष्ट हो जाती है। यह न केवल उन निवासियों के साथ अन्याय है, बल्कि संपूर्ण राष्ट्र की सामूहिक हानि है क्योंकि कोई भी राष्ट्र अपनी एक वृहत आबादी को पीछे छोड़कर कभी विकसित या महान नहीं बन सकता।

278. (D) सतत विकास
सतत विकास वह एकमात्र विचारधारा है जो हमें यह सचेत करती है कि हमारी इस वसुंधरा की अपनी एक सहनशीलता की सीमा है। हम अनियंत्रित वनों का विनाश करके या वायु को विषैला बनाकर सदैव उन्नति नहीं कर सकते। यह दृष्टिकोण हमें स्मरण कराता है कि विकास का तात्पर्य प्रकृति को विनष्ट करना नहीं, बल्कि उसे सहेजना है। यह संसाधनों के ऐसे विवेकपूर्ण उपयोग की चर्चा करता है जिससे आज की आवश्यकताएं भी पूर्ण हों और भविष्य में हमारी संतानों हेतु भी एक सुरक्षित और सुंदर विश्व अवशेष रहे। यह प्रकृति और मनुष्य के बीच सामंजस्य का सूत्र है।

279. (C) विकासशील राष्ट्र के आंतरिक कारकों का विश्लेषण करना।
वेबर और मिर्डल जैसे उदारवादी विद्वान स्वीकार करते हैं कि किसी राष्ट्र का भविष्य उसके अपने प्रयत्नों पर आश्रित है। उनका तर्क है कि यदि कोई राष्ट्र निर्धन है, तो उसे बाह्य शक्तियों को दोष देने के स्थान पर अपने भीतर के दोषों का विश्लेषण करना चाहिए। क्या वहां की संस्कृति में आलस्य या भाग्यवादिता का प्रभाव है? क्या वहां का प्रशासनिक ढांचा भ्रष्ट है? क्या वहां नियम प्रभावी ढंग से लागू नहीं होते? उनके अनुसार, जब तक कोई समाज अपनी इन आंतरिक निर्बलताओं को दूर नहीं करता, तब तक कोई भी बाह्य शक्ति उसे विकसित नहीं बना सकती।

280. (B) लोगों की क्षमताएं और विकल्प।
मानव विकास के परिप्रेक्ष्य में विकास का तात्पर्य गगनचुंबी अट्टालिकाएं नहीं, बल्कि सक्षम और सुशिक्षित मनुष्य हैं। यदि निवासी स्वस्थ हैं, उनके पास ज्ञान का भंडार है और वे जो चाहे बनने हेतु पूर्णतः स्वतंत्र हैं, तभी वह राष्ट्र वास्तविक रूप में विकसित स्वीकार किया जाएगा। यह दृष्टिकोण मानता है कि मनुष्य को उन्नति का साधन नहीं, बल्कि उसका एकमात्र साध्य होना चाहिए। वास्तविक सफलता इस तथ्य में निहित है कि एक सामान्य नागरिक के पास अपने जीवन को श्रेष्ठ बनाने हेतु कितने मार्ग उपलब्ध हैं। जहाँ विकल्प विस्तृत होते हैं, वहीं विकास होता है।

281. (C) विकास एक ऐसी प्रक्रिया है जहाँ आर्थिक और गैर-आर्थिक कारक संचयी कारणता में आबद्ध होते हैं।
गुन्नार मिर्डल ने यह अत्यंत महत्वपूर्ण तथ्य प्रतिपादित किया था कि विकास को हम पृथक खंडों में नहीं देख सकते। संपदा, समाज, रीति-रिवाज और राजनीति—ये समस्त आयाम एक-दूसरे से इतनी गहराई से आबद्ध हैं कि एक में परिवर्तन होने पर अन्य समस्त आयाम प्रभावित होते हैं। इसे उन्होंने संचयी कारणता कहा। यदि लोग निर्धन हैं, तो उनका स्वास्थ्य प्रतिकूल होगा, जिससे वे श्रम नहीं कर पाएंगे और इससे वे और अधिक निर्धन हो जाएंगे। यह एक ऐसा दुष्चक्र है जिसमें सब कुछ एक-दूसरे को प्रभावित करता है। अतः उन्नति हेतु इन समस्त मोर्चों पर सुधार अनिवार्य है।

282. (B) समाज में प्रतिरूपित सामाजिक व्यवस्थाएँ जो व्यक्तियों की क्रियाओं को आकार देती हैं।
सामाजिक संरचना एक अदृश्य ढांचे के समान है जिसमें हम समस्त निवासी निवास करते हैं। यह उन नियमों, संस्थाओं और वर्ग-पदानुक्रमों का एक जटिल जाल है जो हमें बोध कराते हैं कि हमें किस प्रकार आचरण करना है और हमारे पास उन्नति के क्या अवसर उपलब्ध हैं। हम अपनी व्यक्तिगत इच्छा से समस्त कार्य नहीं कर सकते; समाज का यह ढांचा हमारी पसंद और हमारे भविष्य को गहराई से प्रभावित करता है। जिस प्रकार एक भवन का मानचित्र उसकी सुदृढ़ता निर्धारित करता है, वैसे ही सामाजिक संरचना समाज की स्थिरता और उसकी प्रगति की दिशा निर्धारित करती है।

Click Here to Buy book on Amazon

283. (B) सांस्कृतिक आदान-प्रदान को रोकने के लिए राष्ट्रीय सीमाओं को सुदृढ़ करना।
वैश्वीकरण का वास्तविक तात्पर्य ही परस्पर खुलापन और जुड़ाव सुनिश्चित करना है। यह भौगोलिक सीमाओं को सुदृढ़ करने के स्थान पर उन्हें संकुचित और शिथिल करता है ताकि व्यापार, निवासी और नवीन विचार सरलता से एक राष्ट्र से दूसरे राष्ट्र तक पहुँच सकें। आज के काल में कोई भी राष्ट्र स्वयं को संपूर्ण विश्व से पूर्णतः पृथक करके अस्तित्व में नहीं रह सकता। जो राष्ट्र अपनी सीमाओं को पूर्णतः अवरुद्ध करने का प्रयास करते हैं, वे वास्तव में वैश्वीकरण की धारा के विपरीत संचरण करते हैं। वैश्वीकरण परस्पर निर्भरता का एक ऐसा उत्सव है जहाँ संपूर्ण विश्व एक ही मंच पर है।

284. (D) I, II और III
ये तीनों कथन विकास की एक पूर्ण और आधुनिक परिभाषा प्रस्तुत करते हैं। आर्थिक संवृद्धि हमें बोध कराती है कि राष्ट्र के कोष में कितनी संपदा संवर्धित हुई है। मानव विकास हमें प्रदर्शित करता है कि उस संपदा ने निवासियों के जीवन और उनकी व्यक्तिगत स्वतंत्रता को किस सीमा तक परिष्कृत किया है। और अंत में, सतत विकास हमें स्मरण कराता है कि हमें अपनी भावी पीढ़ियों के नैसर्गिक अधिकारों का भी पूर्ण ध्यान रखना है। ये तीनों आयाम मिलकर एक ऐसे मार्ग का निर्माण करते हैं जो न केवल आज हेतु हितकारी हो, बल्कि आगामी भविष्य हेतु भी सुरक्षित हो।

285. (A) A and R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
आधुनिकीकरण सिद्धांत समाजों को एक जीवंत प्राणी के समान देखता है जो समय के साथ परिपक्व और अधिक जटिल होता है। इसके अनुसार, पारंपरिक समाज अपनी शैशवावस्था में हैं जहाँ वे प्राचीन गाथाओं और अंधविश्वासों में आबद्ध हैं। जैसे-जैसे वे विज्ञान और नवीन तकनीक को अंगीकार करते हैं, वे विकास के विभिन्न ऐतिहासिक चरणों से संचरण करते हुए आधुनिक बनते हैं। यह एक ऐसी जीवन यात्रा है जिसमें प्रत्येक समाज को पिछड़ेपन से आधुनिकता की ओर निरंतर कदम-दर-कदम बढ़ना होता है। यह दृष्टिकोण विकास को एक प्राकृतिक और निरंतर चलने वाली उन्नति की प्रक्रिया मानता है।

286. (A) असमानता
सामाजिक-आर्थिक विषमता शब्दावली का प्रत्यक्ष और एकमात्र अर्थ समाज में व्याप्त गहन असमानता है। यह वह विषम स्थिति है जहाँ समाज के कुछ मुट्ठी भर निवासियों के पास समस्त सुख-सुविधाएं—संपदा, शक्ति और प्रतिष्ठा—उपलब्ध हैं, जबकि एक वृहत जनसमूह बुनियादी आवश्यकताओं हेतु भी निरंतर संघर्ष कर रहा है। यह विषमता न केवल आर्थिक रूप से हानिकारक है, बल्कि यह सामाजिक विश्वास को भी विनष्ट करती है। उन्नति के बड़े दावों के मध्य यदि यह खाई विस्तृत हो रही है, तो इसका स्पष्ट अर्थ है कि विकास का प्रतिफल सबको समान रूप से प्राप्त नहीं हो रहा है।

287. (B) पूंजीवादी विकास से जुड़े प्रयास में एक बाधा।
मैक्स वेबर का विश्वास था कि यदि कोई समाज यह स्वीकार कर ले कि उसकी निर्धनता या समृद्धि उसके विगत जन्मों का फल है, तो वह अपनी वर्तमान स्थिति परिवर्तित करने का पुरुषार्थ ही नहीं करेगा। यह भाग्यवादिता निवासियों की श्रम करने की इच्छाशक्ति को विनष्ट कर देती है। पूंजीवाद हेतु एक ऐसी सोच अनिवार्य है जो आज के कठोर श्रम से आगामी कल को परिवर्तित करने में पूर्ण विश्वास रखती हो। जहाँ लोग अपनी नियति के समक्ष पराजय स्वीकार कर लेते हैं, वहां न तो कोई नवीन आविष्कार होता है और न ही कोई जोखिम लेकर वृहत व्यापार स्थापित करता है।

288. (C) उत्तर-आधुनिकीकरण
उत्तर-आधुनिकीकरण वह विचारधारा है जो स्थापित करती है कि प्रत्येक समाज हेतु एक ही मार्ग कभी सफल नहीं हो सकता। यह आधुनिकीकरण के उस दावे पर संदेह करती है कि केवल पश्चिमी मार्ग ही सर्वश्रेष्ठ है। यह विचारधारा स्वीकार करती है कि विश्व अत्यंत विविध है, और प्रत्येक समाज की अपनी विशिष्ट आवश्यकताएं और अपनी मौलिक संस्कृति होती है। इसलिए विकास का पथ भी प्रत्येक समाज का अपना और पृथक होना चाहिए। यह सांस्कृतिक विविधता का सम्मान करने और थोपी गई उन्नति के विरुद्ध अपनी मौलिक पहचान सुरक्षित रखने की एक सशक्त और बुलंद वैश्विक आवाज है।

289. (D) पश्चिमीकरण
पश्चिमीकरण एक ऐसी प्रक्रिया है जिसमें कोई समाज अपनी सांस्कृतिक जड़ों को उपेक्षित करके पश्चिमी राष्ट्रों की नकल करने लगता है। चाहे वह हमारी भाषा हो, हमारी वेशभूषा हो या हमारी जीवन शैली—जब हम यह स्वीकार कर लेते हैं कि पश्चिम की प्रत्येक वस्तु श्रेष्ठ है और उसे अपनाना ही सभ्य होने का प्रमाण है, तो हम पश्चिमीकरण के प्रभाव में होते हैं। यह आधुनिकीकरण से पृथक है क्योंकि आधुनिकीकरण में वैज्ञानिक चिंतन का उदय होता है, जबकि पश्चिमीकरण में केवल बाह्य स्वरूप और अन्य की संस्कृति का अंधानुकरण होता है, जो विवादों को जन्म देता है।

290. (C) नीति कार्यान्वयन और कानून प्रवर्तन
गुन्नार मिर्डल के मृदु राज्य का सर्वाधिक दुःखद पक्ष यह है कि वहां शासन केवल कागजों पर ही प्रभावी प्रतीत होता है। कानून तो अत्यंत श्रेष्ठ निर्मित किए जाते हैं, लेकिन उन्हें धरातल पर क्रियान्वित करने वाला कोई उत्तरदायी तंत्र नहीं होता। यदि कोई प्रभावशाली निवासी कानून का उल्लंघन करता है, तो व्यवस्था उसे दंडित करने के स्थान पर नतमस्तक हो जाती है। इस निर्बलता के कारण भ्रष्टाचार निरंतर फलता-फूलता है और सामान्य नागरिक का विश्वास शासन व्यवस्था से पूर्णतः उठ जाता है। जब तक राज्य अपने नियमों को कड़ाई से लागू नहीं करता, तब तक विकास सफल नहीं हो सकता।

291. (D) सतत विकास
सतत विकास आज के काल की सर्वाधिक समावेशी और वृहत अवधारणा है। यह केवल एक दिशा में नहीं देखती, बल्कि यह संपदा, मनुष्य और संपूर्ण पृथ्वी को एक साथ संरक्षित करने का प्रयास करती है। यह स्वीकार करती है कि उन्नति वही है जो बाजार में लाभ लाए, समाज में सबको समानता का अधिकार प्रदान करे और हमारे वनों एवं नदियों को भी पूर्णतः सुरक्षित

Downloaded from www.pdf.tube

के माध्यम से बताया कि क्यों कुछ राष्ट्रों में विकास की समस्त योजनाएं विफल हो जाती हैं। मानव विकास का मुख्य केंद्र मानवीय क्षमताओं को संवर्धित करना है, ताकि निवासी स्वतंत्र जीवन व्यतीत कर सकें। सतत विकास अंतर-पीढ़ीगत समानता की चर्चा करता है ताकि भावी संतानों हेतु भी पृथ्वी सुरक्षित बनी रहे। ये चारों विचार हमें बोध कराते हैं कि विकास एक ऐसी बहुआयामी यात्रा है जिसमें संस्कृति, शासन, मनुष्य और प्रकृति—सबका समान महत्व है।

241. (A) आधुनिकीकरण सिद्धांत
आधुनिकीकरण सिद्धांत की मूल धारणा यह है कि परंपरा और आधुनिकता एक-दूसरे के धुर विरोधी हैं। इसके अनुसार, जब तक समाज अपने पुराने रीति-रिवाजों, अंधविश्वासों और पारंपरिक सामाजिक बंधनों को नहीं विनष्ट करता, तब तक वह वैज्ञानिक और औद्योगिक प्रगति प्राप्त नहीं कर सकता। यह सिद्धांत विकास को पुरानी पहचानों को त्यागकर एक नवीन, तर्कसंगत और पश्चिमी जैसी पहचान स्वीकार करने की प्रक्रिया के रूप में देखता है। इसके लिए पुराने मूल्यों का बलिदान देकर नवीन आधुनिक मूल्यों को अपनाना ही प्रगति की अनिवार्य शर्त स्वीकार की जाती है।

242. (B) विकास को रोकने वाला एक मृदु राज्य।
जब किसी राष्ट्र में न्यायपालिका और पुलिस ही निष्पक्ष नहीं रह पाती, तो वहां कानून का नहीं बल्कि बाहुबल का शासन स्थापित होता है। गुन्नार मिर्डल ने इसे ही मृदु राज्य की संज्ञा दी है, जहाँ नीतियां केवल प्रदर्शन हेतु होती हैं और प्रभावशाली निवासी नियमों की अवहेलना करते हैं। ऐसी स्थिति में न तो कोई नवीन निवेश करना चाहता है और न ही सामान्य नागरिक सुरक्षित अनुभव करता है। यह प्रशासनिक और नैतिक पतन ही किसी राष्ट्र के पिछड़ेपन का सर्वाधिक प्रमुख कारण है। बिना एक निष्पक्ष और सुदृढ़ शासन के कोई भी राष्ट्र उन्नति नहीं कर सकता।

243. (B) आर्थिक, सामाजिक, पर्यावरणीय
सतत विकास का त्रि-स्तरीय केंद्र एक ऐसा संतुलन है जिसके तीन मुख्य भाग हैं: आर्थिक, सामाजिक और पर्यावरणीय। यदि हम केवल धन अर्जित करने पर ध्यान केंद्रित करें और पर्यावरण को विनष्ट करें या समाज में अन्याय व्याप्त होने दें, तो वह विकास स्थायी नहीं रहेगा। सच्ची प्रगति वही है जिसमें व्यवसाय भी पल्लवित हो, समाज में सबको समानता का अवसर प्राप्त हो और हमारी प्रकृति भी सुरक्षित बनी रहे। इन तीनों आयामों के बीच का यह गहन संतुलन ही वह मार्ग है जो संपूर्ण विश्व को एक सुखद और सुरक्षित भविष्य की ओर सफलतापूर्वक ले जा सकता है।

244. (B) मानव जीवन की गुणवत्ता
आर्थिक संवृद्धि केवल यह प्रदर्शित करती है कि हमारे पास संसाधनों की कितनी मात्रा है, लेकिन मानव विकास यह स्पष्ट करता है कि हम किस प्रकार का जीवन व्यतीत कर रहे हैं। यह मात्रा की प्रतिस्पर्धा से हटकर जीवन के गुणात्मक आयामों पर ध्यान केंद्रित करता है। क्या निवासी स्वस्थ हैं? क्या वे शिक्षित हैं? क्या उन्हें अपनी अभिव्यक्ति की पूर्ण स्वतंत्रता है? ये ही वे मूलभूत प्रश्न हैं जो मानव विकास को वास्तविक रूप में परिभाषित करते हैं। यह दृष्टिकोण मानता है कि यदि राष्ट्र के पास अत्यधिक धन है लेकिन निवासी दुखी हैं, तो उसे विकसित नहीं कहा जा सकता।

245. (A) A and R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
विकास कोई बाहरी चमत्कार नहीं है, बल्कि यह समाज की अपनी आंतरिक शक्ति और संरचना पर निर्भर करता है। सामाजिक संरचना वह ढांचा है जो शैक्षणिक संस्थानों और चिकित्सालयों के माध्यम से हमें आवश्यक सुविधाएं प्रदान करता है। वहीं संस्कृति वह आत्मा है जो हमें कार्य हेतु निरंतर प्रेरित करती है और हमारे मूल्यों को निर्धारित करती है। जब ये दोनों—सुदृढ़ संस्थाएं और सकारात्मक सांस्कृतिक मूल्य—परस्पर मिल जाते हैं, तभी कोई राष्ट्र वास्तविक तरक्की करता है। अतः किसी भी राष्ट्र का भाग्य उसकी अपनी आंतरिक सामाजिक और सांस्कृतिक सुदृढ़ता से ही निर्धारित होता है।

246. (C) वैश्वीकरण
वैश्वीकरण ने विश्व को इतना संकुचित बना दिया है कि अब कुछ शक्तिशाली भाषाएँ संपूर्ण विश्व पर प्रभावी हो गई हैं। सूचना तकनीक और वैश्विक व्यापार के दबाव के कारण निवासी अपनी मातृभाषा और स्थानीय बोलियों को विस्मृत करते जा रहे हैं। इसे सांस्कृतिक समरूपीकरण कहा जाता है, जहाँ संपूर्ण विश्व एक ही सांस्कृतिक रंग में रंगने का प्रयास कर रहा है। यह वैश्वीकरण का एक चिंताजनक सांस्कृतिक परिणाम है, जो हमारी भाषाई विविधता और सदियों प्राचीन पहचानों को मिटा रहा है। उन्नति के इस युग में हम अपनी सांस्कृतिक जड़ों से निरंतर दूर होते जा रहे हैं।

NODIA

247. (B) चक्रीय और संचयी कारणता की व्यवस्था में राज्य की भूमिका।
गुन्नार मिर्डल का उदारवादी दृष्टिकोण यह स्पष्ट करता है कि पिछड़ेपन का एक ऐसा दुष्चक्र विद्यमान होता है जो स्वतः विनष्ट नहीं होता। निर्धनता और पिछड़ापन निरंतर एक-दूसरे को जन्म देते रहते हैं। मिर्डल का विश्वास था कि इस दुष्चक्र को तोड़ने हेतु राज्य को अत्यंत सशक्त और सक्रिय भूमिका का निर्वहन करना होगा। सरकार को केवल मूकदर्शक नहीं बने रहना चाहिए, बल्कि उसे शिक्षा, स्वास्थ्य और बुनियादी ढांचे में वृहत निवेश करना चाहिए ताकि विकास की एक नवीन और सकारात्मक लहर उत्पन्न हो सके। राज्य की शक्ति ही समाज को उन्नति प्रदान कर सकती है।

248. (B) उत्तर-आधुनिकीकरण
उत्तर-आधुनिकीकरण उस समाज की अवस्था है जहाँ अब भौतिक उत्तरजीविता की चिंता समाप्त हो गई है। जब निवासियों के पास पर्याप्त भौतिक संपदा उपलब्ध हो जाती है, तो वे अब और अधिक यंत्रों या मुद्राओं के स्थान पर मानसिक शांति, आत्म-सम्मान और पर्यावरण की शुद्धता के विषय में विचार करने लगते हैं। इसे उत्तर-भौतिकवादी मूल्यों की ओर संक्रमण कहते हैं। अब विकास का तात्पर्य केवल कारखाने स्थापित करना नहीं, बल्कि एक ऐसा जीवन व्यतीत करना है जहाँ

300. (A) P-4, Q-2, R-1, S-3
विकास के मार्ग में चार वृहत अवरोध हैं जिन्हें पहचानना राष्ट्र हेतु अनिवार्य है। यदि पर्यावरण निरंतर दूषित हो रहा है, तो हम अपनी भविष्य की स्थिरता खो रहे हैं। यदि उन्नति की संपदा केवल कुछ विशिष्ट निवासियों तक संचित हो रही है, तो यह समाज के साथ एक वृहत विषमता है। यदि निवासी व्याधिग्रस्त और निरक्षर हैं, तो वह मानव विकास के प्रतिमानों की बहुत बड़ी पराजय है। और यदि शासन भ्रष्ट एवं निर्बल है, तो वह मृदु राज्य राष्ट्र को कभी उन्नति प्रदान नहीं कर सकता। ये चारों चुनौतियां स्पष्ट करती हैं कि विकास केवल संपदा अर्जित करना नहीं है।

www.nodia.in

Click Here to Buy book on Amazon

अध्याय 09
जनसंख्या एवं समाज

1. निम्नलिखित में से कौन माल्थस के जनसंख्या सिद्धांत को सबसे सटीक रूप से परिभाषित करता है?
(A) एक सिद्धांत जो यह प्रतिपादित करता है कि तकनीकी प्रगति सदैव जनसंख्या वृद्धि का समर्थन करेगी।
(B) एक सिद्धांत जिसके अनुसार जनसंख्या वृद्धि अंततः अकाल और रोग द्वारा नियंत्रित होगी।
(C) एक सिद्धांत जो यह सुझाव देता है कि जनसंख्या वृद्धि आर्थिक विकास की एक अनिवार्य शर्त है।
(D) एक सिद्धांत जो उच्च जन्म और मृत्यु दर से निम्न जन्म और मृत्यु दर की ओर होने वाले परिवर्तन का वर्णन करता है।

2. नीचे दिए गए दो कथनों को पढ़ें और सही विकल्प का चयन करें।
कथन I: जनसांख्यिकीय संक्रमण सिद्धांत जनसंख्या वृद्धि को समाज के तकनीकी विकास के स्तर से जोड़ता है।
कथन II: माल्थस का सिद्धांत मुख्य रूप से जनसंख्या को प्रभावित करने वाले सामाजिक-सांस्कृतिक कारकों पर केंद्रित है।
(A) कथन I और कथन II दोनों सत्य हैं।
(B) कथन I और कथन II दोनों असत्य हैं।
(C) कथन I सत्य है, लेकिन कथन II असत्य है।
(D) कथन I असत्य है, लेकिन कथन II सत्य है।

3. माल्थस के अनुसार, जनसंख्या वृद्धि को सीमित करने वाले दो प्रकार के अवरोध कौन से हैं?
(A) आर्थिक और सामाजिक अवरोध।
(B) प्राकृतिक और कृत्रिम अवरोध।
(C) सकारात्मक और निवारक अवरोध।
(D) जनसांख्यिकीय और पर्यावरणीय अवरोध।

4. जनसांख्यिकीय संक्रमण सिद्धांत की किस अवस्था की विशेषता उच्च जन्म दर और तेजी से घटती मृत्यु दर है, जिससे जनसंख्या विस्फोट होता है?
(A) अवस्था 1
(B) अवस्था 3
(C) अवस्था 4
(D) अवस्था 2

5. सूची I को सूची II के साथ सुमेलित करें और नीचे दिए गए कोड से सही उत्तर चुनें।
सूची I: माल्थस के सिद्धांत की अवधारणा
P. गुणोत्तर श्रेणी
Q. समांतर श्रेणी
R. सकारात्मक अवरोध
S. निवारक अवरोध
सूची II: विवरण
1. खाद्य आपूर्ति में वृद्धि
2. जनसंख्या में वृद्धि
3. अकाल, रोग, युद्ध
4. विलंब से विवाह, नैतिक संयम
कोड:
(A) P-2, Q-1, R-3, S-4
(B) P-1, Q-2, R-4, S-3
(C) P-2, Q-1, R-4, S-3
(D) P-1, Q-2, R-3, S-4

6. माल्थस के सिद्धांत में निम्नलिखित में से किसे 'निवारक अवरोध' नहीं माना जाता है?
(A) विलंब से विवाह
(B) अकाल
(C) नैतिक संयम
(D) ब्रह्मचर्य

NODIA

7. जनसांख्यिकीय संक्रमण सिद्धांत की अंतिम अवस्था की विशेषता निम्नलिखित में से क्या है?
(A) उच्च जन्म दर और उच्च मृत्यु दर।
(B) उच्च जन्म दर और निम्न मृत्यु दर।
(C) घटती जन्म दर और निम्न मृत्यु दर।
(D) निम्न जन्म दर और निम्न मृत्यु दर।

8. निम्नलिखित प्रश्न में दो कथन शामिल हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है। इन दोनों कथनों का परीक्षण करें और नीचे दिए गए कोड का उपयोग करके सही उत्तर चुनें।
अभिकथन (A): जनसांख्यिकीय संक्रमण सिद्धांत की अक्सर उसके यूरोपीय-केंद्रित पूर्वाग्रह के लिए आलोचना की जाती है।
कारण (R): यह सिद्धांत यूरोपीय देशों के अनुभव के आधार पर विकसित किया गया था और संभव है कि यह सभी विकासशील देशों के मार्ग को सटीक रूप से न दर्शाए।
(A) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सत्य हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सत्य है लेकिन R असत्य है।
(D) A असत्य है लेकिन R सत्य है।

9. जनसंख्या अध्ययन में 'रुग्णता' शब्द निम्नलिखित में से किसे संदर्भित करता है?
(A) जनसंख्या में मृत्यु की संख्या।
(B) जनसंख्या में पुरुषों और महिलाओं का अनुपात।
(C) जनसंख्या में रोग और अस्वस्थता की व्यापकता।
(D) लोगों का एक क्षेत्र से दूसरे क्षेत्र में गमन।

10. 1901 में पहली समकालिक जनगणना के समय भारत की अनुमानित जनसंख्या कितनी थी?
(A) लगभग 23.8 करोड़
(B) लगभग 15 करोड़
(C) लगभग 36.1 करोड़
(D) लगभग 43.9 करोड़

11. 1901 से भारत में जनसंख्या वृद्धि के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें।
(1) 1921-1951 की अवधि को अक्सर स्थिर जनसंख्या वृद्धि की अवधि के रूप में जाना जाता है।
(2) 1911-1921 के दशक में ऋणात्मक वृद्धि दर दर्ज की गई थी।
(3) 1951 के बाद, भारत ने तीव्र जनसंख्या विस्फोट के चरण का अनुभव किया।
उपरोक्त कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?
(A) केवल 1 और 2
(B) केवल 2 और 3
(C) केवल 1 और 3
(D) 1, 2, और 3

12. निम्नलिखित में से किसे भारत में तीव्र जनसंख्या वृद्धि के प्राथमिक कारण के रूप में पहचाना गया है?
(A) जन्म दर में तीव्र वृद्धि और मृत्यु दर में तीव्र वृद्धि।
(B) मृत्यु दर में भारी गिरावट जबकि जन्म दर उच्च बनी रही।
(C) देश से उत्प्रवास की उच्च दर।
(D) बड़े परिवारों को प्रोत्साहित करने वाली सरकारी नीति।

13. तीव्र जनसंख्या वृद्धि का आर्थिक प्रभाव निम्नलिखित में से कौन सा है?
(A) बचत और पूंजी निर्माण में वृद्धि।
(B) बेरोजगारी दर में कमी।
(C) भूमि और संसाधनों पर बढ़ता दबाव।
(D) सामाजिक आधारभूत संरचना की कम मांग।

14. जनसांख्यिकी में 'प्रजननता' की अवधारणा को सबसे सटीक रूप से परिभाषित किया गया है:
(A) गर्भ धारण करने या बच्चे उत्पन्न करने की शारीरिक क्षमता।
(B) प्रति 1,000 व्यक्तियों पर होने वाली मृत्यु की संख्या।
(C) जनसंख्या में रोग की घटना।
(D) जनसंख्या का वास्तविक पुनरुत्पादक प्रदर्शन।

15. भारत की जनसंख्या वृद्धि के परिणामों के संबंध में गलत कथन की पहचान करें।
(A) इसके परिणामस्वरूप प्राकृतिक संसाधनों की प्रति व्यक्ति उपलब्धता बढ़ती है।
(B) इससे स्वास्थ्य देखभाल और शिक्षा जैसी सार्वजनिक सेवाओं पर दबाव बढ़ता है।
(C) यह पर्यावरणीय अवनयन में योगदान दे सकता है।
(D) इससे अक्सर उच्च निर्भरता अनुपात उत्पन्न होता है।

16. कौन सी जनसांख्यिकीय अवधारणा एक निर्दिष्ट अंतराल के दौरान एक परिभाषित जनसंख्या में मृत्यु की आवृत्ति को मापती है?
(A) रुग्णता
(B) मृत्यु दर
(C) प्रजननता
(D) प्रवास

17. भारत के जनसांख्यिकीय इतिहास में उनके महत्व के आधार पर निम्नलिखित वर्षों को कालानुक्रमिक क्रम में व्यवस्थित करें।
1. महान विभाजक वर्ष
2. वह वर्ष जब भारत ने अपना राष्ट्रीय परिवार नियोजन कार्यक्रम शुरू किया
3. स्वतंत्र भारत की पहली जनगणना का वर्ष
4. वह वर्ष जब भारत की जनसंख्या 1 अरब के आंकड़े को पार कर गई
(A) 1, 3, 2, 4
(B) 1, 2, 3, 4
(C) 2, 1, 3, 4
(D) 3, 1, 2, 4

18. नीचे दिए गए दो कथनों को पढ़ें और सही विकल्प का चयन करें।
कथन I: जनसंख्या की आयु और लिंग संरचना के महत्वपूर्ण सामाजिक और आर्थिक परिणाम होते हैं।
कथन II: युवा व्यक्तियों के उच्च अनुपात वाली जनसंख्या में निर्भरता अनुपात कम होता है।
(A) कथन I और कथन II दोनों सत्य हैं।
(B) कथन I और कथन II दोनों असत्य हैं।
(C) कथन I सत्य है, लेकिन कथन II असत्य है।
(D) कथन I असत्य है, लेकिन कथन II सत्य है।

19. निम्नलिखित में से कौन प्रजननता का प्रत्यक्ष निर्धारक है?
(A) शहरीकरण का स्तर
(B) प्रति व्यक्ति आय
(C) प्रजनन आयु में विवाहित महिलाओं का अनुपात
(D) समग्र जनसंख्या की साक्षरता दर

20. निम्नलिखित प्रश्न में दो कथन शामिल हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है।

Downloaded from www.pdf.tube

(C) खनिज संसाधनों का भौगोलिक वितरण।
(D) श्रम शक्ति का आकार।

42. बाल मृत्यु दर किन आयु वर्ग के बच्चों की मृत्यु को संदर्भित करती है?
(A) 1 वर्ष और 5 वर्ष के बीच
(B) जन्म और 1 वर्ष के बीच
(C) 5 वर्ष और 10 वर्ष के बीच
(D) जन्म और 12 वर्ष के बीच

43. सूची I को सूची II के साथ सुमेलित करें और नीचे दिए गए कोड से सही उत्तर चुनें।
सूची I: भारत में जनसंख्या चरण
P. चरण I: स्थिर जनसंख्या
Q. चरण II: निरंतर वृद्धि
R. चरण III: जनसंख्या विस्फोट
S. चरण IV: धीमी होने के संकेतों के साथ उच्च वृद्धि
सूची II: अवधि
1. 1951-1981
2. 1921-1951
3. 1901-1921
4. 1981 के बाद
कोड:
(A) P-3, Q-2, R-1, S-4
(B) P-1, Q-2, R-3, S-4
(C) P-3, Q-1, R-2, S-4
(D) P-2, Q-3, R-4, S-1

44. यह विचार कि जनसंख्या वृद्धि नवाचार को प्रोत्साहित करके और एक बड़ा बाजार प्रदान करके विकास के लिए एक सकारात्मक कारक हो सकती है, किस दृष्टिकोण से सर्वाधिक मेल खाता है?
(A) माल्थसवादी दृष्टिकोण
(B) जनसंख्या एक मानव संसाधन के रूप में दृष्टिकोण
(C) जनसांख्यिकीय संक्रमण दृष्टिकोण
(D) जनसंख्या बाधा दृष्टिकोण

45. 2.1 की कुल प्रजनन दर को अक्सर 'प्रतिस्थापन स्तर की प्रजननता' कहा जाता है क्योंकि:
(A) यह सभी औद्योगिक देशों में पाई जाने वाली मानकीकृत औसत प्रजनन दर है।
(B) यह तत्काल जनसंख्या गिरावट को रोकने के लिए आवश्यक न्यूनतम प्रजनन दर है।
(C) यह वह स्तर है जहां प्रवास को छोड़कर, एक जनसंख्या पीढ़ियों के बीच स्वयं को प्रतिस्थापित करती है।
(D) यह किसी भी मानव जनसंख्या में संभव अधिकतम संधारणीय प्रजनन दर है।

46. निम्नलिखित प्रश्न में दो कथन शामिल हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है। इन दोनों कथनों का परीक्षण करें और नीचे दिए गए कोड का उपयोग करके सही उत्तर चुनें।
अभिकथन (A): पारंपरिक समाजों में संयुक्त परिवार प्रणाली अक्सर उच्च प्रजननता में योगदान देती है।
कारण (R): संयुक्त परिवार बच्चों के पालन-पोषण के लिए सामाजिक और आर्थिक सहायता प्रदान करता है, जिससे माता-पिता पर प्रत्यक्ष लागत और बोझ कम हो जाता है।
(A) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सत्य हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सत्य है लेकिन R असत्य है।
(D) A असत्य है लेकिन R सत्य है।

47. निर्धारक और प्रजननता पर उसके प्रभाव के गलत युग्म की पहचान करें।
(A) उच्च महिला शिक्षा - बढ़ी हुई प्रजननता
(B) विवाह के समय आयु में वृद्धि - घटी हुई प्रजननता
(C) उच्च शिशु मृत्यु दर - बढ़ी हुई प्रजननता
(D) गर्भनिरोधक का व्यापक उपयोग - घटी हुई प्रजननता

NODIA

48. भारत की जनसंख्या नीति, विशेष रूप से इसके प्रारंभिक या आक्रामक चरणों में, किससे जुड़ी एक प्रमुख समस्या या आलोचना रही है?
(A) इसकी पूर्ण अप्रभावीता।
(B) बलपूर्वक या दमनकारी उपायों पर इसकी अत्यधिक निर्भरता।
(C) इसका विशेष रूप से केवल महिला शिक्षा पर ध्यान केंद्रित करना।
(D) इसमें धन की कमी।

49. भारत में निम्नलिखित जनसांख्यिकीय घटनाओं को सही कालानुक्रमिक क्रम में व्यवस्थित करें।
1. राष्ट्रीय जनसंख्या नीति की घोषणा की गई।
2. "हम दो, हमारे दो" की अवधारणा को लोकप्रिय बनाया गया।
3. पहली पूर्ण जनगणना आयोजित की गई।
4. 79वें संविधान संशोधन विधेयक द्वारा लोकसभा सीटों को स्थिर करने का प्रयास किया गया।
(A) 3, 2, 4, 1
(B) 2, 3, 1, 4
(C) 3, 2, 1, 4
(D) 1, 3, 2, 4

50. माल्थसवादी ढांचे में, खाद्य आपूर्ति से अधिक जनसंख्या होने के परिणामस्वरूप होने वाला अकाल किसका उदाहरण है?
(A) सकारात्मक अवरोध
(B) निवारक अवरोध
(C) सामाजिक अवरोध
(D) राजनीतिक अवरोध

(D) व्यक्तियों का अपने प्राथमिक निवास से कार्यस्थल तक दैनिक आवागमन।

30. निम्नलिखित में से कौन मृत्यु दर का निर्धारक नहीं है?
(A) स्वास्थ्य देखभाल सुविधाओं की उपलब्धता।
(B) जनसंख्या की पोषण स्थिति।
(C) जनसंख्या की आयु संरचना।
(D) अशोधित जन्म दर।

31. भारत के जनसांख्यिकीय इतिहास में "महान विभाजक वर्ष" है:
(A) 1921
(B) 1901
(C) 1947
(D) 1951

32. निम्नलिखित प्रश्न में दो कथन शामिल हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है। इन दोनों कथनों का परीक्षण करें और नीचे दिए गए कोड का उपयोग करके सही उत्तर चुनें।
अभिकथन (A): उच्च महिला साक्षरता दर और निम्न प्रजनन दर के बीच गहरा संबंध है।
कारण (R): शिक्षित महिलाएं विलंब से विवाह करती हैं, उन्हें परिवार नियोजन का बेहतर ज्ञान होता है, और प्रजनन संबंधी निर्णय लेने में उनकी स्वायत्तता अधिक होती है।
(A) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सत्य हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सत्य है लेकिन R असत्य है।
(D) A असत्य है लेकिन R सत्य है।

33. निम्नलिखित में से कौन 'विकास के लिए बाधा के रूप में जनसंख्या' की अवधारणा का सबसे सटीक वर्णन करता है?
(A) एक बड़ी जनसंख्या वस्तुओं और सेवाओं के लिए एक बड़ा बाजार प्रदान करती है।
(B) तीव्र जनसंख्या वृद्धि संसाधनों को निवेश से हटाकर उपभोग की ओर मोड़ देती है।
(C) एक युवा जनसंख्या नवाचार और प्रगति की गारंटी देती है।
(D) जनसंख्या के आकार का विकास की गति पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है।

34. मातृ मृत्यु दर किसी देश में किन सेवाओं की गुणवत्ता का संवेदनशील संकेतक है?
(A) स्वास्थ्य और प्रसूति देखभाल सेवाएं
(B) परिवहन सेवाएं
(C) वित्तीय सेवाएं
(D) शैक्षिक सेवाएं

35. माल्थस का जाल तब उत्पन्न होता है जब:
(A) खाद्य उत्पादन गुणोत्तर रूप से बढ़ता है जबकि जनसंख्या समांतर रूप से बढ़ती है।
(B) एक विशिष्ट देश अपनी जनसांख्यिकीय संक्रमण प्रक्रिया को सफलतापूर्वक पूर्ण कर लेता है।
(C) जनसंख्या वृद्धि खाद्य उत्पादन से अधिक हो जाती है, जिससे आय पुनः निर्वाह स्तर पर आ जाती है।
(D) निवारक अवरोध, सकारात्मक अवरोधों की तुलना में काफी अधिक प्रभावी हो जाते हैं।

36. जनसांख्यिकीय संक्रमण सिद्धांत की एक प्रमुख आलोचना यह है कि यह किसकी भूमिका की उपेक्षा करता है?
(A) औद्योगीकरण
(B) शहरीकरण
(C) गिरती मृत्यु दर
(D) सरकारी नीति और परिवार नियोजन कार्यक्रम

37. निम्नलिखित में से कौन सा अवधारणाओं का सही युग्म है?
(A) जननशक्ति - वास्तविक पुनरुत्पादक प्रदर्शन
(B) रुग्णता - मृत्यु दर का अध्ययन
(C) मृत्यु दर - जनसंख्या में होने वाली मृत्यु
(D) प्रवास - एक ही नगर के भीतर आवागमन

38. तेजी से बढ़ती जनसंख्या वाले देश का आयु-लिंग पिरामिड सामान्यतः कैसा होगा?
(A) आधार पर संकीर्ण और शीर्ष पर चौड़ा।
(B) आधार पर चौड़ा और शीर्ष पर संकीर्ण।
(C) सभी आयु समूहों में अपेक्षाकृत समान।
(D) मध्यम आयु समूहों में संकुचित।

39. निम्नलिखित उपायों पर विचार करें।
(1) महिला शिक्षा को बढ़ावा देना।
(2) गर्भनिरोधकों तक पहुंच में सुधार करना।
(3) राष्ट्रव्यापी अनिवार्य एक-बच्चा नीति लागू करना।
भारत जैसे लोकतांत्रिक ढांचे के भीतर जनसंख्या नियंत्रण के लिए इनमें से किसे सामान्यतः प्रभावी और स्वीकार्य उपाय माना जाता है?
(A) केवल 1 और 2
(B) केवल 2 और 3
(C) केवल 1 और 3
(D) 1, 2, और 3

40. जनसांख्यिकीय संक्रमण की अवस्था 2 में मृत्यु दर में गिरावट का प्राथमिक कारण क्या है?
(A) खाद्य आपूर्ति, सार्वजनिक स्वास्थ्य और स्वच्छता में सुधार।
(B) जन्म दर में कमी।
(C) परिवार नियोजन को व्यापक रूप से अपनाना।
(D) छोटे परिवारों की ओर सांस्कृतिक परिवर्तन।

41. निम्नलिखित में से कौन जनसंख्या की आयु और लिंग संरचना का परिणाम नहीं है?
(A) भविष्य में जनसंख्या वृद्धि की संभावना।
(B) विभिन्न प्रकार की सामाजिक सेवाओं की मांग।

Click Here to Buy book on Amazon

(B) 1.5
(C) 2.5
(D) 3.0

103. भारत जैसे विकासशील देश में तीव्र जनसंख्या वृद्धि का प्रभाव निम्नलिखित में से कौन सा नहीं है?
(A) बेरोजगारी और अल्प-रोजगार में वृद्धि।
(B) विद्यालयों और चिकित्सालयों जैसे सामाजिक आधारभूत संरचना पर बढ़ा हुआ बोझ।
(C) पर्यावरणीय अवनयन और संसाधनों का ह्रास।
(D) प्रति व्यक्ति आय में तीव्र वृद्धि।

104. सूची I को सूची II के साथ सुमेलित करें और नीचे दिए गए कोड से सही उत्तर चुनें।
सूची I: जनसांख्यिकीय संक्रमण की अवस्था
P. अवस्था 1: उच्च स्थिर
Q. अवस्था 2: प्रारंभिक विस्तार
R. अवस्था 4: निम्न स्थिर
S. अवस्था 5: घटती हुई
सूची II: जनसंख्या पिरामिड का आकार
1. चौड़ा आधार, अवतल भुजाएं
2. बहुत चौड़ा आधार
3. संकुचित आधार
4. लगभग ऊर्ध्वाधर भुजाएं
कोड:
(A) P-1, Q-2, R-4, S-3
(B) P-2, Q-1, R-3, S-4
(C) P-1, Q-2, R-3, S-4
(D) P-2, Q-1, R-4, S-3

105. "किसी दिए गए वर्ष के दौरान किसी दिए गए भौगोलिक क्षेत्र की जनसंख्या में होने वाले जीवित जन्मों की संख्या, उसी वर्ष के दौरान उस क्षेत्र की प्रति 1,000 मध्य-वर्ष कुल जनसंख्या पर" किसकी परिभाषा है?
(A) सामान्य प्रजनन दर
(B) कुल प्रजनन दर
(C) अशोधित जन्म दर
(D) शुद्ध पुनरुत्पादन दर

106. निम्नलिखित प्रश्न में दो कथन शामिल हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रुप में अंकित किया गया है। इन दोनों कथनों का परीक्षण करें और नीचे दिए गए कोड का उपयोग करके सही उत्तर चुनें।
अभिकथन (A): प्रवास किसी क्षेत्र या देश के लिए जनसंख्या परिवर्तन का एक प्रमुख घटक है।
कारण (R): किसी क्षेत्र की जनसंख्या केवल जन्म और मृत्यु के माध्यम से ही बदल सकती है।
(A) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सत्य हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सत्य है लेकिन R असत्य है।
(D) A असत्य है लेकिन R सत्य है।

107. इनमें से कौन सा रुग्णता डेटा का एक उदाहरण है?
(A) 2022 में सड़क दुर्घटनाओं में मरने वाले व्यक्तियों की संख्या।
(B) 2022 में उत्पन्न बच्चों की संख्या।
(C) 2022 में ग्रामीण से शहरी क्षेत्रों में जाने वाले व्यक्तियों की संख्या।
(D) 2022 में निदान किए गए मधुमेह के नए मामलों की संख्या।

108. जनसांख्यिकीय संक्रमण मॉडल में अवस्था 2 से अवस्था 3 में संक्रमण किसके द्वारा शुरू होता है?
(A) मृत्यु दर में तेज वृद्धि।
(B) अनिवार्य प्रवास की सरकारी नीति।
(C) एक महामारी का अंत।
(D) जन्म दर में महत्वपूर्ण गिरावट।

109. माल्थसवादी सिद्धांत के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें।
(1) माल्थसवादी सिद्धांत सभी समाजों पर हर समय सार्वभौमिक रुप से लागू होता है।
(2) यह सिद्धांत खाद्य उत्पादन बढ़ाने में तकनीक की भूमिका को ध्यान में रखने में विफल रहता है।
(3) माल्थस ने विलंब से विवाह को जनसंख्या पर सकारात्मक अवरोध माना था।
उपरोक्त कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?
(A) केवल 2
(B) केवल 1 और 3
(C) केवल 2 और 3
(D) 1, 2, और 3

110. जनसंख्या वृद्धि की उच्च दर का एक प्रमुख सामाजिक प्रभाव क्या है?
(A) सामाजिक एकजुटता और स्थिरता में वृद्धि।
(B) अपराध दर में कमी।
(C) सामाजिक मानदंडों और संस्थाओं पर बढ़ा हुआ दबाव।
(D) धन का अधिक समान वितरण।

111. निम्नलिखित में से किसे छोड़कर सभी मृत्यु दर के निर्धारक हैं?
(A) सामाजिक-आर्थिक स्थिति
(B) सार्वजनिक स्वास्थ्य हस्तक्षेप
(C) कुल प्रजनन दर
(D) पर्यावरणीय संकट

112. "जनसंख्या शिक्षा" की अवधारणा मुख्य रुप से किसके बजाय जागरुकता और समझ पैदा करने पर केंद्रित है?
(A) नैदानिक सेवाएं और गर्भनिरोधक प्रदान करना।
(B) जिम्मेदार नागरिकता को बढ़ावा देना।
(C) तर्कसंगत दृष्टिकोण विकसित करना।
(D) जनसांख्यिकीय गतिशीलता के बारे में ज्ञान प्रदान

NODIA

51. नीचे दिए गए दो कथनों को पढ़ें और सही विकल्प का चयन करें।
कथन I: रुग्णता दर किसी जनसंख्या के स्वास्थ्य स्तर और जीवन की गुणवत्ता के बारे में जानकारी प्रदान करती है।
कथन II: संक्रामक रोगों से होने वाली उच्च रुग्णता दर खराब स्वच्छता और स्वास्थ्य देखभाल तक पहुंच की कमी का संकेत दे सकती है।
(A) कथन I और कथन II दोनों सत्य हैं।
(B) कथन I और कथन II दोनों असत्य हैं।
(C) कथन I सत्य है, लेकिन कथन II असत्य है।
(D) कथन I असत्य है, लेकिन कथन II सत्य है।

52. जनसांख्यिकीय संक्रमण की अवस्था 3 के दौरान जन्म दर में गिरावट का मुख्य कारण क्या है?
(A) मृत्यु दर में वृद्धि।
(B) कम बच्चे पैदा करने का सरकारी आदेश।
(C) व्यापक अकाल का अचानक प्रकोप।
(D) शहरीकरण, शिक्षा और गर्भनिरोधक तक बढ़ी पहुंच।

53. जनसंख्या शिक्षा के दायरे के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें।
(1) जनसंख्या शिक्षा केवल गर्भनिरोधक विधियों को सिखाने के बारे में है।
(2) इसका उद्देश्य जनसंख्या के मुद्दों के प्रति तर्कसंगत दृष्टिकोण विकसित करना है।
(3) यह शिक्षार्थियों को जीवन के विभिन्न पहलुओं पर जनसंख्या वृद्धि के प्रभाव को समझने में मदद करती है।
उपरोक्त कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?
(A) केवल 1
(B) केवल 1 और 2
(C) केवल 2 और 3
(D) 1, 2, और 3

54. 'निर्भरता अनुपात' एक ऐसा माप है जो 'आश्रित' आयु (सामान्यतः 15 से कम और 64 से अधिक) के व्यक्तियों की संख्या की तुलना किससे करता है?
(A) कुल जनसंख्या से।
(B) 'आर्थिक रूप से उत्पादक' आयु (15-64) के व्यक्तियों की संख्या से।
(C) जनसंख्या में महिलाओं की संख्या से।
(D) शहरी क्षेत्रों में रहने वाले व्यक्तियों की संख्या से।

55. भारत में वर्ष 1921 को 'महान विभाजक वर्ष' कहे जाने का सबसे उपयुक्त कारण निम्नलिखित में से कौन सा है?
(A) इसने भारत के ऐतिहासिक स्वतंत्रता संग्राम की शुरुआत को चिह्नित किया।
(B) यह एक विनाशकारी अकाल का वर्ष था जिसने जनसंख्या को आधा कर दिया था।
(C) यह वह वर्ष था जब पहली राष्ट्रीय जनसंख्या नीति पेश की गई थी।
(D) इसने उतार-चढ़ाव वाली वृद्धि से निरंतर वृद्धि की ओर संक्रमण को चिह्नित किया।

56. निम्नलिखित में से किसे छोड़कर सभी को प्रजननता के सामाजिक-सांस्कृतिक निर्धारक के रूप में माना जाता है?
(A) आनुवंशिक प्रवृत्ति
(B) विवाह के समय आयु
(C) महिलाओं की स्थिति
(D) धार्मिक मूल्य

57. भारत की राष्ट्रीय जनसंख्या नीति (2000) का तात्कालिक उद्देश्य निम्नलिखित में से क्या है?
(A) 2045 तक स्थिर जनसंख्या प्राप्त करना।
(B) 14 वर्ष की आयु तक स्कूली शिक्षा को निःशुल्क और अनिवार्य बनाना।
(C) गर्भनिरोधक और स्वास्थ्य देखभाल आधारभूत संरचना की अपूर्ण आवश्यकताओं को पूर्ण करना।
(D) शिशु मृत्यु दर को शून्य तक कम करना।

58. सूची I को सूची II के साथ सुमेलित करें और नीचे दिए गए कोड से सही उत्तर चुनें।
सूची I: शब्द
P. सकारात्मक अवरोध
Q. जनसंख्या विस्फोट
R. मानव संसाधन
S. जनसंख्या शिक्षा
सूची II: संबंधित सिद्धांत/अवधारणा
1. जनसांख्यिकीय संक्रमण सिद्धांत (अवस्था 2)
2. माल्थस का सिद्धांत
3. जनसंख्या नियंत्रण उपाय
4. जनसंख्या और विकास
कोड:
(A) P-1, Q-2, R-3, S-4
(B) P-2, Q-1, R-4, S-3
(C) P-2, Q-4, R-1, S-3
(D) P-3, Q-1, R-4, S-2

59. किसी देश को 'जनसांख्यिकीय जाल' में कब कहा जाता है?
(A) जब इसने जनसांख्यिकीय संक्रमण के सभी चरणों को सफलतापूर्वक पूर्ण कर लिया हो।
(B) जब इसकी जन्म दर और मृत्यु दर दोनों बहुत निम्न स्तर पर पहुँच गई हों।
(C) जब यह अंतरराष्ट्रीय प्रवास और गिरावट की उच्च दर का अनुभव करता है।
(D) जब मृत्यु दर गिरती है जबकि जन्म दर निरंतर उच्च बनी रहती है।

60. 'प्रजननता' और 'जननशक्ति' के बीच मुख्य अंतर यह है कि:
(A) प्रजननता जैविक क्षमता है, जबकि जननशक्ति वास्तविक प्रदर्शन है।
(B) जननशक्ति जैविक क्षमता है, जबकि प्रजननता वास्तविक प्रदर्शन है।

NODIA

इन दोनों कथनों का परीक्षण करें और नीचे दिए गए कोड का उपयोग करके सही उत्तर चुनें।
अभिकथन (A): स्वच्छता और सार्वजनिक स्वास्थ्य में सुधार से मृत्यु दर में गिरावट आती है।
कारण (R): बेहतर स्वच्छता और सार्वजनिक स्वास्थ्य उपाय संक्रामक रोगों की घटना और प्रसार को कम करते हैं।
(A) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सत्य हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सत्य है लेकिन R असत्य है।
(D) A असत्य है लेकिन R सत्य है।

21. शिशु मृत्यु दर को प्रति 1,000 जीवित जन्मों पर किस आयु से कम के शिशुओं की मृत्यु की संख्या के रूप में परिभाषित किया गया है?
(A) एक सप्ताह
(B) एक महीना
(C) एक वर्ष
(D) छह महीने

22. समाज में विषम लिंगानुपात का एक बड़ा परिणाम क्या हो सकता है?
(A) कुल प्रजनन दर में कमी।
(B) उपरोक्त सभी।
(C) महिलाओं के विरुद्ध अपराध दर में वृद्धि।
(D) पुरुषों के लिए विवाह की औसत आयु का अधिक होना।

23. सूची I को सूची II के साथ सुमेलित करें और नीचे दिए गए कोड से सही उत्तर चुनें।
सूची I: जनसांख्यिकीय संकेतक
P. शिशु मृत्यु दर
Q. मातृ मृत्यु दर
R. अशोधित जन्म दर
S. सामान्य प्रजनन दर
सूची II: परिभाषा
1. प्रजनन आयु वर्ग (15-49 वर्ष) में प्रति 1,000 महिलाओं पर जीवित जन्मों की संख्या।
2. प्रति 1,000 जीवित जन्मों पर एक वर्ष से कम आयु के बच्चों की मृत्यु की संख्या।
3. प्रति 100,000 जीवित जन्मों पर गर्भावस्था या उसके प्रबंधन से संबंधित किसी भी कारण से होने वाली महिलाओं की मृत्यु की संख्या।
4. किसी दिए गए वर्ष में प्रति 1,000 जनसंख्या पर जीवित जन्मों की संख्या।
कोड:
(A) P-1, Q-3, R-4, S-2
(B) P-2, Q-3, R-4, S-1
(C) P-2, Q-4, R-1, S-3
(D) P-3, Q-2, R-4, S-1

24. जनसंख्या को 'विकास के लिए मानव संसाधन' के रूप में देखने की अवधारणा किस पर बल देती है?
(A) आर्थिक विकास को गति देने के लिए एक विशाल और कुशल कार्यबल की क्षमता।
(B) अर्थव्यवस्था पर बड़ी जनसंख्या द्वारा डाला गया बोझ।
(C) जनसंख्या नियंत्रण के सख्त उपायों की आवश्यकता।
(D) पर्यावरण पर जनसंख्या का नकारात्मक प्रभाव।

25. निम्नलिखित में से कौन जनसंख्या वृद्धि को प्रभावित करने वाला सामाजिक-सांस्कृतिक कारक नहीं है?
(A) परिवार के आकार के बारे में धार्मिक विश्वास।
(B) महिलाओं की सामाजिक स्थिति।
(C) क्षेत्र की भूवैज्ञानिक संरचना।
(D) संयुक्त परिवार प्रणाली का प्रचलन।

26. 'जनसंख्या शिक्षा' का मुख्य उद्देश्य क्या है?
(A) जनसांख्यिकीय गतिशीलता और जीवन की गुणवत्ता के बीच संबंधों के बारे में जागरूकता पैदा करना।
(B) एक-बच्चा नीति को सख्ती से लागू करना।
(C) गर्भनिरोधक उपकरण निःशुल्क उपलब्ध कराना।
(D) नसबंदी करने के लिए डॉक्टरों को प्रशिक्षित करना।

27. "जनसांख्यिकीय लाभांश" की अवधारणा जनसंख्या के किस पहलू से सर्वाधिक संबंधित है?
(A) पूरी जनसंख्या में उच्च मृत्यु दर की निरंतर प्रवृत्ति।
(B) एक विशिष्ट भौगोलिक क्षेत्र के भीतर विषम लिंगानुपात।
(C) वैश्विक क्षेत्रों के बीच अंतरराष्ट्रीय प्रवास की उच्च दर।
(D) बड़ी कार्यशील आयु वाली जनसंख्या के साथ एक अनुकूल आयु संरचना।

28. भारत में जनसंख्या नीति के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें।
(1) भारत परिवार नियोजन के लिए राष्ट्रीय कार्यक्रम शुरू करने वाला विश्व का प्रथम देश था।
(2) राष्ट्रीय जनसंख्या नीति, 2000 का लक्ष्य 2045 तक स्थिर जनसंख्या प्राप्त करना है।
(3) नीति पूर्णतः जनसंख्या नियंत्रण के एक माध्यम के रूप में नसबंदी पर केंद्रित है।
उपरोक्त कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?
(A) केवल 1
(B) केवल 1 और 2
(C) केवल 2 और 3
(D) 1, 2, और 3

29. जनसंख्या अध्ययन के संदर्भ में 'प्रवास' शब्द का क्या अर्थ है?
(A) विभिन्न जंतु प्रजातियों का विभिन्न आवासों के बीच प्राकृतिक मौसमी संचलन।
(B) किसी दिए गए समाज में व्यक्तियों की सामाजिक-आर्थिक स्थिति में ऊर्ध्वाधर परिवर्तन।
(C) स्थायी निवास स्थापित करने के लिए सीमाओं के पार व्यक्तियों का आवागमन।

Downloaded from www.pdf.tube

दर्शाती है।
(C) 2001 तक काफी हद तक स्थिर।
(D) बिना किसी उतार-चढ़ाव के तीव्रता से बढ़ रही है।

71. सूची I को सूची II के साथ सुमेलित करें और नीचे दिए गए कोड से सही उत्तर चुनें।
सूची I: जनसांख्यिकीय शब्द
P. रुग्णता
Q. मृत्यु दर
R. प्रजननता
S. आयु संरचना
सूची II: उदाहरण/संकेतक
1. कुल प्रजनन दर
2. प्रति 100,000 व्यक्तियों पर तपेदिक की घटना
3. निर्भरता अनुपात
4. शिशु मृत्यु दर
कोड:
(A) P-1, Q-3, R-2, S-4
(B) P-2, Q-4, R-3, S-1
(C) P-2, Q-4, R-1, S-3
(D) P-3, Q-1, R-4, S-2

72. पर्यावरण पर तीव्र और अनियंत्रित जनसंख्या वृद्धि के प्रतिकूल प्रभाव में शामिल हैं:
(A) उपरोक्त सभी।
(B) वनों की कटाई और जैव विविधता की हानि।
(C) वायु और जल प्रदूषण में वृद्धि।
(D) प्राकृतिक संसाधनों का ह्रास।

73. 'जनसांख्यिकीय अंतराल' जनसांख्यिकीय संक्रमण मॉडल में किन दो दरों के बीच के अंतर को संदर्भित करता है?
(A) शिशु मृत्यु दर और मातृ मृत्यु दर।
(B) आप्रवास दर और उत्प्रवास दर।
(C) जन्म दर और मृत्यु दर।
(D) ग्रामीण जनसंख्या वृद्धि दर और शहरी जनसंख्या वृद्धि दर।

74. निम्नलिखित प्रश्न में दो कथन शामिल हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है। इन दोनों कथनों का परीक्षण करें और नीचे दिए गए कोड का उपयोग करके सही उत्तर चुनें।
अभिकथन (A): जनसंख्या को एक मूल्यवान मानव संसाधन के रूप में देखा जा सकता है।
कारण (R): एक बड़ी, स्वस्थ, शिक्षित और कुशल जनसंख्या आर्थिक विकास और नवाचार के लिए आवश्यक मानव पूंजी का निर्माण करती है।
(A) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सत्य हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सत्य है लेकिन R असत्य है।
(D) A असत्य है लेकिन R सत्य है।

75. जनसांख्यिकीय संक्रमण मॉडल के चरणों को उनके सही क्रम में व्यवस्थित करें।
1. उत्तरवर्ती विस्तार की अवस्था
2. निम्न स्थिर अवस्था
3. उच्च स्थिर अवस्था
4. प्रारंभिक विस्तार की अवस्था
(A) 3, 4, 1, 2
(B) 3, 1, 4, 2
(C) 4, 3, 2, 1
(D) 1, 2, 3, 4

76. माल्थस द्वारा निवारक अवरोध के रूप में 'नैतिक संयम' की अवधारणा का समर्थन किया गया था, जिसका अर्थ है:
(A) गर्भनिरोधक का उपयोग।
(B) ब्रह्मचर्य का पालन और विवाह को टालना।
(C) एक निश्चित आयु से पूर्व विवाह पर कानूनी प्रतिबंध।
(D) शासन प्रायोजित नसबंदी कार्यक्रम।

77. एक "आयु-लिंग पिरामिड" जो मधुमक्खी के छत्ते के आकार का है (नीचे से संकुचित, बीच में उभरा हुआ और शीर्ष पर संकीर्ण) किसकी विशेषता है?
(A) विस्तारक जनसंख्या।
(B) स्थिर जनसंख्या।
(C) संक्रमण-पूर्व जनसंख्या।
(D) संकुचित जनसंख्या।

78. भारतीय जनसंख्या की वृद्धि के बारे में कौन सा कथन गलत है?
(A) 1911-1921 के दशक के दौरान वृद्धि दर ऋणात्मक थी।
(B) 1951-1961 के दशक में जनसंख्या वृद्धि में तेजी देखी गई।
(C) भारत की जनसंख्या वृद्धि दर ने 1981 के बाद धीमे होने के संकेत देने शुरू कर दिए थे।
(D) 1951 के बाद से हर दशक में जनसंख्या में पूर्ण वृद्धि घट रही है।

79. 'रुग्णता दर' किसका माप है?
(A) उन व्यक्तियों की संख्या जो किसी विशिष्ट रोग से मर गए हैं।
(B) किसी जनसंख्या में रुग्ण या किसी रोग से ग्रस्त व्यक्तियों की संख्या।
(C) स्वस्थ व्यक्तियों का रुग्ण व्यक्तियों से अनुपात।
(D) वह दर जिस पर व्यक्ति रोग से स्वस्थ होते हैं।

80. भारत की राष्ट्रीय जनसंख्या नीति (2000) का एक प्रमुख दृष्टिकोण यह है कि जनसंख्या स्थिरीकरण सर्वोत्तम रूप से किसके माध्यम से प्राप्त किया जा सकता है?
(A) स्वैच्छिक और सूचित विकल्प को बढ़ावा देने वाला जन-केंद्रित दृष्टिकोण।
(B) दमनकारी शासन कार्रवाई और सख्त दंड।
(C) विशेष रूप से पुरुष नसबंदी को बढ़ावा देने पर ध्यान

NODIA

(C) प्रजननता महिलाओं पर लागू होती है, जबकि जननशक्ति पुरुषों पर लागू होती है।
(D) कोई अंतर नहीं है; ये शब्द एक-दूसरे के पूरक हैं।

61. निम्नलिखित प्रश्न में दो कथन शामिल हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है। इन दोनों कथनों का परीक्षण करें और नीचे दिए गए कोड का उपयोग करके सही उत्तर चुनें।
अभिकथन (A): कई विकासशील देशों में, उच्च शिशु और बाल मृत्यु दर के कारण उच्च प्रजनन दर हो सकती है।
कारण (R): माता-पिता यह सुनिश्चित करने के लिए अधिक बच्चे उत्पन्न कर सकते हैं कि कुछ वयस्कता तक जीवित रहें, जिसे 'प्रतिस्थापन प्रभाव' या 'बीमा प्रभाव' के रूप में जाना जाता है।
(A) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सत्य हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सत्य है लेकिन R असत्य है।
(D) A असत्य है लेकिन R सत्य है।

62. जनसंख्या वृद्धि गुणोत्तर श्रेणी में होती है जबकि खाद्य आपूर्ति समांतर श्रेणी में बढ़ती है, यह अवधारणा किसके सिद्धांत का केंद्र है?
(A) कार्ल मार्क्स
(B) वॉरेन थॉम्पसन
(C) आर्सीन ड्यूमोंट
(D) थॉमस माल्थस

63. निम्नलिखित में से कौन आंतरिक प्रवास का एक उदाहरण है?
(A) एक व्यक्ति कार्य के लिए ग्रामीण बिहार से शहरी दिल्ली जा रहा है।
(B) एक व्यक्ति भारत से कनाडा जा रहा है।
(C) एक व्यक्ति प्रतिदिन अपने घर से अपने कार्यस्थल पर जा रहा है।
(D) एक व्यक्ति अल्प अवकाश के लिए दूसरे देश जा रहा है।

64. जनसंख्या नीति पर एक दृष्टिकोण जो जनसंख्या को नियंत्रित करने के सर्वोत्तम मार्ग के रूप में स्वास्थ्य, शिक्षा और महिलाओं के अधिकारों में सुधार पर बल देता है, सामान्यतः कहलाता है:
(A) माल्थसवादी दृष्टिकोण
(B) 'विकास ही सर्वोत्तम गर्भनिरोधक है' दृष्टिकोण
(C) दमनकारी दृष्टिकोण
(D) अहस्तक्षेप दृष्टिकोण

65. भारत में जनसंख्या वृद्धि के कारणों के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें।
(1) विवाह की सार्वभौमिकता एक महत्वपूर्ण सामाजिक कारक है।
(2) पुत्र प्राप्ति की इच्छा अक्सर अधिक जन्मों का कारण बनती है।
(3) मृत्यु दर में गिरावट, जन्म दर में गिरावट की तुलना में बहुत तीव्र रही है।
उपरोक्त कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?
(A) केवल 3
(B) केवल 1 और 2
(C) केवल 2 और 3
(D) 1, 2, और 3

66. जनसांख्यिकीय संक्रमण सिद्धांत की अवस्था 1 की विशेषता है:
(A) उच्च जन्म दर और उच्च मृत्यु दर, जिसके परिणामस्वरूप स्थिर या धीमी वृद्धि होती है।
(B) निम्न जन्म दर और निम्न मृत्यु दर, जिसके परिणामस्वरूप स्थिर जनसंख्या होती है।
(C) उच्च जन्म दर और निम्न मृत्यु दर, जिसके परिणामस्वरूप तीव्र वृद्धि होती है।
(D) निम्न जन्म दर और उच्च मृत्यु दर, जिसके परिणामस्वरूप जनसंख्या में गिरावट आती है।

67. लिंगानुपात को सामान्यतः प्रति कितने पुरुषों पर महिलाओं की संख्या के रूप में व्यक्त किया जाता है?
(A) 100 पुरुष
(B) 100,000 पुरुष
(C) 1,000 पुरुष
(D) 10,000 पुरुष

68. निम्नलिखित में से कौन जनसंख्या नियंत्रण का प्रत्यक्ष उपाय नहीं है?
(A) गर्भनिरोधकों के उपयोग को बढ़ावा देना।
(B) गर्भ के चिकित्सीय समापन को वैध बनाना और बढ़ावा देना।
(C) विवाह की कानूनी आयु बढ़ाना।
(D) अधिक विश्वविद्यालयों का निर्माण करना।

69. नीचे दिए गए दो कथनों को पढ़ें और सही विकल्प का चयन करें।
कथन I: जनसंख्या संवेग का तात्पर्य प्रजनन दर प्रतिस्थापन स्तर तक गिरने के बाद भी जनसंख्या वृद्धि जारी रहने की प्रवृत्ति से है।
कथन II: यह संवेग युवा आयु संरचना के कारण होता है, जिसका अर्थ है कि बड़ी संख्या में व्यक्ति अभी भी अपनी प्रजनन आयु में प्रवेश कर रहे हैं।
(A) कथन I और कथन II दोनों सत्य हैं।
(B) कथन I और कथन II दोनों असत्य हैं।
(C) कथन I सत्य है, लेकिन कथन II असत्य है।
(D) कथन I असत्य है, लेकिन कथन II सत्य है।

70. 1901 से भारतीय जनसंख्या की वृद्धि को सबसे सटीक रूप से इस प्रकार वर्णित किया जा सकता है:
(A) निरंतर घट रही है।
(B) धीमी, स्थिर और फिर तीव्र वृद्धि के स्पष्ट चरणों को

Click Here to Buy book on Amazon

(C) विद्यालयों और बाल स्वास्थ्य देखभाल की बढ़ती मांग।
(D) एक विशाल और अनुभवी कार्यबल।

92. निम्नलिखित प्रश्न में दो कथन शामिल हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है। इन दोनों कथनों का परीक्षण करें और नीचे दिए गए कोड का उपयोग करके सही उत्तर चुनें।
अभिकथन (A): जनसांख्यिकीय संक्रमण सिद्धांत सुझाव देता है कि आर्थिक विकास एक शक्तिशाली गर्भनिरोधक है।
कारण (R): जैसे-जैसे समाज विकसित होता है, शहरीकरण, शिक्षा और महिलाओं के लिए बदलती आर्थिक भूमिकाओं जैसे कारक परिवार के आकार में स्वैच्छिक कमी लाते हैं।
(A) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सत्य हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सत्य है लेकिन R असत्य है।
(D) A असत्य है लेकिन R सत्य है।

93. जनसंख्या के लिंग संगठन में 'लापता महिलाओं' की समस्या का मुख्य कारण किसे माना जाता है?
(A) प्राकृतिक रूप से उच्च पुरुष जन्म दर।
(B) उच्च महिला उत्प्रवास दर।
(C) लिंग-चयनात्मक गर्भपात, महिला शिशु हत्या और कन्याओं की उपेक्षा।
(D) पुरुषों के लिए उच्च जीवन प्रत्याशा।

94. निम्नलिखित में से कौन भारत में जनसंख्या नियंत्रण के लिए किए गए उपाय का प्रतिनिधित्व करता है?
(A) खाद्य आपूर्ति बढ़ाने के लिए हरित क्रांति।
(B) राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी अधिनियम।
(C) प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्रों के माध्यम से परिवार नियोजन सेवाओं का प्रचार।
(D) सार्वभौमिक शिक्षा के लिए सर्व शिक्षा अभियान।

95. माल्थसवादी सिद्धांत के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें।
(1) माल्थस ने तर्क दिया कि जनसंख्या समांतर श्रेणी में बढ़ती है।
(2) उन्होंने निवारक अवरोध के रूप में कृत्रिम गर्भनिरोधक के उपयोग की वकालत की।
(3) यह सिद्धांत जनसंख्या की खाद्य आपूर्ति से आगे निकलने की अपरिहार्य प्रवृत्ति का सुझाव देता है।
उपरोक्त कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?
(A) केवल 3
(B) केवल 1 और 2
(C) केवल 2 और 3
(D) 1, 2, और 3

96. भारत में जनसंख्या वृद्धि के चौथे चरण (1981 के बाद) की एक प्रमुख विशेषता है:
(A) मृत्यु दर में तीव्र वृद्धि।
(B) वृद्धि दर जो उच्च बनी हुई है लेकिन अब धीमी होने लगी है।
(C) ऋणात्मक जनसंख्या वृद्धि दर।
(D) जनसंख्या का पूर्ण स्थिरीकरण।

97. निम्नलिखित में से कौन किसी जनसंख्या में मृत्यु दर के स्तर का प्रमुख निर्धारक है?
(A) शहरीकरण की दर।
(B) भोजन और पोषण की उपलब्धता और गुणवत्ता।
(C) सामान्य प्रजनन दर।
(D) विवाह की कानूनी आयु।

98. यह दृष्टिकोण कि एक बड़ी जनसंख्या विकास के लिए एक बाधा के रूप में कार्य करती है, मुख्य रूप से किस पर केंद्रित है?
(A) प्रति व्यक्ति संसाधनों और पूंजी में कमी।
(B) औद्योगिक वस्तुओं के बाजार की कमी।
(C) अकुशल श्रम की कमी।
(D) तकनीकी नवाचार में वृद्धि।

99. निम्नलिखित जनसांख्यिकीय शब्दों को प्रजननता के सबसे सामान्य से सबसे विशिष्ट माप के क्रम में व्यवस्थित करें।
1. कुल प्रजनन दर
2. अशोधित जन्म दर
3. सामान्य प्रजनन दर
(A) 2, 3, 1
(B) 1, 3, 2
(C) 2, 1, 3
(D) 3, 2, 1

100. भारत में उच्च प्रजनन दर में योगदान देने वाले मुख्य सामाजिक-सांस्कृतिक कारकों में से एक है:
(A) समाज में महिलाओं की उच्च स्थिति।
(B) एकल परिवारों की व्यापक इच्छा।
(C) पुत्र प्राप्ति की तीव्र इच्छा।
(D) विवाह की कम दर।

NODIA

101. नीचे दिए गए दो कथनों को पढ़ें और सही विकल्प का चयन करें।
कथन I: किसी जनसंख्या की आयु और लिंग संरचना स्थिर होती है और समय के साथ नहीं बदलती है।
कथन II: आयु और लिंग संरचना प्रजननता, मृत्यु दर और प्रवास के पिछले रुझानों से प्रभावित होती है।
(A) कथन I और कथन II दोनों सत्य हैं।
(B) कथन I और कथन II दोनों असत्य हैं।
(C) कथन I असत्य है, लेकिन कथन II सत्य है।
(D) कथन I सत्य है, लेकिन कथन II असत्य है।

102. राष्ट्रीय जनसंख्या नीति, 2000 का लक्ष्य कुल प्रजनन दर को किस स्तर तक नीचे लाना है?
(A) 2.1

केंद्रित करना।
(D) राज्यों के बीच प्रवास पर प्रतिबंध लगाना।

81. जनसंख्या वृद्धि पर सामाजिक-सांस्कृतिक प्रभावों के संबंध में निम्नलिखित कारकों पर विचार करें।
(1) शहरीकरण
(2) महिला साक्षरता
(3) धार्मिक विश्वास
उपरोक्त कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?
(A) केवल 1 और 2
(B) केवल 2 और 3
(C) केवल 1 और 3
(D) 1, 2, और 3

82. माल्थस के सिद्धांत की आलोचना मुख्य रूप से किसके प्रभाव को कम आंकने के लिए की गई है?
(A) सकारात्मक अवरोध
(B) जनसंख्या वृद्धि
(C) तकनीकी प्रगति
(D) नैतिक संयम

83. कौन सा जनसांख्यिकीय संकेतक विशेष रूप से प्रसव से जुड़ी मृत्यु के जोखिम को मापने के लिए निर्मित किया गया है?
(A) शिशु मृत्यु दर
(B) बाल मृत्यु दर
(C) मातृ मृत्यु दर
(D) अशोधित मृत्यु दर

84. सही युग्म की पहचान करें।
(A) अवस्था 1 – जनसंख्या विस्फोट
(B) अवस्था 2 – घटती जन्म दर
(C) अवस्था 3 – निम्न मृत्यु दर
(D) अवस्था 4 – उच्च जन्म दर

85. एक युवा आयु संरचना, जिसमें 15 वर्ष से कम जनसंख्या का एक बड़ा भाग है, का तात्पर्य है:
(A) निकट अतीत में निम्न जन्म दर।
(B) भविष्य में जनसंख्या वृद्धि की उच्च संभावना।
(C) कार्यशील जनसंख्या पर कम निर्भरता भार।
(D) एक जनसंख्या जो घटने वाली है।

86. नीचे दिए गए दो कथनों को पढ़ें और सही विकल्प का चयन करें।
कथन I: जनसंख्या शिक्षा का उद्देश्य छोटे परिवार के आदर्श को बढ़ावा देना है।
कथन II: जनसंख्या शिक्षा, यौन शिक्षा और परिवार नियोजन सेवाओं का पर्यायवाची है।
(A) कथन I और कथन II दोनों सत्य हैं।
(B) कथन I और कथन II दोनों असत्य हैं।
(C) कथन I सत्य है, लेकिन कथन II असत्य है।
(D) कथन I असत्य है, लेकिन कथन II सत्य है।

87. माल्थस द्वारा वर्णित सकारात्मक अवरोध का सबसे सटीक उदाहरण निम्नलिखित में से कौन सा है?
(A) एक महामारी जो व्यापक मृत्यु का कारण बनती है।
(B) निरोध के उपयोग को बढ़ावा देने वाला सरकारी अभियान।
(C) अधिक आयु में विवाह करने का सामाजिक प्रचलन।
(D) कृषि में एक तकनीकी सफलता।

88. द्वितीय विश्व युद्ध के बाद विकासशील देशों में मृत्यु दर में गिरावट यूरोपीय देशों के अनुभव की तुलना में बहुत तीव्र थी क्योंकि:
(A) उनकी जन्म दर एक साथ गिर गई थी।
(B) उन्होंने शून्य से अपनी स्वयं की चिकित्सा तकनीकें विकसित की थीं।
(C) वे आधुनिक चिकित्सा, सार्वजनिक स्वास्थ्य तकनीकों और कीटनाशकों का आयात कर सकते थे।
(D) उनकी जनसंख्या आनुवंशिक रूप से रोगों के प्रति अधिक प्रतिरोधी थी।

89. सूची I को सूची II के साथ सुमेलित करें और नीचे दिए गए कोड से सही उत्तर चुनें।
सूची I: कारक
P. उच्च महिला साक्षरता
Q. विवाह के समय कम आयु
R. सार्वजनिक स्वास्थ्य में सुधार
S. पुत्र की चाहत
सूची II: जनसंख्या वृद्धि पर प्रभाव
1. जनसंख्या वृद्धि बढ़ाता है
2. जनसंख्या वृद्धि घटाता है (निम्न मृत्यु दर)
3. जनसंख्या वृद्धि घटाता है (निम्न प्रजननता)
4. जनसंख्या वृद्धि बढ़ाता है (उच्च प्रजननता)
कोड:
(A) P-3, Q-1, R-2, S-4
(B) P-1, Q-3, R-2, S-4
(C) P-3, Q-2, R-1, S-4
(D) P-2, Q-1, R-3, S-4

90. जनसंख्या के 'मानव पूंजी' होने की अवधारणा यह सुझाव देती है कि:
(A) व्यक्तियों को पूंजीगत वस्तुओं की तरह क्रय-विक्रय किया जाना चाहिए।
(B) स्वास्थ्य और शिक्षा में निवेश उत्पादकता में सुधार कर सकता है और आर्थिक विकास को गति दे सकता है।
(C) इसकी विशेषताओं की परवाह किए बिना एक बड़ी जनसंख्या सदैव श्रेष्ठ होती है।
(D) जनसंख्या नियंत्रण अनावश्यक है।

91. निम्नलिखित में से कौन युवा जनसंख्या संरचना का परिणाम नहीं है?
(A) उच्च निर्भरता अनुपात।
(B) जनसंख्या संवेग की उच्च संभावना।

Downloaded from www.pdf.tube

करना।

113. अशोधित मृत्यु दर और आयु-विशिष्ट मृत्यु दर के बीच मुख्य अंतर यह है कि बाद वाला:
(A) केवल एक विशिष्ट आयु वर्ग के लिए मृत्यु पर विचार करता है।
(B) गणना करना सरल है।
(C) मृत्यु दर का कम सटीक माप है।
(D) प्रति 100,000 जनसंख्या पर व्यक्त किया जाता है।

114. जनसांख्यिकीय लाभांश किसी देश को तब प्राप्त होता है जब:
(A) वृद्ध जनसंख्या का अनुपात अपने चरम पर होता है।
(B) प्रजनन दर अपने उच्चतम बिंदु पर होती है।
(C) मृत्यु दर तेजी से बढ़ रही होती है।
(D) कार्यशील आयु की जनसंख्या का अनुपात बड़ा होता है और निर्भरता अनुपात कम होता है।

115. भारत की पहली राष्ट्रीय जनसंख्या नीति आधिकारिक तौर पर किस वर्ष घोषित की गई थी?
(A) 1976
(B) 1952
(C) 1983
(D) 2000

116. कौन सा कथन भारत में जनसंख्या वृद्धि के कारण का सटीक वर्णन करता है?
(A) महिला साक्षरता के उच्च स्तर ने जनसंख्या वृद्धि को प्रेरित किया है।
(B) मृत्यु दर में आई तीव्र गिरावट के साथ जन्म दर में वैसी गिरावट नहीं आई।
(C) छोटे परिवारों के लिए सांस्कृतिक प्राथमिकता व्यापक रही है।
(D) उत्प्रवास दर लगातार आप्रवास दर से कम रही है।

117. निम्नलिखित में से कौन जनसंख्या अध्ययन की केंद्रीय अवधारणा नहीं है?
(A) प्रजननता
(B) रुग्णता
(C) प्रवास
(D) सामाजिक स्तरीकरण

118. नीचे दिए गए दो कथनों को पढ़ें और सही विकल्प का चयन करें।
कथन I: जब जनसंख्या को एक संसाधन के रूप में देखा जाता है, तो इसे मानव पूंजी कहा जाता है।
कथन II: जब जनसंख्या को संसाधन माना जाता है, तो स्वास्थ्य और कौशल के संदर्भ में इसकी गुणवत्ता अप्रासंगिक होती है।
(A) कथन I और कथन II दोनों सत्य हैं।
(B) कथन I और कथन II दोनों असत्य हैं।
(C) कथन I सत्य है, लेकिन कथन II असत्य है।
(D) कथन I असत्य है, लेकिन कथन II सत्य है।

119. एक जनसंख्या नीति जो संधारणीय विकास और स्थिर जनसंख्या प्राप्त करने के दीर्घकालिक दृष्टिकोण के साथ बनाई गई है, किस पर आधारित है?
(A) अल्पकालिक लक्ष्य-आधारित दृष्टिकोण।
(B) समग्र विकासात्मक दृष्टिकोण।
(C) दमनकारी, शासन-नियंत्रित दृष्टिकोण।
(D) एकल-विधि-केंद्रित दृष्टिकोण।

120. निम्नलिखित में से कौन यह स्पष्ट करता है कि भारत में 1911-1921 के दशक में जनसंख्या में मामूली कमी क्यों दर्ज की गई थी?
(A) अकाल और इन्फ्लुएंजा महामारी से उच्च मृत्यु दर।
(B) यूरोप में उत्प्रवास की एक विशाल लहर।
(C) परिवार नियोजन कार्यक्रमों की व्यापक सफलता।
(D) सामाजिक सुधारों के कारण जन्म दर में अचानक गिरावट।

121. सूची I को सूची II के साथ सुमेलित करें और नीचे दिए गए कोड से सही उत्तर चुनें।
सूची I: अवधारणा
P. माल्थसवादी सिद्धांत
Q. जनसांख्यिकीय संक्रमण
R. बाधा के रूप में जनसंख्या
S. संसाधन के रूप में जनसंख्या
सूची II: विशेषता
1. जन्म और मृत्यु दर में ऐतिहासिक बदलाव का वर्णन करता है
2. जनसंख्या वृद्धि खाद्य आपूर्ति से अधिक हो जाती है
3. बड़ी जनसंख्या प्रति व्यक्ति आय को कम करती है
4. कुशल और स्वस्थ जनसंख्या विकास को गति देती है
कोड:
(A) P-2, Q-1, R-3, S-4
(B) P-1, Q-2, R-4, S-3
(C) P-2, Q-3, R-1, S-4
(D) P-3, Q-1, R-2, S-4

122. महिलाओं की कमी के साथ विषम लिंगानुपात का एक महत्वपूर्ण परिणाम क्या है?
(A) महिलाओं के लिए विवाह की औसत आयु में कमी।
(B) बहुपतित्व और महिलाओं की तस्करी में वृद्धि।
(C) एक अधिक संतुलित सामाजिक संरचना।
(D) समग्र निर्भरता अनुपात में गिरावट।

123. निम्नलिखित में से कौन सा कारक प्रजननता और मृत्यु दर दोनों का निर्धारक है?
(A) किसी देश में अस्पतालों की संख्या।
(B) मतदान की कानूनी आयु।
(C) शिक्षा का स्तर, विशेष रूप से महिलाओं की।
(D) अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डों की संख्या।

NODIA

(A) एक स्वतंत्र जनसांख्यिकीय मिशन।
(B) सामाजिक और आर्थिक विकास की एक व्यापक प्रक्रिया।
(C) कानून और व्यवस्था की समस्या।
(D) एक अंतरराष्ट्रीय संधि दायित्व।

167. निम्नलिखित में से कौन देश की अर्थव्यवस्था पर जनसंख्या वृद्धि का प्रत्यक्ष प्रभाव है?
(A) यह सत्तारूढ़ दल की राजनीतिक विचारधारा को परिवर्तित करता है।
(B) यह स्वतः ही आय के अधिक न्यायसंगत वितरण की ओर ले जाता है।
(C) यह रोजगार और सेवाएं प्रदान करने के लिए शासन पर दबाव बढ़ाता है।
(D) यह तकनीकी प्रगति की गारंटी देता है।

168. नीचे दिए गए दो कथनों को पढ़ें और सही विकल्प का चयन करें।
कथन I: किसी देश की आयु और लिंग संरचना को जनसंख्या पिरामिड का उपयोग करके देखा जा सकता है।
कथन II: चौड़े आधार वाला जनसंख्या पिरामिड निम्न जन्म दर को दर्शाता है।
(A) कथन I और कथन II दोनों सत्य हैं।
(B) कथन I और कथन II दोनों असत्य हैं।
(C) कथन I सत्य है, लेकिन कथन II असत्य है।
(D) कथन I असत्य है, लेकिन कथन II सत्य है।

169. मृत्यु दर में गिरावट का प्राथमिक कारण क्या है जो जनसांख्यिकीय संक्रमण की शुरुआत का प्रतीक है?
(A) छोटे परिवारों की ओर सांस्कृतिक परिवर्तन।
(B) समग्र जन्म दर में गिरावट।
(C) सार्वजनिक स्वास्थ्य, स्वच्छता और खाद्य आपूर्ति में सुधार।
(D) गर्भनिरोधक को व्यापक रूप से अपनाना।

170. निम्नलिखित में से कौन मृत्यु दर का निर्धारक नहीं है?
(A) स्वच्छ पेयजल तक पहुंच।
(B) पोषण का स्तर।
(C) संक्रामक रोगों का प्रचलन।
(D) देश में बोली जाने वाली भाषाओं की संख्या।

171. जनसंख्या अध्ययन के संदर्भ में, 'प्रवास' को तीन बुनियादी जनसांख्यिकीय प्रक्रियाओं में से एक माना जाता है। अन्य दो क्या हैं?
(A) शहरीकरण और औद्योगीकरण
(B) प्रजननता और मृत्यु दर
(C) शिक्षा और रोजगार
(D) रुग्णता और विवाह

172. भारत जैसे विविधतापूर्ण देश में जनसंख्या नीति को लागू करने वाली प्रमुख समस्याओं में से एक है:
(A) विशाल क्षेत्रीय, सामाजिक और आर्थिक असमानताएं।
(B) अंतरराष्ट्रीय समर्थन की कमी।
(C) जनसंख्या की एकरूप प्रकृति।
(D) कानूनी ढांचे की अनुपस्थिति।

173. 'जनसंख्या संवेग' की अवधारणा स्पष्ट करती है कि:
(A) प्रजनन क्षमता गिरने के पश्चात भी कुछ समय तक जनसंख्या बढ़ती रहती है।
(B) जब प्रजनन क्षमता प्रतिस्थापन स्तर तक पहुँच जाती है तो जनसंख्या वृद्धि तुरंत रुक जाती है।
(C) मृत्यु दर प्रजनन दर से पूर्व गिरती है।
(D) प्रवास जनसंख्या परिवर्तन में एक निरंतर कारक है।

174. निम्नलिखित में से कौन जनसंख्या पर माल्थस के अवरोधों की सही समझ का प्रतिनिधित्व करता है?
(A) निवारक अवरोध मृत्यु दर बढ़ाते हैं; सकारात्मक अवरोध जन्म दर घटाते हैं।
(B) निवारक और सकारात्मक दोनों अवरोध जन्म दर घटाते हैं।
(C) निवारक और सकारात्मक दोनों अवरोध मृत्यु दर बढ़ाते हैं।
(D) निवारक अवरोध जन्म दर घटाते हैं; सकारात्मक अवरोध मृत्यु दर बढ़ाते हैं।

175. जनसांख्यिकीय संक्रमण सिद्धांत का मुख्य योगदान यह है कि यह:
(A) सिद्ध करता है कि माल्थस पूर्णतः सही थे।
(B) जनसंख्या परिवर्तन को सामाजिक-आर्थिक विकास से जोड़ने के लिए एक ढांचा प्रदान करता है।
(C) जनसंख्या के आकार की भविष्यवाणी करने के लिए एक सटीक गणितीय सूत्र प्रदान करता है।
(D) जनसंख्या वृद्धि में केवल प्रवास की भूमिका पर ध्यान केंद्रित करता है।

176. निम्नलिखित में से कौन सा जनसांख्यिकीय शब्द और उसकी परिभाषा का सही युग्म है?
(A) रुग्णता: जनसंख्या में मृत्यु की संख्या।
(B) प्रजननता: बच्चे उत्पन्न करने की जैविक क्षमता।
(C) मृत्यु दर: जनसंख्या में मृत्यु की घटना।
(D) प्रवास: कार्य के लिए दैनिक आवागमन।

177. भारत में 'बीमारू' राज्य ऐतिहासिक रूप से किसके लिए जाने जाते थे?
(A) कम जनसंख्या वृद्धि और उच्च स्तर का आर्थिक विकास।
(B) उच्च जनसंख्या वृद्धि और निम्न स्तर का आर्थिक विकास।
(C) विदेशी देशों में उत्प्रवास की उच्च दर।
(D) राष्ट्रीय औसत की तुलना में बहुत कम मृत्यु दर।

178. भारत में 1976 में घोषित जनसंख्या नीति की किसके लिए आलोचना की गई थी?
(A) शिक्षा पर बहुत अधिक ध्यान केंद्रित करने के लिए।

Click Here to Buy book on Amazon

134. नीचे दिए गए दो कथनों को पढ़ें और सही विकल्प का चयन करें।
कथन I: जनसंख्या शिक्षा विशेष रूप से प्रजनन आयु वर्ग के वयस्कों के लिए है।
कथन II: जनसंख्या शिक्षा का लक्ष्य व्यक्तियों को जनसंख्या संबंधी मुद्दों के बारे में सूचित निर्णय लेने में सहायता करना है।
(A) कथन I और कथन II दोनों सत्य हैं।
(B) कथन I और कथन II दोनों असत्य हैं।
(C) कथन I असत्य है, लेकिन कथन II सत्य है।
(D) कथन I सत्य है, लेकिन कथन II असत्य है।

135. यह तर्क कि एक बड़ी जनसंख्या आर्थिक विकास के लिए प्रोत्साहन हो सकती है क्योंकि यह पैमाने की मितव्ययिता उत्पन्न करती है और नवाचार को बढ़ावा देती है, किस विचारधारा से संबंधित है?
(A) माल्थसवादी
(B) नव-माल्थसवादी
(C) जनसंख्या आशावादी
(D) जनसांख्यिकीय संक्रमण सिद्धांतकार

136. निम्नलिखित में से कौन प्रजननता का सबसे प्रत्यक्ष निर्धारक है?
(A) महिला साक्षरता दर।
(B) प्रति व्यक्ति आय।
(C) शहरीकरण।
(D) विवाह के समय आयु।

137. निम्नलिखित में से कौन भारत में उच्च जन्म दर का एक कारण है?
(A) महिला शिक्षा का उच्च स्तर।
(B) निम्न शिशु मृत्यु दर।
(C) विवाह की सार्वभौमिकता और विवाह के समय कम आयु।
(D) मुख्य रूप से शहरी जनसंख्या।

138. सूची I को सूची II के साथ सुमेलित करें और नीचे दिए गए कोड से सही उत्तर चुनें।
सूची I: शब्द
P. सकारात्मक अवरोध
Q. निवारक अवरोध
R. जनसांख्यिकीय लाभांश
S. प्रतिस्थापन स्तर की प्रजननता
सूची II: विवरण
1. 2.1 की कुल प्रजनन दर
2. अकाल
3. नैतिक संयम
4. युवा जनसंख्या का आर्थिक लाभ
कोड:
(A) P-1, Q-2, R-3, S-4
(B) P-2, Q-3, R-4, S-1
(C) P-3, Q-2, R-1, S-4
(D) P-2, Q-4, R-1, S-3

139. प्रति 100,000 जीवित जन्मों पर गर्भावस्था से संबंधित कारणों से होने वाली महिलाओं की मृत्यु की संख्या के लिए शब्द है:
(A) शिशु मृत्यु दर
(B) अशोधित मृत्यु दर
(C) आयु-विशिष्ट मृत्यु दर
(D) मातृ मृत्यु अनुपात

140. निम्नलिखित में से कौन भारत की जनसंख्या नीति का एक दृष्टिकोण है?
(A) जनसांख्यिकीय लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए बल प्रयोग करना।
(B) जनसंख्या को एक ऐसी समस्या के रूप में देखना जिसे केवल शासन नियंत्रण के माध्यम से ही हल किया जा सकता है।
(C) जनसंख्या के मुद्दों को स्वास्थ्य, शिक्षा और विकास के व्यापक लक्ष्यों के साथ एकीकृत करना।
(D) केवल जन्म नियंत्रण पर ध्यान केंद्रित करना और मातृ एवं शिशु स्वास्थ्य की उपेक्षा करना।

141. जनसांख्यिकीय संक्रमण एक मॉडल है जो वर्णन करता है:
(A) ग्रामीण से शहरी क्षेत्रों की ओर व्यक्तियों का आवागमन।
(B) समय के साथ जनसंख्या की आयु संरचना में परिवर्तन।
(C) वह दर जिस पर जनसंख्या की आनुवंशिक संरचना बदलती है।
(D) देश के विकास के साथ उच्च जन्म और मृत्यु दर से निम्न जन्म और मृत्यु दर की ओर बदलाव।

142. निम्नलिखित प्रश्न में दो कथन शामिल हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है। इन दोनों कथनों का परीक्षण करें और नीचे दिए गए कोड का उपयोग करके सही उत्तर चुनें।
अभिकथन (A): लोकतंत्र में जनसंख्या नियंत्रण उपायों को व्यक्तिगत स्वतंत्रता और सूचित विकल्प का सम्मान करना चाहिए।
कारण (R): बलपूर्वक नसबंदी जैसे दमनकारी उपाय मानवाधिकारों का उल्लंघन हैं और इससे सामाजिक अशांति और नीतिगत विफलता हो सकती है।
(A) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सत्य हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सत्य है लेकिन R असत्य है।
(D) A असत्य है लेकिन R सत्य है।

143. निम्नलिखित में से कौन 'आयु और लिंग संरचना' को सबसे सटीक रूप से परिभाषित करता है?
(A) किसी देश में रहने वाले व्यक्तियों की कुल संख्या।
(B) जनसंख्या का विभिन्न आयु और लिंग समूहों में वितरण।
(C) एक वर्ष में जन्म और मृत्यु की संख्या।
(D) किसी देश में आने और बाहर जाने वाले व्यक्तियों की

Downloaded from www.pdf.tube

124. 'रुग्णता' शब्द अस्वस्थ या रुग्ण होने की स्थिति का वर्णन करता है। 'सह-रुग्णता' का क्या अर्थ है?
(A) एक एकल संक्रामक रोग जो घनी जनसंख्या के भीतर अत्यधिक संक्रामक है।
(B) एक गंभीर चिकित्सा स्थिति जो बिना किसी पूर्व सूचना के सीधे मृत्यु की ओर ले जाती है।
(C) लंबी अवधि में गंभीर रोग से सफल स्वास्थ्य लाभ प्रक्रिया।
(D) एक ही रोगी में एक साथ दो या दो से अधिक चिकित्सा स्थितियों की उपस्थिति।

125. निम्नलिखित प्रश्न में दो कथन शामिल हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रुप में अंकित किया गया है। इन दोनों कथनों का परीक्षण करें और नीचे दिए गए कोड का उपयोग करके सही उत्तर चुनें।
अभिकथन (A): राष्ट्रीय जनसंख्या नीति, 2000, लक्ष्य-आधारित दृष्टिकोण से विकल्प-आधारित दृष्टिकोण की ओर बदलाव को चिह्नित करती है।
कारण (R): इस नीति ने नसबंदी के जनसांख्यिकीय लक्ष्यों पर ध्यान केंद्रित करने के बजाय गर्भनिरोधक की अपूर्ण आवश्यकताओं को पूर्ण करने और स्वैच्छिक प्रजनन स्वास्थ्य लक्ष्यों को प्राप्त करने पर बल दिया।
(A) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सत्य हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सत्य है लेकिन R असत्य है।
(D) A असत्य है लेकिन R सत्य है।

126. विकासशील समाज में निम्नलिखित समूहों को उनकी मृत्यु दर के क्रम में, सामान्यतः निम्नतम से उच्चतम तक व्यवस्थित करें।
1. शिशु
2. युवा वयस्क
3. वृद्ध
4. बच्चे
(A) 2, 4, 1, 3
(B) 2, 1, 4, 3
(C) 1, 2, 3, 4
(D) 4, 2, 1, 3

127. निम्नलिखित में से किसे जनसंख्या नियंत्रण का अप्रत्यक्ष उपाय माना जाता है?
(A) छोटे परिवार के आदर्शों के बारे में शिक्षा और जागरुकता फैलाना।
(B) सुरक्षित गर्भपात सेवाओं तक पहुंच प्रदान करना।
(C) निःशुल्क निरोध वितरित करना।
(D) नसबंदी शिविर आयोजित करना।

128. जनसांख्यिकीय संक्रमण मॉडल की अवस्था 3 में जन्म दर क्यों गिरने लगती है?
(A) मृत्यु दर पुनः बढ़ने लगती है।
(B) एक महामारी प्रजननक्षम वयस्कों की संख्या कम कर देती है।
(C) सामाजिक और आर्थिक परिवर्तन बड़े परिवारों को कम आवश्यक और अधिक खर्चीला बना देते हैं।
(D) शासन एक से अधिक बच्चे होने पर सख्त कानून लागू करता है।

129. प्रजननता के निर्धारकों के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें।
(1) निम्न शिशु मृत्यु दर अक्सर निम्न प्रजननता से जुड़ी होती है।
(2) शहरीकरण सामान्यतः प्रजनन दर में वृद्धि की ओर ले जाता है।
(3) पितृसत्तात्मक समाज में पुत्रों की इच्छा एक महिला द्वारा उत्पन्न किए जाने वाले बच्चों की संख्या बढ़ा सकती है।
उपरोक्त कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?
(A) केवल 1 और 2
(B) केवल 2 और 3
(C) केवल 1 और 3
(D) 1, 2, और 3

130. माल्थसवादी सिद्धांत के साथ एक प्रमुख समस्या किसके बीच अंतर करने में इसकी विफलता है:
(A) निवारक और सकारात्मक अवरोध।
(B) जनसंख्या वृद्धि और आर्थिक विकास।
(C) खाद्य उत्पादन और औद्योगिक उत्पादन।
(D) बच्चे उत्पन्न करने की इच्छा और गर्भनिरोधक का उपयोग।

131. भारत में 1921-1951 की अवधि की विशेषता है:
(A) निरंतर परंतु निश्चित जनसंख्या वृद्धि।
(B) ऋणात्मक जनसंख्या वृद्धि।
(C) स्थिर जनसंख्या।
(D) जनसंख्या विस्फोट।

132. निम्नलिखित में से किसे छोड़कर सभी आयु-लिंग संरचना के परिणाम हैं?
(A) श्रम आपूर्ति पर प्रभाव।
(B) निर्भरता अनुपात का निर्धारण।
(C) देश की राजनीतिक व्यवस्था का निर्धारण।
(D) भविष्य की जनसंख्या वृद्धि पर प्रभाव।

133. भारत की जनसंख्या के बारे में निम्नलिखित में से कौन सा गलत कथन है?
(A) भारत विश्व का दूसरा सबसे अधिक जनसंख्या वाला देश है।
(B) लिंगानुपात ऐतिहासिक रूप से महिलाओं के प्रतिकूल रहा है।
(C) जनसंख्या का एक बड़ा भाग युवा आयु समूहों में है।
(D) 1921 के बाद से जनसंख्या वृद्धि दर लगातार तीव्र हो रही है।

NODIA

(D) जन्म और मृत्यु दर दोनों में तीव्र गिरावट।

156. जनसंख्या शिक्षा का मुख्य उद्देश्य क्या है?
(A) व्यक्तियों को छोटे परिवार के मानदंडों को अपनाने के लिए विवश करना।
(B) व्यक्तियों को जनसंख्या के मुद्दों के संबंध में तर्कसंगत निर्णय लेने में सहायता करना।
(C) मानव प्रजनन का जीव विज्ञान पढ़ाना।
(D) सीधे विद्यालयों में परिवार नियोजन सेवाएं प्रदान करना।

157. सूची I को सूची II के साथ सुमेलित करें और नीचे दिए गए कोड से सही उत्तर चुनें।
सूची I: जनसंख्या अवधारणा
P. अशोधित जन्म दर
Q. लिंगानुपात
R. शिशु मृत्यु दर
S. मातृ मृत्यु अनुपात
सूची II: मापन इकाई
1. प्रति 1,000 जीवित जन्मों पर मृत्यु
2. प्रति 1,000 पुरुषों पर महिलाएं
3. प्रति 1,000 जनसंख्या पर जन्म
4. प्रति 100,000 जीवित जन्मों पर मृत्यु
कोड:
(A) P-3, Q-2, R-1, S-4
(B) P-1, Q-2, R-3, S-4
(C) P-3, Q-1, R-2, S-4
(D) P-2, Q-3, R-4, S-1

158. निम्नलिखित में से कौन सा एक सामाजिक-सांस्कृतिक कारक है जो जनसंख्या वृद्धि को प्रभावित कर सकता है?
(A) औसत वार्षिक वर्षा।
(B) महिला जनसंख्या की साक्षरता दर।
(C) देश की जीडीपी विकास दर।
(D) खनिज संसाधनों की उपलब्धता।

159. वह सिद्धांत जो जनसंख्या के प्रतिरूप को समाज के तकनीकी विकास के स्तर से जोड़ता है, वह है:
(A) माल्थसवादी सिद्धांत
(B) सामाजिक परिवर्तन का सिद्धांत
(C) मानव पूंजी का सिद्धांत
(D) जनसांख्यिकीय संक्रमण सिद्धांत

160. निम्नलिखित प्रश्न में दो कथन शामिल हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है। इन दोनों कथनों का परीक्षण करें और नीचे दिए गए कोड का उपयोग करके सही उत्तर चुनें।
अभिकथन (A): माल्थस के विचार में, 'सकारात्मक अवरोधों' के प्रभाव भयानक होते हैं और मानवीय कष्ट का कारण बनते हैं।
कारण (R): सकारात्मक अवरोधों में अकाल, रोग और युद्ध शामिल हैं, जो खाद्य आपूर्ति के साथ जनसंख्या को संतुलित करने के लिए मृत्यु दर को बढ़ाते हैं।
(A) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सत्य हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सत्य है लेकिन R असत्य है।
(D) A असत्य है लेकिन R सत्य है।

161. युवा आयु वर्ग (0-14) में जनसंख्या के बड़े अनुपात के होने का एक परिणाम क्या है?
(A) एक उच्च निर्भरता अनुपात।
(B) एक निम्न निर्भरता अनुपात।
(C) एक विशाल तत्काल श्रम बल।
(D) जनसंख्या की एक उच्च औसत आयु।

162. निम्नलिखित में से किसे छोड़कर सभी जनसंख्या नियंत्रण के मान्यता प्राप्त उपाय हैं?
(A) विवाह की आयु बढ़ाना।
(B) ग्रामीण-से-शहरी प्रवास को प्रोत्साहित करना।
(C) परिवार नियोजन को बढ़ावा देना।
(D) महिलाओं की स्थिति में सुधार करना।

163. भारतीय जनसंख्या की वृद्धि के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें।
(1) 1911 और 1921 के बीच भारतीय जनसंख्या की वृद्धि ऋणात्मक थी।
(2) 1951 के बाद से भारतीय जनसंख्या की वृद्धि लगातार 2% प्रति वर्ष से ऊपर रही है।
(3) 1981 के बाद से प्रति दशक जनसंख्या में पूर्ण वृद्धि कम हो रही है।
उपरोक्त कथनों में से कौन सा/से गलत है/हैं?
(A) केवल 1
(B) केवल 2 और 3
(C) केवल 1 और 3
(D) 1, 2, और 3

164. कौन सी अवधारणा उन वर्षों की संख्या का वर्णन करती है जो एक नवजात शिशु जीवित रहेगा यदि उसके जन्म के समय मृत्यु दर के प्रचलित प्रतिरूप उसके पूरे जीवन में समान रहें?
(A) जन्म के समय जीवन प्रत्याशा
(B) अशोधित मृत्यु दर
(C) शिशु मृत्यु दर
(D) प्राकृतिक वृद्धि दर

165. 'जननशक्ति' शब्द का तात्पर्य है:
(A) एक महिला से उत्पन्न बच्चों की वास्तविक संख्या।
(B) बच्चे उत्पन्न करने की शारीरिक क्षमता।
(C) बच्चों की एक निश्चित संख्या के लिए प्राथमिकता।
(D) शिशुओं की मृत्यु दर।

166. भारत की जनसंख्या नीति का एक प्रमुख दृष्टिकोण यह है कि यह किसका भाग है:

Click Here to Buy book on Amazon

संख्या।

144. स्वतंत्रता के पश्चात से भारत में मृत्यु दर में गिरावट के मुख्य कारणों में से एक रहा है:
(A) महामारियों और संक्रामक रोगों का नियंत्रण।
(B) जन्म दर में महत्वपूर्ण कमी।
(C) स्वस्थ जीवन शैली की ओर सांस्कृतिक परिवर्तन।
(D) जीवन प्रत्याशा में शासन द्वारा अनिवार्य वृद्धि।

145. इनमें से कौन रुग्णता का एक माप है?
(A) अशोधित मृत्यु दर
(B) जीवन प्रत्याशा
(C) सामान्य प्रजनन दर
(D) आपतन दर

146. जनसंख्या वृद्धि के परिणामों के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें।
(1) यह सदैव उच्च प्रति व्यक्ति आय की ओर ले जाता है।
(2) यह जल और वनों जैसे प्राकृतिक संसाधनों पर दबाव डाल सकता है।
(3) इससे श्रम शक्ति के आकार में वृद्धि हो सकती है।
उपरोक्त कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?
(A) केवल 1
(B) केवल 2 और 3
(C) केवल 1 और 3
(D) 1, 2, और 3

147. एक "स्थिर जनसंख्या" वह है जिसमें:
(A) कोई प्रवास नहीं होता है।
(B) जन्म दर मृत्यु दर के बराबर होती है, और जनसंख्या का आकार स्थिर रहता है।
(C) प्रत्येक व्यक्ति 65 वर्ष से अधिक आयु का है।
(D) जनसंख्या बहुत तीव्रता से बढ़ रही है।

148. माल्थस के "निवारक अवरोधों" की अवधारणा किस पर निर्भर करती है?
(A) प्राकृतिक आपदाएं और अकाल।
(B) जन्म दर को कम करने के लिए मानवीय कार्य।
(C) खाद्य आपूर्ति बढ़ाने के लिए शासन का हस्तक्षेप।
(D) मृत्यु दर को कम करने के लिए चिकित्सा तकनीक।

149. राष्ट्रीय जनसंख्या नीति (2000) का दीर्घकालिक उद्देश्य किस वर्ष तक स्थिर जनसंख्या प्राप्त करना है?
(A) 2025
(B) 2035
(C) 2055
(D) 2045

150. निम्नलिखित देशों/क्षेत्रों को उनके जनसांख्यिकीय संक्रमण के अनुमानित ऐतिहासिक समय के अनुसार, सबसे पहले से नवीनतम तक व्यवस्थित करें।
1. पश्चिमी यूरोप
2. भारत
3. उप-सहारा अफ्रीका
(A) 1, 2, 3
(B) 2, 1, 3
(C) 3, 2, 1
(D) 1, 3, 2

NODIA

151. नीचे दिए गए दो कथनों को पढ़ें और सही विकल्प का चयन करें।
कथन I: जनसांख्यिकीय संक्रमण सिद्धांत एक सार्वभौमिक रूप से लागू होने वाला नियम है जो प्रत्येक देश के लिए प्रजनन क्षमता में गिरावट के सटीक समय की भविष्यवाणी करता है।
कथन II: यह मृत्यु दर और प्रजनन क्षमता के बदलते प्रतिरूप का एक सामान्यीकृत विवरण है जो कई विकसित देशों में घटित हुआ है।
(A) कथन I और कथन II दोनों सत्य हैं।
(B) कथन I और कथन II दोनों असत्य हैं।
(C) कथन I असत्य है, लेकिन कथन II सत्य है।
(D) कथन I सत्य है, लेकिन कथन II असत्य है।

152. निम्नलिखित में से कौन प्रजननता का प्राथमिक निर्धारक नहीं है?
(A) विवाहित महिलाओं का अनुपात।
(B) गर्भनिरोधक का उपयोग।
(C) प्रेरित गर्भपात की घटना।
(D) अशोधित मृत्यु दर।

153. यह विचार कि एक बड़ी और बढ़ती जनसंख्या एक परिसंपत्ति हो सकती है, जो मांग और नवाचार को प्रेरित करती है, जनसंख्या को इस रूप में देखने का सबसे सटीक वर्णन है:
(A) एक माल्थसवादी संकट।
(B) विकास पर एक बाधा।
(C) मानव संसाधन।
(D) एक जनसांख्यिकीय जाल।

154. समाज में उच्च शिशु मृत्यु दर अक्सर किसका कारण बनती है:
(A) निम्न प्रजनन दर, क्योंकि माता-पिता को बच्चों को खोने का भय होता है।
(B) उच्च प्रजनन दर, क्योंकि माता-पिता कुछ बच्चों के जीवित रहने को सुनिश्चित करने के लिए अधिक बच्चे उत्पन्न करते हैं।
(C) प्रजनन दर में कोई परिवर्तन नहीं।
(D) बच्चे के जन्म पर सरकारी प्रतिबंध।

155. भारत में 'जनसंख्या विस्फोट' का चरण (1951-1981) किसके कारण हुआ था?
(A) जन्म दर में तीव्र वृद्धि और मृत्यु दर में तीव्र गिरावट।
(B) उच्च और स्थिर जन्म दर और तेजी से गिरती मृत्यु दर।
(C) स्थिर जन्म दर और मृत्यु दर में तीव्र वृद्धि।

(B) इसमें बलपूर्वक और दमन के तत्व होने के लिए।
(C) परिवार नियोजन के मुद्दे को विस्मृत करने के लिए।
(D) अपने दृष्टिकोण में बहुत मंद और क्रमिक होने के लिए।

179. प्रजनन दर को कम करने वाला एक सामाजिक-सांस्कृतिक कारक है:
(A) पुत्रों की वरीयता।
(B) महिलाओं की निम्न स्थिति।
(C) उच्च महिला शिक्षा और कार्यबल में भागीदारी।
(D) विवाह की कम आयु।

180. निम्नलिखित प्रश्न में दो कथन शामिल हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है। इन दोनों कथनों का परीक्षण करें और नीचे दिए गए कोड का उपयोग करके सही उत्तर चुनें।
अभिकथन (A): अपनी जनसंख्या के एक बड़े भाग के कार्यशील आयु वर्ग में होने वाले देश में 'जनसांख्यिकीय लाभांश' की संभावना होती है।
कारण (R): यह जनसांख्यिकीय लाभांश स्वतः प्राप्त होता है और शिक्षा, स्वास्थ्य तथा रोजगार सृजन से संबंधित नीतियों पर निर्भर नहीं करता है।
(A) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सत्य हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सत्य है लेकिन R असत्य है।
(D) A असत्य है लेकिन R सत्य है।

181. जनसांख्यिकीय संक्रमण सिद्धांत की अवस्था 2 का मुख्य केंद्र क्या है?
(A) गिरती मृत्यु दर के कारण तीव्रता से बढ़ती जनसंख्या।
(B) उच्च जन्म और मृत्यु दर के साथ एक स्थिर जनसंख्या।
(C) गिरती जन्म दर के कारण जनसंख्या वृद्धि का मंद होना।
(D) निम्न जन्म और मृत्यु दर के साथ एक स्थिर या घटती जनसंख्या।

182. इनमें से कौन सा सूचना और शिक्षा प्रदान करने पर आधारित जनसंख्या नियंत्रण के लिए किए गए उपाय का एक उदाहरण है?
(A) नसबंदी शिविर।
(B) गर्भनिरोधक गोलियों का वितरण।
(C) छोटे परिवार के लाभों पर मीडिया अभियान।
(D) नसबंदी के लिए वित्तीय प्रोत्साहन।

183. मृत्यु दर के निर्धारकों के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें।
(1) चिकित्सा विज्ञान में प्रगति का मृत्यु दर पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है।
(2) युद्ध और प्राकृतिक आपदाएं मृत्यु दर में तीव्र वृद्धि का कारण बन सकती हैं।
(3) किसी जनसंख्या की पोषण स्थिति उसके मृत्यु दर के स्तर का एक प्रमुख निर्धारक है।
उपरोक्त कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?
(A) केवल 1
(B) केवल 1 और 2
(C) केवल 2 और 3
(D) 1, 2, और 3

184. यह विचार कि जनसंख्या वृद्धि बचत और पूंजी निर्माण को कम करके आर्थिक विकास में एक बड़ी बाधा है, जनसंख्या को किस रूप में दर्शाता है?
(A) मानव संसाधन
(B) जनसांख्यिकीय लाभांश
(C) स्थिर कारक
(D) बाधा

185. 1901 से 1921 तक भारत में जनसंख्या वृद्धि के चरण की निम्नलिखित में से कौन सी विशेषता नहीं है?
(A) स्थिर वृद्धि।
(B) उच्च जन्म दर।
(C) उच्च मृत्यु दर।
(D) तीव्र और निरंतर वृद्धि।

186. 'जन्म के समय लिंगानुपात' की अवधारणा किससे संबंधित है?
(A) सभी आयु में पुरुष और महिला जनसंख्या का अनुपात।
(B) पुरुष और महिला जन्मों का अनुपात।
(C) विवाहित पुरुषों और विवाहित महिलाओं का अनुपात।
(D) पुरुष और महिला मृत्यु दर का अनुपात।

187. नीचे दिए गए दो कथनों को पढ़ें और सही विकल्प का चयन करें।
कथन I: माल्थस का सिद्धांत जनसंख्या का एक आशावादी सिद्धांत है।
कथन II: यह भविष्यवाणी करता है कि मानवीय सूझबूझ सदैव जनसंख्या वृद्धि के साथ मेल बिठाने के लिए खाद्य आपूर्ति बढ़ाने के मार्ग खोज लेगी।
(A) कथन I और कथन II दोनों सत्य हैं।
(B) कथन I और कथन II दोनों असत्य हैं।
(C) कथन I असत्य है, लेकिन कथन II सत्य है।
(D) कथन I सत्य है, लेकिन कथन II असत्य है।

188. युवा आयु वर्ग (0-14) में जनसंख्या का एक बड़ा भाग होने का एक प्रमुख परिणाम क्या है?
(A) प्राथमिक शिक्षा पर व्यय में वृद्धि।
(B) पेंशन प्रणालियों और वृद्धों की स्वास्थ्य देखभाल पर बढ़ा हुआ दबाव।
(C) कार्यबल के आकार में तीव्र वृद्धि।
(D) भविष्य की जनसंख्या वृद्धि की उच्च संभावना।

189. 'जनसंख्या विस्फोट' शब्द का तात्पर्य है:
(A) ऐसी स्थिति जहां मृत्यु दर जन्म दर से अधिक हो।
(B) जनसंख्या के आकार में बहुत तीव्र वृद्धि।

Downloaded from www.pdf.tube

(A) जनसंख्या में मृत्यु की दर।
(B) जनसंख्या में बीमारी या रोग की दर।
(C) जनसंख्या में जन्म की दर।
(D) जनसंख्या में प्रवास की दर।

213. नीचे दिए गए दो कथनों को पढ़ें और सही विकल्प का चयन करें।
कथन I: राष्ट्रीय जनसंख्या नीति (2000) ने लक्ष्य-मुक्त दृष्टिकोण अपनाया।
कथन II: यह दृष्टिकोण महिलाओं को उनके प्रजनन स्वास्थ्य के बारे में स्वैच्छिक और सूचित निर्णय लेने का अधिकार देता है।
(A) कथन I और कथन II दोनों सत्य हैं।
(B) कथन I और कथन II दोनों असत्य हैं।
(C) कथन I सत्य है, लेकिन कथन II असत्य है।
(D) कथन I असत्य है, लेकिन कथन II सत्य है।

214. किसी जनसंख्या में असंतुलित लिंगानुपात होने का परिणाम निम्नलिखित में से कौन सा है?
(A) इससे अधिक लैंगिक समानता आती है।
(B) इससे सामाजिक समस्याएं उत्पन्न हो सकती हैं जैसे पुरुषों के लिए विवाह साथी खोजने में कठिनाई।
(C) इसका कोई महत्वपूर्ण सामाजिक या आर्थिक परिणाम नहीं होता है।
(D) इससे कुल जनसंख्या में तेजी से गिरावट आती है।

215. जनसांख्यिकीय संक्रमण सिद्धांत के किस चरण में "जनसांख्यिकीय अंतराल" सर्वाधिक विस्तृत होता है?
(A) अवस्था 1
(B) अवस्था 2
(C) अवस्था 3
(D) अवस्था 4

216. यह विश्वास कि जनसंख्या वृद्धि मांग और नवाचार को प्रोत्साहित करके विकास के लिए एक सकारात्मक शक्ति हो सकती है, किस अवधारणा से जुड़ी है:
(A) बाधा के रूप में जनसंख्या।
(B) मानव संसाधन के रूप में जनसंख्या।
(C) माल्थसवादी जाल।
(D) सकारात्मक अवरोध।

217. सूची I को सूची II के साथ सुमेलित करें और नीचे दिए गए कोड से सही उत्तर चुनें।
सूची I: भारत में जनसांख्यिकीय घटना
P. महान विभाजक वर्ष
Q. राष्ट्रीय परिवार नियोजन कार्यक्रम का शुभारंभ
R. प्रथम राष्ट्रीय जनसंख्या नीति की घोषणा
S. दूसरी राष्ट्रीय जनसंख्या नीति की घोषणा
सूची II: वर्ष
1. 1976
2. 1921
3. 2000
4. 1952
कोड:
(A) P-2, Q-4, R-1, S-3
(B) P-1, Q-2, R-3, S-4
(C) P-2, Q-1, R-4, S-3
(D) P-4, Q-2, R-1, S-3

218. एक निर्धन देश में जनसंख्या में तीव्र वृद्धि का तात्कालिक प्रभाव क्या है:
(A) स्वास्थ्य और शिक्षा जैसी मौजूदा सामाजिक सेवाओं पर बढ़ता दबाव।
(B) बेरोजगार व्यक्तियों की कुल संख्या में कमी।
(C) भोजन की प्रति व्यक्ति उपलब्धता में वृद्धि।
(D) पर्यावरणीय गुणवत्ता में महत्वपूर्ण सुधार।

NODIA

219. निम्नलिखित प्रश्न में दो कथन शामिल हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है। इन दोनों कथनों का परीक्षण करें और नीचे दिए गए कोड का उपयोग करके सही उत्तर चुनें।
अभिकथन (A): किसी जनसंख्या की आयु संरचना उसकी भविष्य की वृद्धि का एक महत्वपूर्ण निर्धारक है।
कारण (R): युवा व्यक्तियों के उच्च अनुपात वाली जनसंख्या में वृद्धि के लिए एक अंतर्निहित संवेग होता है क्योंकि ये युवा व्यक्ति अपनी प्रजनन आयु में प्रवेश करते हैं।
(A) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सत्य हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सत्य है लेकिन R असत्य है।
(D) A असत्य है लेकिन R सत्य है।

220. शिशु मृत्यु दर किसका प्रमुख संकेतक है:
(A) किसी राष्ट्र की आर्थिक समृद्धि और धन वितरण का सामान्यीकृत स्तर।
(B) राष्ट्रीय राजनीतिक व्यवस्था की प्रशासनिक प्रभावशीलता और स्थिरता।
(C) माताओं की पोषण स्थिति और बाल स्वास्थ्य देखभाल सेवाओं की गुणवत्ता।
(D) किसी देश में औद्योगीकरण और तकनीकी विकास का व्यापक स्तर।

221. कौन सा कथन माल्थसवादी और जनसांख्यिकीय संक्रमण सिद्धांतों के बीच अंतर को सटीक रूप से दर्शाता है?
(A) माल्थस ने संकट के आवर्ती चक्रों का प्रस्ताव दिया, जबकि संक्रमण सिद्धांत एक नए संतुलन की ओर बदलाव का वर्णन करता है।
(B) माल्थस ने सामाजिक-आर्थिक विकास को प्राथमिकता दी, जबकि संक्रमण सिद्धांत विशेष रूप से नैतिक संयम पर ध्यान केंद्रित करता है।
(C) माल्थस ने अत्यधिक आशावादी दृष्टिकोण प्रस्तुत किया, जबकि संक्रमण सिद्धांत मूल रूप से निराशावादी प्रकृति

201. निम्नलिखित में से कौन जनसंख्या और निर्वाह पर माल्थस के दृष्टिकोण का सही वर्णन करता है?
(A) निर्वाह के साधनों में जनसंख्या की तुलना में तीव्रता से बढ़ने की प्रवृत्ति होती है।
(B) जनसंख्या में निर्वाह के साधनों की तुलना में तीव्रता से बढ़ने की प्रवृत्ति होती है।
(C) जनसंख्या और निर्वाह के साधन एक ही दर से बढ़ते हैं।
(D) जनसंख्या और निर्वाह के साधनों के बीच कोई संबंध नहीं है।

202. नीचे दिए गए दो कथनों को पढ़ें और सही विकल्प का चयन करें।
कथन I: किसी जनसंख्या की आयु-लिंग संरचना पिछले जनसांख्यिकीय रुझानों का परिणाम होती है।
कथन II: किसी जनसंख्या की आयु-लिंग संरचना इसकी भविष्य की जनसांख्यिकीय क्षमता को भी प्रभावित करती है।
(A) कथन I और कथन II दोनों सत्य हैं।
(B) कथन I और कथन II दोनों असत्य हैं।
(C) कथन I सत्य है, लेकिन कथन II असत्य है।
(D) कथन I असत्य है, लेकिन कथन II सत्य है।

203. कुल प्रजनन दर को इस प्रकार परिभाषित किया गया है:
(A) एक महिला ने अपने जीवनकाल में जितने बच्चों को जन्म दिया है, उनकी कुल संख्या।
(B) किसी दिए गए वर्ष में प्रति 1,000 महिलाओं पर जीवित जन्मों की संख्या।
(C) किसी दिए गए वर्ष में जन्मों की संख्या में से मृत्यु की संख्या घटाकर।
(D) वर्तमान आयु-विशिष्ट दरों का अनुभव करने वाली महिला से उत्पन्न होने वाले बच्चों की औसत संख्या।

204. स्वतंत्रता के पश्चात भारतीय जनसंख्या की तीव्र वृद्धि का मुख्य कारण निम्नलिखित में से कौन सा है?
(A) जन्म दर में तीव्र वृद्धि।
(B) आप्रवास की एक विशाल लहर।
(C) मृत्यु दर में भारी गिरावट।
(D) बड़े परिवारों के लिए सरकारी प्रोत्साहन।

205. जनसांख्यिकीय संक्रमण सिद्धांत के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें।
(1) यह सुझाव देता है कि सभी देशों में अंततः निम्न जन्म और मृत्यु दर होगी।
(2) यह मूल रूप से एशिया के विकासशील देशों के जनसांख्यिकीय इतिहास पर आधारित था।
(3) यह सिद्धांत किसी दिए गए देश के लिए संक्रमण के समय या गति की भविष्यवाणी करने में विफल रहता है।
उपरोक्त कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?
(A) केवल 1
(B) केवल 1 और 3
(C) केवल 2 और 3
(D) 1, 2, और 3

206. मृत्यु दर के निर्धारकों के संबंध में गलत कथन की पहचान करें।
(A) उच्च जन्म दर उच्च मृत्यु दर का प्रत्यक्ष कारण है।
(B) बेहतर पोषण सामान्यतः निम्न मृत्यु दर की ओर ले जाता है।
(C) स्वच्छ जल और स्वच्छता तक पहुंच संक्रामक रोगों से मृत्यु दर को कम करती है।
(D) शिक्षा के उच्च स्तर अक्सर निम्न मृत्यु दर से जुड़े होते हैं।

207. "जनसांख्यिकीय लाभांश" का लाभ उठाने की देश की क्षमता मुख्य रूप से किस पर निर्भर करती है:
(A) बहुत बड़ी वृद्ध जनसंख्या का होना।
(B) अपनी युवा जनसंख्या के स्वास्थ्य, शिक्षा और रोजगार में निवेश करना।
(C) सभी आप्रवास के लिए अपनी सीमाओं को बंद रखना।
(D) उच्च प्रजनन दर बनाए रखना।

208. जनसंख्या नीति के भाग के रूप में जनसंख्या को नियंत्रित करने का प्रत्यक्ष उपाय इनमें से कौन सा है?
(A) सामान्य साक्षरता बढ़ाना।
(B) व्यावसायिक प्रशिक्षण प्रदान करना।
(C) गर्भनिरोधकों को सुलभ बनाना।
(D) अधिक सड़कों का निर्माण करना।

209. भारत में 1951-1981 की अवधि को जनसंख्या विस्फोट की अवधि के रूप में जाना जाता है क्योंकि:
(A) जन्म दर और मृत्यु दर दोनों बहुत अधिक थे।
(B) जन्म दर में तेजी से वृद्धि हुई जबकि मृत्यु दर उच्च बनी रही।
(C) जन्म दर और मृत्यु दर दोनों में भारी गिरावट आई।
(D) मृत्यु दर में भारी गिरावट आई जबकि जन्म दर उच्च बनी रही।

210. माल्थसवादी सिद्धांत को अक्सर निराशावादी के रूप में वर्णित किया गया है क्योंकि:
(A) यह सुझाव देता है कि निर्धनता और कष्ट जनसंख्या वृद्धि के अपरिहार्य परिणाम हैं।
(B) यह सभी के लिए प्रचुरता और समृद्धि के भविष्य की भविष्यवाणी करता है।
(C) यह समानता प्राप्त करने के लिए क्रांतिकारी सामाजिक सुधारों की वकालत करता है।
(D) यह तकनीक की शक्ति के बारे में आशावादी है।

211. कौन सा कारक प्रजननता को प्रभावित करने वाला सामाजिक-सांस्कृतिक निर्धारक नहीं माना जाता है?
(A) कई बच्चे होने का धार्मिक महत्व।
(B) समाज में महिलाओं की सामाजिक स्थिति।
(C) क्षेत्र की औसत ऊंचाई।
(D) संयुक्त बनाम एकल परिवार प्रणालियों का प्रचलन।

212. रुग्णता दर क्या मापती है?

Click Here to Buy book on Amazon

(C) शून्य जनसंख्या वृद्धि का चरण।
(D) प्रवास में अचानक वृद्धि।

190. राष्ट्रीय जनसंख्या नीति का अंतिम लक्ष्य क्या है?
(A) जनसंख्या के आकार को अधिकतम करना।
(B) जनसंख्या के ऐसे आकार और संरचना को प्राप्त करना जो संधारणीय हो और जीवन की उच्च गुणवत्ता के लिए अनुकूल हो।
(C) जनसंख्या को न्यूनतम संभव स्तर तक कम करना।
(D) अन्य देशों में उत्प्रवास को बढ़ावा देना।

191. माल्थस के मूल सूत्रीकरण के अनुसार 'निवारक अवरोध' का उदाहरण निम्नलिखित में से कौन सा है?
(A) दुराचार में सम्मिलित हुए बिना विवाह को टालना
(B) प्लेग महामारी
(C) हजारों व्यक्तियों की जान लेने वाली बाढ़
(D) उच्च उपज वाली फसलों का आविष्कार

192. सूची I को सूची II के साथ सुमेलित करें और नीचे दिए गए कोड से सही उत्तर चुनें।
सूची I: भारतीय जनसंख्या वृद्धि का चरण
P. 1901-1921
Q. 1921-1951
R. 1951-1981
S. 1981-वर्तमान
सूची II: मुख्य विशेषता
1. जनसंख्या विस्फोट
2. स्थिर या गतिहीन चरण
3. धीमे होने के संकेतों के साथ उच्च वृद्धि
4. स्थिर वृद्धि की अवधि
कोड:
(A) P-1, Q-3, R-2, S-4
(B) P-2, Q-4, R-3, S-1
(C) P-2, Q-4, R-1, S-3
(D) P-3, Q-1, R-4, S-2

193. अशोधित मृत्यु दर में गिरावट जनसांख्यिकीय संक्रमण के किस चरण की केंद्रीय विशेषता है?
(A) अवस्था 1
(B) अवस्था 2
(C) अवस्था 3
(D) अवस्था 4

194. किसी देश के विकास के साथ संक्रामक रोगों से गैर-संक्रामक या दीर्घकालिक रोगों की ओर रोग के प्रतिरूप में बदलाव को क्या कहा जाता है?
(A) जनसांख्यिकीय संक्रमण
(B) गतिशीलता संक्रमण
(C) महामारी विज्ञान संक्रमण
(D) पोषण संबंधी संक्रमण

195. कौन सा कथन जनसंख्या पर 'मानव संसाधन' परिप्रेक्ष्य को सबसे सटीक रूप से दर्शाता है?
(A) व्यक्ति मुख्य रूप से उपभोक्ता हैं जो संसाधनों को समाप्त करते हैं।
(B) प्रत्येक अतिरिक्त व्यक्ति शासन पर एक बोझ है।
(C) एक बड़ी, कुशल और स्वस्थ जनसंख्या राष्ट्र की सबसे बड़ी संपत्ति है।
(D) जनसंख्या वृद्धि को हर मूल्य पर रोका जाना चाहिए।

196. मृत्यु दर का एक महत्वपूर्ण निर्धारक जो किसी व्यक्ति की जीवन शैली से संबंधित है, वह है:
(A) उनका आनुवंशिक कोड।
(B) सार्वजनिक स्वच्छता की गुणवत्ता।
(C) उनका व्यवसाय और आय का स्तर।
(D) आहार, व्यायाम और धूम्रपान से संबंधित उनकी आदतें।

197. भारतीय संदर्भ में "जनसंख्या शिक्षा" की अवधारणा किसके बारे में चिंताओं से उद्भूत हुई:
(A) जनसंख्या वृद्धि की तीव्र दर और इसके निहितार्थ।
(B) अधिक कुशल कार्यबल की आवश्यकता।
(C) पारंपरिक पारिवारिक मूल्यों में गिरावट।
(D) उत्प्रवास को बढ़ावा देने की आवश्यकता।

198. निम्नलिखित प्रश्न में दो कथन शामिल हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है। इन दोनों कथनों का परीक्षण करें और नीचे दिए गए कोड का उपयोग करके सही उत्तर चुनें।
अभिकथन (A): भारत में, पुत्र संतान के लिए एक सुदृढ़ सामाजिक प्राथमिकता है।
कारण (R): यह प्राथमिकता एक महत्वपूर्ण सामाजिक-सांस्कृतिक कारक है जो उच्च प्रजननता में योगदान देती है, क्योंकि दंपति तब तक बच्चे उत्पन्न करना जारी रख सकते हैं जब तक कि पुत्रों की वांछित संख्या उत्पन्न न हो जाए।
(A) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सत्य हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सत्य है लेकिन R असत्य है।
(D) A असत्य है लेकिन R सत्य है।

199. जनसंख्या वृद्धि के संदर्भ में "J-आकार" वक्र क्या दर्शाता है?
(A) एक स्थिर जनसंख्या।
(B) एक घटती जनसंख्या।
(C) घातांकीय या अप्रतिबंधित वृद्धि।
(D) वहन क्षमता के साथ लॉजिस्टिक वृद्धि।

200. निम्नलिखित में से कौन एक व्यापक जनसंख्या नीति का प्राथमिक घटक नहीं है?
(A) अंतरराष्ट्रीय व्यापार शुल्कों पर नियम।
(B) मातृ एवं शिशु स्वास्थ्य में सुधार के उपाय।
(C) परिवार नियोजन सेवाओं का प्रावधान।
(D) शिक्षा को बढ़ावा देने की रणनीतियां।

NODIA

का है।
(D) दोनों सिद्धांत विकास की परवाह किए बिना सभी मानव समाजों के लिए बिल्कुल समान जनसांख्यिकीय परिणामों की भविष्यवाणी करते हैं।

222. समाज में उच्च जन्म दर का कारण निम्नलिखित में से कौन सा नहीं है?
(A) साक्षरता और महिला सशक्तिकरण का उच्च स्तर।
(B) शीघ्र और सार्वभौमिक विवाह।
(C) बड़े परिवारों के पक्ष में सामाजिक और धार्मिक विश्वास।
(D) उच्च शिशु मृत्यु दर।

223. भारत की राष्ट्रीय जनसंख्या नीति, 2000 का मुख्य उद्देश्य क्या है?
(A) तुरंत शून्य जनसंख्या वृद्धि प्राप्त करना।
(B) जनसंख्या को न्यूनतम संभव स्तर तक कम करना।
(C) अन्य देशों में उत्प्रवास को प्रोत्साहित करना।
(D) जीवन की गुणवत्ता में सुधार करना और जनसंख्या स्थिरीकरण प्राप्त करना।

224. निम्नलिखित कारकों पर विचार करें।
(1) बढ़ता शहरीकरण
(2) बच्चों के पालन-पोषण की उच्च लागत
(3) परिवार नियोजन विधियों तक अधिक पहुंच
जनसांख्यिकीय संक्रमण के दौरान कौन सी जनसांख्यिकीय दर में गिरावट के लिए ये कारक मुख्य रूप से उत्तरदायी हैं?
(A) प्रवास दर
(B) रुग्णता दर
(C) जन्म दर
(D) मृत्यु दर

225. भारत की जनसंख्या मुख्य रूप से किसके कारण 1921 के बाद लगातार बढ़ने लगी:
(A) जन्म दर में नाटकीय वृद्धि।
(B) पड़ोसी देशों से बड़े पैमाने पर आप्रवास।
(C) एक शासन नीति जिसने नागरिकों को अधिक बच्चे उत्पन्न करने के लिए भुगतान किया।
(D) अकाल और महामारियों पर बेहतर नियंत्रण के कारण मृत्यु दर में गिरावट।

226. नीचे दिए गए दो कथनों को पढ़ें और सही विकल्प का चयन करें।
कथन I: जनसंख्या शिक्षा अध्ययन का एक मूल्य-आधारित क्षेत्र है।
कथन II: इसका उद्देश्य जिम्मेदार पितृत्व और लैंगिक समानता जैसे मूल्यों को विकसित करना है।
(A) कथन I और कथन II दोनों सत्य हैं।
(B) कथन I और कथन II दोनों असत्य हैं।
(C) कथन I सत्य है, लेकिन कथन II असत्य है।
(D) कथन I असत्य है, लेकिन कथन II सत्य है।

227. वह अवधारणा जो व्यक्तियों को न केवल उपभोक्ताओं के रूप में अपितु धन के उत्पादकों और रचनाकारों के रूप में देखती है, किसके विचार का केंद्र है:
(A) मानव पूंजी के रूप में जनसंख्या।
(B) माल्थसवादी समस्या के रूप में जनसंख्या।
(C) जनसांख्यिकीय जाल के रूप में जनसंख्या।
(D) एक स्थिर इकाई के रूप में जनसंख्या।

228. निम्नलिखित में से कौन किसी जनसंख्या की आयु संरचना का प्रत्यक्ष परिणाम है?
(A) जनसंख्या की जातीय विविधता।
(B) जनसंख्या के धार्मिक विश्वास।
(C) जनसंख्या का भाषाई वितरण।
(D) जनसंख्या का वह भाग जो श्रम बल का गठन करता है।

229. किसी देश में उच्च मातृ मृत्यु अनुपात क्या दर्शाता है:
(A) गर्भवती महिलाओं और प्रसव के दौरान अपर्याप्त स्वास्थ्य देखभाल।
(B) एक सफल परिवार नियोजन कार्यक्रम।
(C) समाज में महिलाओं की उच्च स्थिति।
(D) बहुत कम जन्म दर।

230. निवारक अवरोध के रूप में माल्थस के 'नैतिक संयम' के विचार में क्या सम्मिलित नहीं था:
(A) विवाह को टालना
(B) गर्भनिरोधकों का उपयोग
(C) ब्रह्मचर्य
(D) विवाह के भीतर संयम

231. आंतरिक प्रवास और अंतरराष्ट्रीय प्रवास के बीच प्राथमिक अंतर क्या है:
(A) तय की गई दूरी।
(B) ठहरने की अवधि।
(C) राष्ट्रीय सीमा को पार करना।
(D) जाने का कारण।

232. जनसांख्यिकीय संक्रमण प्रक्रिया में निम्नलिखित को उनके घटित होने के कालानुक्रमिक क्रम में व्यवस्थित करें।
1. जन्म दर कम होने लगती है।
2. मृत्यु दर कम होने लगती है।
3. जन्म दर और मृत्यु दर दोनों कम और स्थिर हैं।
4. जन्म दर और मृत्यु दर दोनों उच्च और उतार-चढ़ाव वाली हैं।
(A) 4, 2, 1, 3
(B) 2, 4, 1, 3
(C) 4, 1, 2, 3
(D) 2, 1, 4, 3

233. भारत की राष्ट्रीय जनसंख्या नीति (2000) किसको महत्व देती है:
(A) केंद्रीय रूप से निर्धारित लक्ष्यों के साथ ऊपर से नीचे का

NODIA

उत्तर (व्याख्या सहित)

1. (B) एक सिद्धांत जिसके अनुसार जनसंख्या वृद्धि अंततः अकाल और रोग द्वारा नियंत्रित होगी।
थॉमस रॉबर्ट माल्थस के जनसंख्या सिद्धांत के अनुसार, मानव आबादी में वृद्धि गुणोत्तर श्रेणी में होती है, जबकि खाद्य आपूर्ति केवल समांतर श्रेणी में बढ़ पाती है। इस असंतुलन के कारण समाज में संसाधनों की तीव्र कमी उत्पन्न हो जाती है। माल्थस का तर्क था कि प्रकृति स्वयं अकाल, महामारी और युद्ध जैसे कठोर 'सकारात्मक अवरोधों' के माध्यम से बढ़ती जनसंख्या को नियंत्रित करती है। यह सिद्धांत संसाधनों की उपलब्धता और जनसंख्या वृद्धि के मध्य अनिवार्य संतुलन को वैज्ञानिक रूप से स्पष्ट करता है।

2. (C) कथन I सत्य है, लेकिन कथन II असत्य है।
जनसांख्यिकीय संक्रमण सिद्धांत जनसंख्या वृद्धि को समाज के आर्थिक और तकनीकी विकास के विभिन्न चरणों के साथ जोड़कर देखता है। यह दर्शाता है कि कैसे एक पारंपरिक कृषि प्रधान समाज आधुनिक औद्योगिक समाज में परिवर्तित होकर निम्न जन्म और मृत्यु दर प्राप्त करता है। माल्थस का सिद्धांत मुख्य रूप से जैविक कारकों और संसाधनों की भौतिक उपलब्धता पर केंद्रित है, जबकि यह सिद्धांत सामाजिक-सांस्कृतिक कारकों को भी महत्व देता है। अतः माल्थस के विचारों की सीमितता के कारण दूसरा कथन पूर्णतः तर्कसंगत सिद्ध नहीं होता है।

3. (C) सकारात्मक और निवारक अवरोध।
माल्थस ने जनसंख्या वृद्धि को नियंत्रित करने हेतु दो प्रमुख प्रकार के अवरोधों की पहचान की थी। निवारक अवरोध मानवीय विवेक और प्रयासों से संबंधित हैं, जैसे विलंब से विवाह करना और नैतिक संयम बरतना। इसके विपरीत, सकारात्मक अवरोध वे प्राकृतिक और बाह्य कारक हैं जो मृत्यु दर में अचानक वृद्धि करते हैं, जैसे अकाल, महामारी और भीषण युद्ध। माल्थस का दृढ़ विश्वास था कि यदि मनुष्य स्वयं निवारक अवरोध नहीं अपनाता, तो प्रकृति अनिवार्य रूप से सकारात्मक अवरोधों के माध्यम से जनसंख्या को पुनः संतुलित करती है।

4. (D) अवस्था 2
जनसांख्यिकीय संक्रमण सिद्धांत की दूसरी अवस्था को प्रायः 'जनसंख्या विस्फोट' की स्थिति माना जाता है। इस चरण में चिकित्सा सुविधाओं के विस्तार और सार्वजनिक स्वच्छता में सुधार के कारण मृत्यु दर में अत्यंत तीव्र गिरावट आती है। हालांकि, पारंपरिक सामाजिक मान्यताओं और सांस्कृतिक जड़ता के कारण जन्म दर उच्च बनी रहती है। जन्म दर और मृत्यु दर के बीच का यह विशाल अंतर जनसंख्या में बहुत तीव्र वृद्धि उत्पन्न करता है। यह स्थिति वर्तमान में कई विकासशील देशों में सामान्य रूप से देखी जाती है, जो संसाधनों पर दबाव बढ़ाती है।

5. (A) P-2, Q-1, R-3, S-4
माल्थसवादी सिद्धांत के अनुसार जनसंख्या में वृद्धि गुणोत्तर श्रेणी जैसे 2, 4, 8 में होती है, जबकि खाद्य आपूर्ति समांतर श्रेणी जैसे 1, 2, 3 में बढ़ती है। सकारात्मक अवरोधों में अकाल, रोग और युद्ध जैसे प्राकृतिक कारक सम्मिलित होते हैं जो मृत्यु दर को तीव्रता से बढ़ाते हैं। निवारक अवरोधों में विलंब से विवाह और नैतिक संयम जैसे मानवीय प्रयास शामिल हैं जो जन्म दर को नियंत्रित करने में सहायक होते हैं। यह समग्र अवधारणा जनसंख्या और उपलब्ध संसाधनों के मध्य संतुलन स्थापित करने के महत्व को दर्शाती है।

6. (B) अकाल
माल्थस ने निवारक अवरोधों को उन स्वैच्छिक मानवीय प्रयासों के रूप में परिभाषित किया था जो जन्म दर को कम करने में सहायक सिद्ध होते हैं। इनमें विलंब से विवाह, नैतिक संयम और ब्रह्मचर्य जैसे सचेत कदम सम्मिलित हैं। इसके विपरीत, अकाल एक प्राकृतिक और विनाशकारी घटना है जो मृत्यु दर में वृद्धि करके जनसंख्या को कम करती है। माल्थस के वर्गीकरण में अकाल को 'सकारात्मक अवरोध' की श्रेणी में रखा गया है, क्योंकि यह मानवीय नियंत्रण से बाहर की एक कठोर प्राकृतिक प्रक्रिया है जो जनसंख्या और संसाधनों में संतुलन लाती है।

7. (D) निम्न जन्म दर और निम्न मृत्यु दर।
जनसांख्यिकीय संक्रमण सिद्धांत की अंतिम अवस्था एक विकसित और औद्योगिक समाज की प्रमुख पहचान है। इस अवस्था में उच्च आर्थिक विकास, व्यापक साक्षरता और बढ़ते शहरीकरण के कारण जन्म दर अत्यंत निम्न स्तर पर आ जाती है। साथ ही, उन्नत चिकित्सा सुविधाओं और बेहतर जीवन स्तर के कारण मृत्यु दर भी काफी कम हो जाती है। इसके परिणामस्वरूप जनसंख्या वृद्धि की दर बहुत धीमी हो जाती है अथवा जनसंख्या स्थिर हो जाती है। यह अवस्था समाज में संसाधनों और मानव आबादी के मध्य एक नया और स्थायी संतुलन स्थापित करती है।

8. (A) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
जनसांख्यिकीय संक्रमण सिद्धांत की आलोचना प्रायः इसलिए की जाती है क्योंकि यह मुख्य रूप से पश्चिमी यूरोपीय देशों के ऐतिहासिक अनुभवों पर आधारित है। इसे अक्सर यूरोपीय-केंद्रित माना जाता है क्योंकि यह मानता है कि सभी राष्ट्र विकास के उसी निश्चित मार्ग का अनुसरण करेंगे। कई विकासशील देशों में जनसंख्या परिवर्तन का स्वरूप और समय यूरोप से काफी भिन्न रहा है। अतः यह तर्क सही है कि इस सिद्धांत की सीमाएं इसके उद्गम स्थल और विशिष्ट ऐतिहासिक संदर्भ से गहराई से जुड़ी हुई हैं, जो इसकी सार्वभौमिकता को सीमित करती हैं।

Downloaded from www.pdf.tube

244. जनसांख्यिकीय संक्रमण मॉडल में कौन सा चरण आज उन विकासशील देशों से सर्वाधिक संबंधित है जो तीव्र जनसंख्या वृद्धि का अनुभव कर रहे हैं?
(A) अवस्था 1
(B) अवस्था 4
(C) अवस्था 5
(D) अवस्था 2 या प्रारंभिक अवस्था 3

245. नीचे दिए गए दो कथनों को पढ़ें और सही विकल्प का चयन करें।
कथन I: शिशु मृत्यु दर समाज के समग्र स्वास्थ्य का एक अपरिष्कृत माप है।
कथन II: उच्च शिशु मृत्यु दर अक्सर खराब पोषण, स्वच्छता और मातृ स्वास्थ्य देखभाल को दर्शाती है।
(A) कथन I और कथन II दोनों सत्य हैं।
(B) कथन I और कथन II दोनों असत्य हैं।
(C) कथन I सत्य है, लेकिन कथन II असत्य है।
(D) कथन I असत्य है, लेकिन कथन II सत्य है।

246. माल्थसवादी सिद्धांत में सकारात्मक अवरोध और निवारक अवरोध के बीच मौलिक अंतर क्या है?
(A) सकारात्मक अवरोध स्वैच्छिक हैं, जबकि निवारक अवरोध अनैच्छिक हैं।
(B) सकारात्मक अवरोध मृत्यु दर बढ़ाते हैं, जबकि निवारक अवरोध जन्म दर घटाते हैं।
(C) सकारात्मक अवरोध प्राकृतिक हैं, जबकि निवारक अवरोध मानव निर्मित हैं।
(D) सकारात्मक अवरोध प्रभावी हैं, जबकि निवारक अवरोध अप्रभावी हैं।

247. मृत्यु दर का प्राथमिक निर्धारक है:
(A) साक्षरता दर।
(B) विवाह के समय आयु।
(C) कुल प्रजनन दर।
(D) सार्वजनिक स्वास्थ्य आधारभूत संरचना का स्तर।

248. जनसंख्या शिक्षा की अवधारणा का उद्देश्य शिक्षार्थियों के बीच निम्नलिखित में से क्या विकसित करना है?
(A) जनसंख्या के मुद्दों और उनके परिणामों के प्रति एक गंभीर जागरूकता।
(B) नसबंदी करने की क्षमता।
(C) दूसरे देश में जाने की इच्छा।
(D) जनगणना डेटा संग्रह के लिए कौशल।

249. तीव्र जनसंख्या वृद्धि का प्रभाव निम्नलिखित में से कौन सा है?
(A) कृषि भूमि पर कम दबाव।
(B) सामाजिक सेवाओं की प्रति व्यक्ति उपलब्धता में वृद्धि।
(C) बेरोजगारी और अल्प-रोजगार की वृद्धि।
(D) पर्यावरण की गुणवत्ता में सुधार।

250. निम्नलिखित में से कौन राष्ट्रीय जनसंख्या नीति, 2000 की मुख्य विशेषता नहीं है?
(A) सूचित और स्वैच्छिक विकल्प पर ध्यान केंद्रित करना।
(B) लक्ष्य-मुक्त दृष्टिकोण।
(C) मातृ एवं शिशु स्वास्थ्य देखभाल के साथ परिवार नियोजन का एकीकरण।
(D) दो से अधिक बच्चों वाले दंपतियों के लिए अनिवार्य नसबंदी।

251. एक जनसंख्या पिरामिड जो मध्य की तुलना में आधार पर संकरा है, क्या दर्शाता है:
(A) एक युवा और तेजी से बढ़ती जनसंख्या।
(B) एक स्थिर जनसंख्या।
(C) निम्न जन्म दर वाली एक घटती जनसंख्या।
(D) बहुत उच्च मृत्यु दर वाली जनसंख्या।

252. माल्थसवादी सिद्धांत यह प्रतिपादित करता है कि जनसंख्या, अनियंत्रित होने पर, किस श्रेणी में बढ़ती है:
(A) समांतर श्रेणी
(B) गुणोत्तर श्रेणी
(C) लघुगणकीय श्रेणी
(D) यादृच्छिक श्रेणी

NODIA

253. निम्नलिखित में से कौन 1921 से 1951 तक भारतीय जनसंख्या की वृद्धि का सबसे सटीक वर्णन करता है?
(A) स्थिर
(B) ऋणात्मक
(C) निरंतर वृद्धि
(D) विस्फोटक वृद्धि

254. निम्नलिखित प्रश्न में दो कथन शामिल हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है। इन दोनों कथनों का परीक्षण करें और नीचे दिए गए कोड का उपयोग करके सही उत्तर चुनें।
अभिकथन (A): महिलाओं की स्थिति जैसे सामाजिक-सांस्कृतिक कारक प्रजनन स्तर निर्धारित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।
कारण (R): जब महिलाओं की शिक्षा उच्च होती है और स्वायत्तता अधिक होती है, तो वे कम बच्चे और अधिक आयु में उत्पन्न करती हैं।
(A) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सत्य हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सत्य है लेकिन R असत्य है।
(D) A असत्य है लेकिन R सत्य है।

255. जनसांख्यिकी में, वे तीन प्रक्रियाएं जो जनसंख्या में परिवर्तन उत्पन्न करती हैं, वे हैं:
(A) जन्म, मृत्यु और प्रवास।
(B) शहरीकरण, औद्योगीकरण और आधुनिकीकरण।
(C) शिक्षा, स्वास्थ्य और आय।

278. नीचे दिए गए दो कथनों को पढ़ें और सही विकल्प का चयन करें।
कथन I: प्रवास से विश्व की कुल जनसंख्या नहीं बदलती है।
कथन II: प्रवास केवल देशों के बीच और उनके भीतर जनसंख्या के वितरण को बदलता है।
(A) कथन I और कथन II दोनों सत्य हैं।
(B) कथन I और कथन II दोनों असत्य हैं।
(C) कथन I सत्य है, लेकिन कथन II असत्य है।
(D) कथन I असत्य है, लेकिन कथन II सत्य है।

279. वृद्ध जनसंख्या का उच्च अनुपात होने का परिणाम निम्नलिखित में से कौन सा है?
(A) प्राथमिक शिक्षा पर व्यय में वृद्धि।
(B) एक बड़ा कार्यबल।
(C) पेंशन और वृद्धों की स्वास्थ्य देखभाल पर व्यय में वृद्धि।
(D) उच्च जन्म दर।

280. आयु-लिंग पिरामिड बनाने का प्राथमिक उद्देश्य क्या है:
(A) जनसंख्या की आयु और लिंग संरचना को दृश्य रूप में प्रस्तुत करना।
(B) अशोधित मृत्यु दर की गणना करना।
(C) जनसंख्या की धार्मिक संरचना निर्धारित करना।
(D) जनसंख्या के भौगोलिक वितरण का मानचित्रण करना।

281. भारत की जनसंख्या वृद्धि दर किस वर्ष के बाद निश्चित रूप से घटने की प्रवृत्ति दिखाने लगी?
(A) 1981
(B) 1921
(C) 1951
(D) 2001

282. यह दृष्टिकोण कि एक बड़ी जनसंख्या यदि शिक्षित और कुशल है तो वह एक संपत्ति है, किस रूप में जाना जाता है:
(A) माल्थसवादी दृष्टिकोण
(B) मानव संसाधन दृष्टिकोण
(C) जनसंख्या बाधा दृष्टिकोण
(D) शून्य-वृद्धि दृष्टिकोण

283. जनसांख्यिकीय संक्रमण सिद्धांत की प्रमुख आलोचनाओं में से एक यह है कि:
(A) यह भविष्य के बारे में बहुत निराशावादी है।
(B) यह आर्थिक विकास की भूमिका को ध्यान में नहीं रखता है।
(C) यह यूरोपीय अनुभव पर आधारित है और प्रत्येक स्थान पर लागू नहीं हो सकता है।
(D) यह जन्म और मृत्यु दर की अवधारणाओं की उपेक्षा करता है।

284. निम्नलिखित में से कौन जनसंख्या नियंत्रण का उपाय नहीं है?
(A) परिवार नियोजन विधियों को बढ़ावा देना।
(B) विवाह की आयु बढ़ाना।
(C) बड़े निगमों पर कर कम करना।
(D) मातृ एवं शिशु स्वास्थ्य सेवाओं में सुधार करना।

285. सूची I को सूची II के साथ सुमेलित करें और नीचे दिए गए कोड से सही उत्तर चुनें।
सूची I: जनसंख्या अवधारणा
P. जनसांख्यिकीय लाभांश
Q. विषम लिंगानुपात
R. महान विभाजक वर्ष
S. जनसंख्या विस्फोट
सूची II: भारत के लिए प्रासंगिकता
1. अवधि 1951-1981
2. बड़ी युवा जनसंख्या के कारण वर्तमान क्षमता
3. एक निरंतर सामाजिक समस्या, विशेष रूप से कुछ राज्यों में
4. 1921
कोड:
(A) P-2, Q-3, R-4, S-1
(B) P-1, Q-2, R-3, S-4
(C) P-2, Q-4, R-3, S-1
(D) P-3, Q-2, R-1, S-4

286. निम्नलिखित प्रश्न में दो कथन शामिल हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है। इन दोनों कथनों का परीक्षण करें और नीचे दिए गए कोड का उपयोग करके सही उत्तर चुनें।
अभिकथन (A): राष्ट्रीय जनसंख्या नीति, 2000, जनसंख्या स्थिरीकरण के लिए एक समग्र दृष्टिकोण की वकालत करती है।
कारण (R): नीति मानती है कि बाल उत्तरजीविता, मातृ स्वास्थ्य और महिला सशक्तिकरण जैसे मुद्दों को संबोधित किए बिना जनसंख्या को स्थिर नहीं किया जा सकता है।
(A) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सत्य हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सत्य है लेकिन R असत्य है।
(D) A असत्य है लेकिन R सत्य है।

287. निम्नलिखित में से कौन प्रजननता का सबसे सटीक वर्णन है?
(A) जनसंख्या में मृत्यु की संख्या।
(B) जनसंख्या का वास्तविक पुनरुत्पादक प्रदर्शन।
(C) जनसंख्या में रोग की घटना।
(D) प्रजनन करने की जैविक क्षमता।

288. विकासशील देशों में 20वीं शताब्दी में जनसंख्या "विस्फोट" का सबसे महत्वपूर्ण कारण क्या था:
(A) मृत्यु दर में नाटकीय कमी।
(B) जन्म दर में नाटकीय वृद्धि।
(C) सभी अंतरराष्ट्रीय प्रवास का रुकना।
(D) बड़े परिवारों के पक्ष में एक सांस्कृतिक क्रांति।

Click Here to Buy book on Amazon

कोड:
(A) P-4, Q-2, R-1, S-3
(B) P-2, Q-4, R-3, S-1
(C) P-2, Q-4, R-1, S-3
(D) P-1, Q-3, R-2, S-4

267. जो व्यक्ति जनसंख्या को विकास के लिए एक बाधा के रूप में देखते हैं, उनका मुख्य तर्क यह है कि तीव्र जनसंख्या वृद्धि:
(A) तकनीकी नवाचार को उत्तेजित करती है।
(B) वस्तुओं के लिए बड़े बाजार बनाती है।
(C) संसाधनों को पूंजी में निवेश से वर्तमान उपभोग की ओर मोड़ देती है।
(D) श्रम की आपूर्ति बढ़ाती है।

268. निम्नलिखित में से कौन सा जनसंख्या शिक्षा का लक्ष्य नहीं है?
(A) छात्रों को जनसंख्या वृद्धि के कारणों और परिणामों को समझने में सहायता करना।
(B) जनसंख्या के मुद्दों के प्रति तर्कसंगत और जिम्मेदार दृष्टिकोण विकसित करना।
(C) कक्षा में नैदानिक परिवार नियोजन सेवाएं प्रदान करना।
(D) जनसंख्या और जीवन की गुणवत्ता के बीच संबंधों को समझना।

269. भारत में "जनसंख्या विस्फोट" की अवधि सामान्यतः मानी जाती है:
(A) 1901-1921
(B) 1921-1951
(C) 1951-1981
(D) 1981-2001

270. निम्नलिखित प्रश्न में दो कथन शामिल हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है। इन दोनों कथनों का परीक्षण करें और नीचे दिए गए कोड का उपयोग करके सही उत्तर चुनें।
अभिकथन (A): कई आलोचकों द्वारा माल्थस के जनसंख्या सिद्धांत को अत्यधिक निराशावादी माना जाता है।
कारण (R): इस सिद्धांत ने कृषि में तकनीकी प्रगति की क्षमता और गर्भनिरोधक को व्यापक रूप से अपनाने की क्षमता को कम आंका।
(A) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सत्य हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सत्य है लेकिन R असत्य है।
(D) A असत्य है लेकिन R सत्य है।

271. भारत की जनसंख्या नीति के बारे में सही कथन की पहचान करें।
(A) भारत राष्ट्रीय परिवार नियोजन कार्यक्रम अपनाने वाले अंतिम देशों में से एक था।
(B) 2000 की राष्ट्रीय जनसंख्या नीति परिवार कल्याण को स्वास्थ्य और शिक्षा के व्यापक दृष्टिकोण के साथ एकीकृत करती है।
(C) नीति सदैव सख्त रूप से दमनकारी रही है।
(D) नीति केवल जन्म दर को कम करने पर केंद्रित है और मृत्यु दर की उपेक्षा करती है।

272. निम्नलिखित में से कौन प्रजननता का एक प्रमुख निर्धारक है?
(A) किसी देश में हवाई अड्डों की संख्या।
(B) गर्भनिरोधक उपयोग का प्रचलन और प्रभावशीलता।
(C) अशोधित मृत्यु दर।
(D) औद्योगिक प्रदूषण की दर।

NODIA

273. जनसांख्यिकीय संक्रमण किसके साथ शुरू होता है:
(A) प्रजनन दर में गिरावट।
(B) प्रजनन दर और मृत्यु दर दोनों में एक साथ गिरावट।
(C) प्रजनन दर में वृद्धि।
(D) मृत्यु दर में गिरावट।

274. निम्नलिखित में से कौन जनसंख्या वृद्धि का प्रत्यक्ष प्रभाव है?
(A) जलवायु प्रतिरूप में परिवर्तन।
(B) मौजूदा आधारभूत संरचना पर बढ़ा दबाव।
(C) राजनीतिक विचारधाराओं में बदलाव।
(D) स्वर्ण की मूल्य में वृद्धि।

275. सामाजिक-सांस्कृतिक कारकों और जनसंख्या वृद्धि के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें।
(1) पुत्रों को दिया जाने वाला उच्च मूल्य बड़े परिवार के आकार का कारण बन सकता है।
(2) सार्वभौमिक और शीघ्र विवाह उच्च प्रजननता में योगदान देता है।
(3) महिला शिक्षा का उच्च स्तर सामान्यतः निम्न प्रजननता की ओर ले जाता है।
उपरोक्त कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?
(A) केवल 3
(B) केवल 1 और 2
(C) केवल 2 और 3
(D) 1, 2, और 3

276. कुल प्रजनन दर का "प्रतिस्थापन स्तर" लगभग है:
(A) 1.1
(B) 2.1
(C) 3.1
(D) 4.1

277. "माल्थसवादी आपदा" उस स्थिति को संदर्भित करती है जहां:
(A) निवारक अवरोधों के कारण जनसंख्या वृद्धि रुक जाती है।
(B) अकाल और युद्ध जैसे सकारात्मक अवरोधों द्वारा जनसंख्या को निर्वाह स्तर पर वापस आने के लिए बाध्य किया जाता है।
(C) तकनीकी प्रगति असीमित जनसंख्या वृद्धि की अनुमति देती है।
(D) एक समाज परिवार नियोजन के माध्यम से शून्य जनसंख्या वृद्धि प्राप्त करता है।

(D) प्रजननता, जननशक्ति और मृत्यु दर।

256. भारत में उच्च जनसंख्या वृद्धि का सामाजिक-सांस्कृतिक कारण निम्नलिखित में से कौन सा है?
(A) व्यापक औद्योगीकरण।
(B) पुत्रों की वरीयता।
(C) उच्च महिला साक्षरता दर।
(D) कुशल सार्वजनिक वितरण प्रणाली।

257. निम्नलिखित उपायों पर विचार करें।
(1) छोटे परिवारों के लिए प्रोत्साहन प्रदान करना।
(2) विवाह की कानूनी आयु बढ़ाना।
(3) मीडिया के माध्यम से जागरूकता फैलाना।
उपरोक्त में से कौन भारत में जनसंख्या नियंत्रण के लिए उठाए गए उपाय हैं?
(A) केवल 1 और 2
(B) केवल 2 और 3
(C) केवल 1 और 3
(D) 1, 2, और 3

258. "विकास के लिए मानव संसाधन" की अवधारणा एक बड़ी जनसंख्या को किस रूप में देखती है:
(A) एक संपत्ति, यदि जनसंख्या स्वस्थ, शिक्षित और कुशल है।
(B) एक दायित्व, इसकी विशेषताओं की परवाह किए बिना।
(C) पर्यावरणीय आपदा का कारण।
(D) सामाजिक पिछड़ेपन का संकेत।

259. अतीत में भारत की जनसंख्या नीति से जुड़ी एक प्रमुख समस्या रही है:
(A) महिला सशक्तिकरण पर इसका अत्यधिक ध्यान।
(B) कुछ अवधियों के दौरान दमनकारी विधियों पर इसका अत्यधिक जोर।
(C) मृत्यु दर को कम करने में इसकी पूर्ण विफलता।
(D) शिक्षा की भूमिका की इसकी उपेक्षा।

260. नीचे दिए गए दो कथनों को पढ़ें और सही विकल्प का चयन करें।
कथन I: जनसांख्यिकीय संक्रमण सिद्धांत इस धारणा पर आधारित है कि सभी समाज विकास के समान चरणों से गुजरते हैं।
कथन II: यह सिद्धांत बिना किसी महत्वपूर्ण आर्थिक विकास के भी, सुदृढ़ परिवार नियोजन कार्यक्रमों के कारण कुछ विकासशील देशों में देखी गई प्रजनन क्षमता में तीव्र गिरावट को प्रभावी ढंग से समझाता है।
(A) कथन I और कथन II दोनों सत्य हैं।
(B) कथन I और कथन II दोनों असत्य हैं।
(C) कथन I सत्य है, लेकिन कथन II असत्य है।
(D) कथन I असत्य है, लेकिन कथन II सत्य है।

261. वह शब्द जो जनसंख्या में रोग और अक्षमता की घटना को संदर्भित करता है, वह है:
(A) मृत्यु दर
(B) प्रजननता
(C) रुग्णता
(D) जन्म दर

262. माल्थस ने तर्क दिया कि जनसंख्या और खाद्य आपूर्ति के बीच संतुलन "सकारात्मक अवरोधों" के माध्यम से बनाए रखा जा सकता है, जिसमें निम्नलिखित में से किसे छोड़कर सभी शामिल हैं:
(A) अकाल
(B) रोग
(C) गर्भनिरोधक
(D) युद्ध

263. जनसांख्यिकीय संक्रमण के किस चरण में जनसंख्या वृद्धि दर मंद होने लगती है?
(A) अवस्था 1
(B) अवस्था 2
(C) अवस्था 3
(D) अवस्था 4

264. जनसंख्या की आयु संरचना में एक बड़े 'युवा उभार' का मुख्य परिणाम क्या है?
(A) नवीन व्यवसायों की आवश्यकता में कमी।
(B) भविष्य की जनसंख्या वृद्धि की उच्च संभावना।
(C) जनसंख्या की औसत आयु में तत्काल वृद्धि।
(D) शिक्षा प्रणाली पर कम बोझ।

265. कौन सा निर्धारक मृत्यु दर में गिरावट से सबसे सीधे जुड़ा हुआ है?
(A) जन्म दर में वृद्धि।
(B) साक्षरता में वृद्धि।
(C) स्वच्छता और स्वास्थ्य देखभाल में सुधार।
(D) शहरीकरण में वृद्धि।

266. सूची I को सूची II के साथ सुमेलित करें और नीचे दिए गए कोड से सही उत्तर चुनें।
सूची I: शब्द
P. शिशु मृत्यु दर
Q. अशोधित जन्म दर
R. लिंगानुपात
S. निर्भरता अनुपात
सूची II: परिभाषा
1. प्रति 1,000 पुरुषों पर महिलाओं की संख्या।
2. प्रति 1,000 जीवित जन्मों पर 1 वर्ष से कम आयु के शिशुओं की मृत्यु की संख्या।
3. कार्यशील आयु की जनसंख्या से गैर-कार्यशील आयु की जनसंख्या का अनुपात।
4. प्रति 1,000 जनसंख्या पर जीवित जन्मों की संख्या।

Downloaded from www.pdf.tube

289. 'जनसंख्या संवेग' शब्द किसका परिणाम है:
(A) उच्च मृत्यु दर।
(B) युवा आयु संरचना।
(C) वृद्ध आयु संरचना।
(D) उच्च प्रवास दर।

290. माल्थस जनसंख्या को नियंत्रित करने के साधन के रूप में निम्नलिखित में से किसके समर्थक थे?
(A) कृत्रिम गर्भनिरोधकों का उपयोग।
(B) शासन प्रायोजित परिवार नियोजन।
(C) विवाह को टालना।
(D) नवीन उपनिवेशों में उत्प्रवास।

291. जनसंख्या वृद्धि के कारणों के बारे में निम्नलिखित में से कौन सा कथन गलत है?
(A) मृत्यु दर में गिरावट एक प्रमुख कारण है।
(B) उच्च जन्म दर जनसंख्या वृद्धि में योगदान देती है।
(C) उच्च जन्म दर का प्राथमिक कारण उच्च स्तर का शहरीकरण है।
(D) महिला शिक्षा का निम्न स्तर उच्च जन्म दर से जुड़ा है।

292. नीचे दिए गए दो कथनों को पढ़ें और सही विकल्प का चयन करें।
कथन I: भारत की राष्ट्रीय जनसंख्या नीति नसबंदी के मात्रात्मक लक्ष्यों को प्राप्त करने पर केंद्रित है।
कथन II: नीति का दृष्टिकोण नागरिकों को परिवार के आकार के संबंध में स्वैच्छिक, सूचित विकल्प बनाने में सक्षम बनाना है।
(A) कथन I और कथन II दोनों सत्य हैं।
(B) कथन I और कथन II दोनों असत्य हैं।
(C) कथन I असत्य है, लेकिन कथन II सत्य है।
(D) कथन I सत्य है, लेकिन कथन II असत्य है।

293. जनसांख्यिकीय संक्रमण की अवस्था 3 के दौरान जन्म दर में गिरावट निम्नलिखित में से किसके अतिरिक्त सभी से जुड़ी है:
(A) बढ़ता शहरीकरण।
(B) महिलाओं की उन्नत स्थिति और शिक्षा।
(C) गर्भनिरोधक तक बढ़ी पहुंच।
(D) शिशु मृत्यु दर में वृद्धि।

294. भारत की जनसंख्या नीति पर एक प्रमुख समस्या या परिप्रेक्ष्य किसकी चुनौती है:
(A) सामाजिक और सांस्कृतिक रूप से विविधतापूर्ण राष्ट्र में एक समान नीति लागू करना।
(B) नीति को लागू करने के लिए पर्याप्त व्यक्ति खोजना।
(C) किसी आधिकारिक नीति दस्तावेज़ का अभाव।
(D) इस विषय के बारे में जनसंख्या में जागरूकता की पूर्ण कमी।

295. जनसंख्या अवधारणाओं के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें।
(1) मृत्यु दर जनसंख्या में जन्मों के अध्ययन को संदर्भित करती है।
(2) प्रवास में निर्दिष्ट सीमाओं के पार व्यक्तियों का आवागमन सम्मिलित है।
(3) रुग्णता जनसंख्या में रोग के प्रचलन को संदर्भित करती है।
उपरोक्त कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?
(A) केवल 1 और 2
(B) केवल 2 और 3
(C) केवल 1 और 3
(D) 1, 2, और 3

296. तीव्र जनसंख्या वृद्धि का एक प्रमुख आर्थिक परिणाम क्या है:
(A) प्रति व्यक्ति पूंजी और संसाधनों में वृद्धि।
(B) निवेश का आधारभूत आवश्यकताओं को पूर्ण करने की ओर विचलन।
(C) श्रम बाजार के आकार में कमी।
(D) जीवन स्तर में स्वतः सुधार।

NODIA

297. 'मानव संसाधन' के रूप में जनसंख्या की अवधारणा किस पर बल देती है:
(A) जनसंख्या की गुणवत्ता पर मात्रा।
(B) केवल मात्रा के बजाय जनसंख्या की गुणवत्ता।
(C) किसी भी मूल्य पर सख्त जनसंख्या नियंत्रण।
(D) पर्यावरण पर जनसंख्या के नकारात्मक प्रभाव।

298. किसी जनसंख्या की 'आयु-लिंग संरचना' सीधे किसे प्रभावित करती है:
(A) देश की विदेश नीति।
(B) विद्यालयों और चिकित्सालयों जैसी सामाजिक सेवाओं की मांग।
(C) तेल की अंतरराष्ट्रीय मूल्य।
(D) पड़ोसी देशों की राजनीतिक व्यवस्था।

299. भारत के जनसांख्यिकीय इतिहास में वर्ष 1921 महत्वपूर्ण है क्योंकि:
(A) यह पहली जनगणना का वर्ष था।
(B) इसने जनसंख्या में निरंतर और तीव्र वृद्धि की शुरुआत को चिह्नित किया।
(C) यह वह वर्ष था जब जनसंख्या तेजी से घटने लगी थी।
(D) यह वह वर्ष था जब पहली जनसंख्या नीति लागू की गई थी।

300. वह सिद्धांत जो कहता है कि जनसंख्या गुणोत्तर श्रेणी में बढ़ती है जबकि खाद्य आपूर्ति समांतर श्रेणी में बढ़ती है, किसका है:
(A) कार्ल मार्क्स
(B) थॉमस माल्थस
(C) वॉरेन थॉम्पसन
(D) फ्रैंक नोटेस्टीन

दृष्टिकोण।
(B) केवल शहरी जनसंख्या पर केंद्रित नीति।
(C) पूरे देश के लिए परिवार नियोजन की एकल पद्धति।
(D) स्थानीय शासन निकायों को सम्मिलित करने वाला एक विकेंद्रीकृत, सहभागी दृष्टिकोण।

234. निम्नलिखित प्रश्न में दो कथन शामिल हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है। इन दोनों कथनों का परीक्षण करें और नीचे दिए गए कोड का उपयोग करके सही उत्तर चुनें।
अभिकथन (A): हाल के दशकों में भारत की जनसंख्या की वृद्धि दर घट रही है।
कारण (R): यह मृत्यु दर में तीव्र वृद्धि के कारण है।
(A) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सत्य हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सत्य है लेकिन R असत्य है।
(D) A असत्य है लेकिन R सत्य है।

235. जनसंख्या शिक्षा का मुख्य घटक कौन सा है?
(A) उन्नत शल्य चिकित्सा प्रक्रियाओं को सिखाना।
(B) जनसंख्या और संधारणीय विकास के बीच संबंधों की समझ विकसित करना।
(C) गर्भनिरोधक उत्पादों का विपणन और विक्रय।
(D) बड़े परिवारों के लिए कानूनी दंड लागू करना।

236. 'जनसांख्यिकीय लाभांश' शब्द उस आर्थिक विकास क्षमता को संदर्भित करता है जो इसके परिणामस्वरूप हो सकती है:
(A) वृद्ध नागरिकों का उच्च अनुपात।
(B) जनसंख्या की आयु संरचना में परिवर्तन, मुख्य रूप से जब कार्यशील आयु की जनसंख्या का भाग गैर-कार्यशील आयु के भाग से बड़ा होता है।
(C) बहुत उच्च जन्म दर और बहुत उच्च मृत्यु दर।
(D) अधिक बच्चे उत्पन्न करने के लिए नकद पुरस्कार देने की शासन नीति।

237. किस महाद्वीप के देशों का अनुभव जनसांख्यिकीय संक्रमण सिद्धांत का प्रारंभिक आधार बना?
(A) एशिया
(B) अफ्रीका
(C) यूरोप
(D) दक्षिण अमेरिका

238. भारत की जनसंख्या वृद्धि के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें।
(1) वर्ष 1921 को 'जनसांख्यिकीय विभाजक' के रूप में जाना जाता है।
(2) 1951-1981 की अवधि में जनसंख्या विस्फोट देखा गया।
(3) 1981 के बाद से वृद्धि की दर बढ़ रही है।
उपरोक्त कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?
(A) केवल 1 और 2
(B) केवल 2
(C) केवल 1 और 3
(D) 1, 2, और 3

239. प्रतिकूल लिंगानुपात एक गंभीर सामाजिक समस्या है क्योंकि यह किसका कारण बन सकता है:
(A) सामान्य प्रजनन दर में तीव्र वृद्धि।
(B) निर्भरता अनुपात में कमी।
(C) एक अधिक स्थिर और सामंजस्यपूर्ण समाज।
(D) महिलाओं के विरुद्ध अपराधों में वृद्धि।

240. जनसंख्या वृद्धि को रोकने में किसकी भूमिका की उपेक्षा करने के लिए माल्थसवादी सिद्धांत की आलोचना की गई है?
(A) युद्ध और अकाल
(B) सामाजिक संरचना और गर्भनिरोधक में परिवर्तन
(C) दुराचार और कष्ट
(D) ह्रासमान प्रतिफल का नियम

241. सूची I को सूची II के साथ सुमेलित करें और नीचे दिए गए कोड से सही उत्तर चुनें।
सूची I: जनसंख्या संकेतक
P. प्रजननता
Q. मृत्यु दर
R. रुग्णता
S. प्रवास
सूची II: यह क्या मापता है
1. जनसंख्या में रोग का स्तर
2. जनसंख्या में मृत्यु की आवृत्ति
3. व्यक्तियों का भौगोलिक आवागमन
4. जनसंख्या का पुनरुत्पादक प्रदर्शन
कोड:
(A) P-4, Q-2, R-1, S-3
(B) P-1, Q-2, R-3, S-4
(C) P-4, Q-1, R-2, S-3
(D) P-3, Q-4, R-1, S-2

242. भारत की वर्तमान जनसंख्या नीति के मुख्य दृष्टिकोणों में से एक यह है कि विकास ही सर्वोत्तम क्या है:
(A) गर्भनिरोधक
(B) समस्या
(C) प्रोत्साहन
(D) आपदा

243. "बाधा के रूप में जनसंख्या" तर्क इस बात पर प्रकाश डालता है कि तीव्र जनसंख्या वृद्धि कर सकती है:
(A) पूंजी निर्माण की दर में वृद्धि।
(B) प्राकृतिक संसाधनों पर दबाव कम।
(C) हर अर्थात जनसंख्या को बढ़ाकर विकास के लाभों को कम।
(D) स्वतः ही तकनीकी सफलताओं की ओर ले जाना।

Click Here to Buy book on Amazon

9. (C) जनसंख्या में रोग और अस्वस्थता की व्यापकता।
जनसांख्यिकी के अंतर्गत 'रुग्णता' शब्द का उपयोग किसी विशिष्ट जनसंख्या समूह में बीमारियों, चोटों अथवा अस्वस्थता की दर को मापने के लिए किया जाता है। यह केवल मृत्यु दर से भिन्न है क्योंकि यह जीवित व्यक्तियों के मध्य स्वास्थ्य की स्थिति और जीवन की गुणवत्ता का सूक्ष्म विश्लेषण करता है। उच्च रुग्णता दर किसी समाज में स्वास्थ्य सुविधाओं की कमी और पोषण के निम्न स्तर का स्पष्ट संकेत प्रदान करती है। इसका अध्ययन सार्वजनिक स्वास्थ्य नीतियों के निर्माण और संक्रामक रोगों के प्रभावी नियंत्रण हेतु जनसांख्यिकीय विश्लेषण में अत्यंत महत्वपूर्ण माना जाता है।

10. (A) लगभग 23.8 करोड़
वर्ष 1901 की जनगणना भारत के जनसांख्यिकीय इतिहास में एक अत्यंत महत्वपूर्ण मील का पत्थर थी। इस समय भारत की कुल अनुमानित जनसंख्या लगभग 23.8 करोड़ दर्ज की गई थी। यह आंकड़े बीसवीं शताब्दी के आरंभ में भारत की मानव संसाधन स्थिति का प्रथम आधिकारिक और विस्तृत विवरण प्रदान करते हैं। उस समय देश जनसांख्यिकीय संक्रमण के प्रथम चरण से गुजर रहा था, जहाँ उच्च जन्म दर और उच्च मृत्यु दर प्रचलित थी। 1901 के ये सांख्यिकीय आंकड़े भविष्य में भारत की जनसंख्या वृद्धि के प्रतिरूप को समझने हेतु आधार के रूप में कार्य करते हैं।

11. (D) 1, 2, और 3
भारत के जनसांख्यिकीय इतिहास में विभिन्न चरणों का अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान है। 1921 से 1951 के मध्य जनसंख्या वृद्धि अपेक्षाकृत स्थिर रही क्योंकि मृत्यु दर में क्रमिक गिरावट आनी शुरू हुई थी। 1911-1921 के दशक में भीषण अकाल और इन्फ्लुएंजा महामारी के कारण भारत ने अपने इतिहास में एकमात्र ऋणात्मक वृद्धि दर दर्ज की थी। 1951 के पश्चात, चिकित्सा सेवाओं में सुधार और उच्च जन्म दर के कारण तीव्र जनसंख्या विस्फोट का चरण प्रारंभ हुआ। अतः भारत के जनसंख्या विकास के संबंध में दिए गए ये सभी कथन ऐतिहासिक रूप से पूर्णतः सत्य हैं।

12. (B) मृत्यु दर में भारी गिरावट जबकि जन्म दर उच्च बनी रही।
भारत में तीव्र जनसंख्या वृद्धि का प्राथमिक कारण मृत्यु दर और जन्म दर के मध्य बढ़ता हुआ अंतराल रहा है। स्वतंत्रता के पश्चात चिकित्सा सुविधाओं, स्वच्छता और खाद्य सुरक्षा में व्यापक सुधार के कारण मृत्यु दर में बहुत तीव्रता से कमी आई। हालांकि, साक्षरता की कमी, सामाजिक परंपराओं और निर्धनता जैसे कारकों के कारण जन्म दर में वैसी अपेक्षित गिरावट नहीं देखी गई। जन्म और मृत्यु दर के इसी असंतुलन के परिणामस्वरूप देश को एक लंबे समय तक जनसंख्या विस्फोट की चुनौती का सामना करना पड़ा है, जो विकास को प्रभावित करता है।

13. (C) भूमि और संसाधनों पर बढ़ता दबाव।
तीव्र जनसंख्या वृद्धि का अर्थव्यवस्था पर अत्यंत गहरा प्रभाव पड़ता है, क्योंकि यह उपलब्ध प्राकृतिक और मानव निर्मित संसाधनों पर दबाव बढ़ा देती है। कृषि भूमि का प्रति व्यक्ति हिस्सा निरंतर कम हो जाता है, जिससे खाद्य सुरक्षा हेतु गंभीर चुनौती उत्पन्न होती है। इसके अतिरिक्त, बढ़ती जनसंख्या हेतु आवास, स्वच्छ जल और ऊर्जा जैसी बुनियादी आवश्यकताओं की पूर्ति करना कठिन हो जाता है। यह स्थिति निवेश योग्य पूंजी को विकास कार्यों से हटाकर केवल बढ़ती जनसंख्या के निर्वाह और सामाजिक सेवाओं की पूर्ति की ओर मोड़ने के लिए बाध्य कर देती है।

14. (D) जनसंख्या का वास्तविक पुनरुत्पादक प्रदर्शन।
जनसांख्यिकी में 'प्रजननता' का तात्पर्य किसी जनसंख्या में जीवित जन्मों की वास्तविक संख्या से होता है। यह गर्भ धारण करने की जैविक क्षमता, जिसे 'जननशक्ति' कहा जाता है, से पूर्णतः भिन्न है। प्रजननता किसी समाज के वास्तविक पुनरुत्पादक व्यवहार को दर्शाती है और यह शिक्षा, विवाह की आयु तथा स्वास्थ्य सुविधाओं जैसे सामाजिक-आर्थिक कारकों से प्रभावित होती है। इसका मापन अशोधित जन्म दर अथवा कुल प्रजनन दर जैसे संकेतकों के माध्यम से किया जाता है। यह जनसंख्या वृद्धि को समझने हेतु जनसांख्यिकीय विश्लेषण का एक अनिवार्य और प्राथमिक घटक है।

15. (A) इसके परिणामस्वरूप प्राकृतिक संसाधनों की प्रति व्यक्ति उपलब्धता बढ़ती है।
तीव्र जनसंख्या वृद्धि के नकारात्मक परिणाम समाज, अर्थव्यवस्था और पर्यावरण पर स्पष्ट रूप से दिखाई देते हैं। जैसे-जैसे जनसंख्या बढ़ती है, प्राकृतिक संसाधनों का दोहन तेज हो जाता है और उनकी प्रति व्यक्ति उपलब्धता निरंतर घटती जाती है। यह बढ़ती मांग स्वास्थ्य और शिक्षा जैसी सार्वजनिक सेवाओं पर अतिरिक्त वित्तीय बोझ डालती है, जिससे उनकी गुणवत्ता प्रभावित होती है। इसके अतिरिक्त, उच्च निर्भरता अनुपात और पर्यावरणीय अवनयन भी जनसंख्या वृद्धि के महत्वपूर्ण दुष्परिणाम हैं। अतः संसाधनों की बढ़ती उपलब्धता का दावा जनसांख्यिकीय दृष्टिकोण से पूर्णतः तर्कहीन और गलत सिद्ध होता है।

16. (B) मृत्यु दर
मृत्यु दर एक अत्यंत महत्वपूर्ण जनसांख्यिकीय प्रक्रिया है जो किसी निश्चित समय और विशिष्ट भौगोलिक क्षेत्र में होने वाली मौतों की आवृत्ति को मापती है। यह जनसंख्या के आकार और उसकी संरचना में परिवर्तन लाने वाले तीन प्रमुख घटकों में से एक मानी जाती है। मृत्यु दर के स्तर से समाज की स्वास्थ्य स्थिति, पोषण की उपलब्धता और चिकित्सा सुविधाओं की प्रभावशीलता का स्पष्ट पता चलता है। अशोधित मृत्यु दर और शिशु मृत्यु दर इसके प्रमुख माप हैं, जिनका उपयोग विकास की रणनीतियां तैयार करने और प्रभावी सार्वजनिक नीति निर्माण में निरंतर किया जाता है।

17. (A) 1, 3, 2, 4
भारतीय जनसांख्यिकी में प्रमुख घटनाओं का सही कालक्रम समझना आवश्यक है। वर्ष 1921 को 'महान विभाजक वर्ष' कहा जाता है। इसके पश्चात, स्वतंत्र भारत की पहली जनगणना 1951 में आयोजित की गई थी। भारत ने अपना राष्ट्रीय परिवार नियोजन कार्यक्रम आधिकारिक तौर पर 1952 में प्रारंभ किया,

Downloaded from www.pdf.tube

जो विश्व में अपनी तरह का पहला सरकारी प्रयास था। अंततः, वर्ष 2000 में भारत की जनसंख्या ने 1 अरब के ऐतिहासिक आंकड़े को पार कर लिया। यह क्रम भारत की जनसांख्यिकीय यात्रा के प्रमुख पड़ावों और जनसंख्या प्रबंधन के प्रयासों को सफलतापूर्वक स्पष्ट करता है।

18. (C) कथन I सत्य है, लेकिन कथन II असत्य है।
किसी जनसंख्या की आयु और लिंग संरचना का देश की आर्थिक उत्पादकता और सामाजिक सेवाओं की मांग पर सीधा प्रभाव पड़ता है। युवा और वृद्ध जनसंख्या का अनुपात ही समाज के निर्भरता अनुपात को निर्धारित करता है। जिस जनसंख्या में युवा व्यक्तियों का अनुपात बहुत अधिक होता है, वहां निर्भरता अनुपात वास्तव में बढ़ जाता है क्योंकि कार्यशील आयु वर्ग को बच्चों की शिक्षा और स्वास्थ्य पर अधिक व्यय करना पड़ता है। अतः केवल पहला कथन सही है, जबकि दूसरा कथन निर्भरता की गलत व्याख्या करता है क्योंकि युवा आबादी अल्पकाल में आर्थिक बोझ बढ़ाती है।

19. (C) प्रजनन आयु में विवाहित महिलाओं का अनुपात
प्रजननता को प्रभावित करने वाले अनेक कारकों में से कुछ प्रत्यक्ष होते हैं जो जन्मों की संख्या को सीधे नियंत्रित करते हैं। प्रजनन आयु वर्ग (15-49 वर्ष) में विवाहित महिलाओं का अनुपात एक प्रमुख प्रत्यक्ष निर्धारक है क्योंकि अधिकांश जन्म विवाह की संस्था के भीतर ही होते हैं। शहरीकरण और साक्षरता जैसे कारक अप्रत्यक्ष रूप से प्रजननता को प्रभावित करते हैं, लेकिन विवाह का स्तर और गर्भनिरोधक का उपयोग जैविक रूप से जन्मों की संभावना को सीधे निर्धारित करते हैं। यह जनसांख्यिकीय विश्लेषण और जनसंख्या नियंत्रण नीतियों का एक अनिवार्य हिस्सा माना जाता है।

20. (A) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
सार्वजनिक स्वास्थ्य सेवाओं और स्वच्छता के स्तर में सुधार का सीधा संबंध मृत्यु दर में गिरावट से होता है। बेहतर स्वच्छता, स्वच्छ पेयजल की निरंतर आपूर्ति और व्यापक टीकाकरण जैसे उपाय संक्रामक रोगों के प्रसार को प्रभावी ढंग से रोकते हैं। जब बीमारियों का प्रकोप कम होता है, तो स्वाभाविक रूप से अकाल मृत्यु की दर घट जाती है और समाज की औसत जीवन प्रत्याशा बढ़ जाती है। अतः यह तर्क पूर्णतः सही है कि स्वास्थ्य उपायों में निवेश करना किसी भी जनसंख्या की मृत्यु दर को कम करने का सबसे सशक्त और प्रभावी मार्ग है।

21. (C) एक वर्ष
शिशु मृत्यु दर एक अत्यंत महत्वपूर्ण जनसांख्यिकीय संकेतक है जो समाज की स्वास्थ्य सेवाओं और पोषण स्तर को दर्शाता है। इसे प्रति 1,000 जीवित जन्मों पर एक वर्ष से कम आयु के शिशुओं की होने वाली मृत्यु की संख्या के रूप में मापा जाता है। यह दर मातृ स्वास्थ्य देखभाल, सुरक्षित प्रसव सुविधाओं और शिशुओं हेतु उपलब्ध पोषण तथा टीकाकरण की प्रभावशीलता का मूल्यांकन करने में सहायता करती है। उच्च शिशु मृत्यु दर अक्सर सामाजिक-आर्थिक पिछड़ेपन और अपर्याप्त चिकित्सा सुविधाओं का संकेत प्रदान करती है, जिसे कम करना राष्ट्र की प्राथमिकता होनी चाहिए।

22. (B) उपरोक्त सभी।
समाज में लिंगानुपात का असंतुलन अनेक गंभीर सामाजिक और जनसांख्यिकीय समस्याओं को जन्म देता है। जब महिलाओं की संख्या पुरुषों की तुलना में काफी कम होती है, तो पुरुषों हेतु विवाह की औसत आयु बढ़ सकती है और विवाह बाजार में गहरा असंतुलन उत्पन्न होता है। इसके साथ ही, महिलाओं के विरुद्ध हिंसा और अपराधों की दर में वृद्धि होने की संभावना अत्यधिक बढ़ जाती है। दीर्घकाल में, यह प्रजनन दर में गिरावट और सामाजिक अस्थिरता का मुख्य कारण भी बन सकता है, जो पूरे समाज की संरचना और सद्भाव को नकारात्मक रूप से प्रभावित करता है।

23. (B) P-2, Q-3, R-4, S-1
विभिन्न जनसांख्यिकीय संकेतक जनसंख्या की वास्तविक स्थिति को समझने में सहायता करते हैं। शिशु मृत्यु दर प्रति हजार जीवित जन्मों पर एक वर्ष से कम आयु के शिशुओं की मृत्यु है। मातृ मृत्यु दर गर्भावस्था संबंधी कारणों से प्रति लाख जन्मों पर होने वाली मृत्यु को दर्शाती है। अशोधित जन्म दर प्रति हजार व्यक्तियों पर जीवित जन्मों की कुल संख्या है। अंत में, सामान्य प्रजनन दर प्रजनन आयु वर्ग की प्रति हजार महिलाओं पर होने वाले जन्मों को मापती है। ये सभी संकेतक समाज के स्वास्थ्य, विकास और जीवन स्तर के महत्वपूर्ण मानक माने जाते हैं।

24. (A) आर्थिक विकास को गति देने के लिए एक विशाल और कुशल कार्यबल की क्षमता।
जनसंख्या को मानव संसाधन के रूप में देखने का दृष्टिकोण सकारात्मक है, जो केवल संख्या के स्थान पर गुणवत्ता पर ध्यान केंद्रित करता है। इसके अनुसार, यदि जनसंख्या स्वस्थ, शिक्षित और तकनीकी रूप से कुशल है, तो वह आर्थिक विकास हेतु एक परिसंपत्ति बन जाती है। यह दृष्टिकोण इस विचार पर आधारित है कि मानव पूंजी किसी भी राष्ट्र की उत्पादकता और नवाचार को बढ़ाने का सबसे सशक्त माध्यम है। इसलिए, शिक्षा और स्वास्थ्य में निरंतर निवेश करना जनसंख्या को एक उत्पादक संसाधन में बदलने और संधारणीय विकास प्राप्त करने हेतु अनिवार्य माना जाता है।

25. (C) क्षेत्र की भूवैज्ञानिक संरचना।
जनसंख्या वृद्धि मुख्य रूप से सामाजिक, सांस्कृतिक और आर्थिक कारकों द्वारा निर्धारित होती है। धार्मिक विश्वास, संयुक्त परिवार प्रणाली और महिलाओं की सामाजिक स्थिति जैसे कारक प्रजनन दर और परिवार के आकार को गहराई से प्रभावित करते हैं। उदाहरण के लिए, संयुक्त परिवार प्रणाली बच्चों के पालन-पोषण का आर्थिक बोझ बांटकर उच्च जन्म दर को प्रोत्साहित कर सकती है। इसके विपरीत, क्षेत्र की भूवैज्ञानिक संरचना एक भौतिक कारक है जो जनसंख्या के वितरण और घनत्व को तो प्रभावित कर सकती है, परंतु यह जन्म अथवा मृत्यु दर जैसे वृद्धि कारकों को सीधे प्रभावित नहीं करती है।

NODIA

26. (A) जनसांख्यिकीय गतिशीलता और जीवन की गुणवत्ता के बीच संबंधों के बारे में जागरूकता पैदा करना।
जनसंख्या शिक्षा का मूल उद्देश्य व्यक्तियों को जनसंख्या वृद्धि और उनके व्यक्तिगत एवं सामाजिक जीवन के मध्य के अंतर्संबंधों को गहराई से समझाना है। यह केवल परिवार नियोजन की विधियों तक सीमित नहीं है, बल्कि यह एक सचेत और तर्कसंगत दृष्टिकोण विकसित करने का प्रयास है। इसका लक्ष्य लोगों को यह समझाना है कि कैसे जनसंख्या का अनियंत्रित आकार संसाधनों, पर्यावरण और विकास की भविष्य की संभावनाओं को प्रभावित करता है। इस शिक्षा के माध्यम से समाज में जिम्मेदार पितृत्व और संधारणीय जीवन शैली के प्रति व्यापक जागरूकता बढ़ाई जाती है।

27. (D) बड़ी कार्यशील आयु वाली जनसंख्या के साथ एक अनुकूल आयु संरचना।
जनसांख्यिकीय लाभांश उस आर्थिक लाभ को संदर्भित करता है जो किसी देश को तब प्राप्त होता है जब उसकी कार्यशील आयु (15-64 वर्ष) की जनसंख्या का अनुपात बढ़ जाता है। यह स्थिति तब उत्पन्न होती है जब जन्म दर में गिरावट के कारण बच्चों की संख्या कम हो जाती है और युवा वयस्क कार्यबल में सम्मिलित होते हैं। यदि इस विशाल श्रम शक्ति को उचित शिक्षा, कौशल और रोजगार के अवसर प्रदान किए जाएं, तो यह राष्ट्र की उत्पादकता और सकल घरेलू उत्पाद में अभूतपूर्व वृद्धि कर सकती है, जो विकास हेतु एक स्वर्णिम अवसर है।

28. (B) केवल 1 और 2
भारत ने 1952 में विश्व का पहला आधिकारिक राष्ट्रीय परिवार नियोजन कार्यक्रम प्रारंभ करके जनसंख्या नीति के क्षेत्र में अग्रणी भूमिका निभाई थी। राष्ट्रीय जनसंख्या नीति 2000 का दीर्घकालिक लक्ष्य 2045 तक देश की जनसंख्या को स्थिर करना निर्धारित किया गया है। यह नीति केवल नसबंदी जैसे दमनकारी उपायों पर केंद्रित नहीं है, बल्कि यह स्वैच्छिक और सूचित विकल्प, स्वास्थ्य सेवाओं के विस्तार और महिला सशक्तिकरण के माध्यम से जनसंख्या स्थिरीकरण प्राप्त करने पर बल देती है। अतः केवल पहले दो कथन भारत की जनसंख्या नीति का सही और आधुनिक विवरण प्रदान करते हैं।

29. (C) स्थायी निवास स्थापित करने के लिए सीमाओं के पार व्यक्तियों का आवागमन।
जनसंख्या अध्ययन में 'प्रवास' का तात्पर्य व्यक्तियों अथवा समूहों के एक भौगोलिक स्थान से दूसरे स्थान पर जाने से है, जिसका उद्देश्य सामान्यतः नए स्थान पर स्थायी अथवा दीर्घकालिक निवास स्थापित करना होता है। यह सीमाओं के भीतर (आंतरिक) अथवा अंतरराष्ट्रीय स्तर पर हो सकता है। प्रवास जनसंख्या के वितरण और उसकी संरचना को बदलने वाला एक प्रमुख घटक है। यह आर्थिक अवसरों, सामाजिक सुरक्षा अथवा बेहतर जीवन स्तर की तलाश जैसे कारकों द्वारा संचालित होता है, जो किसी क्षेत्र के जनसांख्यिकीय संतुलन को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित करता है।

30. (D) अशोधित जन्म दर।
मृत्यु दर अनेक कारकों द्वारा निर्धारित होती है जो जीवन की रक्षा और रोगों के नियंत्रण से संबंधित होते हैं। स्वास्थ्य सेवाओं की उपलब्धता, पोषण का स्तर और जनसंख्या की आयु संरचना इसमें महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। उदाहरण के लिए, वृद्ध जनसंख्या वाले क्षेत्रों में स्वाभाविक रूप से मृत्यु दर अधिक हो सकती है। हालांकि, अशोधित जन्म दर स्वयं मृत्यु दर का निर्धारक नहीं है, बल्कि यह प्रजननता का एक माप है। जन्म दर और मृत्यु दर स्वतंत्र जनसांख्यिकीय प्रक्रियाएं हैं, जो मिलकर किसी भी क्षेत्र की जनसंख्या की प्राकृतिक वृद्धि दर को निर्धारित करती हैं।

31. (A) 1921
भारत के जनसांख्यिकीय इतिहास में वर्ष 1921 को 'महान विभाजक वर्ष' के रूप में जाना जाता है। इस वर्ष से पूर्व भारत की जनसंख्या वृद्धि दर अत्यंत अस्थिर थी और कभी-कभी अकाल अथवा महामारी के कारण ऋणात्मक भी हो जाती थी। 1921 के पश्चात मृत्यु दर में निरंतर गिरावट के कारण जनसंख्या में स्थिर वृद्धि देखी गई। यह वर्ष उतार-चढ़ाव वाले चरण से निरंतर वृद्धि वाले चरण के संक्रमण को स्पष्ट रूप से दर्शाता है। यह भारतीय जनगणना के इतिहास में जनसंख्या विकास का सबसे महत्वपूर्ण और निर्णायक पड़ाव माना जाता है।

32. (A) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
महिला साक्षरता और प्रजनन दर के मध्य एक अत्यंत गहरा और विपरीत संबंध पाया जाता है। जब महिलाएं शिक्षित होती हैं, तो वे विवाह की आयु बढ़ाती हैं और अपने प्रजनन स्वास्थ्य के प्रति अधिक जागरूक होती हैं। शिक्षा उन्हें परिवार नियोजन के साधनों के प्रभावी उपयोग और बच्चों के मध्य उचित अंतराल रखने हेतु सशक्त बनाती है। इसके अतिरिक्त, शिक्षित महिलाओं के पास बेहतर आर्थिक अवसर होते हैं, जिससे बड़े परिवार की चाहत कम हो जाती है। अतः महिला साक्षरता जनसंख्या नियंत्रण और सामाजिक सुधार हेतु सबसे प्रभावी उपकरण सिद्ध होती है।

33. (B) तीव्र जनसंख्या वृद्धि संसाधनों को निवेश से हटाकर उपभोग की ओर मोड़ देती है।
जब जनसंख्या बहुत तेजी से बढ़ती है, तो देश का अधिकांश राजस्व बढ़ती आबादी की बुनियादी आवश्यकताओं जैसे भोजन, आवास और स्वास्थ्य सेवाओं को पूरा करने में व्यय हो जाता है। इससे औद्योगिक निवेश और बुनियादी ढांचे के विकास हेतु उपलब्ध पूंजी में कमी आ जाती है। यह स्थिति आर्थिक विकास की गति को धीमा कर देती है और बेरोजगारी एवं निर्धनता की समस्या को बढ़ाती है। इस परिप्रेक्ष्य में, जनसंख्या वृद्धि को विकास के मार्ग में एक बड़ी बाधा माना जाता है क्योंकि यह प्रति व्यक्ति उपलब्ध संसाधनों और निवेश क्षमता को सीमित कर देती है।

34. (A) स्वास्थ्य और प्रसूति देखभाल सेवाएं
मातृ मृत्यु दर किसी देश की स्वास्थ्य प्रणाली की दक्षता और संवेदनशीलता का एक अत्यंत महत्वपूर्ण पैमाना है। यह गर्भावस्था अथवा प्रसव के दौरान होने वाली महिलाओं की मृत्यु

Click Here to Buy book on Amazon

में जनसंख्या स्थिरीकरण और संधारणीय विकास सुनिश्चित करने हेतु एक अत्यंत महत्वपूर्ण और अनिवार्य मील का पत्थर मानी जाती है।

103. (D) प्रति व्यक्ति आय में तीव्र वृद्धि।
तीव्र जनसंख्या वृद्धि अक्सर विकासशील देशों हेतु अनेक आर्थिक चुनौतियां उत्पन्न करती है। इसके परिणामस्वरूप बेरोजगारी बढ़ती है क्योंकि श्रम बाजार में प्रवेश करने वाले युवाओं की संख्या उपलब्ध नौकरियों से कहीं अधिक होती है। शिक्षा और स्वास्थ्य जैसी बुनियादी सेवाओं पर अत्यधिक बोझ बढ़ने से उनकी गुणवत्ता प्रभावित होती है और संसाधनों का अत्यधिक दोहन पर्यावरण को क्षति पहुँचाता है। इन सभी दबावों के कारण प्रति व्यक्ति आय में वृद्धि की गति धीमी हो जाती है, न कि तीव्र। अतः जनसंख्या वृद्धि और प्रति व्यक्ति आय के मध्य अक्सर एक नकारात्मक संबंध देखा जाता है।

104. (A) P-1, Q-2, R-4, S-3
जनसंख्या पिरामिड का आकार समाज के विशिष्ट जनसांख्यिकीय चरण को दर्शाता है। पहली अवस्था में उच्च जन्म और मृत्यु दर के कारण आधार चौड़ा और भुजाएं अवतल होती हैं। दूसरी अवस्था में मृत्यु दर गिरने से आधार बहुत अधिक चौड़ा हो जाता है, जो तीव्र वृद्धि को दर्शाता है। चौथी अवस्था में जन्म और मृत्यु दर दोनों कम होने से भुजाएं लगभग ऊर्ध्वाधर हो जाती हैं, जो स्थिरता का संकेत है। अंत में, पांचवीं अवस्था में गिरती जन्म दर के कारण आधार संकुचित हो जाता है, जो जनसंख्या में गिरावट को प्रदर्शित करता है। यह राष्ट्रों के विकास पथ को स्पष्ट करता है।

105. (C) अशोधित जन्म दर
अशोधित जन्म दर प्रजननता का सबसे सरल और सामान्य रूप से उपयोग किया जाने वाला जनसांख्यिकीय माप है। इसकी गणना किसी विशेष वर्ष में हुए जीवित जन्मों की कुल संख्या को उस वर्ष की मध्य-वर्ष की कुल जनसंख्या से विभाजित करके और फिर 1,000 से गुणा करके की जाती है। चूंकि यह पूरे समाज हेतु जन्म की आवृत्ति का एक मोटा अनुमान प्रदान करती है और इसमें आयु अथवा लिंग संरचना को ध्यान में नहीं रखा जाता, इसलिए इसे 'अशोधित' कहा जाता है। यह विभिन्न क्षेत्रों के मध्य प्रजनन स्तर की तुलना करने हेतु एक प्राथमिक आधार प्रदान करता है।

106. (C) A सत्य है लेकिन R असत्य है।
प्रवास किसी भी क्षेत्र की जनसंख्या में परिवर्तन लाने वाला एक अत्यंत महत्वपूर्ण घटक माना जाता है। यद्यपि जन्म और मृत्यु प्राकृतिक वृद्धि को निर्धारित करते हैं, परंतु व्यक्तियों का भौगोलिक आवागमन, जिसे प्रवास कहा जाता है, किसी विशिष्ट स्थान की जनसंख्या के आकार और संरचना को तीव्रता से बदल सकता है। उदाहरण के लिए, बड़े शहरों की जनसंख्या वृद्धि का मुख्य कारण जन्मों के स्थान पर ग्रामीण क्षेत्रों से होने वाला आप्रवास होता है। अतः यह कहना पूर्णतः गलत है कि जनसंख्या केवल जन्म और मृत्यु से बदलती है; प्रवास इसमें समान रूप से महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

107. (D) 2022 में निदान किए गए मधुमेह के नए मामलों की संख्या।
रुग्णता डेटा मुख्य रूप से किसी जनसंख्या के भीतर बीमारियों और स्वास्थ्य समस्याओं की व्यापकता अथवा उनके प्रसार पर ध्यान केंद्रित करता है। मधुमेह के नए मामलों की संख्या इसका एक उत्कृष्ट उदाहरण है क्योंकि यह समाज के बीमारी के बोझ और विशिष्ट स्वास्थ्य चुनौतियों की सूक्ष्म जानकारी देता है। यह मृत्यु के आंकड़ों से भिन्न है क्योंकि यह जीवित रहते हुए बीमार होने की स्थिति को मापता है। इस प्रकार की जानकारी स्वास्थ्य सेवाओं के भविष्य के नियोजन, बीमारियों की रोकथाम की प्रभावी रणनीति बनाने और सार्वजनिक स्वास्थ्य बजट के उचित आवंटन हेतु अनिवार्य होती है।

108. (D) जन्म दर में महत्वपूर्ण गिरावट।
जनसांख्यिकीय संक्रमण मॉडल में दूसरी अवस्था से तीसरी अवस्था में प्रवेश का मुख्य संकेतक जन्म दर में आने वाली स्पष्ट और निरंतर गिरावट माना जाता है। इस चरण में, मृत्यु दर पहले से ही कम हो चुकी होती है, परंतु अब सामाजिक बदलावों, जैसे बढ़ता शहरीकरण और महिला साक्षरता, के कारण लोग छोटे परिवार को प्राथमिकता देने लगते हैं। जब जन्म दर गिरकर मृत्यु दर के समीप आने लगती है, तो जनसंख्या वृद्धि की गति धीमी होने लगती है। यह संक्रमण समाज के आधुनिकीकरण और जनसांख्यिकीय परिपक्वता की दिशा में एक बड़ा और अनिवार्य कदम माना जाता है।

NODIA

109. (A) केवल 2
माल्थस के सिद्धांत की सबसे बड़ी कमजोरी यह थी कि उन्होंने खाद्य उत्पादन बढ़ाने में मानव ज्ञान और नवीन कृषि तकनीकों की शक्ति को बहुत कम आंका था। हरित क्रांति जैसी घटनाओं ने उनके इस विचार को गलत सिद्ध कर दिया कि खाद्य आपूर्ति केवल धीमी गति से बढ़ सकती है। इसके अतिरिक्त, माल्थस ने 'नैतिक संयम' को निवारक माना था, न कि सकारात्मक अवरोध। उनका सिद्धांत प्रत्येक समाज पर समान रूप से लागू नहीं होता क्योंकि कई देशों ने बिना किसी आपदा के अपनी जनसंख्या को सफलतापूर्वक स्थिर किया है। अतः केवल तकनीक संबंधी आलोचना ही पूर्णतः वैज्ञानिक सिद्ध होती है।

110. (C) सामाजिक मानदंडों और संस्थाओं पर बढ़ा हुआ दबाव।
बहुत तीव्र जनसंख्या वृद्धि समाज के पारंपरिक ढांचे और उसकी संस्थाओं हेतु गंभीर चुनौतियां उत्पन्न करती है। जब आबादी संसाधनों की तुलना में तीव्रता से बढ़ती है, तो परिवार, शिक्षण संस्थान और न्याय प्रणाली जैसे सामाजिक तंत्रों पर भारी दबाव पड़ता है। इससे संसाधनों हेतु आपसी प्रतिस्पर्धा बढ़ती है, जिससे सामाजिक संघर्ष और तनाव की स्थिति उत्पन्न हो सकती है। बढ़ती भीड़भाड़ और अपर्याप्त नागरिक सेवाएं सामाजिक मानदंडों के टूटने का कारण भी बन सकती हैं। अतः जनसंख्या संतुलन बनाए रखना सामाजिक स्थिरता, सुरक्षा और सद्भाव को सुरक्षित रखने हेतु अत्यंत आवश्यक होता है।

111. (C) कुल प्रजनन दर
मृत्यु दर अनेक बाह्य और आंतरिक कारकों द्वारा निर्धारित होती है जो जीवन की रक्षा और रोगों के नियंत्रण से संबंधित होते हैं।

43. (A) P-3, Q-2, R-1, S-4
भारत के जनसांख्यिकीय इतिहास को चार प्रमुख चरणों में विभाजित किया जा सकता है। प्रथम चरण (1901-1921) स्थिर जनसंख्या का था। द्वितीय चरण (1921-1951) निरंतर और निश्चित वृद्धि की अवधि थी। तृतीय चरण (1951-1981) जनसंख्या विस्फोट का काल था, जिसमें मृत्यु दर में तीव्र गिरावट दर्ज की गई। चतुर्थ चरण (1981 के पश्चात) उच्च वृद्धि का है, परंतु अब इसमें वृद्धि दर धीमी होने के स्पष्ट संकेत दिखाई दे रहे हैं। यह वर्गीकरण भारत के विकास के साथ जनसंख्या के बदलते प्रतिरुप को वैज्ञानिक रूप से समझने में सहायता करता है।

44. (B) जनसंख्या एक मानव संसाधन के रूप में दृष्टिकोण
जनसंख्या को मानव संसाधन के रूप में देखने का दृष्टिकोण अत्यंत सकारात्मक है, जो यह मानता है कि मानव श्रम और बुद्धि आर्थिक विकास के प्राथमिक स्रोत हैं। एक बढ़ती हुई जनसंख्या तकनीकी नवाचार को जन्म दे सकती है और औद्योगिक वस्तुओं हेतु एक विशाल बाजार प्रदान करती है। यदि व्यक्तियों को उचित शिक्षा, प्रशिक्षण और स्वास्थ्य सुविधाएं प्रदान की जाएं, तो वे उत्पादन की प्रक्रिया में गुणात्मक सुधार कर सकते हैं। यह परिप्रेक्ष्य केवल संख्या के बोझ के स्थान पर कौशल और उत्पादकता के माध्यम से विकास को गति देने पर बल देता है।

45. (C) यह वह स्तर है जहां प्रवास को छोड़कर, एक जनसंख्या पीढ़ियों के बीच स्वयं को प्रतिस्थापित करती है।
प्रतिस्थापन स्तर की प्रजननता वह औसत दर है जिस पर एक महिला को औसतन इतने बच्चे उत्पन्न करने चाहिए जो एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक जनसंख्या के आकार को स्थिर रख सकें। विकसित समाजों हेतु यह दर सामान्यतः 2.1 मानी जाती है। इसमें अतिरिक्त 0.1 का उपयोग बाल मृत्यु दर और लिंगानुपात के असंतुलन की भरपाई करने हेतु किया जाता है। यदि कोई समाज इस दर को प्राप्त कर लेता है, तो दीर्घकाल में उसकी जनसंख्या प्राकृतिक रुप से न तो बढ़ती है और न ही घटती है, जिससे जनसांख्यिकीय स्थिरता प्राप्त होती है।

46. (A) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
पारंपरिक समाजों में प्रचलित संयुक्त परिवार प्रणाली अक्सर उच्च प्रजनन दर को बढ़ावा देती है। ऐसे परिवारों में बच्चों के पालन-पोषण का आर्थिक और सामाजिक उत्तरदायित्व केवल जैविक माता-पिता पर न होकर पूरे कुनबे पर होता है। यह साझा जिम्मेदारी बच्चों की प्रत्यक्ष लागत और बोझ को कम कर देती है, जिससे बड़े परिवार की चाहत बढ़ जाती है। इसके अतिरिक्त, संयुक्त परिवारों में बच्चों को भविष्य हेतु श्रम शक्ति और वृद्धावस्था की सुरक्षा के रुप में देखा जाता है, जो उच्च जन्म दर बनाए रखने हेतु एक सामाजिक प्रोत्साहन का कार्य करता है।

47. (A) उच्च महिला शिक्षा - बढ़ी हुई प्रजननता
प्रजननता के निर्धारकों का विश्लेषण करते समय शिक्षा की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण मानी जाती है। उच्च महिला साक्षरता और प्रजनन दर के मध्य एक विपरीत संबंध पाया जाता है। शिक्षित महिलाएं सामान्यतः विलंब से विवाह करती हैं, वे परिवार नियोजन के प्रति जागरुक होती हैं और उनके पास करियर के अनेक विकल्प होते हैं, जिसके परिणामस्वरुप वे कम बच्चे उत्पन्न करती हैं। अतः यह कहना पूर्णतः गलत है कि उच्च शिक्षा से प्रजननता बढ़ती है। अन्य कारक जैसे कम उम्र में विवाह और उच्च शिशु मृत्यु दर निश्चित रुप से उच्च प्रजनन दर में योगदान देते हैं।

48. (B) बलपूर्वक या दमनकारी उपायों पर इसकी अत्यधिक निर्भरता।
भारत की जनसंख्या नीति के इतिहास में, विशेष रुप से 1970 के दशक के मध्य में, दमनकारी उपायों का उपयोग एक गंभीर विवाद का विषय रहा है। आपातकाल के दौरान अनिवार्य नसबंदी और कठोर नीतियों ने मानवाधिकारों का उल्लंघन किया और जनता में व्यापक असंतोष उत्पन्न किया। इस दृष्टिकोण की आलोचना इसलिए की जाती है क्योंकि यह सूचित सहमति और स्वैच्छिक भागीदारी के लोकतांत्रिक मूल्यों के विरुद्ध था। इसके परिणामस्वरुप परिवार नियोजन कार्यक्रमों के प्रति सामाजिक प्रतिरोध बढ़ा, जिससे जनसंख्या नियंत्रण के दीर्घकालिक लक्ष्यों को प्राप्त करने में बाधा उत्पन्न हुई।

49. (A) 3, 2, 4, 1
भारत की जनसांख्यिकीय घटनाओं का क्रम ऐतिहासिक विकास को दर्शाता है। सर्वप्रथम, 1881 में पहली पूर्ण और समकालिक जनगणना आयोजित की गई थी। इसके पश्चात, 1970 के दशक में "हम दो, हमारे दो" का नारा परिवार नियोजन को लोकप्रिय बनाने हेतु दिया गया। तत्पश्चात, राजनीतिक स्थिरता और विकास हेतु 1990 के दशक में लोकसभा सीटों की संख्या को स्थिर करने के प्रयास किए गए। अंततः, वर्ष 2000 में वर्तमान व्यापक राष्ट्रीय जनसंख्या नीति की घोषणा की गई। यह अनुक्रम भारत के नीतिगत बदलावों और जनसंख्या प्रबंधन के प्रयासों का सही विवरण है।

50. (A) सकारात्मक अवरोध
माल्थस के सिद्धांत में अकाल एक प्रमुख 'सकारात्मक अवरोध' का उदाहरण माना जाता है। यह तब घटित होता है जब जनसंख्या की वृद्धि खाद्य आपूर्ति की सीमा को पार कर जाती है, जिससे संसाधनों की भारी कमी उत्पन्न हो जाती है। प्रकृति इस असंतुलन को दूर करने हेतु मृत्यु दर में तीव्रता से वृद्धि करती है। अकाल, महामारी और युद्ध जैसे कारक जनसंख्या को वापस उसी स्तर पर ला देते हैं जिसे उपलब्ध संसाधन सहारा दे सकें। यह माल्थस के इस विचार को पुष्ट करता है कि संसाधनों के प्रति लापरवाही अंततः मानवीय त्रासदी की ओर ले जाती है।

51. (A) कथन I और कथन II दोनों सत्य हैं।
रुग्णता दर किसी भी समाज के स्वास्थ्य और कल्याण का एक अनिवार्य मापदंड मानी जाती है। यह न केवल रोगों की व्यापकता को दर्शाती है, बल्कि जीवन की समग्र गुणवत्ता और सार्वजनिक स्वास्थ्य सुविधाओं की प्रभावशीलता के बारे में भी महत्वपूर्ण सांख्यिकीय डेटा प्रदान करती है। संक्रामक रोगों की उच्च दर अक्सर स्वच्छता के निम्न स्तर और प्राथमिक

Downloaded from www.pdf.tube

उपाय है। यद्यपि उच्च शिक्षा अंततः प्रजनन दर को कम करने में सहायता करती है, परंतु इसे एक प्रत्यक्ष जनसंख्या नियंत्रण उपाय के स्थान पर एक अप्रत्यक्ष विकासात्मक निवेश माना जाता है जो कौशल और ज्ञान में वृद्धि करता है।

69. (A) कथन I और कथन II दोनों सत्य हैं।
'जनसंख्या संवेग' एक महत्वपूर्ण जनसांख्यिकीय घटना है जो बताती है कि प्रजनन दर कम होने के पश्चात भी जनसंख्या कुछ समय तक क्यों बढ़ती रहती है। इसका मुख्य कारण जनसंख्या की युवा आयु संरचना है। जब बड़ी संख्या में युवा व्यक्ति प्रजनन आयु में प्रवेश करते हैं, तो भले ही वे कम बच्चे पैदा करें, परंतु जन्मों की कुल संख्या मृत्यु की संख्या से अधिक बनी रहती है। यह संवेग दर्शाता है कि जनसंख्या स्थिरीकरण के प्रयासों के वास्तविक परिणाम दिखने में कई दशक लग सकते हैं, जो भविष्य की योजना बनाने हेतु एक महत्वपूर्ण तथ्य है।

70. (B) धीमी, स्थिर और फिर तीव्र वृद्धि के स्पष्ट चरणों को दर्शाती है।
1901 के पश्चात से भारत की जनसंख्या वृद्धि को स्पष्ट ऐतिहासिक चरणों में देखा जा सकता है। 1921 तक की अवधि अत्यंत धीमी वृद्धि और कभी-कभी गिरावट की थी। इसके पश्चात 1921 से 1951 के मध्य स्वास्थ्य सुधारों के कारण स्थिर वृद्धि हुई। 1951 के पश्चात मृत्यु दर में भारी गिरावट ने जनसंख्या विस्फोट को जन्म दिया, जिससे वृद्धि दर अपने चरम पर पहुँच गई। वर्तमान में, भारत एक ऐसे चरण में है जहाँ जनसंख्या अभी भी बढ़ रही है, परंतु वृद्धि की दर में गिरावट के संकेत साफ़ दिखाई दे रहे हैं, जो स्थिरीकरण की ओर संकेत है।

71. (C) P-2, Q-4, R-1, S-3
जनसांख्यिकीय विश्लेषण हेतु विभिन्न संकेतकों और उनके उदाहरणों के मध्य संबंध को समझना आवश्यक है। रुग्णता का अध्ययन बीमारियों की घटना, जैसे तपेदिक के मामलों, के माध्यम से किया जाता है। मृत्यु दर को शिशु मृत्यु दर जैसे मापों से समझा जाता है जो समाज की स्वास्थ्य स्थिति को दर्शाते हैं। प्रजननता का सबसे व्यापक माप कुल प्रजनन दर है जो प्रति महिला औसत जीवित जन्मों को दर्शाता है। अंत में, आयु संरचना का विश्लेषण निर्भरता अनुपात के माध्यम से किया जाता है जो उत्पादक और आश्रित जनसंख्या के मध्य के आर्थिक संबंध को स्पष्ट करता है।

72. (A) उपरोक्त सभी।
तीव्र और अनियंत्रित जनसंख्या वृद्धि पर्यावरण हेतु एक गंभीर चुनौती उत्पन्न करती है। जैसे-जैसे मानव आबादी बढ़ती है, आवास और कृषि हेतु वनों की कटाई की जाती है, जिससे जैव विविधता का भारी ह्रास होता है। बढ़ते शहरीकरण और औद्योगिकीकरण के कारण वायु, जल और मृदा प्रदूषण में भारी वृद्धि होती है। इसके अतिरिक्त, सीमित प्राकृतिक संसाधनों जैसे स्वच्छ जल और जीवाश्म ईंधन का अत्यधिक दोहन उनके विनाश की ओर ले जाता है। अतः पर्यावरण के संरक्षण हेतु जनसंख्या वृद्धि को संतुलित करना एक अनिवार्य शर्त मानी जाती है, जिससे संधारणीयता बनी रहे।

73. (C) जन्म दर और मृत्यु दर।
'जनसांख्यिकीय अंतराल' जनसांख्यिकीय संक्रमण मॉडल की एक महत्वपूर्ण अवधारणा है जो किसी देश में जनसंख्या वृद्धि की क्षमता को दर्शाती है। यह किसी निश्चित समय में जन्म दर और मृत्यु दर के मध्य के अंतर को संदर्भित करता है। संक्रमण के दूसरे चरण में, जब मृत्यु दर तीव्रता से गिरती है परंतु जन्म दर उच्च बनी रहती है, तो यह अंतराल बहुत बढ़ जाता है। यही वह अंतराल है जो जनसंख्या के प्राकृतिक बढ़ने की वास्तविक दर को निर्धारित करता है। इस अंतराल का संकुचन ही अंततः जनसंख्या स्थिरीकरण की दिशा में ले जाता है।

74. (A) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
जनसंख्या को केवल एक बोझ के रूप में देखना संकुचित दृष्टिकोण है; इसे एक मूल्यवान मानव संसाधन के रूप में भी देखा जा सकता है। एक राष्ट्र की असली शक्ति उसकी जनसंख्या की गुणवत्ता में निहित होती है। यदि लोग स्वस्थ, शिक्षित और कुशल हैं, तो वे न केवल उत्पादन बढ़ाते हैं बल्कि तकनीकी नवाचार और आर्थिक विकास को भी गति प्रदान करते हैं। इसे मानव पूंजी का निर्माण कहा जाता है। अतः, शिक्षा और स्वास्थ्य में निवेश करके किसी भी बड़ी जनसंख्या को देश की सबसे बड़ी आर्थिक परिसंपत्ति में परिवर्तित किया जा सकता है।

75. (3, 4, 1, 2) उच्च स्थिर अवस्था, प्रारंभिक विस्तार की अवस्था, उत्तरवर्ती विस्तार की अवस्था, निम्न स्थिर अवस्था।
जनसांख्यिकीय संक्रमण मॉडल समाज के विकास के साथ जन्म और मृत्यु दर में होने वाले परिवर्तनों को चार मुख्य चरणों में वर्णित करता है। यह प्रक्रिया उच्च जन्म और मृत्यु दर वाली 'उच्च स्थिर अवस्था' से प्रारंभ होती है। इसके पश्चात 'प्रारंभिक विस्तार' का चरण आता है जहाँ मृत्यु दर गिरती है। फिर 'उत्तरवर्ती विस्तार' में जन्म दर भी कम होने लगती है। अंत में, 'निम्न स्थिर अवस्था' प्राप्त होती है जहाँ दोनों दरें निम्न स्तर पर संतुलित हो जाती हैं। यह मॉडल जनसंख्या विकास के ऐतिहासिक मार्ग को वैज्ञानिक रूप से स्पष्ट करता है।

76. (B) ब्रह्मचर्य का पालन और विवाह को टालना।
माल्थस ने जनसंख्या वृद्धि को नियंत्रित करने हेतु 'नैतिक संयम' को एक प्रमुख निवारक अवरोध माना था। उनके अनुसार, व्यक्तियों को तब तक विवाह नहीं करना चाहिए जब तक कि वे अपने परिवार का भरण-पोषण करने हेतु आर्थिक रूप से पूर्ण सक्षम न हो जाएं। इस दौरान उन्हें ब्रह्मचर्य का सख्ती से पालन करना चाहिए। माल्थस कृत्रिम गर्भनिरोधकों के विरुद्ध थे और उन्होंने आत्म-नियंत्रण एवं सामाजिक जिम्मेदारी के माध्यम से जन्म दर को कम करने पर बल दिया। उनके लिए यह कष्टकारी सकारात्मक अवरोधों से बचने का एकमात्र सदाचारी और नैतिक मार्ग था।

77. (D) संकुचित जनसंख्या।
एक आयु-लिंग पिरामिड जिसका आकार मधुमक्खी के छत्ते जैसा होता है, वह संकुचित होती जनसंख्या की विशिष्ट पहचान है। इसका नीचे की ओर संकुचित होना गिरती हुई जन्म दर और बच्चों के घटते अनुपात को दर्शाता है। बीच का उभरा हुआ हिस्सा एक बड़े कार्यशील आयु वर्ग को इंगित करता है, जबकि

NODIA

60. (B) जननशक्ति जैविक क्षमता है, जबकि प्रजननता वास्तविक प्रदर्शन है।
जनसांख्यिकी में जननशक्ति और प्रजननता के मध्य एक स्पष्ट अंतर पाया जाता है। जननशक्ति एक महिला अथवा दंपति की बच्चे उत्पन्न करने की अंतर्निहित जैविक अथवा शारीरिक क्षमता को दर्शाती है। इसके विपरीत, प्रजननता किसी दिए गए समय में उत्पन्न हुए जीवित बच्चों की वास्तविक संख्या को प्रदर्शित करती है। कोई व्यक्ति जैविक रुप से सक्षम हो सकता है परंतु सामाजिक, आर्थिक अथवा व्यक्तिगत कारणों से कम बच्चे पैदा कर सकता है। इस प्रकार, प्रजननता वास्तविक पुनरुत्पादक व्यवहार का मापदंड है, जबकि जननशक्ति केवल संभावित प्रजनन क्षमता को ही इंगित करती है।

61. (A) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
उच्च शिशु और बाल मृत्यु दर वाले समाजों में अक्सर प्रजनन दर भी उच्च पाई जाती है। इसके पीछे मुख्य मनोवैज्ञानिक और सामाजिक कारण 'बीमा प्रभाव' है, जहाँ माता-पिता भविष्य की अनिश्चितता के डर से अधिक बच्चे उत्पन्न करते हैं। उन्हें लगता है कि यदि कुछ बच्चों की मृत्यु भी हो जाए, तो कम से कम कुछ तो वयस्कता तक जीवित रहेंगे और वृद्धावस्था में उनकी देखभाल करेंगे। जब बाल स्वास्थ्य सेवाओं में सुधार होता है और शिशुओं के जीवित रहने की दर बढ़ती है, तो स्वाभाविक रूप से प्रजनन दर भी तीव्रता से गिरने लगती है।

62. (D) थॉमस माल्थस
थॉमस रॉबर्ट माल्थस ने 1798 में जनसंख्या के सिद्धांत पर अपने प्रसिद्ध निबंध में यह अवधारणा प्रस्तुत की थी। उन्होंने तर्क दिया था कि मनुष्यों की प्रजनन शक्ति खाद्य आपूर्ति पैदा करने की भूमि की क्षमता से कहीं अधिक बलवान है। उनके अनुसार, जनसंख्या गुणोत्तर श्रेणी जैसे 2, 4, 8, 16 में बढ़ती है, जबकि खाद्य सामग्री केवल समांतर श्रेणी जैसे 1, 2, 3, 4 में बढ़ सकती है। यह गणितीय असंतुलन अपरिहार्य रूप से अकाल और निर्धनता की ओर ले जाता है, जब तक कि इसे कृत्रिम अथवा प्राकृतिक कठोर अवरोधों द्वारा रोका न जाए।

63. (A) एक व्यक्ति कार्य के लिए ग्रामीण बिहार से शहरी दिल्ली जा रहा है।
आंतरिक प्रवास का तात्पर्य एक ही देश की राजनीतिक सीमाओं के भीतर व्यक्तियों के भौगोलिक स्थान परिवर्तन से होता है। जब लोग रोजगार, शिक्षा अथवा बेहतर जीवन की तलाश में अपने मूल स्थान को छोड़कर उसी देश के किसी अन्य क्षेत्र अथवा शहर में जाकर बस जाते हैं, तो इसे आंतरिक प्रवास कहा जाता है। यह जनसंख्या के क्षेत्रीय वितरण को तो बदलता है, परंतु देश की कुल जनसंख्या पर इसका कोई प्रभाव नहीं पड़ता। यह भारत जैसे विकासशील देशों में शहरीकरण और औद्योगिक विकास की प्रक्रिया का एक मुख्य कारक माना जाता है।

64. (B) 'विकास ही सर्वोत्तम गर्भनिरोधक है' दृष्टिकोण
'विकास ही सर्वोत्तम गर्भनिरोधक है' यह दृष्टिकोण इस विचार पर आधारित है कि जैसे-जैसे समाज का सामाजिक-आर्थिक विकास होता है, प्रजनन दर स्वाभाविक रूप से कम हो जाती है। जब लोग बेहतर स्वास्थ्य, शिक्षा और आर्थिक सुरक्षा प्राप्त करते हैं, तो वे अपनी इच्छा से छोटे परिवार के आदर्श को अपनाते हैं। विशेष रुप से महिलाओं की साक्षरता और उनके अधिकारों में वृद्धि उन्हें अपने प्रजनन जीवन पर पूर्ण नियंत्रण प्रदान करती है। यह दृष्टिकोण केवल दमनकारी उपायों के स्थान पर विकास और सशक्तिकरण के माध्यम से जनसंख्या स्थिरीकरण प्राप्त करने पर बल देता है।

65. (D) 1, 2, और 3
भारत में उच्च जनसंख्या वृद्धि के पीछे सामाजिक और जनसांख्यिकीय कारकों का एक जटिल मिश्रण रहा है। विवाह की सार्वभौमिकता और पुत्र संतान हेतु गहरी सांस्कृतिक वरीयता जन्म दर को उच्च बनाए रखती है। इसके साथ ही, स्वतंत्रता के पश्चात चिकित्सा सुविधाओं में व्यापक सुधार के कारण मृत्यु दर में बहुत तीव्रता से गिरावट आई है। चूंकि जन्म दर में गिरावट की गति मृत्यु दर की तुलना में काफी धीमी रही है, इसलिए जनसंख्या में तीव्र और निरंतर वृद्धि देखी गई। अतः ये सभी कारक मिलकर भारत की वर्तमान जनसांख्यिकीय स्थिति की सटीक व्याख्या करते हैं।

66. (A) उच्च जन्म दर और उच्च मृत्यु दर, जिसके परिणामस्वरुप स्थिर या धीमी वृद्धि होती है।
जनसांख्यिकीय संक्रमण की पहली अवस्था पारंपरिक कृषि समाजों की विशिष्ट पहचान है। इस अवस्था में चिकित्सा और स्वच्छता की सुविधाओं के अभाव के कारण मृत्यु दर बहुत अधिक होती है, विशेष रुप से अकाल और महामारियों के दौरान। इसके साथ ही, सामाजिक मानदंडों और उच्च बाल मृत्यु दर की भरपाई हेतु जन्म दर भी बहुत उच्च बनी रहती है। चूंकि जन्म और मृत्यु दोनों दरें ऊंचे स्तर पर एक-दूसरे को संतुलित करती हैं, इसलिए कुल जनसंख्या में बहुत कम वृद्धि होती है और जनसंख्या स्थिर रहती है। यह अवस्था औद्योगिक क्रांति से पूर्व के समाजों में देखी जाती थी।

67. (C) 1,000 पुरुष
लिंगानुपात एक अत्यंत महत्वपूर्ण जनसांख्यिकीय संकेतक है जिसका उपयोग समाज में पुरुषों और महिलाओं के मध्य के संतुलन को मापने हेतु किया जाता है। इसे सामान्यतः प्रति 1,000 पुरुषों पर महिलाओं की संख्या के रुप में व्यक्त किया जाता है। यह अनुपात समाज में महिलाओं की स्थिति, उनके स्वास्थ्य और उनके प्रति सामाजिक दृष्टिकोण को दर्शाता है। एक प्रतिकूल लिंगानुपात कन्या भ्रूण हत्या अथवा उपेक्षा जैसे गंभीर मुद्दों का संकेत हो सकता है। जनसांख्यिकीय विश्लेषण और प्रभावी नीति निर्माण हेतु लिंगानुपात के सटीक आंकड़े अत्यंत आवश्यक और उपयोगी सिद्ध होते हैं।

68. (D) अधिक विश्वविद्यालयों का निर्माण करना।
जनसंख्या नियंत्रण के प्रत्यक्ष उपायों में वे कार्य सम्मिलित हैं जिनका सीधा लक्ष्य जन्म दर को कम करना होता है। गर्भनिरोधक विधियों का प्रसार, सुरक्षित गर्भपात सेवाओं की उपलब्धता और विवाह की कानूनी आयु बढ़ाना ऐसे ही प्रत्यक्ष हस्तक्षेप हैं। इसके विपरीत, अधिक विश्वविद्यालयों का निर्माण करना एक दीर्घकालिक शैक्षिक और सामाजिक विकास का

Click Here to Buy book on Amazon

86. (C) कथन I सत्य है, लेकिन कथन II असत्य है।
जनसंख्या शिक्षा का प्राथमिक लक्ष्य समाज में छोटे परिवार के महत्व और उसके लाभों के प्रति जागरुकता बढ़ाना है ताकि जीवन की गुणवत्ता में सुधार हो सके। हालांकि, इसे केवल यौन शिक्षा अथवा परिवार नियोजन सेवाओं के साथ पूर्णतः मिलाना गलत होगा। जनसंख्या शिक्षा एक व्यापक क्षेत्र है जो जनसांख्यिकीय परिवर्तनों के सामाजिक, आर्थिक और पर्यावरणीय प्रभावों की समग्र समझ प्रदान करता है। यह एक मूल्य-आधारित शिक्षा है जिसका उद्देश्य जिम्मेदार नागरिक और तर्कसंगत निर्णय लेने वाले व्यक्ति तैयार करना है, न कि केवल नैदानिक अथवा चिकित्सा सेवाएं प्रदान करना।

87. (A) एक महामारी जो व्यापक मृत्यु का कारण बनती है।
माल्थस ने 'सकारात्मक अवरोधों' को उन अनैच्छिक और प्राकृतिक कारकों के रूप में वर्णित किया था जो मृत्यु दर को बढ़ाकर जनसंख्या को नियंत्रित करते हैं। एक महामारी जो बड़ी संख्या में लोगों की जान लेती है, इसका सबसे सटीक उदाहरण है क्योंकि यह मानवीय प्रयासों के बिना ही संसाधनों और जनसंख्या के मध्य संतुलन स्थापित करने की प्रकृति की एक कठोर विधि है। अकाल, युद्ध और प्राकृतिक आपदाएं भी इसी श्रेणी में आती हैं। इसके विपरीत, विवाह में देरी अथवा गर्भनिरोधक का सचेत उपयोग मानवीय 'निवारक अवरोधों' की श्रेणी में आते हैं।

88. (C) वे आधुनिक चिकित्सा, सार्वजनिक स्वास्थ्य तकनीकों और कीटनाशकों का आयात कर सकते थे।
द्वितीय विश्व युद्ध के पश्चात विकासशील देशों में मृत्यु दर में गिरावट की गति पश्चिमी देशों के ऐतिहासिक अनुभव की तुलना में बहुत तीव्र थी। इसका मुख्य कारण यह था कि इन देशों को विकसित राष्ट्रों द्वारा ईजाद की गई आधुनिक चिकित्सा तकनीकों, एंटीबायोटिक्स और स्वच्छता के उन्नत तरीकों तक तत्काल पहुँच प्राप्त हो गई थी। उन्हें इन तकनीकों को विकसित करने में लगने वाले दशकों का प्रतीक्षा नहीं करनी पड़ी। इस तीव्रता से गिरती मृत्यु दर और निरंतर उच्च बनी हुई जन्म दर के कारण ही इन देशों में अल्पकाल में तीव्र जनसंख्या विस्फोट की स्थिति उत्पन्न हुई।

89. (A) P-3, Q-1, R-2, S-4
विभिन्न सामाजिक और स्वास्थ्य कारक जनसंख्या वृद्धि को अलग-अलग प्रकार से प्रभावित करते हैं। उच्च महिला साक्षरता प्रजननता को कम करने का सबसे प्रभावी साधन माना जाता है। इसके विपरीत, विवाह के समय कम आयु प्रजनन अवधि को बढ़ाकर जन्म दर में वृद्धि करती है। सार्वजनिक स्वास्थ्य में सुधार मृत्यु दर को कम करता है, जिससे अल्पकाल में जनसंख्या बढ़ती है परंतु जीवन प्रत्याशा में सुधार होता है। अंत में, पुत्र की प्रबल चाहत सांस्कृतिक रूप से उच्च प्रजननता को प्रोत्साहित करती है क्योंकि दंपति पुत्र प्राप्ति तक निरंतर जन्म जारी रख सकते हैं, जो एक सामाजिक चुनौती है।

90. (B) स्वास्थ्य और शिक्षा में निवेश उत्पादकता में सुधार कर सकता है और आर्थिक विकास को गति दे सकता है।
जनसंख्या को मानव पूंजी मानने का दृष्टिकोण यह बल देता है कि लोग केवल उपभोक्ता नहीं हैं, बल्कि वे उत्पादन के सबसे महत्वपूर्ण साधन हैं। जब किसी राष्ट्र की जनता स्वस्थ और शिक्षित होती है, तो उनकी कार्यक्षमता और रचनात्मकता कई गुना बढ़ जाती है। शिक्षा से कौशल विकसित होता है और बेहतर स्वास्थ्य से कार्य दिवसों की हानि कम होती है। इस प्रकार, मानव संसाधन में किया गया निवेश न केवल व्यक्तिगत जीवन को सुधारता है, बल्कि पूरे देश के आर्थिक ढांचे को सुदृढ़ कर संधारणीय विकास का मार्ग प्रशस्त करता है, जो राष्ट्र निर्माण हेतु अनिवार्य है।

91. (D) एक विशाल और अनुभवी कार्यबल।
युवा जनसंख्या संरचना का अर्थ है कि जनसंख्या में बच्चों और किशोरों का अनुपात अत्यंत उच्च है। इसके अनेक जनसांख्यिकीय और आर्थिक परिणाम होते हैं, जैसे उच्च निर्भरता अनुपात क्योंकि बच्चों को कार्यशील आबादी के सहारे की आवश्यकता होती है। यह भविष्य में जनसंख्या वृद्धि की प्रबल संभावना भी उत्पन्न करता है। हालांकि, ऐसी संरचना में एक विशाल और 'अनुभवी' कार्यबल नहीं होता, क्योंकि अनुभव आयु और वर्षों के कार्य के साथ प्राप्त होता है। युवा आबादी में ऊर्जा तो अधिक होती है, परंतु कार्यक्षेत्र में वरिष्ठता और अनुभव की कमी एक स्वाभाविक विशेषता होती है।

NODIA

92. (A) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
जनसांख्यिकीय संक्रमण सिद्धांत यह तर्क देता है कि आर्थिक और सामाजिक विकास जन्म दर को कम करने का सबसे शक्तिशाली माध्यम है। जैसे-जैसे समाज कृषि से उद्योग की ओर बढ़ता है और शहरीकरण होता है, जीवन के मूल्य बदलने लगते हैं। शिक्षा और आर्थिक स्वतंत्रता के कारण महिलाएं विवाह और बच्चों के संबंध में स्वतंत्र निर्णय लेने में सक्षम होती हैं। बच्चों के पालन-पोषण की बढ़ती लागत भी छोटे परिवार को आकर्षक बनाती है। इस प्रकार, विकास की प्रक्रिया स्वतः ही समाज में प्रजनन क्षमता में स्वैच्छिक गिरावट लाने हेतु उपयुक्त परिस्थितियां उत्पन्न करती है।

93. (C) लिंग-चयनात्मक गर्भपात, महिला शिशु हत्या और कन्याओं की उपेक्षा।
'लापता महिलाओं' की अवधारणा उन लाखों महिलाओं को संदर्भित करती है जो जनसंख्या में होनी चाहिए थीं परंतु लिंग आधारित भेदभाव के कारण नहीं हैं। इसके प्रमुख कारणों में कन्या भ्रूण हत्या, जन्म के समय लिंग-चयन और बचपन में लड़कियों को उचित स्वास्थ्य एवं पोषण न देना सम्मिलित है। यह समस्या गहरी पितृसत्तात्मक सोच और पुत्रों के प्रति सामाजिक प्राथमिकता का परिणाम है। यह न केवल लिंगानुपात को बिगाड़ता है बल्कि समाज में लैंगिक अन्याय और मानवाधिकारों के गंभीर उल्लंघन की एक चिंताजनक स्थिति को भी उजागर करता है, जिसे सुधारना अनिवार्य है।

संकीर्ण शीर्ष वृद्धों की संख्या को दर्शाता है। ऐसी संरचना विकसित देशों में पाई जाती है जहाँ प्रजनन दर प्रतिस्थापन स्तर से भी कम हो गई है। यह भविष्य में जनसंख्या में गिरावट और वृद्ध समाज की चुनौतियों की ओर स्पष्ट संकेत करता है।

78. (D) 1951 के बाद से हर दशक में जनसंख्या में पूर्ण वृद्धि घट रही है।
भारतीय जनसांख्यिकी के विश्लेषण में यह समझना महत्वपूर्ण है कि यद्यपि 1981 के पश्चात जनसंख्या वृद्धि की दर में गिरावट आई है, परंतु जनसंख्या में होने वाली पूर्ण वार्षिक वृद्धि अभी भी बहुत अधिक बनी हुई है। इसका अर्थ है कि भले ही बढ़ने की गति धीमी हुई हो, परंतु आधार जनसंख्या इतनी बड़ी है कि हर दशक में जुड़ने वाले व्यक्तियों की वास्तविक संख्या अभी भी चिंताजनक है। अन्य ऐतिहासिक तथ्य, जैसे 1921 का ऋणात्मक विकास और 1951 के पश्चात का जनसंख्या विस्फोट, भारत के जनसांख्यिकीय इतिहास के सत्य और प्रमाणित विवरण प्रस्तुत करते हैं।

79. (B) किसी जनसंख्या में रुग्ण या किसी रोग से ग्रस्त व्यक्तियों की संख्या।
रुग्णता दर सार्वजनिक स्वास्थ्य का एक प्रमुख मापदंड है जो यह मापता है कि किसी दिए गए समय में किसी जनसंख्या का कितना हिस्सा बीमारियों अथवा स्वास्थ्य समस्याओं से प्रभावित है। यह केवल मृत्यु के स्थान पर जीवन की गुणवत्ता और स्वास्थ्य भार पर ध्यान केंद्रित करता है। रुग्णता के आंकड़े स्वास्थ्य सेवाओं के नियोजन, संसाधनों के आवंटन और संक्रामक एवं गैर-संक्रामक रोगों की रोकथाम हेतु अत्यंत आवश्यक होते हैं। उच्च रुग्णता दर किसी समाज में उत्पादकता की हानि और स्वास्थ्य सेवाओं पर बढ़ते आर्थिक बोझ को भी स्पष्ट रूप से दर्शाती है।

80. (A) स्वैच्छिक और सूचित विकल्प को बढ़ावा देने वाला जन-केंद्रित दृष्टिकोण।
राष्ट्रीय जनसंख्या नीति 2000 का एक बुनियादी दर्शन यह है कि जनसंख्या नियंत्रण केवल सरकारी आदेशों अथवा दंड से प्राप्त नहीं किया जा सकता। यह एक ऐसे दृष्टिकोण का समर्थन करती है जो नागरिकों को उनके प्रजनन अधिकारों के प्रति सशक्त बनाता है। नीति मानती है कि यदि लोगों को बेहतर स्वास्थ्य सेवाएं, शिक्षा और परिवार नियोजन के साधनों का स्वैच्छिक विकल्प प्रदान किया जाए, तो वे स्वयं जिम्मेदार निर्णय लेंगे। यह जन-केंद्रित मॉडल दमनकारी उपायों के स्थान पर सूचना, पहुँच और सशक्तिकरण के माध्यम से जनसंख्या स्थिरीकरण प्राप्त करने का प्रयास करता है।

81. (D) 1, 2, और 3
जनसंख्या वृद्धि एक बहुआयामी प्रक्रिया है जो सामाजिक और सांस्कृतिक कारकों से गहराई से प्रभावित होती है। शहरीकरण आधुनिक जीवन शैली और छोटे परिवार के आदर्शों को बढ़ावा देता है, जिससे प्रजनन दर में कमी आती है। महिला साक्षरता सबसे सशक्त कारक है जो महिलाओं को जागरूक बनाता है और उन्हें अपने जीवन के निर्णय लेने में सक्षम बनाता है। इसी प्रकार, विभिन्न धार्मिक विश्वास और सांस्कृतिक परंपराएं भी परिवार के आकार के प्रति लोगों के दृष्टिकोण को आकार देती हैं। अतः ये सभी कारक मिलकर किसी भी समाज की जनसांख्यिकीय दिशा और गति को निर्धारित करते हैं।

82. (C) तकनीकी प्रगति
माल्थस के सिद्धांत की सबसे बड़ी आलोचना यह है कि वह भविष्य की तकनीकी और वैज्ञानिक प्रगति की संभावनाओं को भांपने में विफल रहे थे। माल्थस का मानना था कि भूमि की उत्पादकता सीमित है और वह बढ़ती आबादी का भरण-पोषण नहीं कर पाएगी। हालांकि, हरित क्रांति जैसी कृषि सफलताओं और आधुनिक उत्पादन तकनीकों ने यह सिद्ध कर दिया कि खाद्य आपूर्ति को भी बहुत तीव्रता से बढ़ाया जा सकता है। तकनीक की इसी महत्वपूर्ण भूमिका को कम आंकने के कारण उनका सिद्धांत कई आधुनिक संदर्भों में अपनी प्रासंगिकता खो चुका है, जो विकास के नए आयामों को दर्शाता है।

83. (C) मातृ मृत्यु दर
मातृ मृत्यु दर एक विशिष्ट जनसांख्यिकीय मापदंड है जिसे प्रसव और गर्भावस्था से जुड़े जोखिमों का सटीक आकलन करने हेतु तैयार किया गया है। यह प्रति एक लाख जीवित जन्मों पर होने वाली उन महिलाओं की संख्या को दर्शाता है जिनकी मृत्यु गर्भावस्था, प्रसव अथवा प्रसव के पश्चात के 42 दिनों के भीतर संबंधित कारणों से होती है। यह संकेतक न केवल महिलाओं के स्वास्थ्य को दर्शाता है, बल्कि समाज में आपातकालीन प्रसूति सेवाओं की उपलब्धता और गुणवत्ता का भी एक बहुत ही संवेदनशील और महत्वपूर्ण मानक माना जाता है, जो स्वास्थ्य प्रणाली की कुशलता बताता है।

84. (C) अवस्था 3 – निम्न मृत्यु दर
जनसांख्यिकीय संक्रमण मॉडल के चरणों का विश्लेषण विकास के साथ उनके संबंधों को स्पष्ट करता है। तीसरी अवस्था में, मृत्यु दर अपने निम्नतम स्तर पर पहुँच जाती है और काफी हद तक स्थिर हो जाती है। इसी चरण में जन्म दर भी तीव्रता से गिरने लगती है, जो बढ़ते शहरीकरण और साक्षरता का परिणाम होती है। अवस्था 1 में जनसंख्या स्थिर होती है, न कि विस्फोट वाली, और अवस्था 2 में मृत्यु दर तीव्रता से गिरती है, न कि जन्म दर। अतः अवस्था 3 और निम्न मृत्यु दर का युग्म इस सिद्धांत की वैज्ञानिक व्याख्या के साथ पूर्णतः मेल खाता है।

85. (B) भविष्य में जनसंख्या वृद्धि की उच्च संभावना।
जिस देश की जनसंख्या संरचना में 15 वर्ष से कम आयु के बच्चों का अनुपात बहुत अधिक होता है, उसे 'युवा जनसंख्या' कहा जाता है। ऐसी संरचना भविष्य में जनसंख्या वृद्धि हेतु एक शक्तिशाली संवेग उत्पन्न करती है, क्योंकि ये बच्चे आने वाले वर्षों में प्रजनन आयु वर्ग में प्रवेश करेंगे। भले ही प्रति दंपति बच्चों की संख्या कम हो जाए, परंतु प्रजननक्षम व्यक्तियों की कुल संख्या अधिक होने के कारण जन्मों की कुल संख्या उच्च बनी रहेगी। यह स्थिति शिक्षा और बाल स्वास्थ्य सेवाओं पर अधिक निवेश की मांग भी करती है, जो राष्ट्र हेतु एक चुनौती है।

NODIA

चिकित्सा सेवाओं की कमी को इंगित करती है। अतः इन दरों का सूक्ष्म अध्ययन सार्वजनिक स्वास्थ्य नीतियों को आकार देने और समाज के कमजोर वर्गों की स्वास्थ्य सुरक्षा सुनिश्चित करने हेतु अत्यंत महत्वपूर्ण माना जाता है।

52. (D) शहरीकरण, शिक्षा और गर्भनिरोधक तक बढ़ी पहुंच।
जनसांख्यिकीय संक्रमण की तीसरी अवस्था में जन्म दर में गिरावट का मुख्य कारण व्यापक सामाजिक-आर्थिक परिवर्तन हैं। जैसे-जैसे समाज शहरीकरण की ओर बढ़ता है, बच्चों के पालन-पोषण की लागत बढ़ जाती है और संयुक्त परिवार टूटने लगते हैं। शिक्षा का प्रसार, विशेष रुप से महिलाओं में, परिवार के आकार के प्रति दृष्टिकोण को पूर्णतः बदल देता है। साथ ही, आधुनिक गर्भनिरोधक साधनों की सुलभता लोगों को अपने परिवार को नियोजित करने में सक्षम बनाती है। ये सभी कारक मिलकर उच्च जन्म दर के पारंपरिक प्रतिरुप को आधुनिक छोटे परिवार के आदर्श में बदल देते हैं।

53. (C) केवल 2 और 3
जनसंख्या शिक्षा केवल परिवार नियोजन की विधियों अथवा गर्भनिरोधक के बारे में सिखाना नहीं है, बल्कि यह एक व्यापक शैक्षणिक अवधारणा है। इसका मुख्य उद्देश्य विद्यार्थियों और समाज में जनसंख्या के मुद्दों के प्रति एक तर्कसंगत और जिम्मेदार दृष्टिकोण विकसित करना है। यह व्यक्तियों को यह समझने में सहायता करती है कि कैसे बढ़ती जनसंख्या उनके व्यक्तिगत विकास, पर्यावरण और राष्ट्र की प्रगति को प्रभावित करती है। इस प्रकार की शिक्षा जिम्मेदार नागरिकता को बढ़ावा देती है और जनसंख्या वृद्धि की गतिशीलता के बारे में एक समग्र सामाजिक समझ प्रदान करती है।

54. (B) 'आर्थिक रूप से उत्पादक' आयु (15-64) के व्यक्तियों की संख्या से।
निर्भरता अनुपात एक ऐसा जनसांख्यिकीय माप है जो किसी अर्थव्यवस्था पर आश्रितों के वास्तविक बोझ को दर्शाता है। इसकी गणना 15 वर्ष से कम आयु के बच्चों और 64 वर्ष से अधिक आयु के वृद्धों की संख्या की तुलना 15 से 64 वर्ष के कार्यशील आयु वर्ग के व्यक्तियों से करके की जाती है। उच्च निर्भरता अनुपात का अर्थ है कि उत्पादक श्रम शक्ति पर आश्रितों की संख्या अधिक है, जो आर्थिक बचत और निवेश को प्रभावित कर सकता है। यह अनुपात सामाजिक सुरक्षा नीतियों और स्वास्थ्य देखभाल के भविष्य के नियोजन हेतु आवश्यक है।

55. (D) इसने उतार-चढ़ाव वाली वृद्धि से निरंतर वृद्धि की ओर संक्रमण को चिह्नित किया।
वर्ष 1921 को भारत के जनसांख्यिकीय इतिहास में 'महान विभाजक वर्ष' इसलिए कहा जाता है क्योंकि इसने जनसंख्या वृद्धि के स्वरुप में एक मौलिक परिवर्तन लाया था। इस वर्ष से पूर्व भारत की जनसंख्या कभी बढ़ती थी तो कभी अकाल और महामारियों के कारण घट जाती थी। 1921 के पश्चात स्वास्थ्य और परिवहन में सुधार के कारण मृत्यु दर पर प्रभावी नियंत्रण पाया गया, जिससे जनसंख्या में निरंतर और तेज वृद्धि होने लगी। इस ऐतिहासिक मोड़ ने भारत को जनसांख्यिकीय संक्रमण के दूसरे चरण की ओर सफलतापूर्वक अग्रसर किया, जहाँ से वृद्धि स्थिर हुई।

56. (A) आनुवंशिक प्रवृत्ति
प्रजननता मुख्य रुप से सामाजिक-सांस्कृतिक कारकों द्वारा निर्धारित होती है, न कि केवल जैविक अथवा आनुवंशिक प्रवृत्तियों द्वारा। विवाह की आयु, महिलाओं की शैक्षिक स्थिति और समाज में प्रचलित धार्मिक एवं नैतिक मूल्य सीधे तौर पर यह निर्धारित करते हैं कि एक दंपति कितने बच्चे उत्पन्न करना चाहता है। उदाहरण के लिए, समाज में महिलाओं को सशक्त बनाने और उन्हें उच्च शिक्षा प्रदान करने से जन्म दर में स्वाभाविक रुप से गिरावट आती है। आनुवंशिक प्रवृत्ति एक व्यक्तिगत विशेषता हो सकती है, परंतु यह समग्र जनसंख्या के प्रजनन स्तर का व्यापक निर्धारक नहीं मानी जाती है।

57. (C) गर्भनिरोधक और स्वास्थ्य देखभाल आधारभूत संरचना की अपूर्ण आवश्यकताओं को पूर्ण करना।
राष्ट्रीय जनसंख्या नीति 2000 का तात्कालिक उद्देश्य स्वास्थ्य सेवाओं और गर्भनिरोधक साधनों की उपलब्धता में मौजूद अंतराल को समाप्त करना है। इसमें बुनियादी स्वास्थ्य ढांचे को सुदृढ़ करना और प्रजनन स्वास्थ्य देखभाल हेतु एक एकीकृत सेवा प्रणाली विकसित करना सम्मिलित है। यह नीति मानती है कि यदि लोगों को उनकी आवश्यकता के अनुसार स्वास्थ्य सेवाएं और परिवार नियोजन के विकल्प सुलभ कराए जाएं, तो जनसंख्या स्थिरीकरण के मध्यम और दीर्घकालिक लक्ष्यों को अधिक प्रभावी ढंग से और स्वैच्छिक रुप से प्राप्त किया जा सकता है, जो विकास हेतु अनिवार्य है।

58. (B) P-2, Q-1, R-4, S-3
जनसांख्यिकीय सिद्धांतों का सूक्ष्म अध्ययन विभिन्न अंतर्संबंधों को स्पष्ट करता है। माल्थस के सिद्धांत में सकारात्मक अवरोधों के माध्यम से जनसंख्या नियंत्रण का उल्लेख किया गया है। जनसंख्या विस्फोट जनसांख्यिकीय संक्रमण की दूसरी अवस्था की मुख्य विशेषता है जहाँ मृत्यु दर तीव्रता से गिरती है। जनसंख्या को मानव संसाधन के रुप में देखना विकास की प्रक्रियाओं से गहराई से जुड़ा हुआ है। अंत में, जनसंख्या शिक्षा एक ऐसा माध्यम है जो जागरुकता और ज्ञान के माध्यम से जनसंख्या को संतुलित करने और जीवन की गुणवत्ता सुधारने के उपायों पर ध्यान केंद्रित करता है।

59. (D) जब मृत्यु दर गिरती है जबकि जन्म दर निरंतर उच्च बनी रहती है।
'जनसांख्यिकीय जाल' उस स्थिति को संदर्भित करता है जब कोई विकासशील देश अपनी मृत्यु दर को सफलतापूर्वक कम कर लेता है परंतु उसकी जन्म दर उच्च बनी रहती है। इसके परिणामस्वरूप जनसंख्या में बहुत तीव्र वृद्धि होती है, जो आर्थिक विकास के लाभों को पूरी तरह समाप्त कर देती है। प्रति व्यक्ति आय स्थिर हो जाती है अथवा गिरने लगती है क्योंकि संसाधनों का बढ़ा हुआ उत्पादन केवल बढ़ती आबादी के निर्वाह में ही व्यय हो जाता है। इस जाल से बाहर निकलने हेतु जन्म दर में तीव्रता से गिरावट लाना राष्ट्र हेतु अनिवार्य हो जाता है।

Downloaded from www.pdf.tube

94. (C) प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्रों के माध्यम से परिवार नियोजन सेवाओं का प्रचार।
भारत में जनसंख्या नियंत्रण हेतु उठाए गए प्रत्यक्ष कदमों में परिवार नियोजन सेवाओं का विस्तार सबसे प्रमुख माना जाता है। सरकार ने प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्रों और ग्रामीण स्वास्थ्य कार्यकर्ताओं के माध्यम से गर्भनिरोधक साधनों, नसबंदी की सुविधाओं और प्रजनन स्वास्थ्य संबंधी जानकारी को आम जनता तक पहुँचाने का निरंतर प्रयास किया है। हालांकि शिक्षा और रोजगार जैसे अन्य कार्यक्रम भी अप्रत्यक्ष रूप से सहायता करते हैं, परंतु परिवार नियोजन सेवाओं का विशेष प्रावधान सीधे तौर पर जन्म दर को नियंत्रित करने और नागरिकों को स्वैच्छिक रूप से नियोजन हेतु प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से किया गया है।

95. (A) केवल 3
माल्थसवादी सिद्धांत का मुख्य केंद्र संसाधनों की तुलना में जनसंख्या की अनियंत्रित वृद्धि की अपरिहार्य प्रवृत्ति है। माल्थस ने तर्क दिया था कि जनसंख्या गुणोत्तर श्रेणी में बढ़ती है, न कि समांतर श्रेणी में। उन्होंने निवारक अवरोधों के रूप में 'नैतिक संयम' और विवाह में विलंब की वकालत की थी, परंतु वे कृत्रिम गर्भनिरोधकों के उपयोग के विरुद्ध थे। अतः केवल तीसरा कथन, जो संसाधनों और जनसंख्या के मध्य होने वाले निरंतर संघर्ष की उनकी मूल चेतावनी को स्पष्ट करता है, पूरी तरह से सही और माल्थस के विचारों के अनुरूप सिद्ध होता है।

96. (B) वृद्धि दर जो उच्च बनी हुई है लेकिन अब धीमी होने लगी है।
1981 के पश्चात से भारत ने अपने जनसांख्यिकीय इतिहास के एक नए चरण में प्रवेश किया है। इस अवधि के दौरान, कुल जनसंख्या में अभी भी भारी वृद्धि हो रही है क्योंकि आधार जनसंख्या बहुत बड़ी है। हालांकि, सकारात्मक पक्ष यह है कि जनसंख्या वृद्धि की 'दर' में क्रमिक गिरावट प्रारंभ हो गई है। यह गिरती हुई प्रजनन दर, बढ़ती साक्षरता और बेहतर परिवार नियोजन प्रयासों का परिणाम है। यह चरण दर्शाता है कि भारत जनसंख्या स्थिरीकरण की दिशा में बढ़ रहा है, परंतु पूर्ण स्थिरता प्राप्त करने में अभी भी पर्याप्त समय लगेगा।

97. (B) भोजन और पोषण की उपलब्धता और गुणवत्ता।
किसी भी जनसंख्या की मृत्यु दर को निर्धारित करने वाला सबसे बुनियादी और महत्वपूर्ण कारक पोषण की स्थिति है। पर्याप्त और संतुलित भोजन शरीर की रोग प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाता है और संक्रामक रोगों से होने वाली अकाल मृत्यु को प्रभावी ढंग से रोकता है। इतिहास में भी अकाल और कुपोषण ही उच्च मृत्यु दर के सबसे बड़े कारण रहे हैं। यद्यपि चिकित्सा तकनीक और शहरीकरण भी अपना प्रभाव डालते हैं, परंतु जब तक बुनियादी खाद्य सुरक्षा और पोषण सुनिश्चित नहीं होता, तब तक मृत्यु दर के स्तर को संधारणीय रूप से कम करना अत्यंत कठिन होता है।

98. (A) प्रति व्यक्ति संसाधनों और पूंजी में कमी।
जनसंख्या को विकास हेतु एक बाधा मानने वाले सिद्धांतकारों का मुख्य तर्क संसाधनों की सीमितता पर आधारित है। उनके अनुसार, तीव्र जनसंख्या वृद्धि के कारण राष्ट्रीय आय का एक बड़ा हिस्सा केवल बढ़ती आबादी की बुनियादी जरूरतों जैसे भोजन और स्वास्थ्य को पूरा करने में व्यय हो जाता है। इससे नई मशीनों, शिक्षा और बुनियादी ढांचे में निवेश हेतु उपलब्ध पूंजी में कमी आ जाती है। साथ ही, भूमि और अन्य प्राकृतिक संसाधनों का प्रति व्यक्ति हिस्सा निरंतर कम हो जाता है, जिससे निर्धनता का चक्र गहरा होता है। यह दृष्टिकोण जनसंख्या नियंत्रण को समृद्धि की पूर्व शर्त मानता है।

99. (A) 2, 3, 1
प्रजननता के मापों की विशिष्टता उनके द्वारा उपयोग किए जाने वाले सांख्यिकीय आधार पर निर्भर करती है। अशोधित जन्म दर सबसे सामान्य माप है जो कुल जनसंख्या पर आधारित होती है। सामान्य प्रजनन दर इससे अधिक विशिष्ट है क्योंकि यह केवल प्रजनन आयु वर्ग की महिलाओं पर केंद्रित होती है। कुल प्रजनन दर सबसे सटीक और विशिष्ट माप मानी जाती है क्योंकि यह एक महिला द्वारा अपने पूरे जीवनकाल में उत्पन्न किए जाने वाले बच्चों की औसत संख्या को दर्शाती है। यह क्रम सामान्य से विशिष्ट की ओर जनसांख्यिकीय विश्लेषण की वैज्ञानिक गहराई को सफलतापूर्वक स्पष्ट करता है।

100. (C) पुत्र प्राप्ति की तीव्र इच्छा।
भारतीय समाज में पुत्रों के प्रति सांस्कृतिक प्राथमिकता उच्च प्रजनन दर का एक प्रमुख सामाजिक-सांस्कृतिक कारण रही है। कई दंपति तब तक बच्चे पैदा करना जारी रखते हैं जब तक कि उनके पास वांछित संख्या में पुत्र न हो जाएं। इसे 'पुत्र वरीयता' कहा जाता है, जो धार्मिक विश्वासों, वृद्धावस्था की सुरक्षा और वंश चलाने की सोच से प्रेरित होती है। यह व्यवहार न केवल परिवार के आकार को बढ़ाता है बल्कि लिंगानुपात के असंतुलन और महिलाओं की स्वास्थ्य समस्याओं हेतु भी उत्तरदायी है। यह पारंपरिक मानसिकता जनसंख्या नियंत्रण के मार्ग में आज भी एक बड़ी चुनौती बनी हुई है।

101. (C) कथन I असत्य है, लेकिन कथन II सत्य है।
किसी भी जनसंख्या की आयु और लिंग संरचना कभी भी स्थिर नहीं होती; यह एक निरंतर गतिशील प्रक्रिया है जो समय के साथ बदलती रहती है। यह संरचना पिछले दशकों में रही जन्म दर, मृत्यु दर और प्रवास के प्रतिरूपों का सीधा प्रतिबिंब होती है। उदाहरण के लिए, अतीत में रही उच्च जन्म दर आज की विशाल युवा जनसंख्या का मुख्य कारण बनती है। इसी प्रकार, यह वर्तमान संरचना ही भविष्य के विकास, श्रम शक्ति की उपलब्धता और सामाजिक आवश्यकताओं को निर्धारित करती है। अतः आयु संरचना को समझना जनसंख्या के अतीत और भविष्य के मध्य की एक अत्यंत महत्वपूर्ण कड़ी है।

102. (A) 2.1
राष्ट्रीय जनसंख्या नीति 2000 का एक प्रमुख जनसांख्यिकीय लक्ष्य देश में कुल प्रजनन दर को 2.1 के स्तर तक लाना निर्धारित किया गया है। इस विशिष्ट स्तर को 'प्रतिस्थापन स्तर की प्रजननता' कहा जाता है। जब कोई समाज इस दर को प्राप्त कर लेता है, तो इसका अर्थ है कि एक पीढ़ी स्वयं को अगली पीढ़ी से इस प्रकार प्रतिस्थापित कर रही है कि कुल जनसंख्या का आकार भविष्य में स्थिर हो जाए। इस लक्ष्य की प्राप्ति भारत

NODIA

को दर्शाती है, जिसे बेहतर प्रसूति सेवाओं और आपातकालीन स्वास्थ्य देखभाल के माध्यम से सफलतापूर्वक रोका जा सकता है। उच्च मातृ मृत्यु दर यह इंगित करती है कि समाज में महिलाओं को उचित पोषण, सुरक्षित प्रसव की सुविधाएं और समय पर चिकित्सा सहायता सुलभ नहीं है। इसलिए, इस दर को कम करना किसी भी राष्ट्र की स्वास्थ्य नीतियों की सर्वोच्च प्राथमिकता होनी चाहिए।

35. (C) जनसंख्या वृद्धि खाद्य उत्पादन से अधिक हो जाती है, जिससे आय पुनः निर्वाह स्तर पर आ जाती है।
'माल्थस का जाल' एक ऐसी आर्थिक स्थिति है जहाँ जनसंख्या वृद्धि की दर खाद्य उत्पादन की वृद्धि दर से अधिक हो जाती है। इसके परिणामस्वरूप समाज में प्रति व्यक्ति संसाधनों की तीव्र कमी हो जाती है और जीवन स्तर केवल जीवित रहने के न्यूनतम निर्वाह स्तर तक गिर जाता है। तकनीकी प्रगति से होने वाले लाभ को भी बढ़ती हुई जनसंख्या शीघ्र ही समाप्त कर देती है। इस जाल से बाहर निकलने हेतु या तो जनसंख्या पर प्रभावी नियंत्रण आवश्यक होता है अथवा खाद्य उत्पादन में क्रांतिकारी सुधार, अन्यथा समाज भुखमरी और निर्धनता में फंसा रहता है।

36. (D) सरकारी नीति और परिवार नियोजन कार्यक्रम
जनसांख्यिकीय संक्रमण सिद्धांत की एक प्रमुख आलोचना यह है कि यह जनसंख्या परिवर्तन को केवल आर्थिक और सामाजिक विकास का एक स्वाभाविक परिणाम मानता है। यह सिद्धांत प्रायः इस बात की अनदेखी करता है कि सरकारी नीतियां और सुनियोजित परिवार नियोजन कार्यक्रम जन्म दर को कम करने में कितनी महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं। कई विकासशील देशों में पूर्ण औद्योगिकीकरण के बिना भी सरकारी हस्तक्षेप के माध्यम से प्रजनन दर में तीव्र गिरावट आई है। अतः केवल विकास पर ध्यान केंद्रित करना और नीतिगत प्रयासों की उपेक्षा करना इस सिद्धांत की एक बड़ी सीमा है।

37. (C) मृत्यु दर - जनसंख्या में होने वाली मृत्यु
जनसांख्यिकी में विभिन्न शब्दावलियों का सटीक उपयोग वैज्ञानिक विश्लेषण हेतु आवश्यक है। मृत्यु दर किसी निर्दिष्ट क्षेत्र और समय में होने वाली मौतों की घटना और उनकी आवृत्ति को संदर्भित करती है। इसके विपरीत, प्रजननता जैविक क्षमता के स्थान पर वास्तविक पुनरुत्पादक प्रदर्शन को दर्शाती है। रुग्णता का संबंध बीमारियों की व्यापकता से है, न कि मृत्यु से। प्रवास में भौगोलिक सीमाओं के पार स्थायी निवास परिवर्तन सम्मिलित होता है। अतः मृत्यु दर और जनसंख्या में होने वाली मौतों का युग्म जनसांख्यिकीय दृष्टि से पूर्णतः सही और प्रासंगिक है।

38. (B) आधार पर चौड़ा और शीर्ष पर संकीर्ण।
तेजी से बढ़ती जनसंख्या वाले देश का आयु-लिंग पिरामिड सामान्यतः एक त्रिभुज के आकार का होता है। इसका चौड़ा आधार उच्च जन्म दर और बच्चों की बड़ी संख्या को दर्शाता है। जैसे-जैसे आयु बढ़ती है, मृत्यु दर के प्रभाव के कारण पिरामिड ऊपर की ओर निरंतर संकरा होता जाता है, जिसका अर्थ है कि वृद्धों की संख्या युवाओं की तुलना में काफी कम है। ऐसा पिरामिड उन विकासशील देशों की विशेषता है जहाँ जनसंख्या की वृद्धि दर उच्च है और भविष्य में भी जनसंख्या के निरंतर बढ़ने की प्रबल संभावना बनी रहती है।

39. (A) केवल 1 और 2
एक लोकतांत्रिक समाज में जनसंख्या नियंत्रण हेतु मानवीय और अधिकार-आधारित उपाय ही स्वीकार्य और प्रभावी माने जाते हैं। महिला शिक्षा को बढ़ावा देना और गर्भनिरोधक साधनों तक आसान पहुँच सुनिश्चित करना ऐसे ही दो महत्वपूर्ण कदम हैं जो नागरिकों को सूचित निर्णय लेने हेतु सशक्त बनाते हैं। इसके विपरीत, अनिवार्य 'एक-बच्चा' जैसी कठोर नीतियां मानवाधिकारों का उल्लंघन करती हैं और अक्सर सामाजिक असंतोष का कारण बनती हैं। अतः शिक्षा और स्वास्थ्य सेवाओं का व्यापक विस्तार ही जनसंख्या को नियंत्रित करने का सबसे संधारणीय और लोकतांत्रिक मार्ग माना जाता है।

40. (A) खाद्य आपूर्ति, सार्वजनिक स्वास्थ्य और स्वच्छता में सुधार।
जनसांख्यिकीय संक्रमण की दूसरी अवस्था के दौरान मृत्यु दर में आने वाली गिरावट का मुख्य कारण बुनियादी जीवन स्थितियों में सुधार है। आधुनिक कृषि तकनीकों के विकास से खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित हुई और सार्वजनिक स्वास्थ्य उपायों ने संक्रामक रोगों के प्रसार को प्रभावी ढंग से कम किया। व्यापक टीकाकरण और बेहतर स्वच्छता सुविधाओं ने महामारी से होने वाली मौतों को नियंत्रित किया। चूंकि इस चरण में जन्म दर उच्च बनी रहती है, इसलिए मृत्यु दर में यह भारी कमी जनसंख्या में अभूतपूर्व वृद्धि का मुख्य कारण बनती है, जिसे 'जनसंख्या विस्फोट' कहा जाता है।

41. (C) खनिज संसाधनों का भौगोलिक वितरण।
जनसंख्या की आयु और लिंग संरचना का सीधा प्रभाव देश की श्रम शक्ति, सामाजिक सेवाओं की मांग और भविष्य की जनसांख्यिकीय संभावनाओं पर पड़ता है। उदाहरण के लिए, एक युवा आबादी को शिक्षा और प्राथमिक स्वास्थ्य सेवाओं की अधिक आवश्यकता होती है। हालांकि, खनिज संसाधनों का भौगोलिक वितरण एक प्राकृतिक और भूवैज्ञानिक प्रक्रिया है, जिसका जनसंख्या की आंतरिक जनसांख्यिकीय संरचना से कोई सीधा संबंध नहीं है। यह संरचना आर्थिक उत्पादकता को तो प्रभावित कर सकती है, परंतु यह किसी क्षेत्र में प्राकृतिक संसाधनों की उपस्थिति अथवा उनके वितरण को निर्धारित नहीं करती है।

42. (A) 1 वर्ष और 5 वर्ष के बीच
बाल मृत्यु दर एक वर्ष की आयु से पांच वर्ष की आयु के मध्य होने वाली बच्चों की मृत्यु को संदर्भित करती है। यह शिशु मृत्यु दर से भिन्न है, जो केवल जन्म से प्रथम वर्ष तक की मृत्यु को मापती है। यह संकेतक समाज में पोषण के स्तर, सुरक्षित पेयजल की उपलब्धता और बचपन की सामान्य बीमारियों के उपचार की गुणवत्ता को दर्शाता है। उच्च बाल मृत्यु दर अक्सर खराब जीवन स्तर और स्वास्थ्य सेवाओं तक अपर्याप्त पहुँच का संकेत प्रदान करती है, जो किसी भी राष्ट्र के मानव विकास हेतु एक चिंताजनक विषय है।

Click Here to Buy book on Amazon

सामाजिक-आर्थिक स्थिति जीवन स्तर और स्वच्छता के माध्यम से मृत्यु की संभावना को प्रभावित करती है। सार्वजनिक स्वास्थ्य हस्तक्षेप, जैसे टीकाकरण, संक्रामक रोगों से होने वाली मौतों को रोकते हैं। पर्यावरणीय संकट और प्राकृतिक आपदाएं भी मृत्यु दर में अचानक वृद्धि ला सकती हैं। हालांकि, कुल प्रजनन दर स्वयं मृत्यु दर का निर्धारक नहीं है; यह प्रजननता का एक माप है। यद्यपि ये दोनों दरें मिलकर जनसंख्या परिवर्तन को प्रभावित करती हैं, परंतु प्रजनन स्तर सीधे तौर पर मृत्यु की आवृत्ति निर्धारित नहीं करता।

112. (A) नैदानिक सेवाएं और गर्भनिरोधक प्रदान करना।
जनसंख्या शिक्षा और परिवार नियोजन सेवाओं के मध्य एक स्पष्ट अंतर होता है। परिवार नियोजन मुख्य रूप से नैदानिक सेवाओं और गर्भनिरोधक साधनों की भौतिक आपूर्ति पर केंद्रित होता है। इसके विपरीत, जनसंख्या शिक्षा एक शैक्षणिक प्रयास है जो व्यक्तियों के भीतर जनसांख्यिकीय मुद्दों के प्रति जागरूकता और तर्कसंगत दृष्टिकोण विकसित करता है। इसका लक्ष्य लोगों को शिक्षित करना है ताकि वे जनसंख्या के प्रति अपनी सामाजिक जिम्मेदारी को समझें और सूचित निर्णय ले सकें। यह केवल उपकरणों के वितरण के स्थान पर ज्ञान और मूल्यों के माध्यम से व्यवहार परिवर्तन लाने का प्रयास करती है।

113. (A) केवल एक विशिष्ट आयु वर्ग के लिए मृत्यु पर विचार करता है।
अशोधित मृत्यु दर संपूर्ण जनसंख्या हेतु एक औसत अनुमान प्रदान करती है, परंतु यह विभिन्न आयु समूहों के मध्य के अंतर को स्पष्ट नहीं कर पाती। आयु-विशिष्ट मृत्यु दर अधिक सटीक होती है क्योंकि यह केवल एक निश्चित आयु वर्ग, जैसे शिशुओं अथवा वृद्धों, के भीतर होने वाली मौतों का विश्लेषण करती है। यह स्वास्थ्य विशेषज्ञों को यह समझने में सहायता करती है कि जनसंख्या का कौन सा भाग सबसे अधिक जोखिम में है। इस विशिष्ट डेटा का उपयोग करके ही लक्षित स्वास्थ्य कार्यक्रम और प्रभावी जीवन रक्षक नीतियां बनाई जा सकती हैं, जो सामान्य औसत दर से संभव नहीं है।

114. (D) कार्यशील आयु की जनसंख्या का अनुपात बड़ा होता है और निर्भरता अनुपात कम होता है।
जनसांख्यिकीय लाभांश एक राष्ट्र हेतु आर्थिक समृद्धि का एक दुर्लभ और मूल्यवान अवसर होता है। यह तब प्राप्त होता है जब जन्म दर में गिरावट के कारण बच्चों की संख्या कम हो जाती है, जबकि पिछली उच्च जन्म दर के कारण युवाओं का एक बड़ा समूह कार्यबल में सम्मिलित होता है। इस स्थिति में, कमाने वालों की संख्या आश्रितों की तुलना में बहुत अधिक होती है, जिससे राष्ट्रीय बचत और निवेश की दर बढ़ती है। यदि इस ऊर्जावान श्रम शक्ति को उचित शिक्षा, कौशल और रोजगार मिले, तो यह देश की आर्थिक प्रगति में क्रांतिकारी बदलाव ला सकती है, जो विकास का आधार है।

115. (A) 1976
भारत की पहली आधिकारिक राष्ट्रीय जनसंख्या नीति की घोषणा वर्ष 1976 में की गई थी। इस नीति का मुख्य उद्देश्य जनसंख्या वृद्धि की समस्या को गंभीरता से संबोधित करना और इसके लिए व्यापक दिशा-निर्देश निर्धारित करना था। इसने विवाह की न्यूनतम कानूनी आयु बढ़ाने और परिवार नियोजन हेतु विभिन्न प्रोत्साहनों एवं दंडों का उल्लेख किया था। यद्यपि भारत ने 1952 में ही परिवार नियोजन कार्यक्रम प्रारंभ कर दिया था, परंतु एक संगठित और विस्तृत राष्ट्रीय नीति के रूप में 1976 का दस्तावेज़ देश के जनसांख्यिकीय नियोजन और प्रबंधन में एक महत्वपूर्ण ऐतिहासिक मील का पत्थर माना जाता है।

116. (B) मृत्यु दर में आई तीव्र गिरावट के साथ जन्म दर में वैसी गिरावट नहीं आई।
भारत की जनसंख्या वृद्धि की मुख्य कहानी मृत्यु दर और जन्म दर के मध्य के गहरे असंतुलन की है। 20वीं शताब्दी के मध्य से, स्वास्थ्य सेवाओं और स्वच्छता में व्यापक सुधार के कारण मृत्यु दर में बहुत तीव्रता से कमी आई, जिससे औसत जीवन प्रत्याशा बढ़ गई। हालांकि, साक्षरता के निम्न स्तर और पारंपरिक सामाजिक मूल्यों के कारण जन्म दर में गिरावट की गति अत्यंत धीमी रही। इन दोनों दरों के मध्य के इसी विशाल अंतराल ने जनसंख्या में तीव्र वृद्धि की, जो कई दशकों तक देश के आर्थिक विकास और संसाधनों के प्रबंधन हेतु एक प्रमुख चुनौती बनी रही।

117. (D) सामाजिक स्तरीकरण
जनसांख्यिकी का मुख्य केंद्र बिंदु उन प्रक्रियाओं का अध्ययन करना है जो जनसंख्या के आकार और उसकी आंतरिक संरचना को निरंतर बदलती हैं। इसमें प्रजननता, मृत्यु दर और प्रवास तीन सबसे बुनियादी अवधारणाएं मानी जाती हैं। रुग्णता भी समाज की स्वास्थ्य स्थिति को समझने हेतु एक अत्यंत महत्वपूर्ण अंग है। इसके विपरीत, सामाजिक स्तरीकरण समाजशास्त्र की एक अवधारणा है जो समाज में वर्गों, जातियों और शक्ति के वितरण का विश्लेषण करती है। यद्यपि सामाजिक वर्ग जनसांख्यिकीय व्यवहार को प्रभावित कर सकते हैं, परंतु स्तरीकरण स्वयं जनसांख्यिकी की प्राथमिक अथवा केंद्रीय मापन प्रक्रिया का हिस्सा नहीं माना जाता है।

118. (C) कथन I सत्य है, लेकिन कथन II असत्य है।
जब हम जनसंख्या को केवल एक संख्या के रूप में न देखकर एक उत्पादक शक्ति के रूप में देखते हैं, तो इसे 'मानव पूंजी' कहा जाता है। यह दृष्टिकोण इस बात पर बल देता है कि जनसंख्या की गुणवत्ता, जिसमें उनका स्वास्थ्य, शिक्षा और तकनीकी कौशल सम्मिलित है, अत्यंत महत्वपूर्ण है। केवल बड़ी संख्या विकास की गारंटी नहीं देती; बल्कि एक स्वस्थ और शिक्षित कार्यबल ही अर्थव्यवस्था को गति प्रदान कर सकता है। अतः, मानव संसाधन के संदर्भ में जनसंख्या की गुणवत्ता को अप्रासंगिक मानना पूर्णतः गलत है, क्योंकि गुणवत्ता ही उसे एक मूल्यवान संसाधन में परिवर्तित करती है।

119. (B) समग्र विकासात्मक दृष्टिकोण।
आधुनिक जनसंख्या नीतियां अब केवल जन्म नियंत्रण तक सीमित नहीं हैं, बल्कि वे एक व्यापक विकासात्मक दृष्टिकोण पर आधारित हैं। यह दृष्टिकोण मानता है कि जनसंख्या स्थिरीकरण तभी संभव है जब लोगों को बेहतर स्वास्थ्य

NODIA

184. (D) बाधा
जनसंख्या को विकास की एक बाधा के रूप में देखने वाला परिप्रेक्ष्य इस तर्क पर आधारित है कि तीव्र जनसंख्या वृद्धि आर्थिक बचत की क्षमता को कम कर देती है। जब अधिक बच्चे और आश्रित होते हैं, तो परिवारों और शासन का अधिकांश खर्च उनके भरण-पोषण, प्राथमिक शिक्षा और स्वास्थ्य पर होता है। इससे उद्योगों और बुनियादी ढांचे के विकास हेतु आवश्यक 'पूंजी निर्माण' हेतु पर्याप्त धन नहीं बच पाता है। यह स्थिति प्रति व्यक्ति संसाधनों को सीमित कर देती है और निर्धनता के दुष्चक्र को बनाए रखती है। इस दृष्टिकोण के अनुसार, अनियंत्रित वृद्धि आर्थिक विकास की गति को धीमा करने वाला एक मुख्य कारक है।

185. (D) तीव्र और निरंतर वृद्धि।
1901 से 1921 तक के भारत के जनसांख्यिकीय चरण को 'स्थिर' अथवा 'गतिहीन' अवधि के रूप में जाना जाता है। इस दौरान जन्म दर और मृत्यु दर दोनों ही अत्यंत उच्च स्तर पर थीं, जिसके कारण जनसंख्या में शुद्ध वृद्धि बहुत धीमी रही। विशेष रूप से 1911-1921 के दशक में भीषण अकाल और इन्फ्लुएंजा महामारी के कारण जनसंख्या में ऋणात्मक वृद्धि भी दर्ज की गई थी। अतः इस विशिष्ट अवधि हेतु 'तीव्र और निरंतर वृद्धि' शब्द का उपयोग करना ऐतिहासिक रूप से पूर्णतः गलत है। यह चरण वास्तव में जनसांख्यिकीय संक्रमण की पहली अवस्था को दर्शाता है जहाँ जनसंख्या अस्तित्व हेतु संघर्षरत थी।

186. (B) पुरुष और महिला जन्मों का अनुपात।
जन्म के समय लिंगानुपात एक अत्यंत महत्वपूर्ण संकेतक है जो यह बताता है कि किसी विशिष्ट समय में उत्पन्न हुए कुल जीवित बच्चों में लड़कों और लड़कियों का अनुपात क्या है। सामान्य जैविक परिस्थितियों में लड़कों का जन्म लड़कियों से थोड़ा अधिक होता है, परंतु यदि यह अनुपात बहुत अधिक विषम है, तो यह लिंग-चयनात्मक प्रथाओं और भेदभाव की उपस्थिति का संकेत देता है। यह समाज के लिंग संगठन का आधार है और आने वाली पीढ़ी के जनसांख्यिकीय संतुलन को निर्धारित करता है। इस डेटा का विश्लेषण कन्या भ्रूण हत्या जैसी कुरीतियों को रोकने हेतु नीति निर्माण में अनिवार्य माना जाता है।

187. (B) कथन I और कथन II दोनों असत्य हैं।
माल्थस का जनसंख्या सिद्धांत मूल रूप से एक अत्यंत निराशावादी दृष्टिकोण प्रस्तुत करता है। उन्होंने भविष्यवाणी की थी कि मानवीय कष्ट, जैसे अकाल और निर्धनता, जनसंख्या वृद्धि के अपरिहार्य परिणाम हैं क्योंकि खाद्य संसाधनों की वृद्धि सीमित है। वे तकनीक की शक्ति के प्रति भी गहरे संशय में थे और उनका मानना था कि मानवीय सूझबूझ कभी भी बढ़ती आबादी की मांग को पूरी तरह पूर्ण नहीं कर पाएगी। माल्थस ने यह कभी नहीं माना कि समाज बिना किसी बड़ी आपदा के अपनी जनसंख्या को सफलतापूर्वक संतुलित कर सकता है। अतः उनके विचार आशावादी होने के स्थान पर एक गंभीर संकट की ओर संकेत करते हैं।

188. (D) भविष्य की जनसंख्या वृद्धि की उच्च संभावना।
युवा जनसंख्या संरचना वाले समाजों में 'जनसंख्या संवेग' की अत्यंत प्रबल स्थिति पाई जाती है। जब कुल जनसंख्या का एक बहुत बड़ा भाग 15 वर्ष से कम आयु का होता है, तो इसका अर्थ है कि आने वाले दशकों में एक विशाल समूह अपनी प्रजनन आयु में प्रवेश करेगा। भले ही ये युवा दंपत्ति भविष्य में कम बच्चे पैदा करने का निर्णय लें, परंतु प्रजननक्षम व्यक्तियों की भारी कुल संख्या के कारण जन्मों की कुल संख्या मृत्यु की संख्या से अधिक बनी रहेगी। यह स्थिति दर्शाती है कि जनसंख्या नियंत्रण के सफल प्रयासों के बावजूद, जनसंख्या का वास्तविक आकार कुछ समय तक निरंतर बढ़ता रहेगा।

189. (B) जनसंख्या के आकार में बहुत तीव्र वृद्धि।
'जनसंख्या विस्फोट' एक ऐसी जनसांख्यिकीय स्थिति को संदर्भित करता है जहाँ किसी देश अथवा क्षेत्र की जनसंख्या बहुत कम समय में अभूतपूर्व गति से बढ़ने लगती है। यह सामान्यतः तब होता है जब मृत्यु दर में अचानक और भारी गिरावट आती है, जबकि जन्म दर उच्च और स्थिर बनी रहती है। स्वास्थ्य सेवाओं में सुधार और अकाल पर नियंत्रण अक्सर इस स्थिति के प्रमुख कारक होते हैं। यह शब्द जनसंख्या और उपलब्ध संसाधनों के मध्य के गंभीर असंतुलन की चेतावनी देता है, जो आर्थिक स्थिरता, पर्यावरण और जीवन की गुणवत्ता हेतु गंभीर चुनौतियां उत्पन्न कर सकता है, जिसे नियंत्रित करना राष्ट्र हेतु अनिवार्य है।

190. (B) जनसंख्या के ऐसे आकार और संरचना को प्राप्त करना जो संधारणीय हो और जीवन की उच्च गुणवत्ता के लिए अनुकूल हो।
राष्ट्रीय जनसंख्या नीति का अंतिम लक्ष्य केवल संख्या को कम करना नहीं है, बल्कि जनसंख्या स्थिरीकरण के माध्यम से संधारणीय विकास प्राप्त करना है। इसका अर्थ है कि जनसंख्या का आकार ऐसा होना चाहिए जिसे देश के उपलब्ध प्राकृतिक संसाधन और पर्यावरण सहारा दे सकें। साथ ही, नीति का मुख्य उद्देश्य यह सुनिश्चित करना है कि प्रत्येक नागरिक को बेहतर स्वास्थ्य, शिक्षा और रोजगार के अवसर मिलें ताकि वे एक गरिमापूर्ण और सुखी जीवन व्यतीत कर सकें। यह संतुलित दृष्टिकोण जनसंख्या के जनसांख्यिकीय और मानवीय दोनों पहलुओं के मध्य सामंजस्य बिठाने का प्रयास करता है, जिससे राष्ट्र की प्रगति सुनिश्चित हो।

191. (A) दुराचार में सम्मिलित हुए बिना विवाह को टालना
माल्थस ने 'निवारक अवरोधों' के अंतर्गत 'नैतिक संयम' को सर्वोच्च स्थान दिया था। उनके अनुसार, विवाह में देरी करना एक जिम्मेदार मानवीय कदम है जो जन्म दर को कम करने में सहायता करता है। माल्थस का मानना था कि व्यक्तियों को तब तक अविवाहित रहना चाहिए जब तक कि वे अपने परिवार का पालन-पोषण करने हेतु आर्थिक रूप से पूर्ण सक्षम न हो जाएं। उन्होंने कृत्रिम गर्भनिरोधकों के उपयोग का समर्थन नहीं किया, बल्कि पूर्ण आत्म-नियंत्रण और सामाजिक उत्तरदायित्व पर बल दिया। उनके लिए यह कष्टकारी सकारात्मक अवरोधों,

Downloaded from www.pdf.tube

STUDYING FROM PDFs?

THINK AGAIN.

If you are studying only from PDFs,
you are wasting valuable time.

Research shows that learning from

PRINTED BOOKS has up to

4× HIGHER RETENTION

than studying from screens.

PRINT BOOK = BETTER MEMORY

PDF = LOWER RETENTION

Those who study from **PRINTED BOOKS**
move **AHEAD.**

Others are left **BEHIND**
in competition.



In competitive exams,
being average is not enough.

STAY ONE STEP AHEAD.

परिणाम देते हैं, परंतु शिक्षा जैसे अप्रत्यक्ष उपाय अधिक स्थायी और स्वैच्छिक बदलाव लाते हैं। ये उपाय समाज की सोच को आधुनिक बनाकर जनसंख्या स्थिरीकरण की ठोस नींव रखते हैं, जो लोकतांत्रिक मूल्यों के अनुरूप है।

128. (C) सामाजिक और आर्थिक परिवर्तन बड़े परिवारों को कम आवश्यक और अधिक खर्चीला बना देते हैं।
जनसांख्यिकीय संक्रमण की तीसरी अवस्था में जन्म दर में गिरावट का मुख्य कारण समाज का तीव्र आधुनिकीकरण है। शहरी जीवन में बच्चों के पालन-पोषण, शिक्षा और स्वास्थ्य पर होने वाला व्यय काफी बढ़ जाता है। इसके अतिरिक्त, गिरती हुई बाल मृत्यु दर के कारण अब माता-पिता को यह विश्वास हो जाता है कि उनके बच्चे जीवित रहेंगे, इसलिए वे अधिक बच्चे पैदा करने की आवश्यकता महसूस नहीं करते। महिलाओं की बढ़ती शिक्षा और कार्यबल में उनकी सक्रिय भागीदारी भी बड़े परिवारों की चाहत को कम कर देती है। इस प्रकार, आर्थिक तार्किकता ही जन्म दर को नीचे लाने में सहायक होती है।

129. (C) केवल 1 और 3
प्रजननता अनेक परस्पर जुड़े हुए सामाजिक कारकों पर निर्भर करती है। जब शिशु मृत्यु दर कम होती है, तो माता-पिता भविष्य के प्रति आश्वस्त महसूस करते हैं और कम बच्चे पैदा करते हैं। साथ ही, पितृसत्तात्मक समाजों में पुत्रों के प्रति प्रबल वरीयता प्रायः दंपतियों को तब तक जन्म जारी रखने हेतु प्रेरित करती है जब तक कि वांछित संख्या में पुत्र न हो जाएं। हालांकि, शहरीकरण सामान्यतः प्रजनन दर को कम करता है क्योंकि शहर में जीवन यापन की लागत अधिक होती है और आधुनिक सुविधाएं छोटे परिवार के आदर्श को बढ़ावा देती हैं। अतः केवल कथन 1 और 3 ही सैद्धांतिक रुप से सही हैं।

130. (D) बच्चे उत्पन्न करने की इच्छा और गर्भनिरोधक का उपयोग।
माल्थसवादी सिद्धांत की एक प्रमुख आलोचना यह है कि यह प्रजननता के जटिल मानवीय और सामाजिक पहलुओं को पूर्णतः नहीं समझ पाया। माल्थस ने बच्चे पैदा करने की जैविक इच्छा और वास्तविक जन्मों की संख्या के मध्य कोई स्पष्ट अंतर नहीं किया था। उन्होंने यह नहीं माना कि मनुष्य कृत्रिम गर्भनिरोधकों अथवा अन्य वैज्ञानिक साधनों के माध्यम से अपनी जैविक प्रवृत्ति को सफलतापूर्वक नियंत्रित कर सकता है। उनके लिए जनसंख्या नियंत्रण केवल कष्टकारी आपदाओं अथवा कठिन नैतिक संयम पर ही निर्भर था। आधुनिक समाज में प्रभावी गर्भनिरोधक के उपयोग ने माल्थस की इस धारणा को पूरी तरह बदल दिया है।

131. (A) निरंतर परंतु निश्चित जनसंख्या वृद्धि।
भारत के जनसांख्यिकीय इतिहास में 1921 से 1951 के मध्य की अवधि 'निश्चित वृद्धि' के चरण के रूप में जानी जाती है। 1921 के 'महान विभाजक वर्ष' के पश्चात, अकाल और महामारियों पर बेहतर नियंत्रण के कारण मृत्यु दर में गिरावट आनी प्रारंभ हुई। हालांकि जन्म दर अभी भी बहुत उच्च थी, परंतु मृत्यु दर में आई इस कमी ने जनसंख्या में निरंतर और सकारात्मक वृद्धि को सुनिश्चित किया। यह चरण 1951 के पश्चात आने वाले 'जनसंख्या विस्फोट' की तुलना में धीमा था, परंतु इसने भविष्य की तीव्र वृद्धि की ठोस आधारशिला रख दी थी, जो जनसांख्यिकीय संक्रमण को दर्शाता है।

132. (C) देश की राजनीतिक व्यवस्था का निर्धारण।
किसी भी राष्ट्र की आयु और लिंग संरचना के अत्यंत गहरे सामाजिक और आर्थिक प्रभाव होते हैं। यह सीधे तौर पर श्रम शक्ति के आकार और गुणवत्ता को प्रभावित करती है और निर्भरता अनुपात को निर्धारित करती है, जो अर्थव्यवस्था पर वास्तविक बोझ को दर्शाता है। यह संरचना यह भी संकेत देती है कि भविष्य में जनसंख्या कितनी तीव्रता से बढ़ेगी। यद्यपि जनसांख्यिकीय परिवर्तन राजनीतिक प्राथमिकताओं और नीतियों को प्रभावित कर सकते हैं, परंतु वे सीधे तौर पर देश की मूल राजनीतिक व्यवस्था (जैसे लोकतंत्र अथवा राजतंत्र) को निर्धारित नहीं करते, क्योंकि राजनीतिक व्यवस्था ऐतिहासिक और संवैधानिक कारकों से अधिक संचालित होती है।

133. (D) 1921 के बाद से जनसंख्या वृद्धि दर लगातार तीव्र हो रही है।
भारत की जनसंख्या वृद्धि के इतिहास का सूक्ष्म विश्लेषण करना अत्यंत आवश्यक है। यद्यपि 1921 के पश्चात जनसंख्या निरंतर बढ़ी है, परंतु यह कहना गलत है कि वृद्धि की 'दर' हमेशा तीव्र होती गई है। वास्तव में, 1981 के पश्चात से भारत की जनसंख्या वृद्धि दर में क्रमिक गिरावट देखी गई है, जो एक सकारात्मक जनसांख्यिकीय संकेत माना जाता है। अन्य तथ्य जैसे लिंगानुपात का महिलाओं के प्रतिकूल होना, भारत का विश्व में जनसंख्या में अग्रणी स्थान और युवा आबादी का अधिक होना, पूरी तरह से सत्य और प्रमाणित हैं। अतः, विकास की निरंतर बढ़ती दर का दावा तथ्यों के विरुद्ध है।

134. (C) कथन I असत्य है, लेकिन कथन II सत्य है।
जनसंख्या शिक्षा को केवल प्रजनन आयु वर्ग के वयस्कों तक सीमित मानना एक अत्यंत संकुचित धारणा है। वास्तव में, यह एक व्यापक शैक्षणिक प्रक्रिया है जो विद्यार्थियों, युवाओं और सभी आयु वर्गों हेतु समान रूप से प्रासंगिक है। इसका मुख्य लक्ष्य लोगों को जनसांख्यिकीय परिवर्तनों के सामाजिक, आर्थिक और व्यक्तिगत प्रभावों के बारे में गहराई से शिक्षित करना है। यह व्यक्तियों को उनके जीवन के महत्वपूर्ण निर्णयों, जैसे विवाह और परिवार नियोजन, के संबंध में तर्कसंगत और जिम्मेदारी पूर्ण निर्णय लेने में सक्षम बनाती है। अतः, यह केवल एक आयु वर्ग के स्थान पर संपूर्ण समाज को जागरूक करने का माध्यम है।

135. (C) जनसंख्या आशावादी
जनसंख्या आशावादी वे विचारक हैं जो बढ़ती हुई जनसंख्या को एक समस्या के स्थान पर एक स्वर्णिम अवसर के रूप में देखते हैं। उनका तर्क है कि अधिक जनसंख्या का अर्थ है अधिक मस्तिष्क और अधिक हाथ, जो नवाचार और उत्पादन को तीव्र गति प्रदान करते हैं। बड़ी जनसंख्या के कारण वस्तुओं की मांग बढ़ती है, जिससे उद्योग 'पैमाने की मितव्ययिता' प्राप्त कर पाते हैं और उत्पादन लागत कम होती है। यह विचारधारा मानती है कि मानवीय सूझबूझ और तकनीकी प्रगति किसी भी संसाधन की कमी को दूर कर सकती है। यह दृष्टिकोण माल्थसवादी

NODIA

सकता है, जो संपूर्ण अर्थव्यवस्था के विकास हेतु घातक सिद्ध होता है।

168. (C) कथन I सत्य है, लेकिन कथन II असत्य है।
जनसंख्या पिरामिड किसी समाज की आयु और लिंग संरचना को समझने का सबसे प्रभावी और दृश्य उपकरण माना जाता है। यह पिछले दशकों के जन्म, मृत्यु और प्रवास के रुझानों को स्पष्ट रुप से दर्शाता है। हालांकि, चौड़े आधार वाला पिरामिड निम्न जन्म दर को नहीं, बल्कि उच्च जन्म दर और बच्चों की बड़ी संख्या को दर्शाता है। संकरा आधार निम्न प्रजननता का संकेत होता है। अतः केवल पहला कथन सही है। जनसंख्या पिरामिड का विश्लेषण नीति निर्माताओं को भविष्य की योजना बनाने, जैसे कि कितने विद्यालय अथवा वृद्धाश्रम चाहिए होंगे, में अमूल्य वैज्ञानिक सहायता प्रदान करता है।

169. (C) सार्वजनिक स्वास्थ्य, स्वच्छता और खाद्य आपूर्ति में सुधार।
जनसांख्यिकीय संक्रमण की शुरुआत सामान्यतः मृत्यु दर में आने वाली तीव्र गिरावट से होती है। इस ऐतिहासिक बदलाव का श्रेय चिकित्सा विज्ञान में प्रगति, बेहतर स्वच्छता सुविधाओं और कृषि उत्पादकता में वृद्धि को जाता है जिसने अकाल की आवृत्ति को कम किया है। व्यापक टीकाकरण और एंटीबायोटिक्स ने संक्रामक रोगों से होने वाली मौतों को प्रभावी ढंग से नियंत्रित किया है। चूंकि इस प्रारंभिक चरण में जन्म दर उच्च बनी रहती है, इसलिए मृत्यु दर में आई यह कमी जनसंख्या की प्राकृतिक वृद्धि दर को बहुत अधिक बढ़ा देती है, जो आधुनिक जनसांख्यिकीय विकास का प्रथम महत्वपूर्ण चरण माना जाता है।

170. (D) देश में बोली जाने वाली भाषाओं की संख्या।
मृत्यु दर मुख्य रुप से उन कारकों द्वारा निर्धारित होती है जो मानव स्वास्थ्य और जीवन रक्षा की क्षमता को प्रत्यक्ष प्रभावित करते हैं। पोषण का स्तर, सुरक्षित पेयजल तक पहुँच और स्वास्थ्य सेवाओं की गुणवत्ता इसमें प्राथमिक भूमिका निभाते हैं। इसके अतिरिक्त, संक्रामक रोगों का प्रसार भी मृत्यु दर को सीधे तौर पर प्रभावित करता है। हालांकि, किसी देश की भाषाई विविधता अथवा बोली जाने वाली भाषाओं की संख्या का मृत्यु दर के जैविक अथवा स्वास्थ्य संबंधी स्तरों से कोई वैज्ञानिक अथवा प्रत्यक्ष संबंध नहीं है। भाषा संस्कृति का अभिन्न अंग है, परंतु यह जीवन प्रत्याशा अथवा मृत्यु दर का निर्धारक कारक नहीं है।

171. (B) प्रजननता और मृत्यु दर
जनसांख्यिकी का अध्ययन तीन मौलिक प्रक्रियाओं के इर्द-गिर्द घूमता है जो जनसंख्या के आकार, संरचना और वितरण को निर्धारित करती हैं। प्रजननता (जन्म), मृत्यु दर (मृत्यु) और प्रवास (भौगोलिक आवागमन) वे तीन स्तंभ हैं जिनके माध्यम से जनसंख्या में कोई भी परिवर्तन संभव होता है। प्रजननता जनसंख्या के आकार को बढ़ाती है, मृत्यु दर इसे घटाती है, और प्रवास क्षेत्रीय वितरण को बदलता है। इन तीनों प्रक्रियाओं के मध्य का जटिल अंतर्संबंध ही किसी राष्ट्र की वर्तमान और भविष्य की जनसांख्यिकीय स्थिति को आकार देता है, और योजनाकारों हेतु इनका विश्लेषण करना अत्यंत अनिवार्य है।

172. (A) विशाल क्षेत्रीय, सामाजिक और आर्थिक असमानताएं।
भारत जैसे विशाल और विविधतापूर्ण देश में एक समान जनसंख्या नीति लागू करना अत्यंत चुनौतीपूर्ण है क्योंकि यहाँ विभिन्न राज्यों के मध्य विकास और साक्षरता के स्तर में भारी अंतर है। उदाहरण के लिए, केरल जैसे राज्यों ने उच्च महिला साक्षरता और बेहतर स्वास्थ्य सेवाओं के माध्यम से जनसंख्या को सफलतापूर्वक स्थिर किया है, जबकि कुछ अन्य राज्य अभी भी उच्च प्रजनन दर की समस्याओं से जूझ रहे हैं। यह क्षेत्रीय असमानता एक ऐसी लचीली नीति की मांग करती है जो स्थानीय आवश्यकताओं और सांस्कृतिक संदर्भों के प्रति संवेदनशील हो, न कि केवल एक 'ऊपर से नीचे' का कठोर और एकरुप ढांचा।

173. (A) प्रजनन क्षमता गिरने के पश्चात भी कुछ समय तक जनसंख्या बढ़ती रहती है।
'जनसंख्या संवेग' एक महत्वपूर्ण जनसांख्यिकीय अवधारणा है जो यह स्पष्ट करती है कि जन्म दर कम होने के तुरंत पश्चात जनसंख्या वृद्धि क्यों नहीं रुकती। इसका मुख्य कारण अतीत की उच्च प्रजननता से उत्पन्न हुई युवा आयु संरचना है। जब बड़ी संख्या में युवा व्यक्ति प्रजननक्षम आयु में पहले से ही मौजूद होते हैं, तो भले ही वे औसतन कम बच्चे पैदा करें, परंतु जन्मों की कुल संख्या अभी भी मृत्यु की संख्या से अधिक रहती है। यह संवेग दर्शाता है कि जनसंख्या स्थिरीकरण की प्रक्रिया में पर्याप्त समय लगता है और इसके वास्तविक परिणाम दिखने में कई पीढ़ियां गुजर सकती हैं।

174. (D) निवारक अवरोध जन्म दर घटाते हैं; सकारात्मक अवरोध मृत्यु दर बढ़ाते हैं।
माल्थस ने जनसंख्या और संसाधनों के मध्य संतुलन बनाए रखने हेतु दो अलग-अलग प्रकार के तंत्रों का वर्णन किया था। निवारक अवरोधों का उद्देश्य जन्मों की संख्या को कम करना है, जिसमें मानवीय विवेक और स्वैच्छिक निर्णय जैसे विवाह में विलंब और नैतिक संयम सम्मिलित हैं। इसके विपरीत, सकारात्मक अवरोध वे प्राकृतिक और अक्सर कष्टकारी कारक हैं जो मृत्यु दर को बढ़ाकर जनसंख्या को कम करते हैं, जैसे अकाल, महामारी और युद्ध। माल्थस का दृढ़ विश्वास था कि यदि मनुष्य स्वयं निवारक उपाय नहीं अपनाता, तो प्रकृति अनिवार्य रुप से सकारात्मक अवरोधों के माध्यम से हस्तक्षेप करती है।

175. (B) जनसंख्या परिवर्तन को सामाजिक-आर्थिक विकास से जोड़ने के लिए एक ढांचा प्रदान करता है।
जनसांख्यिकीय संक्रमण सिद्धांत का सबसे बड़ा योगदान यह है कि यह जनसंख्या की गतिशीलता को केवल जैविक घटना के स्थान पर विकास की प्रक्रिया का एक अभिन्न अंग मानता है। यह सिद्धांत यह समझने में सहायता करता है कि कैसे शिक्षा, शहरीकरण और आर्थिक समृद्धि जन्म और मृत्यु दर के प्रतिरुप को गहराई से बदल देते हैं। यह नीति निर्माताओं को यह आभास देता है कि सामाजिक सुधारों और स्वास्थ्य सेवाओं में निवेश करने से जनसंख्या को संधारणीय तरीके से कैसे संतुलित किया जा सकता है। यह विकास और जनसंख्या

Click Here to Buy book on Amazon

144. (A) महामारियों और संक्रामक रोगों का नियंत्रण।
स्वतंत्रता के पश्चात भारत में मृत्यु दर में आई भारी गिरावट का मुख्य श्रेय चिकित्सा विज्ञान की प्रगति और सार्वजनिक स्वास्थ्य प्रणाली के विस्तार को जाता है। चेचक जैसी जानलेवा महामारियों का पूर्ण उन्मूलन किया गया और हैजा एवं मलेरिया जैसी बीमारियों पर प्रभावी नियंत्रण पाया गया। आधुनिक एंटीबायोटिक्स की उपलब्धता और बेहतर स्वच्छता सुविधाओं ने संक्रमण से होने वाली मौतों को काफी कम कर दिया। यद्यपि जीवन प्रत्याशा बढ़ी है, परंतु यह कोई शासन आदेश नहीं था, बल्कि बेहतर पोषण और चिकित्सा सुविधाओं का एक स्वाभाविक परिणाम था, जिसने देश की जनसांख्यिकीय तस्वीर को पूर्णतः बदल दिया।

145. (D) आपतन दर
सार्वजनिक स्वास्थ्य और जनसांख्यिकी में, 'आपतन दर' रुग्णता का एक प्रमुख माप माना जाता है। यह एक निश्चित समय अवधि के दौरान किसी जनसंख्या में किसी विशेष बीमारी के नए मामलों के निदान की आवृत्ति को दर्शाता है। यह केवल यह नहीं बताता कि कितने लोग वर्तमान में बीमार हैं, बल्कि यह भी बताता है कि बीमारी कितनी तीव्रता से फैल रही है। यह जीवन प्रत्याशा अथवा मृत्यु दर से भिन्न है, जो केवल जीवित रहने अथवा मरने पर ध्यान केंद्रित करते हैं। आपतन दर का उपयोग संक्रामक रोगों के प्रकोप की निगरानी करने और स्वास्थ्य संसाधनों के प्रभावी नियोजन हेतु किया जाता है।

146. (B) केवल 2 और 3
तीव्र जनसंख्या वृद्धि के परिणाम अर्थव्यवस्था और पर्यावरण हेतु अत्यंत चुनौतीपूर्ण हो सकते हैं। एक बड़ी आबादी अनिवार्य रूप से प्राकृतिक संसाधनों जैसे कृषि भूमि, जल और वनों पर भारी दबाव डालती है, जिससे उनके ह्रास और विनाश का खतरा बढ़ जाता है। इसके अतिरिक्त, जैसे-जैसे अधिक युवा वयस्क होते हैं, श्रम शक्ति के आकार में तीव्रता से वृद्धि होती है, जो यदि रोजगार के पर्याप्त अवसरों से मेल न खाए तो बेरोजगारी और अशांति का कारण बन सकती है। यह कहना गलत है कि जनसंख्या वृद्धि सदैव आय बढ़ाती है; वास्तव में, यह अक्सर प्रति व्यक्ति संसाधनों को सीमित कर विकास की गति को धीमा करती है।

147. (B) जन्म दर मृत्यु दर के बराबर होती है, और जनसंख्या का आकार स्थिर रहता है।
एक स्थिर जनसंख्या वह आदर्श जनसांख्यिकीय स्थिति है जहाँ जनसंख्या का आकार समय के साथ परिवर्तित नहीं होता है। यह तब प्राप्त होता है जब किसी समाज में होने वाले जन्मों की कुल संख्या और मौतों की संख्या एक-दूसरे के बिल्कुल बराबर हो जाती है, बशर्ते कि प्रवास का प्रभाव शून्य अथवा संतुलित हो। इस स्थिति में, जनसंख्या की आयु संरचना भी काफी हद तक अपरिवर्तित रहती है। कई विकसित देश अब इस अवस्था को प्राप्त कर चुके हैं अथवा इसके अत्यंत निकट हैं, जो संसाधनों के नियोजन और संधारणीय विकास हेतु एक बहुत ही अनुकूल और संतुलित स्थिति मानी जाती है।

148. (B) जन्म दर को कम करने के लिए मानवीय कार्य।
माल्थस ने 'निवारक अवरोधों' को उन स्वैच्छिक कार्यों के रूप में परिभाषित किया था जो मनुष्य अपनी बुद्धि और दूरदर्शिता का उपयोग करके जन्म दर को नियंत्रित करने हेतु करता है। इनमें विवाह में विलंब करना, परिवार की आर्थिक क्षमता को देखते हुए बच्चों की संख्या सीमित रखना और नैतिक संयम बरतना सम्मिलित है। माल्थस का दृढ़ विश्वास था कि शिक्षित और जिम्मेदार नागरिक इन अवरोधों को अपनाकर जनसंख्या वृद्धि को प्रभावी ढंग से रोक सकते हैं। यदि मनुष्य इन निवारक उपायों को अपनाने में विफल रहता है, तो प्रकृति अनिवार्य रूप से अधिक क्रूर सकारात्मक अवरोधों के माध्यम से अपना संतुलन स्थापित करती है।

149. (D) 2045
राष्ट्रीय जनसंख्या नीति 2000 ने भारत हेतु एक अत्यंत महत्वपूर्ण और दीर्घकालिक लक्ष्य निर्धारित किया है, जो वर्ष 2045 तक देश की जनसंख्या को पूर्णतः स्थिर करना है। इसका अर्थ है कि उस समय तक भारत को प्रतिस्थापन स्तर की प्रजननता प्राप्त कर लेनी चाहिए ताकि जनसंख्या का कुल आकार भविष्य में और न बढ़े। इस लक्ष्य को प्राप्त करने हेतु नीति ने मातृ एवं शिशु स्वास्थ्य में सुधार, किशोरों की विशिष्ट आवश्यकताओं को पूरा करने और परिवार नियोजन सेवाओं को सुलभ बनाने पर विशेष बल दिया है। यह भारत के संधारणीय भविष्य और विकास हेतु एक अनिवार्य समय सीमा मानी जाती है।

150. (A) 1, 2, 3
जनसांख्यिकीय संक्रमण की प्रक्रिया विश्व के विभिन्न क्षेत्रों में अलग-अलग समय पर प्रारंभ हुई है, जो उनके आर्थिक विकास के स्तर को दर्शाती है। पश्चिमी यूरोप के देशों ने औद्योगिक क्रांति के साथ सबसे पहले 18वीं और 19वीं शताब्दी में इस संक्रमण को प्रारंभ किया था। भारत ने इस प्रक्रिया को 20वीं शताब्दी के मध्य के आसपास अनुभव करना शुरू किया, जहाँ मृत्यु दर में तीव्रता से गिरावट आई। उप-सहारा अफ्रीका के कई देश वर्तमान में इस संक्रमण के प्रारंभिक चरणों से गुजर रहे हैं। यह ऐतिहासिक क्रम वैश्विक विकास और स्वास्थ्य सुधारों के प्रसार के प्रतिरूप को स्पष्ट रूप से दर्शाता है।

151. (C) कथन I असत्य है, लेकिन कथन II सत्य है।
जनसांख्यिकीय संक्रमण सिद्धांत को एक अटूट प्राकृतिक नियम के स्थान पर एक सामान्यीकृत मॉडल के रूप में देखा जाना चाहिए। यह पश्चिमी देशों के ऐतिहासिक अनुभवों के आधार पर विकसित किया गया है और बताता है कि कैसे आधुनिकीकरण जन्म और मृत्यु दर को कम करता है। हालांकि, यह प्रत्येक देश हेतु सटीक समय अथवा गति की भविष्यवाणी नहीं कर सकता, क्योंकि प्रत्येक राष्ट्र की सामाजिक-सांस्कृतिक परिस्थितियां और नीतियां भिन्न होती हैं। कई विकासशील देशों में बिना पूर्ण आर्थिक विकास के भी केवल स्वास्थ्य नीतियों के माध्यम से मृत्यु दर और प्रजननता में तीव्र गिरावट देखी गई है, जो इसकी विविधता को दर्शाता है।

Downloaded from www.pdf.tube

निराशावाद के बिल्कुल विपरीत एक सकारात्मक तस्वीर प्रस्तुत करता है।

136. (D) विवाह के समय आयु।
प्रजननता को प्रभावित करने वाले कारकों में 'विवाह के समय आयु' सबसे प्रत्यक्ष और शक्तिशाली निर्धारक माना जाता है। जैविक रूप से, एक महिला की प्रजनन अवधि सीमित होती है। यदि विवाह कम आयु में होता है, तो प्रजनन हेतु उपलब्ध वर्षों की संख्या बढ़ जाती है, जिससे अधिक बच्चे होने की संभावना बढ़ती है। इसके विपरीत, विवाह की आयु में वृद्धि सीधे तौर पर जन्मों की संख्या को कम करती है। यद्यपि शिक्षा और आय भी महत्वपूर्ण हैं, परंतु वे विवाह की आयु और गर्भनिरोधक के प्रभावी उपयोग जैसे माध्यमों से ही प्रजननता को अप्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करते हैं। यह जनसांख्यिकीय नियंत्रण का आधार है।

137. (C) विवाह की सार्वभौमिकता और विवाह के समय कम आयु।
भारत में उच्च जन्म दर के पीछे अनेक गहरे सामाजिक और सांस्कृतिक कारण रहे हैं। भारतीय समाज में विवाह को एक सार्वभौमिक सामाजिक कर्तव्य माना जाता है, जिससे लगभग प्रत्येक वयस्क इस संस्था में प्रवेश करता है। साथ ही, अनेक ग्रामीण और पारंपरिक क्षेत्रों में विवाह कम आयु में ही कर दिया जाता है, जिससे महिलाओं की कुल प्रजनन अवधि बहुत लंबी हो जाती है। यह लंबी अवधि अधिक बच्चों के जन्म की संभावना को अत्यधिक बढ़ा देती है। यही कारण है कि उच्च साक्षरता और शहरीकरण के प्रसार के बिना इन पारंपरिक सामाजिक व्यवहारों को बदलना एक अत्यंत चुनौतीपूर्ण कार्य है।

138. (B) P-2, Q-3, R-4, S-1
जनसांख्यिकीय अवधारणाओं का मिलान उनके सही वैज्ञानिक विवरण के साथ करना आवश्यक है। माल्थस के अनुसार अकाल एक 'सकारात्मक अवरोध' है जो मृत्यु दर बढ़ाता है। 'निवारक अवरोधों' में नैतिक संयम और विवाह में देरी सम्मिलित है जो जन्म दर को नियंत्रित करते हैं। 'जनसांख्यिकीय लाभांश' उस आर्थिक लाभ को दर्शाता है जो युवा आबादी की अधिकता से प्राप्त होता है। 'प्रतिस्थापन स्तर की प्रजननता' 2.1 की वह दर है जहाँ जनसंख्या स्थिर हो जाती है। ये सभी शब्द जनसंख्या विज्ञान के विभिन्न महत्वपूर्ण पहलुओं और नीतियों को समझने हेतु आधारभूत वैज्ञानिक आधार प्रदान करते हैं।

139. (D) मातृ मृत्यु अनुपात
मातृ मृत्यु अनुपात एक विशिष्ट स्वास्थ्य संकेतक है जो महिलाओं के प्रजनन स्वास्थ्य के जोखिम को मापता है। इसे किसी विशेष अवधि के दौरान प्रति 100,000 जीवित जन्मों पर गर्भावस्था, प्रसव अथवा प्रसव के पश्चात की जटिलताओं के कारण होने वाली महिलाओं की मृत्यु की संख्या के रूप में गणना की जाती है। यह संकेतक शिशु मृत्यु दर से पूर्णतः भिन्न है क्योंकि यह पूरी तरह से माताओं के जीवन और उनके स्वास्थ्य पर केंद्रित है। उच्च मातृ मृत्यु अनुपात प्रसव पूर्व देखभाल, सुरक्षित प्रसव सुविधाओं और आपातकालीन चिकित्सा सहायता की कमी का एक स्पष्ट और अत्यंत चिंताजनक संकेत माना जाता है, जिसे सुधारना अनिवार्य है।

140. (C) जनसंख्या के मुद्दों को स्वास्थ्य, शिक्षा और विकास के व्यापक लक्ष्यों के साथ एकीकृत करना।
भारत की आधुनिक जनसंख्या नीति का दृष्टिकोण अत्यंत व्यापक और मानवीय है। यह केवल जन्म नियंत्रण पर केंद्रित रहने के स्थान पर जनसंख्या स्थिरीकरण को समग्र सामाजिक और आर्थिक विकास का एक अनिवार्य अंग मानती है। नीति का मुख्य बल महिलाओं की शिक्षा, स्वास्थ्य सेवाओं के विस्तार और बाल उत्तरजीविता सुनिश्चित करने पर है। यह मानती है कि जब जीवन स्तर सुधरेगा और स्वास्थ्य सेवाएं सुलभ होंगी, तो लोग स्वयं ही छोटे परिवार के महत्व को समझेंगे। यह एकीकृत दृष्टिकोण दमनकारी उपायों के स्थान पर सशक्तिकरण के माध्यम से लक्ष्यों को प्राप्त करना चाहता है, जो संधारणीय है।

141. (D) देश के विकास के साथ उच्च जन्म और मृत्यु दर से निम्न जन्म और मृत्यु दर की ओर बदलाव।
जनसांख्यिकीय संक्रमण एक महत्वपूर्ण मॉडल है जो यह स्पष्ट करता है कि कैसे एक कृषि प्रधान और पारंपरिक समाज आर्थिक विकास के साथ एक आधुनिक औद्योगिक समाज में परिवर्तित हो जाता है। यह प्रक्रिया प्रारंभ में उच्च जन्म और मृत्यु दर के साथ शुरू होती है, जिससे जनसंख्या स्थिर रहती है। विकास के साथ पहले मृत्यु दर तीव्रता से गिरती है और फिर जन्म दर, जिससे अंततः जनसंख्या पुनः एक निम्न स्तर पर संतुलित और स्थिर हो जाती है। यह मॉडल देशों के जनसांख्यिकीय इतिहास और भविष्य की संभावनाओं का विश्लेषण करने हेतु एक ठोस वैज्ञानिक रूपरेखा प्रदान करता है।

142. (A) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
एक लोकतांत्रिक शासन व्यवस्था में जनसंख्या नियंत्रण की पूर्ण सफलता नागरिकों की सहमति और उनकी स्वैच्छिक भागीदारी पर निर्भर करती है। बलपूर्वक किए गए उपाय, जैसे कि अतीत में देखी गई अनिवार्य नसबंदी, न केवल बुनियादी मानवाधिकारों का उल्लंघन करते हैं, बल्कि समाज में गहरा अविश्वास और प्रतिरोध भी उत्पन्न करते हैं। इसके विपरीत, जब लोगों को उचित जानकारी और विकल्प प्रदान किए जाते हैं, तो वे अपनी भलाई हेतु जिम्मेदार निर्णय लेते हैं। अतः मानवीय गरिमा और सूचित विकल्प का सम्मान करना किसी भी जनसंख्या नीति की दीर्घकालिक सफलता और सामाजिक स्वीकार्यता हेतु अनिवार्य माना जाता है।

143. (B) जनसंख्या का विभिन्न आयु और लिंग समूहों में वितरण।
आयु और लिंग संरचना किसी भी जनसंख्या के सबसे बुनियादी और महत्वपूर्ण गुणों में से एक मानी जाती है। यह हमें बताती है कि किसी समाज में बच्चों, कार्यशील आयु के युवाओं और वृद्धों का अनुपात कितना है, साथ ही पुरुषों और महिलाओं की संख्या के मध्य क्या संतुलन है। यह डेटा देश की भविष्य की आवश्यकताओं को समझने हेतु आवश्यक है, जैसे कि कितने विद्यालय अथवा चिकित्सालय चाहिए होंगे और श्रम बाजार में कितने नए लोग प्रवेश करेंगे। इसे प्रायः जनसंख्या पिरामिड के माध्यम से दर्शाया जाता है, जो एक राष्ट्र की वर्तमान जनसांख्यिकीय स्थिति का स्पष्ट चित्र प्रस्तुत करता है।

NODIA

प्रक्रिया के एक अपरिहार्य और स्वाभाविक परिणाम के रूप में देखता है, जो संधारणीयता लाता है।

160. (A) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
माल्थस के विचार में 'सकारात्मक अवरोध' प्रकृति का वह कठोर तरीका है जिसके द्वारा वह संसाधनों और जनसंख्या के मध्य संतुलन स्थापित करती है। अकाल, महामारी और युद्ध जैसे कारक सीधे तौर पर मृत्यु दर में भारी वृद्धि करते हैं, जिससे जनसंख्या तीव्रता से कम हो जाती है। माल्थस ने इन्हें 'कष्टकारी' माना क्योंकि ये मानवीय दुख और त्रासदियों का मुख्य कारण बनते हैं। उनका तर्क था कि यदि मनुष्य अपनी बुद्धि का उपयोग करके जन्म दर को नियंत्रित नहीं करता, तो ये भयानक प्राकृतिक हस्तक्षेप अपरिहार्य हो जाते हैं, जो समाज के विकास हेतु अत्यंत विनाशकारी सिद्ध होते हैं।

161. (A) एक उच्च निर्भरता अनुपात।
जब किसी जनसंख्या में 15 वर्ष से कम आयु के बच्चों का अनुपात बहुत अधिक होता है, तो इसके गंभीर आर्थिक परिणाम होते हैं। इसे 'उच्च निर्भरता अनुपात' कहा जाता है क्योंकि बच्चों का यह बड़ा समूह स्वयं कमाता नहीं है और अपनी शिक्षा, स्वास्थ्य और भरण-पोषण हेतु पूर्णतः कार्यशील आयु वर्ग (15-64 वर्ष) पर निर्भर रहता है। यह स्थिति सरकार और परिवारों पर अतिरिक्त वित्तीय बोझ डालती है, जिससे बचत और निवेश हेतु उपलब्ध संसाधनों में कमी आ सकती है। हालांकि भविष्य में यही समूह कार्यबल का हिस्सा बनेगा, परंतु वर्तमान में यह एक आर्थिक दायित्व के रूप में कार्य करता है।

162. (B) ग्रामीण-से-शहरी प्रवास को प्रोत्साहित करना।
जनसंख्या नियंत्रण के मान्यता प्राप्त उपायों में वे कार्य सम्मिलित हैं जो सीधे अथवा अप्रत्यक्ष रूप से प्रजनन दर को कम करते हैं। विवाह की कानूनी आयु बढ़ाना, परिवार नियोजन को बढ़ावा देना और महिलाओं की सामाजिक एवं शैक्षिक स्थिति में सुधार करना ऐसे ही प्रभावी उपाय हैं। इसके विपरीत, ग्रामीण-से-शहरी प्रवास को प्रोत्साहित करना जनसंख्या नियंत्रण का कोई उपाय नहीं है। प्रवास केवल जनसंख्या के वितरण को बदलता है और अक्सर शहरी क्षेत्रों में भीड़भाड़ और संसाधनों पर दबाव बढ़ा देता है, परंतु यह समग्र रूप से जन्म दर को कम करने में कोई भी सीधी अथवा प्रभावी भूमिका नहीं निभाता है।

163. (B) केवल 2 और 3
भारत की जनसंख्या वृद्धि के इतिहास का विश्लेषण करते समय कुछ महत्वपूर्ण तथ्यों को समझना आवश्यक है। यह सत्य है कि 1911-1921 के दौरान वृद्धि दर ऋणात्मक दर्ज की गई थी। हालांकि, 1951 के पश्चात से वृद्धि दर सदैव 2% से ऊपर नहीं रही है; वास्तव में, हाल के दशकों में इसमें निरंतर गिरावट आई है। साथ ही, यह कहना भी गलत है कि 1981 के पश्चात से प्रति दशक पूर्ण वृद्धि कम हो रही है; दर भले ही कम हुई हो, परंतु आधार जनसंख्या बड़ी होने के कारण जुड़ने वाली पूर्ण संख्या अभी भी बहुत अधिक रही है। अतः कथन 2 और 3 भारत की जनसांख्यिकी का गलत विवरण प्रस्तुत करते हैं।

164. (A) जन्म के समय जीवन प्रत्याशा
जन्म के समय जीवन प्रत्याशा एक अत्यंत महत्वपूर्ण जनसांख्यिकीय और स्वास्थ्य संकेतक मानी जाती है। यह उन औसत वर्षों की संख्या को दर्शाता है जो एक नवजात शिशु के जीवित रहने की आशा की जा सकती है, यदि उस समय की प्रचलित मृत्यु दरें उसके संपूर्ण जीवनकाल में स्थिर रहें। यह दर किसी देश की स्वास्थ्य सुविधाओं, पोषण के स्तर, स्वच्छता और जीवन की सामान्य गुणवत्ता का एक व्यापक प्रतिबिंब है। जीवन प्रत्याशा में वृद्धि बेहतर चिकित्सा सेवाओं और संक्रामक रोगों पर प्रभावी नियंत्रण का प्रमाण होती है, जो समाज के समग्र विकास की सकारात्मक दिशा को स्पष्ट रूप से इंगित करती है।

165. (B) बच्चे उत्पन्न करने की शारीरिक क्षमता।
जनसांख्यिकी में 'जननशक्ति' शब्द का उपयोग एक बहुत ही विशिष्ट अर्थ में किया जाता है। यह किसी महिला, पुरुष अथवा दंपति की संतान उत्पन्न करने की अंतर्निहित जैविक अथवा शारीरिक क्षमता को दर्शाता है। यह 'प्रजननता' से पूर्णतः भिन्न है, जो वास्तविक रूप से उत्पन्न हुए जीवित बच्चों की संख्या को मापती है। जननशक्ति एक व्यक्ति की स्वास्थ्य स्थिति, आयु और अन्य जैविक कारकों पर निर्भर करती है। किसी जनसंख्या की कुल प्रजनन क्षमता को समझने हेतु जननशक्ति और वास्तविक प्रजनन व्यवहार के मध्य के अंतर को समझना अत्यंत आवश्यक है, क्योंकि क्षमता और प्रदर्शन के मध्य सदैव अंतराल पाया जाता है।

166. (B) सामाजिक और आर्थिक विकास की एक व्यापक प्रक्रिया।
भारत की आधुनिक जनसंख्या नीति इस विचार पर आधारित है कि जनसंख्या के मुद्दों को अलगाव में हल नहीं किया जा सकता। इसे केवल एक संख्यात्मक समस्या के रूप में देखने के स्थान पर, नीति इसे स्वास्थ्य, शिक्षा, निर्धनता उन्मूलन और महिला सशक्तिकरण जैसे व्यापक विकासात्मक लक्ष्यों के साथ जोड़ती है। यह माना जाता है कि जब समाज का समग्र विकास होगा और जीवन की गुणवत्ता में सुधार होगा, तो जनसंख्या स्थिरीकरण एक स्वाभाविक परिणाम के रूप में प्राप्त होगा। यह एकीकृत दृष्टिकोण दमनकारी उपायों के स्थान पर संधारणीय और मानवीय विकास के माध्यम से लक्ष्यों की प्राप्ति पर विशेष बल देता है।

167. (C) यह रोजगार और सेवाएं प्रदान करने के लिए शासन पर दबाव बढ़ाता है।
तीव्र जनसंख्या वृद्धि का अर्थव्यवस्था पर सबसे प्रत्यक्ष और तात्कालिक प्रभाव सार्वजनिक सेवाओं और रोजगार की मांग में वृद्धि के रूप में देखा जाता है। शासन पर शिक्षा, स्वास्थ्य देखभाल, आवास और परिवहन जैसी बुनियादी सुविधाएं प्रदान करने हेतु भारी वित्तीय दबाव पड़ता है। साथ ही, प्रत्येक वर्ष श्रम बाजार में प्रवेश करने वाले युवाओं की विशाल संख्या हेतु पर्याप्त रोजगार सृजित करना एक बहुत बड़ी चुनौती बन जाता है। यदि विकास की गति जनसंख्या वृद्धि के अनुरूप न हो, तो यह बेरोजगारी, निर्धनता और सामाजिक असमानता को बढ़ा

Click Here to Buy book on Amazon

152. (D) अशोधित मृत्यु दर।
प्रजननता मुख्य रूप से उन कारकों द्वारा निर्धारित होती है जो प्रत्यक्ष रूप से जन्म की संभावना को प्रभावित करते हैं। विवाहित महिलाओं का अनुपात, गर्भनिरोधक साधनों का उपयोग और प्रेरित गर्भपात की दर ऐसे प्राथमिक कारक हैं जो जैविक रूप से जन्मों की कुल संख्या को नियंत्रित करते हैं। इसके विपरीत, अशोधित मृत्यु दर केवल जनसंख्या में होने वाली मौतों की आवृत्ति को मापती है। यद्यपि उच्च मृत्यु दर कभी-कभी लोगों को अधिक बच्चे पैदा करने हेतु प्रेरित कर सकती है, परंतु यह स्वयं प्रजननता का प्रत्यक्ष अथवा प्राथमिक निर्धारक घटक नहीं मानी जाती है। जन्म और मृत्यु दर स्वतंत्र जनसांख्यिकीय प्रक्रियाएं मानी जाती हैं।

153. (C) मानव संसाधन।
जनसंख्या को एक परिसंपत्ति के रूप में देखने का सकारात्मक दृष्टिकोण 'मानव संसाधन' की आधुनिक अवधारणा पर आधारित है। यह मानता है कि लोग केवल संसाधनों के उपभोक्ता नहीं हैं, बल्कि वे अपनी बुद्धि, कौशल और श्रम के माध्यम से नए संसाधनों के निर्माता भी हैं। एक बड़ी और बढ़ती हुई जनसंख्या अर्थव्यवस्था में मांग बढ़ाती है, जिससे उत्पादन और नवाचार को निरंतर प्रोत्साहन मिलता है। बशर्ते कि जनसंख्या स्वस्थ और शिक्षित हो, वह राष्ट्र की उत्पादकता और आर्थिक विकास हेतु सबसे महत्वपूर्ण पूंजी बन जाती है। यह परिप्रेक्ष्य संख्यात्मक बोझ के स्थान पर गुणात्मक क्षमता पर अधिक बल देता है।

154. (B) उच्च प्रजनन दर, क्योंकि माता-पिता कुछ बच्चों के जीवित रहने को सुनिश्चित करने के लिए अधिक बच्चे उत्पन्न करते हैं।
समाज में उच्च शिशु मृत्यु दर अक्सर उच्च प्रजनन दर हेतु एक शक्तिशाली प्रेरक के रूप में कार्य करती है। जब माता-पिताओं को यह भय होता है कि उनके बच्चे बचपन में ही बीमारियों के कारण मर सकते हैं, तो वे अपनी वंश वृद्धि और बुढ़ापे की सुरक्षा सुनिश्चित करने हेतु 'अतिरिक्त' बच्चे पैदा करने की प्रवृत्ति रखते हैं। इसे प्रायः 'बीमा प्रभाव' कहा जाता है। जैसे-जैसे बाल स्वास्थ्य सेवाओं में सुधार होता है और बच्चों के जीवित रहने की गारंटी बढ़ती है, माता-पिता स्वाभाविक रूप से छोटे परिवार के आदर्श को अपनाने लगते हैं। अतः स्वास्थ्य सुधार ही प्रजनन दर को कम करने का स्थायी समाधान है।

155. (B) उच्च और स्थिर जन्म दर और तेजी से गिरती मृत्यु दर।
भारत में 1951 से 1981 के मध्य की अवधि को 'जनसंख्या विस्फोट' का चरण इसलिए कहा जाता है क्योंकि इस दौरान प्राकृतिक वृद्धि की दर अपने उच्चतम स्तर पर पहुँच गई थी। स्वतंत्रता के पश्चात बेहतर चिकित्सा सुविधाओं और स्वच्छता के कारण मृत्यु दर में बहुत तीव्रता से गिरावट आई, परंतु सामाजिक जड़ता और शिक्षा की कमी के कारण जन्म दर अत्यंत उच्च बनी रही। जन्म और मृत्यु दर के बीच के इसी विशाल और बढ़ते हुए अंतराल ने जनसंख्या में अभूतपूर्व वृद्धि की, जिसने देश के आर्थिक नियोजन और उपलब्ध संसाधनों पर अत्यधिक दबाव डाला, जो विकास हेतु एक बड़ी चुनौती थी।

156. (B) व्यक्तियों को जनसंख्या के मुद्दों के संबंध में तर्कसंगत निर्णय लेने में सहायता करना।
जनसंख्या शिक्षा का प्राथमिक उद्देश्य व्यक्तियों को जनसांख्यिकीय गतिशीलता और उनके स्वयं के जीवन के मध्य के जटिल संबंधों को गहराई से समझने हेतु तैयार करना है। यह केवल एक-बच्चा नीति का प्रचार करना अथवा दमनकारी तरीके अपनाना नहीं है। इसका लक्ष्य लोगों में ऐसी जागरूकता और समझ पैदा करना है जिससे वे अपने परिवार के आकार, स्वास्थ्य और पर्यावरण के प्रति जिम्मेदार और विवेकपूर्ण निर्णय ले सकें। इस प्रकार की शिक्षा एक सूचित और सचेत नागरिक समाज का निर्माण करती है जो संधारणीय विकास के लक्ष्यों के प्रति अधिक संवेदनशील और सक्रिय होता है, जिससे राष्ट्र की प्रगति सुनिश्चित होती है।

157. (A) P-3, Q-2, R-1, S-4
जनसांख्यिकीय विश्लेषण में विभिन्न शब्दावलियों का उपयोग उनके विशिष्ट मापन हेतु किया जाता है। अशोधित जन्म दर प्रति हजार व्यक्तियों पर होने वाले जीवित जन्मों की संख्या है। लिंगानुपात को प्रति हजार पुरुषों पर महिलाओं की संख्या के रूप में मापा जाता है। शिशु मृत्यु दर का संबंध प्रति हजार जीवित जन्मों पर होने वाली एक वर्ष से कम आयु के बालकों की मृत्यु से है। अंत में, मातृ मृत्यु अनुपात प्रति एक लाख जीवित जन्मों पर गर्भावस्था संबंधी कारणों से होने वाली महिलाओं की मृत्यु को दर्शाता है। ये सभी संकेतक समाज की सामाजिक और स्वास्थ्य स्थिति का एक विश्वसनीय और वैज्ञानिक विवरण प्रदान करते हैं।

158. (B) महिला जनसंख्या की साक्षरता दर।
जनसंख्या वृद्धि को प्रभावित करने वाले कारकों में महिला साक्षरता दर एक अत्यंत महत्वपूर्ण सामाजिक-सांस्कृतिक कारक मानी जाती है। शिक्षा महिलाओं को अपने स्वास्थ्य और प्रजनन अधिकारों के प्रति जागरूक बनाती है, जिससे वे विलंब से विवाह करती हैं और परिवार नियोजन के साधनों का अधिक प्रभावी ढंग से उपयोग करती हैं। इसके विपरीत, वर्षा की मात्रा अथवा खनिज संसाधन भौतिक कारक हैं जो केवल जनसंख्या के क्षेत्रीय वितरण को प्रभावित कर सकते हैं। महिला शिक्षा ही वह कुंजी है जो न केवल जन्म दर को कम करती है, बल्कि संपूर्ण परिवार के स्वास्थ्य और पोषण के स्तर में भी गुणात्मक सुधार लाती है।

159. (D) जनसांख्यिकीय संक्रमण सिद्धांत
जनसांख्यिकीय संक्रमण सिद्धांत एक ऐसा वैचारिक ढांचा है जो यह स्पष्ट करता है कि कैसे समाज का तकनीकी और आर्थिक विकास उसके जन्म और मृत्यु दर के प्रतिरूप को मौलिक रूप से बदल देता है। यह सिद्धांत बताता है कि जैसे-जैसे एक समाज कृषि प्रधान से औद्योगिक और फिर सेवा-आधारित अर्थव्यवस्था की ओर बढ़ता है, वह उच्च प्रजननता और उच्च मृत्यु दर की स्थिति से निम्न प्रजननता और निम्न मृत्यु दर की स्थिति की ओर संक्रमण करता है। यह जनसंख्या परिवर्तन को व्यापक सामाजिक-आर्थिक विकास और आधुनिकीकरण की

NODIA

के अंतर्संबंधों के वैज्ञानिक विश्लेषण हेतु एक वैश्विक आधार प्रदान करता है।

176. (C) मृत्यु दर: जनसंख्या में मृत्यु की घटना।
जनसांख्यिकी में शब्दों की सटीक परिभाषा उनके वैज्ञानिक विश्लेषण हेतु अनिवार्य है। मृत्यु दर किसी निश्चित समय और क्षेत्र में होने वाली मौतों की बारंबारता और उनके प्रतिरूप को स्पष्ट रूप से दर्शाती है। अन्य युग्म भ्रामक हैं क्योंकि प्रजननता जैविक क्षमता के स्थान पर वास्तविक पुनरुत्पादक प्रदर्शन को मापती है। रुग्णता बीमारी के बोझ को दर्शाती है, न कि मृत्यु को। प्रवास स्थायी अथवा दीर्घकालिक भौगोलिक स्थान परिवर्तन को संदर्भित करता है, न कि केवल दैनिक कार्य संबंधी आवागमन को। अतः, मृत्यु दर और मौतों की घटना का यह युग्म पूर्णतः सही, वैज्ञानिक और तर्कसंगत है।

177. (B) उच्च जनसंख्या वृद्धि और निम्न स्तर का आर्थिक विकास।
'बीमारू' शब्द का उपयोग ऐतिहासिक रूप से भारत के उन राज्यों (बिहार, मध्य प्रदेश, राजस्थान और उत्तर प्रदेश) हेतु किया जाता था जिनकी जनसांख्यिकीय और आर्थिक स्थिति चिंताजनक थी। इन राज्यों की मुख्य विशेषता उच्च प्रजनन दर, उच्च शिशु मृत्यु दर और साक्षरता का निम्न स्तर थी, जिसके कारण यहाँ जनसंख्या वृद्धि बहुत तेज रही। साथ ही, आर्थिक विकास की धीमी गति ने इन राज्यों के प्रति व्यक्ति संसाधनों पर अत्यधिक दबाव डाला। यद्यपि अब इनमें से कई राज्यों में सुधार के संकेत हैं, परंतु यह शब्द भारतीय जनसांख्यिकीय असंतुलन को समझने हेतु लंबे समय तक प्रासंगिक रहा है।

178. (B) इसमें बलपूर्वक और दमन के तत्व होने के लिए।
1976 की जनसंख्या नीति भारतीय इतिहास के एक विवादास्पद दौर, आपातकाल के दौरान घोषित की गई थी। इस नीति की कड़ी आलोचना का मुख्य कारण इसकी दमनकारी प्रकृति थी, जहाँ सरकारी लक्ष्यों को पूरा करने हेतु अक्सर बलपूर्वक नसबंदी का सहारा लिया गया। इसने व्यक्तिगत स्वतंत्रता और सूचित सहमति के बुनियादी लोकतांत्रिक सिद्धांतों का गंभीर उल्लंघन किया, जिससे जनता में शासन और परिवार नियोजन कार्यक्रमों के प्रति भारी अविश्वास उत्पन्न हुआ। इस अनुभव ने बाद की नीतियों को अधिक मानवीय, स्वैच्छिक और स्वास्थ्य-केंद्रित दृष्टिकोण अपनाने हेतु बाध्य किया, ताकि जनता का सहयोग पुनः प्राप्त किया जा सके।

179. (C) उच्च महिला शिक्षा और कार्यबल में भागीदारी।
प्रजनन दर को कम करने में महिला शिक्षा और उनकी आर्थिक स्वतंत्रता सबसे शक्तिशाली सामाजिक-सांस्कृतिक कारक माने जाते हैं। शिक्षित महिलाएं अपने स्वास्थ्य और अधिकारों के प्रति सचेत होती हैं और करियर की महत्वाकांक्षाओं के कारण अक्सर विवाह और बच्चों के जन्म में देरी करती हैं। कार्यबल में उनकी सक्रिय भागीदारी उन्हें घर के बाहर एक स्वतंत्र भूमिका प्रदान करती है, जिससे बड़े परिवार की चाहत कम हो जाती है। इसके विपरीत, पुत्र की वरीयता और विवाह की कम आयु जैसे कारक जन्म दर को निरंतर बढ़ाने का कार्य करते हैं। अतः महिला सशक्तिकरण ही जनसंख्या स्थिरीकरण का सबसे प्रभावी और स्थायी मार्ग है।

180. (C) A सत्य है लेकिन R असत्य है।
'जनसांख्यिकीय लाभांश' किसी देश हेतु केवल एक संभावना है, कोई गारंटीकृत परिणाम नहीं। यद्यपि कार्यशील आयु की बड़ी जनसंख्या होना एक अनुकूल जनसांख्यिकीय स्थिति है, परंतु इसका लाभ उठाने हेतु सटीक नीतियों की आवश्यकता होती है। यदि युवाओं को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा, कौशल प्रशिक्षण और अच्छे स्वास्थ्य की सुविधाएं नहीं मिलती हैं, और यदि अर्थव्यवस्था उनके लिए पर्याप्त रोजगार सृजित नहीं कर पाती, तो यह लाभांश एक 'जनसांख्यिकीय आपदा' में परिवर्तित हो सकता है। अतः यह लाभांश स्वतः प्राप्त नहीं होता, बल्कि इसके लिए मानव पूंजी में निरंतर और सुनियोजित निवेश की अनिवार्य आवश्यकता होती है।

181. (A) गिरती मृत्यु दर के कारण तीव्रता से बढ़ती जनसंख्या।
जनसांख्यिकीय संक्रमण की दूसरी अवस्था को अक्सर 'प्रारंभिक विस्तार' का चरण कहा जाता है। इस अवस्था में चिकित्सा और स्वच्छता के सुधारों के कारण मृत्यु दर में बहुत तीव्रता से गिरावट आती है, जबकि सामाजिक परंपराओं और जागरूकता की कमी के कारण जन्म दर उच्च बनी रहती है। जन्म और मृत्यु दर के बीच का यह बढ़ता हुआ अंतराल जनसंख्या में बहुत तीव्र वृद्धि उत्पन्न करता है, जिसे प्रायः 'जनसंख्या विस्फोट' कहा जाता है। कई विकासशील देश वर्तमान में इसी चुनौतीपूर्ण चरण से गुजर रहे हैं, जो प्राकृतिक संसाधनों और सामाजिक ढांचे के प्रबंधन हेतु एक बहुत बड़ी चुनौती पेश करता है।

182. (C) छोटे परिवार के लाभों पर मीडिया अभियान।
जनसंख्या नियंत्रण हेतु सूचना, शिक्षा और संचार एक अत्यंत महत्वपूर्ण रणनीति मानी जाती है। छोटे परिवार के आदर्शों पर मीडिया अभियान इसका एक प्रमुख उदाहरण है, जिसका उद्देश्य लोगों के दृष्टिकोण और व्यवहार में स्वैच्छिक परिवर्तन लाना है। यह नागरिकों को सीमित परिवार के आर्थिक फायदों, माताओं के बेहतर स्वास्थ्य और बच्चों के उज्ज्वल भविष्य के बारे में गहराई से शिक्षित करता है। नसबंदी शिविर अथवा वित्तीय प्रोत्साहन प्रत्यक्ष हस्तक्षेप के उदाहरण हैं, जबकि शिक्षा और जागरूकता कार्यक्रम लोगों को जागरूक बनाकर उन्हें स्वयं सही निर्णय लेने हेतु प्रेरित करते हैं, जो अधिक स्थायी और संधारणीय परिणाम प्रदान करता है।

183. (B) केवल 2 और 3
मृत्यु दर अनेक बाह्य और सामाजिक कारकों से गहराई से प्रभावित होती है। भीषण युद्ध, प्राकृतिक आपदाएं और महामारी मृत्यु दर में अचानक और भारी वृद्धि का कारण बन सकती हैं। साथ ही, किसी जनसंख्या की पोषण स्थिति एक बुनियादी निर्धारक है, क्योंकि कुपोषण बीमारियों के प्रति शरीर की संवेदनशीलता को बढ़ा देता है। चिकित्सा विज्ञान में निरंतर प्रगति का मृत्यु दर पर अत्यंत गहरा और सकारात्मक प्रभाव पड़ता है, जिससे औसत जीवन प्रत्याशा बढ़ती है। अतः यह कहना गलत है कि चिकित्सा का कोई प्रभाव नहीं होता। पोषण और आपदा प्रबंधन ही मृत्यु दर को कम करने के प्राथमिक और अनिवार्य स्तंभ माने जाते हैं।

Downloaded from www.pdf.tube

सेवाएं, शिक्षा और आर्थिक अवसर सुलभ हों। इसमें महिलाओं का सशक्तिकरण और शिशु मृत्यु दर को कम करना अत्यंत महत्वपूर्ण घटक माना जाता है। यह संधारणीय विकास के लक्ष्यों के साथ गहराई से जुड़ा हुआ है, जहाँ जनसंख्या के आकार को पर्यावरण और उपलब्ध संसाधनों के साथ संतुलित करने का प्रयास किया जाता है, ताकि भविष्य सुरक्षित रह सके।

120. (A) अकाल और इन्फ्लुएंजा महामारी से उच्च मृत्यु दर।
भारत के जनसांख्यिकीय इतिहास में 1911-1921 का दशक एकमात्र ऐसी अवधि है जब जनसंख्या में गिरावट दर्ज की गई थी। इसका मुख्य कारण कोई सफल परिवार नियोजन कार्यक्रम नहीं, बल्कि भीषण प्राकृतिक आपदाएं थीं। इस दशक के दौरान भारत भीषण अकाल और प्रथम विश्व युद्ध के पश्चात फैली इन्फ्लुएंजा महामारी की चपेट में आ गया था, जिससे लाखों लोगों की मृत्यु हुई। इस अत्यंत उच्च मृत्यु दर ने जन्म दर को पीछे छोड़ दिया, जिसके परिणामस्वरूप जनसंख्या में ऋणात्मक वृद्धि हुई। यह घटना जनसांख्यिकीय संक्रमण के प्रथम चरण की अत्यधिक अस्थिरता का एक चरम उदाहरण है।

121. (A) P-2, Q-1, R-3, S-4
जनसांख्यिकीय अवधारणाएं विकास और जनसंख्या के मध्य के जटिल अंतर्संबंधों को स्पष्ट करती हैं। माल्थसवादी सिद्धांत जनसंख्या और खाद्य आपूर्ति के मध्य अनिवार्य संघर्ष की चेतावनी देता है। जनसांख्यिकीय संक्रमण सिद्धांत समय के साथ जन्म और मृत्यु दर में होने वाले ऐतिहासिक बदलावों का विवरण प्रदान करता है। जनसंख्या को एक बाधा के रूप में देखने वाला दृष्टिकोण बताता है कि कैसे अत्यधिक वृद्धि प्रति व्यक्ति संसाधनों को कम करती है। इसके विपरीत, मानव संसाधन का परिप्रेक्ष्य मानता है कि एक स्वस्थ और कुशल जनसंख्या राष्ट्र की उत्पादकता और आर्थिक विकास का मुख्य इंजन होती है, जो सकारात्मकता दर्शाती है।

122. (B) बहुपतित्व और महिलाओं की तस्करी में वृद्धि।
समाज में महिलाओं की कमी के कारण होने वाला विषम लिंगानुपात गंभीर सामाजिक संकट उत्पन्न करता है। जब विवाह योग्य महिलाओं की संख्या पुरुषों की तुलना में काफी कम होती है, तो यह विवाह बाजार में भारी असंतुलन पैदा करता है। इसके परिणामस्वरूप अक्सर महिलाओं की तस्करी, जबरन विवाह और बहुपतित्व जैसी कुरीतियां बढ़ने की संभावना रहती है। इसके अतिरिक्त, पुरुषों के मध्य जीवनसाथी न मिलने के कारण हताशा और सामाजिक अस्थिरता भी बढ़ सकती है। यह असंतुलन अंततः महिलाओं की सुरक्षा और उनके मानवाधिकारों हेतु एक बड़ा खतरा बन जाता है जो पूरे समाज को प्रभावित करता है।

123. (C) शिक्षा का स्तर, विशेष रूप से महिलाओं की।
शिक्षा, विशेषकर महिला साक्षरता, प्रजननता और मृत्यु दर दोनों को प्रभावित करने वाला सबसे सशक्त सामाजिक कारक है। एक शिक्षित महिला परिवार नियोजन के बारे में जागरूक होती है, जिससे प्रजनन दर में स्वाभाविक गिरावट आती है। साथ ही, शिक्षा उसे बेहतर पोषण, स्वच्छता और स्वास्थ्य सेवाओं के महत्व को समझने में सहायता करती है, जिससे न केवल उसका अपना बल्कि उसके बच्चों का भी स्वास्थ्य बेहतर रहता है और मृत्यु दर कम होती है। अतः, समाज में शिक्षा का प्रसार ही वह कुंजी है जो जनसंख्या नियंत्रण और स्वास्थ्य सुधार दोनों लक्ष्यों को एक साथ प्राप्त करने में सक्षम है।

124. (D) एक ही रोगी में एक साथ दो या दो से अधिक चिकित्सा स्थितियों की उपस्थिति।
चिकित्सा और सार्वजनिक स्वास्थ्य के क्षेत्र में 'सह-रुग्णता' एक महत्वपूर्ण तकनीकी शब्द है। यह उस स्थिति को संदर्भित करता है जब एक व्यक्ति एक ही समय में दो अथवा दो से अधिक पुरानी या गंभीर बीमारियों से ग्रस्त होता है, जैसे कि किसी व्यक्ति को मधुमेह और उच्च रक्तचाप दोनों का एक साथ होना। यह स्थिति रोगी के उपचार को अधिक जटिल बना देती है और मृत्यु के जोखिम को बढ़ा सकती है। जनसांख्यिकीय दृष्टि से, सह-रुग्णता का अध्ययन करना स्वास्थ्य प्रणालियों पर पड़ने वाले वास्तविक बोझ को समझने और वृद्ध आबादी हेतु बेहतर देखभाल रणनीतियां बनाने हेतु आवश्यक है।

125. (A) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
राष्ट्रीय जनसंख्या नीति 2000 ने भारत के जनसंख्या प्रबंधन में एक ऐतिहासिक बदलाव लाया। इसने पूर्व की नीतियों में प्रचलित 'लक्ष्य-केंद्रित' दृष्टिकोण को त्याग दिया, जहाँ प्रायः नसबंदी के सांख्यिकीय आंकड़ों पर अधिक जोर दिया जाता था। इसके स्थान पर, इस नीति ने 'विकल्प-आधारित' और स्वास्थ्य-केंद्रित मार्ग अपनाया। यह मानती है कि यदि प्रजनन स्वास्थ्य सेवाओं और गर्भनिरोधक की अपूर्ण आवश्यकताओं को पूरा किया जाए और लोगों को स्वैच्छिक निर्णय लेने हेतु प्रोत्साहित किया जाए, तो जनसंख्या स्थिरीकरण अधिक प्रभावी और मानवीय रूप से प्राप्त किया जा सकता है, जो संधारणीय विकास हेतु अनिवार्य है।

NODIA

126. (A) 2, 4, 1, 3
किसी भी समाज में मृत्यु दर का स्तर विभिन्न आयु समूहों के मध्य काफी भिन्न पाया जाता है। सामान्यतः, युवा वयस्क (15-34 वर्ष) सबसे सुरक्षित समूह होते हैं और उनकी मृत्यु दर सबसे कम होती है। इसके पश्चात बच्चों (5-14 वर्ष) का स्थान आता है। शिशुओं (0-1 वर्ष) में मृत्यु का जोखिम अधिक होता है क्योंकि वे संक्रामक बीमारियों के प्रति अधिक संवेदनशील होते हैं। अंत में, वृद्धों (60+ वर्ष) में मृत्यु दर सबसे अधिक होती है क्योंकि आयु बढ़ने के साथ शारीरिक प्रतिरोधक क्षमता कम हो जाती है। यह 'U' आकार का मृत्यु वक्र मानव जीवन के जैविक चक्र को दर्शाता है।

127. (A) छोटे परिवार के आदर्शों के बारे में शिक्षा और जागरूकता फैलाना।
जनसंख्या नियंत्रण के अप्रत्यक्ष उपायों का मुख्य उद्देश्य लोगों के व्यवहार और उनके दृष्टिकोण में सकारात्मक परिवर्तन लाना है। शिक्षा और जागरूकता कार्यक्रम लोगों को छोटे परिवार के आर्थिक और स्वास्थ्य संबंधी लाभों को समझने में सहायता करते हैं, जिससे वे स्वयं कम बच्चे पैदा करने का निर्णय लेते हैं। यद्यपि गर्भनिरोधक और नसबंदी जैसे प्रत्यक्ष उपाय त्वरित

जैसे अकाल और महामारी, से बचने का एकमात्र सदाचारी और नैतिक मार्ग था।

192. (C) P-2, Q-4, R-1, S-3
भारतीय जनसंख्या के ऐतिहासिक चरणों को उनकी विशिष्ट विशेषताओं से पहचाना जा सकता है। 1901-1921 की अवधि उच्च मृत्यु दर के कारण जनसंख्या स्थिरता का चरण थी। 1921-1951 के मध्य स्वास्थ्य सुधारों के चलते जनसंख्या में निरंतर और निश्चित वृद्धि देखी गई। 1951-1981 का कालखंड वास्तविक 'जनसंख्या विस्फोट' का था, जहाँ मृत्यु दर तीव्रता से गिरी और जनसंख्या तीव्र गति से बढ़ी। 1981 के पश्चात का वर्तमान चरण अभी भी उच्च वृद्धि का है, परंतु अब इसमें प्रजनन दर में गिरावट और वृद्धि की गति धीमी होने के स्पष्ट संकेत दिखाई दे रहे हैं, जो स्थिरीकरण की ओर एक कदम है।

193. (B) अवस्था 2
जनसांख्यिकीय संक्रमण की दूसरी अवस्था की सबसे महत्वपूर्ण विशेषता मृत्यु दर में आने वाली क्रांतिकारी गिरावट मानी जाती है। इस चरण में चिकित्सा सेवाओं का विस्तार, सार्वजनिक स्वच्छता में सुधार और बेहतर खाद्य सुरक्षा के कारण संक्रामक रोगों और अकाल से होने वाली मौतों पर प्रभावी नियंत्रण पा लिया जाता है। चूंकि जन्म दर इस दौरान उच्च और स्थिर बनी रहती है, इसलिए मृत्यु दर में आई यह कमी जनसंख्या की प्राकृतिक वृद्धि दर को अत्यंत तीव्र कर देती है। यही वह विशिष्ट चरण है जो किसी भी विकासशील देश में जनसंख्या विस्फोट की गंभीर स्थिति उत्पन्न करने हेतु पूर्णतः उत्तरदायी माना जाता है।

194. (C) महामारी विज्ञान संक्रमण
जैसे-जैसे समाज का आर्थिक और चिकित्सा विकास होता है, जनसंख्या के स्वास्थ्य प्रतिरूप में एक बड़ा बदलाव आता है जिसे 'महामारी विज्ञान संक्रमण' कहा जाता है। इसमें मृत्यु का मुख्य कारण हैजा और तपेदिक जैसे संक्रामक रोगों से परिवर्तित होकर हृदय रोग, कैंसर और मधुमेह जैसे गैर-संक्रामक अथवा जीवन शैली से जुड़े रोगों की ओर स्थानांतरित हो जाता है। यह संक्रमण चिकित्सा तकनीक की सफलता और बढ़ती जीवन प्रत्याशा को दर्शाता है, परंतु यह स्वास्थ्य प्रणालियों के समक्ष नई चुनौतियां भी प्रस्तुत करता है, क्योंकि दीर्घकालिक रोगों के उपचार हेतु निरंतर, उन्नत और महंगी स्वास्थ्य देखभाल की आवश्यकता होती है।

195. (C) एक बड़ी, कुशल और स्वस्थ जनसंख्या राष्ट्र की सबसे बड़ी संपत्ति है।
'मानव संसाधन' परिप्रेक्ष्य जनसंख्या को केवल एक उपभोक्ता के रूप में नहीं, बल्कि विकास के एक शक्तिशाली इंजन के रूप में देखता है। यह दृष्टिकोण इस बात पर जोर देता है कि जनसंख्या की गुणवत्ता उसकी मात्रा से कहीं अधिक महत्वपूर्ण है। यदि नागरिकों को उचित शिक्षा, कौशल प्रशिक्षण और बेहतर स्वास्थ्य सुविधाएं प्रदान की जाएं, तो वे अपनी रचनात्मकता और उत्पादकता से राष्ट्र के धन और समृद्धि में अभूतपूर्व वृद्धि कर सकते हैं। यह विचारधारा जनसंख्या को एक परिसंपत्ति मानती है, जो यदि सही ढंग से विकसित की जाए, तो किसी भी प्राकृतिक संसाधन की कमी की भरपाई करने और देश को प्रगति की ओर ले जाने में सक्षम है।

196. (D) आहार, व्यायाम और धूम्रपान से संबंधित उनकी आदतें।
आधुनिक युग में मृत्यु दर का एक प्रमुख निर्धारक व्यक्ति की जीवन शैली और उसकी दैनिक आदतें हैं। आहार संबंधी विकल्प, नियमित शारीरिक गतिविधि और धूम्रपान अथवा मद्यपान जैसे व्यसनों का स्वास्थ्य पर सीधा और गहरा प्रभाव पड़ता है। ये कारक हृदय रोग, उच्च रक्तचाप और कैंसर जैसी पुरानी बीमारियों के जोखिम को निर्धारित करते हैं। सार्वजनिक स्वास्थ्य सेवाओं के विस्तार के बावजूद, व्यक्तिगत व्यवहार मृत्यु दर के स्तर को प्रभावित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। अतः, जीवन शैली में सुधार हेतु जागरूकता पैदा करना किसी भी समाज में अकाल मृत्यु को कम करने और दीर्घायु को बढ़ावा देने हेतु आवश्यक है।

197. (A) जनसंख्या वृद्धि की तीव्र दर और इसके निहितार्थ।
भारत में 'जनसंख्या शिक्षा' की अवधारणा का उदय 1960 और 70 के दशकों में तीव्रता से बढ़ती आबादी के प्रति बढ़ती चिंता के कारण हुआ था। योजनाकारों ने महसूस किया कि केवल नैदानिक परिवार नियोजन सेवाएं पर्याप्त नहीं हैं; लोगों को जनसांख्यिकीय परिवर्तनों के सामाजिक, आर्थिक और व्यक्तिगत परिणामों के बारे में गहराई से शिक्षित करना अनिवार्य है। इसका मुख्य उद्देश्य युवाओं और भावी नागरिकों में एक ऐसी समझ विकसित करना था जिससे वे छोटे परिवार के महत्व को समझ सकें और राष्ट्रीय विकास एवं जीवन की गुणवत्ता में जनसंख्या के संतुलित आकार की भूमिका को पहचान सकें। यह एक दीर्घकालिक सामाजिक चेतना निर्माण का प्रयास था।

198. (A) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
भारतीय समाज में पुत्रों के प्रति प्रबल प्राथमिकता एक गहरा सामाजिक-सांस्कृतिक कारक है जो उच्च प्रजनन दर को बढ़ावा देता है। वंश चलाने, बुढ़ापे की सुरक्षा और धार्मिक अनुष्ठानों हेतु पुत्र को आवश्यक मानने की पारंपरिक सोच दंपत्तियों को तब तक बच्चे पैदा करने हेतु प्रेरित करती है जब तक कि वांछित संख्या में पुत्र प्राप्त न हो जाएं। यह व्यवहार न केवल परिवार के आकार को बढ़ाता है बल्कि लिंग-चयनात्मक प्रथाओं और महिलाओं के स्वास्थ्य पर नकारात्मक प्रभाव हेतु भी उत्तरदायी है। अतः, जनसंख्या नियंत्रण हेतु इस मानसिकता में परिवर्तन लाना समाज हेतु एक बड़ी और अनिवार्य चुनौती है।

199. (C) घातांकीय या अप्रतिबंधित वृद्धि।
जनसंख्या वृद्धि के संदर्भ में 'J-आकार' का वक्र उस विशिष्ट स्थिति को दर्शाता है जहाँ कोई जनसंख्या बिना किसी बाह्य बाधा के बहुत तीव्रता से बढ़ती है। इसे घातांकीय वृद्धि कहा जाता है, जहाँ प्रत्येक समय अवधि में जनसंख्या का बढ़ना पिछली जनसंख्या के आकार के अनुपात में होता है। यह प्रतिरूप अक्सर तब देखा जाता है जब प्राकृतिक संसाधन प्रचुर होते हैं और मृत्यु दर अत्यंत निम्न होती है। हालांकि, प्रकृति में यह तीव्र वृद्धि लंबे समय तक संधारणीय नहीं होती है, क्योंकि

Click Here to Buy book on Amazon

अंततः संसाधनों की कमी अथवा अन्य पर्यावरणीय सीमाएं इसे रोकने अथवा पूर्णतः नष्ट करने का मुख्य कारण बनती हैं।

200. (A) अंतरराष्ट्रीय व्यापार शुल्कों पर नियम।
एक व्यापक जनसंख्या नीति का मुख्य केंद्र उन कारकों को प्रबंधित करना है जो जनसंख्या के आकार, गुणवत्ता और वितरण को सीधे प्रभावित करते हैं। इसमें मातृ एवं शिशु स्वास्थ्य सेवाओं में सुधार, परिवार नियोजन के साधनों की सुलभता और शिक्षा का प्रसार जैसे घटक अनिवार्य रूप से सम्मिलित होते हैं। ये सभी उपाय जन्म दर को संतुलित करने और मानव पूंजी विकसित करने हेतु अत्यंत आवश्यक हैं। हालांकि, अंतरराष्ट्रीय व्यापार शुल्क और आर्थिक व्यापार नियम वित्त एवं वाणिज्य नीति का हिस्सा हैं, जिनका जनसंख्या नियंत्रण अथवा जनसांख्यिकीय नियोजन के प्रत्यक्ष उद्देश्यों और रणनीतियों से कोई सीधा संबंध नहीं होता है।

201. (B) जनसंख्या में निर्वाह के साधनों की तुलना में तीव्रता से बढ़ने की प्रवृत्ति होती है।
थॉमस माल्थस ने अपने सिद्धांत में तर्क दिया था कि मानव की प्रजनन शक्ति भूमि द्वारा भोजन प्रदान करने की क्षमता से कहीं अधिक बलवान है। उनके अनुसार, जनसंख्या में घातांकीय अथवा गुणोत्तर वृद्धि होती है, जबकि खाद्य संसाधनों में केवल समांतर अथवा अत्यंत धीमी गति से वृद्धि संभव है। यह मौलिक गणितीय असंतुलन ही समाज में निर्धनता, भुखमरी और अकाल का मुख्य कारण बनता है। माल्थस का यह विचार संसाधनों की सीमितता के विरुद्ध जनसंख्या के अनियंत्रित प्रसार के खतरों के प्रति एक गंभीर चेतावनी के रूप में देखा जाता है, जो वर्तमान वैश्विक संदर्भ में भी अत्यंत प्रासंगिक बना हुआ है।

202. (A) कथन I और कथन II दोनों सत्य हैं।
किसी भी जनसंख्या की वर्तमान आयु और लिंग संरचना उसके संपूर्ण जनसांख्यिकीय इतिहास का एक सजीव और विस्तृत दस्तावेज होती है। यह पिछले दशकों में रही प्रजनन दर, मृत्यु दर और प्रवास की लहरों का सीधा परिणाम मानी जाती है। साथ ही, यही संरचना यह भी निर्धारित करती है कि भविष्य में जनसंख्या की वृद्धि की वास्तविक संभावना क्या होगी और श्रम बाजार में कितने नए लोग प्रवेश करेंगे। उदाहरण के लिए, एक युवा आबादी भविष्य में जन्म दर को उच्च बनाए रखेगी। अतः, आयु संरचना को गहराई से समझना जनसंख्या के अतीत के प्रभावों और भविष्य की चुनौतियों का सटीक विश्लेषण करने हेतु अनिवार्य है।

203. (D) वर्तमान आयु-विशिष्ट दरों का अनुभव करने वाली महिला से उत्पन्न होने वाले बच्चों की औसत संख्या।
कुल प्रजनन दर प्रजननता का सबसे सटीक और भविष्योन्मुखी माप माना जाता है। यह एक काल्पनिक अनुमान है जो यह बताता है कि यदि वर्तमान की आयु-विशिष्ट प्रजनन दरें स्थिर रहें, तो एक महिला अपने पूरे प्रजनन जीवनकाल में औसतन कितने बच्चों को जन्म देगी। यह दर समाज के वास्तविक प्रजनन व्यवहार का एक स्पष्ट चित्र प्रस्तुत करती है और नीति निर्माताओं को यह समझने में सहायता करती है कि क्या जनसंख्या बढ़ेगी, घटेगी अथवा स्थिर रहेगी। भारत में इस दर को प्रतिस्थापन स्तर (2.1) तक लाना जनसंख्या स्थिरीकरण का एक मुख्य लक्ष्य निर्धारित किया गया है, जो विकास हेतु आवश्यक है।

204. (C) मृत्यु दर में भारी गिरावट।
स्वतंत्रता के पश्चात भारत में हुई तीव्र जनसंख्या वृद्धि का सबसे बड़ा कारण चिकित्सा और स्वास्थ्य सेवाओं में हुआ व्यापक सुधार था। चेचक और प्लेग जैसी जानलेवा बीमारियों पर प्रभावी नियंत्रण, बेहतर स्वच्छता सुविधाओं और अकाल पर काबू पाने से मृत्यु दर में नाटकीय रूप से कमी आई। हालांकि, सामाजिक और सांस्कृतिक जड़ता के कारण जन्म दर अत्यंत उच्च बनी रही। जन्म और मृत्यु दर के बीच के इसी बढ़ते हुए विशाल अंतराल ने जनसंख्या में अभूतपूर्व वृद्धि की, जो कि जनसांख्यिकीय संक्रमण के दूसरे चरण की एक विशिष्ट पहचान है। यह मृत्यु दर में आई गिरावट ही थी जिसने देश को 'जनसंख्या विस्फोट' की ओर धकेला।

205. (B) केवल 1 और 3
जनसांख्यिकीय संक्रमण सिद्धांत यह सुझाव देता है कि आधुनिकीकरण के साथ सभी समाज अंततः निम्न जन्म और मृत्यु दर की स्थिरता को प्राप्त करेंगे। हालांकि, इस सिद्धांत की एक बड़ी सीमा यह है कि यह किसी विशेष देश हेतु संक्रमण की सटीक समय सीमा अथवा गति की भविष्यवाणी करने में असमर्थ है। यह मुख्य रूप से पश्चिमी यूरोपीय देशों के ऐतिहासिक अनुभवों पर आधारित था, न कि एशिया के विकासशील देशों की विशिष्टताओं पर। कई एशियाई देशों में इस संक्रमण का प्रतिरूप यूरोप से काफी भिन्न और तीव्र रहा है। अतः, दिए गए कथनों में से केवल 1 और 3 ही सैद्धांतिक रूप से सही और तर्कसंगत सिद्ध होते हैं।

206. (A) उच्च जन्म दर उच्च मृत्यु दर का प्रत्यक्ष कारण है।
मृत्यु दर को प्रभावित करने वाले कारकों का विश्लेषण करना सार्वजनिक स्वास्थ्य हेतु अत्यंत आवश्यक है। बेहतर पोषण, स्वच्छ पेयजल और उन्नत चिकित्सा सुविधाएं सीधे तौर पर मृत्यु दर को कम करने में सहायता करती हैं। व्यापक शिक्षा भी लोगों को स्वास्थ्य के प्रति जागरूक बनाकर जीवन रक्षा में महत्वपूर्ण योगदान देती है। हालांकि, उच्च जन्म दर स्वयं मृत्यु दर का 'प्रत्यक्ष कारण' नहीं मानी जाती है। यद्यपि बहुत अधिक जन्मों से स्वास्थ्य प्रणालियों पर दबाव बढ़ सकता है और मातृ मृत्यु दर पर प्रभाव पड़ सकता है, परंतु मृत्यु दर के मुख्य निर्धारक संक्रामक रोग, पोषण और चिकित्सा सुविधाओं की गुणवत्ता होते हैं।

NODIA

207. (B) अपनी युवा जनसंख्या के स्वास्थ्य, शिक्षा और रोजगार में निवेश करना।
'जनसांख्यिकीय लाभांश' एक ऐसी स्वर्णिम संभावना है जो अनुकूल आयु संरचना से उत्पन्न होती है, परंतु यह स्वतः प्राप्त नहीं होती। इसका पूर्ण लाभ उठाने हेतु राष्ट्र को अपनी विशाल युवा जनसंख्या को कुशल और स्वस्थ मानव पूंजी में परिवर्तित करना अनिवार्य है। यदि युवाओं को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा, आधुनिक कौशल और बेहतर स्वास्थ्य सुविधाएं प्रदान की जाएं, और अर्थव्यवस्था उनके लिए पर्याप्त रोजगार के अवसर सृजित

करे, तभी वे देश की आर्थिक उत्पादकता तीव्रता से बढ़ा सकते हैं। उचित निवेश के बिना, यही विशाल युवा आबादी आर्थिक बोझ और सामाजिक अस्थिरता का कारण भी बन सकती है।

208. (C) गर्भनिरोधकों को सुलभ बनाना।
जनसंख्या नियंत्रण के प्रत्यक्ष उपायों में वे हस्तक्षेप सम्मिलित होते हैं जिनका लक्ष्य सीधे तौर पर जन्मों की संख्या को सीमित करना होता है। गर्भनिरोधक साधनों की सुलभता सुनिश्चित करना, परिवार नियोजन सेवाओं का विस्तार करना और नसबंदी को प्रोत्साहित करना ऐसे ही प्रभावी प्रत्यक्ष कदम हैं। साक्षरता बढ़ाना अथवा व्यावसायिक प्रशिक्षण देना अप्रत्यक्ष उपाय हैं जो दीर्घकाल में व्यवहार परिवर्तन लाते हैं। गर्भनिरोधकों की आसान पहुँच नागरिकों को अपने परिवार के आकार के बारे में स्वैच्छिक और जिम्मेदार निर्णय लेने में सक्षम बनाती है, जो जन्म दर को तुरंत और प्रभावी ढंग से प्रभावित करता है।

209. (D) मृत्यु दर में भारी गिरावट आई जबकि जन्म दर उच्च बनी रही।
भारत में 1951-1981 की अवधि जनसांख्यिकीय संक्रमण के उस चुनौतीपूर्ण चरण को दर्शाती है जिसे 'जनसंख्या विस्फोट' कहा जाता है। इस दौरान स्वास्थ्य सुविधाओं के विस्तार और खाद्य सुरक्षा के कारण मृत्यु दर में अभूतपूर्व कमी आई, परंतु पारंपरिक सामाजिक सोच और जागरूकता की कमी के कारण जन्म दर बहुत ऊँचे स्तर पर बनी रही। जन्मों की अधिक संख्या और मौतों की कम संख्या के बीच के इस बढ़ते हुए अंतर ने जनसंख्या को बहुत तीव्र गति से बढ़ाया। यह अवधि दर्शाती है कि कैसे केवल स्वास्थ्य में सुधार, बिना सामाजिक व्यवहार परिवर्तन के, जनसंख्या के बोझ को तीव्रता से बढ़ा सकता है।

210. (A) यह सुझाव देता है कि निर्धनता और कष्ट जनसंख्या वृद्धि के अपरिहार्य परिणाम हैं।
माल्थस के सिद्धांत को अक्सर निराशावादी माना जाता है क्योंकि उन्होंने तर्क दिया था कि मनुष्य अपनी प्रजनन क्षमता को नियंत्रित करने में विफल रहेगा, जिससे जनसंख्या सदैव उपलब्ध संसाधनों से आगे निकल जाएगी। उनके अनुसार, इस असंतुलन का अंत अपरिहार्य रूप से अकाल, गंभीर बीमारी और निर्धनता जैसी मानवीय त्रासदियों में होता है। माल्थस ने यह नहीं माना कि तकनीक अथवा सामाजिक सुधार इस संकट को सदैव हेतु टाल सकते हैं। उनके विचार में, कष्ट और संघर्ष मानवीय अस्तित्व का एक स्थायी हिस्सा हैं जब तक कि कठोर नियंत्रण न अपनाया जाए, जो एक नकारात्मक भविष्य प्रस्तुत करता है।

211. (C) कुल प्रजनन दर
मृत्यु दर अनेक बाह्य और आंतरिक कारकों द्वारा निर्धारित होती है जो जीवन की रक्षा और रोगों के नियंत्रण से संबंधित होते हैं। सामाजिक-आर्थिक स्थिति जीवन स्तर और स्वच्छता के माध्यम से मृत्यु की संभावना को प्रभावित करती है। सार्वजनिक स्वास्थ्य हस्तक्षेप, जैसे टीकाकरण, संक्रामक रोगों से होने वाली मौतों को रोकते हैं। पर्यावरणीय संकट और प्राकृतिक आपदाएं भी मृत्यु दर में अचानक वृद्धि ला सकती हैं। हालांकि, कुल प्रजनन दर स्वयं मृत्यु दर का निर्धारक नहीं है; यह प्रजननता का एक माप है। यद्यपि ये दोनों दरें मिलकर जनसंख्या परिवर्तन को प्रभावित करती हैं, परंतु प्रजनन स्तर सीधे तौर पर मृत्यु की आवृत्ति निर्धारित नहीं करता।

212. (B) जनसंख्या में बीमारी या रोग की दर।
रुग्णता दर सार्वजनिक स्वास्थ्य का एक महत्वपूर्ण संकेतक है जो यह मापता है कि किसी जनसंख्या में बीमारियों, चोटों अथवा अस्वस्थता की व्यापकता कितनी है। यह मृत्यु दर से भिन्न है क्योंकि यह जीवित व्यक्तियों के मध्य स्वास्थ्य की स्थिति और बीमारी के बोझ पर ध्यान केंद्रित करता है। उच्च रुग्णता दर किसी समाज में स्वास्थ्य सेवाओं की कमी, खराब स्वच्छता और पोषण के निम्न स्तर को दर्शाती है। रुग्णता के आंकड़ों का अध्ययन स्वास्थ्य बजट के नियोजन, संक्रामक रोगों के नियंत्रण और समाज की उत्पादकता पर बीमारी के प्रभाव को समझने हेतु अनिवार्य होता है, जो भविष्य की योजना बनाने में सहायक है।

213. (A) कथन I और कथन II दोनों सत्य हैं।
राष्ट्रीय जनसंख्या नीति 2000 ने भारत में जनसंख्या प्रबंधन के प्रति एक नई और मानवीय सोच प्रस्तुत की है। इसने पूर्व के कठोर 'नसबंदी लक्ष्यों' के स्थान पर एक 'लक्ष्य-मुक्त' और स्वैच्छिक दृष्टिकोण अपनाया है। इस नीति का मुख्य उद्देश्य स्वास्थ्य सुविधाओं को सुदृढ़ करना और नागरिकों, विशेषकर महिलाओं को उनके प्रजनन स्वास्थ्य के बारे में सूचित निर्णय लेने हेतु सशक्त बनाना है। यह मानती है कि जब लोगों को गुणवत्तापूर्ण सेवाएं और जानकारी सुलभ होगी, तो वे स्वयं ही अपनी भलाई हेतु छोटे परिवार के आदर्श को अपनाएंगे, जो अधिक लोकतांत्रिक और संधारणीय मार्ग माना जाता है।

214. (B) इससे सामाजिक समस्याएं उत्पन्न हो सकती हैं जैसे पुरुषों के लिए विवाह साथी खोजने में कठिनाई।
समाज में असंतुलित लिंगानुपात, जहाँ महिलाओं की संख्या पुरुषों की तुलना में काफी कम होती है, गंभीर सामाजिक विकृतियों को जन्म देता है। इसका सबसे तात्कालिक प्रभाव विवाह बाजार में असंतुलन के रूप में दिखता है, जिससे अनेक पुरुषों हेतु उपयुक्त जीवनसाथी खोजना अत्यंत कठिन हो जाता है। यह स्थिति अक्सर महिलाओं के प्रति हिंसा, तस्करी और अपहरण जैसे अपराधों में वृद्धि का कारण बनती है। दीर्घकाल में, यह सामाजिक सद्भाव को बिगाड़ता है और भविष्य की जनसांख्यिकीय स्थिरता हेतु भी खतरा उत्पन्न करता है। अतः लिंगानुपात को संतुलित करना केवल न्याय नहीं, बल्कि सामाजिक सुरक्षा हेतु अनिवार्य है।

215. (B) अवस्था 2
'जनसांख्यिकीय अंतराल' जन्म दर और मृत्यु दर के बीच के अंतर को संदर्भित करता है, जो जनसंख्या की प्राकृतिक वृद्धि की गति को निर्धारित करता है। जनसांख्यिकीय संक्रमण की दूसरी अवस्था में यह अंतराल अपने चरम पर होता है। ऐसा इसलिए है क्योंकि इस चरण में चिकित्सा और स्वच्छता में व्यापक सुधार के कारण मृत्यु दर में बहुत तीव्रता से गिरावट आती है, जबकि जन्म दर अपनी पुरानी उच्च दर पर ही स्थिर बनी रहती है। इन दोनों दरों के बीच का यह विशाल अंतर

NODIA

262. (C) गर्भनिरोधक
थॉमस माल्थस ने 'सकारात्मक अवरोधों' को उन अनैच्छिक और प्राकृतिक कारकों के रूप में वर्णित किया था जो मृत्यु दर में वृद्धि करके जनसंख्या को नियंत्रित करते हैं। अकाल, महामारी और युद्ध इसके प्रमुख उदाहरण हैं क्योंकि ये मानवीय नियंत्रण से पूर्णतः बाहर हैं और संसाधनों तथा जनसंख्या के मध्य संतुलन स्थापित करने की प्रकृति की एक कठोर विधि हैं। इसके विपरीत, गर्भनिरोधक एक मानवीय और स्वैच्छिक उपाय है जिसका उद्देश्य जन्म दर को वैज्ञानिक रूप से कम करना है। माल्थस कृत्रिम गर्भनिरोधकों के पूर्ण विरुद्ध थे और उन्होंने इन्हें अपने निवारक अथवा सकारात्मक अवरोधों के वर्गीकरण में सम्मिलित नहीं किया था, क्योंकि वे इन्हें अनैतिक मानते थे।

263. (C) अवस्था 3
जनसांख्यिकीय संक्रमण की तीसरी अवस्था वह महत्वपूर्ण मोड़ मानी जाती है जहाँ जनसंख्या वृद्धि की गति में स्पष्ट और निरंतर गिरावट प्रारंभ होती है। इस चरण में, बढ़ते शहरीकरण, महिला साक्षरता और सामाजिक जागरूकता के कारण जन्म दर तीव्रता से गिरने लगती है। मृत्यु दर पहले ही निम्न स्तर पर आ चुकी होती है, परंतु अब जन्म दर और मृत्यु दर के मध्य का अंतराल निरंतर कम होने लगता है। लोग आर्थिक कारणों और बेहतर जीवन स्तर की चाहत में छोटे परिवार के आदर्श को प्राथमिकता देने लगते हैं। यह अवस्था समाज के आधुनिकीकरण और जनसांख्यिकीय परिपक्वता की दिशा में एक बड़ा और सकारात्मक कदम मानी जाती है।

264. (B) भविष्य की जनसंख्या वृद्धि की उच्च संभावना।
जब किसी जनसंख्या में बच्चों और किशोरों का अनुपात बहुत अधिक होता है, तो इसके अत्यंत गहरे जनसांख्यिकीय निहितार्थ होते हैं। इसे 'जनसंख्या संवेग' कहा जाता है, जिसका अर्थ है कि आने वाले वर्षों में एक बहुत बड़ा युवा समूह अपनी प्रजनन आयु में प्रवेश करेगा। भले ही ये युवा दंपत्ति भविष्य में प्रति व्यक्ति कम बच्चे पैदा करें, परंतु प्रजननक्षम व्यक्तियों की भारी कुल संख्या के कारण जन्मों की कुल संख्या मृत्यु की संख्या से अधिक बनी रहेगी। यह स्थिति स्पष्ट रूप से दर्शाती है कि जनसंख्या नियंत्रण के सफल प्रयासों के बावजूद, जनसंख्या का वास्तविक आकार कुछ समय तक निरंतर बढ़ता रहेगा, जो भविष्य के नियोजन हेतु एक चुनौती है।

265. (C) स्वच्छता और स्वास्थ्य देखभाल में सुधार।
मृत्यु दर में गिरावट सीधे तौर पर उन सामाजिक और चिकित्सा कारकों से जुड़ी होती है जो मानव जीवन की रक्षा और रोगों की प्रभावी रोकथाम करते हैं। सार्वजनिक स्वास्थ्य सेवाओं का निरंतर विस्तार, व्यापक टीकाकरण अभियान, आधुनिक एंटीबायोटिक्स की उपलब्धता और उन्नत चिकित्सा देखभाल अकाल मृत्यु को रोकने के प्राथमिक साधन माने जाते हैं। साथ ही, सुरक्षित पेयजल की आपूर्ति और बेहतर स्वच्छता सुविधाएं संक्रामक रोगों के प्रसार को काफी कम कर देती हैं। ये सभी सुधार मिलकर समाज में औसत जीवन प्रत्याशा को बढ़ाते हैं और मृत्यु दर को निम्न स्तर पर ले जाते हैं, जो राष्ट्र के कल्याण का मुख्य आधार है।

266. (C) P-2, Q-4, R-1, S-3
जनसांख्यिकीय संकेतकों का सटीक उपयोग जनसंख्या की वास्तविक स्थिति को समझने हेतु अनिवार्य है। शिशु मृत्यु दर प्रति हजार जीवित जन्मों पर एक वर्ष से कम आयु के शिशुओं की मृत्यु को मापती है। अशोधित जन्म दर प्रति हजार व्यक्तियों पर जीवित जन्मों की आवृत्ति को दर्शाती है। लिंगानुपात समाज में पुरुषों और महिलाओं के मध्य के संतुलन (प्रति हजार पुरुष) को स्पष्ट रूप से प्रकट करता है। अंत में, निर्भरता अनुपात कार्यशील आयु की जनसंख्या की तुलना में आश्रितों (बच्चों और वृद्धों) के वास्तविक आर्थिक बोझ को स्पष्ट करता है। ये सभी मापदंड मिलकर सामाजिक और स्वास्थ्य नीतियों के निर्माण हेतु आधारभूत वैज्ञानिक डेटा प्रदान करते हैं।

267. (C) संसाधनों को पूंजी में निवेश से वर्तमान उपभोग की ओर मोड़ देती है।
जनसंख्या को विकास की बाधा मानने वाले सिद्धांतकारों का मुख्य तर्क संसाधनों के आवंटन पर आधारित है। उनके अनुसार, तीव्र जनसंख्या वृद्धि के कारण राष्ट्रीय आय का एक बहुत बड़ा हिस्सा केवल बढ़ती हुई आबादी की बुनियादी जरूरतों जैसे भोजन, आवास और प्राथमिक स्वास्थ्य सेवाओं को पूरा करने हेतु आवंटित करना पड़ता है। इससे उद्योगों के विकास, आधुनिक तकनीक के अनुसंधान और बड़े बुनियादी ढांचे में निवेश हेतु आवश्यक 'पूंजी निर्माण' हेतु अत्यंत कम धन बचता है। यह स्थिति आर्थिक विकास की गति को धीमा कर देती है और प्रति व्यक्ति संसाधनों को सीमित कर निर्धनता के चक्र को बनाए रखती है।

268. (C) कक्षा में नैदानिक परिवार नियोजन सेवाएं प्रदान करना।
जनसंख्या शिक्षा का प्राथमिक उद्देश्य शैक्षणिक और जागरूकता संबंधी है, न कि नैदानिक अथवा चिकित्सा संबंधी। इसका लक्ष्य विद्यार्थियों को जनसांख्यिकीय परिवर्तनों के सामाजिक, आर्थिक और व्यक्तिगत परिणामों की गहरी समझ विकसित करने में सहायता करना है। यह जिम्मेदार पितृत्व, पर्यावरण संरक्षण और जीवन की गुणवत्ता जैसे मानवीय मूल्यों को बढ़ावा देती है। नैदानिक परिवार नियोजन सेवाएं, जैसे गर्भनिरोधक अथवा नसबंदी प्रदान करना, स्वास्थ्य केंद्रों और अस्पतालों का मुख्य कार्य है, न कि विद्यालयों का। जनसंख्या शिक्षा लोगों को जागरूक बनाकर उन्हें स्वयं सही निर्णय लेने हेतु तैयार करती है, जिससे वे भविष्य में स्वास्थ्य सेवाओं का उचित उपयोग कर सकें।

269. (C) 1951-1981
भारत के जनसांख्यिकीय इतिहास में 1951 से 1981 की अवधि को 'जनसंख्या विस्फोट' का चरण माना जाता है। इस दौरान देश ने अपने इतिहास की अभूतपूर्व जनसंख्या वृद्धि दर का अनुभव किया था। इसका मुख्य कारण स्वतंत्रता के पश्चात स्वास्थ्य सेवाओं में व्यापक सुधार के चलते मृत्यु दर में आई तीव्र गिरावट थी, जबकि जन्म दर अत्यंत उच्च बनी रही। इस अवधि के दौरान जनसंख्या की वार्षिक वृद्धि दर 2% से ऊपर रही, जिसने देश के आर्थिक नियोजन और उपलब्ध संसाधनों पर भारी दबाव डाला। यह चरण स्पष्ट रूप से दर्शाता है कि कैसे

Downloaded from www.pdf.tube

के रूप में प्राप्त होगा। यह दृष्टिकोण मानव अधिकारों का पूर्ण सम्मान करते हुए संधारणीय विकास के लक्ष्यों को प्राप्त करने पर बल देता है, जिससे राष्ट्र की सर्वांगीण प्रगति सुनिश्चित हो सके।

224. (C) जन्म दर
जनसांख्यिकीय संक्रमण के दौरान शहरीकरण, शिक्षा और परिवार नियोजन की बढ़ती सुलभता मुख्य रूप से जन्म दर को प्रभावित करते हैं। शहरी क्षेत्रों में जीवन यापन की उच्च लागत और छोटे परिवारों के प्रति आधुनिक दृष्टिकोण लोगों को कम बच्चे पैदा करने हेतु प्रेरित करता है। व्यापक शिक्षा, विशेष रूप से महिलाओं की, उन्हें जागरूक बनाती है जिससे वे परिवार के आकार के बारे में स्वतंत्र निर्णय ले पाती हैं। साथ ही, आधुनिक गर्भनिरोधक साधनों तक आसान पहुँच इन निर्णयों को प्रभावी बनाने में सहायता करती है। इन सभी कारकों के संयुक्त प्रभाव से समाज में उच्च प्रजननता से निम्न प्रजननता की ओर स्थायी बदलाव आता है।

225. (D) अकाल और महामारियों पर बेहतर नियंत्रण के कारण मृत्यु दर में गिरावट।
वर्ष 1921 के पश्चात भारत की जनसंख्या में निरंतर वृद्धि का मुख्य कारण चिकित्सा और परिवहन के क्षेत्रों में हुए महत्वपूर्ण सुधार थे। बेहतर परिवहन के कारण अकाल प्रभावित क्षेत्रों तक अनाज तीव्रता से पहुँचाना सरल हो गया, जिससे भुखमरी से होने वाली मौतों में कमी आई। साथ ही, सार्वजनिक स्वास्थ्य उपायों और बुनियादी टीकाकरण ने प्लेग एवं हैजा जैसी जानलेवा महामारियों के प्रकोप को कम किया। मृत्यु दर में आई इस प्रारंभिक गिरावट ने, उच्च जन्म दर के साथ मिलकर, जनसंख्या को एक ऐसे पथ पर डाल दिया जहाँ से वह निरंतर बढ़ती गई, जो भारत के जनसांख्यिकीय विकास का एक निर्णायक मोड़ था।

226. (A) कथन I और कथन II दोनों सत्य हैं।
जनसंख्या शिक्षा केवल तथ्यों और सांख्यिकीय आंकड़ों का अध्ययन नहीं है, बल्कि यह एक मूल्य-आधारित शैक्षणिक प्रक्रिया मानी जाती है। इसका मुख्य उद्देश्य विद्यार्थियों और समाज में जिम्मेदारी पूर्ण नागरिकता, लैंगिक समानता और जिम्मेदार पितृत्व जैसे महत्वपूर्ण सामाजिक मूल्यों को विकसित करना है। यह शिक्षा लोगों को यह समझने में सहायता करती है कि उनके व्यक्तिगत निर्णय कैसे समाज, पर्यावरण और आने वाली पीढ़ियों के भविष्य को प्रभावित करते हैं। इस प्रकार, यह केवल जनसांख्यिकी सिखाने तक सीमित नहीं है, बल्कि यह एक बेहतर और अधिक जागरूक समाज के निर्माण का एक सशक्त और नैतिक माध्यम है।

227. (A) मानव संसाधन के रूप में जनसंख्या।
जनसंख्या को 'मानव संसाधन' मानने वाला दृष्टिकोण इस बात पर जोर देता है कि मनुष्य केवल संसाधनों के उपभोगकर्ता नहीं हैं, बल्कि वे अपनी बुद्धि, कौशल और श्रम के माध्यम से नए सामाजिक मूल्यों के निर्माता भी हैं। जब किसी राष्ट्र की जनता स्वस्थ और शिक्षित होती है, तो उनकी कार्यक्षमता और रचनात्मकता आर्थिक विकास का मुख्य आधार बन जाती है। यह परिप्रेक्ष्य जनसंख्या की गुणवत्ता को उसकी मात्रा से अधिक महत्वपूर्ण मानता है और शिक्षा एवं स्वास्थ्य में निवेश को राष्ट्र निर्माण का सबसे प्रभावी मार्ग मानता है। यह लोगों को विकास की प्रक्रिया में सक्रिय और जागरूक भागीदार के रूप में देखता है।

228. (D) जनसंख्या का वह भाग जो श्रम बल का गठन करता है।
किसी भी जनसंख्या की आयु और लिंग संरचना का सबसे प्रत्यक्ष आर्थिक प्रभाव श्रम शक्ति की उपलब्धता पर पड़ता है। यह संरचना यह निर्धारित करती है कि कुल जनसंख्या में से कितने लोग कार्यशील आयु वर्ग (15-64 वर्ष) में हैं और वास्तविक उत्पादन कार्यों में योगदान दे सकते हैं। यदि किसी समाज में युवाओं का अनुपात अधिक है, तो उसके पास एक विशाल और ऊर्जावान श्रम शक्ति होने की प्रबल संभावना होती है। यह डेटा देश की आर्थिक नीतियों, रोजगार नियोजन और उत्पादकता के स्तर को समझने हेतु अनिवार्य है। अतः जनसांख्यिकीय संरचना ही किसी राष्ट्र की आर्थिक और औद्योगिक क्षमता की नींव रखती है।

229. (A) गर्भवती महिलाओं और प्रसव के दौरान अपर्याप्त स्वास्थ्य देखभाल।
उच्च मातृ मृत्यु अनुपात किसी भी समाज हेतु एक गंभीर चिंता का विषय है क्योंकि यह सीधे तौर पर स्वास्थ्य प्रणाली की विफलताओं को उजागर करता है। यह इंगित करता है कि महिलाओं को गर्भावस्था के दौरान उचित पोषण, नियमित जांच और सुरक्षित प्रसव हेतु आवश्यक चिकित्सा सहायता सुलभ नहीं है। यह विशेष रूप से ग्रामीण और पिछड़े क्षेत्रों में आपातकालीन प्रसूति सेवाओं की भारी कमी और प्रशिक्षित स्वास्थ्य कर्मियों की अनुपस्थिति को दर्शाता है। अतः इस दर को कम करना न केवल महिलाओं के जीवन की रक्षा हेतु, बल्कि पूरे समाज के सामाजिक न्याय और स्वास्थ्य प्रणाली में सुधार हेतु अनिवार्य माना जाता है।

230. (B) गर्भनिरोधकों का उपयोग
थॉमस माल्थस ने अपने जनसंख्या सिद्धांत में 'निवारक अवरोधों' के अंतर्गत केवल उन्हीं उपायों का समर्थन किया था जिन्हें वे नैतिक और धार्मिक रूप से सही मानते थे। उनके लिए 'नैतिक संयम' का अर्थ था विवाह में विलंब करना और विवाह होने तक पूर्ण ब्रह्मचर्य का पालन करना। माल्थस कृत्रिम गर्भनिरोधकों के उपयोग के पूर्णतः विरुद्ध थे और उन्हें 'दुराचार' अथवा अप्राकृतिक श्रेणी में रखते थे। उनका मानना था कि आत्म-नियंत्रण ही जन्म दर को कम करने का एकमात्र सदाचारी मार्ग है। यह उनके रूढ़िवादी धार्मिक विचारों और उस समय की प्रचलित सामाजिक मान्यताओं का एक स्पष्ट प्रतिबिंब था।

231. (C) राष्ट्रीय सीमा को पार करना।
प्रवास को भौगोलिक सीमाओं के आधार पर दो मुख्य श्रेणियों में विभाजित किया गया है। आंतरिक प्रवास तब होता है जब लोग एक ही देश की सीमाओं के भीतर, जैसे एक राज्य से दूसरे राज्य अथवा गांव से शहर, जाकर बसते हैं। इसके विपरीत, अंतरराष्ट्रीय प्रवास में एक व्यक्ति किसी राष्ट्रीय सीमा को पार करके दूसरे देश में स्थायी निवास स्थापित करता है। अंतरराष्ट्रीय

NODIA

प्रवास हेतु वीजा और पासपोर्ट जैसे कानूनी नियमों का पालन करना अनिवार्य होता है। यद्यपि दोनों के मूल कारण आर्थिक अथवा सामाजिक हो सकते हैं, परंतु राजनीतिक सीमा का पार करना ही उनके मध्य का प्राथमिक और मौलिक अंतर है।

232. (A) 4, 2, 1, 3
जनसांख्यिकीय संक्रमण मॉडल समाज के विकास के साथ जनसंख्या के बदलते प्रतिरूप का एक निश्चित वैज्ञानिक क्रम प्रस्तुत करता है। यह प्रक्रिया उच्च जन्म और मृत्यु दर (अवस्था 1) से प्रारंभ होती है। इसके पश्चात, स्वास्थ्य सुधारों के कारण मृत्यु दर में तीव्र गिरावट (अवस्था 2) आती है, जिससे जनसंख्या विस्फोट होता है। तत्पश्चात, सामाजिक-आर्थिक परिवर्तनों के कारण जन्म दर भी निरंतर कम होने लगती है (अवस्था 3)। अंत में, दोनों दरें निम्न स्तर पर संतुलित हो जाती हैं (अवस्था 4)। यह क्रम वैश्विक स्तर पर अधिकांश देशों के ऐतिहासिक जनसांख्यिकीय विकास के पथ को वैज्ञानिक रूप से स्पष्ट करता है।

233. (D) स्थानीय शासन निकायों को सम्मिलित करने वाला एक विकेंद्रीकृत, सहभागी दृष्टिकोण।
राष्ट्रीय जनसंख्या नीति 2000 भारत के जनसंख्या प्रबंधन में एक बड़ा रणनीतिक बदलाव लाती है। यह पुराने 'ऊपर से नीचे' के आदेशात्मक मॉडल के स्थान पर एक विकेंद्रीकृत और सहभागी दृष्टिकोण पर बल देती है। नीति मानती है कि जनसंख्या स्थिरीकरण के लक्ष्य तभी प्राप्त किए जा सकते हैं जब पंचायती राज संस्थाओं और स्थानीय समुदायों को स्वास्थ्य सेवाओं के नियोजन और कार्यान्वयन में सक्रिय रूप से शामिल किया जाए। यह दृष्टिकोण स्थानीय जरूरतों के प्रति अधिक संवेदनशील है और लोगों की भागीदारी के माध्यम से परिवार कल्याण कार्यक्रमों को एक जन आंदोलन बनाने का प्रयास करता है, जो अधिक प्रभावी है।

234. (C) कथन I असत्य है, लेकिन कथन II सत्य है।
हाल के दशकों में भारत की जनसंख्या वृद्धि की दर में निरंतर गिरावट दर्ज की गई है, जो एक बहुत ही सकारात्मक जनसांख्यिकीय संकेत माना जाता है। हालांकि, यह गिरावट मृत्यु दर में वृद्धि के कारण नहीं है; इसके विपरीत, मृत्यु दर निरंतर कम हुई है और औसत जीवन प्रत्याशा बढ़ी है। वृद्धि दर में कमी का वास्तविक और वैज्ञानिक कारण जन्म दर में आई महत्वपूर्ण गिरावट है, जो बढ़ती साक्षरता, शहरीकरण और परिवार नियोजन के सफल प्रयासों का परिणाम है। अतः यह तर्क कि मौतों के कारण वृद्धि धीमी हुई है, तथ्यों के पूर्णतः विपरीत है; यह सामाजिक विकास और जागरूकता का ही परिणाम है।

235. (B) जनसंख्या और संधारणीय विकास के बीच संबंधों की समझ विकसित करना।
जनसंख्या शिक्षा का मूल उद्देश्य शिक्षार्थियों को यह समझाना है कि जनसंख्या का आकार, वृद्धि दर और वितरण कैसे उनके व्यक्तिगत जीवन और पर्यावरण को प्रत्यक्ष प्रभावित करते हैं। यह एक व्यापक दृष्टिकोण प्रदान करता है जो बताता है कि संधारणीय विकास हेतु जनसंख्या और उपलब्ध संसाधनों के मध्य संतुलन क्यों आवश्यक है। यह केवल नैदानिक जानकारी देने तक सीमित नहीं है, बल्कि यह जिम्मेदार पितृत्व, पर्यावरण संरक्षण और जीवन की गुणवत्ता जैसे मानवीय मूल्यों को बढ़ावा देता है। इस शिक्षा के माध्यम से, नागरिक जनसांख्यिकीय मुद्दों के प्रति अधिक संवेदनशील और जागरूक बनते हैं, जो राष्ट्र निर्माण हेतु अनिवार्य है।

236. (B) जनसंख्या की आयु संरचना में परिवर्तन, मुख्य रूप से जब कार्यशील आयु की जनसंख्या का भाग गैर-कार्यशील आयु के भाग से बड़ा होता है।
जनसांख्यिकीय लाभांश उस आर्थिक अवसर की स्वर्णिम खिड़की को संदर्भित करता है जो किसी देश को तब प्राप्त होता है जब उसकी कार्यशील आयु (15-64 वर्ष) की आबादी आश्रित आबादी (बच्चों और वृद्धों) से अधिक हो जाती है। यह स्थिति जन्म दर में गिरावट के कारण बच्चों की संख्या कम होने से उत्पन्न होती है। यदि इस विशाल श्रम शक्ति को उचित शिक्षा, कौशल और रोजगार के अवसर प्राप्त हों, तो यह देश की उत्पादकता और सकल घरेलू उत्पाद में अभूतपूर्व वृद्धि कर सकती है। यह लाभांश स्वतः प्राप्त नहीं होता, बल्कि इसके लिए मानव पूंजी में निरंतर और सुनियोजित निवेश की अनिवार्य आवश्यकता होती है।

237. (C) यूरोप
जनसांख्यिकीय संक्रमण सिद्धांत का उद्भव मुख्य रूप से पश्चिमी और उत्तरी यूरोप के देशों के ऐतिहासिक अनुभवों के विश्लेषण से हुआ था। 19वीं और 20वीं शताब्दी के दौरान इन देशों में औद्योगिक क्रांति और शहरीकरण के साथ मृत्यु दर और जन्म दर में जो क्रमिक गिरावट देखी गई, उसी के आधार पर विद्वानों ने इस मॉडल को विकसित किया था। हालांकि बाद में इसे वैश्विक स्तर पर लागू किया गया, परंतु इसके मूल चरण और मुख्य धारणाएं यूरोपीय देशों के विकासवादी पथ को ही दर्शाती हैं। यही कारण है कि कुछ विद्वान विकासशील देशों में इस सिद्धांत की सार्वभौमिक प्रासंगिकता और सटीकता पर समय-समय पर सवाल उठाते हैं।

238. (A) केवल 1 और 2
भारत के जनसांख्यिकीय इतिहास में वर्ष 1921 एक निर्णायक मोड़ है, जिसे 'महान विभाजक वर्ष' कहा जाता है क्योंकि इसके पश्चात जनसंख्या में पुनः कभी गिरावट नहीं हुई। 1951 से 1981 की अवधि वास्तविक 'जनसंख्या विस्फोट' का काल थी, जहाँ मृत्यु दर में भारी गिरावट के कारण जनसंख्या अत्यंत तीव्र गति से बढ़ी थी। हालांकि, यह कहना गलत है कि 1981 के पश्चात वृद्धि की दर निरंतर बढ़ रही है; वास्तव में, 1981 के पश्चात से भारत की जनसंख्या वृद्धि दर में क्रमिक और निरंतर गिरावट देखी गई है। अतः केवल पहले दो कथन भारत की जनसांख्यिकीय वास्तविकता का सही और प्रमाणित विवरण प्रदान करते हैं।

239. (D) महिलाओं के विरुद्ध अपराधों में वृद्धि।
समाज में प्रतिकूल लिंगानुपात, जहाँ महिलाओं की संख्या पुरुषों की तुलना में काफी कम होती है, गंभीर सामाजिक अस्थिरता और नैतिक संकट उत्पन्न करता है। जब पुरुषों हेतु

Click Here to Buy book on Amazon

विवाह के अवसर कम हो जाते हैं, तो इसके परिणामस्वरुप अक्सर महिलाओं के विरुद्ध हिंसा, अपहरण और तस्करी जैसे अपराधों में वृद्धि देखी जाती है। यह असंतुलन समाज में पितृसत्तात्मक दबाव को और अधिक बढ़ा सकता है और महिलाओं की सुरक्षा एवं उनके अधिकारों हेतु एक बड़ा खतरा बन जाता है। अतः लिंगानुपात को संतुलित करना केवल एक सांख्यिकीय लक्ष्य नहीं, बल्कि एक सुरक्षित, न्यायपूर्ण और आधुनिक समाज के निर्माण की एक अनिवार्य शर्त है।

240. (B) सामाजिक संरचना और गर्भनिरोधक में परिवर्तन
माल्थस के सिद्धांत की एक प्रमुख आलोचना यह है कि वह जनसंख्या परिवर्तन को केवल जैविक और संसाधनों के संघर्ष के रूप में देखते थे। उन्होंने इस महत्वपूर्ण बात की उपेक्षा की कि समाज के विकसित होने पर सामाजिक संरचना में बदलाव आते हैं और लोग स्वैच्छिक रूप से परिवार के आकार को सीमित कर सकते हैं। विशेष रूप से, उन्होंने आधुनिक गर्भनिरोधक तकनीकों के प्रभाव और महिलाओं की बढ़ती स्वायत्तता की भूमिका को पूर्णतः नहीं समझा था। माल्थस का मानना था कि केवल कष्टकारी प्राकृतिक आपदाएं ही जनसंख्या को रोक सकती हैं, जबकि आधुनिक समाज ने सामाजिक जागरुकता और विज्ञान के माध्यम से इसे सफलतापूर्वक संतुलित किया है।

241. (A) P-4, Q-2, R-1, S-3
जनसांख्यिकी के मुख्य स्तंभों को उनके विशिष्ट कार्यों के माध्यम से समझा जा सकता है। प्रजननता किसी जनसंख्या के वास्तविक पुनरुत्पादक प्रदर्शन को मापती है। मृत्यु दर जनसंख्या में होने वाली मौतों की आवृत्ति और उनके वैज्ञानिक प्रतिरूप का विश्लेषण करती है। रुग्णता बीमारियों और स्वास्थ्य समस्याओं के बोझ अथवा उनके प्रसार के स्तर को दर्शाती है। अंत में, प्रवास व्यक्तियों के एक स्थान से दूसरे स्थान पर होने वाले भौगोलिक आवागमन को संदर्भित करता है जो जनसंख्या के क्षेत्रीय वितरण को मौलिक रूप से बदलता है। ये चारों घटक मिलकर किसी भी राष्ट्र की जनसांख्यिकीय तस्वीर को आकार देते हैं और प्रभावी नीति निर्माण का आधार बनते हैं।

242. (A) गर्भनिरोधक
'विकास ही सर्वोत्तम गर्भनिरोधक है' यह विचार भारत की जनसंख्या नीति का एक आधारभूत सामाजिक दर्शन रहा है। इसका अर्थ है कि जब किसी समाज का समग्र सामाजिक-आर्थिक विकास होता है, तो प्रजनन दर में गिरावट एक स्वाभाविक परिणाम के रूप में आती है। शिक्षा, बेहतर स्वास्थ्य सेवाएं, निर्धनता में कमी और महिलाओं का सशक्तिकरण लोगों के दृष्टिकोण को सकारात्मक रूप से बदल देते हैं, जिससे वे अपनी स्वेच्छा से छोटे परिवार के आदर्श को अपनाते हैं। यह दृष्टिकोण मानता है कि केवल दमनकारी उपायों के स्थान पर, लोगों के जीवन स्तर में सुधार करना ही जनसंख्या को संधारणीय रूप से स्थिर करने का सबसे प्रभावी और मानवीय मार्ग है।

243. (C) हर अर्थात जनसंख्या को बढ़ाकर विकास के लाभों को कम।
जनसंख्या को विकास की बाधा मानने वाला तर्क इस बात पर जोर देता है कि तीव्र वृद्धि आर्थिक प्रगति के फलों को निष्प्रभावी कर देती है। जब राष्ट्रीय आय बढ़ती है, परंतु जनसंख्या उससे भी तीव्रता से बढ़ती है, तो प्रति व्यक्ति आय और संसाधनों की उपलब्धता वास्तव में कम हो जाती है। अधिकांश संसाधन केवल बढ़ती हुई आबादी की बुनियादी जरूरतों को पूरा करने में ही व्यय हो जाते हैं, जिससे बड़े औद्योगिक निवेश और बुनियादी ढांचे हेतु पर्याप्त पूंजी नहीं बच पाती। इस प्रकार, बढ़ती भीड़भाड़ और संसाधनों की कमी विकास के लाभों को आम जनता तक पहुँचने से रोक देती है, जिससे निर्धनता का चक्र बना रहता है।

NODIA

244. (D) अवस्था 2 या प्रारंभिक अवस्था 3
वर्तमान में अधिकांश विकासशील देश जनसांख्यिकीय संक्रमण की दूसरी अवस्था के अंत अथवा तीसरी अवस्था के आरंभ में हैं। इन देशों ने स्वास्थ्य सेवाओं में सुधार के माध्यम से अपनी मृत्यु दर को काफी कम कर लिया है, परंतु उनकी जन्म दर अभी भी अपेक्षाकृत उच्च बनी हुई है अथवा अत्यंत धीरे-धीरे गिरना प्रारंभ हुई है। इस स्थिति के कारण वे तीव्र जनसंख्या वृद्धि अथवा 'जनसंख्या विस्फोट' के दौर से गुजर रहे हैं। यह चरण संसाधनों के प्रबंधन, शिक्षा और रोजगार सृजन हेतु कड़ी चुनौतियां पेश करता है, और यहाँ से अगली स्थिर अवस्था की ओर बढ़ना ही उनके भविष्य के विकास का मुख्य लक्ष्य निर्धारित किया गया है।

245. (A) कथन I और कथन II दोनों सत्य हैं।
शिशु मृत्यु दर किसी भी समाज के स्वास्थ्य और विकास का एक अत्यंत विश्वसनीय और संवेदनशील मापदंड माना जाता है। यह दर केवल बच्चों की मृत्यु को नहीं दर्शाती, बल्कि यह समाज में माताओं के स्वास्थ्य, पोषण के स्तर और स्वच्छता सुविधाओं की व्यापक स्थिति का सजीव प्रतिबिंब है। उच्च शिशु मृत्यु दर स्पष्ट रूप से यह संकेत देती है कि प्राथमिक स्वास्थ्य सेवाएं और टीकाकरण कार्यक्रम अपर्याप्त अथवा अप्रभावी हैं। अतः, इस दर को कम करना न केवल जीवन बचाने का पवित्र कार्य है, बल्कि यह किसी भी राष्ट्र हेतु सामाजिक न्याय और बेहतर सार्वजनिक स्वास्थ्य प्रबंधन सुनिश्चित करने की दिशा में एक बुनियादी कदम है।

246. (B) सकारात्मक अवरोध मृत्यु दर बढ़ाते हैं, जबकि निवारक अवरोध जन्म दर घटाते हैं।
माल्थस ने जनसंख्या और संसाधनों के मध्य संतुलन बनाए रखने के दो विपरीत तरीकों का सूक्ष्म वर्णन किया है। निवारक अवरोध मानवीय विवेक पर आधारित हैं, जहाँ व्यक्ति विवाह में विलंब अथवा नैतिक संयम के माध्यम से जन्मों की संख्या को कम करने का प्रयास करता है। इसके विपरीत, सकारात्मक अवरोध वे बाह्य और अक्सर क्रूर प्राकृतिक कारक हैं जो मृत्यु दर को बढ़ाकर जनसंख्या को कम करते हैं, जैसे अकाल, महामारी और युद्ध। माल्थस का दृढ़ विश्वास था कि यदि समाज स्वैच्छिक रूप से जन्म दर नहीं घटाता, तो प्रकृति अनिवार्य

ही वह मुख्य कारण है जिसके कारण विकासशील देशों में जनसंख्या विस्फोट की स्थिति उत्पन्न होती है, जो संसाधनों पर दबाव बढ़ाती है।

216. (B) मानव संसाधन के रूप में जनसंख्या।
जनसंख्या को 'मानव संसाधन' के रूप में देखने वाला परिप्रेक्ष्य इस विचार पर आधारित है कि मनुष्य केवल संसाधनों के उपभोगकर्ता नहीं हैं, बल्कि वे अपनी बुद्धि और कौशल के माध्यम से उत्पादन और नवाचार के मुख्य स्रोत भी हैं। एक बड़ी जनसंख्या वस्तुओं और सेवाओं हेतु एक विशाल बाजार बनाती है, जो आर्थिक गतिविधियों को गति प्रदान करती है। साथ ही, अधिक लोग होने से नए विचारों और तकनीकी समाधानों की संभावना बढ़ती है। बशर्ते कि लोगों को उचित शिक्षा और प्रशिक्षण मिले, यह दृष्टिकोण जनसंख्या को देश की सबसे बड़ी आर्थिक परिसंपत्ति और विकास के एक शक्तिशाली इंजन के रूप में प्रस्तुत करता है।

217. (A) P-2, Q-4, R-1, S-3
भारत के जनसांख्यिकीय इतिहास की प्रमुख घटनाओं का सही मिलान उनके ऐतिहासिक महत्व को स्पष्ट करता है। वर्ष 1921 को 'महान विभाजक वर्ष' कहा जाता है। भारत ने 1952 में अपना पहला राष्ट्रीय परिवार नियोजन कार्यक्रम प्रारंभ किया। पहली औपचारिक राष्ट्रीय जनसंख्या नीति की घोषणा 1976 में की गई थी, जिसके पश्चात 2000 में दूसरी और अधिक व्यापक राष्ट्रीय जनसंख्या नीति प्रस्तुत की गई। ये वर्ष भारत के जनसंख्या प्रबंधन के प्रति बदलते दृष्टिकोण और समय के साथ विकसित होती रणनीतियों को दर्शाते हैं, जो संधारणीय विकास के लक्ष्यों के प्रति समर्पित हैं और भविष्य का मार्ग प्रशस्त करते हैं।

218. (A) स्वास्थ्य और शिक्षा जैसी मौजूदा सामाजिक सेवाओं पर बढ़ता दबाव।
एक निर्धन राष्ट्र में तीव्र जनसंख्या वृद्धि का सबसे तात्कालिक नकारात्मक प्रभाव सार्वजनिक आधारभूत संरचना पर पड़ता है। बढ़ती हुई आबादी की जरूरतों को पूरा करने हेतु विद्यालयों, अस्पतालों, आवास और परिवहन की मांग तीव्रता से बढ़ती है। संसाधनों की भारी कमी के कारण ये सेवाएं अक्सर अपर्याप्त हो जाती हैं, जिससे उनकी गुणवत्ता में गिरावट आती है और समाज के गरीब वर्ग को बुनियादी सुविधाओं हेतु निरंतर संघर्ष करना पड़ता है। यह स्थिति विकास के लाभों को सीमित कर देती है और शासन को दीर्घकालिक निवेश के स्थान पर केवल तात्कालिक जरूरतों की पूर्ति में उलझा देती है।

219. (A) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
किसी भी जनसंख्या की वर्तमान आयु संरचना उसकी भविष्य की वृद्धि दर को निर्धारित करने में अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। जिस समाज में बच्चों और युवाओं का अनुपात बहुत अधिक होता है, वहां जनसंख्या वृद्धि हेतु एक अंतर्निहित 'संवेग' सदैव मौजूद रहता है। ऐसा इसलिए है क्योंकि यह विशाल युवा समूह आने वाले वर्षों में प्रजनन आयु में प्रवेश करेगा, जिससे जन्मों की कुल संख्या उच्च बनी रहेगी, भले ही वर्तमान प्रजनन दर कम हो जाए। अतः, केवल वर्तमान जन्म दर को देखना पर्याप्त नहीं है; भविष्य के प्रभावी नियोजन हेतु आयु संरचना का सूक्ष्म विश्लेषण करना अनिवार्य माना जाता है।

220. (C) माताओं की पोषण स्थिति और बाल स्वास्थ्य देखभाल सेवाओं की गुणवत्ता।
शिशु मृत्यु दर समाज के स्वास्थ्य और कल्याण का एक अत्यंत संवेदनशील और विश्वसनीय मापदंड है। यह मुख्य रूप से उन परिस्थितियों को दर्शाता है जिनमें बच्चे जन्म लेते हैं और विकसित होते हैं। उच्च दर अक्सर माताओं में कुपोषण, प्रसव पूर्व देखभाल की कमी और शिशुओं हेतु अपर्याप्त टीकाकरण एवं स्वास्थ्य सेवाओं का स्पष्ट संकेत देती है। यह दर यह भी बताती है कि समाज में स्वच्छ पेयजल और स्वच्छता की उपलब्धता कैसी है। इसलिए, शिशु मृत्यु दर को कम करना न केवल एक स्वास्थ्य लक्ष्य है, बल्कि यह सामाजिक विकास और मानवीय न्याय का भी एक अनिवार्य मानक माना जाता है।

221. (A) माल्थस ने संकट के आवर्ती चक्रों का प्रस्ताव दिया, जबकि संक्रमण सिद्धांत एक नए संतुलन की ओर बदलाव का वर्णन करता है।
माल्थसवादी सिद्धांत एक निराशावादी दृष्टिकोण है जो मानता है कि जनसंख्या वृद्धि सदैव अकाल और महामारी जैसे संकटों की ओर ले जाएगी, जिससे जनसंख्या को बार-बार नियंत्रित किया जाएगा। इसके विपरीत, जनसांख्यिकीय संक्रमण सिद्धांत एक अधिक क्रमिक और विकासवादी प्रक्रिया का वर्णन करता है। यह बताता है कि कैसे आर्थिक और सामाजिक विकास के माध्यम से समाज उच्च मृत्यु और जन्म दर के अस्थिर संतुलन से निम्न मृत्यु और जन्म दर के एक नए, आधुनिक और स्थिर संतुलन की ओर बढ़ता है। संक्रमण सिद्धांत विकास की शक्ति और मानवीय अनुकूलन पर अधिक विश्वास करता है, जो अधिक सकारात्मक दृष्टिकोण है।

222. (A) साक्षरता और महिला सशक्तिकरण का उच्च स्तर।
समाज में उच्च जन्म दर के पीछे अनेक गहरे सामाजिक और जनसांख्यिकीय कारण निहित होते हैं। विवाह की सार्वभौमिकता, कम आयु में विवाह और बड़े परिवार के पक्ष में धार्मिक एवं सांस्कृतिक विश्वास जन्मों की संख्या को तीव्रता से बढ़ाते हैं। साथ ही, उच्च शिशु मृत्यु दर भी लोगों को अधिक बच्चे पैदा करने हेतु निरंतर प्रेरित करती है। हालांकि, साक्षरता और महिला सशक्तिकरण का उच्च स्तर जन्म दर को बढ़ाने के स्थान पर उसे कम करने का कार्य करता है। शिक्षित और सशक्त महिलाएं अपने परिवार के आकार के बारे में जागरुक निर्णय लेती हैं, जिससे प्रजनन दर में स्वाभाविक गिरावट आती है।

223. (D) जीवन की गुणवत्ता में सुधार करना और जनसंख्या स्थिरीकरण प्राप्त करना।
भारत की राष्ट्रीय जनसंख्या नीति 2000 का मुख्य दर्शन यह है कि जनसंख्या नियंत्रण अपने आप में अंतिम लक्ष्य नहीं है। इसका वास्तविक उद्देश्य नागरिकों के स्वास्थ्य, शिक्षा और कल्याण में सुधार करना है ताकि उनके जीवन की गुणवत्ता में वृद्धि हो सके। नीति मानती है कि जब लोगों को बेहतर प्रजनन स्वास्थ्य सेवाएं और विकास के पर्याप्त अवसर प्राप्त होंगे, तो जनसंख्या स्थिरीकरण एक स्वैच्छिक और स्वाभाविक परिणाम

Downloaded from www.pdf.tube

उन्हें बेहतर स्वास्थ्य देखभाल और परिवार नियोजन के साधनों के प्रति सचेत बनाती है, जिससे जन्मों की संख्या में स्वाभाविक गिरावट आती है। अतः, महिला सशक्तिकरण केवल एक सामाजिक न्याय का मुद्दा नहीं है, बल्कि यह जनसंख्या स्थिरीकरण और समाज के समग्र कल्याण को प्राप्त करने का सबसे प्रभावी, मानवीय और संधारणीय उपकरण माना जाता है।

255. (A) जन्म, मृत्यु और प्रवास।
जनसांख्यिकी का मूल विज्ञान उन तीन मुख्य प्रक्रियाओं के विश्लेषण पर आधारित है जो किसी भी स्थान की जनसंख्या के आकार और संरचना को परिवर्तित करने हेतु उत्तरदायी होती हैं। जन्म (प्रजननता) जनसंख्या में नए सदस्यों को जोड़ता है, जबकि मृत्यु (मृत्यु दर) जनसंख्या के आकार को कम करती है। प्रवास (व्यक्तियों का भौगोलिक आवागमन) जनसंख्या के क्षेत्रीय वितरण को बदलता है और किसी विशिष्ट क्षेत्र की आबादी को बढ़ा अथवा घटा सकता है। इन तीनों घटकों के मध्य का जटिल गतिज अंतर्संबंध ही किसी राष्ट्र की वर्तमान जनसांख्यिकीय स्थिति को निर्धारित करता है और भविष्य के आर्थिक एवं सामाजिक नियोजन हेतु वैज्ञानिक आधार प्रदान करता है।

256. (B) पुत्रों की वरीयता।
भारत में उच्च जनसंख्या वृद्धि के पीछे गहरे जड़ें जमा चुके सामाजिक-सांस्कृतिक कारक रहे हैं, जिनमें 'पुत्र वरीयता' सबसे प्रमुख मानी जाती है। पितृसत्तात्मक समाज में वंश चलाने, बुढ़ापे की सुरक्षा और धार्मिक अनुष्ठानों हेतु पुत्र को अनिवार्य मानने की पारंपरिक सोच दंपत्तियों को तब तक बच्चे पैदा करने हेतु प्रेरित करती है जब तक कि वांछित संख्या में पुत्र प्राप्त न हो जाएं। यह व्यवहार न केवल परिवार के आकार को अनावश्यक रूप से बढ़ाता है बल्कि लिंग-चयनात्मक प्रथाओं को भी बढ़ावा देता है। इसके विपरीत, महिला साक्षरता और शहरीकरण जैसे आधुनिक कारक जन्म दर को कम करने में सहायता करते हैं, जो इस समस्या का स्थायी समाधान हैं।

257. (D) 1, 2, और 3
भारत ने अपनी बढ़ती आबादी को प्रबंधित करने हेतु समय-समय पर विभिन्न बहुआयामी रणनीतियां अपनाई हैं। छोटे परिवारों हेतु आर्थिक एवं सामाजिक प्रोत्साहन प्रदान करना लोगों को प्रेरित करता है। विवाह की कानूनी आयु बढ़ाना सीधे तौर पर प्रजनन अवधि को कम करने का एक प्रभावी कानूनी और जनसांख्यिकीय कदम है। साथ ही, मीडिया के माध्यम से निरंतर जागरूकता फैलाना लोगों के दृष्टिकोण और व्यवहार में स्वैच्छिक परिवर्तन लाने हेतु अनिवार्य है। ये सभी उपाय मिलकर एक एकीकृत दृष्टिकोण निर्मित करते हैं जिसका लक्ष्य जन-सहयोग और कानून के माध्यम से जनसंख्या को संधारणीय रूप से स्थिर करना और जीवन की गुणवत्ता बढ़ाना है।

258. (A) एक संपत्ति, यदि जनसंख्या स्वस्थ, शिक्षित और कुशल है।
'मानव संसाधन' का परिप्रेक्ष्य जनसंख्या को केवल एक बोझ के रूप में देखने के स्थान पर उसे विकास के मुख्य कारक के रूप में प्रस्तुत करता है। यह दृष्टिकोण मानता है कि एक राष्ट्र की असली शक्ति उसकी जनता की गुणवत्ता में निहित होती है। यदि लोगों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा, आधुनिक कौशल और बेहतर स्वास्थ्य सुविधाएं प्रदान की जाएं, तो वे अपनी रचनात्मकता और उत्पादकता से राष्ट्र के आर्थिक और सामाजिक विकास में अभूतपूर्व योगदान दे सकते हैं। इस अर्थ में, एक बड़ी जनसंख्या केवल तभी 'परिसंपत्ति' बनती है जब उसे मानव पूंजी के रूप में वैज्ञानिक ढंग से विकसित किया जाए, अन्यथा वह एक दीर्घकालिक आर्थिक दायित्व बनी रह सकती है।

259. (B) कुछ अवधियों के दौरान दमनकारी विधियों पर इसका अत्यधिक जोर।
भारत के जनसंख्या प्रबंधन के इतिहास में एक काला अध्याय 1970 के दशक के मध्य का है, जब सरकारी लक्ष्यों को प्राप्त करने हेतु दमनकारी और बलपूर्वक तरीकों, विशेषकर अनिवार्य नसबंदी, का सहारा लिया गया था। इस दृष्टिकोण ने व्यक्तिगत गरिमा और सूचित सहमति के बुनियादी लोकतांत्रिक मूल्यों का गंभीर उल्लंघन किया, जिससे जनता में गहरा रोष और परिवार नियोजन कार्यक्रमों के प्रति भारी अविश्वास उत्पन्न हुआ। इस अनुभव ने यह स्पष्ट कर दिया कि जनसंख्या स्थिरीकरण जैसे सामाजिक बदलाव केवल जन-भागीदारी और स्वैच्छिक सहयोग से ही सफल हो सकते हैं, न कि दमन अथवा सरकारी दबाव के माध्यम से, जो सामाजिक स्वीकार्यता हेतु आवश्यक है।

260. (C) कथन I सत्य है, लेकिन कथन II असत्य है।
जनसांख्यिकीय संक्रमण सिद्धांत इस बुनियादी धारणा पर आधारित है कि सभी समाज आधुनिकीकरण और आर्थिक विकास के समान जनसांख्यिकीय चरणों से गुजरते हैं। हालांकि, यह सिद्धांत उन स्थितियों की व्याख्या करने में अक्सर विफल रहता है जहाँ बिना किसी महत्वपूर्ण आर्थिक विकास के भी, केवल सुदृढ़ स्वास्थ्य नीतियों और प्रभावी परिवार नियोजन कार्यक्रमों के माध्यम से प्रजनन दर में तीव्र गिरावट आई है। केरल और तमिलनाडु जैसे भारतीय राज्यों के उदाहरण यह सिद्ध करते हैं कि सामाजिक विकास और नीतिगत हस्तक्षेप आर्थिक समृद्धि से पूर्व भी जनसांख्यिकीय बदलाव ला सकते हैं। अतः, यह सिद्धांत एक सामान्य मार्ग तो दिखाता है, परंतु यह एकमात्र अनिवार्य नियम नहीं है।

261. (C) रुग्णता
रुग्णता दर सार्वजनिक स्वास्थ्य का एक अत्यंत महत्वपूर्ण संकेतक है जो यह मापता है कि किसी विशिष्ट जनसंख्या समूह में बीमारियों, चोटों अथवा अस्वस्थता की व्यापकता कितनी है। यह केवल मृत्यु के स्थान पर जीवन की गुणवत्ता और समाज पर बीमारी के वास्तविक बोझ पर ध्यान केंद्रित करता है। रुग्णता के आंकड़े स्वास्थ्य प्रणालियों के नियोजन, संसाधनों के उचित आवंटन और संक्रामक एवं गैर-संक्रामक रोगों की रोकथाम की प्रभावी रणनीतियां बनाने हेतु अनिवार्य होते हैं। उच्च रुग्णता दर न केवल मानवीय कष्ट बढ़ाती है, बल्कि यह आर्थिक उत्पादकता की हानि और स्वास्थ्य सेवाओं पर बढ़ते भारी वित्तीय बोझ का भी स्पष्ट संकेत प्रदान करती है।

NODIA

रूप से मृत्यु दर बढ़ाकर अपना नियंत्रण स्थापित करती है, जो मानवीय कष्टों का कारण बनता है।

247. (D) सार्वजनिक स्वास्थ्य आधारभूत संरचना का स्तर।
किसी भी जनसंख्या की मृत्यु दर को निर्धारित करने में सार्वजनिक स्वास्थ्य ढांचे की गुणवत्ता सबसे महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। अस्पतालों की उपलब्धता, कुशल चिकित्सक, टीकाकरण अभियान और संक्रामक रोगों के नियंत्रण की वैज्ञानिक व्यवस्था सीधे तौर पर जीवन रक्षा को सुनिश्चित करती है। बेहतर स्वच्छता और स्वच्छ पेयजल की नियमित आपूर्ति भी बीमारियों के प्रसार को रोककर मृत्यु दर को कम करती है। यद्यपि शिक्षा और साक्षरता भी सहायक हैं, परंतु एक मजबूत चिकित्सा प्रणाली ही वह प्राथमिक सुरक्षा कवच है जो अकाल मृत्यु को रोकता है और समाज में औसत जीवन प्रत्याशा को बढ़ाने का ठोस आधार तैयार करता है।

248. (A) जनसंख्या के मुद्दों और उनके परिणामों के प्रति एक गंभीर जागरूकता।
जनसंख्या शिक्षा का मूल लक्ष्य विद्यार्थियों और भावी नागरिकों के भीतर एक ऐसी चेतना विकसित करना है जिससे वे जनसांख्यिकीय परिवर्तनों के सामाजिक, आर्थिक और व्यक्तिगत प्रभावों को गहराई से समझ सकें। यह केवल नैदानिक जानकारी देने तक सीमित नहीं है, बल्कि इसका मुख्य उद्देश्य लोगों को यह समझाना है कि जनसंख्या वृद्धि कैसे पर्यावरण, प्राकृतिक संसाधनों और जीवन की गुणवत्ता को प्रभावित करती है। इस शिक्षा के माध्यम से, व्यक्ति जिम्मेदार पितृत्व और संधारणीय जीवन शैली के प्रति एक तर्कसंगत और विवेकपूर्ण दृष्टिकोण विकसित करते हैं, जो समाज के दीर्घकालिक जनसांख्यिकीय संतुलन और कल्याण हेतु अनिवार्य रूप से आवश्यक है।

249. (C) बेरोजगारी और अल्प-रोजगार की वृद्धि।
तीव्र जनसंख्या वृद्धि का एक प्रमुख और गंभीर परिणाम श्रम बाजार पर प्रत्यक्ष रूप से पड़ता है। जब प्रत्येक वर्ष काम की तलाश में आने वाले युवाओं की संख्या उपलब्ध रोजगार के अवसरों से कहीं अधिक हो जाती है, तो बेरोजगारी और अल्प-रोजगार की समस्या विकराल रूप धारण कर लेती है। यह न केवल आर्थिक उत्पादकता को कम करता है, बल्कि समाज में हताशा और अशांति का कारण भी बन सकता है। इसके अतिरिक्त, बढ़ती जनसंख्या के कारण कृषि भूमि पर दबाव बढ़ता है और सामाजिक सेवाओं की प्रति व्यक्ति उपलब्धता निरंतर कम हो जाती है। अतः, आर्थिक स्थिरता बनाए रखने हेतु जनसंख्या और रोजगार के अवसरों के मध्य संतुलन होना अनिवार्य है।

250. (D) दो से अधिक बच्चों वाले दंपतियों के लिए अनिवार्य नसबंदी।
राष्ट्रीय जनसंख्या नीति 2000 की सबसे बड़ी विशेषता इसकी स्वैच्छिक और जन-केंद्रित प्रकृति मानी जाती है। यह नीति किसी भी प्रकार के अनिवार्य अथवा दमनकारी उपायों, जैसे कि अनिवार्य नसबंदी, का कड़ा विरोध करती है। इसके स्थान पर, यह सूचना, शिक्षा और स्वैच्छिक परिवार नियोजन सेवाओं के विस्तार के माध्यम से लक्ष्यों को प्राप्त करने पर बल देती है। नीति का मुख्य ध्यान मातृ एवं शिशु स्वास्थ्य में सुधार और गर्भनिरोधक की अपूर्ण आवश्यकताओं को पूरा करने पर है। यह मानती है कि सशक्त और जागरूक नागरिक ही स्वयं अपनी भलाई हेतु छोटे परिवार के आदर्श को अपनाएंगे, जो अधिक लोकतांत्रिक और मानवीय मार्ग है।

251. (C) निम्न जन्म दर वाली एक घटती जनसंख्या।
एक जनसंख्या पिरामिड जो मध्य की तुलना में अपने आधार पर संकरा होता है, उस आधुनिक समाज की पहचान है जहाँ जन्म दर में निरंतर गिरावट आ रही है। इसका अर्थ है कि जनसंख्या में बच्चों और युवाओं का अनुपात कम हो रहा है, जबकि मध्यम और वृद्ध आयु वर्ग के लोगों की संख्या तुलनात्मक रूप से अधिक है। ऐसी संरचना भविष्य में जनसंख्या में संभावित गिरावट और समाज के वृद्ध होने की ओर स्पष्ट संकेत करती है। यह स्थिति अक्सर विकसित देशों में देखी जाती है जहाँ प्रजनन दर प्रतिस्थापन स्तर से नीचे चली गई है, जो श्रम शक्ति की कमी और सामाजिक सुरक्षा जैसी नई आर्थिक चुनौतियां प्रस्तुत करती है।

252. (B) गुणोत्तर श्रेणी
थॉमस माल्थस ने अपने प्रसिद्ध जनसंख्या सिद्धांत में यह प्रतिपादित किया था कि मानवीय प्रजनन की शक्ति अत्यंत तीव्र होती है। उनके अनुसार, यदि जनसंख्या पर कोई बाह्य नियंत्रण न लगाया जाए, तो वह गुणोत्तर श्रेणी जैसे 1, 2, 4, 8, 16 के प्रतिरूप में बढ़ती है। इसके विपरीत, खाद्य संसाधनों के बढ़ने की गति केवल समांतर श्रेणी जैसे 1, 2, 3, 4 में ही संभव है। इस गणितीय अवधारणा का उपयोग उन्होंने यह समझाने हेतु किया था कि क्यों जनसंख्या सदैव उपलब्ध खाद्य आपूर्ति से आगे निकलने की प्रवृत्ति रखती है, जिससे समाज में निर्धनता और अकाल का खतरा सदैव बना रहता है, जब तक कि उसे रोका न जाए।

253. (C) निरंतर वृद्धि
वर्ष 1921 के 'महान विभाजक वर्ष' के पश्चात से भारत की जनसंख्या के प्रतिरूप में एक बड़ा और स्थायी बदलाव आया। 1921 से 1951 के मध्य, भारत ने ऋणात्मक अथवा गतिहीन वृद्धि के स्थान पर 'निरंतर वृद्धि' के चरण में प्रवेश किया। इस दौरान अकाल और कुछ गंभीर बीमारियों पर बेहतर नियंत्रण के कारण मृत्यु दर में गिरावट आनी प्रारंभ हुई, जबकि जन्म दर उच्च बनी रही। यद्यपि यह वृद्धि 1951 के पश्चात के 'विस्फोट' जितनी तीव्र नहीं थी, परंतु इसने जनसंख्या को एक ऐसे पथ पर डाल दिया जहाँ वह प्रत्येक दशक में सकारात्मक रूप से बढ़ती गई। यह चरण भारत के जनसांख्यिकीय संक्रमण की दूसरी अवस्था के प्रारंभ को दर्शाता है।

254. (A) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
प्रजननता को प्रभावित करने वाले कारकों में महिलाओं की सामाजिक स्थिति और शिक्षा सबसे महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। जब महिलाएं शिक्षित होती हैं और उनके पास आर्थिक स्वायत्तता होती है, तो वे विवाह की आयु बढ़ाती हैं और अपने परिवार के आकार के बारे में जागरूक निर्णय लेती हैं। शिक्षा

Click Here to Buy book on Amazon

केवल स्वास्थ्य सुधार, बिना सामाजिक व्यवहार परिवर्तन के, जनसंख्या के बोझ को बढ़ा सकते हैं।

270. (A) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
माल्थस के जनसंख्या सिद्धांत की कड़ी आलोचना इसलिए की जाती है क्योंकि वह मानव इतिहास की सबसे बड़ी परिवर्तनकारी शक्ति 'तकनीक' की भूमिका को समझने में विफल रहे थे। उन्होंने सोचा था कि खाद्य उत्पादन भूमि की भौतिक सीमा के कारण नहीं बढ़ पाएगा, परंतु हरित क्रांति और आधुनिक कृषि विज्ञान ने उनकी इस धारणा को गलत सिद्ध कर दिया। साथ ही, माल्थस ने यह नहीं माना कि मनुष्य आधुनिक गर्भनिरोधकों के माध्यम से अपनी प्रजनन क्षमता को सफलतापूर्वक नियंत्रित कर सकता है। उनकी यह संकुचित और निराशावादी सोच ही उनके सिद्धांत को आधुनिक संदर्भ में अप्रासंगिक बनाने का मुख्य कारण बनी है।

271. (B) 2000 की राष्ट्रीय जनसंख्या नीति परिवार कल्याण को स्वास्थ्य और शिक्षा के व्यापक दृष्टिकोण के साथ एकीकृत करती है।
राष्ट्रीय जनसंख्या नीति 2000 भारत के जनसांख्यिकीय नियोजन में एक अत्यंत महत्वपूर्ण और आधुनिक दस्तावेज़ है। यह केवल जन्म नियंत्रण पर केंद्रित रहने के स्थान पर जनसंख्या स्थिरीकरण को समग्र सामाजिक और आर्थिक विकास का एक अभिन्न अंग मानती है। नीति का मुख्य बल महिलाओं की शिक्षा, स्वास्थ्य सेवाओं के विस्तार, बाल उत्तरजीविता सुनिश्चित करने और प्रजनन स्वास्थ्य की अपूर्ण आवश्यकताओं को पूरा करने पर है। यह मानती है कि जब लोगों को बेहतर जीवन और गुणवत्तापूर्ण स्वास्थ्य सेवाएं सुलभ होंगी, तो वे स्वयं ही छोटे परिवार के आदर्श को अपनाएंगे। यह एकीकृत दृष्टिकोण दमनकारी उपायों के स्थान पर सशक्तिकरण पर बल देता है।

272. (B) गर्भनिरोधक उपयोग का प्रचलन और प्रभावशीलता।
प्रजननता को प्रभावित करने वाले कारकों में गर्भनिरोधक का उपयोग सबसे प्रत्यक्ष और प्रभावी निर्धारक माना जाता है। यह दंपत्तियों को अपने परिवार के आकार और बच्चों के मध्य उचित अंतर के बारे में सचेत और जिम्मेदार निर्णय लेने में सक्षम बनाता है। जब समाज में प्रभावी गर्भनिरोधक साधनों तक आसान पहुँच होती है और लोग उनके उपयोग के प्रति जागरूक होते हैं, तो जन्म दर में स्वाभाविक और स्वैच्छिक गिरावट आती है। यद्यपि शिक्षा और आय भी महत्वपूर्ण हैं, परंतु वे अंततः गर्भनिरोधक के उपयोग और विवाह की आयु जैसे प्रत्यक्ष कारकों के माध्यम से ही प्रजननता के वास्तविक स्तर को गहराई से प्रभावित करते हैं।

273. (D) मृत्यु दर में गिरावट।
जनसांख्यिकीय संक्रमण की प्रक्रिया ऐतिहासिक रूप से मृत्यु दर में आने वाली प्रारंभिक और तीव्र गिरावट से प्रारंभ होती है। यह बदलाव बेहतर चिकित्सा सुविधाओं, संक्रामक रोगों पर प्रभावी नियंत्रण, सार्वजनिक स्वच्छता में सुधार और बढ़ती खाद्य सुरक्षा का परिणाम होता है। चूंकि इस चरण में जन्म दर अपनी पुरानी उच्च और स्थिर दर पर ही बनी रहती है, इसलिए मृत्यु दर में आई यह कमी जनसंख्या की प्राकृतिक वृद्धि दर को बहुत अधिक बढ़ा देती है। यही वह प्रारंभिक चरण है जो किसी भी समाज को पारंपरिक स्थिरता से निकालकर आधुनिक विकास और तीव्र जनसंख्या वृद्धि के संक्रमण पथ पर सफलतापूर्वक अग्रसर करता है।

274. (B) मौजूदा आधारभूत संरचना पर बढ़ा दबाव।
तीव्र जनसंख्या वृद्धि का सबसे प्रत्यक्ष और तात्कालिक प्रभाव देश की मौजूदा आधारभूत संरचना और उपलब्ध संसाधनों पर पड़ता है। बढ़ती हुई आबादी हेतु भोजन, आवास, स्वच्छ जल, शिक्षा और स्वास्थ्य देखभाल जैसी बुनियादी सेवाओं की मांग तीव्रता से बढ़ती है। जब यह मांग उपलब्ध आपूर्ति से अधिक हो जाती है, तो सेवाओं की गुणवत्ता गिर जाती है और प्राकृतिक संसाधनों का अत्यधिक दोहन प्रारंभ हो जाता है। यह स्थिति शहरों में भीड़भाड़, यातायात की गंभीर समस्या और पर्यावरण के अवनयन का मुख्य कारण बनती है। अतः, जनसंख्या संतुलन बनाए रखना बुनियादी सुविधाओं की गुणवत्ता और संधारणीय विकास को सुनिश्चित करने हेतु अनिवार्य है।

275. (D) 1, 2, और 3
जनसंख्या वृद्धि एक बहुआयामी प्रक्रिया है जो सामाजिक और सांस्कृतिक मूल्यों से गहराई से प्रभावित होती है। पुत्रों के प्रति सांस्कृतिक प्राथमिकता दंपत्तियों को बड़े परिवार हेतु प्रेरित करती है, जो प्रजनन दर बढ़ाती है। विवाह की सार्वभौमिकता और कम उम्र में विवाह प्रजनन अवधि को बढ़ाकर जन्म दर को उच्च बनाए रखते हैं। इसके विपरीत, महिला शिक्षा का उच्च स्तर महिलाओं को जागरूक बनाता है जिससे वे परिवार नियोजन के बारे में स्वतंत्र निर्णय लेती हैं और प्रजनन दर में गिरावट आती है। अतः ये सभी कारक मिलकर किसी भी समाज की जनसांख्यिकीय दिशा, व्यवहार और भविष्य के स्वरूप को निर्धारित करते हैं।

276. (B) 2.1
कुल प्रजनन दर का 'प्रतिस्थापन स्तर' वह विशिष्ट दर है जहाँ जनसंख्या स्वयं को पीढ़ियों के मध्य स्थिर रखती है। विकसित समाजों हेतु यह दर औसतन 2.1 मानी जाती है। इसमें '2' का अर्थ माता-पिता के स्थान पर दो बच्चे हैं, और '0.1' का अतिरिक्त हिस्सा बाल मृत्यु दर और लिंगानुपात के संभावित असंतुलन की भरपाई करने हेतु जोड़ा जाता है। जब कोई देश इस स्तर को प्राप्त कर लेता है, तो दीर्घकाल में उसकी जनसंख्या प्राकृतिक रूप से न तो बढ़ती है और न ही घटती है। यह भारत जैसे विकासशील देशों हेतु जनसंख्या स्थिरीकरण और संधारणीय विकास प्राप्त करने का एक मुख्य लक्ष्य निर्धारित किया गया है।

277. (B) अकाल और युद्ध जैसे सकारात्मक अवरोधों द्वारा जनसंख्या को निर्वाह स्तर पर वापस आने के लिए बाध्य किया जाता है।
'माल्थसवादी आपदा' उस संकटपूर्ण स्थिति को संदर्भित करती है जहाँ जनसंख्या की वृद्धि उपलब्ध खाद्य संसाधनों की सीमा को पार कर जाती है। माल्थस का तर्क था कि यदि मनुष्य स्वयं जन्म दर को नियंत्रित नहीं करता, तो प्रकृति अनिवार्य रूप से अकाल, महामारी और युद्ध जैसे 'सकारात्मक अवरोधों' के माध्यम से हस्तक्षेप करती है। ये आपदाएं मृत्यु दर में भारी वृद्धि करके जनसंख्या को तीव्रता से कम कर देती हैं और उसे पुनः उस स्तर पर ले आती हैं जिसे उपलब्ध संसाधन सहारा दे सकें।

Downloaded from www.pdf.tube

1. यह भारत में अपनी तरह का पहला कानून है।
2. इसमें केवल राज्य पुलिस विभाग द्वारा प्रदान की जाने वाली सेवाएँ शामिल हैं।
3. यह शिकायतों के लिए दो-स्तरीय अपीलीय प्रक्रिया का प्रावधान करता है।

ऊपर दिए गए कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?
(A) केवल 3
(B) केवल 1 और 2
(C) केवल 2 और 3
(D) 1, 2 और 3

31. मध्यप्रदेश में जनसंख्या वृद्धि का अध्ययन संभवतः किस कारक का विश्लेषण करेगा?
(A) जन्म दर और मृत्यु दर के बीच का अंतर।
(B) राज्य में राजनीतिक दलों की संख्या।
(C) राज्य का सकल घरेलू उत्पाद।
(D) राज्य में राजमार्गों की कुल लंबाई।

32. पंचायती राज व्यवस्था के संदर्भ में ग्रामीण नेतृत्व का सबसे उपयुक्त वर्णन क्या है?
(A) परिवार की पीढ़ियों से चली आ रही एक वंशानुगत स्थिति।
(B) समुदाय को विकासात्मक लक्ष्यों की ओर ले जाने की क्षमता।
(C) गाँव के सबसे अमीर व्यक्ति द्वारा विशेष रूप से निभाई जाने वाली भूमिका।
(D) शहर के एक अधिकारी द्वारा भरा जाने वाला एक औपचारिक सरकारी पद।

33. निम्नलिखित में से कौन सा स्वयं सहायता समूहों के माध्यम से 'महिला सशक्तिकरण' का सबसे अच्छा उदाहरण है?
(A) एक महिला को एकमुश्त सरकारी उपभोग अनुदान प्राप्त होना।
(B) एक महिला द्वारा सिलाई का व्यवसाय शुरू करने के लिए स्वयं सहायता समूह से ऋण लेना।
(C) एक बाहरी अधिकारी द्वारा एक महिला को ग्राम समिति में नियुक्त किया जाना।
(D) एक महिला का सामान्य स्वास्थ्य पर एक जागरूकता शिविर में भाग लेना।

34. त्रिस्तरीय पंचायती राज व्यवस्था की अवधारणा का उद्देश्य है:
(A) यह सुनिश्चित करना कि शासन ग्राम, मध्यवर्ती और जिला स्तरों पर वितरित हो।
(B) शीर्ष स्तर पर सभी शक्तियों के साथ एक पदानुक्रमित प्रणाली स्थापित करना।
(C) स्थानीय शासन को केवल ग्राम स्तर तक सीमित करना।
(D) राज्य विधायिका को स्थानीय परिषदों से बदलना।

35. मध्यप्रदेश में पंचायती राज व्यवस्था के संबंध में सूची I को सूची II से सुमेलित कीजिए।
सूची I (स्तर):
P. जिला पंचायत
Q. जनपद पंचायत
R. ग्राम पंचायत
S. ग्राम सभा
सूची II (स्तर विवरण):
1. ग्राम स्तर
2. मध्यवर्ती/ब्लॉक स्तर
3. जिला स्तर
4. आधार (सभी मतदाता)

निम्नलिखित में से कौन सा सही मिलान है?
(A) P-3, Q-2, R-1, S-4
(B) P-1, Q-2, R-3, S-4
(C) P-2, Q-3, R-4, S-1
(D) P-3, Q-1, R-2, S-4

36. मध्यप्रदेश में गोंड जनजाति के सामाजिक संगठन का एक महत्वपूर्ण पहलू है:
(A) मांसाहारी भोजन का कड़ाई से पालन करना।
(B) धार्मिक अनुष्ठानों की पूर्ण अनुपस्थिति।
(C) शहरी केंद्रों में उनकी प्राथमिक बस्ती।
(D) विभिन्न भ्रातृत्व समूहों और गोत्रों में उनका विभाजन।

37. सैला नृत्य, जो गोंड और बैगा जैसी जनजातियों द्वारा किया जाता है, अक्सर किसके द्वारा पहचाना जाता है?
(A) बुजुर्ग महिलाओं द्वारा एकल प्रदर्शन।
(B) विशेष रूप से तार वाले वाद्य यंत्रों का उपयोग।
(C) नर्तकों द्वारा एक समन्वित लय में डंडों का उपयोग।
(D) केवल विवाह समारोहों के दौरान इसका प्रदर्शन।

38. निम्नलिखित में से कौन मध्यप्रदेश में पोषण और स्वास्थ्य कार्यक्रम का प्राथमिक केंद्र होगा?
(A) खेल स्टेडियमों की संख्या में वृद्धि करना।
(B) महिलाओं और बच्चों में एनीमिया की घटनाओं को कम करना।
(C) कृषि उत्पादों के निर्यात को बढ़ावा देना।
(D) अधिक वाणिज्यिक संकुल बनाना।

39. मध्यप्रदेश की जनसांख्यिकी में प्रयुक्त 'लिंगानुपात' शब्द का तात्पर्य है:
(A) साक्षर और निरक्षर जनसंख्या का अनुपात।
(B) ग्रामीण और शहरी जनसंख्या का अनुपात।
(C) प्रति वर्ष 1000 लोगों पर जन्मों की संख्या।
(D) प्रति 1000 पुरुषों पर महिलाओं की संख्या।

40. निम्नलिखित अभिकथन (A) और कारण (R) को पढ़ें और सही विकल्प चुनें:
अभिकथन (A): गैर-सरकारी संगठन मध्यप्रदेश के सामाजिक विकास में सरकार के पूरक की भूमिका निभाते हैं।
कारण (R): गैर-सरकारी संगठनों की अक्सर सामुदायिक पहुँच बेहतर होती है और उन दूरदराज के इलाकों में कार्यक्रमों को लागू करने में लचीलापन होता है जहाँ सरकारी तंत्र सीमित

NODIA

वर्ष' कहा जाता है, क्योंकि इसके पश्चात भारत की जनसंख्या में निरंतर वृद्धि हुई। 'जनसंख्या विस्फोट' मुख्य रूप से 1951-1981 के कालखंड को परिभाषित करता है जब मृत्यु दर में गिरावट के कारण आबादी अभूतपूर्व गति से बढ़ी थी, जो संसाधनों हेतु एक चुनौती बनी।

286. (A) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
राष्ट्रीय जनसंख्या नीति 2000 भारत में जनसंख्या प्रबंधन के प्रति एक समग्र और आधुनिक दृष्टिकोण की वकालत करती है। यह मानती है कि जनसंख्या नियंत्रण केवल जन्म नियंत्रण की गोलियों अथवा नसबंदी तक सीमित नहीं हो सकता है। नीति का स्पष्ट तर्क है कि जब तक महिलाओं को सशक्त नहीं किया जाएगा, शिशु मृत्यु दर कम नहीं होगी और सुरक्षित मातृत्व सुनिश्चित नहीं होगा, तब तक लोग स्वैच्छिक रूप से छोटे परिवार के आदर्श को पूर्णतः नहीं अपनाएंगे। अतः, स्वास्थ्य, शिक्षा और महिला अधिकारों के व्यापक मुद्दों को संबोधित करना ही जनसंख्या स्थिरीकरण के लक्ष्यों को प्राप्त करने का सबसे प्रभावी और संधारणीय मार्ग माना जाता है।

287. (B) जनसंख्या का वास्तविक पुनरुत्पादक प्रदर्शन।
जनसांख्यिकी में 'प्रजननता' का तात्पर्य किसी विशिष्ट जनसंख्या समूह में जीवित जन्मों की वास्तविक संख्या से होता है। यह शब्द केवल 'जन्म देने की क्षमता' जिसे जननशक्ति कहते हैं, उससे पूर्णतः भिन्न है, क्योंकि यह समाज के वास्तविक पुनरुत्पादक व्यवहार को मापता है। प्रजननता का स्तर अनेक सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक कारकों, जैसे शिक्षा, विवाह की आयु और स्वास्थ्य सुविधाओं की उपलब्धता द्वारा निर्धारित होता है। इसका मापन अशोधित जन्म दर अथवा कुल प्रजनन दर जैसे संकेतकों के माध्यम से किया जाता है, जो किसी भी राष्ट्र की जनसंख्या वृद्धि और भविष्य की जनसांख्यिकीय संरचना को समझने हेतु अनिवार्य आधार प्रदान करते हैं।

288. (A) मृत्यु दर में नाटकीय कमी।
20वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में विकासशील देशों में हुई अभूतपूर्व जनसंख्या वृद्धि का सबसे प्रमुख कारण मृत्यु दर में आई तीव्र गिरावट मानी जाती है। इसका श्रेय आधुनिक चिकित्सा तकनीक, एंटीबायोटिक्स, व्यापक टीकाकरण अभियानों और बेहतर सार्वजनिक स्वच्छता को जाता है, जिन्होंने अकाल और महामारियों से होने वाली मौतों को काफी कम कर दिया। चूंकि सामाजिक और सांस्कृतिक जड़ता के कारण जन्म दर अत्यंत उच्च बनी रही, इसलिए जन्मों और मौतों के बीच के इस बढ़ते हुए अंतराल ने जनसंख्या विस्फोट की स्थिति उत्पन्न की। यह चरण दर्शाता है कि कैसे स्वास्थ्य सुधारों की सफलता ही जनसांख्यिकीय बोझ का प्रारंभिक और मुख्य कारण बनी।

289. (B) युवा आयु संरचना।
'जनसंख्या संवेग' एक अत्यंत महत्वपूर्ण जनसांख्यिकीय घटना है जो युवा आयु संरचना का प्रत्यक्ष परिणाम होती है। इसका अर्थ यह है कि यदि आज प्रजनन दर गिरकर प्रतिस्थापन स्तर तक आ जाए, तब भी जनसंख्या कुछ दशकों तक बढ़ती रहेगी। ऐसा इसलिए है क्योंकि पिछली उच्च प्रजननता के कारण युवा व्यक्तियों का एक बहुत बड़ा समूह पहले से ही जनसंख्या में मौजूद है जो आने वाले वर्षों में प्रजनन आयु में प्रवेश करेगा। भले ही ये युवा दंपत्ति भविष्य में कम बच्चे पैदा करें, परंतु उनकी भारी कुल संख्या के कारण जन्मों की कुल संख्या मृत्यु की संख्या से अधिक बनी रहेगी, जो कुछ समय तक जनसंख्या वृद्धि को जारी रखेगी।

290. (C) विवाह को टालना।
थॉमस माल्थस ने जनसंख्या वृद्धि को नियंत्रित करने हेतु केवल उन्हीं 'निवारक अवरोधों' का समर्थन किया था जिन्हें वे नैतिक और सदाचारी मानते थे। इनमें सबसे प्रमुख 'नैतिक संयम' था, जिसका अर्थ है कि व्यक्तियों को तब तक विवाह नहीं करना चाहिए जब तक कि वे अपने परिवार के भरण-पोषण हेतु आर्थिक रूप से पूर्ण सक्षम न हो जाएं। उन्होंने विवाह होने तक पूर्ण ब्रह्मचर्य का पालन करने पर विशेष बल दिया था। माल्थस कृत्रिम गर्भनिरोधकों अथवा शासन द्वारा थोपे गए कठोर नियंत्रणों के विरुद्ध थे। उनके लिए, आत्म-अनुशासन और विवाह में देरी करना ही सकारात्मक अवरोधों के कष्टों से बचने का एकमात्र मानवीय और सदाचारी मार्ग था।

291. (C) उच्च जन्म दर का प्राथमिक कारण उच्च स्तर का शहरीकरण है।
जनसंख्या वृद्धि मुख्य रूप से मृत्यु दर में गिरावट और उच्च जन्म दर के मध्य के अंतर का परिणाम मानी जाती है। स्वास्थ्य सेवाओं में सुधार से मृत्यु दर निरंतर कम हुई है, जो वृद्धि का एक प्रमुख कारण है। इसी प्रकार, महिला शिक्षा का निम्न स्तर जागरूकता की कमी के कारण उच्च प्रजनन दर से गहराई से जुड़ा होता है। हालांकि, यह कहना बिल्कुल गलत है कि शहरीकरण उच्च जन्म दर का कारण है। वास्तव में, शहरीकरण सामान्यतः जन्म दर को 'कम' करता है क्योंकि शहरों में जीवन यापन की लागत अधिक होती है, आधुनिक सुविधाएं सुलभ होती हैं और छोटे परिवार के आदर्श को अधिक प्राथमिकता दी जाती है।

292. (C) कथन I असत्य है, लेकिन कथन II सत्य है।
भारत की वर्तमान राष्ट्रीय जनसंख्या नीति 2000 ने पुराने दमनकारी और केवल मात्रात्मक लक्ष्यों वाले दृष्टिकोण को पूर्णतः त्याग दिया है। यह नीति अब नसबंदी के किसी विशेष संख्यात्मक लक्ष्य को प्राप्त करने पर केंद्रित नहीं है। इसके विपरीत, इसका मुख्य बल नागरिकों को सशक्त बनाने पर है ताकि वे अपने परिवार के आकार और प्रजनन स्वास्थ्य के बारे में स्वैच्छिक और सूचित निर्णय लेने में सक्षम हो सकें। नीति का दृढ़ विश्वास है कि बेहतर स्वास्थ्य सेवाएं, शिक्षा और जागरूकता प्रदान करके ही जनसंख्या स्थिरीकरण को अधिक मानवीय, प्रभावी और स्थायी तरीके से प्राप्त किया जा सकता है, जो एक लोकतांत्रिक समाज की गरिमा के अनुरूप है।

293. (D) शिशु मृत्यु दर में वृद्धि।
जनसांख्यिकीय संक्रमण की तीसरी अवस्था में जन्म दर में गिरावट के पीछे अनेक महत्वपूर्ण सामाजिक-आर्थिक कारण होते हैं। बढ़ता शहरीकरण और जीवन की उच्च लागत बड़े परिवारों को कम आकर्षक बनाते हैं। महिला शिक्षा और उनकी बढ़ती सामाजिक स्थिति उन्हें अपने प्रजनन अधिकारों के प्रति

Click Here to Buy book on Amazon

सचेत बनाती है, जिससे वे कम बच्चे पैदा करने का सचेत निर्णय लेती हैं। साथ ही, गर्भनिरोधक साधनों की आसान पहुँच इन निर्णयों को सफल बनाती है। इसके विपरीत, शिशु मृत्यु दर में 'गिरावट' जन्म दर कम करने में सहायक होती है, जबकि इसकी वृद्धि सामान्यतः जन्म दर बढ़ाने का कारण बनती है। अतः विकल्प D का विवरण जनसांख्यिकीय रूप से गलत है।

294. (A) सामाजिक और सांस्कृतिक रूप से विविधतापूर्ण राष्ट्र में एक समान नीति लागू करना।
भारत जैसे विशाल और सांस्कृतिक रूप से अत्यंत विविध देश में जनसंख्या नीति का प्रभावी कार्यान्वयन अत्यंत जटिल है क्योंकि यहाँ विभिन्न राज्यों के मध्य साक्षरता, धार्मिक विश्वास और विकास के स्तर में भारी अंतर पाया जाता है। उदाहरण के लिए, दक्षिण भारत के कई राज्यों ने जनसंख्या स्थिरीकरण के लक्ष्यों को प्राप्त कर लिया है, जबकि उत्तर भारत के कुछ राज्य अभी भी उच्च प्रजनन दर से जूझ रहे हैं। यह विविधता एक ऐसी लचीली और विकेंद्रीकृत नीति की मांग करती है जो स्थानीय सांस्कृतिक संवेदनाओं और विशिष्ट आवश्यकताओं के प्रति संवेदनशील हो, न कि केवल एक 'ऊपर से नीचे' का कठोर और एकरूप प्रशासनिक ढांचा।

295. (B) केवल 2 और 3
जनसांख्यिकी के मुख्य घटकों को समझना जनसंख्या विश्लेषण हेतु आवश्यक है। प्रवास में भौगोलिक और राजनीतिक सीमाओं के पार व्यक्तियों का स्थायी अथवा दीर्घकालिक आवागमन सम्मिलित होता है, जो जनसंख्या के वितरण को बदलता है। रुग्णता का अध्ययन जनसंख्या में बीमारियों के प्रसार और स्वास्थ्य के वास्तविक बोझ को समझने हेतु किया जाता है। हालांकि, मृत्यु दर जन्मों का नहीं बल्कि जनसंख्या में होने वाली मौतों और मृत्यु की आवृत्ति का वैज्ञानिक अध्ययन है। जन्मों के अध्ययन को प्रजननता कहा जाता है। अतः, केवल कथन 2 और 3 ही जनसांख्यिकीय शब्दावलियों की सही, प्रमाणित और वैज्ञानिक व्याख्या प्रस्तुत करते हैं, जो इसे स्पष्ट करता है।

296. (B) निवेश का आधारभूत आवश्यकताओं को पूर्ण करने की ओर विचलन।
तीव्र जनसंख्या वृद्धि का एक प्रमुख आर्थिक परिणाम राष्ट्रीय संसाधनों के पुनर्वितरण के रूप में देखा जाता है। जब आबादी तीव्रता से बढ़ती है, तो शासन को अपने राजस्व का एक बहुत बड़ा हिस्सा केवल बढ़ती भीड़ की बुनियादी जरूरतों, जैसे कि भोजन, आवास, प्राथमिक स्वास्थ्य और शिक्षा, को पूरा करने हेतु आवंटित करना पड़ता है। इससे उद्योगों के विकास, आधुनिक तकनीक के अनुसंधान और बड़े बुनियादी ढांचे में निवेश हेतु उपलब्ध राष्ट्रीय पूंजी निरंतर कम हो जाती है। यह स्थिति आर्थिक विकास की गति को धीमा कर देती है और प्रति व्यक्ति संसाधनों को सीमित कर निर्धनता के चक्र को और अधिक सुदृढ़ करती है, जो विकास हेतु घातक है।

297. (B) केवल मात्रा के बजाय जनसंख्या की गुणवत्ता।
जनसंख्या को 'मानव संसाधन' मानने वाला सकारात्मक दृष्टिकोण इस विचार पर आधारित है कि राष्ट्र की असली शक्ति केवल व्यक्तियों की कुल संख्या में नहीं, बल्कि उनकी वास्तविक क्षमताओं में निहित है। यह दृष्टिकोण जनसंख्या की गुणवत्ता, जैसे कि उनके स्वास्थ्य का स्तर, शिक्षा की गुणवत्ता और उन्नत तकनीकी कौशल, को सबसे अधिक महत्व प्रदान करता है। एक स्वस्थ और शिक्षित कार्यबल ही देश के प्राकृतिक संसाधनों का सही और कुशल उपयोग कर सकता है और आर्थिक विकास को तीव्र गति प्रदान कर सकता है। अतः, शिक्षा और स्वास्थ्य में किया गया निवेश ही जनसंख्या को एक उत्पादक संसाधन और राष्ट्र की सबसे बड़ी परिसंपत्ति में परिवर्तित करने का एकमात्र मार्ग है।

298. (B) विद्यालयों और चिकित्सालयों जैसी सामाजिक सेवाओं की मांग।
किसी भी जनसंख्या की आयु-लिंग संरचना सीधे तौर पर राष्ट्र की सामाजिक और आर्थिक आवश्यकताओं को निर्धारित करती है। उदाहरण के लिए, यदि जनसंख्या में बच्चों और युवाओं का अनुपात अधिक है, तो शासन को शिक्षा, प्राथमिक स्वास्थ्य और खेल सुविधाओं पर अधिक व्यय करना पड़ता है। इसके विपरीत, वृद्ध आबादी की अधिकता पेंशन प्रणालियों और दीर्घकालिक स्वास्थ्य देखभाल सेवाओं की मांग तीव्रता से बढ़ाती है। यह संरचना भविष्य में श्रम बल की उपलब्धता को भी गहराई से प्रभावित करती है। अतः, जनसांख्यिकीय संरचना का सटीक विश्लेषण नीति निर्माताओं को भविष्य की योजना बनाने और संसाधनों के उचित आवंटन हेतु एक अनिवार्य वैज्ञानिक आधार प्रदान करता है।

NODIA

299. (B) इसने जनसंख्या में निरंतर और तीव्र वृद्धि की शुरुआत को चिह्नित किया।
वर्ष 1921 भारत के जनसांख्यिकीय इतिहास में एक ऐतिहासिक मोड़ माना जाता है, जिसे 'महान विभाजक वर्ष' के रूप में जाना जाता है। इस वर्ष से पूर्व, भारत की जनसंख्या वृद्धि दर अत्यंत अस्थिर थी और अकाल अथवा महामारियों के कारण कभी-कभी ऋणात्मक भी हो जाती थी। 1921 के पश्चात स्वास्थ्य और परिवहन सेवाओं में हुए महत्वपूर्ण सुधारों ने मृत्यु दर को प्रभावी ढंग से कम किया, जिससे जनसंख्या में निरंतर और सकारात्मक वृद्धि का एक नया युग प्रारंभ हुआ। इस वर्ष ने उतार-चढ़ाव वाले चरण को समाप्त कर भारत को जनसांख्यिकीय संक्रमण के दूसरे चरण की ओर अग्रसर किया, जहाँ से वृद्धि देश की एक स्थायी जनसांख्यिकीय विशेषता बन गई।

300. (B) थॉमस माल्थस
थॉमस रॉबर्ट माल्थस ने 1798 में अपने प्रसिद्ध निबंध में यह तर्क प्रस्तुत किया था कि मानव की प्रजनन शक्ति भूमि द्वारा भोजन प्रदान करने की क्षमता से कहीं अधिक बलवान है। उनके अनुसार, जनसंख्या गुणोत्तर श्रेणी (1, 2, 4, 8...) में तीव्रता से बढ़ती है, जबकि खाद्य संसाधनों में वृद्धि केवल समांतर श्रेणी (1, 2, 3, 4...) में ही संभव है। यह मौलिक गणितीय असंतुलन ही समाज में निर्धनता, अकाल और मानवीय कष्टों का मुख्य कारण बनता है। माल्थस का यह सिद्धांत संसाधनों की सीमितता और अनियंत्रित जनसंख्या वृद्धि के मध्य होने वाले अनिवार्य संघर्ष की एक गंभीर चेतावनी के रूप में संपूर्ण विश्व में जाना जाता है।

अध्याय 10
मध्य प्रदेश का सामाजिक परिदृश्य

1. मध्यप्रदेश में पंचायती राज व्यवस्था के मध्यवर्ती स्तर को क्या कहा जाता है?
(A) ग्राम सभा
(B) जनपद पंचायत
(C) जिला परिषद
(D) नगर निगम

2. पंचायती राज के संदर्भ में 'सत्ता के विकेंद्रीकरण' के सिद्धांत का सबसे अच्छा वर्णन निम्नलिखित में से कौन सा है?
(A) राज्य सरकार से स्थानीय स्वशासन को शक्तियों और उत्तरदायित्वों का हस्तांतरण।
(B) राज्य स्तर पर सभी प्रशासनिक और कानूनी निर्णय लेने की शक्ति का संकेंद्रण।
(C) ग्राम प्रशासन को स्वतंत्र रूप से प्रबंधित करने के लिए विशेष राज्य अधिकारियों की नियुक्ति करना।
(D) राष्ट्रीय केंद्रीय अनुदानों पर पूरी तरह निर्भर रहने के लिए स्थानीय राजस्व प्रणालियों को समाप्त करना।

3. मध्यप्रदेश की अधिकांश जनजातियों का सामाजिक संगठन मुख्य रूप से निम्नलिखित में से किस पर आधारित है?
(A) जाति पदानुक्रम
(B) आर्थिक वर्ग
(C) बहिर्विवाही गोत्र
(D) व्यक्तिगत उपलब्धियाँ

4. निम्नलिखित में से कौन सी मध्यप्रदेश में पाई जाने वाली एक प्रमुख जनजातीय कला है, जिसमें अक्सर घोड़ों और प्रकृति का चित्रण किया जाता है?
(A) वारली चित्रकला
(B) मधुबनी चित्रकला
(C) कालीघाट चित्रकला
(D) पिथोरा चित्रकला

5. मध्यप्रदेश में जनजातीय समूहों और उनके संकेंद्रण क्षेत्रों के संबंध में सूची I को सूची II से सुमेलित कीजिए।
सूची I (जनजाति):
P. भील
Q. गोंड
R. बैगा
S. सहारिया
सूची II (क्षेत्र):
1. मंडला और बालाघाट
2. झाबुआ और अलीराजपुर
3. ग्वालियर और शिवपुरी
4. सतपुड़ा श्रेणी
निम्नलिखित में से कौन सा सही मिलान है?
(A) P-2, Q-4, R-1, S-3
(B) P-1, Q-2, R-3, S-4
(C) P-3, Q-1, R-4, S-2
(D) P-4, Q-3, R-2, S-1

6. मध्यप्रदेश लोक सेवा गारंटी अधिनियम, 2010, मुख्य रूप से क्या सुनिश्चित करने के लिए लागू किया गया था?
(A) राज्य के भीतर सभी नागरिकों के लिए गारंटीकृत रोजगार।
(B) नागरिकों को अधिसूचित सार्वजनिक सेवाओं की समयबद्ध प्रदायगी।
(C) सभी स्थानीय निवासियों के लिए निःशुल्क और व्यापक स्वास्थ्य सेवा।
(D) प्राथमिक और माध्यमिक स्तर की शिक्षा तक सार्वभौमिक पहुँच।

7. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
कथन I: मध्यप्रदेश में स्वयं सहायता समूह मुख्य रूप से सूक्ष्म ऋण पर केंद्रित आर्थिक निकाय हैं।
कथन II: स्वयं सहायता समूह घरेलू हिंसा और स्वास्थ्य जैसे मुद्दों को संबोधित करके सामाजिक परिवर्तन और महिला सशक्तिकरण के मंच के रूप में भी कार्य करते हैं।
उपरोक्त कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?
(A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
(B) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।
(C) कथन I सही है, लेकिन कथन II गलत है।
(D) कथन I गलत है, लेकिन कथन II सही है।

8. मध्यप्रदेश जैसे क्षेत्र के जनांकिकीय अध्ययन में उच्च लिंगानुपात क्या दर्शाता है?
(A) प्रति 1000 पुरुषों पर महिलाओं की अधिक संख्या।
(B) प्रति 1000 महिलाओं पर पुरुषों की अधिक संख्या।
(C) पुरुषों और महिलाओं की समान संख्या।
(D) क्षेत्र में उच्च जनसंख्या वृद्धि दर।

9. निम्नलिखित में से कौन सा मध्यप्रदेश की त्रिस्तरीय पंचायती राज व्यवस्था में मान्यता प्राप्त स्तर नहीं है?
(A) ग्राम पंचायत
(B) जनपद पंचायत
(C) ब्लॉक विकास परिषद

Downloaded from www.pdf.tube

(D) P-2, Q-1, R-4, S-3

51. मध्यप्रदेश में जनसंख्या वृद्धि की घटना किसका परिणाम है?
(A) केवल राज्य में जन्मों की संख्या।
(B) केवल अन्य राज्यों से प्रवास।
(C) जन्म दर, मृत्यु दर और प्रवास की परस्पर क्रिया।
(D) जनसंख्या बढ़ाने की एक सरकारी नीति।

52. औपचारिक पंचायती राज व्यवस्था से पहले, एक पारंपरिक ग्रामीण परिवेश में नेतृत्व की भूमिका अक्सर किसके पास होती थी?
(A) गाँव का सबसे युवा सदस्य।
(B) गुप्त मतदान द्वारा चुना गया एक निर्वाचित अधिकारी।
(C) राज्य की राजधानी से भेजा गया एक सरकारी कर्मचारी।
(D) जाति या भूमि स्वामित्व के आधार पर गाँव का मुखिया या बुजुर्गों की एक परिषद।

53. ढोकरा, जो लॉस्ट-वैक्स कास्टिंग तकनीक का उपयोग करने वाली धातु शिल्प का एक रूप है, मध्यप्रदेश के कुछ जनजातीय समुदायों से जुड़ा हुआ है। यह किसका एक उदाहरण है?
(A) जनजातीय नृत्य
(B) जनजातीय त्योहार
(C) जनजातीय कला
(D) जनजातीय सामाजिक संगठन

54. मध्यप्रदेश में महिला सशक्तिकरण की पहल की सफलता को सबसे अच्छी तरह से किसके द्वारा मापा जा सकता है?
(A) सरकार द्वारा घोषित योजनाओं की संख्या।
(B) महिला साक्षरता, कार्यबल भागीदारी और निर्णय लेने वाली भूमिकाओं जैसे संकेतकों में सुधार।
(C) बजट में आवंटित धन की राशि।
(D) अधिकारियों द्वारा भाग लिए गए अंतरराष्ट्रीय सम्मेलनों की संख्या।

55. पंचायती राज व्यवस्था के निम्नलिखित स्तरों पर विचार कीजिए:
1. जिला पंचायत
2. ग्राम पंचायत
3. जनपद पंचायत

निम्नलिखित में से कौन सा उनके प्रशासनिक दायरे के बढ़ते क्रम में स्तरों का प्रतिनिधित्व करता है?
(A) 1, 3, 2
(B) 2, 3, 1
(C) 3, 2, 1
(D) 2, 1, 3

56. मध्यप्रदेश लोक सेवा गारंटी अधिनियम, 2010, प्रत्येक अधिसूचित सेवा के लिए एक अधिकारी को नामित करता है जो समय सीमा के भीतर सेवा प्रदान करने के लिए उत्तरदायी होता है। इस अधिकारी को किस रूप में जाना जाता है?
(A) पदाभिहित अधिकारी
(B) अपीलीय प्राधिकारी
(C) पीठासीन न्यायाधीश
(D) नोडल अधिकारी

57. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
कथन I: मध्यप्रदेश में जनजातियों का प्राथमिक सामाजिक संगठन एकल परिवार है।
कथन II: जनजातीय समुदायों में विस्तारित परिवार और गोत्र सामाजिक ताने-बाने, अनुष्ठानों और विवाह संबंधों में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।
उपरोक्त कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?
(A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
(B) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।
(C) कथन I गलत है, लेकिन कथन II सही है।
(D) कथन I सही है, लेकिन कथन II गलत है।

58. बाल स्वास्थ्य के उद्देश्य से मध्यप्रदेश में परिवार कल्याण कार्यक्रमों का एक मुख्य घटक निम्नलिखित में से कौन सा है?
(A) सार्वभौमिक टीकाकरण कार्यक्रम।
(B) राजमार्गों का निर्माण।
(C) किसानों को अधिक उपज देने वाले बीजों का वितरण।
(D) शहरी यातायात का प्रबंधन।

59. मध्यप्रदेश में लिंगानुपात में गिरावट चिंता का कारण होगी क्योंकि यह संकेत दे सकता है:
(A) एक सफल परिवार नियोजन कार्यक्रम।
(B) महिला साक्षरता की उच्च दर।
(C) राज्य में बेहतर आर्थिक स्थिति।
(D) लिंग आधारित भेदभाव जैसे लिंग-चयनात्मक गर्भपात की उपस्थिति।

60. मध्यप्रदेश में जनजातीय कल्याण के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. कल्याणकारी कार्यक्रम बिना किसी सरकारी संलिप्तता के विशेष रूप से गैर-सरकारी संगठनों द्वारा तैयार और कार्यान्वित किए जाते हैं।
2. एक मुख्य उद्देश्य जनजातीय आबादी को साहूकारों और बिचौलियों द्वारा शोषण से बचाना है।
3. इन कार्यक्रमों में अक्सर कानूनी सहायता और भूमि अधिकारों के संरक्षण के प्रावधान शामिल होते हैं।

ऊपर दिए गए कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?
(A) केवल 1
(B) केवल 1 और 2
(C) केवल 2 और 3
(D) 1, 2 और 3

61. कुछ स्थानीय कर लगाने का पंचायतों का अधिकार किसका एक उदाहरण है?
(A) केंद्रीयकरण
(B) न्यायिक समीक्षा

NODIA

सूची I (शब्द):
P. घोटुल
Q. पिथोरा
R. भगोरिया
S. कर्मा
सूची II (विवरण):
1. अनुष्ठानिक भित्ति चित्रकला
2. फसल नृत्य
3. युवा गृह
4. जनजातीय त्योहार और मेला
निम्नलिखित में से कौन सा सही मिलान है?
(A) P-1, Q-2, R-3, S-4
(B) P-3, Q-1, R-4, S-2
(C) P-2, Q-3, R-1, S-4
(D) P-4, Q-1, R-2, S-3

21. मध्यप्रदेश में जनजातियों के सामाजिक संगठन के बारे में सही कथन की पहचान करें।
(A) मध्यप्रदेश की सभी जनजातियाँ मातृसत्तात्मक प्रणाली का पालन करती हैं।
(B) जनजातीय समाजों में ग्राम परिषद या पंचायत की अवधारणा अनुपस्थित है।
(C) सामाजिक संरचना और विवाह नियमों के लिए नातेदारी और गोत्र वंश केंद्रीय हैं।
(D) जनजातीय समाज कमजोर सामुदायिक बंधनों के साथ अत्यधिक व्यक्तिवादी है।

22. मध्यप्रदेश के सामाजिक परिदृश्य के संदर्भ में 'महिला सशक्तिकरण' शब्द का तात्पर्य है:
(A) आवश्यकता की परवाह किए बिना सभी महिलाओं को बिना शर्त वित्तीय सहायता प्रदान करना।
(B) रणनीतिक जीवन विकल्प चुनने और अवसरों तक पहुँचने की महिलाओं की क्षमता को बढ़ाना।
(C) सभी उपलब्ध सार्वजनिक और निजी क्षेत्र की सरकारी नौकरियों को महिलाओं के लिए आरक्षित करना।
(D) महिलाओं को औद्योगिक कार्य के लिए पारंपरिक घरेलू भूमिकाओं को छोड़ने के लिए मजबूर करना।

23. मध्यप्रदेश लोक सेवा गारंटी अधिनियम, 2010 के तहत निम्नलिखित में से किसे 'सेवा' माना जाएगा?
(A) चुनाव के दौरान किया गया एक राजनीतिक वादा।
(B) राष्ट्रीय नीति में बदलाव का अनुरोध।
(C) किसी सरकारी अधिकारी से व्यक्तिगत उपकार।
(D) एक निर्दिष्ट समय के भीतर जन्म प्रमाण पत्र जारी करना।

24. मध्यप्रदेश में पोषण और स्वास्थ्य कार्यक्रमों का एक मुख्य उद्देश्य किसका मुकाबला करना है?
(A) कुपोषण और शिशु मृत्यु दर
(B) उच्च साक्षरता दर
(C) तीव्र शहरीकरण
(D) कृषि उत्पादन में गिरावट

25. निम्नलिखित अभिकथन (A) और कारण (R) को पढ़ें और सही विकल्प चुनें:
अभिकथन (A): मध्यप्रदेश में लिंगानुपात नीति निर्माताओं के लिए चिंता का एक निरंतर क्षेत्र रहा है।
कारण (R): पुत्र वरीयता सहित सामाजिक और सांस्कृतिक कारकों ने ऐतिहासिक रूप से राज्य में प्रतिकूल लिंगानुपात में योगदान दिया है।
(A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सही है लेकिन R गलत है।
(D) A गलत है लेकिन R सही है।

26. मध्यप्रदेश में पंचायती राज में महिलाओं की भागीदारी वैधानिक रूप से किसके माध्यम से सुनिश्चित की जाती है?
(A) सीटों और नेतृत्व पदों का आरक्षण।
(B) पुरुष सदस्यों द्वारा स्वैच्छिक समावेश।
(C) जिला कलेक्टर का विवेक।
(D) प्रतियोगी परीक्षाओं की एक प्रणाली।

27. मध्यप्रदेश में जनजातियों के लिए एक कल्याणकारी कार्यक्रम का मुख्य कार्य है:
(A) जनजातियों की पहचान मिटाकर उन्हें मुख्यधारा के समाज में समाहित करना।
(B) जनजातीय समुदायों को बाहरी संपर्क के सभी रूपों से अलग करना।
(C) पूरे राज्य में एक एकल, एकीकृत जनजातीय भाषा को बढ़ावा देना।
(D) उनके सांस्कृतिक लोकाचार का सम्मान करते हुए शिक्षा के लिए सहायता प्रदान करना।

28. कर्मा नृत्य, जो मध्यप्रदेश की कई जनजातियों के बीच लोकप्रिय है, मुख्य रूप से एक है:
(A) युद्ध नृत्य
(B) फसल उत्सव नृत्य
(C) विवाह जुलूस नृत्य
(D) अंत्येष्टि अनुष्ठान नृत्य

29. कौन सा कथन मध्यप्रदेश में गैर-सरकारी संगठनों की भूमिका का गलत वर्णन करता है?
(A) गैर-सरकारी संगठन अक्सर सरकारी सेवा प्रदायगी में कमियों को भरते हैं।
(B) गैर-सरकारी संगठन मध्यप्रदेश के भीतर स्थानीय, राज्य या राष्ट्रीय स्तर पर काम कर सकते हैं।
(C) मध्यप्रदेश के सभी गैर-सरकारी संगठन विशेष रूप से विदेशी एजेंसियों द्वारा वित्तपोषित हैं।
(D) गैर-सरकारी संगठन विभिन्न सामाजिक कार्यों के लिए सामुदायिक लामबंदी में योगदान देते हैं।

30. मध्यप्रदेश लोक सेवा गारंटी अधिनियम, 2010 के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

Click Here to Buy book on Amazon

(D) जिला पंचायत

10. निम्नलिखित अभिकथन (A) और कारण (R) को पढ़ें और सही विकल्प चुनें:
अभिकथन (A): मध्यप्रदेश में पंचायती राज संस्थाओं में महिलाओं के लिए सीटों के आरक्षण ने उनकी राजनीतिक दृश्यता में काफी वृद्धि की है।
कारण (R): ग्रामीण विकास योजनाओं में लिंग-विशिष्ट मुद्दों को संबोधित करने के लिए महिलाओं की भागीदारी महत्वपूर्ण है।
(A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सही है लेकिन R गलत है।
(D) A गलत है लेकिन R सही है।

11. मध्यप्रदेश की भील जनजाति का वह प्रमुख त्योहार कौन सा है, जो अपने जीवंत मेले के लिए जाना जाता है जहाँ युवा अपने जीवनसाथी का चुनाव करते हैं?
(A) मड़ई
(B) कर्मा
(C) मेघनाद
(D) भगोरिया हाट

12. मध्यप्रदेश में जनजातियों के लिए कल्याणकारी कार्यक्रम आमतौर पर निम्नलिखित सभी क्षेत्रों पर केंद्रित होते हैं, सिवाय:
(A) शिक्षा और छात्रवृत्ति तक पहुँच प्रदान करना।
(B) पारंपरिक झूम कृषि पद्धतियों को बढ़ावा देना।
(C) स्वास्थ्य और पोषण योजनाओं को लागू करना।
(D) भूमि अधिकार प्रदान करना और शोषण को रोकना।

13. पंचायती राज ढांचे के भीतर ग्रामीण नेतृत्व की भूमिका का सबसे अच्छा वर्णन इस प्रकार है:
(A) बिना किसी महत्वपूर्ण परिवर्तन के पारंपरिक शक्ति संरचनाओं को बनाए रखना।
(B) केवल राज्य सरकार से प्राप्त प्रशासनिक आदेशों का निष्पादन करना।
(C) समुदाय और सरकारी प्रशासन के बीच एक सेतु के रूप में कार्य करना।
(D) केवल व्यक्तिगत घरेलू विवादों के आंतरिक समाधान पर ध्यान केंद्रित करना।

14. मध्यप्रदेश में गैर-सरकारी संगठनों के कार्यों के संबंध में गलत कथन की पहचान करें।
(A) वे सरकारी कल्याणकारी योजनाओं के लिए कार्यान्वयन एजेंसियों के रूप में कार्य करते हैं।
(B) वे पैरवी और नीतिगत प्रभाव में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।
(C) वे सामाजिक मुद्दों पर जागरूकता बढ़ाने में योगदान देते हैं।
(D) वे मुख्य रूप से लाभ कमाने वाले संगठन हैं।

15. मध्यप्रदेश में स्वयं सहायता समूहों के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. ये भारतीय रिजर्व बैंक के तहत पंजीकृत औपचारिक बैंकिंग संस्थान हैं।
2. इनमें मुख्य रूप से समान सामाजिक-आर्थिक पृष्ठभूमि की महिलाएं शामिल होती हैं।
3. इनका मुख्य उद्देश्य बचत को एकत्रित करना और सदस्यों को ऋण प्रदान करना है।
ऊपर दिए गए कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?
(A) केवल 1
(B) केवल 2 और 3
(C) केवल 1 और 3
(D) 1, 2 और 3

16. मध्यप्रदेश में परिवार कल्याण कार्यक्रम निम्नलिखित में से किसे संबोधित करने के लिए तैयार किए गए हैं?
(A) केवल नसबंदी प्रक्रियाओं के माध्यम से जनसंख्या नियंत्रण।
(B) मातृ स्वास्थ्य, बाल उत्तरजीविता और परिवार नियोजन सहित मुद्दे।
(C) विशेष रूप से किशोर जनजातीय लड़कियों की पोषण संबंधी आवश्यकताएं।
(D) गरीबी रेखा से नीचे रहने वाले परिवारों का आर्थिक कल्याण।

NODIA

17. मध्यप्रदेश के जनांकिकीय अध्ययन में निम्नलिखित में से क्या शामिल है?
(A) केवल जनजातीय जनसंख्या के आंकड़े।
(B) जनसंख्या वृद्धि, लिंगानुपात और संबंधित कल्याणकारी कार्यक्रम।
(C) क्षेत्र में प्राचीन बस्तियों का इतिहास।
(D) जनसंख्या की राजनीतिक संबद्धता।

18. मध्यप्रदेश में त्रिस्तरीय पंचायती राज व्यवस्था की सबसे निचली प्रशासनिक इकाई क्या है?
(A) ग्राम पंचायत
(B) जिला पंचायत
(C) जनपद पंचायत
(D) ग्राम सभा

19. मध्यप्रदेश में पंचायतों को सत्ता के विकेंद्रीकरण का प्रत्यक्ष परिणाम निम्नलिखित में से कौन सा है?
(A) स्थानीय परियोजनाओं पर राज्य सरकार के नियंत्रण में वृद्धि।
(B) ग्रामीण क्षेत्रों के गाँवों के लिए वित्तीय स्वायत्तता में कमी।
(C) योजना और विकास कार्यों में अधिक स्थानीय भागीदारी।
(D) जिला कलेक्टर कार्यालय की भूमिका का उन्मूलन।

20. मध्यप्रदेश में जनजातीय जीवन के पहलुओं के संबंध में सूची I को सूची II से सुमेलित कीजिए।

हो सकता है।
(A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सही है लेकिन R गलत है।
(D) A गलत है लेकिन R सही है।

41. आरक्षण के बावजूद, पंचायती राज में महिलाओं की प्रभावी भागीदारी सुनिश्चित करने में एक मुख्य चुनौती है:
(A) आरक्षण के लिए संवैधानिक प्रावधानों की कमी।
(B) महिलाओं की राजनीति में स्वाभाविक रूप से रुचि न होना।
(C) 'सरपंच पति' की स्थिति, जहाँ पुरुष रिश्तेदार छद्म नियंत्रण रखते हैं।
(D) निर्वाचित महिलाओं के लिए किसी भी प्रशिक्षण कार्यक्रम की अनुपस्थिति।

42. स्वयं सहायता समूहों के गठन के पीछे मूल सिद्धांत क्या है?
(A) पारस्परिक लाभ के लिए सामूहिक शक्ति, विशेष रूप से सूक्ष्म वित्त के माध्यम से।
(B) वाणिज्यिक बैंकों के साथ प्रतिस्पर्धा करना।
(C) बड़े पैमाने पर औद्योगिक इकाइयाँ स्थापित करना।
(D) चुनावों के लिए राजनीतिक लामबंदी।

43. मध्यप्रदेश के जनजातीय त्योहारों के बारे में कौन सा कथन सही है?
(A) सभी जनजातीय त्योहार पूरे राज्य में एक ही दिन मनाए जाते हैं।
(B) केवल गोंड जनजाति के त्योहार होते हैं; अन्य जनजातियों के नहीं।
(C) जनजातीय त्योहार विशुद्ध रूप से मनोरंजन के लिए हैं और इनका कोई सांस्कृतिक महत्व नहीं है।
(D) ये त्योहार अक्सर कृषि चक्रों, ऋतुओं और धार्मिक मान्यताओं से जुड़े होते हैं।

44. मध्यप्रदेश में परिवार कल्याण कार्यक्रमों का एक प्राथमिक उद्देश्य है:
(A) राज्य की कुल जनसंख्या में वृद्धि करना।
(B) शिशु मृत्यु दर और मातृ मृत्यु दर को कम करना।
(C) शहरी क्षेत्रों में प्रवास को प्रोत्साहित करना।
(D) सभी परिवारों के लिए आवास प्रदान करना।

45. मध्यप्रदेश में पंचायती राज में महिलाओं की भूमिका के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. तीनों स्तरों पर महिलाओं के लिए कम से कम 50% सीटें आरक्षित हैं।
2. निर्वाचित महिला प्रतिनिधियों की उपस्थिति ने जल, स्वच्छता और स्वास्थ्य जैसे मुद्दों को प्राथमिकता देने में मदद की है।
3. महिलाओं के पंचायत प्रमुख बनने के लिए कोई कानूनी प्रावधान नहीं हैं।

ऊपर दिए गए कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?
(A) केवल 1 और 2
(B) केवल 2
(C) केवल 1 और 3
(D) 1, 2 और 3

46. जिला स्तर पर संचालित मध्यप्रदेश की त्रिस्तरीय पंचायती राज व्यवस्था का उच्चतम स्तर क्या है?
(A) ग्राम पंचायत
(B) तहसील परिषद
(C) जनपद पंचायत
(D) जिला पंचायत

47. पंचायती राज में "सत्ता के विकेंद्रीकरण" की अवधारणा किस संवैधानिक संशोधन द्वारा अनिवार्य है?
(A) 73वाँ संशोधन
(B) 42वाँ संशोधन
(C) 44वाँ संशोधन
(D) 86वाँ संशोधन

48. मध्यप्रदेश में जनजातीय समुदायों के छात्रों के लिए विशेष कोचिंग और छात्रावास की सुविधा प्रदान करने वाली एक सरकारी पहल को इस रूप में वर्गीकृत किया जाएगा:
(A) परिवार कल्याण कार्यक्रम
(B) जनजातियों के लिए कल्याणकारी कार्यक्रम
(C) सार्वजनिक सेवा गारंटी
(D) स्वयं सहायता समूह पहल

49. मध्यप्रदेश में जनजाति और उसके संबंधित सांस्कृतिक पहलू के गलत युग्म की पहचान करें।
(A) भील - भगोरिया उत्सव
(B) बैगा - पिथोरा चित्रकला
(C) गोंड - कर्मा नृत्य
(D) कोरकू - खंब स्वांग प्रदर्शन

50. सामाजिक विकास की अवधारणाओं के संबंध में सूची I को सूची II से सुमेलित कीजिए।
सूची I (अवधारणा):
P. गैर-सरकारी संगठन
Q. स्वयं सहायता समूह
R. पंचायती राज संस्थाएँ
S. मध्यप्रदेश लोक सेवा गारंटी अधिनियम 2010
सूची II (मुख्य विचार):
1. त्रिस्तरीय स्थानीय सरकार
2. समयबद्ध सेवा
3. नागरिक समाज संगठन
4. सूक्ष्म बचत
निम्नलिखित में से कौन सा सही मिलान है?
(A) P-1, Q-2, R-3, S-4
(B) P-4, Q-3, R-2, S-1
(C) P-3, Q-4, R-1, S-2

NODIA

यह अवधारणा संसाधनों के प्रति लापरवाही और अनियंत्रित वृद्धि के खतरों की एक गंभीर चेतावनी मानी जाती है जो आज भी प्रासंगिक है।

278. (A) कथन I और कथन II दोनों सत्य हैं।
प्रवास जनसंख्या परिवर्तन का एक अत्यंत महत्वपूर्ण घटक है, परंतु इसका प्रभाव केवल भौगोलिक वितरण तक ही सीमित होता है। जब व्यक्ति एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाते हैं, तो वे संबंधित क्षेत्रों की स्थानीय जनसंख्या को बदलते हैं, परंतु इससे विश्व की कुल जनसंख्या में कोई परिवर्तन नहीं होता। प्रवास केवल यह निर्धारित करता है कि लोग कहाँ निवास कर रहे हैं और समाज की क्षेत्रीय जनसांख्यिकीय संरचना क्या है। यह आर्थिक अवसरों, युद्ध अथवा पर्यावरणीय कारणों से प्रेरित हो सकता है। अतः, जन्म और मृत्यु के विपरीत, प्रवास केवल जनसंख्या के वितरण को पुनर्गठित करने वाली एक महत्वपूर्ण प्रक्रिया मानी जाती है।

279. (C) पेंशन और वृद्धों की स्वास्थ्य देखभाल पर व्यय में वृद्धि।
जिस समाज में वृद्ध जनसंख्या (60+ वर्ष) का अनुपात अधिक होता है, उसे 'एजिंग सोसाइटी' अथवा वृद्ध समाज कहा जाता है। इसके अत्यंत गंभीर आर्थिक और सामाजिक निहितार्थ होते हैं, क्योंकि वृद्धों की स्वास्थ्य देखभाल और पेंशन प्रणालियों पर सरकारी और पारिवारिक व्यय काफी बढ़ जाता है। इसके साथ ही, कार्यशील आयु के युवाओं की संख्या कम होने के कारण श्रम शक्ति की कमी हो सकती है, जिससे राष्ट्रीय उत्पादकता प्रभावित होती है। यह स्थिति सामाजिक सुरक्षा नीतियों के पुनर्गठन और स्वास्थ्य ढांचे में सुधार की मांग करती है ताकि वृद्धों को एक गरिमापूर्ण, सुरक्षित और स्वस्थ जीवन प्रदान किया जा सके।

280. (A) जनसंख्या की आयु और लिंग संरचना को दृश्य रूप में प्रस्तुत करना।
आयु-लिंग पिरामिड जनसांख्यिकी का एक अत्यंत शक्तिशाली और उपयोगी दृश्य उपकरण माना जाता है। यह किसी भी समय पर जनसंख्या के विभिन्न आयु समूहों और पुरुषों एवं महिलाओं के वितरण को स्पष्ट रूप से दर्शाता है। इसका विशिष्ट आकार समाज के जनसांख्यिकीय स्वास्थ्य और इतिहास की जानकारी देता है, जैसे कि जन्म दर उच्च है अथवा निम्न, और मृत्यु दर का प्रतिरूप क्या है। यह योजनाकारों को भविष्य की आवश्यकताओं का सटीक अनुमान लगाने में सहायता करता है, जैसे कि आने वाले वर्षों में कितने युवाओं हेतु रोजगार और कितने वृद्धों हेतु चिकित्सा सुविधाओं की आवश्यकता होगी, जिससे विकास सुनिश्चित हो सके।

281. (A) 1981
भारत की जनसंख्या वृद्धि के इतिहास में वर्ष 1981 एक अत्यंत महत्वपूर्ण मोड़ माना जाता है। यद्यपि 1951 से 1981 तक जनसंख्या बहुत तीव्र गति से बढ़ी थी, परंतु 1981 की जनगणना के पश्चात से वार्षिक वृद्धि दर में क्रमिक और निरंतर गिरावट की प्रवृत्ति दिखाई देने लगी। यह गिरावट बढ़ती साक्षरता, विशेष रूप से महिलाओं में, बढ़ते शहरीकरण और परिवार नियोजन कार्यक्रमों के व्यापक प्रसार का परिणाम थी। हालांकि जनसंख्या का पूर्ण आकार अभी भी बढ़ रहा है, परंतु वृद्धि की 'गति' का धीमा होना यह दर्शाता है कि भारत जनसंख्या स्थिरीकरण की दिशा में सफलतापूर्वक अग्रसर हो रहा है, जो विकास हेतु सुखद है।

282. (B) मानव संसाधन दृष्टिकोण
'मानव संसाधन' का दृष्टिकोण जनसंख्या को केवल एक सांख्यिकीय बोझ के रूप में देखने के स्थान पर उसे विकास के मुख्य कारक के रूप में प्रस्तुत करता है। यह विचारधारा मानती है कि एक बड़ी जनसंख्या राष्ट्र की सबसे बड़ी शक्ति बन सकती है, बशर्ते कि वह स्वस्थ, शिक्षित और कुशल हो। शिक्षा और प्रशिक्षण के माध्यम से लोगों की उत्पादकता को तीव्रता से बढ़ाया जा सकता है, जिससे वे आर्थिक प्रगति और तकनीकी नवाचार के मुख्य स्रोत बन जाते हैं। यह दृष्टिकोण केवल संख्या के स्थान पर गुणवत्ता पर ध्यान केंद्रित करता है और मानव पूंजी में निवेश को संधारणीय विकास की प्राथमिक शर्त मानता है, जो आधुनिक राष्ट्रों हेतु अनिवार्य है।

283. (C) यह यूरोपीय अनुभव पर आधारित है और प्रत्येक स्थान पर लागू नहीं हो सकता है।
जनसांख्यिकीय संक्रमण सिद्धांत की एक मुख्य आलोचना यह है कि यह पूरी तरह से पश्चिमी यूरोपीय देशों के ऐतिहासिक विकास क्रम पर आधारित है। विद्वानों का तर्क है कि विकासशील देशों की सामाजिक-सांस्कृतिक परिस्थितियां, उपनिवेशवाद का प्रभाव और आधुनिक तकनीक तक उनकी त्वरित पहुँच यूरोप के ऐतिहासिक अनुभव से बहुत भिन्न रही है। कई देशों में बिना पूर्ण औद्योगिक क्रांति के भी केवल प्रभावी स्वास्थ्य नीतियों के माध्यम से प्रजननता और मृत्यु दर में बहुत तीव्रता से बदलाव आए हैं। अतः, यह सिद्धांत एक सामान्य मार्ग तो सुझाता है, परंतु यह प्रत्येक समाज हेतु एक सार्वभौमिक अथवा अनिवार्य नियम नहीं माना जा सकता है।

284. (C) बड़े निगमों पर कर कम करना।
जनसंख्या नियंत्रण के उपायों में वे नीतियां और कार्यक्रम सम्मिलित होते हैं जिनका लक्ष्य जन्म दर को कम करना और जनसांख्यिकीय संतुलन स्थापित करना होता है। परिवार नियोजन को बढ़ावा देना, विवाह की कानूनी आयु बढ़ाना और मातृ एवं शिशु स्वास्थ्य में सुधार करना ऐसे ही प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष प्रभावी उपाय माने जाते हैं। इसके विपरीत, बड़े निगमों पर कर कम करना एक विशुद्ध आर्थिक और राजकोषीय नीति है, जिसका उद्देश्य निवेश और व्यापार को बढ़ावा देना होता है। इस प्रकार के कर सुधारों का जनसंख्या के आकार अथवा जन्म और मृत्यु दर के प्रबंधन से कोई सीधा अथवा जनसांख्यिकीय संबंध नहीं होता है, जो इसे भिन्न बनाता है।

285. (A) P-2, Q-3, R-4, S-1
जनसांख्यिकीय अवधारणाओं का भारत के संदर्भ में विशेष महत्व है। 'जनसांख्यिकीय लाभांश' भारत की वर्तमान युवा आबादी और उससे प्राप्त होने वाली आर्थिक संभावना को दर्शाता है। 'विषम लिंगानुपात' एक गंभीर सामाजिक चुनौती है जो विशेष रूप से उत्तर-पश्चिमी भारत के राज्यों में कन्या भ्रूण हत्या जैसे कारणों से मौजूद है। वर्ष 1921 को 'महान विभाजक

Downloaded from www.pdf.tube

(C) वित्तीय विकेंद्रीकरण
(D) सामाजिक पदानुक्रम

62. मध्यप्रदेश में ग्राम सभा के सदस्यों के रूप में महिलाओं की भागीदारी उनके किस अधिकार का प्रयोग है?
(A) आर्थिक अधिकार
(B) सांस्कृतिक अधिकार
(C) न्यायिक अधिकार
(D) राजनीतिक अधिकार

63. मध्यप्रदेश में भील जनजाति के सामाजिक संगठन की विशेषता है:
(A) 'फालिया' या छोटी बस्तियों की एक प्रणाली।
(B) नेतृत्व संरचना का पूर्ण अभाव।
(C) विशेष रूप से बहुमंजिला शहरी आवासों में रहना।
(D) मातृसत्तात्मक उत्तराधिकार प्रणाली।

64. मध्यप्रदेश में जनजातीय संस्कृति के बारे में कौन सा कथन गलत है?
(A) यह विविध है, जिसमें विभिन्न जनजातियों के अपने अनूठे रीति-रिवाज, नृत्य और कला रूप हैं।
(B) यह स्थिर है और सदियों से नहीं बदली है।
(C) यह प्रकृति और पर्यावरण के साथ गहराई से जुड़ी हुई है।
(D) इसमें मौखिक लोककथाओं और संगीत की एक समृद्ध परंपरा शामिल है।

65. निम्नलिखित अभिकथन (A) और कारण (R) को पढ़ें और सही विकल्प चुनें:
अभिकथन (A): ग्रामीण मध्यप्रदेश में महिला सशक्तिकरण के लिए स्वयं सहायता समूह महत्वपूर्ण उपकरण हैं।
कारण (R): स्वयं सहायता समूह महिलाओं को ऋण तक पहुँच और सामाजिक मुद्दों को संबोधित करने के लिए एक सामूहिक मंच प्रदान करते हैं, जिससे उनकी आर्थिक और सामाजिक स्थिति बढ़ती है।
(A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सही है लेकिन R गलत है।
(D) A गलत है लेकिन R सही है।

66. यदि मध्यप्रदेश लोक सेवा गारंटी अधिनियम, 2010 के तहत कवर की गई सेवा के लिए किसी नागरिक का आवेदन अस्वीकार कर दिया जाता है, या समय पर प्रदान नहीं किया जाता है, तो उनका तत्काल उपाय है:
(A) प्रथम अपीलीय प्राधिकारी को अपील करना।
(B) सर्वोच्च न्यायालय में मामला दर्ज करना।
(C) सरकारी कार्यालय के बाहर विरोध प्रदर्शन करना।
(D) उसी सेवा के लिए पुनः आवेदन करना।

67. मध्यप्रदेश में जनसंख्या वृद्धि के विश्लेषण के एक महत्वपूर्ण पहलू में किसका अध्ययन शामिल है?
(A) ऐतिहासिक स्मारकों की संख्या।
(B) राज्य में उगाई जाने वाली फसलों की विविधता।
(C) जनगणना के आंकड़ों के अनुसार दशकीय वृद्धि दर।
(D) औसत वार्षिक वर्षा।

68. ग्राम पंचायत के प्रमुख को किस रूप में जाना जाता है?
(A) मुख्य कार्यपालन अधिकारी, जिला पंचायत
(B) अध्यक्ष, जनपद पंचायत
(C) पंच
(D) सरपंच

69. स्थानीय स्कूलों और स्वास्थ्य उप-केंद्रों के प्रबंधन जैसे कार्यों का पंचायतों को हस्तांतरण किसका एक रूप है?
(A) सत्ता का पुनः केंद्रीकरण
(B) वाणिज्यिक निजीकरण
(C) कार्यात्मक विकेंद्रीकरण
(D) न्यायिक सक्रियता

70. निम्नलिखित में से कौन सा मध्यप्रदेश में जनजातीय आबादी की आजीविका में सुधार के उद्देश्य से एक कल्याणकारी कार्यक्रम है?
(A) महानगरों में फ्लाईओवरों के निर्माण की योजना।
(B) लघु वनोपज के संग्रह और विपणन को बढ़ावा देने वाले कार्यक्रम।
(C) प्राचीन संस्कृत ग्रंथों के संरक्षण के लिए एक कार्यक्रम।
(D) विलासी कार खरीदने के लिए आर्थिक सहायता।

71. मड़ई त्योहार, जो मुख्य रूप से गोंड जनजाति द्वारा मनाया जाता है, किसका एक उदाहरण है?
(A) एक आधुनिक संगीत कार्यक्रम।
(B) एक राजनीतिक रैली।
(C) एक एकल ध्यान अभ्यास।
(D) अनुष्ठानों, मेलों और सामुदायिक सभा से जुड़ा एक जनजातीय त्योहार।

72. मध्यप्रदेश में महिला सशक्तिकरण के संदर्भ में गैर-सरकारी संगठनों की सबसे महत्वपूर्ण भूमिका क्या है?
(A) जागरूकता अभियान चलाना, कानूनी सहायता प्रदान करना और कौशल विकास प्रशिक्षण देना।
(B) महिलाओं को प्रत्यक्ष सरकारी रोजगार प्रदान करना।
(C) महिलाओं की ओर से चुनाव लड़ना।
(D) बड़ी बुनियादी ढांचा परियोजनाओं का निर्माण करना।

73. मध्यप्रदेश में स्वयं सहायता समूहों के प्राथमिक लाभार्थी हैं:
(A) बड़े कॉर्पोरेट घराने
(B) शहरी पुरुष उद्यमी
(C) ग्रामीण महिलाएं
(D) सरकारी अधिकारी

NODIA

74. मध्यप्रदेश में गर्भवती महिलाओं और स्तनपान कराने वाली माताओं को पूरक पोषण प्रदान करने वाली एक सरकारी योजना किसके अंतर्गत आती है?
(A) पोषण और स्वास्थ्य कार्यक्रम
(B) लोक सेवा गारंटी अधिनियम
(C) पंचायती राज प्रशासन
(D) जनजातीय कला प्रोत्साहन

75. मध्यप्रदेश में जनजातीय नृत्य रूपों और उनके प्रदर्शन के प्राथमिक अवसर के संबंध में सूची I को सूची II से सुमेलित कीजिए।
सूची I (नृत्य):
P. कर्मा
Q. सैला
R. भगोरिया
S. गेंडी
सूची II (अवसर):
1. बसंत उत्सव मेला
2. फसल उत्सव
3. फसल कटाई के बाद डंडों का उपयोग
4. गेंडी नृत्य
निम्नलिखित में से कौन सा सही मिलान है?
(A) P-4, Q-1, R-2, S-3
(B) P-3, Q-4, R-1, S-2
(C) P-1, Q-2, R-3, S-4
(D) P-2, Q-3, R-1, S-4

76. मध्यप्रदेश में 'ग्रामीण नेतृत्व' की अवधारणा पारंपरिक, आरोपित भूमिकाओं से विकसित होकर किस ओर बढ़ी है?
(A) पूरी तरह से अस्तित्वहीन भूमिकाएँ
(B) पंचायती राज ढांचे के भीतर लोकतांत्रिक चुनावों द्वारा परिभाषित भूमिकाएँ।
(C) विशेष रूप से गैर-निवासियों द्वारा धारित भूमिकाएँ।
(D) केवल शैक्षणिक योग्यताओं द्वारा निर्धारित भूमिकाएँ।

77. निम्नलिखित में से कौन सा मध्यप्रदेश में परिवार कल्याण कार्यक्रमों का प्रत्यक्ष लक्ष्य नहीं है?
(A) शिशु मृत्यु दर को कम करना।
(B) जन्मों के बीच अंतराल सुनिश्चित करना।
(C) राज्य की प्रति व्यक्ति आय में वृद्धि करना।
(D) मातृ स्वास्थ्य में सुधार।

78. कई दशकों के दौरान मध्यप्रदेश में लिंगानुपात का अध्ययन किसको समझने में मदद करता है?
(A) राजनीतिक विचारधाराओं में परिवर्तन।
(B) सूचना प्रौद्योगिकी क्षेत्र का विकास।
(C) अंतरराष्ट्रीय खेलों में राज्य का प्रदर्शन।
(D) लिंग संबंधी सामाजिक गतिशीलता में दीर्घकालिक रुझान।

79. मध्यप्रदेश में त्रिस्तरीय पंचायती राज व्यवस्था किसको बढ़ावा देने के लिए स्थापित की गई थी?
(A) लोकतांत्रिक विकेंद्रीकरण
(B) केंद्रीकृत योजना
(C) शहरी विकास
(D) औद्योगिक विकास

80. निम्नलिखित संस्थाओं पर विचार कीजिए:
1. पंचायती राज संस्थाएँ
2. गैर-सरकारी संगठन
3. स्वयं सहायता समूह
इनमें से कौन जमीनी स्तर पर महिला सशक्तिकरण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं?
(A) केवल 1 और 2
(B) केवल 2 और 3
(C) केवल 1 और 3
(D) 1, 2 और 3

81. 'जंगल के लोग' के रूप में जानी जाने वाली बैगा जनजाति के सामाजिक संगठन की एक विशिष्ट विशेषता निम्नलिखित में से कौन सी है?
(A) लोहे के काम में उनकी पारंपरिक विशेषज्ञता।
(B) धरती को 'माता' मानकर उसे क्षति पहुँचाने के भय से ऐतिहासिक रूप से हल चलाने के प्रति उनकी अनिच्छा।
(C) समुद्री व्यापार के इर्द-गिर्द संरचित समाज।
(D) खुले मैदानों में मवेशी चराने का प्राथमिक व्यवसाय।

82. भील जनजाति के घरों में पाई जाने वाली जीवंत भित्ति चित्रकला को किस नाम से जाना जाता है?
(A) पिथोरा कला
(B) गोंड कला
(C) वारली कला
(D) ढोकरा कला

83. मध्यप्रदेश लोक सेवा गारंटी अधिनियम, 2010 के तहत किसी सेवा में बिना किसी उचित कारण के देरी करने के लिए पदाभिहित अधिकारी के लिए संभावित दंड क्या है?
(A) पदोन्नति
(B) प्रशस्ति पत्र
(C) मौद्रिक जुर्माना
(D) पसंदीदा स्थान पर स्थानांतरण

84. मध्यप्रदेश की जनसांख्यिकी के संदर्भ में, "जनसंख्या वृद्धि" का तात्पर्य है:
(A) व्यक्तियों की शारीरिक लंबाई में वृद्धि।
(B) शहरी बुनियादी ढांचे का विकास।
(C) वन क्षेत्रों का विस्तार।
(D) एक विशिष्ट अवधि में राज्य में निवासियों की संख्या में वृद्धि।

Click Here to Buy book on Amazon

85. पंचायती राज निर्णय लेने में महिलाओं की बढ़ी हुई भागीदारी से क्या अपेक्षित है?
(A) ग्राम बजट में कमी।
(B) अन्य सभी सरकारी विभागों का उन्मूलन।
(C) पेयजल, स्वच्छता, स्वास्थ्य और शिक्षा जैसे मुद्दों पर अधिक ध्यान।
(D) बुनियादी ढांचा परियोजनाओं पर पूर्ण रोक।

86. मध्यप्रदेश में पंचायती राज व्यवस्था का कौन सा स्तर ब्लॉक स्तर पर योजनाओं की योजना बनाने और उन्हें लागू करने के लिए उत्तरदायी है?
(A) ग्राम पंचायत
(B) जनपद पंचायत
(C) जिला पंचायत
(D) राज्य विधायिका

87. ग्रामीण नेतृत्व के बारे में निम्नलिखित में से कौन सा कथन गलत है?
(A) पंचायतों में निर्वाचित नेता औपचारिक ग्रामीण नेतृत्व का एक रूप हैं।
(B) प्रभावी ग्रामीण नेतृत्व सामुदायिक भागीदारी जुटाने के लिए महत्वपूर्ण है।
(C) पारंपरिक नेता अभी भी गाँवों में अनौपचारिक प्रभाव रख सकते हैं।
(D) ग्रामीण नेतृत्व कानूनन विशेष रूप से पुरुषों का क्षेत्र है।

88. मध्यप्रदेश में जनजातियों के लिए कल्याणकारी कार्यक्रमों की एक मुख्य विशेषता विशेष आवासीय विद्यालयों की स्थापना है जिन्हें किस रूप में जाना जाता है:
(A) आश्रम स्कूल
(B) नवोदय विद्यालय
(C) केंद्रीय विद्यालय
(D) निजी अंतरराष्ट्रीय स्कूल

89. स्वयं सहायता समूहों का एक प्राथमिक कार्य है:
(A) राज्य विधानसभा चुनाव लड़ना।
(B) एक सरकारी कानून प्रवर्तन एजेंसी के रूप में कार्य करना।
(C) सामूहिक बचत और आंतरिक ऋण के लिए एक मंच प्रदान करना।
(D) राष्ट्रीय राजमार्गों का निर्माण और प्रबंधन करना।

90. निम्नलिखित अभिकथन (A) और कारण (R) को पढ़ें और सही विकल्प चुनें:
अभिकथन (A): मध्यप्रदेश में जनजातियों का सामाजिक संगठन सभी समुदायों में एकरूप और समान है।
कारण (R): प्रत्येक जनजाति, जैसे गोंड, भील और बैगा की अपनी विशिष्ट सामाजिक संरचना, रीति-रिवाज और नातेदारी के नियम हैं।
(A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सही है लेकिन R गलत है।
(D) A गलत है लेकिन R सही है।

91. निम्नलिखित में से कौन सा मध्यप्रदेश में एक गैर-सरकारी संगठन की भूमिका का सबसे सटीक वर्णन करता है?
(A) कर संग्रह के लिए उत्तरदायी एक सरकारी निकाय।
(B) सोशल मीडिया पर केंद्रित एक लाभ कमाने वाली कंपनी।
(C) एक राजनीतिक दल की युवा शाखा।
(D) किसी सामाजिक कार्य की दिशा में काम करने वाला एक निजी, गैर-लाभकारी संगठन।

92. मध्यप्रदेश लोक सेवा गारंटी अधिनियम, 2010 की सफलता किस पर निर्भर है?
(A) अपने अधिकारों के बारे में नागरिकों की अनभिज्ञता।
(B) नागरिकों की जागरूकता और अधिकारियों की जवाबदेही।
(C) अधिनियम के दायरे से हटाई गई सेवाओं की संख्या।
(D) अधिनियम को कमजोर बनाने के लिए उसमें बार-बार संशोधन।

93. मध्यप्रदेश में किशोर लड़कियों को लौह तत्व और फोलिक एसिड की गोलियाँ प्रदान करने वाला कार्यक्रम किसके तहत एक प्रत्यक्ष हस्तक्षेप है?
(A) परिवार कल्याण कार्यक्रम
(B) पंचायती राज सुधार
(C) पोषण और स्वास्थ्य कार्यक्रम
(D) जनजातीय कला प्रोत्साहन

94. 'जनसांख्यिकी' शब्द किसके सांख्यिकीय अध्ययन को संदर्भित करता है?
(A) प्राचीन कलाकृतियाँ
(B) राजनीतिक प्रणालियाँ
(C) भूगर्भीय संरचनाएं
(D) मानव जनसंख्या

95. त्रिस्तरीय पंचायती राज व्यवस्था में ग्राम सभा की एक महत्वपूर्ण भूमिका इस रूप में है:
(A) किसी गाँव के सभी पंजीकृत मतदाताओं का एक निकाय, जो ग्राम पंचायत की पारदर्शिता और जवाबदेही सुनिश्चित करता है।
(B) जिला स्तर पर कार्यकारी एजेंसी।
(C) पंचायत का न्यायिक विभाग।
(D) केवल सांस्कृतिक उत्सवों के आयोजन के लिए एक समिति।

96. सत्ता के विकेंद्रीकरण ने मध्यप्रदेश में ग्रामीण नेतृत्व को कैसे प्रभावित किया है?
(A) इसने ग्रामीण नेतृत्व को अप्रासंगिक बना दिया है।
(B) इसने निर्वाचित पंचायत पदों के माध्यम से नेतृत्व के नए

NODIA

(B) ग्राम पंचायत का सदस्य होना, जो एक विशिष्ट वार्ड का प्रतिनिधित्व करता है।
(C) राज्य द्वारा नियुक्त मुख्य कार्यपालन अधिकारी के रूप में सेवा करना।
(D) राज्य विधानसभा का सदस्य होना।

119. मध्यप्रदेश में पंचायती राज में महिलाओं की भागीदारी के संबंध में सही कथन की पहचान करें।
(A) महिलाओं को कानूनी रूप से चुनाव लड़ने से रोका गया है।
(B) महिलाओं की भागीदारी का पंचायतों में चर्चा किए जाने वाले मुद्दों के प्रकारों पर कोई प्रभाव नहीं पड़ा है।
(C) सभी पंचायत सीटों में महिलाओं के लिए 100% आरक्षण है।
(D) आरक्षण नीतियों ने बड़ी संख्या में महिलाओं को सत्ता के पदों पर आसीन होने में सक्षम बनाया है।

120. मध्यप्रदेश में भूमि हस्तांतरण को रोकने और अवैध रूप से छीनी गई भूमि को जनजातीय स्वामियों को वापस करने पर केंद्रित एक कल्याणकारी कार्यक्रम किसको संबोधित करता है?
(A) आर्थिक शोषण
(B) स्वास्थ्य के मुद्दे
(C) शैक्षिक पिछड़ापन
(D) सांस्कृतिक आत्मसातीकरण

121. गेंडी या स्टिल्ट-वॉकिंग नृत्य मध्यप्रदेश के कुछ जनजातीय युवाओं द्वारा किया जाता है, आमतौर पर:
(A) कड़ाके की ठंड में
(B) विवाह समारोहों के दौरान
(C) वर्षा ऋतु के दौरान
(D) अंत्येष्टि के समय

122. मध्यप्रदेश में स्वयं सहायता समूह का सबसे आम मॉडल शामिल है:
(A) 10-20 महिलाओं का एक समूह जो बचत और ऋण के लिए नियमित रूप से मिलते हैं।
(B) हजारों कर्मचारियों वाला एक बड़ा निगम।
(C) पदानुक्रमित संरचना वाला एक सरकारी विभाग।
(D) एक त्योहार आयोजित करने के लिए गठित एक अस्थायी समिति।

123. मध्यप्रदेश में हाशिए पर रहने वाले समुदायों के अधिकारों की पैरवी करने में गैर-सरकारी संगठनों की सक्रिय भूमिका उनके किस कार्य को प्रदर्शित करती है?
(A) एक सरकारी एजेंसी के रूप में
(B) एक राजनीतिक दल के रूप में
(C) एक न्यायिक निकाय के रूप में
(D) नागरिक समाज के एक हिस्से के रूप में

124. "महिला सशक्तिकरण" की अवधारणा बहुआयामी है और इसमें निम्नलिखित में से कौन सा आयाम शामिल है?
(A) केवल आर्थिक
(B) सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक
(C) केवल राजनीतिक
(D) केवल सामाजिक

125. मध्यप्रदेश में सामाजिक मुद्दों और कार्यक्रमों के संबंध में सूची I को सूची II से सुमेलित कीजिए।
सूची I (निकाय):
P. स्वयं सहायता समूह
Q. पंचायती राज
R. परिवार कल्याण
S. जनजातीय कल्याण
सूची II (केंद्र):
1. मातृ/बाल स्वास्थ्य
2. जनजातीय अधिकार/विकास
3. सूक्ष्म उद्यम
4. ग्रामीण स्वशासन
निम्नलिखित में से कौन सा सही मिलान है?
(A) P-1, Q-2, R-4, S-3
(B) P-4, Q-1, R-2, S-3
(C) P-3, Q-4, R-1, S-2
(D) P-2, Q-3, R-1, S-4

126. मध्यप्रदेश में पोषण और स्वास्थ्य कार्यक्रमों द्वारा मापा जाने वाला एक मुख्य संकेतक है:
(A) कॉलेजों में सकल नामांकन अनुपात।
(B) प्रति व्यक्ति वाहन स्वामित्व।
(C) इंटरनेट की पहुँच का प्रतिशत।
(D) शिशु मृत्यु दर।

127. मध्यप्रदेश में पंचायतों को सत्ता के विकेंद्रीकरण का उद्देश्य है:
(A) शासन और निर्णय लेने को लोगों के करीब लाना।
(B) प्रशासन को अधिक नौकरशाही और जटिल बनाना।
(C) स्थानीय शासन संरचनाओं को कमजोर करना।
(D) राज्य सरकार की भूमिका को समाप्त करना।

128. मध्यप्रदेश की पंचायती राज व्यवस्था में एक प्रभावी ग्रामीण नेता आमतौर पर क्या प्रदर्शित करेगा?
(A) सामुदायिक कल्याण के ऊपर व्यक्तिगत लाभ की इच्छा।
(B) विकास परियोजनाओं के लिए संसाधनों और सामुदायिक समर्थन को जुटाने की क्षमता।
(C) बिना परामर्श के निर्णय लेने की एक निरंकुश शैली।
(D) सरकारी योजनाओं और नीतियों के प्रति पूर्ण अवहेलना।

129. मध्यप्रदेश की कोरकू जनजाति, जो मुख्य रूप से बसे हुए किसान हैं, की सामाजिक संरचना किसके इर्द-गिर्द संगठित है?
(A) खानाबदोश चरवाहा समूह

Downloaded from www.pdf.tube

107. मध्यप्रदेश की जनजातीय जनसंख्या के बारे में कौन सा कथन सही है?
(A) जनजातीय जनसंख्या सभी जिलों में समान रूप से वितरित है।
(B) मध्यप्रदेश की सभी जनजातियाँ एक ही भाषा बोलती हैं।
(C) राज्य में जनजातियों के लिए कोई सरकारी कल्याणकारी कार्यक्रम नहीं है।
(D) मध्यप्रदेश में भारत की सबसे बड़ी जनजातीय आबादी में से एक है।

108. लोरु काज उत्सव, जिसमें भूमि के कल्याण के लिए सुअर की बलि दी जाती है, मध्यप्रदेश की किस प्रमुख जनजाति से जुड़ा है?
(A) भील
(B) गोंड
(C) सहारिया
(D) कोरकू

109. मध्यप्रदेश में गैर-सरकारी संगठनों और स्वयं सहायता समूहों के बीच क्या संबंध है?
(A) वे परस्पर अनन्य हैं और कभी बातचीत नहीं करते हैं।
(B) स्वयं सहायता समूह नियामक निकाय हैं जो गैर-सरकारी संगठनों को नियंत्रित करते हैं।
(C) गैर-सरकारी संगठन अक्सर स्वयं सहायता समूहों को बढ़ावा देने और विकसित करने में भूमिका निभाते हैं।
(D) वे दोनों सरकारी विभाग हैं।

110. मध्यप्रदेश की जनसांख्यिकी से संबंधित निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. 1956 के बाद से राज्य की जनसंख्या में लगातार कमी आ रही है।
2. लिंगानुपात सभी जिलों और सामाजिक समूहों में समान है।
3. जनसंख्या वृद्धि और स्वास्थ्य संकेतकों को प्रबंधित करने के लिए राज्य में परिवार कल्याण कार्यक्रम सक्रिय हैं।

ऊपर दिए गए कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?
(A) केवल 1 और 2
(B) केवल 3
(C) केवल 2 और 3
(D) 1, 2 और 3

111. मध्यप्रदेश की पंचायती राज व्यवस्था में "त्रिस्तरीय" शब्द किन स्तरों को संदर्भित करता है?
(A) जिला, ब्लॉक और ग्राम
(B) राज्य, जिला और ग्राम
(C) केंद्र, राज्य और जिला
(D) ब्लॉक, तहसील और ग्राम

112. एक महिला सरपंच का उदय जो अपने गाँव में एक नए स्कूल के लिए सफलतापूर्वक अभियान चलाती है, किसका एक उदाहरण है?
(A) पंचायती राज व्यवस्था की विफलता।
(B) प्रभावी ग्रामीण नेतृत्व और महिलाओं की भागीदारी।
(C) ग्रामीण क्षेत्रों में शिक्षा की अप्रासंगिकता।
(D) सत्ता का केंद्रीकरण।

113. मध्यप्रदेश में जनजातियों के सामाजिक संगठन में प्रचलित गोत्र बहिर्विवाह की प्रथा का अर्थ है:
(A) केवल अपने ही गोत्र के भीतर विवाह करना।
(B) अपने गोत्र से बाहर विवाह करना।
(C) विवाह अनुष्ठानों का पूर्ण अभाव।
(D) करीबी रिश्तेदारों से विवाह करने की वरीयता।

114. यदि कोई मानवविज्ञानी बैगा जनजाति के गीतों, कहानियों और नृत्यों का अध्ययन करता है, तो वह किसका अध्ययन कर रहा है?
(A) जनजातीय संस्कृति
(B) जनजातीय जनसांख्यिकी
(C) जनजातीय शासन
(D) जनजातीय अर्थव्यवस्था

115. निम्नलिखित अभिकथन (A) और कारण (R) को पढ़ें और सही विकल्प चुनें:
अभिकथन (A): मध्यप्रदेश में परिवार कल्याण कार्यक्रम केवल गर्भनिरोधक तक सीमित नहीं हैं बल्कि इनमें मातृ और बाल स्वास्थ्य सेवाएं भी शामिल हैं।
कारण (R): माताओं और बच्चों के स्वास्थ्य पर ध्यान केंद्रित करने वाला परिवार कल्याण का समग्र दृष्टिकोण छोटे, स्वस्थ परिवारों में योगदान देता है और जनसंख्या वृद्धि के प्रबंधन में मदद करता है।
(A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सही है लेकिन R गलत है।
(D) A गलत है लेकिन R सही है।

116. मध्यप्रदेश लोक सेवा गारंटी अधिनियम, 2010 में द्वितीय अपीलीय प्राधिकारी का प्रावधान किसको मजबूत करता है?
(A) पदाभिहित अधिकारी की शक्ति।
(B) राज्य की कर वसूलने की क्षमता।
(C) अधिनियम में संशोधन की प्रक्रिया।
(D) नागरिक के लिए शिकायत निवारण तंत्र।

117. निम्नलिखित में से किस कारक का मध्यप्रदेश की जनसंख्या वृद्धि पर सबसे महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है?
(A) जनसंख्या की साक्षरता दर।
(B) राज्य में आने वाले पर्यटकों की संख्या।
(C) जन्म दर और मृत्यु दर की गतिशीलता।
(D) राज्य में रेलवे लाइनों की लंबाई।

118. मध्यप्रदेश में ग्राम पंचायत में 'पंच' की क्या भूमिका है?
(A) पूरी जनपद पंचायत के प्रमुख के रूप में कार्य करना।

NODIA

(A) जनजातीय स्कूल छोड़ने की दर में वृद्धि।
(B) जनजातीय संस्कृति और भाषा का क्षरण।
(C) जनजातीय आबादी के बीच बेहतर स्वास्थ्य, शिक्षा और आजीविका संकेतक।
(D) राज्य से बाहर जनजातियों के प्रवास में वृद्धि।

142. "सत्ता का विकेंद्रीकरण" की अवधारणा निम्नलिखित में से किससे सबसे अधिक जुड़ी हुई है?
(A) जनजातीय संस्कृति
(B) मध्यप्रदेश की जनसांख्यिकी
(C) स्वयं सहायता समूह
(D) पंचायती राज व्यवस्था

143. मध्यप्रदेश में परिवार कल्याण कार्यक्रमों के स्वास्थ्य घटक का प्राथमिक लक्ष्य क्या है?
(A) मातृ मृत्यु दर को कम करना।
(B) जन्म दर में वृद्धि करना।
(C) चिकित्सा पर्यटन को बढ़ावा देना।
(D) यह सुनिश्चित करना कि सभी चिकित्सक विदेश में प्रशिक्षित हों।

144. पिछली कुछ जनगणनाओं में मध्यप्रदेश के बदलते लिंगानुपात का अध्ययन किसका एक पहलू है?
(A) राजनीति विज्ञान
(B) जनसांख्यिकी
(C) पुरातत्व
(D) भूविज्ञान

145. मध्यप्रदेश में निर्वाचित महिला पंचायत सदस्यों के लिए कार्यशालाएं आयोजित करने वाला एक गैर-सरकारी संगठन किसमें योगदान दे रहा है?
(A) पंचायत व्यवस्था को कमजोर करना।
(B) क्षमता निर्माण और शासन में महिलाओं की भागीदारी को मजबूत करना।
(C) विशुद्ध रूप से एक व्यावसायिक उद्यम।
(D) एक राजनीतिक दल का प्रचार।

146. एक स्वयं सहायता समूह जहाँ सदस्य सिलाई मशीन खरीदने के लिए एक सदस्य को ऋण देने हेतु अपनी बचत को एकत्रित करते हैं, किसका एक उदाहरण है?
(A) महिला उद्यमिता को बढ़ावा देने वाली एक सूक्ष्म-वित्त गतिविधि।
(B) एक मानक सरकारी कर संग्रह अभियान।
(C) एक बड़े पैमाने पर निजी औद्योगिक ऋण।
(D) एक छोटा राजनीतिक अभियान दान।

147. मध्यप्रदेश का एक नागरिक जो भूमि रिकॉर्ड की प्रति प्राप्त करने के लिए लोक सेवा गारंटी अधिनियम, 2010 का उपयोग कर रहा है, वह अपने किस अधिकार का प्रयोग कर रहा है?
(A) विरोध करने का अधिकार
(B) वोट देने का अधिकार
(C) सेवा का अधिकार
(D) शिक्षा का अधिकार

148. मध्यप्रदेश में एक कार्यक्रम जो आयोडीन युक्त नमक और विटामिन ए की खुराक प्रदान करने पर केंद्रित है, किसके लिए एक व्यापक रणनीति का हिस्सा है?
(A) सड़क बुनियादी ढांचे में सुधार।
(B) औद्योगिक उत्पादन बढ़ाना।
(C) पर्यटन को बढ़ावा देना।
(D) पोषण और स्वास्थ्य में सुधार।

149. पंचायतों के माध्यम से एक औपचारिक, निर्वाचित ग्रामीण नेतृत्व की उपस्थिति किसके साथ सह-अस्तित्व में है?
(A) अनौपचारिक, पारंपरिक नेतृत्व का पूर्ण उन्मूलन।
(B) एक ऐसी प्रणाली जहाँ केवल नौकरशाह ही नेता हो सकते हैं।
(C) बुजुर्गों और समुदाय के प्रमुखों जैसे अनौपचारिक नेताओं का निरंतर प्रभाव।
(D) गाँवों में किसी भी प्रकार के नेतृत्व की अनुपस्थिति।

150. सामाजिक अवधारणाओं और उनके विवरणों के संबंध में सूची I को सूची II से सुमेलित कीजिए।
सूची I (अवधारणा):
P. ग्रामीण नेतृत्व
Q. महिला सशक्तिकरण
R. विकेंद्रीकरण
S. जनसांख्यिकी
सूची II (विवरण):
1. जनसंख्या का अध्ययन
2. सत्ता का हस्तांतरण
3. समुदाय का मार्गदर्शन
4. संसाधनों तक पहुँच
निम्नलिखित में से कौन सा सही मिलान है?
(A) P-3, Q-4, R-2, S-1
(B) P-1, Q-2, R-3, S-4
(C) P-2, Q-1, R-4, S-3
(D) P-4, Q-3, R-1, S-2

151. त्रिस्तरीय पंचायती राज व्यवस्था होने का मुख्य कारण निम्नलिखित में से कौन सा है?
(A) शासन को और अधिक जटिल बनाना।
(B) नौकरशाहों के लिए और अधिक रोजगार सृजित करना।
(C) स्थानीय जरूरतों पर विचार किए बिना दूसरे देश में प्रचलित प्रणाली का पालन करना।
(D) जिला से ग्राम तक एक बड़े क्षेत्र में प्रभावी प्रशासन सुनिश्चित करना।

152. निम्नलिखित में से कौन सा मध्यप्रदेश का जनजातीय नृत्य नहीं है?
(A) कथकली
(B) कर्मा

Click Here to Buy book on Amazon

(B) पितृसत्तात्मक गोत्र और ग्रामीण बस्तियां
(C) मातृसत्तात्मक उत्तराधिकार
(D) मुख्यधारा के समाज के समान जाति-आधारित पदानुक्रम

130. भगोरिया उत्सव का सबसे सटीक वर्णन इस प्रकार है:
(A) भील जनजाति के लिए एक फसल उत्सव और एक महत्वपूर्ण सांस्कृतिक कार्यक्रम।
(B) गोंड जनजाति का एक गंभीर धार्मिक समारोह।
(C) बैगा जनजाति के लिए नव वर्ष का उत्सव।
(D) भोपाल में आयोजित एक साहित्यिक उत्सव।

131. निम्नलिखित में से कौन सा मध्यप्रदेश में कार्यरत एक गैर-सरकारी संगठन की विशिष्ट गतिविधि नहीं है?
(A) गाँवों में स्वास्थ्य जागरूकता शिविर आयोजित करना।
(B) बेरोजगार युवाओं को कौशल प्रशिक्षण प्रदान करना।
(C) राज्य के लिए नियम और कानून बनाना।
(D) सरकारी योजनाओं के कार्यान्वयन की निगरानी करना।

132. स्वयं सहायता समूह वित्तीय पहलुओं के अलावा महिला सशक्तिकरण में कैसे योगदान देते हैं?
(A) उन्हें स्थिर सरकारी रोजगार के अवसर प्रदान करके।
(B) उन्हें अपने परिवारों से स्वतंत्र रहने के लिए प्रोत्साहित करके।
(C) उन्हें बड़े पैमाने पर राष्ट्रीय चुनावों में चुनाव लड़ने की आवश्यकता बताकर।
(D) उनके आत्मविश्वास और सामूहिक मोलभाव की शक्ति को बढ़ाकर।

133. मध्यप्रदेश लोक सेवा गारंटी अधिनियम, 2010 किसका एक साधन है?
(A) सामाजिक बहिष्कार
(B) राजनीतिक प्रचार
(C) प्रशासनिक सुधार और नागरिक सशक्तिकरण
(D) आर्थिक उदारीकरण।

134. मध्यप्रदेश में स्वास्थ्य सेवाओं की योजना बनाने के लिए कौन सा जनांकिकीय संकेतक महत्वपूर्ण है?
(A) पंजीकृत वाहनों की संख्या।
(B) जनसंख्या की आयु और लिंग संरचना।
(C) सिनेमाघरों की संख्या।
(D) कृषि भूमि का कुल क्षेत्रफल।

135. मध्यप्रदेश में पंचायती राज व्यवस्था के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. यह एक त्रिस्तरीय प्रणाली है जिसमें केवल ग्राम पंचायत और जिला पंचायत शामिल हैं।
2. तीनों स्तरों के प्रमुख सीधे जनता द्वारा चुने जाते हैं।
3. यह प्रणाली शासन में स्थानीय भागीदारी सुनिश्चित करने के लिए तैयार की गई है।

ऊपर दिए गए कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?
(A) केवल 3
(B) केवल 1 और 2
(C) केवल 2 और 3
(D) 1, 2 और 3

136. मध्यप्रदेश में परिवार कल्याण कार्यक्रमों का एक महत्वपूर्ण पहलू किससे संबंधित जानकारी और सेवाएं प्रदान करना है?
(A) प्रसव के बीच अंतराल
(B) शेयर बाजार में निवेश
(C) वाहन चालक लाइसेंस प्राप्त करना
(D) विदेश यात्रा

137. निम्नलिखित में से कौन मध्यप्रदेश में त्रिस्तरीय पंचायती राज व्यवस्था के प्रभावी कामकाज के लिए एक चुनौती का प्रतिनिधित्व करता है?
(A) अत्यधिक जनभागीदारी।
(B) राजनीतिक हस्तक्षेप की पूर्ण अनुपस्थिति।
(C) पंचायतों को वित्तीय संसाधनों का अपर्याप्त हस्तांतरण।
(D) निर्वाचित सदस्यों की अत्यधिक योग्यता।

138. पंचायती राज में महिलाओं की भूमिका किसके द्वारा बढ़ाई गई है?
(A) सीटों के आरक्षण के लिए संवैधानिक जनादेश।
(B) सामाजिक मानदंड जो उनकी भागीदारी को हतोत्साहित करते हैं।
(C) चुनाव प्रक्रियाओं की जटिलता।
(D) प्रशिक्षण और क्षमता निर्माण की कमी।

139. निम्नलिखित में से कौन मध्यप्रदेश में जनजातियों के सामाजिक संगठन का सबसे अच्छा वर्णन करता है?
(A) सभी जनजातियों में एक एकल, सजातीय संरचना।
(B) शहरी सामाजिक संरचना की एक सटीक प्रतिलिपि।
(C) बिना किसी नियम या संगठन वाली व्यवस्था।
(D) नातेदारी, गोत्र और वंश पर आधारित विविध प्रणालियाँ, जो प्रत्येक जनजाति के लिए अद्वितीय हैं।

140. निम्नलिखित अभिकथन (A) और कारण (R) को पढ़ें और सही विकल्प चुनें:
अभिकथन (A): मध्यप्रदेश की जनजातीय कला रूपों, जैसे गोंड और पिथोरा चित्रकला, ने राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर पहचान हासिल की है।
कारण (R): ये कला रूप जनजातियों की संस्कृति, पौराणिक कथाओं और प्रकृति के साथ संबंध की एक जीवंत अभिव्यक्ति हैं, जो व्यापक दर्शकों को आकर्षित करती हैं।
(A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सही है लेकिन R गलत है।
(D) A गलत है लेकिन R सही है।

141. मध्यप्रदेश में 'जनजातियों के लिए कल्याणकारी कार्यक्रम' की सफलता किसके द्वारा इंगित की जाएगी?

Downloaded from www.pdf.tube

164. मध्यप्रदेश की गोंड जनजाति की कला किसके लिए जानी जाती है?
(A) एक ही रंग के साथ न्यूनतम शैली।
(B) केवल ज्यामितीय आकारों का उपयोग।
(C) पत्थर पर नक्काशी की तकनीक।
(D) प्रकृति और पौराणिक कथाओं को दर्शाने वाले बिंदुओं और रेखाओं के जटिल पैटर्न।

165. महिला सशक्तिकरण में स्वयं सहायता समूहों का सबसे महत्वपूर्ण योगदान है:
(A) उन्हें शामिल होने के लिए एक राजनीतिक दल प्रदान करना।
(B) उन्हें सरकार से दैनिक मजदूरी दिलवाना।
(C) आर्थिक स्वतंत्रता और सामूहिक शक्ति को बढ़ावा देना।
(D) उन्हें घर पर रहने के लिए प्रोत्साहित करना।

166. निम्नलिखित में से कौन सा महिला सशक्तिकरण का एक उदाहरण है?
(A) एक महिला को संपत्ति के स्वामित्व के अधिकार से वंचित करना।
(B) एक महिला सरपंच द्वारा अपने गाँव के विकास के लिए निर्णय लेना।
(C) एक महिला को उसी काम के लिए पुरुष से कम भुगतान किया जाना।
(D) एक महिला को कम उम्र में विवाह के लिए मजबूर करना।

167. नामांकन और पोषण स्थिति में सुधार के लिए स्कूलों में मध्याह्न भोजन प्रदान करने वाला मध्यप्रदेश का एक सरकारी कार्यक्रम किसका उदाहरण है?
(A) जनजातीय कला कार्यक्रम
(B) लोक सेवा गारंटी अधिनियम पहल
(C) पंचायती राज चुनाव प्रक्रिया
(D) पोषण और स्वास्थ्य कार्यक्रम

168. त्रिस्तरीय पंचायती राज व्यवस्था की प्राथमिक इकाई है:
(A) ग्राम पंचायत
(B) जिला पंचायत
(C) जनपद पंचायत
(D) राज्य सरकार

169. पंचायती राज व्यवस्था में सत्ता के विकेंद्रीकरण का मुख्य उद्देश्य क्या है?
(A) राज्य की राजधानी में शक्ति केंद्रित करना।
(B) स्थानीय करों को समाप्त करना।
(C) स्थानीय समुदायों को अपने मामलों का स्वयं प्रबंधन करने के लिए सशक्त बनाना।
(D) निर्वाचित प्रतिनिधियों की संख्या कम करना।

170. निम्नलिखित अभिकथन (A) और कारण (R) को पढ़ें और सही विकल्प चुनें:
अभिकथन (A): मध्यप्रदेश लोक सेवा गारंटी अधिनियम, 2010, सुशासन को बढ़ावा देता है।
कारण (R): यह अधिकारियों को एक निर्धारित समय सीमा के भीतर उनके कार्य के लिए उत्तरदायी बनाकर सार्वजनिक सेवाओं की प्रदायगी में पारदर्शिता और जवाबदेही लाता है।
(A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सही है लेकिन R गलत है।
(D) A गलत है लेकिन R सही है।

171. मध्यप्रदेश में जनजातियों के लिए कल्याणकारी कार्यक्रमों का एक मुख्य केंद्र है:
(A) उनकी संस्कृति को दबाकर उन्हें मुख्यधारा में एकीकृत करना।
(B) उन्हें शहरी क्षेत्रों में स्थानांतरित करना।
(C) उन्हें किसी भी आर्थिक गतिविधि में भाग लेने से रोकना।
(D) उनकी अनूठी पहचान को बनाए रखते हुए उन्हें आर्थिक और शैक्षिक अवसर प्रदान करना।

172. शब्द "ग्रामीण नेतृत्व" किसको संदर्भित कर सकता है?
(A) गाँव में तैनात केवल आधिकारिक सरकारी प्रशासक।
(B) औपचारिक रूप से निर्वाचित नेता और समुदाय में अनौपचारिक रूप से प्रभावशाली व्यक्ति दोनों।
(C) केवल राष्ट्रीय राजनीतिक दलों के नेता।
(D) क्षेत्र का केवल सबसे अमीर भूस्वामी।

173. मध्यप्रदेश में भगोरिया या मड़ई जैसे जनजातीय त्योहारों का क्या महत्व है?
(A) वे बिना किसी सांस्कृतिक अर्थ के विशुद्ध रूप से व्यावसायिक कार्यक्रम हैं।
(B) वे राज्य के नेताओं को चुनने के लिए राजनीतिक कार्यक्रम हैं।
(C) वे सामुदायिक बंधनों को मजबूत करने, संस्कृति का उत्सव मनाने और अनुष्ठान करने के अवसर हैं।
(D) वे अनिवार्य सरकारी कार्यक्रम हैं।

174. मध्यप्रदेश में स्वयं सहायता समूहों के बारे में गलत कथन की पहचान करें।
(A) वे आमतौर पर समान सामाजिक-आर्थिक पृष्ठभूमि के लोगों के छोटे समूह होते हैं।
(B) वे अपने सदस्यों के बीच बचत की प्रवृत्ति को बढ़ावा देते हैं।
(C) वे अक्सर सामाजिक मुद्दों पर चर्चा के लिए एक मंच के रूप में कार्य करते हैं।
(D) वे बड़ी बहुराष्ट्रीय कंपनियों के रूप में कार्य करते हैं।

175. मध्यप्रदेश लोक सेवा गारंटी अधिनियम, 2010 के तहत यदि कोई नागरिक प्रथम अपीलीय प्राधिकारी के निर्णय से असंतुष्ट है, तो वह किस अंतिम प्राधिकारी के पास अपील कर सकता है?

NODIA

(C) सैला
(D) भगोरिया

153. मध्यप्रदेश में जनजातियों के लिए कल्याणकारी कार्यक्रमों का एक केंद्रीय विषय है:
(A) उनके आवासों से जबरन विस्थापन।
(B) सभी जनजातीय सांस्कृतिक प्रथाओं पर प्रतिबंध लगाना।
(C) उनकी सांस्कृतिक पहचान का सम्मान करते हुए गरिमा के साथ विकास।
(D) सभी जनजातियों के बीच एक ही धर्म को बढ़ावा देना।

154. मध्यप्रदेश के बुंदेलखंड क्षेत्र में पर्यावरणीय मुद्दों पर काम करने वाला एक गैर-सरकारी संगठन किसमें योगदान दे रहा है?
(A) राज्य के सामाजिक परिदृश्य में।
(B) राज्य की राजधानी की राजनीतिक स्थिति में।
(C) अंतरराष्ट्रीय व्यापार नीति में।
(D) राज्य के साहित्यिक परिदृश्य में।

155. एक स्वयं सहायता समूह के सामान्य कामकाज के निम्नलिखित चरणों पर विचार कीजिए:
1. सदस्यों को उनकी आवश्यकताओं के लिए आंतरिक ऋण देना।
2. 10-20 सदस्यों के एक समूह का गठन।
3. बड़े ऋण के लिए बैंकों के साथ जुड़ाव।
4. नियमित बैठकें और प्रत्येक सदस्य से छोटी बचत का संग्रह।

निम्नलिखित में से कौन इन चरणों के सही अनुक्रमिक क्रम का प्रतिनिधित्व करता है?
(A) 1, 2, 3, 4
(B) 2, 4, 1, 3
(C) 3, 1, 4, 2
(D) 4, 3, 2, 1

156. मध्यप्रदेश लोक सेवा गारंटी अधिनियम, 2010 का उद्देश्य किसको कम करना है?
(A) नागरिक भागीदारी
(B) सार्वजनिक सेवा प्रदायगी में भ्रष्टाचार और देरी
(C) सरकारी पारदर्शिता
(D) उपलब्ध सार्वजनिक सेवाओं की संख्या

157. मध्यप्रदेश में जनसंख्या वृद्धि एक महत्वपूर्ण विषय है क्योंकि यह किसको प्रभावित करती है:
(A) केवल जनगणना विभाग को।
(B) अल्पकाल में राज्य की जलवायु को।
(C) जल, भूमि और सार्वजनिक सेवाओं जैसे संसाधनों पर दबाव को।
(D) इमारतों की स्थापत्य शैली को।

158. मध्यप्रदेश में परिवार कल्याण कार्यक्रमों का एक प्रमुख घटक है:
(A) खेल स्टेडियमों का निर्माण।
(B) राज्य के वित्त का प्रबंधन।
(C) शेयर बाजार को विनियमित करना।
(D) परिवार नियोजन के तरीकों पर परामर्श प्रदान करना।

159. मध्यप्रदेश का 'लिंगानुपात' किसका एक महत्वपूर्ण संकेतक है?
(A) लैंगिक समानता और सामाजिक कल्याण का स्तर।
(B) राज्य की आर्थिक समृद्धि।
(C) इसकी क्रिकेट टीम की सफलता।
(D) इसके सड़क नेटवर्क की गुणवत्ता।

160. मध्यप्रदेश में जनजातीय संस्कृति के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. यह पूरी तरह से एकरूप है, जिसमें विभिन्न जनजातियों के बीच कोई भिन्नता नहीं है।
2. इसमें नृत्य, कला और त्योहारों की एक समृद्ध विरासत शामिल है।
3. यह सभी आधुनिक प्रभावों से पूरी तरह से अलग है।

ऊपर दिए गए कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?
(A) केवल 2
(B) केवल 1 और 3
(C) केवल 2 और 3
(D) 1, 2 और 3

161. मध्यप्रदेश में जनपद पंचायत की प्राथमिक भूमिका है:
(A) पूरे मध्यप्रदेश राज्य के लिए कानून बनाना।
(B) अपने ब्लॉक के भीतर ग्राम पंचायतों के कार्यों की निगरानी और समन्वय करना।
(C) सीधे राज्य की राजधानी के प्रशासन का प्रबंधन करना।
(D) राज्य के मुख्यमंत्री की नियुक्ति करना।

162. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
कथन I: 73वें संवैधानिक संशोधन अधिनियम ने पंचायतों में महिलाओं के लिए सीटों के आरक्षण को अनिवार्य किया।
कथन II: इस प्रावधान को मध्यप्रदेश में लागू किया गया है, जिसने स्थानीय शासन में महिलाओं की बढ़ती भागीदारी में योगदान दिया है।
उपरोक्त कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?
(A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
(B) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।
(C) कथन I सही है, लेकिन कथन II गलत है।
(D) कथन I गलत है, लेकिन कथन II सही है।

163. किसी जनजाति के सामाजिक संगठन का तात्पर्य है:
(A) केवल आर्थिक प्रणाली और व्यापार प्रथाएं।
(B) अन्य क्षेत्रीय जनजातियों के साथ राजनीतिक गठबंधन।
(C) सामाजिक संबंधों की संरचना, जिसमें परिवार और गोत्र प्रणालियाँ शामिल हैं।
(D) पारंपरिक स्थानीय नृत्य रूप और लोक संगीत।

Click Here to Buy book on Amazon

मार्ग प्रशस्त किए हैं।
(C) इसने नेतृत्व की भूमिकाओं को सरकार द्वारा नियुक्त प्रशासकों तक सीमित कर दिया है।
(D) इसने राज्य की राजधानी में सभी शक्तियों का पुनः केंद्रीकरण कर दिया है।

97. निम्नलिखित में से कौन सी मध्यप्रदेश की एक प्रमुख जनजाति है?
(A) इनुइट
(B) गोंड
(C) मासाई
(D) ज़ुलु

98. मेघनाद उत्सव, जिसमें एक बड़े लकड़ी के स्तंभ की पूजा की जाती है, मध्यप्रदेश की किन जनजातियों के लिए एक महत्वपूर्ण सांस्कृतिक कार्यक्रम है?
(A) गोंड और कोरकू
(B) सहारिया और बैगा
(C) भील और भिलाला
(D) पनिका और खैरवार

99. मध्यप्रदेश में समग्र सामाजिक और आर्थिक विकास के लिए महिला सशक्तिकरण को महत्वपूर्ण माना जाता है क्योंकि:
(A) यह सभी राज्यों के लिए एक संवैधानिक आवश्यकता है।
(B) यह सभी सरकारी गतिविधियों का एकमात्र केंद्र है।
(C) यह संसाधनों तक पहुँच और निर्णय लेने में भागीदारी को बढ़ाता है।
(D) यह अन्य देशों द्वारा अपनाए जाने वाला एक रुझान है।

100. मध्यप्रदेश में जनजातीय कला और शिल्प के संबंध में सूची I को सूची II से सुमेलित कीजिए।
सूची I (कला/शिल्प):
P. ढोकरा
Q. पिथोरा
R. गोंड चित्रकला
S. बाँस शिल्प
सूची II (सामग्री/रूप):
1. भित्ति चित्र
2. टोकरियाँ/चटाइयाँ
3. बेल मेटल कास्टिंग
4. कागज पर पैटर्न
निम्नलिखित में से कौन सा सही मिलान है?
(A) P-1, Q-2, R-3, S-4
(B) P-3, Q-1, R-4, S-2
(C) P-2, Q-4, R-1, S-3
(D) P-4, Q-3, R-2, S-1

101. मध्यप्रदेश में निम्न लिंगानुपात का क्या सामाजिक परिणाम हो सकता है?
(A) एक अधिक संतुलित और सामंजस्यपूर्ण समाज।
(B) विवाह योग्य महिलाओं का अधिशेष।
(C) वधुओं के लिए बढ़ती प्रतिस्पर्धा, और संभावित रूप से, महिलाओं के विरुद्ध बढ़ते अपराध।
(D) अगली पीढ़ी में महिला जन्म दर में स्वतः वृद्धि।

NODIA

102. मध्यप्रदेश के एक गाँव में एक आँगनवाड़ी केंद्र किन कार्यक्रमों के लिए एक प्रमुख वितरण केंद्र है?
(A) उच्च शिक्षा और विश्वविद्यालय प्रवेश।
(B) बच्चों और माताओं के लिए पोषण, स्वास्थ्य और पूर्व-स्कूली शिक्षा।
(C) मतदाता पंजीकरण और चुनाव प्रचार।
(D) संपत्ति कर का संग्रह और भूमि रिकॉर्ड प्रबंधन।

103. मध्यप्रदेश में पंचायती राज व्यवस्था की शीर्ष संस्था कौन सी है?
(A) ग्राम सभा
(B) जनपद पंचायत
(C) राज्य सरकार
(D) जिला पंचायत

104. पंचायतों को निधि, कार्य और कार्यकर्ताओं के साथ सशक्त बनाने की प्रक्रिया किसकी अवधारणा का केंद्र है?
(A) सत्ता का विकेंद्रीकरण
(B) केंद्रीकृत नियंत्रण
(C) शहरीकरण
(D) वैश्वीकरण

105. निम्नलिखित घटनाओं/कानूनों पर विचार कीजिए:
1. मध्यप्रदेश लोक सेवा गारंटी अधिनियम का अधिनियमन।
2. 73वें संशोधन के माध्यम से पंचायती राज को संवैधानिक दर्जा।
3. मध्यप्रदेश राज्य की स्थापना।
निम्नलिखित में से कौन उनके घटित होने या अधिनियमन के सही कालानुक्रमिक क्रम का प्रतिनिधित्व करता है?
(A) 1, 2, 3
(B) 3, 2, 1
(C) 2, 3, 1
(D) 3, 1, 2

106. एक सरकारी कार्यक्रम जो उच्च शिक्षा के लिए मेधावी जनजातीय छात्रों को छात्रवृत्ति प्रदान करता है, उसका उद्देश्य है:
(A) उनकी सामाजिक और आर्थिक गतिशीलता को बढ़ावा देना।
(B) उन्हें पढ़ाई से हतोत्साहित करना।
(C) उनकी शिक्षा को केवल प्राथमिक स्तर तक सीमित रखना।
(D) उन्हें केवल पारंपरिक व्यवसायों को अपनाने के लिए विवश करना।

(A) द्वितीय अपीलीय प्राधिकारी
(B) मुख्यमंत्री
(C) भारत के राष्ट्रपति
(D) पदाभिहित अधिकारी

176. निम्नलिखित में से कौन सा मध्यप्रदेश में जनसांख्यिकी के अध्ययन का प्रत्यक्ष सरोकार है?
(A) सड़कों की गुणवत्ता।
(B) आयु और लिंग के अनुसार जनसंख्या का वितरण।
(C) वनस्पतियों और जीवों की विविधता।
(D) स्थानीय क्रिकेट मैचों के परिणाम।

177. मध्यप्रदेश में एक सफल परिवार कल्याण कार्यक्रम का संभावित परिणाम होगा:
(A) जनसंख्या वृद्धि में तीव्र वृद्धि।
(B) निम्न शिशु मृत्यु दर और स्थिर जनसंख्या वृद्धि दर।
(C) राज्य के सभी अस्पतालों का बंद होना।
(D) औसत परिवार के आकार में वृद्धि।

178. मध्यप्रदेश में गिरते बाल लिंगानुपात का क्या प्रभाव है?
(A) यह बालक के प्रति वरीयता को इंगित करता है और भविष्य के जनांकिकीय असंतुलन की ओर संकेत करता है।
(B) इसका कोई सामाजिक प्रभाव नहीं है।
(C) यह दर्शाता है कि बालिकाओं को बालकों की तुलना में बेहतर स्वास्थ्य सेवा मिल रही है।
(D) यह एक अत्यधिक विकसित और लैंगिक समानता वाले समाज का संकेत है।

179. 'आँगनवाड़ी' मध्यप्रदेश में किस प्रमुख सरकारी कार्यक्रम की प्रदायगी का केंद्र बिंदु हैं?
(A) राष्ट्रीय राजमार्ग विकास परियोजना
(B) शहरी मेट्रो रेल परियोजना
(C) एकीकृत बाल विकास सेवा
(D) प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना

180. मध्यप्रदेश के सामाजिक परिदृश्य से संबंधित शब्दों के संबंध में सूची I को सूची II से सुमेलित कीजिए।
सूची I (शब्द):
P. जनपद पंचायत
Q. पिथोरा
R. स्वयं सहायता समूह
S. भगोरिया
सूची II (विवरण):
1. जनजातीय कला रूप
2. सूक्ष्म ऋण समूह
3. जनजातीय त्योहार
4. मध्यवर्ती पंचायती राज स्तर
निम्नलिखित में से कौन सा सही मिलान है?
(A) P-4, Q-1, R-2, S-3
(B) P-1, Q-2, R-3, S-4
(C) P-3, Q-4, R-1, S-2
(D) P-2, Q-3, R-4, S-1

181. मध्यप्रदेश में त्रिस्तरीय पंचायती राज व्यवस्था का कार्यान्वयन गांधीवादी सिद्धांत को साकार करने की दिशा में एक कदम है:
(A) औद्योगीकरण
(B) केंद्रीकृत राज्य
(C) ग्राम स्वराज
(D) वर्ग संघर्ष

182. मध्यप्रदेश में एक महिला सरपंच द्वारा सामुदायिक शौचालय परिसर के लिए ग्राम सभा में प्रस्ताव पारित करवाना क्या प्रदर्शित करता है?
(A) विकेंद्रीकरण प्रक्रिया की विफलता।
(B) स्थानीय जरूरतों को संबोधित करने में महिलाओं की प्रभावी भागीदारी।
(C) ग्रामीण क्षेत्रों में स्वच्छता के मुद्दों की अप्रासंगिकता।
(D) राज्य सरकार की पूर्ण शक्ति।

183. जनजातियों के सामाजिक संगठन में 'गोत्र' का क्या महत्व है?
(A) यह शिकार के लिए बनाया गया एक अस्थायी समूह है।
(B) यह राज्य सरकार की औपचारिक प्रशासनिक इकाई है।
(C) यह बिना किसी सामाजिक महत्व के मित्रों का एक समूह है।
(D) यह उन परिवारों का एक समूह है जो एक सामान्य पूर्वज से अपने वंश का पता लगाते हैं, और यह अक्सर विवाह को नियंत्रित करता है।

184. मध्यप्रदेश में जनजातीय नृत्य और कला रूपों का संरक्षण और प्रचार किसके लिए महत्वपूर्ण है?
(A) राज्य की सांस्कृतिक विरासत और विविधता को बनाए रखने के लिए।
(B) जनजातीय पहचान मिटाने के लिए।
(C) यह सिद्ध करने के लिए कि जनजातीय संस्कृति अन्य सभी संस्कृतियों से श्रेष्ठ है।
(D) पर्यटन को हतोत्साहित करने के लिए।

185. मध्यप्रदेश में पंचायती राज व्यवस्था की प्रभावशीलता में गैर-सरकारी संगठन कैसे योगदान दे सकते हैं?
(A) व्यवस्था को समाप्त करने का प्रयास करके।
(B) पंचायतों के अस्तित्व को उपेक्षित करके।
(C) निर्वाचित प्रतिनिधियों, विशेष रूप से महिलाओं और हाशिए पर रहने वाले समुदायों के प्रतिनिधियों को प्रशिक्षित करके।
(D) शासन की एक समानांतर व्यवस्था स्थापित करके।

186. मध्यप्रदेश में महिलाओं के लिए "सशक्तिकरण" की अवधारणा में शामिल है:
(A) एक प्रक्रिया जो उन्हें उनके जीवन और संसाधनों पर अधिक नियंत्रण प्रदान करती है।

Downloaded from www.pdf.tube

बना सकते हैं और उन्हें निष्पादित कर सकते हैं।
(B) राज्य विधायिका द्वारा पारित नए कानूनों की संख्या।
(C) केंद्र सरकार द्वारा प्रयोग किए जाने वाले नियंत्रण का स्तर।
(D) राजधानी में सरकारी कर्मचारियों की संख्या में वृद्धि।

283. निम्नलिखित में से कौन सा मध्यप्रदेश में जनजातियों के लिए एक कल्याणकारी कार्यक्रम का उदाहरण है?
(A) मेट्रो शहर में नया हवाई अड्डा बनाने की योजना।
(B) विलासी कार खरीदने के लिए आर्थिक सहायता।
(C) विदेशी पर्यटन को बढ़ावा देने का कार्यक्रम।
(D) जनजातीय बच्चों के लिए विशेष छात्रवृत्ति और आवासीय विद्यालय।

284. मध्यप्रदेश में जनजातीय कला विशेष रूप से वह है जो किसके द्वारा सृजित और अभ्यास की जाती है:
(A) शहरी अभिजात वर्ग।
(B) आधिकारिक तौर पर मान्यता प्राप्त अनुसूचित जनजातियाँ।
(C) सभी ग्रामीण निवासी।
(D) शहरों में प्रशिक्षित पेशेवर कलाकार।

285. मध्यप्रदेश में 'लाड़ली लक्ष्मी योजना', जिसका उद्देश्य बालिकाओं के स्वास्थ्य और शैक्षिक स्थिति में सुधार करना है, किसके लिए एक प्रमुख पहल है:
(A) खेलों को बढ़ावा देना।
(B) सड़क बुनियादी ढांचे का विकास करना।
(C) महिला सशक्तिकरण और लिंगानुपात में सुधार करना।
(D) कृषि उत्पादन बढ़ाना।

286. जनगणना के आंकड़ों का उपयोग करके मध्यप्रदेश की दशकीय जनसंख्या वृद्धि दर का विश्लेषण किसका अध्ययन है:
(A) नृविज्ञान।
(B) भूविज्ञान।
(C) राजनीति विज्ञान।
(D) जनसांख्यिकी।

287. मध्यप्रदेश में स्वास्थ्य और पोषण कार्यक्रमों की सफलता का माप कौन सा संकेतक है?
(A) 5 वर्ष से कम उम्र के बच्चों में नाटापन और दुबलापन की दरों में कमी।
(B) वाहनों की संख्या में वृद्धि।
(C) राज्य के सकल घरेलू उत्पाद में वृद्धि।
(D) नए सिनेमा हॉल खुलने की संख्या।

288. मध्यप्रदेश की पंचायती राज व्यवस्था में कौन सा निकाय जिले के समग्र विकास के लिए उत्तरदायी है?
(A) ग्राम सभा
(B) जिला पंचायत
(C) ग्राम पंचायत
(D) जनपद पंचायत

289. मध्यप्रदेश के अनुसूचित क्षेत्रों में पंचायतों में अनुसूचित जनजातियों के लिए आरक्षण का प्रावधान किसका एक उदाहरण है:
(A) उन्हें शासन से बाहर करने की नीति।
(B) स्वशासन में उनकी भागीदारी सुनिश्चित करने का एक उपाय।
(C) विशुद्ध रूप से एक आर्थिक कार्यक्रम।
(D) एक सांस्कृतिक उत्सव।

290. किसी जनजाति के सामाजिक संगठन को समझना किसके लिए महत्वपूर्ण है:
(A) विवाह, उत्तराधिकार और सामाजिक आचरण से संबंधित इसके नियम।
(B) विदेशी देशों के साथ संबंध।
(C) शेयर बाजार का प्रदर्शन।
(D) शहरी विकास योजनाएं।

291. जब मध्यप्रदेश में एक गैर-सरकारी संगठन वयस्क महिलाओं के लिए साक्षरता अभियान चलाता है, तो यह प्रत्यक्ष रूप से किसमें योगदान देता है:
(A) निरक्षरता बढ़ाना।
(B) राजनीतिक अस्थिरता।
(C) महिला सशक्तिकरण।
(D) पर्यावरणीय क्षरण।

292. स्वयं सहायता समूहों के पीछे का मूल विचार, जहाँ 'संपूर्ण अपने भागों के योग से बड़ा है', को इस रूप में सबसे अच्छा वर्णित किया गया है:
(A) अराजकता।
(B) व्यक्तिवाद।
(C) प्रतिस्पर्धा।
(D) तालमेल और सामूहिक शक्ति।

293. मध्यप्रदेश लोक सेवा गारंटी अधिनियम 2010 अनिवार्य रूप से नागरिक के किस अधिकार को लागू करने का एक उपकरण है:
(A) कर भुगतान करने का कर्तव्य।
(B) वोट देने का अधिकार।
(C) समय पर सेवा का अधिकार।
(D) विरोध करने का कर्तव्य।

294. मध्यप्रदेश में गिरता लिंगानुपात किस दीर्घकालिक जनांकिकीय समस्या का कारण बन सकता है?
(A) महिलाओं का अधिशेष, जिससे उनका सशक्तिकरण होगा।
(B) विवाह योग्य आयु के पुरुषों के लिए महिलाओं की कमी।
(C) एक अधिक संतुलित समाज।
(D) अगली पीढ़ी में एक प्राकृतिक सुधार।

NODIA

(B) संसाधनों और बुनियादी ढांचे की प्रभावी दीर्घकालिक योजना बनाने के लिए।
(C) क्रिकेट मैचों का कार्यक्रम तय करने के लिए।
(D) अंतरराष्ट्रीय संबंधों को समझने के लिए।

199. मध्यप्रदेश में 'जननी सुरक्षा योजना' को बढ़ावा देने वाला स्वास्थ्य कार्यक्रम किस पर केंद्रित है?
(A) वन्यजीवों की रक्षा करना।
(B) अधिक सड़कों का निर्माण करना।
(C) फसल की पैदावार में सुधार करना।
(D) माँ और बच्चे की सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए संस्थागत प्रसव को बढ़ावा देना।

200. निम्नलिखित अभिकथन (A) और कारण (R) को पढ़ें और सही विकल्प चुनें:
अभिकथन (A): लिंगानुपात मध्यप्रदेश में सामाजिक स्वास्थ्य का एक महत्वपूर्ण संकेतक है।
कारण (R): महिलाओं के विरुद्ध विषम लिंगानुपात अक्सर पुत्र वरीयता और बालिकाओं की उपेक्षा जैसे अंतर्निहित लैंगिक भेदभाव के मुद्दों की ओर संकेत करता है।
(A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सही है लेकिन R गलत है।
(D) A गलत है लेकिन R सही है।

201. मध्यप्रदेश में पंचायती राज व्यवस्था का कौन सा स्तर ग्राम सभा के प्रति सबसे अधिक सीधे तौर पर जवाबदेह है?
(A) जिला पंचायत
(B) जनपद पंचायत
(C) ग्राम पंचायत
(D) राज्य सरकार

202. पंचायती राज के संदर्भ में 'सत्ता के विकेंद्रीकरण' का विशेष रूप से क्या अर्थ है?
(A) राज्य सरकार से स्थानीय पंचायतों को प्रशासनिक और वित्तीय शक्तियों का हस्तांतरण।
(B) सरपंच के हाथों में सभी शक्तियों का संकेंद्रण।
(C) पंचायतों से राज्य सरकार को शक्तियों का हस्तांतरण।
(D) गाँवों से सरकारी अधिकारियों को पूरी तरह से हटाना।

203. शोषण को रोकने के लिए कानूनी सहायता प्रदान करने पर केंद्रित मध्यप्रदेश में जनजातियों के लिए एक कल्याणकारी कार्यक्रम उनके कल्याण के किस पहलू को संबोधित कर रहा है?
(A) सांस्कृतिक
(B) धार्मिक
(C) कलात्मक
(D) सामाजिक और आर्थिक

204. कर्मा नृत्य मध्यप्रदेश की कई जनजातियों से जुड़ा हुआ है और आमतौर पर किसके लिए किया जाता है?
(A) युद्ध की घोषणा करने के लिए।
(B) अच्छी फसल के लिए देवताओं को प्रसन्न करने के लिए।
(C) मृतकों का शोक मनाने के लिए।
(D) जीवनसाथी चुनने के लिए।

205. मध्यप्रदेश में जनजातीय त्योहारों और उनकी प्राथमिक संबंधित जनजातियों के संबंध में सूची I को सूची II से सुमेलित कीजिए।
सूची I (त्योहार):
P. भगोरिया
Q. मड़ई
R. कर्मा
सूची II (जनजाति):
1. भील
2. गोंड
3. बैगा/गोंड
निम्नलिखित में से कौन सा सही मिलान है?
(A) P-2, Q-1, R-3
(B) P-1, Q-2, R-3
(C) P-3, Q-1, R-2
(D) P-1, Q-3, R-2

206. ग्रामीण मध्यप्रदेश में एक गैर-सरकारी संगठन का मुख्य कार्य क्या हो सकता है?
(A) सरकार के लिए कर वसूलना।
(B) पुलिस बल के रूप में कार्य करना।
(C) लाभ कमाने वाला व्यवसाय चलाना।
(D) ग्रामीणों के बीच स्वास्थ्य, स्वच्छता और अधिकारों के बारे में जागरूकता बढ़ाना।

207. निम्नलिखित में से कौन स्वयं सहायता समूहों के माध्यम से महिलाओं के सशक्तिकरण के विचार का सबसे अच्छा प्रतिनिधित्व करता है?
(A) महिलाओं का एक समूह जो सामूहिक बचत के माध्यम से खानपान का व्यवसाय शुरू करता है।
(B) एक महिला को दूर के रिश्तेदार से एक मानक उपहार प्राप्त होना।
(C) एक महिला को उसकी पूर्व सहमति के बिना किसी पद पर नियुक्त किया जाना।
(D) एक महिला का सफल उद्यमियों के बारे में एक टेलीविजन शो देखना।

208. मध्यप्रदेश लोक सेवा गारंटी अधिनियम, 2010 का मुख्य उद्देश्य है:
(A) प्रत्येक नागरिक को सरकारी नौकरी की गारंटी देना।
(B) यह गारंटी देना कि कुछ सरकारी सेवाएँ एक निश्चित समय सीमा में प्रदान की जाएंगी।
(C) सभी के लिए मुफ्त बिजली की गारंटी देना।
(D) सभी फसलों के लिए न्यूनतम समर्थन मूल्य की गारंटी

Click Here to Buy book on Amazon

(B) एकमुश्त नकद सहायता।
(C) घर के बाहर कार्य करने की अनिवार्य आवश्यकता।
(D) परिवार प्रणाली का उन्मूलन।

187. मध्यप्रदेश में 2010 का लोक सेवा गारंटी अधिनियम एक कानूनी ढांचा है जो प्रशासन को और अधिक क्या बनाता है?
(A) विवेकाधीन और मनमाना।
(B) धीमा और अक्षम।
(C) गुप्त और अपारदर्शी।
(D) नागरिक केंद्रित और जवाबदेह।

188. मध्यप्रदेश के एक विशिष्ट जिले में जनसंख्या वृद्धि में अचानक उछाल के लिए सरकार को किसकी योजना बनाने की आवश्यकता होगी?
(A) कम स्कूल और अस्पताल।
(B) अधिक बुनियादी ढांचा, सार्वजनिक सेवाएं और रोजगार के अवसर।
(C) उस जिले के बजट को कम करना।
(D) परिवर्तन को उपेक्षित करना।

189. परिवार कल्याण कार्यक्रमों का एक मुख्य पहलू स्वास्थ्य शिक्षा है। एक विशिष्ट विषय क्या होगा?
(A) उन्नत अंतरिक्ष विज्ञान।
(B) आयकर विवरणी कैसे भरें।
(C) संस्थागत प्रसव और प्रसवोत्तर देखभाल के लाभ।
(D) ब्रिटिश साम्राज्य का इतिहास।

190. निम्नलिखित पर विचार कीजिए:
1. विशिष्ट संस्कृति वाली जनजातीय आबादी।
2. सक्रिय पंचायती राज संस्थाएँ।
3. गैर-सरकारी संगठन और स्वयं सहायता समूह जैसे नागरिक समाज।

इनमें से कौन से तत्व मध्यप्रदेश के सामाजिक परिदृश्य में योगदान करते हैं?
(A) केवल 1 और 2
(B) केवल 2 और 3
(C) केवल 1 और 3
(D) 1, 2 और 3

191. मध्यप्रदेश में गर्भवती और स्तनपान कराने वाली महिलाओं को नियमित जांच और पोषण संबंधी पूरक प्रदान करने पर केंद्रित एक सरकारी स्वास्थ्य कार्यक्रम का उद्देश्य किसको कम करना है?
(A) मातृ मृत्यु दर और शिशु मृत्यु दर।
(B) साक्षरता दर।
(C) पर्यटकों की संख्या।
(D) गेहूँ का उत्पादन।

192. मध्यप्रदेश में जिला पंचायत किस स्तर पर कार्य करती है?
(A) ग्राम स्तर
(B) जिला स्तर
(C) ब्लॉक स्तर
(D) राज्य स्तर

193. आधुनिक मध्यप्रदेश में ग्रामीण नेतृत्व की अवधारणा तेजी से किससे जुड़ी है?
(A) केवल वंशानुगत उत्तराधिकार।
(B) चुनाव जीतने और पंचायत मामलों को प्रभावी ढंग से प्रबंधित करने की क्षमता।
(C) स्वामित्व वाली भूमि की मात्रा।
(D) व्यक्ति की जाति।

194. निम्नलिखित में से कौन सा मध्यप्रदेश की एक विशिष्ट जनजाति के सामाजिक संगठन की विशेषता नहीं है?
(A) अत्यधिक शहरीकृत और व्यक्तिवादी जीवनशैली।
(B) मजबूत सामुदायिक बंधन।
(C) विवाह को विनियमित करने के लिए गोत्रों की एक प्रणाली।
(D) जंगल और प्रकृति के साथ घनिष्ठ संबंध।

195. जीवंत रंगों और बिंदुओं तथा रेखाओं के पैटर्न की विशेषता वाली गोंड जनजाति की लोक चित्रकला मध्यप्रदेश के किसका एक महत्वपूर्ण हिस्सा है?
(A) राजनीतिक व्यवस्था
(B) न्यायिक व्यवस्था
(C) जनजातीय संस्कृति
(D) औद्योगिक नीति

196. मध्यप्रदेश में महिला सशक्तिकरण में स्वयं सहायता समूहों की भूमिका का सबसे अच्छा वर्णन कौन सा कथन करता है?
(A) वे सरकारी विभाग हैं जो सीधे स्थानीय ग्रामीण महिलाओं को रोजगार देते हैं।
(B) वे अनौपचारिक सामाजिक क्लब हैं जो मुख्य रूप से मनोरंजन के उद्देश्यों के लिए स्थापित किए गए हैं।
(C) वे राजनीतिक दल हैं जो राज्य और राष्ट्रीय स्तर के चुनाव लड़ते हैं।
(D) वे वित्तीय समावेशन और सामूहिक कार्रवाई को बढ़ावा देने वाले स्वैच्छिक समूह हैं।

197. मध्यप्रदेश लोक सेवा गारंटी अधिनियम, 2010, कुछ मामलों में आवेदक को मुआवजे के भुगतान का प्रावधान करता है। यह मुआवजा कौन देता है?
(A) आवेदक इसे सरकार को भुगतान करता है।
(B) इसका भुगतान संयुक्त राष्ट्र द्वारा किया जाता है।
(C) इसका भुगतान देरी के लिए उत्तरदायी अधिकारी के वेतन से किया जाता है।
(D) केंद्र सरकार एक विशेष कोष से इसका भुगतान करती है।

198. मध्यप्रदेश में जनसंख्या वृद्धि के रुझानों का विश्लेषण किसके लिए आवश्यक है?
(A) ऐतिहासिक कथा साहित्य लिखने के लिए।

NODIA

1. विशेष रुप से कमजोर जनजातीय समूह वन ज्ञान
2. ग्वालियर-चंबल
3. दक्षिण म.प्र./अनुष्ठानिक नाटक
4. सबसे बड़ी जनजाति/पश्चिमी म.प्र.

निम्नलिखित में से कौन सा सही मिलान है?
(A) P-1, Q-2, R-3, S-4
(B) P-4, Q-1, R-2, S-3
(C) P-2, Q-3, R-4, S-1
(D) P-3, Q-4, R-1, S-2

221. मध्यप्रदेश में पोषण और स्वास्थ्य कार्यक्रम जो बच्चे के जीवन के पहले 1000 दिनों पर केंद्रित है, इस समझ पर आधारित है कि:
(A) यह अवधि बच्चे के विकास के लिए अप्रासंगिक है।
(B) इस दौरान बच्चों को कोई विशेष भोजन नहीं दिया जाना चाहिए।
(C) यह शारीरिक और संज्ञानात्मक विकास के लिए एक महत्वपूर्ण समय है।
(D) स्कूल प्रवेश के लिए यह सबसे अच्छा समय है।

222. पंचायतों को निधि, कार्य, और कार्यकर्ताओं का हस्तांतरण किसका एक मुख्य घटक है?
(A) केंद्रीयकरण।
(B) वैश्वीकरण।
(C) निजीकरण।
(D) विकेंद्रीकरण।

223. मध्यप्रदेश की कई पंचायतों में सरपंच का पद महिलाओं के लिए आरक्षित करने का महत्वपूर्ण प्रभाव क्या रहा है?
(A) इसने पारंपरिक बाधाओं को तोड़ा है और महिला नेतृत्व के उभरने के लिए एक मंच प्रदान किया है।
(B) इसने सिद्ध किया है कि महिलाएं नेतृत्व करने में असमर्थ हैं।
(C) इससे पंचायत व्यवस्था पूरी तरह ध्वस्त हो गई है।
(D) इससे महिलाओं की स्थिति में कोई अंतर नहीं आया है।

224. मध्यप्रदेश में जनजातीय युवाओं को लक्षित करने वाले कल्याणकारी कार्यक्रमों का एक मुख्य उद्देश्य है:
(A) उन्हें शिक्षा प्राप्त करने से हतोत्साहित करना।
(B) उन्हें बेहतर रोजगार के अवसरों के लिए कौशल और शिक्षा प्रदान करना।
(C) उन्हें उनके गाँवों तक सीमित रखना।
(D) उन्हें बिना पारिश्रमिक के कार्य करवाना।

225. भील और भिलाला जनजातियों की पिथोरा चित्रकला न केवल कला है बल्कि यह और क्या है:
(A) मुद्रा का एक रुप।
(B) शांति और समृद्धि के लिए देवताओं को एक अनुष्ठानिक भेंट।
(C) उनकी भाषा की लिपि।
(D) खजाना खोजने का मानचित्र।

226. मध्यप्रदेश में काम करने वाले गैर-सरकारी संगठनों के सामने एक आम चुनौती क्या है?
(A) वित्त पोषण की निरंतरता के मुद्दे, और कभी-कभी, सरकारी एजेंसियों के साथ कठिन संबंध।
(B) समाधान करने के लिए सामाजिक समस्याओं की कमी।
(C) अत्यधिक वित्त पोषण और अतिरिक्त संसाधन।
(D) पूरी तरह से सहायक और समस्या-मुक्त वातावरण।

227. मध्यप्रदेश के संदर्भ में, निम्नलिखित में से कौन सा एक सफल महिला सशक्तिकरण पहल का सबसे अच्छा उदाहरण है?
(A) एक कानून जो महिलाओं के आवागमन को प्रतिबंधित करता है।
(B) एक कार्यक्रम जो महिलाओं की ओर से पुरुषों को नकद प्रदान करता है।
(C) वित्तीय स्वायत्तता के साथ एक सफल उद्यम चलाने वाला स्वयं सहायता समूह।
(D) सभी बालिकाओं के स्कूलों को बंद करने का निर्णय।

228. निम्नलिखित में से कौन सी सेवा मध्यप्रदेश लोक सेवा गारंटी अधिनियम, 2010 के तहत कवर होने की सबसे अधिक संभावना है?
(A) अगले चुनाव के विजेता की भविष्यवाणी करना।
(B) निजी व्यवसाय में लाभ की गारंटी देना।
(C) छात्र के लिए उपन्यास लिखना।
(D) नया बिजली कनेक्शन प्रदान करना।

229. मध्यप्रदेश के जनांकिकीय विवरण में किस पर डेटा शामिल होगा?
(A) इसके राष्ट्रीय उद्यानों में बाघों की संख्या।
(B) राज्य के विभिन्न हिस्सों में वार्षिक वर्षा।
(C) लिंग और क्षेत्र के आधार पर साक्षरता दर।
(D) इसके शासक राजवंशों का इतिहास।

230. मध्यप्रदेश में पंचायती राज व्यवस्था में महिलाओं की भूमिका के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. राज्य में पंचायतों में महिलाओं के लिए 50% आरक्षण का प्रावधान है।
2. महिलाओं की बढ़ती उपस्थिति अक्सर स्वच्छता और पेयजल जैसे मुद्दों पर अधिक ध्यान केंद्रित करने का कारण बनी है।
3. 'सरपंच पति' की स्थिति, जहाँ पुरुष रिश्तेदार छद्म शक्ति का उपयोग करते हैं, एक मान्यता प्राप्त चुनौती है।

ऊपर दिए गए कथनों में से कौन से सही हैं?
(A) केवल 1 और 2
(B) केवल 2 और 3
(C) केवल 1 और 3
(D) 1, 2 और 3

231. मध्यप्रदेश में परिवार कल्याण कार्यक्रमों का सफल कार्यान्वयन किसके लिए महत्वपूर्ण है?
(A) उच्च आर्थिक विकास।

NODIA

देना।

209. निम्नलिखित में से कौन मध्यप्रदेश में परिवार कल्याण कार्यक्रमों का एक मुख्य पहलू है?
(A) बड़े परिवारों को बढ़ावा देना।
(B) मातृ और बाल स्वास्थ्य पर ध्यान केंद्रित करना।
(C) हवाई अड्डों का निर्माण।
(D) वनों का प्रबंधन।

210. मध्यप्रदेश में किशोरियों की पोषण स्थिति में सुधार लाने के उद्देश्य से एक कार्यक्रम किस श्रेणी में आता है?
(A) पोषण और स्वास्थ्य कार्यक्रम।
(B) पंचायती राज सुधार।
(C) जनजातीय कला प्रोत्साहन।
(D) सार्वजनिक बुनियादी ढांचा विकास।

211. मध्यप्रदेश में पंचायती राज संस्थाओं में महिलाओं के लिए 50% आरक्षण किसका उद्देश्य है:
(A) महिलाओं को राजनीतिक क्षेत्र में प्रवेश करने से हतोत्साहित करना।
(B) स्थानीय शासन में पुरुषों की विशिष्ट भूमिका को सीमित करना।
(C) निर्णय लेने वाले निकायों में उनका वास्तविक प्रतिनिधित्व सुनिश्चित करना।
(D) आम चुनावों को काफी महंगा बनाना।

212. ग्रामीण नेतृत्व पंचायती राज के कामकाज में किस तरह योगदान देता है?
(A) सभी विकास परियोजनाओं का विरोध करके।
(B) गाँव के भीतर संघर्ष उत्पन्न करके।
(C) निर्वाचित सरपंच के विरुद्ध कार्य करके।
(D) पंचायत गतिविधियों के लिए सामुदायिक समर्थन और भागीदारी जुटाकर।

213. गोंड जनजाति के सामाजिक संगठन में पाए जाने वाले टोटेमिक गोत्र किसका संकेत देते हैं?
(A) एक आर्थिक वर्ग।
(B) एक राजनीतिक संबद्धता।
(C) एक पौराणिक पूर्वज से संबंध, जो अक्सर एक पशु या पौधा होता है।
(D) शैक्षिक उपलब्धि का स्तर।

214. भील जनजाति के त्योहार भगोरिया हाट का उत्सव मध्यप्रदेश के किसका जीवंत उदाहरण है?
(A) औद्योगिक परिदृश्य।
(B) जनजातीय संस्कृति।
(C) शहरी नियोजन।
(D) राजनीतिक इतिहास।

215. एक गैर-सरकारी संगठन और सरकारी विभाग के बीच मूल अंतर क्या है?
(A) कोई अंतर नहीं है; वे एक ही हैं।
(B) गैर-सरकारी संगठन हमेशा अंतरराष्ट्रीय स्तर पर वित्तपोषित होते हैं, जबकि सरकारी विभाग नहीं।
(C) गैर-सरकारी संगठन केवल शहरों में कार्य करते हैं, जबकि सरकारी विभाग केवल गाँवों में कार्य करते हैं।
(D) एक गैर-सरकारी संगठन निजी, गैर-लाभकारी नागरिक समाज क्षेत्र का हिस्सा है, जबकि एक सरकारी विभाग राज्य तंत्र का हिस्सा है।

216. मध्यप्रदेश में स्वयं सहायता समूहों का विकास किसके लिए एक प्रमुख रणनीति है?
(A) महिलाओं की आर्थिक आत्मनिर्भरता और सशक्तिकरण को बढ़ावा देना।
(B) बेरोजगारी बढ़ाना।
(C) बचत को हतोत्साहित करना।
(D) बैंकिंग क्षेत्र को कमजोर करना।

217. 2010 के अधिनियम के तहत समयबद्ध सेवा के अधिकार का अस्तित्व आधिकारिक विवेक की प्रणाली से किस प्रणाली में बदलाव है?
(A) आधिकारिक विशेषाधिकार।
(B) अधिक अस्पष्टता।
(C) नागरिक पात्रता।
(D) सार्वजनिक भ्रम।

218. मध्यप्रदेश की जनसंख्या वृद्धि दर में बढ़ते रुझान का क्या अर्थ होगा?
(A) एक बढ़ती हुई जनसंख्या जिसे भविष्य में अधिक संसाधनों और सेवाओं की आवश्यकता होगी।
(B) स्कूलों और अस्पतालों की घटती आवश्यकता।
(C) मृत्यु दर जन्म दर से अधिक है।
(D) परिवार कल्याण कार्यक्रम अत्यधिक सफल रहे हैं।

219. मध्यप्रदेश के लिंगानुपात का विश्लेषण जो 0-6 आयु वर्ग में बालकों की तुलना में बालिकाओं की कम संख्या दिखाता है, किसके लिए एक गंभीर चिंता का विषय है?
(A) पर्यटन उद्योग।
(B) निर्माण क्षेत्र।
(C) राज्य की खेल नीति।
(D) भविष्य का जनांकिकीय संतुलन और सामाजिक स्थिरता।

220. मध्यप्रदेश की जनजातियों और उनकी प्रमुख विशेषताओं या संबंधित क्षेत्रों के संबंध में सूची I को सूची II से सुमेलित कीजिए।
सूची I (जनजाति):
P. भील
Q. बैगा
R. सहारिया
S. कोरकू
सूची II (मुख्य विवरण):

Downloaded from www.pdf.tube

(C) उनके नृत्य रूपों को संरक्षित करना।
(D) उनकी कृषि आजीविका में सुधार करना।

245. मध्यप्रदेश की जनजातीय कला, जैसे ढोकरा शिल्प या पिथोरा चित्रकला, किसका एक महत्वपूर्ण स्रोत है:
(A) राजनीतिक संघर्ष।
(B) पर्यावरण प्रदूषण।
(C) कारीगरों के लिए आजीविका और सांस्कृतिक पहचान।
(D) सामाजिक अशांति।

246. मध्यप्रदेश में एक जनजातीय समुदाय के अधिकारों की रक्षा के लिए जनहित याचिका दायर करने वाला एक गैर-सरकारी संगठन किसमें संलग्न है?
(A) व्यावसायिक गतिविधि।
(B) सामाजिक कार्य के लिए पैरवी और कानूनी कार्रवाई।
(C) राजनीतिक प्रचार।
(D) सरकारी प्रशासन।

247. स्वयं सहायता समूह आंदोलन का एक मुख्य सिद्धांत है:
(A) व्यक्तिगत प्रतिस्पर्धा।
(B) सरकारी नियंत्रण।
(C) दान पर निर्भरता।
(D) पारस्परिक सहायता और सामूहिक जिम्मेदारी।

248. महिला सशक्तिकरण की अवधारणा किसको चुनौती देती है?
(A) पारंपरिक पितृसत्तात्मक संरचनाएं जो महिलाओं के अवसरों को सीमित करती हैं।
(B) लैंगिक समानता का विचार।
(C) महिलाओं की शिक्षा की आवश्यकता।
(D) परिवार में महिलाओं की भूमिका।

249. कौन सा कथन मध्यप्रदेश की जनसांख्यिकी का गलत वर्णन करता है?
(A) राज्य में विभिन्न सामाजिक समूहों के साथ एक विविध जनसंख्या है।
(B) राज्य में एक महत्वपूर्ण जनजातीय आबादी है।
(C) जनसंख्या स्थिर है और बदलती नहीं है।
(D) लिंगानुपात एक प्रमुख जनांकिकीय संकेतक है।

250. निम्नलिखित अभिकथन (A) और कारण (R) को पढ़ें और सही विकल्प चुनें:
अभिकथन (A): पंचायती राज में महिलाओं के लिए आरक्षण उनके वास्तविक सशक्तिकरण के लिए आवश्यक है लेकिन पर्याप्त शर्त नहीं है।
कारण (R): प्रशिक्षण की कमी, सामाजिक बाधाएं और 'सरपंच पति' संस्कृति जैसे मुद्दे निर्वाचित महिला प्रतिनिधियों के प्रभावी कामकाज को सीमित कर सकते हैं।
(A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सही है लेकिन R गलत है।
(D) A गलत है लेकिन R सही है।

251. मध्यप्रदेश में पोषण और स्वास्थ्य पर ध्यान केंद्रित करने वाले कार्यक्रमों का एक मुख्य लक्ष्य किसको कम करना है:
(A) साक्षरता दर।
(B) स्कूलों की संख्या।
(C) सड़कों की लंबाई।
(D) कुपोषण, विशेष रूप से बच्चों और महिलाओं के बीच।

252. मध्यप्रदेश में ग्राम सभा किससे बनी होती है?
(A) केवल सरपंच और पंच।
(B) वे सभी व्यक्ति जिनके नाम पंचायत क्षेत्र की मतदाता सूची में हैं।
(C) गाँव में तैनात केवल सरकारी अधिकारी।
(D) केवल प्रभावशाली जाति के सदस्य।

253. एक पारंपरिक गाँव के मुखिया से एक निर्वाचित सरपंच में संक्रमण किसकी प्रकृति में बदलाव का संकेत देता है:
(A) जनजातीय संस्कृति।
(B) महिला सशक्तिकरण।
(C) ग्रामीण नेतृत्व।
(D) जनांकिकीय रुझान।

254. मध्यप्रदेश में जनजातियों के सामाजिक संगठन के संदर्भ में 'गोत्र' शब्द का तात्पर्य है:
(A) एक प्रकार का नृत्य।
(B) एक गाँव का त्योहार।
(C) एक विशिष्ट प्रकार का भोजन।
(D) एक वंश समूह, जो आमतौर पर बहिर्विवाही होता है।

255. मध्यप्रदेश में एक सरकारी निकाय द्वारा एक प्रमुख शहर में "जनजातीय कला मेला" आयोजित करना किसकी एक पहल है:
(A) जनजातीय संस्कृति को बढ़ावा देना और कारीगरों को बाजार प्रदान करना।
(B) जनजातीय कला को हतोत्साहित करना।
(C) जनजातियों की जनसांख्यिकी का अध्ययन करना।
(D) परिवार कल्याण कार्यक्रम लागू करना।

256. मध्यप्रदेश में गैर-सरकारी संगठनों की गतिविधियों का संभावित सकारात्मक परिणाम निम्नलिखित में से कौन सा है?
(A) भ्रष्टाचार में वृद्धि।
(B) अधिक नागरिक जागरूकता और शासन में भागीदारी।
(C) स्थानीय समुदायों का दमन।
(D) सार्वजनिक सेवाओं में गिरावट।

257. मध्यप्रदेश में एक स्वयं सहायता समूह के सफल होने के लिए सबसे महत्वपूर्ण तत्व क्या है?
(A) एक बड़ा कार्यालय भवन।
(B) नियमित बैठकें, खातों में पारदर्शिता और सदस्यों के बीच आपसी विश्वास।

NODIA

(C) एक शक्तिशाली राजनीतिक संबंध।
(D) किसी विदेशी देश से एक बड़ा अनुदान।

258. मध्यप्रदेश में महिला सशक्तिकरण को बढ़ावा देने के लक्ष्यों में से एक है:
(A) यह सुनिश्चित करना कि महिलाओं का उन निर्णयों में प्रभाव हो जो उनके जीवन को प्रभावित करते हैं।
(B) महिलाओं को उनके घरों तक सीमित रखना।
(C) स्कूल जाने वाली लड़कियों की संख्या कम करना।
(D) महिलाओं को उनकी सभी जरूरतों के लिए पुरुषों पर निर्भर बनाना।

259. मध्यप्रदेश लोक सेवा गारंटी अधिनियम, 2010 का एक बड़ा नवाचार क्या था?
(A) इसने नई सरकारी सेवाएँ बनाईं।
(B) इसने कई सार्वजनिक सेवाओं को समाप्त कर दिया।
(C) इसने सरकार को एक विशिष्ट समय के भीतर मौजूदा सेवाओं को वितरित करने के लिए कानूनी रूप से बाध्य किया।
(D) इसने सभी सरकारी विभागों का निजीकरण कर दिया।

260. निम्नलिखित में से कौन मध्यप्रदेश में परिवार कल्याण कार्यक्रमों का प्राथमिक केंद्र है?
(A) वाणिज्यिक भवनों का निर्माण।
(B) सॉफ्टवेयर पार्कों का विकास।
(C) पर्यटन को बढ़ावा देना।
(D) माता और बच्चे का स्वास्थ्य और कल्याण।

261. त्रिस्तरीय पंचायती राज व्यवस्था क्या सुगम बनाती है?
(A) विकास के लिए केवल ऊपर से नीचे का दृष्टिकोण।
(B) जिला प्रशासन का उन्मूलन।
(C) योजना और विकास के लिए नीचे से ऊपर का दृष्टिकोण।
(D) सभी वित्तीय शक्तियों का केंद्रीकरण।

262. एक महिला सरपंच की उपस्थिति एक शक्तिशाली रोल मॉडल के रूप में कार्य कर सकती है, जो अधिक महिलाओं को सार्वजनिक जीवन में भाग लेने के लिए प्रोत्साहित करती है। यह किसका एक मुख्य पहलू है:
(A) जनजातीय सामाजिक संगठन।
(B) पंचायती राज में महिलाओं की भूमिका और भागीदारी।
(C) लोक सेवा गारंटी अधिनियम।
(D) जनांकिकीय अध्ययन।

263. मध्यप्रदेश में भील जनजाति के विवाह रीति-रिवाजों का अध्ययन उनके किसका अध्ययन होगा:
(A) आर्थिक प्रणाली।
(B) राजनीतिक संरचना।
(C) कला रूप।
(D) सामाजिक संगठन।

264. मध्यप्रदेश की जनजातियों के लिए कल्याणकारी कार्यक्रम संवैधानिक रूप से समर्थित हैं क्योंकि:
(A) संविधान अनुसूचित जनजातियों की उन्नति के लिए विशेष उपायों का प्रावधान करता है।
(B) यह अंतरराष्ट्रीय संगठनों की मांग है।
(C) जनजातियों के पास स्वयं बहुत पैसा है।
(D) कोई विशिष्ट कारण नहीं है।

265. मध्यप्रदेश की सामाजिक संरचना के निम्नलिखित घटकों पर विचार कीजिए:
1. एक गाँव में एक स्वयं सहायता समूह।
2. जिला पंचायत।
3. ग्राम पंचायत।
निम्नलिखित में से कौन वृहद से सूक्ष्म स्तर तक के तार्किक अनुक्रम का प्रतिनिधित्व करता है?
(A) 1, 2, 3
(B) 3, 1, 2
(C) 2, 3, 1
(D) 1, 3, 2

266. एक त्योहार जो कृषि चक्र से निकटता से जुड़ा हुआ है और फसल कटाई के बाद एक जनजाति द्वारा मनाया जाता है, किसके बीच गहरे संबंध का एक उदाहरण है:
(A) जनजातीय संस्कृति और प्रकृति।
(B) गैर-सरकारी संगठन और सरकार।
(C) जनसांख्यिकी और राजनीति।
(D) पंचायती राज और शहरी जीवन।

267. एक स्वयं सहायता समूह और एक पारंपरिक बैंक के बीच प्राथमिक अंतर क्या है?
(A) स्वयं सहायता समूह धन का लेन-देन नहीं करते हैं।
(B) बैंक केवल महिलाओं के लिए हैं, और स्वयं सहायता समूह केवल पुरुषों के लिए हैं।
(C) कोई अंतर नहीं है।
(D) स्वयं सहायता समूह अनौपचारिक सदस्य-संचालित समूह हैं जबकि बैंक औपचारिक विनियमित संस्थान हैं।

268. मध्यप्रदेश में माध्यमिक शिक्षा पूर्ण करने वाली लड़कियों की संख्या बढ़ाने की पहल किसकी दिशा में एक कदम है:
(A) साक्षरता दर कम करना।
(B) महिला सशक्तिकरण।
(C) शिक्षा को हतोत्साहित करना।
(D) जनसंख्या वृद्धि दर बढ़ाना।

269. मध्यप्रदेश में तदनुरूप आर्थिक विकास के बिना उच्च जनसंख्या वृद्धि दर किसका कारण बन सकती है:
(A) बेरोजगारी में कमी।
(B) संसाधनों की प्रति व्यक्ति उपलब्धता में वृद्धि।
(C) बेरोजगारी में वृद्धि और सार्वजनिक सेवाओं पर दबाव।
(D) सभी के लिए जीवन की बेहतर गुणवत्ता।

Click Here to Buy book on Amazon

270. मध्यप्रदेश की जनसांख्यिकी में "बाल लिंगानुपात" किसको संदर्भित करता है:
(A) 7-14 आयु वर्ग में प्रति 1000 बालकों पर बालिकाओं की संख्या।
(B) राज्य में बच्चों की कुल संख्या।
(C) स्कूल जाने वाले बालकों का बालिकाओं से अनुपात।
(D) 0-6 आयु वर्ग में प्रति 1000 बालकों पर बालिकाओं की संख्या।

271. मध्यप्रदेश में पोषण और स्वास्थ्य के एक प्रभावी कार्यक्रम को किसके द्वारा समर्थित होना चाहिए:
(A) आँगनवाड़ी केंद्रों और स्वास्थ्य कार्यकर्ताओं जैसे एक मजबूत वितरण तंत्र द्वारा।
(B) अस्पतालों के बंद होने द्वारा।
(C) खेती पर प्रतिबंध द्वारा।
(D) जंक फूड को बढ़ावा देने द्वारा।

272. जिला पंचायत की भूमिका मुख्य रूप से किसकी है:
(A) एक ही गाँव का प्रत्यक्ष प्रशासन।
(B) जिला स्तर पर पर्यवेक्षण, समन्वय और योजना बनाना।
(C) भारतीय संसद के लिए कानून बनाना।
(D) अंतरराष्ट्रीय कूटनीति का संचालन करना।

273. मध्यप्रदेश की पंचायतों में 'छद्म नेतृत्व' या 'सरपंच पति' की अवधारणा किसके वास्तविक स्वरूप के लिए एक चुनौती है:
(A) पुरुषों की भागीदारी।
(B) महिलाओं की भागीदारी।
(C) सत्ता का विकेंद्रीकरण।
(D) पंचायतों का वित्तपोषण।

274. मध्यप्रदेश में जनजातीय समुदायों को वन अधिकार और लघु वनोपज का स्वामित्व प्रदान करने वाला कल्याणकारी कार्यक्रम किसको स्वीकार करता है:
(A) वनों के साथ उनकी पारंपरिक निर्भरता और सहजीवी संबंध।
(B) शहरों में जाने की उनकी इच्छा।
(C) आर्थिक गतिविधियों में रुचि की कमी।
(D) अपनी ही संस्कृति के प्रति अरुचि।

275. गोंड चित्रकला में उपयोग किए जाने वाले रूपांकन, जैसे कि महुआ का पेड़, महत्वपूर्ण हैं क्योंकि वे प्रतिनिधित्व करते हैं:
(A) यादृच्छिक सजावटी पैटर्न।
(B) पश्चिमी कला से नकल किए गए डिजाइन।
(C) तत्व जो जनजाति के जीवन, अर्थव्यवस्था और पौराणिक कथाओं के केंद्र में हैं।
(D) राजनीतिक प्रतीक।

276. मध्यप्रदेश जैसे स्थानों पर एक स्वस्थ लोकतंत्र के लिए गैर-सरकारी संगठनों को अक्सर महत्वपूर्ण क्यों माना जाता है?
(A) क्योंकि वे सरकार का स्थान लेते हैं।
(B) क्योंकि वे रोजगार का मुख्य स्रोत हैं।
(C) क्योंकि वे मीडिया को नियंत्रित करते हैं।
(D) क्योंकि वे नागरिक समाज की आवाज का प्रतिनिधित्व करते हैं और सरकार को जवाबदेह ठहरा सकते हैं।

277. मध्यप्रदेश के एक गाँव में एक स्वयं सहायता समूह जो अपने समुदाय में बाल विवाह के विरुद्ध अभियान चलाने का सामूहिक रुप से निर्णय लेता है, किसका एक उदाहरण है:
(A) केवल आर्थिक गतिविधि।
(B) एक सरकारी आदेश।
(C) सामाजिक सशक्तिकरण और सामूहिक कार्रवाई।
(D) एक अवैध गतिविधि।

278. मध्यप्रदेश लोक सेवा गारंटी अधिनियम, 2010 किस पर आधारित है:
(A) दान-आधारित दृष्टिकोण।
(B) शासन के प्रति अधिकार-आधारित दृष्टिकोण।
(C) विवेक-आधारित दृष्टिकोण।
(D) केवल बाजार-आधारित दृष्टिकोण।

279. जनांकिकीय लाभांश उस आर्थिक विकास क्षमता को संदर्भित करता है जो जनसंख्या की आयु संरचना में बदलाव से उत्पन्न हो सकती है। मध्यप्रदेश को इससे लाभान्वित होने के लिए किसकी आवश्यकता है:
(A) एक वृद्ध, आश्रित जनसंख्या।
(B) एक बहुत ही उच्च जन्म दर।
(C) एक उच्च मृत्यु दर।
(D) युवा, कार्यशील आयु वर्ग में जनसंख्या का एक बड़ा हिस्सा।

280. यह तथ्य कि मध्यप्रदेश में परिवार कल्याण कार्यक्रम अब पूरे परिवार के 'कल्याण' पर जोर देते हैं, किस पुराने संकीर्ण फोकस से बदलाव का प्रतीक है:
(A) केवल जनसंख्या नियंत्रण।
(B) केवल आर्थिक विकास।
(C) केवल अस्पताल बनाना।
(D) केवल शिक्षा।

281. मध्यप्रदेश में ग्राम सभा की बैठकें किसके लिए एक मंच प्रदान करती हैं:
(A) राज्य मंत्रिमंडल की बैठक के लिए।
(B) जिला पंचायत मुख्य कार्यपालन अधिकारी द्वारा ग्रामीणों को संबोधित करने के लिए।
(C) ग्राम पंचायत के कार्यों के प्रत्यक्ष लोकतंत्र और सामाजिक अंकेक्षण के लिए।
(D) राष्ट्रीय राजनीतिक दलों की रैलियाँ आयोजित करने के लिए।

282. मध्यप्रदेश में विकेंद्रीकरण की सफलता को अक्सर किसके द्वारा मापा जाता है:
(A) उस सीमा तक जहाँ स्थानीय निकाय स्थानीय आवश्यकताओं के आधार पर परियोजनाओं की योजना

NODIA

(B) बढ़ती राजनीतिक अस्थिरता।
(C) साक्षरता में गिरावट।
(D) सतत विकास और जनसंख्या स्थिरीकरण।

232. मध्यप्रदेश में एक निर्वाचित सरपंच किसका प्रतिनिधित्व करता है?
(A) औपचारिक, लोकतांत्रिक ग्रामीण नेतृत्व।
(B) पारंपरिक वंशानुगत नेतृत्व।
(C) नियुक्त नौकरशाही नेतृत्व।
(D) अनौपचारिक, सामाजिक नेतृत्व।

233. गोंड जनजाति का 'राज गोंड' और 'धुर गोंड' में विभाजन किसका उदाहरण है?
(A) भौगोलिक विभाजन।
(B) नृत्य रूपों पर आधारित विभाजन।
(C) जनजाति के भीतर सामाजिक स्तरीकरण।
(D) त्योहारों के लिए एक अस्थायी व्यवस्था।

234. खंब स्वांग, एक स्तंभ के चारों ओर केंद्रित एक नाटकीय प्रदर्शन, मध्यप्रदेश की किस जनजाति का सांस्कृतिक आकर्षण है?
(A) कोरकू
(B) भील
(C) गोंड
(D) बैगा

235. स्वयं सहायता समूहों और महिला सशक्तिकरण के बीच संबंध यह है कि स्वयं सहायता समूह क्या प्रदान करते हैं:
(A) मुख्यमंत्री बनने का सीधा मार्ग।
(B) परिवार की सभी जिम्मेदारियों से बचने का उपाय।
(C) सरकारी पेंशन पाने का साधन।
(D) जमीनी स्तर पर आर्थिक और सामाजिक सशक्तिकरण के लिए एक तंत्र।

236. मध्यप्रदेश लोक सेवा गारंटी अधिनियम, 2010 में दंड खंड किसके लिए तैयार किया गया है?
(A) सेवा माँगने के लिए नागरिक को दंडित करना।
(B) सरकारी अधिकारी की ओर से जवाबदेही सुनिश्चित करना।
(C) सरकार के लिए राजस्व उत्पन्न करना।
(D) लोगों को सरकारी सेवाओं का उपयोग करने से हतोत्साहित करना।

237. सरकार के लिए मध्यप्रदेश में जनसंख्या वृद्धि का अध्ययन क्यों महत्वपूर्ण है?
(A) राज्य की आधिकारिक भाषा तय करने के लिए।
(B) राज्य के लिए राजधानी चुनने के लिए।
(C) भोजन, आवास और नौकरियों की भविष्य की मांग की योजना बनाने के लिए।
(D) राज्य ध्वज डिजाइन करने के लिए।

238. "जननी एक्सप्रेस" मध्यप्रदेश में एक सेवा है जो गर्भवती महिलाओं को आपातकालीन परिवहन प्रदान करती है। यह किसके तहत एक व्यापक प्रयास का हिस्सा है?
(A) जनजातीय कल्याण कार्यक्रम।
(B) लोक सेवा गारंटी अधिनियम।
(C) पंचायती राज प्रशासन।
(D) परिवार कल्याण और स्वास्थ्य कार्यक्रम।

239. मध्यप्रदेश के लिंगानुपात की राष्ट्रीय औसत के साथ तुलना किसमें एक सामान्य अभ्यास है?
(A) जनांकिकीय विश्लेषण।
(B) राजनीतिक विश्लेषण।
(C) आर्थिक पूर्वानुमान।
(D) सांस्कृतिक इतिहास।

240. मध्यप्रदेश में एकीकृत बाल विकास सेवा योजना, जो आँगनवाड़ी केंद्रों के माध्यम से संचालित होती है, किसका एक प्रमुख उदाहरण है?
(A) जनजातीय कला प्रोत्साहन योजना।
(B) पोषण और स्वास्थ्य कार्यक्रम।
(C) स्थानीय स्वशासन सुधार।
(D) सार्वजनिक परिवहन पहल।

241. मध्यप्रदेश में पंचायती राज की त्रिस्तरीय व्यवस्था में जनपद पंचायत किसके बीच एक कड़ी के रूप में कार्य करती है?
(A) राज्य सरकार और केंद्र सरकार।
(B) ग्राम पंचायत और जिला पंचायत।
(C) जिला पंचायत और राज्य सरकार।
(D) ग्राम पंचायत और ग्राम न्यायालय।

242. विकेंद्रीकरण की प्रक्रिया को तब अपूर्ण माना जाता है जब इसमें कार्यों का हस्तांतरण तो शामिल हो लेकिन क्या शामिल न हो:
(A) पर्याप्त निधि और कार्यकर्ता।
(B) अधिक नियम और कानून।
(C) राज्य की राजधानी से कड़ा नियंत्रण।
(D) स्थानीय चुनावों का उन्मूलन।

243. मध्यप्रदेश में एक विशेष रूप से कमजोर जनजातीय समूह सहारिया जनजाति का सामाजिक संगठन बुजुर्गों की एक परिषद के इर्द-गिर्द केंद्रित है जिसे कहा जाता है:
(A) घोटुल
(B) फालिया
(C) पंचायत
(D) चौरासी

244. मध्यप्रदेश में जनजातीय किसानों को बीज और उपकरण प्रदान करने वाली एक जनजातीय कल्याण योजना का उद्देश्य है:
(A) उनके कलात्मक कौशल को बढ़ावा देना।
(B) उनके स्वास्थ्य में सुधार करना।

Downloaded from www.pdf.tube

295. मध्यप्रदेश में परिवार कल्याण कार्यक्रमों का केंद्र निम्नलिखित में से कौन सा नहीं है?
(A) सुरक्षित मातृत्व।
(B) बाल उत्तरजीविता।
(C) परिवार नियोजन।
(D) व्यावसायिक ऋण प्रदान करना।

296. पंचायती राज में महिलाओं की प्रभावी भागीदारी के लिए एक मुख्य चुनौती है:
(A) पितृसत्तात्मक सामाजिक मानदंडों और क्षमता निर्माण सहायता की कमी को दूर करना।
(B) उनकी रुचि की कमी।
(C) कानूनी समर्थन का अभाव।
(D) जटिल मुद्दों को समझने में उनकी असमर्थता।

297. मध्यप्रदेश में कई, विविध जनजातीय नृत्यों, कलाओं और त्योहारों का अस्तित्व राज्य की किसकी ओर संकेत करता है:
(A) संस्कृति की कमी।
(B) सजातीय समाज।
(C) समृद्ध सांस्कृतिक और जातीय विविधता।
(D) राजनीतिक एकता।

298. एक प्रहरी के रूप में एक गैर-सरकारी संगठन की भूमिका उसके किस कार्य को संदर्भित करती है:
(A) सरकारी नीतियों और उनके कार्यान्वयन की निगरानी करना।
(B) सुरक्षा सेवाएँ प्रदान करना।
(C) स्थानीय चिड़ियाघर चलाना।
(D) मीडिया को नियंत्रित करना।

299. ग्रामीण मध्यप्रदेश में महिलाओं के लिए, एक स्वयं सहायता समूह किसकी ओर पहला कदम हो सकता है:
(A) अधिक सामाजिक अलगाव।
(B) आर्थिक निर्भरता।
(C) राजनीतिक अधिकार छीनना।
(D) वित्तीय समावेशन और सामाजिक सशक्तिकरण।

300. मध्यप्रदेश का समग्र सामाजिक परिदृश्य किसका एक मिश्रण है:
(A) केवल भूगोल और जलवायु।
(B) शासन संरचनाएं, सामाजिक समूह, विकास पहल और जनसांख्यिकी।
(C) केवल प्राचीन इतिहास।
(D) केवल औद्योगिक उत्पादन और निर्यात।

www.nodia.in
NODIA

53. (C) जनजातीय कला
ढोकरा कला मध्य प्रदेश की एक प्राचीन और अत्यंत सुंदर धातु शिल्प कला है, जिसे लॉस्ट-वैक्स कास्टिंग तकनीक के माध्यम से बनाया जाता है। इस कला में मुख्य रूप से पीतल और तांबे जैसी धातुओं का उपयोग करके देवताओं, पशुओं और दैनिक जीवन की आकृतियां उकेरी जाती हैं। यह मध्य प्रदेश के भरिया और गोंड जैसे कुछ विशिष्ट जनजातीय समुदायों की पहचान है। यह शिल्प न केवल उनकी कलात्मक रचनात्मकता का प्रमाण है, बल्कि यह इन समुदायों के लिए आय का एक महत्वपूर्ण स्रोत और उनकी समृद्ध सांस्कृतिक विरासत का प्रतीक भी है।

54. (B) महिला साक्षरता, कार्यबल भागीदारी और निर्णय लेने वाली भूमिकाओं जैसे संकेतकों में सुधार।
महिला सशक्तिकरण की वास्तविक सफलता का मूल्यांकन केवल सरकारी घोषणाओं से नहीं, बल्कि धरातल पर दिखने वाले ठोस परिणामों से किया जाता है। जब महिला साक्षरता दर में वृद्धि होती है, उनकी कार्यबल में भागीदारी बढ़ती है और वे पंचायतों जैसे महत्वपूर्ण निकायों में स्वतंत्र रूप से निर्णय लेती हैं, तब सही मायने में सशक्तिकरण होता है। ये संकेतक दर्शाते हैं कि महिलाएं सामाजिक और आर्थिक बाधाओं को पार कर रही हैं। मध्य प्रदेश के विकास लक्ष्यों के लिए इन मापदंडों में सकारात्मक परिवर्तन आना अत्यंत अनिवार्य और महत्वपूर्ण माना जाता है।

55. (B) 2, 3, 1
मध्य प्रदेश की पंचायती राज व्यवस्था में प्रशासनिक दायरे के अनुसार एक निश्चित पदानुक्रम है। सबसे छोटे स्तर पर ग्राम पंचायत कार्य करती है जो एक या कुछ गाँवों तक सीमित होती है। उससे बड़े क्षेत्र यानी विकास खंड स्तर पर जनपद पंचायत का अधिकार क्षेत्र होता है, जो कई ग्राम पंचायतों का समन्वय करती है। सबसे ऊपर जिला स्तर पर जिला पंचायत होती है, जिसका प्रशासनिक दायरा पूरे जिले के ग्रामीण क्षेत्रों तक विस्तृत होता है। अतः बढ़ता हुआ सही क्रम ग्राम पंचायत, जनपद पंचायत और फिर जिला पंचायत है, जो शासन को सुव्यवस्थित बनाता है।

56. (A) पदाभिहित अधिकारी
मध्य प्रदेश लोक सेवा गारंटी अधिनियम, 2010 के प्रभावी संचालन के लिए प्रत्येक अधिसूचित सेवा हेतु एक विशिष्ट अधिकारी की नियुक्ति की जाती है। इस अधिकारी को पदाभिहित अधिकारी कहा जाता है, जिसकी प्राथमिक जिम्मेदारी यह सुनिश्चित करना है कि नागरिक को उसकी मांगी गई सेवा निर्धारित समय सीमा के भीतर प्राप्त हो। यदि यह अधिकारी बिना किसी उचित कारण के सेवा प्रदान करने में विफल रहता है, तो उस पर जुर्माना लगाया जा सकता है। यह व्यवस्था सरकारी कर्मचारियों को उनके कार्यों के प्रति अधिक उत्तरदायी और सक्रिय बनाने में सफल रही है।

57. (C) कथन I गलत है, लेकिन कथन II सही है।
मध्य प्रदेश की जनजातीय समुदायों में परिवार का स्वरूप केवल एकल परिवार तक सीमित नहीं है, बल्कि विस्तारित परिवार की अवधारणा भी अत्यंत महत्वपूर्ण है। जनजातीय सामाजिक ताने-बाने में गोत्र और नातेदारी की भूमिका बहुत गहरी होती है, जो उनके विवाह संबंधों, धार्मिक अनुष्ठानों और सामूहिक उत्सवों को व्यवस्थित करती है। गोत्र प्रणाली न केवल सामाजिक अनुशासन बनाए रखती है, बल्कि संकट के समय एक मजबूत सुरक्षा तंत्र भी प्रदान करती है। अतः विस्तारित परिवार और गोत्र ही जनजातीय समाज के वास्तविक और सशक्त आधार स्तंभ माने जाते हैं जो एकता प्रदान करते हैं।

58. (A) सार्वभौमिक टीकाकरण कार्यक्रम।
मध्य प्रदेश के परिवार कल्याण कार्यक्रमों का एक अत्यंत महत्वपूर्ण और बुनियादी घटक सार्वभौमिक टीकाकरण कार्यक्रम है। इस योजना का मुख्य उद्देश्य शिशुओं और छोटे बच्चों को जानलेवा बीमारियों से बचाना और बाल मृत्यु दर में प्रभावी कमी लाना है। नियमित टीकाकरण के माध्यम से बच्चों की रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाई जाती है, जिससे वे स्वस्थ जीवन जी सकें। यह कार्यक्रम राज्य के सभी स्वास्थ्य केंद्रों और आँगनवाड़ियों के माध्यम से निःशुल्क संचालित किया जाता है, जो एक स्वस्थ और सुरक्षित समाज के निर्माण की दिशा में महत्वपूर्ण प्रभावी कदम है।

59. (D) लिंग आधारित भेदभाव जैसे लिंग-चयनात्मक गर्भपात की उपस्थिति।
किसी भी क्षेत्र में लिंगानुपात में गिरावट सामाजिक विकास के लिए एक गंभीर खतरे का संकेत होती है। मध्य प्रदेश के संदर्भ में, यदि महिलाओं की संख्या पुरुषों की तुलना में कम होती है, तो यह पुत्र के प्रति सामाजिक प्राथमिकता और बालिकाओं की उपेक्षा जैसे गहरे भेदभाव को उजागर करती है। यह स्थिति लिंग-चयनात्मक गर्भपात जैसी अनैतिक प्रथाओं की उपस्थिति का भी संकेत हो सकती है। ऐसी गिरावट भविष्य में सामाजिक असंतुलन पैदा करती है, जिसे रोकने के लिए शिक्षा और कानूनी प्रवर्तन के माध्यम से व्यापक जन जागरूकता की अत्यंत आवश्यकता है।

60. (C) केवल 2 और 3
मध्य प्रदेश में जनजातीय कल्याण कार्यक्रमों का मुख्य उद्देश्य इस वंचित वर्ग को शोषण से मुक्त करना और उन्हें आत्मनिर्भर बनाना है। इन योजनाओं में साहूकारों और बिचौलियों के चंगुल से बचाने हेतु विशेष वित्तीय प्रावधान और कानूनी सहायता शामिल होती है। इसके अतिरिक्त, जनजातियों के भूमि अधिकारों का संरक्षण और उन्हें कानूनी सशक्तिकरण प्रदान करना सरकार की प्राथमिकताओं में शामिल है। ये कार्यक्रम राज्य और केंद्र सरकार द्वारा सामूहिक रूप से तैयार और कार्यान्वित किए जाते हैं, जिनमें गैर-सरकारी संगठन भी एक सहयोगी की महत्वपूर्ण भूमिका प्रभावी ढंग से निभाते हैं।

61. (C) वित्तीय विकेंद्रीकरण
पंचायतों को कुछ विशिष्ट स्थानीय कर लगाने और राजस्व एकत्र करने का अधिकार देना वित्तीय विकेंद्रीकरण का एक उत्कृष्ट उदाहरण है। इसका उद्देश्य स्थानीय स्वशासन निकायों को आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बनाना है ताकि वे अपने गाँव के विकास कार्यों के लिए धन की व्यवस्था स्वयं कर सकें। जब पंचायतों के पास स्वयं का कोष होता है, तो वे राज्य सरकार

Click Here to Buy book on Amazon

STUDYING FROM PDFs?

THINK AGAIN.

If you are studying only from PDFs,
you are wasting valuable time.

Research shows that learning from

PRINTED BOOKS has up to

4× HIGHER RETENTION

than studying from screens.

PRINT BOOK = BETTER MEMORY

PDF = LOWER RETENTION

Those who study from **PRINTED BOOKS**
move **AHEAD.**

Others are left **BEHIND**
in competition.



In competitive exams,
being average is not enough.

STAY ONE STEP AHEAD.

जिला स्तर पर जिला पंचायत कार्य करती है। ब्लॉक विकास परिषद इस व्यवस्था का औपचारिक या मान्यता प्राप्त स्तर नहीं है। शासन की यह त्रिस्तरीय प्रणाली ग्रामीण क्षेत्रों में सत्ता के प्रभावी विकेंद्रीकरण और स्थानीय विकास परियोजनाओं के लोकतांत्रिक क्रियान्वयन को सुनिश्चित करने हेतु विशेष रूप से निर्मित की गई है।

10. (B) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
मध्य प्रदेश में पंचायतों में महिलाओं हेतु सीटों का आरक्षण उनकी राजनीतिक दृश्यता बढ़ाने में सफल रहा है। यद्यपि महिलाओं की भागीदारी ग्रामीण विकास की योजनाओं में लिंग-विशिष्ट मुद्दों को उठाने के लिए अत्यंत आवश्यक है, फिर भी केवल भागीदारी ही दृश्यता में वृद्धि का एकमात्र कारण नहीं है। सामाजिक जागरूकता और शिक्षा जैसे अन्य कारकों ने भी इसमें व्यापक योगदान दिया है। अतः अभिकथन और कारण दोनों अपने आप में सही हैं, किंतु वे पूर्णतः एक-दूसरे की तार्किक व्याख्या नहीं करते हैं।

11. (D) भगोरिया हाट
भगोरिया हाट मध्य प्रदेश की भील जनजाति का एक अत्यंत जीवंत और प्रसिद्ध त्योहार है, जो विशेष रूप से होली के अवसर पर मनाया जाता है। यह त्योहार एक बड़े मेले के रूप में आयोजित होता है जहाँ जनजातीय युवा अपनी परंपराओं के अनुसार जीवनसाथी का चुनाव करते हैं। यह उत्सव सांस्कृतिक उत्साह, पारंपरिक संगीत और नृत्य का अनुपम संगम है। यह मेला न केवल आर्थिक गतिविधियों का केंद्र है, बल्कि भील समुदाय के सामाजिक संबंधों और आपसी एकता को मजबूत करने का माध्यम भी है।

12. (B) पारंपरिक झूम कृषि पद्धतियों को बढ़ावा देना।
मध्य प्रदेश में जनजातीय कल्याण कार्यक्रमों का प्राथमिक लक्ष्य शिक्षा, स्वास्थ्य और आर्थिक सुरक्षा सुनिश्चित करना है। ये योजनाएं छात्रवृत्ति प्रदान करने, बेहतर पोषण सेवाएं देने और भूमि अधिकारों की रक्षा कर शोषण रोकने पर केंद्रित होती हैं। इसके विपरीत, पारंपरिक झूम कृषि या स्थानांतरण खेती को आमतौर पर बढ़ावा नहीं दिया जाता है, क्योंकि इसके कारण वनों का क्षरण और पर्यावरणीय क्षति होती है। सरकार जनजातियों को आधुनिक और स्थिर कृषि पद्धतियों को अपनाने के लिए सदैव प्रोत्साहित और प्रशिक्षित करती है।

13. (C) समुदाय और सरकारी प्रशासन के बीच एक सेतु के रूप में कार्य करना।
पंचायती राज ढांचे के अंतर्गत ग्रामीण नेतृत्व की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है क्योंकि यह स्थानीय समुदाय और सरकारी मशीनरी के मध्य संपर्क सूत्र के रूप में कार्य करता है। ग्रामीण नेता विकास योजनाओं को धरातल पर उतारने और जनता की समस्याओं को उच्च अधिकारियों तक पहुँचाने की जिम्मेदारी निभाते हैं। यह नेतृत्व केवल प्रशासनिक आदेशों के पालन तक सीमित नहीं है, बल्कि यह सामुदायिक भागीदारी सुनिश्चित करने और ग्रामीण आत्मनिर्भरता को बढ़ावा देने की दिशा में एक सशक्त और प्रभावी माध्यम है।

14. (D) वे मुख्य रूप से लाभ कमाने वाले संगठन हैं।
मध्य प्रदेश में गैर-सरकारी संगठन सामाजिक विकास के क्षेत्र में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। ये संगठन सरकार की विभिन्न कल्याणकारी योजनाओं को लागू करने में सहयोग करते हैं और सामाजिक मुद्दों पर व्यापक जन-जागरूकता फैलाते हैं। वे अक्सर नीतिगत बदलावों के लिए पैरवी करते हैं और वंचित वर्गों के अधिकारों की रक्षा करते हैं। यह कहना पूर्णतः गलत है कि वे लाभ कमाने वाले संगठन हैं, क्योंकि ये गैर-लाभकारी उद्देश्यों के साथ समाज की सेवा और समावेशी विकास हेतु समर्पित होकर कार्य करते हैं।

15. (B) केवल 2 और 3
मध्य प्रदेश में कार्यरत स्वयं सहायता समूह मुख्य रूप से समान सामाजिक और आर्थिक पृष्ठभूमि वाली ग्रामीण महिलाओं का एक स्वैच्छिक संगठन है। इन समूहों का मूल उद्देश्य सदस्यों के बीच बचत की आदत को प्रोत्साहित करना और आंतरिक ऋण के माध्यम से वित्तीय आवश्यकताओं को पूरा करना है। ये समूह भारतीय रिजर्व बैंक के तहत पंजीकृत औपचारिक बैंकिंग संस्थान नहीं हैं, बल्कि ये सूक्ष्म वित्त और सामूहिक सशक्तिकरण के अनौपचारिक मॉडल पर आधारित हैं जो महिलाओं को आर्थिक रूप से स्वावलंबी बनाते हैं।

16. (B) मातृ स्वास्थ्य, बाल उत्तरजीविता और परिवार नियोजन सहित मुद्दे।
मध्य प्रदेश में परिवार कल्याण कार्यक्रम का उद्देश्य जनसंख्या स्थिरीकरण के साथ-साथ स्वास्थ्य मानकों में सुधार करना है। ये कार्यक्रम मुख्य रूप से सुरक्षित मातृत्व सुनिश्चित करने, शिशु मृत्यु दर को कम करने और परिवार नियोजन के आधुनिक तरीकों के बारे में जागरूकता फैलाने पर ध्यान केंद्रित करते हैं। इसके अंतर्गत टीकाकरण, प्रसव पूर्व देखभाल और पोषण संबंधी सहायता प्रदान की जाती है। यह दृष्टिकोण केवल जनसंख्या नियंत्रण तक सीमित नहीं है, बल्कि यह परिवार के प्रत्येक सदस्य के समग्र स्वास्थ्य और जीवन गुणवत्ता को बढ़ाता है।

17. (B) जनसंख्या वृद्धि, लिंगानुपात और संबंधित कल्याणकारी कार्यक्रम।
मध्य प्रदेश के जनांकिकीय अध्ययन के अंतर्गत जनसंख्या की संरचना, वितरण और परिवर्तन के विभिन्न कारकों का वैज्ञानिक विश्लेषण किया जाता है। इसमें जनसंख्या वृद्धि दर, लिंगानुपात, साक्षरता और शिशु मृत्यु दर जैसे महत्वपूर्ण आंकड़े शामिल होते हैं। साथ ही, यह अध्ययन उन कल्याणकारी कार्यक्रमों के प्रभाव का भी मूल्यांकन करता है जो इन जनांकिकीय संकेतकों में सुधार के लिए लागू किए गए हैं। यह डेटा नीति निर्माताओं को राज्य की भविष्य की आवश्यकताओं और विकास रणनीतियों को प्रभावी ढंग से निर्धारित करने में सहायता करता है।

18. (A) ग्राम पंचायत
मध्य प्रदेश की त्रिस्तरीय पंचायती राज व्यवस्था में ग्राम पंचायत सबसे निचली और प्राथमिक प्रशासनिक इकाई है। यह सीधे तौर पर ग्राम स्तर पर शासन और विकास कार्यों के लिए जिम्मेदार होती है। ग्राम पंचायत का नेतृत्व सरपंच करता

Downloaded from www.pdf.tube

उत्तर (व्याख्या सहित)

1. (B) जनपद पंचायत
मध्य प्रदेश में पंचायती राज व्यवस्था त्रिस्तरीय ढांचे पर आधारित है। इसके सबसे निचले स्तर पर ग्राम पंचायत और जिला स्तर पर जिला पंचायत कार्य करती है। इन दोनों के बीच के मध्यवर्ती स्तर को जनपद पंचायत कहा जाता है, जो विकास खंड स्तर पर प्रशासनिक और विकासात्मक गतिविधियों का समन्वय करती है। यह स्थानीय स्वशासन की महत्वपूर्ण कड़ी है जो ग्रामीण क्षेत्रों के नियोजित विकास में सक्रिय सहयोग और नेतृत्व प्रदान करती है।

2. (A) राज्य सरकार से स्थानीय स्वशासन को शक्तियों और उत्तरदायित्वों का हस्तांतरण।
सत्ता का विकेंद्रीकरण एक प्रशासनिक प्रक्रिया है जिसके माध्यम से राज्य सरकार अपनी शक्तियों और उत्तरदायित्वों को स्थानीय स्वशासन निकायों को हस्तांतरित करती है। इसका प्राथमिक उद्देश्य निर्णय लेने की शक्ति को जनता के निकट लाना और स्थानीय समस्याओं का त्वरित समाधान सुनिश्चित करना है। यह प्रणाली लोकतांत्रिक मूल्यों को सुदृढ़ करती है और विकास कार्यों में जनभागीदारी को बढ़ावा देकर ग्रामीण क्षेत्रों के सर्वांगीण उत्थान में अत्यंत सहायक और प्रभावी सिद्ध होती है।

3. (C) बहिर्विवाही गोत्र
मध्य प्रदेश की अधिकांश जनजातियों की सामाजिक संरचना मुख्य रूप से बहिर्विवाही गोत्र प्रणाली पर आधारित है। इस व्यवस्था के अंतर्गत एक ही गोत्र के भीतर विवाह करना वर्जित माना जाता है क्योंकि वे स्वयं को एक ही पूर्वज की संतान मानते हैं। गोत्र और नातेदारी के ये नियम सामाजिक अंतःक्रियाओं, उत्तराधिकार और सांस्कृतिक अनुष्ठानों को नियंत्रित करते हैं। यह संरचना जनजातीय समुदायों की विशिष्ट पहचान और उनके आंतरिक सामाजिक अनुशासन को बनाए रखने का प्रमुख वैधानिक आधार है।

4. (D) पिथोरा चित्रकला
पिथोरा चित्रकला मध्य प्रदेश की भील और भिलाला जनजातियों की एक उत्कृष्ट सांस्कृतिक परंपरा है। इस कला शैली में प्रकृति, घोड़ों और लोक देवताओं का जीवंत चित्रण किया जाता है। यह भित्ति चित्रकला मुख्य रूप से धार्मिक अनुष्ठानों और शुभ अवसरों पर घर की दीवारों पर बनाई जाती है। इसका उद्देश्य परिवार में सुख, समृद्धि और आरोग्य की कामना करना होता है। यह कला जनजातीय समाज के गहरे विश्वासों और उनके प्रकृति प्रेम को कलात्मक रूप से स्पष्ट दर्शाती है।

5. (A) P-2, Q-4, R-1, S-3
मध्य प्रदेश में विभिन्न जनजातीय समूहों का संकेंद्रण विशिष्ट क्षेत्रों में पाया जाता है। भील जनजाति प्रमुख रूप से पश्चिमी क्षेत्र के झाबुआ और अलीराजपुर में निवास करती है। गोंड जनजाति सतपुड़ा श्रेणी के क्षेत्रों में विस्तृत है, जबकि बैगा जनजाति मुख्य रूप से मंडला और बालाघाट के वनांचलों में केंद्रित है। सहारिया जनजाति का मुख्य निवास स्थान उत्तर में ग्वालियर और शिवपुरी जिलों में है। यह वितरण राज्य की व्यापक भौगोलिक और जनांकिकीय विविधता का श्रेष्ठ परिचय प्रदान करता है।

6. (B) नागरिकों को अधिसूचित सार्वजनिक सेवाओं की समयबद्ध प्रदायगी।
मध्य प्रदेश लोक सेवा गारंटी अधिनियम, 2010 नागरिकों को एक निर्धारित समय सीमा के भीतर अधिसूचित सार्वजनिक सेवाएं प्राप्त करने का कानूनी अधिकार प्रदान करता है। इस अधिनियम का मुख्य उद्देश्य सरकारी तंत्र में पारदर्शिता और जवाबदेही सुनिश्चित करना है। यह कानून प्रशासनिक देरी को कम करने और भ्रष्टाचार पर अंकुश लगाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। इसके प्रभावी क्रियान्वयन से आम जनता को जन्म प्रमाण पत्र और राजस्व रिकॉर्ड जैसी सेवाएं सुगमता से निश्चित अवधि में प्राप्त होती हैं।

7. (A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
मध्य प्रदेश में स्वयं सहायता समूह ग्रामीण महिलाओं के आर्थिक और सामाजिक उत्थान के लिए महत्वपूर्ण माध्यम बने हैं। ये समूह न केवल लघु ऋण और सूक्ष्म वित्त के आर्थिक कार्य करते हैं, बल्कि सामाजिक चेतना जागृत करने के मंच के रूप में भी कार्य करते हैं। इनके माध्यम से महिलाएं स्वास्थ्य, शिक्षा और घरेलू हिंसा जैसे गंभीर मुद्दों पर चर्चा कर संगठित समाधान खोजती हैं। इस प्रकार, ये समूह महिला सशक्तिकरण और ग्रामीण सामाजिक परिवर्तन की दिशा में महत्वपूर्ण दोहरी भूमिका निभा रहे हैं।

8. (A) प्रति 1000 पुरुषों पर महिलाओं की अधिक संख्या।
जनांकिकीय अध्ययन में लिंगानुपात एक अत्यंत महत्वपूर्ण संकेतक है जो प्रति 1000 पुरुषों पर महिलाओं की कुल संख्या को दर्शाता है। उच्च लिंगानुपात का अर्थ है कि उस क्षेत्र में महिलाओं की संख्या पुरुषों की तुलना में अधिक है। यह सकारात्मक अनुपात अक्सर बेहतर सामाजिक स्वास्थ्य, महिलाओं के प्रति कम भेदभाव और स्वास्थ्य सेवाओं तक उनकी अच्छी पहुँच का संकेत देता है। राज्य के विभिन्न क्षेत्रों में लिंगानुपात का विश्लेषण सामाजिक विकास और लैंगिक समानता की वास्तविक स्थिति समझने में सहायता करता है।

9. (C) ब्लॉक विकास परिषद
मध्य प्रदेश में 73वें संवैधानिक संशोधन के अनुसरण में त्रिस्तरीय पंचायती राज व्यवस्था लागू की गई है। इस संरचना में ग्राम स्तर पर ग्राम पंचायत, विकास खंड स्तर पर जनपद पंचायत और

NODIA

और आधुनिक स्वास्थ्य सेवाएं प्रदान करने पर केंद्रित हैं। सरकार यह सुनिश्चित करने का प्रयास करती है कि विकास की प्रक्रिया में उनकी जड़ों से अलगाव न हो। छात्रवृत्ति और आवासीय विद्यालयों के माध्यम से उन्हें सशक्त बनाना राज्य की समावेशी विकास रणनीति का एक अत्यंत महत्वपूर्ण और सफल स्तंभ है।

28. (B) फसल उत्सव नृत्य
कर्मा नृत्य मध्य प्रदेश की गोंड, बैगा और ओराँव जैसी विभिन्न जनजातियों का एक प्रमुख पारंपरिक लोक नृत्य है। यह मुख्य रूप से कर्म देवता को समर्पित है और फसल की कटाई के समय सामूहिक उल्लास व्यक्त करने के लिए किया जाता है। नर्तक एक समूह में घेरा बनाकर ढोल और मांदर की थाप पर थिरकते हैं, जो प्रकृति और कृषि के प्रति उनके गहरे आभार को दर्शाता है। यह नृत्य केवल मनोरंजन नहीं है, बल्कि जनजातीय समाज की सांस्कृतिक एकता और सामूहिक उत्सव की भावना का एक उत्कृष्ट प्रतीक है।

29. (C) मध्य प्रदेश के सभी गैर-सरकारी संगठन विशेष रूप से विदेशी एजेंसियों द्वारा वित्तपोषित हैं।
मध्य प्रदेश में गैर-सरकारी संगठन सामाजिक विकास के विभिन्न क्षेत्रों में सक्रिय हैं और वे अक्सर सरकारी सेवा प्रदायगी की कमियों को दूर करने का प्रयास करते हैं। ये संगठन स्थानीय, राज्य और राष्ट्रीय स्तर पर सामुदायिक लामबंदी और जागरूकता बढ़ाने में महत्वपूर्ण योगदान देते हैं। यह धारणा पूर्णतः गलत है कि सभी संगठन केवल विदेशी वित्त पोषण पर निर्भर हैं। वास्तव में, अनेक संगठन स्थानीय दान, सरकारी अनुदान और व्यक्तिगत योगदान के माध्यम से अपने सामाजिक कार्यों और विकासात्मक परियोजनाओं का सफलतापूर्वक संचालन करते हैं।

30. (A) केवल 3
मध्य प्रदेश लोक सेवा गारंटी अधिनियम, 2010 प्रशासनिक सुधार की दिशा में एक क्रांतिकारी कदम है। इस अधिनियम के तहत, यदि किसी नागरिक को निर्धारित समय में सेवा नहीं मिलती है, तो वह शिकायतों के समाधान के लिए दो-स्तरीय अपीलीय प्रक्रिया का लाभ उठा सकता है। इसमें केवल पुलिस विभाग ही नहीं, बल्कि राजस्व, शिक्षा और स्वास्थ्य जैसे अनेक महत्वपूर्ण विभाग शामिल हैं। यह कानून शासन में जवाबदेही सुनिश्चित करने और नागरिकों को सशक्त बनाने हेतु एक प्रभावी और सुदृढ़ न्यायिक ढांचा प्रदान करने के लिए बनाया गया है।

31. (A) जन्म दर और मृत्यु दर के बीच का अंतर।
जनसंख्या वृद्धि का विश्लेषण करते समय जनांकिकी शास्त्री मुख्य रूप से जन्म दर और मृत्यु दर के बीच के प्राकृतिक अंतर पर ध्यान केंद्रित करते हैं। मध्य प्रदेश के संदर्भ में, इन दोनों दरों का संतुलन ही राज्य की कुल जनसंख्या में होने वाले परिवर्तन का प्राथमिक निर्धारक होता है। इसके अतिरिक्त, प्रवास भी एक महत्वपूर्ण कारक है, लेकिन जनसंख्या की स्वाभाविक वृद्धि को समझने के लिए जन्म और मृत्यु के आंकड़ों का गहन अध्ययन सबसे बुनियादी और आवश्यक कदम माना जाता है जो भविष्य की योजनाएं बनाने में सहायक है।

32. (B) समुदाय को विकासात्मक लक्ष्यों की ओर ले जाने की क्षमता।
पंचायती राज व्यवस्था में ग्रामीण नेतृत्व का वास्तविक अर्थ किसी व्यक्ति की वह क्षमता है जिससे वह अपने गाँव के समुदाय को प्रगति और विकास के लक्ष्यों की ओर प्रेरित कर सके। आधुनिक संदर्भ में यह नेतृत्व केवल धन या पारंपरिक स्थिति पर आधारित नहीं है, बल्कि यह लोकतांत्रिक मूल्यों और जनसेवा की भावना पर केंद्रित है। एक प्रभावी ग्रामीण नेता स्थानीय संसाधनों का कुशल प्रबंधन करता है और सरकारी योजनाओं का लाभ समाज के अंतिम व्यक्ति तक पहुँचाने के लिए निरंतर सक्रिय और पूर्णतः प्रयासरत रहता है।

33. (B) एक महिला द्वारा सिलाई का व्यवसाय शुरू करने के लिए स्वयं सहायता समूह से ऋण लेना।
महिला सशक्तिकरण का सबसे सशक्त उदाहरण वह है जहाँ कोई महिला आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बनने की दिशा में सक्रिय कदम उठाती है। जब एक महिला स्वयं सहायता समूह के माध्यम से ऋण लेकर अपना छोटा व्यवसाय शुरू करती है, तो इससे न केवल उसकी आय बढ़ती है बल्कि उसका आत्मविश्वास भी दृढ़ होता है। यह प्रक्रिया उसे परिवार और समाज में निर्णय लेने की वास्तविक शक्ति प्रदान करती है। आर्थिक स्वायत्तता ही सामाजिक सशक्तिकरण की वह नींव है, जो महिलाओं को स्वाभिमान के साथ जीने का अवसर प्रदान करती है।

34. (A) यह सुनिश्चित करना कि शासन ग्राम, मध्यवर्ती और जिला स्तरों पर वितरित हो।
त्रिस्तरीय पंचायती राज व्यवस्था का मूल उद्देश्य शासन की शक्तियों को जमीनी स्तर तक पहुँचाना और प्रशासनिक कार्यों में आम जनता की भागीदारी सुनिश्चित करना है। इस संरचना के माध्यम से विकास की योजनाएं ग्राम, जनपद और जिला स्तरों पर विभाजित की जाती हैं, जिससे स्थानीय समस्याओं का समाधान अधिक सुगमता से हो पाता है। यह व्यवस्था केंद्रीकृत सत्ता के बजाय एक सहभागी लोकतंत्र को बढ़ावा देती है। इससे शासन अधिक पारदर्शी बनता है और संसाधनों का वितरण स्थानीय आवश्यकताओं के अनुसार न्यायसंगत ढंग से किया जाना संभव है।

35. (A) P-3, Q-2, R-1, S-4
मध्य प्रदेश में पंचायती राज का ढांचा विभिन्न स्तरों पर स्पष्ट रूप से विभाजित है। जिला पंचायत जिला स्तर पर सर्वोच्च निकाय के रूप में कार्य करती है। जनपद पंचायत विकास खंड या मध्यवर्ती स्तर पर समन्वय स्थापित करती है। ग्राम पंचायत ग्राम स्तर पर प्रशासनिक कार्यों और विकास योजनाओं के क्रियान्वयन के लिए जिम्मेदार होती है। ग्राम सभा इस पूरी व्यवस्था का आधार है, जिसमें गाँव के सभी पंजीकृत मतदाता शामिल होते हैं। यह पदानुक्रम सुनिश्चित करता है कि शासन का प्रत्येक स्तर अपनी विशिष्ट भूमिका प्रभावी और पारदर्शी ढंग से निभाए।

Click Here to Buy book on Amazon

36. (D) विभिन्न भ्रातृत्व समूहों और गोत्रों में उनका विभाजन।
मध्य प्रदेश की गोंड जनजाति का सामाजिक संगठन अत्यंत व्यवस्थित और जटिल है, जो मुख्य रुप से विभिन्न भ्रातृत्व समूहों और गोत्रों में विभाजित है। ये गोत्र उनकी सामाजिक पहचान, विवाह के नियमों और धार्मिक अनुष्ठानों के आधार स्तंभ हैं। गोंड समाज में पूर्वजों की पूजा और कुल देवता का विशेष महत्व होता है, जो इन गोत्रों के माध्यम से संचालित होता है। यह आंतरिक विभाजन समुदाय के भीतर आपसी सहयोग और सामाजिक मर्यादा को बनाए रखने में मदद करता है, जो उनकी सांस्कृतिक निरंतरता का एक अत्यंत महत्वपूर्ण हिस्सा है।

37. (C) नर्तकों द्वारा एक समन्वित लय में डंडों का उपयोग।
सैला नृत्य मध्य प्रदेश की गोंड और बैगा जैसी जनजातियों द्वारा फसल कटाई के बाद अत्यंत उत्साह के साथ किया जाता है। इस नृत्य की सबसे विशिष्ट विशेषता नर्तकों द्वारा अपने हाथों में डंडों का उपयोग करना और उन्हें एक समन्वित लय में आपस में टकराना है। यह प्रदर्शन शारीरिक चपलता, लयबद्धता और समूह भावना का एक उत्कृष्ट उदाहरण प्रस्तुत करता है। डंडों की खनक और संगीत की ताल पर होने वाला यह नृत्य जनजातीय समुदायों के मनोरंजन के साथ-साथ उनके गौरवशाली सांस्कृतिक इतिहास और सामुदायिक एकता को भी दर्शाता है।

38. (B) महिलाओं और बच्चों में एनीमिया की घटनाओं को कम करना।
मध्य प्रदेश में पोषण और स्वास्थ्य कार्यक्रमों का एक अत्यंत महत्वपूर्ण लक्ष्य महिलाओं और बच्चों में एनीमिया या रक्त की कमी जैसी समस्याओं का प्रभावी समाधान करना है। एनीमिया कुपोषण का एक गंभीर रूप है जो स्वास्थ्य और विकास को नकारात्मक रुप से प्रभावित करता है। सरकार आयरन की गोलियों के वितरण, पूरक पोषण और स्वास्थ्य शिक्षा के माध्यम से इस स्थिति में सुधार लाने का निरंतर प्रयास करती है। इन कार्यक्रमों का मुख्य उद्देश्य मातृ और शिशु स्वास्थ्य संकेतकों को बेहतर बनाना है ताकि एक स्वस्थ समाज का निर्माण हो सके।

39. (D) प्रति 1000 पुरुषों पर महिलाओं की संख्या।
जनांकिकीय शब्दावली में लिंगानुपात का अर्थ किसी निश्चित भौगोलिक क्षेत्र में प्रत्येक 1000 पुरुषों की तुलना में महिलाओं की कुल संख्या से है। मध्य प्रदेश की जनसांख्यिकी में यह एक महत्वपूर्ण मापदंड है जो समाज में लैंगिक समानता की स्थिति को उजागर करता है। यदि यह अनुपात कम होता है, तो यह बालिकाओं के प्रति भेदभाव और प्रतिकूल सामाजिक परिस्थितियों का संकेत देता है। सरकार इस डेटा का उपयोग स्वास्थ्य और शिक्षा संबंधी नीतियों को तैयार करने के लिए करती है ताकि लिंग आधारित असंतुलन को पूर्णतः दूर किया जा सके।

40. (A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
मध्य प्रदेश के सामाजिक विकास में गैर-सरकारी संगठन सरकार के सहयोगी के रुप में अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। ये संगठन अक्सर उन दूरदराज के क्षेत्रों में प्रभावी ढंग से कार्य करते हैं जहाँ सरकारी तंत्र की पहुँच सीमित हो सकती है। उनकी कार्यशैली में लचीलापन और स्थानीय समुदाय के साथ उनका गहरा जुड़ाव उन्हें विकास कार्यक्रमों के सफल क्रियान्वयन में सक्षम बनाता है। अतः अभिकथन और कारण दोनों सही हैं, और कारण स्पष्ट करता है कि क्यों ये संगठन सरकारी प्रयासों के पूरक के रुप में सामाजिक उत्थान में अनिवार्य योगदान प्रदान करते हैं।

41. (C) 'सरपंच पति' की स्थिति, जहाँ पुरुष रिश्तेदार छद्म नियंत्रण रखते हैं।
पंचायती राज में महिलाओं के लिए कानूनी आरक्षण के बावजूद, उनके प्रभावी नेतृत्व के मार्ग में सरपंच पति की प्रथा एक गंभीर चुनौती बनी हुई है। इस व्यवस्था में महिला निर्वाचित प्रतिनिधि तो होती है, किंतु वास्तविक निर्णय लेने की शक्ति और प्रशासनिक नियंत्रण उसके पुरुष रिश्तेदारों के पास रहता है। यह सामाजिक और पितृसत्तात्मक मानसिकता का परिणाम है जो महिलाओं की स्वायत्तता को सीमित करता है। इस बाधा को दूर करने के लिए महिलाओं का क्षमता निर्माण और समाज में व्यापक जागरुकता लाना अत्यंत आवश्यक है ताकि वे स्वतंत्र रुप से कार्य कर सकें।

42. (A) पारस्परिक लाभ के लिए सामूहिक शक्ति, विशेष रुप से सूक्ष्म वित्त के माध्यम से।
स्वयं सहायता समूहों का गठन संगठन में शक्ति और पारस्परिक सहायता के मूल सिद्धांतों पर आधारित है। इन समूहों का प्राथमिक लक्ष्य समान आर्थिक स्थिति वाले लोगों को एकजुट करना है ताकि वे अपनी छोटी-छोटी बचत के माध्यम से एक सामूहिक कोष बना सकें। यह सूक्ष्म वित्त प्रणाली सदस्यों को बिना किसी जटिल औपचारिकता के ऋण उपलब्ध कराती है, जिससे वे छोटे व्यवसाय शुरु कर सकते हैं। यह सामूहिक प्रयास व्यक्तिगत आत्मनिर्भरता को बढ़ावा देता है और सामाजिक सुरक्षा का एक मजबूत ढांचा प्रदान करने में अत्यंत सफल सिद्ध होता है।

43. (D) ये त्योहार अक्सर कृषि चक्रों, ऋतुओं और धार्मिक मान्यताओं से जुड़े होते हैं।
मध्य प्रदेश के जनजातीय त्योहार उनकी जीवनशैली, प्रकृति और धार्मिक विश्वासों का एक अभिन्न अंग हैं। ये उत्सव आमतौर पर विभिन्न ऋतुओं के आगमन, नई फसल की बुवाई या कटाई और पारंपरिक लोक देवताओं की पूजा से गहराई से जुड़े होते हैं। इन त्योहारों के माध्यम से जनजातीय समाज अपनी समृद्ध सांस्कृतिक विरासत को संजोए रखता है और सामुदायिक संबंधों को प्रगाढ़ बनाता है। प्रत्येक त्योहार का अपना एक विशिष्ट महत्व और अनुष्ठान होता है, जो प्रकृति और मानव के अटूट संबंध को जीवंत और कलात्मक रुप में प्रस्तुत करता है।

44. (B) शिशु मृत्यु दर और मातृ मृत्यु दर को कम करना।
मध्य प्रदेश में परिवार कल्याण कार्यक्रमों का एक प्राथमिक और महत्वपूर्ण उद्देश्य शिशु मृत्यु दर और मातृ मृत्यु दर में प्रभावी कमी लाना है। ये कार्यक्रम सुरक्षित प्रसव, प्रसव पूर्व और प्रसवोत्तर देखभाल, तथा व्यापक टीकाकरण अभियान चलाकर माताओं और बच्चों के स्वास्थ्य की रक्षा करते हैं।

NODIA

बेहतर स्वास्थ्य सेवाएं प्रदान करके राज्य का लक्ष्य जीवन प्रत्याशा बढ़ाना और स्वस्थ भावी पीढ़ी का निर्माण करना है। ये प्रयास सामाजिक विकास के उच्च मानकों को प्राप्त करने और राज्य के स्वास्थ्य संकेतकों में सुधार लाने के लिए अत्यंत अनिवार्य हैं।

45. (A) केवल 1 और 2
मध्य प्रदेश ने पंचायती राज संस्थाओं के तीनों स्तरों पर महिलाओं के लिए 50% सीटों का आरक्षण सुनिश्चित किया है, जो महिला नेतृत्व को बढ़ावा देने की दिशा में एक बड़ा कदम है। निर्वाचित महिला प्रतिनिधियों ने पेयजल, स्वच्छता और बाल स्वास्थ्य जैसे बुनियादी मुद्दों को पंचायतों के एजेंडे में प्राथमिकता दिलवाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। पंचायतों में महिलाओं के प्रमुख पदों पर आसीन होने के लिए स्पष्ट कानूनी प्रावधान मौजूद हैं। ये प्रावधान ग्रामीण शासन में महिलाओं की सक्रिय और प्रभावी भागीदारी सुनिश्चित कर सामाजिक सशक्तिकरण का मार्ग प्रशस्त करते हैं।

46. (D) जिला पंचायत
मध्य प्रदेश की त्रिस्तरीय पंचायती राज व्यवस्था में जिला पंचायत सर्वोच्च स्तर की प्रशासनिक इकाई है जो संपूर्ण जिले के विकास कार्यों का प्रबंधन करती है। यह निकाय जनपद पंचायतों और ग्राम पंचायतों के बीच समन्वय स्थापित करने और सरकारी धन के आवंटन की निगरानी करने के लिए जिम्मेदार है। जिला पंचायत के सदस्य प्रत्यक्ष मतदान द्वारा चुने जाते हैं और यह परिषद जिले के ग्रामीण क्षेत्रों के लिए समग्र योजनाएं तैयार करती है। यह स्थानीय स्वशासन और राज्य सरकार के बीच एक महत्वपूर्ण प्रशासनिक कड़ी के रूप में कार्य करती है और विकास को गति देती है।

47. (A) 73वाँ संशोधन
भारतीय संविधान का 73वाँ संशोधन अधिनियम देश में पंचायती राज व्यवस्था के इतिहास में एक मील का पत्थर है। इस संशोधन ने पंचायतों को संवैधानिक दर्जा प्रदान किया और ग्रामीण क्षेत्रों में सत्ता के लोकतांत्रिक विकेंद्रीकरण को अनिवार्य बनाया। इसके माध्यम से ही महिलाओं और वंचित वर्गों के लिए आरक्षण के प्रावधान लागू किए गए। मध्य प्रदेश इस अधिनियम को प्रभावी ढंग से लागू करने वाले अग्रणी राज्यों में से एक है। यह कानून सुनिश्चित करता है कि ग्रामीण शासन में निर्णय लेने की शक्ति सीधे निर्वाचित स्थानीय प्रतिनिधियों के पास सुरक्षित हो।

48. (B) जनजातियों के लिए कल्याणकारी कार्यक्रम
मध्य प्रदेश सरकार द्वारा जनजातीय समुदायों के छात्रों हेतु विशेष कोचिंग, छात्रवृत्ति और छात्रावास की सुविधा प्रदान करने वाली पहलें जनजातीय कल्याण कार्यक्रमों की श्रेणी में आती हैं। इन योजनाओं का मुख्य उद्देश्य शैक्षणिक बाधाओं को दूर करना और जनजातीय युवाओं को उच्च शिक्षा तथा प्रतियोगी परीक्षाओं में सफलता प्राप्त करने के समान अवसर प्रदान करना है। शिक्षा के माध्यम से यह सशक्तिकरण उन्हें मुख्यधारा के आर्थिक अवसरों से जुड़ने में मदद करता है। यह राज्य की सामाजिक न्याय और समावेशी विकास के प्रति अटूट प्रतिबद्धता का एक प्रत्यक्ष उदाहरण है।

49. (B) बैगा - पिथोरा चित्रकला
मध्य प्रदेश में जनजातीय कला और संस्कृति की अपनी विशिष्ट पहचान है। भील जनजाति भगोरिया उत्सव के लिए प्रसिद्ध है, जबकि गोंड जनजाति कर्मा नृत्य के साथ जुड़ी है। कोरकू जनजाति का खंब स्वांग एक विशिष्ट सांस्कृतिक प्रदर्शन है। हालाँकि, पिथोरा चित्रकला मुख्य रूप से भील और भिलाला जनजातियों की विशेषता है, न कि बैगा जनजाति की। बैगा समुदाय अपनी अन्य परंपराओं और वन आधारित ज्ञान के लिए जाना जाता है। इस प्रकार की सांस्कृतिक भिन्नताओं को समझना राज्य की जनजातीय विविधता को जानने के लिए अत्यंत आवश्यक और महत्वपूर्ण है।

50. (C) P-3, Q-4, R-1, S-2
मध्य प्रदेश के सामाजिक और प्रशासनिक ढांचे को विभिन्न अवधारणाओं के माध्यम से समझा जा सकता है। गैर-सरकारी संगठन नागरिक समाज का हिस्सा हैं, जबकि स्वयं सहायता समूह सूक्ष्म बचत और ऋण के माध्यम से आर्थिक मदद करते हैं। पंचायती राज संस्थाएं त्रिस्तरीय स्थानीय सरकार का प्रतिनिधित्व करती हैं जो ग्रामीण शासन संभालती हैं। मध्य प्रदेश लोक सेवा गारंटी अधिनियम, 2010 का मुख्य विचार नागरिकों को एक निश्चित समय सीमा के भीतर सेवाएं प्रदान करना है। यह सभी तत्व राज्य के सुशासन और समावेशी विकास की दिशा में कार्यरत महत्वपूर्ण आधार स्तंभ हैं।

51. (C) जन्म दर, मृत्यु दर और प्रवास की परस्पर क्रिया।
किसी भी क्षेत्र की जनसंख्या वृद्धि मुख्य रूप से तीन महत्वपूर्ण कारकों के सामूहिक प्रभाव का परिणाम होती है: जन्म दर, मृत्यु दर और प्रवास। मध्य प्रदेश के संदर्भ में, उच्च जन्म दर और स्वास्थ्य सेवाओं के विस्तार से मृत्यु दर में आई कमी जनसंख्या बढ़ाने में मुख्य भूमिका निभाते हैं। साथ ही, रोजगार और अन्य अवसरों के लिए लोगों का राज्य में आना या यहाँ से बाहर जाना भी कुल जनसंख्या को प्रभावित करता है। इन कारकों के संतुलित विश्लेषण से ही राज्य की भविष्य की जनांकिकीय स्थितियों का सही पूर्वानुमान लगाया जा सकता है।

52. (D) जाति या भूमि स्वामित्व के आधार पर गाँव का मुखिया या बुजुर्गों की एक परिषद।
औपचारिक पंचायती राज व्यवस्था लागू होने से पहले, भारतीय ग्रामीण समाज में नेतृत्व पारंपरिक ढांचे पर आधारित था। गाँवों में निर्णय आमतौर पर गाँव के मुखिया या बुजुर्गों की एक परिषद द्वारा लिए जाते थे, जिनका चयन अक्सर उनकी जाति, वंश या भूमि स्वामित्व के आधार पर होता था। यह नेतृत्व व्यवस्था काफी हद तक अनौपचारिक थी और सामाजिक रीति-रिवाजों द्वारा संचालित होती थी। हालांकि इसमें आधुनिक लोकतंत्र जैसी पारदर्शिता की कमी थी, फिर भी यह सदियों तक ग्रामीण समाज में अनुशासन और व्यवस्था बनाए रखने का मुख्य माध्यम बनी रही।

Downloaded from www.pdf.tube

है और इसके सदस्य जनता द्वारा प्रत्यक्ष रूप से चुने जाते हैं। यह इकाई स्थानीय समस्याओं के समाधान, बुनियादी ढांचा निर्माण और सरकारी योजनाओं के क्रियान्वयन में केंद्रीय भूमिका निभाती है। यहीं से जमीनी स्तर पर लोकतांत्रिक विकेंद्रीकरण की प्रक्रिया सुचारु रूप से संचालित और कार्यान्वित होती है।

19. (C) योजना और विकास कार्यों में अधिक स्थानीय भागीदारी।
मध्य प्रदेश में पंचायतों को शक्ति और संसाधनों के हस्तांतरण का सबसे प्रत्यक्ष परिणाम योजना निर्माण और विकास प्रक्रियाओं में स्थानीय जनता की बढ़ती भागीदारी है। विकेंद्रीकरण के कारण अब ग्रामीण समुदाय अपनी प्राथमिकताओं के अनुसार निर्णय लेने में सक्षम हैं। इससे न केवल सरकारी परियोजनाओं की प्रासंगिकता और पारदर्शिता बढ़ी है, बल्कि ग्रामीण नेतृत्व में भी आत्मविश्वास का संचार हुआ है। स्थानीय स्तर पर समस्याओं की पहचान और उनके समाधान की क्षमता विकसित होने से समावेशी विकास का मार्ग निरंतर प्रशस्त हुआ है।

20. (B) P-3, Q-1, R-4, S-2
मध्य प्रदेश की जनजातीय संस्कृति विभिन्न पारंपरिक प्रथाओं और कलाओं का संगम है। घोटुल गोंड जनजाति में प्रचलित एक पारंपरिक युवा गृह है जहाँ युवा अपनी संस्कृति सीखते हैं। पिथोरा भील समुदाय की एक प्रसिद्ध अनुष्ठानिक भित्ति चित्रकला है जो दीवारों पर बनाई जाती है। भगोरिया भीलों का एक अत्यंत लोकप्रिय त्योहार और मेला है, जबकि कर्मा नृत्य फसल के उत्सव के रूप में जनजातियों द्वारा किया जाता है। ये सभी तत्व राज्य की अद्वितीय सांस्कृतिक विरासत और जनजातीय जीवनशैली की गहराई को स्पष्ट रूप से दर्शाते हैं।

21. (C) सामाजिक संरचना और विवाह नियमों के लिए नातेदारी और गोत्र वंश केंद्रीय हैं।
मध्य प्रदेश की जनजातीय सामाजिक व्यवस्था में नातेदारी और गोत्र का अत्यंत महत्व है। ये तत्व विवाह के नियमों, उत्तराधिकार की प्रक्रियाओं और सामाजिक बंधनों को मजबूती प्रदान करते हैं। अधिकांश जनजातियां पितृसत्तात्मक प्रणाली का पालन करती हैं और उनके अपने पारंपरिक नियम होते हैं। प्रत्येक जनजाति में अपनी विशिष्ट ग्राम परिषदें होती हैं जो आंतरिक विवादों को सुलझाने और सामाजिक अनुशासन बनाए रखने का कार्य करती हैं। यह संगठित ढांचा जनजातीय समुदायों को उनकी सांस्कृतिक पहचान और सामुदायिक एकता सुरक्षित रखने में मदद करता है।

22. (B) रणनीतिक जीवन विकल्प चुनने और अवसरों तक पहुँचने की महिलाओं की क्षमता को बढ़ाना।
मध्य प्रदेश के सामाजिक परिदृश्य में महिला सशक्तिकरण का तात्पर्य महिलाओं को स्वायत्त और निर्णय लेने में सक्षम बनाना है। इसका अर्थ केवल वित्तीय सहायता देना नहीं, बल्कि उन्हें शिक्षा, स्वास्थ्य और संसाधनों तक समान पहुँच प्रदान करना है ताकि वे अपने जीवन के महत्वपूर्ण निर्णय स्वयं ले सकें। जब महिलाएं आर्थिक और राजनीतिक रूप से सशक्त होती हैं, तो वे समाज की मुख्यधारा में प्रभावी भूमिका निभाती हैं। यह प्रक्रिया लैंगिक असमानता को कम करने और समाज के समग्र विकास के लिए अनिवार्य मानी जाती है।

23. (D) एक निर्दिष्ट समय के भीतर जन्म प्रमाण पत्र जारी करना।
मध्य प्रदेश लोक सेवा गारंटी अधिनियम, 2010 के अंतर्गत सेवा का अर्थ उन विशिष्ट प्रशासनिक कार्यों से है जो सरकार नागरिकों को प्रदान करने के लिए कानूनी रूप से बाध्य है। एक निश्चित समय सीमा के भीतर जन्म प्रमाण पत्र, जाति प्रमाण पत्र या राशन कार्ड जारी करना इस कानून के तहत अधिसूचित सेवाओं के प्रमुख उदाहरण हैं। यह अधिनियम सुनिश्चित करता है कि नागरिकों को अपने बुनियादी दस्तावेजों के लिए अनावश्यक प्रतीक्षा न करनी पड़े। इससे सरकारी कामकाज में गति आती है और प्रशासन जनता के प्रति अधिक जवाबदेह बनता है।

24. (A) कुपोषण और शिशु मृत्यु दर
मध्य प्रदेश में सरकार द्वारा संचालित पोषण और स्वास्थ्य कार्यक्रमों का प्राथमिक लक्ष्य राज्य में व्याप्त कुपोषण और उच्च शिशु मृत्यु दर की चुनौती का प्रभावी ढंग से मुकाबला करना है। इन योजनाओं के माध्यम से गर्भवती महिलाओं, स्तनपान कराने वाली माताओं और छोटे बच्चों को पूरक आहार और आवश्यक चिकित्सा परामर्श प्रदान किया जाता है। आँगनवाड़ी केंद्रों के नेटवर्क के माध्यम से इन सेवाओं को दूरस्थ क्षेत्रों तक पहुँचाया जाता है। स्वस्थ भविष्य के निर्माण के लिए इन संकेतकों में सुधार लाना राज्य की सामाजिक विकास नीति का एक अनिवार्य हिस्सा है।

25. (A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
मध्य प्रदेश में लिंगानुपात की स्थिति हमेशा से ही नीति निर्माताओं के लिए चिंता का विषय रही है। राज्य के कुछ क्षेत्रों में पुरुषों की तुलना में महिलाओं की कम संख्या सामाजिक असंतुलन को दर्शाती है। इसका मुख्य कारण गहराई से जुड़ी सांस्कृतिक मान्यताएं और पुत्र को प्राथमिकता देने की प्रवृत्ति रही है, जिसने ऐतिहासिक रूप से बालिकाओं के जन्म और स्वास्थ्य को प्रभावित किया है। अतः अभिकथन और कारण दोनों सत्य हैं, और सामाजिक कारण स्पष्ट रूप से राज्य में प्रतिकूल लिंगानुपात की तार्किक और सटीक व्याख्या प्रस्तुत करते हैं।

26. (A) सीटों और नेतृत्व पदों का आरक्षण।
मध्य प्रदेश में पंचायती राज संस्थाओं में महिलाओं की सक्रिय भूमिका कानूनी रूप से सीटों और नेतृत्व पदों के आरक्षण के माध्यम से सुनिश्चित की गई है। राज्य ने ऐतिहासिक रूप से पंचायतों में महिलाओं के लिए 50% आरक्षण का प्रावधान किया है, जो राष्ट्रीय औसत से भी अधिक है। यह वैधानिक व्यवस्था महिलाओं को निर्णय लेने की प्रक्रिया में सीधे शामिल होने का अवसर प्रदान करती है। इससे न केवल ग्रामीण नेतृत्व में लैंगिक विविधता आई है, बल्कि स्थानीय शासन में महिलाओं की आवाज भी अधिक बुलंद और प्रभावी हुई है।

27. (D) उनके सांस्कृतिक लोकाचार का सम्मान करते हुए शिक्षा के लिए सहायता प्रदान करना।
मध्य प्रदेश में जनजातीय कल्याण कार्यक्रमों का मुख्य उद्देश्य जनजातीय समुदायों के सामाजिक और आर्थिक स्तर को ऊपर उठाना है। ये कार्यक्रम उनकी विशिष्ट सांस्कृतिक पहचान और परंपराओं का संरक्षण करते हुए उन्हें शिक्षा, कौशल विकास

NODIA

पर निर्भर रहे बिना छोटी और तत्काल आवश्यकताओं वाली परियोजनाओं को शीघ्रता से पूरा कर सकती हैं। यह स्वायत्तता पंचायतों को वास्तविक अर्थों में सशक्त, आत्मनिर्भर और कार्यकुशल बनाने में सहायक होती है।

62. (D) राजनीतिक अधिकार
ग्राम सभा में सक्रिय भागीदारी करना प्रत्येक पंजीकृत मतदाता का एक बुनियादी राजनीतिक अधिकार है। मध्य प्रदेश में महिलाओं द्वारा ग्राम सभा की बैठकों में भाग लेना और निर्णय लेने की प्रक्रिया में अपनी आवाज उठाना उनके इस अधिकार के प्रभावी प्रयोग को दर्शाता है। यह भागीदारी महिलाओं को गाँव के प्रशासन और विकास की प्राथमिकताओं को प्रभावित करने का अवसर प्रदान करती है। जब महिलाएं अपने राजनीतिक अधिकारों के प्रति जागरूक होती हैं, तो इससे न केवल उनका व्यक्तिगत सशक्तिकरण होता है, बल्कि स्थानीय लोकतंत्र भी अधिक समावेशी और पारदर्शी बनता है।

63. (A) 'फालिया' या छोटी बस्तियों की एक प्रणाली।
मध्य प्रदेश की भील जनजाति के सामाजिक संगठन और निवास स्थान की अपनी एक अनूठी विशेषता है। वे आमतौर पर फालिया नामक छोटी-छोटी बस्तियों में रहते हैं, जहाँ घर एक-दूसरे से थोड़ी दूरी पर बिखरे हुए होते हैं। यह व्यवस्था उनकी स्वतंत्र जीवनशैली और कृषि कार्यों के प्रति उनकी सुगमता को दर्शाती है। प्रत्येक फालिया में अक्सर एक ही वंश या गोत्र के लोग रहते हैं, जो उनके आपसी सामाजिक संबंधों को प्रगाढ़ बनाता है। यह पारंपरिक बसावट भील समुदाय की विशिष्ट पहचान और उनके भौगोलिक सामंजस्य का एक अत्यंत महत्वपूर्ण हिस्सा है।

64. (B) यह स्थिर है और सदियों से नहीं बदली है।
मध्य प्रदेश की जनजातीय संस्कृति अत्यंत जीवंत है और इसमें समय के साथ निरंतर विकास और अनुकूलन होता रहा है। यह कहना कि यह स्थिर है, पूरी तरह गलत है क्योंकि जनजातीय समाज ने अपनी मूल पहचान को बनाए रखते हुए भी आधुनिक शिक्षा और तकनीक के प्रभावों को स्वीकार किया है। उनकी संस्कृति प्रकृति के साथ उनके गहरे संबंध, अनूठे लोक नृत्यों और समृद्ध मौखिक परंपराओं पर आधारित है। यह विविधता और परिवर्तनशीलता ही जनजातीय समाज को समाज के अन्य वर्गों के साथ सामंजस्य बिठाने और प्रगति करने में सक्षम बनाती है।

65. (A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
मध्य प्रदेश के ग्रामीण क्षेत्रों में स्वयं सहायता समूह महिला सशक्तिकरण के एक अत्यंत प्रभावशाली उपकरण के रूप में उभरे हैं। ये समूह महिलाओं को न केवल वित्तीय सहायता और ऋण तक पहुँच प्रदान करते हैं, बल्कि उन्हें सामाजिक समस्याओं पर चर्चा करने के लिए एक सामूहिक मंच भी देते हैं। इससे महिलाओं का आत्मविश्वास बढ़ता है और समाज में उनकी आर्थिक एवं निर्णय लेने की स्थिति मजबूत होती है। अतः अभिकथन और कारण दोनों सत्य हैं, और कारण स्पष्ट रूप से समझाता है कि ये समूह किस प्रकार ग्रामीण महिलाओं के सर्वांगीण विकास में सहायक सिद्ध होते हैं।

66. (A) प्रथम अपीलीय प्राधिकारी को अपील करना।
मध्य प्रदेश लोक सेवा गारंटी अधिनियम, 2010 के तहत नागरिकों को सेवाओं की समयबद्ध प्रदायगी सुनिश्चित की गई है। यदि किसी नागरिक का आवेदन बिना कारण अस्वीकार कर दिया जाता है या समय पर सेवा नहीं मिलती है, तो कानून में स्पष्ट शिकायत निवारण तंत्र मौजूद है। ऐसी स्थिति में, नागरिक का सबसे पहला और तत्काल कानूनी कदम प्रथम अपीलीय प्राधिकारी के पास अपील करना है। यह व्यवस्था सुनिश्चित करती है कि प्रशासनिक लापरवाहियों को शीघ्र सुधारा जा सके और नागरिकों को उनके कानूनी अधिकारों का लाभ बिना किसी कठिनाई के प्राप्त हो सके।

67. (C) जनगणना के आंकड़ों के अनुसार दशकीय वृद्धि दर।
मध्य प्रदेश में जनसंख्या वृद्धि के विश्लेषण का सबसे महत्वपूर्ण और वैज्ञानिक आधार जनगणना के आंकड़ों से प्राप्त दशकीय वृद्धि दर है। यह दर दर्शाती है कि पिछले दस वर्षों में राज्य की जनसंख्या में किस गति से परिवर्तन हुआ है। इस डेटा का अध्ययन शिक्षा, स्वास्थ्य और बुनियादी ढांचे जैसी भविष्य की सार्वजनिक आवश्यकताओं की योजना बनाने के लिए अपरिहार्य है। यह संसाधन आवंटन को अधिक सटीक बनाता है और नीति निर्माताओं को विकास की प्राथमिकताओं को सही ढंग से निर्धारित करने में अत्यंत महत्वपूर्ण दिशा-निर्देश और आधार प्रदान करता है।

68. (D) सरपंच
मध्य प्रदेश की त्रिस्तरीय पंचायती राज व्यवस्था के अंतर्गत ग्राम पंचायत के निर्वाचित प्रमुख को सरपंच कहा जाता है। सरपंच गाँव के विकास कार्यों और प्रशासनिक गतिविधियों के प्रबंधन के लिए सीधे तौर पर उत्तरदायी होता है। उसका चुनाव गाँव के सभी पंजीकृत मतदाताओं द्वारा प्रत्यक्ष मतदान के माध्यम से किया जाता है। सरपंच ग्राम सभा की बैठकों की अध्यक्षता करता है और गाँव की समस्याओं के समाधान हेतु एक महत्वपूर्ण कड़ी के रूप में कार्य करता है। यह पद ग्रामीण नेतृत्व का सबसे प्रभावशाली और जन-केंद्रित संवैधानिक पद माना जाता है जो सुशासन सुनिश्चित करता है।

69. (C) कार्यात्मक विकेंद्रीकरण
स्थानीय स्तर पर स्कूलों, स्वास्थ्य केंद्रों और आँगनवाड़ियों के प्रबंधन जैसे महत्वपूर्ण कार्यों को पंचायतों को सौंपना कार्यात्मक विकेंद्रीकरण का एक सशक्त रूप है। इसका मूल उद्देश्य सार्वजनिक सेवाओं की निगरानी और संचालन को उन लोगों के हाथों में देना है जो सीधे इनसे लाभान्वित होते हैं। जब स्थानीय पंचायतें इन संस्थानों के प्रति जवाबदेह होती हैं, तो सेवाओं की गुणवत्ता में सुधार होता है और भ्रष्टाचार की संभावना कम हो जाती है। यह प्रक्रिया शासन को अधिक पारदर्शी बनाती है और स्थानीय समुदायों को सशक्त करने का कार्य प्रभावी ढंग से करती है।

70. (B) लघु वनोपज के संग्रह और विपणन को बढ़ावा देने वाले कार्यक्रम।
मध्य प्रदेश में जनजातीय समुदायों की आजीविका मुख्य रूप से वनों पर आधारित है, इसलिए सरकार लघु वनोपज

Click Here to Buy book on Amazon

के संग्रह और उनके उचित विपणन पर विशेष ध्यान देती है। इन कल्याणकारी कार्यक्रमों का उद्देश्य जनजातीय लोगों को उनकी मेहनत का सही मूल्य दिलाना और उन्हें बिचौलियों के शोषण से बचाना है। सहकारी समितियों के माध्यम से वनोपज की खरीद और प्रसंस्करण को बढ़ावा दिया जाता है, जिससे उनकी आय में वृद्धि होती है। यह पहल जनजातियों की आर्थिक स्थिति को सुधारने और उनके पारंपरिक ज्ञान को आर्थिक लाभ में बदलने में अत्यंत प्रभावी सिद्ध होती है।

71. (D) अनुष्ठानों, मेलों और सामुदायिक सभा से जुड़ा एक जनजातीय त्योहार।
मड़ई त्योहार मध्य प्रदेश की गोंड जनजाति का एक अत्यंत महत्वपूर्ण और हर्षोल्लास वाला त्योहार है। यह केवल एक धार्मिक उत्सव नहीं है, बल्कि यह एक विशाल सामुदायिक मेले के रूप में आयोजित किया जाता है जहाँ विभिन्न गाँवों के लोग एकत्रित होते हैं। इस अवसर पर पारंपरिक पूजा अनुष्ठान किए जाते हैं और सांस्कृतिक कार्यक्रमों के माध्यम से सामाजिक बंधनों को मजबूती प्रदान की जाती है। यह त्योहार जनजातीय एकता, उनके विशिष्ट लोक संगीत और नृत्य परंपराओं को प्रदर्शित करने का एक उत्कृष्ट मंच है, जो उनकी प्राचीन सांस्कृतिक पहचान को जीवित रखता है।

72. (A) जागरूकता अभियान चलाना, कानूनी सहायता प्रदान करना और कौशल विकास प्रशिक्षण देना।
मध्य प्रदेश में गैर-सरकारी संगठन महिला सशक्तिकरण की दिशा में बहुआयामी कार्य कर रहे हैं। ये संगठन महिलाओं को उनके अधिकारों के प्रति जागरूक करने के लिए व्यापक अभियान चलाते हैं और शोषण के मामलों में उन्हें आवश्यक कानूनी सहायता उपलब्ध कराते हैं। साथ ही, वे विभिन्न कौशल विकास कार्यक्रमों के माध्यम से महिलाओं को व्यावसायिक प्रशिक्षण देकर उन्हें आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बनाने का प्रयास करते हैं। इन स्वैच्छिक प्रयासों से समाज के हाशिए पर रहने वाली महिलाओं में नया आत्मविश्वास पैदा होता है और वे सम्मानजनक जीवन जीने के प्रति निरंतर प्रेरित होती हैं।

73. (C) ग्रामीण महिलाएं
मध्य प्रदेश में स्वयं सहायता समूह आंदोलन के केंद्र में मुख्य रूप से ग्रामीण महिलाएं हैं। इन समूहों का गठन गाँव की उन महिलाओं को संगठित करने के लिए किया गया है जो अक्सर औपचारिक बैंकिंग सेवाओं तक पहुँचने में असमर्थ होती हैं। ये समूह महिलाओं को बचत करने और सामूहिक रूप से निर्णय लेने की शक्ति प्रदान करते हैं, जिससे उनकी सामाजिक और आर्थिक स्थिति में उल्लेखनीय सुधार होता है। ग्रामीण महिलाओं की सक्रिय भागीदारी ने इस आंदोलन को एक बड़े सामाजिक सशक्तिकरण अभियान में बदल दिया है, जो वर्तमान में ग्रामीण अर्थव्यवस्था की सशक्त रीढ़ साबित हो रहा है।

74. (A) पोषण और स्वास्थ्य कार्यक्रम
गर्भवती महिलाओं और स्तनपान कराने वाली माताओं को पूरक पोषण और आवश्यक स्वास्थ्य सेवाएं प्रदान करने वाली योजनाएं सीधे तौर पर पोषण और स्वास्थ्य कार्यक्रमों के अंतर्गत आती हैं। इन पहलों का उद्देश्य मातृ और शिशु स्वास्थ्य के मानकों में सुधार करना और कुपोषण की समस्या को जड़ से मिटाना है। आँगनवाड़ी केंद्रों के माध्यम से वितरित किए जाने वाले ये लाभ यह सुनिश्चित करते हैं कि सबसे जरूरतमंद वर्गों तक संतुलित आहार सुगमता से पहुँच सके। यह राज्य की एक स्वस्थ और सुपोषित अगली पीढ़ी तैयार करने की दीर्घकालिक और अटूट प्रतिबद्धता का हिस्सा है।

75. (D) P-2, Q-3, R-1, S-4
मध्य प्रदेश के जनजातीय नृत्य उनके सांस्कृतिक उत्सवों और कृषि चक्रों से गहरे जुड़े हुए हैं। कर्मा नृत्य मुख्य रूप से फसल के त्योहार के रूप में मनाया जाता है। सैला नृत्य में नर्तक फसल कटाई के बाद खुशी मनाने के लिए डंडों का लयबद्ध उपयोग करते हैं। भगोरिया भील जनजाति का एक प्रसिद्ध वसंत उत्सव और मेला है जहाँ सामाजिक मिलन होता है। गेंडी नृत्य बाँस के ऊँचे डंडों या गेंडी पर संतुलन बनाकर किया जाने वाला एक अनूठा प्रदर्शन है। ये सभी नृत्य जनजातीय समाज की ऊर्जा और उनकी कलात्मक विविधता को बहुत सुंदर ढंग से दर्शाते हैं।

76. (B) पंचायती राज ढांचे के भीतर लोकतांत्रिक चुनावों द्वारा परिभाषित भूमिकाएँ।
मध्य प्रदेश में ग्रामीण नेतृत्व का स्वरूप पारंपरिक और थोपी गई भूमिकाओं से बदलकर अब पूरी तरह लोकतांत्रिक हो गया है। पंचायती राज व्यवस्था लागू होने के बाद अब नेतृत्व का चयन गाँव के नागरिकों द्वारा मतदान के माध्यम से किया जाता है। यह परिवर्तन यह सुनिश्चित करता है कि नेतृत्व केवल वंश या जाति पर आधारित न होकर योग्यता और जनसेवा के प्रति प्रतिबद्धता पर आधारित हो। आधुनिक ग्रामीण नेता अब विकास कार्यों की योजना बनाने और उन्हें लागू करने के लिए कानूनन जिम्मेदार हैं, जो स्थानीय शासन को अधिक पारदर्शी और प्रभावी बनाता है।

77. (C) राज्य की प्रति व्यक्ति आय में वृद्धि करना।
परिवार कल्याण कार्यक्रमों का मुख्य सरोकार मानव विकास के स्वास्थ्य संकेतकों में सुधार करना है। इनका प्रत्यक्ष लक्ष्य शिशु और मातृ मृत्यु दर को कम करना, सुरक्षित मातृत्व सुनिश्चित करना और जन्मों के बीच पर्याप्त अंतराल बनाए रखने के प्रति जागरूकता फैलाना है। यद्यपि एक स्वस्थ जनसंख्या दीर्घकाल में अर्थव्यवस्था में योगदान देती है, लेकिन प्रति व्यक्ति आय बढ़ाना इन स्वास्थ्य-केंद्रित कार्यक्रमों का सीधा या प्राथमिक उद्देश्य नहीं माना जाता है। इनका मूल ध्यान परिवार के प्रत्येक सदस्य के शारीरिक और मानसिक कल्याण को सुरक्षित करने पर ही केंद्रित होता है।

78. (D) लिंग संबंधी सामाजिक गतिशीलता में दीर्घकालिक रुझान।
कई दशकों के दौरान मध्य प्रदेश के लिंगानुपात के आंकड़ों का विश्लेषण समाज में महिलाओं की स्थिति और उनके प्रति दृष्टिकोण के विकास को समझने में मदद करता है। यह अध्ययन दर्शाता है कि विभिन्न वर्षों में सामाजिक सुधारों और सरकारी नीतियों ने महिलाओं के जीवन को किस प्रकार प्रभावित किया है। लिंगानुपात में होने वाले उतार-चढ़ाव शिक्षा, स्वास्थ्य सेवाओं की उपलब्धता और सांस्कृतिक परिवर्तनों के

NODIA

दीर्घकालिक रुझानों को स्पष्ट रूप से उजागर करते हैं। यह डेटा नीति निर्माताओं को लिंग आधारित भेदभाव मिटाने और बेहतर योजनाएं बनाने के लिए एक ठोस आधार प्रदान करता है।

79. (A) लोकतांत्रिक विकेंद्रीकरण
मध्य प्रदेश में त्रिस्तरीय पंचायती राज व्यवस्था की स्थापना का मूल आधार लोकतांत्रिक विकेंद्रीकरण के सिद्धांत को धरातल पर उतारना है। इसका उद्देश्य शासन की शक्तियों को केवल राजधानी तक सीमित न रखकर उन्हें सीधे गाँवों और ब्लॉक स्तर तक पहुँचाना है। इससे स्थानीय लोगों को अपने स्वयं के विकास और प्रशासन के मामलों में सीधे भाग लेने का अवसर मिलता है। जब निर्णय लेने की प्रक्रिया में समुदाय शामिल होता है, तो विकास अधिक प्रभावी और समावेशी होता है। यह व्यवस्था लोकतंत्र की जड़ों को गहराई से मजबूत करने का कार्य प्रभावी रूप से करती है।

80. (D) 1, 2 और 3
जमीनी स्तर पर महिला सशक्तिकरण की प्रक्रिया में पंचायती राज संस्थाएं, गैर-सरकारी संगठन और स्वयं सहायता समूह तीनों की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण और पूरक है। पंचायतों के माध्यम से महिलाओं को राजनीतिक नेतृत्व और निर्णय लेने का अधिकार मिलता है। गैर-सरकारी संगठन उन्हें जागरूक बनाने और कौशल प्रदान करने में मदद करते हैं, जबकि स्वयं सहायता समूह उन्हें आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बनाकर उनकी बचत और निवेश क्षमता को बढ़ाते हैं। इन तीनों निकायों के समन्वित प्रयासों से ही ग्रामीण महिलाओं के जीवन में व्यापक और स्थायी सकारात्मक परिवर्तन आना संभव हुआ है।

81. (B) धरती को 'माता' मानकर उसे क्षति पहुँचाने के भय से ऐतिहासिक रूप से हल चलाने के प्रति उनकी अनिच्छा।
मध्य प्रदेश की बैगा जनजाति को जंगल के लोग कहा जाता है, जिनकी प्रकृति के प्रति अगाध श्रद्धा है। उनकी एक विशिष्ट और पवित्र मान्यता यह है कि धरती उनकी माता है, और हल चलाना उसकी छाती को चीरने के समान है। इसी आध्यात्मिक डर के कारण ऐतिहासिक रूप से बैगा समुदाय हल चलाने से बचता रहा है और इसके स्थान पर झूम खेती या हाथ से बुवाई को प्राथमिकता देता रहा है। यह विश्वास न केवल उनके पर्यावरण प्रेम को दर्शाता है बल्कि उनकी अद्वितीय सामाजिक और सांस्कृतिक पहचान को भी अभूतपूर्व मजबूती प्रदान करता है।

82. (A) पिथोरा कला
भील जनजाति के घरों की दीवारों पर बनाई जाने वाली जीवंत और आकर्षक भित्ति चित्रकला को पिथोरा कला के नाम से जाना जाता है। इस कला शैली में प्राकृतिक रंगों का उपयोग करके घोड़ों, पक्षियों और विभिन्न जनजातीय प्रतीकों को उकेरा जाता है। पिथोरा केवल एक सजावट नहीं है, बल्कि यह एक पवित्र अनुष्ठान का हिस्सा है जिसे अक्सर मनोकामना पूर्ति या देवताओं के प्रति आभार व्यक्त करने के लिए बनाया जाता है। यह चित्रकला भील समुदाय की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत, उनके धार्मिक विश्वासों और प्रकृति के साथ उनके अटूट संबंधों की श्रेष्ठ अभिव्यक्ति है।

83. (C) मौद्रिक जुर्माना
मध्य प्रदेश लोक सेवा गारंटी अधिनियम, 2010 का सबसे सशक्त पक्ष इसकी दंड व्यवस्था है। यदि कोई पदाभिहित अधिकारी किसी अधिसूचित सेवा को प्रदान करने में बिना किसी उचित या पर्याप्त कारण के देरी करता है, तो अधिनियम के तहत उस पर मौद्रिक जुर्माना लगाने का स्पष्ट प्रावधान है। यह जुर्माना अक्सर अधिकारी के वेतन से काटा जाता है और कुछ मामलों में आवेदक को क्षतिपूर्ति के रूप में प्रदान किया जाता है। यह सख्त प्रावधान प्रशासनिक जवाबदेही सुनिश्चित करता है और कर्मचारियों को समय पर कार्य पूरा करने के लिए कानूनी रूप से निरंतर प्रेरित करता है।

84. (D) एक विशिष्ट अवधि में राज्य में निवासियों की संख्या में वृद्धि।
जनसांख्यिकी के क्षेत्र में जनसंख्या वृद्धि का अर्थ किसी निश्चित भौगोलिक क्षेत्र, जैसे मध्य प्रदेश में एक विशिष्ट समय अंतराल के दौरान रहने वाले लोगों की कुल संख्या में होने वाली शुद्ध वृद्धि से है। यह वृद्धि जन्मों की संख्या, मृत्यु दर और अन्य क्षेत्रों से होने वाले प्रवास के सामूहिक प्रभाव का परिणाम होती है। राज्य की विकास नीतियों, बुनियादी ढांचे की योजना और संसाधनों के वितरण के लिए जनसंख्या वृद्धि के सटीक आंकड़ों को समझना अत्यंत आवश्यक है, ताकि भविष्य की बढ़ती मांगों को समय रहते प्रभावी ढंग से पूरा किया जा सके।

85. (C) पेयजल, स्वच्छता, health और शिक्षा जैसे मुद्दों पर अधिक ध्यान।
पंचायती राज व्यवस्था में महिलाओं की बढ़ी हुई भागीदारी से स्थानीय शासन के एजेंडे में एक महत्वपूर्ण बदलाव की अपेक्षा की जाती है। अध्ययनों से पता चलता है कि महिला प्रतिनिधि अक्सर पेयजल की उपलब्धता, बेहतर स्वच्छता सुविधाएं, बच्चों का स्वास्थ्य और प्राथमिक शिक्षा जैसे बुनियादी जीवन-आधारित मुद्दों पर अधिक गंभीरता से ध्यान केंद्रित करती हैं। यह संवेदनशीलता ग्रामीण क्षेत्रों में जीवन की गुणवत्ता में सुधार लाने में मदद करती है। महिलाओं का नेतृत्व विकास को अधिक मानवीय और समुदाय-उन्मुख बनाने की दिशा में एक सकारात्मक और आवश्यक कदम सिद्ध होता है।

86. (B) जनपद पंचायत
मध्य प्रदेश की त्रिस्तरीय पंचायती राज व्यवस्था में ब्लॉक या विकास खंड स्तर पर जनपद पंचायत कार्यरत होती है। यह इकाई अपने क्षेत्र की विभिन्न ग्राम पंचायतों के विकास कार्यों का समन्वय करती है और ब्लॉक स्तर की योजनाओं के प्रभावी क्रियान्वयन के लिए जिम्मेदार होती है। जनपद पंचायत जिला पंचायत और ग्राम पंचायतों के बीच एक महत्वपूर्ण प्रशासनिक सेतु के रूप में कार्य करती है। यह संसाधनों के उचित वितरण को सुनिश्चित करती है और स्थानीय स्तर पर कृषि, शिक्षा एवं स्वास्थ्य संबंधी परियोजनाओं की निगरानी कर ग्रामीण विकास को निरंतर गति प्रदान करती है।

87. (D) ग्रामीण नेतृत्व कानूनन विशेष रूप से पुरुषों का क्षेत्र है।
ग्रामीण नेतृत्व के बारे में यह धारणा पूर्णतः गलत है कि यह केवल पुरुषों का क्षेत्र है। भारतीय संविधान और राज्य के कानूनों

महत्वपूर्ण स्थानीय विकास परियोजनाएं अधूरी रह जाती हैं या शुरू ही नहीं हो पातीं। पंचायतों को वास्तविक रूप से प्रभावी बनाने के लिए उन्हें वित्तीय रूप से स्वायत्त और सक्षम बनाना भविष्य के लिए अत्यंत आवश्यक है।

138. (A) सीटों के आरक्षण के लिए संवैधानिक जनादेश।
पंचायती राज संस्थाओं में महिलाओं की सक्रिय भूमिका और उनकी बढ़ती संख्या मुख्य रूप से सीटों के आरक्षण के संवैधानिक प्रावधानों का परिणाम है। भारतीय संविधान के 73वें संशोधन और राज्य के पंचायती राज अधिनियमों ने महिलाओं के लिए एक निश्चित प्रतिशत सीटें अनिवार्य रूप से आरक्षित की हैं। इस वैधानिक व्यवस्था ने महिलाओं को राजनीतिक क्षेत्र में प्रवेश करने और नेतृत्व की जिम्मेदारी संभालने का एक औपचारिक और सुरक्षित अवसर प्रदान किया है। इसी कानूनी आधार ने ग्रामीण क्षेत्रों में लैंगिक समानता और महिला सशक्तिकरण की प्रक्रिया को अत्यंत तीव्रता और व्यापकता प्रदान की है।

139. (D) नातेदारी, गोत्र और वंश पर आधारित विविध प्रणालियाँ, जो प्रत्येक जनजाति के लिए अद्वितीय हैं।
मध्य प्रदेश की जनजातियों का सामाजिक संगठन कोई एकरूप संरचना नहीं है, बल्कि यह अत्यंत विविध और समृद्ध है। प्रत्येक जनजाति, जैसे भील, गोंड, बैगा या कोरकू, की अपनी विशिष्ट सामाजिक व्यवस्था होती है जो उनके पूर्वजों से चली आ रही नातेदारी, गोत्र प्रणालियों और वंश के नियमों पर आधारित होती है। ये नियम उनके विवाह, संपत्ति के उत्तराधिकार और सामाजिक उत्सवों को एक निश्चित ढांचा प्रदान करते हैं। यह विविधता उनकी सांस्कृतिक विशिष्टता को बनाए रखती है और उन्हें एक सुव्यवस्थित सामुदायिक जीवन जीने के लिए आवश्यक नियम और अनुशासन प्रदान करती है।

140. (A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
मध्य प्रदेश की जनजातीय कलाओं, विशेष रूप से गोंड और पिथोरा चित्रकला, ने अपनी अद्वितीय शैली और जीवंतता के कारण राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय मंचों पर गौरवपूर्ण पहचान बनाई है। इन कला रूपों की लोकप्रियता का मुख्य कारण यह है कि ये जनजातियों की सदियों पुरानी संस्कृति, उनके आध्यात्मिक विश्वासों और प्रकृति के साथ उनके अटूट एवं सहज संबंधों को बहुत ही प्रभावी ढंग से प्रदर्शित करते हैं। अतः अभिकथन और कारण दोनों पूर्णतः सही हैं, और कारण स्पष्ट रूप से समझाता है कि इन कलाओं का कलात्मक और सांस्कृतिक मूल्य ही उनकी व्यापक वैश्विक पहुँच और ख्याति का मुख्य आधार है।

141. (C) जनजातीय आबादी के बीच बेहतर स्वास्थ्य, शिक्षा और आजीविका संकेतक।
मध्य प्रदेश में जनजातीय कल्याण कार्यक्रमों की वास्तविक सफलता का आकलन इस बात से किया जाता है कि जनजातीय समुदायों के जीवन स्तर में कितना सकारात्मक बदलाव आया है। जब जनजातीय क्षेत्रों में साक्षरता दर बढ़ती है, शिशु मृत्यु दर कम होती है, और लोगों के पास सम्मानजनक आजीविका के बेहतर साधन उपलब्ध होते हैं, तभी ये कार्यक्रम सफल माने जाते हैं। इन संकेतकों में सुधार यह दर्शाता है कि सरकारी योजनाएं लक्षित समूहों तक पहुँच रही हैं और उन्हें सशक्त बना रही हैं। विकास का अंतिम लक्ष्य जनजातियों के सामाजिक-आर्थिक स्तर को मुख्यधारा के बराबर लाना है।

142. (D) पंचायती राज व्यवस्था
सत्ता का विकेंद्रीकरण वह मूल अवधारणा है जिस पर संपूर्ण पंचायती राज व्यवस्था टिकी हुई है। इसका अर्थ है शासन की शक्तियों और निर्णय लेने के अधिकारों को केंद्र और राज्य सरकारों से हटाकर जमीनी स्तर की संस्थाओं, जैसे ग्राम पंचायतों को हस्तांतरित करना। यह प्रक्रिया लोकतंत्र को अधिक सहभागी बनाती है क्योंकि इसमें स्थानीय लोग अपने विकास की योजनाएं स्वयं तैयार करते हैं और उनके क्रियान्वयन की निगरानी करते हैं। विकेंद्रीकरण के माध्यम से ही स्वशासन का गांधीवादी सपना साकार हुआ है, जिससे ग्रामीण भारत को प्रशासनिक और राजनीतिक रूप से अभूतपूर्व मजबूती मिली है।

143. (A) मातृ मृत्यु दर को कम करना।
मध्य प्रदेश में परिवार कल्याण कार्यक्रमों के अंतर्गत स्वास्थ्य संबंधी पहलों का एक प्राथमिक और अत्यंत संवेदनशील लक्ष्य मातृ मृत्यु दर को कम करना है। इसके लिए गर्भवती महिलाओं को गर्भावस्था के दौरान उचित चिकित्सा देखभाल, संस्थागत प्रसव की सुविधा और प्रसवोत्तर सहायता प्रदान की जाती है। इन कार्यक्रमों का उद्देश्य यह सुनिश्चित करना है कि कोई भी महिला प्रसव के दौरान रोकी जा सकने वाली जटिलताओं के कारण अपनी जान न गंवाए। बेहतर मातृ स्वास्थ्य न केवल परिवारों की सुरक्षा सुनिश्चित करता है, बल्कि यह राज्य के समग्र सामाजिक स्वास्थ्य मानकों में भी व्यापक सुधार लाता है।

144. (B) जनसांख्यिकी
समय के साथ किसी क्षेत्र की जनसंख्या की संरचना में होने वाले परिवर्तनों, जैसे लिंगानुपात, आयु वितरण और जनसंख्या घनत्व का वैज्ञानिक अध्ययन जनसांख्यिकी कहलाता है। मध्य प्रदेश की विभिन्न जनगणनाओं के आंकड़ों का विश्लेषण कर यह समझना कि लिंगानुपात में क्या बदलाव आए हैं, जनांकिकीय शोध का एक अनिवार्य हिस्सा है। यह अध्ययन समाज में महिलाओं की स्थिति और उनके प्रति व्यवहार के रुझानों को समझने में मदद करता है। प्राप्त निष्कर्षों का उपयोग सरकार द्वारा सामाजिक सुधार की योजनाएं बनाने और स्वास्थ्य एवं शिक्षा संसाधनों के न्यायपूर्ण वितरण के लिए निरंतर किया जाता है।

145. (B) क्षमता निर्माण और शासन में महिलाओं की भागीदारी को मजबूत करना।
जब मध्य प्रदेश में कोई गैर-सरकारी संगठन निर्वाचित महिला पंचायत सदस्यों के लिए विशेष प्रशिक्षण कार्यशालाएं आयोजित करता है, तो वह उनके कौशल और आत्मविश्वास को बढ़ाने में महत्वपूर्ण योगदान देता है। ऐसी पहलें महिलाओं को प्रशासनिक नियमों, बजट प्रबंधन और नेतृत्व की बारीकियों को समझने में मदद करती हैं। यह क्षमता निर्माण उन्हें पुरुषों के अनावश्यक प्रभाव से मुक्त होकर स्वतंत्र रूप से निर्णय लेने के सक्षम बनाता है। इस प्रकार के प्रयास पंचायती राज में महिलाओं की भागीदारी को केवल कागजी आरक्षण से आगे

Downloaded from www.pdf.tube

सामाजिक अंकेक्षण होता है। ग्राम सभा यह सुनिश्चित करती है कि पंचायत के निर्णय लोकतांत्रिक हों और सार्वजनिक धन का सदैव सदुपयोग हो। यह प्रत्यक्ष लोकतंत्र का एक जीवंत उदाहरण है, जो शासन में पारदर्शिता लाने और स्थानीय नेतृत्व को जनता के प्रति जवाबदेह बनाने में अद्वितीय और सशक्त भूमिका निभाता है।

96. (B) इसने निर्वाचित पंचायत पदों के माध्यम से नेतृत्व के नए मार्ग प्रशस्त किए हैं।
सत्ता के विकेंद्रीकरण ने मध्य प्रदेश में ग्रामीण नेतृत्व के पारंपरिक स्वरूप को आधुनिक और लोकतांत्रिक बना दिया है। पंचायती राज व्यवस्था के अंतर्गत होने वाले चुनावों ने गाँव के आम नागरिकों, विशेषकर महिलाओं और पिछड़े वर्गों के लिए नेतृत्व के नए और गौरवपूर्ण अवसर प्रदान किए हैं। अब नेतृत्व केवल जन्म या धन पर आधारित नहीं रह गया है, बल्कि निर्वाचित प्रतिनिधि अपनी योग्यता और जनसेवा के माध्यम से निरंतर आगे आ रहे हैं। इस प्रक्रिया ने ग्रामीण क्षेत्रों में राजनीतिक चेतना को बढ़ाया है और स्थानीय शासन को अधिक समावेशी और सशक्त बनाया है।

97. (B) गोंड
गोंड जनजाति मध्य प्रदेश की सबसे बड़ी और अत्यंत प्रभावशाली जनजातियों में से एक है। इनका निवास मुख्य रूप से विंध्य और सतपुड़ा पर्वत श्रेणियों के क्षेत्रों में पाया जाता है। गोंड समुदाय अपनी विशिष्ट कला, संस्कृति, पारंपरिक लोक संगीत और सुव्यवस्थित सामाजिक ढांचे के लिए प्रसिद्ध है। राज्य के इतिहास और संस्कृति के निर्माण में इस जनजाति का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। वे अपनी गौरवशाली विरासत और प्रकृति के साथ गहरे जुड़ाव के लिए जाने जाते हैं, जो उन्हें मध्य प्रदेश के सामाजिक परिदृश्य का एक अभिन्न और अत्यंत अनिवार्य हिस्सा बनाता है।

98. (A) गोंड और कोरकू
मेघनाद उत्सव मध्य प्रदेश की गोंड और कोरकू जनजातियों के बीच मनाया जाने वाला एक अत्यंत महत्वपूर्ण और पवित्र सांस्कृतिक पर्व है। इस उत्सव के दौरान एक विशाल और ऊँचे लकड़ी के स्तंभ की पूजा की जाती है, जो शक्ति और अटूट आस्था का प्रतीक माना जाता है। यह त्योहार मुख्य रूप से फसल की कटाई के बाद मनाया जाता है, जिसमें सामुदायिक नृत्य और पारंपरिक संगीत के माध्यम से खुशियाँ मनाई जाती हैं। यह उत्सव इन जनजातियों के आपसी सामाजिक बंधनों को प्रगाढ़ करने और उनकी धार्मिक मान्यताओं को जीवंत रखने का एक प्रमुख और सशक्त माध्यम है।

99. (C) यह संसाधनों तक पहुँच और निर्णय लेने में भागीदारी को बढ़ाता है।
मध्य प्रदेश के समग्र सामाजिक और आर्थिक उत्थान के लिए महिला सशक्तिकरण को आधारशिला माना जाता है क्योंकि यह समाज के आधे हिस्से को विकास की मुख्यधारा से जोड़ता है। जब महिलाओं के पास संसाधनों तक पहुँच होती है और वे परिवार एवं समाज के महत्वपूर्ण निर्णयों में भाग लेती हैं, तो इसका सकारात्मक प्रभाव शिक्षा, स्वास्थ्य और आर्थिक स्थिरता पर पड़ता है। सशक्त महिलाएं एक जागरूक पीढ़ी का निर्माण करती हैं, जिससे समाज में लैंगिक न्याय स्थापित होता है और राज्य का सर्वांगीण विकास अधिक न्यायसंगत और स्थायी रूप से सुनिश्चित हो पाता है।

100. (B) P-3, Q-1, R-4, S-2
मध्य प्रदेश की जनजातीय कला और शिल्प उनकी रचनात्मकता और सांस्कृतिक गहराई का अद्भुत संगम है। ढोकरा कला में बेल मेटल कास्टिंग की प्राचीन तकनीक का उपयोग किया जाता है। पिथोरा भील समुदाय की प्रसिद्ध भित्ति चित्रकला है जो दीवारों पर उकेरी जाती है। गोंड चित्रकला अब कागजों और कैनवास पर अपने जटिल बिंदुओं और रेखाओं के पैटर्न के लिए अंतरराष्ट्रीय स्तर पर पहचानी जाती है। बाँस शिल्प के अंतर्गत टोकरियाँ और चटाइयाँ जैसी उपयोगी वस्तुओं का सुंदर निर्माण किया जाता है। ये शिल्प जनजातीय कारीगरों की आजीविका और उनकी गौरवशाली परंपरा के रक्षक हैं।

NODIA

101. (C) वधुओं के लिए बढ़ती प्रतिस्पर्धा, और संभावित रूप से, महिलाओं के विरुद्ध बढ़ते अपराध।
मध्य प्रदेश में गिरता लिंगानुपात केवल एक जनांकिकीय आंकड़ा नहीं है, बल्कि इसके गहरे और चिंताजनक सामाजिक परिणाम होते हैं। पुरुषों की तुलना में महिलाओं की कम संख्या समाज में गंभीर लैंगिक असंतुलन पैदा करती है, जिससे विवाह योग्य महिलाओं की कमी हो जाती है। ऐसी स्थिति में महिलाओं के विरुद्ध अपराधों, अपहरण और जबरन विवाह जैसी समस्याओं के बढ़ने की संभावना प्रबल हो जाती है। यह सामाजिक स्थिरता और नैतिक मूल्यों को नकारात्मक रूप से प्रभावित करता है। अतः संतुलित लिंगानुपात बनाए रखना एक न्यायपूर्ण और सुरक्षित समाज के निर्माण के लिए अनिवार्य है।

102. (B) बच्चों और माताओं के लिए पोषण, स्वास्थ्य और पूर्व-स्कूली शिक्षा।
मध्य प्रदेश के ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों में आँगनवाड़ी केंद्र जमीनी स्तर पर स्वास्थ्य और शिक्षा सेवाओं की प्रदायगी के सबसे महत्वपूर्ण केंद्र हैं। ये केंद्र एकीकृत बाल विकास सेवा योजना के अंतर्गत कार्य करते हैं, जहाँ छोटे बच्चों को प्रारंभिक शिक्षा दी जाती है और उन्हें तथा गर्भवती माताओं को पौष्टिक आहार प्रदान किया जाता है। टीकाकरण, स्वास्थ्य जांच और स्वच्छता के बारे में जागरूकता फैलाना भी इनके प्रमुख कार्यों में शामिल है। ये केंद्र कुपोषण मुक्त समाज की स्थापना और बच्चों के स्वस्थ बचपन को सुनिश्चित करने में केंद्रीय और महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

103. (D) जिला पंचायत
मध्य प्रदेश की त्रिस्तरीय पंचायती राज व्यवस्था में जिला पंचायत सर्वोच्च प्रशासनिक और योजना बनाने वाली संस्था के रूप में कार्य करती है। यह जिला स्तर पर ग्रामीण विकास की सभी गतिविधियों की निगरानी करती है और विभिन्न सरकारी विभागों तथा जनपद पंचायतों के बीच समन्वय स्थापित करती है। जिला पंचायत सरकारी धन के उचित आवंटन और विकास परियोजनाओं के सफल क्रियान्वयन को सुनिश्चित करने के लिए जिम्मेदार होती है। इसके सदस्य सीधे जनता द्वारा निर्वाचित

जबकि उनकी विशिष्ट और प्राचीन संस्कृति पूर्णतः सुरक्षित और संरक्षित रहे।

154. (A) राज्य के सामाजिक परिदृश्य में।
मध्य प्रदेश के बुंदेलखंड जैसे चुनौतीपूर्ण भौगोलिक क्षेत्रों में पर्यावरणीय मुद्दों पर कार्य करने वाला गैर-सरकारी संगठन सीधे तौर पर राज्य के सामाजिक परिदृश्य को प्रभावित करता है। पर्यावरण और समाज का गहरा संबंध है, क्योंकि प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण सीधे तौर पर लोगों की आजीविका, स्वास्थ्य और जीवन की गुणवत्ता को बेहतर बनाता है। ऐसे संगठन जन जागरूकता फैलाते हैं और सामुदायिक भागीदारी के माध्यम से सतत विकास को बढ़ावा देते हैं। उनकी गतिविधियाँ सामाजिक चेतना जागृत करने और भविष्य की पीढ़ियों के लिए संसाधनों को सुरक्षित रखने की दिशा में एक अत्यंत महत्वपूर्ण और प्रभावी योगदान हैं।

155. (B) 2, 4, 1, 3
स्वयं सहायता समूह के संचालन का एक निश्चित और तार्किक क्रम होता है। सबसे पहले समान पृष्ठभूमि के 10-20 सदस्यों का एक समूह गठित किया जाता है। इसके बाद, सदस्य नियमित बैठकें करते हैं और छोटी-छोटी बचत एकत्रित करना प्रारंभ करते हैं। जब पर्याप्त कोष जमा हो जाता है, तो समूह सदस्यों को उनकी व्यक्तिगत या व्यावसायिक जरूरतों के लिए आंतरिक ऋण देना शुरू करता है। अंत में, समूह के अच्छे ट्रैक रिकॉर्ड के आधार पर उसे बड़े आर्थिक कार्यों के लिए बैंकों से जोड़ा जाता है। यह चरणबद्ध प्रक्रिया ग्रामीण क्षेत्रों में आर्थिक आत्मनिर्भरता और सामाजिक सशक्तिकरण का मुख्य आधार है।

156. (B) सार्वजनिक सेवा प्रदायगी में भ्रष्टाचार और देरी
मध्य प्रदेश लोक सेवा गारंटी अधिनियम, 2010 का निर्माण मुख्य रूप से सरकारी विभागों में व्याप्त लालफीताशाही, अनावश्यक देरी और भ्रष्टाचार की समस्याओं को जड़ से मिटाने के लिए किया गया है। यह कानून अधिकारियों को बाध्य करता है कि वे नागरिक सेवाओं को एक निश्चित समय सीमा के भीतर अनिवार्य रूप से प्रदान करें। यदि कोई अधिकारी इस सेवा में देरी करता है, तो उस पर दंड का प्रावधान है, जिससे प्रशासनिक कार्यकुशलता बढ़ती है। यह अधिनियम प्रशासन को जनता के प्रति जवाबदेह बनाता है और सरकारी कार्यों में पूर्ण पारदर्शिता लाकर सुशासन की नींव को और अधिक सुदृढ़ करता है।

157. (C) जल, भूमि और सार्वजनिक सेवाओं जैसे संसाधनों पर दबाव को।
मध्य प्रदेश में जनसंख्या वृद्धि के रुझानों का अध्ययन अत्यंत महत्वपूर्ण है क्योंकि यह सीधे तौर पर राज्य के सीमित संसाधनों पर पड़ने वाले बोझ को प्रभावित करता है। तीव्र गति से बढ़ती जनसंख्या से स्वच्छ जल, कृषि भूमि, आवास और शिक्षा एवं स्वास्थ्य जैसी सार्वजनिक सेवाओं की माँग निरंतर बढ़ जाती है। यदि विकास की गति जनसंख्या वृद्धि के साथ तालमेल नहीं बिठा पाती, तो संसाधनों की कमी और जीवन की गुणवत्ता में गिरावट का खतरा उत्पन्न हो जाता है। अतः जनसंख्या वृद्धि का वैज्ञानिक विश्लेषण राज्य के लिए सतत और संतुलित विकास की योजना बनाने हेतु अत्यंत अपरिहार्य और महत्वपूर्ण है।

158. (D) परिवार नियोजन के तरीकों पर परामर्श प्रदान करना।
मध्य प्रदेश में परिवार कल्याण कार्यक्रमों का एक अत्यंत महत्वपूर्ण और बुनियादी घटक परिवारों को स्वैच्छिक आधार पर परिवार नियोजन के विभिन्न सुरक्षित तरीकों के बारे में सटीक जानकारी और परामर्श प्रदान करना है। इन कार्यक्रमों का उद्देश्य दम्पतियों को यह निर्णय लेने में सक्षम बनाना है कि वे अपने बच्चों की संख्या और उनके बीच का अंतराल स्वयं तय कर सकें। इस जागरूकता से न केवल जनसंख्या स्थिरीकरण में मदद मिलती है, बल्कि माता और शिशु का स्वास्थ्य भी सुरक्षित रहता है। यह सामाजिक कल्याण और परिवार की आर्थिक स्थिति को बेहतर बनाने का एक अत्यंत प्रभावी और मानवीय माध्यम है।

159. (A) लैंगिक समानता और सामाजिक कल्याण का स्तर।
मध्य प्रदेश की जनसांख्यिकी में लिंगानुपात एक अत्यंत शक्तिशाली संकेतक है जो समाज में लैंगिक समानता की वास्तविक स्थिति को दर्शाता है। एक संतुलित और सकारात्मक लिंगानुपात यह संकेत देता है कि समाज में बालिकाओं और महिलाओं को पुरुषों के समान सम्मान, स्वास्थ्य सेवाएं और जीने का अधिकार प्राप्त है। इसके विपरीत, कम लिंगानुपात बालिकाओं के प्रति भेदभाव और प्रतिकूल सामाजिक परिस्थितियों को उजागर करता है। इसलिए, लिंगानुपात में सुधार लाना राज्य की सामाजिक नीतियों का एक मुख्य लक्ष्य है, जिससे एक न्यायपूर्ण, संतुलित और प्रगतिशील समाज का निर्माण सुनिश्चित किया जा सके।

160. (A) केवल 2
मध्य प्रदेश की जनजातीय संस्कृति अपनी अद्वितीय कलाओं, रंगीन नृत्यों और ऋतुओं पर आधारित उत्सवों की एक अत्यंत समृद्ध और प्राचीन विरासत के लिए संपूर्ण विश्व में जानी जाती है। यह संस्कृति प्रकृति के साथ उनके गहरे सहजीवी संबंध और उनके पूर्वजों के गौरवशाली इतिहास की श्रेष्ठ अभिव्यक्ति है। यह कहना गलत है कि यह पूरी तरह एकरूप है, क्योंकि विभिन्न जनजातियों की अपनी विशिष्ट और अलग परंपराएं होती हैं। जनजातीय समाज आधुनिक प्रभावों के साथ सामंजस्य बिठाते हुए भी अपनी मूल जड़ों को सुरक्षित रखने का सफल प्रयास कर रहा है। अतः केवल दूसरा कथन सत्य और तार्किक है।

161. (B) अपने ब्लॉक के भीतर ग्राम पंचायतों के कार्यों की निगरानी और समन्वय करना।
मध्य प्रदेश की त्रिस्तरीय पंचायती राज व्यवस्था में जनपद पंचायत मध्यवर्ती स्तर पर एक अत्यंत महत्वपूर्ण कड़ी के रूप में कार्य करती है। इसकी प्राथमिक भूमिका अपने विकास खंड या ब्लॉक के अंतर्गत आने वाली सभी ग्राम पंचायतों की गतिविधियों की निगरानी करना और उनके बीच उचित समन्वय स्थापित करना है। जनपद पंचायत जिला स्तर की योजनाओं को धरातल पर उतारने में मदद करती है और ग्राम पंचायतों को आवश्यक तकनीकी एवं प्रशासनिक मार्गदर्शन प्रदान करती है। यह संसाधनों के कुशल वितरण को सुनिश्चित कर क्षेत्रीय

Click Here to Buy book on Amazon

है, तो यह प्रभावी ग्रामीण नेतृत्व का एक उत्कृष्ट उदाहरण प्रस्तुत करता है। यह सफलता दर्शाती है कि पंचायती राज में महिलाओं को मिला आरक्षण केवल सांकेतिक नहीं है, बल्कि यह उनमें आत्मविश्वास और निर्णय लेने की क्षमता विकसित कर रहा है। ऐसी पहलें समाज की पुरानी धारणाओं को तोड़ती हैं और अन्य महिलाओं को सार्वजनिक सेवा के लिए प्रेरित करती हैं। यह महिला सशक्तिकरण और स्थानीय शासन की सफलता का एक अत्यंत प्रभावशाली प्रत्यक्ष प्रमाण है।

113. (B) अपने गोत्र से बाहर विवाह करना।
मध्य प्रदेश की अधिकांश जनजातियों में गोत्र बहिर्विवाह की प्रथा सामाजिक मर्यादा और वंश की शुद्धता का आधार मानी जाती है। इसका स्पष्ट अर्थ है कि व्यक्ति को अपने ही गोत्र के भीतर विवाह करने की अनुमति नहीं होती, क्योंकि एक ही गोत्र के सदस्य स्वयं को समान पूर्वज का वंशज और आपस में भाई-बहन मानते हैं। विवाह हमेशा दूसरे गोत्र में ही तय किया जाता है। यह नियम न केवल जनजातीय विवाहों को विनियमित करता है, बल्कि यह समाज के भीतर व्यापक नातेदारी संबंध स्थापित करने और सामाजिक एकता को बढ़ावा देने में भी अत्यंत सहायक होता है।

114. (A) जनजातीय संस्कृति
किसी भी जनजाति के पारंपरिक गीतों, लोक कथाओं और विशिष्ट नृत्य शैलियों का अध्ययन सीधे तौर पर उनकी संस्कृति के अन्वेषण से संबंधित है। मध्य प्रदेश की बैगा जनजाति की ये कलात्मक अभिव्यक्तियाँ उनके जीवन दर्शन, प्रकृति के साथ उनके संबंधों और उनके ऐतिहासिक गौरव को दर्शाती हैं। संस्कृति केवल बाहरी दिखावा नहीं है, बल्कि यह समुदाय के मूल्यों, विश्वासों और उनकी अद्वितीय पहचान की आत्मा होती है। ऐसे अध्ययन जनजातीय समाज की अनमोल विरासत को समझने और उसे भविष्य के लिए संरक्षित करने में अत्यंत महत्वपूर्ण और निर्णायक भूमिका निभाते हैं।

115. (A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
मध्य प्रदेश में परिवार कल्याण कार्यक्रमों का दृष्टिकोण व्यापक और बहुआयामी है, जो केवल गर्भनिरोधक तक सीमित नहीं रहकर मातृ और बाल स्वास्थ्य सेवाओं को प्राथमिकता देता है। इस समग्र दृष्टिकोण के पीछे का मूल कारण यह है कि जब माताओं और बच्चों का स्वास्थ्य सुरक्षित होता है, तो परिवार स्वाभाविक रूप से छोटा और स्वस्थ रखने के प्रति प्रेरित होता है। यह रणनीति जनसंख्या वृद्धि के प्रबंधन में भी प्रभावी रूप से सहायता करती है। अतः अभिकथन और कारण दोनों सही हैं, और कारण अभिकथन की तार्किक और अत्यंत स्पष्ट व्याख्या प्रस्तुत करता है।

116. (D) नागरिक के लिए शिकायत निवारण तंत्र।
मध्य प्रदेश लोक सेवा गारंटी अधिनियम, 2010 के अंतर्गत द्वितीय अपीलीय प्राधिकारी का प्रावधान नागरिक अधिकारों के संरक्षण को और अधिक मजबूत बनाता है। यदि प्रथम अपील के बाद भी किसी नागरिक को संतोषजनक समाधान नहीं मिलता है, तो यह उच्च स्तरीय प्रावधान उसे अपनी शिकायत के लिए एक और कानूनी मंच प्रदान करता है। यह व्यवस्था प्रशासनिक अधिकारियों की जवाबदेही को और कड़ा करती है और यह सुनिश्चित करती है कि किसी भी स्तर पर होने वाली लापरवाही को अनसुना न किया जाए। इससे नागरिकों का सरकारी व्यवस्था और सुशासन में विश्वास निरंतर बढ़ता है।

NODIA

117. (C) जन्म दर और मृत्यु दर की गतिशीलता।
मध्य प्रदेश में जनसंख्या वृद्धि के रुझानों को निर्धारित करने में जन्म दर और मृत्यु दर के बीच का संतुलन सबसे प्रभावशाली कारक है। बेहतर स्वास्थ्य सुविधाओं के कारण मृत्यु दर में आई कमी और तुलनात्मक रूप से उच्च जन्म दर मिलकर जनसंख्या में शुद्ध वृद्धि का मुख्य कारण बनते हैं। यद्यपि शिक्षा और सामाजिक जागरूकता जैसे कारक लंबे समय में जन्म दर को प्रभावित करते हैं, लेकिन जनसंख्या के जनांकिकीय परिवर्तन की प्रत्यक्ष गति इन दोनों दरों की परस्पर क्रिया पर ही निर्भर करती है। इसका विश्लेषण राज्य के भविष्य के नियोजन के लिए अत्यंत अपरिहार्य है।

118. (B) ग्राम पंचायत का सदस्य होना, जो एक विशिष्ट वार्ड का प्रतिनिधित्व करता है।
मध्य प्रदेश की ग्राम पंचायत संरचना में पंच की भूमिका जमीनी स्तर पर अत्यंत महत्वपूर्ण होती है। प्रत्येक ग्राम पंचायत को विभिन्न वार्डों में विभाजित किया जाता है और प्रत्येक वार्ड से एक प्रतिनिधि चुना जाता है जिसे पंच कहा जाता है। ये सदस्य मिलकर ग्राम पंचायत की परिषद बनाते हैं और सरपंच के साथ विकास कार्यों पर निर्णय लेते हैं। पंच अपने वार्ड की विशिष्ट समस्याओं और आवश्यकताओं को पंचायत की बैठकों में उठाते हैं, जिससे यह सुनिश्चित होता है कि गाँव के प्रत्येक हिस्से का विकास और प्रतिनिधित्व पूर्णतः न्यायसंगत और पारदर्शी ढंग से हो सके।

119. (D) आरक्षण नीतियों ने बड़ी संख्या में महिलाओं को सत्ता के पदों पर आसीन होने में सक्षम बनाया है।
मध्य प्रदेश में लागू की गई प्रभावी आरक्षण नीतियों ने ग्रामीण शासन के परिदृश्य को पूरी तरह बदल दिया है। पंचायतों में महिलाओं के लिए 50% सीटों के प्रावधान ने हजारों महिलाओं को सरपंच और जनपद अध्यक्ष जैसे महत्वपूर्ण नेतृत्व पदों पर पहुँचने का ऐतिहासिक अवसर प्रदान किया है। यह कानूनी सशक्तिकरण उन्हें निर्णय लेने की मुख्यधारा में लाया है और समाज की पितृसत्तात्मक बाधाओं को तोड़ने में मदद की है। यद्यपि चुनौतियां अभी भी मौजूद हैं, फिर भी आरक्षण ने ग्रामीण मध्य प्रदेश में महिला नेतृत्व की एक नई, सक्षम और सशक्त पीढ़ी तैयार की है।

120. (A) आर्थिक शोषण
मध्य प्रदेश में जनजातीय समुदायों के भूमि अधिकारों का संरक्षण करने और उनके अवैध हस्तांतरण को रोकने वाले कार्यक्रम सीधे तौर पर आर्थिक शोषण की समस्या को संबोधित करते हैं। जनजातियों के लिए उनकी भूमि केवल संपत्ति नहीं, बल्कि आजीविका का प्राथमिक स्रोत और उनकी सांस्कृतिक पहचान का हिस्सा है। धोखाधड़ी या दबाव में छीनी गई भूमि को वापस दिलाने की कानूनी पहल उन्हें गरीबी और असुरक्षा के कुचक्र से बाहर निकालती है। यह राज्य की सामाजिक न्याय के प्रति

अटूट प्रतिबद्धता को दर्शाता है और कमजोर वर्गों के मौलिक आर्थिक हितों की प्रभावी सुरक्षा सुनिश्चित करता है।

121. (C) वर्षा ऋतु के दौरान
गेंडी या स्टिल्ट-वॉकिंग नृत्य मध्य प्रदेश की गोंड और प्रधान जैसी जनजातियों के युवाओं द्वारा मुख्य रूप से वर्षा ऋतु के दौरान किया जाता है। इस नृत्य में नर्तक बाँस के ऊँचे डंडों या गेंडी पर संतुलन बनाकर उत्साह के साथ थिरकते हैं। पारंपरिक रूप से इसका प्रचलन कीचड़ भरे रास्तों पर चलने की कला से विकसित हुआ माना जाता है, जो बाद में एक रोमांचक नृत्य रूप में परिवर्तित हो गया। यह प्रदर्शन शारीरिक संतुलन, चपलता और सामूहिक उल्लास का अद्भुत मेल है, जो जनजातीय युवाओं के प्रकृति के साथ सामंजस्य को जीवंत और कलात्मक रूप में प्रदर्शित करता है।

122. (A) 10-20 महिलाओं का एक समूह जो बचत और ऋण के लिए नियमित रूप से मिलते हैं।
मध्य प्रदेश में स्वयं सहायता समूहों का सबसे सफल और प्रचलित मॉडल 10 से 20 स्थानीय महिलाओं के एक छोटे समूह पर आधारित है। ये महिलाएं नियमित अंतराल पर एकत्रित होती हैं और अपनी क्षमता के अनुसार छोटी बचत करती हैं। इस संचित कोष का उपयोग समूह के सदस्यों को उनकी आपातकालीन या व्यावसायिक जरूरतों के लिए बहुत कम ब्याज दर पर ऋण देने के लिए किया जाता है। यह मॉडल न केवल वित्तीय समावेशन को बढ़ावा देता है, बल्कि महिलाओं को संगठित होने, आपसी सहयोग करने और सामूहिक नेतृत्व क्षमता विकसित करने के लिए एक सुरक्षित मंच प्रदान करता है।

123. (D) नागरिक समाज के एक हिस्से के रूप में
मध्य प्रदेश में हाशिए पर रहने वाले समुदायों के अधिकारों की वकालत करने और उनके लिए न्याय की माँग करने वाले गैर-सरकारी संगठन नागरिक समाज के एक अनिवार्य अंग के रूप में कार्य करते हैं। ये संगठन सरकार और जनता के बीच एक स्वतंत्र कड़ी की भूमिका निभाते हैं, जो सत्ता को जवाबदेह ठहराने और समाज के वंचित वर्गों की आवाज बुलंद करने का कार्य करते हैं। उनकी यह सक्रियता लोकतंत्र को अधिक समावेशी और संवेदनशील बनाती है। नागरिक समाज के रूप में उनकी उपस्थिति यह सुनिश्चित करती है कि विकास की प्रक्रिया में कोई भी वर्ग पीछे न छूटे।

124. (B) सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक
महिला सशक्तिकरण की अवधारणा अत्यंत व्यापक और बहुआयामी है, जिसमें जीवन के तीन प्रमुख आयाम- सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक शामिल हैं। सामाजिक सशक्तिकरण उन्हें समाज में सम्मान और निर्णय लेने की स्वायत्तता प्रदान करता है। आर्थिक सशक्तिकरण उन्हें वित्तीय रूप से आत्मनिर्भर बनाता है, जबकि राजनीतिक सशक्तिकरण शासन और सार्वजनिक नीति में उनकी सक्रिय भागीदारी सुनिश्चित करता है। ये तीनों आयाम एक-दूसरे से गहराई से जुड़े हुए हैं। जब महिलाओं का सर्वांगीण विकास होता है, तभी समाज में वास्तविक लैंगिक समानता आती है और राज्य की प्रगति सुदृढ़ होती है।

125. (C) P-3, Q-4, R-1, S-2
मध्य प्रदेश के सामाजिक विकास के विभिन्न निकाय अपनी विशिष्ट भूमिकाओं के लिए जाने जाते हैं। स्वयं सहायता समूह सूक्ष्म उद्यमों और छोटी बचतों के माध्यम से आर्थिक मदद करते हैं। पंचायती राज व्यवस्था ग्रामीण स्वशासन का मुख्य ढांचा है जो स्थानीय प्रशासन संभालती है। परिवार कल्याण कार्यक्रमों का मुख्य केंद्र मातृ और बाल स्वास्थ्य सेवाओं में सुधार करना है। जनजातीय कल्याण योजनाएं विशिष्ट रूप से जनजातीय अधिकारों के संरक्षण और उनके सर्वांगीण विकास के लिए समर्पित हैं। इन सभी संस्थाओं का समन्वित कार्य राज्य के समावेशी सामाजिक और आर्थिक विकास को निरंतर सुनिश्चित करता है।

126. (D) शिशु मृत्यु दर।
मध्य प्रदेश में पोषण और स्वास्थ्य कार्यक्रमों की प्रभावशीलता का मूल्यांकन करने के लिए शिशु मृत्यु दर एक अत्यंत महत्वपूर्ण और प्राथमिक संकेतक माना जाता है। यह डेटा दर्शाता है कि प्रति 1000 जीवित जन्मों पर एक वर्ष से कम उम्र के कितने बच्चों की मृत्यु हुई है। इस दर में गिरावट स्वास्थ्य सेवाओं की पहुँच, बेहतर टीकाकरण और सुपोषित माताओं का प्रत्यक्ष परिणाम होती है। राज्य की स्वास्थ्य नीतियों का मुख्य उद्देश्य इस दर को निरंतर कम करना है, जिससे यह सुनिश्चित हो सके कि स्वास्थ्य और पोषण संबंधी सरकारी हस्तक्षेप धरातल पर पूर्णतः सफल हो रहे हैं।

127. (A) शासन और निर्णय लेने को लोगों के करीब लाना।
पंचायतों को सत्ता और संसाधनों के विकेंद्रीकरण का मूल उद्देश्य शासन प्रक्रिया को सीधे तौर पर आम जनता के द्वार तक पहुँचाना है। इससे गाँव के लोगों को अपनी स्थानीय समस्याओं को स्वयं पहचानने और उनके समाधान के लिए निर्णय लेने का अधिकार मिलता है। यह व्यवस्था नौकरशाही के अनावश्यक हस्तक्षेप को कम करती है और विकास कार्यक्रमों की प्रासंगिकता बढ़ाती है। जब शासन लोगों के करीब होता है, तो उसमें पारदर्शिता और जवाबदेही स्वाभाविक रूप से बढ़ जाती है, जो एक जीवंत और सहभागी लोकतंत्र के निर्माण के लिए अत्यंत आवश्यक और महत्वपूर्ण है।

128. (B) विकास परियोजनाओं के लिए संसाधनों और सामुदायिक समर्थन को जुटाने की क्षमता।
मध्य प्रदेश की पंचायती राज व्यवस्था में एक प्रभावी ग्रामीण नेता की पहचान उसकी वह क्षमता है जिससे वह अपने गाँव के विकास हेतु आवश्यक संसाधनों और जन-समर्थन को एकत्रित कर सके। एक सफल नेता वही है जो सरकारी योजनाओं का लाभ पात्र व्यक्तियों तक पहुँचाने के लिए सक्रिय रहता है और सामुदायिक भागीदारी को प्रोत्साहित करता है। नेतृत्व का यह गुण गाँव में सामाजिक समरसता बनाए रखने और सामूहिक विकास के लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए अनिवार्य है। ऐसा नेतृत्व ही ग्रामीण क्षेत्रों में स्थायी और सकारात्मक सामाजिक परिवर्तन लाता है।

Downloaded from www.pdf.tube

129. (B) पितृसत्तात्मक गोत्र और ग्रामीण बस्तियां
मध्य प्रदेश की कोरकू जनजाति मुख्य रूप से एक कृषि प्रधान और बसे हुए किसानों का समुदाय है, जिनकी सामाजिक संरचना पितृसत्तात्मक गोत्र प्रणाली पर आधारित है। उनके समाज में वंश का निर्धारण पिता के नाम से होता है और गोत्र के नियम विवाह एवं सामाजिक संबंधों को नियंत्रित करते हैं। कोरकू लोग व्यवस्थित ग्रामीण बस्तियों में रहते हैं जहाँ सामुदायिक सहयोग और पारंपरिक पंचायत व्यवस्था का विशेष महत्व होता है। यह संगठित ढांचा उन्हें अपनी सांस्कृतिक पहचान बनाए रखने और एक स्थिर आर्थिक एवं सामाजिक जीवन जीने में निरंतर सहायता और मार्गदर्शन प्रदान करता है।

130. (A) भील जनजाति के लिए एक फसल उत्सव और एक महत्वपूर्ण सांस्कृतिक कार्यक्रम।
भगोरिया मध्य प्रदेश की भील और भिलाला जनजातियों का एक अत्यंत जीवंत और रंगीन उत्सव है, जो मुख्य रूप से रबी की फसल कटाई के समय वसंत ऋतु में मनाया जाता है। यह केवल एक त्योहार नहीं है, बल्कि एक बड़ा सांस्कृतिक मेला है जहाँ पारंपरिक संगीत, नृत्य और वेशभूषा का भव्य प्रदर्शन होता है। यह उत्सव भील समुदाय की सामाजिक एकता और उनके गौरवशाली इतिहास का प्रतीक है। इसके माध्यम से युवा अपनी संस्कृति से जुड़ते हैं और समाज के विभिन्न समूहों के बीच प्रेम एवं सौहार्द के संबंध और अधिक सुदृढ़ और प्रगाढ़ होते हैं।

131. (C) राज्य के लिए नियम और कानून बनाना।
मध्य प्रदेश में कार्यरत गैर-सरकारी संगठन सामाजिक कल्याण, जन-जागरूकता और सरकारी योजनाओं के क्रियान्वयन में सहायता करने जैसे अनेक महत्वपूर्ण कार्य करते हैं। वे ग्रामीणों को उनके अधिकारों के प्रति शिक्षित करते हैं और कौशल प्रशिक्षण प्रदान करते हैं, किंतु राज्य के लिए नियम और कानून बनाना उनका कार्य नहीं है। कानून बनाने की शक्ति केवल संवैधानिक रूप से निर्वाचित राज्य विधायिका और सरकार के पास सुरक्षित होती है। गैर-सरकारी संगठन नागरिक समाज के रूप में कार्य करते हुए नीतियों को प्रभावित करने या सुधारने के लिए केवल पैरवी और सुझाव दे सकते हैं।

132. (D) उनके आत्मविश्वास और सामूहिक मोलभाव की शक्ति को बढ़ाकर।
स्वयं सहायता समूह महिलाओं के जीवन में वित्तीय लाभ से परे जाकर गहरा सामाजिक प्रभाव डालते हैं। जब महिलाएं एक समूह के रूप में संगठित होती हैं, तो उनमें आत्मनिर्भरता और अपार आत्मविश्वास का संचार होता है। यह सामूहिक एकता उन्हें समाज और शासन के सामने अपनी माँगों को मजबूती से रखने या सामूहिक मोलभाव करने की शक्ति प्रदान करती है। समूहों के माध्यम से वे सार्वजनिक चर्चाओं में भाग लेना और निर्णय लेना सीखती हैं, जिससे उनकी सामाजिक स्थिति सुदृढ़ होती है। यह प्रक्रिया महिलाओं को एक सक्रिय, जागरूक और सशक्त नागरिक के रूप में स्थापित करती है।

133. (C) प्रशासनिक सुधार और नागरिक सशक्तिकरण
मध्य प्रदेश लोक सेवा गारंटी अधिनियम, 2010 प्रशासनिक प्रणाली को और अधिक पारदर्शी और जवाबदेह बनाने की दिशा में एक बड़ा सुधार है। यह कानून नागरिकों को यह शक्ति देता है कि वे निर्धारित समय सीमा के भीतर अपनी सेवाओं की मांग कर सकें, जिससे भ्रष्टाचार और सरकारी कार्यों में होने वाली देरी पर प्रभावी अंकुश लगता है। यह नागरिकों को अधिकार के रूप में सेवाएं प्रदान कर उन्हें सशक्त बनाता है। इस अधिनियम ने प्रशासन की कार्यसंस्कृति को नागरिक-केंद्रित बनाने और सुशासन के लक्ष्य को प्राप्त करने में अत्यंत महत्वपूर्ण और निर्णायक भूमिका निभाई है।

134. (B) जनसंख्या की आयु और लिंग संरचना।
मध्य प्रदेश में स्वास्थ्य सेवाओं और सुविधाओं की प्रभावी योजना बनाने के लिए जनसंख्या की आयु और लिंग संरचना का डेटा अत्यंत महत्वपूर्ण होता है। यह जनांकिकीय जानकारी यह समझने में मदद करती है कि राज्य के किन क्षेत्रों में शिशुओं, वृद्धों या महिलाओं के लिए विशिष्ट स्वास्थ्य सेवाओं की अधिक आवश्यकता है। उदाहरण के लिए, किशोरियों और माताओं के लिए पोषण कार्यक्रम तैयार करने हेतु लिंग संरचना का सटीक डेटा अनिवार्य है। इसी आधार पर संसाधनों का उचित आवंटन और स्वास्थ्य केंद्रों की स्थापना सुनिश्चित की जाती है, जिससे सार्वजनिक स्वास्थ्य लक्ष्यों को प्राप्त करना संभव होता है।

135. (A) केवल 3
मध्य प्रदेश की त्रिस्तरीय पंचायती राज व्यवस्था में ग्राम पंचायत, जनपद पंचायत और जिला पंचायत शामिल हैं। इस प्रणाली का मूल और प्राथमिक उद्देश्य शासन में स्थानीय जनता की प्रत्यक्ष भागीदारी सुनिश्चित करना और सत्ता का विकेंद्रीकरण करना है। यह कहना गलत है कि सभी तीनों स्तरों के प्रमुख सीधे जनता द्वारा चुने जाते हैं, क्योंकि जनपद और जिला पंचायत के अध्यक्षों का चुनाव निर्वाचित सदस्यों के माध्यम से अप्रत्यक्ष रूप से होता है। अतः केवल तीसरा कथन सही है, जो इस लोकतांत्रिक व्यवस्था के वास्तविक लक्ष्य और समावेशी जन भागीदारी की भावना को स्पष्ट रूप से दर्शाता है।

NODIA

136. (A) प्रसव के बीच अंतराल
मध्य प्रदेश में परिवार कल्याण कार्यक्रमों का एक अत्यंत महत्वपूर्ण और व्यावहारिक पहलू प्रसव के बीच अंतराल के महत्व के बारे में जानकारी और सेवाएं प्रदान करना है। दो बच्चों के जन्म के बीच पर्याप्त समय का अंतर माता के शारीरिक स्वास्थ्य को पुनः प्राप्त करने और शिशु के बेहतर पोषण एवं विकास के लिए अनिवार्य माना जाता है। इस अंतराल से शिशु और मातृ मृत्यु दर में प्रभावी कमी आती है। स्वास्थ्य कार्यकर्ता इसके लिए विभिन्न सुरक्षित तरीकों और परामर्श सेवाओं के माध्यम से परिवारों को जागरूक करते हैं, जो एक स्वस्थ और सुखी परिवार के निर्माण का आधार है।

137. (C) पंचायतों को वित्तीय संसाधनों का अपर्याप्त हस्तांतरण।
मध्य प्रदेश में त्रिस्तरीय पंचायती राज व्यवस्था की सफलता के मार्ग में वित्तीय संसाधनों की कमी एक प्रमुख और निरंतर चुनौती बनी हुई है। यद्यपि पंचायतों को अनेक प्रशासनिक कार्य और उत्तरदायित्व सौंपे गए हैं, लेकिन उनके पास स्वयं का पर्याप्त राजस्व जुटाने के सीमित साधन हैं और वे अक्सर सरकारी अनुदानों पर निर्भर रहती हैं। धन के अभाव में अनेक

होते हैं, जो इसे स्थानीय स्वशासन का एक अत्यंत शक्तिशाली, लोकतांत्रिक और प्रभावी मंच बनाते हैं।

104. (A) सत्ता का विकेंद्रीकरण
सत्ता के विकेंद्रीकरण का मूल विचार पंचायतों को केवल नाममात्र का निकाय न बनाकर उन्हें वास्तविक अर्थों में सक्षम और प्रभावी बनाना है। इसके लिए उन्हें आवश्यक निधि, विशिष्ट कार्य और कुशल कार्यकर्ता उपलब्ध कराना अनिवार्य है। जब स्थानीय निकायों के पास अपने निर्णय लेने के लिए पर्याप्त संसाधन और शक्तियाँ होती हैं, तभी वे जनता की जरूरतों को सही ढंग से पूरा कर सकते हैं। यह प्रक्रिया शासन को अधिक जन-केंद्रित बनाती है और ग्रामीण भारत के आत्मनिर्भर विकास का मार्ग प्रशस्त करती है। यह लोकतांत्रिक जड़ों को और अधिक मजबूती प्रदान करता है।

105. (B) 3, 2, 1
मध्य प्रदेश के इतिहास और प्रशासनिक विकास के क्रम में महत्वपूर्ण मील के पत्थर रहे हैं। सबसे पहले 1956 में मध्य प्रदेश राज्य की स्थापना हुई। इसके पश्चात, 1993 के 73वें संवैधानिक संशोधन द्वारा देश भर में पंचायती राज संस्थाओं को संवैधानिक दर्जा और मजबूती प्रदान की गई। अंततः, शासन में और अधिक पारदर्शिता और जवाबदेही लाने के लिए मध्य प्रदेश सरकार द्वारा 2010 में लोक सेवा गारंटी अधिनियम लागू किया गया। यह कालानुक्रमिक क्रम राज्य के निरंतर विकसित होते शासन और नागरिक सशक्तिकरण की ऐतिहासिक यात्रा को स्पष्ट रूप से दर्शाता है।

106. (A) उनकी सामाजिक और आर्थिक गतिशीलता को बढ़ावा देना।
मेधावी जनजातीय छात्रों को उच्च शिक्षा के लिए छात्रवृत्ति और वित्तीय सहायता प्रदान करने वाले सरकारी कार्यक्रमों का मुख्य उद्देश्य उनके लिए प्रगति के नए द्वार खोलना है। ऐसी पहलें जनजातीय युवाओं को उनकी पारंपरिक सीमाओं से बाहर निकलकर अपनी प्रतिभा दिखाने और आधुनिक व्यवसायों में भागीदारी करने के सक्षम बनाती हैं। शिक्षा के माध्यम से प्राप्त यह सशक्तिकरण उनकी सामाजिक स्थिति को ऊँचा उठाता है और उनकी आर्थिक आत्मनिर्भरता सुनिश्चित करता है। यह राज्य की समावेशी शिक्षा नीति और सामाजिक न्याय के प्रति एक दृढ़ और स्पष्ट प्रतिबद्धता का परिचायक है।

107. (D) मध्य प्रदेश में भारत की सबसे बड़ी जनजातीय आबादी में से एक है।
मध्य प्रदेश अपनी विशाल और विविध जनजातीय आबादी के लिए संपूर्ण भारत में विशिष्ट स्थान रखता है। राज्य में भील, गोंड, बैगा और कोरकू जैसी अनेक प्रमुख जनजातियां निवास करती हैं, जो यहाँ के सामाजिक और सांस्कृतिक ताने-बाने का अनिवार्य हिस्सा हैं। यह जनांकिकीय विशेषता राज्य को एक अद्वितीय पहचान प्रदान करती है। जनजातियों के कल्याण और उनके अधिकारों के संरक्षण के लिए यहाँ अनेक विशेष योजनाएं संचालित की जाती हैं। जनजातीय संस्कृति की समृद्धि और उनकी व्यापक उपस्थिति मध्य प्रदेश की ऐतिहासिक और सामाजिक पहचान को सदैव गौरवपूर्ण बनाती है।

108. (B) गोंड
लोरु काज मध्य प्रदेश की गोंड जनजाति द्वारा मनाया जाने वाला एक अत्यंत विशिष्ट और पारंपरिक त्योहार है। इस उत्सव के दौरान धरती और समुदाय के कल्याण के लिए सुअर की बलि दी जाती है, जो उनके प्राचीन धार्मिक विश्वासों और अनुष्ठानों का हिस्सा है। गोंड जनजाति का मानना है कि ऐसे अनुष्ठान उनके परिवार और कृषि की सुरक्षा सुनिश्चित करते हैं। यह त्योहार उनकी अद्वितीय सांस्कृतिक पहचान, प्रकृति के प्रति दृष्टिकोण और उनके ऐतिहासिक पूर्वजों से जुड़ी मान्यताओं को जीवंत रखने का एक प्रमुख माध्यम माना जाता है जो उनकी परंपरा को संजोता है।

109. (C) गैर-सरकारी संगठन अक्सर स्वयं सहायता समूहों को बढ़ावा देने और विकसित करने में भूमिका निभाते हैं।
मध्य प्रदेश में गैर-सरकारी संगठन और स्वयं सहायता समूह एक-दूसरे के पूरक के रूप में कार्य करते हैं। अनेक गैर-सरकारी संगठन ग्रामीण क्षेत्रों में सक्रिय हैं जो महिलाओं को संगठित करने, उन्हें स्वयं सहायता समूहों के गठन के लिए प्रेरित करने और इन समूहों को उचित प्रशिक्षण प्रदान करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। वे इन समूहों को बैंक लिंकेज और बाजार तक पहुँच दिलाने में भी सहायता करते हैं। यह सहयोग ग्रामीण सशक्तिकरण के आंदोलन को अधिक प्रभावी बनाता है और सामाजिक-आर्थिक विकास की गति को ग्रामीण स्तर पर और अधिक तीव्र करता है।

110. (B) केवल 3
मध्य प्रदेश में जनसंख्या और स्वास्थ्य संकेतकों के प्रबंधन के लिए परिवार कल्याण कार्यक्रम अत्यंत सक्रियता से कार्य कर रहे हैं। ये कार्यक्रम मातृ स्वास्थ्य में सुधार, शिशु मृत्यु दर में कमी और परिवार नियोजन के प्रति जागरुकता फैलाने पर केंद्रित हैं। यह कहना गलत है कि राज्य की जनसंख्या लगातार घट रही है या लिंगानुपात सभी जिलों में समान है, क्योंकि विभिन्न क्षेत्रों में काफी विविधता पाई जाती है। अतः केवल तीसरा कथन सही है, जो राज्य के स्वास्थ्य मिशन और जनांकिकीय चुनौतियों के प्रति सरकार की निरंतर सक्रियता को सही और तार्किक ढंग से दर्शाता है।

111. (A) जिला, ब्लॉक और ग्राम
मध्य प्रदेश की पंचायती राज व्यवस्था में त्रिस्तरीय शब्द शासन के तीन स्पष्ट प्रशासनिक स्तरों को परिभाषित करता है। ये स्तर हैं- जिला स्तर पर जिला पंचायत, विकास खंड या ब्लॉक स्तर पर जनपद पंचायत और ग्राम स्तर पर ग्राम पंचायत। यह संरचना सत्ता के लोकतांत्रिक विकेंद्रीकरण को सुनिश्चित करने के लिए बनाई गई है, ताकि विकास की योजनाएं और प्रशासनिक निर्णय स्थानीय जरूरतों के अनुरूप लिए जा सकें। यह प्रणाली ग्रामीण जनता को शासन के करीब लाती है और प्रत्येक स्तर पर प्रभावी और जवाबदेह स्थानीय स्वशासन की नींव को सुदृढ़ करती है।

112. (B) प्रभावी ग्रामीण नेतृत्व और महिलाओं की भागीदारी।
जब एक निर्वाचित महिला सरपंच अपने गाँव की शिक्षा व्यवस्था को बेहतर बनाने के लिए सफलतापूर्वक संघर्ष करती

Click Here to Buy book on Amazon

ले जाकर वास्तविक और प्रभावी नेतृत्व में बदलने का कार्य करते हैं।

146. (A) महिला उद्यमिता को बढ़ावा देने वाली एक सूक्ष्म-वित्त गतिविधि।
स्वयं सहायता समूह के सदस्य जब अपनी छोटी बचतों को एकत्रित कर किसी सदस्य को व्यवसाय शुरू करने के लिए ऋण देते हैं, तो यह सूक्ष्म-वित्त का एक आदर्श उदाहरण है। यह गतिविधि दर्शाती है कि कैसे छोटे संसाधन मिलकर बड़ी आर्थिक ऊर्जा पैदा कर सकते हैं। यह न केवल महिलाओं को वित्तीय रूप से स्वतंत्र बनाता है, बल्कि उनमें उद्यमिता की भावना का भी संचार करता है। ऐसी पहलें ग्रामीण महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाने और उन्हें अपनी आजीविका के स्वयं के स्रोत विकसित करने के लिए प्रेरित करती हैं, जो आर्थिक सशक्तिकरण की दिशा में राज्य का एक अत्यंत महत्वपूर्ण कदम है।

147. (C) सेवा का अधिकार
मध्य प्रदेश लोक सेवा गारंटी अधिनियम, 2010 नागरिकों को एक अत्यंत महत्वपूर्ण कानूनी अधिकार प्रदान करता है, जिसे सेवा का अधिकार कहा जाता है। जब कोई नागरिक इस कानून का उपयोग भूमि रिकॉर्ड की प्रति या अन्य प्रमाण पत्र प्राप्त करने के लिए करता है, तो वह वास्तव में यह सुनिश्चित कर रहा होता है कि उसे वह सेवा एक निर्धारित समय सीमा में प्राप्त हो। यह अधिकार प्रशासनिक अधिकारियों को जनता के प्रति जवाबदेह बनाता है और सरकारी कार्यों में पारदर्शिता लाता है। यह कानून सुशासन की दिशा में एक क्रांतिकारी कदम है जो नागरिकों को उनके हकों के प्रति जागरूक और सशक्त बनाता है।

148. (D) पोषण और स्वास्थ्य में सुधार।
मध्य प्रदेश में आयोडीन युक्त नमक, विटामिन ए की खुराक और अन्य सूक्ष्म पोषक तत्वों का वितरण करना व्यापक पोषण और स्वास्थ्य सुधार रणनीति का एक अनिवार्य हिस्सा है। ये सूक्ष्म पोषक तत्व बच्चों के शारीरिक और मानसिक विकास के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण होते हैं और इनकी कमी से कई गंभीर बीमारियाँ हो सकती हैं। सरकार इन पूरकों के माध्यम से समाज के सबसे संवेदनशील वर्गों, विशेषकर बच्चों और माताओं में कुपोषण के प्रभाव को कम करना चाहती है। यह पहल एक स्वस्थ कार्यबल और उज्ज्वल भविष्य के निर्माण के लिए राज्य की प्रतिबद्धता को पूर्णतः और स्पष्ट रूप से दर्शाती है।

149. (C) बुजुर्गों और समुदाय के प्रमुखों जैसे अनौपचारिक नेताओं का निरंतर प्रभाव।
मध्य प्रदेश के ग्रामीण क्षेत्रों में निर्वाचित पंचायतों के माध्यम से एक औपचारिक नेतृत्व स्थापित होने के बावजूद, पारंपरिक और अनौपचारिक नेतृत्व आज भी अस्तित्व में है। गाँवों में बुजुर्गों, सामाजिक प्रमुखों और अनुभवी व्यक्तियों का सम्मान और प्रभाव अक्सर बना रहता है। कई बार ये अनौपचारिक नेता गाँव के आपसी विवादों को सुलझाने और सामाजिक निर्णयों में सरपंच के साथ मिलकर महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। यह स्थिति दर्शाती है कि आधुनिक लोकतांत्रिक ढांचा और सदियों पुरानी सामाजिक परंपराएं ग्रामीण समाज में एक-दूसरे के साथ समन्वय बिठाकर सह-अस्तित्व में सफलतापूर्वक कार्य करती हैं।

150. (A) P-3, Q-4, R-2, S-1
सामाजिक और प्रशासनिक अवधारणाओं का उनके सही कार्यों के साथ मिलान करना राज्य की व्यवस्था को समझने के लिए आवश्यक है। ग्रामीण नेतृत्व का अर्थ समुदाय को सही दिशा में मार्गदर्शन देना है। महिला सशक्तिकरण का मुख्य उद्देश्य संसाधनों और अवसरों तक महिलाओं की पहुँच सुनिश्चित करना है। विकेंद्रीकरण सत्ता और शक्तियों के निचले स्तरों पर हस्तांतरण को संदर्भित करता है। जनसांख्यिकी जनसंख्या के आंकड़ों और उसकी संरचना के वैज्ञानिक अध्ययन से संबंधित है। ये सभी तत्व मिलकर मध्य प्रदेश के गतिशील और समावेशी सामाजिक-प्रशासनिक ढांचे का निर्माण करने में सक्रिय सहयोग प्रदान करते हैं।

151. (D) जिला से ग्राम तक एक बड़े क्षेत्र में प्रभावी प्रशासन सुनिश्चित करना।
त्रिस्तरीय पंचायती राज व्यवस्था का निर्माण एक विशाल और विविध भौगोलिक क्षेत्र में प्रशासन को सुव्यवस्थित करने के लिए किया गया है। ग्राम स्तर पर स्थानीय समस्याओं का त्वरित समाधान होता है, जबकि जनपद और जिला स्तर पर व्यापक योजना निर्माण और समन्वय का कार्य किया जाता है। यह पदानुक्रम सुनिश्चित करता है कि शासन का प्रभाव राज्य के प्रत्येक कोने तक पहुँचे और संसाधनों का वितरण निचले स्तर तक प्रभावी ढंग से हो। यह संरचना विकास की गति को तेज करती है और शासन को अधिक सूक्ष्म और समावेशी बनाने का अवसर प्रदान करती है जो लोकतांत्रिक जड़ों को सींचता है।

152. (A) कथकली
मध्य प्रदेश की जनजातीय कला और संस्कृति अत्यंत समृद्ध है, जिसमें कर्मा, सैला और भगोरिया जैसे अद्वितीय लोक नृत्य शामिल हैं। ये नृत्य राज्य की विभिन्न जनजातियों के सामाजिक और धार्मिक जीवन के अभिन्न अंग हैं। इसके विपरीत, कथकली केरल राज्य का एक अत्यंत प्रसिद्ध शास्त्रीय नृत्य है, जिसका मूल मध्य प्रदेश की जनजातीय परंपराओं से नहीं जुड़ा है। मध्य प्रदेश के जनजातीय नृत्य अपनी विशेष वेशभूषा, मांदर की थाप और सामूहिक उल्लास के लिए पहचाने जाते हैं, जो राज्य की विशिष्ट सांस्कृतिक और जातीय विविधता को संपूर्ण विश्व में बहुत ही प्रभावशाली ढंग से प्रदर्शित करते हैं।

153. (C) उनकी सांस्कृतिक पहचान का सम्मान करते हुए गरिमा के साथ विकास।
मध्य प्रदेश में जनजातीय कल्याण कार्यक्रमों का मूल दर्शन विकास और विरासत के संतुलन पर आधारित है। इन योजनाओं का लक्ष्य जनजातियों के सामाजिक-आर्थिक स्तर को सुधारना है, किंतु उनकी अनूठी सांस्कृतिक पहचान, परंपराओं और भाषाओं को नष्ट किए बिना। सरकार यह सुनिश्चित करने का प्रयास करती है कि जनजातीय समुदाय आधुनिक शिक्षा और स्वास्थ्य सेवाओं का लाभ उठाते हुए भी अपनी जड़ों से जुड़े रहें। गरिमापूर्ण विकास का अर्थ है उन्हें ऐसे अवसर प्रदान करना जिससे वे समाज की मुख्यधारा में बराबरी का स्थान पा सकें,

Downloaded from www.pdf.tube

ने पंचायतों में महिलाओं के लिए आरक्षण प्रदान कर उनके नेतृत्व के मार्ग को कानूनी रूप से प्रशस्त किया है। आधुनिक ग्रामीण नेतृत्व लोकतांत्रिक और समावेशी है, जिसमें निर्वाचित नेता और समुदाय के अन्य प्रभावशाली व्यक्ति मिलकर विकास हेतु कार्य करते हैं। प्रभावी नेतृत्व समुदाय को प्रगति की दिशा में प्रेरित करने और जनभागीदारी बढ़ाने के लिए अनिवार्य है। यह व्यवस्था समाज के प्रत्येक वर्ग को शासन में भागीदारी का समान अवसर देती है।

88. (A) आश्रम स्कूल
मध्य प्रदेश सरकार जनजातीय समुदायों के बच्चों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करने के लिए विशेष आवासीय विद्यालय संचालित करती है, जिन्हें आश्रम स्कूल कहा जाता है। इन स्कूलों का उद्देश्य दूरस्थ और दुर्गम क्षेत्रों में रहने वाले जनजातीय छात्रों को शिक्षा के साथ-साथ निःशुल्क आवास और भोजन की सुविधा उपलब्ध कराना है। यह व्यवस्था स्कूल छोड़ने की दर को कम करने और उन्हें बेहतर शैक्षणिक वातावरण प्रदान करने में अत्यंत प्रभावी है। शिक्षा के माध्यम से इन छात्रों का सर्वांगीण विकास करना राज्य की सामाजिक सशक्तिकरण नीति का एक प्रमुख और अत्यंत सफल हिस्सा है।

89. (C) सामूहिक बचत और आंतरिक ऋण के लिए एक मंच प्रदान करना।
स्वयं सहायता समूहों का सबसे बुनियादी और महत्वपूर्ण कार्य अपने सदस्यों के बीच सामूहिक बचत की आदत डालना और उनके लिए आंतरिक ऋण की व्यवस्था करना है। यह प्रणाली सदस्यों को छोटी और आपातकालीन जरूरतों के लिए साहूकारों के चंगुल से बचाती है। सदस्य अपनी बचत को एकत्रित करते हैं और आवश्यकता पड़ने पर समूह के ही किसी सदस्य को बहुत ही कम ब्याज दर पर ऋण प्रदान किया जाता है। यह प्रक्रिया न केवल वित्तीय आत्मनिर्भरता को बढ़ावा देती है बल्कि सदस्यों को सामूहिक निर्णय लेने और वित्तीय प्रबंधन करने के लिए भी प्रशिक्षित करती है।

90. (D) A गलत है लेकिन R सही है।
यह कहना पूरी तरह गलत है कि मध्य प्रदेश की सभी जनजातियों का सामाजिक संगठन एक जैसा है। वास्तव में, राज्य की प्रत्येक जनजाति, जैसे भील, गोंड और बैगा, की अपनी एक विशिष्ट और अनूठी सामाजिक संरचना, गोत्र प्रणाली और सांस्कृतिक रीति-रिवाज होते हैं। उनकी परंपराएं और नातेदारी के नियम एक-दूसरे से काफी भिन्न हैं, जो उनकी अलग नृजातीय पहचान को स्पष्ट करते हैं। अतः अभिकथन असत्य है, जबकि कारण पूर्णतः सत्य है, क्योंकि यह राज्य की समृद्ध जनजातीय विविधता और उनके विशिष्ट सामाजिक ढाँचों को वैज्ञानिक और सही ढंग से रेखांकित करता है।

91. (D) किसी सामाजिक कार्य की दिशा में काम करने वाला एक निजी, गैर-लाभकारी संगठन।
मध्य प्रदेश में गैर-सरकारी संगठन का तात्पर्य एक ऐसे निजी और स्वैच्छिक संगठन से है जो किसी लाभ कमाने के उद्देश्य के बिना समाज के कल्याण हेतु कार्य करता है। ये संगठन शिक्षा, स्वास्थ्य, पर्यावरण संरक्षण या मानवाधिकारों जैसे विशिष्ट क्षेत्रों में अपना महत्वपूर्ण योगदान देते हैं। वे सरकार के पूरक के रूप में कार्य करते हुए अक्सर जमीनी स्तर की समस्याओं का स्थायी समाधान खोजने में मदद करते हैं। उनकी स्वायत्तता और जन-उन्मुख दृष्टिकोण उन्हें समाज के वंचित वर्गों की आवाज उठाने और उनके जीवन में सकारात्मक परिवर्तन लाने का सशक्त माध्यम बनाते हैं।

92. (B) नागरिकों की जागरूकता और अधिकारियों की जवाबदेही।
मध्य प्रदेश लोक सेवा गारंटी अधिनियम, 2010 की वास्तविक सफलता पूरी तरह से नागरिकों की जागरूकता और सरकारी अधिकारियों की सक्रिय जवाबदेही पर टिकी हुई है। जब नागरिक अपने अधिकारों के प्रति सजग होते हैं और निर्धारित समय में सेवाएं प्राप्त करने की मांग करते हैं, तभी इस कानून का वास्तविक प्रभाव दिखाई देता है। साथ ही, अधिकारियों में समयबद्ध सेवा प्रदान करने के प्रति उत्तरदायित्व का भाव होना अनिवार्य है। यह समन्वय ही सुशासन को बढ़ावा देता है, प्रशासनिक कार्यों में पारदर्शिता लाता है और सार्वजनिक सेवा वितरण प्रणाली को प्रभावी बनाता है।

93. (C) पोषण और स्वास्थ्य कार्यक्रम
किशोर लड़कियों को एनीमिया जैसी गंभीर स्वास्थ्य समस्याओं से बचाने के लिए लौह तत्व और फोलिक एसिड की गोलियां प्रदान करना सीधे तौर पर पोषण और स्वास्थ्य कार्यक्रमों का हिस्सा है। ये हस्तक्षेप बालिकाओं के शारीरिक विकास को सुनिश्चित करने और उनकी भविष्य की स्वास्थ्य संबंधी जटिलताओं को कम करने के लिए निर्मित किए गए हैं। इन कार्यक्रमों के माध्यम से सरकार स्वास्थ्य शिक्षा और पोषक तत्वों की आपूर्ति कर मातृ स्वास्थ्य संकेतकों में दीर्घकालिक सुधार लाना चाहती है। यह स्वस्थ और जागरूक समाज के निर्माण की दिशा में एक अत्यंत महत्वपूर्ण और प्रभावी कदम है।

94. (D) मानव जनसंख्या
जनसांख्यिकी एक वैज्ञानिक अध्ययन है जो मानव जनसंख्या के आकार, संरचना, वितरण और विकास के विभिन्न पहलुओं का विश्लेषण करता है। इसमें जन्म दर, मृत्यु दर, लिंगानुपात, साक्षरता और प्रवास जैसे आंकड़ों का व्यापक अध्ययन किया जाता है। राज्य की सामाजिक और आर्थिक नीतियों को प्रभावी ढंग से तैयार करने के लिए जनांकिकीय डेटा अत्यंत अनिवार्य और महत्वपूर्ण होता है। इसके माध्यम से भविष्य की आवश्यकताओं का सटीक आकलन किया जा सकता है, जिससे संसाधनों का न्यायसंगत वितरण और सतत विकास का लक्ष्य प्राप्त करना राज्य के लिए संभव हो पाता है।

95. (A) किसी गाँव के सभी पंजीकृत मतदाताओं का एक निकाय, जो ग्राम पंचायत की पारदर्शिता और जवाबदेही सुनिश्चित करता है।
त्रिस्तरीय पंचायती राज व्यवस्था में ग्राम सभा की भूमिका अत्यंत केंद्रीय और महत्वपूर्ण है। यह गाँव के सभी पंजीकृत मतदाताओं का एक ऐसा मंच है जहाँ विकास की योजनाओं पर सीधे चर्चा की जाती है और ग्राम पंचायत के कार्यों का

NODIA

विकास की गति को निरंतर और प्रभावी बनाए रखने का कार्य करती है।

162. (A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
भारतीय संविधान का 73वाँ संशोधन अधिनियम देश भर की पंचायतों में महिलाओं के लिए आरक्षण को अनिवार्य बनाकर एक क्रांतिकारी परिवर्तन लाया है। मध्य प्रदेश इस प्रावधान को उत्साहपूर्वक लागू करने वाले अग्रणी राज्यों में से एक है, जिसने स्थानीय शासन में महिलाओं के लिए 50% सीटों का आरक्षण सुनिश्चित किया है। इस वैधानिक कदम के परिणामस्वरूप ग्रामीण नेतृत्व में महिलाओं की भागीदारी में अभूतपूर्व वृद्धि हुई है। वे अब न केवल उच्च पदों पर आसीन हैं, बल्कि ग्रामीण विकास के निर्णयों को भी प्रभावी ढंग से प्रभावित कर रही हैं, जिससे सामाजिक सशक्तिकरण का लक्ष्य पूर्णतः सफल हो रहा है।

163. (C) सामाजिक संबंधों की संरचना, जिसमें परिवार और गोत्र प्रणालियाँ शामिल हैं।
किसी भी जनजाति के सामाजिक संगठन से तात्पर्य उस व्यवस्थित ढांचे से है जिसके आधार पर उनके सामाजिक संबंध और सामुदायिक जीवन संचालित होते हैं। इसमें परिवार की प्रकृति, गोत्र प्रणालियाँ, नातेदारी के नियम और उनके पारंपरिक रीति-रिवाज शामिल होते हैं। यह संगठन जनजातीय समाज के भीतर अनुशासन बनाए रखने, विवाहों को विनियमित करने और उत्तराधिकार के मामलों को हल करने में केंद्रीय भूमिका निभाता है। यह ढांचा ही जनजातियों की विशिष्ट सामूहिक पहचान को सदियों तक सुरक्षित रखने में मदद करता है और उन्हें एक संगठित और अनुशासित सामाजिक इकाई के रूप में दृढ़ता से स्थापित करता है।

164. (D) प्रकृति और पौराणिक कथाओं को दर्शाने वाले बिंदुओं और रेखाओं के जटिल पैटर्न।
मध्य प्रदेश की गोंड जनजाति की कला अपनी अत्यंत विशिष्ट शैली के लिए संपूर्ण विश्व में प्रसिद्ध है। इस कला में कलाकार बिंदुओं और रेखाओं के सूक्ष्म एवं जटिल पैटर्न का उपयोग करके प्रकृति के विभिन्न रूपों, पशु-पक्षियों और अपनी प्राचीन पौराणिक कथाओं का जीवंत चित्रण करते हैं। प्रत्येक पैटर्न का अपना एक प्रतीकात्मक अर्थ होता है जो गोंड समाज के जीवन दर्शन और उनके धार्मिक विश्वासों को प्रदर्शित करता है। यह कलात्मक अभिव्यक्ति जनजातीय समुदायों के प्रकृति के साथ गहरे भावनात्मक जुड़ाव और उनकी असीमित कल्पनाशीलता का एक अद्भुत और श्रेष्ठ उदाहरण विश्व के समक्ष प्रस्तुत करती है।

165. (C) आर्थिक स्वतंत्रता और सामूहिक शक्ति को बढ़ावा देना।
स्वयं सहायता समूहों का महिला सशक्तिकरण में सबसे बड़ा योगदान यह है कि वे महिलाओं को अपनी छोटी बचत के माध्यम से वित्तीय रूप से आत्मनिर्भर बनाते हैं। आर्थिक स्वतंत्रता मिलने से महिलाओं का समाज और परिवार में सम्मान और गरिमा बढ़ती है। इसके अतिरिक्त, एक समूह के रूप में संगठित होने से उनमें सामूहिक शक्ति का संचार होता है, जिससे वे अपनी समस्याओं और अधिकारों के लिए एक स्वर में आवाज उठा सकती हैं। यह सामूहिक मंच उन्हें नेतृत्व करने और निर्णय लेने के सक्षम बनाता है, जो ग्रामीण क्षेत्रों में स्थायी सामाजिक और आर्थिक परिवर्तन लाने की दिशा में अनिवार्य है।

166. (B) एक महिला सरपंच द्वारा अपने गाँव के विकास के लिए निर्णय लेना।
महिला सशक्तिकरण का वास्तविक अर्थ महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाना और उन्हें नेतृत्व की भूमिका निभाने के लिए सक्षम करना है। जब एक महिला सरपंच अपने गाँव की प्राथमिकताओं को तय करती है और विकास कार्यों के लिए स्वतंत्र रूप से निर्णय लेती है, तो यह सशक्तिकरण का एक जीवंत उदाहरण है। यह प्रक्रिया दर्शाती है कि समाज की पारंपरिक बाधाओं को पार कर महिलाएं अब शासन और प्रशासन में सक्रिय भूमिका प्रभावी ढंग से निभा रही हैं। ऐसी भागीदारी न केवल उनके आत्मविश्वास को बढ़ाती है बल्कि गाँव के समग्र विकास को भी अधिक समावेशी, संतुलित और न्यायपूर्ण दिशा प्रदान करती है।

167. (D) पोषण और स्वास्थ्य कार्यक्रम
स्कूलों में प्रदान की जाने वाली मध्याह्न भोजन योजना मध्य प्रदेश सरकार का एक अत्यंत प्रभावशाली पोषण और स्वास्थ्य कार्यक्रम है। इस पहल का दोहरा उद्देश्य है- एक ओर यह बच्चों के आहार में पोषक तत्वों की कमी को दूर कर उनके स्वास्थ्य में सुधार करती है, वहीं दूसरी ओर यह स्कूलों में बच्चों के नामांकन और उपस्थिति की दर को बढ़ाने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। यह कार्यक्रम विशेष रूप से वंचित वर्गों के बच्चों के लिए वरदान सिद्ध हुआ है। शिक्षा के साथ बेहतर स्वास्थ्य और पोषण सुनिश्चित करना राज्य की दीर्घकालिक मानव विकास रणनीति का मुख्य आधार स्तंभ है।

168. (A) ग्राम पंचायत
मध्य प्रदेश की त्रिस्तरीय पंचायती राज व्यवस्था में ग्राम पंचायत सबसे बुनियादी और प्राथमिक प्रशासनिक इकाई है। यह सीधे तौर पर ग्रामीण जनता के निकटतम होती है और स्थानीय विकास कार्यों, जैसे नालियों का निर्माण, स्वच्छता और प्राथमिक स्वास्थ्य सुविधाओं के प्रबंधन के लिए जिम्मेदार होती है। ग्राम पंचायत का नेतृत्व जनता द्वारा चुने गए सरपंच और पंचों द्वारा किया जाता है। यह इकाई स्थानीय लोकतंत्र की वह आधारशिला है जहाँ से ग्रामीण स्वशासन की प्रक्रिया प्रारंभ होती है। ग्राम पंचायत ही सरकारी योजनाओं को धरातल पर उतारने और ग्रामीणों की समस्याओं को सुलझाने का मुख्य और प्रभावी मंच है।

169. (C) स्थानीय समुदायों को अपने मामलों का स्वयं प्रबंधन करने के लिए सशक्त बनाना।
पंचायती राज व्यवस्था में सत्ता के विकेंद्रीकरण का मुख्य और पवित्र उद्देश्य स्थानीय समुदायों को स्वावलंबी और सशक्त बनाना है। इसका अर्थ यह है कि गाँव के लोग स्वयं यह तय कर सकें कि उनके क्षेत्र के विकास के लिए क्या आवश्यक है और उन कार्यों को वे अपनी देखरेख में कैसे सुचारु रूप से पूरा कर सकते हैं। यह व्यवस्था निर्णय लेने की शक्ति को सीधे जनता के हाथों में सौंपती है, जिससे शासन में पारदर्शिता और

Click Here to Buy book on Amazon

185. (C) निर्वाचित प्रतिनिधियों, विशेष रूप से महिलाओं और हाशिए पर रहने वाले समुदायों के प्रतिनिधियों को प्रशिक्षित करके।
मध्य प्रदेश में पंचायती राज व्यवस्था को सुदृढ़ करने में गैर-सरकारी संगठन एक उत्प्रेरक के रूप में कार्य करते हैं। वे निर्वाचित प्रतिनिधियों, विशेषकर महिलाओं और कमजोर वर्गों के सदस्यों के लिए क्षमता निर्माण और प्रशिक्षण कार्यक्रमों का संचालन करते हैं। यह प्रशिक्षण उन्हें बजट निर्माण, कानूनी अधिकारों और प्रशासनिक प्रक्रियाओं की बारीकियों को समझने में मदद करता है। जब ये प्रतिनिधि शिक्षित और जागरूक होते हैं, तो वे पंचायतों में अपनी भूमिका अधिक प्रभावी ढंग से निभा पाते हैं। इस प्रकार, गैर-सरकारी संगठन जमीनी स्तर पर लोकतंत्र को अधिक वास्तविक, जवाबदेह और सशक्त बनाने में महत्वपूर्ण सहयोग देते हैं।

186. (A) एक प्रक्रिया जो उन्हें उनके जीवन और संसाधनों पर अधिक नियंत्रण प्रदान करती है।
मध्य प्रदेश के संदर्भ में महिला सशक्तिकरण का तात्पर्य एक ऐसी परिवर्तनकारी प्रक्रिया से है जो महिलाओं को उनके व्यक्तिगत जीवन, आर्थिक संसाधनों और निर्णय लेने की शक्ति पर पूर्ण नियंत्रण प्रदान करती है। इसका उद्देश्य समाज में मौजूद उन बाधाओं को दूर करना है जो महिलाओं के विकास और उनकी स्वायत्तता को सीमित करती हैं। जब महिलाओं को शिक्षा, स्वास्थ्य और राजनीति में समान अवसर प्राप्त होते हैं, तो वे समाज की मुख्यधारा में सक्रिय योगदान देने के सक्षम बनती हैं। यह प्रक्रिया न केवल महिलाओं के जीवन में सुधार लाती है, बल्कि संपूर्ण सामाजिक न्याय को सुदृढ़ करती है जो राष्ट्र के लिए आवश्यक है।

187. (D) नागरिक केंद्रित और जवाबदेह।
मध्य प्रदेश लोक सेवा गारंटी अधिनियम, 2010 राज्य के प्रशासन में व्यापक सुधार लाने वाला एक क्रांतिकारी कानूनी ढांचा है। यह कानून पुरानी और सुस्त प्रशासनिक कार्यप्रणाली को चुनौती देता है और उसे पूरी तरह से नागरिक-केंद्रित बनाने का प्रयास करता है। एक निर्धारित समय सीमा के भीतर सेवाएं प्रदान करने की कानूनी बाध्यता अधिकारियों को जनता के प्रति अधिक उत्तरदायी और जवाबदेह बनाती है। इस अधिनियम ने सरकारी सेवाओं की प्रदायगी में पारदर्शिता बढ़ाई है, जिससे नागरिकों को अपने अधिकारों के लिए अब अनावश्यक प्रतीक्षा नहीं करनी पड़ती और प्रशासन में उनका विश्वास और अधिक दृढ़ हुआ है।

188. (B) अधिक बुनियादी ढांचा, सार्वजनिक सेवाएं और रोजगार के अवसर।
जब किसी विशिष्ट जिले में जनसंख्या वृद्धि दर में अचानक उछाल आता है, तो सरकार के लिए यह संकेत है कि उसे अपनी भविष्य की योजनाओं को तत्काल संशोधित करने की आवश्यकता है। बढ़ती जनसंख्या का सीधा प्रभाव भोजन, स्वास्थ्य सेवाओं, शिक्षा और आवास की माँग पर पड़ता है। इसलिए, सरकार को उस क्षेत्र में अधिक स्कूल, अस्पताल और बुनियादी ढांचा विकसित करने के लिए अधिक संसाधन आवंटित करने होंगे। साथ ही, युवाओं के लिए रोजगार के नए अवसर सृजित करना भी अनिवार्य हो जाता है ताकि बढ़ी हुई जनसंख्या राज्य के विकास में बोझ के बजाय एक उपयोगी और उत्पादक संसाधन सिद्ध हो सके।

189. (C) संस्थागत प्रसव और प्रसवोत्तर देखभाल के लाभ।
परिवार कल्याण कार्यक्रमों के अंतर्गत स्वास्थ्य शिक्षा का एक अत्यंत महत्वपूर्ण और जीवन रक्षक विषय संस्थागत प्रसव को बढ़ावा देना है। इसका अर्थ है गर्भवती महिलाओं को अस्पताल या स्वास्थ्य केंद्र में प्रसव कराने के लिए प्रेरित करना, जहाँ प्रशिक्षित चिकित्सा कर्मी मौजूद हों। प्रसवोत्तर देखभाल भी उतनी ही महत्वपूर्ण है जो माता और नवजात शिशु के स्वास्थ्य की निरंतर निगरानी सुनिश्चित करती है। ऐसी शिक्षा से प्रसव के दौरान होने वाली जटिलताओं और मृत्यु की संभावना को न्यूनतम किया जा सकता है। यह जानकारी परिवारों को सुरक्षित मातृत्व और शिशु के स्वस्थ भविष्य के प्रति जागरूक और जिम्मेदार बनाने के लिए अनिवार्य है।

190. (D) 1, 2 और 3
मध्य प्रदेश का सामाजिक परिदृश्य अत्यंत विस्तृत और समावेशी है, जिसमें जनजातीय संस्कृति, पंचायती राज संस्थाएं और नागरिक समाज जैसे तीनों तत्व महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। राज्य की विशाल जनजातीय आबादी इसकी सांस्कृतिक जड़ों को गहराई प्रदान करती है, जबकि सक्रिय पंचायती राज संस्थाएं जमीनी स्तर पर शासन और लोकतांत्रिक विकेंद्रीकरण को सुनिश्चित करती हैं। साथ ही, गैर-सरकारी संगठन और स्वयं सहायता समूह जैसे नागरिक समाज के अंग जन जागरूकता और आर्थिक सशक्तिकरण के माध्यम से विकास की गति को और अधिक तीव्र करते हैं। इन सभी घटकों के आपसी समन्वय से ही राज्य का संतुलित विकास संभव हो रहा है।

NODIA

191. (A) मातृ मृत्यु दर और शिशु मृत्यु दर।
मध्य प्रदेश सरकार द्वारा संचालित वह स्वास्थ्य कार्यक्रम जो गर्भवती और स्तनपान कराने वाली महिलाओं को नियमित जाँच और पोषक तत्व प्रदान करता है, का प्राथमिक लक्ष्य मातृ और शिशु मृत्यु दर में प्रभावी कमी लाना है। कुपोषण और चिकित्सा सेवाओं का अभाव अक्सर माताओं और नवजात बच्चों के स्वास्थ्य के लिए गंभीर खतरा पैदा करता है। इन हस्तक्षेपों के माध्यम से यह सुनिश्चित किया जाता है कि गर्भावस्था के दौरान और बाद में महिलाओं को उचित आहार और चिकित्सा सुविधा मिले। यह पहल न केवल जीवन बचाती है, बल्कि आने वाली पीढ़ी के शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य की ठोस आधारशिला भी रखती है जो अत्यंत आवश्यक है।

192. (B) जिला स्तर
मध्य प्रदेश की त्रिस्तरीय पंचायती राज व्यवस्था में जिला पंचायत सर्वोच्च प्रशासनिक इकाई है जो संपूर्ण जिला स्तर पर कार्य करती है। यह परिषद जिले के सभी ग्रामीण क्षेत्रों के लिए व्यापक विकास योजनाएं तैयार करने, संसाधनों का आवंटन करने और जनपद पंचायतों के कार्यों की निगरानी करने के लिए जिम्मेदार होती है। जिला पंचायत राज्य सरकार और ग्राम स्तर के स्वशासन के बीच एक महत्वपूर्ण समन्वयकारी

दर स्थिर और नियंत्रित होने लगती है। यह स्थिति अंततः राज्य में जीवन की गुणवत्ता बढ़ाने, संसाधनों के उचित प्रबंधन और सतत सामाजिक विकास सुनिश्चित करने में अत्यंत सहायक और प्रभावी सिद्ध होती है।

178. (A) यह बालक के प्रति वरीयता को इंगित करता है और भविष्य के जनांकिकीय असंतुलन की ओर संकेत करता है।
मध्य प्रदेश में बाल लिंगानुपात (0-6 आयु वर्ग) में गिरावट एक अत्यंत गंभीर सामाजिक और जनांकिकीय समस्या का संकेत है। यह स्थिति स्पष्ट रूप से समाज में बालकों को दी जाने वाली वरीयता और बालिकाओं के प्रति गहरी उपेक्षा या भेदभाव को उजागर करती है। यदि बालिकाओं की संख्या इसी प्रकार कम होती रही, तो भविष्य में यह विवाह बाजार में असंतुलन, सामाजिक अपराधों में वृद्धि और लैंगिक असमानता को और अधिक गंभीर बना देगा। इसे रोकने के लिए बालिकाओं की शिक्षा, स्वास्थ्य और समाज में उनकी गरिमा बढ़ाने हेतु कड़े कानूनी एवं सामाजिक प्रयासों की तत्काल और अनिवार्य आवश्यकता है।

179. (C) एकीकृत बाल विकास सेवा
मध्य प्रदेश के ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों में आँगनवाड़ी केंद्र एकीकृत बाल विकास सेवा योजना के क्रियान्वयन की रीढ़ माने जाते हैं। यह योजना एक अत्यंत महत्वाकांक्षी कार्यक्रम है जो 6 वर्ष से कम आयु के बच्चों, गर्भवती महिलाओं और स्तनपान कराने वाली माताओं के समग्र विकास पर केंद्रित है। आँगनवाड़ियों के माध्यम से पूरक पोषण, पूर्व-स्कूली अनौपचारिक शिक्षा, टीकाकरण और नियमित स्वास्थ्य जाँच जैसी महत्वपूर्ण सेवाएं प्रदान की जाती हैं। यह कार्यक्रम राज्य के कुपोषण को दूर करने और एक स्वस्थ एवं शिक्षित भावी पीढ़ी की नींव रखने में अत्यंत महत्वपूर्ण और प्रभावशाली भूमिका निभाता है।

180. (A) P-4, Q-1, R-2, S-3
मध्य प्रदेश का सामाजिक परिदृश्य विभिन्न प्रशासनिक और सांस्कृतिक तत्वों का एक अनूठा संगम है। जनपद पंचायत पंचायती राज व्यवस्था में मध्यवर्ती स्तर की भूमिका निभाती है। पिथोरा जनजातीय समाज की, विशेष रूप से भील समुदाय की, एक प्रसिद्ध अनुष्ठानिक कला रूप है। स्वयं सहायता समूह ग्रामीण क्षेत्रों में सूक्ष्म ऋण और आर्थिक स्वावलंबन के प्रभावी माध्यम के रूप में कार्य करते हैं। भगोरिया भील जनजाति का एक अत्यंत लोकप्रिय और जीवंत सांस्कृतिक त्योहार है। ये सभी घटक मिलकर राज्य की प्रशासनिक सुदृढ़ता और सांस्कृतिक गौरव को स्पष्ट और प्रभावी रूप से रेखांकित करते हैं।

181. (C) ग्राम स्वराज
मध्य प्रदेश में त्रिस्तरीय पंचायती राज व्यवस्था का सफल क्रियान्वयन महात्मा गांधी के ग्राम स्वराज के सपने को हकीकत में बदलने की दिशा में एक ऐतिहासिक कदम है। गांधीजी का मानना था कि भारत की आत्मा गाँवों में बसती है और वास्तविक लोकतंत्र तभी सफल होगा जब प्रत्येक गाँव आत्मनिर्भर और स्वशासित होगा। यह प्रणाली सत्ता को सीधे ग्रामीण जनता के हाथों में सौंपकर उन्हें अपने स्वयं के विकास की योजनाएं बनाने और निर्णय लेने के लिए सशक्त बनाती है। इस प्रकार, पंचायतों के माध्यम से जमीनी स्तर पर स्वशासन की अवधारणा को सुदृढ़ मजबूती प्राप्त होती है जो राष्ट्र निर्माण का आधार है।

182. (B) स्थानीय जरूरतों को संबोधित करने में महिलाओं की प्रभावी भागीदारी।
जब एक महिला सरपंच ग्राम सभा में सामुदायिक शौचालय जैसे महत्वपूर्ण स्वच्छता प्रस्ताव को पारित करवाती है, तो यह ग्रामीण विकास में महिलाओं की बढ़ती संवेदनशीलता और प्रभावी भूमिका को प्रदर्शित करता है। यह घटना दर्शाती है कि महिला नेतृत्व पेयजल और स्वच्छता जैसे बुनियादी मुद्दों पर अधिक ध्यान केंद्रित करता है, जो सीधे तौर पर गाँव के स्वास्थ्य और गरिमा से जुड़े हैं। ऐसी सक्रियता न केवल विकेंद्रीकरण के लक्ष्यों को सफल बनाती है, बल्कि यह अन्य महिलाओं को भी स्थानीय शासन में भाग लेने और समाज में सकारात्मक परिवर्तन लाने के लिए निरंतर प्रेरित करती है जो लोकतंत्र के लिए शुभ है।

183. (D) यह उन परिवारों का एक समूह है जो एक सामान्य पूर्वज से अपने वंश का पता लगाते हैं, और यह अक्सर विवाह को नियंत्रित करता है।
जनजातीय सामाजिक संगठन में गोत्र का महत्व अत्यंत गहरा और बुनियादी है। यह उन परिवारों का एक समूह होता है जो स्वयं को एक ही पौराणिक या वास्तविक पूर्वज का वंशज मानते हैं। गोत्र की मुख्य भूमिका विवाह के नियमों को विनियमित करना है, जहाँ एक ही गोत्र के भीतर विवाह करना पूर्णतः वर्जित माना जाता है। इसके अतिरिक्त, गोत्र सामाजिक एकता बनाए रखने, धार्मिक अनुष्ठानों को सामूहिक रूप से संपन्न करने और संकट के समय एक-दूसरे का सहयोग करने का एक मजबूत आधार प्रदान करता है। यह जनजातीय समुदायों की विशिष्ट पहचान और उनके आंतरिक अनुशासन का रक्षक है।

184. (A) राज्य की सांस्कृतिक विरासत और विविधता को बनाए रखने के लिए।
मध्य प्रदेश की जनजातीय नृत्य, कला और शिल्प केवल मनोरंजन के साधन नहीं हैं, बल्कि ये राज्य की गौरवशाली सांस्कृतिक विरासत के अमूल्य अंग हैं। इनका संरक्षण और प्रचार-प्रसार अत्यंत आवश्यक है क्योंकि ये जनजातीय समुदायों की विशिष्ट पहचान और उनके ऐतिहासिक मूल्यों को सुरक्षित रखते हैं। यह सांस्कृतिक विविधता मध्य प्रदेश को संपूर्ण विश्व में एक अद्वितीय पहचान दिलाती है। इन कलाओं को बढ़ावा देने से न केवल जनजातीय कारीगरों को आर्थिक सहायता प्राप्त होती है, बल्कि आने वाली पीढ़ियाँ भी अपनी प्राचीन जड़ों और प्रकृति के प्रति श्रद्धा की भावना को गौरव के साथ अपनाती हैं जो समाज के लिए अनिवार्य है।

Downloaded from www.pdf.tube

प्रभावी माध्यम है। भगोरिया की जीवंतता और उसमें निहित सांस्कृतिक उल्लास मध्य प्रदेश की अद्वितीय जातीय विविधता और जनजातीय गौरव को संपूर्ण विश्व के सामने बहुत ही प्रभावशाली और आकर्षक ढंग से प्रस्तुत करता है जो राज्य की पहचान है।

215. (D) एक गैर-सरकारी संगठन निजी, गैर-लाभकारी नागरिक समाज क्षेत्र का हिस्सा है, जबकि एक सरकारी विभाग राज्य तंत्र का हिस्सा है।
गैर-सरकारी संगठन और सरकारी विभाग दोनों ही समाज के विकास के लिए कार्य करते हैं, किंतु उनके संगठनात्मक स्वरूप में मौलिक अंतर होता है। सरकारी विभाग राज्य प्रशासन का अंग होते हैं जो सरकारी नियमों और बजट द्वारा संचालित होते हैं और उनका कार्य मुख्य रूप से नीतियों का क्रियान्वयन करना होता है। इसके विपरीत, एक गैर-सरकारी संगठन नागरिक समाज का हिस्सा होता है जो स्वेच्छा से, निजी और गैर-लाभकारी उद्देश्यों के साथ सामाजिक उत्थान के लिए कार्य करता है। गैर-सरकारी संगठनों के पास कार्य करने में अधिक लचीलापन होता है और वे अक्सर सरकार के पूरक के रूप में समाज की सेवा करते हैं जो समावेशी विकास हेतु अत्यंत आवश्यक है।

216. (A) महिलाओं की आर्थिक आत्मनिर्भरता और सशक्तिकरण को बढ़ावा देना।
मध्य प्रदेश में स्वयं सहायता समूह आंदोलन को बढ़ावा देना राज्य की एक अत्यंत महत्वपूर्ण सामाजिक-आर्थिक रणनीति है। इन समूहों का प्राथमिक उद्देश्य ग्रामीण महिलाओं को संगठित कर उनमें बचत की प्रवृत्ति विकसित करना और उन्हें सूक्ष्म वित्त तक सुगम पहुँच प्रदान करना है। जब महिलाओं के पास अपने स्वयं के संसाधन होते हैं, तो वे छोटे व्यवसाय शुरू कर आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बन सकती हैं। यह आर्थिक स्वतंत्रता न केवल उनके परिवार की आर्थिक स्थिति को सुधारती है, बल्कि समाज में उनके आत्मविश्वास और निर्णय लेने की शक्ति को भी सुदृढ़ करती है, जो वास्तविक सशक्तिकरण का आधार है और ग्रामीण अर्थव्यवस्था को नई गति प्रदान करता है।

217. (C) नागरिक पात्रता।
मध्य प्रदेश लोक सेवा गारंटी अधिनियम, 2010 ने सरकारी सेवाओं की प्रदायगी के दृष्टिकोण में एक मौलिक और क्रांतिकारी बदलाव किया है। पहले जहाँ सरकारी सेवाएं अधिकारियों के विवेक और उनकी इच्छा पर निर्भर मानी जाती थीं, अब इस कानून ने उन्हें नागरिकों की पात्रता या कानूनी अधिकार में बदल दिया है। इसका अर्थ है कि अब नागरिक सेवा की केवल माँग नहीं करते, बल्कि एक निश्चित समय सीमा में उसे प्राप्त करने का पूर्ण हक रखते हैं। यह परिवर्तन नागरिकों को शासन में गौरवपूर्ण स्थान देता है और प्रशासन को अधिक पारदर्शी, समयबद्ध और जनता के प्रति पूर्णतः उत्तरदायी बनाने में सफल सिद्ध होता है जो सुशासन की सर्वोच्च प्राथमिकता है।

218. (A) एक बढ़ती हुई जनसंख्या जिसे भविष्य में अधिक संसाधनों और सेवाओं की आवश्यकता होगी।
मध्य प्रदेश में जनसंख्या वृद्धि दर में बढ़ता हुआ रुझान राज्य के भविष्य के नियोजन के लिए एक अत्यंत महत्वपूर्ण चुनौती और संकेत है। जनसंख्या में निरंतर वृद्धि का सीधा अर्थ है कि आने वाले समय में भोजन, आवास, स्वच्छ पेयजल, शिक्षा और स्वास्थ्य सुविधाओं जैसी बुनियादी सेवाओं की माँग बहुत अधिक बढ़ जाएगी। यदि इन आवश्यकताओं के साथ तालमेल बिठाने के लिए पर्याप्त संसाधन और बुनियादी ढांचा विकसित नहीं किया गया, तो यह राज्य के विकास पर अतिरिक्त दबाव डाल सकता है। अतः बढ़ती जनसंख्या के आंकड़ों को वैज्ञानिक ढंग से समझना संसाधनों के न्यायसंगत और प्रभावी प्रबंधन के लिए भविष्य हेतु अत्यंत अनिवार्य और महत्वपूर्ण है।

219. (D) भविष्य का जनांकिकीय संतुलन और सामाजिक स्थिरता।
0-6 आयु वर्ग में बालकों की तुलना में बालिकाओं की कम संख्या, जिसे बाल लिंगानुपात कहा जाता है, मध्य प्रदेश के भविष्य के लिए एक अत्यंत चिंताजनक संकेत है। यह जनांकिकीय असंतुलन समाज में गहराई से व्याप्त लैंगिक भेदभाव और पुत्र वरीयता की मानसिकता को उजागर करता है। यदि यह स्थिति बनी रही, तो भविष्य में समाज में महिलाओं की कमी से गंभीर सामाजिक असुरक्षा, अपराधों में वृद्धि और विवाह प्रणालियों में असंतुलन पैदा हो सकता है। यह न केवल जनांकिकीय बल्कि सामाजिक स्थिरता और नैतिक मूल्यों के लिए भी एक बड़ी चुनौती है, जिसे दूर करना राज्य की सर्वोच्च प्राथमिकता होनी चाहिए ताकि एक न्यायपूर्ण समाज निर्मित हो सके।

NODIA

220. (B) P-4, Q-1, R-2, S-3
मध्य प्रदेश की जनजातीय विविधता राज्य के विभिन्न भौगोलिक क्षेत्रों में अपनी विशिष्ट विशेषताओं के साथ विस्तृत है। भील राज्य की सबसे बड़ी जनजाति है जो मुख्य रूप से पश्चिमी जिलों में निवास करती है। बैगा जनजाति अपने वनों के गहरे ज्ञान के लिए पहचानी जाती है और इसे विशेष रूप से कमजोर जनजातीय समूह माना जाता है। सहारिया जनजाति का संकेंद्रण ग्वालियर-चंबल संभाग के उत्तरी जिलों में है। कोरकू जनजाति दक्षिण मध्य प्रदेश में सक्रिय है और अपने पारंपरिक अनुष्ठानिक नाटकों के लिए प्रसिद्ध है। यह वितरण राज्य की सांस्कृतिक और जनांकिकीय समृद्धि का एक अद्भुत, व्यापक और श्रेष्ठ चित्रण प्रस्तुत करता है जो राज्य का गौरव है।

221. (C) यह शारीरिक और संज्ञानात्मक विकास के लिए एक महत्वपूर्ण समय है।
मध्य प्रदेश के स्वास्थ्य और पोषण कार्यक्रमों में बच्चे के जीवन के पहले 1000 दिनों पर दिया जाने वाला विशेष ध्यान एक अत्यंत महत्वपूर्ण वैज्ञानिक समझ पर आधारित है। यह अवधि, जिसमें गर्भावस्था के नौ महीने और जन्म के बाद के पहले दो वर्ष शामिल हैं, बच्चे के शारीरिक स्वास्थ्य और उसके मस्तिष्क के पूर्ण संज्ञानात्मक विकास के लिए सबसे संवेदनशील समय मानी जाती है। इस दौरान मिलने वाला उचित पोषण और स्वास्थ्य देखभाल बच्चे की भविष्य की सीखने की क्षमता

संस्था के रूप में कार्य करती है। इसके निर्वाचित सदस्य जिले की विकासात्मक प्राथमिकताओं को तय करने और सार्वजनिक कल्याण की परियोजनाओं को सुचारु रूप से लागू करने में केंद्रीय और निर्णायक भूमिका निभाते हैं।

193. (B) चुनाव जीतने और पंचायत मामलों को प्रभावी ढंग से प्रबंधित करने की क्षमता।
आधुनिक मध्य प्रदेश के ग्रामीण नेतृत्व की अवधारणा में अब एक बड़ा गुणात्मक परिवर्तन आया है। अब नेतृत्व केवल वंशानुगत स्थिति या जाति पर आधारित नहीं रह गया है, बल्कि यह लोकतांत्रिक प्रक्रियाओं और कार्यकुशलता से गहराई से जुड़ गया है। एक प्रभावी ग्रामीण नेता वह माना जाता है जो न केवल लोकतांत्रिक चुनाव जीतने की क्षमता रखता हो, बल्कि पंचायत के प्रशासनिक कार्यों और विकास योजनाओं को सफलतापूर्वक प्रबंधित करने का कौशल भी रखता हो। यह परिवर्तन ग्रामीण राजनीति को अधिक पारदर्शी, जवाबदेह और जन-केंद्रित बना रहा है, जहाँ नेतृत्व का आधार अब जनसेवा और वास्तविक परिणाम प्रदान करना हो गया है।

194. (A) अत्यधिक शहरीकृत और व्यक्तिवादी जीवनशैली।
मध्य प्रदेश की जनजातियों का सामाजिक संगठन मुख्य रूप से सामुदायिक बंधनों, नातेदारी और प्रकृति के साथ उनके गहरे संबंधों पर आधारित है। जनजातीय समाज में सामूहिक जिम्मेदारी और आपसी सहयोग की भावना कूट-कूट कर भरी होती है, जो उनकी एकता का आधार है। विवाह और सामाजिक उत्सवों को विनियमित करने के लिए उनके पास गोत्रों की एक सुव्यवस्थित प्रणाली होती है। इसके विपरीत, अत्यधिक शहरीकृत और व्यक्तिवादी जीवनशैली उनकी पारंपरिक सामाजिक विशेषता नहीं है। जनजातीय जीवन आज भी अपने सांस्कृतिक मूल्यों और सामुदायिक जीवन के सिद्धांतों को गौरव के साथ बनाए हुए है, जो उनकी विशिष्ट पहचान का मुख्य आधार है।

195. (C) जनजातीय संस्कृति
गोंड जनजाति की लोक चित्रकला, जो अपने जीवंत रंगों और सूक्ष्म बिंदुओं एवं रेखाओं के अद्भुत पैटर्न के लिए जानी जाती है, मध्य प्रदेश की समृद्ध जनजातीय संस्कृति का एक अत्यंत गौरवपूर्ण हिस्सा है। यह कला केवल सौंदर्य बोध तक सीमित नहीं है, बल्कि यह गोंड समुदाय के जीवन दर्शन, उनके धार्मिक विश्वासों और प्रकृति के साथ उनके अटूट संबंधों की एक मौन गाथा है। ये चित्र उनकी प्राचीन लोककथाओं और दैनिक अनुभवों को जीवंत रूप में प्रस्तुत करते हैं। आज यह कला न केवल राज्य की सांस्कृतिक पहचान को प्रदर्शित करती है, बल्कि इसने वैश्विक स्तर पर भी अपनी एक अमूल्य और विशिष्ट जगह बनाई है।

196. (D) वे वित्तीय समावेशन और सामूहिक कार्रवाई को बढ़ावा देने वाले स्वैच्छिक समूह हैं।
मध्य प्रदेश में स्वयं सहायता समूह महिला सशक्तिकरण की दिशा में एक अत्यंत प्रभावी और स्वैच्छिक आंदोलन के रूप में कार्य कर रहे हैं। इन समूहों का मुख्य कार्य ग्रामीण महिलाओं को छोटी बचत करने और सूक्ष्म वित्त के माध्यम से आत्मनिर्भर बनाने के लिए संगठित करना है, जिसे वित्तीय समावेशन कहा जाता है। इसके साथ ही, ये समूह महिलाओं को सामाजिक समस्याओं के विरुद्ध एकजुट होकर सामूहिक कार्रवाई करने का एक सशक्त मंच भी प्रदान करते हैं। यह प्रक्रिया महिलाओं में आत्मविश्वास पैदा करती है और उन्हें अपने अधिकारों तथा गाँव के विकास के प्रति अधिक जागरूक और सक्रिय बनाती है जो लोकतंत्र हेतु अनिवार्य है।

197. (C) इसका भुगतान देरी के लिए उत्तरदायी अधिकारी के वेतन से किया जाता है।
मध्य प्रदेश लोक सेवा गारंटी अधिनियम, 2010 प्रशासनिक जवाबदेही को सुनिश्चित करने के लिए एक अत्यंत सख्त और प्रभावी दंड व्यवस्था का प्रावधान करता है। यदि कोई पदाभिहित अधिकारी किसी नागरिक को अधिसूचित सेवा प्रदान करने में बिना किसी उचित कारण के देरी करता है, तो अधिनियम के तहत उस पर जुर्माना लगाया जाता है। विशेष बात यह है कि इस जुर्माने की राशि का भुगतान स्वयं संबंधित अधिकारी को अपने व्यक्तिगत वेतन से करना पड़ता है। यह कड़ा प्रावधान अधिकारियों को अपने कर्तव्यों के प्रति सजग रखता है और यह सुनिश्चित करता है कि नागरिकों को उनके अधिकारों का लाभ समय पर प्राप्त हो जो सुशासन का आधार है।

198. (B) संसाधनों और बुनियादी ढांचे की प्रभावी दीर्घकालिक योजना बनाने के लिए।
मध्य प्रदेश में जनसंख्या वृद्धि के रुझानों का गहन विश्लेषण राज्य के भविष्य को सुरक्षित और समृद्ध बनाने के लिए अत्यंत अनिवार्य है। जनांकिकीय आंकड़ों के सटीक अध्ययन से सरकार को यह पता चलता है कि आने वाले समय में भोजन, स्वच्छ जल, आवास, शिक्षा और स्वास्थ्य सुविधाओं जैसी बुनियादी सेवाओं की कितनी आवश्यकता होगी। इसी जानकारी के आधार पर दीर्घकालिक योजनाओं का निर्माण और संसाधनों का न्यायसंगत आवंटन किया जा सकता है। जनसंख्या वृद्धि को समझना न केवल वर्तमान की चुनौतियों का समाधान करने में मदद करता है, बल्कि यह भविष्य के सतत विकास का एक मजबूत और वैज्ञानिक खाका भी प्रदान करता है।

199. (D) माँ और बच्चे की सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए संस्थागत प्रसव को बढ़ावा देना।
मध्य प्रदेश में जननी सुरक्षा योजना एक अत्यंत महत्वपूर्ण स्वास्थ्य पहल है, जिसका मुख्य उद्देश्य सुरक्षित मातृत्व को बढ़ावा देना और शिशु मृत्यु दर को कम करना है। यह योजना गर्भवती महिलाओं को सरकारी स्वास्थ्य संस्थानों में प्रसव कराने के लिए वित्तीय प्रोत्साहन और आवश्यक चिकित्सा सहायता प्रदान करती है, जिसे संस्थागत प्रसव कहा जाता है। अस्पताल में प्रसव होने से जच्चा और बच्चा दोनों को प्रशिक्षित चिकित्सा कर्मियों की देखरेख में रखा जाता है, जिससे प्रसव के दौरान होने वाली संभावित जटिलताओं और जानलेवा खतरों को काफी हद तक कम किया जा सकता है जो राज्य के स्वास्थ्य लक्ष्यों के लिए अत्यंत आवश्यक है।

Click Here to Buy book on Amazon

200. (A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
मध्य प्रदेश के सामाजिक स्वास्थ्य का मूल्यांकन करने में लिंगानुपात एक अत्यंत गंभीर और संवेदनशील संकेतक माना जाता है। किसी क्षेत्र में पुरुषों की तुलना में महिलाओं की कम संख्या समाज में गहराई से व्याप्त लैंगिक असमानता की ओर इशारा करती है। इसका मुख्य कारण पुत्र प्राप्ति की प्रबल इच्छा और बालिकाओं के प्रति सामाजिक उपेक्षा जैसे सांस्कृतिक कारक रहे हैं, जो प्रतिकूल लिंगानुपात में योगदान देते हैं। अतः अभिकथन और कारण दोनों सत्य हैं, और कारण स्पष्ट रूप से समझाता है कि क्यों लिंगानुपात का डेटा राज्य के नीति निर्माताओं के लिए सामाजिक असंतुलन को पहचानने और सुधारने का एक अत्यंत महत्वपूर्ण आईना और आधार है।

201. (C) ग्राम पंचायत
मध्य प्रदेश की त्रिस्तरीय पंचायती राज व्यवस्था में ग्राम पंचायत ही वह स्तर है जो ग्राम सभा के प्रति सबसे अधिक प्रत्यक्ष रूप से जवाबदेह होता है। ग्राम सभा, जिसमें गाँव के सभी पंजीकृत मतदाता शामिल होते हैं, ग्राम पंचायत के कार्यों की निरंतर निगरानी करती है। सरपंच और पंचों को अपने द्वारा किए गए खर्चों, विकास कार्यों की प्रगति और भविष्य की योजनाओं का विवरण ग्राम सभा की बैठकों में अनिवार्य रूप से प्रस्तुत करना होता है। यह व्यवस्था शासन में पूर्ण पारदर्शिता सुनिश्चित करती है और स्थानीय नेतृत्व को सीधे जनता के प्रति उत्तरदायी बनाकर लोकतंत्र की जड़ों को गहराई से मजबूत करती है जो सुशासन का आधार है।

202. (A) राज्य सरकार से स्थानीय पंचायतों को प्रशासनिक और वित्तीय शक्तियों का हस्तांतरण।
पंचायती राज व्यवस्था के संदर्भ में सत्ता का विकेंद्रीकरण का मूल अर्थ शक्तियों का ऊपर से नीचे की ओर प्रवाह है। इसमें राज्य सरकार अपने प्रशासनिक और वित्तीय अधिकारों को स्थानीय निकायों, विशेषकर पंचायतों को सौंपती है। इस प्रक्रिया का मुख्य लक्ष्य यह है कि स्थानीय विकास के निर्णय वही लोग लें जो उन समस्याओं से सीधे जुड़े हुए हैं। विकेंद्रीकरण से पंचायतों को अपना बजट बनाने, कर लगाने और विकास परियोजनाओं को स्वयं लागू करने की स्वायत्तता प्राप्त होती है। यह व्यवस्था शासन को अधिक सुलभ, पारदर्शी और जन-केंद्रित बनाकर ग्रामीण आत्मनिर्भरता का मार्ग प्रशस्त करती है जो लोकतंत्र की सफलता हेतु अनिवार्य है।

203. (D) सामाजिक और आर्थिक
मध्य प्रदेश में जनजातीय कल्याण के लिए संचालित वे कार्यक्रम जो शोषण को रोकने हेतु निःशुल्क कानूनी सहायता प्रदान करते हैं, उनके सामाजिक और आर्थिक कल्याण के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण हैं। जनजातीय समुदाय अक्सर अज्ञानता या संसाधनों की कमी के कारण साहूकारों, बिचौलियों और भूमि माफियाओं के शोषण का शिकार हो जाते हैं। कानूनी सहायता उन्हें उनके अधिकारों के प्रति जागरूक बनाती है और उन्हें अपनी भूमि एवं आजीविका की रक्षा करने में सक्षम बनाती है। यह पहल न केवल उन्हें न्याय दिलाती है, बल्कि समाज में उनकी गरिमा बहाल कर उन्हें आर्थिक रूप से असुरक्षित होने से भी प्रभावी ढंग से बचाती है जो सामाजिक न्याय का आधार है।

204. (B) अच्छी फसल के लिए देवताओं को प्रसन्न करने के लिए।
कर्मा नृत्य मध्य प्रदेश की गोंड, बैगा और ओराँव जैसी कई प्रमुख जनजातियों का एक अत्यंत पारंपरिक और पवित्र लोक नृत्य है। यह नृत्य मुख्य रूप से कर्म देवता की पूजा से जुड़ा है, जिन्हें भाग्य और वनस्पति का देवता माना जाता है। जनजातीय समुदाय अच्छी फसल की प्राप्ति और आगामी कृषि चक्र में समृद्धि के लिए आभार व्यक्त करने हेतु सामूहिक रूप से यह नृत्य करते हैं। मांदर की थाप पर होने वाला यह लयबद्ध प्रदर्शन उनके प्रकृति के प्रति अगाध प्रेम, विश्वास और सामुदायिक कृतज्ञता को दर्शाता है। यह नृत्य उनकी सांस्कृतिक एकता और गौरवशाली विरासत का एक जीवंत प्रतीक माना जाता है जो जनजातीय पहचान का आधार है।

205. (B) P-1, Q-2, R-3
मध्य प्रदेश के जनजातीय त्योहार उनकी विशिष्ट सांस्कृतिक पहचान और परंपराओं को गौरव के साथ प्रदर्शित करते हैं। भगोरिया भील जनजाति का एक अत्यंत प्रसिद्ध और रंगीन उत्सव है, जो वसंत ऋतु के दौरान हर्षोल्लास के साथ मनाया जाता है। मड़ई त्योहार मुख्य रूप से गोंड जनजाति के बीच प्रचलित है, जिसमें धार्मिक अनुष्ठान और सामाजिक मेले का भव्य आयोजन होता है। कर्मा मध्य प्रदेश की बैगा और गोंड जैसी जनजातियों का प्रमुख त्योहार है जो फसल और प्रकृति की पूजा से जुड़ा है। ये त्योहार राज्य की समृद्ध जनजातीय विरासत और उनकी अद्वितीय लोक परंपराओं को जीवंत बनाए रखने में अत्यंत महत्वपूर्ण और निर्णायक भूमिका निभाते हैं।

206. (D) ग्रामीणों के बीच स्वास्थ्य, स्वच्छता और अधिकारों के बारे में जागरूकता बढ़ाना।
मध्य प्रदेश के ग्रामीण सामाजिक परिदृश्य में गैर-सरकारी संगठनों की भूमिका एक जागरूक मार्गदर्शक की होती है। इन संगठनों का मुख्य कार्य ग्रामीणों को स्वास्थ्य, स्वच्छता, शिक्षा और उनके संवैधानिक अधिकारों के प्रति शिक्षित करना है। वे अक्सर जमीनी स्तर पर कार्यशालाएं और अभियान आयोजित करते हैं, जिससे ग्रामीण जनता सरकारी योजनाओं का लाभ उठाने और अपनी समस्याओं के समाधान के लिए स्वयं सक्रिय हो सके। यह जन जागरूकता न केवल लोगों के जीवन स्तर में सुधार लाती है, बल्कि स्थानीय शासन में उनकी भागीदारी को भी बढ़ाती है, जिससे ग्रामीण विकास की प्रक्रिया अधिक समावेशी, पारदर्शी और प्रभावी बनती है जो लोकतंत्र को मजबूत करती है।

207. (A) महिलाओं का एक समूह जो सामूहिक बचत के माध्यम से खानपान का व्यवसाय शुरू करता है।
महिला सशक्तिकरण का वास्तविक और व्यावहारिक स्वरूप तब उभरता है जब महिलाएं संगठित होकर स्वयं अपनी प्रगति का मार्ग चुनती हैं। जब एक स्वयं सहायता समूह की महिलाएं अपनी छोटी बचत को एकत्रित कर सामूहिक निर्णय लेती हैं और अपना स्वयं का व्यवसाय शुरू करती हैं, तो यह उनके आर्थिक स्वावलंबन को दर्शाता है। यह प्रक्रिया उन्हें न केवल

NODIA

वित्तीय सुरक्षा प्रदान करती है, बल्कि उनमें आत्मविश्वास और नेतृत्व के गुण भी विकसित करती है। आर्थिक रूप से स्वतंत्र महिलाएं परिवार और समाज में अधिक सम्मान पाती हैं और निर्णय लेने की प्रक्रिया में अपनी प्रभावी भूमिका निभाने में पूरी तरह सफल होती हैं जो राष्ट्र के विकास हेतु अनिवार्य है।

208. (B) यह गारंटी देना कि कुछ सरकारी सेवाएँ एक निश्चित समय सीमा में प्रदान की जाएंगी।
मध्य प्रदेश लोक सेवा गारंटी अधिनियम, 2010 का मुख्य और ऐतिहासिक उद्देश्य सरकारी कामकाज में निश्चितता और समयबद्धता लाना है। यह कानून राज्य के नागरिकों को यह कानूनी गारंटी देता है कि अधिसूचित सरकारी सेवाएँ, जैसे प्रमाण पत्र जारी करना या राशन कार्ड बनाना, उन्हें एक पूर्व निर्धारित समय सीमा के भीतर अनिवार्य रूप से प्राप्त होंगी। यदि इस अवधि में सेवा प्रदान नहीं की जाती है, तो नागरिक अपील कर सकते हैं और जिम्मेदार अधिकारी पर जुर्माना भी लगाया जा सकता है। यह अधिनियम प्रशासन को जनता के प्रति जवाबदेह बनाने और सुशासन स्थापित करने की दिशा में एक क्रांतिकारी और अत्यंत प्रभावशाली कदम है जो नागरिक अधिकारों की रक्षा करता है।

209. (B) मातृ और बाल स्वास्थ्य पर ध्यान केंद्रित करना।
मध्य प्रदेश में परिवार कल्याण कार्यक्रमों का एक अत्यंत महत्वपूर्ण और बुनियादी स्तंभ मातृ और बाल स्वास्थ्य संकेतकों में व्यापक सुधार लाना है। इन कार्यक्रमों का मूल उद्देश्य सुरक्षित मातृत्व सुनिश्चित करना, गर्भवती महिलाओं को उचित पोषण और चिकित्सा सहायता प्रदान करना तथा शिशुओं के लिए व्यापक टीकाकरण अभियान चलाना है। बेहतर स्वास्थ्य सुविधाएं उपलब्ध कराकर राज्य शिशु और मातृ मृत्यु दर में प्रभावी कमी लाने का निरंतर प्रयास कर रहा है। यह ध्यान न केवल एक स्वस्थ भावी पीढ़ी का निर्माण करता है, बल्कि यह परिवार की समग्र आर्थिक और सामाजिक स्थिति को बेहतर बनाने में भी महत्वपूर्ण योगदान देता है जो राज्य के विकास हेतु अनिवार्य है।

210. (A) पोषण और स्वास्थ्य कार्यक्रम।
किशोरियों की पोषण स्थिति में सुधार लाने के उद्देश्य से संचालित कार्यक्रम सीधे तौर पर पोषण और स्वास्थ्य कार्यक्रमों की श्रेणी में आते हैं। इन पहलों का लक्ष्य विशेष रूप से उस उम्र में बालिकाओं के स्वास्थ्य को सुदृढ़ करना है जब उनके शारीरिक विकास के लिए लौह तत्व और अन्य विटामिन अत्यंत आवश्यक होते हैं। सरकार इन कार्यक्रमों के माध्यम से एनीमिया जैसी समस्याओं का प्रभावी मुकाबला करती है और उन्हें स्वस्थ जीवनशैली के प्रति जागरूक बनाती है। एक सुपोषित किशोरी ही भविष्य में एक स्वस्थ माँ और सक्रिय नागरिक बन सकती है, इसलिए यह राज्य की मानव विकास नीति का एक दूरदर्शी और अत्यंत महत्वपूर्ण हिस्सा माना जाता है जो उज्जवल भविष्य सुनिश्चित करता है।

211. (C) निर्णय लेने वाले निकायों में उनका वास्तविक प्रतिनिधित्व सुनिश्चित करना।
मध्य प्रदेश में पंचायती राज संस्थाओं में महिलाओं के लिए 50% सीटों का आरक्षण प्रदान करने का क्रांतिकारी उद्देश्य उन्हें राजनीतिक सत्ता की मुख्यधारा में बराबरी का स्थान देना है। यह वैधानिक व्यवस्था यह सुनिश्चित करती है कि ग्रामीण शासन और निर्णय लेने की प्रक्रिया में महिलाओं की आवाज केवल सांकेतिक न रहे, बल्कि प्रभावी और निर्णायक हो। आरक्षण ने हजारों महिलाओं को नेतृत्व के अवसर प्रदान कर उनके आत्मविश्वास को बढ़ाया है और समाज की पितृसत्तात्मक संरचना को चुनौती दी है। इससे स्थानीय विकास की प्राथमिकताओं में महिलाओं की विशिष्ट जरूरतों और दृष्टिकोणों को भी अब प्रमुखता से स्थान मिलने लगा है जो सामाजिक न्याय का आधार है।

212. (D) पंचायत गतिविधियों के लिए सामुदायिक समर्थन और भागीदारी जुटाकर।
पंचायती राज व्यवस्था के सफल संचालन में प्रभावी ग्रामीण नेतृत्व एक उत्प्रेरक के रूप में कार्य करता है। ग्रामीण नेता न केवल सरकारी योजनाओं के क्रियान्वयन की निगरानी करते हैं, बल्कि वे पूरे गाँव के समुदाय को विकास कार्यों में सक्रिय रूप से भाग लेने के लिए प्रेरित भी करते हैं। उनका मुख्य योगदान पंचायत की गतिविधियों के लिए जन समर्थन जुटाना और लोगों के बीच आपसी सहयोग की भावना पैदा करना है। जब ग्रामीण नेतृत्व संवेदनशील और सक्रिय होता है, तो स्थानीय विकास की योजनाएं अधिक पारदर्शी और सफल होती हैं, जिससे पूरे गाँव के जीवन स्तर में सकारात्मक बदलाव लाना संभव हो पाता है जो जमीनी स्तर पर लोकतंत्र को मजबूत करता है।

213. (C) एक पौराणिक पूर्वज से संबंध, जो अक्सर एक पशु या पौधा होता है।
गोंड जनजाति के सामाजिक संगठन में टोटेमिक गोत्र की अवधारणा उनकी गहरी आध्यात्मिक और प्रकृति-आधारित संस्कृति का अभिन्न हिस्सा है। प्रत्येक गोत्र का संबंध किसी विशिष्ट पशु, पक्षी या पौधे से होता है, जिसे वे अपना पवित्र टोटेम और रक्षक पूर्वज मानते हैं। उस विशिष्ट गोत्र के लोग उस टोटेम का अत्यधिक सम्मान करते हैं और उसे कभी नुकसान नहीं पहुँचाते। यह व्यवस्था न केवल उनके सामाजिक संबंधों और विवाह के नियमों को विनियमित करती है, बल्कि यह प्रकृति के प्रति उनकी अगाध श्रद्धा और पर्यावरण संरक्षण की एक अनूठी पारंपरिक पद्धति को भी प्रभावी ढंग से प्रदर्शित करती है जो जनजातीय पहचान का मुख्य आधार स्तंभ है।

214. (B) जनजातीय संस्कृति।
भगोरिया हाट मध्य प्रदेश की भील जनजाति के सांस्कृतिक जीवन की एक अत्यंत जीवंत और गौरवशाली अभिव्यक्ति है। यह उत्सव केवल एक हाट या बाजार नहीं है, बल्कि यह भील समुदाय के पारंपरिक संगीत, लोक नृत्य, रंगीन वेशभूषा और उनके सामाजिक मिलन का एक विशाल और भव्य संगम है। यह त्योहार उनकी समृद्ध जनजातीय विरासत को संजोए रखने और उसे पीढ़ी दर पीढ़ी स्थानांतरित करने का एक प्रमुख और

NODIA

जनभागीदारी बढ़ती है। विकेंद्रीकरण से स्थानीय समस्याओं का समाधान अधिक प्रभावी, प्रासंगिक और जन-हितैषी ढंग से संभव हो पाता है जो लोकतंत्र को मजबूत करता है।

170. (A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
मध्य प्रदेश लोक सेवा गारंटी अधिनियम, 2010 निश्चित रूप से राज्य में सुशासन और प्रशासनिक सुधार को बढ़ावा देने वाला एक सशक्त कानून है। इसका मुख्य विचार यह है कि लोक सेवकों को नागरिकों के प्रति सीधे तौर पर जवाबदेह बनाया जाए। एक निर्धारित समय सीमा में सेवाएं प्रदान करने की कानूनी बाध्यता न केवल सरकारी कामकाज में पारदर्शिता लाती है, बल्कि अनावश्यक देरी और भ्रष्टाचार को भी काफी कम करती है। अतः अभिकथन और कारण दोनों पूर्णतः सत्य हैं, और कारण स्पष्ट रूप से समझाता है कि क्यों यह अधिनियम सुशासन की दिशा में एक ऐतिहासिक और क्रांतिकारी कदम माना जाता है।

171. (D) उनकी अनूठी पहचान को बनाए रखते हुए उन्हें आर्थिक और शैक्षिक अवसर प्रदान करना।
मध्य प्रदेश में जनजातीय कल्याण कार्यक्रमों का एक प्रमुख और संवेदनशील केंद्र जनजातियों का समावेशी विकास सुनिश्चित करना है। इन योजनाओं का लक्ष्य उन्हें शिक्षा, कौशल विकास और आजीविका के आधुनिक अवसर प्रदान करना है, ताकि वे समाज की मुख्यधारा में गौरव के साथ शामिल हो सकें। साथ ही, सरकार उनकी विशिष्ट सांस्कृतिक पहचान, भाषाओं और प्राचीन परंपराओं के संरक्षण के प्रति भी पूरी तरह सजग है। यह संतुलित दृष्टिकोण यह सुनिश्चित करता है कि जनजातीय समुदाय अपनी जड़ों से जुड़े रहते हुए भी आधुनिक प्रगति के लाभ प्राप्त करें और एक सम्मानित जीवन जी सकें जो अत्यंत महत्वपूर्ण है।

172. (B) औपचारिक रूप से निर्वाचित नेता और समुदाय में अनौपचारिक रूप से प्रभावशाली व्यक्ति दोनों।
ग्रामीण नेतृत्व की अवधारणा अत्यंत व्यापक है जिसमें वे सभी व्यक्ति शामिल होते हैं जो गाँव के सामाजिक और प्रशासनिक जीवन को प्रभावित करते हैं। इसमें औपचारिक रूप से निर्वाचित सरपंच और पंच तो आते ही हैं, साथ ही समुदाय के वे अनौपचारिक नेता भी शामिल होते हैं जिनका अपने अनुभव, जाति या सामाजिक कार्यों के कारण लोगों पर गहरा प्रभाव होता है। ये दोनों प्रकार के नेतृत्व अक्सर मिलकर गाँव के विकास और शांति व्यवस्था बनाए रखने में सहयोग करते हैं। आधुनिक लोकतंत्र में निर्वाचित प्रतिनिधियों की भूमिका कानूनन सर्वोच्च होती है, फिर भी अनौपचारिक मार्गदर्शन ग्रामीण विकास में आज भी महत्वपूर्ण बना हुआ है।

173. (C) वे सामुदायिक बंधनों को मजबूत करने, संस्कृति का उत्सव मनाने और अनुष्ठान करने के अवसर हैं।
भगोरिया और मड़ई जैसे जनजातीय त्योहार मध्य प्रदेश की सांस्कृतिक धरोहर के अत्यंत महत्वपूर्ण और अभिन्न अंग हैं। ये त्योहार केवल मनोरंजन के साधन नहीं हैं, बल्कि ये जनजातीय समुदायों के बीच आपसी प्रेम, एकता और सामुदायिक सौहार्द को बढ़ावा देने के सशक्त माध्यम हैं। इन अवसरों पर किए जाने वाले पारंपरिक अनुष्ठान और सांस्कृतिक प्रदर्शन उनकी प्राचीन मान्यताओं और प्रकृति के प्रति अटूट श्रद्धा को जीवंत रखते हैं। ये मेले और उत्सव जनजातीय समाज को एक स्थान पर एकत्रित होने और अपनी विशिष्ट पहचान का उत्सव गौरव के साथ सामूहिक रूप से मनाने का अद्वितीय अवसर प्रदान करते हैं।

174. (D) वे बड़ी बहुराष्ट्रीय कंपनियों के रूप में कार्य करते हैं।
मध्य प्रदेश में स्वयं सहायता समूह आमतौर पर गाँव की उन महिलाओं का एक छोटा और स्वैच्छिक संगठन है जो समान आर्थिक पृष्ठभूमि से आती हैं। इन समूहों का मुख्य उद्देश्य सदस्यों के बीच छोटी बचत को प्रोत्साहित करना, आपसी विश्वास बढ़ाना और सामाजिक मुद्दों पर जागरूकता फैलाना है। यह कहना पूर्णतः गलत है कि वे बड़ी बहुराष्ट्रीय कंपनियों के रूप में कार्य करते हैं। इसके विपरीत, ये समूह अत्यंत सरल और अनौपचारिक ढांचे पर आधारित होते हैं, जिनका मुख्य ध्यान स्थानीय स्तर पर आर्थिक सशक्तिकरण और पारस्परिक सहायता के माध्यम से जीवन स्तर को सुधारने और आत्मनिर्भरता प्राप्त करने पर होता है।

175. (A) द्वितीय अपीलीय प्राधिकारी
मध्य प्रदेश लोक सेवा गारंटी अधिनियम, 2010 में नागरिकों के अधिकारों की रक्षा के लिए एक व्यवस्थित त्रिस्तरीय संरचना बनाई गई है। यदि कोई नागरिक पदाभिहित अधिकारी द्वारा दी गई सेवा या प्रथम अपीलीय प्राधिकारी के निर्णय से असंतुष्ट है, तो कानून उसे अंतिम उपचार के रूप में द्वितीय अपीलीय प्राधिकारी के पास जाने की अनुमति देता है। यह अंतिम प्रशासनिक स्तर है जहाँ शिकायत की गहन समीक्षा की जाती है और संबंधित अधिकारी पर जुर्माना लगाने या सेवा प्रदान करने के स्पष्ट निर्देश दिए जा सकते हैं। यह व्यवस्था सुनिश्चित करती है कि नागरिक को पूर्ण न्याय और समयबद्ध सेवा मिले।

176. (B) आयु और लिंग के अनुसार जनसंख्या का वितरण।
जनसांख्यिकी के अध्ययन का सीधा संबंध मानवीय जनसंख्या के विभिन्न वैज्ञानिक पहलुओं और उनके सांख्यिकीय विश्लेषण से है। मध्य प्रदेश की जनसांख्यिकी का अध्ययन करते समय आयु और लिंग के अनुसार जनसंख्या का वितरण सबसे महत्वपूर्ण क्षेत्रों में से एक माना जाता है। यह डेटा नीति निर्माताओं को यह समझने में मदद करता है कि राज्य में कितने बच्चे, युवा और वृद्ध हैं, और उनमें पुरुषों एवं महिलाओं का अनुपात क्या है। इसी आधार पर शिक्षा, स्वास्थ्य और रोजगार संबंधी भविष्य की प्रभावी योजनाएं और विकासात्मक रणनीतियां तैयार करना संभव होता है जो सतत प्रगति के लिए अनिवार्य हैं।

177. (B) निम्न शिशु मृत्यु दर और स्थिर जनसंख्या वृद्धि दर।
मध्य प्रदेश में एक सफल परिवार कल्याण कार्यक्रम का सबसे स्पष्ट और सकारात्मक परिणाम राज्य के स्वास्थ्य और जनांकिकीय संकेतकों में होने वाला व्यापक सुधार होगा। जब ये कार्यक्रम प्रभावी ढंग से लागू होते हैं, तो बेहतर स्वास्थ्य सेवाओं और जागरूकता के कारण शिशु मृत्यु दर में उल्लेखनीय कमी आती है। साथ ही, लोग छोटे और स्वस्थ परिवार के महत्व को समझते हैं, जिससे जनसंख्या की वृद्धि

Downloaded from www.pdf.tube

और समग्र रोग प्रतिरोधक शक्ति को निर्धारित करती है। अतः इस कालखंड में निवेश करना एक स्वस्थ, बुद्धिमान और सक्षम भावी पीढ़ी के निर्माण का आधार है जो राज्य की प्रगति हेतु अनिवार्य है।

222. (D) विकेंद्रीकरण।
पंचायती राज व्यवस्था के अंतर्गत पंचायतों को निधि, कार्य और कार्यकर्ता का हस्तांतरण करना सत्ता के वास्तविक विकेंद्रीकरण का एक अत्यंत महत्वपूर्ण और अनिवार्य अंग है। विकेंद्रीकरण तभी सफल होता है जब स्थानीय निकायों के पास न केवल जिम्मेदारियाँ हों, बल्कि उन कार्यों को पूरा करने के लिए पर्याप्त धन और कुशल कर्मचारी भी उपलब्ध हों। यह प्रक्रिया निर्णय लेने की शक्ति को सीधे जनता के निकट लाती है, जिससे स्थानीय समस्याओं का समाधान अधिक प्रभावी और पारदर्शी ढंग से हो पाता है। यह व्यवस्था शासन को अधिक लोकतांत्रिक, सहभागी और ग्रामीण जरूरतों के प्रति संवेदनशील बनाती है जो सुशासन और ग्राम स्वराज का आधार है।

223. (A) इसने पारंपरिक बाधाओं को तोड़ा है और महिला नेतृत्व के उभरने के लिए एक मंच प्रदान किया है।
मध्य प्रदेश की पंचायतों में सरपंच पद पर महिलाओं के लिए आरक्षण के प्रावधान ने ग्रामीण भारत की सदियों पुरानी सामाजिक और पारंपरिक बाधाओं को सफलतापूर्वक तोड़ा है। इस नीति ने महिलाओं को उनके घरों की चौखट से बाहर निकलकर शासन और प्रशासन की मुख्यधारा में सक्रिय नेतृत्व की भूमिका निभाने का एक ऐतिहासिक और गौरवपूर्ण अवसर प्रदान किया है। यद्यपि शुरुआती चरणों में कुछ सामाजिक कठिनाइयां रही हैं, फिर भी इस मंच ने महिला नेतृत्व की एक नई, सक्षम और सशक्त पीढ़ी तैयार की है। यह परिवर्तन ग्रामीण क्षेत्रों में लैंगिक समानता की दिशा में एक क्रांतिकारी और अत्यंत सकारात्मक कदम सिद्ध हुआ है जो समाज की सोच बदल रहा है।

224. (B) उन्हें बेहतर रोजगार के अवसरों के लिए कौशल और शिक्षा प्रदान करना।
मध्य प्रदेश में जनजातीय युवाओं को लक्षित करने वाले कल्याणकारी कार्यक्रमों का एक अत्यंत महत्वपूर्ण और दूरदर्शी लक्ष्य उन्हें आधुनिक युग की चुनौतियों के लिए सक्षम बनाना है। इन कार्यक्रमों के माध्यम से उन्हें गुणवत्तापूर्ण शिक्षा, व्यावसायिक प्रशिक्षण और कौशल विकास के अवसर प्रदान किए जाते हैं, ताकि वे अपनी पारंपरिक सीमाओं से बाहर निकलकर बेहतर रोजगार प्राप्त कर सकें। शिक्षा और कौशल के माध्यम से प्राप्त यह सशक्तिकरण न केवल उनकी आर्थिक स्थिति को सुधारता है, बल्कि समाज में उनके आत्मविश्वास और गौरव को भी बढ़ाता है। यह पहल जनजातीय युवाओं को राज्य के विकास में सक्रिय भागीदार बनाने के लिए अनिवार्य है जो समावेशी प्रगति का आधार है।

225. (B) शांति और समृद्धि के लिए देवताओं को एक अनुष्ठानिक भेंट।
भील और भिलाला जनजातियों की प्रसिद्ध पिथोरा चित्रकला केवल एक सजावटी कला रूप नहीं है, बल्कि इसका अत्यंत गहरा धार्मिक और अनुष्ठानिक महत्व है। यह चित्रकला घर की दीवारों पर तब बनाई जाती है जब परिवार किसी मनोकामना की पूर्ति चाहता है या देवताओं के प्रति अपना आभार प्रकट करना चाहता है। इसमें चित्रित घोड़ों और लोक देवताओं को शांति, आरोग्य और सुख-समृद्धि के वाहक के रूप में पूजा जाता है। इस प्रकार, पिथोरा चित्रकला जनजातीय समाज के अटूट विश्वासों, उनकी प्राचीन पौराणिक मान्यताओं और प्रकृति के प्रति उनके गहरे सम्मान का एक जीवंत, कलात्मक और गौरवपूर्ण दस्तावेज मानी जाती है जो उनकी पहचान को अक्षुण्ण रखती है।

226. (A) वित्त पोषण की निरंतरता के मुद्दे, और कभी-कभी, सरकारी एजेंसियों के साथ कठिन संबंध।
मध्य प्रदेश में सामाजिक कार्यों में संलग्न गैर-सरकारी संगठनों को अक्सर अनेक चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। इनमें से सबसे प्रमुख समस्या निरंतर और पर्याप्त वित्त पोषण का अभाव है, जिससे उनकी कई महत्वपूर्ण दीर्घकालिक परियोजनाएं प्रभावित होती हैं। इसके अतिरिक्त, कभी-कभी जमीनी स्तर पर कार्य करते समय सरकारी विभागों के साथ समन्वय और प्रशासनिक जटिलताओं के कारण उनके संबंध तनावपूर्ण हो सकते हैं। इन बाधाओं के बावजूद, ये संगठन अपनी कार्यकुशलता और सामुदायिक पहुँच के माध्यम से सामाजिक परिवर्तन लाने और वंचित वर्गों की सेवा करने की दिशा में निरंतर समर्पित होकर कार्य कर रहे हैं जो सराहनीय है।

227. (C) वित्तीय स्वायत्तता के साथ एक सफल उद्यम चलाने वाला स्वयं सहायता समूह।
महिला सशक्तिकरण की वास्तविक सफलता का सबसे श्रेष्ठ उदाहरण एक ऐसा स्वयं सहायता समूह है जो वित्तीय स्वायत्तता प्राप्त कर चुका है और सफलतापूर्वक अपना उद्यम चला रहा है। जब महिलाएं सामूहिक रूप से व्यापारिक निर्णय लेती हैं, लाभ अर्जित करती हैं और अपनी आर्थिक नियति स्वयं तय करती हैं, तो यह उनके पूर्ण सशक्तिकरण को दर्शाता है। आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर होने से समाज में उनका सम्मान बढ़ता है और उन्हें परिवार के भीतर भी बराबरी का स्थान प्राप्त होता है। यह प्रक्रिया दर्शाती है कि सही अवसर, संगठन और प्रशिक्षण के माध्यम से महिलाएं किसी भी क्षेत्र में सफलता प्राप्त कर सकती हैं जो राज्य के सामाजिक-आर्थिक विकास हेतु अत्यंत सुखद है।

228. (D) नया बिजली कनेक्शन प्रदान करना।
मध्य प्रदेश लोक सेवा गारंटी अधिनियम, 2010 के अंतर्गत वे सभी नागरिक सेवाएं शामिल की गई हैं जो दैनिक जीवन के लिए आवश्यक हैं और जिन्हें सरकार द्वारा प्रदान किया जाना अनिवार्य है। नया बिजली कनेक्शन प्रदान करना एक ऐसी ही महत्वपूर्ण अधिसूचित सेवा है, जिसे एक निश्चित समय सीमा के भीतर पूरा किया जाना कानूनी रूप से बाध्यकारी है। यदि

NODIA

बिजली विभाग इस निर्धारित समय में सेवा प्रदान करने में विफल रहता है, तो उपभोक्ता को शिकायत करने और जिम्मेदार अधिकारी पर जुर्माना लगाने का अधिकार प्राप्त है। यह कानून सुनिश्चित करता है कि बुनियादी सुविधाओं के लिए नागरिकों को अनावश्यक रूप से परेशान न होना पड़े और प्रशासन जनता के प्रति सदैव जवाबदेह बना रहे।

229. (C) लिंग और क्षेत्र के आधार पर साक्षरता दर।
मध्य प्रदेश के जनांकिकीय विवरण का अध्ययन करते समय साक्षरता दर एक अत्यंत महत्वपूर्ण और आधारभूत डेटा माना जाता है। इसमें विशेष रूप से यह देखा जाता है कि राज्य के ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों में साक्षरता की स्थिति क्या है, और पुरुषों एवं महिलाओं के बीच शिक्षा का अंतर कितना है। यह जनांकिकीय जानकारी राज्य के सामाजिक-आर्थिक विकास के स्तर को मापने का एक सशक्त और वैज्ञानिक पैमाना है। इसी डेटा का विश्लेषण करके सरकार शिक्षा के क्षेत्र में व्याप्त असमानताओं को दूर करने के लिए विशेष योजनाएं और भविष्य की रणनीतियां तैयार करती है, जो सर्वांगीण विकास और एक प्रबुद्ध समाज के निर्माण हेतु अत्यंत आवश्यक एवं अनिवार्य हैं।

230. (D) 1, 2 और 3
मध्य प्रदेश की पंचायती राज व्यवस्था में महिलाओं की भूमिका के संबंध में तीनों महत्वपूर्ण तथ्य सत्य हैं। राज्य ने महिलाओं के लिए 50% आरक्षण का गौरवपूर्ण प्रावधान कर उन्हें शासन की मुख्यधारा में लाया है। यह देखा गया है कि महिला नेतृत्व पेयजल, स्वच्छता और बाल स्वास्थ्य जैसे बुनियादी मानवीय मुद्दों पर अधिक संवेदनशील होकर कार्य करता है। हालांकि, सरपंच पति जैसी प्रथा आज भी एक वास्तविक चुनौती बनी हुई है जहाँ पुरुष प्रतिनिधि की शक्ति का प्रयोग करते हैं। इन चुनौतियों के बावजूद, आरक्षण ने ग्रामीण शासन में महिलाओं की दृश्यता और प्रभावशीलता को बढ़ाने की दिशा में एक ऐतिहासिक बदलाव किया है जो निरंतर प्रगति पर है।

231. (D) सतत विकास और जनसंख्या स्थिरीकरण।
मध्य प्रदेश में परिवार कल्याण कार्यक्रमों का सफल क्रियान्वयन राज्य के भविष्य के लिए अत्यंत निर्णायक है, क्योंकि यह सीधे तौर पर सतत विकास और जनसंख्या स्थिरीकरण के लक्ष्यों से जुड़ा हुआ है। जब जनसंख्या वृद्धि दर नियंत्रित और संतुलित होती है, तो उपलब्ध संसाधनों का उपयोग अधिक प्रभावी ढंग से किया जा सकता है, जिससे शिक्षा और स्वास्थ्य की गुणवत्ता में सुधार होता है। ये कार्यक्रम परिवारों को जागरूक कर उन्हें बेहतर जीवन स्तर प्रदान करने में मदद करते हैं। जनसंख्या में स्थिरता आने से पर्यावरण पर दबाव कम होता है और राज्य की प्रगति का मार्ग अधिक न्यायसंगत, स्थायी एवं संतुलित रूप से प्रशस्त होता है जो राष्ट्रहित में है।

232. (A) औपचारिक, लोकतांत्रिक ग्रामीण नेतृत्व।
मध्य प्रदेश की पंचायत व्यवस्था में एक निर्वाचित सरपंच आधुनिक और औपचारिक ग्रामीण नेतृत्व का सबसे सशक्त प्रतीक है। यह नेतृत्व पारंपरिक या वंशानुगत नेतृत्व से भिन्न है क्योंकि इसका आधार जनता का विश्वास और लोकतांत्रिक मतदान प्रक्रिया है। सरपंच को संवैधानिक रूप से गाँव के विकास और प्रशासन के प्रबंधन की शक्तियाँ प्राप्त होती हैं। वह ग्राम पंचायत का प्रमुख होता है और कानून एवं जनता के प्रति जवाबदेह होता है। यह पद इस बात का जीवंत प्रमाण है कि ग्रामीण भारत में अब नेतृत्व का आधार लोकतांत्रिक मूल्य और जनसेवा बन गया है, जो सुशासन और स्थानीय स्वशासन की सफलता के लिए अत्यंत आवश्यक और महत्वपूर्ण है।

233. (C) जनजाति के भीतर सामाजिक स्तरीकरण।
गोंड जनजाति का राज गोंड और धुर गोंड में विभाजन उनके समाज के भीतर पाए जाने वाले सामाजिक स्तरीकरण या श्रेणीबद्ध व्यवस्था का एक स्पष्ट उदाहरण है। पारंपरिक रूप से राज गोंडों को उच्च सामाजिक स्थिति प्राप्त थी क्योंकि वे अक्सर शासक वर्ग या जमींदार परिवारों से संबंधित थे, जबकि धुर गोंड सामान्य कृषक और श्रमिक वर्ग का प्रतिनिधित्व करते थे। यद्यपि आधुनिक समय में शिक्षा और जागरूकता से ये अंतर कम हो रहे हैं, फिर भी यह विभाजन गोंड समाज की ऐतिहासिक संरचना और उनके भीतर की सामाजिक विविधता को समझने में मदद करता है। यह उनकी सामाजिक पहचान का एक अत्यंत महत्वपूर्ण और प्राचीन हिस्सा माना जाता है।

234. (A) कोरकू
खंब स्वांग मध्य प्रदेश की कोरकू जनजाति द्वारा प्रदर्शित किया जाने वाला एक अत्यंत अनूठा और पारंपरिक अनुष्ठानिक लोक नाटक है। इस प्रदर्शन के केंद्र में एक लकड़ी का स्तंभ या खंब होता है, जिसके चारों ओर नर्तक और कलाकार विभिन्न पौराणिक कथाओं और सामाजिक घटनाओं का अभिनय करते हैं। यह प्रदर्शन मुख्य रूप से मेघनाद की पूजा और देवताओं के प्रति आभार व्यक्त करने के लिए किया जाता है। कोरकू समुदाय के लिए यह केवल मनोरंजन नहीं है, बल्कि अपनी सांस्कृतिक जड़ों से जुड़ने और अपनी कलात्मक प्रतिभा को सामूहिक रूप से उत्सव के रूप में मनाने का एक पवित्र और गौरवपूर्ण माध्यम है जो उनकी विरासत को जीवंत रखता है।

235. (D) जमीनी स्तर पर आर्थिक और सामाजिक सशक्तिकरण के लिए एक तंत्र।
स्वयं सहायता समूहों और महिला सशक्तिकरण के बीच एक अत्यंत गहरा और अटूट संबंध है। ये समूह वास्तव में एक ऐसा प्रभावी तंत्र प्रदान करते हैं जो महिलाओं को जमीनी स्तर पर संगठित कर उन्हें आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर और सामाजिक रूप से जागरूक बनाता है। अपनी छोटी बचतों के माध्यम से महिलाएं न केवल वित्तीय संसाधनों पर नियंत्रण प्राप्त करती हैं, बल्कि समूह की चर्चाओं में भाग लेकर उनमें नेतृत्व और सामूहिक निर्णय लेने की क्षमता भी विकसित होती है। यह प्रक्रिया समाज की पारंपरिक बाधाओं को तोड़ने और महिलाओं को एक सशक्त पहचान दिलाने में सबसे सफल माध्यम सिद्ध हुई है जो ग्रामीण अर्थव्यवस्था को नई दिशा प्रदान कर रही है।

236. (B) सरकारी अधिकारी की ओर से जवाबदेही सुनिश्चित करना।
मध्य प्रदेश लोक सेवा गारंटी अधिनियम, 2010 में शामिल दंड खंड का मुख्य उद्देश्य नागरिक सेवाओं की प्रदायगी में किसी भी प्रकार की लापरवाही या अनावश्यक देरी को रोकना है।

Click Here to Buy book on Amazon

यह प्रावधान सुनिश्चित करता है कि सरकारी अधिकारी अपने कर्तव्यों के प्रति सदैव गंभीर और उत्तरदायी बने रहें। जब किसी अधिकारी को यह ज्ञात होता है कि सेवा में देरी होने पर उसे अपने व्यक्तिगत वेतन से जुर्माना देना पड़ सकता है, तो वह कार्य को समय सीमा के भीतर पूरा करने के लिए प्रेरित होता है। यह व्यवस्था प्रशासनिक कार्यकुशलता को बढ़ाती है और यह सुनिश्चित करती है कि सुशासन का लाभ प्रत्येक नागरिक तक पारदर्शिता और सम्मान के साथ पहुँचे।

237. (C) भोजन, आवास और नौकरियों की भविष्य की मांग की योजना बनाने के लिए।
मध्य प्रदेश सरकार के लिए जनसंख्या वृद्धि के पैटर्न का गहराई से अध्ययन करना अत्यंत अनिवार्य है क्योंकि यह भविष्य की सभी विकासात्मक योजनाओं का मुख्य आधार होता है। जनसंख्या के आंकड़ों से यह स्पष्ट होता है कि आने वाले वर्षों में राज्य को कितने अतिरिक्त अनाज, नए आवासों, और शिक्षा एवं रोजगार के अवसरों की आवश्यकता होगी। संसाधनों का सीमित होना और माँग का निरंतर बढ़ना एक बड़ी चुनौती है। अतः सटीक जनांकिकीय जानकारी के बिना संसाधनों का उचित और संतुलित आवंटन संभव नहीं है। यह अध्ययन राज्य के दीर्घकालिक, न्यायसंगत और समावेशी विकास की दिशा निर्धारित करने में अत्यंत सहायक और प्रभावी सिद्ध होता है।

238. (D) परिवार कल्याण और स्वास्थ्य कार्यक्रम।
मध्य प्रदेश की जननी एक्सप्रेस सेवा राज्य के व्यापक परिवार कल्याण और स्वास्थ्य कार्यक्रमों का एक अत्यंत सफल और सराहनीय हिस्सा है। यह सेवा विशेष रूप से गर्भवती महिलाओं को प्रसव के लिए अस्पताल पहुँचाने हेतु निःशुल्क और त्वरित आपातकालीन परिवहन की सुविधा प्रदान करती है। इसका मुख्य लक्ष्य यह सुनिश्चित करना है कि समय पर चिकित्सा सहायता न मिल पाने के कारण किसी भी माता या नवजात शिशु की जान न जाए। यह पहल संस्थागत प्रसव को बढ़ावा देकर मातृ और शिशु मृत्यु दर को कम करने की दिशा में सरकार की एक अत्यंत संवेदनशील और जीवन रक्षक प्रतिबद्धता का प्रमाण है जो ग्रामीण क्षेत्रों में वरदान सिद्ध हो रही है।

239. (A) जनांकिकीय विश्लेषण।
मध्य प्रदेश के लिंगानुपात के आंकड़ों की तुलना राष्ट्रीय औसत या अन्य राज्यों के साथ करना जनांकिकीय विश्लेषण की एक मानक और अत्यंत महत्वपूर्ण प्रक्रिया है। यह तुलना नीति निर्माताओं को यह समझने में मदद करती है कि राज्य सामाजिक मानकों और लैंगिक समानता की दिशा में राष्ट्रीय स्तर पर कहाँ खड़ा है। इस विश्लेषण से उन क्षेत्रों की पहचान करना आसान हो जाता है जहाँ विशेष ध्यान और सुधारात्मक प्रयासों की आवश्यकता है। यह तुलनात्मक डेटा जनांकिकीय रुझानों को स्पष्ट करता है और राज्य की भविष्य की सामाजिक एवं स्वास्थ्य नीतियों को अधिक प्रभावी ढंग से तैयार करने के लिए एक ठोस आधार प्रदान करता है जो सतत विकास हेतु अनिवार्य है।

240. (B) पोषण और स्वास्थ्य कार्यक्रम।
एकीकृत बाल विकास सेवा योजना, जो आँगनवाड़ी केंद्रों के माध्यम से जमीनी स्तर पर संचालित होती है, मध्य प्रदेश के सबसे महत्वपूर्ण पोषण और स्वास्थ्य कार्यक्रमों में से एक है। यह योजना मुख्य रूप से छोटे बच्चों के कुपोषण को दूर करने, उनके शारीरिक विकास की निगरानी करने और गर्भवती एवं स्तनपान कराने वाली माताओं को आवश्यक पोषक तत्व प्रदान करने पर केंद्रित है। आँगनवाड़ी कार्यकर्ता घर-घर जाकर स्वास्थ्य और स्वच्छता के बारे में जागरूकता फैलाती हैं। यह कार्यक्रम राज्य की एक स्वस्थ और सुपोषित अगली पीढ़ी तैयार करने की दीर्घकालिक विकास रणनीति का अत्यंत सशक्त, प्रभावी और सफल माध्यम है जो मानव संसाधन को सुदृढ़ करता है।

241. (B) ग्राम पंचायत और जिला पंचायत।
मध्य प्रदेश की त्रिस्तरीय पंचायती राज व्यवस्था में जनपद पंचायत मध्यवर्ती स्तर पर एक अत्यंत महत्वपूर्ण कड़ी की भूमिका निभाती है। यह इकाई ग्राम पंचायत और जिला पंचायत के बीच प्रशासनिक और विकासात्मक सेतु के रूप में कार्य करती है। जनपद पंचायत का मुख्य उत्तरदायित्व अपने विकास खंड के अंतर्गत आने वाली सभी ग्राम पंचायतों की योजनाओं का समन्वय करना और उन्हें जिला पंचायत तक पहुँचाना है। साथ ही, यह जिला स्तर से प्राप्त संसाधनों और निर्देशों को प्रभावी ढंग से ग्राम स्तर तक पहुँचाने और उनके क्रियान्वयन की निगरानी करने के लिए भी जिम्मेदार होती है, जिससे शासन सुचारू बना रहता है और विकास की गति तीव्र होती है।

242. (A) पर्याप्त निधि और कार्यकर्ता।
सत्ता के विकेंद्रीकरण की प्रक्रिया तभी पूर्ण और सार्थक मानी जाती है जब शक्तियों के हस्तांतरण के साथ-साथ पंचायतों को पर्याप्त निधि और कुशल कार्यकर्ता भी उपलब्ध कराए जाएं। केवल कागजों पर जिम्मेदारी सौंप देने से स्थानीय स्वशासन सफल नहीं हो सकता। पंचायतों के पास अपने विकास कार्यों को स्वतंत्र रूप से पूरा करने के लिए स्वयं का बजट होना चाहिए और उन कार्यों को धरातल पर उतारने के लिए प्रशिक्षित प्रशासनिक अमला होना चाहिए। जब ये तीनों तत्व (कार्य, निधि और कार्यकर्ता) एक साथ मिलते हैं, तभी पंचायतें वास्तविक स्वायत्तता प्राप्त कर अपने गाँव के सर्वांगीण विकास में प्रभावी भूमिका निभा पाती हैं जो लोकतंत्र का असली उद्देश्य है।

243. (D) चौरासी
मध्य प्रदेश की सहारिया जनजाति, जिसे एक विशेष रूप से कमजोर जनजातीय समूह माना जाता है, के सामाजिक संगठन में पारंपरिक पंचायतों का विशेष महत्व है। उनकी सामाजिक व्यवस्था में बुजुर्गों की एक शक्तिशाली परिषद होती है जिसे चौरासी के नाम से जाना जाता है। यह परिषद समुदाय के भीतर अनुशासन बनाए रखने, आपसी विवादों को सुलझाने और सामाजिक रीति-रिवाजों का पालन सुनिश्चित करने के लिए सर्वोच्च संस्था मानी जाती है। सहारिया समाज में इस पारंपरिक नेतृत्व के प्रति अगाध श्रद्धा होती है, जो उनकी सांस्कृतिक पहचान और सामुदायिक एकता को पीढ़ी दर पीढ़ी सुरक्षित

NODIA

यह है कि घर, समाज और शासन के उन सभी महत्वपूर्ण निर्णयों में महिलाओं की आवाज बुलंद और प्रभावी हो जो सीधे तौर पर उनके जीवन, संसाधनों और भविष्य को प्रभावित करते हैं। जब महिलाएं स्वयं अपनी प्राथमिकताओं को तय करने और अपनी समस्याओं का समाधान खोजने में सक्षम होती हैं, तभी समाज में सही मायनों में लैंगिक समानता आती है। यह सशक्तिकरण उन्हें केवल लाभार्थी के बजाय एक सक्षम कर्ता और जागरूक नागरिक के रूप में मजबूती से स्थापित करता है।

259. (C) इसने सरकार को एक विशिष्ट समय के भीतर मौजूदा सेवाओं को वितरित करने के लिए कानूनी रूप से बाध्य किया।
मध्य प्रदेश लोक सेवा गारंटी अधिनियम, 2010 का सबसे क्रांतिकारी और अभिनव पहलू यह है कि इसने सरकारी सेवाओं की प्रदायगी को एक कानूनी बाध्यता में बदल दिया है। पहले सेवा प्रदान करना प्रशासन का स्वैच्छिक कार्य माना जाता था, किंतु इस अधिनियम के बाद सरकार एक निर्धारित समय सीमा के भीतर सेवाएं देने के लिए कानूनन जिम्मेदार है। यदि इस अवधि में सेवा नहीं मिलती, तो नागरिक को मुआवजा पाने और दोषी अधिकारी पर जुर्माना लगाने का अधिकार प्राप्त है। इस नवाचार ने सरकारी कार्यसंस्कृति को समयबद्ध, जवाबदेह और पूरी तरह से नागरिक-केंद्रित बनाकर सुशासन की एक नई मिसाल पेश की है जो सराहनीय है।

260. (D) माता और बच्चे का स्वास्थ्य और कल्याण।
मध्य प्रदेश में परिवार कल्याण कार्यक्रमों का हृदय और उनकी समस्त गतिविधियों का प्राथमिक केंद्र माता और बच्चे का समग्र स्वास्थ्य एवं सर्वांगीण कल्याण सुनिश्चित करना है। इन कार्यक्रमों के माध्यम से राज्य का मुख्य लक्ष्य शिशु मृत्यु दर और मातृ मृत्यु दर में प्रभावी कमी लाना है। इसके लिए सुरक्षित प्रसव, प्रसव पूर्व और प्रसवोत्तर देखभाल, व्यापक टीकाकरण और उचित पोषण सहायता प्रदान करने पर विशेष बल दिया जाता है। एक स्वस्थ माँ और सुपोषित बच्चा ही एक सुखी परिवार और प्रगतिशील समाज की आधारशिला होते हैं। यह ध्यान न केवल जीवन बचाता है बल्कि राज्य के दीर्घकालिक सामाजिक विकास को भी अभूतपूर्व मजबूती प्रदान करता है।

261. (C) योजना और विकास के लिए नीचे से ऊपर का दृष्टिकोण।
त्रिस्तरीय पंचायती राज व्यवस्था शासन की उस लोकतांत्रिक पद्धति को सुगम बनाती है जिसे नीचे से ऊपर का दृष्टिकोण कहा जाता है। इसमें विकास की योजनाएं और प्राथमिकताएं राज्य की राजधानी में नहीं, बल्कि सीधे गाँव की ग्राम सभाओं और पंचायतों में तय की जाती हैं। स्थानीय लोग अपनी जरूरतों को स्वयं पहचानते हैं और उनके आधार पर परियोजनाएं तैयार करते हैं, जो जनपद और जिला पंचायतों के माध्यम से समन्वित होती हैं। यह व्यवस्था यह सुनिश्चित करती है कि विकास कार्य वास्तविक स्थानीय आवश्यकताओं के अनुरूप हों और उनमें जनता की पूर्ण भागीदारी और स्वामित्व की भावना बनी रहे जो लोकतंत्र की आत्मा है।

262. (B) पंचायती राज में महिलाओं की भूमिका और भागीदारी।
जब एक महिला सरपंच अपने पद पर प्रभावी ढंग से कार्य करती है, तो वह पूरे गाँव और समाज के लिए एक शक्तिशाली रोल मॉडल बन जाती है। उसकी सफलता अन्य महिलाओं और बालिकाओं में यह आत्मविश्वास पैदा करती है कि वे भी नेतृत्व कर सकती हैं और सार्वजनिक जीवन में सक्रिय भागीदारी निभा सकती हैं। यह प्रभाव पंचायती राज में महिलाओं की भागीदारी के वास्तविक और गहरे सामाजिक आयामों को प्रदर्शित करता है। ऐसी महिला प्रतिनिधि न केवल स्थानीय विकास को प्रभावित करती हैं, बल्कि वे समाज की सदियों पुरानी पितृसत्तात्मक सोच को बदलने और लैंगिक समानता की नई इबारत लिखने में भी अग्रणी भूमिका निभाती हैं जो गौरवपूर्ण है।

263. (D) सामाजिक संगठन।
मध्य प्रदेश की भील जनजाति के विवाह रीति-रिवाजों और उनसे जुड़ी परंपराओं का अध्ययन करना सीधे तौर पर उनके सामाजिक संगठन के गहन विश्लेषण से संबंधित है। विवाह केवल दो व्यक्तियों का मिलन नहीं, बल्कि एक महत्वपूर्ण सामाजिक संस्था है जो नातेदारी संबंधों, गोत्र के नियमों और सामुदायिक बंधनों को सुव्यवस्थित करती है। भील समाज में विवाह की विभिन्न पद्धतियाँ, जैसे अपहरण विवाह या सेवा विवाह, उनके विशिष्ट सामाजिक ढाँचे और सांस्कृतिक मूल्यों को दर्शाती हैं। ऐसे अध्ययन जनजातीय समाज की आंतरिक कार्यप्रणाली, उनके आपसी संबंधों की गहराई और उनके सदियों पुराने रीति-रिवाजों की निरंतरता को समझने के लिए अत्यंत आवश्यक और महत्वपूर्ण हैं।

264. (A) संविधान अनुसूचित जनजातियों की उन्नति के लिए विशेष उपायों का प्रावधान करता है।
मध्य प्रदेश में जनजातियों के लिए संचालित कल्याणकारी कार्यक्रम केवल सरकारी इच्छाशक्ति का परिणाम नहीं हैं, बल्कि उन्हें भारतीय संविधान से प्रबल समर्थन और वैधानिक शक्ति प्राप्त है। संविधान के विभिन्न अनुच्छेदों के तहत अनुसूचित जनजातियों के सामाजिक, आर्थिक और शैक्षणिक उत्थान के लिए विशेष सुरक्षा उपायों और विकासात्मक योजनाओं का स्पष्ट प्रावधान किया गया है। यह संवैधानिक अधिदेश सरकार को बाध्य करता है कि वह इस वंचित वर्ग के अधिकारों की रक्षा करे और उन्हें विकास के समान अवसर प्रदान करे। इसी कानूनी आधार पर राज्य की जनजातीय नीतियां तैयार की जाती हैं, जो सामाजिक न्याय और समावेशी प्रगति को सुनिश्चित करने की दिशा में सदैव कार्यरत हैं।

265. (C) 2, 3, 1
मध्य प्रदेश के सामाजिक और प्रशासनिक ढांचे को वृहद से सूक्ष्म स्तर के तार्किक क्रम में इस प्रकार देखा जा सकता है। सबसे ऊपरी और व्यापक स्तर पर जिला पंचायत होती है जो संपूर्ण जिले के विकास और समन्वय का कार्य करती है। इसके बाद ग्राम पंचायत का स्थान आता है जो प्रत्यक्ष रूप से एक विशिष्ट गाँव या ग्राम समूह के प्रशासन और स्थानीय विकास के लिए जिम्मेदार होती है। सबसे सूक्ष्म और जमीनी स्तर पर स्वयं सहायता समूह होते हैं, जो गाँव के भीतर ही कुछ व्यक्तियों का छोटा सा स्वैच्छिक संगठन होते हैं जो सूक्ष्म आर्थिक और सामाजिक कार्यों में संलग्न होकर आत्मनिर्भरता को बढ़ावा देते हैं जो ग्रामीण अर्थव्यवस्था का आधार है।

Downloaded from www.pdf.tube

251. (D) कुपोषण, विशेष रूप से बच्चों और महिलाओं के बीच।
मध्य प्रदेश में पोषण और स्वास्थ्य कार्यक्रमों का प्राथमिक और अत्यंत संवेदनशील लक्ष्य राज्य में व्याप्त कुपोषण की समस्या को प्रभावी ढंग से समाप्त करना है। यह समस्या विशेष रूप से ग्रामीण क्षेत्रों के छोटे बच्चों और गर्भवती एवं स्तनपान कराने वाली माताओं में अधिक देखी जाती है। इन कार्यक्रमों के माध्यम से सरकार पूरक पौष्टिक आहार, सूक्ष्म पोषक तत्वों की आपूर्ति और स्वास्थ्य शिक्षा प्रदान करती है ताकि कुपोषण के कारण होने वाले शारीरिक और मानसिक विकास के अवरोध को रोका जा सके। एक सुपोषित, स्वस्थ और सक्षम समाज ही राज्य की आर्थिक एवं सामाजिक प्रगति का वास्तविक आधार स्तंभ सिद्ध हो सकता है जो उज्जवल भविष्य हेतु अनिवार्य है।

252. (B) वे सभी व्यक्ति जिनके नाम पंचायत क्षेत्र की मतदाता सूची में हैं।
ग्राम सभा मध्य प्रदेश की पंचायती राज व्यवस्था की वह पवित्र आधारशिला है जहाँ प्रत्यक्ष लोकतंत्र का वास्तविक स्वरूप दिखाई देता है। इसमें गाँव के किसी विशिष्ट वर्ग या अधिकारी ही शामिल नहीं होते, बल्कि उस पंचायत क्षेत्र के वे सभी वयस्क नागरिक शामिल होते हैं जिनके नाम आधिकारिक मतदाता सूची में दर्ज हैं। यह सभा गाँव के विकास की प्राथमिकताओं को तय करने और ग्राम पंचायत के बजट एवं कार्यों की निगरानी करने का सर्वोच्च लोकतांत्रिक मंच है। ग्राम सभा की सक्रियता यह सुनिश्चित करती है कि स्थानीय शासन पूरी तरह से पारदर्शी, जवाबदेह और आम जनता की आवश्यकताओं के प्रति संवेदनशील बना रहे जो ग्राम स्वराज का आधार है।

253. (C) ग्रामीण नेतृत्व।
मध्य प्रदेश के ग्रामीण क्षेत्रों में सदियों से चले आ रहे पारंपरिक वंशानुगत मुखिया की प्रथा का अब निर्वाचित सरपंच की लोकतांत्रिक व्यवस्था में बदल जाना ग्रामीण नेतृत्व की प्रकृति में आए एक ऐतिहासिक परिवर्तन का प्रतीक है। पहले जहाँ नेतृत्व जन्म या जाति पर आधारित था, अब इसका आधार जनता का विश्वास और लोकतांत्रिक मतदान हो गया है। यह नया नेतृत्व संवैधानिक रूप से सशक्त और जवाबदेह है, जिसे विकास कार्यों के प्रबंधन की औपचारिक शक्तियाँ प्राप्त हैं। यह परिवर्तन न केवल ग्रामीण राजनीति को अधिक समावेशी और पारदर्शी बनाता है, बल्कि स्थानीय शासन में योग्यता और जनसेवा के मूल्यों को भी सर्वोच्च स्थान प्रदान करता है जो गौरवपूर्ण है।

254. (D) एक वंश समूह, जो आमतौर पर बहिर्विवाही होता है।
मध्य प्रदेश की जनजातीय सामाजिक व्यवस्था में गोत्र शब्द का अर्थ एक ऐसे वंश समूह से है जिसके सभी सदस्य स्वयं को एक ही पौराणिक पूर्वज की संतान मानते हैं। गोत्र की सबसे प्रमुख विशेषता इसका बहिर्विवाही होना है, जिसका अर्थ है कि एक ही गोत्र के भीतर विवाह करना पूर्णतः वर्जित है। यह व्यवस्था जनजातीय समाज में विवाह के नियमों, नातेदारी संबंधों और सामुदायिक अनुशासन को बनाए रखने में केंद्रीय भूमिका निभाती है। गोत्र न केवल सामाजिक पहचान का आधार है, बल्कि यह संकट के समय आपसी सहयोग और एकजुटता का एक मजबूत सुरक्षा तंत्र भी प्रदान करता है जो जनजातीय समुदायों की विशिष्ट पहचान और उनके अस्तित्व को सुरक्षित रखता है।

255. (A) जनजातीय संस्कृति को बढ़ावा देना और कारीगरों को बाजार प्रदान करना।
मध्य प्रदेश के प्रमुख शहरों में सरकार द्वारा जनजातीय कला मेलों का आयोजन करना राज्य की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत को संरक्षित करने और बढ़ावा देने की दिशा में एक अत्यंत महत्वपूर्ण कदम है। इन मेलों का मुख्य उद्देश्य जनजातीय कारीगरों की उत्कृष्ट कलात्मक प्रतिभा को व्यापक पहचान दिलाना और उन्हें अपने उत्पादों को सीधे बेचने के लिए एक बड़ा बाजार उपलब्ध कराना है। इससे न केवल उनकी आर्थिक स्थिति सुदृढ़ होती है, बल्कि शहरी समाज को भी जनजातीय जीवन, कला और मूल्यों को करीब से समझने का अवसर मिलता है। यह पहल आधुनिकता और परंपरा के बीच एक मजबूत सेतु का कार्य करती है जो सांस्कृतिक विविधता को गौरव प्रदान करती है।

256. (B) अधिक नागरिक जागरूकता और शासन में भागीदारी।
मध्य प्रदेश में गैर-सरकारी संगठनों की निरंतर सक्रियता का एक अत्यंत महत्वपूर्ण और सकारात्मक परिणाम आम जनता, विशेषकर ग्रामीण समुदाय में बढ़ती हुई नागरिक जागरूकता है। ये संगठन लोगों को उनके संवैधानिक अधिकारों, सरकारी योजनाओं और शासन की प्रक्रियाओं के बारे में शिक्षित करते हैं। जब नागरिक जागरूक होते हैं, तो वे ग्राम सभाओं और अन्य स्थानीय निकायों में अधिक सक्रियता और आत्मविश्वास के साथ भाग लेते हैं। यह भागीदारी शासन को अधिक पारदर्शी और जवाबदेह बनाती है, जिससे विकास की प्रक्रिया अधिक जन-केंद्रित और सफल होती है। इस प्रकार, ये संगठन लोकतंत्र को जमीनी स्तर पर मजबूत करते हैं और समावेशी विकास सुनिश्चित करते हैं।

NODIA

257. (B) नियमित बैठकें, खातों में पारदर्शिता और सदस्यों के बीच आपसी विश्वास।
मध्य प्रदेश में एक स्वयं सहायता समूह की स्थायी सफलता और मजबूती के लिए सबसे अनिवार्य तत्व सदस्यों के बीच अटूट आपसी विश्वास और लोकतांत्रिक कार्यप्रणाली है। नियमित अंतराल पर बैठकें आयोजित करना न केवल सामूहिक निर्णय लेने में मदद करता है, बल्कि यह सदस्यों के बीच एकता के भाव को भी प्रगाढ़ करता है। इसके साथ ही, समूह के वित्तीय लेन-देन और खातों में पूर्ण पारदर्शिता होना अत्यंत आवश्यक है ताकि सभी सदस्यों का विश्वास बना रहे। ये बुनियादी मूल्य ही एक समूह को एक सशक्त आर्थिक और सामाजिक इकाई के रूप में विकसित होने और आत्मनिर्भरता प्राप्त करने में सक्षम बनाते हैं जो ग्रामीण महिलाओं हेतु वरदान है।

258. (A) यह सुनिश्चित करना कि महिलाओं का उन निर्णयों में प्रभाव हो जो उनके जीवन को प्रभावित करते हैं।
मध्य प्रदेश में महिला सशक्तिकरण के अनेक लक्ष्यों में सबसे प्रमुख और बुनियादी लक्ष्य महिलाओं को निर्णय लेने की प्रक्रिया का सक्रिय हिस्सा बनाना है। इसका वास्तविक अर्थ

जब इन कार्यक्रमों के सफल क्रियान्वयन से बच्चों में नाटापन और दुबलापन की दरों में निरंतर कमी आती है, तो यह दर्शाता है कि राज्य के कुपोषण विरोधी अभियान धरातल पर सार्थक परिणाम दे रहे हैं। ये दरें सीधे तौर पर पोषण सेवाओं की पहुँच और शिशुओं के बेहतर स्वास्थ्य देखभाल की स्थिति को उजागर करती हैं। बच्चों की सुधरी हुई पोषण स्थिति एक स्वस्थ और मजबूत भावी पीढ़ी का निर्माण सुनिश्चित करती है, जो राज्य के मानव विकास लक्ष्यों का प्राथमिक केंद्र और आधार स्तंभ है।

288. (B) जिला पंचायत
मध्य प्रदेश की त्रिस्तरीय पंचायती राज व्यवस्था में जिला पंचायत वह सर्वोच्च और प्रमुख निकाय है जो संपूर्ण जिले के समन्वित और सर्वांगीण विकास के लिए कानूनी रुप से उत्तरदायी है। इसका मुख्य कार्य जिले के ग्रामीण क्षेत्रों की विकासात्मक आवश्यकताओं की पहचान करना, संसाधनों का न्यायसंगत आवंटन करना और जनपद एवं ग्राम पंचायतों की गतिविधियों की निगरानी करना है। जिला पंचायत विभिन्न सरकारी विभागों के बीच समन्वय स्थापित कर यह सुनिश्चित करती है कि राज्य की कल्याणकारी योजनाएं कुशलतापूर्वक लागू हों। इसके निर्वाचित सदस्य जिले की भविष्य की प्राथमिकताओं को तय करने और सार्वजनिक बुनियादी ढांचे को सुदृढ़ बनाने में एक निर्णायक एवं अत्यंत प्रभावशाली भूमिका निभाते हैं जो विकास हेतु अनिवार्य है।

289. (B) स्वशासन में उनकी भागीदारी सुनिश्चित करने का एक उपाय।
मध्य प्रदेश के अनुसूचित क्षेत्रों में पंचायतों में अनुसूचित जनजातियों के लिए विशेष आरक्षण का प्रावधान उनके लोकतांत्रिक अधिकारों को सुरक्षित करने की दिशा में एक अत्यंत महत्वपूर्ण कदम है। यह व्यवस्था यह सुनिश्चित करती है कि जनजातीय समुदायों को अपने स्वयं के क्षेत्रों के शासन और निर्णय लेने की प्रक्रिया में नेतृत्व का अनिवार्य अवसर मिले, जो स्वशासन की अवधारणा का मूल आधार है। इस आरक्षण से जनजातीय नेतृत्व उभरकर सामने आया है, जो स्थानीय विकास की प्राथमिकताओं को उनके विशिष्ट सांस्कृतिक और सामाजिक परिवेश के अनुरुप तय करने में सक्षम है। यह पहल जनजातियों के राजनीतिक सशक्तिकरण और शासन में उनकी सम्मानजनक भागीदारी को प्रभावी ढंग से सुदृढ़ और न्यायसंगत बनाती है।

290. (A) विवाह, उत्तराधिकार और सामाजिक आचरण से संबंधित इसके नियम।
किसी भी जनजाति के सामाजिक संगठन का गहन अध्ययन उन बुनियादी नियमों और सिद्धांतों को समझने के लिए अनिवार्य है जो उनके सामुदायिक जीवन को सुव्यवस्थित करते हैं। इसमें विवाह की विभिन्न पद्धतियाँ, संपत्ति के उत्तराधिकार के अधिकार, नातेदारी प्रणालियाँ और सामाजिक आचरण के पारंपरिक मापदंड शामिल होते हैं। यह संगठन जनजातीय समाज के भीतर अनुशासन बनाए रखने और उनके आपसी विवादों को सुलझाने का एक विश्वसनीय और सदियों पुराना तंत्र प्रदान करता है। जनजातीय समाज की विशिष्ट पहचान को संरक्षित करने और उनके साथ विकास की दिशा में प्रभावी समन्वय स्थापित करने के लिए उनकी इस आंतरिक सामाजिक संरचना का सूक्ष्म ज्ञान प्राप्त करना भविष्य हेतु अत्यंत आवश्यक और महत्वपूर्ण है।

291. (C) महिला सशक्तिकरण।
जब मध्य प्रदेश में कोई गैर-सरकारी संगठन वयस्क महिलाओं के लिए साक्षरता अभियान संचालित करता है, तो यह सीधे तौर पर महिला सशक्तिकरण की प्रक्रिया को गति प्रदान करता है। साक्षरता केवल पढ़ने-लिखने तक सीमित नहीं है, बल्कि यह महिलाओं को उनके अधिकारों के प्रति जागरुक बनाती है, उनका आत्मविश्वास बढ़ाती है और उन्हें स्वतंत्र रुप से निर्णय लेने में सक्षम बनाती है। शिक्षित महिलाएं अपने बच्चों की शिक्षा और स्वास्थ्य के प्रति अधिक सजग होती हैं और समाज की मुख्यधारा में बेहतर आर्थिक अवसरों को प्राप्त करने के योग्य बनती हैं। इस प्रकार, साक्षरता महिलाओं को एक सम्मानित और आत्मनिर्भर जीवन जीने की शक्ति प्रदान कर समाज में उनकी स्थिति को सुदृढ़ करती है जो राष्ट्र की प्रगति हेतु अनिवार्य है।

292. (D) तालमेल और सामूहिक शक्ति।
स्वयं सहायता समूहों का मूल विचार इस सिद्धांत पर आधारित है कि जब व्यक्ति अकेले काम करने के बजाय सामूहिक रूप से संगठित होते हैं, तो उनकी शक्ति और प्रभावशीलता कई गुना बढ़ जाती है, जिसे तालमेल कहा जाता है। एक सदस्य की छोटी सी बचत अकेले कोई बड़ा बदलाव नहीं ला सकती, लेकिन जब दस-बीस सदस्य मिलकर बचत करते हैं, तो वह एक बड़ी सामूहिक शक्ति बन जाती है जो सूक्ष्म वित्त और सामुदायिक सुधार के बड़े कार्यों को संभव बनाती है। यह एकता न केवल आर्थिक लाभ प्रदान करती है, बल्कि सदस्यों में आपसी सहयोग, विश्वास और सामूहिक निर्णय लेने की क्षमता भी विकसित करती है, जो ग्रामीण क्षेत्रों में किसी भी स्थायी सामाजिक-आर्थिक परिवर्तन की सशक्त रीढ़ होती है।

293. (C) समय पर सेवा का अधिकार।
मध्य प्रदेश लोक सेवा गारंटी अधिनियम, 2010 अनिवार्य रूप से नागरिकों के समय पर सेवा प्राप्त करने के अधिकार को कानूनी जामा पहनाने का एक क्रांतिकारी उपकरण है। यह कानून पुरानी प्रशासनिक व्यवस्था को चुनौती देता है जहाँ सेवाओं की प्राप्ति अधिकारियों की इच्छा पर निर्भर थी। अब इस अधिनियम ने यह सुनिश्चित कर दिया है कि प्रत्येक नागरिक को अधिसूचित सरकारी सेवाएं एक पूर्व निर्धारित समय सीमा में प्राप्त हों, अन्यथा उसे इसके लिए अपील करने और मुआवजा पाने का हक है। यह अधिकार नागरिकों को प्रशासनिक तंत्र के सामने गौरवपूर्ण स्थिति प्रदान करता है और सरकारी कार्यप्रणाली को पूरी तरह से पारदर्शी, कुशल और आम जनता की आवश्यकताओं के प्रति पूर्णतः उत्तरदायी बनाता है जो सुशासन का आधार है।

294. (B) विवाह योग्य आयु के पुरुषों के लिए महिलाओं की कमी।
मध्य प्रदेश में लिंगानुपात में निरंतर गिरावट भविष्य में एक अत्यंत गंभीर जनांकिकीय और सामाजिक चुनौती पैदा कर

Click Here to Buy book on Amazon

266. (A) जनजातीय संस्कृति और प्रकृति।
मध्य प्रदेश की जनजातीय समुदायों द्वारा मनाए जाने वाले वे त्योहार जो सीधे तौर पर कृषि चक्र, नई फसल की कटाई या ऋतु परिवर्तन से जुड़े होते हैं, जनजातीय संस्कृति और प्रकृति के बीच के अटूट एवं गहरे संबंध का एक उत्कृष्ट उदाहरण हैं। जनजातियों का जीवन वनों और भूमि पर आधारित है, इसलिए वे प्रकृति को अपना पालक मानकर उसकी पूजा करते हैं। इन उत्सवों के माध्यम से वे धरती माता के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करते हैं और अपनी सांस्कृतिक विरासत को जीवंत रखते हैं। यह सह-अस्तित्व की भावना यह दर्शाती है कि जनजातीय समाज का प्रत्येक अनुष्ठान और उत्सव पर्यावरण के साथ सामंजस्य बिठाने का एक माध्यम है जो आज के समय में अत्यंत प्रासंगिक है।

267. (D) स्वयं सहायता समूह अनौपचारिक सदस्य-संचालित समूह हैं जबकि बैंक औपचारिक विनियमित संस्थान हैं।
स्वयं सहायता समूहों और पारंपरिक बैंकों के बीच का प्राथमिक अंतर उनके संगठनात्मक स्वरूप और कार्यशैली में निहित है। बैंक औपचारिक और कड़े नियमों द्वारा विनियमित बड़े वित्तीय संस्थान होते हैं जो व्यापारिक आधार पर कार्य करते हैं। इसके विपरीत, स्वयं सहायता समूह समान सामाजिक-आर्थिक पृष्ठभूमि वाले लोगों का एक छोटा और अनौपचारिक संगठन है, जिसे सदस्य स्वयं अपनी पारस्परिक सहमति और विश्वास के आधार पर संचालित करते हैं। इन समूहों में निर्णय सामूहिक होते हैं और इनका मुख्य उद्देश्य लाभ कमाने के बजाय सदस्यों की आपसी वित्तीय सहायता करना और उनमें बचत की आदत डालकर उन्हें आत्मनिर्भर बनाना होता है जो ग्रामीण आर्थिक सुधार का आधार है।

268. (B) महिला सशक्तिकरण।
मध्य प्रदेश में बालिकाओं की माध्यमिक शिक्षा पूर्ण करने की दर को बढ़ाने के लिए किए जा रहे प्रयास सीधे तौर पर महिला सशक्तिकरण की दिशा में एक अत्यंत महत्वपूर्ण और प्रभावी कदम हैं। शिक्षा ही वह माध्यम है जो लड़कियों को भविष्य के बेहतर आर्थिक अवसरों, स्वास्थ्य जागरूकता और अपने अधिकारों के प्रति सजगता प्रदान करती है। जब एक लड़की शिक्षित होती है, तो उसमें स्वतंत्र रूप से सोचने और निर्णय लेने का आत्मविश्वास विकसित होता है, जो उसे समाज में बराबरी का स्थान दिलाने में सहायक होता है। शिक्षित महिलाएं न केवल अपने परिवार का उत्थान करती हैं, बल्कि वे राज्य की सामाजिक-आर्थिक प्रगति में भी सक्रिय योगदान देती हैं जो एक उज्जवल भविष्य हेतु अनिवार्य है।

269. (C) बेरोजगारी में वृद्धि और सार्वजनिक सेवाओं पर दबाव।
मध्य प्रदेश में यदि जनसंख्या वृद्धि दर उच्च बनी रहती है और उसके अनुपात में आर्थिक विकास एवं संसाधनों का विस्तार नहीं होता, तो इसके गंभीर सामाजिक-आर्थिक परिणाम हो सकते हैं। ऐसी स्थिति में कार्यशील आबादी के लिए पर्याप्त रोजगार सृजित करना कठिन हो जाता है, जिससे बेरोजगारी में तीव्र वृद्धि होती है। साथ ही, शिक्षा, स्वास्थ्य, स्वच्छ पेयजल और सार्वजनिक परिवहन जैसी सेवाओं पर अत्यधिक दबाव बढ़ जाता है, जिससे उनकी गुणवत्ता प्रभावित होती है। संसाधनों की कमी और बढ़ती माँग के बीच यह असंतुलन राज्य के समग्र विकास लक्ष्यों को प्राप्त करने और जीवन स्तर को सुधारने की दिशा में एक बड़ी बाधा बन सकता है जो चिंताजनक है।

270. (D) 0-6 आयु वर्ग में प्रति 1000 बालकों पर बालिकाओं की संख्या।
जनांकिकीय शब्दावली में बाल लिंगानुपात एक अत्यंत विशिष्ट और संवेदनशील मापदंड है जो किसी क्षेत्र में 0 से 6 वर्ष की आयु के बच्चों के बीच पुरुषों और महिलाओं के अनुपात को दर्शाता है। विशेष रूप से, यह प्रति 1000 बालकों पर उसी आयु वर्ग की बालिकाओं की कुल संख्या को मापता है। मध्य प्रदेश की जनसांख्यिकी में यह संकेतक समाज के भविष्य के स्वरूप का पूर्वाभास देता है। यदि यह अनुपात कम होता है, तो यह बालिकाओं के प्रति गहरी सामाजिक उपेक्षा और प्रतिकूल परिस्थितियों की ओर संकेत करता है। इस डेटा का उपयोग सरकार द्वारा बाल विकास और लैंगिक समानता की प्रभावी नीतियां बनाने के लिए किया जाता है जो एक संतुलित समाज हेतु अनिवार्य हैं।

271. (A) आँगनवाड़ी केंद्रों और स्वास्थ्य कार्यकर्ताओं जैसे एक मजबूत वितरण तंत्र द्वारा।
मध्य प्रदेश में पोषण और स्वास्थ्य कार्यक्रमों की धरातल पर सफलता पूरी तरह से एक सुदृढ़ और सक्रिय वितरण प्रणाली पर निर्भर करती है। इसके केंद्र में आँगनवाड़ी केंद्र, महिला स्वास्थ्य कार्यकर्ता और आशा कार्यकर्ता जैसी समर्पित कार्यकर्ता होती हैं जो सीधे तौर पर समाज के सबसे जरूरतमंद वर्गों तक पहुँचती हैं। ये कार्यकर्ता पूरक पोषण, नियमित स्वास्थ्य जाँच और टीकाकरण जैसी जीवन रक्षक सेवाएं प्रदान करने में महत्वपूर्ण सेतु का कार्य करती हैं। एक मजबूत वितरण तंत्र ही यह सुनिश्चित कर सकता है कि सरकारी योजनाओं का लाभ दूरदराज के अंचलों और दुर्गम क्षेत्रों तक पारदर्शिता एवं कुशलता के साथ पहुँचे, जिससे स्वस्थ समाज का निर्माण संभव हो जो राज्य की प्रगति का आधार है।

272. (B) जिला स्तर पर पर्यवेक्षण, समन्वय और योजना बनाना।
मध्य प्रदेश की त्रिस्तरीय पंचायती राज व्यवस्था में जिला पंचायत सर्वोच्च प्रशासनिक और योजनाकारी भूमिका निभाती है। इसका मुख्य कार्य संपूर्ण जिले के ग्रामीण क्षेत्रों के लिए व्यापक विकास योजनाएं तैयार करना और उन्हें अंतिम रूप देना है। जिला पंचायत जिले के विभिन्न विभागों और जनपद पंचायतों के बीच एक प्रभावी समन्वय स्थापित करती है ताकि संसाधनों का न्यायसंगत वितरण हो सके। इसके अतिरिक्त, यह स्थानीय विकास परियोजनाओं के क्रियान्वयन की निरंतर निगरानी और पर्यवेक्षण भी करती है। जिला पंचायत राज्य सरकार और ग्राम स्तर के स्वशासन के बीच एक महत्वपूर्ण कड़ी के रूप में कार्य कर सुशासन सुनिश्चित करती है जो ग्रामीण उत्थान हेतु अत्यंत आवश्यक है।

273. (B) महिलाओं की भागीदारी।
मध्य प्रदेश की पंचायतों में छद्म नेतृत्व या सरपंच पति की प्रथा का होना पंचायती राज में महिलाओं की वास्तविक और

Downloaded from www.pdf.tube

से आगे बढ़ सके जो राज्य के उज्जवल भविष्य के लिए अत्यंत गौरवपूर्ण और आवश्यक आधार स्तंभ है।

www.nodia.in

NODIA

केवल जनसंख्या नियंत्रण और जन्म दर को कम करने पर था, अब इनका दायरा अत्यंत व्यापक हो गया है। वर्तमान में ये कार्यक्रम समग्र परिवार कल्याण पर जोर देते हैं, जिसमें सुरक्षित मातृत्व, बाल स्वास्थ्य, समुचित पोषण और परिवार नियोजन की स्वैच्छिक सेवाओं को समान महत्व दिया जाता है। यह बदलाव दर्शाता है कि सरकार अब केवल आंकड़ों को कम करने के बजाय नागरिकों के स्वास्थ्य की गुणवत्ता और उनके समग्र जीवन स्तर को सुधारने की दिशा में अधिक संवेदनशील, मानवीय और उत्तरदायी होकर कार्य कर रही है।

281. (C) ग्राम पंचायत के कार्यों के प्रत्यक्ष लोकतंत्र और सामाजिक अंकेक्षण के लिए।
मध्य प्रदेश में ग्राम सभा की नियमित बैठकें ग्रामीण क्षेत्रों में प्रत्यक्ष लोकतंत्र को जीवंत बनाने का एक सशक्त माध्यम प्रदान करती हैं। यह वह मंच है जहाँ गाँव का प्रत्येक पंजीकृत मतदाता सीधे तौर पर ग्राम पंचायत द्वारा किए गए विकास कार्यों की समीक्षा कर सकता है और सार्वजनिक धन के खर्च का हिसाब मांग सकता है, जिसे सामाजिक अंकेक्षण कहा जाता है। ग्राम सभा भविष्य की विकास योजनाओं की प्राथमिकताओं को तय करने में भी निर्णायक भूमिका निभाती है। यह व्यवस्था शासन में पूर्ण पारदर्शिता सुनिश्चित करती है और स्थानीय नेतृत्व को सीधे जनता के प्रति जवाबदेह बनाकर भ्रष्टाचार को रोकने में एक अत्यंत प्रभावी और अनिवार्य उपकरण सिद्ध होती है जो ग्राम विकास का आधार है।

282. (A) उस सीमा तक जहाँ स्थानीय निकाय स्थानीय आवश्यकताओं के आधार पर परियोजनाओं की योजना बना सकते हैं और उन्हें निष्पादित कर सकते हैं।
मध्य प्रदेश में सत्ता के विकेंद्रीकरण की वास्तविक सफलता इस बात से मापी जाती है कि स्थानीय स्वशासन निकाय, जैसे ग्राम पंचायतें, अपने गाँव के विकास के लिए कितने स्वायत्त होकर निर्णय ले पा रहे हैं। विकेंद्रीकरण का मुख्य उद्देश्य यह सुनिश्चित करना है कि शासन की शक्ति सीधे उन लोगों तक पहुँचे जो स्थानीय समस्याओं को सबसे बेहतर समझते हैं। जब पंचायतें स्थानीय जरूरतों के अनुरूप स्वयं योजनाएं तैयार करती हैं और उन परियोजनाओं को अपनी देखरेख में सफलतापूर्वक पूरा करती हैं, तभी स्वशासन का वास्तविक लक्ष्य सिद्ध होता है। यह स्वायत्तता और निर्णय लेने की क्षमता ही ग्रामीण क्षेत्रों में स्थायी विकास और जमीनी स्तर पर लोकतंत्र को मजबूत करने का वास्तविक पैमाना है।

283. (D) जनजातीय बच्चों के लिए विशेष छात्रवृत्ति और आवासीय विद्यालय।
मध्य प्रदेश में जनजातीय कल्याण कार्यक्रमों का एक अत्यंत सफल और प्रेरक उदाहरण जनजातीय बच्चों के लिए छात्रवृत्ति और विशेष आवासीय विद्यालयों का संचालन है। इन योजनाओं का मुख्य लक्ष्य भौगोलिक और सामाजिक बाधाओं को दूर कर जनजातीय छात्रों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के समान अवसर प्रदान करना है। आवासीय सुविधाएं उन्हें एक सुरक्षित और बेहतर शैक्षणिक वातावरण उपलब्ध कराती हैं, जिससे स्कूल छोड़ने की दर काफी कम होती है। शिक्षा के माध्यम से प्राप्त यह सशक्तिकरण जनजातीय युवाओं को आधुनिक रोजगार के अवसरों से जुड़ने और समाज में अपनी विशिष्ट पहचान बनाने में सक्षम बनाता है, जो उनके सर्वांगीण और गरिमापूर्ण उत्थान के लिए भविष्य हेतु अनिवार्य है।

284. (B) आधिकारिक तौर पर मान्यता प्राप्त अनुसूचित जनजातियाँ।
मध्य प्रदेश में जनजातीय कला से तात्पर्य उन अद्वितीय कलात्मक अभिव्यक्तियों से है जो राज्य की आधिकारिक तौर पर मान्यता प्राप्त अनुसूचित जनजातियों, जैसे गोंड, भील, बैगा और कोरकू आदि द्वारा पारंपरिक रूप से सृजित और अभ्यास की जाती हैं। यह कला उनकी सदियों पुरानी लोक परंपराओं, धार्मिक विश्वासों और प्रकृति के साथ उनके दैनिक जीवन के अटूट संबंधों का एक जीवंत प्रतिबिंब है। इन जनजातियों के अपने विशिष्ट नृत्य, चित्रकला और शिल्प रूप हैं, जो राज्य की समृद्ध सांस्कृतिक विविधता की आधारशिला हैं। इन कला रूपों को सुरक्षित रखना न केवल इन समुदायों की पहचान के लिए, बल्कि मध्य प्रदेश की ऐतिहासिक और कलात्मक विरासत के संरक्षण के लिए भी अत्यंत महत्वपूर्ण है।

285. (C) महिला सशक्तिकरण और लिंगानुपात में सुधार करना।
मध्य प्रदेश की लाड़ली लक्ष्मी योजना महिला सशक्तिकरण की दिशा में एक क्रांतिकारी और अत्यंत संवेदनशील सरकारी पहल है। इस योजना का मुख्य उद्देश्य बालिकाओं के प्रति समाज की पुरानी नकारात्मक सोच को बदलना और उन्हें भविष्य के लिए एक आर्थिक सुरक्षा प्रदान करना है। इसके माध्यम से बालिकाओं की शिक्षा और स्वास्थ्य सुनिश्चित करने के लिए वित्तीय सहायता दी जाती है, जिससे बाल विवाह जैसी कुप्रथाओं को रोकने में भी मदद मिलती है। यह योजना सीधे तौर पर राज्य के लिंगानुपात में सुधार लाने और बेटियों को समाज में सम्मानजनक स्थान दिलाने के लिए समर्पित है, जो एक न्यायपूर्ण, संतुलित और प्रगतिशील समाज के निर्माण की दिशा में एक अत्यंत प्रभावी और सराहनीय कदम है।

286. (D) जनसांख्यिकी।
जनगणना के आंकड़ों का वैज्ञानिक विश्लेषण करके मध्य प्रदेश की दशकीय जनसंख्या वृद्धि दर का अध्ययन करना सीधे तौर पर जनसांख्यिकी का विषय है। यह अध्ययन राज्य की जनसंख्या में होने वाले परिवर्तनों, उसके घनत्व और वितरण के रुझानों को समझने में मदद करता है। दशकीय वृद्धि दर से यह पता चलता है कि पिछले दस वर्षों में जनांकिकीय स्थितियों ने विकास के मानकों को किस प्रकार प्रभावित किया है। इस डेटा का उपयोग करके ही सरकार आने वाले समय के लिए शिक्षा, स्वास्थ्य और संसाधनों के प्रबंधन की सटीक और प्रभावी योजनाएं तैयार कर सकती है। यह विश्लेषण राज्य के भविष्य के सतत विकास का एक अनिवार्य, विश्वसनीय और वैज्ञानिक आधार प्रस्तुत करता है जो नीति निर्माण हेतु आवश्यक है।

287. (A) 5 वर्ष से कम उम्र के बच्चों में नाटापन और दुबलापन की दरों में कमी।
मध्य प्रदेश में पोषण और स्वास्थ्य कार्यक्रमों की वास्तविक सफलता को मापने का सबसे वैज्ञानिक और प्रभावी संकेतक 5 वर्ष से कम आयु के बच्चों के शारीरिक विकास के आंकड़े हैं।

Click Here to Buy book on Amazon

प्रभावी भागीदारी के मार्ग में एक बड़ी चुनौती है। यद्यपि कानून ने महिलाओं को सरपंच जैसे उच्च पदों पर आसीन होने का अधिकार दिया है, किंतु सामाजिक बाधाओं के कारण अक्सर उनके पुरुष रिश्तेदार ही वास्तविक शक्तियों का उपयोग करते हैं। यह स्थिति महिलाओं को निर्णय लेने की प्रक्रिया में स्वतंत्र रूप से शामिल होने से रोकती है। इस चुनौती को दूर करने के लिए निर्वाचित महिला प्रतिनिधियों का निरंतर क्षमता निर्माण करना और समाज की पितृसत्तात्मक मानसिकता में परिवर्तन लाना अत्यंत आवश्यक है ताकि वे स्वायत्त नेतृत्व प्रदान कर सकें जो लोकतंत्र का ध्येय है।

274. (A) वनों के साथ उनकी पारंपरिक निर्भरता और सहजीवी संबंध।
मध्य प्रदेश के वे कल्याणकारी कार्यक्रम जो जनजातीय समुदायों को वन अधिकार और लघु वनोपज पर स्वामित्व प्रदान करते हैं, उनके वनों के साथ सदियों पुराने सहजीवी संबंध की महत्वपूर्ण स्वीकृति हैं। जनजातियों का जीवन, संस्कृति और आजीविका वनों से गहराई से जुड़े हुए हैं। इन अधिकारों के मिलने से उन्हें अपनी जड़ों से जुड़े रहने और वनों का संरक्षण करते हुए अपनी आर्थिक स्थिति सुधारने का अवसर मिलता है। यह पहल न केवल उन्हें शोषण से बचाती है, बल्कि उनके पारंपरिक ज्ञान और प्राकृतिक संसाधनों के प्रति उनके सम्मान को भी वैधानिक मान्यता प्रदान करती है, जो उनके समग्र और गौरवपूर्ण विकास के लिए अनिवार्य है और पर्यावरण संरक्षण में सहायक है।

275. (C) तत्व जो जनजाति के जीवन, अर्थव्यवस्था और पौराणिक कथाओं के केंद्र में हैं।
गोंड चित्रकला में महुआ जैसे वृक्षों और अन्य प्राकृतिक रूपांकनों का उपयोग केवल सजावटी उद्देश्यों के लिए नहीं किया जाता, बल्कि इनका अत्यंत गहरा सांस्कृतिक और आर्थिक महत्व होता है। महुआ का पेड़ गोंड जनजाति के लिए आजीविका, भोजन और उनके पारंपरिक धार्मिक अनुष्ठानों का एक अनिवार्य आधार स्तंभ है। ये रूपांकन उनकी लोककथाओं और प्रकृति के प्रति उनकी अगाध श्रद्धा को जीवंत रूप में प्रदर्शित करते हैं। चित्रकला के माध्यम से इन प्रतीकों को उकेरना जनजातीय समाज के अपने पर्यावरण के साथ अटूट संबंधों और उनकी प्राचीन गौरवशाली विरासत को भावी पीढ़ियों के लिए कलात्मक रूप से संरक्षित करने का एक अनूठा और सराहनीय तरीका है जो पहचान को सुदृढ़ करता है।

276. (D) क्योंकि वे नागरिक समाज की आवाज का प्रतिनिधित्व करते हैं और सरकार को जवाबदेह ठहरा सकते हैं।
मध्य प्रदेश जैसे विशाल और विविध राज्य में एक स्वस्थ और सक्रिय लोकतंत्र के लिए गैर-सरकारी संगठनों की उपस्थिति अत्यंत महत्वपूर्ण मानी जाती है। ये संगठन नागरिक समाज की एक मुखर आवाज के रूप में कार्य करते हैं, जो समाज के वंचित और हाशिए पर रहने वाले वर्गों के हितों और अधिकारों की रक्षा करते हैं। वे अक्सर सरकारी नीतियों की स्वतंत्र निगरानी करते हैं और प्रशासन की कमियों को उजागर कर उसे अधिक पारदर्शी एवं जवाबदेह बनाने का प्रयास करते हैं। उनकी यह प्रहरी की भूमिका यह सुनिश्चित करती है कि शासन की प्रक्रिया अधिक सहभागी, जन-हितैषी और लोकतांत्रिक मूल्यों के प्रति संवेदनशील बनी रहे जो एक जागरूक और प्रबुद्ध समाज के निर्माण हेतु अनिवार्य है।

277. (C) सामाजिक सशक्तिकरण और सामूहिक कार्रवाई।
जब ग्रामीण मध्य प्रदेश में किसी स्वयं सहायता समूह की महिलाएं केवल आर्थिक कार्यों तक सीमित न रहकर बाल विवाह जैसी कुप्रथाओं के विरुद्ध अभियान चलाने का सामूहिक निर्णय लेती हैं, तो यह सामाजिक सशक्तिकरण का एक उत्कृष्ट उदाहरण है। यह दर्शाता है कि एक समूह के रूप में संगठित होने के बाद महिलाओं में वह आत्मविश्वास और साहस पैदा होता है जिससे वे समाज की रुढ़ियों को चुनौती दे सकें। ऐसी सामूहिक कार्रवाई न केवल सामाजिक सुधारों को तीव्र करती है, बल्कि यह सिद्ध करती है कि आर्थिक रूप से स्वावलंबी महिलाएं समाज की दिशा बदलने और एक प्रगतिशील एवं जागरूक समुदाय के निर्माण में नेतृत्व कर सकती हैं जो राष्ट्र निर्माण में अत्यंत महत्वपूर्ण है।

278. (B) शासन के प्रति अधिकार-आधारित दृष्टिकोण।
मध्य प्रदेश लोक सेवा गारंटी अधिनियम, 2010 की सबसे विशिष्ट विशेषता यह है कि यह शासन के प्रति एक अधिकार-आधारित दृष्टिकोण को वैधानिक मान्यता देता है। इस अधिनियम ने सरकारी सेवाओं को प्राप्त करने की प्रक्रिया को केवल प्रशासनिक उपकार से बदलकर नागरिक के कानूनी अधिकार में परिवर्तित कर दिया है। इसके माध्यम से नागरिकों को यह शक्ति प्राप्त है कि वे निर्धारित समय सीमा के भीतर सेवाओं की मांग कर सकें और देरी होने पर जवाबदेही तय कर सकें। यह दृष्टिकोण प्रशासन की कार्यसंस्कृति में क्रांतिकारी बदलाव लाता है, जहाँ नागरिक अब केवल याचक नहीं बल्कि शासन में एक सक्रिय और सशक्त हितधारक के रूप में स्थापित होता है जो सुशासन का मुख्य आधार है।

279. (D) युवा, कार्यशील आयु वर्ग में जनसंख्या का एक बड़ा हिस्सा।
जनांकिकीय लाभांश का अर्थ है वह आर्थिक लाभ जो किसी राज्य को तब प्राप्त होता है जब उसकी कुल जनसंख्या में कार्यशील आयु वर्ग के युवाओं का अनुपात अधिक होता है। मध्य प्रदेश को इस स्थिति का लाभ उठाने के लिए यह आवश्यक है कि वह अपनी युवा आबादी को उचित शिक्षा, आधुनिक स्वास्थ्य सेवाएं और व्यावसायिक कौशल प्रदान करे। जब राज्य की उत्पादक जनसंख्या अधिक और आश्रित जनसंख्या (बच्चे और वृद्ध) कम होती है, तो यह तीव्र आर्थिक विकास और गरीबी उन्मूलन का एक ऐतिहासिक अवसर प्रदान करती है। इस लाभ को प्राप्त करने के लिए मानव संसाधन के विकास पर निरंतर निवेश करना राज्य के भविष्य हेतु अत्यंत अनिवार्य और महत्वपूर्ण माना जाता है।

280. (A) केवल जनसंख्या नियंत्रण।
मध्य प्रदेश में परिवार कल्याण कार्यक्रमों के दृष्टिकोण में समय के साथ एक महत्वपूर्ण और सकारात्मक बदलाव आया है। पहले जहाँ इन कार्यक्रमों का मुख्य और संकीर्ण फोकस

NODIA

सकती है। पुरुषों की तुलना में महिलाओं की कम संख्या समाज में एक बड़ा लैंगिक असंतुलन उत्पन्न करेगी, जिसके परिणामस्वरूप विवाह योग्य आयु के पुरुषों के लिए महिलाओं की भारी कमी हो जाएगी। यह असंतुलन न केवल विवाह प्रणालियों को प्रभावित करेगा, बल्कि समाज में महिलाओं के विरुद्ध अपराधों, जबरन विवाह और सामाजिक अस्थिरता जैसी समस्याओं को भी बढ़ा सकता है। यह स्थिति सामाजिक ताने-बाने को कमजोर करती है, जिसे रोकने के लिए बालिकाओं के जन्म, स्वास्थ्य और उनकी शिक्षा के प्रति समाज में क्रांतिकारी बदलाव और व्यापक जागरूकता लाना अब समय की पुकार है जो न्यायपूर्ण समाज हेतु आवश्यक है।

295. (D) व्यावसायिक ऋण प्रदान करना।
परिवार कल्याण कार्यक्रमों का मूल दर्शन और उनकी समस्त गतिविधियाँ मानव विकास के स्वास्थ्य और सामाजिक कल्याण के मानकों को बेहतर बनाने के लिए समर्पित होती हैं। इनमें सुरक्षित मातृत्व, बाल उत्तरजीविता सुनिश्चित करने के लिए टीकाकरण और परिवारों को छोटे एवं स्वस्थ परिवार के लाभों के प्रति जागरूक करने हेतु परिवार नियोजन की सेवाएं प्रदान करना प्रमुखता से शामिल है। हालाँकि व्यावसायिक ऋण प्रदान करना आर्थिक सशक्तिकरण की अन्य योजनाओं का हिस्सा हो सकता है, लेकिन यह परिवार कल्याण कार्यक्रमों का प्राथमिक कार्यक्षेत्र नहीं माना जाता है। इन कार्यक्रमों का मुख्य उद्देश्य परिवार के प्रत्येक सदस्य के शारीरिक और मानसिक कल्याण को सुरक्षित कर एक स्वस्थ भावी पीढ़ी तैयार करना है जो राज्य के विकास हेतु अनिवार्य है।

296. (A) पितृसत्तात्मक सामाजिक मानदंडों और क्षमता निर्माण सहायता की कमी को दूर करना।
मध्य प्रदेश की पंचायती राज व्यवस्था में महिलाओं के लिए कानूनी आरक्षण एक बड़ा कदम है, लेकिन उनकी प्रभावी भागीदारी के मार्ग में गहरी जमी हुई पितृसत्तात्मक मानसिकता आज भी एक बड़ी चुनौती बनी हुई है। समाज में महिलाओं के नेतृत्व को पूरी तरह स्वीकार न करना और सरपंच पति जैसी प्रथाओं का होना उनकी स्वायत्तता को प्रभावित करता है। इसके अतिरिक्त, निर्वाचित महिला प्रतिनिधियों को प्रशासनिक प्रक्रियाओं और बजट प्रबंधन का पर्याप्त प्रशिक्षण या क्षमता निर्माण सहायता न मिल पाना भी उनके प्रदर्शन को सीमित करता है। इन बाधाओं को दूर करके ही महिलाएं अपनी शक्तियों का वास्तविक उपयोग कर ग्रामीण विकास में अपनी निर्णायक भूमिका प्रभावी ढंग से निभाने में पूरी तरह सफल हो सकेंगी जो लोकतंत्र का ध्येय है।

297. (C) समृद्ध सांस्कृतिक और जातीय विविधता।
मध्य प्रदेश की भूमि पर फली-फूली विविध जनजातीय कलाएँ, प्राचीन लोक नृत्य और ऋतुओं के अनुसार मनाए जाने वाले रंगीन त्योहार राज्य की समृद्ध सांस्कृतिक और जातीय विविधता के प्रत्यक्ष एवं अत्यंत प्रभावशाली प्रमाण हैं। राज्य में रहने वाली भील, गोंड, बैगा और कोरकू जैसी विभिन्न जनजातियों की अपनी अनूठी परंपराएं और जीवन मूल्य हैं, जो मध्य प्रदेश के सामाजिक ताने-बाने को एक बहुरंगी पहचान प्रदान करते हैं। यह विविधता न केवल राज्य की ऐतिहासिक गहराई को प्रदर्शित करती है, बल्कि यह आपसी सहिष्णुता और सह-अस्तित्व की भावना को भी मजबूती देती है। जनजातीय संस्कृति की यह अमूल्य विरासत मध्य प्रदेश को संपूर्ण भारत और विश्व के सांस्कृतिक मानचित्र पर एक अद्वितीय एवं गौरवपूर्ण स्थान दिलाती है।

298. (A) सरकारी नीतियों और उनके कार्यान्वयन की निगरानी करना।
मध्य प्रदेश के सामाजिक-राजनीतिक परिदृश्य में एक गैर-सरकारी संगठन की प्रहरी के रूप में भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण मानी जाती है। इसका अर्थ है कि ये संगठन नागरिक समाज की ओर से सक्रिय रहकर सरकारी नीतियों के निर्माण और उनके धरातल पर क्रियान्वयन की निरंतर एवं स्वतंत्र रूप से निगरानी करते हैं। वे यह सुनिश्चित करने का प्रयास करते हैं कि सरकारी योजनाएं अपने वास्तविक लाभार्थियों तक पारदर्शिता के साथ पहुँचें और सार्वजनिक धन का सदुपयोग हो। यदि प्रशासन में कोई कमी या भ्रष्टाचार देखा जाता है, तो ये संगठन उसे सार्वजनिक कर सरकार को जवाबदेह ठहराते हैं। उनकी यह भूमिका लोकतंत्र में पारदर्शिता बढ़ाने और सुशासन की नींव को सुदृढ़ करने में सहायक सिद्ध होती है जो एक स्वस्थ समाज हेतु आवश्यक है।

299. (D) वित्तीय समावेशन और सामाजिक सशक्तिकरण।
ग्रामीण मध्य प्रदेश की महिलाओं के लिए एक स्वयं सहायता समूह में शामिल होना उनके जीवन में वित्तीय समावेशन और सामाजिक सशक्तिकरण की दिशा में पहला और सबसे क्रांतिकारी कदम साबित होता है। यह प्रक्रिया उन्हें बैंकिंग सेवाओं से जोड़कर अपनी छोटी बचतों के माध्यम से आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बनने का अवसर प्रदान करती है। समूह के सदस्य के रूप में संगठित होकर महिलाएं न केवल वित्तीय संसाधनों पर नियंत्रण प्राप्त करती हैं, बल्कि उनमें सामूहिक चर्चा करने और समाज की कुरीतियों के विरुद्ध आवाज उठाने का आत्मविश्वास भी पैदा होता है। यह मंच उन्हें उनके घरों की दहलीज से बाहर निकालकर गाँव के सार्वजनिक और आर्थिक जीवन में एक सक्रिय, सम्मानित और सशक्त पहचान दिलाने का सफल माध्यम बनता है जो प्रगति हेतु अनिवार्य है।

300. (B) शासन संरचनाएं, सामाजिक समूह, विकास पहल और जनसांख्यिकी।
मध्य प्रदेश का समग्र सामाजिक परिदृश्य शासन की त्रिस्तरीय पंचायती राज संरचनाओं, यहाँ निवास करने वाले विविध सामाजिक एवं जनजातीय समूहों, सरकार द्वारा संचालित निरंतर विकास की पहलों और राज्य की गतिशील जनसांख्यिकी का एक अत्यंत जटिल और संतुलित मिश्रण है। ये सभी घटक आपस में मिलकर राज्य की अद्वितीय सामाजिक पहचान और इसके विकास की दिशा को निर्धारित करते हैं। जहाँ शासन संरचनाएं सुशासन प्रदान करती हैं, वहीं सामाजिक विविधता राज्य को सांस्कृतिक समृद्धि देती है। विकास कार्यक्रमों और जनांकिकीय रुझानों का संगम यह सुनिश्चित करता है कि मध्य प्रदेश प्रगति के पथ पर समावेशी, न्यायपूर्ण और स्थायी ढंग

Downloaded from www.pdf.tube

रखने में एक अत्यंत महत्वपूर्ण और प्रभावी भूमिका निभाती है जो उनके अस्तित्व का आधार है।

244. (D) उनकी कृषि आजीविका में सुधार करना।
मध्य प्रदेश सरकार की वह कल्याणकारी योजना जो जनजातीय किसानों को उन्नत बीज, आधुनिक उपकरण और कृषि तकनीक उपलब्ध कराती है, का सीधा लक्ष्य उनकी कृषि आजीविका को सुदृढ़ बनाना है। जनजातीय समुदायों का एक बड़ा हिस्सा खेती पर निर्भर है, लेकिन संसाधनों के अभाव में वे अक्सर कम पैदावार और गरीबी का सामना करते हैं। इन संसाधनों के मिलने से उनकी फसल की उत्पादकता बढ़ती है, जिससे उनकी आय में सुधार होता है और वे आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बनते हैं। यह पहल जनजातीय समुदायों के आर्थिक उत्थान और उन्हें मुख्यधारा की कृषि व्यवस्था से जोड़ने के लिए अत्यंत प्रभावी, न्यायपूर्ण और सफल सिद्ध होती है जो समावेशी प्रगति का मार्ग है।

245. (C) कारीगरों के लिए आजीविका और सांस्कृतिक पहचान।
मध्य प्रदेश की जनजातीय कलाएँ, जैसे ढोकरा शिल्प और पिथोरा चित्रकला, राज्य की सांस्कृतिक धरोहर की अमूल्य निधियाँ हैं। ये कला रूप न केवल जनजातीय समुदायों की विशिष्ट पहचान और उनके ऐतिहासिक गौरव को सुरक्षित रखते हैं, बल्कि ये हजारों कारीगरों के लिए सम्मानजनक आजीविका का एक प्रमुख स्रोत भी हैं। जब इन पारंपरिक शिल्पों की माँग राष्ट्रीय और वैश्विक स्तर पर बढ़ती है, तो इससे जनजातीय कलाकारों को आर्थिक मजबूती मिलती है और उनकी प्राचीन कलात्मक प्रतिभा को नई पहचान प्राप्त होती है। इस प्रकार, ये कलाएँ संस्कृति और अर्थशास्त्र के सुंदर मेल का एक जीवंत, गौरवशाली एवं अत्यंत प्रभावशाली उदाहरण प्रस्तुत करती हैं जो राज्य को ख्याति दिलाता है।

246. (B) सामाजिक कार्य के लिए पैरवी और कानूनी कार्रवाई।
जब मध्य प्रदेश में कोई गैर-सरकारी संगठन किसी जनजातीय समुदाय के अधिकारों की सुरक्षा के लिए जनहित याचिका दायर करता है, तो वह वास्तव में सामाजिक न्याय के लिए सक्रिय पैरवी और कानूनी कार्रवाई कर रहा होता है। यह कदम दर्शाता है कि संगठन केवल सेवा प्रदाता नहीं है, बल्कि वह उन लोगों की सशक्त आवाज बन रहा है जो स्वयं कानूनी जटिलताओं से नहीं लड़ सकते। ऐसी गतिविधियाँ शासन और प्रशासन को जवाबदेह बनाती हैं और यह सुनिश्चित करती हैं कि विकास की प्रक्रिया में किसी भी समुदाय के मौलिक और संवैधानिक अधिकारों का हनन न हो। यह नागरिक समाज की एक अत्यंत सशक्त और सराहनीय भूमिका है जो लोकतंत्र को जीवंत बनाती है।

247. (D) पारस्परिक सहायता और सामूहिक जिम्मेदारी।
स्वयं सहायता समूह आंदोलन का सबसे आधारभूत और प्रेरक सिद्धांत पारस्परिक सहायता और सामूहिक जिम्मेदारी है। इसका अर्थ यह है कि समूह का प्रत्येक सदस्य न केवल अपनी प्रगति के लिए प्रयास करता है, बल्कि वह पूरे समूह के कल्याण और स्थिरता के लिए भी उतना ही जिम्मेदार होता है। सदस्य एक-दूसरे की वित्तीय और सामाजिक समस्याओं में पूर्ण सहयोग करते हैं, जिससे उनमें अटूट विश्वास और एकता की भावना पैदा होती है। यह सामूहिक जिम्मेदारी ही इन समूहों की सफलता का मुख्य रहस्य है, जो व्यक्तिगत सीमाओं को तोड़कर एक मजबूत सामाजिक एवं आर्थिक सुरक्षा तंत्र का सफलतापूर्वक निर्माण करती है जो ग्रामीण महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाता है।

248. (A) पारंपरिक पितृसत्तात्मक संरचनाएं जो महिलाओं के अवसरों को सीमित करती हैं।
महिला सशक्तिकरण की मूल अवधारणा उन सभी पारंपरिक पितृसत्तात्मक संरचनाओं और सामाजिक मानदंडों को सीधी चुनौती देती है जो सदियों से महिलाओं की प्रगति और उनके अवसरों को बाधित करते रहे हैं। यह प्रक्रिया समाज की इस सोच को बदलने का प्रयास करती है कि निर्णय लेने की शक्ति केवल पुरुषों के पास होनी चाहिए। सशक्तिकरण महिलाओं को शिक्षा, स्वास्थ्य, आर्थिक संसाधनों और राजनीतिक नेतृत्व में बराबरी का हक प्रदान करता है। यह समाज में शक्ति के संतुलन को बदलकर एक ऐसी न्यायपूर्ण व्यवस्था की स्थापना करना चाहता है जहाँ महिलाओं को उनकी प्रतिभा के अनुसार विकास करने के पूर्ण, गरिमापूर्ण और समान अवसर प्राप्त हों जो प्रगति हेतु अनिवार्य हैं।

NODIA

249. (C) जनसंख्या स्थिर है और बदलती नहीं है।
मध्य प्रदेश की जनसांख्यिकी के बारे में यह कहना पूर्णतः गलत है कि जनसंख्या स्थिर है और बदलती नहीं है। वास्तव में, राज्य की जनसंख्या निरंतर गतिशील है और समय के साथ इसमें जन्म दर, मृत्यु दर और प्रवास के कारण व्यापक परिवर्तन होते रहते हैं। मध्य प्रदेश एक विविध आबादी वाला राज्य है जहाँ लिंगानुपात, साक्षरता और जनांकिकीय संरचना में समय-समय पर महत्वपूर्ण बदलाव देखे जाते हैं। जनसंख्या की इस गतिशीलता को समझना राज्य के भविष्य के आर्थिक नियोजन, सामाजिक विकास की नीतियों और सार्वजनिक संसाधनों के न्यायसंगत वितरण के लिए अत्यंत आवश्यक, वैज्ञानिक एवं अनिवार्य जनांकिकीय प्रक्रिया मानी जाती है जो विकास का आधार है।

250. (A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
पंचायतों में महिलाओं के लिए आरक्षण उनके राजनीतिक प्रवेश की पहली और आवश्यक सीढ़ी है, किंतु यह उनके वास्तविक सशक्तिकरण के लिए अपने आप में पर्याप्त नहीं है। धरातल पर सरपंच पति जैसी सामाजिक बाधाएं और प्रशासनिक प्रशिक्षण का अभाव अक्सर निर्वाचित महिलाओं को स्वतंत्र निर्णय लेने से रोकता है। जब तक महिलाओं को उचित प्रशिक्षण नहीं मिलेगा और सामाजिक मानसिकता नहीं बदलेगी, वे अपनी शक्तियों का पूर्ण उपयोग नहीं कर पाएंगी। अतः अभिकथन और कारण दोनों सत्य हैं, और कारण स्पष्ट रूप से समझाता है कि क्यों केवल कानूनी आरक्षण ही पर्याप्त नहीं है और इसमें अभी अनेक सामाजिक और प्रशासनिक सुधारों की आवश्यकता है जो निरंतर जारी हैं।

Visit :
www.pdf.tube

Download PDFs For :

- ✓ MPPSC Chapterwise Question Bank
- ✓ KVS/NVS Chapterwise Question Bank
- ✓ KVS/NVS 30 Sample Papers for Tier-II
- ✓ DSSSB TGT Chapterwise Question Bank
- ✓ DSSSB Sample Papers
- ✓ Chapterwise Question Bank
- ✓ JEE NEET Foundation
- ✓ Primary Classes Worksheets
- ✓ Olympiad Guide
- ✓ Sample Papers
- ✓ Previous Year CBSE Papers
- ✓ Previous JEE, NEET and CUET Papers

Nodia Editions LLP
125, Sector 6, Vidhyadhar Nagar, Jaipur 302039

MRP ₹ 650.00

Click Here to Buy book on Amazon